लखनऊ–रविवार पौष ६ शक १८८७ माघ कृ० १० वि० २०२२ दिनांक १६ जनवरी सन १९६६ ई०

प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का ताशकन्द में अचानक देहावसान !

समूचे देश में शोक की लहर, विदेशो मे भी शोक छा गया !!

प्रधान मन्त्री का शव रूसी विमान दिल्ली लाया, देश-विदेश के लाखो व्यक्तियो ने श्री शास्त्री जी का श्रद्धांजलियाँ भेंट की।

११ जनवरी को प्रात १ बजकर ३२ मिनट पर ताशकद मे भारत के प्रधानम त्री श्री ल लबहादुर श स्त्री का हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया।

ताशकद घोषणा पर हस्ताक्षर होने के बाद रूस के प्रधान म त्री श्री कोसीजिन द्वारा दी गई दावत के समय श्री श स्त्री जी स्वस्थ और प्रसन्न थ। श्री श स्त्री जी के अ तिम शब्द थ—श्री अयूब खा हमने जो समझौता किया है बहुत अच्छा है श्री अयूब खा ने कहा कि खुदा सब ठीक ही करेगा श्री शास्त्री ने यह शब्द भोजन के पश्चात कहे थ

स्व० श्री ला बहादुर जी शास्त्री

दिल्ली से बातचीत

इसके पश्चात रात को ११ बजे श्री शास्त्री जी ने अपनी प नी और श्री गुलजारीलाल न दा से बातचीत की और कहा कि कल हम यहा से चल दगे। आपने श्री न दा को समझौने का सक्षिप्त विवरण बताया और विनोद मे कहा कि मै आते समय काबुल मे एक दिन अधिक ठहरना चाहता ह। श्री न दा जी ने उ हें आराम करने की सलाह दी। इसके बाद आप सोने को चले गये।

रात को १ बजकर १० मिनट पर श्री शास्त्री जी को खासी का दौरा हुआ और आप अपने कमरे से निकलकर पास के कमरे मे पहुचे जहा उनके निजी डाक्टर चुग सोये हुए थ। डा० चुग ने उनकी प्राथमिक चिकित्सा की कि तु कोई लाभ नहीं हुआ। रूसी डाक्टरो का दल भी तुरन्त वहा आ गया और उनके दिल की गति फिर लाने की कोशिश की पर मौत के सामने उनकी भी एक न चली। १ बज कर ३२ मिनट पर हृदय गति रुक जाने से हमारे प्यारे नेता ने अपनी अन्तिम सास ली। श्री शास्त्री जी की मृत्यु का समाचार पाते ही श्री कोसीगिन उनके स्थान पर आ गये।

शान्ति के महान आदश के लिए शास्त्री द्वारा प्राणोत्सग—अयूब

ताशकद ११ जनवरी। पाकिस्तान के प्रसीडण्ट अयूब खा ने कहा कि शान्ति स्थापना के एक महान आदश के लिए प्रधान मन्त्री शास्त्री जी ने अपना प्राणोत्सग किया। श्री शास्त्री जी जहा ठहरे थ वहा प्रधान अयूब श्री शास्त्री जी को श्रद्धांजलि देने पहुचे। वे शव के पास कुछ देर तक ठहरे। श्री अयूब ने कहा कि हमारे और उनके बीच मे बहुत अच्छे सम्ब ध स्थापित हो गए थ। दोनो नेताओ ने मिलकर खुब दिल खोलकर बात की थीं हाथ मिलाए थ और आग प्रमपूवक रहने के लिए वचन दिये थ। अयूब ने कहा कि आप यकीन कर कि हम भी शान्ति

(शेष पृष्ठ ३ पर)

वयं जयेम

ओ३म वय जयेम त्वया युजा,
वृतमस्माकमशमुदवा भरे भरे।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिव सुग कृधि
प्रशत्रूणां मघवन्वृष्ण्या रुज ॥

ऋ० १।७।१४।०२।४

काव्यानुवाद

हम विजयी हो साथ तुम्हारे
करो मुक्त अपहृत बल को।
सुगम सम्पदा हो हम सबको,
नष्ट करो हरि! अरिदल को ॥

विषय-सूची

वार्षिक ८)
छःमाही ५)
विदेश

वर्ष ६८
अंक ३
एक प्रति

सामयिक समस्याएँ

क्या सन्त फतहसिंह को जलना ही पड़ेगा?

(ले०—श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक वीर प्रताप)

वह दिन हमारे लिए अत्यन्त मनहूस होगा जिस दिन सन्त फतहसिंह को आग में कूदना पड़ेगा। सन्त फतहसिंह मा० तारासिंह नहीं हैं। इसलिए उनकी मृत्यु की जो अशुभ प्रतिक्रिया हो सकती है हमें उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। यही कारण था कि मैं दो बार उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और उन से कहा कि वह पंजाब के हिन्दुओं और सिखों का एक गोलमेज सम्मेलन बुलाकर इस राज्य के विभाजन की समस्या को हल करने का प्रयास करें। यह समस्या इतनी सरल नहीं जितनी वह समझते हैं, एक नक्शे पर रेखा खींच देने से ही पंजाबी सूबा नहीं बन सकता। उसके साथ कई प्रश्न उठेंगे जिनका कोई न कोई सन्तोषजनक उत्तर ढूंढना पड़ेगा। यह उसी स्थिति में सम्भव है यदि परस्पर बैठकर एक दूसरे की बात सुनकर फिर कोई मार्ग निकाला जाए। परन्तु सन्त जी ने मेरी प्रार्थना रद्द कर दी है। वह और उसके साथी शायद समझते हैं कि जब मरने की धमकी देकर वह पंजाबी सूबा प्राप्त कर लेंगे। परन्तु वे अत्यन्त भ्रान्ति में हैं। यदि मैं यह समझता हूं कि वह दिन मनहूस होगा जिस दिन सन्त जी को आत्माहुति देनी पड़ेगी तो इसी के साथ मेरा यह भी निश्चित मत है कि वह दिन इससे भी अधिक मनहूस होगा जब हमारी सरकार आग में जलने की धमकी के आगे झुकेगी। उस दिन देश के इतिहास में एक ऐसा उदाहरण कायम हो जायगा जो इसकी सारी व्यवस्था को ही छिन्न-भिन्न कर सकता है। कोई देश जीवित नहीं रह सकता जहां लोग अपने मतभेदों का निर्णय परस्पर वार्ता द्वारा नहीं अपितु धौंस द्वारा या दूसरों को प्रभावित करके करने लगें। उस देश में फिर संविधान का नहीं अपितु जंगली कानून का शासन स्थापित हो जाता है, जहां न अपील चल सके न दलील। अतः हमारे लिए सबसे बड़ा खतरा यह है कि कल को यहां ऐसी परम्परा स्थापित न हो जो यहां शान्ति व्यवस्था का बना रहना असम्भव बना दें। मुझे डर है कि जिस मार्ग पर सन्त जी चल रहे हैं उस का परिणाम अन्त में यही होगा। यदि आज वह यह कह सकते हैं कि उनकी मांग स्वीकार न हुई तो वह जल मरेंगे, तो कल को और लोग भी ऐसे निकल सकते हैं जो अपनी मांगें मनवाने के लिए वे चाहे कितनी ही अनुचित क्यों न हों आत्महत्या करने को तैयार हो जायेंगे और जिस दिन किसी भी सरकार के विषय में यह विचार पैदा हो जाये कि उसे इस तरह की धमकियों से झुकाया जा सकता है वह सरकार भी नहीं चल सकती। इसीलिए मैंने यह सुझाव दिया था कि जल मरने की धमकी को छोड़कर सन्त जी पंजाब के हिन्दू-सिख नेताओं को एक स्थान पर एकत्र करें और फिर दोनों मिलकर कोई ऐसा मार्ग निकालें जिसमें कि पंजाब की समस्या हल हो सके।

परन्तु मेरी प्रार्थना स्वीकार न हुई और स्थिति पहले से अधिक उलझ रही है। अब तो कई बार यह आशंका भी पैदा हो रही है कि शायद सन्त फतहसिंह को अन्त में यह अन्तिम पग उठाने ही पड़े। यदि यह नौबत आई तो उसके लिए सर्वाधिक वह लोग उत्तरदायी होंगे जो पंजाबी सूबा के दावेदार बने हुए हैं। सन्त जी के कुछ साथी स्थान-स्थान पर जाकर अत्यन्त उत्तेजनात्मक भाषण दे रहे हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या वे समझते हैं कि इन भाषणों से वे पंजाब के हिन्दुओं को भयभीत कर सकेंगे। जितने अधिक वे इस तरह के उत्तेजक भाषण देंगे उतनी हिन्दुओं और सिखों में खाई बढ़ती जायेगी और उतनी ही यह समस्या उलझती जायेगी। मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि सन्त जी के कुछ साथी ऐसी स्थिति पैदा करने पर तुले हैं कि सन्त जी के लिए इस चक्कर में से निकलना असम्भव हो जाए। विवेक और बुद्धिमत्ता की तो यह मांग है कि ऐसी स्थिति पैदा की जाए कि सन्त फतहसिंह को यह अन्तिम पग उठाने की आवश्यकता न पड़े। परन्तु उनके साथी कर इसके बिलकुल प्रतिकूल रहे हैं। इस तरह के अनुत्तरदायी भाषण मा० तारासिंह ने भी न किये होंगे जैसे यह लोग कर रहे हैं। उन्हें अपना पक्ष पेश करने का पूरा अधिकार है। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह शिष्टता सज्जनता का अंचल छोड़ दें और अत्यन्त घटिया ढग की उत्तेजना पर उतर आएं। जितना वह इस विषय में तेज होते जाएंगे उतनी स्थिति बिगड़ती जाएगी।

नई उलझनें पैदा करने में यदि कोई कसर रह गई थी तो वह स० हुकमसिंह ने पूरी कर दी। उन्होंने न तो पंजाबी के लिए मार्ग प्रशस्त किया न सन्त जी के साथ वफा की। अपितु कुछ ऐसी उलझनें पैदा कर दी हैं जो इस समस्या को और भी अधिक कठिन बना देंगी। जो कुछ हो रहा है उसे देखकर मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि कई लोग सन्त फतहसिंह को बलि का बकरा बनाने पर तुले हुए हैं। पंजाबी सूबा के दावेदारों ने सन्त फतहसिंह के बलिदान का लाभ तो उठाना ही था हरियाणा के दावेदार भी अपने आप को पांच सवारों में समझने लगे हैं। उन्होंने आज तक हरियाणा के लिए कभी कोई बलिदान नहीं किया। सदा दूसरे का काटा शिकार ही खाते रहे हैं आज भी सन्त फतहसिंह को ढाल बनाकर यह हरियाणा प्रान्त बनाना चाहते हैं। इनमें से लगभग सब किसी न किसी समय सत्तारूढ़ रह चुके हैं। कोई मन्त्री रहा और कोई उपमन्त्री तथा कोई संसदीय सचिव। परन्तु किसी ने भी अपने समय में उस व्यवहार के विरुद्ध आवाज नहीं उठाई जो हरियाणा के साथ किया जा रहा था जब तक इनमें से प्रत्येक का अपना हलवा माण्डा चलता रहा, इन्होंने हरियाणा की सुध नहीं ली। किसी न किसी समय इनमें से प्रत्येक ने किसी न किसी रूप में स० कैरों का झण्डा अवश्य उठाया है। किसी को स० कैरों के जीवन में यह कहने का साहस नहीं हुआ कि हरियाना के साथ अन्याय हो रहा है। आज जब कि सन्त फतहसिंह ने अपने बलिदान की घोषणा की है तो उन्होंने समझा कि क्यों न वह भी इससे लाभ उठा लें। अतः उन्होंने जलती आग में तेल डालने का निर्णय कर लिया, ताकि एक ऐसी आग जले जिसमें सन्त फतहसिंह जल कर राख हो जाएं और इसके फलस्वरूप यदि हरियाणा प्रान्त भी बन सके तो बना लिया जाए।

आशय यह कि स्थिति पर काबू पाने का प्रयास नहीं हो रहा अपितु इसे उलझाने का। एक पंजाबी सूबा के प्रश्न में १० और प्रश्न खड़े कर दिए। और आज सारा पंजाब परस्पर उलझ रहा है। कोई कहता है कि पंजाबी सूबा बनना चाहिए कोई कहता है हरियाणा प्रान्त भी बनना चाहिये, कोई पर्वतीय राज्य की मांग कर रहा है और कोई हिमालय को पंजाब में मिलाने के लिए कह रहा है। और तो और पंजाबी सूबा के दावेदार एक दूसरे का सिर फोड़ने को तैयार हैं। सन्त जी एक तरह का पंजाबी सूबा मांगते हैं और मास्टर जी दूसरी तरह का और दोनों के सहमत होने की कोई आशा नहीं दिखाई देती। ऐसी स्थिति में मैं यदि यह कहूं कि शायद सन्त जी को जलना ही पड़े तो अनुचित न होगा। तथ्यों से आंखें मून्दना बुद्धिमत्ता नहीं। पंजाब में जो स्थिति पैदा हो रही है उसकी कोई भी उपेक्षा नहीं कर सकता। वह जितनी अधिक उलझती जायेगी उतना ही सन्त जी के लिये इस चक्कर में से निकलना कठिन हो जायेगा।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन एक धार्मिक तथा राष्ट्रिय शिक्षण संस्था है, जो विगत ६० वर्षों से भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत भाषा के प्रसार के माध्यम से भारतीय जनता की सेवा कर रही है। इसकी मौलिक शिक्षण व्यवस्था एवं आदर्श पूर्ण जीवनयापन प्रणाली से केवल देशीय छात्र मात्र लाभान्वित नहीं होते रहे हैं, अपितु फीजी, डचगायना, थाईलैंड आदि देशों के छात्र भी समय-समय पर यहां शिक्षा ग्रहण करते हुये गौरवान्वित हुए है। यह संस्था निःशुल्क शिक्षा प्रदान करती है,यह इसकी विशेषता है। इस संस्था का प्रारम्भ से ही सम्पूर्ण व्यय का भार समय समय पर तथा गुरुकुल के वार्षिक महोत्सव के समय दानी महानुभावों से प्राप्त धन की सहायता पर ही आश्रित रहा है। दुर्भाग्य से युद्ध की संकटकालीन परिस्थिति के कारण इस वर्ष गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव नहीं हुआ है हमें आर्थिक संकट तथा महंगाई के कारण संस्था के संचालन कार्य में अत्यन्त कठिनाई पड़ रही है। गुरुकुल का महोत्सव तो हमने नहीं किया है, किन्तु नवीन छात्रों का प्रवेश चालू रहेगा। दानी महानुभाव भी अपनी इस अवसर पर दी जाने वाली आर्थिक सहायता को भेजने का कष्ट करें।

—नरदेव स्नातक एम० पी० मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, मथुरा

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवो देवेभिरा गमत् ॥५॥
ऋ० १ । १ । १ ५ ॥

अर्थ—हे सर्वदृक ! सब को देखने वाले क्रतु सब जगत के जनक सत्य अविनाशी अर्थात कभी जिनका नाश नहीं होता "चित्रश्रवस्तम" आश्चर्य श्रवणादि आश्चर्य गुण आश्चर्य शक्ति आश्चर्य रूपवान और अत्यन्त उत्तम आप हो जिन आपके तुल्य वा आपसे बड़ा कोई नहीं है हे जगदीश ! देवेभि दिव्य गुणों के सहवर्तमान हमारे हृदय में आप प्रकट हो सब जगत मे भी प्रकाशित हो जिससे हम और हमारा राज्य दिव्यगुणयुक्त हो वह राज्य आपका ही है हम तो केवल आपके पुत्र तथा भृत्यवत हैं। ॥२॥

—आर्याभिविनय

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार १६ जनवरी १९६६ दयानन्दाब्द १४१ सृष्टिसंवत १ ९७ २९ ४९ ०६६

श्री लालबहादुर शास्त्री का निधन

समस्त संसार के लोगों ने भारत के प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री के असामयिक निधन का समाचार बड़े दुःख के साथ सुना। उनकी आयु केवल ६१ वर्ष की थी। वे महान आदर्शवान चरित्रवान और देश के प्रति निष्ठावान थे। उन्होंने एक गरीब परिवार मे जन्म लिया था और अपने परिश्रम से अपना स्वयं निर्माण किया था। आप विद्यार्थी काल मे श्री डाक्टर भगवानदास जी डा० सम्पूर्णानन्द जी के सम्पर्क मे रहे इसलिए इन नेताओं की शिक्षाओं का आप पर विशेष प्रभाव पड़ा। आपने शास्त्री परीक्षा पास की। कालेज मे भी अध्ययन किया पर महात्मा गांधी की आवाज पर आप देश के कार्य मे कूद पड़े। श्री लाला लाजपतराय जी के साथ भी आपने कार्य किया जिसमे आप उनके सत्संग से निखर गये। आप विद्यार्थी काल से ही अग्नि दग्ध कुन्दन के थे। आपने ७ बार जेल यात्रा की और महात्मा गांधी के पावन आदर्श को अपनाया स्वतन्त्र भारत मे आप उत्तर प्रदेश मे गृहमन्त्री के पद पर रहे। श्री प० गोविन्दवल्लभ पन्त की आप पर विशेष कृपा रहती थी इसलिए जब पन्त जी केन्द्रीय सरकार मे पहुंच गये तो श्री शास्त्री जी भी केन्द्र मे पहुंच गये।

श्री प० जवाहरलाल जी नेहरू आपको बहुत प्यार करते थे और वे इन पर भरोसा करते थे। जब जब पंडित जी के सामने उनके उत्तराधिकारी का प्रश्न आया तो वे कह देते थे कि उत्तराधिकारी जनता स्वयं चुन लेती है। यही हुआ। श्री नेहरू जी के स्वर्गवास के पश्चात जनता ने सर्वसम्मति से आपको प्रधानमन्त्री चुना। जब आपको चुना गया तो अनेक लोग शंका करते थे कि यह दुबला पतला ठिगना व्यक्ति इस महान पद को कैसे संभाल सकेगा परन्तु लालबहादुर शास्त्री ने संसार को अपने कर्तव्य से अपने कर्मठ व्यक्तित्व से बता दिया कि श्री जवाहरलाल नेहरू जिस व्यक्ति पर प्यार करते थे वे उसके गुणों को जानते थे।

श्री लालबहादुर शास्त्री महान थे उनकी आत्मा बलवती थी उनके निश्चय ध्रुव थे। वे दृढव्रती थे। जब वे प्रधान मन्त्री बने तो उन्होंने सबसे पहले पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री प्रताप सिंह कैरों को पृथक किया जिसके कारण समस्त पंजाब दुःखी था यह श्री शास्त्री जी के दृढ निश्चय का एक उदाहरण है। भारत पाक के युद्ध मे श्री शास्त्री जी का तेज विशेष रूप से चमका। उन्होंने बड़ी वीरता से युद्ध का संचालन किया और पाकिस्तान पर भारत की विजय का सिक्का जमा दिया संसार चकित रह गया पाकिस्तान के विदेश मन्त्री श्री भुट्टो ने जब सुरक्षा परिषद में विष वमन किया था तो श्री शास्त्री ने उत्तर दिया था कि गाली का जवाब गाली मे दिया जायगा।

श्री शास्त्री जी अपनी बात विपक्षी के सामने बड़ी नम्रतापूर्वक और स्पष्ट रखते थे। उनकी बात मे कुछ आकर्षण होता था।

अब जबकि रूस के प्रधानमन्त्री श्री कोसीगिन महोदय ने ताशकन्द मे पाकिस्तान के प्रसीडेन्ट जनरल अयूब खां से बातचीत के लिए निमन्त्रित किया तो आपने सहर्ष उस निमन्त्रण को स्वीकार किया और वे ३ जनवरी को अपने सहयोगियो सहित ताशकंद पहुंचे। श्री कोसीगिन की उपस्थिति मे तथा अकेले कमरे मे श्री अयूब से खुलकर बात हुई। अयूब खां बिना कश्मीर की स्वीकृति के समझौते के लिए राजी ही नहीं होते थे पर श्री शास्त्री जी ने अपनी चातुरी से अपनी आकर्षण शक्ति से अयूब को बिना बल प्रयोग आपसी झगड़े शान्ति से निपटाने के लिए राजी कर लिया और दोनों नेताओं ने अपने हस्ताक्षर करके घोषणा कर दी कि भविष्य में बल प्रयोग न होगा उसी रात्रि को इस प्रसन्नता में कोसीगिन ने दोनों नेताओं के सम्मान मे दावत दी। दोनों नेता पुनः मिले हाथ मिलाया प्रसन्नता प्रकट की। परन्तु कुछ घण्टे भी नहीं बीते कि कराल काल ने अचानक उन्हें सदैव के लिए छीन लिया वह चमकता सितारा अस्त हो गया!

आपका निधन देश के लिए बड़ा दुःखद हृदय विदारक और दुर्भाग्यपूर्ण है। हम आर्यमित्र परिवार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से श्री शास्त्री जी के परिवार के साथ शोक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और शोकाकुल देशवासियों को धैर्य प्रदान करें।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चाहते हैं श्री शास्त्री जी ने शान्ति के उच्च आदर्शों के लिए अपने प्राण दिये। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर मैं भारत की जनता और वहां की सरकार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं। इसके बाद पाकिस्तान के विदेश मन्त्री श्री भुट्टो भी श्री शास्त्री जी को श्रद्धाञ्जलि देने पहुंचे।

विश्व शोक संतप्त

श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन का समाचार विश्वभर मे फैल गया। और सर्वत्र शोक छा गया। सोवियत रूस के प्रसीडेण्ट पादगार्नी और अलेक्सी कोसीगिन ने भारतीय राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन के नाम एक सन्देश मे कहा कि सोवियत जनता को भारत के एक उल्लेखनीय राजनीतिज्ञ की मृत्यु से गहरा धक्का पहुंचा है उन्होंने कहा कि प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी ने शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत बनाने मे महान योगदान किया सोवियत जनता उन्हें एक महान मित्र के रूप मे सदा याद रखेगी। श्री कोसीगिन ने कहा कि भारत के इस दुःख मे हम सब भारतीय जनता के साथ हैं। वे महान राजनीतिज्ञ महान विवेकशील मानव और एक बड़ी सूझबूझ वाले व्यक्ति थे। उन्होंने शान्ति तथा भारत पाक मैत्री के लिये सब कुछ जो वे कर सकते थे किया। श्री शास्त्री जी हमारे समय के एक महान व्यक्ति थे। असामयिक मृत्यु से वे हमसे और शान्ति के महान आधार हमसे छिन गये।

छपते छपते

श्री गङ्गाप्रसाद चीफ जज का देहावसान!

आर्यजगत मे यह समाचार बड़े दुःख से सुना जायगा कि प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जस्टिस का देहावसान १२ जनवरी सन १९६६ को ५ ३० बजे प्रातः हो गया।

दिल्ली मे मृत्यु की सूचना

जब राष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन और गृह मन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा को प्रधानमन्त्री की मृत्यु की सूचना ताशकंद से रात्रि मे मिली तो वे दुःख मे विह्वल हो गये। श्री शास्त्री की पत्नी माता तथा उनके बच्चे शोक मे डूब गये श्री शास्त्री जी की माता ने तो विश्वास ही नहीं किया और कहा कि मेरा पुत्र मर नहीं सकता। श्रीमती शास्त्री फूट फूटकर रो पड़ीं और कहा कि इस संसार मे अब मेरे लिए बचा ही क्या? श्री तो शास्त्री सर्वदा श्री शास्त्री जी के साथ विदेश जाती थीं पर इसबार श्री शास्त्री उन्हें नहीं ले गये इसके लिए श्रीमती शास्त्री को बड़ा दुःख है।

श्री नन्दा कार्यवाहक प्रधानमन्त्री

केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा को राष्ट्रपति ने कार्यवाहक प्रधान मन्त्री के पद की शपथ दिलायी। श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा श्री शचीन्द्र चौधरी भी शपथग्रहण समारोह के समय उपस्थित थे और इन्हें भी अपने अपने पदों की शपथ दिलाई गई। श्री नन्दा और अन्य मन्त्रिमण्डलीय सदस्य श्री शास्त्री जी के निवास स्थान पर पहुंच गये थे बाद मे राष्ट्रपति ने अन्य मन्त्रियों को शपथ दिलाई।

दो दिन कार्यालय बन्द

प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री के शोक मे ११ व १२ जनवरी को समस्त देश मे सरकारी कार्यालय बन्द रहे। सभा कार्यालय आर्यमित्र कार्यालय और सभा का प्रेस भी बन्द रहा।

रूसी विमान श्री शास्त्री जी का शव दिल्ली लाया

श्री शास्त्री जी की मृत्यु का समाचार सुनकर प्रातः से ही लाखों व्यक्ति १० जनपथ मार्ग पर श्री शास्त्री जी के निवास स्थान पर पहुंच गए थे। और समस्त देशों के प्रधान मन्त्री या उनके प्रतिनिधि विशेष वायुयानों द्वारा दिल्ली

(शेष पृष्ठ ४ कालम ४ पर)

भारत-पाक में समझौता
बल प्रयोग न करने का निश्चय
शास्त्री और अयूब द्वारा संयुक्त घोषणा

रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगिन के सत्प्रयत्न से ताशकंद (रूस) में पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री अयूब तथा भारत के प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री में बातचीत हुयी। श्रीशास्त्री जी ३ जनवरी को विदेश मन्त्री श्री सरदार स्वर्णसिंह, और रक्षामन्त्री श्री यशवन्त राव जी चौहान और अपने सलाहकार अधिकारियो के साथ ताशकंद पहुचे। रूस के प्रधान मन्त्री ने दोनों नेताओ की परस्पर बातचीत करायी। श्री अयूब और शास्त्री जी बड़े प्रेम से मिले। वार्ता चली, पर अन्त में अयूब साहब की कश्मीर की रट के कारण ऐसा प्रतीत हुआ कि वार्ता टूटी, पर रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगिन के सतत् प्रयत्न से दोनों देशों के नेताओं में नौसूत्री समझौता हो गया और इस समझौता की घोषणा श्री शास्त्री और अयूब द्वारा कर दी गयी।

भारत और पाकिस्तान दोनों ने यह वचन दिया कि अपने विवादों को हल करने के लिये शक्ति का प्रयोग नहीं किया जायगा और वे अपनी सेनाए २५ फरवरी तक, अपने-अपने क्षेत्रों में अर्थात् जहां ५ अगस्त को दोनों देशों की फौजें थी, वहां वापस ले जायेंगे। एक सप्ताह की वार्ता के बाद पाकिस्तान और भारत ने नौसूत्री घोषणा, पर दस्तखत किये। दोनों देशों के नेता इस बात पर भी राजी हुए कि उच्चायुक्त को एक दूसरे की राजधानी में पुनः भेज दिया जाय। घोषणा पर प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खां ने दस्तखत किये।

ताशकंद घोषणा का विस्तृत विवरण

ताशकन्द में भारत के प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अय्यूब खां की बैठक में दोनों देशों के सम्बन्धों पर विचार किया गया। दोनों नेताओं ने दोनों देशों की बीच पुन सामान्य और शान्तिपूर्ण सम्बन्ध कायम करने और दोनों ने बीच की जनता मे सद्भावना और मैत्री सम्बन्ध कायम करने को अपने दृढ़ संकल्प की घोषणा की। इन नेताओं ने यह स्वीकार किया कि दोनों देशों की ६० करोड़ जनता के कल्याण के लिए दोनों देशो में मैत्री सम्बन्ध कायम करना बहुत जरूरी है।

दोनो नेताओं ने इस बात पर सहमति प्रकट की कि दोनों पक्ष राष्ट्रसंघ के उद्देश्यपत्र के अनुसार भारत और पाकिस्तान मे अच्छे पड़ोसी जैसा सम्बन्ध कायम करने के लिए हर सम्भव प्रयास करेंगे। उन्होंने इस बात की कि वे उद्देश्यपत्र की व्यवस्था का पालन करते हुए बल प्रयोग का तरीका नही अपनायेंगे और विवादों को शान्तिपूर्ण तरीकों से हल करेंगे।

दोनो नेता यह अनुभव करते हैं कि दोनों देशों में तनाव कायम रहने से न तो उनके क्षेत्र और विशेषकर भारत-पाक उपमहाद्वीप में शान्ति रह सकती है और न भारत और पाकिस्तान की जनता का हित साधन सम्पन्न हो सकता है। इस पृष्ठभूमि में जम्मू व कश्मीर के मामलों पर विचार किया गया और दोनो पक्षों ने अपनी-अपनी स्थिति प्रस्तुत की।

प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री और राष्ट्रपति अय्यूब इस बात के लिए राजी हो गये कि दोनो देशो की सेनाए २५ फरवरी तक अपनी पाच अगस्त १९६५ से पूर्व की स्थिति पर लौटा ली जायेंगी और दोनो पक्ष युद्धविराम रेखा पर युद्धविराम की शर्तों का पालन करेंगे।

दोनों नेता इस बात के लिए राजी हो गये हैं; भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध एक दूसरे के आतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धान्त पर आधारित रहेंगे।

मैत्रीपूर्ण प्रचार

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने यह स्वीकार किया कि दोनों देश एक दूसरे के विरोध में किये जाने वाले प्रचार को रोकेंगे और ऐसे प्रचार को प्रोत्साहन देंगे, जिससे दोनों देशों के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के विकास में सहायता मिले।

सामान्य कूटनीतिक सम्बन्ध

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने यह स्वीकार किया कि पाकिस्तान में भारतीय उच्चायुक्त और भारत में पाक उच्चायुक्त अपने स्थानों पर वापस आयेंगे और दोनों देशों के कूटनीतिक दलो की सामान्य कार्यवाई चालू होगी। दोनो सरकारें कूटनीतिक सम्बन्धो में १९६१ के वियना सम्मेलन का पालन करेंगी।

आर्थिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने यह स्वीकार किया कि वे आर्थिक, व्यापारिक, यातायात सम्बन्धी और भारत-पाक के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान की पुनः स्थापना के लिए कदम उठाने पर विचार करेंगे और भारत और पाकिस्तान के मध्य चल रहे वर्तमान समझौतों को बनाये रखने के लिए कदम उठायेंगे।

युद्धबन्दियों की वापसी

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने यह स्वीकार किया कि वे युक्त बन्दियों को वापसी के लिए अपने अधिकारियों को आदेश देंगे।

भारत के प्रधानमन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने यह स्वीकार किया कि दोनों पक्ष शरणार्थियों, निष्कातों और गैरकानूनी प्रवेश करनेवालों की समस्याओं पर वार्ता जारी रखेंगे।

निष्क्रमण पर रोक

उन्होने यह भी स्वीकार किया कि दोनों पक्ष जनता के निष्क्रमण को रोकने के लिए स्थितिया उत्पन्न करेंगे।

इसके अतिरिक्त उन्होंने स्वीकार किया कि युद्ध मे छीनी गयी सम्पत्ति और पूंजी की वापसी के लिये बातचीत करेंगे।

सीधा सम्पर्क

भारत के प्रधानमन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने यह स्वीकार किया कि दोनो पक्ष दोनों देशों के मध्य सीधे सम्पर्क के मामले में उच्च स्तरीय और अन्य बैठकें जारी रखेंगे। दोनों पक्षों ने भारतीय-पाकिस्तानी संयुक्त संस्थाओं की स्थापना की आवश्यकताओं को स्वीकार किया ये सस्थाएं अपनी सरकारों को आगे कदम उठाने के निश्चयों के सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट देंगी।

भारत के प्रधानमन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने इस बैठक के लिए किये गये रचनात्मक, मित्रता और ईमानदारी पूर्ण कार्य के लिये सोवियत नेताओं, सोवियत सरकार और रूसी मन्त्रिपरिषद् के अध्यक्ष के प्रति गहरी प्रशसा और आभार की भावनाएं व्यक्त की। इस बैठक के परिणाम सन्तोषजनक रहे। उन्होंने रूस की मन्त्रिपरिषद् के अध्यक्ष के प्रति व्यक्तिगत रूप से आभार व्यक्त किया। उन्होंने उज्बेकिस्तान की मित्रवत जनता और सरकार को उनके हार्दिक स्वागत और सद्भावनापूर्ण व्यवहार के लिये हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने रूसी मन्त्रि परिषद् के अध्यक्ष को इस घोषणा के समय उपस्थित रहने के लिये निमंत्रित किया।

संसार के सभी देशों के नेताओं ने इस घोषणा का स्वागत किया है। और कहा है कि एशिया में शान्ति के लिये यह अत्यन्त अच्छा हुआ। ★

(पृष्ठ १ का शेष)

में भारत के प्रधानमन्त्री की शव-यात्रा में शरीक होने के लिये चल पड़े थे, जो ११ जनवरी को प्रातःकाल तक दिल्ली पहुंच गये थे। भारत के कोने-कोने से देश के नेता व सम्भ्रान्त दिल्ली पहुंच गये।

११ जनवरी को २ बजकर ३१ मिनट पर एक ४ इंजन वाला विशाल रूसी जहाज पाकिस्तान के ऊपर से उड़ता हुआ दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पर पहुंचा। वहां पहले से ही अपने प्यारे नेता के दर्शनार्थ लाखों व्यक्ति उपस्थित थे। सबसे पहले जहाज में से श्री स्वर्णसिंह जी निकले, उसके बाद श्री चौहान तथा उनके साथी। इतने में फौजी अफसर अन्दर घुसे और उन्होंने स्टेचर पर तिरंगे झन्डे में लिपटे प्रधान मन्त्री के शव को जहाज से बाहर निकाला और एक फौजी गाड़ी में रखा। श्री शास्त्री जी को फौजी सलामी दी गई, और शव श्री शास्त्री जी के भवन पर लाया गया। मार्ग में लाखों व्यक्ति खड़े आंसू बहा रहे थे।

राष्ट्र के झण्डे झुके

श्री लालबहादुर जी शास्त्री के शोक में सारे देश में राष्ट्रीय झण्डे आधे झुका दिए गये, और यह बारह दिन शोक में झुके रहेंगे।

पाकिस्तान में भी झण्डे झुके

पाकिस्तान सरकार ने भी प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर जी के शोक में पाकिस्तान में सरकारी भवनों पर आधे झण्डे झुकवा दिये।

रात भर गीता पाठ व राम ध्वनि

श्री शास्त्री जी का शव रात्रि भर १० जनपथ मार्ग पर रखा रहा, और रामध्वनि व गीता गान होता रहा। उनके परिवार के सब लोग रात को शव के पास रहे। मिलीटरी का पहरा भी रहा। प्रातः ९॥ बजे श्री शास्त्री जी का शव दाह संस्कार के लिए चला। लाखों व्यक्तियों का जन समूह जय-जयकार करता हुआ चल रहा था। समस्त देशों के प्रधान मंत्री या उनके प्रतिनिधि दिल्ली आ गए थे। और वे शव यात्रा में तथा संस्कार में सम्मिलित थे। रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगिन व पाकिस्तान के वाणिज्य मंत्री तो श्री शास्त्री जी के जहाज के साथ ही दिल्ली पहुंचे थे। इस तरह श्री शास्त्री जी [का शव

(शेष पृष्ठ १३ पर)

वेद-व्याख्या

अनासक्ति योग का दिव्य दैवी आदर्श
(प्रश्नोत्तरी)

(श्री किशोरीलाल गुप्त एम०ए० सिद्धान्त शास्त्री साहित्य वाचस्पति काव्यतीर्थ)

सगच्छध्व सवदध्व सबो मनासि जानताम। देवा भाग यथा पूर्वे सजानाना उपासते ॥

(ऋ० म० सूक्त म० २)

शब्दार्थ—(सगच्छध्वम) मिलजुल कर चला करो। (सवदध्वम) मिलजुल कर बतराया करो। (व मनासि)अपने मनो को। सजानताम) भलीभाँति पह चाना करो। (यथा) जैसे कि। (पूव देवा) पहले देव। (भागम) अपने बट मे मिले काम को। (सजानाना) ठीक ठीक जानते हुए खूब सोचते समझते और विचारते हुए। (उपासते) उपासते हैं सचाल्ति करते हैं सपादित करते हैं।

व्याख्या—प्रश्न—वेद मत्रो को मत्र क्या कहते हैं ? श्लोक क्यो नही कहते?

उत्तर—श्लाको का अथ साधारण होता है मत्रो का अथ साधारण नही होता उनमे कोई न कोई राज छपा होता है भेद भरा ह ता है अथ गुह्य हाना है गहरा हाना है डुबकी लगाना होनी है मनन करना पडता है।

प्र० ऐसा जान पडता है कि मत्र और मनन मे काई निजी पारिवारिक सम्बध है है न ?

उ०—हा है। दोनो एक ही वश की उपज है मननात मत्र। मत्र नाम ही इसलिए पडा कि वह मनन करन की वस्तु है। मामूली शब्द नही।

प्र०—तो इसमे कौन सी मनन करने की बात छिपी हुई है ?

उ०—इसमे अनाशक्ति योग का गुह्य रहस्य छुपा हुआ है जिस पर म० गाधी ने अमल करके स्वराज्य प्राप्त किया।

प्र० आहा हा ! इसीलिए उन्होने अनाशक्ति-योग पर एक पुस्तक भी लिखी है। लेकिन उन्होने किसी वेद मत्र का उल्लेख नही किया।

उ०—उल्लेख कहा से करते ? उन्होने वेद पढ ही नही। थोडी-बहुत टूटी फूटी सस्कृत सीखी थी। उसी से काम चला लेते थे। किन्तु उन्हे यह खेद आज म बना रहा कि उन्होने अधिक सस्कृत न पढी।

प्र०—तो फिर आप ही समझाइये कि यह अनाशक्ति योग क्या बला है ? जिस पर महात्मा गाधी इतने फिदा थे।

उ०—अच्छा ! कान लगाकर सुनिये—इसका सीधा सादा अथ है बिना आसक्ति का योग।

प्र०—बिना आसक्ति वाला योग कैसा ? हम तो इस शब्द आसक्ति को ही नही समझ।

उ०—कोई हरज नही अब समझ जाओगे। इसका अथ है लगाव चिपकन प्रम राग।

प्र०—नही नही ! कुछ नही समझ खाक समझ मे नही आया। कोई उदा हरण दीजिए।

उ०—ठीक बहुत ठीक मै पहले ही समझता था कि तुम स्वय चाहोगे कि कोई उदाहरण दिया जाय मिसाल सामने रखकर समझाया जाय।

प्र०—हा हा यही चाहत है

उ० अच्छा ! उदाहरण भी दिया जायगा और बहुत सुन्दर जो खब समझ मे आ जाय। उदाहरण मत्र के देवा भागम मे गुप्त है छिपा हुआ है।

उ०—जरा धीरज धरो वह भी समझाओगे। निरुक्त नाम वाला वेद की डिक्शनरी (कोश) मे लिखा है—देव कस्मात ? दानातवा दीपनानवा द्योत नात वा जा दान दे प्रकाश दे उजाला करे किसी रहस्य का प्रकट करे वह देव। और उसका यह अपना निजी भाग। जसे कोई मूख निखट्टू निकम्मा आलसी मनुष्य कहे— मेरे भाग मे तो भीखही बदी है वे ही मिलेगी।

प्र०—ऐसा आदमी तो काई हमे सृष्टि मे दिखाई नही देता।

उ०—दिखाई दगे। पहले मत्र के पूव देवा पर नजर डालिये। आज के देवो को छोडिये।

प्र०—अच्छा ! नये छोड पुराने बताइये।

उ०—पुराने ही नही आदिकाल से चले आते हुए जिनकी आद न हमने देखी न हमारे पुर्खों ने देखी न पुर्खों के पुर्खे और सकल पुर्खों ने देखी।

प्र०—अच्छा ! न देखी सही आगे चलिये।

उ०—वे मुख्यतया चार हैं—अग्नि वायु आदित्य और अङ्गिरा।

प्र०—इन चार म मे तीन—अग्नि वायु आदित्य को तो हम सभी जानत है यह अङ्गिरा कौन है ?

उ०—जरा गम खाओ धीरज धरो।

(शष पृष्ठ १२ पर)

वेद-विवेचन

विजय का मार्ग

●

वय जयेम त्वया युजा। ऋ० १।१०२।४

तेरी कृपा और शक्ति से मुक्त होकर हम विजय प्राप्त कर।

★

प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि स्तुति प्राथना और उपासना के द्वारा ईश्वरीय गुणो को अपने जीवन म धारण करे। यह मनुष्य सर्वोपरि कतव्य है। इस कतव्य को पूरा करने के लिए ही जीवात्मा को यह मनुष्य की योनि प्राप्त होती है क्योकि मनुष्य शरीर मे ही इस कतव्य का अनुष्ठान सम्भव है। यह मानव-तन विजय का एक प्रधान साधन है। प्रभु की कृपा से ही मानव तन की प्राप्ति हाती है। कोई तार्किक कह सकता है कि उत्तम कर्मों मे होती है। अथवा य कहे कि प्रभु की कृपा से मनुष्य उत्तम कर्मो का अनुष्ठान करने मे पूणतया सफल होता है। विजय का पव सवप्रथम साधन ता प्रभु की कृपा ही है।

विजय क्या है ? विजय और पराजय ये दो सापेक्ष भाव है। मनोवाछित कार्यो वस्तुओ और याग्यताओं की पूर्ति अथवा प्राप्ति का नाम ही विजय है एवमेव इनकी अपूर्ति या अप्राप्ति ही पराजय है। प्रत्येक सफलता एक विजय है। प्रत्येक बडी विजय छोटी छोटी बहुत सी विजय का समुच्चय स्वरूप ही हाता है। प्रत्यक विजय का विचार और मूल्याकन देश काल और पात्र के आधार पर किया जाता हैं। यह भी हा सकता है कि एक उपलब्धि जो एक के लिये जा विजय है वही दूसरे के लिये पराजय समझी जाये। इसके साथ हा यह ता सवविदित ही है कि जब एक को विजय प्राप्त होती है तभी किसी दूसरे को पराजय भी प्राप्त ह ता है अर्थात किसी एक व्यक्ति की हार ही दूसरे व्यक्ति की जीत हानी है। कभी कभी एसा भी सम्भव है कि जो एक समय विजय हो वही दूसरे समय पराजय हो कभी कभी तो हार भी जीत हा होता है और जीत भी हार ही कहलाती है परिस्थितिया वस्तु के मूल्य महत्व और प्रभाव को उलट पलट देती है।

विजय के साधन भी प्रभु की कृपा से ही मनुष्य की प्रीति शुभ कर्मों मे हाती है। ... साधन द्वारा ईश्वरीय गुण कम और स्वभाव का सचार इस मानव-तन मे होता है ... इसमे असाधारण और अत्यन्त दिव्य शक्तिया का आविर्भाव हो जाता है। ... मनुष्य की शक्तियो म जो वृद्धि होती है और जो निखार तथा उभार आता है शब्दो म उसका उल्लेख सम्भव नही है। साधन पथ के पथिक ही ... अपने अपने अनुभव के आधार पर उसे समझ सकते है।

युजा शब्द यहा विशेष विचारणीय है इस शब्द का एक भाव है कृपा से दूसरा भाव है सयुक्त होकर अथात जुडकर। तभी ता समय समय पर भक्तो ने ऐसे ए उदगार प्रकट किये है—

जब तू है ता क्या कम है
जब तू है तो क्या गम है

और—

उसकी नजर म सूरत जचती नहीं किसी की।
जिस दिल म बस रहा या रब! जमाल तेरा ॥

मनुष्य के सघष का ध्येय लौकिक हो या पारलौकिक। सफलता प्राप्ति के लिये ईश्वर की कृपा का हाना तो सव प्रथम आवश्यक है।

★

—साधु सोमतीर्थ

महाभारत और उसके पश्चात्-१६

[श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

महाभारत के पश्चात् जो सुधार हुये वह सर्वाङ्गी न थे, इसलिये उन सुधारों ने यद्यपि समाज को उत्कृष्ट बनाने और बुराइयों को दूर करने की कोशिश की और किसी सीमा तक सफलता भी प्राप्त की, तथापि उनका प्रभाव देर तक न रहा। स्वामी दयानन्द सर्वाङ्गी सुधारक हैं, वह एकाङ्गी सुधार से संतुष्ट नहीं है, वह मनुष्य जीवन के हर विभाग को लेते हैं और अनुपाततः लेते हैं, (अर्थात् जिसका जितना महत्व है, उसको उतना महत्व देते हैं।) स्वस्थ शरीर वह है जिसके सब अङ्ग अनुपाततः संवृद्ध होते हैं और प्रत्येक अंग अपनी आत्म-रक्षा के साथ-साथ सम्पूर्ण शरीर की रक्षा में भी सहायक होता है। यदि आपके शरीर का कोई एक अंग बढ़ जावे जैसे तिल्ली या जिगर तो यह रोग के चिह्न हैं, क्योंकि इनका सीमा से बढ़ जाना शरीर के अन्य अङ्गों को कष्ट-दायक होता है। इसी प्रकार यदि किसी दरिद्र कुल या दरिद्र देश के पास इतनी सम्पत्ति हो जाय कि कोई नियम (नियंत्रण) न रहे तो वह सम्पत्ति न केवल उसी कुल या देश के नाश का कारण बन जायगी बरन समस्त संसार को क्लेश में डाल देगी। अतः आवश्यक है कि किसी अवयवी (समग्र वस्तु) के भिन्न-भिन्न अङ्गों में जो संवृद्धि हो वह अनुपात से अति न्यून या अत्यधिक न हो। कई महात्माओं ने वैराग्य पर इतना बल दिया कि गृहस्थ-धर्म नष्ट हो गया। साधु इतने बढ़े कि 'असाधु' हो गये। कई साहित्यकारों ने साहित्य के किसी एक विशेष अङ्ग (जैसे व्याकरण) को इतना आगे बढ़ाया कि साहित्य के अन्य अंग अधूरे रह गये। कई विद्वानों ने जगत् के नाशवान् होने पर इतना बल दिया कि लोग जगत् की भौतिक उन्नति से बेपरवाह हो गये।

स्वामी दयानन्द का मार्ग इससे भिन्न है। वह जिस चीज का सुधार करना चाहते हैं, उसके सब अंगों पर गम्भीर दृष्टि डालते हैं। वह देखना चाहते हैं कि इस मशीन का कौन-सा पुरजा खराब है। उसमें क्या त्रुटि है और उस त्रुटि का समस्त मशीन पर क्या प्रभाव पड़ता है।" वह ऐसा सुधार नहीं चाहते कि एक पुरजा सुधर जाये और साथ ही दूसरा पुरजा खराब हो जाये।

अब आप स्वामी दयानन्द के सुधार की संपूर्ण योजना पर दृष्टि डालिये। सुधार के अनुशासन के लिये उनके तीन मुख्य ग्रन्थ है, जो एक दूसरे के पूरक हैं। एक "सत्यार्थ प्रकाश", दूसरा "संस्कार विधि", तीसरा "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" इनके अतिरिक्त कतिपय छोटी-छोटी पुस्तकें हैं, जिनका हम यहां उल्लेख करना नहीं चाहते। 'सत्यार्थ प्रकाश' और 'संस्कार-विधि' सर्वसाधारण (जनता) के लिये लिखी गईं। 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' केवल वेद पाठ करने वालों और वेदों को समझने की कोशिश करने वाले पंडितों के लिये है। तथापि 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में सर्व साधारण के समझने के लिये पर्याप्त सामग्री है। 'सत्यार्थ प्रकाश' में यत्न किया गया है कि मनुष्य जीवन की सामूहिक एकता तथा उसके भिन्न-भिन्न सभी अंगो के लक्ष्य में रक्खा जाय, मानव जीवन अनेक भिन्न-भिन्न अंगों का सामूहिक रूप है, और उसके हर एक अंग मे कुछ न कुछ सुधार की आवश्यकता होती है। अतः वह सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास

में मनुष्य जीवन के आरम्भ से आरम्भ करते हैं। उन्होंने देखा कि भारतवर्ष में बच्चों की शिक्षा की सबसे बड़ी दुर्दशा है। बच्चों की उत्पत्ति क्यों की जाय, कैसे की जाय और उसमें क्या-क्या सावधानी रक्खी जाय इसका सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे और तीसरे समुल्लासो में वर्णन है।

परन्तु 'मनुष्य जीवन' केवल बचपन का ही तो नाम नहीं है, गृहस्थ का इससे सम्बन्ध है। इसकी अधिक जानकारी की इच्छा हो तो आप सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास के साथ-साथ 'संस्कार विधि' के कुछ आरम्भिक संस्कारों (जैसे 'गर्भाधान' जातकर्म आदि) की विधियों, प्रथाओं और मन्तव्यों पर दृष्टि डालिये। सत्यार्थप्रकाश में वैज्ञानिक प्रवचन है। अमुक काम क्यों किया जाय? इसका मूल उद्देश्य क्या है? संस्कारविधि में केवल 'क्रिया' करके दिखलाया है। परन्तु वह क्रिया न तो नीरस है न अर्थ शून्य। जो वेद मंत्र पढ़े जाते हैं और जिस प्रकार से उनका उपयोग किया जाता है उन पर विचार करने से ही सुधार की पूरी योजना समझ में आ जाती है।

आजकल आर्यसमाज में जितना ध्यानपूर्वक 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ा जाता है, उतना ध्यान संस्कार-विधि पर नहीं दिया जाता। यद्यपि हमारे घरों में संस्कार-विधि का सब दिनों काम पड़ता है। बच्चे उत्पन्न होते हैं। उनके संस्कार भी होते हैं। हवन होता है। पंडित जी पधारकर समस्त क्रिया-कलाप को विधि-पूर्वक कराते हैं, परन्तु प्रायः यह समझ लिया गया है कि यह सब काम पंडित जी का है, हमारा नहीं। हम उनको निमन्त्रित करें। उनका सत्कार करें। उनको दक्षिणा दे। यह सब तो ठीक है परन्तु हम को क्या पड़ी कि संस्कार विधि के कौन से भाग से हमारे जीवन के किस भाग का क्या सम्बन्ध है? इस लिए "संस्कार-विधि" पुरोहिताई मात्र की पोथी रह गई है। शायद उपदेशक लोग भी संस्कार-विधि को अपने व्याख्यानों का विषय नहीं बनाते। परन्तु स्वामी दयानन्द के सर्वाङ्गी सुधार का वह भी एक अंग है।

चौथे समुल्लास में समाज के निर्माण के लिये परिवार के संगठन की आवश्यकता है। स्त्री-पुरुष विवाह के पवित्र संस्कार को करके ऐसे संयुक्त हो जावें कि कोई यह न जान सके कि यह अन्य है और यह अन्य। (पति-पत्नी में अनन्यत्व होना चाहिये)।

ऐसे गृहस्थ-निर्माण में महाभारत के पश्चात् क्या त्रुटियां उत्पन्न हो गईं इस पर पहले किसी सुधारक ने इतना बल नहीं दिया। बड़े-बड़े आचार्यों के उच्च कोटि के दार्शनिक ग्रन्थों में इस के सुधार में स्त्री पुरुष के अधिकारों कर्तव्यों और परस्पर सम्बन्ध का जितना विस्तृत वर्णन स्वामी दयानन्द के ग्रंथों में है उतना अन्यत्र नहीं पाया जाता। प्राचीन ऋषियों की लिखी हुई कुछ पुस्तके प्रसिद्ध हैं जैसे गृह्यसूत्र। परन्तु वह सूत्र भी मीमांसात्मक नहीं, प्रथात्मक मात्र है।

स्वामी दयानन्द से पूर्व सर्व साधारण में केवल दो ही संस्कार प्रसिद्ध थे एक 'विवाह', दूसरा जनेऊ। 'जनेऊ' या 'यज्ञोपवीत' तो ब्राह्मणों तक ही सीमित रह गया "विवाह" एक ऐसी चीज थी जिससे न केवल सन्तानोत्पत्ति का ही सम्बन्ध था अपितु सन्तान के उचित, अनुचित तथा दाय भाग का भी प्रश्न था, अतः विवाह सार्वजनिक संस्कार रह गया। परन्तु विवाह ने इतना महत्व प्राप्त कर लिया कि माता-पिता को बच्चा उत्पन्न होते ही विवाह की चिन्ता हो जाती है, और इस कर्तव्य को पूरा करना उनका पहला कर्तव्य समझा जाता है।' इसलिये यदि चार साल के लड़के या लड़की का विवाह करके माँ बाप छुट्टी पायें तो इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है।

७—परन्तु जब विवाह ही पर समस्त चिन्तायें केन्द्रित हो गईं तो अन्य कर्तव्यों की उपेक्षा हो गई।

स्वामी दयानन्द ने विवाह के संबंध में जो सुधार किये वह एक विशेष महत्व रखते हैं। हमने नहीं पढ़ा कि शंकराचार्य महाराज ने अपने किसी राजे शिष्य को यह उपदेश दिया हो कि बचपन का विवाह नहीं करना चाहिये। पुरुष बहुत सी स्त्रियों से विवाह कर लेते हैं। इसकी रोक-थाम करो। या जो स्त्रियां विधवा हो जाती हैं उनके विषय मे कुछ विचार करो। यह विषय इन महान् आचार्यों के विचार-क्षेत्र की सीमा से बाहर की चीज थी।

परन्तु स्वामी दयानन्द के लिए तो मनुष्य जीवन का कोई भाग इतना महत्व-शून्य नहीं है कि उसकी उपेक्षा की जा सके। एक योग्य चिकित्सक जीभ देखता है। आंख के पलक देखता है। नाखूनों का रंग देखता है, नाड़ी देखता है, हिचकी हो खांसी हो, जंभाई हो, सभी अंगों का अध्ययन करता है तभी तो रोग को दूर कर सकता है। एक अच्छे कारखाने का मालिक मशीन के बड़े-बड़े पुरजों का उतना ही ध्यान रखता है जितना कि छोटे-छोटे पुर्जों का कभी-कभी मशीन का एक छोटा-सा पुरजा सारी मशीन को रोक देता है आपके पैर की उंगली का नाखून कभी इतना कष्ट देता है कि आप अपने समस्त शरीर के अन्य स्वस्थ अंगों से कुछ काम नहीं ले सकते।

समाज सुधार की यही दशा है। यदि समाज भ्रान्तियों में ग्रस्त है और ज्योतिष पर विश्वास रखती है तो किसी विशेष 'ग्रह' की विशेष 'गति' आपके समस्त प्रयासों को निष्फल करने के लिए पर्याप्त है। ग्रह-विज्ञान बुरा नहीं। परन्तु ग्रह-विज्ञान के साथ-साथ मुनिजात को पूजना जाप महापातक है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अतिथि यज्ञ

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए. एल टी डी वी कालेज, गोरखपुर)

अतिथि यज्ञ को नृ यज्ञ भी कहते हैं— मनुष्य यज्ञ भी यही है। प्राचीन-काल मे अनजाने रूप मे भी मनुष्य समाज का कुछ भला करता चला जाए इसके लिये उन्होने जो योजनायें बना रखी थीं उनमें यज्ञों का विधान है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज के मनुष्य पर हजारों ऋण हैं। उन ऋणों को चुकाने के जो अनेक उपाय हैं उनमें से एक अतिथि यज्ञ भी है। प्राचीन काल मे यह 'अतिथि सेवा' कुल परम्पराओ मे गिनी जाती थी। रघुवंश मे एक इस प्रकार का वर्णन है कि राम सीता को विमान मे से नीचे के स्थान दिखाते हैं। एक तपोवन की ओर उगली दिखाकर राम कहते हैं कि यहाँ एक ऋषि रहते हैं। वे सब अतिथियों का मन से अतिथि सत्कार करते हैं, लेकिन उनके बच्चे नहीं थे। वे मर गए, लेकिन उनके अतिथि सत्कार का व्रत ये वृक्ष पालन करते है। जो कोई आता है उन्हें यह फल-फूल और छाया देते हैं।

कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरियोपनिषद् तो आर्य संस्कृति और शिष्टाचार का गढ ही है। इसकी प्रथम वल्ली के ग्यारहवें अनुवाक का प्रथम मन्त्र उपदेशामृत से भरा हुआ है। वेद शिक्षा देकर आचार्य शिष्य को अनुशासित करते हैं—

सत्यंवद। धर्मंचर। स्वाध्यायान्मा प्रमद। ×× सत्यान्न प्रमदितव्यम। धर्मान्न प्रमदितव्यम। × × स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम न प्रमदितव्यम।

सत्य बोलना। धर्म करना। कभी भी ज्ञानोपार्जन से विरत नहीं होना। कभी भी सत्य से दूर नहीं जाना। धर्म पालन से कभी भी नहीं भागना। वेदाध्ययन और वेद प्रचार से कभी भी असावधान नहीं होना। इसका अगला मन्त्र है—

देवपितृ कार्याभ्या न प्रमदितव्यम। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। देवो और पितरो के सन्तोषकारी काम से कभी निवृत्त नहीं होना। माता-पिता को पूजनीय देवता जानना। आचार्य और अतिथि को भी उपास्य देवता जानना। प्रशसनीय कर्म ही करना अन्य नहीं।

यही आदेश और यही उपदेश है। यही वेदोपनिषद है और यही अनुशासन है। इसके अनुसार ही अनुष्ठान और आचरण करना।

इस उपनिषद् के उपदेशो मे अतिथि सेवा की महत्ता को ध्यान मे रखते हुए उसका भी शिष्टाचार के अन्तर्गत ग्रहण किया गया है। अब प्रश्न होता है अतिथि किसे कहते हैं। मनु ने अतिथि का लक्षण करते हुए लिखा है—

एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः। अनित्य हि स्थितो यस्मात् तस्मादतिथि रुच्यते। मनुस्मृति ३।१०२

'ऐसा ब्राह्मण जो एक रात्रि भर ठहरता है अतिथि कहलाता है। क्योंकि उसका ठहरना कुछ ही काल के लिए है इसीलिए उसे अतिथि कहा जाता है।"

अतिथि के आगमन की कोई तिथि निश्चित नहीं होती। वह बिना तिथि ज्ञान के भी आ सकता है और आजकल तथा पहले भी निश्चित समय पर भी अतिथि आया करते थे। चाहे वह किसी भी रूप मे आया हो उसका सत्कार करना परम धर्म है। परन्तु अतिथि सदाचारी व्यक्ति ही हो सकते हैं या आतुर व्यक्ति हो सकते हैं। धूर्त और चालाक, छद्मवेशी और कपटाचारी का

विचार-विमर्श

तो वाणी से भी सत्कार करना उचित नहीं। मनु ने लिखा है—

पाखण्डिनो विकर्मस्थान वैडालवृत्तिकान शठान। हैतुकान बकवृत्तींश्च वाङ्मा। त्रेणापि नार्चयेत ॥

पाखडी दुराचारी, दूसरो को हानि पहुचाकर स्वार्थ सिद्ध करने वाले शठ, कुतर्की, बगला भगत व्यक्तियो का वाणी से भी सत्कार नहीं करना चाहिए। परन्तु अतिथि सत्कार का आदेश वेदो में भी दिया गया है। अथर्ववेद ९।६।३ का मन्त्र है—

इष्टं च वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति य पूर्वोऽतिथेरश्नाति।१। पयश्च वा एष रस च०।२। ऊर्जां च वा एष स्फातिं च।३। प्रजा च वा एष पशूश्च।४। कीर्ति च वा एष यशश्च०।५। श्रिय च वा एष संविदं च गृहाणामश्नाति य पूर्वोऽतिथेरश्नाति।६।

इस मन्त्र मे लिखा है कि जो अतिथि से पहले खाता है वह घरों का इष्ट सुख, पूर्णता, दुग्ध, रस, पराक्रम वृद्धि, प्रजा, पशु, कीर्ति, यश, श्री ज्ञान खाता है। फिर आगे इसी सूक्त मे कहा है—

एषवा अतिथि यच्छ्रोत्रियस्तस्मात पूर्वोनाश्नीयात।६। अशितावत्यतिथावश्नीयाद् यज्ञस्य सात्मत्वाय यज्ञस्याविच्छेदाय तद् व्रतम।८।

अतिथि कौन है? जो वेदज्ञानी है, वही अतिथि है। इसलिए उससे पहिले भोजन नहीं करना चाहिए। अतिथि के भोजन करने के पश्चात भोजन करे। यज्ञ के जीवन के लिए, यज्ञ के निरन्तर चलने के लिए यही नियम है।

अतिथि का सत्कार किस प्रकार करना चाहिए इसका भी विधान अथर्ववेद १५।११।१।२ मे इस प्रकार किया गया है—

तद् यस्यैव विद्वान् व्रात्योऽतिथिर्गृहानागच्छेत। स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वावात्सीर्व्रात्योदक व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्ययथा ते प्रियं तथाऽस्तु व्रात्य यथा ते वशस्तथाऽस्तु, व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति ॥

जिसके घर मे इस प्रकार का ज्ञानी व्रतशील विद्वान् अतिथि घर में आ जाये, स्वयं उठकर उसे यह कहे कि हे व्रतशील विद्वान्! तू कहा था? यह जल है तुझे तृप्त करें, जो तुझे अभीष्ट हो, वह हो जाएगा। जो तुझे चाहिए वही होगा। जो तेरी इच्छा है, वैसा ही करेंगे। इस प्रकार अतिथि सत्कार करना चाहिए।

अतिथि सत्कार के लिए जल की आवश्यकता का प्रतिपादन साधारण रीति रिवाज और व्यवहार की दृष्टि से तो आवश्यक है ही वहा मनु जी ने इसका उल्लेख किया है और लिखा है—

भिक्षाम-युदपात्रं वा सत्कृत्य विधि पूर्वकम। वेद तत्वार्थ विदुषे ब्राह्मणायोपपादयेत। ३-९६

भिक्षा या केवल पात्र भर जल भी विधिपूर्वक सत्कार कर तत्व को समझने योग्य व्यक्ति को समर्पित करना चाहिये। और यदि किसी ऐसे स्थान पर व्यक्ति से जहा उसके भोजन के लिए, जल के लिए कोई व्यवस्था न हो तो उसे मीठी वाणी द्वारा ही सत्कार करना चाहिये। अतिथि कभी-कभी शरणागत के रूप मे भी आ उपस्थित होते हैं। शेरशाह से पराजित हुमायूं को 'ममता' नाम की एक स्त्री ने अपने अतिथि धर्म के पालने के लिए अपने पास कुछ भी न होते हुए मीठा वचन, पानी और आश्रय दिया था। दधीचि ने अपने अतिथि धर्म का पालन करने के लिए अपने शरीर और हड्डियों का बलिदान कर दिया। महाराज शिबि ने बाज से डरे हुए कबूतर को बचाने के लिए अपने शरीर का मांस तक तराजू के पलडे पर चढ़ा दिया। महाराज बलि ने अतिथि के दान के लिए अपने तीनो लोको का राज्य भी समर्पित कर दिया। इसलिए अतिथि सेवा, अतिथि यज्ञ,एक आवश्यक यज्ञ है और इस यज्ञ के पीछे हमारी यह भावना कार्य कर रही होती है कि समाज ने जो हमारे ऊपर उपकार किये हैं उस अतिथि को उस समाज का एक अंग समझकर हम अपने ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करते हैं। इस अतिथि सेवा मे मनुष्य की अपने लाभ को छोडकर दूसरों को लाभ पहुचाने की भावना रहती है। और निश्चित रूप मे संसार मे आगे बढने का यह एक कदम है। भर्तृहरि जी ने लिखा है—

एके सत्पुरुषा परार्थ घटका स्वार्थान परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थ मुद्यमभृत स्वार्थाऽविरोधेन ये।
तेऽमी मानस राक्षसा परहित स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहित ते के न जानीमहे।

'जो अपने लाभ को त्यागकर दूसरो का हित करते है वे ही सच्चे सत्पुरुष हैं स्वार्थ को न छोडकर जो लोग लोकहित के लिए प्रयत्न करते हैं वे पुरुष सामान्य है और अपने लाभ के लिए जो दूसरों को हानि पहुचाते हैं वे नीच, मनुष्य नहीं हैं—उनको मनुष्याकृति राक्षस समझना चाहिये। परन्तु एक प्रकार के मनुष्य और भी है जो लोकहित का निरर्थक नाश किया करते है—मालूम नही पडता कि ऐसे मनुष्यो को क्या नाम दिया जाय" (भर्तृहरि नी०श० ७४)

इसी प्रकार राजधर्म की उत्तम स्थिति का वर्णन करते समय कालिदास ने भी कहा है—

'स्वसुखनिरभिलाष खिद्यसे लोक हेतो। प्रतिदिन अथवा ते वृत्तिरेव विधैव (शाकु० ५-७)

अर्थात तू अपने सुख की परवाह न करके लोकहित के लिए प्रति दिन कष्ट उठाया करता है। अथवा तेरी वृत्ति ही यही है।

अतिथि यज्ञ के पीछे यही लोकोपकार की भावना काम कर रही है।

इसीलिये व्यास महाराज ने महाभारत के विदुर नीति प्रकरण मे लिखा है—

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते स तस्मै दुष्कृतं दत्वा पुण्यमादाय गच्छति

(शेष पृष्ठ १० पर)

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की—
देवनागरी तारों के प्रचार की योजना

(श्री हरिबाबू कसल महामंत्री केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
[एक्स० वाई० ६८, सरोजिनीनगर, नई दिल्ली]

आवश्यकता

देश मे रेलवे विभाग और डाक तार विभाग की ओर से कई हजार तार बाबुओ को देवनागरी मे तार भेजने का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। देवनागरी के तारो मे जनता को कई प्रकार की सुविधा उपलब्ध है और वे तार अंग्रेजी तारो की अपेक्षा सस्ते भी पडते है। फिर भी उन सुविधाओ की जानकारी बहुत कम व्यक्तियो को है। जनता द्वारा देवनागरी मे तार कम भेजने से तार बाबुओ को भी अपने प्रशिक्षण को उपयोग मे लाने का अवसर नही मिलता इस कारण जब कभी कोई तार देवनागरी मे लिखा तारघर मे दिया जाता है तो कई तार बाबू भी उसे भेजने मे असुविधा अनुभव करते है। इस दुष्चक्र को तोडने के लिए यह आवश्यक है कि देवनागरी तारो का प्रचार करने के लिए विशेष प्रयत्न किया जाए और जनता के उस वर्ग को जिन्हे बहुधा तार भेजने पडते है देवनागरी के तारो म मिलने वाली सुविधाओ और इस प्रकार के तारो के नमूनो का परिचय कराया जाए। देवनागरी मे तार लिखने और पढने मे सुविधा होगी और दामो मे भी बचत होगी, यह बात समझ लेने पर जब बहुत अधिक व्यक्ति देवनागरी मे तार भेजने लगेगे तो उससे तार बाबुओ के तार भेजने और प्राप्त करने का अभ्यास बढेगा।

देवनागरी तारों में दामों की

देवनागरी तारो मे शब्द गिनने के कुछ विशेष नियम हैं जिनसे वे तार सस्ते बैठते हैं। उन नियमो की जानकारी केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'देवनागरी मे तार' मे प्रस्तुत की गई है। इस पुस्तिका मे ऐसे कई सौ वाक्यांश दिये गये हैं जिनके लिए अंग्रेजी मे तारो मे कई-कई शब्दो का प्रभार लगता है परन्तु हिन्दी मे उसके लिए या तो एक शब्द से काम चल जाता है अथवा समासयुक्त शब्दो का प्रयोग करके अथवा विभक्ति को मिलाकर लिखने से केवल एक शब्द का प्रभार (चार्ज) देना पडता है। उदाहरण के लिए 'डे एण्ड नाइट' अंग्रेजी मे तीन शब्द है परन्तु हिन्दी तार म 'रातदिन' एक शब्द माना जाएगा। इसी प्रकार अंग्रेजी मे सेन्ट बाई गुड्स ट्रेन' मे चार शब्द माने जाएगे परन्तु हिन्दी के तार मे 'मालगाडी से भेज दिया' इसके लिए दो शब्दो का प्रभार देना होगा।' 'अगेन एण्ड अगेन' अंग्रेजी मे तीन शब्दो का वाक्यांश माना जायेगा परन्तु इसका हिन्दी पर्याय 'बारबार' एक शब्द। इसी तरह 'विल बी एबिल टु कम' के लिए 'आ सकूगा', वीअर एण्ड टीअर' के लिए टूट फूट' 'डिप्टी मिनिस्टर' के लिए 'उपमन्त्री', चीफ एडीटर' के लिये 'मुख्यसम्पादक', वकिंग कमेटी' के लिये 'कार्य समिति', 'ऐरर्स एण्ड ओमीशन' के लिए 'भूलचूक' का प्रयोग करके कितनी बचत हो जाती है। ऐसे अनेक उदाहरण उस पुस्तिका मे मिलेंगे।

तारों के नमूने

वैसे तो साधारण हिन्दी जानने वाले व्यक्ति भी सुगमता से हिन्दी मे तार अपने आप लिख लेंगे। फिर भी जिन व्यक्तियो ने अब तक हिन्दी मे तार नही देखे हैं वे इस प्रकार के तार स्वय लिखने मे पहले विभिन्न विषयो पर हिन्दी मे लिखे तारो के प्रत्यक्ष नमूने देखना चाहते हैं। इसी दृष्टि मे पारिवारिक, न्यायालय सम्बन्धी व्यावसायिक, सरकारी, कम्पनी सम्बन्धी आदि-आदि विषयो के कई सौ तारो के नमूने भी उपर्युक्त पुस्तिका मे प्रस्तुत किये गये है। यदि इस पुस्तिका की प्रतियां तारघरो की खिडकियो के पास रख दी जाए तो तार भेजने वालो को तार हिन्दी मे लिख लेने मे बहुत सहायता मिल सकेगी।

प्रचार किस प्रकार किया जाए

जो कार्यकर्ता देवनागरी तारो का प्रचलन बढाने के लिए अपनी सेवाए रचनात्मक रूप मे प्रस्तुत करना चाहते हो उनके लिए सुझाव है कि वे अपने निकटवर्ती क्षेत्र के उन लोगो को जिन्हे बहुधा तार भेजने अथवा लिखने पडते हैं यह बात जानने के लिये आमन्त्रित करें कि सस्ते तार किस प्रकार भेजे जा सकते हैं। बातचीत केवल एक घन्टे की रखी जाए और उस दौरान पुस्तिका मे से छाटे गये विशिष्ट उदाहरणो के आधार पर उपस्थित व्यक्तियो को बताया जाए कि हिन्दी मे तार लिखना कितना सुगम रहता है और वे तार कितने सस्ते पडते हैं। यदि प्रत्यक्ष उदाहरणो से कार्यकर्ता यह बात अच्छी तरह सिद्ध कर सके कि देवनागरी मे तार भेजने से सचमुच ही दामो की काफी बचत होती है तो यह निश्चित है कि अधिकांश व्यक्ति भविष्य में अपने तार हिन्दी में देने लगेंगे।

परिषद् की ओर से भेंट

उपर्युक्त प्रकार के आयोजन मे जो व्यक्ति चर्चा मे उपस्थित हो और इस बात का सकल्प लिखकर दे कि वे भविष्य मे कम से कम २० निजी तार देवनागरी मे भेजेंगे अथवा २० अन्य व्यक्तियो को देवनागरी तारो की विशेषता समझाकर उन्हे देवनागरी मे तार भेजने के लिये प्रेरित करेंगे, तो उन्हे परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तिका नि शुल्क भेंट की जा सकती है। जो कार्यकर्ता इस प्रकार के वर्ग आयोजित करेंगे, एक-एक प्रति उन्हे आरम्भ मे ही नि शुल्क भेंट की जाएगी।

संस्थाओं तथा व्यक्तियों का सहयोग

देश मे अनेक हिन्दी सेवी सस्थाए हैं। हिन्दी से अनुराग रखने वाले भी असख्य व्यक्ति है। इस योजना को सफल बनाने के लिए उन सबका सहयोग आमन्त्रित है। उन्हे उपर्युक्त पुस्तिका की प्रतियां भेजी जा सकेंगी।

योजना का क्रियान्वयन

यह योजना तुरन्त ही आरम्भ की सकती है अथवा २६ जनवरी के आसपास। यह योजना केवल हिन्दी भाषी प्रदेशो तक ही सीमित रखने का विचार नहीं हैं। देवनागरी लिपि में किसी भी भारतीय भाषा के तार भेजे जा सकते हैं और सभी प्रदेशो में राष्ट्रीयता की भावना रखने वाले व्यक्ति हैं। अत. देवनागरी तारो के प्रचार की योजना सभी प्रदेशो मे क्रियान्वित की जानी चाहिए। उसके लिये सभी नगरो के मित्रो का सहयोग आमन्त्रित है। जो सस्थाए तथा कार्यकर्ता इस योजना मे अपना सहयोग प्रदान करना चाहे, उनसे निवेदन है कि वे कृपया अपना पूरा पता परिषद् कार्यालय को भेज दें और 'देवनागरी मे तार' पुस्तिका की अपनी न्यूनतम आवश्यकता भी तुरन्त सूचित करें वे अपने नगर में इस योजना को किस तारीख से किस प्रकार और किन व्यक्तियो का सहयोग लेकर पूरा करेंगे और प्रचार की क्या व्यवस्था करेंगे इसकी भी रूपरेखा साथ भेजने की कृपा करें। एक कार्यकर्ता को पुस्तिका की एक प्रति तथा मसवा को पाच प्रतियां नि शुल्क भेजी जा सकेंगी। डाक व्यय के लिए कृपया १० पैसे का टिकट साथ भेज दें।

अतिथि यज्ञ

(पृष्ठ ७ का शेष)

अर्थात् जिसके घर से अतिथि निराश होकर लौट जाता है वह अपने सम्पूर्ण दुष्कृत गृहपति को दे देता है और उसके सम्पूर्ण पुण्य लेकर चला जाता है। यहां यह बात है कि जब कोई व्यक्ति किसी का आतिथ्य नहीं करना चाहता है तो उसके प्रति रुखाई धारण करता है, उस से मधुर भाषिता नष्ट होती है और मधुरभाषिता के अभाव में वह विद्वानों के सत्सग से वंचित होता है, और सत्सग के अभाव में दुराचार आदि का प्रवेश होता है। और परिणामतः उसके पुत्रादि और वह स्वय मूर्ख, दुराचारी बनते हैं। यह है अतिथि सत्कार के पीछे छिपी भावना।

अतिथि का ठीक तरह सत्कार न करने से 'कठोपनिषद्' मे लिखा है कि वर्तमान तथा भावी सभी सम्पत्तियों का नाश हो जाता है। कठोपनिषद् १-१-८ मे आया है—

आशा प्रतीक्षे सुनृता चेष्टापूर्ते
पशूश्च सर्वान् एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्प
मेधसो यस्यानश्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे।

अर्थात् यम नचिकेता से कहता है कि जिसके घर में ब्राह्मण अतिथि बिना भोजन किये निवास करता है उस गृहस्थी की आशायें, प्रतीक्षा, सत्कर्म, यज्ञ तथा पुण्य, पुत्र, पशु आदि सभी सम्पत्तियों का नाश हो जाता है। इसीलिये नचिकेता के तीन वर देने की बात यमराज ने कही। कठोपनिषद् १-१-९ में लिखा है—

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन्
ब्रह्मन् अतिथिर्नमस्यः। नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्
स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात् प्रतित्रीन्वरान्
वृणीष्व।

हे नमस्कार योग्य ब्राह्मण अतिथि नचिकेता! तुम मेरे घर तीन रात्रि तक बिना भोजनादि के रहे हो इसलिये मैं तुम्हें नमस्कार करता हू, मेरा कल्याण हो इसलिये तुम मुझसे तीन वरदान मांग लो।

अतः आज जब अतिथि प्रत्येक व्यक्ति के लिये भार हो रहा है। हमें अतिथि यज्ञ का महत्व समझकर इस यज्ञ को करने के लिये तत्पर होना चाहिये।

देवनागरी तारो को लोकप्रिय बनाकर हम जनता की कठिनाइयां दूर कर सकते है और तारघर के कर्मचारियो को इस विषय मे मिले प्रशिक्षण को सार्थक बना सकते हैं।

★

संस्कृत और हम

(श्री विश्वम्भरदेव जी शास्त्री देवबन्द)

त्रिभाषा फार्मूला के जन्मकाल से ही भारतीय आत्मा सस्कृत की उपेक्षा देख आन्तरिक आहे भरने लगी थी, वे आहे बढते-बढते राष्ट्र नेताओ के मुखारविन्द से गत पक्ष प्रयत्क्ष रूप से फूट पडी। इसमे भारतीय सस्कृति के ज्ञाता पूज्य राष्ट्रपति तथा शिक्षा मन्त्री महोदय आदि ने अपने भाषणो की झडी लगाकर सस्कृत को पुनर्जीवन प्रदान करने की आशा जगा दी है। यह सौभाग्य है।

परन्तु दानी का दान तभी सफल हो सकता है जब दान के योग्य सुपात्र भी हो। किन्तु देखा जाता है कि यह सुपात्रता आज अपने ही परन्तु विचारो मे पराये बने व्यक्तियो के हाथो मे तिलमिला रही है।

आज का बालक ही भविष्य का नागरिक बनेगा। इसका निर्माण शिक्षा सस्थाओ से होता है। निर्माता शिक्षक तथा आश्रयदाता सस्था के उच्चाधिकारी है। चाहे वह राजकीय सस्था हो या व्यक्तिगत, सभी पर उसका उत्तरदायित्व है। हमारे नेताओ का प्रयास तभी सफल होगा जब शिक्षा सस्थाओ मे पलन वाले बालको के अन्दर अपनी भारतीय सस्कृति के प्रति रुचि प्रदान की जाय तभी सस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए क्षत्र तैयार किया जा सकना है।

सरकार गत वर्षो से सस्कृत प्रचार के लिए प्रचुर आर्थिक सहायता दे रही है। जिससे अनेको सस्थायें लाभान्वित हो रही हैं। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश मे, सभी स्कूलो मे कम से कम एक सस्कृत अध्यापक का वेतन सरकार से प्राप्त होता है। गत वर्षों से कक्षा ८ सस्कृत से उत्तीर्ण छात्रो को कक्षा ९ मे सस्कृत विषय लेने पर छात्रवृत्तिया भी दी जा रही हैं, जिसकी आज्ञा शिक्षा निरीक्षको ने सभी विद्यालयो मे भेजी हैं। इतना होने पर प्रयत्क्ष रूप से देखने मे जो कुछ आता है, उससे अत्यन्त निराशा ही दिखाई दे रही है। उत्तर प्रदेश ही क्या अन्य राज्यो की शिक्षण सस्थाओ मे सस्कृत की नितान्त उपक्षा हो रही है। इसके निम्नलिखित कुछ कारण हैं जिससे स्वय ज्ञात हो सकता है—

वर्तमान अग्रेजी स्कूल अधिक्तर पहले सस्कृत पाठशालाओ के रूप मे थे। पराधीन भारत मे ये सस्थायें सास्कृतिक प्रतीक के रूप मे स्थापित की गई थी। शनै-शनै समय बदला दुर्भाग्य से अग्रेजियत का बोलबाला हुआ। जो शिक्षा आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा शारीरिक उन्नति के लिए दी जाती थी, अब केवल नौकरी करने के लिए बन गई। जिसके माध्यम से विचारों मे अग्रेज और रग से ही भारतीय शिक्षित, अग्रेजो की कठपुतली बन कार्यालयो मे कल बन कर काम करन लगे। अब स्वतन्त्र भारत मे भी यह लोकोक्ति चरितार्थ हो रही है कि 'रस्सी जली पर बल नही गए' अग्रेज गये परन्तु अग्रेजियत नही गई। उच्च कोटि के ज्ञाता भली प्रकार समझ सकते हैं कि भारतीय सस्कृति ससार का कितना हित कर चुकी तथा अब भी कर रही है। इस सस्कृति का मूल हम सस्कृत साहित्य के भण्डार से ही प्राप्त हो सकता है। परन्तु अब शिक्षित लोग आज आखो मे पट्टी बाध कर यही समझ बैठे हैं कि चारो ओर अग्रेजियत ही रहनी चाहिए। उन पर न तो सरकार के अनुदान का प्रभाव और न उन्हे स्वसस्कृति से मतलब केवल पैसा चाहिए।

सांस्कृतिक समस्याएं

इसी भावना ने सस्कृत की प्राचीन पाठशालाओ का अग्रेजी कालेजो मे विलीनीकरण कर दिया है। बच्चो के अन्दर यह भावना भरी जाती है कि सस्कृत पढकर जीवन नष्ट करना है। इसको पढकर कही नौकरी नही मिल सकती। ऐसे भौतिक युग मे नौकरी की भावना रखने वाले छात्रो के मस्तिष्क मे सस्कृत के प्रति निष्ठा स्वत. समाप्त हो जाती है। मा बाप भी नही पढाना चाहते। अब स्कूल, घर और साथियो का वातावरण ही छात्र के अनुकूल नही तब कैसे वह सस्कृत पढने का साहस कर सकता है।

एक ओर पाश्चात्य विद्वान् विशेषकर जर्मनी, हमारी सस्कृत से ही महान् वैज्ञानिक अनुसधान करता जा रहा है, इसके लिए वहा सस्कृत विश्वविद्यालय खुले हैं खेद है उसकी जन्मभूमि भारत मे सस्कृत को हेय की दृष्टि से सस्थाओ मे देखा जाता है। यद्यपि उत्तर प्रदेश मे कक्षा ८वी तक सस्कृत अनिवार्य कर दी गई है। परन्तु व्यवस्था देखकर तथा आगे की कक्षाओ मे अस्पृश्य मानकर छोड ही दी जावेगी। जिसका सबसे बडा कारण देखने मे आ रहा है कि अधिकतर छात्र विज्ञान पढते हैं। अधिकारी वर्ग विषयो का ऐसा वर्गीकरण करते हैं कि विज्ञान का छात्र सस्कृत ले ही नही सकता। निदान अब जिसको अग्रेजी भी न आती हो वह उसमे बचने के लिए सस्कृत ले लेता है वह भी लज्जित हो करके।

कक्षा ९ से १२ वी तक हिन्दी के साथ सस्कृत पढाने की व्यवस्था सर्वत्र उचित रूप से नही है। जो कुछ सस्कृत का ज्ञान छात्र इससे कर सकता है—वह भी उसको नही दिया जाता। केवल परीक्षाकाल मे रट रटाने की विधि उनको बता दी जाती है, वही उन के भाग्य मे रहता है। विना सस्कृत जानने वाले अध्यापक उनके सम्मुख आकर सस्कृत को अरुचिकर बनाने के सिवा और कर भी क्या सकते है। विज्ञान के छात्रो का सस्कृत से वञ्चित रह जाना सस्कृत और सस्कृति के लिए महान् अभिशाप है।

सस्थाओ मे 'सप्ताह' मे चार घटो में से भी कही तीन, तो कही दो ही घण्टे पढाने को मिलते हैं। अधिकारी वर्ग इस मे ही अपना सस्कृत के प्रति इति कर्तव्य प्रदर्शित कर कृतज्ञता प्रकट कर देते हैं।

इण्टर कक्षा मे सस्कृत लेने वाले छात्र वैसे ही कम होते है, परन्तु जहा होते भी हैं यदि बिना अग्रेजी वाला छात्र आ जाय तो कही-कही उनको लताडा जाता है। उनके प्रार्थनापत्रो को फेक दिया जाता है। कभी-कभी यह भी कहते सुना जाता है कि सस्कृत पढकर भीख मागोगे। अर्थात् पूर्णरूपेण सस्कृत को हेय ही क्या उसका अपमान किया जाता है। हनुमान जब बन्धन रूप मे रावण के सम्मुख आया तब रावण के पूछने पर कि तुम बाध कैसे गये? तब उसने कहा था कि मैने नेत्र मात्र से तेरो रानियो को छुवा था उसी अपराध मैं बन्धन मे पडा' तो बताओ अपनी सस्कृत मा का तिरस्कार करने वालो को क्या दण्ड मिलगा—भगवान जाने। जिन सस्थाओ से सस्कृत की छात्रवृत्तियो को लेने के सम्बन्ध म प्रधानाचार्य आदि आदेशो का छिपा देते है बताओ गरीब छात्र क्या जीवन बना रहे है या बिगाड रहे है। न जाने कितने ऐसे विद्यालय देश मे होगे जहा सस्कृत के प्रति उपरोक्त व्यवहार हो रहा होगा।

आज छात्रो मे अनुशासन हीनता बढ रही है इसका मूल कारण है नैतिक शिक्षा का अभाव। सस्कृत के अध्ययन से यह अभाव पूर्ण किया जा सकता है। यदि सस्कृत भाषा को वैज्ञानिक रूप दिया जाय और उपरोक्त प्रबन्ध ठीक किया जाय तथा उपयोगी शिक्षा की व्यवस्था हो जाय तब अवश्य ही विद्यार्थियो के जीवन को कुछ सुधारा जा सकता है। तभी राष्ट्रपति तथा शिक्षा मन्त्री की भावनाओ को फलने-फूलने का अवसर मिल सकता है। सस्कृत भाषा के साथ-साथ सस्कृति का विकास और राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। प्रत्येक शिक्षाधिकारी अपने-अपने क्षेत्र मे अवश्य ही उपरोक्त कमियो को दूर करने का प्रयत्न करे। सरकार अपने धन तथा जनता अपने भावी नागरिको के सदुपयोग की ओर अवश्य ध्यान दे।

शीत ऋतु और स्वास्थ्य

[श्री पं० कृष्णदत्त जी आयुर्वेदालंकार, फैजाबाद]

भारत जैसे उष्ण प्रधान देश के लिये यह ऋतु प्रकृति की एक अत्यन्त उपयोगी देन है। ग्रीष्मकाल की तेज लू तप्त पृथ्वी की शान्ति तो वर्षा काल में हो जाती है किन्तु सूर्य के उत्तरायण होने के कारण मनुष्य के बल का जो अपहरण हो जाता है उसकी पूर्ति शीत-कालीन समीर के सुखद स्पर्श के बिना कदापि नहीं होती। शरीर को हृष्टपुष्ट बनाने और खोई हुई शक्ति को फिर से प्राप्त करने के लिए शीत ऋतु के दिन सदा से ही उपयोगी होते आये हैं और यही कारण है कि रोगी ही नहीं स्वस्थ भी उत्सुकता के साथ इस ऋतु की प्रतीक्षा करते हैं।

उत्तरायण काल में सूर्य की प्रचण्ड किरणों के द्वारा जो रस खींचा जाता है वह शीतकाल में चन्द्रमा की शीतल स्निग्ध किरणों के द्वारा वापस मिल जाता है। सूर्य के उत्तरायण काल को आदान और दक्षिणायन काल को विसर्ग काल कहने का रहस्य यही है कि उत्तरायण अर्थात् गर्मी के दिनों में सृष्टि का रस सूर्य की प्रखर किरणों द्वारा खींचा जाता है तथा दक्षिणायन अर्थात् शीत काल में चन्द्रमा की शीतल किरणो द्वारा रस की वर्षा होने लगती है।

यह शीत ऋतु का प्रत्यक्ष प्रभाव है कि शीतकाल प्रारम्भ होते ही भूख बढ़ने लगती है। शरीर में स्फूर्ति और चेतनता आने लगती है और मस्तिष्क में अनिर्वच-नीय आनन्द की अनुभूति होने लगती है। आयुर्वेद की मान्यता है कि सूर्य के दक्षिणायनकाल मे चन्द्रमा का बल बढ़ जाता है जिससे शरीर की समस्त धातुओ का पोषण होने लगता है। शीत की प्रधानता के कारण वर्षाकाल में बढ़ा हुआ पित्त शान्त हो जाता है जिससे भूख स्वभावतः बढ़ जाती है। शीत कालीन क्षुधा की शान्ति के लिये यदि आवश्यक मात्रा में पौष्टिक आहार नही मिलता है तो बढ़ी हुई भूख शरीरस्थ धातुओं का पाचन करने लगती है अतः शीत ऋतु में उचित मात्रा में घृत, दुग्ध फल, मेवादि पौष्टिक भोज्य पदार्थ और औषधियों के सेवन करने की परम्परा अब भी पाई जाती है।

प्रकृति का एक चमत्कार यह भी है कि शीत ऋतु में पैदा होने वाले सभी खाद्य पदार्थों में रस की पर्याप्त मात्रा वर्तमान रहती है। इस समय सेब, सतरा, अंगूर, मुसम्मी, गाजर, केला, अमरूद और आँवला जैसे पौष्टिक फल ही केवल प्रभूत मात्रा में उत्पन्न नहीं होते अपितु गाय और भैंस के दूध की मात्रा भी बढ़ जाती है। शीतकाल में दुर्बल मनुष्य भी स्फूर्ति और उत्साह का अनुभव करने लगता है। इस तरह शीत ऋतु हमें बल या शक्ति देने के लिए आती है। और यदि थोड़े विवेक से काम लिया जाय तो घृत, दुग्ध, फल, मेवा जैसे पौष्टिक पदार्थों च्यवनप्राश, मकरध्वज आदि रसायनों और व्यायाम तेल मालिश आदि साधनों से बल पर्याप्त मात्रा में प्राप्त किया जा सकता है।

शीतकालीन आहार विहार

स्वयं प्रकृति ही जब मनुष्य की भूख और कार्य शक्ति को बढ़ाकर पौष्टिक पदार्थों का उपहार लेकर स्वास्थ्य को सुन्दर बनाने का अवसर देती है तो विवेकशील व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने जीवन, स्वास्थ्य और सौंदर्य को सजग, सबल एवं आकर्षक बनाने के लिए इस शीत ऋतु के आहार-विहार

का सावधानी से पालन करे। शीतकाल में सबको अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार पौष्टिक पदार्थों का सेवन करना चाहिये घृत और दुग्ध का सेवन करना ही चाहिये। इसके साथ बादाम, पिस्ता, काजू, अखरोट, किशमिश, चिरौंजी आदि मेवा तथा अंगूर, सेब, अमरूद और केला आदि फल भी खाने चाहिये। इस समय मधुर स्निग्ध और पौष्टिक पदार्थों के सेवन से शरीर मे साल भर के लिए आवश्यक जीवन शक्ति का संचय हो जाता है।

तेल की मालिश और व्यायाम

शीत ऋतु में त्वचा की खुशकी कों दूर करने तथा शरीर में स्निग्धता को पहुंचाने के लिये भी तेल की मालिश आवश्यक है। मालिश की उत्तम विधि यह है कि धूप में बैठकर हलके हाथों से कड़वा तेल धीरे-धीरे त्वचा में रमाया जावे ताकि वह शरीर मे अच्छी तरह जज्ब होता रहे। तेल की मालिश अपने आप में बहुत ही बलवर्धक क्रिया है। इसके सम्बन्ध में चरक संहिता में कुछ लिखा है उसका भाव यह है कि जैसे चिकनाई से मट्टी का घड़ा मजबूत हो जाता है। गाड़ी का धुरा दृढ़ हो जाता है वैसे ही तेल की मालिश से शरीर बलवान, तेजस्वी एवं कष्ट सहिष्णु हो जाता है। त्वचा सुन्दर हो जाती है। रोम छिद्रों में गया हुआ तेल शरीर को पुष्ट बनाता है और स्निग्धता पैदा करता है। जिससे वात के रोगों की सम्भावना नहीं रहती त्वचा के रोग दाद, खुजली, अपरस आदि नहीं होते एवं सारे शरीर में तरावट, उत्साह और स्फूर्ति बनी रहती है। उदासीनता और निराशा नष्ट हो जाती है, उत्साह और उमंग तथा आशा उसका स्थान ले लेते हैं। तेल की मालिश के पश्चात् व्यायाम अवश्य करनी चाहिये भारतीय व्यायाम दण्ड, बैठक बहुत अच्छा है। प्रातः सायं का भ्रमण या दौड़ना भी उत्तम व्यायाम है।

व्यायाम के गुणों पर महर्षि चरक का कथन है कि –"लाघवं कर्म सामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेश सहिष्णुता। दोष क्षयोऽग्नि वृद्धिश्च व्यायामादुपजायते॥ अर्थात् व्यायाम करने से शरीर हलका रहता है। जिससे कार्य करने में स्फूर्ति और कर्मण्यता बनी रहती है। व्यायाम प्रतिदिन करने वाले को(Mental worry)नहीं होती तथा दिन भर का कार्य करते हुए थकान, या सिरदर्द का अनुभव नहीं होता। उसकी कार्य करने की क्षमता बराबर बनी रहती है। वह कष्टों के आने पर जल्दी घबड़ाता भी नहीं और हिम्मत से काम लेता है. बढ़ा हुआ दोष शान्त होकर स्वास्थ्य ठीक रहता है और जठराग्नि प्रदीप्त होने के कारण भूख भी जोर की लगती है।

सूर्य स्नान भी शीतकाल में हितकर है:–शीत ऋतु में प्रातःकाल धूप में बैठना या सूर्य स्नान बहुत लाभदायक है तथा प्रिय भी लगता है जाड़ा भी कम हो जाता है। अच्छा तो यह है कि तेल की मालिश धूप मे ही की जावे साधारण जन कड़वे तेल की मालिश करें और जो संपन्न है वे नारायण तेल या महा-नारायण तेल की मालिश कर सकते है। सूर्य स्नान से सर्दी-गर्मी का जल्दी प्रभाव नहीं पड़ता तथा त्वचा के अनेक रोग नष्ट होते हैं।

स्वस्थ होने का उपयुक्त समय

स्वास्थ्य को सुन्दर बनाने का शीत काल उत्तम अवसर है। क्योंकि शीत कालीन जलवायु में कुछ ऐसे गुण हैं जिनके कारण इस समय सेवन की गई औषधि का शीघ्र प्रभाव पड़ता है। बल और वीर्य को बढ़ाने वाली पौष्टिक औषधियों के सेवन करने का यही समय है क्योंकि इन दिनों जठराग्नि प्रदीप्त होती है इस समय खाद्य पदार्थ जो सेवन किए जावें वे स्निग्ध और पौष्टिक हों। वीर्य विकारों से क्षीण हुए व्यक्तियों में भी इन दिनों चेतनता एवं उत्साह आने लगता है।

रसायन की उपयोगिता

जब तक शरीरस्थ दोष, वात, पित्त और कफ सम रहते हैं पाचकाग्नि सीमा के भीतर नियमित कार्य करती रहती है। और भोज्य पदार्थों का उचित परि-पाक होता है। और शरीर को आव-श्यक रस रक्तादि मिलते रहते हैं किन्तु जब दोषों की स्थिति विषम हो जाती है तब पाचन क्रिया गड़बड़ हो जाती है–अथवा शिथिल हो जाती है। शरीर का उचित पोषण नहीं हो पाता और हृदय फुफ्फुस और मस्तिष्क जैसे शरीर के महत्वपूर्ण अगों को पर्याप्त पोषण नहीं मिलता और इनकी कार्य शक्ति क्षीण पड़ जाती है। इससे शरीर के रक्त प्रवाह में भी अव्यवस्था होने लगती है। रक्त को बहाने वाली शिराओं और धम-नियो में गति कम होने लगती है। रक्त की आवश्यक शुद्धि नहीं होती एव फुफ्फुस और मस्तिष्क के नियमित कार्य मे बाधा पड़ने लगती है। इस तरह जब शरीर की मशीन अव्यवस्थित होने लगती है तो साहस, स्फूर्ति, कार्यक्षमता, मेधा और स्मृति ही क्षीण नहीं होती जीवन के दिन भी घटने लगते हैं। मृत्यु निकट आने लगती है। आए दिन छोटे बड़े रोग हो जाते हैं और जीवन का सारा आनन्द नष्ट हो जाता है शरीर से इन रोगों को दूर करने के लिए ही आयुर्वेद में रस रसायनों के सेवन की आवश्यकता बतलाई गई है। महर्षि चरक ने कहा है कि स्वस्थ पुरुषों को अपने बल और वीर्य की वृद्धि के लिए और रोगियों को रोग से मुक्ति पाने के लिए रसायन का सेवन करना चाहिए। रसा-यन का लक्षण इस प्रकार है। 'रसायनं तु तत् प्रोक्तं यज्जरा व्याधि विनाशनम्' अर्थात् रसायन उसे कहते है जिसके सेवन से वृद्धावस्था और रोग दोनों का विनाश होता है। आचार्य सुश्रुत ने भी इन्हीं विचारों की पुष्टि की है। रसायन का प्रभाव बताते हुए चरक ने लिखा है कि–"दीर्घ मायुः स्मृति मेधां आरोग्यं तरुणं वयः। प्रभा वर्ण स्वरौदार्यं देहेन्द्रिय बलं परम्। वाक्सिद्धिं प्रणतिं कान्तिं लभते ना रसायनात्॥ अर्थात् रसायन सेवन से आयु बढ़ती है। स्मृति धारणा. शक्ति और आरोग्य की वृद्धि होती है।

कहानी-कुञ्ज

साधु का चमत्कार

[कहानी]

[श्री बुद्धिप्रकाश जी आर्य प्रधानाचार्य दयानन्द उ० मा वि० बिन्की फतेहपुर]

एक गांव था। जिसके निवासी पर स्पर लडते झगडते रहते थे। अज्ञान और अन्धविश्वासो मे फसकर वे निरन्तर पतित होते जा रहे थे। एक दिन अचानक उस गाव मे आग लग गई। जिस व्यक्ति के घर मे पहले आग लगी उसने सोचा कि मेरा ही घर क्यो नष्ट हो अत उसने अपने घर की आग से दूसरे घर मे आग लगा दी। दूसरे ने ईर्ष्यावश तीसरे के और तीसरे ने चौथे व्यक्ति के घर मे आग लगा दी इस प्रकार सारा गाव ही ईर्ष्या की आग मे भस्म होने लगा। चारो ओर हाहाकार मच गया। उधर से एक लम्बे चौडे शरीर वाला एक साधु निकला जिसका शरीर तेज से दमक रहा था। गोपन धारण किये कमण्डल हाथ मे लिए वह तपस्वी के वेश मे मानो कोई देवदूत था। आख उठाकर उसने गाव को जलता हुआ तथा लोगो को बिलखता हुआ देखा उसका कोमल हृदय दयार्द्र हो गया। दौडकर गाव मे पहुचा। पहुचते ही अग्नि का प्रकोप कुछ शात हो गया। कमण्डल का जल हाथ मे लिया आख बन्द की मौन स्वर मे मन्त्र पाठ किया और उस जल को अग्नि के ऊपर छिडक दिया। तुरन्त आग शान्त हो गई। तत्पश्चात उस साधु ने गाववालो को एकत्रित किया तथा कुछ समय तक अमूल्य शिक्षाये दी और बिदा हो गया।

पाठको! क्या जानते हो कि वह गाव कौन सा था? उसमे अग्नि कौन सी लगी थी वह साधु कौन था कौन सा जल उसके कमण्डल मे भरा था? तथा वे कौन सी शिक्षाये थी जो उसने ग्राम निवासियो को दी थी?

यदि आप नही जानते है तो सुनिये! वह गाव था भारतवर्ष जो ईर्ष्या अज्ञान अन्धविश्वास तथा मतमतान्तरो की दूषित आग से जल रहा था। वह परम तेजस्वी साधु थे ऋषिवर दयानन्द जिनके हृदय रूपी कमण्डलु मे पवित्र वेद ज्ञान का जल भरा हुआ था। जिसके उच्चारण मात्र से ही भारतवासियो के पाप ताप शमन होने लगे थे। वे अमूल्य शिक्षाये जो उस ऋषिवर ने अज्ञानान्धकार मे पडे हुए भारतवासियो को दी वे निम्न थी—

सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम्। देवाभाग यथा पूर्वे सजानाना उपासते॥

प्रेम से मिलकर चलो
बोलो सभी ज्ञानी बनो
पूर्वजो की भाति तुम
कर्तव्य के मानी बनो।

समानो मन्त्र समिति समानी समान मन सह चित्तमेषाम्। समान मन्त्र अभिमन्त्रये व समानेन वो हविषा जुहोमि॥

हो विचार समान सबके
चित्त मन सब एक हो।
भोग देता हू बराबर
भोग पा सब नेक हो।

मा विद्विषावहै अर्थात परस्पर द्वेष मत करो।

योऽस्मान द्वेष्टि य वय द्विष्मस्तम वो जम्भेदध्म।

जो हमसे या हम जिससे द्वेष करते है वह सब आपके शिक्षाओ रूपी दाढो मे दग्ध हो जाय।

स्वादमान वाच मुदित वमाहाम।
मधुर वाणी हो अति सुखप्रदा
दिन सभी शुभ हो सुख पूर्ण हो।

★

शरीर मे नवयौवन आ जाता है चेहरे पर कान्ति आती है रग निखर आता है स्वर मे गाम्भीर्य पैदा हो जाता है देह मे बल की वृद्धि हो जाती है और इन्द्रिया पुष्ट हो जाती हैं।

अतएव शीतकाल मे स्वस्थ बने रहने के लिए पौष्टिक भोजन के साथ साथ रसायन सेवन आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य भी है।

★

गुझिया से गेहूँ को बचाइये

हाल ही मे प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने कहा था कि अगर हम जी जान से कोशिश करे तो कोई वजह नही कि हमारे देश मे अनाज की कमी पूरा न की जा सके। बात सोलह आने ठीक है। खेती के नये उन्नत तरीके अपनाकर अनाज की कमी पूरी की जा सकती है यहा तक कि अपनी जरूरत से भी ज्यादा अनाज पैदा कर सकते है। इसके लिए जहा एक ओर उन्नत बीज उर्वरक और सुधरे तरीके अपनाने की जरूरत है वहा दूसरी ओर अपनी फसल को रोग और कीडो से बचाना भी उतना ही जरूरी है। यदि हम समय रहते अपनी फसल को रोग और कीडो से बचाने का उपाय नही करते है सारी फसल चौपट होने का खतरा है। फसल के इन दुश्मनो की वजह से न होने पर किसान की सारी मेहनत पर पानी फिर सकता है। इसलिये समय रहते फसल को लगने वाले रोग और कीडो का तुरन्त खात्मा कर ना चाहिये।

पिछले दिनो सुनने मे आया है कि उत्तर प्रदेश के कुछ इलाको मे गेहू की फसल को गुझिया नामक कीडा लगना शुरू हो गया है। गुझिया गेहू और दूसरी रबी की फसलो का कट्टर दुश्मन है। यह कीडा जमती हुई फसल को खा जाता है और कभी-कभी तो इसके कारण फसल का इतना ज्यादा नुकसान होता है कि पूरे खेत की फिर से बोआई करनी पडती है।

यह कीडा करीब चौथाई इच लम्बा होता है। इसका रग धूसर भूरा होता है। यह खास कर उत्तर प्रदेश राजस्थान और पजाब के कुछ इलाको मे हाल की बोयी गयी गेहू और चने की फसल को लगता है।

गुझिया की खेतो मे मुलायम ढेलो के नीचे छिपा रहता है। यह सुबह और शाम के समय बाहर निकलता और तमी सतह से पौधो के तनो को जमीन की सतह या सतह से कुछ नीचे से काट देता है।

जब फसल बहुत छोटी होती है तब यह कीडा पौधो को बडे पैमाने पर नुकसान पहुचाता है। फसल पर इसका हमला यकायक और बडे पैमाने पर होता है।

रोकथाम कैसे करें ?

गीले खेतो मे यह कीडा नही देखा गया है इसलिए खेतो की सिचाई करना इसकी रोकथाम का अच्छा उपाय है। किन्तु यह पक्का उपाय नही है क्योकि जब तक खेत मे नमी रहती है यह कीडा पास की मेड पर चला जाता है और बाद मे लौटकर फिर पौधो को काटने लगते है।

कीडा लगे खेतो मे दस प्रतिशत बीएचसी मात्रा किलोग्राम प्रति हैक्टर भुरक कर गुझिया की रोकथाम आसानी से की जा सकती है।

बीएचसी के अलावा पाच प्रतिशत एल्ड्रिन भुरक कर भी इसकी रोकथाम की जा सकती है।

ये दवाए और भुरकाव यन्त्र विकास खण्डो मे भी मिल सकते है। इस बारे मे आप अपने इलाके के विस्तार कार्यकर्ता या कृषि अधिकारी से भी सहायता ले सकते है।

इस तरह आप अपनी फसल को इस कीडे से बचा कर गेहू और चने की अधिक पैदावार ले सकते है।

★

१ गुझिया कीडा

२ कीडे का पीछे का हिस्सा
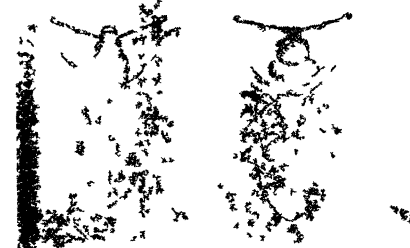
गढ़मुक्तेश्वर मे मेरठ सभा द्वारा प्रचार

दि० ५ से ९ ११ ६५ तक गढमुक्तेश्वर मे कमिश्नरी आय महासम्मेलन हुआ, जिसमे गोरक्षा सम्मेलन सुरक्षा सम्मेलन समता सम्मेलन महिला सम्मेलन एव शिक्षा सम्मेलन हुए।

१ गोरक्षा सम्मेलन

श्री शादीलाल जी की अध्यक्षता मे हुआ जिसम इस आशय का प्रस्ताव पारित किया गया कि गोवध बन्द करने क लिए एव गोवश की वद्धि करने के लिए सरकार व जनता दोनो दढतापूवक काय कर।

२ सुरक्षा सम्मेलन

श्री रघबीर सिंह जी शास्त्री की अध्यक्षता मे हुआ। जिसमे सव श्री मुसद्दी लाल जी जगदीश जी सिद्धानी इन्द्रराज जी व शोभाराम जी के भाषण हुए एव सरकार से अनुरोध किया गया कि वह पाकिस्तान एव चीन की आक्रामक काय वाहियो को देखते हुए पाकिस्तान से सतक रहे।

३ आर्य सम्मेलन

श्री मदनमोहन वर्मा की अध्यक्षता म सम्पन्न हुआ। सव प्रथम शहीद सैनिको मे मेरठ के एम एस० पी० और श्री रघुकुल तिलक जी के सुपुत्र श्री रवि बाबू के निधन पर शोक प्रस्ताव एव श्रद्धाजलिया अर्पित की गइ। श्री वर्मा जी को सुर नाकाष म १०००) की थैली दी गई। और एम आर्तिकाल मे वर्मा जी न आयसमाज क कन या पर पूणरूपण प्रकाश डाला एव वद प्रचार पर बल दिया। श्री प्रकाशवीर जी का भी व्याख्यान हुआ।

४ समता सम्मेलन

श्री मुसद्दीलाल जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसम सव श्री मास्टर सुन्दर लाल जी श्री शिवदयालु जी, लक्ष्मीनारायण जी मिश्र व रघुनन्दन प्रसाद जी मेहरा के भाषण हुए और निम्नलिखित आशय का प्रस्ताव पारित हुआ—

'वतमान भ्रष्टाचार एव शोषण का मूल आधार सम्पत्ति पर व्यक्तिगत स्वामित्व है—इसको समाप्त करने के लिए सरकार मर्यादित सीमा के ऊपर सचित धन की व्यक्तिगत मिल्कियत सविधान मे सशोधन करके दूर कर दो। इस के साथ ही आपकी न्यूनतम अधि कतम सीमायें भी निर्धारित की जावे।

५ महिला सम्मेलन

श्रीमती शकुन्तला देवी गोयल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे स्त्रियो मे वैदिक शिक्षा का प्रचार एव राष्ट्र रक्षा के प्रति कतव्य की प्ररणा करने वाला प्रस्ताव पारित किया गया।

६. शिक्षा सम्मेलन

श्री कैलाशप्रकाश जी शिक्षा म त्री उ०प्र० सरकार के सभापतित्व मे सम्पन्न हुआ जिसमे सवश्री मुसद्दीलाल जी शादीलाल जी शिवदयालु जी के भाषण हुये और एक सवसम्मत प्रस्ताव द्वारा सरकार पर यह जोर डाला गया कि (१) वह पाठय पुस्तको का भारी भर कम बोझ कम कर (२) पाठयपुस्तको मे से गलत ऐतिहासिक घटनाओ को हटायें। (३) नैतिक शिक्षा देन का सरकार की ओर से शिक्षण सस्थाओ म विशेष प्रब ध कर। (४) आयसमाज की समस्त शिक्षण सस्थाओ म धार्मिक शिक्षा अनिवाय हो।

कैम्प मे इस वष निवास भोजन की बडी सुदर व्यवस्था थी जिसका श्रेय मुख्यत श्री बलवीर सिंह जी को है। कैम्प मे एक औषधालय भी था वैद्य भगवत स्वरुप जी गन्दौली के सौजन्य से नि शुल्क चलता था जिसम १००० से अधिक रोगी ने चिकित्सा प्राप्त की।

अन्त म जिला परिषद क अधिकारियो का विशेष रूप से धन्यवाद दिया गया कि उन्होन सम्मेलन को सफल बनाने म एव कैम्प क लगाने म भरसक सहयोग प्रदान किया।

इसके अतिरिक्त दि० १४ ११ ६५ को शर्मा स्मारक भूमि म सुरक्षा मत्री श्री वाई०वी० चौहान की सावजनिक सभा मे २००१) का चेक मुख्य कोष के लिए केन्द्रीय आय समिति मेरठ की ओर से भेंट किया गया।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आय जाति के महान सगठनकर्ता विषमकाल मे राष्ट्रीय आन्दोलन के सूत्रधार शुद्धि आन्दोलन को प्रगति देने वाले श्रद्धा से परिपूण स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना जीवन मानवमात्र के कल्याण के निमित्त समर्पित किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेशो से प्रभावित वैदिक आदर्शों के अनुसार अपना जीवन अनुप्राणित करके एक ऐसा उदाहरण समुपस्थित किया जिसकी उपलब्धि के लिए आज के युग के बड बड महापुरुष भी स्पृहा कर सकते हैं। ऐसी भावनामयी श्रद्धाजलि समर्पित की सवश्री डा० शिवदत्त जी प्रधान केन्द्रीय सभा प०विद्याधर जी म त्री केन्द्रीय आय सभा, डा० जवाहर लाल जी श्री रघुनन्दन स्वरूप जी स्वामी सन्तोषानन्द जी श्री रघुवशराय जी आदि ने। नगर की समस्त आयसमाजो की ओर से आय समाज मन्दिर सीमामऊ मे आयोजित बलिदान दिवस समारोह के अवसर पर।

श्री ओ३म्प्रकाशजी त्यागी भारत लौट रहे हैं।

दिल्ली मे स्वागत की जोरदार तैयारिया

दिल्ली ३ जनवरी। आयसमाज मन्दिर दीवान हाल के कार्यालय से प्रकाशित विज्ञप्ति म बताया गया है कि आय जगत के तपस्वी आयवीर दल के प्रधान सचालक श्री ओ३मप्रकाश जी त्यागी पूर्वी अफ्रीका मौरीशस इग्लैंड आदि मे प्रचारक यात्रा की सफलता पूवक प्रचार करते के उपरान्त स्वदेश पधार रहे है। त्यागी जी इसी सप्ताह बम्बई पहुँच जायेंगे। दिल्ली म उनके पधारने पर उनका भारी स्वागत किया जायगा जिसकी तैयारिया जोर शोर म आरम्भ कर दी गई हैं। श्री त्यागी जी के आगमन की सूचना से आयजगत म हर्ष की लहर दौड गई है।

—विश्वनाथ मन्त्री

नामकरण सस्कार—

—मुबारकपुर टाडा (फैजाबाद) आयसमाज मे एच० टी० इन्टर कालेज टाडा के विद्यार्थी कोदईराम का नाम परिवतन कर श्री देवेन्द्रकुमार नामकरण सस्कार और यज्ञोपवीत सस्कार सम्पन्न किय गये।

—गोरिया हरदोई के श्री हरिनाथ जी के पुत्र का नामकरण सस्कार वैदिक रीति स सम्पन्न हुआ। २) रु० गोरिया और २) श्री चकपुर आयसमाजो को दान दिये गये।

मुण्डन सस्कार—

—श्री चक्रपुर फरुखाबाद निवासी श्री अमरपालसिंह के पुत्रो योगेन्द्रपाल सिंह और ज्ञानेन्द्रपालसिंह के चूडा कम सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुए। २) आयसमाज चक्रपुर को दान मे प्राप्त हुए।

—पुराना गोदाम (गया) आयसमाज के कायकर्ता श्री शिवचरण आर्य के पुत्रो के नामकरण सस्कार श्री लखनलाल जी पुरोहित ने वैदिक रीति से सम्पन्न कराय। प्रीतिभोज भी हुआ।

राष्ट्र रक्षा कोष—

—श्री महयान द उ०मा०वि०विन्दकी (फतहपुर) की ओर से २००)रु० स्टेट बैंक ड्राफ्ट द्वारा तथा ५०१)जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा सुरक्षा कोष के लिए सग्रह कर भेजे गये। विद्यार्थियो और शिक्षको ने अपने पास से यह धन दान दिया है।

आयसमाज मिर्जापुर का वार्षिकोत्सव

आयसमाज मिरजापुर का ८० वा वार्षिकोत्सव ११ से १५ नवम्बर तक बड समारोहपूवक मनाया गया। जनता का इतना प्रेम रहा कि उत्सव म हालाँकि उत्सव जो १४ नवम्बर का ही समाप्त होने वाला था जनता के आग्रह से एक दिन के लिए और बढाना पडा। वैदिक धम का खूब प्रचार हुआ तथा उसका जनता पर बहुत असर पडा। उत्सव म अच्छे अच्छे प्रचारक व भजनोपदेशको ने भाग लिया। शास्त्रार्थ महारथी प० बिहारीलाल द शर्मा आचाय विद्याभान द शास्त्री परमपूज्य स्वामी अखिलान द जी सरस्वती, सभा प्रधान माननीय श्री मदनमोहन वर्मा प०सच्चिदानन्द शास्त्री भजनोपदेशको म सवश्री वगराज वर्मा कुवर जोरावरसिंह सपत्न कुवर महीपालसिंह वीरेन्द्र आय एव ... ने अपने सुन्दर भजनो म जनता का मन्त्र मुग्ध कर लिया। इन लोगो के अतिरिक्त सौम्य मूर्ति श्री विक्रमादित्य जी बसन्त ने उत्सव का सफल बनाने म अपना योगदान दिया।

इसी अवसर पर प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग का अधिवेशन भी १३ व १४ नवम्बर को मीरजापुर हुआ जिसस म आय विद्वानो का एक मेला सा लग गया था। बडा उत्साह रहा। सभा प्रधान माननीय मदनमोहन वर्मा जी को इसी अवसर पर चापन आयसमाज की ओर स ५०१) की थैली उपदेशक विद्यालय स्थापना हेतु दी गइ। इसके अतिरिक्त जिला की समाजो की ओर से ५०१) की थैली सभा भवन निर्माण हेतु जिला उप प्रतिनिधि ने भेट की।

स्वामी अखिलानन्द जी सरस्वती जी के उपदेश का इतना प्रभाव आर्य कन्या इण्टर कालेज की अध्यापिकाओ और छात्राओ पर पडा कि प्रधानाचार्या व एक अध्यापिका सहित १९ छात्राओ का उपनयन सस्कार पूज्य स्वामी जी द्वारा किया गया, सस्कार के पश्चात् श्री स्वामी जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

(पृष्ठ ५ का शेष)

इस पक्षी को भी जानते हो, और खूब पहचानते हो, किन्तु इसके वास्तविक नाम से लोगो को कम परिचय है। हमारी जननी, वसुन्धरा पृथ्वी ही अगिरा है जिसके तत्व से हमारे अङ्ग का अधिकतर भाग निर्मित हुआ है।

प्र —अच्छा ! तो क्या ये ही वे चार ऋषि है, जिन पर सृष्टि की आदि मे वेद नाज़िल हुए ?

उ०—हाँ ! ये ही !! निश्चय रूप से ये ही !!! स्वय वेद ही ऐसा कहते हैं।

प्र०—अच्छा ! छोडो इसे। हम इस विवाद मे नही पडना चाहते। मग्जे मतलब पर आइये। पुन प्रसङ्ग को लीजिए।

उ०—माना ! लो, अब ध्यान पूर्वक सुनिये—इन्ही का उदाहरण 'अनासक्ति-योग' है। पहले इस अगिरा (पृथ्वी) को ही लें। हम इस पर नित्य पेशाब करते हैं, टट्टी फिरते हैं। क्या कभी नाराज होती हैं ? हम स घृणा करती हैं ? किसान नित्य उसकी छाती पर हल चलाते हैं। क्या कभी उसने आह भरी? ऋतु-ऋतु में नवीन-नवीन अन्न, फल औषधिया प्रदान करती है। क्या कभी एवज चाहा ? बदले की आशा की ? बस यही उसका 'अनासक्ति' योग है।

अब अपने दूसरे 'देव' आदित्य की करामात देखिये। पहले माता पृथिवी और फिर पिता आदित्य (सूर्य)। अहर्निश कमाई करता है, कभी देश, कभी विदेश; और जो कुछ भाप रूप से जल-सम्पत्ति बटोरता है, सब की सब पृथ्वी भार्या के हवाले कर देता है, एक बूद तक अपनी पाकेट मे छिपाकर नही रखता। कभी आपस मे लडाई-झगडा करते नही देखा गया। कैसा प्रसन्न सतोषी जीवन ! यह हुआ आदित्य देवका, पति-मालिक-शासक और धारक रूप से, आदर्श-अनासक्ति-योग।

प्र०—बहुत सुन्दर ! बहुत खूब !! माता, पिता एव शासक का अनासक्ति योग सुना, अब अग्नि और वायु देवो की करामात वर्णन कीजिए।

उ०—वह भी सुनो। ये दो, पूर्व के दोनो 'देवो' से कही बढ-चढ कर हैं। आचार्य्य और अनासक्ति-योग द्वारा अपना — अपना भाग (पार्ट, ड्यूटी, फर्ज, कर्तव्य) पालन करते हैं। ये कभी झिझकते, ठिठकते, न डरते हैं। थकने का नाम नही, आराम की चाह नही और कार्य्याधिक्य की भी शिकायत नही। चरैव ! चरैव !! चरैव !!! खूटो। ये हैं आपके चिर-परिचित 'अग्नि' और 'वायु देव—अग्नि देव आचार्य्य, और वायु देव परिव्राजक सन्यासी। एक अपने ज्ञान का प्रकाशन करता है, और दूसरा सतत घूमते-फिरते रहकर पाप-दोष-द्वेषादि क्लेशकर पदार्थों का परिशोधन करता रहता है। यही इनका अपना-अपना कर्तव्य-पालन रूप "अनासक्ति योग साधन" है।

अन्त मे, वेद-मन्त्र सूचित करता है, आगाह करता है—'सजानाना-उपासते'। केवल 'अनासक्ति' काफी नही—(सजानाना उपासते) ये सब कार्य्य बुद्धि-पूर्वक तर्क-सगत, एव ईश-उपासना रूप से करने चाहिये तभी आम के आम गुठलियो के दाम मिलेंगे। अभ्युदय और निश्रेयस् की प्राप्ति हो सकेगी। इति शुभम् !

●

सिंहावलोकन

(पृष्ठ ६ का शेष)

अक्ले शनाश को भी खलल है दमाग का।
पूछो अगर जमीं की, कहे आसमा की बात,"

"ज्योतिषी पागल हो गया है। भूलोक की बात पूछो तो द्यौलोक की बात बताता है।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास मे फलित ज्योतिष का इसीलिए खण्डन किया है। यह बडा आवश्यक था। हिन्दुओं के मध्य मे ग्रह-पूजा का इतना मान बढ गया था कि जीवन के अन्य विभाग फीके पड गये थे आप किसी विद्वान् पडित पुरोहित से यह परामर्श नहीं करते कि अमुक वर मेरी पुत्री के योग्य है या नहीं। आप यह पूछने जाते हैं कि अमुक ग्रह क्या कहता है या क्या चाहता है।

जो पुरजा मशीन की चाल में बाधक है, वही खराब है चाहे वह कितना ही बडा, कितना मूल्यवान, और कितना ही सुन्दर क्यों न हो। इसलिए मशीन की सामूहिक दशा पर विचार करके उसका सर्वांगीण सुधार होना चाहिये।

(पृष्ठ ४ का शेष)

साथ शान्तिवन पहुचा, और चन्दन की विशेष चिता पर रखकर फौजी सम्मान के साथ उनका अन्त्येष्टि सस्कार किया गया।

दिल्ली में शोक सभा

शाम को रामलीला मैदान दिल्ली मे श्री डाक्टर राधा कृष्णन की अध्यक्षता मे एक विशाल शोक सभा हुयी, जिसमे विदेशों से आए हुए तथा भारत के अनेक नेताओं मे श्री लालबहादुर जी शास्त्री को अपनी-अपनी भावभरी श्रद्धाजलिया भेंट की। दिल्ली कारपोरेशन के मेयर ने समस्त आगन्तुकों को धन्यवाद दिया, और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

अन्य देशो के प्रतिनिधियो मे स वियत सघ के प्रधान मन्त्री श्री कोसीजिन, सयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति श्री हम्फ्री, बरतानियां के उपप्रधान मत्री श्री ब्राउन, महारानी एलिजाबेथ के प्रतिनिधि लार्ड माउन्ट बेटन नेपाल के प्रधान मन्त्री श्री सूर्यबहादुर थापा, अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्री, पाकिस्तान के वाणिज्य मन्त्री श्री गुलाम फ़ारूक़, फ्रास, जर्मनी, जापान, कम्बोडिया, सयुक्त अरब गणराज्य युगोस्लाविया आदि देशो के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे। इन लोगो ने अपनी श्रद्धाजलिया अर्पित कीं।

★

वर की आवश्यकता

एक सुन्दर, सुशिक्षित (डबल एम० ए०), गृह कार्य म दक्ष, सुशील हिन्दू कन्या जिसकी आयु लगभग ३१ वर्ष है के लिये एक उच्च शिक्षाप्राप्त सुन्दर वर की आवश्यकता है, जिसकी आयु ३८ वर्ष से अधिक न हो। डाक्टर इन्जीनियर, गजटेड आफीसर इत्यादि को तरजीह दी जायगी। जात-पात का कोई प्रश्न नही।

पता—न० ५ द्वारा आर्यमित्र,
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आवश्यकता है
महिला कालेज, पोरबन्दर के लिए

१—गुजरात यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध छात्रावास युक्त महिला आर्ट्स कालेज के लिये सुयोग्य, अनुभवी महिला प्रिंसिपल की। प्रोफेसर स्तर की योग्यता होना जरूरी है। आर्यसमाजी विचार की महिला को प्राथमिकता दी जायगी।

२—गुरुकुलीय पद्धति पर चलनेवाले उक्त महिला कालेज के लिए सुयोग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी आश्रमाध्यक्ष (होस्टल वार्डेन) की। आर्यसमाजी उम्मीदवार को विशेषता दी जायगी।

—व्यवस्थापक आर्य कन्या गुरुकुल
पोरबन्दर, सौराष्ट्र

आवश्यकता

२० वर्षीया मैट्रिक अग्रवाल कन्या के लिए आर्यसमाजी विचार वाला अधिकतम २४ वर्षीय ग्रेजुएट सजातीय वर चाहिए। गरीब घराने को प्राथमिकता दी जायगी। पता—न० ६ द्वारा आर्यमित्र कार्यालय लखनऊ

आवश्यकता

राजस्थान प्रान्त मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को उच्चकोटि के विद्वान वक्ता उपदेशको एव प्रचारको की शीघ्र आवश्यकता है। प्रत्याशी महानुभाव अपने आवेदन पत्र, योग्यता, अनुभव एव पूर्ण विवरण सहित सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दयानन्द आश्रम केसरगज अजमेर

आवश्यकता

१७ वर्षीया स्वस्थ आठवें तक शिक्षित गृह कार्य मे दक्ष और सुशील कन्या के लिए योग्य वर की आवश्यकता है। लडकी सोमवशी क्षत्री कुल की है। क्षत्री मात्र से ब्याह हो सकेगा। दहेज के इच्छुक पत्र व्यवहार न करें। पत्र व्यवहार के साथ फोटू आवश्यक है।

पता—गोवर्द्धनसिंह वै० शास्त्री
ग्रा० पो० आ० बरवन
जि० हरदोई (उ० प्र०)

आर्य वर अथवा कन्या को आवश्यकता

"सुन्दर सुशिक्षित कन्या आयु २१ वर्ष शिक्षा इण्टर अथवा लडका आयु २६ वर्ष शिक्षा मेट्रिक के लिये सुयोग्य वर अथवा कन्या की आवश्यकता है। दोनो ही सरकारी सर्विस मे है। अथवा घर का मकान व जमीन भी है। विवाह अन्तरजातीय वैदिक रीति से होगा। पूर्ण विवरण सहित शीघ्र लिखें।"

बाक्स न० ८ वर्मा मारफत
मैनेजर आर्यमित्र मीराबाई मार्ग लखनऊ

मद्यपान का यह दुर्दान्त दानव !

[श्री हनुमानप्रसाद जी कानपुर]

[मद्यपान संसार का एक बहुत बड़ा दुर्गुण है, सभ्यता के प्रसार के साथ उसका भी खूब प्रसार हो गया है। वह दुर्दान्त दानव की तरह मानवता का भक्षण कर रहा है, शासन के कर्णधार सतृष्ण दृष्टि से उसी की नशीली नजरों को ताकते है और चाहते हुए भी उसका कुछ प्रतिकार कर नहीं पाते।

प्रस्तुत लेख मे सोवियत रूस मे मद्यपान की विभीषिका का चित्र खींचा गया गया है। भारतवर्ष अगर समय पर इससे सावधान न हुआ तो वह भी रक्तिम दाढ़ो मे पिस जायेगा। भारत के सूत्रधार क्या इस स्थिति से कुछ शिक्षा ग्रहण करेंगे ? —सम्पादक]

महात्मा गाधी ने स्वराज्य को सुराज्य मे परिणत करने की जो बुनियादी शर्तें प्रस्तुत की थी उनमे शराबबन्दी का प्रमुख स्थान है। भारतीय सविधान मे शराबबन्दी की व्यावहारिक स्थापना की गई है और उसके अनुसार भारत के कुछ भागो मे आशिक शराबबन्दी शुरू भी की गई थी, पर इससे सरकारी खजाने को जो हानि उठानी पडी, उससे गाधी जी के इन भक्तो के पैर डगमगा गये है और चीनी आक्रमण के बाद जो आशिक शराबबन्दी यत्रतत्र चल रही थी, वह भी समाप्त कर दी गई। मद्यपान के व्यसन से मुक्त चीन के मुकाबिले के लिए हम भारतीयो को मद्यपी-भ्रष्टाचारी, व्यसनी, दुश्चरित्र, दुर्बल, निर्धन एव अपराधी मनोवृत्ति का बना रहे हैं यह एक परम विचित्र बात है। हमारे राष्ट्र के कर्णधार चीन और पाकिस्तान के मुकाबिले की बडी लम्बी चौडी बाते करते है, पर जब हम उनकी मद्यपान पर आधारित इस सामाजिक, सामरिक व्यूह रचना देखते हैं तो हमारा सर लज्जा से झुक जाता है। इसी सदर्भ मे हम रूस मे प्रचलित मद्यपान की बढती हुई प्रवृत्ति पर यहा पर विचार करेंगे।

रूस में शराबबन्दी कानून

७ जुलाई १९६५ को आया हुआ हमारे सामने मास्को का यह समाचार है—

रूस मे मद्यपान के बढते हुये व्यसन के कारण इधर अपराधो की सख्या बहुत ज्यादा बढ गई थी, इस पर रूस के कर्णधारो मे बडी चिन्ता हो गई थी, उन्होने रूसी नवयुवको मे मद्यपान की प्रवृत्ति समाप्त करने के लिए एक अभियान शुरू कर दिया है। मद्यपान को प्रोत्साहन देने वालो के विरुद्ध उन्होने एक कानून बना दिया है। इसके अनुसार ६ जुलाई १९६५ से जो लोग छोटे बच्चो, नवयुवको को अथवा नवयुवतियो को मद्यपान अथवा नशे की आदत डालने के लिए प्रोत्साहित करेंगे, उन्हे पाच साल तक की जेल की सजा दी जा सकती है। यह कानून फिलहाल रूसी सघ पर, जो १५ सोवियत राज्यो का सबसे बडा सगठन है, लागू होता है। इस बात की सम्भावना है कि इसी प्रकार के प्रतिबन्ध अन्य सोवियत गणतन्त्रो में भी लगाये जायेंगे। कानूनी विशेषज्ञो ने हाल मे शराबखोरी के खिलाफ पत्रो में बहुत जबरदस्त अभियान चालू किया था, नये कानून मे उनके विचारो को व्यावहारिक रूप प्रदान किया गया है। रूस मे नौजवानो मे जो अपराधवृत्ति अधिकाधिक बढती जा रही उसके पीछे वहा की प्रसिद्ध शराब वोडका है। रूसी सघ की विधि कानून सहिता मे जो परिवर्तन किये गये है, उनकी घोषणा ६ जुलाई १९६५ के सोवेत्सकाया रास्सिया नामक पत्र मे कर दी गई है।

रूस मे लागू किये गये इस कानून से पता चलता है कि सोवियत यूनियन मे मद्यपान का यह रोग किस कदर छूत की तरह परिव्याप्त हो गया है।

सामाजिक समस्याएँ

कलंकित आत्माओं की समाधि

विगत ९ अक्टूबर १९६४ को प्रकाशित कोमसोमोलस्का या प्रवदा के अक मे वोडका (रूसी शराब विशेष) के बारे मे पाठकों के प्राप्त पत्रो पर सम्पादकीय टिप्पणी प्रकाशित हुई है, जिसमे बताया गया है कि वोडका के बारे मे जो पत्र आये है, उनसे पता चलता है कि रूस में नष्ट-भ्रष्ट एव पतित मस्तिष्को एव कलकित आत्माओ की समाधि बन गई है।

प्रवदा केने कुयबीशेव मे ओबलास्ट मे रहने वाली एक मजदूर महिला टी० सीलोमटिनया का एक पत्र अपने ७ अगस्त १९६४ के अक मे प्रकाशित किया है। इसमे उसने ऐसे पति पत्नियो और पुत्रो के समुदाय की ओर से लिखा है जिन्होने अपने मस्तिष्क को वोडका के जहर से भर लिया है, एव अपनी विवेक शक्ति खो दी है और इस प्रकार अपनी माताओ, पत्नियो और बच्चो के लिये दयनीय स्थिति पैदा कर ली है। पत्र ने इस पर अपनी टिप्पणी इस प्रकार की है :—

वर्तमान समय मे विवेक शून्य एव बेहोश बनाने वाली औषधि की भाति शराब ने अपने जाल के बन्धन से लोगों को फसा लिया है। उसने उनको अपाहिज एव पगु बना दिया है वे मुकदमेबाज हो गये है, जो परिवार कल तक प्रसन्न एव समृद्ध थे वे आज टूट फूट गये है। शराब ने उनकी इन्द्रियों की शक्ति नष्ट कर दी है और आत्मा को मार डाला है, उसकी वजह से विकृत शरीर एव बच्चे होते हैं। मत्मोन्स्क रेयन अस्पताल मे शराबियो के जो बच्चे पैदा हुए है, उनमे ८० बच्चे ऐसे है जो शरीर एव बुद्धि से बिल्कुल दुर्बल क्षीण एव मूर्ख हैं।

मद्यपान : राष्ट्रीय विपत्ति

रूस मे शराबखोरी एव मद्यपान एक राष्ट्रीय विपत्ति बन गई है। राज्य ने उसके खिलाफ लडाई छेडी है और उसे रोकने के लिये बहुत से कदम उठाये हैं। मदिरापान के विरुद्ध बहुत-सी किताबें, पोस्टर, घोषणाए एव पुस्तिकायें सरकार ने प्रकाशित की है। जन प्रशिक्षण के सार्वजनिक अभियान चालू किये गये है। सरकार ने इस सम्बन्ध मे अनेक प्रस्ताव स्वीकार किये हैं। तथापि जैसा मोलोकोय कम्युनिस्ट नामक पत्र ने लिखा है किसी ने उनकी मुखालिफत नही की फिर भी किसी ने उनके अनुसार काम नहीं किया। सार्वजनिक शान्ति रक्षा एव व्यवस्था विभाग के मन्त्री वी टीकूनाव ने अपनी एक टिप्पणी मे कहा है कि शराबखोरी हमारे हितो एव लक्ष्य को अमित हानि पहुचाती है। इससे कारखाना का उत्पादन कम हो गया है। औद्योगिक दुर्घटनाये अधिक हो गई हैं, समाज मे अपराधो की सख्या बढती जा रही है, परिवार के परिवार नष्ट हो गये है। राष्ट्र की सास्कृतिक, वैचारिक और राजनैतिक उपलब्धियो मे बाधा उत्पन्न हो गई है।

फलत शराबखोरी के विरुद्ध सघर्ष मनुष्य की रक्षा का सघर्ष है। यह समस्त सोवियत समाज के सबसे महत्वपूर्ण कामो में से एक है। मद्यपान रोकने के लिये उग्रतम कठोर कार्यवाही का किया जाना परम आवश्यक है।

उत्पादन की हानि

कोमसोमोल्स्काया प्रवदा ने अपने २३ जून १९६४ के अक मे लिखा है कि कुछ कारखानो मे प्रत्येक सोमवार को उत्पादन १० से १५ प्रतिशत तक कम हो जाता है। रविवार की छुट्टी आमतौर से श्रमिक शराबखोरी मे बिताते हैं और फलस्वरूप वे अपने काम मे या तो पहुचते ही नही यह पहुचते भी हैं तो काम मे ढिलाई करते है। डानबास की कई कोयले की खानें भी प्रत्येक महीने के दसवें और पच्चीसवें दिन निश्चित रूप से अशान्त एव उपद्रवग्रस्त होती हैं। इन दोनो ही दिनो मे मजदूरो को वेतन बाटा जाता है। जिले के पुलिस अधिकारी के बयान के अनुसार एक भी ऐसा दिन नही बीतता जब नशे मे बेहोश हुये श्रमिको मे लडाई-झगडा और गाली गलौज न हो। इन झगडो का परिणाम कभी-कभी हत्याकाण्डो एव भीषणघातक चोटो मे दिखाई पडता है। सन् १९६४ के नौ महीनो मे पिछले वर्ष के इन्ही महीनो की अपेक्षा २० प्रतिशत से अधिक श्रमिक कारखानो से गैरहाजिर रहे। मास्को के पास स्थित कुजना सूती कारखाने से आये हुए एक नवयुवक मजदूर ने बताया कि उक्त कारखाने के आवासगृहो मे २००० जुलाहे रहते हैं, इन सबका मन बहलाने का खास साधन मद्यपान तथा ताश खेलना है। (प्रवदा, १४ नवम्बर १९६४)। मजदूरो मे बढती हुई नशाखोरी को रोकने के लिए कुछ उद्योगो मे शराबियो को वेतन बाटने के अलग स्थान नियत किये हैं। इन स्थानो मे लाउड स्पीकरो द्वारा शराब के खिलाफ उपदेशात्मक प्रचार कार्य किया जाता है, प्रवदा ३ जुलाई १९६४।

धार्मिक पर्वो एवं राष्ट्रीय दिवसों मे शराबखोरी

रूस के ग्रामीण प्रदेशो मे धार्मिक पर्वो एव क्रान्तिकारी कामो की स्मृति मे दी गई छुट्टियो के दिनो मे खासतौर से लोग शराब पीते है और झगड झन्झट करते है और दूसरे दिन वे अपने कामो पर नही पहुचते। शहरो मे भी मई दिवस जैसी राष्ट्रीय छुट्टियो के अवसर पर अथवा अक्टूबर क्रान्ति की वर्षगाठ

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

पौष २६ शक १८८७ माघ कृ० १०
(दिनांक १६ जनवरी सन १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L 60

पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष्य २५९९३ तार आर्य्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

के मौके पर बिना खूब शराब पिये लोगो को चैन नही पडता। किसी भी कारखाने में जब-जब उत्सव होते हैं तब-तब लोग सामूहिक रूप से मदिरा पान करते हैं। कारखानों के मैनेजर भी कभी कभी सामूहिक मद्यपान का आयोजन करते हैं।

इजवेस्तिया के १९ जुलाई १९६४ के अंक में यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई है कि उच्च शिक्षा की उपाधियो के वितरण के समय शराब पीने की परम्परा दृढतापूर्वक स्थापित हो गई है। विज्ञान की थीसीस सम्बन्धी एव वादविवाद खूनी लडाई में परिणत हो गया। मास्को विश्वविद्यालय में एक विभाग के डाइरेक्टरो ने मद्यपान में सलग्न व्यक्तियो का न केवल सरक्षण किया प्रत्युत उन्हे प्रोत्साहित भी किया। मोर्डोवस्की उत्पादन प्रबन्ध बोर्ड की पार्टी कमेटी से सम्बन्धित कर्मचारियो एव मजदूरो ने शराब पीकर उस हवाई जहाज को नीचे गिरा दिया, जो खेतो पर रासायनिक खाद ऊपर से गिरा रहा था। उन्होने नशे में गोष्ठी में लाये गये भोजन को भी बर्बाद कर दिया। उक्त बोर्ड के अधिकारियो ने इतने पर भी इन शराबखोर मजदूरो का बचाव किया।

किशोरों व छात्रो की दुर्दशा

कोमसोमोलस्काया प्रवदा के ३ जुलाई १९६४ के अंक मे यह प्रकाशित हुआ है कि किशोर बालक बहुधा मद्यपान के गहरे आदी होते हैं। कभी कभी वे इस सीमा तक शराब पीने लगते हैं कि वे पक्के चोर बदमाश गिरहकट और कातिल बन जाते हैं। बिटरेटुनोया गजटा के पहली अगस्त १९६४ के अंक में यह वचन छपा है कि मास्को के पर्वोमायस्की रेयन मे बहुसख्यक किशोर बच्चे शराब पीने के आदी हो गये हैं। ये लोग मद्यपान करके शोरगुल मचाते हुये सडकों मे घूमते हैं। शराब पीने के बाद वे फिर किसी की चिन्ता नहीं करते वे झूमते हुये मुसाफिरो से भिड जाते हैं और बहुत भद्दी, गन्दी एव अश्लील भाषा का प्रयोग करते हैं।

मद्यपान का फैशन

रूस मे विद्यार्थियो मे शराबखोरी एक फैशन बनती जा रही है। वे वोदका का रूसी शराब का एक प्याला पीकर गन्दे एव अशिष्ट वार्तालाप करने के आदी हो गये हैं। ग्रीष्म शिविरों मे युवकों के जो दल जाते हैं वे खूब वोदका पीते हैं और फिर आमतौर से सूअर के बच्चों की तरह व्यवहार करते हैं, वहा पर ऐसे-ऐसे कुकृत्य होते हैं जिनका वर्णन भले आदमियों की भाषा मे किया ही नहीं जा सकता।

थोथी दलीलें

मद्यपान विरोधी अभियान मे दो दलीलों का अक्सर वर्णन किया जाता है पहली तो यह कि मद्यपान की प्रवृत्ति पूजीवादी समाज की विशेषता है सोवियत यूनियन मे पूजीवाद को जन्म देने वाली अवस्था का चूकि समूलोच्छेदन कर दिया गया है अत यह प्रवृत्ति भी धीरे धीरे अपने आप गायब हो जायेगी, दूसरी दलील यह दी जाती है कि मद्यपान की समस्या का सोवियत यूनियन मे धीरे धीरे दृढतापूर्वक निराकरण किया जा रहा है पर यह कहना कठिन है कि यह विष अबकि नका समूलोच्छेद हो जायेगा कब। कम्यूनिज्म के अन्तगत यह दुगुण । नष्ट कर दिया जायेगा पर य[illegible] बताया जा सकता कि यह स्थिर्[illegible] पैदा होगी। सोवियत यूनियन के [illegible] की बोर्ड की एक पुस्तिका म र्[illegible] ाकडों से यह पता चलता है कि पि[illegible] २३ वर्षों मे सोवियत यूनियन मे [illegible] का उपयोग १४५ प्रतिशत बढ [illegible]। पिछले दस वर्षों मे इसका [illegible] १२३ प्रतिशत अधिक हुआ है ([illegible] स एस आर इन फीगस १९६३ म [illegible] १९६४, पृष्ठ १८४)।

एन्जिल्स बनाम लेनिन

शराबखोरी की इस बढती हुई आदत की सफाई मे सोवियत सरकार के प्रचार विभाग की ओर से एन्जिल्स का यह वक्तव्य अक्सर उद्धृत किया जाता है कि शारीरिक श्रम से थकनाचूर मजदूर शराब पीकर केवल कुछ घन्टों के लिये जीवन के दुख दर्द और अभाव को भूलने की कोशिश करता है, पर सोवियत विचार विभाग लेनिन के इस कथन को विस्मृत कर देता है कि समाजवादी समाज मे शराब पीने की कोई आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि उसमें जीवन के शोषण, उत्पीडन एव अभाव की सत्ता के लिये समाप्ति हो जाती है। कोमसोमोलस्काया प्रवदा के ९ अक्तूबर १९६४ के अंक मे यह स्वीकार किया गया है कि मद्यपान जनम जीवन के दुखान्त नाटक मे घुलमिल गया है। मद्यपान की प्रवृत्ति भौतिक अभावों वैयक्तिक विवाद उदासीनता और एकाकीपन, प्रेम और घृणा, अव्यवस्था उत्पादनजन्य क्षोभ और अपनी अपूर्णता की तीव्र जानकारी से उत्पन्न होती है।

मद्यपान का निषेध क्यो नहीं किया गया

कुछ लोग यह दलील देते हैं कि मद्यपान का यह प्रसार रूसी परम्परा मे ही निहित है जो कि एक पीढी से दूसरी पीढी मे होता आ रहा है। बाकू की बी० नजरोवा ने एक स्थान पर लिखा है कि वह समाज आध्यात्मिक दृष्टि से कितना अपरिपक्व, विमूढ तथा घृणास्पद था जिसने शराब पीने की यह परम्परा स्थापित की। आठ शताब्दियों से यह कहावत चली आ रही है कि रूसियों को आनन्द मद्यपान में ही प्राप्त होता है। हमारी समझ मे यह बात नहीं आती कि जिस सोवियत समाज मे जीवन के सभी आधारो का पुनर्निर्माण किया गया है उसमे मद्यपान को क्यो बर्दाश्त किया गया है और क्यों यह सम्भव नहीं हुआ कि इस दुखदायी परम्परा को जिसने मनुष्य को क्षत विक्षत कर डाला है ध्वस्त कर दिया जाता।

दो असफल कानून

मद्यपान निषेध अभियान के सिलसिले मे और दो सरकारी कानून बनाये गये थे एक यह था कि शराब व्यवसाय को नियन्त्रित एव सीमित बना देना तथा दूसरा यह कि शराब पीने वालों को पुनर्वासित कर देना। पर ये दोनों उपाय सफल नहीं हुए। पहले उपाय से सरकार की आर्थिक क्षति तो हुई ही, लोगों ने घरो मे ही शराब बनाना शुरू कर दिया क्योंकि उन्हें बाजार में वोदका खरीदने से नहीं मिली। फलत यह प्रतिबन्ध हटा लिया गया।

सुदूर स्थानों में शराबियो को पुनर्वासित कर देने से भी समस्या सुलझी नहीं। इससे शराबखोरी और बढ गई है। इतना ही नहीं उनके आसपास की आबादियों में भी शराब का प्रचार हो गया है। दूरस्थ शराबियों का बहुत शराब असर नौजवानों पर पडता है वे अपनी कमाई तथा सरकार की जो सम्पत्ति उनके हाथ मे पडती है उसका भी उपयोग वे अधिक शराब पीने के लिए कर डालते हैं (कोमसोमोलस्काया प्रावदा, नवम्बर २७,१९६४) मनोविज्ञान वेत्ता बी० मालतोव्स्की ने यह सुझाव दिया कि शराबियों को पुनर्वासित करने के स्थान पर उन्हें समाज से सर्वथा पृथक् कर देना चाहिये और उनसे जबरदस्ती काम लेना चाहिये उन्हे विशेष श्रमिक शिविर मे सख्त अनुशासन मे रखना चाहिये और उनकी मानसिक चिकित्सा करते रहने चाहिये। इन श्रम शिविरों मे इन निर्वासितों द्वारा अर्जित धन का एक अश उनके घरो परिवारों को भेज दिया जाना चाहिये।

अनेक सुझाव

शराबखोरी की इस प्रथा के विनाश के लिये बहुत से सुझाव दिये जा रहे हैं।

कुछ उत्साही पार्टी के सदस्यों ने यह मांग की है कि नया कानून बनाकर शराबियो द्वारा काम मे की गई क्षति का मुआविजा उनके समस्त साथी मजदूरो से सामूहिक रूप से लिया जाय। कुछ का कहना है कि इनके परिवारों को आवास छुट्टियो का वेतन, बोनस आदि लाभो से वंचित कर दिया जाय। कुछ का विचार है कि शराबखोरी एक कानून से नष्ट नहीं की जा सकती इस का समाधान तो धीरे धीरे रचनात्मक उपायों से ही किया जा सकता है। इस लेख के शुरू मे जिस कानून के लागू किये जाने की चर्चा की है वह इसी प्रकार के विविध सुझावों एव विचारों के मन्थन का परिणाम है पर उससे भी शराबखोरी बिल्कुल समाप्त हो सकेगी, ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि सोवियत जीवन में मद्यपान की जड़ वस्तुत बहुत गहरी है।

★

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम शास्त्री द्वारा मुद्रित, प्रकाशित

लखनऊ—रविवार माघ ३ शक १८८७ माघ शु० ७ वि० २०२२ दिनांक ३ जनवरी सन १९६६ ई०

वयं जयेम

ओ३म् वयं जयेम त्वया युजा,
वृतमस्माकमंशमुदवा भरे भरे।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि,
प्रशत्रूणां मघवन्वृष्ण्या रुज

ऋ० १।७।१४।०२।४

काव्यानुवाद

हम विजयी हों साथ तुम्हारे,
करो मुक्त अपहृत धन को।
सुगम सम्पदा हो हम सबको,
नष्ट करो हरि! अरिदल को ॥

विषय-सूची

आर्य नेता एव विद्वान्

श्री पण्डित गंगाप्रसाद जी

भूतपूर्वाचार्य गु०कु०वि०वि० वृन्दावन — एम० ए०, रि० चीफ जज

जन्म	निधन
संवत् १९२८	संवत् २०२२
वि० वैशाख,	वि० माघ
सुदी ३	कृ० ६
मई।	१३जनवरी
सन्१८७१	सन्१९६६

आर्यसमाज की वर्तमान पीढी के वयोवृद्ध नेता एव विद्वान कर्मठ सगठन कर्त्ता तथा समाज सुधारक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के भूतपूर्व प्रधान श्री प० गगाप्रसाद जी (जज) का निधन आर्यसमाज की गहरी क्षति है। आपने अपनी लेखनी और वाणी दोनो से आर्यसमाज के गौरव की वृद्धि की, सारा आर्य जगत् उनकी सेवाओ के लिए चिर ऋणी रहेगा।

आपका निधन वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे हुआ, ३ पुत्र १ भाई अन्त्येष्टि मे पहुचे, गुरुकुल कागडी व महाविद्यालय व आश्रम के आर्य सज्जनो ने गगातट कनखल श्मशान भूमि मे वैदिक रीति से अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न किया।

वार्षिक ८)
छ:माही ५)
विदेश १पौं.

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम. ए.

वर्ष ६८
अंक ४
एक प्रति २० पै.

सिंहावलोकन—

भारत-पाक सम्बन्ध

एक विरोधाभास

(१९ दिसम्बर '६५ के अङ्क से आगे)

भारत सरकार ने एक बार पुनः पाकिस्तान के हिन्दू अल्पसंख्यकों से अनुरोध किया कि वे अब पाकिस्तान के नागरिक बन चुके हैं इसलिए वे अपनी व्यथा के निवारण के लिए अपनी ही सरकार की ओर देखें उसी पर ही निर्भर करें।

शोक का दरिया

इस समझौते के बावजूद देखा गया कि पाकिस्तान की साम्प्रदायिक स्थिति सुधरी नहीं है। हिन्दुओं के विरुद्ध लगातार सामूहिक हिंसात्मक कारवाइयों के चलते असुरक्षा और सन्देह की भावना व्यापक रूप में पैदा हो गई, जिसका नतीजा यह हुआ कि हिन्दू अल्पसंख्यकों को बार बार पूर्व पाकिस्तान से भागकर भारत आना पड़ा। सिर्फ १९६४ में ही पूर्व पाकिस्तान से भारत आने वाले शरणार्थियों की संख्या लगभग १० लाख थी।

शुरू के वर्षों में तो शरणार्थी सिर्फ हिन्दू ही थे। मगर १९६४ में आये शरणार्थियों में सैकड़ों हजारों ईसाई और बौद्ध भी शामिल थे। पाकिस्तान से कितने ईसाई और बौद्ध भागकर भारत आये, इसका अनुमान अमरीकी और ब्रिटिश पत्रों में छपी खबरों से लगाया जा सकता है। २२ जनवरी १९६४ को न्यूयार्क टाइम्स ने एक खबर छापी, जिसका शीर्षक था ईसाइयों पर जुल्म —पूर्व पाकिस्तान से हजारों ईसाई भागकर गारो पहाड़ियों में पहुंचे। ब्रिटिश अखबार स्काटसमैन (२९ फरवरी १९६४) ने एक मोटे शीर्षक के अन्तर्गत यह रिपोर्ट छापी— पूर्व पाकिस्तान में ईसाइयों पर जुल्म, ये अत्याचार बन्द हो।' २३ फरवरी १९६४ को लन्दन के आबजरवर ने कहा— जुल्मो ज्यादती से बचने के लिए पूर्व पाकिस्तान के ईसाइयों में भगदड़—५० हजार से अधिक ईसाइयों का भारत में प्रवेश।" पूर्व पाकिस्तान में ईसाइयों पर ढाये गये जुल्म की कहानी को कालीसी और जर्मन अखबारों ने भी प्रमुखता देकर छापा।

पाकिस्तान बनने के बाद से ९० लाख शरणार्थी भारत आ चुके हैं। यह संख्या आस्ट्रेलिया की समूची आबादी से अधिक है। संसार में इससे ज्यादा शरणार्थियों का उल्लेख कहीं और कभी नहीं मिलता। सबसे बड़ी तादाद में निष्क्रमण करने वाले लोगों का इतिहास आर्मिनियनों, श्वेत रूसियों यहूदियों कोरियाइयों अरब वालों और हंगेरियनों का इतिहास है। लेकिन इन जातियों के सभी निष्क्रमणार्थियों की कुल संख्या से ज्यादा तादाद पाकिस्तान छोड़कर भागने वाले गैर मुस्लिम शरणार्थियों की है और आज भी लोग वहां से भाग रहे हैं।

भारत के विरुद्ध निराधार आरोप

पूर्व पाकिस्तान में, जबकि गैर मुस्लिमों को अपने-अपने घरों से धकेला जा रहा था, पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध यह निराधार आरोप लगाया कि वह असम और त्रिपुरा से मुसलमानों को निकाल रहा है। लेकिन असम और त्रिपुरा के १९६१ के जनसंख्या के आंकड़ों से मालूम होता है कि मुस्लिम आबादी में पहले की अपेक्षा और अधिक वृद्धि हो गई। यहां तक कि इन राज्यों के कुछ इलाकों और जिलों में ६० प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि हुई। वृद्धि की यह दर सामान्य जन्मवृद्धि दर से कहीं अधिक थी। इसलिए सारे इलाके का सर्वेक्षण किया गया और यह पाया गया कि पूर्व पाकिस्तान से बड़े पैमाने पर मुसलमान इन इलाकों में घुस आये हैं। असम में आने वाले मुसलमानों की संख्या २ लाख और त्रिपुरा में ५० हजार थी। इन परिस्थितियों के कारण विदेशियों के लिए बने कानून के अन्तर्गत इनको देश से बाहर निकालने की कारवाई की गई। प्रतिनिधियों को इस बात का पूरा मौका दिया गया कि अगर वे अपने प्रवेश को वैध साबित कर सकते हैं तो करें। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन परिस्थितियों में कोई भी सरकार जो कारवाई करती, वह भारत सरकार ने की। पाकिस्तान सरकार ने, इस तथ्य को भली-भांति जानते हुए भी कि उसके ही नागरिक पाकिस्तान छोड़कर भारत आ रहे हैं उलटे भारत पर यह आरोप लगाना शुरू किया कि वह भारतीय मुसलमानों को अपने देश से निकाल रहा है।

धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र

स्वाधीनता के बाद, भारतीय संविधान सभा ने भारत का संविधान बनाया और २६ जनवरी १९५० को इस पर अपनी स्वीकृति दी। संविधान ने भारत को सब प्रभुसत्ता सम्पन्न, धर्मनिरपेक्ष, लोकतन्त्रीय गणतन्त्र घोषित किया।

भारत का संविधान भारत के प्रत्येक नागरिक को पूर्ण स्वाधीनता और समानता की गारन्टी देता है। संविधान की धारा १४ १५ और १६ में स्पष्ट तौर पर वर्णित है कि—

१४ भारत राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से अथवा विधियों के समान संरक्षण से राज्य द्वारा वंचित नहीं किया जाएगा।

१५ (१) राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म मूलवंश, जाति, लिंग, जन्मस्थान अथवा इनमें से किसी के आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा।

१६. (१) राज्याधीन नौकरियों या पदों पर नियुक्ति के सम्बन्ध में सब नागरिकों के लिए अवसर की समता होगी।

(२) केवल धर्म मूलवंश, जाति, लिंग, उद्भव, जन्मस्थान निवास अथवा इनमें से किसी के आधार पर किसी नागरिक के लिए राज्याधीन किसी नौकरी या पद के विषय में न अपात्रता होगी और न विभेद किया जाएगा।

इस प्रकार भारत लोकतन्त्रीय प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। स्वाधीनता के बाद वयस्क मताधिकार के आधार पर भारत में तीन आम चुनाव हो चुके हैं। एशिया की हंगामी राजनीति में जहां पर कि अनेक देशों में लोकतन्त्र के स्थान पर सैनिक या अन्य प्रकार के तानाशाही शासन स्थापित हुए हैं, भारत की लोकतन्त्रीय शासन प्रणाली की सफलता आशा का प्रकाश स्तम्भ बनी हुई है। इन विक्षोभकारी घटनाचक्रों में पाकिस्तान में संसदीय लोकतन्त्र की असफलता और सैनिक शासन की स्थापना और बाद में उसके बहुत सीमित रूप में 'बेसिक डमोक्रेसी' के रूप में परिणत होना एक उल्लेखनीय घटना है। १९४७ में पाकिस्तान बनने के बाद से अब तक वहां वयस्क मताधिकार के आधार पर कोई आम चुनाव नहीं हुआ।

पाकिस्तान का इस्लामी संविधान

पाकिस्तान की भी एक संविधान सभा थी, जिसने देश का संविधान बनाया। इसके एक अनुच्छेद में लिखा है—

"(२) जब तो में उल्लिखित व्यवस्था के रहते हुए भी प्रेसिडन्ट के चुनाव के लिए कोई व्यक्ति तब तक उम्मीदवार खड़ा नहीं हो सकता जब तक कि वह मुसलमान न हो" (अनुच्छेद ३२)

बाद में, जब पाकिस्तान में संसदीय शासन प्रणाली का अन्त हो गया और उसके स्थान पर सैनिक शासन कायम हुआ, वहां एक नया संविधान लागू हुआ। इसके अनुसार पाकिस्तान को अनुत्तरदायी प्रेसिडन्ट शासन पद्धति के अन्तर्गत बेसिक डमोक्रेसी घोषित किया गया। नए संविधान के अन्तर्गत प्रेसिडन्ट का चुनाव निर्वाचन मण्डल द्वारा होता है, परन्तु उसके चुनाव में खड़ा होने के लिए उसके मुसलमान होने की अनिवार्य शर्त अब भी कायम है। नए संविधान की एलान पहली मार्च १९६२ को किया गया, जो अब भी जारी है। संविधान की यह व्यवस्था गैर मुसलमों को मुसलमानों से अलग करती है और मुसलमानों की अपेक्षा उनको निचले दर्जे का नागरिक समझती है।

धर्मान्ध विचारधारा

पाकिस्तान की कल्पना धर्मान्ध के जिस विचार से की गई, और जिसका अब भी वहां पोषण हो रहा है, उसके अन्तर्गत वहां अल्पसंख्यकों के प्रति उपेक्षा और उदासीनता की भावना होना स्वाभाविक है। शुरू शुरू में पाकिस्तान बनाने का विचार एक मुस्लिम लीगी नेता चौधरी रहमतअली ने व्यक्त किया था। उन्होंने अपनी पुस्तक मिल्लत और उसका मिशन में भावी पाकिस्तान की रूपरेखा बताते हुए स्पष्ट शब्दों में यह बताया था कि वहां अल्पसंख्यकों का क्या स्थान होगा? उन्होंने लिखा था—

अल्प संख्यक न रहने दीजिए—

अर्थात् हमें हिन्दू मुल्क में अपने अल्पसंख्यक नहीं रहने देने चाहिए। यहां तक कि अगर हिन्दू और ब्रिटिश उन्हें तथाकथित संवैधानिक सुरक्षा की गारन्टी देने को भी तैयार हों, तब भी नहीं, क्योंकि सुरक्षा की कोई भी गारन्टी राष्ट्रीयता का स्थान नहीं ले सकती जो उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। हमें अपने प्रदेश में हिन्दू और या सिख अल्पसंख्यक रखने नहीं चाहिए, चाहे वे कितने ही व्यापक, विशेष रियायतों के साथ या बिना रियायतों के हमारे साथ रहने के इच्छुक हों क्योंकि वे कभी भी हमारे नहीं हो सकते। वे सामान्य दिनों में हमारे राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में जहां बाधक सिद्ध होंगे, वहां संकट के

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥६॥
ऋ० १।१।२।१

अर्थ—हे "अङ्ग" मित्र ! जो आपको आत्मादि दान करता है, उसको "भद्रम्" व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख अवश्य देते हो, हे "अङ्गिरः" प्राणप्रिय ! यह आपका सत्यव्रत है कि स्वभक्तों को परमानन्द देना, यही आपका स्वभाव हमको अत्यन्त सुखकारक है कि व्यावहारिक और पारमार्थिक इन दोनों सुखों का दान शीघ्र दीजिये जिससे हम सुखी हुए हों । हमको सदा सुख ही रहे ।—आर्याभिविनयः

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस
वार्षिकोत्सव १८, १९, २० फरवरी १९६६

प्रसिद्ध आर्य स्त्री शिक्षा संस्था कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस का आगामी वार्षिकोत्सव १८, १९, २० फरवरी ६६ को समारोहपूर्वक सम्पन्न होगा । रक्षामन्त्री श्री यशवन्तराव चह्वाण नव स्नातिकाओं को २० फरवरी को दीक्षान्त भाषण देंगे ।

—अभयकुमारी शास्त्री आचार्या मुख्याधिष्ठात्री

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार २३ जनवरी १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसम्वत् १,९७,२९,४९,०६६

आर्य विद्वान् एवं नेता श्री पं० गङ्गाप्रसाद एम.ए. जज का निधन

आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता एवं विद्वान् श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० जज अब हमारे मध्य नहीं रहे इस समाचार से समस्त आर्य-जगत् शोक-संतप्त है । श्री जज साहब का आर्यसमाज के साथ अभिन्न सम्बन्ध था । आपने अपनी विद्वत्ता एवं कर्मठता से आर्यसमाज के मिशन और संगठन को आगे बढ़ाने में जो महत्वपूर्ण सहयोग दिया वह ऐतिहासिक और स्मरणीय रहेगा ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान के रूप में आपने आर्यसमाज का सर्वोच्च पद सुशोभित किया और सभा को सुदृढ़ एवं प्रगतिशील बनाने में सहयोग दिया ।

आर्यसमाज के वर्णव्यवस्था सिद्धान्त के आप सक्रिय समर्थक रहे आपके परिवार में कई अन्तरजातीय विवाह हुए । आपके ही सुझाव पर जाति भेद निवारक आर्य परिवार संघ का निर्माण किया गया जिसके आप कई वर्ष तक प्रधान रहे और अपने जाति भेद निवारण की दिशा में अनेक आर्य परिवारों को सक्रिय प्रेरणायें दीं ।

ब्रह्मचर्याश्रम ज्वालापुर और नारायण आश्रम रामगढ़ में आपने वर्षों निवास कर स्वयं अध्यात्म साधना की तथा अन्यों को भी शिक्षा दी, योगिराज अरविन्द की योग साधना से भी आप प्रभावित हुए और पाण्डुचेरी में अरविन्दाश्रम में रहकर अध्यात्म साधना करते रहे । अध्यात्म जिज्ञासु के साथ साथ आप सामाजिक जीवन और साहित्य साधना में भी संलग्न रहे ।

रामगढ़ (नैनीताल) में नारायण स्वामी हाईस्कूल के अध्यक्ष रूप में आपने पर्वतीय क्षेत्र में शैक्षणिक वातावरण का स्थायी कार्य किया ।

टेहरी राज्य में न्यायाधीश पद पर रहते हुए आपने राज्य की सामाजिक कुप्रथाओं के उन्मूलन एवं राज्य के आदर्श विकास में महत्वपूर्ण योग दिया । टेहरी आर्यसमाज के लिये आपने एक विशेष धनराशि भी सार्वदेशिक सभा में दान रूप में जमा करायी थी जिससे उस क्षेत्र में प्रचार कराया जावे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से आपका घनिष्ठ आत्मीय सम्बन्ध रहा, सभा की प्रमुख शिक्षा संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के आचार्य मुख्याधिष्ठाता रूप में आपने अपना जो विशेष योगदान दिया उसके लिये यह सभा और आर्य-जगत् सदैव कृतज्ञ रहेंगे ।

आर्यमित्र के प्रति आपका स्नेह और आशीर्वाद उल्लेखनीय था । आपकी लेखनी मित्र के लिए अविराम गति से लिखती रही, इतना अधिक लिखते थे कि मित्र को कठिनाई पड़ जाती थी पर आपका स्नेह सदैव बना रहा और आप मित्र के शुभचिन्तक बने रहे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर १९५९ में आपको अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट कर सम्मानित किया था । आपका यह सम्मान आर्यजगत् में एक विशेष महत्व की घटना थी ।

एक आदर्श आर्य, आध्यात्मिक, संयमी, कर्मठ एवं विद्वान् व्यक्तित्व के रूप में आप ९५ वर्ष की आयु तक हमारे मध्य रहे । आपके दीर्घ जीवन से हम लोग प्रेरणा प्राप्त करते रहेंगे । उनके निधन से आर्यसमाज का अमूल्य रत्न छिन गया जिसकी पूर्ति सम्भव न होगी । इस शोकावसर पर आर्यजगत्, सभा एवं मित्र परिवार की ओर से हम शोक संतप्त परिवारकों के प्रति हार्दिक शोक समवेदना प्रकट करते हैं और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं । उस महात्मा के प्रति हम श्रद्धावनत हैं ।

कुम्भ मेले में आर्यसमाज का प्रचार

प्रयाग में कुम्भ हो रहा है । सारे हिन्दु समाज में कुम्भ का जोर-शोर है । कुम्भ मेला भारत का प्राचीन मेला है । इस प्रकार के मेलों का राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से प्राचीन समय से महत्व रहा है परन्तु पिछले काफी समय से कुम्भ सामाजिक और राष्ट्रीय महत्व की आकांक्षाओं को पूर्ण नहीं कर रहा है । केवल अन्धविश्वास के नाम पर लाखों व्यक्ति गंगा में डुबकी लगाने पहुंच रहे हैं । शिक्षित और स्वस्थ भारत समाज में इन अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचार होना चाहिए । महर्षि दयानन्द ने कुम्भ मेले को पाखण्ड-खण्डन का आधार बनाया था ।

आर्यसमाज कुम्भ मेलों में अपने शिविर लगाकर वेद प्रचार और समाज सुधार का सन्देश देता रहा है । प्रयाग कुम्भ में भी आर्यसमाज की ओर से जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा प्रयाग आर्यसमाज शिविर का संचालन कर रही है । आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा दिल्ली की ओर से भी उपसभा के शिविर को पूर्ण सहयोग दिया जा रहा है । आर्य उपदेशकों, प्रचारकों एवं विद्वानों को पाखण्ड खण्डन करके अन्धविश्वासों को भगाकर शुद्ध वैदिक भारतीय आध्यात्मिक जीवनधारा का प्रचार करना चाहिए । आशा है आर्यसमाज शिविर अपने प्रचार कार्य में सफल होगा ।

जनरल निम्मो का निधन

काश्मीर में संयुक्तराष्ट्र दल के नेता जनरल निम्मो का आकस्मिक निधन हो गया ।

जनरल निम्मो ने काश्मीर में एक निष्पक्ष निरीक्षक के रूप में जो कार्य किया और पाकिस्तान के घुसपैठियों के विरुद्ध संयुक्तराष्ट्र संघ को जो प्रतिवेदन दिया उसके लिए भारत उनका सदैव ऋणी और प्रशंसक रहेगा ।

जनरल निम्मो शान्तिदूत के रूप में सफल रहे उनका योगदान विश्व इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा । हम भारतीय जनता की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

नयी कांग्रेसी प्रधानमंत्री

श्रीमती इंदिरा गांधी कांग्रेस संसदीय दल की नेता निर्वाचित हुईं । वह शीघ्र ही प्रधान मन्त्री पद की शपथ ग्रहण करेंगी ।

ऋषि भक्त श्री टी. एल. वास्वानी का देहावसान

श्री टी० एल० वास्वानी का ८७ वर्ष की वृद्धावस्था में पूना में स्वर्गवास हो गया । वे एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री विचारक और लेखक थे । आपने भारतीय चेतना को जागृत करने में विशेष सहयोग दिया । महर्षि दयानन्द जन्म-शताब्दी के अवसर पर महर्षि दयानन्द को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए टार्च बियरर (पथ प्रदीप) नाम पुस्तक लिखी । इस पुस्तक ने अगणित भारतीय नवयुवकों तक महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश पहुंचाया । आपके निधन से एक सच्चा ऋषि भक्त, भारत का शुभचिन्तक एवं विद्वान् व्याख्याता हमारे मध्य से उठ गया । हम प्रभु से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलियां अर्पित करते हैं ।

★

स्व. श्री गङ्गाप्रसाद एम.ए. (जज साहब) का साहित्य

१—ज्योतिश्चन्द्रिका हिन्दी
२—मनुष्य समाज अं० हि०
३—सुख सप्ताह वचन अं० हि०
४—जीवन की समस्यायें अं० हि०
५—विश्व की समस्याएं "
६—जाति भेद "
७—धर्म का आदि स्रोत अं० हि० उ०
८—पञ्च कोष सूक्ष्म जगत अं० हि०
९—केन उपनिषद् अं० हि०
१०—कठ उपनिषद् "
११—वैदिक धर्म और विकास हि०
१२—आत्मकथा हि०

विविध लेख आर्यमित्र आदि पत्रों में और भाषण समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं । आर्य साहित्य के निर्माण में जज साहब का सहयोग सदैव प्रेरणाप्रद एवं अनुकरणीय रहेगा ।

—सम्पादक "आर्यमित्र"

महाभारत और उसके पश्चात्-१७

[श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

स्वामी दयानन्द के सुधारों में एक बहुत बड़ी विशेषता है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह विशेषता है "दार्शनिक समन्वय"। वैदिक साहित्य में षड्दर्शन (छ दर्शन) प्रसिद्ध हैं। (१) न्याय (२) वैशेषिक (३) सांख्य (४) योग (५) जैमिनि दर्शन या पूर्व मीमांसा (६) वेदान्त या उत्तर मीमांसा। अंग्रेजी में इनको "फिलास्फी के ६-स्कूल' (सिक्स स्कूल्स आफ हिन्दू फिलास्फी) कहते हैं। 'स्कूल' अंग्रेजी शब्द है जिसका अर्थ है सम्प्रदाय प्रसिद्ध तो यही है कि हिन्दुओं के दर्शनों के ६ सम्प्रदाय हैं। जो परस्पर ऐक्य नहीं रखते। (अर्थात भिन्न भिन्न हैं।) सांख्य दर्शन के लिए यही धारणा है कि वह अनीश्वरवादी है। योग दर्शन के लिए कहा जाता है कि वह सांख्य से मिलता जुलता है। परन्तु यह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है, न्याय और वैशेषिक भौतिकवादी माने जाते हैं। मीमांसा के लिए प्रसिद्ध है कि वह वेदों को तो मानता है परन्तु ईश्वर अस्तित्व को नहीं। वेदान्त के लिए प्रसिद्ध है कि वह जगत के अस्तित्व को असत्य या मिथ्या मानता है। और 'ब्रह्म' के अतिरिक्त किसी अन्य पदार्थ की नित्यता को स्वीकार नहीं करता। वेदान्त की दृष्टि में 'ब्रह्म' ही नित्य अर्थात अनादि और अनन्त है। आरम्भ के पश्चात और अन्त के पूर्व जो कुछ दृश्य है वह सब वास्तविक अस्तित्व नहीं रखता। इसका अस्तित्व कल्पना-जन्य है। इसी का नाम 'माया' है।

स्वामी शंकराचार्य वैदिक धर्म के बहुत बड़े सुधारक थे। परन्तु उन्होंने वेदान्त दर्शन का भाष्य करते हुए शेष पांच दर्शनों की बड़ी कठोर आलोचना की है और स्थान स्थान पर उनके आचार्यों के लिए अप शब्दों का प्रयोग किया है। स्वामी शंकराचार्य के पश्चात इन दर्शनों का परस्पर विरोध इतना बढ़ गया कि कई दलों या सम्प्रदायों की ओर से एक दूसरे के विरुद्ध बहुत बड़ा साहित्य बन गया। और आप सुगमता से समझ सकते हैं कि गुरु तो गुड़ रहे चेले शक्कर हो गये।

पीरां न मे परन्द मुरीदा मे परानन्द।

अर्थात् गुरु तो स्वयं उड़ते नहीं, चेले उनको उड़ाते हैं। जहां आचार्य लोग नहीं पहुंचना चाहते या पहुंच पाते वहां चेले उनको पहुंचा देते हैं। सम्प्रदायों का सूत्रपात शायद आचार्यों की ओर से ही हुआ हो, परन्तु उनकी सम्पुष्टि तो शिष्यों के द्वारा ही होती है। और इस सम्बन्ध में जितना कार्य स्वामी शंकराचार्य के शिष्यों ने किया है उतना किसी ने नहीं किया। स्वामी शंकराचार्य स्वयं प्रकाण्ड विद्वान् और संस्कृत भाषा के उद्भट पण्डित थे। उनके शिष्य भी वैसे ही हुये और उन्होंने बाल की खाल निकालने का काम अपने हाथ में लिया और दर्शन क्षेत्र को विस्तृत और प्रभावशाली बना दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि सर्वसाधारण को स्वयं निश्चय करना कठिन हो गया और विद्वन्मण्डली में यह विख्यात हो गया कि जब वैदिक धर्म को मानने वाले दर्शनाचार्य ही एक दूसरे से मेल नहीं खाते तो दूसरे उच्चवर्णीय सम्प्रदाय कैसे समन्वित हो सकते हैं। इस बात ने हिन्दू धर्म के टुकड़े टुकड़े कर दिये। बहुत से लोग जिन्होंने न्याय दर्शन का अध्ययन किया नास्तिक हो गये। और बहुत से जिन्होंने वेदान्त दर्शन का मनन किया, वेद शास्त्रों को भी अविद्या और अविद्या मूलक मानने लगे।

स्वामी दयानन्द ने ६ दर्शनों का अध्ययन करके एक नई बात निकाली। जो पहले कभी सुनी नहीं गई थी और जिसकी ओर भारतीय या विदेशी विद्वानों का ध्यान नहीं था।

उन्होंने पहली बात तो यह बताई कि छओं दर्शन वेदों को ईश्वरीय ज्ञान या स्वतः प्रमाण मानते हैं। यह सबसे बड़ी सचाई है जो उन्होंने वर्णन की। इन दर्शनों में ऐसे सूत्र मिलते हैं जिनसे उनका वेदानुकूल होना सिद्ध होता है "मीमांसा" तो कहता ही यह है कि—

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम'

जो वेद में है वही धर्म है जो धर्म है वही वैदिक है। जो वेदानुकूल नहीं वह धर्म नहीं। धर्म की एक ही कसौटी है। वह यह कि वह वेदों के अनुकूल हो। वेदान्त में तो ब्रह्म को शास्त्र की योनि "शास्त्र योनित्वात्" माना है।

यदि यह बात सच है तो छओं दर्शन परस्पर समन्वित हो जाते हैं। और यदि कुछ भिन्नता दृष्ट भी होती है तो वह गौण या प्रतीति मात्र है। गुलाब के एक ही पेड़ से दो भिन्न गुलाब के फूल हो सकते हैं परन्तु वह दोनों होंगे गुलाब ही। उनके गुण भी समान होंगे उनमें विरोध न होगा। उनकी भिन्नता का भी कोई विशेष अर्थ होगा।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में एक स्थल पर इसी प्रश्न की विवेचना की है कि क्या ६ दर्शनों के मन्तव्यों में विरोध है।

वह कहते हैं कि सैद्धान्तिक रूप से छओं दर्शन एक हैं उनमें कोई भेद नहीं। केवल वर्णनशैली या दृष्टिकोण में भिन्नता है। इसका एक दृष्टान्त लीजिये—

यदि कोई वनस्पति शास्त्र के आचार्य दो ग्रन्थों का निर्माण कर एक का विषय हो "फूल" और दूसरे का 'फल'। तो उनका दृष्टिकोण भी एक न होगा और शैली भी भिन्न-भिन्न होगी। परन्तु यतः फल और फूल दोनों अपने जीवन-रस को एक ही उद्गम से प्राप्त करते हैं अर्थात मूल अतः मौलिक विषयों में दोनों सम होंगे। यदि एक तीसरा ग्रन्थकार तीसरे भिन्न विषय अर्थात 'पत्थर' पर पुस्तक लिखे तो वह ग्रन्थ फूल वाले ग्रन्थ से अधिक असमान होगा।

इसी प्रकार यद्यपि छ दर्शनों के अतिरिक्त वैदिक साहित्य की असंख्य पुस्तकें हैं जैसे छन्द ज्योतिष इत्यादि। परन्तु वेदान्त और मीमांसा, वेदान्त और न्याय एक दूसरे के अधिक समान हैं छन्द की अपेक्षा।

दूसरी बात स्वामी दयानन्द ने यह बताई कि यदि सभी दर्शन वेदों को स्वतः प्रमाण मानते हैं तो वह ईश्वर के अस्तित्व का कैसे निषेध कर सकते हैं। क्योंकि वेदों की मान्यता का अर्थ ही यह है कि वेदों के रचयिता ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया जाय। क्या कोई ऐसा भी पुरुष होगा जो शेक्सपियर या कालिदास के ग्रन्थों को स्वीकार करे और इन दोनों कवियों के अस्तित्व का निषेध करे।

स्वामी दयानन्द का कथन है कि सृष्टि की रचना में तो कई प्रश्नों का सम्बन्ध है। आप किसी बनी हुई वस्तु को लीजिये। मैं जिस मेज पर बैठा लिख रहा हूं इसके विषय में कई प्रश्न उठ सकते हैं। इनके उत्तर भी भिन्न भिन्न होंगे परन्तु परस्पर विरुद्ध नहीं।

मेज किसने बनाई? किस चीज से बनाई? कब बनाई? कितने समय में बनाई? किसलिये बनाई? क्या इस मेज के अतिरिक्त भी कोई और पदार्थ हैं? और उन पदार्थों के का इस मेज से क्या सम्बन्ध है? इन सब प्रश्नों के उत्तर एक तो हो नहीं सकते। परन्तु परस्पर विरोधी न होंगे। इसी प्रकार वेदान्त दर्शन में विशेषतः एक प्रश्न उठाया? अर्थात ब्रह्म क्या है? और इसका यह उत्तर दिया कि ब्रह्म वह है जिससे सृष्टि की रचना, पालन और लय होता है।

'जन्माद्यस्य यत:'

यह सूत्र लिखकर इसी की मीमांसा की गई। और जब ऊहापोह आरम्भ हो गया तो अन्य प्रश्नों पर भी गौण रीति से प्रकाश डाला गया।

जैसे ईश्वर उपादान कारण है अथवा निमित्त कारण? और क्या कोई अन्य पदार्थ भी अस्तित्व रखते हैं जिनके कारण ब्रह्म जिज्ञासा आवश्यक समझी गई? लोग समझते हैं कि वेदान्त दर्शन में जीव और प्रकृति का अलग अस्तित्व स्वीकार नहीं किया गया? यह धारणा कितनी भ्रांतिपूर्ण है। सूत्रकार ऋषि व्यास ने तो पहले ही सूत्र में लिख दिया कि हमको ब्रह्म की जिज्ञासा' और ज्ञान की इच्छा है? ब्रह्म ज्ञान की इच्छा उसी की होगी जो ब्रह्म न हो अपितु ब्रह्म से सम्बन्ध रखता हो। यदि केवल एकमात्र सत्ता ब्रह्म ही होती और ब्रह्म से इतर कोई सत्ता होती ही न, तो ब्रह्म जिज्ञासा का प्रश्न ही न उठता। न बांस होता न बांसुरी। पहला सूत्र ही यह बताता है कि जगत में कुछ ऐसी सत्तायें भी हैं जो ब्रह्म तो नहीं हैं परन्तु ब्रह्म से सम्बन्ध रखती हैं और उनके विषय में अनेक मिथ्यावाद उत्पन्न हो जाते हैं। इसके लिये उनको बुद्धि की कसौटी पर परीक्षा करने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार जब वैशेषिक दर्शन ने केवल अग्नि, वायु, आकाश, पृथिवी, जल तत्वों का उल्लेख किया तो महर्षि कणाद को जगत के उपादान कारण की मीमांसा करनी थी। उन्होंने ब्रह्म की उपेक्षा नहीं की, न वेदों की जब हम कहते हैं कि नाक कान मिट्टी के लोथड़े हैं और मृत्यु के पश्चात मिट्टी में मिल जायगे तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि मेरे जीवन में मेरी नाक या कान का मेरी जीवात्मा से कोई सम्बन्ध नहीं। आंख भौतिक है परन्तु आंख का प्रयोग भौतिक नहीं। आंख से मैं देखता हूं। आंख स्वयं नहीं देखती, इस प्रकार हर-

(शेष पृष्ठ १३ पर)

वेद-विवेचन

शिव-संकल्प

तन्मे मनः शिव सकल्पमस्तु ।

यजु० ३४।१

मेरा चचल मन शिव सकल्पो वाला हो ।

★

मन के स्वरूप और उसकी प्रवृत्तियों का चित्रण वेद के कई सन्दर्भों मे किया गया है। मन एक प्रबल शक्ति है। मन को ही अन्तःकरण भी कहते हैं। मन बुद्धि चित्त और अहकार इन चार [illegible] ने भी [illegible] हो मनस्तत्त्व का विवेचन और प्रावशासन [illegible] किया है। मन बड़ा चचल है। मन का [illegible] के लिये प्रत्येक मनुष्य का सर्वोपरि कर्तव्य है। अभ्यास और वैराग्य के द्वारा इस कठिन कार्य मे सफलता का मिलना सम्भव है। जो मोले !

> जब तलक तू हाथ मे मन का न मनका लायेगा ।
> तब तलक इस काठ की माला से क्या फल पायेगा ।।

एवमेव—

> माला तो कर मे फिरे और जिह्वा मुख माहि ।
> मनुआ तो चहु दिशि फिरे यह तो सिमरन नाहि ।।

वेद शिव सकल्प-सूक्त एक अत्यन्त उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक गीत है। इस गीत की [illegible] की टेक— तन्मे मन [illegible] सकल्पमस्तु । यह है। मन के स्वरूप [illegible] स्वभाव का [illegible] पारमार्थिक वैज्ञानिक और सूक्ष्म [illegible] इस सूक्त मे किया गया है। जितना [illegible] तत्त्व इस एक छोटे से सूक्त मे है उतना मनोविज्ञान के बड़े बड़े ग्रन्थ मे भी नहीं है।

अपने मन को सदा ही शिव सकल्पो से परिपूर्ण रखो। किसी भी प्रकार का दुर्विचार अथवा अशुभ विचार मत करो। मनुष्य जो कुछ मन से सोचता है वही वाणी से बोलता है। जो कुछ वाणी से बोलता है, वही कर्म से करता है। जो कुछ कर्म से करता है वही [illegible] के आगे आता है। [illegible] कर्म भी तो कर्म ही है। शुभ कर्मों का फल शुभ होता है, अशुभ कर्मों का अशुभ।

> करनी करे तो फल मरे, करके क्यो पछिताये ।
> बोये पेड बबूल के आम कहा ते खाये ।।

मन [illegible] मनुष्य [illegible] का मूल है। यज्ञो की सफलता सकल्प से ही सम्भव होती है। व्रत नियम, यज्ञ और सभी शुभ कार्य सकल्प से ही पूर्ण होते हैं।'

सकल्प की उच्चता पवित्रता, सात्विकता, सत्यता, सुन्दरता, विश्व कल्याण [illegible] की अवहेलना या उपेक्षा कभी थोडी सी भी न की जाये। शिव सकल्पों से [illegible] जीवन को सुखी [illegible], [illegible] दुःख और नाना प्रकार के [illegible] परिणाम स्वरूप जो दुःख [illegible] हो जाती हैं उनका निवारण और परिमार्जन सहज [illegible] है।

[illegible] करने वाला [illegible] वत [illegible] मन [illegible] वृढता [illegible] चाहिए जिनसे मन मे किसी प्रकार [illegible] कायरता, चिन्ता और विभीषिका का सचार न होने पाये। मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

—साधु सोमतीर्थ

दिव्य-दैवी-देवियाँ

[प्रश्नोत्तरी]

[प्रो किशोरीलाल गुप्त एम ए, सिद्धांत शास्त्री साहित्य वाचस्पति, काव्य तीर्थ]

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवी मयोभुवः। बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः ।।

(ऋ० म०सू० २४ म० ९)

शि०—देवी माता कालिका, चामुंडा क्या हैं इनकी ग्रामो मे बडी पूजा और मान्यता होती है और विशेषतया स्त्रियो द्वारा।

गु० तुम्ही बताओ, तुम क्या समझे बैठे हो ?

शि०—हम तो यह समझे बैठे हैं कि कहीं देव रहते होंगे, उन्हीं की ये सब स्त्रियाँ हैं।

गु०—तुम्हारी समझ मे ये देव लोग कहा रहते होंगे ?

शि०—पृथ्वी पर तो दिखायी नहीं देते [illegible] आकाश मे रहते होंगे।

गु०—अरे [illegible] आकाश तो खाली स्थान है उस पर रहने के लिये घर मकान नहीं बन सकते।

शि०—[illegible] स्वर्ग कहाँ है ? देव लोग कहा रहते हैं ? [illegible] उनके राजा रानी इन्द्र और इन्द्राणी के रहने के राज महल कैसे बन गये ?

गु०—पागल हो गये हो। कहीं आकाश मे महल खडे हो सकते हैं। आगे चलकर जब तुम बडी कक्षाओ मे पहुच कर साइन्स (विज्ञान) पढ़ोगे तब तुम समझोगे कि ये सब ढकोसले मात्र हैं। यदि साहित्यक भाषा मे कहें, तो ये सब आलङ्कारिक वर्णन हैं जो आगे [illegible] तुमने महर्षि दयानन्द का नाम तो सुना ही होगा। उनकी लिखी अगम प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थप्रकाश को पढो। साधारण हिंदी मे लिखी गयी है। उसके पढने से तुम्हारे बहुत से भ्रम [illegible] जावेंगे।

शि०—[illegible] उसे भी पढूँगे। [illegible] प्रकाश डालने की कृपा कर।

गु०—[illegible] और ध्यान से सुनो। सृष्टि के रचयिता जगदीश्वर ने पहले [illegible] की रचना की फिर घास पात फल फूल वनस्पति और तदनन्तर जीव जन्तु प्राण-धारियो को रचा।

शि०—ये देव कौन ? इन्ही को तो जानना चाहते हैं ?

गु०—ठीक ! इनको भी बताते हैं—सूर्य, चन्द्र पवन जल, अग्नि, आकाश, नदी-पर्वत, माता-पिता गुरु उपदेशकादि सभी उपयोगी पदार्थ जिनको देवों के देव "महादेव" ने रचा 'देव' हैं।

शि०—क्या कहा गुरु जी ? महादेव' ने तो सृष्टि नहीं रची। उसे तो सब, प्रलयकारी और सहार करने वाला बताते हैं। पडित लोग तो 'ब्रह्मा" से सृष्टि की रचना हुई बताते हैं और पालन कर्ता विष्णु" को बताते हैं।

गु०—हाँ भया ! वे पडित नहीं, मेंढक के भया लकर धोखा हैं। सृष्टि की रचना सरक्षण एव सहार एक ही अद्वितीय 'ब्रह्म' द्वारा सम्पादित होते हैं। [illegible] भी उसे व हिद-लाशरीक' कहते हैं। वह वाहिद" है अकेला है उसका कोई शरीक साझी नहीं। तीनो कार्य वह अकेला ही करता है। इसलिये तीन मुख्य नाम है। वैसे वह अनन्त गुण वाला है। इसी से उसके अनन्त नाम भी हैं। महर्षि वेदव्यास ने अपना रचा महाभारत मे विष्णु के एक सहस्रनाम गिनाए हैं। वे नाम पुस्तक रूप मे भी छपे हैं जिसे "विष्णु सहस्रनाम' का नाम दिया गया है और जिसका पाठ वैष्णव सम्प्रदाय के लोग नित्य करते हैं। विष्णु' शब्द का अर्थ है—विश्व व्यापक सर्वान्तर यामी। और वह एक है तीन या हजार नहीं।

शि०—अच्छा ! यह तो हुए देव और महादेव तो क्या देवी और महादेवी इन ही की कोई स्त्रियाँ हैं ? दिखाई तो कोई देती नहीं।

(१) इडा (२) सरस्वती (३) मही। मंत्र मे ये हैं "मयो भुव" बताया गया है। मयः का अर्थ है—सुख, कल्याण। अतः मयोभुव' का अर्थ हुआ जो देवियाँ जिनसे [illegible] मन सुख-कल्याण होता है जो जगन्नियन्ता की एक मात्र आधार है।

शि०—वो कौन ?

गु०—वह है—वैदिक कोष बताते हैं—इय पृथवी वै इडा। यह पृथिवी ही 'इडा' है। यह पृथवी विश्वम्भरा-मा [illegible] की प्रति मूर्ति है, शिव का

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्री पं० गंगाप्रसाद जी

(रिटायर्ड चीफ जज)

(श्री डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए० डी० फिल)

श्री पं० गंगाप्रसाद जी का जन्म सं० १९२८ वि० के वैशाख बुदी ३ अक्षय तृतीया के दिन अर्थात् सन १८७१ ई० के मई मास में मेरठ नगर के मुहल्ला अंदर कोट में हुआ था। आपके पिता का नाम लाला रामदास और माता का नाम श्रीमती सुखदेवी था। पितामह का नाम लाला फकीरचन्द था। वे कपड़े का व्यवसाय करते थे जिससे साधारण रूप से घर का निर्वाह हो जाता था। आप की जन्मगत बिरादरी रस्तोगी थी।

आपकी शिक्षा का आरम्भ ७ वर्ष की आयु में एक छोटी सी पाठशाला में हुआ जहां मुड़िया हिन्दी साधारण गणित आदि की पढ़ाई होती थी। आठ वर्ष की आयु में आप गवर्नमेण्ट हाई स्कूल में भरती हो गये। आपके बाबा आर्यसमाज के सभासद थे। उनके प्रभाव से आप कुछ मन्त्रादि भी कण्ठ करते थे। विशिष्ट स्मृति शक्ति के साथ साथ आप पढ़ने लिखने में भी तेज थे। सन १८८५ में विशेष योग्यता के साथ हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की।

आर्यसमाजी परिवार में रहते हुए भी लोक प्रथा के अनुसार आप का विवाह १२ वर्ष की आयु में ही हो गया। पत्नी का नाम श्रीमती नारायणदेवी था। उन का देहान्त सं० १९५५ में हो गया। सं० १९५७ में आपका दूसरा विवाह श्रीमती प्रेमदेवी जी के साथ हुआ।

आर्यसमाज की दीक्षा

बचपन से ही आप में धार्मिक पूजा पाठ की ओर देव दर्शनार्थ शिव मंदिर में जाने की प्रवृत्ति थी पर अपने दादा जी के सहवास से आपने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा और आप एक मूर्त्तिपूजक से आर्यसमाजी बनकर आर्यसमाज के सत्संगों में जाने लगे। इस बढ़ते हुए अनुराग के कारण आपने सं० १९४३ में अपने ही घर पर एक आर्य डिबेटिंग क्लब की स्थापना की। वही आर्यकुमार सभा के नाम से अब तक चल रहा है। बाल सभा के रूप की यह आर्यसमाज की पहली संस्था थी।

इस छोटी-सी अवस्था में ही आपको आर्यसमाज के प्रचार की गहरी लगन थी। सत्यार्थप्रकाश का बहुत सा भाग कण्ठ करने के साथ साथ आपने उस समय का आर्यसमाज का साहित्य भी कुछ न कुछ पढ़ लिया था। छात्रों के साथ आर्यसमाज के सम्बन्ध में आपका वार्तालाप और वाद विवाद चलता रहता था।

कालेज की शिक्षा के साथ साथ आर्यसमाज का कार्य

सं० १९४४ से सं० १९५० (सन् १८८७-१८९३ ई०) तक आपकी आगरा कालेज आगरा में शिक्षा हुई और विशिष्ट योग्यता के साथ आपने एफ० ए० से एम०ए० तक की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। बी०ए० में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी भर में आपका दूसरा नम्बर था।

स्वर्गीय श्री गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज

बी०ए० के बाद ही आप कठिन रोग से ग्रस्त हो गये। डाक्टर ने क्षय रोग का आरम्भ बतलाया। एक वर्ष अध्ययन छोड़कर इलाज कराना पड़ा। स्वभावतः दुर्बल शरीर पर इसका स्थायी प्रभाव पड़ा। कई वर्षों तक आप काफी अस्वस्थ अवस्था में रहे पर युक्ताहार विहार की शिक्षा सदा के लिए इससे मिली। उसी शिक्षा के पालन से आप 'जीवेम शरदः शतम्' इस वैदिक आदर्श का अनुसरण अब तक (लगभग ९७ वर्ष की अवस्था तक) करते रहे।

इस कालेज शिक्षा के समय में आप की आर्यसमाज के प्रति अदम्य लगन को कार्य रूप में आने का अनोखा अवसर मिला। उसी के फलस्वरूप आप खुली सभाओं में शंकराचार्य जैसे विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करने में समर्थ हुए और विभिन्न नगरों में जाकर जनता में व्याख्यान भी देने लगे।

आगरा पहुंचते ही आपने वहां आर्यमित्रसभा की स्थापना की जो अब तक जीवित है और जिसके द्वारा वहाँ कालेजों के छात्रों में आर्यसमाज प्रचार का बड़ा काम सतत होता रहा है।

यह स्मरण रखने की बात है कि मेरठ से ही आपके अनन्य मित्र स्वर्गीय पं० घासीराम एम० ए० ने बराबर आपके उक्त आर्यसमाज के कार्यों में हाथ बटाया था।

आर्यसमाज आगरा के मंदिर के निर्माण में भी आप एक प्रमुख हेतु थे।

आगरे में बी० ए० के विद्यार्थी होते हुए भी आपकी प्रथम विशिष्ट पुस्तक 'ज्योतिश्चन्द्रिका' प्रकाशित हुई थी, जिसका विवरण आपकी पुस्तकों के प्रसंग में किया जायगा।

मेरठ कालेज में प्राफेसरी तथा आर्यसमाज की सेवा

सन १८९३ सं० १९५० में आपकी नियुक्ति मेरठ कालेज में अंग्रेजी भाषा के प्रोफेसर के रूप में हुई। साथ में लाजिक (logic) और इतिहास भी आप पढ़ाते थे। ५ वर्ष तक आपने इस पद पर बड़ी योग्यता और ख्याति के साथ कार्य किया।

सबसे बड़ा लाभ इस पद से आपको यह हुआ कि इन दिनों आपको गम्भीर स्वाध्याय का बहुत अच्छा अवसर मिला। बहिरंग रूप से आपकी ४-५ पुस्तकें (अंग्रेजी में) आपने प्रकाशित कीं और जो बड़ी पुस्तकें आपने बाद को लिखीं उनकी सामग्री इन्हीं दिनों संग्रह की गई।

मेरठ कालेज के आपके मुख्य छात्रों में से ही एक माननीय सर सीताराम जी हैं।

इन्हीं दिनों आप मेरठ आर्यसमाज में उपनिषदों की कथा भी किया करते थे।

सन १८९३ में मेरठ में उत्तरीय भारत के विद्वान पादरियों की विशेष सभा हुई। उनके व्याख्यानों के उत्तर में आपने वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि में अंग्रेजी में बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान दिया था।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य स्थान और प्रधान कार्यालय कुछ वर्षों तक मेरठ ही रहा। सं० १९५० के लगभग आपके ही प्रयत्न और प्रेरणा से आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में आर्य ट्रैक्ट सोसाइटी (Arya tract Society) की स्थापना की गई जिसके आप ही मन्त्री रहे। इसी की ओर से वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में आपकी चार पुस्तकें अंग्रेजी में प्रकाशित हुई जिनका विवरण परिशिष्ट में हुआ है।

मेरठ रहते हुए और भी कई प्रकार

से (यथा 'आर्य पाठशाला' को चलाकर) आपने आर्य समाज की सेवाएँ कीं। पीछे से आप मेरठ आर्यसमाज के प्रधान पद पर भी रहे।

सरकारी नौकरी और आर्य समाज की सेवा

सं० १९५५ सन् १८९८ में आप उसी वर्ष में प्रथमतः प्रारम्भ होने वाली 'डिप्टी कलेक्टरी' की प्रान्तीय प्रतियोगिता परीक्षा में बैठे और सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए। फलतः आपकी नियुक्ति डिप्टी कलेक्टर के पद पर हो गई।

महात्मा मुन्शीराम जी आपके प्रेमी मित्रों में से थे। उन पर आपकी योग्यता तथा वैदिक धर्म के प्रति लगन दोनों का प्रभाव था। इस अवसर पर उन्होंने लिखा था कि उक्त पद पर नियुक्ति के बाद भी आशा है आप पूर्ववत् आर्यसमाज की सेवा करते रहेंगे।

आपने २२ वर्ष तक ब्रिटिश सरकार की सेवा की। वह समय अधिकतर ऐसा था जब कि सरकार आर्यसमाजियों को राजद्रोही समझती थी। तिस पर भी आप आर्यसमाज के साथ बराबर अपना सक्रिय सम्बन्ध रखते रहे।

सन् १९१३ के फरवरी मास में स्वर्गीय सर जेम्स मेस्टन लेफ्टिनेंट गवर्नर, संयुक्त उत्तर प्रदेश, गोरखपुर आये। उसी अवसर पर आपने उनसे भेंट की। उस समय लगभग एक घंटे तक आप के साथ उन्होंने आर्यसमाज के विषय पर बड़े विस्तार से बातचीत की। इस वार्तालाप का आर्यसमाज के उस समय के इतिहास में एक विशेष स्थान रहेगा। एक प्रकार से इसी के फलस्वरूप सर जेम्स मेस्टन अगले मार्च मास में कांगड़ी गुरुकुल पधारे। उसी वर्ष ८ अगस्त को उक्त ले० गवर्नर महोदय ने उत्तर प्रदेशीय आर्य-प्रतिनिधि सभा के निमन्त्रण को पाकर गुरुकुल वृन्दावन की आधारशिला रखी।

सरकारी सेवा काल में आप अनेकानेक स्थानों पर रहे और उत्तरोत्तर उन्नत पदों को प्राप्त करते रहे। जहां कहीं भी आप रहे, वहां सरकार और प्रजा दोनों ने आपकी योग्यता, न्यायपरायणता और जनता के हित की दृष्टि के कारण आपको बहुत मान दिया।

सरकारी कर्तव्यों में व्यस्त रहते हुए भी आपकी आर्यसमाज के प्रति लगन ज्यों की त्यों थी। इसी कारण ऐसी व्यस्तता में भी आप लेखन का उच्चकोटि का काम करते रहे।

सं० १९५७ (सन् १९००) में आपकी एक उत्कृष्ट रचना (जाति प्रथा) अंग्रेजी में प्रकाशित हुई। इसका प्रकाशन उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हुआ था। तब से इसके कई संस्करण निकल चुके हैं। हिन्दी, मराठी, गुजराती मलयालम जैसी भाषाओं में इसके अनुवाद भी निकल चुके हैं।

सन् १९०९ में आपकी दूसरी महत्वयुक्त पुस्तक Fountain head of Religion का प्रकाशन भी आर्य-प्रतिनिधि सभा (उ० प्र०) द्वारा किया गया। इसका हिन्दी अनुवाद श्री प० हरिशंकर शर्मा जी ने किया था, जिसको सभा की ओर से ही प्रकाशित किया गया था।

उक्त दोनों प्रकाशनों के अब तक अनेक संस्करण निकल चुके हैं।

इस पुस्तक के गुजराती, मराठी तथा कुछ दक्षिण भाषाओं में भी अनुवाद हो चुके हैं और प्रकाशित होते रहते हैं।

निस्सन्देह उक्त पुस्तकों को आर्यसमाज का विशिष्ट साहित्य कहना चाहिए।

सन् १९०९ में ही आप अपनी प्रखर विद्वत्ता के आधार पर 'रायल एशियाटिक सोसाइटी, लन्दन' के सदस्य (R. A S.) निर्वाचित हुए।

सं० १९६८ (सन् १९११) में आप कानपुर में होने वाले 'सोशल कान्फरेन्स' के प्रान्तीय अधिवेशन के सभापति बनाये गये। उस अवसर पर आपका जो विद्वत्तापूर्ण अभिभाषण हुआ था, उसकी उस समय के 'लीडर' जैसे प्रमुख पत्रों में भी सी० वाई० चिन्तामणि जैसे प्रसिद्ध नेताओं ने बड़ी प्रशंसा की थी।

कटारपुर का बलवा और सरकारी सेवा से अवकाश ग्रहण

सितम्बर १९१८ में पंडित जी की नियुक्ति एस०डी०ओ० हाकिम इलाका के रूप में रुड़की सब-डिवीजन में हुई। चार्ज लेने के दो सप्ताह के भीतर ही १८ सितम्बर १९१८ को हरिद्वार के पास कटारपुर में गोवध के प्रश्न पर हिन्दू मुसलमानों में भारी बलवा हो गया। आपको वहां की दशा की जानकारी नहीं थी। मुसलमानों के घरों में आग लगा दी गई। १५-२० मुसलमानों की मृत्यु हो गई बहुत बड़ा मुकद्दमा हुआ। डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल ने तहकीकात की। १२० हिन्दू पकड़े गये। तीन जजों का कमीशन अदालत के रूप में बैठा। पंडित जी की विशेष स्थिति थी। आप प्रमुख सरकारी गवाह थे। पर मुसलमान पुलिस अफसरों ने आपके विरोध में बहुत सी झूठी बातें बनाली थीं, जिसका बुरा असर जजों पर पड़ा। मुकदमे में पुलिस ने १७२ अभियुक्त चालान किये थे, इनमें सात पहले ही छोड़ दिये गये। १६५ के विरुद्ध सबूत पेश हुआ। इनमें से ८ को फांसी की आज्ञा हुई। १३५ को आजीवन कैद का दण्ड दिया गया। दो सरकारी अहल्कार थे, उनको सात-सात वर्ष की कैद की आज्ञा हुई। बीस निर्दोष कह कर बरी कर दिये गये। आपके विरुद्ध जजों ने कुछ आक्षेप किये, जिनके लिए आपसे जवाब तलब हुआ। आपका जवाब जिन अफसरों ने पढ़ा उसे बहुत सन्तोषदायक बतलाया। पर प्रान्त के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर हारकोर्ट बटलर ने मुसलमानों के घोर विरोध के कारण आपको डिप्टी कलेक्टरी के निचले दर्जे में रखने की आज्ञा दी।

आप वस्तुत बिल्कुल निर्दोष थे। अतः आपने सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया और पेन्शन लेकर सरकारी नौकरी से सन् १९२० में अलग हो गये।

आपाततः आपके जीवन की यह एक मर्मभेदी घटना थी। पर उदात्त-चरित सत्पुरुषों के लिए ऐसी घटनाएं उनके जीवन को उत्तरोत्तर ऊपर उठने वाली ही होती है, क्योंकि मनुष्य-जीवन का वैदिक आदर्श यही है कि—

रोहेम शरद. शतम्।......

......भूयसी. शरदः शतात।

अथर्व० १९।६७।४,८

अर्थात् हे भगवन्! हम जीवन में सौ और सौ से अधिक वर्षों तक उत्तरोत्तर उन्नति ही करते रहें।

पंडित जी के भविष्य जीवन में आध्यात्मिकता आदि के उत्तरोत्तर उत्कर्ष को देखते हुए उपर्युक्त घटना के पीछे भी करुणामय भगवान् का वरद हस्त छिपा हुआ प्रतीत होता है।

गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता

सरकारी सेवा से पंडित जी के पूर्ण अवकाश लेने के समय के लगभग ही गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य व मुख्याधिष्ठाता का स्थान रिक्त था। महात्मा नारायण स्वामी, (उस समय महात्मा नारायण प्रसाद जी) वर्षों तक गुरुकुल की अपूर्व सेवा के अनन्तर सन् १९१९ में एकान्तवास के लिए रामगढ़ में कुटी बनाकर रहने लगे थे। मित्रों के और विशेषतः स्व० पं० घासीराम जी के आग्रह और परामर्श पर आपने १३ अप्रैल १९२१ से उक्त पद को स्वीकार कर लिया।

उसी समय के लगभग आपके छोटे पुत्र को बहुत बड़ी आर्थिक हानि उठानी पड़ी थी। इसी परिस्थिति से विवश होकर आपने सभा द्वारा स्वीकृत २५०) रु० मासिक का पुरस्कार लेना स्वीकार कर लिया। परन्तु आपको यह बात बिलकुल पसन्द नहीं थी। इसीलिए टिहरी राज्य की सेवा से लौटकर भविष्य में आपने गुरुकुल से प्राप्त उपरोक्त सारा धन ३०००) रु० दान स्वरूप में सभा को लौटा दिया।

कोल्हापुर की शिक्षा संस्थाएँ

सन् १९१८ में पण्डित जी की भेंट कोल्हापुर के छत्रपति शाहू जी महाराज से हुई। तब महाराजा ने इच्छा प्रकट की थी कि वहां के प्रसिद्ध राजाराम कालेज तथा हाई स्कूल को भी आर्य प्रतिनिधि सभा (उत्तर प्रदेश) ले ले, जिससे वहां वैदिक धर्म का प्रचार हो सके। अन्त में सभा ने उक्त संस्थाओं को अपने प्रबन्ध में ले लिया। इस सारी कार्रवाई में पण्डित जी का पूरा सहयोग सभा को प्राप्त हुआ था और आपने कई बार कोल्हापुर जाकर उनका निरीक्षण आदि भी किया था।

टिहरी राज्य की सेवा

जैसा ऊपर कहा है आपकी आर्थिक स्थिति इन दिनों बहुत असन्तोष जनक थी। बहुत बड़ी आर्थिक हानि के साथ-साथ आपको दूसरों का कई सहस्र रुपया देना शेष था। ऐसी परिस्थिति में विवश होकर पुन. आपको एक राज्य की सेवा स्वीकार करनी पड़ी।

टिहरी के महाराजा साहब आपकी योग्यता से परिचित थे। उन्होंने एक विश्वस्त कर्मचारी को आपके पास भेजकर रियासत के चीफ कोर्ट के कार्य के लिए आपको निमन्त्रित किया। अन्त में आपने यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और आर्य प्रतिनिधि सभा को इसकी सूचना दे दी। आपका त्याग-पत्र सभा ने स्वीकार कर लिया और आपने ८ फरवरी सन् १९२२ को पं०शिवनारायण शुक्ल जी को गुरुकुल का कार्य सौंपकर वहां से अवकाश प्राप्त किया।

उस समय आपके मन को बड़ा क्लेश इस बात का था कि आपको दुर्भाग्य-वश पुनः नौकरी स्वीकार करनी पड़ी।

महाराज ने आपको 'चीफजज व जुडिशल मिनिस्टर' नियुक्त किया। अगस्त १९३८ में टिहरी में हाईकोर्ट की स्थापना हुई। जिसमें ३ जज नियुक्त हुए। आपको 'चीफजस्टिस' का पद दिया गया। साथ में कुछ समय के लिए आपको दीवान के पद का कार्य भी करना पड़ा था।

१९३९ (अक्तूबर) में आपने महाराजा से स्वयं प्रार्थना करके पूर्ण अवकाश प्राप्त किया। कारण आपके स्वास्थ्य का गिर जाना ही था।

अवकाश प्राप्त करने के समय महाराजा ने बड़ा दुःख प्रकट किया और आपकी सेवाओं की बहुत प्रशंसा के

साथ-साथ एक पुष्कल ग्रैचुइटी (पारितोषिक) भी आपको भेंट की। इस अवसर पर वाइसराय महोदय ने आपको 'रायबहादुर' पद से सम्मानित किया। प्रजा और नागरिको ने भी अनेकानेक मानपत्र आपको भेंट किये।

१७॥ वर्ष तक आप टिहरी गढवाल राज्य की सेवा मे रहे। इस लम्बे काल मे आपने अनेक प्रकार से राज्य की उन्नति मे भाग लिया। वहा आपने 'राज्य प्रतिनिधि सभा' स्थापित करवा कर उस राज्य के लिए उत्तम कानून बनवाये, जिसका वहा पहले अभाव था।

गढवाल प्रान्त 'तपोभूमि' के नाम से प्रसिद्ध है। तीर्थ और मन्दिरो की बहुलता है। उनके सुधार और सुप्रबन्ध के लिए 'साधु-सुधार' और 'तीर्थ सुधार विधान' बनाये जो सन् १९४७ मे राज्य के उत्तर प्रदेश के साथ एकीकरण हो जाने पर भी विशेष उपयोगी होने से वहा लागू रखे गये।

टिहरी मे रहते हुए भी आपने यथासम्भव आर्यसमाज सम्बन्धी कार्य जारी रखे। उनमे से मुख्य निम्नलिखित हैं :—

(१) कोल्हापुर का शिक्षा-सबधी प्रबन्ध जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। यह प्रबन्ध १९२६ मे समाप्त ही हो गया था।

(२) सन् १९२५ मे मथुरा मे हुई 'ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी' के अवसर पर आयोजित 'सर्व-धर्म-सम्मेलन' के सभापति आप ही थे।

(३) सन् १९३३ मे अजमेर मे आयोजित ऋषि दयानन्द की 'निर्वाण अर्धशताब्दी के उत्सव पर कुछ 'विशेष व्याख्यान' अग्रेजी मे तैयार कराये गये थे। आपने The Inner man and the Inner world' (अर्थात् पचकोष व सूक्ष्म जगत्') विषय पर अग्रेजी मे एक उत्कृष्ट व्याख्यान तैयार किया था। पीछे से अन्य ४ व्याख्यानो के साथ Aryan philosophy के नाम से मद्रास आर्यसमाज की ओर से प्रकाशित किया गया।

आर्य विरक्त आश्रम में निवास और आर्य सामाजिक सेवाएं

सन् १९३९ से आपका 'वानप्रस्थ-आश्रम प्रारम्भ' होता है। १९३९ से १९४८ तक आपने आर्य-वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर' मे निवास किया। वहा आपकी कुटिया १९३६ मे ही बनकर तैयार हो चुकी थी।

६८ वर्ष की अवस्था में आरम्भ हुए इस तपस्वी जीवन की दिनचर्या पूर्णतया अध्यात्म-चिन्तन, स्वाध्याय और आर्यसमाज की कार्यशील सेवा मे बटी हुई रहती थी। इस काल की आपकी मुख्य धार्मिक सेवाये सक्षेप मे इस प्रकार थी।

(१) 'दयानन्द ऐ० वैदिक कालेज सोसाइटी, कानपुर से आपका सम्बन्ध उसके प्रारम्भ से ही था। आप उपप्रधान भी रहे। उसी के द्वारा डी० ए० वी० कालेज, कानपुर का प्रबन्ध होता था। उसके प्रबन्ध और सगठन मे कुछ मौलिक सुधार १९४०-४१ मे किये गये। इन सुधारो मे आपका भी प्रमुख हाथ था।

(२) १९४१ व १९४२ मे आप 'काशी आर्य-विधान सभा' के प्रधान रहे। इसके प्रबन्ध मे ही बनारस की दयानन्द ऐ० वैदिक कालेज, नित्यानन्द वेद विद्यालय, आर्य-कन्या पाठशाला आदि सस्थाओ का सचालन होता है।

(३) रामगढ (जि० नैनीताल) में श्री नारायणस्वामी जी की स्मृति मे जो विद्यालय १९४० मे स्थापित किया गया था उस कार्य को उठाने वाली 'नारायण स्वामी विद्यासभा' के आप ही सभापति थे।

(४) 'रामगढ मे श्री नारायण-स्वामी आश्रम' की जयन्ती जून सन् १९४५ मे बडे उत्साह से मनायी गयी। उसके स्वागताध्यक्ष आप ही थे।

(५) 'परोपकारिणी सभा, अजमेर,' की स्थापना ऋषि दयानन्द के स्वीकार-पत्र के अनुसार हुई थी। आप उसके बहुत वर्षों से सभासद् रहे और आपकी प्रेरणा उसके सचालक का बराबर मिलती रही।

(६) सन् १९०९ मे 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' की स्थापना देहली मे हुई। इसमे आपकी प्रेरणा भी थी। सन् १९२१ मे चुने जाकर आप दो वर्ष तक उसके उपप्रधान, और फिर १९४२ से ३॥ वर्ष तक आप उसके प्रधान भी रहे।

श्री अरविन्द आश्रम की यात्रा और योगाभ्यास की ओर प्रवृत्ति

हम देख चुके हैं कि पडित जी मे अपने बाल्य-काल से ही धार्मिक प्रवृत्ति विद्यमान थी। सदैव अपने वैयक्तिक जीवन मे न्याय और अन्याय का आपको पूरा पूरा ध्यान रहा। ऐसी स्थिति मे आपकी आध्यात्मिक साधना मे विशेष तीव्रता का आजाना स्वाभाविक था।

योगाभ्यास की ओर भी आपकी प्रवृत्ति १५ वर्ष की अवस्था से ही थी। समय-समय पर स्व०श्री स्वामी लक्ष्मणानन्द जी, श्री स्वामी ओमानन्द जी, स्व० श्री स्वामी सियाराम जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, जैसे योगियो से आप इस सम्बन्ध मे उपदेश लेते रहे हैं। सन् १९२३ मे टिहरी मे रहते हुए आपने श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी से सपत्नीक योग की दीक्षा प्राप्त की थी।

इसी भावना से प्रेरित होकर आपने अपने छोटे भाई (भूतपूर्व डिस्ट्रिक्ट जज) स्वर्गीय श्री प्यारेलाल जी के साथ मे १९४१, १९४३ और १९४४ मे योगिप्रवर श्री अरविन्द के आश्रम की यात्राए की और वहा निवास भी किया।

इसमे सन्देह नही कि आपकी महान् आध्यात्मिक साधना के समान ही आपका आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन भी बडा विस्तृत और गम्भीर है।

१९४२ मे जब आप श्री अरविन्द आश्रम, पाडेचेरी मे ठहरे हुए थे बगलौर मे दक्षिण भारत का तृतीय आर्य-सम्मेलन हुआ। उस अधिवेशन के सभापति आप ही थे। इसके साथ-साथ दक्षिण मे आपके अगले दो वर्षों मे कई स्थानो मे विद्वत्तापूर्ण भाषण वैदिक धर्म और आर्यसमाज पर होते रहे, जिनका प्रभाव बहुत अच्छा रहा।

जाति भेद निवारक आर्य परिवार सघ

अपने मन्तव्यो को जीवन मे व्यवहार रूप मे लाना आपका सदा से स्वभाव रहा है। इसी भावना से प्रेरित होकर देहली मे १९४४ मे आयोजित किये गये सत्यार्थ-प्रकाश-महासम्मेलन में (जिसके साथ आपका पूर्ण सक्रिय सहयोग था) आपने यह प्रस्ताव रखा था कि प्रचलित जाति-भेद को निर्मूल करने के लिए एक आर्य-परिवार सघ स्थापित किया जाय। उसी के अनुसार उसी समय उपर्युक्त सघ स्थापित किया गया और आप ही उसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये। यह सघ अब भी अच्छा कार्य कर रहा है। अपने परिवार ने अन्तर्जातीय विवाहो की परम्परा आपने ही स्थापित की। ★

जीवन-झाँकी—

नर्ईल व्यक्तित्व : सादा जीवन : उच्च विचार

श्री लालबहादुर शास्त्री

देश के लोकप्रिय नेता श्री लालबहादुर शास्त्री जो १० जनवरी ६६ की रात तक देश के प्रधानमन्त्री थे वे आज हमारे मध्य नहीं रहे। निर्दयी यमराज उन्हें हमसे छीन ले गया और अब उन्हें स्वर्गीय लिखते हुए कलेजा मुंह को आता है। परन्तु नियति के आगे किसी का जोर नहीं।

स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री का जन्म २ अक्टूबर १९०४ को बनारस में हुआ था। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय हरिश्चन्द्र स्कूल में प्राप्त की। परन्तु १९२१ में शिक्षा छोड़कर गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये और बन्दी बना लिये गये। जेल से छूटने पर उन्होंने काशी विद्यापीठ में अपनी शिक्षा पुनः आरम्भ कर दी और वहीं से शास्त्री की डिग्री प्राप्त की।

१९२६ में वह सर्वेन्ट्स आफ पीपल्स सोसायटी में शामिल हो गये और इलाहाबाद चले गये जो उनकी राजनीतिक गतिविधियों का मुख्य केन्द्र रहा। वहां वह ७ वर्ष तक इलाहाबाद म्यूनिसपल बोर्ड के सदस्य रहे और लगभग ४ वर्ष तक इलाहाबाद इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट के भी सदस्य रहे। वह १९३० से १९३६ तक इलाहाबाद जिला कांग्रेस के प्रधान तथा महामंत्री के पदों पर कार्य करते रहे। बाद में वह उत्तरप्रदेश के महामंत्री भी चुने गये।

विधान सभा में

१९३७ में शास्त्री जी उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। १९४६ में विधान सभा के लिए चुनाव में दूसरी बार सफल हुए और उन्हें मुख्यमन्त्री का संसदीय सचिव चुना गया। १९४७ में उत्तरप्रदेश में गृह और परिवहन विभागों के मन्त्री रहे तथा ४ वर्ष तक उन्होंने इस पद पर काम किया।

पहली बार मन्त्री

१९५१ में शास्त्री जी ने उ० प्र० मन्त्रिमण्डल से त्याग पत्र दे दिया। और अ० भा० कांग्रेस के महामन्त्री का पद सम्भाल लिया। १९५२ के आम चुनाव के बाद वह राज्य सभा के सदस्य चुने गये और परिवहन तथा रेल्वे मन्त्री बन गये। १९५७ में वह इलाहाबाद से लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और मार्च १९५८ तक परिवहन तथा संचार सवाहन विभाग के मन्त्री रहे। इसके बाद उन्हें व्यापार तथा उद्योग विभाग का मन्त्री नियुक्त किया गया।

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में

अप्रैल १९६१ में उन्हें भारत सरकार का गृहमन्त्री नियुक्त किया गया। १९६२ के आम चुनाव में वह लोकसभा के लिए पुनः निर्वाचित हो गये। कामराज योजना के अधीन उन्होंने मन्त्री पद त्याग दिया परन्तु भुवनेश्वर में पं० नेहरू के अस्वस्थ हो जाने के बाद उन्हें फिर भारत सरकार में बिना विभाग का मन्त्री नियुक्त कर दिया गया और वह पं० नेहरू का बहुत सा काम सम्भालते रहे।

पण्डित जी के स्वर्ग सिधारने के पश्चात शास्त्री जी ९ जून १९६४ को भारत के प्रधान मन्त्री बने। इस प्रकार वह १९ महीने और १ दिन भारत के प्रधान मन्त्री रहे।

१९ मास का शासन काल

प्रधान मन्त्री बनने के शीघ्र ही बाद शास्त्री जी हृदय रोग के कारण बीमार पड़ गये थे और लगभग एक मास तक अपने घर पर लेटे रह कर ही शासन कार्य चलाते रहे थे। तब से अब तक उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहा रहा था।

कठोर परिश्रम

जब १९६४ के प्रारम्भ में स्वर्गीय पं० नेहरू ने शास्त्री जी को बिना विभाग का मन्त्री नियुक्त किया तो उन्होंने शास्त्री जी से कहा था—आप मेरे काम की देखभाल करेंगे।' और शास्त्री जी ने अपने नेता के आदेश का बड़े परिश्रम से पालन किया। प्रधान मन्त्री पद सम्भालने के बाद आप रातों को भी देर तक काम करते थे।

पद मोह नहीं था

स्वर्गीय शास्त्री जी मन्त्री पद को विशेष महत्व नहीं देते थे जब वह उत्तर प्रदेश में मन्त्री थे तो उन्होंने कांग्रेस के संगठन के लिए मन्त्री पद छोड़ दिया था। बाद में जब वह केन्द्र में रेल मन्त्री थे तो एक दुर्घटना के बाद उन्होंने मन्त्री होने के नाते स्वयं को जिम्मेवार मानते हुए पद त्याग दिया।

समझौता वादी नेता

कांग्रेस में शास्त्री जी समझौता कराने वाले नेता के रूप में प्रसिद्ध थे। हर राज्य के कांग्रेसियों में झगड़े निपटाने का काम उन्हें सौंपा गया था। जीवन की अन्तिम घड़ियों में भी आपने ताशकन्द में समझौता ही किया है।

सादा जीवन उच्च विचार

कांग्रेस में शास्त्री जी स्वर्गीय श्री नेहरू के अतिरिक्त राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, श्री रफी अहमद किदवई और आचार्य नरेन्द्र के बहुत निकट रहे। ऊँचे विचार होने के बावजूद उनका जीवन कितना सादा था इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि १९६२ तक वह चाय भी नहीं पीते थे। सुबह सवेरे उठकर लोगों से मिलने थे और स्वयं काम के बोझ के कारण आधी रात को सचिवालय से आया करते थे।

विदेशों से मैत्री

प्रधान मन्त्री बनने के बाद अपने पहले भाषण में शास्त्री जी ने कहा था—हमारा मार्ग सीधा और साफ है—घर में समाजवादी लोक राज्य का निर्माण और विदेशों से मैत्री अपनी इसी नीति के अनुसार आपने नेपाल बर्मा और अरब गणराज्य आदि की यात्रायें करके उन देशों से मैत्री सम्बन्ध बढ़ाये। कराची जाकर उन्होंने प्रधान अयूब से भी भेंट की परन्तु वहां सफल न हो सके।

देश की दृढ़ता के प्रतीक

पं० नेहरू के शासनकाल में भी और शास्त्री जी के शासनकाल में भी भारत पर २ २ बार हमला हुआ। परन्तु ५ अगस्त को कश्मीर पर पाकिस्तानी हमले के बाद शास्त्री जी देश की दृढ़ता के प्रतीक बन गये। पाकिस्तान को नाकों चने चबाकर उन्होंने जनता का मन मोह लिया और अब ताशकन्द में सम्मानपूर्ण समझौते पर भी उन्होंने हस्ताक्षर किये हो थे कि उन्हें मृत्यु ने आ दबाया।

१० वर्ष जेल में

शास्त्री जी ने कांग्रेस के प्रायः सभी आन्दोलनों में भाग लिया। वह कुल ८ बार गिरफ्तार हुए और उन्होंने जीवन के १० वर्ष अंग्रेजों की जेल में गुजारे।

स्व० श्री लालबहादुर जी शास्त्री

स्व. प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के प्रति—

श्रद्धांजलि

भारत पर से बरद हस्त उस प्यारे लाल का हटा अरे,
मरते दम उस रतन लाल के घिरी काल की घटा अरे।
मरण वृत्त सुन उस शास्त्रि का वसुधा जैसे कांप उठी,
अन्तरिक्ष में हुआ घोष विह्वल हो जनता चीख उठी।

कुशल सारथी हीन आज भारत के रथ का क्या होगा
लाल बहादुर पुन बिना इस संस्कृत मां का क्या होगा।
संस्कृत माता का निपुण पुजारी सहसा आज विलीन हुआ,
राष्ट्र और जनता हितकारी उससे सुनसान जहान हुआ।

कांप रहे हैं सब नर नारी आतंकित सुन उस मृत्यु को,
हुआ अजब वा दिन दुर्दिन जो छीन लिया उस शास्त्रि को।
भारत माता के दिव्य सपूत और त्याग साधना के ध्यानी,
करते ध्यान सभी हैं उनका नर नारी क्या सुज्ञानी।

जब तक चन्द्र रवि में हैं प्रकाश और गंगा यमुना में पानी
तब तक खिलते कमल कुमुदिनी ओ भारत के सेनानी।
आविर्भूत पुनः हो तब तो मिले शांति इस भारत को,
श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं उस दिवंगत आत्मा को।

—रामनिवास शास्त्री, श्री सर्वदानन्द साधुआश्रम (अलीगढ़)

दयानन्द-सप्ताह

(१२ फरवरी ६६ से १८ फरवरी ६६ तक)

(अन्तरग सभा दि० २५-१२-६३ के नि० स० ३२ द्वारा स्वीकृत)

इस महान् पर्व पर हमारी प्रतिज्ञाएं और कार्यक्रम

१—ऋषि बोधोत्सव पर जन-सम्पर्क एवं सदस्यता अभियान किया जाए—आगामी ऋषि बोधोत्सव पर आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से विशेष जन-सम्पर्क स्थापित करने एव सदस्यता अभियान पर विशेष बल दिया जाना चाहिए ताकि आर्य विचारो तथा आर्यसमाज से सहानुभूति रखने वाले बन्धुओ के सक्रिय सहयोग से समाज लाभान्वित हो सके।

२—आयजनो मे पारस्परिक सहयोग एवं भ्रातृत्व-भावना वृद्धि का प्रयत्न किया जाए—कि प्रत्येक जिले मे जिले की समस्त समाजो को 'आर्य सम्मेलनो" का आयोजन करना चाहिए और परस्पर भ्रातृ-भाव की वृद्धि के साथ-साथ स्थानीय आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक गोष्ठियो के द्वारा परस्पर सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाये।

३—राष्ट्र के नैतिक पतन को रोकने का आर्यजन विशेष यत्न करें—आर्यसमाज धार्मिक आन्दोलन है। राष्ट्र के नैतिक पतन को देखते हुए आर्यसमाज का दायित्व और भी अधिक बढ जाता है। अत सभी आर्य बन्धुओ को चाहिए कि वे इस पर्व पर सामूहिक रूप से राष्ट्र के नैतिक उत्थान मे विशेष सक्रिय सहयोग देने का निश्चय करें और स्वय नैतिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्र का मार्ग दर्शन करे।

दयानन्द सप्ताह का कार्यक्रम

[१] उद्बोधन—प्रतिदिन प्रात नगर-नगर और ग्राम ग्राम मे टोलिया बनाकर उद्बोधन किया जावे।

[२] यज्ञ—प्रभात फेरी के पश्चात् आर्य मन्दिर मे सार्वजनिक यज्ञ किया जावे। यथासम्भव इस सप्ताह मे सम्पूर्ण यजुर्वेद सहिता से वृहद् यज्ञ की योजना की जावे।

[३] प्रचार—(अ) प्रतिदिन सायकाल ग्रामो मे तथा नगर के भिन्न-भिन्न मुहल्लो मे अथवा आर्यमन्दिरों मे कथा द्वारा तथा अन्य प्रकार से वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार की विशेष योजना की जाय और ऋषि जीवन पर विशेष प्रकाश डाला जावे। सत्यार्थ-प्रकाश को बिना मूल्य या लागत-मात्र पर बेचकर अधिक से अधिक प्रचार किया जाव।

[आ] आर्यमित्र—सभा की ओर से वैदिक धर्म प्रचार और आर्यसमाज की गतिविधियो एव नीतियो के परिचयार्थ ६८ वर्ष से "आर्यमित्र" साप्ताहिक प्रकाशित हो रहा है। ८) वार्षिक मूल्य मे प्रत्येक आर्यसमाज स्वय ग्राहक बनकर और सदस्यो को उसका ग्राहक बनाकर प्रचार कार्य मे रचनात्मक सहयोग प्रदान करें।

(इ) गुरुकुल आन्दोलन—सभा की ओर से गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहित करने के लिए गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन गत ६१ वर्षो से सचालित है। बोध रात्रि के अवसर पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व पर विशेष प्रकाश डालना तथा गुरुकुल की आर्थिक सहायता द्वारा उसे समर्थ बनाना प्रत्येक आर्य बन्धु का कर्त्तव्य है।

(४) आचार व्यवहार—जनता मे से भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता मिटाने के लिए, सिनेमाओ के भ्रष्टाचार फैलाने वाले व अश्लील चित्रो के विरुद्ध आन्दोलन किया जावे, मादक द्रव्य निषेध व गोरक्षा पर भी बल दिया जावे।

(५) दलितोद्धार—इस सप्ताह मे न्यून से न्यून एक दिन अछूत कही जाने वाली जातियो मे विशेष रूप से प्रचार कर उनके उठाने और अस्पृश्यता मिटाने का प्रयत्न किया जावे। दलितो को आर्यसमाज का सदस्य बनाना और उनमे वैदिक सस्कारो का प्रचार भी प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए।

(६) प्रीतिभोज—यथासम्भव प्रीतिभोज की उसी दिन योजना की जावे। प्रीतिभोज अत्यन्त सादा और स्वल्प व्ययक हो, उनमे जात-पात छून-अछून का भेद-भाव विसार कर, सब आर्य भाई-बहन समान रूप से सस्नेह भाग लें।

(७) आत्म-निरीक्षण—इस सप्ताह म एक दिन समस्त आर्य भाई-बहनो को एकत्र होकर इस बात पर भी गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि जिस शक्तिशाली, आर्यसमाज का कभी बहुत बडा प्रभाव था, आज वह शिथिल और अकर्मण्य सा क्यो बन गया है। इसमे स्वय अपनी कहा तक त्रुटि है।

[८] स्वदीक्षा-व्रत—भविष्य मे आर्यसमाज की सेवा के लिये दयानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा में स्वीकृत प्रस्ताव के लिए सामूहिक दीक्षाव्रत को व्यक्तिगत और सामूहिक दोहराना चाहिये।

[९] ईसाई प्रचार निरोध—इस सप्ताह मे एक दिन विशेष सार्वजनिक सभा करके ईसाइयत के प्रचार के लिए आने वाले विदेशी धन, विदेशी मिशनरियो पर प्रतिबन्ध लगाने, विदेशी मिशनो के राष्ट्रीयकरण करने तथा हिन्दू बालक-बालिकाओ को ईसाइयत की शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाने की माग करनी चाहिए।

दयानन्द जन्म-दिवस [ऋषि बोध पर्व १८ फरवरी १९६६ ई० दिन शुक्रवार]

प्रात —समस्त आर्य सज्जन तथा देविया मन्दिर मे एकत्रित होकर—

१—कुछ काल वेद पाठ करें।

२—साधारण यज्ञ तथा पर्वेष्टि यज्ञ करें।

३—आत्मोद्धार सम्बन्धी भजन गान किये जाय।

४—प्रत्येक व्यक्ति आत्मोन्नति, स्वाध्याय वैदिक धर्म प्रचार करने का अनुष्ठान करें।

मध्याह्न—विशेष शोभायात्रा का आयोजन किया जाय। शोभायात्रा अधिक से अधिक गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिए। आर्य पुरुषो, कुमारो, देवियो को अपनी-अपनी टोलिया बनाकर स्वय भजन गाने चाहिये। भजनो मे प्रभु-भक्ति महर्षि-महिमा, जातीय गौरव तथा आत्म-सुधार के विशेष भाव हो।

रात्रि—मन्दिरो मे विशेष रोशनी करनी और उसके पश्चात् आर्य मन्दिरो मे वेदोपदेश तथा ऋषि जीवन पर प्रकाश डालने वाले व्याख्यान होने चाहिए।

विनीत—
चन्द्रदत्त
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश

५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दिनांक २-१-६६ ई०

शोक प्रस्ताव—

भारत पाकिस्तान युद्ध के अखनूर क्षेत्र मे ४७ शत्रुओ को मारकर वीरगति को प्राप्त हुए आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध कर्मठ नेता महात्मा देव मुनि के सुपुत्र मेजर जीवेन्द्र प्रताप जी की मृत्यु पर यह सभा शोक प्रकाश करती है। और सतप्त परिवार के साथ सम्वेदना प्रकट करती है। —मन्त्री आ० स० फतेहपुर

—श्री देव मुनि जी के वीर पुत्र श्री जीवेन्द्र प्रताप जी की वीरतापूर्ण, भारत पाकिस्तान युद्ध के अखनूर क्षेत्र मे ४७ शत्रुओ को मारकर शहीद होने वाले इस इस वीर की मृत्यु पर यह जिला आर्य उप सभा फतेहपुर शोक प्रस्ताव करते हुए परमात्मा से दिवगत आत्मा की शाति के लिए प्रार्थना करती है और उनके शोक सतप्त परिवार के साथ सवेदना प्रकट करती है।

—रामनारायण शास्त्री मन्त्री

श्रद्धांजलियां

आर्यसमाज टीटागढ की ओर से दि० २१-८-६५ शनिवार को साप्ताहिक सत्सग के अवसर पर श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के आकस्मिक निधन पर शोक श्रद्धाजलि अर्पित की गई एव स्वामी जी की आत्मा की शान्ति और उनके निधन से आर्य जगत् को जो क्षति पहुची है उसकी पूर्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

सिंहावलोकन

(पृष्ठ ५ का शेष)

एक भौतिक पदार्थ के पीछे पीछे एक अभौतिक (आत्मिक) सत्ता निहित है। जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते। जीवन वस्तुतः जीव और प्रकृति के विशेष संयोग का नाम है और इन (भौतिक और आत्मिक) तत्वों के प्रभाव सम्बन्ध की जिज्ञासा का नाम ही दर्शन है। जो दर्शन एकांगी है वह अपूर्ण है।

कहीं कहीं सूत्रों में ऐसे संकेत मिल जाते हैं जिनसे ऐसा लगता है कि दर्शनों में परस्पर विरोध है। परन्तु थोड़े से विचार से स्पष्ट हो जाता है कि केवल कथन शैली का भेद है। वस्तुतः वह दोनों एक ही मन्तव्य को दो भिन्न भिन्न रूपों में कथन करते हैं। यहां हम केवल एक उदाहरण देते हैं—

सांख्य कहता है न वयं षट्पदार्थवादिनो वैशेषिकादिवत्। अर्थात् हम छः पदार्थों का वाद नहीं मानते। इससे लोग समझते हैं कि कपिल और कणाद के सिद्धान्त एक नहीं। परन्तु उपर्युक्त सूत्र से सांख्यकार का केवल इतना तात्पर्य है कि हमने जो जगत की व्याख्या की है वह छः पदार्थों के आधार पर नहीं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि छः पदार्थ मानना अयथार्थ है। यह तो ऐसा ही है जैसे कोई पुलिस का अधिकारी कहे कि हम तो मनुष्य इस मनुष्य के अपराध से सम्बन्ध रखते हैं इसका स्वास्थ्य कैसा है? यह जानना तो डाक्टर का काम है। इससे पुलिस विभाग और चिकित्सा विभाग का विरोध सिद्ध नहीं होता।

स्वामी दयानन्द अपने युग के सबसे बड़े सुधारक हैं जिन्होंने दर्शनकारों के सिद्धान्तों में समन्वय को सिद्ध करके स्पष्ट कर दिया है। यदि दर्शनकार एक हो जायें तो सब साधारण का पारस्परिक विरोध और द्वन्द्व दूर हो सकता है विरोधियों को समझा कर मित्र बना देना सबसे बड़ा सुधार है और महर्षि दयानन्द इस सुधार के सबसे बड़े प्रवर्तक हैं। ★

वेद-व्याख्या

[पृष्ठ ६ का शेष]

भरण पोषण करती हुई हम तक [illegible] ओढ़े बिछाने [illegible] रहने सहने [illegible] अलंकृत होने की [illegible]
है।

(२) सरस्वती—यह शब्द सृ धातु से बनता है जिसका अर्थ है चलना बहना फलना। सर सरिता, सलिल (सरिर) सरस्वान समुद्र, सरस्वती (नदी)। यह सभी जानते हैं कि जल जीवन के लिये कितना आवश्यक है। जीवन का अर्थ जल भी है। नहर बम्बे नदियों से ही निकाले जाते हैं जो कृषि के प्रधान साधन हैं।

(३) मही—यह शब्द मूलरूप में महत् है। महा मही महान महत आदि इन्हीं से बना लिये गये हैं। पिता मह बड़ा पिता (दादा) पितामही बड़ी मां (दादी)। महा देव बड़े देव मही देवी बड़ी देवी—महादेव की शक्ति प्रकृति जो विश्व की रचना करती है। यह हुआ तीनों का आधिदैविक अर्थ।

किन्तु मन्त्र में इनका आध्यात्मिक अर्थ हमारे अधिक मतलब का है। हमारा पार्थिव शरीर इड़ा है। मानसिक भाव 'सरस्वती' है (चिन्तन मनन बोधन निश्चयकरण)। आत्मिक भाव मही है बड़ी शक्ति है—ऐश्वर्य मयी है। यही तीन मन्त्र की (तिस्रोदेवी) तीन देवियां हैं जो मानव जीवन में मरणशील शरीर को मानवोपयोगी बनाती हैं—शारीरिक बल मानसिक बल आत्मिक बल। इनके मयोभुव। बने रहने पर हम मानव हैं अन्यथा दानव' तो बने बनाये हैं ही।

इसीलिये मन्त्र में प्रार्थना की गयी है कि ये तीनों मयोभुव' शक्तियां (दिव्य दैवी देवियां) बर्हि हमारे मानवी शरीररूपी आसन को।(अस्रिधः अविकल रूप से बिना बिछोह वियोग के। सीदन्तु बिराजकर सुशोभित करती रहें। जब तक ज्यि—पश्येम शरदः शतम। शृणुयाम शरदः शतम। प्रब्रवाम शरदः शतम। अदीनः स्याम शरदः शतम। भूयश्च शरदः शतात्। इति शुभम।

उत्सव—

—इलाहाबाद आर्यसमाज एवं आर्य इण्टरमीडिएट कालेज जूनियर हाईस्कूल का उत्सव २६ से २८ जनवरी ६६ तक मनाया जायगा।

—गया आर्यसमाज का उत्सव ११ माघ से १ अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा।

—लक्ष्मीपुर (पूर्णिया) आर्यसमाज का उत्सव ३१ जनवरी से ३ फरवरी ६६ तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा।

सर्दी, जुकाम, इन्फ्लूएन्जा, अपचन तथा थकान आदि से
गुरुकुल कांगड़ी
चाय
आपके स्वास्थ्य की रक्षा करती है।
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार

हिमालय के हरे आवलों से निर्मित विटामिन सी तथा लोह से भरपूर
गुरुकुल कांगड़ी का
च्यवन प्राश
च्यवन प्राश
शक्ति संचय के लिए आज से ही सेवन करें
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार.

(पृष्ठ २ का शेष)

समय हमें धोखा दे जाएंगे और हमारे विनाश का कारण सिद्ध होंगे।'

किसी भी देश का प्रेसिडेंट या अन्तिम रक्षा अपने देश के सभी नागरिकों के अधिकारों का रक्षक माना जाता है। परन्तु २५ अगस्त १९६४ को ढाका में एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए पाकिस्तान के प्रेसिडेंट ने कहा कि हिन्दुओं और मुसलमानों में कोई समानता नहीं है। उन्होंने कहा—'ये दोनों दशाएं किसी भी परिस्थिति में एक नहीं हो सकते।'

इस बयान पर टिप्पणी करते हुए पूर्व पाकिस्तान के ढाका में अल्पसंख्यकों की एक अर्द्ध-साप्ताहिक बंगला पत्रिका 'आमार देश' ने अपने ३ दिसम्बर '६४ के अंक में लिखा—अरसे से हमने ऐसा स्पष्ट वक्तव्य नहीं सुना था। हालांकि यह अशोभनीय अवास्तविक और पाकिस्तान के हितों के विरुद्ध है हम इसलिये इसका स्वागत करते है क्योंकि यह साफ और खरे शब्दों मे कहा गया है। यदि किसी देश के ८० प्रतिशत लोग बाकी २० प्रतिशत लोगों से यह कहते हैं कि वे एक अलग राष्ट्र हैं और उनका हम से किसी प्रकार का विचारात्मक या दार्शनिक रिश्ता नहीं है तब अल्पसंख्यकों के लिये सिवाय इसके कि वे इसे स्वीकार करें और अपना अलग से संगठन बनाएं, और क्या उपाय रह जाता है।"

"१७ वर्ष इकट्ठा रहने के बाद आज नए सिरे से यह खोज की जा रही है कि हिन्दू और मुसलमान अलग है और किसी भी परिस्थिति में उनका एक दूसरे के साथ मेल नहीं हो सकता। पाकिस्तान की स्थापना के बाद अल्पसंख्यकों ने सिर्फ यह मांग की कि उन्हें पाकिस्तानी नागरिक माना जाए और न कि अल्पसंख्यक। वे मात्र नागरिकता, संवैधानिक अधिकार और राष्ट्रीय अखण्डता चाहते हैं। अल्पसंख्यकों ने संयुक्त चुनाव प्रणाली का समर्थन किया, हालांकि इससे उन्हें नुकसान पहुंचता था। परन्तु आज यह स्पष्ट हो गया है कि पाकिस्तानियों में एक राष्ट्रीयता की स्थापना असम्भव है।"

भारत ने धर्म या मजहब के आधार पर दो-राष्ट्र सिद्धान्त को कभी मंजूर नहीं किया। इस दो राष्ट्र सिद्धान्त के कितने दुष्परिणाम निकल सकते हैं, इसका जो बयान भारत के शिक्षा मंत्री श्री मोहम्मद अली करीम छागला ने ५ फरवरी, १९६४ को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की बैठक में भाषण करते हुए दिया है, वह इस प्रकार है—"हम भारत और पाकिस्तान को दो राष्ट्र मानते हैं, लेकिन हमने मजहब के आधार पर दो-राष्ट्र सिद्धान्त का हमेशा निन्दा की है और हम इसे बहुत बुरा मानते हैं। अगर हिन्दुओं और मुसलमानों को दो अलग अलग राष्ट्र मान लिया जाए, तो भारत के ५ करोड़ मुसलमान अपने ही देश में विदेशी माने जाएंगे।'

भारत, पाकिस्तान और विश्व

भारतीय राष्ट्रीयता के प्रति विरोध की भावना ने ही पाकिस्तान को जन्म दिया। वही भावना आज भी पाकिस्तान को उत्तेजना दे रही है। भारत के प्रति शत्रुता की भावना ही पाकिस्तानी नीतियों और दृष्टिकोणों पर छाई हुई है। भारत और भारतीय सभ्यता को आमतौर से जो सम्मान प्राप्त है महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के नाम जिस श्रद्धा के साथ पूरे विश्व में लिए जाते हैं भारत ने उद्योग और टेक्नोलाजी में जो प्रगति की है वह सब चीज पाकिस्तान को खिझाने वाली है। हर मामले में पाकिस्तान की प्रतिक्रिया भारतविरोधी रूप लेती गई है।

भारत के प्रति विरोध की भावना रखने के कारण पाकिस्तान एक उदाहरण लिया जाए दक्षिण अफ्रीका की जातिभेद नीति के लिए एशियाई अफ्रीकी जातियों के द्वारा उसके बहिष्कार की नीति का विरोध करता रहा है। पाकिस्तानी सरकार ने अतीत में दक्षिणी अफ्रीका के रंगभेद प्रधानतावादी लोगों के साथ भारत का विरोध करने के लिये व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की है यद्यपि परिस्थिति यह है कि उसकी इस नीति से प्रभावित होने वाले लोग थे—(१) अफ्रीकी (२) मुसलमान और दूसरे लोग जो मूलतः अविभाजित भारत से दक्षिण अफ्रीका गए थे।

फिर स्वेज नहर विवाद में पाकिस्तान ने मिस्र का समर्थन नहीं किया—स्पष्ट ही इसका कारण यह था कि भारत ने मिस्र का जोरदार ढंग से समर्थन किया था।

'हम अलग हैं'—इस भावना से ग्रस्त पाकिस्तानी नेताओं ने निरन्तर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के स्वतन्त्र अस्तित्व पर जोर दिया है, यद्यपि ऐसा, बिना इसका ख्याल किए कि हिन्दुस्तान गलत है या सही, किया गया। पाकिस्तान का हिन्दुस्तान से भिन्न रुख अख्तियार करना या भिन्न रूप से कार्य करना बिल्कुल फिजूल था। जैसा कि 'लन्दन टाइम्स' ने एक बार लिखा था "पाकिस्तान की विदेश नीति के प्रत्येक दृष्टिकोण का आधार भारत के साथ बुरा सम्बन्ध है।'

विभाजन के दिन से अब तक पाकिस्तान के शासकों ने अपने राष्ट्रीय लक्ष्यों और हौंसलों को इस रूप में रखा है कि उनकी पूर्ति केवल भारत के हितों का बलि देकर ही सम्भव है। पाकिस्तान के प्रधान मन्त्रियों विदेश मन्त्रियों और राष्ट्रपतियों ने अक्सर कहा है कि भारत पाकिस्तान का नम्बर एक दुश्मन है और पाकिस्तान भारत का कुंठित तथा उस का विनाश करके ही विकास कर सकता है।

भारत के साथ छेड़छाड़

अपने आरोपों का औचित्य सिद्ध करने के लिए पाकिस्तान ने यह भी कहा है कि भारत उसके जायज कामों पर रोक लगाता रहा है और इसके लिए पाकिस्तान ने जूनागढ़ हैदराबाद और कश्मीर की रियासतों के सम्बन्ध में भारत द्वारा अपनाई गई नीति का दृष्टान्त पेश किया है।

घटनाओं को उनके सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम उन घटनाओं को याद करें, जब अंग्रेजों ने भारत को शासन हस्तान्तरित किया तब ५६० देशी रियासतों पर से भी उनकी सार्वभौमता समाप्त हो गई। जैसा हमने पहले देखा है इन रियासतों को भारत या पाकिस्तान, किसी में मिल जाने का परामर्श दिया गया। जूनागढ़ समग्र रूप से गुजरात क्षेत्र में स्थित था और हैदराबाद पूर्णरूपेण दक्षिण में, जो पाकिस्तान से सैकड़ों मील की दूरी पर था। पर पाकिस्तान ने जूनागढ़ के नवाब के अधिमिलन को स्वीकार किया। इस के बारे में अंग्रेज लेखक एण्टयूमिलर लिखता है— जब नवाब ने अपनी मंशा जाहिर की तो भारतीय राज्य मंत्रालय का इससे चिन्तित होना स्वाभाविक ही था और यह चिन्ता उस समय और बढ़ गई जब पाकिस्तान ने नवाब को बुद्धिमानी से काम लेने और भारत से मिल जाने की सलाह देने के बजाय चुपचाप उसके अधिमिलन को मंजूर कर लिया। चाहे किसी भी तरह का विश्लेषण किया जाए एक महीने के सोच विचार के बाद पाकिस्तान द्वारा जूनागढ़ अधिमिलन को स्वीकार कर लेना केवल इस एक लक्ष्य को ही प्रकट करता है कि वह भारत को परेशान करने की नीयत रखता है। स्वयं जूनागढ़ पाकिस्तान के लिए बहुत ही कम काम का है। केवल इसमें पाकिस्तान को भारतीय भूमि में खड़ होने की एक जगह मिल सकती थी। (इण्डिया सिन्स पार्टीशन—लेखक एण्डयूमिलर, प्रकाशक—टमटाइम प्रेस लन्दन, सन् १९५१।)

हैदराबाद के मामले में पाकिस्तान ने उन रजाकारों की मदद की, जो बुद्धिमत्तापूर्ण और स्पष्ट कदम उठाते हुए निजाम को भारत से मिलने की कोशिश का विरोध कर रहे थे।

रागग्रस्त मनोवृत्ति

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, पाकिस्तान का प्रयत्न अपने को भारत विरोधी शक्ति के रूप में प्रदर्शित करना रहा है। पाकिस्तान के अस्तित्व के प्रथम कुछ वर्षों में इसके नेताओं ने उपनिवेशवाद के खिलाफ अपनी नीति घोषित की। इसके बावजूद उन्होंने उपनिवेशवादी पुर्तगाल से मित्रता जारी रखी, और जब भारत ने गोवा, दमन दिउ को, जो भारत में अब भी उपनिवेशवादी पाकेट के रूप में जीवित थे पुर्तगालियों को खाली करने के लिए कहा तो पाकिस्तान ने वचन और कार्य दोनों से उनकी मदद की। १९६१ में जब पुर्तगालियों को खदेड़ भगाया था उस समय भी पाकिस्तान का यही रुख रहा।

यही भारत विरोधी भावना पाकिस्तान के साथ अमेरिका और सोवियत रूस के साथ के सम्बन्धों में भी काम करती रही है। १९४९ में जब भारत के प्रधानमन्त्री श्री नेहरू को अमेरिका-भ्रमण का निमन्त्रण मिला हुआ था, उस समय पाकिस्तान के पत्रों ने विशेष रूप से मित्रता का गीत गाना प्रारम्भ किया और पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री ने मास्को जाने का निमन्त्रण प्राप्त किया। यह यात्रा कभी नहीं की गई। दूसरी तरफ एक साल के भीतर ही पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री संयुक्तराज्य अमेरिका की यात्रा कर रहे थे और साम्यवाद व रूस के खिलाफ सैद्धान्तिक समर्थन और पश्चिमी पक्ष के साथ मित्रता की घोषणा कर रहे थे। भारत के किसी गुट में सम्मिलित न होने की नीति के खिलाफ आलोचना का जो आन्दोलन मिस्टर जान फास्टर डल्स चला रहे थे पाकिस्तान ने उसका भी साथ दिया।

चीन के मामले में भी पाकिस्तान के रुख का यही नमूना रहा है। पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र में चीन गणराज्य के प्रतिनिधित्व का विरोध किया, इसका प्रस्तावक भारत था, किन्तु आज पाकिस्तान चीन के साथ अपना मित्रता की घोषणा कर रहा है और भारत के खिलाफ चीन के साथ यही सम्बन्ध चालू हैं।

न्यूयार्क के 'दी न्यु लीडर' के २ मार्च, १९६४ के अंक में प्रकाशित एक

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
माघ १ शक १८८७ माघ शु० २
(दिनांक २३ जनवरी सन् १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
तार—'आर्यमित्र'
दूरभाष : २२९९१ तार : "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

लेख में प्रो० आर ई० कोनेन्स लिखते हैं—"पाकिस्तान की सभी राजनीतिक गतिविधियों का मूल्यांकन हिन्दुस्तान के साथ उसके सम्बन्धों के सन्दर्भ में करना होगा। पाकिस्तान के लिए न तो रूस शत्रु है और न तो चीन। दुश्मन भारत है, और चीन के साथ पाकिस्तान की नई मित्रता इस बात को उद्घाटित करती है कि चीन कितनी गम्भीरता के साथ 'सीटो' की प्रतिबद्धताओं को लेता है।"

बदलती वफादारियां

पश्चिमी ताकतों (सीटो और सेन्टो) के साथ सैनिक गठबन्धन करने में पाकिस्तान का साम्यवाद-विरोध से तनिक भी सम्बन्ध नहीं है और इसका सीधा सम्बन्ध भारत से है। अमेरिका के इस विश्वास के बावजूद कि अमरीकी सहायता, जिससे पाकिस्तान की सामरिक शक्ति का निर्माण हुआ, एशिया में साम्यवादी प्रसार के विरुद्ध प्रयुक्त होगी, पाकिस्तानी नेताओं ने यह तथ्य उजागर कर दिया है कि उनकी प्रमुख चिन्ता भारत को धमकाने और उसे दबाने की है।

प्रेसीडेन्ट अयूब ने किसी समय यह सलाह दी थी कि पाकिस्तान और भारत को एक साथ मिलकर साम्यवादी चीन के खिलाफ सुरक्षा का संयुक्त प्रबन्ध करना चाहिए किन्तु अपनी प्रकृति में यह मित्रता के एक कार्य से कहीं अधिक [illegible] आदि प्राप्त करना था। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि सम्मिलित रूप 'सुरक्षा' का प्रबन्ध तब तक सम्भव नहीं हो सकता जब तक कि हिन्दुस्तान पहले काश्मीर को पाकिस्तान को नहीं दे देता। १९६१ में, ज्यों ही यह स्पष्ट हो गया कि चीन खुले रूप में भारत के प्रति शत्रु और आक्रामक रूप धारण कर रहा था, पाकिस्तान की पश्चिम नीति बदल रही थी। एकाएक पाकिस्तानी नेताओं ने चीन की मित्रता के लिए स्नेहपूर्ण भावनाएं विकसित कीं। पाकिस्तान के समाचार पत्र राज्य द्वारा (जिन पर राज्य का नियन्त्रण रहता है) चीन की प्रशंसा में बातमुख हो गए।

१९६२ के पतझड़ में, भारत पर चीन के विशाल हमले के बाद, पाकिस्तान पूर्णरूपेण भारत के खिलाफ चीन का समर्थन करता हुआ सामने आया। संयुक्त राज्य अमेरिका और दूसरी पश्चिमी शक्तियों से पाकिस्तान ने जबर्दस्त विरोध प्रकट किया कि वे चीन के भय के खिलाफ भारत को अपनी सैन्य-शक्ति सुदृढ़ करने के लिये अस्त्र-शस्त्र की सहायता क्यों दे रही हैं। स्पष्ट रूप से पाकिस्तान भारत की सुरक्षा-शक्ति को निम्नकोटि का रखना चाहता था, ताकि पाकिस्तान भारत के खिलाफ चीन से मिलकर [illegible] दूसरा मोर्चा खोल सके।

चीन के साथ पाकिस्तान का बढ़ता गठबन्धन काश्मीर के उत्तरी सीमा पर एक गैरकानूनी समझौते के रूप में अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया, जिसके अधीन पाकिस्तान ने जम्मू और कश्मीर प्रदेश का एक हिस्सा जो पाकिस्तान के अधिकार में था चीन को दे दिया।

चीन पाक समझौता

पाकिस्तान के विदेशमन्त्री मि० जेड० ए० भुट्टो ने 'पाकिस्तान नेशनल एसेम्बली' में १७ जुलाई १९६३ को बोलते हुए कहा था—

"युद्ध के समय, पाकिस्तान अकेला नहीं रहेगा। एशिया का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र उस समय पाकिस्तान की मदद करेगा। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध एशिया के सबसे विशाल प्रदेश की सुरक्षा और अखंडता का प्रश्न है।"

यदि श्री भुट्टो का विश्वास किया जाए तो पाकिस्तान और चीन में एक अलिखित सैनिक मित्रता का समझौता हुआ है।

१९६५ के प्रारम्भ में, कच्छ में पाकिस्तान द्वारा हमला और उसके बाद ही, युद्धविराम रेखा के पार से कश्मीर घाटी में पाकिस्तान द्वारा घुसपैठियों का भेजना, और इसके बाद छम्ब क्षेत्र में भारी हथियार बन्द आक्रमण, हिन्दुस्तान के खिलाफ पाकिस्तान की आक्रामक स्थिति का स्पष्ट और ताजा उदाहरण है।

भविष्य की सम्भावनाएं

दुर्भाग्यवश पाकिस्तान के लोग अब भी स्वतन्त्र लोगों की नागरिकता के बुनियादी अधिकारों और जनतन्त्रता प्राप्त करने के लक्ष्य से काफी दूर हैं। पाकिस्तान बनने के बाद से १८ साल के भीतर कई सरकारें बदली हैं और खूबी तो यह है कि इनमें से कोई भी सरकार वयस्क मताधिकार पर आधारित राष्ट्रीय चुनावों के फलस्वरूप नहीं बनी है। शुरू में पाकिस्तान का शासन एक ऐसी सरकार के हाथ में था, जो विधान-मण्डल के प्रति उत्तरदायी थी और उस विधान-मण्डल में पाकिस्तान बनने के पहले हुए सीमित मताधिकार के आधार पर निर्वाचित सदस्य थे। हालांकि उस विधान-मण्डल पर ऐसे साम्प्रदायिक तत्वों का ही आधिपत्य था जो हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच दुश्मनी फैलाकर आगे बढ़े थे। फिर भी उस विधान-मण्डल में विभिन्न मतों के कुछ लोग भी थे।

अल्प संख्या में होने पर भी इस तरह के थोड़े से जो प्रमुख सदस्य थे, वे भारत और पाकिस्तान की जनता के बीच कायम ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध से पूर्णतः अवगत थे, इसलिए उन लोगों ने मांग की कि पाकिस्तान में पूर्ण जनतन्त्र हो और अपने पड़ोसी देश भारत के साथ अच्छे सम्बन्ध कायम किये जाएं।

१९५८ में सैनिक विद्रोह हो जाने के परिणामस्वरूप इस सीमित प्रतिनिधित्व वाली सरकार के उलट जाने के साथ-साथ पाकिस्तानी जनता मार्शल ला के अधीन आ गई। फौजों की नग्न शक्ति से पाकिस्तानी शासक दल की साम्प्रदायिकता को और बल मिला। विरोधियों की आवाजें दबा दी गईं और खासकर पूर्वी पाकिस्तान के वे नेतागण या तो जेलों में डाल दिए गए या चुप कर दिये गये, जो प्रान्तीय स्वायत्तता कायम करने, बंगला भाषा को प्रतिष्ठित करने और गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों के साथ न्यायोचित बर्ताव करने की मांग कर रहे थे। इतना ही नहीं, प्रेस पर कड़ा नियन्त्रण लगा दिया गया और उदार दृष्टिकोण, जो पाकिस्तान में यों ही कमजोर था, के लिए भी कुछ लिखने-बोलने पर पाबन्दी लगा दी गई।

बाद में चलकर पाकिस्तान ने तथाकथित बेसिक डिमोक्रेसी या बुनियादी जनतन्त्र (जिसके अन्तर्गत थोड़े से हेरफेर-लायक निर्वाचक एक हेरफेरलायक निर्वाचक-मण्डल का चुनाव करता है) जो पैसे लागू किया उससे पूर्व स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ा है—अब भी वहां डिक्टेटर का राज्य है। पाकिस्तान की ऐसी स्थिति का भारत की स्थिति के साथ मुकाबला करना सिर्फ इसलिए आवश्यक हो गया है कि एक ओर जहां भारत में घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अखबारों और राजनीतिक नेताओं को भिन्न भिन्न प्रकार के अपने मतों को प्रकाशित प्रसारित करने की आजादी हासिल है और पूर्ण जनतन्त्र मौजूद है, वहां पर दूसरी ओर पाकिस्तान में लोगों पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध कायम हैं और जनतन्त्र नाम की कोई भी चीज वहां नहीं है।

पाकिस्तान की सशस्त्र फौजों ने जब जम्मू और कश्मीर के छम्ब क्षेत्र में बड़े पैमाने पर पूर्णरूपेण हमला किया, तो उसके तीन दिन बाद ही १ सितम्बर को प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने पाकिस्तान की जनता के नाम रेडियो से एक सन्देश प्रसारित करते हुए कहा—"हमारा झगड़ा पाकिस्तान की जनता के साथ नहीं है। हम चाहते हैं कि पाकिस्तान की जनता सुखी समृद्ध रहे, इसलिये पाकिस्तान की जनता के साथ हम शान्ति और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखना चाहते हैं। हम सिर्फ उस हुकूमत या सरकार के खिलाफ हैं, जो स्वतन्त्रता जनतन्त्र और शान्ति में हम लोगों की भांति विश्वास नहीं करती।"

इस बात की आशा करते हुए कि भविष्य में एक दिन जरूर आएगा, जब पाकिस्तान की जनता को वे ही जनतान्त्रिक अधिकार प्राप्त होंगे जो भारतीयों को हैं और भारत-पाकिस्तान सम्बन्ध एक मित्रतापूर्ण वातावरण में पनपेंगे, भारत की सरकार और जनता एक ऐसे साम्प्रदायिक सैनिक दल की, जिसकी आज पाकिस्तान पर हुकूमत है, गैरजिम्मेदार कारवाई से भारत की क्षत्रीय अखण्डता पर आने वाली आंच की उपेक्षा नहीं कर सकती। ★

[illegible]

भारत आणविक शक्तियों से सुदृढ़ हो

(श्री प० नरेन्द्र जी प्रधान आ० प्र० सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद, आन्ध्र)

विज्ञान के तीव्र गति वाले वतमान युग मे युद्ध की शैली बिलकुल बदल चुकी है। कारण कि नित नए-नए प्रकार के तीव्र प्रभावकारक शस्त्रो का निर्माण बढ़ता जा रहा है। इसमे अणु-बम आदि प्रमुखता प्राप्त किए हुए हैं। जिनकी विनाशकारी शक्ति ससार की शान्ति के लिए खतरा बनी हुई है। इसी भयावह स्थिति को अनुभव कर भारत के भूतपूव प्रधान मन्त्री स्व० प० जवाहरलाल जी नेहरू ने स्पष्ट शब्दो मे यह समझाया था कि हमारे सम्मुख जो शान्ति और विनाश के दो माग है, इन मे से किसी एक का वरण हमे करना होगा। यह स्पष्ट है कि मानवता की रक्षा के लिये हम शान्ति का माग ही ग्रहण करेंगे। इसलिये घोषणा की थी कि ऐसे परम विनाशकारी अस्त्रास्त्रो के निर्माण पर जो आणविक शक्ति से बनते हैं केवल पूर्णत प्रतिबन्ध ही लगा दिया जाना नहीं चाहिये बल्कि जो बनें हो उन्हे भी नष्ट कर दिया जाना चाहिये, जिससे कि विश्वशान्ति के लिए कोई खतरा शेष न रह सके। तथापि पडित नेहरू के इस दृष्टिकोण का पूर्णत समथन बरतानिया के सुप्रसिद्ध दाशनिक बर्ट्रेन्ड रसल ने किया था। इसी प्रकार विश्व के अन्य शान्तिप्रिय दार्शनिको ने भी इसे मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया था। इसी के परिणाम स्वरूप पडित जी के अपने काल मे ही आणविक शस्त्रास्त्रों के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी एक आशिक समझौता किया गया था, जिस पर हस्ताक्षर करने वालो मे भारत देश अग्रणी रहा है। चीन के अतिरिक्त विश्व के अन्य सभी शान्तिप्रिय राष्ट्रों ने इस पर हस्ताक्षर किये थे।

विश्व इस समय विनाश के बडे दुराहे पर पहुच चुका है। एक ओर पारस्परिक शान्ति का जीवनदायी सिद्धान्त है, जो ससार को 'जियो और जीने दो' की शिक्षा का स्मरण कराता है और जिसकी महत्ता को ससार के सभी लोग स्वीकार कर चुके हैं तो दूसरी ओर चीन तथा रूस क समथक इण्डोनेशिया और पाकिस्तान जसे राष्ट्र भी हैं जो पारस्परिक शान्ति के सिद्धान्त का परित्याग कर विश्व को युद्ध की अग्नि मे झोक देना चाहते हैं। चीन एशिया की एक बहुत बडी शक्ति है और इसकी विस्तारवादी नीति ने इसे विवश कर दिया है कि वह फासिस्टी रवया अपनावे। कारण कि इसके बिना वह अपनी बढी हुई जन-सख्या की समस्या का समाधान नहीं कर सकता और न ही आर्थिक अनुपात को ही ठीक प्रकार से दृढ बनाये रख सकता है। इसलिये वह हर बात मे शक्ति के प्रयोग को प्रधानता देता रहा है और अणुबमों के विस्फोट का प्रयोग भी कर रहा है। इसी कारण आज सम्पूण एशिया और अफ्रिका का जहा अस्तित्व खतरे मे पड गया है वहीं इनकी स्वतन्त्रता को भी खतरा हो गया है। चीन की सामरिक शक्ति ने इन्डोनिशिया और पाकिस्तान जैसे साधारण देशो को इसकी आधीनता पर विवश कर दिया है और यह आज चीन को अपना प्रमुख सरक्षक समझ बैठे हैं।

श्री प० नरेन्द्र जी

चीन भारत पर आक्रमण कर न केवल अपनी विस्तारवादी लिप्सा की पूर्ति ही चाहता है बल्कि वह सारे महत्व पूण मौलिक सिद्धात पारस्परिक शान्ति और गुटों से पृथक रहने आदि को हमारी नीति से हमे हटाना चाहता है। चीन के यह उद्देश्य अब रहस्य नहीं रहे हैं। चीन वतमान मे ही नहीं बल्कि भविष्य मे भी एशिया और अफ्रीका के लिये खतरा बन चुका है। इसलिए भारत शान्ति स्थापना की दिशा मे मौलिक इच्छा रखते हुए भी शान्ति का अग्रणी प्रचारक होने के नाते आणविक शस्त्रास्त्रो के निर्माण का समथन नहीं करता था। किन्तु जबकि पडोसी राष्ट्र हमे इस विनाशकारी शक्ति को लेकर नष्ट करने पर तुले हुए हैं तब प्रश्न है कि भारत इस विषम स्थिति का सामना किस प्रकार करते हुए शत्रु को उसकी दानवी इच्छाओ से रोके। हमे अपनी सीमाओ की ओर इससे भी बढ़कर अपनी स्वाधीनता की रक्षा करने के निमित्त दानवी प्रवृत्ति को नष्ट करने के लिए आणविक शक्ति के प्रयोग म कटिबद्ध होना है। और इसमे किंचित भी हिचकिचाहट नहीं करनी चाहिये। हम बडी ही सरलता से अपने साधनो को प्रयोग मे ला सकते हैं। इसके लिए हमारे पास साधन भी हैं और इसके विशेषज्ञो की कमी भी नहीं है।

लोक सभा के जिन सदस्यो ने हमारे प्रधान मन्त्री जी से आणविक शास्त्रास्त्रो के निर्माण करने की प्राथना की है और जिसका समथन केन्द्रीय मन्त्री श्री मेहरचन्द जी खन्ना तथा मध्यप्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री मिश्रा जी ने किया है इससे मुझे पूरी पूरी सहमति है। ससार मे सदैव शक्तिवान की जीत होती रही है। मैं यहा यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि आणविक शस्त्रास्त्रो के निर्माण के उपरान्त भी हम इनका प्रयोग तब तक बिलकुल नहीं करगे,जब तक कि प्रतिपक्षी की ओर से इस बात का विश्वास न हो जाये कि उसके विनाशकारी आक्रमण से मानवता महाविनाश के गत मे गिरे बिना नहीं रहेगी। भारत ने जिस भाति स्वतन्त्रता प्राप्त कर पडोसी राष्ट्रो की स्वाधीनता के लिए मागदशन किया है, उसी भांति भारत पर इसका भी दायित्व बनता है कि वह पडोसी राष्ट्रो की स्वाधीनता का जागरूक प्रहरी बने और रक्षा करे। यह उसी अवस्था मे सम्भव है जब कि भारत स्वय आणविक शक्तियो से सम्बद्ध होकर सुदृढ़ हो जाये।

शुभ-विवाह

काँठ (मुरादाबाद) के सुप्रसिद्ध आर्य श्रीयुत मास्टर फकीरचन्द जी के सुपुत्र श्री डा० देवव्रत जी एम० एस० रजिस्ट्रार इर्विन हस्पताल देहली का विवाह सस्कार सौ०प्रेमलता एम बी बी. एस के साथ २-१२-६५ को देहली मे सम्पन्न हुआ। सस्कार श्रीयुत आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री एम० ए० की अध्यक्षता मे श्री प० देवव्रत जी धर्म्मेन्दु ने कराया। इस अवसर पर श्री मास्टर जी ने आर्यसमाज की सस्थाओ को ३५१) दान दिया जिसकी सूची इस प्रकार है–

१०१) शाहजहापुर की सस्थाओं को
५१) सार्वदेशिक सभा
५१) आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्रदेश
४१) कन्या गुरुकुल हाथरस
२१) श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम हरदुआगज (अलीगढ)
२१) आर्यसमाज काठ
१२) महिला आर्य समाज काठ
१२) सावजनिक पुस्तकालय काठ
११) आर्यसमाज फीरोजशाह कोटला नई दिल्ली

इस विवाह की विशेषता यह थी कि यह अन्तर्जातीय एव अन्तर्प्रान्तीय था। इस अवसर पर प्राप्त अनेक शुभ कामनाओ मे से हम श्री डा० हरिशकर शर्म्मा जी की मगल कामना नीचे उद्धृत करते हैं–

चि०देवव्रत जी एवं सौ०प्रेमलता देवी के शुभ विवाहोपलक्ष्य में मंगल कामना

मगलमय भगवान, विश्व का त्राता तू है,
ज्ञान-निधान, महान, विधाता तू है।
कर गुण-गरिमा-गान वधू-वर प्रेम प्रसारें,
बन सुकृति सुजान, सुयश जग मे विस्तारें,
निज मातृ-भूमि के भक्त रह,
धर्म्म-कर्म व्युत्पन्न हों,
व्रत-धीर बनें ध्रुव धीर हो
सुख-समृद्धि-सम्पन्न हों।

इन पक्तियों के लेखक को श्री मास्टर जी के चरणों मे बैठकर काठ के डी० एस० एम० हाई स्कूल (अब डिग्री कालेज) मे शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त रहा है। न जाने कितने विद्यार्थियो मे मास्टर जी ने अपनी शिक्षा एव आचरण से आर्यसमाज के प्रति प्रेम की शुभ-भावना भरी है।

हमारी शुभ-कामनाएँ मास्टर जी के साथ हैं।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरङ्कृता । तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥७॥
ऋ० १।१।२।१

हे अनन्तबल परेश वायो दर्शनीय ! आप अपनी कृपा से ही हमको प्राप्त हो हम लोगों ने अपनी अल्पशक्ति से सोम (सोम वल्ल्यादि) औषधियों का उत्तम रस सम्पादन किया है और जो कुछ भी हमारे अच्छे पदार्थ है वे आपके लिए 'अरङ्कृता' अलङ्कृत अर्थात् उत्तमरीति से हमने बनाये हैं और वे सब आपके समर्पण किये गये हैं उनको आप स्वीकार करो (सर्वात्मा से पान करो) हम दीनों की दानना सुनकर जैसे पिता को पुत्र छोटी चीज समर्पण करता है उस पर पिता अत्यन्त प्रसन्न होता है वैसे आप हम पर होओ।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस
(वार्षिकोत्सव १८, १९, २० फरवरी १९६६)

का महोत्सव १८ १९ २० २१ फरवरी ६६ को होगा। यज्ञ प्रवचन व्याख्यान भजन सम्मेलन होंगे। दीक्षान्त भाषण भारत के रक्षामन्त्री माननीय श्री यशवन्तराव चह्वाण देंगे। अनेक धार्मिक सामाजिक राष्ट्रिय नेता पधारेंगे। ८ फरवरी १९६६ को नवीन कन्याओं का प्रवेश होगा। यह गुरुकुल निःशुल्क शिक्षा संस्था है दूध घी सहित भोजनादि का व्यय केवल ३०) मासिक होता है। सबका एक जैसा सीधा सादा रहन सहन है। अन्य विषय के साथ धार्मिक तथा नियमित व्यवहार विषयों की शिक्षा दी जाती है। —अक्षयकुमारी शास्त्री आचार्या मुख्याधिष्ठात्री

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार ३० जनवरी १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसंवत १ ९७ २९ ४९ ०६६

भारत की नयी प्रधान मन्त्री और उनका मन्त्रिमण्डल

भारत की नयी प्रधान मन्त्री के रूप मे श्रीमती इन्दिरा गांधी ने शपथ ग्रहण कर ली है और नवीन मन्त्रिमण्डल की घोषणा कर दी गई है। हम नयी प्रधान मन्त्री और उनके नवीन मन्त्रि मण्डल का हार्दिक स्वागत करते हैं।

नयी प्रधान मन्त्री के रूप मे श्रीमती इन्दिरा गांधी का निर्वाचन राजनैतिक दृष्टि से तो अपना महत्व रखता ही है इसका भारतीय सामाजिक विकास की दृष्टि से भी विशेष महत्व है। महर्षि दयानन्द ने इस युग मे सर्वप्रथम भारतीय समाज के लिये नारी जागरण को महत्व प्रदान किया था। स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा का द्वार खोलकर नारी के जिस सामाजिक विकास की कल्पना की थी, नयी प्रधान मन्त्री के रूप मे राष्ट्र ने उसे साकार रूप प्रदान कर दिया है। आज भारत की नारी पीड़ित दलित और पैरों की जूती न रहकर राष्ट्र निर्माण मे बराबर की साझीदार बन चुकी है।

नारी सम्मान की इस भावना को राष्ट्र ने आज बिना किसी झिझक के स्वीकार कर अपनी प्रगतिशीलता का परिचय दिया है। नारी का क्षेत्र घर या बाहर यह एक विचारणीय प्रश्न रहा है परन्तु श्रीमती गांधी जैसी नारियां इस प्रश्न से बाहर हैं। श्रीमती गांधी ने राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन और भारत के नव-निर्माण मे जो साहसपूर्ण योगदान दिया है और जिस राजनैतिक क्षमता का परिचय दिया उससे सारे राष्ट्र को आशा है कि वे प्रधान मन्त्री के गुरुतर भार को सफलतापूर्वक वहन कर सकेंगी और राष्ट्र संकट की घड़ियों में से सफलतापूर्वक उसको आगे बढ़ा सकेगा। संसार के सबसे बड़े प्रजातन्त्र की प्रधान मन्त्री के रूप में श्री इन्दिरा जी पर गम्भीर उत्तरदायित्व हैं। सारा देश ही नहीं विश्व उत्सुकता भरी दृष्टि से उनकी ओर निहार रहा है। हम मित्र परिवार की ओर से नयी प्रधान मन्त्री की सफलता की कामना करते है।

नवीन मन्त्रिमण्डल मे सामान्य परिवर्तन हुए हैं आशा है प्रधान मन्त्री की टीम सफलता का वरण करेगी और योग्यतापूर्वक विभागीय समस्याओ को सुलझाकर राष्ट्र के विकास मे सहायक बनेगी। हम नये मन्त्रिमण्डल और उसके सभी सदस्यो को हार्दिक बधाई देते हैं और उनकी सफलता की कामना करते हैं।

श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी की सफल विदेश-यात्रा

श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी अफ्रीका और इङ्गलैंड मे वैदिक धर्म प्रचार यात्रा पूर्ण कर भारत लौट आये है। हम उनकी सफल यात्रा के लिये उन्हे हार्दिक बधाई देते है। श्री त्यागी जी ने अफ्रीका के मूल निवासियो तक वैदिक विचार धारा का प्रचार करने की दिशा मे जहां विदेश प्रचारको ने विशेष ध्यान नहीं दिया था परन्तु इस बार त्यागी जी ने इस कमी को पूरा कर दिया है। श्री त्यागी के प्रयत्न से अफ्रीका के कई परिवार आर्यसमाज मे दीक्षित हुए और अफ्रीकी जनता ने अनुभव किया कि विश्व मे रंगभेद को भुलाकर मानवीय एकता के आधार पर आर्यसमाज मानवोन्नति का काम कर रहा है।

ईसाई मिशनरियो ने विश्व के कोने-कोने मे ईसाइयत का प्रचार किया है और दूसरों को सभ्य बनाने का दावा किया है परन्तु इस तथ्य को नहीं भुलाया जा सकता कि ईसाई पादरी रंगभेद को समाप्त नहीं कर सके क्योंकि वे स्वयं रंगभेद के शिकार हैं परन्तु आर्यसमाज का मिशन इसके विपरीत एक आदर्श मिशन है जिसके आदर्श को क्रियान्वित कर त्यागी जी ने मानव जाति की सेवा की है और आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाया है। श्री त्यागी जी ने मूल अफ्रीकी बालक बालिकाओ को वैदिक शिक्षा देने के लिए भारत भिजवाये हैं। आशा है ऐसे छात्र जब लौटेंगे तब वे आदर्श नागरिक के रूप मे आर्यसमाज के सन्देशवाहक बनेंगे और मानवता की सेवा करेंगे। अफ्रीका से श्री त्यागी जी इङ्गलैंड भी गये। लन्दन मे भारतीयों मे आर्यसमाज के प्रति स्नेह भावना जागृत करने मे उन्हे विशेष सफलता मिली। लन्दन मे आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों का कार्यक्रम विशेष उत्साहपूर्वक सम्पन्न होने लगा है। लन्दन मे आर्यसमाज भवन निर्माण की दिशा मे वहां के भारतीयो ने उत्साह दिखाया है। आशा है भारत से और इङ्गलैंड के भारतीयो की सहायता से लन्दन मे आर्यसमाज भवन निर्माण कार्य शीघ्र सम्पन्न हो सकेगा।

श्री त्यागी जी की सफल विदेश यात्रा के लिये हम मित्र परिवार की ओर से उन्हे बारम्बार बधाई देते है। मित्र श्री त्यागी जी द्वारा आरम्भ किये गये कार्य की पूर्ति मे सदैव सहायता करता रहेगा।

वैदिक मिशन सफल हो यही कामना है।

गणतन्त्र दिवस

भारतीय गणतन्त्र दिवस समारोह सम्पन्न हो गया। यद्यपि प्रधान मन्त्री शास्त्री के वियोग का शोक जनमानस पर छाया हुआ था तदपि देश ने गणतन्त्र के संकल्प को योजनानुसार पुनः दोहराया है।

गणतन्त्र समारोह के अवसर पर देशवासियो को गम्भीरतापूर्वक यह विचारना चाहिये कि देश मे गणतन्त्र की वास्तविक भावना का कहां तक विकास हो रहा है। देश की असंख्य जनता तो गणतन्त्र के गौरव को तभी अनुभव कर सकेगी जब उसकी प्राथमिक आवश्यकताएं पूर्ण हों। राष्ट्र मुख्य समस्याओं की दिशा में अग्रसर हो। जब तक देश की बहुसंख्या अभाव अन्याय और अज्ञान के अभिशापों में सन्तप्त रहेगी तब तक देश मे सच्चा गणतन्त्र नहीं हो सकता। हम सब देशवासियो का कर्तव्य है कि गणतन्त्र के नवनिर्माण समता अभिवृद्धि सन्देश को अधिक अधिक कल्याण एवं व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न करें।

गणतन्त्र को नयी प्रधान मन्त्री के रूप मे एक नारी का नेतृत्व प्राप्त हुआ है। गणतन्त्र उनके नेतृत्व मे उन्नति करेगा यही आशा है।

वसन्त का वहार

ऋतुराज के शुभागमन की सूचना वसन्त पंचमी के रूप मे हम पा चुके हैं। प्रकृति मे वसन्त नवीनता और परिवर्तन का प्रतीक है। वसन्त के इस सन्देश को हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन मे अपनायें यही हमारा प्रयत्न होना चाहिये। शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से वसन्त का समय बड़ा ही मनोहारी और आकर्षक होता है। हम सब स्वास्थ्य सुधार एवं मानसिक प्रफुल्लता की दृष्टि से इस समय का उपयोग कर सकते है। वसन्त की परिवर्तन भावना हमे शारीरिक एवं मानसिक बुराइयों को परिवर्तन करने की प्रेरणा दे रही है। राष्ट्र और समाज के जीवन मे भी वसन्त भावना का विकास हो हम सबको ऐसा प्रयत्न करना चाहिये।

प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी के वियोग से राष्ट्र के हृदया मे जो दुख और दर्द फैल गया था उठी है उस कर्तव्य और निर्माण के पथ का पालन कर हम आगे कदम बढ़ाते रहें। प्रकृति का वसन्त हमारे हृदयों और राष्ट्रीय जीवन का वसन्त बने यही कामना है।

३० जनवरी शहीद दिवस

३० जनवरी महात्मा गांधी जी का बलिदान दिवस है। देश ने इस दिवस को शहीद दिवस के रूप मे मनाना आरम्भ कर दिया है भारत की स्वाधीनता के लिये असंख्य वीरो ने तप-

अन्तरंगाधिवेशन के स्थान में परिवर्तन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दि० १३ फरवरी को बरेली में जो होने जा रहा था वहां न होकर कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस जिला अलीगढ़ के वार्षिकोत्सव के साथ साथ दि० १९ व २० फरवरी १९६६ के दिन शनिवार रविवार को अन्तरंग की बैठकें बुलाने का निश्चय हुआ है। अन्तरंग की प्रथम दिवस की बैठक १९ को रात्रि में ८ बजे और द्वितीय बैठक २० को प्रातः ९ बजे से प्रारम्भ होगी। अन्तरंग सदस्यों से सविनय प्रार्थना है कि कृपया नियत समय पर पधार कर कृतार्थ करेंगे।

पूर्व की ओर से आने वालों को हाथरस सिटी स्टेशन पर उतर कर बस या रिक्शा द्वारा गुरुकुल पहुंचना चाहिये। और मुरादाबाद बरेली की ओर से आने वालों को अलीगढ़ स्टेशन पर उतर कर मोटर बस द्वारा हाथरस के रास्ते के द्वारा गुरुकुल पर उतरना चाहिए।

—चन्द्रदत्त
सभा मन्त्री आ०प्र० सभा उ० प्र०

त्याग किये और बलिदान द्वारा उसका अभिनन्दन किया। बलिदानी वे वीर तो शहीद हो गये क्या हम उनके प्रति कृतज्ञ बन सके हैं यही प्रश्न बलिदान दिवस के अवसर पर हमें (प्रत्येक भारतवासी को) स्वयं से करना है स्वाधीनता की प्राप्ति बलिदान से हुई है और उसकी रक्षा के लिए सदैव बलिदान की आवश्यकता बनी रहेगी। शहीद दिवस जहां हमें कर्तव्य भावना की प्रेरणा दे रहा है वहीं हम सबका यह भी पुनीत कर्तव्य है कि हम गांधी जी और देश के सभी बलिदानियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करें। देश को स्वाधीन हुए १८ वर्ष हो चुके हैं परन्तु यह देश का दुर्भाग्य है कि अभी तक कोई ऐसा प्रकाशन भारत सरकार नहीं कर सकी है जिसमें देश के लिए बलिदानियों का सचित्र विवरण उपलब्ध हो सके। इस दिशा में सरकार को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आशा है सरकार बलिदानियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के उद्देश्य से व्यावहारिक कदम उठायगी।

भारत सरकार ने ३० जनवरी को दिन में ११ बजे दो मिनट मौन रखकर शहीदों को श्रद्धांजलि देने की प्रथा दी है। हर व्यक्ति जहां भी हो किसी कार्य में भी हो इस कृतज्ञता प्रकाशन कार्य को सम्पन्न करना चाहिये।

★

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा के आवश्यक निश्चय

(दिनांक १३—११—६५ मिर्ज़ापुर)

(१) निश्चय सं० २ सभा श्री प्रधान जी की आज्ञानुसार निम्न प्रकार शोक प्रस्ताव सब अन्तरंग सभासदों ने मौन खड़े होकर पारित किया—

सभा की अन्तरंग का यह साधारण अधिवेशन सभा के मुख्य निरीक्षक श्री विश्वम्भरनाथ जी त्रिपाठी कानपुर निवासी की सुपुत्री श्री ओमवती जी सभा के उपदेशक श्री रामनारायण जी विद्यार्थी के सुपुत्र श्री ज्ञानेन्द्रप्रताप जी नरही लखनऊ, श्री देवीप्रसाद जौहरी उर्फ श्री देव वानप्रस्थी ज्वालापुर के सुपुत्र मेजर श्री जोगेन्द्रप्रताप जी लखनऊ सभा उपदेश विभाग के लेखक श्री पन्नालाल जी की सास श्रीमती जुगमति देवी जी लालकुआं लखनऊ बुआ श्रीमती सुखदेवी जी भरथना, श्री विश्वनाथ प्रसाद जी द्विवेदी मिर्ज़ापुर श्री बिहारी लाल जी सदस्य आर्यसमाज पूरनपुर के देहावसान पर हार्दिक शोक एवं समवेदना प्रकट करता हुआ परमपिता परमात्मदेव से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति और शोकातुर परिवार तथा इष्ट मित्रों एवं आर्य जगत को धैर्य प्रदान करे।

(अ) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का यह साधारण अधिवेशन भारत पाकिस्तान युद्ध में भारतीय सेना के जिन वीर सैनिकों एवं जनरलों ने वीर गति प्राप्त की है उनके बलिदान के प्रति हार्दिक शोक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत हुतात्माओं को सद्गति प्रदान करे। युद्ध में वीरगति प्राप्त सैनिकों ने भारत के गौरवपूर्ण इतिहास का निर्माण किया है वे देशवासियों के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत रहेंगे।

(२) नि० सं० ३ के अनुसार निम्नलिखित आर्यसमाजें सभा से सम्बद्ध प्रविष्ट किये जावें।

१—आ० स० कासिमपुर गढ़ाईपुर पो० काजिमाबाद जि० अलीगढ़, स्थापना तिथि २७-१० ६२ कोटि १००)।

२—आ० स० घमण्डपुर विनयनगर पो० पदमपुर, जि० गढ़वाल, स्थापना तिथि १६ ७ ६४ कोटवन १००)।

३—महिला आर्य समाज बहराइच पो० बहराइच स्थापना तिथि १६ ९ ६३ कोटिधन से मुक्त।

४—आ०स० बरदहा बाजार, पो० बरदहा कम्प ए० १३५०, जि०बहराइच स्थापना तिथि ११ जून १९६१ कोटि धन १००)।

५—आ० स० जानकीनगर पो० मथुरा बजार जि० गोंडा स्थापना तिथि ११ मार्च १९६२ कोटिधन १००)।

(३) निश्चय सं० ११ संस्कृत प्रचार योजना के सम्बन्ध में निम्नप्रकार निश्चय हुआ कि

(१) आर्यसमाजों को विशेष प्रेरणा दी जाय कि वे संस्कृत प्रचार की विशेष व्यवस्था करें।

(२) कक्षा ८ तक आर्य विद्यालयों में संस्कृत को अनिवार्य विषय रखने की नीति का दृढ़ता पूर्वक पालन किया जाय।

(३) कक्षा ९ व १० में संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाया जाए।

(४) नि० सं० १० के अनुसार आर्य विद्यालयों की प्रशासकीय योजना में सभामन्त्री जी ने संशोधन प्रस्तुत किये। सभा इस बात से सहमत है कि प्रशासकीय योजना में सभा का यह अधिकार सुरक्षित रखते हुये कि विद्यालय में अव्यवस्था होने पर सभा संस्था विद्यालय के प्रशासन को अपने सीधे अधिकार में ले सकती है। सभा द्वारा पूर्ण सन्तोषजनक व्यवस्था न होने पर ही प्रशासन को प्रशासक नियुक्त करने का अधिकार हो।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि आर्य विद्यालयों की प्रशासकीय योजना में प्रस्तावित प्रारूप स्वीकृत किया गया।

यह भी निश्चय हुआ कि सभा की ओर से श्री मदनमोहन वर्मा जी सभा प्रधान श्री चन्द्रदत्त जी सभा मन्त्री, श्री रामबहादुर जी अधिष्ठाता शिक्षा विभाग श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री तथा श्री विद्याधर जी कानपुर की उपसमिति इस सम्बन्ध में प्रशासन से आवश्यक विचार विमर्श कर सभा के दृष्टिकोण से संशोधन कर लें।

(५) नि० सं० १२ के अनुसार श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री संयोजक 'महात्मा नारायण स्वामी जयन्ती' समारोह के सम्बन्ध में पत्र प्रस्तुत होकर निश्चय हुआ कि महात्मा नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह सम्प्रति देश की संकटकालीन स्थिति को दृष्टि में रखते हुए स्थगित किया जाय। यह भी निश्चय हुआ कि जयन्ती योजना के अन्य प्रकाशन सम्बन्धी एवं धन संग्रह

मास फरवरी ६६ के प्रोग्राम

श्री रामस्वरूप जी आ० मु०—६ से ९ सीयर (बलिया) १४ से २२ चौरी-चौरा।

श्री धर्मराज सिंह जी—७ से ९ गौरी ११ से १४ फ़ोरदपुर १८ से २० रठौडा भका, २६ से २८ भींवा।

श्री गजराज सिंह जी—१८ से २१ शिकोहाबाद।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—२९ जनवरी से ६ फरवरी गुरुकुल रावपुर ८ से ११ पाली १२ से १८ नवाबगंज (गोंडा) १९ से २१ अमीगंज लखनऊ २५ से २८ अकबरपुर कानपुर।

श्री वेदपाल सिंह जी—१७ से २० मेस्टनरोड कानपुर २१ से २३ बिधूना।

श्री खेमचन्द्र जी—३१ जनवरी व १ फरवरी उतरौला, १२ से १८ सदर मेरठ १९ से २१ अमीनाबाद लखनऊ, २५ से २७ इस्लामनगर।

श्री जयपाल सिंह जी—१६ से १८ बहादुर।

श्री प्रकाशवीर जी—१२ से १८ हापुड़।

श्री विन्ध्येश्वरी सिंह जी—१७ से २० बलिया।

श्री डा० प्रकाशवती जी—१४ से २२ चौरी चौरा, २६ से २८ बिस्वा।

महोपदेशक

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—१२ से १८ अमरोहा, श्री बलवीर जी शास्त्री—९ से ११ पाली, १४ से २२ चौरीचौरा, २५ से २७ इस्लाम नगर।

श्री सत्यमित्र जी शास्त्री—१७ से २० कानपुर, श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री—१२ से १८ रुड़की, १९ से २१ अलीगंज लखनऊ श्री विश्ववर्धन जी वेदालंकार १२ से १८ सदर मेरठ, १९ से २१ शिकोहाबाद २६ से २८ बिस्वा।

श्री केशवदेव जी शास्त्री—१९ से २१ अलीगंज लखनऊ, स्वा० प्रणवानन्द जी १२ से से १८ मवाना, १९ से २१ अलीगंज लखनऊ, श्री ललताप्रसाद व श्री स्वा० वेदानन्द जी सरस्वती—७ से ९ चौती। —अधिष्ठाता उपदेश विभाग

भूल सुधार

श्री आशाराम जी पाण्डेय निरीक्षक सभा वाराणसी जिले के समाजों एवं सम्बद्ध संस्थाओं का निरीक्षण करेंगे। —नम्र संशोधन आदि कार्य यथापूर्व उत्साहपूर्वक जारी रक्खे जायं।

(६) नि० सं० १४ के अनुसार स्थानीय आर्यसमाजों में आर्य सभासद् बनने के लिए उपस्थिति एवं शताश चन्दा सम्बन्धी नियमों का पालन करने पर विशेष बल दिया जाए और परिपत्र भेजकर आर्यसमाजों का ध्यान आकर्षित किया जाए। —चन्द्रदत्त सभामन्त्री

वैदिक सूपायन पिता

[प्रो. किशोरीलाल गुप्त एम.ए.; सिद्धान्त शास्त्री, साहित्य वाचस्पति, काव्य-तीर्थ]

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।

पद-पाठः—सः नः पिता इव सूनवे अग्ने सूपायनः भव। स्वस्तये नः सचस्व।

पदान्वयः—सः अग्ने! सूनवे पिता-इव नः सूपायनः भव। स्वस्तये नः सचस्व।।

शब्दार्थ—(सः), (अग्ने) ज्ञान स्वरूप, प्रकाश स्वरूप परमेश्वर, (सूनवे) पुत्र के लिए। (पिता इव) पिता की भांति। (नः) हमारे लिये। (सूपायनः) (सु+उप+अयनः) सुन्दर, निःशङ्क, निडर रूप से, समीप पहुंचने योग्य। (भव) होवें। (स्वस्तये) मंगल कल्याणार्थ। (नः) हम सब विश्व-मानव समाज को। (सचस्व) परस्पर मिलजुल कर, सुसहयोग पूर्वक, बिना किसी प्रकार के द्वेष, बुराई और दुर्नीति बरतने, जीवन बिताने की सुबुद्धि प्रदान कीजिये।

व्याख्या—पिता—(पातीति-रक्षतीति पिता) जो खाना पीना, वस्त्र, मकान, शिक्षा सभी प्रकार की जीवनोपयोगी सामग्री द्वारा रक्षा करे, वह पिता। इस सार्वभौम दृष्टि से ग्राम-प्रधान, मंडल-प्रमुख, जिलाधीशः राज्यपाल, राष्ट्रपति, सेनाध्यक्ष, सुप० पुलिस, जो भी रक्षण कार्य-कर्ता हो, सभी पिता हैं और इसी पितृ-भावना से सबको कर्तव्य भावना से दैनिक व्यवहार-रत रहना चाहिए। फिर किसी प्रकार के भ्रष्टाचार की संभावना ही न रहेगी। रह गया एक अकेला जगत्पिता जगदीश्वर। सो, भ्रष्टाचार उसके बस की वस्तु ही नहीं।

अग्निः—यह पूर्ण शब्द था—(अग्रे+णी) इसमें से सूक्ष्मता लाने के लिये, बोलने में सहूलियत के कारण (रे) को उड़ा दिया (लोप कर दिया) बस, बड़ी (ई को छोटी (इ) मे बदलकर (अग्+नि) 'अग्नि' शब्द बना लिया, जिसका शाब्दिक अर्थ हुआ—आगे ले जाने वाला, उन्नति प्रदाता, ज्ञान प्रदाता, मार्ग-प्रदर्शक। अतः अग्नि शब्द के अर्थ हुए—सेना-नायक, राष्ट्र-सञ्चालक, गुरु, उपदेशक, मन्त्री, यंत्र-संचालक, विश्व-संचालकादि। "अग्नि" शब्द का प्राथमिक अर्थ विश्व-संचालक, जगन्नियन्ता परमेश्वर ही है। प्राकृतिक अग्नि भी उसी का सा गुण रखने के कारण अग्नि कहलाता है। इसी प्रकार जिस किसी कर्मचारी को मार्ग-प्रदर्शन की ड्यूटी मिले, वह भी गौण-रूप से अग्नि ही है। उसे भी अग्निवत् चहुं ओर ज्ञान का प्रकाश करते रहना चाहिये, अपनी संचित् ज्ञान-निधि अन्यों को भी वितरित करते रहना चाहिये।

सूनवेः—यह चतुर्थी विभक्ति का एक वचन है। मुख्य शब्द 'सूनु' है जिस का बिगड़ा हुआ अपभ्रंश-रूप 'सन' Son अंग्रेजी में व्यवहृत होता है। 'सूनवे' का अर्थ है—पुत्र के लिए।

सूपायन—(सु-उप-अयन) सु=भली भांति, आसानी से, निर्भय और निःशङ्क होकर। 'उप'=समीप, गोद में, बगल में, कन्धे पर पीठ पर, कहीं भी। अयन=स्थान, जगह, जहां पहुंच आसान हो, सब कोई जा सके।

(स्वस्तये) यह भी चतुर्थी का एक वचन है। मूल-शब्द 'स्वस्ति' (स्वः+ति)=स्वस्ति। (स्वः)=सुख, कल्याण, आरोग्य, स्वर्गलोक, आनन्द-स्वरूप परमात्मा। (ति) भाववाचक संज्ञा का चिन्ह जैसे—स्तु-ति, (ख्या-ति) (ज्यो-ति) (की-र्ति)

(सचस्व) यह (सच) धातु का आज्ञा सूचक, प्रार्थना-सूचक शब्द है। (सच) धातु का अर्थ है मिले जुले रहना, मिल जुलकर प्रेम पूर्वक काम करना, ऐक्य भाव बनाये रखना, समय पड़े पर एक दूसरे को साहाय्य प्रदान करते रहना।

सांसारिक पिता जगत्पिता का एक परमाणु रूप नमूना है। सभी जीवन में नित्य देखते हैं कि बच्चा किस निःशङ्कभाव से किल-किलाता हुआ पिता जी की गोद में आ बैठता है। वह परवाह नहीं करता कि वह कितना मैला, कितना कुचैला, कितना घिनोना है। कृपालु पिता भी, बिना हिचक के, झट गोदी में ले हृदय से चिपका लेता है, और नाना-प्रकार से बच्चे का मनोरंजन करता है जब वह किसी वस्तु के लिए हठ करता है, प्रसन्नतापूर्वक उसे पूरी करता है, बशर्ते कि वह बच्चे के लिये हानिकारक न हो।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

वेद-विवेचन

प्रार्थना

मृडा सुक्षत्र मृडय। ऋ० ७।८९।१

हे सर्वशक्तिमन्! हमें आनन्दित कर।

★

ऐसे अवसर आते ही रहते हैं, जबकि नाना प्रकार की चिन्तायें हमें घेर लेती हैं। तरह-तरह के विघ्न आ उपस्थित होते हैं। दुष्ट शत्रुओं से प्रत्यक्ष संघर्ष आरम्भ हो जाता है। रोगों से लड़ना पड़ता है। और कठिन प्रसंगों में मित्र-प्यारे, साथी-सम्बन्धी आदि भी साथ छोड़ जाते हैं। जो अपने हैं, वे भी पराये बन जाते हैं। चोट पर चोट लगती है। बारम्बार हानि उठानी पड़ती है। अपमान होते हैं। हृदय असह्य व्यथाओं से भर जाता है। जीने की अपेक्षा मरना ही भला प्रतीत होने लगता है। तब, हे दीनबन्धो! रक्षा के लिये हम आपको छोड़कर और किसे पुकारें? आपको छोड़कर हम और किसके द्वार पर जायें? हमारा और है भी कौन? सुख और स्वार्थ का साथी तो सारा संसार था। अब परमार्थ के काम मे कौन आगे बढ़े? बिगड़ी में कौन किसी का साथ दे? बस, अब तो हमें एकमात्र आपका ही सहारा है। आप ही हमें इन दुःख-जालों से मुक्त करो। आप ही हमें सन्मार्ग की प्राप्ति कराओ। आप ही हमें सुख के भागी बनाओ।

प्रभो! हमारी यह दयनीय दशा और दुःख-परम्परा किसी पाप या अपराध के दण्ड स्वरूप है क्या? हो भी सकती है। सुख के दिनों में हम आपको भूल जो गये थे। तब अहंकार के वश में होकर हम कई प्रकार के पाप भी करने लगे थे। खान, पान, पहिरान भी हमारे बिगड़ गये थे। उन दिनों तो अपनी वाणी पर भी हमारा अधिकार न रहा था। हम अनाप-शनाप बोलते रहते थे। विषय-वासनाओं में फसे पड़े रहते थे। तब अचानक ही एक थप्पड़-सा हमें लगा। सारा नशा हिरन हो गया। हो सकता है कि यह सब आप की ही लीला का खेल हो।

सुख के माथे सिल पड़े, नाम हृदय से जाये।
बलिहारी वा दुःख के नाम ही नाम रटाये।।

सच है—

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करें, दुःख काहे को होय।।

जो बीती सो बीती। अब हम सावधान हैं। परन्तु हे दयानिधे! अतृप्त-कामनायें अभी भी हमें पीड़ित करती रहती हैं। राग-द्वेष और मोह-मत्सर आदि शत्रु भी हमे सताते ही हैं। अग-प्रत्तग में कष्ट है। शरीर भी नाना प्रकार के झञ्झावातों के प्रहारों से दुर्बल और जीर्ण-क्षीर्ण सा हो रहा है। हमें बलप्रदान करो। सत्य-आदि व्रतों का अनुष्ठान करने के लिये हमें दृढ़ता का दान दो। हमारी बुद्धि निर्मल हो। यज्ञ कर्मों से हमारी प्रीति निरन्तर बढ़ती ही रहे। अब फिर कभी हम आपसे विमुख न हों। हमें आस्तिकता की दैवी सम्पत्ति से युक्त करो।

आप तो सुक्षत्र हैं। आपके गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ अनन्त है। आप सर्व शक्तिमान् है। आपके रक्षा-साधन अनन्त भी हैं, अमोघ भी। हे नाथ! हम बहुत दुःख भोग चुके है। अब तो हमारे दुःखों का अन्त कर दो। आपके द्वार के हम तो बहुत पुराने भिक्षुक है। हे दीनानाथ! अब तो हमारी पुकार सुनो।

हमने देख लिया सब ओर,
तुम-सा मिला न कोई और।
सब का है तू ही सिर-मौर,
इसमें कोई भूल नहीं है।।

★

—साधु सोमतीर्थ

❋ काव्य-कानन ❋

भारतीय वीर सैनिकों से

वीरो आगे बढ़े चलो तुम, वीरो आगे बढ़े चलो।
खट्टे करते दांत शत्रुगण के तुम आगे बढ़ चलो॥
पक्ष तुम्हारा न्याय सत्य का, इससे विजय सुनिश्चित है।
सब शक्तिमय का ले आश्रय वीरो आगे बढ़े चलो॥
कुटिल सर्पसम दुष्ट तुम्हारे आगे ठहर नहीं सकते।
करते नित्य पराजित उनको, वीरो आगे बढ़े चलो॥
है पवित्र यह देश हमारा ऋषि मुनि वीर जनों का प्यारा।
पकड़ देव का अतुल सहारा, वीरो आगे बढ़े चलो॥
आवें पर्वत भी जो मग में उनको तोड़ गिराओ।
कायर की परवाह न करते, वीरो आगे बढ़े चलो॥
पुण्य भूमि प्राणों से प्यारी, यह है हम सबकी महतारी।
इसकी रक्षा परम धर्म है, इसको करते बढ़े चलो।
भारतवर्ष हमारा है यह मंगलमूल हमारा है यह।
हम इसको अखण्ड कर देंगे यही सोचकर बढ़े चलो॥
डरा न कोई तुमको सकता हरा न कोई तुमको सकता।
भारत माता के सुपूत तुम, निर्भय बनकर बढ़े चलो॥
तुम हो सिंह तुम्हारे सम्मुख गीदड़ ठहर नहीं सकते।
मार भगाकर नीच शत्रुगण को नित आगे बढ़े चलो॥
नहीं एक भी इस भूमि का, पास शत्रु के रहने पावे।
यह व्रत लेकर बन अवश्य तुम, वीरो आगे बढ़े चलो॥

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड (देवमुनि वानप्रस्थ),
आनन्द कुटीर, ज्वालापुर।

★

हा! शास्त्री जी

नेहरू जी की याद अभी भूल पाये थे न लोग—
तब लौं विपत्ति के पहाड़ टूट आये हैं।
शास्त्री जी का सुन के अचानक वियोगवृत्त—
शोकाकुल मानवों के नैन जल छाये हैं।
पाकर सुपुत्र को न आज दुखी मातृभूमि—
रो रही 'सरस' हाय लाल कहां जाये हैं।
पूछती है दिल्ली शास्त्री जी के सभी नेताओं से—
साथ ले गये थे संग ले के क्यों न आये हैं?
ऐरी ताशकन्द तू बता दे हमारा लाल कहां
कोसीगिन आपही जवाब कुछ दीजिए।
भारत का लाल या तो भारत को सौंप दीजे—
अन्यथा कलंक टीका भाल निज लीजिये।
भारत का भानु लाल रूप में विलीन हुआ—
हाल तो बता दो मई कुछ तो पसीजिये।
सरस महान दुखी भारत के लोग सारे—
धारण कराके धीर आंसू पोछ दीजिये।
सूनी गोद देख निज वृद्ध माता रो रही है—
आकर इन्हें तो कुछ धीरज बधाइये।
ललिता के माथ का सुहाग बिन्दु लाल छिना-
वेकल विचारी को न अब कलपाइये।
सुन हरिकृष्ण शान्त रुदन है चारों ओर—
शास्त्री पुचकार इन्हें गले से लगाइये—
धधक रही है उर 'सरस' वियोग वह्नि—
देकर दरश इस ज्वाला को बुझाइये॥

—वैद्य राजबहादुर आर्य "सरस"

रणवीर

कठिन कमान वांकी कीमत न आंकी जात।
मौर्चों पर खड़ा रहा सदा अग्निवाण हो॥
पीड़ितों की पीड़ा हेतु बीड़ा जो उठाते हंस।
पर त्राण के लिये हो पाणि में कृपाण हो॥
प्रण की न करते अवज्ञा घोर संकटों में।
प्रण रखते चाहे चला जाता प्राण हो।
'प्रणव' कल्याण तभी होता जन्मभूमि का है।
ऐसे रणवीरों का ही रण में प्रयाण हो॥
अङ्ग के ही रङ्ग में रंगीले जो जवान जुटे।
योद्धा हो समूह के अङ्ग जम जाती है॥
जाती है न वीरता बखानी उन वीरों की ही।
तीर शमशीरों में अड़ाते जो कि छाती हैं॥
छाती है छबीली छटा लाल-लाल क्रोध लिए।
शोणित सरित सी सवेग बही आती है॥
कर्द जो दिखाती जब जौहर बेदर्द होके।
'ज्वाला से' मर्द के तो दर्द गिर्द गर्द न दिखाती है॥

—'प्रणव' शास्त्री एम० ए० फीरोजाबाद

स्वागत को सज्जित हम बसन्त

(आचार्य मित्रसेन एम.ए., सेवा सदन, कटरा, अलीगढ़)

सन्तों के सन्त बसन्त! कहो सन्देश हमें तुम लाये क्या?
जीवन की नूतन कलियों का वह हार हमारा लाये क्या?
जिसमें चमकीला मोती था पावन करता सारे जग को।
आनन्द कन्द ऋषि दयानन्द था सारे जग का दिव्य सन्त॥
स्वागत को सज्जित हम बसन्त॥
पर्यंक बनाकर भूतल को पीताम्बर ऊपर है क्या?
अथवा निशि के तारे गिरवीं रख करते ऐसी [illegible]?
पर पूछो वज्र कहां इनमें जो तमहारक है इस जग का।
जिसके यश से गूंजे अब तक सुनते थे सारे दिग् दिगन्त॥
स्वागत को सज्जित हम बसन्त॥
होता मुझको ऐसा प्रतीत नीली पीली जलती ज्वाला।
चित्तौड़ किले में सतियों की सामग्री से बढ़ती ज्वाला॥
सोचो मानव! इसको देखो प्राचीन सभ्यता का प्रतीक।
बासन्ती छलना में छलो जिसका जीवन बनता बसन्त॥
स्वागत को सज्जित हम बसन्त॥
सच्चे सतीत्व से सतियों ने भारत का भाल उठाया क्या?
चन्दन चर्चित जिस पर पीला उसका तेज दिखाया क्या?
अभिनय से तेरी रंगभूमि सबका मन चंचल करती है।
तेरी माया का सेवक भी, पाता न 'मित्र' है आदि अन्त॥
स्वागत को सज्जित हम बसन्त॥

✳ भारतीय जवान की गर्जना ✳

एरे शत्रु मोरे, छिपो है, युद्ध खन्दक में,
हेरे यदि मिलगो तो मारिहौं मैं छन में।
ताके संग भट्टों के भुट्टा बना के प्रिय,
उड़ाऊं जब देहौं घुमा हौं रवन में॥
मेटि करि करनी को, मारो करि मातृ पथ,
मेरी-विजय-ध्वनि पसारिहौं गगन में।
पाक के मधुर पाक पागि के कढ़ाहियन में,
चटिहों चटाचट पुलक पूरि तन में॥
घूर कर मत ताक रे पाक अधम,
मुख से तेरी पुतलियां निकल आयेंगी।
मिलेंगे खाक इरादे नपाक सभी,
अरे शेखी तुम्हारी बदल जायगी॥
हम हिन्दू मुसलमां औ सिख-क्रिश्चियन—
सब की ताकत तुम्हारे पे पिल जायगी।
जिन्दगी में मिली जो न तुमको कभी,
ऐसी शिक्षा तुम्हें खूब ही मिल जायगी॥

—हरिश्चन्द्र बी० ए०, बी० एड, कामठनगर आ०प्र०

महाभारत और उसके पश्चात् ७-८

[इन लेखों को ५ सितम्बर के अंक में प्रकाशित लेख सं० ६ के बाद मानकर पढ़ें]

[श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

हम ऊपर बता चुके हैं कि वैदिक धर्म में सर्वप्रथम विकार यह उत्पन्न हुआ कि सत्कर्मों का स्थान व्यर्थ और अनावश्यक प्रथाओं ने ले लिया। इसके अनन्तर सर्वप्रथम दोष यज्ञ शब्द में उत्पन्न हुआ। वैदिक परिभाषा में यज्ञ महत्वपूर्ण और पवित्र शब्द है। यज्ञ का अर्थ है श्रेष्ठ कर्म अर्थात सबसे बड़ा पुण्य का कार्य। यज्ञ का सम्बन्ध न तो अग्नि जलाने से है न बलि देने से। सत्य बोलना यज्ञ है समाज सेवा यज्ञ है दान देना यज्ञ है कर्तव्य को पूरा करना यज्ञ है। बिना आग जलाये भी यज्ञ हो सकता है। ईश्वर की उपासना में जो वैदिक मन्त्र पढ़ जाते हैं वह ब्रह्म यज्ञ कहलाते हैं। ब्रह्म यज्ञ में न तो कुण्ड की आवश्यकता है न घी की न दियासलाई की न चम्मे की और चिम्टे की। ईश्वर की भक्ति में हृदय को लगाना ब्रह्म यज्ञ है। इसी प्रकार माता पिता की सेवा करना उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना और उनकी सेवा शुश्रूषा करना यज्ञ है। आहुतियां नहीं वरन प्रेम से उनके आदर सत्कार करने ही को पितृ यज्ञ कहा जाता है। जिस प्रकार लोग समझते हैं कि गौ यज्ञ का अर्थ है गाय की बलि अश्वमेध यज्ञ का अर्थ है घोड़े की बलि, इसी प्रकार पितृ यज्ञ का अर्थ होना चाहिये माता पिता की बलि। परन्तु ऐसा अर्थ किसी शास्त्र में नहीं लिया गया। परन्तु महाभारत के पश्चात जब वैदिक धर्म का पतन हुआ तो यज्ञ का अर्थ किया गया आग जलाकर उसमें पशुओं की बलि। यह अज्ञान शायद इसलिए उत्पन्न हुआ कि यज्ञ का एक प्रकार देव यज्ञ भी है। लोगों ने समझा कि देव कोई स्वर्गीय जीवधारी हैं जिनको पशुओं का मांस प्रिय है। इसलिए सुगंधित और स्वास्थ्यप्रद पदार्थों के जलाने के स्थान पर बकरी गाय भेड़ सुअर आदि के मार डालने की प्रथा प्रचलित हो गई। कल्पित देवी देवताओं के पुजारी पशुओं की बलि देवताओं के नाम पर करते और उनके एजेण्ट बनकर उस मांस को चट कर जाते। जब लोगों ने कहा कि यज्ञ तो पवित्र कर्म है तुम ऐसे रक्तपात को क्यों उचित समझते हो। तो उन्होंने एक कल्पित सिद्धान्त स्थापित किया कि जो पशु वेदों की आज्ञा के अनुसार मारा जाता है उसकी हिंसा नहीं होती। उसको तो हम अग्नि द्वारा स्वर्ग पहुंचा देते हैं। जब महात्मा बुद्ध ने जन्म लिया तो उसी रक्तपात को देखकर उसे रोकने का प्रयत्न किया। महात्मा बुद्ध को वह साधन प्राप्त न थे कि वेदों के सूक्ष्मतम कठिनाइयों का समाधान करते और पण्डितों को समझाते कि जिसे तुम वैदिक मन्त्रों की आज्ञा कहते हो वह नासमझी है। उन्होंने वेद मन्त्रों और यज्ञों दोनों के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया।

यह रोग की चिकित्सा की इच्छा तो थी रोग की उचित जांच न थी। यदि कोई मनुष्य अनुचित भोजन खाकर अथवा अधिक खाकर रोगी हो जाय तो उसकी चिकित्सा यह नहीं है कि भोजन के विरुद्ध आन्दोलन किया जाय। भोजन की ठीक विधि का बताना ही उचित चिकित्सा है। ऐसा नहीं किया गया। वेदों में बहुधा यज्ञ के साथ गाय का वर्णन हुआ है। गाय यज्ञ का विशेष साधन है। परन्तु जहां कहीं गाय का वर्णन है वहां अभिप्राय गाय के दूध या घी से है। ऋग्वेद के भाष्य में गोभिः अर्थात गायों के द्वारा इस का अर्थ लिया है गोविकार अर्थात गाय से प्राप्त शुद्ध घी दूध वही न कि गाय का मांस। यह बात अत्योचित थी। बिना दूध घी के कोई यज्ञ नहीं हो सकता। पितृ यज्ञ के लिये भी दूध घी चाहिये। अतिथि यज्ञ के लिये भी दूध घी चाहिये परन्तु जब एक बार भूल हो गयी तो उसका क्रम निरन्तर चलता रहा। इससे बहुत से सविज्ञ और श्रेष्ठ पुरुषों ने यज्ञ और वेद दोनों का विरोध किया जो वेदकल्पित देवताओं पर विश्वास रखते हैं या रक्तपात को धर्म बताते हैं वह ईश्वर की आज्ञा नहीं हो सकती। उन्होंने कहना आरम्भ कर दिया कि गाय को मारकर स्वर्ग में पहुंचाने का साधन गाय की बलि है तो आप अपने बन्धुओं और सम्बन्धियों को भी इस सुन्दर साधन से स्वर्ग में क्यों नहीं पहुंचा देते। यदि बुद्ध धर्म के पण्डित वेद मन्त्रों का स्वाध्याय करके वैदिक धर्म के पंडितों को समझाते तो न वेदों का विरोध होता और न यज्ञों को बन्द करना पड़ता और हिंसा स्वयं समाप्त हो गई होती। परन्तु महात्मा बुद्ध के समय में वेदों का स्वाध्याय साधारण लोगों का स्वाध्याय न था। लोगों की भाषा प्राकृत थी। संस्कृत का रिवाज केवल पण्डितों तक सीमित था जो शायद पूजा पाठ द्वारा जीविकोपार्जन में व्यस्त रहते थे और अधिक से अधिक दक्षिणा प्राप्त करने के लिए यज्ञ की क्रियाओं को लम्बा करने का प्रयत्न करते थे। जिस प्रकार आजकल बड़े डाक्टरों ने साधारण औषधियों का नाम भी लातीनी या यूनानी भाषा से ले रखा है। इसी प्रकार यज्ञ करने वाले साधारण वस्तु के लिए भी एक कठिन शब्द का प्रयोग करते थे जिससे उनकी व्यक्तिगत विद्वत्ता का प्रदर्शन हो। आजकल कोई डाक्टर अपने नुसखों में शब्द वाटर (पानी) का प्रयोग नहीं करता। वह यह नहीं कहता कि अमुक अमुक वस्तु में पानी मिला लो। पानी साधारण शब्द है। बेपढ़ा मनुष्य भी समझता है परन्तु चिकित्सक कहता है (ऐकुआ) मिला लो। आप पूछेंगे यह ऐकुआ क्या वस्तु है ? और कहां कितने को मिलता है ? आपको आश्चर्य होगा कि आपके घड़े का पानी ही ऐकुआ है। इसी प्रकार यज्ञ करने वाले पंडितों ने भी साधारण

वस्तुओं के नाम कठिन शब्दों में रखे— कटोरी कहने के स्थान में प्रणीता पात्र कहा गया। ऐसे शब्दों को सुनकर अशिक्षित यजमानों पर पण्डितों का प्रभाव छा जाता है।

इसी प्रकार जब यज्ञ में पशु मारे जाने लगे तो उन्हीं पंडितों की बन आई आजकल भी कलकत्ते की काली माई और विन्ध्याचल की देवी पर सैकड़ों बकरे चढ़ाये जाते हैं और उनका मांस मुफ्तखोर पुजारियों के पेट में जाता है। यह पशुओं की बलि और वैदिक हिंसा हिंसा नहीं है यह विश्वास यहां तक बढ़ा कि श्री शंकराचार्य महाराज ने गीता के एक श्लोक का भाष्य करते हुए भी इसी बात की पुष्टि की है। और कालिदास आदि संस्कृत कवियों ने तो अपने काव्यों में इनका अनेक बार वर्णन किया है।

वैदिक यज्ञ की यह प्रथा जब भारत वर्ष के बाहर दूसरे देशों में गई तो वहां भी यह प्रवृत्ति बराबर चलती रही। यह देश तो इतने शिक्षित भी न थे। हजरत इब्राहीम का हमने ऊपर उल्लेख किया है जो महाभारत के कई सौ वर्ष पश्चात बताये जाते हैं। पांच सौ साल का दीर्घ काल और कई हजार मीलों की दूरी काल तथा स्थान की विभिन्नता ने इस अनर्थता को और बढ़ा दिया। हजरत इब्राहीम ने एशिया के पश्चिमी दक्षिणी प्रदेश में जन्म लिया।

यहां के लोग केवल गड़रिये थे भेड़ चराना उनका व्यवसाय था। यहूदियों के समस्त पूर्वज इसी वंश से सम्बन्ध रखते थे। इसीलिए हजरत इब्राहीम से यह आशा करना बेकार होगा कि वह यज्ञ की पवित्र प्रथा के विषय में कुछ छानबीन कर सकते। उन्होंने यज्ञ में पशुओं की बलि की प्रथा को अपने बीच में प्रचलित पाया और उसी के अनुसार कार्य करना उचित समझा। ईश्वर के लिए प्रिय से प्रिय वस्तु की बलि देने के लिये हजरत इब्राहीम की ईश्वर भक्ति का पवित्र उदाहरण दिया जाता है। यह समीचीन भी है। इब्राहीम ऐसे दृढ़ विश्वासी थे कि वह केवल एक स्वप्न के आधार पर अपने पुत्र इसमाईल की बलि देने के लिये उद्यत हो गये। परन्तु आश्चर्य तो इस बात का है कि हिन्दू लोग अनेक देवी देवताओं पर विश्वास रखते हैं। एक ईश्वर पर विश्वास रखने वाले हजरत इबराहीम को कैसे विश्वास हो गया कि वह ईश्वर भी हिन्दुओं की देवताओं की भांति मांस को खाना पसन्द करता है। परन्तु हमको ज्ञात होता है कि हिन्दुस्तान के किस्से कहानियां भी उन देशों में गये और यहूदी धार्मिक किस्सों में यज्ञ का विशेष भाग सम्मिलित हो गया।

हजरत आदम के दो पुत्र बताये जाते हैं हाबील और काबील। दोनों ने अपने उपहारों को ईश्वर की सेवा में प्रस्तुत किया। हाबील ने वनस्पति और काबील ने पशु। अगले लोगों में जो मूल्य मांस का है वह वनस्पति का नहीं आजकल भी पश्चिमी सभ्य लोगों में मांस का सेवन न करना मूर्खता समझी जाती है।

एक पादरी हुए हैं हौबट वह कवि भी थे उन्होंने एक कविता लिखी है औन गंगाज़ ब्रैंट इस कविता में एक ब्राह्मण का वर्णन किया गया है। जो गंगा के तट पर पड़े व डले हुए अपना [illegible] पका रहा था वह मुसलमानों के लिये लिखा है कि वे स्वादिष्ट भोजन बना रहे थे और हिन्दू भी अपना सदा (अर्थात सात्विक) भोजन पका रहे थे। इन शब्दों से पादरी साहब के विचार का पता चलता है। यहूदियों के ईश्वर का काबील का सड़ा हुआ [illegible] का उपहार भी स्वीकार न हो [illegible]। [illegible] ने हाबील को मार [illegible]।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यज्ञ और यज्ञ में पशुओं को मारना यह यहूदियों के साहित्य में हजरत आदम के समय से चला आता है। मैने कई मुसलमानों से पूछा है कि जब आप देवी देवताओं पर विश्वास नहीं रखते तो गाय की बलि क्यों देते हैं। परन्तु मुसलमानों के लिये सुधारक बुद्धि रखना कठिन है। वह चू व चरा (ननु नच) करना भी कुफ्र (अधर्म) समझते हैं। हर दृढ विश्वास रखने वाला मुसलमान आज भी चौदह शताब्दी पूर्व की बात सोचता है। वह केवल यही कहते हैं कि यदि हजरत इबराहीम ने किसी प्रथा को चलाया तो हम कौन हैं कि बुद्धि को बीच में लाकर परिवर्तन कर सकें। हजरत इबराहीम ने सुधार तो किया परन्तु बिना छान-बीन के किया। उनकी इच्छा अच्छी रही हो परन्तु रोग का [illegible] बुद्धिमान चिकित्सक का कार्य है। रोग के निवारण की इच्छा तो हर रोगी और परिवारकों को होती है। रोग दूर करने की इच्छा सुधार नहीं है। रोग का निदान अत्यावश्यक वस्तु है। महाभारत के पश्चात् जो धर्म-सुधारक या समाज-सुधारक हुये उन्होंने केवल रोगों की बाह्य बातों की चिकित्सा की, वास्तविक चिकित्सा नहीं कर सके इसलिये एक रोग गया तो उसने अधिक बड़ा रोग उत्पन्न हो गया। महात्मा बुद्ध ने अहिंसा का प्रचार किया परन्तु नास्तिकता रूपी भयानक रोग गले लग गया। यज्ञों में सुधार तो न हुआ यज्ञ भी समाप्त हो गया और अहिंसा भी। अहिंसा यह तो केवल नाम ही नाम है। बुद्ध देशों में मांस की प्रथा इस प्रकार बढ़ी हुई है कि हराम और हलाल में भी विवेक नहीं है। और हजरत इबराहीम की बलि की प्रथा तो आजकल साम्प्रदायिक कलह का कारण बना हुआ है। कोई यह नहीं कहता कि हजरत इबराहीम ने तो अपने प्रिय पुत्र की बलि के लिये तैयार की थी तुम गाय को प्रियतम तो नहीं समझते, परन्तु प्रथायें तो प्रथायें हैं। इसी का नाम है लकीर के फकीर होना। हजरत इबराहीम के लिये तो छान-बीन के साधन प्राप्त न थे इसलिये यदि उन्होंने अधिक छान-बीन नहीं की तो वह क्षमा के योग्य है। परन्तु आजकल के मुसलमानों को तो वैदिक छानबीन के मार्ग भी खुले हुए हैं। परन्तु उनकी बुद्धि कुछ ऐसी हो गई है कि धार्मिक कुरीतियों के मूल कारण तक पहुंचना उनके लिये कठिन है।

भारतवर्ष में महात्मा बुद्ध के पश्चात् कुमारिल भट्ट और स्वामी शंकराचार्य का नम्बर आता है। भारतवर्ष के बाहर हजरत इबराहीम के पश्चात् हजरत मूसा और हजरत ईसा आदि जन्म लेते हैं। बीच में बहुत से छोटे-बड़े सुधारक हुए होंगे जिनको साहित्य के पृष्ठों में शोभा पाने का महत्व नहीं प्राप्त हो सका। प्रकृति किसके नाम को शेष रखती है और किसके नाम को तुरन्त नष्ट कर देती है यह एक कठिन प्रश्न है। हर मनुष्य अपने पश्चात् अपनी कीर्ति भी छोड़ता है और नाम भी। काम का प्रभाव भी उसके भविष्य पर पड़ता है और नाम का भी। परन्तु काम का प्रभाव तो बहुत काल तक रहता है नाम को लोग भूल जाते हैं। इसका एक दृष्टान्त है महाद्वीप अमेरिका की कहानी। आपने संयुक्त देश अमेरिका और कैनाडा का नाम सुना होगा। वर्तमान काल में तो भारत सरकार और अमेरिका सरकार के सम्बन्ध इतने गहरे हैं कि हम प्रतिदिन समाचार पत्रों में इनकी घटनाओं का वर्णन देखते रहते हैं। यह देश अमेरिका कहलाता है क्योंकि इटली के एक समुद्री यात्री अमरीगो वेस पकसी ने इसका पता लगाया था। परन्तु महाद्वीप अमेरिका की सर्व प्रथम खोज करने वाला व्यक्ति कोलम्बस था। देश का नाम कोलम्बिया होना चाहिये था परन्तु कोलम्बस को लोग केवल साहित्यिक दृष्टि से स्मरण करते हैं अमेरीगो का नाम साधारण जनता की जुबान पर है। खैर यह हुई एक बीच की बात—

हजरत इबराहीम के पश्चात् विशेष पैगम्बर का नाम है मूसा। मूसा एक समाज सुधारक था उसके समय मे फिर्औन जैसे ईश्वर से भय न खाने वाला उत्पन्न हो गये थे। जो स्वयं अपने को ईश्वर कहते थे और "म्हारे जैसा कोई नहीं है" की उक्ति को मानते थे। ऐसे शासक की प्रजा भी अपने शासकों के सिद्धान्तों की अनुसरण करती है। इसी प्रकार की और लगभग उसी समय की गाथायें हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद की पौराणिक गाथाओं में प्रसिद्ध हैं।

कहा जाता है कि हिरण्यकश्यप को ईश्वर के नाम से चिढ़ थी और जब उसका पुत्र प्रह्लाद ईश्वर की भक्ति की ओर झुकता था तो उसके पिता को बहुत खराब लगता था। भारतवर्ष में प्रह्लाद की सहायता के लिये ईश्वर नरसिंह का अवतार लेता है। फिर्औन की नास्तिकता को समाप्त करने के लिये मूसा प्रयत्न करते हैं। मूसा को ईश्वर भेजता है। नरसिंह स्वयं ईश्वर ही है अर्थात् ईश्वर का अवतार। ज्ञात ऐसा होता है कि जब कोई सुधारक जन्म लेता है तो उसके महान कार्य को देखकर उसे ईश्वर या ईश्वर का प्रतिनिधि मान लेते हैं। वास्तव में न तो वह ईश्वर होते हैं और न ईश्वर के भेजे हुये होते हैं। परन्तु अशिक्षित लोगों में विश्वास उत्पन्न करने के लिये लोकोत्तर शक्तियों की आवश्यकता समझी जाती है।

महात्मा बुद्ध और हजरत ईसा की शिक्षा में बहुत कुछ समानता है। यह आकस्मिक है या समकालीनता का प्रभाव हो। इसमें शंका नहीं कि बुद्ध धर्म के भिक्षु एक समय में सारे संसार में फैल गये थे। आजकल हम बर्फ वाले पहाड़ और जंगलों को पार करने के लिये भाप बिजली आदि की सहायता लेते हैं। महात्मा बुद्ध के भिक्षुओं ने गेरुए कपड़े और लाठी लेकर सारे संसार को छान डाला था। ईरानी मूर्ति के लिये शब्द "बुत" का प्रयोग करते हैं। यह बुत केवल 'बुद्ध' का बिगड़ा हुआ रूप है। बुद्ध की मूर्तियों को पूजने की प्रथा इतनी सर्वव्यापी हो गयी थी कि लोग ईश्वर को भूल गये थे। नास्तिकता ने अधिकार प्राप्त कर लिया था इसलिये जनता को आवश्यकता पड़ी कि मूर्तियों के स्थान पर एक ईश्वर की पूजा प्रचलित करें। भारतवर्ष में बुद्ध और जैन धर्म की मूर्तियों का इतना प्रचार हुआ कि लोग वैदिक ब्रह्म-पूजा को भूल गये।

टाल्स्टाय ने जो रूस का एक महा पुरुष हुआ है एक स्थान पर लिखा है कि जब ईश्वर की पूजा को लोग छोड़ देते हैं तो सैकड़ो छोटे-छोटे ईश्वरों को मानने लगते हैं। इस प्रकार पूजा से तो छुटकारा नहीं होता, ईश्वर से हो जाता है। महात्मा बुद्ध और महावीर का कहना तो यह था कि कोई वस्तु ऐसी नही है जिसने संसार को बनाया हो और जिसको जगत् का कर्ता या रचयिता समझा जाय। सम्भव है इसका कारण यह रहा हो कि लोगो ने ईश्वर के साथ कल्पित गुणो का सम्बन्ध जोड़ लिया होगा और ईश्वर की सत्ता की उपेक्षा करके किसी ऐसे ईश्वर को मानने लग गये होगे जिसे प्रसन्न करने के लिये बलि देनी पड़ती है। परन्तु यत: यह एक बाह्य तथा गौण चिकित्सा थी इसलिये एक रोग ने और बहुत से रोग उत्पन्न कर दिये। लोग ईश्वर को भूल गये और प्रत्येक बुद्ध या जैन महात्मा या मस्त ही ईश्वर माना जाने लगा और उसकी मूर्तियां पूजी जाने लगीं। कुमारिल भट्ट और स्वामी शंकराचार्य ने इसी दोष का सुधार किया। यद्यपि इन दोनो महात्माओ के सुधार की रीतियां भिन्न-भिन्न थी। बुद्ध और जैन धर्मों ने यज्ञो को समाप्त कर दिया। कुमारिल ने यज्ञो का पुनरुद्धार किया और वेदों तथा वैदिक कर्मों की ओर रुचि उत्पन्न की। स्वामी शंकराचार्य ने एक नवीन पथ को अपनाया। उन्होंने 'ब्रह्म सत्य' और 'जगत् मिथ्या' के दर्शन की आधारशिला रक्खी। शंकराचार्य कर्मकाण्ड के विरुद्ध थे। उन्होंने यज्ञों को पूर्णरूप से समाप्त तो नहीं किया क्योंकि गीता के भाष्य से पता चलता है कि वह वैदिक कर्मकाण्ड के वे इतने विरोधी न थे जितने कि बौद्ध या जैन। परन्तु उन्होंने कर्मकाण्ड को अविद्या का एक भाग माना है। हजरत मूसा ने दूत होने की घोषणा की। उन्होने कुछ चमत्कार भी दिखाया जिससे पता चल जाय कि वह ईश्वर के प्रतिनिधि थे। जादूगरों की चाल कियां भारतवर्ष में भी प्रसिद्ध थीं और दूसरे देशों में भी। मूसा ने जादू किया। फिरऔन ने अपने जादूगरों को बुलाया। दोनों पार्टियों में संघर्ष हुआ मूसा का जादू चल गया। भारतवर्ष में जादूगर पाये जाते थे। स्वामी शंकराचार्य ने जगत् को मिथ्या सिद्ध करने के लिए जादूगरों का दृष्टान्त दिया है। परन्तु स्वामी शंकराचार्य जादूगरों को चैलेंज नहीं करते, दर्शन की तुलना दर्शन से करते हैं। उस समय में बुद्ध धर्म की एक शाखा थी जो जगत् को मिथ्या या कल्पित मानती थी और जादूगरी की भांति असत्य ठहराती थी।

इसके विपरीत मूसा ने यह नहीं कहा कि यह जादूगरी कल्पित या मिथ्या है। कुर्आन शरीफ आदि में जादू का वर्णन आता है। जादूगर जादू को कैसे करता है इसका कोई वर्णन नहीं। शंकराचार्य जादू को केवल हाथ की सफाई बताते हैं जैसा कि वास्तव में है। हजरतमूसा न केवल ईश्वर के प्रतिनिधि ही होने का दावा करते हैं वरन् उनके ऊपर ईश्वर की वाणी आती है। वह एक कोड या विधान के रूप में आती है और इसके द्वारा वह इसराइल के विभिन्न फिरकों में त्रुटियों का सुधार करते हैं जैसा कि बाइबिल की आरम्भिक पुस्तकों में दिया हुआ है। कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य वेदों और उपनिषदों को सामने लाते हैं जो भारतवर्ष की प्राचीन पुस्तकें थीं। हजरत मूसा की "तौरात" एक नवीन रूप को अपनाती है। हजरत मूसा से पूर्व कोई पवित्र पुस्तक थी या नहीं और उसके पश्चात् क्या परिस्थिति हुई इसका ठीक पता नहीं चलता। पाश्चात्य धर्मों का यह ध्येय रहा है कि नया शासक और नया नियम। हर नबी नवीन उपदेश लाता है जो पहले नियमों को हटा देता है। भारतवर्ष के लोग गौण बातो मे परिवर्तन करते हैं मूल मे नही। इसलिये न तो कुमारिल भट्ट ने वेदो से इनकार किया न स्वामी शंकराचार्य ने। परन्तु कुछ ऐसा दुर्भाग्य अवश्य रहा कि ज्ञान कांड और कर्मकांड के बीच में एक बहुत बड़ी खाई

(शेष पृष्ठ १० पर)

परिवार-नियोजन : एक मीठा विष है !

राष्ट्र की ओर भी महान समस्या बड़े वेग के साथ जो देश मे इस समय फलती जा रही है वह परिवार नियोजन की है। परिवार नियोजन के विषय मे प्रारम्भ से ही आर्यसमाज इस मत का है कि इससे दो हानियां स्वाभाविक होगी। पहली हानि तो व्यभिचार वृद्धि की होगी क्योंकि जो लोग गर्भ स्थापन और सन्तोत्पत्ति के भय से व्यभिचार से दूर रहते थे उन्हे इसके लिये खुली छूट और प्रोत्साहन मिलेगा। इस मनोवैज्ञानिक रहस्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मनुष्य बुराइयों से अधिकांश रूपेण समाज के भय से बचता है। अत्यन्त उच्चकोटि के मनुष्यो की बात छोड़िये वह अपवाद होते हैं नियम सर्वसाधारण के लिये होते है महा मानवो के लिए नहीं। और सर्वसाधारण सिद्धान्तो की गहराई मे नहीं जाया करता। उसे अच्छाई और बुराई के विवेचन की न योग्यता होती है न रुचि वह तो परिस्थितियों के साथ बहना मात्र जानता है। यौन सबंध के लिये परिवार नियोजन के परिणाम स्वरूप परिस्थितियां उसके अधिक अनुकूल होगी। परिणामत वह व्यभिचार के पक मे फस जायगा जिससे लज्जा का ह्रास और निलज्जता की वृद्धि होगी। यह परिवार नियोजन का प्रकार है भी कृत्रिम जिससे आगे चलकर राष्ट्रीय सतति को स्वास्थ्य सम्बधी हानि होने की प्रबल आशंका है जो मानव समाज के लिए बड़ी चिनौती बात है। स्वाभाविक और प्राकृतिक परिवार नियोजन की सही प्राप्ति तो स्वाभाविक तथा प्राकृतिक रूपेण जीवन यापन के द्वारा ही सम्भव है।

दूसरी हानि हमारे विचार से होगी आर्यों (हिन्दुओ) की संख्या घटने की। क्योंकि मुसलमानो पर परिवार नियोजन का कोई प्रभाव नहीं है मा प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि हिन्दुओं की ही चिन्ता क्यो है? [illegible] के [illegible] पर आधारित है। जो वग य [illegible] अधिक संख्या मे होगी शासन मे भी उसी का बाहुल्य होगा और वह अपनी संस्कृति सभ्यता एवं धार्मिक विचार धारा का बाहुल्यता से प्रचार कर सकेगा। इसलिए भी आवश्यक है कि चित प्रयोग से जनसंख्या पर आघात पहुंचे उसके प्रति सावधानी से विचार किया जाये। हिन्दू प्रत्येक नवीन किसी भी विचारधारा का ग्रहण करने को उद्यत रहता है और आज परिवार नियोजन की दिशा मे भी हिन्दू ही अग्रसर हुआ है मुसलमान नहीं। यदि इस सम्बन्ध में आज जैसी ही स्थिति रही तो आगामी २५ वर्षों मे भारतवर्ष मे हिन्दू मुसलमान की जनसंख्या का कुछ और ही अनुपात होगा। परिणामस्वरूप भारत भारत रहेगा भी क्या? एक प्रश्न है। आदि काल से ससार को महान सांस्कृतिक देन देने वाली आर्य जाति का इतिहास पृष्ठो की सामग्रीमात्र बनकर रह जायगा।

भारत सरकार के सर पर जब से परिवार नियोजन का भूत सवार हुआ है तभी से आर्य जगत इस सम्बन्ध मे तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रसारित करते चला आया है। आर्यसमाज के उपयुक्त विचारो की सम्पुष्टि उस समय हुई जब नवम्बर १९५९ के दूसरे सप्ताह मे दिल्ली लाल किला के सामने परेड ग्राउण्ड की जमाअत-ए-इस्लामी के अखिल भारतीय सम्मेलन मे श्री जवाहर लाल जी नेहरू के निकटतम प्रेमी और तथाकथित राष्ट्र भक्त मुसलमान मौ० हिफजुल रहमान साहब ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया था कि मुसलमान कदापि भारत सरकार के परिवार नियोजन मे भाग न लें क्योंकि यह इस्लाम की शरह और मुसलमान के ईमान के खिलाफ है। मुसलमान का ईमान है कि अल्लाह मियां इन्सान की रोजी का खुद इन्तजाम करता है। और हर आदमी जो एक मुंह लाता है वो हाथ भी साथ लाता है। हम इस सम्बन्ध मे अधिक कुछ न लिखकर महात्मा गाधी जी के विचार परिवार नियोजन के सम्बन्ध मे ज्यो के त्यों उद्धृत करते हैं जो निम्न प्रकार है [illegible]

मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी कृत्रिम रीति से या पश्चिम मे प्रचलित मौजूद रीतियो से सन्तति निग्रह करना आत्मघात है।

मेरी राय मे तो कृत्रिम साधनों के द्वारा सन्तति नियमन की पुष्टि के लिए नारी जाति को सामने खड़ा करना उस का अपमान करना है।

मैं कृत्रिम साधनो के हामियों से आग्रह करता हूं कि वे इसके नतीजो पर गौर करें। इन साधनो से ज्यादा उपयोग का फल होगा विवाह बन्धन का नाश और मन माने प्रेम बन्धन की बढ़ती।

अत आर्यसमाज उचित यही अनुभव करते हुए अनुरोध करता है कि कोई भी आर्य (हिन्दू) परिवार नियोजन के कृत्रिम [illegible] आए। [illegible] इस कृत्रिम प्रयोग से होने वाली [illegible] देश [illegible] भी प्रेरणा करें कि वह [illegible] प्रणाली से दूर हैं। प्राचीन आचार्यों की जो इस दिशा मे प्रणाली ब्रह्मचर्य की रही है यथायोग्य उसका पालन किया जाए जिससे इच्छानुसार सन्तति लाभ भी बना रहे।

●

श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी का भारत आगमन

[श्री गौरीशंकर जी कौशल]

आर्य जनता तथा भारत की देशभक्त जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूज्य श्री ओमप्रकाशजी त्यागी प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल जनवरी ६६ मे भारत पहुच गये।

पूज्य त्यागी जी १९७६३ को दिल्ली से वायुयान द्वारा अफ्रीका को वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रचार करने रवाना हुए थे अफ्रीका के देशो अर्थात दारेसलाम म्वाजा कम्पाला मुम्बासा नरोबी किसुन आदि स्थानों मे आपने आर्यसमाजों की स्थापना की तथा आर्यवीर दल के ४ ५ शिविर लगाये। एक शिविर आर्य वीरांगना दल का भी लगाया। आपको यहा काफी सफलता मिली। सप्ताह मे दो दिन आपके भाषण रेडियो मे ब्राडकास्ट किये गये। सारी हिन्दू संस्थाओ ने आपको सम्मानित किया विदेशो और भारत के धर्म प्रचार मे बहुत बड़ा अन्तर है वहा इस बात की आवश्यकता है कि भारतीय संस्कृति के उपासको को एक होकर धर्म धर्म संस्कृति के गौरव को उठाना होगा त्यागी जी इस दृष्टि से पूर्ण सफल रहे। सिक्ख जनता ने आपका गुरुद्वारो मे भाषण कराये तथा सरोपा भेंट किया जो सिक्खो मे विशेष आदर का प्रतीक है मुसलमानो ने मस्जिद मे बुलाकर आपको सम्मानित किया। आर्यजगत ने सामूहिक रूप मे आपको दारुस्सलाम में एक अभिनन्दन पत्र भेंट किया। जिस समय जजीबार मे राज्य क्रान्ति हो रही थी श्री त्यागी जी जजीबार के अन्तर्गत पेम्बा मे थे। जहा भारतीयो पर जुल्म अत्याचार हो रहे थे और लोग मारे जा रहे थे। तब पूज्य त्यागी जी ने वहा के क्रान्तिकारी नेताओ से मिलकर भारतीय दृष्टिकोण को रखते हुए भारतीय जनता की रक्षा की तथा भारत सरकार से भी जजीबार की जनता की रक्षा की अपील की थी। वास्तव में यह क्रान्ति अरब शासको के विरुद्ध थी। एक क्रान्तिकारी ने आपको अरबियन समझकर आपके सीने पर बन्दूक रख दी परन्तु प्रभु की कृपा से एक सिपाही के आ जाने से आपकी जीवन रक्षा हो सकी।

वैदिक धर्मावलम्बियों के लिए एक और गौरव की बात यह है कि आज तक जितने भी प्रचारक गये सब ने भारतीयों मे ही प्रचार किया परन्तु पूज्य त्यागी जी का प्रभाव और धर्म प्रचार अफ्रीका के मूल निवासियों में भी हुआ तथा वैदिक धर्म से प्रभावित होकर पूर्वी अफ्रीका के श्री जोसुआ और उनके परिवार विधिवत अपनी शुद्धि कराकर वैदिक धर्म को स्वीकार ही नहीं किया अपितु वैदिक धर्म के प्रचार का व्रत लिया और कर रहे हैं।

आपके सदप्रयत्नो के फलस्वरूप अफ्रीकी बच्चो के लिये दयानन्द अनाथालय खुलवाये जिसमे अनाथ अफ्रीकी बालक रह रहकर वैदिक संस्कृति के अनुरूप अपने जीवन का निर्माण करने और जहा संध्या आदि वैदिक कृत्य होते हैं। मुम्बासा टाइम्स मे सौ से अधिक लेख पूज्य त्यागी जी के भारतीय संस्कृति की विशेषताओ पर छपे हैं।

पूर्वी अफ्रीका से [illegible] [illegible] तथा [illegible] व्रत लिया। श्री उपबध जी (श्रा [illegible] पूर्व जन्म के सस्कारित मनाया विद्वान मने जाते हैं जिन्होंने अपनी १२ वर्ष की आयु मे वेद दर्शन पर संस्कृत में

(शेष पृष्ठ १० पर)

मांसाहार आर्थिक दृष्टि से भी अलाभप्रद है

वर्तमान खाद्य संकट का कारण जन-सख्या की वृद्धि और खाद्य सामग्री की कमी बताई जाती है। परन्तु इसका एक मुख्य कारण मांसाहार में द्रुत गति से वृद्धि का हो जाना भी है।

कृषि योग्य भूमि में किसान उस वस्तु को उत्पन्न करने पर अधिक ध्यान देता है जिससे उसे तत्काल और अधिक पैसा मिल जाय यथा ईख तम्बाकू सब्जी आदि। इसके कारण अन्न की पैदावार कम हो गई है। इसके अतिरिक्त कृषि योग्य भूमि का पशु पक्षियों के चारे और दाने के लिए प्रयोग भी बढ गया है जो उनके मास और अडो के रूप मे परिवर्तित किए जाते हैं। उत्पन्न अन्न का पर्याप्त भाग भी मास और अड देने वाले पशु-पक्षियों के अर्पण कर दिया जाता है। यही कारण है कि गत १५ वर्षों मे गेहू का मूल्य तो दुगना हुआ है परन्तु चने और मकई आदि का मूल्य पचगुना हो गया है।

पशुओ से प्राप्त खाद्य सामग्री के बढ जाने से प्रति व्यक्ति के निर्वाह के लिए आवश्यक भूमि की मात्रा बढ गई है। अमेरिका मे पशुओ से प्राप्त खाद्य सामग्री के कारण जिसमे दूध भी शामिल है और जिसमे समस्त शारीरिक उष्णता का १/३ भाग उपलब्ध होता है खेती योग्य भूमि का ९० प्रतिशतक भाग पशु-पक्षियो के चारे के अर्पण हो जाता है। वहा खाद्य पदार्थों की प्राप्ति के लिए प्रति व्यक्ति ३ एकड भूमि की आवश्यकता होती है परन्तु भारत मे प्रति व्यक्ति के हिस्से मे ६/ एकड भूमि आती है। यदि आबादी की वृद्धि की वर्तमान गति जारी रही तो अगले १० वर्षों मे यह भूमि घटकर ५ एकड रह जायगी। यदि हमारी खेती का पुराना ढर्रा जारी रहा और मांसाहार मे वृद्धि होती रही तो प्रति व्यक्ति ५ एकड भूमि की आवश्यकता होगी जो अब से १० गुना होगी। आखें बन्द करके दूसरो की नकल करने के भयंकर परिणाम सामने आ सकते हैं। परम्परागत शाकाहारी देश मे जिसकी जन सख्या विश्व की जनसंख्या का १ ८ और जिसकी भूमि कुल भूमि का १ ४० भाग हो बड पैमाने पर मास एव अडो के भक्षण से भयकर आपत्ति का आ जाना सुनिश्चित है।

अत हमे एक स्टैण्डर्ड खूराक की व्यवस्था करनी होगी जो प्रति व्यक्ति के हिसाब से ४ एकड भूमि मे उत्पन्न हो जाय और जिसमे स्वास्थ्यवर्द्धक पौष्टिक तत्व भी हो। जहा मांसाहार और अडो का सेवन स्वास्थ्य एव मानसिक पवित्रता की दृष्टि से हेय और त्याज्य है वहा आर्थिक दृष्टि से भी अलाभप्रद है।

सम्मिलित अनैतिकता

अभी हाल मे लार्ड डेवलिन कृत 'नैतिकता का बलात् प्रवर्त्तन' Enforcement of Morality नामक पुस्तक लदन से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक मे लेखक महोदय ने लिखा है कि लोगो के पारस्परिक व्यवहार और जीवन शैली की एकरूपता से समाज का निर्माण होता है।

दूसरे महायुद्ध से पहले ब्रिटेन मे सदाचार की एक ऐसी भावना और उसके प्रति उग्रता व्याप्त थी। यह ठीक है बहुत कम व्यक्ति ईमानदारी सत्यता और रति सयम की मागो की सर्वथा पूर्ति करते हो परन्तु समाज का प्रत्येक सदस्य यह समझता था कि उससे उनकी पूर्ति की आशा की जाती है अथवा इनको व्यवहार मे लाना उसका कर्तव्य है। इतना ही नहीं यदि इनका उल्लघन करते हुए वह पकड लिया जाता था तो वह बहुत लज्जित होता था। परन्तु आज न केवल इस प्रकार का सामाजिक अकुश ही न रहा अपितु लौकिक सत्ताए, जिनमे प्रेस रेडियो एव राज्य भी सम्मिलित है मिलकर अनैतिकता का एक नया मानसिक वातावरण भी तैयार करने का कारण बन रही है जिसे बहुसख्यक नरनारी विशेषत नवयुवक आत्म-सात करने के लिए लालायित रहते हैं। सम्मिलित अनैतिकता के इस दूषित वातावरण मे प्रत्येक कदाचार सहन किया जाने लगा है कोई वस्तु सहन नहीं की जाती है तो वह सदाचार है।

यह दुरवस्था न केवल ब्रिटेन मे ही प्रत्युत प्राय सर्वत्र व्याप्त है।

इसे हम औद्योगिक समाज के अभिशापो की सज्ञा दे सकते हैं जो उपयोगिता वाद पर विकसित हो रहा है जिसने भोगवाद का वातावरण व्याप्त कर रखा है और जिसमे अपने अन्तर को देखने का न तो लोगो को अवकाश ही मिलता है और न प्रेरणा। जब तक लोग अन्तर की अवहेलनापूर्वक बाहर सुख आनन्द सन्तोष और शान्ति की खोज मे रत रहेगे और वेदादि सत्शास्त्रो के पठन पाठन मनन तथा सत्सग के द्वारा प्राप्त ज्ञान को बुद्धिमत्ता एव सदाचरण मे परिणत न करेगे तब तक शान्ति दूर भागती चली जायगी और लोगो मे दुख के प्रति सामूहिक असन्तोष और घृणा व्याप्त न होगी।

—रघुनाथप्रसाद पाठक नई दिल्ली

सूचना

टिहरी गढवाल के भूतपूर्व चीफजज और देश के महान आर्य नेता श्री प० गगाप्रसाद जी रस्तोगी के निधन का समाचार नवभारत टाइम्स दैनिक मे पढकर टिहरी नगर एकदम शोक सागर मे डूब गया और नगर के गण्य मान्य लोग टिहरी आर्यसमाज मन्दिर मे एकत्रित होने लगे। टिहरी आर्यसमाज के प० गगाप्रसाद जी ही सस्थापक थे। टिहरी आर्यसमाज द्वारा सूचना प्राप्त होने पर ता० १७-१-६६ को दोपहर बाद टिहरी व्यापार मण्डल ने बाजार बन्द कर दिया। प्रिन्सिपल महोदय राजकीय प्रताप इन्टर कालेज टिहरी, प्रिन्सिपल महोदया महारानी नेपालिया राजकीय कन्या हायर सेकेन्डरी स्कूल टिहरी, प्रिन्सिपल महोदय स्वामी रामतीर्थ विद्या मन्दिर टिहरी ने भी १७-१-६६ को दोपहर बाद अपने अपने विद्यालय स्वर्गीय आर्य नेता की यादगार मे बन्द कर दिये। १७-१-६६ को आजाद मैदान मे एक सार्वजनिक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता टिहरी नगरपालिका के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रदत्त सकलानी ने की। नगर के सभी प्रमुख व्यक्तियो ने महान नेता को अपनी श्रद्धाजलिया भेट की तथा एक शोक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया जिसकी प्रतिलिपिया सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ और प० जी के सुपुत्र श्री जगदीशस्वरूप जी रस्तोगी डिप्टी इन्जीनियर जल विद्युत विभाग उत्तर प्रदेश को भेजने का निश्चय किया गया। सभा मे रामधुन चलती रही तथा आर्यसमाज टिहरी के मन्त्री ने शान्ति पाठ किया।

यह सूचना आर्यमित्र लखनऊ साप्ताहिक को प्रकाशनार्थ भेजी जा रही है।

—महावीर प्रसाद गैरोला
प्रधान आ० स० टिहरी गढवाल

ओमप्रकाश त्यागी....

[पृष्ठ ९ का शेष]

व्याख्यान देकर विद्वानों को चकित किया था और १८ वर्ष की आयु मे वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ विदेशों में १९५३ में भेजे गये जो अनेक देशो मे प्रचार करते हुए लन्दन मे प्रचार कर रहे हैं) को वेस्ट इण्डीज ब्रिटिश गायना मे प्रचारार्थ भेजा तथा आर्यसमाज की स्थापना कराई।

पूज्य त्यागी जी का भारतीयो के लिए एक अनुकरणीय जीवन है। आपका जीवन एक क्रान्तिकारी जीवन है देश की ऐसी कौनसी क्रान्ति होगी जिसमें उनका हाथ न रहा हो। १९४२ मे आप आगे रहे। नोआखाली मे गांधी जी से तीन मास पूर्व ही शिविर लगाकर महिलाओ की रक्षा करना हैदराबाद के रजाकारो से भिडकर उमरी बैंक के २२ लाख रुपयो की रक्षा करना पूर्वी बगाल के सीमा अतिक्रमण पर ३६ घण्टे तक बराबर फायरिंग का उत्तर फायरिंग से देना छोटे नागपुर रांची क्षेत्र में लगभग ५००० ईसाइयो की शुद्धि उनके गढ मे जाकर करना, मध्यभारत के शाजापुर जिले मे शुद्धि का सूत्रपात किया तथा आज प० देवप्रकाश जी उसी क्षेत्र मे कार्य कर रहे हैं।

बडे सौभाग्य का विषय है कि अब हमारे प्रिय नेता श्री त्यागी जी विदेश प्रचार से वापस लौट आये हैं। हम उन को सफल यात्रा के लिए उन्हे बधाई देते हैं।

सिंहावलोकन

(पृष्ठ ८ का शेष)

उत्पन्न हो गई और वह प्रतिदिन बढती गई। स्वामी शकराचार्य ने वेदान्त दर्शन के भाष्य की बहुत लम्बी भूमिका लिखी जिसका नाम 'चतुःसूत्री' है। कर्मकाड का घोर खण्डन किया है। इससे पूर्व यह समझा जाता था कि पूर्व मीमासा और उत्तर मीमासा दोनो एक दूसरे की पूरक हैं। पहला भाग पूर्व मीमासा है जिसमे १२ अध्याय अर्थात ६० पाद हैं। और दूसरा वेदान्त जिसमे चार अध्याय और १६ पाद हैं। परन्तु शकराचार्य ने पूर्व मीमासा और कर्मकाड दोनो का घोर विरोध किया है।

कुमारिल भट्ट और शकराचार्य दोनो सुधारक थे। वे प्रचलित रोगो की चिकित्सा करना चाहते थे। परन्तु वह महाभारत के प्राचीन वैदिक धर्म का उद्धार न कर सके। एक रोग गया तो दूसरा रोग उससे अधिक भयकर रूप मे उत्पन्न हो गया। जगत मिथ्या है स्वप्न है कल्पना है। इस विचार ने इतना जोर पकडा कि सारा समाज अपने को स्वप्न देखने वाला समझने लगा।

आर्य जगत

निर्वाचन—

—आर्यसमाज इलाहाबाद
प्रधान—श्री किशोरीलाल
मन्त्री—श्री रामस्वरूप आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री हरलाल

—आर्यसमाज जमानिया गाजीपुर
प्रधान—श्री हनुमानप्रसाद आर्य
उपप्रधान—श्री ज्वालाप्रसाद आर्य
मन्त्री—श्री कालिकाप्रसाद गुप्त
उपमन्त्री—श्री ओंकारनाथ
कोषाध्यक्ष—" जगनारायनराम
निरीक्षक—" हरनारायन आर्य

—आर्यसमाज मन्दिर दर्शनपुरवा
प्रधान—श्री मित्रानन्द
उपप्रधान—श्री रामबहादुर
मन्त्री—श्री शिवचरनलाल
उपमन्त्री—श्री प्रतापसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री रामस्वरूप
पुस्तकाध्यक्ष—श्री शिवप्रसाद
लेखानिरीक्षक—श्री मोहनसिंह

—आर्यसमाज चन्द्रनगर लखनऊ
श्री जगदीशचन्द्र खत्री प्रधान
श्री लालचन्द्र बबूटा उपप्रधान एवं कोषाध्यक्ष
श्री पृथ्वीराज बरमानी मन्त्री
श्री रामधन उपमन्त्री
श्री जसवन्तसिंह कोषाध्यक्ष
श्री ओ३मप्रकाश छतवाल निरीक्षक

आ०स० मन्दिर चोपन (मिर्जापुर)
श्री रत्नप्रकाश गोयल—प्रधान
श्रीमती उर्मिला वर्मा—उपप्रधान
श्री नानकचन्द—उपप्रधान
" चन्द्रप्रकाश द्विवेदी मन्त्री
" देवेन्द्रसिंह चौहान—उपमन्त्री
" केवलकृष्ण चोपड़ा—भण्डारी
" रमेशचन्द्र सरीन कोषाध्यक्ष
" प्रभुदयाल चतुर्वेदी—पुस्तकाध्यक्ष
" शिवचरण कालरा—लेखापरीक्षक

शोक—

टिहरी राज्य के भूतपूर्व चीफ जज तथा देश के महान आर्य नेता प० गंगा प्रसाद जी रस्तोगी के निधन पर टिहरी नगर मे आयोजित आम सभा मे पारित प्रस्ताव की प्रतिलिपि दि० १७-१-६६—

टिहरी के नागरिको की यह आम-सभा श्री प० गंगाप्रसाद जी रस्तोगी भूतपूर्व चीफ जज टिहरी राज्य के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। श्री गंगाप्रसाद जी रस्तोगी आर्यसमाज के भारतवर्ष मे प्रमुख स्तम्भ थे और उन्होने आजीवन जो सेवायें समाज को दीं वे भारत के आर्यसमाज के इतिहास मे सदैव स्वर्णाक्षरो मे अंकित रहगी। वे एक महान नेता तथा समाज सुधारक थे। उन्होने टिहरी गढवाल मे दीन छात्रों को जो सेवायें की वह हम लोग कभी नहीं भुला सकते। टिहरी मे आर्य समाज की स्थापना तथा आर्यसमाज भवन का निर्माण उनकी अमर स्मृति रूप हमारे मध्य वर्तमान है। टिहरी गढ़वाल मे न्याय की वास्तविक स्थापना का मुख्यत श्रेय श्री गंगाप्रसाद जी को रहा है। वे एक महान विचारक, अद्वितीय विद्वान तथा साहित्यकार थे। उनके ग्रंथ विशेषकर भारत मे जाति प्रथा तथा धर्म का आदि स्रोत ग्रन्थ उनकी मूर्ति को सदैव अक्षुण्ण रखेंगे और मनुष्य मात्र को सत्पथ पर चलने के निमित्त प्रेरणा देते रहेंगे।

यह सभा भगवान से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उनके विक्षुब्ध कुटुम्ब को इस महान दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे। —वीरेन्द्रदत्त सकलानी अध्यक्ष

नोटीफाइड एरिया कमेटी, टिहरी
जिला टिहरी गढ़वाल।

—महिला आर्यसमाज गणेशगंज (लखनऊ) के साप्ताहिक सत्सग की यह बैठक भारत के प्रधान मन्त्री लालबहादुर जी शास्त्री के ताशकन्द मे आकस्मिक निधन पर घोर दुख प्रकट करती है। और इसे भारत का घोर दुर्भाग्य समझती है। स्वर्गीय शास्त्री जी ने अपने केवल १८ मास की अल्पतम सचिविव की अवधि मे अपनी पटुता और साहस तथा दृढ़ता द्वारा जो सुख्याति और सम्मान प्राप्त किया है या वह उन्हीं की वस्तु थी। राष्ट्र के इस सकटकाल मे उन्होने समार मे राष्ट्र का गौरव बढाया और देश के अन्दर जो एकता और साहस उत्पन्न किया वह इतिहास में स्वर्ण अक्षरो मे लिखा जायगा। परमात्मा दिवगत आत्मा को शाश्वत शान्ति प्रदान करे तथा उनके वियोग सन्तप्त परिवार को यह दुसह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे ईश्वर से हमारी यही एकान्त कामना है।

शोक

—आर्यसमाज मोहम्मदी के हम सब सदस्य स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करते हैं। तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को शान्ति एवम् सदगति प्रदान करें। तथा परिवार के सदस्यों को यह महान दुःख सहने की शक्ति दें।

—राजेन्द्रप्रसाद रस्तोगी मंत्री

—आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ का यह साप्ताहिक अधिवेशन श्री लालबहादुर शास्त्री के असामयिक निधन पर शोक प्रकट करता है। तथा परमात्मा से दिवगत आत्मा को शान्ति तथा परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

—मंत्री

—आर्यसमाज सुभाषनगर प्रयाग के तत्वावधान में आयोजित सुभाषनगर एवम् नया कटरा के निवासियों की एक सार्वजनिक सभा ने जो ११-१-६६ को ४ बजे सायंकाल हुई थी एक प्रस्ताव द्वारा प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री के असामयिक एवम् हृदय विदारक निधन पर असीम वेदना प्रगट की और परम पिता से प्रार्थना की कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। प्रस्ताव ने श्रीमती ललितादेवी जी तथा परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति समवेदना भी प्रगट की। सभा में दिवगत नेता के प्रति श्रद्धाञ्जलियां भी अर्पित की गई।

—बेनीमाधवदेव सिन्हा, मंत्री

—आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर तथा दयानन्द कालेज कानपुर के छात्रों तथा प्राध्यापकों की शोक सभायें अपने लोक प्रिय प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री के ताशकन्द में पाकिस्तान के साथ समझौता प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के बाद ही आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करती हैं। उनका निर्मल व्यक्तित्व हिमालय जैसा दुर्घर्ष था।

स्व० शास्त्री जी ने अपने प्रधान मन्त्रित्व पद के इस अल्पकाल में राष्ट्र को सुसंगठित किया और अपूर्व निष्ठा, दृढ़ता एवं ईमानदारी के साथ देश की राजनीति का संचालन किया। विश्व शान्ति के लिए सतत प्रयास, उनके जीवन का ध्येय था। उनकी अदम्य निर्भीकता एवं संकल्प शक्ति ने संकटकालीन परिस्थित में राष्ट्र के गौरव की रक्षा की।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और हम सबको यह शक्ति देवे कि उनके द्वारा प्रदर्शित शौर्य पूर्ण मार्ग का सुदृढ़ता से अनुसरण करते हुए देश की और संसार का हित कर सकने में समर्थ हों।

(१) आज दिनांक १६-१-१९६६ का आर्यसमाज नरही, लखनऊ का यह अधिवेशन भारत के प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के ताशकन्द में हुए आकस्मिक निधन पर अत्यन्त शोक प्रकट करता है और परमपिता से प्रार्थना करता है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति एवं शोकसन्तप्त परिवार को सान्त्वना प्रदान करें।

(२) आर्यसमाज नरही, लखनऊ आर्यसमाज के प्रमुख नेता एवं विद्वान प० गंगाप्रसाद जी चीफ जज के असामयिक देहावसान पर शोक प्रकट करता है और परमपिता से प्रार्थना करता है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति एवं परिवार को सान्त्वना प्रदान करे।'

साहित्य समीक्षा

लेखक—श्री प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड ज्वालापुर हरिद्वार।

प्रकाशक—मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१

पृष्ठ संख्या ६४, मूल्य ५० पैसे।

भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी और राष्ट्रीय लिपि देवनागरी के पक्ष को आपने इस पुस्तक में बहुत सुन्दर ढंग से पुष्ट किया है। संस्कृत निष्ठ हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है क्योंकि भारत की सब भाषाएं संस्कृत की ही दुहिताएं हैं और उनमें ५० से ८० प्रतिशततक शब्द संस्कृतके ही उपलब्ध होते हैं। इस दावे को सिद्ध करने के लिए आपने बंगला, मराठी गुजराती, असमी, उड़िया, पंजाबी, मलयालम, कन्नड़ तेलगू तामिल आदि भाषाओं के ग्रन्थों से बहुत से प्रमाण संग्रहीत किये हैं।

हिन्दी के विकास में मुसलमान लेखकों एवं कवियों का भी पर्याप्त सहयोग रहा है इस पक्ष की पुष्टि में भी अनेक मुसलमान विद्वानों के वाक्य व पद उद्धृत किये हैं।

देवनागरी लिपि ही सर्वाधिक सरल सुगम एवं वैज्ञानिक है उसकी पुष्टि में भी अनेक भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के मत इस पुस्तक से उद्धृत किये गये हैं।

पुस्तक अत्यन्त योग्यता के साथ लिखी गई है। इस पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिये।

—शिवदयालु मुख्योपमन्त्री सभा

★

देहरादून हिन्दी साहित्य समिति द्वारा——

भारतीय इतिहास काँग्रेस की अंग्रेजी परस्ती पर रोष

भारतीय इतिहास कांग्रेस के प्रवा[illegible] सम्पन्न हुए २७ वें अधिवेशन म भाग ले हे जबलपुर मध्य प्रदेश मे नुवक्ष मस्ब न क निदेशक श्री सुन्दर लाल त्रिपाठी को उक्त कांग्रेस के सचिव ने इस कारण निबन्ध पढने का अनुमति नहीं दी कि वह अंग्रेजी म न लिखा जाकर हि दी मे । [illegible] गया था। हिन्दी साहि य समिति देहरादून ने इस हिन्दी विरोध को अपने राष्ट्रीय [illegible] पर घृण्य पद-प्रहारकी संज्ञा दी है। समिति के मत मे यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि जिस इतिहास कांग्रस के अधिवेशनो मे प्राय भारतीय इतिहास स ही सदर्भित विविध महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विमश होता है, वह ऐसे विचार उमश के माध्यम क रूप मे उस हिन्दी को त्याज्य माने, जो भारत की संविधान स्वीकृत राष्ट्रभाषा और राजभाषा है तथा जिसके द्वारा बहुसख्यक भ रतीय आत्माभिव्यक्ति करते हैं।

हिन्दी साहित्य समिति की अन्तरग सभा द्वारा पारित किये गये प्रस्ताव में यह आशा व्यक्त की गई है कि इस प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण अधिवशनों मे भारतीय इतिहास कांग्रेस का यह अराष्ट्रीय आचरण कदापि उदाहरण न बनेगा और स्वय यह कांग्रेस भी अपने भावी अधिवेशनो में इसकी पुनरावृत्ति न होने देगी।

सभा द्वारा श्री सुन्दरलाल त्रिपाठी को हार्दिक साधुवाद दिया गया है जिन्होने विरोधात्मक मूक हड़ताल का आश्रय लेकर इतिहास कांग्रेस के सचिव के इस हिन्दी विरोधी रवैये की ओर व्यापक रूप से राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया।

एक आदर्श आर्य और उस का अनुकरणीय दान

श्री अचपलसिह जी त्यागी ने जो आज से ४५ वर्ष पहले आर्यसमाज मे प्रवेश किया एवं आपने सदाचार का प्रभाव अपने पिता पर डाला फेराहेडी आर्यसमाज के लिए भूमि प्रदान कराकर मन्दिर बनवाया और इसके बाद २ बीघे पक्के का बाग लगवा कर आर्यसमाज को प्रदान कराया, अब जबकि पुराना आर्य समाज मन्दिर क्षीण होने लगा तो स्वय अपने भाई रामचन्द्र व अपनी चौपाल की भूमि प्रदान करके श्री अचपलसिह ने अपने पास से ७००० हजार रुपया लगाकर एक आर्यसमाज मन्दिर बनवाया। वह बहुत-बहुत धन्यवाद के पात्र हैं।

और इसी नये समाज मन्दिर मे वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया, और इनकी पुत्री श्रीमती कमलावती देवी के उद्योग से स्त्रियो की उपस्थिति अच्छी रही और जिसमें ७० रुपये वेद प्रचार के दान में आये जो भेज दिये गये एव प०ओम सिंह मन्त्री आर्य की कथा हुई जिसका प्रभाव जनता पर अच्छा पड़ा।

आर्यसमाज जेतपुर (सौराष्ट्र)

श्रीयुत अम्बालालजी नरसिंहभाई पटेल जेतपुर नगरपालिका के अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं। इसके पूर्व भी सन १९५३ से १९५७ तक के ४ वर्ष पर्यन्त आप जेतपुर म्यूनिसिपैलिटी के अध्यक्ष रह चुके थे और निस्पृहता एव सलग्नतापूर्वक अपनी सेवाए जेतपुर नगर को प्रदान करते रहे थे। जेतपुर शहर के नगरजनो ने आपका बहुविध सम्मान किया था।

श्री पटेल जी महर्षि दयानन्द सरस्वती चैरिटेबल ट्रस्ट टंकारा के माननीय ट्रस्टी हैं। टकारा स्मारक के आरम्भ से तीन वर्ष पर्यन्त मुख्य व्यवस्थापक के पद पर रहकर अवैतनिक सेवा करते रहे थे।

आप इस समय बृहत सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के भी उपाध्यक्ष हैं।

महर्षि के इस प्रकार के अनन्य भक्त एव राष्ट्रप्रेमी श्री पटेल जी पुन एक बार जेतपुर नगरपालिका के अध्यक्ष चुन लिये गये है। यह आर्यसमाज के लिए बड हर्ष एव गौरव का विषय है। आशा है, जेतपुर के निवासी श्री पटेलजी जैसे सरल प्रकृति के कर्तव्यनिष्ठ आर्य पुरुष से सेवालाभ उठाते रहेगे।

—नारायणदास कटारिया

उत्सव—

—आर्यसमाज, मेस्टन रोड, कानपुर का वार्षिकोत्सव बृहस्पतिवार, १७ फरवरी से रविवार २० फरवरी, १९६६ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। नगर कीर्तन बृहस्पतिवार, १७ फरवरी को एव व्याख्यान आदि १८ १९ एव २० फरवरी को होंगे।

—आर्यसमाज कुशौलिया जंथरा (एटा) उ०प्र० का वार्षिकोत्सव दिनाक ६ ७ ८ दिसम्बर १९६५ को सम्पन्न हुआ जिसमे पूज्या माता जगधात्री देवी जी एटा तथा श्री जीवालाल जी भजनीक आ० स० कायमगज एव स्वा० पूर्णानन्द जी भजनोपदेशक शाहजहाँपुर, श्री दान सहाय जी तथा प० सच्चिदानन्द जी एव वानप्रस्थी वासीलाल जी ने धर्मप्रचार कि[illegible]।

—आ०स० हयपऊ (पढोरा) जि० मैनपुरी का वार्षिकोत्सव १३, १४, १५ नवम्बर ६५ को सम्पन्न हुआ। आर्य शिक्षा सम्मेलन आ०सिद्धान्त सम्मेलन तथा राष्ट्र सुरक्षा सम्मेलन हुए।

—आ० स० फतहपुर विश्नोई जि० मुरादाबाद का वार्षिकोत्सव १२, १३, १४ नवम्बर ६५ को सम्पन्न हुआ। आचार्य सत्यप्रिय जी यती स्वा० शिवानन्द जी तथा श्री गजराजसिंह जी एव नरपतसिहजी पधारे। समाज ने उपसभा को ७५) उत्सव योजना तथा ५१) आ०प्र० सभा को वेद प्रचार मे भेजा।

—आर्यसमाज 'बैरी' जिला फतेहपुर का वार्षिकोत्सव ८ से १० नवम्बर सन् १९६५ ई० को बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमे श्री ललताप्रसाद जी आलिम फाजिल, बैजनाथ जी वानप्रस्थी, तथा श्री चौधरी खजानसिंह जी भजनोपदेशक के भजन व व्याख्यान हुए। सुरक्षा कोष के लिए ५१) प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर को भेजे गये। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। —मन्त्री

आ० स० पुनर्जीवित

श्री गगाधर प्रसाद जी मन्त्री आर्यसमाज जिहुरा मरौचा पो० रामगढ़ी जि० बहराइच सूचित करते है कि श्री प० विद्यानन्द जी प्रम सभा प्रचारक के विशेष प्रभाव डालने पर उक्त समाज पुनर्जीवित हो गयी। जिसके प्रधान श्री कै[illegible]शनाथ जी, उपप्रधान श्री बृजनरेश, मन्त्री गजाधर प्रसाद जी, उपमन्त्री श्री जगद[illegible]शप्रसाद जी, कोषाध्यक्ष श्री बल्देव प्रसाद जी पुस्तकाध्यक्ष श्री श्यामलाल जी निर्वाचित हुए। —सभामन्त्री

शोक—

—आ० स० मन्दिर गोहावर मे २१ ११ ६५ को प्रात एक सभा हुई जिसमे श्री लालसिंह जी मन्त्री आ०स० व श्री क[illegible]सिंह जी पिता उपमन्त्री गोहावर आर्यसमाज तथा माता श्री [illegible] बहादुरसिंह जी सदस्य समाज के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित हुए। आर्यसमाज गोहावर उपर्युक्त तीनो व्यक्तियो के परिवारो के लिए शान्ति तथ दिवगत आत्माओ को सदगति प्रदान करने के हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता है।

इसी सभा मे श्री लालसिह जी मन्त्री समाज की धर्मपत्नी मुनियादेवी तथा पुत्री दिव्यमूर्ति देवी ने वचन दिया कि आर्यसमाज मन्दिर मे मन्त्री जी की स्मृति मे एक कमरा ८००) के मूल्य का शीघ्र बनवाया जायेगा।

—आर्यसमाज मेरठ नगर के ४-४-६५ के सत्सग मे श्री प० अयोध्याप्रसाद जी के निधन पर शोक प्रकट किया गया तथा परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवगत आत्मा को चिरशान्ति एव शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

—आर्यसमाज कनखल अपने प्रधान श्री म० केवलराम जी के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि दिवगत आत्मा को शान्ति तथा परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—८ ११-६५ को महाशय श्री हीरासिंह जी, मन्त्री आर्यसमाज द [illegible]री (बुलन्दशहर) का ५० वर्ष की अवस्था मे रक्त चाप से अचानक देहान्त हो गया है। आप एक सुयोग्य, कुशल एव कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। आपका सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा मे ही बीता है। आपकी मृत्यु से आर्यसमाज को भारी क्षति पहुची है। ईश्वर आपके शोकाकुल परिवार तथा आपकी दिवगत आत्मा को धैर्य एव शान्ति प्रदान करे। —मन्त्री

—आर्यसमाज जोगबनी के उपप्रधान श्री रामचरण जी गुप्त के पिता श्री गनपतराम जी गुप्त क दिनाक १०-१०-६५ को आकस्मिक निधन पर सभा द्वारा हार्दिक शोक एव समवेदना प्रकट कर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गयी कि दिवगत आत्मा को सदगति और शोकातुर परिवार तथा इष्ट मित्रों को धैर्य प्रदान करे। —मन्त्री

—आर्यसमाज हल्दौर (बिजनौर) का दीपावली का अधिवेशन अपने स्थायी उपप्रधान श्री म० यादराम के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और उनकी आत्मा को शान्ति एव परिवार क धैर्य के लिए प्रार्थना करता है।

—श्री जयदेवप्रसाद जी [illegible] प्रधान आर्यसमाज [illegible] (बुलन्दशहर) का ता० २३ १ ६५ को प्रात ७ बजे श्री सरोजनी नायडू अस्पताल [illegible] में स्वर्गवास हो गया। दीपावली व वार्षिक पर्व पर [illegible] मन्दिर [illegible] में शोक सभा हुई और ५ मिनट का मौन [illegible] समाज [illegible] ने पीछे [illegible] पुत्र व भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। प्रभू से प्रार्थना है कि उनके परिवार व मृतात्मा को शान्ति प्रदान करे। —मन्त्री

वेद-व्याख्या

(पृष्ठ ५ का शेष)

जगत्पिता हमारे सांसारिक पिताओ से असख्य अनन्त गुण कृपालु स्नेही सुखदाता और सरक्षणादि सब कुछ है। इसलिये कवि स्वीकार करने को बाध्य हुआ है—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव,
त्वमेव सर्व मम देव देव॥

खराबी सिर्फ इतनी ही है कि हम यह अनुभव ही नही करते कि माताओं की मा, और पिताओं का पिता, गुरुओं का गुरु, शासको का भी शासक कोई है। और नहीं उसके कल्याणकारी उपकारों की ओर दृष्टिपात करते है। कम्यूनिस्ट बन्धुओ की भाति मान बैठे है कि सब कुछ यू ही बन गया है। हा इतना तो अवश्य मान लेते हैं कि यह सब प्रकृति के करिश्मे हैं। बस सब कुछ प्रयत्न के अनुकूल, तीसरा महाभयङ्कर, प्रलयङ्कारी विश्व युद्ध रोके न रुक सकेगा, तब कहीं उनकी आखें खुलेंगी कि कोई जगन्नियन्त्रणकारी शक्ति विशेष है और वेदो की शिक्षायें इसी भयकर काड के रोकने की परमौषधि हैं।

×

शुद्धि—

मिस हनी स्टाफ नर्स को १९-१२-६५ को शुद्ध कर उसका नाम मीरोलता रक्खा गया और उसका विवाह श्री ऋषि मल्क के साथ कर दिया गया—आर्य बन्धु इस शुद्धि और विवाह से बड़े प्रसन्न हैं और आम जनता ने इसका स्वागत किया।

—चोखेलाल सत्यपाल, शाहजहांपुर

विशेष हाल जानने के लिए सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

राष्ट्रीयता बनाम साम्प्रदायिकता

(ले०—श्री प्रो० आनन्दप्रकाश जी प्रचार मन्त्री आ० उपसभा वाराणसी)

किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा, परम्पराओं, मान्यताओं और इतिहास के प्रति आस्थावान होना और उनको अपना गौरव समझना 'राष्ट्रीयता' के अंग हैं। यह वह भावनायें हैं जो कि किसी व्यक्ति का अपने राष्ट्र से भावात्मक सम्बन्ध जोड़ती हैं। इन्हीं सम्बन्धों के वशीभूत होकर उस देश के नागरिक अपने देश की अखण्डता उसके सम्मान और मानमर्यादा की रक्षा के लिये हंसते-हंसते अपने प्राण निछावर कर देते हैं। यही वह भावनायें हैं, जिनके फलस्वरूप वह अपने देश की मिट्टी को अपने माथे पर लगाता हुआ अपने देश की भूमि को 'स्वर्ग से भी बढ़कर' मानता है और मरने के बाद बार बार इसी भूमि पर पैदा होने की कामना करता है। उसके लिये यह भूमि मातृ-भूमि, पितृभूमि, देवभूमि और पुण्य भूमि बन जाती है। अपने देश से महान् किसी दूसरी अन्य वस्तु की वह कल्पना भी नहीं कर सकता। इस कथन की सत्यता को सिद्ध करते हुए हमारे सामने कुछ चित्र आते हैं—गर्म लोहे की सलाखों से अपने शरीर के चिथड़े खिंचवाता हुआ बन्दा वैरागी, आग में जीवित जलती हुई मैनावती, पत्थर के कोल्हू में नारियल के स्थान पर अपनी हड्डियों को पेरता हुआ वीर सावरकर, बन्दूकों की गोलियों से अपने सीने को छलनी करवाता चन्द्रशेखर आजाद, फांसी पर झूल जाने को व्याकुल सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाकउल्ला खां, चीनी दरिन्दों से अपनी मातृभूमि को अपवित्र होने से बचाता हुआ मेजर शैतानसिंह, पाकिस्तानी नरपिशाचों को अपने विश्वासघात का मजा चखाता हुआ ले० कर्नल तारापोर, हवलदार अब्दुल हमीद और मेजर रणजीतसिंह दयाल, भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त कराने के लिये जनचेतना को जगाते हुए लाल-बाल-पाल, गांधी, नेहरू, पटेल और भारत के प्राचीन राष्ट्र गौरव तथा स्वदेशाभिमान की पुनर्जागृति करने का शंख फूंकते हुए युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द। राष्ट्रीय कहलाने का अधिकारी वही है जो अपने धर्म, मजहब और यहां तक कि अपने सर्वस्व को ही राष्ट्र के हित के सामने तुच्छ समझता है और जिसके सामने अपनी 'राष्ट्रीयता' का कोई विकल्प हो ही नहीं सकता।

'सम्प्रदाय' शब्द किसी "धार्मिक समुदाय मजहब, फिरका, सिद्धान्त और परम्परागत मान्यताओं 'आदि' का द्योतक है। 'साम्प्रदायिकता' शब्द की परिभाषा करने में वैसे तो हमारे देश के बड़े-बड़े राजनयिक नेताओं का मस्तिष्क थका हुआ है, और अपनी समस्त कोशिशों के बाद भी वे इसको समुचित व्याख्या नहीं कर पाये; पर जहां तक राष्ट्रीयता के सदर्भ में साम्प्रदायिकता को देखने का प्रश्न है किसी समुदाय की वह मान्यतायें विश्वास और क्रियाकलाप जो कि पूरे राष्ट्र को दृष्टिगत न रखते हुए केवल मात्र उस समुदाय को ध्यान में रखकर स्थापित किये जायें और साथ ही जो दूसरे समुदायों और सम्पूर्ण राष्ट्र के हित को ठेस पहुंचाते हों, साम्प्रदायिकता के अन्तर्गत आते हैं। उदाहरणस्वरूप कुछ वर्षों पूर्व हमारी राष्ट्रीय सरकार ने देश में भावात्मक एकता जाग्रत करने के लिये, श्री अशोक मेहता की अध्यक्षता में एक आयोग बनाया। आयोग के सामने गवाही देते हुए एक मुस्लिम सस्था के दो प्रतिनिधियों ने कहा कि धर्म और राष्ट्र के स्वार्थों में टक्कर होने पर हम धर्म का साथ देंगे।

राजनैतिक समस्याएं

अर्थात् कहना यह कि यदि हमारे देश के ऊपर किसी ऐसे देश की ओर से खतरा पैदा होता है जो कि उनकी दृष्टि में उनका धार्मिक पक्ष है तो उनकी राष्ट्रीयता की बालू की दीवार इस धक्के को सहन न कर सकेगी। यह धार्मिक साम्प्रदायिकता का एक स्वरूप है। इसी प्रकार जो लोग भाषा के प्रश्न को या अपने प्रान्तों के हितों को राष्ट्रीय हित से ऊपर रखते हैं—साम्प्रदायिक कहे जावेंगे। नागालैंड की समस्या, मद्रास में हुए भाषायी दंगे, सिखों के काल्पनिक दमन का रोना रोकर पंजाबी सूबा की मांग सब इसी भावना से प्रेरित हैं। और अभी अपने को धर्मनिरपेक्ष और असाम्प्रदायिक कहने वाली कांग्रेस सरकार द्वारा अपने मुस्लिमपरस्त और हिन्दुत्व के दमनकारी दृष्टिकोण के कारण राष्ट्रीयता के प्रतीक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दू शब्द निकालने का प्रयास भी इसी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का द्योतक है। इस हिन्दू शब्द को हटाने के पीछे सरकार इस हद तक पड़ी कि उसने स्वतन्त्र मतदान का सहारा लेना चाहा। जिस स्वतन्त्र मतदान का प्रयोग बेरुबाड़ी हस्तान्तरण, कच्छ समझौता और भाषा प्रश्न पर भी नहीं किया गया, उसे इस प्रश्न पर इस्तेमाल करने का प्रयास किया गया। हमारा यह दुर्भाग्य रहा है कि सैकड़ों वर्षों के अनुभव के के बाद भी आज तक हम राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता के बीच भेद नहीं कर पाये।

आज हमारे देश में स्वराज्य है। स्वराज्य में अपनेपन का भाव निहित होता है और इस अपनेपन का ही हमसे भावात्मक सम्बन्ध है। मुसलमानों के आने से पहले यहां पर अनेक छोटे बड़े राजा थे। मुसलमान उस समय बाहर से एक आक्रमणकारी के रूप में यहां आये और उन राजाओं को हटाकर यहां पर उन्होंने अपना राज्य स्थापित कर लिया। उन देशी राजाओं के हाथ से मुसलमानों के हाथ में सत्ता हस्तान्तरण की इस घटना को हम स्वराज्य नहीं कह सकते, क्योंकि वह मुसलमान राजा विदेशी शासक थे। उनके साथ अपनेपन का सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकता।

इसके बाद मुसलमानों के हाथ से शासन अंग्रेजों के हाथ में आया। अंग्रेजी शासन का युग भी पराधीनता का युग था। परन्तु जब हमारे देश का शासन अंग्रेजों के हाथ से भारतीयों के हाथ में आया तो उसे स्वराज्य कहा गया क्योंकि जब शासक चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो या ईसाई हो, वह भारतीय है और उस से हमारा अपनेपन का नाता है। हमारा धर्म, हमारी जाति और हमारे विचार सब समष्टि रूप में भारतीय हैं और व्यष्टि रूप में राष्ट्रीय हैं। इस देश के प्रत्येक नागरिक से यह आशा की जाती है कि भारतीयता और राष्ट्रीयता के इस मापदण्ड पर अपने आपको सफल घोषित करे। परन्तु सन् १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के बाद से अब तक कुछ ऐसी भूलें की गईं जिनके कारण हम राष्ट्रीयता की इस भावना से जन-जन को भरपूर नहीं कर पाये।

१८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में हिन्दू और मुसलमानों ने समान रूप से बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में भाग लिया। एक ओर से जहां महारानी लक्ष्मीबाई ने तलवार उठाई, वहीं दूसरी ओर से बेगम हजरतमहल उठी। उसी प्रकार नानासाहब कुंवरसिंह तांत्याटोपे मौलवी अहमदुल्ला ने कमर कसी और ब्रिटिश साम्राज्य की ईंट से ईंट बजा देने के लिए दिल्ली पहुंचे और बिना किसी साम्प्रदायिक भेदभाव के उस समय के मृतप्राय मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के झण्डे के नीचे एकत्र हुए। उस समय उनकी नसों में भारतीय खून दौड़ रहा था, वह भारतीय थे और सिर्फ भारतीय। परन्तु हमारे दुर्भाग्य से अंग्रेज इस स्वाधीनता संग्राम को कुचल देने में सफल हुए। पर एक बात उन्होंने साफ जान ली कि यदि भारत में इसी प्रकार की साम्प्रदायिक एकता बनी रही तो ब्रिटिश साम्राज्य का बना रहना असम्भव होगा। अतः उन्होंने साम्प्रदायिक भेदभाव का बीज बोया। सबसे पहले १९०५ में एक मुस्लिम बहुसंख्यक प्रान्त बनाने के लिए बंगाल का बटवारा किया गया और इस प्रकार पाकिस्तान का विचार मुसलमानों को दिया और इस कार्य के द्वारा जैसा कि लार्ड कर्जन ने स्वयम स्वीकार किया, मुसलमानों में अलगाव की भावना पैदा की। यद्यपि यह बटवारा १९११ में रद्द करना पड़ा, परन्तु इसका प्रभाव यह हुआ कि सन् १९०६ में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई और सन् १९०९ में मार्ले-मिन्टो-सुधार के अनुसार मुसलमानों को साम्प्रदायिक आधार पर कुछ विशेष अधिकार मिल गये। मुस्लिम लीग अपने जन्म से लेकर हमेशा ही प्रतिक्रियावादी साम्प्रदायिक और देश घातक मुसलमानों का अड्डा रही। परन्तु देश के विभाजन से पूर्व तक इसके सही स्वरूप को समझने की चेष्टा अन्य राजनैतिक दलों ने नहीं की। साम्यवादियों ने तो मुस्लिम लीग को एक महान् राष्ट्रीय सस्था माना और राष्ट्रिय एकता के लिए लीग और कांग्रेस का समझौता परम आवश्यक बताया। साम्यवादियों का कहना था कि, 'मुस्लिम लीग निम्न मध्यम वर्ग के मुसलमानों की सस्था है। यह केवल भारतवर्ष में पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए नहीं लड़ रही है, बल्कि वह इस लिए भी लड़ रही है कि मुस्लिम प्रधान प्रदेशों को स्वतन्त्रता और बराबरी के अधिकार मिलें और जिन प्रदेशों में मुसलमान कम हैं, उनमें मुसलमानों की सस्कृति, शिक्षा और भाषा सम्बन्धी अधिकारों की रक्षा की व्यवस्था हो। इस भांति मुस्लिमलीग के बढ़ते हुए प्रभाव को एक प्रतिक्रियावादी चीज नहीं कहा जा सकता। उल्टे यह प्रभाव इस बात को प्रकट करता है कि मुस्लिम जनता में साम्राज्य विरोधी भावना का अधिकाधिक विस्तार हो रहा है और देशव्यापी राष्ट्रीयता के आधार पर सिन्धी, पंजाबी मुसलमानों, पठानों आदि जातियों में जातीय चेतना विकसित हो रही है।"

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

माघ १० शक १८८७ माघ शु० २
(दिनांक ३० जनवरी सन् १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60

पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष्य : २५९९३ तार : "आर्य्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

राजनैतिक समस्यायें

(पृष्ठ २ का शेष)

कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के प्रति तुष्टीकरण का दृष्टिकोण अपनाया। कांग्रेस का खिलाफत आन्दोलन जो कि प्रथम महायुद्ध के बाद खलीफा के राज्य के टुकड़े करने के सम्बन्ध में अंग्रेजों की नीति के विरुद्ध चलाया गया था, विशुद्ध रूप से मुसलमान जनता का आन्दोलन था। राष्ट्रीय एकता बढ़ाने की फिक्र में कांग्रेस ने अपनी धर्मनिरपेक्षिता की नीति को भी ताक में रखकर बार-बार लीग से समझौता वार्ता चलाई और यहां तक कि मुसलमानो के अलग प्रतिनिधि चुने जाने तक की मांग को स्वीकार किया। मुस्लिम लीग को इतना बढ़ावा मिला कि १९३०–३२ में लन्दन की गोलमेज कान्फ्रेंस में लीग को भी कांग्रेस के समान प्रतिनिधित्व मिला। परन्तु ज्यों-ज्यों मुस्लिम लीग को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया गया उसका रूप और भयंकर होता चला गया। परिणाम यह हुआ कि १९४० मे जिन्ना के नेतृत्व में लीग ने पाकिस्तान की मांग की। १६ अगस्त १९४६ को लीग की ओर से पाकिस्तान बनाने के लिये सीधी कार्यवाही की घोषणा की गई। जिन्ना ने कहा कि "या तो हम पाकिस्तान लेंगे या हिन्दुस्तान को तबाह कर देंगे।" मुस्लिम लीग की योजनानुसार ही कलकत्ते, नोआखाली आदि स्थानो पर दगे हुये जिसमे हजारो हिन्दुओ की जानें गईं। ऐसी भीषण स्थिति मे उस काग्रेस को, जिसके लिये "अखड भारत" धर्म वाक्य था (हरिजन, २६ जुलाई, १९४२) देश का बटवारा स्वीकार करना पड़ा। परन्तु इस सबका मूल कारण यही था कि साम्प्रदायिक तत्वो को व्यर्थ ही महत्व देकर उन्हे पनपने का मौका दिया गया। यही साम्प्रदायिक तत्व बाद में इतने खतरनाक बन गये कि गांधी जी को ७ जून, १९४२ के हरिजन में लिखना पड़ा कि "एकता स्वतन्त्रता से पहले नहीं बाद में स्थापित होगी" और काग्रेस के वर्धा अधिवेशन के प्रस्ताव मे कहा गया कि, "काग्रेस के प्रतिनिधि साम्प्रदायिक समस्या को सुलझाने के लिये भरसक प्रयत्न कर चुके हैं, किन्तु वे सफल नहीं हुये, क्योंकि हमारे बीच एक विदेशी शक्ति मौजूद है, जो सदा से फूट डालकर शासन करने के सिद्धान्त को मानती और बरतती चली आई है।"

साम्प्रदायिक तत्वों के प्रति समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाने के फलस्वरूप स्वस्थ राष्ट्रीयता की भावना का विकास नहीं हो पाया और आज पाकिस्तान के रूप में हमारी मातृभूमि का ही एक टुकड़ा हमेशा के लिये एक खतरा बन गया। परन्तु स्वाधीनता के बाद भी इस राष्ट्रीयता की भावना को हम काफी मजबूत नहीं बना पाये। तभी तो कभी हजरतबल काण्ड के रूप में, कभी अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में साम्प्रदायिक दंगों और राष्ट्रविरोधी कारनामों के रूप में, कभी उर्दू को राजभाषा बनाने के प्रश्न को साम्प्रदायिक तरीके से सामने रखने में और अभी पिछले दिनों भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान भारतीय फौजो की जीत के समाचारों को सुनकर कुछ व्यक्तियों के चेहरों पर छायी उदासीनता के रूप मे इस साम्प्रदायिकता का नगा नाच देखने को मिल रहा है। भारतीय सेना की बहादुरी की घटनाओं को सुनकर जहां हर भारतीय का कलेजा दुगुना हो जाता है, वहां यह समाचार कि मलयेशिया और सिंगापुर में रहने वाले कुछ भारतीय मुसलमानो का पाकिस्तान के युद्ध कोष में हजारों डालर का दान, किस भावना को प्रदर्शित करता है। ईसाई मिशनरियो के अराष्ट्रीय प्रचार को बढावा देने का फल नागालैंड की समस्या है। और अब ८० प्रतिशत ईसाई आबादी वाले मीजो जिले को वहा के नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट द्वारा भारतीय सघ से बाहर एक राज्य बनाने की माग की जा रही है। राष्ट्रीयता का इतना बडा अपमान क्या किसी राष्ट्र मे देखने को मिल सकता है, कि शेख अब्दुल्ला जैसे गद्दार पर गरीब जनता की खून-पसीने की कमाई का साढ़े पांच लाख रुपया प्रतिमास बर्बाद किया जावे। यदि देशद्रोहियो के साथ यही बर्ताव किया गया तो फिर क्या राष्ट्रीयता की बुनियाद मजबूत बन सकती है? जिस मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान बनाया, उसके साथ केरल में संयुक्त सरकार बनाकर कांग्रेस ने इस सांप को फिर डसने के लिये बुलावा दिया।

हमने राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता के बीच भेद न कर पाने के कारण जहां एक ओर बहुत सी मुसीबतें पैदा कर लीं वहीं दूसरी ओर स्वस्थ राष्ट्रीयता के पनपने में अड़चन डाली। राष्ट्रीयता के विकास द्वारा ही स्थायी राष्ट्रीय एकता सम्भव है। साम्प्रदायिकता के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाकर या किसी समुदाय को साम्प्रदायिक आधार पर, ससार में अपनी धर्मनिरपेक्षिता का ढिंढोरा पीटने के लिये कुछ अधिक रियायतें देकर किसी स्वस्थ परम्परा को जन्म नहीं दिया जा सकता। ★

शांतिदूत लालबहादुर शास्त्री

भारत-पाकिस्तान के मध्य सुलह-समझौते की वार्तालाप के अन्तिम चरण में सफलता प्राप्त करने वाला भारत का द्वितीय प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री कुछ ही घड़ियों के उपरान्त इस पार्थिव शरीर को त्याग कर सदा के लिये महाप्रयाण कर गया। काबुल और दिल्ली की जनता जो उसके स्वागत की तैयारी कर रही थी महान् शोक में निमग्न हो गई।

इस १९ मास के अल्पकाल में जो लोक-प्रियता भारत के समस्त वर्गों के बीच उसने प्राप्त की थी और विश्व के राजनीतिक क्षितिज पर जो मान्यता और सम्मान उसने उपलब्ध किया वह संसार के इतिहास में अद्वितीय घटना है।

एक अत्यन्त दीन अकिंचन परिवार में जन्म लेकर उस दिवगत आत्मा ने जो उच्चतम सम्मान ४५ करोड़ के महान् राष्ट्र भारत में प्राप्त किया उस का मूल कारण उसकी कर्तव्यनिष्ठा, निस्वार्थ देश सेवा, उत्कट राष्ट्र प्रेम, विनय और शालीनता था।

शास्त्री जी के सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भिक क्षेत्र मेरठ ही था। अछूतोद्धार समिति मेरठ तथा कुमाराश्रम मेरठ के उपमन्त्री पद को काशी विद्यापीठ के स्नातक बनने के उपरान्त सन् १९२४ ई० मे उन्होने सुशोभित किया। तब ही मे मेरा 'उनके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। शास्त्री जी के निधन से मेरा एक पुराना सहयोगी सदा के लिये मुझ से विलग हो गया इससे मुझे जो अपार वेदना हुई है उसको शब्दो में मै व्यक्त नहीं कर सकता।

परमात्मा उस दिवंगत दिव्य आत्मा को सच्ची शान्ति प्रदान करें। बहिन ललिता शास्त्री को धैर्य एवं उनके परिवार के जनों को सान्त्वना प्रदान करें।

राष्ट्र के नायक स्वर्गीय शास्त्री जी के गुणों को अपने जीवनों में धारण कर भारत भूमि की सेवा में सन्नद्ध हों यह ही प्रभु से प्रार्थना है।

संतप्तहृदय शास्त्री जी का सहयोगी
शिवदयालु, मेरठ

आर्यसमाज के महान् नेता एवं उच्चकोटि के विद्वान्

श्री पं. गङ्गाप्रसाद जी एम.ए. रि० चीफ जस्टिस टेहरी का स्वर्गवास

दि० १३-१-६६ को प्रातः ५॥ बजे के ब्राह्म मुहूर्त में ९७ वर्ष की आयु में आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार पं.जी का में शरीरान्त हो गया। स्व.पं.गङ्गा प्रसाद जी उच्चकोटि के विद्वान् थे। धर्म का आदि स्रोत आतिमेद, ज्योतिश्चन्द्रिका, सूर्य सप्ताश्ववर्णन आदि आपकी अनुपम कृतियां हैं। आप उत्तर-प्रदेश के एक लब्धप्रतिष्ठ डिप्टी कलक्टर थे। कटारपुर केस में सरकार ने आपको रिटायर होने की अनुमति प्रदान की। तब से आपका सारा समय आर्य-समाज के कार्यों में ही लगने लगा। आपने कई वर्ष तक आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद को सुशोभित किया। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के आप कई वर्ष तक अधिष्ठाता रहे और फिर टिहरी राज्य में चीफ जस्टिस बनकर चले गये। टिहरी मे आपने आर्यसमाज के कार्यों को विशेष प्रगति दी।

महात्मा नारायणस्वामी जी के सहयोगी बनकर गढ़वाल व कूर्मांचल प्रदेशो मे आर्यसमाज के कार्यों को प्रगति दी। रामगढ आर्य आश्रम, एव वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर की स्थापना में भी आप पूज्य स्वामी जी का साथ देते रहे।

आर्य जगत् आपके निधन मे अपने को महती क्षति से ग्रस्त अनुभव करता है।
—शिवदयालु

शोक प्रस्ताव

डी० ए० वी० कालेज देहरादून के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० पंजाबीलाल शर्मा की धर्म पत्नी के असामयिक निधन पर हिन्दी साहित्य समिति देहरादून ने हार्दिक शोक प्रकट किया है। इस संबंध में समिति की अन्तरंग सभा द्वारा पारित शोक प्रस्ताव में डा० शर्मा के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की गई। और दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई है।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य्यभास्कर प्रेस, ५मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित, प्रकाशित

लखनऊ—रविवार माघ १७ शक १८८७, फाल्गुन कृ० १ वि० [illegible] ६ फरवरी सन १९६६ ई०

वेदामृत

[illegible]

ऋ० १।७।१४।०२१४

काव्यानुवाद

हम विजयी हों साथ तुम्हारे,
[illegible] को ।
[illegible] सम्पदा ही हम सबको,
[illegible] करो हरि! [illegible] को ॥

विषय-सूची

आर्य विद्वान् एवं हिन्दी साहित्यकार, आर्यमित्र के भूतपूर्व सम्पादक—

श्री डा० हरिशङ्कर जी शर्म्मा

(उपकुलपति गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन)

राष्ट्रपति द्वारा "पद्मश्री" उपाधि से विभूषित

आर्यजगत, मित्र परिवार एवं हिन्दी साहित्य गौरवान्वित

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने ७५ वर्षीय प्रमुख साहित्यकार श्री डा०हरिशंकर शर्म्मा जी को "पद्मश्री" उपाधि प्रदान की है। श्री पण्डित जी आर्यसमाज की विभूति हैं, उन्होंने अपने जीवन का आरम्भ आर्यसमाज की सेवा से किया और आज भी वे एक तपस्वी की भांति समाज-सेवा और साहित्य साधना में निरत हैं।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान, आर्यमित्र के चिरन्तन सम्पादक, महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह के अध्यक्ष रह चुके हैं। इस समय भी आप गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के उपकुलपति एवं कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी हाथरस के अध्यक्ष रूप में आर्यसमाज की सेवा में संलग्न हैं। देश में नैतिक उत्थान की दिशा में प्रयत्न करने के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा के नैतिक उत्थान विभाग के अध्यक्ष रूप में भी आप मार्ग-दर्शन कर रहे हैं।

उपर्युक्त सामाजिक शैक्षणिक एवं नैतिक कार्यों के सम्पादन के साथ-साथ आपकी साहित्य-साधना अपना विशेष महत्व रखती है। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन कलम के मजदूर के रूप में व्यतीत किया है; जिस पर उन्हें गर्व है। कलम की मजदूरी का यह अर्थ नहीं कि जिसने जो चाहा उनसे लिखाया उन्होंने एक साहित्यकार की आत्मा को धन की चकाचौंध से कभी प्रभावित नहीं होने दिया। साहित्यकार के स्वाभिमान की उन्होंने जो रक्षा की है, उसका हिन्दी-साहित्य के इतिहास में ही नहीं विश्व साहित्य में उदाहरण मिलना दुर्लभ है। एक बड़े धनपति ने जब अपने दैनिक पत्र के सम्पादन के लिये आपसे प्रार्थना की और समस्त आवश्यक सुविधायें और पुष्कल वेतन जैसा अंग्रेजी के बड़े पत्रकारों को भी आज उपलब्ध नहीं, देने का निवेदन किया परन्तु साथ ही अपनी (धनपति की) इच्छा के अनुसार लेख और सम्पादन का आग्रह किया; तब आपने उस निमन्त्रण और सुख-सुविधा को ठुकरा दिया! क्या आज के साहित्यकार ऐसा साहस दिखा सकते हैं?

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पद्मश्री श्री डा० हरिशंकर जी शर्म्मा

प्रधान सम्पादक
[illegible] चन्द्र स्नातक
वर्ष ६८
अंक ६
एक प्रति

मातृभूमि की रक्षा के अपरिहार्य गुण

(भरतदत्त शुक्ल)

आज हमारे सामने कूटनीतिक छल घातों से निपटने की विषम समस्या है। हर्ष की बात है कि सारा राष्ट्र एक व्यक्ति के रूप में उठ खड़ा हुआ है। लगता है कि समस्त भारतीय एकता एवं शक्ति किसी भी प्रकार के बाधा अवरोध का सामना करने के लिए बद्ध परिकर है। फिर भी इस व्यापक सन्नद्धता के पीछे कुछ ऐसी निबलताएं अवश्य हैं जिनके निराकरण के उपायों पर विचार किये बिना हम अपने लक्ष्य की सिद्धि में उतना सफल नहीं हो सकते जितना कि होना चाहिए।

यह एक सार्वभौम सत्य है कि जब कभी कोई ऐसी जटिल समस्या सामने आती है जिसका कि मूल निदान खोजना कठिन पड़ता तो हम अपने वयोवृद्ध एवं अनुभवी व्यक्तियों की सम्मतियों एवं परामर्शों का सुदृढ़ अवलम्बन ग्रहण करते हैं। वेद परम्परा की दृष्टि से विश्व के प्राचीनतम एवं अद्यतम ज्ञान के विशाल कोष हैं। जीवन की कोई भी ऐसी समस्या नहीं जिसके निराकरण का वेदों में प्रयत्न न किया गया हो। मातृभूमि की रक्षा विषयक वर्तमान जटिल समस्या के लिए भी हमें वेदों का आश्रय लेने में रचमात्र भी संकोच नहीं करना चाहिए।

वसे तो चारों वेदों में परोक्ष या अपरोक्ष रूप में राष्ट्रीय सम्मान एवं मर्यादा की सुरक्षा के सूत्र राशि के राशि बिखरे पड़े हैं किन्तु यहाँ पर अथर्व वेद के मातृ भूमि सूक्त के प्रथम मन्त्र के आधार पर मातृ भूमि की रक्षा कुछ बहुत आवश्यक गुणों की ओर वर्तमान परिस्थिति के अनुसार संकेत मात्र किया जायगा।

यह मन्त्र है—

सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो।
ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति॥
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी।
उरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥
अथर्ववेद १२।१।१

अर्थात सत्य (सच्चाई) बृहत (महत्व) ऋत उग्र सहनशीलता या साधना) दीक्षा ब्रह्म ज्ञान का ... देव पूजा और ... हो ... हमारी ... [illegible]

... और मैं ... का पुत्र हूँ। ...) । इस मातृ सूक्त की सम्मा बती ... के लिए उल्लिखित गुणों का पालन एवं संरक्षण सर्वथा अपरिहार्य है। दूसरे शब्दों में यदि हम चाहते हैं कि विदेशी अतः ... आक्रामक शत्रु एवं कटनीतिक दुरभिसंधियां हमारी मातृभूमि को पद दलित न कर सकें उसके चिर समय शौर्य गौरव एवं ज्ञान विज्ञान की पावन परम्परा अविच्छिन्न बनी रहे उसके ही लाइक सपूत चन्द सिक्कों के लालच के वशीभूत पथभागी एवं गद्दार न बन सकें और उसका भविष्य अन्ध कारमय होने की अपेक्षा शाश्वत प्रकाश एवं स आलोकित बना रहे तो हमें उपर्युक्त गुणों पर सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक मूल्यांकन करना ही चाहिए।

अथर्ववेद के मातृभूमि सूक्त के मन्त्रों में ... स्पष्ट निर्देश किया

गया है कि हम मातृभूमि का संरक्षण करना चाहिए। उपर्युक्त मन्त्र में ... आवश्यक गुण बतलाये गये हैं जिनसे मातृभूमि की सुरक्षा स्थायी तौर पर हो सकती है। इसलिए सन्दर्भ में उन गुणों का स्पष्टीकरण करना असमीचीन नहीं होगा।

(अ) सत्य— मातृ भूमि की रक्षा के लिए सर्वप्रथम गुण है सत्य अर्थात किसी भी भली या बुरी वस्तु परिस्थिति समस्या भावना और क्षमता को यथा का त्या मानना। हमारी सुरक्षा विषयक जटिलता के मूल में बहुत कुछ इस गुण की उपेक्षा हो रही है। हमने इतिहास के पृष्ठों की साक्षियों की सच्चाई को स्वीकार नहीं किया। हम चंगेज हलाकू और कुतलई की औलादों के कारनामों को न समझ कर उनके धोखे की टट्टी में ही उलझ रहे। यहाँ तक कि जिन्होंने ... गद्दारी और राष्ट्र प्रेम में अनुप्राणित ... [illegible] ... होकर ... भी ... ओर से ... हो रहा है फिर भी हम उसकी ओर से आंख बन्द रहे। विश्व शांति के मादक

स्वप्नों में उलझ कर हम सत्य का आदर नहीं कर सके। हमने भले को भला और बुरे को बुरा समझने के औचित्य का रत्ती भर ख्याल नहीं किया। यही नहीं जब हमारे नेत्र खुले तब भी अमरबेली शांति की हिमायत करने के कारण हम जनता एवं जन प्रतिनिधियों के सामने सत्य प्रकट करने से कतराते रहे। उसका जो परिणाम भुगतना था वह हमने १९६२ में भुगता।

इस प्रकार स्थूल रूप में सत्य की परिधि में तीन बातें समाविष्ट होती हैं—

(१) ऐतिहासिक साक्षियों वर्तमान घटनाओं और भविष्य की नवीन योजनाओं के आन्तरिक बाह्य राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय व व्यक्तिगत समसामयिक— मर्यादाशील स्वरूपों का वास्तविक ... यथा का त्या स्वीकार करना।

(२) किसी भी एकांगी अव्यावहारिक आदर्श गुटबाजी गुट बद्ध राष्ट्रों के दबाव या मिथ्या कूटनीतिक दाव पचों से पूर्ण आश्वासन के भ्रम में न पड़कर वास्तविक तथ्य को निर्भीकता के साथ विवेकाश्रित प्रज्ञा के बल पर प्रकट करना और समस्त प्रबुद्ध जनमत को उससे निरन्तर परिचित रखना और—

( ) अतीत की कड़ियों को जोड़ते हुए भावी परिणामों की भयंकरता या सरलता को ध्यान में रखकर परिवर्तन परिवर्द्धन या संशोधन के सत्य में रत्ती भर भी इन्कार न करना।

उदाहरण के लिए वर्तमान सन्दर्भ में अणु आयुध के निर्माण का प्रश्न लिया जा सकता है। यह स्पष्ट सत्य है कि अणु आयुध से लैस चीन ... अब की ... करने के मित्र विश्व के ... निक रूप में ... के लिय ... लिये हमें आवश्यक ... या तो अणुबम बनाना पड़ेगा या ... भी घातक शक्तिशाली ... की खोज करनी होगी। पर आज हम सिद्धान्त और आदर्श के नशे में इतनी

मस्ती से झूम रहे हैं कि हमें सत्य की रंचमात्र भी परवाह नहीं है। हमें यह सत्य मानने में कठिनाई हो रही है कि अणु सम्पन्न बड़ राष्ट्र भारत की अणु क्षमता से अपरिचित न होने के कारण उसे शक्ति सम्पन्न न होने देने के हर प्रयत्न कर रहे हैं। वे जानते हैं कि यदि भारत अणु शक्ति सम्पन्न हो गया तो सारा एशिया ... उसी के इशारे पर नाचेगा और उन्हें कोई पूछेगा भी नहीं इसीलिए वे चाहते हैं कि अणु शक्ति के विषय में भारत पर मुखापेक्षी ही बना रहे। हमारी आंख तो तब खुलेगी जब चीन हम पर विरुद्ध अणु बम का प्रयोग करेगा और हम बड़े राष्ट्रों की सौदेबाजी के शिकार हो जायेंगे।

इसी प्रकार समाज के हर व्यक्ति राष्ट्र के हर दल और शासन के हर अधिकारी के भी दिल में सत्य की अनुभूति होनी चाहिये। यदि ऐसा न हुआ तो भ्रष्टाचार कला और शिथिलता का अन्त कठिन हो रहेगा। कोरी नारेबाजी से लम्बा युद्ध (यदि आय) जीतना असम्भव हो जायगा और हमें इतिहास में काले पृष्ठ जोड़ने की अवस्था स्वीकार करनी पड़ेगी।

(आ) बृहत—मातृभूमि की सुरक्षा के लिये उसके घटकों में बृहद भाव होना चाहिए। विचारगत और व्यवहार दृष्टि से हम में उदारता व्यापकता एवं फैलाव की भावना होनी चाहिये। हम हिन्दू हैं ठीक है, हम मुसलमान हैं ठीक है हम ईसाई हैं यह भी ठीक है किन्तु हम सब मनुष्य और भारत मां के सपूत हैं यह सबसे ठीक है। इसी प्रकार हम मातृभूमि की सत्ता सम्पन्नता एवं सुरक्षा के स्थायित्व के लिये—कांग्रेसी सोशलिस्ट स्वतन्त्र कम्युनिस्ट आदि दलगत मुखौटे उतार कर सबल एकता बनाये रखें। इसका यह अर्थ नहीं कि हम में मतभेद न हो दल भेद न हो सम्प्रदाय भेद न हों। ये सभी भेद हों पर महान लक्ष्य के सामने इनका कोई मूल्य न हो। यदि हो भी तो नितान्त गौण। समता का यह रूप है कि सम्पूर्ण मानवता संयुक्त समाज या राष्ट्र के कल्याण के मार्ग में कोई भी मत भेद उपासना परम्परा या ... साम्प्रदायिक दृष्टिकोण न आ सके और ... राष्ट्र घटक के लिए ... एवं जीवन रक्षक ... उचित मरण पोषण का ... में बाधा न पड़। ... इस ... अनुभूति के पुष्ट आधार ... हित है।

... आकर भारत में दुर्भाग्य से यह ... आवश्यक ... क्षीण होता गया है। पद प्राप्ति के लोभ पद प्राप्ति

(शेष पृष्ठ १६ पर)

'सत्यार्थप्रकाश' में क्या है

(ले०—श्री राम वतार आर्य, आर्यसमाज गाजीपुर)

'सत्यार्थ प्रकाश' महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत एक अमूल्य ग्रन्थ है। इसके विषय समुल्लासों में विभाजित हैं। इसमें कुल १४ चौदह समुल्लास हैं। प्रथम दस पूर्वार्द्ध के और चार उत्तरार्द्ध के। पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में यह बताया गया है कि वैदिक संस्कृति क्या है, और उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में वैदिक संस्कृति पर हमला करने वाले सम्प्रदायों की पोल खोली गयी है। अन्त में 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' दिया है। यह ग्रन्थ का अन्तिम भाग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें ऋषि दयानन्द ने उन-उन बातों पर प्रकाश डाला है जिन को वे मानते थे। जैसे 'वर्णाश्रम' गुण कर्मों की योग्यता से मानता हूं।

इसका उपसंहार करते हुए ऋषि ने लिखा है 'ये संक्षेप में स्वसिद्धान्त दिखला दिये हैं। इनकी विशेष व्याख्या इसी 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रकरण प्रकरण में है तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' आदि ग्रन्थों में भी लिखी है।' इससे स्पष्ट है कि ऋषि के ग्रन्थों का यथायोग्य अर्थ समझने के लिये स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश पढ़ना और समझना अत्यन्त आवश्यक है।

मनुष्य के अन्दर एक बहुत बड़ी कमजोरी होती है। वह किसी के गुणों को पहले नहीं देखता बल्कि अवगुणों को देखता है। यह बहुत बुरी प्रवृत्ति है। होना तो यह चाहिये कि हम उनके अवगुणों को देखते हैं तो उसके गुणों पर भी प्रकाश डालें। ईख के अन्दर खुहिया है तो मिठास भी है। इससे दो लाभ होते है। पहली बात उसके गुणों की जानकारी हो जाती है, जिससे हम कुछ सीख सकते है। दूसरी बात उसके प्रति घृणा या ईर्ष्या का भाव उत्पन्न नहीं होता बल्कि श्रद्धा पैदा होती है और यह श्रद्धा हमें निन्दक होने से बचा लेती है।

सत्यार्थ प्रकाश के दस समुल्लासों में क्या लिखा है, इस पर कोई आदमी विचार करने का कष्ट नहीं करता। उसे पढ़ता भी नहीं। सुनी सुनाई बातों के आधार पर उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में से कहीं दो चार पृष्ठ पढ़ लेता है और जब कहीं चर्चा चलती है तो झट से कहता है—'साहब, स्वामी जी ने दूसरे सम्प्रदाय वालों के साथ बहुत ज्यादती की है। चार समुल्लासों में तो वह सब भरा पड़ा है।' कम पढ़ा लिखा व्यक्ति अथवा जो 'सत्यार्थ प्रकाश' का इतिहास नहीं जानता है वह इस बात को सहर्ष स्वीकार कर लेता है। आज इसी प्रश्न का उत्तर लिखना चाहता हूं। अर्थात क्या सचमुच स्वामी जी ने ज्यादती की है ?

इस प्रश्न का जवाब देने के पहले यह बताना आवश्यक है कि ज्यादती किसे कहते हैं ?

ज्यादती करने का तात्पर्य होता है—दूसरे के हक या अधिकार को छीनना। मान लीजिये एक आफिस का चपरासी है। पांच बजे दफ्तर बन्द होता है। बाबू लोगों की तरह उसकी भी छुट्टी हो जानी चाहिये वह भी अपने घर चला जाय। अगर कोई बाबू पांच बजे के बाद उसकी ड्यूटी अपने घर पर लगा देता है और उसको आठ नौ बजे रात को छुट्टी देता है तो यह बाबू की ज्यादती कही जायेगी। एक दूसरा उदाहरण लीजिये। मुहम्मद साहब ने अपनी ग्यारह शादियां कीं। अगर हम यह बात कहें तो इसमें कोई ज्यादती का प्रश्न नहीं उठता। लेकिन अगर हम यह कहें कि [illegible] बीस शादियां कीं। वे बहुत व्यभिचारी थे तो यह हमारी ज्यादती है। हम झूठ बोलकर एक महापुरुष को बदनाम कर रहे हैं। क्या इस प्रकार का कार्य ऋषि दयानन्द ने किया है ? अगर नहीं तो उन्होंने ज्यादती बिल्कुल नहीं की।

अगर सच पूछा जाय तो स्वामी दयानन्द ने अन्य सम्प्रदाय वालों के साथ ज्यादती नहीं की है अपितु वैदिक-धर्म के प्रति जो अन्य सम्प्रदाय वाले ज्यादती कर रहे थे उनसे वैदिक संस्कृति की रक्षा की है। नहीं तो आज वैदिक संस्कृति का नामोनिशान नहीं होता।

उत्तरार्द्ध के चार समुल्लास क्यों लिखे गये ? इनकी क्या आवश्यकता थी? इसी विषय पर एक दिन मैं आदरणीय पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय से चर्चा कर रहा था। पण्डित जी ने कहा—'देखिये बात ऐसी है कि महर्षि दयानन्द को भारतीय संस्कृति की रक्षा करनी थी। इसके लिये उन्होंने देखा कि उसके दो भक्षक हैं। पहले तो अपने घर के लोग हैं और दूसरे घर के बाहर के लोग। इसलिये सबसे पहले उन्होंने घर के भक्षकों से बचने के लिए दो समुल्लास लिखा। एकादश समुल्लास और द्वादश समुल्लास। इसके बाद घर के बाहर वालों की तरफ देखा तो दो बड़े भक्षक थे। इस्लाम [illegible] और ईसाइयत। ये दोनों बलात धर्म परिवर्तन कर रहे थे इसलिये इनसे बचाव के लिये दो समुल्लास लिखा। अगर ऋषि दयानन्द इन चार समुल्लासों को नहीं लिखते तो भारतीय संस्कृति की रक्षा करना असम्भव था।

इससे स्पष्ट है कि उत्तरार्द्ध के चार समुल्लास भारतीय संस्कृति की रक्षा करने के लिये चार स्तम्भ है। और इन्हीं स्तम्भों के बल पर सत्यार्थ प्रकाश का साधारण पाठक भी भ्रामक मतमतान्तरों की पोल खोलने की क्षमता रखता है।

एक बहुत सच्ची बात है। अगर हम खण्डन न करें तो दूसरे सम्प्रदाय वालों से अपनी संस्कृति की रक्षा कैसे करें ? दूसरा रास्ता क्या है। जिनको अपनी संस्कृति प्यारी नहीं है वे तो कह सकते हैं कि छोड़ो हमें उससे क्या लेना देना है। लेकिन जिसे उससे ममता और स्नेह है कि वे कैसे जबरदस्ती होते हुए अपनी संस्कृति को देख सकते हैं ? इसके लिये एक सुझाव दिया जाता है कि खण्डन नहीं करना चाहिये। सब अपने अपने सिद्धान्त का प्रचार करें। जिसको जो अच्छा लगेगा उसे वह मान लेगा।

लेकिन यह व्यावहारिक सुझाव नहीं है। प्रचारक के समक्ष जो दिक्कतें आती हैं वह वही समझता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के मनुष्य होते हैं। सबसे निबटना होता है बात का जवाब बात से दिया जाता है, लाठी का जवाब तलवार से। यह एक व्यावहारिक बात है। जहां हमें खण्डन की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती वहां नहीं करते। जहां जरूरत पड़ती है वहां करते हैं। ऋषि दयानन्द भी इसी बात को मानते थे। उनका कहना था कि कंटीली झाड़ियों को नहूरने (नाखून) से नहीं साफ किया जा सकता, उसके लिये तो पैने शस्त्र ही काम देंगे।

खण्डन अत्यन्त आवश्यक है। बिना खण्डन किये मण्डन अपूर्ण रहता है। मान लीजिये किसी मन्त्री के खिलाफ कोई झूठा आरोप लगाता है अगर वह इसका खण्डन न करे तो इसका परिणाम क्या होगा। सब लोगों को इस बात का विश्वास हो जायेगा कि उसका आरोप सत्य था। अर्थात यह मन्त्री भ्रष्टाचारी है। इसलिये सबसे पहले उस झूठे आरोप का वह खण्डन करता है और इसके बाद अपनी बात कहता है।

यही स्थिति थी महर्षि दयानन्द के सम्मुख भी। अगर वे प्रचलित भ्रामक मतमतान्तरों का खण्डन नहीं करते तो सत्यासत्य का निर्णय कैसे होता। [illegible] खण्डन मण्डन के द्वारा सत्य के समीप पहुंचता है। [illegible] प्रतीति हो नहीं सकती। ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में अपना अभिप्राय स्पष्ट करते हुए लिखा है—मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्ष-

(शेष पृष्ठ १३ पर)

श्रद्धाँजलि

गतो हा शास्त्रिन् ? त्वं किं धाम !

मान्य मानवता रक्षक साधु विश्व वन्दित शोभन गुण धाम ॥ गतो हा०
भक्त लब्ध्वा शुचि गौरव प्रधानामात्य पद खलु गतम।
भारत पुन प्रयात सौम्य गौरव पापिजनैरपहृतम।
केन गायन्ति त्वदीय यश, सर्व भूमौ हे कीर्तिललाम ? ॥गतो हा०
स्वतन्त्र कर्तु निजकमु भूमिमितो बहुवार कारागृहम।
स्वतन्त्रसति भारते बुधश ? समकरो क्रत्य कष्टापहम।
देश सेवा ससक्त सुधीश ? सत्य सजीवनत्यागाराम ॥ गतो हा०
विश्व तु प्रशम जगति कठोर श्रम कृतवान मनीषिन मुदा।
शान्ति दूत वक्ष्यन्ति वरेण्य ? भवन्त लोके पुरुषा सदा।
विश्वजन वन्दनीयतामित सदा भूमध्ये प्रियसाम ? ॥ गतो हा०
स्वशक्त्या नष्ट स्वलक्ष्या कृता समस्ता रिपवो हे वीरवर ?
तथा लब्धोविजयोऽपि त्वयात्र विपदि धर्य धृत्वा हे धीर ?
सदा धन्य जान तात ? त्वदीय लालबहादुर नाम ॥ गतो हा०
विधातु शान्तिमत्र सदत्र जीवनान्तेऽपि श्रमकृतवान।
म तत्तो हाय बाप हा राम' वदन परलोक मेवगतवान।
अत श्रद्धाञ्जलिमेवाधुना ददामस्तुभ्य मंगलकाम। गतो हा०

-आचार्य प० रामकिशोर शास्त्री गोवर्धन (मथुरा)

झोपड़ी में जन्म लेने वाले महापुरुष—

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

(जन्म-दिवस २८ जनवरी)

(ले०—श्री देवीदास आर्य गोविन्दनगर कानपुर, सभासद नगर महापालिका)

मेरा धर्म हक परस्ती, मेरा विश्वास कौम परस्ती है मेरी भक्ति खल्क परस्ती (जन सेवा) है, मेरी माता आर्य-समाज और मेरा धर्म गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती है मेरी अदालत मेरा अन्तहकरण है मेरी सम्पत्ति मेरा कलम है मेरा मन्दिर मेरा हृदय तथा मेरी उमगें सदा जवान हैं।' यह है शब्द पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के, जिनसे भलीभांति ज्ञात होता है कि वे कितने महान थे और उनकी क्या कल्पनाएं थीं। लाला जी ने ही यह भविष्य-वाणी की थी कि—

"मेरे शरीर पर पड़ी एक एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के कफन में कील सिद्ध होगी।"

लाला जी की यह भविष्य वाणी सत्य होकर रही। इतने बड़े महापुरुष, जो केवल पंजाब के ही नहीं देश के लाज व पत (विश्वास) बन गये थे, का जन्म २८ जनवरी १ ६५ ई० मे पंजाब के जिला फिरोजपुर के एक छोटे से गांव ढुडेके में एक अत्यन्त साधारण परिवार मे एक झोपड़ी मे हुआ था। उनके पिता श्री राधाकृष्ण जी अध्यापक थे। परन्तु उनके साधारण परिवार मे असाधारण महापुरुष ने जन्म लेकर उनको भी प्रसिद्ध कर दिया।

बलिदानी पुरुष

लाला जी ने गरीब घर मे जन्म लेकर अपने को स्वयं बनाया। वे जो कुछ बने अपने ही परिश्रम व प्रयत्नो के कारण। वे एक योग्य वकील महान लेखक, ओजस्वी वक्ता, पक्के देश भक्त, समाज सुधारक भारतीय संस्कृति व सभ्यता के उपासक और अंग्रेज सरकार से जान की बाजी लगाकर टक्कर लेने वाले अदभुत नेता थे। वे पहिले पंजाबी थे जो कांग्रेस के कलकत्ते के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये। गरज गरज कर जब वे बोलते थे अंग्रेजी साम्राज्य की नींव हिल जाती थी इसीलिए वे शेरे पंजाब (पंजाब केसरी के नाम से सुप्रसिद्ध हुए। लाला जी प० मोतीलाल नेहरू, लोकमान्य तिलक, बिपिनचन्द्र पाल, गोखले और महात्मा गांधी के साथियो मे थे। उस समय लाल, बाल व पाल की तूती बोलती थी। लाला जी ने नवयुवकों को देश पर मर मिटना सिखाया। स्वयं जेल की यातनाओ को झेला और जलावतन की सजा को पाया। वे देश के लिए जीवित रहे और देश के लिए बलिदान हुए। महात्मा गांधी ने लाला जी के देहान्त पर कहा गया था कि 'हिन्दुस्तान के आकाश पर एक चमकता सितारा डूब गया है।

आर्यसमाज का प्रभाव

लाला जी पर आर्यसमाज का ऐसा रंग चढ़ा रहा कि वह आयु भर कभी नहीं मिट सका। स्वामी दयानन्द के विचारो से वे बहुत ही प्रभावित हुए। स्वामी जी की यादगार स्वरूप लाहौर मे दयानन्द कालेज (डी० ए० वी०) की स्थापना की। उसकी शाखाएं न केवल पंजाब भर में कायम हुई परन्तु देश भर में जाल बिछ गया। उन्होंने शिक्षा के द्वारा स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का सन्देश घर घर तक पहुंचाया और स्वतन्त्रता की लहर देश मे उत्पन्न की।

शास्त्री जी के गुरु

सन १९२१ ई० मे उन्होंने लोक सेवा मण्डल के नाम से एक संस्था स्थापित की जो अब सर्वेन्टस आफ दी पीपल सोसाइटी के नाम से प्रसिद्ध है। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन श्री बलवन्तराय, स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री, श्री विश्वनाथदास राज्यपाल उत्तर प्रदेश आदि अनेक नेतागण इस संस्था मे सम्मिलित हुए। वे सब लाला जी से देश भक्ति व बलिदान का पाठ पढ़ने के लिए गए थे। हमारे स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री लालाजी को अपना गुरु मानते थे। देहान्त से पूर्व

(शेष पृष्ठ १३ पर)

स्वाध्याय

देवस्य पश्य काव्यम्। अथर्व० १०-८-३२

प्रभु के काव्य को देख=पढ़।

★

वेदों और ऋषियों के बनाये हुए ग्रन्थों के पठन-पाठन को स्वाध्याय कहते हैं। आत्मा और परमात्मा का चिन्तन भी स्वाध्याय के अन्तगत है। अपने किये हुए कार्यों का विचार भी स्वाध्याय है, भावी कार्यक्रमों का विचार भी स्वाध्याय है। प्रकृति निरीक्षण भी स्वाध्याय ही है, तथापि स्वाध्याय शब्द से मुख्य रूप मे तो वेदों और आर्ष ग्रन्थों के पठन पाठन का ही ग्रहण किया जाता है।

स्वाध्याय नित्य-प्रति करने का कर्म है। स्वाध्याय की गणना मनुष्य के आवश्यक कर्तव्यों मे की जाती है। जैसे शरीर की पुष्टि के लिये, उत्तम और रोग निवारक भोजन का होना आवश्यक है वैसे ही मन की शुद्धि बुद्धि के विकास और भ्रान्ति जाल के निराश के लिये स्वाध्याय का अनुष्ठान भी बहुत आवश्यक है। जैसा खाये अन्न वैसा होवे मन। जैसा पीवे पानी, वैसी बोले बाणी। जैसा करे विचार, वैसा बने आचार। अत श्रेष्ठ ग्रन्थो को पढ़कर अपने विचारों को शुद्ध करना मनुष्यमात्र के लिये परमावश्यक है। ऋषियो के ग्रन्थ सब प्रकार के राग द्वेष भूलों और भ्रान्तियों से रहित होते हैं। अत शास्त्र का विधान वेदों और आर्ष ग्रन्थों के पठन पाठन पर ही विशेष बल देता है। मनुष्य कृत-ग्रन्थों मे तो भूलों भ्रान्तियो और राग-द्वेष आदि के कुप्रभाव एवं प्रमादादि मानवी त्रुटियों का होना भी सम्भव है। काम-क्रोध मद मोह लोभ और अहकार को उत्तेजित करने वाले, विषय-वासनाओ को बढ़ाने वाले और सात्विकता को नष्ट करने वाले ग्रन्थों को पढ़ना तथा दृश्यों को देखना तो त्याज्य है।

सम्भव है कि आरम्भ मे तो स्वाध्याय में किसी का मन न लगे। परन्तु "मनुष्य ज्यो-ज्यो अपने अभ्यास को बढ़ाता जाता है, त्यों-त्यों ही उसका मन स्वाध्याय में खूब लगने लगता है। स्वाध्याय से अपूर्व आनन्द की प्राप्ति होती है। मन शुद्ध और जीवन पवित्र हो जाता है। राग-द्वेष और कुसंस्कारों के बन्धन भी स्वाध्याय के द्वारा कट जाते हैं। भूलों, भ्रमों और भ्रान्तियों से छुटकारा भी मिल जाता है। स्वाध्याय का अभ्यास परिपक्व होने पर मनुष्य को यथेष्ट मान-सम्मान भी मिल जाता है।

"रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं। काव्य की प्रवर्तना यश के लिए, धन के लिए, व्यवहार ज्ञान के लिए, आनन्द प्राप्ति के लिये, प्रेमियो के पारस्परिक प्रेमालाप के लिये और जनता को उपदेश देने के लिए होती है।" लोक मे अनेक प्रकार के काव्य ग्रन्थ विद्यमान हैं। जो मनुष्य कृत काव्य हैं, उनमे त्रुटिया भी बहुत हैं। बड़े ज्ञानियों के ग्रन्थों में भी कुछ न कुछ त्रुटियों का होना सम्भव है। कोई चाहे कितना ही बड़ा ज्ञानी क्यो न हो, उसका सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान होना तो सम्भव ही नहीं है। अत "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' एतमेव धर्माधर्म का निर्णय करने के लिये तो श्रुति-वेद ही परम-प्रमाण है। वेद विरोधी नास्तिकों का तो बहिष्कार ही उचित है।'

वेद को ही पढो पढ़ाओ। वेद ईश्वर-प्रदत्त सनातन ज्ञान है। सृष्टि के आरम्भ मे भगवान ने ही मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये महर्षियों के हृदय मे वेद का प्रकाश किया था। वेद संसार का सबसे अधिक प्राचीन ग्रन्थ तो है ही, संसार का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ भी वेद ही है। वेद के ईश्वरोक्त होने में अनेक प्रमाण हैं, एक प्रमाण वेद की अपूर्व शब्द योजना भी है। वेद की अन्त. साक्षी अधिक महत्त्वपूर्ण है।

—साधु सोमतीर्थ

महाभारत और उसके पश्चात् १८

[श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

स्वामी दयानन्द एक समाज सुधारक थे। महाभारत के पश्चात भारतीय तथा विदेशीय समाजों में बहुत सी बुराइयां आती गईं। और उनके सुधार के लिये लोगों ने भिन्न भिन्न प्रकार से प्रयास किया। महाभारत से पहले जो समाज का संगठन था उसका नाम था वर्ण व्यवस्था। इस शब्द के अर्थों पर विचार कीजिए। वर्ण' का अर्थ है 'वरण' अर्थात चुनना या निर्वाचन करना व्यवस्था (वि+अव+स्था) का अर्थ है सनियमन या संगठन अर्थात ऐसे नियम बनाना कि समाज ठीक प्रकार से चल सके। निर्वाचन (चुनना) चुनने वाले की स्वतन्त्र इच्छा को प्रकट करता है। जिस क्रिया में किसी बाह्य बाधना का प्रसंग न हो। (सनियमन) (संगठन) उस स्वातन्त्र्य को सीमित करता है। उसमें बाहरी दबाव का सर्वथा अभाव नहीं है।

कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक जन्तु (सोशल एनिमल) है। अर्थात् इसका पनपना या उन्नति करना समाज के द्वारा ही हो सकती है यह कभी अकेला रहना नहीं चाहता, न अकेले रहने में उसका हित है। अकेलापन इसकी प्रकृति के प्रतिकूल है। और इसकी आवश्यकता के भी। यदि विस्तृत दृष्टि से देखा जाय तो संसार की सब वस्तुयें सामाजिक हैं। पशु सामाजिक हैं, वृक्ष सामाजिक हैं, यहां तक कि पर्वत और नदियां भी सामाजिक हैं, क्योंकि उनकी उत्पत्ति और पालन के लिए दूसरी चीजों की जरूरत होती है। परंतु मानव समाज के निर्माण में मनुष्य को स्वयं अपना बहुत बड़ा हाथ है यदि मनुष्य भूल करता है तो उसको समाज का संगठन अस्त व्यस्त हो जाता है।

हर मनुष्य की प्रवृत्तियां भिन्न भिन्न होती है इन भिन्न भिन्न प्रवृत्तियों के मनुष्यों का इस प्रकार आचरण करना कि एक दूसरे की आवश्यकताओं की भी पूर्ति करें और एक दूसर की उन्नति में सहयोग दें "वर्ण व्यवस्था कहलाती है।

वर्ण को वैदिक ऋषियों ने चार भागों में विभक्त किया था। ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह विभाजन न केवल मानवीय आवश्यकताओं पर आधारित था अपितु उसकी वैयक्तिक विशेषताओं पर आधारित था अपितु उसकी वैयक्तिक विशेषताओं पर भी। समाज को विद्या चाहिये, वीरता चाहिये कला कौशल चाहिये और सेवा चाहिये। यह सब उद्देश्य एक मनुष्य अथवा हर कोई मनुष्य पूरा नहीं कर सकता। इसकी प्रवृत्तियां भिन्न भिन्न हैं। मनुष्य उसी काम को सुन्दरता से कर सकता है जो उसकी प्रवृत्ति के अनुकूल हो। इसलिये हर मनुष्य को स्वतन्त्रता दी गई कि ऊपर लिखे चार हितों में से अपनी प्रवृत्ति के अनुकूल किसी एक को चुनले। वह इस बात के लिये बाधित है कि वह अपने लिए निर्वाचन करे। लेकिन क्या निर्वाचन करे इसमें उसको स्वतन्त्रता है। वह यह नहीं कहा जा सकता कि मैं निर्वाचन करूंगा ही नहीं। अपने सिर क्यों बला लू। स्वतन्त्र क्यों न रहूं। ऐसा करना समाज के लिए बाधक और घातक होगा। इसलिए उसे अपने लिये कोई एक काम तो चुनना ही होगा। चुनने में वह अपनी इच्छा का प्रयोग करता है। परन्तु चुनने के पश्चात उसे उसका पालन आवश्यक हो जायगा। पालन न कर सकने पर उसको दण्ड दिया जायगा। यह है "वर्ण-व्यवस्था"

इस विषय पर पुष्कल साहित्य है। यहां विस्तृत वर्णन की आवश्यकता नहीं।

महाभारत में वर्ण व्यवस्था कुछ धुंधली पड़ गई थी। द्रोणाचार्य ब्राह्मण थे गुरु थे। परन्तु वह थे राजा के नौकर। गुरु थे इसलिए उनकी पदवी थी 'आचार्य' की। परन्तु नाम के लिए। वह राजा की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते थे। उन्होंने एकलव्य को पढ़ाने से इसलिए इनकार कर दिया था कि वह शूद्र का लड़का था। और शूद्र के लड़के को राजघराने के राजकुमारों के साथ पढ़ने का अधिकार नहीं था। और जब एकलव्य ने किसी प्रकार शस्त्र विद्या सीख ली तो गुरु द्रोणाचार्य ने उसे छल द्वारा अयोग्य बना दिया, कि कहीं ऐसा न हो कि शूद्र का लड़का अर्जुन या दुर्योधन से अधिक वीर बन जाय। यह वर्ण व्यवस्था की अवहेलना थी और इसका परिणाम बुरा होना ही था। इसी प्रकार समाज में अन्य बहुत सी त्रुटियां आ गई थीं और अन्त में यहां तक नौबत पहुंची कि वैयक्तिक अधिकारों का प्रश्न कुल गत अधिकारों का प्रश्न बन गया। वर्ण के स्थान पर जातियां (बिरादरियां) हो गईं। वर्ण की कसौटी थी ज्ञान और आचरण। जाति की कसौटी हुई 'जन्म'। एक मनुष्य ब्राह्मण है क्योंकि वह ब्राह्मण कुल में जन्म लेता है। दूसरा कुम्हार है क्योंकि कुम्हार के घर में उत्पन्न हुआ है। कुम्हार के लड़के को अपने कुल का व्यवसाय करना ही चाहिये चाहे उन्हें वह व्यवसाय पसन्द हो या न हो। उसकी योग्यता हो या न हो।

इसका परिणाम बुरा हुआ। जातियां रहीं। उनके नाम रहे। परन्तु उनके गुण नष्ट हो गये। जातियां भी सैंकड़ों हो गईं। उनमें रोटी बेटी का सम्बन्ध न रहा। और विषमता बढ़ गई।

महात्मा बुद्ध ने समाज सुधार करना चाहा। उन्होंने एक उपाय समझा अर्थात भेद भाव को दूर कर दो। सब एक हैं और एक से हैं।" यह निर्वाचन नहीं था अपितु निर्वाचन का अभाव था। इसका काम था सोशल तोड़ फोड़। इसका नाम सुधार (रिफार्म) नहीं था। उन्होंने तोड़ा परन्तु बनाया' नहीं। बौद्ध देशों में कोई जातपात का भेद नहीं है। यह एक अच्छी बात है परन्तु यह सुधार निषेधात्मक है रचनात्मक नहीं

भारतवर्ष में महात्मा बुद्ध के पश्चात श्री शंकराचार्य जी, श्री रामानुजाचार्य जी आदि सुधारक हुये उन्होंने समाज-सुधार को छुआ तक नहीं। जात पात का भेदभाव बढ़ गया। घटा नहीं। कुछ सन्त हुए जिन्होंने इस भेदभाव को हटा दिया।

जात पात पूछे नहि कोई।
हरि का भजे सो हरि का होई।

परन्तु यह बात साधुओं तक सीमित रही। गृहस्थ लोग जात पात को बराबर ही मानते रहे। बौद्धकाल में भी हम भारतवर्ष में यह भेद भाव देखते हैं। बौद्ध भिक्षु या साधु इस भेदभाव को मानते न थे। परन्तु साधारण दुनियादार आदमियों में यह भेदभाव बराबर बना रहा और कड़ाई के साथ बना रहा। केवल साधुओं के सुधार से तो सुधार हो ही नहीं सकता था। शादी, विवाह व्यवसाय आदि तो गृहस्थियों का काम था। इसलिये सामाजिक बुराइयों का शिकार भी गृहस्थी ही हुये।

स्वामी दयानन्द से पूर्व दूसरे देशों के लोगों ने भी सुधार करना चाहा। वहां एक और प्रश्न उठ खड़ा हुआ। वह प्रश्न यह था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने समाज के साथ सीधा सम्बन्ध रखता है। वह अपने समाज का एक अंग है। या समाज और व्यक्ति के मध्य में कोई ऐसी चीज भी है जिसे कुटुम्ब' या कुल' कहते हैं। अफलातून (प्लेटो) का कथन था विद्वानों' के (दर्शन शास्त्र से अभिज्ञ) के लिए विवाह' या 'कुल' की कोई आवश्यकता नहीं उनका का सीधा सम्बन्ध समाज से होना चाहिये इसलिये अफलातून का परामर्श था कि यदि समाज को उच्च योग्यता के लोगों की आवश्यकता है तो विवाह की प्रथा दूर कर देनी चाहिये। कोई योग्य पुरुष योग्य स्त्री से सन्तानोत्पत्ति कर सकता है। वह सन्तान अपने माता पिता की न होकर समाज की सन्तान होगी। समाज या गवर्नमेण्ट सन्तान के पालन-पोषण का प्रबन्ध करेगी। आगे कई शताब्दियों के पश्चात कम्युनिस्ट नेताओं की भी कुछ ऐसी ही धारणा थी। इस सिद्धान्त पर परीक्षण तो बहुत किये गये परन्तु सफल नहीं हुये।

स्वामी दयानन्द के सुधार का प्रकार सर्वथा भिन्न था। वह तोड़ना तो चाहते थे परन्तु बनाने के उद्देश्य से। उन्होंने परिश्रम किया कि भारत के ब्राह्मणों पर यह सिद्ध कर दें कि वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म नहीं अपितु गुण कर्म-स्वभाव है। जहां इन तीनों का समन्वय होगा, वहां व्यक्तिगत उन्नति होगी। जहां व्यक्तिगत उन्नति होगी वहां समाज की उन्नति होगी।

स्वामी दयानन्द वर्ण व्यवस्था को तोड़ना नहीं अपितु सुदृढ़ करना चाहते हैं जिससे वह विशेषतायें जिन पर वर्ण व्यवस्था का आश्रय है स्वयं ही विकसित हो जायें।

इसके लिये सबसे बड़ी आवश्यकता तो यह है कि हर बालक को शिक्षा अनिवार्य हो। किसी बालक को शिक्षा से इसलिये वंचित न रक्खा जाय कि उसके मां बाप नीच हैं या नीच समझे जाते है।

आर्यसमाज के आधीन जो गुरुकुल खुले उनमें प्रवेश पत्रों पर जात बिरादरी का [illegible] दिया गया। विद्यार्थी अपने पिता का नाम लिखता है जात' नहीं लखता।

काशी के ब्राह्मणों में यह प्रथा थी कि जब तक कुल की वंशावली से परिचय न हो पढ़ाते न थे। बिचारा कबीर इतना बुद्धिमान और शुद्ध होते हुये भी शिक्षा से वंचित रहा।

शनैः शनैः स्वामी दयानन्द ने जो सुधार आरम्भ किया वह आज के

विदेशों में—

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के तत्व

(जर्मनी के स्कूल-राज्य प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री डा० कर्ट हर्न के विचार)

(ले०—एक शिक्षा शास्त्री)

बच्चों को शिक्षा देने की समस्या उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव जाति और इस समस्या पर सभी युगो के विद्वानो ने सोचा विचारा है। यह समस्या कितनी सही ढग से सुलझ पाई है इसका प्रमाण उस युग या उस समाज के सास्कृतिक स्तर से पता लगता है। शिक्षा के सम्ब ध मे कई प्रकार की विचारधाराए हैं जैसे कि समाज के कई पथ एव माग होते हैं। हमारे समय के सवश्रेष्ठ एव प्रभावशाली शिक्षा शास्त्री डा० कट हान है इनके विद्यार्थियो को पढाने के विचारो एव तरीको को ससार के कई देशो मे अपनाया गया है।

इनका सबसे प्रसिद्ध एव माना हुआ स्कूल लेक कौ स्टस पर स्थित सलेम हैं। यह पिछले लगभग चालीस वर्षो से स्थापित है इसकी स्थापना पहले महायुद्ध के तुरन्त बाद २१ अप्रैल १९२० को प्रिंस मैक्स आफ बेडन इम्पीरियल जमनी के अन्तिम चासलर ने की थी। परन्तु इस स्कूल का आध्यात्मिक पिता सजक तथा पिछले कई वर्षो से मुख्याध्यापक डा० कट हान हैं जिनकी आयु इस समय ८०वष की है। इस स्कूल का प्रारम्भ दो दजन बच्चो से किया गया। आज इस स्कूल में ५०० से भी अधिक विद्यार्थी हैं। इनमे से कुछ तो सलेम मे भी नहीं है। परन्तु वे सलेम से सम्ब ध तीन अन्य स्कूलो मे हैं।

सलेम जिन शिक्षा सम्बन्धी नवीन विचारो का प्रतिनिधित्व करता है, आज उनका प्रचार जन्म स्थान के बाहर कई स्कूलो में फैल चुका है। वास्तव मे डा० कट १९३३ मे इङ्गलैंड चले गये थ और अब भी महायुद्ध के बाद जमनी लौटने पर वष मे कई मास इङ्गलैड मे बिताते हैं। वहाँ पर उ होंने स्काटलड के उत्तर मे ग डन स्टोन मे एक स्कूल स्थापित किया। इसमे भी अब ५०० से भी अधिक विद्यार्थी हैं। यही नहीं इसके बाद विभिन्न देशो के कई छात्र स्कूल खोले गये।

डा० कट का मूल विचार है छात्र सहयोग प्रशासन। यह विचार धीरे धीरे विकसित होकर परिपक्व दृष्टिकोण बन चुका है। इससे तात्पय है कि स्कूल राज्य की जिम्मेदारी बहुत सीमा तक स्वय विद्यार्थियो पर ही होनी चाहिए। दूसरे शब्दो मे स्कूल मे विद्यार्थियो को एक सामान्य लक्ष्य की पूर्ति के लिए सेवा करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही उ हे नागरिक

उत्तरदायित्व निभाने एव अनुशासन करने तथा साथियो के सुख दुख को सोचने का क्षत्र प्रस्तुत किया जाता है। उचित पथ प्रदशन मिलने पर इनसे विद्यार्थियो को अपने आप शिक्षा मिलती जाती है। इस गुण का महत्व मा बाप अपने अनुभव से पूरी तरह आक सकते हैं।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सलेम मे पूरा भ्रम राज्य का ढाचा तैयार किया गया है। दस वष के छोटे बच्चे तक को घर मे या रसोई बाग या खेल के मदान मे कोई न कोई ड्यूटी होती है। उसे स्कूल की स्लेटी रग की वर्दी तब तक नहीं पहनने के लिए दी जाती जब तक उससे बड विद्यार्थी उसक आचरण के ब रे म स तुष्ट न हो जायें। अगर वह लगातार अच्छा रहता है तो उसे उन विद्यार्थियो मे शामिल कर लिया जाता है जो अपनी बाहो पर स्कूल का बासनी रग की पट्टी बाधते हैं। यह चुनाव निकाय अपने आप विद्यार्थिया म मे नये को चुनता रहता है। अगर कोई सदस्य वा न डाले तो बात रुक जाती है पर , क ले वा विरुद्ध ना ना समझा जाता है। जो विद्यार्थी सलेम स्कूल राज्य मे चुनाव जीत लेते हैं वे इस प्रकार की शपथ लेते हैं—

जिन विद्यार्थियो को बिल्ले मिलते हैं उन्हे ध्यान रखना चाहिए कि वे सलेम के गौरव तथा सास्कृतिक परम्पराओ को नष्ट न होने दें। वे सलेम के नियमों का ध्यान रखगे और उनके पालन मे दूसरो की अपक्षा अपना अधिक ध्यान रखगे।

यह उनका कतव्य है कि वे बलवान को रोककर कमजोर की सहायता करें।

उनका आचरण इस प्रकार का होना चाहिए कि सलेम उन पर प्रत्येक परिस्थिति मे विश्वास कर सके क्योंकि उन्होने बिल्ला लगा रखा है। और वे स्कूल का उसकी सीमा के अन्दर और बाहर प्रतिनिधित्व करते हैं।

अगर कोई विद्यार्थी इन मागो की पूर्ति के लिये लगातार परिश्रम नहीं कर सकता तो उसे चाहिए कि वह बिल्लो को लेने से इन्कार कर दें।

जो विद्यार्थी स्कूल का बिल्ला पहने हुए हैं या सहायको के छोटे से दल के सदस्य हैं और सीध मुख्याध्यापक की मदद करते हैं इन सबका कतव्य है कि वे विभिन्न जिम्मेदारियो का पालन सबसे पहले स्वय कर और दूसरो का मुह न देखन रहे।

यह सलेम मे ुसर स्कू की नरह नहीं है कि अनुशासन के अधिकार पूण पालन के लिये बच्चो को दण्ड दिया जाये। सलेम मे विद्यार्थियो को आरम्भ से आत्मानुशासन पालन करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। छात्रो से आशा नहीं की जाती कि उन्हे पकडा जाये। उनसे सबसे अधिक यही आशा की जाती है। वे स्वयं गलती स्वीकार करें।

... चरित्र निर्माण का सव सिद्ध साधन है, खेल-कूद। विद्यार्थियों की कई समस्या विशेष रूप से जो औद्योगिक देशों में विकट रूप धारण कर लेती हैं, और जिनका उनके भविष्य से सम्बन्ध है, सलेम मे दिखाई ही नहीं देतीं। उचित व्यायाम तथा कसरत के बिना शरीर मे कई तरह के दोष एव कमिया आ जाती हैं या मानसिक उथल पुथल हो जाता है ये सब बातें यहाँ नहीं होतीं। प्रत्येक सुबह को दौड होती है और उसके बाद प्रत्येक सुबह व्यायाम के लिये भी एक घटा नियत किया गया है और एक दिन छोड़कर बाद दोपहर खेले होती हैं। मिल जुलकर तथा टीम बनाकर खेलना सबसे अच्छा माना जाता है क्योंकि इनसे शक्ति एव बल शारीरिक सहन शक्ति एव सहिष्णुता देखने का सामथ्य प्रतिक्रिया की भावना तथा औचित्य एव न्याय के भाव को बढ़ावा मिलता है। सलेम मे खेलकूद मे अगर कोई विद्यार्थी धोखा देने मे सफल हो जाता है तो उसे कोई पराक्रम का काय नहीं माना जाता। वह उतना ही बुरा है जैसे परीक्षा भवन मे हालाकि विद्यार्थियों को जमनी स्तर का हाई स्कूल सार्टिफिकेट का पाठय क्रम पूरा पढ़ना याद करना पड़ता है।

ग डन स्टाउन मे डा० हान का पहला ब्रिटिश स्कूल है वहा पर बहुत सी समस्याओ को सुलझाना आसान था क्योंकि ब्रिटिश पब्लिक स्कूल की परम्पराए बहुत अच्छी हैं। हान ने वहाँ पर बड रुचिकर एव सफल ढग से अपने विचारो तथा अनुभवो को ब्रिटिश परपराओ के साथ जोडा है। सलेम मे सहशिक्षा भी वहाँ पर ऐस नहीं किया गया। ब्रिटिश पाठय क्रम स्कूल व्यवस्था तथा ब्रिटिश की खास खेलो को उपयुक्त एव सही तरीके से सलेम की सस्थाओं में विद्यार्थी सहयोग प्रशासन बि ले लगाना तथा प्रशिक्षण योजना के साथ मिलाया गया है।

हान की ब्रिटिश वायु सेना अध्यक्ष सर लारन्स डावल के साथ मित्रता थी जिसका फल यह हुआ कि हान कई अन्तर राष्ट्रीय स्कूल खोलने म समथ हु ए। य स्कूल कई देशो मे खोले जायगे तथा इनम सभी देशो के चने हुये विद्यार्थियो को दाखला दिया जायगा। यहा पर बच्चे के जन्म स्थान उनके मा बाप की आर्थिक स्थिति आदि के कारण कोई भेद भाव नहीं रखा जायगा और ऐसे बच्चो को हायर स्कूल सार्टिफिकेट तक जिसे यहा सर्वाधिक ... म थना प्र न है शिक्षा दी जायगी सलेम के ढाचे पर इन स्कूलों

शेष पृष्ठ १० पर)

भारतवर्ष मे सर्वप्रिय हो रहा है। महात्मा गाधी ने तो दिल्ली की भगी बस्ती मे अपना घर बना कर छूतछात को मयर कर दिया। भारत के शासन विधान म अस्पृश्यता एक अपराध है नव उत्साह नव लोगो के लिये खुले हुये हैं ... जी ज नर न को तोडकर होने गे ह और यह प्रथा बढती जा रही है। अस्पृश्य न के मदिर धान मे जान ... कोई भेद भाव नहीं है। य द कुछ पुराने सस्कार बने हुये ह तो वह भी धीरे धीरे दूर होते जा रहे हैं। स्वामी दयानन्द ने वाम उपन किया उनके भक्तो ने रथ बन या और मिल ई का। और अ त—

लहराती है ध्वजा दयानन्द का।

★

भूतयज्ञ अथवा बलिवैश्वदेव यज्ञ

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० गोरखपुर)

विचार-विमर्श

मनुष्य एक मननशील प्राणी है। प्रत्यक्षत उपकारी दवी शक्तियों एव मनुष्यों के लिए तो चार यज्ञो का विधान किया गया है। परन्तु यह मनुष्यता की बात नहीं होगी यदि मनुष्य के नीति शास्त्र मे सारी चराचर सृष्टि का विचार न किया जाय। यदि मनुष्य केवल मनुष्य के हित की बातो को ही देख तब वह अन्य पशु पक्षियों की कोटि मे आ जायगा। जब मानव मानवेतर सृष्टि का जहा तक सभव हो पालन पोषण करगा मानवेतर सृष्टि के साथ भी आत्मीयता और अपनत्व का सबध स्थापित करेगा तभी वह सारी सृष्टि में श्रेष्ठ सिद्ध होगा। अत प्रत्यक्ष रूप मे उपकार करने वाले प्राणियो के प्रति प्रेम और उनकी कल्याण करने की भावना से प्रेरित होकर प्राचीन लोगो ने भूत यज्ञ या बलिवैश्वदेव यज्ञ की विधि का निर्माण किया था। पशु पक्षियो के हम पर किए जाने वाले उपकारो की गणना सभव नहीं। गाय कुत्ता खरगोश घोड़ा गधे आदि जानवर तो प्रत्यक्ष रूप मे हमारा उपकार करते ही हैं साप इत्यादि विषैले जन्तुओ का भी हम पर बहुत अधिक उपकार है। साप खेतो की रखवाली करता है। वह खेत मे चूहे आदि नहीं लगने देता। इन सर्पों के उपकार का बदला चुकाना मानव का कर्तव्य है। प्राचीनकाल मे पशुओ और पक्षियो के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए हमने भोजन करने से पूर्व गो ग्रास और काक को अन्न देने की प्रणाली का भी आविष्कार कर रखा था। वैदिक संस्कृति मे प्राणिमात्र की सेवा आवश्यक कर्तव्य के रूप मे मानी गई है। हिन्दुओ ने पुराणों के अनुसार पशुओ पक्षियो और यहा तक तृण वृक्ष और वनस्पतियो तक की पूजा का विधान किया है। मोर को पवित्र माना है। सरस्वती के हाथ मे वीणा देकर हमने उसे मोर पर बिठाया है।

कोकिल की मधुर आवाज किसे मुग्ध नहीं कर लेती? आठ महीने मौन रहकर वसन्त ऋतु आने ही कुहू कुहू की ध्वनि मे मधुर प्रेम गीत गाने वाली कोयल की आवाज कितनी मनभावनी प्रतीत होती है। वसन्त ऋतु के बाद ग्रीष्म ऋतु मे पड़ती है ... [illegible] ... के गीत मे वन नगर ग्राम वन उपवनो को गुजित कर देती है। ... [illegible] ... वनो की गहरा ... [illegible] ... सामगान हो उपनिषद ही हो।

मैंना तोता कितने सुन्दर होते हैं? हरे हरे पत्तो के रग वाले उस तोते की कितनी लाल और चमकदार चोंच है। कितने सुन्दर पंख हैं। वह कैसे गर्दन मोड़ता है! कैसे सीटी बजाता है! उसके नेत्र कितने छोटे और गोल गोल हैं उसका काला कण्ठ कैसा है? यद्यपि वह पिंजड़े में रहना नहीं चाहता तो भी मनुष्य प्रेम मे आकर उसे पिंजड़े मे रखता है और अपने मुख का अमरूद पकड़कर उसे देता है अपना कौर उसे खिलाता है। यह सब मनुष्य प्रेम से करता है। यह इस बात का उदाहरण है कि मनुष्य की आत्मा इतर प्राणियो के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए व्याकुल रहती है। इसी भावना से बलिवैश्वदेव यज्ञ या भूतयज्ञ करने का विधान है।

इस यज्ञ के विषय मे स्वामी दयानन्द ने मनु महाराज के निम्नलिखित वचन का उद्धरण देते हुए सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे लिखा है—

वैश्व देवस्य सिद्धस्य गृहेऽग्नौ विधिपूर्वकम्। आभ्य कुर्याद् देवताभ्यो ब्राह्मणो होमम्न्वहम्॥

अर्थात जब भोजन सिद्ध हो तब जो कुछ भोजनार्थ बने उनमे से खट्टा लवणान्न और क्षार को छोड के घृत मिष्टयुक्त अन्न लेकर चूल्हे से अग्नि अलग धर निम्नलिखित मन्त्रो से प्रतिदिन विधिपूर्वक होम करे

ओ३म अग्नये स्वाहा। सोमाय स्वाहा। अग्निषोमाभ्या स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्य स्वाहा। धन्वन्तरये स्वाहा। कुह्वै स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। सह द्यावा पृथिवीभ्या स्वाहा। स्विष्टकृते स्वाहा।

इन प्रत्येक मन्त्रो से एक एक बार आहुति प्रज्वलित अग्नि मे छोड पश्चात थाली अथवा भूमि मे पत्ता रखके पूर्व दिशादि क्रमानुसार यथाक्रम इन मन्त्रो से भाग रखे—

ओ३म सानुगायेन्द्राय नम। सानुगाय यमाय नम। सानुगाय वरुणाय नम। सानुगाय सोमाय नम। मरुद्भ्यो नम। अद्भ्यो नम। वनस्पतिभ्यो नम। श्रियै नम। भद्रकाल्यै नम। ब्रह्मपतये नम। वास्तुपतये नम। विश्वेभ्यो देवेभ्यो नम। दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नम। नक्तचारिभ्यो भूतेभ्यो नम। सर्वात्मभूतये नम।

इन भागो को जो अतिथि हो उसको जिमा देवे अथवा अग्नि मे छोड देवे। इसके अनन्तर लवणान्न अर्थात दाल भात शाक रोटी आदि लेकर छ भाग भूमि मे धरे। इसमे प्रमाण—

शुना च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्। वायसानां च कृमीणां च शनकैर्निवपेद् भुवि॥ (मनु० ९)

इस प्रकार श्वभ्यो नम पतितेभ्यो नम श्वपग्भ्यो नम पापरोगिभ्यो नम वायसेभ्यो नम कृमिभ्यो नम धर कर पश्चात किसी दुखी बुभुक्षित कुत्ते पापी चाण्डाल पापरोगी कौवे आदि को देवे। यहा नम शब्द का अर्थ अन्न अर्थात कुत्ते पापी चाण्डाल पापरोगी कौवे और कृमि अर्थात चींटी आदि को अन्न देना यह मनुस्मृति आदि की विधि है। हवन करने का प्रयोजन यह है कि पाकशालास्थ वायु का शुद्ध होना और जो अज्ञात अदृष्ट जीवो की हत्या होती है उसका प्रत्युपकार कर देना।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने इस विधि का उल्लेख सत्यार्थ प्रकाश मे किया है।

इस यज्ञ के मूल मे मानव ने अपनी आत्मा का विस्तार किया है। मनुस्मृति ३ ६८ १२३ मे लिखा है ऋषयो पितरो देवताओं प्राणियो तथा मनुष्यों को तृप्त करके फिर किसी गृहस्थ को स्वय भोजन करना चाहिए। मनुस्मृति के ३ ८६ मे कहा है इन यज्ञो के कर लेने पर जो अन्न बच जाता है उसको अमृत कहते हैं और पहले सब मनुष्यों के भोजन कर लेने पर जो अन्न बचे उसे विघस कहते हैं यह अमृत और विघस अन्न गृहस्थ के लिए विहित एव श्रेयस्कर है ऐसा न करके जो कोई सिर्फ अपने पेट के लिए ही भोजन पकाकर खाते तो वह अन्न अयन पाप का भक्षण करता है और उसे स्मार्त मनुस्मृति तथा ऋग्वेद और गीता सभी ग्रन्थो में अघ शब्द कहा गया है (ऋ० १०—११७—६ मनु० ३ ११८ गीता ३ १३)

इस प्रकार यह यज्ञ हमे सब भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया सब सुखी हो सब स्वस्थ हो की भावना अपने हृदयो मे लाने की प्रेरणा देता है। हृदय मे जब सबके प्रति प्रेम की भावना का उदय हो जाता है तो सर्प और चूहे शेर और मृग एक ही स्थान पर रहने लग जाते हैं। उस समय हम विश्व मे अपने को और अपने मे विश्व को देखने लगते हैं। अपने आसपास पशु पक्षी मनुष्य किसी को भी अन्न वस्त्र हीन देखकर हमारा हृदय दर्दपूर्ण हो जाता है। उस समय हम नामदेव की भांति सूखे कुत्ते के घी रोटी खिलाने लगते हैं। उस समय हम अपने मे और दूसरो मे अन्तर नहीं करते है। उस समय जिस प्रकार बादल सारा पानी दे डालते हैं वृक्ष अपने फल दे देते हैं वैसे मनुष्य भी दूसरो के लिए अपना सर्वस्व दे देता है।

इस प्रकार यह यज्ञ भी मनुष्य को करना ही चाहिये।

★

कोरुक्? कोरुक्? कोरुक्?

[श्री बुद्धिप्रकाश आर्य, प्रधानाचार्य दयानन्द उ०मा०वि० बिन्दकी फतेहपुर]

चरक ऋषि आयुर्वेद विज्ञान के प्रणेता थे तथा विश्वविख्यात वैद्य थे। मृत्यु के बाद एक पक्षी की योनि मे उन्होने जन्म लिया। पक्षी का शरीर धारण करने पर भी उनमे अपने पूर्व जन्म की स्मृतिया शेष थीं। एक बार उन्होने विचार किया कि समस्त देश मे भ्रमण करके यह देखा जावे कि वैद्यो मे सर्वोत्तम वैद्य कौन सा है? इसी विचार से वह पक्षी प्रत्येक वैद्य के यहा जाकर उच्च स्वर से कहा करता था—कोरुक? कोरुक्? कोरुक? परन्तु किसी वैद्य ने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। निराश होकर वह पक्षी वाग्भट्ट नामक वैद्य के यहा पहुचा। वहा भी उसने वही प्रश्न किया। वागभट्ट ने उसके सार्थक स्वरों को सुना। उसका ध्यान उस पक्षी की ओर गया और वे स्वर उनके मस्तिष्क मे चक्कर लगाने लगे। मनीषी वैद्यराज को अर्थ समझने मे देर न लगी। तुरन्त बाहर आकर उस पक्षी के अधूरे शब्द काव्य को इस प्रकार पूरा कर दिया—

हितभुक्, मितभुक, ऋत भुक।
सोरुक्, सोरुक्, सोरुक्॥

पक्षी इस उत्तर को सुनकर प्रसन्न हुआ और हर्ष सूचक पक्षध्वनि करता हुआ गगन मण्डल मे विलीन हो गया।

पाठको! देखना है कि वागभट्ट के इस सारगर्भित उत्तर मे कितना गम्भीर रहस्य छुपा है। उस पक्षी ने तीन बार प्रश्न करके वैद्यो से यह ज्ञात करना चाहा था कि कोरुक? अर्थात कौन स्वस्थ हुआ है? परन्तु जब किसी वैद्य ने उसका उत्तर न दिया तब वागभट्ट ने जो उत्तर दिया उसका तात्पर्य यह है 'हितभुक्, मित भुक ऋत भुक्, अर्थात हित से भोजन करने वाला, स्वल्प भोजन करने वाला तथा पवित्र व निरामिष भोजी ही स्वस्थ होता है।

वैद्यराज वागभट्ट का यह कथन कि हित से भोजन करने वाला व्यक्ति स्वस्थ होता है वस्तुतः अनुभूत तथ्यो पर आधारित है। प्रेम से खाने खिलाने वाले जब दोनो ही प्रेम से खाते और खिलाते है तब वह भोजन अमृत तुल्य गुणकारी होता है तथा व्यक्ति का दीर्घजीवी बनाता है। कविवर रहीम ने भी इसका समर्थन निम्न शब्दों मे किया है—

रहिमन रहिला की भली
जो परसै चित लाय।
जो परसत मन मैला कर
सो मैदा जरि जाय॥

वास्तव मे भोजन करते समय जब किसी को क्रोध या आवेश आता है तब वह पाचक रस को विषमय बना देता है और पाचन क्रिया मे भी व्यवधान उत्पन्न कर देता है जिससे रक्त दूषित तथा मन तमोगुणी बनता है। तमोगुणी व्यक्ति क्रोधी होता है। क्रोध व्यक्ति को पाप कर्म मे लगाता है। कहा भी है 'क्रोध पाप कर मूल" अत्यन्त क्रोधी व्यक्ति मानसिक रूप से रोगी होता है। जब वह क्रोध पर काबू नहीं कर पाता तभी विक्षिप्त होकर पृथ्वी के लिये व्यर्थ का बोझ बन जाता है। गीता मे योगिराज कृष्ण कहते हैं—

क्रोधात भवति सम्मोह',
सम्मोहात् स्मृति विभ्रम।
स्मृति भ्रंशाद्बुद्धिनाशो,
बुद्धि नाशात् प्रणश्यति।

अत सतोगुणी तथा क्रोधजित् बनने के लिए हमे सतोगुणी भावों से युक्त होकर शान्त स्वभाव से निरामिष भोजन का सेवन करना चाहिये। ऐसा व्यक्ति ही स्वस्थ होने का दावा कर सकता है। स्वस्थ व्यक्ति का दूसरा लक्षण बताते हुए कविराज कहते हैं 'मितभुक्" अर्थात् स्वल्प भोजी व्यक्ति स्वस्थ होता है। मिताहार से स्वास्थ्य लाभ के साथ साथ आर्थिक स्थिति भी सन्तुलित बनी रहती है। "स्वल्पाहारी गृह त्यागी' आदि मे भी विद्यार्थी के लिए मिताहारी होने का उपदेश दिया गया है कारण स्पष्ट है अल्पभोजन करने से पाचन क्रिया ठीक रहती है, रक्त शुद्ध और ठीक मात्रा मे बनता है मन हल्का एव प्रफुल्लित रहता है, आलस्य पास नहीं फटकता वस्तुतः आलस्य ही तो मनुष्य का शत्रु है कहा भी है 'आलस्य हि मनुष्याणाम शरीरस्थो महान रिपु" अत हम पवित्र सात्विक तथा चिन्तन शील एव आस्तिक बनने के लिये मिताहारी बनना परमावश्यक है। आज के युग मे जब कि खाद्य सकट मे चारो ओर त्राहि त्राहि मची हुई है 'मितभुक्" का सिद्धान्त कितना उपयोगी सिद्ध हो सकता है इस बात का आज भारत के नेता एव खाद्य मन्त्री अनुभव करने लगे है।

तृतीय लक्षण मे 'ऋत भुक' अर्थात् मनोगुणी एव निरामिष भोजी को स्वस्थ व्यक्ति माना गया है। पवित्र भोजन और निरामिष आहार सब सम्मति से पर्यायवाची माने गये हैं। सामिष भोजी भी इसका प्रतिवाद करते हुए नहीं सुने गये हैं। मास, मदिरा अण्डे आदि तामसिक तथा उत्तेजक होते हैं। अत यह स्वाभाविक है कि इनके सेवन से तमोगुण मे वृद्धि होगी, आक्रोश की मात्रा बढेगी मनुष्य स्वार्थी हो जावेगा। न्याय, दया ममता आदि गुण उनके स्वभाव के अग नहीं रह जाते हैं। दुख है कि आज विश्व मासाहार की ओर निरन्तर बढ़ रहा है यही कारण है कि वह स्वार्थान्ध होकर ईर्ष्या, कलह, युद्ध तथा शस्त्रास्त्रो की होड मे अपने को बुरी तरह उलझा कर जीवन के सच्चे सुखों से हाथ धो बैठा है।

अब प्रश्न उठता है कि खाद्य अखाद्य पदार्थ कौन-कौन से हैं। अन्न, दूध, मक्खन, शाकादि जो पृथ्वी से उत्पन्न तथा दूध से तैयार होते हैं, खाद्य हैं। एक विद्वान् ने कहा है कि वास्तविक खाद्य पदार्थ की पहचान उसकी अग्नि परीक्षा द्वारा ही की जा सकती है अर्थात् जो पदार्थ अग्नि मे पडकर सुगन्ध प्रदान करें वे खाने योग्य हैं जैसे घी मक्खन अन्नादि जो पदार्थ अग्नि मे पडकर दुर्गन्ध फैलाते हैं, अखाद्य है, जैसे मास, चर्बी आदि। शुद्ध अन्न से ही शुद्ध मन बनता है। उसी से शाश्वत सत्यो की खोज सम्भव है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व की महान विभूतिया निरामिष भोजी ही थीं जिन्होने अपने सात्विक मस्तिष्क प्रसूत ज्ञान से मानव के जीवनो को कल्याण कोश से भर दिया था उनकी वाणी, सत्य त्याग तथा भक्ति की वह अमर वाणी थी जो आज भी नास्तिको मे भक्ति भाव कायरो मे साहस मदान्धो मे उदारता तथा चचल मनो मे विश्वास, श्रद्धा एव धैर्य का सचार कर देती है। अन्तत हिताहार, मिताहार ऋताहार ही स्वस्थ भवन-निर्माण की वह चिरस्थायी नीव है जिस पर कर्मकाड का अलकृत भवन खडा हो सकता है। ●

भूल-सुधार

आर्यमित्र वर्ष ६८ अक ५ दिनाक ३० १-६६ के 'साहित्य समीक्षा' स्तम्भ मे पृष्ठ १२ पर प्रेस की भूल से पुस्तक का नाम "हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि" छपने से रह गया है। पाठकगण सशोधन कर पढ़ें। —स०

शिक्षा-जगत्

(पृष्ठ २ का शेष)

के सामुदायिक निवास से ये जाति, धर्म और सस्कृति के पूर्वाग्रहो से अलग स्वतन्त्र मानव के रूप मे बढेगे। ये दोष आज मानव जाति मे मिलते हैं।

इनमे से सबसे पहला स्कूल "एटलाटिक कालेज" की स्थापना अक्तूबर, १९६० मे दक्षिण वेल्स के किनारे पर सेंट डोनट कैसल मे हुई। इसमे प्रारम्भ मे ५५ छात्र थे। ये १२ देशों से आए थे और इन्हे छात्रवृत्तियाँ मिली हुई थीं। कालेज मे ४५० विद्यार्थी रखने की व्यवस्था है।

कर्ट हार्न का विश्वास है कि आज की सभ्यता के रोगों को रोका जा सकता है। ये हैं—पहल एव उपक्रम का अभाव मानव सहानुभूति एव सावधानी का अभाव। आज भी ससार के युवको में जोखम लेने की तीव्र इच्छा है, प्रत्येक प्रकार के अनुभव और अवसर प्राप्त करके अपना साहस सिद्ध करने की आकांक्षा है—केवल आवश्यकता इस बात की है कि उनकी शक्ति एव सामर्थ्य का सही पथ-प्रदर्शन किया जाये। दूसरे की सहायता करने तथा अन्य प्रकार के सहयोग कार्य करने की तीव्र आकाक्षा से असाधारण शक्तियो का उपयोग होता है। इसी तथ्य को ध्यान मे रखकर ही १९५३ मे गाडनर टाउन मे समुद्र किनारा रक्षा सेवा प्रारम्भ की गई। इसी परम्परा का अनुसरण करते हुये पर्वत सहायता सेवा, समुद्र-सहायता सेवा, रेड क्रास-दल तथा आग बुझाने का दल बनाए गए। यही बातें सलेम पर लागू होती हैं। इन सस्थाओ का निर्माण केवल शिक्षा के प्रयोजनों के लिये नहीं किया गया परन्तु इनको उपयुक्त राष्ट्रीय सेवा और स्थानीय पालिकाओ का अग बनाया गया। इन से यह तात्पर्य निकलता है कि सकट काल मे सलेम या गाडनरटाउन मे विद्यार्थी उतना ही योगदान करते हैं जितना प्रौढ। इस दिशा मे एक और कदम उठाया गया है ताकि और विद्यार्थियो को शिक्षा दी जा सके—यह शिक्षा जिससे युवक व्यावहारिक और खल कूद की शिक्षा के द्वारा चरित्र निर्माण करते है। तथाकथित सक्षिप्त स्कूलो" की गई हैं, जिनमे चार सप्ताह का प्रशिक्षण दिया जाता है और उपर्युक्त गुणो एव विशेषताओ की ओर ध्यान दिया जाता है। ये पहले ही ब्रिटेन अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया मे मौजूद हैं। जर्मन फेडरल रिपब्लिक तथा आस्ट्रिया मे दो "सक्षिप्त स्कूल" हैं। जिनमे २०,००० युवक प्रशिक्षण ले चुके हैं।

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥८॥
ऋ० १। १। ६। १०

हे वाक्पते! सर्वविद्यामय! हमको आपकी कृपा से "सरस्वती" सर्वशास्त्र-विज्ञानयुक्त वाणी प्राप्त हो "वाजेभिः" तथा उत्कृष्ट, अन्नादि के साथ वर्तमान "वाजिनीवती" सर्वोत्तम क्रिया विज्ञानयुक्त "पावका" पवित्र स्वरूप और पवित्र करने वाली सत्य भाषणमय मङ्गलकारक वाणी आपकी प्रेरणा से प्राप्त होके आपके अनुग्रह से परमोत्तम बुद्धि के साथ वर्तमान "वसु." निधिस्वरूप यह वाणी "यज्ञं वष्टु" सर्वशास्त्रबोध और पूजनीयतम आपके विज्ञान की कामनायुक्त सदैव हो, जिससे हमारी सब मूढ़ता नष्ट हो और हम महापाण्डित्य युक्त हों।—आर्याभिविनय

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार ६ फरवरी १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६६

प्रधान मन्त्री द्वारा हिन्दी की उपेक्षा क्यों ?

सारे देश ने नयी प्रधान मन्त्री के रूप में श्रीमती इन्दिरा गांधी का स्वागत और समर्थन व्यक्त किया है। शपथ ग्रहण करते ही उन्हें गणतन्त्र दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न करना पड़ा और उसी दिन आपने प्रधान मन्त्री के रूप में अपना नीति-भाषण देशवासियों के नाम प्रसारित किया।

प्रधान मन्त्री के रूप में उन्हें जो उत्तरदायित्व पूरे करने हैं उनमें से अधिकांश की उन्होंने चर्चा की और देशवासियों से समर्थन और सहयोग की प्रार्थना की। उनकी इस प्रार्थना का देशवासी आदर करेंगे और देश के नवनिर्माण में उनका सहयोग प्रदान करेंगे।

परन्तु देशवासियो का समर्थन पाने में उन्हें उनके भाषण की भाषा के कारण कुछ कठिनाई अवश्य होगी। देश की बहुसंख्यक जनता की भाषा हिन्दी है, संविधान ने इस सत्यता को स्वीकार किया है और २६ जनवरी ६५ से तो हिन्दी राजकीय कार्य के लिए वैधानिक भाषा है फिर भी नयी प्रधान मन्त्री बहुसंख्यक जनता की भावनाओं को अच्छी तरह न समझ सकी और उन्होंने हिन्दी की उपेक्षा कर अंग्रेजी में ही भाषण दिया। अब तक श्री नेहरू जी और श्री शास्त्री जी प्रधान मन्त्री के रूप में राष्ट्र के नाम जब सन्देश देते थे तब हिन्दी में अवश्य बोलते थे परन्तु इस बार प्रधानमन्त्री के अंग्रेजी भाषण का अनुवाद आकाशवाणी के एक कर्मचारी ने पढ़कर सुना दिया।

प्रधान मन्त्री के इस व्यवहार से भारत की बहुसंख्यक जनता की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंची है।

प्रधान मन्त्री ने ऐसा क्यों किया जब कि उन्होंने उसी भाषण में श्री नेहरू और श्री शास्त्री के पदचिन्हों पर चलने की सार्वजनिक घोषणा की तब भाषा के सम्बन्ध में उनका इस प्रकार का व्यवहार कहां तक उचित और न्याय कहा जा सकता है।

हम समझते हैं कि प्रधान मन्त्री ने ऐसा अनजाने में नहीं किया होगा उनके मस्तिष्क में एक तो अंग्रेजी का वैशिष्ट्य संव्याप्त होगा दूसरे वे दक्षिण के हिन्दी विरोधियों को हिन्दी की उपेक्षा कर प्रभावित करना चाहती होंगी।

हम इन दोनों ही कारणों को अनुचित समझते हैं क्योंकि राजनैतिक स्वाधीनता के लिये राष्ट्रीय स्वाभिमान आवश्यक है और राष्ट्रीय स्वाभिमान स्वभाषा मे निहित होता है। प्रधानमन्त्री के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि उन्होने विदेशो की बहुत यात्रा की है इस कारण उन्हें अनुभव होगा कि किस देश मे अपनी भाषा का व्यवहार होता है किस देश मे दूसरों की भाषा का। शायद प्रधानमन्त्री किसी ऐसे स्वाभिमानी देश का नाम नही बता सकेंगी। जर्मनी, फ्रांस, रूस, यूगोस्लाविया, मिस्र, जापान कोई भी देश दूसरे देश की भाषा का व्यवहार नही करता है फिर भारत ही क्यो अंग्रेजी का व्यवहार करे जो विदेशी भाषा है और जिसे भारत मे १ प्रतिशत से अधिक नही समझ सकते क्यो अंग्रेजी की विभागी गुलामी से पीड़ित है। इसी प्रकार दक्षिण के हिन्दी विरोध का सामना करने का ही यदि प्रश्न है तो भी प्रधान मन्त्री को हिन्दी मे अपना भाषण स्वय देना चाहिए था अनुवाद पढ़वाना राष्ट्रीय स्वाभिमान का अपमान है।

प्रधानमन्त्री पर गम्भीर उत्तरदायित्व है। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि प्रधानमन्त्री राष्ट्र के बहुसंख्यकों की भावना का आदर करेंगी और हिन्दी की उपेक्षा को बढ़ावा न देंगी। हिन्दी को जो गौरवपूर्ण स्थान मिलना चाहिए उसे प्रदान कर हिन्दी को राष्ट्रीय स्वाभिमान का आदर्श बनाना देश के प्रधान मन्त्री का पावन कर्तव्य है। हम जानते हैं कि इस कार्य में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु हिन्दी के लिये उन्हें अपना कर्तव्य पूरा करना ही चाहिये। नये प्रधानमन्त्री की सफलता के लिए जहाँ जनता अन्य बातों का मूल्यांकन करेगी वहां वह यह भी देखेगी कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी के लिये नयी प्रधानमन्त्री ने क्या किया। आशा है भविष्य में प्रधान मन्त्री जनमत का आदर कर राष्ट्रीय स्वाभिमान का परिचय देंगी।

बोध-सप्ताह

आर्य जगत् में प्रति वर्ष ऋषि दयानन्द के बोध दिवस के उपलक्ष्य में बोध सप्ताह मनाया जाता है, आर्य उपप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से बोध सप्ताह का कार्यक्रम प्रकाशित एवं प्रसारित किया जा चुका है। उत्तरप्रदेश की आर्यसमाजों को उत्साहपूर्वक बोध-सप्ताह मनाकर अपने क्षेत्र में अज्ञान अविद्या-अभाव को दूर करने को महर्षि दयानन्द का वैदिक सन्देश फैलाना चाहिये। जन-सम्पर्क के लिए सप्ताह का लाभ उठाना चाहिए।

प्रति वर्ष इस अवसर पर ऋषि जन्म भूमि टंकारा में ऋषि मेले का आयोजन होता है। इस वर्ष भी वहाँ ऋषि मेले का आयोजन है, अधिकाधिक सख्या मे आर्यजनों को उसमें सम्मिलित होने का प्रयत्न करना चाहिए। ऋषि मेले के लिये दिल्ली मे स्पेशल ट्रेन ले जाने की व्यवस्था की गयी है। इच्छुक व्यक्ति स्पेशल ट्रेन का लाभ उठा सकते है। इसी प्रकार विविध स्थानो पर ऋषि के सन्देश को सुनाने का कार्यक्रम रखा जाना चाहिये। आशा है आर्यजन और आर्यसमाजो के अधिकारी बोध-सप्ताह सफलतापूर्वक मनाकर अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

स्व० डा० भाभा

भारत के प्रमुख वैज्ञानिक डाक्टर भाभा का विमान दुर्घटना मे निधन हो गया। इस दुखद समाचार से सारा देश दुखी है हम दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते है।

डा० भाभा ने परमाणु विज्ञान मे भारत को गौरवपूर्ण स्थान प्रदान कराया इसके लिए भारत उनका सदैव ऋणी रहेगा। उनका परमाणु विकास कार्यक्रम शान्ति और विकास की दिशा में विज्ञान की देन था। वे शान्ति और विकास में ही अणु शक्ति का प्रयोग कर रहे थे। उनको खोकर हमें गहरी क्षति उठानी पड़ी है जो निकट भविष्य मे पूर्ण होना असम्भव है। मित्र परिवार ऐसे शान्ति के लिए प्रयत्नशील वैज्ञानिक के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अन्तरंगाधिवेशन के स्थान-तिथि परिवर्तन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दि० १३ फरवरी को बरेली में जो होने जा रहा था वहाँ न होकर कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस जिला अलीगढ़ के वार्षिकोत्सव के साथ-साथ दि० २० फरवरी १९६६ के दिन रविवार को अन्तरंग की बैठकें बुलाने का निश्चय हुआ है। अन्तरंग की प्रथम दिवस की बैठक ९॥ बजे प्रातःकाल से आरम्भ होगी। अन्तरंग सदस्यों से सविनय प्रार्थना है कि कृपया नियत समय पर पधार कर कृतार्थ करेंगे।

उपसमिति की बैठकें १९।२।६६ को गुरुकुल में होगी। पूर्व की ओर से आने वालों को हाथरस सिटी स्टेशन पर उतर कर बस या रिक्शा द्वारा कन्या गुरुकुल पहुंचना चाहिये। और मुरादाबाद बरेली की ओर से आने वालों को अलीगढ़ स्टेशन पर उतर कर मोटर बस के द्वारा गुरुकुल पहुंचना चाहिए।

सभा प्रधान जी को धन भेंट

मा० अध्यक्ष महोदय को दिनांक २१ जनवरी १९६६ को निम्नलिखित धनराशि प्राप्त हुई थी जबकि वे यज्ञशाला, बीहूपुर, जिला कानपुर तथा विज्ञान कक्ष, डी०ए०वी० उच्चतर मा० विद्यालय, मिल्किनपुर, जिला कानपुर का उद्घाटन करने गये थे—

५१) आर्य स० बीहूपुर वेद प्रचार हेतु,
२१) आर्य स० मुरलीपुर ,,
१८, आर्य स० भैरमपुर ,,
११) आर्य स० उमरी ,,
१०१) कुल

इसके अतिरिक्त सुरक्षा कोष हेतु निम्नलिखित धनराशि विभिन्न संस्थाओं की ओर से मा० अध्यक्ष महोदय को भेंट की गई।

४०८) प्रबन्धक, दयानन्द मा० विद्यालय मिल्किनपुर, श्री जगरूपसिंह आर्य द्वारा
५१) मुनम्मत [illegible], ग्राम मिल्किनपुर
५१) प्रधान ग्राम सभा, मिल्किनपुर
५१) आर्यसमाज उमरी
२१) आर्यसमाज बीहूपुर
१०) आर्यसमाज मु[illegible]पुर
५१) ग्राम समाज, बीहूपुर
१५) मोहिनी माता, ग्राम मिल्किनपुर द्वारा।

—धर्मदत्त सभा मन्त्री
आर्य प्र० सभा उ० प्र०

मास फरवरी ६६ के प्रोग्राम

श्री रामस्वरूप जी आ० मु०—६ से ९ सीयर (बलिया) १४ से २२ चौरी-चौरा, २३ से २५ डीहघाट।

श्री धमराज सिंह जी—७ से ९ गौनी ११ से १४ फतेहपुर, २६ से २८ बिस्वा।

श्री गजराज सिंह जी—१२ से १८ तिलहर।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—२१ जनवरी से ६ फरवरी गुरुकुल रायपुर ८ से ११ पाली, १२ से १८ नवाबगंज (गोंडा) १९ से २१ अलीगंज लखनऊ २५ से २८ अकबरपुर कानपुर।

श्री वेदपाल सिंह जी—११ से १३ गोविन्द नगर कानपुर, १७ से २० मेस्टनरोड कानपुर २१ से २३ बिधूना।

श्री खेमचन्द्र जी—८ को नवीनगंज चबौली १२ से १८ सदर मेरठ १९ से २१ अलीगंज लखनऊ, २८ से

श्री जयपाल सिंह जी—१६ से १८ बहादुर।

श्री प्रकाशवीर जी—१२ से १८ हापुड़।

श्री विन्ध्येश्वरी सिंह जी—१७ से २० बलिया।

श्री डा० प्रकाशवती जी—१४ से २२ चौरी चौरा, २६ से २८ बिस्वा।

महोपदेशक एवं उपदेशक

श्री प० विश्वबन्धु जी शास्त्री—१२ से १८ अमरोहा।

श्री प० बलवीर जी शास्त्री—९ से ११ पाली १४ से २२ चौरीचौरा, २८ से इस्लामनगर-बदायूं।

श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री—१२ से १७ लखीमपुर, १८ से २० मेस्टनरोड कानपुर।

श्री प० श्यामसुन्दर जी शास्त्री—१२ से १८ रुड़की, १९ से २१ अलीगंज, लखनऊ।

श्री प० विश्ववर्धन वेदालंकार—१२ से १८ सदर मेरठ, २६ से २८ बिस्वाँ।

श्री केशवदेव शास्त्री—१९ से २१ अलीगंज लखनऊ।

श्री प० भैरों प्रसाद शुक्ला—१२ से १८ तिलहर।

श्री स्व० वेदानन्द जी सरस्वती—७ से ९ गौनी, १२ से १८ फलावदा।

श्री स्वा० योगानन्द जी सरस्वती—१२ से १८ मवाना।

श्री प० कालताप्रसाद जी—७ से ९ गौनी।

—स०अधिष्ठाता, उपदेश विभाग

श्री स्वामी प्रणवानन्द जी अस्वस्थ

समाजों को सूचित किया जाता है कि श्री स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने मेडीकल कालेज लखनऊ मे अपनी दाहिनी आँख का आपरेशन कराया हुआ है वह कालेज से अवकाश मिलने पर आराम करने हेतु अमानिया चले जावेगे, अत कोई समाज एव आर्यबन्धु अभी निमन्त्रित करने का कष्ट न करें।

यात्रा प्रोग्राम

सभा के सुयोग्य एव उच्चकोटि के विद्वान श्री विश्ववचन जी वेदालंकार लखनऊ से चलकर निम्न स्थानों मे प्रचार करते हुए मेरठ सदर समाज मे पहुंचेंगे। उक्त पंडित जी हिन्दी एव अंग्रेजी मे बहुत ही रोचक व्याख्यान देते हैं। दर्शन आदि की प्रभावपूर्ण कथा कहते हैं जो सज्जन अपने यहा बुलाना चाहें अभी से सम्पर्क स्थापित करें।

३१ १ मथना २ ३ इटावा, ४ फीरोजाबाद ५ ६ खुर्जा, ७ दनकौर ८ दादरी ९ १० गाजियाबाद ११ सदर मेरठ।

—स० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

प्रतिवाद

गत १४ नवम्बर के अङ्क मे आर्योप-प्रतिनिधि सभा के नाम से 'लाला लाजपतराय शताब्दी समारोह और 'आनन्द बाग' में शिला लेख लगाये जाने के समाचार प्रकाशित हुये हैं। समाचार मे यह भी उल्लिखित है कि माननीय मदनमोहन जी सभा प्रधान उत्सव में पधारे।

इस सम्बन्ध में निवेदन यह है कि लाला लाजपतराय शताब्दी समारोह गत ६ नवम्बर को अवश्य मनाया गया था परन्तु 'आनन्द बाग' में शिलालेख लगाने का कार्यक्रम नहीं आयोजित किया जा सका था और अस्वस्थ होने के कारण माननीय प्रधान जी भी नहीं पधार सके थे।

जिस सूचना के आधार पर शिलालेख लगाने का समाचार प्रकाशित हुआ है वह भ्रमपूर्ण है। —आनन्द प्रकाश

डा० वृन्दावनलाल जी वर्मा द्वारा शिलान्यास सम्पन्न

पद्मभूषण डा० वृन्दावनलाल वर्मा के कर कमलों द्वारा २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर बुन्देलखण्ड की एकमात्र सर्वोत्कृष्ट कन्या शिक्षण-संस्था आर्य कन्या महाविद्यालय (डिग्री कालेज) सीपरी बाजार झांसी के भवन निर्माण के लिये शिलान्यास सम्पन्न हुआ सम्मिलित रूप से यज्ञ एव वेदपाठ हुआ तत्पश्चात विद्यालय के प्रधान डा०सुरेशचन्द्र शास्त्री की अध्यक्षता मे एक सभा हुई जिसमें डा० वृन्दावनलाल वर्मा जी ने इस विद्यालय के अतीत के गौरवपूर्ण इतिहास की चर्चा करते हुए बुन्देलखण्ड क्षेत्र में शैक्षिक प्रगति के लिये उसकी मौलिक उपादेयता पर प्रकाश डाला और कहा की इस नारी शिक्षा विकास के युग में झांसी वाली रानी की नगरी का यह महाविद्यालय एक दिन विश्वविद्यालय का रूप धारण करेगा।

इस शुभ अवसर पर नगर के प्रसिद्ध ठेकेदार श्री बी० पी० दीक्षित जी ने अपनी धर्म पत्नी के नाम से महाविद्यालय का एक कमरा बनवाने की घोषणा की। इसी प्रकार सभी उपस्थित सज्जनों ने विद्यालय के नव निर्माण मे सर्वतोभावेन सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस कार्यक्रम का सयोजन मैनेजर खुशीलाल कश्यप ने किया।

—खुशीलाल कश्यप

आर्य प्रतिनिधि सभा मेरठ की रजत जयन्ती

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ की २६, २७ २८ फरवरी ६६ को रजत जयन्ति मनायी जायगी। इसके प्रबन्ध के लिए श्री प्रधान, श्री मन्त्री उपसभा श्री इन्दरा जी श्री म० प्यारेलाल जी, श्री बलबीरसिंह बेधड़क, श्री श्यामलाल जी तथा श्री विष्णुदेवी जी सात व्यक्तियो की एक उपसमिति बनाई गई। इस उपसमिति के सयोजक श्री बाबू श्यामलाल जी ७४ रामनगर मेरठ रहेंगे। इस समिति को अधिकार होगा कि वह उपसभा के अन्तरग सदस्यों या बाह्य सम्मानित व्यक्तियों को भी आवश्यकतानुसार सहयोग प्राप्ति के लिए सहयुक्त कर सके। —प्रियव्रत शास्त्री

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

२३ दिसम्बर को आर्यसमाज के अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति मे बलिदान दिवस मनाया गया सर्वत्र जलूस और सभाओं का आयोजन किया गया—

आर्यसमाज गया मानपुर मुगलसराय पुरानी गोदाम गया मुबारकपुर कोसीकला (मथुरा) हल्द्वानी (नैनीताल) दीवानहाल देहली, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी आदि मे विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

शान्ति निकेतन टंकारा, आर्य उप प्रतिनिधि सभा वाराणसी, आर्यसमाज अहमदाबाद, आ० यु० समाज दयालपुर करनाल, हिन्दू धर्म वर्ण-व्यवस्था मण्डल फुलेरा (जयपुर) आर्य समाज देराकस, हल्द्वानी (नैनीताल) आदि मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया।

(पृष्ठ १ का शेष)

आपने हिन्दी मे श्रेष्ठ स्तर के हास्यरस का विकास किया है। 'चिड़ियाघर' 'पिंजरापोल' के वचन आज भी राजनैतिक व्यंग्य में अपना सानी नहीं रखते। आपकी कविताओं से आर्यजगत् तो परिचित ही है हिन्दी साहित्य जगत् मे भी आपकी रचना 'घास पात' पर आपको 'देव पुरस्कार" प्रदान किया गया है। आपकी छन्द शास्त्र सम्बन्धी रचना "छन्द शास्त्र की व्यापकता" हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। आपकी साहित्यिक सेवाओं का आदर करते हुए आगरा विश्व विद्यालय ने आपको डी० लिट की उपाधि प्रदान की थी और अब राष्ट्रपति ने आपको 'पद्मश्री' उपाधि प्रदान की है। 'सर्वत्र विजयम् अन्विष्येत पुत्रादिच्छेत् पराजयम्' इस उक्ति के अनुसार हम भारत के राष्ट्रपति को धन्यवाद देते हैं जो उन्होने एक सच्चे तपस्वी और साहित्यकार की साधना की ओर उनका सम्मान किया। श्री नाथूरामशंकर शर्मा हिन्दी के यशस्वी कवि थे उनके गौरवशाली पुत्र के रूप में आज प० जी ने जो गौरव प्राप्त किया है उसमे वहा शंकर कवि धन्य हैं वहां हम आर्यजन एव साहित्यिक भी अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

श्रद्धांजलि

प० गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज के निधन से आर्यजगत को महान क्षति पहुंची है। स्वर्गीय पंडित जी की साहित्य निर्माण और अन्य सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र मे अनुकरणीय सहयोग रहा है उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि यह है कि हम उनके पदचिन्हों पर चलकर आर्यजगत की सेवा और उपकार में संलग्न रहें। —पूर्णचन्द्र एडवोकेट पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा

श्री गंगाप्रसाद जज साहब के निधन पर शोक

आर्यसमाज सदर बाजार झांसी, बुलन्दशहर, शाहजहांपुर ठठिया चाकापार सहारनपुर, सराय अगस्त (एटा) कायमगंज हरदोई, हल्द्वानी (नैनीताल)

निर्वाचन—

आर्यसमाज नरही लखनऊ

प्रधान—श्री डा० लक्ष्मीनारायण जी, उपप्रधान—श्री बा० रघुनन्दनदास जी, मन्त्री श्री बा० शिवप्रसाद जी श्रीवास्तव, उपमन्त्री—श्री नारायणगोस्वामी वैद्य, कोषा० श्री विजयबहादुर जी, पुस्त०—श्रीमती सुशीलाजी, सभा के लिए प्रतिनिधि—श्री बा० शिवप्रसाद जी।

उत्सव एवं प्रचार—

—अमीरनगर (खीरी) आर्यसमाज का उत्सव १५ से १७ दि० ६५ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। श्री गजराज सिंह जी राघव ने उपदेश दिये। श्री हरिहरबक्स सिंह भूतपूर्व आनरेरी मजिस्ट्रेट ने उत्सव की अध्यक्षता की।

—जमशेदपुर आर्यसमाज का उत्सव दिसम्बर मे समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसमें प्रसिद्ध आर्य विद्वानों एवं नेताओं के भाषण दिये।

—दिल्ली बिरला लाइन्स आर्यसमाज का उत्सव २५ से २७ दि० तक समारोह पूर्वक मनाया गया। १९ से २४ तक कथा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—राजमलपुर नवापुरा बलिया, दयानन्द वैदिक आश्रम का उत्सव दि० ६५ में सम्पन्न हुआ। सर्वश्री आचार्या पुष्पावती, स्वामी सत्यानन्द, स्वामी अभयानन्द, शिवपूजन, परमेश्वरी देवी, जगदेवसिंह, गुलाबचन्द्र, ललिता देवी, वेदव्रत विशारद आदि के भाषणादि हुए।

—बहरिया आर्यसमाज का उत्सव १० से २२ दि० ६५ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। सर्वश्री स्वामी पूर्णानन्द, धारनदेव वैद्य, कृपाराम धनुर्धर आदि ने प्रचार किया। प्रचार से प्रभावित हो ककाम ग्राम मे श्री विद्यावारिधि ने आर्य समाज की स्थापना की।

—बगहा (मीरजापुर) आर्यसमाज व आर्यवीर दल के उत्सव २५, २६ दि० को समारोहपूर्वक मनाये गये। सर्वश्री सत्यदेव, प्रो० आनन्दप्रकाश, कु०महीपाल विद्यार्मसिंह आदि ने भाषण व उपदेश दिये। १०० आर्यवीरो का विराट् प्रदर्शन निकला, १०१) रु० की थैली श्री देवर्नसिंह को दल के प्रचारार्थ भेंट की गयी।

—पीपाड (राजस्थान) आर्यसमाज की ओर से ३१ दि० १, २ जनवरी ६६ मे आर्य सगीत सम्मेलन सम्पन्न हुआ। श्री पन्नालाल पीयूष आर्य सगीत रत्न इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे।

—लुध्याना साबुन बाजार आर्यसमाज की ओर से १६ जनवरी ६६ को श्री स्वामी दर्शनानन्द जयन्ती मनायी गयी। सर्वश्री रणवीर शास्त्री, वैद्य मुकुन्द लाल रामकिशोर, वेदप्रकाश एम० ए० ने भाषण दिये, श्री दीवान रामशरण दास जी ने अध्यक्षता की। वक्ताओं ने स्वामी जी की शिक्षा प्रणाली और प्रचार-भावना को अपनाने की विशेष प्रेरणा की।

—पूना केन्द्रीय आर्यसमाज प्रचार मण्डल का उत्सव २५ से २७ दिसम्बर ६५ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। सर्वश्री स्वामी रामेश्वरानन्द, प०प्रकाशवीर शास्त्री ससद सदस्य, स्वामी दर्शनानन्द प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु आदि विद्वानों के ओजस्वी एव मार्मिक भाषण हुए।

—शामली (मुजफ्फरनगर) आर्य समाज का उत्सव एव आर्य राष्ट्र रक्षा सम्मेलन २२, २३ जनवरी मे सम्पन्न हुआ। सर्वश्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती एम ए, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, श्री रामगोपाल शालवाले श्री प्रतापसिंह शूरजी प्रधान सार्वदेशिक सभा श्री वंशनाथ जी शास्त्री आदि ने ओजस्वी भाषण दिये।

—प्रयाग चौक आर्यसमाज का ९० वा उत्सव २२ से २६ जनवरी तक समारोहपूर्वक मनाया गया। श्री प्रि० ज्ञानचन्द एम ए श्री प्रो रत्नसिंह एम ए. गाजियाबाद श्री ओम्प्रकाश शास्त्री, श्री आर्यभिक्षु श्री नन्दलाल जी, श्री ठा. भद्रपालसिंह, श्री धर्मदत्तजी आनन्द, श्री पन्नासिंह आदि ने ओजस्वी भजन भाषण किये, महिला सम्मेलन भी समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

—हाथरस सासनी आर्यसमाज का उत्सव २४ से २६ दिसम्बर तक समारोहपूवक मनाया गया।

प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी के निधन पर शोक

प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्रीजी के निधन से समस्त देशवासियो को गहरा आघात और शोक पहुचा है। आर्यजगत् मे भी सर्वत्र शोक छाया हुआ है। सर्वत्र दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थनायें की गयीं और पारिवारकों के साथ शोक समवेदनायें व्यक्त की गयीं। निम्न स्थानों पर शोक-प्रस्ताव पारित किये गये।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, आ.स बस्ती, मेरठ नगर, कासगज, शेर कोट, अमरोहा, बाढ़ (पटना), लल्लापुरा (वाराणसी), सदर कैंट लखनऊ, आर्य उप प्र तिनिधि सभा झासी, पार्वती आर्य कन्या सस्कृत इन्टर कालेज बदायू, आर्यवीर दल आलम बाजार कलकत्ता आर्यसमाज सिमापुर, हल्द्वानी (नैनीताल) अनूपशहर, सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर) बानाभवन (मुजफ्फरनगर) कायमगज, मुबारकपुर टाडा (फैजाबाद) काकरिया रोड अहमदाबाद, कानौली (मुजफ्फरनगर) दरियागज दिल्ली गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल अयोध्यानगर (छपरा), सदानन्द साधुआश्रम अलीगढ, गुरुकुल सिराथू (इलाहाबाद) जिला आर्य सभा (पटना), केन्द्रीय आर्य समाज प्रचार मण्डल पूना, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी (अलीगढ), मडियाहू (जौनपुर) आर्यसमाज बगारस्यू (गढ़वाल)।

आयवीर दल मण्डल मानपुर (गया), पुरानी गोदाम गया, जौनपुर गोरखपुर (महिला) काठ (मुरादाबाद) गया होडल (गुडगाव) नामनेर (आगरा), मैनपुरी मथुरा तिलकद्वार, सावली पचपुरी, सराय अगस्त (एटा) हरदोई बगहा (मीरजापुर) नानापेठ पूना, शाहजहापुर, बुलन्दशहर, सकराबा, ठठिया, फर्रुखाबाद इटारसी (होशगाबाद) रेलवे कालोनी चोपन (मिर्जापुर) लालापार (सहारनपुर) करारी (प्रयाग) हकीकत नगर (सहारनपुर) काकडवाडी (बम्बई) फोर्ट बम्बई, गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद, आयवीर दल गाजियाबाद।

(पृष्ठ ६ का शेष)

तक श्री शास्त्री जी उक्त सोसाइटी के अध्यक्ष थे। और नियमपूर्वक आयु भर इस सस्था को जनकल्याणार्थ अपनी वेतन में से २५०) रुपया मासिक अर्पण करते रहे। उनके अन्दर यह त्याग का भाव लाला जी की देन थी। लाला जी के सम्बन्ध मे शास्त्री जी प्राय कहा करते थे कि पजाब केसरी ऐसे महान नेता थे कि उनसे प्रेरणा पाकर हजारो युवको ने चरित्र के नये साचे मे ढलकर देश पर मरना सीखा। मैं जो कुछ हू वह लाला जी से प्राप्त किया है।" श्री शास्त्री जी ने लाला जी के सच्चे शिष्य के नाते गत वर्ष सरकारी स्तर पर लाला जी का शताब्दि समारोह के आयोजन कराये और देशवासियों का ध्यान स्वतन्त्रता के इस महान् सेनानी की ओर आकर्षित किया था। काश ! शास्त्री जी जीवित रहते और वे लालाजी के महान सम्मान के योग्य उनका शानदार स्मारक बनवाते।

लेखक व वक्ता

लाला जी ने स्वतन्त्रता के लिये प्रेम उत्पन्न करने के लिए पीपुलज, यग इण्डिया और उर्दू मे वन्दे मातरम् पत्र जारी किये। उनके वे सम्पादक थे। उनकी लेखनी मे दैवी शक्ति थी उनके लेखों का जनता के हृदय तक अमिट प्रभाव होता था लोग उनके लेखों की प्रतीक्षा करते थे। लालाजी महान् थे उन्होने अनेक पुस्तकें भी लिखीं जो देश भक्ति, भारतीय सस्कृति व सभ्यता से ओत-प्रोत हैं। जैसी उनकी लेखनी मे शक्ति थी वैसे परमात्मा ने उनकी वाणी मे भी विशेष ओज दिया हुआ था। उनके क्रान्तकारी भाषणों को सुनकर मुर्दा दिलों मे भी स्फूर्ति आ जाती थी। उन्होंने सरदार अजीतसिंह, उनके भतीजे सरदार भगतसिंह व अनेक क्रान्तिकारी युवक तैयार किये। भगतसिंह ने ही लाला जी पर साइमन कमीशन के बाई-काट के समय पडने वाली लाठियो का बदला, उनकी अर्थी उठने से पूर्व पुलिस अधिकारी साडर्स को गोली का निशाना बनाकर ले लिया था और लाला जी को सम्बोधित कर लाहौर की बाजार मे पोस्टर चिपकाए कि "आपके खून का बदला खून से ले लिया।"

स्वाभिमानी लाला जी

लाला जी अपनी आवाज को दबाना नहीं सीखे थे। कांग्रेस मे उच्च पद पर रह कर भी कभी भी गलत बात का समर्थन नहीं किया। चाहे बहुमत उस बात को क्यो न चाहता हो। वे स्वाभिमानी थे। कांग्रेस से मतभेद हुआ तो उसको भी छोड दिया। एक समय ऐसा भी आया कि वे केन्द्रीय असेम्बली के लिए कांग्रेस के अधिकृत प्रत्याशी के विरुद्ध चुनाव लडने की घोषणा कर दी और साथ मे यह भी घोषणा कर दी कि वे चुनाव के बीच अपने निर्वाचन क्षेत्र मे भी नहीं जायेंगे। चुनाव हुआ। आप भारी बहुमत से सफल हुये और कांग्रेस प्रत्याशी की जमानत भी जब्त हो गई। इतने जनप्रिय थे लाला जी। जब तक भारत रहेगा तब तक लालाजी की याद कायम रहेगी। क्या भारत को दुबारा लाला लाजपतराय मिल सकेगा?

●

(पृष्ठ ५ का शेष)

पात करता तो आर्यावर्त मे प्रचलित मतों मे से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो जो आर्यावर्त वा अन्य देशो मे अधर्मयुक्त चाल-चलन है उनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हू क्योकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।

दूसरी बात, हम खण्डन से नहीं घबडाते क्योकि हमे सत्य पर पहुचना है। अगर हमारे अन्दर कोई बुराई है तो उसे छोड देंगे। हमारा तो सिद्धान्त ही है सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' लेकिन अन्य सम्प्रदाय वाले खण्डन से घबडाते है। क्यो, इसलिये कि वे जानते है कि इस चक्कर मे पडगे तो हमार पोल खुल जायेगी और हम कही के न रहेगे। इसका तात्पर्य कि उनको खुद अपने सिद्धान्त पर अविश्वास है। उनका सिद्धान्त गलत है। इस बात पर भी विद्वानो को विचार करना चाहिए।

★

टंकारा में ऋषि मेला

दिल्ली से स्पेशल गाड़ी जायगी

महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि मे टकारा की ओर से प्रति वर्ष की भांति १७ १८ १९ फरवरी ६६ को टकारा मे वृहत ऋषि मेले का आयोजन किया जा रहा है। दिल्ली से स्पेशल ट्रेन से आर्यजनो को टकारा ले आने का कार्यक्रम बनाया गया है।

ऋषि मेले मे राष्ट्र रक्षा वेद, सस्कृत आर्य, महिला युवक, गोरक्षा, सौराष्ट्र आर्य सम्मेलनो का आयोजन है। १३ से वृहद यज्ञ होगा, १८ को शोभा यात्रा निकलेगी। अनेक आर्यगण मेले मे पहुच रहे हैं।

गुरुकुल झज्जर स्वर्ण जयन्ती

आर्यसमाज की प्रमुख गुरुकुल शिक्षा संस्था गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर का स्वर्णजयन्ती महोत्सव १७ से २० फरवरी तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा। प्रमुख आर्य नेताओ ने सस्था की सहायता के लिए ५ लाख रुपये की अपील प्रकाशित की है। संस्था का ऋषि शिक्षा प्रणाली के प्रचार-प्रसार मे उल्लेखनीय योगदान रहा है। आर्य जनता को जयन्ती में सम्मिलित होकर और धन की सहायता करनी चाहिये।

—फतहपुर आर्यसमाज का उत्सव ११ से १४ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

—गया (बिहार) आर्यसमाज का उत्सव ३१ मार्च से ३ अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा

—गुरुकुल सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) का ६८ वा वार्षिकोत्सव १७ से २० फरवरी तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा।

—आर्य मेला प्रचार समिति (शिवशकरी) मीरजापुर की ओर से ३०, ३१ मार्च एव १ अप्रैल को शिवशकरी मेले मे पशु बलि को रोकने के लिए प्रचार शिविर लगाया जायगा।

—आ०स० कटरा बाबा का वार्षिक उत्सव १८, १९, २० फरवरी ६६ को होना निश्चित हुआ है।

आर्य-जगत

निर्वाचन—

कुछ उत्साही व्यक्तियों के सहयोग से डा० रघुवंशसहाय जी के अध्यक्षता में आज दि० २४-१०-६५ को ऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस पर अमीगंज बाजार मे आर्यसमाज की स्थापना की गई जिसमे २१ सभासद् बने और निम्नलिखित निर्वाचन कार्य सम्पन्न हुआ —

प्रधान—श्री तुलसीराम आर्य
उपप्रधान—श्री राधेश्याम पाठक
उपप्रधान—श्री गोपीनाथ मिश्र
मन्त्री—श्री रामफेरन आर्य
उपमन्त्री—श्री लल्लनलाल जी
कोषाध्यक्ष—श्री लालचन्द जी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री विजयनाथ मिश्र

—आर्यसमाज आर्डीनेंस फैक्टरी मुरादनगर।

प्रधान—श्री राजमणि शर्मा, उपप्रधान—श्री रमाशंकरसिंह मन्त्री—श्री रामप्रसाद व उपमन्त्री—श्री दीनानाथ जी।

—स्त्री आर्यसमाज लालगंज रायबरेली

प्रधान—श्रीमती नारायणीदेवी जी, मन्त्रिणी—श्री ज्ञानवती देवी, उपमन्त्रिणी—श्री मायादेवी जी।

—आ०स० बैंरी' जिला फतेहपुर

प्रधान—श्री धर्मपाल जी, मन्त्री—श्री आनन्दीप्रसाद जी त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष—श्री सुरादन गुप्त।

—आ०स० सड़ी चौड पश्चिमी (गढ़वाल)

प्रधान—श्री विश्वम्भरसिंह आर्य, उपप्रधान—श्री भगतराम मन्त्री—श्री राजेश्वरप्रसाद, उपमन्त्री—श्री चन्दनसिंह, कोषा०—श्री राघवानन्द, निरी०—श्री रतनराम।

—आ० स० पुरानी गोदाम गया।

प्रधान—श्री परमेश्वरराम आर्य, मंत्री—श्री वासुदेव नारायण, कोषा०—श्री रामेश्वरप्रसाद मदन्ति।

—आ० स० फोर्ट बम्बई

प्रधान—श्री गुलजारीलाल आर्य, उपप्रधान—डा० एस. एल. व दल और ए. एम. पटेल, मन्त्री श्री के० एस० साल्यन, स० मन्त्री—एस जी साल्यन और एच. श्यामराव कोषा०—एच सीना पुजारी, स० कोषा०—एच एम. शालिवाहन, पुस्त०—मजीद खान।

—आर्यसमाज जेतपुर (सौराष्ट्र)

प्रधान तथा कोषाध्यक्ष—श्री अम्बालाल नरसिंह भाई पटेल उपप्रधान—श्री नारायणदास मेलूमल कटारिया, श्री बैचराज डायाभाई हरिभाई, मन्त्री—श्री परमानन्द भाई जी छुटानी एडवोकेट, उपमन्त्री—श्री भूपतलाल दायजी भाई चोदेल।

—आर्यसमाज खड़गपुर (प०बंगाल)

प्रधान—श्री महादेवप्रसाद गुप्त, उपप्रधान—श्री विजयनारायण जी, मन्त्री—श्री प्यारेलाल वानप्रस्थी, स० मन्त्री—श्री कृष्णदत्त वर्मा शास्त्री, प्रचार मन्त्री—श्री शिवराज जी, कोषा०—श्री युगलकिशोरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीपतिरामसिंह आर्य।

—आर्यसमाज डगरा (गया)

प्रधान—श्री बद्रीप्रसाद राव, उपप्रधान—श्री कृतनारायणसिंह, डा०ब्रह्मानन्द गिरि, मन्त्री—श्री नेमधारीप्रसाद, उपमन्त्री—श्री वैद्य अर्जुनप्रसाद वर्मा, कोषा०—श्री रामेश्वरप्रसाद, ले० निरी—श्री पशुनाथ आर्य, पु०—श्री काशीप्रसाद

—आर्यसमाज टिहरी (गढ़वाल)

प्रधान—श्री महावीरप्रसाद गैरोला, उपप्रधान—श्री बंशीलाल पुंडीर, श्री सच्चिदानन्द पैन्यूली व श्री सुरेन्द्रसिंह पंवार, मन्त्री—श्री भरतसिंह असवाल, उपमन्त्री—श्री गोपालदत्त पैन्यूली, श्री विश्वम्भरदत्त शर्मा, श्री नरोत्तमदेव शर्मा व श्री बदलूराम कोषा०—डा०जगदम्बाप्रसाद बडोनी, निरी०—श्री जयशंकर उपाध्याय, पुस्त०—श्री राम बडोनी।

रक्षाकोष के लिए ५१) मुख्यमन्त्री उ० प्र० को भेजने का निश्चय हुआ।

—आर्यसमाज करौरा जि० बुलन्दशहर।

प्रधान—श्री बालकिशन जी वैद्य, उपप्रधान—श्री श्यामलाल शर्मा व श्री मेवाराम शर्मा, मन्त्री—श्री खेमचन्द आर्य, उपमन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र शर्मा व श्री देवेन्द्रसिंह कोषा०—श्री क्षेत्रपाल गुप्त, पुस्त०—श्री पीताम्बर शास्त्री, निरी०—श्री दफेदारसिंह।

—आर्यसमाज देवलाली

प्रधान—श्री भगवन्तसिंह कपूर, उपप्रधान—श्री ज्वालासिंह जी, मन्त्री—श्री दौलतराम जी चड्ढा, उपमन्त्री—श्री पन्नालाल करकबार।

—आ०स० कमुरी (एटा)

प्रधान—महा० रघुवरदयाल जी, उपप्रधान—श्री पोखपाल जी, मन्त्री—श्री भीमसेन जी, उपमन्त्री—श्री ज्ञानीराम जी, कोषा०—श्री मथुराप्रसाद जी, पुस्त०—म०किशोरीलाल जी। नि०—श्री श्यामलाल जी।

—आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग कोटा।

पुरोहित श्री बद्रीनारायण जी शास्त्री एम० ए० विद्यावाचस्पति साहित्यायुर्वेद की अध्यक्षता मे निर्वाचन सम्पन्न हुआ—

प्रधान—ठा० मदनसिंह आर्य, उपप्रधान—श्री मत्थूलाल आर्य, श्री हरियामोमल जी मन्त्री—श्री रामसिंह वर्मा, उपमन्त्री—श्री भगवतीप्रसाद शर्मा, श्री गोविन्दराम कौशिक, कोषाध्यक्ष—श्री ईश्वरदास।

—आ०स० बहादराबाद जि सहारनपुर

प्रधान—श्री प० रूपसिंह जी, उपप्रधान—श्री मु० शुगनसिंह जी मन्त्री—श्री मा० कबूलसिंह जी, उपमन्त्री श्री मा० बलवन्तसिंहजी निरी०—श्री मा० धर्मसिंह जी पुस्त०—श्री राजाराम शास्त्री

—आ०स० ग्राम बुधवाशहीद पो० बुग्गावाला (सहारनपुर)

प्रधान—श्री यशपालसिंह, उपप्रधान—श्री जंपालसिंह, मन्त्री—श्री जगदीश प्रसाद शर्मा उपमन्त्री—श्री मदनसिंह, कोषा०—श्री नकलीराम, पुस्त०—श्री बजपालसिंह।

—आर्यकुमार सभा मुरादाबाद

प्रधान—श्री रमेशचन्द्र त्रिवेदी, उपप्रधान—श्री सुधीरकुमार गोयल श्री रमेश कुमार, मन्त्री—श्री अजयकुमार, उपमन्त्री—श्री जगदीपकुमार, श्री रमेशचन्द्र कोषा—श्री सतीशकुमार, पुस्त०—श्री राकेशकुमार।

—आ० स० ग्राम मगोलपुरा पो० नूरपुर जि बिजनौर, स्थापित हुई।

प्रधान—श्री बल्लूसिंह आर्य उपप्रधान श्री टेकचन्द आर्य, मन्त्री—श्री रघुवीर सिंह आर्य, उपमन्त्री—श्री जगदीशसिंह आर्य, कोषा०—श्री बलबीरसिंह आर्य, पुस्त०—श्री गजरामसिंह आर्य, निरी० श्री हरकेशसिंह आर्य।

—आ०स० टाडा (फैजाबाद)

प्रधान श्री मिश्रीलाल जी, उपप्रधान श्री रामलखन, श्री सुखमंगल, मन्त्री—श्री विश्वामित्र शास्त्री, उपमन्त्री—श्री रामचन्द्र कोषाध्यक्ष—श्री लक्ष्मीशंकर, पुस्त. श्री रामबहोर, निरी०—श्री रामआसरे, प्रचार मन्त्री—श्री सन्तोषीराम।

—आर्यवीर दल, कलौन्दा बुलन्दशहर

ग्राम नायक—सुन्दरसिंह चौहान, उप ग्रामनायक—कुशलसिंह राघव, मन्त्री—मदनपालसिंह पवार, उपमन्त्री—जयप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष—महेशचन्द्र गुप्त, पुस्त०—महावीरसिंह शिशोदिया, बौद्धिकाध्यक्ष—जयवीरसिंह आर्य, निरीक्षक—वीरेन्द्रसिंह शिशोदिया।

सलाहकार बोर्ड के सदस्य—१ राजकिशोर राघव, २ जगपालसिंह आर्य, ३ रामनाथसिंह आर्य, ४ राम अवतार शर्मा, ५ महेन्द्रसिंह आर्य।

—आर्यसमाज कलकत्ता का निर्वाचन दि० २२-८-६५ को श्री हरिश्चन्द्र जी वर्मा के सभापतित्व में साधारण सभा द्वारा सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री हरिश्चन्द्र जी वर्मा, उपप्रधान—श्री राजेन्द्रसिंह जी मलिक एवं छबीलदास जी मनी, मन्त्री श्री पूनमचन्द जी आर्य, उपमन्त्री—श्री प्यारेलाल जी मनचन्दा, श्री अमरसिंह जी सेनी, श्री श्यामराव जी कोषाध्यक्ष—श्री किशोरीलाल जी दवे हिसाब परीक्षक श्री लक्ष्मणसिंह जी पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामेश्वरदयाल जी गुप्त एवं अन्य १४ अन्तरंग सदस्य निर्वाचित किए गये।

—आ०स० अजमेर का वार्षिक अधिवेशन ता० १९ सितम्बर १९६५ रविवार को श्री दत्तात्रय जी वाल्ले प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री दत्तात्रेय जी वाल्ले एम०ए०, आचार्य दयानन्द कालेज, अजमेर, उपप्रधान—श्री डा० नित्यानन्द जी राजपाल, श्री शिवदत्त जी शर्मा, मन्त्री—श्री सूर्यदेव जी शर्मा, उपमन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र जी व श्री राजसिंह जी एम० ए०, कोषा०—श्री मक्खनलाल जी, पुस्त०—श्री मदनमोहन जी लवानिया एम० ए०।

—श्री मद्दयानन्द अनाथालय अजमेर की १९६५ ६६ की प्रबन्धकारिणी सभा के लिए श्री दत्तात्रेय जी वाल्ले एम. ए. आचार्य दयानन्द कालेज अजमेर सर्व सम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

आपके अतिरिक्त उपप्रधान—श्री सोमदत्त भार्गव बी एस सी, एल एल बी असिस्टेंट डिवीजनल, एल. आई सी. अजमेर, मन्त्री—श्री रमेशचन्द्र माथुर एडवोकेट, उपमन्त्री—श्री नन्दकिशोर मेहरा, तथा श्रीमती भण्डारी, श्रीमती ललितादेवी वाल्ले, श्रीमती सुशीलादेवी भार्गव, श्री मथुराप्रसाद माथुर श्री कृष्ण राव वाल्ले, श्री आर सी. मेहरा, श्री डा० ताराचन्द्र, श्री चावकरण गर्ग एडवोकेट आदि १६ प्रतिष्ठित सदस्य चुने गये।

—आ०स० (राजेन्द्रप्रसाद मार्ग) आलमा

प्रधान—श्री ओम्प्रकाश अग्रवाल, उपप्रधान—श्री कवरलाल मक्कड, मन्त्री—श्री रामचन्द्र आर्य उपमन्त्री—श्री सौ सविता देवी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री होतचन्द, प्रतिनिधि—श्री घनश्यामदेव शर्मा, आय-व्यय निरीक्षक—श्री फूलचन्द।

आवश्यकता

एक १७ वर्षीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण हायर सेकेण्डरी कक्षा १० मे पढ रही गृहकार्य एवं सिलाई मे दक्ष (ज्ञातव्य) के लिए बारोजगार अच्छे शिक्षित कान्यकुब्ज ब्राह्मण आर्यसमाजी वर की आवश्यकता है दहेज ठहराने वाले, रूढ़िवादी व्यक्ति पत्र व्यवहार न करें।

पता—वैद्य शिवदत्त शा० आर्य
शा० औषधालय, पो० नावनी
जिला शाजापुर (म०प्र०)

चाणक्य की युद्ध-नीति

[श्री ब्रह्मदत्त शर्मा]

भारत क नीति में चाणक्य का बहु ड़ा स्थान है। उन्होंने अपने से पूर्व प्रवर मनु बृहस्पति, भरद्वाज, शुक्र आदि क मनों का जहा तहां उल्लेख किया है। उन सबकी राजनीति, अर्थ-नीति और युद्धनीति का समन्वय बड़ी प्रौढ़ता से किय है। पर युद्ध और अर्थ नीति के वे परमाचार्य माने गये हैं। शतसहस्रों छोटे छोटे गण-राज्यों को एकत्र क उन्होंने विशाल भारतीय राष्ट्र को जन्म दिया। उन दिनों तक्ष-शिला का राजा आम्भीक, शक्तिशाली पर्वतक और मगध का राजा महानन्द तीनों की आपस मे प्रतिस्पर्धा थी। एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए तत्पर इन सबको एक-एक करके नष्ट करने के लिये सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया। चाणक्य ने यह ताड़ लिया। उन्होंने पहले पर्वतक के हाथो भेदनीति से काम ले सिकन्दर की खासी दुर्गति कराई। फिर आम्भीक को युद्ध-नीति का अवलम्ब ले नीचा दिखाया।

महानन्द बड़ा सम्पन्न और ऐश्वर्य वाला था, परन्तु उद्धत और प्रजापीड़क। चाणक्य ने पहले तो उसके महामन्त्री सुबुद्धि शर्मा से जो राक्षस मन्त्री नाम से प्रसिद्ध हैं, ठीक रास्ते पर उसको लाने क लिये अनुरोध किया। पर जब सफलता न मिली, तो इन सबको ठिकाने लगाने के लिए जो कि अखिल भारतीय दृष्टि से शून्य थे, एक नये राजा चन्द्रगुप्त को मगध मे ला खड़ा किया। युद्धनीति क परम पण्डित चाणक्य के सामने न विदेशी और न प्रान्तीय दृष्टि से देखने वाले राजा ठहर सके। चाणक्य की प्रशंसा इन शब्दों में इतिहासवेत्ताओं ने की है—

> वंशे विशाल वंश्या ना,
> ऋषीणामिव भूयसाम्।
> अप्रति ग्राहकाणां यो,
> बभूव भुवि विश्रुत ।७।
> जातवेदा इवार्चिष्मान,
> वेदान् वेदविदांवर।
> यो अधीतवान् सुचतुर
> चतुरोऽप्येक वेदवित्।।

वे चाणक्य उस प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार मे उत्पन्न हुए थे, जिसके सदस्य ऋषि तुल्य थे, दान दक्षिणा नहीं लेते थे और समाज में सम्मान का सर्वोच्च स्थान जिन्हें प्राप्त था। चाणक्य होमाग्नि के समान ज्योतिर्मय, वेदज्ञ क आदर्श को अपनाने वालों मे अग्रगण्य थे— अपनी प्रतिभा से चारों वेदों पर एक जैसा अधिकार था।

> अस्याभिचार व्रजेण
> वज्रज्वलन तेजस
> पपात मूलत श्रीमान्,
> सुपर्वा नन्द पर्वत।।
> एकाकी मन्त्रशक्त्या य,
> शक्त्या शक्तिधरोपम।
> आजहारनृचन्द्राय,
> चन्द्रगुप्ताय मेदिनीम्।८।

चाणक्य ने अपनी अलौकिक शक्ति के दीप्त वज्र से पर्वततुल्य विशाल नन्द वंश को धूल मे मिला दिया। उस अकेले ने अपनी बुद्धि प्रतिभा तथा देव सेना-पतियों जैसी वीरता से चन्द्रगुप्त को लोक-प्रिय राजा तथा पृथ्वीपति बना दिया।

चाणक्य ने सर्वोपरि युद्धनीति को माना है। उनका मत था कि युद्ध डटकर करना चाहिए। शत्रु जब तक हथियार न डाल दे और मुख मे तिनका न ले, भारी युद्ध सामग्री समर्पित न कर दे, तब तक उसे मारता ही रहे। यह न समझे कि अब यह हीनबल है अतएव दया का पात्र है। उन्होंने कहा है—

राजनैतिक समस्याएं

'—समानेन संधि न कुर्वीत।।

अर्थात नीतिमान बलवान राष्ट्र के लिये यह कदापि उचित नहीं है कि वह पापी निर्बल शत्रु का संग्राम भूमि मे उसे बिना मिटाये उसकी मीठी बातो मे आकर सन्धि कर। उसे भविष्य मे शक्ति-मान बनकर, शत्रुता करते रहने के लिये जीवित न रहने दे, क्योंकि शत्रु को जीवित रहने का अवसर देना राजनीतिक मौत रूपी भयकर प्रमाद है। असह्य गफलत है। तेजस्वी सर्वथा रहना चाहिए कल्याण इसी में है। क्यो?

'तेजो हि सन्धानहेतुस्तदर्थानाम।।

कोष तथा दण्ड देने की योग्यता तेज कहाता है। धन भण्डार कोष कहाता है। दमन तथा सेना ये ही दो दण्ड के भेद हैं। दूसरे के किए अधिक्षेप या अपमान को न सहना तथा इस असहन मे प्राणोत्सर्ग तक कर देना तेज है। चाणक्य का अभिप्राय यह है कि चिर-काल तक निष्प्रभ होकर जीने की अपेक्षा ज्वालमाला के साथ जीना ही शोभा की बात है। क्योंकि अतुल परा क्रमी प्राणो की परवाह न कर शत्रु को जब दबोच लेते हैं तो युद्ध सामग्री उनके हाथ स्वत आ जाती है। यह धन प्राप्ति है जो तेज दिखाने मे आती है।

चाणक्य का मत था कि यदि शत्रु आततायी हो तो उसे अधिक सेना लेकर नष्ट करे। आततायी उसे कहते हैं, जो गांव जला दे, बच्चों को मार दे, स्त्रियो का अपहरण करे।

'गजपाद विग्रह मिव बलवद् विग्रह।'

शत्रु का दमन करने के लिए उससे अधिक शक्तिशाली बनकर अर्थात उसे हाथी के पैर के नीचे कुचल डालने जैसी उससे कई गुनी शक्ति एकत्र करने के पश्चात ही उससे युद्ध ठाने। उत्कृष्ट युद्ध नीति यही है। सदा वैसी बुद्धि रखने वाले का दमन करना ही अचूक उपाय है।

कई बार ऐसे प्रसंग भी आ जाते हैं कि समान बली से लड़ना उचित नहीं होता या शत्रु अधिक बलवान है तब क्या करे? चाणक्य कहते हैं कि तब बुद्धि बल का उपयोग करे।

> 'एक हन्यान्न वा हन्यात
> इषुर्मुक्तो धनुष्मता।
> बुद्धिर्बुद्धिमतोत्सृष्टा
> हन्ति राष्ट्रं स नायकम।।

अर्थात धनुषधारी का छोड़ा एक बाण अपने लक्ष्य को मार सके या न मार सके परन्तु बुद्धिमानो की प्रयुक्त बुद्धि नायक या राजा समेत शत्रु राष्ट्र का ध्वंस कर डालती है। इसी तरह उन्होंने स्वयं नन्द आदि राजाओं का नाम मिटा दिया था।

अरि प्रयत्न मभि समीक्षेत'

अर्थात शत्रुओ के प्रयत्नो, चेष्टाओ उद्यमों, राज्य लाभों परराष्ट्रों से की हुई उनकी सन्धियां आदि को अपने गुप्तचरो द्वारा ठीक ठीक जानता रहे। आत्मरक्षा मे पूरी सावधानी का व्यव-हार करे। वैरियो की गतिविधियों का चौकन्ना रहने पर भी पता चल सकता है। यदि शत्रु चैन न लेने दे, तो मित्रता किससे करे। चाणक्य का अभिमत है—

> शक्तिहीनो बलवन्तमाश्रयेत,
> विशेषत धार्मिकम।'

अर्थात यदि साधनो की कमी हो, तो राजा किसी ऐसे राष्ट्र से सहायता ले जिससे उसकी सेना के पास शस्त्रों की कमी न रहे तथा उसे इच्छित धन भी मिले। पर इस बात का अवश्य ध्यान रखे कि वह धार्मिक हो अपने वचनों को पूरा करे, और सब्र म देश का कुछ हिस्सा न माग बैठे। यह न करने पर उसकी सहायता प्राप्त ज्ञान प स्वाधीनता रक्षा। कम'

अनिवृत्त राजानम् आश्रयत।

अर्थात किसी राजा से सहायता का सम्बन्ध जोड़ने पर उसकी ओर से अग्नि के सम्बन्ध के समान, उसे अपनी हानि न करने देने को सावधान हो व्यवहार करे। प्रयोजन यह कि उससे इतना न घुल मिल जाय कि वह जब चाहे विश्वासघात कर गला घोंटने को उतारू हो जाए। जैसे आग में जल मरना आग का दुरुपयोग है। परन्तु उसकी दाहिका शक्ति को आत्मरक्षा का साधन बना लेना जाड़े मे आग सेंकने के समान, सदुपयोग है। अनेक युद्धों का प्रसंग आने पर या एक शत्रु से ही युद्ध छिड़ने पर राजद्रोही संगठनों का विनाश या अन्त कर दे—

'द्वयोरपीष्यतो द्वैधी भाव कुर्वीत।'

अर्थात राष्ट्र के ऐश्वर्य से, उसकी समुन्नति से ईर्ष्या रखने वाले विरोध के लिए ही सम्मिलित होने वाले नेताओं की कौन कहे दो व्यक्तियों तक में अपने कूट प्रयोगो स पारस्परिक मनमुटाव पैदा कर ईर्ष्यालुओं की महत्वाकांक्षा को दबा ही न दे। उनके अस्तित्व को ही भस्म कर दे। विरोधी अपना दल ही न बना सकें, ऐसा प्रयत्न करे।

सेना पर पूर्ण नियन्त्रण रखने के लिए युद्ध मन्त्री कैसा हो, इस बार में कहा गया है—

> मानी प्रतिपतिमानात्म,
> द्वितीय मन्त्रिणमुत्पादयेत।'

अर्थात खुद अपनी सूझबूझ रखने वाले मानी, उन्नतचेता, विचारशील, यशस्वी और राष्ट्र का अभिमान रखने वाले मन्त्रि-लक्षणो स पूर्ण व्यक्ति को जो सद्गुणी और स्वराष्ट्रवासी हो, युद्ध मन्त्री का पद द। प्रधान को चाहिये कि प्रधान मन्त्री के अतिरिक्त, अन्य मन्त्रियों से मन्त्रणा करने के अवसर पर उन्हे कल्पित घटनाय बताकर इस प्रकार सम्मति लिया करे कि वैसा हो तो क्या करना चाहिये। उस समय जो दत्तचित्त हो और जागरूकता स उत्तर दे वही युद्ध मन्त्री का अधिकारी है। प्रयोजन यह कि राष्ट्रपति प्रधान मन्त्री और युद्ध मन्त्री ही युद्ध स्थिति मे करने या कुछ कहने का उत्तरदायित्व सम्भाले। साथ ही 'श्रुतवान, उपधाशुद्ध युद्ध मन्त्रिण कुर्यात। तर्कशास्त्र दण्डनीति वार्ता आदि विद्याओ म पारंगत, लोभ रहित व्यक्ति को ही युद्ध मन्त्री बनाना चाहिये। साथ ही—

सर्वदारम्भा [illegible] आरभेत।'

[illegible]

चाणक्य [illegible] भारत का एक नक्शा लेकर उन्होंने सर्वत्र राष्ट्रीयता का उपदेश दिया था। अपने युद्ध प्रयत्नो मे सफलता प्राप्त कर,

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

माघ १७ शक १८८७ फाल्गुन कृ० १
(दिनाक ६ फरवरी सन् १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष्य : २५९९३ तार : "आर्य्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

जब वे चन्द्रगुप्त को भारत का अधीश्वर बना चुके, तो उन्होंने प्रधान मन्त्री पद छोड़ दिया और सुबुद्धि शर्मा उपनाम राक्षस को विनयपूर्वक उस पद पर बैठाया। [illegible] सज्जन नीयम पराक्रमी थे। साथ ही उनका डीलडौल भी बड़ा प्रभावशाली था। बिना दण्ड के राज्य शासन चल ही नहीं सकता। इन दोनों की यही मान्यता थी। राष्ट्र द्रोहियों को प्राण-दण्ड देने का चाणक्य ने कई बार उल्लेख किया है। वैसे चाणक्य का अपना जीवन बड़ा त्यागमय रहा। एक कुटी, बैठने को कुशासन, हवन के लिए समिधायें और छात्रों को राजनीति पढ़ाना। परन्तु राष्ट्र सबल रहे, इसके लिए युद्ध उनका नारा था। दण्ड राजधर्म। उनका यह कथन कितना सही है कि—

'सर्वो दण्डजितो लोको,
दुर्लभो हि शुचिर्नरः।

अर्थात् संसार के लोग दण्ड भय से ही कर्तव्य करते और अकर्तव्य से बचते हैं। कितने मनुष्य हैं जो निष्ठापूर्वक कर्तव्य पालन करते हैं। चाणक्य का कथन है कि "युद्धोत्साहे लक्ष्मीर्वसति। यदि युद्ध में तत्पर रहोगे, शत्रु को पछाड़कर ही सांस लोगे तो विजय श्री निश्चय ही गले में माला पहनाएगी।

"युद्धशास्त्रामृत धीमान्,
अर्थशास्त्र महोदधेः।
समुद्दध्रे नमस्तस्मै,
विष्णु गुप्ताय वेधसे।'

अर्थात् समाज निर्माता जगद्वरेण्य उन विष्णुगुप्त चाणक्य को प्रणाम है, जिन्होंने अर्थशास्त्र के महा समुद्र में से युद्ध शास्त्र अर्थात् नीतिरूपी अमृत को निकाला।

★

राष्ट्र-निर्माण

(पृष्ठ २ का शेष)

की वितृष्णा और लोकेषणा की मृगमरीचिका मे भटक कर, बड़े-बड़े तथाकथित आदर्श मनीषियो को भी चारो खाने चित होते देखा गया है। १९४७ से अब तक लगभग दो दशक होने को आये किन्तु हमने 'बृहद् भाव' या शिव व्यापकता के स्थान पर प्रायः अशिव सकीर्णता को प्रश्रय दिया है। ग्राम-सभा से लेकर ससद तक के निर्वाचनों के अवसर आने पर वर्ग, जाति, पन्थ के भेदों और जातियों को चौड़ी होने में सर्वत्र सफलता मिलती रही है। आज भी, इसी व्यापकता के अभाव में प्रमुख प्रदेशों में सत्तारूढ़ दल गुटबाजिता के नग्न तांडव में उलझा हुआ है। उसे मातृभूमि की सुरक्षा की अपेक्षा, अपनी कुर्सी और प्रतिष्ठा की अधिक चिन्ता है। अन्य प्रतिपक्षी दल भी नारेबाजी से आगे नहीं गये हैं। परिणाम यह हुआ कि स्वाधीन भारत की जनता और पराधीन भारत की जनता के जीवन-स्तर में कोई अंतर नहीं आ सका। लगता तो ऐसा है कि पहिले की अपेक्षा वर्तमान समय में जनता अधिक गुमराह, अधिक भ्रष्ट और अधिक असंगठित हुई है। आवश्यकता इस बात की है कि हम व्यापकता का महत्व केवल समझें ही नहीं वरन् सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक आचरण के आधार पर जनता को भली भाँति समझाए भी। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि संप्रदाय नहीं मिटते। चाहे नाम परिवर्तन किये जांय; चाहे उपनामो का प्रयोग वर्जित कर दिया जाय; चाहे कानून पर कानून पास कर लिये जांय; संप्रदाय बदस्तूर कायम रहेंगे। हमें तो सांप्रदायिकता से लड़ना है जिसे तुष्टीकरण के सहारे, कभी भी हराया नहीं जा सकता। उसके लिए ठोस शिक्षा, ठोस जीवन-क्रम और ठोस रचनात्मक प्रयास करते हुए, एक जुट होना पड़ेगा। यदि हम में 'बृहत्' की अनुभूति न हुई तो हम मध्यकालीन अवशेषों की भांति बने रहकर कुछ दिनों में ही अपनत्व खो बैठेंगे। बृहद् भाव यह है कि कुटुम्ब रहे पर दूसरे कुटुम्बों का विनाश न करें: सम्प्रदाय पनपें पर अन्य सम्प्रदायों के मार्ग अवरुद्ध न करें और दल फूलें-फलें पर अन्य दलों से घृणा न करें। इसी की नींव पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अट्टालिका खड़ी की जा सकती है।

(ड) ऋतम्—हम कितना ही सत्य का पालन क्यो न करें तथा व्यापकता के आधार पर अपने आचरण क्यों न ढालें, बिना 'ऋत' तत्व के उन्नत नहीं हो सकते। 'ऋत' का अर्थ है 'नियम बद्धता और सरलता'। यदि हम नियमबद्ध रहे होते और सरल निष्कपट बन गये होते तो सम्भवतः भ्रष्टाचार, पारस्परिक कलह और बेतहाशा जन-सख्या वृद्धि का यह भयंकर स्वरूप दिखाई न देता।' हमने जीवन के क्रम भुला दिये; नियमबद्धता की धज्जियां उड़ा दीं और योग्यता क्षमता एवं कुशलता को नकार कर, सिफारिश, तिकड़म और चाटुकारिता की दासता स्वीकार कर ली। फल यह हुआ कि हमारे सारे नियोजित स्वप्न खटाई में पड़ गये हैं; विषमता बढ़ी है; कार्य-क्षमता फाइलों के नीचे दबकर कराहने लगी है और अयोग्य जनों की दसों अँगुलियाँ घी में हैं। योग्य जनों को अपने पर विश्वास नहीं रहा है; जन-असन्तोष धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा है और सिफारिश की सत्ता चारों ओर छायी हुई है।

इस 'ऋत' तत्व के भी स्थूल रूप से तीन भेद किये जा सकते हैं—

(१) जनता, शासन, शास्त्र एवं असहाय जनों के उद्धारक-संरक्षक वर्ग की सैद्धान्तिक व्यावहारिक शिक्षा, प्रशिक्षण-व्यवस्था एवं संतुलन निर्मात्री संस्थाओं में सरलता तथा नियमबद्धता।

(२) व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, देश एवं विश्व की समग्र व्यापक पीठिका के आधार पर भाषा, धर्म, संस्कृति, सभ्यता एव एकता की प्रायोगिक- तीव्र गतिशील सरलता एवं नियम बद्धता और—

(३) ज्ञान-विज्ञान, शक्ति, क्षमता, साधन, साध्य आदि समस्त पृथक्-पृथक् क्षेत्रों को एक में अनुस्यूत और संतुलित-समन्वित करने वाली निष्पक्ष, निस्पृह स्वयंभुवी कल्याणी सरलता एवं नियम बद्धता।

उपर्युक्त तीनों भेदों को जान परख कर, बिना ऋत तत्व के अमली जामा के हम कुछ दिन, मास या वर्ष तक भले ही मातृभूमि की सत्ता पर आंच न आने दें पर कालान्तर में उसे बचा न सकेंगे।

(ई) उग्रम्—इसका तात्पर्य है वीरता, शौर्य और युद्ध सामर्थ्य। अव्यावहारिक अहिंसा की माला जपने से किसी भी राष्ट्र की रक्षा होना एक असम्भव बात है। संसार शक्ति की भाषा सुनने का अभ्यस्त है। प्रारम्भ से लेकर आज तक, इतिहास के पृष्ठो से यही साबित होता है कि बिना शौर्य एव युद्ध सामर्थ्य के विकास के किसी भी राष्ट्र का भला नहीं हुआ है। हमने अहिंसा और शान्ति की आकाश कुसुमी सुरभि में खोकर जिस नपुन्सकता और विलासी ऐय्याशी को बढ़ावा दिया था उसका दुष्परिणाम १९६२ में सामने आ चुका है। शौर्य के थोड़ा-सा लक्षण दिखते ही, दिल्ली भाई पाकिस्तान के हौसले पस्त हो गये, पैटन टैंकों का दिवाला निकल गया और स्वार्थी कूटनीतिज्ञों की भाषा भी बदलती दिखाई पड़ी। शौर्य पूरे के पूरे परिवेश को परिवर्तित कर देता है।

इस शौर्य की तीन कोटियाँ निर्धारित की जा सकती हैं—

(१) समस्त अधुनातन उपकरणों से युक्त नियमित सैन्य सन्नद्धता तथा ऐच्छिक या अनिवार्य सैन्य शिक्षा के माध्यम से समस्त वयस्क लोक जीवन में युद्ध-सामर्थ्य युक्त सर्वाङ्गीण विकास-परक शौर्य—

(२) उत्साह, तेजस्विता, क्षमता, आदि उन्नतप्रद गुणों के विकास एवं हीनता, कायरता, अक्षमता आदि अवगुणों के समूलोच्छेदन की व्यावहारिक प्रक्रिया द्वारा सर्वाधिक सक्षम गुप्तचर-व्यवस्था एवं जन-मनोबल के स्थायित्व के हर सम्भव प्रयत्न से पूर्ण शौर्य और—

३—आर्थिक, समाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक, वैज्ञानिक समस्त पक्षों से संबद्ध कार्य कलापों सिद्धान्तों व्यवहारों एवं दशानों से प्रवर्द्धमान शौर्य।

यथार्थ जीवन की पगडंडी पर यही अनुभव हुआ है कि हमें सदैव उग्र बने रहना है। युग की अविराम दौड़ के साथ-साथ हमें अपनी युद्ध-सामर्थ्य जगाये रखनी है। आदर्शों की पंखें छोड़कर यथार्थ की बुनियाद मजबूत करने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि ब्रह्मास्त्र, पाशुपतेयास्त्र, नारायणास्त्र जैसे आयुधों का निर्माता भारत अणुबम या उससे भी अधिक शक्तिशाली बम का निर्माण करने के लिए सन्नद्ध हो जाये। युग की पुकार न सुनने से मातृभूमि के रक्षकों का मनोबल घट जाता है। —क्रमशः

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य्यभास्कर प्रेस, ५मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित, प्रकाशित

आर्य विद्वान् महोपदेशक शास्त्रार्थ महारथी—
श्री पं. बिहारीलाल जी शास्त्री
७५ वीं वर्षगांठ पर शुभ-कामनाएँ

★

महान् उपदेशक पंडित बिहारीलालजी काव्यतीर्थ

आर्य्यजगत मे श्री पंडित बिहारीलाल जी को लोग जितना जानते हैं उतना मुझको नहीं जानते। अत उनके सम्मान के लिए मेरी साक्षी का मूल्य नहीं है, तथापि मेरे हृदय मे उनके लिए जो आदर है उसका प्रकाशन मेरा कर्तव्य है। यह उचित ही है कि बरेली के आर्य भाई बहिन उनका अभिनन्दन कर रहे हैं। मैं श्री पंडित बिहारीलाल जी को लगभग ५० वर्ष से जानता हू। कुछ ऐसी धुधली सी याद है कि पहले महायुद्ध के अवसर पर मुझे उनके दर्शन मुरादाबाद आर्यसमाज के एक उत्सव में हुए थे। वह शायद उन दिनों बरेली में रहते थे। वह प० जी के कार्यों का आरम्भिक काल था। उनके उस समय के भाषण ओजपूर्ण होते थे। उनकी यह विशेषता दिन प्रतिदिन अधिक उज्ज्वल होती गई, और मेरा उनका सम्बन्ध भी अधिक दृढ़ होता गया। पण्डित जी के भाषण की विशेषता है 'व्यावहारिक मूल्य'। जनता का हित ही उनके भाषण का उद्देश्य होता है। वह ऐसी बात नहीं कहते कि लोग प्रशसा तो करें परन्तु समझ न सकें। वर्तमान परिस्थिति का विश्लेषण उनकी वक्तृताओं का विशेष गुण है। वह इस वृद्धावस्था मे भी अपने पूर्व उत्साह को सुरक्षित रखते हैं। श्री बिहारीलालजी काव्यतीर्थ तो हैं ही। शास्त्रार्थ करने मे भी दक्ष हैं, और कई पुस्तकों के रचयिता भी हैं। वह मुझसे तो आयु मे बहुत छोटे हैं। अत यह अनुचित न होगा यदि मैं अभिनन्दन के साथ आशीर्वाद को भी सोमरस में आशी (दधि) की भांति मिश्रित कर दूँ। मैं उनकी पिछली सेवाओं के लिए उनको और आर्यसमाज को बधाई देता हू। ईश्वर उनके भविष्य को उनके अतीत से अधिक दीप्ति प्रदान करे।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय, इलाहाबाद

वाणी के धनी

व्याख्यान वाचस्पति श्री प० बिहारीलाल जी एक सुयोग्य विद्वान हैं तथा अच्छे वाग्मी हैं। शास्त्रार्थ मे निपुण एव वाणी के धनी हैं। आपने आर्य समाज के लिए गौरवपूर्ण कार्य किया है। प्रभु उन्हे चिरायु दे शतायु बनें, जिससे महर्षि के कार्य को उनके द्वारा पूर्णगति प्राप्त हो। देश उनकी सेवाओं से पूर्णतया लाभान्वित हो।

—प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास
प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

महर्षि मिशन के आदर्श प्रचारक

श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री की सेवाओं से आर्यजगत पूर्णरूपेण परिचित है। पंडित जी ने अपने सारे जीवन मे शास्त्रार्थ प्रचारों और लेखों से आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार किया। कहना चाहिये कि सारा जीवन इस कार्य में लगाया और अब वृद्धावस्था मे भी उसी प्रकार प्रचार कार्य मे सलग्न हैं।

शास्त्रीजी की वाणी मे बल है और युक्ति एव चातुरी मे ओजस्विता है। विधर्मियों से शास्त्रार्थ करने मे उनकी एक पटुता यह भी है कि वे चुटकियों

श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री को आर्यसमाज सुभाषनगर के मन्त्री भेंट दे रहे हैं।

और चुटकुलों पर बडे बडों को परास्त कर देते हैं। आपके भाषण में विशेष प्रभाव हैं।

सम्पूर्ण जीवन महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार करने वाले इस विद्वान् पण्डित की सेवाओं के प्रति आर्य समाज चिर ऋणी रहेगा।

माननीय शास्त्री जी से मेरा परिचय बहुत पुराना है। वे जब भी मिलते हैं प्रसन्नता होती है और उनकी मजेदार कहानियाँ और हास्यप्रद उक्तियाँ तो हसते हसते लोट पोट हो जाने की स्थिति उत्पन्न कर देती हैं। उनके कार्यों के लिए कुछ भी कहना थोडा हैं। उन का अभिनन्दन एक प्रशसनीय आयोजन है।

——वैद्यनाथ शास्त्री
अध्यक्ष-अनुसन्धान विभाग
सार्वदेशिक सभा, देहली

तार्किक व्याख्यान वाचस्पति

आर्यसमाज के अथक विचारक, प्रसिद्ध एव तार्किक व्याख्यान वाचस्पति श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ की अमूल्य सेवाओं का मूल्याङ्कन कठिन है।

श्रद्धेय पण्डित जी ने अपने इस ५० वर्ष के निरन्तर प्रचार कार्य मे जहाँ वाणी का समुचित प्रयोग किया है वहाँ अपनी प्रभावशालिनी लेखनी का भी उन्होने निरन्तर प्रयोग किया है।

प० बिहारीलाल जी निश्चय ही एक आदर्श वैदिक मिशनरी हैं। और आर्यसमाज के प्रचारकों के प्रेरणा के एक आदर्श स्रोत हैं।

मैं पण्डित जी के दीर्घ यशस्वी जीवन की प्रभु से कामना करता हू।

—शिवदयालु मुख्योपमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

प्रतिभा के धनी

श्रद्धेय प० बिहारीलाल जी शास्त्री आर्यसमाज के अहर्निश प्रचारक तथा तथा कुशल विचारक हैं, आर्यसमाज के सिद्धान्तों तथा तत्वों को आपने जिस विद्वत्ता गम्भीरता तथा प्रखरता से जनता के सामने लाया है उससे चकित रहना पडता है आप वाणी तथा लेखनी दोनों के धनी विद्वान हैं। आपकी तार्किक प्रतिभा के समक्ष विपक्षियों को अपने पक्ष-प्रतिपादन मे मौनावलम्बन ग्रहण करना पडता है। ऐसे विद्वान् आर्यसमाज के गौरव तथा आदर्श के प्रतीक हैं। मैं शास्त्री जी के दीर्घ जीवन की कामना करता हू, जिससे कि वे आर्यसमाज की अधिकाधिक वाणी सेवा तथा साहित्यिक साधना करने में सफल हों।

—वासुदेव प्रधानमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार (पटना)

उपदेशकों के प्रकाश-स्तम्भ

श्रीमान प० बिहारीलाल जी शास्त्री प्राचीन ब्राह्मणों के समान नि स्पृह, त्यागी तथा तपस्वी हैं। आपने समाज में मिथ्या पाखण्ड द्वारा यश की कामना नहीं की अपितु सर्वथा मिथ्या प्रशसा, बाहरी आडम्बर से दूर भागते रहे। सभाओं के निर्वाचन एव पार्टीबाजी मे भी इस महान् पुरुष ने अपने को सलग्न नहीं किया। आपके सामने केवल यही उद्देश्य रहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती की कल्याणी वाणी का प्रचार तथा प्रसार दिग दिगान्तर में कैसे हो।

आप कुशल वाग्मी तार्किक तथा शास्त्रार्थों मे प्रत्युत्पन्न मति हैं। व्याख्यान द्वारा जन मानस मे गूढ़ सिद्धान्तों का, ललित भाषा के माध्यम से सरलतया प्रविष्ट कराने मे वे परम प्रवीण है। इनमे वैदिक मिशन के प्रति श्रद्धा अदम्य उत्साह तथा सर्वजन स्पृहणीय तपस्या है।

हम वैदिक धर्म के प्रचारक बिहार के आर्यसमाजी उनके कृतज्ञ हैं। बिहारी लाल जी बिहार के उपदेशकों के प्रकाश स्तम्भ हैं। इन शब्दों ... यश की पुष्पाञ्जलि अर्पित करता हुआ परमपिता परमेश्वर से उनकी दीर्घायु की कामना करता हू।

स्व जीव शरद शतम्।

—रामानन्द शास्त्री पटना

आर्यसमाज के स्वर्ण रत्न

व्याख्यान वाचस्पति, शास्त्रार्थ महारथी श्रद्धेय प० बिहारीलाल जी आर्यसमाज के उस स्वर्ण युग के अवशिष्ट रत्न हैं जब प्रचारक धनी अपना सर्वस्व आर्यसमाज के लिए अर्पण कर देते थे, न परिवार की चिन्ता और न कष्टों की परवाह।

आपका अध्ययन विस्तृत तथा आलोचना गम्भीर और पैनी होती है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि आपको सुखद दीर्घ आयु प्रदान करें।

—डा० राजबहादुर उपप्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा राजस्थान

वैदिक प्रार्थना

पुरूतम पुरूणामीशान वार्य्याणाम्। इन्द्र सोमे सचा सुते ॥

ऋ० १।१।९।२॥

व्याख्या—हे परात्पर परमात्मन ! आप "पुरूतमम्" अत्यन्तोत्तम और सर्व-शत्रुविनाशक हो तथा बहुविध जगत् के पदार्थों के "ईशान" स्वामी और उत्पादक हो "वार्य्याणाम" वर, वरणीय, परमानन्द मोक्षादि पदार्थों के भी ईशान हो "सोमे" और उत्पत्तिस्थान संसार आपसे उत्पन्न होने से "इन्द्रम्" परमैश्वर्य्यवान आपको (अभिप्रगायत *) हृदय में अत्यन्त प्रेम से गावैं, यथावत् स्तुति करें जिससे आपकी कृपा से हम लोगों का भी परमैश्वर्य्य बढ़ता जाय और परमानन्द को प्राप्त हों।

—आर्याभिविनय

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार १३ फरवरी १९६६, दयानन्दाब्द१४१, सृष्टिसंवत्१,९७,२९,४९,०६६

बोध-सप्ताह सफल करें
१२ से १८ फरवरी

महर्षि दयानन्द की बोध स्मृति में आर्यजगत् १२ से १८ फरवरी तक बोध सप्ताह मना रहा है। यह कार्यक्रम आर्य समाज के मुख्य कार्यक्रम में माना जाता है।

इस दिवस का इतिहास सुप्त भारत को जगाने का इतिहास है क्योंकि इस दिवस की घटना ने भारत को ऐसा दिव्य पुरुष प्रदान किया कि जिसे जीवन भर सत्य की खोज रही, जो ईश्वर प्राप्त करने घर से निकल पड़ा और उसने जनता जनार्दन एवं भारत माता के करुण-क्रन्दन को सुनकर अपनी सारी साधना तपस्या संसार उपकार में लगा दी। महर्षि दयानन्द ने शिवरात्रि पर पिता की आज्ञानुसार व्रत किया पर जब वे मूर्ति के शिव को सच्चा शिव स्वीकार न कर सके तब गृह त्याग ही एकमात्र उपाय रह गया। एक सच्चा जिज्ञासु सच्चे ईश्वर की खोज मे घर से निकल पड़ा लौकिक दृष्टि से वह निराधार और निराश्रित था परन्तु सर्वेश्वर सर्वान्तर्यामी का सर्वाधार उसे प्राप्त था। सत्य मार्ग का पथिक अपनी मंजिल तक पहुंचा और उसने संसार को समझाया कि ईश्वर सर्वव्यापक है और उसकी प्राप्ति में कोई माध्यम नहीं हो सकता, जीवात्मा परमात्मा का सीधा सम्बन्ध है। इस सत्य को स्वीकार करने में लोग घबराये पर सत्य यही था, संसार ने इस रहस्य को पहचाना और माना। सत्य और ईश्वर की खोज के साथ-साथ उस महात्मा के हृदय में एक टीस थी और वे प्रभु के सम्मुख करुणापूर्ण वाणी में कहा करते थे कि हे प्रभो अपने भक्तों को अपने पुत्रों अपने प्यारे भारतवासियों को कष्टों से उबरने की शक्ति क्यों नहीं प्रदान करते? महर्षि ने देश को जगाया, समाज की सड़ांध को साफ किया, अध्यात्म की स्वच्छ वायु को प्रवाहित किया और देश के गौरव की पुनर्स्थापना कर एक नयी शक्ति उत्पन्न की, पांच हजार बरस से सोने वाले भारतवासियों को उनके डिमडिम नाद और पाखण्ड खण्डन ने सतर्क और सचेष्ट बना दिया, राष्ट्र ने आत्मनिरीक्षण किया स्वाधीनता की विचारधारा जन मानस में आन्दोलित हो उठी, ऋषि जब तक रहे अलख जगाते रहे, अपने उत्तराधिकारी रूप मे वह आर्यसमाज स्थापित कर गये। ९० वर्ष से आर्यसमाज उस बोध की मशाल को लिये प्रयत्नशील है। महर्षि का बोध दिवस हमे आत्म निरीक्षण की प्रेरणा देने आया है। हम व्यक्तिगत तौर पर सोचें कि हम महर्षि के आदेशो पर कहा तक चल सके हैं और हमे क्या करना शेष है। आर्यसमाज को सामूहिक रूप से जो उत्तरदायित्व पूरा करना था या अब करना है उसमे उसमे हम कितने सफल हुए हैं या हो सकेंगे इन सब बातो की समीक्षा करना हमारा कर्तव्य है। बोध-दिवस की पवित्र बेला इसी भावना को जगाने आयी है। क्या हम इस दिवस के सन्देश को हृदयङ्गम करेंगे। यदि आर्यसमाज अपनी शक्ति को संगठित बनाये रखे एवं अपने मिशनरी लक्ष्य को स्मरण रक्खे तो भारत वैदिक संस्कृति और विश्वशान्ति सुरक्षित हैं।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्य जगत् आर्यसमाजें, आर्य शिक्षा संस्थायें एवं आर्यजन बोध सप्ताह के कार्यक्रम को सोत्साह मनाकार अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। इस अवसर पर सभी को एक ही स्वर मे गाना चाहिये।

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे॥

प्रामाणिक खुराक

एक शाकाहारी सज्जन ने मांसाहार को त्याज्य बतलाते हुए अपने निजी प्रयोग के आधार पर एक प्रामाणिक खुराक का सुझाव प्रस्तुत किया है। वे लिखते हैं कि "मैं १० से १२ औंस तक (५ या ६ छटाक अन्न, १०५ से २ औंस तक दाल, लगभग ७५ औंस तेल या घी ४ औंस आलू इत्यादि लगभग १ पौंड हरी सब्जियाँ, लगभग ४ औंस रसदार फलों, लगभग ४ औंस केलों, आम और पपैया जैसे गुद वाले फलों, ६ से ८ औंस तक दूध और १ औंस गुड या शकर का प्रयोग करता हू। इस खुराक से मुझे २५०० से अधिक कैलोरीज गर्मी देने वाले तत्व प्राप्त हो जाते हैं जो औसतन वयस्क व्यक्ति के लिये पर्याप्त होती है स्त्रियों को इससे कुछ कम और श्रमिकों को इससे कुछ अधिक की आवश्यकता हो सकती है।

इस खुराक से पुरुषों के लिए अभिप्रेत ६५ ग्राम और स्त्रियो के लिए अभिप्रेत ५५ ग्राम की तुलना मे ७० से ८० ग्राम तक प्रोटीन (मांस बनाने वाला तत्व) ८०० मिलीग्राम तक कैलशियम, लगभग १२ ग्राम के मुकाबले मे २० मिलीग्राम लोहा और १८,००० विटामिट ए० २ मिलीग्राम विटामिन बी० कम्पलैक्स, ७० के मुकाबले मे लगभग १५० मिलीग्राम विटामिन सी० प्राप्त हो जाते हैं।

यह खुराक मांसाहार की तुलना मे वरिष्ठ है और इसकी प्राप्ति के लिए ४ से ५ एकड़ प्रति व्यक्ति भूमि की आवश्यकता होगी। इसमे न्यूनाधिक हो सकता है।

यदि हम ऐसी खुराक अपनायें जिससे पौष्टिक तत्वो का आधा भाग अन्न से और शेष आधा भाग सब्जियों एवं फलो से प्राप्त हो जाय तो हम अपनी वर्तमान भूमि से पैदावार की कमी के होते हुए भी अब से १॥ गुणा प्रजा को पौष्टिक खुराक उपलब्ध कराने मे समर्थ हो सकते हैं।"

अन्नो मे सर्वाधिक प्रोटीन चने मे उसके बाद गेहू मे, दालो मे मसूर की दाल मे उसके बाद मूंग, उर्द और अरहर की दाल में फलों मे मूंगफली मे उसके बाद बादाम मे, दूध में भैंस के दूध मे उसके बाद गाय के दूध मे, मांसों में मुर्ग के उसके बाद गाय बैल और बकरे के और सबसे कम अण्डे मे होती है। चने में १६ ४, गेहू मे ११ ४७, मसूर की दाल मे २३ ६२, उर्द की दाल मे २२.३३, अरहर की दाल मे २१ ७०, मूंगफली में २७ ५, बादाम मे २४.०० प्रोटीन पाई जाती है। मुर्ग के मांस में २२.७ गाय बैल के मांस मे २० ००, बकरे के मास में १८ ०० और अण्डे मे १६ १२ होती है। फलो अन्न और दालों की तुलना मे मास मे चरबी कर्बोज (शक्ति वर्द्धक तत्व) खनिज तत्व बढाने वाले तत्व बहुत कम मात्रा मे होते हैं। उनमें गाय व भैस के दूध के बाद पानी अधिक पाया जाता है।

वार्षिक प्रतिनिधि चित्र सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि वार्षिक प्रतिनिधि चित्र [फर्म] प्रत्येक आर्य समाजो को डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं जिस समाज में न पहुचे हों कृपया सभा कार्यालय से पुन मगा लें।

फार्म नियमानुकूल प्रत्येक खानो की पूर्ति करके सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करें। साथ ही दशांश प्रति०शुल्क, सूबकोटि तथा।) आना प्रत्येक आर्य सभासद् के हिसाब से भेजने की कृपा करें।

२—सभा का आगामी बृहदधिवेशन कहा हो और किस तिथि मे हो, यह विषय सभा के विचाराधीन है निश्चय से आर्यमित्र द्वारा सूचित किया जायगा।

—धर्मदत्त सभा मन्त्री

ब्रिटेन मे भारतीय आदर्श की प्रतिष्ठा

लन्दन के एक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र 'डेली मिरर' मे एक २५ वर्षीया भारतीय स्कूल अध्यापिका के विवाह के तय होने का समाचार छपा है जो १६ वर्ष पूर्व भारत से लन्दन गई थी। पत्र ने इस समाचार को बड़े मोटे शीर्षक मे बहुत अच्छे स्थान पर विस्तारपूर्वक छापा है और कारण यह प्रकट किया है कि लड़की का उस पुरुष के साथ विवाह होगा जिसको उसने कभी नहीं देखा है। इस लड़की का यह कथन भी उद्धृत किया गया है कि 'विवाह के उपरान्त प्रणय-प्रसंग आरम्भ होना चाहिये। वर का चुनाव रमेश अध्यापिका के धन-सम्पन्न पिता ने किया है। वर का नाम डा० व्रज कोहली है।

'डेली मिरर' ने अपने ४० पाठकों को जिनमे अधिकांश संख्या स्त्रियों की है यह बताया है कि वर महोदय शीघ्र ही लन्दन पहुचने वाले हैं और उनके आने पर ही दोनो एक दूसरे को देखेंगे।

रमेश नौटिंघम के एक स्कूल मे पढ़ाती है। दोनों के परिवार इग्लैंड में रहते हैं। फोटोज के आदान प्रदान से ही विवाह तय हुआ है।

रमेश ने पत्र के सम्पादक को बताया

(शेष पृष्ठ १३ पर)

आर्यसभासद बनने के लिए सदाचार उपस्थिति एवं शतांश चन्दा सम्बन्धी नियम उपनियम

श्रीमान मन्त्री जी आर्यसमाज सादर नमस्ते !

आर्यसमाज के नियमानुसार आर्य सभासद सूची तैयार करते समय सदस्यों के सदाचार पूर्वक जीवन पर विशेष बल दिया जाना चाहिये। साथ ही शतांश चन्दा और उपस्थिति सम्बन्धी व्यवस्थाओं का भी दृढ़ता पूर्वक पालन किया जाना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक १३।११।६५ के नि० स० १४ द्वारा इस दिशा में समस्त आर्यसमाजो और आर्य जनो का ध्यान आकृष्ट किया जाता है। आशा है आर्य सभासद् की निर्दिष्ट आवश्यक योग्यता को पूरा करने कराने की दिशा मे आप विशेष ध्यान देंगे।

शतांश चन्दा उपनियम के सम्बन्ध मे सभा की अन्तरंग दि० २१।७।३४ के नि०स० १० के अनुसार कार्यवाही की जानी चाहिए।

१—निम्नलिखित सब मद्दो की आय को शतांश निकालने के लिए शामिल किया जाना चाहिए।

मासिक वेतन पेन्शन सूद किराया, मकान, दुकान इत्यादि वकालत परीक्षाकृति प्राइवेट ट्युशन डाक्टरी या वैद्यक व्यापार जमीदारी पुस्तक प्रकाशन ठकेदारी तथा अन्य वे सभी व्यवसाय जिनसे आमदनी हो।

नोट—इन सब मद्दो से हुई आय को जोडकर उस पर शतांश लगाया जायेगा।

२—यदि किसी सज्जन मकान निज का हो और वह उसमे स्वयं रहते हो या वह किराये में न उठा हो तो वह आय साधन मे शामिल न किया जायगा।

३—यदि कोई सज्जन आयकर देते हो या अन्य कोई सरकारी टैक्स देते हों जो आय पर लगता हो तो यदि उक्त सज्जन इच्छा प्रकट करें तो वही आय शतांश के लिए मान ली जायगी, जो सरकारी टैक्स के लिये निर्धारित की गई हो।

४—प्राबीडैन्ट फण्ड बीमा का प्रीमियम तथा वेतन मे कमी आदि आय मे से निकाल दिये जावेंगे।

५—यदि समाज के सदस्य की धर्मपत्नी और पुत्र-पुत्रियो आदि एक या अनेक समाजों के सदस्य हों और उनकी कोई पृथक आय न हो तो उनके मासिक चन्दे शामिल समझ जायेंगे। परन्तु इस प्रकार के चन्दे प्राप्तव्य शतांश के १/५ भाग से अधिक मुजरा न होंगे।

उपस्थिति सम्बन्धी नियम --

जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्सगो में कम से कम पच्चीस प्रतिशतक हो तो वे आर्यसभासद् बन सकते हैं।

—धारा ४ (क) आर्यसमाज नियम-उपनियम

सदाचार सम्बन्धी नियम—

सदाचार की परिभाषा इस प्रकार है—

सन्ध्या आदि नित्य कर्म, शुद्धवृत्ति वैदिक सस्कार, पतिव्रत तथा पत्नीव्रत आदि सदाचार हैं। व्यभिचार मादक द्रव्यो और मांसादि अभक्ष्य पदार्थो का सेवन जुआ, चोरी छलकपट रिश्वत आदि दुराचार हैं।

—धारा ४ ख (आर्यसमाज के नियम उपनियम)

सदाचार शतांश और उपस्थिति तीनो की नियमानुकूल पूर्ति करने वाले व्यक्तियों को ही आर्यसभासद् सूची मे अंकित किया जाना चाहिये। केवल सख्या वृद्धि या व्यक्ति विशेष के प्रभाव के कारण सूची तैय्यार करने में असावधानी नही करनी चाहिये। आर्यसमाज के आर्य सभा सदों का स्तर ऊँचा होना चाहिये चाहे सख्या भले ही कम रहे।

आशा है आप अपनी आर्यसमाज की आर्यसभासद सूची तैयार करते समय उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखेंगे और तदनुसार कार्य कर समाज के सगठन को सुदृढ़ और आदर्श बनाने में सहयोग प्रदान करेंगे।

निवेदक —

चन्द्रदत्त

मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

अन्तरगाधिवेशन के स्थान-तिथि परिवर्तन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश की अन्तरग सभा का साधारण अधिवेशन कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस जिला अलीगढ़ के वार्षिकोत्सव के साथ-साथ दि २० फरवरी १९६६ के दिन रविवार को अन्तरंग की बैठकें बुलाई गई हैं। अन्तरग की प्रथम बैठक ९॥ बजे प्रात काल से आरम्भ होगी। अन्तरग सदस्यों से सविनय प्रार्थना है कि कृपया नियत समय पर पधार कर कृतार्थ करेंगे।

सभा की सूचना

सभा की मर्यादाओं को कायम रखने के लिए यह आवश्यक है कि आर्य समाजों को सूचित किया जाय कि समाजें समस्त उपदेशकों एव प्रचारकों के सम्बन्ध मे सभा कार्यालय से ही पत्र-व्यवहार करें—उपदेशक या प्रचारक से सीधे नहीं करना चाहिए और उपदेशकों एव प्रचारकों के लिए धन आर्य-व्यय निमित्त सभा के नाम पर सभा की कोषाध्यक्ष जी के नाम पर सभा कार्यालय लखनऊ ही भेजा जाए, उपदेशक या प्रचारक को सीधा नहीं भेजा जाए। अन्यथा सभा जिम्मेवार नहीं होगी।

आर्यसमाज की स्थापना पिथौरागढ़ में

उत्तर प्रदेश के पिथौरागढ़ में श्री रामसिंह जी एम ए तथा सभा के सहयोग और श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक एम ए के प्रयत्न से आर्यसमाज स्थापित हो गया—जिसका १७।१।६५ को प्रथम निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री देवीदत्त जी पाण्डेय, मन्त्री—श्री ज्ञानेन्द्रनाथसिंह जी, कोषा०—श्री रामसिंह जी, अन्तरग सदस्य—श्री महेश्वरदत्त जी, श्री रमणप्रसादसिंह जी, श्री मुरलीलाल जी।

पिथौरागढ़ में प्रचारार्थ एक आर्य संन्यासी की तुरन्त मांग है—जो कुछ मास रहकर वहां के निवासियों में प्रचार कर सकें। जो सन्यासी महानुभाव उक्त स्थान में जाना चाहें वे सभा से पत्र व्यवहार करने का कष्ट करें।

मास फरवरी ६६ के प्रोग्राम

श्री राम चन्द्रजी प्रा० मु०—१४ से २२ चौरीचौरा, २३ से २५ बोहघाट।

श्री अमरनाथसिंह जी—११ से १४ फतेहपुर, २६ से २८ बिस्वा।

श्री गजराज सिंह जी—१२ से १८ तिलहर।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—१२ से १८ पूरनपुर पीलीभीत। १९ से २१ अलीगढ़ लखनऊ २५ से २८ अकबरपुर कानपुर।

श्री वेदपाल सिंह जी—१२ से १६ अलीगढ़ १७ से २० मेस्टनरोड कानपुर, २१ से २३ बिधूना।

श्री प्रेमचन्द्र जी—१२ से १८ सदर मेरठ, १९ से २१ अलीगढ़ लखनऊ, २८ से इस्लामनगर।

श्री जयपाल सिंह जी—१६ से १८ बहापुर।

श्री प्रकाशवीर जी—१२ से १८ हापुड़।

श्री विन्ध्येश्वरी सिंह जी—१७ से २० बलिया।

श्री डा० प्रकाशवती जी—१४ से २२ चौरी चौरा २६ से २८ बिस्वा।

महोपदेशक एव उपदेशक

श्री प० विश्वबन्धु जी शास्त्री—१२ से १८ अमरोहा १९ से २६ रामपुर।

श्री प० बलवीरजी शास्त्री—१४ से २२ चौरीचौरा, २८ से इस्लामनगर-बदायूं।

श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री—१२ से १७ लखीमपुर, १८ से २० मेस्टनरोड कानपुर।

श्री प० श्यामसुन्दर जी शास्त्री—१२ से १८ रुड़की, १९ से २१ अलीगढ़, लखनऊ।

श्री प० विश्ववर्धन वेदालंकार—१२ से १८ सदर मेरठ २६ से २८ बिस्वा।

श्री केशवदेव शास्त्री—११ से १४ फतेहपुर १५ से १८ अलीगढ़, १९ से २१ अलीगढ़ लखनऊ।

श्री प० भैरोंदत्त शुक्ल—१२ से १८ तिलहर।

श्री स्वा० वेदानन्द जी सरस्वती—१२ से १८ फर्रुखाबाद।

श्री ओमप्रकाश जी सिंह—१२ से १८ तक अलीगढ़।

—स०अधिष्ठाता, उपदेश विभाग

आर्य विद्वान् महोपदेशक शास्त्रार्थ महारथी—

श्री पं. बिहारीलाल जी शास्त्री

की ७५ वीं वर्षगांठ पर शुभ-कामनाएँ

★

तपस्वी और त्यागी विद्वान्

माननीय श्रद्धेय पण्डित बिहारीलाल जी शास्त्री ने अब तक निरन्तर जो आर्य समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवायें की हैं और कर रहे हैं और सम्प्रति वृद्धावस्था होते हुए भी निरन्तर सेवा कर रहे हैं उनके लिए आर्यजगत् सदैव आपका आभारी रहेगा। माननीय शास्त्री महोदय ने सन् १९२० ई० से सन् १९२४ ई० तक जिला बिजनौर में निरन्तर वैदिक धर्म का प्रशंसनीय ओजस्वी प्रभावशाली प्रचार बिजनौर की जनता को मन्त्रमुग्ध सा बना दिया। अब तक भी आबाल वृद्ध सभी लोग आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते रहे हैं।

माननीय शास्त्री जी की वक्तृत्व शक्ति का जो प्रभाव जनता पर पड़ता है उसके लिखने में लेखनी असमर्थ है। बिजनौर में रहते हुए शास्त्री जी ने बहुत सी शुद्धियाँ कीं, और अनेकों परिवार ईसाई होने से बचाये।

वास्तव मे शास्त्री जी के तर्क के सम्मुख ईसाई, यवन, पौराणिक आदि कोई भी नहीं ठहर सकता। आपका तर्क युक्ति युक्त तथा प्रशसनीय है। सभी शास्त्रों के आप प्रकाण्ड विद्वान् हैं। आप की विद्वत्ता का प्रभाव व प्रकाश सारे भारतवर्ष में छाया हुआ है।

माननीय पंडित जी वास्तव में तपस्वी और त्यागी विद्वान् हैं। आपकी निर्लोभता एवं त्याग भी आर्य महानुभावों से छिपा नहीं है। पीछे कई वर्ष हुए जब आप बहुत रुग्ण हो गये थे। उस समय आपके यहाँ एक बहुत बड़ी चोरी भी हो गई थी।

उस समय कुछ आर्य सज्जनों ने आपको सहयोग देना चाहा, परन्तु आप तो सच्चे ब्राह्मण हैं। आपने उस समय किसी का भी सहयोग लेना स्वीकार नहीं किया, इसी से आपकी उदारता और निर्लोभता जानी जाती है। पण्डित जी महाराज के मुखारविन्द से हर समय गम्भीरतापूर्वक शास्त्रीय मनोरंजन होता ही रहता है।

ऐसे जगत् प्रसिद्ध विद्वानों के गुणों का वर्णन करना असम्भव नहीं तो कठिन जरूर है।

> कर लेखनी असमर्थ है,
> असमर्थ है मन भी तथा।
> जो लिख सके श्रीमन् के,
> गुण गान की अविरल कथा।

परम प्रभु परमात्मा से प्रार्थना है कि सम्मानित शास्त्री महोदय को दीर्घ जीवन तथा निरोगता प्रदान करें जिससे कि वह लम्बे जीवन तक अपनी अमृत वाणी के द्वारा वेद प्रवचन करते हुए जनता को अमृत पान कराते रहें।

—सुखानन्द सरस्वती कुलपति
श्री केवलानन्द निगम आश्रम
मठ, दारानगर (बिजनौर)

शास्त्री जी आर्यसमाज के गौरव हैं

आर्य जगत के विख्यात विद्वान् व्याख्यान वाचस्पति श्री बिहारीलाल शास्त्री काव्यतीर्थ ने आर्यसमाज की जो सदा सच्ची सराहनीय सेवाएं की हैं वे स्वर्णाक्षरों मे अंकित होने योग्य परम प्रशसनीय हैं एवं अनुकरणीय हैं।

वे आर्यसमाज के गौरव हैं अतः ऐसे आदर्श महानुभाव का जितना भी सम्मान किया जाय कम है। मेरे मन मे उनके प्रति अतीव आदर है। ईश्वर की दया से वे सानन्द शतायु हों यही मंगल कामना है।

—रघुवीर सिंह ससद सदस्य
भू०पू० प्रधान आ०प्र०नि० सभा उ०प्र०

श्रद्धा-प्रकाश

श्रद्धेय महाविद्वान सर्वशास्त्र निष्णात श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री को मै व्यक्तिगत रूप से अनुमानतः ३५ वर्ष से जानता हूं। वैदिक धर्म, आर्यसमाज और भारतीय राष्ट्र के प्रति श्री शास्त्री जी का कार्य-योगदान बहुत उच्च स्थान से सम्बद्ध है। आपने निर्धनता को सहन किया, परन्तु धर्म धन को कभी हाथ से नहीं दिया। रुग्ण होते हुए भी वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार मे स्वस्थ वृत्ति से सदा अग्रसर रहे। परमात्मा आपको दीर्घायु देवे, जिससे हम आपकी कर्तव्य निष्ठा से लाभान्वित होते रहें।

—जगदेवसिंह सिद्धान्ती
लोकसभा सदस्य

जुग-जुग जीवें

> जुग जुग जीवें जगत मे,
> पूज्य बिहारीलाल।
> वैदिक धर्म प्रचार मे,
> सत्यनिष्ठ सब काल॥
> वाणीभूषण ओजमय,
> वाचस्पतिर्महान्।
> आर्य-जगत् नभ में सदा,
> चमकें 'सूर्य' समान॥

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम ए डी लिट्
मन्त्री, भा.द. आर्य विद्यापरिषद अजमेर

शास्त्री जी की अविस्मरणीय सेवायें

प्रसिद्ध वाग्मी श्रीमान् पंडित बिहारीलाल जी शास्त्री आर्य-जगत् की अपनी लेखनी तथा वाणी द्वारा जो सेवा की है वह निःसन्देह नवीन पीढ़ी के लिये अनुकरणीय है। पंडित जी के साथ मेरा सम्पर्क सन् १९२३ से है जब हम दोनों एक साथ जबलपुर काव्यतीर्थ की मध्यमा परीक्षा देने गये थे। पंडित जी के समान सरल, उद्भट विद्वान तथा कर्मकाण्डी कुछ थोड़े से और उपदेशक भी हो जाते तो आर्यसमाज का कार्य बहुत अधिक चमक उठता। पंडित जी की सेवायें आर्यसमाज के क्षेत्र मे अविस्मरणीय रहेंगी।

—मुंशीराम शर्मा सचालक
वैदिक शोध सस्थान कानपुर

आर्य सिद्धांतों के पूर्ण मर्मज्ञ

प० बिहारीलाल जी काव्यतीर्थ की ७५वीं वर्षगांठ पर मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं। वे आर्यसमाज के उस युग के कार्यकर्ता हैं। जब आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य अपने आपको आर्य मिशनरी समझता था। उठते बैठते जिन्हे एक ही धुन रहती थी और वह धुन थी—आर्य धर्म प्रचार की। उन्हे आप आर्यमुसाफिर कहिए अथवा मार्गोपदेशक कह लीजिए। वे आर्य सिद्धान्तों के पूर्ण मर्मज्ञ हैं। साथ ही पौराणिक मत, ईसाई मत, जैन मत तथा मुसलमानी मत के ग्रन्थों का उन्होने अच्छा मथन किया है। वे सुन्दर वक्ता व्याख्यान वाचस्पति और शास्त्रार्थ महारथी हैं। उनके बोलने मे उतार-चढ़ाव है, जो एक अच्छे वक्ता के बोलने मे होना चाहिए। साथ ही वे विनोदप्रिय विनोदी स्वभाव हैं। उनकी वाणी मे तथा कलम मे ओज है। सुन्दर लेखक भी हैं। बहुत दिन हुए मै बहुत प्रभावित हुआ जब पंडित जी ने एक विवाह सस्कार मे वरवधू को उनके गृहस्थ के कर्तव्य और आचरणों के प्रति अपने विनोदी स्वभाव से उन्हें सजग किया। प० बिहारीलाल जी बड़े निर्भीक व्यक्ति हैं। लश्कर समाज के उत्सव मे एक बार एक चीफ मिनिस्टर को जो किसी समय एक आर्यसमाज के मन्त्री भी रह चुके थे महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए निमन्त्रित किया गया। श्रद्धांजलि के साथ उन्होने आर्यसमाज पर भी कई कटाक्ष कर दिये इसके ठीक पश्चात ही प० बिहारीलाल जी को बोलना था। प० जी ने आपके विनोद पूर्ण भाषण मे मिनिस्टर महोदय की जो समालोचना की उससे जनता को हार्दिक सन्तोष और प्रसन्नता हुई, किन्तु मिनिस्टर महोदय अपनी खीज न छुपा सके।

मैं पंडित बिहारीलाल जी को बधाई देता हुआ उनके शतायुष्य होने की मंगल कामना करता हूं। वे आर्यसमाज के गौरव हैं।

—डा०महावीर सिंह
प्रधान आर्यसमाज लश्कर ग्वालियर
तथा प्रधान अ०प्र०सभा मध्यभारत

आर्य उपदेशक मण्डली के आदर्श

आर्य महोपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी श्रद्धेय श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री के उपदेश तथा तर्कपूर्ण शंकासमाधान श्रवण करने का लगभग अर्द्धशताब्दि से सौभाग्य प्राप्त होता चला आ रहा है। महर्षि दयानन्द प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार पंडित जी के जीवन का मुख्य उद्देश्य रहा है। उनके असीमित स्वाध्याय, सादा जीवन, कुशल लेखन शैली, मान-अपमान मे वैराग्य, अथक परिश्रम आदि गुण उपदेशक मंडली के लिये अनुकरणीय हैं। आर्य समाज का गौरव है कि उसमे पंडित जी जैसे उच्च कोटि के विद्वान उपस्थित हैं। सच्चिदानन्द प्रभु से प्रार्थना है कि वह पंडित जी को स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें जिससे आर्य जनता उनके प्रवचनों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त करने मे समर्थ होती रहे। उनका अभिनन्दन एक सराहनीय कार्य है।

—रामचन्द्र दयालू

अनोखी सेवा

प० बिहारीलाल जी शास्त्री वस्तुतः व्याख्यान वाचस्पति तथा शास्त्रार्थ महारथी हैं। शास्त्री जी के सम्पर्क मे आने का मुझे अनेक बार अवसर मिला। हर बार उनके प्रति श्रद्धा प्रगाढ होती गई। सन्देह नहीं आर्य जगत को उन्होंने अनोखी सेवा प्रदान की है जिसके लिये हम सभी उनके ऋणी रहेंगे। सौम्य मूर्ति, वाग्पटु एवं विचारशील, शास्त्री जी आर्यसमाज की अपूर्व देन हैं। हमारी कामना है कि ईश्वर उन्हें चिरायु दे। जिससे अधिक समय तक वह मानवमात्र को पथ-प्रदर्शन कराते रहें।

—लक्ष्मीकान्त गुप्त, बी० ए०
मन्त्री वेदप्रचार मंडल, कोटा

वागीभूषण शास्त्री जी

श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री के सम्पर्क मे मैं १९३३ से आया हू और तभी से मैने प०जी की प्रतिभा का लोहा माना है। आर्य जगत की आपने महान सेवा की है, ऐसे वाणी भूषण तथा शास्त्र के महारथी के प्रति हमारा समाज सर्वंव ऋणी रहेगा। ईश्वर उन्हें चिरायु करे जिससे वह इस समाज की अधिक सेवा कर सके —जियालाल वर्मा

संयोजक वेदप्रचारक मण्डल कोटा

धीमुखी प्रतिभा

श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री की आर्यसमाज के क्षेत्र मे की गई सेवाओं के प्रति हम सर्वंव कृतज्ञ रहेंगे। मान्यवर प० जी की अपने किशोर काल मे ही वैदिक धर्म में आस्था जम गई थी। संस्कृत मे मध्यमा उत्तीर्ण करते ही इन्होंने अध्यापन और प्रचार दोनों ही कार्य प्रारम्भ कर दिये। श्री प० जी कुछ काल विशुद्ध रूप से केवल प्रचार का काम भी करते रहे हैं। इस कार्य में उनकी बहुत अधिक रुचि थी। किन्तु श्रद्धाविहीन सामाजिक ढांचे को देखकर जीविकोपार्जन का आधार तो उन्होंने अध्यापन को बनाया, किन्तु कार्य वास्तव में वे आर्यसमाज का ही करते रहे। रात दिन सैद्धान्तिक ग्रन्थों को पढ़ना और उन पर भाषण देना और लेख लिखना यही उनका प्रधान कार्य रहा। स्कूल में अध्यापन करते हुए कदाचित ही आपका कोई अवकाश का दिन इस प्रकार हो जिसका उपयोग आर्यसमाज के लिए न हुआ हो।

श्री प० जी की प्रतिभा धीमुखी है वे पौराणिक भी और कुरानी प्रत्येक से बहुत सूझ-बूझ के साथ शास्त्रार्थ कर सकते हैं और करते रहे हैं। शास्त्रार्थ समर कला में ये अद्वितीय योद्धा हैं। वादी का मुह बन्द करने के लिए आपको अनोखी सूझती है। भाषण कला मे भी प० जी अपना सानी नहीं रखते। विषय को इस विचित्र ढग से स्पष्ट करते हैं कि योग्य से योग्य और साधारण से साधारण व्यक्ति भी समान रस ले सकता है। इन सब गुणों के साथ साथ श्री प० जी लोक व्यवहार मे भी बहुत कुशल हैं। जहा कहीं रहते हैं बडे बडे व्यक्ति उनका आदर करते हैं। उझियानी मे रहते हुए सामान्य जनता से लेकर उझियानी के राजा मक्खार साहब तक आपका विशेष आदर करते रहे।

शास्त्री जी जहा विद्वान् हैं वहा सच्चे ब्राह्मण भी हैं। सन्तोषी तथा त्याग भाव से काम कार्य करते रहे हैं। आपने बिजनौर में गांव-गांव पैदल भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार किया। बहुत शुद्धियां कीं, बडे-बड़े शास्त्रार्थ किये, ईसाई पादरियों के साथ बडे शास्त्रार्थ किये। एक बार एक पादरी जहां जहां गया उसी उसी स्थान पर प० जी भी साथ-साथ गये जहा पादरी बोला प० तुम यहां भी आ गया। प० बिहारीलाल जी ने कहा—जी हां जहा प्लेग जायगा वहा हेल्थ आफिसर भी जायेगा। जिले बिजनौर के गांव गांव से प० जी की प्रचारशैली की आवाज सर्वंव गूंजती रहेगी। आपने धन-संग्रह करने की कभी रुचि नहीं बनाई। दक्षिणा मे जो भी किसी ने दे दिया, उसे देखा तक नहीं। किसी भक्त से मकान बनाने के लिये भी पैसा नहीं मांगा। बिजनौर का मकान बेचकर बरेली मे मकान बनाया। आर्यजगत सर्वंव प० जी का ऋणी रहेगा

अभिनन्दन शुभ सेवायाम्

श्रद्धेय पं. बिहारीलाल शास्त्री

[रच०—अनिरुद्ध शर्मा शेरकोटी मुख्याध्यापक जू हा. स्कूल, कोतवाली जि० बिजनौर]

ऐ खुशबख्त१ श्री बिहारीलाल !
तूने ऊँचा किया है मा का भाल२ ॥१॥
क़ाबिले क़द्र तेरी नुकता३ रसी,
बाइसे फ़ख़्र४ तेरी धीमी हसी ॥२॥
क़ाबिले क़द्र है तेरा अख़लाक़५,
हो गया जिससे शोहरये आफ़ाक़६ ॥३॥
बात मे बात करते हो पैदा,
जिससे सीइल्म७ हो गये शैदा८ ॥४॥
बन गया आज वाणी आभूषण,
कर दिया वक़्फ़ धर्म में जीवन ॥५॥
है किया रोज वेद का परचार,
तेरे गुन गा रहा है सब ससार ॥६॥
तूने ठाकुर अमर९ बनाये हैं,
लाख जौ साफ़१० खूब सिखाये हैं ॥७॥
११क़ाबिले रश्क तेरी गोयाई१२,
सारा आलम हुआ है शैदाई१३ ॥८॥
दूसरों की भलाई करते हो,
खूब शर१४ की सफ़ाई करते हो ॥९॥
तुमको कहते हैं लोग जादू बयां,
तेरी खूबी है आज सबपे अयां१५ ॥
हम्मो फ़न की तेरी जरूरत है,
तेरा दम हमको एक नेमत१६ है ॥११॥
तू है जी इल्म और है जी होश१७,
भरती तक़रीर मुर्दों मे भी जोश ॥१२॥
हैं तेरे काम काबिले तक़लीद१८,
है तेरा तर्क मुजिबे तस्कीन१९ ॥१३॥
तुम पै हिन्दी गुमान करती है,
दम तेरा उर्दू आज भरती है ॥१४॥
फ़ारसी तुम पै नाज करती है।
संस्कृत दिल निसार करती है ॥१५॥
नेकसीरत हो नेक२० तीनत हो,
तुम अदब की हजार जीनत२१ हो ॥१६॥
तुम में पाई है मैंने अक्ले सलीम२२,
दिल से करता हू मैं तेरी ताज़ीम२३ ॥१७॥
तेरे अहसान का हू मैं ममनू२४,
तेरा फ़ज़लो२५ करम हो और फ़जू२६ ॥१८॥
रौनक़े बज़्म२७ बन गया है आज,
है सआदत२८ का तुझे पहना ताज ॥१९॥
तेरी मदहा२९ करू, ये नामुमकिन,
तुम मे खूबी महफ़ता३० हैं अनगिन ॥२०॥
ख़त्म है अब दुआ पै अपना सख़ुन३१,
गाऊं कब तक तुम्हारे सारे गुन ॥२१॥
तुम सलामत३२ रहो बिहारीलाल,
और तुम ताअबद३३ रहो खुशहाल ॥२२॥
आल औलाद तेरी फूले फले,
गुञ्चये३४ दिल तेरा हमेशा खिले ॥२३॥
तेरा 'शर्मा' बुलन्द३५ पाया हो,
हम पै ता हश्र३६ तेरा साया३७ हो ॥२४॥
हम तेरा करते आज अभिनन्दन,
तेरा खुशहाल हो सदा जीवन ॥२५॥

(१) भाग्यशाली (२) माथा (३) सूक्ष्म दर्शिता (४) गौरव योग्य (५) आचार (६) जगद्विख्यात (७) विद्यावान (८) आसक्त (९) ठाकुर अमरसिंह जी (१०) शुद्ध (११) स्पर्धा योग्य (१२) वाक् शक्ति (१३) आसक्त (१४) बुराई (१५) प्रकट (१६) उत्तम वस्तु (१७) बुद्धिमान् (१८) अनुकरणीय (१९) नवीनता का आविष्कारक (२०) नेक स्वभाव (२१) शोभा (२२) शुद्ध बुद्धि (२३) सम्मान (२४) शुक्र गुजार (२५) अनुग्रह (२६) अधिक २७) सभा की शोभा (२८) नेकी (२९) प्रशंसा (३०) छुपी हुई (३१) कविता (३२) जिन्दे हुए (३३) सदा (३४) दिल की कली (३५) ऊँचा मर्तबा उच्च पद (३६) प्रलय तक (३७) छाया।

व्याख्यान वाचस्पति श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ के सम्बन्ध में मेरी मान्यता

श्री पं० जी विद्या के भण्डार

साहित्य व्याकरण वैदिक सिद्धान्त सभी कुछ उनको प्राप्त और हस्तामलकवत् है उनको सभी कुछ कण्ठस्थ है। उनसे कुछ भी पूछा जाय उसका उत्तर वह तत्काल देते हैं और सर्व प्रकार उनका दिया हुआ उत्तर सन्तोषप्रद होता है।

वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ हैं—

प्रत्येक सिद्धान्त की गहराई तक उन की पहुच है उन्होंने सिद्धान्तों के मर्म को भलीभांति समझा है और बहुतों को समझाया है। किसी भी सिद्धान्त में उनको भ्रान्ति नहीं है। ऋषि दयानन्द जी के सारे ही मन्तव्यों को युक्ति प्रमाणपूर्वक सिद्ध करने की उनमें पूर्ण क्षमता है।

शास्त्रार्थ संगर के महारथी

बडे बडे पौराणिक महारथियों को उन्होंने शास्त्रार्थों मे चारों खाने चित्त मारा है। आचार्य माधवाचार्य जैसे की बोलती बन्द करने की उनमें सामर्थ्य है और इन फक्कड़ों और मुह-फटों को भी परास्त करने के लिए कभी फक्कड़पन का सहारा नहीं लेते हैं। अपनी सभ्यता और अपने शिष्टाचार को हाथ से न जाने देते हुए भी इनको पूर्ण

रहेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं प० जी का अभिनन्दन करता हू।

—विद्यानन्द सन्यासी

कुमेव पराजित करने का भी पं० जी में विशेष गुण है।

त्यागी और तपस्वी ब्राह्मण

उन्होंने धनवान बनने का कभी यत्न नहीं किया, सदा सन्तोष धन के धनी रहे हैं सिद्धान्त तथा गौरव को घटाकर धन प्राप्त करना श्री पंडित जी ने सदा पाप समझा है। धनियों की चापलूसी और चाटुकारिता कभी उन्होंने सीखा ही नहीं बड़े से बड़े धनी का भी दुर्गुण उसके समक्ष कह देने का साहस उनमें सदा रहा है। धन के लालच में उन्होंने फंसना जाना ही नहीं। धर्मानुसार जो भी आय होती है उसी पर सन्तुष्ट रहना उनका स्वभाव है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वह सच्चे ब्राह्मण हैं।

पक्के सिद्धान्तवादी

उनका जन्म ब्राह्मण वंश में हुआ है और गुण कर्म स्वभाव से वह पूरे ब्राह्मण हैं पर जो लोग ब्राह्मण वंश में नहीं जन्मे उनके उत्तम गुण कर्म स्वभावों का पं० जी सदा सम्मान करते हैं। मुसलमानों में जन्मे अनेकों युवकों को शुद्ध करके पं० जी ने अपने पुत्रों की भांति अपने घर में रखकर उनको योग्य बनाया है हरिजन कहलाने वालों को पं० जी ने बिना भेदभाव के सदा छाती से लगाया है। ऋषि दयानन्द जी के सारे मन्तव्यों पर उनकी सदा पूरी आस्था रही है। किसी भी सिद्धान्त पर वह कभी डगमगाये और लड़खड़ाये नहीं हैं सिद्धान्तों पर सदा अडिग रहकर उनके लिए अड़ने और उनपर लड़ने को सदा तैयार रहे हैं।

धर्मवीर

धर्म की रक्षा के लिए सर्व प्रकार के तप, त्याग और बलिदान को वह सदा तैयार रहते हैं। धर्म कार्य में मृत्यु तक से उनको कभी भय नहीं लगता है। धर्म मार्ग से न उनको लोभ हटा सकता है न भय।

उद्‌भट व्याख्याता

उनकी व्याख्यान देने की शैली बहुत ही उत्तम है। उनकी कही हर बात श्रोताओं के हृदयों और मस्तिष्कों में बैठती जाती है और अद्‌भुत प्रभाव डालती है। उनको हम लोग वाणीभूषण कहा करते थे और अब मैं उनको व्याख्यान वाचस्पति कहता तथा मानता हूं।

श्री पण्डित जी में गुण बहुत हैं उन सबका वर्णन करना कठिन है। मैं थोड़े से शब्दों के साथ उनके चरणों में श्रद्धांजलि अर्पण करता हूं।

आपका—
अमरसिंह आर्य पथिक
सम्पादक वेद-पथ तथा
आचार्य वेदविद्यालय

वेद-विवेचन

ज्ञान के शिखर वेद

[ले०—श्री डा० वासुदेव शरण, वाराणसी]

वेद भारतीय संस्कृति की महार्घ निधि है। वे मानवीय ज्ञान के उच्चतम शिखर हैं। किन्तु उनके संकेत दृष्टि से ओझल हो गए हैं। उदाहरण के लिये, मन्त्रों में गौ मातृत्व का प्रतीक है। विश्व की जननी की संज्ञा विराज् कामधेनु है जिसे अदिति भी कहा गया है। वह अदिति देवमाता है, सब देव उसी उत्पन्न हुए हैं और हो रहे हैं,सृष्टि की जितनी दिव्य सनातन शक्तियां पृथिवी और आकाश के बीच में हैं वे सब देव हैं। जो देव बाहर हैं उन्हीं के अंशों से मनुष्य का अध्यात्म शरीर बना है। जो प्राण विराट् में हैं वही भीतर हैं, दोनों का प्रत्येक श्वास में सम्मिलन हो रहा है, तभी तो भीतर गई हुई श्वास आकाश के अमृत प्राण से मिलने के लिए बाहर आती है और पुनः भीतर जाती है। यही चक्र गति है। जैसे अनेक पहियों को मिलाने से कोई यन्त्र बनता है, ऐसे ही प्रजापति ने अनेक चक्रों के संयोग से यह अध्यात्म शरीर और विराट् विश्व बनाया है। फेफड़ों में श्वास प्रश्वास हृदय में रुधिर का अभिसरण, जठर में अन्न का नित्य नया परिपाक ये सब चक्रगति के आधार पर हैं। वस्तुतः प्रत्येक घटक कोष (सेल) में जो सकोच-प्रसार की प्रक्रिया है वह भी चक्र-गति ही है। समञ्चन-प्रसारण (कन्ट्रेक्शन इक्सपेन्शन) यही प्राण की परिभाषा है। इन अर्थों में विलक्षण सौरभ है जो मन को चिरकाल के लिये प्रफुल्लित कर देता है ऐसे सहस्रों अर्थों का कोष ऋग्वेद है।

श्री पं. बिहारीलाल जी शास्त्री

श्री पं० बिहारीलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ आर्यसमाज के उन प्रसिद्ध विद्वानों में हैं, जिन पर आर्यसमाज को गर्व है। आपका समस्त जीवन संस्कृत का प्रचार प्रसार और वैदिक धर्म के प्रचार में ही व्यतीत हुआ है। आपके व्याख्यान वैदिक धर्म की महत्ता पर ही होते हैं। ऋषि दयानन्द का गुणगान करना आप अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं। आपने अपने जीवन में आर्यसमाज की ओर से पौराणिकों और विधर्मियों से सैकड़ों शास्त्रार्थ किये हैं और उन्हें शास्त्रार्थ में चारों कोने चित्त पछाड़ा है। आपकी तर्क-शैली अद्‌भुत है। आपकी सूझ अनोखी है। आपकी विद्वत्ता अनुपम है। विधर्मी और पौराणिक आपका नाम सुनते ही, कतराते हैं। आर्यसमाज के उत्सवों पर के व्याख्यान सुनने के लिए जनता उत्सुक रहती है। पुराने वक्ताओं में आपका प्रमुख स्थान है। परमपिता परमात्मा श्री पंडित जी को चिरायु करें, जिससे वे सभी वैदिक धर्म का प्रचार अनवरत करते रहें। आपने अपनी वाणी और लेखनी दोनों से ही आर्यसमाज के मस्तक को ऊंचा उठाया है।

—निर्मलचन्द्र राठी
अधिष्ठाता आर्य भास्कर प्रेस

★

वेदों में शिशिर ऋतु

शैशिरेणऽऋतुना देवास्त्रयस्त्रिंशेऽमृता स्तुताः। सत्येन रेवती क्षत्रं हविरिन्द्रे वयो दधुः॥

य० अ० २१ मन्त्र २८

पदार्थ—हे मनुष्यो जो (अमृताः) अपने स्वरूप से नित्य (स्तुताः) प्रशंसा के योग्य (शैशिरेणऽऋतुना) प्राप्त होने योग्य शिशिर ऋतु से (देवाः) दिव्य गुण युक्त कर्म स्वभाव वाले (सत्येन) सत्य के साथ (त्रयस्त्रिंशे) तेतीस वसु आदि के समुदाय मे विद्वान लोग (रेवतीः) धन युक्त शत्रुओं की सेना को कूद के जाने वाली प्रजाओं और (इन्द्रे) जीव में (हविः) देने-लेने योग्य (क्षत्रम्) धन वा राज्य और (वयः) वाञ्छित सुख को (दधुः) धारण करें (उनसे पृथ्वी आदि की विद्याओं को धारण करें)।

भावार्थ—जो लोग पीछे कहे हुये आठ वसु, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य बिजली और यज्ञ इन तेतीस दिव्य पदार्थों को जानते हैं वे अक्षय सुख को प्राप्त होते हैं।

जिस प्रकार लक्ष्मी प्राप्त करने के लिये व्यवहार में इक्कीस तथा बल प्राप्त करने के लिये भोज्य पदार्थों के साथ उपयुक्त व्यवहार आवश्यक है उसी प्रकार शिशिर ऋतु के सेवन करने के साथ तेंतीस देवों का ज्ञान होना भी आवश्यक है। उन तेतीस देवताओं को सहस्र गुणा अथवा कोटि गुणा कर लेना जितनी अज्ञानता का परिचायक है वह मनुष्य को उसके कर्तव्यों का पूर्ण ज्ञान न होने का सूचक है। अतः इन तेतीस देवताओं को पूर्ण रूपेण समझते हुए शिशिर के आगमन को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

वेदों मे हेमन्त वर्णन

हेमन्तेनऽऋतुना देवा स्त्रिणवे मरुतः स्तुताः, बलेन शक्वरी सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥२७॥

यजु० अ० २१ मन्त्र २७

पदार्थः—हे मनुष्यो जो [त्रिणवे] घनीभूत व्यवहार में [हेमन्तेन] जिसमें जीव के देह बढ़ते जाते हैं। उस[ऋतुना] प्राप्त होने योग्य हेमन्त ऋतु के साथ वर्तते हुए [स्तुताः] प्रशंसा के योग्य [देवाः] दिव्य गुण युक्त [मरुतः] मनुष्य [बलेन] बल से [शक्वरी] शक्ति के निमित्त पौष्टिक पदार्थों के [सह] बल तथा [हविः] लेने देने योग्य [वयः] वाञ्छित सुख को [इन्द्रे] जीवात्मा में [दधुः] धारण करें।

भावार्थ—जो लोग सब रसों को पकाने वाले हेमन्त ऋतु में यथायोग्य भोज्य पदार्थों के साथ व्यवहार करते हैं वे अत्यन्त बलवान होते हैं।

उपरोक्त वेद के उपदेश का पालन करने वाला व्यक्ति अपने जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करता हुआ अन्य मनुष्यों के जीवन को भी सुखपूर्वक व्यतीत करने में सुगम मार्ग प्रशस्त करता है।

—स्वामी योगानन्द सरस्वती

महाभारत और उसके पश्चात् १९

[श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

दूर सुधार के दो मुख्य साधन हैं। एक ब्रह्मशक्ति और दूसरी क्षात्र-शक्ति। अर्थात जब ब्राह्मण विद्वान बुरे आचार व्यवहार के दोषों का विस्तार से तथा स्पष्ट रूप से खण्डन करते हैं और उनके उपदेशों का लोगों पर प्रभाव पड़ता है तथा वे सामाजिक अनाचार को छोडने के लिये स्वयं उद्यत हो जाते हैं तो एक प्रकार का सामाजिक वाता-वरण उत्पन्न हो जाता है जिसमे लोगों का अनाचार करने का साहस नहीं होता। फिर भी कुछ न कुछ ऐसे मनचले होते हैं जिनमें नियमोल्लंघन की प्रवृ-त्तियां होती हैं वे समाज मत की परवाह नहीं करते। उनकी लाठी किसी के माल को छीनने के लिए तैयार रहती है। वे कहा करते हैं कि हम किसी से नहीं डरते। देखें हमारा कोई क्या करेगा? ऐसे लोग बहुधा दूषित प्रथाओं को जीवित रखने मे सहायता देते हैं। इनके लिये क्षात्र शक्ति अर्थात सुदृढ़ शासक (राजा) की आवश्यकता होती है कि वह दूसरे लोगों को ऐसे आततायियों के प्रभाव से बचा सके। इस प्रकार ब्राह्मण और राजा दोनों मिलकर सुधार का काम करते हैं।

भारत के भीषण युद्ध के पश्चात इन दोनों शक्तियों का लगभग नाश हो गया। जो ब्राह्मण शेष रहे वह राजाओं का मुह ताकते रहते थे। राजे तो 'अन्नदाता' कहलाते थे। जो अन्न' के दाता थे वे मन' के भी दाता थे। जैसा खाये अन्न, वैसा बने 'मन'। दरिद्र के विचार भी दरिद्र हो जाते हैं। ब्राह्मण विद्वान् शास्त्रों की भी ऐसी व्याख्या कर देते थे कि राजे लोग खुश हो जायें। जब राजों में बहु-पत्नी विवाह की प्रथा चली अर्थात् जब राजे अपनी इन्द्रियों को वश में न रख सके तो ब्राह्मणों ने शास्त्रों के उपदेशों की भी वैसी ही व्याख्या कर दी, जिससे राजा साहब को अपनी इच्छापूर्ति का अवसर मिल सके।

यहा हम एक वर्तमान युग के राजा साहब का उल्लेख करते हैं। राजा साहेब को शराब पीने की बुरी लत थी। वे शराब के बिना दो घन्टे भी नहीं रह सकते थे। उनके मन मे आया कि एका-दशी का उपवास रखना चाहिये। परन्तु एकादशी का व्रत और मद्यपान यह तो दो परस्पर विरोधी काम थे। उनका समन्वय कैसे होगा? एक दिन राजा साहेब ने पक्का इरादा कर लिया कि व्रत रखेंगे और शराब न पियेंगे। किसी प्रकार दोपहर तक तो काट लिया, जब तीसरा पहर आया तो शराब न पीना उनकी शक्ति से बाहर की बात हो गई, और वह घबराने लगे। अब किया भी क्या जाय? शराब पाते हैं तो व्रत का फल नष्ट हो जाता है। नहीं पीते तो जान की जोखों है। अन्त में पुरोहित जी बुलाये गये। पुरोहित जी ने आते ही समस्या को सरल कर दिया। 'महाराज! थोडी सी शराब पी लें परन्तु उसमे कुछ बूदें गगाजल की डाल लें।"

पण्डितों को ऐसे चुटकुले बहुत आते थे। यदि किसी राजा का मन किसी सुन्दरी पर लट्टू हो गया तो पं० जी कहते, "महाराज! यज्ञ के एक यूप में कई गायें बंध सकती हैं परन्तु एक गाय को कई यूपों में नहीं बांध सकते। इसलिए एक पुरुष कई पत्नियों से विवाह कर सकता है परन्तु एक स्त्री कई पति नहीं कर सकती।

महाराजा दशरथ भी इसीप्रकार की किसी युक्ति का शिकार हुये होंगे अन्यथा वह कैकेयी से विवाह करके दो पादरियो अपनी मृत्यु का स्वयं साधन न बनते।

हम दूसरे मतों तथा देशों में भी ऐसा ही पाते हैं।

इगलेंड का राजा था अष्टम हेनरी उसका बडा भाई मर गया था। उसकी स्त्री थी हस्पानियां देश के आरगन प्रदेश के राजा की कन्या कैथरायन। ईसाई धर्म के विधान के अनुसार बडे भाई की विधवा से विवाह करना निषिद्ध है। परन्तु जब सप्तम हनरी ने यह इच्छा की कि उसके राजकुमार हनरी का विवाह उसके बडे भाई की विधवा से हो जाय तो रोम के पोप से आज्ञा मांगी गई। पोप ने आज्ञा दे दी और कैथरायन अपने देवर हनरी की वैधानिक पत्नी बन गई, उसका पति (अष्टम हनरी) के नाम से इगलंड की गद्दी पर बैठा। कैथरायन से एक पुत्री भी उत्पन्न हुई जिसका नाम था मेरी या मेरी टूडर। परन्तु मनचले बादशाह का मन एक दिन महारानी की एक अनुचरी पर आसक्त हो गया। बहुविवाह विधान के विरुद्ध था। किया जाय तो क्या? पाद-रियों की शरण ली गई। खुशामदी पंडितों, खुशामदी मौलवियों और खुशा-मदी पादरियों की न तो हिन्दुओं में कमी है, न मुसल , न ईसाइयों मे ने अकल दौड़ाई और यह निर्णय किया कि बादशाह की पहली शादी कानून के विरुद्ध थी इसलिये पोप महोदय के हस्त-क्षेप के होते हुए भी कैथरायन को तलाक दे दी गई और दूसरी महारानी जी आ विराजमान हुई।

इसीलिये मैंने ऊपर कहा है कि सुधार के लिए सुदृढ़ ब्राह्मणों और सुदृढ़ क्षत्रियों की आवश्यकता है।

मैंने १९४५ में शाहपुराधीश जी के पुस्तकालय में एक पुस्तिका देखी, जिस में हिन्दू शास्त्रों से बहुत से श्लोक और सूत्र मांस-भक्षण के पक्ष में उद्धृत किये गये थे। पुस्तक बहुत छोटी थी और लेखक की योग्यता की भी परिचायक न थी। परन्तु उस पर पांच सौ ५००) का पारितोषिक लेखक को दिया गया था। यह पुस्तक शायद आर्य्यसमाज के उस युग में लिखी गई थी जब आर्य्यसमाज की दो पार्टियां हो गई थीं और हर पार्टी पण्डितों से जो चाहे लिखवा लेती थी।

महाभारत के बहुत दिनों बाद तक यद्यपि ब्राह्मण-शक्ति और क्षत्रिय-शक्ति बहुत निर्बल हो गई थी और न कोई उपदेष्टा ब्राह्मण रहा न कोई दण्ड देने वाला क्षत्रिय तथापि राजा और प्रजा का धर्म तो एक ही था और उनके शास्त्र भी एक थे।

परन्तु जब ईसाई और मुसलमान आये तो सुधार का काम और कठिन हो गया। शासकों ने हिन्दू धर्म की कुप्र-थाओं को धर्म-परिवर्तन का एक साधन बना लिया। और उन कुप्रथाओं को दूर करने की इसलिये कोशिश की कि लोग उन बुराइयों के दोषों को समझकर धर्मपरिवर्तन कर लें (अर्थात् ईसाई या मुसलमान हो जाय)। प्रजा ने इसका विरोध किया कि किसी विधर्मी को हमारे धर्म में हस्तक्षेप करने का अधि-कार नहीं है।

राजा राममोहन राय ने 'सती' की दूषित प्रथा को जो घोर निर्दयता-पूर्ण थी ईसाई मिशनरियों की सहायता से रुकवाया था। अतः ब्राह्मणों ने बहुत विरोध किया। उनका कहना था कि ईसाई शासको को हिन्दू धर्म में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इसके बहुत दिनों पश्चात् श्री रमेशचन्द्र दत्त (आर सी दत्त) ने ऋग्वेद के अध्ययन से यह सिद्ध किया कि जिस वेद मन्त्र के आधार पर "सती प्रथा" (मृत पति के साथ जीवित-पत्नी का दाह करना) वेद विहित बताई जाती है उसके पढ़ने ही में गल्ती हुई है। 'अग्ने' शब्द (रकार) के स्थान में अग्ने' (गकार) पढ़ लिया गया है, अस्तु। यह एक अलग विषय है।

हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि जब राजा और प्रजा के धर्म भिन्न-भिन्न होते हैं और धार्मिक संस्थायें भी अलग-अलग होती हैं तो सुधार बहुत कठिन हो जाता है।

स्वामी दयानन्द के समय में यही कठिनाई थी। शासक ईसाई और प्रजा हिन्दू। जब बालविवाह के विरुद्ध आवाज उठी तो पण्डित लोग चिल्लाये कि गवर्मेण्ट को हमारे धर्म मे हस्तक्षेप करने या हिन्दू ला (कानून) के बदलने का कोई अधिकार नहीं।

प्राय छोटी लडकियों का विवाह युवा (बडी आयु वालों) लोगों के साथ हो जाता था। दस या दो साल की लडकी गृहस्थ धर्म पालन का भार नहीं उठा सकती थी। हिन्दू ललनाओं का जीवन संकट में था। उसके विरुद्ध सर-कार की ओर से कानून बनाया गया, तो महात्मा तिलक जैसे सर्वोच्च (सज्जनों) लोगों ने भी इसका विरोध किया। युक्ति यही थी कि ईसाई सरकार को हमारे धर्म में परिवतन करने का अधि-कार नहीं।

स्वामी दयानन्द ने इस समस्या का एक नया समाधान निकाला, कि यदि कोई प्रथा वैदिक शास्त्रों के विरुद्ध है तो या तो पण्डित लोग इसका सुधार अपने हाथ में लें, अन्यथा हम इस दूषित प्रथा को बन्द करने में सरकार की सहायता लेने मे सकोच न करेंगे।

सन् १८५६ ई० में ईसाई शासन की सहायता से श्री पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की कोशिशों से विधवा-पुनर्विवाह का कानून पास हो गया। परन्तु यह कानून अलमारियों में पड़ा सड़ता रहा। जब इस प्रश्न को आर्य्य-समाज ने अपने हाथ में लिया तो देश की काया पलट हो।

आर्य समाजियो का कहना है कि हम यह स्वीकार करते हैं कि सुधार का मुख्य कर्तव्य तो ब्राह्मणों का है, सर्व साधारण की मनोवृत्ति को वही बदल सकते हैं। परन्तु वर्तमान ब्राह्मण भ्रष्ट हो

[शेष पृष्ठ १० पर]

मातृभूमि की रक्षा के अपरिहार्य गुण

(श्री भैरवदत्त शुक्ल)

[गतांक से आगे]

(२) दीक्षा-हम दीक्षा अर्थात् दक्षता या सावधानी का पल्ला पकड़कर ही, मातृभूमि का सम्मान सुरक्षित रख सकते हैं। हमारा कोई भी कार्य सावधानी से रिक्त नहीं होना चाहिए। परिवार से लेकर संसद तक, आँगन से लेकर युद्ध के मैदान तक, खेत-खलिहान से लेकर मिल-फैक्टरियों तक हमें कहीं भी शिथिल या सुस्त नहीं बनना चाहिए। असावधानीवश हम विघटित, पराजित और विफल हो सकते हैं। इस सावधानी के भी तीन पक्ष होते हैं—

(१) कानून, व्यवस्था, न्याय, सामाजिकता आदि समस्त पक्षों की गतिविधि में सवधानी।

(२) पड़ोसी राष्ट्रों एवं अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रों में होते परिवर्तन के परखने में पूर्ण सावधानी। और

(३) शत्रु के विनाश एवं मित्र की सुरक्षा की तत्परता में सचेष्ट, निर्भीक एव तात्कालिक सावधानी।

सावधानी के उपर्युक्त तीनों पक्षों पर साथ-साथ ध्यान दिये बगैर, हम राष्ट्र-रक्षा का सही रूप नहीं समझ सकते। पड़ोसियों और सुदूर देशों की गतिविधि जानने के लिए जिस गुप्तचर-व्यवस्था की आवश्यकता होती है; उसके प्रति हम आज भी उदासीन हैं। हमारे दूतावासों के कार्य भी सक्रिय न होकर अत्यन्त निष्क्रिय हैं जिनकी समय-समय पर उत्तरदायी जनों ने कटु आलोचना की है। हमें 'दीक्षा' पर सर्वाधिक ध्यान रखना पड़ेगा। कोरी हठधर्मी या कोरी आलोचना-प्रत्यालोचना में पड़कर हम भटक भले जायं, पर अपने दायित्व-निर्वाह में सफल नहीं हो सकते। यदि हम बातों के स्थान पर व्यावहारिकता पर ध्यान दें, सावधान रहें और शिथिलता को सत्ता न जमने दें तो तिब्बत, पूर्वी बंगाल, पख्तूनिस्तान आदि क्षेत्रों की अशांति से लाभ उठाकर, राष्ट्रिय सुरक्षा एव विश्व शान्ति का पथ निरापद बनाया जा सकता है।

(ऊ) तप—इसका सीधा-सीधा अर्थ यह है कि शारीरिक, मानसिक या सामाजिक सभी प्रकार की आफतों और तकलीफों के सहने की अपराजेय क्षमता अर्जित कर ली जाय। कोई भी राष्ट्र यदि तप-शक्ति से अपरिचित है तो उसकी सारी क्षमता व्यर्थ हो जायगी। उसका अस्तित्व कभी भी खतरे में पड़ सकता है। यदि हम चाहते हैं कि मातृभूमि का गौरव अक्षुण्ण रहे तो हमें तपस्वी बनना पड़ेगा। साधु-संतों की भांति धूनी रमाना ही तप नहीं है। तप तो सब कुछ हसते-हसते सहन करने की क्षमता का दूसरा नाम है। जनक, आजाद, बिस्मिल जैसे शहीदों की गौरवमयी गाथाएं पावन, अकलुष एव अनुपम तप से भरी हुई हैं। सुभाष, सावरकर, गाँधी और पटेल के जीवन तप के ही ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान समसामयिकता ने तो और भी व्यापकता के साथ कोटि-कोटि भारतीयों को तपस्वी बनने के लिए आहूत किया है। वस्त्राभूषण, धन-संपत्ति, तन-मन, प्राण-जीवन सब कुछ दान देने की होड़ के पीछे तप का ही हाथ दिखायी पड़ता है। किन्तु ये सब दान तप के प्रतीक मात्र हैं; सर्वांशतः तप नहीं। खेद का विषय इतना ही है कि जन-जीवन में तो जाने-अनजाने, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तप की भावना जगी लेकिन बड़े-बड़े सेठ साहूकार, अधिकारी-पदाधीश, अब भी तप से कोसों दूर हैं।

एम. एल. ए, एम पी., मंत्री जब कहीं भी वेतन में अनुकरणीय कटौती की

बात करते नहीं दिखायी पड़े और सेठ-साहूकार जितना पिछले महासमरों में ब्रिटिश सरकार को दान दिया करते थे उसका शतांश भी नहीं दे सके हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि लोकेषणा के कारण वे भले कुछ दे रहे हों पर तप की भावना से कोसों दूर हैं। 'महाजनो येन गतः स पन्थः' के अनुसार तप के क्षेत्र में 'सरकारों' को पहल करनी चाहिए। खान-पान, रहन-सहन आदि में मंत्रियों द्वारा तप अपना लेने पर जनता भी व्यापक पैमाने पर अनुकरण करेगी।

(ऋ) ब्रह्म—मातृ भूमि के संरक्षण में मानवोचित विकासोन्मुख तत्वों की पूर्ण अपेक्षा न केवल आवश्यक वरन् अनिवार्य भी है। मानवता की गरिमा तब तक अपरिचित ही रहती है जब तक ज्ञान-विज्ञान का समन्वित स्वरूप सामने न हो। इसी को ब्रह्म' कहा जाता है। वस्तुतः ज्ञान-विज्ञान ही तो मनुष्य के दो नेत्र हैं। भौतिक सम्पन्नता की अभिवृद्धि में विज्ञान और मानसिक शान्ति की उपलब्धि में ज्ञान सहायक होता है। स्थूल रूप से ज्ञान के क्षेत्र में ईश्वर और जीवात्मा का वह सभी वर्णन समाविष्ट है जो अहं-अन्धकार से मुक्त, मिथ्या विश्वास से परे श्रद्धा मेधा युक्त विवेक शक्ति पर आधारित हो। इसी लिए उसे आत्म-ज्ञान भी कहा गया है। दूसरी ओर समस्त प्राकृतिक सम्पदा ग्रह- उपग्रह, नक्षत्र, सागर, भूमि, अन्तरिक्ष आदि के समुचित परिचय एव प्रयोग का विधिवत् जानना ही 'विज्ञान' कहलाता है। केवल विज्ञान का आश्रय लेने से घोर नास्तिकता और कोरे आत्म-ज्ञान से भौतिक विपन्नता, अकर्मण्यता एव निष्क्रियता का बोल बाला होने लगता है। समस्त पाश्चात्य जगत् तथा उससे प्रभावित आधुनिक बुद्धिजीवी भारत विज्ञान वशवर्ती हो जाने के कारण मानसिक या मनोवैज्ञानिक अशांति से भरा दृष्टिगोचर हो रहा है। यही आज की भयकर समस्या है। सही माने में हम न तो भौतिक समृद्धि के समीप हैं और न आत्मज्ञान के ही पड़ोसी। हमारी स्थिति त्रिशंकुवत् है। प्रकृति जीव और परमात्मा तीनों का सम्यक् ज्ञान और भौतिकता तथा आध्यात्मिकता का समन्वय किये बगैर, लक्ष्य-विषयक विभ्रम एव साधन-संचय संबद्ध अनिश्चयता अनिश्चयता का अन्त नहीं किया जा सकता। विभ्रम एवं अनिश्चयता के बढ़ जाने से, मातृभूमि की रक्षा सुदृढ़ रूप से नहीं की जा सकती।

(ए) यज्ञ—बिना यज्ञ के भी मातृभूमि का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। लेकिन यज्ञ का अर्थ आजकल होने वाले शत चंडी यज्ञ, महारुद्र यज्ञ आदि कर्मकाण्डों से नहीं जोड़ा जा सकता। श्रेष्ठ सज्जनों का सत्कार सम्मान, पारस्परिक सगठन और पतित, अशक्त, निर्बल जनों का उद्धार—तीन कार्यों का समुच्चय ही वास्तविक यज्ञ कहलाता है। यदि किसी भी राष्ट्र में उपर्युक्त तीनों कार्य साथ-साथ सम्पन्न नहीं होते तो वह अधिक दिनों जीवित नहीं रह सकता। मातृभूमि के अस्तित्व के संरक्षण में इन तीनो कार्यों का विशेष महत्व है। हम श्रेष्ठ सज्जनों का सत्कार सम्मान तो करते हैं पर उसमे व्यापकता का अभाव है। इसमें पारस्परिक संघटन तो है पर कलह और अन्तर्विरोध से ... मात्रा बहुत कम है। हम दीन-... ओं का उद्धार तो करते हैं पर अल्पांश मे ही, सर्वांश मे नहीं। इनके अतिरिक्त इन तीनो कार्यों मे समन्वय नहीं दिखाई पड़ता। इसीलिए हमे सफलता के स्थान पर विफलता मिलती है।

यह तो ऊपर सकेत किया जा चुका है कि यज्ञ मे तीन कार्य समाविष्ट माने गये हैं–[१] श्रेष्ठ सज्जनो का सत्कार, [२] दीन-दुखियो का उद्धार और (३) सगतिकरण या पारस्परिक सघटन। वस्तुत राष्ट्र से सम्बद्ध सभी प्रकार के कार्यों का इन्हीं तीन कार्यों मे पूर्ण समाहार किया जा सकता है। यहां यह अनुचित नहीं होगा कि इन तीनों कार्यों की विविध कोटियो का सक्षिप्त परिचय दे दिया जाय।

१—श्रेष्ठ सज्जनो का सत्कार—श्रेष्ठ और सज्जन वही होते हैं जो स्वार्थ से दूर रहकर केवल मातृभूमि के लिए अपने-अपने क्षेत्र में, अपनी सामर्थ्य एव क्षमता के अनुसार कार्य करते रहते हैं। यदि उनके कार्यों का हम उचित मूल्यांकन नहीं करेंगे; उनके भरण पोषण की व्यवस्था नहीं करेंगे और उन्हें समय-समय पर विशेष पदकों या उपाधियों से अलकृत नहीं करेंगे तो वे प्रोत्साहन के अभाव में मातृभूमि की भक्ति से बहुत-कुछ विरत होकर, अन्य देशों में बसने लगेंगे या अपने ही देश में रहते हुए विदेशी राष्ट्रों के मिथ्या प्रचार जालों में फसकर उनके दलाल या प्रशसक बन जायेंगे। फल यह होगा कि राष्ट्र के विभिन्न विभाग या तो योग्य व्यक्तियों प्रतिभाजात् परिणामों से वचित रहेंगे या सिफारिशी अयोग्य लोगों की भीड़ से भरे दिखाई पड़ेगे। इस प्रकार यदि न्यायपूर्वक देखा जाय तो श्रेष्ठ-सज्जनों के सत्कार की प्रमुख चार कोटियां पाई जाती है—

[क] विद्वानों, प्राध्यापको, शिक्षको, उपदेशकों, प्रचारकों, विज्ञापन कर्ताओं आदि का उचित सम्मान।

[ख] सैनिको, आरक्षकों, प्रहरियों गुप्तचरों आदि का उचित सम्मान।

[ग] कृषकों व्यवसाइयो, व्यापारियों श्रमिकों, क्षेत्राधिकारियो आदि का उचित सम्मान और—

[घ] उन सभी लोगों का जो कि उपर्युक्त वर्गों मे नहीं आते किन्तु किसी न किसी रूप मे राष्ट्रिय कार्य करते रहते हैं, उचित सम्मान।

(२) दीन-दुखियो का उद्धार—इसी भांति दीन-दुखियो के उद्धार की बात आती है। दीन दुखी वही होता है जिसकी सामर्थ्य कम हो या जो अभाव-ग्रस्त हो यदि हम अपने राष्ट्र के अभाव-ग्रस्त या असमर्थ वर्ग को सम्पन्न एवं समर्थ बनाने का लक्ष्य अपने सामने रक्खें उसकी पूर्ति के लिए व्यावहारिक व्यापार भी करें और घृणा या उपेक्षा निकाल

में तो दुनिया की कोई भी शक्ति मातृभूमि पर हमला करने की जुर्रत नहीं कर सकती। दीन-दुखियों का उद्धार भी चार प्रकार का होता है—[क] घर-परिवार से ससद तक ही नहीं, वरन् आत्मा-परमात्मा विज्ञान आदि सभी सरल एवं जटिल विषयों से सर्वथा अपरिचितजनों में ज्ञान का सर्वांगीण विकास करना।

(ख) शारीरिक शक्ति, मानसिक बल एव स्नायविक क्षमता आदि से रहित या क्षीण जनों में व्यायाम, योगासन प्राणायाम, क्रीड़ादि का विशेष एव पूर्ण प्रबन्ध करना।

(ग) आर्थिक विपन्नता का समूलोच्छेदन करके सभी राष्ट्र-घटकों की जीवन-रक्षक आवश्यकताओं की पूर्ति के हर सम्भव प्रयत्न करना और—

(घ) विलासिता, अकर्मण्यता, मुफ्तखोरी आदि अवगुणों से हटाकर लोगों में कर्म की गरिमा एवं श्रम की महिमा का परिचय देना और कर्म-क्षेत्र नैपुण्य को प्रोत्साहित करना।

(३) पारस्परिक संघटन—का सीधा सीधा अर्थ यह है कि साध्य-साधन एवं साधकों में किसी प्रकार का असंतुलन न हो, ज्ञान, रक्षा, व्यापार एवं सेवा के क्षेत्रों में कोई भेद-भाव न हो और शासक-शासित, रक्षक-रक्षित, दूकानदार ग्राहक, शिक्षक-छात्र आदि के सम्बन्धों में बिगाड़ न हो। ऐसे पारस्परिक सघटन की भी मोटे तौर पर चार श्रेणियां की सकती हैं—

[क] क्षेत्र गत संघटन।

[ख] विचार, सम्प्रदाय, उपासना के मतभेदों के बावजूद सांस्कृतिक संघटन।

[ग] आर्थिक एव सेवागत सघटन और—

[घ] उपर्युक्त सभी प्रकार के पृथक् पृथक् प्रतीत होने वाले वर्गों या विभागों के कार्य विभाजन विषयक पार्थक्य को छोड़कर ऐक्यानुभूति से युक्त स्वस्थ राष्ट्रीय संघटन।

उपर्युक्त तीनों प्रकार के कार्यों का उनकी समस्त कोटियों या भेदों प्रभेदों के साथ व्यापक प्रसार एव समग्रत: समन्वय करने से ही राष्ट्र-यज्ञ सफल हो सकता है।

[ऐ] सभी के लिए विस्तृत कार्य-क्षेत्र—इन आठ गुणो पर भलीभाति से ध्यान देने पर, नवें गुण का फल के रूप में स्वतः प्रकटीकरण हो जाता है। जब आठ गुण पाल लिये जाते हैं तभी प्रत्येक राष्ट्र घटक की मिलीजुली शक्ति यह प्रार्थना करने की सामर्थ्य रख सकती है कि हे मातृभूमि! हमें विस्तृत कार्य-क्षेत्र प्रदान कर! इस गुण के साथ कर्तव्य-पालन की सर्वोपरिता सिद्ध हो जाती है।

यदि योग्य एवं समर्थ व्यक्तियों के लिए हम विस्तृत कार्य-क्षेत्र न खोज सके तो फिर बहारो, भ्रष्टाचारियों, अपराधियों और असामाजिक आलसी आदमियों की वृद्धि होती जायगी। फल यह होगा कि मातृभूमि के प्रति अपनत्व का भाव समाप्त होते देर न लगेगी। वर्तमान युगीन दायित्व की दुर्वहता के मूल में यह बेरोजगारी का भयकर रोग है। इसे दूर किये बिना, हमारे सामाजिक असंतुलन, प्रशासनिक शैथिल्य एवं वैयक्तिक अवगुण में कमी नहीं हो सकेगी।

सारांश यह है कि मातृभूमि की रक्षा के लिये उपर्युक्त गुणों पर आधारित सैद्धान्तिकता और व्यवहारिकता का मंजुल समन्वय होना अपेक्षित है। कोरी नारेबाजी बहस-मुबाहिसों, बनावटी प्रदर्शनों और मिथ्या फाइली कार्यवाहियों से राष्ट्र बनता नहीं बिगड़ता है। समस्त प्रबुद्ध मातृभूमि का सेवक एवं रक्षक वर्ग इन बातों पर गौर करे।

★

सिंहावलोकन

[पृष्ठ ८ का शेष]

जायं या लकीर के फकीर हो जायं। या स्वयं सुधार का उत्तरदायित्व अपने सिर पर न लें तो कुमार्ग पर चलती हुई पथ-भ्रष्ट जनता को उसके भाग्य पर नहीं छोड़ देना चाहिये। सरकार की सहायता भी लेनी चाहिये।

उद्देश्य है सुधार! सुधार में दोनों शक्तियों अर्थात् ब्रह्म-शक्ति और क्षात्र-शक्ति की आवश्यकता है। आर्य समाज ने कई बार सुधार के विषय में सरकार से मदद ली है।

बाल-विवाह के विरुद्ध कानून पास कराने का श्रेय है श्री हरविलास शारदा को जो आर्यसमाज के एक प्रतिष्ठित नेता थे, और जिनके नाम पर इस कानून को शारदा एक्ट कहते हैं।

जन्म-मूलक जाति-पांति तोड़कर विवाह करने के सम्बन्ध में जो एक्ट (कानून) पास हुआ और जिसको आर्य समाज विवाह एक्ट कहते हैं उसको पास कराने वाले श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त थे जो ४० वर्ष से अधिक समय से अब तक आर्यसमाज का नेतृत्व कर रहे हैं।

स्वामी दयानन्द का सुधार-कार्य केवल भारतवर्ष तक सीमित नहीं है। आर्य समाज एक सार्वभौमिक सस्था है। संसार का उपकार करना अर्थात् आध्यात्मिक, शारीरिक, आचार तथा अर्थ सम्बन्धी उन्नति करना उसका ध्येय है।

महाभारत के पश्चात् इन पांच हजार सालों में जो बुराइयां भारतवर्ष या दूसरे देशों मे फैल गई और जिनके कारण समस्त मानव जाति असत्य मार्ग पर चल पड़ी उन बुराइयों को दूर करने का प्रोग्राम स्वामी दयानन्द ने ससार के समक्ष रक्खा है। यदि आर्यसमाज के लोग श्रद्धा, सुदृढ़ गति और ऋजुता के साथ आगे बढ़ेंगे तो पक्की आशा है कि हम वैदिक धर्म के उस युग को ला सकें जो महाभारत से बहुत पूर्व विद्यमान था।

यही आस अटक्यो रहे,
अलि गुलाब के मूल।
अयि हैं बहुरि बसन्त ऋतु,
इन डारन वै फूल॥

प्रचार—
विशाल आर्य सम्मेलन

दिनाक १८ १९ दिसम्बर को तहसील आर्य सभा के तत्वावधान मे ग्रा० चैंदपुर निवाना तहसील बागपत (मेरठ) मे एक विशाल आ" सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर ही यहा एक आर्यसमाज की स्थापना भी की गई। इस सम्मेलन में आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री प० पूर्णचन्द्र जी आर्य भूतपूर्व महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब श्री प बलबीर जी शास्त्री महोपदेशक आ प्र सभा उत्तरप्रदेश श्री डा शिवराजसिंह जी श्रीमती बहिन सुखदा देवी तथा आयसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री चौ पृथ्वीराजसिंह बेधडक आदि महानुभावों के ओजस्वी भाषण एव मधुर उपदेश हुए। दो दिन तक यह सम्मेलन चलता रहा, इस क्षेत्र की जनता ने बडी सख्या में भाग लिया।

सभा मे भारतीय सेना के भूतपूर्व प्रधान सेनापति श्री तिमैया को भी श्रद्धाजलि प्रदान की गई।

—वैदिक प्रचार समिति तहसील गाजियाबाद ने गांव गाव में जो प्रचार की योजना बनाई है, उसका कार्य चालू हो गया है। "श्री रामचन्द्र आर्य, भजनोपदेशक प्रचार का कार्य बडी तत्परता से कर रहे हैं। गांव-गांव में जाकर आर्यसमाज स्थापित कराने का प्रयत्न किया जा रहा है। ग्राम ग्यासपुर खिन्दौडा, मनेडा, उदाना, नचला अबचू में आयसमाज स्थापना के प्रयत्न जारी हैं। इसके अतिरिक्त ग्यासपुर गोविन्दपुरी, भोजपु , जलालाबाद में भी प्रचार की धूम मचाई गई। श्री विजयपाल शास्त्री और सत्येन्द्रचन्द्र आदि का प्रयत्न प्रशसनीय है।

—आ० स० पुरबालियान जिला मुजफ्फरनगर का इस भांति वेद प्रचार हुआ १२ से २० अगस्त तक ग्राम में जन्माष्टमी से अष्टमी तक आठ सदस्यों के घर प्रात यज्ञ, रात्रि में वेद की कथा ग्राम के मुहल्ले-मुहल्ले में हुई कई सदस्यों के यहां सहभोज भी हुआ। इससे पहले भी १ अगस्त से २० अगस्त तक महाशय जबरसिंह भजनोपदेशक ने स्वामी प्रेमानन्द जी को साथ लेकर आसपास कई ग्रामों में वेदप्रचार और यज्ञ कराया, ३ ग्रामों में स्वामी दिव्यानन्द ने भी भाग लिया जन साधारण को आर्यसमाज की बातें बतलाई। वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम हुआ।

—सिरसी [मुरादाबाद] दि० १८ अक्तूबर स्थानीय आर्यसमाज की ओर से प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी दि०

प्रो. सुरेन्द्र शुक्ल आधुनिक अर्जुन
के मारीशस में विस्मयकारी प्रदर्शन

२२ दिसम्बर ६५ को बम्बई से चलकर शुक्ल जी ३ जनवरी ६६ को नैरोबी पहुचे और वहा से वायुयान द्वारा ३ बजे मौरीशस पहुचे।

एक प्रदर्शन मे प्राणायाम द्वारा हृदय की गति को बिलकुल बन्द कर दिया। डाक्टरों ने नाडी तथा हृदय को देखकर घोषणा कर दी कि मृत्यु हो गई जिससे अगले दिन प्रदर्शन की उपस्थित कम हो गई। प्राणायाम समाप्त करने पर जब शरीर स्वस्थ हुआ तो डाक्टर आश्चर्य चकित रह गये।

विदेश में प्रदर्शनों के कारण श्री प्रो० शुक्ला जी होली तक भारत की सभाओं में न आ सकेंगे। उनका पता है—प्रो० सुरेन्द्र शुक्ला आधुनिक अर्जुन Long Mountain, Mauritius

१४ अक्तूबर से २२ अक्तूबर तक वेद कथा एव राष्ट्रिय यज्ञ का आयोजन किया गया है। वेद कथा कार्यक्रम प्रति दिन रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक एव राष्ट्रिय यज्ञ प्रात ७॥ से ९ बजे तक चलते रहे। श्री प० ब्रह्मानन्द वर्मा के सुमधुर भजनों द्वारा भी वातावरण उत्साहपूर्ण बन गया।

आर्यसमाज सिरसी द्वारा प्रधान-मन्त्री कोष मे पहली किश्त

[illegible]

सिरसी [मुरादाबाद] दिनांक ८ अक्तूबर को आ स सिरसी की ओर से राष्ट्र रक्षा कोष में आज जिलाधीश श्री अयोध्याप्रसाद जी दीक्षित को पहली किश्त प्रधान मन्त्री कोष मे भेजने के लिए १०१) रुपये की भेंट दी। साथ ही एक प्रस्ताव द्वारा वीरगति प्राप्त जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। एव सरकार को हर प्रकार से सहायता देने का आश्वासन दिया गया।

—यज्ञपालसरन मन्त्री

—श्री प० आज्ञानन्द मैजिक लैन्टर्न सहित आ स नगीना पधारे उन्होंने दर्रा हाजीपीर लाहौर, बर्की थाना, पैटन टैंकों को तोडना तथा भारत के सैनिकों की वीरता भरे युद्ध के चित्र दिखलाये तीन दिन वहा बडा भारी मेला रहा। इतनी उपस्थिति नगीना में आज तक किसी उत्सव मे नहीं हुई। दूर दूर के गांव के लोग ये चित्र देखने के लिए रात्रि को आते रहे। पडित जी के प्रचार का भारी प्रभाव पडा।

—अरनियां के श्री करणवीरसिंह जी वानप्रस्थी का प्रचार कार्य निम्न प्रकार है—१, २ जुलाई '६५ गृह प्रवेश सस्कार, ५, ६ जुलाई लहरापुर प्रवचन ग्राम मसयाना ८ ९, १० सितम्बर आ स जहांगीराबाद, ११ से १४ " टिटौटा-वीरबाद।

मास नवम्बर में अरनिया कुटी पर प्रवचन २० से २२ नवम्बर ग्राम अचलपुर में यज्ञ, प्रवचन,दिसम्बरमें बटाला जिला "दवासपुर दीनानगर मठ जिला गुरदास पुर, अमृतसर, देहली सत्सग मे सम्मिलित हुए। —सभा मन्त्री

—आयसमाज बिसौली के वार्षिकोत्स" के अवसर पर उप सभा बदायू के ।न॰ । ''र यज्ञ व सत्सग मडल जिला बदायू की स्थापना कर जिले में "ज्ञ व सत्सग की धूम मच गई है, ।॰जौली आसफपुर तथा मुडयां पुरेकी में बड़े सुन्दर रूप से सत्सग आयोजित हुए, अब कई ग्रामों में इसी प्रकार के सत्सग आयोजित होने जा रहे हैं।

—वेदप्रकाश मन्त्री

—तहसील खागा जिला फतेहपुर के आर्यसमाज के द्वारा ठा० बजरगसिह आर्य भजनोपदेशक बुल शहर निवासी ने ता० १५, १६, १७ १८ ११-६५ को ग्राम रसपालपुर, भीमपुर, शिवपुरी, जमरा उमरा आदिक स्थानो में वैदिक धर्म का अच्छा प्रभावशाली प्रचार किया।

—आयसमाज खागा (फतेहपुर)

—आयसाज मिरजापुर की ओर से दि० ४-१०-६५ ई० से दि० १० १० ६५ ई० तक सभा के उपदेशक श्रीमान् प० रामकौशिक जी ने सम्पूर्ण यजुर्वेद से यज्ञ हवन कराया, यजमान का पद श्री लाला सुमेरचन्द जी प्रधान समाज ने ग्रहण किया।

सर्वश्री करतार सिंह ममतासिंह, दयाराम तथा अभयदेव आदि सज्जनों के साथ साथ ग्रामीण जनता ने बडी प्रसन्नता से धन घतादि से सहायता की जो धन्यवाद के पात्र हैं।

—मन्त्री आयसमाज मिरजापुर

—आयसमाज बेवर मे तारीख २९ अक्टूबर सन १९६५ से एक नवम्बर तक कथा द्वारा प्रचार हुआ।

यह कथा श्री वेदानन्द जी सरस्वती महाराज प्रज्ञाचक्षु व श्री स्वामी परमानन्द जी दण्डी द्वारा सम्पन्न हुई। उपस्थिति बहुत सन्तोषजनक हुई। —मन्त्री

—वानप्रस्थी श्री प०सुवर्णसिंह आर्य सिद्धान्त मनीषी ग्राम नगौला, जिला अलीगढ़ [उ प्र] के प्रसिद्ध वक्ता के विद्यार्थी जीवन तथा कुगुण कुव्यसन, ब्रह्मचर्य रक्षा अनृत भाषण, सचाई का महत्व, चोरी का परित्याग देश भक्ति, राज्य प्रम आदि विषयों पर भाषण होते रहे? और आर्यसमाजों में विविध गम्भीर विषयो पर प्रकाश डाला गया।

—करनसिंह 'विमल' श्यामनगर दिल्ली

दिनाक ३०-८-६५ को सतीदेवी के मन्दिर नवेतर त्रिमुहानी पर ठाकुर वेदपालसिंह भजनोपदेशक सभा द्वारा प्रचार किया गया जिसका जनता पर अच्छा असर रहा २१) सभा में वेद प्रचार को दान भी दिया गया।

कन्हैयालाल

—१३ अगस्त ६५ से २० अगस्त ६५ तक आयसमाज कोटद्वार गढ़वाल मे वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष में यजुर्वेद से मासिक यज्ञ कराया। वेदों की कथा की गई रोजाना प्रात व साय यज्ञ प्रभातफेरी हुई। —बालकराम आर्य

—ता० १३ ९-६५ व १४ ९ ६५ को आयसमाज फैजाबाद की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के भजनोपदेशक ठाकुर वेदपालसिंह आर्य आयसमाज भदरसा मे दो दिनों तक आयसमाज के विषयों पर एक समाज की श्रेणियों पर राष्ट्रीय एकता पर अपने भजनोपदेश द्वारा प्रचार किया जनता पर जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा और साप्ताहिक सत्सग जो बन्द था उसको भी प्रारम्भ कराया। प्रतिदिन उपस्थिति ५०० के लगभग रहती रही।

—मत्री आयसमाज

—आयसमाज फैजाबाद की तरफ से आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भजनोपदेशक ठाकुर वेदपालसिंह आर्य समाज चौरे बाजार मे ता० १५ व १६ ९ ६५ को पधारे। दो दिनों तक उन्होंने वैदिक धर्म के सिद्धान्तों, समाज की कुरीतियो और देश के प्रति सजग रहने का सदेश दिया जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। —केदारनाथ वेद

* ओ३म् *

आवश्यक निवेदन

★

वेद पथिक पं०धर्मवीर आर्य झण्डाधारी जी के सम्बन्ध में कुछ कहना या लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान होगा। श्री झण्डाधारी जी निजाम हैदराबाद के करीमनगर कालेपानी मे और काल कोठरी में देशभक्त कुंवर चांदकरण जी शारदा के साथ रह चुके हैं। आप हिन्दू महासभा के सत्याग्रह में जबलपुर के कारागृह मे श्री डा० गोकुलचन्द जी नारंग के साथ और एन०सी० चटर्जी के साथ रह चुके हैं।

नोआखाली के हत्याकांड के समय आर्य नेताओं के साथ आपने जो कार्य किया था, वह सारा आर्य-जगत् जानता है।

करांची में जब सत्यार्थ-प्रकाश पर सिंध सरकार ने प्रतिबन्ध लगाया था उस समय आपने देश-भक्त कुंवर चांदकरण जी शारदा के साथ पहुंचकर करांची के बाजारों में अपने भाषणो से तहलका मचा दिया था।

काश्मीर के सभी नगरों में श्री शारदा जी के साथ रहकर आपने प्रचार का कार्य महीनों तक किया था।

पंजाब के हिन्दी-रक्षा आन्दोलन में चण्डीगढ़ में आपने सत्याग्रह किया था।

दिल्ली में ईसाई मत का जाल फैलाने वाले पादरियों को चैलेन्ज देने में दिल्ली की पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर लिया था।

पुलिस ने आपका झण्डा छीना था, इसके लिए आपने आमरण अनशन करने की घोषणा करके झण्डे को पुलिस से सम्मान सहित वापिस प्राप्त किया था।

देश जाति और समाज की सेवायें जो आपने की हैं, वे स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य हैं।

दान

श्री झण्डाधारी जी अब तक लगभग पचास हजार रुपयों का दान शुद्धि में, वेद प्रचार में, आर्यसमाजों के दान में और विद्वानों की सेवा-सहायता में दे चुके हैं। हजारों परिवारों को आप शुद्ध करके वैदिक धर्म की शरण में ला चुके है।

झण्डाधारी जी को वाजश्रवा महर्षि की उपाधि भेंट

चारों वेदों के सस्वर वेद-पाठी श्री पूज्य पं० वीरसेन जी वेदश्रमी ने पं० धर्मवीर जी झण्डाधारी को वाजश्रवा की उपाधि से विभूषित किया है।

वाजश्रवा महर्षि ने यज्ञ में अपना सर्वस्व दान कर दिया था, उसी प्रकार आपने दिल्ली में अपने घर पर एक यज्ञ रचाकर जिस यज्ञ को श्री पं० वीरसेन जी ने कराया था, अपना सर्वस्व दान कर दिया।

महर्षि दयानन्द जी की जन्म-भूमि टंकारा में संचालित होने वाले उपदेशक विद्यालय के लिये आजीवन १०१) मासिक देने का सकल्प झण्डाधारी जी ने किया है। हम अखिल भारतीय कुशवाहा क्षत्रिय महासभा की ओर से प्रत्येक जातीय भाई-बहिनों से तथा आर्यसमाजों से अपील करते हैं कि श्री वेद पथिक पं० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी को विश्व-यात्रा करने के लिये तथा उनके साहित्य प्रकाशन के लिये दिल खोलकर तन, मन और धन से सहयोग देकर अपने कर्तव्य का पालन करें। और इनकी पुस्तकों को मगायें।

विश्व शान्ति का पावन सन्देश लेकर तथा वेद के सन्देश को लेकर विश्व के राष्ट्रनायकों से मिलने के लिये झण्डाधारी जी दिल्ली से प्रस्थान कर रहे हैं, यह हमारे देश भारत के लिये एक गौरव की बात है।

ऐसे देशभक्त और धर्मवीर का हम अभिनन्दन करते हैं।

श्री झण्डाधारी जी को एक थैली ११११) की अखिल भारतीय कुशवाहा क्षत्रिय महासभा की ओर से सराय रुहेला में भेंट की जायेगी। आप अपनी आहुति शीघ्र ही मन्त्री अखिल भारतीय कुशवाहा क्षत्रिय महासभा मोतियाखान भारत नेशनल फौण्डरी दिल्ली के नाम भेजें।

निवेदक—

बिहारीलाल
प्रधान

दिवाकर वर्मा
महामन्त्री

अखिल भारतीय कुशवाहा शाक्य क्षत्रिय महासभाः मोतियाखान दिल्ली।

आर्यसमाज का शाश्वत कार्य ही महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है

(श्री प्रो० जगमोहन मित्तल रानी बाजार बीकानेर)

आर्यसमाज का कार्य किसी एक समय व्यक्ति या समूह का कार्य नहीं है। इसी प्रकार इसका कार्य स्थान एवं काल से भी बंधा हुआ नहीं है आर्यसमाज का कार्य तो शाश्वत है। हर व्यक्ति द्वारा हर काल मे और हर स्थान पर इसके प्रचार की जरूरत है। प्रकृति के नियम के अनुसार पौधे में फूल और कांटे दोनों पैदा होते हैं, इसी प्रकार किसान प्रतिवर्ष अपने खेत से अनावश्यक घास और पौधों को खोदकर बाहर फेंकता है ताकि उसकी फसल को अच्छी खूराक मिल सके। ये घास और पौधे आप से आप उगते हैं। कमरे में धूल नित्य प्रति आ जाती है इसलिए झाड़ू की रोज जरूरत है। स्वामी दयानन्द तो अपने समय में झाड़ू लगा गये किन्तु उनके बाद भी भारत मे अनेकों मत और ढोंगियों का प्रादुर्भाव हुआ है। उस अज्ञान से जनसाधारण को बचाना हमारा कर्तव्य है। समाज में दुष्प्रवृत्ति के कीटों को नाश करना जरूरी है। देश और धर्म के शत्रु को भी मारना जरूरी है। इसी प्रकार अपने हृदय से स्वार्थ एवं बुरी भावनाओं को भी निकालना जरूरी है। जन-जन समाज के हित की सोचे। इस प्रवृत्ति को शाश्वत रूप से चलाने के लिये ही हमारे मनीषियों ने संन्यास प्रथा को जन्म दिया था। हर व्यक्ति अगर सारा जीवन नहीं तो एक चतुर्थ तो निस्पृह होकर समाज के कार्य में लगाए और कुछ दूसरा जीवन ही लगाएं एवं यह क्रम टूटने न पाये तब कहीं समाज में स्थिरता कायम रहती है। इस क्रम के टूटते ही समाज में सर्वत्र अराजकता फैल जाती है जैसे आज फैली हुई है। हर आर्य का यह धर्म है कि वह यथासम्भव अपने पड़ोस में अच्छी भावनाओं का प्रचार करे और सभ्यास प्रवृत्ति के अनुसार कार्य करे। उसके पड़ोस में भी जन्म, मुण्डन, विवाह मृत्यु इत्यादि घटनाएं होती हैं उनमें जहां तक हो सके आर्यसमाज से संस्कार करवाने की चेष्टा करे। अगर वह इन परिवारों में समय से पहुंचेगा तो अवश्य ही आर्यसमाज द्वारा हवन कराने में सफलता प्राप्त करेगा।

बन्धुओ! व्यर्थ विवाद में समय मत बिताओ, अपने-अपने मुहल्लों को आर्य साहित्य छोटे-छोटे ट्रैक्ट आर्य पत्र पत्रिकाओं से पाट दो। आपके शहर में कोई ऐसा पुस्तकालय और वाचनालय न बचे जहां के साप्ताहिक और मासिक प... चुके हों। आपके मोहल्ले में कोई ऐसा घर न बचे जहां साल में कम से कम एक बार हवन न हो और हजार परिवारों का कोई ऐसा मोहल्ला न बचे जहां आर्यसमाज मन्दिर न हो।

इस कार्य को मैं और आप कर सकते हैं। ऐसे छोटे-छोटे कार्यों में प्रान्तीय समाजों को परेशान करने से कोई काम नहीं। समाजों का सहयोग तो वार्षिक उत्सवों, शुद्धिकरण एवं अन्य बड़े-बड़े कार्यों में प्राप्त कीजिए। इकाइयों के कार्यों का समूह ही समाज का कार्य बन जाता है। ऋषि बोध पर हम अन्तर निरीक्षण करें और अपने को समाज के लिए समर्पित करने की भावना जगावें यही महर्षि के प्रति हमारी क्रियात्मक श्रद्धांजलि होगी।

(पृष्ठ ३ का शेष)

है कि मैं उसी समय आपत्ति कर सकती थी परन्तु आपत्ति करने का कोई कारण न था। डाक्टर कोहली का चुनाव उसकी शिक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर हुआ है। नाचघर में एकाध बार की भेंट की अपेक्षा उपयुक्त कारणों को विवाह का आधार बनाना कहीं अधिक बुद्धि संगत है। यदि प्रेम का कोई अर्थ है तो वह स्त्री-पुरुष में विवाह के बाद अंकुरित एवं पल्लवित होना चाहिए।'

इस समय विवाह के दो दृष्टिकोण बहु प्रचलित हैं। एक को हम पाश्चात्य और दूसरे को पौर्वात्य कह सकते हैं। पाश्चात्य दृष्टिकोण के अनुसार विवाह एक सौदा या ठेका है जिसे जब चाहे तोड़ा जा सकता है। पौर्वात्य दृष्टिकोण के अनुसार विवाह पवित्र आत्मिक एवं अटूट सम्बन्ध है जो सांसारिक सुख-भोग ऐश्वर्य के अर्जन, पारस्परिक विकास और अच्छे परिवार एवं समाज के निर्माणार्थ किया जाता है। पाश्चात्य दृष्टिकोण में सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि [लव एण्ड्स व्हेन मैरिड] विवाह होते ही प्रेम का अन्त हो जाता है और पौर्वात्य दृष्टिकोण की विशेषता यह है कि [लव बिगिन्स व्हेन मैरिड] विवाह के होते ही प्रेम आरम्भ हो जाता है। कुमारी रमेश ने इसी परम्परा का अनुसरण किया प्रतीत होता है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

झण्डाधारी पर आक्रमण

भगतसिंह कालोनी अंधेरी बम्बई में, श्री बलबीर आर्य झण्डाधारी यज्ञ कराकर लौट रहे थे कि ३ सिक्खों ने उन पर घातक हमला किया और उन्हें पकड़कर अन्दर ले जा रहे थे, किन्तु शोरगुल सुनकर भीड़ एकत्र हो गयी। और सिक्ख छोड़कर चम्पत हुए।

शुद्धि—

ग्राम सिगहा मझारा पो० सरीमपुर जिला शाहजहांपुर मे दि० ५-१-६६ को तीन हरिजन परिवारो की शुद्धि की गई जिसमे ३८ आदमी थे। यह लोग ईसाई पादरियो द्वारा ईसाई बना लिए गए थे। अब यह पुन शुद्ध होकर अपने धर्म मे दीक्षित हो गये हैं यह हरिजन वाल्मीकि थे। इनको श्री ठा उमरावसिंह जी मन्त्री आ स नवादा मधुकर जिला बदायू द्वारा शुद्ध क लिया गया उक्त ठाकुर साहब हमारी सभा के कार्यकर्ता हैं।

—म श्री शुद्धि सभा, आगरा

श्री वैदिकाश्रम (आर्यसमाज) कुशौलिया पो० जैथरा जि० एटा

आश्रम के पास एक एकड निजी भूमि है और यह जैथरा बाजार से ६ फर्लांग सडक के किनारे है। बाजार दर से कीमत ६ हजार रुपये है। पुस्तकालय, औषधालय, भोजनालय बनवाने के लिए पक्की ईंटें आदि सामान चाहिए। धनाभाव के कारण आश्रम वीरान पडा है। धनी महानुभाव यदि ध्यान दें और जनता एक रुपया प्रति व्यक्ति भी देवे तो यह स्थान वैदिक धर्म प्रचार का सुन्दर केन्द्र बन सकता है। इस समय ६० छात्र स्वामी प्राथमिक शिक्षा पा रहे हैं। अध्यक्ष स्वा० पदभुत प्रकाश जी है।

—प० रामकिशोर शर्मा

प्रचार—

—आर्यसमाज रींवा के तत्वावधान मे माह अगस्त व सितम्बर मे श्री प० ज्ञानेन्द्रदेव जी सूफी शास्त्री, तथा स्वामी अभयानन्द जी सरस्वती तथा श्री कु० वेदपालसिंह जी द्वारा व्यापक प्रचार हुआ। जिसमे पर्याप्त जनता आती रही। स्थानीय क्षेत्र मे यहाँ आर्य्य समाज के प्रचार का अभाव सा था। इन महानुभावो के प्रचार का बडा सुन्दर प्रभाव पडा।

—आर्यसमाज दयानन्द पथ सदर मेरठ मे २।९।६५ से श्री ओ३म प्रकाश जी शास्त्री खतौली निवासी के वेद प्रचार के उपलक्ष्य मे सारगर्भित भाषण हुए।—मन्त्री

—आर्यसमाज टाडा अफजल मे दि० ३ व ४ व ५ सितम्बर १९६५ को भाद्र पद की शुक्ला नौमी तिथि को मेला लगा जिसमे कुं सत्यदेव जी तथा श्री स्वामी नरेशानन्द जी द्वारा बडे सुन्दर ढग से प्रचार हुआ ग्राम की जनता ने श्री सत्यदेव जी के वीर रस के भजनो को सुनकर आर्यसमाज को दिल खोल कर दान दिया। और स्वामी जी का प्रवचन ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध मे बडा सुन्दर हुआ। —मन्त्री

आवश्यकता

सक्सेना कायस्थ आर्य परिवार के २५ वर्षीय ग्रेजुयेट (एल एल०बी०छात्र) के लिए गौर वर्णीय गृहकार्य मे दक्ष ग्रेजुएट अथवा गुरुकुल की स्नातिका कन्या की आवश्यकता है। स्वजातीय अथवा अन्तर्जातीय कोई भी सम्बन्ध स्वीकार हो सकता है।

पत्र व्यवहार का पता—
डा० ओ३मप्रकाश आर्य बी एम एस
बिहारीपुर बरेली (उ०प्र०)

स्पष्टीकरण की आवश्यकता है?

[ले०—श्री वीरेन्द्र जी मालिक, दैनिक वीर प्रताप जालन्धर]

भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार दोनों उन उपायों पर विचार कर रही हैं जिनके द्वारा ताशकन्द सन्धि को कार्यरूप दिया जा सके। पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष दिल्ली आये और इस विषय में भारत के स्थल सेनाध्यक्ष जनरल चौधरी से बातचीत करके वापस चले गये। अब जनरल चौधरी पाकिस्तान जायेंगे। इस बातचीत को आगे चलाया जायेगा और इन दोनों की सेनाओं की वापसी की योजना बनाई जायेगी।

मैं नहीं कह सकता कि भारत सरकार इस विषय में क्या सोच रही है। उसके किसी भी जिम्मेवार मंत्री ने अभी तक इस विषय में कुछ नहीं कहा। परन्तु ताशकन्द सन्धि के सिलसिले में एक बात स्पष्ट नहीं हो रही। यह कि पाकिस्तान ने जो घुसपैठकारी काश्मीर भेजे थे वह उन्हें वापस बुलायेगा अथवा नहीं। ताशकन्द सन्धि में शब्द प्रयोग किया गया है 'आर्म्ड परसनल' जिसका अर्थ है सशस्त्र व्यक्ति। यदि केवल 'आर्म्ड फोर्सेज' शब्द प्रयोग किया जाता तो केवल सशस्त्र सेनाओं की वापसी का ही प्रश्न उठता। अब सशस्त्र व्यक्तियों की वापसी का वायदा किया है। इसमें वह सब लोग शामिल हैं जिन्हें पाकिस्तान ने शस्त्र देकर कश्मीर भेजा था सुरक्षा परिषद ने भी युद्ध विराम के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव पास किया उसमें भी यही कहा गया था और उसे भी पाकिस्तान ने स्वीकार कर लिया था। अब जबकि दोनों देशों की सेनाओं की वापसी का प्रश्न विचाराधीन है और हम से हाजीपीर तथा करगिल की चौकियां खाली करने को कहा गया है तो पाकिस्तान से यह तो पूछना ही चाहिए कि वह अपने घुसपैठकारी वापस बुलाने को तैयार था नहीं। हमारे लिये तो इससे अधिक फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि हमने उनमें से अधिकांश समाप्त कर दिये हैं और बहुत से गिरफ्तार कर लिये हैं परन्तु यह तो एक सिद्धान्त का प्रश्न है। हमें यह तो पता होना चाहिए कि पाकिस्तान ईमानदारी से इस समझौते पर अमल करने को तैयार है या नहीं। यह स्पष्टीकरण इस लिए भी आवश्यक है कि पाकिस्तान के शासकों ने कश्मीर की रट फिर लगानी शुरू कर दी है। जब जनरल अयूब से पाकिस्तान में यह प्रश्न किया जाता है कि कश्मीर का क्या बना? जिसके लिए हमने अपना रक्त बहाया है उसकी तो ताशकन्द घोषणा में कहीं चर्चा तक भी नहीं आई, तो वह कहने लगते हैं कि कश्मीर सम्बन्धी स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ा। यह भी कहा जाता है कि यह समस्या फिर सुरक्षा परिषद में पेश की जायगी। यदि पहले की अपेक्षा कुछ फर्क पड़ा है तो केवल यह कि अब इस समस्या का शान्तिपूर्ण हल ढूंढा जायेगा। पाकिस्तान की जनता प्रधान अयूब से पूछ सकती है कि हमारे हजारों भाई मरवा कर अब तुम्हें शान्तिपूर्ण हल की चिन्ता कैसे हुई? परन्तु पाकिस्तान में स्थिति कल को क्या रूप धारण करती है इस बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता अपने और पाकिस्तान के सम्बन्धों में एक नया अध्याय शुरू करते हुए भी हमें विगत १८ वर्षों की घटनाओं की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। हमें यह भी न भूलना चाहिए कि इस बीच में पाकिस्तान के शासकों ने समय समय पर अपनी गद्दियां बचाने के लिये कश्मीर का प्रश्न उठाया है और उसके द्वारा लोगों के मन और मस्तिष्क में इतना विष भर दिया है कि उसे निकालना उन

राजनैतिक समस्याएं

के लिए सुगम न होगा। आज यदि जनरल अयूब जगह-जगह जाकर लोगों को सन्तुष्ट करने का यत्न कर रहे हैं तो इसी लिए। हो सकता है कि वह इसमें सफल हो जायें और हो सकता है कि विरोध बढ़ता जाय। पाकिस्तान में ताशकन्द सन्धि का विरोध भारत से अधिक हो सकता है। एक तो इसलिए कि इस लड़ाई में अधिक क्षति पाकिस्तान की हुई है। दूसरे इसलिए कि इस लड़ाई ने कश्मीर की समस्या हल नहीं की और न ताशकन्द सन्धि में ही कहीं उसकी चर्चा आई है १८ वर्ष तक यत्न करते रहने के बाद आज भी पाकिस्तान का हाथ वैसे ही खाली है जैसे १९४७ में था। उस समय भी उसने बलपूर्वक काश्मीर हथियाने का यत्न किया था, अब फिर किया है और दोनों ही बार वह असफल रहा है।

इन परिस्थितियों में यह अत्यन्त आवश्यक है कि हाजीपीर तिथवाल और कारगिल की चौकियां खाली करने से पूर्व पाकिस्तान से पूछा जाये कि घुसपैठकारियों के बारे में उसकी स्थिति क्या है? वह उन्हें वापस बुलाने को तैयार हैं अथवा नहीं? न हो तो फिर भारत सरकार को इस सन्धि पर जरा सम्भल कर अमल करना चाहिये। यह कोई बुद्धिमता नहीं कि आज हम बिना सोचे समझे अपनी सेनाएं वापस बुला लें और कल को हमें फिर पाकिस्तान के नए हमले के मुकाबले की तैयारी करनी पड़े।

अयूब ने हस्ताक्षर क्यों किये

पाकिस्तान के प्रधान जनरल अयूब ने ताशकन्द सन्धि पर हस्ताक्षर क्यों किये? यह प्रश्न न केवल पाक अपितु संसार के कई अन्य देशों में भी वाद-विवाद का विषय बना हुआ है। कारण यह कि ताशकन्द पहुंचने से पूर्व और उसके बाद जनरल अयूब और उनके साथियों ने बार-बार यह घोषणा की थी कि जब तक काश्मीर की समस्या हल नहीं होती या उसे हल करने के लिए कोई पग नहीं उठाया जाता उस समय तक पाक कोई समझौता नहीं करेगा। उसके विदेश मन्त्री श्री भुट्टो ने गत सितम्बर में यहां तक कह दिया था कि यदि १ जनवरी १९६६ तक काश्मीर समस्या हल न हुई या उसके विषय में कोई प्रभावशाली पग न उठाया गया तो पाक राष्ट्रसंघ से निकल आएगा परन्तु काश्मीर का प्रश्न वहीं का वहीं है। अपितु पहले से अधिक उलझ गया है। भारत के स्वर्गीय प्रधानमन्त्री ने ताशकन्द में यह स्पष्ट कर दिया था कि काश्मीर के प्रश्न पर बातचीत के लिए कोई गुंजायश नहीं। यह हमारा घरेलू मामला है इसके विषय में हम किसी तरह का हस्तक्षेप सहन नहीं करेंगे। इसके बावजूद जनरल अयूब ने ताशकंद सन्धि स्वीकार की तो क्यों?

मद्रास के विख्यात दैनिक 'हिन्दू' के विशेष प्रतिनिधि ने इस पर प्रकाश डाला है। सम्भवतः वह उन दिनों ताशकन्द में ही था जब यह वार्ता हो रही थी। उस समय जनरल अयूब ने, भरसक प्रयास किया कि किसी तरह हमारे प्रधानमन्त्री काश्मीर के विषय में वार्ता को तैयार हो जाएं। जब उसके सभी प्रयत्न विफल सिद्ध हुए और यह आशंका उत्पन्न हुई कि बातचीत टूट जायेगी उस समय जनरल अयूब ने सेनाओं की वापसी का प्रश्न छेड़ दिया। 'हिन्दू' के प्रतिनिधि का मत है कि काश्मीर प्रश्न के हल पर जनरल अयूब बार-बार बल दे रहे थे। परन्तु जो बात सबसे अधिक उन्हें परेशान कर रही थी वह यह कि लाहौर और स्यालकोट की छाती पर भारतीय सेनाएं बैठी हैं। वह किसी न किसी तरह इनसे मुक्ति पाना चाहते थे। भारतीय सेना स्यालकोट में रहने वालों को प्रतिदिन भारत के राष्ट्रीय ध्वज के दर्शन होते हैं। उनकी छाती फटती है जब वह देखते हैं कि उनकी भूमि पर भारत का राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा है। बरकी और डोगराई, लाहौर से १० मील की दूरी पर हैं। लाहौर में रहने वाले वहां से हमारे राष्ट्रीय ध्वज को नहीं देख सकते। परन्तु यदि वे इच्छोगिल नहर के निकट आएं तो उन्हें वह दिखाई देने लगता है। तो उन्हें अनुभव होता है कि इस लड़ाई का परिणाम क्या निकला है। जनरल अयूब इस स्थिति को शीघ्र समाप्त करना चाहते थे। उन्हें यह भय था कि यदि यह क्रम इसी तरह चलता रहा तो भविष्य में उनके अपने ही देश में उनके विरुद्ध घृणा की भावना तीव्र हो जायेगी, अत उन्होंने इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने स्वीकार कर लिए। क्योंकि श्री शास्त्री जी इस बात पर दृढ़ थे कि जब तक पाक के प्रधान उन्हें इस बात का विश्वास नहीं दिलाते कि भविष्य के लिए बल प्रयोग नहीं किया जायेगा, जो युद्ध विराम रेखा पहले नियुक्त हो चुकी है उसका उल्लंघन नहीं किया जायेगा और एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा उस समय तक सेनाएं वापस नहीं हो सकतीं। न केवल यह अपितु अन्त में जो निर्णय हुआ उसके अनुसार केवल सेनाएं ही नहीं अपितु सभी सशस्त्र व्यक्ति जिनमें घुसपैठिए भी हैं, वापस बुलाये जाने हैं। आज पाक के प्रधान या उनके विदेश-मन्त्री कितनी बड़ हांकते फिरें और चाहें कितना काश्मीर का वास्ता देते फिरें तथ्य यह है कि उन्होंने इस सन्धि पर हस्ताक्षर किये तो यह समझ कर कि उनके समक्ष दो ही मार्ग हैं—समझौता करें और ऐसी स्थिति पैदा करें कि भारतीय सेनाएं अपने वर्तमान स्थान से वापस जाएं अन्यथा एक और युद्ध के लिए तैयार हो जाएं।

जनरल अयूब को ज्ञात है कि भारतीय सेनाएं इस समय स्यालकोट से २ मील और लाहौर से १० मील की दूरी पर बैठी हैं। इच्छोगिल नहर को पार करना उनके लिए कठिन न होगा। यदि

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

माघ २४ शक १८८७ फाल्गुन कृ० ८
(दिनांक १३ फरवरी सन् १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष : २५९९३ तार - "आर्य्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

गान्धी मेले में वेद-प्रचार की धूम

—वेद प्रचार मण्डल ने गांधी मेला .... में प्रचार का स्टाल लगाया। जो .... के .... अति आकर्षण के बड़े चित्रों से सुसज्जित था जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—उत्तरप्रदेशीय सभा के प्रचारक श्री पं० रामकृष्ण जी आर्य तिवारी आ० क्षे० डिस्ट्रीक्ट में दि० १९ अक्तूबर से २१-१०-६५ तक आर्यसमाज के हाल में अपनी मजिक लेन्टर्न द्वारा प्रचार करते रहे।

पुनः लड़ाई हो तो कोई शक्ति स्यालकोट और लाहौर को नहीं बचा सकती। इसीलिए ताशकन्द में जब उसने काश्मीर का प्रश्न छेड़ने के सभी प्रयास करके देख लिए उस समय उसके पास केवल बचने का एक ही मार्ग शेष रह गया था कि किसी न किसी तरह भारतीय सेनाएं पाक के क्षेत्र से हटें। रूस भी इस मत का था क्योंकि सुरक्षा परिषद भी यह मांग कर चुकी है कि सेनाएं वापस होनी चाहिए। इसलिए भारत को इस बात का हठ न करना चाहिए। हमारे प्रधानमन्त्री भी समझते थे कि आज की स्थिति में हमें रूस का समर्थन न खोना चाहिए। अतः वह इस सन्धि के लिए तैयार हो गये।

जनरल अयूब और उनके विदेश-मन्त्री ने पुनः काश्मीर की रट लगानी शुरू कर दी है वह जो कुछ कह रहे हैं उसे समझना कठिन नहीं। पाक में ताशकन्द सन्धि के विरुद्ध भारी निराशा है। लोग पूछते हैं कि वह कश्मीर का क्या बना जिसके लिए यह सब खून बहाया गया है। जनरल अयूब यह तो नहीं कह सकते कि वह बाजी हार गये हैं। कहें तो लोग उन्हें खा जाएं। अतः अपना पल्लू छुड़ाने के लिए वह यही कह रहे हैं कि ताशकन्द सन्धि से कश्मीर के प्रश्न का शान्तिपूर्ण हल निकल आयेगा। यह रट उन्हें अभी न जाने कब तक लगानी पड़ेगी। वह सेनाओं के जनरल हैं। जानते हैं कि पहले युद्ध का क्या परिणाम निकला है। उन्हें यह भी ज्ञात है कि यदि युद्ध पुनः हो तो क्या परिणाम निकलेगा। इसीलिए उन्होंने ताशकन्द सन्धि पर हस्ताक्षर किये हैं।

★

प्रचार—

—दिनांक ७, ८, ९ नवम्बर में आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मथुरा की ओर से तरौली में स्वामी के मेले के अवसर पर एक विशाल प्रचार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें श्री लक्ष्मीसिंह आर्य एम० एल० ए० श्री टीकाराम पुजारी पूर्व एम० एल०ए०, कुंवर महिपालसिंह जी आर्य भजनोपदेशक, श्री रामस्वरूप शर्मा आर्य भजनोपदेशक ताहरपुरी। श्री चुन्नीलाल जी आर्य, श्री लालचन्द आर्य, श्री बल-राम जी की भजन मण्डली, श्री ओम्प्र-काश जी सिंह, श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज, श्री स्वामी सुखानन्द जी महाराज, श्री शान्तिस्वरूप जी आर्य वानप्रस्थी आदि अनेक महानुभावों के भजन एवं उपदेश हुए।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मथुरा की ओर से श्री कुंवर महिपाल सिंह जी आर्य भजनोपदेशक एवं श्री रामस्वरूप शर्मा आर्य भजनोपदेशक की नियुक्तियां जिला प्रचार के निमित्त की गई हैं। पूज्य श्री शान्तिस्वरूप जी आर्य वानप्रस्थी अवैतनिक रूप से जिला सभा के कार्यक्रम पर जिले में प्रचार कार्य कर रहे हैं। श्री सोहनलालजी आर्य प्रचारक जिले में राष्ट्रविरोधी ईसाई प्रचार निरोध का कार्य जिला सभा के अन्तर्गत कर रहे हैं। जो समाज अपने यहाँ उक्त महानुभावों द्वारा प्रचार का कार्यक्रम रखना चाहें वे मन्त्री जिला सभा कार्यालय कोसीकलां से सम्पर्क स्थापित करें।

—आर्ययुवक समाज डी० ए० वी० कालेज अम्बालानगर के तत्वावधान में 'विद्यार्थी-भवन" छात्रावास में यज्ञोप-रान्त १९-८-६५को ब्रह्मचारी रामप्रसाद जी (गुरुकुल कांगड़ी) का मनोहर व्या-ख्यान हुआ। एवमेव २६-८-६५ को श्री रामसिंह जी वैद्य ने विद्यार्थियों को उद्बोधन करते हुये विविध यौगिक आसनों का प्रदर्शन दिखाया। कार्यक्रम बड़ा रोचक रहा।

—वेदप्रकाश वेदालङ्कार प्रधान

—आश्विन शरद पूर्णिमा के शुभ अवसर पर आर्यसमाज टपरा (गया) की ओर से वैदिक धर्म का प्रचार का आयोजन एवं हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री शिवशंकरप्रसाद आर्य भजनोपदेशक जी का प्रचार जो दिनों तक धूमधाम से हुआ हजारों की तादाद में जनता की भीड़ होती थी जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—प्रधान

—हिन्द-नेपाल सीमा स्थित आर्य समाज जोगबनी में उभय देशों के पार-स्परिक सहयोग के द्वारा दिनांक ५-९-६५ से श्री स्वामी महावीरानन्द जी सन्यासी के द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से वैदिक धर्म प्रचार कार्य चल रहा है। दैनिक यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम नित्य प्रतिदिन चल रहा है।

श्री स्वामी जी के प्रवचन से स्था-नीय जनता विशेष प्रभावित हो रही है।

—विश्वम्भरप्रसादप्रतापसिंह

—गत ८ व २१ अक्तूबर को राम-नगर स्टेट (वाराणसी) में रामनगर के मेले में व इण्टरकालेज में श्री ठा० महा-वीरसिंह आर्य भजनोपदेशक के भजन भाषण हुए।

—स्त्री आर्यसमाज लालगंज में श्री माता जगरानी देवी जी के मनोहर व्याख्यान लगभग १२ दिन तक हुए। विशेष प्रभाव के कारण महिलाओं ने स्त्री आर्यसमाज की स्थापना भी कर ली। स्त्रियों ने यज्ञ के बाद यज्ञोपवीत भी कराये। पुरुषों में भी भाषण प्रभाव-शाली रहें। जिसका जनता पर अच्छा असर रहा।

—जिला उपसभा फर्रुखाबाद के अन्तर्गत श्री वीरव्रत जी तथा श्री सन्त-व्रत जी वानप्रस्थियों ने तहसील कायम-गंज में ३२ ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा २५ पुस्तकें वितरित कीं। दोनों महानुभावों की अवैतनिक सेवायें जिला उप सभा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगी।

—१५ से १८ कु० नवरावसिंह राघव प्र० सभा का आर्यसमाज अमीर-नगर खेरी में बड़ा प्रभावशाली प्रचार रहा, समाज ने ९१) रुपये सभा को वेद प्रचार में दिये १९ व २० का० कृ० बहोमहो खेरी में प्रचार हुआ।

—आर्यसमाज बड़खा में दिनांक २८-८-६५ से ३-९-६५ तक श्री प० धर्मसिंह जी मेधावी स्नातक गुरुकुल अयोध्या द्वारा, आर्यसमाज ग्राम खैराड, डीगांव वाजन आदि में वैदिक धर्म का मेधावी जी द्वारा प्रचार हुआ।

आचार्य आदि धर्म एवं कुटुम्ब धर्म पर अध्यक्षता में सेठ कन्हैयालाल जी के निवास स्थान पर महिलाओं में सम्मेलन हुआ। उपरोक्त प्रचार कार्य में श्री पं० रामचन्द्र जी तिवारी प्रधान आ० स० श्री बी० एल० भंडारी साहब, श्री सेठ कन्हैयालाल जी .... श्री .... कुमार शर्मा मन्त्री आर्यसमाज का सह-योग सराहनीय रहा।

—ता० १, २, ३ नवम्बर को ग्राम ततारपुर में स्थानीय आर्यसमाज की ओर से श्री वेदेश जी गुलाम और श्री चौधरी कैंवरलाल जी मुखिया का प्रचार बड़े उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अव-सर पर समीपवर्ती .... से भी जनता बड़ी संख्या में आती रही। प्रचार का बहुत अच्छा और स्थायी प्रभाव रहा।

इसी अवसर पर ता० ३-११-६५ बुधवार को श्री युगलकिशोर जी वानप्रस्थ वामनवास जिला रोहतक ने सन्यास आश्रम की दीक्षा ली। उनका नाम श्री स्वामी परमेश्वरानन्द जी सरस्वती रखा गया।

धर्माचार्य त्रिवेदतीर्थ श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती आचार्य वैदिक व्यास विद्यापीठ प० म० ततारपुर, डा० बाबूगढ़ छावनी जिला मेरठ ने वानप्रस्थी जी को सन्यास आश्रम की दीक्षा दी। उपस्थित जनता पर संस्कार का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

—मन्त्री आर्यसमाज ततारपुर

—गत रविवार १०-१०-६५ को श्री के० जी० चोपड़ा किरन इण्डिस्ट्रीज मोहाटी—१ के निवास स्थान पर आर्य समाज का रविवारीय अधिवेशन हुआ। यज्ञ—सन्ध्या एवं भजनों के पश्चात् प० अमरनाथ जी शास्त्री ने सन्ध्या के दूसरे मन्त्र की व्याख्या की।

—हंसराज आर्य मन्त्री

निर्वाचन—

—आर्यसमाज चाँदपुर जि० बिजनौर प्रधान—श्री अमीचन्द, उपप्रधान—श्री किशनसिंह, मन्त्री—श्री किशोरीलाल, उप मन्त्री—मदनमोहन व रामकुमार, कोषा०—श्री वेदप्रकाश, पुस्त०—श्री ....सिंह, नि०—श्री सोमदेव।

—आर्यसमाज ....

प्रधान—श्री द्वारिकाप्रसाद, उप-प्रधान—श्री देशराज, मन्त्री—श्री ईश्वर शरण, उपमन्त्री—श्री धर्मेन्द्रकुमार, कोषा०—जगदीश, निरीक्षक—श्री विश्वेश्वर-दयालु, पुस्त०—श्री शंकरलाल।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए दयानन्दीय आर्य्यभास्कर प्रेस, ५मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री .... भारती द्वारा मु०,प्र०, प्रकाशित

महान् राष्ट्रभक्त—

महर्षि दयानन्द

[ले०—श्री चन्द्रप्रकाश आर्य एम०ए०, साधु आश्रम होश्यारपुर]

भवन्ति नम्रास्तरवो फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घना । अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम ।

'यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल मे दूसरा कोई देश नहीं है इसीलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। · · जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्य्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

(सत्यार्थप्रकाश ११ वा समुल्लास)

यह था ऋषि दयानन्द का देश प्रेम और राष्ट्रीय गौरव। तत्कालीन भारत के भास्वर क्षितिज पर विपत्ति की घनघोर घटायें मडरा रही थीं। यह कपिल और कणाद की पावन वसुन्धरा राजनैतिक और सामाजिक दृष्टि से परतन्त्रता की बेडियों मे जकडी जा चुकी थी। इस भारतभूमि के नौनिहालों के मानस पटल से राष्ट्रीय चेतना का लोप सा हो गया था। आर्य जाति के जनमानस पर अंग्रेजियत का भूत इस भांति हावी हो चुका था कि यह जाति अपने को राम और कृष्ण की सन्तान कहने में हीन समझने लगी थी। ऐसे करालकाल में महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ और उन्होंने विचारों की प्रबल थपेडों से राष्ट्र की स ती हुई चेतना को धक्का मा॰ ॰र जगा दिया और भारतवासियों को यह सदेश दिया कि "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" (सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास)

इन वाक्यो से पता चलता है कि उस ऋषि के हृदय मे इस भारतभूमि की परतन्त्रता की बेडियों को भस्मीभूत करने के लिए कितनी भयकर अग्नि धधक रही थी ? कितना महान् स्वदेश प्रेम टपकता है इन शब्दों से जबकि अंग्रेजी राज यहाँ चमकता रहा था एक भी शब्द उसके विरुद्ध कहना काल के गाल में हाथ देना था परन्तु उस यति ने कहा और डंके की चोट से कहा। महर्षि दयानन्द और उनके स्वदेश प्रेम पर प्रकाश डालना सूर्य को दीपक दिखाना है, वेद को शास्त्र की तुला पर तोलना है अथवा नगाधिराज हिमालय को अलकनन्दा से मापना है। 'जननी जन्मभूमि' का नारा उनके रोम-रोम में रमा हुआ था।

यतिवर दयानन्द इस देश और जाति का बहुमुखी विकास देखना चाहते थे। वे सभ्यता और सस्कृति दोनों दृष्टिकोण से इस देश का उत्थान चाहते थे। ऋषिवर को आर्यावर्त से कितना प्रेम था यह उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से पता चलता है। तीसरे समुल्लास मे यज्ञ के प्रकरण मे होम का गुण बताते हुए मुनिवर लिखते हैं "इसलिए आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि, महर्षि, राजे महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय।" शतपथ के 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' के अनुसार ऋषिवर यज्ञ को सर्व सुखों का मूल मानते थे और इसीलिए उन्होने कहा कि अब भी यदि यज्ञ का प्रचार हो तो यह देश और जाति सुखी हो जाय। कितनी उत्कट कामना है ऋषिवर के हृदय में इस आर्यावर्त्त के सुख की ?

ऋषि इस भारत भूमि की सन्तान एव इसके पारिवारिक जीवन को अत्यन्त समृद्ध एव स्वस्थ देखना चाहते थे। कुमारावस्था में विवाह, ब्रह्मचर्यनाश एव स्वयवर प्रथा के लोप के कारण पतन के गर्त में गिरती हुई इस आर्य जाति को देखकर ऋषि को तीव्र वेदना हुई और उन्होंने लिखा 'जैसी स्वयवर रीति आर्यावर्त मे परम्परा से चली आती है वही विवाह उत्तम है। जब तक इसी प्रकार सब ऋषि मुनि राजा-महाराजा आर्य लोग ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़ ही के स्वयवर विवाह करते थे तब तक इस देश की सदा उन्नति होती थी। जबसे यह ब्रह्मचर्य से विद्या का न पढ़ना, बाल्यावस्था मे पराधीन अर्थात् माता-पिता के आधीन विवाह होने लगा तबसे क्रमश. आर्यावर्त देश की हानि होत

[शेष पृष्ठ १५ पर]

शिवरात्रि जिनका जन्मदिन है—

महर्षि को श्रद्धांजलि

[ले०—श्री भारतेन्द्रनाथ 'साहित्यालंकार']

संसार के इतिहास को जिन ऐतिहासिक क्षणों ने नया मोड दिया है, उन्हीं में से एक है 'शिवरात्रि' की ऐतिहासिक रात्रि।

गुजरात प्रान्त के टकारा नामक स्थान मे देश के अनेक शिव मन्दिरों की भांति धूमधाम से शिवरात्रि मनायी जा रही थी। भक्तजन, श्रद्धा में डूबे दिन भर व्रत रख, रात्रि जागरण मे अपने उपास्य देव को प्रसन्न करने का यत्न कर रहे थे।

श्रद्धा का वातावरण था पर ज्ञान सभी से कोसों दूर था। ऐसे में एक चौदह वर्षीय बालक मूलशकर जिसने बडे उत्साह से व्रत और जागरण का क्रम निभाया था, सोचने लगा—

[१] अखिल ब्रह्माण्ड का रचयिता शिव कौन है ? कहां है ? क्या यह प्रतिमा उसका प्रतीक हो सकती है।

[२] मैं स्वय कौन हू ?

[३] मृत्यु क्यों होती है ? क्या सभी को मरना पडेगा ?

इन तीन प्रश्नों ने मूलशकर के अन्तर को झकझोर दिया। उसकी जिज्ञासा की गूज मन मस्तिष्क पर छा गयी। और प्रश्नों के उत्तर की खोज मे वह सभी कुछ छोडकर घर से निकल पड़ा।

स्थान-स्थान पर जाकर, विद्वानों, साधुओं और योगियों से जिज्ञासा की पर कहीं सन्तोष न मिला। अन्त मे मथुरा मे प्रज्ञाचक्षु वीतराग दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती की कुटी में सत्य-ज्ञान की शिक्षा पाकर मूलशकर 'दयानन्द' बना।

इतिहास साक्षी है कि १८५७ की असफल राज्य क्रान्ति के भयकर दमन के पश्चात् भारत मे महर्षि दयानन्द ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सर्व प्रथम 'स्वराज्य' मन्त्र का उद्घोष किया। उन्होंने जर्जर, पीडित और निराशा ग्रस्त राष्ट्र मे नयी चेतना, नये प्राण, और आत्म, सम्मान का सचार किया।

प्रत्येक दिशा मे उनका मार्ग-दर्शन इतना स्पष्ट और क्रान्तिकारी है कि यदि उस पर ससार चले तो उसकी सभी समस्याए स्वय समाप्त हो सकती हैं।

महर्षि दयानन्द की मान्यता थी कि :—

ससार के सभी मनुष्य एक ईश्वर के पुत्र होने के नाते भाई-भाई की तरह हैं। उनमें किसी भी तरह का भेद करना मानवता, धर्म और विश्वशान्ति के विरुद्ध है। वे ससार में केवल ही जाति मानते थे—मानव जाति। एक धर्म चाहते थे—मानव धर्म। मनुष्य को मनुष्य से पृथक् करने वाली किसी भी व्यवस्था के वे कडे विरोधी थे। उनके जीवन का लक्ष्य था सत्य प्रसार, सत्य उद्घाटन और सत्य की आराधना। असत्य की समाप्ति के लिए ही उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश रचा—इसी ग्रन्थ में उन्होंने लिखा है कि —

"सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है।

"मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद-विवाद करने कराने के लिये।

उनका दृढ़ विश्वास था कि ससार मे सुख-शान्ति और आनन्द की अजस्र-धारा प्रवाहित करने के लिये यह परमावश्यक है कि ससार के सारे मत मतान्तर समाप्त हो जावें, और मनुष्य सच्चे अर्थों मे ईश्वर पुत्र बनकर सभी के कल्याण का कारण बने।

यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जावे तो स्पष्ट ज्ञात होगा कि महर्षि का यह कार्य तो 'विश्व एकता' स्थापना का महत्वपूर्ण पग है। वेद के शब्दों में उनका लक्ष्य था :—

'यत्र विश्व भवत्येक नीड।'

कि यह ससार एक घोंसला बन जाय। ससार के सभी मनुष्य अपना दुख और सुख परस्पर बांट लें। तो फिर दुख कहां रह सकेगा !

उन्होने सदैव उपदेश दिया कि ऐसे कार्य करो —

'जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

ससार के कल्याण का चिन्तन करते हुये भी उन्होंने भारत की दुर्दशा को सदा सामने रखा। विदेशी राज्य के प्रति उनका हृदय सदैव विरोध से भरा रहता था। राष्ट्र की दशा का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा कि.—

[शेष पृष्ठ १० पर]

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् शर्म न वः .... विचक्षिणमबसे हुमहे वयम् ।
दुग्धा मो रक्षा ...... रक्षिता वायुरवस्य स्वस्तये ॥१०॥

हे सर्वाधि ...... ! आप ही चर और अचर जगत के ईशान (रखने वाले) हो ...... "पूषा" सबके पोषक हो, उन आपका हम ...... रक्षा के लिये हुमहे' आह्वान करते हैं। 'यथा' जिस प्रकार से आप हमारे ...... रक्षा के लिए "अवस्य रक्षिता" ...... हो वैसे ही कृपा करके आप स्वस्तये" हमारी स्वस्थता के लिए 'पायु' ...... (विनाश निवारक) हो। आपसे पालित हम लोग, सदैव उत्तम कामों में उन्नति और आनन्द को प्राप्त हों। —"आर्याभिविनय"

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार २० फरवरी १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६६

लेखराम वीर तृतीया
(२१-२-६६)

आर्यसमाज का इतिहास बलिदानों का इतिहास है अमर हुतात्मा प० लेखराम जी आर्यसमाज के उन उज्ज्वल रत्नों में से हैं जिनकी ज्योति प्रभा उनके निधन से अनेकों वर्षों बाद भी हम सब के हृदयों को आलोकित कर रही है। आर्यसमाज की पहली पीढ़ी के दृढ आर्य पुरुषों ने जिस कर्मठता और लगन का परिचय दिया वह हम सबके लिए स्पृहणीय और अनुकरणीय है। महर्षि दयानन्द के कार्यकाल में ही प० लेखराम जी आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हो चुके थे और बाद में आपने अपना सारा जीवन ही महर्षि मिशन की पूर्ति में लगा दिया। आर्यसमाज के कार्य को पूरा करने के लिए पण्डित जी ने वेद प्रचार, साहित्य निर्माण और शुद्धि तीन मुख्य कार्यों पर बल दिया।

वेद प्रचार के लिए पण्डित जी के हृदय में जो तड़पन थी उसकी पूर्ति के लिए वे सभा के आदेशानुसार स्थान-स्थान पर घूमे और देशवासियों को वेद का सन्देश सुनाते रहे। हिन्दू समाज में फैले अन्धविश्वासों के विरुद्ध आपने जबरदस्त प्रचार किया और आर्यसमाज के नवयुवकों में उत्साह का संचार किया लेखन कार्य को आपने विशेष महत्व प्रदान किया, कुल्यात मुसाफिर आपकी प्रसिद्ध रचना है जिसमें आपने इस्लाम के पाखण्ड और अन्ध विश्वासों का उद्घाटन किया। महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आपने खोज के साथ उनका जीवन चरित्र तैयार किया।

शुद्धि को आप विशेष महत्व प्रदान करते थे, आपकी दृष्टि में इस्लाम और इसाईयत को स्वीकार करने वाले हिन्दू भ्रम में फंस रहे हैं उन्हें भ्रम से मुक्त करना और उन्हें अपने में मिला ना आर्य समाज और आर्यों का पवित्र कर्तव्य है। शुद्धि के लिए आपके दिल में जितनी तड़प थी उसका सौवां, हजारवां भाग भी अगर हमारे हृदयों में हो तो शुद्धि का कार्य बहुत आगे बढ़ सकता है।

हम प्रतिवर्ष लेखराम जी के बलिदान का स्मरण करते हैं जो हमें उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये करना ही चाहिये परन्तु क्या कभी हम इस पर भी विचार करते हैं कि उनके जीवन का बलिदान जिस शुद्धि मिशन में हुआ उसके लिये हम क्या कर रहे हैं। यह बलिदान दिवस इस सम्बन्ध में लेखा-जोखा करने के लिये सर्वोत्तम समय है। क्या आर्यजगत गम्भीरतापूर्वक अपने इस कर्तव्य की ओर भी गम्भीरतापूर्वक विचार करेगा। शुद्धियां आज भी होती हैं होती रहेंगी परन्तु शुद्धि की स्प्रिट जो एक मिशन के रूप में हमारे अन्दर होनी चाहिये हम में नहीं है। अपनी इस कमी को हमें मानना और दूर करना चाहिये।

लेखराम जी के बलिदान की कहानी हमें स्मरण दिलाती है कि हम मिशन के लिये तड़पें और उसी के लिये जियें और उसी के लिये मरें। आर्यसमाज की नयी पीढ़ी को लेखराम जी के जीवन से जो प्रेरणायें मिल सकती हैं उन्हें ग्रहण करने का यत्न करना चाहिये। आर्य शिक्षा संस्थाओं में लेखराम जी का बलिदान दिवस विशेष उत्साहपूर्वक मनाया जाना चाहिये। आर्यसमाजों में इस श्रद्धांजलि दिवस पर गम्भीर चिन्तन किया जाना चाहिये। प्रत्येक स्थान पर परिस्थितियों का सर्वेक्षण कर कार्यक्रम बनाये जाने चाहियें और ऐसा निश्चय होना चाहिये कि आगामी वर्ष तक हम इतना काम अवश्य पूरा करेंगे।

आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभाओं को साहित्य निर्माण के पण्डित जी द्वारा छोड़े हुए कार्य को पूर्ण करने में पूरी शक्ति लगा देनी चाहिये। यह निर्विवाद समझना चाहिये आर्यसमाज के कार्य को सफल और समर्थ बनाने के लिए साहित्य की अत्यन्त आवश्यकता है। हम जितना ही आर्य साहित्य तैयार करेंगे वह अज्ञान के महान तमसावृत दुर्ग को ढाने में उतना ही सहयोगी सिद्ध होगा। अमर बलिदानी प० लेखराम जी के प्रति यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रमुख आर्य महिला शिक्षा संस्था—
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस
३०वां वार्षिकोत्सव
१८ से २१ फरवरी ६६

नव-स्नातिकाओं को दीक्षान्त भाषण, भारत के रक्षा-मन्त्री माननीय श्री यशवन्तराव बी. चह्वाण जी देंगे

आर्य जगत् के प्रमुख विद्वान और नेता इस अवसर पर पधार कर आर्यसमाज का सन्देश जन-जन तक पहुंचायेंगे। राष्ट्र की विविध समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। शिक्षा प्रेमी एवं गुरुकुल शिक्षा प्रेमी अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर लाभ उठायें और संस्था संचालकों का उत्साहवर्द्धन करें। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस आर्यसमाज की प्रमुख स्त्री शिक्षा संस्था है। आर्य जगत् की स्वनामधन्या स्वर्गीया माता लक्ष्मी देवी जी ने अपने तपःपूत जीवन से इस संस्था को सींचा पुष्पित और पल्लवित किया। आर्य नेता स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज का आशीर्वाद इस संस्था को जन्म से ही प्राप्त था। आज आर्य जगत के उत्तराधिकारियों को इस संस्था की उन्नति में सहयोग प्रदान कर अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।

गुरुकुलोत्सव पर संस्था के प्रधान पद श्री डा० हरिशंकर शर्मा, मन्त्री श्री ठा० फत्तेसिंह आचार्या कुलपति श्रीमती ...कुमारी एवं गुरुकुल के कुलपति श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री एम०ए० ने आर्य जगत को सादर निमन्त्रित किया है। आर्य जनता को अपने परिचित अधिकारियों के सादर निमन्त्रण पर अवश्य पधारना चाहिए।

सभा की सूचनायें

वार्षिक प्रतिनिधि चित्र सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि वार्षिक प्रतिनिधि चित्र [फार्म] प्रत्येक आर्य समाजों को डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं जिस समाज में न पहुंचे हों कृपया सभा कार्यालय से पुनः मंगा लें

फार्म नियम अनुकूल प्रत्येक खानों की पूर्ति करके सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। साथ ही दशांश प्रति शुल्क (सूचकोटि तथा ।) आना प्रत्येक आर्य समासद के हिसाब से भेजने की कृपा करें।

२—सभा का आगामी वार्षिक सेशन कहां हो और किस तिथि में हो यह विषय सभा के विचाराधीन है निश्चय से आर्यमित्र द्वारा सूचित किया जायगा।

आवश्यक सूचना

शिवरात्रि के अवकाश के कारण आर्यमित्र का २७ फरवरी का अंक बन्द रहेगा। अब अगला अंक ६ मार्च को प्रकाशित होगा। —चन्द्रदत्त

मन्त्री सभा व अधिष्ठाता आर्यमित्र लखनऊ

झांसी कमिश्नरी आर्य समाजों को सूचना

झांसी कमिश्नरी आर्यसमाज एवं महाराजपुर (छतरपुर) एवं आर्य संस्थाओं को विदित हो कि समाज व संस्था निरीक्षणार्थ श्री चुन्नीलाल जी कश्यप मन्त्री आर्यसमाज सीपरी बाजार झांसी को निरीक्षक पद पर नियुक्त की जाती है। आपके पहुंचने पर आर्यसमाज एवं आर्य संस्थाओं का निरीक्षण करायें तथा सभा प्रत्यक्ष कर देने का कष्ट करें।

सुझाव और सम्मतियाँ

क्या ऋषिबोध पर्व पर भी हमारी आँखें नहीं खुलेंगी ?

[ले०—श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा, आगरा]

महर्षि दयानन्द ने जब वह बालक मूल शंकर थे शिवरात्रि को शिव मंदिर में जागरण किया उनकी आंखें खुली हुई थीं वह सब दृश्य को ध्यान से बुद्धिपूर्वक देख रहे थे, उनको एक साधारण घटना देखकर बोध हुआ कि यह पत्थर की मूर्ति सच्चा शिव नहीं हो सकता उन्होंने सच्चे शिव के रूप को जानने के लिए भरसक प्रयत्न किया, देशाटन किया और योगियों से भेंट की। उनको मथुरा में गुरु विरजानन्द के रूप में सच्चे गुरु प्राप्त हुए और जो जिज्ञासा उनको टंकारा में उत्पन्न हुई थी उनका समाधान मथुरा में गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर प्राप्त हुआ। महर्षि ने न केवल ईश्वर के मानने पर बल दिया है परन्तु ईश्वर के सच्चे नाम और उसके सच्चे काम को जानने पर बल दिया है। सत्यार्थ प्रकाश का पहला समुल्लास ईश्वर के नामों पर विचार करने के लिये है। उन्होंने अपनी कई पुस्तकों में ईश्वर के गुणों का वर्णन किया है। उनका तर्क से प्रेम इस से ही विदित है कि उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को प्रश्न और उत्तर के रूप में लिखा है जो सन्ध्या की विधि महर्षि ने प्रतिपादित की है उसमें गायत्री मन्त्र के पश्चात् जो नमस्कार मन्त्र रखा है उसमें एक बार नहीं ५ बार यह घोषणा है कि हमने सच्चे शिव को समझ लिया है वह शिव ही कल्याणकारी है। आर्यसमाज में प्रवेश करने वालों का तर्क से प्रेम प्रसिद्ध है परन्तु पिछले कुछ वर्षों से आर्य समाज के अन्दर एक दूषित वातावरण प्रचलित प्रजातन्त्र के ढंग से उत्पन्न हो गया है। धुराडियो के समान फर्जी मेम्बर बनाये जा रहे हैं उनका चन्दा भी कुछ स्वार्थी व्यक्ति अपने पास से अदा करते हैं और अनुचित रूप से बहुमत प्राप्त करके आर्यसमाज और उनसे सम्बन्धित संस्थाओं पर नाजायज कब्जा करके अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन बनाते हैं। ऐसे आक्रमण करने वालों से आर्यसमाज की रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है परन्तु ये कार्य बड़ा कठिन है यदि सभासदों की सूची के सम्बन्ध में कोई मुकदमा किया जाए तो कोई फल नहीं निकलता तथा आर्यसमाज की ही बदनामी होती है यदि समाचार पत्रों में लेख दिए जायें तो प्रत्युत्तर में अनेक झूठी बातें लिखी जाती हैं। उससे भी बदनामी समाज की ही होती है केवल एक ही वैधानिक उपाय है और वह यह कि प्रान्तीय सभायें सूची की जांच का कार्य निष्पक्ष भाव से अपने हाथ में लें और उसको पूरा करें इसमें भी कभी कभी बड़ी कठिनाई हो जाती है प्रतिनिधि सभा के अधिकारी कभी कभी अकारण या कारणवश अप्रसन्न हो जाते हैं और फिर न्याय करने में बाधा पड़ जाती है।

इस पवित्र पर्व पर मेरा अनुरोध है कि आर्यसमाज की आन्तरिक दशा सुधारने पर गम्भीरता से विचार हो जो नवीन सदस्य बनें वह आर्य सभासद उस समय तक न माने जायें जब तक प्रान्तीय सभा द्वारा निर्धारित सिद्धान्त की परीक्षा में उत्तीर्ण न हो जायें। पिछले ४ वर्षों में जो सदस्य बने हैं उनके सम्बन्ध में भी इसी प्रकार जांच होनी चाहिये। इस प्रकार का विधान प्रान्तीय सभायें बनायें। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों की सूची बनाने का पूर्ण अधिकार और उत्तरदायित्व प्रान्तीय सभाओं पर है क्योंकि प्रान्तीय सभा के लिए प्रतिनिधि इनमें से ही बनते हैं और उनका निर्माण भी इनसे ही होता है। इनमें से ही सार्वदेशिक सभा तक पहुंचते हैं यदि आरम्भ से ही रोकथाम न हुई तो नीचे से ऊपर तक विष फैल जायेगा जैसे फैल भी रहा है और रोग असाध्य सा हो जायेगा। कभी कभी इस दूषित प्रजातन्त्र प्रणाली का प्रभाव ऐसा होता है कि जो स्वयं रोगी है वह चिकित्सक का रूप धारण करने लगते हैं और रोग को बढ़ाते हैं ऋषि बोध पर्व से आन्तरिक दशा की सुधार का कार्य आरम्भ हो जाना चाहिए और निर्वाण पर्व पर इसमें पर्याप्त प्रगति आ जानी चाहिये।

★

आर्यसमाजों से निवेदन

आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि निम्न सज्जनों ने प्रचारार्थ अपना समय देने के लिए सभा को सूचित किया है अतः समाजों से अनुरोध है निम्न व्यक्तियों के प्रचार से लाभ उठावें।

१—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम ए. एल टी आ०स० गोरखपुर।

२—श्री वेदप्रकाश जी आर्य आजमगढ़

३—श्री सुखदेव जी आ स मिर्जापुर

—चन्द्रदत्त सभा मन्त्री

मास फरवरी ६६ के प्रोग्राम

श्री रामस्वरूपजी मा० मु०—१४ से २२ चौरीचौरा, २३ से २५ दोहघाट।

श्री धर्मराजसिंह जी— २६ से २८ बिस्वां।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—१९ से २१ अमीनाबाद लखनऊ, २५ से २८ अकबरपुर कानपुर।

श्री खेमचन्द्र जी— १९ से २१ अमीनाबाद लखनऊ,

श्री विन्ध्येश्वरी सिंह जी—१७ से २० बलिया।

श्री डा० प्रकाशवती जी—१४ से २२ चौरी चौरा, २६ से २८ बिस्वां।

महोपदेशक एवं उपदेशक

श्री प० विश्वबन्धु जी शास्त्री— १९ से २६ रामपुर।

श्री प० बलवीरजी शास्त्री—१४ से २२ चौरीचौरा, २८ से ३ लालनगर-बदायू।

श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री—१८ से २० मेस्टनरोड कानपुर।

श्री प० श्यामसुन्दर जी शास्त्री—१९ से २१ अमीनाबाद लखनऊ।

श्री प० विश्ववर्धन वेदालंकार—२६ से २८ बिस्वां।

श्री केशवदेव शास्त्री—१९ से २१ अमीनाबाद लखनऊ।

—स० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

नामकरण संस्कार

१० फरवरी को आर्यमित्र के व्यवस्थापक श्री नारायण गोस्वामी के पुत्र श्री वीरेन्द्रपाल गोस्वामी के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार आचार्य श्री प० श्याम सुन्दर जी शास्त्री ने पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न कराया। बालक का नाम इन्द्रदेव रखा गया।

महर्षि वेद-व्याख्या की ओर—

आर्य समाज का वेद विषयक कार्य

(श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम०ए० गवर्नमेन्ट कालेज पाली)

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के पश्चात् वेद विषयक जिस विवेचनात्मक साहित्य का सृजन आर्य विद्वानो ने किया उसका एक संक्षिप्त विवेचन इस लेख में प्रस्तुत किया जायगा पृथक् पृथक् वेद संहिताओ पर कुछ कार्य हुआ है, उसका विवरण इस प्रकार है। ज्वालापुर महाविद्यालय के स्वर्गीय कुलपति प० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ ने ऋग्वेदालोचन लिखा। इसकी प्रकाशन तिथि १९८५ वि० है। पं० भगवद्दत्त जी ने ऋग्वेद पर व्याख्यान और पं० जयगोपाल शास्त्री ने ऋग्वेद रहस्य लिखा जो उत्तर-प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभान्तर्गत घासीराम प्रकाशन विभाग से छपा। ऋग्वेद के दशम मण्डल को पाश्चात्य विद्वानों ने अर्वाचीन माना है। इस मत का खण्डन करते हुए प० शिवपूजनसिंह कुशवाहा ने 'ऋग्वेद के दशम मण्डल पर पाश्चात्य विद्वानों का कुठाराघात' शीर्षक पुस्तक लिखी जो रुद्रग्रन्थमाला संख्या ६ के अन्तर्गत २००७ वि० में छपी। ऋग्वेद की मंत्र संख्या भी विचार का विषय रही है। इस पर युधिष्ठिर मीमांसक की ऋग्वेद की 'ऋक् संख्या' तथा स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी की वेद की इयत्ता (आनन्द आर्य ट्रस्ट, दिल्ली) उल्लेखनीय हैं। 'ऋग्वेद की कतिपय दानस्तुतियो पर विचार' शीर्षक पुस्तक युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा लिखित है तथा प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, अजमेर से २००८ मे छपी।

यजुर्वेद पर पृथक् रूप से कोई विवेचनात्मक ग्रन्थ दृष्टिगोचर नहीं हुआ। सामवेद का स्वरूप (शिवपूजन सिंह कुशवाहा रुद्रग्रन्थ माला २२ संवत् २०१२) तथा सामवेद के क्षुद्र सूक्त (पं० राजाराम) सामवेद विषयक प्रकीर्ण ग्रन्थ हैं। पाश्चात्य विद्वानो की दृष्टि में अथर्ववेद की प्राचीनता तथा प्रामाणिकता एक सन्देहास्पद वस्तु रही है। ये विद्वान् अथर्ववेद को जादू टोने के मन्त्रो का संग्रहमात्र समझते हैं। अथर्ववेद विषयक रहस्यो को खोलने मे प० प्रियरत्न आर्य (वर्तमान मे स्वामी ब्रह्ममुनि) ने बड़ा परिश्रम किया। उनकी ब्रह्मवेद का रहस्य (प्रियग्रन्थ माला—२१), अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र (प्रिय ग्रन्थ माला-२४) तथा अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या (गुरुकुल स्वाध्याय मंजरी १३, १९९९ वि०) महत्वपूर्ण हैं। शिवपूजनसिंह कुशवाहा ने 'अथर्ववेद का स्वरूप' लिखा जो रुद्रग्रन्थ माला के प्रथम पुष्प के रूप मे छपी। पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार ने 'अथर्ववेद और जादू टोना' लिखकर इस वेद विषयक कतिपय भ्रमों का उच्छेद किया। पं० राजाराम ने अथर्ववेद का निघण्टु लिखा तथा प० भगवद्दत्त ने अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका लिखी।

आर्यसमाज ब्राह्मण ग्रन्थों को वेदों की संज्ञा प्रदान नहीं करता। इस पर बहुत कुछ ऊहापोह हुआ है। सनातनधर्मी विद्वानों से भी इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त पर यथाकदा विचार और चर्चा होती रहती है। कई वर्ष पूर्व शाहपुरा के राजपण्डित यमुनादत्त शर्मा षट् शास्त्री और करौली नरेश के राजपण्डित में इस विषय पर लेखबद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। दोनों ओर से जो संस्कृत में पत्र व्यवहार हुआ वह 'वेद निर्णय' के नाम से छपा है। उससे आर्यसमाज के मत की पुष्टि होती है। शाहपुरा के राजपण्डित ने आर्यसमाज के पक्ष को पुष्ट किया था। 'मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम् इत्यत्र कश्चिद् अभिनवो-विचार, शीर्षक एक निबन्ध प० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा लिखा जाकर प्राच्य विद्या परिषद् मे पढ़ा गया था। यह नूतन गवेषणापूर्ण तथा विचारोत्तेजक निबन्ध प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान से सम्वत् २००९ मे पृथक् भी आर्यसमाजी विद्वानों तथा सनातनधर्म के स्तम्भ तुल्य स्वामी करपात्री जी ने वेद संज्ञा विमर्श पर विचार किया। सनातनी पक्ष को वेद का स्वरूप और प्रामाण्य शीर्षक पुस्तक के २ भागों में विस्तारपूर्वक उल्लिखित किया गया है। आर्यसमाज की ओर से इसका उत्तर वेद संज्ञा विमर्श के रूप में दिया गया। इसे दयानन्द कालेज कानपुर के वैदिक अनुसन्धान के प्रकाशन के रूप मे छापा गया है।

आर्यसमाज और सनातनधर्म में वेदार्थ की प्रक्रिया के विषय में भी मौलिक अन्तर है। इस सम्बन्ध में आर्यसमाजी विद्वानों ने जो कुछ लिखा है वह निम्न है—

१-वेदार्थ करने की विधि चन्द्रमणि विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी १९७३ वि०।

२—वेदार्थ प्रक्रिया के मूलभूत सिद्धान्त ब्रह्मदत्त जिज्ञासु रा०क० ट्रस्ट।

३—वेदार्थ की विविध प्रक्रियाओं का ऐतिहासिक अनुशीलन युधिष्ठिर मीमांसक-प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान २००९ वि.।

४—वेद का अर्थ यज्ञपरक ही नहीं—गोपाल शास्त्री आर्यसमाज अमरोहा।

काशी विश्वविद्यालय के अरबी और फारसी के प्राध्यापक स्व० मौ० महेशप्रसाद की पुत्री कल्याणी देवी को वेद तथा पौरोहित्य कर्म की कक्षा में प्रवेशाधिकार न देने का फतवा एक समय हिन्दू विश्वविद्यालय के कट्टरपंथी पण्डित समुदाय ने दिया था। यह मामला निर्णयार्थ मालवीय जी महाराज तक पहुंचा था और उसमे आर्यसमाज की विजय हुई थी। उन्हीं दिनो प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति ने अत्यन्त खोजपूर्वक यह ग्रन्थ लिखा—'स्त्रियो का वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकाण्ड में अधिकार।' स्वामी मुनीश्वरानन्द जी ने भी एक पुस्तिका इस विषय पर लिखी है—यज्ञोपवीत तथा वेद मे स्त्री शूद्रो का अधिकार। स्वामी दर्शनानन्द जी का भी इस सम्बन्ध में एक ट्रैक्ट मिलता है—क्या वेदों के पढ़ने का अधिकार सबको नहीं?

आर्यसमाज वेद में लौकिक इतिहास की सत्ता स्वीकार नही करता। स्वर्गीय पं० शिवशंकर जी शर्मा काव्यतीर्थ ने सर्वप्रथम वैदिक इतिहासार्थ निर्णय' लिखकर इस विषय को उठाया। प्रियरत्न आर्य का 'वेद में इतिहास नहीं' (आर्य साहित्य विभाग, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा—१५) तथा चमूपति जी का 'यास्कयुग की वेदार्थ शैलियां' मुख्य-तया निरुक्त की वेदार्थ प्रक्रिया के आधार पर लिखी गई हैं जिनमे इतिहासवाद का खण्डन है। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के वेद में इतिहास पक्ष का खण्डन करते हुये चतुर्वेद भाष्यकार स्व० प० जयदेव शर्मा विद्यालकार ने क्या वेद में इतिहास है? लिखा जो आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर से २०१० वि० मे छपा। इस विषय का सर्वांगपूर्ण विवेचन युक्त ग्रन्थ वैद्यनाथ शास्त्री लिखित 'वैदिक इतिहास विमर्श' है जो पाश्चात्य मत की शकाओं का पूर्ण समाधान करता है।

वेद और विज्ञान विषयक निम्न-ग्रन्थ पठनीय और संग्रह योग्य हैं जो सिद्ध करते हैं कि वेदो मे विज्ञान अपने मूल रूप मे उपस्थित है—

(१) वैदिक साहित्य और भौतिक विज्ञान—ब्रह्मानन्द आयुर्वेद शिरोमणि, (२) वेद और विज्ञान वद—प्रेमचन्द्र काव्यतीर्थ साहित्य सदन दिल्ली १९४४ ई० (३) वैदिक विज्ञान—शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ (४) वैज्ञानिक सिद्धांत शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ. (५) सूर्य-सप्ताश्व वर्णन—प० गंगाप्रसाद अवकाश प्राप्त न्यायाधीश, (६) वेदो मे शरीर विज्ञान और शल्यक्रिया आत्माराम अमृतसरी. (७) वैदिक विज्ञान विमर्श—वैद्यनाथ शास्त्री सार्वदेशिक सभा २०२० वि०, (८) वेदो में आयुर्वेद रामगोपाल शास्त्री, (९) वेद विद्यायें क्षेमकरणदास त्रिवेदी (गुरुकुल कांगड़ी में व्याख्यान) (१०) वेद मे दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां ब्रह्ममुनि परिव्राजक, (११) वेद विद्या निदर्शन—पं० भगवद्दत्त। इनके अतिरिक्त प० सातवलेकर रचित वैदिक सर्पविद्या वेद में चर्खा, वैदिक अग्नि विद्या, वैदिक चिकित्सा, वेद में कृषि विद्या आदि उल्लेखनीय हैं।

अनोखी शिवरात्रि

ज्ञानी हुआ गुरु गुजराती आई अनोखी शिवराती ····

अन्धकार अज्ञान मिटा पुनि शुचि सत्यार्थप्रकाश हुआ
धरा उमगित हो उठी, अरु पुलकित अरुण प्रकाश हुआ।
वेद वीणा बजी प्रभू की गाकर प्रेम प्रभाती ······

अविच्छिन्न था ब्रह्मचर्य का, अनुपम वह व्रतधारी
धरा धसी गगन थर्राया, शोर मचा चहुंओर भारी
पाखण्ड खण्डिनी रहे पताका, ऋषिवर की फहराती···

शत्रुञ्जय से मृत्युञ्जय बन, शिव सच्चा बतलाया
दम्भ पोल पाखण्ड खोल, गुह गुरुडम का गढ़ ढाया
देव दयानन्द के दीपक में, बने हमारी बाती··· ···

क्षमा का अधि देवता हो, अमर आर्य अरु आर्यसमाज
वेद व्यवस्था से बन जाये, स्वतः स्वराज्य सच्चा सुराज
'मूल' मन्त्र मन मुग्ध मोहन, बने आर्य जग जाति ···

क्रान्ति के नूपुर ध्वनित हो, शान्ति के उठते चरण से
अरि दल उर उगे उजियारा दिव्य दिवाकर की किरण से
प्रतिकार पर प्रतिहार उमाये, शुचि 'शंकर' शिवराती ···

—मदनमोहन एडवोकेट आ. स. मोंठ (झांसी)

महर्षि दयानंद ने पुराण खण्डन क्यों किया

(पुराणो का रचनाकाल और रचयिता)

(ले०—श्री ओमप्रकाश जी आय ४९९ साहूकारा बरेली)

दिनांक २८ ११ १९६५ के आर्यमित्र मे पृष्ठ ५ और १२ पर मेरा एक लेख वेद और पुराण शीर्षक मे प्रकाशित हुआ है प्रसगवश मैंने उस लेख मे पुराणो के रचनाकाल के सम्बन्ध मे सब मान्य विद्वान प्रोफेसर अनन्त सदाशिव अल्तेकर का यह मत उद्धृत किया था कि पुराणो की रचना ४०० ई० से ८०० ई तक और उसके पश्चात भी समय समय पर होती रही। उस लेख के प्रकाशित होने के पश्चात अनेक सज्जनों ने पुराणों के रचना काल पर प्रकाश डालने का आग्रह किया अतएव इस लेख मे प्रमाणपूर्वक पुराणों का रचनाकाल प्रस्तुत करता हू।

(१) विश्व के प्राच्य साहित्य मे इन पुराणों का कोई वर्णन उपलब्ध नहीं होता किन्तु जहा कहीं भी पुराण' शब्द प्राच्य साहित्य मे प्रयुक्त हुआ है वह उसका तात्पर्य ब्राह्मण ग्रन्थों से है वर्तमान मे प्रचलित इन अठारह पुराणों और उप पुराणो से नहीं। इस सम्बन्ध मे उन्नीसवीं शताब्दी के प्रख्यात इतिहासकार श्री आर० सी० दत्त की एक सम्मति प्रस्तुत करता हू—राजा महाराजाओं के किसी प्रकार के इतिहास पहले विद्यमान थे जिनको इतिहास पुराण कहते थे। यदि ब्राह्मण ग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ और थे तो वे खोये गये हैं प्राय यह लोगों की कथाओं मे मिले रहे थे इनमें बहुत कुछ परिवर्तन हुआ और समय समय पर इनके साथ झूठी कथाए मिलाई गईं तथा प्राय एक सहस्र वर्ष के पश्चात इनकी अन्त में यह अवस्था हुई कि जिनमे हम इनको अब पाते हैं अर्थात नवीन पुराण। (एन्शियण्ट हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग ३ पृष्ठ ३०५)

( ) प्राय लोग यह समझते हैं कि अठारह पुराण और उपपुराण महाभारत कालीन महर्षि व्यास ने बनाए हैं लेकिन व्यास रचित साहित्य के अध्ययन से विदित होता है कि महाभारत कालीन सत्यवती सुत व्यास से इन पुराणों और उप पुराणो का कोई सम्बन्ध नहीं। व्यास जी के बनाए हुए वेदान्त सूत्र मीमांसा दर्शन की व्याख्या और योग दर्शन का भाष्य विश्व प्रसिद्ध हैं उनकी धार्मिक विचारधारा और धार्मिक मान्यताए भी सब विद्वानो पर प्रकट और स्पष्ट हैं परन्तु यह समस्त पुराण और उप पुराण उनके सिद्धान्त से अत्यन्त विरुद्ध हैं पुराणों का कोई भी सिद्धान्त पूर्वोक्त शास्त्रो से नहीं मिलता फिर व्यास जी रचित ग्रन्थो और पुराणो की भाषा मे भी पर्याप्त अन्तर है। व्यास जी के ग्रन्थों मे सूत्रो और श्लोकों की जो संक्षिप्तता किन्तु अर्थ मे प्रौढ़ता और गम्भीरता है वह पुराणों में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होती।

(३) समस्त पौराणिक विद्वान यह मानते हैं कि सब पुराणों की रचना महाभारत के पश्चात ही हुई और व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को भागवत सुनाया था। भागवत मे भी लिखा है कि राजा परीक्षित के अन्तिम दिनो मे जब उसे तक्षक सर्प ने काटा तो शुकदेव जी ने परीक्षित को भागवत सुनाया। (श्रीमद्भागवत प्रथम स्कन्ध)

परन्तु महाभारत मे लिखा है कि महाभारत युद्ध समाप्त होने के पश्चात शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म पितामह के अन्तिम समय जब युधिष्ठिर उनसे उपदेश लेने गए तो भीष्म ने शुकदेव जी का वर्णन करते हुए कहा—बहुत काल हुआ कि वह मर गए वह योगी पुरुष व्यास जी के पुत्र थे। उनकी मृत्यु पर व्यास जी का शोकातुर होना भी लिखा है। उस समय परीक्षित गर्भ मे थे। (महाभारत शान्ति पर्व। अध्याय ३२२ ३२३)।

अब यह विचारणीय है कि जब राजा परीक्षित के जन्म से पूर्व ही शुकदेव जी मर गए तो मरणोपरान्त ९६ वर्ष के बाद आकर उनका भागवत सुनाना नितान्त असम्भव है और यह प्रकट करता है कि शुकदेव द्वारा परीक्षित को भागवत सुनाने की बात बिलकुल असत्य है तथा भागवत व्यास जी रचित नहीं है। देवी भागवत के टीकाकार ने देवी भागवत की भूमिका मे स्पष्ट लिखा है कि जयदेव के भाई बोपदेव ने भागवत बनाई है। (१८९० मे प्रकाशित देवी भागवत की भूमिका)।

(४) विश्व साहित्य मे पुराणों का सर्वप्रथम वर्णन राजा भोज (पांचवी शताब्दी के उत्तरार्ध) के समय बने हुए संजीवनी नामक ग्रन्थ मे मिलता है वहा लिखा है किसी ने राजा भोज के राज्य मे व्यास जी के नाम से मार्कण्डेय व शिव पुराण बनाया था। उसका समाचार राजा भोज को विदित होने से उन पण्डितो को हस्तछेदन का दण्ड दिया व उनसे कहा कि जो कोई काव्यादि ग्रन्थ बनावे तो अपने नाम से बनावे ऋषि मुनियों के नाम से नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश। समुल्लास ११)

(५) उसके पश्चात पुराणों का वर्णन ११०० ई० में भारत आए हुए इतिहासकार अलबरूनी ने अपने यात्रा वृत्तान्त मे किया है। (श्री आर० सी० दत्त की हिस्ट्री आफ एन्शियन्ट इण्डिया)

(६) समस्त पुराणों मे बुद्ध को विष्णु का अवतार माना है और बुद्धावतार लिखा है तथा जिन वाक्यों में यह कथन है उनमें भूतकाल पड़ा है भविष्यत नहीं। इससे स्पष्ट है कि जिस समय पुराण बनाए गये उससे पूर्व बुद्ध हो चुके थे। यदि उन वाक्यों मे भविष्यत्काल होता तब भी असत्य था क्योंकि यह नितान्त असम्भव है कि कोई भविष्य मे होने वाली घटना या व्यक्ति का वर्णन उसके घटित होने या जन्म लेने से पूर्व ही भविष्यकाल के रूप मे करे।

(७) वायु पुराण के एकलिंग महात्म्य मे चित्तौड के राजा बापा का नाम आया है जो कि सन ७०० ई० मे हुआ था। यह राजा मुसलमान हो गया था अतएव वायु पुराण ८वीं शताब्दी के पीछे का ही बना हुआ है पूर्व का नहीं।

(८) वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक रामानुजाचार्य सम्वत २०१० विक्रमी में चैत्र मास शुक्ल पक्ष को केशव के घर उत्पन्न हुए। उन्होंने अपने शिष्यों को शंख चक्र गदा और पद्म के चिन्ह धारण करने की आज्ञा दी। रामानुजाचार्य से पूर्व इन चिन्होंके लगाने का कहीं वर्णन नहीं है। अतः जिस ग्रन्थ मे भी इन चिन्हो का वर्णन होगा वह निश्चय ही रामानुजाचार्य के पश्चात बना होगा और जिस ग्रन्थ मे इन चिन्हो का खण्डन होगा वह तो इन चिन्हो के व्यापक प्रचलन के बाद रामानुजाचार्य के बहुत पीछे बना होगा। अब देखिए लिंग पुराण मे इस मत के खण्डन के रूप मे लिखा है—

शंख चक्र तप्यित्वा यस्य देह प्रदह्यते स जीवन कुणप त्याज्य सर्व धर्म बहिष्कृता ॥

अर्थात शंख चक्र को तपाकर जिसके शरीर पर छाप लगाई गई है वह जीवन रहते हुए भी मृतक के समान और सब धर्मों से त्याज्य के समान बहिष्कृत करने योग्य है। इससे सिद्ध हुआ कि लिंग पुराण निश्चय ही ११वीं शताब्दी के बाद का बना हुआ है।

(९) जगन्नाथ जी का मन्दिर स० १२३१ विक्रमी मे उड़ीसा के राजा अनग भीमदेव ने बनवाया था। मन्दिर पर भी यह सम्वत लिखा है परन्तु मन्दिर का महात्म्य स्कन्द पुराण मे लिखा है। अतएव स्कन्द पुराण निश्चय ही उस मन्दिर के पश्चात अर्थात १३वीं शताब्दी में बना है व्यास के द्वारा या व्यास युग मे नहीं।

(१०) ब्रह्मपुराण मे भी जगन्नाथ पुरी के मन्दिर का वर्णन मिलता है। अतः उसकी रचना भी मन्दिर निर्माण के पीछे ही अर्थात तेरहवीं शताब्दी मे ही हुई है वह महाभारत कालीन व्यास कृत कदापि नहीं है।

(११) सम्राट अकबर (१५५६—१६०५ ई०) के समय एक पादरी अमेरिका से भारत में तम्बाकू लाया था उससे पूर्व भारत मे तम्बाकू नहीं था। (सम्राट जहांगीर रचित—तुजुक जहांगीरी) परन्तु ब्रह्माण्ड पुराण मे लिखा है—

प्राप्ते कलियुगे घोरे सर्ववर्णाश्रमेतरा। तमाखु भक्षितयेन सगच्छेन्नरकार्णवे ॥

अर्थात घोर कलियुग मे तम्बाकू भक्षण करने वाला नरक मे जाता है।

(१२) इसी प्रकार पद्म पुराण अध्याय २२ मे लिखा है—

धूम्रपान रत विप्र दानं कुर्वन्ति ये नरा। दातारो नरकं यान्ति ब्राह्मणो ग्राम शूकर ॥

अर्थात जो मनुष्य तम्बाकू पीने वाले ब्राह्मण को दान देते हैं वे नरक को जाते हैं और ब्राह्मण गांव के सुअर का जन्म लेता है।

हिन्दुओं के किसी भी प्राचीन धर्म ग्रन्थ में तम्बाकू और धूम्रपान का निषेध नहीं है। सिक्खो के प्रथम गुरु नानक से नवे गुरु तेगबहादुर तक किसी ने भी तम्बाकू और धूम्रपान का निषेध नहीं किया क्योंकि तम्बाकू भारत मे सर्वप्रथम १६वीं शताब्दी के उत्तरार्ध मे आया वह सिक्ख गुरुओ के सामने नया नया था इसलिए उन्होंने उसका खण्डन नहीं किया। परन्तु औरंगजेब के काल में सिक्खो के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी ने उसका अधिक प्रचार देखकर उसका खण्डन किया तथा उसके पश्चात होने वाले अन्य सिक्ख मत प्रचारको ने भी उसका निषेध किया।

अतएव ब्रह्माण्ड पुराण और पद्म पुराण दोनो ही अकबर के पश्चात १७वीं शताब्दी मे बनाये गये हैं और व्यास रचित कदापि नहीं हैं।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रमुख आकांक्षायें

[श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

जब हम रात को सोते हैं तो बहुत-सी आकांक्षायें भी सो जाती हैं। दूसरे दिन प्रातःकाल हमारे उठने के साथ ही वह आकांक्षायें भी जग उठती हैं। जो कर्मशील हैं वह जागी हुई आकांक्षाओं की पूर्ति में सफल हो जाते हैं। जो प्रमादी या अकर्मण्य हैं वह फिर भूल जाते हैं और दूसरी रात को वह जागी हुई आकांक्षायें फिर सो जाती हैं। यहां तक कि मृत्यु आ जाती है और वह आकांक्षायें संस्कार रूप में दूसरे जन्म के लिए स्थगित हो जाती हैं।

जब ऋषि बोधोत्सव आता है तो एक दो सप्ताह बड़ी धूमधाम रहती है। उत्सव किये जाते हैं। पत्रों के विशेष अङ्क निकलते हैं। हमारी सोई हुई आकांक्षायें फिर जाग उठती हैं। व्यक्तियों और संस्थाओं में अगले वर्ष के लिए योजनायें बनाई जाती हैं। परन्तु अधिकतर तो यह उत्साह की गर्मी दो सप्ताह से अधिक नहीं चलती। ऋषि बोधोत्सव फाल्गुन में होता है। जाड़ा और गर्मी दो ऋतुओं का मेल होता है। गर्मी बढ़ती है और सर्दी कम होती है। परन्तु जितनी गर्मी बढ़ती जाती है हम शिवरात्रि की जागी हुई उमंगों को फिर भुला देते हैं। 'ज्येष्ठ मास की दोपहरिया सोने के लिए होती है जागने के लिए।' शेक्सपियर ने एक नाटक लिखा है। (मिड समर नाइटस ड्रीम) अर्थात ग्रीष्म रात्रि का स्वप्न। हम मिड समर डेड्रीम) अर्थात् ग्रीष्म दिन के स्वप्न देखते हैं। इस प्रकार हमारी आकांक्षायें जागकर भी सो जाती हैं।

गत वर्ष ऋषि बोध उत्सव हुआ था आपकी आकांक्षायें जागी होंगी। क्या आपने हिसाब लगाया कि वह जागी हुई आकांक्षायें पूरी हुई या नहीं। स्व० भी दयानन्द एक बार जागकर सोये नहीं। लगभग ४५ वर्ष जागते रहे। और उन्होंने देश और जगत् को जगा दिया। मैंने भी गत वर्ष सोचा था कि कुछ सोई हुई आकांक्षायें जाग उठें। उनमें कुछ तो पूरी हुई परन्तु कुछ सोई न होकर भी पूरी न हो सकीं देखिये आगे क्या होता है? यदि व्यक्तियों को छोड़ दिया जाय तो आर्यसमाज की सामूहिक रूप से एक आकांक्षा है। वह यह कि संसार को आर्य बनाओ। संसार को आर्य बनाना बड़ी चीज है। भारत को ही आर्य बना पावें। यह भी बड़ी बात होगी। परन्तु आकांक्षायें स्वयं पूरी नहीं हो जातीं। ऐसा होता तो भिखारी लोग सम्पन्न हो जाते। तप और बुद्धिपूर्वक तप की जरूरत होती है।

मैं देखता हूं कि इस सम्बन्ध में आर्यसमाज में शुद्धि की आकांक्षा सर्वथा प्रसुप्त हो गई है। हमारा इस ओर कुछ भी ध्यान नहीं है। इच्छा होगी तो अत्यन्त प्रसुप्त और तनु है, न होने के बराबर है। ऋषि बोध उत्सव कई आये और चले गये। हमारी यह आकांक्षा नहीं जागी। जागी होगी तो इसका कोई प्रमाण नहीं। कोई जागृति के चिह्न नहीं। गत पिछले दिनों में तो कोई किसी प्रकार की, किसी माध्यम से, किसी परिमाण में भी आकांक्षा जीवित दृष्टिगोचर नहीं होती। मेरा प्रस्ताव यह है कि इस वर्ष शुद्धि की आकांक्षा को फिर जागृत किया जाय, और वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप से यह सोचा जाय कि हम शुद्धि का काम किस प्रकार चालू कर सकते हैं। इसका यह तात्पर्य नहीं कि पुरानी बात को फिर दुहराया जाय। और जो नैतिक समस्यायें तब उत्पन्न हो गई थीं उनको फिर उभारा जाय शुद्धि तो यह चाहती है कि गत अनुभवों से लाभ उठाया जाय। नवीन प्रकार के साहित्य की आवश्यकता है जिससे दूसरे के विचारों में उथल पुथल हों। जब प्रचार द्वारा दूसरों के विरोधी विचारों में शंका उत्पन्न कर दी जाती है तो ऐसी अवस्था हो जाती है जैसे कोई वृक्ष खुखला कर दिया जाय तो उसके गिराने में सुगमता हो जाती है। यह प्रचार के नैरन्तर्य से ही हो सकता है।

आजकल पहले की अपेक्षा हमारे बड़े बड़े उत्सव होते हैं, परन्तु इनमें वही लोग शरीक होते हैं जो हमारे सिद्धान्तों को मान चुके हैं। हमारी ओर से कोई ऐसा उपाय नहीं किया जाता कि जो हमारे उत्सवों में नहीं आते उन तक हमारा संदेश पहुंचे।

वह न आयें तो तू ही चल रगीं।
इसमें क्या शान तेरी जाती है॥

हर समाज को हिसाब लगाना चाहिये कि किस किस वर्ग के लोग हमारे पास नहीं आते। और क्यों नहीं आते? और उन तक हम कैसे पहुंच सकते हैं? हमारे साहित्यकार ऐसे नये मार्ग तलाश कर सकते हैं जिनसे हम उन तक पहुंच सकते हैं।

मैंने यहां संकेत ही किया है। जहां चाह है वहाँ राह है। चाह तो हो।

ऋषि बोध उत्सव के अवसर पर प्रसुप्त आकांक्षाओं को जगाओ।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत॥

●

द्युमत्तम

[डा० मुन्शीराम शर्मा एम० ए० डी० लिट]

जब तक हम सोते हैं तब तक तमोमयी अवस्था है, पर ज्यों ही जग पड़ते हैं अन्तःचैतन्य उद्बुद्ध होकर अपने अस्तित्व को सार्थक करने लगता है। प्रकाश भीतर भी है बाहर भी है पर दोनों का स्रोत एक तीसरा प्रकाश है जिसे वेद ने द्युमत्तम कहा है। एक द्युमत है दूसरा द्युमत्तर है, तो तीसरा द्युमत्तम है। ऋषि कहते आये हैं कि द्युमत्तम से ही इन अग्नि विद्युत, तारकावलि, चन्द्र और सूर्य को प्रकाश प्राप्त हुआ है। ब्रह्माण्ड की ये दिव्य द्योतित शक्तियां अपने सूक्ष्म रूप के साथ मानव शरीर में भी विद्यमान हैं। अतः मेरे भीतर और बाहर जिस प्रकाश का अनुभव हो रहा है वह प्रकाश के उस परम उत्स से ही प्रकट हुआ है।

रचना क्रम में यह स्रोत हिरण्य गर्भ है पर वेद कहता है कि इनका भी एक स्रोत है जिसे स्कम्भ कहा जाता है। मनुष्य समझते हैं कि हिरण्यगर्भ परम है सबसे उत्कृष्ट अवस्था है और वह अनत्युच है, अनतिक्रमणीय है पर वास्तविकता यह है कि इसके गर्भ में जिस हिरण्य का, प्रकाश का सिंचन हुआ है, वह उस प्रकाशपुञ्ज स्कम्भ द्वारा हुआ है जो स्वयं अविचल और अया होते हुये भी सबका, जात-मात्र का आधार बना हुआ है। अतः द्युमत्तम हम हिरण्यगर्भ को नहीं स्कम्भ को कहेंगे।

शिवरात्रि को हमने ऋषि बोध पर्व का नाम दिया है। भारत ही नहीं, भूमण्डल भर के लिये संवत १८२४ की शिवरात्रि एक महान वरदान के रूप में अवतरित हुई थी। शिव के उपासक उस रात्रि को सोते नहीं जागरण करते हैं। महर्षि दयानन्द ने भी १४ वर्ष की आयु में ऐसी ही एक शिवरात्रि को जागरण किया पर वह जागरण वास्तविक जागरण में परिणत हो गया और वह जागरण अकेले महर्षि का ही नहीं, भूमण्डल भर का जागरण बन गया। जागरण की इस अलौकिक बेला में द्युमत्तम ने भीतर से प्रेरणा दी, ऋषि के अन्तःप्रकाश को उकसाया और कहा यह प्रतिमा पाषाण की है प्रकाश विहीन है, तुम इसका नहीं, सबमें छिपे हुये प्रकाश का अनुसन्धान करो और उसके स्रोत की ओर चलो।

जागरण प्रकाश का एक रूप है। बोध में जो बुध धातु है वह जागरण और प्रकाश दोनों की सूचिका है। जो जग गया वह तम से निकल आया। जो तम से निकल आया, वह प्रकाश का अनुभव करेगा ही। जो प्रकाश का अनुभव करेगा, वह प्रकाश के स्रोत को भी किसी न किसी दिन प्राप्त कर ही लेगा। प्रकाश के स्रोत को प्राप्त कर लेना जीवन उत्थान का चेतना के उत्क्रमण की ओर आध्यात्मिक यात्रा की गन्तव्य भूमि है। इसकी उपलब्धि में ही काम की निष्कामता है आत्मारमता है असंगता और केवलता है। इसे आप मोक्ष कहिये, ब्रह्मानन्द कहिये रसरूपता कहिये त्रिविध दुःखात्यन्त निवृत्ति का नाम दीजिये या द्रष्टा की स्वरूप में अवस्थान कहिये। वचनीयता में बांधने के लिये कोई भी नाम दे दीजिये पर वस्तुत यह अनिर्वचनीय है। परले पर्वों का सबसे अन्तिम और उसके भी आगे की सर्वोत्तम भूमिका का वर्णन असम्भव है एकान्त असम्भव है।

तो द्युमत्तम अनिर्वचनीय है, पर वेद उसे वचनीयता की सीमा में ला रहा है और कहता है—शचीव इन्द्र पुरुकृद् द्युमत्तम तवेदिदमभि तश्चेकिते वसु। हे शक्ति से समवेत परमेश्वर। आपके निर्माण अनन्त हैं। इन निर्माणों में एक प्रकाश भी है। हे प्रकाशकों में सर्वश्रेष्ठ! आप द्युमत्तम हैं। आपसे बढ़कर कोई अन्य प्रकाशवान नहीं। आप ही प्रकाश वालों को प्रकाश प्रदान करते रहते हैं। यहां जितना भी वसु है पार्थिव से लेकर दैवी वसु तक, सब आपका ही है हमारी समझ में पार्थिव वसु का भी अतीव स्वल्प अंश समा पाता है दैवी वस्तु की तो हम कल्पना भी नहीं कर पाते। हां उसकी चमक अवश्य हम तक पहुंच जाती है और वही हमारे संतोष के लिये पर्याप्त है। ऐसी ही एक चमक की शिवरात्रि बोध के रूप में महर्षि दयानन्द को उपलब्धि हुई थी जो हम सबके लिये कल्याण कारिणी बन गई।

पृथ्वी एकान्त द्युति-रहित नहीं है।

[शेष पृष्ठ १० पर]

राष्ट्र निर्माता स्वा० दयानन्द और बोध रात्रि

(श्री रामनारायण शास्त्री विद्याभास्कर, नाई की मण्डी आगरा)

१९ वीं शताब्दी के उस अन्धकार युग में जब समस्त भारत देश निराशा के प्रवाह मे अपने महान् गौरव व इतिहास परम्परा और धर्म विस्मृति के गहरे गर्त मे डाल विनाश की ओर बहा जा रहा था, सन १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के उपरान्त भारतवर्ष के जनमानस को विदेशी शासन ने पूर्ण रूप से आतंकित कर दिया था, राष्ट्रीय विचारधारा तथा भावना को नष्ट करने के हेतु सभी सम्भव प्रयत्न किये जा रहे थे। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा दीक्षा और भाषा के स्थान पर पाश्चात्य संस्कृति और विदेशी भाषा का प्रवाह प्रबल था। राष्ट्रीय जागरण के प्रकाश स्तम्भों को स्वेच्छाचारिता रूपी प्रबल पवन के वेग से उखाड़ा जा रहा था। पराधीनता और अज्ञान का कुचक्र सभी कुछ समाप्त करने को उद्यत था। ऐसे इस महान अन्धकार तथा निराशा की संकटमय घड़ियों में हिन्दुस्तान के गौरवपूर्ण इतिहास की परम्परा अमिट बनाये रखने के हेतु भारतीय क्षितिज पर स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव और आर्यसमाज का आविर्भाव हुआ। स्वामी जी ने अपनी अमर वाणी एवं निर्भय लेखनी के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण आत्म गौरव स्वराज्य एवं स्वतन्त्रता का सर्व प्रथम अमर सन्देश दिया।

आज के कुछ विचारक और राजनीतिज्ञ स्वामी दयानन्द को केवल समाज सुधारक ही मानते हैं किन्तु वह स्वामी दयानन्द के राष्ट्रीय कार्यों को भूल जाते हैं। यह खेद और आश्चर्य की बात है कि नवयुग प्रवर्तक और आदर्श भारतीय राष्ट्र निर्माता के रूप मे उनकी इतनी ख्याति नहीं जितनी होनी चाहिए थी, यद्यपि नेता सुभाषचन्द्र जी जैसे कई राजनीतिज्ञ नेताओं ने उनके इस रूप को पहिचाना और निम्न आशय के रूप मे श्रद्धांजलि दी। स्वामी दयानन्द उन महापुरुषों में से एक थे जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान राजनीतिक एवं धार्मिक पुनरुत्थान के कारण हुए।' भारत के उप प्रधान मन्त्री राजनीतिज्ञ शिरोमणि लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने ९ नवम्बर १९५१ ई० को देहली रामलीला मैदान मे महर्षि निर्वाणोत्सव पर अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि 'स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान यह रहा है कि उन्होंने देश को किंकर्तव्य विमूढ़ता के गहरे गढ्ढे मे गिर जाने से बचाया, उन्होंने ही भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली थी।" भारत के महामहिम राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने २४ फरवरी १९६३ को ऋषिबोध के अवसर पर श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि 'स्वामी दयानन्द नव भारत के निर्माताओं मे से सर्वोत्तम थे। उन्होंने राजनीतिक धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के उद्धार और मोक्ष के लिए निरन्तर प्रयत्न किया।" इससे उत्तम श्रद्धांजलि क्या हो सकती है। उन्होंने स्वामी जी को केवल धार्मिक सामाजिक, सांस्कृतिक, सुधारक ही नहीं माना बल्कि राजनीतिज्ञ भी माना है। इस प्रकार उक्त महापुरुषों के कथनों से स्वामी जी के स्वराज्य स्वतन्त्रता और राजनीतिक कार्यों तथा देश भक्ति के सभी पक्षों की सम्यक् जानकारी प्राप्त होती है।

जिन साहित्यकारों तथा राजनीतिज्ञों ने स्वामी दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थों का अध्ययन किया है वे जानते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपने जीवन काल मे अपनी निर्भय लेखनी और ओजस्वी भाषणों के माध्यम से स्वराज्य और स्वतन्त्रता के लिए अनवरत प्रयत्न किये। स्वतन्त्रता की भावना व्यक्त करते हुये वे अपनी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास मे लिखते हैं कि "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। माता पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" "महर्षि दयानन्द के स्वराज्य के महत्व विषयक ये शब्द स्वर्णाक्षरों मे अंकित करने योग्य हैं। इसके साथ-साथ स्वामी जी ने अपने भाषणों के माध्यम से भी स्वतन्त्रता की भावना को जाग्रत किया। उनके ऐसे परिपक्व निर्भीक विचारों को सुनते ही विदेशी सत्ता की जड़ें हिलने लगीं। परिणाम स्वरूप जनवरी सन १८७३ ई० मे उस समय के अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुक ने कलकत्ता में स्वामी जी से कहा कि 'स्वामी जी क्या आप अपनी ईश्वर प्रार्थना मे देश पर हमारे अखण्ड शासन की प्रार्थना भी किया करेंगे?" इस पर महर्षि ने कहा 'मैं किसी ऐसी बात को मानने मे असमर्थ हूं, क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों को अबाध राजनीतिक उन्नति और संसार के राज्यों मे समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी ही चाहिये। श्रीमान् जी! ईश्वर से नित्य सायं प्रातः उनकी अपार कृपा से इस देश को विदेशियों की दासता से मुक्ति की ही मैं प्रार्थना करता हूं।"

नंगे फकीर महात्मा गांधी से चर्चिल को जितना भय था उससे कहीं अधिक लार्ड नार्थब्रुक के मन में विद्रोही फकीर स्वामी दयानन्द के लिये इस मुलाकात से प्रारम्भ हो गया था और वह सर्वथा स्वाभाविक ही था। राष्ट्रीय जागरण का प्रभाव जन-जन में व्याप्त होकर उनमे स्वदेश प्रेम, आत्म गौरव की भावना जगाने का श्रेय स्वामी दयानन्द को ही था। जिसके परिणामस्वरूप विदेशी दासता के विरुद्ध पुनः एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। स्वामी दयानन्द की दिव्यदृष्टि मे राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति हेतु स्वराज्य सर्वप्रथम आवश्यक था। राष्ट्र गौरव और आत्म-सम्मान के अनुरूप स्वभाषा स्वदेश भूषा तथा स्वदेशी को जितना महत्व ऋषि दयानन्द ने दिया, उस रूप मे उनसे प्रथम कोई न दे सका, उनके पश्चात भी केवल म० गांधी ने ही उनके पथ का अवलम्बन किया। क्या यह कम महत्व की बात है कि गुजराती होते हुए भी राष्ट्र भाषा हिन्दी बनाने का स्वप्न सर्वप्रथम स्वामी जी ने ही देखा था। आपस की फूट को अधोगति का प्रमुख कलंक मानते थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश मे स्पष्ट लिखा कि 'जब भाई भाई आपस मे लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। देखो आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया पर अभी तक वह रोग पीछे लगा है।' इस प्रकार स्पष्ट है कि वे सम्पूर्ण भारतीयों को आपस मे भाई भाई के समान एक रूप मे देखना चाहते थे।

वर्तमान समय मे संसार के विभिन्न देशों मे प्रजातन्त्र राजतन्त्र तथा अधिनायक वाद शासनों का प्रचार है लेकिन महर्षि दयानन्द वेद तथा शास्त्रों के आधार को लेकर आज से लगभग ८५ वर्ष पूर्व ऐसी शासन पद्धति का मार्ग दर्शन किया जिससे स्वाधीनता को प्राप्त कर हम उच्छृंखलता न कर सकें। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में लिखा है कि "एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा, सभाधीन राजा और सभा प्रजा के आधीन रहे।" यह है स्वामी दयानन्द की सच्चे लोकतन्त्र की कल्पना। क्या इससे सुन्दर दुनिया मे कोई लोकतन्त्र की कल्पना उस समय कर सकता था। स्वामी दयानन्द का राष्ट्रवाद स्फटिक मणि की तरह स्पष्ट है, देशभक्ति हिमालय की तरह उज्ज्वल और स्वतन्त्रता सम्बन्धी भावना समझौते की निर्बलता से सर्वथा अलिप्त थी। अपने देश की चर्चा करते हुए उनका रोम रोम उत्कृष्ट देशभक्ति से पुलकित हो उठता था। अपने देश के सम्बन्ध मे उन्होंने लिखा था कि "यह आर्यावर्त्त ऐसा है जिसके सदृश भूगोल मे दूसरा देश नहीं है। इसी लिए इस भूमि का नाम स्वर्ण भूमि है, क्योंकि यही स्वर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है।"

इस प्रकार स्वामी जी ने आर्यावर्त देश की महत्ता तथा गौरव का ध्यान दिलाते हुए स्वराज्य प्राप्ति, एक भाषा, आपस के व्यवहारों मे समता। छुआ-छूत अस्पृश्यता को दूर करने के लिये अविरल प्रयत्न किये थे। यह अकाट्य सत्य है कि स्वामी दयानन्द सच्चे राष्ट्र नायक और सन्मार्ग प्रदर्शक थे। यही कारण है कि आज संसार के सर्वोपरि आचार्य महापुरुष महात्मा गांधी स्वामी जी के विषय में लिखते हैं कि "मेरे पिता तो मुझे आत्मिक धन दे गये हैं, आवश्यक है कि मैं इसमे कुछ उन्नति करूं। तब ही राष्ट्र का और देश का भला हो सकता है।" वर्तमान राजनीतिज्ञ क्षेत्र के सेनापति महात्मा गांधी का ऋषि को आत्मिक बल प्रदान कर्त्ता पिता', कहना क्या अर्थ रखता है? स्पष्ट है कि आज जो जागृति भारत मे दृष्टिगोचर हो रही है उनके प्रथम प्रवर्तक पिता महर्षि दयानन्द थे। इस बात की पुष्टि भारत के स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के इस कथन से भी होती है कि 'स्वामी जी महान राष्ट्र नायक थे उन जैसा विद्वान और क्रान्तिकारी नेता मिलना कठिन है। अटूट ईश्वर विश्वास के साथ उन्होंने रूढ़िवादिता से जबरदस्त टक्कर ली और सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिज्ञ क्रान्ति मचा दी। ऐसे समय मे जब करना तो क्या सोचना भी कठिन था उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी का घोषनाद किया और छूत छात तथा जात-पात के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा। स्वराज्य और स्वदेशी की उन्होंने ऐसी लहर चलाई जिससे इण्डियन नेशनल कांग्रेस के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार हो गई। उनके प्रचार से हिन्दू धर्म का उत्थान हुआ और भारत की सुप्तात्मा जाग पड़ी।" अतः ऐसे स्वराज्य के मन्त्र दाता, नवयुग प्रवर्तक, आदर्श राष्ट्र निर्माता महर्षि

महर्षि दयानन्द का एकात्मवाद

[श्री अचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री]

विदेशी और एतद्देशीय विद्वानों की यह एक अटूट सम्मति बन गई थी कि-वेदो मे एकात्मवाद का वर्णन नहीं है। बहुदेवत्ववाद का ही विशेष उल्लेख है। परन्तु यह तथ्य नहीं है। अतथ्य है अथवा बहुत खींचातानी की जावेगी तो यह अर्धतथ्य ठहरेगा। वेदो मे बहुदेवता वाद की भावना का प्रतिपादन समझने में एक भूल यह है कि वेदो की देवता प्रक्रिया और उसका पारस्परिक आधार को यास्क आदि मुनियों ने स्थापित किया था उसको समझने का प्रयत्न नहीं किया गया, अथवा उल्टा समझा गया। यास्क आदि ने विभिन्न प्रक्रियाओं और दृष्टियो से वैदिक देवों का विवेचन करते हुए भी आत्मतत्व की महत्ता का पूर्णतया प्रतिपादन किया है और स्पष्ट शब्दों मे कहा है कि सारे देव एक महान् आत्मा के अङ्ग हैं जो सृष्टि मे कार्य करते हैं। ये अङ्ग उस महान् आत्मा के अपने भाग या अंश नहीं है बल्कि उसकी विराट विश्व रचना के अङ्ग हैं और वह ही सब की आत्मा है। इन अगों और अङ्गी को एक ही अथवा न देव नहीं कहा जा सकता है। लोक मे भी जब हम यह व्यवहार करते हैं कि हाथ आदि अंग है तो ये शरीर के ही अङ्ग समझे जाते हैं शरीरी आत्मा के अंश नहीं।

इसी प्रकार विराट विश्व भी विश्वात्मा का शरीर है और देव उसके अङ्ग हैं। मानवादि शरीर चेष्टा, इन्द्रिय और अर्थ के आश्रय है और क्लेश, कर्म विपाक एव आशय के आधार पर बने शारीरिक (कारण, सूक्ष्म, स्थूल) रूप वाले हैं। परन्तु परमेश्वर का शरीर यह जगत ऐसा शरीर नहीं है। वह सदा ऐसे शरीरो से रहित है। जगत् उसका केवल आलकारिक शरीर है और देव उसके उसी प्रकार के अग हैं। उपास्य कोटि मे केवल परमेश्वर ही आता है—ये विभिन्न देव नहीं।

साक्षात्कृतधर्मा भगवान् दयानन्द ने वेद के रहस्य को भलीं प्रकार समझा था। और साथ ही समझा था इस देवता की प्रक्रिया को 'इन्द्र मित्र वरुणम' आदि ऋग्वेदीय मन्त्र का यही रहस्य है और महर्षि के भाष्य में इसका पूर्णतया उद्घाटन मिलता है। यास्क ने भी इस का सकेत किया है परन्तु अन्य आधुनिक भाष्यकार इस बात को समझ नहीं सके। यास्क ने निरुक्त मे दो स्थलों पर लिखा है—अथैतं महान्तमात्मानमेसमग्ग्न प्रवदति। इन्द्र मित्र वरुणमग्निमाहु इति।

२—इममेवाग्नि महान्तमात्मनामेकमात्मा बहुधा मेधाविनो वदन्ति, इन्द्र मित्र वरुणमग्निम्। अर्थात् इस महान् आत्मा का ही यह ऋगगण वर्णन करता है—इन्द्र मित्र आदि इस अग्नि नामक महान् एक आत्मा को ही मेधावी जन बहुत नामों से कहते हैं—इन्द्र, मित्र, वरुण आदि। इससे वैदिक दैवत प्रक्रिया का रहस्य खुल जाता है। और एकात्मवाद का वास्तविक रूप सामने आ जाता है।

महर्षि दयानन्द इस आधार को लेकर वेद भाष्य मे अनेक दैवत शब्दों का परमेश्वर अर्थ किया और वैदिक एकात्म वाद की स्थापना की। इसी आधार पर उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास की रचना की और शतश. शब्दों को परमेश्वर का नाम बताया। यह कसौटी भी निर्धारित की कि जब उपासना आदि अथवा जगत की रचना, आदि का प्रसग जुडता हो तो अग्नि आदि पदों का परमात्मा ही अर्थ लेना चाहिए। वैदिक प्रक्रिया के इसी आधार को ब्रह्म सूत्रों की रचना करते हुए व्यासदेव ने भी अपनाया है। उन्होने वैश्वानर, अत्ता, प्राण, आकाश आदि का अर्थ परमात्मा लिया है। वेदार्थ की यह प्रक्रिया बहुत ही प्राचीन है परन्तु मध्यकाल के भाष्यकारो ने इसे नहीं अपनाया और इसी लिए वेदार्थ न खुलकर अनेको वाद खड़े हो गये।

महर्षि दयानन्द का एकात्मवाद भी शकर के एकात्मवाद की तरह नहीं है। शकर का एकात्मवाद प्रशस्त नहीं। वह दार्शनिक उलझनों और अतथ्य कल्पनाओं का वाद है। जगत् की समस्या को सुलझाने मे वह सर्वथा ही असमर्थ है। उसके अन्दर अविद्या माया, और भ्रम की महिमा ब्रह्म से भी महान् है। महर्षि परमेश्वर को तो एक और एक एव एव अद्वैत मानते हैं परन्तु उसके अतिरिक्त जीवात्माओ और प्रकृति की भी नित्य सत्ता स्वीकार करते हैं। वैदिक दशन मे उनके अनुसार ईश्वर, जीव और प्रकृति का अनादित्व है। फिर एकात्मवाद का उनके अनुसार क्या रूप है? यह एक प्रश्न है। वस्तुत परमेश्वर को अद्वैत कहने का यह अर्थ नहीं कि उसके अतिरिक्त और कोई तत्व ही नहीं है। बल्कि यह अर्थ इसमे अभीष्ट है कि उसके समान और वैसा एव उसका अशरूप वा उसकी कक्षा का कोई और उसके अतिरिक्त नहीं है। तथा न कोई उससे बढकर ही है। जगत के मूल मे तीन तत्व हैं परन्तु उसका अपना कोई द्वैत नहीं। अत इस तथ्य को देखते हुए एकात्मवाद का स्वरूप यह है कि परमात्मा एक तो है और अपने स्वरूप से एक ही है परन्तु वह ऐसा है कि न तो जगत् का मूल उपादान कारण है कि जगत उससे निकले, न वह ऐसा है कि उसने ससार को अनस्तित्व से अस्तित्व मे ला दिया हो और न ऐसा ही है कि उसका जगत से कोई सपर्क ही न हो, तथा यह ऐसा भी हो कि इस ससार में मनुष्यो का सहयोगी बनकर किसी रूप मे आवे और सुख दुःख मे भागी बने।

वह प्रभु अकाय है, अव्रण है और नाडी-नस के बन्धनो से रहित है अर्थात् उसका कोई स्थूल शरीर नही है। ऐसा इस कारण है कि वह शुद्ध और अपापविद्ध और सर्वज्ञ है। अर्थात् वह सूक्ष्म और कारण शरीर से भी रहित है और इनको उत्पन्न करने के बीज भूत क्लेश, कर्म विपाक और वासना आदि से अपरामृष्ट है।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

स्वामी दयानन्द जिन्होंने भारतवर्ष को स्वतन्त्र कराने के लिए १७ बार जहर के प्याले पिये और भारतवासियों को अमृत पिला गये उनके चरणों में शतश. प्रणाम!

★

विचारों में—

झीलों से निकल निकल कर।
मस्ती के झोकों को लेकर॥
शीतल वायु बह रहा मनहर।
सुरम्य छटा प्रकृति की देखकर॥१॥

खिला हुआ है नभ मे
छिटक रही चाँदनी अवनि पर॥
पुलकित है रोम-रोम मद में।
कल-कल का रव है तटिनी पर॥२॥

रेत बिछा स्वच्छ पास असीम।
चादी सी चमचम हट दमक भरी॥
कुछ सोच विचारों मे लेटा।
भावी को ताक रहा प्रहरी॥३॥

यदि चिन्ता थी तो होगी क्या?
'निर्माण देश का हो कैसे?
घटा चढी घोर गुलामी की।
निर्माण देश का हो कैसे?॥४॥

अचेत पडे जड बुद्धि मे जो।
उपचार खेद का हो कैसे?
शिक्षा का तनिक प्रचार नहीं।
उत्थान जाति का हो कैसे?"॥५॥

गये मिल विचार तरगो मे।
प्रवाह मे गगा के निर्मल॥
देव दयानन्द ब्रह्मचारी।
उद्धार सोचते थे पल पल॥६॥

समीप थे कर्णवास के वह।
थे खेलते प्रकृति आंचल मे॥
अहा! कितना मनोरम सुदृश्य।
थे लीन ईश के पग तल मे॥७

झझानिल के झोंकों मे भी।
रहा हो जो सीना ताने॥
आओ हम सब मिलकर गायें।
उस परम वीर के अफसाने॥८॥

—रामेश्वरदयाल 'काम्बोज', हरिपुर

महर्षि को श्रद्धांजलि

[पृष्ठ २ का शेष]

"अब अभाग्योदय से और-आलस्य प्रमाद व परस्पर के विरोध से आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है।"

विदेशी राज्य नहीं रहना चाहिये यह उनकी प्रबल धारणा थी क्योंकि उन के विचार अनुसार—

"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराए का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

पराधीनता के कारण

भारत को पराधीनता का दुख क्यों भोगना पड़ा इसका विश्लेषण आज भी हमें स्वतन्त्रता की रक्षा प्रेरणा दे सकता है। उन्होंने बताया कि—

'विदेशियों के राज्य होने का कारण—

(१) आपस की फूट (२) मतभेद (३) ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, (४) विद्या न पढ़ना-पढ़ाना (५) बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह (६) विषया-सक्ति (७) मिथ्या भाषणादि कुलक्षण आदि कुकर्म है।

आज देश स्वतन्त्र है किन्तु जिन दुर्गुणों ने हमारी अवनति की, हम अब भी छोड़ नहीं रहे। आज आवश्यकता है कि हम गम्भीरतापूर्वक विचारें और यत्न करें कि इनकी छाया भी देश में न रहे।

वस्तुत युग-प्रवर्तक दयानन्द ने १९ वीं शताब्दी में संसार को क्रान्ति के मार्ग पर डाला। रूढ़िया-अन्धविश्वास,जाति भेद मतभेदों वर्ग भेदों के विरुद्ध सबल आवाज उठायी।

इसके साथ ही उन्होंने भौतिकवाद के बढ़ते प्रवाह का पूर्व अनुमान कर जीवन के सत्य 'आत्मा' को समझने और ईश्वर के सत्य रूप को जानने का मार्गदर्शन किया। ईश्वर के मन गढ़न्त, कल्पित रूप की समाप्ति कर उन्होंने जो रूप ईश्वर और जीव का बताया उस से संसार का कोई भी व्यक्ति विमुख नहीं हो सकता।

उनकी क्रान्ति सर्वतोमुखी थी, कल्याणकारिणी थी, शान्तिदायिनी और रचनात्मक थी। वे मनुष्य को मनुष्य बनाकर धरती से दुःख, द्वेष, घृणा और ईर्ष्या का चिन्ह तक मिटा देना चाहते थे। उनका हृदय मानवमात्र के प्रति प्यार से भरा था यही कारण था कि अपने शत्रुओं से प्यार किया और अपने हत्यारे को धन देकर दूर चले जाने का परामर्श दिया।

प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक रोम्यां रोलां ने महर्षि दयानन्द को स्मरण करते हुए कहा था—

"ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति अविचलता तथा सिंह पराक्रम से नव प्राण फूंक दिए हैं। राष्ट्रिय भावना और जन जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी।"

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा था—

महर्षि दयानन्द आधुनिक सुधारकों और श्रेष्ठ पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ थे।"

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था कि—"स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में थे,जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान के कारण हुए।"

महापुरुषों की यह श्रद्धाञ्जलियाँ युग प्रवर्तक दयानन्द की महत्ता हमारे सामने प्रस्तुत कर रही हैं। किन्तु दयानन्द का सही मूल्यांकन तो तभी हो सकेगा जब शान्ति की खोज में विह्वल मानवता उनके मार्ग पर चलकर इतिहास को मोड़ देने वाली महान रात्रि शिवरात्रि की देन दयानन्द के लक्ष्य को साकार करेगी।

जब न धरती पर गरीबी होगी, न युद्ध के चीत्कार होंगे। विज्ञान जब मानवता की सेवा में रत होगा। धर्म जब प्रेम का रूप धारण कर प्रकाश फैलायेगा और सत्य हमारे जीवन का मार्ग दर्शन करेगा।

उस दिन को लाने का प्रयत्न ही वस्तुत. युगपुरुष दयानन्द की सच्ची स्मृति है।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में—"मेरा सादर प्रणाम हो, उस महान् गुरु दयानन्द को जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिसने हमारा मार्ग दर्शन कर प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा की।"

★

कोटिशः प्रणाम !!

[आचार्य श्री मित्रसेन एम० ए०, सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़]

योग के सर्वोन्नत शिखर पर, परोपकार-गिरि शृंखला पर पहुंच कर वह विचारने लगा, अब अवतरित क्या होगा ? वह उच्च शृंखलाओं पर चढ़ता ही चला गया, और भी अधिक ऊंचा और भी अधिक उन्नत। उसकी ऊंचाई मापने कौन जावे ? वह सामर्थ्य है किसमें ?

हंसता था समस्त विश्व कि यह केवल संस्कृत पढ़ा विश्व का मार्ग-प्रदर्शन कैसे करेगा ? इन भयकर बाधाओं से धन, जन रहित वह सन्यासी कैसे जूझेगा ? जादूगर मानते हुए भी, उसमें प्रबल आकर्षण जानते भी उन्हें उसमें वह शक्ति, नेत्रों में वह तेज, बुद्धि में वह प्रखरता नहीं जान पड़ी, क्योंकि वह केवल भारतीय ही तो था।

घर बार त्यागने के पश्चात् वह साधनहीन सा ही दीखता था आपत्तियों को सहते हुए वेद की डगर पर वह चला था। उपनिषदों और दर्शनों को उसने जाना पहिचाना था। अपने ज्ञान-गौरव की गठरी के बिना किसी सहयोगी के, वह कौपीनधारी सत्य, धर्म के पहाड़ पर चढ़ता रहा। पण्डितों ने उस पर व्यग्य किये, राजाओं, जमीदारों ने बाधायें दीं, अंग्रेजों ने धमकियां दीं, पर साहस के धनी के मुख की मोहनी मुस्कराहट ज्यों की त्यों अक्षुण्ण ही रही।

क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष और घृणा स्वय भयभीत हो भागने लगे। विश्व-कल्याण के लिए उस मूलशंकर ने कटु हलाहल का पान स्वय किया और धैर्य धारण कर आगे बढ़ता ही रहा।

अपनी भाषा तथा धर्म पर जो सदा गर्व करता रहा। सत्य के प्रकट करने में कभी झिझका नहीं, निर्भीक हो सभी के सम्मुख सत्य को स्पष्ट कहता था। किसी के क्रोधित हो हानि पहुंचाने की कभी सम्भावना या चिन्ता नहीं की।

न जाने कितने शास्त्रार्थ जीवन काल में किये एक साथ कई कई विद्वानों के गूढ़तम प्रश्नों के उत्तर चुटकी में हंसते हंसते देता था। इस प्रकार विरोधियों के वज्रसम हृदय भी मोम से पिघल जाते थे, श्रद्धा और भक्ति-से वे ओत प्रोत हो जाते थे।

जिसने सभी जीवों को आत्मवत् समझा, अहिंसा का वह पुजारी नहीं, नहीं देवता था, क्षमा की तो साकार प्रतिमा ही था, जो अपने हत्यारे को भी क्षमा कर सकता था यह कहकर "मैं संसार को कैद कराने नहीं अपितु छुड़ाने आया हूं।" उसे बचाने के लिए अपने तन, मन, धन अर्पित कर दिये। उसकी इच्छायें पूर्ण की। जिसे सुनकर कल्प वृक्ष भी कथा मात्र रह गया।

यश. पर्वत की चोटी तेरी कीर्ति का भार न समाल सकी, ईश्वर की परम इच्छा थी कि तू उसी के पास रहे, उसकी इच्छा भी जिसने प्रसन्न मन से पूरी की :—

उस देव सम महर्षि को कोटिश प्रणाम !!

[पृष्ठ ७ का शेष]

बालुका के मध्य जब कुछ कण चमक उठते हैं, मिट्टी के गर्भ में जब रजत या स्वर्ण के कण अपनी आभा विकीर्ण करने लगते हैं, हिम का संघात जब गिरि-शिखर पर चान्द्र या सौर आलोक में उद्भासित हो उठता है, हीरे की खान जब श्वेतिमा से जगर मगर करने लगती है और जब जबकि तैल दीपकों के स्थान पर विद्युद्दीपों से मण्डप आलोकित हो उठता है तब ऐसा प्रतीत होने लगता है जैसे छाया ही पृथ्वी तल पर उतर आया हो। वेद तो कहता है कि छाया में निवास करने वाले, सौर किरणों में क्रीड़ा करने वाले, ज्योतिरथ के रथी देव हम मानवों की पीड़ा निवारणार्थ कभी-कभी इस धराधाम पर ही आ जाते हैं।

महर्षि दयानन्द को बोध हुआ, वे प्रकाश में पहुंचे और उस सत्तम की शरण ग्रहण कर हम सबको भी आलोक प्रदान कर गये। वे द्युक्ष थे, द्युक्ष में प्रकाश में ही निवास करने वाले थे। वे पार्थिव शरीर में दैवी और अमरत्व के देवत्व के मूर्तिमान अवतार थे। उनकी दिव्यता ने हमारा परिमार्जन किया, उन की नरता ने हमें पुरुषार्थ दिया, उनके रोम रोम ने हमें आशीर्वाद दिया। यह उन्हीं की कृपा का फल है कि हम आज स्वतन्त्र हैं, उन्नत भाल हैं और अपने पुरातन के सबल पर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर रहे हैं। सुन्दर परमेश्वर हमें सन्मार्ग से ले चले और हमारे सुपथ को सुगम करे।

सांस्कृतिक प्रोग्राम

[श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम डी लिट् अजमेर]

जब से भारत स्वतन्त्र हुआ है "संस्कृति" शब्द का प्रयोग तुलनात्मक बहुत अधिक होने लगा है और स्थान स्थान पर समय समय पर सांस्कृतिक प्रोग्रामों की धूम मची रहती है। विदेशों को भी अनेक मिशन भेजे जाते हैं वे भी सांस्कृतिक सद्भावना तथा सांस्कृतिक प्रोग्राम ही विदेशों मे प्रदर्शित करते हैं। परन्तु देश मे हों अथवा विदेश मे इन सांस्कृतिक प्रोग्रामों मे होता क्या है? केवल नृत्य गान संगीत आदि। इससे सिद्ध होता है कि भारत की संस्कृति अब सिकुड़ कर केवल नृत्य गान तक ही सीमित रह गई है। अभी पिछले दिनों मैं एक कन्या कालेज के वार्षिक सांस्कृतिक समारोह मे सम्मिलित हुआ तो क्या देखा मंच के पर्दे पर स्वर्णाक्षरों मे पहले से ही लिख रखा था एकांकी नृत्य संगीत एकाभिनय (मोनो एक्टिङ्ग) बस यही था सारे प्रोग्राम का सार।

वहां सर्वप्रथम 'मातृ वन्दन' हुई और भारत माता' के सम्मुख भी प्रथम ध्याय छात्राओं का नृत्य आरम्भ हो गया। अब मातृ वन्दना अथवा भारत वन्दना भी बिना नृत्य के नहीं हो सकती। संस्कृति की कितनी गर्हित विकृति की जा रही है हमारे इन शिक्षा केन्द्रों मे एवं विद्या मन्दिरो मे?

भला जिस पावन संस्कृति को वेद ने 'सा संस्कृति प्रथमा विश्ववारा' कहकर पुकारा है जो सृष्टि की आदि से प्रथमा" (फर्स्ट बोर्न) तथा विश्ववारा" (वर्शिप्ड बाई होल वर्ल्ड) रही है, उसी वैदिक संस्कृति की उसी की जन्मभूमि भारत मे ऐसी दुर्गति होगी यह विचार कभी स्वप्न मे भी नहीं आया होगा उन ऋषि मुनियो के मस्तिष्क मे जिन्होंने संसार के सर्वश्रेष्ठ अध्यात्म विद्या के प्रवर्तन उपनिषदों का सृजन किया था। कहा वह कठोपनिषद मे नचिकेता की कथा और कहा यह नवकन्या छात्र छात्राओं के कत्थक नृत्य और तथाकथित सांस्कृतिक प्रोग्राम! भला यह हमारी भारतीय संस्कृति का उपहास मात्र है या नहीं? क्या हमारे ऋषियों ने कण कण बीन कर (कणाद बनकर) शास्त्रों की रचना इसीलिये की थी? क्या उन्होंने तपस्वी जीवन व्यतीत कर मानसिक एवं चारित्रिक पवित्रता का आदर्श इसीलिए उपस्थित किया था? क्या मनु महाराज ने—

'एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥

इसी नाचने गाने को संस्कृति की शिक्षा के लिये लिखा था? क्या यही भगवान् दयानन्द की विश्ववारा संस्कृति है? क्या इसी नृत्य गान संगीत अभिनय नाटक एकांकी मे भारतीय संस्कृति का रहस्य अन्तर्निहित है? क्या इसी मे भारतीय इतिहास भारतीय धर्म भारतीय परम्परायें रीति रिवाज विचारधारा भारतीय जीवन दर्शन आदि सबका समावेश हो जाता है? क्या इन्हीं नृत्य गानो से राष्ट्र की रक्षा हो सकती है? यदि नहीं तो फिर भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले ये नर्तक गायक ही क्यों माने जाते हैं और विदेशों मे भेजे जाते हैं? सांस्कृतिक प्रोग्रामों मे इन्हीं को क्यों स्थान दिया जाता है? इनका नाम सांस्कृतिक प्रोग्राम न रखकर 'कला प्रोग्राम' क्यों नहीं रखा जाता?

ऋषि दयानन्द ने जो वैदिक संस्कृति एवं भारतीय आदर्शों के एकमात्र साक्षात् अवतार थे, इस प्रकार के स्वांग नृत्य नाटक अभिनय आदि को भण्ड कर्म कहा है। इसलिए ऋषि बोध दिवस के पावन अवसर पर हम यह बोध प्राप्त करें कि अपनी संस्कृति को समझ उसके वास्तविक अर्थ को जानकर अपनी राष्ट्रीय एवं भारतीय परम्पराओं का नैतिक मूल्यांकन करें, तभी हम सच्चा 'बोध दिवस' मनाने के अधिकारी होंगे।

'शुद्ध वैदिक पद्धति पर सांस्कृतिक प्रोग्राम हों।
राष्ट्रहित के वीरतामय सब हमारे काम हों॥

एक चिन्ता

★

ऋषिवर के पीछे दीवाली बीत गए ऋषिबोध अनेक।
किन्तु न पूरी हुई हमारे द्वारा ऋषि की प्यारी टेक।
सस्थायें खुल रहीं अनेको फैल रहा है सत्याचार—
अखबारों की होड़ लग रही दृष्टि न आता है प्रतिकार।

[२]

तू तू मैं मैं की आंधी मे अन्धे बन्दे न सूझा ज्ञान—
सोचा कभी न इन झगड़ों मे पड़ कर होगी कितनी हानि।
बीत गये कुछ वर्ष इसी विधि विधना ने की कृपा महान।
असहयोग आन्दोलन की आंधी ने पकड़ा जोर महान।

[३]

तब आशा थी स्वराज्य होने पर सुराज्य हो जावेगा—
ब्रिटिश राज्य का गन्दा वातावरण सभी मिट जावेगा।
दूध दही की नदी बहेगी होगा भारत का उद्धार—
ढोंग पोल पाखण्ड मिटेगा नहीं रहेगा भ्रष्टाचार।

[४]

चोरी डाके घूस अपहरण दुष्ट दानवों का व्यवहार—
झूठ कपट छल छद्म बन्द होंगी अभियोगों की भरमार।
दुख द्वन्द्वों की आग बुझेगी हों प्रसन्न लखकर निज मान—
वैर विरोध बिसार करेंगे प्रेम सिन्धु मे फिर स्नान।

[५]

सो यह आशा मिली धूलि में सूख गये सुख सुविधा स्रोत—
शासन के शरीर में फूटे हा हा दुष्ट भयकर रोग।
सारी बातें उल्टी दीखीं फल कुछ लाया नही स्वराज्य—
कहते सुने सभी यह जाते अब देश में रहा कुराज्य।

[६]

इस प्रकार फिर वही पुरानी व्याधि शुरू हो जाती है—
जो कि समाज हितैषी जन के शिर दद को बढ़ाती है।
आर्ष प्रणाली कहा बिना उसके कैसे शिक्षा दीक्षा—
पनप रही है आज देश भारत में कलुषित सह शिक्षा।

[७]

वैदिक शिक्षा के अभाव मे चरित्र का निर्माण कहा—
चरित्र हीनों से सच्ची सन्तानों का निर्माण कहा।
वैदिक राजा के अभाव मे सुराज्य का निर्माण कहां—
बिनु सुराज्य के हो सकता सुख शान्ति का निर्माण कहां।

[८]

मास और मदिरा का सेवन भक्ष्याभक्ष्य विचार नहीं—
अण्डों के सेवन मे मैं कहता हू शिष्टाचार नहीं।
बिन सात्विक अहार कहो कैसे हो सद्बुद्धि का भाव—
बिन सद्बुद्धि विवेक न होगा बिन विवेक नहिं होइ बचाव

[९]

आज बना रक्खा है लोगों ने जग मे मनमाना खेल—
बिन मिश्रित घी दूध न मिलता अरे न मिलता शुद्ध तेल
कमती तोले और तराजू मे रखते फिर भी पासंग—

[१०]

सम्प्रदाय भी पनप रहे हैं और पार्टियों का उत्पात—
कायर की फूट देखकर जाता चिन्तन है दिनरात।
डरा फन्द खुले जाते जहा चला जाता है कुरा—
राजी को भा दूर न मिलता जिसे देखकर होता दाह।

शिवरात्रि मुझे प्रसाद दे!

(प्रि भवानीदास एम ए डी ए वी कालेज अम्बाला)

मैं जब से शोलापुर से आया हू डी० ए० वी० कालेज अम्बाला की सेवा मे ही लगा रहा हु यह अम्बाला मे मेरा तीसरा फेरा है। ईश्वर कृपा से तथा आर्य जनता के आशीर्वाद से यह कालेज पुन उठ खड़ा हुआ है। ईश्वर ही जानता है कि इसके लिए और कितनी बार कष्ट उठाने पड़ेगे तथा किन किन कठिनाइयों में से निकलना पड़ेगा रातदिन के कालेज भार से कुछ समय भी आर्य समाज सेवा कार्य के लिए न निकाल सका यह मेरे जीवन मे प्रथम बार ही हुआ। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि पूज्य महात्मा हंसराज जी के इस पुराने वृक्ष को आत्मा पर क्या बनी होगी जिसको सींचने के लिए इतना ध्यान देना पड़ा और परिश्रम करना पड़ रहा है। इस सारे समय मे एक दुख की टीस हृदय मे बार बार आती रही कि शक्तिशाली आर्यसमाज तथा महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए सदैव अग्रसर आर्यसमाजी नेताओं को क्या हो गया कि आपस मे लड़ने झगड़ने और अदालतो के दरवाजे खटखटाते हैं। दक्षिण मे आकर यह दृश्य देख कर बहुत दुख हुआ। यह समय की चाल है पर आर्यसमाजी तो समय के प्रवाह को भी अपने वश मे कर लेते थे। आज तो संसार भर की जनता आर्यसमाज की मांग कर रही है। आओ सब एक हो जायें झगड़े छोड़ें तथा ऋषि दयानन्द के उद्देश्य को पूरा करें।

आर्यसमाज के अनेको कार्यकर्त्ता अनुशासन मे रहकर नेताओ की ओर देख रहे हैं। यह शिवरात्रि का प्रसाद है। आजके आर्यसमाजी नेताओ मुझ यह प्रसाद दो। अगर आप नहीं सुनेंगे तो जनसमूह उठेगा और महर्षि के कार्य को आगे बढ़ायेगा।

●

[११]

मदिरा मास प्रचार नास्तिकता प्रति दिन बढ़ती जाती—
अत्याचारों की आंधी से दुखती है कवि की छाती।
हा परिवार नियोजन विधि से चाहे भारत का कल्याण—
सख्या घटने पर आने कैसे होगा सेना निर्माण।

[१२]

सब कुछ होइ हमारे द्वारा चला जा रहा है ईमान—
और हमी सब यह कहते हैं दशा देखकर हैं हैरान।
समझ न आता करने वाले कौन जाति या प्राणी हैं—
किसके माथ पर लिखा यह चोर उचक्का कामी हैं।

[१३]

धूलि झोंकते हैं आंखो मे और सभी कुछ करते आप—
इस लिये पीड़ित हैं सारे और झलते बहुविधि ताप।
अरे खेलते आख मिचौनी का सा सब आपस मे खेल—
है परिणाम उसी का भाई निशिदिन निकल रहा जो तेल।

[१४]

कटवर्क नाईलोन की साड़ी बिन चलता है काम नहीं—
मैं कहता पहनो पर इससे रोके रुकता काम नहीं।
और काम के चक्कर मे फस सच्चा सौंदर्य हो नष्ट—
बिन ब्रह्मचर्य कभी न बनेगी इन प्यारे शरीर की पुष्टि।

[१५]

आज हमारी लड़की कम वस्त्र पहन पढ़ने जाती—
जिन्हें देखकर सच्चे पथिको को भी है लज्जा आती।
नकल करो तो बनो गार्गी मैत्रयी लीला सीता,—
उभय भारती झांसी वाली सावित्री सी पति प्रीता।

[१६]

उपर्युक्त बातों को लखकर दुख होता मे कहता आज—।
कई गुना बढ़ गया तेरा दायित्व अरे ओ आर्यसमाज।
राजनीति मे भाग न ले। जिससे हो दुख हता है—
"सरस" सुधार किस तरह हो बस यही बसी उर चिन्ता है।

—वैद्य राजबहादुर आर्य "सरस"

धर्मवीर ग्रन्थमाला के साहित्य सुमनों की धूम

वैदिक विद्वानों की शुभ-सम्मतियाँ

(१) श्री पूज्य बाल ब्रह्मचारी तरुण सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती एम० ए० अध्यक्ष साधना आश्रम विलेपार्ले बम्बई लिखते हैं—

प्रस्तुत पुस्तक सुखी जीवन के सुनहरे साधन भारत राष्ट्र के लिये वैदिक युग की पवित्र झांकी है। लेखक स्वय वैदिक सस्कृति का पुजारी है।

पुस्तक में भौतिकवाद (भोगवाद) उन्मूलन के लिये अमोघ सामग्र है। जिसके फलस्वरूप हमारा समाज चरित्र गठन और श्रेष्ठ मार्ग का उपासक बन सके। मैं आयसमाज से श्री वेदपथिक प० धर्मवीर जी आय झडाधारी के उत्तम साहित्य प्रकाशन के लिये अधिक से अधिक सहयोग देने का परामश देता हू। आज के युग को ऐसी पुस्तकों की महती आवश्यकता है।

(२) श्रीमान् प० प्रभाकर मिश्र जी साहित्याचार्य एम ए उपकुलपति श्री जवाहरलाल सस्कृत विश्व विद्यालय नई दिल्ली लिखते हैं—

श्री प० धर्मवीर जी आय झण्डाधारी आपके द्वारा लिखित विश्व शान्ति और वदिक धम पुस्तक का अवलोकन किया आपने यह पुस्तक लिखकर मा तीय अ ध्यात्मिक वदिक साहित्य मे नई क्रान्ति जगा दी है। मुझ विश्वास है कि जो भी इस पुस्तक को पढ़ेगा और उसके भावो का मनन करेगा वह जीवन के लक्ष्य मे र ष्ट्र सेवा की दिव्य दिशा मे अवश्य सफल होगा। आपने इस पुस्तक को लिखकर वेदपथिक शब्द को चरिताथ कर दिया है। मुझ इसमे कोई सन्देह नहीं कि आप केवल वाचिक पुरुष नहीं वरन क्रियात्मक पुरुष हैं और देश तथा धम को आप जैसे निष्ठावान व्रती व्यक्तियों की बहुत आवश्यकता है। मैं समस्त धार्मिक सगठनो से अनुरोध करूगा कि धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग के बहुमूल्य प्रकाशन विश्वशान्ति और वदिक धम पुस्तक का घर घर मे और शिक्षण सस्थाओ मे प्रचार प्रसार करगे। म आपके इस साहित्य प्रकाशन के लिये शुभ कामनायें प्रगट करता हू।

(३) श्रीमान डा० रुद्रदेव जी शास्त्री स्नातक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आर्यसमाज गिरगाव बम्बई से लिखते हैं—

धर्मवीर ग्रन्थमाला के कतिपय सुमन दृष्टिगोचर हुए हार्दिक आभार।

विज्ञान के इस महान युग मे जबकि मानव चन्द्रलोक तक पहुचने में सफल सिद्ध है तब वह मानसिक इच्छा वश है उद्विग्नावस्था में—शान्ति के अभाव मे अपार वैभव के रहते भी यदि हम अपने को दुखी और आत्मग्लानी भवर मे फसा हुआ पाते हैं, तो धर्मवीर ग्रन्थमाला के इन सुमनो को एक एक कर पढ़ जाइये वस्तुत आप आध्यात्मिक सुख के महान उद्यान मे सुरभित एव आल्हादित हो उठेगे।

वेद पथिक श्री प० धर्मवीर जी आय झडाधारी जिस लगन और परिश्रम से इन पुस्तको का प्रकाशन कराकर जनता तक पहुचा रहे हैं उसके लिये मै ये ही कह सकता हू कि आयपथिक लेखराम व वीतराग स्वामी दशनान द जी महाराज की वसीयत को पूरा कर रहे हैं।

प्रभु से प्राथना है कि आय धम प्रचार के इस दीवाने धर्मवीर को शत शत वष जीवित रखे।

(४) श्रीमान् प० रुद्रदत्त जी प्रधान आर्यसमाज लक्ष्मणसागर अमृतसर लिखते है—

मा यवर श्रीयुत वेद पथिक प० धर्मवीर जी आय झण्डाधारी सादर नमस्ते।

आपका कृपा पत्र मिला जिसके लिये बहुत बहुत ध यवाद। निस्सदेह आप महर्षि के अन य भक्त और आ यसमाज के अनथक वीर कार्यकर्ता हैं। दिन रात पुस्तको और लेखों द्वारा जितना महान काय आप कर रहे हैं वह दृष्टिगोचर होता रहता है। इसकी जितनी प्रशसा की जाये उतनी ही कम है। भगवान आपको अधिकाधिक शक्ति सुयोग्यता बल एव दीर्घायु दे।

आपकी लिखी पुस्तक विश्व प्रेम का अमृत कलश मुझ प्राप्त हो गई थी। सचमुच अमृत का कलश है जिसका एक एक घूंट ईर्षा और वैर विरोधी की अग्नि से सतप्त हृदयों को शान्ति देने वाला है और आपके उच्च और सुलझ हुये विचारों तथा हार्दिक उदगारों का मुह बोलता चित्र है। परमात्मा आपको सफलता दे। यहाँ सबकी ओर से सादर नमस्ते।

स्वर्ण जयन्ती आर्यसमाज हुसैनगंज पार लखनऊ

आर्यसमाज हुसैनगंज पार (लखनऊ) की स्वर्ण जयन्ती' दिनांक २५ २६, २७ (शुक्र, शनि० रवि०) फरवरी ६६ ई० को मनाने का आयोजन हो रहा है जिसमें उच्चकोटि के विचारक, आर्य विद्वान धर्मोपदेशक आर्य संन्यासी धर्म, संस्कृति और राष्ट्र विषयक बहुमूल्य विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

—विद्यानन्द एम०ए० मन्त्री

आर्यसमाज नरही, लखनऊ

महर्षि दयानन्द बोध दिवस दिनांक १८ फरवरी १९६६ को आर्यसमाज नरही लखनऊ में सरस्वती विद्यालय इण्टर कालेज नरही के प्रांगण में सायंकाल ५ बजे से ७ बजे तक भजन उपदेश तथा संन्यासियों के प्रवचन का आयोजन किया है।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज नरही लखनऊ की अन्तरंग सभा दिनांक १३ २।१९६६ तथा साप्ताहिक अधिवेशन दि० १३ २।१९६६ इस समाज द्वारा संचालित सरस्वती विद्यालय कन्या इण्टर कालेज नरही लखनऊ की प्रधानाचार्या डाक्टर कुमारी प्रसन्नी सहगल के असामयिक देहावसान पर अत्यन्त शोक प्रकट करता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा शोकसंतप्त परिवार को इस दुःखद अवसर पर सहनशक्ति दें।

डा० कुमारी सहगल गत १८ वर्षों से समाज और विद्यालय से सम्बन्धित रही हैं और उन्होंने दोनों संस्थाओं की उन्नति में स्तुत्य प्रयत्न किया है उनके निधन से न केवल दोनों संस्थाओं को अपितु मुहल्ले को भी हानि हुई है और सभी उनके निधन से अत्यन्त दुःखित हैं।

—शिवप्रसाद बी ए विशारद
मन्त्री आर्यसमाज नरही लखनऊ

मारीशस में प्रो. सुरेन्द्र शुक्ल

आधुनिक अर्जुन द्वारा भारतीय संस्कृति का प्रसार

३ जनवरी १९६६ से प्रो० सुरेन्द्र शुक्ल शक्ति निवास सीतापुर के मारीशस में पेरिलुईस रिवेर डि– जागो त्रिपोली गुडलेंड फ्लाक कातर बोन मताई लाज रोज बेल आदि स्थानों पर १० प्रदर्शन हो चुके हैं तथा ३ स्थानों पर भारतीयों द्वारा उनका विशेष स्वागत किया गया।

प्रदर्शन में शब्दवेधी बाण स्पर्शवेधी बाण सप्तताल वेधी बाण रायफल शूटिंग थाली फाड़ना लोहे की सलाख मोड़ना हाथी बांधने की जंजीर तोड़ना मस्तक पर लोहा कटवाना मोटर रोकना आदि आश्चर्यजनक कार्य दिखाये गये जिनसे भारतीय व्यायाम प्रणाली तथा भारतीय संस्कृति का विशेष प्रभाव पड़ा।

प्रोफेसर साहब फरवरी १९६६ के अन्त तक मारीशस से प्रस्थान कर देंगे।

—बाल मुकुन्द द्विवेदी मताई लाज मोरीशस

श्री प्रो० सुरेन्द्र शुक्ल

महर्षि दयानन्द ने पुराण खंडन क्यों किया ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

(१३) आर्यावर्त के एक राजा का लड़का एक म्लेच्छ वेश्या पर आसक्त होकर मुसलमान हो गया था।'

(देवी भागवत)

यह स्पष्ट है कि जब आर्यावर्त में मुसलमान नहीं आये थे तब मुसलमान वेश्याएं भी न थीं और हिन्दू मुसलमान भी नहीं होते थे। देवी भागवत के उपर्युक्त वचन से विदित होता है कि यह पुराण मुस्लिम काल में १३वीं शताब्दी में बनी है और व्यास जी की कृति नहीं है।

(१४) भविष्य पुराण। अध्याय ८। पूर्व भाग। श्लोक ३४ व ३६ में सिक्खों के प्रथम गुरु नानक जी का अवतार होना लिखा है।

इससे विदित होता है कि यह पुराण १६वीं में बनाई गई है।

(१५) उन्नीसवीं शताब्दी के महानतम विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में 'पुराणों' को नवीन ही माना है महाभारतकालीन और व्यास रचित नहीं।

अतः सब मनुष्यों को उचित है कि पुराणों के स्थान पर वेदों की प्रतिष्ठा करें।

★

महर्षि दयानन्द का एकात्मवाद

[पृष्ठ ९ का शेष]

वह नित्य अनादि सर्वज्ञ सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। देश और काल की सीमा उसे नहीं घेरती और न उसमें किसी प्रकार का कष्ट व दुःख उत्पन्न करती है। वह सर्वत्र सर्वदा सर्वथा शरीर आदि बन्धनों से रहित है। इसलिए कि दुःख, जन्म प्रकृति दोष और मिथ्या ज्ञान के चक्र से सदा परे और रहित है। दूसरे अर्थों में यह कहा जा सकता है कि न वह किसी का कार्य है और न उसका कोई सम्बन्धि कार्य है। न वह किसी का उपादान कारण है और न उसके कोई इन्द्रिय आदि करण हैं। न उसके कोई समान है और न उससे कोई अधिक ही है। उसकी शक्ति परा है सूक्ष्म है सब शक्तियों से परे है। उसकी ज्ञान और बल की क्रिया स्वाभाविक है। यह है महर्षि दयानन्द का एकत्ववाद।

आवश्यकता

४० ५० वर्ष के एक आर्य बाल गृह के लिये मनेजर की आर्य कन्या सदन के लिए एक महिला संरक्षिका की आवश्यकता है।

श्री देसराज चौधरी २४ दरियागंज दिल्ली

वेद प्रचार धूम

हम क्या चाहते हैं

१—हम विश्व की रत्न मणियों के रत्न कोष को वेद प्रचार के लिए निछावर करना चाहते हैं।

२—हम विश्व की समस्त राष्ट्र भाषाओं में वेदों का अनुवाद और प्रकाशन का कार्य द्रुत गति से कराना चाहते हैं।

३—हम विश्व में वैदिक सभ्य भावनाओं का प्रबल प्रसार करना चाहते हैं।

४—धर्मवीर ग्रन्थमाला के सैकड़ों साहित्य सुमनों की शत प्रतिशत आय वेद प्रचार और शुद्धि तथा वेद विश्वविद्यालय के निर्माण में दान देने का शुभ संकल्प करते हैं।

५—आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला सराय रुहेला नई दिल्ली ५ की सारी आय वेद प्रचार और यज्ञ प्रचार व वैदिक कर्म काण्डों के प्रचार में लगाने का शुभ संकल्प कर चुके हैं।

६—अब तक वेद प्रचार में वैदिक साहित्य के निर्माण व शुद्धि में हम लगभग पचास हजार रुपयों का शुभ दान कर चुके हैं।

७—हम अब तक हजारों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में ला चुके हैं।

८—हम अब तक निजाम हैदराबाद के करीमनगर काल कोठरी में काले पानी में भागलपुर के कारागृह में नोवाखाली के हत्याकांड में पहुंच कर हजारों परिवारों को बचाने का शुभ कार्य कर चुके हैं।

पंजाब के हिन्दी आन्दोलन में कश्मीर में तथा कराची में सत्यार्थ प्रकाश की पाबंदी पर लगाये गये प्रतिबन्ध को तोड़ चुके हैं। अतः विश्व की समस्त साहित्य प्रेमी जनता से तथा समस्त यज्ञ प्रेमी भाई बहनों से करबद्ध सविनय सानुरोध निवेदन है कि धर्मवीर ग्रन्थमाला के साहित्य सुमनों के प्रकाशन में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

हवन सामग्री का तथा पुस्तकों का भारी संख्या में अपना आर्डर आज ही भेजकर विश्व व्यापी वैदिक धर्म के प्रबल प्रचार में सहायक बनें।

निवेदक —

वेदपथिक धर्मवीर आर्य ज्ञानाधार व्याख्यानभूषण
अध्यक्ष–धर्मवीर ग्रन्थ माला प्रकाशन विभाग
सराय रुहेला नई दिल्ली ५

चारो वेद भाष्य, स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थ तथा आर्यसमाज की समस्त पुस्तकों का

एक मात्र प्राप्ति स्थान—

आर्यसाहित्य मण्डल लि०

श्रीनगर रोड, अजमेर

भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद की विद्यारत्न, विद्या विशारद, विद्या वाचस्पति आदि परीक्षायें मडल के तत्वावधान मे प्रतिवर्ष होती हैं। इन परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें अन्य पुस्तक विक्रेताओं के अतिरिक्त हमारे यहां से भी मिलती हैं।

वेद व अन्य आर्ष ग्रन्थो का सूचीपत्र तथा परीक्षाओं की पाठविधि मुफ्त मगावें

नये वर्ष पर ···· **कर्ण रोग नाशक तैल** अवश्य मगाइये

'कर्णरोग नाशक तैल' रजि०मू० १ शीशी १।)। आखो का 'शीतल सुरमा' रजि० मू० १ शी०१।।)। आखो का 'शीतल अजन' रजि० मू० १ शी० २) नेत्रो मे पीयूष अजन' रजि० मू १ शी० २।।)। कुठार मोतिया बिन्द'रजि मू० १ शी० ३।।), बालो मे शीतल मजन' रजि०मू० १ डिबी १।)।दुखती मे नेत्र लोशन' रजि० मू० १ शी० १।)। दर्द मे शीतल बाम' रजि०मू० १ शी० १८० पै०। बीनाई मे शिवराज सुरमा' मू० १ शी० ६)। आँख की 'परवाल अजन' मू० १ शी०१)। जवाहर सुरमा' (स्याह) मू० १ शी०३)। 'जवाहर अजन' (सफद) मू० १ शी० २।।)। शीतल मरहम' मू० १ शी० १ ८० पै०। श्रेष्ठ शीतल काजल' मू० १ डिब्बी १।।)। खर्चा पैकिग पोस्टेज खरीदार के जिम्मे रहेगा, आज ही हमसे मगाइये। पत्र साफ-साफ लिखें।

'कर्ण रोग नाशक तैल' सन्तोमालन मार्ग, नजीबाबाद यू.पी.

लक्ष्मणधारा

घर का डॉक्टर

इसकी चन्द बूदें लेने से हैजा, कै, दस्त, पेटदर्द, जी-मिचलाना, पेचिस, खट्टी-डकारें, ...जी, पेट फूलना, कफ, खाँसी, जुकाम आदि दूर होते हैं और लगाने से ...द, मोच ..., फोड़ा-फुन्सी, बातदर्द, सिरदर्द, कानदर्द, दाँतदर्द, भिड़ मक्खी आदि के काटे के दर्द दूर करने मे संसार की अनुपम महौषधि। हर जगह मिलता है।

विशेष हाल जानने के लिए सूचीपत्र मुफ्त मगाइये।

निराश रोगियों के लिये स्वर्ण अवसर

सफेद दाग का मुफ्त इलाज

हमारी 'दाग सफा बूटी" से शत प्रतिशत रोगी सफेद दाग से चगा हो रहे हैं। यह इतनी तेज है कि इसके कुछ दिनो के सेवन से दाग का रग बदल जाता है और शीघ्र ही हमेशा के लिए मिट जाता है। प्रचारार्थ एक फायल दवा मुफ्त दी जावेगी। रोग विवरण लिखकर दवा शीघ्र मगा लें। न० १९

पता—श्री लखन फर्मेसी नं० ४

पो० कतरी सराय (गया)

गुरुकुल झज्जर स्वर्ण जयन्ती

यू० पी० गवर्नमेन्ट की विधान सभा के प्रेसीडेन्ट द्वारा प्रशंसित

तुलसी ब्राह्मी चाय

स्वास्थ्य बल और स्मरण शक्ति की वृद्धि करती है। निबलता, खासी और जुकाम का नाश करती है। मूल्य ४० कप का बक्स ३७ पैसे। वी० पी० खर्च ३ बक्स तक १) २५ पैसे। व्यापारी लोग एजेन्सी के नियम मांगें। साहित्य प्रेमी ५ सज्जनों के नाम पते लिखें। सुन्दर उपन्यास मुफ्त लें। पता—

प. रामचन्द्र वैद्य शास्त्री

सुधावर्धक औषधालय नं० ५

अलीगढ़ सिटी उ० प्र०

वर्ण-व्यवस्था

गीता' व रामायण मुफ्त

[नियम भी मुफ्त लीजिये]

मोमुस्लिम जाति निर्णय ५२० पृ० अस्पृश्य शुद्धि व्यवस्था' पृष्ठ ८) क्षत्रिय वंश प्रदीप प्रथम भाग ३७१ पृष्ठ ८), जाति अन्वेषण प्रथम भाग ३६१ हिन्दू जातियो का विश्व कोष' ४७५ पृष्ठ ८) सूचिया जाति निर्णय २२० पृष्ठ ५।।), २ ५१ प्रश्न (जाति निर्णयार्थ) लिखित ५१।) डाक पृथक २।)

पता-वर्ण व्यवस्था मण्डल (A)

फुलेरा (जयपुर)

दैनिक स्वाध्याय के ग्रन्थ

(१ ऋग्वेदसुबोध भाष्य—मधु छन्दा, मेधातिथी शुन शेप कण्व) परमेष्ठी हिरण्य गर्भ, नारायण, बृहस्पति, विश्वकर्मा सप्त ऋषि व्यास आदि, १८ ऋषियो के मन्त्रों के सुबोध भाष्य मूल्य १६) डाक व्यय १।।,

ऋग्वेद का सप्तम मण्डल (वशिष्ठ ऋषि)—सुबोध भाष्य मू० ७) डाक व्यय १)

यजुर्वेद सुबोध भाष्य अध्याय १—मूल्य १।।) अष्टाध्यायी मू०२) अध्याय ३६, मूल्य ।।) सबका डाक व्यय १)

अथर्ववेद सुबोध भाष्य—(सम्पूर्ण २०काण्ड)मूल्य५०) डाक व्यय६)

उपनिषद् भाष्य—ईश२) केन ।।) कठ १।।) प्रश्न १।)मुण्डक१।।) माण्डूक्य ।।) ऐतरेय ।।।) सबका डाक व्यय ४)।

श्रीमद्भगवतगीता पुरुषार्थ बोधिनी टीका—मूल्य १२।) डाक व्यय २)

चाणक्य—सूत्राणि

पृष्ठ-संख्या ६९० **मूल्य १२) डाक-व्यय २)**

आचार्य चाणक्य के ५७१ सूत्रों का हिन्दी भाषा मे सरल अर्थ और विस्तृत तथा सुबोध विवरण, भाषान्तरकार तथा व्याख्याकार स्व० श्री रामावतार जी विद्याभास्कर, रतनगढ जि० बिजनौर। भारतीय आर्य राजनैतिक साहित्य में यह ग्रन्थ प्रथम स्थान में वर्णन करने योग्य है यह सब जानते हैं। व्याख्याकार भी हिन्दी जगत मे सुप्रसिद्ध हैं। भारत राष्ट्र अब स्वतन्त्र है। इस भारत की स्वतन्त्रता स्थायी रहे और भारत राष्ट्र का बल बढ़े और भारत राष्ट्र अग्रगण्य राष्ट्रो मे सम्मान का स्थान प्राप्त करे इसको सिद्ध करने के लिए इस भारतीय राजनैतिक ग्रन्थ का पठन पाठन भारत भर में और घर-घर में सर्वत्र होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए इसको आज ही मगाइये।

ये ग्रन्थ सब पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलते हैं।

पता—स्वाध्याय मण्डल, किल्ला पारडी. जिला सूरत

महान् राष्ट्र भक्त दयानन्द

[पृष्ठ २ का शेष]

चली आई है।" (तृतीय समुल्लास)

देश की उन्नति का सूत्र बताते हुए उस महामुनि ने लिखा 'जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान होता है' यह था ऋषि का मापदण्ड जिसके आधार पर वे इस पावन वसुन्धरा को पुष्पित एव पल्लवित देखना चाहते थे। स्वदेश प्रेम की चिनगारी उनके हृदय में व्यापक रूप धारण कर चुकी थी वे इस भारतभूमि के परतन्त्रता के पाशों को तोड़ने के लिए उतावले हो उठे थे। आर्यों के चक्रवर्ती राज्योल्लेख के प्रसग में वह महायोगी दुखी होकर लिखता है 'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहना किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार के दुख भोगना पड़ता है।" (अष्टम समुल्लास) कितनी मार्मिक वेदना है इन वाक्यों में? आर्य्यावर्त्त की स्वाधीनता के लिए कितनी गहन तड़पन है?

भागीरथी की भीगी रेती में, एक स्त्री को अपने उत्तरीय के छोर से कफन बनाकर अपने मृतक पुत्र को नदी में बहाते एव पुन उसी चीर चीवर को ग्रहण करते देख उस योगीवर दयानन्द के नेत्रों से यमुना और सरस्वती की धारा बहने लगी। जिस दयानन्द को चाचा और भगिनी की मृत्यु न रुला सकी आज वह दयानन्द सुवर्णभूमि की यह दुर्दशा देखकर करुणा, वेदना और पीड़ा के समुद्र में डूब गया। उसके दुख का कोई पारावार न रहा दयानन्द केवल राजनैतिक कल्याण नहीं चाहते थे अपितु वे इस देश को धन धान्य से भी परिपूर्ण देखना चाहते थे। विदेशों से व्यापार आदि द्वारा वे इसकी आर्थिक समृद्धि की कामना करते थे। उनको यह देखकर महान् कष्ट हुआ कि हमारे देशवासी तो धर्मभ्रष्ट होने की शका से बाहर न जायें और विदेशी लोग इसका लाभ उठाकर हमारे यहाँ राज्य एव व्यापार द्वारा लूट मचा रहे हैं अतएव उन्होंने लिखा 'धर्म हमारे आत्मा और कर्तव्य के साथ है जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देश देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता, दोष तो पाप के काम करने से लगते हैं ? क्या बिना देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य या व्यापार किए स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? जब स्वदेश ही में स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश में व्यवहार या राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।" (दशवाँ समुल्लास)

पारस्परिक फूट एव कलह के कारण ही ब्रह्मा और जैमिनी की इस पुण्य वसुन्धरा का पतन देखकर ऋषिवर की मर्म वेदना का पारावार न रहा और वे निम्न वाक्यों में फूट पड़े 'जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है। आपस की फूट से कौरव पाडव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है, न जाने यह भयकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुख सागर में डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्र—हत्यारे, स्वदेश विनाशक नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राज रोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय। (सत्यार्थ प्रकाश, दसवाँ समुल्लास)।

ऋषिवर दयानन्द केवल आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक दृष्टि से ही इस देश और जाति का उत्थान नहीं चाहते थे अपितु वे इसे शारीरिक दृष्टि से भी उन्नत एव स्वस्थ देखना चाहते थे इसीलिए उन्होंने आर्यसमाज के छठे नियम में सबसे पहले शारीरिक उन्नति पर बल दिया। इसके लिये गो-रक्षा परमावश्यक समझते थे। गौमाता के उपकारों का वर्णन करते हुये उन्होने लिखा—'देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे तभी आर्यावर्त वा अन्य भूगोल देश में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्त्तते थे, क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए तब से क्रमश आर्यों के दुख की बढ़ती होती जाती है।"

(दसवाँ समुल्लास)

ऋषि के आने से पूर्व अग्रेजी राज ने आर्यावर्त्त की संस्कृत और संस्कृति को हीनता रूपी अन्धकार के आवर्त्त में डाल दिया था। ऋषि ने इस भारतभूमि को विद्या का प्राचीनतम केन्द्र घोषित करते हुए इसके गौरवमय भाल पर चार चांद लगा दिये। सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में यतिवर ने लिखा—"और जितनी विद्या भूगोल में फैली हुई है, वह सब आर्यावर्त्त देश से मिश्र वालों उनसे यूनानी, उनसे रूम और उनसे यूरोप देश में उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है।"

इस देश के कलाकौशल पर ऋषि को नाज था 'परन्तु' उन्हीं के शब्दों में 'ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया। क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह" महाभारत के युद्ध ने ऋषि को कितनी गहरी ठेस पहुचाई इसका यह प्रमाण है क्योंकि उसी युद्ध के कारण इस देश और जाति का भाग्य चौपट हुआ। बड़े बड़े विद्वान राजा, महाराजा, ऋषि महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला।"

(एकादश समुल्लास)

विभिन्न मतमतान्तरों के पाखण्ड जाल ने इस भारत भूमि को दुराचार और पापाचार की भट्ठी में झोंक दिया था। भागवत की सृष्टि-क्रम विरुद्ध बातों पर समीक्षा करते हुये खिन्न होकर ऋषिवर ने लिखा— इन पोपों से बचते तो आर्यावर्त्त देश दुखों से बच जाता' ऋषि की आत्मा पुराणोक्त परस्पर विरोधी बातों तथा महात्मा श्रीकृष्ण पर लगाये गये लाछनों को देखकर तड़प उठी अतएव उन्होंने उपर्युक्त वाक्य लिखा राम स्नेही मत पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने लिखा—'यदि ऐसे ऐसे पाखण्ड न चलते तो आर्यावर्त्त देश की दुर्दशा क्यों होती।" नाना सम्प्रदायों एव पाखण्डियों ने इस देश की भोलीभाली जनता को अज्ञान की उलझनों में उलझा रखा था और इसको लूट लूट कर वे खूब विषयानन्द करते थे। ऋषि देश की इस दुर्दशा को देख न सके और पुष्टि मार्ग पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने लिखा— 'ऐसे ऐसे लोगों ने आर्यावर्त्त की अधोगति कर दी।"

(११वाँ समुल्लास)

ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज को विदेशी रंग में रंगे देखकर उस महामुनि ने लिखा— भला जब आर्यावर्त्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न-जल खाया पिया अब भी खाते पीते हैं अपने माता, पिता पितामह आदि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशियों पर अधिक झुक जाना ब्राह्मसमाजी और प्रार्थना समाजियों को एतद्देशस्थ सस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान प्रकाशित करते हैं।"

ऋषि के स्वदेश प्रेम का कहा तक बखान किया जाये? उन्हे इस देश की सस्कृति, सभ्यता, कलाकौशल, आचार, विचार और व्यवहार सभी से प्रेम था यहा तक कि वे इस देश के बने हुये जूतों से भी प्यार करते थे। उनको यह देखकर महान कष्ट हुआ कि विदेशी लोग तो हमारे स्वदेशी जूतों तक को पसन्द नहीं करते फिर मनुष्यों की तो बात ही क्या। परन्तु हमारे लोग फिर भी उनका अन्धानुकरण कर रहे हैं— 'देखो! अपने देश के बने हुये जूतों को आफिस और कचहरी में जाने देते हैं इस देशी जूते को नहीं। इतने ही में समझ लेओ कि अपने देश के बने हुए जूतों का भी जितना मान प्रतिष्ठा करते हैं उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते' (११वाँ समुल्लास) राष्ट्रभक्ति और स्वदेश प्रेम का जाज्वल्यमान उदाहरण है। आगे चलकर उसी समुल्लास के अन्त में उस युगप्रवर्त्तक मनीषि ने जो लिखा वह स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है।

'इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा क्योंकि हम और आपको अतिउचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है आगे होगा उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।'

इससे बढ़कर उस योगिराज की देशभक्ति का क्या प्रमाण हो सकता है? यह उस युगपुरुष की देशभक्ति का चरम निदर्शन है।

धन्य है देव दयानन्द! और धन्य धन्य है यह भारत भूमि!! जो तेरे जैसे देशभक्तों को पाकर कृतकृत्य हो गई जो वर्त्तमान, भूत, भविष्यत तीनों कालों में और तन मन, धन तीनों प्रकारों से इस भारत भूमि की उन्नति देखना चाहता था। अहर्निश इस आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान और अभ्युदय की लहर ही उस प्यारे ऋषि के हृदय में उमड़ा करती थीं। उस महान ऋषि को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने ठीक ही कहा था—

I offer my homage of Veneration to swami Dayananda, the great path Maker in modern India who through, bewoldering tangles -the dense undergriwth ofthe degenerate days of our country-of creeds and practices cleared stra ht path that was meant to lead the Hindus to a simple and rational life of devotion to God and service for man With a clear sighted vision

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल.-६०

फाल्गुन१० शक १८८७ फाल्गुन कृ०:१०
(दिनांक २० फरवरी सन् १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60

पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष २५९९३ तार "आर्य्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत—

महर्षि दयानन्द

[वेद पथिक प० धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी, व्याख्यानभूषण]

महर्षि दयानन्द के उपकार

महर्षि दयानन्द जी ने अपने अमर-ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे पूर्ण स्वराज्य का उदघोष किया था।

(२) हिन्दी को राष्ट्र भाषा पद पर आसीन करने का भागीरथ प्रबल प्रयत्न महर्षि दयानन्द जी ने किया था।

(३) गोरक्षा आन्दोलन का शुभ शुभपात महर्षि दयानन्द जी ने ही किया था।

(४) छुआछूत के भयकर भूत को हिन्दू जाति से महर्षि दयानन्द जी ने भगाया था।

(५) वेद विरोधियों से शास्त्रों की धूम मचाकर वेदों का प्रबल प्रचार महर्षि दयानन्द जी ने किया था। भारत की जनता वेद पथ को भूलकर रोग दु खों में भटक रही थी।

(६) विधवा अनाथों की करुण अवस्था को देखकर फूट फूटकर आँसु बहाया था महर्षि दयानन्द ने आज अनेकों अनाथालय और विधवा आश्रम आयसमाज की ओर से चल रहे हैं जिसमे हजारों निराश्रित बालको और बालिकाओ को भोजन वस्त्र और शिक्षा का सारा प्रबन्ध आयसमाज कर रहा है। महर्षि दयानन्द के गुणो का गान किन शब्दो मे गाया जाये।

of truth and courage of determination he preached and worked for our self respect and vigorous awakenment of mind that could strive for a harmonious adjustment with the progressive spirit of the modern age and, at the same time, keep in perfect touch with that glorious past of India when it revealed its personality in freedom of thought and action in an unclouded radiance of spritual realisation"
(Rabindranath Tagore)

(७) नारी जाति की शिक्षा उन्नति का सबसे बड़ा श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है आज भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी है इसका सारा श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है। आज एक दो नहीं हजारों कन्या विद्यालय देश-विदेश में आर्यसमाज की ओर से चल रहे हैं और लाखों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके भारतीय जीवन की विचारधारा को अपनाकर वैदिक सस्कृति की रक्षा में अग्रसर हो रहे हैं।

महर्षि दयानन्द और यज्ञ

(८) महर्षि दयानन्द के पूर्व यज्ञ नाम पर बड़ बड़े पाप और अनर्थ हो रहे थे। यज्ञ के नाम पर पशुबली और कहीं नर मेध यज्ञ चल रहे थे। पाखण्ड अविद्या अन्धकार मे लोग भटक रहे थे वैदिक कर्मकाण्डो का प्रचार पच महायज्ञों का प्रबल प्रचार महर्षि दयानन्द ने किया। आज लाखों नर नारी प्रतिदिन सध्या और यज्ञ कर रहे हैं। अपना जीवन यज्ञमय बनाकर आत्म उन्नति की दिव्यदिशा मे आगे बढ़ा रहे हैं। इसका सारा श्रेय महर्षि दयानन्द को है।

बाल विवाह और ऋषि दयानन्द

९—बाल विवाह की प्रथा ऐसी चल पड़ी थी कि दुधमुहे बच्चों की शादियां धुंआधार हो रही थीं। इस कलक से हजारो विधवाय नित्य विधर्मियो के जाल मे आकर प्रवेश के लिए अभिशाप हो रही थी। विधवाओं के करुणक्रन्दन को सुनकर बाल विवाह की प्रथा का प्रबल विरोध महर्षि दयानन्द जी ने किया था।

मद्य निषेध और महर्षि दयानद

१०—महर्षियों की सतानें नशा में पड़कर अपने धनधोर स्वास्थ्य को खो रही थीं। आज भी प्रति दिन करोडों रुपये देश के धूम्रपान में और शराब गाजा भांग में नित्य बरबाद हो रहे हैं। इन बढ़ती हुई बुराइयों से असख्यों नर-नारियों को बचाया था महर्षि दयानन्द जी ने।

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली और महर्षि दयानन्द

११—गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का लोप हो चुका था उसे वेद विद्या और सस्कृत के प्रचार के लिये जो कार्य महर्षि दयानन्द जी ने किया था उसे आज सारा ससार जानता है। सस्कृत विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है इसके लिए महर्षि दयानन्द जी ने जो कार्य किया है वह स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है।

आज आर्यसमाजकी ओर से अनेकों गुरुकुल, कन्या गुरुकुल सस्कृत विद्यालय देश और विदेशो मे चल रहे हैं। यह सब देव दयानन्द की दया का ही प्रतिफल है।

१२—महर्षि दयानन्द और मानवता की रक्षा विश्व की मानवता जिस समय कराह रही थी। मानवता की रक्षा के लिए महर्षि दयानन्द जी ने सब प्रथम बम्बई नगर में आर्यसमाज स्थापित किया था आज से २० वर्ष पूर्व। आज हजारों आयसमाजें स्थापित हो चुकी हैं जिनके अपने विशाल भव्य भवन हैं। आज हजारों आयसमाजों मे दैनिक सत्सग चल रहे हैं। एक करोड़ से ऊपर आर्य समाज सदस्य हैं।

आयसमाज ने देश के जागरण मे जो काय किया है वह उल्लेख किन शब्दो में किया जाये। सभी दिशाओं में आर्य समाज ने आगे बढ़कर जो कार्य किया है उसका साक्षी भारत का स्वर्ण इतिहास है।

१३—महर्षि दयानन्द और वेद प्रचार वेद प्रचार का जो काय देश और विदेशो मे आज हो रहा है उस काय को करने के लिए आज आयसमाज के हजारों विद्वान उपदेशक सन्यासी प्रचारक काय कर रहे हैं। मैक्समूलर ने स्वामी जी के वेद भाष्य की प्रबल शब्दों मे सराहना की है। इस काय पर करोडों रुपये वार्षिक खर्च हो रहे हैं यह सब उस एक योगी का महा तप और त्याग है जिसका नाम मूलशकर था।

महर्षि दयानन्द और वैदिक साहित्य का निर्माण

१४—महर्षि दयानन्द जी ने मानव को देव बनाने के लिए धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष सुख की सिद्धि को प्राप्त करने के लिए सस्कार विधि जैसे अमूल्य ग्रन्थ को लिखकर तथा सत्यार्थ प्रकाश जैसे पावन ग्रन्थ को लिखकर जो देश की धमजाल से बचाया है उसका ऋणी सारा ससार है। विश्व का मानव समाज महर्षि दयानन्द का अत्यन्त ऋणी है।

★

बम्बई में वेदप्रचार की धूम

आर्य-जगत् के प्रसिद्ध आर्य उपदेशक वेद पथिक प० धर्मवीर जी आर्य ब्रह्मचारी, श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष साधना आश्रम विलेपार्ले बम्बई के निमन्त्रण पर बम्बई पधारे।

आपके दस भाषण साधना आश्रम के दैनिक सत्सग मे हुए। चार भाषण आर्यसमाज गिरगाव बम्बई, एक भाषण आर्यसमाज पुष्पकुञ्ज चचगेट एक भाषण आर्यसमाज चैम्बूर एक भाषण आर्य-समाज गोरेगाव मे हुए हैं।

शोक

—जिनके अथक प्रयत्न से चावपुर में दो आर्यसमाज मन्दिर बने थी प० रामसरन जी आर्य कई वर्ष पहले स्वर्ग-वासी हो गये थे अब ता० २८।१।६६ को उनकी धर्मपत्नी जयदेवी का स्वर्ग-वास हो गया। इन्होने भी अपने जीवन भर आर्यसमाज की सेवा की।

—वैद्य जगदीश शास्त्री

गायत्री महायज्ञ

वेद प्रचारक मडल के तत्वावधान में ७ अगस्त से १५ अगस्त तक हुआ जिसमे राखी के अवसर पर विद्वानो के व्याख्यान हुये जिनमे महात्मा आनन्द भिक्षु जी स्वामी अ त्मानन्द तीर्थ, जय देव सिद्धांति प्रो० रामसिंह आचार्य भगवानदेव आदि के व्याख्यान हुए।

—वेदप्रचारक मडल देहली

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य्यभास्कर प्रेस, ५मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराव धारजी द्वारा मुद्रित, प्रकाशित

लखनऊ—रविवार फाल्गुन १२ शक १८८७ शु० १४ वि० २०२२ दिनांक ६ मार्च सन १९६६ ई०

पंजाब का विभाजन कभी भी स्वीकार न होगा।

पंजाबी सूबे की मांग साम्प्रदायिक एवं अराष्ट्रीय है।

आर्यसमाज पूरी शक्ति से पंजाबी सूबा मांग का विरोध करेगा।

आर्यजगत् पूरी शक्ति के साथ पंजाबी सूबा मांग का विरोधी है और सदैव विरोध करेगा।

राष्ट्र की अखण्डता के लिए जिन खतरों की ओर सदैव ध्यान आकृष्ट किया जाता रहा है उन खतरों में सबसे बड़े दो खतरे हैं सम्प्रदायवाद और भाषावाद। भाषावाद का एक छोटा नाटक जनवरी ६५ में मद्रास में खेला जा चुका है उससे पहले भी आन्ध्र, गुजरात महाराष्ट्र इस नाटक की रंगभूमि बन चुके हैं। आज पंजाब में इस नाटक का मञ्चन हो रहा है।

श्री नेहरू ने पंजाब के इस खतरे को अच्छी प्रकार समझा था और स्वीकार किया था कि पंजाबी सूबे की मांग न केवल भाषायी है किन्तु इसमें साम्प्रदायिक तत्व भी विद्यमान हैं। इसी आधार पर श्री नेहरू ने मा० तारासिंह के अनशन दल की उपेक्षा कर अपनी दृढ़ता का परिचय दिया था। आज की सरकार नेहरू के कदमों पर चलने की घोषणा करके भी उसका पालन करने में हिचकिचा रही है। भारत सरकार की तुष्टीकरण नीति ने एक बार फिर पंजाबी सूबे की साम्प्रदायिक मांग को ज्वलन्त प्रश्न बना दिया है। सरकार ने मन्त्रिमण्डलीय और संसदीय समितियों का गठन कर देश की अखण्डता और एकता के पवित्र सिद्धान्त को गहरा आघात पहुंचाया है।

समय समय पर पंजाबी सूबे के सम्बन्ध में जो भी सुझाव आये हैं आर्यसमाज उन सबसे असहमत रहा है। आर्यसमाज पंजाब के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं समझता है परन्तु इस सम्बन्ध में किसी भी परिवर्तन को घातक और अराष्ट्रीय अनुभव करता है।

आर्यसमाज ने अपना पक्ष पूरी शक्ति के साथ सरकार के सम्मुख रख दिया है। यदि सरकार ने आत्महत्या की धमकियों से झुकना शुरू किया तो इसकी गम्भीर प्रतिक्रिया होगी और इसका दायित्व सरकार पर होगा।

वेदामृत

ओ३म् य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो, विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या, देवासः पिपृता स्वस्तये।

काव्यानुवाद

विद्वन् विज्ञानी, जगत्,
सब जन्मों के ईश हैं।
अघ से कर दे मुक्त कर्म
अकर्म के गुणशील हैं॥

विषय-सूची

वार्षिक ८)
छः माही ५)
विदेश १ पौं.

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक ९
एक प्रति २० पै.

डी. ए. वी. कालेज लखनऊ के नये भवन का शिलान्यास

श्री चन्द्रदत्तजी तिवारी द्वारा १०,०००) का दान

●

डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में १८-२-६६ को शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि बोध पर्व (ऋषि दयानन्द जन्म दिवस) मनाने के पश्चात स्नातक कक्षाओं के नये भवन का शिलान्यास श्री प्रिंसिपल दीवानचन्द जी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। वेद मन्त्रोच्चारण के साथ भवन की शिला रखी गई।

वयोवृद्ध प्रधानाचार्य डी०ए०वी० कालेज कानपुर एवं आगरा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डा० दीवानचन्द ने शिलान्यास समारोह के अवसर पर भाषण करते हुए छात्रों को तीन शिक्षायें दीं—(१) राजनीति से दूर रहें क्योंकि पढ़ने का समय जीवन में एक ही बार आता है। (२) सदा नीरोग (ब्रह्मचारी) रहें और (३) जिस कार्य को भी करें चाहे वह कितना ही तुच्छ हो, पूर्ण परिश्रम से करें।

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी०

इस अवसर पर संसत्सदस्य एवं लोकसभा में निर्दलीय दल के नेता श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने मुख्य अतिथि के पद से भाषण करते हुए ऋषि दयानन्द सरस्वती के जीवन दर्शन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला और बताया कि लगभग सभी डी० ए० वी० कालेजों की स्थापना छावनी क्षेत्रों के निकट की गई ताकि देश के सैनिक संस्कृति से प्रभावित हों। श्री शास्त्री जी ने सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति की चर्चा करते हुए कहा कि सरकार की अनिच्छा होते हुए भी डी०ए०वी० कालेजों में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की व्यवस्था की गई है।

कालेज की प्रबन्ध समिति के मन्त्री श्री चन्द्रदत्त तिवारी ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की और बताया कि स्नातक कक्षाओं की द्विपाली व्यवस्था को जो अवकाश की कमी के कारण चलानी पड़ रही है, समाप्त करने हेतु ही नए भवन का निर्माण किया जा रहा है। श्री तिवारी जी ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि शासन की ओर से जो अनुदान विश्वविद्यालयों को प्राप्त होता है उसमें १०,५०० रुपये की राशि स्वतः प्रति वर्ष की आय में जोड़ दी जाती है जिसके परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष उक्त राशि काटकर ही अनुदान दिया जाता है। उन्होंने अपनी ओर से १० हजार रुपये डिग्री कालेज के निर्माणार्थ देने की घोषणा करते हुए कहा कि हम शीघ्र से शीघ्र एक लाख रुपये का प्राक्कलन एकत्र कर लेंगे।

अन्त में सभापति श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने एकत्र अतिथियों को धन्यवाद दिया। समारोह का समापन बालिका विद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।

आत्मनिर्भर बनना होगा

देश की सम्पन्नता के लिए हमें विकास की गति तेज करनी होगी और खाद्यान्न की दृष्टि से भी हमें आत्मनिर्भर बनना होगा। हमें अगली पीढ़ी के लिए कुछ त्याग करना होगा। हमें चाहिये कि हम खपत में यथासम्भव कमी करें और अपनी बचत बढ़ायें। बचत के लिए अनेक योजनायें चालू की जा चुकी हैं।

—स्व० श्री लालबहादुर शास्त्री

शिलान्यास समारोह पर समिति के मन्त्री द्वारा प्रस्तुत आख्या—

●

परमादरणीय मुख्य अतिथि, श्री शास्त्री जी, उपस्थित महानुभाव अध्यापक बन्धु तथा विद्यार्थियो

आज से लगभग ४८ वर्ष पूर्व ४ जुलाई १९१८ को इस विद्यालय की स्थापना आर्यसमाज मन्दिर गणेशगंज में हुई। १९२६ में लखनऊ के विकास विभाग (इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट) ने हमें वर्तमान भूमि, जिसका क्षेत्रफल लगभग ४० बीघा है स्थाई लीज पर प्रदान की। स्थापना के २४ वर्ष के उपरान्त हमें इन्टर कक्षाओं की मान्यता प्राप्त हुई तथा सन १९५४ में हमें बी० एस-सी० तथा बी० ए० की कक्षाओं को खोलने की मान्यता लखनऊ विश्व विद्यालय से प्राप्त हुई।

सन १९४६ में जनप्रिय शासन आने के उपरान्त राज्य सरकार ने शिक्षा के विस्तार पर विशेष बल देना आरम्भ किया। शिक्षा संहिता में वर्णित नियमों के अनुसार भवन खेलने का स्थान, काष्ठोपकरण तथा दीक्षित शिक्षक न होते हुए भी विद्यालय आकार में बढ़ने लगे और नये नये खुलने लगे। हमारे विद्यालय ने भी अपने आकार को बढ़ाया। १९४९ में हमने बालिका विद्यालय तथा दयानन्द विद्या मन्दिर की स्थापना की। आजादी के प्रथम ५ वर्षों में विद्यालय में छात्रों की संख्या १००० से बढ़कर लगभग ३०० हजार हो गई जबकि स्थान में कोई विशेष वृद्धि न हुई थी। इस विस्तार के कारण हमें शिक्षा के स्तर को कायम रखने में कठिनाई प्रतीत होने लगी। सारा विद्यालय द्विपाली प्रणाली (शिफ्ट) से चलने लगा। छात्रों के अध्ययन तथा शारीरिक व्यायाम का समय कम हो गया। हमने यह महसूस किया कि हम छात्रों के प्रति द्विपाली प्रणाली के कारण अपने नैतिक दायित्व को पूरा करने में समर्थ नहीं हो रहे हैं। फलतः नये भवनों की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतएव १९५२ में हमने निश्चय किया कि दयानन्द विद्या मन्दिर का भवन, विद्यालय भवन से दूर, बनाया जाय तथा इस भवन में पहली से आठवीं कक्षा तक की शिक्षा का प्रबन्ध हो। उस समय के राज्यपाल श्री के० एम० मुन्शी द्वारा ३० जुलाई १९५२ को इस भवन का शिलान्यास किया गया। हर्ष का विषय है कि इस भवन में इस समय २२ कमरों का निर्माण हो चुका है और इस वर्ष ४ नये कमरों के बनवाने की व्यवस्था की जा रही है। इसी प्रकार हमने बालिकाओं की शिक्षा के लिए १९५६ में बालिका विद्यालय के नये भवन की नींव डाली। इस विद्यालय में इन्टर तक की शिक्षा का प्रबन्ध है। इस समय तक इसके भवन में १८ कमरों का निर्माण हो चुका है और बाकी आठ कमरों के निर्माण की इस वर्ष योजना है। इसी प्रकार अब हमने निश्चय किया है कि उपाधि (डिग्री) कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये नये भवन का निर्माण किया जावे।

इस सम्बन्ध में यह बताना असंगत

श्री चन्द्रदत्त तिवारी मन्त्री प्रबन्ध समिति डी० ए० वी० कालेज

न होगा कि हम अपने सीमित साधनों के बावजूद अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करने में अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक हैं। पिछले १२ सालों में हमने लगभग २-५० लाख रुपया व्यय करके बालिका विद्यालय तथा विद्या मन्दिर के भवनों को बनवाया है।

हमारे पास १० वर्ष पहले जितना स्थान था, अब शायद उससे दूना है परन्तु विद्यार्थियों तथा कक्षाओं की संख्या उस समय से कम है। हमारा प्रयत्न विद्यार्थियों में द्वि-पाली प्रणाली को समाप्त करना है। हमारा यह भी विश्वास है कि अवस्था के अनुसार विद्यार्थियों की शिक्षा का प्रबन्ध अलग-अलग

स्थानों में होना चाहिये।

इसी कारण हमने पहली से आठवीं श्रेणी तक की शिक्षा का प्रबन्ध विद्या मन्दिर में तथा नवीं से बारहवीं श्रेणी तक का प्रबन्ध कालेज के मुख्य भवन में किया है तथा उपाधि (डिग्री) कक्षाओं के लिये नये भवन की व्यवस्था की जा रही है।

हमारा यह भी प्रयत्न है कि हम शिक्षा संहिता में वर्णित नियमों का पालन करें अर्थात कक्षाओं में छात्रो की संख्या सीमित हो। यही नहीं हमारा यह भी प्रयास है कि एक इकाई मे छात्रो की संख्या १००० से अधिक न हो।

हमारे विचार से ऐसा होने पर ही शायद हम विद्यालयो का प्रबन्ध समुचित रूप से कर सकेंगे। हमारा विश्वास है कि हमारे विद्यालय सरस्वती मन्दिर हों और यहा पूर्ण मानवता विकसित हो हमें खेद है कि हम अभी अपने लक्ष्य से दूर हैं, पर हमारे कदम भरोसे के साथ बढ़ रहे हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति ने यह महसूस किया कि अपने देश को उन्नतिशील और समृद्धिशील बनाने के लिये हमारी शिक्षा योजना मे विज्ञान को समुचित बल दिया जाना चाहिये। आज विज्ञान और तकनीक का युग है हम तेजी के साथ नये कल कारखानों का निर्माण कर रहे हैं। पर हमें खेद है कि जिस तेजी से देश में उद्योगीकरण हो रहा है उस गति से अच्छी शिक्षा पर समुचित बल नहीं दिया जा रहा है। व्यय का अधिक भाग उपाधि विद्यालयों पर किया जा रहा है।

परन्तु हमारा विश्वास है कि यदि हम शिक्षा का स्तर उठाना चाहते हैं तो हमे प्रारम्भिक से उच्चतर माध्यमिक वर्गों तक की शिक्षा पर समुचित बल देना होगा। इस स्तर के लिये नियुक्त अध्यापकों का कार्य उपाधि कक्षाओ के अध्यापकों से अधिक कठिन और श्रम साध्य है। पर उनका वेतन कहीं कम है। हमारे विचार से उपाधि (डिग्री) कक्षाओ के अध्यापको के वेतन के अनुरूप ही इन विद्यालयो के अध्यापको के वेतन क्रम की ओर समुचित ध्यान दिया जावे तभी अच्छी शिक्षा का प्रबन्ध सम्भव हो सकेगा और राष्ट्र को अच्छे नागरिक प्राप्त हो सकेंगे। हमारे विचार से यदि शासन ने अच्छी शिक्षा पर बल न दिया और वह केवल आंकड़ों (स्टेटिक्स) पर ही ध्यान देती रही तो आज का उद्योगीकरण घोर विपत्ति का कारण बन सकता है।

अब मैं आपके सामने डिग्री कालेज के सम्बन्ध मे विशेष प्रतिवेदन रखना चाहूंगा। हमे १९५४ में बी० ए० तथा बी० एस० सी० खोलने की अनुमति प्राप्त हुई थी। शासन का नियम है ऐसे विद्यालयो के पास १०,५०००) साल की आमदनी का प्राभूत (एजूकेशन फण्ड) हो। ऐसा न होने पर भी अधिकारी अनुदान आंकते समय इतना धन विद्यालय की आमदनी मे प्रति वर्ष जोड़ लेते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि हमें हर वर्ष इतनी रकम कटकर अनुदान मिलता है। अच्छा होता कि लखनऊ विश्वविद्यालय आगरा विश्वविद्यालय की भांति केवल उन्हीं विद्यालयों को मान्यता; देता जिनके पास यह साधन उपलब्ध थे या राज्य सरकार से प्रयत्न कर प्राभूत की आय के नियम को समाप्त अथवा ढीला कराता या कम से कम हमें इस राशि को इकट्ठा करने की प्रेरणा देता। इस कमी के कारण हमे दुःख है कि डिग्री कालेज के छात्रो और विशेष कर अध्यापको को अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ा है। परन्तु हमारा उनसे निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध मे हमारी मजबूरियों को समझेंगे, जिनका कि ज्ञान हमे विश्वास है उन्हें स्वयं होगा और वे हमारे इरादों एवं मन्तव्यों को देखते हुए हमारी कमियों पर सहानुभूति पूर्वक दृष्टिपात करेंगे। लखनऊ विश्वविद्यालय ने अभी भी प्राभूत (इन्डाउमेंट) के सम्बन्ध में कोई नियम नहीं बनाया है। परन्तु हमने निश्चय किया है कि हम शीघ्र से शीघ्र डिग्रीकालेज के लिए एक लाख का नकद प्राभूत इकट्ठा करेंगे। हमारा यह प्रयास शायद लखनऊ में प्रथम ही होगा।

हमे ज्ञान है कि जब तक हम इस कार्य मे सफल नहीं होते हम विद्यालय के छात्रों और विशेषकर अध्यापकों के प्रति अपने कर्तव्य को न निभा पायेंगे।

हमने इस प्रकार अपनी अच्छी शिक्षा योजना के अनुरूप विश्वविद्यालयों का संगठन तथा प्रबन्ध करने का निश्चय किया है। साथ ही छात्रों के लिए सामान्य अध्यापन के साथ-साथ, वेदानुसार नैतिक शिक्षा का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। स्वसंस्कृति का ज्ञान एवं अनुराग, राष्ट्र के प्रति निष्ठा, कर्तव्य परायणता तथा चरित्र निर्माण के लिए ऐसी शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। अपने सीमित क्षेत्र मे इस आवश्यकता की पूर्ति ही हमारे इन विद्यालयो का भी लक्ष्य और प्रयास है। विद्यार्थियो के उच्च शैक्षिक स्तर एवं कठोर अनुशासित जीवन के लिए हम विनीत भाव से प्रयत्नशील है। परन्तु अध्यापको एवं छात्रो के प्रति जो हमारा नैतिक दायित्व पूर्ण कर्तव्य है उसे हम केवल धनाभाव के कारण ही पूर्ण करने में असमर्थ हैं। राज्य शासन द्वारा दिये गये परिमित अनुदान किसी भी रूप में उन सुविधाओं की उपलब्धि नहीं करा सकते जिनको हम देना चाहते हैं। हमारा विश्वास है कि जनता के सहयोग के अभाव में राज्य की सहायता सर्वथा अपर्याप्त रहेगी। इस सहयोग के बिना समाजसेवा भाव से चलाई गई सार्वजनिक संस्थाओ का अस्तित्व ही संदिग्ध हो जाता है। हम इस तथ्य से अवगत हैं तथा अपने कर्तव्य को पूरा करने मे सतत प्रयत्नशील हमारा विनीत प्रयास है कि अनेक मजबूरियों के होते हुए भी हमारे संरक्षण में आये हुए विद्यार्थियों की सर्वांगीण उन्नति तथा विकास मे हम संरक्षकों का कुछ हाथ बंटा सकें। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि हमेशा की भांति आप इस कार्य मे हमे सहयोग तथा सहायता देकर हमारी अच्छी शिक्षा योजना को सफल बनावेंगे।

हमें आज उन उदार दानियों का स्मरण अवश्य करना चाहिये जिन्होंने अपनी सम्पत्ति आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ को सामाजिक सेवा कार्यों के निमित्त दान मे देकर इन विद्यालयों की आधार शिला रखी थी।

१—श्री रामगोपाल गुप्त निवासी नवाबगंज, जिला उन्नाव २५,०००) दिनांक २४ अगस्त १९२०।

२—श्री सरजूदयाल जी निवासी गणेशगंज लखनऊ ४,४००) २७ मई १९२१

३-श्री कामताप्रसिंह निवासी शाहबाद पुर, मलीहाबाद ५०,०००) दिनांक ४ फरवरी १९२७।

४—श्री चतुरी मिस्त्री निवासी बिरहाना लखनऊ ३,०००) ४ जनवरी १९२७।

५—श्री बांकेलाल निगम, निवासी छितवापुर लखनऊ ५०,०००) दि० २५ सितम्बर १९५२।

आज हमें श्री विश्वम्भरनाथ जाल का भी स्मरण आ रहा है जो इस विद्यालय के प्रथम चौबीस साल तक प्रधानाचार्य रहे तथा जिनकी स्थापित मान्यताएँ हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करती रही हैं।

आज हम अपना आभार एवं श्रद्धा श्री रासबिहारी तिवारी के प्रति प्रकट करना अपना कर्तव्य समझते हैं जिन्होंने ४ जुलाई १९१८ को इस विद्यालय का शुभारम्भ किया। जो विशालस्वरूप इस विद्यालय का अब हम देख रहे हैं वह उनकी कर्तव्य निष्ठा एवं दूरदर्शिता का ही प्रतिफल है। उनके उपरान्त श्री भृगुदत्त तिवारी ने जिस प्रकार शिक्षा के कार्य को आगे बढ़ाया तथा तीव्र गति दी वह भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

मैं समझता हूँ कि यह रिपोर्ट अधूरी ही रह जायेगी यदि हम आज श्री मौलवी मोहम्मद हुसेन साहब का स्मरण न करेंगे जो कि ९ मई १८८० मे श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्य समाज, लखनऊ के प्रथम सदस्य एवं दानदाता थे और जिनका प्रशंसनीय कार्य आज भी धार्मिक संकीर्ण विचारों को चुनौती देता हुआ हमारा मार्ग प्रदर्शन कर रहा है।

माननीय मुख्य अतिथि, हमारा संकल्प है कि हम अपने इन शुद्धतावादी विद्यालयों में सर्वांगीण' (टोटल) शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध करेंगे और समाज को 'सु-सम्पूर्ण' (होल) अनुशासित नागरिक देंगे। आपसे प्रार्थना है कि आप हमे आशीर्वाद दें कि हम अपने प्रयत्न मे सफल हों।

समाचार पत्रीयन (केन्द्रीय) 'कानून' १९५६ के आठवें नियम के साथ ही पढ़ी जाने वाली प्रेस तथा पुस्तक-पत्रीयन कानून की धारा १९ डी' की उपधारा 'बी' के अन्तर्गत अपेक्षित "आर्यमित्र" लखनऊ नामक समाचार-पत्र से सम्बन्धित स्वामित्व और अन्य बातों का ब्यौरा।

प्रपत्र—४

१—प्रकाशन का स्थान—भगवानदीन आर्य्य भास्कर प्रेस, नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

२—प्रकाशन की आवर्तिता—साप्ताहिक।

३—मुद्रक का नाम—श्री बाबूराम भारतीय, स्वत्वाधिकारी—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश लखनऊ के लिये।

४—प्रकाशक का नाम—श्री बाबूराम भारतीय, स्वत्वाधिकारी—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश लखनऊ के लिये।
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

५—सम्पादक का नाम—श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—पन्त-भवन' हल्द्वानी [नैनीताल]

६—पत्र का स्वामित्व किसके पास है—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ।

मैं, बाबूराम भारती, घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही है।

बाबूराम

तारीख १ मार्च सन् १९६६ [प्रकाशक के हस्ताक्षर]

विचार-विमर्श

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की रक्षा

(श्री राजबहादुर आर्य सरल)

ऋषि दयानन्द रचित ग्रन्थों के संशोधन की बात आये दिन सुनने एवं पढ़ने को मिलती है। दिवंगत स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती वेदतीर्थ ने सत्यार्थ प्रकाश का संशोधन किया। इस सम्बन्ध मे आर्यसमाज दीवान हॉल मे जब मेरी उन से बातें हुईं तो उन्होने मुझे भी कहा कि मेरी दृष्टि मे जो अशुद्धियां हों उन्हें मैं भी जहां तक हो सके ठीक कर श्री स्वामी जी के पास भेजूं। अत उनके आदेशानुसार मैंने ११ समुल्लासों तक पते प्रमाण आदि की अशुद्धियां ठीक कर श्री स्वामी जी की सेवा मे भेजीं जिन्हें उन्होने बहुत पसन्द किया और मुझे लिखा कि मेरे संशोधन उनके से अधिक काम के रहे।

अब मैं अखबारों मे लगे विज्ञापनों को पढ़ता हूं कि सत्यार्थ प्रकाश का शुद्ध संस्करण छपाया वह हस्तलिखित पुस्तक से मिलाकर छापा गया है आदि आदि। पर मुझे फिर भी सन्देह है कारण कि स्वामी जी ग्रन्थों को स्वयं नहीं लिखते थे वह लेखकों को बोलते जाते थे और वह लिखते थे और यह भी नहीं कि वे सब आर्यसमाजी लेखक हों इस कारण मेरा सन्देह है कि उन्होने मूल प्रति मे भी वेद एवं स्वामी जी के मन्तव्य के विरुद्ध मिलावट की होगी। मेरे इस सन्देह के दो कारण हैं—(१) यह कि दो एक स्थल मेरी दृष्टि मे ऐसे है कि जहां यही नहीं मालुम होता कि उन प्रश्नोत्तरों मे पूर्व पक्ष कौन सा है और उत्तर पक्ष कौन सा और इसकी पुष्टि इससे हो जाती है कि श्री दयानन्द प्रकाश (श्री स्वामी जी का जीवनचरित्र) श्री स्वामी सत्यानन्द जी कृत मे किसी स्थल पर ऐसा आया है जहां बातचीत के दौरान किसी लेखक (जो स्वामी जी के ग्रन्थ लेखन का कार्य करता था) ने कहा था कि यह साधुड़ा (श्री स्वामी दयानन्द जी के प्रति) हम लोगों के हथकण्ड क्या जाने हम इसके ग्रन्थों मे ऐसी मिलावट कर दें कि इसे स्वप्न मे भी पता न चले इसलिए मैंने हस्तलिखित प्रति के सम्बन्ध मे भी सन्देह की बात लिखी है इसलिए हस्तलिखित के मिलान मे भी सावधानी की आवश्यकता है और वह भी ऐसे योग्य व्यक्ति द्वारा होनी चाहिए कि जिसे वैदिक सिद्धान्त एवं श्री स्वामी जी के मन्तव्यों का भली प्रकार ज्ञान हो, आशा है इधर ध्यान देने की कृपा की जायगी।

(२) सत्यार्थ प्रकाश की भांति ही संस्कार विधि के कुछ स्थल भी संशोधन चाहते हैं जिनके लिए विस्तार मे न जाकर एक उदाहरण दूंगा जो कि विवाह विधि से सम्बन्धित है विवाह कब आरम्भ हो यहां लिखा है— एक घण्टे मात्र रात्रि जाने पर और यहां यह ध्यान रखने की बात है कि ऋषि दयानन्द विवाह की दो विधि स्वीकार करते हैं (१) पूर्व विधि एवं (२) उत्तर विधि और पूर्व विधि मे सूर्य दर्शन तथा उत्तर विधि मे ध्रुव दर्शन का विधान लिखते हैं तो विचारणीय है कि क्या पूर्व विधि प्रात सूर्योदय तक होती रहेगी और उत्तर विधि दूसरे दिन सो भी नहीं कारण कि 'एक घण्टे मात्र रात्रि' वाले वाक्य पर नीचे एक फुटनोट दिया हुआ है उसमे लिखा है कि यदि आधी रात तक विधि पूरी न हो सके तो मध्य ह्लोत्तर आरम्भ कर देवे ताकि मध्य रात्रि तक विवाह विधि पूरी हो जावे। तब कार्य हो दूसरे दिन के लिये जाता नहीं तो विचारना है कि उस एक घण्टे वाले वाक्य का क्या उपयोग होना चाहिये वैसे मेरी दृष्टि मे इस का समाधान भी है पर उसे आज नहीं लिख रहा पहिले यह देख लें कि आर्य विद्वान कहां तक मानते हैं और वह क्या समाधान करते हैं।

मुझे ध्यान है कि अब से २०-२२ या तीस वर्ष पूर्व श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने इस सम्बन्ध मे कुछ लिखा था पर मैं यह नहीं कह सकता कि उनकी बात कहां तक मानी गई है मैं यह जानता हूं कि मुझे उस समय (मेरी २० बाईस वर्ष की आयु का बात है) उनकी ऐसी बात बहुत बुरी मालूम हुई कि यह कैसे आर्यसमाजी हैं जो ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों मे भी दोष देखते हैं। किन्तु आज मुझे उनकी वह बात ठीक प्रतीत हो रही है अत मैं चाहता हूं कि आर्य विद्वान विचार कर और अपनी लेखनी उठायें।

(३) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेदोत्पत्ति प्रकरण मे श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज लिखते हैं कि एक अरब छानवे करोड आठ लाख बावन हजार नव सौ छहत्तर वर्ष इस सृष्टि की तथा वेदों की उत्पत्ति मे भी व्यतीत हुए हैं तथा दो अरब तेंतीस करोड बत्तीस लाख सत्ताईस हजार चौबीस वर्ष इस सृष्टि को भोग करने के बाकी रहे हैं इनमे से अन्त का यह चौबीसवां वर्ष भोग रहा है।

अब ऊपर की दोनों संख्याओं का योग चार अरब उन्तीस करोड चालीस लाख अस्सी हजार होता है जो सृष्टि की सम्पूर्ण आयु अर्थात् ब्रह्म दिन के विरुद्ध बैठता है जो स्वयं ऋषि दयानन्द एवं वेद के प्रतिकूल है कारण कि स्वयं श्री स्वामी जी एक सहस्र चतुर्युगियों का एक ब्रह्म दिन इसी पृष्ठ पर स्वीकार करते हैं और एक चतुर्युगी तेंतालीस लाख बीस हजार की मानते हैं तो इस संख्या को एक सहस्र से गुणा करने पर योग चार अरब बत्तीस करोड बैठता है जो ठीक है और वेद सम्मत है। मैं ऐसा मानता हूं कि इसमे सूर्य सिद्धान्त मे कहीं १५ सन्धियों का काल जोड़ने से रह गया है यदि इसमे इसको भी जोड दिया जावे तो संख्या चार अरब पचीस करोड पूर्ण हो जाती है। यह बात भी बहुत से आर्य नहीं मानते पर बिना माने योग पूरा नहीं बैठता। यह बात प्रसंगवश मैंने यहां लिख दी पर मेरी शंका तो यहां है कि स्वामी जी ने सृष्टि की आयु के साथ वेद की आयु किस आधार पर ली है? क्योंकि वह तो जड़ सृष्टि की आयु है और वेद की उत्पत्ति सम्बन्ध रखती है मानवोत्पत्ति से तो क्या मानव जड़ सृष्टि के साथ ही पैदा हो गया? यदि नहीं तो कितने दिन पश्चात तो तभी से वेद की उत्पत्ति और उनकी आयु की गणना की जावे। वैदिक सम्पत्ति के कर्त्ता प० रघुनन्दन जी शर्मा तो तथा अन्य लोग भी मानवोत्पत्ति इस सप्तम वैवस्वत मनु मे मानते हैं और तभी से मानते हैं वेदों की उत्पत्ति, मैं इन्हीं दो का समाधान चाहता हूं कि मानव कब पैदा हुआ और वेद की उत्पत्ति मानव से सम्बन्ध रखती है अथवा जड़ सृष्टि से जैसा कि श्री स्वामी जी महाराज ने लिखा है। साथ ही आर्य विद्वानों से निवेदन है कि वह ऋषि प्रणीत ग्रन्थों की रक्षा की ओर ध्यान दें अन्यथा उनके मिशन की पूर्ति नहीं होगी।

★

ऋषि वीरो बढ़े चलो

[श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम०ए०]

प्राय आर्यसमाज की अधोगति की शिकायत की जाती है। कल एक वृद्ध मित्र आये। कई आर्यसमाजों और संस्थाओं के ह्रास की बात चली। कहने लगे अब आपका स्थान कौन लेगा। मैंने कहा मेरा स्थान तो मेरे जीवन मे ही उत्तमता से भर चुका है। मेरे उत्तराधिकारी हर विभाग मे मुझ से अधिक योग्य हैं। मेरे पुत्र मुझसे अधिक विद्वान मुझसे अधिक सम्पन्न मुझ से उत्कृष्ट लेखक मुझसे अच्छे वक्ता मुझसे अधिक लेखक हैं। मेरे आर्यसमाज के सहयोगियों के प्रवचन लेखों तथा कामों के आगे लोग पहले ही मुझको भूल चुके हैं। इनको मैं शुभ चिह्न समझता हूं। मैं जब मरूंगा तो मुझे यह चिन्ता न होगी कि मेरा काम कौन पूरा करेगा।

सायंकाल को आर्यसमाज चौक इलाहाबाद का उत्सव था। मैं आया तो ईसाई पादरियों से शास्त्रार्थ हो रहा था। आर्यसमाज की ओर से वक्ता थे जतोली वाले श्री ओमप्रकाश शास्त्री। शास्त्री जी वस्तुत श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी के होनहार शिष्य हैं इनकी युक्तियां और वाद विवाद शैली बहुत बहुत अच्छी है। लोग देहलवी जी को भूले तो नहीं परन्तु उनको देखकर उनके गुरु की याद आ जाती है। यदि देहलवी जी के दो चार और शिष्य ऐसे निकल आवें तो उनके अन्तिम जीवन में उनको सन्तोष हो जाय। मेरे वृद्ध मित्र की यह भी शिकायत थी कि आर्यसमाज मे अब उच्चकोटि के संन्यासी नहीं। मुझे तो इस विषय मे भी कोई असन्तोष की बात दिखाई नहीं पड़ती। श्री आनन्द स्वामी आज भी बड़े लोकप्रिय हो गये हैं। कई अन्य कार्यकर्त्ता संन्यास ले चुके हैं। कई देवियां वानप्रस्थ मे आ चुकी हैं। कालान्तर मे यह भी प्रसिद्ध हो जायगे। मुझे तो आर्यसमाज का प्रभाव बढ़ता ही दीख रहा है। इसका यह अर्थ नहीं कि हम मे त्रुटियां नहीं परन्तु यह अर्थ भी नहीं कि हम मुहर्रम मनायें। यह मत सोचो कि दूसरा क्या नहीं कर रहा। यह सोचो कि तुम क्या कर रहे हो। चांद दूसरे सितारों के मन्द होने की शिकायत नहीं करता स्वयं चमकता है और लोग सितारों को भूल जाते हैं। दूसरों की शिकायत से परिस्थिति सुधरती नहीं। नये युवकों मे निराशा हो जाती है। तुम काम करते जाओ। स्थान की पूर्ति परमात्मा पर छोड दो। वह जानता है कि सृष्टि कैसे चलती है। यदि संसार के सब लोग अच्छे हो गये और तुम कर्त्तव्य के पालन करने मे मन्द रहे तो तुमने अपना लोक भी बिगाड़ा और परलोक भी।

❋ काव्य-कानन ❋

★

रह गई मन की मन में

अवलोका तो घ व लगे भारी र भारत माता के तन मे !
हो गया अधीर हुई भारी पीर भर लाया नीर निज नयनन मे ।
ठगियों ने ठगा कर मारी दगा लिया बा ध बचन के बन्धन में ।
कुछ कह न सका दु ख सह न सका बस रह गई मन की ही मन में ।१

कल ही तो वीर जवानो ने सीमा पर खून बहाया था ।
कल ही तो मा के लालों ने हस हस कर शीश चढ़ाया था ।
कल ही तो हिंसक वृत्ति ने धोती कुर्ता अजमाया था ।
चलते चलते यह ध्यान वीर के मन मे रह रह आया था ।
भाया था उसको शान्ति गीत गाधी नेहरू का उस क्षण मे । कुछ २

जब हुआ भोर तो मचा शोर भारत माता के आंगन मे !
छा गया काल बढ़ गया ल ल चर्चा फैली यह जन जन मे ।
रुकती न रो ईश गति क्या से क्य हो जाना क्षण मे ।
कुछ कह न सका दु ख सह न सका बस रह गई मनकी ही मनमे ।३

जाना है सबको वो भी गया उत्तरदायि व समाल गया ।
अरमा न मिटा द्रोही दल के माता का बहादुर लाल गया ।
सीधा सादा भोला भाला आवश मे जीवन डाल गया ।
दुश्मन दल को धोती कुर्ता का भारी [illegible] कमाल गया ।
वह ट ल गया जय ल बहन का भाव भरा ये कण कण मे ।
कुछ कह न सका दु ख सह न सका ४

कर्तव्य निष्ठ बनकर सच्चा अपना सारा जीवन वारा ।
विश्वास पात्र भारत मा का था भारत म ता का प्यारा ।
भारत की सस्कृति का हामी आर्य वीर था रखवारा ।
लाल [illegible] तारा बनकर बना सब की आंखों का तारा
प्यारा प्यारा मुखड़ा उसका बस रहा सभी के नयनन मे ।५ कुछ

इस तरह विदा हो जाओगे था नहीं किसी को सपना भी ।
द्रोही से फसला करते ही कर गये फसला अपना भी ।
तुम्हें भारत वासी देख न पायगे थी नहीं कल्पना भी ।
तप गये देश की भट्टी पर तुम और सिखा गये तपना भी । ६

मेरा लाल हो गया अमर हसकर बूढ़ी माता यू बोली ।
कि तु आज छनी ललिता के माथ से सुह ग की रोली ।
रक्षक है भगव न सभी का धर धीरज उर मे हे भोली ।
भारत मा पर हुई निछावर कितनी वीरो की टोली ।
गोली तान महात्मा गाधी खाय गये अपने तन मे ।७ कुछ

वीरो जागो अ न्य य गा इक दिवस सभी को जाना है ।
जाते [illegible] ज त तो सब का अपना कन [illegible] निम न है ।
[illegible] जन्म देना और [illegible] बना [illegible] है ।
[illegible] म जानी म [illegible] ने म ना है ।
[illegible] युग [illegible] स्व नत में ।८

[illegible] स ।
[illegible] रे ।
[illegible] करे ।
विश्वास तु म्हारा [illegible] क्षण मे ।९
कुछ कह न सका दुख सह न सका बस

—प्रकाशवीर शर्मा प्रचारक प्रचारक आ प्र सभा

अध्यात्म-सुधा

नामानि ते शतक्रतो ।
विश्वाभि गीर्भि ईमहे ।।
इन्द्र अभिमातिषाह्ये ।।।
ऋ० ३।३७ ३

शब्दार्थ—[शतक्रतो] असख्य दिव्य कर्मों के केन्द्र परमात्म व [ते] तुम्हारे [नामानि] असख्य गुणो के बोधक नाम हैं [विश्वाभि] अपनी सब [गीर्भि] वाणियों द्वारा [ईमहे] हम उनका बख न करते हैं । [इन्द्र] हे परमैश्वय युक्त स्वामिन [अभिम तिषाह्य] आप अमित ज्ञान आदि से सयुक्त हो ।

भावार्थ—परमात्मदेव आप शतक्रतु हैं अर्थात सृष्टि रचना आदि अन त दिव्य कर्मों के कर्त्ता और जीवो के कल्याण इस स सार रूपी यज्ञ के रच यिता आप ही है ।

आपके गुणो का बोध कराने व ले नाम असख्य हैं । हम आपके गुणो का पार नहीं पा सकते अत आपके नामो का पार पाना भी हमारी सामर्थ्य के बाहर है ।

हम सब तेरे अमृत पुत्र अपनी असख्य वाणियों द्वारा तथा अपने असख्य स्तोत्रो द्वारा तेरे ही पवित्र यश का बख न करने वाले हैं । हम अपने सब सगीतों द्वारा तेरे ही पावन नामों का कीतन करने व ले बन जाय यह ही हमारी कामना है ।

प्रभो आप परमैश्वयशाली हो । यह सारा ससार आपकी विभूति है । आपकी शक्तिया भी असीम हैं उनका माप करना हमारे ज्ञान के बाहर है आप की इन शक्तियों का प्रसार सारे विश्व मे व्याप रहा है ।

प्रभो ! आप सर्वव्यापक एव सवज्ञ गति व ले हैं । कण कण और रोम रोम मे रमने व ले स्वामिन ! हमे अपना दया और कृपा का पात्र बना लो ।

हम स य माग का पथिक बनाकर अपने जीवन को सफल बनाने की क्षमता से हमे युक्त कर दो ।

प्रभो हम आपकी शरण मे हैं । आपके बिना हमारा अन्य कोई अवलम्बन नहीं । आपको छोड़कर हम जाए भी कहा । प्रभो ! हमे अपना आश्रय प्रदान कर अपना लो । —शिव

शिवरात्रि का सन्देश

शिवरात्री का यह सन्देश ।
भजो देव को जो परमेश ।।
ईश्वर शकर कहलाता है
वही शाति सुख दाता है
भक्तों का वह ही त्राता है
उसका स्मरण हरे सब क्लेश ।
सर्वव्यापक शिव है एक,
गुण सूचक हैं नाम अनेक
है उपास्य [illegible] ही एक
उसको हो तुम भजो हमेश ।

छोड उसे जो है सर्वज्ञ
भजते है जड को अल्पज्ञ
उनका सफल न होता यज्ञ
जो रखते अ यों से द्वेष ।
एकेश्वर से प्रेम लगाओ
हीरा ज म न व्यर्थ गवाओ ।
मिलकर सब [illegible] के गुण गाओ
जो अन्तर्यामी देवेश ।।

शिवरात्रि का [illegible] स देश
सुन [illegible] विदेश
गुण [illegible] नाम विशेष
ब्रह्म [illegible] परमेश ।
ज्ञान मूल जी ने यह पाया
इसको सब जग मे [illegible]
अ धकार को दूर भगाया
आगे भाषो मिल लोकेश ।।

—प०धर्मदेव विद्यामार्तण्ड(देवमु . [illegible]) ज्वालापुर

क़ुरान शरीफ़ के दो भयंकर आदेश—

जहाद और जज़िया

[श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री, बरेली]

क़ुरान शरीफ के उपर्युक्त दो आदेश जहाँ गैर मुसलमानो के लिये आतंक वर्धक भयकारक और त्रासदायक है वहाँ मुसलमानों के लिये भी बेचैनी रखने वाले और सहारकारक है। क़ुरान शरीफ के वे आदेश इस प्रकार से हैं—

"कातिलुल्लजीना ला युमि नूना बिल्लाहि वला बिला योमिल आखरे व ला युहर्रिमूना माहर्रमल्लाहु व रसूल हू। व ला यदीनूना दीनल् हक्के मिनल्लजीना ऊ तुल् किताब हत्ता यूतुल् जजीयत अन् यदिव वहुम सागिरूना। (२९ सूरते तोबाह)।

अर्थ—कत्ल करो उन लोगों को जो खुदा पर और कयामत के दिन पर ईमान नहीं रखते। और जो उन वस्तुओं को हराम नहीं समझते जिन्हें कि खुदा और रसूल ने हराम किया है। और न सच्चे दीन अर्थात् इस्लाम को स्वीकार करते हैं। चाहे वे किताब वाले हैं अर्थात् यहूदी और ईसाई हैं। यहाँ तक कि अपमानित होकर वे जजिया अपने हाथो से देने लगें।

इस्लाम की मान्यता के अनुसार यहूदी तौरेत और जबूर दो पुस्तकें ईश्वरीय मानते हैं और ईसाई इञ्जील को मानते हैं। इस्लाम भी इन पुस्तकों को ईश्वरीय मानता है, और हजरत मूसा हजरत दाऊद और ईसा को खुदा का भेजा रसूल स्वीकार करता है। इसीलिये क़ुरान यहूदी और ईसाइयो को अहले किताब अर्थात् ईश्वरीय पुस्तकें रखने वाला कहता है। उक्त दोनों सम्प्रदाय खुदा को भी मानते हैं और कयामत के दिन को भी। हराम हलाल भी यहूदी और मुसलमानों का एक सा ही है। सुअर खाना, मुर्दा खाना मुसलमानो की तरह यहूदियो मे भी हराम हैं। हा ईसाई कुछ भी हराम नहीं समझते। वे सर्वभक्षी हैं।

फिर इन्हें खुदा को न मानने वाला, कयामत पर विश्वास न रखने वाला, हराम हलाल न समझने वाला क्यों कहा ? इस पर टीकाकारो ने लिखा है वैसा नहीं मानते जैसा मानने का हक है। किसी ने लिखा है पूरा-पूरा नहीं मानते।

यद्यपि आयत के शब्दों से तो यही सिद्ध होता है कि उन्हे कत्ल करो जो किताब वालो यहूदी और ईसाइयो मे—

१—ईश्वर को न मानने वाले हों।

२—प्रलय के समय होने वाले न्याय पर जिनका विश्वास न हो, अर्थात् जो कर्मफल को न मानते हों।

३—जो विधि निषेध (हराम-हलाल) न मानते हों।

४—जो किसी रसूल को न मानते

५—जो दीने हक़ (ईश्वरोपदिष्ट किसी सत्य धर्म) को न मानते हो।

ऐसे लोग वे ही हो सकते हैं जो यहूदी और ईसाई नाममात्र के हो जैसे कि कम्यूनिस्ट। परन्तु व्यवहार मे मुसलमानो ने उन सब यहूदी और ईसाइयों को ले लिया है जो कि अपने धर्मनियमों को पूरा पूरा मानते हैं मगर मुसलमान नहीं बनते। रसूल से मुसलमानो ने केवल हजरत मुहम्मद साहब और दीने हक़ से केवल इस्लाम का आशय लिया है।

यदि आयत के केवल शब्दार्थ माने जायें तो धार्मिक वृत्ति वाले यहूदी और ईसाई कत्ल से बच जायेंगे और मुसलमानों का श्रम कम हो जायेगा। और हिन्दू भी अहले किताब हैं क्योंकि वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं और प्रलय, न्याय, कर्मफल तथा ऋषियो को मानते हैं। विधि, निषेध भी उनमे है अत उनसे भी लडना नहीं पडेगा। केवल लामजहब नास्तिकों से ही मुसलमानो को लडना होगा। परन्तु मुसलमान विद्वान् इस आयत का आशय यही लगाते हैं कि काफिरो के अलावा यहूदी, ईसाई आदि सब धर्म वालो से भी लडो जब तक कि वे मुसलमान न बन जायें और यदि मुसलमान न बने तो जलील होकर जजिया देते रहे।

मौलाना सुलेमान नदवी साहब ने जजिया का समर्थन करते हुए लिखा है कि वह बहुत थोडा सा कर था जो मुसलमान शासक अपनी गैर मुस्लिम प्रजा से लेते थे और इसके बदले म उनको अपने धर्मपालन की स्वीकारी देते थे तथा उनके धर्म स्थानो की रक्षा करते थे। मौलाना के लेख को यदि कोई पढेगा तो जजिये को कभी बुरा न समझेगा। पर जिन्हे इस्लाम के इतिहास की जानकारी है और जो क़ुरान को पढे हैं वह जजिये को गैर मुसलमानो के लिये "अभिशाप" ही समझेंगे। प्रत्येक गैर मुसलमान से २॥ या ५ अथवा १० रुपये प्रतिवर्ष लेना क्या आर्थिक कठोरता नहीं थी। और फिर क़ुरान का शब्द है—"सागिरूना" तुच्छ, ज़लील, अपमानित हुए। अर्थात् जजिया देने वाले अनाहूत, अपमानित और घृणित समझे जायें।

वस्तुत यह कर वस्तुत अर्थ दण्ड गैर मुसलमानो को अपमानित करने के लिये उन पर लगाया जाता था ताकि वे दुखी होकर कष्ट से छुटकारा पाने के लिये मुसलमान बन जायें। उनके धर्मालयो की भी रक्षा का यह प्रकार था कि बिना मुसलमान हाकिम से पूछे वे अपने धर्म मन्दिरों की मरम्मत नहीं करा सकते थे। उसे बढा नहीं सकते थे और न ही नया धर्म स्थान बना सकते थे। रियासत रामपुर का उदाहरण हमारे सामने हे इतने बडे नगर रामपुर मे केवल छोटे-छोटे २।३ मन्दिर थे। इनको न बढाया जा सकता था न ऊँचा किया जा सकता था। बिना आज्ञा राज्य भर मे कोई मन्दिर नहीं बन सकता था और आज्ञा मिलना महा कठिन काम था। इसकी तुलना मे ग्वालियर आदि हिन्दू राज्यो मे बडी बडी विशाल मस्जिदें बनी हुई थीं।

मुसलमानो का शासन होते ही गैर मुसलमानो के लिये चार ही दशायें बनती थी।

१—मुसलमान बनें।

२—जजिया दें।

३—देश और सम्पत्ति छोडकर भाग जायें।

४—कत्ल हो जायें।

आज तक मुसलमान यही करते रहे और क्यो न करते जबकि इन्हे अल्लाह मियाँ ने आदेश दे रक्खा था। परन्तु अल्लाह मियाँ ने आदेश देते समय यह नहीं विचारा कि गैर मुसलमानो के भी हाथ पाव हैं। सिर है और उसमे बुद्धि भी है। हाथ-पावो मे शक्ति भी है। वे भेड बकरियो की तरह यूँ ही कत्ल नही हो जायेंगे। मुसलमानो ने पूरे जोश के साथ जहाद किया। मगर आखिर उनका सब जोश ठंडा पड गया।

ससार भर के मुसलमान मिलकर भी काफिर चीन के मुकाबले म नगण्य हैं। ईसाई अमरीका और दहरीये रूस का सामना करने की शक्ति विश्व भर के मुसलमानो में नहीं है। यहूदी राज्य 'इस्राइल' उनकी छाती पर ही दनदना रहा है।

हिन्दुओ से वे सैकडो वर्ष तक लडते रहे मगर जजिया" न ले पाये। औरगजेब ने जब जजिया लगाया तो महाराणा राजसिंह और महाराज शिवा जी ने चुनौती के पत्र लिखे कि पहले हमसे जजिया वसूल करा तब और हिन्दुओ से लेना। पर औरगजेब असफल रहा। अन्य मुसलमान शासक भी पूरी तरह जजिया प्राप्त न कर पाये। जजिया लेने की सारी उमगें धूल मे मिल गई।

यदि गैर मुसलमान भी बदले मे अर्थात क़ुरान के आदेशो के उत्तर मे मुसलमानो के साथ जहाद करें अथवा जजिया ले तो मुसलमानो की क्या दशा हो। आज करोडो की सख्या मे मुसलमान लोग गैर मुसलमानो के शासन मे रह रहे हे। रूस, चीन, भारत मे करोडो मुसलमान चैन की वशी बजा रहे हैं। कम्युनिस्ट चीन मे तो सिंकियांग के मुसलमानो पर घोर धार्मिक अत्याचार हुए है और हो रहे है मगर भारत मे तो मुसलमान इतनी मौज मार रहे हैं कि इतना सुख उन्हे पाकिस्तान मे भी नहीं। यदि अल्लाह मियां के आदेशो के उत्तर मे गैर मुसलमान शासक भी मुसलमानो से जजिया लेने का निश्चय कर डाल तो मुसलमानों की आर्थिक स्थिति क्या रहे। और 'सागिरूना" (अपमानित हुए) का उत्तर भी दिया जाये तो मुसलमानो का जीवन कैसा हो जाये। सैनिक शक्ति के मद मे कोई जाति किसी जाति पर कुछ दिन अत्याचार भले ही कर ले पर जब दूसरी जाति भी सभल कर उठती हे तब क्या दशा हो जाती है। अत ये बर्बरतापूर्ण आदेश क्या धार्मिक ग्रन्थो को शोभा देते हैं ?

दुराचारियो से, दस्युओ से, जन पीडक असुरो से लडा जाये यह तो जन हित की बात है। सपत्तिशालियो से कर लेकर प्रजा की रक्षा मे लगाया जाये यह उचित है। परन्तु धार्मिक विचारो की भिन्नता के कारण, ईश्वर के मानने के प्रकार मे भेद होने के कारण खाने पीने की वस्तुओ के हराम हलाल के सबब यदि युद्ध किए जाते रहे तो ससार कभी शान्ति से न रह सकेगा। यदि मुसलमान भाई भी इन आज्ञाओ की पूर्ति मे लगे रहे तो वे कभी चैन से नहीं बैठ सकते। इतने बडे ससार मे तलवार चलाते फिरें। गाजी बनना कठिन है शहीद भले ही हो लें। कहा तक लडेंगे आज के युग मे उनकी शक्ति ही क्या है। सारे ससार से शत्रुता बाधकर मुसलमान सुखपूर्वक रहकर रोजा नमाज की पाबन्दी भी कर सकेगा या नहीं। विद्या की उन्नति मे भी बढ सकेगा या नहीं ? धैर्य के साथ सोचिये कि उक्त आदेश कैसे हैं। मुसलमानो के लिए भी मगलमय नहीं और गैर मुसलमानो के हृदयो को भी प्रिय नहीं।

अब आर्यधर्म की विचार प्रणाली देखिये महाभारत मे महर्षि व्यास जी धर्म का निचोड बताते हैं—

(शेष पृष्ठ १० पर)

वैदिक प्रार्थना का पांचवा मंत्र

[ले०—श्री वेदव्यास जी एडवोकेट, फतहपुर]

ओ३म् येन द्यौ रुग्रा पृथ्वी च दृढा येन स्व स्तभितम येन नाकः । यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

यह यजुर्वेद के ३२वें अध्याय का छठवा और ऋग्वेद के १० वें मंडल का १२१वें सूक्त का पांचवा मंत्र है। जिस का स्वामी दयानन्द ने संस्कार विधि में इस प्रकार किया है कि (येन) जिस परमात्मा ने (उग्र) तीक्ष्ण स्वभाव वाले (द्यौ) सूर्य आदि (च) और (पृथिविम्) पृथ्वी को (दृढ) धारण किया है। जो (येन) जिस ईश्वर ने (नाक) दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है (य) जो (अन्तरिक्ष) आकाश में (रजसो) सब लोकलोकान्तरों को (विमान) विशेष मानयुक्त जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं वैसे सब लोकों को निर्माण करता है और भ्रमण करता है। हम लोग उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (हविषा) सब सामर्थ से (विधेम) विशेष भक्ति करें।

अपने वेदभाष्य में इस मंत्र का भावार्थ ऋषिवर ने यह लिखा है कि—हे मनुष्यो जो समस्त जगत् का कर्त्ता तथा सुखों का दाता मुक्ति का साधक आकाश के तुल्य व्यापक परमेश्वर है उसकी भक्ति करो।

अंग्रेज कवि लांगफेलो का कहना है कि (लाइफ इज नाट ऐन एम्पटी ड्रीम) अर्थात मनुष्य का जीवन कोई खोखला या उद्देश्य रहित स्वप्न नहीं है अपरञ्च वह बतलाता है कि [लाइफ इज रियल, लाइफ इज अरनेस्ट। ग्रेव इज नाट इट्स गोल] अर्थात जीवन तथ्यमय है और उद्यमशील है। केवल मृत्यु को प्राप्त होना ही जीवन का ध्येय नहीं है। बात सत्य है और निर्विवाद है कि मानव जीवन लक्ष्यहीन नहीं है उसका कुछ लक्ष्य और आदर्श है। आदर्श रहित जीवन सुव्यवस्थित नहीं हो पाता। और अस्तव्यस्त अथवा असमीचीन जीवन सफल मनोरथ नहीं हो सकता। अतः लक्ष्य या आदर्श का होना आवश्यक नहीं अनिवार्य है। इस भाव को उर्दू के कवि ने अपने उर्दू शायरी के ढंग में 'किसी के सुनके से लाजिम है सिलसिला दिल का" के शब्दों में व्यक्त किया है। वस्तुतः यह विषय कि जीवन का आदर्श होना चाहिए निर्विवाद है और उसकी आवश्यकता भी तर्क से सिद्ध है। प्रश्न केवल यह है कि वह आदर्श या लक्ष्य क्या है और क्या होना चाहिये। यह विषय विवाद ग्रस्त है और विचार का मोहताज या आधीन है। नास्तिक शिरोमणि चारवाक और उसके मतानुयायी का तो कहना है कि—

भूमीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः । तस्मात सब प्रकारेण ऋणम् कृत्वा घृतम् पिबेत ॥

अर्थात इस नाशवान शरीर का बार बार आना जाना तो होता नहीं है। इसलिए खूब कर्ज लो और घी पियो अर्थात मौज करो। चारवाक यदि भारतीय न होता तो 'घृतम पिबेत' के स्थान पर कदाचित 'सुराम् पिबेत' लिखता। ग्रीस अर्थात मिश्र देश के एपीक्यूरियस भी ऐसी विचारधारा के अनुगामी थे। सुविख्यात अंग्रेज कवि मिल्टन ने भी अपने काव्य 'कोमस' में कुछ इसी प्रकार की दलीलें दिया है। गर्ज कि सभी भोगवादी जनों की ऐसी विचार शैली है। 'ईट ड्रिंक एन्ड बी मेरी' अर्थात खाओ पिओ और मौज करो ही उनके सांकेतिक शब्द हैं। वाल्मीकि जी के रामायण में लिखा है कि महारानी सीता जी से रावण ने भी यही शब्द (भुंक्ष्व भोगान् भीरु पिब रमस्व च) संस्कृत में कहे थे। रावण के मुख से उपरोक्त शब्द कहलाकर ऋषि वाल्मीकि यह प्रतिपादित करते हैं कि खाओ-पिओ मौज करो की विचारधारा आसुरी वृत्ति है। अतः वह मानव कल्याण के हित में नहीं है। इस प्रकार के विचार व्यक्ति और समाज में कलह, विद्रोह, स्वार्थपरता एवम व्यभिचार और अनाचार की जन्मदात्री होकर मानवता के शुभगुण दया, भक्ति, श्रद्धा, त्याग, सहृदयता, परोपकार आदि की भावनाओं को विलुप्त करते हैं। अतः खाओ पिओ और मौज करो का जीवनक्रम मनुष्य जीवन का आदर्श या लक्ष्य नहीं हो सकता और न होना चाहिए।

दूसरा समुदाय लाभवादियों (यूटिलिटेरियन) का है जिनका मत है कि प्रत्येक काम को अपने लाभ को दृष्टि में रखकर मनुष्य को करना चाहिए। प्रथम तो लाभ का शब्द ही अनिश्चित है और बहुमुखी है। द्वितीय इस आदर्श से संसार में अनाचार, अत्याचार और अनुचित का अस्तित्व ही न रहेगा। भोगवादी यदि ऐशपरस्त हैं तो लाभवादी स्वार्थपरस्त हैं। इन सिद्धान्तों के आधार पर आचार शास्त्र निर्माण नहीं किया जा सकता। जीवन का यह आदर्श भी हितकर नहीं है।

तीसरा वर्ग उन विचारवान महापुरुषों का है जो अधिक से अधिक प्राणियों का अधिक से अधिक उपकार करना ही मनुष्य जीवन का आदर्श निर्धारित करते हैं। परन्तु इस सिद्धान्त में त्रुटि यह है कि उन व्यक्तियों के लिये जो ईश्वरवादी नहीं हैं या ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते उनको दूसरों के उपकार करने के हेतु कोई प्रेरणा देने वाली शक्ति या सत्ता नहीं है जिससे वह इस सिद्धान्त पर कार्यान्वित होने के लिये प्रेरणा या स्फूर्ति प्राप्त कर सकें। मनुष्य के जीवन का आदर्श तो ऐसा होना चाहिए जो उनके किसी नैसर्गिक इच्छा की पूर्ति कर सके। मनुष्य की प्रबलतम इच्छा सुख (जिसका आतरिक और शुद्ध एवम पवित्र अनुभव आनन्द है) के प्राप्त करने की रहती है जिसकी खोज में वह अहर्निशि प्रयत्नशील रहता है। अतः वेद का मन्त्र है कि—

ओ३म शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तु नः ॥

अर्थात परब्रह्म परमेश्वर इच्छित फल और आनन्द की प्राप्ति के लिए हमारे लिए कल्याणकारी हो और हम पर सुख की वर्षा करे। वैदिक सन्ध्या का यह प्रारम्भिक मन्त्र है जो सन्ध्या के उद्देश्य और आदर्श को बतलाता है और सन्ध्या जीवन के कर्त्तव्यों की पूर्ति करने का विधान स्थापित करती है। मनुष्य का सम्बन्ध केवल [१] अपने से [२] समाज से और [३] ईश्वर से है और इन्हीं के प्रति कर्तव्य पालन का विधान सन्ध्या में है। अतः निष्कर्ष यह हुआ कि सन्ध्या का जो उपरोक्त आचमन करने वाला मन्त्र है वह मनुष्य जीवन का आदर्श उद्देश्य या लक्ष्य निर्धारित करता है। वेद का मत है कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य सुख की प्राप्ति है जैसा कि उपरोक्त मन्त्र में प्रार्थना है कि 'शन्नोरभिस्रवन्तु नः" कि हम सब पर सब ओर से सुख की वर्षा हो। मन्त्र में बहुवचन का प्रयोग हुआ है जो सिद्ध करता है कि वेद केवल व्यक्तिगत सुख का पक्षपाती या अभिलाषी नहीं है अपरञ्च वह मनुष्य मात्र के सामूहिक सुख की कामना करता है और कामना उस सुख की करता है जिसके प्राप्त करने में परमेश्वर के कल्याणकारी वरदहस्त की सहायता हो। आसुरी सुख तो त्याज्य और हेय है। उपनिषद के ऋषि की हृदयग्राह्य प्रार्थना है कि—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत ॥

अतः ऐसा सुख प्राप्त करने का साधन यह है कि मनुष्य अपना जीवन प्राकृतिक नियमों के सामञ्जस्य में व्यतीत करे और हृदयङ्गम कर ले कि ईश्वर की आज्ञा और प्राकृतिक नियम एक ही स्थिति या वस्तु के विभिन्न नाम हैं। अतएव यह सुख भोगवादियों या लाभवादियों के कल्पित सुख से नितान्त भिन्न है। उनका सुख तो केवल सुख का आभास मात्र है और मृगतृष्णा की भांति केवल सुख का भ्रम है वस्तुतः तो वह दुःखों का मूल है। ऋषि वाल्मीकि जी का कहना है कि तपोहि परमं श्रेयः सम्मोहमन्यत्सुखम्" जिसका भावार्थ यह है कि तप से रहित जो सुख है वह बुद्धि के सम्मोह को उत्पन्न करता है। इसलिए आदर्श जीवन वह है कि मनुष्य जब संसार से विदा हो तो वह सुख की मात्रा में वृद्धि कर जावे।

सुख की चरम सीमा दुःख रहित मोक्ष है जिसको परम शक्तिशाली परमात्मा धारण किये हुये है, जो प्रभु का सामर्थ्य प्रकट करता है और फलस्वरूप ईश्वर में विश्वास दृढ़ करता है और निर्देश करता है कि सुख के इच्छुक मनुष्य को सुख के धारण करने वाले ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। और शिक्षाप्रद उपदेश भी मन्त्र देता है कि मनुष्य अपने सकल सामर्थ्य को प्रभु की भक्ति में लगा दे। आर्यों की कार्यशैली ही यह रही है कि कार्य आरम्भ के करने के पहिले वह आदर्श निर्धारित कर लेते थे तत्पश्चात् अपनी सारी शक्ति उस आदर्श के प्राप्त करने में केन्द्रित कर देते थे और लगा देते थे। अतः मनुष्य को सामर्थ्य और शक्ति प्राप्त करना चाहिए क्योंकि उसका उपास्य देव सामर्थ्यवान है। सजातीय ही सजातीय को आकर्षित करता है। उपनिषद के ऋषि की भी घोषणा है कि 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः।' अर्थात् बलहीन मनुष्य ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता। इसी तथ्य को अंग्रेजी की कहावत 'गाड हेल्प्स ओनली दोज हू हेल्प देमसेल्व्स" अर्थात् परमात्मा उन्हीं की सहायता करता है जो स्वयम् अपनी सहायता करते हैं के शब्दों में व्यक्त करती है। फारसी का कवि भी कहता है कि—

कुनद हम जिंस बा हम जिंस परवाज। कबूतर बा कबूतर बाज बा बाज ॥

[शेष पृष्ठ १० पर]

प्राचीन भारत में—

राजा या राष्ट्रपति की दिनचर्या

[श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम०ए० गोरखपुर]

आज संसार में एक सत्ताधारी राजा बड़ा भयंकर समझा जाता है और उसका नाम बड़ी घृणा से लिया जाता है। परन्तु वैदिक शासन व्यवस्था जिसके आधार पर षष्ठ समुल्लास में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राजा का विधान किया है वह वास्तव में आजकल के राष्ट्रपति के सदृश है। परन्तु आजकल के राष्ट्रपति के व्यक्तिगत जीवन से राष्ट्र का कोई मतलब नहीं राष्ट्र तो उसके पारिवारिक जीवन से भी कोई सम्बन्ध नहीं रखता। राष्ट्र का सम्बन्ध तो उसके सामाजिक जीवन से है। सामाजिक जीवन का तात्पर्य यह है कि वह व्यक्तिगत रूप से अपना जीवन शराबगृहों, द्यूत और नृत्यशालाओं में यदि व्यतीत करता है तो राष्ट्र को इससे कोई मतलब नहीं। राष्ट्र तो उसके एसेम्बली या विधानसभा के भाषण उसकी समय समय पर दी गई वक्तृताओं और उसके सभा मञ्चों के भाषणों और उसकी वेषभूषा आदि पर ही ध्यान देगा। परन्तु प्राचीनकाल में यह बात नहीं थी। राजा का, शासक का या किसी भी राज्याधिकारी का चुनाव करते समय उसके व्यक्तिगत पारिवारिक और सामाजिक जीवन में सामञ्जस्य देखा जाता था यदि उसका व्यक्तित्व आकर्षक भाषण प्रभावशाली और ज्ञान विशाल है पर वह आचरणहीन है तो उस व्यक्ति को राज्य पद या शासक रूप में नहीं रखा जाता था। राजा को नियन्त्रित और अनुशासित करने के लिए उसका दिन भर का कार्यक्रम बना हुआ था। उस समय के लोगों का यह विचार था कि—

यद्यदाचरति श्रेष्ठ तत्तदेवेतरो जन। अर्थात श्रेष्ठ और उच्चपदस्थ मनुष्य जैसा आचरण करेंगे दूसरे मनुष्य भी वैसा ही व्यवहार करेंगे। इसलिए राजा का अनुशासित जीवन होने का समर्थन स्वामी दयानन्द ने मनुस्मृति के आधार पर किया है। कार्यक्रम निम्नलिखित रूप में है—

उत्थाय पश्चिमे यामे कृतशौच समाहित हुताग्निर्ब्राह्मणांश्चार्च्य प्रविशेत्स शुभां सभाम् ।१।

तत्र स्थित प्रजा सर्वा प्रतिनन्द्य विसर्जयेत। विसृज्य च प्रजा सर्वा मन्त्रयेत सह मन्त्रिभि ।

अर्थात जब पिछली प्रहर रात्रि रहे तब उठ शौच और सावधान होकर परमेश्वर का ध्यान अग्निहोत्र विद्वानों का सत्कार और भोजन करके सभा में प्रवेश करे। और वहां खड़ा रह कर जो प्रजाजन उपस्थित हों उनको मान्य दे और उनको छोड़ने के बाद मुख्यमन्त्री के साथ राज्य व्यवस्था का विचार करे।

इस जीवनचर्या से नित्य नैत्यिक कर्मों का अनुष्ठान करना ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ पितृयज्ञ आदि का नियमित विधान करना और इसके बाद जनता से भेंट करना उनकी बातों को सुनना और उनकी शिकायतों को दूर करने के लिए मन्त्रियों से मन्त्रणा यह राजा का दैनिक कर्तव्य है। उस समय जब राजा से मिलने का समय था अलग अलग वर्गों के प्रतिनिधि या व्यक्तिगत लोग आकर राजा से मिलते थे अपनी कठिनाइयों और उसकी बुराईयों का निर्भीकतापूर्वक उल्लेख करते थे। महाभारत के आदि पर्व में आता है जब युधिष्ठिर युद्ध के बाद सिंहासन पर बैठे उस समय एक व्यक्ति उनके पास आया। वह एक ब्राह्मण था और उसने कहा राजन सब व्यक्तियों ने मुझे आपके पास प्रतिनिधि बनाकर भेजा है और कहला भेजा है कि तुमको धिक्कार है कि तुमने इतने भाइयों का खून बहाकर सिंहासनारोहण किया है। इस पर उस समय के राजा तथा राजभक्तों को यह हिम्मत नहीं थी कि वे उसको शान्त करा सकते या बाहर निकलवा सकते। सबकी गर्दनें शर्म से झुक गईं और उस युधिष्ठिर को कहना पड़ा—

प्रसादयन्तु भवन्तो मे प्रणतस्याभियाचत । प्रत्यासन्नं व्यसनिनं न मां धिक्कर्तुमर्हथ ॥

हे भगवन आप सब व्यक्तियों से कहें कि वे मुझ दीन पर कृपा करें मुझे अपने भाइयों के मरने का बड़ा दुःख हो रहा है वे मुझे धिक्कार न दें। इस प्रकार जनता के सम्पर्क में आकर राजा लोक सम्मति को जानता था और जन सम्पर्क स्थापित करता था। महाभारत में प्रह्लाद की कथा में लिखा है कि उनका राज्य पृथ्वी के बहुत बड़े भाग पर था तथा प्रजायें उनसे बहुत प्रसन्न थीं। एक व्यक्ति ने एक दिन जन सम्पर्क के अवसर पर आकर पूछा महाराज! आपने इतना बड़ा राज्य कैसे प्राप्त किया। प्रह्लाद ने कहा—

नासूयामि द्विजान्विप्र राजास्मीति कदाचन। काव्यानि वदतां तेषां संयच्छामि वदामि च। ते विस्रब्धा प्रभाषन्ते संयच्छन्ति च मां सदा।

अर्थात हे विप्र! मैं राजा हूं यह मन में सोचकर अपनी प्रजा के ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य द्विजमात्र के प्रति तथा शूद्रों के प्रति कभी भी अभिमान नहीं दिखाता हूं। ये प्रजा के लोग राज विषयक जो नीति और नियम बनाते हैं मैं उसी को मानकर काम में लाता हूं। ये लोग निर्भय होकर बोलते हैं और समालोचना करते हैं। इससे स्पष्ट है कि राजा जन सम्पर्क में आने का समय निकालता था। और इस प्रकार जन सम्पर्क में आने के बाद उसकी पृष्ठभूमि में मन्त्री को साथ लेकर घूमने को चला जाता था। वहां लिखा है पर्वत के शिखर पर एकान्त घर या जंगल में जहां एक शलाका भी न हो वैसे एकान्त स्थान में बैठकर विरुद्ध भावना को छोड़कर मन्त्री के साथ विचार करे।

जिस राजा के गूढ़ विचार को अन्य जन मिलकर नहीं जान सकते अर्थात जिसका विचार गम्भीर शुद्ध परोपकारार्थ सदा गुप्त रहे वह धनहीन भी राजा सब पृथ्वी के राज्य करने में समर्थ होता है भले ही उसके पास सम्पत्ति और कोष न भी हो। यहां पर राजा की मन्त्रणा की चर्चा की है और बतलाया है कि सलाह बिल्कुल गुप्त होनी चाहिए। चाणक्य ने तो लिखा है—

षट्कर्णो भिद्यते मन्त्र चतुष्कर्णो स्थिरो भवेत।'

छ कानों में पहुंची हुई बात प्रकट हो जाती है अत चार कानों तक ही उसे स्थिर रखना चाहिए। राजनीति की यह गुप्त मन्त्रणा आधार शिला है अत स्वामी जी ने राजा को बिल्कुल एकान्त में मन्त्री से सलाह करने की बात बतलाई है। राजा सदा ध्यान रखे कि दीवार के भी कान होते हैं।

मन्त्रणा में राजनीति पर विचार करे। देश की शासन व्यवस्था में आए हुए दोषों पर विचार करे और उन दोषों के निराकरण की योजनायें तैयार करे। मनुस्मृति में बतलाया गया है—

सर्वोपायैस्तथा कुर्यान्नीतिज्ञ पृथ्वीपति। यथास्याभ्यधिका न स्युर्मित्रोदासीनशत्रव ।१।

वह नीति जानने वाला पृथ्वीपति राजा जिस प्रकार इसके मित्र उदासीन (मध्यस्थ) और शत्रु अधिक न हों ऐसे सब उपायों से वर्ते। परन्तु यहां यह समझ में नहीं आता कि मित्रों की अधिकता क्यों मना की गई है। राज्य के प्रति यदि उदासीन व्यक्तियों की संख्या बढ़ जायगी तब भी राष्ट्र को आगे बढ़ने में बाधा पड़ेगी। क्योंकि उदासीन व्यक्ति कार्यों को बिगाड़ेंगे तो नहीं परन्तु बिगड़ते हुए कार्यों को सुधारेंगे भी नहीं उदासीन राष्ट्र का कोई मित्र नहीं होता आज भी भारत जैसे तटस्थ राष्ट्रों की स्थिति कभी कभी विश्व राजनीति में बड़ी विचित्र सी हो जाती है अत राजा को अपने उदासीनों की संख्या न बढ़ने देने के विषय में विचार करना चाहिये। वह यह भी चिन्तन करे कि उसके शत्रुओं की संख्या भी न बढ़ जाय यदि उसके शत्रु बढ़ जायगे तो भी राष्ट्र के लिए भय उत्पन्न हो जायगा। इतना ही नहीं आगे विचारणीय विषयों का उल्लेख करते हुए स्वामी दयानन्द महाराज ने मनुस्मृति के आधार पर लिखा है—

आयतिं सर्वकर्माणां तदात्वं च विचारयेत अतीतानां च सर्वेषां गुणदोषौ च तत्त्वत। आयत्यां गुणदोषज्ञस्तदात्वे क्षिप्रनिश्चय अतीते कार्यशेषज्ञ शत्रुभिर्नाभिभूयते ॥ यथैनं नाभिसन्दध्युर्मित्रोदासीनशत्रव। तथा सर्वं संविदध्यादेष सामासिको नय ।

अर्थात सब कार्यों का वर्तमान में कर्तव्य और भविष्यत में जो जो करना चाहिये और किये हुए कामों के यथार्थता से गुण दोष विवेचन करे। और फिर दोषों के निवारण और गुणों की स्थिरता में यत्न करे। जो राजा भावष्यत अर्थात आगे आने वाले कर्मों में गुण दोषों का ज्ञाता वर्तमान में तुरन्त निश्चय का कर्ता और किये हुए कर्मों में शेष कर्तव्य को जानता है वह शत्रुओं से पराजित कभी नहीं होता है। राजा तथा उसके अन्य कर्मचारियों को ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि जिस प्रकार राजादि जनों के मित्र उदासीन और शत्रु को वश में करके अन्यथा न करावे ऐसे मोह में न फंसे।

मित्रों को न बढ़ाने की बात हमारी समझ में नहीं आती है। पर शायद मित्रों से अभिप्राय स्वार्थसाधक मित्रों से लिया गया हो। परन्तु आगे चलकर इसी प्रकार मित्र बढ़ाने की चर्चा करते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा है—

हिरण्यभूमिसम्प्राप्त्या पार्थिवो न तथैधते। यथा मित्रं ध्रुवं लब्ध्वा कृशमप्यायतिक्षमम् ॥१॥

धमज्ञ च कृतज्ञ च तुष्ट प्रकृति मेव च। अनुरक्त स्थिरारम्भ लघुमित्र प्रशस्यते।२।

प्राज्ञ कुलीन शूर च दक्ष दातार मेव च। कृतज्ञ धृति मन्त च कष्टमाहुर रिं बुधा।३।

आयतापुरुषज्ञान शौर्य करुणवेदिता स्थौल लक्ष्य च सतत मुदासीन गुणो- दय ।।४।।

अर्थात मित्र का लक्षण यह है कि राजा सुवण और भूमि की प्राप्ति से वैसा नहीं बढता कि जैसे निश्चल प्रेम युक्त भविष्यत की बातो को सोचने और कार्य सिद्ध करने वाले समर्थ मित्र या दुबल मित्र को प्राप्त करके बढता है।१।

धर्म को जानने और कृतज्ञ अर्थात किए उपकार को सदा मानने वाले प्रसन्न स्वभाव अनुरागी स्थिरारमी लघु छोटे भी मित्र को प्राप्त होकर प्रशसित होता है।२।

सदा इस बात को दृढ रखे कि कभी बुद्धिमान, कुलीन शूरवीर चतुर ज्ञाना किये हुए को जानने वाले और धैर्यवान पुरुष को शत्रु न बनावे। क्योंकि जो ऐसे को शत्रु बनायेगा वह दुख पायेगा।३।

उदासीन का लक्षण करते हुए लिखा है—जिसमे प्रशसित गुण युक्त अच्छे बुरे मनुष्यो का ज्ञान शूरवीरता और करुणा भी स्थूल लक्ष अथात ऊपर ऊपर की बातों को निरन्तर सुनाया करे वह उदासीन कहाता है।

यह मन्त्रणा और चिंतन राजा का प्रमुख काय था यह सब काय करने के बाद—एव सवमिद राज। सह समत्र्य मन्त्रिभि व्याय।म्याप्लुत्य मध्याह्न भोक्तु मन्त पुर विशेन।

'पूर्वोक्त प्रात काल समय उठ शौच वि सन्ध्योपासन अग्निहोत्र कर वा करा सब मन्त्रियो से विचार कर सभा मे जा सब भृत्य और सेनाध्यक्षो के साथ मिल उनको हर्षित कर नाना प्रकार की व्यूह शिक्षा अर्थात कवायद कर करा सब घोड हाथी गाय आदि का स्थान शस्त्र और अस्त्र का कोष तथा वैद्यालय धन के कोषो को देखकर सब पर नित्य प्रति दृष्टि देकर जो कुछ उनमे दोष हो उन्हे निकालकर व्यायामशाला मे जा व्यायाम करके मध्याह्न समय भोजन के लिए 'अन्त पुर' अर्थात पत्नी आदि के निवास स्थान मे प्रवेश करे और भोजन सुपरीक्षित बुद्धिबल पराक्रम वधक रोग विनाशक, अनेक प्रकार के अन्न व्यजन पान आदि सुगन्धित मिष्टादि अनेक रसयुक्त प्रयुक्त करे कि जिससे सदा सुखी रहे इस प्रकार सब राज्यों के कार्यों की उन्नति किया करे।

इस प्रकार प्राचीन भारत मे राजा एक धम का प्रतीक भी होता था। उस का आचरण आदश होना चाहिये यह मान्यता थी। उस समय राष्ट्र के प्रतीक राजा को धम किसी भी काय को करने से रोक सकता था। कहा है—

अनीकयो सहतयोयद याद ब्राह्मणो न्तरा शान्तिमिच्छन्नुभयतो न योद्धव्य तदाभवेत।

अर्थात जब दो सेनायें लड रही होती थी और एक वेदविद ब्राह्मण उनके बीच मे आकर खडा होकर अपनी ब्रह्म तेजोमयी ध्वनि से हाथ उठाकर कहता था कि बस लडना बन्द कर दो तो उसी समय आज्ञा पाते ही दोनो सेनायें पीछे हट जाती थीं और खून की प्यासी तलवारें भी एक क्षण मे म्यान मे प्रविष्ट हो जाती थीं। धम की आज्ञा बडी बलवती थी और राष्ट्र का मुखिया राजा धम का रक्षक था। आजकल का शासक धम निरपेक्षता मे विश्वास करता है और वह धम को स्वतन्त्रता देता हुआ कहता है हे धम तुम्हे पूण स्वतन्त्रता है मैं तुम्हारी बातो मे हस्तक्षप नहीं करूँगा पर तुम भी मेरे कामो मे हस्तक्षप नहीं करना। यदि तुम भोगविलास मे बह जाना ह निकर समझते हो यदि तुम अपने स्वाथ क लिए दूसरे का खून बहाना पाप समझते हो यदि असत्य व्यवहार करना दूसरो को बहकाकर वचना करना दूसरो की चिताओ पर उत्सव मनाना तुम्हे घार नशमता प्रतीत होती है तो जो यह क्रूरता कर रहे है उन को बचाओ परन्तु याद रखना मेरे भोग विलासो की मेरे अनाचार की मरे वचनापूण असत्य व्यवहारो की समालोचना भूलकर स्वप्न मे भी मत करना, साधारण जनो को समझाने का तुम्हे अधिकार है पर राष्ट्र के प्रतीक हम समझाने का तुम्हे कोई अधिकार नहीं।'

इस प्रकार उस समय राजा भी सत्यादि क बन्धन म बधा होता था। अत उसक ऊपर पूण अनुशासन रखन की दृष्टि से उनकी दिनचर्या और नियत्रित कार्यो का विधान किया गया था। आज के शासक राष्ट्रपति और दूसरे अधिकारी भी सत्यार्थप्रकाश क षष्ठ समुल्लास के आधार पर अपने कतव्यो को समझ यदि शासन करें तो वास्तविक प्रजातन्त्र का अभ्युदय हो सकता है। ★

वेद-व्याख्या

[पृष्ठ ८ का शेष]

उर्दू के सुविख्यात कवि बा० कृष्ण सहाय हितकारी 'वहशी" ने बडी सुन्दरता से इस वैदिक तथ्य को अपने एक निम्नाङ्कित शेर [दोहे] मे व्यक्त किया है—

वही होता है महरम उस हरीमे नाज का 'वहशी"। कि जिसकी हर अदा उनसे अदाये यार होती है।।

भावाथ यह है कि परमात्मा को वही भक्त प्राप्त कर सकता है जो उसके गुणो को धारण करता है। इस दृष्टिकोण से भी भगवान दयानन्द का जीवन आदश और अनुकरणीय है। ऋषिवर क पवित्र और उज्ज्वल जीवन से यह भी शिक्षा मिलती है कि भक्ति मनुष्य के जीवनक्रम का एक अभिन्न अग होना चाहिए। वह सामान्य जीवनक्रम से कोई विशेष कतव्य नही है। भक्ति जब मनुष्य के जीवनक्रम का एक अग बन जाती है और मनुष्य उसका अभ्यस्त बन जाता है तो उसकी पूर्ति करने मे उसे वैसी ही तृप्ति होती है जैसे कि अन्य आवश्यकताओ की पूर्ति मे हुआ करती है। यदि भक्ति जीवन का अश नहीं हुई तो वह केवल ढोंग या आडम्बर है।

मनुष्य के सभी गुण शक्ति और सामथ्य के स्वरूप हैं और मनुष्य शरीर और आत्मा का सयोग है। अत शक्ति या सामथ्य दो प्रकार का शारीरिक और आत्मिक होता है। शारीरिक सामथ्य प्राप्त होता है शरीर को बलिष्ट पवित्र और कीर्तिवान बनाने से और ईश्वर मे विश्वास एवम यम और नियम के पालन करने से आत्मिक बल या सामथ्य मिलता है।

[१] अहिंसा [२] सत्य [३] अस्तेय [४] ब्रह्मचय और [५] अपरिग्रह यम कहलाते है और [१] शौच [२] सतोष [३] तप [४] स्वाध्याय और [५] ईश्वर प्रणिधान की नियम सज्ञा है। अत मनुष्य जब शारीरिक और आत्मिक सामथ्य प्राप्त करके सकल सामथ्य मे भक्ति करता है अर्थात ईश्वर की आज्ञा पालन करने मे तत्पर होता है तो उस विशेष आनन्द या सुख प्राप्त होता है। ऋग्वेद का मन्त्र है कि 'तद्विष्णो परम पदम सदा पश्यन्ति सूरय। दिवीव चक्षु राततम' अर्थात बुद्धिमान लोग अनन्त परमात्मा के उस परम पद की ओर देखा करते है जैसे खुली हुई आख सूर्य को देखा करती है। यह एक सुन्दर उदाहरण है। खुली हुई अर्थात रोग रहित सामथ युक्त आख ही जिस प्रकार सूय से लाभ उठा सकती है वैसा लाभ रोग ग्रसित सामथ्यहीन आख नहीं उठा पाती, वैसे ही बुद्धिमान जन जो सामथ्य-युक्त हैं और अपने सकल सामर्थ्य से ऋषि दयानन्द की भांति ईश्वरीय आज्ञा के पालन करने मे तत्पर रहते हैं वही परमात्मा के प्रेमपात्र होते हैं। काश हम इस तथ्य को हृदयङ्गम कर लेवें।

★

जहाद और जजिया

[पृष्ठ ७का शेष]

"श्रूयता धम सवस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत।'

अथ—धर्म का निचोड सुनो—जो बातें तुम अपने प्रतिकूल समझते हो वे दूसरे के साथ मत करो। जो व्यवहार तुम चाहते हो लोग तुम्हारे साथ करें वही तुम अन्यो के साथ करो।

मुसलमान नहीं चाहते कि धार्मिक आचार विचारो के कारण उन्हे कोई कत्ल करे वा उनको अपमानित करके उनसे अथ दण्ड लिया जाता रहे तो उन्हें भी अन्य धम वालो के साथ जहाद और जजिया लेन का विचार छोड ही देना होगा। इन दबावो के कारण इस्लाम फैलेगा तो क्या हा लोग उससे घृणा करने लगगे। धम के स्वरूप मे क्रूरता का कोई अश नहीं होना चाहिये। धर्म तो सहृदयता सेवा और उदारता से भरा हुआ सौम्य मूर्ति ही होना उचित है। ऐसा धम केवल आय धम ही है। देखो गोस्वामी जी का धर्मोपदेश—

'कोमल चित दीनन पर दाया,
मन वच कम मम भक्ति अमाया
सबहि मानप्रद आपु अमानी
भरत प्राण सम मम ते प्राणी
सरल स्वभाव न मन कुटिलाई
यथा लाभ सतोष सदा ही।"

अब विचार कर बताइये कि शान्ति की समीर कहा बह रही है? मानवता का सौरभ कहा उड रहा है? वेद भगवान का आदेश है।

सहृदयम साम्मनस्यम अवि द्वेष कृणोमिव। अन्योऽन्यमभिहयत वत्स जातमिवाघ्न्या।

अथ—लोगो सहृदय बनो किसी प्राणी को कष्ट म देखकर तुम्हारा हृदय छटपटाने लगे औरो के मन की भी कदर करो अपने मन को समझौता करने वाला बनाओ। किसी से द्वेष मत करो। एक दूसरे को इस प्रकार प्रेम करो जस गाय अपने सद्योजात बछड को प्रेम करती है। बिना जाति पाति, बिना भेद, बिना सम्प्रदाय के अन्तर के वेद कहता है यह व्यवहार प्राणि मात्र के साथ करो। यह सावभौम आदेश है।

इसलिए ऋषि दयानन्द ने सकीर्ण और द्वेष भरे सम्प्रदायों का खण्डन कर के सावभौम प्रेम का सदेश देने वाले वेदो को मान्यता दी। वेद ही सच्ची मानवता का प्रतिपादक है। अत मनु महाराज के शब्दो मे 'वेद एव परोधम' यह हमारी (आर्य जनों की) मान्यता है। धर्म की सदा जय हो! साम्प्रदायिकता का क्षय हो। ★

आत्म हत्याओ की प्रवृत्ति वृद्धि पर

आस्ट्लिया तथा पश्चिम के अधिकाश देशों मे आत्म हत्याओ का ओर बढता जा रहा है। मेडीकल जरनल (आस्ट्रलिया) मे प्रकाशित एक लेख मे सिडनी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक ऐरिक सेट ने लिखा है कि भविष्य मे आस्ट्लिया निवासी या तो अपनी हत्या करेगे या दूसरो की।

इसके कारण पर प्रकाश डालते हुए प्राध्यापक महोदय लिखते है—

पाश्चात्य देशो का आधुनिक सभ्यता मे जो मानसिक अवसाद और समाज विरोधी कर्मों की प्रवृत्ति दल पड रही है उसका परिणाम अनिष्टकर ही हो सकता है। उ होने अपने कथन की पुष्टि मे यह ठीक ही लिखा है कि

आज पाश्चात्य समाज मे इस प्रकार के लोगो की अधिकता है जिनका अपने से भिन्न नर नारियो के प्रति गर्हित जमा व्यवहार रहता है। परिणाम यह है कि ये लोग अपने मन को बहलाने के लिए शराब पान लगते हैं मानव की हत्या करने लगने हैं दुघटना मे आनन्द लेने लगते है या स्वय आत्म हत्या करने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

★

एमर्सन का जीवन का दृष्टिकोण

अमेरिका के सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान एमर्सन का जीवन का दृष्टिकोण आर्य संस्कृति के दृष्टिकोण से मिलना जुलता था। उ होने अपने एक निबन्ध मे। उसका शीर्षक आध्यात्मिक नियम का लिखा कि हे मेरे भाइयो परमात्मा मौजूद है प्रकृति के केन्द्र मे एक आत्मा है जो प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा के ऊपर है अत हममें से कोई भी विश्व का सकल दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं कर सकता

यदि परमात्मा की सत्ता है और विश्व की उत्पत्ति और उसका सचालन उसी के द्वारा होता है तो ससार मे बुराई और अन्याय क्यो है? इसके उत्तर मे वह लिखते हैं—

यदि कोई व्यक्ति कष्ट से पीडित होता या जीवन मे असफल रहता है तो इसमे उसी का अपराध है। परमात्मा के नियमो का उल्लघन करने से ही उसे कष्ट होता है परन्तु मनुष्य यदि [illegible] करता है [illegible] सुख और समृद्ध [illegible] हो नहीं इस भौतिक जगत मे मनुष्य को वह वस्तु प्राप्त नहीं होती जिसका वह अधिकारी होता है। इसके उत्तर मे यही कहा जा सकता है कि हम रेल और यात्री के मध्य व्यक्ति और घटना कुछ समय के लिए ही खडी रह सकती हैं। यह तो स्वप्न मात्र है अर्थात कर्मफल मिलने मे देर भले ही हो जाय परन्तु फल का मिलना अनिवार्य है।

बुराई की समस्या बलिष्ठ से बलिष्ठ व्यक्ति को भी भ्रम मे डालती रहती है। बुराई की विद्यमानता परमात्मा की सत्ता और विशिष्टता को चुनौती देती रहती है। इस समस्या का जो समाधान प्रस्तुत किया जाता है उसे मनुष्य आवश्यक बाद कहकर टाल देता है और उसे अग कार नहीं करता। इस पर एमर्सन का कहना है कि हम समस्या को उसके वास्तविक रूप मे देखे और कर्मफल की [illegible] और [illegible] को समझे। कर्मफल का सिद्धान्त [illegible] [illegible] समता के स्तर पर ला देता है।

— रघुनाथप्रसाद पाठक

सभा की सूचनाएँ

बृहदधिवेशन की सूचना

सभा का आगामी बृहदधिवेशन के स्थान निश्चत करने का विषय अन्तरग सभा दि० २० २ ६६ को प्रस्तुत हुआ। सभा मे प्राप्त निमन्त्रण पत्र स्वीकाराथ प्रस्तुत हुए सर्वसम्मति से आर्यसमाज देहरादून का निमन्त्रण पत्र स्वीकृत हुआ। अर्थात सभा का आगामी बृहदधिवेशन इस वर्ष मई मास मे देहरादून मे हुना या जाना निश्चित हुआ।

तिथियो की घोषणा आर्यमित्र के आगामी अङ्क मे प्रकाशित की जायगी। समस्त आर्यसमाजो के मन्त्री महोदयो से प्रार्थना है कि देहरादून पहुचने का ध्यान नोट करने की कृपा करें देहरादून आर्यसमाज के आर्य बन्धु बडी तत्परता के साथ स्वागतादि का आयोजन कर रहे हैं।

प्रतिनिधि चित्र

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को विदित हो कि वार्षिक प्रतिनिधि चित्र (फार्म) सभा कार्यालय से भेजे जा चुके हैं। कृपया नियम पूर्वक उनकी पूर्ति करके सभा कार्यालय मे शीघ्र दशाश वि के साथ भेजने का कष्ट करें।

नवीन सभा भवन

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एव आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आ०प्र० सभा उत्तरप्रदेश का नवीन सभा भवन निर्माण कार्य आर्यसमाज स्थापना दिवस नव सवत्सर उत्सव अर्थात २३ मार्च १९६६ को प्रारम्भ हो रहा है। दानी सज्जनो से प्रार्थना कि है अपनी अपनी प्रतिज्ञात धनराशि सभा को शीघ्र भेजने की कृपा करें।

उपदेश विभाग की सूचना

उत्तरप्रदेश के समस्त आर्यसमाज एव आर्य जनता को विदित हो कि अन्तरग सभा दि० २० २ ६६ के निश्चय [illegible] सभा के [illegible] पद से [illegible] [illegible] सभा [illegible]।

[illegible] प्रवेश

अन्तरग सभा [illegible] २०२ ६६ के नि० स० ३ के अनुसार निम्नलिखित आर्यसमाज सभा से सम्बद्ध प्रविष्ट किये जावें।

कबरास पो० खास	जि बुलन्दशहर	
कटरा बाजार,		बादा
बन	बिलसी	बदायू
शिवकामधरा	मजू	मुजफ्फरनगर
सलावतपुर	मलानी	खीरी

—प्रद्युम्न सभा मन्त्री व अधिष्ठाता उपदेश विभाग

सभा उपदेश विभाग के मास मार्च के प्रोग्राम

सर्वश्री रमेशचन्द्र आर्य मुसाफिर १२ से १४ अतरा (बादा)।

धर्मराजसिंह—१ से ६ आ० स० सिमरा कारीपुर।

श्री गजराजसिंह—११ से १४ आ० स० शिकोहाबाद १८ से ३१ कोडा जहानाबाद।

श्री धनदत्त आनन्द—६ ७ आ०स० फर्रुखाबाद।

श्री वेदपालसिंह जी—१६ से १९ आ०स० जानकानगर।

श्री रामचन्द्र —८ से ११ औरया १५ से १९ छिबरामऊ २२ से २५ आ० शाहगज।

श्री डा० प्रकाशवती—२२ से २५ शाहगज।

महोपदेशक एव उपदेशक

प० विश्वबन्धु जी शास्त्री—१ से ६ सिमरा वोरीपुर १० से १३ अतरा (बादा) २४ से २७ बिदकी २८ से ३० को कोडा जहानाबाद।

प० बलदेव शास्त्री ६ से ८ जौनपुर ९ से ११ पतशाडा १६ से १९ छिबरामऊ २३ से २५ शाहगज।

प० विश्वबन्धु जी—९ से ११ औरया १२ से १४ शिकोहाबाद।

प० श्याम सुन्दर जी शास्त्री—१६ से १९ जानकीनगर।

—सहायक अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आवश्यकता

स्वस्थ सुन्दर गेहुआ वर्ण [illegible] वर्ष [illegible] [illegible] ११ [illegible] हो।

[illegible] है [illegible] वर [illegible] हैं।

[illegible] जि० मठ

उत्सव—

आर्यसमाज गोनी मोंडवा हरदोई का वार्षिकोत्सव ७ से ९ फरवरी तक मनाया गया। जिसमें श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री एम० ए० तथा श्री प० भैरवदत्त जी शुक्ल एम० ए० के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। साथ ही श्री प० मदनमोहन जी भजनोपदेशक व श्री ठा० धर्मराजसिंह सभा प्रचारक के ओजस्वी भजनों द्वारा प्रचार हुआ। प्रतिदिन हवन उपदेश होता था।

—बजनाथ शर्मा मन्त्री

—५-६ ७ मार्च उत्सव आ० स० हुमायूँपुर पो० सटयाना, त० हापुड़ होना निश्चित हुआ।

—आर्यसमाज सिवहारा जिला बिजनौर का ७० वा वार्षिकोत्सव ११, १२ १३ मार्च सन १९६६ ई० को धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमे वैदिक धर्म के प्रकाण्ड पण्डित विद्वान, प्रचारक तथा भजनोपदेशक—यथा श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य लोकसभा श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर श्री आचार्य वाचस्पति जी शास्त्री श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री आदि पधार रहे हैं।

जि. आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ की जन्म शताब्दी

२६ २७ २८ फरवरी जीमखाना मैदान मे। २७ ता० को नगर मे विराट शोभा यात्रा।

उत्सव पर पधारने वाले विशेष विद्वान श्री आचार्य प्रियव्रत गुरुकुल कांगड़ी श्री प्रो० रामसिंह प्रधान पंजाब सभा श्री प० रघुवीरसिंह शास्त्री मन्त्री पंजाब सभा श्री प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती एम० पी० श्री रामगोपाल शालवाले श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी० दीनानाथ सिद्धान्ती ठा० अमरसिंह।

महर्षि दयानन्द महिला सम्मेलन

अध्यक्षा—श्री विद्योत्तमा यती

निर्वाचन—

—आर्यसमाज एलम पोस्ट खास जिला मुजफ्फरनगर का चुनाव श्री जयपालसिंह जी लखनऊ सभा ने कराया जो कि इस प्रकार है—

प्रधान—श्री मोहकम सिंह जी, मंत्री श्री भवरसिंह जी, उपमन्त्री—श्री महेन्द्रसिंह जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री गिरवरसिंह जी, कोषाध्यक्ष—सरदार श्री पल्टूसिंह जी

—मन्त्री

—आर्यसमाज दादो अलीगढ़

प्रधान—गंगाप्रसाद गोस्वामी, उपप्रधान—श्री यादराम जी यादव, मन्त्री—

श्री प्रेमपालसिंह यादव, उपमंत्री—सरनाम सिंह यादव कोषा० नेत्रपाल जी आर्य पुस्त०—मोदान सिंह यादव निरीक्षक—श्री वैद्य वीरेन्द्रसिंह

—आर्यसमाज गोपीगंज (वाराणसी)

प्रधान—डा० रघुवंशसहाय जी, उपप्रधान—श्री बसन्तलाल जी मन्त्री—श्री भोलानाथ जी, उपमन्त्री—श्री राधेश्याम जी कोषा०—श्री महादेवप्रसाद जी, पुस्त०—श्री चेतईप्रसाद

—आर्यसमाज दौराला

प्रधान—डा० ओमप्रकाश जी, उपप्रधान—श्री कवलसिंह व बा० राजाराम अग्रवाल मन्त्री—चौ० मलूकसिंह राणा उपमन्त्री—श्री० रामेश्वरदयाल फूलसिंह श्री पुस्त०—श्री रमनफूलसिंह जी मु अम सिंह कोषा०—श्री बाबूलाल गुप्ता

—आर्यसमाज मरथना

सर्वश्री श्यामजी आर्य प्रधान धरमपाल जी उपप्रधान मदनदेव जी मन्त्री गोपालदास जी उपमन्त्री मोतीलाल जी कोषाध्यक्ष घनश्याम जी पुस्तकाध्यक्ष देवेन्द्र स्वरूप जी निरीक्षक।

—जिला उपप्रतिनिधि सभा इटावा

सर्वश्री पण्डित मंगनलाल प्रधान (औरैया) स्वामी प्रमानन्द उपप्रधान (विधन) व्रजकिशोर मन्त्री (इन्टर कालेज औरैया) श्यामजी आर्य कोषाध्यक्ष (मरथना)।

—आर्यसमाज नन्दनगर

३० जनवरी १९६६ रविवार को आर्यसमाज नन्दनगर का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ।

सर्वश्री पृथ्वीराज तिवारी प्रधान सुन्दरलाल अग्निहोत्री उपप्रधान (प्रथम) शत्रुघ्नलाल उपप्रधान (द्वितीय) शिवनाथ सिंह मन्त्री निरीक्षक मन्त्री दीपनारायण उपमन्त्री (प्रथम), रामचन्द्र जायसवाल उपमन्त्री (द्वितीय) सीयाराम शर्मा कोषाध्यक्ष रामाभिलाष तिवारी उपकोषाध्यक्ष शिवनारायण आर्य पुस्तकाध्यक्ष चन्द्रशेखर उपपुस्तकाध्यक्ष, सूर्यनारायण तिवारी लेखानिरीक्षक।

—आर्यसमाज बड़हलगंज

प्रधान—श्री रामनारायण आर्य उपप्रधान—श्री विद्यासागर आर्य, मन्त्री—श्री शारदाप्रसाद आर्य, उपमन्त्री—श्री हरिहर प्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री कन्हैयालाल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री इन्द्र देव आर्य, सचालक—श्री मक्खनलाल आर्य।

—आर्यसमाज झांसी शहर

सर्वश्री गयाप्रसाद—प्रधान, सीताराम वर्मा—उपप्रधान सीताराम आर्य—मन्त्री, व्रजबिहारी निगम—उपमन्त्री, जगजीवन लाल—कोषाध्यक्ष भगवन्तसिंह—पुस्तकाध्यक्ष।

—आर्यसमाज अजीतमल (इटावा)

श्री ब्रजेन्द्रमित्र प्रधान श्री रामकृष्ण मिश्र उपप्रधान, श्री ब्रजबिहारीलाल दुबे एम०ए० मन्त्री श्री प्रेमबाबू त्रिपाठी उपमन्त्री श्री वेदप्रकाश पेमी कोषाध्यक्ष श्री पूरनसिंह पुस्तकाध्यक्ष श्री प्रेमनाथ शाण्डिल्य आय व्यय निरीक्षक।

—आ०स० श्रवणनाथनगर हरिद्वार

श्री सेठ देवनदास प्रधान श्री वेणीप्रसाद जिज्ञासु कार्यकर्ता प्रधान, मा० मूलरतन मन्त्री प० श्वेतकेतु विद्यालंकार उपमन्त्री सुरेन्द्रनाथ मेहता उप मन्त्री हरिहरप्रसाद कोषाध्यक्ष, मा० नत्थन लाल पुस्तकाध्यक्ष, प्रि० केहरसिंह निरी

—आ० स० अमरोहा का वार्षिक निर्वाचन ३० जनवरी।

प्रधान—श्री धीरेन्द्रकुमार आर्य, उपप्रधान—श्री ला० बनवारीलाल, मन्त्री—श्री प्रेमबिहारी उपमन्त्री—श्री राजेन्द्र कोषाध्यक्ष श्री शान्तिप्रसाद, पुस्तका०—श्री रामानन्द निरीक्षक—श्री छोटेलाल।

—आ०स० खुर्जा के पदाधिकारियों का निर्वाचन १६ १ ६६।

प्रधान—श्री युधिष्ठिरकुमार माथुर उपप्रधान—श्री मुकटलाल सर्राफ श्री यशपाल व बाम मन्त्री—श्री वीरेश्वरकुमार उपमन्त्री—श्री कुन्दनलाल वधवा, श्री राम स्वरूप कोषा०—श्री सूरज, सम्पत्ति—प्रबन्धक—श्री ला० बुद्धसन।

संस्कार—

—दिनांक ४ अक्टूबर६५ को ३ बजे आर्यसमाज चेम्बूर के प्रधान श्री जयदेव जी के सुपुत्र एवं भतीजों का यज्ञोपवीत संस्कार श्री प० दयाशंकर जी व श्री प० रामचन्द्र जी सिद्धान्तालंकार के आचार्यत्व मे बड़े समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष मे श्री जयदेव जी ने १०१) आर्य प्रतिनिधि सभा एवं १०१) आर्यसमाज चेम्बूर को दान दिया। जिसका धन्यवाद श्री हरिनारायण जी मेहता उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने किया।

—देवव्रत मन्त्री

—आ० स० गन केरिज फैक्टरी क्वार्टर्स जबलपुर के सदस्य श्री रोशनलाल कपूर के सुपुत्र चिरंजीव अशोक कुमार एवं विनोदकुमार का यज्ञोपवीत एवं वेदारम्भ संस्कार श्री प० हृदयप्रकाश भारद्वाज के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। १) दान आ०स० गढ़ीपुरा एवं १) दान आ० स० गनकेरिज फैक्टरी क्वार्टर्स को दिया गया जिसके लिए समाज की ओर से धन्यवाद एवं बालकों को आशीर्वाद दिया गया। —श्रीराम शर्मा उपप्रधान

—आर्यसमाज जमशेदपुर के सुयोग्य आर्य विद्वान पुरोहित श्री प्रेमसुख शास्त्री सगीताचार्य द्वारा आर्य परिवारों में निम्न वैदिक संस्कार कराये गये—

७ दिन वेद कथा रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक, गायक प्रेमसुख शास्त्री जी द्वारा सम्पन्न—नामकरण ७, विवाह ५, मुण्डन २, अन्त्येष्टि ६ सालगिरह पर यज्ञ ३, विशेष यज्ञ ५ कराये।

समय समय पर विद्वानों के प्रवचन हुये श्री प० श्यामसुन्दर जी शास्त्री श्री रामदास जी के भजनोपदेश कराये।

—वेदप्रचार अधिष्ठाता
आर्यसमाज जमशेदपुर

—आर्यसमाज छिबरामऊ के श्री लज्जाराम जी आयुर्वेदाचार्य के पुत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ पुत्र का नाम प्रेमकुमार रक्खा गया उपस्थित महानुभावों ने बालक को आशीर्वाद दिया श्री रामचन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष तथा श्री जीवाराम जी आर्य प्रचार मन्त्री कायमगंज वालों के भजन तथा उपदेश हुये।

प्रचार—

मेरे छोटे भाई ने बबीना मे नवीन भवन बनाया था और उसके उपलक्ष मे यजुर्वेद का यज्ञ श्री सत्यमित्र शास्त्री द्वारा कराया था जिसकी समाप्ति २ ११ ६५ को हुई थी उन्होंने ३-४ नवम्बर को भी वहीं बबीना मे कथा तथा वेद प्रचार किया था समाज से कोई सम्बन्ध था न कोई पैसा दिया गया, असर बहुत अच्छा रहा वेद प्रचार के लिये कुछ भी नहीं दिया गया।

—मन्त्री शहर आर्यसमाज मऊरानीपुर

शोक—

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, फर्रुखाबाद की अन्तरंग सभा श्री मदनलाल जी मिश्र के पूज्य त्यागी, साधु तथा तपस्वी पिता श्री दुलीचन्द की आकस्मिक मृत्यु पर महान शोक प्रकट करती है और प्रभु से प्रार्थना करती है कि मृतात्मा को सद्गति और शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

अमर हुतात्मा पं० लेखराम का बलिदान दिवस

मन, वचन, कर्म से सत्यनिष्ठ ईश्वर धर्म और राष्ट्र के सच्चे और क्रियाशील उपासक अमर हुतात्मा पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर की पुण्य स्मृति को जाग्रत रखने तथा सत्प्रेरणा प्राप्त करने के निमित्त कानपुर नगर की सब आर्य समाजों की ओर से मेस्टन रोड में सामूहिक रूपेण श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए पं० विद्याधर जी, श्रीयुत मूलचन्द जी, श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री, श्री तेजपाल जी मदान, श्री लालताप्रसाद जी एवं स्वामी वेदानन्द जी प्रज्ञाचक्षु पं० विजयपाल शास्त्री आदि ने उद्बोधन किया कि जिन्होंने प्राण दिये पर प्रण नहीं छोड़ा और लोक कल्याण की भावना से सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया उनकी वसीयत से प्रेरणा लेकर पारस्परिक भेदभाव को भुलाकर हम सब प्रशस्त मार्ग का अनुसरण करें।

आर्यसमाज अमरोहा में दयानन्द बोध सप्ताह

आर्यसमाज अमरोहा में १२ फरवरी शनिवार से १८ फरवरी शुक्रवार तक दयानन्द बोध सप्ताह का कार्यक्रम बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया इस शुभ अवसर पर आर्य-जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् नवयुवक वक्ता श्री पं० विश्वबन्धु जी शास्त्री पधारे थे उनके विद्वत्ता पूर्ण व्याख्यानों का जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। कार्यक्रम प्रातः समय आर्य-समाज में रहा किन्तु मध्याह्न में नगर के विभिन्न क्षेत्रों में चला, अन्तिम दिन प्रभातफेरी निकाली तथा सामूहिक जलपान का आयोजन किया गया।

आवश्यकता है

हिन्दी महाविद्यालय हैदराबाद के आचार्य पद के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता है जो किसी भी विषय में एम० ए० (प्रथम या द्वितीय श्रेणी) हो और जिसने किसी मान्य कालेज में कम से कम पांच वर्ष तक स्थायी प्राध्यापक के रूप में कार्य किया हो। प्रशासनीय कार्य का अनुभव प्राप्त व्यक्ति को प्रमुखता दी जाएगी : वेतन रु० ४०० से ७०० प्रतिमास तथा स्वीकृत अलाउन्स दिया जाएगा। प्रार्थना पत्र निम्न पते पर भेजा जाए। हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य है।

मन्त्री
हिन्दी महाविद्यालय
हैदराबाद २०

संस्कार—

—दिनांक ४-९-६५ को श्रीमान डाक्टर सूर्यबली जी की सुपुत्री श्रीसुषमा देवी छतरपुर का पाणिग्रहण संस्कार श्री किशोरीलाल जी टीकमगढ़ के साथ बड़ी धूमधाम से वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ जिसमें श्रीमान जिला के गणमान्य महापुरुष पर्याप्त संख्या में उपस्थित थे इस विवाह का प्रभाव विद्वत् समाज पर बहुत ही अच्छा पड़ा सब लोगों ने वैदिक रीति से विवाह की सराहना की। पं० दिवाकर शर्मा उपमंत्री आर्य समाज लोडी ने वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न कराया।

—श्री ज्ञानचन्द्र आर्य सुपुत्र स्वर्गीय अशर्फीलाल जी आर्य की माता जी श्रीमती कटोरीदेवी आर्य ने अपने पति के देवलोक हो जाने से अब तक बीस वर्ष से अन्न पूर्ण रूपेण त्याग कर अब तक व्रत परायण रह कर गायत्री जाप करती रहीं उसी उपलक्ष में आपने अपने निवास स्थान अताईपुर में एक सप्ताह उपनिषद की कथा श्री सत्यव्रत जी वानप्रस्थी स्थान याकूतगंज द्वारा श्रवण करते हुए ता० १०-१०-६५ रविवार को एक वृहद यज्ञ गायत्री मंत्र द्वारा सम्पन्न किया तत्पश्चात् प्रीतिभोज किया गया तथा माता कटोरीदेवी ने अन्न बीस वर्ष पश्चात् अपनी पूर्ण आहुति के साथ ग्रहण किया। प्रभु इसी प्रकार का आत्म-बल भारत की माताओं को नित्य प्रति प्रदान करता रहे। श्री जीवाराम जी आर्य के उपदेश हुये।

—गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास जि० सुन्दरगढ़ उड़ीसा में राउरकेला सुन्दरगढ़ निवासी श्रीयुत रामनयन जी आर्य की पुत्री का नामकरण संस्कार श्री स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ १२ आश्विन १८८७ शक सोमवार को कराया नाम सजीवनी रखा गया पश्चात् श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने वेदी पर प्राचीन सत्य-नारायण की कथा कही। आश्रमवासियों तथा उपस्थित लोगों को अल्पाहार से सत्कृत किया तथा गुरुकुल के लिये दस रुपये दक्षिणा दी।

—आर्य समाज मटौली बदायूं के सदस्य श्री फकीरचन्द्र के पुत्र का मुंडन संस्कार वैदिक रीति से महाशय अयोध्या-प्रसाद जी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

—१०-९-६५ को मुहल्ला जटवारा कायमगंज मे श्री रामस्वरूप,ओमप्रकाश आर्य के गृह पर लाउड स्पीकर लगाकर वेद मंत्रों से वृहद हवन किया गया। तथा ओमप्रकाश आर्य के पुत्र का नाम-करण संस्कार श्री प० रामेश्वरदयाल व सतीशचन्द्र की अध्यक्षता मे वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज शाहगंज के उपप्रधान श्री डा० शम्भूनाथ आर्य के पौत्र एवं श्री अर्जुनप्रसाद के सुपुत्र चि० देवानन्द का मुण्डन संस्कार वैदिक पद्धति अनुसार श्री प० काशीनाथ आर्य द्वारा स्थानीय आर्यों की समुपस्थिति में दि० ३-११-६५ को प्रातः ९ बजे सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज रम्पुरा (फतेहगढ़) के द्वारा निम्न महानुभावों के यहां नाम-करण संस्कार वैदिक रीत्यानुसार हुआ।

सर्वश्री आर्येन्द्रकुमार श्रीवास्तव १), धीरेन्द्रकुमार आर्य २), सुरजप्रसाद १), भगवती प्रसाद १), दरबारीलाल १), श्री रामनाथ।

दानी महानुभावों को आ० स० रम्पुरा द्वारा धन्यवाद तथा नवजात शिशुओं को आशीर्वाद दिया गया। उपस्थित जनता में मिष्टान्न वितरित किया गया।

डा० रघुवीरदत्त शर्मा प्रधान उप सभा के विशेष प्रयत्न से समाजों की शिथिलता दूर करने के लिए एक विशेष आन्दोलन चल रहा है। दो वानप्रस्थी श्री सत्यव्रत व श्री वीरव्रत समाजों में भ्रमण कर रहे हैं। श्री श्रीराम, श्री रामदास आर्य, श्री बालगोविन्दसिंह श्री जगनूलाल आदि का प्रयत्न सराहनीय है। —सच्चिदानन्द आर्य मन्त्री सभा

—१५-८-६५ दिन रविवार समय ११-३० बजे दिन में आ० स० अर्मापुर स्टेट, कानपुर में श्री सोहनलाल जायस-वाल आत्मज स्व० श्री तनकाईलाल जायसवाल इलाहाबाद का विवाह संस्कार शिवकान्ता देवी आत्मजा स्व० श्री वासु-देवसिंह ग्राम माण्डा जि० इलाहाबाद के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

इस समय गोविन्दनगर कानपुर के निवासी हैं।

—आज दिनांक ५-९-६५ दिन रवि वार समय १०॥ बजे दिन में आ० स० अर्मापुर स्टेट, कानपुर में श्रीमती मेती ईसाई पुत्री श्री कालवीन ईसाई की शुद्धि की गई तथा नाम बदलकर श्रीमती सरोजिनी देवी रखा गया। शुद्धि के पश्चात् श्रीमती सरोजिनी देवी का विवाह श्री अमरसिंह यादव रावतपुर कानपुर के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। —आशादीन वर्मा मन्त्री

—दि० ३-१० ६५ रविवार को कायमगंज से श्री जगन्नाथ प्रसाद आर्य उपप्रधान व श्री रामचन्द्र आर्य कोषा-ध्यक्ष व श्री जीवाराम आर्य प्रचार मन्त्री अताईपुर आ स. के मन्त्री श्री राजनारा-यन जी के यहां गये उनके लघुभ्राता चि० रूपनारायन आर्य डा० का वाग्दान संस्कार वैदिक रीत्यानुसार श्री शिव दयाल जी चेयरमैन मैनपुरी निवासी की पुत्री के साथ सम्बन्ध पक्का हुआ श्री जीवाराम आर्य प्रचार मन्त्री के प्रभाव शाली भजन व उपदेश हुए।

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

आर्यमित्र

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। वेद

लखनऊ—रविवार फाल्गुन २९ शक १८८७, चैत्र कृ० १४ वि० २०२२, दिनांक २० मार्च सन् १९६६ ई०

वेदामृत

सरेऽविन्द्रं सुहवं हवा-
महेऽहो मुचं सुकृतं दैव्यं
जनम। अग्निं मित्रं वरुणं
सातये भगं द्यावा पृथिवी
मरुतः स्वस्तये॥

काव्यानुवाद

अघ विमर्दक इन्द्र रक्षक को
बुलावें हम सभी।
ऐश्वर्यशाली पुण्य, पोषक
संकटों में है वही॥
कर्ता सुकर्मों का, विधाता,
दिव्य जन का मित्र है।
व्यापक वरुण भजनीय
जग-कल्याणकर्ता इन्द्र है॥

विषय-सूची

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द ने ९१ वर्ष पूर्व आर्यसमाज की स्थापना कर संसार से अज्ञान, अन्याय और अभाव को समाप्त करने का जो दायित्व हमें सौंपा था उसकी पूर्ति के लिए हमें आज अपना संकल्प फिर से दोहराना चाहिए। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का गम्भीर और महान दायित्व प्रत्येक आर्यजन का दायित्व है। आर्यसमाज स्थापना-दिवस के अवसर पर हमें विचार करना चाहिए कि हम इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए क्या कर रहे हैं। आर्यसमाज का नव वर्ष शुभ हो यही हम सब की हार्दिक अभिलाषा है।

वार्षिक ८)
छःमाही ५)
विदेश

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक १०
एक प्रति

आर्य नेता पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम०पी० का

हरदोई में श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री द्वारा अभिनन्दन

दि० २ मार्च को हरदोई मे माननीय श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य

प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य

लोक सभा, सभा मन्त्री श्री चन्द्रदत्त जी तिवारी तथा सभा उप मन्त्री श्री धर्मेन्द्र सिंह एम० ए० व श्री रघुराजसिंह जी त्यागी के साथ पधारे। आगमन पर शास्त्री जी का गण्यमान्य व्यक्तियों द्वारा स्वागत हुआ। विशेष जलपान गोष्ठी के आयोजन मे श्री शास्त्री जी के विचार भी सुने गये। रात्रि में सार्वजनिक सभा मे आपका समस्त जिले की ओर से अभिनन्दन किया गया तथा ११०१) रुपये की गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को थैली श्री पं० रघुनन्दन जी शर्मा के द्वारा भेंट की गई। आर्य कन्या पाठशाला की छात्राओं ने स्वागत गान किया। बाद मे श्री शास्त्री जी ने चिर प्रतीक्षित जनता में सामयिक परिस्थितियो पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण का दिग्दर्शन अपने सुलझे हुए विचारो से कराया जनता मन्त्रमुग्ध होकर सुनती रही। अन्त मे श्री प्रधानजी ने धन्यवाद देकर सभा विसर्जित की।

हरदोई जिले मे प्राप्त धन राशि

श्री मन्त्री जी आर्य स० हरदोई	२५१)
श्री मैनेजर आर्य क पा ,,	२०१)
श्री प० रघुनन्दन जी शर्मा	१०१)
श्री मन्त्रिणी जी स्त्री आ स ,	१०१)
श्री मन्त्रीजी आ स. सांडी ,	१०१)
श्री सोमदत्तजी शर्मा बठिया ,,	१००)
श्री डा० पूर्णदेव जी ,,	५१)
श्री डा० बैजनाथ गुप्त	५३)
श्री बाबू सरदारसिंह जी ,	५१)
श्री ठा० वीरेन्द्र विक्रमसिंह ,	२५)
श्री प० रामसेवक जी गुरसा ,,	२५)
श्री रामेश्वरदयालु जी [शुद्धि बाबू] ,,	२१)
श्री डा०शिवमगलजी अस्थाना,,	१५)
श्री डा०केशवदेवजी चढिया ,	१०)
श्री रविशंकरजी आ स पालपुर,,	११)
श्री डा० प्रतिपालसिंह जी ,,	५)
श्री डा० अवधबिहारी जी वर्मा,,	५)
आ आर्यसमाज मल्लावा ,,	११)

★ ओ३म् ★

माननीय श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री

संसत्सदस्य

की सेवा में

❋ अभिनन्दन-पत्रम् ❋

आदरणीय,

हम हरदोई जिले के नागरिक आपको चिरकाल पश्चात आज अपने मध्य पाकर हर्ष और आनन्द से आप्लावित हो रहे है। हम आपके प्रति अपने आदर और श्रद्धाभाव का प्रकट करने मे असमर्थ पा रहे हैं। हम अपने श्रद्धा सुमन के रूप मे यह अभिनन्दन पत्र आपकी सेवा मे अर्पण कर रहे हैं।

गुरुकुलाल्लब्धविद्यो, दर्शनानन्द स्वामिनः।
तद्गुणानात्मसात्कृत्वा, आर्याणा हितचिन्तकः ।।१।।

हे आर्यनेता आपकी उच्च शिक्षा दीक्षा श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) मे हुई है। आपने श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के वाग्मिता आदि गुणो को अपना कर उनके आदर्श के अनुसार आर्यसमाज और आर्य जाति के हित चिन्तन मे लगे हुए हैं।

वाग्मिप्रवर एवासौ, निर्भीको लोकसंसदि।
राष्ट्रचिन्तां हृदि कृत्वा, आदिर्भवति भानुवत् ।।२।।

हे वाग्मिप्रवर आप लोकसभा के निर्भीक वक्ताओ मे है। आपके हृदय मे देश और जाति के हित की चिन्ता सदा रहती है। आप लोकसभा मे सूर्य की भांति अपने प्रकाश को फैला रहे है।

यूनां तु भारतीयानां, सम्राड्रूपेण राजते।
आत्मोत्सर्गप्रवृत्तोऽय, तेषामुल्लासहेतुना ।।३।।

हे प्रणवीर आप भारतीय युवको के हृदय सम्राट है। आपके अन्दर विद्यमान आत्मोत्सर्ग की भावना को देखकर भारतीय नवयुवको मे नव चेतना का संचार होता है।

निरीक्ष्य वाचो वैशिष्ट्यं, मित्रायन्ते स्वशत्रव.।
सदस्या नेतृरूपेण, स्वीकुर्वन्ति यमिच्छया ।।४।।

आप अपनी वक्तृत्व कला के प्रभाव से अपने विरोधियो को भी अपना मित्र बना लेते है। आपकी योग्यता के आधार पर ही अन्य सदस्य आपको अपना नेता मानते है।

राष्ट्रदुःखप्रणाशाय, वह्निवत् संसदि स्थितः।
प्रस्तावान् प्रस्तवीत्येष, राजनीतिविशारदः ।।५।।

आप सफल राजनीतिज्ञ है। आप अपने सूझ बूझ पूर्ण विचारो और प्रस्तावो से देश और जाति के संकट को दूर करते हुए समाज मे एक अपूर्व स्थान बना रहे है।

ज्वालापुर गुरुकुल, य प्रसूय च पावनम्।
यद्गुणै. सार्थक भूत्वा, धन्यतामेति शाश्वतम् ।।६।।

हे कुलरत्न गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की पवित्र भूमि अपनी कोख से आप जैसे योग्य पुत्र को उत्पन्न करके अपने नाम को सार्थक बनाकर सदा के लिये धन्य है।

वैदिकस्यास्य धर्मस्य, हितसम्पादने रतः।
क्लेशानगणयन् सर्वान, यतते वीरवत् सदा ।।७।।

आप अपने दुःखो और कष्टो की चिन्ता न करके वैदिक धर्म की सुरक्षा मे महर्षि दयानन्द के आदर्शानुसार लगे हुए हैं। आपका उत्साह अदम्य है।

वीरः प्रकाशवीरोऽसौ, शास्त्री शास्त्रविचारणात्।
लभतां तु चिरायुष्यं, कीर्ति चैवमनुत्तमाम् ।।८।।

आप यशस्वी वीर 'प्रकाशवीर' है। शास्त्रो के चिन्तन के कारण 'शास्त्री' हैं। हम सबकी हार्दिक शुभकामना है कि आप चिरायु होकर देश-जाति की सेवा करें और आपको अनुपम कीर्ति प्राप्त हो।

हम हैं आपके शुभाकांक्षी —
आर्यसमाज जिला हरदोई के अधिकारी,
तथा सदस्य नागरिक गण

सभा ने वार्षिक वृत्तान्त १९६४ पर प्राप्त हुए प्रश्नों के उत्तर निम्नप्रकार प्रकाशित किये हैं ?

प्रश्न-कोष विभाग

[१] पृष्ठ ८९ पर क्रमांक १९९ तथा २०३ के सम्मुख प्रतिनिधियों को अनुपस्थित तथा उनसे प्रतिनिधि शुल्क २ प्रत्येक से अप्राप्त दिखाये गये हैं। जब कि दोनो उपरोक्त प्रतिनिधियों ने सभा की कार्यवाही मे भाग लिया है तथा प्रतिनिधि शुल्क २)—२) मोला कैम्प कार्यालय मे जमा किये हैं। मेरा प्रवेश पत्र सं० ०८२ था। कृपया आवश्यक स्पष्टीकरण एव शुद्धिकरण सभा की बैठक एव आर्यमित्र में देने की कृपा करें।

उत्तर—प्रतिनिधि रजिस्टर देखने से ज्ञात हुआ कि रुपया जमा है। उपस्थित भी थ। यह प्रेस की भूल से छपने से रह गया।

[२] बैलेंसशीट के विषय में निवे दन है कि इसका रूप पत्र एव आंकड़ों का संकलन एकाउन्ट के साधारण नियमानुसार एव परिचालित परिपाटी के अनुसार नहीं है। किसी भी संस्था के वार्षिक चिट्ठे के ३ आवश्यक एव अनिवार्य अंग होते हैं। जो निम्नलिखित है।

[१] वास्तविक आय व्यय जो वर्ष के मध्य हुआ ?

[२] वर्षान्त में संस्था की पूंजी एव दायित्व ?

[३] वर्षान्त में लाभ एवं हानि का ब्योरा ?

उत्तर—सन् १९६४ की बैलेंसशीट छप चुकी हैं। सन १९६५ की बलेंसशीट में सुझावानुसार ब्योरा दिया जायगा।

[क] सभा के वार्षिक आय-व्यय का विवरण पूर्णतया नहीं दिया गया है यदि यह वृतान्त पृष्ठ ५३ के अनुसार है (जैसा प्रतीत होता है) तब इसके योग नहीं किये गये हैं। वर्षारम्भ एव वर्षान्त की शेष रोकड़ा दिखाकर आय-व्यय का योग बराबर होना चाहिये था तथा रूप पत्र में दिखाया जाना चाहिये था।

उत्तर—आगे से योग लगाया जाया करेगा।

[ग] (बैलेन्सशीट) पूंजी एव दायित्व की विभिन्न मदों के संकलित आंकड़े दिखाए जाने चाहिये थे। किसी भी बैलेंसशीट में इस प्रकार आंकड़े नहीं दिखाये जाते। इस प्रकार के आंकड़े एक स्थान पर दिखाये जाने चाहिये थे। जैसे विभिन्न प्रकार के स्टाक [स्टाक] विभिन्न प्रकार के डिपोजिट, विभिन्न संस्थाओं में विभिन्न निधियाँ आदि एक स्थान पर एक आंकड़ों में ही दिखाये जाने चाहिये थे। पृष्ठ ४५ पर 'पूंजी तथा अन्य देनदारी' का स्तम्भ मेरे विचार में दायित्व एव अन्य देना अधिक ठीक होगा।

उत्तर—आपके सुझाव निरीक्षक महोदय के सम्मुख प्रस्तुत किये गये हैं। बलेंसशीट का निर्माण करते समय निरीक्षक महोदय इस सम्बन्ध में जैसा सुझाव देंगे तदनुसार कार्य किया जायगा।

[ख] वर्षान्त मे लाभ एव हानि का रूप पत्र दिया ही नहीं गया है, इस रूप पत्र के अभाव में बैलेंसशीट की शुद्धता का ज्ञान नहीं हो सकता। इस पत्र का दिया जाना इतना ही आवश्यक है कि जितना कि बलेन्सशीट का दिया जाना।

उत्तर—अगले वर्ष में ध्यान रखा जायेगा।

(ग) बैलेन्सशीट आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ में (पृष्ठ ५५ तथा ५६) आर्य प्रतिनिधि सभा का भवन एव यज्ञ मन्दिर तथा आर्यभास्कर प्रेस का मूल्यांकन नहीं किया गया है। एवं सम्मिलित नहीं किया गया प्रतीत होता, इस प्रकार पूंजी एव दायित्व एक बड़ी धनराशि से कम दिखाई गई है।

उत्तर—मूल्यांकन कराकर आगामी वर्ष की रिपोर्ट में दिया जायगा।

(घ) गुरुकुल की बैलेंसशीट में पृष्ठ सं० ४० पर रामदास भवन निर्माण में दायित्व ९,०००.०० दिखाया गया है, जबकि इसी मद में पृष्ठ५४पर१०,००० ०० यह छापे की भूल ज्ञात होती है। सुधार किया जाए।

उत्तर—वास्तव में ९ हजार रु० ही हैं। यह प्रेस की भूल से दस हजार रु० छप गया।

शिक्षा-विभाग—

(क) सम्बन्धित विद्यालयों की सूची यदि वर्ग वार (गुरुकुल महाविद्यालय विद्यालय एव प्राथमिक पाठशालाएं, प्रकाशित की जाती तो अच्छा होता। भविष्य में ऐसा कराने की कृपया व्यवस्था करें।

उत्तर—भविष्य में वर्गवार सूची दी जायगी।

(ख) क्या दयानन्द डी ए वी. डिग्री कालेज कानपुर, लखनऊ तथा देहरादून सभा से सम्बन्धित नहीं हैं ? इनके नाम पृष्ठ ४८ से ४९ तक कहीं अंकित नहीं है। यह आर्य सभा की सबसे बड़ी शिक्षा संस्थाए हैं। इनकी सूचना का होना आवश्यक था। यदि यह सम्बन्धित नहीं हैं तो इनका सम्बन्ध सभा से कराने के लिए कोई प्रयास किया गया। सभी सम्बन्धित संस्थाओं की सूची देकर वहा की सभाओं से निवेदन किया जाना चाहिए कि वह सम्बन्ध स्थापित करें। कम से कम लखनऊ के डिग्री कालेज के आंकड़े तो सभा के किसी भी अधिकारी द्वारा स्वयं लाए जा सकते थे। यह विशेषकर खेदजनक है, जबकि सभा मन्त्री का स्वयं व्यक्तिगत रूप से भी उक्त कालेज से सम्पर्क है।

उत्तर—सभा के शिक्षा विभाग से सम्बन्धित नहीं है। सम्बद्ध कराने का प्रयत्न किया जायगा।

प्रश्न—इसी प्रकार भोला गोकरननाथ के आर्यसमाज मंदिर मे भी एक पाठशाला चलती है। तथा सभा के उपमन्त्री श्री निर्मलचन्द्र जी राठी (जहां तक मुझे स्मरण है) उस पाठशाला के व्यवस्थापक हैं। परन्तु उक्त पाठशाला भी उपरोक्त सूची में सम्मिलित नहीं है।

उत्तर—सभा से सम्बद्ध नहीं है। पत्र-व्यवहार किया जा रहा है।

—प्र० क० ह० पुरुषोत्तम
आ. स लखीमपुर खीरी

नायक जाति सुधार

(३) रिपोर्ट पृष्ठ ६० नायक जाति सुधार विभाग की ओर से जिन विद्यार्थियों को छात्रवृत्तिया दी गई हैं उनके नाम नहीं दिये गये—जो देना चाहिए।

उत्तर—आगामी वर्ष की रिपोर्ट में नाम छापे जाया करेंगे।

—ह० प्र० क० आनन्द प्रकाश
प्र० आ. स. लल्लापुरा काशी

कोष विभाग-

(४) वार्षिक रिपोर्ट में बैलेंसशीट अंग्रेजी शब्द छपा है, इसके स्थान पर हिन्दी शब्द 'आय-व्यय लेखा' लिखा जाना चाहिए।

उत्तर—'आय व्यय लेखा" शब्द छपा दिया गया है ?

गुरुकुल वृन्दावन

(५) रिपोर्ट के पृष्ठ ५६ पर नीचे जो योग गुरुकुल वृन्दावन के आय-व्यय के जोड़ में (१०,०००) का फर्क है। आय ६५४२८३) १९ है जबकि व्यय का जोड़ ६४४२८३) १९ होना चाहिए अत इस अन्तर को शुद्ध किया जाए।

प्र० क० ह० श्रीराम आर्य
प्रति० आ०स० देवरी महुलावपुर (ऐटा)

उत्तर—वास्तव में व्यय का धन ६५४२८३) १९ ही है। पर प्रेस की असावधानी से ६४४२८३) १९ छप गया है।

उपदेश विभाग—

(६) प्रचारक श्री चक्रपाणिसिंहजी द्वारा सन १९६४ का दशांश आदि के लिये ३०) दिये गये जो प्रतिनिधि सूची मे जमा नहीं किये गये।

उत्तर—रिपोर्ट में जो सूची छपी है वह प्रतिनिधि सभासदों की है। मवीसा आ०स० से वार्षिक चित्र नहीं आए—इस कारण नहीं छापा गया।

प्र० कर्ता खजानसिंह
प्रति० आ स मवीसा (मु नगर)

गुरु विरजानन्द स्मारक निधि—

(७) श्री गुरु विरजानन्द स्मारक निधि मे ५०००) रिपोर्ट पृष्ठ ५३ पर व्यय मे दिखाया गया है ? यह धन इलाहाबाद बैंक मथुरा मे आज प्रति० सभा के नाम जमा है इस मद मे कुछ धन व्यय हुआ है। परन्तु यह धन बैलेंसशीट में दिखाया जाना चाहिए जो नहीं दिखाया गया है।

उत्तर—मथुरा में सभा के नाम से यह धन जमा है। आगे से बैलेंसशीट मे दिखाया जावेगा।

प्र० कर्ता कर्णसिंह
प्र० सभासद उपसभा मथुरा

शिक्षा विभाग—

(८) पृष्ठ ४९ पर संख्या १०० आय कन्या विद्यालय गोविन्दनगर कानपुर सभा से सम्बन्धित नहीं है उसका नाम विवरण मे क्यों दिया गया।

उत्तर—रिपोर्ट का शीर्षक पढ़ने की कृपा करें विद्यालय सभा के असम्बद्ध है। विवरण नहीं आया।

—प्र० कर्ता विश्वपाल शास्त्री
प्रति० आ. स. मेस्टन रोड कानपुर

सभा कार्यालय (भू विभाग)

(९) आयसमाज बरवासल पर अन्य विचार वालों का अधिकार है तथा आयसमाज की रुचि के अनुसार है, अन्यथा धर्मशाला में सत्संग करते हैं इस का क्या हो रहा है ?

प्र० क० श्रीराम
प्रति०आ०स० सूपर मिल्स खतौली

उत्तर—इस सम्बन्ध में सभा की ओर से आवश्यक प्रबन्ध किया जा रहा है।

शिक्षा विभाग

पृष्ठ ५० पर डी० ए० वी० कालेज बुलन्दशहर की आख्या छपी है, उसमें यह स्पष्ट है कि कालेज में सहशिक्षा चालू है जो सर्वथा आयसमाज के सिद्धान्तों के विपरीत है। मुझे यह भी पता है कि उसमें केवल उपकुलपति महोदय की कन्या अध्यापिका है, अन्य कोई नहीं है। क्या यह सहशिक्षा उपकुलपति महोदय की कन्या को रखने के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आनन्द मार्ग तथा यज्ञोपवीत

[ले०—श्री रामानन्द जी शास्त्री उपप्रधान आ०प्र०नि० सभा बिहार]

बिहार में एक नया पथ चला है उसका नाम आनन्द मार्ग है। उसके प्रवर्तक प्रभात रंजन सरकार एक बंगाली सज्जन हैं जो रेलवे आफिस जमालपुर में कार्य करते हैं। इनके सम्बन्ध में आर्यमित्र के पिछले किसी अंक में लिख चुका हूं। यह पंथ बिहार में इस समय बहुत फैल रहा है। इसके अनुयायी साधना एवं योग के नाम पर श्रद्धालु जनों को एकत्र करते हैं तथा उन्हें गुरुडम के गर्त में ढकेल देते हैं। साधना के नाम पर इनके अनुयायी स्त्री पुरुष एक जगह जमा होते हैं तथा अंधेरी कोठरी में बैठकर साधना करते हैं। प्रभात रंजन सरकार को आनन्द मूर्ति कहा जाता है। वे सब से नहीं मिलते, खास अपने शिष्यों से मिलते हैं। जिन्हें 'आचार्य' कहा जाता है। इन आचार्यों को वेद शास्त्र से कोई प्रयोजन नहीं, बस नवागन्तुकों को दीक्षा देना ही इनका कार्य है। जब पूर्ण परीक्षा हो जाती है तो चेली अथवा चेला गुरु आनन्द मूर्ति जी के पास पहुंचते हैं। गुरु जी स्वयं हैं एक शिष्य और शिष्या को शिर, नाक, कान, छाती आदि अंगों पर हाथ रख कर कुछ दिन भावना बनानी होती है कि यह सब कुछ गुरु जी का ही है। गुरु जी के आचरण तथा व्यवहार पर किसी को सन्देह नहीं करना चाहिये। यदि गुरु जी के व्यवहार पर किसी को सन्देह होगा तो वह घोर नरक में जावेगा। गुरु जी एवं गुरु जी के एजेन्टों को मनुष्य पहचानने की बड़ी अद्भुत शक्ति है।

संसार में अनेक प्रकार के मनुष्य हैं। वैसे भी मनुष्य हैं जो भावुक हैं, बुद्धि से कार्य नहीं लेते बस गुरु जी को साक्षात श्रीकृष्ण भगवान् का अवतार समझते हैं। इस प्रकार वाम मार्ग का प्रचार बहुत जोरों से हो रहा है। साधना के नाम पर शिष्यों को गुरु जी उपदेश देते हैं कि जिसको जिस चीज से प्यार है उसी का सेवन करता रहेगा तो सिद्धि को प्राप्त कर लेगा। अतः मांसाहार, शराब, वेश्या-गमन आदि सबको वैध माना जाता है।

आनन्द मार्ग की सभा में यज्ञोपवीत और शिखा की निन्दा की जाती है। कुछ नवयुवकों ने आनन्द मार्ग के भाषण से प्रभावित होकर मेरे पास पत्र लिखा है कि यज्ञोपवीत का क्या प्रयोजन है। अतः इस आर्यमित्र के द्वारा उत्तर दे रहा हूं। जिस प्रकार राष्ट्रीय झंडा का रहस्य है वैसे ही इसका रहस्य है।

(१) यज्ञोपवीत को रखा जाय तो एक वृत्ताकार (सर्किल) बनेगा। यह सर्किल विश्व ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। हमारा सम्बन्ध विश्व ब्रह्माण्ड से है मैं भी इसका एक इकाई हूं।

२—यज्ञोपवीत ९६ चौआ का बनाया जाता है विश्व में ९६ तत्व हैं—

यथा—५ भूत पृथ्वी, जल, तेज वायु, आकाश।

५ ज्ञानेन्द्रिय—जिह्वा, त्वचा, चक्षु, नासिका और श्रोत्र।

५ गुण—दैवी, दान, विसर्ग, आनन्द और भय।

५ कोश—अन्नमय, प्राणमय मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय।

५ आशय—अमर, पक्व मल, जल (मूत्र) शुक्र (वीर्यवाहिनी)।

५ गुण—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध।

१० नाडियाँ—इडा पिंगला सुषुम्ना, शाखिनी, प्रभा, गांधारी अग्नि अलम्बुषा, सिगवा और गुमा।

६ आधार—मूलाधार, स्वाधीस्तना, मनीपुरा, अनाहता, विशुधा और अज्ञा।

३ मण्डल—अग्नि, आदित्य और चन्द्र।

५ अवस्था—जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया, अतितुरीया।

३ दोष—वात, पित्त कफ।

३ एषणायें—वित्त पुत्र एवं लोकैषणा।

१० वायु—प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म कृकल धनंजय।

४ करण—मन बुद्धि, चित्त अहंकार

३ त्रिगुण—सत्व, रज तथा तम।

३ मल—अनावन, मया, कामना।

५ कर्मेन्द्रियाँ—वाक, हाथ पाद, पायु और उपस्थ।

८ राग—काम क्रोध, लोभ, मोह मद, मात्सर्य, द्वेष, तथा वेग।

२ क्रियायें—अच्छी तथा दुष्टक्रिया।

१ ज्ञान—

९६ कुल

अतः यज्ञोपवीत का ९६ चौआ इसका प्रतीक है ये सब हमारे भीतर हैं इनकी जानकारी के साथ आसुरी शक्ति का पराभव तथा दैवी शक्ति की वृद्धि, मानव का परम लक्ष्य होना चाहिये।

अब ९६ चौआ का यज्ञोपवीत तीन गुण किया जाता है ९६—३=३२ चौआ का होता है। ३ गुन इसलिए किया जाता है कि विश्व का सारा क्रिया कलाप ३ के भीतर है। सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण—ये सांख्यों का गुण है। एक परमाणु में (१) इलेक्ट्रोन (२) न्यूट्रोन एवं (३) प्रोटोन ये वैज्ञानिकों का मत है। (१) वात (२) पित्त एवं कफ ये आयुर्वेद शास्त्री कहते हैं। (१) ईश्वर (२) जीव (३) प्रकृति—यह दार्शनिक सिद्धान्त है (१) ज्ञान (२) कर्म (३) उपासना—यह वेदत्रयी वैदिक लोग मानते हैं। ३ अंक ही परिपूर्ण है ऐसा गणितज्ञ मानते हैं।

३ कोण से ही सारा कोण अथवा व्यास बनता है यह रेखागणित की घोषणा है।

तीन काल, तीन वचन आदि त्रित्व में सारा जगत समाया है। अब ३३ चौआ हुआ। ३३ देवता होते हैं यह प्राचीनतम वैदिक सिद्धान्त है। पुनः ३३ को ३ गुण करते हैं ३३—३=११ हुआ। ११ अङ्क रुद्र का द्योतक है। रुद्र' क्रोध का रूप तथा वीरत्व का ज्ञापक है। इस प्रकार ९ गुण हुआ। ९ का अंक पूर्ण है। हमें पूर्णता प्राप्त करनी है। तीन तार का यज्ञोपवीत तीन ऋण को बताता है जो वैदिक धर्मी स्वीकार करता है कि मेरे ऊपर (१) मातृ-ऋण (२) देव ऋण (३) ऋषि-ऋण है। उसके लिए ५ यज्ञ किया जाता है। यज्ञोपवीत का ५ पाँच "प्रवर" इसी का प्रतीक है। एक ब्रह्मचारी (ब्रह्म= सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को चर यतौ' समझने के लिए व्रत करता है अतः ब्रह्मचारी कहलाता है। वह जनेऊ के समय प्रतिज्ञा करता है कि—

एष मह मनुष्याणां वेदस्य निधि गोप्तृयासम।

अर्थात मैं मानवता तथा वेद का रक्षक बनूंगा। यह कितनी बड़ी प्रतिज्ञा है। विधिपूर्वक इसको धारण किया जाता है तथा विधिपूर्वक सन्यासाश्रम के समय इसका त्याग किया जाता है। बायें कन्धे दाहिनी ओर इसलिए लटकाया जाता है क्योंकि मनुष्य का हृदय बायें ही रहता है। यह पवित्र सूत्र है जिसका परम्परागत आदर है, अतः मनुष्य की आत्मा पर शुभ संस्कार को जागृत करता है। आशा है इस अल्पकाय लेख से हमारे आनन्द मार्गी भाइयों को सन्तोष होगा। आर्यमित्र के किसी दूसरे अङ्क में 'चौआ' से ही क्यों नाप होती है इस पर विशेष प्रकाश डालूंगा—

यज्ञोपवीत परम पवित्रम।

श्रेष्ठ कार्य करने के लिए धारण किया गया वस्त्र ही यज्ञोपवीत है।

उपदेशों का संसार

जीवन में उपदेशों का संसार बहुत देखा है,
मानव में मानवता का व्यवहार देखना शेष है।
मैंने देखे ऋषियों के सुन्दर उपदेश अनूठे,
तज न सके दुर्भाव किन्तु नर ये मतवाले झूठे॥
सत्पुरुषों के आदर्शों को अभिनय करके छोड़ा,
धरती के मदमस्त जनों को अभी चेतना शेष है॥
आदि सृष्टि से वेद शास्त्र सब मुक्त कण्ठ से गाते
सगच्छध्वं और संवदध्वं की सीख सिखाते॥
सत्य अहिंसा प्रेम शान्ति है शब्द कोष के अन्दर
मानव मानव के उर में तो अभी वेदना क्लेश है॥
महलों में कुत्ते तक पीते दूध दही के प्याले,
कुटिया में बुझ रहे दवा बिन कितने दीप उजाले॥
आजादी के आंगन में भी ओ मतवालो बोलो,
इस जलती मानवता को क्या अभी सेकना शेष है॥
नव विप्लव का शंखनाद गूंजा करके प्राणों में
धधक रहा विद्रोह भयानक भूखे इन्सानों में॥
इनके हाथों से जगती की शस्य श्यामला भूपर,
बोलो बोलो क्या शोणित की धार देखना शेष है॥

—धर्मेन्द्रनाथ 'अलिन्द' हल्दौर (बिजनौर)

सह-शिक्षा हिन्दू जाति के विनाश का कारण है

डा० रघुवीर शरण मुख्य संगठक, उ०प्र०, अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध समिति

भारत स्वतन्त्र होने के पश्चात् इन सतरह अठारह वर्षों में जहां देश में अन्य कुरीतियां बढ़ी है वहां नास्तिकता ने भी पर्याप्त उन्नति की है। नास्तिकता बढ़ने का कारण धर्म निरपेक्ष राज्य है। परन्तु इस धर्म निरपेक्षता का प्रभाव हिन्दू जाति तक ही सीमित रहा है। ईसाई मुसलमान व सिख इससे बच रहे हैं। धर्म निरपेक्षता का प्रभाव हिन्दू जाति पर इस कारण भी अधिक हुआ कि सहस्त्र वर्षों से अनेक मत-मतान्तरों में उलझी हुई जाति किसी भी एक धर्म को मानने वाली न रह सकी। आज का हिन्दू मुख्यतया शिक्षित हिन्दू [illegible] की बात को [illegible] व साम्प्रदायिकता समझता है। यदि ऐसा ही दृष्टिकोण ईसाई मुसलमान आदि का भी होता तो भी हिन्दू किसी सीमा तक सुरक्षित रह सकता था।

हिन्दू का दृष्टिकोण पाश्चात्य बन चुका है। इसका कारण पाश्चात्य शिक्षा पद्धति व प्रणाली है। सहशिक्षा अर्थात् लड़के व लड़कियों का साथ साथ एक ही शिक्षालय में विद्या प्राप्त करना आजकल की शिक्षा प्रणाली का एक आवश्यक अंग बनता चला आ रहा है। भारतीय दृष्टिकोण तो यह था कि ६ वर्ष का बालक भी बालिकाओं की पाठशाला में व ६ वर्ष की बालिका बालकों की पाठशाला में न जावे। बालक व बालिकाओं की पाठशाला में कम से कम ६ मील का अन्तर होना अनिवार्य था। शिक्षा पद्धति भी पृथक पृथक थी। इस प्रकार उनमें उच्च शिक्षा दी जाती थी। [illegible] जिन देशों में प्रचलित [illegible] को [illegible] बिगड़ चुकी हैं। [illegible] श्री वीरेन्द्र जी [illegible] पर गये थे। [illegible] के विषय में उन्होंने लिखा था कि लड़के लड़कियां जब अपने घरों से स्कूल को चलते हैं तो सीधे स्कूल न जाकर मार्ग में पार्कों में पहुंचते हैं। कुछ समय तक प्रेम लीला का पाठ करते हैं तब स्कूल के पाठ के लिये जाते हैं। स्कूल में भी यही क्रम चलता रहता है। इस सहशिक्षा का यह कुफल है कि अकेले एक पेरिस नगर में अविवाहिता लड़कियों ने एक वर्ष में ५ हजार अवैध बच्चों को जन्म दिया। लन्दन का समाचार है कि हजारों लड़के व लड़कियां, वयस्क व अल्पवयस्क मदिरा के नशे में मस्त होकर शहर के बाजारों में घुस पड़े और दुकानों को लूटना व आपस में एक दूसरे से गुत्थम गुत्था आरम्भ करके रास्ते रोक दिये। तुरन्त पुलिस बुलाई गई तब उन पर काबू पाया गया। यह हैं इस आधुनिक शिक्षा प्रणाली के करिश्मे। जिसके कुछ कुछ लक्षण भारतीय नवयुवकों व युवतियों में भी दृष्टिगोचर होने लगे हैं।

मैं जिस आने वाले सर्वनाश की ओर हिन्दुओं (आर्यों) का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं वह है भारत में उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही सह शिक्षा के कारण हिन्दुओं के सामूहिक धर्म परिवर्तन की आशंका। हिन्दुओं के सामूहिक धर्म-परिवर्तन ही क्यों हो रहा है और होगा इस पर गम्भीरता से विचार करना है। जिन स्कूलों में हिन्दुओं के लड़के व लड़कियां शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उन्हीं स्कूलों में ईसाई व सिख लड़के व लड़कियां पढ़ रहे हैं। मुसलमान लड़के भी पढ़ रहे हैं परन्तु मुसलमान लड़कियां नहीं पढ़ रहीं। मुसलमान अपनी कन्याओं को या तो घरों में ही कुरान शरीफ पढ़ा कर सन्तुष्ट हो जाते हैं या अपनी कन्याओं को मुस्लिम कन्या पाठशालाओं में ही पठन पाठन को भेजते हैं। मुस्लिम कन्याएं तो किसी भी दूसरे स्कूल में शिक्षा प्राप्ति हेतु नहीं भेजी जातीं अतः मुस्लिम स्त्री जाति सुरक्षित है।

सह शिक्षा में चरित्र हीनता का होना माना हुआ दोष है। हिन्दू लड़के व लड़कियों के ही सह शिक्षा के स्कूल होते तो भी हिन्दू जाति की इतनी हानि न थी। माता पिता के विरोध करने पर भी चरित्र भ्रष्ट होकर हिन्दू लड़के व लड़कियों के ही परस्पर प्रेम सम्बन्ध होते। परन्तु वर्तमान सह शिक्षा में यह होगा कि जाति पाति में जकड़े हुये हिन्दू समाज के नवयुवक व नवयुवतियां परस्पर प्रेमपाश में बंधकर हिन्दू जाति में नहीं रह सकेंगे। परिणाम यह होगा कि वह अपने धर्म को तिलाञ्जलि देंगे व ईसाई मुसलमान या सिख होकर अपनी प्रेम-लीला को पूर्ण करेंगे। हिन्दू नवयुवक, ईसाई युवती से प्रेम करके ईसाई संख्या को बढ़ावा देगा। हिन्दू नवयुवतियां ईसाई मुस्लिम या सिख नवयुवकों को आकर्षित करके या आकर्षित होकर विधर्मियों को

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सन्त फतेसिंह जी के साथ मेरा व्रत

[ले०—श्री सत्यानन्द सरस्वती, वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर जिला अम्बाला]

सन्त जी ने यह घोषणा कर रक्खी है। अगर पंजाबी सूबा न बना, तो वह दरबार साहिब के अन्दर एक मकान की तीसरी मंजिल के बन्द कमरे में बैठे हुए जीवित ही जल जायेंगे। उनके प्रतिद्वन्दी मास्टर तारासिंह सन्त जी के पंजाबी सूबा से सर्वथा असन्तुष्ट हैं। और ऐसा पंजाबी सूबा बनाना चाहते हैं जो प्रभु सत्ता सम्पन्न राज्य (फुल फ्लैज्ड सेकुलर स्टेट) हो। घृणा पर आधारित इस प्रकार के राज्य में हिन्दू समाज के अन्तर्गत हरिजनों और देश भक्त सिक्खों व अन्य जातियों को भी रहना कठिन हो जायेगा। सन्त जी के इस निश्चय से पंजाब और सारे भारत का वातावरण इतना दूषित हो चुका है कि इस देश की जनता जिसमें देशभक्त नामधारी, रामदासी सिक्ख, राधास्वामी, सनातन धर्मी आर्यसमाजी, जैनी और हरिजन भाई आदि हैं, यह सोचने को विवश हो गये हैं कि अगर हमारी सरकार अकालियों के दबाव के सामने झुक गई तो उनकी धांधली और दुर् उत्साह और भी बढ़ जायेगा हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। केन्द्रीय सरकार यद्यपि उनकी असंवैधानिक और साम्प्रदायिक मांगों को सर्वथा अनुचित समझती है तथापि समय समय पर गत वर्षों में उनके दबाव के कारण झुकती आई है। जिसके परिणाम स्वरूप पंजाब के बहुसंख्यक लोगों से विशेषतया कांगड़ा व हरियाना के भाइयों के साथ विकास सम्बन्धी कार्यों में प्राय अन्याय होता रहा है। ऐसी शोचनीय अवस्था में पंजाब की एकता प्रिय जनता की प्रतिनिधि पंजाब संयुक्त समिति ने साहसपूर्वक उनके साम्प्रदायिक आन्दोलन से टक्कर लेने का दृढ़ निश्चय किया है। मेरा अन्तःकरण मुझे पुनः पुनः यह प्रेरणा दे रहा है कि इस ओर अन्याय के निवारण और देश में भ्रातृ भाव उत्पन्न करने के लिए समिति की आज्ञानुसार सन्त जी के विरोध में व्रत का अनुष्ठान करते हुए किसी मकान के अन्दर छिपकर नहीं अपितु भरी जनता के समक्ष अपने शरीर को अग्नि में भस्मसात् करते हुए पवित्र कर्त्तव्य का पालन करूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे व अन्य एकता प्रिय भाइयों के बलिदान से इस ओर साम्प्रदायिकता की अग्नि शान्त हो जायेगी। इस ऋषियों और गुरुओं के देश, वीर भूमि पंजाब के लोग पारस्परिक प्रेम से फलते फूलते रहेंगे और विशाल भारत का सबल अंग बन करके उन्नति करेंगे। एक विशेष बात यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि मेरा यह व्रत जहां अकालियों की ओर साम्प्रदायिक मांगों के विरोध में होगा वहां कांगड़ा और हरियाना के वीर भूमि के लोगों के साथ किये जा रहे अन्याय के विरोध में भी होगा। जिस पावन भूमि में एकता तथा प्रेम का संचार करने के लिये श्री गुरु नानक देव जी तथा गुरु गोबिन्दसिंह जी ने अपना जीवन लगा दिया उस पंजाब की [illegible] के एकताप्रिय भाइयो मिलकर तत्पर हो जाओ और अकालियों और साम्प्रदायिक तत्वों को सदा के लिये [illegible] बना दो।

★

भक्त जी का भ्रम जाल—वेद द्रोह की पराकाष्ठा

(ले०—श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री)

विचार-विमर्श

कलिमल ग्रसे धर्म सब,
लुप्त भये सद् ग्रन्थ।
दम्भिन निज मत कल्पि कर,
प्रकट कीन्ह बहु पन्थ ॥
(गोस्वामी जी)

मकड़ी जाला तनती है मक्खियों को फंसाने के लिये। परन्तु वह स्वयं उसमें नहीं फंसती। इसी प्रकार मत

श्री बिहारीलाल जी शास्त्री

चलाने वाला आप तो मौज मारता है परन्तु चेलों को फंसाकर भ्रमजाल में छोड़ देता है। श्री सत्यभक्त जी ने भी एक मजहब चला दिया है। उसमें कुछ चेले फंसने ही चाहिये फंसे हुए हैं। भक्त जी सब मतों को मान्यता देते हैं, मगर वह वेद के पक्के विरोधी हैं। वेद पढ़ना उनकी समझ में व्यर्थ है। वह लिखते हैं—

"उस समय के लोग आधुनिक विज्ञान की पहली कक्षा में भी तो बैठने योग्य नहीं थे। उन्हें पृथ्वी का आकार उसकी गति आदि की मामूली बातों तक का तो पता न था। तब वेदों में अन्य जानकारी की तो बात ही क्या है, अविकसित युग के ग्राम्य गीतों का ही तो वह संग्रह है।"

अच्छा भक्त जी, अब देखिये कि पृथ्वी के आकार और गति का ज्ञान आदि ऋषियों को था या नहीं। इसके प्रमाण में हम अपनी ओर से कुछ न लिखकर भारत के एक महान् ज्योतिर्विद् की सम्मति उद्धृत करते हैं—

पृथ्वी का गोलत्व निराधारत्व और दिन रात

स वा एष न कदा चनास्तमेति नोदेति तं यदस्तमेतीति मन्यन्तेऽह्न एव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते। रात्रिमेवावस्तात् कुरुतेऽहः परस्तात् अथ यदेनं प्रात करोतीति मन्यते रात्रिरेव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यतेऽहरेवावस्तात् कुरुते रात्रिं परस्तात् स वा एष न कदाचन निम्रोचति) (ऐ० ब्रा० १४६)

वह सूर्य न तो कभी अस्त होता है न उगता है। वह जो अस्त होता है वह सचमुच दिन के अन्त में जाकर अपने को उलटा घुमाता है। इधर रात करता है उधर दिन। इसी प्रकार वह जो सबेरे उगता है वह वस्तुत रात्रि का अन्त करके अपने को उलटा घुमाता है। इधर दिन करता है उधर रात्रि। (वस्तुत.) वह (सूर्य) कभी भी अस्त नहीं होता। उपर्युक्त ब्राह्मण वाक्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि पृथ्वी गोल है, अचल है, और आकाश में निराधार स्थित है। इन बातों का ज्ञान था अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण (९।१०) में भी इस अर्थ के बहुत से ऐसे ही वाक्य हैं।

मालूम होता है कि ऋग्वेद संहिता काल में भी यह बात ज्ञात थी कि पृथ्वी का आकार गोल है और वह निराधार है। निम्नलिखित ऋचायें देखिये—

'चक्राणास परीणाह पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुम्भमाना। न हिन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्र परिस्पशो अदधात् सूर्येण। ऋग्वेद म० १।३३।८८

सुवर्णमय अलकारों से सुशोभित वृत्र के दूत पृथिवी की परिधि के चारों ओर चक्कर लगाते हुए तथा आवेश से दौड़ते हुए भी इन्द्र को जीतने में समर्थ नहीं हुए। (फिर उसने उन) दूतों को सूर्य (प्रकाश) से आच्छादित किया।

पृथ्वी यदि सम धरातल होती तो सूर्य के उगते ही उसके किरण सम्पूर्ण पृथ्वी पर कम से कम उसके आध भाग पर एक ही साथ पड़ते परन्तु वे इस प्रकार न पड़कर क्रमशः पड़ते हैं ऐसे निर्देश अनेकों स्थलों में हैं। निम्नलिखित ऋचा देखिये—

'आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे प्रबाहू अस्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत् ॥

ऋ० म० ४।५३।३

देदीप्यमान (सविता ने) अन्तरिक्ष के द्युलोक के (और) पृथ्वी पर के प्रदेश (तेज से) भर डाले हैं—अपनी कान्ति से जगत को सुलाते और जागृत करते हुए सविता ने उदित होकर अपनी बाहें फैला दी हैं—

'सूर्य सुलाते और जागृत करते हुए उगता है।" इसका अर्थ यह है कि वह जैसे-जैसे आकाश में ऊपर चढ़ता जाता है वैसे वैसे जगत् के कुछ भागों में रात्रि होने लगती है और कुछ भागों में दिन इससे पृथ्वी का गोलत्व व्यक्त होता है।"

यह उद्धरण है 'भारतीय ज्योतिष' ग्रन्थ का जिसके लेखक हैं स्वर्गीय श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित। मूल पुस्तक मराठी में लिखी गई थी जिसका अनुवाद उत्तर प्रदेश की सरकार ने हिन्दी में कराया है।

'चक्राणास ऋचा जो ऊपर दी गई है उस पर 'वेदार्थ पत्रकार श्री शंकर पाण्डुरंग पंडित इस ऋचा की व्याख्या (वेदार्थ पत्र प्र० १ पृ० ३८० में लिखते हैं—

इस ऋचा के 'परीणाहं चक्राणास' शब्दों से स्पष्ट विदित होता है कि इस सूक्त की रचना के समय हमारे आर्य पूर्वजों को यह ज्ञान था कि पृथ्वी की आकृति सपाट नहीं बल्कि गोल है।'

उपर्युक्त नोट भी इसी प्रसंग में है। इस पुस्तक का यह पूरा अध्याय पठनीय है।

ऋग्वेद में है—

'दाधर्थ पृथिवी मभितो मयूखैः"

सूर्य ने अपनी रश्मियों अर्थात आकर्षक किरणों से पृथिवी को चारों ओर से धारण किया हुआ है। श्री प० सत्यव्रत सामश्रमी जी ने 'ऐ रेयालोचन' में अनेक प्रमाण देकर बताया है कि ज्योतिष का बड़ा-बड़ा ज्ञान ऋषियों को था। अथर्ववेद में २८ नक्षत्रों के नाम हैं। ग्रहों का विज्ञान है। आयुर्वेद के सिद्धान्त हैं। विमान शास्त्र बताता है कि ऋषियों को विमान निर्माण आता था। परन्तु यह सब बड़ा-बड़ा विज्ञान निर्माण रावण के यहाँ विद्यमान था। ऋषियों ने इसकी उपेक्षा करी। यह भौतिक उन्नति अनेक हानियों से भरी हुई थी। अत ऋषियों ने इसे छोड़ दिया राक्षसों ने अपनाया। टाइप राइटर से सुलेख कला का सर्वनाश हो गया है। टेप रिकार्ड स्मरण शक्ति का ह्रास करता है। मशीनों से वैयक्तिक हस्तकला ध्वस्त हो जाती है। अत ऋषियों ने इसे नहीं बढ़ाया। उस समय के लोग आधुनिक विज्ञान की पहली कक्षा में भी बैठने योग्य नहीं थे। भक्त जी का यह लिखना उन्मत्त प्रलाप ही है। वेदों का नासदीय सूक्त आदि इस बात के प्रमाण हैं कि उनका चिन्तन कितना बढ़ा हुआ था।

ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेद धनुर्वेद यह सब वेदांग हैं। वेदों के अंग हैं। कोई वस्तु नहीं बनाता यह उनकी बनाने की योग्यता के अभाव को सिद्ध नहीं करता जबकि उनके ग्रन्थ दूसरे विषयों में उनकी प्रखर बुद्धि को प्रमाणित कर रहे हैं। हमने वेद मंत्र देकर अपने लेख में सिद्ध किया था कि वेदपाठ की कितनी आवश्यकता है मानवता की रक्षा के लिये उस पर भगत जी मौन साध गये। मुसलमानों के विषय में भगत जी ने अद्भुत बात लिख मारी है—

'मुसलमान लोग कुरान मानते हैं परन्तु उसे जानते नहीं हैं। वाह भगत जी, आप अरबी का फूटा अक्षर नहीं जानते परन्तु कुरान जानने का दावा करते हैं और मुसलमान जो वर्षों अरबी पढ़ते कुरान और हदीसों का अध्ययन करते, कुरान के शाने नजूल को समझते हैं वे कुरान को नहीं समझते। आपको उर्दू तक तो आती नहीं 'मुखालफ़त' की जगह 'खिलाफ़त' लिख रहे हैं जिसका अर्थ है—'खलीफत का शासन' आपकी इस उन्मादोक्ति पर मुसलमान उलमा (विद्वान) हंसकर ही रह जायेंगे। लो पढ़ो कुरान शरीफ में—

'या अय्युहल्लजीना आमनू ला तत्तखिजू आबा अकुम व इख्वानकुम औलिया अ इनिस्तहब्बुल् कुफ़्रा अलल् ईमानि व मय्यतवल्लहुम्मिनकुम फ़उलाइका हुमुज़्ज़ालिमून"

—सूर तौबा ७

अर्थ—ऐ मुसलमानों ! अपने पिता और भ्राताओं को अपना मित्र (या सहायक) स्वीकार न करो। यदि वे कुफ्र को इस्लाम से प्रिय समझें और तुममें से जिसने उनसे मित्रता की फिर वही लोग पापी हैं।"

कहो भगत जी, इस आयत के होते हुए मुसलमान आपको अपना गुरु बनावेगा ? अगर बनावेगा तो इस आयत के विरुद्ध रहेगा। और कलामे खुदा से एक शब्द को भी हटाना या उससे

(शेष पृष्ठ १० पर)

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन—

महात्मा ईसा के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्ति

(ले०—श्री बालगोविन्द सहाय, रांची)

प्रश्न है कि क्या महात्मा ईसा सूली पर मर कर जीवित हो उठ थे और बादलों पर चढ़ स्वर्ग चले गये ?

सृष्टि क्रम के विरुद्ध इन बातों का उत्तर और रहस्य उद्घाटन जेरुसलम के एक ईसार (Esseer) की गोपनीय चिट्ठी करती है।

महात्मा ईसा के समय में जेरुसलम और इसके आस-पास के प्रदेशों में ईसार लोगों की एक गुप्त सस्था थी। इस संस्था के मेम्बर विद्वान्, परोपकारी, कार्यकुशल, दृढ़प्रतिज्ञ और सत्यनिष्ठ थे, अपने आप को और सस्था के कार्यक्रम को जनता से छिपाते, ईसार सेवा व्रत धारी थे। अपने व्यवहार, रहन-सहन, बात-चीत, चिट्ठी-पत्री, लेख आदि में कठोर सत्य का पालन करते थे। उनमें कितने ही चिकित्साशास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। चाहे वे जहां भी हों आपस में भाईचारे और सत्य का व्यवहार करते थे। शासन और राजनीति से अलग रहते थे। अनुशासनप्रिय थे और प्रचलित कानूनों को मानते थे।

महात्मा ईसा भी इस ईसार संघ के सदस्य थे। वे शक्ति और गुणों से सम्पन्न थे। अनेक विद्याओं के ज्ञाता थे। परोपकारी थे, किसी का अनिष्ट नहीं चाहते थे। उनकी शिक्षा और उपदेश कल्याणकारी होते थे। उनकी शिष्य मण्डली उनके उपदेशों का प्रचार करती थी। ईसा की आकृति सुन्दर और आकर्षक थी। आंखों में तेज था।

अन्याय और स्वार्थ के वशीभूत हो राज्यपाल पोनटियस पाइलेट ने पुजारी केफ़ाफ़स आदि के कहने पर बादशाह टिबेरियस सीजर के राज्य-काल के ईसा को जेरुसलम में सूली पर मृत्यु-दण्ड दिया था। ईसा पर यह आरोप लगाया गया था कि वे षड्यन्त्र करते हैं, लोगों को बहकाते हैं और अपने आप को झूठ ही ईश्वर का पुत्र बताते हैं।

महात्मा ईसा के चमत्कारों की कथा और सूली पर मर कर जी उठने की अद्भुत वार्ता जेरुसलम और इसके इर्द-गिर्द देशों में शनै-शनैः बड़े जोरों से फैल रही थी। किवदन्तियां जब अलिक्जेण्ड्रिया पहुंचीं तो वहां के एक ईसार ने जेरुसलम के एक ईसार बन्धु से जानना चाहा कि असली तथ्य क्या था जेरुसलम का ईसार, सूली के समय स्थल पर मौजूद था। उसने ईसा के जीवन-रक्षा में क्रियात्मक भाग लिया था। सारी गोपनीय बातें भी उसे मालूम थीं। महत्वपूर्ण गुप्त बातें और अपनी आंखो देखी बातें उसने एक गोपनीय पत्र से लिख अलिक्जेण्ड्रिया के ईसार बन्धु के पास भेजी थी। पत्र लैटिन भाषा में था। बहुकाल तक यह पत्र अलिक्जेण्ड्रिया में गुप्त ही रहा। बाद में यह वहां के पुस्तकालय में किसी तरह पहुंच गया। पुस्तकालय के नष्ट होने पर यह अबिसिनिया व्यापार कम्पनी के एक फ्रांस निवासी हिस्सेदार के हाथ लगा। फ्रांस से यह पत्र जर्मनी पहुंचा जहां इसके स्वत्वाधिकारी ने इसका रूपान्तर अंग्रेजी में किया। उस समय तक काल के प्रभाव से असली पत्र कई स्थलों पर बरबाद हो चुका था। अंग्रेजी रूपान्तर पहले-पहल अमेरिका से सन् १८७३ में पुस्तकाकार मुद्रित हो प्रकाशित हुआ। इस प्रकाशन से ईसाइयों में तहलका मच गया। पुस्तक ईसाईयत के मौलिक सिद्धान्तों पर कुठाराघात करता था। एक ईसाई के लिये लाजमी है कि पूर्णरूपेण विश्वास करे कि ईसा सूली पर मर जाने के बाद अपने भौतिक शरीर में ही जीवित हो उठे थे। खोज-खोज कर पुस्तक का प्रत्येक प्रति जहां भी मिली, उसे नष्ट किया जाने लगा। संयोग से एक प्रति एक फ्रीमेसोन (Freemason) के पास बच गयी, उनके मृत्यु के बाद उनकी लड़की ने उस प्रति को टी० के० को दिया, टी० के० ने इस पुस्तक का पुनः प्रकाशन किया। इस बार भी ईसाइयों ने पुरानी बातें दुहराईं। फिर भी एक प्रति बच ही गयी। घूमते-घामते यह प्रति भारतवर्ष आयी और किसी प्रकार से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली के पास पहुंच गयी। सभा ने लोक हितार्थ, ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध बातों के निराकरण के लिए और सत्य की रक्षा के लिए, इस पुस्तक को सन् १९२५ में "सूली" 'आंखों देखा का बयान' के नाम से मुद्रित कर प्रकाशित किया। इस पुस्तक की दूसरी आवृत्ति हो चुकी है।

सर्वसाधारण को यह पुस्तक सभा से प्राप्य है। जेरुसलम से भेजे पत्र के असली होने का तथा अन्य स्वाभाविक शंकाओं का समाधान पुस्तक के अध्ययन से हो जाता है। यह लेख उक्त पुस्तक के आधार पर उक्त पत्र का सारांश है। पत्रोत्तरदाता ने अपने बन्धु के पास गोपनीय पत्र में लिखा 'कि ईसा के बारे में जो किवदन्तियां आपके यहां अलेक्जेंडरिया में पहुंची हैं उन्हें आप समझ लें कि वे तीव्र बवंडर की नाईं, शुद्ध वायु अर्थात् सच्ची बातों को दूर धकेल, पृथ्वी के अनर्गल तत्वों अर्थात् सुनी-सुनाई मनगढ़न्त बात को अपने साथ लेकर दौड़ती हैं। साधारण जनता, भावना और अन्धविश्वास से ही काम लेती है। ईसा के विषय में भी यही बात है। कुछ ही लोगों को सच्ची बातें मालूम हैं।

सूली का आंखों देखा वर्णन

मैं ने जो कुछ निज आंखों से देखा है और जिन बातों को मुझे पूरी जानकारी है, उन्हीं को मैं आपके पास लिख रहा हूं।

राज्यपाल पाइलेट ने ईसा को सूली पर मृत्यु दण्ड दिया था। सूली पर चढ़ाते समय ईसा के कपड़े उतार लिए गए थे। उनके दोनों बाहुओं और टांगों को सूली के साथ मजबूती से बांध दिया गया था। इस कारण लहू का दौरा करीब-करीब रुक गया था और ईसा को श्वास, प्रश्वास में कठिनाई होती थी। दोनों हाथों में लोहे के मोटे कील ठोंक दिये गये थे। पैरों में कोई कील न ठोकी गयी थी। ईसा की सूली साधारण सूलियों से कुछ भिन्न थी। ईसा की सूली में गरदन और मस्तक के अवलम्ब के लिए कोई सहारा न था। दो चोरों के सूली के बीच उनकी सूली थी।

कड़ी धूप थ। सूली स्थल पर बहुत बड़ा जन-समुदाय एकत्र था, लोग भी थे और ईसा की माता भी थीं, मैं भी था। पुजारी केफ़ाफ़स और कुछ दूसरे लोग ईसा का भद्दा मखौल उड़ा रहे थे। ईसा आकाश की ओर दृष्टि कर, सारे कष्टों को शान्ति के साथ सह रहे थे। घोर वेदना में स्तुति, कीर्तन (Pslam) प्रभु हमें क्यों बिसार दिया', उच्चारण करते थे। और ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि वह उन्हें दारुण कष्ट से मुक्त करे। सन्ध्या हो रही थी ऐसे समय में एक बड़े जोरों का भूकम्प हुआ। जमीन और पहाड़ जोरों से डोलने लगे। लोग बड़े भयातुर हो गये थे और उनकी धारणा हो रही थी कि एक नेक निर्दोष व्यक्ति पर जुल्म करने का ही यह नतीजा था। इसी समय ईसा का मस्तक एक मृत व्यक्ति की नाईं उनकी छाती पर झुक गया और ऐसा लगा कि उन्होंने अन्तिम श्वास छोड़ा। सरकारी पहरेदार भी भूकम्प के कारण सहमें हुए थे। उनके विचार में यह आने लगा था कि ईसा देव पुरुष और निर्दोष थे।

हम ईसा को सूली दण्ड से बचा नहीं पाये, किन्तु उनके जीवन को बचाने में हम समर्थ हुये हैं। जोसेफ हमारे ईसार संघ का एक धनीमानी, प्रभावशाली गुप्त मेम्बर है। जनता और सरकार में उनका बड़ा मान और प्रभाव है। लोगों की दृष्टि में वे निर्दोष हैं। निकोडेमस उनका घनिष्ठ मित्र है। वह भी ईसा संघ का वरिष्ठ मेम्बर है और प्राची शास्त्र और चिकित्सा शास्त्र का अच्छा ज्ञाता है। वे दोनों ईसा के सूली स्थल पर मौजूद थे। भूकम्प के बाद जब बहुत लोग सूली स्थल से हट गए तब वे दोनों सूली के पास गये। शरीर परीक्षण के बाद निकोडेमस ने जोसेफ को बताया कि ईसा मरे नहीं हैं, शक्ति के ह्रास होने से वे मृत समान मालूम पड़ते हैं। यदि हमें उनका शरीर बिना किसी छेड़छाड़ के शीघ्र मिल जावें तो मैं अपने ज्ञान के बल पर दावे के साथ कहता हूं कि उनके जीवन को बचाना सम्भव है।

इतनी बातें होने पर, वे दोनों शरीर प्राप्ति के लिए पाइलेट के पास चल पड़े मैं वहीं ठहरा रहा, मुझे घबराहट हो रही थी कि कहीं पहरेदार लोग ईसा के शरीर को असावधानी से सूली से उतार उनकी हड्डियों को तोड़ने न लग जावें क्योंकि दूसरा दिन विश्राम (Sabbath) दिवस था और किसी शरीर को रात भर सूली पर छोड़ा नहीं जाता था। ऐसे मौके पर जल्द दफनाने के विचार से पहरेदार प्रायः हड्डियों को तोड़ शरीर को प्राणहीन करते थे। इस कारण पहरेदारों के हवलदार को मैंने बातों में बझाये रखा। उसके हृदय में भी ईसा के लिए मान होने लगा था और भूकम्प के कारण घबड़ाया हुआ भी था। मैंने उसे बताया कि नगर का एक धन्य मान्य व्यक्ति पाइलेट के पास इस असाधारण पुरुष के शव को अपने निजी कबरगाह में उचित सम्मान के साथ दफनाने की अनुमति के लिए गया हुआ है। हवलदार नरम पड़ गया था। इतने ही में पाइलेट का भेजा एक दूत उससे आकर बोला कि राज्यपाल ईसा की मृत्यु हो जाने का हाल जानने के लिये उसे बुला रहे हैं। पाइलेट को भी ईसा के प्रति अपने कृत्य के लिए ग्लानि हो रही थी।

हवलदार को ईसा की मृत्यु में शंका न थी, तो भी पुष्टि के लिए उसके एक सिपाही ने ईसा के चूतड़ में बरछी से आघात किया। शरीर में कोई हरकत न हुई। वह मृत्यु रिपोर्ट देने चल पड़ा। जोसेफ के आवेदन पर पाइलेट ने बिना किसी शर्त के ईसा के शरीर को उनके कबरगाह में दफनाने की, अनुमति

(शेष पृष्ठ १० पर)

प्रचार समस्या—

आर्यसमाज व मारवाड़ी समाज

(ले०—श्री बंशीलाल जी मोदानी, कोषाध्यक्ष आर्यसमाज शोलापुर)

आर्यसमाज ने वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिये जो कुछ किया है व कर रहा है वह किसी से छिपा हुआ नहीं। आज राम कृष्ण का कोई नाम लेवा व पानी देवा न होता यदि महर्षि दयानन्द ने इस गौरवशाली संगठन का निर्माण न किया होता। आर्यसमाज के सब प्रयत्नों के होते हुये भी कई बार ऐसा अनुभव होता है कि हमारी जाति का भविष्य अभी उज्ज्वल नहीं कहा जा सकता। हमारे विनाश की शक्तियां दिन रात हमारे संहार के लिये जुटी रहती हैं। ऐसी सब शक्तियां साधन सम्पन्न हैं। हमारी जाति के पतन का कारण हम स्वयं भी हैं। हमारी रूढ़ियां, कुरीतियां, पाखण्ड व अन्ध विश्वास हमारे विकास में ही बाधक नहीं अपितु हमारे घातक सिद्ध हो रहे हैं। आर्यसमाज अकेला अन्दर की बुराई व बाहर के आक्रमणों से जूझ रहा है। प्राचीन संस्कृति का नाम लेने वाले इस देश में अनेक संगठन हैं परन्तु इस जाति के बचाने के लिये शेष संगठन क्या कर रहे हैं? आर्यसमाज इस जाति के लिये राम कृष्ण की सन्तान की रक्षा के लिये जो कार्य कर रहा है उसका ज्वलन्त प्रमाण यह है कि देश में जहां जहां आर्य समाज है या जहां कहीं भी कोई आर्यसमाजी पहुंच जाता है वहां इन लोगों की दाल क्यों नहीं गलती? एक साधारण आर्यसमाजी भी अकेला होने पर भी पादरियों व मौलवियों के मद तोड़ने का साहस कैसे कर लेता है? केरल को ही लीजिये वहां ईसाइयों की ३५० पत्र-पत्रिकायें निकलती हैं। न जाने पादरियों की वहां कितनी बड़ी सेना है फिर भी गत दो वर्षों से शंकराचार्य की इस भूमि में देव दयानन्द के एक ही सैनिक (वह भी अनुभवहीन युवक श्री पं० नरेन्द्र भूषण बी० ए० ने दो सहस्र भाइयों को पुनः वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उनको शिखा सूत्रधारी बनाकर प्यारे राम व योगेश्वर कृष्ण की सेवा में लाकर खड़ा कर दिया है।

क्या केरल में, मद्रास में, आसाम उड़ीसा में हिन्दू विद्वान् नहीं? बहुत हैं फिर वे क्यों ईसाइयत की बाढ़ को नहीं रोक पा रहे। महाराष्ट्र आंध्र व उत्तर-प्रदेश में अब भी मुसलमान अपनी संख्या बढ़ाने के लिये हिन्दुओं को सब उपायों से मुसलमान बनाने के लिये यत्नशील हैं परन्तु हिन्दू पंडितों से कुछ नहीं बन पा रहा है। इसका कारण यह है कि ये लोग वेद का नाम ही लेते हैं। वैदिक पवित्र धर्म का इनको ज्ञान ही नहीं। यदि ज्ञान है तो स्वार्थवश ये लोग वेद का प्रचार प्रसार नहीं करते। ये लोग रूढ़ियों को ही धर्म समझे हुये हैं। ये लोग आर्यसमाज की महत्ता को समझते हुये भी लोगों को आर्यसमाज के निकट नहीं आने देना चाहते। इनकी यह नीति राष्ट्र के लिये अहितकर है, जाति घाती है और यह नीति रामकृष्ण के साथ द्रोह है।

क्या यह दुःख की बात नहीं कि शिवा जी महाराज के प्रदेश से, राम व कृष्ण के प्रदेश से हिन्दू देवियों का आज भी अपहरण हो? जब देवियों का अपहरण होता है तब ये सब लोग आर्यसमाज के पास आते हैं क्योंकि इनका अपना हृदय अनुभव करता है कि बहिनों को बचाने वाला रामदूत दयानन्द का आर्यसमाज ही है।

जाति के शुभ चिन्तकों को सोचना चाहिये कि ऋषियों की अनादि प्रभु प्रदत्त संस्कृति, प्रभु का दिया पावन वेद ज्ञान कैसे सुरक्षित रखे जा सकते हैं? इनसे संसार का उपकार तो तभी होगा जब जीवित रहेंगे यदि हम ही मिट गये तो विश्व को वेद-ज्योति कौन देगा।

रह रह के एक ही आशा किरण दीखती है और वह है मारवाड़ी समाज। मेरा जन्म भी मारवाड़ी समाज में हुआ है। अपने मारवाड़ी समाज के सब गुण दोष मैं समझता हूं। मारवाड़ी भाइयों की धमनियों में राजस्थान का रक्त है पर न जाने आर्य गौरव महाराणा प्रताप सरीखे छोटे बड़े असंख्य वीरों का उबलता रक्त आज मारवाड़ियों की रगों में कैसे जम गया है? देश जाति की वर्तमान अवस्था देख कर क्यों राजस्थान की वीर भूमि के इन साधन सम्पन्न लोगों का रक्त नहीं खौलता?

मैं जब सोचता हूं तो एक ही बात राष्ट्र कल्याण के लिये सूझती है। मारवाड़ी समाज के लोग यदि आर्यसमाज को समझने का यत्न करें तो देश जाति के दिन फिरते देर नहीं लगेगी। आर्य समाजी के सीने में देश जाति के प्रेम की एक धधकती ज्वाला है। आर्यों के हृदय में राम कृष्ण की सन्तान के लिये जो पीड़ा है वह और किसके अन्दर है?

'सरिता' जैसी कितनी पत्रिकायें हैं जो हमारे धर्म व संस्कृति पर निर्मम प्रहार कर रही हैं। कौन इनका उत्तर देता है? केवल आर्यसमाज! आर्य समाज के सिवाय और किसी में टक्कर लेने की क्षमता भी कहां है? जब सरिता ने महाराज राम पर वार किया, माता सीता पर कीचड़ उछाला तो आर्यसमाज का बूढ़ा केसरी पं० बुद्धदेव आगे निकला। अभियोग चला, सब कुछ हुआ परन्तु घबराना आर्यों ने नहीं सीखा। अब आर्यसमाज के एक साधु वेद मुनि जी परिव्राजक ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम व श्रीकृष्ण जी की संस्कृति पर किये गये प्रत्येक प्रहार का प्रतिकार करने के लिये 'पुण्य लोक' मासिक का प्रकाशन आरम्भ किया है। आर्यसमाज को नीति की रक्षा के लिये अनेक मोर्चों पर युद्ध करना पड़ता है पर आर्यसमाज के साधन सीमित हैं।

आर्यसमाज को साधन चाहिये। मारवाड़ी समाज साधन सम्पन्न है। मारवाड़ी भाई देश के सब भागों में फैले हुये हैं। यदि मारवाड़ी भाई आर्य समाज को समझने का थोड़ा सा भी प्रयत्न करें तो इनका हृदय साक्षी देगा कि जाति के जीवन की गारंटी एकमात्र आर्यसमाज ही है। मारवाड़ियों की दानशीलता देश भर में प्रसिद्ध है परन्तु मारवाड़ियों द्वारा दान की जो दुर्गति हो रही है उसको सभी जानते हैं। जैसे दान की दुर्गति हो रही है वैसे ही हमारी भी दुर्गति हो रही है। जो भी मांगने आता है, मारवाड़ी उद्देश्य को, पात्र कुपात्र की जांच किये बिना दान दे देते हैं। यह सर्वथा अबुद्धिमत्तापूर्ण है।

मारवाड़ी समाज को चाहिये कि केवल वेद रक्षा, गोरक्षा, राष्ट्र रक्षा, मातृभक्ति की रक्षा, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्र भाषा प्रसार व शुद्धि आदि पुनीत कार्यों के लिये दान दिया करें। कितने ही अनाथ बच्चे हैं जिनका लालन-पालन करके पूना आदि स्थानों पर ईसाई लोग उन को पादरी बना कर हमारे लिये तैयार कर रहे हैं। दक्षिण भारत में ऐसी २०-२५ संस्थाओं का निर्माण होना चाहिये जहां असहाय बहिनों व ऐसे बच्चों के पोषण व शिक्षा आदि का प्रबन्ध हो। मारवाड़ी लोग सुगमता से यह काम कर सकते हैं। यह एक निर्विवाद सत्य है कि ऐसी संस्थायें चलाने का ढंग केवल आर्यसमाज ही जानता है। आर्यसमाज के वातावरण में पाला पोषा गया बालक कभी विधर्मी नहीं हो सकता। क्या किसी ने आज तक किसी आर्यसमाजी को ईसाई, मुसलमान बनते देखा है?

कुछ स्वार्थी लोगों ने तो पेट पूजा के लिये आज भी यही भ्रम फैला रखा है कि आर्यसमाजी राम को नहीं मानते, आर्यसमाजी कृष्ण को नहीं मानते। सम्भवतया वह समझते हैं कि १०० बार झूठ बोलने से झूठ सत्य बन जाता है। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने तो यहां तक लिखा है कि श्रीकृष्ण महाराज ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई पाप नहीं किया। जो आर्यसमाजी राम पर किये गये प्रत्येक वार का मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए २४ घण्टे तत्पर रहते हैं उनके सम्बन्ध में ऐसी लचर बात कहना जाति का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। ऋषि दयानन्द जी आर्य पूर्वजों के इतने अनन्य भक्त थे कि उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश उदयपुर में लिखा परन्तु इस ग्रंथ की भूमिका में स्थान का नाम उदयपुर न लिखकर राणा जी का उदयपुर लिखा है। इसी प्रकार छत्रपति शिवा जी आदि समस्त राष्ट्रवीरों पर वह असीम गौरव करते थे। ऐसे महान् ऋषि के सन्देश को न समझ कर हम अपने कल्याण के मार्ग में स्वयं बाधक बन कर राष्ट्रीय हितों की हत्या कर रहे हैं।

आज भी मारवाड़ियों में बाल-विवाह की कुप्रथा बड़ी दुखदायी है। राहु व केतु की कहानियां व सूर्यग्रहण की वास्तविकता न समझना बड़ा विनाशक अज्ञान है। वर्षा ऋतु में विवाह

(पृष्ठ ८ का शेष)

महात्मा ईसा के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांति

रहे थी। जोसेफ और निकोडेमस अनुमति प्राप्त कर शीघ्रता से सूली स्थल पर आये। बरछी के जख्म से स्वभाविक लहू बहते देख, निकोडेमस को ईसा के जीवित रहने में और भी पक्का निश्चय हुआ। सावधानी से बन्धन खोल सतर्कता से ईसा का शरीर सूली से उतारा गया और जमीन पर लिटा दिया गया। लोगों को यह बताकर कि कुछ समय तक शव को सड़ान से बचाना है, निकोडेमस ने प्राणदायिनी औषधियां ईसा के शरीर और जख्म में लगायीं। इसके बाद शरीर को जोसेफ के कबरगाह में पहुंचाया गया। कबरगाह पहाड़ी स्थल में था। पहाड़ के एक गुफा में गुणभरी रसायनिक पत्तों को बिछा ईसा के शरीर को उस पर लिटा दिया गया। एक दीपक जला गुफा के मुह को एक चट्टान से बन्द कर दिया गया। इस तरह दफन का काम पूरा किया गया।

काम की सारी बातें गुप्त रखी गई थीं। ईसार संघ का एक सदस्य गुप्त रूप से गुफा का पहरा कर रहा था। रात्रि में फिर एक भूकम्प हुआ और जोर होते होते एक दूसरा भूकम्प भी हुआ। अब तक ईसा के कथित मृत्यु से ३६ घण्टे बीत चुके थे। इसी समय गुफा से कुछ आवाज आती उस ईसार बन्धु ने सुनी। गुफा के मुह से चट्टान को हटाकर वह अन्दर गया। और यह देख उसे बड़ी प्रसन्नता हुई कि ईसा का सांस चल रहा था और उनके ओठ हिल रहे थे। उसने ईसा के सिर को अपने गोद में ले लिया। बाद में ईसा की आंखें भी खुली। जोसेफ निकोडेमस आदि कुल २४ ईसार बन्धु गुफा में पहुंचे। ईसा ने आगन्तुकों को पहचाना और पूछा कि वे कैसे हैं। निकोडेमस ने सारा हाल बताया और एक विशेष प्रकार का औषधिपूर्ण रस पीने को उन्हें दी जिससे उनमें स्फूर्ति आई और वे उठ बैठे।

ईसा अभी कमजोर थे, चलने फिरने की उनमें यथेष्ट शक्ति न थी। इस परिस्थिति में उन्हें गुफा में छोड़ना, खतरे से खाली न था। पुजारी के गुप्तचर भी उनके पीछे लगे हुए थे। गुप्त रूप से ईसा को काल्मेरी के पास एक ईसार बन्धु के बगीचे में खोज ले गये और कालान्तर में उप उपचार से ईसा चलने फिरने लायक हो गये।

इधर श्रद्धा और भक्ति से प्रेरित हो अनेक स्त्रियां ईसा की कबर के दर्शन के लिये सुबह वहां पहुंचीं। कबर के द्वार से चट्टान को खुड़का देख उन्हें कुछ आश्चर्य हुआ और वे कबर के पास गईं। वहां वे दो श्वेत वस्त्रधारी ईसार बन्धुओं को देखा। इन्हें यह काम सौंपा गया था कि ईसा के चिकित्सा के सारे उपकरण और चिन्ह गुप्त रूप से गायब कर दें। उन श्वेत वस्त्रधारियों का फरिश्ता समझ स्त्रियां उनको सिजदा करने लग गईं। ईसार बन्धु अपने काम में विघ्न देख उन्हें जल्द से जल्द हटाना चाहते थे अत वे स्त्रियों को सम्बोधन करते हुये बोले ईसा जीवित हो उठे हैं उनका शरीर अब यहां नहीं है। साथ ही यों ही यह भी घोषित कर दिया कि ईसा गेलीली में प्रकट होंगे, परन्तु कोई स्थान विशेष या समय न बताया। स्त्रियां इस सम्वाद को लोगों में फैलाने लगीं। दिनों दिन ईसा के स्वास्थ्य में उन्नति होने लगी। विचार विमर्श के बाद निश्चय हुआ कि गेलीली के कारमेल (माउन्ट कारमेल) की निर्जन घाटी में ईसा अपने को प्रकट करें। ईसा गैलीली के लिये चल पड़े और समुद्र के किनारे पहुंचने पर अपने प्यारे शिष्य पीटर को उसकी झोपड़ी में पाया। पीटर मछली पकड़ने का काम करता था। शिष्य जोन भी वहीं था। ईसा ने इन्हें आदेश दिये कि लोगों के साथ वे उक्त घाटी में आवें। उनके वहां पहुंचने पर ईसा ने एकत्रित लोगों को सदोपदेश दिये अपने प्यारे शिष्यों को आदेश दिये कि उनकी शिक्षाओं को वे लगन के साथ जनता में प्रचार और प्रसार करें। साथ ही उन्होंने कहा कि उनका अन्तिम समय निकट आ गया है।

जनता का रुख देख, सत्ताधारियों को भय हो रहा था कि ईसा के कारण रोमन सत्ता कहीं उलट न जावे। कैफास आदि ईसा की हत्या के लिये षड्यन्त्र रचने लगे। ईसा को भी एकान्त विश्राम की बड़ी आवश्यकता थी। ईसार बन्धुओं से सलाह कर, वे अपने विश्वासी शिष्यों को साथ ले माउन्ट ओलिवरट की चोटी के पास आये। पूर्व निश्चयानुसार ईसार बन्धु पहाड़ के दूसरी ओर ओट में ईसा के लिये इन्तजार कर रहे थे। सूर्य डूब रहा था। घना कुहेसा पहाड़ को घेर रहा था। ऐसे समय में ईसा सदोपदेश दे, अपने दोनों बाहुओं को उठा, मित्रों के लिए प्रार्थना कर, अपने शिष्यों को आशीर्वाद देने लगे। शिष्य मण्डली घुटना टेक माथा झुका श्रद्धा और भक्ति प्रदर्शन कर रही थी ईसा शीघ्रता से घने कुहासे में एकान्त विश्राम के लिये प्रवेश कर गये और ईसाई बन्धुओं से जा मिले। जब तक शिष्य गण अपना माथा उठायें ईसा उनकी दृष्टि से अलोप हो चुके थे। जनता में यह किंवदंति फैल गई कि ईसा बादलों पर चढ़कर स्वर्ग चले गये हैं। यह किंवदन्ती उन्हीं की फैलायी हुई थी, जो ईसा के प्रस्थान के समय मौजूद न थे। इसके फैलने से ईसा के शिष्यों का अभीष्ट सिद्ध होता था अत उनके किसी भी शिष्य ने इस किंवदन्ती का प्रतिवाद न किया। इसके कुछ दिन बाद ही ईसा की स्वभाविक मृत्यु हुई और ईसार बन्धुओं ने उनके शव को मृतक समुद्र (Dead Sea) के पास दफना दिया।

*

विचार-विमर्श

(पृष्ठ ७ का शेष)

इकारी होना काफिर बन जाना है। आप जिस बात को हिन्दुओं की खूबी समझते हैं कि वह किसी ग्रन्थ के पाबन्द नहीं बना ही मुसलमानों को बनाना चाहते हैं तो वे मुसलमान ऐसे मुसलमान नहीं रहेंगे। आपके चेले बनते ही प्रत्येक धर्म वाला अपने धर्म में शिथिल हो जायगा। अत अपने मजहब में रहते हुए सत्यसमाजी बने रहना पूरा धोखा है। वहां उनका साहब ने भी बहाई मत में यही खेल कर रखा है। उनका प्रचार सत्य समाज से भी अधिक है परन्तु यह सब है एक भ्रमजाल ही।

भगत जी मानते हैं कि 'मांस खाना दोष है परन्तु एक दोष के होने पर उनके अन्य गुणों की कदर करनी चाहिएं' परन्तु वह अपने दोष को दोष समझें तब न? क्या ईसाई और मुसलमान मांस भक्षण को दोष कह सकते हैं? क्या हजरत ईसा और पोलूस मांस भक्षण को दोष मानते थे? यदि नहीं तो फिर इनका समन्वय जैनों से कैसे होगा? जैन धर्म के अनुसार कुगुरु और कुदेवता को प्रणाम तक करना पाप है। यथो—

> बहु गुण विज्जानिलओ,
> उस्सुतभासी तहावि मुत्त वी।
> जह वर मणि जुत्तो विहु;
> विग्घ करो विस हरो लोए॥

प्रक० भा० २ षष्ठी पृ० १८

बहुगुण और विद्या की खान बड़ा पंडित विद्वान तो भी यदि सम्यक दर्शनी जैन नहीं है तो उसे त्याग देना चाहिये जैसे सुन्दर मणि से युक्त विषकारी साप को लोक में त्याग देते हैं। सम्यग् दर्शन सम्यग ज्ञान और सम्यक चरित्र का अभिलाषी जैन इस ईसा मूसा की पलटन को नमस्कार नहीं कर सकता और यदि करता है तो मिथ्यात्व में फंस कर जैन नहीं रहेगा।

भगत जी समन्वय अच्छा है परन्तु उन्हीं वस्तुओं का समन्वय हो सकता है जिनमें सात्म्य हो। असात्म्य में समन्वय करना वस्तुओं का विनाश करना है। तिल सरसों मिलाकर पेरे जा सकते हैं परन्तु बालू और सरसों मिलाकर पेरने से एक बूंद तेल नहीं मिलेगा। पोदीने की चटनी में लौंग डाली जा सकती है। कुटकी और धतूरे के बीज नहीं। आपने भगवान राम कृष्ण बुद्ध और महावीर की पंक्ति में मार्क्स को भी ला खड़ा किया उसकी भी प्रार्थनायें रच डालीं। मार्क्स है घोर अनात्मवादी पुण्य पाप में कर्म फल सिद्धान्त विरोधी उससे भगवान कृष्ण और महावीर का समन्वय कैसा? पर दुकानदारी वाले को इससे क्या? मांस भक्षण के दो श्लोक आपने दिये हैं। श्रीमान जी मनु स्मृति सार्वभौम विधान है। यह 'मांस (मास) का राक्षसों के लिए है ऋषियों के लिए नहीं।

(क्रमशः)

★

क्यों नहीं करने चाहिये? इस रहस्य को और मोटी बुद्धि की व्यावहारिक बात को न समझकर भ्रममूलक बच्चों पर विश्वास करना अपने पूर्वजों का उपहास करना है। इसी प्रकार विश्व के रचयिता ईश्वर को सोया हुआ मानना व उसका जगाना ये कैसी मूढ़ कल्पनायें हैं।

महाराज कृष्ण तो गीता में कहते हैं कि जब लोग सोते हैं तो ज्ञानी प्रभु भक्त जागते हैं। प्रश्न यह है कि यदि ईश्वर ही सो जाता है तो उपासक के जागने का क्या लाभ? यह वेद विरुद्ध विचार छोड़कर हम सबको कल्याण मार्ग के पथिक बनना चाहिये। इसके लिये हम सबको आर्यसमाज का अंग बनना चाहिये। विश्व वेद की तिमिर नाशक रश्मियों से आलोकित होगा। प्रभु करे हम सब इस पथ पर चलें।

●

आदर्श विवाह

श्री मोतीलाल रामनारायण शर्मा, सारस्वत, जलगांव, (महाराष्ट्र) की सुकन्या कुमारी प्रमीला उर्फ दुर्गादेवी का आदर्श विवाह श्री प० मोहनलाल जी शर्मा, सारस्वत अछनेरा, जिला आगरा, (उत्तर प्रदेश) के सुपुत्र युवक वीर श्री रामदेव जी शर्मा के साथ मिती फाल्गुन सु०३ बुधवार ता० २३-२-६६ को सादर सम्पन्न हुआ। विवाह में प्राधान्यता आदर्श पालन की हुई।

आदर्श पालन

(१) वर वधू के सम्मति से विवाह होना।

(२) वर वधू दोनों पक्षों के परिवार की प्रसन्नता सतुष्टता से विवाह होना।

(३) दहेज प्रथा क्रय विक्रय आदि प्रलोभनों से वंचित विवाह होना।

(४) परस्पर समानता का भाव होना।

(५) निरर्थक खर्च बाह्य आडम्बर बन्द करके विवाह करना।

विवाह में सभी पक्षों, सम्प्रदायों तथा पक्षों के लोग उपस्थित थे।

अखण्ड पंजाब दिवस

२७-२-६६ को आर्यसमाज राजामंडी आगरा में अखण्ड पंजाब दिवस मनाने के लिये एक सार्वजनिक सभा प्रात काल ९ बजे हुई और उसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुआ—

प्रस्ताव—

यह सभा पंजाबी भाषा की आड़ में स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माण की अकालियों की साम्प्रदायिक मांग का घोर विरोध करती है जो मा० तारासिंह के वक्तव्यों तथा सन्त फतहसिंह के सम्वाददाताओं को दिये गये ताजा वक्तव्य से सपुष्ट हो गया है।

यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि वह किसी भी दबाव अथवा धमकी में आकर इस मांग को स्वीकार न करे क्योंकि स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माण से पाकिस्तान और नागालैण्ड के निर्माण से भी अधिक भयावह उलझनें और स्थितियां पैदा हो जायेंगी जिसकी समस्त उत्तरदायिता भारत सरकार पर होगी।

सैकड़ों आर्य नर नारियों द्वारा अनशन

आर्य युवक संघ की प्रेरणा पर सैकड़ों आर्य नर नारियों ने एक दिन का अनशन करने का निश्चय किया है।

पंजाब के और विभाजन को रोकने के लिए जो स्वामी सत्यानन्द जी महाराज १५ मार्च को दीवान हाल दिल्ली में आमरण अनशन आरम्भ कर रहे हैं उसी दिन शामली आर्यसमाज में भी उनकी सहानुभूति में सामूहिक अनशन किया जायेगा।

—रहतूलाल गुप्ता, अध्यक्ष

सामवेदीय ब्रह्म पारायण महायज्ञ

१ से ५ अप्रैल सन ६६ तक गुरुकुल भोनेर (मैनपुरी) मे होने जा रहा है। जिसके ब्रह्मा, महावैयाकरण श्री प० शंकरदेव जी आचार्य तथा यज्ञाध्यक्ष महायाज्ञिक प० आनन्दभिक्षु जी महाराज देहली एवं यजमान प० रामचन्द्र शर्मा सि० शास्त्री वानप्रस्थी, साठपर्वा (मैनपुरी) उ० प्र० होंगे।

कानपुर के न्यायालय में सनसनी हिन्दू कन्या का अपहरण

श्री देवीदास आर्य के प्रयास से कन्या प्राप्त मुस्लिम युवक बलपूर्वक विवाह करने में सफल न हो सका

कल सन्ध्या ५ बजे अतिरिक्त जिलाधीश (नगर) कानपुर के न्यायालय में उस समय सनसनी फैल गई जब स्थानीय आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने मुहम्मद हनीफ व उसके साथियों से एक १८ वर्षीय हिन्दू कन्या कुमारी राज को छीन लिया। इस लड़की को भगा ले जाने वाले यह लोग भागने में सफल हो गए।

घटना इस प्रकार बताई जाती है कि कुमारी राज अपने पड़ोस की एक लड़की को मालरोड फूलबाग एक लड़की को कालेज पहुंचाने गई थी। जब वह वापस लौट रही थी तो परेड के निकट मोहम्मद हनीफ व उसके कुछ साथी उस को मिल गये उन्होंने चाकू दिखाकर डरा धमकाकर उसे न्यायालय पहुंचाया जहां उससे एक दरख्वास्त पर दस्तखत करा लिए और बिलकुल चुप रहने की धमकी दी। यह दरख्वास्त स्पेशल मैरेज ऐक्ट के अन्तर्गत एक वकील द्वारा दाखिल की गई। किसी प्रकार इसकी सूचना श्री देवीदास आर्य को प्राप्त हो गई। श्री आर्य ने न्यायालय से अत्यन्त गुप्त रूप से लड़की के सरक्षकों का पता लगा लिया और तुरन्त उनसे सम्पर्क स्थापित किया और उनको मोटरकार द्वारा तुरन्त न्यायालय मे पहुंचाया और अपने कुछ साथियों को न्यायालय के बाहर तैनात कर दिया। जैसे उक्त लड़की के माता पिता न्यायालय पहुंचे वैसे मुहम्मद हनीफ ने लड़की को दूसरे दरवाजे से बाहर निकाल कर भागने का प्रयत्न किया परन्तु श्री आर्य उनके साथियों ने लड़की को उनके हाथों से छीन लिया। इस छीना झपटी में श्री आर्य को मामूली चोट भी लग गई। परन्तु मुहम्मद हनीफ व उसके साथी भागने मे सफल हो गये।

तत्पश्चात अतिरिक्त जिलाधीश ने उक्त लड़की को उसके माता पिता के सुपुर्द कर दिया।

आवश्यक सूचना

आर्यसमाज देहरादून के कर्मठ नेता श्री धर्मसिंह जी एम० काम०, एल-एल०बी० उत्तराखण्ड ग्रेजुएट चुनाव क्षेत्र से एम०एल०सी० का चुनाव लड़ रहे हैं। आपका क्षेत्र है, सहारनपुर, देहरादून, बिजनौर मुरादाबाद नैनीताल अल्मोड़ा पिथौरागढ़ गढ़वाल, समस्त क्षेत्र। आर्यजनों को आपको सफल बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

—प्रकाशवीर शास्त्री, संसद सदस्य

आर्य जनता सावधान रहे

विदित हुआ है कि ओंकारनाथ दुबे नाम का कोई व्यक्ति मध्य प्रदेश आदि के आर्यसमाजों मे घूम रहा है। वह अपने को कई विषयों मे पी० एच० डी० और गुरुकुल कांगड़ी का प्रोफेसर बताता है।

यह व्यक्ति अपने को सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध भी प्रकट करता है।

इस व्यक्ति का सार्वदेशिक सभा के साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। न सभा ने इन्हे समाजों मे घूमने का प्रमाण पत्र ही दिया है। ऐसे व्यक्तियों से आर्यसमाजें और नर नारी सावधान रहें और इन्हें किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन न दें।

—मन्त्री सार्वदेशिक आ०प्र०सभा,
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली—१

शुभ सूचना

श्री प० आशानन्द जी आर्यसमाज के भजनोपदेशक हैं आप सभा से रिटायर हो चुके हैं और अब स्वतन्त्र प्रचार करते हैं। आपका प्रचार मैजिक लैन्टर्न (धार्मिक सिनेमा) द्वारा हृदय पर बहुत ही प्रभावोत्पादक होता है। आप बाजे पर गीत भी बहुत सुन्दर गाते हैं, आर्य जगत को इनकी सेवाओं से अवश्य लाभ उठाना चाहिये। इनसे आर्यसमाज नया बास दिल्ली ६ के पते पर पत्र व्यवहार करना चाहिए।

—आनन्द भिक्षु वानप्रस्थी

भीमसिंह मैमोरियल कबड्डी टूर्नामेन्ट मे गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की महान विजय

विभिन्न चार दलों को पराजित कर गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की कबड्डी दल ने अन्तिम खेल में प्रेम पोलीटैक्निक इन्स्टीच्यूट मथुरा को पराजित कर भीमसिंह स्मृति विजय कलश प्राप्त किया। गुरुकुल मे जब विजयी दल ने प्रवेश किया तो हर्ष सूचक नारों के साथ उसका स्वागत किया गया।

गुरुकुलीय क्रीडा परिषद के प्रधान मन्त्री श्री कृष्णदत्त ने दल का स्वागत करते हुए इस अवसर को विश्वविद्यालय के क्रीडा परिषद के इतिहास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिन कहा।

यह प्रथम ही अवसर है कि जब इस टूर्नामेन्ट मे विश्वविद्यालय ने विजय कलश जीता है।

प्रयाग विश्वविद्यालय के समीप वैदिक छात्रावास

आर्यसमाज कटरा ने १९५० में समाज की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर यह निश्चय किया था कि प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए एक वैदिक छात्रावास बनवाया जाय। तब से अहर्निश एक उपयुक्त भूमि (प्लाट) प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा था। परमपिता परमात्मा की कृपा से अब मन्त्रिमडल ने प्रयाग नगर के बाघम्बरी ग्राम मे भूमि देने का निश्चय कर लिया है। आर्य जगत् की ओर से सरकार को बधाई।

आधुनिक अर्जुन का भारत में आगमन

निरन्तर चार मास तक विदेशों में धनुर्विद्या तथा व्यायाम प्रदर्शनों के द्वारा भारतीय वीरता एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के बाद सीतापुर निवासी आधुनिक अर्जुन प्रोफेसर सुरेन्द्र शुक्ला २२ अप्रैल १९६६ तक अपने निवास स्थान आ जायेंगे और उसके बाद ही भारत के प्रोग्रामों पर जा सकेंगे।

पता लगाने में सहयोग दें

आर्यसमाज रहालकी किशनपुर डा० बहादराबाद जिला सहारनपुर के सदस्य का लडका जिसकी आयु लगभग ३४वर्ष की है, रग गोरा, सिलाई का काम जानता है कद ५ फुट है चिन्ह नाभि बडी है। करीबन कई वर्ष हुए घर से निकल कर चला गया है अगर किसी सज्जन को कहीं पता चले तो मन्त्री आर्यसमाज रहालकी किशनपुर के पते पर सूचित करने की कृपा करें। —मन्त्री

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला बरेली का कार्यालय स्थानान्तरित

सूचित किया जाता है कि आर्य उपप्रतिनिधि सभा बरेली का कार्यालय १ अप्रैल १९६६ तक के लिए आर्यसमाज फरीदपुर जि० बरेली में स्थानान्तरित कर दिया गया है। उपसभा के मन्त्री श्री ओ३मप्रकाश आर्य के अवकाश ग्रहण करने के कारण यह व्यवस्था की गई है। उनके अवकाश की अवधि मे श्री देवेन्द्र कुमार आर्य फरीदपुर मन्त्री पद पर कार्य करगे। उपसभा सम्बन्धी समस्त पत्र व्यवहार आर्यसमाज फरीदपुर के पते पर किया जावें। बरेली जिला की आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे १५ मार्च १९६६ तक अपना प्रतिनिधि चित्र अपना निर्वाचन कर कार्यालय में भेज दें तथा जो समाजें अपने यहा उपसभा का अधिवेशन बुलाना चाहें वह अपना प्रार्थना पत्र अन्तरग सभा को स्वीकृति कराकर उक्त तिथि तक भेज दें।

—रामपाल सिह आर्य प्रधान,
आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला बरेली

अ० भा० आर्य संन्यासी मण्डल का निर्वाचन

शिवरात्रि पर दि० १८ फरवरी को टकारा मे रजिस्टर्ड अ० भा० आर्य सन्यासी मण्डल का निम्न प्रकार निर्वाचन हुआ।

पेट्रन प्रधान—स्वामी व्रतानन्द जी (गुरुकुल चित्तौड), प्रधान-स्वामी रामानन्द शास्त्री एम० पी० (देहली), उपाध्यक्ष—स्वामी रामेश्वरानन्द शास्त्री एम पी (देहली) उपाध्यक्ष—स्वामी विशुद्धानन्द शास्त्री (बम्बई), प्रधान मन्त्री—वेद स्वामी मेधार्थी एम० ए० (टकारा) मन्त्री—स्वामी वेदानन्द सरस्वती (नगानगर), उपमन्त्री-स्वामी सर्वानन्द शास्त्री (हरिद्वार) पुस्तकाध्यक्ष—स्वामी सुखानन्द सरस्वती (जोधापुर), कोषाध्यक्ष—स्वा स्वतन्त्रतानन्द सरस्वती (बासवाडा)

इन पदाधिकारियो के अतिरिक्त ६ आर्य सन्यासी अन्तरग में चुने गये। जोधापुर मे विरजानन्द सन्यास आश्रम स्थापित करने का निश्चय हुआ ताकि सौराष्ट्र मे सुविधा से वेद प्रचार हो सके। मडल का मुख्य कार्यालय राजस्थान मे ही रहेगा।

—स्वामी वेदानन्द सरस्वती मन्त्री
द्वारा आर्यसमाज गगानगर (राजस्थान)

निर्वाचन—

—आर्यसमाज नवाबगज कानपुर।
प्रधान—श्री शिवदत्तलाल जी गुप्त उपप्रधान—श्री शिरोमणि जी, मन्त्री—श्री वेदराज जी दीक्षित, उपमन्त्री—श्री लाजपतराय जी गुप्त, कोषाध्यक्ष—श्री विश्वबन्धु जी गुप्त।

—आर्यसमाज राजामडी आगरा का वार्षिक निर्वाचन दिनांक २७ २ ६६ को हुआ—

प्रधान—श्री श्यामसुन्दर जी, उपप्रधान—म० बाबूराम जी गुप्त श्री चमनलाल जी वेदार्थी मन्त्री—श्री शकरलाल जी शर्मा उपमन्त्री—श्री मथुराप्रसाद जी, श्री देवेन्द्रनाथ जी, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मसिंह जी निरीक्षक—श्री रमेशचन्द्र जी चार सनेही पुस्तकाध्यक्ष—श्री दीन दयाल जी।

अनभ्र वज्रपात

धनाभाव होते हुए कठिन परिश्रम से,
विद्या पढी, शास्त्री हुए, चिन्ता न की क्लेश की।
साहस से, सयम से स्नेह से सराहनीय,
स्वार्थहीन सेवा की सर्वदा स्वदेश की।
शोक ! ताशकन्द मे अनभ्र वज्रपात हुआ,
सहसा गये शास्त्री जी गोद भुवनेश की।
भारत के लोकप्रिय नेता के वियोग में है।
रो रही जनता सभी देश व विदेश की।

—रणञ्जयसिंह एम०पी०, अमेठी

सुझाव और सम्मतियाँ

गर्भपात को कानूनी मान्यता दिलाना अनैतिक

श्री छागला होश से काम लें

कृत्रिम उपायो द्वारा परिवार नियोजन जैसी बेहूदा योजना को असफल होती देख "गर्भपात को वैध घोषित करने" की बात करना सरासर अबुद्धिमत्तापूर्ण है। राष्ट्र को पतन से बचाने का उपाय कानून नहीं बल्कि नैतिकता है और जब देश के कर्णधार ही नैतिकता का इस तरह गला घोटने पर उतारू हो जायें तो राष्ट्र का पतन निश्चित है। अन्न समस्या का हौवा खडा करना अन्न उत्पादन बढाने का मार्ग छोडकर कृत्रिम उपायो से परिवार नियोजन करना ही सरासर गलत है। गर्भपात करना हत्या, पाप, नैतिक पतन और पाप की पराकाष्ठा है और भारत का जनमानस इसे कभी स्वीकार न करेगा।

पाश्चात्य सभ्यता के अनुयायी देश, इस पथ पर चलकर नैतिक पतन के कडुवे फल चख रहे हैं। मैं श्री छागला से निवेदन करूँगा कि वे भारतीय जनता की भावनाओ से न खेलें और इस तरह की बातें न करें वरना उन्हें विवश हो मन्त्री पद छोडना पडेगा।

रहतूलाल गुप्ता अध्यक्ष—आर्यंयुवक सघ, शामली

शिक्षा-जगत्

(पृष्ठ ६ का शेष)

सख्या को ही बढावा देंगी। क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता या शिक्षा में दीक्षित होकर भी हिन्दू अभी भी अत्यन्त सकुचित मनोवृत्ति का है। अपने लडके व लडकियों को अहिन्दुओं से विवाह करने की आज्ञा अभी हिन्दू नहीं दे सकता भले ही ऐसे पाशों मे बधकर युवक युवतिया अपने धर्म या माता पिता को क्यो न त्याग दें। अब पाठक स्वय विचारें कि देश में सह-शिक्षा के प्रचार व प्रसार से हिन्दुओं का ही सर्वनाश होने जा रहा है या नहीं।

कितनी हिन्दू ललनाएं विधर्मियों के घर बसा चुकी हैं। हिन्दुओं को अपने धर्म का ज्ञान ही नहीं है—ऐसे धर्म ज्ञान शून्य माता पिता के घर में बालक व बालिकाओं के लिये धर्मशिक्षा का अभाव, उधर धर्म निरपेक्ष राज्य होने के कारण स्कूल कालिजों में धर्मशिक्षा का अभाव, हिन्दू जाति के अस्तित्व को विनाशकारी सिद्ध हो रहा है। किन्तु ईसाई मुसलमान व सिख शिक्षा सस्थाओं मे व मस्जिदो, गिरजाघरों व गुरुद्वारों में अपने मजहबों की शिक्षा अब भी दी जा रही है। मुसलमानों के छोटे छोटे बालक भी रोजे व नमाज के अभ्यासी हैं। बालकपन से ही बच्चो के हृदय-पटल पर मजहब की नींव जमा दी जाती है। युवा होकर यह विचार और भी परिपक्व हो जाते हैं।

हिन्दुओ ! यदि जीवित रहना है तो रोको इस सह-शिक्षा के प्रभाव को। घरों पर धार्मिक शिक्षा प्राप्ति का प्रबन्ध करो, स्वय भी धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करो, स्त्री व बच्चों को भी धार्मिक विचारो का बनाओ, वरन् सर्वनाश होने में सन्देह व विलम्ब नहीं है।

●

(पृष्ठ ४ का शेष)

किये ही प्रारम्भ की गई है। सभा के इस अधिवेशन को निश्चय करना चाहिये कि आर्यसमाज के सिद्धान्त के विपरीत कोई कार्य न किया जाए।

प्र० क० विजयेन्द्र
प्रति० सभासद आ० स० हापुड़

उत्तर-केस न्यायालय में विचाराधीन है सहशिक्षा के सम्बन्ध में प्रशासक महोदय का ध्यान आकर्षित किया गया है।

गुरुकुल वृन्दावन

(११) गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के व्यय से स्पष्ट है कि भवन आरम्भ का व्यय निकाल कर एक विद्यार्थी पर कम से कम हम १३००) प्रति वर्ष व्यय करते हैं। यह व्यय साधारण विद्यालय से ड्योढ़ा है। यह कम भी न खटके यदि हम वह में कुछ विद्यार्थी ऐसे बना सकें जो आर्य सिद्धांतों के अनुरूप अपना जीवन बना सकें। क्या आधिष्ठाता जी बता सकेंगे कि हम इस ओर कहां तक सफल हो सके? रिपोर्ट मूक है, क्या सभा व प्रतिनिधि इस ओर इस व्यय की सार्थकता पर विचार करेंगी?

प्र० क० धर्मेन्द्र सिंह
प्रति० आ० स० देहरादून

उत्तर-यदि प्रदेश की कुछ मुख्य समाजें योग्य होनहार विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर गुरुकुल में प्रविष्ट करायें तो विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ेगी और उस पर होने वाला व्यय प्रति विद्यार्थी कम हो जायगा और आर्य सिद्धान्तों के अनुरूप उनका जीवन बन सकेगा क्योंकि समाज की तरफ से ऐसे ही विद्यार्थियों का चुनाव किया जाय जिनमें आर्य सिद्धान्तों के प्रचार एवं प्रसार की लगन हो। गुरुकुल एक शिक्षा प्रणाली सम्बंधी आन्दोलन है उसे सफल बनाने में सबका सहयोग वाञ्छनीय है।

उपदेश विभाग

(१२) वार्षिक वृत्तान्त के पृष्ठ ५७ पर कुछ उपदेशकों के नाम में कुछ धनराशि दिखायी गयी है। वह धन उनकी ओर शेष कैसे रहा? और उन उपदेशकों के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गयी? जिन्होंने आर्यसमाजों से रुपया लेकर प्रतिनिधि सभा में जमा नहीं किया?

प्र० क० रोशनलाल
प्रति०आ०स० नामनेर आगरा छावनी

उत्तर—कुछ का पता नहीं चल रहा है कि वह जीवित हैं या नहीं और कुछ की मृत्यु हो गई है, जो शेष हैं उनसे धन प्राप्त करने का यत्न किया जा रहा है।

भूसम्पत्ति विभाग

(१३) आर्यसमाज सुदामज (फर्रुखाबाद) में सभा की ओर से आर्यसमाज मन्दिर बनाना इतिहास उत्तर प्रदेश में है उसका वर्णन इस रिपोर्ट में नहीं आया है? आना चाहिये? क्यों नहीं आया क्या यह सत्य है कि जो मन्दिर (डेरा) है उसे सभा बेच रही है? यह बेचना सभा के लिये कहां तक शोभाजनक है।

क्या सभा उस डेरा को आर्यसमाज भवन के लिए सुरक्षित रक्खेगी?

प्र० क० सच्चिदानन्द आर्य
मन्त्री जिला उपप्रतिनिधि सभा

उत्तर—प्रश्न आने से पूर्व डेरा की भूमि बेचने का निश्चय हो चुका था और बयाना भी आ गया है। अत सभा की अन्तरंग ही निश्चय करेगी। सुदामज में आर्यसमाज भवन निर्माण के लिये सभा पूर्ण प्रयत्न करेगी।

सभा कार्यालय

(१४) आर्यसमाजों में जो निरीक्षक प्रतिनिधि सभा की ओर से भेजे जाते हैं, उनकी नियुक्ति किस आधार पर होती है? हमारे यहां लगभग ५ वर्षों से निरीक्षक २ मिनट समाज में आकर चले जाते हैं, सभासदों के कार्यों का निरीक्षण करना भी उनका कर्तव्य होना चाहिए।

प्र०क० मुन्नीलाल
प्रति० आ० स० सिकन्दराबाद

उत्तर—निरीक्षक की नियुक्ति सभा अपनी निजी जानकारी एवं अन्तरंग सदस्य तथा जिला उपसभा की सिफारिश पर नियुक्ति की जाती है।

(१५) अन्तरंग सदस्यों तथा अन्य आर्यों के भी नाम के आगे जन्म की जाति सूचक शब्द नहीं होने चाहिये। रिपोर्ट के पृष्ठ ७ ८ पर दस नामों के आगे कपूर, तिवारी, अग्रवाल, मधोरिया आदि शब्द छपे हैं। सार्वदेशिक सभा ने जो यह प्रस्ताव स्वीकृत कर रक्खा है। भविष्य में ऐसा न होना चाहिए।

प्र० क० वीरेन्द्र शास्त्री
प्रति० आ० स० रायबरेली

उत्तर—अब इस सम्बन्ध में विशेष ध्यान दिया जा रहा है और जातिसूचक शब्दों का प्रायः बहिष्कार किया जा रहा है।

[१६] वार्षिक वृत्तान्त के पृष्ठ ५ में सभा की समाजों की संख्या में गढ़वाल की समाजों की संख्या १०४ है। समाजों की अधिकसंख्या पर प्रति वर्ष गढ़वाल से अन्तरंग सभा में २ सदस्य लिए जाते थे। अब ऐसा विदित हुआ है कि एक ही सदस्य लिया जायगा। यह अवैधानिक है। ऐसा क्यों हुआ? स्पष्ट किया जाय।

—प्र०क० शान्तिप्रकाश प्रेम
प्रति० आ० स० सांवली आदि बदपुरी गढ़वाल

उत्तर—अन्तरंग सभा दि० २५ ४-६५ में केवल एक प्रतिनिधि लेने का निश्चय किया?

कोष विभाग

[१७] रिपोर्ट पृष्ठ सं० ८५ पर सन १९६४ का आर्य स्त्री समाज सदर मेरठ का २६ रु० ३८ न० पै० दशांश जो भेजा गया था वह अंकित नहीं किया गया है।

—प्र०क० शीलावती गोयल
प्रति० सभासद स्त्री आ०स० सदर मेरठ

उत्तर-सभा के कोष विभाग में धन जमा है।

—चन्द्रदत्त सभा मन्त्री

प्रोग्राम ३१-३-६६ तक

१—श्री रामस्वरूप जी आ० मु०—२३ से २६ साधु आश्रम लवेदी।

२—श्री धर्मराज सिंह जी—२५ से २७ स्त्री स० सम्बोली।

३—श्री गजराजसिंह जी-२४ से २६ अम्बहटा, २८ से ३१ कोडा जहानाबाद (फतेहपुर)।

४—श्री वेदपालसिंह जी—२० से २७ नानपारा।

५—श्री क्षेमचन्द्र जी—२२ से २५ शाहगंज।

६—श्री डा० प्रकाशवती जी—२२ से २५ शाहगंज।

१—श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—२४ से २७ बिन्दकी, २८ से ३१ करोड़ा जहानाबाद।

२—श्री बलवीर शास्त्री—१९ से २१ आर्यकुमार सभा बधाई (बिजनौर) २३ से २५ शाहगंज, २६-२७ नागलपुर।

आमन्त्रित कीजिये—

श्री विश्ववर्धन जी वेदालंकार
" श्यामसुन्दर जी शास्त्री
" रामनारायण जी विद्यार्थी
" केशवदेव शास्त्री
" धर्मदत्त जी आनन्द
" प्रकाशवीर जी
" जयपालसिंह जी
" लक्ष्मणपाल सिंह
" रघुवरदत्त जी

—सच्चिदानन्द शास्त्री
स० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्यसमाज फेराहेड़ी

आर्यसमाज फेराहेड़ी का सालाना चुनाव निम्नलिखित है—

प्रधान—प्रथपालसिंह, मन्त्री—जीवनसिंह उपमन्त्री—परमानन्द, उपप्रधान—हुकुमसिंह, कोषाध्यक्ष—सन्तूराम, पुस्त०—जयराम, ऑडीटर—करनसिंह।

आर्यसमाज छिबरामऊ

जिला उपसभा के विशेष प्रयास करने पर आर्यसमाज छिबरामऊ जिला फर्रुखाबाद का संगठन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा से निर्वाचन के अधिकार प्राप्त करके नियमानुसार वार्षिक निर्वाचन दिनांक १३।२ ६६ ई० को निम्न प्रकार सर्व सम्मति से कराया गया।

प्रधान—श्री पं० शान्तिदेव जी उपप्रधान—श्री पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, मन्त्री—श्री सत्यदेव गुप्त, उपमन्त्री—श्री बाबूराम जी वकील, कोषाध्यक्ष—श्री छोटेलाल जी, आडीटर—श्री रामसेवक जी।

वार्षिकोत्सव की तिथियां सर्वसम्मति से १६, १७, १८ मार्च निश्चय हो गई हैं।

बस्ती जनपद में आर्यसमाज का प्रचार

आर्यसमाज बढ़नी बाजार जिला बस्ती का वार्षिकोत्सव दि० १४ से १६ मार्च को होने जा रहा है इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिये आर्यसमाज के प्रसिद्ध वक्ता पं० बलवीर जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश डा० इन्द्रदेव सिंह जी बिहार श्री मुन्नीप्रसाद जी आर्य सैनिक गोरखपुर डा० अवधबिहारीदास जी पं० शिवनारायण जी वेदपाठी आदि आर्य विद्वान पधार रहे हैं। उत्सव में राष्ट्रभाषा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन आदि महत्वपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। उत्सव में अधिक से अधिक आर्य हिन्दू भाई सम्मिलित होकर लाभ उठाने का कष्ट करें। —शिवप्रसाद जी मन्त्री
आर्यसमाज बढ़नी बाजार

इसकी चन्द बूंदें लेने से
दस्त, पेटदर्द, जी-मिचलाना,
मूजन, फोड़ा-फुन्सी, बातदर्द, सिरदर्द,
में संसार

नैतिकता का प्रचार-प्रसार, व्याख्या एवं व्यवस्था

(श्री डा० हरिशंकर जी शर्म्मा अधिष्ठाता नैतिक उत्थान विभाग आगरा)

आर्यसमाज ने समाज सुधार के लिए जो महान् कार्य किये, वे आज किसी से छिपे नहीं हैं—विश्व विदित हैं। अब देश में भ्रष्टाचार का बड़ा वेग है। हत्याओं, चोरी जारी, रिश्वत स्वार्थान्धता और अपराधों की वृद्धि हो रही है। धर्म निरपेक्ष अपने को कहकर, हमारी शासन सत्ता धर्म से विमुख सी दिखाई देती है।

सत्य अहिंसा एवं त्याग तपस्या धर्म के जिन मौलिक सिद्धान्तों द्वारा देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, आज उसी धर्म्म से असहयोग सा किया जा रहा है। मत सम्प्रदाय या पन्थ निरपेक्ष होना तो उचित है, परन्तु धर्म्म निरपेक्ष बन जाना भयकर भूल है, सरकार की धर्म्म निरपेक्षता देख जनता भी धर्म को अनावश्यक समझने लगी है। और देश में भयकर भ्रष्टाचार बढ़ गया है।

इस सम्बन्ध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के शब्द सुनिए। वे कहते हैं—

"मेरे नजदीक धर्महीन राजनीति कोई चीज नहीं। धर्म के मानी वहमों और मतानुमतिकता का धर्म्म नहीं है। द्वेष करने वाला और लड़ने वाला धर्म नहीं है। बल्कि विश्वव्यापी सहिष्णुता का धर्म। मैं धर्म से भिन्न राजनीति की कल्पना भी नहीं कर सकता। वास्तव में धर्म तो हमारे हर काम में व्यापक होना चाहिए। धर्म्म का अर्थ कट्टर पन्थ नहीं उसका अर्थ है, विश्व की राजनैतिक सुव्यवस्था। बाहर की अपेक्षा भीतरी पवित्रता की ज्यादा जरूरत है। भीतर अगर घुन लगा हो तो उस पर बनाया हुआ सबका शोभहीन राजविधान भी सफेद झूठ सा होगा। हमें आत्म-शुद्धि और आत्म-त्याग भावना बढ़ानी होगी। चरित्र के बिना सारा ज्ञान बुराइयों की जड़ है। नीति सदाचार और धर्म्म एक ही बात है। इसके बिना जीवित बालू पर खड़े किये गये मकान की तरह है।"

विश्ववन्द्य महात्मा गांधी ने अपने उपर्युक्त शब्दों में धर्म की महत्ता और उसके प्रचार पर कितना बल दिया है। महर्षि दयानन्द जी तो बहुत पूर्व यही आदेश उपदेश दे गये हैं। और आर्य-समाज ने इस भव्य भावना का प्रचार भी किया है। महर्षि दयानन्द ने विश्व का एक ही धर्म बताया है और वह है वैदिक धर्म। प्रोफेसर मैक्समूलर ने लिखा है कि "धर्म" के लिये विश्व की किसी भी भाषा में कोई शब्द नहीं है। अंग्रेजी शब्द 'रिलीजन' का अर्थ है—सम्प्रदाय और अरबी शब्द 'मजहब' का अर्थ है—रास्ता यानी 'पन्थ'।

श्री आर्य धर्मार्थसभा कहते हैं—

No society can be upheld in happiness, and honour without the sentiments of Dharam There is only one धर्म (Religion) though there are hundred versions of it

अर्थात् धर्म्म-भावना रहित होकर कोई भी समाज का सुख एवम् प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त कर सकता। धर्म एक है—यद्यपि उसकी शाखाएं सैकड़ों हैं।

उर्दू के शायर अकबर ने भी कहा है—

यही है इबादत यही दीनो ईमा
कि काम आए दुनिया में इन्सा के इन्सा॥

धर्म्म के आधार पर 'स्वराज्य' तो हो गया परन्तु सुराज्य नहीं हुआ। इसके लिए आर्य्यसमाज को प्रयत्न करना चाहिए। अर्थात धर्म के मौलिक सिद्धांत हमारे और सर्वसाधारण जनता के जीवन एवम् व्यवहार में आए। धर्म्म सिद्धान्तों को क्रिया में लाना ही नैतिकता है। नैतिकता को अंग्रेजी भाषा में 'मौरेलिटी" और "अरबी" में 'अखलाक" तथा 'हुस्ने अमल' कहते हैं। सब शब्दों का अर्थ है—धर्म्म सिद्धान्तों को आचार में लाना—'प्रैक्टिसिंग" या "Performing"। 'आचार" शब्द "आ" और चार से बना है। 'आ' अर्थात पूरी तरह से और "चार" माने अनुष्ठान यानी अमल करना। 'आ—'चरण' में चरण का अर्थ भी अमल करना है। हमारे शास्त्रों में तो धर्म्माचार की महिमा है ही। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी कवि शेक्सपीयर भी यही कहते हैं—

Religion without morality is a tree without fruit and morality without religion is a tree without root

अर्थात अमल के बिना धर्म निष्फल है और बिना धर्म्म के कर्म निर्मूल है।

धर्म्म कर्म में आता है तो
वही सफल कहलाता है।
कर्म्म धर्म के बिना निपट
निर्मूल व्यर्थ बन जाता है॥

अभी कुछ दिन पूर्व एक धार्मिक सभा में माननीय श्री गुलजारीलाल नन्दा ने भी नीचे लिखे शब्द कहे थे—

धर्म का जितना ही प्रभाव पड़ेगा उतना ही भ्रष्टाचार कम होगा। लोगों के हृदयों में जो पाप है उसे धर्म्म भावना ही नष्ट कर सकती है। कानून या शासन का भय इसे कुचलने के लिए काफी नहीं। धार्मिक समाजों को धर्म्म प्रचार के लिये आगे आना चाहिये।

इस समस्त निवेदन का अभिप्राय यह है कि आर्यसमाज संगठित रूप से धर्म को क्रियान्वित करने अर्थात नैतिकता प्रचार पर बल दें। इसके लिए अवश्य ही नियमित प्रचार व्यवस्था द्वारा सर्वसाधारण जनता में प्रचार करना पड़ेगा। आर्य्यसमाज मन्दिरों के अतिरिक्त छोटे बड़े नगरों एवं ग्रामों में सार्वजनिक स्थानों पर प्रचुर प्रचार करना होगा। प्रचार कार्य्यालय में लेखक, टाइपिस्ट मुद्रण पोस्टेज, मार्ग-व्यय आदि की व्यवस्था करनी होगी। इस प्रकार से जनता में धार्मिक भावना उत्पन्न होगी, उस पर अमल भी किया जायगा और तब 'स्वराज्य' एवं 'सुराज्य' दोनों की परिस्थिति अनुकूल हो सकेगी। महात्मा गांधी के शब्दों में 'स्वराज्य' का स्वरूप इस प्रकार है।

स्वराज्य का अर्थ है अन्न वस्त्र की बहुतायत इतनी कि इसके बिना किसी को नंगा भूखा न रहना पड़े। एक बालिका भी घोर अन्धकार में निर्भयता के साथ घूम फिर सके। रिश्वत का नाश कर दिया जाय। किसी का शोषण न किया जाय। उन्नति करने का सबको सम न अधिकार है। स्त्रियां माता और बहनें समझी जाय। ऊंच नीच का भेद न हो।' मेरी प्रार्थना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा नैतिकोत्थान अर्थात धार्मिक सिद्धान्तों को क्रियान्वित करने के लिए सारे प्रदेश में प्रचार की व्यवस्था करे और प्रत्येक जिले में एतदर्थ प्रचार कार्यालय स्थापित किये जाय। ऐसा करने से जनता तथा शासन सत्ता दोनों का हित होगा और हम महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी के आदेशानुसार धर्मप्रचार में सफल हो सकेंगे। इससे देश का प्रत्येक दृष्टि से हित होगा।

वीरों के बलिदान से,
भारत हुआ स्वतन्त्र
सत्य अहिंसा त्याग तप,
था सब का गुरुमन्त्र
किन्तु न सदाचार का
हुआ विकास विस्तार
स्वार्थ सिन्धु लहरा रहा,
फैला भ्रष्टाचार
हां स्वराज्य तो हो गया,
हुआ न सुखद सुराज
इसके लिए प्रयत्न तू कर,
अब आर्य्य समाज

आर्य प्रांत. सभा उ.प्र. की अन्तरङ्ग का निश्चय

विषय संख्या ११ अन्तरंग सभा दिनांक १३।११।६५ के नि० सं० २८ के अनुसार नैतिक उत्थान विभाग के कार्य चलाने के हेतु विस्तृत व्यय विवरण आख्या स्वीकारार्थ प्रस्तुत होकर श्री प० हरिशंकर शर्मा जी ने "नैतिकोत्थान' सम्बन्धी अपना वक्तव्य पढ़ा। श्री सभा प्रधान जी ने प्रस्तुत विषय की गम्भीरता पर प्रकाश डाला। निश्चय हुआ कि श्री शर्म्मा जी से अनुरोध किया जाय कि वह इस विषय को क्रियात्मक रूप देने के लिए एक योजना तैयार करके प्रस्तुत करें।

यह भी निश्चय हुआ कि 'सैक्युलरिज्म" की जो परिभाषा भारत संविधान में की गई है उसको यह सभा सही नहीं समझती। सभा की दृष्टि से धर्म निरपेक्ष के स्थान में मत निरपेक्ष किया जाना चाहिये।

यह भी निश्चय हुआ कि उपर्युक्त निश्चय के सम्बन्ध में आवश्यक आन्दोलन किया जाय।

अतः आर्य्य जनता इस विषय में अपने विचार प्रस्तुत करे।

—मन्त्री सभा

(पृष्ठ १६ का शेष)

की मार से कौन बचा है अन्यथा उस समय ही क्या था जो वह काल कवलित हो गई। उनकी प्रतिभा का निखार हुआ था।

जीवन को आदर्शमय बनाना उन्होंने कर्तव्य समझा उसे निभाना भी परम कर्तव्य समझकर पालन किया। सर्वांगीण जीवन को एक बनाकर उद्देश्य में निहित कर दिया। समस्त विश्व को क्या कहें पर विकृत रेखा बनायी जिसे पृथक माना था। यदि नारी अपनी कोख से गुरु गोविन्द सिंह पैदाकर समाज को हित कराती है तो उसी नारी ने अपने विचारों से पूरे समाज को गुरु गोविन्द सिंह बनाने का सफल प्रयत्न कर साहित्य रचना के रूप में आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने का महाव्रत ले लिया। तेज किरणों के विलीन होने पर जिस प्रकार अन्धकार का साम्राज्य हो जाता है इसी प्रकार हम लोग अपने को अन्धकार में डूबा हुआ पाते हैं। सूर्य के अवसान के बाद फिर प्रभात होता है उस समय सूर्य अपनी किरणों को फैला अन्धकार का नाश कर महा प्रकाश करता है। वह आयगी या नहीं पर उसका व्यक्तित्व और कृति न हमें निस्तेज होने देगा। एक आशा की किरण है—उनकी स्मृतियां।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

फाल्गुन २९ शक १८८७ चैत्र कृ० १४
(दिनांक २० मार्च सन् १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L. 60

पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष २५९९३ तार "आर्य्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

जिनकी स्मृतियां ही शेष हैं—

स्व० डा० कुमारी प्रसिन्नी सहगल

एम०ए०, पी०एच०डी प्रिंसिपल सरस्वती विद्यालय नरही लखनऊ

[ले०—श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री स० अधि० उपदेश विभाग]

आंधी और तूफान रोग मात्र की चीज नहीं है उनका प्रकृति की बीमारियों को दूर करने के लिए आना आवश्यक है। एक तूफान आया, जबकर उखाड़-पछाड़ कर चला गया। उस तूफान में कौन और क्या बहा गया यह एक समस्या बन गई। १९४७ में भयंकर तूफान बंगाल और पश्चिम पंजाब में उठा, बड़े रोष दाब से हाहाकार मच गया। लाखों नर-नारी विचलित हुए बिछुड़ गये। भारत के कोने-कोने में अपनी स्मृतियां संजोये वह स्फुलिंग आकर टिक गये। एक ज्योतिर्लिंग हम लोगों के मध्य नारी रूप में विकसित होकर आ गया। किसी को क्या आभास था कि यह चिराग प्रकाशमय बनकर कितना प्रकाश करेगा—कल्पना में भी नहीं था। नाम था कु० प्रसिन्नी सहगल—यथानाम तथा गुणा।

भारत में स्वामी दयानन्द के आविर्भाव तक नारी की क्या दशा थी किसी से छिपा नहीं है इसी भावना से प्रेरित हो सबसे प्रथम कन्या विद्यालय जालन्धर स्थापित हुआ और उसका प्रभाव पंजाब की हर नारी जाति पर पड़ा तथा नारी में नवजागृति आई।

कु० प्रसिन्नी सहगल जन्मना तो गुजरांवाला की थीं और शिक्षा दीक्षा डी०ए० खालसा कालिज में हुई। भारत विभाजन के बाद वह उत्तरप्रदेश में आ गई तथा एम० ए० १९५० में आगरा विश्वविद्यालय से पास किया। पुनः एल०टी० १९५२ में सं०वि०शिक्षा लय से पास कर १९६१ में लखनऊ विश्वविद्यालय से माननीय श्री डा० सरयूप्रसाद जी के संरक्षकत्व में पी एच डी की सम्मानित उपाधि को प्राप्त किया। गुरु गोविन्दसिंह और उनका काव्य इस विषय पर शोध ग्रन्थ लिख कर सम्मानित उपाधि प्राप्त की।

१९४८ में सहायक अध्यापिका के रूप में नरही सरस्वती विद्यालय के जूनियर क्लासों में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। अपनी विशेष प्रतिभा व लगन से जहां निज जीवन में उन्नति की वहां संस्था के आन्तरिक जीवन में चार-चांद लगा दिये और विद्यालय को हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त हुई। जिसकी आप सर्वप्रथम मुख्याध्यापिका निर्वाचित की गयीं। १९६२ के बाद जब इण्टर की मान्यता मिली उस समय विद्यालय अपने निखार पर था। जिसके अन्दर एक सहस्र छात्रायें विद्योपार्जन करती थीं। यह सब परिणाम था उन्हीं के शुभ संकल्पों एवं प्रयत्नों का ही। जहां विद्यालय में शैक्षणिक योग्यता देकर छात्राओं को योग्य बनाने का दायित्व है वहां उन मासूम बच्चों को नैतिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना भी प्रधानाचार्या का ही धर्म है। उनमें आर्यसमाजों के दायित्वों का कूट-कूट कर उन बच्चों में संस्कार देना भी अपना नैतिक दायित्व समझती थीं।

विद्यालय में छोटे से बड़ों तक का स्नेह व आदर पाना और व्यवहार कुशलता का ही परिणाम था कि सभी उनके प्रति आश्वस्त व एकनिष्ठ रहते थे। प्रबन्धकारिणी समिति उनकी अच्छी व्यवस्था के कारण ही बहुत ही निश्चिन्त रहती थी। आश्रितों पर शासन करना यह भी एक बड़ा भारी गुण है जो उनमें विशेष था। अपने इन विशेष गुणों के कारण ही वह शिक्षा क्षेत्र में तथा नगर में आदर की दृष्टि से देखी जाती थीं।

अध्यापन कार्य के अतिरिक्त अध्ययन चिन्तन करना भी उनका एक विशेष गुण था जिसका स्वरूप हमारे समक्ष गुरुओं की वाणी पर 'दशम गुरु—गुरु गोविन्द सिंह के व्यक्तित्व कृतित्व का विशेष परिचय' है। दशम गुरु के काव्य का दर्शन हम भिन्न भिन्न स्थानों व भाषाओं में पाते हैं—जैसे ब्रजभाषा या गुरुमुखी या राजस्थानी पंजाबी मिश्रित।

पर माननीय डा० दीनदयालु गुप्त अध्यक्ष हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय के शब्दों में— कु० सहगल ने प्रस्तुत ग्रन्थ में गुरु गोविन्दसिंह के व्यक्तित्व और काव्य का सांगोपांग विवेचन तथा धार्मिक विचारधारा का विशद मनन अध्ययन कर लिया है। हिन्दी में अभी तक इतने विस्तृत और प्रामाणिक रूप में दशम गुरु की कृतियों का मूल्यांकन प्रस्तुत नहीं किया है।"

महान गुरु के व्यक्तित्व के तीन पक्षों को सन्त योद्धा और विद्वान का उचित मूल्यांकन अपने संकलन में किया है। कु० प्रसिन्नी सहगल ने कहीं-कहीं पर गुरु की कतिपय धारणाओं से पूर्ण सहमत न होते हुए भी महान गुरु की कृतियों का विशद और विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उनके काव्य पर साधिकार लेखनी उठाई है। उनके कृतित्व का अनुशीलन देश की सांस्कृतिक चेतना में अध्याय की एक गौरवपूर्ण कड़ी है। उनकी यह कृति आज के संघर्षशील टूटे पंजाब में सचमुच अनुकरणीय बन सकती है। इस कृति से गुरु की काव्य कला के प्रसार प्रचार द्वारा न केवल हिन्दू जाति में ही अपितु गुरु के अनुयायियों में भी नवीन शक्ति का संचार करेगी। सिक्ख धर्म के अन्तिम गुरु की रचनाओं में उपलब्ध सिक्ख विचारधारा का सुन्दर प्रतिपादन भी हुआ है।

यह कृति केवल उत्कृष्ट साहित्यिक विशेषताओं से युक्त एक सुमन ही नहीं है किन्तु इस पुष्प माला की सुगन्धि से समाज के विचारों में नई रचना का संचार भी होगा। हिन्दी जगत् में ही नहीं सिक्ख समुदाय में भी इस ग्रन्थ का स्वागत होगा। यह कृति न केवल हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य निधि है वरन इसमें सिक्ख विचारधारा का सुन्दर प्रतिपादन भी हुआ है।

डा० कु० सहगल एक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न महिला थीं। जहां नारी की सीमा एक परिवार के अन्दर सिमट कर विशेषताओं से पूर्ण किया था उन्हें वहां पर वह बाह्य जगत में भी प्रतिभा पूर्ण थीं। उनमें आन्तरिक व बाह्य जगत के दोनों गुण विद्यमान थे। समय

(शेष पृष्ठ १५ पर)

लखनऊ—रविवार चैत्र ६ शक १८८८, चैत्र शु० ५ वि० २०२३, दिनांक २७ मार्च सन् १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् सुत्रामाण पृथिवीं द्यामनेहसं, सुशर्माण मदितिम सुप्रणीतिम् दैवीं नावं स्वरित्रामनागस मस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।

काव्यानुवाद

समुज्ज्वला शान्त सुख प्रदात्री ।
सुनीति पूर्णा दैवी धरित्री ॥
सदा सुयन्त्रान्वित पार रक्षिता ।
चढ़ें सभी या नौका अमरता ॥

विषय-सूची

आर्यजगत् में पंजावी सूबा संबंधी निर्णय का व्यापक विरोध

सार्वजनिक सभायें, विरोध प्रस्ताव, आमरण अनशन द्वारा सरकार को चेतावनी

श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती जी महाराज का अनशन १५ मार्च से आरम्भ

पंजाब में हिंसात्मक घटनाओ, विनाश और मृत्युओ का दायित्व सरकारी निर्णय पर, जनता की भावनाओ के साथ खिलवाड़ करने वाली सरकार जनता की सरकार होने का गर्व नहीं कर सकती, पुलिस के जुल्मों की जांच कराई जाय।

पंजावी सूबा सम्बन्धी कांग्रेस कार्य समिति के निर्णय के विरोध मे कार्यालय मे जो सूचनायें पहुंच रही हैं उनसे स्पष्ट पता चलता है कि इस निर्णय मे न केवल पंजाब के गैर सिक्ख भी क्षुब्ध हैं अपितु भारत के एकतावादी सभी व्यक्ति क्षुब्ध और चिन्तित हैं। आर्यसमाज के शिष्ट मण्डल ने पंजाब विभाजन का दृढ़तापूर्वक विरोध करते हुए प्रधान मन्त्री और गृहमन्त्री से स्पष्ट कर दिया है यदि कांग्रेस के निर्णयानुसार सरकार ने आंख मींचकर निर्णय किया तो पंजाब की स्थिति और भी अधिक विस्फोटक हो बन जायेगी। सरकार को राष्ट्रीय एकता, सुरक्षा और हिन्दी राष्ट्रभाषा के हितों की उपेक्षा नीति को त्यागकर सत्य, न्याय और राष्ट्रीय भावना का आदर करना चाहिए।

निम्न स्थानों पर पंजाबी सूबा निर्णय के विरोध मे प्रस्ताव पारित किये गये—

आर्यसमाज श्री गंगानगर (राजस्थान) देवबन्द घाटमपुर (कानपुर) मोरिस कर्णपुरदस (फर्रुखाबाद) हरिद्वार, एत्मुली (आगरा) खुरजा, बलरामपुर, कृष्णपोलबाजार उदयपुर हरदोई, सीसामऊ कानपुर थाना भवन (मुजफ्फरनगर) इटारसी फैजाबाद, निरपुड़ा (मेरठ) कांकरिया रोड अहमदाबाद लश्कर, कालपी, गरही लखनऊ, भरतपुर, हल्द्वानी नैनीताल फफूंद (इटावा) काशीपुर, रामनगर, शामली, पुसद (महाराष्ट्र) पीलीभीत, पूरनपुर लाजपतनगर कानपुर, फतहपुर, बिलसोई (मुरादाबाद) मवाना कलां (मेरठ), मवीसा मुजफ्फरनगर, असुवन बसारतपुर (गोरखपुर) रानी की सराय (आजमगढ) रुद्रपुर-हापुड बिजनौर, देहरादून, माई की मण्डी आगरा बीसलपुर, पटेल मार्ग बम्बई, मोजपुर बेडी, मुरादाबाद, माटुंगा बम्बई, गाजीपुर, छपरौला मगोह खतनपुर (सहारनपुर) दिलदारनगर, गोविन्दनगर कानपुर, जनकनगर सहारनपुर, कायमगंज, देवास मध्य प्रदेश, जौनपुर, बिधूना (इटावा) गोविन्दपुरी (मेरठ) झांसी शहर, कोसीकलां, फीरोजाबाद, कांठ, कुन्दरकी (मुरादाबाद) ममीला, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

वार्षिक ८) छ:माही ५) विदेश १ पौं.

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८ अंक ११
एक प्रति २० पै०

भक्त जी का भ्रम जाल— वेद द्रोह की पराकाष्ठा

[श्री बिहारीलाल जी शास्त्री, बरेली]

[गतांक से आगे]

मनु जी स्वयं कहते हैं—

'यक्षरक्षपिशाचान्नं मद्यं मांसं सुरासवम् ।'

मद्य मांस, सुरा आसव यक्ष राक्षस और पिशाचों का भोजन है। मुनियों का खाद्य है—जौ, तिल, चावल, श्यामा का मांस कहीं भी मुनि खाद्यान्नों में नहीं गिना गया। देखो वेद में—

व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माष मथो तिलम्। (अथर्व)

यहाँ तिल, जौ, चावल, उड़द ही मुन्यन्न बताये गये हैं। आप विचार करते तो अपने ऋषियों पर भगवान् रामकृष्ण पर झूठा दोष न लगा पाते कि वे मांस खाते थे। ऋषि थे तो मांस भक्षी नहीं हो सकते। मांस भक्षी थे तो ऋषि नहीं हो सकते। ऋषियों पर गो मांस और कुत्ते का मांस खाने की बात लिखकर आप ऋषियों की निन्दा कर रहे हैं। और उन स्थलों का कूटार्थ समझने में

भगत जी ने ये पंक्तियां अपने अल्प-संख्यक सम्प्रदाय पर घटा ली हैं। हजरत केवल अल्प संख्या का होना कोई महत्व की बात नहीं है उस अल्प संख्यक सम्प्रदाय का साहित्य दर्शन और सिद्धान्त देखे जाते हैं आपका सम्प्रदाय सिद्धान्त की दृष्टि से तो निरा 'गुलदस्ता' ही है। दार्शनिक आधार तो उसका रेतीला मात्र है। आगाखानी, बहाईमत जैसे मुसलमानों में आकाश बेल का काम दे रहे हैं वैसे ही आप हिन्दू जाति की आकाश बेल हैं। आपकी तुकबन्दी जो आपके पत्र में छपी है उसके भावों का आधार वेद है परन्तु आप फिर भी वेदों की निन्दा कर रहे हैं। यह घोर कृतघ्नता है मिलान करो:—

'कहता अपनी आप कहानी
लिये करोड़ों जन्म पिया
है घाट घाट का पानी।
'अहंम गुरभवम् सूर्यश्चाहं,

विचार-विमर्श

असमर्थ हैं, जो प्रमाण आपको अन्धकार में ढकेल रहे हैं उन्हें समझने में आप असमर्थ हैं। काकचष्ठा से यदि कोई कौए की जांघ अर्थ लेकर कौए की जांघ खाने लगे तो उसे महामूर्ख ही कहेंगे। कुत्ते की टांग है—कुकुरमुत्ता जिसका शाक लोग प्रायः खाते हैं। आप लिखते हैं कि हमने अपने लेख में गालियां दी हैं परन्तु प्रमाण एक नहीं। अतः आप 'निरनुयोज्यानुयोग' निग्रह स्थान में आ जाते हैं। ऋषि मुनियों को गालियां दे रहे हैं आप और इलजाम लगाते हैं हम पर यह है आपका मनोन्माद।

आपके पत्र को चिपका हमने आकार दृष्ट्या नहीं। लेख दृष्ट्या लिखा था। इस पत्र में भक्त जी और उनके २-१ भक्तों के लेख केवल सत्य समाज का प्रोपेगंडा मात्र होते हैं। किसी विद्वान् के गम्भीर लेखों से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

हमारे इस लिखने पर भगत जी ने खूब बगलें बजाई हैं कि "किसी धर्म के मानने वालों की संख्या का घटना बढ़ना पराजय और विजय का माप दण्ड नहीं होता।

कक्षीवां ऋषि रास्म विप्रः।

यह पुनर्जन्म का विचार सबसे पहले वेद ने दिया जिसकी गूंज सब ही आर्य धर्मों में पायी जाती है और आपने भी वही ध्वनि गाई है। वेद की महत्ता में बड़े बड़े विद्वान् क्या विचार रखते हैं पढ़िये—

श्री वासुदेव शरण अग्रवाल पी एच. डी. लिखते हैं—

"वेद भारतीय संस्कृति की महार्घ निधि हैं। वे मानवीय ज्ञान के उच्चतम शिखर हैं।" कहिए आपने जो कुछ वेद निन्दा में लिखा है वह ठीक है या इस महान् विद्वान् की सम्मति ठीक है। रत्नों की परख में गांव के गड़रियों की मानी जाये या जौहरी की राय मानी जायेगी। भक्त जी ने ऋषि दयानन्द से अपनी तुलना करने की और उन्हें घोर अनुदार बताने की धृष्टता की है। श्री स्वामी जी को संकीर्ण और अपने को उदार बताया है। स्वामी जी वेदों को मानते थे इसलिये आपकी राय में संकीर्ण थे। क्या अनोखा तर्क है। 'भगत जी कलम भगत जी का अखबार जो चाहे

(शेष पृष्ठ १५ पर)

महर्षि दयानन्द वचनामृत

[भगवानदेव गुरुकुलीय, महर्षि महालय-टंकारा गुजरात]

★ मेरी अस्थियां किसी एक स्थान में मत गाड़ना अपितु किसी खेत में जाकर बखेर देना। कहीं मेरे पीछे भी मेरे भक्त जन मुझे अवतार या पैगम्बर मानकर मेरी पूजा अर्चा करने न लग जावें।

★ शरीर की पुष्टि तथा आत्मा और अन्तःकरण की शुद्धि प्रभु प्राप्ति का साधन है।

★ परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए यदि अज्ञानी जन मेरे जीते जी मेरी अंगुलियों को काटकर बत्ती का भी काम क्यों न लें; किन्तु दयानन्द, प्रभु आज्ञा का परित्याग कभी न करेगा।

★ उस जगदीश्वर की आज्ञा है कि मैं सन्मार्ग च्युत जीवों को कल्याण का मार्ग दिखाऊँ।

★ जब शय्याशायी होने लगो, तो प्रणव पवित्र (ओ३म्) का जप किया करो, जब तक नींद न आये, पाठ करते रहो। यहां तक कि उसी नाम स्मरण में सो जाओ। इससे उत्तमोत्तम लाभ होते हैं, वासनामय देह बदल जाता है।

★ धर्म, कर्म और आत्मा परमात्मा से भिन्न वस्तुओं में आनन्द समझना, अविद्या का एक लक्षण है।

★ बलदेव ! मेरे अपमान पर कोप न करो ये तो हमारे भाई हैं। इन्हीं की कल्याण कामना करते ही रात दिन बीतते हैं। मेरे मान अपमान पर ध्यान न दो "धर्मोपदेशक" को तो भूमि के समान सहनशील होना चाहिये।

★ हे मनुष्यों ! जो जगदीश्वर सारे संसार में व्यापक होकर सब को धारण करके रक्षा करता हुआ अन्तर्यामी रूप से सर्वत्र व्याप्त हो रहा है जिसकी कृपा से विज्ञान दीर्घायु तथा विजय प्राप्त होती है। तुम उसी का ही निरंतर भजन करो।

★ मुझे अपनी मुक्ति की कुछ भी चिन्ता नहीं, दारुण दुःखों के त्रास से दयनीय दीन दशा से दुर्बल अवस्था से परमपिता के पुत्रों को मुक्ति दिलाते हुए मैं स्वयम् ही मुक्त हो जाऊँगा।

★ राजन ! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँ या परमेश्वर की ? मैं चाहूं तो आपके राज्य की सीमा से एक दौड़ में पार हो सकता हूं; किन्तु भगवान् की आज्ञा का उलंघन करके उसके विशाल राज्य से कैसे पार हो सकूंगा ?

★ विश्व की विचित्र रचना ही उस विश्व के रचयिता को सिद्ध कर रही है।

★ परोपकार और परहित करते समय अपना मानापमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है।

★ यदि मेरी भी कोई बात तुम्हें असत्य तथा वेद-विरुद्ध प्रतीत हो तो उसे भी मत मानना।

● परमेश्वर की उपासना अर्थात् योग-वृत्ति ही सब क्लेशों का नाश करने वाली और सुख-शान्ति आदि गुणों को प्रदान करने वाली है।

● जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें, इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसे दूसरा नहीं हो सकता।

★ सर्व तन्त्र सिद्धान्त अर्थात् सार्वजनिक धर्म जिसको सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी, इसलिये उसको सनातन नित्य धर्म कहते हैं कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।

★ जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध हैं उनका त्याग कर बर्तें बर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित हो।

★ जिस प्रकार आरोग्य विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार भोजन छादन और व्यवहार करें—करावें अर्थात् जितनी क्षुधा हो उससे कुछ न्यून भोजन करें। मद्य मांस आदि के सेवन से अलग रहें।

★ जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य्य रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल पराक्रम बढ़ के बहुत सुखों की प्राप्ति होती है।

★ जैसी हानि प्रतिज्ञा को मिथ्या करने वाले की होती है, वैसी अन्य किसी की नहीं; इसलिये जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसी ही पूरी करनी चाहिए।

★ बल और बुद्धि का नाशक जैसा व्यभिचार और अति विषयासक्ति है; वैसा और कोई नहीं।

● जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् त्वमस्य पारे रजसो व्योमन स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मन. ।
चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम् ॥१३॥

हे परमैश्वर्यवन परमात्मन ! आप इस लोक के पार में तथा भीतर अपने ऐश्वर्य और बल से विराजमान होके दुष्टों के मन को धर्षण तिरस्कार करते हुए सब जगत तथा विशेष हम लोगों के 'अवसे' सम्यक् रक्षण के लिए 'त्वम्' आप सावधान हो रहे हो, इससे हम निर्भय होके आनन्द कर रहे हैं किञ्च 'दिवम्' परमाकाश "भूमिम्" भूमि तथा 'स्व' सुख विशेष मध्यस्थ लोक इन सबों को अपने सामर्थ्य से ही रच के यथावत धारण कर रहे हो 'परिभूरेषि' सब पर वर्तमान और सबको प्राप्त हो रहे हो 'आदिवम' द्योतनात्मक सूर्यादि लोक "आप" अन्तरिक्षलोक और जल इन सब के प्रतिमान (परिमाण) कर्ता आप ही हो, तथा आप अपरिमेय हो, कृपा करके हमको अपना तथा सृष्टि का विज्ञान दीजिये ॥१३॥ —'आर्याभिविनय'

पंजाबी सूबे का निग्रह-स्थान

पंजाबी सूबे में पंजाबी भाषा का आधिपत्य स्वीकार करते हुये उसे लिपि विशेष के साथ न बांधा जाय। आखिर आप पंजाबी सूबा बना रहे हैं न कि लिपि विशेष पर आधारित। अगर पंजाबी सूबे में पंजाबी भाषा को गुरमुखी, नागरी और उर्दू लिपि में लिखने की प्रदेश स्तर पर छूट दे दी जाय तो पंजाबी सूबे का दंश कम हो जायगा। सूबे के विरोधियों का भी सारा आक्रोश पंजाबी के लिये लिपि विशेष की अनिवार्यता पर है। जो गुरमुखी लिपि में न हो वह पंजाबी नहीं हो सकती ऐसा तर्क अपने दूर तक न खींचा जाए। लिपि विशेष का आग्रह प्रकारान्तर से साम्प्रदायिकता के निकट पड़ जाता है। पंजाबी सूबे के समर्थकों का यही सबसे बड़ा निग्रह-स्थान है। स्मरण रहे संविधान में पंजाबी भाषा को किसी लिपि विशेष के साथ नहीं बांधा गया है।

—दैनिक हिन्दुस्तान दिल्ली २० मार्च १९६६

वर्ष ...-रविवार २७ मार्च १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसंवत १,९७,२९,४९,०६७

अन्याय का विरोध

आखिर पंजाब को एक बार फिर अग्नि परीक्षा में से गुजरना पड़ा है। कांग्रेस के पंजाबी सूबे सम्बन्धी निर्णय की पंजाब के हिन्दी भाषी एवं हिन्दू वर्ग में जो तीव्र और भयकर प्रतिक्रिया हुई है उससे सारा देश स्तम्भित रह गया है। कांग्रेस के कर्णधारों ने अपरिहार्य दुर्ई समझकर इस सूबे का निर्माण स्वीकार किया और बहुमत दल का निर्णय कहकर पंजाब की सत्तर प्रतिशत जनता पर लाद दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भाषा के आधार पर विभाजन के लिए सिद्धान्त प्रस्तावित किया है कि जहां ३० प्रतिशत से अधिक अल्पमत हो वहां ३० प्रतिशत को महत्व मिलना चाहिए। राज्य पुनर्गठन आयोग ने भी इसी सिद्धान्त को मद्देनजर रक्खा था पर कांग्रेस ने फूट डालो और तुष्टीकरण करो की नीति अपना कर ७० प्रतिशत को अल्पमत और ३० प्रतिशत को बहुमत में बदल दिया। इसे ही कहते हैं जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले, परन्तु क्या यह निर्णय राष्ट्रीय एकता में सहायक होगा। इस सम्बन्ध में इंगलैण्ड के स्काटलैंड का दृष्टिकोण कांग्रेस की आंख खोलने के लिए पर्याप्त है।

पंजाब में सूबे सम्बन्धी निर्णय का विरोध स्पष्ट करता है कि सरकार ने जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया है।

विचार और लेखन की स्वतन्त्रता की दुहाई देनेवाली कांग्रेस सरकार ने अंग्रेजों से भी अधिक जेंबर और निर्ममता की नीति अपनाकर अपनी बुद्धि का दिवाला पीट दिया। श्री यश, श्री वीरेन्द्र और श्री जगतनारायण की गिरफ्तारियां बताती हैं कि पुलिस किस प्रकार सोचती है। श्री यशदत्त और श्री स्वामी सत्यानन्द जी के उपवासों में आत्म शक्ति है वे अन्याय का विरोध कर रहे हैं। हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है उसकी प्रतिष्ठा है।

इसी प्रकार देश का बहुसंख्यक सीमान्त में अल्पसंख्यक बन कर रहे तो राष्ट्रिय सुरक्षा एवं एकता को खतरा बना रहेगा। हम हिंसा के समर्थक नहीं पर पुलिस के तरीके हिंसा को प्रोत्साहित करते हैं शासन को अपनी पुलिस का रवैय्या बदलना होगा। पानीपत में और अन्य स्थानों पर जो लूट, हत्या आगजनी हुई उसकी हम घोर निन्दा करते हैं पर यह निश्चित है कि सरकारी दल यदि इतनी अपरिपक्वता से निर्णय न करता तो ये घटनायें न होतीं।

अन्त में सरकार ने पंजाबी सूबे के विरोधियों से वार्ता आरम्भ कर दी है और हम आशा करते हैं कि वार्ता में समन्वय का मार्ग निकल आयगा। हमारी यही प्रार्थना है "सबको सन्मति दे भगवान्"।

रामनवमी

मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के जन्म-दिवस का भारतीय इतिहास और सांस्कृतिक जीवन में जो महत्व है उससे सभी भारतीय परिचित हैं।

राम के चरित्र की विशेषताओं ने ही उन्हें मर्यादापुरुषोत्तम बना दिया। रामायण के सभी पात्रों में राम सर्वश्रेष्ठ हैं। इसलिए नहीं कि वे ईश्वर के अवतार थे या एक राजा के पुत्र थे। उनकी विशेषता उनके महान् चरित्र में निहित है। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा पालन करके संसार के सम्मुख आदर्श उपस्थित किया कि सम्पत्ति का सुख कोई महत्व नहीं रखता सम्पत्ति का त्याग गौरव का कारण होता है, भरत के आग्रह पर भी राजगद्दी के लिए न लौटकर उन्होंने त्याग में अपनी दृढ़ आस्था का परिचय दिया। लक्ष्मण के प्रति भ्रातृ प्रेम का आदर्श हम सबको आज भी प्रेरणा देता है। सीता वियोग की स्थिति में एक कर्मठ तपस्वी के रूप में सीता की खोज का निश्चय किया और सीता की प्राप्ति के लिये साधनहीन होते हुए भी साहस के साथ रावण से लोहा लिया और अन्त में विजय प्राप्त की। अयोध्या लौटने पर आपने राज्य की जो सुव्यवस्था की उसी को आदर्श मानकर महात्मा गांधी जी ने स्वराज्य का आदर्श 'राम राज्य" बताया था।

लेकिन राम के इन सभी कार्यों के पीछे सदाचार, नैतिकता, औदार्य, मानवता आदि गुण छिपे हैं। इन्हीं आदर्श गुणों को आत्मसात कर वे भारतीय इतिहास के अमर प्रकाश-स्तम्भ बन गये।

राम को ईश्वरीय अवतार मानने वाले यह भूल जाते हैं कि यदि यह सब ईश्वरीय तत्व था जो उन्होंने दिखाया तो मानव निस्सहाय, और निराश बना रहेगा। राम का महत्व इसी बात में है कि उन्होंने मानवता के आदर्श गुणों को जीवन की कसौटी पर परखा और हम सबके लिए आदर्श उपस्थित किया।

ऐसे महामानव का जन्मोत्सव हमारे हृदयों में नवीन प्रेरणा एवं उत्साह का संचार कर रहा है। आगामी ३१ मार्च को रामनवमी का पर्व मनाकर हम उन का पावन स्मरण करें और उनके आदर्शों को जीवन में ढालने का संकल्प लें यही हमारा कर्तव्य है। —स्नातक

आर्य समाज में नवीन रक्त संचार

आवश्यकता है आर्यसमाज में नवीन रक्त के संचरण की। बिना इसके जीवन एवं वास्तविक प्रगति नहीं करना। नव-रक्त का संचार होगा युवक शक्ति को उद्बोधित करने से।

युवक शक्ति का उद्बोधन होगा ठोस और क्रान्तिकारी कार्यक्रम उसके समक्ष प्रस्तुत करने से।

आर्यसमाज के पास ठोस और क्रांतिकारी कार्यक्रम है किन्तु उसको प्रस्तुत नहीं किया जाता।

खाकसार आन्दोलन को कुचलने के लिये बापू की प्रेरणा से आर्यसमाज ने क्रांतिकारी कार्यक्रम अपनाया था। हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन के समय क्रान्ति का जो शंखनाद फूंका उसने गुंजाया था।

भारी संख्या में युवकों ने आर्य-ध्वज के नीचे एकत्रित होकर पूरा योगदान किया था।

आज नितान्त आवश्यकता है पाखण्डी तत्वों और विदेशी मिशनों को कुचलने की।

प्रथम आवश्यकता है इस बात की कि आर्यसमाज पारस्परिक दलबन्दी और पदलोलुपता त्यागकर इस क्रान्ति-कारी पग को संगठित रूप से उठाये। नगर नगर और ग्राम ग्राम में आर्यवीर दल संगठित किया जाय। न्यून से न्यून २ लाख आर्यवीरों की सेना संगठित करने का निश्चय सार्वदेशिक सभा द्वारा किया जाय।

आर्यवीरों के शिक्षण के लिये शिविरों का आयोजन किया जाय।

सत्याग्रह से शिक्षण पाकर अपना तन-मन धन इस दिशा में विशेष रूप से लगाया जाय। और अपनी युवक शक्ति के साथ कार्य क्षेत्र में उतर पड़ा जाय।

निश्चय ही युवक शक्ति आर्यसमाज के झण्डे के नीचे संगठित हो जावेगी।

एक ओर जहां जाति और राष्ट्र का कल्याण होगा वहां दूसरी ओर आर्य-समाज में भी पुनरपि नवजीवन लह-लहाने लगेगा।

'उत्तिष्ठत सन्नह्यध्वमुदारा केतुभिः सह।'

उठो संगठित रूप से तैयार हो और अपने अपने झण्डे ऊंचे करो।—शिव

सभा के आगामी वृहदधिवेशन की तिथि निश्चित

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं उप प्रतिनिधि सभाओं को विदित हो कि इस सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दि० २८ व २९ मई १९६६ दिन शनिवार व रविवार को आर्यसमाज मन्दिर देहरादून में बुलाया जाना निश्चित हुआ है। अतः सब समाज एवं प्रतिनिधि महोदय उक्त तिथियों को नोट करने की कृपा करें और देहरादून पहुंचने के लिए अभी से तैयारियां प्रारम्भ करें।

प्रतिनिधि चित्र फार्म

२—सभा कार्यालय से वार्षिक प्रतिनिधि चित्र फार्म भेजे जा चुके हैं। फार्म बहुत कम ही भरकर प्राप्त हुए। कृपया प्रति० चित्रों की खाना पूर्ति करके सभा कार्यालय में सभा प्राप्तव्य धन के साथ भेजने का कष्ट करें।

सभा के विभागों के नाम सूचना

सभा की वार्षिक रिपोर्ट अगले मास अप्रैल में प्रेस में छपने दे दी जायगी। अतः विभागों के अधिष्ठाता महोदयों से साग्रह प्रार्थना है कि अपने अपने विभाग की रिपोर्ट सभा कार्यालय में न भेजी हों वह १० अप्रैल ६६ तक भेज दें। साथ ही बजट भी भेजने की कृपा करें।

इसी प्रकार आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के मन्त्री महोदयों से प्रार्थना है कि अपनी अपनी उप सभाओं का वार्षिक वृत्तान्त १० अप्रैल तक अवश्य भेज दें। पश्चात् आये हुए वृत्तान्त सभा की रिपोर्ट में सम्मिलित न हो सकेंगे।

सभा की सूचना

सभा के अन्तरंग सदस्य अवैतनिक उपदेशक महानुभावों एवं निरीक्षक महोदयों की सेवा में निवेदन है कि सभा से वृत्तान्त भेजने के लिए कार्ड भेजे जा चुके हैं। अतः वर्ष भर का कार्य क्रम सभा कार्यालय में शीघ्र भेजने की कृपा करें।

उपदेश विभाग

आर्य समाजों को विदित हो कि श्री पं० सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल०टी० १०२ जाफरा बाजार गोरखपुर ने अपना समय सभा द्वारा प्रचारार्थ देने का वचन दिया है।

आर्यसमाजों को चाहिए अपने-अपने समाज के उत्सवों पर आमन्त्रित करने के लिये सभा को पत्र देने की कृपा करें अथवा पं० जी वेदालंकार जी से भी पत्र व्यवहार करके निश्चित कर लें।

—धर्मदत्त सभामन्त्री

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल पंजाब एकता संरक्षण समिति की मांगों पर अपना फैसला शीघ्र देगा

नई दिल्ली २० मार्च। मन्त्रिमंडल द्वारा निकट भविष्य में ही पंजाब एकता समिति की उन मांगों पर विचार किया जायेगा जो समिति के नेताओं ने केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा के समक्ष प्रस्तुत की हैं।

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की बैठक आज अथवा कल इस सम्बन्ध में विचार करने के लिए आयोजित होगी।

ये सम्भावनाएं कल यहां पंजाब एकता समिति, जनसंघ और आर्यसमाज के नेताओं के साथ केन्द्रीय मन्त्रियों श्री गुलजारीलाल नन्दा, श्री सत्येन रेड्डी और श्री जी० एस० पाठक के साथ तीन घण्टे तक हुई वार्ता से उत्पन्न हुई हैं।

पंजाब एकता समिति की मांगों में अन्य मांगों के अतिरिक्त पंजाबी सूबा और हरियाणा प्रान्त के लिये एक ही राज्यपाल, एक उच्च न्यायालय एक जनसेवा आयोग और देवनागरी और गुरुमुखी दोनों लिपियां रखने की मांगें शामिल हैं।

केन्द्रीय मन्त्रियों से वार्ता के पश्चात् पंजाब के नेताओं ने संवाददाताओं को बताया कि यदि मन्त्रिमण्डल ने उनकी मांगों पर अनुकूल निर्णय न किया तो श्री यज्ञदत्त शर्मा और स्वामी सत्यानन्द का अनशन जारी रहेगा।

किन्तु यह भी निश्चित हुआ है कि अनशन के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय पंजाब जनसंघ के नेताओं की बैठक में ही होगा। इस बैठक में जनसंघ के कतिपय केन्द्रीय नेता भी भाग लेंगे।

बैठक के बाद केन्द्रीय विधि मन्त्री श्री जी० एस० पाठक ने यह वक्तव्य पढ़ कर संवाददाताओं को सुनाया—

पंजाब एकता समिति, जनसंघ और आर्यसमाज के नेताओं से विस्तृत विचार विमर्श के बाद कतिपय सुझाव रखे गए हैं। उन पर सरकार विचार करेगी और भविष्य में भी विचार विमर्श होगा। अन्त में गृह मन्त्री ने उन प्रतिनिधियों से पुनः यह आग्रह किया कि वे श्री यज्ञदत्त शर्मा को अनशन समाप्त करने पर तैयार करें।

श्री पाठक ने इन सुझावों के सम्बन्ध में कुछ भी बताने से इन्कार कर दिया क्योंकि इससे विचार विमर्श में बाधा पड़ने की आशंका है।

एक प्रश्न के उत्तर में श्री पाठक ने कहा कि इन प्रस्तावों पर शीघ्र ही विचार किया जाएगा। हम इस सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री से सम्पर्क स्थापित कर रहे हैं। मन्त्रि मण्डल की बैठक का निश्चय अभी होना है।

जब आपसे अकाली नेताओं से वार्ता के सम्बन्ध में प्रश्न किया गया आपने कहा कि हम अभी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकते। आपने यह भी कहा कि वार्ता बड़े ही सद्भावनापूर्ण वातावरण में हुई।

पंजाब के प्रतिनिधि मण्डल में डा० बलदेव प्रकाश एम०एल०ए०, श्री रामगोपाल शालवाले श्री के० नरेन्द्र (सम्पादक दैनिक वीर अर्जुन व 'प्रताप'), श्री रणवीर, श्री किशननारायण, श्री कृष्णलाल एम एल सी, श्री सोमनाथ मरवाहा श्री ओमप्रकाश त्यागी, कैप्टन केशवचन्द्र, श्री ओम्प्रकाश गोयल, श्री वीरेन्द्र, श्री यज्ञ श्री जगतनारायण और श्री बलरामजी दास टण्डन शामिल थे। वार्ता में पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री रामकिशन, श्री जगजीवनलाल त्यागी, श्री बी० सी० शुक्ला, आदि ने भी भाग लिया।

प्रोग्राम मास अप्रैल

श्री रामस्वरूप जी—२ से ५ अप्रैल गुरुकुल एटा, ७ से १० रावी, ११ से १३ कोहरवमा, १५ से १८ [illegible]

श्री अमरजीतसिंह जी—३० मार्च से २ अप्रैल काशीपुर, ५ से ७ फूलपुर, ८ से १०, ममहर १४ से ७ सांडी।

श्री बजराजसिंह जी ९, १० आजमगढ़, १३ से १५ अर्जुनपुर गढ़ा।

श्री यमदत्त जी आनन्द—४ से ७ केराकत।

श्री वेदपालसिंह जी—८ से १० ममहर

श्री रघुवरदत्त जी—१० से २ अप्रैल काशीपुर, १८ से २० कमोलिया।

श्री प्रकाशवीर जी—३ से ५ गोमेर ८ से १० मुरादनगर।

श्री डा० प्रकाशवती जी—३ से ५ स्त्री समाज मुरादाबाद, ८ से १० ममहर १४ से १७ साडी।

महोपदेशक

श्री विश्वबन्धु शास्त्री—८ से १० जौनपुर १३ से १५ अर्जुनपुर गढ़ा।

श्री बलबीर शास्त्री—३ से ५ गोमेर ७ ८ छपरा, ९ से ११ जमहोलपुर।

श्री विश्ववचन वेदालंकार—३०-३१ मार्च जुही कानपुर।

श्री श्यामसुन्दर शास्त्री—९-१० आजमगढ़।

श्री कमलदेव शास्त्री—८ से १० ममहर

—सच्चिदानन्द शास्त्री
स० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आखिर सरकार को झुकना पड़ेगा। पंजाब के बिगड़ते हालातों से सरकार भी चिन्तित है पर पुलिस दमन से नहीं विचार और न्याय से बात सुलझेगी।

'सत्यमेव जयते'

सार्वदेशिक सभा के नेताओं की प्रधानमंत्री से वार्ता

नई दिल्ली, १९ मार्च। स्वामी सत्यानन्द सरस्वती जी पंजाबी सूबे के विरोध में आर्यसमाज के नाम पर जो अनशन कर रहे हैं, साधारणतया ठीक है किन्तु उनकी दुर्बलता बढ़ती जा रही है। उनका वजन भी ९ पौण्ड कम हो गया है।

आज जो लोग उनसे मिलने आये उनमें श्री अटलबिहारी बाजपेई, श्री केदारनाथ साहनी और श्री दीनदयाल उपाध्याय भी शामिल हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक प्रतिनिधि मण्डल पंजाबी सूबे की समस्या पर बातचीत करने के लिये प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से कल रात उनके निवास स्थान पर मिला। मण्डल ने प्रधान मन्त्री से मांग की कि कांग्रेस कार्य समिति ने ९ मार्च को जो निर्णय किया है उसे वापस लिया जावे।

प्रधान मन्त्री से प्रतिनिधि मण्डल ने कहा कि नेहरू जी पंजाबी सूबे के बनाये जाने के सख्त विरोधी थे और वे यह जानते थे कि यदि पंजाबी सूबा बना दिया जायेगा तो इससे देश की बड़ी हानि होगी। राज्यपुनर्गठन आयोग ने भी पंजाबी सूबा बनाए जाने का विरोध करते हुए अपने प्रतिवेदन में लिखा था कि प्रस्तावित राज्य से न तो भाषा की समस्या का समाधान होगा और न साम्प्रदायिक समस्या का।

कोई आश्वासन नहीं

बातचीत के दौरान श्रीमती गांधी गांधी ने कोई आश्वासन नहीं दिया और इस सम्बन्ध में स्वराष्ट्र मन्त्री श्री नन्दा से बातचीत करने की सलाह दी। प्रधान मन्त्री ने श्री स्वामी सत्यानन्द जी का अनशन तुड़वाने का प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों से अनुरोध किया। सदस्यों ने प्रधान मन्त्री को उत्तर में बताया कि जब तक कोई उचित आश्वासन नहीं मिलता तब तक स्वामी जी द्वारा अनशन समाप्त करने की बात कैसे की जा सकती है। जिस सिद्धान्त के लिए स्वामी जी अनशन कर रहे हैं उसकी ओर यदि सरकार कोई आश्वासन दे तो इस सम्बन्ध में विचार किया जा सकता है।

★

आर्यसमाज की— आन्तरिक व्यवस्था

[ले०—श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आगरा]

आर्यसमाज की आन्तरिक व्यवस्था उसकी सदस्यता के प्रश्न से सम्बन्धित है। महर्षि दयानन्द ने कुछ वर्षों तक वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया और जब उन विचारों से कुछ व्यक्ति प्रभावित हो गये तो उन विचारों के प्रचार को संगठित रूप देने के लिए आर्यसमाजों की स्थापना हुई। सब से पहिला आर्यसमाज बम्बई में १८७५ में स्थापित हुआ।

आर्यसमाज का संगठन नीचे से ऊपर को है अर्थात् पहिले स्थानीय फिर प्रान्तीय सभा में और उससे ऊपर सार्वदेशिक सभा। प्रान्तीय सभाओं की स्थापना के बहुत दिनों बाद १९०८ में सार्वदेशिक सभा की स्थापना हुई। कुछ प्रान्तीय सभाएं इसके बाद भी बनी हैं और कुछ का सार्वदेशिक सभा में समावेश हुआ है। जैसे प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब बहुत दिनों से स्थापित थी। परन्तु सार्वदेशिक सभा में वह सन् १९५९ या ६० में सम्मिलित हुई है।

स्थानीय समाजों के सदस्यों में से कुछ अंश प्रतिनिधि के रूप में प्रान्तीय सभाओं में गये और उनसे प्रान्तीय सभा संगठित हुई इसी प्रकार प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों में से कुछ अंश सार्वदेशिक सभा में ले गये और उनसे सार्वदेशिक सभा संगठित हुई। प्रतिनिधित्व का प्रश्न जो सार्वदेशिक और प्रान्तीय सभाओं से जुड़ा हुआ है विशेष महत्व रखता है।

आरम्भ में आर्यसमाज में जो सदस्य बनते थे वे स्वयं प्रचार से प्रभावित होकर और विचारों में परिवर्तन के आधार पर सदस्य बने। मेरा यह अनुभव है कि जो सदस्य बनता है वह आर्य समाज को बनाता है और स्वयं अपने को भी आर्य बनाने का यत्न करता है जो किसी कारण से या किसी स्वार्थपूर्ति के निमित्त से बनाया जाता है वह आर्य समाज को बिगाड़ता है।

कभी कभी आर्यसमाज की उन्नति की दृष्टि से सदस्य संख्या बढ़ाने के लिये या दुगनी करने के लिए योजनाएं बनती हैं और उसके आधार पर सदस्य बनने का अवसर मिल जाता है और कभी कभी सदस्य बनने की होड़ में अवांछित व्यक्तियों का भी प्रवेश हो जाता है। जब मथुरा में महर्षि की जन्म शताब्दी हुई थी उस समय भी ऐसी अपील की गई थी। मुझे स्मरण है कि हमारे यहाँ एक आर्यसमाज में इस अपील का अंत में ऐसे सदस्य कुछ बन गये गये जिनसे बनाने वालों का प्रबन्ध में बहुमत हो जावे और मनमानी करने का अवसर मिले।

इसी प्रकार की अपील आर्यसमाज की स्थापना शताब्दि के सम्बन्ध में जो १९७५ में मनाई जानी है हो रही है। भावना अच्छी है परन्तु सदस्य वृद्धि में बहुत सावधान होने की आवश्यकता है।

आरम्भ में आर्यसमाज के प्रवेश में दुनिया के लाभ की दृष्टि से कोई विशेष आकर्षण नहीं था। इसके स्थान में कुछ संकटों का सामना भी करना पड़ता था जैसे जन्म सूचक बिरादरियों से संघर्ष और विदेशी राज्य का आतंक। आर्यसमाज के तत्कालीन कार्यकर्ताओं ने बड़ी वीरता से इन संकटों का मुकाबला किया और आर्यसमाज की उन्नति के मार्ग को सुरक्षित और विस्तृत बनाया। इन विजयों से संघर्ष कम हुए परन्तु संस्थाओं की वृद्धि ने सम्पत्ति और आर्थिक आकर्षक बना दिया। संस्थायें बड़ी आवश्यक और आर्यसमाज के प्रचार के साधन भी हैं। परन्तु इनके प्रबन्ध में स्वार्थ सिद्धि को दृष्टि से बड़ा आकर्षण है। संस्थाओं का प्रबन्ध आर्यसमाज के वार्षिक निर्वाचनों पर आधारित है और इसलिए वार्षिक निर्वाचन स्वयं एक स्वार्थ सिद्धि के साधन बन गये। निर्वाचनों से विजय सदस्यों की वोट की संख्या पर निर्भर है और इसलिए सदस्य बनने में वोट मिलने पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। योग्यता सिद्धान्त प्रेम और सदाचार आदि पर नाममात्र की दृष्टि रह गई और यह विष ऐसा फैला कि बहुत सी स्थानीय समाजों की दशा चिन्ताजनक हुई और यह विष बढ़ता हुआ प्रान्तीय सभाओं तक पहुंचा और वहां से बढ़कर सार्वदेशिक सभा तक तक पहुंच गया।

सार्वदेशिक सभा में आरम्भ से लेकर १९५७, ८ तक प्रतिनिधियों की संख्या निश्चित रही फिर एक ऐसा नियम सार्वदेशिक सभा ने प्रतिनिधियों के निर्वाचन के सम्बन्ध का बनाया जिस के अनुसार प्रान्तीय समाजों से १०० प्रतिनिधियों पर ५ प्रतिनिधि भेजने का नियम था। मेरा यह अनुभव है कि इस नियम के बनाने में प्रान्तीयता का विष था और इसका ही दूषित परिणाम हुआ कि सार्वदेशिक सभा में संघर्ष और वैमनस्य की आधारशिला इस नियम से सम्पन्न हो गई। मेरा प्रान्तीय समाजों से और सार्वदेशिक सभा से वर्षों का सम्बन्ध रहा है। मेरे सम्मुख इस नियम के बनने से पहले और इसके बनने के पश्चात् दोनों चित्र हैं और इस एक विषैले नियम ने आर्यसमाज को बड़ा दूषित कर दिया है। सार्वदेशिक सभा जो आर्यजगत की शिरोमणि सभा है उसका विवाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से चल रहा है और अदालत में मुकदमे चल रहे हैं। प्रादेशिक सभा से प्रतिनिधि भी २ साल से सार्वदेशिक में नहीं आ रहे हैं। प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सार्वदेशिक सभा में सम्मिलित करने का प्रस्ताव अजमेर में महर्षि की निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर हुआ था। उस समय मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का प्रधान था। और सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग का सदस्य। जब मैं सन् १९५९ या ६० में सार्वदेशिक सभा का प्रधान बना तब उस प्रस्ताव को कार्य रूप में परिणत करने का अवसर मुझे मिला और मैंने अन्तरंग सभा द्वारा उसको सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित कराया। मेरे हटने से कुछ समय के बाद से ही विवाद सा ही छिड़ गया और सम्पर्क न होने के बराबर सा ही रहा यही हाल गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा का हुआ और उपरोक्त सभा सार्वदेशिक सभा में सम्मिलित हुई और फिर उसको पृथक कर दिया गया। जिनके प्रभाव से यह पृथक की गई थी उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनको स्वयं आर्यजगत से पृथक किया गया है। और विशेष चिन्ता यह है कि सारी शक्ति व्यर्थ के संघर्षों में लगी हुई है। १ लाख रुपये के लगभग व्यय आर्य महासम्मेलन में व्यय हुए और प्रमुख आर्यों का सम्मेलन इस सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण अंग था। जिसमें दो दिन लगातार आर्यसमाज के प्रवेश प्रचार व्यवस्था के सम्बन्ध में बड़े उपयोगी प्रस्ताव स्वीकार हुए। यदि वे प्रस्ताव नियमों का अंग बन जाते तो आज आर्यसमाज में सदस्यता के दूषित होने का प्रश्न बहुत कुछ समाधान हो गया होता परन्तु जिन महानुभावों का सार्वदेशिक सभा में अधिकार हो गया उनका ध्यान उस सम्मेलन के और महासम्मेलन के अन्य प्रस्तावों पर नहीं गया वह कार्यालय में दाखिल दफ्तर पड़े हैं।

मथुरा की दीक्षा शताब्दी पर जो गुरु विरजानन्द की स्मृति में स्मारक बनाना स्वीकार हुआ था। वह भी अभी कुछ नहीं हो सका है और जितना रुपया दीक्षा शताब्दि पर व्यय हुआ वह भी अब व्यर्थ सा गया ऐसी दशा में मेरा सुझाव है कि अति शीघ्र देहली या अन्य केन्द्रीय स्थान पर सार्वदेशिक सभा प्रमुख आर्यों का सम्मेलन पुनः बुलावे और उसमें जो प्रस्ताव स्वीकार हो चुके हैं उन पर पुनः विचार करके उनको आर्य समाज के नियमोपनियमों का अंग बनाया जावे। आर्यसमाज में प्रवेश सदस्यता के लिए सबके लिए सुगम हो परन्तु आर्यसमासद बनने के लिए बहुत कड़ाई से काम लेने की आवश्यकता है। प्रत्येक सभासद को आर्य सभासद बनते समय आर्यसमाजों के सिद्धान्तों में परीक्षा हो और बिना परीक्षा में उत्तीर्ण हुए कोई आर्य सभासद न बन सके। सदस्यता के बाद कम से कम ३ साल की अवधि आर्य सभासद बनने के लिए आवश्यक हो। यह भी आवश्यक है कि सार्वदेशिक सभा निर्वाचन सम्बन्धी मतदाताओं की सूची बनाने और निर्वाचन करने के नियम पृथक बना दे जिससे निर्वाचन मर्यादित हो जावे। वर्तमान समय में स्थानीय समाजों को सूची बनाने का अधिकार होना सब झगड़े की जड़ है। जिनको स्वयं निर्वाचित होना है वे ही अपने निर्वाचन कर्ताओं का चयन करें इससे मनमानी और अन्याय की सम्भावना है। जब तक निर्वाचन सम्बन्धी नियम और निर्वाचन परिषद पृथक न बन उस समय तक प्रान्तीय सभाओं को अपने निरीक्षकों को अन्य समाजों की सूची की जांच और तैयार कराने का अधिकार देना चाहिये। इसके लिए यदि कुछ विशेष निरीक्षक नियत हो सकें तो बड़ा लाभदायक होगा। मेरी दृष्टि में आर्यसमाज को अपनी आन्तरिक दशा के सुधार पर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिये।

बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट

ओ३म पञ्चवेन्द्रो वृषासुत ।
कृधी नो यशसो जने ।
विश्वा अपद्विष जहि ॥
—स म० ५ १० ३

शब्दार्थ—(इन्द्रो) परम आनन्ददाता प्रभो (वृषासुत) आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न मनत्रों द्वारा मन्थन किये जाने वाले हैं (पचन्व) आप हमारी सब ओर से पालना करो (जने) जन समाज के बीच (न) हमको (यशस) यशस्वी (कृधि) बनाइये (विश्व) समस्त (द्विषा) द्वेष भावनाओं को हमारे बीच से (अप जहि) दूर हटाइये।

भावार्थ—परमात्मदेव सदा आनन्द वारि की वर्षा करने वाले हैं। अध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न मानव ही ध्यान योग द्वारा अपने अन्दर मन्थन कर इस अमृत रस को निष्पन्न करता है। यह आनन्द रस सदा हमारी रक्षा करता और प्रगति पथ का पथिक बनाता है। इस दिव्य आनन्द रस को पाकर हम सब प्रकार की कुटिलताओं से मुक्त हो जाते और पवित्रतम भावनाओं से परिपूरित हो जाते हैं।

आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न मानव न चाहते हुए भी जनता में यश का भागी बन जाता है। आनन्द-रस का पान करने वाला व्यक्ति लोक प्रतिष्ठा अथवा लोकेषणा से दूर भागता है। किन्तु लोक प्रतिष्ठा उसका पीछा नहीं छोड़ती।

हमारे अन्दर यदि कामना हो तो केवल सात्विक प्रतिष्ठा की हो जिससे हमारे जीवन का कभी नैतिक पतन न हो। कर्म-योग के आत्मवान साधक को यह सात्विक प्रतिष्ठा अनायास ही उपलब्ध होने लगती है। इसको प्राप्त करने के निमित्त लेशमात्र भी प्रयत्न करना नहीं पड़ता।

साधक की कामना तो द्वेष भावों को दूर भगाने की सदा होनी चाहिये। सर्वप्राणियों का हित साधन ही उसकी एकमात्र साधना होनी चाहिये। साधक के जीवन का कार्यकलाप इतना स्वार्थ शून्य हो कि द्वेष भावनायें उसके पास तक न फटकने पायें और समता सनातन का स्वच्छ प्रेम सदा उसको उपलब्ध होता रहे। —'शिव'

★

केवल सदस्य वृद्धि पर ही नहीं होना चाहिये। आगे चलकर यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि जब किसी धर्म या मत के अनुयायियों का रजिस्टर नहीं है तो आर्यसमाजियों का रजिस्टर कब तक चलेगा। आवश्यक यह है कि आर्यसमाज के प्रचारकों और प्रबन्धकों का रजिस्टर हो और उनमें नाम अंकित होने की कोई उत्तम विधि बनाई जाये। यह विधि क्या हो इस पर आगामी लेख में विचार प्रगट करूँगा। इस लेख को समाप्त करने से पूर्व मैं सार्वदेशिक सभा के वर्तमान अधिकारियों से अपील करूँगा कि वे अति शीघ्र आर्यसमाज के संशोधन के विषय पर ध्यान दें। और प्रमुख आर्यों का सम्मेलन बुला कर उसकी प्रतिष्ठा करायें। सार्वदेशिक सभा का आगामी वार्षिक अधिवेशन देहली में हो और उनसे दो दिन पूर्व प्रमुख आर्यों का सम्मेलन बुलाया जाये और नियमों के संशोधन का विषय वार्षिक अधिवेशन की विषय सूची में अंकित होना चाहिये और यह भी अत्यन्त आवश्यक है कि वार्षिक अधिवेशन से पूर्व जो विवाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में चल रहा है उसको समाप्त कराने का यत्न हो आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रश्न को भी हल किया जाये। इन विवादों के अन्त कराने में यदि मेरी सेवाओं की आवश्यकता हो तो मैं दे सकता हूँ मेरा २५ वर्ष से आर्यसमाज से सम्बन्ध है और वर्तमान दशा देखकर मुझे बड़ा दुःख है और इसलिए मैंने यह लेख लिखा है किसी संस्था या किसी व्यक्ति विशेष पर आक्षेप करने का मेरा विचार नहीं है।

★

महर्षि का उपकार

प्रथम आर्य देश में थे निर्माण हुआ नर सृष्टि का।
सम भावना थी न भेद था न स्वर भिन्न दृष्टि का॥
मिल एक से हो एक रखते गौरवता निज देश की।
छवि चमकती विश्व में प्यारी परम पावन वेष की॥
संलग्न रहते अपने अपने देश के हित कार्य में।
शुभ कर्म से व्यवहार चलता वेद अनुसार आर्य में॥
सत्यता की भावना थी सब दम्भ का अभाव था।
सद नीति के अनुकूल चलते वेदों का प्रभाव था॥
वन पहाड़ में रहते ऋषी तप तेज में भरपूर थे।
पढ़ते सभी सद वेद विद्या योग में न दूर थे॥
गुरुकुल में अध्ययन करते बाल ब्रह्मचर्य धार के।
पढ़ शास्त्र शुभ धर्म नीति वही आते गृह विचार के॥
गृहस्थ में प्रवेश हो नित्य पालन करते धर्म को।
वेद विधी सब भावना से करते रहते कर्म को॥
हवन सन्ध्या कर्म नित्य करते सब नर नारी मिल।
मन मुदित दम्पति प्रेम रस में रहते नित सुख में खिल॥
परस्पर का द्वेष तज जुट जाते एकता रंग में।
अभिमान के अपना रहें कर्तव्य के सब अंग में॥
निज देश की उन्नति में अपनी उन्नति को मानते।
जीवन सुख से बसर करते सु वेद विद्या जानते॥
वही आर्य धर्म आदि का जग धारण सुख रूप है।
उपदेश वेद विचार पावन भव्य भाव अनूप है॥
आर्य संस्कृति अटल रहेगी जब तक ये ब्रह्मांड है।
आवृत्ति लाखों बार हो हैं अन्य मत सब कांड है॥
आर्य विचलित हो न सके आसुरी लाखों आ बसे।
आकाश को न गिरा सके चमक दि लाखों आ धसे॥
ईश्वरकृत सत्य वेद नियम को कौन है परिवर्तन करें?
आनन्द प्रद आर्य लोक में आर्य महर्षि अभ्यर्थन करें।
आर्य अपना वेद है ये ही आर्य अपना देश है।
आर्य धर्म व्यवहार सब वही आर्य मानव वेष है॥
आर्य शासन देश में था सब आर्य पर चलते।
आर्यों की थी वेदवाणी आर्य धरा पर राजते॥
समस्त थे भू भाग पर यह आर्यों का निजराज थे।
सत-वेद विद्या द्रव्य से सुसज्जित सब विधि साज थे।
जय सिन्धु से हिमवान तक रामेश्वर के थे वहीं
अमरनाथ से कन्याकुमारी तक स्वराज थे यहां॥
आर्यों की है मूल भाषा संस्कृत सुर वाणी है।
सृष्टि की आदि में रची सब विद्या की महारानी है॥
सब विश्व भाषा की जननी वेद-वाणी है यही।
अति मृदु रसयुक्त सब गुणमय, लोक वाणी है यही॥
अनेक भाषा विकृत हो जावे ही नित्य बदलवे।
किन्तु न विद्या बदलती शुद्ध रूप रहती अदलवे॥
यह राज भाषा देव भाषा वेद भाषा जानती।
है शुद्ध अति निरदोष प्यारी, विश्व में प्रकाशती॥
अविद्या अंधेरे थी निशी पाखण्ड का भरमार था।
पोप लबार पापियों का दुखद पापाचार था॥
शूद्र विधवा अनाथों का अति देश में अपमान था।
वेद शिक्षा से रहते वंचित कुछ भी न अपना ज्ञान था॥
आये दयानन्द महर्षि वह नाम जिनका काम था।
कर गये अछूतोद्धार स्वामी, आर्य महर्षि नाम था॥
गई भूल से अब वहां निशा थी घर दुखद क्लेश की।
अर्योदय अब हो गया अति आभा चमकी देश की॥

—कस्तूरचन्द 'घनसार' आर्यसमाज पीपाड़ (राज०)

स्वामी दयानन्द की संस्कृत सेवा

[ले०—श्री प्रा० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए०]

आर्यसमाज के संस्थापक के व्यक्तित्व और कृतित्व पर जब हम गम्भीरतापूर्वक विचार करते हैं तो हमे ज्ञात होता है कि उन्हें अपने महत् अनुष्ठान की पूर्ति के लिये संस्कृत भाषा और उसके महान साहित्य से अपार सहायता और अदम्य प्रेरणा प्राप्त हुई। प्रस्तुत अध्याय मे हमे यही विचार करना है कि स्वामी जी के द्वारा प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप मे संस्कृत भाषा और संस्कृत वाङ्मय की जो सेवा हुई है वह कितनी महत्वपूर्ण है। सब प्रथम जब हम स्वामी जी के बाल्यकाल पर दृष्टिपात करते हैं तो हमे उनके लालन-पालन, उनके शैशव काल तथा तत्कालीन वातावरण मे कई विशिष्टतायें दृष्टिगोचर होती हैं जो समकालीन अन्य महापुरुषों से भिन्न दिखाई देती हैं। राममोहनराय यद्यपि ब्राह्मण कुलोत्पन्न थे परन्तु उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अरबी फारसी के माध्यम से मुसलमानी परिपाटी का अनुसरण करते हुये हुई देवेन्द्रनाथ ठाकुर जिस आभिजात्य कुल का गौरव और वैभव लेकर जन्मे उसे देखते हुये यह आश्चर्यजनक ही लगता है कि वे अपने जीवन मे योगियों की सी वीतरागता तथा स्थित प्रज्ञ दृष्टि का समावेश करा सके। केशवचन्द्रसेन की शिक्षा-दीक्षा तो पाश्चात्य शैली पर ही हुई थी, अत यदि उन्होने ब्राह्मसमाज मे से पौरस्त्य भावों का निष्कासन कर उसे पश्चिमी ईसाई पद्धति पर ढालने का प्रयास किया तो आश्चर्य ही क्या ?

स्वामी दयानन्द एक ऐसे ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुये थे, जिसमें वेदों के अध्ययन की परम्परागत परिपाटी प्रचलित थी। यद्यपि उनके पिता सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण थे परन्तु शैव होने के कारण यजुर्वेद के पठन पाठन की रीति उनके कुल मे चली आई थी। बाल्यावस्था मे ही उन्हें यजुर्वेद संहितान्तगत स्वाध्याय की शिक्षा दी जाने लगी। १८९४ वि० मे जब वे १४ वर्ष के थे, उनको यजुर्वेद संहिता कण्ठस्थ हो गई थी, तथा कुछ कुछ अन्य वेदों का भी उन्होंने अभ्यास कर लिया था। बाल्यावस्था में वेदपाठ के ये संस्कार ही आगे चलकर उनमे विशेषरूप से उद्बुद्ध हुये जबकि वेद के प्रचार को ही उन्होने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बनाया और संसार ने उन्हें वेद के एक अप्रतिम प्रचारक के रूप मे स्वीकार किया। व्याकरण के शब्द रूपावली आदि ग्रन्थों को भी बालक मूलशंकर ने अपने पिता से इसी अवस्था मे पढ़ लिया था।

बाल्यावस्था से ही मूलशंकर विद्या की अदम्य प्यास लेकर उत्पन्न हुये थे। सम्वत् १९०० में जब उनकी आयु का बीसवां वर्ष समाप्त हो रहा था तथा उनके माता-पिता उन्हें विवाह बन्धन में बांधकर निश्चित हो जाना चाहते थे, उस समय युवा मूलशंकर का व्याकरण, ज्योतिष और वैद्यक पढ़ने काशी जाने की इच्छा व्यक्त करना यह सूचित करता है कि वे विद्या विलासी और शास्त्र जिज्ञासु जन्म से ही थे। वैराग्य ग्रहण करने के अनन्तर तो उनकी ज्ञान पिपासा लिप्सा और भी तीव्र हुई। अब उन्हें समय भी पर्याप्त मिलने लगा। ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य के रूप मे वैराग्य की दीक्षा लेकर जब उन्होने अपने आपको सर्वात्मना विद्याभ्यास और शास्त्रचिंतन में लगाया। तब भी भोजनादि के बखेड़े के कारण वे अपना पूरा समय इस ओर नहीं दे पाते थे। उनका सन्यास ग्रहण मे एक प्रयोजन यह भी था जिससे कि वे समग्र विधिनिषधों से मुक्त होकर एक मात्र विद्याध्ययन मे ही प्रवृत्त हो सकें तथा सर्वशास्त्र निष्णात, सब तन्त्र स्वतन्त्र सन्यासी बन कर धर्मालोचना मे प्रवृत्त हों।

अपने प्रमुख शास्त्र एव दीक्षा गुरु स्वामी विरजानन्द के समीप पहुंचने से पूर्व स्वामी दयानन्द ने अनेक गुरुओं के सान्निध्य मे रहकर शास्त्राभ्यास किया था। कृष्ण शास्त्री से उन्होने व्याकरण के कुछ ग्रन्थ पढ़े तथा चाणोद कर्नाली निवासी किसी राजगुरु से वेदाध्ययन किया। उत्तराखण्ड भ्रमण के प्रसंग में उन्हें अनेक विलक्षण अनुभव हुये। टिहरी राज्य मे निवास करते हुये उन्हें तन्त्र ग्रन्थों के अध्ययन करने का अवसर मिला और इन ग्रन्थों के अध्ययन के अनन्तर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इन ग्रन्थों को तामस शास्त्रों की कोटि में ही रक्खा जा सकता है। सदाचार और लोक मर्यादा विरुद्ध पंचमकारादि के जो प्रयोग तन्त्र ग्रन्थों मे बताये गये हैं वे इन ग्रन्थों के रचयिताओं की विकृत और दूषित बुद्धि ही सूचित करते हैं। उत्तराखण्ड भ्रमण के अनन्तर स्वामी जी गंगा तट पर विचरण करते रहे। इस समय वे संस्कृत भाषा ही बोलते थे तथा मात्र कौपीन ही उनका वस्त्र था। अब तक उन्होंने शिवसन्ध्या, हठप्रदीपिका, योगबीज आदि हठयोग के ग्रन्थों का भी अध्ययन कर लिया था, परन्तु एक शव का परीक्षण कर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि हठयोग के ग्रन्थो मे दी जाने वाली शरीर रचना मिथ्या ही है क्योंकि मनुष्य शरीर मे उस प्रकार के चक्रादि उपलब्ध नहीं होते जैसा कि उनका वर्णन इन ग्रन्थों मे मिलता है।

विद्या की जो अदम्य प्यास स्वामी दयानन्द मे थी, उसकी पूर्ण परितृप्ति उन्हें स्वामी विरजानन्द के निकट आकर हुई। प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द ने विपरीत परिस्थितियों मे भी संस्कृत व्याकरण पर जैसा असाधारण अधिकार कर लिया था, वह वस्तुत प्रशंसा की वस्तु थी। अपने युग मे वे 'व्याकरण के सूर्य' के नाम से विख्यात थे और पाणिनिकृत अष्टाध्यायी तथा पातञ्जल महाभाष्य पर उनका असाधारण अधिकार था। जराजीर्ण शरीर लेकर भी वे मथुरा मे अपनी पाठशाला चलाते थे जिसमे शास्त्र शिक्षण के लिये दूर दूर के छात्र आते थे।

संवत १९१७ कार्तिक सुदी २ को स्वामी दयानन्द मथुरा मे स्वामी विरजानन्द की पाठशाला मे प्रविष्ट हुये। लगभग २॥ वर्षों तक स्वामी दयानन्द ने यहां विद्याभ्यास किया तथा अष्टाध्यायी, महाभाष्य वेदान्तसूत्र तथा कतिपय अन्य ग्रन्थों का अध्ययन किया। विरजानन्द के अध्यापन मे कुछ विशेषतायें थीं। प्रथम तो उनकी यह धारणा थी कि संस्कृत मे जितनी शास्त्र सम्पत्ति है उसे आर्ष और अनार्ष इन दो भागों मे विभक्त किया जा सकता है। आर्ष ग्रन्थ वे हैं जिन्हें साक्षात्कृतधर्मा मन्त्र द्रष्टा ऋषियों ने अपनी ऋतम्भरा बुद्धि से लिखा है तथा जिनमे सत्य का पूर्ण प्रतिपादन है। इसके विपरीत जो सामान्य मनुष्य रचित ग्रन्थ हैं वे मिथ्या, विज्ञान, युक्ति और बुद्धि विरुद्ध हैं। इनमे से अधिकांश कपोल कल्पना युक्त अतिशयोक्तिपूर्ण तथा आडम्बरयुक्त होने से त्याज्य हैं। स्वामी विरजानन्द का यह भी मत था कि भागवतादि पुराण ग्रन्थ सर्वथा नवीन एवं कपोल कल्पित हैं अतः उन्हें वेदादि सत्य शास्त्रों की तुलना में कदापि मान्य नहीं कहा जा सकता और न उनका प्रामाण्य ही हो सकता है।

शास्त्र विषयक इन मान्यताओं का स्वामी दयानन्द पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उन्होने अपने भावी कार्यक्रम में आर्ष ज्ञान के प्रचार को अपना महत्वपूर्ण लक्ष्य बनाया साथ ही उन्होंने यह भी दृढ़ निश्चय कर लिया कि धर्मालोचन मे वेद को एकमात्र प्रमाण ग्रन्थ के रूप मे स्वीकार किया जाना चाहिये तथा वेदानुकूल होने से ही अन्य ग्रन्थ मान्य हो सकते हैं। वेद के प्रतिकूल किसी भी ग्रन्थ का प्रामाण्य स्वीकार नहीं किया जा सकता।

स्वामी जी का संस्कृत शास्त्राध्ययन का कार्यक्रम विरजानन्द की पाठशाला पर ही समाप्त नहीं होता। वे अपने भावी जीवन मे भी शास्त्रमन्थन के कार्य मे सतत तल्लीन रहे। एक प्रसंग मे उन्होने कहा कि संस्कृत के लगभग ३ हजार ग्रन्थो का अवलोकन कर उन्होने अपने धार्मिक सिद्धान्तो को अन्तिम रूप प्रदान किया है।

संस्कृत के पठन पाठन के लिए स्वामी जी ने एक विशिष्ट क्रम निर्धारित किया था। उसका उल्लेख उन्होने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के पठन पाठन विषय के अन्तर्गत किया है। सत्यार्थ प्रकाश मे संस्कृत भाषा तथा साहित्य के पठन पाठन का निम्न क्रम निर्धारित किया गया है—सर्वप्रथम पाणिनि रचित शिक्षा सूत्र पढ़ाया जिससे उच्चारण ज्ञान हो सके। पश्चात छात्र को अष्टाध्यायी सूत्र पाठ से व्याकरण का बोध कराया जाय। अष्टाध्यायी की प्रथम आवृत्ति मे धातु पाठ अर्थ सहित और दस लकारों के रूप तथा प्रक्रिया सहित सामान्य और अपवाद सूत्रों का ज्ञान कराया जाय। इसके अनन्तर उणादि गण, पुन शंका समाधान, वार्तिक, कारिका और परिभाषा पूर्वक अष्टाध्यायी की द्वितीय आवृत्ति कराई जाय। तदुपरान्त महाभाष्य का अध्ययन करना आवश्यक है। सम्पूर्ण आर्ष व्याकरण का बोध होने में स्वामी जी ३ वर्ष का समय (डेढ़ वर्ष में अष्टाध्यायी और डेढ़ वर्ष मे महाभाष्य) पर्याप्त मानते हैं।

व्याकरण के अनन्तर यास्क कृत निघण्टु और निरुक्त का अध्ययन ६ या ८ महीने मे समाप्त हो सकता है। अनन्तर पिंगलाचार्य कृत छन्दो ग्रन्थ से वैदिक और लौकिक छन्दो का ज्ञान तथा नवीन श्लोक रचना का अभ्यास चार मास मे करे। पुन मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत के उद्योग पर्व के अन्तर्गत विदुर नीति के प्रकरण तक और नीतिशास्त्र के अध्ययन की दृष्टि से पढ़ें। इन ग्रन्थो के अध्ययन मे एक

[शेष पृष्ठ ९ पर]

भाषा या पन साम्प्रदायिक उन्माद—

हैदराबाद में रजाकारी तत्व सिर उठा रहा है

उर्दू की आड़ में इस्लामी राज्य की मांग

स्थान स्थान पर सभाओं में देशद्रोहात्मक भाषणों का सिलसिला

हुकूमत मुसलमानों के वोटों के चक्कर में कर्तव्य विमूढ़

(ले०—श्री छमनलाल विजयवर्गी)

हैदराबाद के साम्प्रदायिक मुसलमानों तथा रजाकारी काल की मजलिस इत्तहादुल मुसलमीन ने एक भयानक कुचक्र चलाया है। इस समय उन्होंने उर्दू की आड़ ले रखी है। गत दो वर्षों से आन्ध्र के उर्दू पत्रों ने इस बात का एक बवण्डर खड़ा कर दिया है कि उर्दू को भी तेलगू के समान राजभाषा स्वीकार कर लिया जाये। देश की जो भी समस्या हो इन उर्दू पोषकों का उसकी ओर कोई ध्यान नहीं। उन्हें केवल उर्दू का ढोल पीटने की ही धुन है। उधर उर्दू माध्यम वाले स्कूलों में छात्रों के न मिलने पर उनके वर्ग बन्द होते जा रहे हैं किन्तु उर्दू पत्रों में उर्दू माध्यम के स्कूलों और समानान्तर उर्दू वर्गों के खोलने की मांग जारी है, ताकि उर्दू पढ़ाने के नाम पर कुछ लोगों को रोजी मिल जाए।

क्या उर्दू अल्पसंख्यकों की भाषा है ?

प्रश्न यह है कि किसी भी प्रदेश में अल्पसंख्यकों की मर्यादा क्या है ? क्या प्रदेश की सम्पूर्ण जनसंख्या का २।४।५ प्रतिशत समूह भी अल्पसंख्यकों की परिभाषा में आता है ? और क्या उनकी भाषा को क्षेत्रीय भाषा का दर्जा दिया जा सकता है ? हैदराबाद नगर और तेलगाने क्षेत्र के कुछ नगरों को छोड़ दें तो आन्ध्र में उर्दू भाषी जो प्रायः सभी मुसलमान हैं बहुत कम हैं। सम्पूर्ण आन्ध्र प्रदेश की जन संख्या ३ करोड़ २७ लाख से अधिक है। इसमें उर्दू भाषी ५-६ प्रतिशत भी नहीं है। क्या ५ ६ प्रतिशत की भाषा उर्दू को आन्ध्र प्रदेश की मूल भाषा तेलगू के समान राजभाषा का पद दिया जाएगा ?

वोटों का चक्कर

इस समय आन्ध्रप्रदेश विधान सभा के सामने तेलगु को राजभाषा बनाने का बिल विचाराधीन है। बिल सिलेक्ट कमेटी के सुपुर्द किया गया है। आन्ध्र के मुख्य मन्त्री पर सभी मुस्लिम (कांग्रेसी, साम्यवादी और मजलिस मोहिदीन सहित) विधायक इस बात का दबाव डाल रहे हैं कि बिल में उर्दू को तेलगू के समान दर्जा दिया जाए। आन्ध्र के कुछ ऐसे विधायक जो तेलगाना क्षेत्र से बाहर के हैं और जो साम्प्रदायिक और रजाकारी मुस्लिम मनोवृत्ति से सर्वथा अपरिचित हैं, मुख्य मन्त्री श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी और विधि मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंहराव पर निरन्तर दबाव डाल रहे हैं कि मुस्लिम वोटों की खातिर उर्दू को तेलगू के समान राजभाषा स्वीकार किया जाए। हैदराबाद नगर में मुस्लिम वोट की समस्या है। इसी एक नगर के असेम्बली के २-३ सीटों की खातिर सदा के लिए उर्दू का फन्दा गले में डालने की तैयारी हो रही है।

उर्दू की आड़ में देशद्रोहिता

मेलादुलनबी के जलसों में, उर्दू की मांग के लिए आमन्त्रित सभाओं में, उर्दू लेखकों और कवियों के जन्म अथवा मृत्यु दिवस के जलसों में, ऐसी ऐसी भयानक और देश द्रोहात्मक तकरीरें हो रही हैं कि उनमें भारतीय विधान को चुनौती दी जा रही है उसको गैर इस्लामी कहकर उसके प्रति द्वेष और घृणा की भावना फैलाई जा रही है। मजलिस इत्तहादुल मुसलमीन के तुरन्त हुए उत्सव में तो देश द्रोहिता का नग्न प्रदर्शन हुआ है। ऐसे व्यक्तियों ने भी विषैले भाषण दिये हैं जिन पर न्यायालय ने जबान बन्दी की पाबन्दी लगा दी है। हुकूमत इसलिए विवश है कि (१) आगामी चुनावों में उसे मुस्लिम वोट चाहिए, (२) आन्ध्र के गृहमन्त्री मुसलमान हैं, और पुलीस सी० आई० डी० का विभाग मुसलमानों से पटा पड़ा है और (३) कांग्रेस की गुटबाजी इतनी भयानक है कि यदि एक ऐसे देश द्रोहियों के विरुद्ध कोई सख्त कदम उठाना है तो दूसरा मन्त्री इन साम्प्रदायिक मुसलमानों की पीठ ठोकता है। इसके पीछे मुसलमानों की हिमायत प्राप्त करना उद्देश्य है।

हिन्दी का भी विरोध

एक आश्चर्य की बात कि प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उर्दू के हिमायती हिन्दी के विकास को सहन नहीं करते। जहां भी सम्भव हो हिन्दी की उपेक्षा में एड़ी चोटी का जोर लगा देते हैं। आन्ध्र के कुछ विधायक हिन्दी के बड़े विरोधी हैं। उनमें से कुछ उर्दू की इसलिए हिमायत कर रहे हैं कि उर्दू के कारण हिन्दी का प्रभाव कम होगा। आन्ध्र में आज हाई स्कूल का प्रत्येक छात्र किसी न किसी रूप में हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ता है। उर्दू भी तेलगू के साथ साथ राजभाषा बन जाए तो उर्दू की शिक्षा अनिवार्य हो जाएगी और हिन्दी का स्थान विवादित होगा। हैदराबाद के विचारशील और दूरदर्शी लोग उर्दू के इस आन्दोलन को अत्यन्त चिंता की दृष्टि से देख रहे हैं।

मुसलमानों की ईमानदारी का इनाम उर्दू

एक विधायक ने जो, विरोध पक्ष से सम्बन्ध है विधान सभा में भाषण देते हुए कहा कि पाकिस्तान से संघर्ष के दिनों में मुसलमानों ने जो सेवाएं की हैं उनको दृष्टि में रखते हुए उर्दू की मांग को स्वीकार किया जाए।

★

स्वामी जी के उस सपने को साकार हमें करना होगा

जब देश पै बादल थे छाये जब वीर हकीकत खोया था।
जब देश हमारा रोया था बन्दा गोबिन्दा खोया था॥
औरंगजेबी नादिरशाही, खूनी तेगें चमकी थीं।
मासूम हृदय के टुकड़ों से रक्तिम दीवारें दमकी थीं॥
जीवन भर बाला विधवायें कौम को अपनी रोती थीं।
सतिया सुहाग की लाली को आंसू से अपने धोती थीं॥

वेदों को लेकर आड़ किया पण्डों ने अत्याचार यहां।
लेकर प्रश्रय उपनिषदों का फैलाया भ्रष्टाचार यहां॥

तब धीर हृदय को प्राची में एक नवप्रभात का उदय हुआ।
लेकर प्रकाश तब वेदों का ऋषि दयानन्द ने जन्म लिया॥
जब नैया पड़ी भंवर में थी तब मांझी बन वह आया था।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' यह वेदों का तथ्य बताया था॥

स्वामी की वाणी कल्याणी सुन आर्यवीर तब जागे थे।
सदियों से खोई मानवता के सोये भाग्य जगाये थे।
उठना होगा चलना होगा अब तो आगे बढ़ना होगा।
स्वामी जी के उस सपने को साकार हमें करना होगा॥

युधिष्ठिर कुमार प्रदीप

आर्यसमाज

आज भारत के उत्कर्ष हित अति हर्ष भर कर
वेद की अगणित ऋचायें एक स्वर में गा रही हैं।
आर्य जन की टोलियां वसुधा सदन की साधना के,
ओ३म की पावन पताका व्योम में फहरा रही हैं।

विश्व में जो एक अन्धाधुन्ध सा छाया हुआ है।
नायकों अधिनायकों के व्यस्त कोपों की कथा है।
छोड़ धरती की सतह जो उड़ चला नभ को बसाने,
दिग्विजय हरगिज नहीं विज्ञान की वैदिक कथा है।

सरहदों को लांघते डग डग उठाये बढ़ रहे हैं
राज भोगों की हदें फिर भी न लांघी जा रही हैं।
अतिक्रमण, अन्याय, अत्याचार को जीवित जलाने,
सत्य की ज्वाला समाजों में सुलगती आ रही है।

—कृपाशंकर शर्मा

नारी जाति का जीवनदाता—
आर्यसमाज

[श्री कु० सुशीला आर्या एम० ए० कन्या गुरुकुल नरेला]

प्रत्येक व्यक्ति विशेषतः संस्था के कुछ मूलभूत सिद्धान्त एवं नियम होते हैं जिनके आधार पर जीवन यात्रा का निर्वाह किया जाता है। इन्हीं सिद्धान्तों को आधारभूत मानकर हम संस्था या व्यक्ति की गतिविधि से अवगत हो सकते हैं। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द जी द्वारा निर्धारित दश नियम ऐसे ही हैं। इनमें एक छठे नियम के अनुसार संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक तथा आत्मिक साथ ही समाज की उन्नति में बतलाई गई है। अर्थात् आर्यसमाज ने अपनी उदार दृष्टि समस्त संसार पर डाली है अपनी विशाल भुजाओं में सब को समेटा है फिर नारी जाति इसकी सर्वतोप्रवाहिनी करुणा धारा से कैसे अनाप्लावित रहती।

सचमुच आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व नारी जाति की अत्यन्त दयनीय दशा थी। अनेक घातक कुरीतियां नारीसमाज में जड़ जमाए बैठी थीं। जिनके परिणाम स्वरूप क्या कहना उन्नति का उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ा था। वैदिक युग की सत्कृता उच्चपदासीना नारी माता, पत्नी, कन्या, बहिन सभी रूपों में तिरस्कृत हो चुकी थी। कन्या-वध, बाल-विवाह, विधवा विवाह निषेध, स्त्री शिक्षा को पाप समझना, पर्दा प्रथा इत्यादि अनेक रूढ़ियां प्रचलित होकर तथाकथित धर्म का रूप धारण कर चुकी थीं। एक समय था जब स्त्री को पति के साथ जल मरने को बाधित किया जाता था। इस कुप्रथा के निवारणार्थ महान सुधारक राजाराम मोहन राय जी ने पूर्ण प्रशंसनीय यत्न किया। किन्तु महर्षि दयानन्द एक ऐसे दिव्य दयालु सुधारक हुए कि जिन्होंने नारी जाति की अवमानना पर सर्वांगीण विचार किया। वास्तव में उनके हृदय में मातृशक्ति के प्रति करुणा का स्वाभाविक स्रोत उद्रेक कर रहा था। उन्होंने इस तथ्य को सूक्ष्मदर्शिनी प्रतिभा से स्थिर कर लिया था कि नारी की उन्नति के बिना समाज का सुधार असम्भव है। इस त्रुटि की निवृत्ति के लिए उन्होंने द्विमुखी कार्य-विधि अपनाई। एक तो स्त्री शिक्षा के प्रसार पर बल दिया जिससे नारी जाति की सोई चेतना ने अंगड़ाई ली वह सजग होकर अपने अस्तित्व की दुहाई देने लगी। दूसरे सामाजिक चेतना उत्पन्न कर नारी जाति की उन्नति का महत्व हृदयङ्गम कराया। इन दोनों यत्नों में उन्हें विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, क्योंकि मध्यकालीन रूढ़िवादियों तथा पाखण्डियों ने समाज में नारी जाति की स्थिति संकटापन्न कर दी थी तथापि ऋषि ने अपना पूरा बल लगा था और उनके उत्तराधिकारी आर्य समाज ने भी नारी कल्याण के मार्ग पर पग बढ़ाए।

आर्यसमाज ने शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। तत्र स्त्री शिक्षा प्रसार में भी उसने पहल की। शिक्षा का अधिकार मुख्य वरदान था जिसने हाथों के पाश में सबके पाव की भांति अन्य सुधार भी बन आ गये। पढ़ी लिखी देवियां पर्दा छोड़कर संसार क्षेत्र में आईं। बाल विवाह का विरोध स्वयं उनकी ओर से भी होना प्रारम्भ हुआ। शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर आर्य-समाज ने विवाह सम्बन्धी उन कुरीतियों का—जिनके पंजे में फंसकर नारी जाति लहूलुहान हो रही थी—निवारण किया। वैदिक गृह व्यवस्था के ऐतिहासिक तथा वेद मन्त्रों के प्रमाण देकर उसका सम्मानित रूप क्या सर्वमान्य जनता और क्या धर्म के तथाकथित ठेकेदारों के सामने प्रस्तुत किया। आगे चलकर अन्य मतावलम्बियों ने भी नारी शिक्षा के पक्ष में सहमति प्रकट की तथा अपनी अपनी धार्मिक संस्थाएं भी चलाईं। स्वाधीनता आन्दोलन में नारी का जो जागृत रूप देखने में आया उस जागृति को लाने में आर्यसमाज का बड़ा हाथ था। मनु महाराज के निष्कर्ष रूप कथन को डंके की चोट से सर्वप्रथम उद्घोषित करने वाला आर्यसमाज ही था—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफला क्रिया ॥

इस गगनभेदी घोष में नारी शूद्रौ नाधीयतामिति' 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी' इत्यादि अनेकानेक हीनता के द्योतक कथन नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह गए। क्योंकि आर्यसमाज के पास अपना पक्ष पोषण करने के लिए वेद का सम्बल था इसलिए उसकी वाणी में बल था। उसने वेदोक्त विविध स्वरूपों का उद्घाटन नारी सम्मान के प्रसंग में किया। देखिए वेद नारी को क्या कह कर सम्बोधित कर रहा है—

इड रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति। एता तेऽघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात ।

यजुर्वेद ८/४३

आदि सृष्टि में इतने सर्वोत्तम सुन्दर प्रशस्य विशेषणों से सम्बोधित की जाने वाली नारी क्या कभी किसी की अवमानना की पात्री बन सकती है? कभी नहीं। यही क्यों वेद के अनुसार आर्य समाज नारी के संतुलित रूप को जन जीवन में लाया। वह घर की रानी भी है। सास, ससुर ननद देवर पर सम्राज्ञी है। 'शिवा भव मोष्ठ पशुभ्य' कहकर उसे पशु सेवा द्वारा घर को सुख समृद्धि आरोग्यता बढ़ाने के लिए भी आदेश है साथ ही वह विश्रुत मही भी है। न्यायाधीश राजा जहां पुरुषों का न्याय करता है उनकी पत्नियां भी स्त्रियों का न्याय करें ऐसा वेद का स्पष्ट आदेश है।

आज भारतीय महिला उन्नति की चरम सीमा का स्पर्श कर चुकी है। यहां तक कि राजनीतिक क्षेत्र में सारे देश की महिला प्रधान मन्त्री है। अन्य भी अनेक गौरवपूर्ण पदों को अलंकृत कर रहीं या कर चुकी हैं। पैर की जूती से प्रधान मन्त्री की कुर्सी तक पहुंचने में नारी ने जो लम्बी दौड़ दौड़ी है उसमें उसके राह के सारे कांटे आर्यसमाज ने ही चुने हैं। इस प्रक्रिया में देव दयानन्द ने तो विष के प्यालों से नाता जोड़ा ही अन्य भी अनेक ऋषि भक्तों को अपना तन मन क्षत विक्षत करना पड़ा है। यह सब कहने या लिखने के लिए नहीं, सत्य की सुगन्ध से सना तथ्य है।

हमें एक पल को भी यह न भूलना चाहिये कि आर्यसमाज हमारा जीवन दाता है। उसने हमें मृत्यु के कराल करों से मुक्ति दिलाई है। अपमान की उपेक्षा, हीन भावना की मौत क्या हमारी जाति नहीं मर रही थी? आज भी लज्जा और मर्यादा के बन्धन तोड़ने को उतावली नारी को सपत्त जीवन की आदर्श प्रेरणा देता हुआ आर्यसमाज उसे विनाश पथ पर गति करने से रोक रहा है। अन्य किसी ओर से ऐसा प्रयत्न होता हुये दृष्टिगोचर नहीं होता। नारी का सच्चा हित चिन्तक आर्यसमाज है अन्य लोग तो कांटों में उसका आंचल उलझा कर उसके नग्न स्वरूप या क्षत विक्षत शरीर का उपहास करने मात्र की दुराशयता रखते दीखते हैं इसलिए नारी को चाहिये कि वह अपने उपकारक के उपकार माने। उसके प्रति कृतज्ञता प्रकाशन का एक ही सुचारु ढंग है वह है वेद वर्णित निर्दिष्ट सत्य मार्ग पर चलना। सत्शिक्षा ग्रहण करके भी गृह कार्यों के प्रति हीन भावना न रखना विदेश में जाकर भी स्वदेश की मर्यादा को न भूलना छोटे बड़ों के प्रति सम्बन्धों की मर्यादा को सुरक्षित रखना सामाजिक कार्यकर्त्री होने पर भी माता पत्नी बहिन पुत्री व पुत्र वधू के रूप में अपने को ढालना। अथवा दो शब्दों में यों कहिये नारी बनी रहना। नारीत्व के संरक्षण में ही सब कुछ आ जाता है। यदि हमारे देश की नारी नारी न रहकर पुरुष बन गई तो इस पद की पूर्ति कौन करेगा? इसी प्रश्न पर हमें आज आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर विचार करना है।

स्वामी दयानन्द की संस्कृत सेवा

[पृष्ठ ७ का शेष]

वर्ष लगाना पर्याप्त होगा। इसके बाद सांख्य योग, न्याय वैशेषिक पूर्वमीमांसा तथा वेदान्त इन षड् दर्शनों को आर्ष व्याख्याओं सहित पढ़े। वेदान्त सूत्रों के पढ़ने से पूर्व ईशादि दश उपनिषदों का पढ़ना आवश्यक है। पश्चात् दो वर्षों में ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मणों के सहित चारों वेदों को स्वर शब्द अर्थ, सम्बन्ध तथा क्रिया सहित पढ़ना चाहिये। वेदाध्ययन के उपरान्त आयुर्वेद (चरक, सुश्रुत), धनुर्वेद गान्धर्व वेद (भरत संहिता) तथा अर्थवेद इन चारों उपवेदों का अध्ययन किया जाना चाहिये। तत्पश्चात् ज्योतिष के सूर्य सिद्धान्तादि ग्रन्थ भी पढ़ने चाहिये जिन में बीजगणित अंकगणित भूगोल खगोल तथा भूगर्भ आदि विषय हैं। ऋग्वेद भाष्य भूमिका में भी इसी पठन पाठन विधि का संक्षेप में लिखा गया है पाठ्य ग्रन्थों का नामोल्लेख करने के साथ साथ स्वामी जी उन अनार्ष ग्रन्थों की भी सूची प्रस्तुत करते हैं जिनका अध्ययन वे उचित नहीं समझते। पठन पाठन प्रणाली का यह विस्तृत विवरण यह सिद्ध करता है कि स्वामी जी संस्कृत शिक्षा पद्धति के मर्मज्ञ शिक्षा शास्त्री थे।

विज्ञान वार्ता

चमत्कारी औषधि—सल्फाड्रग

(ले०—प्रो० रूपनारायण मोहिले)

सल्फेनिल एमाइड की भी जांच-पड़ताल इसी तरह शुरू कर दी गई और बहुत मेहनत के बाद रसायनज्ञ इस नतीजे पर पहुचे कि सल्फनिल एमाइड के अणु मे (क) पाच तत्व—कार्बन, हाईड्रोजन, आक्सीजन, नाईट्रोजन होते हैं।

(ख) इनमे प्रत्येक के ऐटमों की संख्या इस प्रकार है—

कार्बन—६ नाईट्रोजन—२ हाईड्रोजन—८ सल्फर—१ आक्सीजन—२

(ग) कार्बन ६ एटम आपस मे एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े होते हैं कि एक षट्कोण बन जाता है जैसा कि बेंजीन अणु में होता है।

इनके अतिरिक्त इसी प्रकार के और भी पदार्थ जैसे सल्फा गुआनीडीन सल्फा डेराजीन सल्फा मीथाजीन, सल्फा थायसेजोल इत्यादि अनेक नाम की दवाये बन गई जिनके गुण सल्फनिल अमाइड से भी कहीं अधिक थे और बाजार में इनके पहुचते ही डाक्टरों के नुस्खे से सल्फेनिल एमाइड का नाम गायब होने लग गया।

साधारण व्यक्ति को जो रसायन शास्त्र नहीं जानता इन नामों के बोलने में कुछ कठिनाई का अनुभव होता है। अत. लोग इन दवाओ को सल्फा ड्रग यानि कि (मथक-युक्त दवा) के नाम से जानने लगे हैं। यह सल्फा दवाये बड़ी जल्दी लोकप्रिय हो गई क्योंकि सल्फा पाइरिडीन निमोनिया के लिए, सल्फा थायाजोल-स्टेफिलोकाकी इन्फक्शन के लिए सल्फा गुआनोडीन और सक्सीडीन आंतो की सूजन के लिए बहुत गुणकारी साबित हुई।

बैक्टीरियो की जांच पड़ताल करने वाले वैज्ञानिको के सामने अब यह प्रश्न था कि आखिर इन सल्फा दवाओ मे कौन सी ऐसी बात है जो बड़े बड़े भयंकर रोगों के कीटाणुओं को मार देती हैं। बहुत खोजबीन के बाद इस रहस्य का सूत्र भी पता लग गया। यह भी एक दिलचस्प कहानी से कम मजेदार नहीं है।

वैज्ञानिकों की खोज से यह मालूम हुआ कि प्रत्येक बैक्टीरिया चाहे हमारे लिए हानिकारक हो अथवा नहीं उसे अपने पोषण के लिए भोजन की ठीक उसी प्रकार आवश्यकता होती है जैसा कि हमें आपको। यदि बैक्टीरिया को भोजन न मिले तो वह भी भूख से मर जाते हैं। हमारे शरीर मे खून की बीमारियो के बैक्टीरिया, जिन्हे स्ट्रेप्टोकाकी कहते हैं इन्हे अपने शारीरिक पोषण के लिये विटामिन की तरह का एक पदार्थ पैरा एमीनो बैंजोइक एसिड चाहिए। बिना इसके यह बैक्टीरिया मर जाते हैं। यह पैरा एसिड हमारे शरीर मे विटामिन, प्रोटीन और खून के कणों से बनता रहता है। पैरा-एमीनो बेन्जोइक एसिड की बनावट और शक्ल सूरत सल्फेनिल एमाइड से मिलती जुलती है।

जब दवा के रूप मे सल्फेनिल एमाइड हमारे शरीर मे पहुचता है तब चूंकि इसकी शक्ल सूरत पैराएमनो बैंजोइक एसिड से बिल्कुल मिलती जुलती है, अत भूखे स्ट्रप्टोकाकी बक्टीरिया इसके धोखे मे सल्फेनिल एमाइड को खा जाते हैं। फिर सल्फनिल एमाइड अपने विषैले गुण के कारण इन बक्टीरियों को धीरे धीरे पंगु बनाकर निर्जीव कर देता है। इस प्रकार कुछ समय बाद बक्टीरिया की वंश-वृद्धि समाप्त हो जाती है जिससे हमे स्वास्थ्य लाभ मालूम होता है।

सल्फा दवाए धोखे से इन हानिकारक बैक्टीरिया पर आक्रमण करती हैं। यद्यपि उनके प्रति हमारा यह कार्य हिंसापूर्ण है, परन्तु अपने स्वास्थ्य और जीवन के हित मे हमे उनको अपना शत्रु बनाकर ऐसा करना ही पड़ता है।

सल्फा दवाए चूंकि टिकिया की शक्ल मे आसानी से निगल ली जाती है इनका कोई इन्जेक्शन नहीं लगाना पड़ता साथ साथ बहुत सस्ती भी होती हैं इसलिए इनका उपयोग गरीब मुल्कों मे तेजी से फैल गया। परन्तु बाद मे इन दवाओं को अधिक मात्रा मे बराबर खाते रहने से बहुत सी खराबियां भी पैदा होने लगीं। खासतौर पर गुर्दों पर बुरा असर पड़ता था क्योंकि सल्फेनिल एमाइड को छोड़कर अन्य नई नई सल्फा दवाए पेशाब मे रवों की शक्ल में बैठ जाती थीं जिनसे गुर्दों की नलियो को बहुत नुकसान पहुचता था। इसकी भी जांच-पड़ताल हुई और यह मालूम हुआ कि क्षारीय पेशाब में यह रवे नहीं बनते। इसलिए डाक्टर लोग मरीज को पहले कुछ सोडा बाइकारबन खिला देते थे तब दवा देते थे इस परेशानी को दूर करने के लिये फिर १९५३ के बाद से तीन प्रकार की सल्फा दवाएं मिलाकर देते थे। इसके बाद फिर ऐसी सल्फा दवाए बन गई जिनसे यह मिलाने का झंझट भी खत्म हो गया है और एक ही सल्फा क्षारीय और अम्लीय पेशाब मे काम आने लगा।

इतना सब कुछ होने के बाद भी सल्फा दवाओं की शरीर पर जो और हानिकारक प्रतिक्रिया होती है उसको रोकने का भी बहुत प्रयत्न किया गया। सल्फा दवाओ को पेनिसिलिन आदि एन्टीबायोटिक दवाओं के साथ मिलाकर दिया जाने लगा। लेकिन इससे भी पूरी सफलता नहीं मिली। यह अवश्य हुआ कि हानिकारक प्रतिक्रियायें कम हो गयीं मगर फिर एक और नई समस्या सामने आई वह यह कि बहुत से प्रकार के बैक्टीरिया जैसे गोनो काकी (सुजाक पैदा करने वाले) और स्टेफिलो काकी (छाले, फोड़े आदि जहर पैदा करने वाले) आदि पर इन सल्फा दवाओं का शुरू में तो अधिक असर पड़ता है और ऐसा मालूम होता है कि बैक्टीरिया अब खत्म हो गये परन्तु अचानक रोग लौट पड़ता है, जिसका यह नतीजा निकलता है कि यह बैक्टीरिया भी भी पिटते पिटते कुछ समझदार हो जाते हैं और फिर सल्फा दवा के धोखे मे नहीं पड़ते, या फिर इनके बाल बच्चो पर सल्फा दवा का असर ही नहीं होता। फिर भी कुछ रोगों मे सल्फा दवायें सचमुच मे कमाल कर जाती हैं।

*

ऋषि दयानन्द उवाच

स्मरण रहे सत्य से बड़ी कोई शक्ति नहीं है। सत्य स्वयं सिद्ध है, स्वयम्भू है स्वयं फल है न वह क्षीण होता है और न उसका विनाश होता है।

× ×

स्मरण रहे धर्म ही सबसे बड़ा सम्बल है। इसलिए मन से कर्म से और वचन से सब धर्म की जड़ों को ही सींच। धर्म की जय ही मनुष्यत्व की जय है। धर्म का विकास ही संस्कृति का विकास है।

× × ×

स्मरण रहे संकल्प की शक्ति ही सबसे बड़ी शक्ति है। स्वयं सृष्टि का सर्जन भी संकल्प की प्रेरणा पर ही हुआ है। इसलिए सदैव शुभ संकल्पो पर मन केन्द्रित कर। शुभ संकल्प का स्मरण और मनन करके ही स्वयं मे बदल सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

\+ +

स्मरण रहे कर्म से अनिवार्य और कोई स्फूर्ति नहीं है। कर्म से बचकर कोई भाग नहीं सकता। इसलिए आलस्य त्यागकर निश्छल निर्भीक भाव से सौ वर्ष का आयुबल भोगते हुए निरन्तर कर्म के द्वारा अपने आपको सार्थक करता रहे।

जि. आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ की रजत जयन्ती महोत्सव

दि० २६, २७ २८ फरवरी ६६ को बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुई। २७ फरवरी रविवार को छावनी मे विराट् शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमे जिले की विभिन्न टोलियों ने भी भाग लिया। महोत्सव पर श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी०, प० रघुवीरसिंह शास्त्री, श्री तिलोत्तमा यती आदि आर्य नेताओं व विद्वानों के ओजस्वी भाषण हुए। २६ ता० को महिला सम्मेलन भी विशेष सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। अभ्यागतों के लिए ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया था। भारी संख्या में नगर के नरनारियो ने इसमें भाग लिया।

२७ फरवरी वीर सावरकर जी के निधन पर शोक सभा का भी दीपावली पण्डाल में आयोजन किया गया। —डा० मथुरा प्रसाद दिव्याचार्य

मानसिक अत्याचार

(श्री रघुनाथप्रसाद जी पाठक)

तलाकों के मामलों में इन दिनों मानसिक अत्याचार शब्द का प्रचलन बहुत बढ़ गया है और यह भी तलाक देने या लेने का एक प्रमुख कारण बन गया है।

प्राचीन काल में तलाक प्रधान समाज में शारीरिक निर्दयता से तलाक का सूत्रपात हुआ जबकि पति अपनी पत्नी के शरीर पर अपना एकाधिकार मानकर उसकी ताड़ना करने या उसे मारने पीटने में इस अधिकार का उपयोग किया करता था। उस समय पति आक्रामक समझा जाता था और बेचारी पत्नी उसका शिकार बनी जाती थी।

इसके बाद उन समाजों में तथाकथित सभ्यता का स्तर ऊँचा हो जानेपर न्यायालयों ने पति द्वारा पत्नी की उपेक्षा स्वार्थ रत लम्पटता, घोर अपमान और भय प्रदर्शन आदि से उत्पन्न दुरवस्था और कष्टों के कारण 'मानसिक अत्याचार' को तलाक का एक कारण स्वीकार कर लिया।

समय ने पलटा खाया। एक अंग्रेज जज ने तलाक के एक मामले में पत्नी के दुर्व्यवहार और उसकी मन मानियों से उत्पन्न पति पर मानसिक अत्याचार की बात स्वीकार करके कानून के क्षेत्र में एक नये इतिहास का निर्माण कर दिया, पति ने शिकायत की थी कि जब मैं प्रातःकाल समाचार पत्र पढ़ने बैठता हूं तो मेरी पत्नी मेरे हाथ में से समाचार पत्र छीन लेती है। उसे आग की भेंट कर देती है। मेरी आंखों पर लगे हुए चश्मे को उतार कर फेंक देती है। मेरा घृणित उपहास करती और बाहर वालों की उपस्थिति में मुझे बुद्धू बनाती है। मुझे भर नींद सोने नहीं देती। प्रेम का नाटक रचकर मुझे हर समय तंग करती रहती है। मैं पत्नी के प्रेम के इस नाटक से बहुत तंग आ गया हूं।

इस प्रतिक्रिया ने भी दूसरा रूप ग्रहण कर लिया सिद्धान्ततः अबला समझी जाने वाली नारी आक्रामक बनकर रण मंच पर अवतरित हो गई कैलीफोर्निया की एक अदालत में नारी के इस नाटक की झांकी देखने को मिली। उसमें पति द्वारा अत्यधिक प्रेम के प्रदर्शन को नारी के प्रति मानसिक अत्याचार का कारण मानकर पत्नी को तलाक प्राप्त करने का अधिकार दे दिया। पति का अपराध यह था कि वह अपनी ६० वर्षीया पत्नी की सुख सुविधा के लिए मरा जाता था। वह स्वयं घर का काम करता था, कपड़े धोता था, खाना बनाता था, बर्तन मांजता था। घर को झाड़ता बुहारता था और पत्नी को किसी काम को हाथ न लगाने देता था। पत्नी ने इसी पति की उपेक्षा समझकर विद्रोह कर डाला और अदालत में तलाक के लिए आवेदन पत्र दे दिया। जिसमें मानसिक अत्याचार की शिकायत अंकित कराई गई थी।

एक प्राचीन अंग्रेज जज ने कहा था कि मनुष्य के मन की मुख्यतः नारी के मन की थाह नहीं पाई जा सकती स्वयं भगवान भी उसे नहीं जान पाता अतः उसके विरुद्ध अभियोग नहीं चलाया जा सकता। 'मानसिक निर्दयता' को तलाक का एक कारण मानकर न्यायालयों ने इस कथन को झुठला दिया है। बाइरन ने इस दुरवस्था के निराकरण का सुझाव देते हुए कहा है। हठ को हटा रखना स्त्रियों को सिखाना होता है जो स्वयं विकासोन्मुख बच्चों जैसी होती हैं।

नारी के प्रति हीन भावना की प्रतिक्रिया के रूप में ही यह सब कुछ हुआ है परन्तु इस प्रतिक्रिया ने सीमातिक्रमण भी किया हुआ है जिसे देखकर विज्ञ समाज चकित और आतंकित है। पति और पत्नी को एकमात्र पाशविक स्तर पर रहना नहीं होता उन्हें पारस्परिक सहयोग से अपना योग क्षेम सिद्ध करते हुए समाज को सुसन्तान प्रदान करना भी आवश्यक होता है। उन्हें एक दूसरे के मित्र और पूरक बनकर विवाह को वरदान बनाना होता है। विवाह को पाशविक स्तर तक सीमित रखने से ही उपर्युक्त प्रकार की बुराइयां उत्पन्न होती हैं। अतः उन्हें विवाह को वरदान बनाना चाहिए इसी में उनका और समाज का हित सम्मिलित है।

मांसाहार का अभिशाप

किसी समय ब्रिटिश साम्राज्य में अधिकांश सुखी रहने वाले आयरलैंड के निम्न वर्गों में पाई जाती थीं जिनका मुख्य भोजन आलू था। लंकाशायर और यॉर्कशायर का कृषक वर्ग जो आलू दूध और मक्खन पर निर्भर रहता था अग्रज जाति में सुन्दरतम वर्ग था।

वेल्स, नार्वे, स्वीडन, रूस, डेनमार्क, पोलैंड, जर्मनी टर्की, यूनान स्विटजरलैंड, स्पेन, पुर्तगाल और रूस के उत्तरी भाग से लेकर जिब्राल्टर तक फैले हुए यूरोप के प्रायः प्रत्येक देश के निवासी का २० वीं सदी के आरम्भ तक मुख्य भोजन शाकाहार था। फारस के निवासी, हिन्दू ब्रह्मदेश वासी चीनी, जापानी, पूर्वी भारत द्वीप समूह हिमालय वासी तथा एशिया के बहुसंख्यक लोग पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले शाकाहार से अपना जीवन निर्वाह करते थे। प्राचीन मिस्र और फारस के बहुसंख्यक लोग अपने को शाकाहार तक सीमित रखते थे। स्पार्टा के वीर लोग जो हाथों की शक्ति, शारीरिक बल, और कठिन दुखों को सहन करने की क्षमता के लिए राष्ट्रों के इतिहास में उच्च स्थान ग्रहण किए हुए हैं, शाकाहारी ही थे। इस सात्विक भोजन का परित्याग करते ही उनका पतन आरम्भ हो गया। यूनान और रोम की सेनाएँ उस समय जबकि उन्होंने अपनी विजयों के अमर स्मारक बना दिये शाकाहारी थीं। यूनान के सार्वजनिक खेलों के प्रशिक्षण में जहाँ भुजदण्डों का शक्ति विविध रूपों में प्रदर्शित की जाती थी, शाकाहार का ही आश्रय लिया जाता था। परन्तु जब मांसाहार अपनाया गया तो वे बलवान दुर्बल, आलसी और सुस्त बन गए।

पंजाब के विभाजन से भारत की एकता को खतरा

—ब्रिटिश पत्रों का मत

लन्दन १७ मार्च—पंजाबी सूबे के सम्बन्ध में कांग्रेस कार्य समिति के निर्णय से उत्पन्न अशान्त स्थिति पर विचार प्रकट करते हुए 'टाइम्स' और 'स्काटसमैन' दोनों पत्रों ने अपने अग्रलेखों में भावनापूर्ण टिप्पणियां लिखी हैं—

टाइम्स ने लिखा है कि—पंजाबी भाषी राज्य बनाने की स्वीकृति देते हुए भारत सरकार यह आशा नहीं कर सकती थी कि इस कदम से उत्पात नहीं होंगे।

इस बारे में श्री नेहरू का भी यह दृष्टिकोण था कि सिक्खों को पंजाबी सूबे की मांग भाषायी सूबे की अपेक्षा सिक्ख प्रभुत्व वाले सूबे की स्थापना की मांग है।

टाइम्स ने प्रश्न किया है कि कांग्रेस ने तब यह मांग क्यों मान ली जबकि उसे सन्त फतहसिंह द्वारा केवल एक नये उपवास का ही खतरा था सन्त के साथ इस आन्दोलन में अब मास्टर तारासिंह द्वारा संचालित आन्दोलन की अपेक्षा अधिक लोग हैं। उदाहरण के लिये साम्यवादियों के साथ हुई सांठ गांठ ने इस आन्दोलन को एक प्रगतिशील राजनीतिक रंग दे दिया है।

टाइम्स' ने यह भी चेतावनी दी है कि सिक्ख आन्दोलन ने जैसे जोर पकड़ा था वैसे ही जनसंघ द्वारा एक हिन्दू आन्दोलन भी जोर पकड़ सकता है।

'स्काटसमैन' ने लिखा है—सिक्ख बहुल्य वाले राज्य के विरुद्ध हिन्दुओं का सोचना काफी हद तक पर आधारित है क्योंकि चाहे सिक्ख अभी पृथकतावादी नहीं है लेकिन समय आने पर मास्टर तारासिंह के विचार वाले सिक्ख हावी हो सकते हैं।

★

पंजाबी सूबा असामयिक और राजनीतिक भूल होगी

—दिनमान साप्ताहिक

पंजाबी सूबे के बारे में कांग्रेस कार्यकारिणी का निर्णय बे ठीक समय पर की गयी राजनीतिक भूल है। यों निर्णय का पूरा अभिप्राय अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है पर इतना स्पष्ट है कि निर्णय (क) दबाव में आकर (ख) गड़बड़ी के आतंक से किया गया है। ये दोनों आधार पहले ही सन्दिग्ध विवेकमयता को और भी सन्देहास्पद बना देते हैं और भविष्य के बारे में कोई आश्वासन नहीं देते।

पंजाबी सूबे की स्वीकृति पहली बार सन्दर्भ रहित (प्रशासनिक सुविधा रहित) भाषाधार प्रान्त के सिद्धान्त को मान्यता दे रही है। पहली बार प्रशासनिक पुनर्संगठन के व्यावहारिक उपाय के बदले सीधे सादे विभाजन के सिद्धान्त के स्वीकृति दी गयी जान पड़ रही है। दूसरे कटुतर शब्दों में कहें कि अब पहले पहल कांग्रेस उस तर्क को प्रश्रय दे रही है जो भारत पाकिस्तान के विभाजन का आधार बनाया गया था।

और इसीलिये भाषाधार प्रशासनिक इकाई की तर्क संगत बात ऐतिहासिक सन्दर्भ के कारण, यहां राजनैतिक दुर्भावना के लिये एक ओट बन जाती है। और इस रूप में इसका अनुमोदन करना हमारे लिये असम्भव हो जाता है। लाचारी की दलील देकर भी हम उसे गले से नीचे नहीं उतार पाते।

—सम्पादकीय दिनमान १८ मार्च ६६

आवश्यक सूचना

(संशोधन)

'आर्यमित्र' दिनांक २० मार्च १९६६ के पृष्ठ ११ पर मूल लेख अस्पष्ट होने से प्रेस में कम्पोजिंग में भूल हो गई है शुद्ध कर निम्न प्रकार पढ़ें—

आर्यसमाज देहरादून के कर्मठ नेता श्री धर्मसिंह जी एम०काम० एल एल बी० उत्तराखण्ड ग्रेजुएट चुनाव क्षेत्र से एम०एल०सी० का चुनाव लड़ रहे हैं। आपका क्षेत्र है सहारनपुर देहरादून, बिजनौर मुरादाबाद नैनीताल अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ गढ़वाल का समस्त क्षेत्र। आर्य जनों को आपको सफल बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिये

—प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ६६वां वार्षिकोत्सव

देश की सुप्रसिद्ध शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ६६ वां वार्षिकोत्सव ११ १२ १३ १४ अप्रैल को मनाया जायगा। जिसमें देश के तथा आर्यसमाज के नेता व संन्यासी महानुभाव पधारेंगे और और आर्यसमाज की वर्तमान समस्याओं पर अपने विचार प्रगट करेंगे। इस उत्सव पर वेद सम्मेलन तथा संस्कृत सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया है। आयुर्वेद तथा हिन्दी की वर्तमान समस्याओं पर विचार किया जायेगा।

गुरुकुल शिक्षा प्रणालियों के प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे इस अवसर पर पधारने की कृपा करें।

सिनेमा सर्वनाश का अखाड़ा है

भारत की समस्त आर्य हिन्दू जनता के नाम आवश्यक अपील

सिनेमा को व्यभिचार का अखाड़ा कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

नारी जाति के नग्न चित्रों का आज खुले बाजार प्रचार प्रदर्शन करके जनता के खून पसीने की कमाई की लूट मनोरंजन के नाम पर की जा रही है।

यदि अश्लील फिल्मों पर नग्नचित्रों पर प्रतिबन्ध न लगाया गया तो देश की भावी सन्तानें ऐयाश कायर, कमजोर, बुजदिल, हिजड़ा हो जायगी।

देश और धर्म की रक्षा के लिये सदाचारी, धर्मवीर धर्मात्मा, वीर ब्रह्मचारी, सत्यवादी नर नारियों की आज भारतमाता को अत्यन्त आवश्यकता है।

—वेद पथिक धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी
व्याख्याता गुरुकुल

आर्य-जगत

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज राँची का ७२ वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से ७ से १० अप्रैल तक मनाया जा रहा है जिसमें श्री आचार्य पं० रामानन्द जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी (पटना) पं० रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर (लखनऊ) पं० धनाधर शास्त्री व्याकरणाचार्य (पटना) पं० मोहनप्रसाद आर्य सिद्धान्त शिरोमणि व श्री जयपालसिंह भजनोपदेशक के पधारने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इसके अतिरिक्त ओमप्रकाश शास्त्री (खतौली) व अन्य विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है।

—दयाराम पोद्दार बी०काम० मन्त्री

आवश्यक निवेदन

आर्यसमाज काकड़वाड़ी विट्ठल भाई पटेल रोड बम्बई के वार्षिकोत्सव पर व्याख्यान देने के लिये मैं बम्बई जा रहा हूं। उत्सव २ से २३ मार्च सन १९६६ तक होगा।

परन्तु मेरा विचार बम्बई नगर में कुछ समय तक ठहरने का है। मेरी इच्छा है कि गुजरात और महाराष्ट्र और पुराने हैदराबाद (दक्षिण) के मुख्य मुख्य नगरों के आर्यसमाजों में जाकर मैं वैदिक धर्म के मौलिक सिद्धान्तों पर एवं संसार की वर्तमान समस्याओं का वैदिक धर्म द्वारा हल विषयों पर व्याख्यान दूं।

अतः इन प्रान्तों की समस्त आर्य समाजों तथा प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों से प्रार्थना है कि यदि वे मेरे व्याख्यान कराना चाहें तो काकड़वाड़ी आर्यसमाज विट्ठलभाई पटेल—बम्बई ४ पर मेरे साथ पत्र व्यवहार करें।

—विश्वनाथ स्वामी बी ए एल एल बी
धर्म मिशनरी

आ.स. बैंकाक (थाईलैण्ड) का महोत्सव

आर्यसमाज का ४६वां वार्षिकोत्सव दिनांक ७ मार्च १९६६ ई० को प्रधान भारतीय सभा थाईलैण्ड, भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज सिंगापुर श्री दुर्गादास सचदेव की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया गया। तत्पश्चात स्वागताध्यक्ष श्री वीरेन्द्रसिंह एम० ए० ने मनोनीत अध्यक्ष का परिचय कराते हुए स्वामीजी आर्यसमाज के इतिहास से लोगों को अवगत कराया। श्री सीताराम आर्य ने 'आर्यसमाज क्या है?' विद्वत्तापूर्ण शब्दों में प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द का मार्ग दर्शन इतना स्पष्ट है कि यदि उस पर लोग चलें तो विश्व की सभी समस्यायें शान्तिमय तरीकों से हल हो सकती हैं। श्री इन्द्रदेव सिंह जी 'आर्यसमाज की आवश्यकता' तथा पंडित वेंकटेशमणि जी 'वेद क्या है?' प्रभावशाली भाषण दिये। श्री प्रमशरण सिंह जी बिसेन तथा श्री लल्लन प्रसाद जी व्यास ने भारतीय संस्कृति तथा महर्षि दयानन्द जी के कार्यों की प्रबल शब्दों में सराहना की। और कहा कि वेद और संस्कृत के प्रचार के लिए जो कार्य महर्षि ने किया था वह स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। श्री रामप्रसाद दूबे तथा श्री सीताराम सिंह जी का मनोहर भजन हुआ। पं० ईश्वर दत्त जी ने कहा कि अन्धविश्वास, रूढ़िवाद संसार के किसी भी मनुष्य जाति राष्ट्र की उन्नति का शत्रु होता है।

भारतीय राजदूत श्री पद्मनाभन महोदय ने कहा कि पं० जवाहरलाल नेहरू के बाद भारत का दूसरा प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री हुये। १९ मास तक देश की बागडोर सफलतापूर्वक सम्भाला। इस अल्पकाल में ही देश का राष्ट्रनायक बन गया। उन्होंने देश समाज के उत्थान एवं उद्धार के लिये जो त्याग व तपस्या की वह एक आदर्श है। देशवासियों का कर्तव्य है कि स्व० शास्त्री जी के गुणों को अपनाते हुये एकता बनाये रखें। अन्त में अध्यक्ष श्री सेठ दुर्गादास सचदेव ने कहा कि आर्यसमाज भारत के नव निर्माण में महत्वपूर्ण सहयोग दे रहा है। नारी उन्नति का सबसे बड़ा श्रेय महर्षि को है। साथ ही स्वागत कमेटी के कार्यकर्ताओं के सराहनीय सेवाओं के लिये प्रशंसा और अन्य संस्थाओं से आये हुये प्रतिनिधियों के सहयोग के लिये आभार प्रकट करते हुये सभा की कार्यवाही समाप्त की।

—बाबूलाल आर्य उपाध्यक्ष
आर्यसमाज बैंकाक

नामकरण संस्कार

२० मार्च को महानगर लखनऊ के फ्लाईट लेफिटनट नरेन्द्र सेठी जी के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीत्यनुसार श्री नारायण गोस्वामी जी द्वारा से सम्पन्न कराया। बालक का नाम राम रखा गया।

निर्वाचन—

—आर्यसमाज मोहाना

प्रधान—श्री तारावन्द जी विद्यार्थी उपप्रधान एवं पुस्तकाध्यक्ष—श्री श्याम स्वरूप जी बी०ए० बी०टी० मन्त्री—श्री शिवचरन जी एम०एस सी० बी० टी० उपमन्त्री—श्री उदयवीरसिंह बी० ए० एल० टी० कोषाध्यक्ष—श्री नन्दकचन्द जी आय व्यय लेखा निरीक्षक—श्री वीरेन्द्र सिंह जी प्रचार मन्त्री—श्री हरशरण जी पुरोहित।

साहित्य-समीक्षण

सच्चे गुरू और पारखी

लेखक—श्री वेदानन्द वेदवागीश

प्रकाशक—हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर (रोहतक)। पृ० सं० २०८ मूल्य ३) रु० सजिल्द। कागज छपाई सुन्दर है।

झज्जर में गुरुकुल की स्थापना में जो जो बाधाएं पहुंचाई गईं और दृढ़ता तथा धैर्य के साथ जिस प्रकार उनका सामना किया गया उसका सुन्दर साहित्यिक ढंग से इस पुस्तक में चित्रण किया गया है।

आर्यसमाज आरम्भिक प्रचार युग में जो कष्ट और बाधाएं उसके कार्यकर्ताओं ने सहन की हैं उनका आभास इस पुस्तक के पढ़ने से भली प्रकार लग जाता है। पुस्तक संग्रहणीय है।

जन कल्याण का मूल मन्त्र

लेखक—पद्ममोहन विद्यासागर।

प्रकाशक—कल्याण प्रकाशन, अमजया सुल्तान बाजार हैदराबाद (आन्ध्र-प्रदेश)।

पृ० सं० १३२ मूल्य दो रुपया।

पुस्तक में लेखक ने गायत्री मन्त्र की विस्तृत व्याख्या की है और उसके महत्व पर पूर्ण प्रकाश डाला है। परिश्रम करके वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् गृह्यसूत्र, स्मृति, पुराणादि ग्रन्थों के एक सौ से अधिक प्रमाण संग्रहीत किये हैं।

जापकी विधि को सुन्दर रूप में प्रस्तुत करने का भी लेखक ने सफल प्रयत्न किया है। पुस्तक की छपाई कागजादि भी सुन्दर है। स्वाध्याय की दृष्टि से इस पुस्तक की निश्चय विशेष उपादेयता है।

लाला लाजपत राय

ले०—श्री जोहनलाल उपाध्याय, लोक सेवक मण्डल।

प्रकाशक—श्री विश्वबन्धु विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर।

भूमिका लेखक—श्री लाल बहादुर शास्त्री। पृ० सं० १६० मूल्य २)

सजिल्द।

भारत के महान् स्वर्गीय नेता लाला लाजपतराय जी के जीवन वृत्त को संक्षेप के साथ इस पुस्तक में वर्णित किया गया है। लाला जी का सार्वजनिक जीवन सन् १८८२ में आर्यसमाज से आरम्भ हुआ और अन्त समय तक संघर्षों में बीता। ४३ वर्ष संघर्षों के उपरान्त ६३ वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हुआ। राष्ट्र को आपकी अन्तिम देन 'लोक सेवा संघ' का निर्माण कार्य है।

कागज व छपाई बहुत सुन्दर है। प्रत्येक स्वाध्याय शील व्यक्ति को इस जीवनी का अवश्य पाठ करना चाहिये।

पश्चिम के राजनैतिक दार्शनिक

मौरिस क्रेन्स्टन द्वारा सम्पादित ग्यारह निबन्धों का हिन्दी अनुवाद है।

अनुवादक—श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार एवं प्रकाशक नेशनल एकडमी ९, असारी मार्केट, दरियागंज दिल्ली—६। पृ० सं० १६२ मूल्य १) मात्र है।

पश्चिम के प्लेटो अरस्तु ऐक्वाइनैस माक्यावेली हाब्ज लाक रूसो, बर्क हेगल मार्क्स एवं मिल नामक ११ प्रसिद्ध राजनीतिक दार्शनिकों के विचार-बिन्दुओं की यह पुस्तक एक सुन्दर माला है। विद्वान सम्पादक ने इन दार्शनिकों की कृतियों के आधार पर उनके विचारों का योग्यता पूर्वक विश्लेषण किया है। अनुवादक ने बड़ी योग्यता के साथ सफल अनुवाद करके हिन्दी संसार को विशेष उपकृत किया है।

कम्युनिष्ट चीन में सोवियत वैज्ञानिक

लेखक—मूल लेखक माइकिल ए० क्लोचको (रूसी भाषा में) अंग्रेजी अनुवादक—ए० ड्र० मैक एण्ड्र०। हिन्दी अनुवादक—महेन्द्र भारद्वाज। प्रकाशक—नेशनल एकाडमी ९, असारी मार्केट दरियागंज देहली ६।

पृष्ठ सं० २१२ मूल्य १) रुपया। कागज व छपाई सुन्दर।

इस पुस्तक में रूस के वैज्ञानिक क्लोचको ने सन १९५८ व १९६० ई० के अपने चीन देश की राजधानी पेकिंग तथा अनेक अन्य स्थानों में भ्रमण सम्बन्धी वृत्तान्तों एवं अनुभवों का चित्रण किया है। सन् १९६० ई० में रूस और चीन के सम्बन्ध कुछ बिगड़ चुके थे और रूसी लोगों पर जो चीन में पर्यटन आदि के लिये जाते थे उन पर विशेष ध्यान रखा जाने लगा था।

लेखक ने यात्रा वृत्तान्त रोचक ढंग से लिखा है।

आज का मार्क्सवाद

लेखक—श्री राबर्ट कॉक्स्टेड। हिंदी अनुवादक—श्री निशादेवी।

प्रकाशक नेशनल एकडमी, ९ अन्सारी मार्केट दरियागंज दिल्ली ६।

पृ० सं० ८८ मू० १)। कागज व छपाई सुन्दर। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने कार्लमार्क्स के मूल सिद्धान्तों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है अपने को मार्क्सवादी कहने वाले साम्यवादी संगठनों व देशों ने मार्क्स के अनेक मौलिक सिद्धान्तों को तिलांजलि दे दी है। और अनेक दिशाओं में अपने निर्णीत मन्तव्यों को मार्क्स पर थोपने की चेष्टा तक की गई है।

मार्क्स विचार स्वतन्त्र्य का समर्थक था और उसकी मौलिक शिक्षायें लोकतन्त्री चिंतन की अनेक परम्पराओं से बहुत से सूत्रों से जुड़ी हुई है किन्तु उनके अनुयायियों ने उनके विपरीत आचरण करना आरम्भ कर दिया है।

मार्क्सवाद को समझने की दृष्टि से पुस्तक विशेष उपयोगी है।

कहां छिपोगे कहां बचोगे

लेखक तथा प्रकाशक—श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आर्य नगर आगरा

पृ० सं० १६ मू० २० पैसे।

आर्य जगत के महान् नेता एवं धुरन्धर विद्वान् लेखक एवं वक्ता श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट ने अथर्ववेद चतुर्थ काण्ड के चतुर्थ अनुवाक के १६ वें सूक्त के ९ मन्त्रों के आधार पर सर्वव्यापक परमात्मा के न्याय नियम की सुन्दर व्याख्या की है जिसकी व्यवस्था से कोई बच नहीं सकता। ट्रैक्ट विशेष उपादेय है और मनन करने योग्य है।

जैनों से

लेखक—श्री स्वामी सत्यभक्त जी संस्थापक सत्याश्रम वर्धा।

प्रकाशक—श्री लाल जी भाई सत्य स्नेही संगम, सत्याश्रम वर्धा पृ० सं० ३६ मू० ४० पैसे।

स्वामी जी एक सुयोग्य सत्य वक्ता जैन विद्वान् हैं। जैन धर्म की बुद्धि एवं विज्ञान शून्य मान्यताओं से आपको घृणा हो जाने के कारण, वर्धा में सत्य समाज की स्थापना की है। इस पुस्तक में आपने जैन मत की अवैज्ञानिक बुद्धि शून्य एवं विज्ञान विपरीत मान्यताओं का सुन्दर विवेचन किया है। जैनियों में में प्रचार की दृष्टि से यह ट्रैक्ट बहुत उपयुक्त है।

ईसाई बन्धुओं से अपील

संग्रहकर्त्ता—प० गोविन्दप्रसाद आर्य विद्यावारिधि, स्नातक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (पंजाब)।

प्राप्ति स्थान—आर्यसमाज मन्दिर स्वामी श्रद्धानन्द पथ रांची (बिहार) पृ० सं० १६ मू० १० पैसे। इस ट्रैक्ट में ईसाई मत की सुन्दर समालोचना की गई है और ईसाइयों की ओर से प्रचलित होने वाले मतों से इसमें विशेष अपील की गई है स्थान स्थान पर बाइबिल, अंजील आफ ल्योर, इंसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका आदि के प्रमाण उद्धृत करने से ट्रैक्ट की प्रामाणिकता सिद्ध है।

योगिराज श्री कृष्ण

ले० कु० सुमित्रा आर्या एम० ए० विद्या भास्कर उपाचार्या आर्य कन्या गुरुकुल नरेला (देहली)

प्रकाशक—प्रिंसिपल रामचन्द्र जी वेद, अधिष्ठाता अनुसन्धान साहित्य प्रकाशन विभाग आ० प्र० सभा पंजाब गुरुदत्त भवन, जालन्धर नगर।

पृ० सं० २०, मू० १२ पै०।

प्रस्तुत ट्रैक्ट में योगीराज कृष्ण को यथार्थ रूप में हिन्दु रूप में हिन्दु जाति के समक्ष प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न आदरणीया लेखिका ने किया है। भाषा विशेष परिमार्जित एवं आकर्षक है। जन्माष्टमी पर्व पर जनता में इस ट्रैक्ट को वितरण करने से विशेष लाभ होगा।

गीता की वैज्ञानिक परीक्षा

लेखक—श्री पारसनाथ सहाय एम० ए० बी० एल०, एडवोकेट हजारी बाग (बिहार)।

प्रकाशक—श्री बालचन्द नाहटा, अध्यक्ष बुद्धिवादी प्रकाशन, ४६ स्ट्रैण्ड रोड कलकत्ता—७।

पृ० सं० ७५, मूल्य १॥)

लेखक ने महात्मा गांधी की इस भ्रान्त धारणा को कि 'महाभारत कोई ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं है और न कृष्ण कोई ऐतिहासिक व्यक्ति हुआ है" आधार बनाकर इस पुस्तक को लिखा है।

गीता की प्रशंसा में जो 'सर्वोपनिषदो गावो। दोग्धा गोपाल नन्दन आदि श्लोक प्रचलित हैं। उसके आधार पर यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि गीता उपनिषद् काल के बाद में लिखा हुआ पुस्तक है। महर्षि वेदव्यास जी का जो कि गीता के प्रणेता हैं। यदि यह वाक्य होता तब तो लेखक की धारणा का कुछ मूल्य आंका जा सकता था। लेखक का यह दावा कि—

श्वेताश्वतर आदि उपनिषदों के श्लोक गीता में ज्यों के त्यों और कुछ किञ्चित परिवर्तन के साथ उद्धृत हैं साध्य कोटि में है।

यह भी तो कहा जा सकता है कि श्वेताश्वतरादि में गीता के श्लोकों को उद्धृत किया गया है।

इसी प्रकार लेखक ने बौद्ध ग्रन्थों के कतिपय श्लोकों को किञ्चित परिवर्तन के साथ गीता में उद्धृत बतलाया है जबकि गीता से बौद्ध ग्रन्थों में यह श्लोक उद्धृत किये गये हैं। वर्तमान ७२० श्लोकों

गीता वेदव्यासकृत नहीं है। मूल गीता का कलेवर बहुत छोटा था। बाद में जैसे महाभारत मे साम्प्रदायिक लोगों ने बहुत सी मिलावट की है वैसे ही गीता में भी मिलावट स्पष्ट है। जिसके कारण गीता मे अनेक विरोधाभास दृष्टिगोचर होते हैं। हम गीता के संशोधन के पक्ष मे हैं उसका अंश लेखक के मतानुसार निराकरण के पक्ष मे नहीं।

संसार की अद्भुत पुस्तक बाइबिल की अद्भुत बातें

ले०—श्री स्वामी शिवानन्द तीर्थ, आचार्य शान्तिआश्रम (लोहरदगा)।

प्रकाशक—पं० गोविन्दप्रसाद आर्य विद्यानिधि स्नातक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (पंजाब)।

पृ० सं० ४८ मूल्य ३० पैं०।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने स्थल-स्थल पर बाईबल के प्रमाण प्रस्तुत करके उसका नग्न चित्र पाठको के समक्ष उपस्थित किया है। बाइबिल की आधारहीनता तथा बुद्धि शून्य मान्यताओं की समालोचना इस पुस्तक मे पढ़ने को पाठकों को मिलेगी।

चक्रवर्ती दशरथ

लेखक—श्री गोपाल नारायण श्रीवास्तव एम. ए. (हिन्दी संस्कृत) एल.टी.

प्रकाशिका—श्रीमती कृष्णाकुमारी अध्यक्षा—साहित्य प्रतिष्ठान मु० सकट मोचन, मीरजापुर।

पृ० सं० ६८ मूल्य १॥)

यह एक वृद्ध आर्यसमाजी लेखक की खण्ड-काव्य के रूप में पद्यमयी कृति है। महाराज दशरथ को चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में अंकित करने का इस काव्य में प्रयत्न किया गया है। काव्य सात सर्गों में लिखा गया है यथा राज्यारोहण, अभियान, नारी शौर्य, श्रवण निधनादि। भाषा सरल है तथा भाव अभिव्यक्ति सुन्दर है। लेखक का प्रयास सराहनीय है।

शान्ति कैसे ?

लेखक तथा प्रकाशक—श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आगरा।

पृ० सं० २४ मूल्य २५ पैसा।

श्री बाबू जी आर्यजगत् के एक धुरन्धर विद्वान् नेता, वक्ता एवं लेखक हैं। आपने इस ट्रैक्ट में शान्ति मन्त्रों की बड़ी सुन्दर खोजपूर्ण विस्तृत व्याख्या की है। प्रकाशित बाबू जी का प्रयत्न सराहनीय है।

★

अयोध्या पुल दुर्घटना के लिए ६ अधिकारी उत्तरदायी

१० मार्च को विधान सभा प्रश्नोत्तर काल मे उपमन्त्री श्री शान्ति प्रपन्न शर्मा ने सदन को बताया कि अयोध्या पुल दुर्घटना जांच समिति की रिपोर्ट के अनुसार श्री एस० पी० अग्रवाल, मजिस्ट्रेट एवं मेला अधिकारी, श्री रामलाल मजिस्ट्रेट श्री के०के० मेहरोत्रा, मजिस्ट्रेट श्री राम आसरे, पुलिस अधीक्षक श्री एच० के० मर्ग, अधिशासी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग तथा कुछ अन्य व्यक्तियों को दुर्घटना के लिए उत्तरदायी पाया गया है।

एक अन्य पूरक प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री शर्मा ने सदन को सूचित किया कि आयोग की रिपोर्ट का संक्षिप्त हिंदी रूपान्तर एक सप्ताह में सदन की मेज पर रख दिया जायगा। उन्होंने यह भी कहा कि रिपोर्ट का सम्पूर्ण हिन्दी रूपान्तर लगभग १०दिनों में उपलब्ध हो जायगा।

उत्सव—

—आर्य गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा का वार्षिक महोत्सव चैत्र शुक्ला द्वादशी से पूर्णमासी सं० २०१३ तदनुसार २ अप्रैल से ५ अप्रैल १९६६ शनि, रवि, सोम, मंगलवार को होगा। आप सादर निमन्त्रित है। —स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी

आ.स.मौरिस

प्रधान-श्री सुरेन्द्रनाथ जी, उपप्रधान—श्री प०रामरतन पांडे मन्त्री—श्री अनुभवानन्द, उपमन्त्री—प० रामस्वरूप जी, कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धसेन, पुस्तकाध्यक्ष—श्री नरेन्द्रसिंह, निरीक्षक श्री नरेशचन्द्र। प्रति० अनुभवानन्द। —मन्त्री

विचार-विमर्श

(पृष्ठ २ का शेष)

सो लिख मारे' परन्तु है ऐसा ही।

"शकर शृगाल डरपोक कहे, केहरी को,
केचुआ प्रसिद्ध आकरे केचुआ फणीश को
मोती का घटावें मान वेदरी कनौडी कौडी
तेजहीन जुगनू बतावें रजनीश को।
भौंरे को न माने गुबरीला मकरन्दग्राही
गो पद का गत गिने छोइया नदीश को।
ऐसा यदि हो सके तो भक्त भी बनाते रहे,
ओर अनुदार दयानन्द से मुनीश को।"

ऋषि ने अपना मत न चलाकर वेदों को मान्यता दी। अवैदिक मतो और अन्धविश्वासो का खण्डन किया। भगत जी की समझ मे यह सकीर्णता है। कौडी और हीरे मोती सबको स्वामी जी रलगड्ड कर देते तो उदार कहलाते। बलिहारी है भगत जी की इस राय को अपने बाप को बाप कहे वह सकीर्ण और सबके बापों को अपना बाप बताकर पचायती लडका बनता फिरे वह उदार धन्य है इस भ्रष्ट बुद्धि को! भगत जी सबका आदर वेश्या के यहा होता है पतिव्रता तो केवल पति के चरणो को ही हृदय मे धारण करती है। सबका मत समान हैं यह वेश्यावृत्ति है। सब गुरु एक से हैं यह मूर्ख प्रलाप है। आपने भी अपनी तुक्कडी मे कुगुरुओं को खूब कोसा है।

"जो पापोत्तेजन करता है,
झूठी क्षमा दिखाता।
तुझे पाप मे निर्भर करता,
जम का नरक बढ़ाता॥"

आपके इस गीत मे ईसाइयत का प्रत्यक्ष खण्डन है। बप्तिस्मा से पापमोचन मानने वाला ईसाई आपके पिजडे मे कैसे आयेगा? अत यह आपका बनाया मतों का 'गुलदस्ता' बुद्धिमानों को मान्य नहीं हो सकता। आपके लेख पर आपको बधाइयां मिली हैं मुबारिक! अपनी पीठ आप ही ठोकिये। सब तरह के लोग मिल जाते हैं। मूर्खता की दाद देने वालो की भी कमी नहीं है। पर तर्क तुला पर प्रमाण निकषा पर जब कोई खरा उतरे तब समझदार लोग सराह सकते हैं। भगत जी प्रतिभाशाली ज्ञानी लोग छोटी छोटी घटनाओं को देखकर ही बड़े बडे सबक ले लेते हैं पर मूर्खों के सामने पहाड टूटते रहें तब भी कुछ नहीं। 'न्यूटन' ने सेब को गिरता देख पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति को जान लिया। उसी प्रकार स्वामी जी ने शिवलिंग पर चूहे को चढ़ते देख जड पूजा की हेयता को जान लिया। आपके मतोन्माद पूर्ण निःसार लेखो का उत्तर देने की इच्छा नहीं थी पर कई मित्रों के आग्रह पर लेख लिख दिया है। आगे को यदि आप कोई सारगर्भित विचार प्रस्तुत करें तो उस पर ध्यान दिया जायगा नहीं तो रद्दी मे लेख डाल दिये जायेंगे। आपका यह लिखना इतिहास विरुद्ध है कि 'महावीर स्वामी के बाद ही भारत मे मास न खाने वाले कुछ लोग दिखाई देने लगे।' इसका तात्पर्य तो यह है कि भारत मे मास भोजन तो अनिवार्य था। सब लोग नित्य खाते थे। क्यो भगत जी क्या श्री नेमिनाथ तीर्थंकर और श्री पार्श्वनाथ जी के शिष्य भी मास खाते थे?

मास भक्षण निवृत्ति तो पुराणो मे भी भरी पडी है। श्री महावीर स्वामी जी से प्रथम भी मास निषेधक विद्यमान थे। श्री रामचन्द्र जी कहते हैं—

त्यक्त्वा मुनि वदामिषम आर'
(वाल्मीकि रा०)

मुनियो के समान मास त्यागकर वन मे रहूगा। इस श्लोक से यह तो सिद्ध ही हो जाता है कि मुनि लोग मास नहीं खाते थे। हालाकि उक्त पद्यांश है किसी मास भक्षी का ही विचार, पर मुनि ऋषि और ब्रह्मचारी उस काल मे भी मास नहीं खाते थे। पढो सूत्र ग्रंथ, स्मृतियां, पुराण। परन्तु भगत जी को विवेचन से क्या प्रयोजन? अपनी ही गायें जायेंगे। पक्षपाताध व्यक्तियों को झूठ लिखने मे लज्जा कहा?

आप फूले नही समाते कि किसी मुसलमान ने आपको चन्दा दे दिया या तारीफ कर दी। भगत जी आप जिस बात को हिन्दुओं की खूबी बताते हैं वही उनके नाश का कारण है। हिन्दू कब्र ताजिये पूजता है मुसलमान कभी मन्दिर मे नहीं जायेगा। हिन्दू देवियां मुसलमानों से गडे ताबीज लेती फिरती हैं। जो लोग हिन्दू राष्ट्र का समूल नाश करने को आक्रामक बनकर आये आज हिन्दू उन्हीं की कब्रों पर चादर चढा रहा है इस 'रमतुरैया वृत्ति' ने हिन्दू को तेजहीन कर दिया। आज आप हिन्दुओं को वेदो से हटाकर आवारा, दर दर मारा फिरने वाला बनाना चाहते हैं। सगठन के लिये कोई केन्द्र बिन्दु चाहिये। हिन्दुओं के लिये वह केन्द्र बिन्दु वेद ही हो सकते हैं। बाइबिल और कुरान वालो ने ज्ञान-विज्ञान का विरोध अवश्य किया परन्तु वैदिक धर्मियों ने ज्ञान विज्ञान का सदा आदर किया। वेद बीज ज्ञान है उसे विकसित करने मे आर्य जाति ने खूब परिश्रम किया और जहा भी विकास है हम उसका आदर करते हैं। विकास की कोई सीमा नहीं। पुराने काल मे विकास और ढग पर हुआ अब और रीति पर है। आगे ह्रास भी हो सकता है और फिर विकास भी। इसलिये पुराने लोगो की निन्दा करना अपनी अल्पज्ञता का प्रमाण पेश करना है। आप कल्पनाओं की कलाबाजियां खा-खाकर सतुष्ट हो रहे हैं परन्तु मूल ज्ञान से दूर हटते जा हैं। बड बड विचारक विद्वान् क्या कह रहे हैं इस पर आपकी दृष्टि नहीं जाती। श्री भर्तृहरि जी ने ठीक ही कहा है—

अज्ञ सुख माराध्य सुखतरमा-
राध्यते विशेषज्ञ, ज्ञान लव दुर्विदग्ध
ब्रह्मापि त नर न रञ्जयति।

अज्ञान अच्छा, विशेष ज्ञान बहुत अच्छा, पर ज्ञान लवदुर्विदग्धता बहुत बुरी असाध्य रोग है। आपको एक मत के गुरु बन जाने का अभिमान सत्यान्वेषण नहीं करने देता। मतोन्मादतमाच्छादित मति विभ्रम भ्रमा रहा है। अत सब धर्मों को मान्यता का दावा करते हुए भी वेद का विरोध कर रहे हैं। ठीक भी है जुगनू दीपको का तारो का विरोध नहीं करेगा किन्तु भगवान भुवन भास्कर से तो वह चिढेगा ही। सूर्योदय पर उसकी स्थिति समाप्त है। वेद रवि के उदय पर मतान्धकार नष्ट हो जायगा अत मत वाले उसका विरोध करेंगे ही। परन्तु सूर्य का तेज तो अखड ही रहेगा कोई देखे न देखे। वेद की जय हो।

फूको से यह प्रकाश,
बुझाया न जायगा।
उगली से हिमालय को,
हटाया न जायगा॥

●

मुरादनगर व गगनहर के किनारे हसादेव के गुण्डों की करतूत

गाजियाबाद (मेरठ) से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक 'शूरवीर' ने अपने ९ मार्च के अङ्क मे उपर्युक्त शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया है जिसमे लिखा है कि नहर के किनारे हसादेव (दसासिंह) ने लगभग ९० बीघ भूमि मे अपना आश्रम बनाया है। पास के गरीब किसानो की जमीन को हडपने की कुचेष्टा की जा रही थी।

२७ फरवरी की दोपहर को हसासिंह' के दो गुण्डे चेलो ने किसान पर लाठियो से हमला किया जबकि वह अपने खेत से चारे का बोझ उठाने ही वाला था। शोर मचाने पर कुछ व्यक्ति वहा पहुच गये और दोनो गुण्डों को पकड लिया। किसान मेरठ के अस्पताल मे पडा है और गुण्डे पुलिस की हिरासत मे हैं। गुण्डो का बयान बतलाया जाता है कि उन्होने अपने गुरु हसादेव के आदेश से ही ऐसा किया है। सारे हल्के मे सनसनी फैली हुई है। जिला अधिकारियो को इन गुण्डों के साथ-साथ इनके गुरु पर भी अभियोग चलाकर तीनों को कडी सजा देनी चाहिये।

दयानन्द वचनामृत

(पृष्ठ २ का शेष)

★ जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे।

★ एक गाय की एक पीढी मे ४ लाख ७५ हजार छ सौ मनुष्यों का पालन होता है।

★ जब से गो आदि पशुओ को मारने वाले विदेशी इस देश मे आकर राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमश दु खों की बढती होती जाती है।

★ जिनके मरे पर चमडा भी कटक आदि से रक्षा करे उनके गले छुरी से काटकर जो अपना पेट भरते हैं, उनसे अधिक विश्वासघाती अनुपकारी दु ख देने वाले और पापी जन कोई नहीं।

★ गो आदि पशुओ के नाश से राजा और प्रजा दोनो का नाश हो जाता है।

★ राजा प्रजा से कर लेता है कि गाय आदि की यथावत् रक्षा करे।

★ न्याय पुस्तक मे गोवध निषेध की व्याख्या होनी चाहिए।

★ इन पशुओं की हत्या करने 'शिव' वालो को सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानियेगा।

● गाय आदि पशुओं को सरकारी जगल मे बिना महसूल दिये चरने की छूट होनी चाहिए।

● तुम्हारा तन मन धन, गाय आदि की रक्षारूप परोपकार मे न लगे तो किस काम का? ★

(पृष्ठ १६ का शेष)

घर मे रखा हुआ पैसा और मिट्टी बराबर है। अपने बचे हुए पैसों का उपयोग तरह तरह की बचत योजनाओ मे करना चाहिये।

तो क्या आपने अपने बचत के पैसों से १०-१२ या १५ वर्षीय बचत-पत्र ले लिए हैं या आपने अपना धन अन्य राष्ट्रिय बचत पत्रों या सावधिक जमा य जनाओ मे लगा दिया है?

यो तो मैंने आपसे पाच प्रश्न किये है और इनके उत्तर भी पाच ही होने चाहिये लेकिन यदि आप इन पाचों प्रश्नो का एक ही उत्तर यह कहकर दें कि आप बचत कर रहे हैं तो मैं आपके सभी उत्तर सही मानूगा।

आप केवल इतना ही बताइये कि आप बचत करते हैं या नहीं? अगर आप बचत करते हैं तो ठीक है, आपके द्वारा उठाये गये सभी नारे ठीक हैं, आप एक अच्छे नागरिक हैं और आपके हाथो मे देश सुरक्षित है। ●

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

चैत्र [illegible] शक १८८८ चैत्र सु० ५
([illegible] २७ मार्च सन् १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60

पता—'आर्यमित्र'

दूरभाष २५९९३ तार "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आपको ज्ञात है कि लगभग २० वर्ष से राष्ट्रीय बचत योजना का एक अभियान चल रहा है जिसका उद्देश्य विकास-योजनाओं के लिए साधनों का जुटाना तथा जन साधारण में बचत की आदत डालना है। देश की वर्तमान स्थिति में इस योजना का जितना महत्व बढ़ गया है, उसे आप भलीभांति समझते हैं और उस पर मुझे अधिक बल देने की आवश्यकता नहीं। इस समय सुरक्षा पर व्यय होने वाली निधि का सही-सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता किन्तु जितनी आवश्यकता है वह सब पूरी करनी है। राज्य सरकार को भी सब ओर उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रयास बढ़ाने हैं। इन सब कार्यों के लिए प्रचुर मात्रा में धन की आवश्यकता है और वर्तमान संकट काल में हमें अधिकतर आत्मनिर्भर ही रहना पड़ेगा। यदि हम सब चाहें तो हर व्यक्ति की छोटी-छोटी बचतें एक बड़ी धनराशि होकर देश की सुरक्षा तथा विकास कार्यों के व्यय की समस्या को काफी सीमा तक हल कर सकती हैं।

—सुचेता कृपलानी मुख्य मन्त्री, उत्तरप्रदेश

ये अच्छे नारे हैं !

ये सुनने में भी अच्छे लगते हैं।

[ले०—श्री ठाकुरप्रसाद सिंह]

★ हम हर बाहरी आक्रमण से देश की रक्षा करेंगे।

★ हम अपने पैरों पर खड़े होंगे।

★ ऐसी कोई भी सहायता हम बाहर से स्वीकार नहीं करेंगे जिसके लिये हमें अपनी स्वतन्त्रता तथा प्रभु-सत्ता का सौदा करना पड़े।

★ देश का बच्चा बच्चा देश के लिए बलिदान करने के लिए प्रस्तुत है।

★ हम उत्पादन अधिकाधिक बढ़ायेंगे और खर्चे जहांतक हो सकेगा घटायेंगे।

नारे सभी अच्छे होते हैं निश्चय भी सभी अच्छे होते हैं लेकिन वे तभी अच्छे होते हैं जब उन पर अमल किया जाय।

क्या आपने इन नारों पर अमल किया है? क्या आप निश्चयों पर दृढ़ हैं?

मैं आपसे एक एक करके पूछता हू। आप जहा भी हों जिस भी स्थिति में हों, अपनी अन्तरात्मा को साक्षी करके मेरे इन प्रश्नों का उत्तर आप 'हां' या 'नहीं' मे देंगे। यदि आपके दिये गये उत्तरों में 'हा' की सख्या दो या दो से ज्यादा है तो आप यह विश्वास कर लीजिये कि आपने जो निश्चय किये थे उन पर आप अपनी शक्ति भर आचरण कर रहे हैं। यदि हा' की सख्या चार से अधिक है या सभी प्रश्नों के उत्तर आपके 'हा' मे दिये हैं तो क्या कहना ? आप ऐसे नागरिकों पर हमे गर्व होगा। यदि हा की सख्या के मुकाबले नहीं' की सख्या ज्यादा है तो क्षमा कीजिएगा आपने जो नारे लगाये वे हवा मे उड गये और उनके साथ ही आपके निश्चय की दीवार भी ढह गयी।

अब हम आपसे पूछते हैं—

क्या आपने देश की सुरक्षा के लिए अपना हिस्सा देश को भेंट किया है अर्थात क्या आपने १२ वर्षीय रक्षा-पत्रों या १० वर्षीय रक्षा जमा पत्रों मे अपनी बचत का धन लगाया है ? आप जानते हैं कि इस तरह की रक्षा-बचतों से आप को दोहरा लाभ है अर्थात् आपका धन सुरक्षित रहता है और उस पर आपको ब्याज भी मिलता है तथा पूरे देश के लोगों द्वारा थोड़ा थोड़ा करके जमा की हुई रकम बूद बूद करके इकट्ठी हो जाती है और फिर वह इतनी अधिक हो जाती है कि उसके बल पर देश की रक्षा के लिए बनायी गयी बड़ी से बड़ी योजनाए पूरी की जा सकती हैं। नैट तथा और तरह के अपने देश मे बने हवाई जहाज वैजयन्त टैंक, शक्तिमान टैंक और ऐसे ही कितने सामान जो हमारा देश बनाने लगा है और जिनके लिए अपार धन की आवश्यकता देश को होगी।

तो प्रश्न पूछता हू आपसे कि क्या आपने देश को बाहरी आक्रमणों से बचाने के लिए अपनी बचतों को रक्षा-पत्रों के रूप मे बदल डाला है या नहीं ?

क्या अपने पैरो पर खड होने के लिए आपने इतनी बचत कर ली है कि आपको जरूरतों के लिए असमय मे हाथ न फैलाना पड ? केवल कह देने भर से कि आप अपने पैरो पर खड हैं हम विश्वास तो नहीं कर सकते।

यह ठीक है कि रोज कुआ खोदते हैं और रोज पानी पीते हैं। आपके हाथ मे आज इतनी शक्ति है कि आप कुआं खोद कर पानी पी सकते हैं। लेकिन कल अगर कोई विपत्ति पड गयी तो, आप बीमार हो गये या किसी-किसी बडे जरूरी काम से आपको जाना पडा तो आपके लिए कोई दूसरा तो कुआं खोदेगा नहीं तो आप पानी कैसे पीजिएगा ? मेरा मतलब है कि क्या अपने सकट के दिनों के लिए इतना कुछ बचाकर रखा है कि आप विश्वास से बुरे दिनों का सामना कर सकें अर्थात क्या आप वेतन से एक निश्चित रकम अपने कार्यालय में कटवा रहे हैं, क्या आप यह विश्वास करते हैं कि रोज रोज की गयी बचत एक दिन काम आती है? इसी प्रकार डाकघर बचत बैंक योजना मे कम से कम पैसे से भी आपने अपना कोई छोटा मोटा खाता खोल लिया है ? ऐसे छोटे मोटे खाते से आपको मोटर गाडी, स्कूटर या इसी तरह की चीजें खरीदने की सुविधा भी मिल जाती है तथा और भी कितने ही लाभ होते हैं। इसी प्रकार क्या आपने राष्ट्रीय बचत पत्रों सावधिक जमा योजना १० १२ तथा १५ वर्षीय बचत पत्रो मे कुछ न कुछ रकम लगायी है ?

आपने यह निश्चय किया है कि आप ऐसी कोई बाहरी सहायता नहीं लेंगे जिसके लिये आपको अपना सम्मान गिरवी रखना पडे लेकिन आये दिन रोज आप अखबारों मे पढ़ते होंगे कि बाहर से आए हुए अनाज के लिए आपकी मेहनत से अर्जित बहुत सी विदेशी-मुद्रा आपको दे देनी पड रही है। विदेशी-मुद्रा आपके पास वैसे ही कम है। इसलिए निर्माणों के लिए इकट्ठी की गयी धनराशि अगर देश के करोडो, लोगों की भूख मिटाने के लिए खर्च कर दी गई तो भविष्य के सपनों का क्या होगा ? आप जानते हैं कि विदेशी-मुद्रा बचाने के लिए ही स्व० प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने आपसे बार-बार कहा था कि आप अपने पास छिपाकर रखा सोना सरकार के पास जमा कर दीजिये। आपके द्वारा दिये गये सोने के बल पर हमारा देश विदेशों से अधिकाधिक बल्का मगा सकेगा तथा और भी मशीनें कल-पुर्जे मगा सकेगा और इतना मजबूत हो जायगा कि उसे विदेशो मे अपना सम्मान गिरवी नहीं रखना पड़ेगा। आपके सामने चुनौती है सोना दीजिए या सम्मान !

क्या आपने सम्मान की रक्षा के लिए सोना दिया और उसके बदले मे गोल्ड बाड ले लिए ?

४—देश का बच्चा-बच्चा देश के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार है तो क्या आपने अपने बच्चे से पूछा कि उसने देश के लिए कौन-सा बलिदान अब तक किया। और तो छोडिये क्या उसने २५ पैसे, ५० पैसे या एक रुपये के मूल्य के बचत टिकट खरीद कर अपने बचत कार्ड में चिपकाने शुरू कर दिये हैं यदि इतना भी उसने नहीं किया है तो केवल हाथ ऊँचे करके 'बलिदान करेंगे' कह देने भर से तो कुछ नहीं बनता ? उससे आज ही पूछिये कि उसने बचत कार्ड ले लिया है या नहीं ?

५—आपने प्रतिज्ञा की है कि आप उत्पादन बढ़ायेंगे और खर्च घटायेंगे—यह अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय है और इससे आप चीजों के दाम भी बढ़ने से रोकेंगे और देश का आर्थिक ढांचा भी इससे सभलेगा लेकिन क्या इस प्रकार होने वाली बचतों का सदुपयोग करने का भी कोई रास्ता आपने निकाला है ? आप जानते हैं कि पैसा बचाकर घर में रख लेना ही महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि

(शेष पृष्ठ १२ पर)

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवावदीन आर्य्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित, प्रकाशित

लखनऊ—रविवार चैत्र ११ शक १८८८, चन्द्र शु० १३ वि० २०२३ दिनांक ३ अप्रैल सन १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् विश्वे यजत्रा अधि-
वोचतोतये, त्रायध्वं नो दुरेवाया
अभिह्रुतः। सत्यया वो देव-
हूत्या हुवेम, शृण्वतो देवा
अवसे स्वस्तये।

काव्यानुवाद

शुचि यम सभी भाव धर
यजमान विद्वज्जन सभी।
रक्षाव दुराचार के बन के
बढ़ें, होवें सभी॥
हम सत्य वाणी से उन्हें,
आह्वान में नित रत रहें।
बन भावना सुनकर सुखी
रक्षा सदा करते रहें॥

विषय सूची

आर्यजगत् के गौरव—

श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री का आर्यसमाज बिहारीपुर में अभिनन्दन

★

श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

श्री पण्डित बिहारीलाल जी शास्त्री आर्यसमाज के समुज्ज्वल रत्न देदीप्यमान नक्षत्र और वैदिक सिद्धान्त पताका के दिग्विजयी नायक हैं।

शास्त्रार्थ महारथी के रूप में आपकी वाग्मिता और प्रत्युत्पन्न प्रतिभा का सभी विरोधियों ने महत्व स्वीकार किया है। वैदिक सिद्धान्त समर्थन और पाखण्ड खण्डन में आपने अपने ७५ वर्षीय जीवन का सर्वोत्तम समय व्यतीत किया है। अपनी सारी शक्ति लेखनी और वाणी द्वारा प्रचार करने में लगाकर आपने अनेकों नवयुवकों में मिशनरी भावना उत्पन्न कर दी, अनेकों को अपने शिष्य रूप में तय्यार कर दिया और आज भी वृद्धावस्था आपके मार्ग में बाधक नहीं बन सकी, जिधर से भी आर्यसमाज के प्रचार के लिये मांग आयी आर्यसमाज के एक सेनानी के रूप में आप उधर ही चल देते हैं।

आपके ७५ वर्षीय जीवन पर आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली ने ३ अप्रैल ६६ को आपका हार्दिक अभिनन्दन आयोजित किया है।

श्री शास्त्री जी मित्र परिवार के अभिन्न अंग हैं हम मित्र परिवार की ओर से इस शुभावसर पर श्री शास्त्री जी के जीवन के लिये मंगल कामनायें करते हैं और प्रभु से उनके दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते हैं।

★ ★ ★ ★

वार्षिक ८)
छ: माही ४)
विदेश १ पौं.

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम. ए.

वर्ष ६८
अंक १२
एक प्रति २० पै.

पंजाबी सूबे के सम्बन्ध में हमारा दृष्टिकोण

जैसा कि भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने २८-८-६१ को कहा था, "पंजाबी सूबे की मांग मूलरूप में एक साम्प्रदायिक मांग है। भले ही उसे भाषा के आधार पर कहा जाता हो।" परन्तु क्योंकि अकाली चाहते हैं कि इस प्रश्न पर भाषा के दृष्टिकोण से ही विचार किया जाय, पंजाब का बुद्धिजीवी वर्ग इससे भी इनकार नहीं करता।

पंजाबी क्षेत्र में पंजाबी की स्थिति वैसी नहीं है जैसी कि बंगला, गुजराती या मराठी की अपने-अपने देश में है। बंगाल, गुजरात या महाराष्ट्र में बोली जाने वाली और लिखी जाने वाली भाषा एक ही है। एक पढ़ा लिखा बंगाली, गुजराती या मराठा निश्चित रूप से अपनी भाषा में लिख पढ़ सकता है परन्तु पंजाबी के लिए ऐसा करना सम्भव नहीं। ऐसे पंजाबियों की संख्या कम नहीं है जो पंजाबी बोलते हुए भी और पढ़े-लिखे होते हुए भी न पंजाबी लिख सकते हैं न पढ़ सकते हैं। इसलिए जहां तक भाषा का प्रश्न है दूसरे प्रदेशों से पंजाब की स्थिति की तुलना नहीं की जा सकती।

जहां भाषा के आधार पर दूसरे प्रदेशों में पृथक् प्रदेशों की मांग समूची जनता की ओर से आती रही है। वहां पंजाबी भाषी प्रदेश की मांग का पंजाबी क्षेत्र की बहुत बड़ी संख्या विरोध कर रही है क्योंकि पंजाबी भाषी क्षेत्र की मांग केवल सिखों के एक वर्ग, अकालियों की ओर से है और हिन्दू पूरी तरह इसका विरोध कर रहे हैं जिनकी संख्या सरकारी आंकड़ों के अनुसार ४५ प्रतिशत है दूसरे प्रदेशों की तरह पंजाबी भाषी प्रदेश की मांग में कोई जान नहीं रह जाती।

पंजाब के हिन्दी क्षेत्र अथवा हरियाणा की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है। हरियाणा के लोगों के लिए भाषा की बात तो क्या पंजाबी एक बोली भी नहीं है। इस क्षेत्र में हिन्दी भाषी लोगों की संख्या ९६ प्रतिशत है। ४ प्रतिशत की भाषा को ९६ प्रतिशत लोगों पर बलात् ठूंस देना किस प्रकार न्यायसंगत माना जा सकता है?

पंजाब की मुख्य भाषा पंजाबी मान कर उसे एक भाषी प्रदेश बना देना राज्य पुनर्गठन आयोग के सिद्धान्तों की अवहेलना है। उक्त आयोग और 'संयुक्त-राष्ट्र संघ' द्वारा स्वीकृत सिद्धान्त के अनुसार उसी प्रदेश को एक भाषी बनाया जा सकता है जहां एक भाषा के बोलने वाले लोगों की संख्या कम से कम ७० प्रतिशत हो। किन्तु जहां ३० प्रतिशत से अधिक भाषाई अल्पसंख्यक लोग हों उस प्रदेश को द्विभाषी ही बनाया जा सकता है।

हमारी आशंकाएं

यदि पंजाबी सूबे की मांग स्वीकार की जाती है तो ऐसी स्थिति पैदा होने की आशंका है जिसे संभालना किसी के लिये सम्भव न होगा।

१—क्योंकि पंजाबी सूबे की मांग का आधार द्विराष्ट्र सिद्धान्त है, किसी न किसी दिन पंजाबी सूबा सर्वथा स्वतन्त्र राष्ट्र का रूप धारण करेगा। अकालियों ने इस बात को कभी छुपाया नहीं है। परिणाम स्वरूप यह सीमान्त प्रदेश एक दिन दूसरा पाकिस्तान सिद्ध होगा।

२—क्योंकि पंजाबी सूबा अकालियों द्वारा प्रचारित साम्प्रदायिक घृणा का परिणाम होगा, पूर्वी पाकिस्तान की तरह इसमें भी हमेशा साम्प्रदायिक झगड़े होते रहेंगे।

३—जैसा कि मास्टर तारासिंह ने स्वयं कहा है, आबादी और सम्पत्ति की अदला-बदली की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। समय-समय पर अकाली नेताओं द्वारा कही गई बातों को देखते हुये यह कहा जा सकता है कि पंजाबी सूबे में हिन्दू ही नहीं गैर अकाली सिखों के लिये भी कोई स्थान न होगा। १९४७ का इतिहास एकबार फिर दोहराया जायेगा।

हमारी मांगें

१—पंजाब का पुनः विभाजन किसी भी अवस्था में नहीं होना चाहिये। यदि ऐसा किया गया तो यह न केवल हिन्दुओं और सिखों के लिये बल्कि सारे पंजाब और देश भर के लिये अत्यन्त हानिकारक होगा।

१—क्योंकि हिन्दी क्षेत्र में लगभग ९६ प्रतिशत लोग हिन्दी भाषी हैं इसलिये राज्य पुनर्गठन आयोग द्वारा निर्धारित सिद्धान्त के अनुसार इस क्षेत्र को

(शेष पृष्ठ १६ पर)

भारत का एक और महान् दुर्भाग्य

(ले०—श्री दीपचन्द 'निर्मोही' पानीपत)

अभी वह घड़ी भूल भी नहीं पाई जबकि हजारों हमारे भाई बेघर बार हुए कितनी ही बहनों और कुल-वधुओं की लाज लुटी। माँ बाप के बिना अबोध और सुकोमल बच्चे प्राण छोड़ गये। रावी का पानी लाल हो गया, और धरती गरम रक्त से रंगी गई देखते ही देखते भारत दो भागों में बट गया। जिसका परिणाम हम अभी तक भुगत रहे हैं। चीन ने पाकिस्तान को भड़काया और वह भारत पर टूट पड़ा। फलस्वरूप कितने ही ऐसे सुमन जिनकी सुगन्ध अभी फैलने भी नहीं पाई थी—सदा के लिए धरती माँ की गोद में सो गये। कितनी ही सुहागिन अपना सुहाग खो बैठी। हजारों बहनें बिना भाई के रह गईं, और कितनी ही माताओं ने अपने प्यारे लाल बलि वेदी पर चढ़ा दिये। इतना ही नहीं। इस युद्ध पिशाच ने शान्ति के महान आराधक पूज्य लालबहादुर शास्त्री के भी प्राण लिए बिना न छोड़े। इसके पर भी शान्ति के आसार दिखाई नहीं देते। ऐसी स्थिति में भी मास्टर तारासिंह ने एक और महान संकट राष्ट्र के सामने खड़ा कर दिया है।

वास्तव में सिक्ख और हिन्दू दो नहीं कहे जा सकते। पंजाब में बहुत से ऐसे परिवार हैं जिनमें एक भाई सिक्ख है और दूसरा नहीं। इस प्रदेश में ऐसी प्रथा सी चल गई थी कि हर दम्पत्ति अपना पहला लड़का सिक्ख बना देती थी। इसी प्रथा का रूप आज भी पंजाब प्रदेश में कहीं-कहीं देखने को मिलता है इस प्रकार हिन्दू और सिक्ख एक ही बाप के दो बेटे हैं तो यह महान विभाजन कैसी। हिन्दुत्व की रक्षा के लिये ही सिक्ख संगठन का जन्म हुआ। इसी संगठन ने हिन्दुत्व की रक्षा की, जो किसी समय विधर्मियों के द्वारा पददलित हो गया था। अब इस संगठन ने विनाशक रूप धारण कर लिया है तो इसे हिन्दुओं से पृथक कैसे कहा जा सकता है परन्तु मास्टर तारासिंह और सन्त फतेहसिंह ने हिन्दू और सिखों को अलग अलग बता-कर अपनी लीडरी के स्वार्थवश इन दोनों के बीच एक महान् खाई खोदने का सूत्रपात कर दिया है। यदि मास्टर तारासिंह और सन्त फतेहसिंह की इस विरोधी प्रवृत्ति से हिन्दुओं और सिखों के बीच यह खाई बन गई तो यह भारत का एक और महान् दुर्भाग्य होगा।

गुरु गोविन्दसिंह जी का अधिकतर साहित्य हिन्दी और ब्रज भाषा में मिलता है। बहुत थोड़ा साहित्य ही उन्होंने पंजाबी में लिखा। गुरु ग्रन्थ साहब में भी अधिकतर सन्त कबीर और सूरदास आदि के दोहे और पद संगृहीत हैं, जो खड़ी बोली और ब्रज भाषा में हैं, परन्तु सिक्खों के ये अनूठी लीडर जान-बूझकर अल्प-संख्यक भाषा-भाषी और बहु संख्यक भाषा-भाषी का नारा लगा-कर भारत को एक बार फिर विभाजन की तरह खण्डित करना चाहते हैं। वे ऐसा करके सिक्ख गुरुओं के प्रति अन्याय कर रहे हैं जो हिन्दुत्व की रक्षा के लिये बलिदान हो गये।

मास्टर तारासिंह की इस मांग से कि वह नेपाल की तरह स्वतन्त्र राज्य चाहते हैं—राष्ट्र में एक चिन्ता की लहर सी व्याप्त हो गई है। इनकी इस मांग से ही राष्ट्र की प्रगति में महान् बाधायें आकर खड़ी हो गई हैं। इधर पंजाबी सूबे की मांग हुई तो उधर विशाल हरियाणे की बात होने लगी। इधर हिमाचल प्रान्त के समर्थक खड़े हुए तो उधर विशाल हिमांचल का नारा लगा। जबकि भाषाओं और निम्न लोगों की समस्यायें अभी तक समाप्त नहीं हुई। इस प्रकार देश के वातावरण में एकदम अशान्ति व्याप्त हो गई जिसे स्वर्गीय नेहरू और शास्त्री ने अभी तक दबाये रखा।

यदि मास्टर तारासिंह ने अपनी इस रट को बन्द नहीं किया और सरकार ने उनकी इस विनाशकारी मांग को मान लिया तो निश्चित ही भारत के युवक जिन्हें सरदार भगतसिंह, सुखदेव, शेखर और सुभाष आदि देश भक्तों के बलिदान अभी नहीं भूले—ऐसी स्थिति में भारत की अखण्डता के लिये अपने प्राण न्योछावर कर, सरदार पटेल का स्वप्न जिसे उन्होंने साकार कर दिखाया था—भंग नहीं होने देंगे।

★

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् विश्वानीद्धरणि से च बन्धवो वञ्मिते रण्या आमनमनाम ।
आरी मत ममामानम्बू योविशा विनेता सधमादेषु बाजन । १४॥

ऋ० १ ४ १०-८

हे बलाधेय सबको जानने वाले ईश्वर ! आप "आर्यान्" विद्या धर्मादि उत्कृष्ट स्वभाव आचरणयुक्त आर्यों को जानों से च बन्धव" और जो नास्तिक, डाकू, चोर विश्वासघाती, मूर्ख, विषय लम्पट हिंसादि दोषयुक्त उत्तम कर्मों में विघ्न करने वाले स्वार्थी स्वार्थ साधन में तत्पर वेद विद्या विरोधी, अनार्य (अनाड़ी) मनुष्य 'बर्हिष्मते' सर्वोपकारक यज्ञ के विध्वंस करने वाले हैं इन सब दुष्टों को आप "रन्धय" (समूलान् विनाशय) मूल से नष्ट कर दीजिये और "शासदव्रतान्" ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासादि धर्मानुष्ठानव्रतसहित वेद मार्गोपदेशक आचारियों का यथायोग्य शासन करो) जिससे वे भी शिक्षायुक्त हो के शिष्ट हों अथवा उनका प्रमाद ही नाश किया हमारे वश में ही रहें 'शाकी" तथा जंगलों परम शक्ति युक्त शक्ति देने और उत्तम कामों में प्रेरणा करने वाले हो, आप हमारे दुष्ट कामों में निरोधक हो मैं भी "सधमादेषु" उत्कृष्ट स्थानों में निवास करता हुआ "विवेता ते" तुम्हारी आज्ञानुकूल सब उत्तम कर्मों की "वाकन" कामना करता हूं सो आप पूरी करें ।

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार ३ अप्रैल १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसंवत् १,९७ २९,४९,०६७

स्वामी सत्यानन्द जी की तपस्या

पंजाब एकता समिति के निर्देशन में श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने पंजाब की एकता के लिए आमरण अनशन व्रत आरम्भ किया था और अपने जीवन को एक कठिन अग्नि परीक्षा के समर्पित कर दिया था। अब पंजाब एकता समिति के परामर्श पर उन्होंने अपना व्रत खोल दिया है और फलों का रस ग्रहण कर अपने शुभ चिन्तकों को धन्यवाद दिया। हम स्वामी जी को उनके व्रत के लिए बधाई देते हैं। उनके व्रत ने पंजाब को भावी विनाश से बहुत दूर तक बचा लिया है। गृहमन्त्री श्री नन्दा ने जो आश्वासन दिये हैं हम उनका आदर करते हैं और आशा करते हैं कि गृहमन्त्री श्री स्वामीजी और वीर यज्ञदत्त जी के व्रतों और पंजाब की जनता की भावनाओं का आदर करेंगे और पंजाब की जनता में एकता बनाये रखने में सफल सिद्ध होंगे।

प्रधानमन्त्री की विदेश यात्रा

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी मुख्य रूप से अमेरिका की यात्रा पर हैं। फ्रांस, इंग्लैण्ड रूस भी जायेंगी।

प्रधान मन्त्री बनने के बाद यह इन्दिरा जी की पहली विदेश यात्रा है। अमेरिका ने प्रधान मन्त्री शास्त्री जी को भी निमन्त्रण दिया था उनकी पूर्ति इस यात्रा द्वारा हो रही है। सारे देश और विश्व की दृष्टि इस मिलन पर लगी हुई है। भारत की खाद्य समस्या रक्षा समस्या और विकास समस्या सभी का भविष्य इन्दिरा-जानसन भेंट पर है।

भारत तटस्थ नीति का समर्थक है परन्तु उसे सहृदयता के लिए मित्रों और शुभचिन्तकों की आवश्यकता है। यह सौभाग्य का विषय है कि इस समय अमेरिका और रूस दोनों भारत की सहायता कर रहे हैं रूस ने अपनी मैत्री का उदारतापूर्वक परिचय दिया है और अब बोकारो कारखाने का आरम्भ कर एक नया कदम बढ़ाने जा रहा है। इसी प्रकार अमेरिका भी अन्न संकट में हमारा सबसे अधिक सहायक सिद्ध हुआ है। हमें इन सहयोगों के लिये आभार मानना चाहिये।

मुख्य रूप से रक्षा समस्या ऐसी समस्या है जिसमें अमेरिका भारत के साथ पाकिस्तान को बराबर का दरजा देकर व्यवहार करना चाहता है और इस प्रकार वह दोनों देशों को अपने शक्ति सन्तुलन में उपयोग करना चाहता है। परन्तु पिछले युद्ध में अमेरिकी पैटन टैंकों और सैबरजेट विमानों की जो दुर्गति पाकिस्तान ने कराई है उसने अमेरिका की आंखें खोल दी हैं। इसी प्रकार पाकिस्तान राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर चीनी टैंकों और मिगों का प्रदर्शन कर पाकिस्तान ने अमेरिका को भी बखूबी दिखाई है कि हम चीन को अपना दोस्त मानते हैं इस बात का भी अमेरिका की नीति पर प्रभाव पड़ेगा और वहाँ के राष्ट्रपति अनुभव करेंगे कि चीन से पाकिस्तान को फिर उभारना आरम्भ कर दिया अतः भारत को सुरक्षा का खतरा है। चीन कभी भी गड़बड़ी कर सकता था कर सकता है ऐसी अवस्था में प्रधान मन्त्री की राष्ट्रपति जानसन से भेंट ऐतिहासिक महत्व की सिद्ध होगी।

हम आशा करते हैं कि इस यात्रा से भारत और अमेरिका में परस्पर जो गलत फहमियां हैं या उत्पन्न कर दी गई हैं वे दूर हो सकेंगी। प्रधान मन्त्री की यात्रा सफल हो और इससे भारत ही नहीं विश्व के लिए सुख समृद्धि और शान्ति का सन्देश फैले यही हमारी मंगल कामना है।

नागा गण राज्य दिवस

पिछले दिनों नागालैण्ड में कोहिमा नगर से ३ मील दूर विद्रोही नागाओं ने नागा संघ सरकार की ओर से गणराज्य दिवस मनाया। राष्ट्रपति के रूप में अध्यक्ष ने अपना राष्ट्र ध्वज फहराया, भाषण हुए, सांस्कृतिक गीत नृत्य हुए। इस आयोजन में शांति मिशन के सदस्य पादरी स्काट भी सम्मिलित हुए।

जब लोक सभा में नागाओं के इस कार्य के सम्बन्ध में सदस्यों ने पूछा कि सरकार ने इस राज विद्रोह का दमन क्यों नहीं किया तब हमारे एक भोले मन्त्री ने कहा कि सरकार इसे देश द्रोह नहीं मानती इस उत्तर से विरोध सदस्य ही नहीं कांग्रेसी सदस्य भी असन्तुष्ट थे। विदेशमन्त्री स्वर्णसिंह ने जब इस कार्यवाही की निन्दा की और उचित एक्शन का विश्वास दिया तब सदन कुछ आश्वस्त और शान्त हुआ। पादरी स्काट की उपस्थिति के प्रति भी विदेश मंत्री ने बुरा मनाया।

हम नहीं समझ पाते कि सरकार इतने भोलेपन और बच्चूपन से क्यों काम लेती है अगर विद्रोही नागाओं की अप्रैल में प्रधानमन्त्री से वार्ता होने वाली है तो इसका यह अर्थ नहीं होना चाहिए कि इस बीच विद्रोही नागा जो चाहे कार्य करें उन्हें रोका न जाय। ऐसे तो कल कुछ पाक समर्थक पाकिस्तानी ध्वज फहरा सकते हैं या सिक्खिस्तान के नाम पर सिक्खिस्तान का झण्डा फहराया जा सकता है। सरकार का नागाओं की गतिविधियों पर कठोर नियन्त्रण रखना चाहिए। पादरी स्काट भारत विरोधी है यह स्पष्ट हो चुका उन्हें अधिक अशान्ति फैलाने का मौका न दिया जाय और वापस किया जाय। यदि ऐसा न हुआ तो शायद एक दिन सुनने को मिल सकता है कि कांग्रेस कार्य समिति ने नागा विद्रोहियों की नागा राज्य मांग उसी प्रकार स्वीकार कर ली जैसे पंजाबी सूबे की मांग।

★

श्री पं० बिहारीलालजी शास्त्री का अभिनन्दन

रविवार ३ ४ ६६ को आर्यसमाज की ओर से आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प० बिहारीलाल शास्त्री काव्यतीर्थ का सार्वजनिक अभिनन्दन विधान सभा अध्यक्ष श्री मदनमोहन वर्मा एम० ए० एल० एल० बी० प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के सभापतित्व में सायंकाल ६ बजे मोती पार्क बरेली में होगा।

आपसे सप्रेम सविनय आग्रह है कि उत्सव में सम्मिलित होकर शोभा बढ़ावें।

पधारने वाले सदस्य

श्री मदनमोहन वर्मा अध्यक्ष विधान सभा, श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एल०सी०, श्री नरदेव स्नातक संसदसदस्य, श्री धर्म-दत्त मन्त्री सभा, श्री शिवदयालु मुख्योप मन्त्री, श्री धर्मेन्द्रसिंह जी उपमन्त्री, श्री डा० हरिशंकर शर्मा डी लिट्०, श्री देवेन्द्रार्य कोषाध्यक्ष, श्री हरप्रसाद जी, श्री उमेशचन्द्र सम्पादक 'आर्यमित्र' प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम० ए० आदि-आदि। दर्शन भिलाषी—

नारायण ऐडवोकेट उदयानन्द शास्त्री
प्रधान मन्त्री
तथा
सदस्यगण आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली

कानपुर की आर्यसमाजों की ओर से श्री सभा प्रधान जी को १११) भेंट

श्री प० विद्याधर जी शर्मा सभा उपप्रधान एवं आर्य केन्द्रीय सभा कानपुर द्वारा आयोजित नवसंवत्सरोत्सव आर्यसमाज स्थापना दिवस चैत्र शु० १ दिनांक २३ मार्च १९६६ दिन बुधवार को आर्यसमाज जेरटन रोड कानपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के माननीय प्रधान श्रीमान् मदनमोहन वर्मा जी अध्यक्ष विधान सभा एवं सभामन्त्री श्री धर्मदत्त जी सिद्धान्ती कानपुर ६॥ बजे सायं पहुंचे। श्री प्रधान जी का ओजस्वी भाषण हुआ ? जनता पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। सभा के वेद प्रचारार्थ श्री प्रधान जी को १११) रु० निम्न आर्यसमाजों ने भेंट स्वरूप प्रदान किए। सभा दानी सज्जनों एवं आर्य जनता की आभारी है और धन्यवाद देती है।

	आर्यसमाज	सीसामऊ	१०१)
	आर्यसमाज	लाजपतनगर	१०१)
	"	गोविन्दनगर	१०१)
महिला	"	जेरटनरोड	१०१)
व हुका	"	दर्शनपुरवा	५१)
	"	नयागंज	५१)
	"	रेल बाजार	५१)
	"	स्वरूपनगर	५१)
	"	जेरटन रोड कानपुर	५०१)
		कुल	१११११)

स्वामी सत्यानन्द जी ने अनशन खोल दिया

शिष्टमंडल श्री नन्दा के आश्वासनों से संतुष्ट

पंजाब की एकता के लिए संघर्ष जारी रहेगा

• स्वामी सत्यानन्द जी ने कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के पंजाबी सूबे के विरुद्ध अपना अनशन आर्यसमाज दीवानहाल में २३ मार्च को नवें दिन समाप्त कर दिया।

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक ने स्वामी जी को फलों का रस देकर अनशन खुलवाया। इस पर सारा हाल वरन् स्वामी सत्यानन्द जी महाराज अमर रहें, वैदिक धर्म की जय, आर्यसमाज अमर रहे, स्वामी दयानन्द की जय के गगनभेदी नारों से गूंज उठा। इस अवसर पर आर्यसमाज दीवानहाल में आर्य स्थापना दिवस और स्वामी जी के अनशन खोलने के सिलसिले में सभा हो रही थी। जब स्वामी जी ने अनशन खोला, तो हाल करतल ध्वनि और नारों से गूंज उठा।

विभिन्न संस्थाओं की ओर से अभिनन्दन करने के लिए स्वामी जी का अभिनन्दन किया गया और उन्हें फूल मालाएं पहनाई गईं। इस अवसर पर दीवानहाल दर्शनाभिलाषियों से खचाखच भरा था। बरामदे में भी लोगों की लाइनें लगी हुई थीं।

स्वामी जी का भाषण

स्वामी जी ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच अपने संक्षिप्त भाषण में कहा कि मैंने पंजाब की एकता और स्वर्गीय प्रधानमन्त्री पंडित नेहरू की ओर से दिलाये गये आश्वासनों की रक्षा के लिये अनशन प्रारम्भ किया था। यह हमारा दुर्भाग्य है कि मेरा वह व्रत पूरा न हो सका, परन्तु सरकार ने हमारे प्रतिनिधि मण्डल को जो विश्वास दिलाया है, यदि हमारी सरकार अपने उन वचनों का भी पालन करे तो पंजाबी सूबा बनने से पंजाब का जो बटवारा हुआ है, उसकी बहुत सी बुराइयां दूर हो सकेंगी और पंजाब के हिन्दू सिखों का प्रेम भी बना रह सकेगा। मेरी भगवान् से प्रार्थना है कि वह हमें और हमारी सरकार को सद्बुद्धि दे, ताकि उन वचनों का पालन हो सके और हिन्दू सिख एकता अक्षुण्ण रह सके।

सभा में श्री वीरेन्द्र, लाला जगत् नारायण और श्री ओमप्रकाश त्यागी ने भाषण दिये, जिनके दौरान उन्होंने कहा कि पंजाब की एकता के लिये हमारा संघर्ष जारी रहेगा। हमने अनशन खुलवा कर संघर्ष का पैंतरा बदला है।

श्री वीरेन्द्र ने अनशन खत्म करने के लिए जहां स्वामी जी का धन्यवाद किया, वहां उन्होंने दिल्लीवासियों का भी धन्यवाद किया कि उन्होंने सदा गाढ़े समय में पंजाब के हिन्दुओं की सहायता की है और उनका उत्साह बढ़ाया है। हमें विश्वास है कि दिल्लीवासी भविष्य में भी पंजाब के हिन्दुओं की इसी तरह सहायता करते रहेंगे। जब भी हिन्दुओं पर संकट आया तो हमारे किसी न किसी नेता ने आगे आकर बलिदान दिया है। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द और स्वामी रामेश्वरानन्द आदि के उदाहरण दिये। उन्होंने बताया कि हमारे संघर्ष का रूप बदला है। इस संघर्ष का यह लाभ हुआ है कि सरकार को यह अनुभव हुआ है कि हिन्दुओं में जीवन है और वे अब किसी अत्याचार को सहन करने के लिए तैयार नहीं।

उन्होंने कहा कि आर्यसमाज और जनसंघ दोनों एक ही आदर्श के लिए लड़ रहे थे कि पंजाब का और विभाजन न हो। इस आन्दोलन का यह लाभ हुआ है कि आज सरकार को हमारे प्रतिनिधियों से बातचीत करनी पड़ी है। सरकार की ओर से हमारी शिकायतें दूर करने का विश्वास दिलाया गया है और उसके लिए बातचीत जारी रहेगी।

लाला जगतनारायण ने कहा कि स्वामी जी का यह त्याग व्यर्थ नहीं जायेगा।

श्री ओमप्रकाश त्यागी ने कहा कि इस संघर्ष में १४ व्यक्तियों का बलिदान हुआ है, इसका फल मीठा हुआ। कांग्रेस ने साम्प्रदायिकता का जो बीज बोया है उसका फल शीघ्र ही उसे भुगतना पड़ेगा और हम अन्तिम समय तक उसकी इस साम्प्रदायिकता के विरुद्ध लड़ते रहेंगे।

गृहमन्त्री से भेंट

इससे पूर्व आर्यसमाज के नेताओं का एक शिष्ट मण्डल, जिसमें श्री प्रकाशवीर शास्त्री, ला० जगतनारायण, श्री वीरेन्द्र, श्री ओमप्रकाश त्यागी और डा० रामगोपाल शालवाले सम्मिलित थे, आज केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा से मिला। गृहराष्ट्र विभाग के राज्य मन्त्री श्री विद्याचरण शुक्ल और उप गृह मन्त्री श्री जी०सी० शुक्ल भी उपस्थित थे।

शिष्ट मण्डल ने गृहमन्त्री से पंजाबी सूबा सम्बन्धी उनके वक्तव्य के कुछ अंशों के स्पष्टीकरण की मांग करने के अति-

[शेष पृष्ठ ११ पर]

सार्वदेशिक सभा देहली की व्यवस्था

सार्वदेशिक सभा देहली का पत्र सं० १५२० दि० २७ ७ ६४ का निम्न प्रकार प्रकाशित किया जाता है—

प्रतिलिपि

श्रीयुत मन्त्री जी

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

श्रीमन् नमस्ते !

आपका पत्र १०-७ ६४ का पत्र सं० २९३२ श्री डा० श्रीराम जी आर्य के ९।७ ६४ के पत्र सहित मिला। यदि कोई व्यक्ति जातीय सभा का सदस्य व अधिकारी हो तो वह आर्य सदस्य रह सकता है, आर्य सभासद नहीं बन सकता।

यदि कोई व्यक्ति किसी पौराणिक देव मन्दिर की प्रबन्ध कमेटी का पदाधिकारी या सदस्य हो तो वह आर्यसमाज का आर्य सदस्य हो तो वह आर्यसमाज का आर्य सदस्य भी न बनाया जा सकता है और न रह सकता है।

—रामगोपाल मन्त्री

उपर्युक्त सार्वदेशिक सभा की व्यवस्था से उत्तरप्रदेश के सर्व आर्यसमाज एवं शिक्षणसंस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्यमित्र दि० १६ ८-६४ के पृष्ठ सं० ४, अङ्क ३२ पर प्रकाशित हो चुकी है। समाजों की जानकारी के लिये पुनः प्रकाशित किया जाता है। अतः उचित कार्यवाही करने की कृपा करें और आगे के लिए नोट करें।

—जगदत्त तिवारी सभा मन्त्री

प्रतिनिधि चित्र भेजिये

प्रदेशीय आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय में प्रतिनिधि चित्र फार्म बहुत ही कम संख्या में प्राप्त हुए हैं। अतः समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि प्रतिनिधि फार्म यथा शीघ्र नियमानुसार खाना पूर्ति करके भेजने की कृपा करें।

सभा वार्षिक बृहदधिवेशन दिनांक २८ व २९ मई १९६६ शनिवार, रविवार को देहरादून में होना निश्चित हुआ है। देहरादून आर्यसमाज के आर्य बन्धु प्रतिनिधि महोदयों के स्वागत करने की तैयारियों में जुट गये हैं। आशा है कि प्रतिनिधि महोदय तिथि नोट करने का कष्ट करेंगे।

—सभा मन्त्री

उरई आर्यसमाज द्वारा ३०१ भेंट

आर्यसमाज उरई की ओर से दि० २७ मार्च को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के माननीय श्री प्रधान जी महोदय को ३०१) भेंट किया गया। सभा आर्य समाज उरई को इस दान राशि के प्राप्ति हेतु धन्यवाद देती है।

प्रोग्राम मास अप्रैल

श्री रामस्वरूप जी—२ से ५ अप्रैल गुरुकुल एटा, ११ से १३ कोहारखना, १५ से १८ जलालाबाद, २४ से २७ रायबरेली।

श्री धर्मराजसिंह जी—२ अप्रैल तक काशीपुर, ५ से ७ फूलपुर, (आजमगढ़)

श्री बजराजसिंह जी ९, १० आजमगढ़, १३ से १५ अर्जुनपुर गढ़ा।

श्री जयदत्त जी आजम—४ से ७ केराकत।

श्री प्रेमचन्द्र जी—३० मार्च से ४ अप्रैल तक उपसभा झांसी।

श्री रघुवरदत्त जी—१५ से १७आजमगढ़ १८ से २० विवाह कमोलिया।

श्री प्रकाशवीर जी—३ से ५ गोनेर व से १० मुरादनगर, १२ से आ०स० देहरी [गढ़वाल]

श्री रूपपालसिंह जी—१ से ३० अप्रैल तक उप सभा मेरठ।

श्री दिनेशचन्द्र जी—१ से ३० अप्रैल तक उपसभा मेरठ।

महोपदेशक

श्री विश्वबन्धु शास्त्री—३ से ५ स्त्री स० मुरादाबाद, ८ से१० बेगमपुर ११ १२ कामनेर आगरा, १७ से १९ आंवला, २१ से २७ कटरा प्रयाग, २९ से सूर्यकुण्ड बदायूं।

श्री जगवीर शास्त्री—३ से ५ गौनेर ७ ८ छपरा, ९ से ११ जगदीशपुर, १३से १५ अर्जुनपुर गढ़ा (फतेहपुर) १८ से २१ समस्तीपुर, २२ से २५ जोगरी, २८ से ३० बहुर्वा।

श्री श्यामसुन्दर शास्त्री—९—१० आलमबाग लखनऊ।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

स० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

क्या समाजोत्सव नहीं मनाया है ?

यदि हां, तो—

आमंत्रित कीजिये—

मधुर एवं उत्तेजित करने वाले भजनोपदेशकों एवं सुन्दर, सुगम और प्रभावकारी व्याख्याताओं को।

विवाह संस्कारों पर भी याद कीजिये और लिखिये प०—

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्य प्र० सभा, लखनऊ

काशीपुर में चैती मेला पशु बलि निरोध

आर्यसमाज काशीपुर तथा नैनीताल की आर्यसमाजों की ओर से इस वर्ष २९ मार्च से ३ अप्रैल तक चैती मेले पर प्रचार की योजना बनाई है। मेले में श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद् सदस्य श्री शिवराम जी, श्री उमेशचन्द्र स्नातक श्री भगवद्दास जी आदि पहुंच रहे हैं।

मोहन आश्रम हरिद्वार

[ईश्वर भक्ति तथा वैदिक धर्म का प्रचार ही इस आश्रम का मुख्य उद्देश्य है]

(ले०—श्री स्वामी सच्चिदानन्द सर्व अधिष्ठाता मोहन आश्रम हरिद्वार)

मोहन आश्रम, भीमगोडा के ऊपर सप्त स्रोत गंगा के तट पर उसी महत्वपूर्ण स्थान पर है जहाँ पर इतिहास बतलाता है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सम्वत् १९२४ विक्रमी के कुम्भ के मेले के अवसर पर अपना शिविर लगाया था और पाखण्ड खण्डिनी पताका स्थापित करके वैदिक धर्म का प्रचार प्रारम्भ किया था।

(देखो श्रीमद्दयानन्द सप्त सस्करण पृष्ठ ११४)।

आश्रम बनाने वालों का परिचय-

महर्षि दयानन्द जी महाराज के परम भक्त श्री ला० बल्देवसिंह जी देहरादून के एक प्रसिद्ध रईस थे। महर्षि दयानन्द जी जब सम्वत् १९३७ वि० में देहरादून पधारे थे तब उन्होंने दो मास से भी अधिक (कार्तिक सुदी ४ से मार्गशीर्ष बदी ८ तक) लाला जी की कोठी में ही निवास किया था। लाला जी के परिवार वालों के विशेष आग्रह पर महर्षि जी ने प्रथम बार वहा पर ही अपनी प्रतिकृति उतरवाना स्वीकार किया था। सिर पर पगड़ी, गले में दुपट्टा और कुर्सी पर बैठे हुए महर्षि दयानन्द जी की छवि लाला जी की कोठी में ही खींची गयी थी।

(देखो श्रीमद्दयानन्द प्रकाश सप्तम सस्करण पृष्ठ ४६४ से ४६६ तक)।

वैसे तो लाला जी में ईश्वर-भक्ति और परमार्थ के चिन्ह बचपन से ही विद्यमान थे परन्तु महर्षि जी के दीव सत्संग से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना तन, मन, धन आदि सर्वस्व ईश्वर भक्ति और परोपकार में ही अर्पण किया। उनका प्रिय वाक्य था—'परमपिता जी ! सब आपके भक्त बन जावें।' देहरादून के समीप होने के कारण आप सत्संग के लिये प्रति सप्ताह हरिद्वार में भी आया करते थे और चाहते थे कि जगद्गुरु महर्षि दयानन्द जी ने सम्वत १९२४ वि० के कुम्भ मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़कर अपने चरणों के स्पर्श से जिस भूमि को पवित्र किया था उस महत्वपूर्ण भूमि को मोल लेकर ईश्वर भक्ति और वैदिक धर्म प्रचारार्थ एक आश्रम बनाया जावे। अन्ततोगत्वा अपने परम मित्र श्री स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती जी महाराज और श्री महात्मा हंसराज जी महाराज के सहयोग से सन् १९ २ ई० में उसी भूमि को मोल लेकर एक ट्रस्ट भक्ति प्रचारिणी सभा के नाम करके मोहन आश्रम की स्थापना कर ही तो दी। आश्रम का नाम उनके प्रिय पुत्र मोहन के नाम पर रखा गया जिसकी २० वर्ष की आयु में ही मृत्यु हो गयी थी।

ट्रस्ट (भक्ति प्रचारिणी सभा) का प्रबन्ध बड़े बड़े सुयोग्य महापुरुषों के द्वारा होता चला आ रहा है जैसे स्वयं श्री लाला बल्देवसिंह जी, श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी, श्री महात्मा हंसराज जी, श्री सेठ राधाकृष्ण जी होती मर्दान, सर श्री बख्शी टेकचन्द जी जज हाईकोर्ट लाहौर, सर श्री गोकुलचन्द जी नारंग, रायबहादुर श्री दुर्गादास जी, श्री डा० गोवर्धनलाल दत्त जी उपकुलपति विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, प० विश्वनाथ जी, डा० छज्जूराम जी भला विश्वविद्यालय, श्री लाला रलाराम जी वानप्रस्थी अकालगढ़ श्री ला० धनीराम जी भल्ला, श्री सेठ रामकिशोर जी, श्री ला० भगवानदास जी पुरी आदि आदि। इन्हीं महापुरुषों के द्वारा इस आश्रम का सरक्षण और संवर्धन हुआ। आश्रम में ६५ कमरे बन चुके हैं। पानी बिजली का भी अच्छा प्रबन्ध है। यज्ञ-शाला भोजन-शाला वाचनालय, पुस्तकालय का भी प्रबन्ध है ४५ बीघा जमीन भी है।

आश्रम के वर्तमान पदाधिकारी

प्रधान—श्री पूज्यपाद आत्मानन्द स्वामी जी महाराज, उपप्रधाना—श्रीमती माता सत्यवती जी सेठानी धर्मपत्नी स्वर्गीय

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दुर्घटना का गौरव करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

ब्रह्मचारी दत्तमुनि जी के आकस्मिक दुःखद निधन पर भक्तों के शोक संदेश प्राप्त हो रहे हैं।

★

संस्था-परिचय

आर्यसमाज का महत्व

(ले०—श्री बाबूलाल जी गुप्त एम एस सी)
[भू पू० सचालक शिक्षा विभाग म भा०]

आर्यसमाज को स्थापित हुये ९१ वर्ष व्यतीत हुये यद्यपि इस अल्पावधि में यह अनेक महान कार्य कर चुका है—और इसके प्रशंसकों की सख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथापि इसके गुणों और उनकी सम्भावनाओं का वास्तविक मूल्यांकन अभी नहीं हो पाया यदि इसके सदस्यों ने इसके यथार्थ स्वरूप को पहिचान कर उसके अनुकूल आचरण करना आरम्भ कर दिया तो वह दिन दूर नहीं जब न केवल भारतवर्ष अपितु सम्पूर्ण जगत् इसको एक स्वर से अपना वास्तविक उद्धारक समझने लगेगा।

आर्यसमाज के दस नियमों पर दृष्टिपात करने से विदित होगा कि प्रात स्मरणीय महर्षि दयानन्द ने जहा इसकी स्थापना ससार के सर्व प्रकारेण उपकार हेतु की थी वहा इसके सदस्यों के कर्तव्य भी इस प्रकार निर्धारित कर दिये थे कि इसके मुख्योद्देश्य की पूर्ति में कोई सदेह शेष न रहे। ससार में जितना कष्ट और दुःख है उसके मूल कारण अविद्या, पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष, असत्य भाषण और स्वार्थपरता है। महर्षि ने उपर्युक्त कारणों का मूलोच्छेदन करने हेतु आर्यसमाज के नियमों के अन्तर्गत आर्यसमाज के सदस्यों को निर्देश दिया कि उन्हें अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना चाहिये। उन्हें सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये, और केवल अपनी उन्नति में सतुष्ट न रह कर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिये। उन्हें सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के त्यागने हेतु सर्वदा उद्यत रहना चाहिये और सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए। सत्य और अहिंसा का ऐसा सजीव यथार्थ निरूपण अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

आर्यसमाज इस सृष्टि के रचयिता और पालनकर्ता ऐसे ईश्वर में विश्वास करता है जो सर्व व्यापक, सर्वान्तर्यामी सर्व शक्तिमान् दयालु और न्यायकारी है। ईश्वर के इस स्वरूप को मानने वाला व्यक्ति न तो स्वेच्छा से कभी कोई दुराचार अत्याचार अथवा भ्रष्टाचार कर सकता है और न कभी किसी अत्याचारी अथवा दुराचारी से भयभीत होकर वह दूसरों के दुराचारों को सहन कर सकता है।

आजकल समाजवाद अथवा साम्यवाद का जोरों से ढोल पीटा जा रहा है। हमारे कितने ही भाई तो आधुनिक प्रत्येक बुराई का अन्त समाजवाद अथवा साम्यवाद के प्रसार और प्रचलन में ही मान बैठे हैं परन्तु खेद है कि उनका ध्यान वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की ओर नहीं गया जो निःसन्देह निष्कलंक समाजवाद के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। यह दायित्व आर्यसमाज के सभासदों का है कि वे वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार अपना वैयक्तिक, पारिवारिक एव सामाजिक जीवन धारण करके दूसरों के सम्मुख उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत करें जब दूसरे लोग इसी जीवन प्रणाली द्वारा आर्यसमाज के सभासदों को लाभान्वित होता हुआ देखेंगे तो उनको भी इसे अपनाने में सकोच न होगा।

चरित्र हीनता के कारण जो नाना प्रकार की बुराइयां हमारे वैयक्तिक एव सामाजिक जीवन को कष्टमय बना रही हैं उनको अनुभव तो प्रायः सब कर रहे हैं परन्तु उनका उन्मूलन किस प्रकार किया जा सकता है ऐसी अचूक युक्ति अभी किसी के द्वारा व्यक्त नहीं हो पाई, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की दिव्य दृष्टि इस ओर भी गई थी और उन्होंने संस्कार विधि की रचना कर ससार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था कि मनुष्य के चरित्र का निर्माण उत्तम ढंग से किस प्रकार किया जा सकता है। आजकल न केवल असंस्कृत प्रजा उत्पन्न हो रही है अपितु अविद्याग्रस्त काम-वासना के वशीभूत माता-पिताओं के कारण कुसंस्कारी बालक जन्म ले रहे हैं और दूषित वातावरण में उनका पालन पोषण होने के कारण उनका चारित्रिक ह्रास दिनों दिन वृद्धि पर है। आर्यसमाज के सभासदों का यह दायित्व है कि वे अपने परिवारों में संस्कार विधि में निर्देशित षोडश संस्कारों का प्रचलन आरम्भ कर दें।

आर्यसमाज प्रत्येक गृहस्थ के लिये दैनिक पंच महायज्ञों का करना अनिवार्य मानता है। आर्यसमाज के सभासदों को शान्त मस्तिष्क से यह सोचना आवश्यक है कि उन्होंने अपने जीवन में प्रति दिन किये जाने वाले पंच महायज्ञों को कितना

(शेष पृष्ठ ११ पर)

क्षेमचन्द्र सुमन

(पृष्ठ ७ का शेष)

से मोर्चा लेने का साहस करे। सुमन जी के छात्र जीवन की यह साधना ही उन्हें भावी जीवन में एक सफल लेखक, कवि और आलोचक बना सकी है।

जहां तक उनके सम्पादन आदि का प्रश्न है, वे दिन प्रतिदिन निरन्तर उन्नति ही करते रहे। अब वे केवल 'सुधांशु' और 'किशोर मित्र' के ही सम्पादक न थे बल्कि धीरे धीरे उनकी मांग बाहरी संसार में भी होने लगी थी। सन '३७ में वे सबसे पहले 'आर्य' साप्ताहिक के सम्पादक के रूप में कार्य क्षेत्र में अवतरित हुए थे। इस समाचार पत्र को लोकप्रिय बनाने का सम्पूर्ण श्रेय आपको ही दिया जा सकता है। इसमें आप प्रत्येक सप्ताह अपनी एक या दो कविताएं देने के साथ ही सामयिक और धार्मिक विषयों पर अपने विचार भी प्रस्तुत करते थे। बाहर के साहित्यिक जगत् के सम्पर्क में लाने वाला यह प्रथम सम्पादकत्व था, जहां से उनका वास्तविक विकास प्रारम्भ हुआ। उन दिनों मैं भी कुछ कविता किया करता था और प्रायः प्रति सप्ताह हम दोनों की कविताएं 'आर्य' में प्रकाशित होती थीं। बाद में मेरी प्रवृत्ति उस दिशा में मन्द पड़ गई और सुमन जी इस क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ते रहे। फलस्वरूप इधर उधर होने वाले प्रायः सभी कवि-सम्मेलनों से सुमन जी की मांग आने लगी। जनता के प्रोत्साहन के फलस्वरूप कवि अभिरुचि उधर और भी बढ़ती गई। सम्पादन के क्षेत्र में 'आर्य' के सम्पादन से आपको जो अनुभव प्राप्त हुआ उसके फलस्वरूप वे उस समय आगरा से निकलने वाले आर्यसमाज के प्रमुख साप्ताहिक 'आर्यमित्र' के सम्पादकीय विभाग में आ गये। अपने नवीन उत्साह, लगन और अधिक परिश्रम करने की प्रवृत्ति ने इन्हें 'आर्यमित्र' में भी सफलता प्रदान की। इनके समय के 'आर्यमित्र' के [illegible] अङ्क और विशेषाङ्क अत्यधिक लोकप्रिय हुए। उसके बाद वे अमेठी राज्य के [illegible] पत्र के सम्पादक हुए और बाद में [illegible] मुरादाबाद से प्रकाशित होने वाली 'शिक्षा सुधा' का सम्पादन किया।

लाहौर के दैनिक 'हिन्दी मिलाप' में भी सुमन जी सहकारी सम्पादक रहे थे। उन्हीं दिनों लाहौर में इनका परिचय और सम्बन्ध कुछ क्रान्तिकारी तत्वों से हो गया और इनमें भी क्रान्तिकारी प्रवृत्ति जागृत हो गई। फलतः लाहौर में आपका मकान एक प्रकार से क्रान्तिकारी तत्वों का केन्द्र ही हो गया। सभी प्रकार के क्रान्तिकारी तत्व वहां मिल सकते थे। श्री सुमन जी के जीवन में इस प्रवास ने क्रान्ति का एक मन्त्र फूंका, जो उस समय से आज तक प्रज्वलित है। श्री सुमन जी साहित्यिक साधना को अर्थकरी विद्या नहीं मानते, और न वे अर्थोपार्जन के लिए लिखते और कविता करते हैं। वे क्रान्ति के एक देवदूत के रूप में लिखते-पढ़ते हैं। सुमन जी को इन्हीं क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों के कारण उन्हें १९४२ की राष्ट्रीय क्रान्ति के समय जेल भी जाना पड़ा और जेल से छूटने के बाद भी अंग्रेजी सरकार की क्रूर दृष्टि उन पर रही और वे अपने गांव तक में नजरबन्द रखे गए।

श्री सुमन जी बचपन से ही विनोदप्रिय रहे हैं। वे जब तक ठट्ठा मारकर हंस न लें और दूसरे को हंसा न लें तब तक उनकी रोटी हजम नहीं होती। यही कारण है कि जीवन के अत्यन्त कठोर और घोर संकट के दिनों में भी उन्होंने अपनी हिम्मत नहीं छोड़ी और दुःखों तथा कष्टों को हंस हंसकर सहते रहे। कारावास की कठोर यातनाएं भी उन्हें अपने लक्ष्य से विचलित न कर सकीं।

सुमन जी में समाज-सेवा का भाव बचपन से ही है। वे अपने-आप को समाज के साथ मिलाकर चलना जानते हैं। उन्हें अपनी उन्नति और प्रतिष्ठा उतनी प्रिय नहीं है, जितनी कि अपने साथियों और सहयोगियों की। वे अपने साथियों और सहयोगियों की श्रीवृद्धि में बड़ा से बड़ा योग और बलिदान दे सकते हैं। उनके पास जो भी सेवा-सहायता पाने की भावना से आता है, उसे वे निराश नहीं करते, चाहे वह विद्यार्थी हो, प्रकाशक हो, साहित्यिक हो, राष्ट्रीय नेता हो या समाज-सेवी हो। उनके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति उनका ऋणी अवश्य हो जाता है। कभी-कभी उनकी यह अतिशय उदारता अपात्रों और कुपात्रों को भी प्राप्त हो जाती है फलस्वरूप वे उसका दुरुपयोग भी कर बैठते हैं। पर सुमन जी को इसका कोई मलाल नहीं है। कतिपय प्रकाशक उनकी कृतियों से सम्पन्न और समृद्ध हो गए और उन्होंने इन्हें धोखा भी दिया। पर सुमन जी ने यह सब सहज भाव से सहा। वे किसी के प्रति अशुभ भावनाएं कभी मन में नहीं लाते।

अपने छात्र जीवन में आचार्य शुद्धबोध तीर्थ और आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ (कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार) की कृपा-दृष्टि सदा सुमन जी पर रही है। साहित्यिक सेवा के क्षेत्र में आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ और पंडित पद्मसिंह शर्मा को वे अपना गुरु मानते रहे हैं और उनके ही पद चिन्हों पर चलते भी रहे हैं। अपने इन गुरुजनों के समान ही वे निष्काम कर्मयोगी होने में विश्वास रखते हैं। सच तो यह है कि इन आचार्यों ने ही अपने छात्रों में यह निष्काम कर्म करने का बीज रोपा था, जो आज इधर-उधर प्रस्फुटित हो रहा है। ★

मोहन आश्रम हरिद्वार

(पृष्ठ ९ का शेष)

श्री सेठ रामकिशोर जी जो भक्तराज बल्देवसिंह जी के उत्तराधिकारी थे। मन्त्री श्री प० दयाराम जी एम० ए० शास्त्री देहली, उपमन्त्री—श्री राजकुमार जी देहली, खजांची श्री दरबारी लाल जी देहली हैं।

एकान्त शान्त स्थान होने के कारण योगाभ्यास स्वाध्याय व शान्ति के लिए यह आश्रम बड़ा ही अनुकूल है। हरिद्वार स्टेशन से ऋषिकेश रोड पर दो मील और हर की पौड़ी से एक मील तीन फर्लांग की दूरी पर यह आश्रम है। रिक्शा ॥।) और तांगा १-१॥) रु० में यहां तक स्टेशन से मिल जाता है।

आश्रम में दैनिक यज्ञ और सत्संग होते हैं। इसका विशेष ध्यान रखा जाता है कि कोई बात ऐसी न हो जिससे किसी का दिल दुखे, सब लोग सद्भाव से रहें। और आश्रम आध्यात्मिक शान्ति का सदन बना रहे।

सन १९१५ ई० के कुम्भ मेले के अवसर पर सब श्री भक्तराज बल्देवसिंह जी, महात्मा हंसराज जी, सेठ राधाकृष्ण जी प० आत्ममुनि जी, प० राजराम जी आदि महानुभावों द्वारा आश्रम में पाखण्ड खण्डिनी पताका पुनः गाड़ी गयी और वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। सन् २४ ई० के गंगा की बाढ़ से कच्चे मकान आदि सब बह गये जहां अब पक्के मकान आदि बनाये गये हैं, आश्रम ने उसी महत्वपूर्ण स्थान में पाखण्ड-खण्डिनी पताका स्थापित करके एक पक्का स्थाई स्मारक बना दिया गया है।

यहां पर प्रतिवर्ष अप्रैल के दूसरे सप्ताह में ऋषि मेला हुआ करता है। जिसमें सन्त महात्मा विद्वान आदि एकत्रित होते हैं व्याख्यानों, पुस्तकों, लेखों आदि के द्वारा ऋषि दयानन्द जी की भावना के अनुसार वैदिक धर्म का पूर्ण रूप से प्रचार किया जाता है। सब महानुभावों से प्रार्थना है कि आश्रम के उद्देश्य को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें। —स्वामी सच्चिदानन्द शास्त्री

अधिष्ठाता मोहन आश्रम हरिद्वार

[पृष्ठ ५ का शेष]

में पास में आये हुये बिच्छू को जल (लोह पीठ) से और सर्प को दण्ड से मार डालता हूं।

इस मन्त्र में विषधारी बिच्छू और सांपों को जो कि डसने के लिए समुद्यत हों मार डालने की प्रेरणा है। यह बहुजन हिताय की ही भावना से है।

पूर्वोक्त मन्त्र वचनों से विदित होता है कि वेद में किसी को मारने का उद्देश्य उसके अपराध या दोष को समाप्त करना ही है, जो कि दण्ड रूप है। मार कर उसका मांस खाने या व्यर्थ की हिंसा करने का वहां नाम भी नहीं है। वस्तुतः वेद की शिक्षा तो समस्त प्राणियों के साथ मित्रता का व्यवहार करने की है जैसा कि यजुर्वेद के निम्नांकित मन्त्र में कहा गया है—

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।'
(यजु० ३६-१८)

अर्थ—हे ईश्वर! मुझ (उत्तम मार्ग में) स्थिर कीजिये (जिसमें कि) सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें। मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हूं। हम (परस्पर) मित्र की दृष्टि से देखते हैं।

परन्तु आततायियों, चोरों, क्रूरकर्मा, नरपिशाचों (मांसाहारियों) को समुचित दण्ड देने का भी विधान साथ ही कर दिया है जिससे कि समाज में शांति बनी रहे। यह तो निश्चित रूप से जान लेना चाहिये कि निरपराध को मारने का उपदेश वेद कभी नहीं देता, क्योंकि उस ने स्वयं कहा है—'अनागो हत्या वै भीमा' (अथर्व वेद) अर्थात निरपराध की हत्या करना भयकर है, महापाप है। ऐसी स्थिति में यदि श्वपद की या वृक्ष के वध किये जाने में होने वाली हिंसा को हिंसा न कह कर अहिंसा या धर्म ही माना जाय तो 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' इस वाक्य की संगति भी लग जाती है। ★

आर्यसमाज का महत्व

[पृष्ठ ९ का शेष]

ध्यान दिया है। बहुत से संकट जो हमारे वैयक्तिक पारिवारिक और सामाजिक जीवन को कष्टमय बनाये हुये हैं स्वतः नष्ट हो जायगे यदि हम आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित मार्ग पर निष्ठापूर्वक चलने लगेंगे। परमपिता परमात्मा हमको सद्बुद्धि एवं यथेष्ट बल प्रदान करें जिससे हम अपने को महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी सिद्ध करते हुए अपना और दूसरों का वास्तविक भला कर सकें। ★

राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर विचारार्थ

मराठवाड़ा आर्य सम्मेलन बीड को सफल बनाइये

यह सम्मेलन मई १९६६ के प्रथम सप्ताह में ऐतिहासिक प्रसिद्ध बीड नगर में सम्पन्न होगा। इसी अवसर पर आर्य समाज बीड का वार्षिकोत्सव भी मनाया जायगा।

देश की वर्तमान समस्याओं के कारण आज यह परिस्थिति उत्पन्न हो चुकी है जिस पर समस्त आर्यजगत को एकत्रित होकर गम्भीरतापूर्वक अपना भावी कार्यक्रम निश्चित करना है।

बढ़ती हुई अनास्तिकता भ्रष्टाचार और भौतिकवाद का विष प्रवाह भविष्य निर्माण में समस्त आर्यजनों को ध्वस्त कर रहा है। विदेशी ईसाई पादरियों की राष्ट्रद्रोह गतिविधियां समस्त भारतीय संस्कृति प्रेमियों को निरन्तर चुनौती दे रही हैं। वैदिक साहित्य इतिहास,दर्शन और प्राचीनतम गौरवमयी परम्पराओं को समूल नष्ट करने के दूषित उद्देश्य से विरोधी शक्तियों द्वारा विदेशी असत्य भ्रान्त साहित्य का निर्माण कर भारतीय नागरिकों की मानस धारा को परिवर्तित किया जा रहा है।

उलझी हुई भाषा समस्या ने समस्त राष्ट्र हित वर्षों के ... को ... उद्वेलित कर ... उपस्थित कर दिया है कि भाषा की ओट में ... विकता के ... का सामना कैसे किये जाय?

अतः इस विषम परिस्थिति में ज्वलन्त समस्याओं के समाधान हेतु सत्य न्याय और ... के ... देव दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यजन का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह सही दिशा में देश का मार्ग दर्शन करें। मन्त्री

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का महोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (सहारनपुर) का ५८ वां महोत्सव दि० ८ ९ ११ अप्रैल को समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। दि० ८ अप्रैल को उत्तरप्रदेश के कृषि मन्त्री श्री गर्वसिंह जी के सभापतित्व में कृषि सम्मेलन मनाया जायगा। उसी दिन श्री श्रीमन्नारायण जी के सभापतित्व में आर्य किशोर सभा का वार्षिकोत्सव मनाया जायगा। दि० ९ अप्रैल को माननीय मदनमोहन जी वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के सभापतित्व में आर्य सम्मेलन होगा जिसका उद्घाटन श्री पं० अलगूराय जी शास्त्री करेंगे। दिनांक १० अप्रैल को दीक्षान्त समारोह श्रीमती राज माता विजया राजे सिंधिया ग्वालियर के सभापतित्व में होगा। दीक्षान्त भाषण केन्द्रीय रेलमन्त्री श्री एस०के० पाटिल करेंगे। इसी दिन मध्याह्नोत्तर श्री राजबहादुर जी सूचना व प्रसार मन्त्री भारत सरकार की अध्यक्षता में राज भाषा सम्मेलन होगा। दिनांक ११ अप्रैल को अनेक आर्य सन्यासियों व आर्य विद्वानों के प्रवचन व भाषण होंगे। चित्रकला का वार्षिक अधिवेशन श्री डा० रामकरणजी विशेष अधिकारी केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के सभापतित्व में सम्पन्न होगा जिसमें उच्च कक्षाओं में अध्ययन करने वाले छात्रों के संस्कृत में भाषण होंगे। आयुर्वेद प्रदर्शिनी का उद्घाटन श्री पुरुषोत्तमराम जी शर्मा द्वारा होगा,तथा आयुर्वेद सम्मेलन में अनेक प्रतिष्ठित आयुर्वेद के विद्वानों के भाषण होंगे। जनता को इस अवसर पर पहुंचकर लाभ उठाना चाहिये।

—प्रकाशचन्द्र शास्त्री
मन्त्री महाविद्यालय सभा

आर्यसमाज की स्थापना

उत्तर भारत के प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री पं० ओमप्रकाश प्रेमी के सफल प्रयत्न से उन्हीं के अपने ग्राम मोहम्मदपुर रायसिंह जि मुजफ्फरनगर में विधिवत आर्यसमाज की स्थापना हो गई है और साथ ही आर्यसमाज का उत्सव १५ १६ १७ मार्च को सानन्द सम्पन्न हुआ जिससे जनता पर आर्य समाज की छाप बैठ गई है श्री ब्र० बलदेव जी नैष्ठिक श्री स्वामी शिवानन्दजी पं० हरपाल जी व प्रतिकान्त जी शास्त्री ब्र० वीरेन्द्र जी वीर व मुन्नालाल जी आर्य पं० ओमप्रकाश रेडियोसिंगर पं० ब्रजलाल जी भजनोपदेशक पधारे। प्रधान श्री बा० भवरसिंह मन्त्री—श्री शिवकरण जी चुने गये।

दु:खद समाचार

आर्यसमाज के प्रसिद्ध वक्ता श्री पं० शीतलचन्द्र जी शीतल की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती का लम्बी बीमारी की लम्बी चिकित्सा के बाद नई दिल्ली के इर्विन अस्पताल में ४ ३ ६६ को शरीरान्त हो गया और उसी सायंकाल को निगमबोध घाट पर उनके पुत्रों द्वारा वैदिक विधि से अन्त्येष्टि संस्कार कर दिया गया कृष्ण नगर दिल्ली के आर्य पुरुषों एवं महिलाओं ने इस कार्य में पं० शीतल जी को हर प्रकार का सहयोग दिया और आर्यसमाज तथा महिला समाज ने शोक प्रस्ताव भी पारित किये।

मोहन आश्रम हरिद्वार में ऋषि मेला

महर्षि जी के भक्तों को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की पाखण्ड खण्डिनी पताका के नीचे मोहन आश्रम हरिद्वार में पूर्ववत इस वर्ष भी ता० ८ ९ १० और ११ अप्रैल सन ६६ को ऋषि मेला मनाया जा रहा है।

—अधिष्ठाता

उत्सव—

—आर्यसमाज ... दयानन्द मार्ग फ़ीरोज ... का वार्षिक उत्सव ता० १ २ ३ ... सन ६६ को अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है जिला आर्य ... सभा के सदस्य उत्सव में पधार ... कर और संन्यासियों एवं विद्वानों के उपदेशों से लाभ उठायें ... अवश्य पधारें।

—आर्य समाज ... का उत्सव २१ ... मार्च को सानन्द सम्पन्न हुआ।

अ० भा० आर्य सन्यासी मण्डल की अन्तरंग बैठक

वैशाखी के अवसर पर हरिद्वार में गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी और आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के वार्षिकोत्सवों के साथ साथ गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर और कन्या गुरुकुल हरिद्वार के भी उत्सव होते हैं। इस अवसर पर प्रायः सभी आर्य सन्यासी हरिद्वार पधारते हैं अतः रविवार दिनांक १० अप्रैल को आर्य वानप्रस्थाश्रम की यज्ञशाला में मध्याह्न पीछे ४ बजे अ० भा० आर्य सन्यासी मण्डल की अन्तरंग बैठक होगी परन्तु इसमें प्रत्येक आर्य सन्यासी सम्मिलित होकर आर्य सन्यासियों के सम्बन्ध सम्बन्धी सुझाव प्रस्तुत कर सकता है। आर्य सन्यासी नहीं बन रहे हैं। यह एक चिन्ता का विषय हो रहा है आर्य समाजों में सन्यासी ठहर नहीं सकते हैं स्वागत सत्कार तो दूर की बात हो गयी है। अतः प्रत्येक आर्यसमाज में कम से कम एक सन्यासी के स्थायी निवास और योगक्षेम की व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिये। ऐसी आर्य समाजों को जिनमें सन्यासी स्थायी ठहर नहीं सकते हों सरकार द्वारा अवैध घोषित करा देना चाहिये ताकि विवाह कराकर रुपये बटोरने वाली अनेक आर्य समाजों को गैरकानूनी करा दिया जाय और उनमें ताले डलवा दिये जाय। इत्यादि क्रान्तिकारी विचारार्थ सभी आर्य सन्यासी हरिद्वार की बैठक में पधारें। भोजन की व्यवस्था रहेगी।

—वेद स्वामी मेधार्थी एम० ए०
प्रधान मन्त्री
रजिस्टर्ड अ० भा० आर्य सन्यासी
मण्डल हरिद्वार

नेपाल राज्य में महान् शास्त्रार्थ

यहां ईसाइयों के भयंकर षड्यन्त्र द्वारा स्थानीय हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा रहा है ... के पार्श्ववर्ती ... उत्सव में महायज्ञ प्रयाग के अवसर पर श्री स्वामी ... के आग्रह पर आर्य जगत के महान विद्वान ... पं० ... शास्त्री ... धर्माचार्य श्री ... हस इयो ... का ... किया गया। १ ... को ... जनसमूह ... श्री पंडित जी का शास्त्रार्थ हुआ जिसमें हिन्दू ... धर्म का विजय हुई। नया आर्य युवक सभा की स्थापना हुई ५० ... की शुद्धि हुई। ... जी का ... होता रहा। जनता पर ... प्रभाव पड़ा।

गुरुकुल चित्तौड़ का उत्सव

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महाराणा प्रताप की पुण्य भूमि चित्तौड़गढ़ में ... गुरुकुल महाविद्यालय का २५ वां वार्षिकोत्सव विक्रमी सवत २०२३ ज्येष्ठ कृष्णा ९ ११ तदनुसार दिनांक १४ १५ व १६ मई १९६६ ई० को (क्रमशः ... रवि सोम) आयोजन किया जा रहा है। ... अधिवेशन गुरुकुल भूमि में सम्पन्न होंगे।

यह विशेष उल्लेखनीय है कि आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान व अन्य प्रान्तों में आर्य शिक्षा तो एवं संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार तथा विकास में बरसों से योग दे रहा है और अपनी दृढ़ निष्ठा के साथ महर्षि दयानन्द के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

मैं आप सबसे निवेदन करता हूं कि इस महोत्सव में पधारकर वीरभूमि चित्तौड़गढ़ और गुरुकुल के वातावरण से अवश्य लाभ उठायें।

—स्वामी व्रतानन्द कुलपति

विज्ञान वार्ता

हमारा कांच उद्योग

देश का कांच उद्योग उन गिने चुने उद्योगों में है जिन्होंने हाल में काफी प्रगति की है। यह सब की पंचवर्षीय योजनाओं से ही सम्भव हुआ। यद्यपि सदियों पहले से देश में कांच बनाया जा रहा है किन्तु बड़े पैमाने पर यह काम १९ वीं शताब्दी के अन्त में शुरू हुआ। पर इस उद्योग का वास्तविक विस्तार १९५० के बाद हुआ, जब सरकार ने कलकत्ता में केन्द्रीय कांच और चीनी मिट्टी अनुसन्धान संस्थान और दिल्ली में भारतीय मानक संस्थान खोला तथा सोडा रसायन आदि कांच और कांच का सामान इस्तेमाल करने वाले उद्योगों के साथ साथ कांच उद्योग के विस्तार की व्यवस्था की गई।

पहली योजना के प्रारम्भ में देश में कांच के सामान के १०९ कारखाने और कांच की चद्दरों के ३ कारखाने थे। आज देश में १४० कारखाने हैं जिनमें प्रति वर्ष ४ लाख टन कांच का सामान तैयार हो सकता है। १९६१ में देश में १ लाख १२ हजार टन कांच और कांच का सामान तैयार हुआ, जबकि १९६५-६६ में ४ लाख टन से अधिक होने का अनुमान है।

किस्म की दृष्टि से भी कांच उद्योग का बड़ा विकास हुआ है। ब्रिटेन, अमरीका, प० जर्मनी, रूस, बेल्जियम और जापान के फर्मों के सहयोग से विशेष किस्म का कांच और कांच का सामान बनाया जा रहा है। अनेक बड़े कारखाने आधुनिकतम भट्टियों और स्वचालित यन्त्रों का इस्तेमाल कर रहे हैं।

आधुनिक मशीनों, भट्टियों और नए तरीकों के इस्तेमाल से न केवल उत्पादन बढ़ा है, बल्कि भिन्न किस्म की चीजें भी बनने लगी हैं। अब देश में शीशियों से लेकर अनेक किस्म के वैज्ञानिक यन्त्र बनते हैं। केन्द्रीय कांच और चीनी मिट्टी-अनुसन्धान संस्थान में प्रकाशीय कांच (आप्टिकल ग्लास), दुर्गापुर में रूस सहयोग से चश्मा कांच और बम्बई में बोरोसिल कम्पनी द्वारा वैज्ञानिक यन्त्रों के लिए बढ़िया किस्म का कांच तैयार किया जा रहा है। इसके अलावा कीटसंघर्ष विधि से तारदार और रंगदार कांच भी बनाया जाता है।

कांच और उसका सामान विदेशों को भी भेजा जाता है। पिछले कुछ वर्षों से प्रति वर्ष ३० से ३५ लाख रु० का कांच और कांच का सामान बाहर भेजा जा रहा है। मुख्यतः बहुर काच निर्वात बोतल (वैक्यूम फ्लास्क), दवा की शीशियां, चश्मे, चकाचौंधी और वैज्ञानिक उपकरण निर्यात किये जाते हैं। हमारी ये निर्यात की जाने वाली वस्तुयें उन्नत देशों की वस्तुओं से किसी प्रकार कम नहीं हैं।

मुर्गीखानों के लिए ठण्डी गाड़ियाँ

बम्बई की एक कम्पनी ने मुर्गीखानों से अण्डे आदि ले जाने के लिए दो ठंडी गाड़ियां तैयार की हैं। इस काम में कम्पनी को अमरीका की अन्तर्राष्ट्रीय विकास संस्था से आर्थिक मदद मिली है। ये डिब्बे पूरी तौर से देशी सामान से बने हैं। ये चण्डीगढ़ के मुर्गीखाने को भेंट कर दी गई हैं।

ये ठण्डी गाड़ियां मुर्गीखानों से करीब १ लाख अण्डे ३००-२५० मील तक बिना बिगड़े ले जा सकती हैं।

जहाजों के लिए रेडियो-टेलीफोन

आस्ट्रेलिया में जहाजों और मछुआओं के लिए एक उठौआ जलरोक, पानी में तैरने वाला रेडियो टेलीफोन तैयार किया गया है, जिससे वे दुर्घटना के समय खबर दे सकते हैं। इसका नाम "लिंक लाइन" रखा गया है। इसका वजन सिर्फ ५ पौंड है और इसे इस्तेमाल करने का तरीका भी बहुत आसान है। इसकी प्रेषण (ट्रांसमिशन) और संग्रहण (रिसेप्शन) की आवृत्ति (फ्रिक्वेन्सी) २१८२ किलो साइकिल प्रति सकेण्ड है। इससे ७५ मील दूर तक के तटवर्ती केन्द्रों से सम्पर्क किया जा सकता है।

(४) झाग से निकला मकान

एक नए इमारती सामान की खोज की गई है—'स्टाइरिट'। यह आकार में बहुत व्यापक तथा विस्तृत होते हुए भी बहुत हल्का है। इससे त्रिफैब्री-कटिड मकान निर्माण में क्रांतिकारी परिवर्तन आने की सम्भावना है। ऐसन में कम बायक स्थान पर पश्चिमी जर्मन निर्माण विशेषज्ञों ने कई वर्ष तक प्रयोग करने के बाद एक प्रिफ-ब्रीकेटिड मकान बनाया। यह किसी भी अन्य पक्के मकान के बराबर रखा तथा जमाया जा सकता है। इसकी दीवारें एक नई सामग्री से बनाई गई हैं जो इतनी दृढ़ एवं मजबूत हैं कि भिन्न को सम्हाल सकती हैं और साथ ही इतनी हल्की है प्रत्येक दीवार पानी पर तैर सकती है। यह सामग्री इतनी हल्की है कि दूर स्थित हुक कीलों पर भी परिवहन-व्यय कम पड़ता है। स्टाइरिट' में कील ठोके जा सकते हैं स्क्रू बांध जा सकते हैं और उसे चीरा जा सकता है। इसके साथ ही उस पर गर्मी सर्दी तथा कीड़ों के कारण नुकसान नहीं हो सकता है। ४ इंच मोटी झाग की दीवार में बिजली के प्रभाव को रोकने (इन्सुलेशन) के लिए उतनी मात्रा चाहिए जितनी ईंट की २५ इंच मोटी दीवार को।

इस नए इमारती सामान की खोज का विचार उस चीज से लिया गया जो आधुनिक निर्माण तकनीक का मूल एवं स्थायी आधार है—सीमेंट। आज सीमेंट भारी होता है। और उससे सर्दी का कोई बचाव नहीं हो सकता। सीमेंट में से कंकर पत्थरों को निकाल दिया और इनके स्थान पर पकी मिट्टी की गोलियों को मिलाया गया। ये कांच के मोती के समान होती हैं। जिनमें छोटे छोटे बुलबुले होते हैं। इनसे आवाज और सर्दी से बहुत अच्छा बचाव होता है। तकनीकी विशेषज्ञ तो इस दिशा में एक कदम और आगे बढ़ गए। इस सामग्री को गाढ़ा करने के लिए जितने सीमेंट की जरूरत है उसे कम करके उसके स्थान पर झाग वाले बेकलाइट का प्रयोग किया गया। इस्पात का नक्शा तथा लोहे के प्रयोग से स्टाइरिट दीवार को अपेक्षित मजबूती मिल जाती है।

डेढ़ घण्टे के बाद सपना

(मनोवैज्ञानिकों ने खोज द्वारा मानव सपने की गति का पता लगाया है। एक सपना ३० मिनट तक रह सकता है।)

अब तक यह विश्वास किया जाता है कि सुबह सपने अधिक आते हैं। उस समय व्यक्ति की नींद कम गहरी होती है और इसी के बाद व्यक्ति जागता है। पश्चिमी जर्मन मनोवैज्ञानिक डा० इवे स्ट्रौक फ्रैंकफर्ट में सचाओं में इस धारणा का पक्की तरह खण्डन किया है। इन्होंने यह सूचना जर्मन मनोविज्ञान सभा में इस खोज में अपने परीक्षणों के आधार पर दी। यह सभा इस वर्ष विस्बादन में हुई।

यह बहुत देर तक माना जाता था कि कुछ खास अवधियों में असाधारण नियमितताओं का पालन करने से नींद की गहराई में उतार-चढ़ाव आते हैं। नींद का रेखाचित्र बनाया जाय तो नींद रेखा का झुकाव स्पष्ट रूप से ऐसा ही होगा। हाल ही में नींद के दौरान मस्तिष्क की गतिविधि धाराओं का अध्ययन किया गया और सिद्ध हुआ कि नींद की मात्रा में प्रति डेढ़ घण्टे के बाद परिवर्तन आता है। तत्कालीन समय में मस्तिष्क गतिविधि चित्रों से कुछ लेख गति का पता लगा है। इसके समानान्तर पलकों का हिलना जुलना या जीवन एवं उत्साह के अन्य संकेतों से पता लगाया जा सकता है कि इस समय मन अधिक क्रियाशील है।

डा० स्ट्रौक ने जिन सोने वालों का परीक्षण किया उन्हें नींद तथा इस आवरण में परिवर्तन करने के तीन से तीस मिनट बाद जगा पाया। सभी परीक्षित व्यक्तियों में से कोई भी अपने सपने की वस्तुस्थिति को बताने में समर्थ नहीं हो सका। इतना उन्हें अवश्य याद है कि रात को उन्हें जगाया गया था और उन्होंने सपने को बताया था। बहुत से परीक्षणों के आधार पर पता लगा है कि सपनों का सम्बन्ध लय और ताल से है। सोये हुए व्यक्ति को प्रत्येक ९० मिनट की नींद के दौरान एक कम नींद का चक्र पार करना पड़ता है, इसी में अक्सर सपने आते हैं।

अब तक यह माना जाता था कि सपना एक सेकेंड या उसके एक भाग तक रहता है। इसके विपरीत डा० स्ट्रौक ने खोज द्वारा पता लगाया है कि सपने का अनुभव ३० मिनट तक हो सकता है। दूसरे मनोवैज्ञानिकों ने डा० साहिबा द्वारा परीक्षित व्यक्तियों के सपनों और उनके विषयों एवं तत्वों की ओर विशेष ध्यान दिया परन्तु वे कोई महत्वपूर्ण नई खोज न कर सके। कई मामलों में तो डा० साहिबा के निष्कर्ष तो सपनों के वैज्ञानिक विश्लेषण के जनक सिगमंड फ्रायड तथा अन्य स्वप्न विश्लेषकों के परिणामों से मिलते जुलते हैं।

—वोको

सभा भवन में राष्ट्रीय नवसंवत्सर व आर्यसमाज स्थापना-दिवस

दि० २३ मार्च को साय ५ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के केन्द्र नारायणस्वामी भवन लखनऊ में बड़ समारोह के साथ मनाये गये।

इस अवसर पर एक विशेष यज्ञ प० शिवदयालु जी मुख्योपमन्त्री सभा के पौरोहित्य में किया गया। आपने राष्ट्रिय संवत् के महत्व पर भी प्रकाश डाला तथा प० सच्चिदानन्द शास्त्री, एम० ए० सहायक अधिष्ठाता उपदेश विभाग ने आर्यसमाज की स्थापना और उसके क्रान्तिकारी कार्यों पर प्रकाश डाला। अन्त में उपस्थित जनता का मिष्टान्न से स्वागत किया गया।

रविवार चैत्र ३० शक १८८८ वैशाख कृ० ५ वि० २०२३ दिनांक १० अप्रैल सन १९६६ ई०

वेदामृत

अपामीवामप विश्वामना-हुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघा-यतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये॥

तुम रोग हरो मन का, तन का
सब रोग हरो भेषजित्।
तुम त्याग अकाल हरो हर को,
रिपु दुर्मति अघायत।
तुम दूर करो दुर्बुद्धि सदा
तुम से विद्वेष हरो तो।
हमको अतुलित सुख प्रभुवर!
कर दो प्रदान, निर्भय हो॥

विषय-सूची

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली ही सर्वोत्तम शिक्षा-प्रणाली है

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, कन्या गुरुकुल कनखल हरिद्वार में तीन गुरुकुलों के वार्षिकोत्सव ८ से १४ अप्रैल तक विशेष समारोह

गुरुकुल प्रेमी जनता अपने इन ज्ञान तीर्थों पर पहुंच कर अपनी ज्ञान पिपासा शान्त करें और राष्ट्र मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रचार और प्रसार का संकल्प लें

आर्यसमाज की विभूति

श्री आचार्य नरदेव जी शास्त्री ने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के निर्माण में अपना जीवनार्पण किया।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आदर्श स्नातक

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति जी
आपने भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में अपने जीवन से योग देकर एवं सफल पत्रकारिता की मर्यादा स्थापित कर गुरुकुल का महत्व दर्शाया

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के समर्थक

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के संस्थापक

श्री महात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

भारत मे गुरुकुल आन्दोलन की धूम मचाने वाले गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संस्थापक स्वा दर्शनानन्दजी थे

वार्षिक ८) छःमाही ५) विदेश ...

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम. ए.

वर्ष ६८
अंक १३
एक प्रति २० पै.

विचार-विमर्श

भारत के विध्वंस में पुराणों की भूमिका

[ले०—श्री ओमप्रकाश आर्य ४९९ साहूकारा, बरेली]

गत एक सहस्त्र वर्षों में भारत को विध्वस करते हुए रसातल तक पहुंचाने में पुराणों ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसके लिए भारत के विरोधियों को निश्चय ही पुराणों के रचयिताओं का हार्दिक धन्यवाद करना चाहिए। भारत के शत्रु जो कार्य स्वयं न कर सके उसे इन पुराणकारों ने साहित्य के द्वारा सम्पन्न कर दिया और फिर भी परम पूज्य बने रहे। आज तो स्थिति यह है कि कोई सामान्य हिन्दू स्वप्न में यह नहीं सोच सकता कि पुराणों से किसी राष्ट्र या जाति को कभी कोई हानि भी पहुंच सकती है इसका कारण यह है कि इस एक सहस्त्र वर्ष की अवधि में पुराणों का हलाहल विष भारतवासियों की नसों में इस गहराई से समाया हुआ है जिसे निकालकर भारत को निरोग और स्वस्थ बनाने के लिए महर्षि दयानन्द जैसे अनेकों चिकित्सकों की आवश्यकता है, किन्तु यह भारत का दुर्भाग्य है कि राष्ट्र के प्रमुख विचारक एवं विद्वान कहलाने वाले सज्जन आज झूठी प्रतिष्ठा एवं कुछ कागज के टुकड़े पाने के लालच में सत्य के विपरीत अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं।

अत्यन्त कष्टप्रद होते हुए भी यह स्थिति सामान्य नागरिक से उत्तरदायी अधिकारियों एवं नेताओं तक में है। यही कारण है कि जब आदरणीय कालिन्दी साहित्यकार जी का एक उद्घाटन भाषण लेख के रूप में "नवभारत के निर्माण में पुराणों का महत्व" शीर्षक से लखनऊ के हिन्दी दैनिक 'स्वतन्त्र भारत' एवं कुछ अन्य पत्रों में प्रकाशित हुआ तो किसी भी विद्वान ने अथवा किसी भी पत्र-पत्रिका ने श्री महोदय के लेख के विरुद्ध कुछ भी कहना उचित न समझा और तब प्रथम 'आर्यमित्र' ने ही श्री महोदय के लेख के आलोचनार्थ दो लेख प्रकाशित कर अपना कर्तव्य पूर्ण करते हुए अपनी सत्यप्रियता का परिचय दिया।

राजा भोज के राज्य में किसी ने 'शिव पुराण' व मार्कण्डेय पुराण' बनाए। राजा भोज ने यह समाचार जानकर उन पुराण बनाने वालों को हस्तछेदनादि दण्ड दिया परन्तु समय का परिवर्तन देखिए कि आज के शासनाधिकारी पुराण जैसे निकृष्ट और निरर्थक ग्रन्थों का समर्थन और ईश्वरीय ज्ञान वेदों का तिरस्कार कर रहे हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के इतिहासकार और निष्पक्ष विद्वान श्री आर० सी० दत्त ने पौन शताब्दी पूर्व पुराणों के सम्बन्ध में लिखा था—

"मूर्खता प्रत्येक वार्ता का विश्वास कर लेती है और दुर्बलता बल चाहती है। जब शताब्दियों तक की विदेशीय लोगों की पराधीनता ने ऐसी मूर्खता व अत्यन्त ही दुर्बलता उत्पन्न कर दी तो लोगों ने बुरे व अपवित्र मार्गों से उस शक्ति को प्राप्त करने की अभिलाषा की जो कि ईश्वरीय सृष्टि नियमानुसार केवल हमारे उन स्वतन्त्र कार्यों से ही सम्भव है जो सज्जनता बुद्धिमानी व शारीरिक शक्तियों को उचित प्रकार से व्यय करके किये जावें। ऐतिहासिक के निकट पुराणों का साहित्य हिन्दुओं के मत सम्बन्धी विचारों की कोई भी विशेष अवस्था नहीं प्रकट करता वरन मनुष्य की मानसिक दुर्बलता व दुष्टता बतलाता है जो कि केवल उस समय में सम्भव है जबकि किसी देश को स्वदेशानुरागिता व स्वजातीयता न रह गई हो और सब प्रकार के ज्ञान का लोप हो चुका हो तथा विद्या का सूर्य अस्त हो गया हो।" (श्री आर० सी० दत्त, 'हिस्ट्री आफ एन्शियन्ट इण्डिया' भाग ३, पृष्ठ ३०६)।

पुराणों के सम्बन्ध में एक सर्वोत्तम सम्मति श्रीमद्भागवत में ही लिखी है—

स्त्री शूद्र द्विजबन्धूनां त्रयी न श्रुति गोचरा।
कर्म श्रेयसी मूढ़ानां श्रेय एवं भवे दिह॥
इति भारतमाख्यानं कृपया मुनिना कृतम्॥

(श्रीमद्भागवत। प्रथम स्कन्ध)

अर्थ—स्त्री शूद्र व द्विजों के नौकरों को वेदों का अधिकार नहीं उनके लिए पुराण बनाए गये हैं।

भागवत के उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि जिसे वेदों का अधिकार नहीं उसके लिये पुराण बनाये गये हैं अर्थात जिसे वेदों का अधिकार हो उसके लिए पुराण व्यर्थ हैं। वेदों के अनुसार मनुष्यमात्र को—ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य के अतिरिक्त शूद्र भृत्य स्त्री और चाण्डालों तक को भी वेद का अधिकार है (यजुर्वेद अध्याय २६ मन्त्र २। इसी प्रकार से अथर्व वेद ११।२४।३।१८) में कन्याओं को वेद का अधिकार लिखा है। अतः स्त्री, शूद्र और द्विजों के नौकरों को भी पुराण व्यर्थ हैं। तब प्रश्न होता है कि पुराण किसके लिये बनाये गये हैं? इसका उत्तर है—"पाखण्डियों ने मूर्खों को अपने जाल में फंसाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये पुराणों की रचना करी है।"

पुराणों का सब प्रमुख दोष यह है कि पुराणों के अध्ययन के पश्चात किसी भी निष्पक्ष व्यक्ति को सनातन धर्म या हिन्दु मत पर कोई आस्था नहीं रहती, साथ ही रही-सही आस्था भी समाप्त हो जाती है। इसका कारण यह है कि पुराण धर्म के उज्ज्वल रूप को नहीं अपितु निकृष्टतम और घृणित रूप को ही प्रस्तुत करते हैं जो कि त्याज्य है और इसी कारण पुराण भी त्याज्य हैं।

पुराणों में एक ओर तो सब ऋषि, मुनि महात्मा और महापुरुषों को ईश्वर या ईश्वर का अवतार मान लिया गया है, दूसरी ओर उन पर मिथ्या कलंक लगाये गये हैं यथा—

(१) ब्रह्मा जी को अपनी बेटी से व्यभिचार का कलंक, (२) कृष्ण को कुब्जा, राधा और गोपियों से (३) महादेव को ऋषि-पत्नियों से (४) विष्णु को जलन्धर की स्त्री वृन्दा से, (५) इन्द्र को गौतम स्त्री अहिल्या से, (६) सूर्य को कुन्ती से (७) चन्द्रमा को अपने गुरु बृहस्पति की पत्नी तारा से, (८) वायु को और महादेव को केसरी की पत्नी अञ्जनी से, (९) वरुण-देव को अरुण की माता उर्वशी से (१०) बृहस्पति को अपने भाई उतथ्य की पत्नी उतथ्या (ममता) से, [११] विश्वामित्र को मेनका से (१२) पराशर को मत्स्योदरी (सत्यवती) से, (१३) व्यास को दासी से (१४) द्रौपदी को पांच पतियों से व्यभिचार के समान विवाह का कलंक (१५) देवियों को मांस भक्षण और मद्यपान का कलंक (१६) वामन अवतार और कृष्णावतार को छल कपट का (१७) बलदेव को सुरापान और परस्त्री गमन का, [१८] रामचन्द्र जी को नारद के शाप से जन्म लेने और निरपराधिनी सीता को घर से निकालने का कलंक, इत्यादि।

विदेशी विद्वान हिन्दुओं के ईश्वर उनके अवतार और ऋषि मुनि व महात्माओं के चरित्रों पर लगाये गये व्यभिचार आदि के उपर्युक्त मिथ्या कलंकों को पुराणों से पढ़कर अपने-अपने देशवासियों के सम्मुख अत्यन्त वीभत्स रूप में प्रस्तुत करते हैं जिससे भारत का अत्यन्त अपमान होता है। विदेशी साहित्यकार सांस्कृतिक पतन की चरम पराकाष्ठा के काल में धर्म की शरण में लिखी गई कपोल कल्पनात्मक मूर्खतापूर्ण गाथाओं के उदाहरण के रूप में पुराणों के साहित्य को उपस्थित करते हैं। इन पुराणों के द्वारा भारतीय संस्कृति और धर्म का अत्यन्त विकृत रूप विश्व के सम्मुख प्रस्तुत होता है जिससे विदेशियों द्वारा भारतीय सम्मान को ठोकर मारी जाती है।

पुराणों के पश्चात प्रकाशित हुए प्रायः सभी मतमतान्तरों ने अपने-अपने मत संस्थापकों को ईश्वर के स्थान पर मानकर उनकी उपासना की जिससे निराकार अजन्मा ईश्वर का महत्व घटा तथा एकेश्वर वाद और अद्वैतवाद के स्थान पर अनेकेश्वरवाद बहुदेवतावाद, अद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद और विशिष्टाद्वैतवाद आदि अनेक काल्पनिक वादों का आरम्भ हुआ। पुराणों के द्वारा अन्धविश्वास, चमत्कार, जादू, टोना, टोटका झाड़ फूक और प्राकृतिक जड़ पदार्थों की पूजा ईश्वर के काल्पनिक चित्र, मूर्ती, आकृति आदि की उपासना तथा अवतारवाद का आरम्भ हुआ।

पुराणों के रचयिताओं ने आरम्भ में पुराणों को वेदों के समान ही ईश्वरीय ग्रन्थ वेदों के विद्यमान होते हुए लोगों ने पुराणों को ईश्वरीय ग्रन्थ के रूप में स्वीकार न किया, तब पुराणों को व्यासोक्त कह कर जनता को ठगने लगे। लेकिन पुराणों का सबसे भयंकर परिणाम यह हुआ कि उन्हें ईश्वरीय ग्रन्थ बताये जाने से वास्तविक ईश्वरीय ग्रन्थ वेदों से भी लोगों की श्रद्धा कम होती गई और जिस प्रकार पुराण मनुष्य रचित हैं वैसे ही वेदों को भी मनुष्य रचित माना जाने लगा। आज विश्व के अधिकांश प्रमुख विद्वान वेदों को ईश्वरीय ग्रन्थ न मानकर मनुष्य रचित ही मानते हैं। पुराणों के पश्चात् वेदों का अध्ययन-अध्यापन-प्रचार कम होकर उनका तिरस्कार और पाखण्ड का पोषण होता गया जिससे भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना लुप्त होकर शनैः शनैः ईसाई, इस्लाम और अनेकानेक नवीन मतमतान्तर आरम्भ हुए।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः ।
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक् ॥१५॥

—ऋ० १।५२।१४

हे परमैश्वर्ययुक्तेश्वर ! आप इन्द्र हो हे मनुष्यो ! जिस परमात्मा का अन्त इतना है वह न हो उसकी व्याप्ति का परिच्छेद (इयत्ता परिमाण कोई नहीं कर सकता। तथा दिव अर्थात सूर्य्यादि लोक सर्वोपरि आकाश तथा पृथिवी मध्य निकृष्ट लो ये कोई उसके आदि अन्त को नहीं पाते क्योंकि अनुव्यच ' वह सब के बीच में अनु यूत (परिपूर्ण) हो रहा है तथा 'न सिन्धव" अन्तरिक्ष में जो दिव्य जल तथा सब लोक सो भी अन्त नहीं पा सकते 'नोत स्ववृष्टिं मदे" वृष्टिप्रहार से युद्ध करता हुआ वृत्र (मेघ) तथा बिजुली गर्जन आदि भी ईश्वर का पार नहीं पा सकते। हे परमात्मन ! आपका पार कौन पा सके ? क्योंकि "एक" एक (अपने से भिन्न सहायरहित) स्वसामर्थ्य से ही 'विश्वम्" सब जगत को 'आनुषक" आनुषक अर्थात् उसमें व्याप्त होते और "चकृषे" (कृतवान) आपने ही उत्पन्न किया है फिर जगत के पदार्थ आपका पार कैसे पा सके तथा (अन्यत) आप जगत रूप कभी नहीं बनते, न अपने में से जगत् को रचते हो किन्तु अनन्त अपने सामर्थ्य से ही जगत का रचन, धारण और लय यथाकाल में करते हो इससे आपका सहाय हम लोगों को सर्वत्र है ॥१५॥

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार १० अप्रैल १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसंवत १,९७ २९,४९,०६७

संस्कृत के लिए चार करोड़ रुपये

भारत सरकार ने चतुर्थ पञ्चवर्षीय योजना में संस्कृत भाषा की उन्नति प्रचार एवं प्रसार पर व्यय करने के लिए ४ करोड़ रुपये की धनराशि प्रस्तावित की है। हम इस उदार भावना का स्वागत करते हैं, इससे हमें आशा होने लगी है कि चिरकाल से उपेक्षित संस्कृत का वर्चस्व पुनः देशवासियो के हृदय पर अधिकार कर सकेगा।

भारत मे संस्कृत को अंग्रेजी शासन काल की शिक्षा नीति ने गहरा धक्का पहुँचाया। साथ ही मध्ययुग की रूढ़ि परम्पराओ ने भी संस्कृत को हानि पहुँचायी परन्तु स्वतन्त्र भारत मे आरम्भ के वर्षों मे संस्कृत की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। कुछ लोग तो संस्कृत को राष्ट्र भाषा घोषित कराने का आन्दोलन करते रहे पर सरकार ने उनकी एक न सुनी पर धीरे-धीरे सरकार ने संस्कृत आयोग बनाने का निश्चय किया और संस्कृत की उन्नति के सम्बन्ध मे विचार आरम्भ हुआ। दूसरी तीसरी योजनाओं में संस्कृत पर बहुत कम खर्च किया गया परन्तु चौथी योजना मे चार करोड़ का प्रस्ताव करके भारत सरकार ने अपनी भूल का सुधार कर लिया है हम आशा करते हैं कि सरकार इस राशि को सही तरीके से संस्कृत प्रचार में लगायेगी और भारत के पूर्वजों की एक अमूल्य धरोहर की रक्षा के अपने पुनीत कर्तव्य का पालन करने मे सफल होगी।

प्रधान सभा श्री मदनमोहन जी दुर्घटनाग्रस्त

पिछले दिनो इस समाचार से सभी आर्यजनों को हार्दिक दुःख एवं चिन्ता हुई कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान माननीय श्री मदनमोहन जी अध्यक्ष विधान सभा उत्तर प्रदेश एक कार और बस की टक्कर मे दुर्घटना ग्रस्त हो गये, कार ड्राइवर को भी विशेष चोट लगी प्रभु की असीम कृपा है कि श्री प्रधान जी व उनके साथियों को शीघ्र ही चिकित्सा सुविधायें प्रदान हो सकीं, प्रधान जी के डाक्टरों ने उन्हें विश्राम की सलाह दी है और चोटों के शीघ्र ठीक हो जाने की आशा प्रकट की है।

हम इस अवसर पर मित्र एवं आर्य जगत की ओर से पूज्य प्रधान जी के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं। हमे आशा है कि प्रधान जी शीघ्र ही स्वस्थ होकर पूर्ववत अपने पथ प्रदर्शन से हम सबको लाभान्वित करते रहेंगे।

बस्तर हत्याकाण्ड

बस्तर में मध्यप्रदेश पुलिस ने वहाँ की वन जाति के लोगों के धार्मिक कार्यों में बाधा डालकर और वहाँ की जनता की भावनाओं का अनादर कर जगदलपुर में एक नृशंस हत्याकाण्ड कर डाला। पुलिस ने अपनी गोलियों से जनता को ही नहीं भून डाला अपितु जनता को शान्त करने वाले प्रवीण चन्द्र भंजदेव भू०पू० बस्तर नरेश को भी मार डाला।

इस काण्ड ने एक बार फिर ब्रिटिश दमन की याद ताजा करा दी प्रजातन्त्रात्मक भारत गण राज्य मे पुलिस की दमन शक्ति से राज्य नहीं चल सकता। जो कांग्रेस ब्रिटिश गोलियों का विरोध करती थी वह आज दमन के उसी मार्ग पर चल रही है। पंजाब मे अभी यही हुआ और अब मध्यप्रदेश में यह नंगा नाच हो गया। हम नहीं समझते इस कांड के कारण विदेशो मे हमारी प्रधान मन्त्री का कितना सिर नीचा हुआ होगा।

बस्तर के नृशंस हत्याकाण्ड की न्यायिक जाँच के प्रश्न को लेकर संसद मे भी तूफान आ गया, हम समझते हैं कि कांग्रेस उच्च सत्ता को कांग्रेसी सरकारों को भलीभाँति समझा देना चाहिये कि सत्ता के मद मे जनता के साथ दुर्व्यवहार न करे। इस प्रकार का दमन कांग्रेस सरकार के विनाश का कारण बन जायगा। मध्यप्रदेश के ८० प्रतिशत दिर धी विधायको ने कांग्रेस सरकार से पद त्याग की माँग की है। सारे देश मे इस दुखद काण्ड से शोक और चिन्ता व्याप्त है।

क्या इसी प्रकार भारत मे प्रजातन्त्र विकसित होगा। प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए बस्तर काण्ड ने एक प्रश्न चिन्ह उपस्थित कर दिया है। हम आशा करते हैं कि सरकार सम्पूर्ण काण्ड की उच्च स्तर पर न्यायिक जाँच कर अपनी निष्पक्षता का परिचय देगी। यदि मध्य प्रदेश के न्यायाधीश की नियुक्ति पर देशवासियो को आपत्ति है तो सर्वोच्च न्यायालय और भी नियुक्ति कर सकता है। मृतक नागरिकों के शोक मे समवेदना प्रकट करते हुए हम आशा करते हैं कि सरकार भविष्य में ऐसे नृशंस हत्याकाण्डों से बचेगी यदि सरकार ने अपनी नीति नहीं बदली तो वह अधिक दिन टिकी न रह सकेगी।

उर्दू के नाम पर विष वमन

पंजाब का पंजाबी भाषा के आधार पर विभाजन करने की घोषणा का लाभ उठाकर उर्दू समर्थको ने उत्तर प्रदेश मे उर्दू भाषा के नाम पर आन्दोलन आरम्भ कर दिया है।

डा० फरीदी ने उत्तर प्रदेश के उर्दू भाषियों के नाम पर उर्दूस्तान की माँग की है और अंजुमन इस्लामिया ने इसके लिये लखनऊ मे एक सम्मेलन में प्रस्ताव किया है। अंजुमन के महामन्त्री ने घोषणा की है कि यद्यपि अंजुमन सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन है फिर भी अंजुमन उर्दू के नाम पर आगामी चुनाव में सक्रिय भाग लेगी और उर्दू के समर्थक व्यक्तियों को चुनाव मे खड़ा करेगी।

इस प्रकार हम देखते है कि उर्दू वालों ने विषवमन आरम्भ कर दिया है। वास्तव मे अंजुमन जैसी संस्थायें उर्दू की आड़ मे मुस्लिम लीगी तत्वों को बढ़ावा देने का दुष्प्रयत्न कर रही हैं। सरकार को इस साम्प्रदायिक विद्वेष को बढ़ाने वाली माँग पर ध्यान नहीं देना चाहिये। यदि जरा भी तुष्टीकरण का प्रयत्न किया उर्दू के नाम पर साम्प्रदायिकता भड़क उठेगी। आशा है सरकार सावधान रहेगी।

प्रधान मन्त्री की विदेश यात्रा

भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी अपनी विदेश यात्रा से लौट आयी हैं। आपने मुख्य रूप से अमेरिका के राष्ट्रपति श्री जान्सन से भेंटकर भारत की स्थिति का परिचय कराया। हर्ष है कि प्रधान मन्त्री ने भारत के स्वाधीन विचारो की रक्षा करने मे सफलता प्राप्त की। अमेरिका मे आपने भारत को दी जाने वाली सहायता के औचित्य को प्रजातन्त्र की रक्षा मे सहयोग बताया और कहा कि हम बराबरी के दर्जे पर परस्पर सहयोग चाहते हैं। साथ ही आपने काश्मीर मे जनमत के १८ वर्षीय गड़े प्रस्ताव को मुर्दा घोषित कर अपने साहस का परिचय दिया। भारत के लिये ३५ लाख टन अन्न की सहायता तथा अन्न,आर्थिक एवं तकनीकी मदद पाने में प्रधान मन्त्री सफल रहीं। अमेरिका मे उनका स्वागत भी भारत के गौरव अनुरूप हुआ इस प्रकार दोनों देशो मे सम्बन्ध और भी अधिक प्रगाढ़ बनने की आशा उज्ज्वल हो उठी है। हम दोनो देशो की जनता को इस सफल मिलन के लिये बधाई देते हैं।

समाजों से अनुरोध

प्रायः यह देखने मे आ रहा है कि समाजें अपने उत्सवो पर उपदेशक प्रचारक सभा से नहीं बुलाती हैं और यदि बुलाती भी हैं तो ऐसे समय पर पत्र लिखती हैं कि जब उत्सव के ६-७ दिन शेष रहते हैं। अथवा दो दिन पहले तार दे देते हैं तत्पश्चात नियुक्ति के उपरान्त स्थगन की सूचना आ जाती है। ऐसा करने से जहाँ अव्यवस्था पैदा हो जाती है वहाँ अपव्यय होना साधारण सी बात है।

अतः सभा यह अनुरोध करती है कि संगठन और अनुशासन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि उत्सव होने के कम से कम एक मास पूर्व अवश्य लिखा करें तथा व्यवस्था बनायें।

पंजाबी सूबे की वकालत

[ले०—श्री वीरेन्द्र जी, सम्पादक वीर प्रताप, जालन्धर]

स० स्वर्णसिंह एक सफल वकील रहे हैं और सफल वकील वही होता है जो झूठ को भी सत्य सिद्ध कर सकता है। जिस झूठ के पैर ही न हों उसे कौन सत्य सिद्ध करेगा। परन्तु स० स्वर्णसिंह सफल वकीलों से भी आगे निकल गये हैं। अर्थात वह एक सफल राजनीतिज्ञ भी समझे जाते हैं। इसलिए उन्होंने उस औपचारिकता से काम लेना भी छोड़ दिया है जो कई उच्चकोटि के वकीलों की विशेषता समझी जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी वकालत में तर्क के लिए अब कोई स्थान नहीं रह गया। होता तो पंजाबी सूबे का यह इस ढंग से वकालत न करते जैसी कि उन्होंने पिछले दिनों जालन्धर में पत्र प्रतिनिधियों के सामने की।

सरदार साहब फरमाते हैं कि द्विभाषी पंजाब का परीक्षण सफल नहीं रहा। पहला प्रश्न जो मैं उनसे करना चाहता हूं यह है कि उन्हें यह आकाशवाणी कब हुई है कि यह परीक्षण सफल नहीं रहा? १८ वर्ष तक उन्होंने इस प्रश्न पर अपनी जबान नहीं खोली बल्कि जब तक पं० नेहरू जीवित रहे तब तक आप पंजाबी सूबे का विरोध करते रहे। अब आपको यह ख्याल कैसे पैदा हुआ कि यह परीक्षण सफल नहीं रहा। क्या इस लिए कि कांग्रेस कार्यकारिणी ने यह फैसला कर दिया है कि पंजाब का बटवारा कर दिया जाए? क्या इसलिए अब आपको भी पंजाबी सूबे में अच्छाइयां नजर आने लगी हैं? जब पं० जवाहरलाल नेहरू ने लोक सभा में खड़े होकर यह घोषणा की थी कि पंजाबी सूबा नहीं बनेगा उस समय स० स्वर्णसिंह उनके मन्त्रिमण्डल के एक सदस्य थे। यदि उस समय भी उनका यही मत था जो आज है तो ईमानदारी और नैतिकता की मांग यह थी कि वह केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र दे देते और पं० नेहरू से कहते कि पंजाबी सूबे के प्रश्न पर मैं आपसे सहमत नहीं इसलिए मन्त्रिमण्डल से अलग होता हूं। अलग न भी होते तो भी किसी न किसी ढंग से अपने विचार तो प्रकट कर ही सकते थे। उस समय तो सरदार साहब ने अपने दिल में यह धारणा बना ली थी कि आप पंजाब के विभाजन के विरुद्ध हैं। आज जबकि पं० नेहरू हमारे मध्य नहीं हैं उन्होंने कहना शुरू कर दिया है कि द्विभाषी पंजाब का परीक्षण सफल नहीं रहा। अर्थात् जब गये तो पंजाबी सूबा समझ गये तो जमनादास। जैसी स्थिति देखी उसके अनुसार पैंतरा बदल लिया।

परन्तु वह यह भी तो बतायें कि यह परीक्षण किस दृष्टि से सफल नहीं रहा? वह क्या मापदण्ड है जिसके अनुसार सरदार साहब इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। हर कोई जानता है और यह एक अकाट्य तथ्य है जिसे स० स्वर्णसिंह और उनके विचारों वाले अन्य लोग किसी भी स्थिति में झुठला नहीं सकते कि पिछले १८ वर्ष में जितनी आर्थिक और औद्योगिक उन्नति पंजाब ने की है किसी अन्य राज्य ने नहीं की। पंजाब की गणना भारत के समृद्ध राज्यों में की जाती है। क्या सरदार स्वर्णसिंह इसे एक असफल परीक्षण समझते हैं। पंजाब यदि उन्नति के क्षेत्र में सरपट दौड़ सका है तो केवल इसलिए कि वह संयुक्त था। यही कारण था कि पं० जवाहरलाल नेहरू बार-बार कहा करते थे कि जिस दिन पंजाब बटवारा होगा यह आर्थिक दृष्टि से तबाह हो जायेगा और उनकी यह भविष्यवाणी ठीक सिद्ध हो रही है। सरदार स्वर्णसिंह के 'असफल परीक्षण' के दौरान में यह स्थिति रही कि अन्य राज्यों के लोग भी पंजाब में आकर कारखाने लगा रहे थे और अब जो सफल परीक्षण यह करना चाहते हैं उस का परिणाम यह है कि कोई व्यक्ति अब पंजाब में नया कारखाना लगाने को तैयार नहीं बल्कि जो कारखाने इस समय यहां लगे हुए हैं उनके मालिक भी यहां से स्थानान्तरित होने की सोच रहे हैं। पिछले एक मास में दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, फरीदाबाद, पानीपत, सोनीपत और अन्य स्थानों पर भूमि का मूल्य १० से लेकर ४० प्रतिशत तक बढ़ गया है और केवल इसलिए कि पंजाब के कारखानेदार वहां जमीन खरीद रहे हैं। यह स० स्वर्णसिंह के सफल परीक्षण का अभी आरम्भ ही है। इसका अन्त क्या होता है, यह तो आगे चलकर पता चलेगा।

स० स्वर्णसिंह से यह भी पूछा जा सकता है कि यह निर्णय किस ने दिया है कि द्विभाषी पंजाब का परीक्षण असफल रहा है? पंजाब की जनता से तो किसी ने पूछा नहीं बल्कि जब भी अकालियों ने इस प्रश्न पर चुनाव लड़ा है उन्हें मुंह की खानी पड़ी है। ऐसी स्थिति में वह कौन से तथ्य और आंकड़े हैं जिनके आधार पर सरदार साहब ने यह फतवा दे दिया कि चूंकि द्विभाषी पंजाब का परीक्षण असफल रहा है इस लिए इस राज्य का बटवारा करना पड़ा, वह यह कहते कि किसी न किसी कारण सरकार ने अब एक फैसला कर दिया है इसलिए इसे स्वीकार कर लेना चाहिये और इस नये परीक्षण को सफल बनाने का यत्न करना चाहिए तो बात मेरी समझ में आ सकती थी परन्तु यह कहना कि द्विभाषी पंजाब का परीक्षण असफल रहा है, उस इतिहास को मिटाने के समान है जिसे स० पटेल और पं० जवाहरलाल जैसे महान् राष्ट्रीय नेताओं ने अपने हाथ से लिखा था। इस में स० स्वर्णसिंह कभी सफल न होंगे।

●

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आनन्द पुष्प-हार बना कर दिया गया गया।
भारत को दयानन्द दुबारा दिया गया॥

—महाकवि 'शंकर'

श्री प्रधान सभा की कार बस से लड़ गयी!

★

गत ३० मार्च को आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री मदनमोहन जी वर्मा बाराबंकी आर्यसमाज की एक बैठक में सम्मिलित होने के उपरान्त फैजाबाद जा रहे थे, बाराबंकी फैजाबाद रोड पर आपकी कार एक पैसेंजर बस से टकरा गयी। जिससे माननीय श्री प्रधान जी व उनके साथियों को चोटें आयीं। इस कारण श्री प्रधान जी को अपने पूर्व प्रोग्राम स्थगित करने पड़े। अब श्री प्रधान जी स्वस्थ हो रहे हैं। इस दुर्घटना का समाचार पढ़कर सैकड़ों उनके मित्रों और आर्यजनों ने सहानुभूति के तार व पत्र भेजे हैं। श्री प्रधान जी यह निवेदन करते हैं कि अनेक महानुभावों के पत्रों का उत्तर पूर्ण स्वास्थ्य लाभ न होने के कारण, उचित समय के अन्दर न दे सके। अतः सब आर्य बन्धुओं की सहानुभूति के लिए वे हृदय से अनुगृहीत हैं और उनकी सेवा में वे धन्यवाद समर्पित करते हैं। —धर्मदत्त

मंत्री आ०प्र०स० लखनऊ

★

विचार विमर्श—

दण्ड और अपराध

[ले०—श्री हरीप्रसाद, २७६ आर्यनगर बरेली]

यह एक प्राकृतिक नियम है कि सबल ही संसार में जीवित रह पाता है और निर्बल या तो मृत्यु को प्राप्त हो जाता है या सबल के आधीन होकर उसे दासता का जीवन व्यतीत करना पड़ता है। कानून या विधान का कार्य निर्बल को सुरक्षित कर उसे सबल या बलवान की अनुचित दासता से मुक्त करा सम्मान का जीवन प्रदान करना है। नीतिकारों ने कानून में दण्ड की व्यवस्था का विधान इसी उद्देश्य से रक्खा है कि सबल निर्बल को अपने शक्ति से अनुचित रूपेण हानि न पहुंचा सके।

संसार में तीन कोटि के व्यक्ति होते हैं। उत्तम, मध्यम और नीच। उत्तम प्रकार के व्यक्ति आस्तिक वेद, शास्त्र और महापुरुषों की आज्ञा पालन करने वाले होते हैं। वे कोई भी पाप या अधर्म इसलिये नहीं करते कि ईश्वर उन्हें माफ नहीं करेगा या वह कृत्य वेदाज्ञा प्रतिकूल है अतः भिन्न कोटि का है या उन्हें अपने साथ वैसा व्यवहार उचित नहीं लगेगा। मध्यम कोटि के व्यक्ति भी ईश्वर, धर्म और वृद्धजनों का विचार कर पाप या अधार्मिक कृत्य नहीं करते लेकिन कभी कभी परिस्थितियों वश, दुर्भाग्यवश और कुपरामर्श वश उनसे अपराध हो जाता है जिसके लिए उनके मन में सदैव ग्लानि बनी रहती है। निम्नकोटि के व्यक्ति वे हैं जो नास्तिक हैं। मनुष्य को ही सर्वशक्ति सम्पन्न, जगत का सृष्टा व विनाश कर्ता मानते हैं या फिर वेद शास्त्रों को अनुपयोगी समझ उनकी अवहेलना करते हैं और अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु उचित अनुचित सभी प्रकार के कार्य करते हैं। वे किसी को इसलिए सर नहीं झुकाते हैं कि वह शिष्टाचार है वरन् इसलिए कि वे उससे किसी बड़े उद्देश्य की पूर्ति करने वाले हैं। ऐसे व्यक्ति सदैव पाप कर्म किया करते हैं और उनकी दृष्टि में वही शक्ति शाली है जो उनसे अधिक बदमाश, धूर्त और गिरोह बन्द है। साधारण व्यक्ति को वह मच्छर मक्खी की तरह हुक्म करने की सामर्थ्य रखते हैं।

नीति शास्त्र में राजा या शासन के विविध अधिकारों और कर्त्तव्यों की चर्चा की गई है। जिसमें स्पष्ट लिखा है कि शासन को दुष्टो के विनाश और सज्जनों की रक्षा की व्यवस्था करनी चाहिये। राजा के हाथ में तलवार या दंड इसी उद्देश्य का प्रतीक स्वरूप था। कानून या विधान की व्यवस्था तब हुई जब निम्नकोटि के मनुष्य बढ़ने लगे और जब शास्त्रों में उल्लिखित मर्यादायें और मान्यताओं की तोड़ने वालों की संख्या बढ़ने लगी। आज अपराधों की संख्या की तीव्र वृद्धि के जहां अन्य कारण हैं, वहाँ दण्ड का सुगम तथा सरल हो जाना भी एक कारण है। इतिहास बताता है कि प्राचीन काल में इन दिनों की अपेक्षा कम अपराध होते थे। कारण स्पष्ट है कि उन दिनों या तो लोगों का धार्मिक आत्मिक एवं नैतिक स्तर ऊँचा था या दण्ड इतना अधिक कठिन एवं असहनीय था कि एक बार दण्डित होने के बाद अपराध करने की हिम्मत ही नहीं होती थी। लेकिन उत्तरोत्तर दण्ड की प्रणाली में परिवर्तन आया। मनोवैज्ञानिकों ने दण्ड की सुधारवादी नीति का प्रतिपादन कर दण्ड को सरल बनाने की वकालत की और मृत्युदण्ड और अङ्ग भंग को अमानुषिक बता करके समाप्त करने की मांग की। समय के साथ साथ दण्ड सरल होता गया और आज की जेल शाही मेहमान घर बनकर रह गई है, फिर अपराधी को दण्ड का भय क्यों हो ?

मृत्यु दण्ड के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। अभी इंगलैंड ने मृत्यु दण्ड का बहिष्कार करने के लिए एक विधेयक पारित किया। इस विधेयक के पारित करने पर 'आर्यमित्र' के सम्पादक महोदय ने अपने व्यक्तिगत विचाराधीन 'सम्पादकीय' में इंगलैण्ड को इस कार्य के लिए बधाई दी। भारत में यद्यपि ऐसा विधेयक पारित नहीं हो पाया है मगर यहां भी इस तरह का विधेयक लाने की बात काफी समय से चल रही है। आइये विचार करें कि मृत्यु दण्ड के सम्बन्ध में आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का क्या दृष्टिकोण है।

महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में कठोर दंड व्यवस्था का समर्थन करते हुये प्राण दंड और अंग भंग करने का विधान वेदानुकूल है ऐसा बताया है। अथर्व ६-२९ ११ व ८ ३-१५ में वेद भगवान राजा को प्राणदण्ड की आज्ञा देने का अधिकार प्रदान करते हैं। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि 'राजा सब प्राणियों को दुख देने वाले साहसिक मनुष्य को बन्धन छेदन किये बिना कभी न छोड़े। अगछेदन को जो कड़ा दंड जानते हैं वे राजनीति को नहीं समझते क्योंकि एक पुरुष को इस प्रकार का दंड होने से सब लोग बुरे काम करने से अलग रहेंगे और बुरे काम को छोड़कर धर्म मार्ग में स्थित रहेंगे। सच पूछो तो यही है कि एक राई भर भी यह दंड सबके भाग में न आवेगा, और जो सुगम दंड दिया जाय तो दुष्ट काम बहुत बढ़कर होने लगेंगे। वह जिसको तुम सुगम दंड कहते हो वह करोड़ों गुना अधिक होने से करोड़ों गुना कठिन होता है क्योंकि जब बहुत मनुष्य दुष्ट कर्म करेंगे तब थोड़ा थोड़ा दंड भी देना पड़ेगा जो

[शेष पृष्ठ १२ पर]

तेजः

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ।

यजु० १९।९

तू तेजस्वी है, मुझ में तेज का आधान कर।

★

पापों और पापी जनों को पराभूत करने वाली शक्ति को तेज कहते हैं। लोक-व्यवहार में तेज शब्द के और भी कई अर्थ प्रसिद्ध हैं। चमक दमक तेज कहलाती है। अग्नि को तेज कहते हैं। सूर्य तेज पुंज है। विशेष पुरुषार्थ के लिए भी तेज शब्द का व्यवहार होता है। वीर्य, बल, ओज, मन्यु और सह शब्द जिस जिस भाव को बतलाते हैं, तेज का भाव भी उनसे कुछ कुछ मिलता जुलता है। एक स्थूल विचार के अनुसार इन सभी शब्दों को समान अर्थ का सूचक भी माना जा सकता है, परन्तु वास्तव में तो ये भिन्न अर्थों और पृथक पृथक शक्तियों के ही सूचक हैं। मानव जीवन की सफलता के लिए इन सभी शक्तियों की प्राप्ति आवश्यक है।

तेज की परिभाषा बताना तो बहुत कठिन है। तेज तो बस तेज है। तेज वह है जिसके प्रभाव से मनुष्य जीवन को धारण करता है, रोगों और वैरियों का निवारण करता है। विभिन्न कारणों से उत्पन्न होने वाले विरोधों और अवरोधों का सामना करता है, और विजयी होता है। तेज की विद्यमानता मनुष्य को उत्साही, साहसी पुरुषार्थी यशस्वी, और जयशील बनाती है। जब दो तेजस्वी पुरुषों में संघर्ष होता है तब अधिक तेजस्वी पुरुष जीत जाता है। छोटी आयु तेज के कार्यक्रम में बाधक नहीं है। बड़ी आयु का तेज के क्षेत्र में कोई विशेष महत्व नहीं है। कुल विशेष या देश विशेष का भी इस विषय में कोई विशेष महत्व नहीं। तेजस्वी जन अपनी तेजस्विता और श्रेष्ठता को सैकड़ों प्रकार से प्रस्थापित करते हैं। तूफानों और विघ्नबाधाओं से तेजस्वी जन घबराते नहीं।

शुद्ध विचार, सदाचार, परोपकार, न्याय-परायणता, सात्विकता, ईश्वर-भक्ति, सत्संगति आदि उत्तम आचरणों से तेज की वृद्धि भी होती है और तेज के होने का पता भी चलता है। भ्रान्त विचारों, दुराचारों, स्वार्थपरता अन्याय, तमोगुणी भोजन, नास्तिकता और कुसंग से तेज का ह्रास होता है। निस्तेज जीवन भी कोई जीवन में जीवन है? ईश्वर बचाये।

सकल सृष्टि का रचयिता परमपिता परमात्मा तेज का भण्डार है। उसकी शरण ग्रहण करने से और उससे सम्बन्ध करने से ही मनुष्य को तेज की प्राप्ति होती है। आओ, तेज की प्राप्ति के लिए हम भी ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना के अपने कुछ सुनियोजित कार्यक्रम आरम्भ करें। हे सब विघ्नों के निवारक ! ज्योति स्वरूप परमात्मन् ! आप की कृपा से हमारा जीवन सब प्रकार के पापों और दोषों से मुक्त हो। शुभ कर्मों में हमारी प्रीति निरन्तर बढ़ती ही रहे। हम स्वतन्त्र स्वावलम्बी और कर्तव्यनिष्ठ बनकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हों। आपकी कृपा से हम निराशा असफलता और प्रत्येक प्रकार की पराजय के कष्टों से बचे रहें।

हे दयानिधे ! हम पापों और पापियों के साथ समझौते करके, अपने जीवन को कलंकित न करें। आपकी पवित्र ज्योति सदा ही हमारे मनमन्दिर और कर्तव्य पथ को आलोकित करती रहे। सभी अवस्थाओं और सभी परिस्थितियों में हम आगे बढ़ें ऊपर ही उठें। हे नाथ ! किसी भी अवस्था में हमारा किसी भी प्रकार का पतन कभी भी न हो। आपकी कृपा से हम सदा ही जीवन ज्योति और जागृति से परिपूर्ण बने रहें।

—श्री साधु सोमतीर्थ

इस देश के भिन्न-भिन्न नाम

[ले०—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार]

[लेखक ने अपने देश के विभिन्न नामों का ऐतिहासिक मूल्याङ्कन करने का यत्न किया है। इस अनुसन्धानात्मक लेख के बहुत से विचार विचारणीय हैं। इस सम्बन्ध में अन्य विचारों का भी हम आदर करेंगे। लेखक के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। —स्नातक]

श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार

आज जिस देश को 'हिन्दुस्तान' या 'भारतवर्ष' कहा जाता है उसके इतिहास में अनेक नाम रहे हैं। मुख्य तौर से इस देश के नाम 'आर्यावर्त' 'ब्रह्मावर्त', 'जम्बूद्वीप', 'भारतवर्ष' तथा 'हिन्दुस्तान' रहे हैं। इन सब नामों पर हम इस लेख में विचार करेंगे और क्योंकि 'हिन्दू' शब्द को आमतौर पर साम्प्रदायिक समझा जाता है इसलिए इस पर विशेष प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

१ आर्यावर्त

मनुस्मृति अध्याय २, श्लोक २२ में आर्यावर्त की सीमा का वर्णन करते हुए लिखा है—

आ समुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः॥

अर्थात् पूर्व के समुद्र (बंगाल की खाड़ी) से लेकर पश्चिम के समुद्र (अरब सागर) तक तथा उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक का प्रदेश 'आर्यावर्त' है।

इस परिभाषा में सम्पूर्ण उत्तर-भारत आ जाता है, दक्षिण भारत नहीं आता। ऐसा प्रतीत होता है कि इस देश का सबसे प्राचीन नाम 'आर्यावर्त' ही है क्योंकि जो लोग सर्व प्रथम इस देश में बसते थे वे अपने को 'आर्य' कहते थे, अपने से इतर लोगों को 'दस्यु' या 'म्लेच्छ' कहते थे। ऋग्वेद (१-५१-८) में लिखा है—'विजानीहि आर्यान् ये च दस्यवः'। मनुस्मृति (१०-४५) में लिखा है—'म्लेच्छवाचश्चार्यवाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः'। इसी प्रकार मनुस्मृति (२-२३) में लिखा है—'म्लेच्छदेशस्त्वतः परः'। महाभाष्य में भी लिखा है—"कः पुनरार्यावर्तः। प्रागादर्शात् प्रत्यक् कालकवनात् दक्षिणेन हिमवन्तम् उत्तरेण पारियात्रम्"। महाभाष्यकार पतञ्जलि पुष्यमित्र शुंग के समकालीन थे। शुंग वंश ईसा से २-३ शताब्दी पहले राज्य करता था। ईसा से दो-तीन शताब्दी पहले आर्यावर्त के विषय में यह चर्चा चलना कि आर्यावर्त कौन सा देश है सिद्ध करता है कि आर्यावर्त शब्द का प्रयोग बहुत प्राचीन काल से होता था। वसिष्ठ धर्मसूत्र में भी 'आर्यावर्त' का लक्षण दिया है जो पतञ्जलि मुनि ने दिया है। वहां लिखा है—'आर्यावर्तं प्रागादर्शात् प्रत्यक् कालकवनात् उदक् पारियात्रात् दक्षिणेन हिमवतः उत्तरेण च विन्ध्यस्य'। मनुस्मृति, महाभाष्यकार तथा धर्मसूत्रों के समय तक 'आर्यावर्त'-शब्द बहुत पुराना हो गया था क्योंकि 'आर्यावर्त' कौन-सा देश है इस प्रकार की गवेषणापूर्ण चर्चा चल पड़ी थी। इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि सर्वप्रथम इस देश का नाम 'आर्यावर्त' या 'आर्य-देश' था तथा इस देश से भिन्न देश को यहां के निवासी 'म्लेच्छ देश' या 'दस्यु देश' कहते थे। वे लोग अपने देश को 'आर्य देश' इसलिए कहते थे क्योंकि वे अपने को 'आर्य' या 'श्रेष्ठ' कहते थे, ठीक ऐसे जैसे आज के युग में पाकिस्तान वाले अपने को पाक या पवित्र कहने लगे हैं।

२-ब्रह्मावर्त

जैसा हमने कहा 'आर्यावर्त' शब्द में सम्पूर्ण उत्तर-भारत तो आ जाता था क्योंकि आर्य लोग तब तक उतने ही भाग में बसे थे, दक्षिण भारत इस परिभाषा में सम्मिलित नहीं था। 'आर्यावर्त' में भी वह स्थान जहां आर्य लोग विशेष रूप से निवास करते थे, जहां उनकी सभ्यता तथा संस्कृति का केन्द्र था उस स्थान का नाम 'ब्रह्मावर्त' था। 'ब्रह्मावर्त' सम्पूर्ण 'आर्यावर्त' का नाम न होकर 'आर्यावर्त' का वह भाग था जहां आर्य संस्कृति अपने शुद्ध परिष्कृत रूप में विद्यमान थी। 'ब्रह्मावर्त' की व्याख्या करते हुए मनुस्मृति (२ १६) में लिखा है—

सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते॥

'ब्रह्मावर्त' का यह प्रदेश वह था जिसे कुरुक्षेत्र कहा जाता है। महाभारत (३-८३-२०४ २०५) में लिखा है—

दक्षिणेन सरस्वत्या उत्तरेण दृषद्वतीम्
ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे।

कोई समय था जब कुरुक्षेत्र के पास सिरसा क्षेत्र में सरस्वती नदी बहती थी। दृषद्वती आजकल की घग्घर नदी को कहते हैं। यही प्रदेश कुरुक्षेत्र का प्रदेश है जहां आर्य लोग 'ब्रह्म' की चर्चा में व्यस्त रहा करते थे। उपनिषदों के समय आर्य संस्कृति का केन्द्र कुरु पांचाल प्रदेश हो गया। शतपथ ब्राह्मण (३ २ ३-१८) में लिखा है—'तस्मादत्रोत्तरा हि वाग्वदति कुरुपाञ्चालत्रा'—अर्थात् कुरु पांचाल के लोग शुद्ध वाणी का प्रयोग करते हैं। छान्दोग्योपनिषद (५-३-१) में लिखा है कि श्वेतकेतु कुरु पांचालों की सभा में गया। कौषीतकी उपनिषद् (४-१) में लिखा है कि किसी समय कुरु पांचाल आध्यात्मिकता का गढ़ था।

इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है कि आर्य लोगों ने जिस देश में सबसे पहले अपना निवास स्थिर किया उस देश का नाम उन्होंने 'आर्यावर्त' रखा, और सबप्रथम कुरुक्षेत्र के प्रदेश में आध्यात्मिकता तथा अपनी संस्कृति का केन्द्र बनाया जहां ब्रह्मज्ञान, ब्रह्म चर्चा चलती थी, उस केन्द्र में ब्रह्मचर्चा चलते रहने तथा उनकी ब्रह्म परायण संस्कृति का केन्द्र होने के कारण उसका नाम उन्होंने 'ब्रह्मावर्त' रखा। कुछ काल के अनन्तर जब आर्य लोग कुछ और आगे उत्तर की ओर बढ़े तब आर्य संस्कृति का केन्द्र ब्रह्मावर्त के स्थान में कुरु पांचाल प्रदेश हो गया। कुरुक्षेत्र तथा कुरुपांचाल में सिर्फ विस्तार का ही भेद है। राय चौधरी ने लिखा है कि कुरु प्रदेश की राजधानी मेरठ जिले के हस्तिनापुर तथा दिल्ली क्षेत्र के इन्द्रप्रस्थ में थी। पांचाल की राजधानियां बरेली जिले के रामनगर तथा फर्रुखाबाद जिले के कम्पिल (प्राचीन काम्पिल्य) स्थान में थीं।

३-जम्बुद्वीप

इस देश में प्रत्येक धार्मिक संस्कार करते हुए एक सङ्कल्प मन्त्र पढ़ा जाता है जो इस प्रकार है—

द्वितीय परार्धे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलीयुगे पञ्च सहस्र गताब्दे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे—इत्यादि।

इस संकल्प के अनुसार भारतवर्ष को जम्बुद्वीप का एक खण्ड कहा गया है। भारत को जम्बुद्वीप का खण्ड मानने का कारण विष्णु पुराण का वह कथन है जिसमें सम्पूर्ण पृथ्वी को सात द्वीपों में बांटा गया है। वे सात द्वीप हैं—जम्बु, शाक, कुश, शाल्मल, क्रौंच, गोमेद और पुष्कर। इनमें से जम्बु द्वीप के फिर नौ खण्ड कहे गये हैं। इन 'खण्डों' को 'वर्ष' भी कहा गया है। जम्बुद्वीप के नौ खण्ड या नौ वर्ष हैं। इन नौ वर्षों के बीच में इलावृत वर्ष है, इलावृत वर्ष के उत्तर में रम्यकवर्ष, हिरण्मय वर्ष तथा कुरुवर्ष हैं, इस के दक्षिण में हरिवर्ष, किम्पुरुष वर्ष तथा भारतवर्ष है, इसके पूर्व में भद्राश्ववर्ष तथा पश्चिम में केतुमाल वर्ष है। भारतवर्ष तो स्वयं ही जम्बुद्वीप के नौ खण्डों का एक खण्ड है, फिर भारतवर्ष के भी नौ खण्ड कहे गये हैं। ये नौ खण्ड हैं—इन्द्रद्वीप, कशेरुमान्, ताम्रपर्ण, गभस्तिमान, नागद्वीप, सौम्य, गन्धर्व, वरुण तथा कुमारी द्वीप। कुमारी द्वीप ही वास्तविक भारत है। शेष आठ भाग जो कहे गये हैं वे 'वृहत्तर भारत' के अंग हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पुराणकार के समय एशिया के सम्पूर्ण प्रदेश को जम्बुद्वीप कहा जाता था, भारतवर्ष का भी वृहत्तर रूप था, और कुमारीद्वीप (कन्या कुमारी तक का प्रदेश) भारत का वह खण्ड था जहां से वृहत्तर भारत का शासन होता था। पुराणों के बाद बौद्ध काल में जम्बुद्वीप का विशाल रूप जाता रहा, भारत को ही जम्बुद्वीप कहा जाने लगा। यही कारण है कि चीनी युआन चुआंग ने भारत के लिए 'चम्पु' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'चम्पु' शब्द 'जम्बु' का ही रूपान्तर है। पाली त्रिपिटक में लिखा है कि बुद्ध जम्बुद्वीप में ही उत्पन्न होते हैं। इसका यही अर्थ हो सकता है कि यद्यपि पुराणों में जम्बुद्वीप एशिया प्रदेश मात्र के लिए प्रयुक्त हुआ है, तो भी बौद्ध साहित्य में जम्बुद्वीप का भारत के लिये प्रयोग होने लगा। ऊपर जिस सङ्कल्प मन्त्र का हम उल्लेख कर आये हैं उसमें भी 'जम्बुद्वीपे भरतखण्डे' से जम्बुद्वीप को भरतखण्ड का विशेषण मानकर यही ध्वनि निकलती है कि जम्बुद्वीप तथा भरतखण्ड एक ही प्रदेश के नाम हैं। पुराणों का कथन है कि जम्बुद्वीप का नाम जम्बुद्वीप इसलिये पड़ा क्योंकि वहां हाथी के प्रमाण के जामुन के फल पाये जाते हैं। जो कुछ भी हो, इस देश के लिए जम्बुद्वीप कभी इतना प्रसिद्ध नहीं हुआ जितना आर्यावर्त तथा भारतवर्ष प्रसिद्ध हुए।

४-भारतवर्ष

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में जब आर्यों ने इस देश में निवास प्रारम्भ

[शेष पृष्ठ ९ पर]

क्या राम का जन्म नौ लाख वर्ष पूर्व हुआ था ?

[ले०—श्री बाबूराम जी मिश्र]

[वाल्मीकि रामायण में कितने ही स्थानों पर चार दांत वाले हाथियों का उल्लेख हुआ है। वैज्ञानिक बतलाते हैं कि आज से लगभग दस लाख वर्ष पहले से बहुत इधर तक एशिया, यूरोप और उत्तरी एवं दक्षिणी अमरीका में चार दांतों वाले हाथी पाये जाते थे। तब, क्या श्रीराम का जन्म आज से लगभग नौ लाख वर्ष पहले हुआ था? महर्षि वाल्मीकि 'को चार दांतों वाले हाथियों का क्या पता हो सकता था जबकि आधुनिक वैज्ञानिकों तक को कुछ ही पीढ़ियों पहले इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी। इस शोधपूर्ण लेख में यही विवेचना की गयी है।

—सम्पादक]

रामनौमी, चैत्र शुक्ला नवमी को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र की जयन्ती हम प्रतिवर्ष मनाते हैं। अयोध्यापुरी आज भी उस दिन की स्मृति में आत्मविभोर हो उठती है। आदि कवि लिखते हैं—"जब राम जन्म हुआ, गन्धर्वों ने मधुर गीत गाये, अप्सराओं ने नृत्य किया, देवताओं के नगाड़े बजने लगे और आकाश से फूल बरसने लगे। अयोध्या में लोगों की बड़ी भीड़ हुई और भारी उत्सव हुआ। गलियां और मार्ग लोगों से भर गये। उनमें नट और नर्तक अपनी कला का प्रदर्शन करने लगे, गाने और बजाने के शब्द गूंजने लगे। उनमें वे रत्न भी दिखाई पड़े थे, जिन्हें लुटाया गया था।" अयोध्या को अपने इस अतीत पर गर्व हो तो यह उचित ही है।

अयोध्यापुरी में राम जन्म के जिस उत्सव का वर्णन महर्षि वाल्मीकि ने किया है, वह आज से कितने समय पहले की घटना है? यह जिज्ञासा स्वाभाविक है। भारतीय काल गणना से रामजन्म आज से लगभग नौ लाख वर्ष पहले हुआ। जैसा कि माना जाता है, रामावतार त्रेता युग के अन्त में हुआ। सृष्टि का जीवन चार युगों में बांटा गया है कृत, त्रेता, द्वापर व कलियुग। इनकी अवधि क्रमशः ४, ३, २ और १ के अनुपात से क्रमशः ४८००, ३६००, २४०० और १२०० देव वर्षों की मानी गयी है। मानव वर्षों में यह अवधि यथाक्रम १७२८०००, १२९६०००, ८६४०००, और ४३२००० वर्ष आती है। इनमें प्रत्येक युग के आरम्भ में बारहवां भाग सन्धिकाल और अन्त में बारहवां भाग संध्यांश काल हुआ। मनुस्मृति और महाभारत दोनों इस विषय में एक मत हैं। आजकल २८ वां कलियुग चल रहा है जिसके ५०६६ वर्ष बीत रहे हैं। इस हिसाब के अनुसार त्रेता के बाद द्वापर को आठ लाख चौसठ हजार और कलियुग को अभी तक पांच हजार छयासठ [५०६६] वर्ष बीत चुके हैं। इनमें यदि त्रेता के सन्ध्यांश काल के १०८००० वर्षों में से श्री राम के राज्य शासन के ११ हजार वर्ष जोड़ दिये जावें तो सहज ही हम ८ लाख ८७ हजार वर्ष से आगे, मोटे हिसाब से लगभग नौ लाख वर्ष तक पहुंच जाते हैं। परन्तु रामजन्म का आज इतना समय बीत चुका है, इस बात को कौन मानता है। पाश्चात्य विद्वानों ने प्राचीन शोध के सम्बन्ध में प्रशंसनीय कार्य किया है, परन्तु भारतीय संस्कृति इतनी प्राचीन हो सकती है, इसकी तो उन्हें कल्पना भी नहीं है। पाश्चात्य विद्वान् और उन्हीं की तरह सोचने वाले भारतीय विद्वान् भी रामायणकाल को छह हजार वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं मानते। उनके हिसाब से आज से २५-३० हजार वर्ष पहले संसार में काष्ठ युग था और मनुष्य जंगलों में नंगा घूमता था। ये विद्वान् वेद काल तक को जब आज से २५-३० हजार वर्ष पीछे ले जाने के लिए किसी तरह तैयार नहीं हैं, तब रामायण काल की तो बात ही क्या है, जो असंदिग्ध रूप से वेदकाल के बहुत इधर है।

यह माना जाता है कि श्रीराम और महर्षि वाल्मीकि समकालीन थे और उन्होंने श्रीराम के इस पृथ्वी पर रहते हुए ही रामायण की रचना की थी। यह हो सकता है कि आज जो वाल्मीकि रामायण उपलब्ध है, वह वही न हो, जिसे मूल रूप में महर्षि ने लिखा था और बाद में उसी को आधार बनाकर वर्तमान रामायण की रचना कुछ विस्तार से किसी विद्वान् द्वारा की गई हो। फिर भी वाल्मीकि रामायण में चार दांतों वाले हाथियों का उल्लेख ऐसी बात है जो रामजन्म के समय को अपने आप उस युग में पहुंचा देती है, जब आज से लगभग १० लाख वर्ष पहले चार दांतों वाले हाथी एशिया, यूरोप, अमरीका और अफ्रीका में पाये जाते थे और जिनका ज्ञान आधुनिक वैज्ञानिकों तक को आज से दो तीन सौ वर्ष पहले नहीं था।

सीता का पता लगाने के लिए महावीर हनुमान जब लंका में पहुचे और रात में उसका कोना-कोना छानने लगे, तब उन्होंने राक्षस राज के विशाल प्रासाद के द्वार जिन पशुओं को देखा उनमें चार दांतो वाले हाथी भी थे। वाल्मीकि रामायण सुन्दर काण्ड चतुर्थ सर्ग में २८ वें श्लोक में बताया गया है-

चरांश्च चतुर्दन्तैः श्वेताभ्रनिचयोपमं
भूषितं रुचिरद्वारं मत्तैश्च मृग पक्षिभिः।

नौवें सर्ग में पांचवें श्लोक में इसी तरह तीन और चार दांतों वाले हाथियों का उल्लेख पुनः मिलता है—

चतुर्विषाणैर्द्विरदैः त्रिविषाणैस्तथैव च परिक्षिप्तमसम्बाधं रक्ष्यमाणमुदायुधैः।

इसमें हाथी के अर्थ में 'द्विरद' शब्द का प्रयोग यह बताता है कि दो दांतों वाले हाथी भी तब तक अस्तित्व में आ चुके थे और उन्हें अस्तित्व में आये इतना समय बीत चुका था कि 'द्विरद' शब्द हाथी के अर्थ में रूढ़ि हो गया था। यह कहना कठिन नहीं है कि यह 'द्विरद' ऊपरी जबड़ों वाला, ऊपर के जबड़े में जबड़ों वाला आजकल का हाथी था या नीचे वाले जबड़े के दो जबड़ोंवाला दीन हस्ति वर्ग का यह हाथी, जिसे वैज्ञानिक अंग्रेजी में डिनोथेरोईडीया कहते हैं और जो आज से लगभग ढाई करोड़ वर्ष पहले से लगाकर इधर लगभग १५ लाख वर्ष पहले तक अर्थात् मध्य नूतन युग के पूर्वार्द्ध से लगाकर अति नूतन युग के मध्य तक यूरोप और एशिया में और मध्य नूतन युग के पूर्वार्द्ध से लगाकर प्रति नूतन युग तक—आज से लगभग ढाई करोड़ वर्ष पहले से लगा कर दस लाख वर्ष पहले से इधर तक अफ्रीका में पाये जाते थे। इनकी विशेषता थी ऊपर के जबड़ों में जबड़ों का न होना और नीचे के जबड़ों में जबड़ों का एक जोड़ा होना जो नीचे की ओर मुड़े होते थे और प्रायः कम्बवत् बढ़ते थे।

चार दांतों वाले हाथी का उल्लेख अन्यत्र भी मिलता है। कुम्भकर्ण के मारे जाने पर रावण द्वारा भेजे जाने पर महोदर जिस हाथी पर बैठकर रणभूमि में गया, उसका नाम 'सुदर्शन' था और वह ऐरावत जाति का था।

ततः सुदर्शनं नाम नीलजीमूत संनिभम् ऐरावत कुले जातमारुरोह महोदर (यु० ६९/९०)

ऐरावत इन्द्र के हाथी को कहते हैं, पर यह उस हाथी का नाम नहीं है, जैसी कि लोगों की धारणा है। ऐरावत हाथियों की एक जाति होती थी, जिसके चार दांत होते थे। इन्द्र का वह हाथी भी चार दांतों वाला था।

ततः कैलास कुटाभंचतुर्दन्तम्
मद-सुतम्
इन्द्रः करीन्द्र मारुह्य राहुम्
कृत्वा पुरःसरम्

इससे यह परिणाम सहज ही निकाला जा सकता है कि श्री राम और हनुमान दोनों ही उस समय में हुए जब संसार में चार दांतों वाले हाथी आज से लगभग दस लाख वर्ष पहले से बहुत इधर तक मिलते थे।

आधुनिक वैज्ञानिकों को आज से लगभग तीन सदी पूर्व चार दांतों वाले हाथियों का पता नहीं था; यह सारा संसार जानता है। वैज्ञानिकों का केवल चार दांतों वाले हाथियों का ही नहीं, अन्य कितने ही भीमकाय जन्तुओं के अस्तित्व का भी, जो अब लुप्त हो गये हैं, ज्ञान तब हुआ जब उन्होंने भूगर्भ में गहराई तक जाकर उनके प्रस्तरीभूत कंकालों को पाया।

संसार में किसी समय चार दांतों वाले हाथियों का होना अब सब एक मत से स्वीकार करते हैं। इस विषय में अब विवाद नहीं है। विवाद केवल इस विषय में है कि वे आज से कितने वर्ष पहले पाये जाते थे—लगभग १० लाख वर्ष पहले या इससे लाख पचास हजार वर्ष न्यूनाधिक।

यहां हाथी के विषय में वैज्ञानिकों का आधुनिकतम मत देना अप्रासंगिक नहीं होगा। यूनेस्को (जोहान्सबर्ग) विश्वविद्यालय में जन्तु विज्ञान के प्रोफेसर स्वर्गवासी डाक्टर टी० जी० वायकर डी. एस-सी., एफ. आर. एस. और दिल्ली विश्वविद्यालय में जन्तु विज्ञान के प्रोफेसर स्वर्गवासी विलियम ए० हुलबीस एम. ए., डी. एस-सी., एफ. आर. एस. द्वारा लिखित और भोपाल विश्वविद्यालय में जन्तु विज्ञान और तुलनात्मक शरीर विज्ञान के प्रोफेसर डाक्टर ए. के. मार्शल डी. फिल., डी. एस-सी. द्वारा संशोधित 'ए टेक्स्ट बुक आफ जूलोजी' के द्वितीय भाग सप्तम संस्करण में पृष्ठ ८११ से ८१८ तक शुण्डि वंश के विकास का जो विवरण दिया गया है, उससे पता चलता है कि हाथी का अस्तित्व जीव विज्ञान के अनुसार प्रादि नूतन युग से, लगभग ४२५ लाख वर्ष पहले से, लगाकर आज तक रहा है। यह दूसरी बात है कि इस लम्बी अवधि में इसकी काया, डील-डौल, दंतविन्यास, सिर गर्दन और दूसरे अंगों में भारी परिवर्तन हुआ हो। इन परिवर्तनों के

मूल में मुख्य कारण हाथी की सूंड ही रही है। आज हम उसके नीचे के जबड़े में उद्दंत नहीं पाते। परन्तु किसी समय हाथी के नीचे और ऊपर, दोनों ही जबड़ों में दोनों ओर दो-दो उद्दंत होते थे। ऐसा भी समय रहा है जब ऊपर के जबड़े के दोनों उद्दंत लुप्त हो गये और केवल नीचे के जबड़े में ही दो उद्दंत रहने लगे थे।

हाथी का पूर्वज आदि नूतन युग में आज से लगभग साढ़े तीन करोड़ वर्ष पहले स्पष्ट ही जिस रूप में सामने आया वह इधर प्रातिनूतन युग में आज से लगभग दस लाख वर्ष पहले आरम्भ होने वाले युग में भी रहा। इनके ऊपर के उद्दंत लम्बे और नीचे की ओर मुड़े होते थे। नीचे वाले उद्दंत आरम्भ काल में होते थे। वे या तो नीचे की ओर मुड़े होते थे या सामने की ओर फैले हुए। बाद में नीचे के जबड़ों के उद्दंत लुप्त हो गये। इनकी ऊंचाई कंधों पर छह फीट होती थी। इस परिवार में एक अन्य जाति का भी हाथी ढाई करोड़ वर्ष पहले से लगाकर लगभग १० लाख वर्ष से इधर तक होता रहा।

प्रश्न यह है कि जब आधुनिक वैज्ञानिकों तक को चार दांतों वाले हाथियों का पता नहीं था; तब महर्षि वाल्मीकि को इन लुप्त हाथियों का क्या ज्ञान हो सकता था, यदि वे स्वयं उस युग में, न होते। इससे हम यह परिणाम निकालते हैं कि वाल्मीकि स्वयं उस युग में, आज से लगभग नौ लाख वर्ष पहले जब चार विशाल दांतों वाले हाथी होते थे और उन्होंने अपनी मूल रचना में अपनी जानकारी से रावण के राजभवन के बाहर चार दांतों वाले हाथियों के होने का उल्लेख किया। यदि वर्तमान रामायण को बाद की रचना, आज से लगभग छह हजार वर्ष पहले की रचना माना जाय तो भी यह मानना ही होगा कि यह रचना किसी महाकवि ने महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखित मूल रामायण को सामने रखकर की होगी और उसमें से चार दांतों वाले हाथियों की बात ले ली होगी क्योंकि आज से छह हजार वर्ष पहले की तो बात ही क्या है, कई लाख वर्ष पहले ही चार दांतों वाले हाथी नहीं रह गये थे और किसी को उनका पता नहीं था। प्रत्येक अवस्था में यह निष्कर्ष अप्रभावित रहता है कि श्री राम का जन्म अयोध्यापुरी में आज से लगभग नौ लाख वर्ष पहले तब हुआ था जब संसार में चार दांतवाले हाथी पाये जाते थे और महावीर हनुमान ने इन हाथियों को रावण पालित कक्षा में देखा था। भारतीय गणना से तो पहले ही रामावतार का समय आज से लगभग नौ लाख वर्ष पहले माना जाता रहा है। हम उन आधुनिक वैज्ञानिकों के ऋणी हैं, जिन्होंने अपनी हाथियों सम्बन्धी खोज द्वारा हमें भगवान् राम के जन्म लेने के सही समय तक पहुंचा दिया।

वस्तु स्थिति से अवगत होने के लिए इस सम्बन्ध में यह ध्यान में रखना चाहिए कि अस्थि प्रस्तर पिण्डों के जिस अध्ययन के आधार पर मानव और अन्य जीव-जन्तुओं के विषय में वैज्ञानिक इस सुदूर अतीत के अन्धकारपूर्ण युग की झलक दिखाने में समर्थ हुए हैं वह अभी केवल प्रारम्भिक अवस्था में है, कई सौ वर्ष ही पुराना है। अभी तक मुख्य रूप से फ्रांस, बेल्जियम, डेनमार्क, इंगलैंड और अमरीका में ही अच्छी खोज की गयी है। अफ्रीका, एशिया, भारत, चीन और पूर्वी द्वीप समूह में बहुत कम खोज हुई है। इस दिशा के विद्वान् बहुत कम हैं और जो हैं, उनमें भी मतैक्य नहीं है। हमें वैज्ञानिकों की निष्ठा और चेष्टा की सराहना करते हुए भी यह नहीं भूलना चाहिए कि अभी तक की खोज सर्वथा अपर्याप्त है। फलतः उसके परिणामों और निष्कर्षों को भी वैसा ही अधूरा माना जायगा। और सम्पूर्ण चित्र तैयार होने से पहले धैर्यपूर्वक कितनी ही शृंखलाओं, जोड़ों, अंगों और उपांगों का पता लगाना होगा। निस्सन्देह वैज्ञानिकों के सामने कितने ही प्रश्न उठते हैं, समस्याएं उपस्थित होती हैं, शंकाएं आती हैं और कितनी ही बार भ्रम भी होने लगता है, परन्तु मानव प्रयास क्या इस तरह की बाधाओं के सामने नतमस्तक हो जायगा? समय आयेगा जब आधुनिक वैज्ञानिक संसार के गहन अन्धकारपूर्ण अतीत को प्रकाश में लाने में आज से कहीं अधिक सफल होंगे। अन्धकारपूर्ण अतीत का भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि संसार ने अभी तक जितना जाना है, उससे कहीं अधिक उसे जानना है।

[क्रमशः]

इस देश के भिन्न भिन्न नाम

(पृष्ठ ७ का शेष)

किया तब कुरुक्षेत्र के प्रदेश में अपनी संस्कृति का केन्द्र होने के कारण उसे 'ब्रह्मावर्त' कहा और उत्तर भारत को "आर्यावर्त" का नाम दिया। 'ब्रह्मावर्त' 'आर्यावर्त' का ही एक प्रगाढ़ सांस्कृतिक केन्द्र था। इसके अनन्तर आर्यावर्त के राजाओं में चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने का विचार उठ खड़ा हुआ। जब चक्रवर्ती राजा होने लगे, जिन राजाओं ने सम्पूर्ण उत्तर तथा दक्षिण प्रदेश को अपने वशवर्ती कर लिया तब इस देश का नाम 'भारतवर्ष' रखा गया। भारतवर्ष की परिभाषा करते हुए मार्कण्डेय पुराण [५७-५९] तथा वायुपुराण [४५-७५] में लिखा है—

दक्षिणापरतो ह्यस्य पूर्वेण च महोदधिः
हिमवानुत्तरेणास्य कार्मुकस्य यथा गुणः ॥
उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवद्दक्षिणं च यत् ।
वर्षं तद्भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा ॥

पुराणों में 'भारतवर्ष' की सीमा का उल्लेख करते हुए कहा है—'हिमालयात् आसमुद्रम्'—हिमालय से लेकर समुद्र पर्यन्त प्रदेश का नाम भारतवर्ष है। मार्कण्डेय पुराण का अभी हमने उल्लेख किया है, उसका अर्थ भी यही है कि भारतवर्ष वह प्रदेश है जो उत्तर में धनुष की डोरी की तरह हिमालय से और दक्षिण, पश्चिम तथा पूर्व में समुद्र से घिरा हुआ है। वायु पुराण में भी कहा है कि जो प्रदेश समुद्र के उत्तर में हिमालय के दक्षिण में है वह 'भारतवर्ष' है।

जब तक सिर्फ आर्य लोग इस देश में बसते थे तब तक इस देश का नाम 'आर्यावर्त' था, जब उन आर्यों ने चक्रवर्ती राज्य स्थापित कर लिया तब उन्होंने इस देश का नाम 'भारतवर्ष' रख दिया। आर्य-देश में आर्य लोगों का ही निवास था, 'भारतवर्ष' हो जाने पर आर्यों ने अन्य जातियों को भी जोड़कर उन्हें अपने में सन्निविष्ट किया। चक्रवर्ती राज्य की स्थापना तो आर्यों ने ही की थी, परन्तु चक्रवर्ती राज्य स्थापित करके उन्होंने अपने को अन्यों से श्रेष्ठ कहने के स्थान में अपने को अन्य सब में मिला दिया और अपने को आर्यावर्त के निवासी कहने के स्थान में भारतवर्ष के निवासी कहना शुरू किया।

उस समय, इस समय की तरह, इस देश के दो नाम थे। एक नाम उत्तरी-प्रदेश का था, दूसरा दक्षिणी-प्रदेश का था। दक्षिण प्रदेश में बस जाने वाले आर्य अपने को पंच द्राविड़ कहते थे। पंच द्राविड़ थे—द्राविड़ (तामिल), कर्नाट (कन्नड़), गुर्जर (गुजराती), महाराष्ट्र तथा तैलंग (तेलगु)। इसी प्रकार उत्तर-प्रदेश में बस जाने वाले आर्य अपने को पंच-गौड़ कहते थे। पंच-गौड़ थे—सारस्वत (पंजाब में सरस्वती के तट पर बस जाने वाले), कान्यकुब्ज (उत्तर प्रदेश में बसने वाले), गौड़ (बंगाल में बसने वाले), मैथल (उत्तर बिहार में बसने वाले) तथा उत्कल (उड़ीसा में बसने वाले)।

आर्यों ने जब उत्तर तथा दक्षिण भारत को एक करके चक्रवर्ती राज्य की स्थापना की तब इस देश का नाम आर्यावर्त से भारतवर्ष क्यों पड़ा? इसका कारण यही समझ में आता है कि यह कार्य पहले-पहल राजा भरत ने किया और उसी के नाम पर यह देश आर्यावर्त से भारतवर्ष हुआ। यह भरत कौन था? पौराणिक कथानक के अनुसार भरत राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र था जिसका वर्णन कालिदास ने अपनी अमर कृति अभिज्ञान शाकुन्तल में किया है। महाभारत में भरत को भरत दौष्यन्ती कहा गया है—दौष्यन्ती, अर्थात् दुष्यन्त का पुत्र। यह संभव है कि भरत ने उत्तरी प्रदेश तथा दक्षिणी प्रदेश को अपने एकाधिकार में कर लिया हो, और तब इस सारे देश का नाम जो एक राजा की छत्रछाया में आ गया था 'आर्यावर्त' से 'भारत' पड़ गया हो। भागवत (११-२-१५) तथा ब्रह्माण्ड पुराण (३४, ४४) में भरत को ऋषभ का पुत्र तथा नाभि का पौत्र कहा गया है। मत्स्य पुराण [११४-५] में कहा गया है कि भारतवर्ष भरत ने बसाया, और भरत मनु का ही दूसरा नाम था। जो कुछ भी हो, हमारी यह धारणा है कि इस देश के निवासियों ने जब तक वे उत्तरी भारत तक सीमित रहे अपना नाम पहले-पहल 'आर्यावर्त' रखा, और जब आर्यों का नेतृत्व करते हुए भरत ने उत्तरी-प्रदेश तथा दक्षिणी प्रदेश में एक छत्र राज्य स्थापित कर दिया तब उन्होंने इस स्वीकृत देश का नाम आर्यावर्त के स्थान में इस एकीकरण के मुख्य कर्णधार भरत के नाम पर भारत रख दिया।

परन्तु भारतवर्ष का विस्तार हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक ही रहा हो—ऐसा प्रतीत नहीं होता। समय आया जब 'भारतवर्ष' शब्द का प्रयोग 'विशाल भारत' के लिये प्रयुक्त होने लगा, हिमालय तथा कन्याकुमारी से बाहर के प्रदेश भी भारत के अन्तर्गत आ गये। सम्भव है, भरत की तरह इस देश में अन्य राजा हुए जिन्होंने अपने पराक्रम से अन्य अनेक प्रदेशों को जीत कर भारत में सन्निविष्ट किया। मत्स्य तथा वायु पुराण में लिखा है—'भारतस्यास्य वर्षस्य नवभेदान् निबोध मे' अर्थात्, भारतवर्ष के नौ विभागों को सुन। ये नौ विभाग कौन-से थे? पुराण में लिखा है—

इन्द्रद्वीपः कशेरुमान्
ताम्रपर्णी गभस्तिमान् ।
नागद्वीपस्तथा सौम्यो
गान्धर्वो वारुणस्तथा ॥
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः ।
योजनानां सहस्रं वै
द्वीपो यं दक्षिणोत्तरान् ॥

भारतवर्ष के नौ द्वीपों में यह भारत जिसका वर्णन हो रहा है उसे नवम द्वीप कहा गया है। पुराणों में इस नवम द्वीप

[शेष पृष्ठ १२ पर]

गर्मियों की सब्जियां उगाएं

★

हमारे भोजन में सब्जियों का मुख्य स्थान है। आजकल गर्मियों की सब्जियां उगायी जा रही हैं। शहरों में घर की बगिया में साग सब्जी उगायी जा सकती हैं। दूसरी फसलों की तरह सब्जियों के लिए भी सही मात्रा में उर्वरक देना जरूरी है। यहाँ हम गर्मियों की कुछ सब्जियों की कृषि क्रियाओं को और उर्वरक की मात्रा के बारे में बता रहे हैं।

लौकी

गर्मियों की खास सब्जी है लौकी। राष्ट्रीय बीज निगम ने लौकी की पूसा समर प्रोलीफिक लौंग और पूसा प्रोलीफिक राउन्ड की सिफारिश की है। पहली किस्म की बेल में काफी संख्या में फल आते हैं। इसका फल ४० से ५० से०मी० लम्बा और २० से २५ से० मी० व्यास का होता है। इसका रंग हरा और चीकना सा होता है।

दूसरी किस्म भी काफी फल देने वाली होती है। इसके फल गोल १५ से १८ से० मी० व्यास वाले पीले और हरे रंग के होते हैं।

बुआई—ये दोनों किस्में गर्मियों के मौसम और वर्षा में उगायी जाती हैं। गर्मियों में उगायी जाने वाली लौकी की बुआई फरवरी से अप्रैल तक की जाती है बरसात में उगायी जाने वाली फसल की बुआई जून जुलाई में होती है। फी हैक्टेयर लगभग ५ किलो बीज बोना चाहिये। नालियों के बीच ९ मीटर का और पौधों के बीच एक मीटर का फासला रखना चाहिये।

खाद व उर्वरक—खेत तैयार करते समय फी हैक्टेयर ५० गाड़ी गोबर की खाद दी जानी चाहिये। १२५ किलो अमोनियम सल्फेट, ३१२ किलो सुपर फास्फेट और १०० किलो पोटाशियम सल्फेट का मिश्रण खेत की मिट्टी में मिलाएं। फूल निकलने के समय फसल को १२५ किलो अमोनियम सल्फेट दें।

बुआई का तरीका—बुआई नाली के एक तरफ या दोनों तरफ की जाती है। नालियों में पानी भर दिया जाता है और कूँडी में पानी के स्तर से ऊपर बीज बो दिया जाता है। बोती बुआई के लिए बीज को पहले अंकुरित करके फिर क्यारियों में रोपा जाता है। हर जगह २ ३ बीज बोये जाते हैं और पौधे निकलने पर जरूरत के मुताबिक छटाई कर दी जाती है।

सिंचाई—गर्मियों की सब्जियों में ३ ४ दिन के अन्तर से सिंचाई करना जरूरी है। बरसात में वर्षा के हिसाब से सिंचाई करें। खेत में से खर पतवार हटाते रहने चाहिये।

कीट व्याधियां—लौकी को कद्दू के लाल कीड़े और फल मक्खी से बहुत नुकसान पहुंचता है। कद्दू के कीड़े पहली पत्तियों को खाते हैं। इसके बचाव के लिए सुबह के समय 'पोरिस ग्रीन' और राख १ : ८ के अनुपात से या लैडआर्सनेट १ : ३० के अनुपात से पौधों पर छिड़कनी चाहिये। मिट्टी का तेल मिली राख को छिड़कने से भी सफलता मिलती है। सुबह के समय जब कीड़े सुस्त हों उन्हें हाथ से पकड़ कर नष्ट किया जा सकता है।

फल मक्खी से पीड़ित पौधों को शुरू की अवस्था में ही छांटकर नष्ट कर देने से इनका प्रकोप रोका जा सकता है।

कटाई—सब्जी बनाने के लिए लौकी को मुलायम ही काट लेनी चाहिए। अगर फल ठीक समय पर नहीं तोड़े गये तो कड़े हो जाएंगे और उपज पर भी असर पड़ेगा। फी हैक्टेयर १५० से १७५ क्विंटल तक लौकी की उपज मिलती है।

घिया तोरई

दूसरी अच्छी सब्जी है घिया तोरई। यह भी बड़े चाव से खायी जाती है। इसके लिए राष्ट्रीय बीज निगम ने पूसा चिकनी नामक किस्म की सिफारिश की है। इसके फल जल्दी तैयार होते हैं। दूसरी किस्मों की तरह इस किस्म में फूल आने से पहले तने और पत्तियों की बढ़वार ज्यादा नहीं होती। बोने के करीब ४५ दिन बाद लताओं में फूल आते हैं। इसके फल चिकने, गहरे हरे रंग के और बेलन की तरह लम्बे होते हैं।

बुआई—बुआई भी दो मौसमों—गर्मियों और बरसात में होती है। गर्मियों में फरवरी से अप्रैल तक तथा बरसात में जून जुलाई में होती है। बीज ५ किलोग्राम फी हैक्टेयर के हिसाब से बोना चाहिए। कतारों और पौधों के बीच क्रमशः २ और १ मीटर का फासला होना चाहिए। बीज नालियों की एक या दोनों किनारों पर बोये जाते हैं। लौकी की तरह ही नालियों में पानी भर दिया जाता है और बीज के लिए पहले अंकुरित करके पौधों को रोपा जाता है।

खाद व उर्वरक—खेत तैयार करते समय फी हैक्टेयर ५० गाड़ी गोबर की खाद देनी चाहिए। फी हैक्टेयर १२५ किलो० अमोनियम सल्फेट, ३१५ किलो सुपरफास्फेट और १०० किलो पोटाशियम सल्फेट का मिश्रण भी देना चाहिए। फूल आने के समय फी हैक्टेयर १२५ किलो अमोनियम सल्फेट का बुरकाव जरूरी है।

सिंचाई और देखभाल—गर्मियों की फसल में तीसरे या चौथे दिन सिंचाई करनी चाहिए। बरसात के दिनों में जरूरत के मुताबिक सिंचाई करें। पौधे उगते ही निराई करना जरूरी है। समय-समय पर निराई गुड़ाई करते रहना चाहिए।

कीट व्याधियां—लौकी की तरह घिया तोरई की फसल को भी कद्दू के लाल कीड़े और फल मक्खी से नुकसान पहुंचता है। इसके लिए भी वही उपचार करें जो ऊपर लौकी के लिए बताया गया है।

करेला

करेला स्वाद में तो कड़वा होता है, पर बहुत उपयोगी है। इसकी सब्जी को बहुत पसन्द किया जाता है। राष्ट्रीय बीज निगम ने इसके लिए 'कोयम्बटूर लौंग' किस्म की सिफारिश की है।

बुआई—इसकी बुआई मई से जुलाई तक होती है। बीज ५ किलो फी हैक्टेयर के हिसाब से बोना चाहिए। नालियों में १.५ मीटर और कतारों में १ मीटर का फासला रहना चाहिए। बुआई का तरीका लौकी और घिया तोरई की तरह ही है।

खाद और उर्वरक—खेत तैयार करते समय फी हैक्टेयर ५० गाड़ी गोबर की खाद के अलावा १२५ किलो सुपर फास्फेट और १०० किलो सल्फेट आफ पोटाश का मिश्रण बुआई के लिए नाली तैयार करते समय डालना चाहिए। फूल आने के समय १२५ किलो अमोनियम सल्फेट का खड़ी फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई और देखभाल—सिंचाई मौसम पर निर्भर है। वैसे फसल को ८-१० दिन बाद सिंचाई की जरूरत पड़ती है। क्यारियों को विशेषकर शुरू में ही खरपतवारों से साफ कर देना चाहिए। बाद में जल्दी फैलने वाली बेलें खरपतवारों को खत्म कर देती हैं। इस फसल को झाड़ों पर या मचान पर चढ़ाना अच्छा होता है। निराई-गुड़ाई भी करते रहना चाहिए।

कीट व्याधियों की रोकथाम—करेले की फसल को भी कद्दू के लाल कीड़े और फल-मक्खी से नुकसान पहुंचता है। इसके बारे में वही उपचार करें, जो ऊपर बताये गये हैं।

फल तोड़ना—सब्जी के लिये प्रायः फल तब तोड़े जाते हैं जब बीज पकने लगते हैं। यह फसल के आकार और रंग से पता चल जाता है। बीज पकने पर फल पिलपिले हो जाते हैं और उनका रंग बदल जाता है। फी हैक्टेयर १२५ से १५० क्विंटल तक इसकी फसल मिल जाती है।

इसके अलावा इस मौसम में ग्वार, लोबिया, कद्दू आदि भी उगाये जा सकते हैं। इन फसलों में उचित समय पर कृषि क्रियाओं और उचित मात्रा में खाद और उर्वरक देने से अच्छी फसल ली जा सकती है। अच्छी रकम भी कमायी जा सकती है।

—कृषि अनुसंधान समाचार सेवा की ओर से साभार

[illegible]ण्ड और [illegible]र ध

[पृष्ठ ५ का शेष]

प्रत्येक मनुष्य के नाश में अधिक दण्ड बढ़ेगा।" शास्त्रों में कहा गया है—

गुरु वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तं हन्यादेवा विचारयन्॥

पाकिस्तान के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने अपराधियों के अंग भंग करने की परामर्श देकर अंगभंग को दण्ड के स्वरूप के अन्तर्गत लाने का विचार प्रस्तुत किया। जो कुछ भी हो वर्तमान भारतीय कानून में अपराधों से मुख्य सम्बन्धित पुस्तक इण्डियन पैनल कोड में अंगभंग करने की दण्ड व्यवस्था नहीं है। उपरोक्त पुस्तक के अनुसार मृत्युदण्ड" की व्यवस्था है जो केवल सात प्रकार के अपराधियों का सात धाराओं में प्रयोग की जा सकती है। वे अपराध निम्न हैं।

(१) राज्य के विरुद्ध विद्रोह करना या लड़ाई छेड़ना (धारा १२१)

(२) घटित राजक्रान्ति में सहायता देना या भाग लेना (धारा १३२)

(३) किसी ऐसी मुकदमें में झूठी गवाही देना जिसमें एक निर्दोष व्यक्ति फांसी चढ़ा दिया गया हो (धारा १९४)

(४) हत्या (धारा ३०२)

(५) किसी नाबालिग या पागल या नशे में चूर व्यक्ति को अपनी आत्म-हत्या करने मे सहायता देना (धारा ३०५)

(६) डकैती जिसमें किसी की हत्या भी की गई हो (धारा ३९६)

(७) अपने आजन्म कारावास के कार्यकाल में किसी व्यक्ति की जान से मार देने के उद्देश्य या प्रयास में गम्भीर चोट पहुंचाना।" (धारा ३९६)

"उपरोक्त सभी दशाओं में मृत्युदण्ड वांछनीय है क्योंकि किसी न किसी रूप में उपरोक्त अपराधों का करने वाला एक न एक व्यक्ति की मृत्यु के लिए उत्तरदायी होता है। राजद्रोह या क्रांति में मृत्युदण्ड की व्यवस्था परम्परागत है और नीति शास्त्र के अनुकूल है।

मृत्यु-दण्ड या अंगभंग करना एक कड़वी दवा है जिस तरह दवा प्रयोग केवल रोगी के लिए वांछित होता है उसी प्रकार मृत्यु दण्ड भी कुछ विशेष प्रकार के अपराधियो के लिये है सब प्रकार के अपराधियों के लिए नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि मृत्युदण्ड की घोषणा करने से पूर्व अपराध के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त की जानी चाहिए। महर्षि दयानन्द के शब्दों मे जो अपराध करें उसको सदा दण्ड देवे और अनपराधी को कभी दण्ड न देवें। 'यह बात दूसरी है कि हम सब मिलकर ऐसा वातावरण उत्पन्न करें कि प्राण दण्ड या अंगभंग का अवसर कम आवे या न आवे।" लेकिन मृत्युदण्ड या कठोर दण्ड का बहिष्कार सर्वथा हानिकारक है क्योंकि सरल दण्ड अपराधियों को प्रोत्साहन देता है और निबल या साधारण व्यक्तियों के जीवन, सम्पत्ति एवं सम्मान को असुरक्षित सी छोड़ देता है। हमारा कर्तव्य है कि जनता को सदमार्ग की ओर प्रेरित करें ताकि हम से किसी को ऐसा दण्ड सोचने का अवसर न आये। यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम धार्मिक एवं नैतिक संगठनों और सत्संगों के माध्यम से सभी को अपराध रहित जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दें। सरकार का कर्तव्य है कि वह आर्थिक विषमता को दूर करे और नैतिकता का प्रसार करे। जो व्यक्ति इतने पर भी न मानें तो उसे उसके कर्मानुसार दण्ड मिलना ही चाहिए क्योंकि उसे दण्ड देना अपराध को समूल नष्ट करने का प्रयत्नमात्र है।

★

इस देश के भिन्न भिन्न नाम

[पृष्ठ ९ का शेष]

का नाम नहीं दिया गया, परन्तु राजशेखर ने अपनी काव्य मीमांसा में इस नवम द्वीप का नाम कुमारी द्वीप' दिया है। राजशेखर लिखते हैं—'तत्रेदं भारतवर्षस्य च नवमेद। इन्द्रद्वीप" कुमारीद्वीपश्चायं नवम।' कुमारीद्वीप के लिये पुराण में सागरसंवृत' विशेषण आया है जिसका अर्थ है—'समुद्र से घिरा हुआ'। अलबरूनी (११वीं ईस्वी) ने सागरसंवृत' की जगह नागरसंवृत' शब्द का प्रयोग किया है जो सागरसंवृत का ही रूपान्तर है। ऐसा प्रतीत होता है कि ज्यों-ज्यों भारतवर्ष के राजा लोग अपने राज्य का क्षेत्र बढ़ाते गये त्यों त्यों इन्द्र द्वीप, कशेरुमान, ताम्रपर्ण गभस्तिमान् आदि प्रदेशों मे भी उन्होने अपने राज्य का विस्तार कर लिया। इसी को वे चक्रवर्ती राज्य कहते थे, और और इन सम्पूर्ण प्रदेशों को वे भारतवर्ष कहने लगे, और 'भारतवर्ष' शब्द का प्रयोग सिर्फ भारत के लिये सीमित न रहकर विशाल भारत के लिये होने लगा।

★

उनसे कह दो कि किसान भी तैयार हैं

आज के हमारे युद्ध के मोर्चे केवल चीन या पाकिस्तान की सीमाओं पर ही नहीं बने हुए हैं बल्कि हर घर, हर गली, हर खेत, हर कार्यालय, हर कारखाना, सब एक बड़े मोर्चे का एक अंग है। इनमें से कहीं भी कमजोरी रह गयी तो उसका असर युद्ध के निर्णय पर अवश्य पड़ेगा।

पाकिस्तान के साथ हुई हमारी लड़ाई ने यह बात लोगों की समझ में इस बार आ गयी है कि हमने इस बार सही लड़ाई लड़ी है, यानी लगभग ८० प्रतिशत अपने देश के बने हुए सामानों के बल पर हमने अमरीका के अस्त्र-शस्त्रों से लैस पाकिस्तानियों के दांत खट्टे किये हैं। इस सफलता से यह बात लोगों की समझ में आ गयी है कि लड़ाई के मोर्चे सचमुच कारखानों तक फैले हुए हैं और यदि उत्पादन ढंग से हो तो कोई कारण नहीं कि हम मोर्चे पर मजबूती से डटे न रह सकें। मैट बिनानों पाकिस्तान ट्रकों, ईशापुर की राइफलों तथा अपने टोप-बमों से लड़ी गयी इस लड़ाई ने जहां मोर्चे पर लड़ने वाले जवानों की प्रतिष्ठा बढ़ायी है वहीं भारतीय कारखानों की बनी हुई युद्ध-सामग्री की श्रेष्ठता की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। दुनिया के बाजारों में अगर भारतीय सामानों की साख बैठती है तो इससे हमारे देश का भविष्य उज्ज्वल होगा।

ऐसी ही लड़ाई हमें खेतों में भी लड़नी है पेट्रोल या मिट्टी के तेल से बने अन्य सारे सामानों के सम्बन्ध में हमारा देश लगभग अपने पैरों पर खड़ा हो चुका है। यही कारण था कि यहां केवल १५ दिन की लड़ाई में पाकिस्तान की हवाई और यातायात की अन्य सेवाएं लड़खड़ा गयी थीं वहीं अपने देश में स्थिति एकदम सामान्य थी। विदेशी कम्पनियों का वश चलता तो वे इस बीच नखरे करतीं लेकिन वे जानती थीं कि यदि इस बार उन्होंने गड़बड़ी की तो उनका पत्ता ही इस देश से कट जायगा।

लेकिन अन्नोत्पादन के मोर्चे पर हमारी दिक्कतें कम नहीं हो रही हैं। बाहर से मिले अनाज के बल पर हम लम्बी लड़ाई नहीं चला सकते। हम चाहे कितने भी स्वाधीन हों लेकिन यदि अनाज के प्रश्न पर हमको विदेशों के सामने घुटने टेकने पड़ें तो हमें अपने निर्णयों पर पुनः पुनः सोचना होगा। ऐसी स्थिति उत्पन्न हो इससे पहले ही आवश्यकता है कि हम अन्न का मोर्चा शक्ति भर सम्भाल लें। हम यह नहीं कहते कि हमारे देश के किसान आलसी हैं या उनको खेती में कोई मोह नहीं रह गया है। इतने सारे परिवर्तनों के बाद भी खेती हमारे देश का सबसे बड़ा पेशा है और अब भी लोग उसे सबसे उत्तम पेशा मानते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि खेतों से अधिकाधिक अन्न उत्पन्न किया जाय और इसके लिए जो कुछ भी साधन उपलब्ध हों उनकी व्यवस्था के लिये नये उद्योग कायम किये जायें। अच्छी खाद, अच्छे बीज और आधुनिक यन्त्रों के बल पर हम अपने खेतों की उपज बढ़ा सकते हैं और इस प्रकार शत्रु की चुनौती का सामना और अधिक तत्परता और सफलता के साथ कर सकते हैं।

पिछले १८ वर्षों में सिंचाई की अधिकाधिक सुविधाओं के विस्तार के बाद भी अभी हमारे देश का अधिकांश खेती योग्य क्षेत्र जल के लिए आकाश का मुंह जोहता है। उसे हम छोटी सिंचाई योजनाओं से जल्दी से जल्दी सींच सकते हैं। इस कार्य को हमें सबसे अधिक ध्यान से करना होगा। राज्य सरकार ने इस वर्ष तीन लाख कच्चे कुएं खुदवाने का लक्ष्य इसी दृष्टि से रखा है। वैसे ही रासायनिक खादों के अभाव में हमें कम्पोस्ट और हरी खाद के अधिकाधिक उपयोग की बात सोचनी होगी। कुल मिलाकर हमको परम्परा से चले आते तरीकों से संयुक्त करना होगा। और इन तरीकों के लिए किसानों को भी हृदय से तैयार करना होगा। पिछले १८ वर्षों में किसानों के सोचने समझने के ढंग में काफी परिवर्तन आया है और यह इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने इन कार्यों की उपयोगिता समझी है। अब इस विश्वास को कार्य के ईंधन के रूप में प्रयोग में लाना होगा, स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने होंगे और उन तक पहुंचने के स्पष्ट और व्यावहारिक तरीके लोगों को बताने होंगे देर से पूरी होने वाली योजनाओं पर सम्प्रति कम ध्यान देकर हमें अत्यन्त यथार्थवादी और जल्दी फल देने वाले तरीके पकड़ने होंगे।

खाद्यान्नों पर लोगों का काफी जोर है इसलिए यह भी जरूरी है कि लोगों को खाने-पीने की आदतों में सुधार

जिम्मेदारियों की एक नयी भावना

जवानों ने खून दिया, किसान अपना पसीना दें

किसानों को कारखानों और खानों के मजदूरों, खेतिहर मजदूरों, नगरवासियों और फिर देश की रक्षा करनेवाले सैनिकों को खिलाना है। सिर्फ अनाज पैदा करना ही काफी नहीं है। हमें सारी जनता को अनाज देना है। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि अनाज की मुनासिब और सही बांट हो। इस काम में भी किसान सबसे ज्यादा सहायता कर सकते हैं। किसान भाई अपनी जरूरत का अनाज खुशी से अपने पास रखें। लेकिन जो बाकी बचे उसे उन्हें बेचना ही चाहिए। अपने पास रखना देश पर संकट लाना होगा। आपको यह विश्वास दिलाया जा चुका है कि आपकी उपज की मुनासिब कीमत मिलेगी। मैं खास तौर से बड़े किसानों से कहना चाहता हूं, जो अनाज अपने पास रोक रख सकने की कुछ शक्ति रखते हैं कि वे आगे आयें और उनके पास जो भी अधिक अनाज पड़ा है, या आगे भी उनके पास बचे, उसे वे मंडी में ले आयें। संकट की इस घड़ी में यही उनकी सबसे बड़ी देश-सेवा होगी। किसानों का इस समय एक ही नारा होना चाहिए 'ज्यादा पैदा करो और ज्यादा बेचो।' हर गांव में खेती को बढ़ाने का काम तेजी और मजबूती से होना चाहिए। मुझे आशा है, ग्राम-पंचायतें और किसानों की कोआपरेटिव सोसाइटियां इस काम में पूरी तरह से हाथ बटायेंगी। आजादी की लड़ाई में भारत के किसान सदा आगे रहे। मुझे भरोसा है कि आज भी जरूरत की इस घड़ी में वे देश का साथ देंगे।

वक्त बहुत नाजुक है, खतरा अभी टला नहीं है। संकट के समय में बहादुर जवानों ने जो रास्ता दिखाया है, क्या हमारे किसान इससे पीछे रह सकते हैं? जवान अपना खून बहा रहा है, देश के लिए अपनी जान की बाजी लगाये बैठा है। किसान को अपनी मेहनत और अपना पसीना देना है। किसान हमारे देश के प्राण हैं। उन्हें आज लाखों को खाद्य में स्वतन्त्र और मेहनत से खेती में जुट जाना है। उनके सामने एक ही लक्ष्य है, 'अन्न की पैदावार बढ़ाओ।' हम दूसरे देशों पर निर्भर न रहें। हम अपनी आजादी को सजोये रखें। हम पर जो कुछ भी बीते, देश का सम्मान सदा बना रहे। हमें आत्म निर्भर शक्तिशाली देश बनना है और हम बनकर रहेंगे।

उपभोक्ताओं का कर्तव्य

जहां तक दूसरे लोगों का सम्बन्ध है, हमारे लिए जरूरी है कि हम अनाज या और कोई चीज जो कम हो, उसे खरीदकर जमा करने की कोशिश न करें हम सिर्फ उतना ही माल खरीदें जो हमारी तात्कालिक आवश्यकताओं के लिए काफी हो। किसी के पास न हो और किसी के पास कम हो और किसी के पास ज्यादा, यह आज हम कैसे देख और सोच सकते हैं। यदि त्याग करना पड़े तो सबको बराबर का त्याग करना चाहिये। हम लोग थोड़े से संयम से काम लेकर देश की काफी मदद कर सकते हैं।

गृहणियों का कर्तव्य

महिलाओं के कर्तव्य के बारे में भी मैं कुछ कहूंगा। वे आज के संकट के समय में बहुत कुछ सहायता कर सकती हैं। वे खाने में ऐसी चीजें परोसें जो आस-पास के इलाके में ज्यादा पैदा होती हों, पर ज्यादा खाई नहीं जाती हों। इस प्रकार वे घर के लोगों की खूराक की आदतों को बदल सकती हैं। हम अपने भोजन में कुछ गेहूं और कुछ मक्का, जो बाजरा और चना आदि खा सकते हैं। गृहिणी को चाहिये कि वह अनाज की खपत में किफायत करे और इस बात की कोशिश करें कि कुछ भी बेकार न हो: दुर्भाग्य से आजकल के दिनों में भी खाने-पीने की काफी चीजें खराब जाती हैं ऐसा नहीं होना चाहिए। खुशहाल घरों में सब्जियां फल, दूध और मछली आदि ज्यादा खाकर अनाज की की खपत में कमी की जा सकती है। मैं चाहता हूं ऐसे परिवारों में हर हफ्ते कम से कम कुछ बार का खाना बिना अनाज के परोसा जाय। भारत की महिलाओं ने देश की सेवा में सदा योग दिया है। अब अनाज की बचत करें और त्याग में भी देश का नेतृत्व करें।

(स्व० प्रधान मन्त्री के भाषण से संकलित)

किया जाय। फल, तरकारियां, सिंघाड़े, दुग्ध तथा ऐसे अन्य उत्पादों के बल पर हमें खाद्यान्नों की कमी का मुकाबला करना है और जहां तक हो सकता पैसे के लालच से पैदा की जाने वाली फसलों

(शेष पृष्ठ १४ पर)

चीन का हमला होने पर फारमोसा दूसरा मोर्चा खोलेगा

नई दिल्ली से--

फारमोसा के परराष्ट्र उपमन्त्री श्री चैंगलन शेन ने पत्रकारों को बताया कि यदि कम्युनिस्ट चीन ने भारत पर फिर हमला किया तो फारमोसा दूसरा मोर्चा खोलेगा और बड़ी संख्या में कम्युनिस्ट फौजों को पूर्व में उलझा देगा। उन्होंने कहा कि इस समय भी लगभग ६० लाख कम्युनिस्ट फौजें फारमोसा के सामने लगी हुई हैं और इस कारण भारतीय सीमा पर पेकिंग के तानाशाह पूरा दबाव डालने में असमर्थ है।

श्री शेन और फारमोसा के आर्थिक मामलों के मन्त्री श्री के०टी०ली०इकाफे सम्मेलन में भाग लेने दिल्ली आये हैं और कल स्वदेश लौट जायेंगे। दिल्ली में वे खाद्यमन्त्री श्री सुब्रह्मण्यम वाणिज्य मन्त्री श्री मनुभाई शाह और सिंचाई तथा बिजली मन्त्री डा० के० एल० राव से मिले।

श्री शेन ने बताया कि भारत से उन्होंने तीन सूत्री प्रस्ताव रखा है— भारत और फारमोसा में व्यापार बढ़ाया जाय सांस्कृतिक सम्बन्ध कायम किया जाय और तकनीकी सहयोग किया जाय।

उन्होंने कहा—भारत और फारमोसा में कूटनीतिक सम्बन्ध नहीं है, लेकिन फिर भी व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाया जा सकता है। मैंने देखा है कि भारत में फारमोसा के प्रति दिलचस्पी बढ़ रही है। मैं आशा करता हूं कि भारत और फारमोसा के सम्बन्ध लगातार बढ़ेंगे।

एक लाख टन धान का बीज

फारमोसा के आर्थिक मामलों के मन्त्री श्री ली ने खाद्य मन्त्री को एक लाख किलो विशेष किस्म का धान का बीज भेंट किया। फारमोसा के इस धान का भारत में परीक्षण किया जा चुका है और इससे उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है।

श्री ली ने कहा कि भारत और फारमोसा कृषि तथा उद्योगों के क्षेत्र में काफी सहयोग कर सकते हैं और इससे दोनों देशों को लाभ होगा।

भारत में इसी वर्ष राकेटों का निर्माण

नई दिल्ली ६ अप्रैल। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आज राज्य सभा में बताया कि भारत में इस वर्ष के अन्त तक राकेट बनने लग जायेंगे।

उन्होंने श्री गुरमीतसिंह अटवाल को बताया कि प्रति राकेट ४२ हजार से ६६ हजार रु० लागत आयगी। यह लागत राकेटों की संख्या पर, जो हमें अन्तरिक्ष अनुसन्धान कार्यक्रम के लिए चाहिये, निर्भर है।

किसान भी तैयार हैं

(पृष्ठ १३ का शेष)

में कमी लाकर उनकी जगह खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाया जाय। आज जब गेहूं, जौ बाजरे और मक्का के भावों में कोई खास फर्क नहीं रह गया है तब स्वाभाविक है कि गांव का किसान गेहूं अपने लिए रोक ले और अन्य फसलों को बाजार में भेजे, जबकि पहले गेहूं उसके लिए बिक्री का अन्न था और मोटे अन्न वह खाने के लिए घर में रख लेता था। हमें इस प्रवृत्ति से भी लड़ना होगा और लोगों को समझाना होगा कि उनकी बखारों में रखा हुआ अनाज देश के लिए है और उन्हें उचित मूल्य पर आवश्यकता से अधिक अनाज बाहर निकाल देना चाहिए। चीनी के सम्बन्ध में भी इधर गांवों में दृष्टिकोण बदला है। उचित तो यह होता है कि गन्ने के उत्पादन के सम्बन्ध में नया दृष्टिकोण बदला जाता और लोग कुछ दिनों के लिए चीनी के उपभोग पर आवश्यक नियन्त्रण रखते। अमरीका ने जब अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतन्त्रता संग्राम शुरू किया था तो ऐसे कितने ही दबावों के बीच से उसे गुजरना पड़ा था। बिना चीनी, बिना नमक बिना कपड़े के उन लोगों ने टाट लपेट कर और काली रोटियां खाकर लड़ाई जारी रखी और अन्त में इंग्लैंड को उनके सामने झुकना पड़ा। ऐसे ही रूस को क्रान्ति के बाद दुनिया के विरोध के कारण अभावों के बीच वर्षों चलना पड़ा। हमारी स्थिति न तो अमरीका की सी है और न तो क्रान्ति के बाद के रूस की सी है। हमने १८ वर्षों तक इस देश में निर्माण के कितने ही काम किये हैं और खेतों के मोर्चे पर भी हमारी सफलताएं नगण्य नहीं हैं। हम यदि इस समय थोड़ा सा भी परिश्रम कर दें तो उत्पादन और उपभोग के बीच का फर्क खत्म कर सकते हैं। इस फर्क के खत्म होने के माने हैं बाहर से आने वाले अनाज का आना खत्म होना और बाहर का अनाज आने के खत्म होने के माने हैं बाहर से पड़ने वाले दबाव का खत्म होना।

हिन्दुस्तान का किसान सम्भवतः विश्व का सबसे पुराना किसान है। उसने अपनी आंखों के सामने बड़े बड़े साम्राज्य बनते-बिगड़ते देखे हैं लेकिन हल की मूठ पर उसकी पकड़ कभी ढीली नहीं हुई है। हल की मूठ पर किसान की पकड़ के मजबूत रहने का मतलब है देश में उन सभी मूल्यों का बना रहना जिनसे एक देश की आत्मा का निर्माण होता है। किसान केवल फटे पुराने कपड़े पहने गंवार सा लगने वाला आदमी नहीं है बल्कि वह प्रतीक है हजारों वर्षों तक बार बार व्यवहार की कसौटी पर खरे उतरने वाले उन शाश्वत मूल्यों का जिनसे देशों की आत्माएं निर्मित होती हैं।

★

उत्सव

आर्यसमाज लालगंज आजमगढ़ का उत्सव ता० १२।१३।१४ अप्रैल को समारोह पूर्वक मनाया जायगा। -मन्त्री

विज्ञान वार्ता

२० करोड़ वर्ष प्राचीन जीवित जीवाणु

नमक की खदानों में जिज्ञासापूर्ण खोजें

नमक की खदानों में वैज्ञानिकों को ऐसे जीवाणु (बैक्टेरिया) प्राप्त हुए हैं, जो २०करोड़ वर्ष प्राचीन बतलाये जाते हैं। इन जीवाणुओं को यदि नमक के बीचोबीच मे रख दिया जाय तो उनमें पुन जीवन का संचार हो जाता है। प्रथम बार इन जीवाणुओं की खोज जीवन विश्वविद्यालय (जर्मनी) के जैवभूजाती एवं ऋतु चिकित्सकी विभाग के डा० डोम्बोवस्की, एम०डी०, डी०एस०सी०ने की है जबकि वे महाने के स्थलों पर नमक के चश्मों के सम्बन्ध में जांच पड़ताल कर रहे थे।

डा० डाम्बोवस्की ने यह खोज तब की, जब कुछ वर्ष पूर्व वे उत्तरी जर्मनी की पश्चिम चूने की खदानों से उपलब्ध होने वाले नमक का अध्ययन कर रहे थे तब उन्हें इस नई वस्तु का पता चला तो उन्होंने नमक के टुकड़ों में जीवाणुओं को पृथक् किया और एक घोल में डाल दिया। इससे करोड़ों वर्षों से सुषुप्त जीवाणु जीवित हो गया और नमक से मिलने वाले भोजन से उसका पोषण होने लगा। पश्चिम की यह चूने की खदानें २० करोड़ वर्ष प्राचीन बतलाई जाती हैं। डा० साहब के कुछ साथियों का यह अनुमान था कि यह जीवाणु बहुत प्राचीन नहीं हैं। इस पर डा० साहब ने अनुसंधान करके यह सिद्ध कर दिया कि ये जीवाणु दरअसल करोड़ों वर्ष प्राचीन हैं जो नमक के अन्दर सुषुप्त अवस्था में पड़े रहे और मुक्ति मिलते ही ये पुन जीवित हो उठे यह जीवाणु नमक की डलियों के आसपास या ऊपर न होकर उसके बीचोबीच मे पाये जाते हैं।

डा० डोम्बोवस्की ने यह जानने के लिए किन अवस्थाओं मे नमक के अंदर यह जीवाणु कायम रहे, आदर्श प्रक्रिया अपनाई। नमक के घोल मे जीवाणु मिलाकर सुखाया गया तो जीवाणु मर गये। तत्पश्चात नमक के घोल मे और नमक मिलाया गया और इस गाढ़ घोल को क्रमश सुखाया गया तो उसके अंदर के जीवाणु पुन जीवित होने लगे। इससे यह परिणाम निकाला गया कि प्राचीन काल मे समुद्रों के धीरे धीरे सूखने से यह जीवाणु इस नमक में फस गये। एक और परीक्षण से पता चला है कि कई मील नीचे खोदने पर नमक में जीवाणु नहीं मिलते क्योंकि वहा का तापमान १६० डिग्री सेन्टीग्रेड होने से कोई वस्तु जीवित नहीं रह सकती। १००० गज नीचे तक की गहराई में नमक के अन्दर जीवाणु मिलते हैं।

●

अपराधों का पता लगाने के लिए गणनायंत्र

प० जर्मनी के अपराधों के जांच-पड़ताल विभाग के अपराध रजिस्ट्रेशन कार्यालय में २० लाख से अधिक फाइलें हैं। फिंगरप्रिंट डिवीजन में १२ लाख लोगों के १६ लाख अंगुलियों के निशानों के कार्ड हैं। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष फाइलें भी हैं,एक अपराधों के होने वाले स्थानों की, एक नामों की, एक उपनामों की, एक गुप्त सूचनाओं की, एक दस्तावेजों की, एक पहिचान के विशेष निशानों की एक फाइल अपराध के शिकारों की और एक विशेषज्ञों की।

इतनी फाइलों का ढेर इतने मामले, लेकिन अपराधी जांच पड़ताल विभाग के पास कर्मचारियों का अभाव है। इस समस्या के समाधान के लिए गणना यन्त्रों (कम्प्यूटरों) की सहायता ली जाने लगी है, यद्यपि उनका दायरा अभी सीमित है।

यद्यपि विएसबेडन के अपराधों का पता लगाने वालों का कहना है कि इन गणना यन्त्रों के प्रयोग से काफी कार्य किया जा सकता है, लेकिन इसे वे भी स्वीकार करते हैं कि इनकी सेवा का दायरा पुलिस के लिए एक हद तक सीमित है। हमें कभी-कभी अजीब गुप्त संकेतों से काम करना पड़ता है। हमें एक समय काम करना पड़ता है, हमें सोचना पड़ता है। मशीन के लिए एक निश्चित जानकारी चाहिये, जो हमारे काम में सदा उपलब्ध नहीं हो पाती।

फिर भी प० जर्मनी का जांच पड़ताल विभाग किसी भी प्रकार अनुदार नहीं है। उदाहरण के तौर पर विएसबेडन में विभाग के पास एक आधुनिक स्पेक्ट्रम का पता लगाने वाली मशीन है, जो बारूद के निशान की जांच करने के पश्चात ठीक ठीक यह बता देती है कि कितनी दूर से गोली चलाई गई थी। वहां एक विद्युत माइक्रासकोप भी लगा है जो ममयों के छोटे से छोटे अंश का पता भी लगा लेता है।

हस्तलेखन विशेषज्ञ शीघ्र ही यह पता चला लेते हैं किसी काले बाजारिये ने किस प्रकार की बाल पाइंट पेन का प्रयोग अपने पत्र को लिखने मे किया तथा वह किस समय लिखा गया। अपराधी जांच पड़ताल विभाग के १४ विशेषज्ञ आधुनिक रसायनों का पूरा उपयोग करते हैं।

हृदय रोग के कारणों की नई खोज

(मनोवेग भी हृदय-रोग के कारण बन जाते हैं)

(डा० जोहान म थनेर हैम्बग (जर्मनी)

आज की वैज्ञानिक एवं भौतिकवादी दुनिया मे हृदय रोग का प्रसार दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है। अभी तक सामान्य लोगों का यही ख्याल है कि हृदय धमनियों में रक्त की गाठ के बन जाने से हृदय मे आक्सीजन पहुंचना बन्द हो जाता है, जिससे हृदय की गति रुक जाती है और मनुष्य मर जाता है। लेकिन हृदय रोग का यही कारण नहीं है। और भी बहुत से कारण हैं। कई रोगियो को रक्त की गाठ नहीं पड़ती फिर भी उनकी हृदय की गति रुक जाती है। इसके अलावा अत्यधिक काम करने से अपने मनोवेगों को दबाने से, रुचि के अनुकूल काम न मिलने से भी दिल का दौरा पड़ जाता है। हाबी या शौक पूरा न होने पर भी मनुष्य के हृदय पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

मेडिकल क्षेत्र की आम धारणा के अनुसार हृदय रोग का खतरा तब उपस्थित होता है जबकि दो हृदय धमनियों मे से एक अथवा ऐसी धमनी की बड़ी शाखा यकायक थ्राम्बस से एक रक्त की गाठ जो हृदय के बिलकुल पास तक जाती है—अवरुद्ध हो जाती है। इसके कारण से हृदय अथवा उसका भाग यकायक आक्सीजन की सप्लाई से तथा अन्य पौष्टिक तत्वों से वंचित हो जाता है, जिससे हृदय का चलना यकायक बन्द हो जाता है। इस पर कि यह रक्त की गाठ कैसे बन जाती है, काफी मतभेद पाया जाता है। ऐसा ख्याल किया जाता है कि रक्त प्रवाह प्रणाली के किसी भाग में किसी समय कोई डिपाजिट जमा हो जाता है, जो ढीला होकर और रक्त नलिकाओं से प्रवाहित होकर थ्राम्बस का रूप धारण कर लेता है।

म्युनिख के प्रोफेसर डब्ल्यू हास ने अपनी नाजी खोजों मे उक्त सिद्धान्त का खण्डन किया है। प्रो० हास ने मालूम किया कि जिस रक्त की गाठ की बात अक्सर कही जाती है वह कई हृदय रोग के मामलों मे नहीं पाई गई विशेष रूप से उन गम्भीर मामलों मे जो घातक सिद्ध हुए। प्रोफेसर महोदय ने यह बात निश्चित की कि इन मामलों मे हृदय धमनी की आन्तरिक दीवार मे सूजन आ गई या 'ट्यूमरस लम्प' बन गया, जिसने अवरोध का काम किया और अन्तत हृदय के दौरे से रोगी की मृत्यु हो गई।

प्रो० हास के परिणामों की पुष्टि अब मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ही हो गई है। आन्तरिक मेडिसन के विशेषज्ञ हेम्बग के प्रो० ए० जोर ने, जो रोगों के मूल का पता लगाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ भी माने जाते हैं, हृदय रोग के विभिन्न मामलों के मेडिकल इतिहास की पूरी जांच की। हाल ही मे दी गई एक विशेष भेंट में उन्होंने अपना यह दृढ़ विश्वास प्रकट किया कि मानसिक तनाव और संघर्षमय स्थितियां ही हृदयाघात का प्राथमिक कारण स्वीकृत किया जाना चाहिये। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि हृदय रोग में मनोवेग अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

प्रो० जोर के अनुसार काम में रुचि के प्रतिकूल गलत रूप से पड जाना या उससे गलत सम्बन्ध जुट जाने का भी हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कई मामलों मे लोगों का भावनात्मक दृष्टि से कई प्रकार की हाबियों या कलात्मक गतिविधियो से लगाव होता है लेकिन उन्हें ऐसे पेशे मे पड़ने से जिसमे अधिक समय काम मे लगे रहना पड़ता है, कभी समय नहीं मिल पाता कि वे अपने उस कलात्मक व्यक्तित्व को पूरा कर सकें। कई लोग जाने या अनजाने कभी कभी अपने कार्यों को करते हुए अपने भावनात्मक प्रेम या वैवाहिक संघर्ष को छिपाने की कोशिश करते हैं। ऐसे मामलो मे क्षमता से अधिक काम करने के कारण मस्तिष्क पर भारी दबाव पड़ता है। और इससे हृदय धमनियों को क्षति पहुंचती है जिससे अन्तत हृदय पर प्रभाव पड़ता है। (यू पी एस)

●

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
रजीकरण स० एल.-६०

वर्ष २० शक १८८८ वैशाख कृ० ५
(दिनांक १० अप्रैल सन १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L. 60

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष २१९९२ तार "आर्यमित्र"
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

प्रयाग में पंजाबी सूबा नीति का विरोध

★

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में कल सायंकाल आर्यसमाज मन्दिर चौक में स्वामी प्रज्ञानन्द की अध्यक्षता में एक महती सार्वजनिक सभा अखण्ड पंजाब दिवस मनाने के हेतु हुई।

सभा मे निम्न प्रस्ताव श्री दया स्वरूप जी प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा ने प्रस्तुत किया जिसका समर्थन श्री मुकुन्द जी ने किया। 'यह सभा पंजाबी भाषा की आड मे स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माण की अकालियों की साम्प्रदायिक मांग का घोर विरोध करती है, जो मास्टर तारासिंह के वक्तव्यों तथा सन्त फतेहसिंह के सम्वाद दाताओं को दिये गये वक्तव्य में स्पष्ट हो गया है। यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि वह किसी भी दबाव अथवा धमकी मे आकर इस मांग को स्वीकार न करे क्योंकि स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माण में पाकिस्तान और नागालैंड के निर्माण से भी अधिक भयावह उलझनें और स्थितियाँ पैदा हो जायेंगी जिसका समस्त उत्तरदायित्व भारत सरकार पर होगा।

यह सभा कांग्रेस वर्किंग कमेटी के पंजाबी सूबा के निर्माण के निश्चय पर अत्यन्त खेद एवं रोष प्रकट करती है, साथ ही देश के समस्त राष्ट्रवादी एवं देशभक्त तत्वों से आग्रह पूर्वक अनुरोध करती है कि वह इस प्रश्न को पंजाब का स्थानीय प्रश्न न समझ कर समस्त देश का प्रश्न समझें और देश भर में ऐसा वातावरण बनायें कि जिस प्रकार ब्रिटिश सरकार को १९११ में बंग विच्छेद को रद्द करना पड़ा था उसी प्रकार भारत सरकार को भी पंजाब विच्छेद को रद्द करने की घोषणा अविलम्ब करनी पड़े। साथ ही यह सभा पंजाबी भाइयों में भ्रातृत्व की भावना स्थाई रखने के लिये पंजाब सरकार से यह अनुरोध करती है कि भाषा अध्ययन के सम्बन्ध मे प्रत्येक नागरिक को स्वेच्छानुसार गुरुमुखी अथवा देवनागरी लिपि अपनाने की स्वतन्त्रता रहे। यह सभा संयुक्त पंजाब संरक्षण समिति के इस सम्बन्ध मे किये गये प्रयत्नों की सराहना करती है।'

प्रस्ताव के अनुमोदन मे सर्वश्री तीर्थराम कोहली डा० मुरलीधर गुप्त रामगोपाल सड डी० मेसी महेन्द्रकुमार शर्मा भारत राष्ट्रीय दल के पादरी मंगलसिंह सत्यनारायण तिवारी, इ इ बोस एवं प्रभात कुमार एडवोकेट ने भाषण दिया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। सभा मे महिलाओं की संख्या भी पर्याप्त थी।

सभा के प्रारम्भ मे सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवम डा० एन०बी० खरे भूतपूर्व प्रधान हिन्दू महासभा एवं पद्मश्री डा० हरिशङ्कर जी शर्मा के भेजे हुये सन्देश श्री दयास्वरूप जी ने सुनाये जो क्रमश इस प्रकार हैं—

(१) भारत की सुरक्षा के लिये देश की अखण्डता बनाये रखने की आपके प्रयत्न अभिनन्दनीय हैं। किसी भी जाति सम्प्रदाय या भाषा के आधार पर देश की अखण्डता को क्षति पहुंचे ऐसा कोई भी निर्णय देश के लिए महान घातक और अनर्थकारी होगा।

(२) जिस प्रकार मुसलिम साम्प्रदायिकता के आगे पाकिस्तान देकर कांग्रेस ने आत्मसमर्पण किया था अब कांग्रेस ने पंजाबी सूबा को स्वीकार कर सिक्ख साम्प्रदायिकता के आगे आत्म समर्पण कर दिया है।

(३) पंजाब का विभाजन होना अत्यन्त अनुचित असंगत और अनावश्यक है। मैं तो उसकी 'अखण्डता' का सबल समर्थन करता हूं। आपका इस विषय मे बड़ा सराहनीय उद्योग है।

●

श्री गोपालप्रसाद व्यास को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट

●

नई दिल्ली २१ मार्च। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और पत्रकार श्री गोपाल प्रसाद व्यास को आज एक विशेष समारोह में व्यास अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। समारोह की अध्यक्षता और ग्रन्थ समर्पण डा० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी ने किया।

हास्य रस के कवि होने के कारण श्री गोपालप्रसाद व्यास का अभिनन्दन भी सबने हास्य और व्यंग्यमय किया। स्वागत समिति के मन्त्री श्री भवानीप्रसाद मिश्र ने स्वयं कार्यवाही का श्रीगणेश इस ढंग से किया कि उनके बाद बोलने वाले सभी वक्ताओं ने व्यास जी की प्रशस्ति के साथ साथ कुछ मीठी चुटकियां भी लीं।

डा० विजयेन्द्र स्नातक ने जहां व्यास जी को कर्मठ और जीवट वाला बताया वहां यह भी कहा कि वह अनेक संस्थायें खड़ी करते हैं और बन्द भी कर देते हैं। किन्तु डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यास जी की नई नई संस्थायें पैदा करने और उन्हें बन्द करने की प्रवृत्ति को ही उनका सबसे बड़ा गुण बताया। उन्होंने कहा कि मानव कोई बंदरिया नहीं है जो मरे हुए बच्चे को भी छाती से चिपकाए रहे।

श्री रायबहादुर ने कहा कि व्यास जी ने हिन्दी साहित्य की जो सेवायें की हैं उन्हें कोई भुला नहीं सकता। लोकनाथ ने भी उनको अपनी शुभ कामनायें भेंट कीं।

श्री रामधारीसिंह दिनकर और सेठ गोविन्ददास ने इन सभी के साहित्य और पत्रकारिता की चर्चा करते हुए उनकी बहुमुखी प्रतिभा पर प्रकाश डाला।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने भी अपने सन्देश को आशीर्वाद दिया।

[पृष्ठ २ का शेष]

कुछ पौराणिक विद्वान ऐतिहासिक ग्रन्थों के रूप में पुराणों का प्रतिपादन करते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि किसी भी पुराण मे शुद्ध सत्य और क्रमपूर्ण इतिहास उपलब्ध नहीं होता। इस विषय मे निष्पक्ष और प्रख्यात इतिहासकार श्री आर० सी० दत्त ने लिखा है—

राजा महाराजाओं के किसी प्रकार के इतिहास पहले विद्यमान थे जिनको इतिहास पुराण कहते थे। यदि ब्राह्मण ग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ और थे तो वे खोये गये हैं। प्राय यह लोगों की कथाओं में मिले रहे व इनमें बहुत कुछ परिवर्तन हुआ तथा समय समय पर इनके साथ असत्य कथायें मिलाई गईं। प्राय एक सहस्र वर्ष के पश्चात हम अब इनको नवीन पुराणों के रूप मे पाते हैं। क्योंकि यह सिद्ध हो चुका है वे पुराण जो अब विद्यमान हैं पौराणिक समय में बनाये गये हैं तथा मुसलमानों के भारत विजय करने के पश्चात भी बहुधा शताब्दियों मे उनमें परिवर्तन व प्रक्षेप किया गया। (श्री आर० सी० दत्त—हिस्ट्री आफ एन्शियेंट इण्डिया भाग १, पृष्ठ ३०५)।

अत भारत को भावी विनाश से बचाने के लिए भारत को पुराणों से बचाया जाय तभी इसका कल्याण हो सकता है।

ओम्प्रकाश वर्मा रेडियो कलाकार प्रचारार्थ सुलभ

अनेक वर्षों तक पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा मे कार्य करने के बाद अब वहां से मुक्त हो गये हैं। जो भी आर्य समाज उनकी सेवा से लाभ उठाना चाहें निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

—नेशनल शू कम्पनी यमुनानगर (अम्बाला) पंजाब

निर्वाचन—

—आर्यसमाज कोमरी जि० अलीगढ़

प्रधान—स्वामी नौबतसिंह जी, उपप्रधान—मा० केहरीसिंह जी मन्त्री—कु० रमेशचन्द्र जी ठोकर जी एल सी उपमन्त्री—माहबसिंह जी राजपालसिंहजी कोषाध्यक्ष—म० तेजसिंह जी पुस्तका०—स्वामी सेवानन्द जी, निरीक्षक—ब० सुन्दरलाल जी।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए नवजागृति आर्य्यभास्कर प्रेस, ५मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम शास्त्री द्वारा मुद्रित, प्रकाशित

लखनऊ—रविवार वर्ष २७ अंक १८८८, बैशाख कृ० १२ वि० २०२१ दिनांक १७ अप्रैल सन १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् [illegible] स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि यमादित्यासो नयथा सुनीति विरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।

काव्यानुवाद

[illegible] प्रधान नर धर्मधर्मा
हो [illegible] सर्वदा।
होता प्रजा द्वारा प्रकट
सुख सम्पन्न होकर सदा।
शुभ नीति पथ पर [illegible]
हैं चलते विश्व को।
सम्पूर्ण पापों से हटाकर
स्वस्ति हेतु समस्त को॥

[illegible]

आर्यसमाज की दो विभूतियां

महात्मा हंसराज जी

आपने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा मे समर्पित कर दिया। आर्यसमाज के शिक्षा प्रचार की पूर्ति में आपके द्वारा स्थापित डी० ए० वी० शिक्षा सस्थाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

१९ अप्रैल को आपकी १०१वीं जन्म जयन्ती सारे आर्यजगत् मे मनायी जा रही है।

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज आर्यसमाज की अन्यतम विभूति है।

देश मे वेद प्रचार के साथ साथ विदेशो मे वैदिक धर्म प्रचार मे आप विशेष सहयोग देते रहे है।

बर्मा, अफ्रीका, मारीशस के बाद अब ६ अप्रैल को आपने थाइलैण्ड मे वेद प्रचार के लिए प्रस्थान किया है।

समस्त आर्यजगत आपकी सफल यात्रा के लिए शुभ कामना करता है।

वार्षिक ८)
छः माही ५)
विदेश १ पौं०

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ।

सौम्यमूर्ति, परमादरणीय श्रद्धेय डा० हरिशङ्कर जी शर्मा डी० लिट्०

उपकुलपति गु० विश्वविद्यालय वृन्दावन

के

भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' उपाधि से विभूषित होने के शुभ अवसर पर

अभिनन्दन-पत्र

श्रीमदार्य—जयदायित्व, हिन्दी साहित्याकाश कवि, विद्वद्रेण्य, विद्या-प्रवृद्ध, नवरससिद्ध, वयोवृद्ध, काव्य कादम्बिनी वमक, रसज्ञ, साहित्य-पयोनिधि-मन्थित, स्वकार्य बद्ध प्रवित, सहृदयवर्चित, कुलजन परिचित महामहिम यशस्वी, माननीय उपकुलपति महोदय का रामनवमी के पुण्यपर्व पर हम कुलवासी जन सहर्ष सोल्लास स्वागत कर अननुभूत अपूर्व हर्ष अनुभव कर रहे हैं। इस कुल का यह सौभाग्य है कि आप जैसे लब्ध प्रतिष्ठ, सुयोग्य अभिभावक के स्वागत का हमें सुअवसर प्राप्त हुआ। आप नामानुरूप 'हरि' हैं। अपने सत्परामर्श द्वारा कुल' की पालना करने वाले, आप शंकर' हैं। जनता में कुल की प्रगति अभिवृद्धि उपयुक्तता घोषित कर जनता का सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त कराने वाले, आपके वरदहस्त की छत्रछाया में 'कुल' ने ऐसी संकटकालीन परिस्थिति में, अति विषम वेला में अपने आदर्शों पर अविचल आस्था से अडिग रहकर अपना पथ प्रशस्त किया है। आज उन्हीं 'पद्मश्री' विभूति विभूषित पंडित वर—

'स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्'

सूक्ति को सार्थकता प्रदान करने वाले देव दयानन्द के अन्यतम अनुयायी को अपने मध्य पाकर अभिनन्दन करते हुये हम स्वयं को धन्य धन्य मान रहे हैं।

सफल साहित्यकार !

आपने अपनी नितनूतन नवनवोन्मेष शालिनी दैवप्रदत्त प्रतिभा से स्वरचित सद्ग्रन्थ सुमन माला से कविता देवी' का अनुपम शृंगार किया है। आपकी एक एक रचना साहित्य की अमूल्य निधि है। वंश परम्परानुरूप माँ शारदा के वरदपुत्र महाकवि श्री नाथूरामशंकर जी के सुयोग्य उत्तराधिकारी, आपने अपनी प्रतिभा प्रभा से समस्त साहित्य जगत को आलोकित कर आर्य-जगत् एवं हिन्दी साहित्य का मस्तक सदा सर्वदा के लिये उन्नत कर दिया है। आपकी सुसमृद्ध प्रौढ़ वाग्विभूति अनेकानेक शताब्दियों तक हिन्दी उपासकों का पथ प्रदर्शन करेगी तथा हिन्दी प्रेमी, स्वदेश विदेशी साहित्यानुशीलनकारों को प्रेरणा देती रहेगी। पत्रकारिता के क्षेत्र में आपका उठाया हुआ चरण नवीन पीढ़ी के लिये दिग्दर्शक, निर्देशक रहेगा।

निष्काम-मूक-समाजसेवी पुरुषप्रवर !

न केवल साहित्याराधन ही आपके जीवन का पवित्रतम उद्देश्य रहा है अपितु समाज-सेवा द्वारा देश सेवा भी आपका प्रमुख ध्येय रहा है। आपने सामाजिक त्रुटियों का संशोधन केवलमात्र भाषण द्वारा ही न करके, जनता के हृदय पटल पर अक्षुण्ण प्रभाव डालने वाली, समाज का सजीव चित्र अंकित करने वाली 'पिंजरा पोल' तथा 'चिड़िया घर' जैसी रचनाएं भेंट कर सामाजिक भाव जगत में युगान्तर उपस्थित कर दिया है। आपकी 'पाखण्ड-प्रदर्शिनी' रचना समाज संशोधनात्मक आपकी उदात्त भावना की प्रतीक है। आपके जैसा उपदेशात्मक शिक्षा परक शिष्ट हास्य अन्यत्र दुर्लभ है। सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों, अन्धविश्वासों का मूलोच्छेद करने में आपकी रचनाएं अन्यतम हैं।

अनासक्त योगी !

'योग: कर्मसु कौशलम्' उक्ति के सच्चे अनुयायी, स्वाधीनता संग्राम में कार्य

पद्मश्री डा० हरिशंकर जी शर्मा डी० लिट०

करते हुए भी न यशोलिप्सा, न नाम ख्याति की आकांक्षा। आपने न राजाश्रय मुखापेक्षण किया, न राज्य साहाय्य वाञ्छा ही कभी आपको स्वकर्तव्य विमुख कर सकी। जन सेवा जन-कल्याण एवं सत्यादर्श से, गांधी मार्ग से पथभ्रष्ट, सम्मान लोलुप राज्याधिकारियों की भर्त्सना करने में भी आप कभी हिचकिचाए नहीं। आपकी त्याग भावना का प्रत्यक्ष प्रमाण है—उपलब्ध कांग्रेस टिकट का स्वत परित्याग। राजनीतिक कार्यक्षेत्र में भी आपने अपनी ओजस्विनी कविताओं की सिंह गर्जना द्वारा शासनाधिकारियों को चेतावनी दी—सत्यव्रत पथ पर आरूढ़ रहने की। जीवन के घोर अर्थाभाव की संकटापन्न परिस्थिति में भी कोई प्रलोभन आपको पथ च्युत न कर सका।

महा मनीषी प्रबन्ध-पटु उपकुलपति महोदय !

उपकुलपति पद पर प्रतिष्ठित होकर आपने अपने त्रिवर्षीय कार्यकाल में जिस अभिनव प्रबन्धात्मक परिपाटी की आधारशिला स्थापित की वह सर्वथा अभिनन्दनीय है। अनेक कठिनाइयाँ आपके सामने विकराल स्वरूप धारण कर समय-समय पर आती रहीं। परन्तु आप उनके सामने सदा अडिग बने रहे और सफलतापूर्वक निर्वाह किया। विषम से विषम परिस्थितियों में आपने जिस दूरदर्शिता दृढ़ता न्याय सद्भावना का परिचय दिया, वह सर्वथा श्लाघनीय वन्दनीय, अनुकरणीय है प्रेरणादायक है। इतना ही नहीं अन्धकारावृत्त एवं डगमगाते लड़खड़ाते भविष्य का वह सदा सदा के लिए प्रकाशस्तम्भ स्वरूप मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। प्रारम्भिक कार्य काल में अनेक विरोधी तत्वों का सामुख्य करना पड़ा परन्तु—'खद्योतो द्योतते तावत्यावन्नोदयते रवि' के अनुसार वे सब विलुप्त हो गए आपके कार्य नैपुण्यालोक में।

अब आपका पुन त्रिवर्षीय कार्यकाल आरम्भ हुआ है तथा हम स्वागत कर रहे हैं आपका पद्मश्री' शोभित ऋषि कल्प, ज्येष्ठ श्रेष्ठ, महाकवि, साहित्यकार, पत्रकार, माँ सरस्वती के समाराधक, तरुण हृदय सम्माननीय महाभाग का।

समादरणीय-श्रद्धास्पद महानुभाव !

नतमस्तक हो भाव कुसुमाञ्जलि सादर समक्ष समर्पित करते हुए हम समस्त कुलवासी जन, कर्मचारी, ब्रह्मचारीगण प्रार्थना करते हैं मंगलमय प्रभु से कि वह शत सहस्राधिक वर्ष पर्यन्त हमें 'हरिशंकर' की सुखद शीतल छत्र छाया से वंचित न करे, तथा हमें सदैव आपके सान्निध्य के साथ-साथ सत्पथ प्रेरक समुचित निर्देशन प्राप्त होता रहे।

हम हैं आपके—
समस्त कुलवासी जन
गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन
रामनवमी संवत २०२३

आवश्यक सूचना

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा के भूतपूर्व उपदेशक श्री पं० सत्यमित्रजी शास्त्री की सेवायें १ मार्च १९६६ से समाप्त कर दी गई हैं। अतः सभी समाजों से अनुरोध है कि उन्हें किसी भी प्रकार का सभा प्राप्तव्य धन न देवें, अन्यथा सभा उत्तरदायी न होगी।

टेहरी जिले में वैदिक धर्म का प्रचार

आर्यसमाज टेहरी में प्रचारार्थ सभा प्रचारक श्री प्रकाशवीर जी शर्मा को १३ अप्रैल ६६ से नियुक्त किया गया है। आर्य बन्धुओं को प्रचार में विशेष रूप से सहयोग प्रदान करना चाहिये, तथा अन्य स्थानों पर समाज स्थापित कराने का प्रयत्न करना चाहिये।

मेरठ जिले में प्रचार

इस वर्ष जिला उप प्रतिनिधि सभा मेरठ ने जिले की समस्त समाजों में प्रचार कराने की योजना बनाई है। सभा की ओर से उपरोक्त जिला समाजान्तर्गत श्री जयपालसिंह एवं श्री दिनेशचन्द्र जी शर्मा की नियुक्ति कर दी गई है। समाजों के मन्त्री महोदयों से प्रार्थना है कि उपर्युक्त महानुभावों के पहुंचने पर प्रचार की व्यवस्था करें। तथा सन् ६४ तक का सभा प्राप्तव्य धन दशांश, शुद्धकोटि एवं वेदप्रचारार्थ धन प्रदान कर रसीद प्राप्त करलें।

सभा के पुराने कार्यमुक्त उपदेशकों एवं भजनीकों की सेवा में

सभा के खातों में निम्नलिखित पुराने उपदेशक व भजनीकों का धन निकल रहा है। परन्तु सभा कार्यालय में उनका ठीक पता न होने के कारण अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है। अतः इन सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्र सभा कार्यालय से पत्रव्यवहार कर अपना धन प्राप्त करने की कृपा करें।

१—श्री ज्वालाप्रसाद जी
२—श्री गायत्रीदेव जी शर्मा
३—श्री महावीर प्रसाद जी
४—श्री विपिनचन्द्र जी
५—श्री रघुवर दयालु जी
६—श्री रामदेव जी
७—श्री रामनाथ जी

—धर्मदत्त सभामन्त्री

प्रोग्राम मास अप्रैल

श्री रामस्वरूप जी—१५ से १८ फर्रुखाबाद, २४ से २७ रायबरेली, ३० से २ मई शिवपुरी।

श्री धर्मराजसिंह जी—२१ से २६ शाहजहांपुर, कनेठी।

श्री जयपालसिंह जी—२१ से पिपली नायक (रामपुर)

महोपदेशक

डा० विश्वबन्धु शास्त्री—२१ से २७ प्रयाग, २९ से १ मई सूर्यकुण्ड।

श्री बलवीर शास्त्री—१८ से २१ समस्तीपुर, २२ से २५ जोगरी, २८ से ३० सहर्षा। —सच्चिदानन्द शास्त्री

उ० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

उत्सवों एवं विवाह संस्कारों पर आमन्त्रित कीजिए—

धनुर्विद्या का प्रदर्शन करने वाले महानुभाव, सुयोग्य एवं मधुर गायक और उत्साह वर्धक तथा प्रभावशाली व्याख्याता—

आज ही पत्र लिखिए—

प्रचारक

श्री प्रेमचन्द्र जी—लखनऊ
श्री धर्मराजसिंह जी—कांठ
श्री मुख्तारसिंह जी—अलीगढ़
श्री देवपालसिंह जी—वाराणसी
श्री जयपालसिंह जी—अलीगढ़
श्री ओमप्रकाश जी नि:शुल्क
श्री रामकृष्ण शर्मा-धनुर्विद्या प्रदर्शक

महोपदेशक

श्री प० विश्ववर्धन जी वेदालंकार
श्री पं० श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री प० केशवदेव जी शास्त्री
श्री प० रामनारायण जी विद्यार्थी

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्र० सभा, लखनऊ

महात्मा हंसराज जी

(जिनका जन्म दिवस १९ अप्रैल को मनाया जायगा)

महात्मा हंसराज जी आर्यसमाज के एक महान नेता और अखिल भारतीय प्रसिद्धि के शिक्षा शास्त्री थे। उनकी गणना आर्यसमाज और पंजाब के निर्माताओं में की जाती है।

उन्होंने डी०ए०वी० स्कूल को पंजाब के ही नहीं अपितु देश के मूर्धन्य कालेज का रूप दिया जिससे हजारों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके निकले जिनमें से अनेक देश के सार्वजनिक जीवन में चमके और अनेक उच्च सरकारी पदों पर आरूढ़ हुए। डी० ए० वी० कालेज लाहौर की टक्कर का शायद ही अन्य कोई कालेज रहा हो जिसकी शिक्षा का स्तर, विद्यार्थियों की सभ्यता और अनुशासन की भावना सर्वोपरि रह सकी हों। पंजाब और उसके बाहर डी० ए०वी० एवं आर्य स्कूलों तथा कालेजों का जो जाल बिछा उसका प्रमुखतम श्रेय महात्मा हंसराज जी को उनकी प्रबन्ध पटुता, कार्य कुशलता और कर्मठता को प्राप्त है।

उन्होंने डी० ए० वी० कालेज और आर्यसमाज की निस्वार्थ सेवा का व्रत उस समय लिया जबकि वे सहज ही किसी गवर्नमेण्ट कालेज के प्रिंसिपल या उच्च सरकारी पदाधिकारी बन कर वैभव और अधिकार में खेलते परन्तु उन्होंने धन वैभव पर लात मारकर सेवा और त्याग का भव्य उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने अभाव और कष्टों का जीवन स्वेच्छा से अपनाया और उसका दृढ़ता और प्रसन्नता से निर्वाह किया। वे चुपचाप कार्य करने वाले महान् पुरुष थे। कीर्ति उनके पीछे पीछे चलती थी।

डी० ए० वी० आन्दोलन में व्याप्त मिशनरी भावना सर्वत्र ही प्रशंसा का विषय रही है जिस पर महात्मा हंसराज जी की छाप लगी हुई देख पड़ती है।

महात्मा हंसराज जी ने अन्य क्षेत्रों में भी आर्यसमाज की प्रशंसनीय सेवा की। शुद्धि, दलितोद्धार, पीड़ितों की सेवा सहायता और रक्षा की दिशा में भी उन्होंने बड़ा भारी कार्य किया था।

वस्तुतः उनका जीवन हमारे लिए प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करता है जिससे न जाने कितनो के जीवन-दीप जलते और प्रकाशित होते रहेंगे।

—रामगोपाल शालवाले मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में श्री डा० हरिशंकर जी शर्मा का अभिनन्दन

३१-३-६६ को रामनवमी के दिन गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के उपकुलपति माननीय श्री डा० हरिशंकर जी शर्मा डी० लिट्० को भारत सरकार की ओर से 'पद्म श्री' की उपाधि दिये जाने के उपलक्ष में श्री डा० विजयेन्द्र जी स्नातक रीडर दिल्ली विश्व विद्यालय दिल्ली की अध्यक्षता में एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया, जिसमे कुल के प्राय: सभी कार्यकर्ताओं तथा ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त नगरपालिका वृन्दावन के चेयरमैन श्री प० मगनलाल जी शर्मा एव वृन्दावन तथा मथुरा के अन्य प्रतिष्ठित प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता भी उपस्थित थे (स्वागत समारोह की कार्यवाही गुरुकुल विश्वविद्यालय के परिषद् भवन मे सम्पन्न हुई जिसमे श्री डा० हरिशंकर जी शर्मा का हार्दिक अभिनन्दन किया गया) वक्ता महानुभावों में श्री प्रिंसिपल कन्हैयालाल जी भूतपूर्व एम०एल०सी०, श्री पं० मंगलाल जी शर्मा, चेयरमैन श्री चौ० दिगम्बरसिंह जी संसद सदस्य और श्री ठा० चक्रेश्वरसिंह अध्यक्ष जिला परिषद मथुरा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने श्री पं० जी द्वारा की गई साहित्यिक सेवाओं की बड़ी प्रशंसा की और आपका हार्दिक अभिनन्दन किया। श्री पं० जी को पुष्प मालाओं से लाद दिया गया। गुरुकुल की ओर से श्री स्नातक महेशचन्द्र जी ने अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया।

स्वागत समारोह के पश्चात् कुल की ओर से दिये गये प्रीतिभोज में कुल के सभी कार्यकर्ता, ब्रह्मचारी तथा सभी आगन्तुक महानुभावों ने भाग लिया।

—नरदेव स्नातक एम० पी०
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

पं० बिहारीलाल शास्त्री निधि

काव्यतीर्थ प० बिहारीलाल शास्त्री के सार्वजनिक अभिनन्दन (जो ३-४-६६ को बरेली में होने वाला था—किन्तु श्री सभा प्रधान के कार दुर्घटना ग्रस्त हो जाने के कारण स्थगित हो गया) के अवसर पर बदायूं उझानी, दिल्ली, रामपुर, शाहपुर आदि-आदि स्थानों से आने वाले आर्य बन्धुओं ने एक उपयोगी सुझाव रखा। सुझाव यह है कि श्रद्धेय पंडित जी के अभिनन्दन के अवसर पर सभी आर्यसमाजें पंडित जी को यथेष्ठ राशि भेंट करे। वह समस्त राशि 'बिहारीलाल शास्त्री निधि" के नाम से आर्य प्रतिनिधि सभा में जमा कर दी जाये और सभा उसे वेद प्रचार विशेषतः ईसाई प्रचार निरोध में व्यय करे।

यह समस्त राशि उसी समय सभा प्रधान माननीय श्री मदनमोहन वर्मा को जो इस महोत्सव का सभापतित्व करने पधारेंगे—भेंट कर दी जायेगी।

आशा है कि श्री पंडित जी के इष्ट-मित्र सम्बन्धी व आर्यसमाजें इस अवसर पर उदारतापूर्वक इस निधि के लिये धन देकर पंडित जी मे अपनी श्रद्धा को व्यक्त करेंगे।

—चन्द्रनारायण ऐडवोकेट प्रधान
आर्यसमाज बिहारीपुर
संयोजक सार्वजनिक अभिनन्दन
समारोह समिति

★

भारतीयता के आदर्श—

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

[ले०—श्री मदनमोहन जी एडवोकेट मोंठ (झांसी)]

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक अर्थात नव सम्वत्सर से रामजन्म तक नव दिवस विशेष शक्ति, भक्ति, अर्चना, आराधना एवं उपासना के रूप में मनाने की परिपाटी सूर्य कुल कमल दिवाकर, प्रवर वीर लोक हितैषी वेद-मनीषी आर्य संस्कृति आधार सद्गुणा-गार श्रीराम के समुज्वल आदर्श जीवन गाथा को अविस्मरणीय नित नूतन बनाये रखने हेतु ही विशेष समारोह से सवलित प्रतीकमात्र प्रतीत होती है।

मधुश्च माधवश्च वासन्तिका ऋतू (यजु० अ० १३ म० २५) वेद की श्रुति के अनुसार मधु माधव शब्दों के अनुसार ही बसन्त ऋतु के मासों के नाम पड़े हैं कालान्तर में ज्योतिष विद्या विकास एवं विस्तार से चान्द्र गणना प्रचलित होने पर विशेष नक्षत्र वाली पूर्णमासी पर उसी नक्षत्र के अनुरूप ही मासों की संज्ञा परिवर्तित हो गई। चित्रा नक्षत्र युक्ता पौर्णमासी चैत्रीय सा चैत्रीय पौर्णमासी अस्मिन सा चैत्र मासा अर्थात चित्रा नक्षत्र युक्त पौर्णमासी से ही चैत्र संज्ञा हुई इत्यादि।

पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग में क्रमशः देव तथा देवी ईश्वर की संज्ञा होती है जो शक्ति का प्रतीक है। उसी की उपासना अभीष्ट है।

कौशिल्या अजनयद्राम सर्व लक्षण संयुतम भरतोनाम कैकईयाम जज्ञेसत्य-पराक्रमा अथ लक्ष्मण शत्रुघ्नौ सुमित्रा, अजनयत्सुतौ (बाल्मीक रामायण)

कौशिल्या ने दिव्य लक्षणों से युक्त राम को केकई ने सत्य पराक्रमी भरत को तथा सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को उत्पन्न किया। बाल्मीकी प्रामाणिक ग्रन्थ होने से श्रीराम को अवतारों की श्रृंखला में गणना करना भी सत्य नहीं है। श्रीराम के लिए बाल्मीक ने पुरुषोत्तम नरपुंगव आदि संज्ञा ही प्रयुक्त की है।

केवल लोक मर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति स्थापन रखने को निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्ण करके पालन करके प्रातः स्मरणीय श्रीराम ने ही दिखाया था।

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च नमया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रम राज्याभिषेकार्थ बुलाये हुए वन के लिए विदा किए हुए और भवन्त्र के मुखाकार में कुछ भी अन्तर नहीं देखा। स्वकुल दीपक पातु भीष्मवर्धक पितृ निर्देश पालक पुत्र एक पत्नीव्रत प्राण प्रिय भार्यासखा सुख दुख विमोचन मित्र प्रजापालक मर्यादा व्यवस्थापक पुरुष रत्न का एकत्र एकीकृति सविशेष अभिलाषं पावनतम महाराज रामचन्द्र में ही निहित पाया जाता है।

लोक हितार्थ सीता महार्हा निष्कासन आदित्य ब्रह्मचारी लक्ष्मण को मेघनाथ से युद्ध करवाने अवसर करना, रावण का संहार करके विभीषण को ही प्रस्थापित करना इत्यादि अनेक स्थल भगवान राम की सर्वोत्तम मर्यादा के ही तो प्रतीक हैं।

अत आज राष्ट्रोन्नति के उक्त सब प्रत्ययों के अनुरूप ही परस्परिक अनाबंधक वाद विवाद त्याग कर विशुद्ध और पूजा का पुनरुद्धार करें और अपने आदर्श पुरुषों की जन्म तिथि या शिक्षाप्रद प्रकार से मनायें जो सर्वसाधारण के लिए पथदर्शक बने, विशुद्ध रामराज्य की स्थापना हो और जन जन में अनुपम शक्ति शौर्य साहस का सृजन हो जा असुरों का विजेता बनकर भारत की कीर्ति केतु को विश्व में फहराये।

आयुष्ठ हो सान्निध्य हो
नित शुद्ध बुद्ध विराम हो।
जा राम जो आराम हो
अविराम हो अभिराम हो॥

वीर्यम्

वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि

यजु० १९।९

तू वीर्यवान् है, मुझमें वीर्य का आधान कर।

★

जब मनुष्य का जीवन शुद्ध और ईश्वर-परायण होता है, तब तेज की प्राप्ति के बाद वीर्य की प्राप्ति भी उसे होती है। मानो शक्ति के किसी बहुत बड़े स्रोत से मनुष्य का सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। तब वीर्य के प्रभाव से मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार की उत्तम और रचनात्मक शक्तियों का विकास शीघ्रता से होने लगता है। नई नई सफलतायें भी मिलती हैं। शरीर शास्त्री हमें बताते हैं कि भोजन का सार रस है, रस का सार रक्त है और रक्त का सार वीर्य है। मनुष्य जो कुछ खाता है उससे चालीस दिन के पश्चात बहुत थोड़ी सी मात्रा में वीर्य की उत्पत्ति होती है। यह वीर्य मानव जीवन का अर्थात मनुष्य के शरीर विकास और बौद्धिक पोषण का मुख्य आधार है। वीर्य के प्रभाव से ही मनुष्य को निरोग चिर जीवन की प्राप्ति होती है। इस वीर्य के उत्पादन, संरक्षण संवर्धन के लिये ही मानव जीवन को चार आश्रमों अर्थात ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास के कठोर बन्धन में बांधा जाता है। वीर्य का नाश ही मृत्यु है और वीर्य का संरक्षण ही जीवन है। मरणं बिन्दु पातेन, जीवनं बिन्दु धारणात।

तेज के समान ही वीर्य शब्द के भी कई उत्तम तत्व अर्थ हैं। मानव जीवन को आनन्द और उल्लास से परिपूर्ण करने वाला पवित्रता का प्रवाह वीर्य की शक्ति का ही तो चमत्कार है। रोगों और पापों को तो तेज भी दूर कर देता है, और वीर्य भी। परन्तु तेज की प्रचण्डता अत्यन्त दाहक होती है। निर्माण के साथ ही तेज की प्रक्रिया में कुछ विनाश भी होने का डर बना ही रहता है। वीर्य के रूप में परिणत होकर तेज का विनाशक वेग प्रवाह शान्त, स्निग्ध और शीतल एवं सुन्दर रूप धारण कर लेता है। यह एक उन्नत, उच्चतर अवस्था है। खिलाड़ी-क्रीड़ा अर्थात कौतूहल और चपलता के आवेग वीर्य की प्राप्ति होने के साथ ही साथ शान्त हो जाते हैं।

तेजस्वी पुरुष तो दूसरों को पराभूत ही करता है, परन्तु वीर्यवान मनुष्य तो अपने ही जैसे अन्य अनेक श्रेष्ठ वीरों को उत्पन्न करने में भी समर्थ होता है। अभावों का रोना तो वीर्यवान पुरुष कभी रोते ही नहीं। सत्य तो यह है कि कोई अभाव कभी उनके पास फटकता ही नहीं। वीर्य के उत्पादन, संरक्षण संवर्धन और उसके सदुपयोग पर हमें कुछ अधिक ध्यान देना चाहिए। इसके साथ ही साथ अग्नीषोमासना अर्थात् तेज की प्राप्ति का कार्य क्रम भी चलता ही रहे। तेज आता रहे और परिपक्व होकर वीर्य के रूप में परिणत होता रहे।

सकल सृष्टि का रचयिता परमपिता परमात्मा वीर्य का अक्षय भण्डार है। उसकी शरण ग्रहण करने और उससे याचना करने से मनुष्य को वीर्य की प्राप्ति होती है। आओ वीर्यवान जीवन लाभ के लिये इतिहास प्रसिद्ध महान् महापुरुषों के समान ही हम भी ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना के सुनियोजित अनुष्ठान आरम्भ करें। हे सकल सृष्टि के रचयिता परमपिता

(शेष पृष्ठ ११ पर)

गुरुकुल शिक्षा पद्धति भारत की आत्मा के अधिक अनुकूल

—पाटिल

हरिद्वार १० अप्रैल। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के दीक्षान्त समारोह में भाषण करते हुए रेलमन्त्री श्री एस० के० पाटिल ने नवीन स्नातकों के लिए जीवन में सफलता पाने की कामना व्यक्त की।

उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि यहां से प्राप्त ज्ञान का वे अधिकाधिक प्रसार करेंगे।

समारोह की अध्यक्षता महाविद्यालय के कुलपति श्री रामधारीसिंह दिनकर ने की। इस अवसर पर ८ स्नातकों को विद्याभास्कर और १४ स्नातकों को आयुर्वेद भास्कर की उपाधियां दी गयीं।

श्री पाटिल ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति की सराहना की और कहा कि यही पद्धति भारतीय आत्मा के निकटतम है। राज्य सरकारों का कर्तव्य है कि इस प्रकार की संस्थाओं को आर्थिक सहायता देकर और समुचित संरक्षण देकर देश के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनायें।

गुरु शिष्यों के निकटतम सम्बन्धों को अच्छी शिक्षा का आधारभूत सिद्धांत बताते हुए उन्होंने इस दृष्टि से गुरुकुल शिक्षा को अत्यन्त वैज्ञानिक पद्धति बताया।

उन्होंने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा की दूसरी विशेषता है हिन्दी माध्यम से विभिन्न विषयों का अध्यापन।

संस्कृत शिक्षण को महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा कि देश में एकता स्थापित करने की दिशा में यह महत्वपूर्ण साधन बन सकता है।

डा० हरिदत्त ने रेलमन्त्री का प्रारंभ में अभिनन्दन किया।

समारोह में सर्वश्री प्रकाशवीर शास्त्री, रामगोपाल शालवाले आदि महानुभावों ने भी भाग लिया।

विवाह का उद्देश्य

(श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए०, गोरखपुर)

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार उद्देश्य समय, पुनर्विवाह आदि पर अपने विचार प्रकट

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार

किये हैं। विवाह—एक समस्या है? ऐसी समस्या जिस पर जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को विचार करना पड़ता है। एक बार वीनरवु एडूवर्ड से एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि आपने विवाह क्यों नहीं किया? इसके उत्तर में उन्होंने कहा था

'विवाहित जीवन को मैं सदा स्त्री पुरुषों के लिए प्राकृतिक और स्वाभाविक जीवन समझता रहा हूँ। गृहस्थ जीवन ही सर्वोत्कृष्ट जीवन है। अविवाहित रहने से मेरे जीवन का विकास रुक गया और एकाकी बन गया। पुरुष जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग पितृत्व है और मैं जीवनभर इस पितृत्व के पावन गौरव को नहीं समझ सकूंगा।"

सामवेद के गौतम धर्म सूत्र के तृतीय अध्याय के दूसरे सूत्र में बताया गया है कि ब्रह्मचारी, गृहस्थ वैखानस और भिक्षु नाम के चार आश्रम माने हैं। इन सबका अन्तिम स्थान गृहस्थ ही है; क्योंकि अन्य तीन सन्तान नहीं उत्पन्न करते।'

सचमुच गृहस्थाश्रम सारे समाज का आधार है। गृहस्थाश्रम भविष्य का निर्माण करता है। गृहस्थाश्रम समाज की धारणा है। गृहस्थाश्रम की महिमा सब ने गाई है।

'धन्यो गृहस्थाश्रमः'

यह गृहस्थाश्रम धन्य है। लेकिन ऐसी धन्यता सरलता से प्राप्त नहीं होती। यह प्रयत्न साध्य है। कष्ट साध्य है। गृहस्थाश्रम में पति पत्नी के शरीर सुन्दर और नीरोग होने चाहिये। उनके मन भी नीरोग होने चाहिये। पति-पत्नी को एक दूसरे के प्रति निष्ठा से व्यवहार करना चाहिये। गृहस्थाश्रम में जाने की विधि का नाम विवाह है। आइए, हम विवाह शब्द की उत्पत्ति और इसके अर्थ पर विचार करें। 'विवाह' शब्द वह् प्रापणे' धातु से बना है तथा इसका अर्थ है विशेष रूप से जिसमें प्राप्त किया जाय। अर्थात् पुरुष और स्त्री एक दूसरे को एक विशिष्ट भावना के साथ स्वीकार करें। आजकल के मनोवैज्ञानिक विवाह को मनुष्य के विकास में आवश्यक किया मानते हैं। उनका कहना है कि मनुष्य में १४ मूल प्रवृत्तियां हैं। यह मूल प्रवृत्तियां [१] पलायन [२] युयुत्सा [३] निवृत्ति [४] पुत्रकामना [५] शरणागति [६] काम प्रवृत्ति (सेक्स) [७] जिज्ञासा [८] दैन्य [९] आत्म-गौरव [१०] सामूहिकता [११] भोजनान्वेषण [१२] संग्रह वृत्ति [१३] विधायकता और [१४] हास। इनमें से हास की मूल प्रवृत्ति केवल मनुष्यों में पाई जाती है। बिल्ली, बन्दर बैल या मनुष्येतर कोई भी जन्तु कभी हंसता नहीं, रोता अवश्य है। इनमें सबसे अधिक प्रबल मूल प्रवृत्ति काम वासना

सामाजिक समस्याएँ

(सेक्स) ही है प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक शोपेनहार ने लिखा है कि लड़ाइयों का कारण जाति का हेतु गम्भीरता का आकार मजाक का लक्ष्य कामवासना है।" फ्रायड लिखता है—'कामशक्ति ही रूपान्तरित होकर विभिन्न प्रकार की मानसिक अथवा शारीरिक शक्ति का रूप धारण करती है।' इतना तो निर्विवाद है कि काम वासना एक बहुत बड़ी प्रेरक शक्ति है। काम वासना की तृप्ति के लिये ही विवाह आवश्यक है, ऐसा बहुत से पाश्चात्य विद्वान मानते हैं। परन्तु जातियों के इतिहास की खोज करने पर यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति की रक्षा के लिये जिस प्रकार भोजनान्वेषण (फूड सीकिङ्ग इन्सटिंक्ट) आवश्यक है उसी प्रकार जाति की रक्षा के लिए काम प्रवृत्ति (सेक्स) जरूरी है।

डब्ल्यू ये बुड्होस नामक विद्वान् ने ग्रीस में आदर्श नागरिक जो राज्य और जाति के लिये उपयोगी हों, ऐसी सन्तानोत्पत्ति को विवाह का उद्देश्य समझा जाता था, लिखा है—

ईरान में भी गृहस्थ जीवन को बड़ा उच्च आसन दिया गया था। जोरोअस्ट्रियन पारसी विचार के लिये कहता है—

The second Happiest place in the world is that in which a righteous man sets up his house hold

अर्थात् संसार में पारिवारिक जीवन की स्थापना अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। धनवान पारसी अपनी धर्म मत का कुछ भाग गरीबों के विवाहों के लिये अर्पण कर देते हैं इसी उद्देश्य के लिए बम्बई में पारसियों की एक पंचायत भी है।

यहूदियों ने भी विवाह को जीवन का एक अंग माना है। जो विवाह न करे उसे वह मनुष्य ही नहीं समझते, बिना विवाह के वे आत्मायें जो इस मनुष्य लोक के लिये बनाई गई हैं जन्म नहीं लेंगी।

विवाह के प्राचीन उद्देश्यों में रोमन जाति का उद्देश्य इसमें उत्तम प्रतीत होता है डब्ल्यू वार्ड फाउलर ने निम्न शब्दों द्वारा अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है 'जाति और धर्म की सेवक सन्तान पैदा करना ही रोमन विवाह का उद्देश्य समझा जाता था। आजकल की भांति प्रेमासक्ति का वहाँ कोई स्थान न था।"

अरब से फैलने वाले मुसलमानी मत में भी सन्तानवृद्धि ही विवाह का उद्देश्य समझा गया है।

आर्य धर्म में भी विवाह का उद्देश्य सन्तान वृद्धि माना गया है। परन्तु उसमें एक विशेषता यह है कि वह केवल सन्तानोत्पत्ति को ही विवाह का उद्देश्य नहीं कहते अपितु उत्तम सन्तानोत्पत्ति' को उद्देश्य बतलाते हैं। मध्यकाल में जिस समय कालिदास हुए हैं यही भाव आर्य जाति के सामने था। रघुवंश में कालिदास ने लिखा है —

स्थित्यै दण्डयतो दण्ड्यान परिणेतु. प्रसूतये। अप्यर्थ कामौ तस्यास्तां धर्म एव मनीषिण.॥

अर्थात् राजा दिलीप का काम भी धर्म के मार्ग से अलग नहीं था। उसने धर्म से सन्तान उत्पन्न करने के लिए ही विवाह किया था।

वैदिक संस्कृति में धर्म अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ माने गये हैं। ये चार वस्तुएं ही संसार में ऐसी हैं जिसे मनुष्य को अपने प्रयत्न से प्राप्त करना चाहिए। पुरुषार्थ का अर्थ है वह वस्तु जिसे मनुष्य को अपने प्रयत्नों से प्राप्त करना होता है। स्वभाव से ही अर्थ और काम का त्याग नहीं। प्रयत्न नहीं समझता। यहां अर्थ भी एक पुरुषार्थ है द्रव्य संग्रह त्याज्य नहीं प्रयत्नों के द्वारा द्रव्य प्राप्त कीजिए सर्वास्त कोइद सम्पत्ति का है अतः काम उप-भोग भी त्याज्य नहीं सर्वास्त पवित्र है। काम भी पवित्र है मनुष्य को अर्थ और काम प्राप्त करना चाहिए। परन्तु अर्थ और काम के प्रारम्भ में धर्म है और अन्त में मोक्ष। मनुष्य का प्रयत्न मोक्ष के लिए है। मोक्ष का अर्थ है स्वतन्त्रता, आनन्द। मोक्ष का अर्थ है परमसुख केवल शान्ति। ऐसी स्थिति में विचारणा यह है कि क्या काम के सेवन से मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है? राजा ययाति के विषय में कहा जाता है कि उसने बहुत अधिक भोग भोगा और अन्त में उसने परिणाम निकाला—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।

यदि कहीं तक काम का उपभोग किया जाय तो भी काम शान्त नहीं होता। अग्नि में आहुति डालने से वह बुझती तो नहीं किन्तु अधिक अधिक प्रज्वलित ही होती है।

विवाह का उद्देश्य संयमहीन भोग बनाता है आज विवाह केवल धर्म रहित काम के लिए हो रहा है। इसके लिए मदन-बन्दी और लूप का प्रयोग किया जा रहा है। सम्भव है इससे जन संख्या वृद्धि में कुछ कमी आ जाय परन्तु यह निर्विवाद है कि जीवन अधिक संकटमय और दुःखी होगा इसलिए इस काम को नियन्त्रित करने के लिये धर्म का बन्धन भारतीय जीवन में लगा दिया था। सन्त तुकाराम के शब्दों में विधि से सेवन। धर्म का बन्धन अर्थात् यदि विषयों का सेवन विधि पूर्वक किया जाय तो वह धर्महीन नहीं।

इस धार्मिक भावना को उत्पन्न करने के लिये सन्तानोत्पत्ति को दूसरे शब्द में ऋण माना गया है। मनुष्य पर तीन बड़े ऋण हैं ऋषि ऋण देव ऋण, पितृ ऋण। तैत्तरीय सं० ६।३।१०।५ में आया है —

जायमानो ह्वै ब्राह्मणस्त्रिभि ऋणैः ऋणवान जायते। ब्रह्मचर्येण ऋषिभ्यो, यज्ञेन देवेभ्य, प्रजया पितृभ्य इति।

अर्थात मनुष्य तीन ऋणों से ऋणी होकर उत्पन्न होता है और वह ब्रह्मचर्य द्वारा ऋषि ऋण से यज्ञ द्वारा देव ऋण से और सन्तान द्वारा पितृ ऋण से मुक्त हो सकता है। मनु भगवान ने इसलिए कहा है —

अधीत्य विधिवद्वेदान् पुत्रांश्चो-

[शेष पृष्ठ १२ पर]

इस देश के भिन्न-भिन्न नाम

[ले०—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार]

[लेखक ने अपने लेख के विभिन्न नामों का ऐतिहासिक मूल्यांकन करने का यत्न किया है। इस अनुसन्धानात्मक लेख के बहुत से विचार विचारणीय हैं। इस, सम्बन्ध में अन्य विचारों का भी हम आदर करेंगे। लेखक के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। —सम्पादक]

(गतांक से आगे)

५—हिन्दुस्तान

(क) पूर्व मध्य युग में आर्यावर्त तथा भारतवर्ष नाम लुप्त हो गये—हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक का इस से दूर-दूर तक भी जब तक यह देश एक शासन के अधीन रहा तब तक इसका नाम 'भारतवर्ष' रहा परन्तु पूर्व मध्य-युग का ऐसा समय आया जब देश का शासन छिन्न भिन्न हो गया, यह देश खंड-खंड हो गया, यहां वहां जगह-जगह भिन्न-भिन्न राज्य स्थापित हो गये। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय इस सम्पूर्ण देश का नाम कुछ न रहा। भिन्न भिन्न राजा थे, वे आपस में लड़ते थे, एक दूसरे पर विजय पाने का प्रयत्न करते थे जिसका जितना राज्य था उसने राज्य का ही नाम लिया जाता था।

ईसा से छठीं शताब्दी पूर्व के समय से भारत की एकता नष्ट होनी प्रारम्भ हो गयी थी। बौद्ध साहित्य के अध्ययन से प्रतीत होता है छठी शताब्दी ई० पू० के समय इस देश में सोलह महाजनपद बन चुके थे, एक तरह से १६ भिन्न भिन्न राज्य उठ खड़े हुए थे जो एक दूसरे पर विजय पाने के लिए उत्सुक रहते थे। इन महाजनपदों के नाम थे—अंग मगध, काशी कोशल वृजि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पंचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवन्ति, गान्धार और कम्बोज। इनमें से वृजि, मल्ल और शूरसेन इन तीन में गणतन्त्र राज्य था और शेष १३ में राजतन्त्र। इन राजतन्त्र राज्यों में मगध का राज्य सबसे प्रबल था। मगध के सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य तथा उसके अमात्य आचार्य चाणक्य के समय ३२१ ई० पू० के लगभग सिकन्दर के प्रतिनिधि सैल्यूकस ने इस देश पर आक्रमण किया, उस समय इस देश की प्रधान राज शक्ति मगध की ही थी, उस समय विदेशी आक्रमण के कारण भिन्न-भिन्न राज्यों में अपनी रक्षा की भावना के कारण एकता उत्पन्न हुई देश एकता के सूत्र में बंधा, परन्तु उस एकता के समय 'आर्यावर्त' या 'भारतवर्ष' जैसे किसी नाम का पुनरुज्जीवन नहीं हुआ, उस समय चन्द्रगुप्त का जो राज्य था वह मगध राज्य कहलाया, परन्तु आर्यावर्त या भारतवर्ष आदि शब्दों का तत्कालीन साहित्य में कहीं उल्लेख नहीं हुआ।

इस देश के इतिहास के पूर्व मध्य-युग में सम्पूर्ण देश का कोई एक नाम नहीं था। कुछ समय के लिए चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक के समय देश में प्रशासनिक एकता का सूत्रपात हुआ परन्तु उस समय आर्यावर्त या भारतवर्ष की जगह मगध के सम्राट् का उल्लेख होता रहा, मगध-राज्य का उल्लेख होता रहा, इस देश के प्राचीन नाम का उल्लेख इसलिए नहीं होता रहा क्योंकि उस समय सम्पूर्ण देश अनेक राज्यों में विभक्त था और जो राज्य सब पर प्रबल हो गया था उसी राज्य का उल्लेख हो सकता था।

मगध के साम्राज्य के बाद फिर यह देश छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। मगध का राज्य भी क्षीण हो गया। दूसरी सदी ई० पू० में यवन, शक, हूण और कुषाण जातियों ने इस देश पर आक्रमण करने शुरू कर दिये। इस समय देश की राजनैतिक एकता सर्वथा क्षीण हो गई, जब देश को एक सूत्र में बांध देने वाली कोई शक्ति न रही तब देश का एक नाम कहां रहता?

राजनैतिक तथा प्रशासनिक एकता के न रहने पर भी इस समय धार्मिक तथा सांस्कृतिक एकता देश के एक कोने से दूसरे कोने तक बनी हुई थी। देश का नाम न आर्यावर्त रहा था, न भारतवर्ष रहा था, परन्तु बौद्ध ग्रन्थों में जीवन के मार्ग को 'अष्टांगिक आर्य मार्ग' तथा धार्मिक आचार को 'चत्वारि आर्य सत्यानि' कहा जाता था, वैदिक युग के 'आर्य' शब्द की, जो इस देश की संस्कृति का सूचक था, ध्वनि अब भी यहां गूंज रही थी। आश्चर्य इसी बात का है कि सम्पूर्ण देश के लिये इस समय किसी एक शब्द का प्रयोग नहीं हो रहा था। आचार्य चाणक्य के अर्थशास्त्र में भी जो चन्द्रगुप्त मौर्य के समय लिखा गया था इस देश को 'चक्रवर्ती क्षेत्र' तो कहा गया है, किसी नाम विशेष से स्मरण नहीं किया गया। वहां लिखा है—

'देशः पृथिवी। तस्यां हिमवत्समुद्रान्तरमुदीचीनं योजन सहस्र परिमाणमतिर्यक् चक्रवर्तिक्षेत्रम्। ९-१।

अर्थात् वह भूमि जो उत्तर से दक्षिण की तरफ, हिमालय से समुद्र की तरफ फैली हुई है वह 'चक्रवर्तिक्षेत्र' है।

अशोक के चौदह शिलालेख पेशावर में, देहरादून में, बम्बई में, उड़ीसा में, आन्ध्र प्रदेश में सब जगह मिले हैं परन्तु किसी शिलालेख में इस सम्पूर्ण देश के लिये आर्यावर्त या भारतवर्ष शब्द का उल्लेख नहीं मिलता क्योंकि अशोक की गति विधि राजनैतिक न रह कर सांस्कृतिक हो गई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में भारत की जो राजनैतिक तथा सांस्कृतिक एकता उत्पन्न हो गई थी उन दोनों में से इस समय तक राजनैतिक एकता नष्ट हो चुकी थी या होती जा रही थी, केवल सांस्कृतिक एकता ही अब अवशिष्ट रह गई थी। इसीलिए राजनैतिक एकता का सूचक सम्पूर्ण देश के लिये प्रयुक्त होने वाला कोई एक शब्द जीवित नहीं रहा था, सांस्कृतिक एकता का सूचक 'आर्य' शब्द बौद्ध तथा संस्कृत साहित्य में अभी जीवित था।

(ख) मध्य युग में मुसलमानों ने इस देश को 'हिन्दुस्तान' का नाम दिया—मगध साम्राज्य के बाद फिर भारत की राजनैतिक एकता धीरे-धीरे क्षीण होती गई और १२वीं शताब्दी के अन्त तक ऐसा समय भी आ गया जब इस देश में मुसलमान आक्रान्ताओं का राज्य स्थापित हो गया। यह सम्पूर्ण काल इस देश के इतिहास का मध्ययुग है।

वैसे तो मुसलमानों का इस देश पर पहला हमला ७१२ ईस्वी में मुहम्मद बिन बिनकासिम ने किया, परन्तु वह सिन्ध क्षेत्र पर ही अपने राज्य को स्थापित कर सका। मुसलमानों का नियमित शासन इस देश में १२वीं शताब्दी में स्थापित हुआ। जिस समय इस देश में मुसलमान आये उस समय चन्द्रगुप्त मौर्य और आचार्य चाणक्य के समय का वह देश जो हिन्दूकुश पर्वतमाला के पार बाल्हीक देश तक फैला गया था नष्ट हो चुका था। देश में अनेक राजवंश उठ खड़े हुए थे, ये आपस में लड़ा करते थे। दसवीं शताब्दी में इस देश के उत्तर में पाल, गुर्जर-प्रतिहार, कार्कोटक राजवंश राज करते थे, दक्षिण में राष्ट्रकूट, पल्लव, गंग, चोल, चालुक्य राज्य करते थे। यह दशा अनेक सदियों तक बनी रही इसलिये जब मुसलमानों ने इस देश पर आक्रमण किया तब राजनैतिक एकता न होने के कारण उ होने सब राजाओं को परास्त कर दिया और १२वीं शताब्दी से मुसलमानों के इस देश में पांव स्थिर तौर पर जमने लगे। हम पहले कह चुके हैं कि पूर्व मध्य तथा मध्य युग में सारा देश भिन्न भिन्न राज्यों तथा राजवंशों में बंटा हुआ था, इसलिये इस समूचे देश का जब कोई एक नाम नहीं रहा था। समूचे देश का नाम तो तब होता जब समूचे देश की राजनैतिक इकाई होती मुसलमान जब आये तब उन्होंने भिन्न भिन्न राज्यों तथा राजवंशों को खत्म कर सम्पूर्ण देश को एक राजनैतिक इकाई में बांध दिया। जिन प्रदेशों से मुसलमान आये थे वहां इस देश को 'हिन्दुस्तान' कहा जाता था, इसलिये जब वे यहां आकर बस गये तब उन्होंने इस देश को 'हिन्दुस्तान' कहना शुरू किया। उन्हें सम्पूर्ण देश को एक नाम देने की आवश्यकता इसलिये अनुभव हुई क्योंकि उनके शासन में आकर देश में राजनैतिक एकसूत्रता उत्पन्न हो गई जिसका अब तक सदियों से अभाव था।

(ग) हिन्दुस्तान' शब्द की उत्पत्ति—यह तो स्पष्ट है कि 'हिन्दुस्तान' शब्द इस देश का विदेशियों का दिया हुआ नाम है, इस देश के रहने वाले तो प्राचीन काल में इसे 'आर्यावर्त' तथा भारतवर्ष कहते थे, पूर्व मध्ययुग में यहां के निवासी इस देश के खण्ड खण्ड हो जाने के कारण इस समूचे देश के लिये किसी एक शब्द का प्रयोग ही नहीं करते थे। पहले-पहल मुसलमानों ने इसे 'हिन्दुस्तान' क्यों कहा? कई लोगों का कहना है कि फारसी भाषा में 'हिन्दु' शब्द का अर्थ चोर, डाकू काला है, और इसी अर्थ में मुसलमानों ने यह नाम इस देश के वासियों को दिया। असल बात यह है कि फारसी लुगत (डिक्शनरी) में 'हिन्दू' का अर्थ चोर, काला आदि अवश्य है, परन्तु मूलरूप में इस शब्द का यह अर्थ नहीं है।

'हिन्दू' शब्द 'सिन्धु' का अपभ्रंश है। फारसी भाषा में 'स' के स्थान में 'ह' हो जाता है। उदाहरणार्थ फारसी 'असुर' के लिए 'अहुर' शब्द का प्रयोग होता है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से 'स' का 'ह' उच्चारण करना कोई नई बात नहीं है 'सप्ताह' की जगह 'हफ्ता' इस नियम का उदाहरण है। गुजराती भाषा में 'ससुर' को 'हहुर' बोला जाता है, 'होता' कहते हैं। अगर 'हिन्दू' शब्द 'सिन्धु' शब्द का अपभ्रंश है, तब यह तो स्वतः सिद्ध है कि यह भौगोलिक शब्द है, एक भूखण्ड का सूचक है किसी धर्म या सम्प्रदाय का सूचक नहीं है, और न इसका मूल अर्थ चोर, डाकू, काला आदि है।

ऐसी अवस्था में दो प्रश्न उठ खड़े होते हैं। पहला प्रश्न तो यह कि अगर 'हिन्दू' शब्द किसी धर्म, सम्प्रदाय या जाति विशेष का सूचक नहीं है, तो फारसी लुगत में इसका अर्थ चोर, डाकू, काला आदमी अब क्यों है, दूसरा प्रश्न

यह कि अगर 'हिन्दु' शब्द 'सिन्धु' का अपभ्रंश है तो क्या भारतीय या अन्य किसी देश के साहित्य में 'सिन्धु' नाम का कोई देश था, या 'सिन्धु' शब्द सिर्फ नदी के लिये ही व्यवहृत होता था, किसी देश—विशेष के लिए व्यवहृत नहीं होता था।

(च) फारसी लुगत में 'हिन्दु' का अर्थ चोर आदि क्यों है—जो लोग 'हिन्दु' शब्द का विरोध करते हैं उनका कहना है कि इस शब्द का फारसी शब्दकोश में अर्थ चोर, काला डाकू लुटेरा आदि है इसलिए इस शब्द को हमारे लिए ग्रहण करना उचित नहीं है। दूसरे पक्ष के लोग कहते हैं कि इस शब्द का मूल अर्थ चोर आदि नहीं है वह एक भौगोलिक शब्द है, इसलिए इस शब्द को अपनाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। प्रश्न यह है कि क्या कारण है कि 'हिन्दु' शब्द जो 'सिन्धु' का अपभ्रंश होने के कारण सिन्ध प्रदेश का सूचक था, उसका अर्थ फारसी भाषा में चोर लुटेरा हो गया।

हमें यह ध्यान में रखना होगा कि शब्दों के अर्थ समयानुसार बदलते रहते हैं। 'देवानां प्रियः' का अर्थ अशोक के शिलालेखों में देवताओं का प्यारा है, परन्तु क्योंकि बौद्धों तथा भारत के अन्य मतों में पारस्परिक कलह उत्पन्न हो गया इसलिये सिद्धान्त कौमुदी में 'देवानां प्रियः' का अर्थ देवताओं के प्यारे के स्थान में 'मूर्ख' हो गया। कोई समय था जब आर्यों की दो शाखाएं हो गई थीं। 'रिग्वेदिक इण्डिया' के लेखक श्री दास का कथन है कि आर्यों की मूल शाखा सिन्धु प्रदेश में रहती थी, इन्हीं आर्यों की एक दूसरी शाखा फारस देश में जा बसी। डा० हाग आदि पाश्चात्य लेखकों का जो कथन है कि आर्य किसी अन्य प्रदेश से आते हुए पहले फारस में आ बसे, और फारस में इनकी दो शाखायें हो गई जिनमें से एक तो फारस में ही बसी रही, दूसरी सिन्ध नदी पार आ बसी। दोनों प्रकार के लेखकों का कथन है कि आर्यों की ये दोनों शाखाएं पहले तो प्रेम से रहती थीं, परन्तु कालान्तर में इनमें झगड़ा उठ खड़ा हुआ। पहले इनके देवी देवता एक ही थे, परन्तु झगड़े के बाद इनके देवी देवता भी एक दूसरे से उलट गये। भारत में आ बसने वाले आर्यों का 'इन्द्र' तो देवता बना रहा, परन्तु फारस में रह जाने वाले आर्यों में वह इन्द्र एक राक्षस माना जाने लगा। भारतीय आर्यों में राक्षस के लिए असुर शब्द था, पारसी आर्यों में 'अहुर' शब्द परमेश्वर के लिये प्रयुक्त होने लगा। सातवीं शताब्दी में फारस में इस्लाम ने प्रवेश किया। पारसी तथा सिन्धु प्रदेश के आर्यों में जो कलह था उसका यह परिणाम हुआ कि पारसी लोग जब मुसलमान हो गये, तब वे मुसलमान भी सिन्धु प्रदेश में बसने वाले आर्यों को अपशब्दों से स्मरण करने लगे। अब तक पारसी लोग सिन्ध पार रहने वाले आर्यों को 'सिन्धु' या 'हिन्दु' कहते थे, अब ये पारसी मुसलमान हो जाने के बाद भी उन्हें 'हिन्दु' कहते रहे, और क्योंकि पारसियों और सिन्धु प्रदेश के आर्यों में झगड़ा चला आता था, इसलिये इन पारसी मुसलमानों के शब्दकोष में हिन्दू का अर्थ चोर लुटेरा लिखा जाने लगा, ठीक उस तरह जैसे 'देवानां प्रियः' का अर्थ संस्कृत में मूर्ख समझा जाने लगा। यह ध्यान रखने की बात है कि पारसियों के धर्म ग्रन्थ जिन्दावस्था में या उसके बाद की पहलवी भाषा में 'हिन्दु' शब्द का अर्थ कहीं चोर डाकू आदि नहीं है, पारसियों के प्राचीन ग्रन्थों में 'हिन्दु' शब्द का जैसा हम आगे देखेंगे, भौगोलिक अर्थों में ही प्रयोग किया गया है।

(छ) प्राचीन फारसी तथा प्राचीन भारतीय साहित्य तथा दोनों साहित्य में 'सिन्धु' या 'हिन्दु' का अर्थ चोर न होकर 'सिन्धु' नाम का देश था—जो लोग 'सिन्धु तथा 'हिन्दु' नाम पर आपत्ति करते हैं वे कहा करते हैं कि इस बात का क्या प्रमाण है कि 'सिन्धु' नाम का कोई प्रदेश था। 'सिन्धु' नाम की नदी की बात तो वे मान लेते हैं, परन्तु भारतीयों ने कभी 'सिन्धु' नाम किसी प्रदेश के लिये प्रयुक्त किया हो—इस विषय में वे सन्देह प्रकट करते हैं।

फारस तथा भारत दोनों के प्राचीन साहित्य के अध्ययन से प्रतीत होता है कि फारसी-साहित्य तथा भारतीय साहित्य दोनों में 'सिन्धु' अर्थात् 'हिन्दु' शब्द चोर काला डाकू आदि अर्थों में प्रयुक्त न होकर सिन्धु प्रदेश के लिये प्रयुक्त होता था। पहले हम प्राचीन फारसी साहित्य, फिर प्राचीन साहित्य तथा तदनन्तर दोनों साहित्य में इस शब्द की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करेंगे।

(१) प्राचीन फारसी साहित्य में 'सिन्धु' शब्द—फारसी साहित्य का एक प्राचीन ग्रन्थ है—वेन्दीदाद। इसके अध्यायों को फारगार्द कहते हैं। वेन्दीदाद के प्रथम फारगार्द के १९ वें खण्ड में लिखा है।

अहुर्मज्द (पारसियों का परमेश्वर) ने जरथुश्त्र (पारसियों के प्रथम पैगम्बर) को कहा—हे जरथुश्त्र। मैंने एक सुन्दर स्थान उत्पन्न किया जहां पहले कोई निवास नहीं कर सकता था। अगर मैं उसका निर्माण न करता, तो सारी सृष्टि 'आर्यन वीज' में उमड़ पड़ती क्योंकि वहीं उस समय पृथ्वी का स्वर्ग था। उस स्थान पर शरद के १० तथा ग्रीष्म के २ मास होते थे। उसके बाद मैंने मानव के निवास के लिये एक दूसरे स्थान का निर्माण किया जिसका नाम 'सौ' था। फिर तीसरा—मोरु, फिर चौथा—बाखधी (बैक्टोरिया), फिर पांचवां—निसाई, फिर छठा—हरोयू (हिरात), फिर सातवां—वेकरेत, फिर आठवां—उर्वा [काबुल], फिर नौवां—खनेन्त (कन्धार], फिर दसवां—हरख्वैती फिर ग्यारहवां—हैतुमत [हिलमन्द] फिर बारहवां—रघ, फिर तेरहवां—चखर, फिर चौदहवां—वरेन, फिर पन्द्रहवां—'हप्तहिन्दु', फिर सोलहवां वह स्थान था जहां बिना किसी शासक की सुरक्षा के लोग समुद्रों के पास रहते हैं।

इस सारे प्रकरण में सृष्ट्युत्पत्ति का वर्णन करते हुए लिखा है कि अहुर्मज्द ने सृष्टि की उत्पत्ति के सिलसिले में १५ वीं सृष्टि 'हप्तहिन्दु' में की। इस बात किसी को सन्देह नहीं हो सकता कि 'हप्तहिन्दु' ऋग्वेद के (१ ३२.८,१.९१-७,२.११.३ २.१२.१२ ८.२४.२९) 'सप्त सिन्धु' का ही रूपान्तर है। इस प्रकरण में 'हप्तहिन्दु' शब्द पर टिप्पणी करते हुए जिन्दावस्था के अनुवादक डा० हाग लिखते हैं—

"Hapta Hindu is Sapta Sindu of the Vedas, a name of the Indus country"

अर्थात् जिन्दावस्था का 'हप्तहिन्दु' शब्द वेदों का 'सप्तसिन्धु' ही है जो कि सिन्ध प्रदेश के लिये प्रयुक्त किया गया है।

जिन्दावस्था के तीर और गोश खण्ड में लिखा है कि तिस्त्रय नक्षत्र वर्षा लाता है, और इस प्रकरण में हिन्दुकुश पर्वत का वर्णन है। डा० हाग अपने Essays on Parsee Religion के पृ० २०१पर लिखते है "In the midst of the sea there is a m›untain called HENDVA (very likely the Hindukush range of mountains is to be understood) over which the clouds· gather together."

इस प्रकरण में हिन्दुकुश पर्वत के लिए 'हिन्दव' शब्द का प्रयोग हुआ है। यह बात भी विचारणीय है कि 'हिन्दुकुश' पर्वत का नाम 'हिन्दु' शब्द के साथ कब और कैसे पड़ा। हम अभी तक इसके सम्बन्ध में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे यह एक गवेषणा का विषय है, परन्तु फिर भी इस सबसे स्पष्ट है कि प्राचीन पारसी साहित्य में 'हिन्दु' शब्द का प्रयोग भौगोलिक अर्थ में हुआ है, इस शब्द का तो उस समय चोर डाकू अर्थ था, न यह किसी धर्म या सम्प्रदाय के लिए प्रयुक्त होता था।

अगर जिन्दावस्था को ईसा से १००० वर्ष पहले का माना जाय तो यह स्पष्ट है कि पारसी साहित्य में आज से लगभग ३००० वर्ष पूर्व 'हिन्दु' शब्द का प्रयोग भौगोलिक अर्थ में होता था, किसी धर्म या सम्प्रदाय के लिए इस शब्द का प्रयोग नहीं होता था।

वेदों में भले ही 'सप्त सिन्धु' शब्द प्रयोग आध्यात्मिक अर्थों में हुआ हो, परन्तु पारसी धर्मग्रन्थ में तो वह स्पष्ट ही सिंधु-प्रदेश के लिए प्रयुक्त हुआ है क्योंकि वहां लिखा ही यह है कि अहुर्मज्द ने १५ वीं कोलोनी 'हप्तहिंदु' इस नाम से प्रतिष्ठित की। यह 'हप्तहिंदु' भारत के सिवाय अन्य कौन सा देश हो सकता है?

(२) प्राचीन भारतीय साहित्य में 'सिंधु' शब्द—ऋग्वेद में 'सप्तसिंधु' शब्द का प्रयोग पाया जाता है, इसका उल्लेख हम अभी कर आये हैं। ऋग्वेद के वे मन्त्र जिनमें 'सप्तसिंधु' शब्द आया है निम्न हैं—

अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्याः त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् (ऋ. १-३५ ८)

यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून्
(ऋ० २. १२. ३)

पूषा विष्णु र्हवनं मे सरस्वत्यवन्तु सप्तसिन्धवः। आपो वातः पर्वतासो वनस्पतिः शृणोतु पृथिवी हवम्।
(ऋ० ८-५४-४)

इन सब मन्त्रों में 'सप्तसिंधु' शब्द का प्रयोग हुआ है।

१७ वीं शताब्दी का एक ग्रन्थ शक्तिसंगम तन्त्र है। इसमें एक भाग 'षट्पंचाशद्देश, विभाग है। इसमें ५६ देशों का वर्णन है। इसमें ५६-५७ श्लोकों में सिन्धु देश का उल्लेख पाया जाता है। सिंधु देश का उल्लेख करते हुए लिखा है—

मायापुर समारभ्य सप्तश्रृङ्गालयोत्तरे।
बर्बराख्यो महादेशो सैन्धवः शृणु सादरम्।
लंकाप्रदेशमारभ्य मक्कान्तं परमेश्वरि।
सैन्धवाख्यो महादेशः पर्वते तिष्ठति प्रिये
।५६ ५७

इस वर्णन में लंका से लेकर पश्चिमी एशिया के मक्का तक के प्रदेश को सिंधु देश कहा गया है। यह उद्धरण डा० डी. सी. सरकार के ग्रन्थ "स्टडीज इन दी जियोग्रफी आफ एन्शियेंट एण्ड माइडीवियल इण्डिया से लिया गया है। परिभाषा प्रकाश ग्रन्थ में लिखा है—प्राक् सिन्धुर्सौवीरात् दक्षिणेन हिमवत. पश्चात् काम्पिल्यात् उदक् पारियात्रात् अनवद्यं ब्रह्मवर्चसम्' अर्थात् तु नितान्तक आध्यात्मिकता का केन्द्र वह स्थान है जो सिन्धु

आर्य जगत

आर्यसमाज मंदिर बाराबंकी में सभाध्यक्ष श्री मदनमोहन जी वर्मा का स्वागत

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान माननीय मदनमोहन जी वर्मा (अध्यक्ष विधान सभा उत्तर-प्रदेश का शुभागमन।

आज दि० ३० ३ ६६ सन्ध्या ५ बजे श्री वर्मा जी आर्यसमाज मन्दिर बाराबंकी में पधारे। आर्यसमाज की कार्यकारिणी के सदस्य समाज के अन्तर्गत चलने वाले दोनों विद्यालयों के अध्यापकों छात्रों एवं बाराबंकी के गणमान्य आर्य बन्धुओं ने श्री वर्मा जी का भव्य स्वागत किया। श्री वर्मा जी श्री दयानन्द स्मारक न्यास (ट्रस्ट) के पुनर्गठन के सम्बन्ध में आये थे। न्यास की पुनर्गठन को कायम ही परिपूर्ण करने के उपरान्त श्री वर्मा जी ने उपस्थित आर्य बन्धुओं के मध्य प्रवचन किया। प्रवचन में वर्तमान के सन्दर्भ में आर्यसमाज का नूतन दृष्टिकोण, महर्षि दयानन्द का पुण्य दर्शन तथा वैदिक जीवन दर्शन के महत्व पर व्यापक प्रकाश डाला। वक्ता ने इस बात पर विशेष बल दिया कि आर्यसमाज की संस्थाओं में शिक्षित छात्रों को विशिष्ट जीवन सरणि मिलनी चाहिए जिससे वे समाज में स्वतः विशिष्ट दृष्टिगोचर हो सकें जिन्हें देखकर समाज आकृष्ट हो और प्रेरणा ले सके।

अन्त में मन्त्री कृष्णचन्द्र कौशल ने धन्यवाद देते हुए हार्दिक आभार प्रकट किया, वैदिक शांति पाठ के बाद सभा विसर्जित हुई।

[आर्यसमाज बाराबंकी में श्री दयानन्द स्मारक न्यास (ट्रस्ट) के पुनर्गठन का कार्य सम्पन्न करके ही श्री सभा प्रधान फैजाबाद को जा रहे थे। मार्ग में उनकी कार से बस की टक्कर हो गयी और उनके चोट आ गयी। प्रभु की कृपा से वे सुरक्षित हैं। ईश्वर उन्हें चिरायु करें। —सम्पादक]

आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी का ८६वां जन्म दिवस समारोह

रामनवमी के दिन आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने अपने जीवन के ८५ वर्ष समाप्त करके ८६ वें वर्ष में पदार्पण किया। उनके इस शानदार लम्बे जीवन के उत्साहवर्धक कार्यों का निचोड़ पाठकों के लिए अवश्य ही पथ-प्रदर्शन का काम देगा।

श्री पं० जी का जीवन न केवल आर्यसमाज के लिए अपितु समूची आर्य (हिन्दू) जाति के लिए एक बहुमूल्य देन है। हमें उन पर गर्व है। उनका व्यक्तित्व सार्वदेशिक है। जितनी ठोस एवं बहुमूल्य सेवा उन्होंने आर्यसमाज अथवा आर्य वैदिक धर्म की की है उतनी बहुत थोड़े विद्वानों ने की होगी। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह शतायु हों।

पण्डित जी का प्रचार कार्य दिल्ली से आरम्भ हुआ और देखते ही देखते भारत भर में व्याप्त हो गया। उन्हें देश के कोने-कोने से शास्त्रार्थों एवं व्याख्यानों के इतने निमन्त्रण आने लगे कि उनका सब स्थानों पर पहुंचना असम्भव हो गया। उनके शास्त्रार्थों में जनता सहस्रों की संख्या में उपस्थित होती थी जिसमें हिन्दू मुसलमान और ईसाई सभी प्रकार के लोग सम्मिलित होते और शास्त्रार्थ के पश्चात् वे एक विशेष सुख एवं प्रभाव का अनुभव करते थे।

आरम्भ में उन्होंने दिल्ली में अपने कार्य का आरम्भ विचार विनिमय से किया और शनैः शनैः वह गम्भीर और सजीव शास्त्रार्थों में परिणत हो गया। इस क्षेत्र में उनकी योग्यता और शैली पर लोग दांतों तले अंगुली दबाते थे और कहते थे कि यह आर्यसमाज का सौभाग्य है कि उस दार्शनिक विद्वान स्वामी दर्शनानन्द जी शास्त्रार्थ महारथी के निधन के तत्काल पश्चात युवक रामचन्द्र जी जैसे योग्य शास्त्रार्थी मिल गए। उन्होंने उस अवस्था एवं उसके पश्चात कोई ऐसा धार्मिक विषय नहीं छोड़ा जिसमें विरोधियों को परास्त न किया हो।

उनकी योग्यता एवं सौभाग्य के कारण उन्हें युवावस्था में बाबरी ज्वालाप्रसाद जी, मौ० सनाउल्लाह साहिब तथा दिल्ली के अन्य अनेक योग्य शास्त्रार्थियों से शास्त्रों में वह सफलता मिली जिसका पूरा उल्लेख बहुत ही कठिन है। और हर्ष की बात यह है कि विरोधी उनके व्याख्यानों एवं उनकी युक्तियों से चिढ़ने की बजाए उनसे विशेष प्रकार का आनन्द और प्रभाव ग्रहण करते थे और चाहे खुले बन्दों चुप रहे परन्तु अपनी एकान्त गोष्ठियों में यह कहते सुने जाते थे कि यह काफिर सचमुच ईश्वर प्रदत्त सूझ-बूझ का स्वामी है।

यहां यह बताना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि आर्यसमाज की हैदराबाद विजय के लिए प्रारम्भिक क्षेत्र इन्होंने ही तैयार किया था। अब जब कि वह पर्याप्त वृद्ध हो गए हैं और कार्य कलाप स्वभावतः ढीला पड़ गया है फिर भी उन्हें हर समय आर्यसमाज की सेवा एवं उसकी उन्नति की चिन्ता सताती रहती है।

—रामगोपाल प्रधान मन्त्री
सार्वदेशिक सभा, देहली

श्री दयानन्द पुरस्कार

यह सूचित किया जाता है कि श्री दयानन्द पुरस्कार के लिये विचारार्थ लेखक वेद, दर्शन तथा आर्यसमाज के अन्य सिद्धान्तों पर प्रकाशित अपनी मौलिक अनुसन्धानपूर्ण रचनाओं की पांच पांच प्रतियां सभा कार्यालय को ३० अप्रैल ६६ तक भेज सकते हैं।

ये प्रकाशित रचनायें १९६५ जनवरी से दिसम्बर १९६५ के काल की ही होनी चाहिए। पूर्व विज्ञापन के अनुसार जिन लेखकों ने अपनी कृतियां विचारार्थ भेज दी हैं उन्हें पुनः भेजने की आवश्यकता नहीं। श्रेष्ठ रचनाओं पर एक सहस्र रुपये का एक पुरस्कार दिया जायेगा।

—रामगोपाल मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

आर्य बाल गृह-आर्य कन्या सदन का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली, पिछले दिनों दिल्ली की प्रसिद्ध समाज सेवी संस्था आर्य बालगृह—व आर्य कन्या सदन दरियागंज दिल्ली का वार्षिक महोत्सव श्री सरदार रौनक सिंह जी की अध्यक्षता में समारोह सम्पन्न हुआ।

संस्था के अध्यक्ष दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य नेता व नगरनिगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देशराज चौधरी ने संस्था का परिचय देते हुए कहा कि इस संस्था की स्थापना स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने की थी और तब से लेकर आज तक यह संस्था दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है। जनता व उदार दानी, महानुभावों के सहयोग से आज संस्था में ५०० से ऊपर लड़के व लड़कियां अच्छे परिवारों की तरह शिक्षा, भोजन आदि प्राप्त कर रहे हैं।

आपने कहा कि वर्तमान आर्थिक महगाई ने हमारे सामने ज्वलंत समस्या उत्पन्न कर दी है किन्तु हमें विश्वास है कि देश की उदार दानी जनता दान देते समय इन ५०० बच्चों को नहीं भूलेगी।

आपने बताया कि हम शीघ्र ही संस्था को आत्म-निर्भर बनाने की दृष्टि से औद्योगिक विभाग भी आरम्भ कर रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उप प्रधान ला० हंसराज जी ने आशा प्रकट की कि हमें विश्वास है कि संस्था उदार-दानी महानुभावों के सहयोग से और भी उन्नति करेगी।

संस्था के अधिष्ठाता श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री ने बताया कि यहां के बालक शिक्षा प्राप्त करने के बाद पूर्ण स्वस्थ नागरिक बनते हैं। इस प्रकार इस संस्था द्वारा राष्ट्र की महान् सेवा हो रही है।

इस अवसर पर कुमारी शान्ता वशिष्ठ एम०पी०, श्रीमती मनमोहिनी सहगल श्री डा० धर्मप्रकाश एम० पी०, श्री क्षितीशकुमार वेदालंकार ने भी अपने भाषणों में जहां संस्था की सराहना की, वहां संस्था के अधिकारियों को विश्वास दिलाया कि जनता प्रत्येक प्रकार से संस्था के लिए यत्नशील रहेगी।

निर्वाचन—

—महिला आर्यसमाज सदर कन्टूमेंट लखनऊ।

प्रधाना—श्रीमती कमलादेवी गुप्ता, उपप्रधान—श्रीमती शिवप्यारी देवी, मन्त्रिणी—श्रीमती पुष्पा सूद उपमन्त्रिणी—श्रीमती पद्मा दुआ, कोषाध्यक्षा—श्रीमती धनदेवी, प्रतिनिधि मन्त्रिणी—श्रीमती शकुन्तलादेवी सूद।

(पृष्ठ ६ का शेष)

परमात्मन ! आपकी कृपा से हमारा जीवन उत्तमोत्तम गुणों से युक्त और सभी प्रकार की सृजनात्मक शक्तियों से परिपूर्ण हो। शुभ कर्मों में हमारी प्रीति सदा ही बढ़ती रहे। हम स्वतन्त्र स्वावलम्बी और पुरुषार्थी बनकर धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हों। आपकी कृपा से हम निराशा, असफलता तथा पराजय के कष्टों से बचे रहें। हे दयानिधे ! आप तो बोध के भण्डार ही हैं। हमें भी बोध प्रदान करो। आपकी कृपा से हम आगे ही आगे बढ़ें ऊपर ही ऊपर उठें। किसी भी अवस्था में हमारा किसी भी प्रकार का पतन कभी न हो।

★

आर्य [illegible] सभा, प्रयाग के तत्वावधान में

प्रयाग कुम्भ के पुण्य पर्व पर आयोजित 'वेद सम्मेलन' के स्वागताध्यक्ष

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

का स्वागत भाषण

१८–१९ जनवरी, १९६६

★

वैदिक सस्कृति के प्रेमियो, वैदिको और सज्जनो !

दुर्भाग्य का विषय है कि वेद की कार्यवाही का आरम्भ दो मर्म वेदनाओ के उल्लेख से होता है। एक तो भारत-विभूति प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का देश की विजय पताका फैलाते हुये ताशकन्द के राजनैतिक रण-क्षेत्र से अकस्मात् ११ जनवरी को लुप्त हो जाना, जिसने विश्व के सभी देशो और नर-नारियो को पीडित कर रक्खा है।

अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।

दूसरा १२ जनवरी का श्री गगा प्रसाद एम ए, एम आर.ए एस रिटायर्ड चीफ जज, टहरी का निधन। श्री पडित जी को आर्यसमाज का महान् वृद्ध पुरुष (ग्रेन्ड ओल्ड मैन) कहना उचित होगा। वह फाउन्टेन हेड आफ रिलीजन आदि कतिपय पुस्तको के लेखक, तपस्वी, आदर्श सयमी महान् आत्मा थे। उनकी आयु १०० वष से कुछ ही कम थी। वह ६० वर्ष से निरन्तर आर्यसमाज की सेवा कर रहे थे। अब दो आसू बहाने के पश्चात् हम आज की कार्यवाही की अथ श्री करते हैं।

मैं स्वागताध्यक्ष हू। इसका अर्थ यह है कि स्वागनकारिणी समिति ने मुझ से अनुरोध किया है कि उनकी ओर से आदरपूर्वक आपका स्वागत करू। अत इस अधिकार से मैं आज नम्रता और सम्मान के साथ आपका स्वागत करता हू और प्रार्थना करता हू कि

विष्टरो विष्टरो विष्टर प्रति गृह्यताम्।

स्वागताध्यक्ष का दूसरा कर्तव्य यह है कि जिस कार्य के लिये आपको निमत्रित किया है उसको सक्षेप से आपके समक्ष रख दूं।

यत्कामास्ते जुहमस्तन्नो अस्तु।
(ऋ० १०।१२१।१०)

हम यजमान हैं। ओर आप हैं ऋत्विज। हमने किसी कामना को लेकर यह यज्ञ रचा है। यज्ञ की सफलता मे आपकी सहायता अपेक्षित है। जिससे यज्ञ का अनुष्ठान यथेष्ट रूप से हो सके।

इस यज्ञ का नाम मैं "लाकम्पृण" यज्ञ रखता हू। यह नाम कुछ अपरिचित सा प्रतीत होता है। जब यज्ञ की वेदी बनाई जाती है और ईट चुनी जाती है तो बीच-बीच मे कही-कही सुलार (छिद्र) छूट जाती है। इन छिद्रो को 'लोक' (अवकाश) या खाली जगह कहते हैं। उनको भरने के लिए जो ईटे ठूंस दी जाती हैं, उनका नाम है "लोकम्पृण इष्टियाँ"। वैदिक संस्कृति रूपी प्राचीनतम वेदी मे युग-युगातर के के तूफानो तथा बाह्य और आभ्यन्तर विप्लवो के कारण जो छिद्र आ गये हैं और जिनके कारण यह वेदी निर्बल हो गई है उन छिद्रो को भर कर आप इस वेदी को सुदृढ कर देवें यही आपसे माग है।

वैदिक सस्कृति का कुम्भ मेले के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। भारत प्राचीनतम देश है। गगा प्राचीनतम नदी है। और कुम्भ का मेला भी बहुत पुराना प्रतीत होना है। ऋग्वेद मे आया है—

उपह्वरे गिरीणा सगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत।(ऋ० ८।६।२८)

अर्थात् पहाडो की उपत्यकाओ मे और नदियो के सगम पर महात्माओ को आत्मदर्शन की प्रेरणा मिलती है। कुम्भ इसी प्रेरणा के लिए रचा गया होगा। कुम्भ प्रयाग मे होता है और हरिद्वार म। हरिद्वार मे पहाड भी है और गगा भी। सगम नही है। प्रयाग मे पहाड तो नही है। सगम है। पहाड स्थिति का प्रतीक है और नदी गति का। हरिद्वार मे हिमालय पर्वत ईश्वर के स्थाणुत्व (अचलता) का स्मरण दिलाता है और गगा जगत् की चलायमानता का। प्रयाग में गगा और यमुना के सगम को देखकर हम जगत् की भिन्न-भिन्न प्रगतियो का एकीकरण कर सकते हैं। वैदिक सस्कृति का उद्देश्य भी आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक प्रगतियो का समन्वय है। जब आप गगा मे स्नान करते हैं तो हमारे पूर्वज हमको पुकार-पुकार कर सचेत करते है।

आत्मा मे गगा बहे,
क्यो न तू न्हावरे।

गगा और यमुना के साथ जब आप की आत्मा म बहने वाली गगा अर्थात् सरस्वती (सरस्वती न सुभगामयस्करत्। [ऋग्वेद १।८९।३]। सरस्वति अर्थात् वेदविद्या या अध्यात्म-विद्या हमको सुख देवे।) का सम्मेलन होगा तभी तो आप कुम्भ महात्म के भागी हो सकेंगे। "माहात्म्य '(महा+आत्मा+ष्यञ) का तो यही अर्थ है कि आप को आध्यात्मिक बडप्पन प्राप्त हो। इसलिये कुम्भ का माहात्म्य चाहता है कि आप वैदिक सस्कृति के प्रचार और प्रसार के उपायों पर गम्भीरता से विचार करें।

'वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। इनका पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'। (आर्यसमाज का नियम ३)

सृष्टि के आरम्भ से लेकर अब तक इस भूमण्डल पर जितनी सस्कृतियो का प्रादुर्भाव या प्रसार हुआ उन सब का आदि स्रोत वेद थे। ऋग्वेद मे लिखा है—

बृहस्पत प्रथम वाचो अग्र, यत् प्रैरत नामधेय दधाना। यदेषा श्रेष्ठ यदरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषा निहित गुहावि ॥ (ऋ० १०।७१।१)

अर्थात् आदि सृष्टि मे ऋषियो के हृदयो मे विज्ञान के मूलरूप शब्द और ज्ञान और उनके सम्बन्ध (नाम और नामी) का आविर्भाव हुआ। वही वैदिक भाषा आदि भाषा थी। वही सभी भाषाओ की जननी है। और उस भाषा मे जो 'निहित" भाव थे वही वैदिक सस्कृति थी। इन्ही भावनाओ से प्रेरित होकर ऋषियो ने मानव समाज की नीव डाली। बन साफ किये। पहाड खोदे। नदिया पर पुल बनाये। नगर बसाये। राष्ट्र स्थापित किये। राष्ट्र विधानो का निर्माण किया। वर्णाश्रम रूपी सामाजिक प्रथाओ का निर्माण किया। कालान्तर मे वैदिक सस्कृति समस्त ससार मे फैल गई। मनुस्मृति मे लिखा है—

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवा ॥ (मनुस्मृति २।२०)

अर्थात् भारत के विद्वानो ने ही भूमण्डल के अन्य निवासियो को आचार व्यवहार की शिक्षा दी। भारत के गुरुत्व को सुदृढ रखने के लिये ही मनु ने उपदेश दिया था—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम।
सजीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय ॥
(मनु० अ० २ श्लोक १४६।१६८)

कि जो विद्वान् वेद को छोडकर अन्यत्र परिश्रम करता है वह अपने वश के लोगो के साथ शूद्रत्व को प्राप्त होता है।

गीता में ऐसा ही कथन है—

य शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारत। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुख न परागतिम् ॥ (गीता १६।२३)

अर्थात् जो वेदो की स्वार्थवश अवहेलना करता है उसे न सुख मिलता है न मोक्ष।

परन्तु अब वह बात तो नही रही। हिमालय वही है परन्तु वेद की ध्वनि नहीं। मेले वही हैं। परन्तु वेदो का नाम नही। चतुर्वेदी और द्विवेदी या त्रिपाठी घरानो के प्राचीन नाम चले आते हैं। परन्तु अभाव है उन गुणो का जिन के कारण इन नामो के अधिकारी बने।

यथा काष्ट मयो हस्ती। (मनु०)

यह अवस्थान्तर कैसे हो गया? विचार का स्थल है। और इसी विचार के लिये आपको कष्ट दिया गया है। यदि कुम्भ के कार्यक्रम मे वेद सम्मेलन का स्थायी रूप से स्थान मिल सका तो हम आर्य जाति की खोई हुई महत्ता को पुन प्राप्त कर सकेंगे।

इस विषय म वेद स्वय चेतावनी देता है—

इच्छन्ति देवा सुन्वन्त,
न स्वप्नाय स्पृयहन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्रा ॥
(ऋग्वेद ८।२।१८)

अर्थात् जो अपना कर्तव्य पालन करते हैं देव उन्ही को प्यार करते हैं। वह सोने वालो को नही चाहते। प्रमादी पुरुष को भारी दण्ड देत हैं।

हमारी वैदिक सस्कृति के प्रहरी जब सो गये तो दैव ने उनको कडा दण्ड दिया। हमारी अधोगति का यही कारण है।

इस अति प्राचीन भारत के इतिहास का विवेचन तो कठिन है परन्तु मध्य-काल के इतिहास से पता चलता है कि वैदिक सस्कृति पर सबसे पूर्व इसी देश मे तीन भारी आक्रमण हुए। चार्वाक आदि नास्तिको का दूसरा बौद्धो का, तीसरा जैनियो का।

नास्तिक न वेद को मानते है, न ईश्वर को, न किसी अभौतिक सत्ता को। उनका सिद्धान्त तो वह है—

यावज्जीवत् सुख जीवेत।
ऋण कृत्वा घृत पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य।
पुनरागमन कुत ॥

यही आजकल के कम्यूनिज्म का मत है। परन्तु ससार म किसी देश या किसी युग म नास्तिको का प्रभुत्व नही रह सका। शुद्ध भौतिकवाद पर तो कोई समाज दो दिन भी नही चल सकता। अत चारवाको का कभी कोई प्रभाव

(शेष पृष्ठ १५ पर)

'आयुर्वेद की सर्वोत्तम, कान के बीसों रोगों की एक अक्सीर दवा'

अवश्य पढ़िये—— **कर्ण रोग नाशक तैल** ——रजिस्टर्ड

कान बहना, कम होना, कम सुनना दर्द होना, खाज आना, सांय सांय होना, मवाद आना, फुलना, सीटी सी बजना, आदि कान के रोगों में बड़ा गुणकारी है। एक बार अच्छे कामों में भी परीक्षा कीजिए, कीमत १ शीशी २।), चार शी० मंगाने से १ शी० फ्री भेजते हैं। खर्चा पैकिंग–पोस्टेज खरीदार के जिम्मे रहेगा। बरेली का प्रसिद्ध रजि० 'शीतल सुरमा' से आंखों का मैला पानी, निगाह का तेज होना, दुखने न आना, अंधेरा व तारे से दीखना, धुंधला व खुजली मचना, पानी बहना, जलन, सुर्खी, रोहें, आदि को शीघ्र आराम करता है एक बार परीक्षा करकेदेखिये, कीमत १ शीशी २॥), आज ही हमसे मंगाइये ॥

'कर्ण रोग नाशक तैल' सन्तोमालन मार्ग, नजीबाबाद यू.पी.

चारों वेद भाष्य, स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थ तथा
आर्यसमाज की समस्त पुस्तकों का
एक मात्र प्राप्ति स्थान—

आर्यसाहित्य मण्डल लि०

श्रीनगर रोड, अजमेर

भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद् की विद्यारत्न, विद्या विशारद, विद्या वाचस्पति आदि परीक्षायें मंडल के तत्वावधान में प्रतिवर्ष होती हैं। इन परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें अन्य पुस्तक विक्रेताओं के अतिरिक्त हमारे यहां से भी मिलती हैं।

वेद व अन्य आर्य ग्रन्थों का सूचीपत्र तथा परीक्षाओं की पाठविधि मुफ्त मंगावें

दैनिक स्वाध्याय के ग्रन्थ

(१ ऋग्वेदसुबोध भाष्य—मधु च्छन्दा मातिथी, शुन: शेप कण्व) परानीतम, हिरण्य गर्भ, नारायण, बृहस्पति, विश्वकर्मा, सप्त ऋषि व्यास आदि, १८ ऋषियों के मन्त्रों के सुबोध भाष्य मूल्य १९) डाक-व्यय १॥)

ऋग्वेद का सप्तम मण्डल (वशिष्ठ ऋषि)—सुबोध भाष्य। मू० ७) डाक-व्यय १)

यजुर्वेद सुबोध भाष्य अध्याय १—मूल्य १॥), अष्टाध्यायी मू०२) अध्याय ३६; मूल्य ॥) सबका डाक-व्यय १)

अथर्ववेद सुबोध भाष्य—(सम्पूर्ण २०काण्ड)मूल्य५०) डाक-व्यय

उपनिषद् भाष्य—ईश२):, केन ॥), कठ १॥।) प्रश्न १॥)मुण्डक१।) माण्डूक्य ।।), ऐतरेय ॥।): सबका डाक व्यय १)।

श्रीमद्भगवतगीता पुरुषार्थ बोधिनी टीका—मूल्य २०) डा०-व्यय २)

चाणक्य—सूत्राणि

पृष्ठ-संख्या ६९० मूल्य १२) डाक-व्यय २)

आचार्य चाणक्य के ५७१ सूत्रों का हिन्दी भाषा में सरल अर्थ और विस्तृत तथा सुबोध विवरण, भाषान्तरकार तथा व्याख्याकार स्व० श्री रामावतार जी विद्याभास्कर, रतनगढ़ जि० बिजनौर। भारतीय राजनैतिक साहित्य में यह ग्रन्थ प्रथम स्थान में वर्णन करने योग्य है, यह सब जानते हैं। व्याख्याकार श्री हिन्दी जगत् में सुप्रसिद्ध हैं। भारत राष्ट्र अब स्वतन्त्र है। यह भारत की स्वतन्त्रता स्थायी रहे और भारत राष्ट्र का बल बढ़े और भारत राष्ट्र अग्रगण्य राष्ट्रों में सम्मान का स्थान प्राप्त करे, इसकी सिद्धता करने के लिए इस भारतीय राजनैतिक ग्रन्थ का पठन-पाठन भारत भर में और घर-घर में सर्वत्र होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए इसको आज ही मंगाइये।

ये ग्रन्थ सब पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलते हैं।

पता—स्वाध्याय मण्डल, किल्ला पारडी, जिला सूरत

भारत सरकार से रजिस्टर्ड

सफेद दाग

दवा मूल्य ५) विवरण मुफ्त मंगावें

दमा श्वास पर अनुभवित दवा है मूल्य ६, ५०

एक्झिमा (दाद, खुजली, चम्बल) दवा का मूल्य २) रु०

रोगियों को मुफ्त सलाह दी जाती है।

वैद्य के.आर.बोरकर आयुर्वेद-भवन
पो० मंगरूलपीर, जि०अकोला (महाराष्ट्र)

निर्वाचन—

आर्यसमाज माधूपंच (फतेहपुर)

प्रधान—श्रीराम गुप्त, उपप्रधान—रामलाल, मन्त्री—जगजवराम, उपमंत्री—सीतेलाल, कोषाध्यक्ष—रामचन्द्र।

—आर्यसमाज बरकड़ा बिजनौर

प्रधान—वैद्य किशनसिंह, उपप्र०—बलवन्त सिंह, मंगूलाल, मन्त्री—सोमप्रकाश आर्य अध्यापक, उपमन्त्री—करोड़ी सिंह, श्यामलाल, कोषाध्यक्ष—चन्द्रप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्यामलाल

सभा का नवीन प्रकाशन

पाप-पुण्य

महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज के महत्वपूर्ण व्याख्यानों का संग्रह मूल्य ३७ पै०।

राष्ट्र सुरक्षा तथा वेद

अथर्ववेद में राष्ट्र की सुरक्षा के लिये जो मौलिक साधन बतलाये गये हैं उनकी विशद व्याख्या इस नवीन प्रकाशित पुस्तक में की गई है। मू० १२ पै०

मेहेर बाबा मत दर्पण

२० वीं शती के पूना के ईरानी अवतार मेहेर बाबा के मत की समीक्षा इस ट्रैक्ट में देखें। मू० ६ पैसा।

अधिष्ठाता घासीराम प्रकाशन-विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ

वर्ण-व्यवस्था

'गीता' व रामायण मुफ्त

[नियम भी मुफ्त लीजिये]

गोमुस्लिम जाति निर्णय ५२० पृ० अस्पृश्य 'शुद्धि-व्यवस्था'-मुल्क ८) क्षत्रिय वंश प्रदीप प्रथम भाग ३७१ पृष्ठ ८), जाति अन्वेषण प्रथम भाग ३६१ हिन्दू जातियों का 'विश्व कोष' ४७५ पृष्ठ ८) सूजिया जाति निर्णय २२० पृष्ठ ५॥), २ ५१ प्रश्न (जाति निर्णयार्थ) किजित ५१।) डाक पृथक २।)

पता-वर्ण व्यवस्था मण्डल (A)
फुलेरा (जयपुर)

गुरुकुल झज्जर स्वर्ण जयन्ती यू०पी० गवर्नमेन्ट की विधान सभा के प्रेसीडेंट द्वारा प्रशंसित

तुलसी ब्राह्मी चाय

स्वास्थ्य, बल और स्मरण शक्ति की वृद्धि करती है। निर्बलता, खांसी और जुकाम का नाश करती है। मूल्य ४० कप का बक्स ३७ पैसे। वी० पी० खर्च ३ बक्स तक १) २५ पैसे। व्यापारी लोग एजेन्सी के नियम मांगें। साहित्य प्रेमी ५ सज्जनों के नाम पते लिखें। सुन्दर उपन्यास मुफ्त लें। पता—

पं० रामचन्द्र वैद्य शास्त्री
सुधावर्धक औषधालय नं० ५
अलीगढ़ सिटी उ० प्र०

अमृतधारा

घर का...

इसकी चन्द बूंदें लेने से
हैजा, क़ै, दस्त, पेटदर्द, जी-मिचलाना, पचिस, खट्टी-डकार, बदहजमी, पेट फूलना, कफ, खांसी, जुकाम आदि दूर होते हैं और लगाने से चोट, मोच, सूजन, फोड़ा-फुन्सी, वातदर्द, सिरदर्द, कानदर्द, दाँतदर्द, भिड़ मक्खी आदि के काटे के दर्द दूर करने में संसार की अनुपम महौषधि। हर जगह मिलता है।

रूप विलास कम्पनी कानपुर

विशेष हाल जानने के लिए सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

सोम क्या है ?

[ले०—श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री, बरेली]

वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में सोम का वर्णन अधिकता से आता है। सूत्र ग्रन्थों में भी सोम का वर्णन पर्याप्त है। सुश्रुत सूत्रस्थान में सोम का बहुत विस्तार के साथ वर्णन है। यह सोमलता काया-कल्प कर देती है। देखिये सुश्रुत चिकित्सित स्थान २९ वाँ अध्याय:—

ब्रह्मादयोऽसृजन् पूर्वममृतं सोमसंज्ञितम्। जरामृत्युविनाशाय विधानं तस्य वक्ष्यते ॥

ब्रह्मादि देवताओं ने जरा मृत्यु के विनाश के लिये सोम नाम का अमृत रचा।

वह सोम २४ प्रकार का है। तद्यथा:—

अंशुमान् मुञ्जवांश्चैव चन्द्रमा रजतप्रभः। दूर्वासोमः कनीयांश्च श्वेताक्षः कनकप्रभः ॥

प्रतानवांस्तालवृन्तः करवीरोंऽशवानपि स्वयंप्रभो महासोमो यश्चापि गरुडाहृत: ॥

गायत्र्यस्त्रैष्टुभः पाङ्क्तो जागतः शाक्वरस्तथा। अग्निष्टोमो रैवतश्च यथोक्त इति संज्ञितः ॥

गायत्र्या त्रिपदा युक्तो यश्चोडुपतिरुच्यते। एते सोमाः समाख्याता वेदोक्तैर्नामभिः शुभैः ॥

अर्थात्—अंशुमान्, मुंजवान चन्द्रमा, रजतप्रभ, दूर्वा सोम कनीयान्, श्वेताक्ष, कनकप्रभ, प्रतानवान् तालवृन्त करवीर, अंशवान स्वयंप्रभ, महासोम, गरुडाहृत, गायत्र्य त्रैष्टुभ, पाङ्क्त, जागत, शाक्वर, अग्निष्टोम रैवत, त्रिपद गायत्र्य, उडुपति।

इन २४ नामों में गायत्र्य, त्रिपद गायत्र्य त्रैष्टुभ, पाङ्क्त, जागत ये नाम वैदिक छन्दों से सम्बद्ध हैं। चन्द्रमा उडुपति एकार्थक ही हैं। चन्द्रमा को भी सोम कहते हैं, छन्दों के पाठ और गान से भी आनन्द आता है, अतः चन्द्र और वैदिक छन्दों से सोम का कोई सम्बन्ध अवश्य है। आगे इन सोमों के सेवन का विधान है। सोम सेवन से शरीर नया हो जाता है और आयु बढ़ जाती है। सोम का यह सब महत्व बताकर सोम का उत्पत्ति स्थान बताया है—हिमालय, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय, श्रीपर्वत, देवगिरि, देवसह, पारियात्र, विन्ध्य, देवसुन्द हृद, वितस्ता नदी के उत्तर वाले पर्वत सिन्धु नदी के पास काश्मीर। कौन-कौन सा सोम कहाँ होता है, यह भी बताया गया है तथा सोमों की पहचान भी दी है यथा:—

अंशुमानाज्यगन्धस्तु कन्दवान् रजतप्रभः। कदल्याकारकन्दस्तु मुंजवांल्लशुनच्छदः ॥

चन्द्रमाः कनकाभासो जले चरति सर्वदा। गरुडाहृतनामा च श्वेताक्षश्चापि पाण्डुरौ ॥

सर्वेनिर्मोकसदृशौ तौ वृक्षाग्रावलम्बिनौ। तथान्येमण्डलैश्चित्रैश्चित्रा इव भान्ति ते ॥

अर्थात्—अंशुमान् सोम में घृत की सी सुगंध आती है। रजतप्रभ कन्दवाला होता है, केले के आकार के कन्दवाला और लहसुन के से पत्ते वाला मुंजवान् होता है चन्द्रमा सुनहरी चमक वाला होता है और जल में तैरता रहता है। गरुडाहृत और श्वेताक्ष पीले भूरे रंग के होते हैं। साँप की केंचुली के समान ये वृक्षों पर लटकते रहते हैं। सब चित्र विचित्र मण्डलों से चित्रित होते हैं।

सब ही सोम पन्द्रह पत्तों वाले होते हैं। कृष्ण पक्ष में इनका क्रमशः एक पत्ता गिरता जाता है और अमावस्या को डाल रिक्त रह जाती है। इसी प्रकार शुक्ल पक्ष में एक एक पत्र बढ़ते बढ़ते पूर्णिमा को पूरे १५ पत्ते हो जाते हैं। इसमें आश्चर्य या संदेह करने की कोई बात नहीं है। अनेक पौधे ऐसे हैं जिनके फूल ठीक ९ बजे से ११ बजे तक रहते हैं। किसी के १२ से ५ बजे तक। कमल दिन में और कुमुद रात में प्रसन्न होते हैं। चन्द्रमा से सोम का यह घटने बढ़ने का सम्बन्ध है इसीलिये इस लता का नाम चन्द्र के पर्याय सोम के नाम पर "सोमलता" रक्खा गया है।

सोम की प्राप्ति

प्रश्न यह है कि यह अद्भुत लता अब कहाँ लुप्त है जो मिलती नहीं। तो उत्तर भी सुश्रुत में ही है—

न तान् पश्यत्यधर्मिष्ठः कृतघ्नश्चापि मानवः। भेषजद्वेषिणश्चापि ब्राह्मणद्वेषिणस्तथा ॥

अधर्मी, कृतघ्न, औषधों के द्वेषी अर्थात् औषधों को उखाड़ कर उनका नाश कर डालने वाले, औषधों को बरबाद करने वाले, ब्राह्मणद्वेषी अर्थात् ज्ञानी विद्वानों से द्वेष करने वाले इन दिव्य औषधियों सोमों को नहीं पा सकते। ज्ञानियों से द्वेष करने वालों को ज्ञानी ऐसी वस्तुओं का पता ही क्यों देने लगे? अतः आज भी सोमलता लुप्त नहीं हो सकती। हाँ गुप्त अवश्य है। चूँकि कन्द जीवक कन्द भी अप्राप्त हैं। संजीवनी बूटी भी नहीं मिल रही है। जतन के साथ इनकी खोज होनी चाहिये।

यह तो हुआ औषध सोम का वर्णन, भौतिक सोम की बात। अब एक और सोम भी है जिसका पता वेद देते हैं। अथर्ववेद कहता है—

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही। अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः ॥

सोमं मन्यते पपिवान् यत्संपिषन्त्योषधिम्। सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति पार्थिवः ॥

यत्त्वा सोम प्रपिबन्ति तत आप्यायसे पुनः। वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः ॥

आच्छद्विधानैर्गुपितो बार्हतैः सोम रक्षितः। ग्राव्णामिच्छृण्वन् तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः।

—अथर्व० १४-१-२-४

अर्थ—सोम से आदित्य (प्राण) बल वाले हैं। सोम से भूमि विस्तृत है। नीचे इन नक्षत्रों की गोद में सोम विराजमान है। सोम उसे यह मानते हैं कि पिया गया है, जिस औषध को पीसते हैं। पर जिस सोम को ब्रह्मा (चतुर्वेदज्ञ) जानते हैं उसे कोई खाता नहीं है। हे सोम! जिस तुझको पीते हैं और उससे तृप्त होते हैं। सोम का वायु (प्राण वायु) रक्षक है। वर्षों का सोम व्यवच्छेदक है, अतः मास भी है। छाये हुए विधानों से रक्षित है। बड़े बड़े विधानों से सोम रक्षित है। तू स्तुतियों को सुनता हुआ रहता है। तुझे पार्थिव—राजा अथवा भौतिक जन या धनी लोग नहीं खा सकते।

सरलार्थ वाले शब्द हैं, पर इनमें गम्भीर भाव भरे हुए हैं। सोम को ब्राह्मण जानते हैं। केवल ब्राह्मणों को ही उसकी रसानुभूति होती है, राजाओं तक को नहीं। पार्थिव लोग—जड़ भौतिकवादी उसे नहीं पा सकते। यह सोम क्या है? आध्यात्मिक आनन्द, ब्रह्म रसानुभूति नक्षत्रों की गोद में सोम है। वह है वही चन्द्रमा। प्रतिमास इसकी आकृति पूर्ण हो जाती है। सोम लता भी प्रतिमास पूर्णिमा को पञ्चदश पत्र युक्त हो जाती है।

वायु (प्राण) सोम का रक्षक है। प्राणशक्ति बलवती होती है ब्रह्मचारी तपस्वी की। उसके द्वारा ही आध्यात्मिक आनन्द की रक्षा होती है। विधान व्रत तप कर्मकाण्ड से, वैदिक स्तोत्रों से, बड़े बड़े यज्ञों से सोम शक्ति की रक्षा हो रही है। भौतिक जन उसके अधिकारी नहीं। उक्त मन्त्रों से प्रकट हुआ कि सोम तीन हैं—भूतल का सोम सोमलता जिसका वर्णन सुश्रुत में है। अन्तरिक्ष का सोम चन्द्रमा जिसका वर्णन ज्योतिःशास्त्र करता है। द्युलोक का सोम सहस्रारचक्र ब्रह्मरन्ध्र में प्राण ले जाने पर जो योगी को आनन्द मिलता है वह सोम है सर्वोपरि। उसी सोम से आदित्य बलवान् है पृथिवी बड़ी है। नक्षत्रों में उसका प्रकाश है, जगत का वही जीवन है। सोमलता एक उपलक्षण मात्र है। इसके द्वारा उसी महान् सोम की ओर संकेत किया जाता है। ऋग्वेद का नवम मण्डल पवमान सोम की प्रशंसा से भरा है। वह पवमान सोम भी ब्रह्मानन्द ही है।

सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा।

(यजु० ९-४०)

ब्राह्मणों का राजा सोम है। तात्पर्य यह है कि तपस्वी पर कोई शासन चल नहीं सकता। कानून दो प्रकार की जनता के लिए व्यर्थ, मृत हो जाता है—सम्पूर्ण जनता, एक एक व्यक्ति नियम पर स्वयं चलने वाला हो या फिर सारी जनता, प्रत्येक व्यक्ति घोर दुराचारी हो। ब्राह्मण जब स्वयं ही नियम में चलने वाले हैं, उनके लिए राजा व्यर्थ है। सोम तप श्रद्धा ईश्वरोपासन ही ब्राह्मणों का राजा है यहा तपस्या का ही नाम सोम है। शतपथ ब्राह्मण में कहा ही है—

हिरण्मयोर्ह कुशयोरन्तरवहित आस।

दीक्षातपसौ हैव ते आस्तु. । श. ३।६।२

सुनहरी कुशाओं में सोम रक्खा था। वे कुशाएं हैं दीक्षा और तप। ऋग् यजु., साम अथर्व सब में ही सोम का अद्भुत वर्णन है। शतपथ ब्राह्मण में कई स्थानों पर सोम का उल्लेख है। यज्ञ की सोम मुख्य वस्तु है। ब्राह्मण ग्रन्थ सूत्र ग्रंथ, यज्ञ पद्धतियां निरुक्त गाथायें और पुराण सब में सोम विराज रहे हैं। सोम स्वर्ग में था, उसे वहाँ से गायत्री देवी हरकर लायी और सोम को कुशाओं में रखा, वहाँ से इन्द्र ले गया। कुछ बूंदें कुशाओं पर गिरी, उन्हें सर्पों ने चाट लिया तो उनकी जिह्वा चिर गई और वे द्विजिह्व हो गये।

यह कहानी भी यही बताती है कि सोम परमात्मा का आनन्द है। अथर्ववेद में सहस्रार चक्र को 'स्वर्गो ज्योतिषावृतः' कहा गया है। यही सोम है। गायत्री के अनुष्ठान द्वारा वह प्राप्त होता है। पर उसका स्वामी इन्द्र है। योग द्वारा पवित्र हुआ जीवात्मा। वही "श्येन" कहा गया है। योगासन का भी महत्व होता है। उस आसन पर ढोंगी, कुटिल अहि-सर्प भी बैठ सकते हैं। वह भी दो चार बूंद तपश्चर्या के आनन्द की चाट सकते हैं पर उनकी जीभ कट जायेगी। रहेंगे द्विजिह्व ही प्रत्यक्ष में और परोक्ष में अन्य रूप।

[शेष पृष्ठ १३ पर]

सभा के आगामी वृहद्-धिवेशन की सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को विदित हो कि आर्य प्र० सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक २८ व २९ मई १९६६ दिन शनिवार व रविवार को देहरादून मे बुलाना निश्चित किया गया है। प्रतिनिधि महानुभावों के निवास एव भोजन की सुव्यवस्था का प्रबन्ध आर्यसमाज देहरादून की ओर से 'महादेवी आर्य कन्या पाठशाला डिग्री कालेज देहरादून" में किया गया है। आर्यसमाजों के मन्त्री महोदयों से प्रार्थना है कि अपने अपने समाज के प्रतिनिधि सज्जनों को नियत समय पर भेजने की कृपा करें।

प्रतिनिधि चित्र तुरन्त भेजिए

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय में अब तक २०० आर्यसमाजों के वार्षिक प्रतिनिधि चित्र प्राप्त हुए हैं। अत समाजों के मन्त्री महोदयों एव जिला उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदयों तथा सभास्थ निरीक्षक तथा उपदेशक, प्रचारकों से तथा सभास्थ अन्तरग सदस्यों से निवेदन है कि अपने अपने जिला क्षेत्र के समाजों से प्रतिनिधि चित्र कार्य भरवाकर सभा कार्यालय में भेज दशांश, शुद्धकोटि तथा चार आना फण्ड व प्रतिनिधि शुल्क भिजवाने की कृपा करें। —सन्तराम सभामन्त्री

टेहरी जिले में वैदिक धर्म का प्रचार

आर्यसमाज टेहरी में प्रचारार्थ सभा प्रचारक श्री प्रकाशवीर जी शर्मा को १३ अप्रैल ६६ से नियुक्त किया गया है। आर्य बन्धुओं को प्रचार में विशेष रूप से सहयोग प्रदान करना चाहिये, तथा अन्य स्थानों पर समाज स्थापित कराने का प्रयत्न करना चाहिये।

मेरठ जिले में प्रचार

इस वर्ष जिला उप प्रतिनिधि सभा मेरठ ने जिले की समस्त समाजों में प्रचार कराने की योजना बनाई है। सभा की ओर से उपरोक्त जिला सभान्तर्गत श्री नरदेवपालसिंह एव श्री दिनेश चन्द्र जी शर्मा की नियुक्ति कर दी गई है। समाजों के मन्त्री महोदयों से प्रार्थना है कि उपर्युक्त महानुभावों के पहुचने पर प्रचार की व्यवस्था करें। तथा सन् ६४ तक का सभा प्राप्तव्य धन दशांश, शुद्धकोटि एव वेदप्रचारार्थ धन प्रदान कर रसीद प्राप्त करलें।

शिक्षा विभाग की सूचनाएं

१—आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध सभी शिक्षा सस्थाओं को सूचित किया जाता है कि सन १९६६ की धर्म शिक्षा परीक्षायें जो इस विभाग की ओर से ली गई थीं उनमे लगभग ४००० छात्र छात्राए बैठे उनके परिणाम शीघ्र घोषित होने वाले हैं जो आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ मे प्रकाशित होगे और समय समय पर इस विभाग की सूचनाएं उसमे प्रकाशित होती रहती हैं जिन शिक्षण सस्थाओ मे आर्यमित्र न जाता हो वे तुरन्त आर्यमित्र के ग्राहक बन जायें।

२—अध्यापक व अध्यापिकाओं को धर्म शिक्षा पढ़ाने योग्य बनाने के लिये इस विभाग की ओर से ग्रीष्म अवकाश मे धर्मशिक्षा प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा। प्रत्येक सभा से सम्बद्ध शिक्षण सस्थाओं के प्रबन्धक व मुख्य आचार्य महानुभावों से अनुरोध है कि अपने-अपने विद्यालय से दो या एक अध्यापक-अध्यापिकाओ के नाम व पते उसमे सम्मिलित होने के लिये ३० सप्ताह के अन्दर इस कार्यालय को भेज दें। सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों के मार्ग-व्यय का भार सम्बन्धित सस्थायें वहन करेंगी और प्रशिक्षार्थियो के निवास व भोजन व जलपान की व्यवस्था नि शुल्क इस विभाग की ओर से होगी। अध्यापिकाओं के शिविर अलग और अध्यापकों के शिविर अलग लगेंगे। स्थान और निश्चित तिथियों की सूचना अप्रैल के तीसरे सप्ताह में आये हुए नामों के व्यक्तियो को इस कार्यालय से व्यक्तिगत रूप से दी जावेगी।

३—आर्य शिक्षण सस्थाओं से प्राय इस कार्यालय से आर्य अध्यापक-अध्यापिकाओं सम्बन्धी मांग पत्र आते रहते हैं। इसलिये इस विभाग ने अपने कार्यालय में ऐसे विद्वानो की सूची रखने का आयोजन किया है जो आर्य हों और आर्य शिक्षण सस्थाओं में कार्य करने को उद्यत हों। जो सज्जन अध्यापकी का कार्य करने के इच्छुक हों वह अपनी योग्यता अपना पूरा पता, और आर्य समाजी होने का प्रमाणपत्र, सहित तथा आयु लिखकर प्रार्थनापत्र इस कार्यालय को भेज दें ताकि आगामी सत्र मे उनके सम्बन्ध में विचार और प्रयत्न किया जा सके। जिन शिक्षण सस्थाओं को अध्यापक व अध्यापिकाओं की आवश्यकता हो वह सस्था भी इस कार्यालय को अपनी आवश्यकता लिखे।

४—आर्य विद्वानों से प्रार्थना है कि धर्म शिक्षा को विद्यालयों में प्रभावशाली रूप प्रदान करने के विषय में कोई जानकारी सुझाव यदि उचित समझें तो इस कार्यालय को देने की कृपा करें, सभा ऐसे महानुभावों का आभार मानेगी।

—रामबहादुर एडवोकेट
अधिष्ठाता शिक्षा विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
पूरनपुर, जिला पीलीभीत

प्रोग्राम मास अप्रैल

आ० विश्वबन्धु शास्त्री—२१ से २६ प्रयाग, २९ से गुरुकुल सूर्यकुण्ड।

श्री कबीर शास्त्री—२२ से २५ मोमरी कमालपुर २८ से ३० सहुर्वा।

श्री रामस्वरूप जी—२४ से २७ रायबरेली, ३० शिवपुरी [म०प्र०]।

श्री नरदेवसिंह जी—२१ से २६ साध्याश्रम कनेवी।

श्री धर्मराजसिंह जी—२१ से २६ साध्याश्रम कनेवी।

—अखिलानन्द शास्त्री
उ० अधिष्ठाता उपदेशक विभाग

महात्मा हंसराज जी

(एक झलक)

[श्री प्रो० वेदप्रकाश जी मल्होत्रा एम ए मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा]

महात्मा हंसराज आधुनिक पजाब के निर्माता थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व के बल से पजाब के निर्माण में अद्वितीय भाग लिया। वे अपने जीवन के प्रभात मे ही समझ गये थे कि इस योद्धाओं की जन्मभूमि में आत्मसम्मान उत्पन्न करने की आवश्यकता है। यदि आज कुलोत्पन्न पजाबी अपनी सस्कृति में स्वाभिमान की भावना उत्पन्न कर सकें तो भारत के निर्माण मे अनोखा योगदान दिया जा सकता है। उन्होंने देखा कि शिक्षा का क्षेत्र इस काम के करने के लिए उत्तम है। इससे न केवल साक्षरता फैल सकती थी अपितु स्वाभिमान की भावना भी उत्पन्न हो सकती थी। भारत की प्राचीन वैदिक सस्कृति के प्रति गौरव की भावना भी इसी द्वारा ही उत्पन्न हो सकती थी। दूरदर्शी महात्मा हंसराज ने देख लिया कि पूर्व और पश्चिम प्राचीन और अर्वाचीन का समन्वय ही नवीन भारत के निर्माण की आधारशिला बन सकती है। उनकी इस दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि आज भारत भर मे आर्य समाजी शिक्षा सस्थाओं का जाल फैला हुआ है। इन शिक्षा सस्थाओं ने शिक्षा के प्रसार मे प्रशसनीय कार्य किया है। साक्षरता फैलाने के साथ उन्होंने देश-प्रेम की उत्कट भावना भी जन-मानस में प्रसारित की है।

महात्मा जी का दूसरा कार्य वेद प्रचार के क्षेत्र में था। उन्होंने बड़ा परिश्रम करके अपने आप को इस कार्य में लीन किया। डी०ए०वी० कालेज के दैनिक कर्मों के अतिरिक्त वेद प्रचार के लिए सतत प्रयत्न करना उनके गौरव का विशेष कारण था। उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त कई आर्य समाजों की स्थापना की। जीवन पर्यन्त नगर-नगर घूम कर वेद सदेश जनता-जनार्दन तक पहुचाने का यत्न करते रहे। इस काम मे बाधा उपस्थित कर दो। मुझे वह दिन याद है जब अनारकली समाज लाहौर में टकारा से आई हुई दो देवियों ने प्रार्थना की कि आर्यसमाज ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि टकारा मे भी ऋषि सदेश के प्रसार के लिए कोई प्रबल केन्द्र स्थापित करें। महात्मा जी उस समय खड़े हुए और कहने लगे कि उनकी तीव्र इच्छा पजाब से बाहर प्रचार करने की है। उन्होंने यह भी कहा कि पजाब में नवयुवक २० रुपये मासिक वेतन के लिए धक्के खाते फिरते हैं। मैं दक्षिण में और गुजरात में प्रचार करने वाले नव युवकों को दुगुना वेतन देने के लिए तैयार हू।

महात्मा जी किसी पद पर अधिक देर तक टिके रहने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने जब देख लिया कि श्री साईंदास जी कालेज के कार्य को चला सकते हैं, उन्होंने कालिज की सेवा से मुक्ति प्राप्त कर ली। उन्होंने पद लोलुपता को दूर ही रखा।

महात्मा जी सुलझे हुए विचारक तथा लेखक थे। उनकी कथनी और करनी में भेद न था। उनका चरित्रबल सब पर विदित था। उन्होंने अपने प्रसन्न वदन से बड़ी-बड़ी पीड़ाओं को पार किया था। सारी आयु अवैतनिक काम करने वाला यह नेता पजाब का हृदय-सम्राट क्यों न बनता। न उनमें दिखावा था, न क्रोध, न लालच, न मोह। वे अपनी सीमाओं को समझते थे अत. उनके निकट आने वालों को भी सीमाओं को समझना पड़ता था। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी०ए०-वी० आन्दोलन के जन्मदाता होने के नाते उन्होंने हमारे ऊपर बड़ा एहसान किया है। इस ऋण को चुकाने का केवल मात्र एक ही तरीका है। हम भी उनके उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनकी तरह ही निराकस और निस्वार्थ सेवा करें। उनका जन्म-दिन सदा यही सन्देश देता रहेगा।

✱

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, प्रयाग के तत्वावधान में
प्रयाग कुम्भ के पुण्य पर्व पर आयोजित
वेद सम्मेलन के अध्यक्ष

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

(का अध्यक्षीय भाषण)

ओ३म् तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्नि-र्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्। गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमाना सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥

[ऋग्वेद ९।९७।३४]

श्री स्वागताध्यक्ष महोदय, विद्वज्जन, देवियो एवं सज्जनो !

प्रयाग की इस प्राचीन नगरी में कुम्भ के अवसर पर वेद सम्मेलन का आयोजन कर आपकी स्वागत कारिणी समिति ने प्रशंसनीय कार्य किया है। इस सम्मेलन की अध्यक्षता के भार को स्वीकार करने के लिए आपकी समिति ने श्री यथास्वरूप जी स्वागत मन्त्री के माध्यम से जो आदेश मुझे दिया उसे स्वीकार कर मैं यहाँ उपस्थित हुआ हूँ और तदर्थ आप सबका हृदय से आभारी हूँ।

मेरी उपस्थिति एवं अध्यक्षता का क्या उपयोग है इसका निर्णय तो मैं स्वयं कर नहीं सकता हूँ परन्तु अपनी इस धारणा को आप लोगों तक पहुँचा देने की चेष्टा करना चाहता हूँ कि मैंने आपकी इस भावना और प्रेम का अपमान नहीं ही किया है। वह यह कि आपने इस सम्मेलन का स्वागताध्यक्ष एक ऐसे प्रसिद्ध लेखक, आर्य-दार्शनिक एवं आर्य समाज की पुरानी कड़ी के विद्वान् को चुना है कि जिनके कार्य से समस्त आर्य जगत् सुतराम् परिचित है। आप लोगों के साथ ही मेरी भी उनमें बड़ी आस्था है। उन्हें स्वागताध्यक्ष बनाकर मुझे इस अवसर पर अध्यक्ष का स्थान देकर आपने स्यात् यह अवसर प्रदान करना चाहा है कि वे अपनी इस वृद्धावस्था में यह देख लें कि उनकी पीढ़ी की परम्परा को आगे आने वाली पीढ़ी कहाँ तक पूर्ण कर सकेगी और इससे उन्हें कितना सन्तोष है। मैं इस दृष्टि से भी यहाँ उपस्थित हुआ हूँ और उनसे एवं आपसे मिल रहा हूँ।

वेद प्रभु की वाणी है जो प्रत्येक कल्प के आदि में परम कारुणिक भगवान् मानव के कल्याणार्थ प्रदान करता है। समुचित परिभाषा में, नहीं नहीं, भगवान् दयानन्द के दृष्टिकोण से यह ईश्वरीय ज्ञान है और है सब सत्य विद्याओं का पुस्तक। वेद की शब्दराशि ज्ञान सहित है और प्रलयकाल में परावाक् के रूप में ब्रह्म में विद्यमान रहती है। यह नित्या और आकाशवत् व्यापिनी वाक् है। इसी दृष्टि को ऋग्वेद में प्रकट करते हुये कहा गया है कि 'यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्'—ऋ० १०।११४।८ अर्थात् जितना बड़ा ब्रह्म है उतनी वाणी भी है। ब्रह्म में स्थित यह परावाक् समयक्रम से पश्यन्ती होकर साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों द्वारा साक्षात् की हुई मध्यमा रूप से प्रकट होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि परावाक् साक्षात होने से पश्यन्ती बनती है और उसी का रूप मध्यम स्थानीय वायु आदि पदार्थों में होने से उसे मध्यमा कहा जाता है। मध्यमा वाणी को वैदिक साहित्य में सरस्वती नाम भी दिया गया है। यह मध्यमा वाणी ही आन्तरिक जगत् सुषुम्ना केन्द्र में स्थित होकर वैखरी को प्रकट करती है और देवत जगत में अन्तरिक्ष में अभिव्यक्त हुई देवपत्नी द्वारा मनुष्य और प्राणियों की वाणी को प्रकट कराती है। इसी दृष्टि से ऋग्वेद में कहा गया है—यद्वाग्वदन्ति अविचेतनानि० ॥ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। ऋ० ८।१००।१०-११ इस प्रकार वाक् परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी नामों से चार प्रकार की है। ये सब वस्तुतः परास्रोत से ही निकली हैं। वैखरी वाणी ही व्यवहार की वाणी है। परा वाक् से जो ज्ञानमयी शब्द राशि पश्यन्ती बनती है वही वेद वाणी है। यह ऋषियों पर प्रकट होती है। परन्तु प्रकट होने मात्र से इसे अनित्य एवं अपूर्ण नहीं कहा जा सकता है। यह परा वाक् ही है अतः अनादि अनिधना, नित्या है। यह समस्त ज्ञान-विज्ञानों का भण्डार है। साक्षात् कृतधर्मा भगवान दयानन्द ने इसी दृष्टि से वेद को ईश्वरीय ज्ञान और सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा है। यह प्रसंग बड़ा विस्तृत है परन्तु विस्तार के लिए समय नहीं।

शाखायें और ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है

चार वेदों की संहितायें मन्त्र भाग मात्र ही वेद हैं। वेद की शाखायें और ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं अपितु वेदों के व्याख्यान हैं। संहिता, शाखाओं और ब्राह्मण ग्रन्थों की अन्तःसाक्षियों से यही तथ्य सिद्ध होता है। कई लोग यह कहा करते हैं कि शाखायें जो उपलब्ध हैं उनके देखने से यह नहीं प्रकट होता है कि ये व्याख्यान हैं। उनमें पाठभेद, मन्त्र न्यूनता और मन्त्राधिक्य आदि तो पाया जाता है परन्तु व्याख्यान होने के कोई लक्षण नहीं पाये जाते हैं। इसका समाधान यह है कि व्याख्यान की परिभाषा करने पर शाखाओं में व्याख्यान के लक्षण सर्वथा ही घट जाते हैं।

व्याख्या एवं व्याख्यान की परिभाषा केवल विस्तृत भाष्य ही नहीं है। निम्न प्रकार से भी मन्त्र की व्याख्या हो जाती है और भाव खुल जाते हैं—

१—मन्त्रों के पदों को पृथक्-पृथक् करने से।

२—अनादिष्ट देवता वाले मन्त्रों के देवता निश्चित कर देने से

३—मन्त्र से यज्ञ क्रिया का विनियोग कर देने से।

४—मन्त्रस्थ पद का पर्यायवाची पद रख देने और तदनुसार स्थिति बना देने से।

५—मन्त्र का कोई पद लेकर विनियोग आदि के आधार पर कल्पित आख्यान बना देने से।

६—मन्त्रस्थ किसी पद अथवा देवता-पद की यौगिक व्याख्या अथवा निरुक्ति कर देने से।

७—मन्त्रों को किसी निश्चित अर्थ में कम बद्ध कर देने से।

इनमें से अनेक वस्तुयें शाखाओं में पायी जाती हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों और किन्हीं शाखाओं में तो प्रतीक देकर व्याख्यान किये गए हैं अतः ये मूल वेद नहीं—व्याख्यान हैं। इसके अतिरिक्त नीचे कुछ और प्रमाण दिये जाते हैं जो स्पष्ट करते हैं कि शाखायें और ब्राह्मण वेदों के व्याख्यान हैं—

१—स एतं (भूमिर्भूम्ना) कसर्णीरः काद्रवेयो मन्त्रमपश्यत। [तैत्तिरीय शाखा १।५।४]

२—शुनः शेपमाजीगर्तिं वरुणोऽगृह्णात्—स एतां वारुणीमपश्यत। [तै० शा० ५।२।१]

३—स (वामदेव) एतं सूक्तमपश्यत् कुणुष्वपाजः प्रसृतिं न पृथ्वीमिति।

[काठक १०।५]

४—इतिहस्म आह मन्त्रज्ञः।

[मैत्रायणी ४।८।४।७]

५—मनुः पुत्रेभ्यो दायं व्यभजत।

[तै० शा० ३।१।९।९]

६—अनमीवस्य शुष्मिण इत्याहाक्षमस्येति। (तै० शा० ५।२।१।३)

७—ऋग्वेद १०।५१।८ तथा १०।५१।९ मन्त्र प्रयाजानुयाज के मन्त्र हैं। मैत्रायणि १।७।३।४ और काठक ९।१ पर प्रयाज' की विभक्तियाँ आदि लगाने का विधान है। यह विधान इन शाखाओं को व्याख्यान सिद्ध करता है।

८—शतपथ ब्राह्मण १०।४।२।२३—२५ में त्रयी विद्यास्थ ऋचाओं का परिमाण १२००० बृहती छन्द परिमाण, यजु का ८००० और ४००० बृहती छन्द परिमाण साम का माना गया है। इस प्रकार चारों वेदों के २४०० बृहती छन्द परिमाण ठहरते हैं। बृहती छन्द १६ अक्षरों का होता है अतः इससे गुणा करने पर ८६४००० अक्षर होते हैं। यह है चारों वेदों का अक्षर परिमाण। यदि शाखा और ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद माना जावे तो अक्षर परिमाण कई गुना हो जाता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में ऊपर दिए गए व्याख्यान के लक्षण तो पाये जाते ही हैं उनमें मन्त्रों की व्याख्या स्पष्ट की गई है। यजुर्वेद के लगभग १९ अध्यायों के मन्त्रों की क्रमशः व्याख्या पाई जाती है। ऐतरेय ब्राह्मण में भी मन्त्रों के व्याख्यान पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त निम्न लिखित आधारों से भी ये वेदव्याख्या ही ठहरते हैं—वेद नहीं।

१—वेद मन्त्रों का स्वर भिन्न है और ब्राह्मणों का भाषिक स्वर होता है।

२—शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के कई अध्यायों के मन्त्रों का क्रमिक विनियोग और व्याख्यान आदि मिलता है

३—शतपथ १।१।१।१ में व्रतमुपैष्यन्; अग्ने व्रतपते०, १।१।४।८।९ में उरोरन्तरिक्षं—ऊरसि वातो विभजनम तथा बृहद्ग्रावासि वानस्पत्य, ६।५।१।२ में आपो हिष्ठा मयोभुव० इत्यादि मन्त्रों की प्रतीकें देकर व्याख्यान पाये जाते हैं। लगभग सब सभी ब्राह्मणों में यह प्रक्रिया पाई जाती है।

४—चारों वेदों की आनन्त्यॆन 'ओं भूर्भुवः स्वः' आदि व्याहृतियें बतलाई गई हैं (गोपथ पूर्वार्ध १।१८)। यदि ब्राह्मण वेद होते तो उनकी भी कोई व्याहृति होती। परन्तु ऐसा नहीं है।

५—वेदों के ऋषि, देवता छन्द आदि का वर्णन अनुक्रमणियों और बृहद्देवता आदि में पाया जाता है परन्तु ब्राह्मणों का यह क्रम नहीं पाया जाता।

६—वेद की वाणी नित्य है परन्तु ब्राह्मणों और शाखाओं की वाणी को नित्य नहीं माना गया है। व्याकरण महाभाष्य में स्पष्ट दो प्रकार के शब्द माने गये हैं—कृत छन्द और अकृत छन्द शाखाओं आदि के छन्द कृत हैं और

संहिताओं के नित्य एवं अकृत हैं। महाभाष्यकार के शब्द इस प्रकार हैं। तत्र कृते ग्रन्थ—इत्येव सिद्धम। मनुष्योक्त न हि छ वासि क्रियन्ते नित्यानि छ दासोति छन्दांस्यपि क्रियन्ते। यद्यप्यर्था नित्य या त्वसौ वर्णानुपूर्वी साऽनित्या। तद भेदाच्च भवति काठक काण्व पक मौदक पैप्पलादकमिति। महाभाष्य ४।३।१०१—स्वरो नियत आम्नायेऽस्य वाशब्दस्य वर्णानुपूर्वी खल्वप्याम्नाये नियता। म० ५।२।५९। पाणिनि की अष्टाध्यायी में छन्द' पद का प्रयोग इन्हीं अर्थों में है। यहाँ पर विस्तार से मैं वर्णन नहीं कर सकता हूं। विस्तार से वर्णन तो मेरी पुस्तक दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश मे है।

आजकल कुछ दिनों से सब वेद शाखा सम्मेलन किये जाने लगे हैं। इन सम्मेलनों में यदि शाखाओं के विषय पर विविध विचार होने तो अच्छा होता। परन्तु ऐसा न करके संहिताओं, शाखाओं और ब्राह्मणों को एक बनाने का प्रयत्न किया जाता है। काश के मकान मे बैठकर भी दूसरे पर ढले फेंके जाते हैं। परन्तु इन सब कार्यों के करने के बाद भी इसके पक्ष पोषकों में इतनी हिम्मत नही है कि वे भगवान् दयानन्द के इस विचार को खण्डित कर सकें कि शाखायें और ब्राह्मण वेद के व्याख्यान हैं वेद नहीं। ऐसे सम्मेलनों से वेद की रक्षा नहीं हो रही है बल्कि उसका उपहास किया जा रहा है। ऐसे सम्मेलनों में शास्त्रार्थ का प्रबन्ध कर वास्तविक रूप को दिखाने का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

याज्ञिकी परिभाषा और वेद

यद्यपि यह निश्चित सिद्धान्त है कि शाखायें और ब्राह्मण ग्रन्थ वेद के व्याख्यान हैं तथापि परिभाषा की दृष्टि से याज्ञिकों ने अपनी सुविधा के लिए मन्त्र ब्राह्मण की वेद संज्ञा कल्पित की थी। यह एक परिभाषा है वास्तविक अर्थ नहीं। जिस प्रकार आज भी परिभाषायें बनाई जाती है परन्तु वे सार्वजनिक नियम नहीं होतीं। पाणिनि के गुण, वृद्धि लिंग आदि और न्याय के लिङ्ग, गुण आदि इसी प्रकार की परिभाषायें हैं। इसी प्रकार यज्ञ में यह परिभाषा मन्त्र ब्राह्मण की वेद के रूप में की गई इस परिभाषा के रहते हुये भी कर्मकाण्ड के ग्रन्थों और मीमांसा आदि में मन्त्र और ब्राह्मण को पृथक एवं उनके वास्तविक अर्थों में भी माना गया है। मापव सूत्रों' २।१० इस विषय पर अच्छा प्रकाश डालता है। यथा प्राच्यो नद्यो बह्व्य समुद्रमपि यन्ति मानाना छिद्यते नामधेय यज्ञ इत्याचक्षते। अर्थात जो पूर्व की नदियां बहती हैं जो दक्षिण की ओर उत्तर तथा पश्चिम की—सभी का नामधेय है परन्तु जब समुद्र मे मिल जाती है तब सब का नाम समुद्र पड़ जाता है इसी प्रकार समस्त वेद कल्प ब्राह्मण आदि का यज्ञ मे नामधेय छिन्न हो जाता है और यज्ञ कहा जाता है इसी प्रकार की प्रक्रिया का अवलम्बन कर याज्ञिकों ने मन्त्र ब्राह्मण' वेद है—यह परिभाषा बना ली वस्तुत ब्राह्मण वेद नहीं वेद के व्याख्यान ही हैं।

वेद ज्ञान विज्ञान भण्डार है

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने हमें यह बतलाया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक हैं। प्राचीन वैदिक साहित्य इस सिद्धान्त का पोषक है। श्री शंकराचार्य ने भी वेदान्त १ १-३ सूत्र में वेद को सर्वविद्योपबृंहित माना है। कुछ काल से यह धारणा कुछ नवीनों की बन गई है कि वेद केवल कर्मकाण्ड मात्र के लिए है। उनका कोई अर्थ नहीं है। परन्तु यास्क ने निरुक्त मे और जैमिनि ने मीमांसा में समाव पूर्व पक्षों को उठाकर समाधान किया है और दिखलाया है कि वेद मन्त्रों के अर्थ है—वे निरर्थक एवं केवल यज्ञार्थ नहीं हैं। वस्तुत यज्ञ भी एक प्रक्रिया वेदमन्त्रों के अर्थ की है। शेष दो प्रक्रियायें-आध्यात्मिक और आधिदैविक हैं और ज्ञान विज्ञान को दिखाने वाली हैं। कर्म काण्ड भी वेदो को बिना सार्थक माने सिद्ध एवं सम्पन्न नहीं हो सकता है। शाखाओं और विशेष कर ब्राह्मण ग्रन्थों में वेदों के रहस्य का उद्घाटन करते हुए ऋषियो ने अनेक विज्ञानों का वर्णन किया है। साम्वेद उपासना काण्ड कहा जाता है। उसका प्रथम मन्त्र 'अग्न आयाहि वीतये' आदि है। इस मन्त्र मे आये वीतये' पद की बड़ी सुन्दर एवं वैज्ञानिक व्याख्या शाखा और ब्राह्मण ग्रन्थों में की गई है। पूर्व अवस्था मे सूर्य और पृथिवी लोक पृथक नहीं होते। अग्नि इन्हें पृथक करता है। अत तैत्तिरीय शाखा का कथन है कि यह 'अग्न आयाहि वीतये' जो कहा है वह इन दोनों लोकों को पृथक करने के लिए कहा गया है—

अग्न आयाहि वीतये इति वा इमौ लोको व्यैताम। अग्न आयाहि वीतय—इति यदाह—अनयोर्लोकयोर्वीत्यै।

(तै० शा० ५ १ ५)

शतपथ ब्राह्मण इसी बात को इस प्रकार पुष्टि करता है। अर्थात यह जो वीतय (वी इति) ऐसा कहा गया है वह इसलिये यह वि इति होता है। देवो ने इच्छा की कि ये लोक किस प्रकार पृथक होवें। उन्होने इन (वीतये) तीन अक्षरो से पृथक किया और ये लोक दूर हो गए। यहा पर 'वि' का अर्थ पृथक और इति का अर्थ गमन है। शतपथ ब्राह्मण का वाक्य निम्न प्रकार है—

अग्न आयाहि वीतये—इति तद्वेति भवति वीतये—इति। ते देवा अकामयन्त कथन्नु इमे लोका वितरां स्यु॰। तानेतैरेव त्रिभिरक्षरैं व्यनयन वीतय इति त इमे विदूर लोका ॥

[शतपथ १ ४ १ २२ २३]

इसी प्रकार एक बहुत ही प्रसिद्ध मन्त्र है—

या ओषधी पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुग पुरा। मनै नु बभ्रूणामहम शत धामानि सप्त च ॥

यह ऋग्वेद १०।९७।१ पर पाया जाता है। इसका अर्थ यह है कि जो औषधिया मनुष्यों से तीन चतुर्युगी पूर्व उत्पन्न होती हैं उनके १०७ नाम हैं, १०७ स्थान हैं। ऐसा मै वैज्ञानिक जानता हू। यहा १०७ नाम और प्रयोग के स्थानो का वर्णन है। उसे १०७ नामों का परिज्ञान तो आजकल नहीं है परन्तु निरुक्त और ब्राह्मण ग्रन्थो मे प्रयोग के १०७ स्थानों का वर्णन मिलता है। वे मनुष्य के १०७ मर्मस्थान हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थों मे सप्तोत्तर मर्मशत भवति' का यही अभिप्राय है। अगर आज इन १०७ ओषधियों का परिज्ञान लोगो को होता तो संसार का महान उपकार होता।

ऋग्वेद १ २४ ८ १० मन्त्रो मे यह दिखाया गया है कि राजा वरुण अर्थात वायु ने सूर्य को अपनी कक्षा में घूमने का मार्ग दिया है उसी ने पैर रहित सूर्य को आकाश में चलने को पैर दिया है। अर्थात वही उसकी किरणों को विस्तारित करता है और वही उसे अपनी कक्षा मे घूमने का भाव देता है। दशम मन्त्र मे कहा गया है कि ये नक्षत्र जो आकाश मे स्थित हैं वे रात्रि मे तो दीखते हैं परन्तु दिन मे कहाँ चले जाते हैं कि नहीं दिखाई पड़ते। वायु (प्रवाह वायु) का यह दृढ़ नियम है कि उसके जरिये चन्द्रमा निकलता हुआ रात्रि मे दिखाई पड़ता है। यहा पर नक्षत्रों आदि की गति में सहायक वायु है अर्थात प्रवह वायु है—इस बात का वर्णन है। मन्त्र निम्न प्रकार है—

उरु हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ। अपदे पादा प्रतिधातवे ऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित ॥८॥ अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा नक्त ददृश्रे कुहचिद्दिवेयु। अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि विचाकशच्चन्द्रमा नक्तमेति ॥१०॥

वैदिक साहित्य मे सृष्टि के पदार्थों की रचना को वैदिक शब्द पूर्वक और छन्दों से सम्बद्ध माना गया है। भूरिति प्रजापति भुवमसृजत स्वरित्यन्तरिक्षम= अर्थात 'भू' कहकर प्रजापति ने पृथ्वी और 'स्व' कहकर अन्तरिक्ष की रचना की। इसका तात्पर्य यह है कि वैदिक शब्दो का सृष्टि के पदार्थों के साथ औत्पत्तिक सम्बन्ध है। यही भाव जैमिनि ने मीमांसा मे व्यक्त किया है कि 'औत्पत्तिकस्तु शब्दस्यार्थेन सम्बन्ध'।

समस्त भूत पदार्थों की अपनी एक आकृति एवं परिधि है उस परिधि को ही छन्द घेरता है। इसे ही लेकर शतपथ ब्राह्मण मे कहा गया है कि छन्दोभिरिद वयुन नद्धम' अर्थात यह सारा भुवन छन्दों से बंधा हुआ है। इस प्रकार महर्षि की यह धारणा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है सर्वथा ही सिद्ध है परन्तु इस सम्मेलन मे मै इतने समय मे अधिक बातें तो कह नहीं सकता हू और न ऐसा करना यहाँ पर ठीक ही होगा। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' इसको पूर्ण करने का काम आर्यसमाज का है। हमे चाहिए कि समाज की पूरी शक्ति लगाकर इस सूत्र को सिद्ध करें। विशेष विस्तार से इन विषयों पर मैने अपनी पुस्तकों में विचार किया है।

कभी कभी कुछ ऐतिहासिक वेद में अमुक पशु का वर्णन नहीं, सिंह का वर्णन नहीं यह नहीं, वह नहीं कहकर वेदों की रचना और आर्यों के स्थान की कल्पना करने लगते हैं। परन्तु यह मार्ग प्रशस्त नहीं। इन सामग्रियों के आधार पर कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं सिद्ध किया जा सकता है। ऋग्वेद १।६४।७ मे महिष मृग, हस्ती और चित्र भानु आदि का वर्णन है। ऋग्वेद १।१३८।२ में उष्ट्र का नाम आया है। यजु १९।१० में व्याघ्र वृक और सिंह का नाम आया है। इस प्रकार विविध पक्षियों आदि के भी नाम वेदो में मिलते हैं। परन्तु इनके बल पर किसी भौगोलिक स्थिति का ढूंढना प्रशस्त समीचीन नहीं है।

हमारा कर्तव्य

वेद का आर्यसमाज के साथ समवाय सम्बन्ध है। अत प्रत्येक आर्य एवं आर्यसमाज और उसकी सभाओ को चाहिए कि वे वेद के विज्ञान का संसार मे फैलाने का पूर्ण प्रयत्न करें। आजकल वेद सम्मेलनों के नाम सम्मेलन और वेदभाष्य के नाम मे वेदभाष्य एवं वेदान्वेषण के नाम से वेदान्वेषण अपने अपने ढङ्ग से दूसरे लोग भी करने लगे है। परन्तु इन सबका प्रयत्न वैदेशिक ढंग का होता है अथवा अपनी मान्यताओं को सिद्ध करने एवं आर्यसमाज का खण्डन करने के लिए होता है। यद्यपि समझदार विद्वानों का ऐसा भी वर्ग है जो महर्षि दयानन्द के भाष्य को स्वीकार कर रहा है और उसे सर्वोत्तम बता रहा

(शेष पृष्ठ १२ पर)

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली भारतीयता के अनुकूल है।

ज्वालापुर गुरुकुल (हरिद्वार) में दीक्षान्त भाषण

केन्द्रीय रेलवे मन्त्री

श्री सदाशिव कान्होजी पाटिल

गुरुकुल प्रणाली के सम्बन्ध में आप लोगों से कुछ कहना शायद मेरे लिए असंगत हो फिर भी यह तो मैं जरूर कहना चाहूंगा कि प्राचीन काल से हमारे देश की शिक्षण व्यवस्था में गुरुकुल पद्धति का कितना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मेरा यह मत है कि गुरुकुलों का उद्देश्य केवल लोगों को पढ़ाने और साक्षरता प्रसार करने का ही नहीं था। उन सब विचारों और भावों की नींव भी गुरुकुलों में ही डाली जाती थी जिनके आधार पर भारतीय संस्कृति हमारी सभ्यता और हमारी विचारधारा का कालान्तर में निर्माण हुआ। शिक्षा स्वयं साध्य है और साधन भी। साध्य इसे इसलिए माना जाता है कि मानव की आन्तरिक प्रवृत्तियां और अन्तर्निहित शक्तियां इसी के कारण विकसित होती हैं। विद्या से ही मनुष्य प्राणियों में श्रेष्ठ कहलाता है। संस्कृत साहित्य में विद्या को सर्वोच्च स्थान दिया गया है और अनेक सूक्तियों और नीति के श्लोकों में विद्या का गुणगान किया गया है। इसलिए विद्या को साध्य मानकर ही हमारे पूर्वज शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करते थे।

साधन के रूप में भी शिक्षा का स्थान जीवन में कम महत्वपूर्ण नहीं। मनुष्य में मानवीय गुणों के विकास, चरित्र निर्माण और उन सभी क्षमताओं के उदय का साधन शिक्षा ही है जो सामाजिक उन्नति और सुख समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। आज के युग में हम यह कह सकते हैं कि आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार की प्रगति का सर्वोत्तम साधन सच्ची शिक्षा है। हजारों वर्षों से गुरुकुलों की शृंखला ने हमारे देश में विद्या और ज्ञान का प्रकाश सब ओर फैलाया है। जिसे हम आज भारतीय दर्शन, सभ्यता और विचारधारा कहते हैं, उसके विकास में भी गुरुकुलों का हाथ था। इसलिए मैं समझता हूं कि आप लोग अपनी प्राचीन परम्परा पर गर्व कर सकते हैं।

यह मैं मानता हूं कि अन्य सार्वजनिक संस्थाओं की तरह गुरुकुलों के लिए भी समय के अनुसार चलना आवश्यक है। हमारे पूर्वजों ने जिन अनेक धर्मों को स्वीकार किया था उनमें एक कालधर्म भी है। काल अथवा समय के अनुसार कार्य करने को ही श्रेष्ठ माना गया है। मुझे बहुत खुशी है कि इस गुरुकुल के व्यवस्थापकों ने शिक्षा में जहां भारतीय विचारधारा और धार्मिक ग्रन्थ को ऊंचा स्थान दिया है, वहां सामयिक विषयों की भी अवहेलना नहीं की है। विद्यार्थियों को यहां देश विदेश की सामयिक परिस्थिति से ही परिचित नहीं कराया जाता वर्तमान परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। मैं समझता हूं यही कारण है कि अन्य भाषाओं के साथ अंग्रेजी के अध्ययन की भी यहां अनिवार्य रूप से व्यवस्था की गई है। इसे मैं व्यवस्थापकों की व्यवहार कुशलता और दूरदर्शिता ही कहूंगा।

आज के युग में निस्सन्देह विदेशी भाषाओं, विशेषकर अंग्रेजी जैसी विश्व व्यापी भाषा के अध्ययन का बहुत महत्व है। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान विज्ञान की आधुनिक प्रवृत्तियों से विशेष सम्बन्ध है। यद्यपि हम अपनी भाषा को ठीक ही सर्वप्रथम स्थान देते हैं, और यह होना भी चाहिए फिर भी अपने विद्यार्थियों के लिए और भारत की भावी सन्तानों के लिये हमें ज्ञान के किसी भी द्वार को बन्द नहीं करना चाहिए। इसी में देश का कल्याण है और इसी में सच्ची शिक्षा की सार्थकता है।

भले ही मुझे कोई परम्परावादी कहे किन्तु संस्कृत के सम्बन्ध में मैं अपने स्वतन्त्र विचार आप लोगों के सामने रखना चाहता हूं। सभी आधुनिक भाषाविज्ञ संस्कृत को एक महान भाषा मानते हैं पर हमारे लिए संस्कृत भाषा मात्र नहीं है। हमारे लिए संस्कृत हजारों वर्ष से इस देश के लोगों के चिन्तन और उनकी उपलब्धियों की सुरक्षित निधि के समान है। यही नहीं, इस भूखण्ड को एक देश के रूप में भारत की संज्ञा भी संस्कृत के कारण ही मिली और संस्कृत के प्रताप से ही व्यापक विभिन्नताओं और विविधताओं के होते हुए यह विशाल भूखण्ड अपनी एकता को बनाये रख सका है। विभिन्नताओं में राष्ट्रीयता तथा एकता का सूत्रपात जिन कारणों से भारतीय जीवन में हुआ, मैं समझता हूं संस्कृत का अध्ययन और प्रसार उनमें सर्वप्रथम है। आश्चर्य की बात यह है कि राष्ट्रीय एकता को दृढ़ बनाये रखने की शक्ति संस्कृत भाषा में जितनी प्राचीन और मध्य युग में थी उतनी ही वर्तमान युग में भी है। आज भी जब कि बहुत सी प्रादेशिक भाषाएं उन्नत हो चुकी हैं और उनके साहित्य समृद्ध हो चुके हैं संस्कृत ही हमारे लिए समान रूप से प्रेरणा और एकरूपता का स्रोत है। इसलिए मैं संस्कृत के अध्ययन और अध्यापन को राष्ट्र-निर्माण की दृष्टि से रचनात्मक कार्य मानता हूं।

उत्तर भारत में संस्कृत के अध्ययन की परम्परा को जीवित रखने की दिशा में गुरुकुलों ने जो कार्य किया है वह प्रशंसनीय है। इस समय संस्कृत के साथ साथ आप लोग हिन्दी के विकास और प्रसार में भी पूर्ण योगदान दे रहे हैं, यह और भी अच्छी बात है। हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा है और देर सबेर इसे भारत में वही स्थान प्राप्त होगा जो किसी भी स्वतन्त्र और स्वाभिमानी देश में राष्ट्रभाषा को मिलना चाहिए। यह खुशी की बात है कि साहित्य इतिहास दर्शन आदि साधारण विषयों के साथ साथ विज्ञान के अध्ययन का माध्यम भी आपके गुरुकुल में अधिकतर हिन्दी ही है। विज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाने और स्वयं हिन्दी को विकास के शिखर तक ले आने का यही एकमात्र उपाय है।

यहां मैं अपनी ओर से एक सुझाव देना चाहता हूं। यद्यपि यह गुरुकुल देश के उत्तरी अंचल में स्थित है, यहां पढ़ने वाले पांच सौ विद्यार्थियों में से बहुत से देश के अन्य भागों से आये हैं। बहुत से विद्यार्थी अहिन्दी भाषी हैं किन्तु वे दूसरे विद्यार्थियों की तरह हिन्दी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि देश की दूसरी प्रादेशिक भाषाओं के अध्ययन की सुविधा यहां आसानी से हो सकती है। अन्य भारतीय भाषाओं के पठन पाठन से जहां सभी विद्यार्थियों को लाभ होगा वहां इस विद्यालय के वातावरण में और विद्यार्थियों के मानसिक दृष्टिकोण में यथेष्ट उदात्त भावना का भी सृजन होगा। यही भावना भारतीय राष्ट्रीयता और देश की एकता की बुनियाद है। ऐसी व्यवस्था से विद्यार्थियों को ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को लाभ पहुंचेगा। एक दूसरे को समझने के लिए दूसरों की भाषा जानना बड़ा आवश्यक है। भाषा ही मनुष्य की अन्तरात्मा और आन्तरिक विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। इसी कारण हमारे विद्यार्थियों का बहुभाषाविद होना राष्ट्र-हित में और उनके निजी मानसिक विकास की दृष्टि से बहुत जरूरी है। मेरा यह सुझाव है कि इस गुरुकुल के सभी विद्यार्थियों को हिन्दी के साथ साथ एक और भारतीय भाषा का ज्ञान अनिवार्य रूप से कराया जाना चाहिए। ऐसी ही कुछ वर्षों से भारतीय सरकार की नीति भी रही है।

स्वाधीन भारत में शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली क्या हो, यह विषय विवादास्पद हो सकता है किन्तु इस सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते कि शिक्षा में धार्मिक विचारों और आध्यात्मिक मूल्यों को भी स्थान मिलना चाहिए। मैं यहां धार्मिक शब्द का प्रयोग संकीर्ण अर्थों में नहीं कर रहा हूं। मेरा अभिप्राय ईश्वर में आस्था और नैतिक कर्तव्य की चेतना से है। व्यक्ति अपने हित में और समाज की उन्नति के हित में जो कुछ भी करता है धार्मिक तथा नैतिक धारणाओं से उसका निकट का सम्बन्ध है। कर्तव्यपरायणता की कल्पना का आधार ही नैतिकता है और स्वयं नैतिकता बहुत हद तक हमारी धार्मिक मान्यताओं और वैयक्तिक तथा सामाजिक आचरण पर आधारित है। इसलिए मेरे विचार से पार्थिव शिक्षा के साथ साथ आप लोग इस विद्यालय में यदि धार्मिक शिक्षा पर भी जोर देते हैं, यह बात प्रशंसनीय है। इसी प्रकार हम विद्यार्थियों को मानवोचित गुणों और उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित कर सकते हैं। इस दिशा में आपका कार्य अनुकरणीय है और मैं आशा करता हूं कि अन्य शिक्षण संस्थाएं आपसे कुछ सीखने का यत्न करेंगी।

स्वयं शिक्षा के क्षेत्र में हमारी परम्पराएं प्राचीन ही नहीं बहुत व्यापक और ऊंची भी हैं। शिक्षार्थी को आरम्भ से ही यह सिखाया जाता था कि माता-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

विचार-विमर्श

दाराशिकोह और उसकी वैदिक वाङ्मय के प्रति श्रद्धा

[उपनिषद् भूमिका का अनुवाद]

[अनु०—विद्याभिक्षु आर्य प्रधानाचार्य, हिन्दू इण्टर कालेज रसौली बाराबंकी]

मुगल साम्राज्य के अन्तिम काल मे जिस समय औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता ने भारतवर्ष के हिन्दुओ पर नाना प्रकार के अन्याय और अत्याचारों को इस्लाम धर्म का एक पुनीत कर्तव्य समझ रखा था, उसी काल मे उसके बड़े भाई दाराशिकोह ने धर्म का वास्तविक अर्थ क्या समझा था और इसके इस्लामेत्तर धर्मों विशेषकर वैदिक धर्म के प्रति क्या विचार थे। इसे समझने के लिए हम उसके द्वारा फारसी भाषा मे अनूदित ४९ उपनिषदों की भूमिका का हिन्दी रूपान्तर दे रहे हैं। हमे आशा है कि इससे पाठकों को उसकी वास्तविक भावनाओं का पता चल जायगा।

—लेखक

स्तुति के योग्य केवल वही सत्ता है, कि समस्त ईश्वरीय पुस्तकों के 'अर्थ' के प्रथमाक्षर मे जिसके नित्य रहस्य का संकेत है तथा स्मरणीय केवल वही एक महानाम है, जिसका उल्लेख कुरान की सूरतें फातिहा मे है और जिसके साथ समस्त देवता, वेदो पुस्तकें, समस्त ऋषि तथा मुनि अङ्कित हैं।

विहित स्तुति प्रार्थना के उपरान्त साधु स्वभाव दाराशिकोह १०५० हिजरी मे जब स्वर्ग भूमि कश्मीर मे गया था तो ईश्वर की असीम कृपा के आकर्षण तथा अपरिमित अनुकम्पा से उसे मुल्लाशाह (ईश्वर उन पर कृपा करें) द्वारा दीक्षा पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुल्लाशाह एक ख्यातिनामा महात्मा, एक पहुंचे हुए सन्त एक सच्चे अगुणी तथा महान गुरु और ब्रह्मज्ञानी थे। क्योंकि इस तुच्छ को प्रत्येक सम्प्रदाय से मिलने तथा ब्रह्मवाद की चर्चा सुनने का आरम्भ से ही चाव था और उसने तसव्वुफ (वेदान्त) की अनेक पुस्तकों का अध्ययन करके वर्षों तक इस विषय से सम्बन्धित कई ग्रन्थों की रचना की थी और जिसकी अगाधसिन्धु तुल्य ब्रह्मज्ञान की पिपासा निरन्तर बढ़ती जाती थी और कतिपय ऐसी जटिल समस्यायें मन मे उत्पन्न होती रहती थीं जिनका समाधान ईश्वरीय ज्ञान तथा परम गुरु के बिना सम्भव न था।

कुरान शरीफ मे बहुत स्थानों पर सांकेतिक वर्णन है। जिनके ऐसे समझने वाले इस युग मे सर्वथा दुर्लभ हैं, जिन्होंने समस्त ईश्वरीय पुस्तकों का अध्ययन किया हो और उनकी सहायता से उन्हे समझा सकें। क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान अपनी व्याख्या स्वयं करता है। यदि एक पुस्तक में कोई बात व्यञ्जनात्मक ढंग से सूक्ष्म रूप मे वर्णित है तो दूसरी मे उसकी स्पष्ट और विस्तृत व्याख्या विद्यमान है।

लेखक ने इसी उद्देश्य से तौरात, जुबूर, इञ्जील तथा अन्य ईश्वरीय पुस्तकों का अध्ययन किया परन्तु ब्रह्मज्ञान का वर्णन उनमे अत्यन्त सूक्ष्म तथा अस्पष्ट रूप से पाया जाता है। उन सरल अनुवादों से जिन्हें स्वार्थियों ने किया है जब ज्ञान पिपासा शान्त न हुई तब मेरा ध्यान इस ओर गया कि पता लगाऊँ कि भारतवर्ष मे जो ब्रह्मज्ञान की चर्चा पाई जाती है उसका उद्गम क्या है? प्राचीन भारतीय आर्यों के लौकिक तथा आध्यात्मिक कर्मों की श्रेष्ठता से इन्कार नहीं किया जा सकता और उनके एक ब्रह्मवाद के सिद्धान्त पर किसी प्रकार की शङ्का के लिए कोई स्थान नहीं है अपितु वह अत्यन्त विश्वसनीय है, वर्तमान मूर्खों की भ्रान्त धारणाओं के विपरीत जिन्होंने अपने आपको उलेमा (विद्वान मान लिया है और जो एकेश्वरवादी हिन्दुओ के विरुद्ध कुफ्र के फतवे देकर कुरान शरीफ की सत् शिक्षाओं और नबी की वास्तविक हदीसों के आदेशो के विपरीत उन (एकेश्वर वादियों) को मार डालने और उन पर अत्याचार ढाने के पीछे पड़े हैं। यह मूर्ख (उलमा) ईश्वर के मार्ग के लुटेरे हैं।

(बहुत अधिक) खोज के उपरान्त ज्ञात हुआ कि प्राचीन आर्यों के मध्य इन (कथित) आसमानी पुस्तकों, तौरात, जुबूर और इञ्जील से पूर्व चार पुस्तकों ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का आविर्भाव (आदि कालीन) सर्वश्रेष्ठ ऋषियों की अन्तरात्मा मे हुआ जैसा कि इन्हीं पुस्तकों मे विदित है और (फिर) इन्हीं चारों पुस्तकों एक मात्र जिनमे श्रेय और प्रेय मार्गों का उल्लेख है कि स्पष्ट सविस्तार व्याख्या, जब के ऋषियों ने अलग करके उसका नाम उपनिषद रखा जिसके स्वाध्याय को उन्होंने अपने लिए श्रेष्ठतम उपासना माना।

क्योंकि मेरा लक्ष्य ब्रह्मतत्व की वास्तविक जानकारी था न कि अरबी, सुरियानी, इबरानी अथवा संस्कृत भाषाओं के माध्यम का मैंने चाहा कि इन उपनिषदों का जो ब्रह्म ज्ञान की भण्डार है, और जिनके मनन इस (हिन्दू) जाति मे भी नगण्य हैं, फारसी भाषा मे, बिना किसी न्यूनाधिकता के निस्वार्थ भाव से

(शेष पृष्ठ १० पर)

सुझाव और सम्मतियाँ

राजस्थान में—

संस्कृत विश्वविद्यालय कहां हो?

अभी दो दिन पहले ही जब श्री तिलकायत जी का अभिनन्दन जयपुर मे किया गया तब उन्होंने यह घोषणा की कि नाथद्वारा मे संस्कृत विश्वविद्यालय बनेगा। राजस्थान के लिए यह सौभाग्य की बात होगी कि उसमे यह संस्कृत का विश्वविद्यालय हो।

संस्कृत विश्वविद्यालय के लिए तीन स्थानों से पैसा व स्थान आदि देने का वचन मिला है। नाथद्वारा रतनगढ़ और सरदार शहर वाले इसकी स्थापना अपने अपने यहां कराना चाहते हैं। स्थान कौन-सा उचित हो इस बारे मे समझता हूं कि एक निष्पक्ष निर्णय होना चाहिए।

यह ठीक है कि उपर्युक्त तीनों स्थानों वाले पैसा व स्थान देंगे। परन्तु विश्वविद्यालय केवल मकानों व धन से नहीं चला करते। शिक्षा संस्थाओं के लिए मुख्य हैं विद्यार्थी। क्या उपर्युक्त तीनों स्थानों पर विद्यार्थी मिल सकेंगे? अनुभव इसके विपरीत है। नाथद्वारा मे सम्प्रति एक संस्कृत पाठशाला चल रही है। वहां छात्रवृत्ति देने के बावजूद विद्यार्थियों की संख्या नगण्य है। यही हाल रतनगढ़ और सरदारशहर का भी है। दूसरे ये तीनों स्थान राजस्थान के कोनों में स्थित हैं जिससे मध्यवर्ती स्थान में ही विश्वविद्यालय का रहना उपयुक्त एवं व्यावहारिक होगा।

मेरी दृष्टि में राजस्थान का मध्यवर्ती स्थान अजमेर ही हो सकता है। अजमेर के समीप ही पुष्कर भी है। ऐच्छिक संस्कृत लेकर हायर सेकेण्डरी परीक्षा देने वालों की संख्या भी पर्याप्त है। अजमेर में एक राजकीय संस्कृत कालेज भी है। अजमेर शिक्षा की दृष्टि से आगे बढ़ा हुआ शहर है। यहां कालेजों सहित शिक्षा संस्थाओं की संख्या इतने परिमाण के रहते किसी भी राजस्थानी शहर से अधिक है। न केवल पुरुषों की अपितु स्त्रियों की संख्या भी अधिक है।

और भी एक बात है। निकट भविष्य में यहां आयुर्वेद विश्वविद्यालय बनने जा रहा है। यदि उसके साथ संस्कृत विश्वविद्यालय को सम्बद्ध कर दिया जाए तो दोनों की समुन्नति साथ-साथ होती जाएगी। स्थानादि चुनने में सुविधा होगी।

आज वह समय वह नहीं रहा जिस में केवल जन्मना ब्राह्मण कहलाने वाले संस्कृत पढ़ें। नाथद्वारादि में ऐसे ही लोगों की संख्या अधिक रहेगी जो संस्कृत का अध्ययन केवल ब्राह्मणों के लिए उपयुक्त समझते हों। परन्तु अजमेर में आर्यसमाजियों एवं सुधारकों के आधिक्य के कारण ब्राह्मणतर लोग भी संस्कृत पढ़ने के लिए सहर्ष आते जायेंगे।

अतः सरकार से निवेदन है कि उपर्युक्त बातों को ध्यान मे रखते हुए संस्कृत विश्वविद्यालय अजमेर में ही स्थापित किया जाना चाहिए।

—मंजुलता प्रधानाध्यापिका
डी०ए०वी० क० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, अजमेर

प्रयाग कुम्भ के पुण्य पर्व पर आयोजित

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

संक्षिप्त वृत्तान्त, स्वीकृत प्रस्ताव तथा स्वागताध्यक्ष

श्री डा० सत्यप्रकाश

अध्यक्ष, रसायन विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय का

स्वागत भाषण

भारतीय राष्ट्र के प्रेमियों तथा कर्णधारो !

प्रयाग नगरी में कुम्भ के पर्व पर आप सब अभ्यागतों का स्वागत करते हुये मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। प्रयाग की ऐतिहासिकता और कुम्भ पर्व सम्बन्धी भावनाओं से आपको परिचित कराने की आवश्यकता ही क्या है ? वस्तुतः भारतवर्ष की यह नगरी प्रत्येक युग में ही पवित्र और पावन मानी गयी है। यज्ञ स्थली होने के कारण इसका नाम प्रयाग पड़ा। श्रेष्ठतम समस्त कार्यों का नाम ही यज्ञ है अतः श्रेष्ठतम आयोजनाओं का प्रवर्तन प्रयाग की विशेषता रही है। गंगा और यमुना के दोनों तीरों पर योजनों तक फैली हुई यह भूमि प्रयाग का तीर्थ क्षेत्र मानी जाती है। गंगा पार प्रतिष्ठान पुरी या झूंसी, एवं ३५-३६ मील दूरी पर स्थित कौशाम्बी, सभी प्रयाग क्षेत्र के अन्तर्गत हैं, जिन्होंने इतिहास में यश प्राप्त किया। महर्षि भरद्वाज की विद्यापीठ अपनी परम्परा के लिये प्रसिद्ध है। शतपथ ब्राह्मण में प्रोति कौशाम्बेय कौसुरुबिन्दि और उद्दालक का उल्लेख है। कौसुरुबिन्दि कौशाम्बी का निवासी था। कौशाम्बी के पड़ोस में ही लगभग दो मील दूरी पर पभोसा नामक स्थली पर महर्षि कणाद का आश्रम था जहाँ उसने अपने वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित परमाणुवाद और कार्य-कारणवाद की नींव डाली, जो आज के युग की आधार शिला बनी हुई है। आज का युग परमाणु-युग कहलाने लगा है, और परमाणु का सर्व प्रथम कल्पना भारत में महर्षि कणाद की और यूनान में ल्यूकिटियस और डिमोक्रिटस की देन हैं।

प्रयाग की इस नगरी ने युग-प्रवर्तक पुरुषों को पोषित किया। वैदिक काल से लेकर वर्तमान शती तक का इतिहास इस नगरी के गौरव का इतिहास है। अशोक अकबर और अनेक सम्राटों से सम्मानित यह नगरी देश के वर्तमान इतिहास में महामना मालवीय, जवाहर लाल नेहरू, राजर्षि टण्डन और दिवंगत प्रधान मन्त्री लालबहादुर जी की तपोभूमि रही है। नरम दल के राजनीतिज्ञों में चिन्तामणि और तेज बहादुर सप्रू का नाम इस नगरी से सम्बद्ध है। सप्रू के ऐलबर्ट रोड के निवास स्थान पर और मोतीलाल जी के आनन्द भवन में देश की ऐतिहासिक आयोजनायें हम लोगों के जीवनकाल में ही बनीं, और इस नगरी ने राष्ट्र की वर्तमान जागृति में महत्वपूर्ण भाग लिया। अतः ऐसी ऐतिहासिक नगरी में अभ्यागतों का स्वागत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यन्त्रालय प्रारम्भिक दिनों में प्रयाग में ही था जहाँ से वेदाय प्रकाश और वेद-भाष्य के बहुत से फर्मे छपे। इस प्रकार युग पुरुष महर्षि दयानन्द के जीवन से भी, इस नगरी का सम्बन्ध रहा। प्रयाग ऐसी ऐतिहासिक नगरी में आप राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में भाग लेने आए हैं, और वह भी कुम्भ ऐसे पर्व पर, यह बात कम महत्व की नहीं है। कुम्भ मेले की विशालकायता संसार का कोई और मेला नहीं कर सकता। वर्तमान युग में कुम्भ मेले के ही अवसर पर देश ने एक नयी क्रान्ति को जन्म दिया था। कुम्भ के पर्व पर ही हरद्वार में युग प्रवर्तक दयानन्द ने पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा' लहराई और ज्ञान एवं व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्ति का नारा लगाया। 'पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा' हमें आज भी सन्मार्ग पर आने का संकेत कर रही है। पाखण्ड न केवल धार्मिक और साम्प्रदायिक क्षेत्रों में ही अनर्थ कर रहे हैं, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में भी वे उतना ही अनिष्ट का कारण बन रहे हैं। पुराने युग में धर्मध्वजियो से जिस प्रकार सतर्क रहना आवश्यक था, वर्तमान युग में दल-ध्वजियों से भी उतना सतर्क रहना वाञ्छनीय है। धर्माधिकारियों के मठ, अखाड़े, झंडे और पण्डे थे, उसी प्रकार देश की वर्तमान जागृति में राजनीतिज्ञों के भी मठ, अखाड़े, झंडे और पण्डे विभिन्न नामों से हमारे सामने आ रहे हैं। इनमें से कुछ दल इस देश की भूमि से ही उद्भूत हैं, किन्तु कुछ दूर देशों से भी आए हुए हैं, रूस से और अमरीका से, इन दलों के आचार्य भी हैं, प्रचारक भी और धन कुबेर भी इनके पृष्ठ-पोषक हैं। राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में कहीं-कहीं इनकी सद्भावनायें हमारे साथ हैं, तो कहीं-कहीं उनके षड्यन्त्र और कुचक्र भी देखने को मिल जाते हैं। इस प्रकार पुराने देशी-विदेशी मतमतान्तरों से जैसे हमें सतर्क रहना आवश्यक हो गया है उसी प्रकार आज इन नये मतमतान्तरों और उनके नये आचार्यों से भी हमें सतर्क रहना है। धर्म की आड़ में विदेशी शासन हमारे देश में अनिष्ट का कारण बना, और आज राजनीतिक विचारों की आड़ में देश में एक नयी परतन्त्रता प्रवेश पा रही है जिससे हमें सावधान रहना चाहिये। आप सब लोग जो इस राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में भाग लेंगे उन समस्याओं पर सम्भवतः कुछ विचार करेंगे जो नये रूप में आज प्रस्तुत हो गयी हैं।

यह राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आर्य-विचारकों की विचार-धारा का सम्मेलन है। आर्य विचारक मानव मात्र के कल्याण की बात सोचता है। आर्य विचारक पृथिवी मात्र को अपनी माता या मातृभूमि मानता है. और मानव मात्र को अपना बन्धु। आर्य समाज की स्थापना सब देशों के कल्याण के लिए है, और महर्षि दयानन्द ने जो विचार-धारा हमारे समक्ष प्रस्तुत की, उसके अनुसार गङ्गा जितनी पवित्र है, वोल्गा या टेम्स भी उतनी ही। हिमालय जितना पवित्र है, आल्प्स भी उतना ही, प्रयाग जितना पवित्र है, मक्का भी उतना ही। प्रत्येक राष्ट्र के उन्नायक और विजेता एक सी ही स्तुति के पात्र हैं, और मनीषी विचारक भी। हमें सभी राष्ट्रों को सद्भावना से देखना है। आर्यों का यह राष्ट्रीय गीत 'आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरइषव्योऽतिव्याधीमहारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥" (यजु० २२।२२)

मंगल कामनायें प्रत्येक राष्ट्र के लिए करता है। प्रत्येक राष्ट्र में पाण्डित्य एवं आचार-पूर्ण ब्राह्मण हों शूर क्षत्रिय हों' प्रचुर दूध देने वाली गायें और बलवान घोड़े हों, सब प्रकार से योग्य मातायें और बहिने हों, सब देशों में समयानुसार वर्षा हो, और सब राष्ट्र फल-फूल धन-धान्य से सम्पन्न हों। सर्वत्र योग-क्षेम हो।

विश्वबन्धुत्व और मानव मात्र के कल्याण की भावना राष्ट्रीय भावनाओं का पोषण करती है, उसमें बाधक न हों है। आततायियों का युद्ध में हनन भी विश्वकल्याण की भावना से ही है। दण्ड और शासन के मूल में भी सद्भावनायें हैं। इसलिए ब्रह्म शक्ति और क्षत्र-शक्ति दोनों का प्रतिष्ठापन इस वैदिक संस्कृति की विशेषता है। बल, तेज, वीर्य, ओज और मन्यु इन पाचों गुणों का व्यक्ति और समष्टि में महत्वपूर्ण स्थान है। शक्तिशाली राष्ट्र के निवासी ही 'ब्रह्मसि बल मे देहि' से लेकर 'मन्युरसि मन्युं मे देहि' तक के शब्दों मे ओजस्वी प्रार्थना कर सकते हैं और इन गुणों की उपलब्धि के, अनन्तर ही वे 'सहोऽसि सहो मे देहि' कहने के अधिकारी बनते हैं।

बीसवीं शती में राष्ट्र-रक्षा का प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय बन गया है। आजकल ऐसा लगता है कि भूखण्ड के समस्त राष्ट्र सोवियट यूनियन और संयुक्त राष्ट्र अमेरीका के प्रबल दलों में बंट गये हैं। पचास वर्ष पूर्व इन दोनों राष्ट्रों को कोई नहीं पूछता था। पचास वर्ष के पश्चात् इन की क्या स्थिति होगी, और कौनसी अन्य शक्तियाँ उत्पन्न होंगी, कोई नहीं कह सकता। आज भारत पिछड़ा हुआ है, रूस और जापान भी ५०-६० वर्ष पूर्व इतने ही पिछड़े थे।

अतः हममें आत्मविश्वास आवश्यक है, और हमारा राष्ट्र शक्तिशाली बन सकता है, ऐसा निश्चय हममें होना चाहिये। देश में बड़े होने की क्षमता है, पुराना इतिहास जो हमारे अतीत के उत्कर्ष का साक्षी है। आवश्यकता है तपस्या और नीतिमत्ता की। पुरुषार्थ और आत्म-निर्भरता ही हमारा सम्बल होना चाहिये। भीख मांग कर हम अपने को सबल नहीं बना सकते। अन्य देशों के दान और अनुग्रह हमें किसी समय परावलम्बी बना देंगे। पर अपने देश को सम्पन्न बनाने के लिये देश के व्यक्तियों को अथक परिश्रम करना पड़ेगा। तपस्या द्वारा ही हम वसुन्धरा का दोहन कर सकते हैं। उच्च वैदिक सिद्धान्त यदि हमारे समाज में नैतिकता का प्रचार न कर सके तो इसका कलंक उन सब धार्मिक संस्थाओं को लगेगा, जिनसे आशा की जाती है कि वे राष्ट्र की और अधिक सेवा न कर सकें तो कम से कम नैतिकता का स्तर ही ऊँचा बना दें। स्वतन्त्र भारत में यदि नैतिकता का स्तर नीचा होता गया, तो इसके लिये हम दोषी किसको ठहरा सकते हैं ? शासक और प्रजा, ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य नैतिकता के स्तर में पतित हो गये, तो फिर राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन में आप कुछ क्रियात्मक सुझाव अपने कार्यों

लिये प्रस्तुत करेंगे। कब किसने कहाँ पर किस तरह कितनी भूल कर दी, इसकी लम्बी सूची बनाने से हमारे इष्ट की सिद्धि न होगी। किस व्यक्ति या समष्टि ने अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति नहीं की कब हमसे क्या भूलें हुई या अपने से इतर दूसरों को क्या कब करना चाहिये इसकी अपेक्षा हमें स्वयं क्या करना है यह बात अधिक सोचने की है। हम सब की कामना यह है कि राष्ट्र हमारा सपन्न हो, और प्रबल राष्ट्रों की पंक्ति में बराबर के स्थान पर आसीन होकर हमारा राष्ट्र विश्व में मानव कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करें। यदि हमारा राष्ट्र प्रबल और शक्तिशाली न हुआ तो फिर हमारे सुझावों और आदर्शों का भी कोई मूल्य न होगा।

मैंने आपका बहुत समय इस स्वागत में ले लिया। आजकल की तत्कालीन परिस्थिति में मैं निम्न ऋचा द्वारा ईश्वर से योग क्षेम की प्रार्थना कर सकता हूँ—

स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मे महि क्षत्रं जनाषालिन्द्र तव्यम्। रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन् राये च नः स्वपत्या इषे धाः॥ (ऋ० १।५४।११)

अर्थात् हे इन्द्र परमात्मन, सुख की वृद्धि करने वाला हमें यश प्राप्त हो, राष्ट्र को उत्कर्ष की ओर ले जाने वाला शत्रुघाती हम में बल हो। हमारे धन सम्पन्नों की रक्षा कर, हमारे विद्वानों को निरापद कर। हमारे राष्ट्र को उत्तम सन्तान अन्न एवं ऐश्वर्य प्राप्ति के साधनों के प्रति समर्थ कर।

संक्षिप्त वृत्तान्त तथा स्वीकृत प्रस्ताव

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में, कुम्भ नगर प्रयाग में, दिनांक २० एवं २१ जनवरी को हुआ। २० जनवरी को सम्मेलन की अध्यक्षता पं० पद्मकान्त मालवीय ने की। स्वागताध्यक्ष डा० सत्यप्रकाश एवं स्वागत मंत्री श्री दयास्वरूप के अतिरिक्त गुरुकुल मथुरा आश्रम बम्बई के ब्रह्मचारी दत्त मूर्ति जी, श्री मन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर पंजाब के प्रतिनिधि प्रो० रमेशचन्द्र जी अवस्थी एम० ए० एवं भारत राष्ट्रीय चर्च के लार्ड पादरी एम० ए० जे० हल, एस विलियम्स के भाषण हुये। २१ जनवरी को सम्मेलन की अध्यक्षता ब्रह्मचारी दत्तमूर्ति जी ने की। निम्नलिखित ९ प्रस्ताव पारित हुए—

प्रस्ताव संख्या १—यह सम्मेलन विगत सितम्बर ६५ में भारत पाक संघर्ष के समय भारतीय सेना के नौजवानों ने जो शौर्य एवं राष्ट्र प्रेम का अद्भुत परिचय दिया है उसके प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रदर्शित करता है तथा उन समस्त वीर सैनिकों के प्रति जिन्होंने अपने प्राणों को इस युद्ध में उत्सर्ग किया है श्रद्धांजली प्रस्तुत करता है। शोक ग्रस्त परिवारों के प्रति पूर्ण सद्भावना तथा दिवंगतों की यश कीर्ति सर्वदा अमर रहे, ऐसी अभिलाषा व्यक्त करता है।

प्रस्ताव संख्या २—विगत वर्ष भारत पाक युद्ध के समय भारतीय जनता ने जिस धैर्य उत्साह एवं राष्ट्रीय एकता का परिचय दिया है वह देश के इतिहास में अपूर्व घटना है। यह सम्मेलन भारत की समस्त जनता को हार्दिक बधाई देता है तथा भूरि-भूरि अभिनन्दन करता है तथा आशावान है कि भविष्य में यह एकता दृढ़ होती जायेगी।

प्रस्ताव संख्या ३—यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा एवं विकास को ध्यान में रखते हुये नवोदित शक्तिशाली राष्ट्र इस्राईल को मान्यता प्रदान करें।

प्रस्ताव संख्या ४—यह सम्मेलन भारत पाक संघर्ष के अवसर पर उन समस्त राष्ट्रों को विशेषतः जापान, मलेशिया सिंगापुर आदि, जिन्होंने पाकिस्तान को स्पष्ट रूप से आक्रमणकारी घोषित किया था, के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

प्रस्ताव संख्या ५—यह सम्मेलन राष्ट्र की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार से सादर अनुरोध करता है कि एटम बम निर्माण की घोषणा करें। आज का समय तथा हमारी शत्रुओं से घिरी हुई जो स्थिति है उसमें इस अस्त्र का बनाना नितान्त आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

प्रस्ताव संख्या ६—यह सम्मेलन भारत सरकार से साग्रह निवेदन करता है कि अपनी हठधर्मी का परित्याग करके समस्त भारत में गोहत्या का अविलम्ब प्रतिबन्ध कर दे। भारतीय जनता की मनोभावना का आदर तथा देश की एकता के लिए यह पग उठाना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रस्ताव संख्या ७—यह सम्मेलन भारत सरकार से प्रबल अनुरोध है कि अब भाषा तथा सम्प्रदाय के आधार पर वर्तमान प्रदेशों का और अधिक विभाजन न किया जाय। वर्तमान पंजाबी सूबा की साम्प्रदायिक मांग एवं हरियाणा की अवसरवादी मांग को सरकार अविलम्ब स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दें।

प्रस्ताव संख्या ८—यह सम्मेलन भारत सरकार से बहुत प्रबल शब्दों में अनुरोध करता है कि विदेशी मिशनरियों के धर्म प्रचार की ओट में भारत के मानचित्र को बदलने तथा ईसाईस्तान के बनाने की योजनाओं से सतर्क हो जाय और इस के राष्ट्र विरोधी कार्यों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दें।

प्रस्ताव संख्या ९—अभी हम एक संकट का मुकाबला कर चुके हैं और भविष्य में इससे भी बड़े संकट हमारे ऊपर मंडरा रहे हैं। अतः यह सम्मेलन बड़े ही प्रभावकारी एवं प्रबल शब्दों में भारत सरकार एवं विधायकों से अनुरोध करता है कि निम्न बातों को कार्य रूप में परिणत करके राष्ट्र की सुरक्षा दृढ़ होने में सहायता प्रदान करे।

(क) राष्ट्र में कोई भी सामाजिक नियम विशेष वर्ग या जाति को ध्यान में रखकर न बनाया जाय अपितु प्रत्येक नियम राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के लिये समान रूप से अनिवार्य हो।

(ख) केन्द्रीय सत्ता को अधिक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली होना आवश्यक है अतः एकात्मक (यूनिटी) सरकार बनाने की ओर अविलम्ब पग उठाये जाय और प्रदेशों में भेद न किया जाय तथैव काश्मीर के सम्बन्ध की धारा ३७० समाप्त की जाय।

(ग) जातीय संस्थाओं को अवैध घोषित किया जाय।

★

विचार-विमर्श

(पृष्ठ ८ का शेष)

शाब्दिक अनुवाद करके इस रहस्य को समझूं कि यह जाति (हिन्दू) जो मुसलमानों से उन्हें (उपनिषदों को) इतना गोपनीय रखती है उसका क्या कारण है।

क्योंकि इन दिनों मेरा सम्बन्ध उस काशी नगरी से है जो इस जाति की विद्याओं का केन्द्र है यहां के वेद और उपनिषदों के मर्मज्ञ, विख्यात पंडितों एवं सन्यासियों को एकत्र करके, ब्रह्मज्ञान के सार को जिन्हें उपनिषद अर्थात् गोपनीय रहस्य कहते हैं और जो सभी ब्रह्मतत्व वेत्ताओं का परम लक्ष्य है, १०६७ हिजरी में निस्वार्थ भाव से स्वयं अनुवाद किया। प्रत्येक कठिन प्रश्न तथा प्रत्येक उच्च ज्ञान जिसके हल और प्राप्ति की मेरी सर्वदा इच्छा रहती थी और जिसे मैं सतत ढूंढते रहने पर भी नहीं पाता था इस प्राचीन ग्रन्थ के माध्यम से जो निःसंदेह सर्वप्रथम ईश्वरीय ज्ञान का सार सत्य का स्रोत और ब्रह्मज्ञान का आकार है और कुरआन मजीद के साक्ष्य के अनुकूल ही नहीं अपितु उसकी व्याख्या है और स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि कुरान शरीफ की यह आयत—("इन्नहू लकुरआनुन् करीम फ़ी किताबिम्मकनून ला यमस्सुहू इल्लल्मुतहहरून, तन्ज़ीलुम्मिर्रब्बिल आलमीन।") इसी प्राचीन इलहामी पुस्तक के सम्बन्ध में है। निःसंदेह कुरान करीम एक गोपनीय पुस्तक है उसे केवल पवित्र आत्माएं ही छू सकती हैं, उसमें रहस्य की अनुभूति कर सकती हैं जिसका आविर्भाव जगत पिता परमात्मा द्वारा हुआ है।

उद्धृत आयत से यह निश्चित रूप से स्पष्ट हो जाता है कि उसका संकेत तौरात जुबूर अथवा इञ्जील आदि की ओर नहीं है। क्योंकि वे किताबें मकनून (गोपनीय पुस्तक) नहीं हैं और शब्द तनजील (उतारी हुयी) से यह भी सिद्ध हो जाता है कि वह पुस्तक लौहे महफूज़ (जैसा कि उलमाए इस्लाम कहते हैं) भी नहीं हो सकती। क्योंकि वह (लौहे महफूज़) नाज़िल शुदा पुस्तक नहीं है। उपनिषद ही गोपनीय रहस्य है, और इलहामी पुस्तक (नाज़िल शुदा) वेद का सार है, अतः वही कुरान का मूल-स्रोत है) कुरान की कतिपय आयतें ज्यों की त्यों उसमें पायी जाती हैं। इस जिज्ञासु ने इसी के द्वारा अपने अनेक प्रश्नों को हल कर सका तथा दुरूह रहस्यों को जाना।

क्योंकि ब्रह्म को प्राप्त करने वाले के उद्देश्य की पूर्ति उस समय तक संभव नहीं है जब तक वह स्व' को अपने कुटुम्ब और इष्ट मित्रों का पूर्ण त्याग न कर दे अतः जो भी सौभाग्यशील स्वार्थ की दूषित प्रवृत्तियों को त्यागकर, विशुद्ध भाव से ब्रह्मतत्व के ज्ञान को लक्ष्य करके इस अनुवाद को जो 'सिर्रे अकबर' के नाम से विख्यात है, ईश्वरीय ज्ञान का अनुवाद समझकर हठधर्मी को त्याग कर पढ़ेगा और समझेगा, वह निर्विघ्न निर्द्वन्द्व और निर्भय होकर मुक्ति प्राप्त करेगा।

ओ३म और अल्लाह एक ही नाम की ज्योति है अर्थात् चाहे ओ३म कहा जाये अथवा अल्लाह सब उसी एक ब्रह्म की ज्योतिष्ठ या है।

आचार्य वैद्यनाथ का भाषण

[पृष्ठ ६ का शेष]

है। परन्तु विदेशी सरणी के अनुगामी और एतद्देशीय पौराणिक सरणी के अनुयायी महर्षि दयानन्द के भाष्य और विचारो के खण्डन मे ही अपनी कृतकृत्यता समझते हैं। इसका भी हमे उपाय करना होगा।

पहले यह कहा जा चुका है कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। इसकी सिद्धि मे अनुसधान कार्य को ऊँचे पैमाने पर करने की आवश्यकता है। एक केन्द्रीय पुस्तकालय हो और अनेक विद्वान् वहाँ बैठकर वैदिक अनुसधान करे और विविध विद्याओ के विषय मे पुस्तकें लिखकर जनता एव सुधी वर्ग के समक्ष रखे। यह एक बहुत बडा काय है और इसे करना भी आवश्यक है। यह प्रसन्नता की बात है कि सार्वदेशिक सभा इस दिशा म कुछ कार्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार अच्छे ढग पर कर रही है। परन्तु इस कार्य को और भी विशालतम बनाने की आवश्यकता है। अन्यत्र भी कार्य हो रहे हैं परन्तु या तो वे उल्टी दिशा मे चले गए हैं या वेद के नाम पर कुछ और ही करने लगे हैं। कहीं नया वेद बनाने की चेष्टा न होने लगे। साहित्य की कुछ सस्थायें अर्ध सरकारी वा अराजकीय स्तर पर काय करती हैं। परन्तु इनके कार्य-कलाप का ढग अपना अलग है और इनके पुरस्कार आदि उन ग्रन्थो पर दिये जाते हैं जो अपनी आयसमाज की धारणा के प्रतिकूल हो। 'वैदिक विज्ञान और भारतीय सस्कृति' पुस्तक पुरस्कृत है। परन्तु पुस्तक म महर्षि दयानन्द की धारणा को मानकर वेद म विज्ञान तो माना गया फिर भी लिखा गया कि महर्षि दयानन्द के भाष्य म कोई वैज्ञानिक बात नहीं मिलती है। यह कितनी विचित्र बात है - पुस्तक देखने पर पता चला कि इसम मृतक श्राद्ध और रास लीला का भी एक वैदिक विज्ञान सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। यह है एक पौराणिक विद्वान् का वेद सम्बन्धी वैज्ञानिक अनुसधान। पुस्तक को देखकर मुझे बडा आश्चर्य हुआ। अन्त मैंने इस के उत्तर म 'वैदिक विज्ञान विमर्श' पुस्तक लिखी और निराकरण किया। यह तो एक प्रयास है। ऐसे अनेको प्रयत्न हो रहे है। इनका हम सामना करना पडेगा। आयसमाज के वैदिक दृष्टिकोण को जनाने का काम बहुत उच्च स्तर पर होना चाहिए। अनुसधान विभाग और वह भी केन्द्रीय अनुसधान विभाग हो, ऐसी सस्था चलाने की आवश्यकता है। हमारी सभाये इस विषय पर सोचें और शीघ्र कार्य कर पग उठावें।

वेद विषयक अनुसधान पर अधिक बल भी अनुसधान सस्थायें नही देती। भारत मे दो स्थानो पर अनुसधान का काय अखिल भारतीय स्तर चल रहा है एक पूना और दूसरा बडौदा मे। परन्तु इन दोनो सस्थाओ मे से एक ने महाभारत और एक ने वाल्मीकि रामायण पर ही अपनी शक्ति लगा रखी है। इससे निपटेंगे तो स्यात् पुराण और तन्त्रो पर जुट जावे। पुराण और तन्त्र की अनुसधान की सामग्री रखते हैं, यह एक ऐसी धारणा है जिसे समीचीन तो कहा नहीं जा सकता।

आर्य जगत् मे व्यक्तिगत रूप मे कुछ विद्वान् अपनी कठिनाइयो को साथ लिए हुए भी इस दिशा में अपनी शक्ति के अनुसार कार्य कर रहे हैं। वे धन्यवाद और हमारी श्रद्धा के पात्र हैं। परन्तु इनके कार्यों को केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

एक सत्य है जो कहे बिना छोडना यद्यपि समुचित न होगा जबकि वह अप्रिय है। परन्तु मैं उसे यहा कहने लगा हू। कई आर्य विद्वान् वेदानुसधान के अथवा अनुसधान के नाम पर ऐसा भी कार्य करते हैं जो वेद की धारणा, आर्यसमाज एव महर्षि के विचारों के सर्वथा प्रतिकूल है। ऐसे कार्यों में वह लोग देखा वस्तुत अपनी ही हानि करता है। हमें अपने सिद्धान्तो के प्रति दृढ रहने की आवश्यकता है।

वेद सम्मेलन होते हैं और घण्टे दो घण्टे में व्याख्यानों के साथ समाप्त हो जाते हैं। उनमें किसी विषय पर विचार नहीं हो पाता। आर्यसमाज और उसकी सभाओं को चाहिए कि वह प्रत्येक वर्ष ओरियन्टल कान्फ्रेंस के ढग पर वैदिक साहित्य सम्मेलन का आयोजन करें जो कि कम से कम तीन दिन का हो और उसमें विविध विषयों पर विचार हुआ करे। निबन्ध पढे जावें और वे प्रकाशित भी किये जावें।

इन सब कार्यों के करने के लिए आर्यसमाज को अनिवार्य प्रयत्न करने चाहिए। आज तो वेद का स्वाध्याय भी कोई नहीं करता है। यदि कुछ लोग करते हैं तो उनकी संख्या नगण्य ही है। स्वाध्याय की इस प्रवृत्ति को बढाना चाहिए। वैदिक विद्वानों की कमी ही होती जा रही है। नये विद्वान् बनते नहीं। फिर भविष्य कैसा बनेगा—यह आप सोच लें। इसके लिए भी कुछ करना ही पडेगा। सोचिये और कुछ कीजिए।

बातें तो बहुत हैं परन्तु सब कही नहीं जा सकती। आपका समय भी मैंने पर्याप्त लिया। अन्य व्याख्यान भी होंगे और सम्मेलन की कार्यवाही भी होनी ही होगी। अत अधिक समय न लेकर यहीं पर विराम करता हूं।

आपका पुन. धन्यवाद करता हूं।

—[illegible]

शिक्षा जगत्

(पृष्ठ ७ का शेष)

पिता, आचार्य और अभ्यागत पूज्य हैं और वे उसके लिए देव-तुल्य हैं। हमारे धर्म ग्रन्थो मे इस बात की चर्चा की गयी है। उपनिषदों मे विद्यार्थी को सम्बोधित करके कहा गया है—

मातृ देवो भव
पितृ देवो भव
आचार्य देवो भव
अतिथि देवो भव

उपनिषदो का यह उपदेश अनेक शताब्दियां बीत जाने के बाद भी हमारे लिए पहले जैसा ही उपयोगी और सामयिक है। जब कभी देश के किसी भाग मे आजकल अनुशासनहीनता देखने मे आती है, तो मुझे उपनिषद की यह सूक्ति याद आ जाती है। मेरी यह धारणा है कि शिक्षण कार्य को अधिक से अधिक लाभप्रद और उपादेय बनाने के लिए यह आवश्यक है कि गुरु और शिष्य के पारस्परिक सम्बन्धों का धरातल उचित हो। हमे गुरु-शिष्य की पुरानी परम्परा को आजकल की परिस्थितियों के अनुसार पुनर्जीवित करना होगा। तभी गुरुजन आदर के पात्र बन सकेंगे और तभी विद्यार्थी अध्यापको के पथ प्रदर्शन से पूरा लाभ उठा सकेंगे। ऐसी स्थिति मे अनुशासन मे आस्था स्वाभाविक रूप से होगी और अनुशासनहीनता के उभरने का मौका बहुत कम रहेगा।

आप लोगों के दीक्षान्त समारोह सम्बन्धी कार्यक्रम को देखकर यह भास होता है कि प्राचीन पद्धति के अनुसार यहाँ गुरु शिष्य परम्परा के आदर्श को अपनाया गया है। इस दृष्टि से भी अन्य शिक्षण संस्थाओं को इस गुरुकुल की प्रणाली का अनुकरण करना चाहिए। अच्छी बात और गुण जहा से भी मिलें उन्हें अपनाने में संकोच करना ठीक नहीं आधुनिकवाद अथवा प्रगतिवाद का यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक प्राचीन अथवा परम्परागत विचार को निरस्कृत किया जाय। आधुनिक और प्राचीन के व्यावहारिक और समुचित समन्वय से ही हम आज की स्थिति में मार्गदर्शन की आशा कर सकते हैं।

आपके विद्यालय को देखकर मुझे इस बात से भी खुशी होती है कि इस आश्रमों की परम्परा को निभाने के साथ साथ यहा के अध्यापक और विद्यार्थीगण राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित रहे है तथा भारतीय सस्कृति और राष्ट्र की रक्षा के लिए सदा तत्पर हैं। यहां के जीवन के हर कार्य और ढंग में भारत की सांस्कृतिक परम्परा की झलक मिलती है और राष्ट्रीय भावना [illegible] भी होता है। [illegible]

दर्शन मैंने इस बात से किया कि आपकी सस्था ने अभी हाल ही में पाकिस्तानी आक्रमण के समय हताहत हुए जवानों के पचास बच्चों को निशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की है। राष्ट्रीय भावना की दृष्टि से यह कार्य अपने आप में बहुत बडा है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के बारे में जो कुछ मै जान पाया हू और जो मैंने आपकी सस्था मे देखा है, उसके आधार पर मैं कहना चाहता हू कि हमारे विशाल देश में इस प्रकार की शिक्षण सस्थाओ को पूर्ण प्रोत्साहन मिलना चाहिए। ये सस्थाएं भारतीय जनता और भारत की आत्मा के निकट हैं, इसलिए इनके द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन में एक भारी अभाव की पूर्ति होती है। दूसरे, आर्थिक दृष्टि से अधिकांश लोग अधिक खर्चीले स्कूलो और कालिजो का व्यय न उठा सकने कारण गुरुकुलो से लाभ उठा सकते हैं। आप की सस्था मे प्रति विद्यार्थी पर जो खर्च होता है, विद्यार्थियो से केवल उसका एक तिहाई भाग ही लिया जाता है, जो करीब २५ रुपये मासिक बैठता है। सस्था होने पर भी यहा का पाठ्यक्रम और प्रबन्ध उच्च कोटि का है। यह सब देखकर मेरा यह विश्वास होता है कि देश मे शिक्षा के प्रचार तथा प्रसार के भावी कार्यक्रम मे गुरुकुलों का योगदान निश्चय ही बहुत महत्वपूर्ण होगा। इससे यह आशा होती है, कि राज्यो का सरकार तथा देश का धनी वर्ग इन सस्थाओ की खुले दिल से सहायता करेगा। इसी प्रकार वे अपने साधनो का सदुपयोग कर सकते है और शिक्षा के रचनात्मक काय मे अपना योगदान दे सकते हैं।

मित्रो मैंने जो कुछ यहाँ देखा उससे मुझे बड़ा सन्तोष हुआ है। सार्वजनिक कार्यकर्ताओ के उत्साह और जन साधारण के समर्थन के बल पर चलने वाली इन सस्थाओं को हम सच्चे अर्थों मे राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र कह सकते हैं। मेरी यह धारणा है कि देश के भविष्य का और हमारे रचनात्मक कार्यक्रम की सफलता का इन सस्थाओं से गहरा सम्बन्ध है।

आज जिन स्नातकों को उपाधिपत्र और पुरस्कार मिले हैं उन्हे मैं बधाई देता हू। मेरी यह आशा और शुभकामना है कि वे अपने जीवन के नये चरण में सफल हों और इस सस्था में उन्होंने जो कुछ ग्रहण किया है उससे वे स्वयं लाभ उठावें और दूसरों के हित में उसका प्रचार कर सकें।

उत्सवों एवं विवाह संस्कारों एवं कथाओं के निमित्त आमन्त्रित कीजिए—

प्रकाण्ड विद्वान्, सुमधुर गायक सुयोग्य सन्यासी एवं वैदिक संगठन द्वारा प्रचार करने वाले योग्य प्रचारक।

महोपदेशक

आचार्य विश्वबन्धुजी शास्त्री महोपदेशक
श्री धर्मवीर जी शास्त्री „
श्री पं० श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री पं० विश्ववर्धन जी वेदालंकार
श्री पं०केशवदेव जी शास्त्री उपदेशक
श्री पं० रामनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर भजनोपदेशक
श्री यज्ञरामसिंह जी—प्रचारक
श्री धर्मदत्त जी आनन्द "
श्री धर्मरामसिंह जी— "
श्री खेमचन्द्र जी (फिल्मी तर्जगायक)
श्री वेदपालसिंह जी— "
श्री प्रकाशवीर जी शर्मा "
श्री जयपालसिंह जी मानव "
श्री ओमप्रकाश जी निर्द्वन्द्व „
श्री दिनेशचन्द्र जी "
श्री सज्जनपालसिंह जी "
श्री रघुवरदत्त जी "
श्री स्वामी योगानन्द जी सरस्वती
„ प्रणवानन्द जी "
„ वेदानन्द जी „
श्रीमती डा० प्रकाशवतीजी
श्री माता विद्योत्तमावती जी
„ हेमलता देवी जी
„ कमलावती देवी जी
„ प्रेम सुखदायति जी और—
श्री रामकृष्ण शर्मा-वैदिक लेक्चरर

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्र० सभा, लखनऊ

सभा के पुराने कार्यमुक्त उपदेशकों एवं भजनीकों की सेवा में

सभा के खातों में निम्नलिखित पुराने उपदेशक व भजनीकों का धन निकल रहा है। परन्तु सभा कार्यालय में उनका ठीक पता न होने के कारण अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है। अतः इन सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्र सभा कार्यालय से पत्रव्यवहार कर अपना धन प्राप्त करने की कृपा करें।

१—श्री ज्वालाप्रसाद जी
२—श्री गायत्रीदेव जी शर्मा
३—श्री महावीर प्रसाद जी
४—श्री विपिनचन्द्र जी
५—श्री रघुवर दयालु जी
६—श्री रामदेव जी
७—श्री रामनाथ जी

—चन्द्रदत्त सभामन्त्री

[पृष्ठ ३ का शेष]

"मनस्यन्यद् वचस्यन्यत्"। दुरात्माओं की यही तो चिह्न यें है। सोमरस का आनन्द ब्रह्मनिष्ठ को प्राप्त होगा। वह इन्द्र योगी आत्मा का भाग है। वैदिक स्तुतियां अधिकांश में इसी सोम के विषय में हैं। कुछ तिमिराच्छन्न जनों ने सोम को शराब बताया है। कुछ मूढ़-मतियों ने भंग कहा है। इन्हें इतना भी ज्ञान नहीं कि शतपथ में सोम को और सुरा को पृथक्-पृथक् कहा है। देखिये—

प्रजापतेर्वा एते अन्धसी यत् सोमश्च सुरा च। ततः सत्यं श्रीर्ज्योतिः स मो-ऽनृतम् पाप्मा तमः सुरा"।

प्रजापति के ये दो अन्न हैं सोम और सुरा। इनमें सत्य श्री, ज्योतिः (प्रकाश) सोम है। अनृत [झूठ] पाप, तम, अन्धकार, अज्ञान सुरा है। शतपथ के इस वाक्य के होते हुए कुछ धूर्त मन्दमति ऋषियों को शराबी लिखने की धृष्टता भी आज कर रहे हैं। प्रायः ऐसे बकवास भरे लेख हिन्दी की कुख्यात पत्रिका सरिता में छपते रहते हैं। यह पतित पत्र दूसरों के इशारे पर वैदिक धर्मी ऋषि मुनियों, वैदिक आचार विचारों और हिन्दुओं की मान्यताओं पर कमीने प्रहार करता रहता है। कारण यह है कि हिन्दू जाति सहिष्णु है, उदार है।

सोमलता दिव्य औषध है। सोम चन्द्रमा है और अध्यात्म में सोम ब्रह्मानन्द है। ऋग्वेद का यह मन्त्र इसी को कहता है—

अपाम सोमममृता अभूम।
आगन्म ज्योतिरविदाम देवान् ॥

सोमपान से अमरत्व मिलता है, दिव्य ज्योति मिलती है और दिव्य शक्तियों का ज्ञान होता है। दिव्य शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं।

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः। [ऋ]

इस मन्त्र में "मदिष्ठया धारया" को देखकर और कई स्थानों पर "मादयिष्णवे" आदि शब्दों को देखकर भौतिक मति मूढ़ों ने सोम को नशे की वस्तु और ऋषियों को नशेबाज लिख मारा है। ये पशुबुद्धि यदि सूफियों के कलाम में 'शराब" शब्द पढ़ें तो यही शराब ले लेंगे। उनकी 'बेहोशी" को नशा ही मानेंगे। पर 'फ़ना' और 'बक़ा' का अर्थ भी क्या मौत और पुनर्जन्म ही माना जायगा। यदि ऐसा ही अर्थ किया गया तो कवि पाठकों की बुद्धि पर सिर धुन कर पछतावेगा। कविता में 'फ़ना' सांसारिक बन्धनों और अज्ञान से पृथक् हो जाना, अपने को भूल जाना और 'बक़ा' स्वरूप में अवस्थित हो जाना है, जैन शास्त्र की परिभाषा में 'केवली' बन जाना है। यहां भी मन्त्र में 'सुतः' शब्द निचोड़ा हुआ कोई भौतिक द्रव्य नहीं है। माननीय भाष्यकार आचार्य दुर्ग लिखते हैं—

'सुतः'—आपूरितोऽसि सुषुम्णेन रश्मिना'

सुषुम्णा किरण से भरपूर प्राण सुषुम्णा नाड़ी में जाकर होगा। यह सच्चा मद नशा भौतिक नहीं है किन्तु आध्यात्मिक है। गुरुनानक देव जी कहते हैं—

और नशे संसार के उतर जायें परभात
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिनरात।'

इसी सोम को सन्त पीते हैं और अमर होते हैं।

"अपाम सोमममृता अभूम"

साप्ताहिक सत्संग

आर्यसमाज हरबंशमुहाल, कानपुर के साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर दि० १०-४-६६ को पूज्य पं० विद्याधर जी, उपप्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा, लखनऊ, आयुर्वेदाचार्य वैद्य श्री केदार नाथजी गुप्त तथा आचार्य लालताप्रसाद जी सिद्धान्त वाचस्पति के ओजस्वी भाषण हुए।

अन्धे बालकों को सूचना

मैनपुरी स्थित कुं० लालसिंह मानसिंह आश्रम विगत वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में देश तथा राष्ट्र की सेवा करता चला आ रहा है। उक्त संस्था में अन्धे बालकों को जिनकी आयु १०-११ साल की हो ५ वर्ष तक पढ़ने लिखने बेत की कुर्सी बुनने और संगीत की निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। निर्धन बालकों को ट्रस्ट की ओर से भोजन वस्त्र और आश्रम में रहने का प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त कारपेन्ट्री, टेलरिंग तथा संस्कृत कक्षायें भी हैं जिनमें आठवीं कक्षा पास विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते हैं प्रवेश के लिए फार्म मंगाकर १५ मई तक आ जाना चाहिये। कक्षा १ जुलाई से प्रारम्भ होती हैं। विशेष जानकारी पत्र द्वारा अथवा आश्रम में आकर प्राप्त कर सकते हैं। निवेदक—

सुपरिन्टेन्डेन्ट,
कु० लालसिंह मानसिंह आश्रम
मैनपुरी [उ० प्र]

गुरुकुल नौनेर में यज्ञ

दिनांक १ से ५ अप्रैल तक गुरुकुल नौनेर (मैनपुरी) में, सामवेदीय, ब्रह्म परायण महायज्ञ श्री पं० शङ्करदेव जी शर्मा महावैयाकरण व्याकरणाचार्य कुलपति स्थानीय गुरुकुल के ब्रह्मत्व में तथा महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज देहली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ; जिसका कुल व्यय पं० रामचन्द्र शर्मा सि०शास्त्री वानप्रस्थी साठगवा (मैनपुरी) ने किया।

श्री राजाराम जी, पाल बाबरी, रामलाल जी ठाकुर आर्यपुर खेड़ा तथा सेठ लालता प्रसाद जी मैनपुरी एवं राजाराम जी गुप्तार्य मुंगोली (हमीरपुर) का सहयोग प्रशंसनीय था जिन्होंने तन, मन, धनादि से सहयोग प्रदान किया है।

—आचार्य

आ०उप प्र०सभा लखनऊ का निर्वाचन

१७ अप्रैल को आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का निर्वाचन आर्यसमाज गणेशगंज में हुआ। सन् १९६६ के लिए अधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये—

प्रधान—श्री कृष्ण बल्देव जी, उपप्रधान—श्री वासुदेव जी एडवोकेट, श्रीमती धंज्जोदेवी जी, मन्त्री-श्री विक्रमादित्य जी 'बसन्त', उपमन्त्री—श्री पृथ्वीराज जी बरमानी, श्रीमती प्रकाशवतीजी अख्तर, वेदप्रकाश जी गुप्त, श्री कुन्दनलाल जी, कोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्रनाथजी शर्मा।

निर्वाचन—

—आर्यसमाज जानसठ [मुजफ्फरनगर]

प्रधान—श्री पूर्णचन्द्र जी शर्मा, उपप्रधान—श्री महीपालसिंह जी, मन्त्री—श्री अयोध्याप्रसाद जी, उपमन्त्री—श्री नरेन्द्र चन्द्रजी, कोषाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र सहाय जी।

अमृतधारा
घर का डॉक्टर
LAKSHMI
इसकी चन्द बूंदें लेने से
हैजा, कै, दस्त, पेटदर्द, जी-मिचलाना,
पेचिस, खट्टी-डकारें, बदहजमी, पेट फूलना, कफ,
खांसी, जुकाम आदि दूर होते हैं और लगाने से चोट,
मोच, सूजन, फोड़ा-फुन्सी, वातदर्द, सिरदर्द, कानदर्द,
दाँतदर्द, भिड़ मक्खी आदि के काटे के दर्द दूर करने में संसार
की अनुपम महौषधि। हर जगह मिलता है।

लखनऊ—रविवार वैशाख ११ शक १८८८, वैशाख शु० ११ वि० २०२३, दिनांक १ मई सन् १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठ-द्दशाङ्गुलम् ॥१॥

अर्थ—असंख्य सिर जिसके अन्दर हैं, असंख्य नेत्र जिसके अन्दर हैं एवं जिसमें असंख्य पैर भी हैं ऐसा जो पूर्ण परमात्मा है वह भूमण्डल में सब ओर से व्याप्त होकर पंचस्थूल तथा पंच सूक्ष्मभूत अवयव समूह को अति-क्रमण करके विराजमान है अर्थात् उनके अन्दर तथा बाहर सर्वत्र व्यापक है।

विषय-सूची

पंजाब के पुनर्गठन का आधार १९६१ की जनगणना होगी

भारत सरकार द्वारा तीन सदस्यों का सीमा निर्धारण आयोग घोषित

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जयन्तीलाल छोटालाल शाह आयोग के अध्यक्ष होंगे, श्री एम० दत्त भूतपूर्व परराष्ट्र सचिव एवं श्री एम० एन० फिलिप, परिवहन व संचार मन्त्रालय आयोग के सम्मानित सदस्य होंगे।

श्री गुलजारीलाल जी नन्दा

पंजाबी सूबा निर्माण की घोषणा के बाद अब तक पंजाबी सूबे की सीमाओं आदि का निर्धारण करने विषयक जो उत्सुकता बनी हुई है उसकी पूर्ति के लिये केन्द्र शासन की ओर से गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा जी ने सीमा आयोग की नियुक्ति घोषित कर दी है। इस घोषणा का हम हार्दिक स्वागत करते हैं क्योंकि इस कार्य को न्यायिक एवं प्रशासनिक आधार पर निर्धारित करने का निश्चय किया गया है इसीलिये आयोग में न्याय एवं प्रशासन से सम्बद्ध व्यक्ति ही रक्खे गये हैं सरकार ऐसे कार्यों को राजनैतिक व्यक्तियों को भी सौंप सकती थी परन्तु ऐसा न कर उसने अपनी सदाशयता का परिचय दिया है।

इस अवसर पर आयोग को सीमा निर्धारण के लिये गृहमन्त्री ने १९६१ की जनगणना को आधार बनाने का निर्देश दिया है। हम इस घोषणा का स्वागत करते हैं। अकाली दल की ओर से सन्त फतहसिंह ने सन् ६१ की जनगणना को आधार मानने का विरोध किया है परन्तु हम नहीं समझते इस प्रकार की मांग कर सन्त जी पंजाबी सूबे के अपने भाषायी सिद्धान्त की स्वयं क्यों हत्या कर रहे हैं। जिस जनगणना के आधार पर भारत की योजनाओं का निर्धारण किया जाता है उस जनगणना को मिथ्या बताना सरकार के तथ्यों की उपेक्षा करना है। हम आशा करते हैं सीमा आयोग पंजाब हरियाना और पहाड़ी प्रदेश की सीमाओं का निर्धारण करने में जनगणना के महत्वपूर्ण तथ्यों को महत्व प्रदान करेगा।

आशा है आयोग पंजाब में हिन्दी के हितों की रक्षा के लिये भी शासन को सुझाव देगा और इस प्रकार पंजाबी सूबे का ऐसा रूप बनेगा जो भारतीय संघ के लिये आदर्श राज्य बन सकेगा।

वार्षिक ८) छ:माही ५) विदेश १ पौं.

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक १६
एक प्रति २० पै.

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में
रक्षा मन्त्री
श्री यशवन्तराव चह्वाण
का दीक्षान्त भाषण

१३ अप्रैल को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में रक्षा मन्त्री श्री यशवन्तराव चह्वाण ने अपने दीक्षान्त भाषण में कहा कि—

भागीरथी के तट पर स्थित गुरुकुल

श्री यशवन्तराव जी चह्वाण

कांगड़ी में आकर आज मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस शिक्षण संस्था के सम्बन्ध में मित्रों से कई बार मैंने कुछ सुना, किन्तु इसे देखने का अवसर आज ही मिला है। यदि इसे अत्युक्ति न माना जाए तो मैं कहूंगा कि यहां आकर देखने से मुझ को कुछ मालूम हुआ और जो कुछ मैंने सोचा था, उससे कहीं अधिक बढ़कर इसे पाया है। दूसरे शब्दों में वास्तविकता कल्पना से कहीं अच्छी और सुन्दर सिद्ध हुई है। इसलिए मैं आपके कुलपति श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का आभारी हूं कि उन्होंने इस अवसर पर यहां आने के लिये मुझे आमन्त्रित किया।

इधर प्रायः एक दो बार मुझे दूसरे विश्वविद्यालयों में ऐसे ही समारोहों के सम्बन्ध में जाने का अवसर मिला है। किन्तु उन विश्वविद्यालयों में और आपके विश्वविद्यालय में कुछ अन्तर है। वे सब बड़े बड़े शहरों में स्थित हैं और उनका संगठन अधिकतर पाश्चात्य ढंग पर हुआ है, जब कि आपका विश्वविद्यालय ऐसी जगह स्थित है जो किसी राज्य की राजधानी तो क्या एक जिला भी नहीं है। दूसरे, संगठन, शिक्षा प्रणाली और वातावरण की दृष्टि से इनमें भारतीयता के दर्शन कम होते हैं। मेरे कहने का यह अभिप्राय नहीं कि शहरों में स्थित अन्य विश्वविद्यालय भारतीय नहीं हैं अथवा उनका वातावरण आवश्यक रूप से विदेशी होता है। कहने का मतलब यह है कि विचारधारा और वातावरण की दृष्टि से आपकी संस्था भारतीय जनजीवन के अधिक निकट है। यह बहुत खुशी की बात है, क्योंकि शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य अब हमारे देश में जनता के हृदय और मस्तिष्क को स्पर्श करना और उनका परिष्कार करना है। यद्यपि कुछ न कुछ प्रभाव तो छोटी बड़ी प्रत्येक संस्था का लोगों के दिल दिमाग पर पड़ता ही है, किन्तु जो संस्था रचना और कार्य-प्रणाली की दृष्टि से जनता से अधिक निकट होगी जनता पर उसका अधिक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

इस दृष्टि से देखा जाय तो हमारे गुरुकुलों और इसी प्रकार की दूसरी शिक्षण संस्थाओं का महत्व इतना अधिक है कि हम इन्हें वयस्क शिक्षा प्रसार के अपने कार्यक्रम की आवश्यक कड़ी कह सकते हैं। मेरा सदा से यह मत रहा है कि निरक्षरता निवारण के काम में हम तभी सफल हो सकते हैं जब छोटी बड़ी शिक्षण संस्थाएं देश भर के देहाती इलाकों में उसी तरह फैल जाएं जिस तरह डाकघर फैले हुए हैं। इस आवश्यक काम को पूरा करने के लिए हमें सारे देश में स्कूलों और पाठशालाओं का जाल बिछाना होगा। उच्च शिक्षा और अनुसंधान के लिए भले ही हमें बड़े बड़े शहरों में स्थित शिक्षण संस्थाओं अथवा विश्वविद्यालयों पर निर्भर करना पड़े, किन्तु इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि अज्ञानता का अन्धकार दूर करने के लिए और देश की जनता को साक्षर बनाने के लिए हमें अधिकतर देहातों में खोली गई या खोली जाने वाली संस्थाओं पर ही निर्भर करना पड़ेगा। अंग्रेजी राज्य-काल में कुछ ऐसा नियम था कि लोग शिक्षा के लिए शिक्षण संस्थाओं की तलाश में निकलते थे। स्वाधीन भारत में हमें इस पद्धति को बदलना होगा। अब स्कूलों और शिक्षण संस्थाओं को विद्यार्थियों की खोज में देहातों की तरफ बढ़ना होगा। साक्षरता का हमारा संकल्प तभी पूरा हो सकता है और जनतन्त्र के संविधान की धाराओं में अंकित सभी नागरिकों को समान अधिकार देने का हमारा व्रत तभी सार्थक हो सकता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में जो कुछ भी मैं जान पाया हूं उसके आधार पर यह कहना चाहता हूं कि यह प्रणाली हमारी आज की परिस्थितियों और देश की आवश्यकताओं के अनुकूल है। मैं नहीं मानता कि इस प्रणाली और पाश्चात्य ढंग पर चलने वाले विश्वविद्यालयों की प्रणाली में किसी प्रकार का पारस्परिक विरोधाभास है। शिक्षा का क्षेत्र इतना व्यापक है और हमारी जरूरत इतनी अधिक है कि ये दोनों प्रणालियां एक दूसरे की पूरक मानी जा सकती हैं। जिस प्रकार पानी की आवश्यकता पड़ने पर लोग कुएं भी खोदते हैं और नदियों से नहरें भी निकालते हैं, उसी प्रकार शिक्षा की प्यास को बुझाने के लिए हमारे देश में सभी प्रणालियों और सभी तरह की संस्थाओं की आज पूरी गुंजाइश है। प्रश्न केवल इतना है कि शिक्षा का उद्देश्य और इसकी कार्यप्रणाली के बारे में हमारा मन सुनिश्चित और पुष्ट होना चाहिए। यद्यपि खाली अक्षरबोध का भी हमारे लिए कम महत्व नहीं, हमारे सामने विकास और राष्ट्र निर्माण के काम इतने अधिक हैं कि हमें अक्षर-बोध के साथ साथ लोगों को उनके कर्तव्य का बोध भी कराना है। यह काम शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है।

यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में साहित्य, इतिहास, दर्शनशास्त्र, भाषा-विज्ञान आदि मानविकी विषयों पर ही जोर दिया जाता बल्कि विज्ञान के अध्ययन को भी ऊंचा स्थान दिया जाता है। आज के जीवन में विज्ञान का कितना महत्व है, इसके बारे में अधिक कहने की जरूरत नहीं। यही कहना काफी होगा कि यंत्रात्मक प्रगति और तकनीकी उन्नति एक प्रकार से आधुनिकता के प्रतीक बन गये हैं। यह युग जन साधारण का युग है। राजाओं और [illegible] शासकों के युग समाप्त हो गये। अब साधारण मानव के युग का उदय हुआ है। इस युग में वही राष्ट्र महान् है जिसमें साधारण नागरिक का जीवन स्तर ऊंचा है, जिसमें छोटे-बड़े अमीर-गरीब, जाति पांति और स्त्री-पुरुष के भेदभाव के बिना सभी नागरिकों को एक जैसे अधिकार और अवसर की समानता मिलती है। सब के लिए समान सुविधाओं के इस लक्ष्य को व्यावहारिक रूप तभी दिया जा सकता है जब राष्ट्र सम्पन्न हो और उसके भौतिक साधन पूरी तरह विकसित हों। यह विकास विज्ञान की प्रगति पर निर्भर करता है। यही कारण है कि विज्ञान और तकनीक को आधुनिकता का प्रतीक कहा गया है।

मैं गुरुकुल कांगड़ी के अध्यापकों और संचालकों को बधाई देता हूं कि शिक्षण की परम्परागत प्रणाली को अपनाते हुए और भारत की प्राचीन विद्या के अध्ययन पर जोर देते हुए भी उन्होंने शिक्षा के आधुनिक पहलू की एकदम अवहेलना नहीं की है। यथा धर्मशास्त्र दर्शनशास्त्र और भारतीय इतिहास और साहित्य की शिक्षा के अतिरिक्त आप लोग आधुनिक कृषि विज्ञान, रसायन शास्त्र और चिकित्सा विज्ञान के अध्ययन पर भी जोर देते हैं। इन विभागों में विद्यार्थियों की संख्या तथा उनके उत्साह से आपने जान लिया होगा कि आजकल के नौजवान विज्ञान में कितनी रुचि रखते हैं। मुझे आशा है कि इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने और देश की विकास योजनाओं में पूर्ण योगदान देने की दृष्टि से आप इस विश्वविद्यालय में इंजीनियरी तथा तकनीक सम्बन्धी दूसरे विभागों को खोलने का भी यत्न करेंगे। मेरा विश्वास है कि हरिद्वार के निकट आधुनिक ढंग के बड़े बड़े कारखाने खुल जाने से अब आप लोगों का ध्यान भी इस आवश्यकता की तरफ जरूर गया होगा। इसलिए मैं आशा करता हूं इस संस्था के संचालक प्राचीन विद्या और आधुनिक विज्ञान के समन्वय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्र का नया मार्ग सुझाने की कोशिश करेंगे।

जो विचार मैंने ऊपर प्रकट किया है, उसके बारे में दो शब्द और कहने की जरूरत है। निजी विकास द्वारा सत्प्रवृत्तियों को सशक्त करके अपनी क्षमता और उपयोगिता बढ़ाने का शिक्षा व्यक्ति के लिए एक आवश्यक साधन है। इसीसे मनुष्य अपने बौद्धिक और मानसिक धरातल को ऊपर उठा पाता है। किन्तु समाज की दृष्टि से शिक्षा का महत्व और भी अधिक है। वर्तमान युग में सामूहिक उन्नति और सामाजिक उत्थान में ही व्यक्ति का कल्याण और उसकी सुख-समृद्धि निहित है। जहां व्यक्ति निजी सुरक्षा के लिए समाज पर निर्भर करता है, वहां समाज भी सामूहिक प्रगति के लिये व्यक्ति के विकास को आधार मानता है। इस प्रकार राष्ट्रीय उन्नति के लिए और अपनी समृद्धि के लिये व्यक्ति और समाज एक दूसरे पर आश्रित हैं। यह विचार भी आधुनिकता की विशेष देन है। आज के अधिकांश सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं का निर्माण इसी धारणा के आधार पर हुआ है। व्यक्ति और समाज

को सशक्त बनाने और उसके समन्वय से राष्ट्रिय सन्गठन को जन्म देने मे शिक्षा का बहुत बड़ा हाथ है। मेरे विचार से शिक्षा जहां राष्ट्रिय बल का साधन है वहां सामाजिक सुरक्षा की भी कसौटी है। कोई राष्ट्र कितना उन्नत है और सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था कहां कितना सुदृढ़ और व्यापक है, यह समझने के लिए इतना जान लेना काफी है कि राष्ट्र विशेष मे शिक्षा की व्यवस्था कहां तक समानता के सिद्धान्त पर आधारित है। जिस देश मे प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति और योग्यता के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकता है मेरी राय मे उसी देश को समानता का दावा करने का अधिकार है।

इस क्षेत्र मे आपकी संस्था ने और अन्य गुरुकुलों ने जो काम किया है वह राष्ट्रीय महत्व का है। जब मैं यह देखता हू कि इस गुरुकुल की स्थापना और संचालन के पीछे सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का शिक्षा अनुराग और लोक हित की भावना है तो मेरी दृष्टि से इस काम का महत्व और भी बढ़ जाता है। सम्भवत यही कारण है कि वर्षों तक किसी तरह की सरकारी सहायता के बिना और आवश्यक साधनों के अभाव में भी आप लोग शिक्षा के कार्य को बराबर आगे बढ़ाने में कामयाब रहे हैं।

इस अवसर की जनता पर मैं स्पष्ट गुरुकुल की शिक्षा दीक्षा की छाप देखता हू। इसी प्रकार की विशुद्ध भारतीय शिक्षा प्रणाली ने हमें अनेक नेता और विचारक दिये हैं, जिनमें सर्वप्रथम मैं स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री को मानता हू। उनकी शिक्षा किसी औपचारिक ढंग के स्कूल या कालेज में नहीं हुई थी। इसी प्रकार की शिक्षा पाने वाले और भी बहुत से कार्यकर्ता हैं जो मन्त्रिमण्डलों में या लोकसभा और विधान सभाओं में कार्य द्वारा देश की सेवा कर रहे हैं। इसलिए इस शिक्षा की उपादेयता और कुछ अर्थों में इसकी सफलता से कोई इन्कार नहीं कर सकता।

यदि इस अवसर पर मैं शिक्षा के माध्यम की समस्या पर कुछ कहू तो असंगत न होगा। शिक्षा का विशेष कर प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा का, जितना गहरा सम्बन्ध व्यक्ति के बौद्धिक विकास से है, उतना ही उसकी मातृभाषा से है। इसलिए प्रारम्भिक और माध्यमिक स्तरों पर कोई भी शिक्षा की ऐसी योजना वैज्ञानिक या उचित नहीं कही जा सकती जिसमें मातृभाषा को माध्यम का स्थान न दिया गया हो। फिर भी दूसरी भाषाओं को सीखने की विद्यार्थियों की क्षमता अद्भुत होती है। और जब विभिन्न भाषायें एक ही परिवार की हों और उनमें कुछ मूलभूत समानतायें हों, तो यह काम और भी सहज हो जाता है। मैं समझता हू यही कारण है कि भारतीय सरकार ने मातृभाषा के माध्यम से प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा के सिद्धान्त को अपनाया है और विद्यार्थियों द्वारा एक दूसरी भारतीय भाषा पढ़ने पर जोर दिया है। इसी से आशा की जाती है कि एक दिन एक ऐसी भाषा होगी जो सभी विद्यार्थी जान सकेंगे। इसी भाषा अर्थात् हिन्दी को अखिल भारतीय अथवा राष्ट्र भाषा का नाम दिया है। वास्तव में इस व्यवस्था पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिये क्योंकि राष्ट्रभाषा का उपयोग सीमित क्षेत्र मे होगा और प्रादेशिक भाषाओं के अधिकारों पर वह अतिक्रमण नहीं करेगी।

खेद की बात है कि यह सब होते हुए भी राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर कुछ भ्रान्तियां अभी भी फैली हैं, किन्तु मैं समझता हू यह विषय है ऐसा जिसे हमें केवल तर्क से सुलझाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। पारस्परिक सहानुभूति और राष्ट्रीयता की उदात्त भावना से हमें इस समस्या को सुलझाना चाहिये। अहिन्दी क्षेत्रों में कुछ लोगों का रुख चाहे जैसा हो हो, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हिन्दी के पठन पाठन की व्यवस्था सभी राज्यों में की गई है। जिस प्रकार अहिन्दी क्षेत्रों के विशेषकर विश्वविद्यालयों में हिन्दी को स्थान दिया गया है, मेरी राय मे उसी प्रकार हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों में भी यदि अभी नहीं तो प्रमुख प्रादेशिक भाषाओं के अध्यापन का प्रबन्ध होना चाहिये। इस दिशा में यदि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय दूसरी संस्थाओं का नेतृत्व करे और अपने पाठ्यक्रम में प्रादेशिक भाषाओं को अपने विषयों के समान स्थान दे सके, मैं समझता हू यह सर्वथा इस गुरुकुल की परम्पराओं के अनुरूप होगा। कम से कम उत्तरप्रदेश में आपके नेतृत्व का व्यापक प्रभाव पड़ेगा और भाषा सम्बन्धी विवाद की जटिलता मे आपसे कमी होने लगेगी। आपसी सम्पर्क और सद्भावना का मूल मन्त्र केवल व्यक्तियों व समूहों को सुलझाने में ही कारगर नहीं होता—भाषाओं के विवाद को दूर करने मे भी यह रामबाण सिद्ध हो सकता है, ऐसा मेरा विचार है। इसलिये यदि गुरुकुल कांगड़ी प्रादेशिक भाषाओं के पठन पाठन को अपने पाठ्यक्रम का विशेष अंग बनाये और इस दिशा में देश भर के विश्वविद्यालयों का मार्गदर्शन करे, तो यह इस संस्था और राष्ट्र के लिए गौरव की बात होगी।

देश की जो आज हालत है उसके बारे मे और सुरक्षा की समस्या के सम्बन्ध मे कुछ शब्द कहकर मैं अपना भाषण समाप्त करूंगा। भारत शान्ति प्रिय देश है। स्वाधीन होने के बाद से हमने यदि किसी बात पर अधिक से अधिक जोर दिया है वह संसार में शान्ति बनाये रखने की बात है। हमारी घरेलू नीति और विदेश नीति दोनों का ही प्रमुख आधार शान्ति में हमारा विश्वास रहा है। कुछ लोगों की आलोचना सहते हुए और थोड़ा खतरा उठाते हुए भी हम अमन की नीति पर कायम रहे हैं।

यह दुर्भाग्य की बात यह है कि हमारे दो पड़ोसी देशों ने इस नीति को शायद हमारी दुर्बलता समझा। इसी कारण ये दोनों देश हमसे विमुख होते गये और भारत विरोधी षडयन्त्र में दिलचस्पी रखने के कारण आपस में गहरे मित्र हो गये। उनकी मित्रता से हमें कोई द्वेष नहीं। हां हम उन्हें यही बताना चाहते हैं कि किसी भी तरह के झूठे दबाव मे आकर भारत उनसे डरने वाला नहीं है। पाकिस्तान तो इस बात को अपने अनुभव से समझ गया है। अच्छा हो चीन भी इस बात को जान ले। इस बीच मैं हम अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए पूरी तरह तैयार रहेंगे, अपने उत्पादन के साधनों को उन्नत करेंगे और हर प्रकार की कुर्बानी करने के लिए तैयार रहेंगे।

हमारी इस दृढ़ता और संकल्प के आधार देश के नौजवान हैं। उन्हीं का साहस हमारी हिम्मत है और उन्हीं का बलिदान राष्ट्र का सहारा है। मुझे आशा है आप सब लोग जिन्होंने इस संस्था में पढ़ते समय राष्ट्रियता का व्यावहारिक सबक सीखा है, अपनी जिम्मेदारी को समझने और साधारण नागरिक के रूप में या देश की सैन्य सेवाओं में भर्ती होकर सुरक्षा के काम में पूरा सहयोग देंगे।

मुझे बहुत खुशी है कि मैं यहाँ आकर आप सब लोगों से मिल सका और इस विश्वविद्यालय को देख सका। जिन स्नातकों को आज उपाधियां और पुरस्कार मिले हैं, उन्हें मैं बधाई और अपनी शुभ कामनायें भेंट करता हू। मेरी हार्दिक कामना है कि यह संस्था निर्बाधित आगे बढ़े और ज्ञान तथा साक्षरता प्रसार के रचनात्मक कार्य में बराबर योगदान देती रहे।

★

परिवार नियोजन के लिए

नई दिल्ली, १४ अप्रैल [हिस]। स्वामी रामेश्वरानन्द [स] ने स्वास्थ्य मन्त्री श्रीमती सुशीला नैयर से अनुरोध किया है कि वह लोकसभा के सदन में ही नहीं बाहर जाकर भी ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम से परिवार नियोजन का संदेश प्रसारित करें।

स्वामीजी ने 'लूप' की निन्दा करते हुए अपने भाषण में ब्रह्मचर्य को परिवार नियोजन का श्रेष्ठ साधन बताया था।

स्वास्थ्य मन्त्री ने अपने अन्य सदस्यों की बातों पर बहस का उत्तर देते हुए कृतज्ञता प्रकट की कि स्वामीजी कम से कम परिवार नियोजन को तो बुरा नहीं मानते। आत्मसंयम की भावना का प्रचार वह करेंगे तो प्रभाव अवश्य होगा।

माओत्से तुंग मौत के मुँह में

तैपइ—२० अप्रैल। समाचार मिला है कि चीन के सर्वेसर्वा माओ सख्त बीमार हैं और एक आपरेशन कराने के बाद उनकी स्थिति और भी बिगड़ गई है। माओ गत वर्ष २६ नवम्बर के बाद से अब तक पीकिंग मे दिखाई नहीं पड़े हैं। माओ यदि खुदा के प्यारे हुये तो चीन की पिटी राजनीति में एक भयंकर क्रान्ति आ जाने की सम्भावना है।

महान् पुरुष

(श्री रघुनाथ विद्यालंकार)

वेद में पुरुष की महत्ता का विशद वर्णन मिलता है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के ९० सूक्त में पुरुष पर प्रकाश डाला गया है परन्तु पुरुष नाम से दो पुरुषों की अभिव्यक्ति होती है जैसे—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्य पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

इसमें कहा गया है कि दो सुन्दर पंख वाले सदा साथ रहने वाले, मित्र रूप पक्षी एक समान वृक्ष का सेवन करते हैं। उनमें से एक पक्षी बरगद के फल का सुस्वादु रूप में भोग करता है और द्वितीय पक्षी केवल चतुर्दिक निरीक्षण करता है। इसमें दो पुरुषों के कर्मों पर भी प्रकाश डाला गया है। एक संसारी पुरुष है जो शरीरधारी होकर सुख दुःख का अनुभव करता है। जो कर्म रूपी बन्धन में पड़कर संसार रूपी चक्र में घूमता रहता है, यही कर्म बन्धन जब शिथिल होकर टूट जाता है तब वह भी पुरुषत्व की सच्ची सत्ता प्राप्त कर लेता है।

द्वितीय पुरुष महान् पुरुष है जैसा इस मन्त्र में कहा गया है कि—

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १०।९०।१

वह पुरुष सहस्र सिर वाला है। उसकी हजार आंख हैं। हजार पैर हैं। वह सम्पूर्ण वसु जगत को व्याप्त करके विद्यमान है तथापि स्वयं दस अङ्गुल मात्र स्थान में विराजमान है।

इस मन्त्र में दो बातों पर बल दिया गया है कि वह हजार सिर वाला है अर्थात् उसमें बौद्धिक शक्ति की पराकाष्ठा है वह सम्पूर्ण वस्तुओं का ज्ञान रखने वाला है। यहां पर शीर्ष शब्द की अभिव्यक्ति ज्ञानात्मक है। वह हजार आंखों वाला है अर्थात् उसमें निरीक्षण की निपुणता है। उसकी दृष्टि से कोई ओझल नहीं हो सकती है। वह हजार पैरों वाला है। इससे उसकी सर्वव्यापकता का पता चलता है। संसार में जितने भी कर्म होते हैं वे सभी कर्म उस की दृष्टि में रहते हैं क्योंकि वह सर्वत्र गमनशील है। इसके पश्चात् कहा गया है कि वह सम्पूर्ण को चारों ओर से घेर कर दशाङ्गुल रूप में विद्यमान है। दशाङ्गुल शब्द यहां पर सूक्ष्म से सूक्ष्म के लिये उपलक्षण मात्र है। यद्यपि भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अपनी-अपनी व्याख्या प्रस्तुत की है।

सायण ने दश ऋ लपरिमित देशम्' अर्थ किया है। उव्वट ने दश च तानि अङ्गुलानि दशाङ्गुलं नीं द्रयाणि दशाङ्गुल प्रमाणं हृदयस्थानम्' अपरे तु नासिकाग्र दशाङ्गुलमिति" तीन अर्थ किये हैं। प्रथम अर्थ है—दसों इन्द्रियों में विद्यमान है, अथवा दस अंगुली के माप के स्थान में (हृदय में) रहने वाला है। तृतीय अर्थ है नासिका के नोक के बराबर स्थान में रहने वाला है।

महीधर ने इसका अर्थ उपलक्षण मात्र माना है। इस प्रकार स्पष्ट है कि दशाङ्गुल शब्द सूक्ष्म से सूक्ष्म स्थान के लिए आया है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने इसे आर्यसमाज के नियमों में द्वितीय नियम के रूप में उपस्थित किया है।

इसी को द्वितीय रूप में इस मन्त्र में कहा है—

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥

इसी वस्तु को श्वेताश्वतर उपनिषद् में इस प्रकार अभिव्यक्त किया—

सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥

इस प्रकार स्पष्ट हो गया कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपने नियमों में से द्वितीय नियम वेद के आधार पर ही निर्मित किया है। इससे यह भी पता चलता है कि सामान्य पुरुष और महान् पुरुष में क्या भेद है? सामान्य पुरुष अल्पज्ञ अल्पगामी, अल्पद्रष्टा अल्पचेता है जबकि द्वितीय पुरुष सर्वज्ञ, सर्वव्यापक सर्वद्रष्टा तथा उदारचेता है।

प्रथम पुरुष पत्थर की भांति सदा एक निश्चित परिमाण प्रकार में विद्यमान रहता है। उसके घटने बढ़ने की एक निश्चित प्रक्रिया है। वह सीमा के अन्दर रहने वाला सीमित मानव पुरुष है जब कि द्वितीय पुरुष वायु की तरह आकार प्रकार हीन है जैसे वायु सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तुओं में भी अपना स्थान बना लेती है तथा विशाल से विशाल वस्तुओं को भी अपना आधार बना लेती है उसी प्रकार द्वितीय पुरुष भी महान से भी महान अर्थात महत्तम है। सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है जैसा कठोपनिषद में कहा गया है—

अणोरणीयान् महतो महीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्। तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ॥

इस प्रकार स्पष्ट पता चलता है कि पुरुष की महत्ता इस जगत में सर्वत्र व्याप्त है। वह कितना विशाल है इसका पता मानव की कल्पना से भी परे है। आज मानव सूर्य और चन्द्र तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है, परन्तु ये ग्रह तो करोड़ों ग्रहों में से एक हैं। पता नहीं मानव बुद्धि के अदृश्य ग्रह कितने और हैं। इसलिए उस सर्वव्यापक प्रभु की स्तुति तथा प्रार्थना के द्वारा निरन्तर अपने को उठाने का प्रयास करें। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने प्रार्थना तथा स्तुति पर बल दिया है कि महान के गुणों को स्मरण करके अभिमान तथा दर्प से बच जायेंगे तथा निरन्तर गुणगान करने से उन जैसा बनने का भी प्रयास करेंगे।

★

बलम्

बलमसि बलं मयि धेहि।

—यजु० १९।९

तू बलवान है। मुझ में बल का आधान कर।

★

तेज बल का एक रूप है। जो कि आंखों में चमकता है। चेहरे से टपकता है। शरीर में झलकता है। शरीर की प्रत्येक चेष्टा गति और स्पन्दन में जिस की अभिव्यक्ति होती है। जो वाणी में टंकार और जीवन में मधुर एवं मादक झंकार को उत्पन्न करता है।

वीर्य बल का वह रूप है जो संसार में सुख समुदाय की वृद्धि करता है। संरक्षण करता है, और रचनात्मक प्रवृत्तियों को कार्योन्मुख करता है, संहार लीलाओं को निरुद्ध करके निर्माण करता है। अकेला बल शब्द शारीरिक बल, सामाजिक बल, आध्यात्मिक बल, धन बल, जन बल, कुल बल, विद्या बल और दल बल सभी प्रकार के बलों का प्रतिबोधक है। तेज और वीर्य भी बल के ही शाखा भेद हैं। यहां बल शब्द के लोक प्रसिद्ध अर्थ का ही विचार है।

बल के बिना हमारा जीवन ही व्यर्थ है। बल का होना जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है। इन्द्रियां सबल हों शरीर सबल हो मन और आत्मा भी सबल हो। समाज में जाति में और राष्ट्र में बल हो। तभी जीवन की सफलता है। दुर्बल व्यक्ति जाति और राष्ट्र तो दुष्ट व्यक्तियों दुष्ट जातियों और दुष्ट राष्ट्रों के पाप में प्रवृत्त करने करने का ही काम देते हैं। वे सदा दुष्टों को अनुचित कर्म करने का बढ़ावा और दुर्बलों पर अत्याचार करने का मूक समर्थन ही देते रहते हैं। इसी प्रकार दुर्बल समाज और दुर्बल जातियां सबल समाजों और जातियों की दासता में फंस जाते हैं। उनको दास-जीवन के असह्य कष्ट भोगने पड़ जाते हैं।

मुल्क रौन्दे गये हैं पैरों से।

चैन किस को मिला है गैरों से।

बल रहित जन समाज और राष्ट्र अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए भी दूसरों के आश्रित होते हैं। परमुखापेक्षी होना तो अत्यन्त अधम और निरादर पूर्ण है। स्वतन्त्रता ही परम सुख है और परतन्त्रता ही परम दुःख है। संसार में बलवानों की ही पूछ होती है। सर्वत्र बल का ही सिक्का चलता है। बल से ही शरीर का कल्याण होता है। बल से ही आत्मा मोक्ष प्राप्त करता है। परमात्मा की प्राप्ति बलवानों को ही होती है। 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः' बल की उपेक्षा कोई भूलकर भी न करे कोई ऐसा काम न किया जाये जिससे किसी प्रकार की दुर्बलता बढ़े। यह भी ध्यान रहे कि हमारा बल यशस्वी ही हो। चोरों डाकुओं, हत्यारों आदि के समान हमारा बल निन्दित न हो। वास्तविक बल तो मानवता के लिए शोभनीय ही होता है।

वह सकल सृष्टि का रचयिता परम पिता परमात्मा तो बल का अक्षय भण्डार ही है। उसकी शरण ग्रहण करने, याचना करने से ही बल की प्राप्ति होती है। आओ बल प्राप्ति के लिए हम सब भी ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें और सुनियोजित अभियान के द्वारा अपने जीवन के चरम लक्ष्य पर पहुंचें। हे सर्वशक्तिमान परमात्मन्! आपकी कृपा से हमारा जीवन सब प्रकार के पापों और दोषों से मुक्त हो। शुभ कर्मों में हमारी प्रवृत्ति सदा ही बढ़ती रहे। हम सब स्वतन्त्र और और स्वावलम्बी बनकर धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त करें। आपकी कृपा से हम निराशा असफलता और

राष्ट्र रक्षा में संस्कारी एवं सबल नारी भारी योगदान दे सकती है

कन्या गुरुकुल हरिद्वार में रक्षा मन्त्री का नारियों को आह्वान

हरिद्वार। डाक से। स्थानीय कन्या गुरुकुल कनखल के ३ व वार्षिकोत्सव पर नव स्नातिकाओं को आशीर्वाद देते हुए रक्षा मन्त्री श्रीयुत चह्वाण ने कहा—प्राचीन आर्यों के सांस्कृतिक युग में महिलाएं विदुषी हुआ करती थी। वे आपकी तरह ही वेद विद्या में प्रवीण होती थीं परन्तु मध्यकालीन मुगलों के शासन में देश को नारी शिक्षा से वंचित रहना पड़ा पर आज वही प्राचीन युग पुनः आ गया है। और नारी शिक्षा की ओर इसलिए भी ध्यान दिया जा रहा है कि यह स्वाधीन राष्ट्र उठ रहा है आगे बढ़ रहा है और अपनी समस्याओं का समाधान करने में समर्थ हो रहा है। राष्ट्रों के उत्थान और पतन में संस्कारी एवं सबल नारी की भारी आवश्यकता है। इस क्रम में कन्या गुरुकुल हरिद्वार के कार्यों और कार्यकर्ताओं के उत्साह की मैं इसलिये विशेषत: सराहना करता हूं कि नारी शिक्षा का यह अनूठा प्रयास बिना सरकारी सहयोग के चल रहा है। स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली शिक्षण संस्थाओं के लिए यह अनुकरणीय आदर्श है। इस संस्था के कार्य में यदि मैं भी सहयोग दे सका तो मुझे प्रसन्नता होगी।

देशवासियों से मैं कहना चाहता हूं कि वह प्राथमिक रूप से नारी शिक्षा पर बल दें क्योंकि नारी शिक्षा से पूरा परिवार स्वतः शिक्षित हो जाता है। शिक्षिता मां सम्पूर्ण परिवार को एक लड़ी में बांध सकती है। कन्या गुरुकुल आज केवल शिक्षा का ही नहीं अपितु आचार्या और उनकी शिष्या के रूप में कन्याएं गहरे रूप से संस्कारित हो जाती हैं, जो कि पश्चात बालिका के जीवन को प्रतिभा सम्पन्न एवं उज्ज्वल बनाने का उत्तम उपाय है। आज प्रायः नारी शिक्षा संस्थाओं की छात्राएं डे स्कालर के रूप में होने से अपनी आचार्या के सम्पर्क से वंचित रह जाती हैं विस्तार रूप से बोलते हुए उन्होंने कहा—हिमालय आदि पर्वतों गंगा यमुना आदि नदियों से युक्त देश ही भारत नहीं है। इस देश की चालीस करोड़ जनता ही वास्तव में भारत देश है। हमें इन चालीस कोटि स्त्री पुरुषों को मजबूत बनाना है उनको एक सूत्र में गूंथना है, अतः हमारा कर्तव्य है कि सम्पूर्ण देश बिना किसी ऊंच नीच और प्रान्त भाषा भेद के एक होकर अपनी समस्याओं का समाधान करे। इस दिशा में यह संस्था अनुपम कार्य कर रही है, प्रत्येक देशवासी के दिल दिमाग में देश के प्रति भक्ति की भावना होनी चाहिए वह भक्ति और प्रेम पैदा करने का काम इस प्रकार की शिक्षा संस्थाओं द्वारा बड़े उत्तम प्रकार से सम्पन्न हो सकता है।

उसी दिन ३२ वे दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय लोह एवं इस्पात मंत्री श्रीयुत डी० एन० सिंह ने नव स्नातिकाओं को भाव भरे शब्दों में आशीर्वाद देते हुए कहा—आज की विदाई के अवसर पर यदि आप आचार्या चन्द्रावती देवी शास्त्री की मनोव्यथा का सही चित्र देखना चाहती हैं तो शकुन्तला को दिए गए महर्षि कण्व के उपदेशों को स्मरण रखना चाहिए। उनका पिता पति और गुरु इन तीनों कुलों का सम्मान सुरक्षित ही नहीं अपितु संवर्धित भी करना होगा। आज देश के वयोवृद्ध कर्णधारों के कन्धों का भार भावी भारत की युवक पीढ़ी मुख्यतया शिक्षित कन्याओं के ऊपर है। उसके लिए जैसा कि आचार्या जी ने अन्तिम उपदेश दिया तदनुसार सत्य संयमी सरलता सहृदयता और सदाचारी कन्याएं ही देश का भाग्य निर्माण कर सकती हैं। ऐसे कार्यों के लिए सरकारी सहायताओं की नितान्त आवश्यकता है मानकर नहीं चलना चाहिए। इस कन्या गुरुकुल का भारी सौभाग्य है कि यह सरकार से नहीं वरन जनता से सञ्चलित होता है। संस्था के संचालकों को यह गर्व की बात मानकर चलना चाहिए। सिद्धान्तों पर समझौतों की नहीं बल्कि सुदृढ़ता की आवश्यकता हुआ करती है। अन्त में निरन्तर साढ़े तीन घण्टा संस्था की प्रवृत्तियों से निकटतम परिचय के पश्चात संस्था के कार्यों की हार्दिक सराहना करते हुए माननीय श्रीयुत डी० एन० सिंह साहब ने नवस्नातिकाओं को दीक्षान्त अभिभाषण के उपसंहार में कहा—आज भारत सन्तान विलायती रंग में रंगे जाने के लिए अंगरेजी राज के युग से भी अधिक दीवान बनती चली जा रही है। स्वदेश स्ववेशभूषा और अपनी प्रिय भाषा का परित्याग करके अपनी रहन-सहन और भाषा का मोह त्यागा किया जाना मानकर राष्ट्रद्रोह के रूप में मानकर चलना भावी भारत की भारी आवश्यकता है। मैं कन्या गुरुकुल हरिद्वार की नवस्नातिकाओं को पुनर्वार आशीर्वाद देता हुआ यह कामना करता हूं कि वे राष्ट्रोत्थान की सर्वांगीण उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दें।

देश के विभिन्न भागों से आई हुई दस हजार जनता ने कन्या गुरुकुल के चार दिवसीय महोत्सव में सहोत्साह भाग लिया। देशभक्त राजा महेन्द्रप्रताप शहीद भगतसिंह की बहिन अमरकौर श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती एम०पी० श्री प्रो० शेरसिंह एम० एल० सी० श्री ठा० यशपाल सिंह एम० पी० श्री स्वामी रामानन्द शास्त्री एम० पी० श्री राजा रणञ्जयसिंह एम०पी० श्री सेठ नानजी भाई कालीदास मेहता पोरबन्दर पदम भूषण वरत्न श्री प० शिवशर्मा श्री प्रो० रामसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आचार्य श्री बंगूराम मिश्र श्री रघुवीरसिंह शास्त्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज तथा श्री युद्धवीरसिंह एम०पी० आदि अनेक नेताओं व विचारकों ने महोत्सव के विभिन्न सम्मेलनों में भाग लिया।

+

सूर्यो ज्योतिः

(पृष्ठ ८ का शेष)

इसी कारण प्राचीन शास्त्रों में विधान है कि प्रातः स्नान द्वारा रोम कूपों को स्वच्छ करके नंगे बदन पूर्व की ओर मुख करके पूजा पाठ करो। इतना ही नहीं बल्कि नदी तट पर बैठ सन्ध्या करो। जिस प्रकार वर्षा के पश्चात आकाश में फैले जल बिन्दुओं में से गुजर कर सूर्य किरण इन्द्र धनुष बनाती है। इसी प्रकार प्रातः पूर्व क्षितिज से आती सूर्य किरण नदी के जल के ऊपर बादर में से निकलती हुई हमारे शरीर पर इसी प्रकार पड़ें। जिस प्रकार इन्द्र धनुष बनता है।

अब पृष्ठ में सेवन को भी न भूलना चाहिये अच्छा होगा यदि कुछ समय तक पश्चिम की ओर मुख करके कर। इससे पीठ पर भी अल्ट्रावायलेट रेज अपना प्रभाव डाल सकेगी।

घर बनाते समय भी यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इसमें सूर्य किरणों का प्रवेश हो सके। सूर्य से बढ़कर रोगों का नाश करने वाली अन्य कोई वस्तु नहीं। नदियों का पानी सूर्य किरणों से स्वच्छ रहता है। इट्टियों में जहां पलंग नहीं वहां सूर्य किरणों का प्रवेश अत्यन्त आवश्यक होता है।

सूर्य स्नान भोजन की अपेक्षा भी अधिक लाभकारी है। प्रातःकाल के अतिरिक्त दिन के शेष भाग में सूर्य में नंगे बदन रहना कोई विशेष लाभकारी नहीं। हानि होने की सम्भावना अवश्य है। आज के वैज्ञानिकों के मत में यदि प्रतिदिन सूर्योदय से लेकर एक घण्टा मनुष्य धूप में रह सके तो उसका स्वास्थ्य कभी गिर नहीं सकता। किन्तु यह एक घण्टे का समय भी इन सब बातों को बढ़ाते हुए लगभग एक मास के पश्चात करना उपयुक्त है। चरबी बढ़ या मधुमेह के रोगी के लिये इस प्रकार का सूर्य स्नान गुणकारी सिद्ध हुआ है। ज्यूं ज्यूं धूप बढ़ती जाय सिर पर गीला तौलिया रख लीजिये। सिर को अधिक गरम करना उपयुक्त नहीं। मधुमेह के रोगी को धूप में इतनी देर रहना चाहिये कि उसे पसीना आ जावे। इसके लिये उसे बीस-बीस मिनट के बाद थोड़ा पानी के घूंट पी लेना चाहिये।

साधारणतया मनुष्यों को १२-२० मिनट धूप में रहना उपयुक्त है। एक घण्टा भर रहने के लिये कुछ ऐसे कड़े नियम हैं जिनका पालन प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता। इस लिये हम उन नियमों का उल्लेख भी नहीं कर रहे।

सूर्य स्नान करते समय पूजापाठ के अतिरिक्त "सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा" का पाठ करना उपयुक्त होगा।

★

चरित्र निर्माण और देश की समृद्धि

[ले०—आचार्य रामवीर शर्मा, एम० ए० साहित्यरत्न अलीगढ़]

संसार में जीवन यात्रा को सफलता पूर्वक संचालन करने के लिए चरित्र ही एक अनुपम साधन है और यही एक ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर व्यक्ति कभी अपने गन्तव्य स्थान को नहीं भूल सकता। यह मनुष्य में स्वाभिमान देश भक्ति एवं आत्मिक शक्ति का संचार करता है। जिस व्यक्ति का चरित्र उज्ज्वल है वह महान है, यशस्वी है और जिसके चरित्र का पतन हो गया है उसका संसार में जीवन कलंकित एवं अपमानपूर्ण समझना चाहिये।

चरित्र की महिमा सभी विद्वान, सभी धर्मग्रन्थ गाते हैं और सभी यही शिक्षा देते हैं कि चरित्रवान बनो। और व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन सफल बनाओ। वास्तव में मनुष्य का मूल्य उसके चरित्र में है, पद अथवा धन में नहीं। यदि कोई चरित्रहीन मनुष्य धनी अथवा उच्च पदासीन है तो दो चार लालची अथवा चापलूस व्यक्ति ही उसका सम्मान करेंगे। यदि निर्धन होते हुए भी कोई चरित्रवान है तो एक दो व्यक्ति क्या सारा संसार ही उसे आदर की दृष्टि से देखेगा। मनुष्य में चरित्र ही एक ऐसी वस्तु है जिस पर उसका अस्तित्व निहित है अन्यथा उसे मृत व्यक्ति ही समझना चाहिये। इसलिए विद्वानों ने चरित्र संरक्षण का उपदेश देते हुए कहा है—

'वृत्त यत्नेन संरक्षेत, वित्तमायाति याति च। अक्षीणो वित्तत क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हत ॥'

अर्थात् चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये। क्योंकि धन तो आता है और चला जाता है। धन से रहित व्यक्ति निर्धन नहीं माना है पर चरित्र हीन तो मरे हुए के समान ही माना जाता है। हमारे देश पर समुद्र पार से आकर अंग्रेजों ने लगभग तीन सौ वर्ष तक शासन किया। इसका कारण क्या था? क्या उनमें बल अधिक था? क्या विद्या की अधिकता थी? क्या वे धर्मपरायण थे? नहीं। उनमें केवल चरित्र बल विशेष था जिसके बल पर उन्होंने देश को पराधीन बनाया। देश की अपार सम्पत्ति को विदेश ले गये। तथा कृषि का विनाश करके देश को सदा के लिए पराश्रित कर दिया, जिसका दुखद परिणाम हम आज तक भोग रहे हैं। सौभाग्य से तथा महापुरुषों के त्याग व बलिदानों के परिणामस्वरूप देश में १८ वर्ष पूर्व स्वतन्त्रता देवी के दर्शन किये। हम स्वतन्त्र देश के नागरिक बन गये। संसार सम्मुख मस्तिष्क ऊंचा करने का हमको गौरव प्राप्त हुआ। पर इतना अधिक समय व्यतीत हो जाने पर भी हम में अभी चरित्र निर्माण नहीं हुआ है। आज तक हमने अपने संविधान का आदर करना नहीं सीखा है। हमें न अपनी भाषा पर गर्व है और न अपनी वेष-भूषा पर खान पान तथा रहन-सहन की तो बात ही क्या। आज हम में चरित्र का लेशमात्र भी दृष्टिगोचर नहीं होता। हम छोटी छोटी बातों पर लड़ बैठते हैं शत्रुता मोल ले लेते हैं। क्षुद्र स्वार्थ के लिए बड़े से बड़े देशद्रोह का कार्य करने लग जाते हैं। अपना कर्तव्य भूल करके दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप करने लग जाते हैं। ये सब बातें चरित्र-हीनता से ही सम्बन्ध रखती हैं।

आज देश को अच्छे नागरिकों की आवश्यकता है जो स्वार्थ लोभ, अभिमान आदि दुर्गुणों से दूर हों जिनमें परमार्थ, त्याग तथा स्वाभिमान की भावना कूट कूट कर भरी हो। जो आवश्यकता पड़ने पर सर्वस्व निछावर करने को तैयार रहें और मातृभूमि की रक्षा के लिए हंसते हंसते अपने प्राणों को भी उत्सर्ग कर सकें। आजकल विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की समस्या बढ़ रही है। सरकार भी इस समस्या से परेशान है। समय समय पर बड़े अधिकारी इस पर विचार करते हैं परन्तु जरा भी हल नहीं निकाल पाते। इस अनुशासनहीनता के लिए भी यही आवश्यक है कि छात्रों में चरित्र निर्माण किया जाय। नैतिक शिक्षा द्वारा नैतिक बल सम्पन्न किया जाय। जब तक उनको जीवन के निर्माण करने वाली सुशिक्षा प्राप्त नहीं होगी तब तक चरित्र निर्माण असम्भव है। दुर्भाग्य से अट्ठारह वर्ष बीत जाने पर भी शिक्षा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। वही शिक्षा पद्धति प्रचलित है जो १९२५ में लार्ड मकाले ने प्रारम्भ की थी जो चरित्र विकास तो दूर रहा। उसमें थोड़ा सा मनोबल भी प्रदान नहीं करती। केवल दास बनाना ही सिखाती है।

अब देखना यह है कि यह चरित्र क्या है? जिसकी इतनी प्रशंसा की गई है। चरित्र शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'चाल चलन या व्यवहार'। इसी अर्थ को अनेक कोष कारों ने बतलाया है।

हिन्दी साहित्य के उद्भट विद्वान समालोचक एवं दार्शनिक डा० गुलाबराय एम०ए० ने चरित्र की परिभाषा देते हुए लिखा है। "चरित्र उन गुणों का समूह है जिनके अनुसार जीवन यात्रा का संचालन किया जाय।" भाव यह है कि चरित्र में वे सभी गुण आ जाते हैं। जो एक सुयोग्य नागरिक में होने चाहिये आज के समय में ऐसे गुण सम्पन्न नागरिकों का अभाव है जिन पर किसी देश व समाज को गर्व होता है। इस प्रकार चरित्रवान व्यक्ति के अन्तर्गत सत्य भाषण परोपकार शिव भावना कर्तव्य परायणता गुरुजनों का आदर, आज्ञा पालन, विनय, समय का सदुपयोग, देश भक्ति एवं ईश्वर विश्वास आदि सभी सद्गुण आ जाते हैं। इन्हीं से व्यक्ति का नैतिक व मानसिक विकास होता है और अपनी जीवन यात्रा को भी सरलता से चला सकता है।

आज देश पर संकट के बादल छाये हुए हैं। चीन विषधर भुजंग की तरह फन फैलाये हुए हमारे देश को नष्ट करना चाहता है। दूसरी ओर पाकिस्तान अपनी नापाक हरकतों से भारत को परेशान करना चाहता है और कर रहा है। गत भारत पाक युद्ध में भारतीय जवानों ने देश रक्षा में अपने प्राणों की बाजी लगा दी और स्वतन्त्रता की रक्षा की। सभी भारतीयों ने अपने जाति, सम्प्रदाय व ऊंच नीच के भेद को भुलाकर एकता का परिचय दिया और विजयश्री प्राप्त की। यद्यपि प्रधानमन्त्री स्व० लालबहादुर शास्त्री द्वारा ताशकन्द समझौता हो गया है, पर इससे स्थायी शान्ति कायम नहीं हो सकती। यह तभी सम्भव है जब हम चरित्रशील बनें। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को त्याग दें। समूचे राष्ट्र का ही हितचिन्तन करें। यदि कोई बाह्य शक्ति देश को बुरी नजर से देखती है तो हम उसका डटकर सामना करने के लिए समुद्यत रहें। संकट के समय ही व्यक्ति की परख होती है। यदि हम अपनी स्वार्थ प्रवृत्तियों से दूर रहें, देश का ध्यान सर्वोपरि रखें तो कोई कारण नहीं कि हम पर कोई शत्रु आक्रमण कर सके या आक्रमण करने की बात सोच सके। देश की समृद्धि में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। पंचवर्षीय योजनाओं को पूर्ण करने में यथासम्भव शासन की सहायता करें। यही चरित्रवान व्यक्ति का कर्तव्य है उसे अपनी प्रतिष्ठा व यश प्राप्ति की कामना नहीं करनी चाहिये, और देश की रक्षा व उसकी प्रगति करना ही उसका सर्वप्रमुख कार्य होना चाहिये।

नैतिक उत्थान आन्दोलन

विषमताओं का देश भारत

वाशिंगटन—भारत में सिंचाई की ऐसी व्यवस्था है जिसको संसार की महानतम जल व्यवस्थाओं में रखा जा सकता है, पर साथ ही राजस्थान है जहां अनेक ऐसे स्थान हैं, जिसमें लोगों को बहुमूल्य जल को ताले और कुओं में रखना पड़ता है।

एक ओर भारत में छ करोड़ से अधिक बैलगाड़ियां हैं जो चूं चूं करती देहाती रास्तों पर धूल उड़ाती रहती हैं दूसरी ओर भारत शक्ति उत्पादन के लिए तीन अणु प्लांट तैयार कर रहा है।

एक ओर भारत में ऐसी भूमि है जहां बहुत ही कम पैदावार होती है, दूसरी ओर ऐसी भूमि भी है जिसमें इतना गन्ना पैदा होता है जिसमें हवाई और जावा की पैदावार भी फीकी पड़ जाती है।

संसार में जितने निरक्षर व्यक्ति हैं उनकी एक तिहाई संख्या भारत में है, पर दूसरी ओर हम निरन्तर निरक्षरता पर विजय प्राप्त कर रहे हैं।

—श्रीमती इन्दिरा गांधी अमरीका के राष्ट्रपति जानसन द्वारा दिये गये प्रीति भोज के अवसर पर।

भारत में विदेशी प्रचार

प्रिय महोदय,

हाल ही में भारत सरकार ने एक नया प्रेस कौंसिल कानून बनाकर भारत में विदेशी प्रचार को नियन्त्रण में लाने की चेष्टा की है पर यह प्रयत्न एक तरफा ही है। इसके अत्यधिक महत्वपूर्ण पहलू की ओर यथोचित ध्यान नहीं दिया गया है। बिना उस पर ध्यान दिये भारत में कुप्रचार विदेशी प्रचार न तो नियन्त्रण में आ सकता है और न कम हो सकता है। क्योंकि यह अनेकों रूपों में होता है। इनमें समाचार पत्र एक ही रूप है।

इसका स्रोत है भारत में विदेशी दूतावासों और कूटनीतिज्ञों को दी गई सुविधायें और उनका दुरुपयोग। यह अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार बराबरी के दर्जे पर दो स्वतन्त्र देश एक दूसरे को देते हैं। इस समय भारत के विदेशों के साथ कूटनीतिक सम्बन्धों को दो प्रकार के वर्गों में बांटा जा सकता है। एक है पश्चिम के जनतन्त्रात्मक देश जैसे इंगलैण्ड, अमेरिका पश्चिमी जर्मनी जापान आदि के साथ और दूसरा है साम्यवादी देशों के साथ जिनमें रूस, चीन, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, रूमानिया आदि शामिल हैं।

पश्चिम के जनतन्त्रात्मक देशों में भारत के दूतावास व कूटनीतिज्ञों को वह सभी सुविधायें उपलब्ध हैं जो भारत उनको देता है और जो अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार बराबरी के हिसाब से मिलनी चाहिये। साम्यवादी देशों में यह सुविधायें भारत को नहीं मिली हुई हैं। जबकि भारत में वह इन सब को पाये हुये ही नहीं हैं, उनका दुरुपयोग भी खूब आजादी से कर रहे हैं। कभी-कभी ऐसे समाचार पढ़ने को मिलते हैं। अगर उनको श्रृंखलाबद्ध किया जाय तो हमारे इस कथन की पुष्टि बहुत जोरदार ढंग से हो जाय। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिये हम पिछले वर्षों के कुछ समाचारों की ओर पाठकों का ध्यान इस पत्र में दिलाना चाहते हैं। उनके स्मरण आने पर वास्तविक स्थिति बहुत साफ-समझ में आ जायेगी।

कम्युनिस्ट आदि देशों में भारतीय कूटनीतिज्ञों को सारे देश में घूमने फिरने की सुविधा नहीं है। वह मास्को या पेकिंग के कुछ मील के दायरे से बाहर बिना वहां की सरकार से विशेष आज्ञा लिये नहीं जा सकते। भारत में वह चाहे जहां बिना सरकार को बताये, घूमने फिरने और तोड़फोड़ के कार्य करने को स्वतन्त्र हैं, उन पर कोई रुकावट नहीं है।

भारत में इन देशों के दूतावासों की ओर से अनेक साप्ताहिक पाक्षिक, मासिक पत्र पत्रिकायें निकलती हैं। वह सभी प्रवेशक भाषाओं में छापकर विज्ञापन देकर नाम मात्र अल्प मूल्य पर या अब मुफ्त बांटी जाती हैं। वह अपने-अपने देशों से अनेकानेक पुस्तक पुस्तिकायें आदि मंगवाकर हिन्दी अंग्रेजी आदि भाषाओं में भी खूब बांटते हैं। पर भारतीय दूतावासों को उन देशों में अन्तर्राष्ट्रीय कानून के बराबरी के हक के अनुसार के बावजूद भी यह सब करना वर्जित है। इतने वर्षों के बाद में हाल ही में रूस में भारतीय दूतावास को एक छोटी मोटी मासिक पत्रिका रूसी भाषा में निकालने में सफलता मिली है। परन्तु उसके वितरण पर भी परोक्ष रूप से प्रतिबन्ध है।

इन देशों के नागरिक विदेशी दूतावासों से डाकघरी आदि, जमाने आदि के लिये भारत की तरह स्वतन्त्र नहीं हैं। अगर किसी रूसी या चीनी नागरिक के पास जनतन्त्रात्मक देशों के दूतावास की सामग्री आदि हुई देखी जाती है तो वहां की सरकार उसको दण्ड दण्डित करती है तो वह उसे वापिस भेज देता है और समझाने का साहस नहीं करता। वही नहीं वह लोग इन दूतावासों में खुल्लमखुल्ला आ जा भी नहीं सकते। इस पर भी कड़ी निगाह रखी जाती है। पाठक जानते हैं कि भारत में इस पर कोई रोक टोक नहीं है। कुछ दिन पहिले भारतीय समाचार पत्रों में छपा था कि डाकचीन ने भारतीय दूतावास को वहां भारतीय स्वतन्त्रता दिवस नहीं मनाने दिया जबकि भारत में उसने अपना धाम-धौकत के साथ मनाया था।

इसी प्रकार के अनेक उदाहरण पेश किये जा सकते हैं। अमेरिका ने तो अपने देश में रूसी दूतावास और उसके कूटनीतिज्ञों पर वह सब प्रतिबन्ध लगा दिये हैं जो रूसियों ने अमेरिकन दूतावास व कूटनीतिज्ञों पर लगाये हैं क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिक कानून बराबरी का हक देता है। अन्य देशों ने भी ऐसा ही किया है। पर भारत सरकार इस ओर चुप्पी साधे है। जब तक वह अपने इस कानूनी अधिकारों को प्राप्त नहीं करती या उनके ऊपर वैसा ही प्रतिबन्ध नहीं लगाती वह इन देशों के इस विदेशी प्रचार को भारत में रोक नहीं सकती। अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार उन देशों को अपने देश के बारे में प्रचार करने का हक है, पर वह देश तो भारत के मित्र पश्चिमी देशों के खिलाफ भी अपनी सुविधाओं का दुरुपयोग करके जहरीला झूठ तथ प्रचार करने से नहीं चूकते जो इस अन्तर्राष्ट्रीय कानून की अवहेलना भी है। इनसे भारत के राष्ट्रीय हितों और अन्य देशों के साथ मैत्री सम्बन्धों को भी ठेस लगती है। इस प्रश्न के इस पहलू पर भी सरकार को ध्यान देने की आवश्यकता है अन्यथा यह कानून बेकार सिद्ध होगा।

विनीत—

सुधीर

लाजपत भवन के पास, लाजपत नगर,

नई दिल्ली

★

लखनऊ—रविवार वैशाख १८ शक १८८८, ज्येष्ठ कृ० ४ वि० २०२३, दिनांक ८ मई सन् १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् पुरुषऽएवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥

भावार्थ—जो उत्पन्न तथा उत्पन्न होने वाला है तथा जो वर्तमान है, उन सब जगत को मोक्ष का स्वामी होता हुआ पूर्ण परमात्मा ही यथायोग्य सामग्रियों समेत अधिकृत करता है।

छाने छाने

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के ८० वें बृहदधिवेशन की तिथियों के सम्बन्ध में आर्यसमाज देहरादून के अधिकारियों का पत्र श्री प्रधान जी के विचाराधीन है। समाज के अधिकारियों ने कतिपय कठिनाइयों के कारण तिथि परिवर्तन का अनुरोध किया है। श्री प्रधान जी के निर्णय की घोषणा आगामी अंक में की जायगी। —उपप्रधान मन्त्री

विषय सूची

वार्षिक बृहदधिवेशन—

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का

८०वां वार्षिक बृहदधिवेशन

आर्यसमाज देहरादून के निमन्त्रण पर देहरादून में सम्पन्न होगा

आर्यसमाज प्रतिनिधि चित्र और सभा दशांश आदि शीघ्र भेजें।

उत्तर प्रदेश के सामाजिक एवं धार्मिक जागरण के लिए प्राप्त प्रस्तावों पर बृहदधिवेशन में विचार विमर्श होगा। प्रतिनिधिगण अपने प्रस्ताव शीघ्र भेजें।

हिमालय की सुरम्य इस घाटी में अवस्थित देहरादून नगर उत्तर प्रदेश ही नहीं भारत के प्रमुख नगरों में है। महर्षि दयानन्द ने अपनी प्रचार यात्रा में इस नगर को पवित्र किया और शुद्धि एवं वैदिक धर्म प्रचार द्वारा इस क्षेत्र की जनता का पथ-प्रदर्शन किया था। इस क्षेत्र के आर्य बन्धुओं ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश का वार्षिक बृहदधिवेशन देहरादून में निमन्त्रित किया है। उत्तर प्रदेश की समस्त १५०० आर्यसमाजों को इस अवसर पर अपने प्रतिनिधि अधिकाधिक संख्या में देहरादून भेजकर देहरादून के आर्य बन्धुओं का उत्साह बढ़ाना चाहिये।

आर्यसमाज के मिशन का प्रचार करने के लिये देहरादून में दयानन्द महाविद्यालय, आनन्द वन वानप्रस्थ तपोवन आश्रम, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय आदि प्रमुख संस्थायें कार्य कर रही हैं। इनकी इन संस्थाओं की गतिविधि का सिंहावलोकन करने और आर्यसमाज के कार्य को उत्तर प्रदेश में आगे बढ़ाने के लिए प्रतिनिधियों को अधिक संख्या में देहरादून पहुंचना चाहिये।

सभा के बृहदधिवेशन अवसर पर विगत का सिंहावलोकन करने और आगे विकास गतिविधियों के लिये आवश्यक है कि आर्यजन अधिकाधिक संख्या में एकत्र हों। सभा ने अतीत में जो प्रगति की है उस पर गर्व अनुभव करते हुए हमें प्राप्त सामाजिक धरोहर की रक्षा भी करनी होगी। यह तभी हो सकता है जब हम सदभाव सहयोग एवं दृढ़ता के साथ आर्यसमाज के लिये कार्य करने का संकल्प दोहरावें। पहले हमारी संख्या कम थी, शक्ति अल्प थी परन्तु हमारे कार्यों का व्यापक प्रभाव पड़ता था। आज संख्या अधिक है शक्ति भी है पर प्रभाव की दृष्टि से अन्य संगठनों को हम अपने से आगे बढ़ता हुआ पाते हैं। ऐसे समय में सभा का बृहदधिवेशन वर्तमान परिस्थिति पर विचार करने के लिये समुचित अवसर है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्यसमाजें और प्रतिनिधि गण सभा के बृहदधिवेशन को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग देंगे।

वैदिक प्रार्थना

त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा । त्वं भद्रो असि क्रतुः ॥१९॥

ऋ० १।९१।५

व्याख्यान—हे सोम राजन् सत्पते परमेश्वर ! तुम सोम सबका सार निकालने हारे प्राप्तस्वरूप, शान्तात्मा हो तथा सत्पुरुषों का प्रतिपालन करने वाले हो, तुम्हीं सबके राजा "उत" और वृत्रहा" मेघ के रचक, धारक और मारक हो भद्रस्वरूप भद्र करने वाले और "क्रतु" सब जगत् के कर्ता आप ही हो ॥१९॥

लखनऊ रविवार ८ मई १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसम्वत् १,९७,२९,४९,०६७

पादरी स्काट को भारत से बाहर भेजा जाय

नागा विद्रोहियों की ओर से शान्ति मिशन के सदस्य रूप में पादरी माइकेल स्काट ने पिछले दो वर्षों में जो कार्य किया है उस षड़यन्त्र की ओर से भारत सरकार ने न जाने क्यों आंखें मूंद रक्खी हैं।

पिछले दिनों जब स्काट ने विदेशी पत्रों में नागा पक्ष के लिये पत्र लिखे तब भारत सरकार के कान खड़े हुए और उसने स्काट की हरकतों के सम्बन्ध में अप्रसन्नता व्यक्त की है। हम मित्र के इन स्तम्भों में बारम्बार स्काट के कारनामों की चर्चा करते रहे हैं और इस जहरीले सांप को अधिक दूध पिलाना बन्द करने की मांग करते रहे हैं खेद है कि सरकार ने अपनी उदासतापूर्ण शान्तिवादी नीति के नाम पर हम लोगों के विरोध पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

परिणाम स्वरूप स्काट की हरकतें बढ़ती रहीं और अब जब सरकार ने उसकी हरकतों पर नाराजगी प्रकट की है स्काट पर्दे से बाहर आ गये हैं। दूसरी शान्ति वार्ता बैठक के बाद ही आसाम में दो बम विस्फोटों से रेल दुर्घटनायें हो गयीं अनेक स्थानों पर बम मिले हैं। इस प्रकार स्काट के इशारे पर नागा विद्रोही तोड़ फोड़ की नीति पर चलने लगे हैं।

जब भारत सरकार ने शान्ति वार्ता आरम्भ की थी और सैनिक अभियान रोका था उस समय विद्रोहियों की संख्या यदि दो हजार थी तो अब वह संख्या दस हजार से अधिक पहुंच चुकी है। इस प्रकार शान्ति वार्ता की ओट में विद्रोही अपनी शक्ति को बढ़ा रहे हैं। इसके विपरीत हमारी भोली भाली सरकार विस्फोट सम्बन्धी गुप्त कागजात के पकड़ जाने पर भी विद्रोहियों और उनकी ओर को छोड़ देती है क्योंकि अधिक सख्ती करने पर डर है कि विद्रोह भड़क उठेगा। ऐसी डरपोक सरकार पर देश कैसे विश्वास कर सकता है।

हम स्पष्ट शब्दों में भारत सरकार से मांग करते हैं कि वह—

१—नागा विद्रोहियों के साथ शान्ति वार्ता को समाप्त करने की घोषणा करे।

२—शान्ति मिशन भंग किया जाय।

३—विद्रोही नागाओं को अवैध करार घोषित किया जाय।

४—पादरी स्काट को अविलम्ब भारत से चले जाने का आदेश दिया जाय।

यदि सरकार उदारता के नाम पर ढुलमुल नीति पर चलती रही तो देश का गौरव नष्ट होगा विद्रोहियों की शक्ति बढ़ेगी और बाद में विद्रोह का दमन कर सकना कठिन हो जायगा। आशा है सरकार जन भावनाओं का आदर करेगी।

उड़ीसा में भुखमरी

शस्य श्यामला भारत भूमि आज आज अकाल-ग्रस्त है, उसके पुत्र अन्न के दाने दाने के लिये मुहताज हैं और भिखारी की झोली लिये दुनिया की दर दर ठोकरें खा रहे हैं। उस तथ्य को स्वीकार करने को मन नहीं होता परन्तु जब उड़ीसा में गरीब जनता अपने हृदय के टुकड़ों, अपनी सन्तानों को एक एक रुपए में बेच रही हो, धार्मिक दृष्टि से जिस गौ को माता के समान पूज्य माना जाता है उसकी हत्या कर उसके मांस से जीवन रक्षा का प्रयत्न किया जा रहा हो। तब दुखी हृदय से इस कटु सत्य को मानने के लिये विवश होना पड़ रहा है कि देश में अकाल बढ़ रहा है और गरीब जनता भुखमरी का शिकार बन रही है।

हृदय को कंपा देने वाले इन समाचारों को पढ़कर कौन ऐसा मानव होगा जिसका हृदय द्रवित न हो उठेगा। ऐसे अवसर पर मानवता के नाम पर हम समस्त सेवी संगठनों से मांग करते हैं कि वे आगे आवें और जनता की सहायता से पीड़ित क्षेत्र के निवासियों को राहत पहुंचावें। आर्यसमाज का सेवा-कार्य अनुपम और अद्भुत रहा है। हम सार्वदेशिक सभा से अनुरोध करेंगे कि वह उड़ीसा की जनता के लिये अपना सेवा मिशन भेजने की व्यवस्था करे और जैसे भी सम्भव हो उड़ीसा की गरीब और निरुत्साहित जनता के जीवन की रक्षा की जाय।

भुवनेश्वर और दिल्ली के वातानुकूलित भवनों में बैठी सरकारें उड़ीसा की जनता के भाग्य से भले ही खिलवाड़ करती रहें हमें अपना कर्तव्य पहचानना चाहिये। बिना इस बात की प्रतीक्षा किये कि सरकार क्या और कितना सहयोग देती है हमें अपना सेवा-कार्य आरम्भ कर देना चाहिये। आर्यसमाज के आगे आते ही देश की अन्य समाज सेवी संस्थायें आगे आयेंगी और सरकार को विवश होकर सेवा कार्यों में सहयोग देना पड़ेगा। देश के किसी भी हिस्से में अकाल की छाया सारे देश का संकट है उसे हम सबको मिलकर दूर करना ही चाहिये। आशा है सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही आर्य जनता की भावनाओं को दृष्टि में रखते हुए पग प्रस्थान करेगी। आर्य जनता और देश के सभी उदार दानी इस महान कार्य में सहयोग देंगे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का निर्वाचन हो

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के हिन्दी विश्वविद्यालय का उपाधि वितरण समारोह ८ मई को सम्पन्न हो रहा है। हम इस अवसर पर सभी उपाधि प्राप्त नव स्नातकों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। आशा है सभी उपाधिधारी हिन्दी सेवा करने का पवित्र व्रत ग्रहण करेंगे।

इस अवसर पर हम सम्मेलन के सम्बन्ध में दो शब्द लिखना अपना कर्तव्य समझते हैं—

सम्मेलन को एक राष्ट्रीय संस्था के रूप में भारत सरकार ने मान्यता प्रदान कर दी है परन्तु इस मान्यता प्रदान करने के कई वर्ष हो जाने के बाद भी अभी तक सम्मेलन के नवीन निर्वाचन की वैधानिक व्यवस्था नहीं की गयी है। पहले माननीय श्री श्रीप्रकाश जी अध्यक्ष बने रहे और अब श्री सेठ गोविन्ददास जी अध्यक्ष बन रहे हैं। परन्तु इस वर्तमान व्यवस्था को अनिश्चित काल तक नहीं चलाया जा सकता है। इस क्रम को अधिक समय तक चलाना सन्देह उत्पन्न करता है। हम भारत सरकार से प्रबल अनुरोध करते हैं कि वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली घोषित कर शीघ्र ही नव निर्वाचन करावे।

सम्मेलन का नवीन वैधानिक निर्वाचन हो जाने पर उसका रूप अधिक प्रजातन्त्रात्मक बन सकेगा और हिन्दी की समृद्धि और प्रसिद्धि के लिये स्वतन्त्रतापूर्वक अधिक और व्यापक कार्य कर सकेगा। हम आशा करते हैं कि सम्मेलन के वर्तमान सभापति अध्यक्ष श्री सेठ जी इस दिशा में सरकार को प्रेरित करेंगे और सम्मेलन शीघ्र ही अपनी ऐतिहासिक एवं गौरवपूर्ण परम्परानुसार हिन्दी सेवा कर सकेगा।

भारत सुरक्षा नियमों का दुरुपयोग

भारत सुरक्षा नियमों को अभी लागू रखने के सम्बन्ध में संसद में जो विवाद हुआ उससे स्पष्ट हो गया कि प्रशासन सुरक्षा नियमों का कैसे दुरुपयोग करता है।

श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य ने दुरुपयोग के जो उदाहरण प्रस्तुत किये—

(१) काश्मीर में श्रीसिंह विद्यार्थी ने मांग की कि पाठ्य पुस्तकों में से चीन की प्रशंसा सम्बन्धी अंश निकाल दिये जाय जब तक ऐसा न होगा आन्दोलन किया जायगा। काश्मीर सरकार ने भारत सुरक्षा नियम में उसे गिरफ्तार कर लिया।

(२) महाराष्ट्र के एक मन्त्री ने इसलिये एक लड़के को भारत रक्षा नियम में गिरफ्तार करा दिया जिससे कि वह एक विशेष लड़की से विवाह न कर सके।

इसी प्रकार पाठकों को स्मरण होगा कि पूर्वी पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओं की सहायता के लिये आर्य समाज की ओर से अपीलें की गयी तब आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं पर जिला अधिकारियों ने भारत रक्षा नियम लगा कर चालानियां कर दीं।

कहने का अभिप्राय यह है कि भारत रक्षा नियम का उद्देश्य प्रशासन को मनमाने अधिकार में देना नहीं होना चाहिये इसके विपरीत सुरक्षा की दृष्टि से जो लोग राष्ट्रघातक कार्यवाहियां करें उन्हें गिरफ्त में लेना इस नियम

[शेष पृष्ठ १२ पर]

विवाह कब और कैसे-२

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी. डी. बी. कालेज, गोरखपुर)

स्वामी दयानन्द ने विवाह कब करना चाहिए इसके विषय में मनु महाराज के ——— उद्धरण देते हुए लिखा है—

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार

तं प्रतीतं स्वधर्मेण ब्रह्मदायहरं पितुः।
स्रग्विणं तल्प आसीनमर्हयेत्प्रथमं गवा ॥

जो स्वधर्म अर्थात् यथावत आचार्य और शिष्य का धर्म है उससे युक्त पिता जनक व अध्यापक से ब्रह्मदाय अर्थात् विद्या रूप भाग का ग्रहण माला का धारण करने वाला अपने पलंग में बैठे हुए आचार्य को प्रथम गोदान से सत्कार करे। वैसे लक्षण युक्त विद्यार्थी को भी कन्या का पिता गोदान से सत्कार करे।

आगे फिर स्वामी जी महाराज ने लिखा है—

गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि। उद्वहेत द्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम् ।

अर्थात् गुरु की आज्ञा से स्नान कर गुरुकुल से अनुक्रमपूर्वक आ के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने वर्णानुकूल सुन्दर लक्षणयुक्त कन्या से विवाह करे।

विवाह के समय के विषय में भी स्वामी जी महाराज ने विस्तार से चर्चा करते हुए कहा है कि सोलहवें वर्ष से लेके चौबीसवें वर्ष तक कन्या और पच्चीसवें वर्ष से ले के अड़तालीसवें वर्ष तक पुरुष का विवाह समय उत्तम है। इसमें जो १६ और पच्चीस में विवाह करे तो निकृष्ट, अट्ठारह बीस की स्त्री तीस पैंतीस के वा चालीस वर्ष के पुरुष का विवाह मध्यम, चौबीस वर्ष की स्त्री और अड़तालीस वर्ष के पुरुष का विवाह होना उत्तम है। जिस देश में इसी प्रकार विवाह की विधि श्रेष्ठ और ब्रह्मचर्य विद्याभ्यास अधिक होता है वह देश सुखी और जिस देश में ब्रह्मचर्य विद्याग्रहण रहित बाल्यावस्था और अयोग्यों का विवाह होता वह देश दुःख में डूब जाता है, क्योंकि ब्रह्मचर्य विद्या के ग्रहण पूर्वक विवाह सुधार ही से सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है।

सामाजिक समस्याएँ

स्वामी जी के इस महत्वपूर्ण वक्तव्य को सुनकर विपक्षी तथा स्वार्थी ब्राह्मणों को आजीविका और उनके स्वार्थ को धक्का लगना स्वाभाविक था अतः उन्होंने पाराशरी तथा शीघ्रबोध के प्रमाण के आधार पर प्रश्न किया कि—

अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी, दशवर्षा भवेत् कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला ।

माता चैव पिता तस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च। त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्या रजस्वला ॥

अर्थ यह है कि कन्या की आठवें वर्ष विवाह में गौरी, नववें वर्ष रोहिणी, दशवें वर्ष कन्या और उसके आगे रजस्वला संज्ञा होती है। जो दसवें वर्ष तक विवाह न करके रजस्वला कन्या को माता-पिता और बड़ा भाई ये तीनों देख के नरक में गिरते हैं। इस प्रश्न को सुनकर स्वामी जी महाराज ने अपनी विनोदपूर्ण वाणी का सहारा लिया और तत्क्षण एक श्लोक बनाकर व्यंग्य करते हुए कहा—

एक क्षणा भवेद् गौरी द्विक्षणेयन्तु रोहिणी, त्रिक्षणा सा भवेत्कन्या ह्यत ऊर्ध्वं रजस्वला ।

माता पिता तथा भ्राता मातुलो भगिनी स्वका। सर्वे ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्या रजस्वलाम् ॥

अर्थात् जितने समय में परमाणु एक पलटा खावे उतने समय को क्षण कहते हैं, जब कन्या जन्मे तब एक क्षण में गौरी, दूसरे में रोहिणी, तीसरे में कन्या और चौथे में रजस्वला होती है। उस रजस्वला को देख के उसके माता पिता भाई मामा और बहिन सब नरक को जाते हैं।

जब स्वामी दयानन्द की इन व्यंग्योक्तियों को सुनकर विपक्षी ने कहा—ये श्लोक प्रमाण नहीं। उत्तर देते हुए स्वामी दयानन्द ने कहा— क्यों प्रमाण नहीं ?" विपक्षी ने कहा "तुम्हारे श्लोक असम्भव होने से प्रमाण नहीं क्योंकि सहस्र क्षण जन्म समय में ही बीत जाते हैं तो विवाह कैसे हो सकता है ? और उस समय विवाह करने का कुछ फल भी नहीं दीखता।

स्वामी जी महाराज ने तब कहा— "जो हमारे श्लोक असम्भव हैं तो तुम्हारे भी असम्भव हैं, क्योंकि आठ, नौ और दसवें वर्ष में भी विवाह करना निष्फल है, क्योंकि १६ वें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान भी उत्तम होते हैं। सुश्रुत में धन्वन्तरी महाराज ने कम आयु के विवाह का निषेध करते हुए लिखा है:—

ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पञ्चविंशतीम्। यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ।

जातो वा न चिरञ्जीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः। तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत् ॥

अर्थात् सोलह वर्ष से कम आयु की स्त्री में पच्चीस वर्ष से कम आयु का पुरुष जो गर्भ स्थापन करे तो वह गर्भ विपत्ति को प्राप्त होता है अर्थात् पूर्णकाल तक गर्भाशय में रहकर उत्पन्न नहीं होता। यदि किसी तरह उत्पन्न हो जाता है तो दुर्बलेन्द्रिय होता है अतः कम आयु में सन्तान न उत्पन्न करे। इन बातों का ध्यान रखते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि तुमने जो सभी स्त्रियों को गौरी और रोहणी नाम दिया है वह ठीक नहीं। यदि कन्या गोरी न होकर काली हुई तो वह गौरी कैसे ? और दूसरी बात यह है कि महादेव की स्त्री गौरी और वसुदेव की स्त्री रोहिणी थी। और तुम उनमें मातृत्व मानते हो। ऐसी स्थिति जब कन्याओं में गौरी आदि की भावना करते हो तो फिर उनसे विवाह कैसे सम्भव है ? अतः जैसे हमारा श्लोक ठीक नहीं वैसे ही तुम्हारे भी श्लोक ठीक नहीं और पाराशर इत्यादि के नाम से बना लिए गये हैं।

आज सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित यह बातें व्यर्थ सी लग सकती हैं। परन्तु जिस समय स्वामी जी ने यह लिखा था उस समय स्त्रियों की अत्यन्त दुर्दशा थी। बाल विवाह बुरी तरह प्रचलित था। बूढ़ों का बालिकाओं से विवाह बलात् कर दिया जाता था। ऐसे समय मनु महाराज के शब्दों में स्वामी दयानन्द की यह क्रान्तिकारी आवाज थी—

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती। ऊर्ध्वं तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशं पतिम् ।

अर्थात् रजस्वला होने के बाद अच्छे पति की खोज कर उसका विवाह कर दे। आगे उन्होंने फिर कहा है—

काममामरणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि, न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित् ।

चाहे लड़की मरण पर्यन्त कुमारी रहे परन्तु गुणहीन पुरुष से उसका विवाह न करे वेद का प्रमाण देखिए—

शुद्धा पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्र पृथक् सादयामि। यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्स ददातु तन्मे । अ० ६।१२२।५

अर्थात् शुद्ध, पवित्र, पूजनीय इन स्त्रियों को ब्राह्मणों के हाथों में पृथक्-पृथक् देता हूँ। जिस इच्छा को धारण करने वाला मैं आपका यह अभिषेक करता हूँ। उस कामना को प्रभु मुझे देवे।

शुद्ध पवित्र पूजा योग्य तरुणी स्त्रियों का पाणिग्रहण ब्राह्मण और योग्य पुरुष ही करें। और पृथक्-पृथक् एक तरुणी का पाणिग्रहण एक ही पुरुष करे अर्थात् एक पुरुष अधिक स्त्रियाँ न करे और अयोग्य स्त्री पुरुषों का विवाह कभी न हो, स्त्री पुरुषों के विवाह का हेतु परमात्मा की कृपा से सफल होवे। अथर्ववेद ६।४९।७ में आया है—

पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीरपत्नी धियं धात् । ग्नाभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यंसत् ।

अर्थात् पवित्रता करने वाली, विद्या से सुसंस्कृत कन्या वीरों को पति रूप में वर कर उनको सनाथ करती है।

ऋग्वेद मण्डल ३, सूक्त ८, मन्त्र ४ में आया है कि—

युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

जो पुरुष सब ओर से यज्ञोपवीत ब्रह्मचर्य सेवन से उत्तम शिक्षा और विद्या से युक्त सुन्दर वस्त्र धारण किया हुआ ब्रह्मचर्य युक्त पूर्ण जवान होकर गृहाश्रम में आता है वही दूसरे विद्याजन्म में प्रसिद्ध होकर अतिशय शोभायुक्त मंगलकारी होता है। अच्छे प्रकार ध्यान युक्त विज्ञान से विद्यावृद्धि की कामना युक्त, धैर्ययुक्त विद्वान् लोग उसी पुरुष को उन्नतिशील करके प्रतिष्ठित करते हैं और जो ब्रह्मचर्य धारण किया, उसका

(शेष पृष्ठ १४ पर)

८०वें वृहदधिवेशन का विज्ञापन

उत्तरप्रदेशीय सभान्तर्गत आर्यसमाजों के मन्त्री गण तथा आर्य प्रतिनिधि महोदयों की सेवा में—

श्रीमान् महोदय नमस्ते !

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का ८० वां वार्षिक साधारण अधिवेशन एवं प्रदेशीय आर्य महासम्मेलन मिति ज्येष्ठ शुक्ल ९ व १० सं० २०२३ वि० सं० ज्येष्ठ ७ ८ शक सं० १८८८ दि० २८, २९ मई १९६६ ई० दिन शनि व रविवार स्थान देहरादून नगर में होगा। साधारण अधिवेशन दि० २८।५।६६ की प्रथम बैठक ३ बजे अपरान्ह से प्रारम्भ होगी।

आशा है कि आर्यसमाजों एवं उप प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधि महोदय नियत समय पर अधिवेशन में सम्मिलित होकर अनुगृहीत करेंगे।

प्रवेशनीय विषय सूची

१—उपस्थिति, ईश्वर-प्रार्थना के उपरान्त शोक प्रस्ताव।
२—स्वागताध्यक्ष एवं सभापति के भाषण।
३—वार्षिक वृत्तान्त १ जनवरी १९६५ से ३१ दिसम्बर १९६५ तक आय-व्यय लेखा सहित स्वीकृतार्थ।
४—आगामी वर्ष सन् १९६७ के लिए बजट स्वीकृत्यर्थ।
५—सभा के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन।
६—आय व्यय लेखा निरीक्षक (आडीटर) की नियुक्ति।
७—गुरुकुल विद्या सभा के लिये सभा के नि० सं० ४४ (ड) के अनुसार छ प्रतिनिधियों का निर्वाचन।
८—सभा के नि० सं० ४४ (१) के अनुसार प्रदेशीय विद्यार्य सभा के लिये दो सदस्यों का निर्वाचन।
९—सभा के नियम सं० ८ (ए) के अनुसार ३ सदस्यों का निर्वाचन।
१०—प्रदेशीय आर्य महासम्मेलन में पारित प्रस्ताव तथा अन्य आवश्यक विषय सभा नियम धारा २१(६) के अनुसार प्रस्तुत हो सकेंगे।

टिप्पणी—(१) दिनांक २८ व २९ मई १९६६ को "प्रदेशीय आर्य महासम्मेलन" भी देहरादून नगर में होगा। प्रथम दिवस की बैठक रात्रि में ८ बजे और द्वितीय बैठक दि० २९-५-६६ के रात्रि ८ बजे से होगी।
(२) आर्य प्रतिनिधि सभासदों के निवास भोजन की सुव्यवस्था आर्यसमाज देहरादून "महादेवी आर्य कन्या पाठशाला डिग्री कालेज देहरादून" में की गई है।
(३) नवीन अन्तरंग अधिवेशन की समाप्ति पर बैठगी।
(४) प्रदेशीय आर्य सम्मेलन के लिए आर्यसमाजों और प्रतिनिधियों के प्रस्ताव १५ मई १९६६ तक सभा कार्यालय में भेज देने चाहिए।

वृहदधिवेशन का कार्यक्रम—

२८ मई १९६६ दिन शनिवार

प्रातः—७ से ८॥ तक सन्ध्या, यज्ञ, ९ से ११ तक प्रवचन।
अपरान्ह—३ से ६ बजे तक वृहदधिवेशन की प्रथम बैठक।
सायं—६ से ८ बजे तक नित्यकर्म, सन्ध्या, भोजनादि। तत्पश्चात् आर्यसम्मेलन की प्रथम बैठक।

२९ मई १९६६ दिन रविवार

प्रातः—६॥ से ७॥ तक सम्मिलित सन्ध्या, यज्ञ।
" ८ से १२ तक वृहदधिवेशन की द्वितीय बैठक।
अपरान्ह—२ से ४ बजे तक वृहदधिवेशन की तृतीय बैठक नवीन अधिकारियों द्वारा कार्य भार ग्रहण तथा धन्यवाद।

निवेदक—
कालीचरण
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

नारायणस्वामी भवन, लखनऊ
दि० २।४।६६

सभा के आगामी वृहदधिवेशन की सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को विदित हो कि आर्य प्र० सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक २८ व २९ मई १९६६ दिन शनिवार व रविवार को देहरादून में बुलाना निश्चित किया गया है। प्रतिनिधि महानुभावों के निवास एवं भोजन की सुव्यवस्था का प्रबन्ध आर्यसमाज देहरादून की ओर से 'महादेवी आर्य कन्या पाठशाला डिग्री कालेज देहरादून" में किया गया है। आर्यसमाजों के मंत्री महोदयों से प्रार्थना है कि अपने अपने समाज के प्रतिनिधि सज्जनों को नियत समय पर भेजने की कृपा करें।

प्रतिनिधि चित्र तुरन्त भेजिए

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय में अब तक २०० आर्यसमाजों के वार्षिक प्रतिनिधि चित्र प्राप्त हुए हैं। अतः समाजों के मन्त्री महोदयों एवं जिला उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदयों तथा समस्त निरीक्षक तथा उपदेशक, प्रचारकों से तथा समान्य अन्तरंग सदस्यों से निवेदन है कि अपने अपने जिला क्षेत्र के समाजों से प्रतिनिधि चित्र पूर्ण भरवाकर सभा कार्यालय में अब दशांश, शुद्धोदि तथा चार आना प्रति प्रतिनिधि शुल्क भिजवाने की कृपा करें।

—कालीचरण सभामन्त्री

सभा के पुराने कार्यमुक्त उपदेशकों एवं भजनीकों की सेवा में

सभा के कागजों में निम्नलिखित पुराने उपदेशक व भजनीकों का धन निकल रहा है। परन्तु सभा कार्यालय में उनका ठीक पता न होने के कारण अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है। अतः इन सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्र सभा कार्यालय से पत्र व्यवहार कर अपना धन प्राप्त करने की कृपा करें।

१—श्री श्यामलाल जी
२—श्री माधवदेव जी शर्मा
३—श्री महावीर प्रसाद जी
४—श्री [illegible] जी
५—श्री रघुवर दयालु जी
६ श्री रामदेव जी
७—श्री [illegible] जी

—कालीचरण सभामन्त्री

तपोवन आश्रम और श्री आनन्दस्वामीजी महाराज

श्री आनन्द स्वामी जी महाराज आजकल वैदिक धर्म प्रचारार्थ थाईलैण्ड [स्याम] गये हुए हैं। वहां से उन्होंने पत्र द्वारा सूचित किया है कि बहुत से व्यक्ति समय-समय पर तपोवन देहरादून के सम्बन्ध में उन्हें पत्र लिखते रहते हैं। उन सबको सूचित कर दिया जाय कि—

तपोवन देहरादून के साथ अब मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है वहां की कमेटी से भी मैं त्यागपत्र दे चुका हूं। अतः मेरे साथ तपोवन देहरादून के सम्बन्ध में कोई सज्जन पत्र व्यवहार न करें।

बैंकाक ७-४-६६ —आनन्दस्वामी

आशा है तपोवन सम्बन्धी पत्र-व्यवहार के अभिलाषी इस सूचना को ध्यान में रखेंगे। —[illegible]
सम्पादक आर्यमित्र

(पृष्ठ १४ की शेष)

मन्युः

मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ।

यजु० १९।९

तू उत्साही है मुझ में उत्साह का आधान कर ।

★

बल के उस रूप को मन्यु कहते हैं, जो कि दुष्टों का विरोध और सज्जनों का संरक्षण करता है । जो दीन दुखियों से सम्वेदना प्रकट न करे, वह तो सहृदय ही नहीं है । जो सत्य की हत्या को सहन करे, अन्याय और अत्याचार को सहन करे, पाप और पाखण्ड को सहन करे, वह तो अधम और निन्दनीय मनुष्य है ।

साधारणतया तो क्रोध एक बुरा मनोभाव है, परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में क्रोध भी दूषण नहीं; अपितु भूषण हो जाता है । आततायियों के विनाश और देश, धर्म, जाति, सज्जन गो-ब्राह्मण, उच्च आदर्शों एवं निर्बलों की रक्षा के लिए समय-समय पर वीरजन जो क्रोध करते हैं, वह तो श्लाघनीय ही होता है : 'मन्यु" शब्द क्रोध के इसी न्यायानुमोदित रूप को प्रकट करता है ।

मन्यु शब्द का एक अर्थ उत्साह है, दूसरा अर्थ क्रोध है, तीसरा अर्थ विचारक भी है । "मन्यु" शब्द का पर्यायवाची कोई अन्य शब्द मिलना कठिन है । "मन्यु" के प्रयोग में पूर्ण विचार, पूर्ण विवेक सन्तुलन न्याय, सत्य और सदुद्देश्य का जो भाव निहित है, वह इसके अर्थ-सौन्दर्य को बहुत बढ़ा देता है ।

न चाहते हुए भी संसार में जब-तब ऐसे संकट-काल आते ही रहते हैं । जबकि आसुरी भाव उग्र रूप धारण कर लेते हैं, दुष्ट लोग संसार में भारी उत्पात और हाहाकार मचा देते हैं, समझाने बुझाने, विचार प्रचार द्वारा स्थिति को सुधारने तथा उत्तम आदर्शों को सुरक्षित रखने की सम्भावनायें सर्वथा ही मिट जाती हैं, अथवा बहुत ही कम हो जाती हैं, तब तो एक ही उपाय होता है, जिससे स्थिति को सम्भाला जा सकता है और वह है मन्यु का उपयोग । उस विषम अवस्था में तो लोहे और बारूद का जोश और होश के साथ उपयोग ही वीरों का परम कर्तव्य होता है । तभी तो दण्ड नीति को ही श्रेष्ठ नीति माना जाता है ।

न वह किस्से से चलता है, न वह दोहे से चलता है ।
समझ लो सल्तनत का काम तो लोहे से चलता है ॥

सत्य की रक्षा, न्याय की प्रतिष्ठा, शान्ति की स्थापना, आत्म रक्षा और स्वदेश की सुरक्षा के लिए शस्त्र प्रयोग करना प्रत्येक सज्जन पुरुष का कर्तव्य है । धन्य हैं वे नर-श्रेष्ठ जो संकट-काल में मन्यु का उपयोग करके विजयश्री को प्राप्त करते हैं । यदि कभी ऐसा प्रसंग आये तो हमें भी ऐसे वीरों का अनुकरण करना ही चाहिए ।

वह न्यायकारी परमात्मा मन्यु का भण्डार है । उसकी शरण ग्रहण करने और उससे याचना करने से ही मन्यु की प्राप्ति होती है । आओ हम भी मन्यु-पूर्ण जीवन लाभ के लिए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के सुनियोजित कार्यक्रम आरम्भ करें । हे सर्वशक्ति सम्पन्न परमात्मन् ! आपकी कृपा से हमारा जीवन सब प्रकार के पापों और दोषों से मुक्त हो । शुभ कर्मों से हमारी प्रीति सदा बढ़ती ही रहे । हम सब स्वतन्त्र तथा स्वावलम्बी बन कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करें । आपकी कृपा से हम निराशा असफलता और पराभव के कष्टों को न भोगें । हे दयानिधे ! आप तो मन्यु के भण्डार हैं । हमें भी मन्यु प्रदान करो । आपकी कृपा से हम सब आगे ही आगे बढ़ें, ऊपर ही ऊपर उठें । किसी भी अवस्था में हमारा किसी भी प्रकार का पतन न हो ।

—साधु सोमतीर्थ

★

आर्यसमाजों में वेद पाठ

(ले०—परिव्राजकाचार्य वेदस्वामी वेदारत्नी एम० ए० विद्यालंकार, सामवेद मार्तण्ड, पालिरत्न, एल०टी०, आयुर्वेद शास्त्री ऋषिधाम गोपालपुर पो० हंकारा)

आर्यसमाज का तीसरा नियम है वेद का पढ़ना, पढ़ाना इत्यादि । सौभाग्य से ऋषि दयानन्द की दया से प्रायः सभी आर्यसमाजों में वेद पाठ होता है । ईश्वर, प्रार्थना, उपासना के स्तुति पाठ तो सर्वत्र होते हैं । स्वस्तिवाचन और शान्ति प्रकरण भी झूम-झूमकर पढ़े जाते हैं । इतना सब होते हुये भी विद्वानों का एक मत है कि आर्यसमाजों में जो वेद पाठ होता है वह बिलकुल स्वर-शून्य भद्दा और अर्थविकारक होता है । बड़े-बड़े पण्डित ध्यान नहीं देते हैं, न सुधार करवाते हैं । स्तुति प्रार्थना और उपासना के ८ मन्त्र तक गलत बोल जाते हैं । छन्दों का तो पता ही नहीं चलता है । 'सदाधार' के स्थान पर स दाधार' बोलना चाहिए । 'छाया अमृत' के स्थान पर 'छाया-मृत' बोलना चाहिए । 'इन्द्राजा' के स्थान 'इन्द्-राजा' बोलना चाहिए द्विपदश्चतुष्पद.' के स्थान पर 'द्विपदश्चतुष्पदः' बोलना चाहिए । 'स्वः स्तभित' के स्थान पर 'स्व स्तभित' बोलना चाहिये । विसर्ग न बोलें । 'मिन्धो' के स्थान पर 'म्मन्धो' बोलना चाहिए । 'अस्तु वय' को अलग-अलग बोलना चाहिए । 'अस्तु' बोलकर ठहरना चाहिए । पश्चात् 'वय स्याम पत यो रयीणाम' यह एक साथ बोलना चाहिए ।

'सनो बन्धु:' के स्थान पर 'स' अलग बोलना चाहिये । 'नो' अलग करके बोलना चाहिये । 'तृतीये' यह पद लम्बा करके बोलना चाहिए । छोटी 'ति' बोलने से छन्दोभंग भी हो जाता है । 'भूयिष्ठाम' इस पद को भी लम्बा करके अर्थात 'भू' लम्बा करके बोलना चाहिये । 'ष्ठाम्' की जगह 'ष्ठान्' बोलना अशुद्ध है । यह आठ मन्त्र शुद्ध हो जाय तो सर्वत्र आनन्द का राज्य हो जाय । ध्यान दीजिए !

यदि आर्य जनता ने पसन्द किया तो मैं सन्ध्या, हवन आदि के मन्त्रों की भी प्रसिद्ध त्रुटियां सुधरवा दूंगा ।

मैं सर्वत्र घूम नहीं सकता हू । अतएव मैंने 'आर्यमित्र' द्वारा यह पुण्य कार्य करने का निश्चय किया है । नाम के आगे डिग्रियाँ इसलिये लिख दी हैं—ताकि जनता यह जान जाय कि मैं साधिकार मन्त्र की गलतियां शुद्ध करा रहा हूं ।

ध्यान रहे—जो यजमान अशुद्ध वेद पाठ करने वाले पण्डितों से संस्कार कराते हैं उनको जन हानि, धन हानि, और तन हानि होती है ।

अथर्व वेद में एक मन्त्र है । (आवश्यकता होगी तो पूरा मन्त्र अर्थ सहित आगामी लेख में लिखूंगा)—

जिसका मतलब यह है कि जो काणता झुमला की छल (कूट) से अशुद्ध मन्त्र पढ़ता है उसको पुत्र पुत्री नाश भोगना पड़ता है । जो गायत्री का शुद्धोच्चारण न जानता हुआ गायत्री यज्ञ कराता है वह स्वयं अज्ञान के गढ्ढे में गिरता है और सारे परिवार को अज्ञानी बना देता है । जो पण्डित स्वर-हीन वेद पाठ करता है—वह घरों व ग्रामों को जला देता है । प्रायः घरों में आग लग जाती है । भली भांति पता लगायगे तो पता लगेगा कि किसी मूर्ख पाठ ने वहाँ विवाह कराया होगा ।

अन्त में वेद मन्त्र कहता है—

"काणता दीयते स्वम्"

जो पण्डित व्याकरण नहीं जानता है और वेदोपदेश करता है वह अपने भी तन और धन को नष्ट कर लेता है, दूसरों को तो भ्रम में डाल ही देता है । आजकल व्याकरण शून्य वेद भाष्य कर्ता बढ़ रहे हैं । मन्त्रों के छन्दानुवाद करते नहीं अघाते हैं । आये दिन पत्रों में मद्दे अनुवाद छपते हैं । वेद-मन्त्रों का छन्दों में अनुवाद असम्भव है । बाज आ जाय ! महापाप न करें । गुरुमन्त्र का अनुवाद न करें । शेष फिर—

★

आर्यसमाज का आदर्श और हम

[श्री कृष्णस्वरूप विद्यालंकार इस्लामनगर, बदायूं]

प्राचीन धर्मी पौराणिकों में अवतारों के आने का प्रयोजन—

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे । गीता अ० ४-८

सज्जन पुरुषों की रक्षा, दुष्टों का विनाश, धर्म की स्थापना कहा गया है। पौराणिकों के अवतार (?) युग-युगान्तरों के बाद होते हैं परन्तु आर्यसमाज के संस्थापक युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक आर्यसमाज को अवतार का काम सौंपा और आर्यसमाज का नियम बनाया कि "इस संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक, सामाजिक उन्नति करना" नियम सं० ६। आर्यों ने भी "कृण्वन्तो विश्वमार्यमपघ्नन्तोऽराव्णः" वेद मन्त्र को विश्व को आर्य श्रेष्ठ बनाने और दुष्टों का नष्ट करने का आदर्श स्वीकार किया।

आर्यसमाज आर्यों आर्य श्रेष्ठ पुरुष बनने की इच्छा वाले पुरुषों का समाज है। यदि व्यक्ति ही श्रेष्ठ न हों तो समाज कैसे श्रेष्ठ बन सकता है? यदि गंदे पानी से मैला कपड़ा उज्ज्वल, अन्धों से अन्धों को सही मार्ग दर्शन, बुझे दीपकों से दीपक प्रकाशित किये जा सकते हों तो सम्भव है हम अश्रेष्ठ अनार्य भी संसार को श्रेष्ठ आर्य बना सकेंगे। परन्तु यह असम्भव है। संसार की उन्नति की कामना करने वाले पुरुष के लिये यह आवश्यक है कि वह पहिले स्वयं जीती जागती चमकती मशाल बने। उसके लिये कोई यह न कह सके कि "पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे।"

इसीलिये क्रान्तदर्शी महर्षि ने आर्य समाज का यह भी नियम बनाया कि जो आर्यसमाज में प्रविष्ट होना चाहे, उसके लिये वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" इस परम धर्म वेद पाठ श्रवणादि से उपार्जित ज्ञान को अपने आचरणों में लाने के लिये बल दिया व ऋषि ने नियमों में व्यवस्था की। जिसे व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन, को उन्नत बनाने के सूत्र नियम रूप में बनाए।

आर्यसमाज के सभी नियम व्यक्ति व समाज के आदर्श व चरित्र हैं। इन्हीं आदर्शों की कसौटी में हमें अपने जीवन में जांच करनी चाहिये व व्यवहार में अपने चरित्र की पड़ताल करनी चाहिये कि मैं आर्य समाजस्थ किस आर्यसमाज सदस्य का बन रहा हूं व बन चुका हूं मैंने उसके नियम उपनियम व उद्देश्यों के अनुकूल कहां तक अपना जीवन बनाया है।

मनुष्य अपनी कमजोरी को नहीं देख सकता। समुद्र में बहता व्यक्ति, युद्ध में जूझता सैनिक स्वभावतः ही नहीं जान सकता कि मैं कहां हूं? किधर जाना चाहिये? तटस्थ ही इसे ठीक बता सकता है। उसके बताने को बुराई नहीं मानना चाहिये। इसी के अनुसार स्थानीय आर्यसमाजें और उनके कार्यकर्ता जो प्राय झगड़ों में उलझे हुए हैं वह गुण दोष विवेचन करने में असमर्थ हो रहे हैं और नहीं जानते कि हम अपने लड़ाई झगड़ों से आर्यसमाज की नाव को किधर ले जा रहे हैं? न उन्हें नजर दीखता है न चट्टानें, न वेद दीखता है न महर्षि की आत्मा। दीखता है केवल

स्वार्थ साधन लोकेषणा व वित्तैषणा। पद अधिकार व सम्पत्ति से धनादि कमाने की इच्छा पूर्ति।

आर्यसमाज में श्रद्धा विश्वास प्रेम निष्ठा के कारण स्वयं प्रविष्ट होने वालों की संख्या नगण्य है बड़ी बड़ी पुरानी समाजों में भी कस्बों में १२ १५; तहसीलों में २० २५; जिले में ४०, ५०; गांवों में कई कई गांवों को मिलाकर १० १२ आर्य सभासद ही प्राय होते हैं। आजकल जिन समाजों में शिक्षा या अन्य किसी प्रकार की संस्थाएं खुल गई हैं या पहिले से चल रही हैं और उन्हें गवर्नमेण्ट से ग्रान्ट पर्याप्त मिलने लगी है, वहां लोकेषणा बहुत अधिक व वित्तैषणा की भी बहुत कुछ प्राप्ति के कारण, चतुर नेता जनता में पहुंचकर मेम्बरों के फार्म भरवा-भरवा कर ला रहे हैं, और जहां पहिले ४०, ५० साल से १५ १६ मेम्बर ही चले आ रहे थे, वहां एक साल में ही ५०,६० फार्म नए-नए भर कर आ रहे हैं। वह लोग जो पहिले आर्यसमाज और आर्यों को फूटी आंखों देखना नहीं चाहते थे, उन्हीं से फार्म भरवा कर चतुर नेता लोग आ रहे हैं कि जिससे उनका बल बढ़ जावे, और यदि कहीं कभी आवश्यकता पड़ जावे तो उनके द्वारा गाली गलौज मार-पीट इत्यादि भी हो सके। कोई इस बात को देखने वाला नहीं कि इन नए सदस्यों में शिष्टाचार सभ्यता है या नहीं? आर्यसमाज के नियमों का उद्देश्य का पालन, इनके जीवन में होता है या नहीं? महर्षि प्रतिपादित सिद्धान्तों को मानते हैं या नहीं? व्यापार में मिलावट, अनैतिकता ब्लैक मार्केटिंग, रिश्वत का लेना मजदूरों की मजदूरी मार लेना, तोल में अधिक लेना कम तोलना, सत्य को छोड़ना असत्य को ग्रहण करना, अपने स्वार्थ साधन के सामने समाज, लोक हित, देश राष्ट्र की भी उपेक्षा आदि आर्य दोष इनमें हैं या नहीं। सन्ध्या हवन करते हैं या नहीं? मन्त्र भी याद हैं या नहीं।

पूछ कर स्वागत से चाहे यह मनुष्य कोटि में पहुंचें न पहुंचें आर्य समासद बनाना ही है क्योंकि अपने बहुमत की आवश्यकता है।

मुझे कई ऐसी आर्यसमाजों की निजी जानकारी है कि जहां वर्षों से पार्टी बन्दी और झगड़े चले आ रहे हैं। प्रायः इन सभी समाजों में शिक्षा संस्थाएं भी हैं।

आर्य समाजों को नियोजित चन्दा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० भी इन झगड़ों के कारण दुःखी व चिन्तित है।

आर्य समासदों के फार्मों में सताय चन्दा देने की शर्त लिखी है परन्तु मैंने देखा है कि जो सम्पत्ति भरे हैं वह भी ।) ॥) मासिक चन्दा लिखाते हैं और देते हैं जब इस पर आक्षेप होता है आ० प्र० नि० सभा में झगड़े व अपीलें पहुंचती हैं तो सभा के योग्य अधिकारी झगड़ों के निर्णायक फैसला देते हैं कि "हम पर जोर न दें। आर्य समासद बनाते समय केवल इस बात का ध्यान रखें कि वह वर्ष में १३ उपस्थिति साप्ताहिक अधिवेशनों में हों और) साहुकार कम से कम चन्दा देता हो। यदि सभी शर्तें चरित्रादि विषयक की भी छानबीन करेंगे, तब तो समाजें खाली हो जावेंगी।" इसका अर्थ यह है कि यह अधिकारी इस बात को जानते हैं कि वर्तमान आर्य सदस्यों में वह कमियां मौजूद हैं कि जिनके कारण उन्हें आर्य सदस्य नहीं बनाया जाना चाहिये। परन्तु समाजें खुली रहें इसलिये उनकी उपेक्षा कर देनी चाहिये।

मुझे आश्चर्य होता है कि ऋषि दयानन्द की आत्मा ऐसे मान्य अधिकारियों के निर्णयों से और उनके व्यवहारों से कितनी दुःखी होती होगी कि जो आर्यसमाज के नियम, सिद्धान्त, आचरणों का बहिष्कार करके केवल साप्ताहिक) चन्दा और १३ उपस्थिति पर जोर देते हैं। यह तो आर्यसमाज को रसातल तक बलात् के साथ वेग में धकेला जा रहा है बल्कि यह कहिये कि धकेल दिया है। आर्यसमाज शुद्ध धार्मिक संस्था है। राजनीति प्रधान पुरुषों को अन्य राजनैतिक संस्थाओं ने अपने छल-कपट के हाथ बिकाने चाहिये। साम, दाम, दण्ड भेद संधि विग्रह, मान, आसन द्वैधी भाव संश्रय की नीतियों का प्रयोग करना चाहिये जहां कि इनका उपयोग उचित माना जाता है।

जब राजनीति प्रधान पुरुषों को राजनैतिक संस्थाओं में जगह नहीं मिल पाती, तो वह इन धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक संस्थाओं पर ही किला कब्जा शुद्ध सदा भाव से ही स्थापित की गई थी, प्रभुत्व जमाते हैं। इसी से देवासुर संग्राम प्रारम्भ हो जाता है। आर्यसमाज खण्ड खण्ड हो जाता है, जनता में उपहास का पात्र बन जाता है।

हम सबको सोचना चाहिये कि क्या आर्यसमाजों के निर्वाचक अधिकारी से, सदस्यों के चरित्र के सम्बन्ध में आर्यसमाज की प्रतिष्ठा बढ़ी है? क्या आर्यसमाज के मिशन का विस्तार हुआ है? क्या संसार का उपकार हुआ है? क्या इस कार्य को केवल यही आर्यसमाज ही बना सकता है? यदि इस सबका उत्तर नकार में हो तो रोग के कारणों का पता लगाकर उसकी व्यवस्था की जावे।

आर्यसमाज के नियम "अविद्या का नाश विद्या की वृद्धि करनी चाहिये" में स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली विद्या विद्या नहीं है। वहां सत्य विद्या वेद विद्या से ही तात्पर्य है कि महर्षि जिसका प्रचार चाहते थे।

★

राष्ट्रोन्नति का मौलिक साधन—
वर्ण-व्यवस्था

(श्री हरदत्तजी, बरूटा बुलन्दशहर)

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद अमर है। वेद में जो कुछ भी प्रतिपादित किया गया है वह अकाट्य सत्य है। संसार के किसी भी ऋषि मुनि विद्वान में इतनी शक्ति नहीं हुई न है न होगी जो किसी तर्क द्वारा वेद को असत्य कहने का साहस कर सके। यदि अज्ञानवश तर्क किया भी गया है तो ज्ञानवश वेद ने ही उसका निराकरण भी कर दिया है। वेद ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन ही चार वर्णों की मानव समाज में प्रतिष्ठा करने के लिए प्रेरणा की है। मनुस्मृत्यादि शास्त्रों ने इन ही चार वर्णों की व्याख्या की है। इन चार वर्णों के अतिरिक्त वेद ने या वेद से सहमत किसी शास्त्र ने अन्य वर्णों वर्ग जाति सम्प्रदाय अथवा दल का बोध भी नहीं कराया है। हां, सभा तथा समिति निर्माण करने का विधान अवश्य किया गया है। इन ही सिद्धान्तों के आधार पर महर्षि दयानन्द ने चारों वर्णों की स्थापना और संगठन करने के लिए आर्य समाज संस्था संचालन की योजना प्रस्तुत की है। इस वैदिक योजना को क्रियान्वित कर देने का उत्तरदायित्व सामयिक राज सभा, शासक वर्ग तथा आचार्य पर निर्भर है।

वर्ण क्या है? इस प्रश्न को सम्मेलनों वाद विवादों या समाचार पत्रों में कभी कभी प्रश्न आने पर वर्णों के लक्षण बताकर सुलझाया जाता है। उन लक्षणों पर महाभारत तथा मनुस्मृत्यादि शास्त्रों के प्रमाण की मुहर लगाकर समाप्त कर देते हैं। बस इतने श्रम पर ही आर्य जनता को सन्तोषित कर दिया जाता है। इस प्रकार के मौखिक व्याख्यानों से जनता को वर्ष ने भी आर्य जनता कोई सिद्धि नहीं प्राप्त कर सकी। अतः अब ज्ञान को कार्य रूप में परिवर्तित करने का समय है। आवश्यकता है जनता में सक्रिय रूप से वर्ण व्यवस्था की, जिससे आर्य जन वर्ण संकर होने के दोषों से बच जाये।

जिन वेदादि शास्त्रों ने चारों वर्णों के विधान और लक्षण किये हैं वहां यह रहस्य स्पष्ट विदित है कि ब्राह्मण वर्ण का स्तर अन्य तीनों के स्तर से उत्तम है शूद्र वर्ण का स्तर सबसे नीचा है। क्षत्रिय और वैश्य का स्तर मध्यम श्रेणी का है किन्तु इस प्रकार के उत्तम मध्यम और क्षुद्र स्तर का होना किसी व्यक्ति या समाज के अपमान का हेतु नहीं है। क्योंकि व्यक्ति या समाज निराधार रूप से किसी को वर्ण पद देने में अशक्त है। वर्ण पद तो ज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक शिक्षा प्राप्ति के लिए की गई तपस्या का न्याय रूप परिणाम है। जो व्यक्ति जितनी तपस्या करता है उसको उतना ही फल मिलता है। महर्षि दयानन्द द्वारा दी गई व्याख्यात्मक प्रेरणा के अनुसार प्रत्येक बालक-बालिका को विद्याध्ययन कराना अनिवार्य है। वैदिक विधानानुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम का स्तर सेवा वृत्ति से लेकर ब्रह्म ज्ञान तक है। स्पष्ट है कि पारस्परिक सेवा भाव, वैभव उत्पादन का क्रिया कौशल, समाज का आन्तरिक और बाह्य संरक्षण, तथा ईश्वर जीव प्रकृति के ज्ञान विज्ञान के साथ साथ धार्मिक कर्तव्य, सदाचार शील, दानवृत्ति, ईश्वरोपासना इत्यादि की शिक्षा सभी को दी जाती है। यहाँ लम्बी लम्बी अवधि तक विद्योपार्जन की तपस्या करने वाले ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य पद के अधिकारी होते हैं वहाँ थोड़े समय तक शिक्षा पाने वाला अर्थ में धार्मिक तथा नैतिक कर्तव्यों से परिचित होकर ही शूद्र पद का अधिकारी होता है। तपस्या हीन निरक्षर रहने वाले व्यक्ति को पतित अछूत शूद्र इत्यादि संज्ञायें दी गई हैं।

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि मानव विकासोन्मुखी है। शूद्र या पतित कोई भी रहना नहीं चाहता। सब ही ब्राह्मण होना चाहते हैं। किन्तु किन्हीं परिस्थितियों से विवश होकर ही शूद्र पद ग्रहण करना पड़ता है। इस प्रकार उच्च वर्ण प्राप्ति की अभिलाषा ही मानव को विकोप जन की स्पर्धा के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा ही व्यक्ति समाज और राष्ट्र की संरक्षक तथा विकास की आधार शिला है।

यह आत्मज्ञान का तथ्य है कि मानव स्वतन्त्रता प्रेमी है। अपने जीवन व्यापार को स्वतन्त्र रखना चाहता है। इसके विपरीत नौकरी पराश्रयी वृत्ति है पराधीनता है बन्धता है, शून्यता है जीवन विक्रय है। आत्मा की न्याय दृष्टि में नौकरी अक्षम्य अपराध है। नौकरी कोई भी करना नहीं चाहता। इस ही तथ्य के आधार पर वैदिक साहित्य में नौकरी को कहीं भी वर्ण कर्तव्य नहीं माना है। किसी दशा में भी भृत्य वृत्ति को प्रोत्साहन नहीं दिया है। नौकरी में देश जाति और धर्म की उन्नति नहीं है। बल्कि विधान के अनुसार स्वतन्त्र व्यापार की कला से वैभव उपार्जन तथा निर्लोभ सेवाभाव समाज को शक्तिशाली बनाने की योजना है। यही गुण कर्म वर्णव्यवस्था के द्योतक हैं। इस ही में राष्ट्र का हित निहित है।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि मानव सामाजिक प्राणी है। समाज का संगठन विचार शक्ति संरक्षण शक्ति संचय शक्ति और सेवा शक्ति पर आधारित है। यहाँ शक्तियाँ गुण कर्म हैं और वर्ण प्रधान हैं। इन से चारों वर्ण परस्पर सहयोगी रहते हैं। महाभारत काल से पूर्व आर्य संगठन ने वैदिक वर्ण व्यवस्था के आधीन रहकर संसार में सम्मान, सत्ता और प्रभुता प्राप्त किया। सभी इतिहास इस आदर्श के ज्वलन्त प्रमाण हैं। महाभारत काल के पश्चात अब तक का इतिहास वर्ण व्यवस्था भंग करने और वर्ण संकर होने का प्रमाण दे रहा है। इस ही कलंक के फलस्वरूप आज राष्ट्र दासता के रूप में परिणत हुआ तथा आज देश की सीमा का क्रमशः विघटन हो रहा है।

यह प्रत्यक्ष तथ्य है कि निरक्षर मूर्ख, सदाचारता से हीन धर्म कर्म के प्रति अज्ञान व उदासीन व्यक्ति जो ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ है वह भी अपने को स्वयं ब्राह्मण कह रहा है। इस पर भी आश्चर्य तो यह है कि सभा संगठन व सभा धर्म सभायें उन को ब्राह्मण होने की मान्यता दे रहे हैं। उधर शिक्षित सदाचारी धार्मिक और जिसने शूद्र कुल में जन्म लिया है उसे समाज शूद्र ही मान रहा है। ऐसी ही वस्तुस्थिति क्षत्रिय और वैश्य के सम्बन्ध में है। इसके अतिरिक्त नये-नये वर्ग जाति, उप सम्प्रदायों का नित्य क्रमशः जन्म हो रहा है। जो सभी को दूसरे से सर्वथा भिन्न मान रहे हैं। इस प्रकार की व्यवस्था स्वतन्त्र राष्ट्र और विज्ञान काल में आश्चर्यजनक कलंक और विडम्बना है।

यह समाज विज्ञान का तथ्य है कि समाज अपनी सदस्य वृद्धि का प्रयत्न करता है। उधर सदस्य भी समाज में अपना साधिकार मान चाहता है। इस तथ्य के आधार पर किसी मुसलमान या ईसाई को शुद्ध करके आर्य धर्म में प्रविष्ट कर लेते हैं। किन्तु जब उसे किसी वर्ण, कुल, जाति उप जाति से सम्मानित संरक्षण नहीं मिलता तब वह विवश होकर पुनः मुसलमान या ईसाई होकर अशुद्ध हो जाता है। आर्य समाज और वैदिक धर्म के लिए इस प्रकार की हानि का मूल कारण वर्ण व्यवस्था भंग होना ही है।

उक्त पांचों तथ्यों के उल्लंघन योग से आर्य देश भारत वर्ण संकर हो गया है। अब व्यक्ति नौकरी की इच्छा, दासवृत्ति पदलोलुपता तथा अयोग्य दशा से अधिकार प्राप्ति की ओर तीव्र गति से दौड़ रहा है प्रत्येक जाति वर्ग, समाज, घर और व्यक्ति में कुप्रवृत्तियों की सफलता के लिए अनैतिक विधियों का प्रयोग हो रहा है। वर्ण संकर होने से ही ईर्ष्या, द्वेष, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, अनधिकृत रूप से वैभव प्राप्ति उदासीनता प्रमाद विलासिता व्यभिचार इत्यादि दोष पनप रहे हैं। आज ९५ प्रतिशत आर्य व्यक्ति अपने बच्चों को केवल विवाह की आशा और नौकरी की अभिलाषा से स्कूल कालिज में पढ़ने के लिए भेज रहे हैं। सन्तान को ब्रह्मचारी, विद्वान् शक्तिशाली कलाकार तथा स्वावलम्बी बनाने का विचार उनके मन में नहीं है। उधर स्कूल और सरकार को देखिए। विद्यार्थियों को कला और भौतिक विज्ञान का प्रमाणपत्र तो दे दिया जाता है, किन्तु उस प्रमाण-पत्र में नैतिकता और अध्यात्म ज्ञान का कोई स्थान नहीं है। विदित होता है इस प्रकार की शिक्षा पद्धति किसी विदेशी कूटनीति के आधार पर चल रही है।

अब सम्प्रति विज्ञानकाल में वर्ण व्यवस्था का विषय सिद्धान्तवादी आर्य समाज के समक्ष अनिवार्य रूप से विचारणीय होना आवश्यक है। यह ठीक है कि इस अभियान को आरम्भ करने में कुछ कठिनाइयाँ आयेंगी। क्योंकि अवसर वादी राजनैतिक तथा साम्प्रदायिक दल अभी स्वार्थ के वशीभूत हो इसका विरोध करेंगे। फिर भी आर्यसमाज को अपने नियम ४, ६, ९ का पालन करना ही चाहिये। ये नियम आर्यसमाज के

क्या पंजाब के हिन्दू भाषाई अल्पसंख्यक नहीं हैं ?

(श्री वीरेन्द्र जी एम०ए० सम्पादक 'वीर प्रताप, जालन्धर)

एक लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई दूसरी आरम्भ हो रही है। पंजाबी सूबा अभी बना नहीं। और अभी यह कहना भी कठिन है कि इसकी अन्तिम रूपरेखा क्या होगी किन्तु एक और सवाल अभी खड़ा हुआ है। वह यह कि नये पंजाब में कोई भाषाई अल्पसंख्यक भी होंगे नहीं। हिन्दुओं का कहना है कि उन्हें भाषाई अल्पसंख्यक माना जाय किन्तु न सन्त फतहसिंह इसके लिए तैयार हैं, न मा० तारासिंह। मा० जी का इन्कार तो समझ में आ सकता है। वह स्पष्ट शब्दों में कह चुके हैं कि वह सिख स्टेट चाहते हैं जिसे आत्म निर्णय का अधिकार प्राप्त हो। वह यह भी स्पष्ट कर चुके हैं कि उनकी राय में हिन्दू धर्म को खत्म करने के लिए आवश्यक है कि हिन्दी भाषा का भी खात्मा किया जाय। उनके अनुसार पंजाबी सूबा में न हिन्दी के लिये कोई स्थान होगा और न हिन्दुओं के लिए किन्तु सन्त फतहसिंह तो स्वयं को हिन्दू सिख एकता के इच्छुक कहते हैं। अब वह भी यह कहते हैं कि पंजाब में कोई भाषाई अल्पसंख्यक नहीं है तो कुछ अचम्भा आवश्यक होता है। कोई व्यक्ति जानबूझ कर स्थिति से आंखें बन्द करना चाहे तो उसे कोई रोक नहीं सकता। किन्तु इसका परिणाम अच्छा नहीं निकल सकता। विशेषकर जब एक बड़ा वर्ग स्थिति को आंख से ओझल करने का प्रयास करे उसका एक भी गलत निर्णय कई प्रकार की आपत्तियां पैदा कर सकता है। मुझे भय है जो कुछ आज सन्त फतहसिंह कर रहे हैं, उसका परिणाम भी इस सूबा के लिए हितकर न होगा।

पंजाब में भाषाई अल्पसंख्यकों के अस्तित्व से इन्कार करने का अर्थ है कि सन्त फतहसिंह या उनके साथी यह मानने के लिए तैयार नहीं कि इस सूबा में ऐसे लोग भी हैं जो हिन्दी को अपनी भाषा मानते हैं, पंजाबी उनकी बोली अवश्य है किन्तु उनकी भाषा नहीं। शायद वह पंजाबी को अपनी भाषा मान लेते यदि उन्हें यह देवनागरी में लिखने की अनुमति दे दी जाती। गुरमुखी को हिन्दुओं ने कभी अपनी लिपि नहीं माना वह एक विशेष धार्मिक लिपि है। और क्योंकि अकालियों की ओर से बार बार यह प्रयास हो रहा है कि पंजाब में केवल पंजाबी ही सरकारी भाषा रहे और वह भी केवल गुरमुखी लिपि में। इसलिए हिन्दुओं की ओर से इसकी निन्दा भी हो रही है। जिस दिन उन्हें यह अनुमति मिल जायगी कि वह पंजाबी को गुरमुखी में लिखें या देवनागरी में उस दिन उनका विरोध भी खत्म हो जायगा।

सन्त फतहसिंह और उनके साथियों को समझ लेना चाहिये कि पंजाब का हिन्दू पंजाबी के विरुद्ध नहीं है किन्तु वह हिन्दी का आंचल भी किसी तरह छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। सन्त फतहसिंह के लिए हिन्दी केवल देश की राष्ट्र भाषा है किन्तु हिन्दुओं के लिए राष्ट्र भाषा के अतिरिक्त एक साधन है अपने धर्म और अपनी संस्कृति के प्रचार का। हमारे सारे धार्मिक ग्रन्थ देवनागरी में हैं और हिन्दी या संस्कृत भाषा में लिखे हुए हैं। इसलिए यदि सिखों को गुरमुखी से प्यार है तो हिन्दुओं को देवनागरी से प्यार है। मैं यह मानता हूं कि सिखों में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जिसे पंजाबी या गुरमुखी के विरुद्ध किसी प्रकार की आपत्ति हो। हिन्दुओं में ऐसे बेचैन के कोटे कई मिल जायेंगे जो अपने निजी स्वार्थ के लिए हिन्दी या देवनागरी के विरुद्ध भी बहुत कुछ कहने के लिए तैयार हो जाते हैं। सिखों की सफलता का रहस्य यही है कि वह हर बुनियादी सवाल पर एक ही आवाज से बोलते हैं चाहे वह कांग्रेसी हों या अकाली कम्युनिस्ट हों या सोशलिस्ट। हिन्दुओं में ऐसे आतिकारक अवश्य मिल जायेंगे जो अपनी अलग से डफली बजाना शुरू कर देते हैं। किन्तु इनको हिन्दुओं की दृष्टि में कोई पूछ नहीं और न ही वह कभी हिन्दुओं के जनमत को प्रभावित कर सकते हैं।

हिन्दुओं को भाषाई अल्पसंख्यक मानने से इन्कार करते हुये सन्त फतहसिंह ने एक और विचित्र तर्क दिया है। वह फरमाते हैं कि अल्पसंख्यक तो उसे ही माना जा सकता है जो कहीं बाहर से आये। हिन्दू बाहर से नहीं आये। वह तो इसी सूबे के रहने वाले हैं और पंजाबी उनकी भी इसी तरह भाषा है जिस तरह सिखों की। अब मैं सन्त जी से पूछ सकता हूं कि सिख कब बाहर से आये थे। वह भी तो इसी सूबा के रहने वाले थे। उन्हें इस सूबा में अल्पसंख्यक माना गया है कि नहीं, यदि उन्हें कहा जा सकता था तो अब हिन्दुओं को क्यों नहीं कहा जा सकता। इस देश में आज जितने भी अल्पसंख्यक हैं उनमें से कोई भी बाहर से नहीं आए। सभी इसी देश के रहने वाले हैं किन्तु हमारे विधान के अधीन उन्हें विशेष अधिकार मिले हुये हैं, वही अधिकार नये पंजाब में हिन्दुओं को भी मिलना चाहिए। अब सन्त फतहसिंह और उनके साथी हमें यह अधिकार देने के लिए तैयार नहीं हैं—किन्तु हम भी अपना संघर्ष जारी रखेंगे। इसलिए मैंने प्रारम्भ में लिखा है कि एक लड़ाई खत्म नहीं और दूसरी आरम्भ हो गई है।

सन्त फतहसिंह फरमाते हैं कि पंजाबी सूबे में या हिन्दी का कोई स्थान प्राप्त होगा जो अन्य प्रान्तों की भाषा में है। क्या इसका अर्थ यह नहीं कि पंजाब में भी हिन्दी के साथ वही बर्ताव किया जायगा जो मद्रास और बंगाल में किया जा रहा है? सन्त जी किसी भ्रान्ति में न रहें। पंजाब का हिन्दू यह सहन करेगा कि इस सूबा में हिन्दी के साथ ऐसा बर्ताव न होने देगा। १९६१ की जनगणना के अनुसार नए पंजाब में हिन्दी भाषी लोगों की संख्या ३५ प्रतिशत से कम नहीं होगी। यदि अब हिन्दी का रास्ता नहीं रहा जो आज है तो मैं आज यह भविष्यवाणी करने का साहस करता हूं कि १९७१ की जनगणना में यह संख्या ५० प्रतिशत तक जा पहुंचेगी पहले हम यह सहन न थे। इसलिए हमें अपने नागरिकों की अधिक चिन्ता न थी। अब हमने अपने अधिकारों के लिए लड़ना है और लड़ेंगे। कोई मत समझे कि पंजाब के विभाजन के साथ पंजाब की सब ही समस्या हल हो गई है। यह तो अब आरम्भ हुई है। यदि अकाली चाहते हैं कि हम पंजाबी को और उसके साथ गुरमुखी लिपि को अपना लें तो उन्हें हिन्दी और देवनागरी लिपि को भी इस सूबा में एक सम्मान पूर्ण स्थान देना होगा। ४५ प्रतिशत जनता की भावनाओं को आंख से ओझल कर के इस सूबा में कोई सरकार नहीं चल सकती। इसलिए यदि सन्त फतहसिंह और उनके साथी चाहते हैं कि पंजाबी सूबा की यह गाड़ी सही मार्ग पर चले और यह सूबा फले और फूले तो उन्हें पंजाब के हिन्दुओं को एक भाषाई अल्पसंख्यक मान कर उनके अधिकारों को मान्यता देनी होगी।

★

वैदिक राष्ट्र व्यवस्था

(पृष्ठ ९ का शेष)

चारों वेदों में विद्यमान इस कथन का आशय है कि हे वीरो आगे बढ़ो विजयी बनो ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें, तुम्हारे अस्त्र शस्त्र शक्तिमान हों जिससे तुम अक्षत रहो। सेनापति को सम्बोधित करते हुये वेद में कहा कि—त्वया मन्यो सरथम् रुजन्तो हर्षमाणा हृषितासो मरुत्वन। तिग्मेषव आयुधा संशिशाना उप प्रयन्तु नरो अग्निरूपाः। अ०४।३१।१ हे सेनापति! तेरे साथ शत्रु को नष्ट कर प्रसन्न होते हुये तीक्ष्ण बाण वाले एवं आयुधों को तीक्ष्ण करते हुये अग्नि तुल्य तेजस्वी सैनिक हुये प्राप्त हों। राष्ट्र के समोदक को गिराने वाले उस द्रोही को दण्ड देने का सुन्दर विवेचन वेद में मिलता है। वृश्चामि ते कुलिशेन वृक्ष यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति। अथर्व० ९ १२।२१ जो व्यक्ति जिस प्रकार से हमारे मनोबल को गिराते हैं मैं उनको उसी प्रकार नष्ट करता हूं जैसे कुठार से वृक्ष नष्ट किया जाता है। इस प्रकार राष्ट्र को सभी विपत्तियों से सुरक्षित रखने का सुन्दर प्रकार हमारे वेदों में वर्णित है। राष्ट्र को वर्तमान संकट से मुक्त करने के लिये वेदोक्त उपरिनिर्दिष्ट उपायों का पूर्ण रूप से अपनाना परमावश्यक है इन्हीं शिक्षाओं के आधार पर हमारे पूर्वजों ने समस्त भूमण्डल पर अपना अधिकार किया था।

वेद भगवान् के आदेशानुसार शत्रु एवं दस्यु दल को नष्ट करने के लिये हमें राष्ट्र को अधिक से अधिक शक्ति सम्पन्न आयुधों से युक्त तथा सैनिकों को वेदोक्त विधि से तैयार करना परमावश्यक है। हमें सभी शिक्षाओं को क्रियात्मक रूप में परिणत करना चाहिए, तभी इन वर्तमान समस्याओं का स्थायी तथा पूर्ण समाधान होगा।

आर्य-जगत

गौ-रक्षा सम्मेलन

सार्वदेशिक गोकृष्यादि रक्षिणी सभा, लखनऊ के तत्वावधान में गुरुवार दिनांक २८।४।६६ को सायंकाल ७ बजे से ९ बजे तक सत्सङ्ग भवन, माडल हाउस लखनऊ में, तृतीय मासिक गो रक्षा सम्मेलन समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। सर्वश्री सत्यव्रत और कृष्णचन्द्र के 'गौ की करुण पुकार' के भजन हुए। स्वामी केशवानन्द जी ने गौ के धार्मिक महत्व को बतलाते हुए कहा कि हमने केवल इस पशु को ही माता की संज्ञा दी है क्योंकि यह मातृवत् हमारा पालन करती है और इसका दुग्ध सब दुधारी पशुओं के दुग्ध से श्रेष्ठ है। आचार्य पंडित श्यामसुन्दर जी शास्त्री ने बतलाया कि हमारी वर्तमान दुरावस्था एवम् दारिद्रय का एकमेव कारण गोवंश का ह्रास है जिसे आपने अर्थशास्त्र के आधार पर प्रस्तुत किया।

सभा का आगामी गोरक्षा सम्मेलन २६ मई १९६६ को सायंकाल ७ बजे से ९ बजे तक रामकिशन मिशन आश्रम (गूंगे नवाब के पार्क के निकट) अमीनाबाद में होगा।

—विक्रमादित्य 'बसन्त' मन्त्री

सभी लोगों ने धर्म सभा में के अन्तिम प्रवचन में भाग लिया यह श्री स्वामी जी हिन्दु धर्म सभा विष्णु मन्दिर अंतिम प्रवचन था। श्री स्वामी जी ने पूर्व दिन विष्णु की परिभाषा की थी। जिसे सुन कर बाहर वाली पंडित तथा आम सब लोग चकित रह गये थ आज आपने गायत्री मन्त्र एवं यज्ञ पर अपना प्रवचन पूरा किया अपार भीड़ थी, कारण आर्य समाज से सारी जनता श्री हिन्दु धर्म सभा में श्री स्वामी जी के साथ गई अन्तर भी तो सिर्फ दिवाल की ही थी बकाक मे श्रद्धास्पद प्रात स्मरणीय श्री नेता जी के पश्चात श्री स्वामी जी महाराज दूसरे व्यक्ति थे बकाक की सारी जन समूह अपने भेद भाव भूलकर प्रवचनों में भाग लेती थी, अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात तरल नेत्रों से लोगों ने श्री स्वामी जी को विदाई दी। कल सोमवार १८-४-६६ को ३ बजकर २० मिनट पर बी० ओ० सी० जहाज पर इस स्वीकृति के पश्चात सिंगापुर से पुन आऊँगा, वरिष्ठ अधिकारियों ने आँखों को पोंछते हुए चरण छू छू नमस्ते कर सिंगापुर के लिये विदा दी। भगवान इस वयोवृद्ध को दीर्घायु व और साथ में यह प्रेरणा दें कि दक्षिण पूर्व में इन ३३ लाख प्रवासी भारतियों के जीवन को धर्ममय एवं सफल बनाने के लिए वर्ष मे एक बार अवश्य आया करें। ओ३म् शान्ति-शान्ति।

★

नामकरण संस्कार

२९ अप्रैल को लखनऊ की प्रसिद्ध आर्य विदुषी श्रीमती डा० प्रकाशवती जी उपदेशिका के सुपुत्र श्री कमलचन्द्र श्रीवास्तव कैंटवारा लखनऊ विश्व विद्यालय के नवजात बालक का नामकरण संस्कार समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। पश्चात शिशु का नाम उत्कर्ष रखा गया।

निर्वाचन—

—आर्य स्त्री समाज बहरा प्रधाना—श्रीमती दुर्गादेवी सूद, उपप्रधान—श्रीमती पार्वतीदेवी श्रीमती सत्तो देवी, मन्त्रिणी—श्रीमती उषा देवी, उपमन्त्रिणी—श्रीमती दुर्गादेवी मग कोषा०—श्रीमती प्राज्ञदेवी।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा वाराणसी की वार्षिक साधारण बैठक दि० २४ अप्रैल को आर्यसमाज कचहरी में हुई जिसमे आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित निर्वाचन सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री रामकृष्ण अग्रवाल उपप्रधान श्री भगवती प्रसाद तथा श्री मुकुन्द आर्येय, मन्त्री—श्री आनन्दप्रकाश उपमन्त्री—श्री हरेन्द्रनाथ वर्मा तथा बर्फी सिंह प्रचार मन्त्री—श्री डा० रघुवरसहाय, कोषाध्यक्ष—श्री डा० आनन्दस्वरूप, आय व्यय निरीक्षक—श्री ओमप्रकाश जी इनके अतिरिक्त ११ अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुये तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए श्री आनन्द प्रकाश प्रतिनिधि नियुक्त हुए। —मन्त्री

—आर्यसमाज बैंकुण्ठ (पालिका) प्रधान—श्री इन्द्रदेवसिंह वर्मा वैद्य उपप्रधान—श्री बंशीधर द्विवेदी, मन्त्री—श्री प० बलेशमणि जी पाण्डेय उपमन्त्री—श्री प० रामपलट पाण्डेय, कोषाध्यक्ष—श्री बाबूलाल आर्य पुस्तकाध्यक्ष—श्री ठाकुर रामबिलाससिंह।

—आर्य स्त्री समाज गोंडा का वार्षिक निर्वाचन दि० २७ ४ ६६ को श्री प० शिवदयालु जी मुख्य उपमन्त्री सभा की अध्यक्षता में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। उक्त चुनाव की २१ देवियों ने चुनाव में भाग लिया।

प्रधाना—श्रीमती गायत्री जौहरी, उपप्रधाना—श्रीमती कमलादेवी, श्रीमती सुशीला श्रीवास्तव, मन्त्री—श्रीमती कृष्णा चन्द्रा उपमन्त्री—श्रीमती निर्मलेश कुमारी श्रीमती रमानन्दिनी श्रीवास्तव, कोषाध्यक्षा—श्रीमती सरस्वती सीसोदिया पुस्तकाध्यक्षा—श्रीमती शारदा श्रीवास्तव, सभा प्रतिनिधि—श्रीमती सरोज सक्सेना, कृष्णा चन्द्रा सरस्वती सीसोदिया।

★

विचार-विमर्श

[पृष्ठ ९ का शेष]

कि कई साम्प्रदायिक लोगों ने हलवा, लड्डू तथा पुलावों बाट कर जलती पर तेल का कार्य किया। ऐसे भड़काने वालों को सरकार ने कुछ नहीं कहा। सन्त जी जो अपने आपको हिन्दू सिक्ख एकता का पुजारी कहते हैं अवश्य इन बातों पर रोष प्रकट करना चाहिए था। सरकार इस पकड़-धकड़ में न केवल विद्यार्थियों को ही पकड़ बैठी अपितु जनता पर काबू रखने वाले कुछ नेताओं को भी पकड़ कर जेल में डाल दिया। आर्य समाज का भला इसी में है कि सब एक हो जाएं। जो लोग पंजाबी सूबा में सिक्खों की बहुसंख्या का विरोध करते हैं वह गलती करते हैं। पंजाबी सूबा वर्तमान पंजाबी क्षेत्र मे से, गढ़ होशियारपुर, पठानकोट, अबोहर फाजिल्का आदि तहसीलें निकाल कर बनना चाहिए। जितनी हिन्दुओं की संख्या कम होगी उतना ही सुसंगठित होकर वह साम्प्रदायिक वृत्ति को नष्ट कर सकेंगे। जो सुविधाएं सिक्खों को पंजाब में ३२ प्रतिशत पर मिल रही हैं वह सुविधाएं हिन्दुओं को पंजाबी सूबा में तभी मिलेंगी अगर हिन्दू अल्प संख्या में होंगे। इसका दूसरा लाभ यह होगा कि अकालियों को साम्प्रदायिकता की ऐनक छोड़कर सबको साथ लेकर चलना पड़ेगा। अधिक से अधिक क्षेत्र हरियाना के साथ होने से राष्ट्रीय तत्वों को बढ़ौती मिलेगी। अकाली यह याद रखें कि मराठी प्रान्तों में जो स्तर हिन्दी को है उसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि महाराष्ट्र में तो लिपि देवनागरी है ही पर गुजरात तथा दूसरे प्रदेशों में देवनागरी लिपि की मांग दिनों दिन बढ़ रही है। जिन गुजरातियों ने लड़ झगड़ कर गुजरात प्रदेश बनाया था वही जान गए हैं कि गुजराती लिपि में कार्य नहीं चल सकता तथा धीरे धीरे देवनागरी की ओर बढ़ रहे हैं। सुदूर दक्षिण में भी ऐसा वातावरण देखा जा सकता है। लोग जब एक-दूसरे की भाषा नहीं समझ सकते तो अंग्रेजी की बजाय हिन्दी का प्रयोग करते हैं। मद्रास विश्वविद्यालयों में देवनागरी लिपि लगाने के प्रयत्न चलते ही रहते हैं। लाखों व्यक्ति प्रतिवर्ष हिन्दी परीक्षाओं में अपनी इच्छा से बैठते हैं। पंजाबी सूबा का निराला ढंग अगर छोटे से छोटे प्रदेश में चलेगा तो कुछ वर्षों में कूप मंडूक की होड़ लगने लगेगी। उनका भारत से दूर जाने का तर्क मैंने कभी नहीं माना तथा न ही यह होगा। आर्यसमाज का नाद होना चाहिये कि पंजाबी सूबे को छोटे से छोटा करो।

जो तीनों प्रदेशों में साझे तत्वों की बात है वह भी कुछ नहीं। साझे तत्वों का लाभ तभी हो सकता है अगर अकाली पंजाबी की लिपि में स्वतन्त्रता दें। अगर जैसा कई अकाली कहते हैं कि उनको हिन्दी गुरुमुखी लिपि में लिखने की भी छूट हो तो दे देनी चाहिए। कौन उन पर लिपि ठोंस सकता है। साझे तत्वों से झगड़े बहुत बढ़ेंगे तथा भ्रष्टाचार भी। सिवाए हाईकोर्ट के कोई बात चल न सकेगी। पंजाबी सूबा बनाना है तो सिक्खों की बहुसंख्या से छोटे से छोटा सूबा बनाना ही ठीक रहेगा तथा आर्य समाज को एक होकर यही बल देना चाहिए।

आवश्यकता

स्वस्थ, सुन्दर, राजकीय विद्यालय में अध्यापन कार्य करती हुई २४ वर्षीया ब्राह्मण कन्या के लिये सुशिक्षित एम० ए० आचार्य स्नातक वर की आवश्यकता है। योग्यता, पारिवारिक स्थिति आदि का पूर्ण विवरण सहित पत्र व्यवहार कीजिए।

पता—

द्वारा—आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र एम० ए०

ज्ञान व मन्दिरम

कूची पाड़ा

बदायूं।

[पृष्ठ ९ का शेष]

का उद्देश्य है। हमें दुख के साथ कहना पड़ता है कि सरकार ऐसे लोगों पर जो खुले आम विद्रोह की बोली बोलते और हरकतें करते हैं हाथ डालने से घबराती है और अपने दंत निकालने के लिये विरोधी व्यक्तियों पर इस नियम का दुरुपयोग करती है।

ताशकन्द समझौते की धज्जियां उड़ाने वाले डा० करीबी की पुस्तक को तो विधि विभाग जाच ही करता रहेगा। क्योंकि विधि मन्त्री पर उनका प्रभाव है, इसी प्रकार विद्रोही भाषा पकड़ं जाने पर भी छोड़ दिये जायेंगे क्योंकि शान्ति वार्ता में बाधा पहुंचेगी, परन्तु कौन सी प्रभुता के विरुद्ध आन्दोलन करना अपनी इच्छा से किसी से विवाह करना और अपने पीड़ित धर्म भाइयों के लिये धन की सहायता मांगने से देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है। ऐसी बुद्धि वाले शासकों को क्या कहा जाय। भारत सरकार को अधिकार मिले हैं उनका प्रयोग ठीक से होना चाहिये दुरुपयोग से जनता सरकार के प्रति सहयोग समाप्त कर देती है। प्रजातन्त्रात्मक भारत सरकार को इस भावना का सदैव ख्याल रहना चाहिये.

निकोबार ईसाईस्तान बन रहा है

भारतीय द्वीप निकोबार मे ईसाई मिशनरी जिस तेजी से वहा के मूल निवासियों का धर्म परिवर्तन कर रहे हैं उस सम्बन्ध में वहा से जो समाचार प्राप्त हुए हैं वे बड़े कष्टप्रद और भयकर हैं।

वहा के मूल निवासियों के सांस्कृतिक जीवन को छिन्न भिन्न कर उन्हें आर्थिक प्रलोभनों में फसाकर ईसाई मिशनरी वहा का ईसाईकरण कर रहे हैं। भारत सरकार नागालैण्ड मे ईसाई मिशनरियों के गुप्त षड्यन्त्रो से परेशान हो चुकी है परन्तु फिर भी कोई सावधानी नहीं बरत रही। निकोबार में ईसाई मिशनरियों को प्रवेश की अनुमति किस आधार पर दी गयी है यह भारत सरकार ही जाने जबकि वह अन्य धर्म प्रचारकों को वहा जाने की अनुमति नहीं देती है।

हम भारत सरकार को चेतावनी देना अपना कर्तव्य समझते हैं कि वह निकोबार की जनता के धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन की रक्षा करे और निकोबार को दूसरा नागालैण्ड बनने से बचावे। निकोबार भारतीय स्थल से ३०० मील दूर समुद्र में है। देश की सुरक्षा की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है अत अभी से सतकर्ता रखकर हम भावी सकट से बच सकेंगे। यदि हमने थोड़ी भी उपेक्षा की तो निकोबार भारत से पृथक् होकर अमेरिकन या ब्रिटिश नौसेना का अड्डा बन सकता है तब हमारी सुरक्षा सदैव के लिये खतरे मे पड़ जायगी। धर्मनिरपेक्षता की बतं मान नीति का देश के लिये यह भयकर परिणाम होगा।

हिन्दी तार योजना

भारत सरकार के तार विभाग की ओर से अनेक वर्षों से हिन्दी तार योजना आरम्भ कर रक्खी है परन्तु कुछ तकनीकी कठिनाइयों के नाम पर विभाग इसे आगे बढाने में असमर्थ रहा परन्तु साथ ही सरकार की हिन्दी व्यवहार के प्रति उपेक्षा भी इस दिशा में प्रगति में बाधक रही अब इस दिशा में विभाग और भारत सरकार दोनों ने ध्यान देना आरम्भ किया है।

हिन्दी तार योजना का प्रसार करने के लिए अब व्यापक प्रचार आरम्भ हुआ है। पिछले दिनों मित्र में इस सम्बन्ध मे कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं और देश के विभिन्न क्षेत्रों मे हिन्दी तार के सम्बन्ध में प्रयत्न हो रहे हैं।

उत्तर प्रदेश हिन्दी भाषी राज्य है अभी तक यहा के सरकारी अधिकारी अंग्रेजी तार को ही मुख्यता देते रहे हैं। हर्ष का विषय है कि उत्तर प्रदेश की मुख्य मन्त्री श्रीमती सुचेता जी ने सभी सरकारी अधिकारियों को हिन्दी में तार भेजने का आदेश जारी कर दिया है। सरकार तो इस दिशा में प्रयत्न करेगी ही शिक्षित जनता से भी हमारा अनुरोध है कि वह अपने तार हिन्दी मे ही भेजें तभी हिन्दी तार योजना सफल हो सकेगी। यह योजना देश की एकता के लिये महत्वपूर्ण है।

श्री छागला का हिन्दी भाषण

भारत के शिक्षा मन्त्री श्री छागला ने पिछले दिनों एक हिन्दी सम्मेलन मे अपना भाषण हिन्दी मे आरम्भ कर सबको आश्चर्य मे डाल दिया। यद्यपि वे दो मिनट से अधिक हिन्दी में न बोल सके परन्तु उन्होंने अपने इस आचरण से हिन्दी के प्रति जो सम्मान प्रदर्शित की है उसका हम हार्दिक स्वागत करते हैं। श्री छागला का प्रयत्न अन्य मन्त्रियों और अधिकारियों के लिए अनुकरणीय एवं प्रेरणाप्रद है। जो हिन्दी भाषी हैं हिन्दी में बोल और कार्य कर के हिन्दी की सेवा कर सकते हैं परन्तु अंग्रेजी के व्यामोह में वे हिन्दी की उपेक्षा कर रहे हैं। श्री छागला का यह प्रयत्न ऐसे लोगों के मुह पर एक तमाचा है। उन्हें शर्म अनुभव करनी चाहिये और राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाकर राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा करनी चाहिये।

दस दिन में भी वृष्टि समस्या का देश व्यापी हल हो सकता है

वेद विज्ञानाचार्य अथर्व विद्वान् श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी की घोषणा

कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज ने दिनांक १७ अप्रैल को बगलौर मे मन्त्र द्वारा वर्षा कराने के लिये मन्त्रीपद अर्पण करने को कहा। इसके उत्तर में गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के स्नातक वेद विज्ञानाचार्य प० वीरसेन वेदश्रमी ने उन्हें अपनी सेवायें यज्ञ द्वारा वृष्टि कराने के लिये अर्पित की हैं। आपका यह कार्य प्राकृतिक विज्ञान पर आश्रित है।

श्री प० वीरसेन वेदश्रमी ने इस वर्ष कांग्रेस अधिवेशन पर जयपुर में वर्षा कराने के लिये २२ जनवरी को योजना बनाई थी। वे इस प्रयोग को करने के लिये ३१ जनवरी को अपने साथियों सहित जयपुर पहुंच गये थे।

दिनांक ८ फरवरी से १२ तक राष्ट्रभृत यज्ञान्तर्गत वृष्टियज्ञ किया था। दिनांक १० को प्रात कुछ बूंदें पड़ी थीं, शाम को कुछ हल्की बौछार हुई और रात्रि को सामान्य वर्षा हुई। दिनांक ११ को भी वर्षा हुई।

दिनांक १२ को प्रात. यज्ञ की पूर्णाहुति करते समय आपने कहा कि अभी तो जो वर्षा पड़ी है उसे रेत यहां की पी गई है। परन्तु आज अब जो वर्षा होगी उसका पानी बहा बहेगा। तदनुसार १२ की शाम को बहुत जोर-से वर्षा हुई थी और कांग्रेस अधिवेशन जो १३ तक होना था उसी दिन समाप्त कर देना पड़ा।

गत वर्ष भी श्री प० वीरसेन जी ने अजमेर दिल्ली एवं पानीपत में वृष्टि यज्ञ द्वारा वर्षा कराई थी। आप इस बारे मे कई वर्षों से अनुसंधान कर रहे हैं। आपकी योजना के अनुसार कार्य होने पर १० दिन मे भी जल की समस्या का देशव्यापी हल निकल सकता है यदि शासन एवं वैज्ञानिक सहयोग प्रदान करें।

—जगदीशप्रसाद वैदिक

सयोगितागंज, इन्दौर मध्य प्रदेश

वैदिक प्रार्थना

आ म व न सोम विश्वत रक्षा राजन्नघा त । न रिष्येत् त्वावत सखा । २०
ऋ० १ ९१ २० ८

व्याख्यान—हे सोम राजन्नीश्वर ! तुम अघायत " जो कोई प्राणी हमसे पापी और पाप करने की इच्छा करने वाले हों विश्वत " उन सब प्राणियों से हमारी रक्षा रक्षा करो जिसके आप मित्र हो "न, रिष्येत्" वह कभी विनष्ट नहीं होता किन्तु हमको आपकी सहायता से तिलमात्र भी दुःख वा भय कभी नहीं होता जो आपका मित्र और जिसके आप मित्र हो उसको दुःख क्योंकर हो।

लखनऊ रविवार १५ मई १९६६, दयानन्दाब्द १४१, सृष्टिसम्वत् १,९७२९४९,०६७

नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़

आर्य समाज के अन्यतम तपस्वी नेता महात्मा नारायण स्वामी जी महराज ने अपनी साधना स्थली रामगढ़ (नैनीताल) में अपना जो आश्रम बनाया था उसके साथ अपने भक्तो की कुटिया मे भी बनवायी थीं। स्वामी जी का आश्रम और कुटिया मे आज भी अपना गौरव बनाये हुए हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से श्री बाबू विद्यारत्न जी बी० ए०, एल० एल० (हल्द्वानी) आश्रम के अधिष्ठाता हैं और वे आश्रम की सुरक्षा एव उन्नत के लिये प्रयत्नशील हैं। आपकी हार्दिक अभिलाषा है कि आर्य-जगत के तपस्वी एव साधनाशील वानप्रस्थी एव सन्यासी आश्रम मे आकर रहें और स्वामी जी की धरोहर का लाभ उठावें।

सम्प्रति आश्रम मे वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर से दो साधक वहां पहुच चुके हैं। आश्रम में चौकीदार की व्यवस्था है। निवास के लिये कुटियायें हैं। पहले बस पहुचने की असुविधा थी पर वह भी दूर हो गयी है। बस आश्रम के पास तक पहुचती है। सामान्य आवश्यकता की सभी वस्तुए सुलभता स प्राप्त हो जाती हैं। ऐसी स्थिति मे ग्रीष्मकाल में इस स्थान की अत्यधिक उपयोगिता है। साधकों के आश्रम मे रहने से समीपस्थ वातावरण मे वैदिक धर्म प्रचार की गूज आने लगी है। अत जो सज्जन इस आश्रम निवास का लाभ उठाना चाहें वे अधिष्ठाता जी से पत्र-व्यवहार करें और पहुचने का निश्चय कर लें।

स्वामी जी के अनेक भक्तो का का विचार है कि आश्रम में कोई सार्वजनिक कार्यक्रम रक्खा जाय। सभा इस सम्बन्ध म विचार रही है कि आश्रम मे नारायण स्वामी जी की जन्म शताब्दी का एक कार्यक्रम सम्पन्न हो और शिविर भी लगाया जाय। इन योजनाओं के कार्यक्रम की घोषणा शीघ्र की जायगी। आश्रम बड़ा उपयोगी एव रमणीक है उसका लाभ उठाया जाना चाहिये।

विदेशी सहायता

सर्वं परवश दुःख सर्वं आत्मवश सुख का आदर्श केवल व्यक्तिगत जीवन के लिये ही नहीं है उसका पालन समाज और राष्ट्र के लिये भी उतना ही महत्व-पूर्ण होना चाहिये।

आज भारत की शस्य श्यामला भूमि अन्न की दृष्टि से, धन सम्पत्ति की दृष्टि मे परमुखापेक्षी बनी हुई है। हमारी तीन योजनायें पूरी होने जा रही हैं परन्तु हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये न हमारे पास अन्न है न औद्योगिक उत्पादन, हम हर समय दूसरे देशों के सामने भिक्षा की झोली लिये घूम रहे हैं इससे देश के स्वाभिमान को गहरा आघात पहुच रहा है। ऐसी अवस्था में यह प्रश्न है कि क्या विदेशी सहायता न ली जाय। हम इसका विरोध नहीं करते परन्तु हम अपने शासन और देशवासियों से अपील करना अपना कर्तव्य समझते हैं कि प्राप्त सहायता का अधिकाधिक उपयोग होना चाहिये किसी प्रकार भी इस सहायता का अपव्यय, विलासी जीवन मे उपयोग नहीं किया जाना चाहिये। हम समझते हैं कि विदेशी सहायता का उतना सदुपयोग नहीं हो रहा जितना होना चाहिये। यदि हम देश को अपने पैरो पर खड़ा करने के लिये दृढ़-प्रतिज्ञ हैं तो हमे कष्ट उठाने होंगे पर ये कष्ट किसी एक वर्ग के लिये ही न होकर सबमे विभक्त होने चाहिये। देश का धनी वर्ग अधिक धनी बनकर इन कष्टों का अनुभव ही नही करता और गरीब वर्ग द्वारा जन कष्टो को सहा जा रहा है। शासन को सबसे पहले इस दिशा में विचार करना चाहिये। जनसाधारण ता सदा कष्ट उठाने को तैयार है पर उसके कष्टो का अन्तिम परिणाम देश-गौरव मे वृद्धि होना चाहिये।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के बिना देश की उन्नति में बाधा

श्री मुरार जी देसाई ने अपने एक वक्तव्य मे कहा है कि देश की उन्नति में जो बहुत सी बाधायें हैं उनमें राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित सम्मान न मिलना भी एक बडी बाधा है। क्योंकि राष्ट्र की बहुसंख्यक प्रजा अंग्रेजी भाषा स अन-भिज्ञ है और हिन्दी की शासन ने उपेक्षा की है। शासन यदि चाहता है कि देशोन्नति में जनता उसका खुले हृदय से साथ दे तो उसे जनता की भाषा में ही सोचना और बोलना चाहिये। हिन्दी समर्थकों पर हिन्दी साम्राज्यवाद का आरोप निराधार और निरर्थक हैं। वास्तविकता यह है कि अंग्रेजी व्यामोह मे राष्ट्र का सत्तारूढ वर्ग अपने स्वाभि-मान को भूल रहा है। हम आशा है श्री देसाई के इस कथन पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जायगा और देश की उन्नति में उत्पन्न बाधा दूर होगी।

—स्नातक

हिन्दी के प्रचार में शिथिलता भीषण पाप है

भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश बिहार, राजस्थान मध्य भारत, हरियाना, हिमा-चल दिल्ली हिन्दी भाषाभाषी प्रदेश है तथा गुजरात, महाराष्ट्र हिन्दी के प्रबल पोषक हैं यदि यह संगठित रूप से हिन्दी के विस्तार व प्रचार में संलग्न हो जाय तो राष्ट्र-भाषा हिन्दी की निश्चय बड़ी सेवा हो।

समाचार पत्रों में निरन्तर यह शिकायतें आ रही हैं कि हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्त ही हिन्दी के प्रचार मे सबसे अधिक शिथिलता प्रदर्शित कर रहे हैं। अभी तक इन प्रदेशों के जन मानस से अंग्रेजी का भूत उतरा नहीं है। अपने निजी व्यवहार में, अपनी सभा सस्थाओं के व्यवहार में, और नगरपालिका, जिला परिषद व प्रदेशीय सरकार के साथ होने वाले पत्र व्यवहार तक में अंग्रेजी का मोह इन्हें सता रहा है। शिक्षा सस्थाओं ने अधिक मात्रा में अंग्रेजी का ही पल्ला पकड़ा हुआ है। नाम पट्टो को देवनागरी अक्षरो में परि-वर्तित करने तक मे आनाकानी की जा रही है। तार भी अंग्रेजी मे प्राय देते, बैंकों मे हिसाब अंग्रेजी मे रखते। यही तक कि अपने हस्ताक्षर भी हिन्दी के करने म सकोच किया जाता है। ऐसी परिस्थिति मे हिन्दी का प्रचार व विस्तार कम हो यह एक गम्भीर प्रश्न हमारे सामने है

स्थान स्थान पर हिन्दी का महान पक्ष लेने वाले आर्य समाज स्थापित हैं। हिन्दी प्रचारिणी सभाए आदि स्थापित हैं किन्तु उनकी क्रियाशीलता शिथिलता के गर्त में हिन्दी बैठी है। केवल सरकार से मांग करने अथवा उसकी भर्त्सना करने मात्र से काम सिद्ध होने वाला नही है।

मैं यहा आर्य समाजों से और आर्य शिक्षा सस्थाओं आदि के सचालकों से सादर किन्तु साग्रह विशेष अनुरोध करूंगा कि वह पूर्ण सजग होकर राष्ट्र-भाषा हिन्दी के व्यवहारिक रूपेण सरक्षक प्रचारक व प्रसारक बनें। प्रत्येक आर्य समाज व आर्य शिक्षा सस्था अपने नाम-पट्ट लैटर हैड, कार्ड लिफाफे, रसीद बहिया, रजिस्टर, फार्म आदि एकदम देवनागरी अक्षरो में ही मुद्रित करावें। समस्त पत्र व्यवहार, कार्यवाही विज्ञापन आदि एक मात्र हिन्दी में कर।

प्रत्येक आर्य समाजी अपने हस्ताक्षर सर्वत्र हिन्दी में करें। तार दें तो केवल देवनागरी अक्षरों में देवें इसके साथ २ स्थानीय जनता का ध्यान भी इस महान राष्ट्रीय कार्य की ओर आकर्षित करें। हिन्दी प्रचारिणी सभाओं को शक्तिशाली बनावें और उनके माध्यम से प्रत्येक शिक्षा सस्था के सस्थापकों से मिलकर सस्थाओ मे देवनागरी का पूर्णतया प्रच-लन करावें। घर घर जाकर हिन्दी का अलख जगावें।

जो जन हिन्दी नहीं जानते है उनको हिन्दी सिखावें एव देवनागरी लिपि का बोध करावें।

ऐसी शिक्षा सस्थाओं का जो अंग्रेजी के माध्यम से ही कार्य करती हैं अथवा जहा बालकों को अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करना सिखाया जाता है व्यव-हारिक रूप से बहिष्कार करें।

हिन्दी व देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार की दृष्टि से सकेत रूप से कुछ बातें यहा लिखी हैं।

आशा है आर्य जनता विशेष रूप से जागरूक होकर इस दिशा में अपना कर्तव्य दृढ़ता के साथ पालन करेगी।

— शिवदयालु

कर्म का रहस्य

(ले०—श्री प० कृष्णदत्त जी आयुर्वेदालंकार फैजाबाद)

शास्त्रकारों ने कर्म ३ प्रकार के बताए हैं। (१) सचित (२) प्रारब्ध (३) क्रियमाण। अब इन पर पृथक पृथक विचार कीजिए।

(१) सचित—अनेक जन्मों से लेकर अब तक के सगृहीत कर्मों को सचित कहते हैं। मन वाणी और शरीर से मनुष्य जो कुछ कर्म करता है वह जब तक क्रियारूप में रहता है तब तक उसका नाम क्रियमाण है। और पूरा होते ही तत्काल सचित बन जाता है। और अन्तःकरण रूप वृहत भण्डार में जमा हो जाता है। मनुष्य को इस सचितकर्म राशि मे से—पाप पुण्यों से शरीर जिस योनि के योग्य होता है वह उस योनि को प्राप्त होता है। जब तक इस सचित कर्म राशि का सर्वथा नाश नहीं होता तब तक जीवात्मा की मुक्ति नहीं हो सकती सचित कर्म से वासना, वासना से क्रियमाण, क्रियमाण से पुन सचित और सचित के अंश से प्रारब्ध। इस प्रकार जीवात्मा निरन्तर कर्म प्रवाह में बहता रहता है। सचित के अनुसार ही बुद्धि की सतोगुणी रजोगुणी और तमोगुणी वृत्तियां होती हैं। यह स्मरण रहे कि सचित केवल प्रेरणा करता है—तदनुसार कर्म करने के लिए मनुष्य को बाध्य नहीं कर सकता। जैसे किसी के मन में बुरे सचित कर्म से चोरी करने की प्रेरणा हुई। दूसरे के धन पर मन चला परन्तु सत्सग शुभ विचार और सुन्दर वातावरण के प्रभाव से वह बुरी प्रेरणा वहीं दब कर नष्ट हो गई। इसी प्रकार शुभसचित से दान की इच्छा हुई परन्तु वह भी कुमित्रों की बुरी सलाह से दब कर नष्ट हो गई। सचित के विशाल कर्मों के ढेर में से जब से पहले उसी के अनुसार मन में प्रेरणा होगी जो सचित मन से नये कर्म का होना एक सात्विक धार्मिक वृत्ति का सत्सग देती है परन्तु कुसग से सिनेमा देखने लगा इनसे उसे सिनेमा के ही दृश्य याद आने लग जिस तरह की वासना मनुष्य के मन में होती है उसी के अनुसार वह कर्म करता है कर्म का वैसा ही सचित होता है उससे फिर वैसी ही वासना बनती है पुन वैसे ही कर्म होते हैं। इस प्रकार कर्म का चक्कर चलते-चलते वह मनुष्य सत्कर्म को छोड़ बैठा इससे यह सिद्ध हुआ कि सत्सग या सदुपदेश से बुरी वासनायें दब जाती हैं अतः सत्सग करना आवश्यक है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है जिस प्रकार विद्यार्थी परीक्षा के प्रश्नों का उत्तर देने में स्वतन्त्र है चाहे ठीक लिखे चाहे अशुद्ध परन्तु फल देना परीक्षक का काम है। इसी प्रकार हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं लेकिन यदि सत्कर्म करेंगे तो अच्छे फल मिलेंगे और यदि कुकर्म करेंगे तो बुरे फल भोगने पड़ेंगे जिससे हमें दुख या कष्ट होगा यह समझकर वैदिक सिद्धान्त यही है कि हमें सत्कर्म ही करने चाहिए। बहुत से लोग समझते हैं कौन देखता जो चाहे कर लो इस पर महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि वे महा मूर्ख हैं जो आत्मा और परमात्मा को न देख कर पाप करते हैं।

(२) प्रारब्ध—पाप पुण्य रूप सचित के कुछ अंश से एक जन्म के लिए भोग भुगताने के उद्देश्य से प्रारब्ध बनता है भोग दो प्रकार भोगा जाता है मानसिक वासना से और स्थूल शरीर की क्रियाओं से। स्वप्नादि में जो तरह-तरह की विचार की तरंगें चित्त में उठती हैं उनमें जो सुख दुख का भोग होता है वह मानसिक है।

प्रारब्ध भोग का दूसरा प्रकार सुख दुख रूप इष्ट अनिष्ट पदार्थों का प्राप्त होना है। सुख दुख रूप प्रारब्ध का भोग ३ प्रकार से होता है। जिनको अनिच्छा, परेच्छा और स्वेच्छा प्रारब्ध कहते हैं।

अनिच्छा—मार्ग पर चलते हुए मनुष्य पर किसी मकान की दीवार का टूट कर गिर जाना। घर में बैठे हुए पर छत का टूट कर गिर जाना, हाथ से अकस्मात बन्दूक छूटकर गोली लग जाना आदि दुखरूप और मार्ग पर चलते हुए को नोटों की गड्डी या जेवर मिल जाना, लाटरी निकल आना या इनामी बान्ड की विजेता सूची में नाम निकल आना, खेत जोतने वाले किसान को जमीन में गड़ा धन मिल जाना आदि सुख रूप भोग जिनके प्राप्त करने की न मन में इच्छा की थी। इस प्रकार अनायास संयोग से आप से आप सुख दुखादि रूप भोगों का प्राप्त होना अनिच्छा प्रारब्ध है।

परेच्छा—सोये हुए मनुष्य पर रात को चोर डकुओं का आक्रमण होना आदि दुखरूप और कुमार्ग में जाते हुए को महर्षि का रोककर बचा देना, कुपथ्य करते हुये रोगी को हाथ पकड़ कर वैद्य या मित्र द्वारा रोका जाना आदि सुखरूप भोग जो दूसरों की इच्छा से प्राप्त होता है उसका नाम परेच्छा प्रारब्ध है।

स्वेच्छा—कर्मयुक्त व्यापार में कष्ट स्वीकार करना, उससे लाभ होना न होना या होकर नष्ट हो जाना आदि स्वेच्छा प्रारब्ध है। इन कर्मों को करने के लिए जो प्रेरणात्मक वासना होती है उसका कारण प्रारब्ध है। तदनन्तर क्रिया होती है। क्रिया का सिद्ध होना न होना सुकृत दुष्कृत का फल है।

कर्मों का फल ईश्वर के आधीन है। इससे जीव की पूर्ण परतन्त्रता है। इस जीवन में पाप करने वाले लोग धन, पुत्र या नारि से सुखी देखे जाते हैं और पुण्य करने वाले मनुष्य सांसारिक पदार्थों के अभाव से दुखी देखे जाते हैं। जिससे पाप पुण्य के फल में लोगों को सन्देह होता है वहां यह समझ लेना चाहिये कि उनके वर्तमान बुरे भले कर्मों का फल आगे मिलेगा। अभी पूर्व जन्म कृत कर्मों का फल प्राप्त हो रहा है। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।'

(३) क्रियमाण—अपनी इच्छा से जो नवीन कर्म किये जाते हैं उन्हें क्रियमाण कहते हैं। क्रियमाण कर्मों में प्रधान हेतु सचित है। कहीं कहीं अपना या पराया प्रारब्ध भी हेतु बन जाता है। क्रियमाण कर्म में मनुष्य स्वतन्त्र है। पाप पुण्य जो चाहे कर सकता है पर फल भोगने में परतन्त्र है। यह समझना भ्रम है कि ईश्वरेच्छा से पाप या पुण्य होते हैं। अतः यह मानना उचित नहीं कि पाप पुण्य ईश्वर कराते हैं। पाप के लिये तो ईश्वर की कभी प्रेरणा ही नहीं होती पुण्य या सत्कर्मों के लिए ईश्वर का आदेश है। परन्तु उसका पालन करना न करना या विपरीत करना हमारे अधिकार में है।

पाप का कारण—पाप कर्मों के करने में प्रधान हेतु निरन्तर विषय चिन्तन है। इसीसे रजोगुण समुद्भूत काम की उत्पत्ति होती है। उस काम से ही क्रोध, लोभ, मोह आदि दोष उत्पन्न होकर जीवात्मा की अधोगति में कारण होते हैं। गीता में लिखा है—'ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते। सङ्गात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते॥ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात् स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति॥" अर्थात विषयों के चिन्तन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है। कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है, क्रोध से अविवेक (मूढ़ भाव) उत्पन्न होता है। अविवेक से स्मरण शक्ति भ्रमित हो जाती है स्मृति के भ्रमित हो जाने से बुद्धि अर्थात ज्ञान शक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश से वह पुरुष श्रेय साधन से गिर जाता है। इसी को कहते हैं 'विनाश काले विपरीत बुद्धि'। इससे यह स्पष्ट हो गया कि पाप कर्मों के होने में आसक्ति प्रधान कारण है, ईश्वर या प्रारब्ध नहीं। अतः पापों से बचने के लिए नवीन शुभ कर्म करने की आवश्यकता है। नवीन शुभ कर्मों से शुभ सचित होकर शुभ का चिन्तन होगा जिससे शुभ कर्मों के होने और अशुभ के रुकने में सहायता मिलेगी। और क्रियमाण कर्म शुद्ध हो जायेंगे क्रियमाण ही सचित और प्रारब्ध कर्म के कारण हैं।

प्रारब्ध कर्मों का नाश बिना भोगे नहीं हो सकता। सचित और क्रियमाण कर्मों का नाश निष्काम भाव से किए हुए यज्ञ, दान तप, सेवा आदि सत्कर्म से तथा प्राणायाम श्रवण मनन निदिध्यासन आदि परमेश्वर की उपासना से हो सकता है। इससे अन्तःकरण की शुद्धि होकर ज्ञान उत्पन्न होता है। जिससे सचित कर्मों की राशि भस्म हो जाती है। और कोई स्वार्थ न रहने के कारण किसी भी सांसारिक पदार्थ की कामना एवं कर्म करने में आसक्ति न रह जाने से नवीन कर्म बन नहीं सकते।

कर्म का फल कौन देता है—कर्म का फल देने के लिए कोई शासक या राजा दण्ड की व्यवस्था करता है यह संसार में हम देखते हैं। चोर चोरी करता है न्यायाधीश दण्ड देता है। इसी प्रकार कर्मों के नियमन तथा व्यवस्था के लिए किसी नियामक का होना आवश्यक है। और वह ईश्वर है। ईश्वर समदर्शी सर्वान्तर्यामी, दयालु और न्यायकारी होने के कारण उससे कोई भूल नहीं हो सकती।

ईश्वर भजन की आवश्यकता क्यों

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सुझाव और सम्मतियाँ

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधियों से—

दो विनम्र शब्द

(ले०—श्री चन्द्रसहाय जी एडवोकेट बरेली)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन देहरादून मे होने जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि गण इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिये अभी से प्रयत्नशील होंगे। यद्यपि अधिवेशन का मुख्य तात्पर्य गत वर्ष का सिंहावलोकन करके अपनी स्थिति परख कर आगामी वर्ष के लिये प्रान्तीय स्तर पर कार्यकर्ताओं की एक टीम चुनना है परन्तु आजकल हम ऐसा नहीं कर पाते, हमे अपनी शक्ति का उचित उपयोग करना चाहिये। क्या ही अच्छा हो कि इस अवसर पर आर्यसमाज में कतिपय विशेष कार्यों को लेकर प्रान्त का ध्यान केन्द्रित किया जावे जिनके प्रकाश में वर्ष भर तक कार्य अन्य कार्यों के सहित होवे। इस प्रकार के दो तीन सुझाव लेख मे उपस्थित किये जाते हैं।

सभा का एक विभाग जात पांत निवारक संघ है उसके लिये प्रति वर्ष एक अधिष्ठाता नियुक्त होता है वर्ष मे कुछ कार्य भी होता है। क्या यह उपयोगी सिद्ध नहीं होगा कि वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर इसकी विशेष चर्चा की जावे ताकि इस विषय में अग्रगामी महानुभावों का उसी समय एक शक्तिशाली दल बन जावे जिससे आर्यसमाज के अन्य सभासदों को जो सिद्धान्त रूप से इसमे रुचि रखने वाले परन्तु क्रिया रूप मे भीरुपन दर्शाने वालों को भी आगे बढ़ने की शक्ति मिले। यदि इस प्रकार का वास्तविक रूप से कार्यक्रम बनाया जावे तो इस अवसर पर अनेक विवाह भी किये जा सकते हैं जो पहले से निश्चित किये गये हों। इस सुधार कार्य मे आर्यसमाज से बाहर के लोगों की भी दिलचस्पी हो सकती है और अनेक प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों का भी निराकरण हो सकता है और अनेक प्रगतिशील परिवारों का सहयोग आर्य समाज को प्राप्त हो सकेगा।

वैदिक धर्म मे अतिथि यज्ञ पंच महायज्ञों मे से एक है इस आर्थिक संकट काल मे भी अनेक परिवार इसको धर्म-दृष्टि से निभा रहे होंगे। उधर आर्य समाज में इस प्रकार की शिकायत सुनी जा रही है कि वानप्रस्थियों और सन्यासियों का अभाव सा हो रहा है। यदि आर्य प्रतिनिधि सभा एकत्रित प्रतिनिधियों की सम्मति से यह प्रेरणा दे कि प्रत्येक आर्यसमाज जिसके सभासद तीस से अधिक हों वह अपनी समाज मे एक वानप्रस्थी अथवा एक सन्यासी को अवश्य आश्रय दें तो उस समाज के अन्य सभासदों को अतिथि यज्ञ के पालन करने मे सरलता तथा बढ़ावा मिलेगा और सामाजिक बल से आत्मबल पुष्ट होकर वानप्रस्थ, तथा सन्यासियों की संख्या अवश्य बढ़गी और समाज के प्रचार कार्य मे अनायास विस्तार होगा।

प्रो० भवानीलाल भारतीय अध्यक्ष हिन्दी विभाग गवर्नमेन्ट कालिज पाली राजस्थान ने ओमद्दयानन्द वाङ्मय की बड़ी लाभदायक सूची टंकारा पत्रिका में प्रकाशित की है। उसके द्वारा ज्ञात होता है कि प्रतिनिधि सभाओं आर्यसमाजों और व्यक्तिगत रूप से अनेक आर्य विद्वानों ने आर्य समाज के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का अनेक देशी और विदेशी भाषाओं मे अनुवाद करके संसार को अविद्या के अन्धकार से निकालने का बड़ा स्तुत्य कार्य किया है। सूची से पता चलता है कि अनुवाद का कार्य १८९८ से आरम्भ हुआ है, और उसकी इति श्री १९२८ मे हो गई सी प्रतीत होती है। उसके बाद केवल श्रद्धेय पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के प्रयत्न से स्वयम् उनके द्वारा सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी में अनुवाद १९४६ मे और उनके प्रयत्न के द्वारा चीना भाषा मे १९५८ में प्रकाशित हुआ। जिन भाषाओं मे सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध हैं वे निम्नलिखित हैं। हिन्दी उर्दू, अंग्रेजी गुजराती, मराठी, बंगला पंजाबी उड़िया, संस्कृत, सिन्धी, तमिल, तेलगु कन्नड मलयालम जर्मनी फ्रेन्च बर्मी और चीनी। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वतन्त्रता के आगमन के साथ ही शायद सत्यार्थ प्रकाश के अन्य देशों मे प्रचलन की आवश्यकता नहीं समझी जा रही है। हमारे पड़ोसी देश नेपाल और भूटान में उत्तर प्रदेश के

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सभा की सूचनाएँ

प्रतिनिधि चित्र तुरन्त भेजिए

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय में अब तक २५० आर्यसमाजों के वार्षिक प्रतिनिधि चित्र प्राप्त हुए हैं। अतः समाजों के मन्त्री महोदयों एवं जिला उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदयों तथा समाज्य निरीक्षक तथा उपदेशक, प्रचारकों से तथा सभाज्य अन्तरंग सदस्यों से निवेदन है कि अपने अपने जिला क्षेत्र के समाजों से प्रतिनिधि चित्र फार्म भरवाकर सभा कार्यालय में मय दशांश, सूदकोटि तथा चार आना फण्ड प्रतिनिधि शुल्क भिजवाने की कृपा करें।

—कन्हैयालाल सभामन्त्री

सभा के पुराने कार्यमुक्त उपदेशकों एव भजनीकों की सेवा में

सभा के खातों में निम्नलिखित पुराने उपदेशक व भजनीकों का धन निकल रहा है। परन्तु सभा कार्यालय मे उनका ठीक पता न होने के कारण अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है। अतः इन सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्र सभा कार्यालय से पत्र-व्यवहार कर अपना धन प्राप्त करने की कृपा करें।

१—श्री ज्वालाप्रसाद जी
२—श्री गायत्रीदेव जी शर्मा
३—श्री महावीर प्रसाद जी
४—श्री विपिनचन्द्र जी
५—श्री रघुवर दयालु जी
६—श्री रामदेव जी
७—श्री रामनाथ जी

—कन्हैयालाल सभामन्त्री

उत्सवों एवं विवाह संस्कारों एवं कथाओं के निमित्त आमन्त्रित कीजिए—

प्रकाण्ड विद्वान्, सुमधुर गायक, सुयोग्य सन्यासी एवं मैजिक लैनटर्न द्वारा प्रचार करने वाले योग्य प्रचारक।

महोपदेशक

आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री महोपदेशक
श्री बलबीर जी शास्त्री „
श्री प० श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री प० विश्वबन्धु जी वेदालंकार
श्री पं०केशवदेव जी शास्त्री उपदेशक
श्री पं० रामनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर भजनोपदेशक
श्री नत्थासिंह जी—प्रचारक
श्री धर्मदत्त जी आनन्द ”
श्री धर्मराजसिंह जी— ”
श्री खेमचन्द्र जी (फिल्मी संचालक)
श्री देवपालसिंह जी— प्रचारक
श्री प्रकाशवीर जी शर्मा ”
श्री जयपालसिंह जी मानव ”
श्री ओमप्रकाश जी सिंहल „
श्री दिनेशचन्द्र जी ”
श्री छत्रपालसिंह जी ”
श्री रघुवरदत्त जी ”

अवैतनिक उपदेशक

श्री स्वामी योगानन्द जी सरस्वती
„ प्रणवानन्द जी ”
„ वेदानन्द जी „
श्रीमती डा० प्रकाशवतीजी
श्री माता तिलोत्तमा सती जी
„ हेमलता देवी जी
„ जगधात्री देवी जी
„ प्रेम सुखमा यति जी और—
श्री रामकृष्ण शर्मा मैजिक लैनटर्न

—सच्चिदानन्द शास्त्री
—स०अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्र० सभा, लखनऊ

प्रोग्राम मास मई

महोपदेशक

आ० विश्वबन्धु शास्त्री—२२ से २४ आ० स० फीरोजाबाद।

श्री बलबीर जी शास्त्री—१४ से १५ गुरुकुल चित्तौडगढ़, १८ से २१ सहरसा बिहार, २७ से २९ गयाना।

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर—१५ से १८ विवाह कुण्डा, २२ से २४ विवाह कासिमाबादपुर।

श्री धर्मराजसिंह जी—२४ - २५ विवाह महुवया।

श्री नत्थासिंह जी—२१ से २४ फीरोजाबाद।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—१४ से १६ मेला बरमाह।

श्री खेमचन्द जी—१४ १५ विवाह पिढरा।

श्री जयपालसिंह जी—१८ से २० खेबरनपुर २७ से २९ गाजनेर।

श्री प्रकाशवीर जी—२९ से १ जून वेद मन्दिर गोरखपुर।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
स० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

★

सहः

सहोसि सहो मयि धेहि ।

यजु० १९।९

तू सहनशील है, मुझ में सहनशीलता का आधान कर ।

★

बल का वह रूप जो कि सहनशील बनाता है, सह कहलाता है। तेजस्वी मनुष्य ही क्रमशः वीर्यवान्, बलवान्, ओजस्वी, मनस्वी और सहनशील होता है। यह आरोह का क्रम है। सहनशीलता से बल की परिपक्वता और श्रेष्ठता का भी परिचय मिलता है। जीवन को शान्त, उन्नत, मधुर और सन्तुलित बनाने के लिए बल के किसी भी रूप की उपेक्षा नहीं की जा सकती। वीणा के स्वरों के समान ये बल के विविध रूप अपनी-अपनी उपयोगिताओं के लिए अत्यन्त वांछनीय हैं। आनन्द की सृष्टि तो इन सबके सम्यक् ताल-मेल से ही होती है।

'सहः' शब्द पूर्णता, सन्तोष, विजय, पराकाष्ठा, आनन्द और अधिक क्षमता का सूचक है। बल के इन तेज, वीर्य आदि छः रूपों में कार्य-कारण सम्बन्ध की कल्पना जैसे आरोहक्रम में सम्भव है, वैसे ही यह अवरोहक्रम में भी सुसंगत है। सहनशीलता एक दुर्लभ सिद्धि भी है, श्रेष्ठ सद्गुण भी। इसकी प्राप्ति के लिए असाधारण पुरुषार्थ अपेक्षित है: तुनक-मिजाजी और चंचलता एवं वाचालता आदि तो दुर्बलता की ही निशानियां हैं। संसार को आज सर्वाधिक आवश्यकता तो सहनशीलता की ही है। आज मनुष्य इतना अधिक दुर्बल हो गया है कि वह अत्यन्त साधारण बातों पर ही लड़ना, झगड़ना और भड़कना-भड़काना शुरू कर देता है। कभी देश के अपमान का झूठा नारा लगाया जाता है, कभी धर्म को खतरे में बताया जाता है, कभी एक बहाना बनाया जाता है कभी दूसरा। व्यक्तिगत और अत्यन्त तुच्छ स्वार्थों के संघर्ष को भी दो राष्ट्रों, जातियों या वर्गों के आदर्शों अथवा विचारों की टक्कर बताकर, धूर्त और असहिष्णु लोग अपने स्वार्थ साधन में लगे रहते। ये मानवता के तथाकथित हितैषी ही आज मानवता के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है। मानवता का अपमान, वर्णवाद के झगड़े, आर्थिक उलझनें, विनाश की बड़ी बड़ी तैयारियां सभी के पीछे सहनशीलता का अभाव दृष्टिगोचर होता है। अन्याय और अत्याचार को सहनशीलता का सहन न किया जावे यह तो ठीक ही है, परन्तु सज्जनों पर झूठे आरोप न लगाये जायें, दुर्बलों को न सताया जावे और जो वास्तव मे दुर्बल हैं। वे झूठी शान-शेखी के लिए बलवान् होने के ढोंग न रचें।

संसार के लोगो! विचारवान् और सहनशील बनो। दूसरों के अधिकारों में हस्तक्षेप न करो। आत्म-निर्भर बनो। अपने हितों का सम्पादन बुरा नहीं। दूसरों के हितों का विनाश कोई न करे। सहनशील जन तो एक सीमा तक अपने शत्रुओं, अपशब्दों और किञ्चित् हानियों को भी सहते ही हैं, क्योंकि वे सह सकते हैं।

वह सर्वाधार परमात्मा तो सहनशीलता का भण्डार है। उसकी शरण ग्रहण करने और उससे याचना करने से सहनशीलता की प्राप्ति होती है। आओ, हम भी सहनशीलता की प्राप्ति के लिए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के सुनियोजित कार्यक्रम आरम्भ करें। हे सब शक्ति सम्पन्न परमात्मन्! आपकी कृपा से हमारा जीवन सब प्रकार के पापों और दोषों से रहित हो। शुभ कर्मों में हमारी प्रीति सदा बढ़ती ही रहे। हम सब स्वतन्त्र और स्वावलम्बी बनकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करें। आपकी कृपा से हम निराशा, असफलता और पराजय के कष्टों को न भोगें। हे दयानिधे! आप तो सहनशीलता के भण्डार हैं। हमें भी सहनशीलता प्रदान करो। आपकी कृपा से हम सब आगे ही आगे बढ़ें ऊपर ही ऊपर उठें। किसी भी अवस्था में हमारा किसी भी प्रकार का पतन न हो।

★

आर्य जगत् के महान् नेता—

पद्मभूषण श्री डा. दुखनराम जी

उपप्रधान सार्वदेशिक सभा

आदर्श आर्य जीवन की एक झलक

डा० दुखनराम का व्यक्तित्व निष्ठा, परिश्रम और प्रतिभा का अनुकरणीय उदाहरण है, जिसका प्रभाव एक साथ सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और चिकित्सकीय क्षेत्रों मे देखा जा सकता है।

मध्यम वर्ग के परिवार में जन्म लेकर 'सत्यधर्मास्त्वं सकलार्थसिद्धि' को सार्थक करनेवाले, अध्यवसाय एवं परिश्रम के बल पर सदा आगे बढ़नेवाले डा० दुखनराम ने एक बहुत बड़ी परम्परा का निर्माण किया है। वह परम्परा सम्पूर्ण समाज के लिये प्रेरणा-केन्द्र बन गयी है। डा० दुखनराम ने १९२६ ई० में २७ वर्ष की उम्र में कलकत्ता से बी० एस०-सी० और एम० बी० की उपाधियां प्राप्त की। १९२७ ई० में पटना मेडिकल कालेज में आंख-कान नाक विभाग के चिकित्सक के रूप में आपने प्रवेश किया। १९३३ ई० में आप बिहार सरकार की ओर से विशेष अध्ययन के लिये इग्लैण्ड भेजे गए और वहा से डी० एल० ओ० तथा डी० ओ० एम० एस० की उपाधियां प्राप्त की। व्यावहारिक ज्ञान के लिए आपने विएना मे ६ महीनों तक विशेष प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। १९३५ में भारत लौटने पर आप पटना मेडिकल कालेज में आंख-कान नाक विभाग में लेक्चरर नियुक्त हुए; १९४१ में इस विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष तथा १९५५ मे प्रोफेसर के साथ ही डीन और मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल बने। १९५७ मे डा० दुखनराम बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त किये गये। १९६१ में भारत सरकार ने आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

इस लम्बी अवधि में डा० दुखनराम ने प्रभूत यश अर्जित किया और एशिया के सर्वश्रेष्ठ नेत्र-चिकित्सकों में अन्यतम माने गये। एक साथ लक्ष्मी और सरस्वती के स्नेह-भाजन विरले भाग्यशाली ही हो पाते हैं। डा० दुखनराम उनमें अग्रणी हैं।

डा० दुखनराम ने नेत्र-चिकित्सक के रूप में जीवन आरम्भ किया, आपने धन भी बहुत अर्जित किया, किन्तु विकासमान आत्मा को केवल धन से ही सन्तोष नहीं होता। आत्म तृप्ति तो 'स्व' के निरन्तर विस्तार से होती है और 'स्व' के विस्तार का साधन है मानव-प्रेम जिसकी अभिव्यक्ति शिक्षा, संस्कृति, समाज-सेवा और लोक सेवा में होती है। डा० दुखनराम की समाज-सेवा के अनेक क्षेत्र हैं, किन्तु प्रमुख माध्यम है आर्य-समाज।

डा० दुखनराम आर्य-समाज के उप-कुलपति थे, उसी समय आपने नेत्र चिकित्सक, शिक्षाशास्त्री और आर्य-समाज के सन्देशवाहक के रूप में विश्व-भ्रमण किया तथा सर्वत्र, विशेष कर एशिया और अफ्रीका में, भारतीय संस्कृति का सन्देश सुनाया।

बिहार में आर्य-समाज द्वारा संचालित छात्र छात्राओं की शिक्षण-संस्थाओं के आप प्रमुख संचालक हैं। इसके अतिरिक्त निजी साधनों से भी आपने सैंकड़ों स्त्री पुरुषों को शिक्षित-प्रशिक्षित किया है। विज्ञान और कला दोनों में डा० दुखनराम की देन महत्वपूर्ण है। बिना किसी जाति और सम्प्रदाय के भेद के आप सबकी सहायता करते हैं। मानव सेवा के क्षेत्र मे डा० दुखनराम के महत्वपूर्ण कार्य हैं। निजी साधनों से प्रति वर्ष दो-तीन कैम्प कायम कर मोतियाबिन्द के एक हजार रोगियों की आप निःशुल्क शल्य चिकित्सा किया करते हैं। इस रूप मे अब तक लगभग पन्द्रह हजार नेत्र रोगियों को आपने नेत्र दान दिया है। डा० दुखनराम के जीवन में कठोर परिश्रम, चारित्रिक उज्ज्वलता और ज्ञान का आलोक है। ऐसे व्यक्ति के अभिनन्दन से समाज मे सेवा-भावना कर्तव्यपरायणता, ज्ञान तथा धर्म के प्रति आस्था बढ़ती है। इसीलिए हम लोग डा० दुखनराम की अड़सठवीं वर्ष-गांठ पर एक अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट करना चाहते हैं।

धर्म शिक्षा का महत्व

धर्म शिक्षा के बिना शिक्षा किस काम की

[ले०—वेदपथिक धर्मवीर आर्य सदाचारी व्याख्यान भूषण बरावहेका दिल्ली ५]

१—धर्म शिक्षा के बिना मानव जीवन सर्वथा पशुवत है।

२—धर्म शिक्षा के बिना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सुखों की सिद्धि असंभव है।

३—धर्म के मर्म के ज्ञान बिना मानव जीवन सर्वथा नीरस है।

४—धर्म शिक्षा के बिना भारतीय शिष्टाचार का बोध होता नहीं है।

५—धर्म शिक्षा के बिना हृदय का सुख मिलता नहीं है।

६—धर्म शिक्षा के बिना वैदिक भव्य भावनाओं का उदय स्रोत मिलता नहीं है।

७—धर्म शिक्षा के बिना मानव जीवन का चरित्र निर्माण होता नहीं है।

८—धर्म शिक्षा के बिना वेद शास्त्रों का बोध होता नहीं है।

९—धर्म शिक्षा के बिना विश्व की मानवता की रक्षा होती नहीं है।

१०—धर्म शिक्षा के बिना उर अंतर में परमात्मा की दिव्य ज्योति का प्रकाश पुंज मिलता नहीं है।

११—धर्म शिक्षा के बिना आत्म दर्शन का अधिकारी मानव होता नहीं है।

१२—धर्म शिक्षा के बिना शिव संकल्पों से युक्त मानव होता नहीं है।

१३—धर्म शिक्षा दुःख शोक का और दरिद्रता का नाशक है।

१४—धर्म शिक्षा के बिना जीवन की शोभा नहीं है।

१५—धर्म शिक्षा ही मानव जीवन का भूषण है।

१६—धर्म शिक्षा ही मानव जीवन की सर्वाङ्ग उन्नति का ज्ञान है।

१७—धर्म शिक्षा ही विश्व की रत्न मणियों का भूषण है।

१८—धर्म शिक्षा के बिना मानव कुल के धर्म कर्म का बोध होता नहीं है।

१९—धर्म शिक्षा के बिना संयम सदाचार मनोनिग्रह का अलौकिक सौन्दर्य मिलता नहीं है।

२०—धर्म शिक्षा के बिना भारतीय वैदिक संस्कृति की रक्षा होती नहीं है।

२१—धर्म शिक्षा के बिना शुभ कर्मों के करने में मन लगता नहीं है।

२२—धर्म शिक्षा के बिना मनुष्य चोरी एवं व्यभिचार करता है।

२३—धर्म शिक्षा के बिना आज चोरी और डाके नित पड़ते हैं।

२४—धर्म शिक्षा के बिना मनुष्य का मूल्य एक कौड़ी का भी नहीं है।

२५—धर्म शिक्षा के बिना आज का मानव भोगवाद की ओर बढ़ रहा है।

२६—धर्म शिक्षा के बिना विश्व विनाश के पथ में आगे बढ़ रहा है।

२७—धर्म शिक्षा के बिना नास्तिकता बढ़ रही है।

२८—धर्म शिक्षा के बिना लड़कियां लज्जा और शीलता को तिलांजलि देकर तितलियां बन रही हैं।

२९—धर्म शिक्षा के बिना महर्षियों का भगवान राम और कृष्ण का नाम मिट रहा है।

३०—धर्म शिक्षा के बिना आज मद्यपान बढ़ रहा है।

३१—धर्म शिक्षा के बिना अन्डे और मांस भक्षण का प्रचार बढ़ रहा है।

३२—धर्म शिक्षा के बिना भारत य वेश भूषा का पारधान समाप्त हो रहा है।

३३—धर्म शिक्षा के बिना पाश्चात्य सभ्यता की गुलामी का नग्न प्रचार हो रहा है।

३४—धर्म शिक्षा के बिना संयम सदाचार मिट रहा है।

३५—धर्म शिक्षा के बिना आज देश में गर्भ हत्यायें हो रही हैं।

३६—धर्म शिक्षा के बिना पग पग पाखण्ड अनाचार बढ़ रहे हैं।

३७—धर्म शिक्षा के बिना शिक्षा सूत्र का निशान मिट रहा है।

३८—धर्म शिक्षा के बिना विद्यार्थि जीवन से संयम स्वाभिमान मिट रहा है।

३९—धर्म शिक्षा के बिना देश रसातल की ओर द्रुत गति से जा रहा है।

४०—धर्म शिक्षा के बिना माता-पिता और गुरुजनों के प्रति श्रद्धा की पवित्र भावनायें विद्यार्थियों से लुप्त हो रही हैं।

४१—धर्म शिक्षा के बिना आज आत्महत्यायें हो रही हैं।

४२—धर्म शिक्षा के बिना आज भ्रष्टाचार खाद्य पदार्थों में मिलावट कर रहे हैं।

४३—धर्म शिक्षा के बिना आश्रम मर्यादाओं का लोप हो रहा है।

४४—धर्म शिक्षा के बिना ब्रह्मचर्य व्रत का पालन नहीं हो रहा है।

४५—धर्म शिक्षा के बिना मानव दानव बनता जा रहा है।

४६—धर्म शिक्षा के बिना विश्व का वैभव बेकार है

४७—धर्म शिक्षा के बिना मनुष्य को मनुष्यता आती नहीं है।

४८—धर्म शिक्षा के बिना आत्म ज्ञान, ब्रह्मज्ञान और मोक्ष ज्ञान मिलता नहीं है।

४९—धर्म शिक्षा के बिना धर्म का आदि स्रोत मिलता नहीं है।

५०—धर्म शिक्षा के बिना सत्संग में वेद कथा में मन लगता नहीं है। सत्संग के बिना जीवन का सुधार होता नहीं है।

५१—धर्म शिक्षा के बिना परमात्मा का साक्षातकार होता नहीं है।

५२—धर्म शिक्षा के बिना शान्ति सुधाकर मिलता नहीं है।

५३—धर्म शिक्षा के बिना विश्व शान्ति होती नहीं है।

५४—धर्म शिक्षा के बिना विश्व की मानवता खतरे में है।

५५—धर्म शिक्षा के बिना मनुष्य मृतक समान है।

५६—धर्म शिक्षा के बिना शुद्ध विचारों का उदय स्रोत मिलता नहीं है।

५७—धर्म शिक्षा के बिना विश्व बन्धुत्व की भव्य भावनाओं का उदय होता नहीं है।

५८—धर्म प्रधान धर्म प्राण भारतवर्ष का दुर्भाग्य है कि आज भारत के विद्यार्थियों को धर्म शिक्षा से वंचित किया जा रहा है।

५९—धर्म शिक्षा से ही मनुष्य में तेज, पराक्रम, पुरुषार्थ, संयम, सदाचार, साहस तप, योग, अनुराग, साधना, की शक्तियों का उदय-स्रोत प्राप्त होता है।

६०—धर्म शिक्षा से ही विद्यार्थी सत्कारवान, तेजस्वी और वर्चस्वी बनते हैं।

६१—धर्म शिक्षा से ही जीवन में सादगी आती है।

६२—धर्म शिक्षा से ही मानव जीवन की उन्नति का मूल मंत्र है।

६३—धर्म शिक्षा से ही मानव दैवि शक्तियों को प्राप्त करता है।

६४—धर्म शिक्षा से ही मनुष्य विद्याओं के शुद्ध स्रोत को पाता है।

६५—धर्म शिक्षा से ही मनुष्य महापुरुष कहलाता है।

६६—धर्म शिक्षा से ही मनुष्य विश्वविजय कर पाता है।

६७—धर्म शिक्षा से ही मनुष्य मनस्वी बनता है।

६८—धर्म शिक्षा विश्व के मानव समाज का प्राण है।

६९—धर्म शिक्षा के बिना विश्व की मानवता खतरे में है।

७०—धर्म शिक्षा से ही अन्तरात्मा की दिव्य ज्योति का प्रकाश-पुंज मिलता है।

७१—धर्म शिक्षा ही वेदों की शिक्षाओं का अनुपम सार है।

७२—धर्म शिक्षा विश्व कल्याण का और विश्व शान्ति का अनुपम अद्वितीय साधन है।

७३—धर्म शिक्षा से ही विश्व में राम राज्य स्थापित होगा।

आवश्यक निवेदन

आज मैं कांग्रेस शासन के अधिकारियों से तथा समस्त समाज सुधारकों और देश भक्तों, भाई बहिनों से विनम्र शब्दों में अपील करना देश का प्रहरी होने के नाते अपना परम कर्तव्य समझता हूं कि समस्त देश के विद्यालयों में धर्म शिक्षा अनिवार्य रूप से चालू करने का अविलम्ब प्रबन्ध करें। शिक्षा में धर्म शिक्षा को प्रधान अंग बनायें अन्यथा देश की भावी सन्तानें अनाचार-वादी और नास्तिक हो जायेंगी।

देश के कर्णधारों जागो देश की संस्कृति और सभ्यता मिट रही है।

आज देश के प्रत्येक विद्यार्थी की नस नस में विदेशी सभ्यता के कीटाणु और परमाणु घुस चुके हैं। आज देश विदेशी फैशन में रमता जा रहा है। इसलिये देश और धर्म की रक्षा चाहते हो धर्म शिक्षा को चालू करो अन्यथा रोम और मिश्र की संस्कृति के समान ही भारतीय संस्कृति मिट जायेगी।

स्वतन्त्र भारत के स्वर्ण इतिहास मे धर्मनिरपेक्षिता के शासन में कांग्रेस राज्य का नाम कलंक की कालिमा में लिखा जायेगा, यदि धर्म शिक्षा का प्रबन्ध न किया गया तो भारत की स्वतन्त्रता भी खतरे में है। ऐ देश के नेताओं आंखें खोलो, सावधान हो जाओ, भारत वैदिक संस्कृति की रक्षा करो।

परमात्मा की आराधना

(ले०—श्री लालचन्द जी)

परमात्मा सनातन शाश्वत व्यापक अमर सत्ता है। परमात्मा एक अदृश्य नियामक शक्ति है। जो हमें आंखों से नहीं दीखती किन्तु अनुभव हो रही है। वह आदि कारण है। वह जीवन दायिनि शक्ति है। वह हम जीवों के अभ्युदय और विकास तथा कल्याण के लिए सृष्टि रचना करती है और उसमे सुव्यवस्था कर रही है। वह शक्ति नित्य है और चैतन्य है। उसका कभी नाश नहीं होता वह सबसे महान परम ब्रह्म है। वह अद्वितीय है उस जैसा कोई नहीं। उसकी प्रतिमा कोई नहीं। परमात्म नित्य नवजीवन दे रहे हैं। वह प्राणस्वरूप प्रेममय परमात्मा हम सभी प्राणियों को प्राणशक्ति दे रहे हैं। अनवरत रूप से हम उसी महाप्राण से जीवन पा रहे हैं। उस प्राण रूप भगवान के वश में सारी जगती है। सारी जगती का संचालन भगवान कर रहे हैं। वेद में कहा है—

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम्॥

अथर्व ११-४-१

प्राण रूप जीवन आधार परमात्मा को नमस्कार, वह स्वयम्भू प्रभु सारी जगती को अपने वश में किये है वह परमात्मा सबका ईश्वर है उसी में सब कुछ प्रतिष्ठित है। वह प्राण जीवन देने वाला भगवान सबका आधार है वही सबका आश्रय है। हमारा जीवन उस परम महान् शक्ति के अनुकूल हो, हम उससे जीवन पाते रहें—

याते प्राण प्रिया तनू यो ते प्राण प्रेयसी, अथो यद् भेषजं तव तस्य नो धेहि जीवसे॥

अथर्व० ११।४।९

हे व्यापक प्राण जो तेरा प्राणमय प्रिय स्वरूप है और तेरी जीवन शक्ति है और तेरी रोग निवारण शक्ति दोषों को दूर करने की शक्ति है, वह दीर्घ जीवन के लिए हमें दो।

व्यापक प्राण मानव देह रूप सभी प्राणियों में कार्य कर रहा है। प्राण शक्ति की वृद्धि प्राणायाम से होती है। अद्भुत रूप जो व्यापक प्राण है वह जीवनप्रद है जीवन की वृद्धि उससे होती है। उपासक जब प्राणरूप भगवान की आराधना चाहता है तो अवश्य ही यम नियम पालन और योग्य व्यायाम भी करता है। जब साधक प्राणशक्ति को अपने में बढ़ती हुई अनुभव करता है तो उसका आनन्द बढ़ता है और इसका केन्द्र जो मस्तिष्क है वह सक्षम होता है, इसका प्रभाव मन और बुद्धि पर अवश्य पड़ता है और अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त अहङ्कार, सभी शुद्ध और सशक्त होते हैं। इस प्रकार मनुष्य अपनी अमर सत्ता को पहचान लेता है और शुद्ध अन्तःकरण में अपनी अमर ज्योति को अनुभव करने लगता है। आरोग्यता इस प्रकार पूर्ण होती है और प्राणमय कोश और मनोमय कोश के शुद्ध होने पर और इनका सम्यक ज्ञान होने पर साधक अपने अन्दर बुद्धि की निर्मलता प्राप्त करता है और अपनी सभी ज्ञान और कर्मेन्द्रियों को सम्यक् रूप से कार्य करते देखता हुआ अपना सन्तुलन बनाए रखता है। अपने दृढ़ साधन और भगवान की कृपा से यह स्थिति प्राप्य है। ऐसे व्यक्ति बहुत समझदार, धैर्यवान शक्तिशाली और प्रभावशाली होते हैं, यह प्राणोपासना का महत्व है।

प्राण शक्ति के विकास के साथ मन शान्त और सशक्त तथा बुद्धि निर्मल और धारणशक्ति की क्षमतायुक्त हो जाती है। प्राण रूप में भगवान की उपासना करने से, अर्थात् प्राणशक्ति के बढ़ाने से, मन और बुद्धि अधिकतर शान्त और उन्नत हो जाते हैं। प्राण स्वरूप भगवान जीवन होता है। प्राण का बड़ा महत्व है। प्राण शक्ति एक अद्भुत शक्ति है। मन की एकाग्रता का प्राण शक्ति पर प्रभाव पड़ता है। निश्चय शान्त मन ही सशक्त मन है। शान्त मन में ही मनन क्रिया सम्यक् रूप से होती है और मन की ठीक-ठीक क्रिया का प्रभाव अवश्य ही विज्ञानमय कोश पर भी पड़ता है। शुद्ध तत्व में ठीक ठीक समझने की और समझ हुए ज्ञान को धारण करने की शक्ति हो जाती है।

प्राण मन और बुद्धि एक दूसरे से सम्बन्धित हैं भगवान के गुणों में व्यापक प्राण भी एक गुण है। प्राणोपासना का बड़ा महत्व है। भगवान की कृपा से मनुष्य शक्तिमान होता है। और कोई ऐसा विचार संकल्प अथवा कार्य नहीं करता जिससे शक्ति के ह्रास की सम्भावना हो। प्राण तत्व के अन्दर होने के कारण हम प्राण स्वरूप परमात्मा से अति निकट सम्बन्ध है। जीवन के केन्द्र परमात्मा स्वयं प्राण के रूप में सभी प्राणियों की आरोग्यता और अभिवृद्धि में सहायक हो रहे हैं। भगवान के सारे कार्य ही जीवों के मंगल के लिए हो रहे हैं। इसी लिए हम भगवान के यश का मनन करते हैं—

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात्, पितरं च दृशेयं मातरं च। ऋ० १।२४।२

हम अमर देवों से पहिले अग्निदेव के सुन्दर नाम का, यश का, मनन करते हैं वह हमें महान स्वातन्त्र्य देता हमें सुखमय स्थिति देता है हमें अखण्डता के योग्य करता है जिससे हम माता पिता को पुनः देखते हैं।

भगवान के सुन्दर नाम का ध्यान जप और मनन करने वेद आदेश दे रहा है। सब अमर देवों में मुख्य अग्नि देव परमात्मा ही हैं जिसकी कृपा से हमें पुनः जगत में उत्पन्न होने से माता पिता का दर्शन होता है और इस प्रकार जन्म लेकर पुरुषार्थ करते हुए हम परम धाम को पहुंचते हैं। जन्म बन्धन का हेतु नहीं है। जन्म लेकर ही मनुष्य यज्ञ करता है, आध्यात्म विकास करता है मंगल कार्य करता है, और जन्म लेकर ही मनुष्य भगवान के यश का मनन करता है और इस प्रकार अपना विकास करता है और अन्य लोगों का भी उपकार करता है। मानव जन्म साधना का सुअवसर है बन्धन का हेतु नहीं। मानव जन्म मिलने में भगवान की महती कृपा है।

अदिति का भाव है बन्धन रहित स्थिति स्वतन्त्रय, स्वाधीनता, अदीनता विपुलता, सुखमय स्थिति अखण्डता कार्य करने की स्वतन्त्रता। दिति का भाव बन्धन और जड़ता का है। अदिति में देवत्व है दिति में असुरत्व है। केवल निजी ही प्राण पोषण की कामना वाले असुर होते हैं और वे दैत्य कहे जाते हैं उनके स्वार्थ के कार्य उन्हें बन्धन में डालते हैं अदिति का भाव कामना के त्याग है। हम अदिति के लिए अनागस हों।

'वयं अदितये अनागसः स्याम' ऋ० १।२४।१५। निष्पाप होने से ही हममें विपुलता आएगी पापी रहने से तो आध्यात्मिक दृष्टि से हम दरिद्री ही रहेंगे। भगवान के सुन्दर यश का मनन करने से मनुष्य समृद्ध होता है वह उदार होता है क्योंकि वह भगवान के उदारता दया न्याय आदि दिव्य गुणों का मनन करता है और उन्हें धारण करता है। भगवान के गुण का चिन्तन और मनन मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है।

परमात्मा मनुष्य की सदा सहायता करता है—

आपिर्पिता सूनवे पिता यविष्ठ आयवे, सखा सख्ये वरेण्य। ऋ० १।२६।३

जैसा पुत्र के लिये पिता सम्बन्धी के लिए सम्बन्धी सहायता करता है, वैसा शुभ मित्र के लिए तू सर्वश्रेष्ठ मित्र सब कल्याण करता है।

परमात्मा परम सुहृद है वह आत्मा का आत्मा है वह हमारे हृदय में नित्य हमारे साथ है। वह हमारा आत्मीय है हमारा सगा है। उसका हमसे निकटतम सम्बन्ध है। वह निरन्तर हमारी रक्षा और सहायता करता है। भगवान सदा हमारा मंगल ही करता है। भगवान मंगलमय है, वह कभी किसी का अमंगल करता ही नहीं। उसकी प्रेरणा सदा भद्र के लिए, कल्याण के लिए होती है।

*

ईश्वर और विज्ञान

[ले०—ब्रह्मचारी सुदर्शनसिंह "आर्य" सिद्धान्त वनीषी महीला मलीगढ़]

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
यजु० १०। १२।१२। य ३२ म० ६ ॥

जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाववाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया और जिस ईश्वर ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है और जो आकाश में सब लोकलोकान्तरों को विशेष मान युक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिये सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

विज्ञान विषयक—

विज्ञान सारथिर्यस्य मनः प्रग्रहवान्नरः।
सोऽध्वन पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम् ॥ मनु ॥

मनुस्मृति के इस प्रमाण से स्पष्ट है कि शुद्ध विज्ञान ही ईश्वर प्राप्ति का साधन है। शुद्ध विज्ञान से अपार सुख और अपार शक्ति प्राप्त होती है। शुद्ध विज्ञान वेत्ता प्रत्येक पदार्थ में प्रति क्षण ईश्वरी शक्ति का दर्शन करता रहता है। "ऋते ज्ञानान्मुक्तिः"

शुद्ध विज्ञान से रहित प्रयत्न को सार्थक मानना तथा उस में सुख शान्ति का आभास समझना निरा अनीश्वरवाद है। पदार्थ अर्थात् केवल भौतिकी में उलझा हुआ मनुष्य नास्तिक है। उसकी कभी मुक्ति नहीं। उसको कभी सुख शान्ति के दर्शन नहीं हो सकते। तात्पर्य यह है जिस विज्ञान से परम सुख का अनुभव होने लगता है उसी विज्ञान की उपर्युक्त श्लोक में स्थापना है। इसके अतिरिक्त मानने वालों को विज्ञान का सही अर्थ करना पड़ेगा कि—विगतों ज्ञानं यस्य सविज्ञानः सम्प्रति विज्ञानवादः—

क्या हम जैसे बीसवीं शताब्दी के व्यवहार व्यस्त लघुविचार प्राणी ईश्वर के बारे में तर्क कर सकते हैं? प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों के विचार से अन्धे की तरह टटोल कर चलने वाला विज्ञानवाद यदि उस प्रभु को टटोल का भी साहस करे कि जिस ने इस सारे सुन्दर जगत का निर्माण किया है जो उसे अवसर में विध्वंस भी कर सकता है, तो यह हास्यास्पद है। जो पक्षियों के कलरव में बोलता है नदी के कल कल में गाता है और आकाश के के उज्ज्वल आभास में रमता है, क्या वह तुच्छ विचार वाले मनुष्यों की तर्क एवम् कल्पना की वस्तु है? मनुष्य जो एक फूल को देख कर मुग्ध हो जाता है, कोयली की मधुर तान पर कंठ पोट वाला है। महकती हुई मञ्जरियों से लदी हुई वायु के झकोरों से लहलहाती हुई आम्र वृक्ष की सुमनोहर अद्भुत शाखाओं पर स्थित कोकिल की मधुर कूक से प्रफुल्लित तथा कमलों पर मंडराते हुए भ्रमरों की गुंजार से एवम् स्वच्छ जलाशय में किलोल करतेहुये मरालादि के आकाश भेदी शब्दों से परमात्मा की कारीगरी की अद्भुत विचित्रता पूर्ण रूप से प्रकट होती है। नास्तिक जगत निर्माण कर्ता की कारीगरी का क्या पार पा सकता है? उसे तो सब कुछ त्यागकर ईश्वर भक्ति में लगना अनिवार्य है। जो उसकी आत्मा को तृप्ति शान्ति धैर्य, पवित्रता और जीवन प्रदान करेगी। दुर्भाग्यवश इधर-उधर अकर्तव्य कार्यों में फंसकर ईश्वर भक्ति को नितान्त ही भुला दिया? जो नास्तिक जगत् का नितान्त ही चिन्तनीय विषय है।

विचार-विमर्श

ईश्वर की ओर से विज्ञान वादियों को चेतावनी—

इंग्लैण्ड का सबसे बड़ा जहाज टाईटैनिक जिसके बनाने में कई वर्ष लगे थे और १० अप्रैल सन १९१२ ई० को साउथ हैम्पटन बन्दरगाह से २३५९ यात्रियों को लेकर अमरीका चला? यह जहाज संसार का सबसे बड़ा समझा जाता था, बनाने वालों और विज्ञानवेत्ताओं को यह गर्व था कि संसार की कोई शक्ति उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। वही जहाज एटलांटिक महासागर में केवल तीन दिन ही चलने पाया था कि एक बर्फ की मामूली चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो गया। उस समय अनीश्वरवादी विज्ञान वेत्ताओं की आंखें खुलीं और उन्होंने जाना कि हमारी शक्ति से परे और भी कोई अवश्य शक्ति काम कर रही है। कवि ने उस समय ठीक ही लिखा था कि—

टटिनिक टुकड़ा हुआ,
इतरा के [illegible] गर्व से।
बन गया [illegible] योरुप का,
[illegible] से।

इसी प्रकार इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन सामने रखा। एक बड़ा हवाई जहाज बनाकर तैयार किया था। यह भी उस समय का बड़ा ही जहाज था। विश्वास किया जा सकता था कि संसार की कोई शक्ति उसका बाल बाका नहीं कर सकती थी। ८० मनुष्यों के बैठने का स्थान भोजनालय स्नानागार वाचनालय आदि समस्त साधन पृथक पृथक् एक एक मनुष्य के लिये थे। अक्टूबर सन १९३० ई० को इंग्लैण्ड के ५० बड़े बड़े वैज्ञानिक वायुयान विशारद उसमें बैठकर भारत की ओर चल दिये, केवल पहिले ही दिन फ्रांस में उड़ते हुए उसमें एक साथ आग लग गई केवल तीन को छोड़कर अन्य सब जल मरे। मानों ईश्वर की ओर से दूसरी चेतावनी दी गई? ऐ ईश्वर विरोधि वैज्ञानिकों! तुम्हारे ऊपर भी कोई शक्ति काम कर रही है, जो तुम्हारे अधिकार से परे है। इस उक्त जहाज में लगभग ९० हजार पौण्ड रुपया इसके बनाने में व्यय किया गया था।

कवि के आदर्श विचार—

नास्तिको वैज्ञानिको
देखो अनुपम शक्ति को।
विज्ञान केवल कुछ नहीं,
धारण करो प्रभु भक्ति को ॥१
भूलता जाता है योरुप,
आसमानी बाप को।
बस खुदा समझा है उसने,
बर्फ और भाप को ॥२
बर्फ गिर जायगी एक दिन,
और उड़ जायगी भाप।
देखना प्यारो बचाए रहना,
अपने आप को ॥३

इन घटनाओं के पश्चात् योरुप वालों वैज्ञानिक प्लेटो के शब्दों को मानने लगे हैं कि सर्व सांसारिक सत्ताओं के परे और दृश्य जगत् के समस्त नियमों, विचारों और सिद्धान्तों के परे एक चेतन सत्ता अवश्य है, जो पथ-प्रदर्शन कराती है?

योरोपीय विचार विनिमय धर्म्म और विज्ञान

इन दोनों के सम्बन्ध में प्रोफेसर मलकेने अपनी पुस्तक में दोनों पर विचार करते हुए लिखा है कि 'सच्चा विज्ञान और सच्चा धर्म्म जुड़वा-बहनें हैं। उनको एक दूसरे से पृथक् करना नाश का कारण है। अगस्त १९[illegible]० ई० को इंग्लैण्ड में एक विज्ञान सप्ताह मनाया गया था जिसमें बहुत बड़े-बड़े वैज्ञानिकों के व्याख्यान केवल धर्म और विज्ञान पर रखे गये थे। सबने विज्ञान के सिद्धान्तों के लिए ईश्वर सत्ता को माना। प्रोफेसर थामसन ने अन्त में जो परिणाम निकाला वह बड़ा महत्वपूर्ण है। वह कहता है कि धर्म और विज्ञान दोनों के परस्पर योग से ही विश्व का कार्य चलता है। क्योंकि वर्तमान समय में प्रचलित लगभग सभी मतों में यह तीन बातें मुख्य हैं। यथा—(१) ईश्वर, (२) जीवन की अमरता, (३) मनुष्यों में दया प्रदि गुणों की महत्ता। इसी तरह अब तक विज्ञान के निश्चित नियम यह हैं कि—

प्रकृति का अविनाशत्व, रसायन तत्वों की विशेषता, शक्ति की नित्यता आदि। इस प्रकार "धर्म" और "विज्ञान" इन सचाइयों में परस्पर विरोध कहाँ? दोनों के सिद्धान्त मिलकर मनुष्य जाति का कल्याण करने वाले मुख्य विचार यह हैं जिसमें उपरोक्त सब सिद्धान्त पाये जाते हैं।

हम गहरी दृष्टि से अवलोकन करें कि जिसमें ईश्वर की सत्ता, जीव की अमरता, प्रकृति का अविनाशत्व, शक्ति की नित्यता, मनुष्यों में दया आदि गुण पाये जाते हैं। वह तो हमारा "वैदिक धर्म ही है।" जिसका समर्थन योरुप के बड़े-बड़े वैज्ञानिक कर रहे हैं। वास्तव में वैज्ञानिक समुदाय अपने पर भारी अभिमान करने वाला, पश्चिमी वायुमंडल के संसर्ग से सत्पथ को त्याग कर असत्पथ पर आरूढ़ हो अपना अस्तित्व खो बैठा: शास्त्रों का कथन भी है कि "सत्यमेव जयते नानृतम्" तात्पर्य यह है मुख्य सिद्धान्त सच ई के साथ है।

हिन्दी के कवि ने भी अच्छा प्रकाश डाला है—

सचाई छिप नहीं सकती,
बनावट के उसूलों से।
खुशबू आ नहीं सकती कभी,
कागज के फूलों से ॥

ईश्वर भक्त ऊँचा प्रकाश डाल रहा है—

नहिं शोले मनका न गे अर्श से नाफिल।
करता हर दम है यो [illegible] सुराई करता।

[illegible] निरर्थक है (वेदान्त), प्रारम्भ में कहा [illegible] ईश्वर [illegible] पार्थनोपासना के द्वारा ही [illegible] आत्मा के प्रयोग [illegible]। अमल करने से उपर्युक्त तीनों ही [illegible] परिपूर्ण हो जाते हैं।

(पृष्ठ ८ का शेष)

तब उनमें न आचार्य का अर्थ होगा कि जो ज्ञान विज्ञान का पूर्ण ज्ञाता व उपदेष्टा हो और सद्गुण विशिष्ट आचरण युक्त स्तुत्य प्रशंसनीय हो। सारांश यह कि जो पूर्ण विद्वान हो और जिसमें उपदेश करने तथा पढ़ाने की क्षमता हो। जो इन गुणों से युक्त शिष्यों के लिये आकर्षक हो। ऐसे गुण युक्त आचार्य शिक्षक को ही गर्भधाम कहा जाता है।

'गुणात्युपविशति वेद शास्त्र, विद्याम् आचारज्ञश्च य स गुरु। आचार्य पिता वा'। अर्थात् जो वेदशास्त्र का उपदेश देने में और विद्या पढ़ाने में कुशल तत्पर हो उसे आचार्य तथा पिता कहते हैं।

उदरे बिभर्त्ति

आचार्य अपने उदर में ब्रह्मचारी को रख कर उसका भरण पोषण करे—

उदर शब्द का अर्थ—

'उदि दृणातेरलचौ० पूर्वं पदान्तस्य लोपश्च'। उणादि ५।१९

उद दृणाति येनान्नमिति उदरम्। कुक्षि स्थान वा।

जो अन्नादि को दलन करके सार तत्व को ग्रहण और निःसार को पृथक कर दे, उसे उदर कहते हैं।

जैसे मनुष्यादि प्राणियो के उदर में जाकर अन्नादि पदार्थों का विदलन सम्पन्न होकर उनके इस सार तत्व का ग्रहण और निःसार का मल-मूत्र के रूप में परित्याग होता है।

आचार्य का उदर क्या है ?

इसी प्रकार आचार्य का आश्रम ही उसका उदर स्थानी है जिसमें रहने वाले ब्रह्मचारी की शारीरिक मानसिक, बौद्धिक आदि प्रत्येक प्रकार की दुर्बलता एवं दोषों को विदूर होकर उत्तर बल बुद्धि विद्या ज्ञान विज्ञान आदि गुण रूप रत्नों की प्राप्ति होती है। अतः वैदिक परिभाषा से यौगिक अर्थ में यहां उदर शब्द से आचार्य का आश्रम ही उसका उदर होता है। इस आश्रम रूपी उदर मे ब्रह्मचारी कितने दिनों को कब तक रखा जा सकता है ? एतदर्थ मन्त्र में कहा गया है कि आचार्य उसे तीन रात्रि तक ही अपने उदर-आश्रम में रखे।

रात्रि शब्द का शब्दार्थ क्या है ?

'राज्ञ विस्था त्रप्' उणादि ४।६७

रमन्ते छिनत्ति-इतरात्रि हस्त्रो वा राति ददाति सुखमिति रात्रि।

अर्थात जो सुख देने वाली हो उसे रात्रि कहते हैं। ऐसी रात्रि जो संख्या में भी तीन ही हों और सुख देने वाली भी हों क्या है ?

यहां रात्रि शब्द से विद्या का ग्रहण है। विद्यार्थी ब्रह्मचारी आचार्य के पास विद्याऽध्ययनार्थ जाता है और मूल में विद्यायें तीन ही प्रकार की हैं क्योंकि यह सारा संसार ईश्वर, जीव, प्रकृति के सम्मिश्रण से ही बना हुआ है। जगत् मे मूल पदार्थ ईश्वर, जीव, प्रकृति ये तीन ही हैं, जो अनादि अनन्त हैं। इन तीनों को समझना ही जगत को समझना है। क्योंकि ईश्वर जीव प्रकृति विषयक ज्ञान विद्या भी तीन ही प्रकार की हैं। विद्यार्थी गुरु के पास जाकर उसके आश्रम रूपी उदर में इन तीन प्रकार की विद्याओं की प्राप्ति तक अवश्य ही निवास करे। इन त्रिविध-विद्या रूपी रात्रियों के निवास से ही शिष्य पूर्ण विद्वान् होके विद्याव्रत स्नातक बनकर आचार्य के उदर-आश्रम से बाहर निकलता है।

तब उस पूर्ण विद्वान के दर्शनार्थ उसके विविध ज्ञानादि की परीक्षार्थ भी अन्य विद्वान आते हैं और दीक्षान्त संस्कार समारोह में सम्मिलित होते हैं।

निरुक्त में कहा है कि—

'विद्वांसो हि देवाः' विद्वानों को ही देव कहते हैं।

इस मन्त्र में आचार्य के गुणों के साथ यह भी बताया है कि विद्यार्थी विद्या की समाप्ति तक आचार्य के अनुशासन में ऐसे ही नियमबद्ध सदैव बना रहे जैसे कि गर्भवती माता के उदर में उसका बालक रहता है।

तीन रात्रि तक रहे अर्थात ईश्वर, जीव प्रकृति विषयक त्रिविधात्मक सम्पूर्ण विद्याओं की प्राप्ति तक रहे। इन रात्रियों को दूसरे प्रकार से यों भी कहा जाता है कि विद्यार्थी को गुरुकुलों में प्रातः सवन माध्यन्दिन सवन और सायं सवन ब्रह्मचर्य आश्रम के इन तीन सवनों तक रहकर वसु रुद्र, आदित्य उपाधि की प्राप्ति तक रहना चाहिये। इस प्रकार त्रिविद्या तीन सवन, तीन उपाधियों में ज्ञान कर्म, उपासना की पूर्ण सिद्धि तक ही रहना चाहिये।

इसके अतिरिक्त यदि यहां रात्रि से सूर्याभाव के १२ घण्टात्मक अन्धकार-मय समय का ही ग्रहण किया जायेगा तो अर्थ की सुसंगति नहीं लग सकती।

हां ! यदि रात्रि शब्द का अर्थ अन्धकार ही लिया जाये तो तब भी अर्थ यही होगा कि विद्यार्थी ब्रह्मचारी को गुरु के आश्रम में तब तक रह कर पढ़ते रहना चाहिये जब तक कि उसके मन मस्तिष्क में आध्यात्मिक आधि-भौतिक तथा आधिदैविक त्रिविधात्मक अज्ञान की अन्धेरी रात्रियां बनी हुई हैं। सारांश यह कि इन अज्ञानान्धकार की तीनों रात्रियों को समाप्त करके वेद ज्ञान के सूर्य के पूर्णतया उदय होने पर ही शिष्य ब्रह्मचारी आचार्य के आश्रम-रूपी उदर से बाहर निकल आवे। इस प्रकार इस वेद मन्त्र में आचार्य शिक्षक की उच्चतम आकर्षक योग्यता, शिष्य का नियमबद्ध अनुशासन में रह कर पूर्ण विद्वान होना और आचार्य के आश्रम में ब्रह्मचारियों के जीवन रक्षा एवं शिक्षा साधन आदि सब साधनों की उपस्थिति होवे आदि का उत्तम चित्र-चित्रित है।

इसी प्रकार अश्वमेध गोमेध, अजमेध, यज्ञों में पशुवध देवासुर संग्राम आदि अनेकश विषयों के आलंकारात्मक मन्त्रों के यौगिक—यौगिक प्रकरणानुसार उत्तमार्थ करने का सन्मार्ग जिस ऋषि दयानन्द ने हमें प्रदर्शित कर मानव समाज और वैदिक धर्म का उद्धार किया है।

तथा विज्ञान की उत्पत्ति भी इसी से होती है।

स्तुति प्रार्थनोपासना की साधना के पश्चात जिस विज्ञान का दिग्दर्शन होता है, प्रारम्भ में कहे हुए श्लोक के मनु जी ने स्पष्ट कर दिया है अर्थात विज्ञान सात्विक को कार्य करना है परन्तु उस सत्य से बंधा हुआ जीव स्तुति प्रार्थनोपासना का सिद्ध हो। तभी परमपद की प्राप्ति सम्भव है।

★

क्या आर्यसमाज चुनौती को स्वीकार करेगा ?

[ले०—श्री कृष्णदत्त १०१९ नारायणगुडा हैदराबाद]

विशाखापट्टनम में अप्रैल १९६६ के दूसरे सप्ताह में आन्ध्र प्रदेश के ईसाइयों का नवम सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में डा० स्टेन्ली जोन्स ने भी भाषण दिया। डा० स्टेन्ली जोन्स बहुत ही अनुभवी, सुलझे हुए मस्तिष्क वाले और भावी व्यक्ति हैं। जीवन भर उन्होंने सेवा कार्य किया है। उन्होंने अपने भाषण में जो विचार प्रकट किये, वह एक तरह से सेवाकार्य में रत देश की सभी संस्थाओं को एक चुनौती है। दक्कन क्रानिकल हैदराबाद के १८ अप्रैल १९६६ के अंक में उनके भाषण की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। उस विवरण के निम्न भाग पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

He said that the christian church had the best service Organisation and as such one should be thankfut to the Almighty that there were only critics and no competitors

इसका आशय यह है कि ईसाई चर्च सेवा का सर्वोत्तम संगठन है। भगवान का धन्यवाद है कि हमारे आलोचक बहुत से हैं, हमारा कोई प्रतिस्पर्धी नहीं है। आगे चलकर उन्होंने जो कहा वह उनके कथन और विश्वास की बात रहकर भी आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं के लिए एक चुनौती है।

One should consider it as privilege to serve the destitute and the sick It was in christianity alone that man sought for God in the material world,

तात्पर्य यह कि निराश्रय और रोगियों की सेवा करना यह किसी के लिए भी सौभाग्य की बात है। इस भौतिक संसार में केवल ईसाइयत के द्वारा ही मनुष्य को भगवान की प्राप्ति की इच्छा हो रही है।

डा० जोन्स ने सेवा और भक्ति दोनों क्षेत्रों में ईसाई चर्च को सर्वोत्तम बतलाया है। इस समय भारत में बहुत से संगठन हैं, जो जन सेवा और आध्यात्मिक प्रचार में लगे हुए हैं। रामकृष्ण मठ, सनातन धर्म सभा, आर्य समाज आदि अनेक ऐसी संस्थाएं हैं जो धार्मिक प्रचार के साथ साथ शिक्षा और सार्वजनिक सेवा के अन्य कार्यों में लगी हुई हैं। ऐसी भी संस्थाएं हैं, जो केवल आध्यात्मिक प्रचार करती हैं और कुछ ऐसी संस्थाएं भी हैं, जो केवल सेवा या रिलीफ का कार्य कर रही हैं। किन्तु डा० जोन्स ने यह दावा किया है कि सेवाकार्य में ईसाई संगठन सर्वोपरि है। औषधालयों द्वारा रोगियों की चिकित्सा निराश्रय बालकों के लिए अनाथालय अशिक्षितों के लिए शिक्षण संस्थाओं को चलाना इत्यादि स्थायी सेवा कार्य के अन्तर्गत आते हैं। बाढ़, अकाल भूचाल आदि अवसरों पर सामयिक या अस्थायी सेवाकार्य होता है।

इस दृष्टि से आर्य समाज ने शिक्षा क्षेत्र में जो कार्य किया है वह प्रशंसनीय है। यद्यपि देश विभाजन के कारण आर्य समाज के इस कार्य को बहुत धक्का पहुंचा है। किन्तु आर्य समाज के शिक्षा कार्य का प्रसार देश के सभी भागों में समान रूप से नहीं हुआ है। अन्य प्रदेशों में पर्वतों और आबादी से दूर रहने वाले लोगों में, समुद्र तट पर बसे हुए समूहों में आर्य समाज के शिक्षा केन्द्र या तो चलते नहीं और चलते हैं, तो अपेक्षाकृत बहुत कम संख्या में। ईसाइयों के शिक्षणालय आदि सम्पूर्ण देश में जाल की तरह फैले हुए हैं। इन शिक्षणालयों के साथ-साथ प्राय अनाथालय और छात्रावास भी होते हैं।

शिक्षणालयों के सम्बन्ध में एक विचारणीय बात यह है कि ईसाइयों के स्कूल और कालेजों की पढ़ाई का स्तर इतना ऊंचा है या इतना ऊंचा माना जाता है कि समाज के उच्च वर्गों के हिन्दू मुसलमान अपने बच्चे ईसाई शिक्षण संस्थाओं में ही भेजते हैं। कुछ स्थानों पर आर्य समाज ने इस परम्परा को तोड़ा है। उसने अपनी संस्था में शिक्षा के स्तर को ऊंचा करके उच्च श्रेणी के बच्चों को भी आकर्षित किया है। किन्तु सम्पूर्ण देश में आर्य समाज का ऐसी शिक्षा संस्थाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

औषधालयों और अस्पतालों की दृष्टि से सम्भवतः कोई संस्था ईसाई संस्थाओं के मुकाबले में ठहर नहीं सकती। कुछ रोगों के इलाज के लिए तो ईसाई अस्पतालों की देश व्यापी ख्याति है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बड़े बड़े डाक्टर केवल सेवा की भावना से प्रेरित होकर अस्पतालों में अपना जीवन लगा देते हैं। बहुत भागों में पर्वतीय प्रदेशों में, नगरों से दूर गांवों में सैकड़ों विदेशी डाक्टर विद्वान् धर्म प्रचारक बन जाते हैं। वहां की भाषा सीखते हैं, उसी को माध्यम बनाकर प्रचार करते हैं और धीरे-धीरे भारतीयों के मन-मस्तिष्क को विदेशियों का गुलाम बनाते हैं। भारतीयों को विचारों भावनाओं, रहन-सहन और निष्ठा में अभारतीय बनाते हैं।

सेवा और आध्यात्मिकता के प्रसार और प्रचार की आड़ में ईसाई चर्च ने ईसाई और गैर ईसाई लोगों की एक ऐसी सेना तैयार कर रहा है, जो भारतीय धर्म संस्कृति, सभ्यता भाषा आदि से घृणा करता है या उसे तुच्छ समझता है। इस समूह की सहानुभूति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विदेशों के प्रति अधिक है। विदेशी शक्तियों के हाथों में ये लोग राजनैतिक दृष्टि से भी हथियार बन जाते हैं। इनमें अपवाद हो सकते हैं। इस दिशा में नागा और मिजो प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। भारत के तटवर्ती, सीमावर्ती, वन्य और पर्वतीय प्रदेशों में ईसाई चर्च का प्रचार बहुत प्रबल है।

इन क्षेत्रों में इनकी संख्या भी बहुत तेजी से बढ़ रही है। जन संख्या में यह वृद्धि जन्म के कारण नहीं हो रही है, मुख्यरूप से धर्म परिवर्तन के परिणाम स्वरूप हो रही है। धार्मिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय दृष्टि से इसके भयानक परिणाम होंगे। उन परिणामों की कल्पना हमारे राजनैतिक नेताओं और संस्थाओं को नहीं हो सकती। क्योंकि भारत में अन्य सभी राजनैतिक संस्थाओं का नेतृत्व प्रमुख रूप से हिन्दुओं के हाथों में है। इस पृथ्वी तल पर हिन्दुओं के समान इस दिशा में धार्मिक अनुभूति शून्य अदूरदर्शी प्राणी अन्य कहीं पाये नहीं जाते इसलिये हमारी राजनैतिक संस्थाएं धर्म परिवर्तन की गम्भीरता, राष्ट्रीय दुष्परिणामों और सांस्कृतिक ह्रास को अनुभव नहीं कर सकती। आर्य समाज यदि संस्थाएं अनेक कारणों से चाहकर भी कुछ नहीं कर सकतीं।

आर्य समाज आर्थिक दृष्टि से ईसाई संगठन के मुकाबले में साधन हीन है। ईसाइयों को विदेशों से और देश में स्वयं हिन्दुओं की जेबों से तथा अप्रत्यक्ष रूप से सरकारों से बहुत सहायता मिलती है किन्तु यह आर्थिक सहायता ईसाई संगठनों को उनके कार्यों के कारण और उनके नेताओं के वैयक्तिक प्रभाव के कारण मिलती है। आर्य समाज अपने ठोस कार्य द्वारा अपने मिशन को चलाने के लिए देश से धन प्राप्त कर सकता है। आर्य समाज में एक युग ऐसा था, जब उसने ईसाई और इस्लाम के प्रचार और तबलीग का दुहरा हमला सहन नहीं किया था प्रत्युत उन आक्रमणों का मुंह मोड़कर देश में प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आज भी हमें ईसाई प्रचार का सामना उत्साह पूर्वक करना है।

हमारी वर्तमान कमजोरियों के कारण कुछ भी हों, किन्तु डा० जोन्स के इस कथन में सत्यता है कि ईसाई धर्म के आलोचक बहुत हैं इसके साथ स्पर्धा करने वाला कोई नहीं। डा० जोन्स का उपर्युक्त कथन आर्य समाज सहित देश की अन्य समाज सेवी संस्थाओं के लिए एक चुनौती है। जोन्स का कथन भारत में ही नहीं उन सभी देशों में सत्य सिद्ध हुआ है जहां जहां ईसाई धर्म का प्रचार हुआ है। अफ्रीका दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश, आस्ट्रेलिया, सिलोन इत्यादि सभी देशों में उनका प्रतिद्वन्द्वी कोई नहीं रहा। भारत में सजग रहकर भी ईसाइयत के प्रचार को रोकने की सफलता किसी ने प्राप्त नहीं की है।

डा० जोन्स की चुनौती को स्वीकार करने के लिये हमें नकारात्मक अथवा निषेधात्मक (Negative) दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिये। ईसाई पोप भारत आया है अतः हम उनका विरोध करें ईसाई प्रातः सायं नगरकीर्तन द्वारा नगर के किसी चौराहे पर ठहर कर प्रचार करते हैं अतः हमें भी उनके प्रत्युत्तर में वैसा ही करना चाहिये, किसी स्थान पर ईसाइयों ने सामूहिक धर्म परिवर्तन किया है इसलिये उनका विरोध करें और धर्मपरिवर्तन करने वालों को वापस लाने का प्रयत्न, यह नकारात्मक दृष्टिकोण है। इसका उत्साह अल्पकालिक होता है। इससे हम अपने कार्य को बढ़ा नहीं सकते। दूसरे के कार्य में किंचित अवरोध पैदा करके उन्हें अपने कार्य को अधिक जोर से प्रारम्भ करने की प्रेरणा देने का हमारा यह प्रयत्न किसी भी दशा में वांछनीय नहीं। हमारा कार्य नकारात्मक न होकर सकारात्मक या विध्यात्मक (Positive) होना चाहिए। क्या आर्य समाज डा० स्टेन्ले जोन्स की चुनौती को स्वीकार करेगा ?

*

कैंसर के नये विषाणु की खोज

पशुओं पर किये गये परीक्षणों से सफलता की आशा

[डा० सुधाकर, देहली]

केन्सर एक खतरनाक बीमारी है। यह क्यों होता है, इसके बारे में बराबर खोजें की जा रही हैं। म्युनिख के डा० एक्जेल ज्योर्मी ने जो नया अनुसंधान केन्सर के सम्बन्ध में किया है, उसके अनुसार यह मान लिया गया है कि जो केवल बाहरी प्रभाव से या सेलों के परिवर्तन से अथवा क्षति से ही केन्सर हो सकता है, बल्कि कई मामलों में विषाणुओं से या विषाणु जैसे छोटे-छोटे भागों से भी केन्सर होने का अंदेशा रहता है।

श्रोताओं के आश्चर्यपूर्ण एवं अवाक रूप में करतल ध्वनि की और तत्पश्चात् उस पर सैद्धांतिक वाद विवाद प्रारम्भ हुआ जो 'यदि व लेकिन' शब्दों के दायरे में घूमता रहा। लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि म्युनिख विश्व विद्यालय की पेथालाजिकल इन्स्टट्यूट के ३५ वर्षीय रीडर डा० एक्जेल ज्योर्मी ने जर्मन केन्सर रिसर्च एसोसिएशन के वार्षिक अधिवेशन में जो भाषण दिया, वह उस अधिवेशन का सबसे महत्वपूर्ण प्रबन्ध था जिसे उसमें भाग लेनेवाले ७०० वैज्ञानिकों ने सराहा। डा० ज्योर्मी ने अपने साथियों को वह रिपोर्ट सुनाई जिसमें मानव गाठों (ट्यमरों) की गाठ पैदा करने वाले विषाणुओं के महत्व पर प्रकाश डाला गया था। इस ताजे अनुसंधान के अनुसार यह मान लिया गया है कि न केवल बाहरी प्रभाव (किरणें आदि) या सेलों के परिवर्तन से या क्षति से ही केन्सर हो सकता है, बल्कि कई मामलों में विषाणुओं से या विषाणु जैसे छोटे छोटे भागों से भी केन्सर का अंदेशा रहता है।

तीन वर्ष पूर्व प० जर्मनी की गत कांग्रेस में भी हनोवर के तरुण रिसर्च वैज्ञानिक डा० हंस अल्बर्ट नपियर ने यह बात सामने रखी थी कि केन्सर की तलाश उसके पीछे के किसी विषाणु में की जा सकती है और इस प्रकार उसे हम एक छूत वाला रोग भी कह सकते हैं। यह सिद्धान्त परीक्षात्मक स्तर तक ही रहा और सिद्ध नहीं किया जा सका। इस बीच प० जर्मनी के विभिन्न नगरों की प्रयोगशालाओं में गाठ पैदा करने वाले विषाणुओं के बारे में पशुओं और बन्दरों पर सफल परीक्षण किये गये। इस प्रकार डा० ज्योर्मी म्युनिख के उक्त अधिवेशन में पशुओं में गाठ पैदा करने वाले विषाणुओं के चार प्रकारों की रिपोर्ट देने में समर्थ हो सके। इनमें से तीन में अणु एसिड डी० एन० एस० मौजूद हैं, जिसे हाल ही मानव शरीर के सेलों में सञ्चालित सूचना वाहक के रूप में स्वीकार किया गया है। अणु एसिड के मुख्य तत्व पीढ़ी-दर पीढ़ी चलते रहते हैं। वह शायद केन्सर के विषाणु या विषाणु के टुकड़े फैलाते हैं।

डा० ज्योर्मी ने पशुओं पर परीक्षण करके यह सिद्ध किया है कि विषाणु ल्युकेमिया के होने में एक मुख्य भूमिका अदा करता है विशेष रूप से चूहों में। एक १५ वर्षीय लड़की के ल्युकेमिया को विद्युत माइक्रोस्कोप द्वारा देखने के बाद डाक्टर इस नतीजे पर पहुंचा तो वह ठीक उसी प्रकार का था, जैसे चूहे में। दूसरे शब्दों में केन्सर के लिए रक्त में किसी को छूत जैसा रोग लग सकता है, कम से कम विषाणु जैसा। विषाणुओं में डाक्टर ने एक और छोटे भाग का पता लगाया है जिसे माइकोप्लाज्म' कहते हैं।

डा० ज्योर्मी ने खतरनाक एस बी ४० विषाणु की खोज की है, जो पहले बन्दर के गुर्दे में पाया गया। यदि यह विषाणु अन्य पशुओं में प्रविष्ट हो जाय तो इससे निश्चित रूप से केन्सर हो सकता है जिससे यह सिद्ध होता है कि केन्सर वाले विषाणु एक से दूसरे में प्रविष्ट होते हैं। लेकिन डा० ज्योर्मी ने इन परिणामों से यह मान लेने के विरुद्ध चेतावनी दी है कि मानव केन्सर गाठें भी विषाणुओं के प्रवेश से होती हैं।

●

बनवासी जनता को बलात् ईसाई बनाया जा रहा है

सारनगढ़। रामगढ़
मध्यप्रदेश २४।४।६६

श्रीयुत उमेशचन्द्र जी,
सम्पादक आर्यमित्र लखनऊ।

निवेदन है कि रामगढ़ क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचारकों की बहुत आवश्यकता है। उनका कार्य यहां पर दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। जसपुर क्षेत्र और सारनगढ़ में उनका कार्य जोरों पर चढ़ी के साथ इतना बढ़ रहा है कि अभी २९ ३ ६६ को ही करीब १००० आदिवासियों को ईसाई बनाया है। नाम वाले व जिनको ईसाई बनाया गया है वह इसका विरोध कर रहे हैं पर वो इनका नाम अपने रजिस्टर में लिख लिये हैं और कहते हैं कि ये लोग ईसाई हो गये हैं। गड़बड़ी व मारपीट के भय से अभी जो लोग वापस रामगढ़ चले गये हैं। इसी समय यदि जोर दिया गया तो उनका प्रचार रोका जा सकता है। यदि इस समय कोई कार्य न किया गया तो उन लोगों के प्रति एक प्रकार से अन्याय ही होगा।

अतः निवेदन है कि किसी प्रचारक को कुछ दिनों के लिए इस क्षेत्र में अवश्य भेजें।

रामगढ़ में आर्यसमाज की एक शाखा खुल गई है पर उसमें अभी सदस्य भी ज्यादा नहीं हैं एवं उनमें भी अभी उत्साह भरना है आगे के कार्य के लिए।

अतः आपसे निवेदन है कि इस ओर ध्यान देंगे और इसके लिए कुछ अवश्य करेंगे।

रामगढ़ के आर्यसमाज का पता—
श्री रविशंकर जी गुप्त वकील
आर्यसमाज, रामगढ़

कृपया पत्रोत्तर शीघ्र देने की कृपा करेंगे।

भवदीय—
कालीदीन चौबे
द्वारा इन्द्रजीतसिंह जी एम बी बी एस.
सिविल हास्पीटल सारनगढ़,
रामगढ़ [मध्य प्रदेश]

[सार्वदेशिक सभा देहली, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश दयानन्द मालवेशन मिशन होशियारपुर श्रद्धानन्द ट्रस्ट देहली आदिम जाति सेवा संघ देहली आर्य (हिन्दू) सेवा संघ देहली आदि संस्थाओं और धर्मप्रेमी जनों को इस पत्र पर विचार करना चाहिये और रामगढ़ क्षेत्र में ईसाई प्रचार को रोकने के लिये उपदेशक एवं रक्षक भेजने चाहिये। आशा है यह बलात धर्म परिवर्तन शीघ्र रुक सकेगा। —सम्पादक]

भूल-सुधार

आर्यमित्र दि० ८ ५ ६६ को अन्तिम पृष्ठ पर 'हिन्दी में तार' शीर्षक लेख में जहां 'यदि बीच में स्थान छोड़ा गया हो' लिखा है वहां गया हो' के स्थान पर गया न हो' पढ़ना चाहिए। प्रेस की भूल से न छपना रह गया है।

—शिवदयालु

अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध कैसे किया जाये और कौन करे?

[ले०—श्री प्रो० योगेश्वर देव एम० ए०]

प्रत्येक जाति की अपनी संस्कृति और सभ्यता होती है। यह संस्कृति और सभ्यता ही उसकी वास्तविक निधि है जिसे सुरक्षित रखने के लिये जातियां संघर्ष करती हैं, जिसके जीवित रहने से जातियां जीवित रहती हैं और जिसके नष्ट होने से जातियां नष्ट हो जाती हैं। आर्य जाति का इतिहास भी संघर्षों का इतिहास है। यह हमारे लिये अभिमान का विषय है कि समय के भीषण झंझावातों में भी इस जाति के पांव नहीं डगमगाये और इसने अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखा। इस देश पर विदेशियों ने हमले किये। आततायी आये, उन्होंने मन्दिर गिरा दिये चोटियां काट डालीं यज्ञोपवीत तोड़ डाले परन्तु इसके अन्दर निवास करने वाली आत्मा को वे नहीं छू सके। यही कारण था कि समय के प्रवाह में अन्य अनेक जातियां नष्ट हो गयीं अपनी संस्कृति और सभ्यता समाप्त कर बैठीं इस जाति को नष्ट नहीं किया जा सका। ऐसा भी समय आया जब तलवारों ने गर्दनें उतार दीं, भालों ने हृदय बेध दिये गोलियों ने शरीर को छलनी कर दिया पर इस सबसे क्या होता है? अत्याचार शरीर पर हुये आत्मा ने इसे स्वीकार नहीं किया किया, वह उसी तरह अम्लान रूप से चमकती रही। इसका मुख्य कारण यह था कि इस जाति का जीवन भौतिक न होकर आध्यात्मिक था। यहां हाड़ मांस की पूजा नहीं हुई अपितु उस के अन्दर निवास करने वाली आत्मा की हुई है। शरीर नष्ट किया जा सकता है, आत्मा नहीं।

इसी बीच एक अन्य प्रवाह आया जिसने इस जाति का रंग ही बदल दिया वह थी अंग्रेजी शिक्षा और उसके पीछे दो सौ वर्षों में जितना धक्का हमारी संस्कृति को लगा है उतना उससे पिछले हजार वर्षों में नहीं लगा। मुसलमानों के आक्रमण हुये—हो सकता है कुछ लोग हजारों की संख्या में नहीं—मुसलमान बन गए। लेकिन शेष हिन्दू हिन्दू ही रहे। उनकी विचारधारा में अन्तर नहीं आया, लेकिन इस नई शिक्षा ने हमें ऊपर से चाहे हिन्दू रहने दिया हो लेकिन आन्तरिक रूप में अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति में ढाल दिया है। हिन्दू होते हुए भी हम हिन्दू नहीं रहे। क्या हुआ छठे छमाहे कभी पंडित जी को बुलवा-कर हवन करवा लिया, सबेरे उठकर गायत्री का पाठ कर लिया, अब तो आवश्यकता भी पंडित जी की दो ही स्थानों पर पड़ती है—विवाह मण्डप में या श्मशानघाट में। अन्य बातों से हुए भी हम अपने सिद्धान्तों से अपरिचित हैं।

यह सब हुआ शिक्षा के कारण जो हमने ली है और हमें दी जा रही है। इस शिक्षा ने हम से हमारी भाषा छीन ली हमारी संस्कृति छीन ली, हमारा अपना इतिहास छीन लिया, हमारा साहित्य छीन लिया। इसने गुरु और शिष्य के बीच इतनी जबरदस्त खाई डाल दी है जो पाटे नहीं पट सकती विद्यार्थी और समाज को फाड़कर अलग कर दिया और दिया क्या? पिता की जगह 'पापा' माता की जगह 'मम्मी'। आज का नयी कट का युवक धोती के स्थान पर लंगोट लगाता है नहाने के लिये बाथरूम में। न उसे धोती तक की आवश्यकता पड़ती है न स्नानागार की। अब सुना है एक और पीढ़ी चल पड़ी है, इनके कुर्से भी

पैसों से खरीदा जा रहा है। पिछड़ी जातियों के इलाकों में अथवा उन क्षेत्रों में जहां शिक्षा का प्रचार नहीं है ईसाई मिशनरियों ने अपने अड्डे जमा रखे हैं। अशिक्षितों को शिक्षित करने के लिये बीमारों का इलाज करने के लिये, नंगों का तन ढांकने के लिये स्कूल खुले हुए हैं, हस्पताल खुले हुए हैं, और लाखों का दान दिया जा रहा है। अपने में यह बातें बुरी नहीं हैं। न शिक्षा का प्रचार करना बुरा है, न अस्पताल खोलना बुरा है, और न तन ढकने के लिये वस्त्र देना बुरा है। पर यह सब करके किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व खरीद लिया जाये तो कहां तक अच्छा है, यह विचारणीय प्रश्न है। राजनीति के क्षेत्र में जो दृष्टिकोण साम्यवादियों का है, धार्मिक क्षेत्र में वही

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन

विज्ञापन करने के लिये माध्यम बनाये जाते हैं। इस नई सभ्यता ने एक नये प्रकार के ज्ञान को जन्म दिया है। इसमें न विचार है, न रस है, न तरन्नुम। रस आये भी कैसे? जिसके ज्ञान कोष के कानों में फिल्मी गानों व सस्ती कव्वा-लियों का जमघट है, चित्रशाला में फिल्मी एक्ट्रेसों ने कब्जा कर रखा, जीभ पर मुर्ग मुसल्लम का जायका है और नाक कोमल के बालों के कीमे कबाब की गन्ध से भीगी हुई है वहां बेचारी संस्कृति और सभ्यता करे भी तो क्या करे। उनके दफ्तरों में फिल्म वालों की, घर में मागसओं की, यार दोस्तों में ताश के तीन पत्तों की, और यदि मन सा हुआ स्लीवलेस हुई तो उच्छृंखलतापूर्ण होटलों की ही बात हो तो आश्चर्य क्या?

हमारी संस्कृति पर यह हमला एक तरफ से ही नहीं हुआ अपितु दो तरफ से हुआ है सम्पन्न और समर्थ समाज तो शिक्षा के माध्यम से बदल रहा है और गरीब जनता अथवा असमर्थ समाज

दृष्टिकोण ईसाई मिशनरियों का है। गुरबत दोनों के लिये वरदान है। दोनों गरीबी में पनपते हैं। दूसरों की गरीबी से दोनों अपना उल्लू सीधा करते हैं। ईसाई मिशनरी एक हाथ से रोटी देते हैं तो दूसरे हाथ से आत्मा खरीदते हैं। अर्थात् रोटी भी दी तो सशर्त।

अब तो इन्होंने एक कदम और आगे बढ़ाया है। जो नागालैण्ड और मिजो क्षेत्रों में दृष्टिगोचर हो रहा है। इन दोनों प्रदेशों के लगभग मुख्य मुखिया ईसाई पादरियों के प्रभाव में हैं। देश जानता है कि नागालैण्ड के विद्रोही नागालोग नागालैण्ड को भारतवर्ष का हिस्सा ही नहीं मानते। उन्होंने भारत सरकार की प्रभुसत्ता को ही चुनौती दे दी है।

आसाम के बाद उड़ीसा का नम्बर आता है। उड़ीसा के कुछ इलाकों में लाखों ईसाई बना लिये गये हैं विशेष कर सुन्दरगढ़ जिले में। उड़ीसा की लगभग कुल १॥ करोड़ की आबादी है, जिसमें से ८० लाख आदिवासी हैं। सुन्दरगढ़ की ४ लाख २० हजार की आबादी में एक लाख ८१ हजार ईसाई हो चुके हैं। इस जिले में ७ मिशन हैं। और प्रत्येक मिशन के पास एक हाई स्कूल व हस्पताल है। भारतवर्ष में ईसाई प्रचार के लिये ३३ करोड़ रुपया खर्च हो रहा है। ३०० से अधिक प्रचारक रातदिन इस कार्य में जी जान से जुटे हुये हैं। इस वर्ष और भी अधिक भूखा पड़ने के कारण स्थिति अत्यन्त भयानक हो गई है। हमें सूचना मिली है कि उड़ीसा के मलाम और फुलबाड़ी जिले में हजारों लाख हरिजन ईसाई हो गये हैं।

यह उस देश की अवस्था है जिसे हम देवों का देश व ऋषिमुनियों का देश कहते हैं। अब प्रश्न यह है कि किया क्या जाये और कौन करे?

आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व भी एक बार यही प्रश्न उठा था। वह पौराणिक पाखण्ड मूर्तिपूजा, अन्धश्रद्धा का जमाना था, पण्डों का आधिपत्य था, पुजारियों का युग था। उस समय भी यही प्रश्न उठा था कि किया क्या जाय और कौन करे?

इसी प्रश्नवाचक चिन्ह में से एक दिन हिमालय की उठानों ने गंगा की रेती पर एक बाल ब्रह्मचारी संन्यासी को देखा। हजारों विरोधियों के बीच खड़े होकर उस एक और अकेले संन्यासी ने कहा—भोले लोगो, क्या तुम यह समझने में भी असमर्थ हो गये हो कि मन्दिरों और शिवालयों के ये देवी देवता जड़ हैं इन पत्थरों से तुम्हारा कोई कार्य सिद्ध होने वाला नहीं। इन बहते पानी में पाप नहीं धोये जा सकते। हृदय की मल शरीर मांजने से नहीं मन मांजने से छूटता है। अतः इन पण्डों और पुरोहितों से जितना शीघ्र हो सके पीछा छुड़ा लो। पुण्य प्राप्ति के लिये न मन्दिरों में जाने की आवश्यकता है, न तीर्थों में भटकने की।

सत्य उसकी वाणी थी, साहस उसका बल। मस्तिष्क से शान्त मन से गम्भीर, कर्मों में दृढ़, व्रतों में अजेय और आचार से पवित्र एक ओर मैं बढ़ा और दूसरे ने कम डुलिया इस ब्रह्मचारी ने ज्ञान की जो अमृत अनन्तधारा बहाई उसमें पाखण्डों के अम्बार बह गये अन्ध विश्वास के जाल टूट गये तीर्थों के भ्रम समाप्त हो गये। गंगा के पवित्र जल में स्नान कर स्वयं ऋषि मिलते या नहीं यह भले विवादास्पद हैं पर इस संन्यासी के सम्पर्क में से

(शेष पृष्ठ १५ पर)

कर्म का रहस्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

है ?—यह मान लेने पर कि शुभाशुभ कर्मानुसार फल ईश्वर देता है। एक प्रश्न यह पैदा होता है कि उसके भजन की क्या आवश्यकता है। इसका उत्तर यह है कि ईश्वर भजन से बुद्धि में सत प्रेरणायें उत्पन्न होती हैं। जिससे अन्तःकरण शुद्ध होकर ज्ञान का प्रकाश चमक उठता है जो पाप करने नहीं देता। ज्ञानाग्नि से संचित कर्म दग्ध होकर पुनर्जन्म के कारण को नष्ट कर डालते हैं। इसलिए प्रतिदिन ईश्वर की भक्ति या भजन करना आवश्यक है।

यह समझ कर भी ईश्वर भजन करना चाहिए कि यह हमारे जीवन का परम कर्तव्य है। ईश्वर का स्मरण न करना बड़ी कृतघ्नता है।

माता पिता की सेवा मनुष्य अपना कर्तव्य समझ कर करते हैं। फिर जो माता पिता का भी परम पिता है। जिसने हमें वायु जल अन्न, औषधि मकान सब तरह की सुविधायें दी हैं जो निरन्तर हम पर अकारण ही कृपा रखता है जिस कल्याणमय ईश्वर से सृष्टि के आदि में हमें वेद वाणी मिली है। जो हमारे जीवन की ज्योति है। डूबते हुए का सहारा और पथभ्रष्ट का मार्ग दर्शक है उसका स्मरण करना तो हमारा प्रथम कर्तव्य है।

हम जब माता पिता और उसके उपकार का बदला नहीं चुका पाते तब ईश्वर के उपकारों का बदला तो कैसे चुकाया जा सकता है। ईश्वर भजन को किसी भी सांसारिक वस्तु की प्राप्ति के लिए नहीं करना चाहिए परन्तु कर्तव्य समझकर अन्तःकरण की शुद्धि के लिए—काम, क्रोध, लोभ मोहादि शत्रुओं से अपनी रक्षा के लिए ईश्वर भजन प्रतिदिन करना चाहिए। और यह (मिकेमिकल) न होकर हृदय से होना चाहिए। जब तक भक्ति रस से हृदय आप्लावित न हो ईश्वर भक्ति का कोई लाभ नहीं है। मीरा और प्रह्लाद की तरह भक्ति ईश्वर की करनी चाहिए तो लाभ अवश्य होगा। सन्ध्या समाप्त हो गई और हृदय में ईश्वर भक्ति जागृत न हुई तो ऐसी सन्ध्या का करना न करना बराबर है।

★

(पृष्ठ १४ का शेष)

पचासों अध्यापक कार्य कर रहे हैं। थाईलैण्ड में हजारों भारतवासी रहते हैं इन तीनों देशों से हमारा मत्रीभाव तथा घनिष्ट सांस्कृतिक सम्बन्ध है। इसी प्रकार रूस से हमारी घनिष्ट मित्रता और सद्भाव है। इन चारों देशों में आर्य सामाजिक विचारधारा प्रचार के लिये कार्य होना ही चाहिये। क्या ऐसी योजना नहीं बन सकती कि आगामी वर्ष में इन चार देशों की राष्ट्रीय भाषा में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद का कार्य हाथ में लिया जावे।

कम से कम इतना तो अवश्य ही हो सकता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश अपने अन्तर्गत एक साहित्य प्रसार विभाग खोले जिसके द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के सब अनुवाद तथा अन्य वितरण योग्य पुस्तक एकत्रित कराई जाय। अपनी सामर्थ्यानुसार जिन प्रान्तों और देशों को साहित्य प्रसार के योग्य चुना जावे। वहां के गण्यमान्य पुरुषों और संस्थाओं की सूची आर्यमित्र में छपे और इच्छुक आर्य पुरुष तथा आर्यसमाज स्वयम वहां पुस्तकें भेजें या साहित्य प्रसार विभाग द्वारा भिजवायें। इस प्रकार के कार्य में हजारों आर्य पुरुष और लगभग सभी आर्यसमाजें प्रेरणा देने पर योगदान दे सकते हैं।

प्रचार कार्य में रत आर्यसमाज को अपने संगठन शक्ति को उत्प्रेरित करने के लिए सभा के वार्षिक अधिवेशन का समय एक सुनहरा अवसर होता है। उसका जितना भी उपयोग किया जावे थोड़ा ही है।

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन

(पृष्ठ १३ का शेष)

का न ही आगरवी में जो नहा लिया। उसे व सच्चा से अवश्य मुक्ति मिल गई। कुछ ही म ना प्राप्त कर न उसने समाज से याचना की और न सरकार से। परन्तु इमा पर अगाध विश्वास रखे हुए वह स्थिर कदमो से आगे बढ़ा। अपनी एक मात्र वाणी से उसने समाज झकोर दिया। जब वह चला था तो केवल दो कदम थे, जब वह थका गया तो उसके पीछे हजारों कदम चल पड़े जब वह पहिले पहल चला तो लोगों ने उसके मार्ग पर कांटे बिछा दिये जब वह चला था तो उसी मार्ग को लोगों ने आसुओं से भिगो दिया, जब उसने चलना आरम्भ किया तो लोगों ने पत्थरों, ढलों और जूतों से उसका स्वागत किया, जब वह थका गया तो उसने सब को लोगों ने फूलों से ढक दिया। तो फिर अब यह प्रश्न कैसे उठता है कि कैसे किया जावे और कौन करे ?

अभी पिछले दिनों मुझे उड़ीसा जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उड़ीसा एक पिछड़ा हुआ प्रान्त है। वहां की जनता गरीब है पर जनता है आदर्शो गरीब नहीं हैं। उन पर चाहे वस्त्र न हो पर हाथ में बोतल अवश्य होगी। वेसी शराब पानी तरह बहती है। बाप पीता है, मां पीती है, बच्चे पीते हैं और हर कोई पीता है। यह बात मैं उन लोगों को कह रहा हूं जो पिछड़ी जाति के लोग हैं। इसी अवसर पर पानपोश में स्थित गुरुकुल में दशानाम वेदव्यास में जाने का भी मौका मिला। सुन्दरगढ़ जिले में ईसाइयों के गढ़ में इस सांस्कृतिक केन्द्र को देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। इस छोटी सी संस्था के संचालक स्वामी ब्रह्मानन्द जी से भी परिचय हुआ। जब से मुझसे मन से जाना इस इस सन्यासी ने किस प्रकार ईसाइयों से मोर्चा लिया हुआ है—वास्तव में आश्चर्यजनक है। कहां सन्यास और कहां इसी दौड़ धूप में तीस तीस और चालीस चालीस मील साइकल पर जाना। न सर्दी की चिन्ता, न गर्मी की, न उन्हें आंधी रोक सकती है और तूफान। उन्हें तो बस एक ही चिन्ता है कि हिन्दू जनता को किस प्रकार ईसाइयों के चंगुल से बचाया जावे।

कहां तो ईसाई मिशनरियों के पास ———— के लिये जीप और मोटरसाइकिलें हैं और कहां इनकी दो पहियों वाली साइकल ! कहां तो उनके पास प्रचार के लिये स्कूल हस्पताल प्रेस इत्यादि सब प्रकार के साधन हैं और कहां इनके पास एक छोटा सी संस्था ? कहां उनकी पीठ पर ३३ करोड़ रुपये का चलो है है और कहां इस सन्यासी की एक मात्र भिक्षा की झोली।

मैंने उनसे पूछा कि आपने विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये गुरुकुल क्यों खोला है ?

उन्होंने उत्तर दिया—मैं चाहता हूं कि इसमें से ऐसे प्रचारक निकलें जो वैदिक संस्कृति मे रंगे हुए हों। आप जानते हैं उड़ीसा एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है। वहां ऐसे पढ़ लिखे व्यक्ति नहीं मिलते जो इस कार्य को कर सकें। पंजाब या उत्तर प्रदेश से आये हुये व्यक्ति पढ़ लिख कर इस कार्य को आगे बढ़ायें। उन्होंने बड़े सरलभाव से कहा—मैं तो बीज बो रहा हूं और यही अंकुर फूट कर एक दिन आर्य समाज के महावृक्ष बन जायेंगे। सच पूछा जावे तो मेरी इच्छा है कि उड़ीसा के चारों कोनों पर ऐसी संस्थायें बना दूं जो ईसाइयों की इस बाढ़ को रोक सकें।

वहां के बच्चों को दिखाते हुए उन्होंने कहा—ये देखिये गुरुकुल के इन २५ आदिवासी छात्रों में से कितने ही ऐसे हैं जिनके मां-बाप ईसाई बन चुके हैं। मैंने उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया और उनसे इन बच्चों को शिक्षा के तौर पर मांग कर लाया हूं। इन्हें रहने के लिये, स्थान, पहिनने के लिये वस्त्र, खाने के लिये भोजन और पढ़ने के लिये पुस्तकें—ये सब मुझे ही देना है। १२००० से अधिक व्यक्तियों को ईसाइयों के चंगुल से छुड़ा कर पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया जा चुका है।

मैंने प्रश्न किया कि इसके लिये इतना रुपया कहां से आता है ?

उन्होंने हंसते हुए कहा—कहां से आता है, आप लोगों के सहयोग से आता है। पर यह सब बहुत ही अपर्याप्त है। इतने बड़े कार्य को इस राशि से नहीं चलाया जा सकता। सच पूछा जावे तो आर्य समाज को इस तरफ जितना ध्यान देना चाहिये उतना नहीं दे रहा। शायद वह परिस्थिति की गम्भीरता को नहीं समझ रहा। फिर कुछ सचेतन होकर जैसे किसी ने अन्दर से ललकार दी हो बोले—यदि मैं धन की तरफ से निश्चिन्त हो जाऊं और मुझे भ्रमण के लिये साधन तथा अन्य सुविधा मिल जावे, कुछ प्रचारक तैयार हो जावें तो मैं वर्षों के इस इलाके को कुछ ही वर्षों में बदल कर दूं ईसाई बने लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में ले आऊं। आखिर ये हैं तो हमारे ही अंग। अरे इन्हीं वसुन्धरा से हो तो ये पुत्र हैं जिसके आप और हम हैं। इसी का अन्न खाकर ये बड़े हुए हैं जिसका अन्न खाकर हम बड़े हुए हैं।

इस विषय में क्या कभी ईसाइयों से आपका वार्तालाप हुआ मैंने प्रश्न किया ?

हां कितनी बार। पर वे हमें देख कर खुश नहीं हैं। हमारे विरुद्ध कितने ही मुकदमे किये गये। अभी हमारी संस्था के पास ही अपना मिशन बनाने का उन्होंने प्रयत्न किया जो कि हर समय के झगड़े की जड़ बन जाता है। लाचार कचहरियों की और सरकार की शरण जाना पड़ा। अब फैसला हो गया है कि वे नहीं बना सकते। झगड़ा तो वे चाहते ही हैं अपनी चोटें दिखाते हुए उन्होंने कहा—ये देखिये यह उन्हीं का दिया हुआ प्रमाण है। पर इन चोटों से मैं डरने वाला नहीं हूं।

इसके पश्चात श्रद्धा से नत मुख और दुख की अनुभूतियों से मिश्रित मैंने स्वामी जी से विदाई ली और मैं सोचने लगा—कितने हैं ऐसे लोग जिन्हें अपनी जाति, संस्कृति और सभ्यता का ख्याल हो। और कितने हैं ऐसे जिन्होंने अपने को इस कार्य के लिये न्योछावर कर दिया हो।

अब सुना गया है कि रात और दिन के अथक परिश्रम के कारण स्वामी जी गम्भीर रूप से बीमार हो गये हैं। डाक्टरों ने उनके पूर्ण रूप से चार, पांच महीने के लिए विश्राम करने के लिए कहा है। वे महान अर्थाभाव के संकट में पड़े हुये हैं। न संस्था के चलाने के लिये पैसा है और उपचार के लिये। उत्कल प्रदेश (उड़ीसा) की यह धुरी यदि कदाचित टूट गयी और स्वामी जी अर्थाभाव के कारण इस कार्य को न हटा न इनका उपचार न हो सका आज मसरू म ... या अ ... ... प्रमाण या वह भी ... मुख जायगा।

भारतीय संस्कृति किसी एक व्यक्ति व वर्ग की सम्पत्ति नहीं है कह इस धारा पर जन्म लेने वाले इस संस्कृति में विश्वास रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति की अमूल्य धरोहर है। आने वाली सन्तति ने इसी से प्रेरणा प्राप्त करनी है। संकट की इस घड़ी में प्रत्येक आर्य समाज का और प्रत्येक आर्य का यह फर्ज है कि वह इस उत्तरदायित्व को अनुभव करें।

मुझे विश्वास है कि यदि प्रत्येक आर्य समाज १० रु० प्रति मास भी भेजना निश्चित कर ले और सार्वदेशिक सभा व अन्य संस्थायें मिल कर कार्य को सम्भाल लें तो उड़ीसा में ईसाई मिशनरियों द्वारा किया जाने वाला विषैला प्रचार न केवल रुक जायगा अपितु लाखों व्यक्ति पुनः आर्य धर्म में आ जायेंगे। आर्य समाज की संस्थायें सरकार के बल पर नहीं चलीं आर्य समाज के बल पर चली हैं। इस समय प्रत्येक आर्य व आर्य समाज अपने फर्ज का अनुभव करे और बिना किसी की प्रतीक्षा किये इस महायज्ञ मे अपना हिस्सा बटाये और उस सांस्कृतिक प्रदीप की लौ को बुझने न दें जिस ज्योति को प्रज्वलित करने के लिए इस संस्था का संस्थापक महर्षि न अपमान देख कर पीछे हटा न सम्मान देख कर लालायित हुआ न उसने तलवार के भय से गर्दन झुकाई और न विष दे कर मारा।

स्वामी जी का पता—

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी
गुरुकुल वैदिक आश्रम पान पोश
पो० राउर जिला सुन्दर गढ़ (उड़ीसा)

लखनऊ–रविवार ज्येष्ठ १ शक १८८८, ज्येष्ठ शु० २ वि० २०२३, दिनांक २२ मई सन १९६६ ई०

आर्यसमाजों के प्रतिनिधि गण–

सभा के बृहदधिवेशन पर देहरादून अवश्य पहुँचें!

उत्तर प्रदेश भारत का सीमान्त राज्य है, सीमान्त की सुरक्षा, अराष्ट्रीय ईसाई पादरियों के कुप्रचार एवं अविकसित पर्वतीय क्षेत्र की समस्याओं पर आर्यजन गम्भीरतापूर्वक विचार करें

भारत विशेषकर उत्तरप्रदेश के सामाजिक जीवन में सर्वव्याप्त विदेशी सांस्कृतिक अन्धानुकरण, नागरिक जीवन में नैतिक मूल्यों का ह्रास और सब दिशाओं से आधुनिकता के नाम पर पाश्चात्य भावना के उमड़ते कृष्ण मेघों भारतीय भावना की रक्षा कैसे हो कौन करे इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा एक दो नहीं उत्तरप्रदेश की १३०० आर्यसमाजों की प्रतिनिधि संस्था है। जहां उसका क्षेत्र बढ़ रहा है दायित्व बढ़ रहा है, इस दायित्व की पूर्ति सबके सम्मिलित सहयोग से ही सम्भव होती रही है और आगे भी हो सकेगी। अधिवेशन काल तक जिन पर दायित्व रहा उनकी हमें प्रशंसा करनी चाहिये कि वे सभा को आगे बढ़ाने में सफल रहे, परन्तु साथ ही विशेष दायित्व नवीन प्रतिनिधियों को पूरा करना है। जिस उत्साह के साथ और जितनी संख्या में प्रतिनिधि अधिवेशन में पहुंचेंगे उतनी ही सभा आगे बढ़ेगी। यदि हम चाहते हैं कि आर्यसमाज का कार्य आगे बढ़े तो उसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर से त्याग का परिचय देना होगा। आर्यसमाज की सेवा को जो लोग आराम के साथ करना चाहते हैं वे आर्यसमाज की कार्यप्रणाली या भावना को नहीं समझ पाते, आर्य के जीवन में अकर्मण्यता आ ही नहीं सकती फिर आर्यों का समूह शिथिल क्यों रहे। इसलिए अपनी आवश्यकता एवं सक्रियता का परिचय देने के लिए समवेत हूजिये सब लोग मिलकर आगामी कार्यक्रम पर विचार करें आर्यसमाज जन्म शताब्दी के लिये योजना लक्ष्य निर्धारित करें और उसकी पूर्ति में संलग्न होने का संकल्प लें।

देहरादून आर्यसमाज ने सभा के बृहदधिवेशन का निमन्त्रण देकर आपके स्वागत का निश्चय किया है इसलिए प्रतिनिधि अधिकाधिक संख्या में देहरादून पहुंचें और अधिवेशन को सफल बनायें

बृहदधिवेशन की तिथियाँ— ११, १२ जून १९६६ स्मरण रक्खें

वेदामृत

ओ३म् त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥

भावार्थ–(उक्त) अमृतरूप तीन पाद वाला पूर्ण परमेश्वर इससे भी ऊर्ध्व होता हुआ व्याप्त हो रहा है तथा यहां (जगद्रूप) इसका एक पाद पुनः पुनः उत्पन्न होता रहता है एवं उससे भिन्न वह जड़ चेतन जगत के प्रति भलीभांति व्याप्त हो रहा है।

विषय-सूची

वार्षिक ८)
छःमाही ५)
विदेश १ पौं.

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक १९
एक प्रति २० पै०

कामराज ने पंजाबी सूबा उत्तर भारत को टुकड़े २ करने के लिए बनाया

लोकसभा में श्री प्रकाशवीर शास्त्री की गर्जना

१९६१ की जनगणना स्वीकार नहीं तो १९७१ की प्रतीक्षा की जाये

नई दिल्ली लोकसभा में पंजाब के पुनर्गठन के विषय में गृहमंत्री श्री नन्दा की ओर से १८ अप्रैल को दिये गये बयान पर अधूरी बहस हुई। यह बहस श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री हुकमचन्द कछवाया और श्री यशपालसिंह के प्रस्ताव पर हुई।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा कि भाषा के आधार पर राज्य बनाकर सर-

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी०

कार ने देश के टुकड़ टुकड़े करने का बीज बो दिया है। आवश्यकता इस बात की है कि देश को चार या ५ बड़ी इकाइयों में बांट दिया जाये। आपने पंजाबी सूबा की मांग को साम्प्रदायिक ठहराया। आपने कहा सम्भव है पंजाब के बटवारा से कामराज नादर को सन्तोष हो गया हो क्योंकि वह उत्तर भारत के टुकड़ २ करके उसकी राजनैतिक शक्ति को घटाना चाहते हैं।

पाकिस्तान बनने के बाद पंजाब वैसे ही दोआब रह गया है। रावी, जेहलम और चिनाब तो पाकिस्तान में चली गई। इधर तो केवल सतलज और व्यास ही रह गई थीं। पर अभागे पंजाब को अभी और एक बटवारे का घाव लगना बाकी था। यह यहां किसी को पता नहीं था। भारत सरकार ने पंजाबी सूबा न देकर यहां दिल्ली की नाक के नीचे एक दूसरा नागालैंड खड़ा कर दिया यहां अकालियों के चक्कर में आकर हिन्दू और सिखों के बीच कड़वाहट का एक ऐसा बीज बो दिया है जिसे अभी यदि सावधानी से न समाप्त किया गया तो पता नहीं आगे इस वृक्ष में से कैसी शाखा प्रशाखायें फूटें।

मैं प्रारम्भ से ही सिखों को हिन्दुओं से पृथक नहीं मानता। दोनों एक बाप दादों की औलाद हैं और दोनों की नसों में एक ही खून है। अकाली जो सिखों से पृथक हिन्दुओं को कहते हैं उनके सब सब सिख नहीं हैं और न ही पंजाब के विभाजन का दोष सारे सिखों पर रखा जा सकता है। नामधारी सिख मजहबी रंगरेटिये और जो अब कैरों राज के डर से बदल गये कल तक वह कामरेड जो पंजाब के विभाजन के विरुद्ध थे। पंजाबी सूबे की यह मांग सबसे पहले १९४२ मे उठी जब क्रिप्स मिशन भारत में आया था। उस समय के कुछ अकाली नेताओं ने सोचा कि जब मुसलमान पर पाकिस्तान हो सकता है तब सिख नाम पर सिक्खिस्तान क्यों नहीं हो सकता? उसके बाद १९४५ की शिमला कान्फ्रेंस में मास्टर तारासिंह ने कहा कि यदि सिखों को सिख राज्य मान लें तो हम पाकिस्तान मान लेंगे। हम लोग भी पाकिस्तान की उनकी मांग को स्वीकार कर लेंगे। ब्रिटिश कैबिनेट मिशन के सामने १९४६ में भी इस तरह की मांग उनकी ओर से आई। इस तरह से यह साम्प्रदायिक मांग कभी सिक्खिस्तान कभी खालिस्तान, कभी आजाद पंजाब के रूप में और अब पंजाबी सूबा के नाम से उठी है। सन् १९४७ में जब देश का बटवारा हो गया तो फिर मास्टर तारासिंह ने एक नया नारा लगाया कि हिन्दुओं को हिन्दुस्तान मिल गया और मुसलमानों को पाकिस्तान मिल गया पर हमें क्या मिला? देश के बटवारे का घाव इतना गहरा था जो किसी का ध्यान उस समय उधर नहीं गया। लेकिन बाद में फिर जब पानी सिर को लांघने लगा तो सरदार पटेल ने मास्टर तारासिंह को जेल में भेज दिया। सन् १९४८ में जब पंजाब विश्वविद्यालय का लाहौर से उजड़ कर पंजाब यूनिवर्सिटी का दीक्षान्त जलसा आया तो पहला दीक्षान्त भाषण देने के लिए सरदार पटेल यहां पर गये। उनके जिस भाषण को भारत सरकार ने पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया है उसमें सरदार पटेल ने कहा कि मैंने मास्टर तारासिंह को क्यों जेल में डाला? सरदार कहने लगे कि देश के विभाजन का सबसे गहरा घाव पंजाब को लगा है। मैं उस घाव को मरहम लगाकर भरना चाहता हूं लेकिन मास्टर तारासिंह और उनके साथी बार बार ठोकर मारकर उस घाव से खून निकाल रहे हैं इसीलिए मजबूर होकर मुझे मास्टर तारासिंह को जेल में भेजना पड़ा। लेकिन सरदार पटेल ने अपने भाषण में यह भी कहा कि मेरी गद्दी पर जो भी आकर बैठेगा उसको इसी प्रकार के कदम इस तरह के लोगों के सम्बन्ध में उठाने पड़ेंगे। दुःख है कि सरदार पटेल के बाद जिस गद्दी पर श्री गोविन्द वल्लभ पन्त श्री लालबहादुर शास्त्री जैसे व्यक्ति बैठे थे आज उस गद्दी पर श्री गुलजारीलाल नन्दा बैठे हैं। जिनकी कि नाक इतनी मोम की है जो कांग्रेस के अन्दर और बाहर बैठे अकालियों ने मोड़ दी। भाषा की आड़ में वह मजहबी राज्य मांग बैठे। उन्होंने भाषा की आड़ में मजहबी राज्य श्री गुलजारीलाल नन्दा के श्रीमुख से कहलवा लिया। स्वतन्त्रता से पूर्व के सिक्खिस्तान या खालिस्तान की बात छोड़ भी दें स्वतन्त्र होने के बाद यह मांग केवल भाषा की न रहकर एक पंथ की मांग थी। उसके लिए भी मैं कुछ प्रमाण उपस्थित करना चाहता हूं। मेरे हाथ में सन्त फतेहसिंह और पण्डित जवाहरलाल नेहरू की जो पीछे तीन मुलाकातें हुई थीं उनकी यह विवरण है जो पीछे इसी सदन के पटल पर रखा गया था। इसमें पहली मार्च को जो उन की मुलाकात है एक मार्च १९६१ की उसके पृष्ठ ६ पर एक बात लिखी हुई है। सन्त फतेहसिंह ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को यह कहा कि श्री मुरारजी देसाई स्थान स्थान पर यह कहते हैं कि यह मांग भाषा की नहीं है बल्कि मजहब की है। उसमें श्री जवाहरलाल नेहरू ने उत्तर देते हुए कहा कि मैं भी जानता हूं अकाली जो चाहते हैं वह भाषा पर आधारित प्रदेश नहीं वरन् पंथ प्रदेश चाहते हैं। मास्टर तारासिंह जब इनसे जालन्धर में मिले थे तब उन्होंने यह बताया था कि वह अपने पंथ के लिए यह प्रदेश बनाना चाहते हैं। भाषा तो केवल एक गौण विषय है। श्री जवाहरलाल नेहरू को मास्टर तारासिंह ने १९६१ के अन्दर यह बात कही जिसका कि उन्होंने उसके अन्दर उल्लेख किया है।

मास्टर तारासिंह स्थान स्थान पर इस बात को कहते रहे अभी पिछले साल २४ अगस्त १९६५ को पाकिस्तान के साथ संघर्ष शुरू होने से कुछ दिन पूर्व मास्टर तारासिंह लाहौर गये। वहां कराची से प्रकाशित डान अखबार के मुख पृष्ठ पर उनका जो स्वागत वहां के मुसलमानों ने किया उसका एक फोटो दिया हुआ है। उसमें भी उन्होंने वहां लाहौर में जाकर यही कहा कि हम एक इस तरह का राज्य बनाना चाहते हैं जिसमें हिन्दुओं का प्रभुत्व न हो और हमारी ही एक बहुत बड़ी सत्ता हो। कुछ बातें उसमें उन्होंने और भी कहीं। लाहौर से आकर उन्होंने हमारे लोकसभा के अध्यक्ष तक के ऊपर कीचड़ उछाली और यह कहा कि संविधान सभा में जो हमारे सिखों के प्रतिनिधि थे सरदार हुकुमसिंह और भूपेन्द्रसिंह मान उन्होंने भारतीय संविधान के ऊपर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। वह उससे सहमत नहीं थे। क्या मास्टर तारासिंह को इतना भी सामान्य ज्ञान नहीं था कि जो व्यक्ति भारतीय संविधान में विश्वास न रखता हो या भारतीय संविधान की शपथ न ले क्या वह इस देश की लोकसभा का अध्यक्ष किस प्रकार बन सकता है? लेकिन यह बात उन्होंने वहां जाकर कही। पर इससे भी एक बड़ी बात जिससे कि उनके मन का पता लगता है वह मैं आपके सामने कहना चाहता हूं ……।

श्री कपूरसिंह—सभापति महोदय, मैं आपकी इजाजत से कुछ कहना चाहूंगा।

सभापति महोदय—अभी नहीं जब आपकी बारी आयेगी तब आप कह दीजिएगा।

श्री कपूरसिंह—मेरी बारी नहीं आयेगी इसलिए मैं आपकी इजाजत से कहना चाहता हूं कि यह जो कह रहे हैं कि अकाली सिखों ने संविधान पर दस्तखत नहीं किये थे यह बात गलत है जो मैं उनको बतलाना चाहूंगा कि यह गलत कह रहे हैं। अकाली सिखों ने संविधान के ऊपर दस्तखत नहीं किये थे यह बात ठीक है। यह बात मैंने इसलिए कही कि जो व कम त हैं उन्हें वह ठ क बतलायें ताकि जो उनके मन में आये वह कहें। (क्रमश)

आर्यसमाज के तेजस्वी नेता—

पं० नरेन्द्र जी के जीवन की एक झाँकी

(निजामशाही आर्यत्व के समक्ष नतमस्तक हुई)

(श्री वेदप्रकाश आर्य, एम० ए० प्राध्यापक डी०ए०वी० कालेज आजमगढ़ उ०प्र०)

जब जी०टी० एक्सप्रेस दो घंटे से ऊपर हैदराबाद स्टेशन पर खड़ी रही ?-

हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह अपनी तरुणाई पर था। देश के कोने कोने से आये हुये सहस्रशः आर्य वीरों के पदचाप से हैदराबाद की धरती और उनके जयघोषों से आकाश मंडल प्रकम्पायमान था। निजाम के कारागारों में इंच भर भी स्थान शेष नहीं था। ऐसे रोष और जोश भरे वातावरण में एक दिन हैदराबाद से दिल्ली जाने वाली डाकगाड़ी नामपल्ली स्टेशन पर खड़ी थी। छूटने का निर्धारित समय हो चुका था पर ट्रेन आगे बढ़ने का नाम न लेती थी। यात्रीगण अपने अपने डिब्बों से झांक रहे थे, कुछ बेचैनी में बाहर निकलकर पता लगा रहे थे कि ट्रेन क्यों नहीं छूट रही है और आखिर कब छूटेगी ? पर निश्चित उत्तर रेलवे अधिकारी भी नहीं दे पा रहे थे। आज निजाम सरकार के आकस्मिक आदेश से यह ट्रेन रुकी हुई थी। पर यह आदेश हैदरी को क्यों देना पड़ा ? इसे जानने के लिये निम्न पंक्तियाँ पढ़िये।

मन्नानूर की काल कोठरी—

इस घटना के ठीक १८ महीना पूर्व। सन्ध्या का समय था। हैदराबाद का बत्तीस वर्षीय आर्य युवक नरेन्द्र, जिसकी रग-रग से फूट पड़ने वाली जवानी देश और समाज को अर्पण थी—अपनी धुन में मस्त जा रहा था। कहां जा रहा है यह युवक—कौन सा आकर्षण इसे खींचे जा रहा है ? यह उस सुल्तान बाजार मुहल्ला की ओर जा रहा है जहाँ १० हजार लोग हिन्दुओं की बस्ती है जो आर्यसमाज के रंग में रंग गये हैं पर यह निजामशाही को भला कैसे सहन होता ? उसने वहाँ मुसलमानों को भड़काकर भीषण दंगा करवा दिया। यह कोई नई बात नहीं थी। निजाम सरकार के द्वारा आये दिन ऐसे ही अत्याचार होते रहते थे। उलटे हिन्दुओं पर मुकदमा चला। २२ व्यक्ति कारागार की काल कोठरियों में डाल दिये गये जिनमें से श्री सोहनलाल व ठाकुर अमरावसिंह मुख्य थे। न्यायालय में न्याय का नाटक आरम्भ हुआ। आर्य समाज की ओर से मुकदमा लड़ने की व्यवस्था की गई। उस समय के भारत के प्रसिद्ध अधिवक्ता (वकील) श्री भूलाभाई देसाई और मि० नरीमान को पैरवी के लिये जब बुलाया गया तो सरकार सहम गयी। प्रपंच का भण्डाफोड़ न हो इसलिये सरकार के आदेशानुसार इन दोनों अधिवक्ताओं के पैरवी करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। तब आर्यसमाज को विवश होकर दिल्ली से दिल्ली के प्रसिद्ध वकील मि०तसद्दुकी को बुलाया पड़ा। मुकदमा चल रहा था। सफाई गवाह की हैसियत से युवक नरेन्द्र को भी बयान देना था। इसी हेतु वह श्री विनायकराव जी विद्यालंकार बैरिस्टर से मिलने जा ही रहा था कि राघवेन्द्रराव पुलिस अधीक्षक सामने आ गये। 'कहाँ जा रहे हैं पंडित जी ? चलिये भोजन कर लीजिये।" कई बार अस्वीकार करने पर भी वह न माना और आग्रह करके ले ही गया। घर पर बड़े प्रेम से भोजन कराया। हाथ मुँह धोकर युवक नरेन्द्र बाहिर निकला। सामने क्या सुन्दर दृश्य है ? पुलिस के बीस, पच्चीस, सशस्त्र जवान खड़े हैं। जिनके हाथ में हथकड़ी है। पुलिस की हथकड़ियां अग्रसर हुई—युवक के हाथों ने उनका स्वागत किया। और विशेष प्रेम के साथ भोजन कराने के ले पुलिस अधीक्षक श्री राघवेन्द्रराव जी को भी धन्यवाद दिया। पुलिस युवक को गाड़ी में बिठाकर सदरे आजम अकबर हैदरी के यहाँ ले गयी। अकबर हैदरी ने देखते ही कहा—"आपका ही नाम नरेन्द्र है।"

"जी हां" युवक ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

"आपके लिये यह शाही फरमान है। पढ़ लीजिये।" सदरे आजम ने एक सीलबन्द लिफाफा आगे बढ़ा दिया।

युवक ने फरमान पढ़ा—लिखा था—"नरेन्द्र ! तुम्हें हुकूमते निजाम का तख्ता पलट देने के खतरनाक इरादों के पादाश में तीन साल के लिये "मन्नानूर" में नजर बन्द किया जाता है।"

"मन्नानूर' ! कितना भयानक नाम। जहाँ निर्जन में शेर, चीते दहाड़ते हैं। पर यह नाम सुनकर भी नरेन्द्र के ललाट पर चिन्ता की एक भी रेखा नहीं हृदय की धड़कन तेज नहीं हुई, देह में कम्पन नहीं, आंखों में आकुलता की झलक नहीं।

व्यंग्यपूर्ण स्वर में अकबर हैदरी ने कहा—"मंजूर है।"

'खुशी से मंजूर है।" अधरों से मुसकान बिखेरते हुये युवक नरेन्द्र ने कहा। "पर एक दरख्वास्त भी आपसे है।"

'फरमाइये।'

"मेरे पास दो हजार रुपया है जो मुझे श्री विनायकराव जी को देना है, क्या आप इसे किसी प्रकार वहाँ तक पहुंचाने की व्यवस्था करेंगे।"

अकबर हैदरी ने तुरन्त ही राघवेन्द्र राव को रुपया श्री विनायक राव जी तक पहुंचाने तथा उनसे रसीद लाकर नरेन्द्र को देने का आदेश दिया। लगभग १५ मिनटों में ही रुपये प्राप्त होने की रसीद आ गई। तदनन्तर नरेन्द्र को लेकर "मन्नानूर" की ओर पुलिस वैगन दौड़ पड़ी। रात्रि १२ बजे एक निर्जन, नीरव सांय सांय करते हुए स्थान पर पुलिस वैगन रुकी। एक कोठरी, जिसके सामने थोड़ा सा बरामदा। पुलिस अधीक्षक ने नरेन्द्र से कहा—'बस यही आप का घर है। इसके बाहर आप नहीं जा सकेंगे। भोजन की व्यवस्था के लिए यह पुलिस के सैनिक हैं।" न लिखने-पढ़ने की व्यवस्था, न समाचार पत्र, न किसी से मिलना जुलना। मास में एक बार केवल एक पत्र जिसमें मात्र इतना समाचार आप लिख सकेंगे 'हम अच्छे हैं और आपकी कुशलता के आकांक्षी हैं।"

'मन्नानूर" का नाम ही हृदय में कम्पन उत्पन्न करता है। मीलों जंगल ही जंगल। शेर-चीतों की दहाड़ रह-रहकर नीरवता भंग करती है। नृशंस निजामशाही ने जनता के लोकतान्त्रिक मानवीय अधिकारों की हत्या करने को जिस कुचक्र की रचना की उसके अनुसार ही नरेन्द्र को "मन्नानूर" में बन्द कर दिया गया। पर कहीं स्वतंत्रता की लहर कारागारों से दबाई जा सकी है ? सागर की उत्ताल तरंगों और झंझा झोंकों को कोई प्रतिबन्धित कर सका है ?

जिस समय पुलिस-अधीक्षक नरेन्द्र को उस कालेपानी में छोड़कर वापस चला, उसने अनुभव किया कि जिस "मन्नानूर" के वातावरण में उस नीरव निशीथिनी में अभी तक सिंहों की हुंकार सुनाई देती रही थी झींगुरों की झनकार रह रहकर कानों से टकराती थी—एक तीसरी आवाज भी सुनाई दे रही थी—

"सद्धर्म का प्रचार कभी,
रुक न सकेगा।
बादल में अधिक देर,
सूर्य छुप न सकेगा।।"

और यह आवाज मन्नानूर" की कालकोठरी से निकलकर सम्पूर्ण हैदराबाद में गूंज गई और हैदराबाद की सीमाओं को लांघती हुई—सारे देश के वातावरण में फैल गई—

"बरसा ले कोई कितने,
गोले गोलियां या तीर।
चाहे चला ले लाठियां,
भाले छुरी, समशीर।।
डाले गले में फांसी,
हाथ - पांव में जंजीर।
पर याद रहे हम हैं,
मर्दाना आर्यवीर।।
अत्याचियों के आगे,
कभी झुक न सकेगा।
सद्धर्म का प्रचार,
कभी रुक न सकेगा।।"

[शेष पृष्ठ ११ पर]

श्री पं० नरेन्द्र जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा २५ मई ६६ को उत्तरप्रदेश के दौरे पर रहे हैं।

भारत के विध्वंस में पुराणों की भूमिका

[ले०—श्री ओम्प्रकाश आर्य, टी० ५-डी० रेल कालोनी, कुन्दरकी, मुरादाबाद]

'तुम्हें पुराणों पर लिखने का क्या हक है ? आज पुराणों पर तथा सत्यार्थ प्रकाश पर शास्त्रार्थ करने का समय नहीं है। आज तो लोहा लेना है उन अनीश्वरवादी, जड़वादियों से, जिन की दृष्टि में ईश्वर मानना पाप और मूर्खता है। मूर्ति पूजा मानो या नहीं, ईश्वर निराकार है या साकार, पुराण गप्प है या नहीं; इत्यादि समाज के विच्छेदक विषयों पर लेख लिखने से कोई लाभ नहीं है इत्यादि······।'

इन उपर्युक्त पंक्तियों में शताधिक पत्रों का सारांश है जो कि दि०१०-४-६६ के 'आर्यमित्र' में पृष्ठ दो पर प्रकाशित मेरे उपर्युक्त शीर्षक के लेख के सम्बन्ध में मुझे प्राप्त हुए हैं। इस आलोचना के अतिरिक्त 'आर्यमित्र' के कुछ आदरणीय पाठकों ने मुझे आशीर्वाद, धन्यवाद और प्रशंसापत्र भी भेजे हैं। मैं 'आर्यमित्र' के सम्पादक महोदय का अत्यन्त कृतज्ञ हूं जो कि कृपा करके मेरे लेखों के साथ मेरा पूरा पता भी प्रकाशित कर देते हैं जिससे लेखक और पाठक के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है और मैं अपने पाठकों के निकट सम्पर्क में हो जाता हूं। आप्य पाठकगण अपने पत्रों से मेरे लेख पर हुई अपनी प्रतिक्रिया से मुझे अवगत कराते हैं और मैं उससे मार्गदर्शन प्राप्त कर अपने विषय को अधिकाधिक स्पष्ट करने की चेष्टा करता हूं। इस अत्यधिक संख्या में प्राप्त हुए पत्रों के प्रेषक महोदयों को पृथक् पृथक् उत्तर देना मेरे लिए सम्भव नहीं है। अतः समस्त पत्र प्रेषकों को धन्यवाद सहित 'आर्यमित्र' द्वारा ही उत्तर दे रहा हूं।

यदि पुराण बाजार में नहीं बिकते तब तो शायद मैं पुराणों पर न लिखता किन्तु जब समस्त पुराण प्रेस में छपते हैं और खुले बाजार में बिकते हैं तब प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपने धन से खरीदकर पढ़ सकता है और जो व्यक्ति अपना धन व्यय कर किसी वस्तु को क्रय करेगा वह संविधान प्रदत्त विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता के आधार पर उसके प्रति अपने विचार भी प्रकट कर सकता है जिसे किसी भी कानून के द्वारा विचार प्रकाशन की स्वतन्त्रता के मूल अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। जो बुद्धिमान होते हैं वे सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग में सर्वव तत्पर रहते हैं तथा अपनी कठोरतम सत्य आलोचना को भी सहर्ष स्वीकार और सहन कर लेते हैं परन्तु मूर्ख अपनी कठोर आलोचना से शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते हैं।

मैंने कठोर भले ही लिखा हो किन्तु असत्य नहीं लिखा। मैंने सनातन धर्म के ग्रन्थों के सबसे बड़े और प्रामाणिक प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित पुराणों को आद्योपान्त पढ़ने के पश्चात् ही सप्रमाण कुछ थोड़ा सा लिखा है, किसी की गप्प सुनकर नहीं। मैंने पुराणों पर कीचड़ नहीं उछाली किन्तु उनके वास्तविक-वीभत्स स्वरूप की एक लघु झलक मात्र ही प्रस्तुत करी है, आप उसी से इतना उत्तेजित हो गए हैं तो इस लेखमाला के अगले लेखों को देखकर कहीं आपके हृदय का स्पन्दन ही तीव्रतम न हो जाय। अतः अपने हृदय को सान्त्वना देकर आगामी लेखों की प्रतीक्षा कीजिए।

मेरी यह निश्चित धारणा है कि वास्तविक रूप से अब ही वह समय है जबकि समस्त निष्पक्ष विद्वत् जन पुराणों और सत्यार्थ प्रकाश पर भलीभांति विचार कर अपना पक्षपात रहित निर्णय दे सकते हैं कि दोनों में से किसमें कपोल कल्पित गप्प है ? क्योंकि आज बुद्धिवाद का युग है इसलिए तर्क की कसौटी पर कसे बिना किसी भी बात को अन्ध-विश्वासपूर्वक बलात् स्वीकार नहीं किया जा सकता और सत्यार्थ प्रकाश को तर्क से कोई भय नहीं है। जहां तक शास्त्रार्थ का प्रश्न है सो अब तक अनेक बार हुए शास्त्रार्थों में सर्वव पौराणिकों की ही पराजय होकर पुराणों की निस्सारता और गप्पबाजी ही सिद्ध हुई है।

मैं पूछता हूं कि विश्व के प्रमुख विद्वानों और वैज्ञानिकों में से आधे से अधिक और विश्व की कुल जनसंख्या का तृतीयांश आज अनीश्वरवादी और जड़वादी कैसे हुआ ? यदि नहीं जानते तो सुनो—

जब पुराणों के द्वारा पाखण्ड और पोपलीला का प्रसार हुआ तथा ईश्वर के स्थान और नाम पर उसकी कल्पित मूर्ति, चित्र आदि प्राकृतिक जड़ पदार्थों और ईश्वर के कल्पित अवतार, पुत्र, दूत आदि की उपासना आरम्भ हुई तो विद्वानों ने पुराण तथा पुराणों जैसे अन्य पाखण्ड ग्रन्थों में वर्णित ईश्वर और धर्म के सिद्धान्तों को तर्क की कसौटी पर कसा और उनकी निस्सारता को जानकर तथा लोक में भी ईश्वर और धर्म के नाम पर गत डेढ़ सहस्राब्दी में जो कुछ हुआ उसे प्रत्यक्ष देखकर उन्होंने पुराण तथा उन सदृश अन्य पाखण्ड ग्रन्थों के साथ ही उनमें वर्णित ईश्वर और धर्म से भी अपना पीछा छुड़ाया। वे ही आज अनीश्वरवादी और जड़वादी कहलाते हैं, पर उन्हें निरीश्वरवादी बनाने में प्रमुख हाथ तो पाखण्ड ग्रन्थों का ही रहा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जब तक पृथ्वी पर पुराणों का प्रचलन रहेगा तब तक पाखण्ड का भी अस्तित्व रहेगा और तभी तक ये अनीश्वरवादी-जड़वादी भी रहेंगे। अतः अनीश्वरवाद-जड़वाद को समाप्त करने से पूर्व पाखण्ड पोषक पुराणों को भी समाप्त करना होगा। महर्षि दयानन्द की यही सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने रोग के मूल कारण को देखा। यदि एक शताब्दी पूर्व उनका आविर्भाव न हुआ होता और उन्होंने अत्यन्त दृढ़तापूर्वक वेद का पुनर्स्थापन कर ईश्वर और धर्म का वास्तविक स्वरूप भारतीयों के सम्मुख रखने हेतु सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन न किया होता तो आज रूस, चीन आदि के समान ही भारत भी निरीश्वरवादी और जड़वादी बन जाता। मैं भी इसी भावना को सम्मुख रखकर निरीश्वरवाद के मूल कारण पाखण्ड-पोषक पुराणों पर लिखता हूं।

मैंने अपने लेख का शीर्षक 'भारत के विध्वंस में पुराणों की भूमिका' इसलिये नहीं रक्खा कि मुझे पुराणों से कोई द्वेष है, अपितु इसलिये कि पुराण स्वयं पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि 'हमारा एकमात्र उद्देश्य भारत का विध्वंस करना ही था और है।' मैंने पुराणों के साथ प्राच्य इतिहास का भी कुछ थोड़ा सा अध्ययन किया और मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि शस्त्र से किये गये विध्वंसको को तो समाप्त किया जा सकता है परन्तु शास्त्र से किए गए विध्वंस को नहीं। और पुराण-कारों ने शास्त्र के द्वारा-साहित्य के द्वारा ही भारत का विध्वंस किया। इन पाखंडियों ने एक ओर तो हमारे जैसे हाथ-पांव वाले और माता के गर्भ से उत्पन्न हुए मनुष्यों परशुराम, राम और कृष्ण को ईश्वर का अवतार लिखा और दूसरी ओर उन पर घृणित से घृणित लाञ्छन लगाने, में भी इन धूर्तों को लज्जा नहीं आई।

मैं निम्न उदाहरण शिवपुराण, रुद्र संहिता, कुमार खण्ड, अध्याय ९, श्लोक १८ से २५ प्रस्तुत करता हूं—

(१) तत्र विष्णुश्छली दोषी ह्यविवेकी विशेषतः। बलिर्येन पुरा बद्धश्छल-माश्रित्य पापतः ॥१८॥

(२) तेनैव यत्नतः पूर्वमसुरौ मधु-कैटभौ। शिरोहीनौ कृतौ धीरावपि वेद-मार्गो विवर्जितः ॥१९॥

(३) मोहिनी रूपतोऽनेन पंक्ति भेदः कृतो हि वै। देवासुर सुरापाने वेदमार्गो विनिर्हृतः ॥२०॥

(४) रामो भूत्वा हता नारी बाली विध्वंसितो हि सः। पुनर्वैश्रवणो विप्रो धृतो नीतिहंता श्रुतेः ॥२१॥

(५) पापं विना स्वकीया स्त्री त्यक्ता पापरतेन यत्। तत्रापि श्रुति मार्गस्य विध्वंसितः स्वार्थ हेतवे ॥२२॥

(६) स्वजनन्यः शिरश्छिन्नमवतारे रसारण्यके। गुरुपुत्रापमानश्च कृतोऽनेन दुरात्मना ॥२३॥

(७) कृष्णो भूत्वाऽन्यनार्यश्च दूषिताः कुलधर्मतः। श्रुति मार्गं परित्यज्य स्वविवाहाः कृतास्तथा ॥२४॥

(८) पुनश्च वेदमार्गो हि निन्दितो नवमे भवे। स्थापितं नास्तिकमतं वेद-मार्गे विरोधकृत् ॥

अर्थ—उनमें विष्णु छली, दोषी और विशेषकर अविवेकी है, जिसने पूर्वकाल में छल करके (वामनावतार के रूप में) पाप से बलि को बांधा था। उसने ही पहले यत्नता से मधु और कैटभ राक्षसों को सिर से रहित किया था और वेद मार्ग को छुड़ाया था। देवों और असुरों के अमृतपान के समय इसने ही मोहिनी रूप से पंक्तिभेद किया और (इस प्रकार) वेद मार्ग को निन्दित ठहराया। राम होकर नारी (ताड़का राक्षसी) को मारा और बाली का विध्वंस किया, फिर वैश्रवण (रावण)ब्राह्मण को मारा (इस भांति) श्रुति नीति की हत्या की। उस पापरत (राम) ने अपराध के बिना अपनी पत्नी (सीता त्यागी, उसमें स्वार्थ

[शेष पृष्ठ ११ पर]

जीवन-ज्योति

[पृष्ठ ३ का शेष]

निजाम को झुकना पड़ा:-

देश के कोने कोने में हलचल मच गई। आर्य सत्याग्रह का डंका बज गया। वैदिक धर्म की जय जयकार से सारा हैदराबाद गूंज उठा। जिस आवाज को निजाम 'नरेन्द्र" को कारागार में डालकर कुचल देना चाहता था, वह और

जाता है उसमें हम नये कर्म से प्रभाव नहीं डाल सकते।

यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।

इसके विद्वानों ने दो अर्थ किये हैं। पहला तो यह कि यदि यत्न करने पर सिद्धि न हो तो समझना चाहिए कि यत्न में कोई कमी रह गयी, उसको फिर पूरा करो। दूसरा अर्थ यह भी किया है कि यदि पूरा यत्न करने पर सिद्धि न हो तो समझ लो कि तुमने अपना कर्तव्य पालन कर दिया। सम्भव है कि पुराने कर्म इतने प्रबल हों कि नये कर्म उसमें परिवर्तन न कर सकें। ऐसा तो लोक-शासन में भी होता है। हमारा सिद्धान्त तो इन दोनों अर्थों से सगति खाता है। हमारे कर्म-सिद्धान्त के अनुसार तो जाति, आयु, भोग तीनों में परिवर्तन हो सकता है। जैसे किसी वीर सैनिक ने देश की रक्षा करते हुए अपने प्राण दे दिये तो इस शुभ कर्म के इनाम में उस का जन्म (योनि) भी बदल गया, आयु भी और भोग भी। इसलिए कर्म फल का सिद्धान्त यह निश्चित करता है कि सदा कर्म करते रहो। धर्म और अधर्म का विचार करके करते रहो और तीन प्रकार के दुःखों का प्रतिकार करने का प्रयास भी करते रहो यही पुरुषार्थ है। इसमें सकाल और अकाल मृत्यु का कोई प्रश्न नहीं उठता। सकाल और अकाल कर्म का तो उठता है अर्थात जागरूकमनुष्य ठीक समय पर काम करेगा। आलसी चूक जायेगा। मनुष्य प्राय सकाल कर्म करते हैं और अकाल भी। कोई ठीक समय पर उठता है कोई देर से। कोई ठीक समय पर व्यवहार करता है, कोई बालकपन और बुढ़ापे में। सकाल कर्म को धर्म कहेंगे, अकाल कर्म को अधर्म। सकाल कर्म के हेतु का परिणाम सुख होगा और अकाल का दुःख। सुख और दुःख अन्तिम परिणाम हैं। इनके माध्यम होंगे—जाति, आयु और भोग।

ऊपर के सूत्रों से इस कथन की संगति मिला जाइये। अर्थ स्पष्ट हो जायगा।

★

बुलन्द होती गई और सारे आकाश में गूंज गई। भाई० श्यामलाल, वेदप्रकाश धर्मप्रकाश सरीखे अगणित शहीदों का रक्त अपना रंग दिखाने लगा। पूज्यपाद महात्मा नारायणस्वामी जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, घनश्याम सिंह गुप्त के नेतृत्व में २० हजार सत्याग्रहियों से निजाम की जेलें भर गयीं। प्रति दिन हैदराबाद की धरती पर आने वाले सत्याग्रही वीरों की हुंकारों ने निजाम को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। आर्यवीरों के गगनभेदी नारों से दिशायें अनुगुंजित हो उठीं। घबड़ाकर निजाम ने कहा—"समझौता होना चाहिये।" समझौते की वार्ता के निमित्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री देशबन्धु गुप्त वार्ता करने आये। वार्ता ७ घन्टे तक चलती रही। जिस ट्रेन से देशबन्धु जी दिल्ली जाने वाले थे वह जी० टी० एक्प्रेस हैदराबाद के नामपल्ली स्टेशन पर खड़ी हुई थी और इधर वार्ता चल रही थी। इस वार्ता में सदरे आजम अकबर हैदरी, वजीरेरियासत मेंहदी नवाबजंग, मि० कंफटन डायरेक्टर जनरल पुलिस और श्री देशबन्धु जी गुप्त थे। अन्ततोगत्वा निजाम सरकार ने सत्याग्रह की सभी मांगें स्वीकार कर लीं। उसने स्वीकार किया कि (१) आर्यसमाज के मन्दिर, यज्ञशाला बनाने में निजाम सरकार से आदेश पाना आवश्यक नहीं होगा। (२) आर्यसमाज के बाहर से इस राज्य में आने वाले प्रचारकों पर कोई प्रतिबन्ध न होगा। (३) आर्य समाज का साहित्य जब्त न किया जायगा। (४) आर्यसमाज के विद्वानों पर से सारे अभियोग व प्रतिबन्ध उठा लिये जावेंगे। (५) आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं पर से सारे अभियोग उठा लिये जायेंगे, जब्त की गई सम्पत्तियां वापस कर दी जावेंगी—नजरबन्दों को ससम्मान रिहा कर दिया जायगा। (६) आर्य समाज के विद्यालयों में धार्मिक शिक्षण की पूरी पूरी स्वतन्त्रता रहेगी। (७) हिन्दी के प्रचार पर कोई प्रतिबन्ध नहीं रहेगा। सारी मांगें स्वीकार करते हुये भी निजाम सरकार के सदरे आजम ने कहा—किन्तु पंडित नरेन्द्र को रिहा करने को हम तैयार नहीं। सारी मांगें एक ओर नरेन्द्र जी की मुक्ति एक ओर। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि निजाम सरकार नरेन्द्र जी को अपना सबसे भारी शत्रु समझती थी। देशबन्धु जी ने नागपुर में श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त को टेलीफोन पर परिस्थिति से अवगत कराया। इधर जिस ट्रेन से श्री देशबन्धु जी जाने वाले थे उसके छूटने का समय हो रहा था। निजाम का आदेश हुआ कि ट्रेन अभी रुकी रहे। गाड़ी स्टेशन पर खड़ी थी, वार्ता चलती रही। नागपुर से घनश्यामसिंह जी गुप्त ने श्री देशबन्धु जी से कहा—यदि निजाम सरकार नरेन्द्र जी को छोड़ने को तैयार नहीं है तो वार्ता टूट जाने दो। अभी सत्याग्रह और चलता रहेगा। नरेन्द्र जी को छोड़कर हम सत्याग्रह को समाप्त नहीं कर सकते।" श्री देशबन्धु जी ने सर अकबर हैदरी को इस निर्णय से अवगत करा दिया। वह भी किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। सत्याग्रह चलता तो भी संकट और यदि नरेन्द्र जी को छोड़ता है तो भी संकट। निजाम को दोनों ओर ही खाई दिखाई दे रही थी। निजाम एक ऐसी नौका पर सवार था जिसके चारों ओर भवरें थीं। विवश होकर उसकी ओर से अकबर हैदरी ने कहा अच्छा ३ महीने का आप हमें अवसर दें। तीन महीने बाद हम नरेन्द्र जी को भी छोड़ने का वचन देते हैं पर अब आप कृपा कर के सत्याग्रह समाप्त होने की घोषणा करें। हम सभी सत्याग्रहियों को उनके घरों तक का मार्ग व्यय दे रहे हैं और आप राज्य की सीमा पर साढ़े तीन हजार सत्याग्रही प्रतीक्षा में बैठे हैं, उन्हें भी वापस जाने का आदेश दें।"

यह प्रार्थना स्वीकार कर ली गई, समझौता हो गया। जी० टी० एक्सप्रेस निजाम के इतिहास में पहली बार सरकारी आदेश से अपने निर्धारित समय के दो घन्टे बाद तक रुकी रही। समझौता होने पर श्री देशबन्धु जी गुप्त को लेकर ही ट्रेन आगे बढ़ी। लोगों पर आर्यसमाज की धाक बैठ गई।

सत्याग्रह सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। विजय दुन्दुभी बजाते हुए आर्यजन अपने-अपने घरों को लौट गये! ओ३म् पताका अभिमान के साथ आकाश में लहराने लगी—तीन महीने बीत गये पर निजाम सरकार ने नरेन्द्र जी को मुक्त नहीं किया। आर्य नेता श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त ने महात्मा गान्धी को निजाम की इस नीचता और दुराग्रह की सूचना दी। कहीं आग फिर न भड़क उठे। सोये हुये नाग फिर न फुंकार उठें। गांधी जी ने हस्तक्षेप करना उचित समझा। गांधी जी ने अकबर हैदरी को पत्र लिखा कि नरेन्द्र जी को आप अविलम्ब मुक्त करें। इधर हैदरी साहब अरविन्दाश्रम पांडिचेरी की माता जी का भी भक्त था। आचार्य अभयदेव जी माता जी का पत्र लेकर हैदरी के पास आये।

माता जी ने भी आचार्य अभयदेव जी के द्वारा अपना पत्र हैदरी साहब के पास भेजा कि प० नरेन्द्र जी को आप अविलम्ब मुक्त करें। हैदरी ने जब निजाम के सामने नरेन्द्र जी को छोड़ने का प्रस्ताव रखा तो वह बौखला उठा। उसने अपने पत्र में सदरे आजम हैदरी को लिखा—हुकूमत नरेन्द्र को खतरनाक समझती है। उनकी रिहाई की अभी जरूरत नहीं।'

निजाम रूपी रस्सी की जलने के बाद भी ऐंठन नहीं गई। हैदरी ने निजाम को समझाया कि आप जमाने की रफ्तार समझें और मान जायें। कहीं फिर आर्य समाजियों ने सत्याग्रह छेड़ दिया तो रियासत का बेड़ा गर्क हो जायगा। फिर मैं भी जबान दे चुका हूं। आप नरेन्द्रजी को अब रिहा करने में विलम्ब न करें।" निजाम को झुकना पड़ा। सत्याग्रह समाप्त होने के ४ महीना २१ दिन बाद और कुल मिलाकर १७ महीना २१ दिन का कालापानी भुगतने के बाद नरेन्द्र जी को एक दिन पुलिस अधीक्षक रात के सन्नाटे में आर्यसमाज मन्दिर सुलतान बाजार पर छोड़ गया और कहा—यह आपका पुराना घर है।" जनता में बिजली की तरह सूचना फैल गई। हर्ष और उत्साह की लहरों से सारा नगर भर गया। अपने नेता को पाकर जनता फूली न समाई और नगर में विशाल स्वागत-समारोह हुआ। जिस में ५०,००० नर नारियों ने भाग लिया। इतना ही नहीं, स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद २ अक्तूबर १९४९ को निजाम के उस्मानिया विश्वविद्यालय के विशाल गुम्बद के नीचे स्वयं विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर ने पंडित जी का अपार जन समूह के समक्ष स्वागत किया और माला पहनाई। मानो निजामशाही आर्यत्व के सामने नतमस्तक हो गई।

समन्वय

[ले०—श्री लालचन्द जी मेरठ]

ज्ञान प्रेम और कर्म का समन्वय आवश्यक है। इस समन्वय में ही मानव की मानवता का पूर्ण विकास संभव है। मनुष्य, यदि दिव्य जीवन की ओर अग्रसर होना चाहता है तो यह समन्वय ही उसे सहायता देगा। इस समन्वय की सहायता से मानव में संकीर्णता न रहेगी, संकोच न रहेगा, वह उदार होगा उसमें उसे स्वयं दिव्यता का प्रकाश अनुभव होगा और वह प्रकाश उसे परमतत्व की अनुभूति में परम सहायक होगा। उसका ज्ञान, विश्व ज्ञान हो जायगा, उसका प्रेम विश्व प्रेम हो जायगा और उसके सभी कर्म, विश्व कर्म बन जाएंगे। ज्ञान प्रेम और कर्म के समन्वय से मानव के सभी भावना विचार, संकल्प और कार्यों में दिव्यता आ जाएगी। संशय और सन्देह उसके जीवन मार्ग में बाधा न डाल सकेंगे मानव अपने निश्चय में दृढ़ और अपने विश्वास में स्थिर रहता हुआ कर्तव्य किये जाएगा और स्वतंत्रता के आनन्द का अनुभव लेगा। मानव इस प्रकार सुसमृद्ध और दिव्य ऐश्वर्य सम्पन्न और शक्तिमान होगा वह अपने को दीन-हीन और असमर्थ कहना छोड़ देगा, यह है ज्ञान, प्रेम और कर्म के समन्वय की महिमा। यह समन्वय मानवों की सभी कामनाएं पूर्ण करेगा, क्योंकि वे कामनाएं और आकांक्षाएं दिव्य होंगी और उनकी पूर्ति में सबका परम हित होगा, ऐसा महत्व वाला यह ज्ञान प्रेम और कर्म का समन्वय है। यह समन्वय मानव को पवित्र कर देगा और चूंकि पवित्रता ही तेजस्विता और समृद्धि का आधार है इसलिए मानवों में सभी ऋद्धियां और समृद्धियां स्थिर रहेंगी और विकसित रहेंगी। मानव जीवन नीरस न होने पाएगा, सम्पूर्ण मानव सरस रहेगा क्योंकि उसमें दिव्य प्रेम की स्निग्धता होगी। मानव एक दूसरे से स्नेह करेगा और स्नेह पायगा। आपस में इस प्रकार यज्ञ चरितार्थ होगा क्योंकि सभी आदर सत्कार सम्मान करेंगे और सब में उदारता का व्यवहार होगा। अपने बर्ताव में दिव्यता आने से सब के व्यवहार में माधुर्य होगा। क्योंकि सभी सत्य युक्त धर्म का व्यवहार कर रहे होंगे। ज्ञान प्रेम और कर्म के समन्वय से यह पृथ्वी ही स्वर्ग न हो जायगी।

जब हम बड़ों का आदर करते हैं तो प्रेम पाते हैं, और जब हम आपस में एक दूसरे का सम्मान करते हैं तो सुख और आनन्द की वृद्धि होती है। उदारता से मनुष्य का हृदय शान्त होता है और वह कृतज्ञता का वातावरण बनाता है। कृतज्ञता गुण है कृतघ्नता अवगुण है। जब कोई व्यक्ति हम से हित करे और हमारी सहायता करे तो हमें कृतज्ञ होना चाहिये भगवान हमारा परम हित कर रहे हैं हमें आराधना में भगवान के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट करने चाहिये। ऐसी आराधना और उपासना में इस प्रकार आपस का आदर सत्कार सम्मान और उदार बर्ताव एक ऐसा स्वच्छ और पवित्र वातावरण बना देता है कि उसमें सभी का हित होता है और सभी एक दूसरे की उन्नति में सहायक होते हैं। आपस में एक दूसरे को ठीक-ठीक समझने से आपस में सद्भावना बनाये रखने से सामञ्जस्य सिद्ध हो जाता है और भेद-भाव दूर हो जाने से आपस में विश्वास स्थिर होता है और परिणामतः सभी सुख अनुभव करते हैं क्योंकि इस प्रकार सभी समृद्ध और ऐश्वर्यवान होते हैं। ज्ञान, प्रेम और कर्म के समन्वय से यह अनुभूति होती है कि एक ही नित्य, अव्यय, विशुद्ध आनन्दमय चैतन्य सनातन शाश्वत परम तत्व ही अखिल जगती की स्थिति और सुव्यवस्था का आधार है और वह परमतत्व जहां कहां अणु अणु में व्यापक है वहां वही सारे ब्रह्माण्ड को घेरे हुए है और साथ ही प्रत्येक के हृदय में वही परमदेव विराजमान है। यह अनुभूति आपस के ऐक्य को सुबोध बना देती है और सभी जन आपस के सौहार्द और प्रेम होने से कोई किसी का अहित नहीं करता। यही सच्ची आस्तिकता है ज्ञान युक्त प्रेम और ज्ञानयुक्त कर्म से कभी अनर्थ नहीं हुए ज्ञानयुक्त प्रेम में जीवन का विकास होता है हृदय परस्पर मिलते हैं और उन्नत होते हैं। ज्ञान और कर्म का समन्वय मनुष्य को कर्तव्य की प्रेरणा करता है और इस प्रकार मनुष्य कभी अनाचार और दुराचार में नहीं चलता। ज्ञानयुक्त धर्म ही सदाचार और सदा-चार है जिससे सभी का अभ्युदय और निःश्रेयस साथ साथ सम्भव है।

✤

वेद-व्याख्या

(पृष्ठ ६ का शेष)

हे ज्ञान प्रकाशक परमात्मन्! अत्यंत सुन्दर सद्गुण सम्पन्न एक तू ही तो है। तू ही सभी प्रकाशमान देवों को भी प्रकाश देता है। तू ही प्रकाशक महादेव है। मुझ को तू ही प्रकाश देकर अन्धकार से दूर करता है। बनाने वाले जितने प्रभु हैं, उन्हें भी तू ही बनाता है। सभी संसारी मित्रों से बढ़कर तू ही हमारा परम निःस्वार्थ मित्र है। तेरे जैसे सुन्दर, गुणयुक्त, ज्ञानप्रकाशक, परम मित्र महादेव की उदार शरण में ही हम सदा सुखी रह सकते हैं।

हम अक्सर दूसरों के गुण दोष देखने में लग जाते हैं। ऐसे व्यक्ति एस (सैनी-टरी इन्सपेक्टर) सफाई दरोगा के तुल्य हैं जो सदा गन्दी नालियां ही देखता फिरता है परन्तु उस मकान की, सुगन्धित स्वच्छ और आनन्दमय मंदिर की ओर नहीं देखता जो अपने हृदय के अन्दर ही मौजूद है जहां से सभी सुख साधन प्राप्त हो सकते हैं। वहीं हमारा परम-मित्र कल्याणकारी परमपिता परमात्मा मौजूद है उसी की गोद में हमें जाकर आनन्द प्राप्त हो सकता है। 'प्रेम' कवि की वाणी में—

'तू सर्वेश सकल सुखदाता,
शुद्ध स्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते,
जो तेरे ढिग आता है॥
सारे दुर्गुण, दुर्व्यसनों से
हमको नाथ बचा लीजै।
मंगलमय, गुण कर्म स्वभाव
प्रेम पिता हमको दीजै॥"

यदि हम उपरोक्त वेद आज्ञा का पालन करें तो आज आर्य-समाज बहुत ऊँचा उठ सकता है और समाज को विघटन करने वाली नीतियां सफल न होकर आपस में वही प्रेम भावना बहती नजर आवेगी जो आज से ३० वर्ष पहिले आर्यसमाज के सभासदों में दिखाई देती थी। उस समय हर एक आर्य सभासद अपने भाई के लिये जान तक देने में न हिचकता था।

आज जब हम पत्रों में पढ़ते हैं कि अमुक आर्यसमाज का चुनाव पुलिस की निगरानी में हुआ तो हमारी गर्दन शर्म से नीची हो जाती है। हम कितने ऊंचे थे कि कोर्ट में हमें सच्चा समझा जाता था और कसम खाने की आवश्यकता न होती थी। ईश्वर करे आर्यसमाज में फिर वही प्रेम भावना बहे जो सारे संसार

सिद्धान्त विमर्श

[पृष्ठ ७ का शेष]

के कारण वेदधर्म का ध्वंस किया। छटे (परशुराम) अवतार में अपनी माता का सिर काटा और इस दुरात्मा ने गुरुपुत्र का अपमान किया कृष्ण होकर दूसरों की स्त्रियों को उनके कुल (पातिव्रत) धर्म से पतित किया और वेद मार्ग का त्याग करके अपने विवाह किये फिर नवम (बुद्ध) अवतार में वेद मार्ग की निन्दा की और वेद मत का विरोध करने वाला नास्तिक मत स्थापित किया।

इन श्लोकों में ईश्वर के मनुष्यरूपी अवतारों की स्तुति है जिसे सम्पादकीय कलमों का मय होते भी शिवपुराण से मूल संस्कृत श्लोकों सहित उद्धृत कर विवरण सहित प्रस्तुत करके लेख का कलेवर इसलिए बढ़ाया कि मेरे लिखे भाव के अर्थ को कोई मनमाना या काल्पनिक न कह दे। कोई विदेशी किन्हीं भारतीयों, हिन्दुओं, सनातन-धर्मावलम्बियों के कथित ईश्वर, उसके अवतार और उसके क्रियाकलापों को पुराणों में पढ़कर क्या सोचेगा? क्या कोई भारतीय विद्वान है जो शिव पुराण के उपर्युक्त उदाहरण को देखकर भी यह कहने का साहस करे कि भारत के विध्वंस में पुराणों की कोई भूमिका नहीं कोई योग नहीं।

भोले भारतीयों! भूलकर भी पाखण्डी पुराणों के अन्धकार में मत भटको। इन पुराणों ने भारत का विध्वंस कर दिया इनका नाम भी मत लो। बस! बहुत हो चुका अब बन्द कर दो पुराणों को और ऋषि दयानन्द के 'सत्यार्थ प्रकाश' की मशाल हाथ में लेकर ईश्वरीय ग्रन्थ वेदों की शरण में आओ, उपनिषदों का स्वाध्याय करो, सभी धार्मिक विवाद शान्त हो सकेंगे।

★

से ऊंचाकर आर्य समाजों में नई उमंगें पैदा करे। और एकबार फिर एक शक्तिशाली संस्था के रूप में संसार के सामने आर्यसमाज आगे बढ़े।

वृहद् अधिवेशन में हमें इस बात पर गम्भीरता से विचार करना है।

★

पानीगांव का यज्ञ स्थगित

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी के गांव पानीगांव (मथुरा) में जो यज्ञ २६ जून से २९ जून तक होने वाला था, वह कुछ कारणों से अब इस वर्ष स्थगित कर दिया गया है।

—स्वामी हरिहर

सामाजिक समस्याएँ

सुखी गृहस्थ-जीवन कैसे ?

[ले०—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम०ए० एल०टी०, डी०वी० कालेज गोरखपुर]

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में आदर्श और उपयुक्त गृहस्थ जीवन का चित्र उपस्थित किया है और साधारण से साधारण प्रश्न की ओर भी उन्होंने ध्यान आकृष्ट कर मनुष्य जीवन को सफल बनाने का मार्ग बतलाया है। जिस समय उनके सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित किया गया कि विवाह करना माता पिता के अधीन होना चाहिए या लड़का लड़की के अधीन रहे? तो इस प्रश्न का उत्तर देते हुये उन्होंने लिखा है—'लड़का-लड़की के अधीन विवाह होना उत्तम है। जो माता पिता विवाह करना कभी विचारें तो भी लड़का-लड़की की प्रसन्नता के बिना न होना चाहिए। क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता और सन्तान उत्तम होती है। अप्रसन्नता के विवाह में नित्य क्लेश ही रहता है: विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है। माता पिता का नहीं, क्योंकि जो उनमें परस्पर प्रसन्नता रहे तो उन्हीं को सुख और विरोध में उन्हीं को दुःख होता। कहा भी है—

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च। यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥

जिस कुल में स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है और जहाँ विरोध, कलह होता है वहाँ दुःख दरिद्रता और निन्दा निवास करती है। इसलिए जैसी स्वयंवर की रीति आर्यावर्त में परम्परा से चली आती है वही विवाह उत्तम है। जब स्त्री पुरुष विवाह करना चाहें तब विद्या विनय, शील, रूप आयु, बल, कुल, शरीर का परिमाणादि यथायोग्य होना चाहिये। जब तक इनका मेल नहीं होता विवाह में सुख नहीं होता।"

सचमुच संसार में प्रत्येक व्यक्ति सफल और सुखी गृहस्थ जीवन व्यतीत करना चाहता है। ऐसा कौन है जिसके मन में यह लालसा न हो कि उसे अपने जीवनसाथी का अटूट आदर, विश्वास, प्रेम और सहयोग प्राप्त हो सके। इस सफलता के लिए हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। हमें सबसे पहले यह समझ लेना चाहिये कि मनुष्य जीवनकाल में बुद्धि से अधिक भावुकता का नेतृत्व स्वीकार करता है। परन्तु जीवन में भावुकता से ही तो काम चल नहीं सकता। परिस्थितियों और आयु के परिवर्तन के साथ साथ भावुकता का स्थान वास्तविकता लेने लगती है और उस वास्तविकता को ढूंढ़ के समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए बच्चा उत्पन्न होने के पश्चात् पति के प्रेम का बहुत सा भाग बच्चे को मिलने लगता है और बच्चे का जीवन ही उसके प्रेम और त्याग का केन्द्र बन जाता है। इस प्रकृति के महान नियम को गृहस्थ को समझना चाहिए। यदि यह प्रेमोन्माद उसके मन में न होता तो मानव समाज के विकास बड़ी बाधायें आतीं। इसीलिए अथर्व वेद में एक मन्त्र में कहा है—

एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व। सुपत्नी पत्या प्रजया प्रजावत्या त्वागन् यज्ञः प्रति कुम्भं गृभाय॥

अर्थात् (एमा) ये सब (शुंभमानाः) उत्तम गुणों से युक्त (योषितः) स्त्रियां (अगुः) आ गई हैं। हे नारि! तू (उत्तिष्ठ) उठकर खड़ी हो (तवसं रभस्व) बल प्राप्त कर (पत्या) पति के साथ (सुपत्नी) उत्तम पत्नी बनकर और (प्रजया) शुभ सन्तान से (प्रजावती) उत्तम सन्तान वाली होकर रहो, यह (यज्ञ) गृहस्थ व्यवहार का शुभ कर्म (त्वा आगन) तेरे पास आ गया है इसलिए (कुम्भम्) घड़ा ले और (प्रतिगृभाय) यह कार्य कर।

इसमें भावुकता का स्थान स्पष्ट रूप से वास्तविक परिस्थितियों ने ले लिया है और इस प्रकार गृहस्थ में आने के बाद वेद मन्त्र में बौद्धिक दृष्टि से कार्याकार्य विचार कर कर्त्तव्यों के निर्वाह का मार्ग बतलाया गया है।

दूसरी बात गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने के लिए यह समझ लेना आवश्यक है कि मनुष्य भूलें करता है। पत्नी भी भूलें कर सकती है और पति भी भूल कर सकता है। ऐसे समय हमें एक दूसरे के प्रति उदार होना पड़ेगा और गलतियों तथा त्रुटियों को दूर करने के लिए रचनात्मक मार्ग का अवलम्बन करना होगा। उदाहरण के लिए आपकी पत्नी ने आपको जिस प्याली में या गिलास में चाय या पानी दिया है वह गन्दा है। इस गन्दगी को दूर करने के लिए आप उसे डांटते हुए प्याली को दूर भी फेंक सकते हैं और आप इसका रचनात्मक रूप यह रख सकते हैं कि अपने किसी के घर, होटल या कहीं गन्दे गिलास में पानी पीने की घटना का उल्लेख कर उसे आवश्यक रूप में सफाई की शिक्षा दे सकते हैं। इसी प्रकार पत्नियों को भी अपने मन से यह बात तो निकाल देनी चाहिये कि वे अपने पति की त्रुटियों का प्रदर्शन कर और उनकी कटु आलोचना कर उन्हें अपने अनुकूल बना लेंगी। इतिहास के पन्ने खोलकर देखिए फ्रांस का सम्राट नैपोलियन तृतीय अपनी स्त्री के इसी प्रकार के व्यवहार से दुःखी होकर गुप्त रूप से दूसरी स्त्री पर मुग्ध हो गया। अमेरिका का शान्त स्वभाव का लिंकन भी अपनी पत्नी के व्यवहार से अन्त में उससे घृणा करने लगा, टाल्सटाय जीवन भर अपनी स्त्री की गाली गलौज सहन करता रहा और ८२ वर्ष की आयु में चुपचाप घर से निकल गया और निमोनिया से उसकी मृत्यु हो गई। पत्नियों के दुःख की कथाओं से तो पन्ने के पन्ने भरे जा सकते हैं अतः सुखी गृहस्थ जीवन के लिए कटु आलोचना से हमें बचना होगा।

अपने गार्हस्थ्य जीवन को सुखी रखने के लिए पारस्परिक विश्वास भी आवश्यक है। जो सम्बन्ध विश्वास रहित है वह सूत के कच्चे धागे से भी अधिक बोदा और कमजोर होता है। इसलिए विश्वास को उत्पन्न करने के लिए एक दूसरे के प्रति सच्चाई का व्यवहार गृहस्थाश्रम में आवश्यक है।

आज कल के युग में यूरोप के अनुकरण के कारण नव विवाहित पति पत्नी अपने माता पिता, भाई बहन और दूसरे सम्बन्धियों के प्रति उदासीनता और उपेक्षा धारण करते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए भरे घर में हम अपनी पत्नी की वांछित वस्तुओं और उसकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखें और दूसरों की उपेक्षा करें तो हमारे चारों ओर ईर्ष्या के कांटे उगने लगेंगे और जिनकी चुभन हमारे पारिवारिक जीवन को दुःखी कर देगी। वास्तव में यह व्यवहार भारतीय दृष्टिकोण से इसलिए भी उचित नहीं कि हम तो उस स्त्री को जब अपने घर में लाते हैं तो उसे अपना मालिक बना कर लाते हैं और परिवार के नेता के रूप में पति पत्नी का यह कर्त्तव्य है कि उन्हें किसी चीज के लिए भले ही कष्ट हो पर जिनकी सुविधा देखनी है उन्हें न कष्ट होने पावे। वेद में स्पष्ट कहा है—

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा। एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य। अ० १४।१।४३

जिस प्रकार बलवान् समुद्र ने नदियों का साम्राज्य उत्पन्न किया है इसी प्रकार तू पति के घर जाकर महारानी बनकर रह। अर्थात् पुरुष घर का सम्राट् और स्त्री घर की सम्राज्ञी अर्थात् महारानी है।

सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु। ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वाः॥

अपने श्वशुर आदि के बीच, देवरों के मध्य में ननद के साथ, सास के साथ भी महारानी होकर रह।

जरा सोचिए तो वैदिक समाज में स्त्री को कितना बड़ा अधिकार दिया गया है। स्त्री का जितना समादर वैदिक धर्म में है, उतना और किसी मत सम्प्रदाय में नहीं। इसी तत्व को ध्यान में रखकर स्वामी दयानन्द ने स्त्री आदरण का बिगुल फूका।

पति-पत्नी को एक दूसरे से सन्तुष्ट रहने के लिए एक दूसरे की भावनाओं और इच्छाओं को उदारता ही नहीं आदर की दृष्टि से देखना चाहिए। इसके लिए स्त्रियां चादर से अधिक पैर न फैलायें और पुरुष उनसे सहृदयता का व्यवहार करें।

इसी प्रकार स्वास्थ्य, धन, शिक्षा, सम्मान आदि अनेक वस्तुयें हैं जो पारिवारिक जीवन को और विशेष रूप में पति और पत्नी को सन्तुष्ट रख सकती हैं इन सब बातों का ध्यान रखना चाहिए।

गृहस्थ को सुखी रखने के लिए हमें अन्य भी कुछ बातों की ओर ध्यान देना होगा। बातें तो छोटी हैं पर सुखी गृहस्थ के लिए उपयोगी हैं।

हमें अपना जीवन अनुशासनमय बनाना होगा। स्वामी दयानन्द ने अनुशासन शब्द का भी जिसमें समावेश हो जाता है उस शब्द का प्रयोग करते हुए कहा है कि गृहस्थ को संयमी होना चाहिए। अर्थात घर की स्वच्छता और सफाई का दोनों को ध्यान रखना चाहिए। हम कहां इसका ध्यान रखते हैं। जहां बैठे वहीं थूक दिया, वहीं खाकर जूठन डाल दी। रसोई, स्नानघर, पेशाबघर पाखाने की सफाई की बात तो सोची ही नहीं जाती। यह घरेलू आदतें हमें समाज में भी विचित्र स्थिति में डाल देती हैं।

इसी प्रकार अपने नौकरों के साथ भी हमें उत्तम व्यवहार करना चाहिए। उनसे न तो इस तरह कार्य लेना चाहिए जैसे वे जानवर हों और न उनके प्रति अनुचित शब्दों का प्रयोग करना चाहिये।

सबसे बड़ी बात यह है कि बच्चों को योग्य बनाना। स्वामी दयानन्द ने तो बच्चों की शिक्षा के लिये एक अलग समुल्लास ही लिख दिया है। पर पारिवारिक जीवन में प्रविष्ट पति पत्नी को इतना तो ध्यान रखना ही चाहिए कि बच्चों को ठीक करने के लिए हमें उनके मनोविज्ञान का अध्ययन कर उन्हें प्रेम से अच्छी आदतों की ओर ले जाने की कोशिश करनी चाहिए। हमें बालकों की शक्ति का ठीक उपयोग करना चाहिए। उनकी शक्ति का ठीक उपयोग न होने से उनके भावी जीवन पर उसका कितना बुरा प्रभाव पड़ता है इसका हमें ध्यान रखना चाहिए।

इस प्रकार इन छोटी बातों की ओर अगर हम यदि हम ध्यान रखते हुए चलेंगे तो हमारा पारिवारिक जीवन सुखी और सफल होगा।

सब बातों की एक बात यह है कि 'संयम' ही सुखी गृहस्थ जीवन की आधारशिला है। संयम का अर्थ दरअसल नहीं है। संयम का अर्थ बालसापन नहीं। संयम का अर्थ है शक्ति। वह जीवन के विकास के लिए है। वह उत्कृष्ट कर्म करने के लिए। वह अपने हाथों अपार सेवा करने के लिए है। वह समाज में अधिक आनन्द, अधिक संगीत लाने के लिए है। संयम उपयोगी वस्तु है। आइए, संयम को शिक्षा पढ़कर हम अपने अपने परिवार और समाज को सुखी कर सकें।

★

निर्वाचन—

—आर्य जिला सभा मैनपुरी

प्रधान—श्री श्यामबिहारी, मन्त्री—सूबेदार माधव, कोषाध्यक्ष—श्री सोबरन।

—आर्यसमाज बेवर

प्रधान—श्री कान्तिस्वरूप वर्मा, मन्त्री—श्री बंशी लाल, कोषाध्यक्ष—श्री मोहनलाल आर्य।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखीमपुर

प्रधान-श्री निरंजनचन्द्र राठी वोकील, उपप्रधान—श्री केदारनाथ कुकड़ापुर मन्त्री—श्री वीरेन्द्रबहादुर सिंह बी० काम एल० टी० सिद्धान्त शास्त्री उपमन्त्री—श्री राजेन्द्रप्रसाद मोहम्मदी, प्रचार मन्त्री एवं निरीक्षक—श्री शिवरतनलाल बी ए कोषाध्यक्ष—श्रीमती सुशीलादेवी बोहरी स्त्रीसमाज लखीमपुर।

आर्यवीर दल केन्द्रिय शिविर

१२ जून १९६६ से २६ जून १९६६ तक दिल्ली में श्री रामचन्द्र जी स्वामी प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया है। इस शिविर में प्रान्तीय अधिकारियों के अतिरिक्त आर्यवीर दल का सेवा कार्य करने के इच्छुक शिक्षित व्यक्ति ही भाग ले सकेंगे। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति केन्द्र की ओर से विभिन्न प्रान्तों में की जायगी। शिविर में भोजन का प्रबन्ध निःशुल्क होगा। जो आर्यवीर इसमें भाग लेना चाहें वह अपना प्रार्थना-पत्र यथासम्भव अपने प्रान्तीय संचालकों के द्वारा मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल, दयानन्द भवन, आसफअली रोड, नई दिल्ली के पते पर ११.६.६६ तक भेजें। शिविरार्थियों को ११ जून की शाम तक दिल्ली पहुंच जाना चाहिए। —मन्त्री

सभा की सूचनाएँ

सभा के वृहदधिवेशन की तिथियों में परिवर्तन

दि० ११ व १२ जून निश्चित

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के समस्त कार्यकर्त्ताओं एवं प्रतिनिधि महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि आर्य प्र० सभा उत्तरप्रदेश का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक २८ व २९ मई के स्थान में दि० ११ व १२ जून १९६६ दिन शनिवार व रविवार को आर्य कन्या विद्यालय डिग्री कालेज देहरादून में होना निश्चित हुआ है। प्रथम दिवस की बैठक ३ बजे अपराह्न से प्रारम्भ होगी।

कृपया समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि अपने अपने समाज के प्रतिनिधि महोदयों को ११ जून ६६ के प्रातः देहरादून पहुंचने के लिए प्रेरणा करें।

२—दि० ११ ६ की रात्रि में प्रदेशीय आर्य सम्मेलन भी देहरादून में ही होगा। जो समाज एवं प्रतिनिधि प्रस्ताव भेजना चाहें वह ३१ मई तक भेज दें।

३—सभा की वार्षिक रिपोर्ट भेजी जा रही है। जो प्रश्न करना है वह सभा कार्यालय में अधिवेशन की तिथि से १५ दिन पूर्व भेजने का कष्ट करें।

४—अधिवेशन की तिथियों में प्रदेशीय आर्य शिक्षा सम्मेलन भी श्री प० महेन्द्रनाथ शास्त्री जी एम० ए० की अध्यक्षता में देहरादून में होगा। तिथियों एवं समय की सूचना श्री अधिष्ठाता जी शिक्षा विभाग देंगे।

५—जिन किसी समाज ने अभी तक प्रतिनिधि चित्र न भेजे हों वे सभा कार्यालय में भेज दें। अन्यथा वृहदधिवेशन के समय जांच वाले कामों को जांच करने में कठिनाई होती है। अतः सूचना की प्राप्ति के तुरन्त भेजने का कष्ट उठावें और जिन जिन समाजों ने सभा प्राप्तव्य धन न दिया हो वह कृपया अवसर के समय देने की कृपा करें।

अन्तरंग अधिवेशन की सूचना

समस्त अन्तरंग सदस्यों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक १० जून १९६६ दिन शुक्रवार समय मध्याह्न ५ बजे से आर्यसमाज देहरादून में आरम्भ होगा। कृपया सदस्यगण नियत समय पर पहुंचने का कष्ट करें।

—चन्द्रदत्त, सभा मन्त्री

सभा कार्यालय देहरादून को

आ० प्र० सभा उ० प्र० का कार्यालय १० जून १९६६ को देहरादून पहुंच जावेगा। अतः आर्यसमाजों एवं उपसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा अधिवेशन सम्बन्धी कार्य, जो भी हो वह प्रथम दिन ५ जून तक लखनऊ के पते पर तत्पश्चात् 'आर्यसमाज देहरादून" के पते पर भेजने की कृपा करें। १२।६ से लखनऊ के पते पर भेजो जावे।

—सभा मन्त्री

समाजों का कर्तव्य

हर्ष का विषय है कि सभा को निम्न विद्वान् महानुभावों ने जीवन प्रचार में अपना अमूल्य समय देने का संकल्प किया है। समाजों को चाहिए कि वे अपने यहाँ बुलाकर प्रवचन करावें और लाभ उठावें। सभा उनके इस सहयोग के लिये धन्यवाद देती है।

१—श्री ओंकार जी मिश्र 'प्रणव'
२—श्री वेदप्रकाश जी एम० ए०
३—श्री सुरेशचन्द्र जी वेद प्रकाश
४—श्री राजकुमार जी शर्मा एम० ए०

प्रतिनिधि चित्र तुरन्त भेजिए

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय में अब तक २५० आर्यसमाजों के वार्षिक प्रतिनिधि चित्र प्राप्त हुए हैं। अतः समाजों के मन्त्री महोदयों एवं जिला उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदयों तथा समाज निरीक्षक तथा उपदेशक, प्रचारकों से तथा समाज अन्तरंग सदस्यों से निवेदन है कि अपने अपने जिला क्षेत्र के समाजों से प्रतिनिधि चित्र फार्म भरवाकर सभा कार्यालय में मय दशांश सुरक्षित तथा चार आना फन्ड प्रतिनिधि शुल्क भिजवाने की कृपा करें।

—चन्द्रदत्त सभामन्त्री

सभा के पुराने कार्यमुक्त उपदेशकों एवं भजनीकों की सेवा में

सभा के खाता में निम्नलिखित पुराने उपदेशक व भजनीकों का धन निकल रहा है। परन्तु सभा कार्यालय में उनका ठीक पता न होने के कारण अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है। अतः इन सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्र सभा कार्यालय से पत्र-व्यवहार कर अपना धन प्राप्त करने की कृपा करें।

१—श्री ज्वालाप्रसाद जी
२—श्री वाचस्पतिदेव जी शर्मा
३—श्री महावीर प्रसाद जी

—चन्द्रदत्त सभामन्त्री

उत्सवों एवं विवाह संस्कारों एवं कथाओं के निमित्त आमन्त्रित कीजिए—

प्रकाण्ड विद्वान्, सुमधुर गायक, सुयोग्य सन्यासी एवं वैदिक कीर्तन द्वारा प्रचार करने वाले योग्य प्रचारक।

महोपदेशक

आचार्य विश्वबन्धुजी शास्त्री महोपदेशक
श्री सत्यवीर जी शास्त्री „
श्री प० श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री प० विश्ववर्धन जी वेदालंकार
श्री प० केशवदेव जी शास्त्री उपदेशक
श्री प० रामनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर भजनोपदेशक
श्री अमरसिंह जी—प्रचारक
श्री धर्मदत्त जी आनन्द "
श्री धर्मरायसिंह जी— "
श्री हेमचन्द्र जी (फिल्मी तर्जवादक)
श्री देवपालसिंह जी— प्रचारक
श्री प्रकाशवीर जी शर्मा "
श्री जयपालसिंह जी मानव "
श्री ओमप्रकाश जी सिंह „
श्री विवेकचन्द्र जी "
श्री खड़गपालसिंह जी "
श्री रघुवरदत्त जी "
श्री रामकृष्ण शर्मा मैजिक लैनटर्न

प्रोग्राम मास जून

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—१ से ३ साधुआश्रम जसोतुरा।

श्री बलवीर जी शास्त्री—२३ से २६ बलरामपुर बिहार।

श्री राम स्वरूप जी आर्य मुसाफिर—८ से १० उमरना सुल्तानपुर।

श्री अमरसिंह जी—१ से ३ फरीदपुर।

श्री प्रकाशवीर जी—५ से ८ विवाह दुडियापुर।

श्री डा० प्रकाशवती जी—८ से २१ उप सभा सुल्तानपुर।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
—स० अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्र० सभा लखनऊ

[पृष्ठ ३ का शेष]

अपनी सक्रिय सहानुभूति प्रदर्शित करेंगे। हमने पिछले दिनों सार्वदेशिक सभा को सम्बोधित किया था कि वह पंजाब में सेवादल भेजे जाता है सार्वदेशिक सभा इस दिशा में सचेष्ट होगी।

संसद् में पंजाब के पुनर्गठन सम्बन्धी संविधान संशोधन विधेयक आवश्यक उपस्थिति के अभाव में पारित न हो सका और अब सम्भवतः इसके लिये संसद का विशेष अधिवेशन बुलाने की व्यवस्था की जावेगी।

इस घटना से यह स्पष्ट हो रहा है कि संसद् सदस्य हृदय से पंजाबी सूबे के पक्ष में नहीं हैं हां कांग्रेस दल अपने आदेश से सदस्यों का मत अपने पक्ष में प्राप्त कर ले तो और बात है पर यह विवशता ही होगी दूसरे शब्दों में आत्मा की आवाज के विरुद्ध कार्य होगा।

श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने संसद् में ठीक ही कहा है कि पंजाबी सूबे के सम्बन्ध में सरकार को विश्वास में नहीं ले सकी और उसने जोर दबावों से साम्प्रदायिक तुष्टीकरण के वश पर पंजाबी सूबा नीति घोषित कर दी। यह जनतन्त्र की पद्धति से मेल खाने वाली बात नहीं है। ऐसे निर्णय बहुमत की अन्ध शक्ति का परिचय देते हैं और ऐसे निर्णय जन्म में तानाशाही को जन्म देने लगते हैं।

हम संसद् सदस्यों से जोरदार अभ्यर्थना करते कि वे राष्ट्रिय एकता और अखण्डता के नाम पर पंजाबी सूबे के विधेयक को पारित न करें और इस प्रकार एक नये संकट से देश की रक्षा करें।

अध्यापिकाओं की आवश्यकता

निम्नलिखित पदों के लिये योग्य आर्य समाजी विचार धाराओं वाली अध्यापिकाओं से २५ मई ६६ तक प्रार्थना पत्र आमन्त्रित हैं।

१—योग्य तथा अनुभवी प्रधानाचार्या।
२—बीए ट्रेंड ग्रेजुएट अंग्रेजी में विषय अंग्रेजी साहित्य गृह विज्ञान राजनीति विज्ञान इतिहास, भूगोल संस्कृत और संगीत (गायन)।
३—सीनियर जे० टी० सी० या सी० टी० विषय—हिन्दी विज्ञान ड्राइंग तथा पेंटिंग।
४—दो एच० टी० सी० प्राइमरी कक्षाओं को। अण्डर भी प्रार्थना पत्र दे सकती हैं।

मन्त्री—आर्य कन्या पाठशाला
हायर से० स्कूल दिल्ली (बदायूं)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

ज्येष्ठ १ शक १८८८ ज्येष्ठ शु० २
(दिनांक २२ मई सन् १९६६)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60

पता—'आर्यमित्र'

दूरभाष : २२९९३ तार : "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

विज्ञान वार्ता

पशु बनाम टेक्नालाजी

अणु-युग में भी टेक्नालाजी पशुओं से बहुत कुछ सीख सकती है।

(श्री मिल्टन ब्लेच, जर्मन)

न्यूविच (डाक)—यह एक बड़ा दिलचस्प, मजेदार और महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या आज के अणु युग में भी टेक्नालाजी पशुओं से कुछ सीख सकती है? विश्व के वैज्ञानिकों ने इसका उत्तर 'हां' में दिया है। लेकिन आज दिन तक ऐसे बहुत कम मामले देखने में आये हैं जबकि मनुष्य पशुओं में निहित निराली शक्ति का पर्यवेक्षण कर सके। लेकिन जब पश्चिम जर्मनी का प्रथम अन्तरिक्ष-यान कोपरनिक—१ कई मास तक अन्तरिक्ष में भ्रमण करने हेतु उड़ेगा और हमारे पड़ोसी नक्षत्र बृहस्पति (जुपिटर) की खोज करेगा तो वह अपने अनन्त आकाश अपनी दिशा का उसी भांति ज्ञान प्राप्त करेगा, जैसे कि एक छोटी सी चिड़िया गौरैया रखती है।

यूरोपीय अनुसंधान कार्यक्रम में भाग लेने वाले अन्तरिक्ष यान व राकेट 'एसरो' और 'एल्डो' भी, जिनमें प० जर्मनी भाग ले रहा है, वैसा ही तकनीक अपनायेंगे जैसा कि गौरैया अपनाती है। कहा जाता है कि यह गौरैया पक्षी अपनी रात्रि की उड़ानों में तारों के द्वारा ही अपना मार्ग निर्धारित करती है। जब आधुनिक राकेट व अन्तरिक्ष में उड़ेंगे तो वे गौरैया की आंखों जैसे ही देखेंगे और दूरस्थ नक्षत्रों की ओर बढ़ते जायेंगे।

मैक्स प्लेन्क इन्स्टीट्यूट के प्रो० कोनार्ड लोरेंज ने अनेक ऐसे दिलचस्प उदाहरण दिये हैं कि जिनसे यह पता चलता है कि आज भी पशु जगत् में ऐसे सैकड़ों चक्कर में डाल देने वाले चमत्कार हैं, जिनसे आज की टेक्नालाजी बहुत कुछ सीख सकती है। मनुष्य ने पशुओं से बहुत-कुछ सीखा है, लेकिन आज भी ऐसे अनेक पशु समूह हैं जो मनुष्य व उसके तकनीकी कौशल की समानता करने में सक्षम हैं। दिशा ज्ञान के विषय में यह बात विशेष रूप से लागू होती है।

जैसे ध्वानिक अथाहतामापी एक ऐसा विषय है जो आधुनिक जहाजरानी में आवश्यक है। इसकी सहायता से समुद्र में जाने वाला जहाज समुद्र की गहराई तथा समुद्रतल का अनुमान ठीक-ठीक व सरलता से लगा सकता है। लेकिन जब मनुष्य जहाज भी नहीं बना पाया था तब एक पशु (मेमल) था। जिसमें प्रकृति से ही ऐसी शक्ति थी कि वह पानी के अन्दर ध्वनि की गूंज से अपना मार्ग निर्धारित कर लेता था। यह पशु था डाल्फिन, जिसके व्यवहार पर हाल ही में समुद्री प्रयोगशाला में अध्ययन किया गया। प्रो० लारेंज ने कहा कि डाल्फिन ने ध्वनि गूंज की ईजाद की थी।

सभी यूरोपीय जलाशयों में एक और जानवर पाया जाता है जिसे भी अल्ट्रा तथा तेज ध्वनि का ज्ञान होता है। यह जब पानी को सतह से छूता है तो इसे पहिचाना जा सकता है। वह लहरों की गूंज से पानी की सतह पर चलता जाता है। उसके पैरों के छोटे छोटे बाल रिसीवर का कार्य करते हैं। उसके ध्वनि के उपकरण इतने दुरुस्त हैं कि वे अपने और अपने शिकारों की ध्वनि के अन्तर को भलीभांति पहिचान सकता है।

एक और जानवर मोल मछली की तलहटी में रहता है जो लगभग अन्धा है और उसे कीचड़ वाले पानी में अपना मार्ग बनाने के लिये विद्युत ध्वनि की आवश्यकता पड़ती है। उसकी दुम के दोनों सिरों पर उसके ऐसे अंग हैं जो विद्युत तरंग वैसे ही छोड़ते हैं, जैसे राडार। पानी के अन्दर की ध्वनि की इस विद्युत तरंगों के सहारे यह आगे या पीछे तैरता है। यह भी अपने अवरोधों और शिकार के बीच अन्तर कर सकता है। इसके विद्युत सेल ५०० वाल्ट शक्ति को प्रवाहित करने की क्षमता रखते हैं, जो मनुष्य को पंगु बना सकता है। यह लगभग ४० वाल्ट शक्ति की विद्युत तरंगें भी छोड़ता है, जिससे उसे मार्ग मिलता है।

प्रो० लारेंज ने इसी प्रकार कई पशु पक्षियों की क्षमताओं पर व्यापक प्रकाश डाला है और बताया है कि वे किस प्रकार ध्वनि का सहारा लेते हैं और अवरोधों, शत्रुओं व शिकार के बीच अन्तर करने में सक्षम हैं।

होती है। इसलिए किसानों को चाहिये कि वे अधिक से अधिक खेतों में मनी की जुताई करके लाभ उठायें।

—कृषि अनुसंधान समाचार सेवा दिल्ली की ओर से प्रसारित।

—सम्पादक

★

निर्वाचन—

—आर्यसमाज बहराइच

प्रधान—श्री दयालाल जी, उपप्रधान श्री हरीराम जी, मन्त्री—श्री रामचन्द्रजी उपमन्त्री—श्री गोविन्दराम जी, कोषा०—श्री बलवंत सिंह जी, निरीक्षक समाज—श्री जयकिशन जी, प्रान्तीय सभा के लिए प्रतिनिधि—श्री श्यामलाल जी, श्री गोविन्दराम जी :

अन्तरंग सदस्य —

सर्वश्री मनमोहनसिंह, मथुराप्रसादजी हुबराज जी, महेश्वरदयाल जी, केदारनाथ जी, कृष्ण बिहारी जी।

—आर्यसमाज मेंडू (अलीगढ़)

प्रधान—श्री वेदपाल शर्मा आयुर्वेदाचार्य उप प्रधान—श्री बालमहावीरसिंह, हरचरनलाल आर्य मन्त्री—सूर्यपालसिंह उपमन्त्री—रविकान्त आर्य, ओमप्रकाश वर्मा कोषा०—श्री मनसुखलाल गुप्त०—श्री प० रामप्रसाद आर्य, निरीक्षक—श्री मुन्नलाल सिंह।

—आर्यसमाज लोहामण्डी कानपुर

प्रधान—श्री डा० सुखदेव एम बी बी.एस. उपप्रधान—श्री रघुवंशराय एम ए एल टी., श्री ओमप्रकाश इन्जीनियर, मन्त्री—श्री डा० हरिवंश सहगल, उपमन्त्री—श्री अमीचन्द गुप्त, उपमन्त्री—श्री अमीचन्द गुप्त, श्री राजेन्द्रकुमार भाटिया कोषा —श्री हेमराज, पुस्त०—श्री शिवलाल प्रति० आर्य प्रतिनिधि सभा—श्री बी० एन० तिवारी श्री हरिवंश सहगल, श्री ओमप्रकाश इन्जीनियर।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग

प्रधान—श्रीसत राजाराम, उपप्रधान—श्री विश्वप्रकाश, मातागुलाम सक्सेना मदन मोहन दास ओबराय रामकिशोर सिंह डा० अविनाश चन्द्र, मन्त्री—श्री राधेमोहन, उपमन्त्री—सर्वश्री ज्वालाप्रसाद, वेणीमाधव देव, श्रीमती उषा देवी, महादेव प्रसाद गुप्त, श्रीमती शान्ती देवी, कोषाध्यक्ष—श्री हरिश्चन्द्र साहु निरी०—श्री कमला पति वर्मा, अधिष्ठाता—श्री कृष्णप्रसाद।

उत्सव—

आर्यसमाज फीरोजाबाद का वार्षिकोत्सव दिनांक २१ २२, २३ और २४ मई १९६६ को अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। अनेक साधु सन्यासी और विद्वान पधार रहे हैं। पुस्तक-विक्रेता अपनी दूकान लावें। —मन्त्री

★

लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ ८ शक १८८८, ज्येष्ठ शु० १० वि० २०२१ दिनांक २१ मई सन १९६६ ई०

गोरक्षा आन्दोलन आर्यसमाज का आन्दोलन है

आर्यसमाजें २९ मई को गोरक्षा दिवस मनाकर सरकार से गोबध बन्द करने की मांग करें

सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही गोरक्षा आन्दोलन को व्यापक बनायगी

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल जी ने भारत में गोवध की निन्दा और गोरक्षा आन्दोलन के समर्थन में वक्तव्य देते हुए आर्य जनता से प्रार्थना की है कि आन्दोलन का पूर्ण तत्परता के साथ समर्थन किया जाय।

सभा मन्त्री ने अपने वक्तव्य में कहा है कि—गोहत्या भारत के माथे पर कलंक है। इस कलंक को मिटाने के लिये महर्षि दयानन्द ने पहल की थी। महात्मा गांधी ने जिस स्वतन्त्र भारत के निर्माण के लिये यत्न किया था उसमें गोवध के लिये कोई स्थान न था।

दुःख है कि स्वतन्त्र भारत में न केवल यह कलंक मिटा ही नहीं अपितु गोवध में बहुत वृद्धि हो गई है जिसके लिये हमारी सरकार ही जिम्मेदार है। गोवध की निरन्तर वृद्धि और सरकार की उपेक्षा से जनता का असन्तोष बहुत बढ़ गया है सरकार को चाहिए कि वह गोवध बन्द करने में अब अधिक विलम्ब न करे अन्यथा देश में उपद्रव व्याप्त होने का भय है जिसका सम्हालना सरकार के लिए कठिन होगा।

आर्थिक दृष्टि से भी गोवध घाटे का सौदा है देश में शुद्ध घी दूध की कमी को दूर करने और खाद्य समस्या का सन्तोषजनक समाधान करने के लिए भी गोवध बन्द होना अत्यन्त आवश्यक है।

गोवध बन्दी के प्रश्न पर जो आन्दोलन हो रहा है आर्यसमाज उसका समर्थन ही नहीं करता अपितु उसे अपना आन्दोलन समझता है। अतः देश की समस्त आर्यसमाजों का कर्तव्य है कि वे २९ मई को गोरक्षा दिवस मनाकर जन जागृति उत्पन्न करें और सरकार को गोवध बन्दी के लिये प्रस्ताव पास कर भेजें। गोरक्षकों के साथ सरकार जो दुर्व्यवहार कर रही है हम उसकी निन्दा करते हैं और सरकार से मांग करते हैं कि गोरक्षा समर्थकों के साथ उचित एवं आदरपूर्ण व्यवहार हो।

उत्तरप्रदेश की आर्यसमाजें गोरक्षा के प्रति अपने कर्तव्य का सतर्कता के साथ पालन कर देश का पथ-प्रदर्शन करें

वेदामृत

ओ३म् ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥५॥

भावार्थ— सम्पूर्ण परमेश्वर से ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ तथा इस ब्रह्माण्ड के ऊपर पूर्ण परमात्मा अधिष्ठित है। वह पूर्ण पुरुष उत्पन्न जगत के अतिरिक्त है पश्चात भूमण्डल बनाता है। अनन्तर शरीरों का बनाया।

विषय-सूची

वार्षिक ८)
छःमाही ५)
विदेश १ पौं०

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक २०
एक प्रति २० पै०

कामराज ने पंजाबी सूबा उत्तर भारत को टुकड़े २ करने के लिए बनाया

लोकसभा में श्री प्रकाशवीर शास्त्री की गर्जना

१९६१ की जनगणना स्वीकार नहीं तो १९७१ की प्रतीक्षा की जाये

[गतांक से आगे]

श्री प्रकाशवीर शास्त्री—सभापति जी, अगर श्री कपूरसिंह मेरी बात को पूरा सुन लेते तो शायद मुझसे सहमत होते। मैं तो कह ही रहा हूं कि मास्टर तारासिंह का यह वक्तव्य है जो कि सही नहीं हो सकता क्योंकि संविधान पर हस्ताक्षर

श्री कपूरसिंह—यह सही है मैं नहीं कह रहा हूं।

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी०

श्री प्रकाशवीर शास्त्री—अगर सही है तो मैं समझता हूं कि इससे बड़ी देश के लिए दुर्भाग्य की बात और कोई नहीं हो सकती जो आप कह रहे हैं। इसलिए जो बात मैं कह रहा था यह मांग भाषा की न होकर पंथ की है इसका मैं एक और प्रमाण उपस्थित करना चाहता हूं। मास्टर तारासिंह का प्रभात अखबार जो जालन्धर से निकलता है उसमें छपा हुआ लेख भी इसी बात का प्रमाण है। उसका एक उद्धरण है। जब भारत और पाकिस्तान का संकट समाप्त हो गया तो पहली अक्तूबर ६५ को उसके अंक में उन्होंने एक लेख लिखा उसके अपने शब्द पढ़कर सुनाना चाहता हूं—

"जब कश्मीर का युद्ध चल रहा था तब मैं सोच रहा था कि इसका परिणाम क्या होगा? मैंने यह भी कहा था कि यदि पाकिस्तान जीत जाय उसकी सेनाएं हमारे इलाके में से गुजर भी जायें तो हमें कुचला समझो। यदि हिन्दुस्तान जीत जाय तो हिन्दू अहंकार और हिन्दू शक्ति इतनी बढ़ जायगी कि हमें थोड़े ही दिनों में रगड़ कर रख देगी और हम यही चाहते थे कि किसी की जीत के बिना ही बीच में संधि हो जाय फिर हम सोचेंगे और अपना स्वतन्त्र चेहरा बनाने का समय हमें मिल जायगा। वाहे गुरु की कृपा से अब यह अवसर हमें मिला है और अब हमें तत्काल सोचना होगा कि हम किसी तरीके से अपनी कोई ऐसी स्वतन्त्र स्थिति बना लें जिससे पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों को हमारे तुष्टीकरण की इच्छा बनी रहे।

यह है वह दृष्टिकोण जिसके कि आधार पर पंजाबी सूबे की मांग अकालियों की ओर से उठी। आखिरकार श्री नेहरू, सरदार पटेल, गोविन्द वल्लभ पंत और लालबहादुर शास्त्री क्यों इससे सहमत नहीं थे क्योंकि वह अच्छे तरीके से जानते थे कि यह मांग भाषा की नहीं है यह भाषा के पीछे छिपी एक साम्प्रदायिक मांग है।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने पंजाबी सूबे की मांग स्वीकार की उसकी बात तो मुझे समझ में आ सकती है क्योंकि कांग्रेस संगठन का सबसे बड़ा अध्यक्ष हो वह है जो उत्तर और दक्षिण की दो आंखों से भारत को देखता है। राज्य सभा में श्री कामराज के भाषण की चर्चा करते हुए मद्रास के एक सदस्य ने उनके चुनाव अभियान के एक भाषण की चर्चा करते हुए बताया, उन्होंने कहा कि दक्षिण के ऊपर हमेशा से उत्तर के लोग अपना आधिपत्य जमाने का प्रयास करते रहे हैं। पर एक बात मेरी समझ में नहीं आई। श्री कामराज पंजाबी सूबे की मांगें वह तो बात तो समझ में आ सकती है। उत्तर के किसी तरह से टुकड़े हों इससे तो शायद उनको संतोष हो सकता है पर श्री जवाहरलाल नेहरू की पुत्री जो इस देश की प्रधान मंत्री हैं और और जिन्होंने इस बात की प्रधान मंत्री बनते ही घोषणा की थी कि हमारे पिता जो काम अधूरा छोड़ कर गये हैं मैं उस काम को पूरा करूंगी। मैं पूछना चाहता हूं कि उनके मन्त्रिमंडल में जिस समय पंजाब के विभाजन का प्रस्ताव पास हो रहा था तो उन्होंने मन्त्रिपरिषद में कैसे यह प्रस्ताव पास हो जाने दिया? क्या पटेल, नेहरू, पन्त और शास्त्री जी के उत्तराधिकारियों में कोई नहीं ऐसा नहीं था जो लाजपतराय और भगतसिंह के पंजाब को टुकड़े टुकड़े होने से बचा लेता? क्या कोई भी ऐसा उस समय मौजूद नहीं था जो हिम्मत के साथ खड़ा होकर कहता कि मैं लाला लाजपतराय और शहीद भगतसिंह के पंजाब का विभाजन स्वीकार नहीं करूंगा।

पंजाब के और देश के इतिहास में ६ सितम्बर ६५ वह काला दिन माना जायगा जब नन्दा जी ने पाकिस्तान के साथ लड़ाई बन्द हुए १२ घंटे भी नहीं हुए थे संसदीय समिति और कैबिनेट सब कमेटी बनाने की घोषणा कर दी।

संसदीय समिति की घोषणा इतनी आतुरता से गुलजारीलाल नन्दा जी ने की, जो उसके अधिकार और कर्तव्य क्या होंगे, इसकी पूरी व्याख्या भी श्री नन्दा नहीं कर सके। संसदीय समिति के सदस्यों का जिस रहस्यात्मक ढंग से चुनाव हुआ, वह भी इस संसद के इतिहास में एक नई घटना रहेगी, जिसका इतिहास आगे चलकर लिखा जायगा कि किस प्रकार से वह समिति बनी, इससे जो हानि हुई उसके परिणाम पंजाब नहीं पूरे देश को भुगतना पड़ेंगे।

सभापति जी, मैं आप के माध्यम से यह भी कहना चाहता हूं कि अभी जब कि विभाजन की घोषणा हुई है और शाह कमीशन ने रेखा भी नहीं खींची है, उसी का परिणाम यह हो रहा है कि पंजाब के व्यापारी वर्ग ने गाजियाबाद, सोनीपत और फरीदाबाद में इधर आकर जमीनें खरीदनी शुरू कर दी हैं। जब से पंजाब के विभाजन की घोषणा हुई है पंजाब में जमीनों के भाव ऊंचे चले गये हैं। आप रिजर्व बैंक से पूछिये कि इस प्रस्ताव की घोषणा के बाद पंजाब के कितने बैंकों से लोगों ने अपना हिसाब इधर ट्रान्सफर कराया है या दूसरी ओर भेजा है।

पंजाब के विभाजन का आधार भाषा न होकर मजहब रहा है। १९६१ की जनगणना के आंकड़ों को आज मानने से मास्टर तारासिंह, सन्त फतेहसिंह और अकाली लोग इन्कार करने लगे हैं और कहते हैं कि वे भाषाई आंकड़े साम्प्रदायिक हैं। यदि इन आंकड़ों के पीछे तथ्य नहीं है तो मैं इन लोगों से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं, क्या पंजाब यूनिवर्सिटी के आंकड़े भी झूठे हैं? क्या एस० आर० कमीशन की रिपोर्ट झूठी है। अगर जनगणना के आंकड़े झूठे हैं तो इन दोनों प्रमाणों के बारे में वे क्या कहेंगे।

ए० आर० कमीशन की रिपोर्ट में जो सीमा निर्धारण आयोग था, पैरा ५३२ के शब्द आपको सुनाना चाहता हूं। उन्होंने लिखा है कि जालन्धर डिवीजन के छः जिलों में १९५० से १९५५ तक जो छात्र पंजाब विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में बैठे उनमें ६२ २ प्रतिशत छात्रों ने हिन्दी ली और ३७ ८ छात्रों ने पंजाबी ली। एस० आर० कमीशन ने उसी में लिखा है कि १९५१ से १९५५ तक पंजाब विश्वविद्यालय की मैट्रीकुलेशन परीक्षाओं में १,३७,५८८ बच्चे बैठे। इन्हें इतिहास और भूगोल के पर्चों के हिन्दी या पंजाबी के माध्यम से उत्तर देने की छूट थी। कमीशन लिखता है कि इनमें से ७३ ३ प्रतिशत छात्रों ने हिन्दी में उत्तर दिये और २६ ५ छात्रों ने पंजाबी में उत्तर दिये। अब मैं पूछना चाहता हूं सन्त फतेहसिंह, मास्टर तारासिंह और उनके समर्थकों से कि क्या विश्वविद्यालय के आंकड़े भी झूठे माने जायेंगे। अब रह जाती है सन् १९६१ की जनगणना, इसके लिये कहते हैं कि लोगों ने दबाव में आकर, साम्प्रदायिक बहाव में आकर अपने को हिन्दी भाषी लिखाया है। इसके भी आप दो उदाहरण सुनिये। मैं जालन्धर और गुरदासपुर के आंकड़े देना चाहता हूं

जालन्धर जिले में हिन्दुओं की संख्या ६,६२,६३१ है और इस जिले में जिन लोगों ने अपनी मातृभाषा हिन्दी लिखाई है, उनकी संख्या ४,६९,१५८ है बाकी हिन्दुओं में से १,९३,४७३ हिन्दू वे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा पंजाबी लिखवाई है, जिसके लिये कि वे कहते हैं कि भाषा के खाने में गलत लिखवाया है।

[शेष पृष्ठ १५ पर]

सभा की सूचनाएं

सभा के वृहदधिवेशन की तिथियों में परिवर्तन

दि० ११ व १२ जून निश्चित

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के समस्त कार्यकर्त्ताओं एवं प्रतिनिधि महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि आर्य प्र० सभा उत्तरप्रदेश का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक २८ व २९ मई के स्थान में दि० ११ व १२ जून १९६६ दिन शनिवार व रविवार को आर्य कन्या विद्यालय "डिग्री कालेज" देहरादून में होना निश्चित हुआ है। प्रथम दिवस की बैठक ३ बजे अपराह्न से प्रारम्भ होगी।

कृपया समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वे अपने अपने समाज के प्रतिनिधि महोदयों को ११ जून ६६ के प्रातः देहरादून पहुंचने के लिए प्रेरणा करें।

२—दि० ११ ६ की रात्रि में प्रदेशीय आर्य सम्मेलन भी देहरादून में ही होगा। जो समाज एवं प्रतिनिधि प्रस्ताव भेजना चाहें वह ३१ मई तक भेज दें।

३—सभा की वार्षिक रिपोर्ट भेजी जा चुकी है। जो प्रश्न करना है वह सभा कार्यालय में अधिवेशन की तिथि से १५ दिन पूर्व भेजने का कष्ट करें।

४—११ जून को मध्याह्न प्रदेशीय आर्य शिक्षा सम्मेलन भी श्री प० महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी एम० ए० की अध्यक्षता में देहरादून में होगा।

५—जिन किसी समाज ने अभी तक प्रतिनिधि चित्र न भेजे हों वे सभा कार्यालय में भेज दें। अन्यथा वृहदधिवेशन के समय आने वाले कार्यों की जांच करने में कठिनाई होती है। अतः सूचना की प्राप्ति के तुरन्त भेजने का कष्ट उठावें और जिन जिन सदस्यों ने सभा शुल्क अब न दिया हो, वह कृपया अधिवेशन के समय देने की कृपा करें।

अन्तरङ्गाधिवेशन की सूचना

समस्त अन्तरङ्ग सदस्यों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अन्तरङ्ग सभा का आवश्यक अधिवेशन दिनांक १० जून १९६६ दिन शुक्रवार समय मध्याह्न १२बजे से आर्यसमाज देहरादून में आरम्भ होगा। कृपया समयानुसार निश्चित समय पर पहुंचने का कष्ट करें।

—कालीचरण, सभा मन्त्री

सभा कार्यालय देहरादून को

आ०प्र० सभा उ०प्र० का कार्यालय ९ जून १९६६ को देहरादून पहुंच जायगा। अतः आर्यसमाजों एवं उपसभाओं को सूचित किया जाता है कि सभा अधिवेशन सम्बन्धी कार्य, जो भी डाक हो वह दि० ५ जून तक लखनऊ के पते पर तत्पश्चात् 'आर्यसमाज देहरादून" के पते पर भेजने की कृपा करें। १२।६ से लखनऊ के पते पर भेजी जावे। —सभा मन्त्री

समाजों का कर्तव्य

हर्ष का विषय है कि सभा को निम्न विद्वान महानुभावों ने ग्रीष्मावकाश में अपना अमूल्य समय देने का संकल्प किया है। समाजों को चाहिए कि वे अपने यहाँ बुलाकर प्रवचन करावें और लाभ उठावें। सभा उनके इस सहयोग के लिये धन्यवाद देती है।

१—श्री ओंकार जी मिश्र 'प्रणव'
२—श्री वेदप्रकाश जी एम०ए०
३—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार
४—श्री रामकुमार जी शर्मा एम०ए०

प्रतिनिधि चित्र तुरन्त भेजिए

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय में अब तक ९५० आर्यसमाजों के वार्षिक प्रतिनिधि चित्र प्राप्त हुए हैं। अतः समाजों के मन्त्री महोदयों एवं जिला उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदयों तथा समस्त निरीक्षक तथा उपदेशक, प्रचारकों से तथा समस्त अन्तरङ्ग सदस्यों से निवेदन है कि अपने अपने जिला क्षेत्र के समाजों से प्रतिनिधि चित्र कार्य भरवाकर सभा कार्यालय में अब दशांश, शुद्धकोटि तथा चार आना रूप प्रतिनिधि शुल्क भिजवाने की कृपा करें।

—कालीचरण सभामन्त्री

सभा के पुराने कार्यमुक्त उपदेशकों एवं भजनीकों की सेवा में

सभा के खातों में निम्नलिखित पुराने उपदेशक व भजनीकों का धन निकल रहा है। परन्तु सभा कार्यालय में उनका ठीक पता न होने के कारण अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है। अतः इन सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्र सभा कार्यालय से पत्र व्यवहार कर अपना धन प्राप्त करने की कृपा करें।

१—श्री श्यामाप्रसाद जी
२—श्री सत्यदेव जी शर्मा
३—श्री महावीर प्रसाद जी

आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं की सेवा में निवेदन

प्रत्येक जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि अपने-अपने जिले के आर्य समाजों से वार्षिक प्रतिनिधि फार्म भिजवा कर सभा कार्यालय में भिजवाकर कृतार्थ करें और सभा का शुल्क (दशांश शुद्धकोटि।) आना रूप तथा प्रतिनिधि शुल्क भिजवाकर अनुगृहीत करें। इस विषय में उपसभाओं को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

—कालीचरणसभामन्त्री

शिक्षा सम्मेलन

सभा सम्बद्ध आर्य विद्यालयों के प्रबन्धक महोदयों तथा प्रधानाचार्यों की सेवा में निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के वृहदधिवेशन के अवसर पर ११ ६ ६६ को मध्याह्न १२ बजे शिक्षा सम्मेलन, श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम० ए० के सभापतित्व में सम्पन्न होगा।

आपसे साग्रह प्रार्थना है कि इसमें सम्मिलित होकर इस आयोजन को सफल करें। "विद्यालय वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में कैसे अधिक उपयोगी हो सकते हैं" इस विषय पर अपने अमूल्य सुझाव देकर अनुगृहीत करें।

—रामबहादुर
अधिष्ठाता शिक्षा विभाग

उत्सवों एवं विवाह संस्कारों एवं कथाओं के निमित्त आमन्त्रित कीजिए—

प्रकाण्ड विद्वान्, सुमधुर गायक, सुयोग्य सन्यासी एवं वैदिक वेदवर्ग द्वारा प्रचार करने वाले योग्य प्रचारक।

महोपदेशक

आचार्य विश्वबन्धुजी शास्त्री महोपदेशक
श्री धर्मवीर जी शास्त्री „
श्री पं० श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री प० विश्वधर्म जी वेदालंकार
श्री पं०केशवदेव जी शास्त्री उपदेशक
श्री पं० सत्यनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर भजनोपदेशक
श्री चन्द्रपालसिंह जी—प्रचारक
श्री धर्मदत्त जी आनन्द "
श्री धर्मपालसिंह जी— "
श्री हेमचन्द्र जी (फिल्मी सर्वज्ञ)
श्री देवपालसिंह जी— प्रचारक
श्री प्रकाशवीर जी शर्मा "
श्री जयपालसिंह जी आर्य "
श्री ओमप्रकाश जी सिद्धेश „
श्री दिनेशचन्द्र जी "
श्री कृष्णपालसिंह जी "
श्री रघुवरदत्त जी "
श्री रामकृष्ण शर्मा-वैदिक वेदवर्ग

प्रोग्राम मास जून

उपदेशक

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—१ से ९ अलीपुर १० से १२ आ० स० बदायूं, १७ १८ सिठारा (अलीगढ़)।

श्री धर्मवीर जी शास्त्री—६ से ८ बदायूं, १३ से २६ जगन्नाथपुर बिहार।

श्री विश्वधर्म जी—१ से ६ हाथरस लखनऊ, १० से १२ बदायूं।

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर—१ से ५ मथुरा जमुनी, ८ से ११ कमलपुर सुल्तानपुर।

श्री धर्मपालसिंह जी—१ से ५ विवाह फरीदपुर, ११ से १४ लखनऊ।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—१ से १० तक हल्द्वानी।

श्री प्रकाशवीर जी—२—३ विवाह कुचैला, ५ से ८ विवाह मुड़ियापुर। १० ११ फतेहगढ़ १३, १४ फर्रुखाबाद, १६, १७ सुजानपुर, १९, २० सुलतानपुर-बंश, २२ २३ विविधा सआदतपुर, २५ २६ कन्नौज, २८, २९ औरिया।

श्री देवपालसिंह—१, २ राजी की सराय ४, ५ नानपारा, ७, ८ जगन्नाथ गढ़, ११, १२ बरसनियां, १४, १५ चौंडा, १७, १८ देवबन्द, २०, २१ चोंटी २३, २४ गोपालगढ़, २६,२७ नवाबपुर, २९, ३० मोहम्मदाबाद गोहना।

—शिवदयालु शास्त्री
—उ०अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्र० सभा, लखनऊ

अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध कैसे हो ?

(ले०—श्री डा० रघुवीर शरण जी मुख्य संगठक, उत्तर प्रदेश)

प्रो० योगेश्वर देव एम० ए० द्वारा लिखित लेख अराष्ट्रीय प्रचार निरोध कैसे किया जाय और कौन करे ५ मई सन् ६६ के आर्यमित्र में पढ़ा। प्रो० जी पानपोस (उड़ीसा) में ईसाइयों की गतिविधियों को देखकर हैरान हैं और सोच में हैं कि किया क्या जाय और कौन करे। यह तो एक पानपोस उन्होंने देखा है किसी भी प्रान्त के किसी जिले के ग्राम में घूम जाइये आपको पानपोस ही पानपोस नजर आयेंगे। मुझे हिन्दू से कोई शिकायत नहीं दुःख तो यह है कि आर्य समाज जैसी जागरूक संस्था इस ओर से उदासीन है। मैं अलीगढ़ को केन्द्र बनाकर अलीगढ़ एटा व मैनपुरी व मथुरा जिलों में ६ फरवरी सन ६३ से ईसाई विरोध कार्य कर रहा हूँ इन जिलों के शहर, कस्बा व ग्राम का लगभग ५० प्रतिशत से भी अधिक ईसाई बन चुका है। गाँव गाँव में अछूतों के समूह के समूह ईसाई हो चुके हैं और होते जा रहे हैं। मैंने लोगों पैदल व साइकिल द्वारा ग्राम ग्राम में घूमकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई देहली को रिपोर्टें दी हैं। ईसाई मिशन इन प्रदेशों में आटा, वंजीटेबिल बांट रहा है। प्रत्येक सप्ताह लोगों में सामान जाता है। उक्त प्रलोभन द्वारा ईसाई बनाया जा रहा है। इसकी रोकथाम के लिये कुछ जिलों की तहसीलों में सभा की ओर से प्रचारक कार्य कर रहे हैं, कार्य की गति तो सतोषजनक है पर कार्य बढ़ नहीं रहा है। कारण है धनाभाव। जिला सभाओं व स्थानीय आर्य समाजों के अधिकारियों से मिलता हूँ ईसाइयों की गतिविधियों का रोना रोता हूँ परन्तु इनके कान पर जूं भी नहीं रेंगती। किसी भी प्रकार का सहयोग देने का उत्साह नहीं। मैं उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मदनमोहन वर्मा जी अध्यक्ष उत्तर प्रदेश एसेम्बली से लखनऊ जाकर मिला एक दिन आधा घन्टा दूसरे दिन एक घन्टा ईसाइयों की गतिविधियों पर बातें हुईं। ध्यान तो मेरी बातों पर खूब दिया मुझसे लिखित रिपोर्ट मांगी, मैंने लिखित रिपोर्ट भी दी। किस प्रकार कार्य आगे बढ़ सकता है यह भी लिखा। मैं किस प्रकार कार्य कर रहा हूँ पर उत्तर कोई नहीं। स्मरण-पत्र भेजने पर उत्तर मिला कि उक्त विभाग के अधिष्ठाता जी को आपके पत्र भेज दिये गये हैं उनसे सम्पर्क स्थापित कीजिये। मुख्य अधिष्ठाता जी को कई पत्रों के भेजने पर उत्तर मिला कि अमुक तिथियों में अमुक स्थान पर मिलिये। वहां गया घन्टा डेढ़ घन्टा बातें हुईं, उत्तर मिला धनाभाव के कारण केवल ईसाई प्रचार निरोध विषय पर लेख लिख देता हूँ। कहिये जब सभाओं की यह दशा है तो समाजों से शिकायत क्या ? ऐसी दशा में हो क्या सकता है।

वानप्रस्थी सन्यासी या गृहस्थी कैसे भी प्रचारक रखिये उदरपूर्ति व मार्ग व्यय आदि के लिये धन तो प्रत्येक को चाहिये ही कहां से आये। ईसाई मिशन का देशव्यापी प्रचार व प्रसार इस कारण है कि अमेरिका, इंगलैण्ड व अन्य ईसाई देश करोड़ों रुपया भारतीयों को ईसाई बनाने के लिये दे रहे हैं। ईसाई मिशन का योजनाबद्ध कार्य है उसी से वह बढ़ रहे हैं अमेरिका में मिशन का मुख्य कार्यालय है, वहीं से प्रचारक ट्रेंड होकर चलता है वहीं से धन चलता है, वहीं से योजना चलती है, हम रे यहां क्या है कुछ नहीं। व्यक्तिगत रूप से कभी कहीं किसी को जोश आ गया उसने चार-छः महीने वर्ष दो वर्ष हाथ पैर मारे और थक कर बैठ गया, ऐसे व्यक्ति को कोई सहयोग देने वाला भी नहीं।

ईसाई प्रचार की उन्नति का एक कारण यह भी है कि उनके कार्यकर्ता केवल ईसाई प्रचार का ही कार्य करते हैं उन्होंने अपने को अनेक समस्याओं में उलझाया हुआ नहीं है। उनका मस्तिष्क, उनका शरीर, उनका ध्यान एक ही ओर लगा हुआ है। उनका कहना है कि ईसाई धर्म होने के साथ साथ ही भाषा आदि की समस्याएं स्वयं ही हल हो जायेंगी।

अतः ईसाई प्रचार निरोध कैसे किया जावे और कौन करे की समस्या केवल इसी प्रकार सुलझ सकती है कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी अन्य समस्याओं से ध्यान हटाकर समस्त प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों को, व समाजों के मंत्री व प्रधानों का एक सम्मेलन शीघ्र ही केवल एक इसी विषय पर विचार के लिये बुलायें कि ईसाई प्रचार निरोध देश व्यापी कैसे बने और कुछ निश्चय करके उठें। इसके पश्चात इस कार्य सचालन के लिये जो भी संगठन बने उसके अधिकारी सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि आदि संस्थाओं के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित करें। संगठन को बल मिलेगा, धन मिलेगा, सहयोग मिलेगा व कार्यकर्ता भी मिलेंगे। कुछ ही वर्षों में काया पलट जायगी—वरन कितने ही सम्मेलन आर्य समाजें कर लें कितने ही पानपोस के स्वामी ब्रह्मानन्द जी जैसे महानुभाव व्यक्तिगत प्रयत्न करके स्वयं ही क्या कर लें और भी कर दें कुछ नहीं होगा। बम्बई में ईसाइयों का विश्व सम्मेलन दिसम्बर सन् ६५ में हुआ, आर्य समाज तो शोर मचा कर साहित्य बांट कर वहीं का वहीं है, परन्तु बम्बई में ईसाइयों की योजना बनी उसी के अनुसार सारे भारतवर्ष में ईसाई प्रचार तीव्रतम होता जा रहा है, आर्य समाजों के पास तो एक ही हथियार शेष है कि अपने-अपने उत्सवों पर ईसाई प्रचार विरोध सम्मेलन करके दो-चार भाषण करा दिये और बस। विरोधी सचेत हो जाते हैं हम वहीं के वहीं रह जाते हैं। भाई करो तो कोई ठोस काम करो वरना शोर भी मत मचाओ।

ओ३म् प्रसोमासो विपश्चितः ।
अपो नयन्त ऊर्मयः ।
वनानि महिषा इव ॥

साम० ५।१०।२

अन्वय—(सोमास) भक्ति रस में सराबोर (विपश्चित) विद्वान लोक (ऊर्मय) लहरों की भांति (अपः) प्रजाओं को (प्रनयन्त) बहा ले जाते हैं (महिषा) बड़े बड़े मेघों की (इव) भांति (वनानि) जलों को।

भावार्थ—प्रभु के भक्त ज्ञानी महात्मा सर्व साधारण जनता को जिस ओर चाहें चला सकते हैं। वह चाहें तो शान्ति प्रिय देश को कलह और युद्ध का केन्द्र बना दें सुसगठित राष्ट्र को छिन्न भिन्न कर टुकड़ों में विभाजित कर दें और चाहें तो भीरु कायर जाति को नवजीवन प्रदान कर एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में परिवर्तित कर दें। और बड़े से बड़े सम्राट से टक्कर लेने वाला बना दें। वह चाहें तो वसुन्धरा को स्वर्ग बना दें और चाहें तो घातक अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण कर संसार में प्रलय उपस्थित कर दें।

संसार में विचार की शक्ति सबसे महान है। वास्तव में विचार ही हैं जो वसुधा पर शासन करते हैं। बड़े से बड़े ग्रन्थ बल को वह विचार और विचारक ही चाहे रक्षक बना दें और चाहे सब संहारक बना दें।

जब संसार के विचारकों के अन्दर जीवन का कोई ऊंचा लक्ष्य होगा और उनमें श्रद्धा होगी तब उनका जीवन पवित्र होगा परोपकार प्रेम और करुणा की भावनाओं से ओतप्रोत होगा तो निश्चय वह अपनी आध्यात्मिक भारती में भरताने जन संसार को सुपथ का पथिक बना देंगे।

जिस प्रकार आकाश में मंडराने वाले मेघ जलों को जिधर चाहते हैं ले जाते हैं।

आवश्यक सूचना

आर्यसमाज मुजफ्फरनगर आर्यसमाज पुर बरेली के आर्य सभासदों की सूची अन्तिम रूप से बन गई है, अब निर्वाचन दि० ५ जून सन् ६६ को आर्यसमाज मुजफ्फरनगर का तथा ७ जून सन् ६६ को आर्यसमाज पुर बरेली का होगा।

—हरप्रसाद निर्वाचक
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आज के युग में आर्यसमाज की आवश्यकता

बंग-असम आर्य-महासम्मेलन के अष्टम समारोह के शुभ अवसर पर

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि-सभा के उपप्रधान, बिहार राज्य आर्य-प्रतिनिधि-सभा के माननीय प्रधान, बिहार विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति एवं भारत के राष्ट्रपति के अवैतनिक नेत्र चिकित्सक

पद्मभूषण डा० दुखनराम, एम०एल०ए० का

अभिभाषण

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते॥

श्रीमान् स्वागताध्यक्ष महोदय, तथा आर्य भाइयो और बहनो;

आज आपने मेरे दुर्बल कन्धों पर जो अपनी अकृत्रिम दया का विशाल भार सौंप दिया, उससे मेरा हृदय आप के समक्ष स्वयं प्रणत है। मैं सम्पूर्ण बंग-असम प्रदेशस्थ आर्यों के इस महासम्मेलन के उन कर्मठ आयोजकों को अनेकानेक हार्दिक साधुवाद देता हूं, जिनके अथक एवं अनुकरणीय प्रयत्नों से आज मुझे यहां की धर्मबुभुक्षु आर्य जनता के सामने अध्यक्ष के गौरवमय पद से कुछ कहने-सुनने तथा धन्यवाद देने का शुभ अवसर मिला है।

आर्य समाज क्या है? इसकी परम्परा क्या है? और इसकी क्या आवश्यकता है? ये प्रश्न यद्यपि आज उत्तर की अपेक्षा नहीं रखते, तथापि आज इनकी संक्षिप्त व्याख्या की अनिवार्य आवश्यकता तो आ ही गई है। स्वामी दयानन्द के पूर्व भारत का तामसिक दौर ही था। धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से देश का पराभव हो चुका था। छूआछूत, सामाजिक असमानता, विधवाओं के करुण मूक क्रन्दन, बाल विवाह, सतीप्रथा, धार्मिक अन्धविश्वास एवं स्त्री शिक्षा के लुप्त हो जाने एवं विधर्मियों के आक्रमण से हिन्दू समाज जर्जर हो रहा था। ऐसे अवसर पर महर्षि दयानन्द का पावन प्रादुर्भाव हुआ। स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज का प्रवर्तन कर विश्व को दिव्यालोक प्रदान किया। ईश्वरीय ज्ञान वेद के पावन सन्देश को सर्वसाधारण के लिये सुलभ कराया। काल और देश के अनुसार सभी शाश्वत मूल सिद्धान्तों और जीवन्त सत्याओं के विवरण विवर्तित होते रहते हैं। कभी वेदों का पठन-पाठन सामान्य प्रक्रिया से होता रहा था। लेकिन पीछे अल्पगुण जनों के समझने के लिये ब्राह्मणग्रन्थों को निघण्टु लिखना पड़ा और निघण्टु को भी समझने के लिये यास्क ऋषि को निरुक्त जैसा ग्रन्थ लिखना पड़ा था। यही हाल सामाजिक संस्थाओं का भी होता है। आज आर्यसमाज को जनता के सामने सही ढंग से वैदिक धर्म का मूल सिद्धान्त प्रस्तुत करना है।

आर्यसमाज कोई ऐसी सामयिक संस्था नहीं है, जो कुछ दिनों के लिए बनी और कार्य पूरा करके समाप्त हो गयी। यह सदा शाश्वत वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने वाली संस्था है, समाज में लगी हुई काई और कमजोरी को दूर करना तथा बाह्य आक्रमण से इसकी सुरक्षा करना इसका मुख्य काम है। ये दोनों कार्य किसी भी समाज के लिए अनिवार्य अंग हैं। दूसरे शब्दों में एक डाक्टर की हैसियत से मैं यही कह सकता हूं कि शरीर के अन्दर धमनियों में बहने वाले रक्त में दो प्रकार के कण होते हैं। एक रक्तकण दूसरे श्वेतकण। इनमें श्वेत कणों की उपयोगिता यही है कि वे रक्त के अन्दर आने वाले बाहरी शत्रुओं का मुकाबला करके उन्हें बाहर निकाल दें और भीतरी गन्दगी को भी दूर कर दें। ठीक ऐसा ही आर्यसमाज वैदिक धर्म के लिए करता है।

आर्यसमाज एक ऐसी सामाजिक संस्था है, जो मुमूर्षु मानवसमाज को बचाने के लिए बनी थी। इसके अपने दस नियम ही इसकी अपनी संपूर्ण कहानी कह देते हैं। इस क्रान्तिकारी संस्था के अन्दर कहीं कोई दुराव छिपाव नहीं है, कहीं दुराग्रह नहीं है, कहीं ऊंच-नीच का भाव नहीं है। पुण्य श्लोक महर्षि दयानन्द जी ने उन्नीसवीं सदी की परतन्त्रता, अन्ध विश्वास, अशिक्षा, स्त्रियों के प्रति हीन विचार, तथा अकर्तव्य कर्तव्य में पड़े हुए वैदिक धर्मावलम्बियों आर्यों को बचाने के लिए, सही मार्ग प्रदर्शन के लिए इस संस्था की प्रतिष्ठापना की थी। महर्षि ने सम्पूर्ण आर्यावर्त में—गुजरात और कश्मीर से लेकर असम प्रदेश तक की भूमि में घूम घूमकर अपना झंडा फहराया था और वैदिक धर्म का वास्तविक उपदेश दिया था। उन्होंने ईसाइयों, मुसलमानों आदि की ओर से हो रहे आक्रमण से हिन्दू समाज को बचाया तथा भीतरी घुन, अन्धविश्वास आदि से जनता को आगाह किया था। उन्होंने शास्त्रार्थ करके, सभायें कराकर तथा उपदेश देकर गुमराह जनता को और शिक्षित समाज को वेदों का तत्त्व समझाया था। उसी काम को उनके बाद आर्यसमाज करता आ रहा है।

महर्षि ने २९ वें वर्ष की उम्र तक वैदिक धर्म का प्रचार किया था। और १८८३ ई० के कार्तिक मास में ठीक दीपमालिका के दिन, जब घर-घर में मिट्टी के दीये जो जलने को थे, महर्षि के नश्वर शरीर की ज्योति महान प्रकाश में विलीन हो गई थी लाखों बुझते दीपकों को जला कर। यह समय भारत की अंगड़ाई का था। इंगलैंड और फ्रांस में इसके पूर्व ही क्रान्ति हो चुकी थी। वहां राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन होने लगे थे। बंगाल में राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा स्वामी विवेकानन्द जैसी हस्ती ने समाज को ऊपर उठाने का कार्य प्रारम्भ किया था। इन सभी का विचार एक था कि हिन्दू समाज मुमूर्षा में है, उसे बचाना चाहिए। लेकिन, दुर्भाग्य से चिकित्सा सभी की भिन्न भिन्न हो गई। फलतः, सभी एक दूसरे से दूर हो गए। यह तो मानना ही पड़ेगा कि इनमें से महर्षि दयानन्द ही ऐसे थे, जिन्होंने आर्य समाज को अपनी पूर्व गरिमा की याद दिलाई और कहा कि उसके पास संसार को देने के लिए ही सब कुछ है, लेने के लिए कुछ नहीं। यह सचमुच बड़ा है उसके वेद सर्व ज्ञानमय हैं, उसकी पवित्र भारत भूमि सर्वोत्तम है। यहां का प्रत्येक निवासी आर्य है, सर्व श्रेष्ठ है।

आज भी भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व मुमूर्षा में पड़ा हुआ है। कहीं राजनीतिक मोह है तो कहीं आर्थिक और कहीं दैविक मूर्छा है तो कहीं सामाजिक। सभी देश और प्रदेश, सभी महाद्वीप और द्वीप अन्तःसंघर्ष में तिलमिला रहे हैं। नित्य नवीन समस्यायें उठ खड़ी हो रही हैं। और समस्याओं का समाधान ढूंढ़ नहीं मिलता है। आज समय और दूरी का अन्तर इतना छोटा हो गया है कि संसार के किसी कोने में जरा सा स्पन्दन हुआ कि दूसरे छोर तक उसका प्रभाव पहुंच जाता है। और अब तो चन्द्र और मंगल लोक की घटनाओं का भी प्रभाव होने लगेगा। ऐसी स्थिति में, भारत उससे अप्रभावित रहेगा, यह कैसे कहा जा सकता है?

यहां भी नित्य नवीन, पाश्चात्य और पौरस्त्य का, नवीनता-प्राचीनता का, सिद्धान्त और वाद का संघर्ष बढ़ता ही जा रहा है। कर्तव्याकर्तव्य, पथ्या-पथ्य, खाद्याखाद्य, सभी विवेच्य हैं। ऐसी स्थिति में कौन है, जो सही मार्ग प्रदर्शन कर सकता है?

जहां तक पुण्यश्लोक महर्षि स्वामी दयानन्द जी और उनके द्वारा प्रतिष्ठापित आर्यसमाज का प्रश्न है, वह तो सतत जाग्रत हो कहते आये हैं कि जब तक सारा विश्व आर्य (विचारों से श्रेष्ठ) नहीं हो जाता तब तक समस्याओं का समाधान नहीं मिल सकेगा, इसलिए सभी विश्व को आर्य बनाने, विवेकशील श्रेष्ठ जन बनाने का निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। यह काम हम छोटी इकाई से लेकर बड़े समाज, देश तथा विश्व तक की परिधि में कर सकते हैं, हमें करना चाहिए। आर्यसमाज को करना है। आज आर्यसमाज अपने ओ३म् के झंडे को आगे करके 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का अमर संदेश देकर जनता में श्रद्धा विश्वास और साहस का संचार करे। उसे आज स्वामी दयानन्द जी, पं० लेखराम जी तथा स्वामी श्रद्धानन्द, जी की नितान्त आवश्यकता है। उसे आज नया दर्शनानन्द, स्वतन्त्रानन्द, अभेदानन्द और ध्रुवानन्द चाहिए, जो वैदिक सिद्धान्त को घूम-घूम कर सारे भारत के कोने कोने में तथा विश्व के बड़े छोटे नगरों में फैला दे। आर्यसमाज के प्रतिपादित सिद्धान्त को सुनने के लिए उत्सुक जनता को अपने पीछे लगा ले।

जनता की समस्यायें अनेक हो सकती हैं समस्यायें राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक हो सकती हैं, भ्रष्टाचार खाद्याभाव, दुर्भिक्ष, शोषण आदि की जनता और उसके रोकने का उपाय के रूप में आ सकती हैं, तथा ये सीमा के पार से आक्रमण के रूप में तथा उसके समाधान जनित कठिनाइयों के रूप में उपस्थित हो सकती हैं। अथवा औत्पातिक-भाव, बाढ़ भूकम्प आदि का रूप धारण कर भी समस्यायें आती हैं और जनता को तबाह करती हैं।

आर्यसमाज इन सभी संघर्षों का तथा मार्गदर्शन आदर्श विचारों एवं वेदप्रतिपादित उत्तम सिद्धान्तों के माध्यम से कर सकता है, किन्तु यही धर्म-प्रदर्शन ही कर सकता है। समाधान तो वस्तुतः शासन के हाथ में है। हां, आर्यसमाज वास्तविक मार्ग दिखाकर समस्याओं के परिणाम की कठोरता को कम कर सकने में सहायक अवश्य हो सकता है, उसे होना चाहिए। आज आर्यसमाज को धर्म के प्रचार-प्रसार के

लिए जनता के नैतिक बल को उन्नत करना होगा। उसके अन्दर की स्वार्थ भावना को निर्मूल करना होगा। समाज म फिर से प्राचीन वैदिकयुगीन पांच यमों के प्रति आस्था पांच नियमों के प्रति निष्ठा जगानी होगी। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना पड़ेगा कि आवश्यकता से अधिक लेकर या नाजायज ढंग से उपार्जन कर वह न केवल समाज अथवा देश का अहित करता है, बल्कि मानवता की हत्या करता है और जब बेचारी मानवता मारी जायगी तब प्रत्येक व्यक्ति असुरक्षित हो जायगा, क्योंकि तभी 'मात्स्यन्याय' चल पड़ता है—बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। यह हाल नहीं होने पाये उसके लिए अभी से सतर्क होना चाहिए। इसी माग से भ्रष्टाचार, कालाबाजार, दुर्भिक्ष, शोषण, जैसी कृत्रिम समस्यायें कभी नहीं उभरने पायेंगी।

चूंकि मैं एक डाक्टर हूं और वह भी जीवन विशिष्ट नहीं, अब चिकित्सक। इसलिये जरा आबादी की बढ़ता और उसके उपाय पर बोलना भी मेरे लिये अनुचित न होगा। आज भारत जैसे तथा-कथित 'डेफिसिट' देश के लिए आबादी का बढ़ना अच्छा नहीं माना जाता है। इसलिए उसके रोकने के उपायों में भारत सरकार ने परिवार-नियोजन का नुस्खा निकाला है। आबादी की बढ़ती या घटनी उस देश की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। यदि देश सुशिक्षित जागरूक तथा प्रकृति-प्रदत्त साधन सम्पन्नता के साथ-साथ उसको उपयोग में आधुनिकतम भौतिक वैज्ञानिक साधनों से सन्नद्ध है, तो बढ़ती आबादी वरदान बनेगी, अभिशाप नहीं। भारत जैसे देश का प्रकृति-भण्डार अभी तक ७५ फीसदी नहीं तो पचास फीसदी अवश्य ही अस्पृश्य है, उसका कोई उपयोग प्रयोग नहीं हो रहा है। और न उधर ध्यान ही दिया जा रहा है। क्या वे साधन हमारे लिये सहायक नहीं होंगे? इसलिए जनता को सर्वप्रथम शिक्षित, जागरूक और अपने आप को सबसे इन्द्रियजित, परिश्रमी, कर्मठ बनना पड़ेगा। तभी हमारी सारी समस्याओं का समाधान हो सकेगा। जहां तक परिवार नियोजन का प्रश्न है, उसे यदि प्राकृतिक ढंग से किया जाय तो किसे ग्राह्य नहीं होगा? लेकिन कृत्रिम ढंग का या आजकल की औषधनशी प्रणाली का परिवार नियोजन न तो हमारे देश या समाज के अनुकूल पड़ता है और न इसे नैतिकता का सहारा ही मिलता है। यह मैं इसलिये कह रहा हूं कि इस प्रणाली के बाद निकट भविष्य में ही, इसके अमर्यं न सिद्ध होने तथा कठिनाई बढ़ जाने के कारण इसका प्रयोग सफल न हो सकेगा और फिर गर्भस्राव तथा भ्रूण हत्याओं को वैधानिक करने की मांग सामने आयेगी। फिर यह तो भारत जैसे नीतिवादी देश के लिये असम्भव सा होगा। अतः प्राचीनता की ओर चलकर हम जनता को शिक्षित करें कि वह आत्म संयम करके ही कम सन्तान पैदा करे। जैसा गांधी जी ने भी कहा है—

'Both man and woman should know that abstention from satisfaction of the sexual app'tite results not in diseases, but in health and vigour provided that mind co-operates with the body'

परिवार नियोजन मे एक राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण भी है और इस नियोजन की प्रतिक्रिया के पर्यवेक्षण से हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि देश में शनैः शनैः योग्य व्यक्तियों और श्रेष्ठ सपूतों का अभाव हो जायगा और वह भी केवल हिन्दु समाज में ही। क्योंकि इस योजना को पूर्णरूपेण केवल हिन्दुओं का ही बुद्धिजीवी वर्ग अपना रहा है, और श्रेष्ठ अवदान देने का एकमात्र क्षेत्र किसी समाज का बुद्धिजीवी वर्ग ही होता है। इसके विपरीत अशिक्षित तथा पिछड़ी हुई जनता में इस नियोजन का कोई प्रभाव नहीं है। साथ ही, एक दूसरे खतरे की ओर भी हम निर्देश कर देना अपना कर्तव्य समझते हैं। इस नियोजन को ईसाई या मुसलमान अपने धर्म और शरीअत के विरुद्ध समझते हैं। उनके यहां, कृत्रिम गर्भ-निरोध या परिवार नियोजन अथवा गर्भपात धर्म विरुद्ध माना जाता है। यही कारण है, ईसाई या मुस्लिम परिवार कदापि नियोजन के लिये तैयार नहीं होता और उन धर्मों के डाक्टर भी इस कार्य को करने के लिये सन्नद्ध नहीं दीखते हैं, फलतः उनकी संख्या तो दिनोंदिन बढ़ती जायगी और हिन्दुओं की घटती जायगी। ऐसी स्थिति में आप पचास वर्ष आगे की कल्पना कीजिये कि संख्या का उतार चढ़ाव कैसे हो जायगा? और फिर इस प्रजातान्त्रिक युग में, जहां बहुमत का आदर और अधिकार होता है, भारत में ही हिन्दुओं की क्या स्थिति होगी? बहु संख्यक हिन्दु, अल्प-संख्यक रूप में परिणत हो जायगे और यह पूरा देश स्वयमेव ईसाईस्तान और मुसलमानिस्तान बन जायगा इसलिये समाज को इसके विपरीत पहले आवाज उठानी है और पुरजोर प्रयास जारी करना है तथा वैदिकता के विरुद्ध नियोजन कार्य का पर्दाफाश जनता के बीच करना है।

आप सभी उपस्थित लोगों को मालूम है कि जब कभी जहां कहीं भारत भर में कोई दैवी या प्राकृतिक उत्पात होता है, वहां आर्यसमाज अपनी सम्पूर्ण या अधिक शक्ति लेकर जनता की सहायता के लिये उपस्थित हो जाता है। बंगाल का अकाल हो या पंजाब का विभाजन, बिहार का भूकम्प हो या आसाम की बाढ़। सर्वत्र आर्यसमाज ने उचित रीति से यथाशक्ति समस्या का समाधान किया है और भविष्य में भी देश की इन स्थितियों में वह सहायता के लिए अगली पंक्ति में खड़ा रहेगा।

राजनीतिक समस्याओं के प्रति आर्यसमाज का दृष्टिकोण सदा प्रगतिशील रहा है। स्वयं महर्षि ने सर्वप्रथम स्वराज्य को आर्यों का जन्मसिद्ध अधिकार माना था और वे चाहते थे कि सभी भारतीय राजे मिलकर ब्रिटिश सल्तनत को धूलिसात् कर दें। महर्षि के 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखने के बाद ही १८८५ ई० में कांग्रेस का जन्म हुआ था। कांग्रेस में भी बीसवीं सदी के शुरू से ही आर्य समाज के नेता ही वस्तुतः देश नेता होते थे। इसके उदाहरण पुरुषोत्तम लाला लाजपत राय, वीर सावरकर भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जी प्रभृति नेता हैं। अनुवर्ती समय मे आर्यसमाज का सामान्य कार्यकर्ता भी स्वभावतः खादी का परिधान पहनने वाला तथा एक बार अवश्य जेल से हो आने वाला होता था। आज भी बहुत से कांग्रेसी तथा दूसरे राजनीतिक दल के नेता कभी आर्यजन भी हो रहे। लेकिन आर्यसमाज कभी भी हिन्दुस्तान में दो तीन प्रकार की राष्ट्रीयता का समर्थन नहीं करता था। वह सदा से एक राष्ट्र का सिद्धान्त मानता है और मानता रहेगा। यदि आर्यसमाज का सिद्धान्त माना जाता तो फिर आज पाक भारत का प्रश्न ही क्यों खड़ा होता और क्यों भारतभूमि की सहस्रों वर्षों की सीमा तोड़कर नई सीमा बनाई जाती। फिर आज सीमा के ये विवाद और झगड़े भी नहीं उठते।

अब से पूर्व १९६२ ई० में चीन ने आक्रमण करके भारत की सीमा दिखाना चाहा था और १९६५ में उससे शह पाकर चीन समर्थित पाक सेना ने पश्चिमी सीमा पर आक्रमण कर दिया तथा कश्मीर को अव्यवस्थित करना चाहा। इन परिस्थितियों में आर्यसमाज सदा से राष्ट्रीय दृष्टिकोण से सोचता है और वैसा ही कार्य करता है वह सदा भारतीय शासन को नैतिक समर्थन करता है और साथ ही आवश्यकता पड़ने पर अपने हजारों स्वयंसेवकों द्वारा राष्ट्र की प्रतिष्ठा बचाये रखने के लिए कृत संकल्प रहता है। हमारे स्वयंसेवकों ने पत सीमा संघर्ष में अनुकरणीय कार्य किये हैं। मुझे विश्वास है, आर्यसमाज तथा आर्य और दल सदा अपनी मातृभूमि की रक्षा इसी प्रकार करता रहेगा। हमारा मन्त्र है—'राष्ट्रे वयं जागृयाम पुरोहिताः।' राष्ट्र में हम आगे बढ़कर जाग्रत रहें।

आज अन्न समस्या का एक प्रश्न दावाग्नि की भांति उठ खड़ा हुआ है। इसके कारण प्रत्येक प्रदेश में गड़बड़ी हो रही है। अभी बिहार में केरल तथा नहीं बंगाल में जो असाधारण वातावरण उपस्थित हो चुका है। सैकड़ों गिरफ्तारियां हुईं, कोष आहुत हुये, लेकिन समस्या जहां की तहां रह गई।

यह समस्या अशान्त प्रदर्शन तथा गिरफ्तारी से नहीं सुलझने की है। समस्या का निदान और समाधान दोनों यहां की खेती और गोसंरक्षण हैं। इस के लिये अधिकतर कागजी काम हुआ है समस्या का निदान और समाधान दोनों कागजी हैं। इसका समाधान अमेरिकी या कनाडियन गेहूं भी नहीं है। वस्तुतः सरकार यदि उचित ढंग से खेती पर ध्यान देगी, उन्नत वैज्ञानिक तरीकों को अपनायेगी तथा बिचौलियों का भार हटायेगी और किसानों को उचित मात्रा में कृषि का संरक्षण—जैसा कि मिलों को प्राप्त है, अनाज का उचित मूल्य और कृषि सामग्री की प्राप्ति तथा सिंचाई का साधन मिलेंगे—तभी सुधार सम्भव है। साथ ही, भारतीय किसान अधिकतर पशु शक्ति पर निर्भर करता है और यहां के पशु मारे जाते हैं। आज इसी कारण गोवंश का ह्रास हो गया। उसका प्रत्यक्ष प्रभाव तो यह हुआ कि आज हमारे बच्चों तक को एक एक छटांक दूध तक दुर्लभ हो गया। जबकि हमारे बच्चे दूध की पौष्टिकता से बढ़ते हैं। सरकार को इसी प्रसंग में इधर भी ध्यान देना चाहिए आर्यसमाज को गोवंश की वृद्धि के लिए पूर्ण प्रयास करना है।

गोहत्या को रोकने के लिये सभी समय प्रयास करना है। आर्यसमाज ऊपर कही गई सभी समस्याओं को समाहित करने में योगदान करेगा, करता आ रहा है। लेकिन इसका एक दूसरा पक्ष भी है, वह है आध्यात्मिक। समाज धर्म प्रधान संस्थान है, इसके लिए भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता और वैदिकता प्राथमिक वस्तु हैं। यदि कहीं यह भौतिकता की चपेट में संभल हुवा, वेदों का स्वाध्याय-मनन आदि भुला बैठे तो वह पथ छोड़ दलदली की ओर दौड़ता होगा। इसलिए हमें जरा फिर एकबार महर्षि के बतलाये धर्म पथ को देखना होगा। हमारा धर्म, आत्मा का अभिन्न अंग है। इसकी व्याख्या वैशेषिककार ने इन शब्दों में की है—'यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः' यहां से अभ्युदय

ऐहिक और निःश्रेयस पार-लौकिक फल की सिद्धि होती है, वही धर्म है। उपनिषदों ने इन्हीं दोनों को प्रेयस् और श्रेयस कहा है—विद्वानों के लिए श्रेय और प्राकृतों के लिए प्रेय ग्राह्य होता है अर्थात समझदार लोग शाश्वत फल को देने वाली वस्तु ग्रहण करते हैं जबकि प्राकृत जन तत्काल प्रिय लगने वाली वस्तु को स्वीकार करते हैं।

"श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्य मेत—

स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।

श्रेयोहि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते

प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥

—कठोपनिषद्-द्वितीयवल्ली, २

इसलिए हमें अपनी आत्मिक उन्नति के लिए दोनों वस्तुओं का परिज्ञान करके अपने श्रेय को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए और वह श्रेय हमें महर्षि के शास्त्र समुद्र के मथन से प्राप्त 'सत्यार्थ प्रकाश' से ही मिल सकता है। यह मुझे इसलिए कहना पड़ रहा है कि आजकल प्रायः अब बहुत कम लोग इस ग्रन्थरत्न को साद्योपान्त पढ़ते हैं। 'मूले नष्टे नैव पत्रं न शाखा।' मेरा इतना ही कहना है कि आप अपने धर्म को समझें। आपका धर्म "वैदिक" है। आप किसी सम्प्रदाय के अनुगामी नहीं हैं। वह वेद सभी सत्य विद्याओं की निधि है। और जब तक उन निधियों का स्वाध्याय और मनन न होगा तो धर्मरत्न कहाँ मिलेगा। बौद्धों ने अपने त्रिरत्न धर्म त्रिपिटक (तीन पेटारियों) में बन्द कर दिये थे, लेकिन वैदिक धर्म सदा खुले पन्नों में खुला पड़ा है। आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य का यह दैनिक नियम होना चाहिए कि ब्राह्ममुहूर्त में वह थोड़ा बहुत ही सही, वेदों का स्वाध्याय अवश्य करे।

आत्म निरीक्षण

आर्यसमाज के सदस्यों का कर्तव्य है कि वे जब सभी समस्याओं पर विचार करते हैं, तो उसके पहले वे अपने आपका भी निरीक्षण कर लें। कार्य की प्रगति में आत्म निरीक्षण बहुत अधिक सहायक होता है। यहाँ के प्रत्येक सदस्य को यह देखना है कि वे समाज के उद्देश्यों के प्रति कितना जागरूक हैं। क्या वे अपने घर, दैनिक धार्मिक विधान पूरा करते हैं? क्या अपने बच्चों को नैतिकता की शिक्षा देते हैं? क्या वे ऐसा कोई कार्य तो नहीं करते, जिससे उनके शिशुओं और पास-पड़ोस के लोगों पर उल्टा प्रभाव पड़ता हो? यदि वे ऐसा ध्यान नहीं रखते हैं, तो उसे अवश्य रखना चाहिए। समाज में गृहस्थों का अपना गार्हस्थ्य धर्म, सन्यासियों को अपना उपदेश धर्म तथा अपने आचरण मनसा,

[illegible]

नवयोकों तथा दूसरे कार्यकर्ताओं को ऐसा ही करना चाहिए। आर्यसमाज के सदस्यों को अपने मिशन के प्रति सतत जागरूक रहना है और आत्म-निरीक्षण करके, आत्मालोचन करके अपनी कमियों को पूरा करना है।

आर्यसमाज के कर्तव्य

वर्तमान काल में आर्यसमाज को निम्नलिखित अनिवार्य कार्यों को समस्याओं के समाधान के लिए अपने हाथ में लेना चाहिये और इसके लिए एक योजनाबद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत कर कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए।

१—महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्त्री शिक्षा की प्राथमिक आवश्यकता बतायी। उनके चलाये गये स्त्री शिक्षा-आन्दोलन के फलस्वरूप आज भारतीय स्त्रियां लगभग एक सौ वर्ष के अन्दर शिक्षा की पात में काफी प्रगति कर रही हैं। किन्तु भारतीय संस्कृति एवं भारतीय आदर्शों की दृष्टि से वर्तमान ढंग की स्त्री-शिक्षा से भारत का कल्याण असम्भव है। हमें कन्याओं के लिये कन्या गुरुकुलों की पद्धति के अनुरूप शिक्षा चाहिये। सहशिक्षा से हो रहे अवांछनीय परिणाम से हम और आप अनभिज्ञ नहीं हैं। स्त्रियां जननी हैं इनके विचार यदि सौम्य आदर्श तथा वैदिक मर्यादा से सम्बद्ध हुए तभी हमारा कल्याण हो सकता है। तभी हम आदर्श सन्तान की भी कामना करने के अधिकारी हो सकते हैं। सरकार को भारतीय संस्कृति के अनुरूप स्त्री-शिक्षा को मोड़ना चाहिये।

२—गोवंश की वृद्धि के लिए तथा गोहत्या के निरोध के लिये एक संगठित प्रयास अपेक्षित है। इसमें गोहत्या के निरोध के लिए सरकार से मांग करना तथा जनता में गोवंश की वृद्धि के लिये प्रचार करना आवश्यक है। ऐसा करके हम जनता को दूध और मक्खन के लिये सस्ती दर देकर जनता बचा सकेंगे।

३—महात्मा गांधी का प्रधान कार्य था मद्यनिषेध। लेकिन इस विषय में आज सरकार की नीति अत्यन्त हानिकर है। आज अठारह वर्षों के शासन में कहीं भी पूर्ण रूप से मद्य निषेध कानून नहीं लागू किया गया है। अब आर्यसमाज को, यह कार्य अपने हाथ में लेना चाहिये और इसके लिये भी एक पंचवर्षीय योजना बनाकर जनता में प्रचार करना चाहिये।

४—आज भाषा की समस्या कठिन हो गई है। लेकिन, आर्यसमाज को राष्ट्रभाषा के समर्थन के साथ-साथ संस्कृत की अनिवार्य शिक्षा के लिए आन्दोलन करना चाहिये। जब तक संस्कृत का पढ़ना पढ़ाना अनिवार्य नहीं होगा, तब तक कोई भी वैदिक धर्मावलम्बी अपने शास्त्रों और वेदों का अध्ययन मनन कैसे कर सकता है? फिर यह तो, न केवल प्राचीनतम भाषा है, पर इसका साहित्य भी समृद्धतम है और सभी भारतीय भाषायें या तो इसी से निकली हैं या इससे बहुत अधिक प्रभावित हैं। इसके लिये समाज को बड़ा आन्दोलन करना चाहिये।

५—आज छात्रों में अनुशासन की कमी को अनुभव किया जा रहा है लेकिन उसके मूल कारणों का निदान ही नहीं किया जाता। अनुशासनहीनता तो उन्हें जन्म से मिलती नहीं है। यदि गुरु और शिक्षक उनके साथ अपना अधिक समय देंगे, अपनापा दिखलायेंगे और उनके दैनिक व्यवहार में सदाचार की सीख देंगे तभी उनमें अनुशासन आयेगा। इनके लिये आवश्यक है कि गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली अपनाई जाय। इसके लिये प्राचीन शिक्षा-प्रणाली में नवीन शिक्षा का समावेश करके और सर्वत्र गुरुकुलों की स्थापना करके यह कार्य किया जा सकता है किया जाना चाहिये। यद्यपि यह 'पीछे मुड़ो' (Back to the Vedas) की नीति है लेकिन इसके बिना समस्या का कोई दूसरा समाधान नहीं हो सकता है। मैं तो अपने जीवन के अनुभव से कह रहा हूं कि शिक्षकों, आचार्यों और उपकुलपतियों—सभी को विद्यार्थियों के निकट सम्पर्क में रहना चाहिए। छात्र, शिक्षण संस्थाओं में अपने परिवार की भांति रहेंगे तो उनमें स्वतः अनुशासन आयेगा। साथ ही उन्हें नैतिक और धार्मिक शिक्षा भी देनी चाहिये। यह भी पढ़ाई का एक आवश्यक अंग है। इस पर तो बहुत अधिक दबाव देना चाहिये कि प्रत्येक शिक्षा में नैतिकता का भी स्थान हो और फिर एक 'वेल फेयर स्टेट' के लिये तो यह अनिवार्य है। धार्मिक और नैतिक आचरण से दैनिक क्रियाओं में अनुशासन की भावना जागरित होती है। आर्यसमाज इस कार्य को फिर से अपने हाथ में ले और कार्य को आगे बढ़ावे। शिक्षा क्षेत्र में अनुशासन हीनता एक बड़ा सवाल हो गया है और इसका उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। साथ ही, पढ़ाई के बाद भी तो वे ही छात्र अधिकारारूढ़ होंगे अथवा होते हैं और यदि वे अनुशासनहीन रहे, तो वे अच्छे नागरिक नहीं बन सकेंगे और न अच्छे अधिकारी हो। इसलिए शिक्षा को गुरुकुल प्रणाली में बदलकर नैतिक पाठ को अनिवार्य करके अच्छे नागरिक, समाज सेवी वर्ग को हम प्रस्तुत कर सकते हैं। यदि आज, शिक्षा-प्रणाली में भी पंचवर्षीय योजना बनाकर कार्य किया जाता तो पच्चीसवें वर्ष में एक शिक्षित नागरिक नया रूप लेकर हमारे सामने आता और हम तब विश्वास करते कि देश से भ्रष्टाचार आदि दोष समूल नष्ट हो जायेंगे। क्या अब भी उसका समय नहीं है? अब भी चेतें तो कार्य पूरा हो सकता है।

उपर्युक्त सभी कामों के लिए समाज को एक योजनाबद्ध कार्यक्रम तैयार करना चाहिए और इन योजनाओं के लिए एक सुशिक्षित कार्यकर्ता वर्ग तैयार करना चाहिये। कार्यकर्ता गण को संक्षिप्त प्रशिक्षण देकर यथा स्थान नियुक्त करना चाहिए। ये कार्य इतना आवश्यक हैं कि यदि आज आर्यसमाज इतना ही कार्यक्रम लेकर चले तो भी देश में उसका मिशन पूरा हो सकता। इसके लिए अपने अन्दर एक ऐसा उत्साह जगाना होगा जैसा कि अशोक के समय बौद्ध भिक्षुओं में था। यदि उनमें यह 'स्पिरिट' नहीं होता तो क्या सम्पूर्ण विश्व में बौद्ध धर्म का प्रचार होता? मैं तो चाहता हूं समाज का एक केन्द्र-स्थान हो जहां उपदेशकों कार्यकर्ताओं और सम्बद्ध अधिकारियों को उचित प्रशिक्षण दिया जाय तथा वहां से देश भर में फैले हुए कार्यों का संचालन हो। इसके लिये मैं अवकाश प्राप्त इंजीनियरों डाक्टरों अध्यापकों प्राध्यापकों तथा ऊंचे सरकारी अधिकारियों तथा प्रतिष्ठित अनुभवी व्यक्तियों से भी अनुरोध करूंगा कि वे सभी मिलकर एक ऐसी संस्था का निर्माण करें, जिसके द्वारा आर्यसमाज का काम पूरा हो और संगठित रूप से कार्य की प्रगति की जाय।

अपने वक्तव्य का उपसंहार करते हुए मैं उन महापुरुषों के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिन का जन्म और विकास इस ऐतिहासिक पवित्र भूमि से हुआ था। इन महापुरुषों के जीवन से भारतीय संस्कृति का पुनः उन्नयन हुआ एवं न केवल भारतवर्ष में अपितु सारे संसार में भारतीय दर्शन भारतीय साहित्य एवं विज्ञान का आलोक जगमगाने लगा। असम और बंग के भाइयों के बीच में गौरव का अनुभव कर रहा हूं जहाँ सुप्रसिद्ध योगी और विद्वान् श्री अरविन्द घोष ने महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की शैली का समर्थन किया है। इसका प्रभाव समस्त भारत के शिक्षित व्यक्तियों पर विशेष रूप से पड़ा है। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के-संग्राम के वीर सेनानी सुभाषचन्द्र बोस, संस्कृति के महान् प्रहरी डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी, महान समाज सुधारक

परिवार में अधिकार का प्रश्न

[श्री कुन्तल गोयल]

[परिवार अधिकार से नहीं चलता । उसको सहेजने के लिए तो स्नेह, त्याग, सहनशीलता, मृदुलता और सामंजस्य की सदा आवश्यकता होती है ।

अचानक वीणा मुझे रास्ते में मिल गई । इतने दिनों के बाद उससे मिलना हुआ था । बहुत कुछ कहना था, सुनना था । मैंने उसे घर आने का निमन्त्रण दिया तो उसने कहा, "दीदी, तुम्हीं आ जाना न । घर के कामों से तो पल भर के लिए भी छुटकारा पा जाना मेरे लिए कठिन है । हां तुम आ जाओगी तो अवश्य कुछ देर के लिए मुझे राहत मिल जाएगी ।" मैं उसका अनुरोध टाल नहीं पाई । बहुत देर तक उसके पास बैठी रही । उस समय वह घर में अकेली ही थी । सम्मिलित परिवार था उसका । घर में सास थी और दो छोटे देवर । उस समय सास घर में नहीं थी । फिर भी मैंने देखा कि वीणा खुल मन से बातें नहीं कर पा रही है । लग रहा था जैसे किसी के सहसा आ जाने का भय मन में हो या वह डर समाया हुआ हो कि कोई उसे इस तरह हंसते, बातें करते, निरर्थक समय गंवाते न देख ले । जो हो चलने लगी तो अन्य समस्क सी वीणा ने मेरा हाथ थाम लिया, "दीदी, कितने आग्रह से तो तुम्हें बुलाया था मैंने, पर कुछ भी स्वागत सत्कार नहीं कर पाई तुम्हारा । अम्मा जी भी नहीं हैं । कुछ रुककर वह बोली 'ठहरो, जरा पान लाल तो ला दूं' आओ मैं लाता कह कि वह भीतर चली गई । अन्दर जाने और बाहर आने तक काफी समय लग गया उसे । वह आई तो सकुचित सी, प्लेट में एक बीड़ा पान उसने मेरे सामने बढ़ा दिया । क्यों तुम नहीं लोगी ?" 'नहीं दीदी, मैं तो खाती नहीं ।" मैं चली आई पर वीणा के बारे में बहुत कुछ सोचती रही ।

इसके बाद बहुत दिनों तक वीणा से मेरी मुलाकात नहीं हो सकी । उसकी सहेली लता से ही जब तब वीणा के समाचार सुनने को मिल जाते हैं । कालेज में पढ़ने वाली वह शोख और बुद्धिमती वीणा से कितनी बदल गई यह वीणा ? हर समय सकुचाई सी, झिझक कर बातें करने वाली । उसकी जिन्दगी भी क्या है । लता कहती है, "सास के शासन में बेचारी के सारे अरमान मिट्टी में मिलते जा रहे हैं । पहले जब वह अकेली थी तब उसकी बात ही कुछ और थी । जरा सी देर में ही उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व दूसरों पर हावी होने लगता था । पर अब तो लगता है जैसे मन ही मन वह घुलती जा रही है। कोई उसके पर विशेष आता जाता भी तो नहीं । सास का एक छत्र शासन चलता है सब पर । उनकी आज्ञा के बिना घर में एक पत्ता भी नहीं हिल सकता । जो वह कहेंगी, घर में वही होगा । उन्हीं की मर्जी से वीणा खाएगी-पिएगी । उन्हीं की मर्जी से कहीं आना-जाना होगा । जैसा वह कहेंगी वीणा को वह करने के लिए बाध्य होना होगा : अरे देखो न, कोई जान पहिचान वाली आ जाये तो न तो वह खुलकर उससे बातें ही कर पाती है, न ही कहीं आवभगत ही किया पाती है । एक बार इसी बात पर बहुत सुनी भी हो गई थी पर जब वीणा के पति ही कुछ नहीं बोलते तो उसका अस्तित्व रह ही कहां जाता है ।"

मुझे वीणा की सकोचमयी मुख-मुद्रा याद हो आई । सच पूछा जाए तो यह प्रश्न अधिकार का प्रश्न है और वीणा का घर कोई अपवाद नहीं है । बात बहुत आम है एक के शासन तले न जाने परिवार के कितने सदस्यों की भावनायें भीतर ही भीतर टूटती और बिखरती रहती हैं । मन में कितना आक्रोश भी होता है पर प्रकट में वे उसका विरोध नहीं कर पाते । अधिकार की यह बात सब सम्बन्धों में एक जैसी ही है । चाहे पिता की पुत्र के प्रति अधिकार की तीव्र भावना हो पति की पत्नी के प्रति, मालिक की नौकर के प्रति सास की बहू के प्रति या शासक की कर्मचारियों के प्रति । उसकी प्रतिक्रिया सब पर एक जैसी ही होती है । अधिकार को निर्विरोध भोगने की लालसा में मनुष्य यह भूल ही जाता है कि इससे दूसरों के अधिकारों के प्रति अन्याय हो रहा है । और अधिकार के निर्वाह में दूसरों के प्रति अपने दायित्वों का अन्त हो जाता है । अधिकार की भावना नहीं पनपती है वहां स्नेह दुर्बल होता है, स्वार्थ प्रबल होता है । यदि अधिकार की बात मानी भी जाए तो यह क्यों भूला जाये कि अधिकारों का उपयोग एक के निर्मुक्त जब के लिये जितना आवश्यक है दूसरों के लिये भी उतना ही महत्व का है । जहां परस्पर सहयोग की भावना होती है, विचारों तथा कार्यों में सामंजस्य होता है, वहां अधिकार की बात मन में आती ही नहीं । ऐसे परिवारों में जहां छोटे बड़े का भेदभाव नहीं होता, सब एक दूसरे का आदर करते हैं, अपने अहम को महत्व नहीं देते वहीं अधिकार का यह प्रश्न आड़े आता ही नहीं । अधिकार से मनुष्य दूसरों पर कभी अच्छा प्रभाव नहीं डाल सकता इसके विपरीत प्यार और शान्तिपूर्ण व्यवहार की तो बात ही और है । अधिकार को सहते सहते भावनायें कड़वी होने लगती हैं प्यार में सन्देह पनपने लगता है और एक समय ऐसा भी आ जाता है जब प्रतिशोध की भावना दृढ़ होने लगती है ।

मीराधना को देखकर उसके परिवार का सुन्दर वातावरण सामने आ जाता है । जब भी उससे मिलना होता है, मन अपने आप खुश हो जाता है । मीराधना अक्सर कहती है, 'मैंने तो कभी जाना ही नहीं कि मैं ससुराल में हूं और सच कहूं तो उस वक्त मुझे हैरानी होती है जब मैं दूसरों से अपने ससुराल के विकट सम्बन्धों के बारे में सुनती हूं । मेरा तो अम्मा जी उतना ही ध्यान रखती हैं जितना कोई अपनी बेटी का रखता होगा । मेरी रुचि, मेरी भावनाएं मेरे कार्य इसीलिए तो एक नई दिशा पाते हैं । कभी इच्छाओं को टालती भी हूं तो मां कहती हैं, 'पगली है तू । अरे यही तो दिन हैं तेरे निर्मुक्त रहने के हंसने खेलने के । मैंने तो बहुत सारा जीवन देखा है, अब तेरे देखने के दिन हैं बेटी । तेरी इच्छाएं, तेरी भावनाएं यदि अभी दबी रहेंगी तो विचारों की दृढ़ता मन का विश्वास और जीवन जीने की क्षमता कैसे पाएगी ? अरे, मां बाप के होते हुए जो तू अपने मन को मारती रही या खुलकर रह नहीं पाई तो कल साथ-साथ जिम्मेवारियां तेरे सिर पर आएंगी तब तू उन्हें जीत कैसे पाएगी ।" मैंने देखा मीराधना को । यह सब कहते-कहते उसकी आंखों में आत्मगौरव छलक रहा था । आश्चर्य से उसने मेरी ओर देखा । तभी तो कितनी निश्चिन्त है यह मीराधना, मैंने सोचा । नए नए ढंग से काम करती है, घर की हर एक वस्तु में उसकी सुरुचि की छाप है । सभी उसके व्यवहार की प्रशंसा करते हैं । और जब कभी मीराधना के बारे में मां से कुछ सुनती हूं तो वह उस समय बड़े स्नेह और गर्व से भरी होती हैं । मैंने उसके इस सौभाग्य पर बधाई दी तो वह हंस दी । बोली, "दीदी, परिवार अधिकार से नहीं चलते । उनको सहेजने के लिए तो स्नेह, त्याग, सहनशीलता और सामंजस्य की जरूरत होती है । कुछ मैं सहूं कुछ दूसरे कुछ मैं त्याग करूं, कुछ दूसरे । मैं उन्हें प्यार करूं, सम्मान दूं और वे मुझे । एक तरफ का शासन तो मन में विद्रोह उपजाता है । जहां विद्रोह के भाव हों अपनी इच्छाएं टूटने की कसक हो वहां प्यार और सम्मान रहेगा कैसे ? अनुशासन अथवा शासन बुरा नहीं होता यदि उसमें स्नेह की तरलता हो और दूसरे की इच्छाओं का सम्मान हो ।" मीराधना जाने कितनी ही पर उसकी बातें मुझे बहुत अच्छी लग रही थीं और मैं सोच रही थी, काश ! ऐसे परिवार सभी जगह होते । लेकिन ऐसे घर अधिक देखने को मिलते कहां हैं ? साधारणतया तो घरों में अधिकार और कर्तव्य की रस्साकशी ही दिखाई देती है और अपनी अपनी खींच

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वनिता विवेक

राजा राम मोहन राय, वांग्मय के उपासक एवं सरस्वती माता के वरदपुत्र विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर, निष्पक्ष विचारक महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर, शिक्षा विशेषज्ञ श्री आशुतोष मुकर्जी, भारतीय दर्शन के उन्नायक स्वामी विवेकानन्द, आध्यात्म विचार के महान साधक महात्मा रामकृष्ण परमहंस एवं भारत के गौरव प्रसिद्ध विज्ञवेत्ता श्री जगदीशचन्द्र बसु, प्रभृति महापुरुषों को जन्म देने का श्रेय इसी भूमि को प्राप्त है ।

अन्त में मैं अपने स्वागताध्यक्ष महोदय को, उनके सहयोगियों तथा आर्यों के महान् धुरीपते निर्भयता और निश्चिन्तता से सुनने वाले आप सभी प्रेमी आर्य श्रोताओं को हार्दिक साधुवाद देता हूं और आरम्भ के मन्त्र के अनुसार संगति (मिलकर बैठना,) सवन (मिलकर सत्कार करना) तथा सदन (मिलकर ज्ञान प्राप्त करना) की कामना करते हुये अन्तिम प्रार्थना करता हूं—

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत । ओ३म् शान्तिः शान्तिः, शान्तिः ।"

★

वार्षिक प्रगति उ.प्र. आर्यवीर दल

(१ अप्रैल ६५ से ३१ मार्च १९६६ तक)

असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥
मृत्योर्मामृतं गमयेति ॥

असत्य से सत्य की ओर ले चलो। हे प्रभु अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो। हर्ष के साथ वार्षिक विवरण प्रस्तुत है। परमपिता परमात्मा की महती कृपा रही कि प्रान्त के इस विशाल क्षेत्र में अल्प साधनों के होते हुये भी ऋषि के मिशन के प्रति अपने कर्त्तव्य पालन में कार्य कर्त्ताओं के सहयोग से हमें एक विशेष सफलता मिली है।

हम उन सभी साथियों के आभारी हैं जिनके सतत प्रयत्न से प्रान्त मे अनेक सम्मेलन, उत्सव शिविर गोष्ठी आदि के सफल आयोजन हुये तथा उनके शिक्षण, निरीक्षण, नियन्त्रण एवं दौरे आदि से दल की प्रगति हुई है।

सम्वेदनायें

हम आर्य वीर दल की ओर से आर्य समाज के महान नेता एवं सन्यासी स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज हिन्दी पत्रकारिता के भीष्म पितामह प० सत्यदेव विद्यालंकार, आर्य समाज के प्रमुख स्तम्भ श्री देवीचन्द जी एम० ए० महान क्रान्तिकारी श्री बटुकेश्वर दत्त, गुजरात के मुख्य मन्त्री श्री बलवन्त राय व उनकी धर्मपत्नी एवं अन्य अधिकारी-गण, स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी हिन्दु हृदय सम्राट श्री वि० दामोदर वीर सावरकर, भारत मां के सच्चे व वीर सपूत तथा जनमन के प्रिय नेता श्री लालबहादुर शास्त्री तथा भारत पाक युद्ध में वीर गति प्राप्त अनेकों शहीदों के प्रति उनके निधन पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

चीन पाक आक्रमण

भारत पाक युद्ध में हमारे जवानों ने जिस अद्वितीय पराक्रम, दिलेरी एवं वीरता का परिचय दिया है, वह भारत ही में नहीं दुनिया के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जावेगा। संकट की इस विकट घड़ी में, देश में एकता, मिथ्या अफवाहों के खण्डन, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में धन संग्रह करके, होमगार्ड व सेना में भर्ती होने तथा घायल सैनिकों को खून देने आदि राष्ट्रीय कार्य में हमारे दल के आर्य वीरों ने तन, मन व धन से सहयोग किया है। आगरा, कानपुर, नवाबगंज, मिर्जापुर, वाराणसी व गाजियाबाद आदि अनेक स्थानों का कार्य सराहनीय रहा।

वीर सावरकर सम्मान कोष

प्रान्तीय केन्द्र की ओर से इस कोष में धन संग्रह करने की विज्ञप्ति निकाली गई तथा हापुड़ के आर्य वीरों ने ५१) सम्पादक वीर अर्जुन को इस कोष में अपने सैनिकों से प्राप्त कर भेजे।

पुस्तकालय एवं स्वाध्याय मंडल

इस दिशा में यद्यपि धनाभाव के कारण हमारी प्रगति अच्छी नहीं है। परन्तु फिर भी हमारे गाजियाबाद, नवाबगंज, देहरादून कलौली (जि० बुलन्दशहर) की मासिक विवरणों से स्पष्ट होता है कि दल का अपना निजी पुस्तकालय है और प्रति सप्ताह विधिवत स्वाध्याय मंडल का कार्यक्रम चलता है।

शस्त्र अस्त्र एवं वस्तु भंडार एवं व्यायामशालायें

एक व्यवस्थित वस्तु भंडार का हमारा प्रयत्न चल रहा है। अलीगढ़ ने इसके लिये १००० रु० एकत्र करने का आयोजन किया गया है। गाजियाबाद, हापुड़ व नवाबगंज के शाखाओं ने शस्त्र-अस्त्र व व्यायाम की वस्तुयें एकत्रित कर ली गई हैं तथा वाराणसी की शाखाओं ने भी अस्त्र शस्त्र के अतिरिक्त दल के ५०० बैज बनवाये। अनेक शाखाओं में दल की अपनी व्यायामशालायें भी चल रही है।

शिक्षा केन्द्र

इस दिशा में भी दल के अधिकारी सचेष्ट हैं। हापुड़ में तथा नवाबगंज में प्राइमरी कक्षाओं तक सफल रूप से शिक्षा केन्द्र में अनेकों विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं। लखनऊ में दल की ओर से अव्यवस्था के कारण दयानन्द लाइब्रेरी का प्रयत्न चल रहा है।

सेवा कार्य

२८, २९ तथा ३० मई सन १९६५ को मेरठ में होने वाले आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय सम्मेलन तथा कानपुर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन में २ से ४ जौलाई सन् ६५ तक गाजियाबाद तथा कानपुर के आर्यवीरों ने सेवा तथा प्रबन्ध कार्य किया। धर्म स्थान, विजय दशमी तथा अन्य तीर्थों पर लगे मेलों में सेवा कार्य, खोये हुए बच्चों को उनके अभिभावकों तक पहुंचाना, मेले का प्रबन्ध करना, आर्यसमाज के जलूसों में सक्रिय सहयोग करने आदि की रिपोर्ट गढ़मुक्तेश्वर (मेरठ), मुरादाबाद, अलीगढ़, मिर्जापुर वाराणसी आदि से मिले हैं। कछुआ जिला मिर्जापुर मे तीन दिन तक आर्य वीरों ने मेले में सेवा कार्य किया तथा उनके सफल प्रयत्न से बकरों की बलि बन्द हो गयी। आर्यवीर दल नवाबगंज के कार्यकर्ता श्री भगवतीप्रसाद जी, आर्य तथा श्री अवधेशप्रसाद जी मित्र ने मोहम्मदाबाद कस्बे में एक हिन्दु अबला नारी को मुसलमान गुण्डों से छीन कर रक्षा की तथा उस गुण्डे को पुलिस के हवाले कर दिया।

पर्व, उत्सव तथा दिवस

पर्वों उत्सवों तथा दिवस आदि के मनाने के लिये समय समय पर प्रान्त की ओर से विज्ञप्तियाँ निकाली गयीं तथा समस्त शाखाओं की ओर से विशेष-विशेष पर्वों पर जिसमें विजय दशमी का पर्व मुख्य है सोत्साह मनाया गया था। हुतात्मा दिवस का आयोजन दल की शाखाओं में व्यापक रूप से किया गया। अनेक शाखायें अपना वार्षिक उत्सव भी मनाने में सफल हुई।

सम्मेलन एवं बैठकें

आर्यवीर दल ने कार्य को गति देने के लिये अनेक सम्मेलनों तथा बैठकों का आयोजन किया। जिसमें आर्यवीरों के अतिरिक्त प्रान्तीय अधिकारियों ने भाग लिया। गाजियाबाद के विशेष कार्यक्रम में जो हमारे सहायक प्रधान संचालक श्री गौरीशंकर कौशल तथा श्री उत्तमचन्द जी शरर प्रान्तीय संचालक पंजाब ने भी पधार कर आर्यवीरों को उत्साहित किया तथा दल की विचारधारा पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री महादेव जी शास्त्री प्रधान शिक्षक आर्यवीर दल ने भी हमारी अनेक बैठकों तथा सम्मेलनों को सफल बनाया है। मंडल आर्यवीर दल जौनपुर की ओर से १४ १० ६५ को एक सफल सम्मेलन किया गया जिसमें आजमगढ़, वाराणसी, मिर्जापुर, गाजीपुर, फैजाबाद तथा इलाहाबाद के आर्यवीरों ने भाग लिया इस प्रकार गाजियाबाद मेरठ, हापुड़, मुरादाबाद, बहजोई अलीगढ़, बरेली, इलाहाबाद, फैजाबाद नवाबगंज, जौनपुर शाहगंज, कूचपुर, कछुआ वाराणसी आदि अनेक स्थानों पर प्रान्तीय, क्षेत्रीय एवं स्थानीय बैठकों व सम्मेलनों का आयोजन इस वर्ष किया गया।

शोभा यात्रा तथा वन विहार

आर्यवीर दल जौनपुर मंडल की ओर से शाहगंज तथा कछुआ (जि० मीरजापुर) में आर्यवीरों ने अपने गणवेश में नगर में जलूस तथा शोभायात्रा निकाली जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। रानी की सराय (आजमगढ़) के ४८ आर्यवीरों ने सारनाथ में वन विहार का कार्यक्रम रखा और आर्य साहित्य का वितरण किया।

शिविर

हमारे प्रान्त मे इस वर्ष अनेक शिविरों का भी आयोजन किया गया। कानपुर मंडल मे मैनपुरी तथा मसौली श्री नवल किशोर जी तथा श्री देवेन्द्र सिंह जी ने मिर्जापुर में ग्रीष्म अवकाश शिविर लगवाया। ८ जून से १३ जून तक इलाहाबाद में शिविर लगा जिसमें २८ आर्य वीरों ने भाग लिया तथा शिक्षण का कार्य श्री रामकुमार जी आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ। डी० ए० वी० कालेज बाराबंकी के शिविर में ३१ आर्य वीरों ने भाग लिया। १८-७ ६५ को वाराणसी के सम्मिलित रैली में ७० आर्य वीरों ने भाग लिया। आगरा के शिक्षण शिविर में २५ आर्य वीरों ने श्री गोरख प्रसाद जी की अध्यक्षता में शिक्षण प्राप्त किया तथा ७ दिसम्बर से १३ दिसम्बर तक फैजाबाद के शिक्षण शिविर मे श्री गोरखप्रसाद जी शिक्षक आर्य वीर दल ने शिक्षण का कार्य सम्पादन किया तथा इस शिविर का उद्घाटन प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने किया २० दिन का शिक्षण गाजियाबाद में श्री काशीनाथ जी शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ।

दौरे

हमारे प्रान्त के अधिकारीगण ने जिस तत्परता तथा लगन से प्रान्त के अनेक स्थानों का दौरा एवं भ्रमण किया है वह अत्यन्त प्रशंसनीय व सराहनीय है। मेरठ गाजियाबाद इटावा, मुरादाबाद, बहजोई बरेली, बाराबंकी फैजाबाद व लखनऊ आदि स्थानों पर जाने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ, जिससे कार्य की प्रगति में बल मिला। श्री देवेन्द्र सिंह जी का मीरजापुर, वाराणसी, इलाहाबाद

आदि स्थानों का तूफानी दौरा बराबर चलता रहता है। श्री मदन बिहारी जी खन्ना, श्री राम कुमार सिंह जी, श्री कुंजी लाल श्री सत्यदेव शास्त्री, श्री काशीनाथ जी शास्त्री श्री मदन लाल जी श्री रघुनाथ प्रसाद जी, श्री लज्जो लाल जी आर्य तथा श्री शिवनाथ जी आर्य वीर आदि अनेक अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने दल का दौरा तथा निरीक्षण करके दल को विशेष प्रगति दी है।

शाखाओं की सूची

दैनिक २८, साप्ताहिक ११, तृतीय २१, कुल ६०

वीरों की संख्या लगभग १५००

क्षेत्र	मण्डल	शाखा स्थान	अधिकारी	शाखा संख्या	शाखा प्रकार	वीरों की संख्या
वाराणसी	१–वाराणसी	दुर्गाकाण्ड	श्री नेमदास नवरत्नाकर	४	दैनिक	१००
	२–मीरजापुर	१–वनहा				
		२–वनही				
		३–रामनगर				
		४–शहन्शाहपुर		४	"	१००
	३–इलाहाबाद	चौक		१	"	१५
	४–जौनपुर	१–शाह				
		२–बेला सराय				
		३–शाहगंज				
		४–फिराकत		४	"	१२५
	५–गाजीपुर	शहर		१	साप्ताहिक	५०
	६–गोरखपुर	शहर		१	तृतीय श्रेणी	१५
	७–आजमगढ़	१–लालगंज				
		२–देवगांव				
		३–रानी की सराय				
		४–फूलपुर		४	दैनिक	१५०
बरेली	बरेली	बरेली	डा० ओमप्रकाशजी	१	तृतीय	१०
	पीलीभीत	पीलीभीत	विद्याशंकरजी	१	"	२५
	शाहजहांपुर	शाहजहांपुर	श्री सत्यपाल	१	"	२५
	फर्रुखाबाद	फर्रुखाबाद		१	दैनिक	३०
फैजाबाद	गोंडा	बलरामपुर	श्री भगवतीप्रसाद	१	"	५०
		दलरामपुर	श्री शिवनरायणजी	१	तृतीय	१५
	बहराइच	नानपारा	श्री लालमराम जी	१	दैनिक	४०
	फैजाबाद	फैजाबाद	डा० दिनेश शर्मा	१	साप्ताहिक	२०
सीतापुर	सीतापुर	सीतापुर	श्री रघुनाथसिंह	१	"	३०
		काशी		१	"	१०
		कमालपुर				
	हरदोई	हरदोई	श्री ईश्वरचन्द्रजी	१	"	२०
	लखीमपुर	लखीमपुर		१	तृतीय	१५
	लखनऊ	लखनऊ	श्री लालबहादुर	१	"	५०
	उन्नाव	१–हसनगंज				
		२–मोहान				
		३–शहर	श्री जयपाल जी	१		४०
कानपुर	कानपुर	१–बंदू पुरवा				
		२–बदन पुरवा				
		३–अहमद नगर निरंजन				
		४–सीतापुर				
		५–फाटनपुर				
		६–उबरा ग्राम				
		७–मकोली				
		८–बरादा	श्रीयुगलकिशोरजी	८	तृतीय	१५०
देहरादून	देहरादून	देहरादून		१	दैनिक	५०
	मेरठ	१–हापुड़ श्री जगदीशप्रसाद		१	"	५०
		२–मवाना		१	साप्ताहिक	३०
		३–गाजियाबाद	श्रीविजयकुमार	१	दैनिक	५०
मेरठ	बुलन्दशहर	१–बाबरी		१	तृतीय	१०
		२–कलौदा	श्री जयपालसिंह	१	साप्ताहिक	१५
झांसी	झांसी	झांसी		१	तृतीय	२५
अलीगढ़	अलीगढ़	१–अलीगढ़	श्री नवलरायजी	१	साप्ताहिक	५०
	हाथरस	१–हाथरस		१	दैनिक	३०
मुरादाबाद	मुरादाबाद	१–शहर		१	तृतीय	५०
		२ कपूरी		१	साप्ताहिक	५०
		३–बालवाटिका मुरादाबाद		१	"	३०
		४–सम्भल	श्री चन्द्रपालजी	१	तृतीय	३०
		५–अमरोहा		१	"	१०
	बदायूं	बदायूं	श्री नरेशचन्द्र जी	१	"	३०
	बिजनौर	बिजनौर		१	"	२५
	रामपुर	रामपुर	श्री नरेश जी	१	दैनिक	५०

—देवीप्रसाद आर्य

संचालक उ० प्र० आर्य वीर दल

(पृष्ठ १० का शेष)

की खुशी में पूरे परिवार की सुख शान्ति दम तोड़ती नजर आती है।

जहां बहू ही घर की सर्वेसर्वा होती है और सास तथा अन्य लोगों को उसकी मातहती में रहना पड़ता है वहां भी उनको कम नहीं सहना पड़ता। अपनी-अपनी इच्छाओं को दबाते हुए उन्हें तिल-तिल कर मरना पड़ता है पैसे पैसे तक के लिए मोहताज हो जाना पड़ता है। निरन्तर उपेक्षा, अवमानना और ज्यादतियों के बावजूद उन्हें वहीं रहने के लिए विवश होना पड़ता है। ऐसे परिवार जहां एक के सदस्य तानाशाह हों और दूसरे उस शासन की क्रूरता, उसके स्वार्थों से पीड़ित हों, वहां जीवन का माधुर्य आता ही नहीं आ सकता। परिवार वही आदर्श होता है जहां सब अपने स्वार्थों से बेखबर रहकर परस्पर स्नेह और त्याग की जिन्दगी जीते हैं। ऐसे वातावरण में पल कर बच्चे कभी बिगड़ने नहीं पाते। उनके सामने बड़ों का आदर्श होता है और वे उनके विवेकपूर्ण व्यवहार उनके परस्पर स्नेह और एकता के बीच अपने जीवन को सफलता के परिपक्व विचार पाते हैं। ऐसे बच्चों का व्यक्तित्व आगे चलकर पूर्णता को प्राप्त होता है। वे अनुशासन का महत्व समझते हैं और दूसरों के सुख दुःख को बड़ी सहजता से अनुभव करते हैं। जहां दिन रात कलह मची रहती है वहां छोटे कभी अपने को सुरक्षित अनुभव नहीं करते हैं। बड़ों के अन्यायपूर्ण व्यवहार से उनमें अविश्वास पनपता है तनावपूर्ण विचार आते हैं और वे कभी उनसे स्नेह नहीं कर पाते। स्पष्ट है, अस्वस्थ वातावरण में अस्वस्थ मनः स्थिति की उपज होगी ही और मनुष्य पूर्ण रूप से स्वस्थ रह ही नहीं सकेगा। परिणाम यही होता है कि छोटे उद्दण्ड हो जाते हैं और बड़े निरंकुश। निरन्तर विषम वातावरण से परिवार टूटने लगते हैं और सम्बन्ध बिखरने लगते हैं। परिवार वही सार्थक होते हैं जिनके सदस्यों के बीच वैमनस्य न हो सब मिलजुल कर रहें और इस तरह अपने सुन्दर व्यवहार एवं व्यक्तित्व से दूसरों को भी प्रभावित करें। वे अपने परिवार ही नहीं वरन समाज तथा इससे भी आगे बढ़कर समस्त मानव के प्रति उदार एवं सहिष्णु होते हैं और यही जीवन की सफलता मानी जाती है।

—समाज कल्याण से साभार

(पृष्ठ ५ का शेष)

जाने से कोई लाभ नहीं और किसी पर उसका प्रभाव नहीं होगा सन्त जी ने पंजाबी सूबा बनने से पूर्व भी हिन्दुओं को विश्वास में नहीं लिया और अब जबकि वह बन गया है उसके बाद भी वह उनसे बात करने को तैयार नहीं, हां वह अवश्य चाहते हैं कि उनके श्रीमुख से जो कुछ भी निकले हिन्दू उसे वेद वाक्य समझकर स्वीकार कर लें। वह उनकी भावनायें समझने को तैयार नहीं, उनके हृदयों में उत्पन्न आशंकायें दूर करने को तैयार नहीं परन्तु—

यह अवश्य चाहते हैं कि जिस प्रकार का पंजाबी सूबा बनाने की उनकी इच्छा है उसमें हिन्दू आंख बन्द करके उनका अनुसरण करें। यह नहीं होगा। हिन्दू आज कमजोर हैं और इसमें भी सन्देह नहीं कि आज भारत सरकार उनकी आवाज सुनने को तैयार नहीं फिर भी उन्हें इतने गए गुजरे नहीं समझा जाना चाहिए जितना कि समझा जा रहा है। सन्त फतहसिंह जी को भी समझ लेना चाहिए कि पंजाबी सूबा यदि समृद्ध हो सकता है तो पंजाब के हिन्दुओं के सहयोग से ही। पंजाब ने विगत १८ वर्ष में जो औद्योगिक उन्नति की है वह बहुत कुछ इस राज्य के हिन्दुओं के कारण ही है। ऐसी स्थिति में यदि सन्त जी और उनके साथी हिन्दुओं की अवहेलना ही करना चाहें तो नहीं कर सकते। ★

श्री सूर्यदेव शर्मा को पितृ शोक

अत्यन्त दुःख है कि १९ मई को प्रातः आर्य समाज गोरखपुर के उप प्रधान श्री प० सूर्यदेव जी शर्मा के पूज्य पिता श्री विश्वनाथ जी शर्मा का ७० वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप आर्य समाज के अत्यन्त शुभ चिन्तक थे। श्री सूर्यदेव जी शर्मा को अपने पूज्य पिता जी से बड़ी प्रेरणा मिलती थी। आपके कारण श्री शर्मा जी को घर की विशेष चिन्ता नहीं रहती थी और इसीलिए वे आर्य समाज के कार्यों में अपना अधिक समय देते थे। पितृ वियोग भी बड़ा दुखदाई होता है, पर किसी के भी माता पिता सदैव नहीं बैठे रहते। वियोग तो अनिवार्य है। इसलिए धैर्य रखना ही पड़ता है। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करावें और शोक संतप्त परिवार को धैर्य दें। हम आर्यमित्र की ओर से श्री सूर्यदेव जी शर्मा के शोक में समवेदना प्रकट करते हैं।

पंजाबी सूबा

[पृष्ठ ५ का शेष]

गुरदासपुर जिले मे कुल जनसंख्या में हिन्दुओं की आबादी ४,९४ ६७२ है, इनमें से जिन लोगों ने हिन्दी लिखवाई है, उनकी जनसंख्या ४,८३ ७९१ है, यहाँ भी दस हजार से ऊपर वे आदमी हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा पंजाबी लिखाई है। इस के बाद भी वह किस तरह से कह सकते हैं कि वहां पर लोगों ने दबाव में आकर अपनी भाषा को गलत लिखवाया है। किसी की मातृ भाषा क्या है? सभापति जी इसका निर्णय वह खुद करेगा या मातृभाषा के चुनाव का अधिकार वह किसी दूसरे व्यक्ति को दे देगा।

अगर इस पर भी अकालियों को मास्टर तारासिंह और संत फतेहसिंह को आपत्ति है तो मैं भारत सरकार से कहूंगा कि यदि १९६१ के भाषा के आकड़ों को वे प्रमाणित नहीं मानते तो भी पुरुषार्थीलाल नन्दा एक और हिम्मत वाला कदम उठावें। हिम्मत वाला कदम उठाकर यह कहें कि अगर अगर १९६१ के भाषा के आकड़े प्रमाणित नहीं हैं तो भाषा के नये आकड़े पंजाब के अन्दर एकत्रित किये जाय। उसके आधार पर पंजाब का विभाजन किया जाय। अगर वह भी वे स्वीकार नहीं करते तो एक तीसरा विकल्प यह है कि जहां १८ १९ साल से पंजाब का विभाजन न होने से सब आराम से रहते आये हैं, वहां चार साल के बाद १९७१ में आकड़े ले लिये जायें और उसके बाद पंजाब का विभाजन कर दिया जाय। आखिर कोई स्पष्ट नीति तो मानी जाय, न्याय तो माना जाय। चित भी मेरी और पट भी मेरी अगर इसी तरह से अकालियों को सन्तुष्ट करने के लिए भारत सरकार लगी रहे तो यह बात भला किस प्रकार से सहन हो सकती है।

एक और बात कहना चाहता हूं कि आखिर इसमें इनको खतरा क्या है? खतरा सबसे बड़ा यह है कि भाषा के आधार पर पंजाबी सूबा बनाने की बात को तो यह कह बैठे पर अब खतरा यह है कि उनके साथियों ने ही उनके कपड़े खींचने शुरू कर दिये हैं। पंजाबी सूबा लेने के बाद तुमको मिला क्या? जिस पंजाबी सूबे के लिये लड़ाई लड़ी तुम्हारे हाथ में आया क्या? भाषा के आधार जब पंजाब का विभाजन होगा तो खरड़ तहसील न होने से चण्डीगढ़ तुम्हारे पास नहीं रहेगा, ऊना के न रहने से भाखड़ा तुम्हारे पास नहीं रहेगा और भी कई बातें इस प्रकार की होंगी। अकालियों ने भाषा के आधार पर पंजाबी सूबा माना तो पंजाबी भाषा के साथ भी न्याय नहीं किया। पहले पंजाबी १९ जिलों में पढ़ाई जाती थी, अब सिर्फ ९ जिलों में चलेगी, हिमाचल और हरियाणा को इससे मुक्ति मिल गई, पंजाब को आखिर इन्होंने क्या दिया? और अगर पंथ की हिफाजत के लिये यह किया जैसा कि मास्टर तारासिंह और उनके साथियों का कहना है, तो उन्होंने पंथ के लिये ही क्या किया? सिवाय इसके हिन्दुओं और सिखों में भेद डाल दिया। जहां कभी गुरुगोविन्द सिंह जी महाराज ने कहा था कि—

जगे धर्म हिन्दू सकल भंड भाजे।

लेकिन मास्टर तारासिंह और उनके समर्थकों का कहना है कि सिख हिन्दुओं से अलग हैं। अब इस नीति के परिणामस्वरूप जो कभी सिख पंथ को हिन्दू धर्म का अंश मानते थे उनको मास्टर तारासिंह की इस नीति से सिख पंथ के विस्तार में बहुत अधिक हानि पहुंची है। आखिर उन्होंने पंजाबी सूबा बनाकर क्या ले लिया?

एक बात और रह जाती है और वह यह कि पंजाबी भाषा की लिपि को गुरुमुखी ही रखी जाय। मैं पूछता हूं उन लोगों से कि अगर लिपि केवल गुरुमुखी रखने से उनको कोई बड़ी भारी सुविधा है या इसमें पंथ की सुरक्षा देखते हैं, तो लाहौर में जो पंजाबी चलती है, वहां क्या वह गुरुमुखी लिपि में चलती है? या सन १९४७ से पहले जो पंजाब में लिपि चलती थी क्या वह गुरुमुखी लिपि में ही पंजाबी के लिए चलती थी? देवनागरी लिपि को भी अगर गुरुमुखी लिपि के साथ साथ पंजाब की लिपि मान लिया जाय तो क्या पंजाबी भाषा समाप्त हो जायगी? आज मराठी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि होने से क्या उसका अस्तित्व समाप्त हो गया? पंजाबी उर्दू लिपि में भी तो लिखी है।

श्री गुरमुखसिंह मुसाफिर—क्या प्रकाशवीर शास्त्री जी मानेंगे कि हिन्दी को देवनागरी में छोड़कर उर्दू में लिखा जाय।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री—मुझे कोई आपत्ति नहीं है। हिन्दी की अपनी लिखी लिपि देवनागरी सुरक्षित रहते हुए, अगर किसी दूसरी लिपि में हिन्दी इतनी ही शुद्ध लिखी जा सकती है तो मुझे वैकल्पिक लिपि वह स्वीकार है। लिपि के लिये मैं कठोर नहीं हूं। मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूं कि पंजाबी की लिपि गुरुमुखी को रखते हुए आप देवनागरी को पंजाबी की वैकल्पिक लिपि मानिये। जिस आधार पर आज पंजाबी सूबा बन रहा है और जो वहां पर आज देवनागरी लिपि के माध्यम से काम करते हैं उनको किसी प्रकार की भी कोई कठिनाई न हो। जहां तक भाषा का प्रश्न है मैं बड़े अदब से नन्दा जी से कहना चाहता हूं कि जिस तरह से आसाम के सम्बन्ध में बंगाली भाषा भाषियों के लिए आपने कानून बनाया है, पंजाब के लिए भी वही नीति मजबूती से अपनाइये।

मैं चण्डीगढ़ के सम्बन्ध में भी कुछ कहना चाहता हूं। राजधानी का प्रश्न ऐसा है जिस पर पंजाब वालों के मस्तिष्क में असन्तोष फैला हुआ है। मुझे पंजाब के विभाजन का दुख है। क्योंकि पंजाब के विभाजन का न मैं पहले समर्थक था और न अब समर्थन करता हूं। लेकिन सभापति महोदय! समुद्र मन्थन से जहां विष निकला था, वहां अमृत भी निकला था, हरियाणा वाले जो १९४७ से अंग्रेजों के अभिशाप से ग्रस्त थे इनको भी अब सांस लेने का मौका खुली हवा में मिला है।

लेकिन अब उनकी राजधानियों का प्रश्न रह जाता है। क्या श्री गुलजारी लाल नन्दा इस बात को पसन्द करेंगे कि आज के अर्थ संकट के इस युग में जब एक एक पैसे को जमा करने के लिए श्री अशोक मेहता झोली लेकर विदेशों में घूमते फिर रहे हैं देश में करोड़ों रुपये खर्च करके नई राजधानी खड़ी की जावे बुद्धिमत्ता तो इसी में होगी कि पंजाब के अन्दर जो राजधानियां रह चुकी हैं उनको ही दोनों की राजधानी बनाया जावे। और इसका तरीका यह है कि अगर खरड़ तहसील हरियाना में आती है तो चण्डीगढ़को हरियाणाकी और पंजाब की राजधानी पटियाला बनाया जाये। पटियाला में पेप्सू की राजधानी रह भी चुकी है। वहां सेक्रेटेरियेट भी बनी बनाई है, इसलिए कोई दिक्कत भी नहीं होगी।

रह जाती है भाखड़ा बांध की बात जिसके ऊपर किसी को आपत्ति हो सकती है। भाखड़ा बांध के सम्बन्ध में मुझे यह कहना है कि चूंकि ऊना तहसील में हिन्दी भाषा भाषियों की संख्या ज्यादा है इसलिए ऊना तहसील हरियाना में आवेगी अवश्य। भाखड़ा बांध से पंजाब वालों को खतरा है कि अगर वह हरियाना में आ गया तो पता नहीं बाद में हरियाना वाले पूरी बिजली और पानी पंजाब को दें या न दें। इसके लिए पहली चीज तो मैं यह कहना चाहता हूं कि मुख्यतः भाखड़ा बांध बनाया ही गया था हरियाना के लिए। पंजाब के इस हिस्से का विकास करने के लिए कि किसी तरह से नहर या बिजली वहां भी जाये और हरियाना भी दूसरे हिस्से की तरह से विकसित हो यह बांध बनाया गया था फिर भी मैं कहता हूं कि अगर इसमें कोई आपत्ति हो तो चूंकि सेन्ट्रल गवर्नमेंट का करोड़ों रुपया भाखड़ा बांध में लगा हुआ है, केन्द्रीय सरकार एक काम करे कि केन्द्र की देखरेख में भाखड़ा बांध के लिए एक संयुक्त बोर्ड बना दिया जाये ताकि किसी क्षेत्र के साथ किसी प्रकार का कोई पक्षपात न हो और सब को बराबर पानी और बिजली मिलती रहे।

अब मैं अपने वक्तव्य को उपसंहार की ओर ले जाते हुए दो तीन बातें और कहना चाहूंगा। एक तो यह कि मेरे विचारों से यह सदन परिचित है। मैं एक विधेयक भी लाकर अपनी विचारधारा को इस सदन में व्यक्त कर चुका हूं कि मैं भाषावार राज्यों के निर्माण से कभी सहमत नहीं हूं। सरकार ने भाषावार प्रान्तों का निर्माण करके इस देश को खण्ड खण्ड करने का बीज बोया है। अगर इस देश को खंड खंड होने से बचाना है तो उसका एक ही तरीका है कि भाषावार राज्यों की सीमायें समाप्त करके सारे देश को पांच भागों में विभक्त करके एक मजबूत केन्द्रीय शासन की स्थापना की जाये। यूनिटरी फार्म आफ गवर्नमेंट इस देश में होना चाहिये पहले से मैं इस विचार का समर्थक रहा हूं। भारत सरकार की इस नीति का परिणाम यह हुआ है उसने आज पंजाब के सम्बन्ध में घुटने टेके। अभी पंजाब की बात समाप्त नहीं हुई थी कि नाग और मिजो के आन्दोलन में फिर से जान आ गई। डा० अणे यहां बैठे हुये हैं, वे इस बात को जानते हैं। काश्मीर के एक जिम्मेदार आदमी ने कहना शुरू कर दिया कि एक डोगरा राज्य की स्थापना कर दी जाये और महाहिमाचल का निर्माण करना चाहिये क्या इस मांग के उठाने का अर्थ यह है कि हम पाकिस्तान को फिर एक बार बल दें और आज काश्मीर राज्य के अन्दर जो पाकिस्तानी तत्व घूमते फिर रहे हैं और जिनको वहां प्रश्रय मिल रहा है उनको आगे बढ़ने का मौका दें और यह सारी बातें वहां होती रहें। अभी समय है कि अब भारत सरकार चेते और अपनी भूलें सुधार कर इस देश को छोटे छोटे टुकड़ों में बंटने से बचाये।

पंजाब के सम्बन्ध में एक बात और कह कर मैं अपने भाषण को समाप्त कर

लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ १५ अंक १८८८, आषाढ़ कृ० २ वि० २०२३, दिनांक ५ जून सन् १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् तस्माद्यज्ञात्सर्व हुत: सम्भृत पृषदाज्यम्। पशूं स्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥

उस विश्वपूज्य (परिपालकर्ता) सच्चिदानन्द परमेश्वर से दधि आदि पदार्थ उत्पन्न हुए। जो अरण्य तथा ग्राम के हैं उन पक्षियों और पशुओं को उत्पन्न किया।

विषय-सूची

नैनीताल में आर्य स० का भव्य समारोह सम्पन्न

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री विश्वनाथदास द्वारा यज्ञ में विशेष आहुतियाँ एवं महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलि अर्पण

विशेष यज्ञ, विशाल नगर कीर्तन, गोरक्षा दिवस, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला-सम्मेलन आदि कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न।

उत्तर प्रदेश में विशेषकर कुमायूं क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध आन्दोलन को तीव्र करने के लिये सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री श्री रामगोपाल जी की घोषणा।

भारत की सुरक्षा के लिये आर्यसमाज पूरी शक्ति से कार्य करता रहेगा, देश को शक्तिशाली बनाना ही आज का राष्ट्रीय कर्तव्य है। संसद् सदस्य श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री द्वारा उद्बोधन।

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा उपप्रधान   श्री मदनमोहन जी वर्मा तथा प्रधान

उत्तर प्रदेश में वैदिक धर्म के प्रहरी रूप में आर्यसमाज नैनीताल का एक विशेष महत्व है। मई के अन्तिम सप्ताह में जब कि सारे देश भर के लोग वहाँ एकत्र होते हैं आर्यसमाज के प्रचार का विशेष आयोजन किया जाता है। इस वर्ष इस आयोजन को विशेष उत्साह के साथ सफल बनाने का यत्न किया गया है। (शेष पृष्ठ ४ पर)

जनसंघ और आर्यसमाज

[श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार एम०ए० प्रो० कन्या महाविद्यालय, जालन्धर]

जनसंघ भारत की राजनीति के क्षेत्र में एक उन्नति करती हुई पार्टी है। अखिल भारतीय स्तर की राजनीतिक पार्टियों में उसका स्थान कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी के बाद है। विशेषता यह है कि यह स्थान उसने पिछले १७ १८ वर्षों में प्राप्त किया है। उसके पास राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अथक और नौजवान कार्यकर्ताओं का बड़ा भारी दल है और वही उसकी शक्ति का मुख्य आधार है।

जनसंघ प्रारम्भ से भारतीय संस्कृति और सभ्यता को आधार मानकर अपना कार्य चला रहा है। इसलिए स्वभावतः आर्य संस्थाएं और समाजें उसे आदर और सहानुभूति की दृष्टि से देखती रही हैं और जहां तक बन सका सहयोग भी देती रही हैं। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि प्रारम्भ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में प्रशिक्षण देने के लिये पंजाब की आर्य समाजों के अनेक युवक कार्यकर्ता नागपुर गये थे। उस समय हिंदू मात्र की सहानुभूति इस संस्था से थी, विशेषकर हिन्दू विचार के लोगों की।

इस वर्ष जनसंघ का वार्षिक अखिल भारतीय अधिवेशन जालन्धर में हुआ। जलूस और अधिवेशन दोनों ही उपस्थिति और उत्साह की दृष्टि से शानदार रहे। पर इस वर्ष एक नई बात भी थी। वह थी पंजाबी सूबा की मांग के कारण पंजाब का विभाजन। जनसंघ की कार्यवाही पर इस नई महत्वपूर्ण घटना की पूरी छाप पड़ी। इस घटना ने तथा इससे मिलती जुलती दूसरी घटनाओं ने जनसंघ के दृष्टिकोण में परिवर्तन कर दिया। जनसंघ के नेता अब आधुनिक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहते हैं। वे अब हिन्दु रूप में न रह कर भारतीय रूप धारण करना चाहते हैं पर इसके लिये उन्हें दो बातें करनी पड़ेंगी। एक उनके नेताओं में मुसलमान ईसाई तथा सिख सज्जनों के नाम भी आने चाहिए और पर्याप्त मात्रा में आने चाहियें। इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आधार छोड़ना पड़ेगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को कोई भी वर्तमान आधुनिक अर्थ में राष्ट्रवादी संस्था नहीं कह सकता।

हमारा विचार है कि जनसंघ यह दोनों ही नहीं कर सकता।

इस नए दृष्टिकोण को अपनाकर जनसंघ के नेताओं ने तीन ऐसी बातें की जिनसे आर्यसमाज के हितों को हानि होती है:

पहली बात यह कि पंजाब के हिन्दुओं को हिन्दी देवनागरी त्यागकर पंजाबी-गुरमुखी अपनी भाषा माननी चाहिये।

दूसरी बात यह कि जनसंघ के वर्तमान प्रधान श्री बलराज मधोक ने आर्यसमाज और अकाली पार्टी को एक स्तर पर लाकर इन दोनों को पंजाब की आजकल की गड़बड़ का दोषी ठहराया।

तीसरे श्री यज्ञदत्त जी ने अपने भाषण में नाम न लेकर श्री वीरेन्द्र, श्री जगतनारायण तथा श्री यश को भला-बुरा कहा।

आर्यसमाज की ओर से इन तीनों ही बातों का निराकरण आवश्यक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पंजाब के हिन्दु विशेषकर आर्यसमाजी हिन्दी-देवनागरी से प्यार करते हैं। जनसंघ तथा किसी भी पार्टी के कहने से वे इस प्यार को छोड़ नहीं सकते। पंजाब के हिन्दू हिन्दी-देवनागरी से आज सिक्खों या पंजाबी के द्वेष के कारण प्यार नहीं करने लगे। तब से करते हैं जबकि अकाली पार्टी और जनसंघ का जन्म भी नहीं हुआ था। ऋषि दयानन्द ने जब सन् १८८२ में अपने सत्यार्थप्रकाश में यह लिख दिया था कि जब बालक वा बालिका पांच वर्ष के हों तो उन्हें देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराया जावे तो पंजाबी गुरमुखी के नाम लेवा अभी पैदा भी न हुए थे। जब महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने स्कूल-कालिज और गुरुकुलों में हिन्दी देवनागरी को शिक्षा का माध्यम बनाया था तब तो पंजाब में उर्दू का बोलबाला था, पंजाबी का नहीं।

आर्यसमाजी को चाहे वह किसी प्रान्त का भी क्यों न हो हिन्दी-देवनागरी वैसी ही प्यारी है, जैसे कनाडा और अमरीका में पैदा हुए सिक्खों को भी पंजाबी गुरमुखी प्यारी लगती है। जैसे भारत में पैदा हुए मुसलमानों को भी अरबी फारसी प्यारी लगती है। हिन्दुओं को हिन्दी प्यारी इसलिये नहीं कि उन्हें पंजाबी से द्वेष है, बल्कि इसलिये कि उनका सारा साहित्य हिन्दी संस्कृत में है। वे इसे छोड़ नहीं सकते।

रही जनसंघ की बात। वह एक राजनीतिक पार्टी है। राजनीति में कलाबाजियां खाना स्वाभाविक है। सिक्खों के वोटों की आवश्यकता हो तो पंजाबी-गुरमुखी ठीक है और हिन्दुओं से वोटों की आवश्यकता हो तो हिन्दी-देवनागरी ठीक है।

हिन्दी आन्दोलन में जनसंघ और आर्यसमाज दोनों साथ थे। हजारों लोग जेल गये, पौलिसों ने अंग-भंग करा बैठे। पोलीस ने भी जी भरकर पीटा और जेल में डाक्टरों से भी लाठियां चलवाई गईं। सरदार प्रतापसिंह कैरों ने छल-बल से इस आन्दोलन को कुचल दिया। यदि बलिदान में आर्यसमाज और जनसंघ दोनों का भाग था तो असफलता में भी दोनों का भाग था। एक बच नहीं सकता।

इसी तरह कांग्रेस के श्री नेहरू जी से लेकर कांग्रेस दफ्तर साफ करने वाले जमादार तक सबने अर्थात् कांग्रेस के छोटे बड़े सबने एक स्वर से कहा कि पंजाबी सूबा नहीं बन सकता। लोगों को विश्वास हो गया कि पंजाबी सूबा नहीं बनेगा। जब सन्त फतहसिंह ने व्रत करने की धमकी देकर पंजाबी सूबा की मांग की तो सेना के सिक्ख सेनापतियों से लेकर कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टी सोशलिस्ट पार्टी तथा अकाली दल के सब सिक्खों ने उस मांग का खुले या दबे शब्दों में समर्थन किया। कांग्रेस के नेता सिक्खों की इस मांग के आगे झुक गये। पिछले १८ वर्ष के वायदे भूल गये और पंजाबी सूबे का बनाना मान लिया। पंजाब के हिन्दू लोगों पर उसकी भयकर प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। श्री यज्ञदत्त जी तथा श्री सत्यानन्द जी ने आमरण अनशन का व्रत रखा। अभिप्राय यह कि इस आन्दोलन में जनसंघ और आर्य समाज साथ साथ थे।

इसमें सन्देह नहीं कि आन्दोलन का परिणाम कुछ अच्छा नहीं हुआ। बिना किसी निश्चित आश्वासन के आन्दोलन समाप्त हो गया। पर यदि श्रेय है तो जनसंघ और आर्यसमाज दोनों को और यदि असफलता की बदनामी है तो दोनों को। जनसंघ के नेता इस मामले में आर्यसमाज को बुरा-भला कैसे कह सकते हैं।

आर्य समाज को अकालियों के साथ जोड़कर जनसंघ राष्ट्रवादी नहीं बन सकता। यह राजनीति की पुरानी घिसी पिटी चाल है। कांग्रेस जनसंघ और अकाली पार्टी को साम्प्रदायिक कहकर अपने को राष्ट्रवादी कहती है। कम्युनिस्ट कांग्रेस को अमरीका के पिछलग्गुआ कहकर अपने को किसानों और मजदूरों के हितैषी कहते हैं। सोशलिस्ट पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी को रूस और चीन का एजेंट कहती है। राजनीति में झूठ बोलना और गाली देना धर्म है। जनसंघ जो भारतीय संस्कृति का नाम लेता है उसे कुछ ऊंची बात करनी चाहिए।

तीसरी बात श्री वीरेन्द्र, श्री यश तथा श्री जगतनारायण को बुराभला कहने की है। ये तीनों सज्जन आर्य समाजी हैं, देशभक्त हैं, कसौटी पर कसे जा चुके हैं, राजनीति के चतुर खिलाड़ी हैं। चोट सहना भी जानते हैं। उन्हें आर्य समाज के आश्रय की आवश्यकता नहीं।

आर्य समाज में कांग्रेसी भी हैं, प्रजा सोशलिस्ट भी और जनसंघी भी, पर आर्य समाज इनसे अलग भी कुछ है। आर्य समाज ने स्वतन्त्रता के आन्दोलन में कांग्रेस का पूरा साथ दिया। लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य लाखों आर्य समाजी जेल गये और हर तरह का नुकसान भी उठाया। पर जब कांग्रेस को मुसलमानों का पक्षपात कर देश का नाश करते देखा, वही ला० लाजपत राय और स्वा० श्रद्धानन्द कांग्रेस के विरोध में खड़े हो गये। जब आर्य समाज गांधी और जवाहरलाल के आगे नहीं झुका तो श्री अटलबिहारी वाजपेयी, श्री बलराज मधोक तथा श्री यज्ञदत्त के आगे क्या झुकेगा। आर्य समाज को अपने सिद्धांत प्रिय हैं, उसके लिये किसी और के विचार का हमारे सामने कोई मूल्य नहीं।

इसका यह अभिप्राय नहीं कि हमारे मन में यज्ञदत्त तथा अन्य नेताओं का मान नहीं। हम उन सबका सम्मान करते हैं। विशेषकर श्री यज्ञदत्त जी का तो पंजाब के सब हिन्दु हृदय से मान करते हैं। पर आर्य समाज का नेतृत्व और सिद्धांत स्वतन्त्र ही रहने चाहिये, पराश्रित नहीं।

एक सबसे अलग और विशेष बात यह है कि आर्य समाज वैदिक धर्म के लिये स्थापित एक संस्था है। वैदिक धर्म संसार के इस्लाम, क्रिश्चियनिटी तथा तथा बुद्ध धर्म आदि धर्मों में मूर्धन्य एक धर्म है। राजनीतिक पार्टियां कांग्रेस, जनसंघ आदि अस्थाई दल हैं जिन्होंने कुछ देर बाद नष्ट होना है। पर वैदिक धर्म तो सृष्टि प्रारम्भ से अब तक चला है। यावच्चन्द्र दिवाकरौ रहेगा। यह एक स्थाई वस्तु है।

धर्म और राजनीतिक पार्टियों की कोई तुलना नहीं। राजनीतिक पार्टियां सदा धर्मों के प्रभाव से रही हैं और रहेंगी।

इस प्रकार यदि वस्तु स्थिति स्पष्ट समझ ली जाय तो आर्य समाज की स्थिति और महत्व संदेह रहित रूप में सामने आ जायेंगे।

★

दहेज प्रथा का उन्मूलन कैसे किया जाए ?

[श्री सावित्री देवी रांका]

दहेज प्रथा वास्तव में हिन्दू समाज के लिए एक दारुण अभिशाप है। अन्य सामाजिक कुप्रथाओं के समान यह भी मध्य युग की उपज है। वैदिक काल में यह प्रथा नहीं थी। अथर्ववेद में इसका वर्णन अवश्य मिलता है कन्या का विवाह करते समय पिता उसे बहुत से प्रेमोपहार देकर विदा किया करता था लेकिन आज की तरह न तो यह अनिवार्य था और न इसके लिये कोई शर्त ही निर्धारित की जाती थी। कन्या का पिता तथा बन्धु गण अपनी सामर्थ्य और सुविधानुसार प्रेम प्रदर्शन के रूप में वधू को उपयोगी भेंटें दिया करते थे। आगे चलकर ज्यों ज्यों समाज में अकर्मण्यों का दल बढ़ता गया त्यों त्यों दहेज की राशि के प्रति लोगों का मोह बढ़ता गया और इसे विवाह के साथ अनिवार्य रूप से जोड़ दिया गया। राजा, सामन्त और धनी लोग अपनी कन्याओं के विवाह के समय वैभव प्रदर्शन के रूप में अधिकाधिक द्रव्य देने लगे। राजपूत राजाओं के शासनकाल में इस प्रथा का खूब विकास हुआ। दास भी उस समय धन का एक रूप थे। धन आदि अन्य पदार्थों के साथ साथ दास-दासियां भी दहेज में दिये जाने लगे। बाल विवाहों ने इस प्रथा को और भी बढ़ावा दिया।

दहेज के दुष्परिणाम

आज यह प्रथा इतनी बढ़ चुकी है कि विवाह के समय दहेज में मिलने वाली वस्तुओं को कन्या से अधिक महत्व दिया जाता है। आज विवाह का आधार दहेज ही है। फलतः दहेज की कमी के कारण अनेक योग्य और गुणवती कन्यायें अविवाहित रह जाती हैं या माता पिता की विवशतावश अयोग्य व्यक्तियों के साथ ब्याह दी जाती हैं। दूसरी ओर दहेज की मोटी रकम लाने वाली अयोग्य कन्यायें भी अच्छे घर और वर प्राप्त करती हैं। चाहे बाद में उनका वैवाहिक जीवन असफल हो रहे।

लड़कियों के निरादर का कारण

दहेज की कुप्रथा ने परिवार में कन्या के स्थान को बहुत नगण्य बना दिया है। कोई समय था जब इस विभीषिका से डरते हुये माता-पिता अपनी अबोध कन्याओं की हत्या तक कर देते थे। आज भी हमारे घरों में कन्या के पालन पोषण और शिक्षा दीक्षा पर अधिक व्यय नहीं किया जाता क्योंकि माता-पिता दहेज के लिए रकम जमा करना अधिक जरूरी समझते हैं। उनकी इस अनोवृत्ति के पीछे समाज के ठेकेदारों की शोषण प्रवृत्ति छुपी रहती है जो विवाह योग्य कन्याओं के अभिभावकों को दहेज की अधिकाधिक बोलियां सुनाकर भयभीत करते रहते हैं। दहेज की कमी के कारण वधू का जीवन नरक बन जाता है। दूसरी ओर पुत्री को सुखी देखने की अभिलाषा से पिता कर्ज लेकर भी वर पक्ष की मांगें पूरी करता है। परन्तु ये मांग बराबर बढ़ती रहती हैं और उन्हें पूरी करने की चिन्ता में कन्या के घर वालों का सुख चैन सब कुछ लुट जाता है। माता पिता के कष्टों का ध्यान करके अनेक अविवाहित एवं नवविवाहित कन्यायें आत्महत्या तक कर लेती हैं।

आज विवाह के बाजार में लड़कों की बोलियां लग कर दहेज की रकमें तय की जाती हैं। अप्रत्यक्ष रूप से कन्या के माता पिता भी इसे बढ़ाने में योग

सामाजिक समस्याएँ

देते हैं। आज एक साधारण गृहस्थ की भी यह कामना रहती है कि उसकी लड़की किसी बड़े घर की बहू बने। उस के पास बंगला हो कार हो, नौकर चाकर हों। कन्या के हित के लिये की जाने वाली यह कामना दहेज प्रथा का पोषण करती है। जब लड़की के लिये पिता सब सुविधायें चाहता है तो लड़के वाले भी अपनी मांगें रखते हैं और चाहते हैं कि इन सुविधाओं को कन्या का पिता पूरी करे। वह उसे कार और बंगला दहेज में दे। बड़े अफसर लड़कों के माता पिता सोचते हैं कि उन्होंने अपने लड़के को पढ़ाने लिखाने में दिक्कतें उठाई हैं और खर्च किया है। इस खर्च का बहुत बड़ा हिस्सा वे दहेज के रूप में प्राप्त करने की आशा रखते हैं। इसलिए माता पिता को चाहिये कि वे अपनी कन्या के लिये योग्य और शिक्षित लड़कों को प्राथमिकता दें न कि दहेज के लालची धनवान और बड़े अफसरों को।

दहेज के विरोध में वातावरण तैयार करें

दहेज की कुप्रथा को मिटाने के लिये सामाजिक जीवन में आमूल चूल परिवर्तन करने होंगे। इस विभीषिका को मिटाना सभी चाहते हैं परन्तु कार्य सही दिशा में न होने के कारण दहेज का रिवाज मिटने की बजाय दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। मई सन् १९६१ में अनेक समाज सुधारकों के प्रयत्नों से दहेज निरोधक कानून भी पास हो गया है फिर भी दहेज का लेना और देना आज भी जारी है। कन्या पिता के घर में कुआंरी नहीं रह सकती इसलिये कन्या का पिता वर पक्ष के सम्मान की पूरी जिम्मेवारी लेकर कानून का उल्लंघन करके गुप्त रूप से दहेज देता है। यह एक महान सामाजिक अपराध है, जिसे जनता सामाजिक चेतना का गला घोंटना है। दहेज की कुप्रथा को मिटाने के लिये नये खून के आगे आने की आवश्यकता है। पुरानी पीढ़ी के लोग दहेज की रकम का मोह आसानी से नहीं छोड़ सकते। जाति बिरादरी की बात का भी हिन्दू समाज में बहुत अधिक ध्यान रखा जाता है। इसलिये दहेज लेकर विवाह करने वालों को दण्ड देने का काम बिरादरी के लोग अच्छी तरह कर सकते हैं। पूरी जाति में ऐसे लोगों की चर्चा और अपमानित किया जाना जरूरी है। मुखिया लोगों का कर्तव्य है कि वे अपने घरों से दहेज की प्रथा को समाप्त करने के लिये उचित वातावरण तैयार करें। अनेक जातीय पत्र भी इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। समय समय पर आयोजित होने वाले धार्मिक और सामाजिक सम्मेलनों के अवसर पर भी जनता को दहेज से होने वाली हानियों से सचेत करके इसके विरोध में वातावरण तैयार किया जा सकता है। स्त्री शिक्षा का प्रचार इस दिशा में विशेष सहायक है। शिक्षित युवकों और युवतियों में वयस्क प्रेम-विवाहों को बढ़ावा देकर भी दहेज की समस्या सुलझाई जा सकती है। वास्तव में विवाह का दायित्व माता-पिता की अपेक्षा लड़के लड़की को सौंपना अधिक श्रेयस्कर है। दहेज निरोधक कानून को सफल बनाने के लिए युवकों को यह प्रण कर लेना चाहिए कि वे दहेज लेकर विवाह नहीं करेंगे।

दहेज विरोधी अभियान

किसी भी कानून की सफलता के लिए जनता में उसकी उपयोगिता का प्रचार करना भी बहुत जरूरी होता है। प्रचार के इस कार्य के लिए पत्र, रेडियो और सिनेमा सफल सहायक हो सकते हैं। इन सब में सिनेमा का जन जीवन से गहरा सम्बन्ध है। दहेज के दुष्परिणामों को दिखाने वाली फिल्में दहेज के विरोध में उपयुक्त वातावरण बना सकती हैं। समाज शास्त्र का अध्ययन भी पाठ्यक्रम का एक आवश्यक विषय होना चाहिए। बचपन से लेकर शिक्षा समाप्त करने तक प्रत्येक विद्यार्थी को अपने देश की सामाजिक स्थिति का पूरा परिचय हो जाना बहुत जरूरी है। इस तरह युवक और युवतियां छात्र जीवन में ही अच्छी और बुरी सामाजिक प्रथाओं से परिचित हो जाएंगे और बुराइयों को दूर करने का संकल्प लेकर ही वे सामाजिक जीवन में प्रवेश करेंगे। विकेन्द्रीकरण की प्रणाली का भी इस दिशा में काफी महत्व है। गांव की सफाई और प्रबन्ध की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत पर है। इन पंचायतों के कार्यकर्ता अपने गांव के लोगों से दहेज न लेने और देने का प्रण करवा सकते हैं। नगरों में काम करने वाली सामाजिक धार्मिक और राजनैतिक संस्थाएं इस कुप्रथा को मिटाने में सक्रिय सहयोग दे सकती हैं।

हमारे धर्मग्रन्थों में त्याग और अपरिग्रह की महिमा गाई गयी है और व्यक्ति को त्यागपूर्वक भोग करते हुए जीवनयापन का उपदेश दिया गया है परन्तु अपने व्यावहारिक जीवन में हम लोभ और माया मोह में इस प्रकार ग्रस्त हैं कि विवाह जैसे पुनीत कार्य के समय भी लोभवृत्ति को नहीं छोड़ते। वर और वधू की शिक्षा शील और चरित्र आदि गुणों को ध्यान में न रख कर अर्थ और भौतिक पदार्थों की प्राप्ति को ही विशेष महत्व देते हैं। परन्तु अनुभव बताता है कि इस प्रकार के विवाह अन्त तक सफल नहीं होते। विवाह तो दो हृदयों का पवित्र आत्मिक बंधन है। भौतिक पदार्थों की लालसा और लोभवृत्ति में फंस कर हमें इसे दूषित नहीं करना चाहिए। दहेज की प्रथा से छुटकारा पाने के लिए हमें युवकों और युवतियों के जीवन में त्याग और अपरिग्रह की महिमा अंकित करनी होगी, उन्हें विवाह के सच्चे स्वरूप से परिचित कराना होगा और अपने पुरुषार्थ द्वारा अर्जित सम्पत्ति के सदुपयोग के लिए प्रेरित करना होगा।

★

संस्था-परिचय

आर्यसमाज देहरादून और वहाँ के दर्शनीय स्थल

(संक्षिप्त परिचय)

[विद्याभास्कर श्री प० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री एम० ए० ...]

आर्य प्रतिनिधि सभा का ८० वां वार्षिक वृहद् अधिवेशन ११ १२ जून ६६ को देहरादून के कर्मठ आर्य नेता श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य के आमन्त्रण पर होने जा रहा है। वहाँ पर प्रान्त के १२०० आर्यसमाजों के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री एम० ए०

उत्तराचल में देहरादून आर्यसमाज की गतिविधियों का एक मुख्य केन्द्र रहा है डी०ए०वी० कालिज कन्या गुरुकुल कन्या विद्यालय, अनाथालय आ० स० मसूरी, चकरौता, चूहड़पुर विशेष स्थल हैं। वैसे यह अब आचार्य प्रवर श्री प० नरदेवजी शास्त्री वेदतीर्थ की विशेष प्रचार स्थली है और द्वितीय विद्वान प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड का कालसी अपना विशेष महत्व रखता है। आज़ादी की रणस्थली के बाद श्री हुकम वर्मा श्री प० अमरनाथ जी वैद्य इस नगरी की शोभा रहे हैं। आज वहाँ की आर्यसमाज का नेतृत्व नवयुवक कार्यकर्ता श्री धर्मेन्द्रसिंह जी आर्य एम. काम. एल. एल. बी. सभा के मुख्य उपमन्त्री कर रहे हैं। आर्यसमाज के प्रतिनिधि वहाँ जाकर उनकी गतिविधियों से प्रेरणा लें।

चलते हुए पंजाब की लपटों से निकल कर एक वीतराग तपस्वी ने भी अपनी आराधना स्थली देहरादून को ही चुना, उस मूर्धन्य सन्यासी की दर्शनीय स्थली नालापानी (तपोभूमि) है। माननीय श्र पूज्य आनन्दस्वामी जी महाराज ने इस पवित्र स्थान को बनाकर देहरादून का बाद लगाकर शोभा को बढ़ा दिया है। विशेष रूप से आर्य समाजियों का दर्शनीय स्थान है यहाँ प्रेरणा मिलेगी।

मन्सूरी जहाँ पर्वतीय रानी कही जाती है वहाँ पर आ०स० के अपने दो विशाल भवन प्रचार के केन्द्र बिन्दु हैं। भारत भर से आये आर्यसमाज के लिए सुविधा स्थल है। मन्सूरी देहरादून के दर्शन कर यात्री ऋषिकेश का ओर प्रस्थान करेगा।

हृषीक—अर्थात इन्द्रियों के० ईश० स्थान जहाँ पर सन्यासी महात्मा अपनी इन्द्रियों को ईश्वर में लगाकर ध्यान मग्न होते हैं, उस सुरम्य गंगा द्वार ऋषिकेश में लक्ष्मण झूला, स्वर्गाश्रम मुनि की रेती—नीचे से ऊपर नरेन्द्रनगर के दर्शन करेंगे आ०स०का पवित्र स्थान वैदिक आश्रम नगरके मध्य में स्टेशनरोड पर स्थित है। आर्यसमाजियों को ठहरने की पूर्ण सुविधा है। बाबा काली कमली का क्षेत्र जनता की सुविधा का विशेष स्थान है वहाँ से लौटने पर —

हरि द्वार में आ जाइये। यहाँ पर ठहरने के लिये धर्मशालायें हैं। आर्य समाजियों के लिये ऋषिकेश से आते हुए हरिद्वार के निकट मोहन आश्रम नाम से एक पवित्र आर्यसमाज की संस्था है विश्राम का श्रेष्ठ स्थान है या फिर हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर उतर कर शहर में प्रवेश करें तो एक तिराहे पर शिव की मूर्ति अपने ऊपर जल छोड़ती मिलेगी वहीं से पूर्व की ओर एक छोटी सड़क है उस पर आर्यसमाज के कर्मठ सन्यासी पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने आर्यसमाज के प्रचार प्रसार हेतु एक पवित्र स्थान स्थापित किया है। आर-

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सफलता का रहस्य

*

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के गुणज्ञ मन्त्री श्री चन्द्रदत्त जी तिवारी ने गत वर्ष सभा के भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस के प्रबन्ध का भार अन्तरंग द्वारा मुझे वहन करने के लिए बाध्य किया था। उस समय मैं नहीं जानता था कि किन कारणों से प्रेस कार्य से अनभिज्ञ व्यक्ति के दुर्बल कन्धों पर यह गुरुतम भार रखा जा रहा है। अनिच्छा से और अन्यमनस्कता से उनके आग्रह पर मुझे अपनी सहमति देनी पड़ी।

सभा के अन्तराल में प्रवेश कर जब मेरे ज्ञान की परिधि का विस्तार हुआ और आर्यमित्र के पुरातन कार्यकर्ता श्री नारायण गोस्वामी जी तथा सभा के मुख्य लिपिक श्री बाबूराम जी से प्रेस की पूरी पुराण सुनी कि किस प्रकार आगरे में इसको उन्नत करने के सब अध्यवसाय व्यर्थ हुए किस प्रकार आर्य-साहित्य मंडल अजमेर के सभी प्रयत्न विफल हुए और अन्ततोगत्वा आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड का भागीरथ आयोजन भी नाकाम हो गया और उसकी इतिश्री श्री बा० कालीचरण जी, वर्तमान स्वामी अखिलानन्द जी, के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुई तो मेरे जैसे व्यावसायिक बुद्धि वाले का हृदय भी दोलायमान हो गया और सितम्बर १९६४ से दिसम्बर १९६४ तक इस गुरुतर भार को टालता ही रहा किन्तु बकरी की मां कब तक खैर मनाती, अन्तत: १५ दिसम्बर १९६४ को इस भार को मुझे उठाना ही पड़ा।

किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए अर्थशास्त्र के सिद्धान्तानुसार तीन वस्तुयें आवश्यक है—(१) उपकरण (२) वित्त (३) श्रम। सर्व-प्रथम दृष्टि में मैंने यह परिलक्षित किया कि जो धन लगाया जाय उससे लाभ होने के लिये ठीक औजार, मशीन टाइप आदि होने चाहिए। तदनुकूल एक सहायक मैनेजर की नियुक्ति की आवश्यकता समझी गई जो प्रेस की टूटी फूटी मशीनों का जीर्णोद्धार करा सके और इस कार्य का विशेषज्ञ हो। बड़ी सिलिन्डर मशीन १५ दिन में खुलवाकर कायाकल्प के लिए दे दी गई उसमें बहुत कुछ मरम्मत होनी थी नए पुर्जे बनने थे और स्टोन आदि को समतल (प्लेनिङ्ग) करना था जिसमें तीन मास लग गये और तब अप्रैल में मशीन चालू हुई। इस बीच आर्यमित्र ट्रेडिल मशीन पर प्रकाशित होता रहा, कुछ देर होने पर कतिपय फार्म बाहर भी छपे। मशीन ठीक होने के बाद दूसरी समस्या टाइप की आई। जो टाइप अधिक खराब हो गया था वह ढलवाया गया किन्तु सारे टाइप की आयु समाप्त हो चुकी थी और सब ही बदलवाना था। पाँच हज़ार से ऊपर रुपया लग चुका था इसलिए आधे को ढलवा कर ही सन्तोष किया अब शेष को भी पुन: ढलवाना होगा। इस साज-सज्जा में लगभग ६ मास समाप्त हो गए तब कार्य पूर्णरूपेण आरम्भ हुआ। अभी काम जमा भी नहीं था कि सहायक

श्री निर्मलचन्द जी राठी
अधिष्ठाता—भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस

मैनेजर ने निजी कारणों से त्यागपत्र दे दिया और पुन: उचित व्यवस्था करने में समय लगा। इस प्रकार कठिनाइयों के बीच वर्षान्त हुआ। फिर भी हानि अपेक्षाकृत नाममात्र है यह सन्तोष का विषय है और इससे आशा होती है कि भविष्य में लाभ अवश्य होगा।

सफलता का अन्य रहस्य है कुशल और सन्तुष्ट कामगार। प्रेस कर्मचारी अप-वादों को छोड़कर लगभग सभी काफी पुराने हैं और प्रेस के प्रति हित दृष्टि रखते हैं। आधुनिक बढ़ती हुई महंगाई को देखते हुए और बढ़ती हुई मजदूरी की दरों को दृष्टिगत करते हुए समुचित पारिश्रमिक ही कार्य में उनकी रुचि बनाये रख सकता है। व्यवस्था के इस अंग में अभी सुधार अपेक्षित है और कार्य के विस्तार के साथ उसकी भूमिका भी तैयार की जा रही है। सफलता के इन तीनों अंगों की पूर्ति हो जाने पर आशा है उसके रहस्य का उद्घाटन हो जायेगा और वह एक मृग मरीचिका न रहेगी।

—निर्मलचन्द राठी

मन मन्दिर

[श्री धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी देहली]

आज विश्व का मानव समाज परमात्मा की प्राप्ति के लिये अधीर है व्याकुल है।

कोई काशी जाता है तो कोई काबा में तो कोई मक्के और मदीने में खाक छानता है।

कोई मंदिर में, कोई गुरुद्वारे में, कोई चर्च में तो कोई मस्जिद में सिजदा करता है।

आज इस विशाल विश्व का मानव समाज परमात्मा को पाने के लिये उद्विग्न अवस्था में ठोकरें खा रहा है।

ऐ विश्व के नर-नारियो यह याद रखो यदि परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हो।

यदि स्वर्गों और सुखों को प्राप्त करना चाहते हो।

यदि मोक्ष अवस्था में विचरण करना चाहते हो।

यदि जन्म मरण के दुसह दुखों से मुक्त होना चाहते हो।

यदि चिन्ताओं को चिता से बचाना चाहते हो।

यदि अक्षय सुखों को प्राप्त करना चाहते हो।

यदि प्रेम प्रीतम का साक्षात्कार करना चाहते हो।

यदि परमात्मा से वार्तालाप करना चाहते हो।

यदि परमात्मा का दिव्य दर्शन अपनी अन्तर आत्मा की गहन गुफाओं में करना चाहते हो।

यदि वेदोक्त जीवन के रहस्य के मर्म को जानना चाहते हो।

यदि महर्षियों के जीवन की झांकियों को देखना चाहते हो।

यदि सृष्टि के आदि काल के उन कल्याणकारी शब्दों को, वेदज्ञान के मर्मों को, जो अब आकाश में गूंज रहे हैं उन्हें सुनना चाहते हो तो आओ आज मन मंदिर के पुजारी बनो।

आओ आज हम प्रेम योगी बनें।

आओ हम आज प्रेम पुजारी बनें।

आओ आज हम अपने मन मंदिर में प्रेम की अखंड ज्योति जगायें।

जगाये हृदय बीच तल्लीन होकर भक्ति रस में पगें।

अहंभाव न बनें, श्रद्धा और प्रेम के बिना मन मंदिर की ज्योति का प्रकाश पुण्य मिलता नहीं है।

मन मंदिर में ही परमात्मा का निवास है।

रत्न जटित मंदिरों में भगवान को ढूंढना सर्वथा बेकार है।

जिस मनुष्य का मन पवित्र नहीं।

जिस मनुष्य के मन में, आंखों में वाणी में भावनाओं में इन्द्रियों में पवित्रता नहीं हो।

वो मनुष्य ब्रह्मज्ञान के समान पवित्र जन्म शरीर को नहीं रखता है।

जो मनुष्य कुवासनाओं का और इन्द्रियों का दास है जो मनुष्य अपने मन पर विजय नहीं प्राप्त कर सकता है। वह मनुष्य लाख जन्मों में भी परमात्मा का दर्शन नहीं कर सकेगा।

ऐ विश्व के नर नारियो जीवन की सफलता के लिये शिव संकल्पों से युक्त अपने मन को बना लो।

माया की भंवरा का दास मत बनो।

संसार के सौन्दर्य में, विश्व के कण-कण में फूलों में, हवा में निर्झर झरनों में, आकाश में चांद में, सूर्य में तारों में, पवन में कला में वक्ता की वाणी में, महात्माओं और योगियों के जीवन में, विज्ञान में जीवन निर्माण और विश्व रचना में, पृथ्वी में, पाताल में, कृषक जोड़ियों के प्यार में महात्माओं के वैराग्य में, अनुराग में, क्रान्ति दर्शी कवियों की वाणी में, भक्तों की टेर में, घनघोर आपदाओं में, संकटों में, जीवन की तरल तरंगों में, उषा काल की लाली में, अगर सागर कोष में, समुद्र की गहराइयों में यत्र-तत्र सर्वत्र उस परमात्मा को देखने का अपना अनुपम अनुभव मंगल मय सरल सरस शान्ति स्वभाव भाव बना लो, अपने नयनों में परमात्मा की दिव्य द्युति को आज विवेक द्वारा देखो।

गायत्री माता की गोद में बैठने का परमात्मा का अमृत पुत्र और पुत्रियाँ कहलाने का परम सौभाग्य जगाओ। मन निग्रह करो मन में लेशमात्र भी विकार न आने दो।

मनस्वी बनो !

जो मनुष्य मन पर विजय प्राप्त कर सकता है। और परमात्मा को मन मंदिर में प्राप्त कर सकता है। वह विश्व विजय करने की क्षमता भी प्राप्त कर सकता है।

यह याद रखो कूकर, शूकर कीट पतंगों के समान हमारे जीवन बन गये हैं।

आज संसार का मानव समाज भोगवाद की ओर द्रुतगति से आगे बढ़ रहा है। विश्व का मानव समाज अपने आप को और परमात्मा को भूलकर प्रतिक्षण विनाश के गर्त में जा रहा है। आज हम मानव कुल के धर्म कर्म को भूलकर सुख और शान्ति की आशा रखते हैं।

सुख और शान्ति अनन्त ऐश्वर्य का परम धाम परमात्मा की भक्ति में तथा विश्व की मंगलता की रक्षा में नहीं है।

यह याद रहे। सुख और शान्ति चाहते हो तो दीन और दुखियों दरिद्रों नारायणों की सेवा करो।

निष्काम कर्म करो। विश्व कल्याण मंगलमय में लग जाओ। घोर तप करो तपस्वी बनो। आलस्य कायरता भीरुता को पास न आने दो। दैवी गुणों को प्राप्त करो। जीवन को सादा और मन को पवित्र बनाओ। भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपनाओ। शिखा-सूत्र की रक्षा करो।

देश प्रेम देश सेवा, देश उन्नति में अपने जीवन को लगा दो। परमात्मा की प्राप्ति शुभ कर्मों के करने से तथा धर्म युक्त जीवन के निर्माण से अनायास ही हो जाती है।

परमात्मा का दिव्य-दर्शन भक्त भावनाओं से परम सरलता से ही होता है।

ऐ विश्व के नरनारियो, अपने आप को पहचानो परमात्मा को अपने मन मन्दिर में ही प्राप्त कर सकते हैं परमात्मा को ढूंढने के लिये कहीं भटकने की और दूर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। संयम सदाचार, वैराग्य अनुराग युक्त हो अपना जीवन सदन मोह माया ममता की विषमता न सताये। तभी मन मन्दिर के हम पुजारी बने।

मन मन्दिर में ही हम आज उद्बुद्ध करें ज्ञान अग्नि रवि को यह याद रहे ज्ञान के बिना गति नहीं है।

ज्ञान ही वेदों का शास्त्रों का उपनिषदों का महर्षियों की पवित्र वाणी का सार है।

मन मन्दिर में ही जन्मजन्मान्तरों का संस्कार सूक्ष्म विचार और कर्म रेखा की गति प्रगति सुषुप्त अवस्था में पड़ी हुई है। मन में विशाल वेदों का ज्ञान छिपा हुआ है।

मन की अनन्य शक्तियों को, मनोविज्ञान के निष्कर्ष को काम लाने पर तथा मन को वश में कर लेने पर जिस परम आनन्द का अनुभव मनुष्य करने लग जाता है। उसका शतांश मात्र भी चक्रवर्ती सम्राटों को प्राप्त नहीं होता है।

मन को वश में कर लेने वाला मनुष्य देव बन जाता है मन को वश में कर लेने वाले और मन मन्दिर में ही परमात्मा का दिव्य दर्शन करने वाले महात्माओं महापुरुषों के दर्शन [illegible] करने से मन में परम शान्ति और आनन्द से परिपूरित मनुष्य का जीवन बन जाता है।

मानव जीवन की दिव्य दिशाओं में आनन्द की विविध लहरें तरंगित होने लग जाती हैं। आओ आज हम मन मन्दिर के सच्चे पुजारी बनें आत्म ज्ञानी अनुरागी आराधक बने।

जगत जननी का आज यह संदेश है महर्षियों का तथा वेद शास्त्रों का आज यह सन्देश है कि जीवन मरण के बन्धनों से मुक्त होने के लिए मन मन्दिर के पुजारी बनो।

वेद विज्ञान कर्म विज्ञान, धर्मविज्ञान आत्म विज्ञान सृष्टि विज्ञान, सूर्यविज्ञान जीवन विज्ञान मनो विज्ञान, ब्रह्म विज्ञान आदि विद्याओं विज्ञानों को प्राप्त करने के लिए आत्मज्ञानी महात्माओं के सत्संग में जाओ जहां जाने से संशय शूल मिट जाते हैं। मन की वेदोक्त तरल तरंगों में देखो वह परमात्मा हमें देख रहा है।

आज कुवासनाओं, कुसंस्कारों, कुकर्मों को, कुविचारों को नमस्कार कर दो।

दया, विनम्रता, विवेक अनुराग से अनुरक्त जीवन पथ को भूल न जाना। जीवन पथ में क्या रेखा बनकर चाहे फूल आवे या आवे शूल उन शूलों को या फूलों को हम परमात्मा के मधुर मिलन में तल्लीन हो चुके हैं हंस हंस के झुम जाओ।

यह ध्यान रहे अपनी चित्त वृत्ति को पवित्र बनाओ।

मन को पवित्र बनाना चाहते हो और मन मन्दिर में ही परमात्मा का दिव्य दर्शन करना चाहते हो तो ओ३म् नाम का पल छिन अहि यदि प्रतिपल जाप करो परमात्मा को एक क्षण के लिये भी मत भूलो।

सुख चाहते हो तो संयमयुक्त सदाचारयुक्त निष्कलंक निर्विकार निर्लिप्त अपने जीवन को बना लो।

आज से ऐ धर्मवीर कर्म को ही अपना मित्र बना लो, कर्म को मित्र बना लेने पर संसार स्वयमेव मित्र बन जायेगा।

परमात्मा से अपनी मित्रता जोड़ो।

परमात्मा को अपना मित्र बना लो।

अपने नैनों में, प्राणों में, वाणी में परमात्मा बसाओ।

मनमन्दिर की पवित्रता के लिए अपना जीवन, सब सर्वस्व निछावर कर दो।

यह याद रहे परमात्मा को भूल जाना महाअज्ञान है और महामृत्यु है।

परमात्मा की प्राप्ति में आत्मविभोर हो जाओ।

(शेष पृष्ठ १० पर)

ग़लती की स्वीकारोक्ति करो

[श्री यश प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, जालन्धर]

अकालियों को खुश करने के लिए जनसंघ ने आर्यसमाज पर हमला तो कर दिया लेकिन अब स्वयं ही घबरा रहा है। पंजाब जनसंघ के भूतपूर्व प्रधान कैप्टन केशव चन्द्र ने उस बहस को बन्द करने की अपील की है जो इस प्रश्न पर हो रही है।

लेकिन यह बहस शुरू किसने की? और फिर इस बहस को व्यक्तिगत स्तर पर कौन ले आया? अखिल भारतीय जनसंघ के प्रधान ने सारे आर्य समाज पर लाञ्छन लगा दिया कि यह पंजाब के वातावरण को खराब कर रहा है। और उसके बाद हर छोटे मोटे जनसंघी ने आर्य समाज और उसके नेताओं पर बरसना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, लाला जगतनारायण व श्री वीरेन्द्र के विरुद्ध घटिया भाषा में लेख लिखे गए जिनका किसी भी युग की सभ्यता से कोई सम्बन्ध नहीं। बहस सिद्धान्त की हो दलील में वज़न हो और सभ्यता की सीमा में रह कर एक दूसरे का केस काटने की कोशिश की जाये तो मैं इसे बुरा नहीं समझता। लेकिन जब लड़ाई व्यक्तिगत स्तर पर पहुंच जाये और उसमें मतभेदों का उल्लेख न होकर गालियां निकाली जायें तो स्वाभाविक रूप से हर किसी को अफ़सोस होगा लेकिन जनसंघ ने यही क्यों समझ लिया कि केवल वही हमला कर सकता है? जब प्रत्युत्तर मिलने लगा तो वह परेशान हो उठा। हर संस्था में जहां उत्तरदायित्व हीन व्यक्ति होते हैं, वहां समझदार वर्ग भी होता है। जनसंघ का दुर्भाग्य यह है कि इसके प्रधान और कई दूसरे नेता उत्तरदायित्व हीन हैं। इसलिये वे यह सोचते ही नहीं कि जो पग वे उठाने जा रहे हैं, उसका परिणाम क्या निकल सकता है। जनसंघ यदि अपने आपको राजनीतिक संस्था मानता है तो उसे राजनीतिक संस्थाओं से ही लड़ना चाहिये धार्मिक या सामाजिक संस्थाओं से उलझ कर वह अपने आपको कमज़ोर ही कर सकता है, सत्ता प्राप्त नहीं कर सकता। आर्य समाज कोई राजनीतिक पार्टी नहीं है। इसके दिल की भड़ास निकालने के दो ही मतलब हो सकते हैं, एक यह कि जनसंघ अपने आपको राजनीतिक और असाम्प्रदायिक पार्टी कहता अवश्य है, लेकिन दिल से नहीं मानता। उसके दिल में वही बात है जो मास्टर तारासिंह और सन्त फतेहसिंह के दिल में है। इन दोनों नेताओं का विश्वास है कि धर्म और राजनीति अलग अलग नहीं हो सकते। इन दोनों नेताओं ने धर्म का प्रयोग राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिये किया है। जनसंघ का आर्य समाज से उलझना यह सिद्ध करता कि वह भी धर्म की आड़ में राजनीतिक शिकार खेलना चाहता है दूसरे यह कि जनसंघ भी भारत की राजनीति में वही भूमिका निभाना चाहता है जो किसी समय मुस्लिमलीग ने निभाई थी। मुस्लिमलीग वालों का विश्वास था कि जो व्यक्ति मुस्लिमलीग में शामिल नहीं होता वह मुसलमान नहीं है। इसलिये वे किसी ऐसे मुसलमान को सहन नहीं करते थे जो मुस्लिमलीग के अलावा किसी और पार्टी में हों। मौ० अबुलकलाम आजाद को संसार भर के मुसलमान तो मुसलमान मानते थे लेकिन मुस्लिमलीग उन्हें 'काफ़िर' समझती थी। कांग्रेस, अंजुमन अहरार यहां तक कि यूनियनिस्ट पार्टी के कितने भी मुसलमान थे, वे चाहे पांच वक्त नमाज़ पढ़ने के पाबन्द हों तो भी मुस्लिमलीग की निगाह में मुसलमान नहीं थे। यह फ़सिस्ट रवैया मुस्लिमलीग ने इसलिये अपनाया क्योंकि वह मुसलमानों की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था बनना चाहती थी। वह कांग्रेस या किसी दूसरी राजनीतिक पार्टी के ग़ैर मुस्लिम नेताओं को तो सहन कर लेती किन्तु किसी मुस्लिम नेता का नाम तक सुनना गवारा न करती। इसी प्रकार जब जनसंघ यह कोशिश कर रहा है कि हिन्दू उसका एकाधिकार हो जाए उसे यह सहन नहीं कि किसी और पार्टी के झंडे तले काम करने वाला कोई हिंदू विशिष्ट स्थान प्राप्त करे। मुस्लिम लीग की तरह वह एक हिन्दू लीग की भूमिका निभाना चाहता है और उन लोगों को हिन्दू मानने से इन्कार करने लगा है जो जनसंघ में नहीं हैं। दूसरी सभी पार्टियों में काम करने वाले ग़ैर हिन्दुओं को तो वह सहन करता है किन्तु कोई हिन्दू उसे गवारा नहीं।

आर्यसमाज या उसके नेताओं से उलझन का इसके सिवा और कोई अर्थ हो ही नहीं सकता। आर्यसमाज न तो कभी चुनाव में भाग लेता है और न इस पर किसी एक राजनीतिक पार्टी का अधिकार है। अलबत्ता आर्यसमाज ऐसी हैं जिनके पदाधिकारी जनसंघी हैं। ऐसे भी हैं जिनके पदाधिकारी सोशलिस्ट हैं आर्यसमाज में कांग्रेसी भी हैं और ऐसे लोग भी हैं जिनका सम्बन्ध किसी राजनैतिक पार्टी से नहीं। आर्य समाज ने कभी किसी पर आपत्ति की न किसी पर प्रतिबन्ध लगाया। जनसंघ वालों ने कई जगह आर्यसमाज के मंच और संगठन का दुरुपयोग करने का यत्न अवश्य किया इस पर उन्हें रोका ज़रूर गया निकाला नहीं गया। अलबत्ता जनसंघ का यह प्रयत्न अवश्य असफल हुआ है कि वह इसके आर्यसमाज पर पूर्ण रूप से आधिपत्य जमा ले। सम्भवतः इस प्रयत्न की असफलता ही उस क्रोध का कारण है, जो अब आर्यसमाज पर निकाला जा रहा है। लेकिन जनसंघ वालों ने कभी सोचा नहीं कि यदि आर्यसमाजी जनसंघ को छोड़ जाएं तो बाकी क्या रह जाता है।

मैं कैप्टन केशवचन्द्र जी से सहमत हूं कि यह बहस बन्द होनी चाहिये। किन्तु इसे आर्यसमाज ने नहीं छेड़ा, स्वयं जनसंघ के नेताओं ने छेड़ा है। आर्यसमाज किसी भी राजनीतिक पार्टी पार्टी से उलझना नहीं चाहता और न किसी राजनीतिक पार्टी के लिये अपने दरवाज़े बन्द करना चाहता है किन्तु यह सम्भव नहीं कि जनसंघ अकालियों को प्रसन्न करने के लिए आर्यसमाज पर लाञ्छन भी लगाये और यह आशा भी रखे कि इसे प्रत्युत्तर नहीं मिलेगा। अभी तो आर्यसमाज खामोश है आर्यसमाज के कुछ नेताओं ने ही जनसंघ को उत्तर दिया है। संस्था के रूप में अभी कुछ कहा नहीं गया। आर्यसमाज में सहन शक्ति बहुत है। यदि अकालियों का हमला सहन कर सकता है तो जनसंघ का भी। किन्तु हर बात की एक सीमा होती है। यदि जनसंघ का यही रवैया रहा तो फिर उसे भी हरकत में आना पड़ेगा। बेहतर हो कि जनसंघ अपनी गलती को स्वीकार करते हुए आर्यसमाज से [illegible] आर्यसमाज को इस बात से कोई सरोकार नहीं कि जनसंघ अकालियों से गठजोड़ करता है या स्वतन्त्र पार्टी से यह उसका अपना दृष्टिकोण है। आर्यसमाज चुनाव के पचड़े में नहीं पड़ता। लोग जनसंघ को अच्छा समझेंगे तो उसे वोट देंगे, कांग्रेस को अच्छा समझेंगे तो उसे सफल करा देंगे। इससे आर्यसमाज का कोई सम्बन्ध नहीं। लेकिन आर्यसमाज जनसंघ को यह अनुमति नहीं देगा कि वह चुनाव जीतने के लिए धार्मिक संस्था पर कीचड़ उछाले।

●

उपनयन संस्कार

दि० २१ मई १९६६ को प्रातः श्रीमती सुमित्रादेवी दुबे सदस्य महिला समाज गणेशगंज लखनऊ के पौत्र का यज्ञोपवीत संस्कार सुभद्रा भवन में पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार श्री पं० अयोध्याप्रसाद तथा श्री पं० गंगाप्रसाद द्विवेदी ने सम्पन्न कराया। प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक संस्कार होता रहा जिसमें नगर के सम्मान्य व्यक्तियों ने एकत्रित होकर ब्रह्मचारी को आशीर्वाद दिया पश्चात् प्रीतिभोज हुआ। पुरुष समाज को २१) दान तथा महिला समाज को २१) दान दिया गया।

आर्य-उप-प्रतिनिधि सभा लखनऊ

(१) ग्राम प्रचार—

शुक्रवार दिनांक २७-५-६६ को उपसभा के अधिकारी गण आर्यसमाज भाल (बलिहाबाद) में प्रचारार्थ पधारे। श्रीकृष्ण बलदेवजी (प्रधान जिलोपसभा) ने समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में पधारे हुए आर्य बन्धुओं से परिचय प्राप्त किया, आर्यसमाज की आवश्यकताओं एवम् कठिनाइयों को सुना। श्री पृथिवीराज वरमानी (उपमन्त्री) के प्रभु भक्ति के भजन हुए तथा श्री विक्रम दित्य 'बसन्त' (मन्त्री) द्वारा सन्ध्या कराई गई और 'आर्य' के क्या लक्षण होते हैं इस पर सारगर्भित वेदोपदेश हुआ जिसे श्रोताओं ने मुग्ध होकर सुना और बारम्बार करतल ध्वनि से हर्ष प्रकट किया। इस अवसर पर प्रधान सभा श्रीकृष्ण बलदेव जी द्वारा दस रु० आर्यसमाज को दान दिये गये।

(२) ३६वां मासिक अधिवेशन—

आर्यसमाज ठाकुरगंज के सुप्रबन्ध में सार्वजनिक स्थान पर रविवार दि० २९-५-६६ को सायंकाल ५-३० से ८-३० तक मनाया गया। पं० रामचन्द्र जी द्वारा सामवेद से बहुत वैदिक यज्ञ कराया गया जिसके यजमान श्री वासुदेव जी (उप प्रधान जिलोपसभा) थे। यज्ञ के पश्चात् प्रबल आंधी के कारण पण्डाल गिर पड़ा परन्तु प्रधान श्रीकृष्ण बलदेव जी के सुप्रबन्ध से तुरन्त ही आर्यसमाज ठाकुरगंज के प्रधान श्री हरिप्रसाद के गृह पर अधिवेशन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम साढ़े आठ तक चालू रहा गया। पं० देवराज जी वैदिक मिशनरी का वेदोपदेश हुआ तथा अधिवेशन में पधारे हुए सब महानुभावों को प्रसाद वितरित किया गया।

जिलोपसभा, लखनऊ का ३७ वां अधिवेशन रविवार २६-६-६६ को लालबाग में गोपाल हाउस के सम्मुख आर्यसमाज लालबाग के सुप्रबन्ध से मनाया जायगा। —वि०वि०बसन्त मन्त्री

पं० रामचन्द्र शर्मा वानप्रस्थी का प्रचार

दि० १५ मई को शाहजहांपुर मुहल्ला एनम गई बलालपुर में श्री राम शर्मा, के लघु भ्राता शिवाराम शर्मा का उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार उनकी धर्मपत्नी का उपनयन संस्कार कराया।

दि० ४-५ मई को हरोआ पो० खुदार (शाहजहांपुर) में प्रधान रामस्वरूप तथा उनके लघु भ्राता बलवीरसिंह जी धर्मपत्नी को पुत्र के यहां पारिवारिक यज्ञ कराया।

दि० ११ मई में सुल्तानपुर में पुत्तूलाल, श्री कृष्णकुमार यज्ञ तथा पुत्तूलाल का उपनयन संस्कार कराया।

दि० १९ से २१ मई तक छत्र आश्रम फौजनगर पो० मीरानपुर कटरा शाहजहांपुर में गायत्री महायज्ञ बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यह मन्दिर उदासी गुसाइयों की गद्दी है। इस समय में पिछड़ी हुई बहिष्कृत जातियों के २५ (पच्चीस) उपनयन हुए जिनमे ३ महिलायें थीं।

उत्सव—

आर्यसमाज सांडी (जि० हरदोई) का वार्षिक उत्सव दि० १६ १७ १८, १९ जून ६६ ई० को बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध महोपदेशक एवम् भजनीक पधार रहे हैं। इसी शुभ अवसर पर जिला उपप्रतिनिधि सभा हरदोई की अतरंग की बैठक १९-६-६६ ई० को दोपहर २ बजे से होगी। अतः अन्तरंग सदस्य गण एवं जनसाधारण अपने इष्ट मित्रों और बन्धु-बान्धवों सहित उत्सव के अवसर पर पधारकर धर्म लाभ उठाएं।

शुभ-विवाह

१६ मई को श्री पं० वेदव्रत शास्त्री अग्निहोत्री के सुपुत्र चिरंजीव रामदेव बी०ए० एल०एल०बी० का पाणिग्रहण संस्कार श्री कृष्णकुमार चतुर्वेदी वैद्य शास्त्री ठठिया (फर्रुखाबाद) की सुपुत्री कु० गायत्री देवी के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री श्री स्वामी अनुभवानन्द जी श्री चिरञ्जीलाल पालीवाल एम०एल०सी०, श्री भगवतीप्रसाद वर्मा करपात्री बनारस तथा सच्चिदानन्द जी शास्त्री (लखनऊ) ने पधार वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान किया।

निर्वाचन—

—आर्यसमाज हरदोई

प्रधान—श्री डा० पूर्णदेव जी, उप प्रधान—श्री प्रतिपालसिंह, श्री वेदव्रत पांडिया मन्त्री—श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता, उप मन्त्री—श्री पं० जगपत, श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त कोषाध्यक्ष—श्री बा०कुंजबिहारी लाल, निरीक्षक—श्री सरदारसिंह, पुस्त०—श्री सुरेन्द्रविक्रम सिंह

आर्य प्र० सभा के लिये प्रतिनिधि
श्रीमती माता जियम्बादेवी जी
श्री ठा० प्रतिपालसिंह जी
श्री ठा० सरदारसिंह जी।

—आर्यसमाज डोईवाला का वार्षिक निर्वाचन श्री धर्मेन्द्रसिंह जी उपमन्त्री सभा के द्वारा निम्न प्रकार से हुआ।

प्रधान—श्री वैद्य मोहनलाल जी, उपप्रधान—श्री सूरजसिंह मन्त्री—वैद्य कृष्णदत्त, उपमन्त्री—श्री भगतसिंह, कोषा० श्री रामपालसिंह ले० निरी०—श्री देवदत्त शास्त्री देहरादून।

प्रतिनिधि

प्रतिनिधि सभा एवं उप प्रतिनिधि सभा के लिए श्री वैद्य कृष्णदत्त जी निर्वाचित हुए।

—आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली

प्रधान—श्री डा० मेलाराम उप प्रधान—सर्वश्री सरदारीलाल वर्मा, तारा चन्द्रदास कपूर श्रीमती प्रकाशवती गुप्ता, मन्त्री—श्री हरवंशलाल बहल, उपमन्त्री—सर्वश्री रामकृष्ण दीक्षित, तिलकराज मनहोत्रा, जगदीशचन्द्र शर्मा, श्रीमती सरला राय, कोषा०—श्री हरिचन्द्र जी सूद।

—आर्य युवक परिषद् दिल्ली ६

अध्यक्ष—श्री देवव्रत धर्मेन्दु, उपाध्यक्ष—श्री डा० ईश्वरदत्त, मन्त्री—श्री ओ३मप्रकाश परीक्षा मन्त्री—श्री हरिदत्त जी, कोषाध्यक्ष—श्री ओ३मप्रकाश।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल सांस्कृतिक शिविर

देश की बदली हुई वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुये सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति ने आर्य वीर दल के कार्य एवं स्वरूप को उसके अनुकूल बनाना आवश्यक समझ दिल्ली में १३ जून से २६ जून ६६ तक प्रान्तों के कमठ कार्यकर्ताओं का एक सांस्कृतिक शिविर प्रधान संचालक श्री ओ३मप्रकाश जी त्यागी की अध्यक्षता में लगाने का निश्चय अपनी एक मई की बैठक में किया है। सार्वदेशिक सभा ने इस निश्चय का स्वागत करते हुए सहायतार्थ दो हजार रुपया देना स्वीकार किया है।

इस शिविर में प्रान्तीय दल कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त वही योग्य शिक्षित व्यक्ति भाग ले सकेंगे, जिनको प्रान्तीय दल संचालक या प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें सिफारिश करेंगी जो व्यक्ति प्रान्तीय संचालक व आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क स्थापित करने में असमर्थ हों वे अपने स्थानीय आर्य समाज की सिफारिश के साथ अपना प्रार्थना पत्र मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल, दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली—१ के पते पर भेज देना चाहिये।

शिविर में भाग लेने वाले व्यक्तियों के प्रार्थना-पत्र ७ जून १९६६ तक दिल्ली कार्यालय में पहुंच जाने चाहिये ताकि उनके भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके। शिविर भोजनादि की व्यवस्था दल की ओर से होगी। शिविर स्थल तक आने जाने का मार्ग व्यय शिक्षार्थियों को वहन करना होगा। शिक्षार्थियों को अपने साथ दो कमीज, दो निकर, पटीट (सफेद), नोटबुक, लोटा, गिलास, कटोरी लाना होगा।

(बालदेव एम० ए०) मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल न्यू दिल्ली—१

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास की माताजी का देहान्त

आर्य जगत मे घोर शोक

आर्य जगत मे यह समाचार बड़े दुःख के साथ सुना जायगा कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास की पूज्या माता श्रीमती जयलक्ष्मी जी का हृदय की गति बन्द हो जाने से २१ मई ६६ को बम्बई में देहान्त हो गया।

माता जी न केवल अपने घर की ही वरन् आर्यसमाज की एक बड़ी विभूति थीं। समस्त परिवार को धर्मनिष्ठ एवं आर्यसमाज का भक्त बनाने में उनका बड़ा हाथ था। मातृश्री को श्री सेठ प्रतापसिंह जी जैसा रत्न आर्य-समाज को प्रदान करने का गौरव प्राप्त है। वे अपने पीछे भरा पूरा और सुयोग्य सन्तानों से परिपूर्ण घर छोड़ गई हैं। वस्तुतः वे बड़ी सौभाग्यशालिनी थीं।

मैं अपनी तथा समस्त आर्य जगत की ओर से श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी तथा परिजनों के प्रति हार्दिक समवेदना का प्रकाश करता हुआ दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

रामगोपाल मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली।

सभा की सूचनाएँ

सभा के वृहदधिवेशन की तिथियाँ

दि० ११ व १२ जून निश्चित

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के समस्त कार्यकर्ताओं एवं प्रतिनिधि महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि आर्य प्र० सभा उत्तरप्रदेश का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक ११ व १२ जून १९६६ दिन शनिवार व रविवार को महादेवी आर्य कन्या विद्यालय डिग्री कालेज देहरादून में होना निश्चित हुआ है। प्रथम दिवस की बैठक ३ बजे अपराह्न से प्रारम्भ होगी।

कृपया समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वे अपने अपने समाज के प्रतिनिधि महोदयों को ११ जून ६६ के प्रातः देहरादून पहुंचने के लिए प्रेरणा करें।

२—दि० ११-६ की रात्रि में प्रदेशीय आर्य सम्मेलन देहरादून में होगा। जो समाज एवं प्रतिनिधि प्रस्ताव भेजना चाहें वह ३१ मई तक भेज दें।

३—सभा की वार्षिक रिपोर्ट भेजी जा चुकी है। जो प्रश्न करना है वह सभा कार्यालय में अधिवेशन की तिथि से १५ दिन पूर्व भेजने का कष्ट करें।

प्रतिनिधि चित्र भेजिए

४—जिन किसी समाज ने अभी तक प्रतिनिधि चित्र न भेजे हों वे सभा कार्यालय में भेज दें। अन्यथा वृहदधिवेशन के समय आने वाले कार्यों की जांच करने में कठिनाई होती है। अतः सूचना की प्राप्ति के तुरन्त भेजने का कष्ट उठावें और जिन जिन समाजों ने सभा प्राप्तव्य धन न दिया हो, वह कृपया अधिवेशन के समय देने की कृपा करें।

अन्तरङ्गाधिवेशन की सूचना

समस्त अन्तरंग सदस्यों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक १० जून १९६६ दिन शुक्रवार समय ३ बजे मध्याह्न से महादेवी आर्य कन्या डिग्री कालेज देहरादून में आरम्भ होगा। कृपया सदस्यगण नियत समय पर पहुंचने का कष्ट करें।

—मनुदत्त, सभा मन्त्री

समाजों का कर्तव्य

हर्ष का विषय है कि सभा को निम्न विद्वान् महानुभावों ने प्रोत्साहनार्थ में अपना अमूल्य समय देने का संकल्प किया है। समाजों को चाहिए कि वे इन्हें वहाँ बुलाकर प्रवचन करावें और लाभ उठावें। सभा उनके इस सहयोग के लिये धन्यवाद देती है।

१—श्री ओंकार जी मिश्र "प्रणव"
२—श्री वेदप्रकाश जी एम०ए०
३—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार
४—श्री राजकुमार जी शर्मा एम०ए०

सभा के पुराने कार्यमुक्त उपदेशकों एवं भजनीकों की सेवा में

सभा के खातों में निम्नलिखित पुराने उपदेशक व भजनीकों का धन निकल रहा है। परन्तु सभा कार्यालय में उनका ठीक पता न होने के कारण अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है। अतः इन सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्र सभा कार्यालय से पत्र-व्यवहार कर अपना धन प्राप्त करने की कृपा करें।

१—श्री ज्वालाप्रसाद जी
२—श्री वासुदेव जी शर्मा
३—श्री महावीर प्रसाद जी

आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं की सेवा में निवेदन

प्रत्येक जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि अपने-अपने जिले के आर्य समाजों से वार्षिक प्रतिनिधि कार्य विवरण कर सभा कार्यालय में भिजवाकर कृतार्थ करें और सभा का प्राप्तव्य धन (दशांश, वेदप्रचार निधि, गुरुकोष्ठि।) अपना कम्प सभा प्रतिनिधि शुल्क भिजवाकर अनुगृहीत करें। इस विषय में उपसभाओं को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

—मनुदत्त सभामन्त्री

शिक्षा सम्मेलन

सभा सम्बद्ध आर्य विद्यालयों के प्रबन्धक महोदयों तथा प्रधानाचार्यों की सेवा में निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के वृहदधिवेशन के अवसर पर ११-६-६६ को मध्याह्न १२ बजे शिक्षा सम्मेलन, श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम० ए० के सभापतित्व में सम्पन्न होगा।

आपसे सादर प्रार्थना है कि इसमें सम्मिलित होकर इस आयोजन को सफल करें। "विद्यालय वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में कैसे अधिक उपयोगी हो सकते हैं" इस विषय पर अपने अमूल्य सुझाव देकर अनुगृहीत करें।

—रामबहादुर
अधिष्ठाता शिक्षा विभाग

उत्सवों एवं विवाह संस्कारों एवं कथाओं के निमित्त आमन्त्रित कीजिए—

प्रकाण्ड विद्वान्, सुमधुर गायक, सुयोग्य सन्यासी एवं मैजिक लैन्टर्न द्वारा प्रचार करने वाले योग्य प्रचारक।

महोपदेशक

आचार्य विश्वबन्धुजी शास्त्री महोपदेशक
श्री कबीर जी शास्त्री "
श्री पं० श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री प० शिवशर्मन जी वेदालंकार
श्री प०केशवदेव जी शास्त्री उपदेशक
श्री पं० रामनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर भजनोपदेशक
श्री नत्थारामसिंह जी–प्रचारक
श्री धर्मदत्त जी आनन्द "
श्री धर्मरामसिंह जी— "
श्री खेमचन्द्र जी (फिल्मी तर्जवाला)
श्री वेदपालसिंह जी– प्रचारक
श्री प्रकाशवीर जी शर्मा "
श्री जयपालसिंह जी यादव "
श्री ओमप्रकाश जी सिंहल "
श्री विवेकचन्द्र जी "
श्री कश्यपालसिंह जी "
श्री रघुवरदत्त जी "
श्री रामकृष्ण शर्मा-मैजिक लेनटर्न

प्रोग्राम मास जून

उपदेशक

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री–१ से ५ अलीपुर, ७ से १० कसेरू, १० से १२ आ० स० बदायूं १७ १८ सिकन्दरा।

श्री कबीर जी शास्त्री–६ से ८ जवाला, ११ से ११ देवरामपुर, २८ से ३० कबाकपुर बिहार।

श्री शिवशर्मन जी—३ से ६ डांडा अमरूक, १० से १२ बदायूं।

रामनारायण जी—८ से ११ उप सभा बुलन्दशहर।

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर—२ से ३ गंगा मजुरी, ८ से ११ उपसभा सुल्तानपुर।

श्री धर्मरामसिंह जी—१ से ५ विवाह फरीदपुर, ५-६ खूंट खेड़ा, ८ से १० भीकमपुर, २५ से २८ लखनऊ।

श्री नत्थारामसिंह जी—३ से ६ डांडा अमरूक, १० से १२ बदायूं, १३ से १५ सरकड़ा विश्नोई।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—१० तक हल्द्वानी, ११ से १३ देवरामपुर।

श्री खेमचन्द्र जी—३-४ विवाह अकबरपुर।

श्री प्रकाशवीर जी—२–३ विवाह कुचेसा, ५ से ८ विवाह हुसैनपुर। ९ से ११ सिकन्दरपुर (एटा), १३, १४ कमालगंज, १६, १७ सुखगंज, १९, २० गुलबहार गंज।

श्री जयपालसिंह जी—४ से ६ हरदुआगंज ७–८ रसेयर।

श्री वेदपालसिंह–१, २ रानी की सराय ४, ५ आजमगढ़, ७, ८ मऊनाथ भंजन, ११ १२ परसामया, १४, १५ बांदा, १७, १८ देवगाव, २०, २१ कोसी

केवल मैजिक लेन्टर्न द्वारा प्रचार

श्री रामकृष्ण शर्मा–११ से १३ देवरामपुर, १६ से १९ सांडी।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
—उ०अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्र० सभा, लखनऊ

●

आवश्यकता है

(१) प्रधानाचार्या पद के लिये एक ट्रेन्ड ग्रेजुएट टीचर।

(२) दो सहायक ट्रेन्ड ग्रेजुएट टीचर हाई स्कूल कक्षाओं को पढ़ाने के लिये।

(३) एक सहायक इन्टर सी० टी० जूनियर क्लास पढ़ाने को।

(४) एक सहायक जे० टी० सी० अध्यापिका।

वेतन सरकारी स्केल अनुसार आर्य विचार वाली को विशेषता दी जायेगी। प्रार्थनापत्र सार्टीफिकेट सहित १० जून ६६ तक आने चाहिये।

—रामनारायण आर्य प्रबन्धक
आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
इस्लामनगर [बदायूं]

आवश्यकता है

१–व्याकरणाचार्य १ साहित्याचार्य तथा १ एम०ए० (हिन्दी) की आवश्यकता है। १५ जून ६६ तक आवेदनपत्र प्रमाण पत्रों सहित प्रबन्धक आर्य गुरुकुल महाविद्यालय किरठल पत्र मेरठ" इस पते पर प्रेषित किये जावें।

संस्था परिचय

(पृष्ठ ७ का शेष)

साधुकों के लिए श्री स्वामी जी की ओर से सभी सुविधायें प्रदत्त हैं।

हरिद्वार हर की पैंड़ी चंडी देवी का मन्दिर, पूर्व में मनसा देवी का मन्दिर काल वाला बाग और अनेक दर्शनीय स्थल हैं। हरिद्वार क्षेत्र पंचपुरी के नाम से प्रसिद्ध है—मायापुर जहां से गंग नहर निकलती है उसी के पास कनखल नगर जिसमें दक्ष प्रजापति का प्रसिद्ध मन्दिर है। आर्यसमाज का केन्द्र है जहां श्री पं० विष्णुदत्त जी वैद्य ज्वालापुर के स्नातक जगदत्त जी वैद्य कांगड़ी के स्नातक बेनीप्रसाद जी जिज्ञासु प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। साथ ही आर्यसमाज साहित्य समाज के प्रसिद्ध विचारक का नाम आप लोगों ने सुना ही होगा वह हैं आचार्य श्री पं० किशोरीदास जी वाजपेयी जो इसी नगर की एक शोभा हैं यहीं पर निवास करते हैं। कनखल के बाद आर्यसमाज के विशेष तीर्थ भी यहीं समीप ही हैं जो कि एक दर्शनीय हैं—

(१) गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी
(२) गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय (३) कन्या गुरुकुल कनखल महिला विद्यालय सतीकुण्ड कनखल हैं जहां पर महर्षि दयानन्द के वैदिक विचारों से अभिप्रेत हजारों छात्र छात्रायें स्नातक होकर देश विदेश में कार्य कर रहे हैं। आर्य जनता इन्हें देखकर भाग दर्शन करें।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के समीप गंगनहर पार कर ज्वालापुर नगरी है उससे हरिद्वार जाने वाली मोटर सड़क पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महात्मा नारायण स्वामी जी द्वारा संस्थापित आर्य सन्यास वानप्रस्थाश्रम है। ज्वालापुर रेलवे स्टेशन के उत्तर पश्चिम में जो कभी मिलिटरी कैम्प था बाद में शरणार्थी कैम्प बना वहीं वह स्थान रूस के सहयोग से निर्मित हैवी इलेक्ट्रिकल्स का कारखाना भारत सरकार ने बनाया है जो कि १४ १५ वर्ग मील में स्थित है, एक विशाल नगर का रूप बन गया है। इस प्रकार देहरादून आने वालों के लिए एक यह संक्षिप्त परिचय रूप में है। वहां पर आर्यजन आकर स्वयं प्रेरणा प्राप्त करेंगे वहीं पर कुछ अपने सुझाव भी उन स्थानों को देंगे। जिससे आपस में लाभ उठा सकेंगे। प्रान्त के आर्यसमाजों के प्रतिनिधि ११ १२ जून को न भूलें और अपना अमूल्य समय देहरादून आर्यसमाज को देकर श्रीधर्मेन्द्र सिंह जी के आमन्त्रण को स्वीकार कर अवश्य ही पधारें।

वेश्यावृत्ति

(एक अभिशाप)

(ले०—श्री चन्द्रप्रकाश आर्य "कमल" दिल्ली)

भारतीय समाज में विद्यमान अनेकों बुराइयों में वेश्यावृत्ति प्रमुख अन्य की बुराइयों की कोटि में आती है। वेश्यावृत्ति एक अपराध ही नहीं वरन् ऐसा अनुचित व्यवहार एवं व्यापार भी है जो राष्ट्र देश और जाति को ह्रास की ओर ले जाकर आदर्श विमुख एवं अपमान का पात्र बना देता है। वेश्यावृत्ति की उपस्थिति राष्ट्र को सुदृढ़, सुखी एवं सफल पारिवारिक एवं राष्ट्रीय जीवन से विमुख कर उन्हें अनेकानेक अपराधों में जकड़ देती है। मनुष्य के आत्मिक विकास की तो बात करना व्यर्थ ही है वेश्यावृत्ति और उसके अनुकूल वातावरण में अपने को शारीरिक एवं मानसिक रोगों के ह्रास से बचाये रखना ही कठिन कार्य है। वेश्यावृत्ति के दुष्परिणामों को ध्यान में रखकर ही हमारे धर्म एवं नीति ग्रन्थों में वेश्यावृत्ति को एक अक्षम्य अपराध और दुष्कर्म बताया गया है और व्यभिचारी स्त्री पुरुषों को कठोर दण्ड की व्यवस्था की गई है समाज ने कभी भी वेश्यावृत्ति को वैधानिक एवं उचित नहीं माना और किसी शासकीय नियम एवं विधान के अभाव में भी ऐसे सभी लोगों को अपमान का पात्र बनाया गया जो किसी भी प्रकार से इस रोग से ग्रस्त थे। लेकिन सामाजिक अपमान, निन्दा एवं बहिष्कार से कार्य न चल सका, वेश्यावृत्ति बढ़ती ही चली गई और अब यह स्थिति आ गई कि सरकार को वेश्यावृत्ति उन्मूलन के लिए प्रान्तीय स्तर पर कानून बनाने पड़े। पर क्या वेश्यावृत्ति समाप्त हो गई। नहीं! वेश्यावृत्ति के वर्तमान पहलू पर विचार करने से पहले जरा वेश्यावृत्ति की प्रगति का इतिहास दोहरा लें ताकि हम यह समझ सकें कि वेश्यावृत्ति क्यों, कैसे प्रगति करती गई।

हिन्दू संस्कृति में विवाह की आठ पद्धतियों में निकृष्ट विवाहों की श्रेणी में राक्षस एवं पैशाच विवाह भी आते हैं। इन विवाह पद्धतियों में एक वर बल प्रयोग के पिता की हत्या करके या बलात्कार से कन्या का अपहरण कर उससे संभोग कर विवाह करता है। निःसंदेह यह प्रथा निकृष्ट मानी गई लेकिन इस तरह के विवाहों का परिणाम अवश्य ही वेश्यावृत्ति को जन्म देने वाला था। दूसरा वर्ग वर्ण संकरों का था। वर्ण संकर वह सन्तान मानी जाती थी जिसके माता-पिता दो विभिन्न वर्णों के सदस्य होते थे। अन्तर्जातीय विवाह उस समय प्रचलित ही थे क्योंकि हम भारतीय वैदिक एवं मध्यकालीन युग में वर्ण-व्यवस्था को प्रचलित मानते हैं। राजाओं द्वारा शत्रुओं पर आक्रमण, उन पर विजय प्राप्त कर उनकी स्त्रियों को कैद करना भी वेश्यावृत्ति के मूल-भूत कारणों में था। भले ही राजा धर्म में विश्वास रखने वाले नीतिवान, चरित्रवान होते थे मगर एक ऐसा वर्ग जिसने अपने पतियों को खो दिया है और जो शत्रु की दासता में ही नैतिकताच्युत न हों जरा कठिन सी बात है। मध्यकालीन भारत में तो विशेष कर मुग़ल शासनकाल में तो ऐसे वर्गों की स्त्रियों की संख्या इतनी बढ़ गई थी कि मुसलमान बादशाहों की विलासिता पूर्ति के बाद शेष को उनके दरबारियों की विलासिता का पात्र बनना पड़ा। केवल शत्रु की दासता में रहना ही एक कारण नहीं था वरन् यौन की भूख और गरीबी भी उसके सहयोगी थे। संरक्षण प्रदान था पैसे पैसे को मोहताज हो गई और वेश्याओं में परिणत होगई मुग़ल शासनकाल में बलपूर्वक मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं की एक श्रेणी जो शुद्धि प्रथा के अभाव में पुनः हिन्दू न हो सकी, आर्थिक विषमता एवं धार्मिक सांकलता के अभाव में इसी वर्ग की सदस्य हो गई। उपरोक्त सभी कारण उस वेश्यावृत्ति के हैं जिसका सम्बन्ध शारीरिक यौन, धन प्राप्ति के लिये अस्थायी रूप से किये गये सम्बन्ध से है। इसमें वे लोग सम्मिलित नहीं हैं जिनको हम नाचने गाने वाली वेश्याओं के रूप में जानते हैं। नाचने गाने वाली वेश्यायें जिन्हें स्वर्ग में अप्सरायें कहते हैं स्वयं

नैतिक उत्थान आन्दोलन

हिन्दू समाज की कुछ धार्मिक एवं कुरीतियों का शिकार एक पददलित एवं तिरस्कृत वर्ग विधवाओं एवं त्याज्य स्त्रियों की श्रेणी में पहले से था जिसे युग के समाज सुधारकों ने देवबालाओं एवं देवदासियों के नाम से मठ एवं मन्दिरों में शरण दे रखी थी ताकि वे सामाजिक बहिष्कार एवं यातना के दुःख को भूलकर अपने को आत्मिक, नैतिक एवं आत्मिक विकास के कार्य में लगा सकें लेकिन मन्दिर एवं मठों में शरण पायी यह देव कन्यायें और देवबालायें भी यौन पिपासा की सन्तुष्टि के साधन के अभाव में आवश्यक रूप से विचलित हो गईं और धीरे-धीरे हमारे इतिहास का वह दुर्भाग्य पूर्ण समय आया जब यह मठ और मन्दिर स्वयं व्यभिचार एवं यौन पिपासा की शान्ति के स्थान बनकर रह गये। राजाओं एवं महाराजाओं में विद्यमान बहुपत्नी विवाह की परम्परा भी जाति-गोत्र असुरक्षा एवं आर्थिक सम्पन्नता के कारण कभी हीनता की दृष्टि से नहीं देखी गई, समय के साथ में पड़कर महान विवाद एवं गम्भीर समस्या का कारण बनी। हजारों की संख्या में स्त्रियां जिन्हें कभी अमुक राजा या नवाब की रानी कहलाने का अधिकार था एवं आर्थिक

से हैं और रहेंगी भी क्योंकि हम नृत्य को एक कला मानते हैं और स्वयं नृत्य कला को प्रोत्साहित कर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सफलता का श्रेय पाते हैं।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वेश्याओं का बड़ा भाग निःसंदेह परिस्थितियों वश इस कुव्यवसाय का सहायक बना। यह हमारी धार्मिक कुरीतियां, रूढ़ियां एवं अज्ञानता थी जिसने अछूतों की तरह स्त्रियों को एक महत्वपूर्ण संख्या को समाज विरोधी बनाकर पंचायत पतित रहने को विवश किया मगर यह नहीं कहा जा सकता कि आर्थिक विषमता एवं यौन पिपासा भी वेश्यावृत्ति के महत्वपूर्ण कारण नहीं हैं। यौन सन्तुष्टि भोजन की ही भांति आवश्यक है। विवाह की संस्था का जन्म बहुत कुछ इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया गया। मगर अन्य बुराइयों की तरह विवाह की संस्था में बाल विवाह की कुप्रथा प्रचलित हो गई जिसके कारण तरुण विधवाओं की संख्या बढ़ी। बेमेल विवाहों के कारण तरुण विधवाओं का एक वर्ग था जिसे आर्थिक विषमता के कारण नहीं वरन् यौन असंतुष्टि के कारण धर्म च्युत आचरण करना पड़ा, निन्दा का पात्र बनने के बाद समाज से अलग होकर वेश्यावृत्ति को अपनाना पड़ा। यौन की बात इसलिए आवश्यक है क्योंकि क्योंकि आज की स्थिति में यौन ही वेश्यावृत्ति का मूल कारण है।

वेश्यावृत्ति उन्मूलन विधेयकों के बन जाने के बाद धीरे-धीरे वेश्याओं के सामूहिक रूप से रहने के स्थान (वेश्यालय) और और वेश्याओं के समूह धीरे धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। लेकिन वेश्याओं ने अपना व्यवसाय बन्द कर दिया है ऐसा नहीं कहा जा सकता। वेश्यालयों के बन्द होने के बाद केवल ५ प्रतिशत ही ने अपना व्यवसाय छोड़कर या तो सुधार केन्द्रों की शरण ली है या शादी कर विवाहित जीवन में प्रवेश किया है। शेष ९५ प्रतिशत उचित संरक्षण न पाने या उसे पसन्द न करने के कारण विघटित स्वरूप में गांवों और शहरों में रहकर हमारे घरों की कुलवधुओं, बहनों एवं माताओं की गृहस्थी (पद दलित) कर रही है। सच तो यह है कि वेश्यावृत्ति उन्मूलन विधेयक बनाने से पहले हम ऐसा वातावरण बनाने में सर्वथा असमर्थ रहे जिसमें वेश्याओं को सफल एवं सम्मान प्राप्त गृहणी बनने का अवसर मिल सकता। परिणाम यह है कि वेश्यालयों की समाप्ति से वेश्यावृत्ति बढ़ती जा रही है। उदाहरणतया यदि पहले एक नगर में एक वेश्यालय था जहां ५० वेश्यायें थीं तो आज उसी तरह ५०० वेश्यालय हैं जहां ७५० लड़कियां एवं विवाहित स्त्रियां धन प्राप्ति एवं यौन सन्तुष्टि के हेतु परपुरुषों से यौन सम्बन्ध स्थापित करती हैं। भले ही यह वेश्यालय पहले के वेश्यालयों की तरह बदनाम नहीं है और हर व्यक्ति इन्हें नहीं जानता मगर हर जरूरतमन्द स्त्री एवं पुरुष इन्हें पहचानता है। इन वेश्यालयों की एक विशेषता यह है कि कुछ गिने चुने लोगों को इसकी खबर होने के कारण इनमें विलासिता एवं यौन सुख का आनन्द लेने वाले स्त्री एवं पुरुषों को अपनी सफेद पोशाक पर धब्बा लगने का वैसा भय नहीं है जैसा पहले था। यह कटु सत्य है कि भले ही सामान्य व्यक्ति को पता न हो मगर सभी पुलिस के अधिकारी यह जानते हैं कि अमुक नगर में कितने ऐसे स्थान हैं जहां धन कमाने एवं यौन सन्तुष्टि के लिए स्वेच्छा से एवं बलपूर्वक अबलाओं एवं बालाओं का शोषण किया जाता है क्या वेश्यावृत्ति उन्मूलन विधेयक इसके लिये लागू नहीं हो सकते। शायद नहीं तभी तो व्यभिचार दिन दिन बढ़ रहा है और सामूहिक वेश्यावृत्ति अपने संकुचित दायरे से निकल चुकी सांस में, स्वच्छन्दता एवं निर्भयता से व्यक्तिगत रूप में फलफूल रही है।

ब्राह्मण कौन हैं ?

(श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी० डी० वी० कालेज, गोरखपुर)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं। वर्ण का अर्थ पेशा या व्यवसाय नहीं है। वर्ण शब्द 'वृञ्' वरणे धातु से बना है और इसका अर्थ है 'वरण करना' या चुनना'। चुनने का अभिप्राय पेशे का चुनाव नहीं। पेशा तो जीवन की भौतिक आवश्यकताओं को सामने रखकर चुना जाता है, चुनने का अभिप्राय अपनी प्रवृत्ति अथवा स्वभाव अपने जीवन पथ को चुनने से है। जीवन पथ से हमारा अभिप्राय उस पथ से है जो आत्म तत्व के विकास के लिए अधिक उपयुक्त है। सांख्य शास्त्र के अनुसार 'सत्व रजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृति' सत्व, रज, तम की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है और इसकी विषमावस्था यह संसार है। मन की रचना भी इन्हीं तीन तत्वों से होती है। अतः मन सात्विक, राजसिक और तामसिक तीन प्रकार का होता है। मनोविज्ञान के ये तीन तत्व समाजशास्त्र में चार बन जाते हैं और उनके अनुसार मनुष्य चार प्रकार के हो जाते हैं। ये चार प्रकार के हैं—सात्विक, सात्विक राजसिक, राजसिक तामसिक, तामसिक। इस प्रकार सात्विक प्रवृत्ति के मनुष्य ब्राह्मण, सात्विक राजसिक प्रवृत्ति के मनुष्य क्षत्रिय, राजसिक तामसिक प्रवृत्ति के मनुष्य वैश्य और तामसिक प्रवृत्ति के मनुष्य शूद्र कहलाते हैं। सात्विक प्रवृत्ति प्रधान होने के कारण ब्राह्मण को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय के ११ वें मन्त्र में 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्०' में ब्राह्मण को मुख के समान माना गया है, क्योंकि यह सबसे मुख्य है। शतपथ ब्राह्मण में भी इस मन्त्र के समान लिखा है—

यस्मादेते मुख्यास्तस्मान्मुखतो ह्यसृज्यन्त इत्यादि। जिससे ये मुख्य हैं इससे मुख से उत्पन्न हुए ऐसा कथन संगत होता है अर्थात् जैसा मुख सब अंगों में श्रेष्ठ है वैसे पूर्ण विद्या और उत्तम गुण, कर्म स्वभाव से युक्त होने से मनुष्य जाति में उत्तम ब्राह्मण कहाता है। जब परमेश्वर के निराकार होने से मुखादि अंग ही नहीं हैं तो मुखादि से उत्पन्न होना असम्भव है। इसका यह यही तात्पर्य है कि ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ है। ब्राह्मण इत्यादि वर्णों की उत्पत्ति जन्म से होती है या कर्म से इस विषय में पृथक् किसी लेख में विस्तार से विचार किया जायगा, परन्तु आज तो हमें यह देखना है कि ब्राह्मण कौन हो सकता है ? हम तो यही समझते हैं और स्वामी दयानन्द का भी यही स्पष्ट मत था कि ब्राह्मणादि वर्ण कर्म और गुणों से हो सकते हैं। अतः ब्राह्मणों के गुणों को हमें देखना है। स्वामी दयानन्द ने ब्राह्मणों के गुणों का वर्णन करते हुए कहा है कि 'पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, कराना, दान देना, दान लेना ये छः कर्म हैं।" और शम, दम, तप, शौच, शान्ति अर्थात् निन्दा, स्तुति, सुख-दुःख शीतोष्ण क्षुधा, तृषा, हानि, लाभ मान-अपमान आदि हर्ष शोक छोड़ के धर्म में दृढ़ निश्चय रहना, आर्जव अर्थात् कोमलता, निरभिमान सरलता, सरल स्वभाव रखना, कुटिलतादि दोष छोड़ देना ज्ञान अर्थात् सब वेद इत्यादि शास्त्रों को सांगोपांग पढ़ने पढ़ाने का सामर्थ्य, विवेक सत्य का निर्णय जो वस्तु जैसी हो अर्थात् जड़ को जड़, चेतन को चेतन जानना, और मानना विज्ञान पृथ्वी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों को विशेषता से जानकर उनसे यथायोग्य उपयोग लेना, आस्तिकताकारी वेद, ईश्वर मुक्ति, पूर्व पर जन्म, धर्म, विद्या सत्संग, माता, पिता, आचार्य और अतिथियों की सेवा को न छोड़ना और निन्दा कभी न करना ये ब्राह्मणों के स्वाभाविक गुण हैं। शौच दो प्रकार का होता है। (१) जल से शरीर और (२) सत्य से आत्मा तथा मन की शुद्धि होती है। सत्य मनुष्य के राग द्वेष आदि को दूर करता है। हम किसी वस्तु के प्रति आकर्षित होते हैं, यह राग है। किसी से घृणा करते हैं यह द्वेष है? सत्य इन दोनों को मिटाता है। ब्राह्मण को इनसे दूर रहना चाहिए। मनु महाराज ने कहा है—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति विद्यातपोभ्याम् भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।

ज्ञान की महिमा अपरम्पार है। समाज को नव विचार देना भारी एक महान् साधना है। चिन्तन, परीक्षण के बाद जो विचार हम में आते हैं उनको बढ़ाते रहने वाला ब्राह्मण है। ज्ञान का बाह्य स्वरूप कोई भी हो, यह देखना है कि उन बाह्यांगों की पूजा करने के लिए निःस्वार्थ रूप से किस प्रकार प्रयत्न करता है। उदाहरण के लिये ज्ञान का बाह्यांग व्याकरण है। पाणिनी व्याकरण में रम गये। उसमें उन्हें आनन्द आने लगा। उसकी शिक्षा उन्होंने शिष्य को देनी प्रारम्भ की। कहते हैं कि एक दिन जब वे अपने शिष्यों को तपोवन में व्याकरण सिखा रहे थे, कि एकाएक बाघ आया। बाघ को देखकर उन्हें 'व्याघ्र' शब्द की व्युत्पत्ति समझ में आ गई, उन्हें उसका आन्तरिक प्रत्यक्ष हो गया। वे कहने लगे। इस सूंघते सूंघते आने वाले व्याघ्र को देखो, 'व्याजिघ्रति व्याघ्रः।' शिष्य भाग चुके थे। बाघ ने उन्हें खा डाला। पर वे तो आनन्द की स्थिति में थे। इन्हें शंकराचार्य ने अपने ग्रन्थ में 'भगवान् पाणिनी' कह कर याद किया। इन्हें ही हम ब्राह्मण कह सकते हैं। ज्ञान का कोई क्षेत्र क्यों न हो, उस के पीछे पीछे जाकर उसके अन्तिम छोर पर जो पहुंच जाता है, जो परमोच्च स्थान प्राप्त कर लेता है वही ऋषि है, वही ब्राह्मण है। आज अनुसन्धान में लग कुछ भूल जाने वाला न्यूटन ब्राह्मण है। ५० वर्ष तक अध्ययन, मनन करके नई दृष्टि देने वाला कार्लमार्क्स ब्राह्मण है, संसार के विचारों में क्रान्ति करने वाला डार्विन ब्राह्मण है, इंग्लैण्ड में एक झोपड़ी में रहकर सहयोग के नये मार्ग संसार को दिखाने के लिए प्रयत्न करने वाला निर्वासित महान् क्रोपाटकिन को हम ब्राह्मण ही कहेंगे।

ज्ञान के आराधक कपिल, कणाद, गौतम, व्यास पतंजलि आदि सभी ब्राह्मण हैं। महर्षि दयानन्द जिन्होंने न केवल भारत को अपितु विश्व को ज्ञान दी आर्षे दीं ब्राह्मण हैं, भारी ब्राह्मण हैं।

हम परमेश्वर को ज्ञान स्वरूप मानते हैं। परमेश्वर की व्याख्या करते हुए कहा गया है 'ज्ञान ब्रह्म' ज्ञान का अर्थ ही है ब्रह्म। ईश्वर की उपासना ज्ञान की उपासना है और वह उपासक ब्राह्मण है। फिर चाहे वह ज्ञान भूगोल, खगोल, इतिहास, विज्ञान, आयुर्वेद, दर्शन या किसी क्षेत्र का हो। अतः ब्राह्मण का मुख्य कार्य ज्ञान का प्रचार है। विचार सत्कार और मत दोनों की अपेक्षा अधिक तेज है। इसलिये ब्राह्मण भी सबसे श्रेष्ठ है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में ब्राह्मणों के लिए लिखा है—

ब्राह्मण को ब्रह्मवर्चसी या तेजःस्वी होना चाहिये'—

तद्वयेन ब्रह्मवर्चसस्य यद् ब्रह्मवर्चसी स्यादिति।' शतपथ १-९-३-१६) गोपथ ब्राह्मण पूर्वार्द्ध २ २१) में यज्ञ को ही ब्राह्मणों का बल माना गया है। एतान्वै ब्रह्म आयुधानि यज्ञायुधानि ऐतरेय ब्राह्मण ७ १९ में में ब्राह्मणों को मनुष्यों का देवता माना गया है। अथ हैते मनुष्यदेवा ये ब्राह्मणा.।' शतपथ ब्राह्मण में वेद ज्ञाता ब्राह्मण को महान् प्रतापी माना गया है।

ब्राह्मणों के विषय में वेदों में भी उल्लेख करते हुए उनके कर्मों का निर्देश किया गया है—

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ॥ ऋ० ७-१०३-१

अर्थात् (संवत्सर शशयाना) वर्ष की अवधि तक समाधि की शान्त अवधि में रहते हुए (व्रतचारिणः) नियमों के अनुसार आचरण करने वाले तथा (मण्डूकाः मण्डन्ति भूषयन्ति विभावयन्ति वा मण्डूका) मण्डन और सज्जन करने वाले (ब्राह्मणाः) ब्राह्मण या ज्ञानी (पर्जन्यजिन्विताम्) तृप्तिकारक प्रेरणा से (वाचं) वाणी को (प्र अवादिषुः) विशेष प्रकार से बोलते हैं। अर्थात् ब्राह्मणों का काम है कि समाज और राष्ट्र में ऐसी वाणी का प्रयोग करें कि जिससे उसमें पूर्णता आवे और न्यूनता न रहे।

दूसरे मन्त्र में कहा गया है—

ब्राह्मणास सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्त परिवत्सरीणम् । अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न केचित् । ऋ० ७-१०३।८

(सोमिनः) सौम्य शांत (अध्वर्यव) अहिंसायुक्त कर्म करने वाले (सिष्विदाना घर्मिणः) तपने वाले तपस्वी (ब्राह्मणाः) ब्राह्मण विद्वान् (ब्रह्म परिवत्सरीणं कृण्वन्तः) वेद को समस्त संसार में फैलाने वाले (गुह्या न केचित्) किसी प्रकार की गुप्तता न रखते हुए (आविर्भवन्ति) बाहर आते हैं और (वाचम् अक्रत) उपदेश करते हैं अर्थात् संसार में वेद प्रचार के अधिकारी विद्वान् शांत अहिंसाशील तपस्वी ब्राह्मण बाहर आकर उपदेश करते हैं, पक्षपात को छोड़कर अन्दर कुछ बाहर कुछ इस प्रकार न करते हुए ठीक सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग करते हैं।

ब्राह्मण जैसा हो, उसका उल्लेख

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सांप और उनसे रक्षा

[लेखक—डा० महेशचन्द्र गुप्त, एम०बी०बी०एस०]

गर्मी का मौसम बीत गया है। बरसाती ऋतु आ गई है। बरसात शुरू होने पर जहां गांवों में हरियाली की बहार छा जाती है और खेतों-मैदानों में हरियाली छा जाती है वहां दूसरी ओर एक और समस्या भी ग्रामीण व्यक्तियों के सम्मुख आ खड़ी होती है। यह समस्या है सर्पदंश की। अनुमान है कि सांप के काटने से भारत में प्रति वर्ष लगभग आठ हजार व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है। सर्पदंश की समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है न केवल इसलिए कि भारत की ८० प्रतिशत जनता गांवों में रहती है, बल्कि इस कारण भी कि पक्के मकानों सड़कों आदि के कारण शहरों में सांप कम पाए जाते हैं। यही कारण है कि सारे अमरीका देश में सर्पदंश से केवल बीस मौतें प्रति वर्ष होती हैं जबकि छटे से बड़े सघन वर्षा प्रदेश में यही संख्या इससे भी दुगुनी है। कुल मिलाकर सांपों की लगभग ढाई हजार जातियां हैं। इनमें से केवल ढाई सौ अर्थात दस प्रतिशत सांप ही जहरीले होते हैं। सांप दो प्रकार के होते हैं—भूमिवासी तथा समुद्रवासी। समुद्री सांप प्रायः सभी विषैले होते हैं। ध्रुवीय प्रदेशों तथा कतिपय अन्य स्थानों (उदाहरणतया आयरलैंड) को छोड़कर सारे विश्व के सभी भागों में पाए जाते हैं। परन्तु इनकी बहुतायत गर्म देशों में ही पाई जाती है। यूरोप के अधिकांश सांप विषरहित होते हैं। अमरीका में लगभग दस प्रतिशत तथा भारत में लगभग प्रतिशत सांप विषैले होते हैं। आकार प्रकार रहन-सहन, तथा खाने पीने के अनुसार सांपों की अनेक किस्में होती हैं। ९-१० इंच से लेकर १५-२० फुट तक विभिन्न प्रकार के सांप पाए जाते हैं। इनका निवास स्थान समुद्र तल से लेकर पर्वतों की चोटियों तक पाया जाता है। भूमिवासी सांपों में से कुछ जमीन में बिल बना कर रहते हैं तथा कुछ भूमि तल पर घास-फूस पत्थरों आदि की आड़ में। कुछ सांप तो पेड़ों पर भी रहते हैं। सांपों का भोजन प्रायः कीड़े-मकोड़े मेढक, चूहे, खरगोश व चिड़िया आदि पक्षी तथा उनके अंडे होता है। कुछ प्रकार के सांप अपने शिकार पर वार करके उसे मार कर खाते हैं जब कि अन्य प्रकार के सांप शिकार को जीवित ही निगल जाते हैं। एक प्रकार की जाति के सांप तो ऐसे भी होते हैं जो केवल अन्य जाति के सांपों को खा कर ही पेट भरते हैं। सांप की एक विशेषता यह होती है कि इसके जबड़े बड़े लचकीले होते हैं इस कारण यह अपेक्षाकृत दीर्घाकार पदार्थों को भी आसानी से निगल जाता है। उदाहरणतया कई बार यह देखा गया है कि केवल एक उंगली के बराबर मोटा सांप भी मुर्गी के अंडे को समूचा निगल सकता है।

भारत में पाए जाने वाले विषैले सर्पों में तीन मुख्य हैं—कोबरा, क्रेट तथा वाइपर। वाइपर ब्रिटेन का एकमात्र विषैला सर्प है। भारत में भी यह अन्य सांपों की अपेक्षा अधिक पाया जाता है। दिल्ली तथा उसके आस पास के इलाके में जो जहरीले सांपों में वाइपर ही सर्वाधिक मिलता है। भारत के जिन प्रान्तों में सांप अधिक पाए जाते हैं वे बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा जम्मू हैं। उक्त तीनों प्रकार के सांपों में से क्रेट (करैत) सबसे अधिक विषैला होता है। इसके बाद कोबरा (नाग या काला) का नम्बर आता है। एक बार के काटने में ही

कोबरा शरीर में इतना विष छोड़ देता है कि उससे दस व्यक्तियों की मृत्यु हो सकती है। इसके मुकाबले वाइपर (पोलगा) जाति का सांप एक दंश में दो व्यक्तियों की मृत्यु के लिए पर्याप्त विष छोड़ता है। सर्प-विष हल्के पीले रंग का एक तरल पदार्थ होता है जो विष-ग्रन्थियों में उत्पन्न होता है। आंख तथा जबड़े के मध्य दोनों ओर एक विष ग्रन्थि स्थित होती है। इनमें से विष एक नली द्वारा दो लम्बे विष दांतों की जड़ तक पहुंचता है। ये विष दांत भीतर से खोखले होते हैं और विष इनमें से होता हुआ दांतों की नोक तक पहुंच जाता है। हमले के समय सांप यदि दांत जब शरीर में गड़ता है तो विष इनमें से होता हुआ दांतों की नोक तक पहुंच जाता है। हमले के समय सांप यही दांत जब शरीर में गड़ाता है तो विष इनमें से होता हुआ शरीर में प्रविष्ट हो जाता है। कहते हैं कि दवाइयों के इंजेक्शन लगाने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली सुई के निर्माण की प्रेरणा सांप के विष दांतों से ही प्राप्त हुई थी। विषरहित सांपों में ये लम्बे नुकीले विष दंत नहीं होते। उनकी एक विशेषता यह भी होती है कि उनके सिर तथा पेट पर स्थित शल्क या पपड़ियां दूर दूर स्थित होती हैं जबकि विषैले सांपों में वे अधिक सघन होती हैं। यूं तो जहर के तथा हानिरहित सांपों में और भी अनेक अन्तर हैं पर व्यावहारिक रूप से यह दो भेद मुख्य हैं। यहां पर यह उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा कि संसार में कुछ स्थानों पर लोग चूहों के विनाश के लिए बिल्ली की भांति विषरहित सांपों को भी पालते हैं।

सांप के काटने पर क्या करें—

सांप के विष का प्रभाव उतारने के लिए अब एक प्रकार की एंटीसीरम दवा बनी गई है जिसे 'एंटीवेनिन' कहते हैं। जिस जाति के सांपों का जहर रासायनिक रूप से जिस प्रकार का होता है और इस कारण उसके लिए उसी कोटि की एंटीवेनिन की आवश्यकता होती है। पर हर तरह के रोगियों में प्रायः यह निश्चित करना असंभव होता है कि सांप किस जाति का था। इस कारण इन रोगियों को आमतौर पर उपरिलिखित तीन मुख्य जातियों के सांपों के लिए प्रयुक्त की जाने वाली एंटीवेनिनों का एक मिश्रण दिया जाता है जिसे 'पोलीवेनिन" कहते हैं। यह बम्बई के हैफकिन इंस्टीट्यूट द्वारा बनाई जाती है। सांप द्वारा काटे जाने पर तुरन्त इस औषधि का इंजेक्शन लगवा देना चाहिये। परन्तु जब यह तत्काल प्राप्त न हो तो नीचे लिखे अनुसार प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए—

(१) काटे गये व्यक्ति को यह सान्त्वना तथा विश्वास दिलाइये कि इस बात की बहुत सम्भावना है कि उसे काटने वाला सांप जहरीला नहीं था क्योंकि भारत में लगभग तीन चौथाई सांप विषरहित होते हैं। प्रायः देखा गया है कि सांप के जहरीला न होने पर भी लोग मानसिक आघात के कारण ही सदमा के रोगी बन जाते हैं।

(२) रोगी को बिल्कुल चलने-फिरने न दें बल्कि उसे लिटा कर पूर्ण विश्राम करा दें। शारीरिक श्रम से खून का दौरा बढ़ जाता है और फलस्वरूप सर्प दंश के स्थान से विष शीघ्र ही शरीर में फैल जाता है।

(३) काटे गये स्थान से लगभग ५ सेन्टीमीटर ऊपर एक टूर्निकेट लगा दें अर्थात एक रुमाल या पट्टी इतनी कस कर बांध दें ताकि दंश स्थान से हृदय की ओर खून का बहाव रुक जाए। हर बीस मिनट बाद मिनट के लिए इस पट्टी को ढीला कर देना चाहिए।

(४) जिस स्थान पर दांतों के निशान हों उसे ब्लेड या चाकू को साफ करके आग में गर्म करके उससे डसे गये स्थान पर आधा सेन्टीमीटर गहरे और एक सेन्टीमीटर लम्बे दो तीन चीरे लगा दीजिये।

(५) इस स्थान को पानी से धो कर वहां अपना मुंह लगाइये और जहर चूसने का प्रयत्न कीजिये। यह जहर पेट में जाकर नष्ट हो जाता है और इस कारण चूसने वाले व्यक्ति को कोई हानि नहीं पहुंचाता। परन्तु याद रखें कि विष चूसने वाले व्यक्ति के मुंह में, होठों पर या जीभ पर कोई छाला या घाव नहीं होना चाहिये।

(६) काटे गये स्थान को पोटेशियम परमैंगनेट के घोल से अच्छी तरह धोइये।

(७) इस स्थान पर बर्फ का एक टुकड़ा लगाकर ठंडा रखिये। ऐसा करने से भी रक्त में विष का प्रवाह घट जाता है।

(८) डाक्टर को बुला लीजिये या रोगी को चारपाई या स्ट्रेचर पर लिटा कर डाक्टर के पास ले जाइये।

सांपों से रक्षा—

सर्पदंश की घटनाएं अधिकतम वर्षा और बरसात के दिनों में पाई जाती हैं। प्रायः ऐसा रात के समय होता है जबकि अंधेरे में चलते वे सांप के ऊपर पैर पड़ जाता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि साधारणतया सांप बिना कारण मनुष्य को नहीं काटता और न ही उसका पीछा करता है। इस कारण गांव के लोगों को चाहिए कि अंधेरे में सफर करना हो तो साथ में टॉर्च या लालटेन रखें। ऐसा करने से एक तो सांप पर अनजाने पैर पड़ने से बचा जा सकता है और दूसरे प्रकाश को देखकर सांप स्वयं ही पास नहीं आता। किसी प्रकार की आवाज की ध्वनि करने से भी सांप रास्ते से हट जाते हैं। इसलिए खेतों में या कच्चे रास्तों पर चलते समय कुछ ध्वनि करते रहना (उदाहरणतया लाठी बजाना, जोर से बातें करना आदि) लाभप्रद रहता है। इसके अतिरिक्त लोगों को चाहिए कि जहां तक सम्भव हो चारपाई पर सोएं क्योंकि जमीन पर सोने से सांप द्वारा काटे जाने की सम्भावना अधिक रहती

[शेष पृष्ठ ११ पर]

सामान्य शिष्टाचार में भारतीयता नहीं। पहनावा की लगभग प्रत्येक बात में विदेशीपन ही झलकता है। पश्चिम के अनुकरण में ही देश के मद्र और धार्मिक वृत्ति के परिवारों में मांस-मदिरा का सेवन बढ़ता जा रहा है। अनीश्वरवाद और भौतिकवाद की ओर हमारा शिक्षित वर्ग तेजी के साथ कदम बढ़ा रहा है। मैं किसी भी देश या व्यक्ति के अनुकरण का सर्वथा विरोधी नहीं हूं। किन्तु अनुकरण स्वस्थ और रचनात्मक हो और जिसमें भारतीयता की छाप हो। पश्चिम के अनुकरण तथा आधुनिकता के अनुसरण की आड़ में हमारी नवीन पीढ़ी भारत के महापुरुषों भारतीय इतिहास और वैदिक धर्म से सर्वथा अपरिचित सी होती जा रही है। पश्चिम के इस आकर्षण और भारतीयता के ह्रास इस अवसाद को रोकने की आवश्यकता है। शिक्षित महिला वर्ग में यह प्रवृत्ति अधिक शोचनीय और कमजोर होती जा रही है।

महर्षि ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में राजस्थान का भ्रमण आरम्भ किया था। वे चाहते थे कि राजस्थान के शासकों की दिनचर्या तथा उनके जीवन को सुधारा जाए ताकि वे अपनी प्रजा का सुधार कर सकें। स्वामी जी महाराज ने व्यक्ति की दिनचर्या पर विशेष बल दिया था। यों तो दिनचर्या के सुधार की बात हमारे शिक्षित वर्ग के लिए हास्यास्पद सी लगती है। वे निर्धारित दिनचर्या को वैयक्तिक जीवन में अनुचित हस्तक्षेप और वैयक्तिक स्वाधीनता की हत्या समझेंगे किन्तु गम्भीरता से विचार किया जाए तो सुनियोजित दिनचर्या वैयक्तिक चरित्र निर्माण की शुरुआत होती है। इससे व्यक्ति परिश्रमशील, स्वस्थ और पुरुषार्थी बनता है। मेरा विश्वास है कि दिनचर्या के सुनियोजित हुए बिना अनुरूप धार्मिक वृत्ति का दृष्टिकोण नहीं बन सकता। अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग मैंने छात्रों के साथ बिताया है। अब भी छात्रों के बीच रहता हूं। गत पचास वर्ष के अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि विद्यार्थियों की दिनचर्या को सुधारने की बड़ी आवश्यकता है। किसी भी बड़े व्यक्ति के जीवन को देखने से पता चलता है कि उसके एक-एक क्षण का मूल्य होता है। उनका एक-एक क्षण नियमों में बंधा रहता है। मनुष्य जितना नियम में रहता है उसका जीवन उतना ही अधिक निरापद होता है। किसी कवि का कथन है—

"बेहुद वे होते हैं जो,
बाजा हुब में होते हैं।"

राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रश्न अत्यन्त जटिल बन गया है। यद्यपि हिन्दी का प्रचार प्रसार आर्यसमाज का लक्ष्य नहीं है। किन्तु हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करने वालों में महर्षि दयानन्द सरस्वती अग्रणी हैं। वे पहले ही व्यक्ति हैं, जिन्होंने हिन्दी में वेदों का अनुवाद करके जनसाधारण के लिए वेदाध्ययन सुलभ बनाया। उन्होंने स्वयं लगभग १५ हजार पृष्ठों का हिन्दी साहित्य देश को दिया। मेरे निजी अध्ययन के आधार पर मैं कह सकता हूं कि आकार में छोटा हो सही किन्तु हिन्दी में आत्म चरित लिखने वाले महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति हैं। यह अनुसंधान का एक विषय है। आर्यसमाज द्वारा हिन्दी का बहुत प्रसार और प्रचार हुआ। हिन्दी की दृष्टि से आर्यसमाज ने अनेक ऐतिहासिक कार्य किये हैं यद्यपि पं० रामचन्द्र जी शुक्ल जैसे हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों ने इस पर अहेतु पर्दा डालने की कोशिश की है। उच्चकोटि के लेखक, पत्रकार कवि आर्यसमाज ने हिन्दी जगत् को दिये। १९०१ में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने शिक्षा क्षेत्र में भारतीय भाषा विशेषतः हिन्दी की क्षमता को सिद्ध किया। कांग्रेस के मंच से अमृतसर अधिवेशन में वे ही सर्वप्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी श्रद्धानन्द जी दोनों की मातृभाषा हिन्दी नहीं थी। किन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् हमारी देशी सरकार ने हिन्दी के साथ जो खिलवाड़ किया है वह बहुत ही शोचनीय है। हिन्दी के विकास की चर्चा करके अंग्रेजी की जड़ों को मजबूत करना और लोकके सामने उनके अंग्रेजी के प्रभाव को बढ़ाना यही हमारे केन्द्रीय शासन का तरीका बन गया है। इधर हिन्दी का प्रचार करने वाली संस्थाएं, जो जनमत को हिन्दी के अनुकूल बना सकती थीं कई कारणों से चुप हैं या उन्हें चुप करा दिया गया है। मेरा विचार है कि आर्य समाज इस दिशा में जनमत को हिन्दी के पक्ष में प्रबल करके एक ओर केन्द्रीय सरकार को अपने निश्चयों पर अमल करने के लिए बाधित कर सकती है और दूसरी ओर अहिन्दी प्रदेशों और विशेषतः 'हिन्दी विरोध के गढ़ माने जाने वाले मद्रास प्रदेश में हिन्दी के अनुकूल जनमानस को तैयार कर सकता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि कोई आपत्ति नहीं, जिसकी मातृभाषा चाहे जो हो, हिन्दी का किसी रूप में भी विरोधी नहीं है।

आज राष्ट्र के सामने एक भयावह परिस्थिति है, जिसका सीधा सम्बन्ध आर्यसमाज के कर्म और उद्देश्य से है। वह है देश में तेजी के साथ होने वाला धर्म परिवर्तन। यदि गम्भीरता से अध्ययन करें तो ज्ञात होगा कि देश के समुद्र तट से लगे हुए सभी भागों में, पर्वतीय और वन इलाकों में ईसाई धर्म का प्रसार बहुत बढ़ रहा है। अभी-अभी समाचार प्रकाश में आये हैं कि निकोबार द्वीप में, जो भारत के लिए सामरिक महत्व का स्थान है तथा भारत से हजारों मील की दूर पर समुद्र में है, ईसाई और इस्लाम धर्म का प्रचार इतनी तेजी से बढ़ गया है कि १८ हजार आदिवासियों में १२ हजार ने अपना धर्म परिवर्तन किया है। ७ मई ६६ के साप्ताहिक "सार्वदेशिक" ने इसी के सम्बन्ध में अग्रलेख लिखा है। इस प्रकार के धर्म परिवर्तन का राजनैतिक और राष्ट्रीय महत्व भी है और इसका परिणाम अत्यन्त भयावह है। यह धर्म परिवर्तन केवल सीमावर्ती और तटवर्ती इलाके में ही नहीं हो रहा है, अपितु देश के बीच विभिन्न केन्द्रों, अविकसित देश के केन्द्रों और वन के भागों के इलाकों में भी अधिक हो रहा है। आश्चर्य है कि हमारी सरकार ने इन इलाकों में विदेशी पादरियों को विद्रोहात्मक प्रवृत्ति फैलाने की पूरी छूट दे रखी है, किन्तु आर्य समाज जैसी संस्था के कार्य की छूट नहीं है। सरकार का यह एक तरफा सेक्युलरिज्म वस्तुतः एक पहेली ही है। इसकी भी शिकायत "सार्वदेशिक" पत्र के उपयुक्त अंक में की गयी है। सार्वदेशिक साप्ताहिक दिनांक ३१ मार्च, ६६ के अंक में सूचना प्रकाशित हुई है कि बर्मी सरकार ने सभी विदेशी ईसाई प्रचारकों को इस वर्ष के अंत तक बर्मा से निकल जाने का आदेश दे दिया है। ईसाई धर्म के साथ साथ इस्लाम की ओर से भी धर्म परिवर्तन निरन्तर हो रहा है, किन्तु चुपचाप। पूर्वपंक्तियों के रूप में सीमावर्ती इलाकों में बसने वाले पाकिस्तानी मुसलमान भी एक समस्या बने हुए हैं। राजनैतिक संस्थाओं में काम करने वाले हिन्दू मसमुचाव ऐसे धर्म परिवर्तन से किस प्रकार की अनुभूति प्राप्त करते हैं यह वर्णन मेरे लिए कठिन है, किन्तु अनुभूति रखने वालों के लिए यह अत्यन्त चिन्ताजनक बात है। इसका हल आर्यसमाज के पास है। किन्तु आर्यसमाज के मार्ग में भी एक बहुत बड़ी कठिनाई है, जिसने आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन को कुण्ठित करके छोड़ दिया है। वह कठिनाई है जन्म के आधार पर बनी हुई जाति-पांति की भावना। वह भावना इतनी मजबूत और इतनी सुदृढ़ है कि इसकी कुटिल छाया आर्यसमाज पर भी पड़ी और इसने आर्यसमाज के कार्यों में भी शिथिलता पैदा कर दी। आर्यसमाज गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त को मानता है। जन्म से बनी जातियों का इससे कोई सम्बन्ध नहीं। महर्षि दयानंद ने जन्म के आधार पर बनी जातियों और सम्प्रदायों को स्वीकार ही नहीं किया है अपितु उन्हें नष्ट करने का स्पष्ट शब्दों में आदेश दिया है। 'शिक्षापत्री, ध्वान्त निवारण' में महर्षि के इन शब्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है "सब सज्जनों को कमर बांधकर इन सम्प्रदायों को जड़ मूल से उखाड़ डालना चाहिए। जो कभी उखाड़ डालने में न आवे तो अपने देश का कल्याण कभी होने का ही नहीं।"
इस दिशा में आर्यसमाज से हटकर अन्य चिन्तकों ने भी अपने ऐसे ही विचार व्यक्त किये हैं। अभी अभी 'कादम्बिनी' मासिक पत्र, के अंक में प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर के एक विचार – बोधक लेख लिखा है। उनके निम्न शब्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। लेख में आर्य समाज पर टीका है, जिसमें कुछ भ्रान्ति भी है। तथापि सम्पूर्ण लेख पढ़ने योग्य है। श्री कालेलकर जी ने लिखा है।

"क्या आज हिन्दू समाज विभिन्नता में एकता लाने के लिए यह नियम बनाने को तैयार है कि विवाह हो तो भिन्न जाति में ही करना चाहिए, एक जाति में विवाह करना निषिद्ध माना जाये अधर्म माना जाये? अगर ऐसा नियम हुआ तो जाति-जाति के बीच के झगड़े एकदम सुधर जायेंगे। चुनाव के दिनों में जो जाति-संकीर्णता बाधक बनती है वह भी दूर होगी और विविधता में बहुत बड़ी एकता स्थापित होगी।

"हम जाति को कायम रख हिंसावादी और अहिंसावादी परिवारों के अन्दर की शादियां मंजूर करते हैं। जैन वैष्णव और क्षत्रिय भी परस्पर शादियां कर सकते हैं। सनातनी और सिख भी अगर जाति एक हो तो परस्पर शादियां कर सकते हैं। गुजरात में जैन और वैष्णव बनिये भी परस्पर शादियां कर सकते हैं। धर्मभेद, उपासना-भेद, दर्शन भेद आड़े नहीं आते। तो एक ही धर्म की अनेक जातियों में विवाह करने का रिवाज क्यों न चलावें? केवल सजातीय विवाह करने से कुछ नहीं होगा।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

मराठवाड़ा आर्य सम्मेलन

[पृष्ठ ८ का शेष]

ऋषि-मुनियों का उपाय स्वीकार कर के भविष्य में अपनी जाति में विवाह नहीं होने चाहिये। तब जा कर चिकित्सा रहते हुए एकता सिद्ध होगी।" जन्म के आधार पर बनी जातियों से राष्ट्रीय क्षति को स्वीकार विद्वान् लेखक ने उसका कुछ भी बतलाया है। इस जन्म मूलक जाति पाँति का एक मात्र हल अन्तर्जातीय विवाह है। इसी जाति-पाँति ने आर्य समाज को घरों में प्रवेश करने नहीं दिया। इसे केवल भ्यास पीठ पर रखा, घरों से बाहर ही रखा। जहाँ-जहाँ आर्य समाज ने जन्म मूलक जाति-पाँति को उखाड़ फेंका, वहाँ वहाँ आर्य समाज का प्रवेश घरों में हुआ और ऐसे ही जगहों पर आर्य समाज वास्तव में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और पुनः तीसरी पीढ़ी तक चलता रहा। आज कितने ही आर्य परिवारों में, कतिपय पदाधिकारियों के घरों में तक वैदिक पद्धति के संस्कार नहीं होते। जब आर्य समाजियों की अपनी ही यह परिस्थिति है तो शुद्ध करके लाये जाने वालों की दशा क्या होगी? जब आर्य समाज में प्रवेश करके भी मराठा, ब्राह्मण, लिंगायत कायस्थ, हरिजन, राजपूत अपना कुल इत्यादि ज्यों के त्यों बने रहेंगे तो शुद्ध होकर आने वाले ईसाई मुसलमान का कौनसा स्थान होगा? उन्हें कौन अपनायेगा? उनकी सामाजिक स्थिति क्या होगी?

पुलिस कार्यवाही के पूर्व तक हैदराबाद में आर्य समाज ने बड़े जोर के साथ जन्म मूलक जाति पर अन्तर्जातीय विवाहों द्वारा कठोर कुठाराघात किया था। आर्य समाजी अपने जाति सूचक नामों को तिलांजलि दे चुके थे। जाति को पूछना और पूछने पर उसका उल्लेख करना सामाजिक अपराध समझते थे। किन्तु अब उनकी पुनरावृत्ति हो रही है। अन्तर्जातीय विवाहों का विचार शिथिल पड़ता जा रहा है। मैं ऐसे आर्य सज्जनों को जानता हूं जिन्होंने जाति के नाम पर लिखने वाले अखबारों के टिकिटों को लेने से इन्कार कर दिया था।

अपने मूल विषय की ओर आते हुए मैं आप सज्जनों से यही निवेदन करूंगा कि ईसाई और इस्लाम द्वारा धर्म परिवर्तन को रोकने और इस तरह बढ़ती हुई अराष्ट्रीय तथा अभारतीय शक्तियों को रोकने के लिए शुद्ध ही एक मात्र उपाय है और शुद्धि आन्दोलन को सफल करने का एक मात्र साधन अन्तर्जातीय-विवाह आन्दोलन है। यह कार्य सरल नहीं है। इसके लिये कभी-कभी कठोर बनना पड़ता है। किन्तु साहसी और पुरुषार्थी व्यक्तियों के लिये यह बड़ा सरल भी है। आर्य युवकों को इस कार्य के लिए पुरातन रूढ़ियों के विद्रोह करने की आवश्यकता है। देश में सांप्रदायिकता और भाषा वाद बढ़ते हुए वैमनस्य का भी एक मात्र हल अन्तर्जातीय और अन्तर्प्रान्तीय विवाह ही है।

ईसाई और इस्लाम के प्रचारक हमारी दुर्बलताओं से परिचित हैं। अप्रैल ६६ में विदर्भवाड़ा में हुये एक ईसाई सम्मेलन में एक अमरिकी पादरी डा० रहे की ओप्स ने अपने भाषण में ईसाई धर्म के प्रचारकों को प्रोत्साहन देते हुए कहा था, 'ईसाई धर्म सेवा का सर्वोत्तम संगठन है। भगवान का धन्यवाद है कि हमारे आलोचक बहुत से हैं, किन्तु हमारा कोई प्रतिस्पर्धी नहीं।' हम अपने चुनावों, अपने व्यापार, अपने व्यवसाय में इतने तल्लीन हैं कि समाज पर होने वाले भीषण प्रहारों की सुध-बुध ही नहीं है। हमारे राष्ट्रकर्ता जो हिन्दुओं के वोटों पर विजयी होते हैं अपने सेक्युलरिज्म के प्रवाह में यह नहीं सोच रहे हैं कि प्रति वर्ष उनके कितने वोट घट रहे हैं। हमारी कुछ पद्धति ही ऐसी है कि हम अपने विरोधियों को स्वयं बढ़ा लेते हैं और पुनः उनके वास्तविक अस्तित्व को होने पर हथियार डाल देते हैं या उनकी शक्ति तोड़ने में अधिक साधन समय और धन खर्च करते हैं।

भारतीयों के धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए शुद्धि के साथ साथ प्रचार कार्य और सेवा कार्य को भी बढ़ाना आवश्यक है। यह सेवा कार्य तथा प्रचार कार्य विध्वंसात्मक न हों; प्रतिक्रिया स्वरूप न हों। हमारे कितने अस्पताल कितने छात्रावास (हॉस्टेल्स), कितने अनाथालय चलते हैं? जो चलते हैं उनमें कितने आदर्श हैं? क्या यह बात सत्य तथ्य पर आधारित नहीं है कि हमारी संस्थाएं लड़ाई और झगड़ों के अखाड़े बन रहे हैं? बहुत पहले किसी ने आर्य समाजियों के बारे में कहा था, "इन्हें लड़ने के लिये कोई न चाहिये। अन्यथा ये आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं" इस ढंग से हम न तो भारत में होने वाले धर्म परिवर्तन को रोक सकते हैं और न ही कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

किसी भी संस्था को बड़ा शक्ति नष्ट नहीं कर सकती। आर्यसमाज को मिटाने के लिए विपुल साधन सम्पन्न निजाम हैदराबाद की सरकार ने एड़ी चोटी का जोर लगाया था। यज्ञ करने पर रोक लगायी, यज्ञोपवीत तोड़े और क्या नहीं किया? किन्तु पग पग पर होने वाले हजारों ने यज्ञोपवीत धारण किये। किन्तु आज हमने स्वार्थवश अपने हाथों से, अपने प्रमाद आलस्य और उपेक्षा से बलादि नित्यकर्मों को तिलांजलि दी, यज्ञोपवीत उतार फेंके गृह कलह प्रारम्भ किया और संगठन को शिथिल बनाया। आर्य समाजों ने आर्य समाज की उपेक्षा की, आर्य समाजों ने अपने प्रादेशिक संगठन के प्रभाव को नष्ट किया और प्रादेशिक संगठनों ने केन्द्रीय सभा को शक्तिशाली बनाने की अधिक चिन्ता नहीं की। जिस संस्था का संगठन शिथिल दुर्बल और निस्सार हो जाये उसका मूल्य कुछ नहीं होता: इससे पूर्व आर्य समाज संकटों में भी कुन्दन बन कर इसीलिये निकल सका क्योंकि इसमें शक्ति थी। जिस संगठन में शक्ति होती है, जन मानस पर जिसका प्रभाव रहता है और जो सेवा कार्य और आदर्श चरित्र के द्वारा अपने प्रभाव को नित्य बढ़ाता रहता है वही संगठन हुकूमतों से अपनी बात को मनवा सकता है। अभी भी जनता पर पर आर्य समाज का अच्छा प्रभाव है। आर्यसमाज के नेतृत्व में चलने के लिये जनसाधारण तैयार है। किन्तु जनता के इस विश्वास और आस्था का सदुपयोग करना आर्यसमाजियों का कार्य है। उन्हें युवकों और छात्रों से सम्पर्क पैदा करना चाहिये। आर्यसमाज का साहित्य हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं में जन जन तक पहुंचना चाहिये। अनेक प्रकार की बौद्धिक प्रतियोगिताओं और खेलों के द्वारा युवक विद्यार्थियों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करके उनके सिद्धांतों और कार्यों से उन्हें परिचित कराना चाहिये। हमें अपने पवित्र, निश्छल और आदर्श जीवन से दूसरों के जीवन का निर्माण करना चाहिये। हमें स्वयं इस बात पर पूर्ण विश्वास करना चाहिये कि आर्यसमाज हमारे सामने एक पूर्ण जीवन दर्शन उपस्थित करता है। एक ऐसे मानव का निर्माण करता है जो सर्वत्र सम्मान और स्नेह प्राप्त कर सकता है जो विश्वास और आस्था का केन्द्र हो सकता है।

मैंने आपका बहुत समय लिया। मधुर और उपयोगी बातें कितनी कही हैं यह तो नहीं जानता, किन्तु कुछ कटु और नीरस कहकर आप को दुखाया अवश्य है। ऐसे प्रसंगों के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं। मैं आपका हृदय से आभारी हूं, क्योंकि आपने मुझे यह सम्मान दिया और धर्य और शान्ति से आपने मेरी बात सुनी। इत्योम्

स्वास्थ्य सुधा

[पृष्ठ १ का शेष]

है। कारण यह है कि सांप प्रायः ऊंचाई पर नहीं चढ़ सकता। यही कारण है कि फौज के सिपाही जब भी किसी सर्प-प्रभाव प्रदेश में कैम्प लगाते हैं तो तंबू या खेमे के चारों ओर एक डेढ़ फुट चौड़ी तथा गहरी एक खाई खोद खोद देते हैं। और इस खाई को पार करके तंबू के अन्दर तक नहीं आ पाते। कभी कभी तो प्रातः काल में पाया जाता है कि खाई में दो सांप दौर गिरे हुए हैं।

कुछ मिथ्या विश्वास—

इस लेख के अन्त में सर्प सम्बन्धी कुछ भ्रान्तियों का निराकरण करना अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रसंग में सर्व प्रथम कुछ ठग विद्याओं की पोल खोलनी होगी। आपने आपने सुना होगा कि अमुक व्यक्ति मन्त्र फूंक करके, थप्पड़ मार कर या यहां तक कि टेलीफोन पर मन्त्र पढ़ कर सर्पदंश का इलाज करता है। वास्तव में इन कथनों में तनिक भी सत्यता नहीं है। हम पहले ही देख चुके हैं कि लगभग ७२ प्रतिशत सांप हानिरहित होते हैं। इसी तथ्य के कारण पाखंडी लोग भोले-भाले मनुष्यों को धोखा देकर खूब यश कमाते हैं। वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा इनका कथन मिथ्या सिद्ध कर दिया गया है। प्रयोगशालाओं में पाले गये विषैले सांपों द्वारा जानवरों को डसे जाने पर उपरिलिखित साधन उन्हें बचाने में पूर्णतया निष्फल सिद्ध हुये। किंवदंती है कि सर्पयुगल में से यदि आप किसी एक, नर या मादा, को मार दें तो जोड़े का बचा हुआ सांप या सर्पिणी मारने वाले का पीछा करते हैं और उसे बाद भी डसे डसे बिना नहीं छोड़ते। पर यह भी केवल एक कपोल कल्पना है।

★

पू० पाक विद्रोह करेगा ?

[ले०—श्री नरेन्द्र सम्पादक वीर प्रताप]

संसार के दो बड़े समाचार पत्रों ने इस सम्भावना की पुष्टि करती है कि पूर्वी पाक में विद्रोह की चिनगारियां अन्दर ही अन्दर सुलग रही हैं। पहले अमरीका के सबसे बड़े समाचारपत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' ने और अब लन्दन के सबसे बड़े समाचार पत्र टाइम्स ने पू० पाक की वर्तमान स्थिति का जो चित्र प्रस्तुत किया है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि पाकिस्तान में गृह युद्ध के लक्षण पैदा हो रहे हैं और इस समय पूर्वी पाक में अन्दर ही अन्दर यह आन्दोलन जोर पकड़ रहा है कि उसे प० पाक से अलग हो जाना चाहिए। अभी तो केवल यही कहा जा रहा है कि पाकिस्तान की राजधानी रावलपिंडी में है, उसकी केन्द्रीय सरकार दो हजार मील दूर बैठी पू० पाक का प्रशासन ठीक तरह नहीं चला सकती इसलिये पू० पाक को अधिकाधिक स्वायत्त शासन अधिकार दिया जावे ताकि वह अपना शासन स्वयं चला सके। परन्तु 'न्यूयार्क टाइम्स' और 'लन्दन टाइम्स' दोनों के सम्वाददाताओं का यह विचार है कि भारत और पाकिस्तान के मध्य हाल ही में जो लड़ाई हुई है उसने इस आन्दोलन को और भी बल दिया है। कारण यह कि पूर्वी पाकिस्तान यह समझता है कि भारत और पाकिस्तान के मध्य लड़ाई में पूर्वी पाकिस्तान सदा खतरे में रहेगा। भारत किसी समय भी उस पर हमला करके उस पर कब्जा कर सकता है। पहले पाकिस्तान के शासक उसे यह दिलासा दिया करते थे कि जब कभी भारत ने पूर्वी पाकिस्तान पर हमला किया, प० पाकिस्तान तुरन्त भारत पर हमला कर देगा परन्तु जो कुछ सितम्बर १९६५ में हुआ है उसके बाद पूर्वी पाक को यह विश्वास हो गया है कि युद्ध की स्थिति में प० पाक उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता। पाकिस्तान के दोनों भागों में इतना अन्तर है कि युद्ध की हालत में वह आसानी से एक दूसरे को सहायता को नहीं पहुंच सकते। इस समय पाकिस्तान के विमान भारत के ऊपर से उड़ कर दो घण्टे में ढाका पहुंच जाते हैं परन्तु युद्ध के समय उन्हें लंका या बर्मा के रास्ते जाना पड़ता है। इसमें न केवल समय लगता है बल्कि खर्च भी कहीं अधिक होता है इसलिए पू० पाक समझता है कि भारत के साथ लड़ाई में प० पाक को कोई लाभ हो या न हो कम से कम पू० पाक को तो कोई नहीं। उसे सबसे बड़ी हानि यह भी हो रही है कि उसका व्यापार बन्द हो गया है। यदि भारत के साथ खुले व्यापार की स्वतन्त्रता हो तो उसे बहुत लाभ है। उसे कई सस्ती चीजें भारत से मिल सकती हैं और वह अपनी कई चीजें भारत को बेच सकता है। परन्तु दोनों देशों के सम्बन्ध खराब होने के कारण अब पू० पाक का व्यापार भी तबाह हो रहा है। इसके अतिरिक्त एक और आकर्षण भी है जो पू० पाक को भारत की ओर खींचता है, वह है भाषा का। प० बंगाल और पूर्वी बंगाल दोनों की भाषा एक है अर्थात् बंगला। पू० पाक की उर्दू में कोई रुचि नहीं और प० पाक की भाषायें—पंजाबी सिंधी या पश्तो—तीनों ही वहां के लोग नहीं समझते। प्रारम्भ में जब पाकिस्तान सरकार ने उर्दू को सारे पाकिस्तान की राजभाषा बनाने का फैसला किया था तो पू० पाक में दंगे शुरू हो गये थे कई स्थानों पर पुलिस को गोली चलानी पड़ी थी। आखिर सरकार को यह स्वीकार करना पड़ा कि उर्दू के साथ बंगला भी पाकिस्तान की राजभाषा होगी। प० पाक का सबसे बड़ा अंग्रेजी दैनिक 'डान' प्रतिदिन उर्दू के साथ बंगला में भी कुछ न कुछ प्रकाशित करता है ताकि पूर्वी पाक को शिकायत का अवसर न मिले। परन्तु उनकी तसल्ली नहीं हो रही। वह समझते हैं कि उनका बचाव इसी में है कि किसी प्रकार प० पाक की दासता से मुक्त हो जावें। वह यह भी अनुभव करते हैं कि यदि वह अलग हो जायें तो भारत के साथ उनके सम्बन्ध सुधर जायेंगे। दोनों देशों का व्यापार भी बढ़ जायेगा और आवश्यकता पड़ने पर वह भारत से सहायता भी ले सकेंगे, जैसे कि इस समय नेपाल आदि कई देशों को भारत देता है। इसलिए यह आन्दोलन अन्दर ही अन्दर बल पकड़ रहा है।

परन्तु प्रश्न तो यह है कि हमें इस बारे में क्या करना है? क्या भारत सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी रहेगी और तमाशा देखती रहेगी या पू० पाक के उन तत्वों की कुछ सहायता भी करेगी। जो प० पाक से अलग होना चाहते हैं। नीतिमत्ता और बुद्धिमत्ता की मांग तो यह है कि उनकी हर प्रकार से सहायता की जावे। यदि पाकिस्तान को काश्मीर में गड़बड़ पैदा करने में कोई शर्म नहीं आती और वह आये दिन हमारे लिए कोई न कोई विपदा खड़ी कर देता है तो हम अब पूर्वी पाकिस्तान में कुछ कर सकते हों तो क्यों न करें। यदि हमारी सरकार इस मामले में कुछ सक्रिय हो जावे और पू० पाक प० पाक से अलग हो जावे तो इस में हमें लाभ ही है हानि नहीं। वह न भी हो तब भी इसका एक लाभ यह तो हो सकता है कि पाकिस्तान सरकार काश्मीर में हस्तक्षेप करने से बाज आ जावे। पाकिस्तान को ठीक मार्ग पर लाने का इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं। संसार की अन्य सरकारें अपने हितों की रक्षा के लिये सदा ऐसा ही करती हैं। कोई सरकार यह पसन्द नहीं करती कि उसके पड़ोस में उसके विरोधी शासन करते रहें। इसलिए पूर्वी पाक में विद्रोह का जो आन्दोलन चल रहा है उससे लाभ उठाने की आवश्यकता है। काश्मीर में पाकिस्तान जो कुछ कर रहा है उसका यही एक उत्तर है।

★

श्री सुरेन्द्र शर्मा का अन्त्येष्टि संस्कार

दुःख है कि दि० १९-५-६६ को सभा के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र शर्मा जी का लखनऊ में एक लम्बी बीमारी के कारण देहावसान हो गया। आपका अन्त्येष्टि संस्कार २० मई को प्रातः श्री गयाप्रसाद जी द्विवेदी ने पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार कराया। श्री शर्मा जी स्व० श्री पं० रामचन्द्र जी शर्मा इञ्जिनियर के भाई थे। श्री रामचन्द्र जी ने इस सभा भवन को बनवाने में बड़ा प्रयत्न किया था। श्री पं० सुरेन्द्र जी बड़े सौम्य प्रकृति के पुरुष थे। आपका समस्त परिवार आर्य है। परमपिता परमात्मा मृतात्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

ब्राह्मण कौन हैं ?

[पृष्ठ २ का शेष]

करते हुए यजुर्वेद के ७।४६ मन्त्र में कहा है—

ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्य-मृषिमार्षेयं सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत ॥

अर्थात् (अद्य ब्राह्मणं विदेय) आज हम ब्राह्मण को प्राप्त हों, जो विद्वान् (पितृमन्त) अर्थात् जो उत्तम पिता से उत्पन्न हो, (पैतृमत्यं) जिसका पितामह सदाचारी तथा श्रेष्ठ हो, (आर्षेयं) ऋषियों का सब ज्ञान जिसने पढ़ा हो तथा (ऋषिं) जो स्वयं दिव्य दृष्टि से युक्त हो, (सुधातु दक्षिणं) उत्तम वीर्य धारण करने में जो दक्ष हो अर्थात् इन्द्रिय निग्रही ऊर्ध्वरेता हो (अस्मत् द्राता) हमसे प्रगति को प्राप्त होकर (देवत्रा) विद्वानों में जो (प्रदातार) जो विशेष दानशील हो उनके पास (गच्छत) जाओ और (आविशत्) उसमें प्रविष्ट होकर रहो।

अथर्व वेद ५।१८।९ में क्षत्रिय लोगों के उन्मत्त होने की दशा में अर्थात् जब शासक मार्ग भ्रष्ट हों, अनुचित दबाव और धूर्तताओं से शासन को चलाते हुए जनता को कष्ट दे रहे हों, जब राष्ट्र की आन्तरिक या बाह्य सुरक्षा खतरे में हो उस अवस्था में ब्राह्मण शस्त्र धारण करके, हिंसात्मक या अहिंसात्मक क्रान्ति करके राष्ट्र की रक्षा करे। ब्राह्मण अपने ज्ञान से अच्छे शास्त्रों और युक्तियों से जनक्रान्ति की प्रेरणा दे। उसके अस्त्र ब्राह्म युद्ध के होंगे, क्षात्र युद्ध के नहीं। वह क्रान्ति करेगा परन्तु महात्मा गांधी की तरह शासन से बाहर रहेगा, वह क्रान्ति करेगा परन्तु स्वामी दयानन्द की भांति पद और सम्मान को न चाहेगा, वह क्रान्ति करेगा परन्तु उसका उपयोग दूसरों के लिए स्वामी श्रद्धानन्द की भांति न्योछावर कर देगा। मन्त्र में है—

तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा हेतिमन्तो यामस्यन्ति शरव्यां न सा मृषा। अनुहाय तपसा मन्युना चोत दूरादव भिन्दन्त्येनम्। अ० ५।१८।९

(तीक्ष्ण इषवः) जिनके बाण तीखे हैं और जो हेतिमन्तः) हथियार धारण करते हैं ऐसे (ब्राह्मणाः) ब्राह्मण (यां शरव्यां) जिन शस्त्रों को (अस्यन्ति) फेंकते हैं (सा न मृषा) वे शस्त्र व्यर्थ नहीं होते। वे (मन्युना) तेजस्वी बल के साथ (तपसा) तप के अर्थात् कष्ट सहन करके (अनुहाय) शत्रु का पीछा करके (उत) निश्चय से (एनं) इस शत्रु को (भिन्दन्ति) दूर से ही भेदन करते हैं।

स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि

लखनऊ—रविवार आषाढ ५ शक १८८ आषाढ शु० ८ वि० २०२३ दिनांक २६ जून १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादत । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावय ॥८॥

भावार्थ—उससे अश्व उत्पन्न हुए उसी से गाय उत्पन्न हुई उसी म बकरी भेड उत्पन्न हुई तथा जो कोई ऊपर नीचे दांतवाले हे वे सब उसी स उत्पन्न हुए ।

विषय-सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के नव-निर्वाचित पदाधिकारी

श्री चन्द्रदत्त जी तिवारी-मन्त्री
बी० ए० एल० एल० बी०

श्री मदनमोहन जी वर्मा-प्रधान
अध्यक्ष विधान सभा उत्तरप्रदेश

आयप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के देहरादून म सम्पन्न ०व वहृदविवेशन म दोनो महानुभाव को सवसम्मति से प्रधान और मन्त्री पदा पर निर्वाचित किया गया ह । सभा ने इनके निर्वाचन द्वारा जहा दोनो महानुभावो की कतव्य निष्ठा लगन और योग्यता का सम्मान किया ह वही अपनी निर्वाचन योग्यता का भी परिचय दिया ह । आज जहा छोटे छोटे निवाचनों म विवाद उत्पन्न हो जाते ह वहा सभा के सवसम्मत चनाव से हम प्रेरणा लेनी चाहिये और आयसमाज के गौरव को बढाना चाहिय । हम आशा ही नही पूण विश्वास है कि आप दोनो महानुभावों के पथ प्रदशन म सभा विशष प्रगति करेगी और विगत तीन वर्षों म जो काय आप लोगो ने आरम्भ किये है वे सफलतापूवक सम्पन्न हो सकगे । मित्र परिवार की ओर से नवीन प्रधान एव मन्त्री को हार्दिक बधाई

विचार-विमर्श

क्षत्रिय कौन है ?

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल०टी०, डी०वी० कालेज, गोरखपुर]

प्राचीन भारत में ब्राह्मणों के बाद क्षत्रियों का स्थान आता है। सत्यार्थ प्रकाश में स्व० श्री दयानन्द महाराज ने क्षत्रियों के गुण एवं कर्मों का उल्लेख करते हुए कहा है "न्याय से प्रजा की रक्षा अर्थात् पक्षपात छोड़ के श्रेष्ठों का सत्कार और दुष्टों का तिरस्कार करना, सब प्रकार से सबका पालन, दान, विद्या धर्म की प्रवृत्ति और सुपात्रों की सेवा में धनादि पदार्थों का व्यय करना, अग्निहोत्रादि यज्ञ करना वा कराना, अध्ययन अर्थात् वेदादि शास्त्रों का पढ़ना तथा पढ़वाना और विषयों में न फंसकर जितेन्द्रिय रह के सदा शरीर और आत्मा से बलवान रहना। सैकड़ों सहस्रों से भी युद्ध करने में अकेला भय न होना, सदा तेजस्वी अर्थात् दीनता रहित प्रगल्भ दृढ़ रहना, धैर्यवान होना, राजा और प्रजा सम्बन्धी व्यवहार और सब शास्त्रों में अति चतुर होना, युद्ध में भी दृढ़ निःशङ्क रह के उससे कभी न हटना, न भागना अर्थात् इस प्रकार से लड़ना कि जिससे निश्चित विजय होवे आप बचे जो भागने से अथवा शत्रुओं को धोखा देने से जीत होती हो तो ऐसा करना, दानशीलता रखना, पक्षपात रहित होके सबके साथ यथायोग्य बर्तना, विचार के देना प्रतिज्ञा पूरी करना, उस को कभी भंग होने न देना। ये ग्यारह क्षत्रियों के कर्म और गुण हैं।"

महाभारत में यक्ष युधिष्ठिर संवाद में यक्ष ने यह प्रश्न किया—

किं क्षत्रियाणां देवत्वं,
कश्च धर्मः सतामिव।
कश्चैषां मानुषो भावः,
किमेषामसतामिव॥

"अर्थात् क्षत्रियों का देवत्व क्या है? उनका सज्जनों की भांति धर्म कौन सा है? इनमें मनुष्यत्व क्या है? और असज्जनता कौन सी है?"

युधिष्ठिर ने उत्तर दिया—

इष्वस्त्रमेषां देवत्वं,
यज्ञ एषां सतामिव।
भयं वै मानुषो भावः,
परित्यागोऽसतामिव॥

"अर्थात् धनुष और अस्त्र इनका देवत्व है यज्ञ अर्थात् परोपकार इनकी सज्जनता है, भय मानवीय प्रकृति है और अबलाओं दीनों, दुखियों की रक्षा न करना उन्हें वैसे ही छोड़ देना इनकी असज्जनता है।"

रघुवंश में कालिदास ने 'क्षत्रिय' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है—

'क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।"

अर्थात् जो चोट से, अत्याचार से, विपत्तियों और शत्रुओं के आक्रमण से व्यक्ति या राष्ट्र की रक्षा करता है वह क्षत्रिय है।"

ऐतरेय ब्राह्मण ८-६ में क्षत्रिय को बलवान होना लिखा गया है। शतपथ १३-१ ५६ में युद्ध क्षत्रिय का बल माना गया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण १ ५-९-१ में अराजक अर्थात् क्षत्रिय शून्य देश को युद्ध के लिए अनुपयुक्त कहा गया है।

गीता में अर्जुन को क्षात्र-धर्म का उपदेश देते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं—

आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि।

अर्थात् तेरे शस्त्र पीड़ितों की रक्षा करने के लिए हों निरपराध जनता का हनन करने के लिये।

इस प्रकार क्षत्रिय का मुख्य कर्तव्य राष्ट्र और समाज के दीन, दुखी और असहायों की रक्षा करना और उनके अन्यायों के विरोध में संघर्ष करना है।

यद्यपि यह ठीक है कि राष्ट्र पर केवल राजा का ही अधिकार नहीं देश के विद्वान ब्राह्मणों का भी अधिकार है। देखिये—कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा में लिखा है कि—

"ब्रह्मणा च क्षत्रेण चोभयतो राष्ट्रं परिगृहीतं भवति।
(२ का० । ७ प्र० । १५ अनु०)

अर्थात् ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों पर राष्ट्र की रक्षा का भार है। क्षत्रिय राजा ब्राह्मणों की सहायता के बिना कुछ भी नहीं कर सकता। ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है—

'ब्रह्मण एव तत्क्षत्रं वशमेति तद्यत्र वै ब्राह्मणः क्षत्रं वशमेति तद्राष्ट्रं समृद्धं तद्वीरवदाहास्मिन्वीरो जायते।"

क्षत्रिय राजा देश के विद्वान ब्राह्मणों के ही आधीन होता है तथा जिस राष्ट्र में क्षत्रिय राजा विद्वान् ब्राह्मणों के कथनानुसार चलता है वह राष्ट्र अत्यन्त समृद्धिशाली होता है तथा उसी राष्ट्र में वीर कोष उत्पन्न होते हैं।" महर्षि वेदव्यास ने कहा है—

'तस्मात् सम्भूय कर्तव्यं प्रजानां परिपालनम्।'

अर्थात् क्षत्रिय राजा को चाहिए कि वह देश के विद्वान् ब्राह्मणों के साथ मिलकर ही प्रजाओं पर शासन करे।"

परन्तु इन सब बातों से इतना अवश्य सिद्ध होता है कि शासन का कार्य मुख्य रूप से क्षत्रिय को करना है। वास्तव में सत्य भी यही है कि राष्ट्रों का सञ्चालन सैनिकों क्षत्रियों के ही हाथ में रहता है। जहां क्षत्रियत्व की कमी आती है वहां भ्रष्टाचार पराधीनता और दूसरी बहुत सी बुराइयों का समावेश हो जाता है। आधुनिक विश्व का उदाहरण आप के समक्ष है कि सेनापतियों ने राष्ट्र का सञ्चालन किया है। आज भारतवर्ष में क्षात्र शक्ति का ह्रास हो रहा है। युद्ध को हम घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं। लड़ना अच्छा नहीं, युद्ध बुरी वस्तु है परन्तु इस दुष्ट जनों से परिपूर्ण विश्व में, इस चाओ, माओ, अयूब और भुट्टो से भरे हुए संसार में शस्त्र के बिना काम भी तो नहीं चल सकता। इसलिए आज की हमारी अहिंसा क्षात्र धर्म विरोधिनी अहिंसा है। इसलिये आज जीवन के क्षेत्र में आगे बढ़ने की आकांक्षा करने वाले नवयुवक से मैं जोरदार शब्दों में कहूंगा कि हे भारत के नवयुवक तू अब तक इस युग में जिस अहिंसा का पाठ पढ़ता चला आया है इस अहिंसा ने तेरी हिम्मत, तेरी वीरता और तेरी क्षात्र शक्ति को प्रसुप्त कर दिया है। अहिंसा सज्जनों के साथ व्यवहार की वस्तु है। राष्ट्र पर आक्रमण करनेवाला राष्ट्र के निवासियों को चोर बाजारी, घूस और दूसरे अनुचित साधनों से नष्ट भ्रष्ट करने वाला पशु है और उसके अहिंसा का बर्ताव उचित नहीं। याद रखो यह निर्बलों के लिए नहीं। संसार में क्षात्र धर्म का पालन करने वालों की गाथाएं गायी जाती हैं, कवियों की लेखनियां क्षात्र धर्म का पालन करनेवालों के जीवन को महाकाव्य का विषय बनाती हैं जनता को साधना और सद्गुण भावों के पूजा के स्थान भगवान् वीर विजेता क्षत्रिय होते हैं। राम को भगवान् बनानेवाली वाल्मीकि रामायण राम की विजय यात्रा है। महाभारत का महाकाव्य वीरों की उज्ज्वल गाथाओं की निधि है। हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक गीता हाथ में अनुनायक बन भारत करने वाले कृष्ण महाराज का युद्धोपदेश है। गीता में कृष्ण भगवान ने कहा है—

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि। धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते॥ यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्। सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्॥ अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि। ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि॥ अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्। सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते॥

अर्थात् इसके सिवाय स्वधर्म की ओर भी देखें तो भी इस समय हिम्मत हारना ठीक नहीं। क्योंकि धर्मोचित युद्ध की अपेक्षा क्षत्रिय को श्रेयस्कर और कुछ है ही नहीं। और हे पार्थ! यह युद्ध आप ही आप खुला हुआ स्वर्ग का द्वार ही है, ऐसा युद्ध भाग्यवान् क्षत्रियों को ही मिलता है। अतः यदि तू अपने धर्म (क्षात्र) के अनुकूल युद्ध न करेगा, तो स्वधर्म और कीर्ति को खोकर पाप बटोरेगा। यही नहीं बल्कि सब लोग तेरी अक्षय दुष्कीर्ति गाते रहेंगे और अपयश तो संभावित पुरुष के लिये मृत्यु से भी बढ़कर है। सचमुच अभ्युदय तो उसी राष्ट्र का होगा 'यत्र ब्रह्म च क्षत्रं चोभे चरतः सह' अर्थात् जहां ब्रह्म शक्ति और क्षत्र शक्ति मिलकर कार्य करेगी वहां ही श्री की अभिवृद्धि सम्भव है।

हमारी वैदिक भावना यह है कि हम अहिंसा को अपना मूल धर्म मानते हैं पर हिंसा को आपद् धर्म। यदि हम अपने आपद धर्म जिसका भार मुख्य रूप से क्षात्र धर्म पर आश्रित है उसको नहीं अपना सके, यदि हमने राष्ट्र रक्षा के लिए दृढ़ बल का निर्माण नहीं किया तो हमारा मूलधर्म अहिंसा, हमारा मूल धर्म विश्व शान्ति, हमारा मूल धर्म हमारी स्वतन्त्रता स्वयं खतरे में पड़ जायेगी। बुद्ध, अशोक, शंकराचार्य, गौतम, कपिल कणाद, महात्मा गांधी, स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द भारत के रक्षक नहीं स्वयं भारतवर्ष हैं ये ब्राह्मण हैं, ये ब्रह्मशक्ति के प्रतीक हैं परन्तु इनकी रक्षा के लिये क्षात्र शक्ति की आवश्यकता है। इनकी रक्षा के लिए परशुराम, गुरुगोविन्दसिंह, राणा प्रताप और शिवा जी की आवश्यकता है। यदि हम इनका निर्माण न कर सके तो मूल धर्म के नाश की सम्भावना हो जायेगी। यही वास्तविक क्षात्र धर्म के प्रतीक हैं। इसीलिये अथर्ववेद ४।२२ में कहा गया है—

इममिन्द्र वर्धय क्षत्रियं म इमं विशामेकवृषं कृणु त्वम्। निरमित्रानक्ष्णुह्यस्य सर्वांस्तान् रन्धयास्मा अहमुत्तरेषु॥

हे (इन्द्र) प्रभो! (इम क्षत्रियं)

[शेष पृष्ठ १६ पर]

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२५॥
ऋ० ५।३।२१।२५

व्याख्यान—हे ईश्वर ! भग आप और आपका दिया हुआ ऐश्वर्य शं नः हमारे लिए सुखकारक हो और शमु नः शंसो अस्तु आपकी कृपा से हमारी सुखकारक प्रशंसा सदैव हो । पुरन्धिः शमु सन्तु रायः संसार के धारण करने वाले आप तथा वायु प्राण और सब धन आनन्ददायक हों । शंसः सत्यस्य (सुयमस्य शंसः) सत्य यथार्थ धर्म सुसंयम और जितेन्द्रियादि लक्षणयुक्त जो प्रशंसा (पुण्यस्तुति) सब संसार में प्रसिद्ध है वह परमानन्द और शान्तियुक्त हमारे लिये हो । शं नो अर्यमा न्यायकारी आप पुरुजातः अनन्त सामर्थ्ययुक्त हमारे कल्याणकारक होओ ।

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार २६ जून १९६६ दयानन्दाब्द १४२ सृष्टिसंवत् १९७२९४९०६७

सभा का नवीन निर्वाचन और हमारा कर्त्तव्य

सभा का चिरप्रतीक्षित ८०वां वृहदधिवेशन देहरादून में सकुशल सम्पन्न हो गया । वृहदधिवेशन के स्थान का चुनाव करने में सभाधिकारियों ने जो बुद्धिमत्ता दिखाई उसकी प्रशंसा की जानी चाहिये । जून मास की प्रचण्ड तप्त लूओं से दूर दून घाटी के शीतल वातावरण में लगभग ४०० प्रतिनिधियों ने जिस उत्साह सहृदयता और सद्भावना के साथ वृहदधिवेशन को सम्पन्न किया वह सभा के इतिहास में विशेष स्मरणीय रहेगा । प्रतिनिधियों के आतिथ्य एवं निवास की व्यवस्था आर्य समाज देहरादून की ओर से महादेवी आर्यकन्या महाविद्यालय के विशाल भवन में की गयी थी । विद्यालय के सुरम्य वातावरण और भवन आदि के कारण प्रतिनिधियों को बहुत सुविधा रही । भोजनादि की समुचित व्यवस्था की विशेष रूप से देहरादून के महिलाओं ने व्यक्तिगत सहयोग की स्पर्धा लगी हुई थी । प्रतिनिधियों के अनुमान से अधिक संख्या होने और उनके साथ आने वाले दर्शक बन्धुओं आदि के कारण भोजन काल में कुछ विलम्ब अवश्य होता रहा परन्तु संख्या आधिक्य के कारण यह स्वाभाविक ही था । स्वागत समिति के इस सब प्रबन्ध के लिये सभी प्रतिनिधियों ने हार्दिक धन्यवाद दिया । निर्वाचन की समाप्ति के पश्चात् डी०ए०वी० कालेज तपोवन, सहस्रधारा कन्या गुरुकुल महिला आश्रम, वनअनुसन्धान संस्थान, मसूरी आदि अनेक स्थान और संस्थायें दर्शनीय थीं । प्रतिनिधियों ने इनको देखने का विशेष लाभ उठाया और लौटने में अधिकांश प्रतिनिधि ऋषिकेश हरद्वार गुरुकुल कांगड़ी कन्या गुरुकुल कनखल गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर आदि स्थानों पर भी गये और संस्थाओं की प्रगति से परिचित हुए । हरद्वार में आर्यसमाज मन्दिर निर्माण की चर्चा भी हुई । सभा मन्त्री जी ने इस कार्य के लिये हरद्वार के स्थानीय व्यक्तियों की बैठक बुलाकर विचार विमर्श भी किया । आशा है यह कार्य अब शीघ्र ही साकार रूप धारण कर लेगा । इस प्रकार देहरादून वृहदधिवेशन के फलस्वरूप आर्य प्रतिनिधियों को प्रान्त के एक कोने में आर्यसमाज की प्रगति का विहङ्गावलोकन करने का सुअवसर मिल गया ।

सभा के वार्षिक अधिवेशन में सभा की आन्तरिक स्थिति एवं परिस्थितियों का सूक्ष्म निरीक्षण एवं विश्लेषण किया गया । सभा के अध्यक्ष पद पर विद्यमान सभा प्रधान श्री मदनमोहन जी जिस दक्षता से सभा का सञ्चालन कर रहे थे उससे सभी यह अनुभव कर रहे थे कि मानो यह विधान सभा का ही अधिवेशन हो रहा हो । विधान सभाओं में सरकार अपनी बात चलाती है परन्तु इस अधिवेशन में मन्त्री प्रधान जी पर दोनों उत्तरदायित्व थे वे सभा के विद्यमान अन्तरंग भी थे जिसके कारण सभा के विगत वर्ष की गतिविधियों के प्रति वे उत्तरदायी थे और इस अधिवेशन का भी उन्हें ही सञ्चालन करना पड़ रहा था । इस अवसर पर प्रतिनिधियों की भावनाओं का आदर करते हुए प्रधान जी ने सब के विचार गम्भीरतापूर्वक सुने और अधिकारियों से उनके प्रश्नों का समाधान करवाया । अपने अध्यक्षीय सन्देश में भी आपने प्रतिनिधियों से अपील की कि हम सब यहाँ एक परिवार के रूप में उपस्थित हुए हैं अतः हमें सब कार्य मिल कर और सद्भावनापूर्वक करने चाहिये ।

सभा के अध्यक्ष पद पर सभा ने सर्व सम्मति से पुनः माननीय अध्यक्ष श्री मदन मोहन जी को ही आगामी वर्ष के लिये निर्वाचित किया । आप विगत तीन वर्षों से सभा के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं सभा ने आपकी उपयोगिता अनुभव करते हुए आगामी वर्ष के लिये भी अपनी बागडोर आपको ही सौंप दी है । सभा के इस निर्णय पर अध्यक्ष महोदय तो बधाई के पात्र हैं ही सभा स्वयं बधाई की पात्र है ।

मन्त्री पद पर भी सभा ने इस वर्ष पुनः अपने पूर्व परिचित विद्यमान मन्त्री श्री [illegible] जी को सर्वसम्मति से चुनकर एक उत्तम निर्णय किया । [illegible] की कर्मठ लगन और सुविचारक [illegible]

[illegible] गौरव वृद्धि हुई है । आपने जिन योजनाओं को अपने हाथ में लिया था उनको पूरा करने का उत्तम सुअवसर सभा ने आपको प्रदान किया है आशा है विरजानन्द स्मारक हरद्वार आर्यसमाज नवीन सभा भवन नारायण स्वामी उपदेशक विद्यालय नवीन वेद प्रचार योजना नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह आदि कार्यक्रम आपके पथ प्रदर्शन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकेंगे हम इस निर्वाचन पर मन्त्री जी को मित्र परिवार की ओर से हार्दिक बधाई देते हैं ।

सभा के चारों उपप्रधान और चारों उपमन्त्री [illegible] पुस्तकाध्यक्ष पदों पर [illegible] विख्यात एवं परिचित व्यक्ति ही चुने गये हैं । कुछ नये व्यक्ति भी पद पर आये हैं । इस प्रकार मन्त्रि मण्डल के निर्माण में [illegible] इसमें [illegible] नहीं पूर्ण विश्वास है कि सभा के कार्य को विशेष प्रगति मिलेगी । मन्त्र मण्डल की सहायता के लिये ४५ अन्य सदस्यों का भी क्षेत्रीय निर्वाचन किया गया है इस प्रकार सारे उत्तर प्रदेश के मूर्धन्य और कर्मठ व्यक्तियों को अन्तरंग का वर्ष भर के लिये सभा का दायित्व सौंप दिया गया है ।

इस वर्ष परिवर्तित विधान की धारा के अनुसार अध्यक्ष के लिये नीति परामर्श समिति का भी गठन किया गया है जो आर्यसमाज के विधान में एक नवीन परीक्षण है । इस नीति परामर्श समिति के सदस्यों में अधिकारियों के अतिरिक्त तीन व्यक्तियों का निर्वाचन साधारण सभा द्वारा सम्पन्न किया गया है । इस समिति को समय समय पर आर्यसमाज के नीति सम्बन्धी वक्तव्य प्रस्ताव घोषित करने और सङ्कटकालीन प्रशासकीय व्यवस्था सम्बन्धी अधिकार सौंपे गये हैं । हम आशा करते हैं कि अध्यक्ष महोदय इस समिति की बैठकें प्रतिमास बुलाने की व्यवस्था करेंगे और इस समिति की उपयोगिता को सार्थक करेंगे ।

इस वर्ष साधारण सभा ने नवीन विधान के अनुसार बनने वाली विद्या सभा के निर्माण का अधिकार अध्यक्ष को सौंप दिया है । इस विद्या सभा के निर्माण का परिणाम यह होगा कि की उत्तर प्रदेश में स्थित आर्य समाज की सभी शिक्षा संस्थायें (गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के अतिरिक्त उसकी पृथक सभा है) इस विद्या सभा के वैधानिक संरक्षण में आ जायगी । अब तक सभा की अन्तरंग शिक्षा संस्थाओं के जिन विवादों आदि पर निर्णय करती थी अब उन पर यही विद्या सभा निर्णय करेगी । इस सभा के निर्माण से अन्तरंग सभा को अन्य नीति सम्बन्धी विषयों पर विचार विमर्श करने की अधिक सुविधा हो जायगी । अब तक अन्तरंग सभा का अधिकांश समय शिक्षा संस्थाओं के झगड़ों में ही उलझा रहता था । इसके अतिरिक्त यह सभा शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा स्तर को उन्नत करने और संस्थाओं में वैदिक धर्म की शिक्षा व्यवस्था सम्बन्धी प्रश्नों पर अधिक विचार कर सकेगी और शिक्षा सम्बन्धी आर्यसमाज के दृष्टिकोण का अधिक प्रचार कर सकेगी ।

इस प्रकार सभा का ८०वां वृहदधिवेशन एक उल्लासपूर्ण वातावरण में बड़े सहयोग और सद्भाव के साथ सम्पन्न हुआ । इसका श्रेय जहां देहरादून की शीतल जलवायु को है वहीं श्री धर्मेन्द्रसिंह जी विद्याभास्कर तथा अन्य उन सभी उत्साही आर्यवीरों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को है जिन्होंने इस अधिवेशन को सफल बनाने में तत्परतापूर्वक विशेष सहयोग दिया । अन्त में हम सभा में उपस्थित सब बन्धुओं के लिए [illegible] सभा प्रतिनिधियों से सविनय निवेदन करना अपना कर्तव्य समझते हैं कि आपने जो निर्वाचन किया है उसको सफल बनाना भी आप सब का विशेष उत्तरदायित्व है । प्रधान मन्त्री तथा अन्य अधिकारी प्रतिनिधियों के सहयोग से ही कुछ कर सकेंगे आप अपने सहयोग

[शेष पृष्ठ १३ पर]

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के नव निर्वाचित पदाधिकारी

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री उपप्रधान

श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री उपप्रधान

श्रीमती शकुन्तला जी ग ग्ल उपप्रधान

श्री शिवकुमार जी शास्त्री उपप्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा के नव-निर्वाचित पदाधिकारो एवं अन्तरग मभासद सन् १९६६ ई०

१ श्री मदनमोहन जी बी०ए० एल एल०बी० अध्यक्ष विधान सभा उत्तर प्रदेश सरकार—लखनऊ प्रधान

२ श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम०पी० १ कनिंग लन नई दिल्ली उपप्रधान

३ श्रीमती माता शकुन्तला देवी जो खरनगर बाजार १६८ कानमोयान शहर मेरठ

४ श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम०ए० एम०ओ०एल० गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार (सहारनपुर)

५ श्री शिवकुमार जी शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर(सहारनपुर)

६ श्री चन्द्रदत्त जी बी०ए० एल एल०बी० डी० १०/५ पेपर मिल कालोनी लखनऊ मन्त्री

७ श्री विद्योत्तमायति जी आय वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर(सहारनपुर) उपमन्त्री

८ श्री धर्मेन्द्रसिंह जी एम०ए०, एम०काम० १२/१ भगवानदास क्वार्टर देहरादून

९ श्री आशाराम जी मु० टटिहाई आयसमाज मिर्जापुर

१० श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री एम०ए० नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

११ श्री साहू देवेन्द्र जी आय सरायतरीन हयातनगर जि० मुरादाबाद कोषाध्यक्ष

१२ श्री विक्रमादित्य वसन्त जी ६ टस्ट कालोनी ऐशबाग लखनऊ सहा०

१३ श्री नरदेव जी स्नातक एम०पी० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय वन्दावन (मथरा) पुस्तकाध्यक्ष

१४ श्री रमेशचन्द्र जी बी०ए० एल एल०बी एडवोकेट तिलकद्वार मथरा सहा० पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरग सभासद

१५ श्री भजनदेव जी आय कण्टक्टर आयसमाज शृंगारनगर लखनऊ

१६ मुन्नालाल जी विद्यारत्न आयसमाज उन्नाव

१७ रामेश्वरदयालु जी वर्मा आयसमाज हरदोई

१८ निर्मलचन्द जी आयसमाज गोला गोकर्णनाथ (खीरी)

१९ सूर्यदेव जी वर्मा आयसमाज फजाबाद

२० गोविन्दराम जी आय मु० अकबरपुरा नगर बहराइच

२१ धर्मचन्द्र जी वर्मा आयसमाज गोंडा

२२ आचाय वीरेन्द्र शास्त्री जी प्रधानाचाय राजकीय दीक्षा विद्यालय बलरामपुर (गोंडा)

२३ ,, फूलचन्द्र जी गुप्त इन्जीनियर आयसमाज देवरिया

२४ वेदप्रकाश जी आय एम०ए० आर्यसमाज आजमगढ़

श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री उप मन्त्री

श्री निर्मलचन्द जी राठी अधिष्ठाता—म० दी० आयभास्कर प्रेस

२५ कन्हैयालाल जी आयसमाज उसकाबाजार पो० खास (बस्ती)

२६ आनन्दप्रकाश जी एम०ए० आयसमाज लल्लापुरा काशी वाराणसी

२७ ओ३म प्रकाश जी शास्त्री आर्योपदेशक खतौली (मुजफ्फरनगर) छात्र—बलिया गाजीपुर

२८ कपूरचन्द्र जी आजाद आयसमाज मिर्जापुर

२९ दयास्वरूप जी १३८ विवेकानन्द मार्ग इलाहाबाद

३० नन्दकिशोर जी आय आयसमाज जहानाबाद पो० खास (फतेहपुर)

३१ विजयपाल जी शास्त्री एम०ए० आयसमाज मेस्टन रोड कानपुर

३२ शिवव्रत राव जी एम०ए० एल एल०बी० एडवोकेट इटावा

३३ रामरक्षपाल जी अग्निहोत्री आयसमाज कायमगंज (फर्रुखाबाद)

३४ वेदारीलाल जी आय ७१ रतनपुरा नगरा झांसी

३५ उमेशचन्द्र जी स्नातक एम०ए० पद्म भवन हल्द्वानी (नैनीताल)

३६ मक्खनलाल जी आयसमाज कोटद्वार (गढ़वाल)

३७ तेजसिंह जी आय निकट आयसमाज मन्दिर खालापार सहारनपुर

३८ ,, फलसिंह जी सि०शास्त्री रामनगर रायवाला पो० इमलीखेडा सहारनपुर

३९ ,, त्रिलोकचन्द्र जी आयसमाज शामली (मुजफ्फर नगर)

४० अमोलकचन्द्र जी आयसमाज हापुड (मेरठ)

४१ ,, भारतसिंह जी आय आयसमाज मवाना (मेरठ)

४२ ,, शिवलाल जी वर्मा अमरकोट, बुलन्दशहर

(शेष पृष्ठ १३ पर)

जहां दूध की नदियां बहती थीं, वहां अब शराब की बहती हैं

देहरादून आर्य महासम्मेलन में श्री प्रकाश वीर शास्त्री का भाषण

देहरादून में स्थानीय महादेवी कन्या महाविद्यालय के खुले प्रागण में आर्य महासम्मेलन आर्य समाज देहरादून के मन्त्री श्री देवदत्त बाली के सयोजकत्व मे सम्पन्न हुआ जिसमें उत्तर प्रदेश की आर्य समाजो के प्रमुख कार्यकर्ताओ ने भाग लिया।

मुख्य वक्ता श्री प्रकाशवीर शास्त्री ससद सदस्य थे। अन्य वक्ताओ मे सर्वश्री कृष्णावतार सिंह अमरनाथ वैद्य बनारसी सिंह राधश्याम जायसवाल गगाधर शर्मा धर्मचन्द्र तथा आचार्य विशुद्धान द के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने १९७५ में मनाई जाने वाली आर्य समाज की शताब्दी तक के लिए कार्य की एक विशिष्ट योजना बनाने का आग्रह किया। आर्य समाज के सच्चे मिशनरी पैदा करने के लिए आपने दयानन्द आश्रम स्थापित करने का सुझाव दिया।

श्री शास्त्री ने सस्था शब्द का अर्थ मृत्यु भी बताया और कहा कि सस्थाए आर्य समाज के मिशन की मृत्यु की कारण बन रही है। आपने आर्य समाजियो को सलाह दी कि स्कूल कालेज चलाना छोडकर ऐसे छात्रावास स्थापित करें जहा योग्य तथा निर्धन छात्रो को निःशुल्क आश्रय मिले और उन्हे आर्य जीवन की शिक्षा मिले।

उन्होंने कहा कि कभी इस देश मे दूध घी की नदिया बहती थी परन्तु अब स्केण्डनेवियन देशो मे ही ऐसी नदिया बहती हैं। भारत मे तो केवल शराब की नदिया बह रही हैं। श्री प्रकाशवीर ने गोहत्या बन्दी तथा मदिरा निषेध पर बल दिया।

देशवासियो को राष्ट्ररक्षा के लिए बड से बडा त्याग करने का तैयार रहने का आह्वान करतेहुये श्री शास्त्री ने कहा कि यदि स्वतन्त्रता न बची तो धर्म और समाज कुछ न बचेगा। आपने बताया कि चीनी आक्रमण के बाद राष्ट्ररक्षा कोष में आर्य समाजियो ने एक करोड रुपये से ऊपर दिया और पाकिस्तानी आक्रमण के समय उस राशि का योग ७५ लाख रहा जिसकी सूचना सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे प्राप्त हुई।

●

तप और दीक्षा के बिना सम्मानित राष्ट्र नही बनते

उत्तर प्रदेश आर्य सम्मेलन में आर्य नेताओ के भाषण

देहरादून मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के ८०वें वार्षिक अधिवेशन के प्रथम दिन यहा सार्वजनिक सभा मे

श्री प० वाचस्पति जी शास्त्री
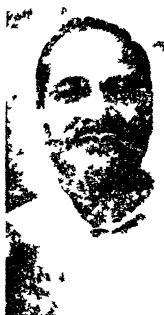
भाषण करते हुए प० वाचस्पति शास्त्री ने वेदमन्त्र के हवाले से कहा कि राष्ट्र का निर्माण बल और ओज की उत्पत्ति तथा राष्ट्र का सम्मान तप और दीक्षा से ही होता है।

आपने तप की व्याख्या करते हुए श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित करने पर बल दिया और कहा कि जिस देश मे किसान का तिरस्कार और जुआरी का सत्कार होगा, वह कमाल होगा। दीक्षा का अर्थ आपने दक्षता प्राप्त करना बताया।

सभा के प्रधान तथा उ० प्र० विधान सभा के अध्यक्ष श्री मदन मोहन जी वर्मा ने अपने भाषण मे आज की बढती हुई विलासिता और फैशन की होड मे लगे युवक युवतियो की रुचि श्रम में कभी हो ही नही सकती।

श्री वर्मा जी ने कहा कि प्रत्येक पिता प्रसन्न होगा, यदि उसकी पुत्री सुन्दर वस्त्र आभूषण धारण करे परन्तु यह विरोधाभास हास्यास्पद है कि रोटी के लिए तो हम अमरीका के आगे झोली फैलाए और विलासिता के प्रसाधनो के पीछे दौड फिरे। आपने मार्मिक शब्दो मे अपील की कि सादा जीवन अपना कर और कठोर परिश्रम करके जननी जन्मभूमि की सेवा करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दि० १२।६।६६ द्वारा सभा के विभागों के अधिष्ठाताओं का कार्य विभाजन निम्न प्रकार हुआ—

१ सभा कार्यालय के साथ निम्नलिखित विभाग रखना निश्चित हुआ —
   (अ) आर्य समाज रक्षा निधि विभाग
   (ब) अनाथ रक्षा विभाग — सभा मन्त्री
   (स) उपदेश विभाग।

२ उपदेश विभाग सहायक अधिष्ठाता—श्री सच्चिदानन्दजी शास्त्री एम० ए० लखनऊ।

३ गोकृष्यादि रक्षिणी विभाग अधिष्ठाता—श्री विक्रमादित्य बसन्त जी लखनऊ।

४ शुद्धि विभाग अधिष्ठाता—श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री खतोली।

५ आर्य महिला प्रचार मण्डल की मन्त्रिणी—श्री माता शकुन्तला देवीजी मेरठ।

६ अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन के अधिष्ठाता—श्री दयास्वरूप जी प्रयाग।

७ अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन के सहायक अधिष्ठाता—श्री आनन्द प्रकाश जी काशी।

८ घासीराम प्रकाशन एव सस्कृत प्रकाशन विभाग अधिष्ठाता—श्री आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री निवासी रायबरेली।

९ नायकजाति सुधार विभाग अधिष्ठाता—श्री उमेशचन्द्रजी स्नातक हल्द्वानी।

१० भूसम्पति विभाग अधिष्ठाता—श्री हरप्रसाद जी धमोरा (रामपुर)।

११ भूसम्पति विभाग सहा० अधिष्ठाता—श्री हरिगोपाल जी आगरा नगर।

१२ खान पान निवारण सभा अधिष्ठाता—श्री ओमप्रकाश जी आर्य भूड बरेली

१३ प्रदेशीय आर्य वीर दल अधिष्ठाता—श्री आनन्द प्रकाश जी काशी।
   (अ) प्रदेशीय वीर दल स० अधिष्ठाता—श्री वेद प्रकाश जी आजमगढ़।
   (ब) प्रदेशीय आर्यवीर दल सहायक अधिष्ठाता—श्री फत्ह सिह जी राघडवाला (सहारनपुर)।

१४ समाज कल्याण विभाग अधि०—श्री आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्रीजी बदायूं।

१५ समाज कल्याण विभाग स० अधिष्ठाता—श्री विजयपालजी शास्त्री कानपुर।

१[illegible] मन्त्री आर्यभास्कर प्रेस अधिष्ठाता—श्री निर्मलचन्द्रजी गोका गोकरननाथ।

१७ आर्यमित्र के अधिष्ठाता—श्री चन्द्रदत्त जी लखनऊ (सभा मन्त्री)

१८ नैतिक उत्थान विभाग अधिष्ठाता—श्री डा० हरिशंकर शर्मा जी आगरा।
   नोट—नैतिक उत्थान विभाग के सहायक अधिष्ठाता चयन का अधिकार श्री अधिष्ठाता जी को दिया गया।

१९ गिरिवासी वनवासी सेवा विभाग अधिष्ठाता—श्री दयास्वरूप जी प्रयाग

२० शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी सार्वजनिक पुस्तकालय भवाली के अधिष्ठाता—श्री विद्यारत्न जी हल्द्वानी।

२१ विरक्त वानप्रस्थ सन्यस्थ आर्य आश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष—श्री शिवदयालु जी मेरठ। (शेष पृष्ठ १३ पर)

सितारों के गुलाम

[ले०—श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

श्री गगाप्रसाद जी उपाध्याय

सूर्यादास—देखो भाई अब हम अग्रेजो की गुलामी से छूट गये। अब हम स्वतन्त्र है।

बुद्धिप्रकाश—ठीक तो है। एक गुलामी गई परन्तु कई प्रकार की गुलामी बाकी है। जब तक दूसरी गुलामिया रहेगी हम कभी स्वतन्त्र नही कहलाये जा सकते।

सूर्यादास—क्या हम स्वतन्त्र नही है? हम अपने देश के आप मालिक है। हमी मे से प्रधान मन्त्री हैं, हमीं मे से राष्ट्रपति हैं, हमी मे से कलक्टर और कमिश्नर हैं। हमी में से गवर्नर भी है।

बुद्धिप्रकाश—यह तो सच है। परन्तु जब तक देश मे अविद्या का राज है तब तक सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त नही हो सकती। अविद्या की गुलामी सबसे बडी गुलामी है।

सूर्यादास—आपका क्या मतलब है? हम किसके दास हैं?

बुद्धिप्रकाश—लीजिये, भारतवर्ष मे सबसे बडी दासता है सितारो की। बच्चा पैदा होते ही ज्योतिषी से पूछते हैं कि इसके ग्रह कैसे हैं?

सूर्यादास—तो क्या जन्म पत्र नही बनवाना चाहिये फिर आयु की गणना कैसे होगी? कैसे मालूम होगा कि अमुक आदमी इतना बडा है?

बुद्धिप्रकाश—आयु के लिये साधारण विधि से काम चल सकता है। आलपीके जन्म पत्र की क्या आवश्यकता है? यह जन्म पत्र नही शोक पत्र है। बालक के माता पिता डर जाते हैं कि बालक के अमुक ग्रह खराब हैं।

सूर्यादास—भाई साहब पहले से ग्रहो का कोप मालूम हो जाने से ग्रहो की शान्ति कर सकते हैं।

बुद्धिप्रकाश—ग्रहों की शान्ति का क्या अर्थ है? मनुष्य का भाग्य उसके कर्मों से मिलता है। कर्मों का फल तो अवश्य ही भोगना है। गीता में लिखा है:—

अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम्।

ग्रहो का कर्मफल से क्या सम्बन्ध? ग्रह तो अपनी चाल चलते हैं। उनकी चाल तो आकाश में नित्य होती रहती है। उन्ही ग्रहो में अच्छे आदमी अच्छे कर्म करते हैं, बुरे आदमी बुरे।

ग्रहो की शान्ति तो ठग विद्या है। ज्योतिषियो ने लोगो से दान-दक्षिणा लेने के लिये मनमानी बात गढ ली है। यदि शनिश्चर नक्षत्र तुमसे नाराज हैं तो पंडित जी को दक्षिणा देकर कैसे प्रसन्न होगा अथवा क्या पडित जी शनिश्चर के एजेन्ट या वकील हैं? या शनिश्चर के कोई रिश्तेदार हैं? हमको तो यही दीखता है कि पण्डित जी ही स्वय शनिश्चर हैं। जो पुरश्चरण की सामग्री है वह पडित जी के ही घर रह जाती है। शनिश्चर तक नहीं पहुचती।

सूर्यादास—अजी, देखिये। लडके लडकी का विवाह भी जन्म पत्र देखकर होता है। ग्रह मिलन से वैवाहिक जीवन सुख से बीतता है।

बुद्धिप्रकाश—बिल्कुल झूठ। केवल थोड मूल हिन्दुओं को छोड ससार भर के लोग बिना जन्म पत्र मिलाये विवाह करते हैं और सुखी रहते हैं। ग्रहो को मिलाकर विवाह होने पर लाखो बाल विधवायें हो जाती हैं। लाखो रडुए (विधुर) हो जाते हैं।

सूर्यादास—भाग्य तो कर्मो से बनता है।

बुद्धिप्रकाश—हम भी यही कहते हैं, भाग्य अपने कर्मो से बनता है। ग्रहो के प्रभाव से नही। एक ही मुहूर्त मे लाखो बच्चे उत्पन्न होते हैं। कोई राजा होता है कोई आयु भर रक रहता है। ग्रह न कुछ बिगाड सकते हैं ना ही बना सकते हैं। अब भाग्य पर ही निर्भर होना है तो नक्षत्रो और ग्रहो का मुह ताकना मूर्खता है और जो मूर्खों को ठगते हैं वह ठग हैं। यदि ज्योतिष का फल ठीक होता और ग्रहों की पूजा का कुछ लाभ होता तो ज्योतिषी लोग स्वय सबसे सुखी होते। उनके घर मे कुसमय मृत्यु को पुरश्चरण द्वारा वे टाल सकते।

सूर्यादास—ज्योतिषी पहले से ही बता देते हैं कि अमुक दिन ग्रहण पडेगा और यह सच होता है।

बुद्धिप्रकाश—यह तो ग्रहों की चाल का हिसाब है। भूगोल के साधारण विद्यार्थी भी जानते हैं कि पृथ्वी अपनी कीली पर भी घूमती है और सूर्य के चारों ओर भी, और चाँद पृथ्वी के चारो ओर घूमता है। जिस रात को पृथ्वी सूर्य और चाद के बीच इस प्रकार आ जाती हैं कि किरणो को पृथ्वी बीच मे रोक लेती है तो 'चन्द्र ग्रहण' पड जाता है। और जिस दिन चाद पृथ्वी और सूर्य के इस प्रकार बीच में आ जाता है कि सूर्य की किरणो को चाद बीच में रोक लेता है और पृथ्वी तक नही जाने देता उस दिन को 'सूर्य ग्रहण' पड जाता है। स्कूलों में इस प्रकार के लोगो के चित्र दिखाये जाते हैं जिससे ठीक बात समझ मे आ जाती है।

सूर्यादास—तो क्या राहु और केतु राक्षसो के आक्रमण की बात झूठी है?

बुद्धिप्रकाश—पडित जी, आप विद्वान होकर ऐसी अनर्गल बातो पर विश्वास करते हैं! यदि राहु और केतु कोई वास्तविक राक्षस होते तो कोई बताये कि वह कहा रहते हैं? क्या करते हैं? अमावस्या और पूर्णिमा को ही क्यो आक्रमण करते हैं? और आपके गगा नहाने या मेहतरों को दान देने से उनका प्रभाव कैसे मिट जाता है?

सूर्यादास—देखिये अभी कुछ दिन हुये नक्षत्र में गडबड हो गई थी। काशी के पडितों ने बहुत से पुरश्चरण कराये। सारे भारतवर्ष मे कोलाहल मच गया। बड बडे यज्ञ किये गये।

बुद्धिप्रकाश—यह कोलाहल तो केवल मूर्ख हिन्दुओ के डराने और उनको लूटने के लिये था। आप जैसे डर गये और ज्योतिषियो की ठगाई से देश भर के लोगो में चिन्ता की लहर फैल गई। बुद्धिमानों ने कुछ भी चिन्ता नही की, न कुछ कोलाहल हुआ। यही तो सितारो की गुलामी है। बच्चा पैदा होने से लगाकर मृत्यु तक ज्योतिषी उसका तो पीछा नही छोडते। नाम रखेंगे तो सितारो को पूछ कर, मुडन करेंगे तो सितारो को पूछ कर विवाह करेंगे तो सितारा को पूछ कर —

अजुम शनास को भी खलल है दिमाग का।
पूछो अगर जमीं की कहे आस्मा की बात॥

सूर्यादास—बड बडे प्रोफेसर, जज, वकील भी तो ग्रह दिखाते हैं और जन्म-पत्र बनवाते हैं।

बुद्धिप्रकाश—यह न पूछिये। इसी को तो भेड चाल कहते हैं। यह लोग स्कूलो में कुछ और पढते हैं और घर मे आकर मूर्ख बन जाते हैं। वह गणित, ज्योतिष आदि सभी विद्याओ को पढते हैं, परन्तु अन्ध विश्वास उनका पीछा नही छोडता। ज्योतिषी लोग उनकी स्त्रियो को बहकाया करते हैं। जिन देशो में नक्षत्रो पर विश्वास नही किया जाता वहाँ तो ज्योतिषियो की कुछ नही चलती। क्या कोई बुद्धिमान सेनापति ज्योतिषियों से मुहूर्त दिखाकर लडाई करेगा? क्या कोई बुद्धिमान वकील ज्योतिषियों से पूछ कर मुकदमे लडेगा? क्या कोई बुद्धिमान व्यापारी ज्योतिषियो से पूछ कर व्यापार करेगा? क्या कोई कालिज का विद्यार्थी परीक्षा मे उत्तीर्ण होने के लिये ज्योतिषियों और जन्म पत्र पर भरोसा करेगा? पण्डित जी महाराज! आप लोगों के प्रसाद से भारतवर्ष सैकडो वर्षों से भूत, चुडैलो और सितारो का गुलाम रह चुका। अब दया कीजिए। महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, प० जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य देश भक्तों के आत्म-त्याग से देश स्वतन्त्र हुआ है, ज्योतिषियो की करतूतो से नहीं। अब भी यदि देश को शत्रुओ के हाथ से बचा सकेगे तो चतुर नीतिज्ञ और वीर सेनाध्यक्ष ही बचा सकेंगे। ज्योतिषियो के पोथी पत्रा धरे रह जायेंगे नक्षत्र बिचारे तो हमसे कुछ कहते-सुनते नही। वह क्या कहे? वह तो जड हैं। चेतन नहीं। हमको डर ज्योतिषियों का है जो बिना वकालतनामे के ग्रहो के वकील बने हुए हैं। कैसी हँसी की बात है कि शनिश्चर को तेल देने से शनिश्चर का प्रकोप दूर हो जाय।

देहात मे ज्योतिषियो की चाक चल जाती है। अत हमारे ग्रामों के लोगों को भी चाहिए कि इनके पास न फटकें। और एक नियम को दृढ गाठ बाधकर याद कर लें कि अच्छे कर्मों का अवश्य अच्छा फल मिलेगा और बुरे कर्मों का बुरा। झूठ, मक्कारी, चोरी जारी, इनसे बचिए और ग्रहो के चक्कर मे मत पडिए। ★

वैदिक-दर्शन

[ले०—श्री रामावतार आर्य, आर्यसमाज गाजीपुर]

अभी थोड़े दिन हुए 'आर्योदय' के वेदांक में मैंने आर्य जगत् के प्रसिद्ध विचारक पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय का एक लेख पढ़ा। वह अंग्रेजी में है। उसका शीर्षक है 'वैदिक फिलासफी' यह लेख अत्यन्त गम्भीर, विचारोत्तेजक, और कई नयी बातों पर प्रकाश डालता है। इसे आद्योपान्त पढ़ जाने पर यह बात अच्छी प्रकार समझ में आ जाती है कि वैदिक दर्शन है क्या। क्या ही अच्छा होता अगर ट्रैक्ट विभाग चौक इसे हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रकाशित करवा देता।

लेख लम्बा है किन्तु ठोस और मनन करने योग्य है। पाठकों के मार्गदर्शन के लिये कुछ बातें लिखना चाहता हूं।

अपने इस लेख में आदरणीय पं० जी ने बताया है कि साधारण पाठक वैदिक दर्शन का अर्थ वेदान्त समझता है, वेदान्त का अर्थ अद्वैतवाद तथा अद्वैतवाद में खास करके शंकराचार्य के अद्वैतवाद को।

अब हम वेदान्त (वेद+अन्त) पर विचार करते हैं तो हमें पहले वेदादि (वेद+आदि) पर विचार करना चाहिए। आदि से अन्त की ओर चलते हैं। शंकराचार्य जगत् को मिथ्या बताते हैं। और इसको उपमा स्वप्न से देते हैं। जगत् स्वप्नवत् मिथ्या है। अब देखना है कि क्या संसार सचमुच माया है? मिथ्या? वेद का पहला मन्त्र है—अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्विजम्। ऋ० १।१।१ इसमें माया कहां। इसी प्रकार अन्य मन्त्रों को पढ़ जाइये। कहीं माया नहीं मिलेगा।

शंकराचार्य ने जगत् को उपमा स्वप्न से दी है। जगत् स्वप्नवत् मिथ्या है। इस पर थोड़ा विचार करना चाहिए। स्वप्न में हम जो कुछ देखते हैं, वह जाग्रतावस्था का प्रतिबिम्ब होता है। अगर जाग्रत अवस्था में देखी हुई चीजें सत्य हैं तो स्वप्न में वह मिथ्या कैसे हो सकती हैं। मान लीजिये हमने बगीचे में एक सुगन्धित फूल देखा। वह हमें पसंद आ गया और हमने उसका तस्वीर खींच ली। उस तस्वीर को देखकर कोई कहे कि यह तस्वीर मिथ्या है क्योंकि इस फूल से सुगन्ध नहीं आती। इसका मतलब यह हुआ कि वह तस्वीर और वास्तविक फूल के अन्तर को नहीं समझ सका। अगर बाग का फूल मिथ्या है तो तस्वीर भी मिथ्या हो सकती है। इसी प्रकार स्वप्न की बात है। हमारा मन जागते समय सब चीजों का फोटो ले लेता है। मन स्वप्नावस्था में उन्हीं फिल्मों को दिखलाता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जाग्रतावस्था की देखी हुई चीजें मूल हैं और स्वप्नावस्था की प्रतिलिपि। प्रतिलिपि को मूल (ओरिजनल) से मिलाकर ठीक करते हैं न कि मूल को प्रतिलिपि (डुपलीकेट) से। इस प्रकार शंकराचार्य का 'जगत् स्वप्नवत् मिथ्या है' सिद्धान्त उसी प्रकार है जैसे कोई महात्मा गांधी की तस्वीर को देख कर कहे कि यह तस्वीर नहीं बोलती, इसलिये गांधी जी भी नहीं बोलते थे। चूंकि तस्वीर मिथ्या है इसलिये गांधी जी भी मिथ्या थे। शंकराचार्य का अद्वैतवाद जिस आधार पर खड़ा है, वह आधार ही मिथ्या है। इसलिये उनका वेदान्त वैदिक दर्शन नहीं है। अब प्रश्न है—वैदिक दर्शन क्या है?

वैदिक दर्शन त्रैतवाद का प्रतिपादन करता है। यह बताता है कि संसार के अन्दर तीन अनादि पदार्थ हैं। जीव, प्रकृति और परमात्मा। ऋग्वेद ने इसे बड़े सुन्दर ढंग से समझाया है।

> द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं
> वृक्षं परिषस्वजाते।
> तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो
> अभिचाकशीति ॥
> ऋग्वेद १।१६४।२०

सायणाचार्य ने उसकी व्याख्या करते हुए लिखा है—'अत्र लौकिक पक्षिद्वय दृष्टान्तेन देकर जीवपरमात्मानौ स्तूयते।" अर्थात् इसमें दो लौकिक पक्षियों का दृष्टान्त देकर जीव और परमात्मा इन दोनों की स्तुति की गयी है।

इस मन्त्र के भाव को समझने की कोशिश कीजिये। इसमें उपमा के माध्यम से त्रैतवाद का सुन्दर चित्र खींचा गया है। विचार कीजिये। एक वृक्ष है। उस पर दो पक्षी बैठे हुए हैं। एक पक्षी वृक्ष के फलों को खाता है और दूसरा फलों को न खाता हुआ उनकी अध्यक्षता करता है। वह व्यवस्थापक है।

इसमें उपमालंकार है। दो पक्षी आत्मा और परमात्मा हैं। शरीर वृक्ष है। जीव को देखने के लिये आंख चाहिए, सुनने के लिये कान चाहिये, बोलने के लिये मुंह चाहिये, काम करने के लिये हाथ चाहिये। परमात्मा ने इन सब चीजों को बनाया है। किसके लिये? जीवों के लिये। (व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः यजु० ४०।८) परमात्मा को बोलने, सुनने और काम करने के लिये हमारे मुंह, कान और हाथों की सहायता नहीं लेना। तुलसी बाबा ने ठीक है—

> बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।
> बिनु कर कर्म करै विधि नाना ॥

इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि यह सृष्टि जीव केन्द्रित है। ईश्वर केन्द्रित नहीं। जीव को केन्द्र मानकर सृष्टि की रचना की गयी है। ईश्वर को केन्द्र मानकर नहीं। ईश्वर सृष्टिकर्ता है। लेकिन यह सृष्टि उसने अपने लिये नहीं बनायी है। शाश्वत रहने वाले जीवों के लिये बनायी है। वेदों में प्रार्थना मंत्र

भी इसी प्रकार के हैं कि हम अपना विकास करें, ऊपर उठें और मोक्ष प्राप्त करें। ऋग्वेद के अन्त में कहा भी है—यथा वः सुसहासति। अर्थात् तुम लोग ऐसा प्रयास करो जिससे तुम लोगों का सहयोग एक दूसरे को प्राप्त हो सके। इसमें माया कहां है?

वेदों में जीव को अजर, अमर कहा गया है। शरीर नष्ट होने वाला है। नश्वर है। वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्। यजु० ४० १५ अर्थात् यह जीवात्मा अलौकिक और अमर है और यह शरीर भस्म होने वाला है। जब कपड़ा फट जाता है, काम का नहीं रहता तो दूसरा नया कपड़ा पहन लेते हैं। इसी प्रकार यह शरीर जब काम योग्य नहीं रहता तो ईश्वर जीव के कर्मों के अनुसार दूसरा शरीर दे देता है। इस प्रकार वैदिक दर्शन में आवागमन का सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण है। जीव का आना और जाना ईश्वर की इच्छा पर निर्भर नहीं है बल्कि जीव के कर्मों पर निर्भर है। जीव जैसा कर्म करेगा ईश्वर उसी के अनुसार उसे दूसरा जन्म देगा। इस प्रकार वैदिक दर्शन में न तो कहीं शाश्वत स्वर्ग है और न नर्क। जैसा मनुष्य कर्म करता है उसी के अनुसार उसे सुख दुख मिलता है। जीव के लिये सुख का दरवाजा सदा खुला रहता है। इसी को धार्मिक ग्रन्थों ने मृत्युञ्जय (मृत्यु पर विजय) के नाम से पुकारा है।

जो मनुष्य वैदिक दर्शन को सम्यक् प्रकार समझ जाता है उसे मृत्यु का भय नहीं रहता। वह मृत्यु से डरता नहीं। वह समझता है कि मृत्यु केवल एक परिवर्तन है। इसके बाद केवल दुःख ही नहीं मिलता। इससे अधिक सुख-शान्ति और आनन्द हमारे कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म में मिल सकता है। इसलिये वह मृत्यु से डरता नहीं बल्कि उसका स्वागत करता है।

जीव सृष्टि निर्माण करने में सहायक होते हैं। आप अपनी शहर की ओर नजर दौड़ाइये, यह बात स्पष्ट हो जायेगी। जो आप महल, पार्क, बगीचे, स्टेशन आदि देखते हैं, इनको ईश्वर ने नहीं बनाया है। इनको जीवों ने बनाया है। ईश्वर ने सामान इकट्ठा कर दिया है। बनाने का ज्ञान भी दे दिया है। अब जीव उसे बनावें। मधुमक्खियां शहद को छत्ता बनाती है। पक्षियां घोंसले बनाती हैं। इस प्रकार ईश्वर की व्यवस्था में जीवों का स्पष्ट हाथ है।

जीव के विकास के लिये ही वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) और आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास) की नींव डाली गयी है। इसका उद्देश्य ही यह था कि जीवात्मा अधिक से अधिक अपना विकास कर सके।

साथ ही साथ वैदिक दर्शन एक बहुत बड़ी बात की ओर संकेत करता है। वह है त्याग। वृक्ष पर बैठे दो पक्षियों में से एक त्याग तथा दूसरा भोग करता है। भोग करने वाले जीव की अपेक्षा त्याग करने वाला ईश्वर महान् है। यही बात इस संसार में भी है। जो जितना अधिक त्याग करता है वह उतना ही अधिक महान् है। खाने वाले बच्चों की अपेक्षा खिलाने वाला पिता महान् है। शिष्यों की अपेक्षा गुरु महान् है। रोगी की अपेक्षा डाक्टर महान् है जो बिना किसी प्रलोभन के गरीब रोगियों को स्वस्थ बना देता है। इसलिये कि वह त्याग करता है। जो जितना अधिक त्याग करता है वह ईश्वर के उतने ही नजदीक पहुंचता है। क्योंकि ईश्वर निस्वार्थी है। बिना किसी स्वार्थ के जीवों की भलाई करता है। इसलिये ईश्वर जैसा बनने के लिये हमें निस्वार्थी बनना चाहिये। त्याग हमें

चन्द्र और सूर्य्य ग्रहण

[ले०—वानप्रस्थी सुवर्णसिंह 'आर्य' सिद्धान्त मनीषी नगोला जर्वा अलीगढ]

[सम्प्रति पुराणो मे ग्रहण का कारण बड़ा ही अद्भुत लिखा है। यथा जिस समय विष्णु-भगवान मोहिनी का रूप धारण कर अमृत बांट रहे थे वहा राहु नामक एक राक्षस देवता का रूप धारण कर आ बैठा। जब विष्णु भगवान ने उसको अमृत बांटा वह उसी समय पी गया। सूर्य और चन्द्रमा ने उसकी चुगली खाई कि यह राक्षस है। विष्णु भगवान ने क्रोध मे आकर चक्र से राहु का सिर काट डाला। परन्तु वह मरा नही, क्योंकि वह अमृत पी चुका था, इसी कारण चन्द्र और सूर्य्य को ग्रहा पाता है, वही ग्रस लेता है, परन्तु वह उसी गर्दन के छिद्र मे होकर निकल जाते हैं। यह पुराणो के अनुसार ग्रहण का संक्षिप्त वृत्तान्त है। इस कारण भ्रम मे पड़कर बहुसंख्यक-जन साम्प्रतिक कृत्रिम तीर्थों मे मारे-मारे फिरते है। कुरुक्षेत्र, उज्जैन, आदि-आदि तीर्थों मे कई-कई लाख मनुष्यादि एकत्रित हो जाते हैं। अनभिज्ञता के कारण अपनी अर्द्धाङ्गि-नियो को भी ग्रहण के अवसर पर दान कर आते हैं, इस अज्ञानता और बेसमझी का भी ठिकाना है। पुराणो की कपोल-कल्पित बातें प्रकाश के समय मे कदापि नहीं ठहर सकती। आज इतनी जागृति के पश्चात् भी हमारे देश-वासियो मे ग्रहण को एक धार्मिक रूढि का रूप प्राप्त है। अपने बहुमूल्य व्रतो का लेश भी ध्यान नही रहा? नितान्त ही भूल बैठे। देवियो के क्या व्रत थे। असंख्य जनसमूह के समक्ष यह उक्त कृत्य होना कितना निन्दनीय है अपने कर्तव्यो मे इस प्रकार की अभव्य मान्यताओ को समाप्त करने की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। दान देने की वास्तविकता हो। किन-किन धन दौलत का दान होता है किन-किन का नही? इत्यादि।

वेदों और ज्योतिष के ग्रन्थों मे ग्रहण का असली कारण स्पष्ट लिखा है कि जिस प्रकार पृथ्वी सूर्य्य की परिक्रमा करती है, उसी प्रकार चन्द्रमा पृथिवी की परिक्रमा करता है। इनमे से सूर्य्य बड़ा भारी प्रकाश बिन्दु है। जिसके गोले का व्यास ८,६५,७८० मील है। पृथ्वी और चन्द्रमा में प्रकाश नहीं है, ये सूर्य्य के प्रकाश से ही प्रकाशित होते हैं। पृथ्वी के गोले का व्यास ७९२६ मील है। चन्द्रमा के गोले का व्यास २१५२ मील है। सूर्य्य की परिक्रमा ३६५ दिन ६ घन्टे के लगभग में करता है और पृथ्वी की परिक्रमा चन्द्रमा २७ दिन ७ घन्टे ४३ मिनट में करता है, इन दोनों की गतियो के कारण चन्द्रमा सूर्य्य के पास २९ दिन १२ घन्टे ४४ मिनट में पहुंचता है। इसी समय को चन्द्रमास कहते है। जिस दिन सूर्य्य और चन्द्रमा एक दिशा म होता है। उसको अमावस्या कहते हैं—

जिस दिन सूर्य्य और पृथ्वी के बीच मे चन्द्रमा रहता है, इसके १४ दिन १८ घन्टे के पश्चात् चन्द्रमा सूर्य्य के विपरीत दिशा मे पहुंच जाता है अर्थात् पृथ्वी बीच मे हो जाती है। चन्द्रमा एक ओर हो जाता है और सूर्य्य दूसरी ओर इस दिन को पूर्णमासी कहते हैं। इस दिन चन्द्रमा पूरा गोल दीख पड़ता है। क्योंकि चन्द्रमा का आधा भाग सूर्य के सम्मुख होता है, वही पृथ्वी निवासियो के सामने भी होता है। जिस दिन सूर्य्य पश्चिम मे अस्त होता है। तब चन्द्रमा पूर्व मे उदय होता रहता है। इसलिए यह सहज ही जाना जा सकता है कि चन्द्रमा और सूर्य्य एक दूसरे के विरुद्ध दिशा मे है। अमावस्या के दिन चन्द्रमा सूर्य्य की ही दिशा मे रहता है, इसलिए वह सूर्य के प्राय साथ ही साथ उदय

विज्ञान वार्ता

और अस्त होता है। हम लोगों को नहीं देख पड़ता। इसलिए एक दिन आगे-पीछे भी चन्द्रमा अदृश्य रहता है। शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की कलायें जिस क्रम से बढ़ती हैं, कृष्ण पक्ष में उसी क्रम से घटती भी हैं। घूमते हुए जब सूर्य्य और पृथ्वी तथा चन्द्रमा तीनो एक सीध म आ जाते हैं तब ग्रहण पड़ता है। चन्द्र-ग्रहण का कारण समझने के लिए यह जानना आवश्यक है पूर्व भी इस पर प्रकाश पड़ चुका है कि (पृथ्वी के समान) चन्द्रमा (भी) सूर्य्य से प्रकाशित होता है। यथा—"दिविसोमो अधिश्रत" अथर्व का १४ का० १ म० १। चन्द्रलोक सूर्य्य से आश्रित होकर प्रकाशित होता है।

और आगे भी देखिये—

निळमयस्वस्येन्दोर्भाभिर्मीनोसित
मदस्य धर्म।
स्वच्छाय मास्यदसित कुम्भस्ये
वात पस्वस्य ॥१॥
त्यकिल मलसिनिर वेदोचित
यो मूर्छितास्य मोनेषम।
वयमन्ति दर्पणोदर विहिता
इव मन्दिर स्वाना ॥२॥
। बृहत्संहिताम्।

—धूप मे रक्खे हुए घड़े के समान चन्द्रमा का आधा भाग सूर्य्य की किरणो से प्रकाशित हो जाता है और दूसरा आधा अपनी छाया से अन्धकार मे रहता है। सूर्य्य की किरणें चन्द्रमा पर (जिस के बहुत से भाग मे जल है) पड़कर प्रतिबिम्ब हो लौट जाती है और रात्रि के अन्धकार को नाश करती है जैसे धूप में रक्खे हुए दर्पण पर सूर्य्य की किरणें पड़कर मन्दिर के भीतर चली जाती हैं। ऐसा ही सि० शि० मे लिखा है—

तराणे किराणी मज्जा दश पिण्डा
दिन रदिशिचन्द्रिश्चन्द्रिकाभिश्च करसित
दिनरदिशवाला कुन्तलस्यामलमौछदवनिज
मूर्तिच्छय यैशस्य ॥

—अ० चन्द्रलोक का सूर्य्य की ओर वाला भाग उसकी किरणो के सम्पर्क से प्रकाशित होकर चमकता है। दूसरी ओर वाला भाग धूप में रक्खे हुए घड़े के सदृश अपनी मूर्ति की छाया से अन्ध-कार मे रहता है। इसलिये जब सूर्य्य और चन्द्रमा के बीच मे पृथ्वी आ जाती है, तो सूर्य्य का प्रकाश चन्द्रमा मे जाने से रुक जाता है अर्थात् चन्द्रमा म अन्ध-कार आने लगता है।

जितने भाग में अन्धकार आ जाता है, उतना भाग कटता सा दिखाई देता है जिसको चन्द्रग्रहण कहते हैं। ज्यो-ज्यो पृथ्वी और सूर्य्य की सीध से निकलता जाता है, उसमे सूर्य्य की किरणें पहुंचने लगती हैं। इसी को उग्रहण या मोक्ष कहते हैं, इसके विरुद्ध जब पृथ्वी और सूर्य्य के बीच मे चन्द्रमा आ जाता है, तब सूर्य्य चन्द्रमा की ओट मे आने लगता है और जितना भाग चन्द्रमा की ओट मे आ जाता है, उतना भाग कटता सा दिखाई देता है, इसी को सूर्य्य ग्रहण कहते हैं। जब पूरा सूर्य्य ग्रहण पड़ता है, तब पृथ्वी पर प्रकाश कम हो जाता है। यह चन्द्र और सूर्य्य ग्रहण का ठीक कारण ज्योतिष के ग्रन्थो मे लिखा है।

और आगे दृष्टि डालिये—

"छादयति शशि सूर्य्यं शशि न च महती भूच्छाया।" —आर्यभट्ट

सूर्य्य ग्रहण में चन्द्रमा सूर्य्य को ढक लेता है और चन्द्र ग्रहण में पृथ्वी की छाया चन्द्रमा को ढक लेती है। सूर्य्य सिद्धान्त भी यही बतलाता है—

छादको भास्करस्येन्दुरध
स्थोधन वद्भवेते।
भूच्छाया प्राङमुखश्चन्द्रो
विशन्यस्यस्यभवेदसौ ॥
—सूर्य्य सिद्धान्त

सूर्य ग्रहण मे चन्द्रमा बादल के सदृश सूर्य्य को ढाप लेता है, चन्द्र ग्रहण में चन्द्रमा पूर्व की ओर जाता हुआ, पृथ्वी की छाया म आ जाता है। आगे भी—

पूर्वां विमुष्मा गच्छन कुच्छायान्त
पर्न शशि विशति तेन प्राक मग्रण
पश्चात मोक्षाऽस्य निस्सारत।

—जब चन्द्रमा पूर्व की ओर जाता हुआ भूमि की छाया में चला जाता है तब ग्रहण पड़ता है। जब छाया से निकल आता है, तब मोक्ष हो जाता है।

ग्रहलघव में भी कहा है—

च्छादयत्यर्क विन्दुर्विध भूमिभा।

—चन्द्रग्रहण में भूमि की छाया चन्द्रमा को और सूर्य्य ग्रहण में चन्द्रमा सूर्य्य को ढक लेता है। कवि शिरोमणि कालीदास भी इस विषय में अपनी सम्मति प्रदान करते हैं।

छायादि भू शशिनो मल्नोतरो
पिता शुद्धिमत प्रजामिपि।
रघुवंशे सर्ग १४ श० ४०

चन्द्र ग्रहण में पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है, परन्तु लोग उसको शुद्ध चन्द्रमा में कलङ्क लगाते है। (जो सर्वथा अयुक्त है)

—ग्रहण के विषय में एक और विशेष बात ध्यान में रखने की है, वह इस प्रकार है कि ग्रहण होते समय सूर्य्य अथवा चन्द्रमा का वृत्ताकार भाग ही क्यो कटता है? अर्थात् ग्रसित होता है यदि पुराणो के अनुसार राहु द्वारा ग्रहण माना जावे तो गोल नहीं कटना चाहिये क्योंकि जब कोई किसी पर शस्त्र प्रहार करता है तो वह नाप-तोलकर अथवा परि-काल से नही काटता प्रत्युत यथावसर प्रहार करता है। यहा ज्योतिष ही प्रमाण है। क्योंकि सूर्य आदि ग्रह गोल है, इसलिये गोल पर गोल का प्रकाश छाया गोल ही पड़ती है। तथा गोल के बीच में आ जाने से गोल ही भाग छिपता है।

ग्रहण के विषय मे सैकड़ो प्रमाण सद्ग्रन्थों में भरे पड़े हैं। 'चन्द्र' और 'सूर्यग्रहण" पृथ्वी और चन्द्रमा की छाया से गतियो के (शास्त्रो के अनुसार) साथ पड़ती हैं। लेख का अधिक विस्तार होने के भय से समाप्त करना पड़ रहा है।

पुराणो की कपोल कल्पित बातें अवश्य त्यागनी होंगी। केवल वेद का

चेकोस्लोवाकिया में भारत संबंधी अध्ययन

[ले०—वात्सलव म कोरनी]

भारतीय साहित्य और संस्कृति मे चेकोस्लोवाक विद्वान सदियो से दिलचस्पी लेत रहे हैं औ चेक भाषा की अनेक प्राचीन कृतियो मे भारतीय लोक कथाओ और पौराणिक कहानियो का हवाला मिलता है। १८वी और १९वी शताब्दी मे यह दिलचस्पी शिखर पर पहुच गई और जमन भाषा मे वदो का अनुवाद करने वाले पहले विद्वान प्राग के चाल्स विश्वविद्यालय के ही अध्यापक थ।

इस लख का उद्देश्य पिछले काय का सिंहावलोकन करना नही है। फिर भी यह याद दिलाना आवश्यक समझता हू कि चैकोस्लोवाकिया के एक भारत विद डा० विसस लेसनी भारतीय विश्व विद्यालयो मे विशेषकर दिल्ली और रवीन्द्रनाथ के विश्वभारती विश्वविद्यालयो मे अध्यापन काय कर चुके हैं। उपरोक्त चाल्स विश्वविद्यालय के एक और प्राध्यापक डा० मौरित्ज वितर नित्ज की पुस्तक भारतीय व डमय का इतिहास आज भी भारतीय विश्व विद्यालयो मे पाठय पुस्तक है।

वतमान स्थिति

चकि म यह जानना चाहता था कि इस महत्वपूण क्षेत्र मे आजकल क्या काम हो रहा है इसलिए मने प्राग क प्राच्य विद्या सस्थान मे भारत शास्त्र विभाग क प्रधान डा० [illegible] से भट करन आवश्यक समझा।

डा० जवबिनल ने मुझ बताया कि उनके प्राच्य विद्या सस्थान के भारत विभाग मे इस समय १२ विद्वान काम कर रहे हैं जिनमे डा० [illegible] डा० मारेक [illegible] डा० कनान कोवा जसे विद्वान हैं ध्यान रहे कि इस सस्थान [illegible] विश्वविद्यालय [illegible] अध्ययन होता है [illegible] प्रारम [illegible] आदि अनेक विद्वान है।

[illegible] अध्ययन [illegible] अध्यापन [illegible] काम करते [illegible] एक दल [illegible] यह दल [illegible] हिन्दी [illegible] बगला तमिल और मलयालम भाषाओ का अध्ययन कर रहा है। [illegible] शास्त्री [illegible] भारत म

साहित्य के विकास का वैज्ञानिक और तथ्यगत अध्ययन प्रस्तुत करते हैं।

इस सस्थान मे काम मुख्यत व्याख्यानमालाओ क द्वारा होता है और अन्य शिक्षा सस्थाओ से सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं। समय समय पर भारतीय विद्वान यहा बुलाये जाते हैं। उदाहरण के लिये हाल में प्रसिद्ध विद्वान डा० जगदीशचन्द जैन ने इस सस्थान के अतिरिक्त प्राग ब्रनो और ब्रातिस्लावा मे अनेक स्थानो पर भारतीय साहित्य और सस्कृति पर व्याख्यान दिय।

महत्वपूर्ण कृतित्व

मने डा० जवबितल से हाल को महत्वपूण कृतियो के विषय मे पूछा। उन्होने बताया कि भारत सम्बन्धी हाल क प्रकाशन मे एक अत्यन्त महत्वपूण कृति है देवता ब्राह्मण और जनता जो चेक भाषा मे १९६४ म प्रकाशित हुई थी। इसमे अनक विद्वानो के लेख है जिनम हिंदू धम दशन और प्राचीन भारतीय संस्कृति पर गहन प्रकाश [illegible] है

[illegible] कृति है—'[illegible] धर्माविद और देश भक्त' जिसके लेखक है श्री [illegible] बिलान। इस पुस्तक मे भारतीय जनता क निर्माता को प्राचीनकाल से लेकर महात्मा गाधी और नेहरू जी तक क जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। अपन ढग की यह अनूठी पुस्तक है।

डा० जव [illegible] ने अपने एक सहयोगी डा० वेसेवलके कामकी सराहना की। डा० जवेबिल इन दिनो अमेरिका मे व्याख्यान यात्रा पर गय हुए हैं। वह तमिल के विद्वान हैं और तमिल के प्राचीन साहित्य से अनक कृतियो के अनुवाद चेक भाषा म प्रस्तुत कर चुके है।

डा० जवेबिल स्वय बगला भाषा के ज्ञाता हैं। मैंने उनके अपने काम के विषय मे पूछा। उन्होन बताया कि वे शीघ्र भारत जानेवाले हैं— वेने और लने दानो के उद्देश्य स। वे चाहते है कि अपनी बगला पाठय पुस्तक का विस्तारित रूप तैयार कर। यह पुस्तक न सिर्फ चकोस्लोवाकिया के बल्कि अन्य कई देशो के विश्वविद्यालयो क काम म आ रही है।

तुलनात्मक अध्ययन

डा० जवेबिल के स्वय अपने काम का महत्व यह है कि उन्होंने भारतीय साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन पेश किया है। अब तक भारतीय साहित्य की तुलना पश्चिम के, विशेषकर अंग्रेजी के साहित्य स की जाती थी। डा०जवबिल पहले व्यक्ति है जो उसकी तुलना एशिया के अन्य देशो के साहित्य से करने मे सफल हुए है। वे स्वय कई भाषाए जानते है और साथ ही इस काय के लिये जापान चीन और ईरान के साहित्यकारो से विचार विनिमय करते रहे है।

डा० जवबिल पाच बार भारत यात्रा कर चुके है और इस समय कलकत्ता नगर पर एक पुस्तक तैयार कर रहे है। उनकी कृतियो म स एक अत्यत महत्वपूर्ण है [illegible] थ य जो ९८ म कलकत्ता स प्रका[illegible]शित हुई थी। इस कृति से वे विवाद हल करने मे सफलता मिली है जो इस विषय पर भारतीय विद्वानो मे बराबर बने रहे हैं। उनका किया हुआ रवीन्द्र नाथ के नाकी का अनुवाद अभी ही चेकोस्लोवाकिया की दुकानो पर पहुचा है।

डा० जवेबिल की इस भट से चकोस्लोवाकिया विद्वानो के काय की झलक मिलती है। जहां तक अनुवादों का प्रश्न है, हर महीने कोई न कोइ नई पुस्तक चेक भाषा म प्रकाशित होती है। गांधी नेहरू राधाकृष्णन रवीन्द्रनाथ भारती प्रमचन्द्र मुल्कराज आनन्द भवानी भट्टाचाय आदि की कृतिया प्रकाशित होते ही हाथोहाथ बिक जाती हैं। स्पष्ट ही चैकोस्लोवाक विद्वान भारत और चेकोस्लोवाकिया के सास्कृतिक सम्बन्धो का सुदृढ़ करने के लिये भरसक प्रयत्न कर रह है।

●

सांस्कृतिक समस्याएं

एक प्रमाण देकर इस लख [illegible] का समाप्त किया जाता है। यथा—

मव सूर स्वधानुस्त मगावि यह सुग। अन्तमस्तप द्र विद नसमा अवे अग्र कृवत॥ ऋग्वद स्वाध्वलायन २/०

●

अब क्यों चीखते हो ?

[श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक वीर प्रताप जालन्धर]

पंजाबी सूबा बन गया है और अकालियों की मनोकामना पूरी हो गई। वह पंजाब के टुकड़े कराना चाहते थे और उन्होंने करवा लिये। अब इसकी बजाये कि वह खुश हो और बगल बजायें कि उनकी मनोकामना पूरी हुई है वह उलट चीख पुकार कर रहे हैं। उनके समाचार पत्रों को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि उनके घरों में शोक छाया हुआ है। इसीलिए कि अब उन्हें यह आभास होने लगा है कि उन्होंने कितनी बड़ी मूर्खता की है। एक बहुत शानदार सूबे का सत्यानाश करके रख दिया गया है और सूबे की जगह आठ जिलों की एक छोटी सी सूबी लेकर बैठ गये हैं। एक अयोग्य नेतृत्व पूरी कौम का कैसे सत्यानाश कर सकता है इसका अनुमान हम पंजाब के बटवारे से लगा सकते हैं। आज के पंजाब में सिखों के लिए किसी प्रकार की कठिनाई पैदा नहीं हो रही थी। उनकी भाषा इस राज्य की दो करोड़ जनता को पढ़नी पड़ती थी। सिख अफसर अमृतसर से लेकर दिल्ली तक और रोहतक से लेकर लाहौल स्पिति तक शासन किया करते थे। पंजाब हिन्दुओं का नहीं बल्कि सिखों का राज्य समझा जाता था। केन्द्रिय सरकार में पंजाब का प्रतिनिधित्व सदा सिख करते रहे हैं। कांग्रेस समिति में भी पंजाब का प्रतिनिधि सदा एक सिख ही लिया जाता रहा है। यह सब इस लिए कि क्रियात्मक रूप में पंजाब के सिखों का सूबा समझा जाता था, इसके अतिरिक्त सभी अन्य सूबों के द्वार सिखों के लिए खुले थे। इस देश का कौन सा सूबा है जहां सिख नहीं पहुंचे और वहां जाकर उन्होंने अपना कारोबार नहीं किया। तात्पर्य यह कि सिखों के लिए उन्नति और समृद्धि के मैदान खुले पड़े थे। वह जिधर भी बढ़ना चाहे बढ़ सकते थे परन्तु कुछ उन्मादी अकालियों के मस्तिष्क में यह विचार आया कि सिखों का भी एक राज्य होना चाहिए। १९४७ में मा० तारासिंह और ज्ञानी करतारसिंह ने यह नारा लगाया था कि हिन्दुओं को मिल गया हिन्दुस्तान, मुसलमानों को पाकिस्तान पर सिखों को क्या मिला। उस दिन से यह पंजाबी सूबा आन्दोलन शुरू हुआ, आज उसे भाषा का लिबास पहना कर चाहे किसी शक्ल में पेश करने का यत्न करें। परन्तु वास्तव में यह साम्प्रदायिक मांग थी और इसकी तह में यही भावना काम कर रही थी कि सिखों का भी एक सूबा होना चाहिए। सन्त फतहसिंह, मा० तारासिंह की अपेक्षा अधिक चालाक सिद्ध हुए हैं। उन्होंने समझा कि धर्म या सम्प्रदाय के नाम पर यदि एक सूबे की मांग की गई तो वह शायद स्वीकार न हो। क्या न भाषा की आड़ में यह मांग पेश की जाय। यदि यह मांग राष्ट्रवादी भावनाओं से प्रेरित होकर पेश की जाती तो उस स्थिति में सन्त फतहसिंह का पहला कर्तव्य यह था कि वह पंजाब के हिन्दुओं के साथ बैठ कर फैसला करते उन्हें सहमत करते और फिर यह मांग हिन्दुओं तथा सिखों दोनों की ओर से पेश की जाती। परन्तु उन्होंने ऐसा न किया और कर भी न सकते थे क्योंकि वास्तव में वह भी एक सिख राज्य के ही स्वप्न ले रहे हैं ताकि उसे चाहे कुछ दे दें। आखिर इसका कोई कारण तो होना चाहिये कि वह पंजाब के हिन्दुओं को विश्वास में लेने को क्यों तैयार नहीं। उनके इस रवैये का यह

प्रभाव अवश्य हुआ है कि हिन्दुओं ने इस मांग का विरोध किया और अन्त में यह केवल सिखों की मांग बन कर रह गई। हरियाणा के हिन्दुओं ने उनका साथ अवश्य दिया। परन्तु क्यों ? यह अब हमारे सामने है।

सन्त फतहसिंह समझते थे कि वह हरियाणा के हिन्दुओं को अपने उद्देश्य के लिए प्रयोग कर रहे हैं परन्तु आज उन्हें पता चला है, कि वास्तव में वह स्वयं प्रयुक्त होते रहे हैं यदि सन्त फतहसिंह पंजाब के हिन्दुओं को साथ लेकर चलते तो शायद पंजाबी सूबे का यह रूप न होता जो आज बन गया है और अकालियों को इतना निराश न होना पड़ता जितने कि वह आज हो रहे हैं। एक अकाली सहयोगी, दैनिक अजीत ने लिखा है कि जिस प्रकार छूत के रोगी को एक 'कुरिन्टीन में बन्द कर दिया जाता है उसी प्रकार सिखों को एक छोटे से सूबे में बन्द कर दिया गया है। यह तर्क बिल्कुल गलत है क्योंकि सिखों के लिए तो आज भी सभी राज्यों के द्वार खुले हैं। वह जहां भी चाहें जाकर आबाद हो सकते हैं और अपना कारोबार भी कर सकते हैं परन्तु पंजाबी सूबा सचमुच कुरिन्टीन' है जो इसके लिए स्वयं सिख ही उत्तरदायी हैं। हिन्दुओं ने पंजाबी सूबा बनाने में बिल्कुल कोई पार्ट अदा नहीं किया। वह तो शुरू से ही चिल्ला चिल्ला कर कह रहे थे कि इस पंजाब का जैसा भी है रहने दो परन्तु अकाली साम्प्रदायिकता उन्हें दम न लेने देती थी। पहले उन्होंने पंजाब के विभाजन का सिद्धान्त मनवाया। उसके बाद उन्होंने यत्न किया कि अधिक से अधिक क्षेत्र पंजाबी सूबे में शामिल हो सकें परन्तु इसमें वह सफल न हुए। हो भी न सकते थे। जब वह इस संघर्ष में हिन्दुओं को साथ लेने को तैयार न थे और न ही उनकी भावनाओं का सम्मान करने को तैयार थे तो उनसे किसी प्रकार के सहयोग की आशा कैसे रख सकते थे। पंजाबी सूबा जिसे अब 'कुरिन्टीन' का नाम दिया जा रहा है, हिन्दुओं की इच्छा के विरुद्ध बना है। इसके लिए उत्तरदायी हैं तो सन्त फतहसिंह और मा० तारासिंह, स० स्वर्णसिंह और स० हुकुमसिंह तथा वह सब अकाली समाचार पत्र जो कल तक पंजाब के हिन्दुओं को खातिर में लाने को तैयार न थे। 'कुरिन्टीन हमने नहीं बनाई। हमारा दामन इस मामले में बिल्कुल साफ है। जो कुछ भी बना उसका सारा दायित्व सिखों पर है और विशेषतः अकालियों पर।

परन्तु मैं उनसे कहना चाहता हूं कि अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। इस 'कुरिन्टीन से निकलना चाहते हो तो अब भी निकल सकते हो और इसमें पंजाब के हिन्दू अकालियों का पूरा साथ देने को तैयार हैं। सन्त फतहसिंह यदि चाहें तो आज भी प्रधान मन्त्री से जाकर कह सकते हैं कि उन्हें पंजाब का विभाजन स्वीकार नहीं। इस तरह कुरिन्टीन स्वयमेव समाप्त हो जायेगी और पंजाब के हिन्दू तथा सिख मिलकर एक बार फिर आजादी तथा खुशहाली का सांस ले सकेंगे।

लखनऊ जिला सभा का मासिक अधिवेशन

२६ जून को सायकाल ५।। बज से ८।। बज तक भूपाल हाउस लालबाग के बरामदे मे आय उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का ३७ वा मासिक अधिवेशन, आर्यसमाज लालबाग के प्रबन्ध से होगा शहर के समस्त आर्य पुरुषो से प्राथना है कि वे अधिक से अधिक अपने इष्ट-मित्रा व परिवार के सदस्यो सहित पधार कर ज्ञानोपार्जन करें।

विक्रमादित्य बसन्त मन्त्री जिलासभा

गुरुकुल कांगड़ी, विश्व-विद्यालय

गुरुकुल कांगडी हरिद्वार में नये (६ से १० आयु के) ब्रह्मचारियो का प्रवेश १ जुलाई १९६६ स प्रारम्भ होगा शिक्षा नि शुल्क। सब विषयो की शिक्षा आश्रमवास। विशेष देखरेख। सीधा-सादा भारतीय जीवन। कडा अनुशासन एक सा रहन सहन। प्राकृतिक, सुन्दर, स्वास्थ्यप्रद वातावरण। सात्विक भोजन पालन-पोषण का साधारण व्यय। उपाधिया सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त। नियमावली मगावें।

महन्द्रप्रताप शास्त्री मुख्याधिष्ठाता

आ. प्र. सभा मध्यप्रदेश विदभ का निर्वाचन

छिन्दवाडा मे २९ मई ६६ को आय प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश विदभ का वृहद आधवेशन भी हुआ। सभा ने छत्तीसगढ के अकाल पीडित क्षेत्रा मे अन्न वितरण की योजना बनाई जिसक अनुसार अनावृष्टिग्रस्त ग्रामा क असहाय लागो का एक समय भोजन दिया जायेगा। वृहदाधिवेशन म सभा क पदाधिकारियो का निवाचन भी हुआ। प० विश्वम्भरप्रसाद जी तीसरी बार पुन सर्वसम्मति स सभा क प्रधान निर्वाचित हुए। स्वामी दिव्यानन्द जी, श्री शिवराम जी बरुआ श्री जयदव विरमानी भिलाई तथा श्री शान्तकुमारजी अकाला सभा क उपप्रधान एव श्री कृष्णजी गुप्त प्रधान मन्त्री चने गय। श्री नरदेव जी आय पुस्तकाध्यक्ष श्री जयसिह राव गायकवाड कोषाध्यक्ष इसी प्रकार श्री सत्यव्रतजी शास्त्री तथा श्रीमती यशोदा देवी पाराशर उपमन्त्री चुन गय। इस अवसर पर मध्यप्रदेश विदभ की अनेक समाजो के प्रतिनिधि पधारे।

—आयसमाज आसफपुर (बदायू)

प्रधान—श्री दिनेशचन्द्र मन्त्री—श्री महावीरसिंह ओवरसियर, कोषाध्यक्ष श्री अनिलकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—स्वामी ईश्वरानन्द जी।

आर्य जगत

निर्वाचन—

दि० ५ ६ ६६ को जिला आय उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बूटामलजी शर्मा तथा मन्त्री श्री केदारीलाल जी आर्य ने आर्यसमाज ललितपुर झासी जो कि शिथिल अवस्था मे पडी हुई थी का निरीक्षण किया। आय समाज के सभी सदस्यो स सम्पक स्थापित किया तथा सायकाल ५ बजे एक बैठक आय समाज मन्दिर मे श्री बूटामल जी शर्मा प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा झासी की अध्यक्षता मे की गई जिसमे सर्वसम्मति से १९६६ के शेष समय दिसम्बर ६६ तक के लिए पदाधिकारियो का निर्वाचन किया गया। प्रधान श्री वीरसिंह जी ठकेदार, मन्त्री—श्री कन्हैयालाल जी तथा कोषाध्यक्ष—श्री फकीरचन्द जी।

स्त्री आर्यसमाज काठ

प्रधाना श्रीमती विद्यावती जी शर्मा उपप्रधाना जगदीश्वरीदेवी, मन्त्रिणी-श्रीमती शान्तिदेवी उपमन्त्रिणी श्रीमती सावित्रीदेवी तथा श्रीमती हीराकली, कोषाध्यक्ष—श्रीमती विद्यावती गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—ज्ञानवती जी उप पुस्तका० राजकुमारी जी आडीटर सत्यवती जी।

—दि० १५ ५ ६६ क आय समाज गगोह (सहारनपुर) म अ०स०का वार्षिक चुनाव श्री धर्मसिह जी उपमन्त्री आय प्रतिनिधि सभा लखनऊ की अध्यक्षता मे निम्न प्रकार से हुआ—

प्रधान—श्री जयमलसिह उपप्रधान—श्री बलवीरसिह मन्त्री—श्री सग्रामसिह उपमन्त्री—श्री देवीचन्द कोषाध्यक्ष—श्री रहनूलाल पुस्तकाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश

उत्सव—

—आर्यसमाज गोवर्धनपुर (अलीगढ) का द्वितीय वार्षिक महोत्सव १८ १९ २० मई को बड समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमे श्री नारायणस्वामी फतेहगढ श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी एटा श्री बाबूलाल जी दीक्षित, श्री किशोरीलाल जी मथुरा, श्री जयपालसिह म नव आदि उपदेशको ने भाग लिया।

—हरिहरानन्द मुख्याधिष्ठाता
संस्कृत महाविद्यालय साधुआश्रम
जिला अलीगढ

शोक—

श्रीमती दुर्गावती कोषाध्यक्ष स्त्री आयसमाज आगरानगर, पुत्री श्री महा० श्रीराम जी भू०पू० अधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा) व धर्मपत्नी श्री सुन्दरलाल जी मन्त्री शुद्धि सभा आगरा का निधन दि० ४ ६-६६ को सिविल अस्पताल लखनऊ मे हो गया उनका दाह सस्कार पूण वैदिक रीति से कानपुर मे गगा के किनारे प० वेदरत्न जी गौतम आय समाज सीसामऊ कानपुर के द्वारा किया गया।

श्रीमती दुर्गावती जी ने अपने जीवन काल मे स्त्री आर्यसमाज की बहुत सेवा की। परमात्मा दिवगत आत्मा को शाति और दुखी आर्य महिलाओ को धैय धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

—निमला मोबिल मन्त्रिणी

सूचना

सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ के उच्च वर्ग के महाविद्यालय में छात्रो का प्रवेश १ जुलाई ६६ से ही प्रारम्भ हो रहा है। प्रविष्ट होनेवाले छात्र शीघ्रता से आने का प्रयत्न करें। सख्या पूर्ण हो जाने पर कोई छात्र प्रविष्ट नही हो सकेगा। यहा व्याकरण और साहित्य की आचाय परीक्षाओ तक की शिक्षा सुयोग्य अध्यापकों द्वारा दी जाती है।

-अधिष्ठाता

निवेदन

किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय व मनीआडर भेजते समय ग्राहक अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें।

(पृष्ठ १ का शेष)

का हाथ बराबर आगे बढ़ाते रहे आपके सहयोग सम्बल से सभा अवश्य गौरवान्वित होगी और आप अपने निर्वाचन को सफल पायेंगे।

सार्वदेकि सभा का वार्षिक अधिवेशन

★

आर्य जगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन २५,२६ जून को देहली मे सम्पन्न हो रहा है।

इस अधिवेशन मे आर्य समाज की वार्षिक गतिविधि पर गम्भीर विचार-विमर्श होगा और भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध मे निर्णय होंगे। गत वर्ष कानपुर अधिवेशन में आर्य समाज जन्म-शताब्दी सम्बन्धी दस वर्षीय योजना स्वीकार हुई थी उसके अनुसार सभा की ओर से सार्वदेशिक साप्ताहिक का प्रकाशन एवं मद्रास में सार्वदेशिक सभा के उपकार्यालय की स्थापना दो कार्य सम्पन्न हो चुके हैं। अन्य बहुत से कार्य ऐसे हैं जिनका आरम्भ अभी से हो जाना चाहिये परन्तु अनेक कारणों से ऐसा नही हो सका है। आशा है इस अधिवेशन मे १९६६-६७ के वर्ष मे क्या-क्या कार्य पूरे करने हैं इस प्रश्न पर एक वर्षीय योजना के रूप मे विचार किया जायगा, हम समझते हैं इससे कार्य मे अधिक प्रगति आ सकेगी। मुख्य रूप से विशेष प्रचार साहित्य प्रकाशन, अछूतोद्धार और समाजसेवा सम्बन्धी कार्यों पर विशेष बल दिया जाना चाहिये।

जहाँ तक निर्वाचन का प्रश्न है सार्वदेशिक सभा आर्य जगत् की शिरोमणि सभा है सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओ एवं आर्य समाजो के लिये सार्वदेशिक सभा आदर्श है। प्रजातन्त्र मे विचार स्वातन्त्र्य और मतभेद को गुजाइश रहनी ही चाहिये। आर्य समाज का प्रजातन्त्र देश और विश्व की अन्य प्रजातन्त्र संस्थाओ के लिये आदर्श होना चाहिये। हम समझते है भूल करने वालों को क्षमा करना और छोटे भाइयो को संगठन मे मिलाना हमारा आदर्श होना चाहिये। आर्य समाज की इकाइयां सार्वदेशिक की माला मे सुगठित हों इसी से आर्य समाज का काम आगे बढ़ेगा। हम आशा करते हैं सभा के वृहदधिवेशन मे आर्य समाज की एकता, सुदृढ़ता और अनुशासन समस्याओ पर प्रतिनिधिगण गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे आर्यसमाज के उपनियमों मे संशोधन का विषय भी इस अधिवेशन मे प्रस्तुत है। हम यह ज्ञात नही है कि नियम संशोधन का वर्तमान ज्ञापन आर्य समाजो एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओ की सम्मति के लिये प्रचारित हुआ या नही उनसे सम्मतियां प्राप्त करना अधिक उपयुक्त है। आशा है नियम संशोधन के प्रश्न पर भी गम्भीरतापूर्वक विचार होगा।

हम सार्वदेशिक सभा के वृहदधिवेशन की सफलता चाहते हैं।

[पृष्ठ ४ का शेष]

४३ ,, चम्पाराम जी आर्य आर्यसमाज हाथरस (अलीगढ़)
४४ ,, केदारनाथ जी आर्य, आर्यसमाज अलीगढ़
४५ ,, जयकुमार जी स्नातक प्रधान आर्यसमाज तिलकद्वार मथुरा
४६ ,, हरिगोपालसिंह जी बी०ए०, एल-एल०बी०, प्रधान आर्यसमाज पथवारी आगरा
४७. ,, फूलनसिंह जी आर्यसमाज शिकोहाबाद (मैनपुरी)
४८. ,, विद्याभूषण जी स्नातक आयुर्वेद शिरोमणि, भूषण औषधालय ऐटा
४९. ,, ओ३म् प्रकाश जी आर्य, २३४ आर्यनगर (भूड़) बरेली
५० ,, आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री आनन्द मन्दिरम् कूचा पाठी बदायू
५१ ,, ईश्वरदयालु जी आर्य मु० भाटान बिजनौर
५२ ,, हरिश्चन्द्र जी आर्य, आर्यसमाज मन्दिर अमरोहा (मुरादाबाद)
५३. ,, मुरारीलाल जी मु० चमकनी ३२९ बहादुरगंज शाहजहांपुर
५४. ,, रामबहादुर जी एडवोकेट पूरनपुर (पीलीभीत)
५५. ,, हरप्रसाद जी आर्य ग्राम व पोस्ट धमौरा (रामपुर)
५६ ,, देवदत्त जी आर्यसमाज देहरादून
५७ ,, गणेशदास जी रावलपिण्डी फ्लोर मिल्स मुरादाबाद
५८ ,, विद्याधर जी शर्मा १०८ परमट कानपुर
५९ ,, विद्यारत्न जी बी०ए० एल-एल०बी० सिविल लाइन्स हल्द्वानी (नैनीताल)
६० ,, बाबूलाल जी गुप्त इन्जीनियर २५ डिप्टीगंज मुरादाबाद
६१. ,, प्रेमचन्द्र जी शर्मा पूर्व एम०ए०सी० हाथरस (अलीगढ़)

—चन्द्रदत्त सभामन्त्री

(पृष्ठ ८ का शेष)

२२ हरिद्वार आर्य समाज मन्दिर के निर्माण मन्त्री—श्री प० धर्मपाल विद्यालंकार जी गुरुकुल कांगड़ी।
हरिद्वार आर्य समाज मन्दिर के निर्माण सहायक मन्त्री—श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री जी गुरुकुल कांगड़ी।
२३ रामगढ़ नारायण आश्रम अधिष्ठाता—श्री विद्यारत्न जी हल्द्वानी।
२४ वैदिक आश्रम अलीगढ़ के मन्त्री—श्री रामप्रसादजी आर्य मैन्डू (अलीगढ़)
२५ श्री विरजानन्द दण्डीधाम स्मारक मथुरा मन्त्री—श्री रमेशचन्द्र जी एडवोकेट मथुरा।
२६ सभा भवन के मन्त्री—सभा मन्त्री श्री चन्द्रदत्त जी

अन्तरंग सभा दिनांक १२।६।६६ के निश्चयानुसार निम्नलिखित संस्थाओं के लिए निम्नस्थ प्रतिनिधि चुने गये—

१ कन्या गुरुकुल हाथरस १ प्रति० श्री माता शकुन्तला देवी जी मेरठ।
२ गाजियाबाद व्यायामशाला " श्री प्रो० रतनसिंह गाजियाबाद
३ वैदिक पुत्री पाठशाला इण्टर कालेज नई मण्डी मुजफ्फरनगर—श्री प० ओमप्रकाश जी शास्त्री खतौली
४ पार्वती आर्य संस्कृत पाठशाला बदायू १प्रति श्री शिवकुमार शास्त्री ज्वालापुर
५ ब्रजरत्न सुन्दर आ० क० पाठ० सम्भल २ " जी देवेन्द्र जी आर्य सरायतरीन
श्री बाबूलाल जी इन्जीनियर मुरादाबाद
६ आर्य विद्या सभा काशी— ३ प्रति० श्री मदनमोहन जी वर्मा, श्री महेन्द्र-प्रताप जी शास्त्री, श्री चन्द्रदत्त जी लखनऊ
७ आर्य कन्या पाठशाला अल्मोडा २ प्रति श्री विद्यारत्न जी हल्द्वानी
उमेशचन्द्र जी स्नातक "
८ आर्य " बिलसी २ प्रति० श्री हरप्रसाद जी [अन्तरंग मे]
श्री रघुनन्दनप्रसाद जी, श्री ईश्वरदयालु जी (साधारण सभा के लिये)
९ आर्य कन्या पाठशाला काशीपुर २ प्रति श्री उमेशचन्द्रजी स्नातक हल्द्वानी
विद्यारत्न जी "
१० आर्य कन्या पाठशाला रामनगर १ श्री किशोरीलाल जी
११ आर्य विद्या सभा आजमगढ़ १ श्री कपूरचन्द्र जी आजाद मिर्जापुर

—चन्द्रदत्त सभा मन्त्री

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा ककुहास की पुण्यस्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धनराशि सभा को समर्पण कर बो० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद सं० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद मे व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेज कर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु, मय, त्वष्टादि गरीब प० ब्रा० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र मे उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

कर्मक्षेत्र

[श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव बी० ए०]

गद्दार कौन है और कहाँ छिपा है ? यह एक सामान्य प्रश्न हो सकता है। आज के जटिल समाज में व्यक्तिवाद के कुप्रभाव से त्रस्त क्या श्रमजीवी और क्या अन्य वर्गों के लोग अथवा नेताजन अधिकांशतः सभी एक ही दिशा की ओर भागते जा रहे है। उनकी गति इतनी तेज है कि उनकी हर चाल और हर दौड़ के गिरते हुए कदमों से धरती हिलने लगी है, कांप उठती है इस वसुन्धरा की कगारें, परन्तु कोई देखने वाला है और न उस धमक की भयंकर आवाज को सुनने वाला क्योंकि आंखों और कानों पर व्यक्तिवाद का काला पर्दा चढ़ा है। सामाजिकता की भावना का नारा देने वाले हमारे कर्मठ कर्मजीवी जन भी कुछ करते नजर नहीं आते और इसका स्पष्ट प्रमाण है देश की आज की स्थिति। इतिहास साक्षी है कि हमारा देश कभी कंगाल नहीं था, अधमरा नहीं था और न विदेशियों की नीतियों का पोषक ही रहा है। परन्तु आज प्रगति और विकास के नाम पर देश को भगी बनाते जाना और जनता के पीठ में छुरा भोंकते जाना हमारी आदत में आता जा रहा है। क्या इसे ही हम सामाजिक भावना का पोषक मान सकते है और यदि इन्हीं तत्वों के आधार पर हम आज सामाजिकता का पाठ पढ़ते है तो हमें यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि प्लेटो और एरिस्टाटिल की परिभाषायें आज खप नहीं सकतीं। बकवास है यह कहना कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, क्योंकि 'सामाजिक प्राणी' के अन्तर्गत जिस भाव की विशालता उन परिभाषाओं में निहित थी, वह आज कहीं देखने सुनने में नहीं आती। अतः केवल समाज के संकीर्ण अर्थों में पलते हुये आज के 'व्यक्तिवाद' को हम चाहे तो आज के युग का कथित 'समाजवाद' कह सकते हैं, परन्तु जैसा उक्त तथ्यों से स्पष्ट है यह मुर्दा समाजवाद किस सीमा तक समाज का भला कर पाता है यह एक साधारण नागरिक भी समझ रहा है। प्रगति तो दूर, इस समाजवाद की गहरी खाई में देश ऐसा गिरा है कि निकल पाना असम्भव दीख पड़ता है। देश की गाड़ी को हांकने वाले अन्धे चालकों के सरों पर चाहे सेहरा बांधिये या कफन, देश की हुई अपार क्षति की पूर्ति हो नहीं सकती। भौतिक दृष्टि से जो कुछ हुआ उससे सभी कराह रहे है परन्तु विचारों में व्यक्ति की मानसिक स्थिति में इतना उतार-चढ़ाव एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास होते जाना किसी भी देश के लिये चिन्ता की बात है। दूषित विचारों से कुप्रेरित कर्म न तो व्यक्ति का कर्म ही है और न उसका कोई कर्मक्षेत्र ही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इतनी तीव्रता से बदलती हुई स्थितियों में या तो हम उन परिभाषाओं के परिवर्तन पर ध्यान दें कि वे कोरी न रहकर क्रियात्मक हों और या आज की तरह बदलती हुई स्वार्थी व्यक्तिगत भावनाओं और उनकी मान्यताओं के अनुरूप चलकर अपना भला करते जायें, और देश को गहरे अन्धकार में झोंकते जायें, जैसा कि आज हो रहा है। इन सभी तथ्यों पर एक साथ विचार करने से हम स्वयं को ही भारत विरोधी पायें तो क्या आश्चर्य। केवल भावनागत प्रेम ही देश के प्रति मोह या प्रेम नहीं कहलाता क्योंकि बिना कर्म के भावना नगण्य है उसका कोई मूल्य नहीं और इस मर्यादाहीन अनर्गल भावना और देश के प्रति इस उपेक्षा को खुले शब्दों में गद्दारी कहें तो हम एक बार यह चिन्तन करने को कहां अवश्य पा जायेंगे कि देश के प्रति गद्दार कौन है ?

प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली का न तो यह अर्थ है कि समस्त शक्ति शासन के हाथ में है और न यही अर्थ है कि समस्त शक्ति जनता ही में निहित है। जनशक्ति अथवा उसकी मान्यता तो केवल निर्वाचन के समय ही स्पष्ट हो पाती है और फिर पांच वर्षों के लिये वह लुप्त हो जाती है और हम जो समझते है कि भारत में वही जनशक्ति कालान्तर में भीख मांगते दिखाई पड़ती है। अतः जनतन्त्र को निभाने के पीछे जनचेतना का अभाव एवं शासन द्वारा जनहित की उपेक्षा, दोनों ही मूलरूप से उत्तरदायी है इस उपेक्षा की समस्त कटुताओं के प्रति। दोनों ही में गद्दार भरे पड़े हैं चाहे वह जनशक्ति द्वारा उखाड़ फेंके जायें और चाहे जनशासन द्वारा, परन्तु जब तक यह नहीं होता, तब तक हम भूखे और नंगे रहें मगर चिल्लायें नहीं, तो ही अच्छा है, क्योंकि दोष अपना भी है।

★

विदेश-वार्ता

सूआ फिजी

२६—५—६६

[ले०—आनन्द स्वामी सरस्वती, आकलेंड, न्यूजीलेंड]

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

मै १९ मई, १९६६ सायं ८ बजे सिंगापुर से बी०ओ०ए०सी०के वायुयान द्वारा फिजी की ओर उड़ा सारी रात वायुयान में बैठे बैठे बीत गई, अब २० की सायं के ६ बज चुके हैं और मैं अभी न्यूजीलेंड के नगर आकलैंड के 'एयर पोर्ट' पर बैठा हू। अभी चार घण्टे और प्रतीक्षा करूँगा—तब नन्दी (फिजी) की ओर जाने वाला वायुयान मिलेगा, यहां मुझे ७ घण्टे प्रतीक्षा करनी पड़ी। दिन के २ बजे यहा पहुचा था। १८ घण्टे की वायु यात्रा के पश्चात भी अभी बीच ही मे हू। रात को सोना नहीं मिला, प्रात को नहाना नहीं मिला, दिन का खाना नहीं मिला, दोपहर को आराम नहीं मिला अब रात को फिर सोना नहीं हो सकेगा सुना था २० मई को सूर्य-ग्रहण होगा, पता नहीं सूर्य को ग्रहण लगा था नहीं लगा मुझ तो लग गया। यहां बैठा विचार कर रहा हू कि दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में आज से दो हजार वर्ष पूर्व बुद्ध मत का प्रचार करने को भिक्षु आये थे, उन्होंने कितने कष्ट उठाये होंगे जब समुद्र यात्रा भी बहुत कठिन था, महीनों समुद्र मे ही रह कर प्रचारकों ने वर्षा, धूप सर्दी, गर्मी भूख-प्यास सहन की होगी। भाषा की भिन्नता ने भी कितनी ही उलझनें डाल दी होंगी और इतने तप के पश्चात बुद्ध मत के प्रचार से बर्मा चीन जापान कम्बोडिया, स्याम, मलाया, इत्यादि कितने ही देश बुद्ध भगवान के भक्त बन गये, परन्तु अब तो इन देशों मे सिवायें थाईलैंड के और कहीं भी बुद्ध मत नहीं रहा। इतना तप इतना प्रयत्न, बहुत स्थाई प्रभाव डाल न सका। तब मन में यह विचार आ घुसा कि तू जो ८३ वर्ष की आयु के शरीर को कष्ट दे रहा है इससे होगा क्या? महाराजा अशोक ने बौद्ध मत के प्रचारार्थ अपनी पुत्री तथा पुत्र को लंका भेजा था, वहीं से बौद्ध प्रचारक फिर एशिया के इन देशों मे पहुचे थे, तत्पश्चात पश्चिमी एशिया को पार करके बौद्ध प्रचारक उत्तर अफ्रीका के नगर काईरोज तक फैल गये थे, इराक मे भी बौद्ध तथा जैन मत के तपस्वी महानुभाव निवास करते थे, इन्डोनेशिया, सुमात्रा, जावा, बोरन्यू बाली आदि द्वीपों में हिन्दु मत का बोलबाला था, आज इन स्थानों में हिन्दुत्व तथा बौद्ध मत के खण्डरात तो हैं और कोई भी चिन्ह नहीं।

आज से २१०० वर्ष पहले, पूर्व-उत्तरी अरब पर एक राजा 'देकुण्डनाथ' राज्य करता था। तुर्की के एक गांव की खुदाई से २५०० वर्ष पुरानी हिन्दु मूर्तियां निकली हैं, परन्तु अब न तुर्की में न अरब में कहीं भी हिन्दुत्व नहीं रहा। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि भारत से प्रचारक इन देशों में फिर नहीं पहुचे आलस्य ने घर किया होगा, यदि प्रचारक पहुचते रहते तो आज सारा एशिया अवश्य आर्य हिन्दु होता और अब जिन देशों मे हिन्दु आबाद हैं उन को भारतीय सभ्यता का भक्त बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि भारत के सन्यासी कष्ट उठाकर भी यहा पहुचे।

फिजी की बात—

फिजी की बात पहले कीजिये—इस समय इसकी आबादी लगभग पांच लाख है, इनमें से आध भारतीय हैं, इन भारतीयों के पूर्वजों को गन्ने की काश्त के लिये भारत से १८७९ मे ५-५ वर्ष के एग्रीमेन्ट पर लाया गया था, जब मैं २१ मई को प्रात सूआ (फिजी) पहुचा और इन भारतीयों को हिन्दी बोलते—नमस्ते, जय हिन्द तथा राम-राम कहते सुना तो हृदय गद्गद हो गया। लगभग एक सौ वर्ष इनको फिजी में रहते हो गये, प्रारम्भ में भारतीयों ने अकथनीय कष्ट सहन किये। यहां के 'फैजियो' लोगों को पादरियों ने ईसाई बना लिया परन्तु आर्यसमाज का विचार रखने वाले जो लोग यहा आ चुके थे उन्होंने इस खतरे को भांप लिया और आर्यसमाज का आन्दोलन प्रारम्भ किया। वैदिक धर्म तथा हिन्दुत्व की खूबियों का वर्णन होने लगा, भारत से प्रचारक पहुचने लगे और १९०४ मे विधि पूर्वक आर्यसमाज की स्थापना हो गई। फिजी के मनमोहन सरदार बलदेवसिंह भक्त ने मुझे स्पष्ट कहा कि यदि आर्यसमाज यहा न होता तो जिस प्रकार फिजी के सारे फैजियो लोग ईसाई बन चुके हैं, भारत के यह सारे हिन्दु भाई ईसाई बन चुके होते।

आर्यसमाज की गतिविधिया—

आर्यसमाज ने प्रारम्भ में क्या काम किया। आर्यसमाज की स्थापना में बाबू अमरसिंह जी का बड़ा हाथ है। १९१२ में एडवोकेट राम मनोहरानन्द शर्मा से फिजी पहुचे और बा० रणधीरसिंह, बा० रामलालसिंह, सेठ हीरालाल, प० बद्री महराज, प० हरदयाल शर्मा, प० राम नारायण मिश्र, प० शिवनन्दन इत्यादि के सहयोग से गुरुकुल की स्थापना का बड़ा सुन्दर काम होने लगा। १९१८ में आर्य प्रतिनिधि सभा की भी स्थापना हो गई। कितने ही ग्रामों नगरों में आर्यसमाज जारी हो गये। १९२० में एक ऐसी घटना घटी जिसने आर्यसमाज मे फूट पैदा कर दी। राम मनोहरानन्द ने जो भगवे वस्त्र पहनते थे विवाह कर लिया, इस पर दो पार्टियां बन गई। राम मनोहरानन्द के स्थान पर गुरुकुल का आर्य प० शिवदत्त शर्मा बनाये गये। १९२५ मे गुरुकुल वृन्दावन से प० गोपेन्द्र नारायण फिजी पधारे और दोनों पार्टियो का मिलाप करा दिया। गुरुकुल लोकप्रिय बनने लगा फिजी द्वीप के असली वासी 'फैजियो' बालक भी गुरुकुल में पढ़ने लगे वेद मन्त्र गाते गायत्री मन्त्र का जप करते, जब यह लोग फैजियो' ब्रह्मचारी वेद पाठ करते तो समा बंध जाता। तभी ७० लड़के और २५ लड़कियां भारत पढ़ने के लिए भेजे गये। लड़के गुरुकुल वृन्दावन मे और लड़कियां कन्या महा विद्यालय जालन्धर मे। फैजियो लड़कों को गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ाने का निश्चय हुआ परन्तु फिजी की अंग्रेजी सरकार ने रोक दिया। गुरुकुल को हानि पहुचाने के लिये सरकार ने ग्राम मे स्कूल खोल दिया। फैजियो लड़के गुरुकुल मे पढ़ना चाहते थे उन्हें बलपूर्वक रोका गया। उन्हीं दिनों में भारत से प० श्रीकृष्ण जी फिजी पधारे, जिस समुद्री जहाज मे यह आये, उसे एक मास क्वारन्टीन में रखा गया। कितने लोगों की जहाज मे मृत्यु हो गई, प० श्रीकृष्ण जी ने फिजी पहुच कर वेद प्रचार प्रारम्भ कर दिया। १९२६ से १९३१ तक प्रचार खूब हुआ। अंग्रेजी सरकार प० श्रीकृष्ण को देश बदर करने पर तैयार हो गई। १९२७ मे प० अमीचन्द जी स्नातक गुरुकुल कांगड़ी फिजी आये। गुरुकुल की बागडोर सम्भाली, १९२ मे डा० कुन्दन सिंह डॉक्टर बन कर आये। ईसाई तथा मुसलमानों का कुछ उपद्रव देखकर 'हिन्दु संगठन" स्थापित किया। तीन सौ मुसलमानों की शुद्धि की गई तब सरकार ने कुछ हिन्दुओं को साथ मिल कर हिन्दुओं में फूट डलवा दी। आर्यसमाज ने स्कूल, कालेज कन्या कालेज जारी करने के शुरू किये। सिक्ख भाइयों तथा सनातनधर्म भाइयों ने भी स्कूल कालेज जारी किए इस समय फिजी में ८० प्रतिशत छात्र-छात्रायें दयानन्द स्कूल, कालेज तथा सनातन धर्म कालेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

फिजी मे तीन सौ टापू हैं, जिनका व्यास १ लाख मुरब्बा मील है जन-संख्या आजकल लगभग ५ लाख है, जिनमें से आधे भारतीय लोग हैं। १८७९ मे भारत से साठ हजार से अधिक लोगों को नाना प्रकार के प्रलोभन दिखाकर फिजी लाया गया। यहां इन्हें कुली पुकारा जाने लगा। फिर १८९१ से इण्डियन कहा जाने लगा, इन भारतीय लोगों ने प्रारम्भ मे भारी अपमान तथा कष्ट सहन किये, परन्तु अपनी सहनशीलता तथा बुद्धिमत्ता से ७५ वर्षों मे भारतीय ऊँचे स्थान पर पहुच गये। गुजरात से पर्याप्त व्यापारी भी यहां पहुच गये और आज व्यापार ८० प्रतिशत भारतीयों के हाथ मे है। श्री ए० डी० पटेल बार एट ला० यहा की सरकारी कौंसिल में मिनिस्टर हैं। फिजी की सारी बस सर्विस हिन्दुस्तानियों के हाथ में है। ५०-६० वकील भारतीय हैं बीस से अधिक डाक्टर हैं। एञ्जीनियर भी हैं। फिजी में जितनी मोटर कारें हैं इनमें ७८ प्रतिशत भारतीयों की हैं इन के मकान बहुत सुन्दर तथा सुख देने वाले हैं। हिन्दी का प्रचार बहुत अच्छा है, आर्यसमाज तथा सनातन धर्म की सारी संस्थाओं में हिन्दी पढ़ाई जाती है।

लखनऊ—रविवार आषाढ १२ शक १८८८, प्र० श्रावण कृ० १ वि० २०२३, दिनांक ३ जुलाई १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवाऽअयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥९॥

भावार्थ—उस पूर्व से प्रसिद्ध यजनीय परमेश्वर को इस महान ब्रह्माण्ड मे (भक्तिभावों)से सिक्त करते हैं, उसी को विद्वान् पूजते हैं। साध्य (योगाभ्यासी) तथा मन्त्रद्रष्टा ऋषि भी उसी का यजन करते हैं।

विषय-सूची

आर्य जगत् को ओर से सार्वदेशिक स्तर पर—

नारायण स्वामी जन्म शताब्दी

आगामी दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में

गुरुकुल वि० विद्यालय वृन्दावन में मनाने का निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश शताब्दी समारोह का संयोजन करेगी

सार्वदेशिक सभा ने ५००० पांच हजार की धनराशि शताब्दी व्यय के लिये स्वीकृत की है।

अन्य राज्यों की आर्य प्रतिनिधि सभायें भी इस कार्य में पूर्ण सहयोग देंगी।

शताब्दी समारोह समिति का गठन एवं कार्यारम्भ

आर्यसमाज के स्मरणीय नेता श्रद्धेय महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की जन्म शताब्दी मनाने का संकल्प आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने किया है। इस कार्य की महत्ता और पूज्य स्वामी जी के सार्वदेशिक महान् व्यक्तित्व को दृष्टि मे रखते हुए यह उचित और आवश्यक प्रतीत होता था कि इस आयोजन को सार्वदेशिक स्तर पर सम्पन्न किया जाय। इसके लिए सभा की ओर से सार्वदेशिक आ० प्र० नि० सभा दिल्ली एवं सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओ से सहयोग की प्रार्थना की गयी और शताब्दी समिति की बैठक आर्यसमाज दीवान हाल देहली मे सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर आयोजित की गयी। इस बैठक मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री श्री रामगोपाल जी ने सार्वदेशिक सभा की ओर से ५०००)रु० शताब्दी के लिये देने की सूचना दी, मध्यभारत, मध्य दक्षिण (आन्ध्र) तथा अन्य राज्यो की ओर से भी विशेष सहयोग के आश्वासन दिये गये।

शताब्दी समिति की अध्यक्षता पद्मश्री डा० हरिशंकर शर्मा जी कर रहे थे। उन्होंने स्वामी जी का जीवन चरित्र लिखने का कार्य करने की स्वीकृति दी। श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम० ए० उपकुलपति गु० विश्वविद्यालय कांगड़ी एवं उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने जो

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी

(शेष पृष्ठ ४ प)

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक २४
एक प्रति २० पै०

दक्षिण भारत में आर्यसमाज—

मराठवाड़ा आर्य सम्मेलन का बीड़ में भव्य आयोजन

उत्तर भारत के आर्य नेताओं का आगमन

आर्य जाति और देश की विभिन्न समस्याओं पर गम्भीर विचार

(प्रस्तावों की स्वीकृति)

हैदराबाद १७ जून ६६, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के तत्वावधान में मराठवाड़ा आर्य-सम्मेलन का आयोजन महाराष्ट्र की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी बीड़ में श्री प० कृष्णदत्त जी एम० ए० आचार्य, हिन्दी महाविद्यालय हैदराबाद की अध्यक्षता में ५ से ७ जून ६६ को किया गया था। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश आर्य जगत् के सुविख्यात् नेता श्री पं० प्रकाश वीर जी शास्त्री, सदस्य लोक सभा, आचार्य कृष्ण जी दिल्ली, पं० ओ३म् प्रकाश जी पंजाब आदि पधारे। मराठवाड़ा के पांचों जिलों से लगभग १५०० से अधिक प्रतिनिधिगण ने सम्मेलन मे भाग लिया। सम्मेलन के लिए एक विशाल पडाल की रचना की गई थी। जिसमें प्रातः और मध्यान्ह की कार्यवाही सम्पन्न होती रही। इस पंडाल को विभिन्न प्रकार की झडियों आदि से सुसज्जित किया गया था। मंच पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक बहुत बड़ा चित्र रखा गया था। ५ जून ६६ को सम्मेलन की कार्यवाही का प्रारम्भ श्री पं० रुद्रदेव जी, श्री मगलदेव जी,प० नरदेव जी स्नेही, पं० देशबन्धु जी, पं० ज्ञानेन्द्र जी तथा पं० कर्मवीर जी आदि के पौरोहित्य में वृहद यज्ञ के द्वारा हुआ।

शोभा यात्रा (जुलूस)—

साय ५ बजे सम्मेलन के सभापति श्री प० कृष्णदत्त जी एम०ए०,आर्य नेता पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा आचार्य कृष्ण जी एवं पं० ओ३म्प्रकाश जी और श्री श्रीपतिराव जी कदम एम० एल० ए० स्वागताध्यक्ष का भव्य जुलूस बड़े ही आकर्षक ढग से सजी हुयी जीप गाडी पर महाराजा छत्रपति शिवा जी की प्रतिमा के पास से निकाला गया। जो लगभग एक मील लम्बा था। यह जुलूस नगर के प्रमुख-प्रमुख मार्गों से भ्रमण करता हुआ पडाल पहुचा। जुलूस-गम्य मार्ग में विभिन्न स्थलों पर अनेक कमानें भी बनाई गई थीं।

जुलूस के अग्र भाग में ब्याड और बदबात् हाथी, ऊँट तथा घोड़ों पर आर्य वीर दल के स्वयं सेवक ओ३म् पताका लिए आरूढ़ थे। इनके पीछे समाजों के दल भजन गाते हुए चल रहे थे। भजनों के बीच-बीच "वैदिक धर्म की जय" "महर्षि दयानन्द की जय" "आर्यसमाज अमर है" और "भारत माता की जय" आदि गगनभेदी नारे गुंजायमान हो रहे थे। इनके पीछे आर्य नेतागण जिसमें पं० शेषराव जी वाघमारे एडवोकेट, श्री ए०बालरेड्डी जी, श्री छगनलाल जी, श्री देवदत्त जी एडवोकेट, श्री उत्तममुनि जी लातूर, श्री वेदकुमार जी वेदालंकार व श्री मास्टर बापूराव जी श्री धर्मसिंह जी, श्री शिवराम जी नान्देड़, श्री प० प्रहलाद जी, श्री शंकरराव जी, श्री दिगम्बरराव जी, पत्तेवार, श्री पुरुषोत्तम राव जी, प० गोपालदेव जी, ओ३म् प्रकाश जी जालना आदि चल रहे थे। अन्त में सभापति जी की गाड़ी थी। विभिन्न स्थानों पर नागरिकों द्वारा जुलूस का पुष्पमालाओं से स्वागत किया गया। इस जुलूस में लगभग १० सहस्र से अधिक नर-नारियों ने भाग लिया।

ध्वजारोहण—

जुलूस के पडाल पहुचने पर श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर आर्य वीर दल द्वारा सैनिक अभिवादन भी समर्पित किया गया।

उद्घाटन और सन्देश—

सम्मेलन के खुले अधिवेशन की कार्यवाही का प्रारम्भ श्री पं० रुद्रदेवजी उपदेशक सभा ने वेद मन्त्रों के पाठ द्वारा किया। तत्पश्चात् श्री श्रीपतिराव जी कदम एम० एल० ए० स्वागताध्यक्ष ने अपने स्वागताध्यक्षीय भाषण द्वारा आमन्त्रित जनों का स्वागत करते हुए आर्यसमाज द्वारा की गई राष्ट्रीय सेवाओं पर प्रकाश डाला और कहा कि आर्यसमाज कोई साम्प्रदायिक संस्था नहीं है, अपितु यह एक विशुद्ध सार्वभौम धार्मिक सिद्धान्तों का प्रचार करने वाली संस्था है।

अन्त में आपने सभापतित्व के लिए श्री पं० कृष्णदत्त जी एम०ए० का नाम प्रस्तुत किया जो करतल ध्वनि में स्वीकृत हुआ और सभापति जी ने आसन ग्रहण किया। बीड़ की विभिन्न २५ सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से श्री पं० कृष्णदत्त जी एम०ए० तथा पं० प्रकाश वीर जी शास्त्री आदि को पुष्पमालाएँ पहिनाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् श्री पं०प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य लोक सभा ने अपने भाषण द्वारा इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। बाद को प० नरेन्द्र जी ने भारत के विभिन्न नेताओं द्वारा प्राप्त सन्देश पढ़कर सुनाए जिन महानुभावों के सन्देश इस अवसर पर प्राप्त हुए उनमें श्री सम्माननीय सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी, राष्ट्रपति भारत सरकार, श्री के० एम० मुन्शी जी, श्री प्रताप सिंह शूर जी वल्लभदास प्रधान सार्वदेशिक सभा देहली तथा श्री रामगोपाल जी, मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली, श्री घनश्याम-सिंह जी दुर्ग, श्री कुम्भाराम जी आर्य मन्त्री, राजस्थान सरकार, श्री खाद्य मन्त्री मैसूर, श्री शिक्षा मन्त्री महाराष्ट्र, श्री केशवराव जी सहकार मन्त्री महाराष्ट्र एवं प० देशबन्धु जी शास्त्री होशियारपुर आदि के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। सन्देश वाचन के उपरान्त सभापतिजी ने अपना अध्यक्षीय भाषण पढा। इस भाषण में आपने आर्यसमाज की प्रस्तुत गतिविधि और आर्यसमाज के भावी दायित्व की ओर संकेत करते हुए प्रेरणा की। खुले अधिवेशन में लगभग २० हजार से ज्यादा जनसमूह उपस्थित होता रहा। अधिवेशन के दूसरे और तीसरे दिन ७ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये।

प्रस्ताव संख्या (१)

गोवध बन्दी की मांग

(अ) मराठवाडा आर्यसम्मेलन बीड़ महाराष्ट्र सरकार से यह मांग करता है कि धार्मिक आर्थिक और सामाजिक परम्परा को देखते हुए महाराष्ट्र राज्य में सम्पूर्ण गोवध बन्दी को वैधानिक दृष्टि से कठोरता के साथ लागू किया जाय। भारतीय संस्कृति और समाज में गो सदा ही पूज्य मानी जाती रही है। गो और गो सन्तान भारतीय कृषि तथा व्यापार का मुख्य साधन और आधार रहा है और आज भी है। भारत के सभी कार्यक्षेत्रों के नेताओं ने गोवधबंदी का प्रयत्न किया है। गोवध स्वतन्त्र भारत के मस्तिष्क पर एक राष्ट्रिय कलंक है। आर्यसमाज अपने आरम्भ काल से ही गोवध बन्दी के लिए प्रयत्न करता आया है। आज यह सम्मेलन उसी मांग को दुहराता हुआ महाराष्ट्र सरकार से इस दिशा में तुरन्त ही सक्रिय कदम उठाने की प्रार्थना करता है।

(आ) यह सम्मेलन भारत सरकार का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता है कि चूंकि केन्द्रीय सरकार ने गोवधबन्दी का प्रश्न निर्णयार्थ राज्य सरकारों पर छोड़ दिया है। इसका दुष्परिणाम यह सामने आया है कि कुछ राज्य सरकारों ने स्वराज्य के १८ वर्षों बाद तक भी इस दिशा में न तो कोई सक्रिय कदम ही उठाया है और न ही कोई निश्चित निर्णय ही किया है। जनमत की यह घोर उपेक्षा और धार्मिक, सामाजिक भावना के प्रति यह शिथिलता निस्संदेह निन्दनीय है। अतएव यह सम्मेलन भारत सरकार से दृढतापूर्वक यह मांग करता है कि वह संविधान की भावना का आदर करने के लिए इस विषय में राज्य सरकारों को शीघ्रातिशीघ्र प्रेरणा दे और अपने प्रभाव को काम में लाए।

(इ) साथ ही यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली से यह प्रार्थना करता है कि बम्बई के साधारण अधिवेशन में किये गये अपने निश्चय को क्रियान्वित करने के लिये, जिन-जिन राज्यों मे गोवधबन्दी अभी तक नहीं हो पाई है, सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में उन राज्यों मे गोवध बन्दी के लिये ६६ की समाप्ति तक आवश्यक कार्यवाही अथवा तीव्र आन्दोलन भी किये जायें।

प्रस्तावक—श्री उत्तममुनि जी,
अनुमोदक—छगनलाल जी
समर्थक—श्रीपतराव जी कदम,
एम०एल०ए०

प्रस्ताव संख्या (२)

मद्य-निषेध

यह मराठवाडा आर्य सम्मेलन बीड़ महाराष्ट्र सरकार से यह मांग करता है कि महाराष्ट्र राज्य में मद्यनिषेध को अधिक कठोरता से लागू किया जाये। आज कुछ राज्य सरकारें इस दिशा में अपनाई गई राष्ट्रिय नीति में कुछ शिथिलता लाती हुई प्रतीत होती हैं। यह सम्मेलन मांग करता है कि इस विषय में जन-जन की इच्छा तथा हित का आदर किया जाये। मद्यपान भारतीय संस्कृति एवं भारतीय परम्परा के विरुद्ध है। अनेक धार्मिक एवं राष्ट्रिय नेताओं ने मद्यपान का कठोर विरोध किया है। अतः एवं यह सम्मेलन महाराष्ट्र सरकार

(शेष पृष्ठ १५ पर)

भारत का इतिहास नए ढंग से सही रूप में लिखा जाए

● पु० ना० ओक

विदेशी लेखकों ने भारत के धर्म, संस्कृति और गौरव को मिटाने के लिए जो झूठा इतिहास लिखा है—अब समय आ गया है कि उस का परिष्कार कर सभी कुछ नए और सही ढंग से लिखा जाए

हमारा अनुभव है कि पाठशालाओं की अध्ययन-पुस्तकों में व्याकरणगत अशुद्धियों अथवा विषय-वस्तु के दोष-पूर्ण प्रस्तुतीकरण के कारण कुछ लोगों में अत्यन्त रोष उत्पन्न हो जाता है। अतः यह अनुभूति तो अधिकाधिक जन-समुदाय में व्यापक होनी चाहिए कि हमारा सम्पूर्ण इतिहास बुरी तरह से तोड़ा-मरोड़ा गया है। किन्तु दुर्भाग्यवश सामान्य व्यक्ति यह भी नहीं जानता कि आज भारतीय इतिहास के नाम से उसे एवं उसके बालकों को जो कुछ पढ़ाया जा रहा है, वह न तो भारतीय है और न ही इतिहास, अपितु काल्पनिक विचारों, कपोल कल्पनाओं एवं निपट असत्यता का पिटारा है।

उपर्युक्त न्यूनताओं और अशुद्धताओं के अतिरिक्त भारतीय इतिहास में कुछ विलुप्त अध्याय भी हैं। उन अध्यायों का सम्बन्ध उस प्रभुत्व से है, जो कभी भारतीय क्षत्रियों ने प्रशान्त महासागर वाली से उत्तर-पश्चिम यूरोप में बाल्टिक तक तथा कोरिया से जावा, एवं अंगकोर वाट से अरेबिया (अरब) तक अर्जित किया था। अतीत काल में बृहत्तर भारत के दूर-दूर तक फैले हुए सीमान्तों के अस्तित्व से तथा कथित भारतीय इतिहास के विद्वान् लोग भी अज्ञान में बेसुध प्रतीत होते हैं।

भूलों भरा इतिहास

ऐसे समस्त दोषों का भारतीय इतिहास-ग्रन्थो मे समाविष्ट हो जाने का कारण यह रहा है कि भारत लगभग एक सहस्र वर्ष तक विदेशी शासन के अधीन रहा है। राजनीतिक पराधीनता मे सर्व प्रथम प्रहार इतिहास पेर ही होता है, क्योंकि किसी भी राष्ट्र के इतिहास को विकृत कर देना उस राष्ट्र के मनोबल को गिरा देने का निश्चित प्रकार से सफल उपाय है। अरबी या फारसी मे लिखे मुगलकालीन तिथि-वृत्तों और पश्चिमी विद्वानों के अन्वेषण प्रबन्धों पर प्रधानतः निर्भर रहने के कारण हमारे इतिहास में महत्वपूर्ण तिथि वृत्तात्मक एवं तथ्यपरक भूलें भरी पड़ी हैं।

तत्कालीन बादशाहों की प्रमुख रूप में चाटुकारिता के उद्देश्य से लिखे जाने के कारण मध्यकालीन मुस्लिम इतिहास वृत्तों में प्रामाणिकता से झूठी बातें भरी पड़ी हैं। चूंकि उनका उद्देश्य सत्य-परिवेष्टित होना और तथ्यों का ज्यों का त्यों लिख देना था ही नहीं, इसीलिए उनमें बादशाहों के जन्म-दिनों तथा तख्त पर बैठने जैसी सरल, किन्तु महत्वपूर्ण तिथियों के सम्बन्ध में भी गम्भीर मतभेद हैं। इसका एक ज्वलन्त उदाहरण यह है कि जहांगीरनामा में जहांगीर स्वयं अपने ही बेटे शाहजादा परवेज की मां को पहचानने में भी भूल कर बैठा है। जिस स्त्री के साथ का उल्लेख उसने किया है, उसके सम्बन्ध में अन्य समकालीन लोगों ने विवाद प्रस्तुत किया है।

भारतीय इतिहास को विकृत करने में पश्चिमी विद्वान भी भारतीय सभ्यता की अति प्राचीनता के सम्बन्धों में प्रमुख रूप से तथा मानव-सभ्यता के सम्बन्ध में सामान्य रूप से, अपनी अपरिपक्व धारणा वश प्रमुख कारण बन गये थे।

१६ वीं तथा १७ वीं शताब्दी मे जब पश्चिमी प्रवासी गण अधिकाधिक संख्या में भारत आने लगे थे, तब वे लोग अपनी इस अपरिपक्व धारणा से ग्रस्त थे कि मानव-सभ्यता ईसामसीह से बहुत अधिक काल पूर्व उदित नहीं हुई थी। उस धारणा से ही उन्होंने भारतीय तिथि क्रम तथा विश्व-सभ्यताओं के इतिहास को ऐसे तोड़ना-मरोड़ना प्रारम्भ कर दिया, जिससे कि अत्यन्त दूरातीत काल की घटनाओं को ईसामसीह के जन्म के आस पास अथवा जहां तक सम्भव हो, ईसामसीह के जन्म के पश्चात् ही घटित बताया जा सके।

उनकी 'सिविल' अपरिपक्वता की तुलना में तो भारतीय परम्परा में पोषित हमारे रसोइये और मिस्त्री लोग भी समय स्थिति की अखण्ड-गति, मानव-सभ्यता का अज्ञात अतीत तथा हमारे अपने विश्व की भांति अन्य लाखों विश्वों के अस्तित्व के सम्बन्ध मे उनसे अधिक वैज्ञानिक रूप से सही ज्ञान रखते थे। आधुनिक वैज्ञानिक विचार धारा भी धीरे-धीरे प्राचीन भारत के उपर्युक्त परम सिद्धान्तों की दिशा में ही विचार-परिवर्तन कर रही है। अतः जब कभी एक लाख, पांच लाख या दस लाख वर्ष पुराने नर-कंकाल मिल जाते हैं, तो पश्चिमी विद्वानों द्वारा प्रदर्शित किया जाने वाला सहज आश्चर्य अत्यन्त बाल सुलभ तथा संवेदजन्य दोष प्रतीत होता है।

भारतीय इतिहास का अथवा इस दृष्टि से किसी भी इतिहास का पुनर्लेखन निश्चित रूप से इस स्पष्ट ज्ञान के साथ प्रारम्भ किया जाना चाहिए कि मानवता का अतीत अत्यन्त अलभ्य है। दीर्घकाय कालिचाल चक्र की भांति, जिसमे बहुत से झूले लगे होते हैं, जीवन का चक्र अनेक बार चक्कर लगा चुका है। ऊपर वाले वाले झूले मे बैठकर स्वयं सबसे ऊपर होने का विचार करने वाले व्यक्तियों के अनुरूप ही प्रत्येक पीढ़ी ने यह अहंकार पूर्ण अनुभव प्राप्त किया है कि वह ही ऐसी पीढ़ी रही है, जिसने विभिन्न क्षेत्रों में परम सत्यों की खोज की है। एक सभ्यता के पश्चात् दूसरी सभ्यता प्रगति के पथ पर अग्रसर हुई और (उसके बाद) मानव-कारणों अथवा ईश्वर-निर्मित महाप्रलयों के फलस्वरूप नष्ट होकर (सदैव के लिए) विलुप्त हो गई है। अतः हमारा यह कल्पना करना गलत है कि पिछले २०० वर्षों मे की गई वैज्ञानिक प्रगति अभूतपूर्व है। दो सहस्राब्दियां तो समय की अनन्तता में केवल एक चिनगारी मात्र हैं। इस प्रकार की तो असंख्य चिनगारियां निश्चित ही रही होंगी। इसी कारण समय के परम्परागत भारतीय मापक प्रतिपल से लेकर अनन्त काल तक के है। जो युग, महायुग तथा कल्पों के नाम से पुकारे जाते हैं।

ऋग्वेद कितना पुराना

अतः यह दृढ़ता से जान लेने योग्य है कि रामायण और महाभारत के युद्ध उन दिनों के, विज्ञान मे अत्यन्त उन्नत दो राष्ट्रों के मध्य लड़े गये महाप्रलयकर युद्ध थे। इसलिये उनकी उपलब्धियों के सन्दर्भों को केवल काव्यगत प्रगल्भता कह कर उपेक्षित नहीं किया जा सकता। दूसरी बात यह है कि पश्चिमी [illegible]वादियों की भांति ही इस पर अड़े रहना अनुचित है कि यह भारत ईसा से केवल १००० वर्ष पूर्व की है, तथा रामायण इससे भी कुछ और पहले की। दोनो बहुत अधिक पूर्व काल की है। वेद तो बहुत अधिक अतीत काल के हैं।

अत भारतीय इतिहास ग्रन्थो की प्रथम भयंकर भूल वेदो, रामायण, पुराणो तथा महाभारत के रचना काल को अल्प-कालीन करने मे है।

अन्य अत्यन्त दुर्भाग्य जनक भयंकर भूल यह मानना है कि संस्कृत कभी भी भारत की सर्व-व्यापक सामान्य बोली जाने वाली, राष्ट्रीय भाषा नहीं रही है। तथ्य यह है कि संसार की अन्य कोई भी भाषा इतनी अधिक नहीं बोली गई, जितनी संस्कृत। समस्त प्राचीन भारतीय साहित्य, चाहे वैज्ञानिक, तकनीकी या मानव-शास्त्र से सम्बद्ध रहा हो, सर्वथा संस्कृत भाषा मे ही रहा है। अधिक उल्लेख योग्य जो बात रही, वह यह है कि यह सब कुछ सदैव पद्य मे ही था। सारे आदेश, पत्रक, अनुदान, नाटक, लोक-साहित्य, धर्म-विधि-विषयक साहित्य का संस्कृत भाषा मे ही होना इस बात का प्रबलतम प्रमाण है कि न केवल भारत मे, अपितु विश्व के विशाल क्षेत्र वाली से बाल्टिक तथा कोरिया से अरेबिया तक जहां कभी भारतीय क्षत्रियो का राज्य था, राष्ट्र भाषा के रूप मे संस्कृत को अप्रतिहत सम्मान का गौरवशाली स्थान प्राप्त था।

हार की जीत

तीसरी भयंकर भूल बुद्ध एवं श्री शंकराचार्य की तिथियो से सम्बन्धित है। कहा जाता है कि भारत मे शंकराचार्य पीठों के पास पिछले दो हजार छह सौ वर्षों से चले आ रहे आचार्यों की अविच्छिन्न क्रमबद्ध शृंखला है।

चौथी बड़ी गलती सिकन्दर महान के भारत मे पदार्पण के मूल्यांकन से सम्बन्ध रखती है। कुछ इतिहासकारो का मत यह है कि पोरस को हराना तो दूर रहा यह सिकन्दर ही था, जो हारा था, और इसी कारण वह शीघ्रता मे वापस भागा तथा जल्दी ही मर गया। इस विचार के समर्थन मे यह कहा जाता है कि वे समस्त वर्णन, जिनमे सिकन्दरकी अभूतपूर्व विजय का उल्लेख है, केवल ग्रीक-देश के ही हैं। और जैसा कि संकुचित, स्वार्थी लेखकों का नित्य अभ्यास होता है, हार को भी

(शेष पृष्ठ १० पर)

महात्मा आनन्द स्वामी की रोचक विदेश यात्रा का

प्रेरक—वर्णन

मैं १६ मई, १९६६ सायं ८ बजे सिंगापुर से बी ओ० सी० के वायुयान द्वारा फिजी की ओर उड़ा-सारी रात वायुयान में बैठे २ बीत गई, अब २० की सायं के ६ बज चुके हैं और मैं अभी न्यूजीलैंड के नगर आकलैंड के 'एयर पोर्ट' पर बैठा हूं। अभी चार घण्टे और प्रतीक्षा करूंगा। तब नन्दी (फिजी) की ओर जाने वाला वायु यान मिलेगा, यहां मुझे ७ घण्टे प्रतीक्षा करनी पड़ी। दिन के दो बजे यहां पहुंचा था। १८ घण्टे की वायु यात्रा के पश्चात् भी अभी बीच ही में हूं। रात को सोना नहीं मिला प्रातः को नहाना नहीं मिला, दोपहर को खाना नहीं मिला, दिन को आराम नहीं मिला, अब रात को फिर सोना नहीं हो सकेगा, सुना था २० मई को सूर्य ग्रहण होगा पता नहीं सूर्य को ग्रहण लगा था नहीं लगा, मुझे तो लग गया। यहीं बैठा विचार कर रहा हूं कि दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में आज से दो हजार वर्ष पूर्व बुद्ध मत का प्रचार करने भिक्षु आये थे, उन्होंने कितने कष्ट उठाये होंगे जब समुद्र यात्रा भी बहुत कठिन थी, महीनों समुद्र ही में रहकर प्रचारकों ने वर्षा, धूप, सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास सहन की होगी। भाषा की भिन्नता ने तो कितनी ही उलझनें डाल दी होंगी और इतने तप के पश्चात बुद्ध मत के प्रचार से बर्मा, चीन, जापान, कम्बोडिया, स्याम, मलाया इत्यादि कितने ही देश बुद्ध भगवान के भक्त बन गये, परन्तु अब तो इन देशों में सिवाय हाई-लैंड के और कहीं भी बुद्ध मत नहीं रहा। इतना तप, इतना प्रयत्न बहुत स्थाई प्रभाव डाल न सका। तब मन में यह विचार आ घुसा कि तू जो ८३ वर्ष की आयु के शरीर को कष्ट दे रहा है, इस से होगा क्या ? महाराजा अशोक ने बौद्ध मत के प्रचारार्थ अपनी पुत्री तथा पुत्र को लंका भेजा था। वहीं से बौद्ध प्रचारक फिर एशिया के इन देशों में पहुंचे थे, तत्पश्चात पश्चिमी एशिया को पार करके बौद्ध प्रचारक उत्तरी अफ्रीका के नगर काई-रोज तक फैल गये थे, ईराक में भी बौद्ध तथा जैन मत के तपस्वी महानुभाव निवास करते थे, इण्डोनेशिया, सुमात्रा, जावा, बोरन्यू, बाली आदि द्वीपों में हिन्दु मत का बोल बाला था। आज इन स्थानों में हिन्दुत्व तथा बौद्ध मत के खण्डरात तो हैं, और कोई भी चिह्न नहीं।

आज से २१०० वर्ष पूर्व उत्तरी अरब पर एक राजा 'वैकुण्ठनाथ' राज्य करता था तुर्की के एक गांव की खुदाई से ३५०० वर्ष पुरानी हिन्दू मूर्तियां निकली हैं, परन्तु अब न तुर्की में न अरब में कहीं भी हिन्दुत्व नहीं रहा। इस का कारण यही प्रतीत होता है कि भारत से प्रचारक इन देशों में फिर नहीं पहुंचे आलस्य ने घेर लिया होगा, यदि प्रचारक पहुंचते रहते तो आज सारा एशिया अवश्य आर्य हिन्दु होता, और अब जिन देशों में हिन्दु आबाद हैं, इन की भारतीय सभ्यता का मत बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि भारत के सन्यासी कष्ट उठा कर भी यहां पहुंचें।

फिजी की बात

फिजी की बात पहले लीजिये। इस समय इस की आबादी लगभग पांच लाख है, इन में से आधे भारतीय हैं, इन भारतीयों के पूर्वजों को गन्ने की काश्त के लिये भारत से १८७९ में ५-५ वर्ष के Agreement पर लाया गया था, जब मैं २१ मई प्रात सूवा (फिजी) पहुंचा और इन भारतीयों को हिन्दी बोलते। नमस्ते, जय-हिन्द, तथा राम राम करते सुना तो हृदय गद्गद हो गया। लगभग एक सौ वर्ष इन को फिजी में रहते हो गये, प्रारम्भ में भारतीयों ने अकथनीय कष्ट सहन किये। यहां के 'फैंजिती' लोगों को पादरियों ने ईसाई बना लिया। भारतीयों पर भी कुछ समय के बाद पादरियों ने डोरे डालने शुरू किये। परन्तु आर्यसमाज का विचार रखने वाले जो लोग यहां आ चुके थे, उन्होंने इस खतरे को भांप लिया और आर्यसमाज का आन्दोलन प्रारम्भ किया। वैदिक धर्म तथा हिन्दुत्व की खूबियों का वर्णन होने लगा, भारत से प्रचारक पहुंचने लगे, और १९०४ में विधि पूर्वक आर्यसमाज की स्थापना हो गई। फिजी के माननीय सरदार बख्शीशसिंह मल नेगु ने स्पष्ट कहा कि यदि आर्यसमाज यहां न होता तो जिस प्रकार फिजी के सारे फैंजिती लोग ईसाई बन चुके हैं, भारत के यह सारे हिन्दु भाई ईसाई बन चुके होते।

आर्यसमाज की गति विधि

आर्यसमाज ने प्रारम्भ में बड़ा काम किया। आर्यसमाज की स्थापना में बाबू मगलसिंह जी का बड़ा हाथ है। १९१२ में एक सज्जन राम मनोहरानन्द शर्मा से फिजी पहुंचे और डा० रणवीरसिंह, डा० रामनरीक सिंह, सेठ हीरालाल, प० काशी महाराज, प० हरदयाल शर्मा पं० रामनारायण मिश्र, प० शिवनन्दन इत्यादि के सहयोग से गुरुकुल की स्थापना की, बड़ा सुन्दर कार्य होने लगा। १९१८ में आर्य प्रतिनिधि सभा की भी स्थापना हो गई। कितने ही ग्रामों, नगरों में आर्यसमाज जारी हो गये। १९२० में एक ऐसी घटना घटी जिस ने आर्यसमाज में फूट पैदा कर दी राम मनोहरानन्द ने जो भगवे वस्त्र पहनते थे, विवाह कर लिया। इस पर दो पार्टीयां बन गईं, राममनोहरानन्द के स्थान प गुरुकुल का आचार्य प० शिव दत्त शर्मा बनाये गये, १९२५ में गुरुकुल वृन्दावन से प० गोविन्द नारायण फिजी पधारे और दोनों पार्टियों का मिलाप करा दिया। गुरुकुल सर्व प्रिय बनने लगा, फिजी के असली वासी 'फैंजिती' बालक भी गुरुकुल में पढ़ने लगे। वेद मन्त्र गाते, गायत्री मन्त्र का जप करते जब यह तीस फैंजिती ब्रह्मचारी वेद गायन करते तो समय बन्ध जाता। तभी ७० लड़के और २५ लड़कियां भारत पढ़ने के लिये भेजे गये। लड़के गुरुकुल वृन्दावन में और लड़कियां कन्या महाविद्यालय जालन्धर में "फैंजिती" लड़कों को गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ाने का निश्चय हुआ परन्तु फिजी की अंग्रेजी सरकार ने रोक दिया। गुरुकुल को हानि पहुंचाने के लिये सरकार ने ग्राम में स्कूल खोल दिया फैंजिती लड़के गुरुकुल में पढ़ना चाहते थे, उन्हें बल पूर्वक रोका गया। उन्हीं दिनों में भारत से प० श्री कृष्ण जी फिजी पधारे, जिस समुद्री जहाज में यह गये, उसे एक मास क्वारन्टीन में रखा गया। कितने लोगों की जहाज में मृत्यु हो गई, पं० श्री कृष्ण जी ने फिजी पहुंच कर वेदप्रचार प्रारम्भ कर दिया। १९२६ से १९३१ तक प्रचार खूब हुआ। अंग्रेजी सरकार प० श्री कृष्ण को देश बदर करने पर तैयार हो गई। १९२७ में प० धर्मेन्द्र जी स्नातक गुरुकुल कांगड़ी फिजी आये, गुरुकुल की बागडोर सम्भाली, १९२८ में डा० कुन्दनसिंह डीचर बन कर आये। ईसाई तथा मुसलमानों का कुछ उपद्रव देख कर हिन्दू "सगठन" स्थापित किया। तीन सौ मुसलमानों की शुद्धि की गई, तब सरकार ने कुछ हिन्दुओं को साथ मिलाकर हिन्दुओं में फूट डलवा दी। आर्यसमाज ने स्कूल, कालेज, कन्याकालेज जारी करने शुरू किये। सिख भाईयों तथा सनातन धर्मी भाईयों ने भी स्कूल कालिज जारी किये। इस समय फिजी में ८० प्रतिशत छात्र छात्रायें दयानन्द स्कूल, कालिज तथा सनातन धर्म कालेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

फिजी में तीन सौ टापु हैं, जिन का व्यास एक लाख मुरब्बा मील है, जन-संख्या आजकल लगभग ५ लाख है, जिन में से आधे भारतीय लोग हैं। १८७९ में भारत से साठ हजार से अधिक लोगों को नाना प्रकार के प्रलोभन दिखा कर फिजी लाया गया यहां इन्हें कुली पुकारा जाने लगा फिर १८९१ से इनडियन कहा जाने लगा, इन भारतीय लोगों ने प्रारम्भ में भारी अपमान तथा कष्ट सहन किये परन्तु अपनी सहन शीलता तथा बुद्धिमत्ता से ७५ वर्षों में भारतीय ऊंचे स्थान पर पहुंच गये। गुजरात से पर्याप्त व्यापारी भी यहां पहुंच गये, और आज व्यापार ८० प्रतिशत भारतीयों के हाथ में हैं श्री ए० डी० पटेल बार एट ला० यहां की सरकारी कौंसिल में मिनिस्टर हैं। फिजी की सारी बस सर्विस हिन्दुस्तानियों के हाथ में हैं। ५०-६० वकील भारतीय हैं। बीस से अधिक डाक्टर हैं। इञ्जीनियर भी हैं। फिजी में जितनी मोटर कारें हैं इन में ७५ प्रतिशत भारतीयों की हैं, इन के मकान बहुत सुन्दर तथा सुख देने वाले हैं हिन्दी का प्रचार बहुत अच्छा है। आर्यसमाज तथा सनातन धर्म की सारी संस्थाओं में हिन्दी पढ़ाई जाती है। फिजी सन्देश-हिन्दी पत्र निकलता है। यह प्रसन्नता की बात है कि आर्यसमाज तथा सनातन धर्म सभा ने फिजी में हिन्दुत्व को जीवित रखा हुआ है, यद्यपि नई सन्तान पश्चिमी सभ्यता की ओर झुक रही है, फिर भी Divine Life Society रामकृष्ण मिशन आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा के यत्नों से युवक मण्डल अभी कुछ सम्भला हुआ है परन्तु यदि यहां प्रचारक सन्यासी न पहुंचे तो हिन्दुत्व को भारी धक्का लगने का भय है। साथ ही भारत के लिये आज जो प्यार यहां दिखाई देता है, वह भी जाता रहेगा। मैं थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर में वेद सन्देश सुनाकर अब फिजी में वेद की बातें सुना रहा हूं। यहां से न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया जाकर सेवा करनी है, फिर हांगकांग तथा जापान जाना है अभी दो तीन महीने और इधर सेवा करनी होगी।

—आनन्दस्वामी सरस्वती

विचारों के लिए संपादक का सहमत और उत्तरदायी होना आवश्यक नहीं है।

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य । अग्ने रथीरध्वराणाम् ॥२१॥

—ऋ० ५-८-३१-२

व्याख्यान—हे "अग्ने" सर्वज्ञ ! तू ही सर्वत्र "प्रशस्य" स्तुति करने के योग्य है, अन्य कोई नहीं । 'विदथेषु" यज्ञ और युद्धों में आप ही स्तोतव्य हो । जो तुम्हारी स्तुति को छोड के अन्य जडादि की स्तुति करता है उसके यज्ञ तथा युद्धों में विजय कभी सिद्ध नहीं होता है । "सहन्त्य" शत्रुओं के समूहों के आप ही घातक हो । "रथी" अध्वरो अर्थात् यज्ञ और युद्धो मे आप ही रथी हो । हमारे शत्रुओं के योद्धाओं को जीतने वाले हो इस कारण से हमारा पराजय कभी नही हो सकता ।

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार ४ जुलाई १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

सार्वदेशिक सभा का नव निर्वाचन

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन और नव निर्वाचन २५ जून को देहली में सम्पन्न हो गया । आर्यसमाज दीवानहाल में अधिवेशन सम्पन्न हुआ और उसी की ओर से सभी राज्यो से समागत प्रतिनिधियो के निवास एव भोजनादि की सुव्यवस्था थी, इस आतिथ्य के लिये आर्यसमाज दीवानहाल के अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं ।

वार्षिक अधिवेशन मे वर्ष भर की प्रगति, गतिविधियों का लेखा-जोखा सम्पुष्ट करने के पश्चात् नवीन अधिकारियो का निर्वाचन सम्पन्न हुआ । आर्य जगत् के प्रतिनिधियो ने आगामी वर्ष के लिये भी प्रधान और मन्त्री पदो पर पूर्व अधिकारियों को ही सर्वसम्मति से निर्वाचित किया । इस प्रकार पूर्व अधिकारी श्री प्रतापसिंह शूर जी प्रधान और श्री रामगोपाल जी प्रधान मन्त्री बने । इन दोनों व्यक्तियो का निर्वाचन उनकी सेवाओ का मूल्याकन है । हमे आशा एव पूर्ण विश्वास है कि इन दोनो अनुभवी व्यक्तियो के पथ-प्रदर्शन मे आर्य समाज का कार्य और भी गतिशील हो सकेगा । हम मित्र परिवार की ओर से दोनो मुख्य अधिकारियो को हार्दिक बधाई देते हैं ।

इनके अतिरिक्त अन्य पदो पर एव अन्तरग सदस्यो के रूप मे भी जिन सदस्यों का निर्वाचन हुआ है वे सभी अनुभवी एव कर्मठ कार्यकर्ता हैं, आशा है सारी अन्तरग सभा एव नवीन अधिकारी मिलकर आर्यसमाज के इतिहास में एक नवीन मोड लाने का साहसिक कदम उठायेंगे । हम हार्दिक सफलता की कामना करते हैं ।

इस अधिवेशन में दो बातें मुख्य रूप से विचारणीय रही—प्रथम "गोरक्षा आन्दोलन का प्रश्न", इसमे सन्देह नहीं कि आर्य समाज इस आन्दोलन का जन्मदाता और पुरोधा रहा है, प्रसन्नता की बात है कि अब और लोग भी इस ओर सक्रिय हैं परन्तु इसका यह अर्थ नही कि हम इस ओर उदासीन रहे नहीं हमे और भी अधिक उत्साह के साथ इस कार्य को आगे बढाना है । इस सम्बन्ध मे वार्षिक अधिवेशन मे जो प्रस्ताव पारित हुआ है वह अति महत्वपूर्ण है समस्त आर्य जगत् को उस भावना के अनुसार कार्य करना है ।

अधिवेशन मे आर्य समाज शताब्दी योजना की सम्पन्नता के सम्बन्ध में भी विशेष विचार हुआ । कुछ सदस्यो ने शताब्दी योजना की प्रगति के सम्बन्ध मे असन्तोष प्रकट किया और पूर्ण उत्साह के साथ दस वर्षीय योजना को दस भागो मे बाटकर पूर्ण करने का आग्रह किया । प्रत्येक राज्य मे आर्य महा सम्मेलन करने के प्रश्न पर भी विचार किया गया, शताब्दी काल तक आर्य साहित्य प्रकाशन की विशेष योजना पर भी बल दिया गया । इन सभी प्रश्नो पर शताब्दी समिति के सहयोग से सार्वदेशिक सभा कार्य करेगी ऐसा प्रधान जी ने आश्वासन दिया ।

हम आशा करते हैं कि सभा गोरक्षा के ज्वलन्त प्रश्न पर कदम उठायेगी और शताब्दी योजना पर भी व्यापक वातावरण बनाने मे सफल होगी । सभी आर्यजनो को सभा के कार्यों की पूर्ति मे सहयोग देकर आर्यसमाज के कार्य को सफल और अग्रसर बनाना है ।

स्मरणीय स्वामी ध्रुवानन्द

आर्यजगत् के कर्मठ एव यशस्वी नेता स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का वियोग हुए एक वर्ष हो गया उनके सम्पर्क की स्मृतिया अभी ताजी है और आर्यसमाज की वर्तमान गतिविधियों एव रीतिनीतियो पर उनकी छाप सुस्पष्ट है । आर्यसमाज में उनकी अपार निष्ठा और कर्मठता के प्रति ऐसा कौन व्यक्ति है जो कृतज्ञ न होगा । स्वामी जी ने एक साधारण व्यक्ति से बढकर सार्वदेशिक व्यक्तित्व प्राप्त किया हमे उनकी इस निष्ठा और कर्मठता का अनुकरण करना चाहिये । आजीवन ब्रह्मचारी और सन्यासी के रूप मे उन्होने जो आदर्श प्रस्तुत किया उसका हमे अनुकरण करना चाहिये ।

स्वामी जी ने सार्वदेशिक सभा देहली, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, सर्वदानन्द साधुआश्रम हरदुआगज (अलीगढ) के निर्माण और विकास में विशेष सहयोग दिया । इन संस्थाओं की उन्नति में सहयोग देना उनके प्रति श्रद्धा रखने वाले व्यक्तियो का कर्तव्य है । आर्यमित्र परिवार तो उनका अपना परिवार था, वे कही भी रहे देश मे या विदेश में उन्होने मित्र को कभी नही भुलाया मित्र ने भी उनके आदेशो एव आदर्शों का यथाशक्ति पालन करने का यत्न किया ।

स्वामी जी ने विदेश प्रचार यात्राओ द्वारा अपनी मिशनरी भावनाओ का परिचय दिया इस ज्योति को भी हमे जगाये रखना है ।

आर्यसमाज सगठन की सुदृढता एव पवित्रता के लिये वे जिये और मरे, उन के पश्चात् आर्यसमाज को आदर्श बनाये रखने का दायित्व वर्तमान पीढी पर है । स्वामी ध्रुवानन्द के प्रति यही सच्ची श्रद्धाजलि होगी कि हम उनके कार्यो को पूर्ण करने मे सलग्न हो ।

कीर्तियस्य स जीवति

उत्तरप्रदेश मे चीन समर्थक जासूस

उत्तरप्रदेश का यह दुर्भाग्य है कि उसमे विदेशी समर्थक पचमागी तत्व बढ रहे है । अनेक उच्चकोटि के राष्ट्रिय नेताओ और तीन प्रधान मन्त्रियो को जन्म देने का गौरव रखते हुए भी यह राम कृष्ण की पवित्र भूमि जासूसो का घर बनी हुई है और सारे देश मे इस अपवित्र वातावरण के प्रति दुख और चिन्ता है ।

पिछले दिनो उत्तरप्रदेश पुलिस ने डा० राजेन्द्र नामक एक वैज्ञानिक को जासूसी के अपराध मे पकडा है । ज्ञात हुआ है कि ये सज्जन श्री नेहरू के भी कृपापात्र बनने वाले थे पर पीछे हट गये और बाद में छिप तौर पर चीन समर्थक बनकर उत्तरप्रदेश के सीमान्त मे सैनिक तैयारिया करते रहे और जासूरी द्वारा चीन की सहायता करते रहे, इस व्यक्ति ने एक विशेष वर्ग तैयार करने में भी सफलता प्राप्त की जो चीन का समर्थन करने मे उसका सहायक सिद्ध हो । वह एक सेना के निर्माण मे सलग्न था जो चीनी आक्रमण के समय चीन की सहायता करती । ऐसे गद्दार और देशद्रोही तत्वो के साथ कोई रियायत नही होनी चाहिये सरकार को ऐसे व्यक्तियो पर कोई दया न दिखाकर प्राण दण्ड की व्यवस्था करनी चाहिये ।

हम आशा करते है कि उत्तरप्रदेश प्रशासन अधिक सतर्क हो इस प्रकार के तत्वो से उत्तरप्रदेश की रक्षा करेगा ।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बैठक का पथ-प्रदर्शन कर रहे थे शताब्दी समारोह बडे उत्साह के साथ मनाने की अपील की आपने सुझाव दिये कि शताब्दी के समय तक स्वामी जी का सारा साहित्य ग्रन्थ माला के रूप में प्रकाशित हो, स्वामी जी का बडा चित्र प्रकाशित कराया जाय, स्वामी जी की स्मृति में उपदेशक विद्यालय चलाया जाय, आर्यमित्र एव अन्य पत्रो के विशेषाक प्रकाशित कराये जाय, नारायण स्वामी आश्रम रामगढ पर आर्य विद्वत्परिषद् की एक बैठक एव यज्ञ आदि का आयोजन किया जाय, समाचारपत्रो एव आकाशवाणी आदि द्वारा स्वामी जी के जीवन एव कार्यो का परिचय दिया जाय, गुरुकुल आन्दोलन, वानप्रस्थ सन्याश्रम आदि की उन्नति मे सहयोग दिया जाय । इसी प्रकार अन्य बहुत कार्यों की योजना पर उपसमिति में विचार हुआ । शताब्दी कार्य को शीघ्र आरम्भ करने एव तत्परतापूर्वक सफल सम्पन्न करने के लिये गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता श्री धर्मदेव स्नातक ससद-सदस्य को शताब्दी समारोह का सयोजक नियुक्त किया गया । श्री प० प्रेमचन्द्र शर्म्मा (हाथरस), श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० सम्पादक आर्यमित्र, श्री प० शिवदयालु जी अध्यक्ष वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर सहयोगी सयोजक नियुक्त किये गये हैं ।

यह भी निश्चय हुआ कि शताब्दी समारोह एव स्वामी जी के साहित्य प्रकाशन आदि के लिये विशेष रूप से धन-सग्रह किया जाय उसके लिये रसीदें छपायी जाय ।

शताब्दी समारोह दिसम्बर मे सम्पन्न होना है, समय अत्यल्प है समस्त आर्य जनता से इस महान् कार्य मे सहयोग की प्रार्थना है । उस महान् व्यक्तित्व के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन कर हमे अपना कर्तव्य पालन करना है ।

×

नैनोताल आर्यसमाज में—

सभाप्रधान श्री मदनमोहन जी

अध्यक्ष विधान सभा उत्तर प्रदेश

का हार्दिक अभिनन्दन

आर्यरत्न की उपाधि से विभूषित

●

आर्यसमाज नैनीताल में दिनांक १९-६-६६ को आर्यसमाज के कर्मठ सेनानी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के नवनिर्वाचित प्रधान एवं उत्तर-प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री मदनमोहन वर्मा का अभिनन्दन किया गया तथा आर्यजगत् के प्रति उनकी रचनात्मक सेवाओं के लिए आर्यसमाज चौक लखनऊ के मन्त्री श्री छेदीलाल अग्रवाल ने उन्हें 'आर्यरत्न' की उपाधि से अलंकृत किया। श्री प्रधान जी के सम्मान में बोलते हुए श्री छेदीलाल ने कहा—'प्रधान जी ने आर्यसमाज की जो अमूल्य सेवाएं की हैं उनका मूल्य आंकना सम्भव नहीं। जीवन के मैदान मे हम सब खिलाडी हैं और खिलाड़ी को सफलता के लिए यदि उसे पुरस्कार दिया जाता है। तो, प्रोत्साहन के लिए। इसी प्रकार यह उपाधि भी समाज द्वारा वर्मा जी की सेवाओं के प्रति आदर की प्रतीक है। आर्यसमाज को ऐसे कर्मयोगी पर गर्व है।'

इस अवसर पर आर्यसमाज नैनीताल के प्राण एवं कसल बुक डिपो नैनीताल के संचालक श्री बाकेलाल जी कसल ने इस उपाधि वितरण के उपलक्ष म श्री प्रधान जी को बधाई दी तथा आर्यसमाज चौक लखनऊ को धन्यवाद दिया।

अपने सम्मान के लिए आर्यसमाज के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करते हुए प्रधान सभा श्री मदनमोहन जी ने अपने संक्षिप्त भाषण मे कहा—'मनुष्य जीवन की सार्थकता, ज्ञान और तप के सामञ्जस्य में है। माना कि कुम्हार को घडा बनाने का पूर्ण ध्यान है किन्तु जब तक वह अपने ज्ञान को क्रियात्मक रूप देकर घड का निमाण नहीं करता तब तक उसका ज्ञान अधूरा है। अत ज्ञानी होने के साथ-साथ तपस्वी होना भी आवश्यक है।" प्रधान जी के भावुकता-पूर्ण शब्दो में आयसमाज के सदस्यो स अनुरोध किया कि वे मौखिक बातें करने की अपेक्षा कर्मठ और तपस्वी बनने की प्रतिज्ञा करें। उपदेशको का कार्य केवल उपदेश देना ही नही अस्तु उसे अपने जीवन मे ढाल कर ससार के सम्मुख आदर्श रखना है।

श्री मदनमोहन जी वर्मा सभाप्रधान

इस अवसर पर दो अन्य विद्वत्तापूर्ण भाषण भी हुए। भाषणकर्ता के कन्या गुरुकुल हरिद्वार के मुख्याधिष्ठाता कविराज योगेन्द्र पाल शास्त्री एव इलाहाबाद के आर्योपदेशक महाशय दयास्वरूप जी। श्री योगेन्द्रपाल जी ने प्रधान जी की सेवाओ का उल्लेख करते हुए कहा—श्री मदनमोहन जी आर्यजगत् के महान् सेनानी और वयोवृद्ध नेता हैं जिन्होने राजनैतिक मच पर भी आर्य-समाज के कार्यक्रम को प्रोत्साहन दिया ओर सामाजिक क्षेत्र मे भी।' महाशय दयास्वरूप जी एडवोकेट ने विश्व संस्कृतियो का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करते हुए आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता प्रतिपादित की। अन्त मे श्री बाकेलाल जी के धन्यवाद के शब्दो के अनन्तर शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में नवीन प्रवेश

प्रसिद्ध आर्य शिक्षा संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का शिक्षा सत्र १ जुलाई से आरम्भ हो गया है। ६ से १० वर्ष की आयु के बालक विद्यालय विभाग म प्रविष्ट होगे। महाविद्यालय विभाग मे पण्डित कक्षा ११-१२ में संस्कृत लेकर मैट्रिक (शिरोमणि कक्षा १३-१४ में संस्कृत इण्टर व मध्यमा प्रविष्ट हो सकते हैं। शीघ्र पत्र-व्यवहार करे। —उमेशचन्द्र स्नातक उपमन्त्री विद्या सभा गुरुकुल वि वि वृन्दावन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ

दिल्ली २६ जून १९६६। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन २६ जून १९६६ को श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास जे० पी० बम्बई के सभापतित्व में आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों और अन्तरग सदस्यो का निर्वाचन हुआ और लगभग ५ लाख रुपये का बजट स्वीकार हुआ।

श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास प्रधान और श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले मन्त्री निर्वाचित हुए।

उपप्रधानो मे श्री डा०डी० राम जी एम० एल० ए० भूतपूर्व वाइस चांसलर पटना विश्वविद्यालय तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार तथा प० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम०पी० के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

सभा ने आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के कार्यक्रम को प्रगति देने का निश्चय किया है जो १९७५ म समस्त आर्यजगत् मे समारोहपूर्वक मनाया जायगा।

सभा ने उच्चकोटि के आर्य विद्वानों के दो सांस्कृतिक मण्डल आर्यसमाज का सन्देश प्रसारित करने के लिए भारत से बाहर भेजने का निश्चय किया है। इस के अतिरिक्त एक अंग्रेजी मासिक पत्र निकालने का भी निर्णय किया गया है।

सभा ने एक विशेष प्रस्ताव के द्वारा भारत सरकार से गोवध निषेध कानून बनवाने का निश्चय किया है और गोवध निवारण के लिए साधु महात्माओं ने त्याग और बलिदान का जो मार्ग अपनाया है उसके प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट की गई और साथ ही देश की समस्त आर्यसमाजो को आदेश दिया गया है कि इस महान् कार्य को सफलता के लिये क्रियात्मक सहयोग दे।

नागालैण्ड की समस्या के समाधान और ईसाइयो के अराष्ट्रिय प्रचार के निवारण के लिये भी सभा ने योजना बनाई है और सभा का एक प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही नागालैण्ड आदि का भ्रमण करेगा।

२५-६-६६ को दिल्ली में निर्वाचन

१९६६-६७ के लिए पदाधिकारियों एव अन्तरग सदस्यो का निर्वाचन इस प्रकार हुआ—

१—श्रीयुत प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास	प्रधान
२— डा० डी० राम जी	उपप्रधान
३—" मिहिरचन्द्र जी धीमान	"
४—" नरेन्द्र जी	"
५—" प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी०	"
६—" ला० रामगोपाल जी	मन्त्री
७—" नरदेव जी स्नातक एम०पी०	उपमन्त्री
८—" उमेशचन्द्र जी स्नातक	"
९—" शिवचन्द्र जी	"
१०—" बालमुकन्द जी आहूजा	कोषाध्यक्ष
११—" आचार्य विश्वश्रवा जी	पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरग सदस्य

१२—" श्रीयुत महात्मा आनन्दस्वामी जी	(जनरल)
१३—" ए० बालरेड्डी जी	मध्यदक्षिण
१४—" हरिगोबिन्द जी धरमसी	बम्बई
१५—" प० वासुदेव जी शर्मा	बिहार
१६—" प्रेमचन्द जी शर्मा	उत्तरप्रदेश
१७—" महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री	"
१८—" विष्णुदेव मेघराज जी	मोरीशस
१९—" बटुकृष्ण जी वर्म्मन	बगाल
२०—" डा० महावीरसिंहजी	मध्यभारत
२१—" विश्वम्भरप्रसादजी	मध्यप्रदेश
२२—" छोटूसिंह जी एडवोकेट	राजस्थान
२३—" महेन्द्रपाल जी	पूर्वी अफीका
२४—" ला० चतुरसेन जी गुप्त	आजीवन
२५—" सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट	जनरल
२६—" डा० हरिशंकर जी शर्मा	"
२७—" मती शकुन्तला जी गोयल	"

श्री नारायणदास कपूर आडीटर नियुक्त हुए।

यज्ञ

(श्री लालचन्द जी मेरठ)

आध्यात्मिक तौर पर यज्ञ जीवन की उस स्थिति को कहेगे जिसमे कि शरीर प्राण मन और बुद्धि सभी का पूर्ण सामञ्जस्यपूर्वक समन्वय हो और सारी क्रिया आत्मा के अनुकूल हो रही हो। मनुष्य की बुद्धि में ऋत को धारण करने की क्षमता हो विवेचना शक्ति सम्यक रूप से काय कर रही हो और मनुष्य श्र य की ओर अग्रसर हो उसमें मनोबल हो दृढ़ सकल्प हो और वह व्रत को पूर्ण करने के लिए तत्परता और लग्न से कसा हुआ हो उसकी प्राणशक्ति उसके मन द्वारा ज्ञानेन्द्रिया और कर्मे द्रयो मे अपना युक्त काय कर रही हों तथा काय करने मे उसे प्रसन्नता प्राप्त हो रही हो। यह स्थिति एक श्रष्ठ आध्यात्मिक स्थिति है और जब मनुष्य अपना सम्ब ध सर्वनियन्ता भगवान से अनुभव कर रहा हो और उसकी अनु मति से ही काय हो रहा हो जिसमे स्पष्ट रूप से भगवान की प्ररणा अनुभव हो रही हो तो ऐसी स्थिति सब से उत्तम सबसे श्र ष्ठ होने से और भगवान के साथ योग की अनुभूति होने से ब्राह्मी स्थिति कहलाती है।

ब्राह्मी स्थिति मे मनुष्य मधुरतम रस और ऋजुवित्तम होकर एक विल क्षण तेज को अपने अ दर और बाहर अनुभव करता है जो तेज प्रकाशमय किंतु धम्र रहित और परम शुभ्र और अत्यन्त प्रभायुक्त होता है और मनुष्य में सन्देह और सशय नहीं टिकने देता। ऐसा मनुष्य निश्चय का पक्का और दृढ़ व्रती होता है और परम सात्विक जीवन चर्या और आपस मे प्रम व्यवहार करता हुआ सदा निश्चिन्त होकर एव निष्ठा से कर्तव्य किये जाता है और उ हे भगवान को ही समर्पित किये जाता है।

भगवान यज्ञ रूप हैं और उनके भजन की विधि भी यज्ञ ही है। यज्ञ की यह विधि सनातन है। इस विधि मे मनुष्य धर्माचरण करता है क्योंकि वास्तव में धम की प्रक्रिया का नाम ही यज्ञ है।

जब हम ऋत और सत्य को इकट्ठा आचरण मे लाते हैं तो वह धम कहा जाता है। ऋत और स य परम ज्योति मय भगवान के नियम हैं इन नियमो का पालन करने वाला भगवान का प्रमपात्र हो जाता है। आधिभौतिक अर्थात सामाजिक क्षत्र में मिलकर सर्वमगल के कार्यों को नि स्वार्थ भावना से पूरी लगन से सम्पन्न करना यज्ञ है। इस यज्ञ में पूजा, सगति करना और दान इन तीनों व्यवहारो का समन्वय दिखाई देता है अर्थात अपने से छोटों स उदारता का बर्ताव। यह यजन बहुत महत्व का है इससे सस्कृति और सभ्यता दोनो की नींव दृढ़ होती है। जब मनष्य अपने आपको सामाजिक प्राणी जानकर सब हित में निजी हित निहित जानकर सब हित में तत्पर हो जाता है तो एसे समाज म सहयोग उदय होता है जो अजेय होता है और ऐसा समाज ऐश्वय युक्त और प्रभावशाली हो जाता है। यही रहस्य प्राचीन भारत के वैभव का था। भारत में यज्ञ प्रथा जारी थी और समाज सशक्त था। सशक्त समाज उन्नति शील होता है। प्रत्येक व्यक्ति मे उ साह होता है और उसमे समाज और राष्ट के मान का ध्यान होता है जिसे वह उत्तम जीवनचर्या और सदव्यवहार द्वारा सुरक्षित रखता है। यज्ञ मे मानवो की शक्ति विकसित होती है यज्ञ म समाज का सामर्थ्य बढ़ता है। यज्ञ द्वारा राष्ट्र मे लक्ष्मी और शोभा दोनो का वास होता है।

यदि ठीक ठीक धम मर्यादाओ का पालन किया जाय तो सपूर्ण जीवन ही योग है। मनुष्य प्रगतिशील प्राणी है। जब तक उसक प्रगति ठीक दिशा म है तब तक वह योगमय जीवन यतीत करता है। योगमय जीवन म सामजस्य और समन्वय है उसमे भग का क म ही नहीं। जब सभी जन अधिकारो और कर्तव्यो का सतुलन रखगे तो कभी आपस के झगड नहीं होग और सभी सुखी होगे। सबके सुख को दष्टि मे रखकर जो जीवन व्यवहार किया जाता है वह यज्ञमय व्यवहार है उससे सबका अभ्युदय होता है। सब मे ऐश्वय और समृद्धि होने में दरिद्रता दूर होगी।

निकृ ति एक अभिशाप है जब लोगो का साधारण आवश्यकताए उनके श्रम के फलस्वरूप पूरी होती रह और समाज मे विषमता का घोर रूप न दीखे तो अवश्य सामञ्जस्य होगा। यूनतम आय और उच्चतम आय में इतना विषम अन्तर जसा कि आजकल दीख रहा है अवश्य क्षोभ उत्पन्न करता है और क्रान्ति का आवाहन करता है। एक ओर धन का इतना आधिक्य और दूसरी ओर भोजन कपडा तथा निवास तक के लिए व्याकुलता यज्ञ का अभाव दर्शा रहे है। यज्ञमय जीवन में तो सभी सतुष्ट और प्रसन्न रहने चाहिये और किसी वग का अ य दूसरे वग पर दबाव न रहना चाहिये तभी समझना चाहिये कि वह समाज यज्ञ द्वारा सुव्यवस्थित है।

आधिदविक जगत मे भगवान का चलाया विश्वयज्ञ चल रहा है उसमे कसी सुन्दर व्यवस्था है सब ऋतुए एक दसरे के पीछे क्रम से आ रही हैं सभी सूय चन्द्र नक्षत्र तारागण ठीक गति से काय कर रहे हैं। हम देखते हैं वनस्पति जगत मे भी सुव्यवस्था है और खनिज पदाथ भी ठीक मर्यादा मे हैं। हम कहीं भी त्रुटि नहा दीखती। पेड पशु जीव ज तु सभी ठीक ठीक है।

जितना उ पात मानव जगत में दीखता है उतना तो कही भी नही। कोई वन का हिसक पशु भी सजातीय पशु को मारता और सताता नहीं सुना गया। विजात य पशुओ पर तो आक्र मण ह ते हैं पर मनुष्य तो अपने ही जसे मनुष्यो का रक्त चूसता है। यह मानव प्राणी ही उपद्रव का कारण है और उसे नचा रहा है उसका स्वाथ। यदि स्वाथ पर निय त्रण किया जाय तो मनुष्य भी सुखी रह सकता है। मनुष्य अपने स्वाथ मे इतना लि त है कि उसका दष्टि मन्द हो गई है उसे अपना सुख ही सूझता है और दूसरे व्यक्ति का दुख उसे दुख ही नही लगता मैं सब स वसा व्यवहार करू जसा कि मै चाहता हू कि लोग मुझ से कर और मै ऐसा बर्ताव किसी से भी न करू जसा कि मै नही चाहता कि लोग मुझ से कर। तो यह ससार जिसमे वमनस्य कलह और दुर्व्यवहार क्लेश और दुख है अपने ही आपस के सदव्यवहार से स्वग बन सकता है। स्वाथ के कारण ही सन्देह होता है और

श्री लालच द जी
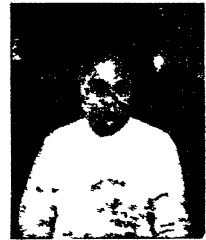
स देह भय उ पन्न करता है भय के कारण हम मित्र को न केवल शत्रु सम झने लगते है हम उसे शत्रु बना देते हैं। मैत्री भाव सौहार्द समवेदना और सहानुभूति मे जो मनुष्य का विकास होता है वह उन्नति आपस के वैमनस्य और स देह मे नही हो सकती। व्यक्ति का समाज के साथ सामञ्जस्ययुक्त सम न्वय ही सही मानवता का मूल्यांकन कर सकता है जितना हम एक दूसरे को ठीक समझने का य न करगे उतने ही अपने आप को सबके निकट पायगे और आपस मे समता के सम्ब ध स्थिर हो सकग। आपस का ऐक्य ही वह यज्ञ है जिसमे सबके दुरिता का क्षय और भद्र की प्राप्ति होगी।

श्री अरविंद अपनी अमूल्य पुस्तक योग समन्वय मे लिखते हे कि व्यक्ति का समष्टि के साथ सम्ब ध यह नही कि वह अपने साथियो का ख्याल रखे बिना अहम्भावपूर्ण होकर अपनी भौतिक और मानसिक उन्नति का या आध्या त्मिक मुक्ति का अनुसरण करे न ही यह कि वह सघ की खातिर अपने समुचित विकास को दबा दे या पगु कर दे, बल्कि यह कि वह अपनी सब सव त्तम और पूर्णतम सम्भावनाओं को अपने म एकत्र करे और उ ह विचार कम तथा अ य सभी साधनो से अपने चारो ओर रहने वाले मनुष्य साथियो पर बरसाय जिससे कि सम्पूर्ण जाति अपने सर्वोत्कृष्ट व्यक्तियो की उपलब्धियो के अधिक निकट पहुच सके। उन्नत व्यक्ति का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने साथियो की उन्नति मे सहयोग दे यह यज्ञ का तत्व है। यह ही सम वय का रहस्य है। इस प्रकार समाज का वाता वरण शुद्ध पवित्र और प्रगतिशील होता है जिसमे सर्वोन्नति म बाधा नहीं पडती।

महिला मण्डल

अमर वीरांगना—
लक्ष्मी बाई

[ले०—श्री पं० सुन्दरलाल जी]

गत एक सौ वर्षों से भी अधिक समय से रानी लक्ष्मीबाई का नाम सम्पूर्ण भारत के हृदय में बसा रहा है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में रानी लक्ष्मीबाई के ऊपर रचित सैकड़ों आल्हाओं, युद्ध गीतों व अन्य साहित्य ने भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में प्रदर्शित रानी की वीरता को शाश्वत बना दिया है। सं० १८५९ से लेकर १९४७ तक के मध्य भारतीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने वाले अगणित देशभक्तों के लिये उनका नाम सदा ही अजस्र प्रेरणा प्रदान करने वाला रहा है।

१८५४ तक मध्यभारत में स्थित झांसी एक स्वाधीन भारतीय रियासत थी जो दिल्ली के मुगल सम्राट् के प्रति निष्ठ थी। उस समय दिल्ली सम्राट् सम्पूर्ण भारत के सार्वभौम सत्ता सम्पन्न शासक माने जाते थे।

१८५४ में झांसी के राजा गंगाधर राव की बिना संतान के ही मृत्यु हो गई। पर मृत्यु से पूर्व राजा और उनकी युवा पत्नी लक्ष्मीबाई ने अपने ही परिवार के एक बालक दामोदर राव को अपने पुत्र और उत्तराधिकारी के रूप में गोद ले लिया। रस्म समारोह में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

पर गवर्नर जनरल की आज्ञा से ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेनाओं ने यह तर्क देते हुए कि दामोदर राव का गोद लेना अवैधानिक है, सम्पूर्ण झांसी को गैर कानून व अवैधानिक रूप से छीन लिया।

रानी लक्ष्मीबाई जिसकी उम्र उस समय केवल १८ वर्ष थी, कम्पनी के इस अनुचित कार्य के आगे रंचमात्र भी न झुकी। ब्रिटिश गवर्नर जनरल ने रानी को ५ हजार रुपया प्रतिमास आजीवन पेंशन का प्रस्ताव रखा पर रानी ने तिरस्कारपूर्वक इसे अस्वीकार कर दिया।

इसके तीन साल बाद ही ब्रिटिश शासन के विरुद्ध देशव्यापी स्वाधीनता संग्राम की लहर ने जन्म लिया। रानी लक्ष्मीबाई की आयु उस समय २१ वर्ष की थी। रानी इस स्वाधीनता संग्राम की एक प्रमुख नेत्री और कर्मठ कार्यकर्ती बन गई। रानी ने शादी से पूर्व ही अपने बचपन में घुड़सवारी आदि की अच्छी शिक्षा प्राप्त की हुई थी। रानी तलवार चलाने व राइफल के प्रयोग में भी कुशल थी। दीर्घ व कठोर संघर्ष के बाद रानी लक्ष्मी बाई ने सम्पूर्ण झांसी की रियासत को ब्रिटिश शासकों से स्वाधीन करा लिया और झांसी के किले पर एक बार पुनः यूनियन जैक के स्थान पर दिल्ली के सम्राट् की हरी पताका फहराने लगी।

मैं यहां भारत के स्वाधीनता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई द्वारा किये गये वीरता पूर्ण कार्यों मे नहीं जाऊंगा। इतना कहना ही पर्याप्त है कि उत्तर में जमुना के मध्य और दक्षिण के विन्ध्याचल तक का सम्पूर्ण प्रदेश ब्रिटिश शासको से स्वाधीन करा लिया गया और इन सब के पीछे थी रानी लक्ष्मीबाई के विस्मय जनक सैनिक नेतृत्व की शक्ति, अतुल उत्साह, प्रबल वीरता और अदम्य साधना। भारतीय इतिहास के इन अविस्मरणीय वर्षों में रानी ने क्या-क्या कार्य किये, किस प्रकार घोड़े की पीठ पर सैकड़ों-सैकड़ों मील बिना रुके चलती रही, कैसी कठिन परिस्थितियों में उसने अपने सैनिकों को उत्साह व प्रेरणा प्रदान की और किस प्रकार उस काल के महानतम कुछ सैनिक कमांडरो के विरुद्ध भी विजय प्राप्त की यह सारी कहानी आज रोमांच के समान लगती है अंग्रेज इतिहासकारों ने सैनिक नेत्री के रूप से रानी के गुणों की जीभर प्रशंसा की है।

सुपरिचित इतिहासकार विंसेंट ए० स्मिथ ने अपनी "आक्सफोर्ड स्टूडैन्ट्स भारतीय इतिहास" नामक पुस्तक में रानी को विद्रोही नेताओं में सर्वाधिक योग्य बताया है।

रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु जिस समय हुई, उसके हाथ में तलवार थी और वह वीरतापूर्वक दुश्मन का सामना कर रही थी। उसकी मृत्यु के बाद उस के एक स्वामिभक्त सेवक रामचन्द्रराव ने गंगादास बाबा नामक साधु की झोपडी के पास रानी की हिन्दू रीति से अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न की।

ब्रिटिश अधिकारियों के विवरणो के अनुसार रानी एक अति उच्च और निष्कलंक चरित्र की महिला थी, इन अधिकारियो में अधिकांश रानी लक्ष्मी बाई के निकट सम्पर्क में आये थे या झांसी के दरबार में रहे थे। महाराष्ट्र इतिहास संशोधक मंडल पूना ने इधर रानी के इतिहास पर कुछ उल्लेखनीय शोधें की हैं। इन शोधों से यह असंदिग्ध रूप से सिद्ध हो गया है कि रानी लक्ष्मी बाई राजा गंगाधर राव के जीवन-काल में एक आदर्श हिन्दू पत्नी की तरह रही और अपने पति को मृत्यु के बाद भी आदर्श हिन्दू विधवा के रूप में उनका जीवन बीता। एक उत्तरदायी ब्रिटिश अधिकारी मेजर मेलकम को रानी के दैनिक जीवन को अत्यन्त निकटता से देखने का अवसर प्राप्त हुआ था, उसने भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल को लिखे गये एक सरकारी पत्र में १६ मार्च १८५५ का लिखा था 'रानी एक अत्युच्च चरित्रवान महिला हैं और झांसी में उस का भारी सम्मान है।'

१८५७ के संग्राम के अन्यतम लेखक सर जोन कार्य ने रानी लक्ष्मीबाई के बारे में लिखते हुए कहा है कि रानी के बारे में बहुत सी गलत बातें लिखी गई हैं क्योंकि यह हमारी रीति रही है कि किसी देशी राजा का राज्य ले लेना और फिर उसके पदच्युत शासक या भावी उत्तराधिकारी के आदर्श चरित्र को बदनाम करना। यह कहा गया है कि रानी मात्र बच्चा थी और दूसरों के प्रभाव में थी और उसका स्वभाव अत्यंत उद्धत था। पर रानी के साथ बातचीत से यह प्रदर्शित हो गया है कि रानी को बच्चा कहना गलत है, और उसके स्वभाव को उद्धत बताना तो एकदम मिथ्या कल्पना है।

पर कुछ पुस्तकों में रानी के चरित्र पर कीचड़ उछालने की कम चेष्टा नहीं की गई है। २५ अगस्त १८५८ के टाइम्स में मिस्टर लेयार्ड एम० पी० ने इस तरह की बातो का सहारा लिया है। यही नही ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा लिखी गई कई पुस्तकों में रानी का एक गलत और काल्पनिक चित्र भी प्रस्तुत किया गया है जिसमें रानी को भारतीय पेचवान हुक्का पीते हुए और पास में एक सुराही रखे हुए बताया गया है। स्वभावतया इस सुराही से शराब की ओर इंगित किया गया है। निश्चय ही यह चित्र एकदम मिथ्या व दूषित है।

ब्रिटिश इतिहासकारों के काल्पनिक व प्रसिद्ध चित्र रहे हैं। कासेल के भारत के इतिहास में मैंने अभी सम्राट् बहादुर शाह का एक चित्र देखा जिसमें उन्हें राजपूती ढंग के जूते व राजपूती धोती पहने सिर पर राजपूती पगड़ी बांधे और पैरों में सोने के कड़े डाले बताया गया है।

ब्रिटिश इतिहासकारों ने तो इन मिथ्या चित्रों का सहारा लिया ही है पर यह देख कर दुख होता है कि भारतीयों ने भी उनके इस कार्य की नकल की है और इन वीर चरित्रों को गलत रूप में पेश किया है।

१८५७ का स्वाधीनता संग्राम किन कारणों से असफल रहा, हम इसके विस्तार में नहीं जाएंगे। इसके ९० साल बाद भारत ने पूर्णतया भिन्न तरीके से अपनी स्वाधीनता प्राप्त की पर इस सारे ९० वर्ष के समय में रानी लक्ष्मी बाई के नाम ने, उसके असाधारण और वीरतापूर्ण चरित्र ने विदेशी शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष करने वाले भारतीय वीरों को सदा प्रेरित किया और चेतना प्रदान की। जब तक भारत की स्वाधीनता का इतिहास कायम है रानी का नाम सदा अमर रहेगा। ★

—वीरप्रताप से साभार

संस्कृत परीक्षार्थियों को शुभ सूचना

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ और सं० विश्वविद्यालय वाराणसी की शास्त्री और आचार्य परीक्षाओं में नियत ऋषि दयानन्द के ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा यजुर्वेद भाष्य संग्रह आदि ग्रन्थ उक्त परीक्षार्थियों को बिना मूल्य (डाक व्यय देना होगा) देने की व्यवस्था की है। इस अत्यावश्यक शुभ कार्य के लिये श्रीमान् चम्पालाल जी ख्यालीराम जी फतहनगर (राजस्थान) ने २११) रु० देने का संकल्प किया है। पुस्तकें नीचे लिखे पते से प्राप्त हो सकती हैं—

—युधिष्ठिर मीमांसक
भारतीय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,
२१/१४४ अलवर गेट, अजमेर

निर्वाचन—

—आर्यसमाज बिसारा

प्रधान-श्री मलखानसिंह स्वामी उप प्रधान—देवीचरनसिंह शास्त्री, मन्त्री—ओमप्रकाश निर्द्वन्द्व, कोषाध्यक्ष—ओम् प्रकाश निर्मल वैद्य।

नियोग मीमांसा

[श्री डा० ओ३म् प्रकाश जी (ब्रह्मदेश)]

१९वीं शताब्दी के भारतीय साहित्य मे ऋषि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश सब से क्रान्तिकारी तथा सबसे महान रचना है। भारत की विचारधारा को उसने नया मोड दिया तथा देश को नवचेतना प्रदान की। जैसा स्वाभाविक ही था सत्यार्थ प्रकाश का विरोध भी हुआ। प्लेटफार्म से भी तथा प्रेस द्वारा भी। रूढिवादी विचारधारा वालों ने अनेक पुस्तकें इसके विरोध मे प्रकाशित कीं। बहुतो की भाषा अत्यन्त अशिष्ट और अभद्र थी, क्योकि जब तर्क से विजय नहीं प्राप्त होती दीखती तो व्यक्ति अपनी दुर्बलता छिपाने के लिए गाली अथवा मारपीट पर उतर आता है। "शास्त्रार्थों" का भी जोर था। इस विरोध मे "नियोग" की बात लेकर बहुत कटाक्ष होते थे तथा कई बार आर्य समाज के अनेक उपदेशको को पौराणिक पण्डित ने शास्त्रार्थ में "परास्त कर दिया" ऐसे समाचार छपते थे। आज पुरुष ब्रह्मचर्य मे रहना चाहे तो कोई उपद्रव न होगा।.........जो न रख सके तो नियोग कर सन्तानोत्पत्ति करें...... जैसा नियम से विवाह होने पर व्यभिचार नही कहाता तो नियमपूर्वक नियोग होने से व्यभिचार न होवेगा।......... इस व्यभिचार और कुकर्म को रोकने का एक यही कठिन उपाय है कि जो जितेन्द्रिय रह सके वे विवाह वा नियोग भी न करें तो ठीक है। परन्तु जो ऐसे नहीं हैं उनका विवाह और आपत्काल मे नियोग अवश्य होना चाहिये। इससे व्यभिचार का न्यून होना, प्रेम से उत्तम सन्तान होकर मनुष्यो की वृद्धि होना सम्भव है और गर्भ हत्या छूट जाती है। —इत्यादि

इन उद्धरणो से स्पष्ट रूप से ऋषि का मन्तव्य प्रकट हो जाता है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हो जाता है कि नियोग का विधान कोई उनकी अपनी कल्पना ही नही है—शास्त्रो तथा इतिहास की

सामाजिक समस्याएँ

भी बहुत से विद्वान भी यह कहते सुनाई देते हैं। सब बाते तो ठीक हैं, समझ मे आ जाती हैं, पर यह तो जो "नियोग" वाली बात स्वामी जी ने लिखी है यह ठीक नही जँचती। अभी उस दिन एक संस्कृत के पण्डित ने भी मुझ से यही बात कही।

नियोग पर आक्षेप करते हुए लोग यह भूल जाते है कि जिस समाज की कल्पना ऋषि ने की थी-वह आर्य श्रेष्ठ धर्मपरायण, वेदपाठी, विद्वान व्यक्तियो का है। उसमे प्रत्येक कार्य धर्म-अधर्म का विचार कर, मर्यादा के अनुसार ही होता है। उसमे उच्छृंखलता नही है। ऋषि के मन्तव्यानुसार एक साधारण द्विज की शिक्षा-दीक्षा भी सत्यार्थ प्रकाश मे वर्णित स्तर की ही होनी चाहिये। ऐसे शिष्ट तथा सुशिक्षित समाज के लिये कोई शास्त्रोक्त प्रणाली क्योकर 'घृणास्पद' या बुरी हो सकती है।

दूसरी बात जो ध्यान मे रखनी आवश्यक है वह यह है कि ऋषि ने 'नियोग' का विधान केवल विशेष परिस्थितियों में, आपत् काल के लिये ही किया है। इस सम्बन्ध में वे लिखते हैं— (उत्तर) नहीं, नही, क्योंकि जो स्त्री साक्षी के आधार पर ही उन्होंने यह सुझाव रखा है। आज हिन्दू समाज की सामाजिक व्यवस्था ऐसी है कि यह बात उसके गले नही उतर पाती। इसके सम्बन्ध मे बात करते या विचार करते एक प्रकार का सकोच होना है। परन्तु वैज्ञानिक क्षेत्र मे यह नियोग 'अज्ञात और अव्यावहारिक नहीं है। पश्चिम मे अनेक निस्सन्तान दम्पत्तियो के लिये इस क्रिया का प्रयोग होता है। भेद इतना ही है कि कई बार "पिता का नाम गुप्त रक्खा जाता है। किसी पुरुष के शुक्रकण लेकर किसी 'माता" के गर्भ मे नलिका द्वारा स्थित कर दिये जाते हैं। इसे वैज्ञानिक भाषा मे आर्टीफीसियल इन्सेमिनेशन कहते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि व्यक्तिगत रूप से सन्तानोत्पत्ति की क्षमता रखते हुए भी दम्पत्ति विशेष के पारस्परिक सबध से सन्तान उत्पन्न नही हो पाती। नैपोलियन बोनापार्ट और साम्राज्ञी जोसफीन के सम्बन्ध मे यह बात लागू थी। जोसफीन के पहले पति से सन्तान थी, पर नैपोलियन से न हुई। इसी प्रकार नैपोलियन के भी अन्य रानियो से सन्तान पैदा हुई पर जोसफीन से नही। एसी अवस्था मे नियोग की क्रिया वैज्ञानिक रूप में आज भी सफलता से प्रयुक्त होती है। वहा जनसाधारण मे भी नियोग का विचार 'गैर' नही है। नोबल पुरस्कार विजेता श्रीमती पर्ल एस० बक ने अपनी पुस्तक "द गुड वाइफ" मे एक स्थल पर दो मित्रो के बीच यह बातचीत दी है—

John looked away and wet his lips. "I want to ask you a queer thing—queer enough so I reckon no man asked it ever before of another man"

Pierce tried to look at him and could not He picked up his pipe and lit it "Molly's still-young. Too young to live—without more children, Pierce. I want you to father me a child," "I have thought it all out Why should she suffer-because of what the war did to me? It will happen-sooner or later with some man. Pierce, let it be you!"

जौन ने दूर दृष्टि डालते हुए कहा कि मैं तुमसे एक अजीब वस्तु मांगने लगता हू। इतनी अजीब कि शायद

(शेष पृष्ठ ९ पर)

फीजी में महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती का वैदिक धर्म प्रचार

[पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज के विदेश प्रचार कार्यक्रम से फीजी तथा अन्य प्रवासी क्षेत्रो की जनता को बहुत लाभ पहुचा है। सार्वदेशिक सभा को विदेश प्रचार की स्थायी व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। आशा है सभा इस ओर विचार करेगी। —सम्पादक]

महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर मे दो महीने वेद सन्देश सुनाने के पश्चात फीजी मे २१ मई ६६ को पहुचे, फीजी देश दिल्ली से नौ हजार मील परे प्रशान्त महासागर मे तीन सौ छोटे-छोटे टापुओ का प्रदेश है। जहा आज से एक सौ वर्ष पूर्व इस देश को आबाद करने के लिये भारतीय लाए गये, जिन्होने इस जगल को अपने तप तथा बुद्धि के द्वारा हरे-भरे प्रदेश में परिवर्तित कर दिया। महात्मा आनन्द स्वामी पन्द्रह दिनो तक निरन्तर वेद मन्त्रो की व्याख्या सुनाते रहे—

सरस्वती रामायण मडली को कोलेज पर, सनातन धर्म रामायण के मन्दिर पर, डिवाइन लाइफ सुसाइटी के भवन पर, श्री नेहरू मेमोरियल पर, डी० ए० वी० कोलेज पर, आर्य कन्या पाठशाला पर और आर्य मन्दिर मे। इसी मन्दिर मे स्वामी जी के नाम एक पुस्तकालय का भी उद्घाटन आपके कर कमलो द्वारा हुआ।

स्वामी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सस्थापित दयानन्द कोलेज और स्कूलो को देखा जिसकी सख्या चन्द्रह है। फीजी की राजधानी सूवा मे वेद सन्देश सुनाकर फिर आप सूवा से एक सौ मील दूरी राकी-राकी मे पहुचे। और मार्ग मे काईबीती तथा भारतीय स्कूलो पर भी वेद प्रवचन सुनाते रहे। राकी-राकी मे ३१ मई को श्री मोतीलाल के भवन पर उनकी कथा हुई भवन खचाखच भरा हुआ था। अब आप यहा से तावुवा वा लौतोका होते हुए नादी की तरफ गये। और नादी से ४ जून को निउजीलैण्ड के लिय प्रस्थान कर अन्य देशो को जायगे।

स्वामी जी के प्रवचनो को सुनकर फीजी की जनता की क्षुधा तृप्ति नही हुई है। आशा है कि स्वामी जी खुद पुन यहा पदार्पण करे या आपके स्थान पर कोई अन्य सन्यासी या प्रचारक आ कर फीजी का उद्धार करे, फीजी का भविष्य अन्धकार मे है, स्वामी जी का प्रबन्ध श्री विद्याप्रकाश जी के गृह पर होता था और मोटरकार की सहायता श्री विद्याप्रकाश तथा श्री श्रीधर महाराज ने की और राकी२ का प्रबन्ध श्री पं० श्याम नारायण जी के गृह पर हुआ यह सभी सज्जन धन्यवाद के पात्र है।

—सन्तराम प्रचारक आर्यसमाज
दोम्बुईलेवु, पो० राकी, राकी, फीजी

गुरुकुल कांगड़ी वि. विद्यालय के नये उपकुलपति

(प्रो० गगाराम एम० ए० रजिस्ट्रार गुरुकुल कागडी, हरिद्वार)

गुरुकुल कागडी मे महान उपकुलपतियों की एक लम्बी शृङ्खला रही है। इस शृङ्खला म जहा स्वामी श्रद्धानन्द, आचाय रामदेव और श्री चमूपति रह हैं वहा इसकी अन्तिम दो कडी श्री इन्द्रजो स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र और गुरुकुल कांगडी के प्रथम स्नातक थ । व एक महान् लेखक, पत्रकार वक्ता राजनीतिक कार्यकर्ता एव आर्यसमाज के प्राण थे। भारत के राष्ट्रिय जीवन पर अपने पिता क समान उनकी गहरी छाप थी। उनका महान कृतिया अब भी बड चाव से पढी जाती हैं और पढी जाती रहगी। अभी पहली जून को इस शृङ्खला की अन्तिम कडी श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालकार ने अपना कार्यभार इस न टूटने वाली शृङ्खला की एक अन्य कडी को सौप दिया। उनका कार्यकाल पूरा हो जाने पर सीनेट की एक उपसमिति ने ३ समान व्यक्तियो के नामों की सिफारिश की। इनमें से गुरुकुल के विजिटर डा० मगलदेव शास्त्री ने प्रिसिपल महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल० को चुन लिया। इस निश्चय के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान एव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय क कुलपति प्रो० रामसिंह जी एम० ए० ने श्री श्री शास्त्री जी को गुरुकुल विश्वविद्यालय का उपकुलपति नियुक्त कर दिया और व एक जून की प्रात से इस पद को सुशोभित कर रहे हैं।

श्री शास्त्री जी गुरुकुल के वातावरण म ही पले हैं। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल वृन्दावन म और बाद को अन्य कालेज मे हुई। श्री शास्त्री जी क पिता का सम्बन्ध स्वामी श्रद्धानन्द जी म बहुत निकट का था। उनके पिता ठा० माधवसिंह जी स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित अखिल भारतीय शुद्धि महासभा के महामन्त्री थ। आगरा के शुद्धि आन्दोलन मे उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के दाहिने हाथ का काय किया। श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री इन्ही ठा० माधवसिंह जी के एक मात्र सुपुत्र है।

एम०ए० की परीक्षा पास करने के बाद १९२५ ई० म राजाराम कालेज कोल्हापुर मे श्री शास्त्री जी अध्यक्ष संस्कृत विभाग नियुक्त हुये।

१९२८ मे राजकुमार नत्र-जयसिंह (शाहपुराधीश मेवाड के पौत्र) के सरक्षक तथा शिक्षक बनकर इङ्गलैण्ड गये। वहा से लौटकर आप १९२९ मे डी०ए०

श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री

वी० कालेज देहरादून म कई वर्ष तक प्रोफसर तथा आचार्याध्यक्ष रह। देहरादून मे आप आय समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थ और कई वर्षों तक वहा की समाज के प्रधान भी रहे पर आपका कार्यक्षेत्र देहरादून तक ही सीमित नही था। आप उत्तरप्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के कई वर्षो तक महामन्त्री और उपप्रधान रहे।

आपके चरित्र पर भी स्वामी श्रद्धानन्द जी की गहरी छाप है। जाति-पाति के बन्धन की शृङ्खला को तोडकर आप ने अपने पिता जी की स्वीकृति से विवाह किया। आपको पत्नी कन्या गुरुकुल हाथरस की सस्थापिका की सुपुत्री हैं और अब भी वे इस गुरुकुल का कार्यभार सभाले हुये हे। आपने अपने तीनों पुत्रों के विवाह जाति पाति तोडकर किये।

श्री शास्त्री जी डी०ए०वी० कालेज लखनऊ के कई वर्ष तक प्रिंसिपल रहे। उसके पश्चात इन्होंने जाट वैदिक कालेज बडौत का सचालन भी बडी सफलता पूर्वक किया। पर आपने कभी भी आर्य समाज को नही भुलाया। आप सार्वदेशिक सभा के भी अन्तरग सदस्य रहते रहे हैं। आर्य जाति तथा आर्यसमाज के क्षेत्र में आपने वैदिक धर्म प्रचार का जो महान् कार्य किया है उसे कभी नही भुलाया जा सकता है। आप अनेक सामाजिक एव शिक्षा सस्थाओं के प्रधान, मन्त्री प्रबन्धक रहे है। आगरा व लखनऊ विश्वविद्यालय तथा उत्तरप्रदेश बोर्ड से उनका सम्बन्ध रह चुका है।

पहली जून से जब आपने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति का भार सभाला है तबसे पजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा अन्य प्रदेशों के आयसमाज तथा आर्यनेताओ से बधाई के सदेश लगातार आ रहे हैं। पहली जून को ही गुरुकुल में अधिकारियो तथा कर्मचारियो की एक सभा हुई जिसमें सभी ने शास्त्री जी को अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

हमें पूर्ण आशा है कि श्री शास्त्रीजी की नियुक्ति गुरुकुल के लिये ही नहीं अपितु आयजनता तथा आयसमाज के लिये वरदान सिद्ध होगी।

श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मुख्याधिष्ठाता भी नियुक्त हुये

श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एक पुराने शिक्षा शास्त्री हैं। विश्वविद्यालय के विधान की धारा ८ (सी) के अनुसार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का प्रथम जून '६६ को श्री प्रो० रामसिंह जी सभा प्रधान तथा श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती एम०पी० की उपस्थिति मे उपकुलपति का कार्यभार सभाल लिया। सायकाल को गुरुकुल कागडी के प्राध्यापकों तथा अधिकारियो ने इकट्ठे होकर श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री की उपकुलपति के पद पर नियुक्ति का स्वागत किया तथा उन्हे अपने सहयोग का पूर्ण विश्वास दिलाया। श्री शास्त्री जी शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रो मे पिछले ३५ वर्ष से काय करते रहे है। वह १५ २० वर्ष स्नातकोत्तर कालिजों के प्रिंसिपल रहे है तथा आगरा व लखनऊ विश्वविद्यालय, यू०पी० बोर्ड तथा बहुत सी आयसमाजी सस्थाओ से उनका सम्बन्ध रहा है।

प्रो० रामसिंहजी सभा प्रधान ने श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री को स्वामिनी सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से गुरुकुल कागडी का मुख्याधिष्ठाता भी नियुक्त कर दिया इस अधिकार से आयुर्वेद कालेज साइन्स कालेज इञ्जीनियरिंग कालेज विद्यालय विभाग कृषि कालेज, अनुसूचित जाति शिक्षणालय, गोशाला गुरुकुल कागडी फार्मेसी गुरुकुल के सारे आय व्यय तथा सभा व गुरुकुल की सारी सम्पत्ति के प्रबन्ध तथा नियन्त्रण की पूर्ण जिम्मेवारी श्री शास्त्री जी की होगी।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ

उपयुक्त सभा का ३७ वा मासिक अधिवेशन २६ जून को आर्यसमाज लाल बाग क प्रबन्ध मे भूपालहाउस लालबाग लखनऊ मे सभा के प्रधान श्री कृष्णबल्देव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रारम्भ मे सामवेद से बृहत यज्ञ हुआ। उसके पश्चात् सन्ध्या, प्रार्थना और प्रभु भक्ति के भजन श्री पृथ्वीराज वरमानी तथा श्रीमती कमलेश के हुए। इसके पश्चात जिला सभा के मन्त्री श्री विक्रमादित्य जी 'बसन्त' का विद्वत्तापूर्ण वेदोपदेश हुआ। उक्त सभा का ३८ वां मासिक अधिवेशन ३१ जुलाई को आर्य समाज चन्द्रनगर मे होगा, और ३ जुलाई को शाम के ६ बजे आयसमाज गणेशगज में अन्तरग सभा की बैठक होगी।

निवेदन

किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय व मनीआर्डर भेजते समय ग्राहक अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखे।

—व्यवस्थापक आर्यमित्र
लखनऊ

संस्था-परिचय

अखिल भारतीय महिला-आश्रम देहरादून

(ले०—श्री वेदवती विद्यालङ्कार एम० ए० (संस्कृत)

दून की सुरम्य उपत्यका मे स्थित यह महिला आश्रम भारत की निधन चनी, युवा प्रौढ बालिका एव निराश्रित देवियो की सेवा मे मौन साधना पूवक सतत सलग्न है। आश्रम की सस्थापिका आचार्या विद्यावती सेठ न देहरादून की गण्यमान्य प्रतिष्ठित महिला सरस्वती देवी जी सोनी के सहयोग से सब प्रथम लक्ष्मण चौक मे चौड के वन के वक्षो के नीचे आश्रम के काय का श्री गणश जुलाई सन १९४५ मे किया। साथ ही २५ रुपये मासिक किराये पर एक छोटा भवन लेकर उसमे प्रौढ अनाथ विधवा निराश्रित महिलाओ के रखने का प्रब ध किया गया। धीरे धीरे कई वषो के बाद देहरादून का काय कुशल और उदार महिलाओ के सहयोग से वही पर १२ बीघ जमीन खरीद ली गई। यह स्थान बडा रमणीक और एकान्त म होते हुए भी शहर से मिला हुआ भी है और बसो के चलने से हर एक के लिए पहुचना सुलभ हो गया है।

यह सस्था जन्म से ही बालिकाओ को आत्मिक शारीरिक और बौद्धिक उन्नति के लिए सब प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध करके उन्हे स्वावलम्बी बनाने का सराहनीय एव अनुकरणीय प्रयत्न करती है वहा गरीब परन्तु सुपात्र बहिनो के लिए भोजन आदि का प्रब ध भी यहा से होता है। आध्यात्मिक उन्नति तथा अध्ययन की इच्छुक सम्पन्न बहिन भी अपन खच से यहा रहती हैं। भोजन व्यय २० रुपय मासिक है।

यहा सिलाई बुनाई कढाई चित्र कला दरी वा मोमजामा बनाना साबुन बनाना बिस्कुट बनाना अचार मुरब्बे आदि बनाना भी सिखाया जाता है। साथ मे कृषि बागवानी गोसेवा रोगी परिचया आदि की शिक्षा भी दी जाती है। धात्री शिक्षा फस्ट एड आय वेद होम्योपैथी की शिक्षा का भी प्रबन्ध है। वतमान स्कूलो को पाठ विधि दसवी तक चालू है। प्रत्येक की योग्यता और आवश्यकतानुसार ट्रेनिंग का प्रबन्ध किया जाता है।

अभी तक इस आश्रम मे निम्नलिखित भवन है—

१ विद्यालय भवन

२—(छात्रावास) जिसमें द कमरे नीचे हैं एक बडा हाल ऊपर है जिसमे सिलाई बुनाई आदि का काय सिखाया जाता है।

३—गृह विज्ञान भवन

४ मध्य मे एक भव्य यज्ञशाला है

५ महिला वानप्रस्थाश्रम जिसके अन्तगत (पुस्तकालय धमशाला वद विद्यालय तथा यज्ञशाला आदि है।

महिला वानप्रस्थाश्रम—

इस सस्था का एक विशेष महत्व पूर्ण भाग है। यहा रहकर कोई भी महिला अपनी मानसिक और आत्मिक उन्नति कर सकती है। विदुषी बहिने स्कूल की अध्यापिकाए कालेज की प्राध्यापिकाए तथा एम० ए० या ट्रेनिंग लेने की इच्छुक बहिने भी देहरादून का स्वच्छ स्वास्थ्यप्रद जलवायु का लाभ उठाती हुई यहा की अन्य सस्थाओ म विद्या ग्रहण करती हुई आवास का लाभ उठा सकती है। गर्मी की छुट्टियो म यहा रहकर विद्या का आदान प्रदान भी कर सकती है।

यहा पर नित्य प्रति प्रात साय सन्ध्या हवन प्राथना और वद उपनिषद तथा अन्य ऋषि प्रणीत ग्रन्थो की कथा भी होती है। आश्रम वासिनी को हर एक काम अपने ही हाथ से करना होता है। उन्हे जनता की निस्वाथ सेवा की क्रियात्मक शिक्षा दी जाती है। भोजन भडार मे सबको एकसा मिलता है विशेष दूध घी फल आदि अपना भी रख सकती है। आश्रम मे पानी बिजली आदि की भी उत्तम व्यवस्था है।

इस सस्था की सस्थापिका एव सचालिका है आय जगत की प्रसिद्ध समाज सेवी वीतराग तपस्विनी विदुषी आचार्या श्रीमती विद्यावती जी से० जो एक बहुत सम्पन्न एव प्रतिष्ठित परिवार की महिला है और जिन्होने आजन्म ब्रह्मचय व्रत का पालन करते हुए ऋषि दयानन्द की शिक्षा दीक्षा के प्रसार एव भारतीय महिलाओ की सेवा मे सारा जीवन त्याग तप और निष्ठापूवक व्यतीत किया है देश की प्रसिद्ध सस्था कन्या गुरुकुल देहरादून आचार्या जी के अदम्य साहस सतत प्रयास एव निस्वाथ सेवाओ का ही ज्वलन्त उदाहरण है। आचार्या जी की कितनी ही शिष्याए इस गुरुकुल की स्नातिका बनने के पश्चात अपनी विद्वत्ता योग्यता एव समाज सेवा की भावना द्वारा शिक्षा के प्रसार एव राष्ट्र निर्माण म सक्रिय सहयोग दे रही हैं।

इस समय ७ वष की आयु होते हुए भी आप बडी लगन तथा तत्परता से दिन रात आश्रम के कार्यों म व्यस्त रहती हैं। आय जगत आचार्या जी की बहुमुखी सेवाओ के प्रति सदव चिरऋणी रहेगा। आपकी दोनो बहिन श्रीमती रामप्यारी जी तथा श्रीमती ओमवती जी भी आपके साथ सामाजिक सेवाओ के काय मे निरन्तर लगी रही है। इस प्रकार आचार्या जी के सम्पूर्ण परिवार ने ही समाज सेवा को अपने जीवन का ध्येय बनाकर एक अनुकरणीय आदश प्रस्तुत किया है।

महिला आश्रम की उपयोगिता दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। साथ ही आश्रम की आवश्यकताए भी उसी तरह से बढ रही है आचाय जी को सेवाओ के प्रति कृतज्ञता की भावना रखने वाले धनी लोगो ने तथा उनकी श्रद्धालु शिष्याओ ने आश्रम के भवन बनाने म आर्थिक सहायता प्रदान की है परन्तु आश्रम की बढती हुई आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए कुछ और नये भवन का कमी अनुभव की जा रही है। आशा है आय जनता इस उपयोगी सस्था को अग्रसर करने मे यथासभव तन मन धन से सहायक सिद्ध होगा।

(पृष्ठ ८ का शेष)

आज तक किसी पुरुष ने दूसरे से न मारा हो पीटर न उससे आख मिलानी चाही पर न मिला सका। उसने अपना पाइप उठाया और उसे सुलगाने लगा।

मौली—अभी छोटी है। बच्चों के बिना रहने के लिए काफी छोटी है।

पीयस—पीयस मे चाहता हू कि तुम मेरी सन्तान के पिता बनो मैंने इसे अच्छी तरह सोच विचार लिया है। यूद ने जो कुछ भी मुझे उनका नाला है (नपसक)—उसके कारण बडा यातना भोगे ? यह तो कभी न करूँगी होगा ही किसी पुरुष के साथ। ना पीयर वह व्यक्ति तुम ही क्यो न हो जाओ।

इससे स्पष्ट है कि विदेशो म नियोग एक अनहोनी बात या अव्यवहारनीय विचार नहीं है। बल्कि विशष परिस्थितियो म मान्य है तथा प्रस्तावित भी किया जा सकता है

सुझाव और सम्मतियाँ

सनातन धर्म

मेरे सामने सनातन धर्म नाम की एक छोटी सी पुस्तक है। इसके लेखक हैं श्री राजेन्द्रजी अतरौली (जि अलीगढ) श्री राजेन्द्र जी अनेक पुस्तको के लेखक है शैली सरल सुबोध और मनोरजक है। बाल की खाल निकालना इनका उद्देश्य नही है परन्तु विषय के स्थूल अगो को बडी अच्छी भाषा मे प्रदर्शित करते हैं। इस पुस्तक मे बताया गया है कि शुद्ध सनातन धर्म क्या है और कल्पित सुप्रसिद्ध सनातन धर्म क्या है। प्रत्येक आय समाजी इस पुस्तक को पढकर प्रसन्न होगा, परन्तु यह पुस्तक आर्यसमाजियो के लिए नही लिखी गई है उनको तो ज्ञान है ही। यह पुस्तक साधारण सनातन धर्मी कहलाने वाले लोगो के लिए है जिससे वे कल्पनाओ को छोड कर याथातथ्य का ज्ञान कर सकें।

मैं इस असमजस मे हू कि यह पुस्तक उन लोगो तक कैसे पहुचे जिनके लिए यह पुस्तक लिखी गई है।

आयसमाज म सैकडो पुस्तक लिखी जाती हैं और मै भी बहुत सी पुस्तकें लिख चुका हू और जिनकी प्रसिद्धि भी है और पत्रकारो ने उनकी समालोचनाय अच्छी की है परन्तु इतने से लेखक का श्रम सफल नही होता। दीपक अधेरी रात के लिये है दोपहर के लिए नही। लेखक परिश्रम करता है प्रकाशक कुछ पैसा व्यय करता है। इनका साफल्य तभी हो सकता है जब आर्यसमाजी लोग ऐसी पुस्तक को खरीद कर उन लोगो के हाथ मे पहुचाए जो भ्रम मे फसे हुए हैं कोई कट्टर सनातन धर्मी क्यो खरीदेगा और क्यो पढेगा और यही हाल मुसलमानो और ईसाइयो के विरुद्ध लिखे जाने वाले साहित्य का है। आर्यसमाजियो को चाहिये कि वे अपने दान का कुछ भाग ऐसे काम के लिए पृथक कर दें जीवन मे बहुत से अवसर आते रहते है, विवाहादि आदि उत्सव या पर्व। ऐसे अवसरो पर उचित साहित्य का वितरण प्रचार का मुख्य साधन हो सकता है।

—गगाप्रसाद उपाध्याय

आर्यमित्र की उन्नति के लिये–

डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिरनिधि

अन्तरग सभा दिनाक ९-५-६३ के निश्चयानुसार विषय स० २४ श्री प० सूर्यदेव शर्मा एम०ए० अजमेर का आर्यमित्र सहायतार्थ धन दिये जाने विषयक पत्र विचारार्थ प्रस्तुत होकर श्री शर्मा जी का पत्र पढा गया। निश्चय हुआ कि दानी सज्जन की निम्न शर्तो के लिए चार सहस्र रुपया दान लेना स्वीकार किया जावे। धन प्राप्त होने पर एफ० डी० में जमा किया जाए।

श्री डा० सूर्यदेवजी शर्मा

१–इस निधि का नाम डा० सूयदेव स्थिरनिधि होगा।

२–इस निधि की धनराशि स्थायी रूप मे सभा मे पृथक् जमा होगी।

३–इसके ब्याज से प्रति वर्ष सार्वजनिक सस्थाओ, पुस्तकालया एव वाचनालयो को आयमित्र लागत मूल्य मे दिया जाया करेगा। अवशिष्ट से शेष धन आर्यमित्र की उन्नति में लगाया जाया करेगा।

४–वर्ष में कम से कम दो बार जनवरी, जुलाई मास मे इस निधि की सूचना प्रमुख शर्तों के साथ आयमित्र' मे प्रकाशित होगी।

५–सम्मान रूप मे आयमित्र सदा दानी सज्जन को भेजा जाया करेगा। जहा जहां जायगा उसकी सूची दानी सज्जन के पास भेजी जाया करेगी।

६–आयमित्र का प्रकाशन बन्द हो जाने पर इस निधि का ब्याज वैदिक साहित्य प्रकाशन मे लगाया जावेगा।

—चन्द्रदत्त तिवारी मन्त्री आर्य्यप्रतिनिधि सभा, लखनऊ

सामयिक समस्याएँ

पंजाब फिर भी द्विभाषी ही रहेगा

[ले०—श्री वीरेन्द्र जी, सम्पादक वीर प्रताप]

यह मत केवल मेरा ही नही भारत के प्रमुख समाचार पत्रों का भी है। दिल्ली के अंग्रेजी दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स और 'इण्डियन एक्सप्रैस' दोनो का यह मत है कि पजाब के विभाजन के साथ इस राज्य की भाषाई समस्या हल नही हुई। सीमा आयोग ने १९६१ की जनगणना को ठीक स्वीकार किया है जिसका यह अर्थ है कि पजाब मे ४० प्रतिशत के लगभग लोग वह होगे जिनकी भाषा हिन्दी है और भारत सरकार के अपने निणय के अनुसार जिस राज्य मे ३० प्रतिशत या उससे अधिक व्यक्ति सरकारी भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा को अपनी भाषा स्वीकार करते हो वह राज्य अनिवार्य ही द्विभाषी स्वीकार किया जाएगा इस सिद्धान्त की स्वीकृति ससद द्वारा भी दो जा चुकी है। जहा तक अकालियो का सम्बन्ध है व यह स्वीकार करने को तैयार नही हैं कि पजाब मे पजाबी के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा भी चल सकती है। सन्त फतेहसिंह से लेकर का० रामकृष्ण तक सब एक ही रट लगाए जा रहे हैं कि पजाब को भाषा पजाबी है।

परन्तु हिन्दी को वही स्थान मिलेगा जो देश की राष्ट्रभाषा के रूप मे उसे दूसरे राज्यों मे मिला है। परन्तु यह दोनो भूल जाते है कि दूसरे अहिन्दी भाषी राज्यो की स्थिति पजाब से बिलकुल भिन्न है। उन राज्यो मे ९० और ९५ प्रतिशत लोग एक ही भाषा के दावेदार हैं। उदाहरणार्थ बगाल, महाराष्ट्र, गुजरात या मद्रास इन राज्यो मे रहने वाले ८० या ९० प्रतिशत लोग एक ही भाषा बोलते है। उसी मे वे पढते है और लिखते भी हैं। उनकी भाषा और बोली मे कोई अन्तर नही है। पजाब मे स्थिति भिन्न है। यहा पजाबी बोलने वाले तो आपको ९० प्रतिशत मिल जाएगे। परन्तु पजाबी मे लिखने और पढने वालो की सख्या ५०-५५ प्रतिशत से अधिक नही। यह एक अकाट्य तथ्य है कि सिखो मे भी बहुत से लोग ऐसे हैं, विशेष रूप से सरकारी कार्यालयो, स्कूलों या कालेजो में जो आज भी पजाबी की अपेक्षा अग्रजी को प्राथमिकता देते हैं। जो लोग तोते की तरह यह रट लगाए जा रहे है कि पजाब के हिन्दुओ की भाषा भी पजाबी है, मुझे खेद है कि उनमे कुछ वह हिन्दू भी है जो राजनैतिक विशेष हितो के कारण आँखें मूंद रहे हैं। यह लोग भूल जाते हैं कि बोली और भाषा मे अन्तर होता है। अपनी भावनाए प्रकट करने के लिए आदमी के पास दो ही साधन है एक बोली और दूसरा लिखना। बोली के लिए लिपि की आवश्यकता नही होती किन्तु लिखने के लिए लिपि अनिवार्य है। जब बोली को एक ही लिपि द्वारा लेख का रूप दिया जाता है तो वह भाषा बन जाती है। इस प्रकार बोली और भाषा मे सदा अन्तर रहा है। राजनैतिक विशेष हितो के कारण इन्हे कोई कितना ही उलझाने का प्रयास कर वह इसमे सफल नही हो सकता।

प्रश्न हमारे सामने यह है कि पजाब के हिन्दुओ की बोली यदि पजाबी है तो उनकी भाषा क्या है? भाषा का फैसला करने से पहले लिपि का फैसला करना होगा। कोई कुछ कहे पजाब के हिन्दू गुरुमुखी को अपनी लिपि मानने के लिए तैयार नही। अकाली इस बात पर हठ कर रहे है कि पजाबी की एकमात्र लिपि गुरुमुखी ही है अत हिन्दुओ के लिए भी इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नही रह जाता कि वह पजाबी को अपनी भाषा मानने से इन्कार कर दें।

पजाब सीमा आयोग ने इस प्रश्न पर अत्यन्त सुन्दर ढग से बहस की है उसका कहना है कि १९३१ मे जब हिन्दुओ ने पजाबी अपनी भाषा लिखवाई थी उस समय लिपि को कोई पाबदी न थी उस समय पजाबी की लिपि फारसी थी किन्तु ३०वर्ष मे स्थिति बदल गई है अब पजाबी को ऐसी लिपि के साथ बाँध दिया गया है जिसे हिन्दू अपनी लिपि नही मानते अत १९३१ की जनगणना ठीक नही समझी जा सकती।

हमारे सिख भाई इस बात पर हठ कर रहे हैं कि पजाबी की लिपि केवल गुरुमुखी रहेगी। यदि कोई मुझ से पूछे तो मैं भी उसकी लिपि को बदलवाने के अधिक पक्ष मे नहीं हू। यदि व उसे गुरुमुखी से बाध कर एक ऐसी चारदीवारी मे बन्द कर देना चाहते हैं जहा इसकी उन्नति बिल्कुल अवरुद्ध हो जाए तो इसमें मुझे कोई आपत्ति नही। पजाबी के ठेकेदार इस समय हमारे सिख भाई ही बने हुए हैं। इसलिए वे इसे जो भी रूप देना चाहे शौक से दें। परन्तु मैं उनके इस अधिकार को कदापि स्वीकार करने को तैयार नहीं हू कि मेरे विषय में भी वे यह निणय करें कि मैंने कौन सी भाषा पढनी है। किस व्यक्ति की मातृभाषा कौन सी है इसका निर्णय वही कर सकता है कोई दूसरा नही। यदि हमारे सिख भाई पजाबी को देवनागरी लिपि मे लिखने की हमे अनुमति नही दे सकते तो हम इस पर हठ नही करेंगे। परन्तु इसके साथ ही अत्यन्त स्पष्ट और असदिग्ध शब्दो मे यह भी कह देना चाहते है कि इसके बाद पजाबी केवल हमारी बोली ही रहेगी, हमारी भाषा नही बन सकती।

यह सब कुछ मैंने इस लिए लिखा कि कुछ क्षत्रो में यह भ्रान्ति पैदा हो रही है कि पजाबी सूबा बनने के बाद इस राज्य की भाषा केवल पजाबी रहेगी। सविधान और कानून दानो के अनुसार पजाब अब भी द्विभाषी रहेगा। यदि इस तथ्य को आज ही समझ लिया जाए तो बहुत सी भ्रान्तिया जो हिन्दु और सिखों मे उत्पन्न हो रही है और हो सकती है वह दूर हो जाए तो दोनो मिलकर इस राज्य की प्रगति के लिए कार्य कर सकते है अन्यथा यह सघर्ष तो जारी रहेगा और उस समय तक चलेगा जब तक भारत सरकार अपने ही निर्णय के अनुसार यह स्वीकार नही करती कि पजाब द्विभाषी राज्य है जहा हिन्दी और पजाबी दोनो भाषाए चलेगी।

●

हमारे पुराने वीर पुरुष

जब से आर्यसमाज की स्थापना हुई है भिन्न भिन्न स्थानो मे भिन्न-भिन्न रूप मे विरोधियो ने आर्यसमाजियो को पीडा पहुचाई है। हर छोट-बडे स्थान पर ऐसे दृष्टान्त मिलेंगे जहा लोगो ने सद्धर्म पर चलने के लिए अनेक प्रकार की मुसीबतें उठाई। हर समाज को चाहिए कि अपने ऐसे पुराने वीरो को कहानिया इकट्ठा करे और जहा पुस्तक रूप से छप सके छापें या समाचार पत्रो मे दें।

—राधेमोहन मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, प्रयाग

स्व० श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती

आपका २९ जून सन् १९६५ को बम्बई मे देहावसान हुआ था। एक वर्ष हो गया। स्वामी जी आर्य जगत् की विमल विभूति थे, आपने आर्यसमाज की जो आजीवन सेवा की, वह सदैव प्रत्येक आर्य को प्रेरणा देती रहेगी। आपने देश विदेशो मे सभी जगह पहुचकर वैदिक सन्देश सुनाया। आर्यसमाज की चिन्ता मे ही आप अपने प्राणो को उत्सर्ग कर गये।

शोक—

श्री प० हरस्वरूप जी आर्य ग्राम अथाई पो० बास्टा बिजनौर का देहान्त हो गया है उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति अनुसार सपन्न हुआ। व ६९ वर्ष के थे। रविवार २६-६ ६६ आर्यसमाज मन्दिर बास्टा सत्सग मे पूज्य प० हरस्वरूप जी आर्य ग्राम अथाई पो० बास्टा जि० बिजनौर के आकस्मिक निधन के उपलक्ष में शोक प्रस्ताव पारित हुआ कि प्रभू दिवगत आत्मा को पूर्ण शान्ति प्रदान करें व सतप्त परिवार को धैर्य दे। वे हमारे बास्टा क्षेत्र के पूर्ण कमठ आर्य थे। उन्होने हमारे क्षेत्र मे वेदप्रचार में अकथनीय कार्य किया था। उनके निधन से हमारे बास्टा अथाई क्षेत्र को बडी हानि पहुची है। आर्यसमाज बास्टा बिजनौर उन्हीं का लगाया पौधा है, जहा प्रत्यक रविवार को सत्सग होता है। हमारे क्षेत्र ने अमूल्य निधि खो दी है। —मन्त्री

पते की सूचना

सभा के अवैतनिक उपदेशक श्री प० कालीचरण जी शर्मा का पता निम्न प्रकार है—पता—
श्री प० कालीचरण शर्मा
शास्त्रार्थ महारथी
मार्फत—पी०सी० भूषण टी०आई०
मकान न० १४२, रेलवे कालोनी
रेवाडी, जि० गुडगाव (पजाब)

सरकार पाक-चीन गठबन्धन के प्रति जागरूक—चह्वाण

हर स्थिति का दृढ़ता से मुकाबला किया जायगा

नई दिल्ली, २८ जून। ऐसा समझा जाता है कि रक्षा मन्त्री श्री यशवन्तराव चह्वाण ने आज यहां संसदीय कांग्रेस दल की बैठक में बताया कि पाकिस्तान को चीन से फौजी मिग विमान तथा अन्य प्रकार के जो हथियार मिल रहे हैं

श्री यशवन्तराव जी चह्वाण

उसके प्रति भारत सरकार जागरूक है।

उन्होंने यह भी बताया कि गिलगिट तथा चित्राल में चीन पाक यातायात प्रारम्भ होने के बारे में भी भारत सरकार को जानकारी है। पाकिस्तान अब कारगिल के ऊपर सड़क बना रहा है।

रक्षा मन्त्री ने बताया कि चीन पाकिस्तानी सैनिकों को बड़ी संख्या में छापामार युद्ध की ट्रेनिंग दे रहा है और खासतौर से पूर्वी पाकिस्तान में चीन अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है।

श्री चह्वाण ने कहा कि पाकिस्तान कटगाव के बन्दरगाह को नौसेना का अड्डा बना रहा है और इस काम में चीन सहायता दे रहा है।

रक्षा मन्त्री ने भारतीय सेनाओं की शक्ति एवं आत्मविश्वास में पूर्ण आस्था रखते हुए पुनः कहा कि चीन और पाकिस्तान की ओर से अगर किसी प्रकार की गड़बड़ी की गई तो उसका दृढ़तापूर्वक मुकाबला किया जायगा।

इस अवसर पर भूतपूर्व रक्षा मन्त्री श्री कृष्ण मेनन भूतपूर्व मन्त्री श्री महावीर त्यागी और भूतपूर्व मन्त्री श्री अशोक सेन भी उपस्थित थे।

कश्मीर के अपने दौरे के अनुभवों को बताते हुए रक्षा मन्त्री ने कहा कि यहां की राज्य सरकार द्वारा पाक घुसपैठियों एवं विघटनकारी तत्वों का दृढ़तापूर्वक मुकाबला किया जा रहा है। राज्य सरकार एवं ग्रामीण जनता के बढ़ते हुए आपसी सहयोग के कारण ही पाकिस्तान से प्रचुर मात्रा में चोरी छिपे लाये गये शस्त्रास्त्रों के भंडारों का पता लगाया जा सका है।

जहां तक राजस्थान पाक सीमाओं पर सुरक्षा का प्रश्न है रक्षा मन्त्री ने बताया कि राजस्थान सरकार एवं रक्षा मन्त्रालय द्वारा इस सम्बन्ध में उचित कदम उठाए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि जम्मू कश्मीर सरकार पाकिस्तान की विध्वंसपूर्ण तथा घुसपैठपूर्ण कारवाइयों का पूरी तरह मुकाबला कर रही है और युद्धविराम रेखा पर पूरी चौकसी रख रही है। शस्त्र भंडारों और घुसपैठियों का पता बताए जाने के सिलसिले में राज्य की जनता ने अधिकारियों को काफी मदद पहुंचाई।

श्री चह्वाण ने बताया कि चीन के सैनिक विशेषज्ञों की पूर्वी पाकिस्तान स्थित पाकिस्तानी सेना से जो नया गठबन्धन हुआ है, वह एक नया पहलू है जिसे ध्यान में रखा जाना चाहिए। सरकार इस स्थिति का मुकाबला करने को भी तैयार है।

उन्होंने बैठक में बताया कि ऐसे संकेत हैं कि पाकिस्तान सरकार मिजो और नागा विद्रोहियों को शस्त्र दे रही है और उन्हें प्रशिक्षित भी कर रही है।

पाकिस्तान मिजो और नागा विद्रोहियों को जो मदद दे रहा है वह सर्वथा उसकी भारत को परेशान करने वाली नीति के अनुरूप है, पर सरकार पाकिस्तान या चीन की ओर से की जाने वाली किसी भी आक्रमणकारी कार्यवाही का पूरी तरह जवाब देने में समर्थ है।

श्री चह्वाण ने कहा कि अवमूल्यन का प्रतिरक्षा उत्पादन या तैयारी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि प्रतिरक्षा सम्बन्धी बजट में विदेशी मुद्रावाला भाग कोई अधिक नहीं है।

इससे पूर्व कांग्रेस संसदीय दल के महा मन्त्री श्री रघुनाथसिंह ने बहस प्रारम्भ करते हुए कहा कि उन समाचारों पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये जिनमें यह बताया गया है कि पाकिस्तान जोरदार सैनिक तैयारी कर रहा है पूर्वी पाकिस्तान में चीनी अधिकारी हैं और वहां मिजो विद्रोहियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है तथा चिटगांव में नौसैनिक बन्दरगाह को सुदृढ़ किया जा रहा है।

इसके बाद बहस में जिन व्यक्तियों ने भाग लिया उनमें भूतपूर्व वित्तमंत्री श्री अशोक सेन भूतपूर्व पुनर्वास मन्त्री श्री महावीर त्यागी श्री बी के कृष्ण मेनन श्री आर एस पाण्डे तथा श्री आर एस पंचहजारी शामिल हैं।

कुछ सदस्यों ने इस बात का भी उल्लेख किया बताते हैं कि पाकिस्तानी अधिकारियों का एक दल इस समय मास्को में शस्त्रों की खरीद के लिए गया हुआ है।

श्रीयुत सम्पादक जी,
सम्पादक आर्यमित्र लखनऊ

१५-५-६६ के आर्यमित्र में एक पत्र वनवासी जनता को बलात ईसाई बनाया जा रहा है, नाम से पढ़ा। मन तभी से बहुत उद्विग्न है। क्या कोई भी सहयोग कहीं से पहुंचा जिन जिन संस्थाओं से अपील की गई थी। उन एक हजार भाइयों को ईसाई बनने से बचाया जा सका या नहीं? हम साधारण जन इसमें किस प्रकार सहयोग दें इसका मार्ग दर्शन चाहते हैं।

एक स्वप्न यह भी मेरा है कि यदि एक मैमोरैन्डम तैयार करके और उसके साथ बलात ईसाई बनाने के प्रामाणित तथ्य इकट्ठे करके सरकार के पास भेजे जाय और सरकार पर यह जोर डाला जाय कि 'विदेशी मिशनरियों को देश से निकालो' तो क्या कुछ सफलता नहीं मिलेगी यदि देश के कोने कोने से हजारों हस्ताक्षरों के साथ यह मेमोरेन्डम पहुंचे। इसकी योजना बनाई जाएगी परन्तु आपका पूरा सहयोग इसमें हमें मिलेगा ऐसा आश्वासन दीजिये।

इससे पहले जनता को जाग्रत करने के लिए किसी प्रभावशाली लेख को अधिक से अधिक संख्या में इश्तहार के रूप में छपवा कर जनता में बटवाया जाय और उसी लेख को जितने भी समाचार पत्रों में दे सकें सभी में देने का प्रयत्न करें। उसमें आर्यसमाजी तथा दूसरे सभी हिन्दुओं को आकर्षित करने योग्य सामग्री हो क्योंकि देश भर के हिन्दू संगठित होकर यदि यह काम इस समय नहीं सम्भालेंगे तो एक दिन अवश्य हिन्दुत्व मिट जायगा। जिस हिन्दुत्व को हमने हजारों वर्षों की गुलामी में बचाए रक्खा उसे अब आजाद होकर खो रहे हैं।

आपके इसी अंक में पृष्ठ १३ पर ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन नाम से जो लेख श्री प्रोफेसर योगेश्वरदेव एम० ए० का लिखा है वह बहुत सुन्दर और इस काम में सहायक है। यदि इस लेख को मैं दूसरे कुछ पत्रों में श्री योगेश्वर जी के नाम से ही छपवाने का प्रयत्न करूं तो आपको तथा लेखक को कोई आपत्ति तो न होगी। इस प्रकार के लेख विशाल पैमाने पर जनता में पहुंचते रहे तो कभी तो जाग्रति आएगी ही। कृपया पत्रोत्तर देने का कष्ट कीजिये।

भवदीय—
राजदुलारी गर्ग
द्वारा डा० अमरनाथ गर्ग
मोरगंज सहारनपुर

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री की बहन का शुभ-विवाह

नई दिल्ली २८ जून। लोकसभा के एक प्रमुख सदस्य तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपप्रधान श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री की बहन कुमारी रेखा का विवाह आज सायंकाल यहां श्री महेन्द्रसिंह एम एस सी के साथ सम्पन्न हो गया।

श्री सिंह बुलन्दशहर के हैं तथा यहां इंडियन आयल कारपोरेशन में वैज्ञानिक अनुसंधान अफसर हैं।

इस अवसर पर कई मंत्रिगण, संसद सदस्य तथा राजधानी के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति काफी संख्या में उपस्थित थे।

आर्यसमाज सांडी जिला-हरदोई

का वार्षिकोत्सव दि० १६ से १९ जून ६६ ई० तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। इस शुभ अवसर पर सर्व श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री एम ए. उपमंत्री सभा, श्रीमती डा० प्रकाशवती जी, श्री ठा० बजराजसिंह जी प्रचारक सभा, श्री ठा० कुमेन्द्रपालसिंह जी, श्री पं० मदनमोहन जी पं० ब्रह्मानन्द जी के मनोहर उपदेश और भजन हुए।

—मन्त्री आर्यसमाज सांडी, हरदोई

महर्षि निराश होने वाले नहीं थे वे देशवासियों को अपनी महानतम विचारधारा के द्वारा जीवन के विशेष धार्मिक एवं नैतिक स्तर तक पहुंचाना चाहते थे। वे अनुभव करते थे कि हम लोगों में प्राचीन गौरव की भावना में शिथिलता आ गई है। उस उच्च आदर्श तक पहुंचाने की प्रबल लालसा, स्वामी गुरु से प्राप्त दीक्षा वचनों को सहर्ष स्वीकार कर उसका अक्षरश पालन किया।

श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री

हम लोग भी अपने परम गुरु के प्रति आदरभाव से उनके आदेशों का पालन करने का व्रत लें।

आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन सकुशल सम्पन्न हो गया। देखना यह है कि इस आने वाले वर्ष में कुछ भी जागरूकता हम में आयेगी। वैदिक विचारधारा के प्रसार के लिए क्या कुछ करेंगे? सारे प्रदेश में कार्य के सचालन का उत्तरदायित्व इस सभा पर है। सभा का बल प्रदेश की आर्य समाजें हैं और व्यक्ति हैं। हम सभी को मिलकर अपने अपने क्षेत्र में, शहरों में, नगरों-ग्रामों में, उन व्यक्तियों के हृदयों तक जो नयी आशा की किरण लेकर संसार में आये हैं, उन्हें बताना है कि आर्यसमाज क्या है, नया प्रकाश देता है, जो अन्धकार में पड़े हैं, हम विचार और अपने कार्य में लग जायें। सत्य ज्ञान का प्रकाश पहुंचाने के लिए।

हम लोग क्षण भर में आशावादी व निराशावादी हो जाते हैं ऋषि आशावादी थे। आशा और विश्वास के साथ उठो, कार्य में लग जाओ। इस महामन्त्र को लेकर—

कार्यं वा साधयेयम्।
देहं वा पातयेयम्॥

समय की मांग है कि हम अपनी कार्य-प्रणाली में यदि आवश्यकता है कुछ परिवर्तन की, तो उसमें हेर-फेर कर प्रगतिशील बनें। केवल योजनाओं से

वृहदधिवेशन हो गया—

महर्षि के स्वप्नों को पूरा करने का व्रत लीजिये

[ले०—श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री उपमन्त्री आ प्र स. उ प्र]

कार्य बनेगा नहीं, कोरे घोषणा पत्र नव-निर्माण नही कर सकते हैं इन सबके पीछे हमें बलिदान की भावना लेनी होगी और कमर कसकर मर मिटने को तैयार होना पड़ेगा। काश-प्रत्येक जिले से दो-चार व्यक्ति भी उभर कर खड़े हो जायें और अपने क्षेत्रों में जाकर समाजों को जागृत करें, पर सुनता कौन है? अधिवेशन बीतते चले जाते हैं। उठते हुए नरों को देखता कौन है कोरी कल्पना का सहारा लेकर उन्हे रोक नही सकते हैं।

ऋषि के महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए हम सभी बढ़ने वाली सेना के सिपाही हैं, फिर—अभाव, अन्याय अज्ञान का तूफान उमडा क्यो? इसलिए उठो? इन सभी से टकराने के लिए पहले से अधिक आज हम लोगो की अधिक आवश्यकता है।

ईसाई, मुसलमान, कम्युनिस्ट तथा भोगवादी विचारधारा के प्रसारक, असत्य का सम्बल लेकर सफलता की ओर कैसे बढ़े जा रहे हैं उनमे भी अज्ञान, अन्याय आदि को बढ़ाने के लिए असत्य के पीछे अपने मत का प्रचार करने के लिये त्याग व मिटने की भावना है। वही सब कुछ हम लोग भी लेकर ज्ञान-यज्ञ की ज्योति में आहुति देने की भावना लेनी होगी, यदि जीवित रहना है और आगे बढ़ना है।

निराशा नाम की वस्तु महर्षि ने हमें जन्म की घुट्टी मे नही पिलाई है। उनका अमर त्याग बलिदान जीवित है। वह समय-समय पर लाखो नर-नारियो आबाल वृद्धो मे प्ररणा बनकर जगमगा रहा है।

ऋषि भक्तो! सम्भलो न जाने किसके हृदय में टीस बनकर वेदना उभार ले और प्ररणा मिले। आलस्य को छोडकर महा पथन पर चलो व प्रसार का कारण बनो।

आर्यसमाज के अधिकारियो,सदस्यो प्रचारको, उपदेशको सभी से आत्मावलोकन करने की यह भावना है वह सोच कि ऋषि के मिशन का दायित्व हम कहा तक निभा रहे हैं यदि नही तो उसकी पूर्ति का दृढ व्रत लें। और इस वर्ष कुछ नया कार्य कर दिखायें। यदि एक व्यक्ति ने एक नये व्यक्ति का नव निर्माण किया तो हमें सन्तोष होगा कि हमने इस वर्ष हजारों व्यक्तियों के विचार बदलकर सच्चे आर्य पैदा किये हैं।

ऋषि की यही इच्छा थी कि एक से अनेक बनाओ। कालेजों विद्यालयो में घुसो, शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक वातावरण पैदा करो। आचार-विचार में परिवतन लाना है, खानपान परिधान मे परिवर्तन लाना है। दैनिक जीवनचर्या का निर्माण करना है यह है वह कार्य जिनके लिए हम एक आधार है कम को स्वच्छ पवित्र बनाने के लिए, आ० स० एक साधन है जिसके द्वारा जीवन को ढालना है। अधिवेशन बीत गया, अगले अधिवेशन तक कुछ सोचकर कम पथ पर अग्रणी हो और कुछ कर दिखाये ऐसी भावना के साथ हम व आप आगे बढें, ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये।

★

निर्धन छात्रों को छात्रवृत्तियां

आर्य शिक्षण संस्थाओ के निर्धन, योग्य, निपुण एव परिश्रमी तथा सदाचारी छात्र छात्राओ से छात्रवृत्ति के लिए आवेदन-पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं। आवेदन पत्र आचार्य के प्रमाण पत्र सहित मन्त्री श्री प्रभुदयाल चैरिटेबल ट्रस्ट ६५६२/६ चमेलियान रोड मौडल बस्ती दिल्ली-६ के पास शीघ्र पहुच जाने चाहिए। —हरिदत्त मन्त्री
श्री प्रभुदयाल चैरिटेबल ट्रस्ट
मौडल बस्ती, दिल्ली

सभा महोपदेशक श्रीबलवीर शास्त्री के परिवार में शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के महोपदेशक श्री बलवीर जी शास्त्री की भाभी श्रीमती देववती देवी जी (धर्मपत्नी श्री चौधरी राजसिंह जी कृषि पण्डित) का दस मई ६६ का आकस्मिक निधन हो जाने से सारे परिवार में शोक छा गया। गुरुकुल किरठल (मेरठ) के मुख्याधिष्ठाता श्री शिवपूजन जी शास्त्री एव श्री धर्मपाल जी शास्त्री ने वैदिक रीति से अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न कराया। ग्राम वासियो ने शोक सभा कर देवी जी के प्रति श्रद्धांजलियां अर्पित की। प्रभु शोक सतप्त परिवार को धैर्य की शक्ति प्रदान करें।

दयानन्द साल्वेशन मिशन का प्रचार कार्य

१—आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर ने प० हरिश्चन्द्र विद्यार्थी बी० ए० बी० टी० जम्मू को आसाम तथा उड़ीसा प्रान्त में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ तथा मिशन के लिए धन एकत्रित करने के लिए नियुक्त किया है।

२—मिशन ने अपने एक कार्यकर्ता श्री वेदव्रत को भी आसाम प्रान्त में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ तथा शुद्धि कार्यार्थ भेजा है।

३—श्री मोहनलाल महादेव आर्य जो आसाम प्रान्त मे कार्य करते थे अब उनको वैदिक धर्म के प्रचारार्थ तथा शुद्धि कार्यार्थ मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र मे भेजा जा रहा है।

४—कुष्ठ रोगियो की सेवा के लिये ५००) मिशन को दान—

श्री जे० आर० चावला, पैन्हानर ०२ डी० सेकेट मेरठ शहर, ने प्रसन्नता पूर्वक आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर को निर्धन लोगो के सहायतार्थ कुष्ठ रोगियो के सेवार्थ (आयुर्वेदिक औषधियो के लिए), तथा वैदिक धर्म के प्रचारार्थ १०००) दान दिया है। जिसके लिए मिशन उनका अत्यधिक धन्यवादी है। दानी महानुभाव श्री चावला जी मिशन के आजीवन सदस्य भी हैं और उन्होने मिशन को पहले भी पाच सौ ५००) वैदिक धर्म के प्रचारार्थ दान दिया हुआ है।

५—गुजरात में शुद्धियाँ—आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर की बड़ौदा (गुजरात) शाखा के कार्यकर्ताओ के प० आनन्द प्रिय जी, जो मिशन के अनथक, लगनशील तथा अवैतनिक कार्यकर्ता है और मिशन को वही की शाखा के अध्यक्ष हैं, के नेतृत्व सूदवा (कच्छ) मे विधर्मियो के ?०० परिवार जिनके सदस्यो की कुल संख्या १००० है, का पुन वैदिक हिन्दू धर्म मे प्रवेश किया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय में प्रवेश

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में नये (६ से १० तक आयु के) ब्रह्मचारियों का प्रवेश १ जुलाई १९६६ से प्रारम्भ होगा। शिक्षा निःशुल्क। सब विषयों की शिक्षा। आश्रम-वास। विशेष देख-रेख। सीधा सादा भारतीय जीवन। कड़ा अनुशासन। एकसा रहन-सहन। प्राकृतिक सुन्दर, स्वास्थ्यप्रद वातावरण सात्विक भोजन। पालन-पोषण का साधारण व्यय। उपाधियाँ सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त। नियमावली मगावें।

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रवेश

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में ग्रीष्म अवकाश की समाप्ति के पश्चात् शिक्षा का नवीन सत्र १ जुलाई से प्रारम्भ हो गया है।

नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश हो रहा है, गुरुकुल महाविद्यालय के प्रेमी महानुभाव जो अपने बालकों को गुरुकुल महाविद्यालय में प्रविष्ट कराना चाहे वे कार्यालय से प्रवेश नियमावली मगावें।

—अधिष्ठाता गु०कु०म०ज्वालापुर (हरिद्वार)

शराब की दुकानें शासनाधिकारियों के बंगलों पर खोली जायें

आर्यसमाज देहरादून की सभा मे मांग

आर्यसमाज देहरादून के साप्ताहिक अधिवेशन मे निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ—

'सभी धर्मों के आचार्य इस बात पर एकमत हैं कि मद्य का सेवन मनुष्यों के लिए हानिकर है। महात्मा गांधी जी ने भी मद्य-निषेध को अपने कार्यक्रम का एक प्रमुख अंग माना था। परन्तु देखने में आ रहा है कि गांधी जी के अनुयायी कहलाने वालों की सरकार, किन्हीं निहित स्वार्थों के कारण, न केवल मद्य निषेध की ओर ध्यान नहीं दे रही है बल्कि शराब का प्रचार अधिकाधिक बढ़ाने के लिए नित्य नई नई दुकानें खुलवाती जा रही है जिससे चरित्र भ्रष्टता के साथ-साथ अपराध स्थिति भी भयंकर होती जाती है। इसके विरोध में समय-समय पर नागरिकों की ओर से अधिकारियों के पास अपना क्षोभ व्यक्त किया जाता रहा है।

यह सभा सरकार से जोरदार मांग करती है कि न्याय-व्यवस्था की सहायता के लिए तथा नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए पूर्ण मद्य-निषेध सारे देश में अविलम्ब लागू करे। इस सभा का यह भी अनुरोध है कि यदि सरकार किसी नगर में शराब की नई दुकान खोलना अनिवार्य समझे तो इसके लिए प्रधान मन्त्री के निवास, मुख्य मन्त्रियों के बंगलों तथा जिलाधीशों के बंगलों के आस-पास स्थान चुना जाए ताकि शराबियों के असभ्य आचरण और अनर्गल कोलाहल से जन साधारण बचे रहें।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों नगर के चुक्खू मुहल्ला में देशी शराब की एक नई दुकान खोली जाने वाली थी जिसके विरोध में मोहल्ला-वासियों ने आन्दोलन किया। अब यह दुकान न्यू मारकेट में खोल दी गई है जिससे उस क्षेत्र के लोग क्षुब्ध हैं।

आसाम में सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रचार कार्य

श्री अमरनाथजी शास्त्री द्वारा संगठन, प्रचार एवं शुद्धियां

सार्वदेशिक सभा ने श्रीयुत प० अमरनाथ जी शास्त्री को १०.९.६५ को नियुक्त करके आसाम भेजा वहां प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है। आसाम प्रचार की एक विस्तृत योजना भी तैयार कर ली गई है जिसे कार्यान्वित करने के लिए साधन जुटाये जा रहे हैं।

सार्वदेशिक आ०प्र० सभा देहली के श्रीयुत प० अमरनाथ जी शास्त्री ने आसाम पहुंचकर बड़ा प्रशंसनीय एवं सन्तोषजनक कार्य किया है और वे निरंतर क्षेत्र तैयार करने में संलग्न हैं। उनके कार्य का प्रभाव जन सामान्य जनता से लेकर विशिष्ट वर्गों यहां तक कि राज्याधिकारियों तक पर भी पड़ रहा है यह हर्ष की बात है। उनका हेड क्वार्टर आर्यसमाज गोहाटी (लैम्ब रोड) है।

उनके द्वारा हुए कार्य का विवरण निम्न प्रकार है—

यज्ञ २७४
प्रवचन व भाषण १११

गोहाटी ५ डिगारन ९, नागफू ७, सिलपुखरी रोड ५ शिलांग में ११ परिवार एवं १ युरोपियन परिवार६७ अन्य स्थानों पर ८५ कुल १७८

संस्कार २५

एक हिन्दू देवी व उसके २ बच्चों को मुसलमानों के घरों से निकाला गया।

१—राज्यपाल महोदय के घर पर यज्ञ।
२—लेबर कमिश्नर की पुत्री का विवाह संस्कार।
३—कर्नल बर्मी के पुत्र का नामकरण।
४—चीफ जस्टिस के घर पर दैनिक यज्ञ।
५—स्टेट लायब्रेरी में भाषण।
६—तीन फौजी कैंपों में भाषण।
७—गवर्नर, एडवाइजर गवर्नर, मुख्य मन्त्री व शिक्षा मन्त्री आदि से भेंट।
८—छ परिवारों में दैनिक यज्ञ का चालू किया जाना।
९—तीन स्थानों पर रविवारीय सत्संग चालू करवाना।
१०—ग्यारह गोष्ठियां की गई जिनमें आर्यसमाज के कार्य विस्तार पर विचार होकर कार्य को बढ़ाये जाने के उपायों का निर्धारण हुआ।

सर्वदानन्द साधुआश्रम हरदुआगंज (अलीगढ़)

सर्व सज्जनों को विदित हो कि श्री सर्वदानन्द साधुआश्रम जिला अलीगढ पूज्यपाद वीतराग स्वर्गीय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज द्वारा काली नदी के तट पर सन् १९१० ई० से स्थापित यह पवित्र आश्रम दीर्घकाल से वैदिक धर्म के पूर्ण प्रचार का पुण्य कार्य करता चला आ रहा है। आर्यसमाज के रत्न परम विद्वान् स्व० प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु और श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती, स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी, प० सुरेन्द्र शर्मा गौर तथा प० शंकरदेव जी आदि-आदि परम विद्वान इस आश्रम की ही विभूतियां हैं। इसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड कमेटी द्वारा किया जा रहा है।

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी के निधन के पश्चात् इस आश्रम के संचालन का सारा भार आर्य जनता पर ही है। यहां एक संस्कृत महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है। जिसमें आचार्य परीक्षा तक की शिक्षा दी जाती है। वैदिक धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है और वैदिक संस्कृति का जीवन ढाला जाता है।

अस्तु सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे इस विश्वविख्यात आर्य संस्था को अधिक से अधिक धन द्वारा सहायता करें और योग्य विद्यार्थी भेजकर उनका जीवन सुधारने का पुण्य प्राप्त करें।

—स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती अधिष्ठाता

गोवध बन्द करो

आ. स. की मांग

आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर के तत्वावधान मे गो रक्षा के सम्बन्ध मे एक आमसभा श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हुई। सभा में प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से मांग की गई कि भारत के आर्थिक व धार्मिक दृष्टिकोण के कारण गोवध कानूनी तौर से बन्द किया जावे। तिहाड़ दिल्ली जेल में अनशन करने वाले साधुओं के साथ किये जाने वाले अमानुषिक व्यवहार की प्रस्ताव में निन्दा की गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से आग्रह किया गया कि गो रक्षा के लिये तीव्र आन्दोलन प्रारम्भ करे। सभा में श्री देवीदास आर्य ने भाषण देते हुये कहा कि कई मुस्लिम बादशाहों ने गोवध को कानूनी बन्द कर हिन्दुओं की भावनाओं का सम्मान किया था परन्तु खेद का विषय है कि महात्मा गांधी जैसे गो रक्षक के पैरोकार सरकार गो वध को कानूनी तौर से बन्द करने में डरती है। गांधी जी ने गो रक्षा के प्रश्न को स्वराज्य के प्रश्न से कम महत्व नहीं दिया था और कहा था कि जब गाय कटती है तो ऐसा अनुभव होता है कि गांधी कट रहा है। सभा में स्वामी शिवानन्द, श्री जाती भूषण व श्री मोहन लाल के भी भाषण हुये।

●

कन्या गुरुकुल देहरादून

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून मे नवीन कन्याओं का प्रवेश १ जुलाई १९६६ से आरम्भ हो रहा है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५० नये पैसे के टिकट भेजकर नियमावली मंगवा लें।

यह कन्या गुरुकुल विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी का ही एक कालेज है। महाविद्यालय विभाग में प्रथम वर्ष मे संस्कृत लेकर मैट्रिक उत्तीर्ण छात्रायें भी प्रविष्ट हो सकेंगी। —आचार्या

अजीर्ण की बीमारी आज-कल बहुत है लोगों की पचाने की शक्ति के दुर्बल हो जाने से यह रोग वृद्धि पकड़ रहा है। जो कुछ भी हम खाते हैं उसी भोजन के जीर्ण होने से हमारे अन्दर, रस, रक्त, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा, वीर्य बनता है। यदि खाया हुआ भोजन ही हजम न हो तो चाहे हम बढ़िया से बढ़िया भोजन क्यों न खावें उस से शरीर मे कोई पुष्टि नहीं आती, इस लिए अजीर्ण रोग की ओर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

कारण—अधिक शराब, सिगरेट, चाय, काफी, तेज मिर्च मसाले, बेमेल भोजन के खाने, अधिक जल पीने टट्टी, पेशाब, अपान वायु के वेगों के रोकने, बहुत जागने ईर्ष्या, भय, क्रोध, शोक और चिन्ता से हमारी पाचन शक्ति दुर्बल हो जाती है। यह दुर्बल हुई२ भोजन को पूरी तरह नहीं पचाती। यह बदहजमी या है। पेट को दबाने से पीड़ा होती है यदि कष्ट अधिक हो जावे तो बिना दबाये भी शूल अनुभव होने लगती है।

चिकित्सा—जितना यह रोग भयंकर है उतनी ही चिकित्सा सरल है। सब से पहली चिकित्सा इसकी उपवास है। जब तक पूरी तरह से भूख न लगे तब तक भूखे रहना चाहिये। पानी में थोड़ा निम्बू डाल कर पीते जाना चाहिए। यदि सरदी की ऋतु हो तो गर्म पानी ही पीना अच्छा है। लवण लगा कर निम्बू को वैसे चूसना चाहिए इस तरह कुछ दिन उपवास रखने से मेहदे मे पचाने की शक्ति बढ़ती है और भूख लग कर भोजन हजम हो जाता है।

यदि कब्ज के कारण अजीर्ण हो तो बड़ी पीली हरड का छिलका, वा निशोत (त्रिवि) कूट कर दो या तीन मासे गर्म पानी लेने से शौच खुल जाता है और अजीर्णता शान्त हो जाती है।

अजीर्ण रोग और उसका इलाज

● वैद्य रामगोपाल शास्त्री

(आर्य समाज रोड करोल बाग नई दिल्ली)

अजीर्ण है।

लक्षण—इससे शरीर और हृदय में भारी पन, बहु मिचलना गालों और आंखों के नीचे सूजन, भोजन के पीछे बहुत डकारों का आना, सिर मे चक्कर, प्यास का अधिक लगना, बेहोशी, छाती और पीठ में कभी २ पीड़ा का होना पसीना अधिक आना, छाती में जलन, खट्टे डकार, कब्ज, पेट में अफारा, उल्टी, थूकों की अधिकता, अपान वायु का रुकना, सिर दर्द, अङ्गों में पीड़ा दिल की धड़कन का बढ़ना आदि लक्षण हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त जब अजीर्ण बहुत बढ़ जावे तो मृत्यु तक हो जाती है। यह जरूरी नहीं कि ऊपर लिखे सभी लक्षण अजीर्ण में इकट्ठे ही हों। किसी समय थोड़े, कभी बहुत लक्षण इकट्ठे हो जाते हैं तो हमें समझ लेना चाहिए कि अब हमारी पाचन शक्ति दुर्बल हो चली

यदि खट्टी डकारें साथ आती हों तो गर्म पानी मे निम्बू अथवा गर्म पानी में लवण का चम्मच डालकर पीना लाभ कारी है। सोडा वाटर पीने से भी लाभ होता है।

इस रोग को रोकने की मूल चिकित्सा तो सैर, खेलना, कूदना वा व्यायाम है। ऐसे लोगों से यह कोसो दूर भागता है। अत: जो इस दुष्ट रोग से बचना चाहें शरीर को किसी खेल या काम में अवश्य लगाना चाहिए।

अजीर्ण में नीचे लिखी वस्तुओं को छोड़ देना चाहिए जब दालें, उड़द, चना, मूंग, अरहर, मटर, लोबिया आदि, हर प्रकार का मांस, तले हुए पदार्थ जैसे परौठा, पुरी, कचौरी, समोसा, बेसनादि, मावा (खोया) मेवा, बेसन की बनी नमकीन या मिठाइयें, अधिक घी, तेल आ,

(शेष पृष्ठ १० पर)

[पृष्ठ २ का शेष]

से यह मांग करता है कि वह नैतिकता और सदाचार की वृद्धि के लिए मद्य निषेध को अधिक कठोरता से लागू करे और सारे राष्ट्र मे मद्यपान वैधानिक दृष्टि से सम्पूर्णतया निषिद्ध घोषित किया जाये।

(आ) यह सम्मेलन भारत सरकार से भी यह मांग करता है कि सारे देश में मद्यनिषेध की नीति एक समान लागू की जाये।

प्रस्तावक—श्री लक्ष्मणराव जी
अनुमोदक—श्री प० प्रह्लाद जी
समर्थक— , नरदेव जी स्नेही

प्रस्ताव संख्या (३)

वैदिक संस्कारों का महत्व

(अ) आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण को अनुभव करके अत्यन्त खेद होता है कि आर्यसमाज के कतिपय सदस्य अपने घरो मे अवैदिक संस्कार करते हैं और अन्य आर्यसमाजी सदस्य उनको निरुत्साहित करने के स्थान पर उलट ऐसे अवैदिक संस्कार में सम्मिलित होते हैं। जिसका परिणाम यह हो रहा है कि वैदिक संस्कारो का लोप होता जा रहा है। अत यह सम्मेलन आर्यसमाजी सभासदो से अनुरोध करता है कि इस नियम का यदि किसी सभासद द्वारा उल्लंघन करने की धृष्टता हो तो आर्यसमाजी सभासदो से अनुरोध करता है कि इस नियम का यदि किसी सभासद द्वारा उल्लंघन करने की धृष्टता हो तो आर्यसमाजी सभासद ऐसे अवैदिक संस्कारो मे कदापि सम्मिलित न हों।

(आ) आर्यसमाजी जन अपने घरो में विशुद्ध वैदिक संस्कार करावें एवं पर्व पद्धति के अनुसार पर्वों का आयोजन करें।

संस्कार के सम्बन्ध मे यह सम्मेलन निम्न बातो की ओर आर्य सदस्यो का ध्यान आकर्षित कराता है। (१) आर्यों के संस्कारो मे यथासम्भव आर्यसमाजी सदस्य सपरिवार सम्मिलित होवें।

(२) संस्कारों को यथासम्भव कम खर्चीला बनाया जाये।

(३) प्रमुख समाज अपने यहां १ पुरोहित की नियुक्ति करें जिससे कि सदस्यों के यहां संस्कार सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो सकें।

प्रस्तावक—श्री प० ज्ञानेन्द्र जी
अनुमोदक—श्री डा० हरिश्चन्द्र जी
समर्थक— वेदकुमार जी वेदालंकार

प्रस्ताव संख्या (४)

तालुका और जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाएं

मराठवाडा आर्यसम्मेलन बीड आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण से प्रार्थना करता है कि आर्यसमाज के कार्य को सुचारुरूप से और प्रभावशाली रूप से प्रचारित करने के लिये निम्नलिखित प्रस्ताव पर विचार करें।

जिले के हर तालुके में एक तालुका प्रतिनिधि मण्डल होना चाहिये जो कि सम्पूर्ण तालुके के आर्यजगत की असुविधा या त्रुटियो को दूर करने का प्रयत्न करें।

इसी प्रकार जिले के स्तर पर भी आर्यसमाज के प्रचार प्रसार की दृष्टि से तथा संगठनात्मक सुगठितता लाने के लिए एक जिला प्रतिनिधि मण्डल की भी स्थापना की जाये। इस मण्डल के कर्तव्य और उद्देश्यों मे शैक्षणिक सामाजिक आर्थिक और धार्मिक सभी कार्य सम्मिलित हैं।

प्रस्तावक—श्री शेषराव जी वाघमारे
अनुमोदक—श्री वेदकुमार जी वेदालंकार

प्रस्ताव संख्या (५)

स्वतन्त्रता सैनिक

यह सम्मेलन महाराष्ट्र सरकार ने १५ अगस्त १९६५ के स्वातन्त्र्य सैनिकों के बारे में जो घोषणा की है उसका स्वागत करता है। स्वातन्त्र्य आन्दोलन मे आर्यो ने भाग लिया था लेकिन इसमे जिन आर्यसमाजी व्यक्तियो ने भाग लिया था उनके नाम बदल कर लिखवाये गये थे इसलिये उनके नाम बदलने की बाबत उसका स्वीकार नही किया जा रहा है सभा जो प्रमाण पत्र देगी उसको प्रमाणित मानकर उनको स्वतन्त्र्य सैनिक करार दिये जाय।

प्रस्तावक—श्री शेषराव जी वाघमारे
अनुमोदक— प० प्रह्लाद जी

प्रस्ताव संख्या (६)

आर्यसमाज का कार्यक्रम

बदलती हुयी परिस्थिति और जनता की आज की आवश्यकताओ को लक्ष्य मे रखकर यह सम्मेलन आर्यसमाज के कार्य को गतिशील बनाने के उद्देश्य से निम्नांकित कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

(१) प्रौढ शिक्षण के प्रसार के लिए उसकी आवश्यकता अनुभव करते हुए आर्य समाजो से अनुरोध करता है कि वे अपने यहां रात्री पाठशालाओ का संचालन करें। इन पाठशालाओ मे किसान मजदूर नर नारियो को शिक्षित बनाकर देश की शैक्षणिक स्थिति को सुधारने का कर्तव्य आर्यसमाज अपने ऊपर अवश्य लें।

(२) आर्यसमाज सदैव ही जनता के कष्टो को दूर करने का प्रयत्न करता रहा है। आज अनेक कारणो से जनता को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है जिन्हें आर्य समाज जैसी समाजसेवी संस्था देखकर चुप नहीं बैठ सकती। अत यह सम्मेलन आर्यसमाजियों से अनुरोध करता है कि जन-सम्पर्क क्षेत्र को बढाकर जनता के कष्टो को दूर करने का प्रयत्न करें।

(३) भ्रष्टाचार विरोधी भावनाओ को जाग्रत किया जाए।

(४) राज्य द्वारा संचालित परिवार नियोजन आन्दोलन को असफल बनाने की दिशा मे प्रत्येक समाज द्वारा व्यापक रूप मे प्रचार किया जाए जिससे कि हिन्दुओ की संख्या घटकर जो राजनैतिक परिणाम निकल सकते हैं उनकी रोक थाम हो सके।

(५) जन्म मूलक जाति पाति बन्धनो से मुक्त अन्तर वर्णीय विवाह सम्बन्धो को सक्रिय प्रोत्साहन दिया जाए।

(६) प्रत्येक आर्यसमाज द्वारा व्यायामशाला का संचालन सुचारु रूपेण किया जाए।

(७) नवयुवको के स्वास्थ्य पालन और नैतिक उत्थान के लिए आर्यसमाजो मे आर्यवीर दल की स्थापना की जाकर इस रचनात्मक कार्यक्रम को सुचारुता पूर्वक चलाया जाए।

(८ यह सम्मेलन देश मे बढती हुयी अनैतिकता और उसके प्रभाव को नष्ट करने के लिए आवश्यक अनुभव करता है कि प्रत्येक आर्यसमाज द्वारा अपने यहां धार्मिक परीक्षाओ की पाठविधि का व्यवस्था करे। और अधिकाधिक लोगों को इसमे भाग लेने को प्रोत्साहित करें।

(९) ईसाई निरोध प्रचार पर विशेष ध्यान दिया जाय।

(१०) शुद्धि के कार्य मे प्रत्येक समाज विशेष भाग ले।

प्रस्तावक श्री शेषराव जी वाघमारे
अनुमोदक श्री प० मंगलदेव जी शास्त्री
समर्थक श्री कर्मवीर जी तथा डा० इन्द्रदेव जी

प्रस्ताव संख्या (७)

एक पुरुष एक स्त्री विवाह का नागरिक नियम सब भारतीयो के लिए हो

बहु विवाह प्रतिबन्ध लगाकर भारत सरकार ने निःसंदेह एक प्रशंसनीय कार्य किया है। किन्तु यह खेद की बात है कि सम्पूर्ण देश में इसका पालन सभी के लिए समान रूप से नही है। मुसलमानो पर इस बहु विवाह प्रतिबन्ध का कोई प्रभाव नही है। एक राष्ट्र मे सामाजिक उत्थान के इस कानून पर आचरण की दो भिन्न नीतियां सर्वथा अनुचित है। मुस्लिम महिलाओ के प्रति इस अन्याय पूर्ण नीति के विरुद्ध बम्बई मे मुस्लिम महिलाओ के अभी-अभी प्रदर्शन का यह सम्मेलन समर्थन करता है। यह सम्मेलन भारत सरकार से प्रार्थना करता है कि कही राष्ट्र के निवासियो मे भेद करने वाली इस नीति को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त कर दें तथा भारत के सभी नागरिको को समान व्यवहार की इस न्यायपूर्ण मांग को स्वीकार करें।

प्रस्तावक—श्री उत्तममुनि जी
अनुमोदक डी एल होलीकर जी
समर्थक— करण्कर जी

श्री जिज्ञासु स्मारक भवन

समस्त आर्य बन्धुओ को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि भारत शासन से सम्मानित आर्यसमाज के वेद और व्याकरण के उद्भट विद्वान स्व० श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की स्मृति मे और उनके द्वारा प्रवर्तित कार्यो को बढाने के लिये आर्यसमाज ट्रस्ट पंजाबी बाग, देहली ने ५०० गज भूमि श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट को दी है। इस स्थान पर रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा स्व० श्री पूज्य प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु द्वारा प्रवर्तित वेदानुसन्धान कार्य बृहत्तम पुस्तकालय और आर्ष पाठविधि के अनुसार वेद वेदांगो के अध्ययन अध्यापन के लिए पाणिनि विद्यालय आदि विविध प्रवृत्तियो को केन्द्रित किया जायगा। इस स्मारक भवन पर एक लाख रुपया व्यय होगा।

आशा है समस्त आर्य बन्धुओ तथा श्री पूज्य जिज्ञासु जी के शिष्य भक्त और प्रेमी महानुभाव इस महान कार्य के लिए मुक्त हस्त होकर सहयोग प्रदान करेंगे।

श्री माननीय जिज्ञासु जी की जन्म तिथि १४ अक्तूबर से १६ अक्तूबर तक आर्यसमाज ट्रस्ट पंजाबी बाग द्वारा प्रदत्त भूमि पर एक विशिष्ट समारोह किया जायगा जिसमें भावी विशिष्ट कार्यक्रम पर विचार किया जायगा। इस शुभ अवसर पर सभी आर्य बन्धुओ को निमन्त्रित किया जायगा। अत आर्य बन्धु १४ १५ १६ अक्टूबर की तिथि अभी से नोट कर लें। विशिष्ट सूचनाएं यथा समय दी जाया करेंगी।

—युधिष्ठिर मीमांसक

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-६०

आषाढ़ १२ ... प्र०मासपक्ष० १
(दिनांक ३ जुलाई सन् १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
तार—'आर्यमित्र'
दूरभाष : २२९९२ तार : "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

अखिल भारतीय मतदाता सहायक संघ की ओर से देश के शुभ-चिंतकों की सेवा में परिपत्र

फोन : ६८१—कार्यालय-आर्यसमाज मार्ग, देहरादून

दिनांक ३१ मई १९६६

"गरीब देश के नुमाइन्दों की जिन्दगी इस तरह शानशोकत वाली बने, यह अशोभनीय है।"

"खिदमतगार लोगों का जीवन सादा होना चाहिए।'

'आज के अफसर बादशाहत के नमूने हैं।"

' राष्ट्रपति की यह शान दरिद्र भारत के अनुकूल नही। —विनोबा

आदरणीय महानुभाव,

आपकी कुशलता की कामना के साथ निवेदन है कि देश रक्षार्थ, शासन जो करें वे शोषण न करें, ताकि देश रक्तपात से बचकर आस्तिकता (धर्म) व प्रजातन्त्र को बचा सके। सरकार बचत करने को, जनता से कहती है किंतु प्रतिनिधि खर्चीलेपन की छूत व बोझ से जीना भी कठिन करके, बचत में रोडा बन रहे हैं। अत देश भर के ग्रामो, नगरो मे गोष्ठियों, जलूसों, जलसों के द्वारा बार-बार बचत की माग की जाय और इसमे जो उम्मीदवार व समर्थक सहयोग न दें उन्हें जनता वोट न दे।

और तय हुआ है कि १५ अगस्त १९६६ को देश के भिन्न भिन्न क्षेत्रो से स्वयसेवको की टोलियां पद यात्रा पर निकलें तथा जनता को अपनी यात्रा का उद्देश्य बताती हुई ऐसे प्रतिनिधि के क्षत्र मे, जिसने गरीबी से कराहती हुई साधारण जनता पर पडने वाल बड वेतनो के खर्चीले-पन के भारी बोझ को घटवाने की जगह बढवाने मे अगवानी की हो के क्षत्र में २ अक्तूबर ६६ को पहुचकर वहा के वोटरो से देश को सहयोग दने की मांग करनी चाहिये, जिसस देश क सभी वोटरो मे सगठन का आरभ हो और भविष्य में वैसा करने वाले को जनमत का भय हो।

(बिनु भय होय न प्रीति)

तय हुआ है कि सघ का कोई भी सदस्य किसी भी सीट के लिये चुनाव मे खडा न हो और नाही किसी के बारे मे यह आश्वासन दें कि वह चुने जाने के बाद भी ईमानदारी का परिचय देगा। जनता जिसे चाहे आजमायें, सघ का तो यह सतत प्रयत्न रहेगा कि कानून जनता को लूटने वाले नही, लूट को रोकनेवाले हों तथा जो प्रतिनिधि इसके विरुद्ध चले जनता उसके विरुद्ध चले।

इस अभियान मे यदि जनमत जाग्रत होता दीखे तो नमक सत्याग्रह की भांति देश के प्रत्येक चुनाव क्षत्र की जनता से इस खर्चीलेपन के विरुद्ध, २ अक्टूबर को विशेष आवाज उठवाई जाय और बाद मे क्या क्या कार्यक्रम रक्खे जाय इस पर विचार हो, ताकि भारत ने जिस प्रकार ससार के सामने यह सिद्ध करके दिखाया था कि अन्याय का प्रतिकार शस्त्र से नहीं बिना शस्त्र के भी किया जा सकता है, उसी प्रकार भारत दुनिया के सामने यह भी सिद्ध करके दिखा सके कि अन्याय का प्रतिकार सत्ता लेकर ही नही बिना सत्ता लिये भी किया जा सकता है। आवश्यकता है उसी उत्साह, त्याग, साहस और विश्वास की।

यदि अब भी देश के कार्यकर्ता गण केवल उन्ही कार्यक्षत्रो मे उलझ रह जिनमें उन्होने १८ वर्षो से आज तक अपनी शक्ति को लगाया है, तो क्या प्रतिनिधियो के भार से तग आकर देश मे दिनो दिन बढती ज ने वाली 'डिक्टेटरी' की माग सभी की वाणी, लेखनी तक की स्वतन्त्रता का छीन कर किसी तानाशाह का गुलाम नही बना डालेगी ? ऐसा बुरा दिन देखना न पड इसके लिये पत्रकार बन्धु अपने पत्रो मे इसे स्थान दिला कर देश को विचार तथा सहयोग देने का मौका दें ऐसी प्रार्थना है।

नोट—(१) इसे देशवासी अपने क्षत्र की भाषा मे एक हजार या अधिक छपवाकर जरूर बटवा द।

(२) सघ कार्यालय से पत्र-व्यवहार करें। तथा यात्रा के इच्छुको से फार्म भरवाने जल्दी शुरू किये जायें। इस यात्रा के इच्छुक व्यक्ति अपने नाम १५ जौलाई तक प्रेषित कर।

जगदीश्वरानन्द — अध्यक्ष
हरिश्चन्द्र वैद्य — सस्थापक
रामलाल उनियाल मत्री

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी भवानीलाल शर्मा ककुहास की पुण्यस्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालको के हितार्थ ७०००) की धन-राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद स० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब असहाय किन्तु होनहार बालक-बालिकाओं के शिक्षण मद मे व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि स आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुको को ।) के स्टाम्प भेज कर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु, मय, त्वष्टादि गरीब प० बा० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपयुक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र मे उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को मित्र पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार आषाढ़ १९ शक १८८८, द्वि० श्रावण कृ० ७ वि० २०२३, दिनांक १० जुलाई १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ।१०।

भावार्थ—जब कि समष्टि पुरुष का विधान करते हैं तब कितने प्रकार से उसकी कल्पना करते हैं, (अर्थात्) तब इसका क्या मुख है, क्या बाहु है उरु क्या हैं एवं पैर क्या कहे जाते हैं?

विषय-सूची

मथुरा में—

गुरु विरजानन्द स्मारक का निर्माण प्रगति पर

श्री प्रतापसिंह शूर जी प्रधान सार्वदेशिक सभा के सात्विक दान से आर्य जगत् की चिरप्रतीक्षित भावनायें साकार रूप धारण करेंगी।

महात्मा नारायण स्वामी जन्म-शताब्दी के सुअवसर पर स्मारक-भवन का उद्घाटन होगा।

आर्य जनता स्मारक के विकास एवं कार्य सचालन के लिये यथाशक्ति तन-मन-धन का सहयोग देकर अपनी गुरुभक्ति का परिचय दें।

आर्य जगत् की चिरकाल से यह उत्कट अभिलाषा रही है कि महर्षि दयानन्द ने जिस पुण्य स्थली में गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर आर्य ज्ञान की वैदिक ज्योति की शिक्षा प्राप्त की उस स्थान को उसी गौरव के अनुरूप विकसित किया जाय। सन् २४ में महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर जब आर्य जनता मथुरा में एकत्र हुई थी उसने गुरुवर की पाठशाला स्थली के दर्शन किये थे। सन् ५९ में महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर आर्य जगत् ने राष्ट्रपति डा०राजेन्द्रप्रसाद जी के कर कमलों से गुरुधाम स्मारक का शिलान्यास सम्पन्न कराया और अब गुरुधाम निर्माण का कार्य इस गति से प्रगति कर रहा है कि आगामी दिसम्बर में आर्य जगत् के स्मरणीय नेता एवं महर्षि दयानन्द के प्रमुख अनुयायी महात्मा नारायण स्वामी जी की जन्म शताब्दी के सुअवसर पर गुरुधाम का विधिवत् उद्घाटन सम्पन्न हो जायगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री प्रतापसिंह शूर जी ने इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये एक लाख रुपये के सात्विक दान का संकल्प किया था। उसी धनराशि से निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है। स्मारक समिति की ओर से श्री रमेशचन्द्र जी एडवोकेट मथुरा, श्री चन्द्रदत्त जी मन्त्री आ० प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश एवं श्री केदारनाथ जी रिटायर्ड इञ्जीनियर (इटावा) निर्माण कार्य में सक्रिय योग दे रहे हैं उन्हीं के निरीक्षण में नींव की खुदाई और भराई एवं चिनाई का कार्य चल रहा है। मथुरा नगरी के मध्य में नवनिर्मित हो रहे इस भवन की वहां आज विशेष चर्चा है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल जी एवं कोषाध्यक्ष श्री बालमुकुन्द जी जी सभा की ओर से निर्माण कार्य का निरीक्षण कर चुके हैं।

इस निर्माण की सूचना से आर्य जगत् में अत्यन्त प्रसन्नता और उत्साह उमड़ पड़ा है। दीक्षा शताब्दी के पुण्यावसर पर गुरुधाम के लिये समर्पण की जो भावनायें आर्य जनों ने व्यक्त की थीं आज उन्हें पूर्ण करने का अवसर आ गया है। भवन तो बन ही रहा है। स्मारक में वृहद पुस्तकालय, वेद-भवन, यज्ञशाला, अतिथिशाला एवं अनुसन्धान कक्ष आदि की विस्तृत योजनायें सम्पन्न होनी हैं। प्रत्येक आर्य भाई का यह कर्तव्य है कि इस पवित्र कार्य में अपना-अपना अंश देना आरम्भ कर दें। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश में विरजानन्द स्मारक नाम से अपना अंश दान भेजकर सहयोग प्रदान करें।

गुरु विरजानन्द स्मारक चिरकाल तक आर्य ज्योति का प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध होगा।

सत्यार्थप्रकाश के संबंध में

(श्री वेदानन्द शर्मा सि० शास्त्री, १२८ जैकमपुरा, गुड़गांव पंजाब)

महर्षि द्वारा लिखित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मानवता के लिए प्रकाश स्तम्भ है। सत्य अर्थ के प्रकाश को प्राप्त कर अनेक भ्रमित व्यक्ति सत्पथ के पथिक बन सके और आत्म-कल्याण प्राप्त कर जन-हित में रत हो सके। इसकी महत्ता और उपादेयता अनुपम है। इसका गौरव अवर्णनीय है। राष्ट्र भाषा में लिखा गया यह दिव्य ग्रन्थ सदा प्रेरणा-स्रोत रहेगा, यह निर्विवाद है।

आर्यसमाज ने इसके प्रचार तथा प्रसार का प्रयास यथा-शक्ति किया है। अनेक संस्करण इसके हो गये हैं तथा अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद किया गया है। इस ग्रन्थ के अध्ययन तथा श्रवण कर्ता लाखों की संख्या में हैं परन्तु इस विस्तृत अध्ययन के साथ एक समस्या भी प्रमुख रूप से उठ खड़ी हुई है और वह है—

सत्यार्थप्रकाश के शुद्ध संस्करण की आवश्यकता

मैं ३५ वर्ष से निरन्तर महर्षि का सन्देश जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा हूं। मैं अनुभव करता हूं कि सत्यार्थ प्रकाश का पठन-पाठन सनातन धर्मियों तथा अन्य धर्मावलम्बियों में निरन्तर बढ़ रहा है और उसका अध्ययन उसी दृष्टिकोण से करते हैं जिस दृष्टिकोण से पूर्ववर्ती आर्य विद्वान् पुराण, कुरान, बाइबिल, आदि का करते थे परिणाम स्वरूप सत्यार्थ प्रकाश की अनेक विषमताएं वे हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। उनके प्रश्नो और समस्याओं का उत्तर केवल 'प्रेस की भूलों', 'अनुवाद करने वालों की असावधानी' आदि के द्वारा ही नहीं दिया जा सकता है। आर्य जगत् के विद्वानो को, परोपकारिणी सभा को, सार्वदेशिक सभा को और प्रत्येक आर्य को इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना है। इस अमर ग्रन्थ का एक ऐसा सर्वशुद्ध संस्करण प्रकाशित होना चाहिए जिस पर किसी को भी किसी भी रूप में अंगुलि निर्देश करने का साहस न हो सके। महर्षि का स्पष्ट आदेश है कि अशुद्धियां ठीक कर ही किसी ग्रन्थ को प्रकाशित करना श्रेयस्कर होता है। इस सम्बन्ध में प्रयास किये गये हैं परन्तु सुपरिणाम न प्राप्त हो सका। जहाँ तक मैं जानता हूं सबसे अन्तिम प्रयास श्री प० भगवद्दत्त जी द्वारा किया गया है। उनका प्रयत्न सराहनीय है परन्तु मुझे खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि उनके सम्पादित ग्रन्थ में भी अनेक अशुद्धियां विभिन्न प्रकार की विद्यमान हैं।

सत्यार्थ प्रकाश का अनेक बार मैंने आलोडन तथा विलोडन किया है और मैने पाया है कि उसमें निम्नलिखित प्रकार की अशुद्धियां विद्यमान हैं—

(क) प्रमाणों के पते अशुद्ध हैं।

(ख) भाषा सम्बन्धी अशुद्धियां।

(ग) श्लोक का अर्थ अशुद्ध होना।

(घ) सिद्धान्त सम्बन्धी अशुद्धियां।

मेरे समक्ष इस समय सत्यार्थ प्रकाश के अनेक संस्करण विद्यमान हैं। इनमे से प्रमुख ये हैं—

(१) शताब्दी संस्करण।

(२) श्री जगदेव सिद्धान्ती का संस्करण।

(३) श्री स्वामी वेदानन्द जी का संस्करण।

(४) श्री पंडित भगवद्दत्त जी का संस्करण।

मैंने इनका मिलान किया है और इन समस्त संस्कारो में अशुद्धियां विद्य-

विचार-विमर्श

मान हैं। पते अशुद्ध हैं तथा अर्थ श्लोकों या मन्त्रों के अनुसार नहीं हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते है—

प्रथम समुल्लास—

(अ) श्री स्वामी जी ने लिखा है 'ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं।' परन्तु कुल ११८ नामों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

(आ) मनुस्मृति अ० १२ श्लोक १२३ का प्रमाण 'एतमेके वदन्त्येके' इत्यादि दिया गया है परन्तु मनुस्मृति मे 'एके' नहीं अपितु 'एकम' पाठ है। समस्त संस्करणो मे 'एके' ही पाठ प्राप्त है परन्तु मनुस्मृति के अनुसार अशुद्ध है।

(इ) 'स ब्रह्मा स विष्णु स रुद्रस्स शिवस्सोऽक्षरस्स परम स्वराट्' इत्यादि प्रमाण कैवल्य उपनिषद् का दिया गया है परन्तु इस उपनिषद् में इस प्रकार का पाठ नहीं प्राप्त होता है। वहां कुछ अन्तर है। उद्धरण को तदनुसार ही होना चाहिए।

(ई) 'अन्यत्ता ध्यायति तदवाचा वदति' इत्यादि का पता नहीं दिया गया है। श्री वेदानन्द जी के संस्करण में इसका पता शत० का० १४ अ० ७ ब्रा० २ क० ७ दिया है परन्तु पूर्णरूप से यह उद्धरण उससे नहीं मिलता है। श्री प० भगवद्दत्त जी ने इसका पता ही नहीं दिया है।

(उ) 'प्रश्न—वेद अब अप्रसिद्ध और वे उत्तम भी हैं, इससे मैं उनका ग्रहण करता हूं।

उत्तर—क्या परमेश्वर अप्रसिद्ध और उससे कोई उत्तम भी है? पुनः ये आप परमेश्वर के भी क्या नहीं मानते। जब परमेश्वर अप्रसिद्ध और उससे तुल्य भी कोई नहीं तो उससे उत्तम कोई क्यो कर हो सकेगा? इससे आपका यह कहना सत्य नहीं।'

इसमे उत्तर में द्वितीय 'अप्रसिद्ध' अशुद्ध है। इसके स्थान पर अतिप्रसिद्ध अथवा प्रसिद्ध होना चाहिए परन्तु समस्त संस्करणों में 'अप्रसिद्ध' ही छपा है और अर्थ का अनर्थ कर रहा है।

(ऊ) महादेव शब्द की व्याख्या मे श्री वेदानन्द जी ने यो महता देव स महादेव के स्थान पर यो महता देवाना देव स महादेव लिखा है। 'देवानाम्' शब्द बढ़ा दिया है।

द्वितीय समुल्लास—

(ए) 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद यह प्रमाण इस रूप मे नहीं उपलब्ध है। श्री भगवद्दत्त जी ने इसका पता तुलना के लिए शत० १४।५।८।२ दिया है परन्तु यह अशुद्ध है। मिलता-जुलता पाठ शत० १४।६।१०।२ मे 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् ब्रूयात्' प्राप्त होता है। शतपथ के अन्य स्थानो पर भी यह पाठ इसी रूप में तथा बृहदारण्यक में भी इसी रूप में प्राप्त है परन्तु जो रूप स्वामी जी ने दिया है वह कहीं भी प्राप्त नहीं है। पता मिलना चाहिये।

(ऐ) माता तथा पिता द्वारा शिक्षा काल का वर्णन करने के उपरान्त श्री स्वामी जी लिखते हैं कि द्विज घर में उपनयन कर आचार्य कुल में भेजें और 'शूद्रादि वर्ण उपनयन किये बिना विद्याभ्यास के लिये गुरुकुल भेज दें।'

विचारणीय यह है कि द्विज का तात्पर्य प्रथम तीन वर्णों से है। ऐसी अवस्था में 'शूद्रादि' में आदि शब्द व्यर्थ है। इस वचन का तात्पर्य यह होता है कि शूद्र के बालक का यज्ञोपवीत संस्कार न किया जाए। बालकों में वर्ण गत भेद नहीं होना चाहिए। बालक बालक सब शूद्र ही हैं। इसी को पुष्ट करते हुए महर्षि तृतीय समुल्लास में लिखते हैं 'प्रथम लड़कों का यज्ञोपवीत घर में हो और दूसरा पाठशाला में आचार्य कुल में हो।' इस वचन से स्पष्ट है कि शूद्र का बालक भी घर से यज्ञोपवीत धारण कर आचार्य कुल जावे। दो बार यज्ञोपवीत संस्कार का विधान भी विचारणीय है।

इस प्रकार दो समुल्लासो के कुछ स्पष्ट अंश उद्धृत किये जा रहे हैं। आर्य चिन्तक इन पर विचार करें। ये कुछ ही रखे गये हैं। समस्त संस्करणों में पारस्परिक भिन्नता का तो कहना ही क्या। अन्य समुल्लासों के भी विचारणीय स्थल बाद में प्रस्तुत किये जायेंगे।

●

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में नवीन प्रवेश

प्रसिद्ध आर्य शिक्षा संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का शिक्षा सत्र १ जुलाई से आरम्भ हो गया है। ६ से १० वर्ष की आयु के बालक विद्यालय विभाग में प्रविष्ट होंगे। महाविद्यालय विभाग में पण्डित कक्षा ११-१२ में संस्कृत लेकर मैट्रिक (शिरोमणि कक्षा १३-१४ में संस्कृत इन्टर व मध्यमा प्रविष्ट हो सकते हैं। शीघ्र पत्र-व्यवहार करें। —उमेशचन्द्र स्नातक उपमन्त्री विद्या सभा गुरुकुल वि वि वृन्दावन

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रवेश

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में ग्रीष्म अवकाश की समाप्ति के पश्चात् शिक्षा का नवीन सत्र १ जुलाई से प्रारम्भ हो गया है।

नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश हो रहा है, गुरुकुल महाविद्यालय के प्रेमी महानुभाव जो अपने बालकों को गुरुकुल महाविद्यालय में प्रविष्ट कराना चाहें वे कार्यालय से प्रवेश नियमावली मगावें।

—अधिष्ठाता गु०कु०म०ज्वालापुर (हरिद्वार)

निवेदन

किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय व मनीआर्डर भेजते समय ग्राहक अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें।

—व्यवस्थापक आर्यमित्र

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्नि राप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूय पात स्वस्तिभि सदा न ॥२७॥
—ऋ० ५ । ३ । २७ । २५

व्याख्यान—हे भगवन ! "तन्न इन्द्र सूर्य 'वरुण" चन्द्रमा, 'मित्र वायु अग्नि 'आप' जल 'ओषधी वृक्षादि वनस्थ सब पदार्थ आपकी आज्ञा से सुखरूप होकर हमारा सेवन करें । हे रक्षक ! 'मरुतामुपस्थे' प्राणादि पवनो के गोद मे बैठ हुए हम आपकी कृपा से 'शर्मन्त्स्याम' सुखयुक्त सदा रहें 'स्वस्तिभि' सब प्रकार के रक्षणो से 'यूय, पात" (आदरार्थे बहुवचनम्) आप हमारी रक्षा करो किसी प्रकार से हमारी हानि न हो ॥

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार १० जुलाई १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९ ०६७

शिक्षा आयोग

भारत सरकार ने शिक्षा आयोग नियुक्त कर भारत की शिक्षा व्यवस्था पर गम्भीर विचार का जो काम आरम्भ किया था ३० जून को शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन मिलने से उस काम को अब विशेष प्रगति मिलने की सम्भावना है ।

शिक्षा आयोग ने शिक्षा के स्तर माध्यम एव पद्धति आदि पर गम्भीर विचार किया है । शिक्षा के स्तर को उन्नत करने के लिए आयोग ने सस्तुति की है कि शिक्षा पर होने वाले वर्तमान बजट मे तुरन्त वृद्धि की जाय इस समय प्रति व्यक्ति १२) रु० वार्षिक के औसत व्यय को ४०) से ५०) रु० तक बढाया जाय शिक्षा की साधन सुविधाओं को बढाकर ही वातावरण मे परिवर्तन लाया जा सकता है । इसी प्रसग मे आयोग ने एक महत्वपूर्ण बात लिखी है कि सारे देश मे शिक्षकों की सभी स्तर की श्रेणियों का वेतनमान समान कर दिया जाय सरकारी और गैर सरकारी शिक्षकों के वेतनो में एकरूपता बरती जाय और न्यूनतम वेतन १५०) रु० रक्खा जाय (मैट्रिक ट्रण्ड) इससे कम वेतन स्तर देकर सरकार शिक्षकों को समाज में उचित स्थान कैसे दिला सकती है । माध्यमिक उच्चतर माध्यमिक विश्वविद्यालय स्तरों पर भी आयोग ने अच्छे वेतन क्रम सुझाये हैं । प्रसन्नता का विषय है कि शिक्षा मन्त्री इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि आयोग के वेतन स्तरों को शीघ्रातिशीघ्र मान्यता प्रदान की जाय ।

शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध में भी आयोग ने हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के महत्व पर बल दिया है। आयोग ने उतने साहस का परिचय जो नहीं दिया है जैसी उससे आशा थी अंग्रेजी का मोह छोडने में उसे काफी झिझक अनुभव होती रही है और इसी कारण अग्रजी को भी माध्यम रखने की सस्तुति की है । अग्रजी का प्रश्न आयोग के सम्मुख भी राजनैतिक पहेली बनकर खडा हो गया है उसने त्रिभाषा फार्मूले में अग्रजी की अनिवार्यता को ऐच्छिक में बदलने की सस्तुति कर साहस का परिचय दिया है । इससे कही अग्रजी को बढावा और हिंदी को हानि और कहीं हिंदी को बढावा और अग्रजी को हानि की सम्भावनायें बढ सकती हैं ।

आयोग ने शिक्षा में परीक्षा पद्धति पर भी विचार किया है और परीक्षा-प्रणाली के दोषो की चर्चा करते हुये उसमें कुछ परिवर्तनों का सकेत दिया है । परन्तु मूल पद्धति में आयोग कोई मौलिक परिवर्तन नहीं सुझा सका है । छात्र के वार्षिक कार्य विवरण को भी उत्तीर्णता मे सहायक मानने की सस्तुति उत्तम एव उचित प्रतीत होती है परन्तु इसका व्यावहारिक रूप अस्पष्ट है ।

इस प्रकार सक्षेप मे हम अनुभव करते हैं कि शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन गम्भीर है परन्तु धार्मिक नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध मे विचार न किया जाना आयोग की चूक है अथवा उसने इस प्रश्न पर जानबूझ कर चुप्पी साधी है । वास्तव मे शिक्षा की मूल समस्या तो अनैतिकता की वृद्धि ही है । आशा है सरकार नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में श्री प्रकाश समिति की सस्तुतियों को शिक्षा के लिये स्वीकार करेगी । शिक्षा आयोग के विस्तृत प्रतिवेदन का गम्भीरता के साथ पर्यालोचन होना चाहिये ।

ईसाइयत व बाइबिल खतरे में

विद्रोही मिजो लोगों ने भारतवर्ष की जनता और सरकार के विरुद्ध प्रचार करने के लिये अब ईसाइयत खतरे में का नारा लगाना आरम्भ कर दिया है । मिजो क्षेत्र में ईसाई मिशनरियो ने जो विष वृक्ष बोया था अब उसके काटे फैलने लगे हैं । विद्रोह की असफलता के बाद विद्रोही मिजो लोगों के पास साम्प्रदायिकता का ही हथियार रह गया है क्योंकि अधिकांश शिक्षित जनता ईसाई है ।

इस साम्प्रदायिक प्रचार का सामना आर्यसमाज जैसी सगठित एव तार्किक सस्थायें ही कर सकती हैं । सार्वदेशिक सभा को चाहिये कि मिजो क्षेत्र में आर्य समाज के विद्वानो उपदेशकों एव प्रचारकों को भेजकर वहां की भोली भाली जनता को गुमराह होने से बचावे । इस समस्या के हल में सरकार को आर्य समाज जैसी राष्ट्रीय एव बौद्धिक सस्था का सहयोग लेना चाहिये । आशा है सरकार और आर्यसमाज दोनों मिलकर मिजो विद्रोहियों के इस साम्प्रदायिकता एव राष्ट्र-द्रोहात्मक विष-वृक्ष को उखा-

आर्यसमाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

वेद-प्रचार-सप्ताह

(३० अगस्त से ८ सितम्बर तक)

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि वेद प्रचार सप्ताह दि० ३० अगस्त से ८ सितम्बर १९६६ श्रावणी से जन्माष्टमी तक प्रदेश में मनाया जायगा निश्चित हुआ है । प्रत्येक आर्यसमाज को चाहिये कि इस सप्ताह को धूम से मनाने के लिए रचनात्मक प्रोग्राम बनाने की योजना तैयार करें जिससे आर्य जनता में नव सचार उत्पन्न हो और समाज में जागृति आवे ।

सप्ताह का कार्यक्रम आगामी अक में प्रकाशित किया जायगा ।

—चन्द्रदत्त सभा मन्त्री

डने में सफल होंगे । सारे देश का सहयोग उन्हें प्राप्त है ।

●

सभा की सूचनायें

समाजों के अधिकारी एवं सदस्य ध्यान दें

सभा ने विगत वर्षों मे ऐसा निश्चय किया था कि वेद प्रचार सप्ताह पर समाज का प्रत्येक सदस्य १–१ रुपया वेद प्रचारार्थ दिया करें, इसका पालन कुछ वर्षों तक तो होता रहा, परन्तु इधर कुछ वर्षों से बन्द कर दिया गया। हम चाहते है कि प्रत्येक आ० स० का प्रत्येक सदस्य १) आगामी वेद प्रचार सप्ताह पर एकत्रित कर सभा को भेजें जो कि अपने वेद प्रचार निधि को मज-बूत बनाने मे सहायक हो।

यदि प्रतिवर्ष प्रान्त की सभी समाजें ऐसा करने का प्रयत्न करें तो यह अस-म्भव नही है कि वेद प्रचार स्थिर निधि न बन सके। और ऐसा करने पर हम उन स्थानोंपर अपने उपदेशकों प्रचारकों को भेजने मे समर्थ हो सकेंगे कि जिन स्थानों पर हमारी समाजें मृतावस्था मे पड़ी हुई हैं, तथा वर्षो से जिनके उत्सव नही हो रहे हैं।

हम आशा और विश्वास करते है कि इस प्रकार से सहयोग प्रदान कर हमे कार्य करने को अग्रसर करगे।

समाजों का दशांश

प्रान्त म पन्द्रह सौ से अधिक आय समाज हैं परन्तु हम देखते हैं कि प्रति वष सभा के वृहदधिवेशन पर कठिनता से ३०० समाजें ऐसी हैं जिनका दशाश आदि प्राप्त होता है। शेष १२०० ऐसी समाज रह जाती हैं जिनम से कुछ का तो उपदेशको प्रचारको द्वारा आ जाता है और कुछ का प्रतिवष बढता चला जाता है। सभा कार्यालय से जो प्राप्तव्य धन की सूचियाँ बनाकर भजी जाती हैं, हम देखते हैं कि बहुत से वर्षों का दशाश प्रतिवष उन सूचियो में उतारना पडता है।

सभा के उपदेशकों प्रचारका की रसीदों को देखने से ज्ञान हुआ कि बहुत सी समाज ऐसो भो ह जिनका दशाश १०) से २००) के बीच म होता है, और जब वह अपना उत्सव अथवा सप्ताहो पर प्रचारको को बुलाती हैं तो वेद प्रचार मे धन न देकर वही दशाश की राशि देती है।

दशाश और वेद प्रचार दो अलग-अलग मद्दे हैं फिर पता नही हमारी समाजो के मत्री एव अन्य अधिकारी महोदय ऐसा क्यो करते हैं। ऐसा करने से निष्कर्ष यह निकलता है कि जो धन सीधा सभा को प्राप्त होना चाहिये वह नही हो पाता और सभा को आर्थिक स्थिति का सामना करना पडता है।

आइये! इस वष हम सब प्रतिज्ञा करें कि भविष्य मे चालू वष का दशाश सीधा सभा कार्यालय मे ही भेजा करगे।

वेद प्रचार सप्ताह

गत वर्षों की भाति इस वष भी वेद प्रचार सप्ताह ३० अगस्त से ८ सितम्बर १९६६ तक मनाया जा रहा है। गत वर्षो मे ऐसा देखा गया है कि प्रत्येक आ० स० निश्चित तिथियो में ही उपदशक प्रचारक बुलाती है और इस प्रकार सभी समाजो की माग की व्यव स्था पूण रूप स नही हो पाती। इसलिए इस वष समाजो स सानुरोध निवेदन है कि वह पूरे सावन मास म कथाओ का आयोजन कर ताकि आगे पीछे सभी समाजो म उपदशको प्रचारको के भेजने की समुचित व्यवस्था की जा सके।

हम आशा करते हैं कि इस दशा में भी समाज हम सहयोग दगी।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
सभा उपमत्री

श्री प्रधानजी की कार्यकारिणी के सदस्यो का निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के ८० वें वृहदधिवेशन दि० १२।६।६६ के निश्चयानुसार ३ सदस्य एव अन्तरग सभा द्वारा दि० १२।६।६६ को २सदस्यो का श्री प्रधान जी की कार्यकारिणी समति के लिए निम्न प्रकार निर्वाचन हुआ।

१–श्री शिवदयालु जी मेरठ
२–श्री यशपालजी शास्त्री, गभीरी
३ श्री उमेशचन्द्रजी स्नातक हल्द्वानी
४–श्री ईश्वरदयालु जी बिजनौर
५–श्री फूलनसिह जी शिकोहाबाद

निरीक्षक (आडीटर)

आर्य प्रतिनिधि सत्तरप्रदेश के ८० वें वृहदधिवेशन दि० १२।६।६६ के निश्चयानुसार आय व्यय लेखा निरीक्षक (आडीटर) के पद पर श्री विश्वेश्वर नाथ जी वर्मा बी०ए० पानदरीबा लख-नऊ निवासी निर्वाचित हुए हैं।

स्थानिक आय-व्यय लेखा निरीक्षक

अन्तरग सभा दि० १२ ६-६६ के निश्चयानुसार निम्नलिखित विभाग के लिय निम्न सज्जन स्थानिक आय-व्यय लेखा निरीक्षक पद पर नियुक्त किये गये हैं—

नाम विभाग तथा निरीक्षक
म०दी० आर्यभास्कर प्रस व आर्यमित्र
श्री शिवप्रसाद जी नरही
श्री अर्जुनदेव जी शृङ्गारनगर
गुरुकुल वृन्दावन
श्री गोपालसहाय जी मथुरा
उपदेश विभाग
श्री शिवप्रसाद जी नरही लखनऊ
सभा कार्यालय
श्री शिवप्रसाद जी लखनऊ

—चन्द्रदत्त सभा मन्त्री

उत्सवों एवं विवाह संस्कारों एवं कथाओं के निमित्त आमन्त्रित कीजिए—

प्रकाण्ड विद्वान्, सुमधुर गायक, सुयोग्य सन्यासी एवं वैदिक कीर्तनकार द्वारा प्रचार करने वाले योग्य प्रचारक।

महोपदेशक

आचार्य विश्वबन्धुजी शास्त्री महोपदेशक
श्री अभयवीर जी शास्त्री ,,
श्री पं० श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री पं० विश्ववर्धन जी वेदालंकार
श्री पं०केशवदेव जी शास्त्री उपदेशक
श्री पं० रामनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर भजनोपदेशक
श्री बलरामसिंह जी—प्रचारक
श्री धर्मदेव जी आनन्द ,,
श्री धर्मपालसिंह जी— ,,
श्री हेमचन्द्र जी ([illegible])
श्री वेदपालसिंह जी— प्रचारक
श्री प्रकाशवीर जी वर्मा ,,
श्री जयपालसिंह जी यादव ,,
श्री ओमप्रकाश जी सिंह ,,
श्री विवेकचन्द्र जी ,,
श्री [illegible]पालसिंह जी ,,
श्री रघुवरदत्त जी ,,
श्री रामकृष्ण वर्मा-वैदिक कीर्तनकार

डा० दुखनराम अभिनन्दन ग्रन्थ

एशिया के श्रेष्ठ नेत्र-चिकित्सकों में अन्यतम, समाजसेवी एव प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री पद्मभूषण डा० दुखन राम (भूत-पूर्व उपकुलपति, बिहार विश्वविद्यालय) की अडसठवी वर्षगाठ पर एक अभिनदन ग्रन्थ समर्पित किया जायगा। इस ग्रन्थ मे डा० राम के जीवन चरित्र और व्यक्तित्व से सम्बन्धित लेख एव सस्मरणो के अलावा चिकित्सा शास्त्र सम्बन्धी महत्वपूर्ण निबन्ध, आर्यसमाज द्वारा प्रव-र्तित समाज सुधार और वैदिक धर्म की प्रवृत्तियों का सर्वेक्षण तथा आधुनिक भारतीय जीवन की प्रबुद्ध प्रवृत्तियों का सिंहावलोकन भी किया जायगा।

हम आर्यमित्र के पाठको से आग्रह करेंगे कि वे इस ग्रन्थ के अनुरूप अपनी रचना भेजें। डा० राम के जीवन चरित्र और व्यक्तित्व से सम्बन्धित लेख और सस्मरणो का भी स्वागत किया जायगा।

—प्रधान मन्त्री
डा०दुखन राम अभिनन्दन ग्रन्थ समिति,
श्री शकरजी मिल्स
मछुआ टोली कुआ रोड, पटना–४

जिला उपप्रतिनिधि सभा अलीगढ़

जिला अलीगढ की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा अलीगढ का वार्षिक निर्वाचन १० ७ ६६ रविवार को १२॥ बजे से आर्यसमाज अलीगढ़ में होगा। प्रतिनिधि गण सम्मिलित होकर कार्यक्रम में सहयोग दें।

—महेशचन्द्र मन्त्री

१०० ईसाई हिन्दू बने

आर्यसमाज गुन्नौर ने अपने वार्षिक उत्सव के अवसर पर जो २, ३ जुलाई को मनाया गया। १०० ईसाई भाइयों की शुद्धि की। इस अवसर पर जनता की अपार भीड थी, जिसने अपने नवीन आर्य भाइयो के हाथ का मिष्ठान्न लिया और उनका उत्साह बढाया।

आर्यसमाज ने अब तक १० वर्ष की अवधि में कई बार शुद्धि का आयोजन कर चुकी है जिसमें अनेको यवनों को शुद्ध किया जा चुका है।

—नरेन्द्रप्रकाश आर्य प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज और हिंदी

[ले०—श्री सत्यपाल शर्मा एम०ए० वेद शिरोमणि, डी० १८ न्यू दिल्ली साउथ एक्सटेंशन–१, नई दिल्ली–१]

आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी सस्था है। इसके सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वय एक साहसी क्रान्तिकारी थे, और उन्होंने महाभारत काल से उत्तरोत्तर पतनोन्मुख चलती हुई संस्कृति की धारा को बदलने के लिए क्या धार्मिक, आध्यात्मिक और सास्कृतिक क्षेत्र में अपितु शिक्षा और समाज-व्यवस्था के क्षेत्र मे भी एक महान् क्रान्ति को क्रियारूप दिया। आज उसी महान् आत्मा की महान् शक्ति का ही परिणाम है कि भारत में समाज अपनी परम्परा की दिशा मे एक दम लपट कर एक नई दिशा की ओर चल पडा। यह बात अवश्य है कि जिस तेजी से वह चल नहीं पाया और यद्यपि उसकी क्रान्ति के परिणाम उसके चारो ओर के वातावरण मे स्पष्ट तथा लक्षित हो रहे हैं परन्तु वह स्वय थका-थका सा मन्द-मन्द घिसट रहा है और इसका परिणाम क्या हो सकता है, यह बताने की आवश्यकता नही है।

आज स्थान-स्थान पर सनातन धर्म समाजो की ओर से 'पुत्री पाठशालाए जो खुली हुई हैं, यह इसी क्रान्ति का ही तो परिणाम है। आज पौराणिक पडितो के मुख से आर्यसमाज के प्रति वह अपशब्द नहीं सुनने को मिलते। इतना ही नही बहुत से पौराणिक पडित अपनी बगल में सस्कार-विधि भी लेकर चलते हैं। आप कह सकते हैं कि उसे तो धन प्राप्ति की लालसा है, इसलिए किसी भी विधि से सस्कार कराने मे सकोच नही करता। यही बताना है कि अब पौराणिक पडित भी अपनी कट्टरवादिता से अलग हो चुके हैं। यही नही, अब तो बहुत से सनातन धर्मी नेताओ ने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दिये गए "यथेमां वाच कल्याणीम्" के अर्थ को स्वीकार कर लिया है, और वे भी शूद्रों तक को वेद पढाने के विधान का वेद मे होना स्वीकार करते है। इसी तरह से शुद्धि का क्षेत्र भी। अब शायद ही कोई ऐसा होगा जो आर्यसमाज के इस क्षेत्र में किए गए कार्यों की सराहना न करता हो या उसके मार्ग में बाधक बनना चाहता हो। माइकेलस्काट जैसे ईसाई मिशनरियो की काली करतूतो ने अब और भी आंखें खोल दी हैं।

पर आजकल का आर्यसमाज अपने पूर्वजो के बलिदानों के फलोपभोग मे ही आनन्द से तल्लीन है। उसके क्रान्ति के ये कदम रुक तो गए ही हैं, जिस प्रकार बहता पानी कही इकट्ठा हो जाता है, तो उसमें बहुत से बाह्य तत्व मिलने लगते हैं इसी प्रकार इस आर्यसमाज की धारा में भी जो अब था तो बहे ही नहीं रहो या अगर बह भी रही हैं, इतने धीरे कि प्रवाह लक्षित ही नही होता, बहुत से कलुषित बाह्य तत्व मिलने शुरू हो गये है। राजनैतिक अखाडो की कूटनीतिया पारस्परिक विद्वेष, आदि स्वतन्त्र भारत की राजनीति के कलुषित तत्व तो इसमे घुस ही गए हैं। तेजी से बदलती हुई सस्कृति और सभ्यता के भौतिकवादी तत्व भी जो वस्तुत: अस्थिर हैं, और जो आर्यसमाज की लक्ष्य प्राप्ति में बहुत बडे बाधक हैं, इसमे घुसते चले आ रहे हैं। अब आर्यसमाज के सभी नताओ और इस क्रान्तिकारिणी सस्था के क्रान्ति-स्वरूप को जो जीवित और जागृत रखना चाहते हैं उनके समाज मे एक क्षेत्र ऐसा रखना चाहता हू जिसमे आर्य समाज एक बहुत बडी क्रान्ति ला सकता है। वह है हिन्दी का क्षेत्र। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वय हिन्दी मे सत्यार्थ प्रकाश लिखकर इस क्रान्ति का प्रारम्भ किया, परन्तु जिस दूरदर्शी महर्षि ने आर्यसमाज को यह एकता का सूत्र दिया उसने इसे आगे बढाया नही। यह निश्चित है कि यदि बहुत से अन्य आन्दोलनो के साथ हिन्दी-आन्दोलन शुरु मे ही आर्यसमाज अपनाता तो सारे दक्षिण भारत मे आज हर क्षेत्र मे आर्यसमाज ही आर्यसमाज होती। यह सोचने की बात है कि कोई भी धार्मिक आन्दोलन शुद्ध धार्मिक आधार पर कभी भी तेजी से बढ नही सकता। उसको बढने के लिए कुछ और भी सहारा चाहिए। उत्तर भारत मे इसके इतने प्रचार का कारण है शुद्धि आन्दोलन और शिक्षा-आन्दोलनो दक्षिण भारत मे उस समय यदि हिन्दी-आन्दोलन को अपना लिया जाता तो आज दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की जो स्थिति है, इससे बढिया स्थिति आर्यसमाज की होती और हिन्दी आन्दोलन का रूप भी ऐसा क्रान्तिकारी होता कि दक्षिण भारत में कोई भी हिन्दी विरोधी द्रविड मुन्नेत्र कषगम पैदा न होता। जिस प्रकार आर्यसमाज ने सस्कृत का क्षेत्र बिल्कुल अछूता छोड दिया है, और उसमे पुरातनपन्थी पडितो को काम करने के लिए "सस्कृत विश्व परिषद्" आदि के रूप में अनेको सस्थाए मिल गई हैं—और इससे निश्चित रूप मे सस्कृत के क्षेत्र में अज्ञान का ऐसा सुदृढ किला तैयार हो रहा है कि फिर उसे भेदने के लिए किसी महान् आचार्य की आवश्यकता पडेगी—इसी प्रकार हिन्दी शिक्षा का क्षेत्र भी आर्यसमाज ने अछूता ही छोड रखा है।

अब भी समय है कि वह इस क्षेत्र मे कुछ रचनात्मक कार्य करे। पजाब के विभाजन से यह अब पूर्णत निश्चित हो गया है कि राष्ट्रभाषा की समस्या का समाधान कभी भी राजनैतिक आन्दोलनो की सहायता से नहीं किया जा सकता इसके लिये जन-जन के मानस मे बैठना पडेगा। जन-जन तक पहुचना होगा। अब हमको यह जान लेना चाहिए कि ८-१० दिना का सत्याग्रह भूख हडताल या अन्य कोई आन्दोलन करके हम भाषा को जन-सामान्य के गले नही उतार सकने उसके लिए वर्षों की तपस्या करनी पडेगी। इसमे १० वर्ष भी लग सकते हैं २० और तीस भी। परन्तु "दीर्घकाल नैरन्तर्य सत्कारासेवितो दृढभूमि" योग दर्शन के इस सूत्र के अनुसार हम लोग दीर्घकाल तक निरन्तर तथा श्रद्धा एव तत्परता से यह काम करेंगे तो भारत में भाषायी एकता लाने का सेहरा आर्यसमाज के सिर बधेगा। यह काम आर्यसमाज ही कर सकता है। इसके लिए हमें अभी से काम करना पडेगा। कुछ सुझाव ये हैं—

१—आर्यसमाज की अन्तरग सभा मे एक सदस्य इसी के लिए नियुक्त हो कि वह हिन्दी-विकास तथा उसमे आर्य समाज के प्रयत्नो की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर लें।

२—आर्यसमाजों के सभी अधिवेशन आदि हिन्दी में ही रखे जायें।

३—जिस-जिस ग्राम या शहर में आर्यसमाजे हैं, वहां-वहां के व्यापारी तथा कम्पनियो या फर्मों से मिलकर उन्हे हिन्दी में कागज पत्र रखने के लिए प्रेरित करें।

४—जो व्यापारी वर्ग के व्यक्ति आर्य समाज के सदस्य हो वे इस बात का दृढ सकल्प करें कि देश हित के लिए वे सारा काम हिन्दी में ही करेंगे।

५—जो आर्यसमाज के सदस्य सरकारी कर्मचारी हैं वे स्वय इसका पूर्ण व्रत लें तथा अपने साथियो को भी प्रोत्साहित करें।

६—हिन्दी विकास को ही ले करके आर्यसमाजे अपने मन्दिरो मे साप्ताहिक या मासिक कार्यक्रम रखें।

७—उत्सवो मे एक हिन्दी सम्मेलन अवश्य करें और इसमे केवल कविताओं आदि तक सीमित न रहकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप जनता मे प्रतिष्ठित करने के लिए क्रियात्मक उपाय ढूंढे जायें।

अपने-अपने शहर और ग्राम मे हिंदी का अधिक से अधिक विकास करने की पूरी जिम्मेदारी वहां का आर्यसमाज अपने ऊपर ले।

अन्त मे मैं एक बात और कहना चाहता हू। दिल्ली में हिन्दी का आन्दोलन जनता और सरकारी कर्मचारियों में चुपके-चुपके करने वाली एक सस्था है केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद"। इसके कार्यकर्ताओ मे भी वही भाव है जो आर्यसमाज के आन्दोलन के नेताओं में थी। इस परिषद् ने सरकारी कर्मचारियो की सहायता के लिए बहुत सी उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित की हुई हैं। उदाहरणार्थ—जनता अंग्रेजी में तार देने की प्रवृत्ति को बदलकर हिन्दी मे ही तार दिया करे इस आन्दोलन को चलाने के लिए उसकी ओर से एक पुस्तक प्रकाशित की गई है "हिन्दी मे तार"। अब भारत मे २६०० ऐसे केन्द्र हैं जहां हिन्दी में ही तार लिए दिये जाते हैं। इसका सदुपयोग हम क्यो नहीं कर सकते? आर्यसमाज इसके लिए क्या नहीं कर सकता? हिन्दी परिषद के कार्यकर्त्ता आर्यसमाज के किसी भी रचनात्मक आन्दोलन में उसका हाथ बढाने के लिए तैयार हैं। अब यदि प्रत्येक आर्यसमाज मे परिषद की ये पुस्तकें हो और इनसे जनता तक पहुचाया जाय। तो कितनी तेजी से यह आन्दोलन फैल सकता है। यही नहीं यदि किसी शहर या ग्राम मे कोई कपनी या फर्म और कोई सस्था अपना अपनी साहित्य हिन्दी मे करवाना चाहे तो उसके लिए भी पूरी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसा साहित्य आर्यसमाजें मेरे पते पर भिजवायें, इस साहित्य क

हिन्दी में तैयार करके भेज दिया जायगा प्रत्येक बड़ी-बड़ी आर्यसमाजें स्वयं अपना हिन्दी विभाग इन कामों के लिए खोल सकती हैं। केवल संकेत रूप में मैं यह सब बातें लिख रहा हूं। यदि आर्यसमाजें इस ओर प्रवृत्त हुए और उनकी इस ओर कुछ प्रगति देखी गई तो दिल्ली में एक सामाजिक हिन्दी विभाग खोला जा सकता है जिसमें इस प्रकार का अधिक से अधिक हिन्दी साहित्य तैयार हो। तथा यह सब काम बिना कोई शुल्क लिए ही किया जा सकेगा।

मुझे आशा है कि आर्यसमाज के प्रेमी इन मेरे विचारों तथा सुझावों की ओर ध्यान देंगे तथा इस दिशा में कुछ ठोस कदम अभी से उठायेंगे ताकि आर्य समाज हिन्दी आन्दोलन में भी अग्रणी बनकर चल सके।

★

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा ककुहाल की पुण्यस्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन-राशि सभा को समर्पण कर श्री० भी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद सं० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब; असहाय किन्तु होनहार बालक-बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेज कर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु, मय, त्वष्टादि गरीब पं० ब्रा० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ अविरत प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्र के प्रत्येक अङ्क निःशुल्क मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

सुझाव और सम्मतियाँ

मुसलमानों की बदली हुई नीति

मुसलमानों के विरुद्ध अब तक यह शिकायत थी कि वे हिन्दी से कोई सम्बन्ध नहीं रखते परन्तु अब परिस्थिति बदल गई है। हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा है और यद्यपि मुसलमानों का एक भाग उर्दू को हिन्दी के मुकाबले में खड़ा करने की कोशिश करता रहता है तथापि मुसलमानों की प्रवृत्ति हिन्दी की ओर बढ़ रही है कुछ लोग तो विवश होकर हिन्दी सीखते हैं क्योंकि सरकारी कर्मचारियों को बिना हिन्दी ... नाई होती है। ... धार्मिक ... भी मुसलमानों की प्रवृत्ति हिन्दी की ओर बढ़ रही है। रामपुर से एक हिन्दी मासिक पत्रिका निकलती है जिसका नाम है कान्ति। यह कान्ति इस्लाम धर्म का बड़ा सुन्दर रूप से प्रचार करती है। कुरान की व्याख्या, हदीसों की आलोचना इस्लामी श्रेष्ठ पूर्वजों की कथायें आधुनिक युग में ... धर्म का स्थान और इस्लाम की जरूरत आदि इन विषयों पर सुन्दर लेख इसमें पढ़ने को मिलते हैं हिन्दी विशद और रोचक होती है इसके सम्पादक हैं ... यजदानी जो हिन्दी के ... लेखक हैं। अन्य कई हिन्दी सुविज्ञ मुसलमानों के लेख भी होते हैं। जहां से कान्ति पत्रिका निकलती है वहाँ से इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों पर छोटी २ सरल पुस्तिकाये भी निकलती हैं। अभी हमारे पास हिन्दी कुरान आया है यह कुरान का बहुत अच्छा अनुवाद है। पुस्तक की आकृति और भाषा रोचक है इसके लिखनेवाले हैं श्री मुहम्मद फारूक खाँ। और इसके प्रारम्भ में एक सुन्दर प्राक्कथन श्री अबुल आला मौदूदी का है। इन सबका उद्देश्य यह है कि हिन्दी जानने वाले लोगों में इस्लाम का प्रचार हो। इसका परिणाम तो यही होगा कि इस्लाम के विरुद्ध हिन्दुओं में अब तक जो धारणायें बनी हुई हैं उनमें परिवर्तन होगा लोग इस्लाम की ओर खिंचेंगे यों तो बीसियों ऐसे कारण हैं जिनसे विरोध होते हुए भी कुछ न कुछ हिन्दू मुसलमान बनते ही रहते हैं कभी कोई हिन्दू विधवा विचलित हो जाती है कभी कोई हिन्दू युवक किसी जाल में फंस जाता है परन्तु यदि इस प्रचार के द्वारा हिन्दुओं की आन्तरिक भावनायें भी विकृत हो गईं तो इस्लामी प्रचार में कुछ न कुछ ... होगी ... आर्यसमाज की ओर से ... एक ... उठाया गया कि हम सब साधारण मुसलमानों तक अपने विचार ... इस्लाम के ... न तक नमस्कार भी उठनी ही ... स्वभाविक बात है। पर यदि ऐसा हुआ तो उस समय ... मुसलमान लोग हिन्दू जनता तक आने का यत्न कर रहे हैं वहां हम भी मुसलमानों तक पहुंचने का यत्न करें। हमारी ओर से छोटी छोटी सरल पुस्तिकाएं उर्दू और हिन्दी में बांटी जानी चाहिए। इसका एक ऐसा सुसंगठित प्रयत्न हो कि कार्य सुगमता से चल सके। क्या कोई महानुभाव इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम०ए०
प्रयाग

श्री गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय

हम क्या करें ?

श्रावण मास पड़ते ही वैदिक सप्ताह फिर आ रहा है हर्ष की बात है कि वैदिक ... आर्यसमाज मनाते हैं कि ... सख्या में नहीं मिलते। यह वेद सप्ताह के प्रचार की सफलता का शुभ चिह्न है। परन्तु वर्षा ऋतु आने के कारण उपदेशों का लाभ अधिकतर वही लोग उठाते हैं जो आर्य समाज के सदस्य हैं या उनसे हित रखते हैं मैं चाहता हूं कि इससे कुछ अधिक किया जाय। संक्षेप से मेरे सुझाव ये हैं—

१—वैदिक सप्ताह आने से पूर्व हर एक आर्य को कम से कम १० मन्त्र याद कर लेने चाहिए ऋग्वेद का पहिला सूक्त या सामवेद का पहला सूक्त। इस प्रकार हम में वेदों के लिए रुचि उत्पन्न होगी।

२—वैदिक सप्ताह आने के पूर्व हमको अपने इष्ट मित्रों में आने वाले उपदेशकों के लिए रुचि बढ़ानी चाहिए लोगों को कहते रहना चाहिए कि वैदिक सप्ताह आने वाला है अच्छे उपदेश होंगे आपको चलना है।

३—जो लोग आर्यसमाज को नहीं जानते या कम जानते हैं उनमें ट्रैक्ट आदि के द्वारा प्रचार करना चाहिए।

(३) नगर के विशेष उच्च श्रेणी के विद्वानों तक उनकी योग्यता के अनुरूप कोई न कोई अच्छी पुस्तक पहुंचाने का यत्न करना चाहिए। ★

उ.प्र आर्यवीर दल के समस्त अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की सेवा में

बन्धुओ! आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वार्षिक अधिवेशन के शुभ अवसर पर देहरादून में आर्यवीर दल के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक हुई जिसमें आर्यवीर दल की वर्तमान स्थिति पर विचार किया गया और भविष्य में दल को सुदृढ़ एवं गतिशील बनाने के लिए अनेक कार्यक्रम स्वीकृत किये गये। बैठक का सबसे महत्वपूर्ण निश्चय यह था कि आगामी विजयादशमी के अवसर पर गंज आर्यसमाज मुरादाबाद में एक कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन किया जावे। एतदर्थ एक समिति का गठन भी किया गया जिसके सदस्य निम्नलिखित महानुभाव मनोनीत किये गये।

१—श्री डा० सुरेशचन्द्रजी शास्त्री झांसी
२— रामनारायण जी शास्त्री आगरा
३— वेदप्रकाश जी आजमगढ़
४— शन्नोलाल जी मुरादाबाद
५— यशपाल जी शास्त्री अलीगढ़
६— विजयकृष्ण जी देहरादून
७— जगन्नाथप्रसाद जी मुरादाबाद
८— गोविन्दराम जी बहराइच
९— आनन्दप्रकाश जी वाराणसी

समिति के समस्त सदस्यों से मेरा साग्रह अनुरोध है कि वे अपने अपने क्षेत्र में कार्यकर्त्ता सम्मेलन को सफल बनाने हेतु प्रयास आरम्भ कर देवें। प्रान्त के आर्यवीर दल के समस्त अधिकारियों से मेरा नम्र निवेदन है कि कार्यकर्त्ता सम्मेलन के आयोजन को अपना सामूहिक उत्तरदायित्व मानते हुए इस आयोजन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें। हम सबको मिल जुलकर एक क्रान्तिकारी कदम उठाना है जिससे कि देहरादून की बैठक में किया गया निर्णय एक ऐतिहासिक निश्चय बन जावे और हमारे सम्मिलित प्रयास द्वारा आर्यवीर दल को वह गौरवपूर्ण पद प्राप्त हो जावे जो कि उसे कुछ वर्ष पूर्व प्राप्त था।

इस सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते पर करें।

—आनन्दप्रकाश अधिष्ठाता
प्रान्तीय आर्यवीर दल उत्तरप्रदेश
आ०स० लल्लापुरा, वाराणसी

राजनीति को ऋषियों की देन

[ले०—ओम्प्रकाश आर्य, टी० ५,-डी० रेल कालोनी, कुन्दरकी, मुरादाबाद]

सुनते हैं देवासुर संग्राम में जब असुरो द्वारा प्रयुक्त अस्त्र शस्त्रो के सम्मुख देवताओं के अस्त्र-शस्त्र न ठहर सके और देवो की हार होने लगी तब उन्हे ऐसा कठोरतम शस्त्र बनाने की आवश्यकता हुई जो बज्र से भी कठोर हो और बज्र के सम्मुख ठहर सके। अथक प्रयास के पश्चात् भी जब ऐसी कठोरतम वस्तु उपलब्ध न हो सकी तो महर्षि दधीचि सामने आये। उन्होने देवो से कहा—आदित्य ब्रह्मचर्य के कारण मेरे शरीर की अस्थियां अत्यन्त कठोर हो गई हैं बज्र के आघात का भी इन पर कोई प्रभाव नही पडेगा और इनसे निर्मित शस्त्र के सम्मुख बज्र भी न ठहर सकेगा। अत देवगणो! 'मैं राष्ट्र रक्षा और आपकी विजय के निमित्त अपनी देह त्यागता हू। आप लोग मेरे शरीर से मास पृथक् करवा कर अस्थियो से आवश्यकतानुसार अस्त्र-शस्त्रो का निर्माण करवा लें।' ऐसा कहकर महर्षि दधीचि ने प्राणायाम द्वारा अपने प्राणो को शरीर से पृथक् कर दिया। देवों ने उनकी अस्थियों से भयकर अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण करवाकर असुरो को युद्ध में पराजित कर दिया। दधीचि के त्याग से देवताओ की विजय होकर युद्ध समाप्त हुआ और विश्व में शान्ति स्थापित हुई।

सुनते हैं अयोध्या नरेश दशरथ की वृद्धावस्थाजन्य शिथिलता के कारण उनका प्रशासन शिथिल था और उनका राज्य केवल उत्तर कौशल तक ही सीमित था। वे युद्ध में राक्षसराज रावण का सामना करने मे भी असमर्थ थे और रावणीय साम्राज्य लका से बढते-बढते भारत तक आ गया था तथा समस्त दक्षिण भारत पर रावण के अनुचरो ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। तब रावणीय साम्राज्यवाद से विश्व को बचाने की कामना से ऋषि विश्वामित्र दशरथ के पुत्रो राम और लक्ष्मण को अयोध्या से अपने गाजीपुर स्थित आश्रम पर ले गये। उन्हे युद्ध विद्या और शस्त्रास्त्र का स्नातककोत्तर प्रशिक्षण देकर अनेक दिव्य अस्त्रो का प्रयोग और रहस्य बताया। फिर माता-पिता के आदेश पर जब राम बन मे गये तो तो वहाँ अगस्त्य ऋषि ने उनको शस्त्रास्त्र का विशेष ज्ञान प्रदान करके शत्रु सहार और रावणीय साम्राज्य विनाश की विस्तृत योजना को कार्यान्वित करवाया। विश्वामित्र, अगस्त्य, अत्रि, शरभग, सुतीक्ष्ण आदि अनेकानेक ऋषियों के कही प्रत्यक्ष और कहीं अप्रत्यक्ष सहयोग से ही राम रावणीय सत्ता को समाप्त कर सम्पूण विश्व मे शान्ति स्थापित कर सके।

सुनते हैं ऋषि वेदव्यास ने महाभारत युद्ध से पूर्व वन में जाकर वनवासी पाण्डवो को अनेकबार शस्त्रास्त्रो की विशेष शिक्षा और आयुध सग्रह का आदेश दिया। यद्यपि सम्बन्ध की दृष्टि से कौरव और पाण्डव उनके लिये एक समान ही थे, फिर भी दुर्योधनादि कौरवो की राज्यलिप्सा उनसे छिपी नही थी। उन्होने सोचा—जो कौरव राज्य प्राप्ति के लिये अपने भाई पाण्डवो से छल-कपट कर सकते है वे सम्पूर्ण विश्व पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिये क्या नहीं कर सकते? इस प्रश्न के समाधान के लिये ही उन्होने अपना कर्तव्य निश्चित किया। वेद व्यास के सत्परामर्श और कृष्ण के पूर्ण सहयोग से महाभारत युद्ध में पाण्डवो की विजय और कौरवो की पराजय होकर सम्पूर्ण विश्व मे शान्ति स्थापित हुई।

ऋषियो की इस पावन परम्परा को पीछे के साधु सन्यासियों ने अक्षुण्ण बनाये रखा।

बौद्ध काल में एक ओर वाममार्गी और कापालिक लोग धर्म का विरोध कर समाज मे वाममार्ग और व्यभिचार का प्रसार कर रहे थे, दूसरी ओर बौद्ध लोग बौद्ध मत प्रचार के नाम पर वैदिक धर्म, सस्कृति, सभ्यता और साहित्य का जड मूल से उन्मूलन कर रहे थे। ऐसे समय मे भारत मे आचार्य शकर का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने सुधन्वा राजा को एक ओर तो कापालिको और वाममार्गियों के विरुद्ध उत्तेजित कर उसे उसके कर्तव्य का बोध कराया, जिससे समाज मे कुछ शान्ति हुई, दूसरी ओर जैनियो और बौद्धों से शास्त्रार्थ कराने की व्यवस्था करने को कहा और स्वय वैदिक धर्म का पक्ष लेकर शास्त्रार्थ करके बौद्धो को पराजित कर भारत से निकाल बाहर किया जिससे समाज की विध्वसक स्थिति और अराजकता समाप्त होकर सुख और शान्ति की लहर आई।

मुस्लिम काल में दक्षिण भारत के विजय नगर राज्य को विध्वस करने के लिये बीजापुर, गोलकुण्डा और हैदराबाद आदि पाच मुस्लिम राज्यो ने सम्मिलित उद्योग किया और निरन्तर युद्ध करते-करते जब विजय नगर का राजकोष रिक्त हो गया तो शृङ्गेरी मठ के तत्कालीन अधीश्वर शकराचार्य (भूतपूर्व सायणाचार्य) ने मठ का सम्पूर्ण कोष विजय नगर राज्य की रक्षा के निमित्त देकर सराहनीय कार्य करके विजयनगर राज्य को बचा लिया।

मुगलकाल मे जब हिन्दुओ पर अत्यधिक अत्याचार हुए और धार्मिक नियम पालन पर प्रतिबन्ध लगाये गये तो समर्थ गुरु रामदास ने वीर शिवाजी की पीठ पर हाथ रखकर महाराष्ट्र राज्य की स्थापना करवाई। इसी प्रकार गुरु गोविन्द सिंह ने भी एक महान् आन्दोलन चलाया। उनके द्वारा सचालित आन्दोलन मे जब क्षीणता के लक्षण उपस्थित हुए तो वीर बन्दा बैरागी ने उसे पुनर्जीवन देकर आततायियो का कोपभाजन बनना स्वीकार किया।

फर्रुखसियर ने अंग्रेजो को बगाल की दीवानी का पट्टा देकर राजनैतिक मूर्खता की पराकाष्ठा कर दी। १७६९-७० ई मे बगाल मे भयकर अकाल पडा। उस समय शासन सूत्र व्यवाहारिक रूप से अग्रेजो के हाथ मे था लेकिन उन्हे जनता से कोई सहानुभूति न थी अत बगाली दाने दाने को तरसते हुए बेमौत मरे। फिर अग्रेजो ने छल-छद्म करके सिराजुद्दौला और मीरजाफर आदि से झगडा करके उन्हे अपने मार्ग से हटाया और १७७२ ई० में वारेन हेस्टिंग को बगाल का गवर्नर नियत कर दिया। बगाल के सन्यासियो से अग्रेजो के ये सब अत्याचार सहन न हो सके और उन्होने १७७३ ई० में नवोदित अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भयकर आन्दोलन और उसका विरोध किया।

ऋषि दयानन्द जब १८५५ ई० मे जिज्ञासु के रूप में कनखल में अपने (होने वाले) विद्यागुरु विरजानन्द के गुरुदेव स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की सेवा में विद्या प्राप्ति के निमित्त पहुचे तो स्वामी पूर्णानन्द ने उनसे कहा—'वृद्धावस्था के कारण हम आपका मनोरथ पूर्ण करने मे असमर्थ हैं। आप मथुरा जाइये, वहा हमारे योग्य शिष्य विरजानन्द सरस्वती रहते हैं वे आपकी मनोकामना पूर्ण करने मे समर्थ हैं'—ऐसा स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्रों मे लिखा है, लेकिन स्वामी दयानन्द कनखल से सीधे मथुरा न जाकर उत्तराखण्ड, कानपुर और नर्बदा तक होते हुए कई वर्ष बाद मथुरा पहुचे हैं। यह वह क्षेत्र था जहा स्वतन्त्रता सग्राम का आयोजन किया जा रहा था। इससे विदित होता है कि वृद्ध पूर्णानन्द ने युवा दयानन्द को स्वतन्त्रता सग्राम की ओर प्रेरा।

१८५७ ई० के स्वातन्त्र्य सग्राम मे अनेक भारतीय राजा सम्मिलित हुए। उस समय के राजाओं की जैसी प्रवृत्ति हो रही थी उसको देखते हुए कहा जा सकता है कि उस समय में सम्मिलित होने की भावना उनकी अपनी न थी, वह किसी अन्य की प्रेरणा से प्रसूत थी। स्वभाव से यह मानना पडता है कि वह किसी ऐसे की थी, जिसकी बात टालने का उन्हे साहस न होता था और उस समय भारत में एकमात्र दण्डी स्वामी विरजानन्द ही ऐसे व्यक्ति थे। इसका प्रमुख प्रमाण यह है कि १८५९ ई० के नवम्बर के अन्त मे तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग ने भारतीयों के मनो को जीतने की चेष्टा के निमित्त आगरा में एक दरबार किया। उसमें सम्मिलित होने वाले भारतीय राजाओं से भेंट करने हेतु स्वामी विरजानन्द भी आगरा पधारे थे।

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८५७ ई० की क्रान्ति को विफल होते हुए अपने नेत्रों से देखा था वे सदैव ही भारत को विदेशियों से मुक्त कराने की चिन्ता मे व्यग्र रहते थे। उन्होने भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाली काग्रेस के जन्म से भी दस वर्ष पूर्व १८७५ ई० में अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा—'स्वदेशी राजा चाहे कितना ही बुरा हो, फिर भी अच्छे से अच्छे विदेशी राजा से अच्छा है।' सृष्टि से लेकर पांच सहस्त्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल मे सर्वोपरि एक मात्र राज्य था। अब इनके सतानो का अभाग्योदय होने से राज भ्रष्ट होकर विदेशियो के पदाक्रान्त हो रहे हैं। महर्षि दयानन्द से ही प्रेरणा प्राप्त कर स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपत राय ने भारतीय राजनीति में प्रमुख भाग लिया। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा सस्थापित आर्यसमाज के अनेक अनुयायियों ने भारतीय राजनीति में सक्रिय भाग लिया। ★

शुभ-विवाह

१८ जून को आर्यसमाज बक्सरा के उपप्रधान श्री सत्यनारायण सिंह के प्रपौत्र श्री सुरेन्द्रनाथसिंह का शुभविवाह जमालपुर (बलिया) के श्री जौहरसिंह की सुपुत्री के साथ सुसम्पन्न हुआ।

शोक प्रस्ताव—

आर्य समाज पानीपत के वयोवृद्ध सन्यासी श्री स्वामी वेदानन्दजी सरस्वती के देहावसान पर हार्दिक दुख प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे। —[illegible] मन्त्री

एक आदर्श आर्य—

स्व० श्री रामनारायण जी हापुड़

[ले०—श्री हीरालाल व्रतपाल जी अल्मोड़ा]

स्व० श्री ला० रामनारायण जी हापुड़ निवासी ६६ वर्ष मे दि० ८-९ मई ६६ की रात्रि मे २ बजे हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवासी हो गए।

श्री लाला जी बाहार जि० बुलन्द शहर के सम्पन्न घराने के थे, समय के फेर से परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाने से आप १४ वर्ष की आयु में व्यापार की तलाश में हापुड चले आए यहा आकर आपने आर्यसमाज हापुड के अधिकारियो से सम्पर्क बनाया और नियमित रूप से नित्य आर्यसमाज मन्दिर में प्रात २ घन्टे कुछ नवयुवकों के साथ व्यायामशाला में व्यायाम करने स्नान के बाद सम्मिलित सन्ध्या करने का नियम बनाया जो वर्षों तक निरन्तर चलता रहा। आ० स० मन्दिर हापुड उस समय बहुत छोटा था। आर्यसमाज के सम्पर्क से आपमें सत्यता सुशीलता-परोपकारिता-दृढता-धर्म प्रेम आदि सभी गुण आचुके थे। धीरे-धीरे इन गुणों का प्रभाव आपके व्यापार पर भी पड़ा, ईश्वर की कृपा से आपकी दिनदूनी उन्नति होने लगी। आपने सदा आर्यसमाज के हित के कामो में मुक्त हस्त होकर स्वय हजारो रुपया दान दिया और हापुड के गण्यमान्य व्यापरियो से दान दिलवाया। जिसके फलस्वरूप आज आर्यसमाज मन्दिर हापुड अति सुन्दर विशाल उच्च मस्तक किये ओम ध्वज फहरा रहा है। आपकी सूझबूझ से आ० स० की दूकाने बन गइ जिसके किराए से आ० स० हापुड की आर्थिक स्थिति नियमित रूप से सुदृढ होगई। आपके ही सद्प्रभाव से आ० स० हापुड की आर्यकन्या पाठशाला आज अपने विशाल शानदार भवनो म इन्टर कालेज के रूप मे चल रही है। आप बराबर वर्षों आर्यसमाज हापुड के प्रधान रहे तथा आर्यकन्या पाठशाला कमेटी के भी प्रधान रहे। आप अपने पीछे भरा पूरा आय परिवार छोड गए हैं लाखो की सम्पत्ति और कारबार छोड गए हैं। आपके सुयोग्य ५ पुत्रा श्री भारतभूषण, श्री वेदभूषण श्री विजयभूषण (डा पी एच डी) श्री इन्द्रभूषण व श्री विनोदभूषण एम ए (लेफ्टीनेन्ट) ने आपका पूर्ण वैदिक रीति से अत्येष्टी सस्कार करवा कर शुद्धि यज्ञ के दिन लगभग १००००) दस हजार रु० की सम्पत्ति सार्वजनिक हित के लिए दान दी है तथा आर्यसमाज और उसकी सस्थाओ को ५०००) पाच हजार रु० नगददान दिया है परमात्मा ऐसे सच्चे आर्यसमाज परोपकारी दानी की पवित्र आत्मा का शान्ति और सद्गति प्रदान करें उनके योग्य पुत्रो को धैर्य दे और बल द ताकि वे अपन पूज्य पिता जी के चरण चिन्हा म चलकर उनके यश को उज्वल रख सक।

★

५२वाँ गो-रक्षा सम्मेलन

गुरुवार दिनाक ३०-६-६६ को सायकाल ७ बजे से ९ बजे तक श्री गीता सत्सग भवन गोलमदुद्ध मार्ग में सार्वदेशिक गौ-कृष्यादि रक्षिणी सभा, लखनऊ के तत्वावधान मे गौ-रक्षा सम्मेलन बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री कृष्णचन्द्र के प्रभु भक्ति व गोरक्षा सम्बन्धी भजन हुए। श्री कुन्दनलाल जी आर्य का गोरक्षा और हमारा कर्त्तव्य विषय पर व्याख्यान हुआ। अथर्ववेद के गौ सूक्त पर श्री विक्रमादित्य बसन्त' का वेदोपदेश हुआ। पर्याप्त वर्षा होने पर भी श्री गीता सत्सग भवन का हाल श्रोताओ से भरा हुआ था।

गौ कृष्यादि रक्षिणी सभा का अगामी गोरक्षा सम्मेलन १८-७-६६ को सायकाल ७ बजे से ९ बजे तक श्री सिद्धनाथ जी के मन्दिर में (जो नादान महल रोड पर अहियागन्ज के निकट है) होगा।

जापान में श्री आनन्द स्वामी जी महाराज द्वारा वेद-प्रचार

मेरे प्यारे श्री उमेश जी, ओसाका (जापान)
सप्रेम नमस्ते ! १९-६-६६

थाईलैण्ड (स्याम) मलेशिया, सिंगापुर, फीजी, न्यूजीलैण्ड आस्ट्रेलिया हाग काग फरमूसा मे वेद सन्देश सुनाकर मैं जापान मे आ पहुचा यहा बौद्ध-मन्दिर तो हैं परन्तु हिन्दू मन्दिर कोई नही, इधर लगभग दो हजार भारतीय रहते है सिक्खो ने गुरुद्वारा बनाया हुआ है और शेष ने 'इण्डिया क्लब' बना रक्खा है—उसी मे सप्ताह मे एक बार एकत्र दिल बहला लेते हैं। मेरी कथा इण्डिया क्लब में हो हो रही है।

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

जापान ने पिछले युद्ध के पश्चात् अपने आपको बडी बहादुरी बुद्धिमत्ता तथा पुरुषार्थ से खूब सभाला है, यहा का हर पुरुष, स्त्री, बालक बालिका दिन रात कार्य करते रहते हैं कोई भी अकर्मण्य नही है—कोई भूखा नहीं, कोई धन से दुखी नही। जापान के लोगो ने यहा अपनी प्राचीन सभ्यता नही छोडी वहा य रप की सब अच्छी बाते ग्रहण कर ली हैं। यह जापान पूर्वी तथा पश्चिमी सभ्यताओ का बडा सुन्दर सम्मिश्रण है—यहा का सरकारी मत बुद्धमत ही है, परन्तु अन्य मत वालो को कार्य करने का सुभीता है। ईसाई अपना कार्य खूब कर रहे हैं—जापानी भाषा मे कितना ही साहित्य यह बाटते रहते है—इस्लाम अपने ढग से काम कर रहा है, यदि कार्य नही होता तो आर्य हिन्दुओ की ओर से नही होता। जिस विचार का प्रचार नही होगा वह फैलेगा कैसे ? "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के नारे लगाने वालो का कर्त्तव्य है कि वे गम्भीरता से इस पर विचार करें।

जापान में २४ जून तक वेद की बात सुनाकर मुझे फिर हागकाग पहुचना है ताकि वहा के लोगों की अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए वेद-व्याख्या सुना सकू इसी प्रकार सिंगापुर पुन जाना है, बैंकोक में भी इस प्रकार अभी जुलाई के अन्त तक इधर ही सेवा करनी होगी, तब भारत आना हो सकेगा। शरीर भी थक गया है, विश्राम चाहता है।

भवदीय—
आनन्दस्वामी सरस्वती
द्वारा—मूलामल एण्ड का०
७३/१ हाई स्ट्रीट, सिंगापुर

श्री आनन्द स्वामी जी जापान में

आर्यसमाज के महान सन्यासी पूज्यपाद श्री आनन्दस्वामी जी महाराज अनेक देशो मे वैदिक धर्म का सन्देश सुनाते हुए अब जापान पहुच कर वेदोपदेश कर रह है। उन्होंने डी०ए०वी० कालेज अम्बाला के प्रि० श्री भगवानदास जी को निम्न पत्र भेजा है। जो विद्वान् विदेश मे प्रचारार्थ जाना चाहें वे श्री प्रिंसिपल साहब से पत्र व्यवहार करें। —सम्पादक

मेरे प्यारे श्री प्रि० भगवानदास जी, सप्रेम नमस्ते !

लगभग तीन महीने हो गये मुझ विदेश मे भ्रमण करते हुए, थाईलैण्ड मलेशिया सिंगापुर फीजी, न्यूज लैण्ड आस्ट्रेलिया, हाककाग फारमोसा मे वेद सन्देश सुनाकर आजकल जापान मे वेद कथा सुना रहा हू। सिंगापुर मे आर्यसमाज का विशाल भवन है। कार्य भी ठीक हो रहा है फीजी मे आर्य समाज के १५ स्कूल तथा कालेज है। समाजें ११ हैं परन्तु फूट काम बिगाड रही है और कही समाज नही हां बैंकाक (थाईलैण्ड) मे एक समाज है। लोगो मे श्रद्धा है वह वेद की बात सुनना चाहते है परन्तु सुनाने वाला कोई नही, यदि दयानन्द कालेजो मे से ५-६ प्रचारक आ जायें, जो मीठी इंगलिश मे भाषण दे सकें तो प्रचार आगे बढ सकता है, आपके हृदय मे अग्नि जलती है इसीलिए आपसे निवेदन किया है। सेवक—

आनन्दस्वामी सरस्वती
द्वारा मूलामल एण्ड कम्पनी, ७३/१, हाई स्ट्रीट

(पृष्ठ ९ का शेष)

सावधान हो ! सावधान हो !!
ऋषियो की सन्तान !!!
(३)
होना था सो हुआ बन्धुओ
अच्छा है अब भी चेतो।
धर्म राष्ट्र के सच्चे सेवक,
बनकर अब घर से निकलो।
कह दो यह ललकार,
"विदेशी वालो से मुख मोडो।"
नारा है बस यही—
'पादरी देश हमारा छोडो।'
युग युग से है मानवता का,
भारत केन्द्र महान।
सावधान हो ! सावधान हो !!
ऋषियो की सन्तान !!!

(६) आज देश को आवश्यकता है असख्य प्रचारको की। इतिहास के नए पृष्ठ जब खुलेगे तो ज्ञात होगा कि ऋषि दयानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे लगभग ५००० सन्यासियो ने १८५७ की आजादी की क्रान्ति के समय, बगाल पर धावा बोल दिया था। कैप्टन एडवर्ड ने सन्यासियो को घेरे मे ले लिया और एक घमासान ऐतिहासिक युद्ध हुआ। इस लडाई मे हमारी भारी जीत हुई थी। सार्जेंट मेजर डगलस की लाश तक का पता न चला उनका हैट अवश्य एक नाले मे पडा पाया गया। कम्पनी की इस हार का इतिहास मे कही पता नही लगता। यह बात तो पुराने कागजातो से मालूम हो रही है। वह दूसरा विषय है, प्रसगवश थोडा सा दे दिया है। तात्पर्य यह है कि यदि आज भारत समस्त साधु समाज, भेदभाव छोड कर वैदिक संस्कृति के प्रचार मे हमारा साथ दे तो भी बहुत कुछ काम बन सकता है। ध्यान रहे समस्त अमरीकी राष्ट्र इन विदेशी मिशनरियो के पीछे हैं, अत जब तक समस्त भारत राष्ट्र उठकर खडा न होगा तब तक उनका मुकाबला करना कठिन है। भारतीय ऐंग्लो इण्डियन तथा ईसाई भी विदेशी मिशनरियो की गतिविधियो से सतुष्ट नही हैं। उनके अन्दर भारतीय खून है और वे हमारी ओर देख रहे हैं कि कब हम उन्हे हृदय से लगाने के लिए तय्यार होंगे।

यदि हमने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की चेतावनी पर १०० वर्ष पहिले ध्यान दिया होता तो आज देश का विभाजन न होता। आज भी समय है कि हम सोते न रहे और चेतें। हमे तो परम पिता परमात्मा का पूर्ण सहयोग प्राप्त है और हमें आशा है कि हमें अपने लक्ष्य को पूरा करने में सफलता अवश्य मिलेगी।

★

कन्या विद्यालय देहरादून में प्रवेश

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय स्त्री शिक्षण सस्था है। जो कि गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय से सम्बन्धित है। यहा पर प्रथम श्रेणी से स्नातक (विद्यालकार) की शिक्षा का प्रबन्ध है।

छात्राओ के लिए पढाई के अलावा चित्रकला गायन सगीत, विभिन्न प्रकार के खेल तथा व्यायाम सिलाई कटाई खिलौने बनाना तथा गृह विज्ञान आदि के शिक्षण की सुन्दर व्यवस्था है। शिक्षण शुल्क नही है।

१ जुलाई से नवीन कन्याओ का प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव प्रवेश फार्म तथा नियमावली ५० नये पैसे ६० राजपुर रोड देहरादून से प्राप्त कर सकते हैं।

आ. स. बिलथरा रोड में वैदिक धर्म प्रचार

स्थानीय आर्यसमाज में वेद विश्व विद्यालय निर्माण समिति के मन्त्री वेदपथिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी दिल्ली से पधारे।

आपका ओजस्वी भाषण आत्म-उन्नति और जीवन विषय पर हुआ। आपने साहित्य भी वितरित किया। तथा मधुबन जि० आजमगढ में आर्यसमाज स्थापित करके भवन निर्माण के लिये १०००) एक हजार रु० देने का शुभ सकल्प किया है।

आप इससे पूर्व हजारो को परिवारों को ईसाइयत के जाल से बचाने का कार्य इस क्षेत्र में कर चुके हैं।

कैलाशप्रसाद मन्त्री आ०स० सीयर
बिलथरारोड, (बलिया)

आर्य शिक्षा संस्थाएं धर्म शिक्षा एवं वैदिक धर्मप्रचार के उत्तरदायित्व को पूरा करें

(आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में देहरादून में दि० ११-६-६६ को श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री की अध्यक्षता मे हुये सभा से सम्बद्ध शिक्षण सस्थाओं के प्रबन्धकों व आचार्यों के सम्मेलन में श्री रामबहादुर अधिष्ठाता शिक्षा विभाग का वक्तव्य) ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में सभा से सम्बद्ध शिक्षण संस्थाओ के प्रबन्धको व प्रधानाचार्यों का यह तीसरा सम्मेलन है। इस

श्री रामबहादुर जी मुख्तार पूरनपुर

सम्मेलन का उद्देश्य यह है कि हम सब मिलकर यह विचार करें कि हम आर्य शिक्षण सस्थाओ को किस प्रकार उस दृष्टि से उपयोगी बना सकते हैं कि जिस लक्ष्य की पूर्ति के लिए यह सस्थायें स्थापित की गई थी। तथा यह भी विचार करेंकि कहीं हम अपने लक्ष्य से हट तो नहीं गये हैं।

आर्यसमाज का लक्ष्य एक शब्द मे वेदप्रचार है। वेदप्रचार का अर्थ यह है कि वेद के आधार पर मानवता का निर्माण हो, इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए ही महर्षि दयानन्द ने घोर तपस्या की और वेदभाष्य की वह शैली जिससे वेदो के सत्यार्थ ससार के समक्ष रखे जा सकें विद्वानों के पथ-प्रदर्शन के लिए प्रस्तुत की,तथा सत्यार्थप्रकाश व संस्कार विधि के द्वारा सर्वसाधारण का मानवता के निर्माण के उपायो के सम्बन्ध मे पथ-प्रदर्शन किया, महर्षि ने मनुष्य की सर्वाङ्गीण उन्नति जिसमे शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक व राजनीतिक सभी प्रकार की उन्नति समाविष्ट है की ओर इस प्रकार से सुझाव दिये हैं कि जो किसी अन्य धर्म, सोसायटी व मत के सचालकों ने नहीं दिये।

संसार व राष्ट्र के कल्याण के लिये इन उत्तम विचारधाराओ के प्रचार व प्रसार निमित्त महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना की। महर्षि के बाद सारा उत्तरदायित्व आर्यसमाज के कन्धो पर वेद प्रचार व मानवता निर्माण का आ पड़ा। आर्य समाज ने प्रचार के अन्य उपायो के अतिरिक्त शिक्षा सस्थाओं की स्थापना भी इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए की। लक्ष्य यह है कि शिक्षा सस्थाओ के द्वारा बालक बालिकाओ युवक व युवतियो को वैदिक धर्मी अथवा वैदिक धर्म सिद्धान्तो से उनको विज्ञ करके देश जाति धर्म की सेवा के लिये तथा ससार के कल्याण के लिये तैयार किया जा सके।

आज भी जो नई शिक्षा सस्थायें आर्यसमाज के तत्वावधान मे स्थापित की जाती है उनका लक्ष्य यह ही घोषित किया जाता है, पर वास्तविकता मेरे अपने अनुभव के आधार पर यह है कि हमारे इस लक्ष्य की पूर्ति इन शिक्षा सस्थाओ से वैसी नही हो रही है जैसी होना चाहिये। हमारी शिक्षा संस्थाओ मे स्पष्ट ऐसा भेद हो कि अन्य शिक्षा सस्थाओके मुकाबलेव्यक्ति अधिक चरित्रवान

शिक्षा जगत

बलवान, साहसी, योग्य तथा ससार के हर उपयोगी क्षेत्र मे कार्य कुशल हो। पर मैं यह पूछता हू कि क्या आप ऐसा अनुभव करते हैं ? यदि नही तो मैं यह पूछना चाहूगा कि हमारे विद्यालयो की सचमुच दूसरे विद्यालयो के मुकाबले मे कोई विशेष उपयोगिता है ? आप कह सकते है कि इन विद्यालयो मे धर्म शिक्षा दी जाती है। इस सम्बन्ध मे भी आपसे पूछूगा कि क्या सचमुच आप स्वय ही धर्म शिक्षा की पढाई से जो इस समय किन्ही विद्यालयो में दी जा रही है सन्तुष्ट हैं।

मेरा तो ऐसा अनुभव है कि कुछ विद्यालय तो धर्म शिक्षा किंचित् मात्र देते ही नहीं। और कुछ केवल सप्ताह मे एक बार हवन व सन्ध्या सामूहिक रूप से करा लेना ही पर्याप्त समझते हैं,केवल विद्यालय जिनकी सख्या अति न्यून है इस ओर ध्यान देते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने भी अपने जीवन काल मे कुछ विद्यालय इस उद्देश्य से खोले थे पर लक्ष्य की पूर्ति की सफलता न देखकर स्वय ही बन्द कर दिया।

मेरा निवेदन है कि हम अपन विद्यालयो को आर्यसमाज के प्रचार के सहयोग के लिए उपयोग मे ला सके तथा तथा उनसे हमारे लक्ष्य की पूर्ति हो सके, ऐसा प्रयत्न किया जाय।

यदि हमारे विद्यालया से केवल वह ही सरकारी शिक्षा की पूर्ति की जाय जो अन्य विद्यालयो मे होती है तो हमारे विद्यालयो की कोई विशेष उपयोगिता नही है। अत आप से मेरा आग्रह है कि हम उन उपायो पर विचार करें कि जिससे हम अपने लक्ष्य की पूर्ति मे सफल हो सकें। इस सम्बन्ध मे मेरे निम्न विचार आपके समक्ष उपस्थित हैं जिन पर गम्भीरता से विचार करें।

१—धर्म शिक्षा की आर्य विद्यालयो में समुचित, नियमपूर्वक, तथा नित्यप्रति पढ़ाने की व्यवस्था होनी चाहिये।

२—विद्यालयो मे ब्रह्मचर्य पालन तथा शारीरिक व्यायाम सम्प्रति यौगिक आसन की ओर विशेष अभिरुचि होनी चाहिये। छात्र छात्राओ में सादा जीवन और उच्च विचार की भावनायें भरी जाये, और फैशन से दूर रहने के उपाय अपनाये जाय, तथा विद्यालय की वेषभूषा (Uniform) भी होनी चाहिये।

३—शिक्षा सस्थाओ में आर्य प्रतिनिधि सभा के नियम के पालन करने तथा उसके आदेशो के अनुकूल कार्य करने की भावना प्रबल होनी चाहिए।

४—मेरी इच्छा यह है कि सभा के शिक्षा विभाग के पास एक अच्छा कोष हो जिससे समय-समय पर ऐसे क्षेत्रो मे जहा आर्थिक कठिनाइया है विधर्मियो के बढते हुए प्रभाव को रोकने की आवश्यकता हो वहा ऋण या अनुदान से आर्य विद्यालय स्थापित करने या उन्नत करने के लिए सहयोग दिया जा सके। यह कोष विद्यालयो से प्राप्त वार्षिक।)

सम्बद्ध सस्थायें इस दिशा में अपने कर्तव्य का ठीक ठीक पालन करें।

५—धर्म शिक्षा को प्रोत्साहन देने के निमित्त निम्नलिखित उपाय काम मे लाये जावें।

श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री

आय आना प्रति छात्र-छात्रा की दर से संचित किया जा सकता है, यदि सभी

(अ) धर्म शिक्षा नित्य प्रति प्रत्येक कक्षा मे सभा के शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार दी जाने की उचित व्यवस्था होनी चाहिये।

(ब) इस विभाग की ओर से प्रति वर्ष जो प्रशिक्षण शिविर लगाये जावें उनमे प्रत्येक विद्यालय अपने यहाँ से कम से कम एक अध्यापक या अध्यापिका अवश्य सम्मिलित कराया करें इस कार्य मे उदासीनता उचित नही है। तथा वहा यह निश्चय कर लीजिए कि यह शिविर कहा और किस समय लगाये जावें। ताकि विद्यालयो को अपने अध्यापक भेजने मे सुविधा रहे। मेरा अपना विचार यह है कि हर जिले में एक-एक शिविर उसी जिले के विद्यालयों के लिये लगाये जावे तो अच्छा रहेगा।

(स) शिविर में जो प्रशिक्षणार्थी भाग लें उनमे जो सर्व प्रथम उत्तीर्ण हो उन्हे पारितोषिक भी दिया जावे, तथा सभी को प्रमाण-पत्र दिये जावें जिनका नियुक्ति के समय ध्यान रहे।

(द) धर्म शिक्षा मे अधिक अभिरुचि लेने वाले कुछ छात्र-छात्राओ को छात्रवृत्ति का प्रबन्ध होना चाहिये।

(ह) प्रत्येक विद्यालय मे नियमित रूप से आर्यमित्र जाना चाहिए, प्रत्येक विद्यालय ग्राहक बने। क्योकि उसमे शिक्षा-विभाग की सूचनायें प्रकाशित होती हैं।

(च) प्रत्येक विद्यालय मे यज्ञशाला होनी चाहिए।

(छ) जो विद्यालय आर्यसमाज मन्दिर के भवनो मे लगते हैं उन विद्यालयो का यह परम कर्तव्य हो कि आर्य समाज का सत्सग हाल व यज्ञशाला सुरक्षित रखें और उनसे छात्र-छात्राओं के

धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता

(श्री गुलजारीलाल बी०ए०, सी०टी० पूर्व हेड मास्टर जलालाबाद फर्रुखाबाद)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज मे उत्पन्न होता है, समाज में उसका पालन पोषण होता है, समाज मे वह जीवन व्यतीत करता है और अन्त में समाज मे ही उसकी मृत्यु होती है। सफल जीवन व्यतीत करने के लिये मनुष्य को कुछ सामाजिक शिक्षा' दी जाती है। समाज के सफल सचालन के लिये कुछ नियमो का पालन करना अनिवार्य हो जाता है। मनुष्य समाज के सफल सचालन के लिये जो शिक्षा अपेक्षित है उसी का नाम सामाजिक शिक्षा अथवा धार्मिक शिक्षा है।

धर्म शब्द एक विस्तृत शब्द है। इसके अनेक अर्थ हैं। यहा पर इसके अर्थ कर्तव्य है। जो मनुष्य को करना चाहिये अथवा उससे समाज आशा करती है वही उसका कर्तव्य अथवा धर्म है। आजकल पश्चात्य देशो के निवासी इसके अर्थ 'मत या मजहब करते हैं जो सर्वथा अनुचित और द्वेषपूर्ण हैं। भारतवर्ष में धर्म के जो अग माने गये हैं वे सभी देशो के समाजो ने स्वीकार किये हैं। आज तक किसी भी देश की समाज ने उनके विरोध करने का साहस नही किया है। वे इस प्रकार हैं—

धृति क्षमा दमोऽस्तेय, शौचमिन्द्रिय निग्रह। धीर्विद्या सत्यमक्रोध दशकम् धर्म लक्षणम्॥

सत्यम्—समाज के सचालन के लिये यह नियम सर्वोपरि है। यदि समाज का प्रत्येक सदस्य सत्य बोलना छोडकर झूठ बोलने लगे तो समाज मे गडबडी फैल जाय। सतयुग मे प्राय सभी मनुष्य सत्य बोलते थे तभी उसका नाम सतयुग पडा। त्रेता मे सत्य का पतन हुआ और समाज मे कुछ बुराई आई। द्वापर में सत्य का और पतन हुआ तो समाज मे और दोष फैले। अब कलियुग मे तो सत्य का गला घोटा जा रहा है। फल क्या हो रहा है—पापाचार मिथ्याचार दुराचार और अत्याचार का साम्राज्य। आज देश मे किसी का भी जीवन अथवा धन सुरक्षित नही है।

अस्तेयम्—इसके अर्थ चोरी न करना है। यदि समाज का प्रत्येक सदस्य चोरी करने लगे तो समाज विशृङ्खल हो जाय जैसा कि इस समय हो रहा है। इस 'स्वराज्य' में तो चोरियों की सख्या कीटाणुओं की तरह बढ रही है।

इन्द्रिय निग्रह—समाज मे इस नियम की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके अभाव मे समाज का अस्तित्व ही भयावह हो जाता है जैसा कि आजकल हो रहा है। बलात्कार, स्त्री अपहरण, चोरी, आदि इसी के परिणाम हैं। किसी मनुष्य की इन्द्रियाँ उसके वश में नहीं हैं, सुन्दर लडकी को देखकर उसके अपहरण का प्रश्न इसके अभाव मे उत्पन्न होता है। जिह्वा के वश में न होने से चोरी करने का मोह उत्पन्न होता है।

धी—इसके अर्थ बुद्धि हैं। मनुष्य में बुद्धि ही ऐसा गुण है कि जिसके कारण उसे पशु से श्रेष्ठ समझा गया है। मनुष्य में जितनी अधिक बुद्धि होगी वह उतना ही अधिक पूज्य होगा। बुद्धि के अभाव में समाज उससे पशु का सा व्यवहार करती है।

अक्रोध—इसका अर्थ क्रोध न करना है। ससार में क्रोध ही सब पापो की जड है। जब मनुष्य को क्रोध आता है तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और उसे अच्छे बुरे का ज्ञान नही रहता। वह हत्या, चोरी व्यभिचार आदि बुराइयो का शिकार हो जाता है।

धृति—इसका अर्थ धैर्य है। इसके अभाव में मनुष्य बहुत दुख उठाता है प्रत्येक कार्य समय पर होता है। रोगी को तो धैर्य अमृत है। रोगी शन शनै ही नीरोग होगा। अधीर होने से कोई लाभ नही।

क्षमा—इसका अर्थ किसी को उसके कुकृत्य से मुक्त कर देना है। बुराई करने वाला जब जान जाता है कि उसके फल से अब उसको मुक्ति मिल गई तो उसे बडा आत्म सतोष होता है।

दम—इसका अर्थ अनुचित इच्छा का दमन है। यदि मनुष्य के मन में कोई अनुचित इच्छा उत्पन्न हो और वह उसे दमन कर दे तो वह आने वाली बुराई से बच जाता है।

शौचम्—इसका अर्थ पवित्रता है, मनुष्य को शरीर और मन से स्वच्छ रहना चाहिये। शरीर की पवित्रता जल से होती है और मन की बुद्धि से, बुरा विचार उत्पन्न होने पर बुद्धि ही उसको बुरा कर्म करने से रोकती है।

विद्या—इसका अर्थ ज्ञान प्राप्ति है। मनुष्य ही ज्ञान प्राप्त करता है पाठशालाओं मे बालक को विद्या ही पढाई जाती है। विद्या के द्वारा ही बालक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करता है।

जब धार्मिक शिक्षा इतने गुणों की खान है तब नहीं मालूम कि हमारी सरकार उसे पाठशालाओं में अनिवार्य करने में क्यों हिचकती है। एक समय था जब भारतवर्ष में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य थी। तभी भारतवर्ष ससार भर में सिरमौर था। उस समय विदेशी भारतवर्ष शिक्षा के लिये आते थे। इसी के कारण आर्य जाति सर्वश्रेष्ठ, पूज्य गुणी, विद्वान् और सभ्य गिनी जाती है।

भारतवर्ष स्वतन्त्र तो हो गया किन्तु धार्मिक शिक्षा के अभाव में बुराइयों का घर हो गया। हत्यायें दिन दूनी रात चौगुनी बढ रही हैं। किसी भी मनुष्य की जान सुरक्षित नही है। भ्रष्टाचार का साम्राज्य है। दिन-दहाडे चोरियाँ हो रही हैं। सभी वर्ग के लोग लोभी हो रहे हैं। काम की वृद्धि हो रही है। प्रत्येक पदाधिकारी अपने कर्तव्य को भूल गया है। रक्षक भक्षक हो रहे हैं धन ही सर्वस्व है। धन की प्राप्ति के लिये हत्या चोरी, डाका सभी उचित समझे जाते हैं।

इन सब बुराइयो की औषधि धार्मिक शिक्षा ही है। इसके प्रसार से सभी बुराइयाँ अदृश्य हो जायेंगी।

×

नैतिक उत्थान आन्दोलन

पढाये जावें ताकि विद्यार्थियों व अध्यापको का उनकी पवित्रता का ध्यान रहे और उससे वे प्रभावित हों।

(क) सभा की ओर से सरकारी शिक्षा बोर्ड में प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का भरसक उद्योग किया जावे ताकि आर्य शिक्षा सस्थाओं के हितो की वहा रक्षा हो सके।

(ख) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से आग्रह किया जावे कि प्रत्येक वर्ष आर्य विचार के ससद सदस्यों व विधान सभा के सदस्यो का एक सम्मेलन किया करें जिसमें उनके सहयोग से सरकारी क्षेत्र में राजनीति व शिक्षा के प्रसार के कार्यों का वैदिक विचारधारा से प्रभावित करने के उपायो पर विचार विनिमय हुआ करे और उन विचारो को कार्यरूप में परिणत करने का उद्योग हुआ करे, अच्छा हो कि इस प्रकार के विधायको की एक सभा बनाई जावे जिस प्रकार कि राजनैतिक पार्टियो की पार्टी लेविल पर अपनी सभायें होती हैं।

(ङ) विद्यालयों में अध्यापको की नियुक्ति के समय विशेष ध्यान रखा जावे कि वही व्यक्ति नियुक्त किये जावें जो वैदिक विचारधारा के हो तथा जिनमे वैदिक धर्म के प्रचार की लगन भी हो।

●

चेतावनी—

विघटनकारी तत्वों से सावधान !

[ले०—श्री जगजीवनलाल जी, १३६, पन्नालाल, शहर झांसी]

ओ३म् यो जागार तमृच कामयते ।
यो जागार तमु सामानि यन्ति
यो जागार तमय सोम आह
तवाह मस्मि सख्ये नियोक ॥
—साम २१-२-५

जो पुरुष अज्ञानरूपी निद्रा को त्याग-कर सचेत हो जाता है उसी को स्तुति मन्त्रों का बोध होता है। ऐसे ही ही सदा जागते रहने वाले को ही साम-वेद का यथार्थ ज्ञान होता है और निरंतर दूरदर्शिता से जागरूक रहने वाले को ही परमानन्द रस 'मैं तुम्हारा मित्र हूं" पान करने को मिलता है। समस्त संसार उसे मित्र कह कर पुकारता है क्योंकि ऐसे पुरुष को अपना मित्र बनाने की सभी की उत्कट अभिलाषा होती है। सच तो यह है कि इस पृथ्वी पर अधिकार करके और भोग सामग्री उपलब्ध करके, उनका उचित सदुपयोग करना भी सदा चैतन्य तथा सचेत पुरुष का ही काम है।

किसी अज्ञात कवि की वाणी मे उपर्युक्त वेद मन्त्र गीत मे गाया गया है

जाग प्यारे जाग ! जाग प्यारे जाग !!
जाग प्यारे जाग !!!
जागरूकों के लिये है भूमि का भू भाग।
जाग प्यारे जाग ॥
जागता है जो उसे सारी ऋचाएं चाहती हैं।
सोम की यश गीतिकाएं भी उधर ही
भागती हैं।
जागता है जो उसे यो सोम भोग पदार्थ
कहते "हम तुम्हारे हैं" तुम्हारी
मित्रता मे नित्य रहते।
अत छोड़दो आलस्य,गाओ जागरण के राग।
जाग प्यारे जाग ! जाग प्यारे जाग !!
जाग प्यारे जाग !!!

असंख्य कुर्बानियो के पश्चात् हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की। समस्त भारत भूमि को एक ही झंडे के नीचे लाने के लिये लौह पुरुष (आर्य पुत्र) सरदार वल्लभ-भाई पटेल ने सैकडो राज्यो में बंटे हुए भारत देश को एक किया और हम दुनिया के सामने एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप मे प्रगट हुए। हमारी ओर संसार के बहुत से देशो ने मित्रता का हाथ बढ़ाया और हमारा सहयोग पाकर कई पडोसी देश स्वतन्त्र हो गए। हमारी कीर्ति संसार में फैलने लगी और अभी हम अपने को अच्छी तरह संभाल भी न पाए थे कि चीन, जो हमारा पडोसी देश मित्रता की दुहाई देता था, पूरी शक्ति के साथ शत्रु के रूप म सामने आया। उसके इस अचानक आघात से हमारे पूज्य प्रधान मन्त्री को बड़ा दुख हुआ फिर भी वे जागरूक थे और उन्होने अथक परिश्रम करके देश मे बड़े-बड़े कल कारखाने स्थापित किये जिनमे दसोदिश काम होने लगा। परन्तु वे भी हमारे बीच से उठ गए। इसी अवसर पर पाकिस्तान ने फिर हमारे ऊपर हमला किया उसने सोचा कि वह अमरीकी पैटन टैंको और हथियारो से भारत को कुछ ही दिनो में परास्त कर देगा और दिल्ली तक अपना राज्य स्थापित कर लेगा। परन्तु हमारे प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री, ने उनका पूरी शक्ति से सामना किया और हमारी देश भक्त फौजो ने लाहौर के निकट तक अपना अधिकार भी कर लिया। फिर ताशकन्द समझौता हुआ और हमारे वीर प्रधान मन्त्री, श्री लाल बहादुर शास्त्री भी हमे छोड़कर शांति की खोज मे ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करके, परम गति को प्राप्त हो गए।

आज हमारा भारत देश बडी कठिन परिस्थितियों मे होकर गुजर रहा है। जो भारत सरदार वल्लभ भाई पटेल ने एक करके दिखा दिया था, कुछ राजनीतिक पार्टियो ने भाषाई दबाव डाल कर देश के टुकड़े-टुकडे करना आरम्भ कर दिया है। पंजाबी सूबा तो बन ही रहा है, बुंदेलखंड, ब्रज भाषी सूबा, आदि-आदि न जाने कितने टुकडे इस पवित्र भारत भूमि के होगे। उधर नागालैंड को लेकर जो षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं, वहां गंभीर वारदातें आए दिन होती रहती हैं, वे समस्या को और भी जटिल बना रही हैं। नागालैंड तो भारत के अन्दर ही है परन्तु पाकिस्तान से मिला हुआ है और उसे पाकिस्तान से हथियारो की तथा अन्य सहायता भी मिलती हैं। चीन पाकिस्तान गुट एक गंभीर खतरा है। उधर समस्त भारत के पहाडी इलाकों मे, तथा दुर्गम जंगली प्रदेशो मे विदेशी ईसाई पादरी, सभी जगह अपना जाल फैलाए हुए हैं। भारत मे दरिद्रता, बेबसी, निर्धनता आदि का अनुचित लाभ उठा कर यह विदेशी पादरी (विशेषकर अमरीकी पादरी) करोडों रुपया पानी की तरह बहाकर, हमारे देश के लाखों व्यक्तियो को, मजहबी स्वतन्त्रता की आड में, ईसाई बनाने में लगे हैं। उन्हे अराष्ट्रीय तत्वो से बहकाया जा रहा है। यह एक खतरनाक चक्र है। कहने को तो वे कहते हैं, 'हम भारत के बीमारो की सहायता करते हैं, अनपढ और मूर्ख लोगो को सभ्य बनाते हैं परन्तु अंग्रेज मिशनरी डाक्टर वेरियर ऐलविन हमे चेतावनी देते हैं, और कहते हैं—

'मैं यह बात जोर देकर कहता हू कि विदेशी मिशनरियो को आदिवासी क्षेत्रो से तुरन्त हट जाना चाहिए। इस क्षेत्र की सभी प्रकार की शिक्षा का कार्य, भारत सरकार द्वारा ही संचालित होना चाहिए। हमारी राय है कि सरकार जो कुछ भी यहां कर रही हैं, उससे कहीं अधिक किया जाना चाहिए। अन्त मे विशाल हिन्दू समाज से यही प्रार्थना है कि अब सोने का समय नही है ...आप स्वयं भी जागें। यह आपके ही करोडो भाई आपसे छीने जा रहे है। आने वाले सैकडो वर्षों तक यही आपके बगल के कांटे बने रहेगे, यदि आपने उनकी रक्षा दीक्षा का तुरन्त उपाय नही किया . ।"

सच है, डाक्टर वेरियर एल्विन ठीक ही कहते हैं। भारत के अन्दर ही नही वरन ऐंडमन नीकोबार टापुओ मे (जो बंगाल की खाड़ी मे हैं) जैसा कि प्रेस रिपोर्टों से पता चलता है, १५००० की हिन्दुओं की बस्ती मे १२००० तो ईसाई हो ही चुके हैं, शेष ३००० के भी शीघ्र ही ईसाई बनने की सम्भावना है फिर इन टापुओ की रक्षा करना कितना कठिन हो जायगा, यह बात नागालैंड की हालत से भली-भांति जानी जा सकती है।

(५) ऐसी बात नहीं कि हमारी सरकार इस ओर ध्यान नहीं दे रही है हमे यह जानकर हर्ष हुआ कि केन्द्रीय सरकार द्वारा असम राज्य सरकार को ऐसे आदेश जारी किये जा चुके हैं कि वह विदेशी मिशनरियो तथा मीजो नागाओ की गति-विधियो पर कड़ी नजर रक्खे। असम राज्य से भी सभी मजिस्ट्रेटो को ऐसे ही आदेश दिये जा चुके है, और ऐसा समझा जाता है कि मीजो पहाड़ियो मे सुरक्षा का भी पूरी तरह से बन्दोबस्त कर दिया गया है और यदि आर्य-हिन्दू सारा राष्ट्र एक साथ मिलकर पिछडी जाति के सामूहिक वर्गों को शिक्षा, दीक्षा देकर उन्हे आदर्श नागरिक, वेदमाता की संस्कृति के अन्तर्गत सभ्य तथा सुशील समाज के रूप मे देखने के लिये क्रान्तिकारी पग उठाए तो भारत सरकार भी हमारी पूरी सहायता करेगी। सबसे पहिले तो समस्त हिन्दू-आर्य जाति की यह जिम्मेदारी है कि वह अब देर न करे और तुरन्त आगे बढ़ कर अपनी वैदिक संस्कृति को ही नही भारत की स्वतन्त्रता को भी कायम रखें। यदि आज हम सोते रहे तो आगे चलकर पछताना पड़ेगा। एक दुखी कवि की वाणी मे—

(१)

सावधान हो ! सावधान हो !!
ऋषियो की सन्तान !!!
ईसाई गतिविधियों से है,
देश को हानि महान !! सावधान
सेवा और सुश्रूषा का,
आडम्बर खूब दिखलाते हैं।
ले मजहब की आड यह,
भारत भर में धूम मचाते हैं ॥
और करोडों भोले-भाले,
लोगों को बहलाते हैं।
कपट प्रलोभन देकर,
ये ईसाई उन्हे बनाते है ॥
किन्तु सो रहे गहरी निद्रा में,
क्यों चादर तान।
सावधान हो ! सावधान हो !!
ऋषियो की सन्तान !!!

(२)

सोचो तो किस लिए यहां,
आश्रम सुविशाल बनाए हैं।
नर्सिङ्ग होम, अस्पताल,
किस लिए जगह-जगह बनवाये हैं।
और किस लिये विविध जाति के,
कालिज यहा चलाये हैं ?
लाईब्रेरी सेनीटोरियम,
भली प्रकार सजाये हैं ॥
सुनो सभ्यता भारत की हैं
चले यह सभी मिटाने को।
अति दूषित पश्चिमी सभ्यता,
भारत मे फैलाने को ॥
स्थापित करने को फिर से,
विदेशियो का राज्य महान।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

क्या सरकार महंगाई को रोक सकेगी ?

—अर्थशास्त्री

रुपए के अवमूल्यन ने जहां अधिक आर्थिक संकट से ग्रस्त भारत सरकार को थोड़ा सांस लेने का अवसर दिया, वहीं दूसरी ओर, घरेलू मोर्चे पर महंगाई की रोकथाम का प्रश्न उपस्थित करके एक नया और बड़ा सिर-दर्द पैदा कर दिया। भिन्न भिन्न राज्यों से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार वस्तुओं की कीमतें लगातार तेजी से बढ़ती जा रही हैं। महंगाई ने उन्हीं वस्तुओं को प्रभावित नहीं किया जिन का सम्बन्ध आयात से है, बल्कि उन वस्तुओं को भी प्रभावित किया है जो सम्पूर्णतः स्वदेशी उत्पादन हैं फलतः सरकार को महंगाई की रोकथाम के लिए कदम उठाने को बाध्य होना पड़ा है, क्योंकि महंगाई बढ़ने से अवमूल्यन के लाभ समाप्त हो जाने की आशंका है। इसीलिए सरकार ने कुछ नए कदम उठाए हैं जिनकी सफलता का प्रश्न वाद विवाद का विषय बन गया है।

सरकारी कार्यवाही

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सरकारी मूल्य नियन्त्रण नीति की व्याख्या करते हुए बतलाया कि सरकार केवल जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के भाव नियन्त्रित करने के लिए जिम्मेदार होगी। इन वस्तुओं में शिशु खाद्य, वनस्पति तेल, कैरोसीन मिट्टी का तेल, डीजल, खाद्यान्न आदि कुल १९ मदें हैं।

सरकार ने देश भर में ४५ डिपार्टमेन्ट स्टोर १०१ थोक विक्रय भंडार और २००० प्राथमिक विक्रय केन्द्र खोलने का निर्णय किया है जिनके माध्यम से उपभोक्ता सामग्री का २० प्रतिशत राष्ट्रीय व्यापार होगा। चालू वित्त वर्ष में कुल ४३ डिपार्टमेन्ट स्टोर, ३३१ थोक विक्रय भंडार और ११०० प्राथमिक बिक्री केन्द्र चालू होने की संभावना है, क्योंकि काफी संख्या में सरकारी स्टोर पहले से ही काम कर रहे हैं। डिपार्टमेन्ट स्टोर २ लाख या इससे अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में स्थापित किए जाएंगे। सरकार का अनुमान है कि इन स्टोरों से वर्ष भर में कुल ३५० करोड़ रु० के मूल्य की उपभोक्ता-सामग्री का वितरण होगा।

पहले से स्थापित उपभोक्ता सहकारी भंडारों को सक्रिय बनाने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं। इन भंडारों के पास कार्यकारी वित्त का अभाव था। अतः सरकार ने २५ प्रतिशत कार्यकारी वित्त स्वयं सुलभ करने का निर्णय किया है।

मूल्यों की सूचनाएं

इसके अलावा नागरिक संभरण के लिए एक आयुक्त नियुक्त किया गया है जो १८ अनुसूचित उपभोक्ता सामग्रियों की कीमतों की दैनिक सूचनाएं एकत्रित करके तत्सम्बन्धित मन्त्रिमंडलीय उपसमिति को प्रदान करेगा। महंगाई पर नियन्त्रण के लिए जो मन्त्रिमंडलीय उपसमिति बनाई गई है उसके सदस्य योजना मन्त्री अशोक मेहता, खाद्यमन्त्री सी० सुब्रह्मण्यम, वित्त मन्त्री शचीन्द्र चौधरी और वाणिज्य मन्त्री मनुभाई शाह हैं। आयुक्त इस उपसमिति के निर्णयों के क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार होगा। उपसमिति नित्य अपनी बैठक में बाजारभावों का अध्ययन करके समुचित निर्णय किया करेगी। इसी तरह की व्यवस्था सभी राज्यों में की जाएगी।

राजनैतिक समस्याएं

सरकार ने महंगाई की रोकथाम के लिए जीवनोपयोगी सामग्री अधिनियम में संशोधन का निर्णय लिया है ताकि सरकार मुनाफाखोरों, जमाखोरों और चोर बाजारियों के विरुद्ध प्रभावकारी कार्यवाही कर सके।

व्यापारियों से अपील

सरकार ने बुनियादी वस्तुओं तथा सामान्य उपयोग की वस्तुओं के उत्पादकों से भाव स्थिर रखने की अपील की है। केन्द्रीय मन्त्रियों ने इसी उद्देश्य से कलकत्ता, बम्बई और मद्रास जैसे बड़े नगरों का दौरा करके उत्पादकों से संपर्क स्थापित किया है। सरकार ने आश्वासन दिया है कि भाव स्थिर रखने में योग देने वालों को आयात के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

लेकिन सरकार व्यापारियों के सहयोग पर पूर्णतः निर्भर नहीं है। वह राज्य व्यापार निगम तथा अन्य सरकारी एजेन्सियों द्वारा सामान खरीदकर थोक व खुदरा व्यापारियों को निर्धारित कीमतों पर बेचने के लिए प्रदान करेगी। आयातित खाद्य सामग्री के भाव स्थिर रखने के लिए सरकार लगभग २५ करोड़ रु० का घाटा भी बर्दाश्त करेगी।

लेकिन क्या सरकार के प्रयत्न सफल होंगे ? इस प्रश्न का उत्तर पिछले अनुभवों के आधार पर दिया जा सकता है। वर्तमान प्रवृत्तियां महंगाई में बढ़ोत्तरी की सूचक हैं। भाव स्थिर रहने की कोई सम्भावना नजर नहीं आती। सरकार स्वयं भी इस स्थिति से अनभिज्ञ नहीं है। प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी ने एक सम्वाददाता सम्मेलन में स्वयं यह कहा है कि सरकार केवल खाद्यान्न के भाव स्थिर रखने के लिए वचनबद्ध हैं। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डा० वी०के० आर० वी० राव ने भी अपनी एक रेडियो वार्ता में कहा है कि भाव रेखा की स्थिरता सभी तरह की वस्तुओं पर लागू करने की आशा नहीं की जा सकती। इससे साफ जाहिर है कि खाद्येतर वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे। प्रधान मंत्री का बयान भी मुनाफाखोरों को प्रोत्साहन देगा। अतः सभी खाद्येतर वस्तुओं के भाव बढ़ना प्रायः निश्चित है।

खाद्येतर उपभोक्ता सामग्री की भावों की स्थिरता का प्रश्न भी काफी जटिल है। इस दिशा में सरकारी प्रयत्नों की सफलता संदिग्ध है। पिछले अनुभवों के आधार पर सहज ही यह भविष्यवाणी की जा सकती है कि सरकारी प्रयत्नों के बावजूद महंगाई बढ़ेगी। सरकार ने महंगाई की रोकथाम के लिए पहले भी सचिवों की एक उपसमिति बनाई थी जिसने कीमतों को उत्पादक, थोक विक्रेता और खुदरा विक्रेता के स्तरों पर निर्धारित करने के प्रयत्न किए थे। लेकिन प्रयत्न सफल नहीं हुए। खाद्यान्न, चीनी और मिट्टी के तेल का राशनिंग करना पड़ा। जगह-जगह सरकारी दूकानें स्थापित की गईं। उत्पादकों से भी भाव न बढ़ाने की अपीलें की गईं। राज्य सरकारों को मुनाफाखोरों के विरुद्ध भारत-रक्षा अधिनियम के अन्तर्गत कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। लेकिन भाव बढ़ते ही गए। अतः महंगाई की रोकथाम के लिए सरकारी प्रयत्नों की सफलता की आशा प्रायः निराधार है। महंगाई विरोधी नई व्यवस्था पुरानी विफल व्यवस्था पर ही आधारित है।

अन्धकार-पूर्ण भविष्य—

भविष्य निश्चय ही अन्धकारपूर्ण है। अर्थशास्त्र का यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि जब एक वस्तु की कीमत बढ़ती है तो दूसरी वस्तुओं की कीमतें स्वतः ही बढ़ जाती हैं, क्योंकि हर व्यापारी स्वयं उपभोक्ता भी होता है। जब उसे एक वस्तु की खरीद के लिए जेब से ज्यादा खर्च करना पड़ता है तो वह इस घाटे की पूर्ति के लिए अपने अपने माल की कीमत बढ़ा देता है। केवल बंधी हुई आमदनी वाला वर्ग घाटे में रहता है क्योंकि खरीद फरोख्त पर उसका नियन्त्रण नहीं होता। महंगाई का दुष्चक्र इसी तरह लगातार चलता जाता है।

महंगाई खाद्यान्न के उत्पादन और आयात पर भी निर्भर करती है। यदि आयात ज्यादा होगा तो विदेशी मुद्रा का व्यय बढ़ेगा जिसके फलस्वरूप कुछ अन्य वस्तुओं का आयात नियमित करना होगा। इससे उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और कीमतें ऊपर चढ़ जाएंगी।

विलास सामग्री

सरकार की यह आशा भी निराधार है कि महंगाई के कारण विलास-सामग्री की खपत घट जाएगी। समाज विलास सामग्री की अधिकाधिक खपत की ओर उन्मुख है। काफी वर्षों से बढ़ती हुई महंगाई के बावजूद विलास-सामग्री की खपत में लगातार बढ़ोतरी होती रही है। अतः अवमूल्यन का यह उद्देश्य भी पूरा नहीं होगा। विलास-सामग्री के आयात में कमी की कोई संभावना नहीं है।

इस प्रकार सरकारी कार्यवाही न केवल महंगाई रोकने में विफल रहेगी, अपितु जन-जीवन पर अफसरशाही का शिकंजा भी मजबूत करेगी। फलतः मुनाफाखोरी, जमाखोरी और चोरबाजारी बढ़ेगी। अतः जनता को अवमूल्यन की भारी कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए और सरकारी आश्वासनों पर भरोसा नहीं करना चाहिए। (दैनिक 'हिन्दुस्तान' से साभार)

आर्यसमाज की स्थापना

आर्यसमाज अशोकरोड मैसूर का उद्घाटन श्री डा० कृष्णन जी एम०बी० बी० एस० की अध्यक्षता में हुआ जिसमें श्री लक्ष्मीचन्द जी, श्री जयकृष्णजी तथा श्री कृष्ण शास्त्री जी के आर्यसमाज विषयक ओजस्वी भाषण हुए। ज्ञात रहे कि यह मैसूर शहर में तीसरी समाज है।

—प्रयोगी राम वर्मा

कपास के कीड़ों की रोकथाम

कपास की फसल पर कीड़ों का बहुत आक्रमण होता है। इसी कारण कपास की पैदावार बहुत कम होती है। कपास के पौधों पर बहुत से कीड़ों का आक्रमण होता है। इनमें गुलाबी कीड़ा, सफेद मक्खी, तना छेदक और पत्ती लपेटने वाला कीड़ा आदि प्रमुख हैं।

गुलाबी कीड़ा

यह एक प्रकार की सूंडी होती है। इसकी लम्बाई करीब एक इन्च और रंग गुलाबी होता है। इसकी तितली बहुत छोटी होती है। यह कपास के गूलर में छेद करके रेशे को काटकर बीज को खा जाता है। इस प्रकार कपास की उपज काफी हद तक कम हो जाती है। इसकी रोकथाम के लिए बोने से पहले बिनौलों को तेज धूप में २ या ३ घण्टे तक सुखाना चाहिये। बिनौलों में मिथाइल ब्रोमाइड की धूनी देनी चाहिये।

सफेद मक्खी

यह आकार में बहुत छोटी होती है यह पत्तियों की निचली सतह पर छिपी रहती है। इसके प्रकोप से पत्तियां सिकुड़ कर सूख जाती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। इसकी रोकथाम के लिए कपास की फसल में अमोनियम सल्फेट या सुपरफास्फेट देना चाहिये। कपास की छोटी पत्ती वाली किस्मों पर भी इस मक्खी का प्रकोप कम होता है।

तना छेदक

इस कीड़े का रंग हरा होता है। यह कपास के पौधे के तने में छेद कर देता है। इस कारण पौधे का बढ़ना रुक जाता है। इसकी रोकथाम का सरल उपाय यह है कि इससे प्रभावित पौधों को उखाड़ कर फेंक देना चाहिये।

पत्ती लपेटने वाला कीड़ा

इस कीड़े का रंग मटमैला होता है। यह कीड़ा कपास के पौधों की पत्तियों को लपेट कर पौधों को कमजोर बना देता है। यह अपना सारा जीवन पत्तियों पर ही बिताता है। इसकी रोकथाम के लिए लिपटी हुई पत्तियों को सूंडी सहित पौधों से तोड़कर नष्ट कर देना चाहिये इसके अलावा फसल पर ०५ प्रतिशत डी०डी०टी० या बी०एच०सी० के घोल का छिड़काव कर देना चाहिये।

कृषि उत्पादन समस्या—

जुलाई मास के कृषि कार्य

अनाज को भंडार में रखना

अधिकतर किसान अपना अनाज मिट्टी के बने कोठों में रखते हैं या नमी वाले स्थान पर ढेर लगाकर जमा कर देते हैं। कभी-कभी पुरानी बोरियों में अनाज भर कर रख देते हैं। यही कारण है कि अनाज घुन जाता है। घुन इन स्थानों पर पहले से ही मौजूद रहता है। इनमें जब अनाज भरा जाता है तो घुन इसे खाकर नष्ट कर देता है। अनाज भरने वाला पात्र यदि हल्का हो तो उसे धूप में पड़ा रहने देना चाहिये। बोरों को उल्टा करके धूप में डाल देना चाहिये मिट्टी के बर्तन को ५० प्रतिशत बी० एच०सी० पाउडर को पानी में घोलकर अन्दर से अच्छी तरह पोत देना चाहिये। इसके अलावा उसके अन्दर नीम की सूखी पत्ती और गंधक का धुआं करके मुंह बन्द कर देना चाहिये।

अनाज को भंडार में रखने से पहले उसे धूप में खूब सुखा लेना चाहिये। ५०० ग्राम ५० प्रतिशत शक्ति वाला बी०एच०सी० पाउडर ४० किलोग्राम अनाज के हिसाब से मिला देना चाहिये। इसके बाद अनाज को पात्र में भरकर उसे बन्द करके सूखे स्थान पर रख देना चाहिये। यदि अनाज के बोरों में भरना है तो अनाज भरने से पहले बोरों को धूप में सुखा लेना चाहिये और बोरों के ऊपर ५ प्रतिशत बी०एच०सी० पाउडर भुरक देना चाहिये। जिस मकान में अनाज को भंडार करना हो, उसकी छत तथा फर्श पक्का होना चाहिये। फर्श पक्का होने से चूहों तथा नमी से हानि बहुत कम होती है। यदि कमरा पक्का हो तो उसकी दीवारों को २ फुट की ऊँचाई तक तारकोल तथा बाकी को चूने से पोत देना चाहिये। कमरे के फर्श पर १ फुट मोटे भूसे की तह बिछा देनी चाहिये। बोरियों में दवा मिला हुआ अनाज भरकर दीवारों से २ फुट जगह छोड़कर तह लगाते जाना चाहिये। प्रत्येक तह के ऊपर बी०एच०सी० पाउडर भुरकते जाना चाहिये। दीवार तथा बोरियों के बीच भूसा भरते जाना चाहिये। अनाज का भण्डार हो जाने पर कमरे के रोशनदान आदि सभी बन्द कर देने चाहिये। कमरा बन्द कर देने के बाद फिर उसे नहीं खोलना चाहिये। वर्षा के मौसम में कमरे की छत को देखते रहना चाहिये। अगर छत में कोई दरार हो तो उसमें सीमेंट भर देना चाहिये।

गन्ने की फसल में सिंचाई, निराई-गुड़ाई और मिट्टी चढ़ाना

यह समय गन्ने की फसल की बढ़वार का है। गन्ने की फसल से अधिक उपज लेने के लिये सिंचाई और निराई-गुड़ाई आदि कृषि क्रियायें उपयुक्त समय पर करनी चाहिये। इस समय पौधों की ऊँचाई कम होती है इसलिये फसल में कृषि क्रियायें आसानी से की जा सकती हैं। इसके बाद फसल बढ़ जाती है और निराई-गुड़ाई करने में परेशानी होती है हल्की जमीन (रेतीली मिट्टी) में बोई गई गन्ने की फसल की सिंचाई दो तीन सप्ताह के अन्तर से करते रहना चाहिये देर से सिंचाई करने की अपेक्षा जल्दी-जल्दी सिंचाई करना फायदेमन्द रहता है। हरेक सिंचाई के बाद जमीन की गुड़ाई अवश्य करनी चाहिये। कारण गुड़ाई करने से जमीन पोली हो जाती है कल्ले अधिक निकलते हैं और खरपतवार नष्ट हो जाते हैं, वर्षा शुरू होने से पहले ही गन्ने की फसल में अन्तिम बार मिट्टी चढ़ाने का काम भी समाप्त कर देना चाहिये। पौधों पर मिट्टी चढ़ाने से फसल कम गिरती है।

सकर मक्का की बुआई

खेती की अच्छी तरह तैयारी करके सकर मक्का की बुआई इसी महीने में कर देनी चाहिये। बोने से पहले मक्का के बीजों को किसी रासायनिक दवा से उपचारित कर लेना चाहिये। बीजों को उपचारित करने के लिए एग्रोसन जी० एन० को काम में लाना चाहिये। १० किलो बीज को २८ ग्राम एग्रोसन जी० एन० से उपचारित करना चाहिये। मक्का की बुआई कतारों में करनी चाहिये। कतारों में बुआई करने से उपज अधिक होती है और निराई-गुड़ाई करने में आसानी रहती है। बुआई करते समय पौधों के बीच में २५ से ३० सेन्टीमीटर का फासला रखना चाहिये। दो कतारों के बीच में ७० से ७५ सेंटीमीटर का फासला रखना चाहिय।

खरीफ की अन्य फसलों के साथ अंडी भी उगायें

आय में वृद्धि करने के लिये किसानों को मुख्य फसलों के साथ कुछ ऐसी सहायक फसलें भी उगाना चाहिये, जिनका मुख्य फसल पर बुरा प्रभाव भी न पड़े और सहायक फसल की उपज से आय में भी वृद्धि हो जाय। सहायक फसल के रूप में उगाने के लिए अंडी की फसल अच्छी रहती है। अंडी की फसल को कपास मक्का, ज्वार अरहर और मिर्च के खेतों के चारों तरफ बो सकते हैं। कहीं कहीं इसे अकेले भी बोते है। इसके लिये दुमट-बलुई मिट्टी अच्छी रहती है। भूमि में जल निकास का प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए। इसे अकेला बोने पर भूमि की २ या ३ बार जुताई करने की आवश्यकता होती है। अंडी की फसल में वैसे तो खाद दी नहीं जाती है परन्तु अधिक उपज लेने के लिये थोड़ी-बहुत गोबर की खाद डाल देनी चाहिये। फसल में नीम की खली देने से अंडी के बीजों में तेल की मात्रा बढ़ जाती है। अंडी की फसल में रासायनिक उर्वरक देने की विशेष आवश्यकता नहीं होती है।

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि भवन नई दिल्ली १)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्रवेश

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में नये (६ से १० तक आयु के) ब्रह्मचारियों का प्रवेश १ जुलाई १९६६ से प्रारम्भ होगा। शिक्षा निःशुल्क। सब विषयों की शिक्षा। आश्रम-वास। विशेष देख-रेख। सीधा-सादा भारतीय जीवन। कड़ा अनुशासन। एकसा रहन-सहन। प्राकृतिक सुन्दर, स्वास्थ्यप्रद वातावरण सात्त्विक भोजन। पालन-पोषण का साधारण व्यय। उपाधियां सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त। नियमावली मंगावें।

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री मुख्याधिष्ठाता

सार्वदेशिक साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-६०
[illegible]
(दिनांक १० जुलाई सन् १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
[illegible]
दूरभाष : [illegible] तार : "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

चोर पकड़ने के लिए राडार का प्रयोग

प० जर्मनी में म्युनिच के पास स्टाक डोर्फ नामक नगर के ४० वर्षीय इन्जीनियर अवस्त बर्ल ने, जो पहले भी देश-विदेश की कई आर्ट गैलरियो और फैक्टरियो में सुरक्षा घण्टियाँ लगा चुके हैं, अब उपयोगी रेडार सेट की ईजाद की है, जो कहीं पर भी लगाया जा सकता है।

यह हरे रंग का चमकता हुआ डिब्बानुमा यन्त्र साधारण सा दिखाई देता है, इसकी ऊंचाई १० सेन्टीमीटर और चौड़ाई २५ सेन्टीमीटर होती है। इसके ढक्कन पर लोहे की एक छोटी सी छड़ लगी रहती है, उससे निकलने वाली रेडियो किरणें अपने चारों ओर १५ मीटर तक जाती हैं जो एक सामान्य घर के लिए पर्याप्त है। अधिक बड़े यन्त्र की किरणें ३० मीटर तक जाती हैं।

श्री बर्ल पर्याप्त समय से खतरे की घण्टियां बनाने के काम में सिद्ध-हस्त हैं। १५ वर्षों के कठिन परिश्रम से उसने एक ऐसा जटिल यन्त्र तैयार किया है जो अब यूरोप मे प्रत्येक स्थान पर कलात्मक वस्तुओ के उत्तम नमूनो की सुरक्षा के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है। आर्ट गैलरियो के अतिरिक्त बड़-बड़े बैंक, जौहरी व अन्य बहुमूल्य वस्तुओ के व्यापारी श्री बर्ल द्वारा निर्मित खतरे की घण्टी प्रयुक्त करत हैं।

जब श्रमिको के अभाव के कारण रात्रि के समय घरो पर पहरा देने वाले रक्षकों की कमी अनुभव की जाने लगी तो श्री बल ने घरों की सुरक्षा के लिए रेडार के सिद्धान्त पर चलने वाले यन्त्र को बनाने का विचार किया। जब कोई चोर रेडियो की किरणो के दायरे में आता है तो अलार्म का बटन दब जाता है और खतरे का भोंपू लगातार बजने लगना है और उसकी बत्तिया जलने लगती हैं। ऐसा भी किया जाता है कि खतरे की सूचना एक छोटे से कम्प्यूटर में भर दी जाती है और उसे टेलीफोन के साथ सम्बद्ध कर दिया जाता है। जब खतरा होता है तो यह कम्प्यूटर स्वत टेलीफोन के द्वारा पुलिस को अपना पता बताकर सूचना देता है कि यहा चोरी हो रही है, तत्काल आओ।

श्री बर्ल ने एक 'शाट-अलार्म' का आविष्कार भी किया है, जो गोली चलने की आवाज होने पर अपना कार्यारम्भ कर देता है। यह यन्त्र टैक्सियो में प्रयोग करने के लिए उत्तम है। उसने एक छोटा सा ट्रान्समीटर भी तैयार किया है जो जेब में सरलता से रखा जा सकता है। यह जरा सा दबाव पड़ने पर अपना काम करने लगता है तथा जौहरियो व बैंक मे काम करने वालों के लिए उपयोगी है। जो लोग अपनी और भी सुदृढ सुरक्षा चाहते हैं, उनके लिए एक ऐसा उपकरण बनाया गया है जो बाजू के ऊपर के भाग मे बाध दिया जाता है। जब चोर चिल्लाता है कि हाथ ऊपर करो तो वे खुशी से ऐसा कर देते हैं, जिससे घण्टी जोर से बजने लगती है।

यह रेडार सेट बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसका मूल्य ३१०० मार्क है। इसकी सहायता से उत्तरी बवेरिया में तिजोरी तोड़ने वाला गिरोह गिरफ्तार कर लिया गया। म्युनिच में इसकी सहायता से तीन १२ वर्षीय लड़कों को पकड़ लिया गया जो समुद्री तारो के गोदाम में चोरी कर रहे थे।

गिरजाघरो में चोरी करने वाले चोरो के पकड़ने के लिए श्री बर्ल ने एक विशेष रेडार सेट का आविष्कार किया है। स्टोकहोम में मौलिक मेडोना की बहुमूल्य प्रतिमा के पास यह रेडार सेट लगाया गया है। प्रतिमा के अधिक समीप आने पर खतरे का भोंपू बजने लगता है तथा गिरजाघर की घण्टिया बजने लगती हैं।

●

आर्यसमाज सांवली आदि पंचपुरी गढ़वाल

२५ मई १९६६ को आ०स० मन्दिर पंचपुरी (गढ़वाल) मे समाज की २५ वर्षीय सेवाओं के उपलक्ष में उत्सव मनाया गया। श्री हरिशर्मा जी साहित्य रत्न ने अध्यक्षता की, समाज का प्रकाशित पच्चीस वर्ष का वृत्तान्त वितरण किया गया। श्री शान्तिप्रकाश जी प्रेम श्री सन्तनसिंह जी आर्य, श्री धर्मचन्द्रजी आर्य, श्री रघुनाथसिंह जी, श्री फतेह सिंह जी और समाध्यक्ष श्री शर्मा जी के आर्य संगठन को सुदृढ बनाने तथा पिछड़े हुए इन पर्वतीय क्षेत्रो मे आर्य समाज के प्रचार कार्य को प्रगति देने के लिए सारगर्भित भाषण हुए। समाज के सामने क्षेत्र के प्रसिद्ध स्थान स्यूसी नगर में एक भव्य आ०स० मन्दिर बनाने की योजना भी है। इन कार्यों के लिए शिरोमणि आर्य संस्थाओ का सहयोग लिया जायगा। समाज के पदाधिकारियों ने आमन्त्रित आर्यजनो का जलपान से स्वागत किया। —मन्त्री

विश्व कल्याण यज्ञ

आगरा नगर में शहर के मध्य में महात्मा आनन्द भिक्षु जी के द्वारा विश्व कल्याण यज्ञ १४ जुलाई से १९ जुलाई तक हो रहा है, उसमें बड़ बड़े महात्मा गण पधारेंगे यज्ञ प्रात और सन्ध्याकाल होगा तथा रात्रि मे मैजिक लालटेन से प्रचार होगा तथा श्याम जी पाराशर के व्याख्यान भी होंगे। आगरे के निकट जनता से प्रार्थना है कि इस धार्मिक समारोह मे सम्मिलित होकर लाभ उठायें।

★

सर्वदानन्द साधुआश्रम हरदुआगंज (अलीगढ़)

सर्व सज्जनों को विदित हो कि श्री सर्वदानन्द साधुआश्रम जिला अलीगढ़ पूज्यपाद वीतराग स्वर्गीय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज द्वारा काली नदी के तट पर सन् १९१०ई० से स्थापित है। यह पवित्र आश्रम दीर्घकाल से वैदिक धर्म के पूर्ण प्रचार का पुण्य कार्य करता चला आ रहा है। आर्यसमाज के रत्न परम विद्वान् स्व० प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु और श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती, स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी, प० सुरेन्द्र शर्मा गौड़ तथा प० शंकरदेव जी आदि-आदि परम विद्वान् इस आश्रम की ही विभूतियाँ हैं। इसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड कमेटी द्वारा किया जा रहा है।

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी के निधन के पश्चात् इस आश्रम के संचालन का सारा भार व्यय जनता पर ही है। यहां एक संस्कृत महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है। जिसमें आचार्य परीक्षा तक की शिक्षा दी जाती है। वैदिक धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है और वैदिक संस्कृति का जीवन ढाला जाता है।

अस्तु सभी महानुभावो से प्रार्थना है कि वे इस विश्वविख्यात आर्य संस्था को अधिक से अधिक धन द्वारा सहायता करें और योग्य विद्यार्थी भेजकर उनका जीवन सुधारने का पुण्य प्राप्त करें।

—स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता

×

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

...—...र श्रावण २ शक १८८८ प्र० श्रावण शु० ७ वि० २०२३, दिनांक २४ जुलाई १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥

भावार्थ—विराट पुरुष के मन के तुल्य चन्द्रमा हुआ। चक्षु के तुल्य सूर्य हुआ। श्रोत्र के तुल्य वायु तथा प्राण हुए। मुख के तुल्य अग्नि हुआ।

विषय-सूची

आर्य विद्वान् एवं महोपदेशक—

श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री का अभिनन्दन

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली की ओर से २६ जुलाई को भव्य आयोजन

श्री शास्त्री जी द्वारा भेंट में प्राप्त ७८७ रु० की थैली वेद प्रचार के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान जी को भेंट

श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ

आर्यजगत की विभूति के रूप में श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री हम सबके आदरणीय है। श्री शास्त्री जी ने अपना समस्त जीवन आर्यसमाज संगठन को सुदृढ करने और वेद का सन्देश गजाने में सर्मापित कर दिया। महर्षि दयानन्द ने सच्चे ब्राह्मणो से जो आशा की थी उसे श्री शास्त्री जी ने अपने जीवन से कर दिखाया।

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली ने श्री शास्त्री जी के अभिनन्दन का आयोजन कर सराहनीय कार्य किया है हम आयोजकों को इसके लिये बधाई देते हैं।

★

श्री मदनमोहन जी वर्मा सभा प्रधान

श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री के अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता के लिये बरेली पहुच कर आपने एक आदर्श उपस्थित किया कि आर्य जन अपने विद्वानो का हृदय से अभिनन्दन करना जानते है। अपने भाषण में आपने श्री शास्त्री जी की आर्यसमाज एव वेद-प्रचार सम्बन्धी सेवाओ पर प्रकाश डाला और आभार प्रदर्शन किया। श्री प्रधान सभा ने आज के युग मे आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता पर बल दिया और आशा व्यक्त की कि श्री शास्त्रीजी हमारे मध्य चिरजीवी होकर आर्य युवकों एव मिश्नरियो का पथ प्रदर्शन करते रहेंगे।

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम॰ ए॰

(गतांक से आगे)

"ठीक है अब यह बताइये जिस स्वरूप प्रतिष्ठित चिति शक्ति का द्रष्टा स्वरूप में अवस्थान होता है, वह द्रष्टा क्या वस्तु है ?

इसे समझने के लिए हमें 'अवस्थानम्' पद का विश्लेषण करना पड़ेगा। यह शब्द दो पदों से बना है 'अव' और 'स्थान' से। 'अव' उपसर्ग का जो अर्थ अभ्यन्तर दिखाई देता वह ही यहां लेंगे। इसका बहुत स्थलों में प्रयोग आया है, जैसे ऋषि प्रथमा प्रैवमुप्यावच्चैरमि-बावैश्ववीणा मन्त्र दृष्टयो भवन्ति ॥

—निरु० ७-१

यहां अवच शब्द का प्रयोग है, जिसका अर्थ है—अल्प अभिप्राय। पर्व-ण्यारोहति यहां अवरोहण का अर्थ नीचे उतरना है।

इस पुरुष में अवगुण है, यहां 'अव' शब्द गुणों की न्यूनता बता रहा है। "छन्दसि परिपन्थि परिपरिणौ पर्यवस्था-तरि"। अष्टाध्यायी ५ २ ८९। वेद में पर्यवस्थाता का अर्थ चोर है, जो सब ओर से निम्न गुणों में स्थित हों। ध्यान से विचार करने पर इन प्रयोगों में यह स्पष्ट दीख पड़ेगा कि सर्वत्र अव उप-सर्ग निम्नता का बोधक है। इसी प्रकार यहां अवस्थान का अर्थ होता है-निम्न स्थान। आत्मा असम्प्रज्ञात समाधि द्वारा ऊंचा उठकर स्वरूप में प्रतिष्ठित है, इतना होने पर भी उसका स्थान निम्न ही रहा। यह बात हमें बाधित करती है कि कोई पदार्थ ऐसा अवश्य है, जिसका स्थान इस अवस्था में भी ऊंचा बना हुआ है। ऋषि पतञ्जलि ने योग सूत्रों में दृश्य और आत्मा से भिन्न तीसरी शक्ति का और भी निरूपण किया है, जिसे पुरुष विशेष या ईश्वर कहते हैं। सूत्र यह है—'क्लेश कर्म विपाकाश-यैरपरामृष्ट पुरुष विशेष ईश्वर' जिसमें क्लेश, कर्मों का परिपाक तथा उनके संस्कारों का स्पर्श भी नहीं है वह ईश्वर है, पुरुष विशेष है, जगत् इन तीन ही पदार्थों के सम्पर्क से बना है, जिन्हें प्रकृति, आत्मा और ब्रह्म कहते हैं। प्रकृति अर्थात् दृश्य से छूटकर जब आत्मा स्वरूप प्रतिष्ठित होता है तब उसका स्थान किससे भिन्न रह जाता है यह स्पष्ट हो जाता है, उस पुरुष विशेष को ही हम ब्रह्म कहेंगे। यह आवश्यक नियम भी है कि निम्न स्थिति अल्प गुणों के कारण ही हुआ करती है। यह भी अनिवार्य ही है कि अल्प गुणों वाला अधिक गुणी का आश्रय लेता है, जैसे—लता वृक्ष का, बच्चे माता का, और शिष्य गुरुओं का। ठीक इसी प्रकार अल्प गुणी आत्मा बहुगुणी ब्रह्म का आश्रय लेता है,

योग दर्शन का एक सूत्र—

'तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्'

(ले०—श्री स्वामी वेदानन्द वेदवागीश, गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

'अवस्थान' शब्द ब्रह्म के आश्रय में प्रयुक्त हुआ भी है जैसे—अनेन विधिना सर्वांस्त्यक्त्वा सङ्गान् शनैः-शनैः सर्व द्वन्द्व विनिर्मुक्तो ब्रह्मण्येवावतिष्ठते'। मनु० ६।९१। अवतिष्ठे प्रयोग अवपूर्वक स्था धातु का ही है। अतः द्रष्टा का अर्थ इस सूत्र में ब्रह्म ही है।'

'फिर ब्रह्म शब्द ही क्यों नहीं रख दिया, जिसके रखने से संशय ही न रहता और टीकाकार भी इसका अर्थ जीवात्मा न करते।'

'ब्रह्म शब्द रखने से डेढ़ मात्रा बढ़ जाती है और सूत्र बनाने में यह ध्यान रखना पड़ता है कि वह छोटे से छोटा बने। दूसरे मुख्य बात जो यह है कि ब्रह्म शब्द उस रहस्य पर प्रकाश नहीं डालता, जिसे द्रष्टृ शब्द प्रकट करता है। द्रष्टा' पद का अर्थ है—देखने वाला। जहां देखने वाला हो, वहां दीखने वाला भी होना चाहिये। ईश्वर देखने वाला है और वह आत्मा को उसके कर्मों का फल देने के लिए निरन्तर देखता रहता है, तब दृश्य पदार्थ आत्मा हुआ। अतः द्रष्टृ शब्द ही रखा, ब्रह्म नहीं।'

'पर यहां तो अब ईश्वर के भी द्रष्टृत्व की आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि जीवात्मा ने मुक्त होने के लिये जो कर्म किये थे उनका फल उसे मुक्ति मिल ही गया है, अब वह किसलिये उसे देखेगा? कोई प्रयोजन न होने से उसका द्रष्टृत्व भी समाप्त हो जाता है।'

'समाप्त नहीं होता, यह आगे निरू-पण करेंगे।'

'यह कैसे पता लगता है कि आत्मा में अल्प गुण हैं, जिस कारण उसे ब्रह्म का आश्रय लेना पड़ता है?'

'आत्मा में आनन्द नहीं है, यदि होता, तो वह सदा आनन्दी रहता और उसे आनन्द के लिए इधर-उधर भटकने अथवा प्रयत्न करने की आवश्यकता न थी। इससे प्रतीत होता है कि स्वरूप प्रतिष्ठ आत्मा को ब्रह्म से आनन्द प्राप्त होता है, वह ब्रह्म है।'

'अब कृपया यह बताइये—आत्मा ब्रह्म के सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त करता है अथवा अल्प को?'

'इसका उत्तर देते हुये मैं आपका ध्यान एक दूसरी ओर आकर्षित करता हूं, वह यह कि बहुत विशाल गहरे समुद्र में स्नान करता हुआ कोई पुरुष कितने जल से अपनी तृप्ति कर लेता है, अथवा सूर्य के चहुं ओर फैले हुये उष्ण किरणों से अपना शीत मिटाने के लिये वह उसकी कितनी अपेक्षा रखता है? आप इसके उत्तर में कहेंगे, कि किसी एक स्थान पर अथवा सर्वत्र घूमता-घूमता वह जितने जल और उष्णता से अपनी तृप्ति समझता है, उतने से ही उसका प्रयोजन है, उससे अधिक नहीं। ठीक इसी प्रकार सर्वत्र व्यापक ब्रह्म में रहता हुआ जितने आनन्द से वह तृप्त होता है, उतने ही आनन्द की उसे अपेक्षा है, अधिक की नहीं। आत्मा अणु होने के कारण सर्वव्यापक ब्रह्म के सम्पूर्ण आनन्द का भोग करने में असमर्थ ही है, यह समझ लेना चाहिये।'

"आत्मा अपने सामर्थ्य के अनुसार ही ब्रह्म का आनन्द लेता है, इस बात को प्रकट करने के लिए क्या कोई अन्य सूत्र बनाना चाहिये?"

'किसी दूसरे सूत्र बनाने की आवश्य-कता नहीं है। तदा द्रष्टु स्वरूपेऽवस्था-नम्' में ही जो 'अवस्थानम्' पद रखा हुआ है, वह इसी विषय को प्रकट करता है। अवस्थान तथा अवरस्थान ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं, जिस आत्मा का स्थान ही ब्रह्म से अवर (न्यून, अवकृष्य, अल्प) है, वह ब्रह्म के व्यापक आनन्द का सम्पूर्ण भोग कैसे कर सकता है?"

क्यों जी! आपने अभी पीछे 'अव-स्थानम्' पद का विश्लेषण करके उसका प्रयोजन आत्मा की ब्रह्म में स्थिति भी बताया था। यह ही प्रयोजन रखिए अथवा वह ही। एक मूर्धाभिषिक्त प्रयो-जन होना उचित है।"

'सम्पूर्ण आनन्द का भोग करने में असमर्थ है, यह ही प्रयोजन रख लीजिये।'

"फिर ब्रह्म में स्थिति का प्रतिपादन कैसे करेंगे?"

'अवस्थानम्' पद में से 'अव' हटा-कर केवल 'स्थान' शब्द रखने पर भी ब्रह्म में स्थिति का बोध हो जाता है। जैसे—'तदा द्रष्टु' स्वरूपे स्थानम्' यह ऐसा सूत्र करने पर भी प्रयोजन सिद्ध होता है, तब 'अवस्थानम्' पद में प्रयुक्त 'अव' पद से स्थिति प्रतिपादन की कोई आवश्यकता नहीं है।

"तब तो हम भी बिना 'अव' उप-सर्ग लगाये अपने अभय आनन्द की स्था-पना कर लेंगे, क्योंकि जो जिसमें स्थित होता है, वह उसकी समता कभी नहीं कर सकता और आपके पक्ष में तो दोष पर्वतों का स्तूप बना है, क्योंकि आपने 'अव' उपसर्ग का माहात्म्य लेकर जीवात्मा से अधिक गुणवान् पदार्थ ब्रह्म की खोज की थी। 'अव' उपसर्ग न रखनेपर आप ब्रह्म की खोज कैसे करेंगे?"

'अव' उपसर्ग के बिना भी ब्रह्म की स्थापना सम्भव है, क्योंकि जगत् में तीन ही तो पदार्थ हैं—प्रकृति, आत्मा और ब्रह्म। जब आत्मा प्रकृति के बन्धन से छूट गया और स्वरूप प्रतिष्ठित हो चुका, तब सूत्र कहता है—द्रष्टृ स्वरूपे स्थानम् तब वह ब्रह्म से अतिरिक्त कहां जायेगा? इतना ही नहीं, हमें तो ब्रह्म में स्थिति प्रतिपादन के लिए 'स्थानम्' इस पद की भी आवश्यकता नहीं है। इतना ही सूत्र पर्याप्त है—'तदा द्रष्टु स्वरूपे' स्वरूपे शब्द में जो सप्तमी विभक्ति का प्रयोग है, वह स्थिति को स्वयं प्रकट कर रहा है, क्यों कि सप्तमी विभक्ति अधिकरण में होती है। अधिकरण का दूसरा नाम आधार है। आधार स्थिति को ही बताता है। यदि सप्तमी विभक्ति यह अर्थ न दे, तो इसका प्रयुक्त होना ही व्यर्थ है। लोक में भी जहां आधाररूप सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हो जाता है, वहां फिर उसके लिए दूसरे शब्द की आवश्यकता नहीं रहती। जैसे कोई किसी से पूछता है—कहां विष्णु मित्र? वह उत्तर देता है—'उद्यान में' बस इतना कहने से ही उद्यान में स्थिति का बोध हो गया, अब ही तो आगे किसी अन्य शब्द का प्रयोग नहीं किया गया। इसी प्रकार यहां भी जब पूछते हैं कि स्वरूप प्रतिष्ठित आत्मा कहां रहता है, तब इतना ही उत्तर पर्याप्त है—तदा द्रष्टु स्वरूपे'। श्रीमान् जी! आप ही हमारे वकील हैं, क्योंकि हमारे द्वारा स्थिति का प्रतिपादन किये बिना आप अपने आनन्द की स्थापना नहीं कर सकते।'

'यह तो आपका वचन उचित ही है; अतः 'अवस्थानम्' पद की अब आपको ही आवश्यकता नहीं रही, तो हमें क्या अपेक्षा है। हमारा तो इतना ही कथन है कि जो जिसमें रहता है वह उसकी समता नहीं कर सकता। इस कारण ब्रह्म का सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त कर लेना आत्मा के

(शेष पृष्ठ १९ पर)

स्वाध्यायान्माप्रमद

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् नेह भद्र रक्षस्विने नावयै नोपया उत । गवे च भद्र धेनवे वीराय च श्रवस्यतेऽनेहसो व ऊतय सु ऊतयो व ऊतय ॥ २९ ॥

ऋ० ६ । ४ । ९ । १२ ॥

व्याख्या—हे भगवन् ! "रक्षस्विने भद्र, नेह" पापी हिंसक दुष्टात्मा को इस ससार में सुख मत देना । "नावयै" धर्म से विपरीत चलने वाले को सुख कभी मत हो । तथा 'नोपया उत' अधर्मी के समीप रहने वाले उसके सहायक को भी सुख नही हो । ऐसी प्रार्थना आपसे हमारी है कि दुष्ट को सुख कभी न होना चाहिए नहीं तो कोई जन धर्म में रुचि नहीं करेगा किन्तु इस ससार मे धर्मात्माओं को ही सुख सदा दीजिए । तथा हमारी धर्मदमादियुक्त इन्द्रियाँ, दुग्ध देने वाली गौ आदि, वीरपुत्र और शूरवीर भृत्य "श्रवस्यते" विद्या विज्ञान और अन्नाद्यैश्वर्ययुक्त हमारे देश के राजा और धनाढ्यजन तथा इसके लिए "अनेहस" निष्पाप निरुपद्रव स्थिर दृढ़ सुख हो "व ऊतयो व ऊतय" (व युष्माक, बहुवचनमादरार्थम्) हे सर्वरक्षकेश्वर ! आप सब रक्षण अर्थात् पूर्वोक्त सब धर्मात्माओं की रक्षा करने हारे हैं । जिस पर आप रक्षक हो उनको सदैव भद्र कल्याण (परमसुख) प्राप्त होता है अन्य कोई नही ॥२९॥

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार २४ जुलाई १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

गोवध की मांग से राष्ट्रपति की सहानुभूति

भारत गो सेवक समाज के शिष्ट-मण्डल से भेंट के अवसर पर राष्ट्रपति राधा कृष्णन ने कहा कि आप लोगों ने गोवध पर प्रतिबन्ध की जो मांग की है उस पर उन्हें सहानुभूति है । परन्तु साथ ही आपने कहा कि मैं राष्ट्र का केवल सवैधानिक अध्यक्ष हू । गोवध के लिये सरकार के विशेषकर गृहमन्त्री के पास जाना चाहिये जो आपके ही प्रतिनिधि हैं ।

इसी अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि शास्त्रों मे कलियुग के लक्षण बताते हुए कहा गया है कि जब जनता धन और भोग को प्रधानता देने लगती है तब विनाश-काल आ जाता है । आज हमारे समाज और देश में ये दोनो दुर्गुण बढ़ रहे हैं इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिये । राष्ट्रपति जी जैसे धार्मिक व्यक्ति की गोवध बन्दी के प्रति सहानुभूति होना उचित और स्वाभाविक है । देश की जनता ने आपके सांस्कृतिक वैशिष्ट्य की दृष्टि मे रखकर ही आपको राष्ट्रपति बनाया है । इसलिये राष्ट्र आपकी सहानुभूति के लिये आभारी है परन्तु आप जिस पद पर हैं उससे यह आशा होना स्वाभाविक है कि आप सहानुभूति से भी अधिक अपने प्रभाव का उपयोग करेंगे । राष्ट्रपति से हम [illegible] करेंगे कि वे सरकार से [illegible] कि [illegible]

कि भारतीय सविधान की धाराओ एव भारतीय जनभावना की इतनी उपेक्षा क्यो हो रही है ।

गोवध-निषेध आन्दोलन भारतीय आत्मा की आवाज है उसे दबाया नही जा सकता । महर्षि दयानन्द न अपन काल में गोरक्षा के प्रश्न को उठाया था और इसके लिये आन्दोलन किया था तब से अब तक करोडो अरबो गौ का विनाश किया गया और देशवासी आहे भरते रहे । अब जब देश मे गोवश नाश के कारण दूध और अन्न के सकट छाये हुए हैं देश की जनता सरकार की उपेक्षा को बरदाश्त नही कर सकती जो भावनायें अभी तक सुधार की आशा मे दबी हुई हैं उनका शीघ्र ही विस्फोट हो सकता है । राष्ट्रपति जनता को गृहमन्त्री का द्वार न दिखा कर स्वय गृहमन्त्री को स्पष्टीकरण के लिय अपने पास बुलावें यही सामयिक और उचित होगा ।

श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज अन्तरराष्ट्रीय प्रचार यात्रा पर

श्री स्वामी अखिलानन्दजी महाराज एक वर्ष पूर्व मारीशस अफ्रीका आदि में वेद प्रचार कर लौटे थे एक वर्ष तक देश के विविध स्थानों में विशेष कर बगाल में प्रचार कार्य सम्पन्न करते रहे । आपके प्रचार की मांग अफ्रीका से बराबर आती रही अत. सार्वदेशिक सभा की ओर से आप ७ जुलाई को पुन अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार यात्रा पर अफ्रीका रवाना हो गये हैं ।

श्री स्वामी जी महाराज आर्यजगत् के कर्मठ कार्यकर्ता हैं । आपने उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पदों पर रहकर दीर्घ-काल तक सगठन की सेवा की है । सन्यास धारण करने के बाद आप अपना सारा समय प्रचार में लगा रहे हैं । आपकी इस प्रचार यात्रा के अवसर पर हम मित्र परिवार और आर्यजगत् की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं । हमे आशा है कि वे अपनी यात्रा मे सफल होगे और भारत से बाहर वेद-प्रचार एव आर्यसमाज सगठन की वृद्धि मे सहायक बनेंगे ।

भारत से बाहर वैदिक मिशनरियो के प्रचार के दो रूप होने चाहिये प्रथम प्रवासी भारतियो म प्रचार और द्वितीय उस देश के मूल निवासियो मे प्रचार । पूज्य स्वामी जी दोनो प्रकार से कार्यसम्पन्न करने मे समर्थ हैं इस दृष्टि से उनकी यात्रा का विशेष महत्व है । हम पुन स्वामी जी की यात्रा पर मगल कामनायें करते हैं ।

श्री चन्द्रभानुगुप्त जी का अभिनन्दन

उत्तर प्रदेश के भू० पू० मुख्यमन्त्री श्री चन्द्रभानु गुप्त जी का उनक ६५वें जन्म दिवस पर विशेष अभिनन्दन किया गया ।

श्री चन्द्रभानुगुप्त जी एक आर्य परिवार में जन्मे और आर्य परम्परा मे पले, शिक्षित दीक्षित हुए और आर्य-सामाजिक वातावरण मे ही सामाजिक एव राजनीतिक सघर्ष के खिलाडी बने । भारत की राजनीति मे उनको दकर आर्यजगत् गौरवान्वित है ।

श्री गुप्त जी की सेवाओ के उपलक्ष मे उनके अभिनन्दन का आयोजन करने वाली समिति के प्रयत्न से इस अवसर पर श्री गुप्त जी को ४३ लाख रुपये की थैली भेंट की गयी है । इस थैली का समस्त धन गुप्त जी सामाजिक एव राजनैतिक सेवाओ और सेवकों को तय्यार करने में करेंगे । इस प्रकार समाज एव राष्ट्र-सेवा की दिशा में एक नया प्रयास आरम्भ होगा । श्री गुप्त जी ने सारा जीवन समाज और देश-सेवा में अर्पित कर दिया और इस भेंट को भी वे समाज-राष्ट्र के अर्पित कर रहे हैं यह और भी महान् घटना होगी ।

आर्य परिवार के सदस्य के नाते श्री गुप्त जी के अभिनन्दन पर हम उनके गौरव के साथ स्वय को गौरवान्वित समझते हैं ।

हम आर्य जनता की ओर से श्री गुप्तजी के जन्म दिवस पर उनके दीर्घायुष्य के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं और आशा करते हैं कि वे राष्ट्र और समाज के लिये चिरस्थायी प्रकाश स्तम्भ बने रहेंगे ।

१० प्रतिशत की कटौती

अवमूल्यन और महगाई का मुकाबला करने के लिये प्रधानमन्त्री के निर्देशानुसार सरकारी व्यय मे १० प्रतिशत की कटौती का प्रस्ताव क्रियान्वित हो रहा है । हम सरकार के इस कदम के लिये बधाई देते हैं । परन्तु सरकार के व्ययो की कटौती बहुधा दिखावटी होती है क्योकि सरकारी कटौती के पीछे जो त्याग की भावना होती है सरकारी कर्मचारी उस त्याग भावना से प्रेरित या प्रभावित नही होते । आवश्यकता इस बात की है कि मन्त्री स्तर पर सरकारी कटौती को प्रभावशाली बनाया जाय । मन्त्रियो के व्यवहार का सरकारी कर्मचारियो और जनता दोनो पर प्रभाव पडता है । यदि मन्त्री सच्चे हृदय से गाधी जी के स्वदेशी और सादगी के आदर्शों को अपना लें तो सारे देश मे एक नया वातावरण उत्पन्न हो सकता है । आशा है सरकारी व्यय मे कटौती एक आदर्श योजना होगी और जनता के प्रतिनिधि उसे सफल बना सकेंगे ।

कथाओं का आयोजन कीजिए

बरसात का समय है अत प्रत्येक समाज का कर्तव्य है कि वह अपने यहां सुयोग्य एव प्रकाण्ड विद्वानो को आमन्त्रित कर कथा का आयोजन करें । यह आवश्यक नही है कि वेद प्रचार सप्ताह मे ही केवल कथा सुनी जाये । सप्ताह से पूर्व और पश्चात् मे भी कथाओ का कार्यक्रम बनाकर वैदिक धर्म का प्रचार एव प्रसार कर अपने कर्तव्य का पालन करें । जो समाजें प्रचारको (भजनोपदेशको) को ही बुलाना चाहे, वह शीघ्र लिखने की कृपा करें ताकि व्यवस्था की जा सके ।

मथुरा, आगरा, मैंनपुरी जिले में प्रचार व्यवस्था

उपरोक्त जिलो की समाजों मे प्रचार निमित्त श्री कमलदेवजी शर्मा की नियुक्ति सभा ने की है, हम आशा करते हैं कि उपरोक्त भजनोपदेशक क पहुचने पर समाजें प्रचार की व्यवस्था कर वेद प्रचारार्थ धन प्रदान करेंगी ।

—अधि० उपदेश विभाग

मत स्वारथ रंग में रंगो चुनरी

करो चिंतन प्रिय परमेश्वर का,
मत स्वारथ रंग में रंगो चुनरी !
वृथा माया मोह को संग लिये
प्रेम की कलिका सरसाय रहे
नव यौवन का मकरन्द लिये
मिथ्या मद मे इतराय रहे
पल पल करके घट आयु रही
बोझिल हुई जाय रही गठरी !
फिरे कुंज में घूम रहे कलिका
उन्मत्त बने रस पान करो
यह चार दिना की अरे जिंदगी
तुम तापर गर्व गुमान करो
गम ही गम है नर जीवन में,
खुशियाँ क्षणभगुर हैं सिगरी !
दुखियाओं का उपकार करो
उपकार बड़ा अनमोल रतन
समता के विचार भरो मन मे
छुआछूत भगे, करो ऐसा जतन
प्रिय प्रेम की सुन्दर बीण बजे
गुंजे राष्ट्र जागरण की लहरी !
इत उत बिछ जाय नजर अपनी
श्रुति के श्रवणों में सुबोल पड़ें
जननी पर आन पड़े सकट
हम बैरी से सग्राम करें
गगनांगन में अरुध्वज फहरे
दे शिकस्त दुश्मनो को गहरी ।
काया मिल जायेगी माटी में
यश ही जग में रह जायेगा
अपयश की करेंगे सभी निन्दा
यश के गुन हर कोई गायेगा ।
है वक्त अभी सभलो, चेतो,
मत सोचो और हवा जहरी !

—धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म'

भारतवर्ष हमारा है

१—भारतवर्ष हमारा है यह, भारत वर्ष हमारा है।
यह तो हमको अपने प्राणो, से भी बढ़कर प्यारा है ॥
२—सदा रखेंगे इसकी शान, दे देंगे हम इस पर जान।
होंगे इस पर हम कुर्बान, यह प्रिय देश हमारा है ॥
३—पले इसी में थे श्रीराम, खेले इसमे कृष्ण महान्।
दिव्य महापुरुषो की खान, यह शुभ देश हमारा है ॥
४—इसका तो कण-कण पवित्र है, इसका अति उज्ज्वल चरित्र है।
मनमोहन इसका सुचित्र है, यह सर्वस्व हमारा है ॥
५—इसकी स्वतत्रता की रक्षा, इसकी अखण्डता की रक्षा।
प्राणाहुति देकर भी करना, यह शुभ धर्म हमारा है ॥
६—एक इंच भी पुण्य भूमि का, नहीं शत्रु के पास रहे।
ऐसा वीर सभी व्रत धारें, यह कर्तव्य हमारा है ॥
७—सभी स्वदेशी का व्रत धारें, इस पर तन-मन-धन सब वारें।
मिलकर इसके कष्ट निवारें, भारतवर्ष हमारा है ॥
८—इसकी सुन्दरता अनुपम है, भूतल पर इसके नहिं सम है।
धन इसका चरित्र सयम है, यह शुभ देश हमारा है।
९—हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, जैन-पारसी हम सब भाई।
सब मैं इसकी धूलि रमाई, यह शुभ राष्ट्र हमारा है ॥

—अर्चित विद्यावाचस्पति, आनन्दकुटीर, ज्वालापुर

चयनिका

—महान् व्यक्तियों मे दृढ निश्चय होता है कमजोर व्यक्ति केवल इच्छा ही करते रह जाते हैं। —कहावत

—ठोकरें सिर्फ धूलि उड़ाती हैं, जमीन से फसलें नही उगाती। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

—प्रणहीनता प्राणहीनता के समान है —स्वामी शिवानन्द

—विचार फूलो के समान है। और सोचना उनको माला मे गूँथना है' —मैडम स्वेटचीन

—दुर्बल चरित्र वाला व्यक्ति उस सरकण्डे के समान है जो हवा के हर झोके पर झुक जाता है। —माघ

—निश्चय हीन मनुष्य के लिए यह कभी नही कहा जा सकता है कि वह अपना मालिक है, वह समुद्र की एक लहर की तरह है जिसे हर झोंका इधर से उधर उठा देता है। —जानफास्टर

—आदमी को चाहिये कि वह अपना मित्र आप बने, बाहरी मित्र की खोज मे न भटके। —जैन सूत्र

—हम प्रकृति पृथ्वी से तो परिचित हैं पर अपने अन्दर के स्वर्ग से बिलकुल अपरिचित हैं। —गांधी

—हम सब शारीरिक पक्षाघात से डर जाते हैं और उससे बचने की तदबीर करते है लेकिन आत्मा को लकवा मारजाने पर किसी को परेशानी नहीं होती है। —एपिक्टेटस

—अगर आदमी सीखना चाहे तो उसकी हर भूल उसे शिक्षा दे सकती है। —अज्ञात

—उत्साह अत्यन्त बलवान है, उत्साह सरीखा कोई बल नहीं, उत्साही पुरुष को इस ससार में कुछ दुर्लभ नही ? —वाल्मीकि

—हमारी असली गरीबी यह है कि हम दूसरो को सुधारने का खूब यत्न करते हैं, अपने आपको सुधारने के लिए थोड़े से थोड़ा। —धूमकेतु

—निरुद्देश्य जीवन अकाल मृत्यु के समान है। —गेटे

—सादगी प्रकृति का पहला कदम है और कला का आखिरी। —बेली

—खुद तुम से बढ़कर तुमको कोई अच्छी सलाह नही दे सकता।

—अगर तुम्हारे पचास मित्र हैं तो वे भी कम हैं और अगर तुम्हारा एक भी शत्रु है तो वह भी अधिक है। —इटालियन कहावत

—जो अपने को अधिक ज्ञानी समझते हैं वे ही अधिक मूर्ख होते हैं। —गेटे

—विकार आग की तरह है, वह मनुष्य को आग की तरह जलाता है। —गांधी

—जो बदला लेने की सोचता है वह अपने ही घावो को हरा रखता है। —बेकन

—शान्ति बाहर की चीज से नही मिलती वह अपने अन्दर की चीज है। —गांधी

—संस्कृतिकुमारी

'और न समझना'

★

होना अधीर मत तुम, जीवन बहुत पड़ा है।
यदि कष्ट कुछ मिलें तो, उपहार ही समझना।
तप स्वर्ण आग मे ही, सुन्दर निखार पाता।
अंगार यदि मिलें तो, उपहार ही समझना।
सभी न कोई साथी, रूठें सभी सहारे।
नीरस्व यदि मिले तो उपहार ही समझना ॥
मैं हूँ वही रहूँगा, मन न बदल सकेगा।
यदि मौन ही रहूँगा, मन न बदल सकेगा।
कर्तव्य पथ निरन्तर, प्रतिपल सचेत करता।
यदि देर कुछ लगे तो, दुःस्वप्न मत समझना ॥
होती यहा चमन है, मिलती यहा तपन भी।
यदि राख ही बचे तो, अभिशाप मत समझना ॥

—देवेन्द्र शर्मा, रसौली, बाराबंकी

आर्यसमाजियों के कर्तव्य

[ले०—श्री प० कृष्णदेव जी आयुर्वेदालकार, फर्रुखाबाद]

(१) ईश्वर की प्रतिदिन उपासना करना जो कि निराकार, सर्व व्यापक आदि गुणो से युक्त है।

(२) अन्धविश्वास और रूढ़िवाद में न फसना।

(३) सस्कार विधि मे लिखित १६ सस्कारो को यथासमय करना और उन मे दी हुई शिक्षाओं को भली भाति समझ कर उन पर आचरण करना।

(४) बच्चो का पालन-पोषण इस ढग से करना कि वे जहा स्वस्थ एव सुन्दर बनें वहा वैदिक धर्म की छाप भी ऊपर उसी समय डाल दी जावे यह तभी होगा जब माता-पिता विद्वान् और धर्मात्मा होंगे।

(५) बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह को रोकना।

(६) युवावस्था में ब्रह्मचर्य, व्यायाम तथा भोजन के नियमों का दृढतापूर्वक पालन करना। इसकी उपेक्षा से भारी हानि होती है और नवयुवक का चरित्र निर्माण वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार नहीं होता।

(७) मैं देखता हू कि आजकल होटलो में मद्य, मांस और अण्डे खाने वालो की सख्या बढ रही है। मादक द्रव्य बीडी, सिगरेट, तम्बाकू की बिक्री भी बढ रही है। यह हमारे घोर पतन के चिन्ह हैं। आर्यसमाजी का कर्तव्य है इससे जम कर मोर्चा लेना और इनके विरुद्ध प्रबल जनमत तैयार करना।

(८) आर्यसमाज को मूर्तिपूजा का खडन करते एक लम्बा समय व्यतीत हो चुका है तो भी मूर्ति-पूजा बढती जाती है। इसे दूर करने के लिये निराकार ईश्वर की महत्ता का समझाना आवश्यक है।

(९) पितर पक्ष में मृतक श्राद्ध प्रति वर्ष मनाया जाता है इसके विरुद्ध भी प्रबल आन्दोलन की आवश्यकता है ताकि मृतक श्राद्ध को छोडकर जीवित माता पिता और आचार्य की सेवा, सत्कार और सम्मान करने वालो की सख्या बढे।

(१०) आर्यसमाज जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध है। गुण, कर्म और स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था को मानता है परन्तु इसके अनुसार व्यवहार नही हो पाता। इसके लिए भी उपाय करना चाहिये और प्रत्येक आर्य सभासद् को गुण, कर्म और स्वभावानुसार वर्ण देने की प्रणाली चलानी चाहिए।

(११) बेमेल विवाह बहुत होते हैं जिससे बडी हानि होती है इधर भी हमे ध्यान देना चाहिये क्योकि यह ऐसी भूल है जिससे जन्म भर पति और पत्नी को पछतावा पडता है।

(१२) दहेज की प्रथा का वेदों द्वारा बहुत खन्डन हो चुका है परन्तु व्यवहार मे रुपये का लालच सबको घेर लेता है अत ऐसे 'आदर्श विवाह' सैंकडो की सख्या मे आर्यसमाजो को करके दिखाने चाहिये जहा दहेज तो न दिया जावे लेकिन पति और पत्नी का वरण गुण, कर्म और स्वभावानुसार हो।

(१३) अछूतो का उद्धार करना लेकिन जब तक वे सुयोग्य न बन ऊँचे पद न देना।

(१४) गोरक्षा करना और उत्तम ढग से गोशालाओ का सचालन करना अपना आवश्यक धर्म समझना ताकि शुद्ध दूध जनता को प्राप्त करना सुलभ हो।

(१५) आपस मे आर्यसमाज के सदस्यों से मनोमालिन्य न रखना और प्रेम पूर्ण सद्व्यवहार करना। ईर्ष्या, द्वेष, व्यग, कटाक्ष, पक्षपात से दूर रहना।

सुझाव और सम्मतियाँ

(१६) आर्य सदस्यो के यहा दुख और सुख मे सम्मिलित होना और सेवा द्वारा अपने सम्बन्धो को दृढ करना।

(१७) विधर्मियो, ईसाई, मुसलमानों बौद्धो और पौराणिकों के विचारो मे परिवर्तन करके उनको शुद्ध करके वैदिक धर्म मे दीक्षित करना।

(१८) सामयिक राजनैतिक आन्दोलनो के सम्बन्ध में वैदिक दृष्टिकोण से विचार करना और महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो से जो प्रकाश मिले उसे सम्मुख रखकर अपने कर्तव्य का निर्णय करना।

(१९) अपने पुत्रो को आर्यकुमार सभाओं का सदस्य बनाना तथा आर्यसमाज के सत्सगो म भी उन्हे साथ ले जाना ताकि वे बाल्यकाल से ही वैदिक दृष्टिकोण को समझने लग।

(२०) सह शिक्षा अर्थात् नवयुवक और नवयुवतियों की एक साथ शिक्षा (का-एजूकेशन) जो आजकल कालेजों मे चल रही है और जिसका महर्षि दयानन्द ने विरोध किया है, डट कर विरोध करना।

(२१) स्कूलो और कालेजों में धर्म शिक्षा, सस्कृत और स्वास्थ्यवृत्त (हाइजीन) विषयों को रखवाना। इसके लिये शिक्षा मन्त्री पर पूरा जोर डालना और क्योंकि इनके बिना सुन्दर चरित्र का निर्माण नही हो सकता और स्कूलों तथा कालेजो में अनुशासन भग की जो शिकायतें प्राय सुनने मे आती है वे दूर नही हो सकती।

(२२) अग्रेजी वेशभूषा, रहन-सहन तथा खान पान को दूर करके भारतीय वेशभूषा, रहन-सहन तथा खान-पान को प्रोत्साहित करना।

(२३) चोटी तथा जनेऊ स्कूलों के तथा कालेजों के लडके प्राय धारण नहीं करते उनको ऐसे आदेश दिये जावें कि वे इन्हे धारण करें और इन्हे भारतीय सस्कृति का चिन्ह समझें।

(२४) हर एक आर्य परिवार में पच महायज्ञ और स्वाध्याय प्रतिदिन हो तथा यज्ञ के पश्चात् सुन्दर धार्मिक भजन गाये जावें तो हमारे अन्दर ईश्वर भक्ति जागृत होगी और हम पाप या भ्रष्टाचार करने से डरेंगे।

(२५) जन्म के मूर्ख ब्राह्मणों की पूजा तो न करनी चाहिये परन्तु गुण कर्मानुसार जो वेदो के विद्वान् तथा सदाचारी हो उन्ही को ब्राह्मण मानना उनका पूरा आदर सत्कार करना।

(२६) अपने घर की महिलाओ को वैदिक धर्मी बनाने का प्रबन्ध करना ताकि वे पौराणिक रूढियो मे न फस जायें तथा पाश्चात्य सस्कृति का भी अनुकरण न करने लग जावें।

(२७) ईश्वर प्रकृति और जीव के वास्तविक रूप को ठीक ठीक समझना जैसा कि न्याय दर्शन मे लिखा है।

(२८) मनुष्य जीवन का लक्ष्य धर्म अर्थ, काम और मोक्ष को समझना।

(२९) मोक्ष के ठीक रूप को समझना और इस सम्बन्ध मे फैले हुए अशुद्ध विचारो का खण्डन करना।

(३०) कांग्रेस शासन में वैदिक दृष्टिकोण से जो दोष दिखाई दें उन्हे दूर करने का सतत प्रयत्न करते रहना। इसके लिए साधारण निर्वाचन (जनरल एलेक्शन) के समय अधिक से अधिक आर्य विद्वानो को विधान सभा तथा ससद मे भेजने का प्रयत्न करना।

(३१) ऋषि कृत ग्रन्थों का निरन्तर स्वाध्याय करना और मनुष्यकृत ग्रन्थो की वही बातें मानना जो ऋषि कृत ग्रन्थों के अनुकूल हों।

(३२) गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रत्येक बच्चों को-धर्म शिक्षा आदि के आर्यसमाज के स्कूलों तथा सरकारी स्कूलों में लाने का प्रयत्न करना।

(३३) अपने परिवार को सच्चे अर्थों में आर्य बनाना अर्थात् बच्चों और महिलाओ को वैदिक धर्म की शिक्षा देकर घर को स्वर्ग बनाना तथा ईर्ष्या द्वेष और घरेलू झगडों एव मुकदमेबाजी से उन्हें छुडाना।

(३४) मुहल्ले वालों की आवश्यकता पडने पर सहायता करना।

(३५) देश की सेवा भी करना लेकिन वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार।

(३६) जब किसी विषय मे सशय हो तो उस विषय के विद्वानो से परामर्श करके उसे दूर करना।

(३७) निष्काम भाव से प्रत्येक कर्तव्य का पालन करना।

(३८) दिन चर्या और ऋतुचर्या के नियमो का आयुर्वेद के दृष्टिकोण से पालन करना।

(३९) प्रति दिन स्वाध्याय करना प्रत्येक आर्य सभासद का कर्तव्य है। इसीलिए शास्त्रकारो ने कहा है कि 'स्वाध्यायान्माप्रमद'।

(४०) कुतर्क से दूर रहना चाहिये तर्क वही तक उचित है जब तक वस्तु का ज्ञान नही हो जाता। उसके पश्चात् श्रद्धा का स्थान है तथा दृढता से उसका पालन करना चाहिये। तभी उच्च चरित्र का निर्माण होता है।

(४१) आर्य सिद्धान्तो पर लेख, कविता, निबन्धादि लिखने का भी अभ्यास करना चाहिये ताकि आर्य सिद्धान्त हमारे हृदय मे बैठ जावें।

(४२) रिश्वत, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष और मक्कारी से दूर रहना।

(४३) विषयों के पीछे न दौडना किन्तु इन्द्रियो को सयम करके अपने अनेक कर्तव्यो का सुचारुरूप से पालन करना।

(४४) पाप क्षमा नही होते बल्कि प्रत्येक कर्म का फल मिलता है इस सिद्धान्त को सर्वदा याद रखना।

(४५) रोगी होने पर भारतीय चिकित्सा पद्धति 'आयुर्वेद' को अपनाना।

(४६) आर्य और दस्यु मे भेद समझना।

(४७) स्वदेशी वस्तुओ का प्रयोग करना और विदेशी का बहिष्कार करना।

(४८) भारतीय दृष्टिकोण से खद्दर या स्वदेशी कपडा पहनना।

(४९) गणित ज्योतिष को मानना और फलित से दूर रहना।

(५०) शास्त्रार्थों को फिर प्रचलित करना और वेद विरुद्ध मतों का खण्डन करना।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सत्यार्थ प्रकाश में क्या है (२)

(श्री रामावतार आर्य, गाजीपुर)

प्रथम समुल्लास

इस ग्रन्थ का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' है जिसका अर्थ होता है—सत्य के अर्थ को प्रकाशित करने वाला ग्रन्थ। इसमें स्थल-स्थल पर इस बात की घोषणा की गई है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। सत्य और असत्य की कसौटी भी इस ग्रन्थ में विद्यमान है। इससे स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द यह चाहते थे कि प्रत्येक मनुष्य सत्य को जाने, माने और तदनुसार आचरण बनावे।

जब सूर्यास्त हो जाता है तो अंधेरा छा जाता है। उस समय प्रकाश की आवश्यकता होती है। लोग अंधेरे से बचने के लिए दीपक जला लेते हैं। लेकिन दीपक के प्रकाश और सूर्य के प्रकाश में महान् अन्तर है। दीपक का प्रकाश अत्यन्त सीमित होता है।

वह बहुत थोड़ी दूर तक जाता है। अल्पज्ञ का प्रकाश अल्प शक्ति वाला होता और सर्वज्ञ का सर्वशक्ति सम्पन्न जब वेद विद्या का तिरोभाव होने लगा तो नाना-मत-मतान्तर चल पड़े। अन्धकार में ये दीपक का कार्य कर रहे थे सूर्य के प्रकाश की तुलना नहीं कर सकता। ये सभी मतमतान्तर मनुष्यो के चलाये हैं। अगर इन सबके सिद्धान्तों को लेकर एक तीसरा सिद्धान्त बनायें तब भी वह अत्यन्त त्रुटिपूर्ण होगा और वेद के हजारहवें भाग के बराबर भी नही होगा।

हम यात्री हैं, रथ पर सवार हैं कहीं जाना है। मार्ग अनजान, कटकाकीर्ण और कठिनाइयो से आवृत है। मार्ग मे प्रकाश चाहिये। इन टिमटिमाते दीपको से काम नही चलेगा। हल्की हवा के झोंकों में ये बुझ जायेंगे। हमे सूर्य (वेद) का प्रकाश चाहिए। समय बहुत कम है जिस रथ पर हम बैठे हैं, उस रथ से एक दिन उतरना होगा। बिना मंजिल पर पहुंचे यदि उतर गये तो इस रथ की सवारी महंगी पड़ेगी।

इस ग्रन्थ के अन्दर उसी प्रकार का वर्णन है, जिसके प्रकाश मे हम अपने जीवन की यात्रा पूरी कर सकते हैं।

प्रथम समुल्लास 'ओ३म्' नाम की व्याख्या से प्रारम्भ होता है और ओ३म् शब्द पर ही समाप्त होता है। इसके अन्दर ऋषि दयानन्द ने ईश्वर के सौ नामो की व्याख्या की है और यह दिखाया है कि वेदों मे आने वाले ओ३म्, विष्णु, गणेश, महादेव, शंकर आदि सभी नाम परम पिता परमात्मा के हैं, अन्य के नहीं। इसलिये उसी परमात्मा की स्तुति प्रार्थना और उपासना करनी चाहिये।

इसका तात्पर्य यह नहीं कि ईश्वर के केवल सौ नाम हैं। उसके असंख्य नाम हैं क्योंकि उसके गुण, कर्म, स्वभाव असंख्य हैं। सौ नामों की व्याख्या के पश्चात् ऋषि ने लिखा है—

"ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं। परन्तु इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं, क्योंकि जैसे परमेश्वर के असंख्य गुण, कर्म, स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम भी हैं उनमें से प्रत्येक गुण, कर्म, स्वभाव का एक-एक नाम है। इससे ये मेरे लिखे नाम समुद्र के सामने बिन्दुवत् हैं क्योंकि वेदादि शास्त्रों मे परमात्मा के असंख्य गुण, कर्म, स्वभाव व्याख्यान किये हैं।"

उपर्युक्त कथन से इस प्रश्न का जवाब मिल गया कि ईश्वर को क्यो भिन्न भिन्न नामो से पुकारते हैं। इसको और स्पष्ट करने के लिए एक छोटा सा उदाहरण दे रहा हूं। मान लीजिए उमाशंकर गाजीपुर आर्यसमाज के मन्त्री हैं। कुछ लोग उनको उमाशंकर कहते हैं। कुछ लोग मन्त्री जी कहते है। कुछ लोग प्रधान जी कहते हैं, क्योंकि ग्रामसभा के प्रधान भी हैं। कुछ लोग मुनीम जी कहते हैं। इसलिए कि मुनीम का काम करते हैं। उनका पुत्र उन्हे पिताजी कहता है। पत्नि उन्हे पतिदेव कहती है। बहन भैया कहती है। मा उन्हे बेटा कहती है। इस प्रकार आप विचार करें कि उमाशंकर एक व्यक्ति है लेकिन उसे मन्त्री जी प्रधान जी, मुनीम जी, बेटा, पिता भाई और पतिदेव के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसलिये कि उसके भिन्न भिन्न गुण, कर्म, स्वाभाव हैं और प्रत्येक गुण, कर्म,स्वभाव के लिए एक-एक नाम सम्बोधित किया जाता है। ठीक यही बात ईश्वर के सम्बन्ध मे भी है।

अब इस बात पर विचार करना चाहिये कि इन सौ नामो की व्याख्या करने से क्या लाभ हुआ। सबसे पहला लाभ तो यह हुआ कि वेदो मे गणेश, शंकर, लक्ष्मी, विष्णु, महादेव आदि देवताओ का नाम है—यह भ्रम दूर हो गया। दूसरा लाभ यह हुआ कि व्याख्या के बीच मे कुछ ऐसे शब्द आ गये जिनसे बहुत बड़ा भ्रम दूर हो गया। जैसे सगुण और निर्गुण शब्द। ऋषि दयानन्द के पूर्व सगुण और निर्गुण इन दो शब्दो को साकार और निराकार अर्थ मे प्रयुक्त किया जाता था। परन्तु ऋषि दयानन्द ने जब इसकी व्याख्या की तो इसका वास्तविक अर्थ प्रकाश में आया। सगुण का अर्थ है—गुणो से युक्त और निर्गुण भी है। क्योंकि वह सृष्टि रचने, पालन करने, दयालुता, सर्वशक्तिमत्ता आदि गुणो से युक्त है इसलिए वह सगुण हुआ। परन्तु वह दुःख, पीडा, मृत्यु, जन्म आदि गुणो से रहित है। ईश्वर रोता नहीं, उसे भूख नही लगती, उसे कष्ट नही होता। ये सब गुण उसके अन्दर नहीं है इसलिए वह निर्गुण है। ऋषि दयानन्द ने लिखा कि ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो सगुणता और निर्गुणता से पृथक हो। मैं जिस कलम से लिख रहा हू वह सगुण भी है और निर्गुण भी। इसके अन्दर लिखने का गुण है लेकिन यह मुख से बात नहीं करती, इसके अन्दर बोलने का गुण नही है। अतः वह निर्गुण है।

वेदों का यथायोग्य अर्थ समझने में एक दिक्कत होती है। इसी कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अग्नि, वायु, जल, विराट्, भूमि आदि शब्द कही-कही ईश्वर के लिये प्रयुक्त हुए हैं और कहीं-कहीं लौकिक पदार्थों के लिये। फिर कैसे ठीक-ठीक अर्थ निकालें? ऋषि दयानन्द ने इस प्रश्न का बहुत अच्छा समाधान किया है। उन्होने बताया है कि वेदो का अर्थ समझने के लिए मुख्य रूप से दो बातो का ध्यान रखना रखना चाहिये। पहला प्रकरण और दूसरा विशेषण। जहाँ जैसा प्रकरण हो वहा वैसा अर्थ करना चाहिए। जैसे मुखादग्निरजायत (यजु ३१।१२) मुख से अग्नि उत्पन्न हुआ। यहाँ उत्पत्ति का प्रकरण है। इसलिये लौकिक अग्नि का अर्थ ग्रहण करना होगा। अगर बिना प्रकरण समझे यह अर्थ कर द कि मुख से ईश्वर उत्पन्न हुआ तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा।

अब विशेषण के सम्बन्ध मे विचार कीजिये। ऋषि दयानन्द ने लिखा है—'जहां-जहां सर्वज्ञादि विशेषण हो वहाँ-वहाँ परमात्मा और जहाँ जहां इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और अल्पज्ञादि विशेषण हो वहाँ वहाँ जीव का ग्रहण होता है।' इसको समझाने के लिये अग्नि शब्द का ही एक दूसरा उदाहरण दे रहा हू।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
(ऋग्वेद १।१८९।१)

इसमे भी अग्नि शब्द आया है। लेकिन इसका एक विशेषण है। विश्वानि वयुनानि विद्वान्। जिसका अर्थ है समस्त ज्ञानो का भण्डार। अर्थात् वह अग्निदेव समस्त ज्ञानो का भण्डार है। इसीलिये उपासक उससे मार्ग प्रदर्शन करने की प्रार्थना करता है। चूंकि सर्वज्ञ विशेषण है इसलिये हम 'अग्नि' का अर्थ ईश्वर करेंगे।

ग्रन्थ के आदि में क्या लिखना चाहिए

ग्रन्थ के आदि में लोग मंगलाचरण लिखते हैं। जैसे गणेशायनम। परन्तु इसे मंगलाचरण नही कहते। 'मंगलाचरण शिष्टाचारात् फलदर्शनाछ्रुतितश्चेति।' यह सांख्य शास्त्र (अ० ५।सू० १) का वचन है। इसका यह अभिप्राय है कि जो न्याय, पक्षपात रहित, सत्य, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा है उसी का यथावत् सर्वत्र और सदा आचरण करना मंगलाचरण कहलाता है। ग्रन्थ के आरम्भ से लेके समाप्तिपर्यंन्त सत्याचार करना ही मंगलाचरण है, न कि कहीं मंगल और कही अमंगल लिखना।' (प्रथम समुल्लास)

इससे स्पष्ट है कि मंगल अर्थात् कल्याण करने वाला आचरण करना ही मंगलाचरण कहलाता है। सत्य बोलना, परोपकार करना, दीन दुखियो की सेवा करना, मंगलाचरण के विपरीत चोरी करना, बोलना. किसी प्राणी को दुःख देना अमंगलाचरण है।

पुस्तक के आदि मे 'ओ३म्' या 'अथ' शब्द लिखना वैदिक परम्परा है। प्रथम समुल्लास के अन्त में ऋषि ने पर्याप्त प्रमाण देकर इसे स्पष्ट किया है। कम से कम वैदिक साहित्य के लेखको को इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने ऋषियो की इस परम्परा का पालन किया है। प्रत्येक ग्रन्थो के आरम्भ मे 'ओ३म्' और प्रकरण के आरम्भ मे 'अथ' शब्द मिलेगा। 'सत्यार्थ प्रकाश' का ही उदाहरण ले लीजिये। प्रथम समुल्लास से लेकर चौदहवे समुल्लास तक देख जाइये, सब में 'अथ' शब्द मिलेगा। जैसे 'अथ सत्यार्थप्रकाश' 'अथ द्वितीय समुल्लासारम्भ' 'अथ शिक्षा प्रवक्ष्याम' 'अथ चतुर्दश समुल्लासारम्भ' 'अथ यवनमत विषय समीक्षिष्यामहे।' इत्यादि।

हम आर्य लोग किसी मन्त्र का उच्चारण करने के पूर्व ओ३म्' शब्द का उच्चारण करते है। लेकिन कुछ लोग हरि ओ३म् शब्द का उच्चारण करते हैं। यह पौराणिक प्रथा है। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि वेदादि शास्त्रो मे 'हरि' शब्द कही नही आया है। अत वैदिक संस्कृति से प्रेम रखने वाले लोगो को दो बातें हमेशा याद रखना चाहिए। किसी मन्त्र का उच्चारण करने के पूर्व 'ओ३म्' शब्द का उच्चारण करना न भूले और दूसरी बात पुस्तक के आदि मे 'ओ३म्' शब्द अवश्य लिखें।

विचार-विमर्श

अकाल मृत्यु के सम्बन्ध में

[ले०—वैद्य राजबहादुर आय स रा]

दिनांक २२ मई ६६ के अङ्क में आर्य समाज के वयोवृद्ध दार्शनिक विद्वान् श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय जी का एक लेख 'अकाल मृत्यु शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। उपाध्याय जी ने सिद्ध किया है कि काल मृत्यु मे न तो उपादान कारण है और न निमित्त कारण। उपाध्याय जी के इन विचारो से मैं सहमत हू कारण कि काल वैशेषिक दर्शन मे कहे नौ द्रव्यो मे से एक द्रव्य है जो क्रिया रहित है। वैशेषिक दर्शन में जहाँ पृथिव्या उपस्ते जो वायुराकाश काल दिग्यात्मा मन इति द्रव्याणि मे नव द्रव्य दिखाये हैं वहा अकाल काल, एव दिशा यह तीन द्रव्य क्रिया से रहित माने गये हैं, इसलिये काल का मृत्यु से इस प्रकार का सम्बन्ध न होना ठीक प्रतीत होता है। किन्तु एक खास बात जिससे कि उलझन बिल्कुल सुलझ जाती है सिद्ध नही की कि आयु क्या है यद्यपि योग दर्शन के प्रमाण से उपाध्याय जी यह साबित करते हैं कि आयु पूर्वजन्म कृत कर्म का फल है जैसा कि लिखा है सति-मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोग ' अर्थात जाति आयु और भोग कर्म के विपाक से सम्बन्ध रखते है किन्तु जैसे आप जाति से मनुष्य पशु पक्षी आदि जाति और सुख दुख से मनुष्य की सुविधायें या असुविधायें आदि मानते हैं उसी प्रकार आयु की परिभाषा नही की कि आयु क्या है ?

चाणक्य नीति मे भी एक श्लोक आता है जिसमे कहा है कि—

आयु कर्मञ्च वित्तं च विद्या निधन मेवच-
पचैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिन।

चा० नी० अ० ४।१

अर्थात् आयु कर्म धन, विद्या और मरण ये पाचो जब प्राणी गर्भ में आता है तभी पैदा हो जाते हैं। अत इस प्रमाण से भी यह सिद्ध है कि आयु कर्म के अनुसार ही मिलती है। पर प्रश्न यह है कि आयु है क्या ? आगे चलकर उपाध्याय जी लिखते हैं कि बहुत से मनुष्य प्राण (श्वास) को आयु मानते हैं किन्तु प्राण दस हैं और वह शारीरिक कार्यों में सहयोग देने के लिए है इस भांति श्वास के रूप मे आयु का होना उपाध्याय जी नही मानते हैं। यहा मेरा उपाध्याय जी से मतभेद है, कारण कि उपाध्याय जी जो दस प्राण मानते हैं उनमें मुख्य प्राण श्वास ही है, इस एक के होने से यह सब हैं और इस एक के निकल जाने पर अन्य नौ किसी काम के नही और उनका शरीर मे अपना पृथक-पृथक् स्थान है जैसे श्वांस कंठ में उदान हृदय मे समान उदर (जठराग्नि में) अपान नाभि में और ५ वा व्यान सारे शरीर में काम करता है, इसके अतिरिक्त इसी प्रकार नागे के पांच नाम कूर्म आदि हैं जो मनुष्य के करवट बदलने आदि क्रियाओ मे सहायक हैं। पर इससे श्वास को आयु मानने में कोई बाधा नही होनी चाहिये।

यहा मैं ऐसा मानता हू कि आयु श्वास के रूप मे ही होती है और यह बात मेरी मनगढन्त नही है किन्तु यह उप० जैसे ग्रन्थ द्वारा प्रमाणित है तत्ति० उप० में एक स्थल पर आता है प्राणो हि भूतानामायु ' तैत्ति उप० ब्रह्म वल्ली अनुवाक ३ अर्थात प्राण (श्वास) सारे जन्तुओ का आयु है।

इस प्रमाण के आधार पर मै यह कहने का अधिकारी हू कि प्राण श्वास ही जीवो की आयु है। और यदि यह न मानें तो फिर ऐसी कौन सी वस्तु है जो आयु की परिभाषा बन सकती है। फिर एक समस्या और है कि आयु घटने बढने वाली मानी गई है अर्थात् कहावत है कि सदाचारी अधिक जीता है दुराचारी कम ब्रह्मचारी अधिक जीता है व्यभिचारी कम आयुर्वेद व शास्त्र बतलाते हैं कि अमुक औषधि के सेवन से आयु बढ जाती है चरक नाम के आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ मे एक स्थल पर आता है कि पौष मास की अमुक रात्रि में मनुष्य आंवले के वृक्ष पर चढ जावे और आंवले तोडकर खावे तो जितने आंवले तोड़कर खावेगा उतने ही वर्षों की आयु अधिक हो जावेगी। एव जीवेम शरद शतम् की प्रार्थना हम नित्य करते ही हैं यदि आयु को श्वास के रूप मे न मान कर दिनरात के रूप मे माना जावे तो क्या अधिक जीने वाले के लिए अधिक लम्बे और अल्पायु वाले के लिए छोटे हो जावेंगे। आयु ही ऐसी चीज हो सकती है कि उसे बढाकर अधिक दिनो तक रखा जा सके।

अब यहा एक युक्त हो सकता है कि क्या आयु की कोई तोल नाप नहीं जबकि वह किसी कर्म का फल है तो क्या उसकी कोई सीमा है जब उसे लम्बा किया जा सकता है क्योंकि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है जैसे एक पिता अपने पुत्र को पाच हजार रुपया देता है पर लडका उनके उपयोग मे स्वतन्त्र है। चाहे ईमानदारी से कोई काम कर उनके आठ हजार कर ले च हे जुआ आदि किसी दुष्ट कर्म के द्वारा बीस वर्ष की अपेक्षा उसे आठ वर्ष में व्यय कर दे इसी प्रकार आयु के भोग में वह स्वतन्त्र है चाहे सदाचारी सात्विको होकर अधिक दिनो तक उस आयु को ले जावे और चाहे दुष्ट दुराचारी बनकर उसी आयु रूपी मिली सम्पत्ति को थोडे दिन में नष्ट कर दे सुनने में भी आता है कि दिन में सोने वाला अल्पायु होता है क्यों ?

इस सम्बन्ध मे एक किंवदन्ती है कि—

बैठ बारह चले अठारह सोवत में बत्तीस, मैथुन कर्म मे चौंसठ लागे यह भाखे जगदीश।

अर्थात् स्वस्थ मनुष्य बैठा हुआ एक मिनट मे १२ श्वास लेता है वही चलता हुआ १ मिनट मे १८ और सोते में ३२ श्वासो का भोग करता है तभी यह कहावत है कि अधिक सोने से आयु कम हो जाती है। व्यभिचारी की श्वासो का हिसाब ऊपर आ चुका है। अब मृत्यु के प्रकारो पर भी दृष्टि डालिये।

कि जहाँ एक व्यक्ति एक रोग से मर जाता है दूसरा उसी से मुक्त होकर स्वस्थ हो जाता है।

कुएं में गिरने से रेल से कट जाने पर लाठी या बन्दूक की गोली लगने पर जहाँ लोगो की मृत्युए हो जाती हैं वहा साथ ही इन सबसे हुए भी देखे जाते हैं इसका अर्थ यह है कि जहाँ यह घटनाए जीवन अवधि समाप्ति के लिये घटी वहाँ मृत्यु हो गई और जिनकी आयु या भोग संसार में शेष रहे वहा इन घटनाओं के घटते ही लोग इन सब से बचते देखे जाते हैं एक मोटर दूसरी किसी गाडी आदि से टकराती है उसमें बैठे हुए कुछ मनुष्य मरते कुछ जीवित रहते हैं, जिनकी जीवन अवधि समाप्त है वही मरते हैं अन्यथा वहीं जिसका परमात्मा रक्षक है बाल न बांका कर सके जो जग बैरी होय।'

एक आदमी सौ वर्ष का होकर मरता है दूसरा साठ का तीसरा बीस का चौथा पाच वर्ष और कोई ६ मास का कोई दो दिन का और कोई दो घटे का होकर ही जीवन लीला समाप्त कर लेता है बिना किसी घटना के ही इससे यही साबित हुआ कि उनकी जीवन लीला समाप्त हो चुकी और उन्हें आयु बढाने के लिये उचित साधन नहीं मिल सके हम अपने बडे बूढ़ों की आयु अपने से अधिक पाते हैं क्योंकि वह हमारी अपेक्षा अधिक सात्विकी और सदाचारी रहे। अत मैं उपनिषद के प्रमाण पर विश्वास कर प्राण (श्वास) के रूप में ही आयु मानता हू तथा एक बात और लिखकर लेख समाप्त करता हू कि आर्य समाज के दिवंगत किन्तु जाने हुए सन्यासी महा० नारायण स्वामी जी महाराज अपने योग रहस्य के पृष्ठ २६ २७ पर जहाँ कि एक तालिका प्राणियों के श्वास लेने की दी है वहा सिद्ध किया है कि प्राणायाम करने से आयु बढ़ जाती है और मेढक का एक उदाहरण दिया है कि वह एक मिनट मे केवल ३ श्वास लेने के कारण ११० वर्ष तक जीवित रह सकता है और ऐसा मानने से अकाल मृत्यु होती है कि नहीं इसका निपटारा हो जाता है। यह मैंने थोडे से शब्द मान्यवर उपाध्याय जी के लेख पर लिखे, आशा है अन्य विद्वान् भी इस सम्बन्ध मे प्रकाश डालने का कष्ट करेंगे।

●

निवेदन

किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय व मनीआर्डर भेजते समय ग्राहक अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें।

—व्यवस्थापक आर्यमित्र
लखनऊ

आवश्यकता

आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर के अन्तर्गत नियाशाक आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय अजमेर के लिए ट्रेंड ग्रेजुएट्स प्रधानाध्यापिका की आवश्यकता है। आर्य विचारों वाली प्रधानाध्यापिकाओ को प्राथमिकता दी जावेगी वेतन राजस्थान सरकार के नियमानुसार दिया जायेगा ताराचन्द मन्त्री,

आर्यसमाज शिक्षा सभा
अजमेर

राजनैतिक समस्याएं

भारत और कुछ अन्य देशों में अवमूल्यन

[ले०—एक अर्थ शास्त्री]

[क्या अवमूल्यन किसी देश के आर्थिक विकास और स्वावलम्बी बनने के प्रयत्नों में हार की निशानी है ?]

जिन कुछ देशों में हाल के वर्षों मे असाधारण आर्थिक प्रगति की है और अपनी मुद्रा का अवमूल्यन नहीं किया है, उनके उदाहरण से शायद उपरोक्त प्रश्न का उत्तर कुछ लोग हां में दें। अमेरीका के डालर की स्थिति अन्य देशों की मुद्रा की तुलना में दृढ रही है। जापानी येन का मूल्य विदेशो में पिछले १३ वर्षों में अपरिवर्तनीय रहा है। १९६१ मे जर्मनी ने अपने मार्क का विनिमय मूल्य कुछ बढ़ाया, यह अवमूल्यन नहीं था।

इन उदाहरणो के आधार पर कुछ लोग विनिमय दर की स्थिरता और आर्थिक विकास मे आवश्यक सम्बन्ध जोड सकते हैं। किन्तु वास्तव मे ऐसा कोई सम्बन्ध जरूरी नही।

जो देश अपनी मुद्रा के विदेशों मे मूल्य को घटा लेता है वह एक अन्य देश से, जो अपनी मुद्रा के विनिमय मूल्य मे कोई परिवतन नही करता, आर्थिक विकास की एक सी स्थिति में, ज्यादा तेजी से प्रगति कर सकता है भारत और पाकिस्तान को ही ल भारत ने स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद, सितम्बर, १९४९ मे डालर की तुलना में अपने रुपए का अवमूल्यन किया उस समय पाकिस्तान ने भी ऐसा करने के उपाय पर विचार किया, लेकिन वैसा करना ठीक नही समझा। किन्तु जुलाई, १९५५ मे पाकिस्तान ने अपने रुपए का अवमूल्यन किया और उसे अमरीका के २१ सेंट के बराबर कर दिया। भारत ने भी ६ साल पहले अपने रुपए का मूल्य अमरीका डालर की तुलना में इसी स्तर पर किया था।

अब हम यह देखें कि इन ६ वर्षों में भारत और पाकिस्तान ने कैसी प्रगति की।

संयुक्त राष्ट्र संघ की अक सकलन सांख्यिकी के अनुसार भारत के राष्ट्रीय उत्पादन का सूचक अक १९४८ को आधार १०० मानकर १९५० में ७६ और १९५५ में ९० था। अर्थात् भारतीय रुपए के अवमूल्यन के बाद ६ वर्षों में भारत का राष्ट्रीय उत्पादन १८.४२ प्रतिशत बढा। इसी पुस्तक के अनुसार पाकिस्तान के राष्ट्रीय उत्पादन का सूचक अक १९५० में ८५ और १९५५ में ९२ था। अर्थात् पाकिस्तान का राष्ट्रीय उत्पादन उन ६ वर्षों में ८.२३ प्रतिशत ही बढा, जिन वर्षों में उसने अपनी मुद्रा का अवमूल्यन नही किया था।

ब्रिटेन मे १९४९ मे अपने पौंड के अवमूल्यन किया गया। जवाहरलाल नेहरू ने भी उस समय देश के नाम रेडियो सदेश में कहा था कि भारत के लिए इसी प्रकार की कारवाई करना जरूरी है, ताकि हम अपना निर्यात का स्तर बनाए रखें जो अधिकाश रूप में उस समय स्टर्लिंग वाले देशो को होता था। उन्होंने यह भी कहा था कि इसके अलावा डालर रुपए के अनुपात में परिवर्तन करने से डालर वाले देशों को भी हमारा निर्यात बढ़ सकता है।

भारत की तरह ब्रिटेन ने भी अवमूल्यन के बाद ज्यादा मजबूती से आर्थिक प्रगति की। ब्रिटेन के राष्ट्रीय उत्पादन का सूचक अक १९५० में ८६ से १९५५ मे बढकर ९८ हो गया और तब से वह बढ ही रहा है। १९४९ में पश्चिम यूरोप के अनेक देशो ने पौंड स्टर्लिंग के साथ आने में अपनी मुद्राओ का अवमूल्यन किया तब से उनकी अर्थव्यवस्था भी सुधरती ही जा रही है।

दिसम्बर, १९५८ में फ्रांसीसी मुद्रा फ्रांस के अवमूल्यन का उदाहरण भी उल्लेखनीय है। विनिमय मूल्य में यह सुधार जनरल दि गाल ने किया, जो दूसरे महायुद्ध के बाद फ्रांस के राजनीतिक और आर्थिक पुनर्जागरण के प्रतीक बन चुके हैं।

फ्रांक के ८ अवमूल्यन से पहले एक के बाद एक फ्रांसीसी सरकारो ने भुगतान के सतुलन को ठीक करने के लिए अवमूल्यन को छोडकर अन्य अनेक उपाय किए राष्ट्रीय स्वर्ण ऋण जो हमारी स्वर्ण बाड योजना की तरह की थी, आयात पर शुल्क में वृद्धि और निर्यात होने वाली चीजों को सहायता। भारत की तरह फ्रांस मे भी अवमूल्यन के ये विकल्प अपर्याप्त पाए गए।

जनरल दि गाल ने जब अवमूल्यन का निश्चय किया, तो उन्होंने इसके साथ ही अन्य बहुत से उपाए किए और ये उपाय भी वैसे ही थे, जैसे हमारे वित्त मन्त्री ने ५ जून को घोषित किए है। फ्रांस ने आयात म ढील दी और निर्यात को दी जाती कृत्रिम सहायता हटा ली। फ्रांस ने अपनी मुद्रा की विनिमय की दर मे जो सुधार किए उससे अनेक मित्र देशो ने फ्रांस को बहुत मात्रा मे ऋण दिए।

दिसम्बर, १९५८ के अवमूल्यन के बाद फ्रांस की अर्थ व्यवस्था कभी नहीं पिछडी। फ्रांस का विदेशी मुद्रा का कोष १९५८ म लगभग १ अरब डालर से बढकर १९६५ के अत मे ६ अरब डालर से भी अधिक का हो गया। एक अन्य देश ने, और वह एक समाजवादी देश है, जिसने अवमूल्यन को अपने आर्थिक सुधार का माध्यम बनाया है, वह है यूगोस्लाविया।

१९५१ मे इस देश के सामने चीजो के दाम बहुत बढ जाने के कारण बडी कठिनाइयां आई। १९४८ से कमिनफार्म के देशो ने यूगोस्लाविया की अर्थव्यवस्था पर अनेक दबाव डाल रहे थे, जिनसे इनकी कठिनाइयां और बढ गई। मार्शल टीटो की सरकार ने अपने दीनार का विनिमय मूल्य अन्य देशों की कीमतो के अनुपात मे लाना जरूरी समझा। अत जनवरी, १९५२ मे दीनार का अवमूल्यन किया गया और १ डालर के बराबर ३०० दीनार कर दिए गए, जबकि पहले केवल ५० दीनार होते थे।

दिसम्बर, १९६० मे यूगोस्लाविया ने विनिमय मूल्य मे एक और सुधार किया। विनिमय की एक समान दर लागू की गई और एक अमरीकी डालर के बराबर ७५० दीनार किए गए, जबकि पिछले वर्षो मे विनिमय की अनेक दरें कायम हो गई थी। सरकारी तौर पर एक अमरीकी डालर की कीमत ३०० दीनार थी, जबकि कुछ जिन्सों के निर्यात के लिए एक अमरीकी डालर १५०० दीनार तक के बराबर माना जाता था। अभी हाल में, पिछले साल जुलाई मे यूगोस्लाविया को अपनी मुद्रा का फिर अवमूल्यन करना पडा और एक अमरीकी डालर १२५० दीनार के बराबर हो गया। इन सुधारों के साथ-साथ यूगोस्लाविया की सरकार ने निर्यात की चीजो के उद्योगो को सहायता देनी बन्द कर दी और विदेशी व्यापार पर से जटिल प्रशासनिक नियन्त्रणो को भी ढीला कर दिया। इन सुधारो को कारगर बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और अन्य स्थानो से विदेशी ऋण लिए गए।

अब आप देखेंगे कि यूगोस्लाविया में अवमूल्यन और इससे सम्बन्धित उपायों का ढांचा वैसा ही था जैसा १९५८ मे फ्रांस का, अर्थात् निर्यात के लिए कृत्रिम सहायता का उठ या जाना, विदेशी व्यापार पर नियन्त्रणो मे ढील और एक नई वास्तविक और दृढ ढांचे की अर्थव्यवस्था का विकास करने के लिए मित्र देशो और बैंकों से सहायता लेना। आज हम भी भारत मे इसी प्रकार के सुधार कर रहे हैं और विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय विकास सस्था और भारत सहायता सघ के अन्य देशो से पर्याप्त सहायता की अपेक्षा कर रहे हैं।

यद्यपि विदेशी सहायता से देश का आर्थिक विकास करना आसान हो जाता है, लेकिन अवमूल्यन मूलरूप से विदेशी सहायता पर निर्भरता को समाप्त करने का एक उपाय है। इससे देश से निर्यात होने वाली चीजो को विश्व के बाजारों में टिकाऊ बनाने मे मदद मिलती है, जिससे देश आत्मनिर्भर हो सकता है। इस काम म अवमूल्यन तभी सफल हो सकता है, जबकि इसके बाद देश मे ऊंचे दर्जे का आर्थिक अनुशासन भी बरता जाए। उदाहरण के लिए यूगोस्लाविया मे अवमूल्यन के बाद महगाई रोकने के लिए उत्पादकता बढाने और प्रशासन मे किफायत करने को सर्व प्रथम राष्ट्रीय कार्य मानकर काम किया गया।

सोवियत रूस ने भी जहा मूलरूप से विदेशी व्यापार माल के बदले माल ले देकर किया जाता है, अपनी अदृश्य कमाई बढाने के लिए एक बार अपनी मुद्रा का अवमूल्यन किया। १९५० से, जब रूबल की कीमत स्वर्ण के आधार पर तय की गई, सरकारी तौर पर विनिमय की दर १ अमरीकी डालर के बदले ४ रूबल थी। मार्च १९५७ में यह घोषणा की गई कि अमरीकी डालरों और अन्य विशिष्ट विदेशी मुद्राओं को रूबल में बदलने पर १५० प्रतिशत तक के प्रीमियम दिए जाएंगे।

१ जनवरी, १९६१ को एक नया "भारी" रूबल चालू किया गया, जो पुराने १० रूबलों के बराबर था। वैसे विदेशो में इस नए रूबल का विनिमय मूल्य स्वर्ण के आधार पर घटा दिया गया। इसका मूल्य ९८७ मिलीग्राम

स्वर्ण रखा गया, जो पिछले स्वर्ण के ९२२ मिलीग्राम के मूल्य का १० गुना नहीं था।

अब हम यह देख चुके हैं कि बहुत से देश अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करने के बाद अपनी अर्थ-व्यवस्था को दृढ़ बनाने में सफल हुए। लेकिन यह नहीं समझना चाहिए कि अवमूल्यन अपने आप में किसी देश के भुगतान के सन्तुलन को निश्चित रूप से सुधार ही देगा। उत्पादन और निर्यात को बढ़ाने के लिए एक नया और वास्तविक आधार देने के लिए यह जरूरी है कि देश में राजनीतिक स्थिरता हो और बजट का बड़ी चतुराई और सावधानी से प्रबन्ध किया जाए।

इन्दोनेशिया एक ऐसा उदाहरण है, जिसे अवमूल्यन से अर्थ व्यवस्था सुधारने में सफलता नही मिली। दिसम्बर, १९४९ में इन्दोनेशिया को स्वतन्त्रता मिली और पहली बार फरवरी, १९५२ इन्दोनेशिया के रुपया का अवमूल्यन किया। १ अमरीकी डालर के बराबर ११४ रुपये थे, जबकि अवमूल्यन के बाद यह दर एक डालर के बराबर ३१·७२ रुपया हो गई। लेकिन इस अवमूल्यन से इन्दोनेशिया की अर्थ-व्यवस्था मजबूत नहीं हो पाई। कई वर्षों तक सेना पर भारी खर्च और अन्य अनुत्पादक खर्च से इन्दोनेशियाई रुपया की कीमत घट गई। देश मे इतनी महंगाई हो गई थी कि पिछले साल दिसम्बर में फिर अवमूल्यन किया गया और तब विनिमय की दर १ अमरीकी डालर के बराबर १० हजार रुपया कर दी गई। इस घटती हुई कीमत पर जरा गौर कीजिए—कहां १९५२ के ३२ रुपया और कहां अब के १० हजार रुपया। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेने का प्रश्न ही नही उठता था क्योंकि जनवरी, १९६५ मे संयुक्त राष्ट्र संघ से निकलने के बाद इन्दोनेशिया अगस्त मे इस कोष से भी अलग हो गया था।

अब इस प्रश्न का—क्या अवमूल्यन किसी देश के आर्थिक विकास के प्रयत्नों मे हार की निशानी है—इसका उत्तर स्पष्ट है कि यह जरूरी नही ऐसा हो ही। इसके विपरीत अवमूल्यन आर्थिक कठिनाइयों पर विजय पाने और आत्म-निर्भर बनने के लिए दृढ़ आधार भी बन सकता है। वास्तव में प्रश्न यह है कि—क्या रुपए के वर्तमान अवमूल्यन से भारतीय अर्थ-व्यवस्था को प्रगतिशील करने मे वैसी मदद मिलेगी जैसी १९४९ के अवमूल्यन के बाद मिली और जो प्रगति ब्रिटेन फ्रांस और यूगोस्लाविया ने की, जिनके उदाहरणों का हमने सर्वेक्षण किया है। क्या इन्दोनेशिया की तरह अवमूल्यन से बढ़ती हुई महंगाई में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा?

भारत मे राजनीतिक स्थिरता रहे सार्वजनिक और निजी खर्च को उत्पादक कार्यों मे लगाने का दृढ़ संकल्प हो और विदेशों से जो सद्भावना और सहायता हमे मिल सकती है, इन सबके आधार पर उक्त प्रश्न के उत्तर के बारे मे कोई संदेह नहीं हो सकता।

★

क्या आप आर्यसमाजी हैं ?

(श्री धर्मदत्त जी आनन्द प्रचारक सभा, अराष्ट्रीय प्रचार निरोध कुमायूँ क्षेत्र)

यह एक प्रश्न है, उन पुरुषों महिलाओं युवकों और वृद्धों के सम्मुख! जो अपने को सकोच छोड़कर आर्यसमाजी कहने में गर्व का अनुभव करते हैं।

सचमुच आर्यसमाजी बनने या कहने में प्रत्येक नर-नारी युवक वृद्ध को गर्व का अनुभव होना भी चाहिये। क्योंकि आर्य कहते हैं श्रेष्ठ, सदाचारी, धर्मात्मा, उदार, न्यायप्रिय, सत्यवादी आदि उत्तम गुणों से युक्त व्यक्ति को उपर्युक्त गुणों से युक्त व्यक्तियों के समूह का नाम ही आर्यसमाज है, ऐसे सुन्दर समाज के सदस्य को ही आर्यसमाजी कहते हैं, अत अपने को आर्यसमाजी कहने मे गर्व का अनुभव होना ही चाहिये। फिर भी! उपर्युक्त प्रश्न आपके सम्मुख है "क्या आप आर्यसमाजी हैं?

आर्यसमाजी हैं ?

इस प्रश्न को आप साधारण न समझें! यह एक दिव्य प्रश्न है, जो कि
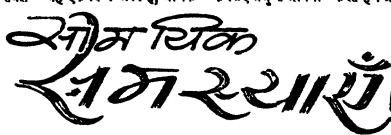
आपकी आत्मा को उदबुद्ध करता है, आपके हृदय और मस्तिष्क को झिंक-झोरता है आपको अपने आर्य कर्तव्यों को करने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। क्या आप आर्यसमाजी हैं? इस प्रश्न के साथ जितनी भी बातें पूछी जा सकती हैं, उनमे से कुछ मैं पूछता हू आप उनका उत्तर अपने आपको ही दे दीजिये।

१—आपने अपने अब तक के जीवन में आर्यसमाज की उन्नति के लिए क्या कार्य किया? यह स्वाभाविक है कि व्यक्ति जिस संस्था से सम्बन्धित होता है उसकी उन्नति के लिए कुछ करना भी है भले ही उसको अपने अन्य कार्यों से काटकर समय निकालना पड़े।

इसीलिये पहली बात मैं आपसे पूछता हू कि आपने अपने अब तक के जीवन मे (जब से आप आर्यसमाज के सदस्य बने) आर्यसमाज की उन्नति के लिए क्या कार्य किया?

यदि आपने कुछ किया है तो आप को प्रसन्न होना चाहिये, यदि नही! तो अब तक के प्रमाद के लिए पश्चात्ताप करना चाहिये और भविष्य के लिये कुछ करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये। जो भी कार्य अपनी इच्छानुसार आपने चुना हो उसमें कुछ न कुछ समय नित्य प्रति देना चाहिये, यह तभी सम्भव हो सकेगा जब आप सामाजिक उन्नति के कार्यों के प्रति अपने अन्दर उत्साह पैदा कर लेंगे।

२—आप सन्ध्या करते हुए साय प्रात दोनो समय आचमन के उपरान्त वाणी, नासिका, नेत्र श्रोत्र, पाद, नाभि, हृदय कण्ठ और मस्तिष्क की पवित्रता के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं। प्रश्न यह है कि प्रार्थना के साथ पवित्रता के लिए कुछ प्रयत्न भी करते हैं? केवल प्रार्थना से तब तक लाभ नहीं हो सकता जब तक कुछ किया न जाये।

जैसे गुड़ कहने से मुह मीठा नही हो सकता जब तक खाया न जाय। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश मे लिखा है—

"जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा ही वर्तमान करना चाहिये। अर्थात जैसी सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करता है उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना करे, अर्थात अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है।"

स्पष्ट है कि मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार अन्तःकरणों तथा वाणी, नेत्र, श्रोत्र, नासिका आदि बाह्यकरणों की पवित्रता के लिये पूर्व प्रयत्नों के पश्चात् प्रार्थना करना योग्य है। आप क्या करते हैं इसका उत्तर स्वयं मे ही ढूंढिये।

३—आप प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग मे आर्यसमाज के १० नियमों का पाठ गर्दन सीधी करके ऊँचे स्वर से करते हैं। प्रश्न है! क्या आपका यह नियम-पाठ मौखिक ही होता है, या हृदय और मस्तिष्क पर भी इसका प्रभाव होता है? दस नहीं तो आठ का, ६ का, चार का, दो या एक नियम का भी प्रभाव पूर्ण रूप से आपके जीवन पर पड़ा? यदि 'हां' तो आप आर्यसमाजी हैं, और साधुवाद के पात्र हैं।

यदि केवल मौखिक-पाठ ही चलता है, आर्यसमाज के दस नियमों में जो महान् शिक्षा, जीवन, समाज, राष्ट्र को पूर्णता के शिखर पर पहुंचाने के लिए पर्याप्त है, उसका आपके जीवन पर तनिक भी प्रभाव नही हुआ तो इस नियम पाठ का क्या लाभ? इसका भी उत्तर स्वयं ही दे लीजिये।

४—महर्षि दयानन्द जी ने वर्ण-व्यवस्था को गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर माना है। आप प्रत्येक बात में स्वामी जी महाराज को प्रमाण मानते हैं। क्या वर्ण व्यवस्था को आप भी वैसे ही मानते हैं या जन्म से? क्या कल्पित वर्तमान बिरादरीवाद के बन्धन से तो नही बधे हैं? पुत्र या पुत्री का वैवाहिक सम्बन्ध गुण, कर्म, स्वभाव वाली वैदिक मर्यादा को ठुकराकर, बिरादरी के दम्भी और हठी लोगों के दबाव मे आकर अनुचित रूप से तो नही कर देते? आर्यसमाज दहेज प्रथा का खण्डन खुलकर करता है, आप अपने पुत्र के विवाह मे दहेज लेते हैं या नहीं। यदि नही तो ठीक है। यदि लेते हैं तो आपके सामने वही प्रश्न उपस्थित है।

क्या आप आर्यसमाजी हैं ?

५—महर्षि दयानन्द जी ने मानव जीवन को महान् बनाने के लिये १६ संस्कारों का विधान किया है। क्या आप संस्कारों के प्रति आस्थावान होकर अपने पुत्र पुत्रियों के सभी संस्कार करते हैं? उपर्युक्त संस्कारों द्वारा ही सन्तान श्रेष्ठ आचरण वाली होती है। संस्कारों द्वारा ही आर्यत्व की भावना जागृत होती है। यदि आप आर्यसमाजी हैं तो आपके बच्चों के सभी संस्कार यथा समय होने चाहिये। यदि आप प्रमादवश समय पर संस्कार नही करते तो आपके सम्मुख बरबस प्रश्न खड़ा हो जायगा—क्या आप आर्यसमाजी हैं?

६—आर्य समाज के प्रवर्तक ने आर्य समाजियों के ५ दैनिक कर्म बताये हैं, जिनको पंचमहा यज्ञ कहते हैं। ब्रह्म यज्ञ (सन्ध्या) देवयज्ञ (हवन) पितृ यज्ञ (माता, पिता एवं गुरुजनों की सेवा) अतिथि यज्ञ (अकस्मात् घर पर आये विद्वान् अतिथि का सत्कार) और बलि वैश्य देवयज्ञ। क्या आप इन पांचों महायज्ञों को श्रद्धापूर्वक नित्य करते हैं? मनुष्य गृहस्थाश्रम में रहता हुआ

उपर्युक्त पंच महायज्ञों को करता हुआ ईश्वर का साक्षात्कार कर मोक्ष नामक सर्वोत्तम सुख की उपलब्धि कर लेता है। पंच महायज्ञों को सेवन करने वाले सद्-गृहस्थ का सभी लोग सम्मान करते हैं क्योंकि उसके जीवन में प्रकाश होता है, वह अन्य लोगों के लिये मार्ग दर्शक बन जाता है। वह सत्य वक्ता दयालु उदार नम्र और न्यायप्रिय होता है। क्या आपने भी पंच महायज्ञों द्वारा उपयुक्त गुणों को अपने जीवन में बसा लिया है? यदि हाँ तब तो आप निश्चय ही आर्य समाजी हैं अन्य लोगों को आपसे शिक्षा लेनी चाहिये आपको अपना नेता या पथ-प्रदर्शक सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिये। यदि उक्त महायज्ञों से आप विरक्त हैं, बार-बार याद दिलाने पर भी भूले ही रहते हैं तो वही प्रश्न आपके सम्मुख वृहदाकार में खड़ा हो जायेगा—क्या आप आर्यसमाजी हैं।

आप इस प्रश्न का समाधान करें यही इस लेख की भावना है। आशा है आपजन गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

★

सुझाव और सम्मतियाँ

(पृष्ठ ६ का शेष)

(५१) यह समझना भ्रान्तिमूलक है कि सब मत बराबर हैं सब धर्मों का आदि मूल वेद है। वेद सूर्य है तो अन्य मत दीपक हैं।

(५२) अहिंसावाद का हर जगह चलाना भारी भूल है। हिंसा की जगह हिंसा और अहिंसा की जगह अहिंसा दोनों का वेद में विधान है।

(५३) अपराधी को पहले प्रायश्चित कराना चाहिए यदि उससे ठीक न हो तभी दंड देना चाहिए।

(५४) विदेशों में आर्य विद्वानों को राजदूत बनाकर भेजना चाहिए ताकि वे मेहता जैमिनी, श्री प० अयोध्याप्रसाद कलकत्ता और श्री सत्याचरण शास्त्री की तरह वैदिक सिद्धान्तों का गौरव स्थापित करें।

(५५) विश्वयुद्ध तभी बन्द होंगे जब विदेशों में भौतिकवाद की जगह अध्यात्मवाद फैलेगा और उसके नेता सतोगुण प्रधान होंगे, जब तक रजो गुण उनमें भरा है, स्थायी शान्ति नहीं हो सकती।

★

अखिल भारतीय मतदाता सहायक संघ (२)
(आर्य समाज मार्ग, देहरादून)

देश के समस्त आस्तिकों (धार्मिकों) से निवेदन

[जिन पर जनता के लोक-परलोक को सुधारने का विशेष रूप से दायित्व है]

खाली पेट, नंगी पीठ सूखे चेहरे, निरस्कृत जीवन तिस पर भी ऋण का भार, एक ओर जीवन की यह दुर्दशा, और दूसरी ओर विलासपूर्ण जीवन की होड़ और उसके लिए कानून के सहारे। कौन रोकेगा इन्हें? कहाँ हैं वे धार्मिक जन? जो तड़पते मानव को न केवल परलोक में वरन् इस लोक में भी समान स्थान दिलाने की बात करा सकें?

आस्तिकता (धर्म) की सीमा यदि अपने और अपने परिवार या अपनी मोक्ष तक ही रही तब समाज कैसे बचेगा? इसलिये सभी हिन्दू मुस्लिम ईसाई आदि को स्वयं से क्या यह नहीं पूछना होगा कि यदि इस पश्चिम की खर्चीलेपन की छूत को हटाया न गया तो क्या नास्तिक लोग गरीबों और भूखों को यह कह कर नहीं भड़कायेंगे कि धर्म, परलोकादि सब पाखंड हैं? मारो काटो और छीनो। फिर ये मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, लोकतन्त्र और इसके नुमाइन्दे कहाँ जायेंगे? यदि हम शोषण की जड़ इस खर्चीलेपन को स्वयं ही हटा लें तो नास्तिकता और तानाशाही आ नहीं सकती।

स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री ने कहा था कि आन्तरिक स्थिति और आन्तरिक समस्याओं का समाधान शान्तिपूर्ण ढंग से ही होना चाहिए। इस मामले पर गरम होने, क्रोध और विरोध भड़काने का रास्ता ठीक नहीं। उनकी इस इच्छा को पूर्ण करने का बीड़ा कौन उठायेगा—जन प्रतिनिधि अथवा हमारे धार्मिक नेता? कौन आगे आयेगा?

इतिहास साक्षी है कि भारत के आर्य-जनों ने, न केवल धार्मिक संकट के समय वरन् राजनैतिक संकट में भी भारत मां की अपूर्व सेवा की है। क्या आज वे, भारत माँ पर आए आर्थिक संकट के समय उपेक्षा बरतेंगे? नहीं, कदापि नहीं अब उन्हें आगे बढ़कर खर्चीलेपन को समाप्त कराने की आवाज उठानी होगी। तभी न केवल आर्य जगत वरन् सारा संसार नास्तिकता और तानाशाही से बच सकेगा।

अतः आशा है कि देश भर की धार्मिक संस्थाएं जन शिक्षण के द्वारा देश में ऐसा वातावरण तैयार करेंगी कि अबकी बार, खर्चीलेपन के किसी भी हिमायती को एक भी 'वोट' न मिले।

नोट—खर्च घटे, उत्पादन बढ़ाने हेतु सरकारी खर्च नापने की कमीशन नियुक्त हो, तो गरीबी हटे। इन पर्चों को आप भी छपवाकर बटवायें।

जगदीश्वरानन्द प्रधान रामलाल मन्त्री

कृपया हर घर पर यह लिखाइये।
आर्थिक संकट में हमें न फसाइये।
खर्चीलापन घटाइये॥
वरना 'वोट' मांगने मत आईये॥।

वेद प्रचार के लिए वेदपथिक धर्मवीर झण्डाधारी का दौरा

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध धर्म उपदेशक वेद पथिक प० धर्मवीर आर्य झण्डाधारी ने इन दिनों आर्य समाज बापर नगर मेरठ, देहरादून, लखनऊ, आजमगढ़, मऊनाथ भंजन, घोसी, बड़ा गाव, मल्लूपुर, बेल्थरा रोड बलिया, गोविन्दपुर, सिवाह, खीरी कोठा, अजबली उफरौलकी आदि उत्तरप्रदेश के नगरों और ग्रामों में घूमकर जनता को वेदों का सन्देश सुनाया है।

१९४२ की स्वतन्त्रता की महाक्रान्ति का प्रमुख स्थान मधुबन है। आज मधुबन के निकटवर्ती ग्रामों में ईसाईयत का व्यापक प्रचार बढ़ रहा है।

इस इलाके में पहले हजारों परिवारों को ईसाइयत और इस्लाम के जाल से बचाने का शुद्धि का कार्य प०धर्मवीरजी आर्य झण्डाधारी कर चुके हैं।

गत मंगलवार को मधुबन में आर्य समाज की स्थापना की गई है।

आर्यसमाज भवन के लिए दो एकड़ भूमि दान देने की घोषणा प० चन्द्रभान पाण्डे ने की है।

एक एक हजार रुपया दान देने का संकल्प श्री झगरूमल जी ने तथा श्री वेदपथिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी ने किया है।

पदाधिकारियों का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—सर्वश्री झगरूमल प्रधान सरयूसिंह, हरिदत्त उपप्रधान उदयभान पांडे मन्त्री संरक्षक प० धर्मवीर आर्य झण्डाधारी चुने गये है।

बड़गाव घोसी आर्यसमाज के लिए १३४१) रु० का शुभ दान दे चुके हैं।

आर्यसमाज सिवार में वेदपथिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी २०-६-६६ को पधारे आपके सतत् प्रयास से पदाधिकारियों का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री सेठ कृष्णलाल जी, उप प्रधान—श्री श्यामसुन्दर जी, मन्त्री श्री स्वामीनाथ जी उप मन्त्री—श्री शिवजनी जी, कोषाध्यक्ष—श्री रघुपतमल जी चुने गये।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में नवीन प्रवेश

प्रसिद्ध आर्य शिक्षा संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का शिक्षा सत्र १ जुलाई से आरम्भ हो गया है। ६ से १० वर्ष की आयु के बालक विद्यालय विभाग में प्रविष्ट होंगे। महाविद्यालय विभाग में पण्डित कक्षा ११ १२ में संस्कृत लेकर मैट्रिक (उत्तीर्ण कक्षा १३ १४ में संस्कृत इण्टर व मध्यमा प्रविष्ट हो सकते है। शीघ्र पत्र व्यवहार करें। —उमेशचन्द्र स्नातक उपमन्त्री विद्या सभा गुरुकुल वि० वि० वृन्दावन

आर्य उप सभा मुरादाबाद
श्री रामकुमारजी शास्त्री एम.ए. का भ्रमण पुरोगम

२४ जुलाई ६६ रविवार आ स अमरोहा
७ अगस्त " " " हसनपुर
१४ " " " आ स. मंडी बांस मुरादाबाद
२१ " " " " सरायतरीन
२८ " " " " कांठ

सम्बन्धित समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि प्रचार की समुचित व्यवस्था करें। —हरि आर्य

स्वास्थ्य-सुधा

जर्मनी में—

धूम्रपान की सामाजिक बुराई की अनुभूति

प्रमुख व्यक्ति अब धूम्रपान करते नहीं आयेंगे

प० जर्मनी के सिगरेट उद्योग ने अपने विज्ञापन करने की प्रणाली में एक प्रकार का स्वैच्छिक अनुशासन अपनाने का निश्चय किया है। भविष्य में नवयुवक अधिक धूम्रपान करन के लिए प्रेरित न हो, इसके लिए जो सिद्धान्त निर्धारित किय गय हैं, वे सिगरेट औद्योगिक एसोशिएशन के १७ सिगरेट निर्माताओ अर्थात् ९९.१ प्रतिशत पर लागू होंगे। स्वैच्छिक स्वानुशासन के अनुसार यह भविष्यवाणी की गई है कि भविष्य मे सिगरेट का कोई भी विज्ञापन स्कूल या यूथ मेगजीन और समाचार पत्रो मे नही निकाला जायगा। तरुणो के मेगजीन का निश्चय प्रत्येक म मले में पृथक पृथक किया जायगा। इसके अलावा १ अक्टूबर, १९६३ को जो सिफारिश की गई थी, उसे अधिकृत रूप से नियम समझा गया है और उसमे हर प्रकार की व्यवस्था है कि ७ बजे सध्या से पूर्व टेलिविजन पर सिगरेट के विज्ञापन प्रदर्शित न किये जाय। एक मह-वपूण निश्चय यह भी किया गया है कि कोई भी प्रमुख व्यक्ति विज्ञापन में प्रकाशित न‍ी किया जायगा विशेष रूप से वे व्यक्ति जो अपने प्रकाश म आने से, अपनी अदा से या पेशे से तरुणो के लिये आदर्श का काम देते हैं। २५ वर्ष से कम आयु वाले व्यक्ति भी सिगरेट के विज्ञापनो में प्रदर्शित नही किये जायेंगे। इसके अल वा इस प्रकार के नारे भी प्रसारित नही किये जायेंगे जिससे लोगो को अधिक धूम्रपान करने और धुए को पीने की आदत बढ। अब यह नही कहा ज'यगा कि सिगरेट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नही है। नियम भग करन पर २ लाख डी०एम० (५० हजार डालर) तक जुर्माना भी किया जा सकेगा। (यू०पी०एस०)

★

वैदिक साधन आश्रम यमुना नगर का वार्षिक शिविर

(१) वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर जिला अम्बाला का वार्षिक शिविर (उत्सव) जो मार्च १९६६ मे पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के व्रत के कारण स्थगित किया गया था यह अब २८ सितम्बर से २ अक्तूबर १९६६ तक पूर्ण समारोह से होगा। इस शुभ अवसर पर स्वामी समर्पणानन्द, स्वामी विशुद्धानन्द, स्वामी वेदमुनि, स्वामी अनन्तानन्द, श्री वीरेन्द्र जी एम० ए०, श्री रामगोपाल शालवाले, श्री जयदेव सिंह सिद्धान्ती, श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री, प० बिहारीलाल जी शास्त्री, प्रिंसिपल दीक्षित जी, प० भारतेन्द्रनाथ प्रो० उत्तमचन्द जी शरर, आदि कई विद्वानो से पधारने के लिए प्रार्थना की गई है। दानी सज्जन तथा परिवार अपना पवित्र दान शीघ्र भेजकर यश के भागी बने।

(२) उपदेशक महाविद्यालय पूर्ण सफलता से चल रहा है। प० विद्याधर जी स्नातक तथा प० रविदेव जी शास्त्री अध्यापन कार्य पूर्ण योग्यता स कर रह है। शिक्षा नि शुल्क है, भोजन निवास बिजली, पानी आदि का प्रबन्ध भी आश्रम की ओर से निःशुल्क है। प्रवेश के लिए आयु १८ वर्ष और योग्यता हिन्दी सस्कृत मे मैट्रिक के समकक्ष होनी चाहिए। नवीन विद्यार्थियो का प्रवेश हो रहा है। यह आश्रम जगाधरी रेलवे स्टेशन से लगभग दो मील पक्की सडक ग्राम शादीपुर क निकट है।

(३) वेद प्रचार विभाग, धर्मार्थ औषधालय, गोशाला तथा प्रकाशन विभाग भी पूर्ण सफलता से चल रहे हैं। एक सुन्दर वैदिक पुस्तकालय का भी निर्माण किया जा रहा है जिसके लिए बन्टा ब्रदर्स ने एक सुन्दर भवन दान के रूप मे बनवा दिया है।

—रावाराजसिंह आर्य अधिष्ठाता

आवश्यक सूचना

"वैदिक उपासना विधि"

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के साहित्य प्रकाशन विभाग की ओर से हवनमन्त्र स्वस्तिवाचन, शान्तिप्रकरण आदि की पुस्तक अर्थसहित प्रकाशित करने का विचार है जिसका मूल्य कागज मात्र रक्खा जावेगा। इस समय आर्यजगत् की आवश्यकता को अनुभव करते हुए इस पुस्तक में अन्य भी उपयोगी बातें (यथा हवन की विधियों का व्याख्या, शुद्धि विधि, आर्यसमाज आदि) सम्मिलित की जावेंगी। प्रत्येक आर्यसमाज तथा आर्य विद्यालय को इसकी प्रचारार्थ कम से कम एक सौ प्रतियाँ अवश्य खरीदनी चाहिए। सौ प्रतियाँ खरीदने वाली आर्यसमाजों तथा आर्य-संस्थाओं का नाम पुस्तक के मुख पृष्ठ पर अंकित करके दिया जायेगा।

आर्यसमाजें तथा शिक्षा संस्थायें कृपया शीघ्र से शीघ्र अपने सुझावों सहित सूचित करे कि उनके लिये कितनी कितनी प्रतियाँ सुरक्षित रखी जावें।

संस्कृत प्रचार विभाग खोलिये

प्रत्येक आर्यसमाज के अधिकारियो से निवेदन है कि वे सदस्यो को ईश्वरीय ज्ञान वेद का अर्थ समझने के योग्य बनाने के लिये अपनी आर्यसमाजो में एक सस्कृत प्रचार विभाग' शीघ्र से शीघ्र स्थापित करे जिसकी ओर से प्रतिदिन साय या रात्रि के समय कम से कम एक घटा सस्कृत की कक्षाएँ चला कर। इन मे पढाने का काम सस्कृतज्ञ सभासद पुरोहित अथवा अध्यापक करें जिनको आवश्यकतानुसार दक्षिणा देने की भी व्यवस्था की जाये। इन कक्षाओ मे सर्व प्रथम महर्षि दयानन्दकृत 'सस्कृत वाक्य प्रबोध' और 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' सस्कृत भाग पाठ्यपुस्तक नियत की जाती है।

सस्कृत वाक्य प्रबोध' का अच्छा उपयोगी सस्करण सभा की ओर से प्रकाशित किया जायेगा।

सस्कृत पाठको की सख्या अधिक हो जाने पर सभा की ओर स सस्कृत की परीक्षाओ की तथा उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रमाणपत्र देने की व्यवस्था की जायेगी।

आर्यसमाजें सस्कृत प्रचार विभाग द्वारा अपने-अपने क्षेत्रो में सस्कृत के प्रचार के अन्य आवश्यक उपायो का भी सम्पादन करें।

अपनी समाज में 'सस्कृत प्रचार विभाग' खोले जाने की सूचना शीघ्र दीजिये।

निवेदक

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए० आचार्य

अधिष्ठाता सा० प्रकाशन विभाग

आ० प्र० स०

बलरामपुर, (गोंडा)

●

बिहार बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र—

साप्ताहिक आर्यावर्त का संक्षिप्त इतिहास

(सन् १८८७–१९०७)

[ले०—श्री दयाराम जी, मंत्री आर्यसमाज राँची, (बिहार)]

[आर्यावर्त साप्ताहिक पत्र के सम्बन्ध में इस लेख मे जो विवरण प्रस्तुत है वह इतिहास की सामग्री है। आशा है इनसे सम्बन्धित जानकारी रखने वाले व्यक्ति भी अपनी जानकारी भेजेंगे। —सम्पादक]

स्वर्गीय इन्द्र विद्यावाचस्पति जी ने आर्यसमाज के इतिहास (१) के पृष्ठ २४४ से २४८ में तत्कालीन समय में प्रकाशित समाचार-पत्रो व पत्रिकाओ के बारे मे लिखा है। पर साप्ताहिक 'आर्यावर्त जो बिहार व बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र अप्रैल १८९८ ई० में रांचीस्थ कार्यालय से निकलता था, उसका उल्लेख भी नहीं है। सम्भव है आर्यसमाज के इतिहास (१) के सम्पादकीय वक्तव्य पृष्ठ (६) के अनुसार बिहार बंगाल से सामग्री विलम्ब से मिलने के कारण ऐसा हुआ हो। अस्तु ! जो भी हो। साप्ताहिक आर्यावर्त समाचार पत्र के बारे में निम्न लिखित बात जानकारी के लिए लिखी जाती हैं—

राष्ट्र भाषा में आर्यसमाज का सर्वप्रथम साप्ताहिक

आर्यसमाज का इतिहास व सम्पादकाचार्य प० अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी कृत समाचार पत्रो का इतिहास (ज्ञान वापी मण्डल, वाराणसी से प्रकाशित) से ज्ञात होता है कि आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल मे कई मासिक पत्र-पत्रिकायें हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी में निकलीं। साप्ताहिक पत्रो में आर्यसमाज की स्थापना से सन् १९०० तक जहाँ अंग्रेजी मे 'आर्य पत्रिका' और उर्दू मे 'आर्य समाचार' निकला वहा उर्दू का मासिक 'भारत सुरक्षा प्रवर्तक' व उर्दू साप्ताहिक का 'सद्धर्म प्रचारक' सन् १९०७ से हिन्दी मे निकलने लगा और उर्दू मे यू०पी०से प्रकाशित 'साप्ताहिक मुर्शिद' १९०१ मे 'आर्यमित्र' नाम से हिन्दी की साप्ताहिक पत्र बन गया। कई अन्य पत्रो का पता नही चलता कि वे साप्ताहिक थे या मासिक। इसप्रकार 'आर्यावर्त' ही पूर्णरूपेण हिन्दी मे सर्व प्रथम आर्यसमाजी साप्ताहिक पत्र था, क्योंकि इसका प्रकाशन १ अप्रैल १८८७ ई० में आर्यावर्त प्रेस ६२ जगन्नाथ प्रसाद स्ट्रीट भवानीपुर (कलकत्ता) से होता था।

यह बात आर्यसमाज रांची के तत्कालीन समय में प्रकाशित आर्यावर्त की लगभग १५ प्रतियो के सुरक्षित फाइल मे ग्राहकों से पुन चन्दा प्राप्त करने की अपील व समाचार पत्रो की प्रतियो के ऊपर अंकित वर्ष से ज्ञात होती है। उस समय मे वर्तमान बिहार और बंगाल एक ही संयुक्त राज्य के रूप में था। कलकत्ता समग्र ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी थी, यद्यपि यह बंगला भाषा भाषी क्षेत्र है और आर्यसमाज का प्रचार अभी भी इन क्षेत्रों में कुछ स्थानों को छोड़कर अत्यन्त प्रभावशाली रूप में नहीं है।

आर्यावर्त के संस्थापक, सम्पादक व कार्यालय स्थान

(१८८७–१८९८)

साप्ताहिक आर्यावर्त के ८ दिसम्बर १९०० के अंक व बिहार बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रेषित पत्रो की नकल (सन् १८९८ ई० से १९०४ तक) जो आर्यसमाज राची में अभी सुरक्षित है। उसके १६ जनवरी १८९८ ई० के पत्र के अनुसार प्रतिनिधि सभा के मन्त्री ठाकुर गदाधरसिंह (जो राची के डोरन्डा में सेना के राजपूत रेजिमेन्ट आफिसर थे और ये अंग्रेजी सेना की ओर से चीन

निकलता था, १८९७ ई० में यह राची से निकलने लगा। और बाद मे पटना दानापुर से निकलने लगा। १९१० से १९१७ तक भागलपुर से मासिक रूप म छपता था। १९२१ मे पटने से निकलने लगा और बाद में बन्द हो गया।

(२) आर्यसमाज राची के ५० वें वर्ष पर प्रकाशित अष्ट पृष्ठीय विवरण में कहा गया है कि राची से १८९७ से १९०७ तक आर्यावर्त अखबार निकलता था। वस्तुत २ अप्रैल १९०४ के अंक के अनुसार आर्यावर्त अखबार के कार्यालय के स्थानान्तरण का क्रम इस प्रकार है—

साहित्य-समीक्षा

में लड़ने के बाद इन्होंने अपने संस्मरण 'चीन में तेरह मास' नामक पुस्तक में लिखा था) द्वारा एक लिखे पत्र से स्पष्ट है कि अप्रैल १८८३ में भवानीपुर (कलकत्ता) से पत्र निकालने वाले भागलपुर के जमीन्दार श्री महावीरप्रसाद जी थे।

आर्यावर्त के १८ फरवरी १९०५ के अंकानुसार 'श्री महावीरप्रसाद भागलपुर के राय तेजनारायण की कोठी मे रहते थे, इन्होंने ही आर्यावर्त पत्र निकाला था।"

आर्यसमाज के इतिहास (१) पृष्ठ २८३ से ज्ञात होता है कि जब सर्वप्रथम कलकत्ते में सन् १८८५ ई० में आ० स० की स्थापना हुई तो श्री महावीरप्रसाद जी ही इसके सर्वप्रथम प्रधान निर्वाचित हुए थे।

एक शंका का समाधान

साप्ताहिक आर्यावर्त का कार्यालय कहाँ था इस सम्बन्ध मे विभिन्न विरोधाभास व गलत फहमी है। उदाहरणार्थ (१) समाचार पत्रों का इतिहास पुस्तक के पृष्ठ १९७ और २९९ के अनुसार आर्यावर्त पहले १८८७ में कलकत्ते से

पहले वह कलकत्ता में था, फिर दानापुर और फिर राची आया। आर्यावर्त के प्राप्त अंको से यह पता नही चलता कि यह पत्र कब तक कलकत्ते और दानापुर में रहा और कब राची आया। इसके सम्बन्ध में निम्न दृष्टव्य हैं—(१) स्वामी श्रद्धानन्द जी कृत लेखराम की जीवनी तृतीय संस्करण पृष्ठ ४८ से ज्ञात होता है कि जब धर्मवीर जी ऋषि जीवन की सामग्री एकत्र करने के लिए पटना, बाकीपुर होते हुए कलकत्ता पहुंचे तो १४ फरवरी १८९१ ई० को आर्यावर्त के कार्यालय मे डेरा किया।" इस उद्धरण से यह स्पष्ट है कि कम से कम १८९१ तक आर्यावर्त के अखबार कलकत्ते मे था। यह पत्र सम्भवत १८९७ ई० में कलकत्ते से दानापुर आया। आर्यावर्त के एक अंक के अनुसार कलकत्ते मे प्रकाशित आर्यावर्त के प्रथम सम्पादक प० रुद्रदत्त जी सम्पादकार्य थे। पत्रकार प्रवर प० बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा लिखित सम्पादकाचार्य प० रुद्रदत्त जी की जीवनी के सम्बन्ध मे 'समाचार पत्रों के इतिहास' पुस्तक में एक लेख उद्धृत है, इसके अनुसार प० रुद्रदत्त जी ने १० वर्ष तक कलकत्ता मे आर्यावर्त का सम्पादन किया, तब निश्चय ही वे १८९७ तक इसके सम्पादक रहे। चूकि १८८७ से आर्यावर्त का प्रारम्भ सप्रमाण प्रारम्भ म पूर्व ही वर्णित है—प० रुद्रदत्त जी के अतिरिक्त आर्यावर्त के कौन कौन सम्पादक रहे, इसके सम्बन्ध मे समाचार पत्रो का इतिहास पृष्ठ १९७ मे लिखा है—"प० क्षत्रपाल शर्मा इसके सम्पादक थे।' यह स्मरणीय है कि प० क्षेत्रपाल जी पश्चात् मे सुख सचारक के मथुरा के मालिक हुए। पृष्ठ २९९ मे निम्नांकित है—कौन महाशय इसके सम्पादक थे, नही मालूम परन्तु प० शिवनाथ त्रिवेदी नाम के एक सज्जन इनके सम्पादक मंडल मे थे। यह उन्होने हमें बताया था।" वस्तुत प० रुद्रदत्त जी ही विशेष रूप से सम्पादक थे।

आर्यावर्त पत्र जब कलकत्ते से दानापुर आ गया तो प० रुद्रदत्त जी प्रतिनिधि सभा का काम छोड़कर प्रेस खोलन की धुन में कानपुर चले गये तब बाबू ब्रह्मानन्द जी जो बाद मे स्वामी ब्रह्मानन्द जी के नाम से विख्यात हुए और गुरुकुल झज्जर के मुख्याधिष्ठाता रहे। वे वैदिक यन्त्रालय अजमेर का काम छोड़कर दानापुर आये और पत्र के सम्पादन व प्रबन्धक हो गये। बाबू ब्रह्मानन्द जी बिहार की आरा जिले के डुमरा ग्राम के रहने वाले थे। कुछ दिन तक आरा निवासी प० श्याम जी शर्मा जो भागलपुर के जिला स्कूल के हेड पंडित थे, वे भी सम्पादक रहे। एक पंजाबी नवयुवक होतीलाल भी सम्पादक मंडल मे था, जिसे पुलिस क्रान्तिकारियो से सम्पर्क रखने व बम बनाने के षड्यन्त्र में पकड़ कर ले गयी।

आर्यसमाज राँची उन दिनो बंगाल बिहार की आर्यसमाजो में प्रमुख स्थान रखता था। प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रेषित पत्रो की प्रतिलिपि का एक रजिस्टर जिसमे प्रथम पत्र ६ जनवरी १८९८ ई० का है। राँचीस्थ कार्यालय से लिखा गया था, (यह रजिस्टर अभी आर्य समाज राँची मे है) इससे ज्ञात होता है कि प्रतिनिधि सभा का प्रधान कार्यालय १८९८ मे राँची हो गया था।

आर्यसमाज राँची की अन्तरग सभा ने ८ अक्टूबर १८९७ को श्री बालकृष्ण सहाय प्रधान आर्यसमाज राँची (ये प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान थे) के सभापतित्व में निम्न प्रस्ताव पारित किया—"चूकि बिहार बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा का अपना आर्गन नही है और आगम रहने की बड़ी आवश्यकता है तथा आर्यावर्त पत्र साधारण एक है दूसरा चकमा आर्यावर्त को कठिन और आर्यावर्त को हानिकारक है। इसलिये

प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना की जाये कि बाबू महावीर प्रसाद को प्रार्थना करे कि आर्यावर्त पत्र तथा प्रेस जिसका मूल्य प्रतिनिधि सभा किस्त करके बाबू साहब को दे देगी प्रतिनिधि सभा को कृपया दे देवें।" इस अन्तरंग में प० रुद्रदत्त जी सम्पादकाचार्य भी उपस्थित थे।

प्रतिनिधि सभा के मन्त्री द्वारा प्रेषित पत्र दिनांक १६ जनवरी १८९८ ई० से ज्ञात होता है कि बाबू महावीर प्रसाद ने आर्यावर्त पत्र प्रतिनिधि सभा को दान मे दे देने का प्रस्ताव किया था जिसे प्रतिनिधि सभा ने स्वीकार कर लिया था। ७ मार्च १८९८ ई० को प्रतिनिधि सभा को आर्यावर्त पत्र का अधिकार प्राप्त हुआ था। पत्र रांची से १ अप्रेल १८९८ ई० से निकलने लगा।

२० मई ९८ ई० को प्रतिनिधि के मन्त्री द्वारा लिखे पत्र के अनुसार २९ मई को बांकीपुर मे सभा का नैमित्तिक अधिवेशन रखा गया था। जिसकी विषय सूची से ज्ञात होता है कि महावीर प्रसाद जी ने आर्यावर्त पत्र कुछ शर्तों के साथ दिया था। ये शर्तें ९ अप्रैल १८९६ ई० के आर्यावर्त में छपी थीं। चूंकि इस तिथि का अंक उपलब्ध नहीं अतः नहीं कहा जा सकता कि वे शर्तें क्या थी। सभा का यह नैमित्तिक अधिवेशन कोरम पूरा नहीं होने के कारण न हो सका। इसी अधिवेशन में आर्यसमाज रांची से आर्यावर्त पत्र के प्रबन्ध सम्बन्धी शर्तों पर भी विचार होना था।

आर्यावर्त पत्र के प्रबन्ध सम्बन्धी शर्तों के विचारार्थ आर्यसमाज रांची की अन्तरंग सभा ने दिनांक ७ नवम्बर व २९ नवम्बर १८९८ ई० को विशेष बैठक में निम्न नियम स्वीकृत किये—

(१) आर्यावर्त पत्र का प्रबन्ध आर्य समाज रांची के अधीन कम से कम पांच वर्ष तक रहेगा। प्रतिनिधि सभा को निरीक्षण करने का अधिकार होगा।

(२) आर्यावर्त के द्वारा जो हानि या लाभ हो, उसका भागी प्रतिनिधि सभा होगी।

(क्रमश)

वेदप्रचार सप्ताह पर मुफ्त भेंट

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद ने निश्चय किया है कि वेद प्रचार सप्ताह के शुभ अवसर पर 'ईश्वर का स्वरूप अवतारवाद तथा मूर्तिपूजा" नामक ट्रैक्ट आर्यसमाजो व आर्य विद्यालयों को मुफ्त भेजा जावेगा। जो समाजें या संस्थायें मगाना चाहें वह दस नये पैसे का टिकट डाक व्यय के लिए शीघ्र भेज दें।

—हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान

श्री भवानीलाल गऊजूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिउओदेवी भवानीलाल शर्मा बकुहास की पुण्यस्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालको के हितार्थ ७०००) की धनराशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद स० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक-बालिकाओं के शिक्षण मद मे व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेज कर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है। प्रार्थना-पत्र ३० सितम्बर तक आ जाना चाहिये।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु, मय, त्वष्टादि गरीब प० [illegible] बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जावेगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को लिये पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

देश और जाति के कर्णधारो सावधान

अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे।
बचोगे न तुम और न साथी तुम्हारे ॥

(ले०—श्री रुद्रदत्त जी शर्मा, प्रधान आर्यसमाज कटड़ा अमृतसर)

जागो न जागो आपका यह अधिकार है।
न भेको अब समाज को समझाये जायेंगे ॥

हिन्दु जाति तथा इसके आधुनिक नेताओं की अवस्था देखकर मथुरा की एक घटना याद आती है। यमुना नदी में कुछ मुसाफिर रातों रात किसी दूसरे नगर को जाने के लिये नाव में सवार हुए। रात अन्धेरी थी, निरन्तर चप्पू चलाते रहे। प्रातःकाल थोड़ा प्रकाश होने पर बड़ी बड़ी इमारतें दिखाई देने लगी। ख्याल किया कि हम अपने ध्येय स्थान पर पहुंच गये हैं। चप्पू चलाने बन्द करके इमारतों को देखने लगे तो मालूम हुआ कि मथुरा के तट पर वहीं खड़े हैं जहां रात को किश्ती में सवार हुए थे। रात भर चप्पू चलाने के बावजूद अपने आपको वहीं देखकर बहुत हैरान हुए। कारण ढूंढने लगे तो मालूम हुआ कि किश्ती का रस्सा घाट पर लगे कुण्डे से बंधा रहा इसलिये किश्ती एक कदम आगे नहीं बढ़ सकी और सारी रात की मेहनत और समय व्यर्थ गया। यही हालत कोल्हू के बैल की होती है, जब दिन भर बंधी हुई आंखों के साथ चलने और चलते जाने के पश्चात सायंकाल उनकी आंखें खोली जाती हैं, तो वह अपने आपको वहीं कोल्हू के साथ बंधा हुआ पाता है।

मैं अपनी जाति के पथ-प्रदर्शकों नेताओं और तन मन से इसके उत्थान के लिए दिन रात एक करने वाली संस्थाओं के सामने नम्रतापूर्वक एक प्रश्न रखना चाहता हूं कि कभी उन्होंने यह देखने की तकलीफ उठाई है कि वर्षों की निष्काम सेवा से जाति की नौका को किनारा पाये ले जा सके हैं या वह वहीं की वहीं खड़ी है अथवा आगे जाने की बजाय (जैसा कि देखा जा रहा है) उल्टी जाने उद्देश्य से और भी पीछे तो नहीं जा रही? अन्तिम दोनों अवस्थाओं में इसका कारण ढूंढना जाति के प्रत्येक शुभचिन्तक का परम कर्तव्य हो जाता है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक भूगोल पर चक्रवर्ती राज्य करने वाली आर्य जाति उठने का नाम नहीं लेती। इसका हर कदम अपनी अनश्वर प्राचीनता की तरफ से बढ़ने की बजाय यूरोप और अमरीका की विनाशकारी असभ्यता की तरफ जा रहा है। मांस, शराब, दुराचार, अश्लील गाने और नाच सिनेमा तथा रेडियो के भयानक दुरुपयोग और कल्चरल प्रोग्रामों के नाम पर कालिख आचार हीनता के खुले प्रचार ने हमें कहां से कहां ला फेंका है? हमारे नवयुवक आज धर्म ईश्वर और वेद का नाम सुनने को तैयार नहीं। उनकी दृष्टि में रामायण और महाभारत कल्पित कहानियाँ हैं। उनके विचार में राम और कृष्ण नाम के कोई महापुरुष इस संसार में नहीं हुए।

धर्म निरपेक्ष सरकार की तरफ से हमें बेदीन और धर्महीन बनाने का पूरा यत्न किया जा रहा है। ऐसी अवस्था से लाभ उठाने के लिए मुसलमान और ईसाई हर उचित और अनुचित ढंग से अभागी हिन्दू जाति के युवकों और युवतियों का धर्मभ्रष्ट कर रहे हैं। अंग्रेजी राज्य की अपेक्षा कई गुनी अधिक संख्या में यूरोपियन मिशनरी भारत के कोने-

कोने में रुपया, कपड़ा, अनाज घी और दूध के डिब्बे बांट बांट कर प्रायः गरीब हिन्दुओं और विशेषतः अछूत कहलाने वाले भाइयों को बेखटके धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं। परन्तु हमारी सरकार भीम, ब्रह्मा और लंका की तरह इन को देश से निकालने की बजाय उल्टा समय समय पर उनकी सहायता करती और उन्हें हर प्रकार की सुविधायें देती है। आज इस जाति की अवस्था नदी किनारे खड़े उस वृक्ष की सी हो रही है जिसकी जड़ें हर समय पानी के थपेड़ों से खोखली हो रही हैं। अकेला आर्यसमाज वेद प्रचार और शिक्षा आदि के कार्यों में लगा होने पर भी अपनी शक्ति के अनुसार ईसाइयत की बाढ़ का भी मुकाबला कर रहा है। परन्तु क्या जाति के प्रत्येक हितैषी को इसकी चिन्ता नहीं होनी चाहिए?

एक दुकानदार भी वर्ष भर के पीछे देखता है उसने क्या कमाया और क्या बचाया है? आखिर कोई समय तो ऐसा भी आना चाहिए जब भारतीयता और प्राचीनता के संरक्षक अपने कर्म का निरीक्षण करें और देखें कि इतने परिश्रम के पश्चात् भी क्या वह कोल्हू के बैल की तरह अथवा खूटे के साथ बंधी हुई किश्ती की तरह वहीं की वहीं तो नहीं खड़े?

गत चुनाव के समय चूक जाने के कारण शासन की ओर से हिन्दुओं तथा मातृ भाषा हिन्दी के साथ हो रहे घोर अत्याचारों के जो कटु अनुभव इन पांच वर्षों में हुए उन्हें सामने रखते हुए आने वाले चुनाव में अपनी आवाज को अधिक से अधिक बलवती और प्रभावशाली बनाना इस समय आपके हाथ में है। यदि तुम्हारे हृदय में वस्तुतः देश और जाति के लिए तड़प विद्यमान है तो प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के अनुकूल विचारधारा वाले नेताओं सभाओं और संस्थाओं को कुछ काल के लिए अपने मतभेदों और द्वेषों को भुला कर तथा स्वार्थ की भावना को मिटाकर केवल जाति के उत्थान के महान् लक्ष्य को सामने रखते हुए एक संयुक्त मार्ग निर्धारित करना होगा। देश और जाति का हित चाहने वाली जनता ऐसे निश्चय का सच्चे हृदय से स्वागत करेगी। हां, इसके लिये उदारता और त्याग की आवश्यकता है। पृथक् पृथक् गुट बन्दियों से ऊपर उठना होगा और संगठित एवं सम्मिलित शक्ति के साथ उच्चतम योग्य महानुभावों को सफल करने के लिये कटिबद्ध होना होगा। ऐसे शुभ उद्देश्य के लिए मिलकर चलने में किसी को भी हानि नहीं होगी अपितु अधिक शक्ति के जुट जाने से अधिक से अधिक सुलझे हुये उम्मीदवार सफल हो सकेंगे। यदि किसी संस्था को आरम्भ में किसी अंश में कुछ हानि प्रतीत भी होगी, तो वह उस निराशापूर्ण और अपमानजनक हानि से कहीं बेहतर होगी जो फूट की अवस्था में बांट बट जाने के कारण परिश्रम और धन व्यय करने के पश्चात् असफल होकर देखनी पड़ती और उसके साथ वर्षों तक फिर सारी जाति के विरोधियों और विधर्मियों द्वारा पद दलित होना पड़ता। सैकड़ों वर्षों की गुलामी के पश्चात हमें पिछले इतिहास से कुछ तो शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और अधोपतन के एक मात्र कारण टूट-फूटरूपी राक्षसी से बचना चाहिये।

जिन संस्थाओं में प्रभु कृपा से कुछ जागृति दिखाई देती है वह देश और जाति का हित रखते हुए भी शक्ति के नशे में तथा तंगदिली का शिकार होकर अपनी संस्था को ही सब कुछ समझते हुए विशाल जातीय दृष्टिकोण से सोचने और एक दूसरे के साथ मिलकर चलने को तैयार नहीं होते जिसके परिणाम स्वरूप वह पूरी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते जो मिलकर चलने की अवस्था में कर सकते हैं दूसरी तरफ कई महानुभाव अपनी सफलता में विश्वास रखते हुए भी केवल इस लक्ष्य से खड़े हो जाते हैं कि व्यक्तिगत ईर्ष्या के कारण सम्मुख खड़े अच्छे से अच्छे उम्मीदवार को हानि पहुंच सके। यह जाति के सबसे बड़े शत्रु हैं।

इस समय 'लोक सभा' और विधान सभाओं आदि में ऐसे अनुभवी, सदाचारी और आदर्श महानुभावों को भेजने की आवश्यकता है जो रूस और अमरीका आदि की तरफ आंखें लगाये रखने की बजाय भारत और भारतीयता के सच्चे पुजारी हों और जिनके हृदय में देश और जाति दोनों के लिए वास्तविक हित और अटूट श्रद्धा हो और किसी अवस्था में भी जाति के नाम पर देश को और देश के नाम पर जाति के हितों को न्योछावर करने के लिए तैयार न हो सकें। अन्त में वास्तविक हित का एक दृष्टान्त देकर अपनी इस प्रार्थना को समाप्त करना चाहता हूं।

एक बार अदालत में एक बच्चे के सम्बन्ध में दो देवियों का झगड़ा पेश हुआ। दोनों ही माता होने का दावा करती थी। मजिस्ट्रेट जब किसी प्रकार भी वास्तविक (सच्ची) माता का निश्चय न कर सका तो उसे एक उपाय सूझा और आदेश दिया कि चूंकि दोनों देवियां बच्चे की माता होने का दावा करती हैं। और उसे लेना चाहती हैं अतः इसका एक ही उपाय हो सकता है कि बच्चे के दो टुकड़े कर दिये जावें और दोनों को एक एक टुकड़ा दे दिया जावे उसके साथ ही जल्लाद को बुला

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-६०
आ० २ [illegible] १८८८ ई० श्रावण शु० ५
(दिनांक २४ जुलाई सन् १९६६)

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
तार—'आर्यमित्र'
दूरभाष : २२११२ तार : "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वाध्यायान्माप्रमदः

(पृष्ठ २ का शेष)

तात्पर्य से बाहर है।

भ्रातृवर ! आप ब्रह्म पद के लिए प्रयुक्त किये गये 'द्रष्टु' शब्द के प्रयोजन की व्याख्या पीछे नहीं कर सके थे और अब 'अवस्थानम्' पद भी हटा डाला। ऋषि महानुभाव अनर्थक पद तो कहीं भी नहीं रखते, तब इन पदों का प्रयोग किस प्रयोजन के लिए हुआ है ?"

'द्रष्टु और अवस्थान' इन दोनों शब्दों का इस सूत्र में परस्पर सम्बन्ध है। यह शब्द यह प्रकट करते हैं कि जो स्थान जिसका है, वह उसी का रहता है। दूसरा उसके स्थान पर जाकर अपना काम करके लौट आता है। चिति शक्ति आत्मा को भी ब्रह्म के स्थान पर जाकर लौट आना चाहिये।"

"इन शब्दों से यह अर्थ कैसे निकाल लिया।"

'प्रत्येक किये गये कर्म का परिपाक होता है। मुक्ति के लिए भी किये गये कर्म का परिपाक अवश्यम्भावी है। परिपाक हो जाने पर उसे भी ब्रह्म पद छोड़ना पड़ेगा।"

"उसके इस नियत काल को जानने में कौन समर्थ है।"

"ब्रह्म से अतिरिक्त और कौन हो सकता है। इसलिए यहां मुक्ति में भी ब्रह्म का द्रष्टृत्व आवश्यक है। उसके द्रष्टृत्व का निराकरण मुक्ति और सांसारिक दोनो दशाओं में ही नहीं किया जा सकता। इस पुरुष विशेष के लिए भी योग दर्शन का यही सूत्र पर्याप्त है—द्रष्टा दृशिमात्र शुद्धोपि प्रत्ययानुपश्य। अब शेष रहा 'अवस्थानम्' पद। वह अपने आप नियत काल का बोधक हो गया।"

'इस शब्द में से यह अर्थ निकलता भी है अथवा शब्द व्यापक हो जाने से आप यह अर्थ ले रहे हैं ?"

'निकलता है, जैसे कोई कहे (अवस्थिता वर्णाद्रुतमध्यविलम्बितासु वृत्तिषु प्रयोक्तृणाम्) कि शब्दों का प्रयोग करने वाले पुरुषों की शीघ्र, मध्यम और विलम्बित रूप से बोलने रूप वृत्तियों में वर्ण अवस्थित हैं। इतना कहने पर यह समझ लिया जाता है कि क, ख ग आदि वर्ण नियत काल तक मुख के अपने-अपने स्थानों में रहकर वहां से हट जाते हैं। जैसे इनका यह नियत काल है ठीक इसी प्रकार मुक्त आत्मा ब्रह्म में रहकर नियत समय पर पुन: संसार में आ जाता है। ब्रह्म के समान स्थिति मुक्त जीव की कभी नहीं हो सकती। इसी को प्रकट करने के लिए 'अवस्थानम्' पद में 'अव' उपसर्ग लगा गया है। अन्यथा सर्वदा स्थित रहने के लिए 'स्थानम्' पद ही पर्याप्त था। सूत्र ऐसे बनता—'तदा द्रष्टु स्वरूपे स्थानम्' इस पद विन्यास से यह प्रकट होता है कि स्वरूप प्रतिष्ठित आत्मा का द्रष्टा के स्वरूप में सदा के लिए स्थान हो गया। ऐसा होने पर '[illegible]' पद की भी कोई सार्थकता [illegible]। 'अव' उपसर्ग ब्रह्म में [illegible] का अवधारण करता है और [illegible] इस काल पर [illegible] है। अतः इन दोनो शब्दो का परस्पर [illegible]"

'अच्छा, [illegible] कितना है ?'

'छोटे से सूत्र में इतनी सब बातें नहीं आ सकतीं। इसका कहीं अन्यत्र से पता लगाइये। यह इतना मुख्य भी नहीं है जितना कि मुक्ति में ब्रह्म के भीतर विद्यमानता, वहीं आनन्द की प्राप्ति और वहाँ से लौट आने का प्रतिपादन।'

'क्यों जी ! भाष्यकार व्यास ऋषि ने तो यथा कैवल्ये' कहकर यह प्रकट किया है कि जैसे शरीर से रहित हो जाने पर मुक्ति में आत्मा होता है वैसे ही असम्प्रज्ञात समाधि में भी होता है। समाधि द्वारा ब्रह्म में स्थिति और आनन्द का उपभोग तो सिद्ध है ही, उससे निवर्तन कैसे सिद्ध करेंगे।'

यह भी सिद्ध ही है, क्योंकि असम्प्रज्ञात से योगी सम्प्रज्ञात में आ जाता है, इसी बात को बताने के लिए सूत्रकार ने 'तदा द्रष्टु स्वरूपेऽवस्थानम्' के पश्चात् 'वृत्ति सारूप्यमितरत्र' यह सूत्र रखा है। यह सम्प्रज्ञात समाधि का वर्णन करता है। यहीं भाष्यकार पञ्चशिखाचार्य का सूत्र उद्धृत करते हैं—'एकमेव दर्शनं ख्यातिरेव दर्शनम्'। अर्थात् असम्प्रज्ञात में तो कुछ नहीं दीखता था, परन्तु सम्प्रज्ञात में बुद्धि का दर्शन होता है। इस सूत्र की उत्थानिका में भी लिखते हैं—'चितिशक्तिस्तथापि भवन्ती न तथा' आत्मा ब्रह्म के स्वरूप में स्थित रहता हुआ भी सम्प्रज्ञात समाधि में वैसा नहीं रहता। किन्तु ब्रह्म का ज्ञान जो जगत् में फैला है, उसका दर्शन करता है। इसलिए 'यथा कैवल्ये' महर्षि व्यास ने उचित ही कहा है।"

'अच्छा, अब यह बताइये—सूत्र में 'स्वरूप' शब्द क्यों रक्खा ?"

'तदा द्रष्टर्यवस्थानम्' इतने से यह पता नहीं लगता कि आत्मा ब्रह्म पद में किस प्रयोजन के लिए पहुंचा। 'स्वरूप' ग्रहण करने से स्पष्ट हो जाता है कि उसका जो रूप आनन्द है उसे भोगना ही आत्मा का लक्ष्य है।"

'श्रीमान् जी ! तब तो 'रूप' का ग्रहण सूत्र में से हटा देना चाहिये; क्योंकि तदा द्रष्टु स्वस्मिन्नवस्थानम्' इतना कहने से ही द्रष्टा के रूप में अवस्थान हो जायेगा। रूप से भिन्न द्रष्टा का 'स्व' पदार्थ और कुछ है ही नहीं।'

'सूत्रकार ने 'रूप' शब्द का जो ग्रहण किया है, वह प्रकट करता है कि रूप से भिन्न भी द्रष्टा का कुछ और है, जिसका नाम है—अर्थ। उसे ही हम अस्तित्व के नाम से पुकारते हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि अर्थ सहित रूप का ग्रहण होगा है, न केवल अर्थ का और न केवल रूप का। इसलिये आत्मा मुक्त और जीवन्मुक्त दोनों दशाओं में ब्रह्म सहित आनन्द में अवस्थित होता है। ब्रह्म को छोड़कर केवल आनन्द में ही नहीं।'

(पृष्ठ १५ का शेष)

किया गया। ज्यों ही जल्लाद ने तलवार उठाई तो उसकी लड़की या झट कूदकर मध्य में आ खड़ी हुई और कहने लगी कि भगवान् के लिए बच्चे के टुकड़े मत करो इसे वही सलामत दूसरी स्त्री को दे दो। ठीक इसी तरह अब समय है कि देश और जाति का सच्चा हित चाहने वाले नेता और संस्थायें व्यक्तिगत हानि सहन करके भी जाति और देश के टुकड़े होने से बचाने के लिए मैदान में निकलें परन्तु यह त[illegible] का[illegible] यदि हम जाति के हित को अपने और अपनी संस्थाओं से अधिक महत्व दें। निस्सन्देह इसी में सब का कल्याण है।

●

[illegible]धिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आत्मभास्कर प्रस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम शास्त्री द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

साहित्य-समीक्षण

मुकर्रर करेगा और उसकी मजूरी प्रतिनिधि सभा के अधीन रहेगी।

(७) आर्यसमाज रांची ग्यारह सभासद चुनकर एक कार्यकारिणी सभा निर्माण करेगा, जिसमें अध्यक्ष और मैनेजर उक्त समाज के सभासद अवश्य रहेंगे। (८) पत्र को बिना मूल्य या कम मूल्य पर व्यक्ति विशेष को देने का अधिकार कार्यकारिणी सभा को रहेगा। पर ऐसे मनुष्यों की संख्या सैकड़े पांच से अधिक किसी दशा में न होगी। [९] आर्यसमाज रांची आय और व्यय का नक्शा हर तीन महीने में तैयार करके प्रतिनिधि सभा में भेजा करेगा और जब प्रतिनिधि सभा मांगे। (१०) पत्र में किसी प्रकार का परिवर्तन प्रकाशन, लेख मूल्यादि में बिना प्रतिनिधि सभा की स्वीकृति के नहीं किया जा सकेगा।

सर्वसमत्यानुसार निश्चित हुआ कि प्रतिनिधि सभा को सूचना दी जाय कि सम्पादक श्री बालकृष्ण सहाय तथा बाबू द्वारकानाथ जी मैनेजर नियत किये गये।

सन् १८९९ ई० में बिहार बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में आर्यसमाज रांची द्वारा स्वीकार्थ प्रेषित उपर्युक्त नियमों पर विचार न हो सका चूंकि कलकत्ता आर्यसमाज के प्रतिनिधियों ने इस अधिवेशन में आर्यावर्त पत्र के प्रबन्ध व संचालन स्वयं करने की इच्छा प्रकट की। उस समय रांचीस्थ आर्यावर्त के जिम्मे ७००-८०० छपाई के बाकी हो चुके थे। ११ फरवरी १९०० को प्रतिनिधि सभा के मन्त्री द्वारा कलकत्ता समाज को पत्र लिखा गया कि यदि वह उपर्युक्त रकम की अदायगी कर दे और उसके नियम संतोषजनक हों तो पत्र १ अप्रैल १९०० में निकले। पत्र का उत्तर आया या नहीं कहीं अंकित नहीं फिर भी पत्र रांची से नियमित रूप से निकलता रहा। बिहार बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम यशस्वी प्रधान व 'आर्यावर्त' पत्र के अवैतनिक सम्पादक बाबू बालकृष्ण सहाय जी ने आर्यावर्त पत्र के प्रचार के

आर्थिक स्थिति खराब ही रही। पत्र का न तो अपना प्रेस था और न टाइप। आर्यावर्त उनके निजी कमलेश्वर प्रेस मे छपता था। उन्होंने पत्र की स्थिति सुधारने के अभिप्राय से १ जुलाई १८९९ ई० को ७ वर्षों का अग्रिम चन्दा २५) रु० १०० सदस्यों से प्राप्त करने की योजना पेश की जिससे पत्र का अपना प्रेस हो सके। १५ दिसम्बर १९०० तक ग्यारह लोगो ने २६०) रू० भेजा था और ४१५) प्रतिज्ञात थे, दोनों रकम मिला कर भी प्रेस क्रय करने के लिए रकम यथेष्ट न न थी। वे निराश होकर रुपया लौटाना चाहते थे पर लोगों के आग्रह पर इसे छोटा नागपुर बैंक में जमा कर दिया गया। कहा नहीं जा सकता कि यह राशि एकत्र हुई कि नहीं। पर फिर भी प्रतिनिधि सभा के लिए प्रेस खरीदा गया और प्रथम बार रायल पृष्ठों में अप्रैल १९०१ से अंक इसी प्रेस से छपने लगा। तत्कालीन पत्र के अन्त में निम्नलिखित अंकित है—

Printed and Published M. Dwarikanath Manager, at the Pratinidhi Press Ranchi for the Arya Pratinidhi Sabha Bihar Bengal.

ग्राहक संख्या

आर्य भाषा में एकमात्र साप्ताहिक होने व अपनी विशिष्ट सामग्री के कारण पत्र सुदूर स्थानों व विदेशों में भी जाता था। १५ सितम्बर १९०० के अंक में ९४ सदस्यों द्वारा जून जुलाई मास में व २० अक्तूबर १९०० के अंक में अगस्त सितम्बर माह में ७४ ग्राहकों से आर्यावर्त का शुल्क प्राप्त दिखाया गया है। उन सभी के नाम व पते भी छपे हैं।

होता है कि ग्राहकों की संख्या लगभग ४०० थी।

वार्षिक चन्दा

आर्यावर्त का वार्षिक शुल्क रांचीस्थ समय में ३॥) रु० वार्षिक था। १८९८ ई० में उत्तर प्रदेश प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक उर्दू मुशीरिक जब आर्यमित्र बनकर हिन्दी में निकलने लगा तब उस का वार्षिक शुल्क २) रु० था। आर्यावर्त पत्र सन् १९०५ ई० मे पूर्व समझौते पर २) रु० में भी बाद में विशेष अवस्थाओं में उपलब्ध होता था, वैसे वार्षिक मूल्य ३।) रु० ही था। आर्यावर्त मार्च १९०३ तक १९"×१२" में छपता था और २ अप्रैल १९०४ से यह २०"×१३" में छपने लगा।

आर्यावर्त साप्ताहिक रूप में समाप्त

आर्यसमाज रांची द्वारा प्रकाशित एक अष्ट पृष्ठीय विवरण में बताया गया कि रांची से १८९७ ई० से १९०७ तक आर्यावर्त पत्र निकलता था। "पर वस्तुतः जैसा कि हमने पूर्व ही देखा कि रांची से पत्र १८९७ ई० से नहीं बल्कि १८९८ ई० से निकला था। वर्तमान समय में आर्यसमाज रांची में २० अक्टूबर १९०५ का अन्तिम अंक प्राप्त है। अनुमानतः पत्र १९०७ तक रांची से निकलता रहा और पश्चात् में बन्द हो गया।

आर्यावर्त पत्र का पुनः प्रकाशन

समाचार पत्रों का इतिहास पृष्ठ १९७ व २९९ से ज्ञात होता है कि साप्ताहिक आर्यावर्त पश्चात् में भागलपुर से १९१० ई० में मासिक रूप में पं० रामजी शर्मा के सम्पादकत्व में १९१७ तक निकलता रहा। मासिक रूप में पत्रिका

...ाहिक पत्र निकालने के प्रस्ताव को मुंगेर निवासी श्री डा० कार्तिकप्रसाद एल०एम० एस० ने अपना प्रेस दान कर मूर्त रूप दिया, उस समय बिहार प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री महादेवशरण जी थे। वर्तमान समय में श्री महादेव शरण जी गुरुकुल बैजनाथधाम (जिला संथाल परगना) के मुख्याधिष्ठाता हैं। इस साप्ताहिक आर्यावर्त के सम्बन्ध में 'प्रवासी की आत्म कथा' भवानी दयाल संन्यासी कृत पृष्ठ ३९५ में निम्न विवरण उल्लिखित है:—"सन् १९३१ में पटना से आर्यावर्त पत्र निकला जो बिहार प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र था। इसके प्रधान सम्पादक के आसन पर मुझे बिठाया गया था। मैंने अवैतनिक रूप से यह पद स्वीकार कर लिया था। मैं जहां कहीं भी होता, यह अग्रलेख से वंचित रहने नहीं पाया। मेरे सहकारी पं० महादेवशरण जी थे और वास्तव में वही इस पत्र के प्राण थे। उन्हीं के उद्योग से आर्यावर्त निकला था और उन्हीं के अथक परिश्रम से उसका संचालन भी हो रहा था। उन्हीं के प्रेरणा और प्रयत्न से मैंने भी आर्यावर्त का सम्पादन भार भी स्वीकार किया था। महादेव शरण जी उन आर्यों में से एक हैं जिन पर आर्यसमाज गर्व कर सकता है। इस समय वे गुरुकुल देवघर के मुख्याधिष्ठाता हैं।

आर्यावर्त अखबार गगन में उज्ज्वल नक्षत्र की भांति उठा था। उसमें आर्यावर्त के अतिरिक्त वृहत्तर आर्यावर्त (ग्रेटर इंडिया) की भी यथेष्ट चेष्टा होती थी, प्रत्येक अंक में प्रवासी भारतीयों की परिस्थिति पर प्रकाश पड़ता था, पर संताप की बात है कि कुछ कारणवश वह दीर्घजीवी न होने पाया। वह अपना प्रकाश फैलाकर अदृश्य हो गया। जिस दिन अर्थात् सन् १९३२ के मार्च मास में मैंने बम्बई से दक्षिण अफ्रीका को प्रस्थान किया उसी दिन

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने विभावसुः। स्याम ते सुमतावपि ॥३०॥
ऋ० ६ । ३ । ४० । २४

व्याख्यान—हे परमात्मन् ! आप वसु अर्थात् सबको अपने में बसाने वाले और सब में आप बसने वाले हो। तथा 'वसुपति' पृथिव्यादि वास हेतुभूतों के पति हो 'कमसि' हे अच्छे विज्ञानानन्द स्वप्रकाशस्वरूप, आप ही सबके सुखकारक और सुख स्वरूप हो। तथा 'विभावसु' सत्यस्वप्रकाशैक धनमय हो। हे भगवान् ! ऐसे जो आप उन के आपकी 'सुमतौ' अत्युत्कृष्ट ज्ञान और परस्पर प्रीति में हम लोग स्थिर हो।

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार ३१ जुलाई १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत १,९७,२९,४९ ०६७

पंजाब में दोनों आर्यसभाओं की एकता

●

आर्यसमाज के इतिहास मे आज साठ वर्ष पूर्व संगठन में जो दरार पड गई थी समय के थपेडो ने आज उस दरार को समाप्त करने का प्रयत्न किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के दोनो संगठनों ने आर्यसमाज के काम को बढाने में प्रतिस्पर्द्धात्मक योगदान किया है। विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र मे दोनो सभाओ ने अच्छा कार्य किया है परन्तु दोनो संगठनो के आरम्भ मे जो कटुता या पृथकता की भावना थी वह काफी समय तक उग्र बनी रही एक ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विकास को अपना लक्ष्य बनाया एक लम्बी अवधि तक दोनो सभायें स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज एव उनके अनुयायियो के पथ प्रदर्शन मे कार्य करती रही परन्तु पंजाब के विभाग, पूर्वी पंजाब मे हिन्दी की रक्षा और वर्तमान पंजाब के पुन विभाजन आदि अनेक प्रसगों ने दोनो सभाओ को संगठित होकर काय करने की व्यापक प्रेरणायें दी। १९५७ के हिन्दी रक्षा आन्दोलन के समय दोनों सभाओ की संयुक्त समिति ने आन्दोलन को आगे बढाया वर्तमान में भी दोनो सभाओ ने पंजाब की एकता के लिए संयुक्त प्रयत्न किये। आज पंजाब और समीपस्थ क्षेत्रो में आर्यसमाज की स्थिति को सुदृढ और व्यापक बनाने की दृष्टि से दोनों सभाओ की अन्तरग सभाओ की सम्मिलित बैठक में दोनों सभाओं को एक बनाने के लिए प्रस्ताव पारित किया गया है। दोनों सभाओं के प्रधानो को यह अधिकार दिया गया कि वे समिति के सदस्य मनोनीत कर लें। शीघ्र ही यह समिति एकता की रूपरेखा प्रस्तुत कर कार्य को सम्पन्न करेगी।

इस एकता प्रस्ताव का समस्त आर्य जगत हार्दिक स्वागत करता है। वास्तव मे आज पंजाब के आर्यसमाज के कार्य को सुस्थिर बनाने के लिए एकता की सर्वाधिक आवश्यकता है। हमें पूर्ण आशा है कि इस प्रस्ताव से एकता मे वृद्धि होगी और आर्यसमाज का कार्य आगे बढ़ेगा। एकता को व्यावहारिक रूप देने के कार्य मे अनेक कठिनाइया होगी परन्तु जब एकता की भावना उत्पन्न हो गयी है तब सारी बाधायें अवश्य समाप्त हो जायगी। हम इस एकता प्रयत्न का हार्दिक स्वागत करते हैं।

उच्च न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग

भारत का दुर्भाग्य है कि स्वतन्त्रता के १८ वर्ष बाद भी भारत में विदेशी भाषा का निर्बाध साम्राज्य है और यदि विदेशी भाषा अंग्रजी को हटा कर हिन्दी एव अन्य भाषाओ को प्रोत्साहन देने की माग की जाती है, तब अंग्रजी समर्थक विध्वसात्मक आन्दोलन चलाकर अंग्रजी का वचस्व स्थापित रखने की कोशिश करते हैं। १९६५ की २६ जनवरी से यद्यपि हिन्दी को राजभाषा का सम्मानित संवैधानिक अधिकार घोषित हो चुका है फिर भी अन्य क्षेत्रों की भांति उत्तर प्रदेश जैसे हिन्दी क्षेत्र के उच्च न्यायालय मे सारी कार्यवाही अभी तक अंग्रेजी में ही मान्य होती रही है। हिन्दी क्षेत्र के वकीलों को जबरदस्ती अंग्रेजी मे बहस करनी पडती थी। परन्तु अब अनेक प्रयत्नो के पश्चात् राष्ट्रपति ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में हिन्दी में बहस करने की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली है। हम इस भूल-सुधार का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं शीघ्र ही वह दिन आयगा जब उच्च न्यायालय में केवल हिन्दी मे ही बहस करने का नियम घोषित हो सकेगा।

हम आशा करते हैं कि राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त इस अनुमति का इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे अधिकाधिक प्रयोग होगा और अब जनता की भाषा में जनता को न्याय सुलभ हो सकेगा।

बांदा में पुलिस दमन

उत्तर प्रदेश बन्द का आन्दोलन चाहे कितना ही अनुचित हो परन्तु बांदा में पुलिस द्वारा गोलीकाण्ड किसी भी दशा में उचित नही ठहराया जा सकता। बांदा की पुलिस ने बिना मजिस्ट्रेट की अनुमति के गोली चलाकर कानून की जो अवज्ञा की है उससे पुलिस की दमन एव आतंकवादी मनोवृत्ति बिलकुल स्पष्ट हो जाती है। इस गोलीकाड में प्रत्यक्ष दर्शियो के कथनानुसार ३० से अधिक व्यक्तियो की मृत्यु हुई है। इस दुखद काण्ड के लिए राज्य की सारी जनता में व्यापक क्षोभ है। जिलाधिकारियो एव पुलिस अधिकारियो के स्थानान्तरण की माग को राज्य की प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाकर जन भावना का आदर किया जाना चाहिए। जनता को शान्ति एव सुरक्षा का उपदेश देने वाली सरकार को स्वय भी जनता की भावनाओ का आदर उपस्थित करना चाहिये।

आर्य शिक्षा संस्थाओं में संस्कृत और धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था

शिक्षा सत्र आरम्भ हो चुका है। सत्र के आरम्भ मे शिक्षा सस्थाओं का समय विभाग निर्माण करते समय आर्य शिक्षा संस्थाओ के अधिकारियों को विशेष रूप से प्रधानाचार्यों प्रधानाचार्याओ को ध्यान देना चाहिये कि सस्था मे संस्कृत विषय और धार्मिक शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था हो। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा प्रत्येक आर्य शिक्षा सस्था मे संस्कृत की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिये। इसी प्रकार आर्यसमाज शिक्षा मे धार्मिकता का सदैव समर्थक रहा है हम बराबर भारत सरकार और राज्य सरकारो से माग करते हैं कि शिक्षा सस्थाओ में धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था की जाय। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज की शिक्षा सस्थाओ पर विशेष दायित्व है कि वे अपने यहा धार्मिक शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था करें। प्राय कभी-कभी सुना जाता है कि आर्य शिक्षा सस्थाओं के प्रबन्धक अधिकारी सोचते हैं कि यदि हम धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था करेंगे तो शिक्षाधिकारी अप्रसन्न होंगे इसलिये इच्छा होते हुए भी धार्मिक शिक्षा की उपेक्षा कर देते हैं। परन्तु उनका यह कार्य कमजोरी का सूचक है। प्रत्येक आर्य शिक्षा सस्था के प्रबन्धक एव आचार्य का कर्तव्य है कि वे धार्मिक शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था करें। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने धार्मिक शिक्षा की कक्षानुसार पाठविधि तैयार की है उसके अनुसार पाठ्यक्रम चलाना चाहिये। हमे आशा है कि आर्य शिक्षा सस्थाओ में धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था कर सस्थाओ के अधिकारी आर्यसमाज के मिशन की पूर्ति में योगदान करेंगे।

पंजाब में चोरबाजार विरोधी अभियान

पंजाब में राष्ट्रपति शासन की घोषणा के पश्चात् राज्यपाल श्री धर्मवीर के आदेश से वहा चोरबाजारियो के विरुद्ध व्यापक अभियान आरम्भ हो गया है।

इस अभियान के फलस्वरूप चोर बाजारियो एव जमाखोरो की व्यापक धर पकड हुई है। ३५० से अधिक व्यापारियो को मिलावट, चोरबाजारी एव जमाखोरी के अपराध मे बन्द करके पंजाब की पुलिस ने साहसपूर्ण कदम उठाया है। यदि पुलिस इसी प्रकार साहस करके सारे पंजाब मे कार्य करेगी उठाया है। यदि पुलिस इसी प्रकार पंजाब राज्य को आदर्श बनाकर दूसरे राज्यो मे भी इसी प्रकार के कठोर कदम उठाये जाने चाहिये।

पंजाब में राष्ट्रपति शासन होने के कारण पुलिस को इस बात का भय नही है कि कोई मन्त्री उनसे अप्रसन्न होगा या कोई मन्त्री अपने व्यक्तियो की रक्षा मे अपने प्रभुत्व का प्रयोग करेगा। पुलिस इस मानवीय मनोवृत्ति से भलीभांति परिचित होती है। परन्तु यह पुलिस के लिये आदर्श नही है। पुलिस का कर्तव्य है कि चाहे कैसा भी शासन हो वह अपना कार्य करे बिना किसी प्रभाव के कर्तव्य पालन ही सच्ची देश सेवा है। यदि पुलिस जनता के उत्पीडन के स्थान पर जनता के हितो की ओर अधिक ध्यान दे तो शीघ्र ही सुशासन स्थापित हो सकता है। हम पंजाब मे राज्यपाल के आदेश से आरम्भ हुए इस अभियान का स्वागत करते हैं।

●

आर्य-जगत् के वयोवृद्ध आर्य नेता

माननीय पं. बिहारीलालजी शास्त्री

का अभिनंदन

पंडित जी के परम भक्त श्री बा० चन्द्रनारायण जी एडवोकेट ने तथा समस्त आर्यों ने अपनी गुरुभक्ति का एक अनुकरणीय परिचय उनका अभिनन्दन कर प्रदर्शित किया है। यह एक शुभ लक्षण है हम लोगों के स्नेह का। प० जी का सारा जीवन त्याग व तपस्या का एक ज्वलन्त उदाहरण है जनता द्वारा प्रदत्त धनराशि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को सम्मान के साथ भेंट कर दी, आर्यों की भेंट आर्यों के लिए है त्याग की प्रत्यक्ष प्रमाण। आगे भी शास्त्री जी ने निवेदन किया है कि जो भी धन इस मद में आये वह भी आ०प्र० नि० सभा के पते पर भेजते रहना चाहिये। श्री बा० चन्द्रनारायण जी की सूझबूझ निराली है। इस आयोजन के उनकी सर्वत्र प्रशंसा हो रही है और वह उसके पात्र भी हैं।

जैसे योग्य पिता तदनुरूप उनके सुपुत्र श्री अरविन्द कुमार जी एम०ए०ने इस अवसर पर सपत्नीक यजमान बनकर आर्यसमाज मन्दिर में श्रद्धा सहित यज्ञ कर पूज्यपिता के प्रति आदर-भाव प्रकट किया और आशीर्वाद प्राप्त किया।

आर्यसमाजियों के अतिरिक्त नगर के सनातन धर्मावलम्बियों ने भी पं० जी के प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित कर दीर्घायुष्य की प्रभु से कामना की।

बाहर से महान् विद्वानों, उच्च प्रतिष्ठितों की अनेक शुभ कामनायें भी पं० जी को प्राप्त हुई।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम.ए.
उपमंत्री सभा

गुरुकुल विद्या सभा के प्रतिनिधि निर्वाचित

सभा के वृहदधिवेशन दि० १२-६-६६ के निश्चय अनुसार सभा की प्रधान जी ने गुरुकुल विद्या सभा वृन्दावन के लिए निम्नलिखित छै: प्रतिनिधि निर्वाचित किए :—

१—श्री पं० महेन्द्रप्रतापजी शास्त्री एम.ए.
२—„ उमेशचन्द्र जी स्नातक एम०ए०
३—" फूलनसिंह जी शिकोहाबाद
४—" रमेशचन्द्र जी एडवोकेट मथुरा
५—" जयकुमारजी स्नातक एम.ए. मथुरा
६—" रोशनलाल जी गुप्त एम.ए. आगरा

—चन्द्रदत्त सभामन्त्री

शीघ्रता कीजिये

इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह ३० अगस्त से ८ सितम्बर तक मनाया जा रहा। प्रदेश की सभी समाजों से अनुरोध है कि उक्त तिथियो मे यदि मन चाहे उपदेशक प्रचारक सभा से नही मिल पाते हैं, तो वह अगस्त और सितम्बर मे किन्ही भी तिथियों में मन चाहे महानुभावो को बुलाकर सप्ताह मनाने की व्यवस्था करें, परन्तु इसके लिए तथा ३० से ८ सितम्बर की तिथियों के लिये पत्र लिखने की शीघ्र कृपा करें ताकि पूर्व से व्यवस्था की जा सके।

क्या हम आशा करें ?

सभा की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। सभा के समस्त कार्य बिना धन के रुके पड़े हैं। क्या हम अपने आर्य भाइयो और माताओं से आशा करें जैसा कि पिछले आर्यमित्र अक में प्रकाशित किया जा चुका है कि प्रत्येक समाज का वेद प्रचार सप्ताह मे १) प्रदान कर वेद प्रचार निधि को सुदृढ़ बनाने मे सहयोग देंगे ?

हम बारम्बार आप सबसे यह अनुरोध करते हैं कि जिस पुनीत सप्ताह को आप इतने उत्साह के साथ मना रहे हैं, वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए उसी उत्साह के साथ१)-१) प्रति सदस्य अवश्यमेव प्रदान करें। यह अनुरोध हमारा ८ सितम्बर तक बराबर प्रकाशित होता रहेगा। इन शब्दों के साथ हम पुन: आशा और विश्वास करते हैं कि आर्यसमाज के सदस्य तथा आर्य जनता अधिक से अधिक धन वेद प्रचारार्थ प्रदान कर हमें कार्य करने का अवसर देंगे।

कथाओं का आयोजन कीजिए

बरसात का समय है अत: प्रत्येक समाज का कर्तव्य है कि वह अपने यहाँ सुयोग्य एवं प्रकाण्ड विद्वानों को आमंत्रित कर कथा का आयोजन करें। यह आवश्यक नहीं है कि वेद प्रचार सप्ताह मे ही केवल कथा सुनी जाये। सप्ताह के पूर्व और पश्चात् मे भी कथाओं का कार्यक्रम बनाकर वैदिक धर्म का प्रचार एव प्रसार कर अपने कर्तव्य का पालन करें। जो समाजें प्रचारको (भजनोपदेशकों) को ही बुलाना चाहे, वह शीघ्र लिखने की कृपा करें ताकि व्यवस्था की जा सके।

बरेली, पीलीभीत जिलों में प्रचार व्यवस्था

सभा ने बरेली, पीलीभीत, रामपुर, जिले की समाजों में प्रचारार्थ ब्रह्मचारी श्री मुरलीधर जी भजनोपदेशक की नियुक्ति की है। समाजों को चाहिये कि उपरोक्त प्रचारक जी के पहुंचने पर प्रचार की व्यवस्था करें, तथा वेद प्रचारार्थ धन प्रदान करें।

मथुरा, आगरा, मैंनपुरी जिले में प्रचार व्यवस्था

उपरोक्त जिलों की समाजों में प्रचार निमित्त श्री कमलदेवजी शर्मा की नियुक्ति सभा ने की है, हम आशा करते हैं कि उपरोक्त भजनोपदेशक के पहुंचने पर समाजें प्रचार की व्यवस्था कर वेद प्रचारार्थ धन प्रदान करेंगी।

—अधि० उपदेश विभाग

वेद प्रचार सप्ताह के प्रोग्राम

(३० अगस्त से ८ सितम्बर)

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—१५ से २१ अगस्त छपरा (बिहार), ३०अगस्त से ८ सितम्बर तक आ० स० लखीमपुर खीरी।

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री—३० अगस्त से ८ सितम्बर अलीगढ़।

श्री धर्मराजसिंह जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर चन्दौसी।

श्री गजराजसिंह जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर भर्थना (इटावा)।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—३० अगस्त से ८ सितम्बर मऊनाथ भंजन।

श्री प्रकाशवीर जी शर्मा—३०अगस्त से ८ सितम्बर अलीगढ़।

प्रचार योजना वर्ष १९६६-६७

क्रम सं० नाम प्रचारक	नाम मंडलपति	जिला जिनमें प्रचार करना है
१—श्री रामस्वरूप जी आर्य मु०	श्री मक्खनलाल जी कोटद्वार	गढ़वाल तथा टेहरी
२—श्री गजराजसिंह जी	श्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री, झांसी	झांसी, बांदा, हमीरपुर, जालौन
३—श्री धर्मराजसिंह जी	श्री रामावतार जी, जौनपुर	जौनपुर, प्रतापगढ, बाराबंकी, सुल्तानपुर, फैजाबाद
४—श्री धर्मदत्त जी आनन्द	श्री उमेशचन्द्र जी, हल्द्वानी	कुमायूं क्षेत्र—नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़
५—श्री वेदपालसिंह जी	श्री आशाराम जी पान्डेय	बलिया, बनारस, मिर्जापुर, गाजीपुर, आजमगढ़
६—श्री क्षेमचन्द्र जी	श्री पं० विद्याधर जी शर्मा	कानपुर, उन्नाव, फतेहपुर, रायबरेली
७—श्री बालकृष्ण जी धनुर्धर	श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, गोंडा, बहराइच
८—श्री रामनिवास जी	जिलोपसभा इलाहाबाद	इलाहाबाद
९—श्री रघुवरदत्त जी शर्मा	श्री मुरारीलाल जी धमकनी	हरदोई, शाहजहांपुर, सीतापुर, लखीमपुर
१०—श्री ओमप्रकाश जी निर्द्वन्द	श्री विशुद्धानन्द जी शास्त्री	बदायू, एटा, फर्रुखाबाद
११—श्री खड़गपालसिंह जी	श्री चौ०तेजसिंह जी सहारनपुर	सहारनपुर, मु० नगर, देहरादून
१२—श्री प्रकाशवीर जी शर्मा	श्री ईश्वरदयालु जी आर्य	बिजनौर, मुरादाबाद
१३—श्री जयपालसिंह जी	श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा	अलीगढ, मथुरा, आगरा
१४—श्री दिनेशचन्द्र जी	श्री सत्येन्द्रबन्धु जी	बुलन्दशहर, अलीगढ़
१५—श्री कमलदेव जी शर्मा	श्री रमेशचन्द्र जी एडवोकेट	मैंनपुरी, इटावा
१६—श्री मुरलीधर जी	श्री बा० चन्द्रनारायण जी	बरेली, रामपुर, पीलीभीत

क्या प्रमाणों से ईश्वर को सिद्ध किया जा सकता है?

[ले०—श्री रामावतार आर्य, आर्यसमाज गाजीपुर]

★

सत्य और असत्य को जानने के साधनों को प्रमाण कहते हैं। मैं चाहता हू 'चोरी करना अधर्म है।' आप कहते हैं 'नहीं, चोरी करना भी धर्म है।' अब प्रश्न है कि किसकी बात सत्य मानी जाय और किसकी असत्य। इसके निर्णय का कोई मापदण्ड होना चाहिए। जैसे कपडे की लम्बाई मापने के लिए मीटर है। अन्नादि के लिये तराजू बाट होते हैं। इसमे विवाद नही चलता कि यह कपडा चार मीटर है या तीन मीटर। अगर शका होती है तो दुकानदार मीटर उठाकर नाप देता है। अगर मीटर के अनुसार ठीक है तो ग्राहक को मानना पडता है। इसके बाद वह विवाद का विषय नही बनता। इसी प्रकार सत्यासत्य के निर्णय के लिए दार्शनिकों ने साधन बनाये हैं। उन साधनो का नाम ही प्रमाण रखा है।

न्याय दर्शन मे गौतम मुनि ने ८ प्रमाण माने हैं—

प्रत्यक्षानुमानोपमान शब्दा प्रमाणानि। (न्याय० १।१३)

अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

न चतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभाव प्रामाण्यात्। (न्याय २।२।१)

अर्थात् ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव इन चार का भी प्रमाण होने से प्रमाण केवल चार ही नही आठ हैं।

इस प्रकार प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव से आठ प्रमाण हुये।

योगदर्शनकार पतञ्जलि मुनि ने केवल तीन प्रमाण माना है।

प्रत्यक्षानुमानागमा प्रमाणानि। (योग० १।७)

अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द।

सांख्यकार कपिल मुनि ने भी इन तीनो को ही माना है।

तत् त्रिविध प्रमाणम् (सां० १८७) मुनि ने भी इन तीनो को ही स्वीकार किया है।

प्रत्यक्ष चानुमान च शास्त्र च विविधागमम्। (मनु० १२।१०५)

लिखने का तात्पर्य यह है कि सबने प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अनुमान और शब्द को भी प्रमाण माना है। यदि ठीक ढग से विचार किया जाय तो पता लगेगा कि इन तीनो प्रमाणों के अन्दर गौतम मुनि के आठो प्रमाण आ जाते हैं। इस लिये प्रमाण सख्या के विषय में (आठ है या तीन) कोई विवाद नहीं खड़ा करना चाहिए।

अब एक प्रश्न होता है कि क्या ईश्वर पर प्रत्यक्ष प्रमाण लगता है? इस प्रश्न के उत्तर मे कुछ लोगो का कहना है कि ईश्वर पर प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं घटित हो सकता। चूंकि ईश्वर का प्रत्यक्ष नही होता इसलिये उसका अनुमान भी नही किया जा सकता। शब्द प्रमाण भी नही लग सकता। उनका कहना है कि वर्षा होने के पहले हमने देखा था कि बदली थी। इसका कई बार प्रत्यक्ष हो चुका था। इसलिए जब बारिस हो गयी तो उसे देखकर यह अनुमान लगाते हैं कि पहले बदली हुई होगी। या खूब घनघोर बदली देखते है तो अनुमान लगाते हैं कि बारिस होगी। क्योंकि पहले का अनुभव हमारा यह बताता है कि ऐसी बदली होने पर बारिस होती थी।

इस दलील पर विचार करने की आवश्यकता है। जो लोग उपर्युक्त तर्क प्रस्तुत करते हैं वे जाने या अनजाने एक ही प्रमाण मे विश्वास करते है। चूकि ईश्वर पर प्रत्यक्ष प्रमाण घटित नही होता इसलिए अन्य प्रमाण भी नही घट सकते। इस दलील का साफ मतलब यह हुआ कि जिस-जिस पर प्रत्यक्ष प्रमाण नही लगेगा उस-उस पर दूसरे प्रमाण नही लग सकते। अगर ऐसी ही बात होती तो अन्य प्रमाणो की आवश्यकता ही क्या थी। कहते हैं—

प्रत्यक्ष किं प्रमाणम्।

अर्थात् जिसका प्रत्यक्ष हो रहा हो उसके लिये अन्य प्रमाणो की क्या आवश्यकता है।

अब एक सवाल होता है कि जिसका प्रत्यक्ष नही होता, क्या उस पर अनुमानादि प्रमाण नही लग सकते? इस प्रश्न पर कुछ उदारता से विचार करना चाहिये। सबसे पहले इस बात की जानकारी करनी चाहिए कि प्रत्यक्ष कहते किसे हैं? न्यायदर्शन मे गौतम जी ने 'प्रत्यक्ष' का लक्षण करते हुए लिखा है—

इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्न ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकप्रत्यक्षम्। (न्याय १।१।४)

अर्थात् इन्द्रिय और अर्थ के सन्निकर्ष से जो ज्ञान पैदा होता है वह यदि अशाब्द, भ्रम रहित और सशय रहित हो तो प्रत्यक्ष कहलाता है।

इन्द्रिया ग्यारह हैं। पाँच कर्मेन्द्रियाँ और ग्यारहवा मन, जो दोनो मे कामन है इस सूत्र का तात्पर्य ज्ञानेन्द्रियो तथा मन से है। आख, नाक, कान, जिह्वा और त्वचा। यही पाच ज्ञानेन्द्रिया हैं। यह इन्द्रिया ज्ञान कराती है। आख से देखकर हम यह बता सकते हैं कि अमुक चीज कैसी है। यह घडी है, यह दावात है, यहाँ प्रकाश है, यह रूपवान है, उस की शकल भद्दी है, वह फूल लाल है यह सब ज्ञान कराती है। अगर आपके सामने घोडा और हाथी लाकर खडाकर दिया जाय और आप से पूछा जाये कि इन जानवरो का नाम बताओ, आप उन्हे देखकर बता देंगे कि यह हाथी है और वह घोडा है। लेकिन आपकी आखे बन्द कर दी जाय तो आप नही बता सकते।

कान से शब्द सुनते हैं। कोई उपदेशक बोल रहा हो और आप बहरे हो। परन्तु आखे ठीक हो तो क्या उपदेश श्रवण कर सकेंगे? आप आख से उपदेशक को देख सकते हैं लेकिन आख से उसकी आवाज नही सुन सकते। शब्द का ज्ञान कान (स्रोत) से होता है। आप घर मे बैठे हो और बाहर भौ-भौ की आवाज हो रही हो तो आप पहचान जाते हैं कि कुत्ता भूक रहा है। रेडियो से खबरें सुनकर सारी दुनिया का हाल जान सकते है। फोन पर अपने मित्र, पत्नी या सम्बन्धी की बोली पहचान जाते हैं। यह सब श्रोत्रेन्द्रिय की महिमा है।

नाक गध का ज्ञान कराती है। किसी गदी गली से होकर गुजरिये, आप की नाक बदबू से भर जायेगी। आप रूमाल से नाक बन्द कर लेते हैं। सुगध और बदबू का ज्ञान न तो आख करा सकती है और न तो कान। कही कपडा जल रहा हो तो आप की नाक बता देती है। रबर या मिर्चा जल रहा हो तो तुरन्त आप की नाक को पता लग जाता है। पके आम को नाक से सूघकर पता लगा लेते हैं कि पका है या कच्चा। मीठा है या खट्टा।

इसी प्रकार जिह्वा स्वाद का ज्ञान कराती है। सब्जी आपने बहुत अच्छी बनाई है। देखने मे बडी सुन्दर लगती है। लेकिन जब आप खाने बैठे तो जिह्वा ने बता दिया कि इसमे नमक तो है ही नही। नमक डालना भूल गये हो। इसी प्रकार तीता, मीठा, खट्टा, चरपरा सभी प्रकार के स्वादो का ज्ञान जिह्वा के अतिरिक्त और कोई इन्द्रिय नही कराती।

पाचवी इन्द्रिय त्वक् है जिसे त्वचा कहते है। अगर आप रात मे खुले स्थान मे सोये हो। वारिस होना शुरु हो जाय। जब आपके शरीर पर पानी की बूदे पडती है तो आप जग जाते हैं। आपकी त्वचा बता देती है कि बारिस हो रही है। आप चुप चाप बैठे पढ रहे हो और आप की पीठ पर कोई एक घूसा मारे तो आप को पता लग जाता है कि किसी ने घूसा मारा है। नाई यदि आपकी दाढी बना रहा तो आपकी त्वचा बता देती है कि उसका छूरा भूथरा है। क्योंकि काफी दर्द हो रहा है। कही कट जाता है तब भी पता लग जाता है।

इस प्रकार ये पाचो ज्ञानेन्द्रिया अलग अलग विषयो का ज्ञान कराती हैं। एक इन्द्रिय मन है। यह कर्मेन्द्रियो और ज्ञानेन्द्रियो दोनो म कामन है। यह ज्ञान कराने मे भी शरीक रहता है और कर्म करने में भी। यह सुख, दुख, ईर्ष्या द्वेष प्रेम, अनुराग, लज्जा, उत्साह, शका भय आदि का ज्ञान कराता है। सक्षप मे यह समझ लेना चाहिये कि जिन चीजो का ज्ञान इन पाच इन्द्रियो से नही हो पाता उनका ज्ञान मन से होता है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं। लेकिन वह ज्ञान निर्भ्रम होना चाहिए। ऐसा न हो कि इसमें किसी प्रकार का सन्देह हो। अगर सन्देहास्पद ज्ञान होगा तो उसे प्रत्यक्ष ज्ञान नही कह सकते।

(क्रमश)

दयानंद के वीर सैनिक का अभिनन्दन

(ले०—श्री अमीचन्द प्रधान आर्यसमाज चान्दपुर जि० बिजनौर)

अभी उस दिन बरेली के मोती पार्क में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्रद्धेय पंडित बिहारीलाल जी शास्त्री का सार्वजनिक अभिनन्दन माननीय श्री मदन-

श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

मोहन जी वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अध्यक्ष विधान सभा उत्तर प्रदेश के सानिध्य मे हो गया। बाबू चन्द्रनारायण जी एडवोकेट प्रधान आर्य समाज बिहारीपुर बरेली ने सफलता-पूर्वक समारोह का सचालन किया।

रात अंधियारी थी और बिजली ने भी आंखें फेर ली थी। आंख मिचौनी का खेल चल रहा था। वातावरण मे गर्मी तथा भारीपन था। कभी-कभी धोका हो जाता था कि समारोह बरेली जैसे नगर मे हो रहा है या किसी अन्य स्थान पर। महर्षि स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव के समय के वातावरण की याद आ गई। चारो ओर अन्धकार ही अन्धकार। अपना कोई नजर नही आता था परन्तु ऋषि ने अपना रास्ता स्वय टटोला। आगे बढ़ा। अज्ञानता के काले बादल छिन्न-भिन्न हो गये और चहुंओर प्रकाश ही प्रकाश।

ज्योंही 'पेट्रोमेक्स' की सहायता ली गयी कि बिजली ने भी मित्रता का झूठा प्रदर्शन किया। समारोह में रस तथा उत्साह था। सादगी, सरलता और सौजन्यता का साम्राज्य था आर्य जगत् के जाने माने विद्वान्, साधु और सन्यासियों के शुभ सन्देश पढ कर सुनाये गये। कवितायें, नज़्में तथा भाषण हुये। श्रद्धेय पंडित जी के चरणो मे नाना प्रकार की भेंटें और श्रद्धा सुमन चढ़ाये गये। माननीय प्रधान जी के अपने ही शब्दों में कि 'इस राकेट और अणुबम के युग में इस प्रकार के अभिनन्दन कुछ महानुभावो को धर्म निरपेक्षता की आड में शायद कुछ अटपटे से लगें, परन्तु शीघ्र समय आयेगा जब ऐसे अभिनन्दन का वास्तविक मूल्यांकन किया जायगा। भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के पुजारियो की चहुंओर पूजा होगी।" श्रद्धेय प० जी ने अन्त मे अभिनन्दन समारोह के संयोजको तथा जनता का आभार प्रदर्शन करते कहा कि 'मैंने इस सारे नाटक मे सम्मिलित होने की स्वीकृति इस कारण दी, जिससे भारी बाधाओं और वेदनाओं को सहता हुआ भी आर्य-समाज का उपदेशक और प्रचारक सामूहिक स्तर पर सुख और सान्त्वना प्राप्त कर सके और हीनता तथा दीनता की भावना से पीडित न होकर गर्व के साथ अपना सीना तान कर चले और अपने को सम्मानित समझे।"

से विरोधियो की छठी का दूध याद आ जाता है। अनथक विचारक, तार्किक और वाणी तथा लेखनी दोनो के धनी हैं भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पूर्ण रूप मे प्रतिनिधि, नि स्पृह, त्यागी और तपस्वी ब्राह्मण हैं। आपको झूठ यश, सम्मान तथा आडम्बर से हमेशा घृणा रही। आपने निर्धनता तो सहन की, परन्तु अन्याय से समझौता नहीं किया। धर्म धन और सन्तोष धन के पुजारी रहे। ईसाई पादरियों, यवनो तथा पौराणिको से सहस्त्रो से शास्त्रार्थ किये जीवन मे सैकड़ो शुद्धिया की। अछूतोद्धार आपका प्रिय विषय रहा है।

पूज्य पंडित जी ७५ वर्ष के हो गये। आर्यसमाज के 'प्लेटफार्म' पर ५० वर्ष पहले भी उनके भाषणो की धाक थी।

दिन प्रतिदिन उनके भाषणो मे प्रवाह तेजी और रवानी बढ़ती ही गई। ज्वलन्त परिस्थितियो का विश्लेषण उन की एक विशेष कला है। शास्त्रार्थ महारथी हैं। उनकी चुटकियो तथा चुटकलों

समाज के विघटन और कलह को रोकने का प्रयत्न करते रहे। गुण कर्मानुसार वैदिक वर्ण-व्यवस्था मे ब्राह्मण और शूद्र दोनों ही अपने-अपने स्थान पर गौरवशाली हैं।

जीवन भर अध्ययन तथा अध्यापन करते बीता। गम्भीर तथा पैनी आलोचना में आप अपना सानी नही रखते।

शतायु हों !

लेखनी कुछ तू भी उस विद्वान् का गुण गान कर।
जिसने तन मन धन लगाया वेद के प्रचार पर॥

है तपस्वी और त्यागी धर्म प्राणा धार है।
आर्य जाति का है दीपक ज्ञान का भण्डार है॥

देखकर इनकी चमकती तर्क की कृपाण को।
भाग जाते हैं विधर्मी छोड़कर मैदान को॥

इस दधीचि को कलि के कोटिश मेरा नमन।
आ गया हू मैं भी करने भेंट श्रद्धा के सुमन॥

कर रहे गुणगान जिसका कौन सा वह लाल है।
हम सभी का प्राण-प्यारा वह बिहारीलाल है॥

अन्त में भगवान से कर जोड़कर मेरी विनय।
हों शतायु और मिले सर्वत्र ही पग-पग विजय॥

—अमीचन्द गुप्त प्रधान आ०स० चान्दपुर (बिजनौर)

विनोदप्रिय हैं, सोने मे सुहागे की तरह। मजाक का ढग निराला है। थोड़े से मे ही सब कुछ कह डालते हैं। वैदिक मान्यताओं के निर्भीक और निस्वार्थ व्याख्याता हैं। आप किसी पूर्व आग्रह तथा सीमित मान्यता से नही घिरे हैं। न्याय अन्याय, सत्य असत्य का वैदिक मूल्यांकन ही आपके जीवन का लक्ष्य रहा है। आर्यसमाज के प्रचार तथा प्रसार मे अपनी भरी पूरी जवानी का एक एक कण और क्षण होम देने वाले कलियुग के इस तपस्वी दधीचि के सामने कौन नतमस्तक नही होगा। इन की वाणी और लेखनी से देश का आत्म बली मिला है। अपनी जीवन शक्ति की एक-एक बूंद राष्ट्र को अर्पण कर रहे हैं मरने के बाद तो बहुत से शहीद माने जाते हैं परन्तु श्रद्धेय पंडित जी तो जिन्दा ही शहीद हैं।

जिले मुरादाबाद में जन्म लिया। उत्तरप्रदेश तथा अन्य प्रान्तो मे भी वैदिक नाद सुनाया। समस्त रोहेल खण्ड डिवीजन आपका विशेष कार्य क्षेत्र रहा। जिले बिजनौर में आर्य उप प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत १९२० से '२४ तक उपदेशक रहे। जिले के गाव-गाव और घर-घर घूमकर वैदिक सन्देश सुनाया। वैदिक पताका फहराई। अपने सामने खड़े हो होकर ईंट और गारे से आर्यसमाज के भवन निर्माण कराये तथा प्रेरणा दी।

श्रद्धेय पण्डित जी के अभिनन्दन के शुभ अवसर पर मैं उनके चरणो में अपनी श्रद्धांजली अर्पण करता हुआ इन के शतायु होने की प्रभु से कामना करता हू। उनका यह उपदेश और सन्देश सदा आर्य जगत् मे गूंजता रहता है कि—

'जिन्दगी ऐसी बना,
जिन्दा रहे दिल शाद तू,
तू न हो दुनियां मे तो,
दुनिया को आये याद तू।'

पण्डित जी जीवन भर अभावो से संघर्ष करते रहे, समाज मे जमी हुई गन्दगी को कुरेदते रहे और बाह्य आक्रमणो से रक्षा करते रहे। अन्त मे सब परीक्षणो मे कुन्दन बनकर ही निकले।

'डुबो दे जो जहाजो को,
उसे तूफान कहते हैं,
जो तूफानों से टक्कर ले,
उसे इन्सान कहते हैं।'

और लीजिए उस औघड दानी ने भेंट में आई सम्पूर्ण धन राशि को वेद प्रचार फण्ड के लिए सम्मानपूर्वक अध्यक्ष महोदय के चरणो मे रख दिया। पल्ला झाड कर उठ खड़ा हुआ और खाली हाथ अपने घर लौट गया।

★

म० आनन्द स्वामी जी

द्वारा थाईलैंड, सिंगापुर, फीजी, न्यूजीलैंड आस्ट्रेलिया, हांगकांग, जापान, मलेशिया में

व्यापक वेद प्रचार यात्रा

★

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

९-७-६६

मेरे प्यारे श्री प० रमेश जी
आनन्दित रहो !

आशा है आप हर प्रकार से स्वस्थ होंगे। मेरे प्यारे विद्यारत्न जी को मेरा नमस्ते कह दीजिये—

इस दक्षिण पूर्वी एशिया तथा शान्त महासागर के तीन बड़े टापुओं में भ्रमण करते तीन मास से अधिक हो गये सब से पहले मैं थाईलैंड (स्याम) की राजधानी बंकाक में पहुंचा वहां उत्तर प्रदेश के श्रद्धालु तथा पुरुषार्थी सज्जनों ने विशाल आर्यसमाज मन्दिर बना रखा है विधिपूर्वक सत्संग होते हैं और उपदेश भी। आर्यसमाज मन्दिर के साथ विष्णु मन्दिर है वहां भी मैं वेद मन्त्रों की व्याख्या सुनाता रहा हूं—एक और बहुत विशाल हिन्दू समाज का मन्दिर है वह शहर का केन्द्र है—वहां १२ दिन वेद कथा सुनाई। स्याम देश बुद्ध देश है यहां का राज घराना पहले हिन्दू ही था अब भी उनका राज पुरोहित तथा राज गुरु दक्षिणी ब्राह्मण है यज्ञोपवीत तथा चोटी धारी है—सारे संस्कार इन्हीं के द्वारा होते हैं—यहां भारत थाई-सांस्कृतिक सभा भारत तथा स्याम के सम्बन्ध दृढ़ बनाने का यत्न करती रहती है।

बैंकाक से मैं वायुयान द्वारा सिंगापुर पहुंचा यहां पंजाब के श्री मूलामल सचदेव के परिवार ने अपने धार्मिक साथियों की सहायता से बड़ा सुन्दर तथा विशाल तीन मंजिला भवन कई लाख डालर व्यय करके बनवाया हुआ है इसके प्रधान श्री डा० शिवनाथ जी कपूर और मन्त्री श्री प० श्रीधर जी त्रिपाठी अपने मित्रों सहित बड़ी लगन से कार्य कर रहे हैं यह समाज सारे मलेशिया के लिये प्रेरणा केन्द्र है मैंने इसे अपना मुख्य कार्यालय बनाया यहां २० दिन कथा तथा वेद व्याख्या करके यहां से बहुत दूर शान्त महासागर के टापू फीजी जा पहुंचा—जो सिंगापुर से लगभग सात हजार मील दूर है समुद्र के मार्ग से कई सप्ताह लगते हैं—मैं आकाश मार्ग से ३० घण्टों में पहुंचा। फीजी में आर्य प्रतिनिधि सभा है और १५ दयानन्द कालेज तथा स्कूल चला रही है—इस टापू में २१ लाख हिन्दू निवास करते हैं—इनके पूर्वज मजदूर बनाकर यहां लाये गये थे, जिन्होंने फीजी में पहुंचकर घोर तप तथा भयंकर कष्ट उठाये और फीजी को हरे भरे खेत में परिवर्तित कर दिया और उन तपस्वियों की सन्तान आज बड़ी सुन्दर अवस्था में है, इनमें से अधिकांश उत्तर प्रदेश, बिहार, मद्रास तथा मध्यप्रदेश के लोग हैं—गुजराती सज्जन बहुत पीछे वहां व्यापार के लिये पहुंचे—सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के भी स्कूल तथा कालेज हैं—और यह प्रसन्नता की बात है कि आर्यसमाज तथा सनातन धर्म की लगभग सारी संस्थाओं में हिन्दी पढ़ाई जाती है। इस टापू में दिव्य जीवन संस्था भी अच्छा कार्य कर रही है उत्तर प्रदेश की जनता में रामायण कीर्तन मण्डलियां सर्वप्रिय हैं मुझे सनातन धर्म सभाओं आर्य समाजों स्कूलों कालेजों डिवाईन लाईफ सोसायटी राम मन्दिरों कृष्ण मन्दिरों सभी स्थानों पर वेद सन्देश सुनाने के लिये निमन्त्रण मिले और मैं सब स्थानों पर पहुंचा। वेद व्याख्या के ढंग से सभी बड़े प्रभावित हुए। फीजी की अंग्रेजी सरकार ने (ब्राडकास्टिंग स्टेशन) से तीन बार वेद कथा करवाई। फैजाबाद (उ० प्र०) के धार्मिक सज्जन श्री प० श्रीधर जी महाराज सूआ (फीजी) में बड़ी भारी ट्रांसपोर्ट कम्पनी के मालिक हैं। वह अपनी कार में कई सौ मील की यात्राओं में मुझे स्वयं ले गये और आर्य समाज सनातन धर्म सभा सिंह सभा तामिल संगम तथा अन्य स्कूलों कालेजों गुरुकुल आदि के लगभग २१ हजार छात्र छात्राओं में मेरी वेद की बात सुनवाई।

जहां कहीं भी मैं गया एक ही बात सुनी कि अब तक इन लाखों लोगों को आर्यसमाज ने पतित होने से बचाये रखा है परन्तु अब भारत से अच्छे धर्म प्रचारक नहीं आ रहे और नई पीढ़ी पर ईसाई प्रभाव बढ़ रहा है यह पीढ़ी कैसे बचेगी।

न्यूजीलैंड तथा आस्ट्रेलिया

फीजी में वहां की जनता में भारत वेद तथा मानवता की विचार धारा प्रवाहित करने के पश्चात मैं न्यूजीलैंड जा पहुंचा। इसे शान्त महासागर का इंगलैंड कहा जाता है यहां पांच हजार गुजराती भारतीय बहुत शान से रहते हैं यहां इन्होंने गांधी हाल बनाया हुआ है उसी में सत्संग होते हैं मेरी वेद कथा गांधी हाल में होती रही, एक दिन कथा में १५ योरोपियन स्त्री पुरुष भी पधारे। उस दिन वेद व्याख्या करते योग की कुछ बातें कहीं सभा के सभापति श्री लालभाई पटेल वकील ने मेरे भाषण का अनुवाद अंग्रेजी में किया—

योग की बात सुनकर योरोपियन की रुचि बढ़ी और वह मुझे योग इंस्टीट्यूशन में ले गये जब मैंने उन्हें बतलाया कि योग केवल शारीरिक आसनों का नाम नहीं अपितु यह तो परमात्मा से सीधा सम्बन्ध पैदा करने का एक बड़ा साधन है और योग का आदिस्रोत वेद है कुछ मन्त्र भी सुनाये प्राणायाम की विधि भी बतलाई तो बड़े प्रभावित हुए और कहने लगे कि यहीं ठहर जाओ उन्होंने अपने योग आश्रम का मुझे आजीवन माननीय सदस्य भी बना लिया। न्यूजीलैण्ड से एक योरोपियन सज्जन मि० जोन कारवैल मुझे आस्ट्रेलिया ले गये। वहां भी योरोपियन स्त्री पुरुषों को प्राणायाम सिखलाया और योग सम्बन्धी वेद मन्त्र सुनाये।

न्यूजीलैण्ड बहुत सुन्दर देश है इसका रकबा एक लाख सढ़तीस हजार मील है जनसंख्या पचीस लाख है जिसमें अंग्रेज न्यूजीलैंड प्रधान हैं यहां सब पूरे भ्रातृ भाव से रहते हैं। यहां से दूध मक्खन पनीर तथा दूध से बने पदार्थ दूसरे देशों को बड़ी संख्या में जाते हैं। यहां जून जुलाई में वैसा शीत होता है जैसा दिल्ली में जनवरी में। आस्ट्रेलिया शान्त महासागर का इतना बड़ा टापू है कि इसमें कितने ही भारत समा सकते हैं। परन्तु आबादी केवल एक करोड़ नौ लाख है। आस्ट्रेलिया को बड़ी भारी गोशाला तथा ऊन का घर कह सकते हैं यहां भी योरोपियन योग में बड़ी रुचि रखते हैं और साधना करने वाले लगभग सारे योरोपियन शाकाहारी हैं। मद्य से भी दूर रहते हैं। यहां एक वेजीटेरियन सोसाइटी है। हजारों इसके सदस्य हैं। मुझे यहां आकर अनुभव हुआ कि योग विद्या के द्वारा योरोपियन लोगों को वेद प्रेमी बनाया जा सकता है। यहां दूध की नदी बहती है बड़ी सुन्दर गाय हैं, जो २०-२५ सेर दूध प्रतिदिन देने वाली हैं। प्रति वर्ष एक अरब पचास करोड़ गैलन दूध यहां होता है। आस्ट्रेलिया का एक भाग वेस्टर्न आस्ट्रेलिया है यह ऐसे ही वीरान पड़ा था। पहले यहां डच पहुंचे फिर फ्रेंच आ गये और अंग्रेजों ने तो यहां १८०३ में अधिकार ही जमा लिया। भेड़ पाली जाने लगी इस समय १७ करोड़ भेड़ ऊन देने वाली हैं एक लाख बीस हजार इनकी पालना करने वाले हैं प्रति वर्ष अस्सी करोड़ डालर की आय ऊन द्वारा होती है सारी दुनियां में जितनी ऊन होती है उसका लगभग आधा भाग आस्ट्रेलिया का यह प्रान्त देता है। इसी प्रकार दूध मक्खन पनीर इत्यादि से भी करोड़ों डालरों की आय होती है तीन तीन सौ गौओं का दूध एक ही समय मशीन से दुहा जाता है। गाय तथा भेड़ों द्वारा ही आस्ट्रेलिया का राज्य चलता है। वहां की सरकार काले लोगों को यहां आबाद होने में रुकावट डालती है। गोरों को बड़ी सुविधायें देकर आबाद करती है। हां करोड़पति कालों को भी रहने देती है।

हांगकांग

आस्ट्रेलिया से सिंगापुर पहुंच कर मैं फिर जापान की ओर उड़ने लगा जो सिंगापुर से तीन हजार सौ मील की दूरी पर है। मार्ग में हांगकांग नगरी आकाश से बात करने वाले पच्चीस पच्चीस तथा तीस तीस मंजिले भव्य भवन यहां दिखाई देते हैं। यह वास्तविक रूप में चीन ही का भाग है परन्तु अंग्रेजों ने कम किराये पर ले रखा है और कुछ भारतीय सेनाओं द्वारा विजय करके लिया हुआ है। ३५ लाख की आबादी है। ८० प्रतिशत तो चीनी ही हैं। पिछले कुछ वर्षों से चीन से भाग भाग कर दस लाख से अधिक चीनी हांगकांग आ चुके हैं जिनके लिये सुन्दर सस्ते मकान बनवाये गये हैं। कुछ करोड़पति चीनी भी हैं परन्तु अधिक संख्या गरीबों की है बड़े मेहनती मजदूर हैं।

यहां कई हजार सिंध के भारतीय सज्जन हैं जिनमें से कुछ सिंधी करोड़ों के स्वामी हैं। बड़े बड़े होटल बीस बीस मंजिले भवन बड़ी बड़ी दुकानें इन सिंधी महानुभावों की हैं। हांगकांग पहु

जाने से पहले कवोलून नगर आता है, फिर समुद्र को फेरी द्वारा पार करके हांगकांग आता है, हांगकांग की हैप्पी-वैली में बड़ा भव्य लक्ष्मीनारायण मन्दिर बनाया गया है यहां यात्रियों के निवास का भी प्रबन्ध है ऐसे ही कवोलोन में भी मन्दिर है—इन दोनों मन्दिरों में प्रतिदिन मेरी वेदकथा चलती रही, बड़ी श्रद्धा से सिंधी-पारसी सब श्रवण करते थे, हांगकांग मन्दिर के प्रधान सेठ जेठानन्द जी उ० प्र० सेठ दयालदास जी हैं अन्तिम दिन हांगकांग के २५ मंजिला होटल मैनडरिन में इन महानुभावों ने मेरे स्वागत में एक बड़ी पार्टी का आयोजन किया जिसमें भारत के हाईकमिश्नर श्री गंजी (लखनऊ भी पधारे—वहां एक घण्टा "गृहस्थाश्रम सुखी कैसे ? इस विषय पर भाषण हुआ ?"

हांगकांग को चीनी आक्रमण से बचाये रखने के लिए कई हजार नैपाली बहादुर गोरखे यहां विद्यमान हैं। हांगकांग तथा चीन के बीच में एक पुल है—और चीन जब चाहे हांगकांग को हड़प कर सकता है परन्तु वह ऐसा क्यों नहीं

चीनियों से पूछी तो कहने लगे कि हांगकांग इस समय जिस अवस्था में है, यह चीन के जीवन का बड़ा भारी साधन बना हुआ है चीन का बना माल हांगकांग लाया जाता है, और उस पर हांगकांग की मोहर लग जाती है, तब जिन देशों ने चीन को बायकाट किया हुआ है उन देशों मे भी चीन का माल पहुंचता रहता है और ऐसे देशों का माल हांगकांग द्वारा चीन को मिलता रहता है, इस प्रकार चीन को करोड़ों अरबों रुपया की आय होती रहती है, और उन्हें अत्यन्त आवश्यक चीजें भी मिलती रहती हैं। ऐसी अवस्था में वह हांगकांग को अपने अधिकार में लेने का यत्न नहीं करता। हांगकांग में लाखों चीनी रहते चीन से बाहर हैं और गुण गाते रहते हैं चीन का और समय आने पर यह सब चीनी चीन ही का साथ देंगे और यह है भी स्वाभाविक। यहां के सिंधी व्यापारियों ने अपनी योग्यता से सिंगापुर के राज्य में भी स्थान प्राप्त किया और भारत के संकटकाल में भारत को हर प्रकार की सहायता पहुंचाते रहते हैं।

जापान में

हांगकांग से जापान दो हजार मील की दूरी पर है, मार्ग में फारमोसा का तैपई हवाई अड्डा है—फारमोसा में बिना आज्ञा के यात्री तीन दिन ठहर सकता है यह वही स्थान है जहां उस वायुयान की दुर्घटना हुई जिसमें नेताजी बैठे थे यहीं चीन के विद्वान् कनफ्यूशस की समाधि है इसे देखने के मैं ठहर गया समाधि की देख रेख ठीक है, एक चीनी टूटी इंगलिश में कुछ बतला ही देता है) अमरीका की सहायता पर यह च्यांग-काई शेक का चीनी राज्य जीवित है।

'तैपई' से वायुयान मुझे ओसाका (जापान) ले आया जो तैपई (फारमोसा) से एक हजार एक सौ मील की दूरी पर है।

जापान सहस्रों छोटे बड़े टापुओं का सुन्दर देश है—जिसका रकबा एक लाख ४३ हजार वर्ग मील है।

चार बड़े टापू हैं। जन संख्या दस करोड़ है—आज से २१ वर्ष पूर्व इसका भयकर नाश अमरीका के बमों द्वारा कर दिया था, दो बड़े नगर हीरोशिमा तथा नागासाका सर्वथा नष्ट हो गये थे, टोकियो को भी भारी हानि पहुंची यहां भूकम्प भी सर्वनाश में भाग लेते रहते हैं। परन्तु भगवान ने जापानियों को ऐसी शक्ति दे रखी है कि यह शीघ्र क्षति को पूरा कर लेते हैं २१ ही वर्षों के अन्दर जापान पुनः दुनियां की पांच बड़ी शक्तियों में गिना जाने लगा है। १८६८ से पूर्व भारत का अधिक सम्बन्ध जापान से नहीं रहा, हां बौद्ध देश होने के कारण जापानी भारत मे बुद्ध गया आते रहे। १९०२ में जापान का एक बहुत बड़ा विद्वान् नेता श्री तेनशिन ओकाकूरा भारत आया और श्री रवीन्द्रनाथ जी ठाकुर से मिला तो उसने बड़ी प्रबल आवाज में कहा—(एशिया इज वन) सारा एशिया एक है। जब १९०४-५ जापान ने रूस को पराजय कर दिया तो जापान की धाक दुनियां पर बैठ गई—भारत भी बड़ा प्रभावित हुआ। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् में श्री नेहरू जी ने १९५७ में कहा था कि मैंने जापान का नाम पहलीबार १९०५ में सुना था दुनिया शक्ति के आगे झुकती है। आज जापान पुनः आगे बढ़ रहा है अमरीका के पश्चात् कलाकौशल में इसी का नाम लिया जाता है।

इस समय जापान में भारतीय अधिक संख्या में नहीं हैं परन्तु फिर भी पर्याप्त हैं और बहुत अच्छे बड़े व्यापारियों में इनकी गणना है। भारतीयों को यहां जमीन खरीदने सम्पत्ति बनाने की पूरी स्वतन्त्रता है. और भारतीय पर्याप्त सम्पत्ति के यहां स्वामी हैं। इण्डिया क्लब तथा इन्डियन एसोसियेशन के नाम से दो संस्थायें कोबे (जापान) में अच्छा कार्य कर रही हैं—इन दोनों में मैं वेद-कथा करता रहा। योगदर्शन का जापानी अनुवाद करने वाले प्रोफेसर डा० टो० साहोदा से भी भेंट हुई यह क्योटो नगर में रहते हैं और ओसाका यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर हैं जब इनके आश्रम पर मैंने साधना कराई और प्राणायाम सिखला कर बतलाया कि योग का आदि स्रोत वेद है मन्त्र भी सुनाये तब वह एक दूसरे योगी श्री सोहाकू ओगाटा के पास ले गये, इस योगी ने जैन शिक्षा केन्द्र जारी कर रखा है। जैन कहते हैं ध्यान अवस्था को। जापान के इन योगियों से जब मैंने वेद सम्बन्धी बातें कीं तो उन्होंने स्वयं कहा कि वेद तो देखे भी नहीं। कितनी भारी आवश्यकता है इस बात की कि वेद प्रचार के प्रेमी, बाहर निकलें और वेद-संदेश दूसरे देशों में भी पहुंचायें। इधर बैंकाक, सिंगापुर इत्यादि फीजी के अतिरिक्त और कहीं आर्यसमाज नहीं, मैंने इसके लिये कुछ यत्न किया जब कुछ फल निकलेगा तभी उसका वर्णन करूंगा।

सुझाव और सम्मतियाँ

क्या आर्यसमाज का मन्त्री गैर आर्य-समाजी बन सकता है ?

[आर्यसमाज के निर्वाचन नियमों में स्पष्ट है कि अन्तरंग सभा स्वीकृत आर्य सभासद सूची में अंकित व्यक्ति ही आर्यसमाज के निर्वाचन में मतदान कर सकते हैं। आर्य सभासद का वयस्क होना तो आवश्यक है ही परन्तु प्रत्येक वयस्क आर्य सदस्य को मतदान का अधिकार नहीं है। अन्तरंग सभा के लिए भी निर्देश है कि वह आय का शताश वार्षिक चन्दा एवं न्यूनतम २५ प्रतिशत उपस्थिति के साथ-साथ सदाचार एवं वैदिक सिद्धान्तों का रखने वाले व्यक्तियों को ही आर्य सभासद् स्वीकार करे। यदि कोई अन्तरग सभा इस निर्देश का उल्लंघन करती है तो वह संगठन एवं सिद्धान्त भावना के विरुद्ध है।

—सम्पादक]

महोदय,

मैं आपके सम्मानित और लोकप्रिय पत्र द्वारा आर्य जगत का ध्यान निम्न-लिखित ज्वलन्त समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

१९वीं शताब्दी में आर्यसमाज पहला सामाजिक संगठन है जिसे प्रजातन्त्रिक प्रणाली पर किया गया। इसमें वयस्क मताधिकार प्रणाली को प्रोत्साहित किया गया। यह सर्व विदित है कि आर्यसमाज एक विशुद्ध धार्मिक संस्था है, जिसकी मान्यतायें वेद और वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित है। यह उन संस्थाओं के समान नहीं है, जिनका कोई तात्कालिक उद्देश्य होता है। ऐसी तात्कालिकपूर्ण संस्थायें अपने उद्देश्य की पूर्ति के पश्चात् मृतप्राय: हो जाती हैं। यद्यपि इन तात्कालिक संस्थाओं का विधान एवं गठन भी प्रजातन्त्रात्मक पद्धति पर होता है। परन्तु आर्यसमाज को देश और काल की परिधि में नहीं बांधा जा सकता आर्यसमाज एक आन्दोलन है, जो चित्र पूजा के स्थान पर चरित्र पूजा और हाड़ मांस के मनुष्य को श्रेष्ठ मानव बनाने तथा उसे संसार में सभ्यतापूर्वक रहने का ज्ञान सिखाता है। इस प्रकार आर्य-समाज निरन्तर आगे बढ़ने वाली संस्था और आन्दोलन है।

हमें अभी-अभी एक दुःखद और आश्चर्य से भरा एक समाचार मिला है। एक आर्यसमाज का वार्षिक निर्वाचन हुआ है और उसमें वयस्क मतदान प्रणाली तथा निर्धारित अवधि तक का चन्दा जमा कर देने वालों ने मतदान किया। इस मतदान और निर्वाचन का यह कुपरिणाम निकला कि आर्यसमाज के मन्त्री पद पर एक गैर आर्यसमाजी महाशय निर्वाचित हो गये। यह निर्वाचन देखकर सारे आर्यसमाजी अचम्भित हो गये और वे मन ही मन अशान्त से हो रहे हैं।

संविधान की दृष्टि से उसकी पवित्रता में सन्देह नहीं किया जा सकता मतदाताओं के मतों के आधार पर निर्वाचित व्यक्ति के निर्वाचन पर सन्देह नहीं किया जा सकता। परन्तु आर्य-समाज के समान सार्वभौमिक धार्मिक संस्था के पद एक ऐसे व्यक्ति का निर्वाचित होना, जिसे न तो वैदिक सिद्धान्तों का ही ज्ञान है और न उसके कार्यक्रमों का हो। वर्ष दो वर्ष निरन्तर चन्दा दे देने पर या वर्ष के कुछ साप्ताहिक अधिवेशनों में उपस्थित हो जाने मात्र से क्या कोई व्यक्ति आर्यसमाज के मन्त्री पद के योग्य हो जाता है ? यदि नहीं, तो क्या हमने आर्यसमाजी की कुछ निश्चित परिभाषा की है ?

कोई व्यक्ति आर्यसमाजी है। यह उसकी प्रकृति (नेचर), व्यवहार स्वभाव और क्रियाकलापों से अनुभव होता है। आर्यसमाजी एक भावात्मक गुण है, इसे अनुभव किया जाता है; इसे हांफ मैं क

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सामाजिक समस्याएँ

भ्रष्टाचार कैसे रुके

[डा० रायगोबिन्द चन्द्र, कोषाध्यक्ष बनारस विश्वविद्यालय]

अक्सर लोग यह कहते सुने जाते हैं कि हमारे देश में भ्रष्टाचार चतुर्मुखी है और यह इतना व्याप्त है कि कि लगभग इसने एक जीवन प्रणाली का रूप धारण कर लिया है, पर यह बात माननी पड़ेगी कि कुछ ईमानदार व्यक्ति भी हैं, चाहे उनका अनुपात कितना ही अल्पतर है क्योंकि यदि कोई भी व्यक्ति ईमानदार न हो तो यह बुराई प्रत्यक्ष नहीं हो सकती।

इसलिये 'भ्रष्टाचार है" इस कथन से स्वय सिद्ध हो जाता है कि ईमानदार लोग भी अवश्य है। पर यहा यह भी तथ्य है कि जो मनुष्य बड़े ऊँचे स्वर में भ्रष्टाचार की शिकायत करते हैं, स्वयं भ्रष्ट निकलते हैं।

भ्रष्टाचार के कई तरीके हैं, जैसे, भाई-भतीजावाद, धन व उपहार के रूप में रिश्वत लेना, अनुचित तरीकों से टैक्स से बचना, मिलावट, परीक्षा में अनुचित उपायो का अवलम्बन इत्यादि। हमें इस भ्रष्टाचार के मूल में जाकर इसके कारण जानने चाहिए। मुख्यत भ्रष्टाचार के कारण पाँच प्रकार के हैं १ सामाजिक, २. आर्थिक, ३. राजनीतिक, ४ धार्मिक और ५. मनोवैज्ञानिक।

सामाजिक कारणों के अन्तर्गत अपने पड़ोसी के साथ और अपने भीतर मिथ्या अभिमान की भावना आती है। यदि 'क' के पास रेडियो, रेफ्रिजेटर अथवा इसी प्रकार के उपकरण हैं तो 'ख' भी समाज में अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए इन चीजों को रखना चाहता है। चाहे उसकी औकात हो या न हो। अगर 'क' की पत्नी के पास एक खास ढंग की साड़ी है तो 'ख' को पत्नी वैसी ही लेना चाहेगी। इस प्रकार शादी, क्लब व अन्य प्रदर्शन को लेकर सामाजिक जीवन में अपनी स्थिति रखने के लिए व्यक्ति अनुचित उपायो का अवलम्बन करता है।

भ्रष्टाचार के आर्थिक कारण इतने स्पष्ट हैं कि उनकी गिनती करना आवश्यक नहीं है। जीवन यात्रा मनुष्य को कई बार अनुचित उपायो का अवलम्बन करने के लिए बाध्य करती है। रिश्वत लेने के लिए व्यक्ति अपने पद की शक्ति का उपयोग करता है। १५०) रु० मासिक पाने वाला क्लर्क यह महसूस करता है कि वह अपने बीबी बच्चो के भोजन, कपड़े की ठीक प्रकार व्यवस्था नहीं कर पाता है। तब वह बाध्य हो अनुचित साधनों का सहारा लेता है। उसका वेतन निश्चित है पर एक ओर जीवन स्तर ऊँचा हो रहा है और दूसरी ओर कीमतें बढ़ रही हैं। दोनो कारण आर्थिक स्थिति को नाजुक बना देते हैं। भारत में नौकरी करने वालों की हालत और भी अधिक दुखपूर्ण हो जाती है क्योंकि उसे अपने परिवार पालन के अतिरिक्त अन्य सम्बन्धियो की भी देख-रेख करनी पड़ती है।

राजनैतिक कारणों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के सरकारी कन्ट्रोल और परमिट आते हैं, जो स्पष्टत आर्थिक कारणो से चालू किये जाते हैं। यद्यपि सरकार सदा इससे इन्कार करती है पर वस्तुत नौकरशाही इन कन्ट्रोलो पर निर्भर करती है। इसलिए काल्पनिक आकड़ों को पेश करते हुए बनावटी कमी पैदा की जाती है। इनसे देश में भ्रष्टाचार का वातावरण पैदा हो जाता है। जब बाजार मे किसी चीज की कमी होती है और व्यक्ति को जरूरत वही चीज खरीदने के लिए उसे बाध्य करती है, तब वह उसी चीज के लिए अधिक दाम देता है और उसे प्राप्त करता है। चूकि इन चीजों पर कंट्रोल होता है। इसलिए उनकी बिक्री हिसाब की नियमित किताबों मे दिखायी नही जा सकती। इस ढंग से प्राप्त रकम काला धन बन जाती है और यह काला धन फिर सफेद नही बनता व काले धन की प्राप्ति मे ही खर्च होता है। इससे सरकार को टैक्स की क्षति होती है और उधर लोगों की नैतिकता गिरती है। यह एक ऐसी स्थिति है जो लायसेंस और परमिट होल्डरो द्वारा बनावटी अभाव की सृष्टि के परिणामस्वरूप सामने आती है। यह आम शिकायत रहती है। कि लायसेंस और परमिट उन्हें ही दिये जाते हैं, जो राजनीतिक प्रभाव डाल सकते हैं। ये परमिट होल्डर ही चोर बाजार का निर्माण कर रहे हैं और व्यापारियो को जमाखोरी और चोर बाजारी के लिए दोषी ठहराते हैं।

धार्मिक कारण जो भ्रष्टाचार के लिये प्रेरणा देते हैं वे मानव की भय-भावना पर आश्रित हैं। धार्मिक उपदेशक अपने अनुयायियों को कुछ खास अनुष्ठान करने अथवा चक्करदार पूजा करने की प्रेरणा देते हैं ताकि वे अपने धन्धों मे फले फूले। यह प्रथा केवल हिन्दुओं तक ही सीमित नही है किन्तु अन्य सम्प्रदायो में भी है जहा अपनी शक्ति से अधिक धन खर्च किया जाता है। इस प्रकार धर्म गुरु जहा पहले नैतिक आचरण पर जोर देते थे, अब वह अपने धनी शिष्यो को अपने पापों से बचने के लिये विशेष प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान करने की प्रेरणा देते रहते हैं।

मनोवैज्ञानिक कारणो में वह आदत शामिल है जो बचपन से ही रिश्वत लेने से पड़ जाती है। माता पिता बच्चो की कोई खास काम करने व न करने के लिये लिए मिठाई इत्यादि की अक्सर रिश्वत देते रहते हैं। यह एक तस्कर वृत्ति के समान है और इस पर सहज काबू पाना सम्भव नही होता। यह अक्सर पूछा जाता है कि क्यो एक व्यक्ति जिसे भारी वेतन मिलता है और जिसे कोई कमी नही है, वह रिश्वत लेता है, अथवा एक उद्योगपति, जिसके पास मुनाफे की काफी गुंजाइश है वह अपने सामान मे मिलावट क्यो करता है। दोनो की मन्द बुद्धि की नीतियाँ हैं क्योंकि पहले मामले मे अक्सर अपनी नौकरी खो सकता है और और दूसरे मामले मे उद्योगपति अपने व्यापार मे घाटा उठा सकता है पर ऐसे लोग, आसानी से ऐसा किये बिना नही रह सकते क्योकि यह उनकी आदत का हिस्सा बन गया है।

इसी प्रकार एक ग्वाला अपने दूध मे पानी जरूर मिलायेगा चाहे उसे दूध के पूरे दाम क्यो न मिलते हों, एक सुनार ग्राहक के सोने में जरूर मिलावट करेगा चाहे उसे बनवाई के पूरे पैसे मिलें। जीवन में यह चीजें उसकी आदत का हिस्सा बन गयी हैं क्योकि यह उसने अनेकों बार सीखा है कि ऐसा करने मे कोई नुकसान नहीं है।

इसी प्रकार अगर एक बच्चा स्कूल मे नकल करने की या धोखा देने की कोशिश करता है तो उसके इस अपराध की उपेक्षा कर दी जाती है। बाद मे यह उसकी आदत बन जाती है और वह उन सब लोगो को जो उसके काम मे रुकावट डालते हैं, अपना शत्रु समझने लगता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय समाज को भ्रष्ट करने के एक नही अनेक कारण हैं। मुख्य कारण यह है कि आर्थिक दबाव के अतिरिक्त हमारा ध्यान नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं से हटकर अब जनता के भौतिक कल्याण पर अधिक हो गया है। लगभग प्रत्येक घर मे धर्म देवता की पूजा के बदले धन देवता की पूजा हो रही है। हममे से अधिकाश धन के पीछे भाग रहे हैं क्योकि यही वह चीज है जिससे समाज मे प्रतिष्ठा, बच्चो और परिवार की सुरक्षा और अपनी जरूरतों तथा महत्वाकाक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। एक ईमानदार आदमी भले ही वह अपने देवता और अपनी आत्मा को सन्तुष्ट कर सके पर, वह मूर्ख समझा जाता है। वह इस ससार में कोई चीज प्राप्त नही कर सकता, अपने साथियो से मान-प्रतिष्ठा तक भी उसे नही मिलती क्योंकि वे उसकी ईमानदारी को कोई महत्व नही देते। ईमानदार आदमी की कोई परवाह नही करता, यहा तक कि उसके घर के लोग भी उसे नही पूछते।

भ्रष्टाचार दूर करने के लिए ईमानदार को एक निश्चित विशिष्टता मिलनी चाहिए। कुशलता और दक्षता की भी परवाह न करते हुए केवल ईमानदार व्यक्ति को सत्ता के स्थानो पर बैठाना चाहिए। यह नियम बना लिया जाए कि किसी व्यक्ति को तब तक ईमानदार समझा जाएगा जब तक वह अपने को बेईमान सिद्ध न कर दे। बेईमान व्यक्ति को किसी प्रकार का आश्रय न दिया जाए, भले ही वह उपयोगी और गुणी क्यो न हो। अधिकार और कुर्सी की तुलना मे नैतिकता को ऊँचा स्थान दिया जाए। निर्बाध व्यापार हो जब तक राष्ट्रीय परियोजनाओ के लिये ईमानदार व्यक्ति न मिलें। हम धीरे-धीरे चले और हरेक चीज को थोड़े से थोड़े समय में पूरा करने की चेष्टा न करें क्योंकि किसी राष्ट्र के जीवन में २५ व ५० वर्ष का कोई महत्व नही होता। प्रत्येक सरकारी कर्मचारी, उद्योगपति, व्यापारी और सार्वजनिक कर्मचारो के सम्मुख मोटे अक्षरो मे ईमानदारी का नारा हो।

★

लखनऊ में वैदिक सत्संगों का आयोजन

आर्यसमाज चौक लखनऊ के प्रबन्ध से लाजपत नगर चौक मे प्रति गुरुवार को ५॥ से ८॥ बजे तक शाम को पारिवारिक वैदिक सत्सग होते हैं। ७, १४ व २१ जुलाई के सत्सगो मे जिला उप सभा के मन्त्री श्री विक्रमादित्य जी बसन्त के वैदिक धर्म की महत्ता पर विद्वतापूर्ण उपदेश हुए। सैकड़ो पुरुष और महिलाओ ने पहुच कर इस सत्सग से लाभ उठाया। आर्य जनता को अधिकाधिक सख्या में पहुच कर इस सत्सग से लाभ उठाना चाहिए।

अगस्त मास के कृषि कार्य

भूमि का कटाव रोकने के लिये सीढ़ीदार खेती करें

वर्षा के मौसम में भूमि का कटाव होने से बहुत हानि होती है। कारण बहुत से पोषक तत्व पानी और मिट्टी के साथ बहकर खेत से बाहर चले जाते हैं। इस प्रकार भूमि की उपजाऊ शक्ति कम हो जाती है। वैसे तो भूमि सरक्षण की कई विधियां है। इनमें एक तरीका समोच्च कृषि या सीढीदार खेती करना है। ढाल खेतो मे भूमि सरक्षण करना बहुत आवश्यक है। भूमि का कटाव रोकने के लिए जुताई, बुआई निराई-गुड़ाई आदि जरूरी काम जमीन के ढाल की दिशा में न करके ढलान की आड़ी तिरछी दिशा मे करने चाहिए। खेत की जुताई ढाल की आडी तिरछी दिशा मे करने से हरेक कूड मे वर्षा के पानी के बहाव में रुकावट पैदा होती है। इस तरह जुताई करने से वर्षा का पानी अधिक से अधिक मात्रा मे जमीन द्वारा सोख लिया जाता है। भूमि सतह पर पानी का बहाव तेज नही होता। इस तरह भूमि का कटाव कम हो है। खेत की ढाल की आडी तिरछी दिशा मे बोई हुई फसल की कतार खेत से बहते हुए पानी के रास्ते में रुकावट पैदा करती हैं। इससे खेत मे कटाव कम होता है और मिट्टी के तत्व तथा उपजाऊ सामग्री खेत में ही बनी रहती है। सीढीदार खेती (समोच्च कृषि) करने से बाढ को भी रोका जा सकता है। यदि खेत में अधिक से अधिक पानी अपनी जगह पर रुक जाय तो बहुत कम पानी खेत से बाहर जायेगा। इस प्रकार हर खेत मे पानी रुक जाने से नदी नालो मे बाढ भी कम आयगी और भूमि सरक्षण के तरीको मे मशीनो की सहायता लेने या किसी दूसरे तरीके अपनाने मे सबसे पहले किसान को रुपया लगाना पड़ता है। लेकिन सीढीदार खेती करने से किसी और तरह की लागत लगाये बिना खेती से लाभ उठाया जा सकता है। सीढीदार खेती को पूरी तरह से अपनाने के लिए सबसे पहले खेत मे घूमकर यह देख ले कि खेत का ढाल किस दिशा में है। इस के बाद खेत के सबसे ऊचे बिन्दु से नीचे की ओर चलें और ५० या ६० फुट नीचे चल कर खेत के किनारे एक खूटा गाड दें। दूसरी खूटी खेत के दूसरे किनारे पर गाड दें तथा दोनो को मिलाकर सीधी मेड़ें बना दें। यदि यह रेखा ज्यादा लम्बी हो तो बीच मे निशान लगा लें। इसके बाद अन्दाज से करीब २५ फुट की दूरी पर उस खूटी वाले निशान की ही ऊचाई की सीध मे खेत मे कई निशान लगा लिये जाय। इन निशानो को मिलाने वाली रेखा के सहारे एक पतली और मेड बना ले। इसी को कन्टूर गाइड लाइन भी कहते हैं। इसके बाद हर मेड या गाइड लाइन के ऊपर वाले टुकड़े मे इस गाइड लाइन के सहारे ही जुताई करनी चाहिये।

मूगफली के खेत की तैयारी और बुआई

मूगफली की बुआई के लिए खेत को अधिक तैयार करने की आवश्यकता नही होती है। इसकी फसल हल्की जमीन में अच्छी होती है। खेत की केवल दो बार आर पार जुताई करनी चाहिए। इसके बाद प्रति हैक्टर २५ गाड़ी सड़ी हुई गोबर की खाद मिट्टी मे मिला देनी चाहिये। अगर सम्भव हो तो प्रति हैक्टेयर २ क्विटल सुपर फास्फेट डालकर खेत की जुताई कर देनी चाहिये भूमि तैयार हो जाने के बाद बोने के लिए मूगफली के दाने तैयार कर लेने चाहिये। एक हैक्टयर के लिये ६५ से ७० किलो तक दाने काफी होते है। यह ध्यान रखना चाहिये कि दाने स्वस्थ और

बिना टूटे फूटे हो। अगर दाने टूटे फूटे हुए तो वे उगते नहीं। दाने हाथ से निकालने चाहिये। बीजो का एक दूसरे से कतारो मे १ फुट की दूरी पर बोनी चाहिये। बुआई के बाद सिंचाई कर देनी चाहिये। पौधो के बीच में इतना फासला रखने से मिट्टी चढाने मे आसानी रहती है। मूगफली के पौधो पर मिट्टी चढाना, मिट्टी का पोला होना और जल निकास का प्रबन्ध होना अति अति आवश्यक है।

मक्का की फसल मे निराई गुडाई

मक्का की फसल उग चुकी होगी। अधिक उपज लेने के लिए किसानो को चाहिये कि वे मक्का की फसल में निराई गुडाई का कार्य ठीक समय पर करें। अकुरण के बाद फसल धीरे धीरे बढती है। इस समय २ या ३ बार खुरपी की मदद से निराई गुडाई करनी चाहिये। इसके बाद एक या दो बार कल्टीवेटर या देशी हल से गुडाई करना फसल के पौधो के लिए लाभदायक रहता है। जब मक्का के पौधे ८-१० सप्ताह के हो जाय तो अन्तिम बार इस प्रकार गुडाई करनी चाहिये कि पौधों की जडो पर मिट्टी चढ जाये। यदि वर्षा न हुई हो तो समय नुसार सिंचाई कर देनी चाहिये। चारे के लिए बोई गई फसल में निराई गुडाई की आवश्यकता नही होती है।

पटसन के कीडे सेमूलूपर की रोकथाम

पटसन के पौधो को कई तरह के कीडों को नुकसान पहुचता है। इनमे से मुख्य कीट निम्नलिखित हैं—

जूट माइट जूट मईलर और जूट सेमीलूपर नामक कीड़ से पटसन की फसल को प्रति वर्ष बहुत अधिक नुकसान होता है। असम पश्चिमी बगाल बिहार उड़ीसा उत्तरप्रदेश और त्रिपुरा मे इस कीड से पटसन की खेती को बहुत हानि होती है। इसके प्रकोप से पौधो की पत्तिया नष्ट हो जाती है। पौधे कम जोर और छोटे हो जाते है। कभी कभी तो कीड पौधो से ऊपरी भाग को खाकर नष्ट कर देते है। ऐसा होने पर पौधो के सिरे से कई शाखायें निकल जाती हैं। ज्यादा शाखाय निकलने से रेशा घटिया किस्म का हो जाता है। इस कीड का रग मिट्टी जैसा होता है। वर्षा शुरू होते ही पिछले साल के छिपे हुए पतंगे कूप से निकलने लगते हैं। इन्हे रात का तेज रोशनी मे देखा जा सकता है। इस कीट की इल्ली सबसे ज्यादा नुकसान पहुचाती है। शुरू शुरू मे यह पत्तियो के हरे पदार्थ (क्लोरोफिल) को खुरच खुरचकर खाती है। इसके बाद यह पत्तियो को काटकर खाना शुरू कर देती है। इल्ली पौधो के ऊपरी हिस्से को ही अधिक नुकसान पहुचाती है।

रोकथाम

इसकी रोकथाम के लिए पटसन की बुआई जल्दी ही कर देनी चाहिये। ताकि कीट का हमला शुरू होने से पहले ही पौधे अधिक स्वस्थ और लम्बे हो जाय। गर्मियों मे पटसन वाले खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई कर देनी चाहिये। ऐसा करने से भूमि मे कोषावस्था मे छिपे हुए कीड़े भूमि के ऊपर आ जाते हैं। इस तरह यह गर्मी से व चिड़ियो द्वारा चुगे जाने के कारण अधिक सख्या मे नष्ट हो जाते हैं। जब पौधो पर इल्लियो का प्रकोप शुरू हो तभी २० प्रतिशत एन्ड्रीन नाम की कीट नाशक दवा का छिड़काव पौधो पर करें। छिड़काव स्प्रेयरो से करना चाहिये। इससे इल्लिया मर जाती है। दवा छिड़कते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि पौधो के ऊपर भाग पर खास तौर से दवा छिडकनी चाहिये। इस दवा का असर १५ २० दिन तक पत्तियो पर रहता है।

हरी खाद की पलटाई

हरी खाद की फसल को अगस्त के दूसरे या तीसरे सप्ताह मे पलट देना चाहिये। ढैचा की फसल को बुआई के ५ से ६ सप्ताह बाद और सनई को फसल को बुआई के ४५ ५० दिन बाद पलटना अच्छा रहता है। परन्तु परीक्षणो से यह पता चला है कि हरी खाद की फसल को बुआई के ४ ६ सप्ताह बाद पलट देना चाहिये। यह भी पता चला है कि ५० दिन की सनई की फसल मे नाइट्रोजन अधिक मात्रा मे जमा रहता है। फसल की पलटाई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिये। कारण ये हल एक ही ओर को मिट्टी पलटते हैं। इन हलो से पलटाई करने पर फसल के सभी हिस्से मिट्टी से ढक जाते हैं। पलटाई काम करने के लिए पजाब और विक्टरी हल का इस्तेमाल करना अच्छा रहता है। हरी खाद की फसल को १५ अगस्त तक मिट्टी मे आवश्यक दबा देना चाहिये। क्योंकि १५ अगस्त के बाद इतनी वर्षा जरूर हो जाती है कि उससे खेत मे पडी हुई हरी खाद की फसल भलीभाति सड जाती है।

१५ अगस्त के बाद पलटाई करने पर खेत मे पलटी हुई फसल को सड़ने गलने के लिए पानी का अभाव रहता है, हरी खाद के पौधो को जब तक मिट्टी मे दबाया नही जाता है तब तक वे अच्छी तरह गल सड नही पाते हैं। जो पौधे भूमि के ऊपर रह जाते हैं वे सूख जाते हैं और उनकी सूखी लकड़िया खेत मे पडी रहती है। इनसे खेत में दीमक लगने का डर रहता है। हरी खाद पलटने के लिए सदैव मिट्टी पलटने वाले हल का ही इस्तेमाल करना चाहिये। पलटाई के बाद खेत को ४-५ सप्ताह तक यो ही छोड देना चाहिये। परन्तु इस बीच मे खेत मे नमी का रहना अति आवश्यक है। नमी की कमी से फसल सड नही पाती है। अगर वर्षा नहीं होती है तो सिंचाई कर देनी चाहिये। खेत में जितनी अधिक नमी

(शेष पृष्ट ११ पर)

हमें अपनी सारी शक्ति इस बात में लगानी है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी का पूरी तरह प्रयोग हो

—शिक्षा उपमंत्री श्री भक्त दर्शन

पुरुषोत्तमदास टंडन हिन्दी भवन मेरठ के वार्षिक समारोह के अवसर पर भाषण करते हुय श्री भक्तदर्शन जी शिक्षा उपमंत्री भारत सरकार ने राजर्षि टंडन जी की आजीवन हिन्दी सेवाओ तथा त्याग एव तपस्या की सराहना की। उन्होंने उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये कहा कि हमे हिन्दी के प्रचार द्वारा उनके महत्वपूर्ण कार्य को आगे बढाने का प्रयत्न करना चाहिये।

अहिन्दी भाषी राज्यो में हिन्दी के कार्य के सम्बन्ध मे विचार व्यक्त करते हुये उन्होने कहा कि वहा हिन्दी के प्रति श्रद्धा है भले ही कुछ लोग नौकरियो में नहीं लिये जाने की आशंका, राजनैतिक कारणों अथवा हठधर्मी से कभी-कभी हिन्दी का विरोध करते हैं। परन्तु उन राज्यो मे हिन्दी पढने वालो की सख्या निरन्तर बढ रही है। उन्होने बताया कि मद्रास मे मलयालम से अधिक सख्या हिन्दी मे एम० ए० के छात्रो की है।

उत्तर प्रदेश में हिन्दी के प्रयोग किये जाने के सम्बन्ध मे श्री भक्तदर्शन जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत का हृदय माना जाता है। उसमे अभी तक हिन्दी का राजभाषा का समुचित स्थान प्राप्त न होना चिन्ता का विषय है। उत्तर प्रदेश गंगा जमुना के बीच की भूमि भारत का ममस्थल है। वहीं पर यदि हिन्दी को बल न मिले तो हमे समझ मे नही आता। हम पहले सारी शक्ति इस बात पर लगायें कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी का पूरी तरह से प्रयोग हो। यदि अंग्रेजी का पत्र आये तो उसे वापिस कर दें विवाहो के अंग्रेजी मे निमन्त्रण मिलें तो उन्हें सधन्यवाद लौटा दें। एक बार तो विद्रोह कीजिये। ऐसे विवाहो मे मत जाइये।

आपने अंग्रेजी के साइन बोर्डों को हिन्दी मे लिखे जाने पर जोर दिया और कहा कि हिन्दी भाषी प्रान्तो मे हिन्दी को अधिक व्यवहारिक रूप दिये जाने का यत्न होना चाहिये। अहिन्दी भाषी प्रान्तो में भारत सरकार द्वारा किये गये कार्य की चर्चा करते हुए श्री भक्त दर्शन जी ने कहा कि अहिन्दी भाषी विद्यार्थियो को हिन्दी में शिक्षा देने के लिये सरकार १००० छात्रवृत्तियाँ देती है। उन्हे प्रोत्साहन दिया जाता है कि वे हिन्दी के वातावरण मे रहकर हिन्दी सीखें। इन राज्यो मे जो हिन्दी के अध्यापक तैयार करते हैं उन्हे हम भारत सरकार के व्यय पर उत्तर भारत की यात्रा के लिये प्रेरित करते हैं, जिससे उनके उच्चारण में शुद्धता आये। उन्होने बताया कि हम प्रयत्न कर रहे हैं कि उच्चतम कक्षाओं तक की पढाई हिन्दी माध्यम से हो। इसके लिये भारत सरकार ने कितनी ही टैकनीकि एव वैज्ञानिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं और यह काम आगे चल रहा है।

श्री भक्त दर्शन जी ने इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती एव महात्मा गाधी जी के कार्यो का उल्लेख करते हुये बताया कि उन्होने हिन्दी को व्यापक रूप मे फैलाने का यत्न किया और हिन्दी को देश के रंगमंच पर उचित स्थान दिलाया।

इस अवसर पर श्री भक्त दर्शन जी ने मेरठ विश्वविद्यालय की चर्चा करते हुये कहा कि मेरठ विश्वविद्यालय हिन्दी के विस्तार के लिये देश का नेतृत्व करेगा और यहाँ अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के छात्र शिक्षा प्राप्त करने मे गर्व अनुभव करेंगे।

हिन्दी भवन के सम्बन्ध में उन्होने इस सुझाव का स्वागत किया कि यहाँ अहिन्दी भाषी प्रान्तों के कुछ छात्र छात्रावास के रूप में रहकर हिन्दी का अध्ययन करें।

हिन्दी भवन समिति की ओर से श्री सुन्दरलाल जैन अध्यक्ष हिन्दी भवन समिति ने श्री भक्त दर्शन जी की सेवा में अभिनन्दन पत्र भेंट किया। समिति के मंत्री श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी ने हिन्दी भवन के कार्य एव उसकी प्रगति का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर श्री गोपालप्रसाद व्यास ने भाषण देते हुये कहा कि हिन्दी की समस्या की कुञ्जी केन्द्रीय सरकार के पास नहीं है—केवल उत्तर प्रदेश सरकार के पास है। उत्तर प्रदेश को हिन्दी के चलाने में कोई कठिनाई नही है। कानूनी हिचक कुछ नही है। बाधा है इसके व्यवहार में। सरकारी अधिकारी व वह लोग जो सरकार से लाभ उठाना चाहते हैं इसमें बाधा डालते हैं। बिहार में जिला स्तर तक हिन्दी में काम होता है, राजस्थान में जिला स्तर से भी ऊँचे तक हिन्दी में काम होता है। मध्यप्रदेश में भी हिन्दी का विस्तार हो रहा है। उत्तर प्रदेश मे कठिनाई क्या है? उत्तर प्रदेश ने अभी तक हिन्दी टाइपराइटर को स्वीकृति नही दी। उत्तर प्रदेश अभी तक केन्द्र के साथ अंग्रेजी में पत्राचार कर रहा है।

उन्होने कहा—हिन्दी के प्रयोग और व्यवहार की बात हिन्दी प्रदेशों विशेषकर उत्तर प्रदेश से आरम्भ होनी चाहिये। हिन्दी का काम इसलिये रुका हुआ है कि विदेश की भाषा और विदेश की सस्कृति से हम आक्रान्त हो गये हैं।

(पृष्ठ १० का शेष)

होगी, उतना ही अच्छा लगाव होगा। इसके बाद दूसरी पल्टाई भी मिट्टी पलटने वाले हल से ही करनी चाहिए। फिर खेत की तैयारी शुरू कर देनी चाहिये। मन की बराबर जुताई करते रहना चाहिये। जुताई करते रहने मे जमीन में हवा और नमी मिलती रहती है। हवा और नमी रहने से पौधे जल्दी बढते है।

—कृषि अनुसन्धान समाचार सेवा
भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्
कृषि भवन नयी दिल्ली ३

स्वदेश और स्वभाषा के प्रति आस्था उत्पन्न होनी चाहिये।

उन्होने हिन्दी प्रेमियो को प्रेरणा की कि वे अपना सारा काम हिन्दी में ही करें।

रात्रि को श्री गोपालप्रसाद व्यास की अध्यक्षता मे कवि सम्मेलन हुआ, जिसमें अनेक कवियो ने भाग लिया।

आर्य अनाथालय देहली

चन्द्रवती चौधरी स्मृति पारितोषिक वितरण समारोह

नयी दिल्ली—श्रीमती रक्षासरन की अध्यक्षता में स्व० श्रीमती चन्द्रवती चौधरी स्मृति पारितोषिक वितरण समारोह आर्य बाल गृह व आर्य कन्या सदन पाटौदी हाउस दरियागंज में मनाया गया।

इस अवसर पर श्री चौधरी ब्रह्म प्रकाश ससद सदस्य ने सस्था की प्रशसा करते हुये कहा कि सरकार का जो काम था उसे सस्था कर रही है और इसे १०० प्रतिशत सहायता सरकार से मिलनी चाहिये।

डा० युद्धवीर सिंह ने सस्था के म ळिको की प्रशसा की और स्वर्गीया श्रीमती चन्द्रवती चौधरी के ससमरण सुनाये।

श्रीमती रक्षासरन ने प्रतियोगिता के विजयी छात्र छात्राओ को पारितोषिक दिए। कु० प्रतिमा, रघुमल आर्य कन्या म ाविद्यालय, नई दिल्ली की छात्रा भाषण वाद विवाद में प्रथम और लेख प्र तयोगिता म द्वितीय रही।

(२) स्व० चन्द्रवती चौधरी की पुण्य स्मृति मे, जिनका निधन ५ जुलाई को ही हुआ था अनेक वक्ताओं ने श्रद्धांजलियां अर्पित की।

यह समाज सेवी सस्था ५३० पितृविहीन ब-चो का पालन प षण मध्यवर्गीय परिवार के बच्चो की तरह कर रही है। जिस पर प्रतिवर्ष ३ लाख रु० व्यय होता है। अन सस्था के अध्यक्ष श्री देसराज चौधरी ने सभी से सस्था का अधिक सहयोग दने की मार्मिक अपील की।

आय बाल गृह व आर्य कन्या सदन के बच्चो के भाषण आदि सुनकर उप स्थित जन समूह पर भारी प्रभाव पडा।

●

आवश्यकता

आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर के अन्तर्गत जियालाल आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय अजमेर के लिए ट्रेंड ग्रेजुएट्स प्रधानाध्यापिका की आवश्यकता है। आर्य विचारो वाली प्रधानाध्यापिकाओं को प्राथमिकता दी जावेगी वेतन राजस्थान सरकार के नियमानुसार दिया जायेगा। ताराचन्द मन्त्री,

आर्यसमाज शिक्षा सभा

अजमेर

उत्सवों एवं विवाह संस्कारों एवं कथाओं के निमित्त आमन्त्रित कीजिए—

प्रकाश विहार, सुलपुर बावक

(पृष्ठ ८ का शेष)

तो पकडा जा सकता है और न दिखाया ही जा सकता है।

ऐसी स्थिति में आर्यसमाज के व्यक्तियों के सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित होता है कि निर्वाचन के नाम पर क्या कोई गैर आर्यसमाजी केवल वर्ष दो वर्ष का चन्दा मात्र दे देने से आर्यसमाज के मन्त्री पद के निर्वाचन के लिये सक्षम हो सकता है? हमारी सम्मति से यह कदापि सम्भव नही हैं। परन्तु यदि केवल अपने विरोधियो को पछाडने तथा उन्हें अपनी तिकडमबाजी की कला बताने के लिए यह सब कुछ किया जाता है फिर आर्यसमाजी और अन्य तात्कालिक सस्थाओ मे कोई अन्तर नही रह जाता।

परन्तु जो लोग ऋषि दयानद के मिशन को बढाना चाहते हैं जिन्हे ईश्वर, वद और वैदिक धर्म मे अटूट श्रद्धा है, वे इस घटना को बडी भारी दुर्घटना मानते हैं आर्यसमाज का प्रत्येक शुभचिन्तक ऐसे निर्वाचनो को आर्यसमाज के उद्देश्य को पूर्ण करन मे सबसे बडी बाधा मानता है। यह एक अस्वस्थ लक्षण है।

क्या आयजगत के विद्वान् इस समस्या के हल के लिए कोई वैधानिक उपाय बतायेंगे ताकि भविष्य मे ऐसी दुर्घटना पुन जन्म न लेने पावें?

—मनुदेव 'अभय
१/२८ राम मोहल्ला, उत्तर
इन्दौर २

सुयोग्य संन्यासी एवं वैदिक विद्वान् द्वारा प्रचार करने वाले योग्य प्रचारक।

महोपदेशक

आचार्य विश्वश्रवा जी शास्त्री महोपदेशक
श्री धर्मवीर जी शास्त्री ,,
श्री पं० श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री प० विश्ववर्धन जी वेदालंकार
श्री पं० देवव्रत जी शास्त्री उपदेशक
श्री पं० रामनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर भजनोपदेशक

श्री अमरसिंह जी–प्रचारक
श्री धर्मदेव जी आजाद ''
श्री धर्मपालसिंह जी— ''
श्री प्रेमचन्द जी (जिला संचालक)
श्री वेदपालसिंह जी– प्रचारक
श्री प्रकाशवीर जी शर्मा ''
श्री जयपालसिंह जी आर्य ''
श्री ओमप्रकाश जी सिंह ''
श्री दिनेशचन्द्र जी ''
श्री रूपपालसिंह जी ''
श्री रघुवरदत्त जी ''
श्री रामकृष्ण शर्मा-वैदिक विद्वान्

—सच्चिदानन्द शास्त्री
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

●

साहित्य समीक्षण

(पृष्ठ २ का शेष)

उसका अन्तिम अंक निकला था। सन् १९१३ में जब मैंने पत्रकारिता के क्षेत्र में पहले पहल प्रवेश किया था तो इसी नाम से मासिक पत्र के सहकारी सम्पादक के रूप में। अतएव आर्यावर्त पर स्वभावत. मेरी ममता और मोह है। इस समय तो आर्यावर्त नामक उच्चकोटि का दैनिक पटना से निकल रहा है जो दरभगा नरेश की कृति और सम्पत्ति है।" अर्थात् पटने से अभी प्रकाशित आर्यावर्त्त मे आर्यसमाज का कोई सम्बन्ध नहीं है।

वर्तमान समय मे आर्यसमाज रांची के पास तत्कालीन साप्ताहिक आर्यावर्त (१९००-१९०५) के कुछ अन्तरग की कार्यवाही पुस्तिका व प्रतिनिधि सभा के प्रेषित पत्रो की नकल से निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातें उल्लेखनीय हैं—

(१) वर्तमान बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा को वार्षिक रिपोर्ट व अन्य डाइरेक्टरी के पृष्ठ ५४ व आर्यसमाज के इतिहास पृष्ठ २८३ के अनुसार बिहार बगाल आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना सन् १८९९ ई० मे दानापुर के उत्सव के अवसर पर हुई। यह ठीक नही जचता, इसके कारण निम्न है—

(क) १२ जनवरी १९०० के साप्ताहिक आर्यावर्त के अंक में १८९६ ई० मे आरा (शाहाबाद जिला) मे प्रतिनिधि सभा का वार्षिकोत्सव का उल्लेख है। १८९७ ई० मे २५ व २६ दिसम्बर को गया में प्रतिनिधि सभा का वार्षिकोत्सव था। इसके प्रस्ताव सख्या ४ के अनुसार वैदिक धर्म प्रचारार्थ २४०० रु० एकत्र करने का निश्चय हुआ था जिसमें महावीर प्रसाद जी, आर्यसमाज आरा, बाकीपुर, मुगेर, दानापुर व लक्ष्मीनारायण जी (गया) ने क्रमश २००, १५०, १००, १००, ५० व १०० रु० देने का वचन दिया था।

(२) दूसरी बात यह है कि रांची आर्यसमाज मे ८ अक्टूबर १८९७ में यह प्रस्ताव पास किया था कि प्रतिनिधि सभा महावीर प्रसाद जी को अनुरोध करे कि वे अपना आर्यावर्त पत्र सभा को दान में दे दें।

(३) मन्त्री आर्यसमाज फर्रुखाबाद को लिखे एक पत्र के अनुसार सन् १८९८ ई० तक निम्नलिखित दस समाजें सभा से सम्बन्धित थी—(१) कलकत्ता (२) दानापुर (३) आरा (४) बाकीपुर (५) मुगेर (६) बाढ़ (७) बिहार (८) लोहरदगा (९) छपरा (१०) रांची। सन् १९०० तक यह सख्या १० से बढ़कर १९ हो गई। इनके नाम ये है—(११) दार्जिलिंग (१२) रानीगंज (१३) पटना शहर (१४) मौजफ्फुर (१५) अगौल (१६) कोथवा (१७) हसनपुरा (१८) मनेर (१९) सीवान। २८ फरवरी १९०२ तक प्रतिनिधि सभा से निम्न तीन समाजें और सम्बन्धित हो गयी, इससे यह सख्या बढ़कर २२ हो जाती है (२०) हाजीपुर (२१) बेला (२२) आसनसोल।

इन उपर्युक्त तथ्यो से स्पष्ट है कि प्रतिनिधि सभा की स्थापना १८९९ में दानापुर के उत्सव मे न होकर, इसके पूर्व ही हुई थी।

तत्कालीन समय के सुप्रसिद्ध पौराणिक प० अम्बालाल की मृत्यु पर शोक प्रकाशित करते हुए ८ दिसम्बर १९०० के अंक के अनुसार बिहार और बगाल में आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल में स्व० तेजनारायण सिंह बहादुर, बाबू महावीर प्रसाद, बाबू माधोलाल, घ्रुवलाल महाशय द्वारकानाथ व मास्टर जनकधारी लाल प्रभृति आर्यसमाज में प्रतिष्ठित व वय प्राप्त लोग थे।

(५) आर्यसमाज रांची उन दिनो प्रान्त भर की सामाजिक गतिविधियो का केन्द्र था। उन दिनो महामहोपाध्याय प० आर्य मुनि जी, स्वामी नित्यानन्द जी, प० रुद्रदत्त जी व स्वामी मुनिश्वरानन्द जी के प्रचार का यह प्रिय स्थल था। त्रिदेव निर्णय, जाति निर्णय, वैदिक इतिहासार्थ निर्णय आदि ग्रन्थो के निर्माता, वैदिक यन्त्रालय द्वारा प्रकाशित वृहदारण्यकोपनिषद् आदि ग्रन्थो के भाष्यकार, गुरुकुल कांगड़ी के सर्वप्रथम वेदोपाध्याय व आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्व० प० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ (ग्राम चिहुटा पोस्ट कमनोल, जिला दरभगा) सन् १९०३ मे प्रतिनिधि सभा के उपदेशक नियुक्त हुए। उन दिनो आर्यसमाज रांची द्वारा सचालित वेद विद्यालय के आप प्रधानाध्यापक भी थे। तत्कालीन आर्यावर्त में विविध वैदिक सिद्धान्तो व अन्य विषयो पर लिखित आपके लेखों के प्रचार की जरूरत है।

(६) सम्पादकाचार्य प० रुद्रदत्तजी १ फरवरी १८९८ ई० को प्रतिनिधि सभा में चालीस रुपये मासिक में उपदेशक नियुक्त हुये थे। इनके प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध के बारे मे प्रतिनिधि सभा के रांचीस्थ कार्यालय से प्रेषित पत्रो की नकल से यथेष्ट नवीन सामग्री मिल सकती है।

(७) आर्यावर्त के पत्र के मुखपृष्ठ पर निम्न बातें अंकित रहती थी—

"ओ३म्"

"आर्यावर्त"

"The Aryavarta"

"A weekly organ of the Arya Pratinidhi Sabha Bihar-Bengal."

"निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्पथ प्रविचलन्ति पद न धीरा॥"

(८) स्थानीय समाचारो के अतिरिक्त इसमे तत्कालीन चीन सग्राम व रूस जापान युद्ध (१९०५) का समाचार भी छपता था।

(९) विविध जाति के विज्ञापन तथा दवाई, विवाह, आर्यसमाज आगरा, वच्छोवाली लाहोर, पजाब प्रतिनिधि सभा आर्यावर्त कार्यालय रांची व अन्य प्रकाशकों की पुस्तको के विज्ञापन भी इसमें छपते थे।

(१०) पत्र मे आर्यसमाज रांची, लोहरदगा, दक्षिण हैदराबाद मागधरा नवाबगज, उन्नाव हरदोई भरौंच कालपी, जबलपुर इत्यादि के वार्षिकोत्सव व कन्या महाविद्यालय जालधर की सवत् १९६० की रिपोर्ट भी छपी है।

(११) प० कृपाराम शर्मा (स्वामी दर्शनानन्द) और श्रीमती प्रतिनिधि सभा पश्चिम उत्तर अवध, (जिसके तत्कालीन मत्री श्री नारायणप्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी थे) के सम्बन्धो मे २१ दिसम्बर १९०० का अंक यथेष्ट प्रकाश डालता है।

(१२) महारानी विक्टोरिया, मैक्समूलर, श्री माधव गोविन्द रानडे, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर व प्रथम सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशक राजा जयकृष्णदास के निधन समाचार विस्तार से छपे हुए हैं।

(१३) आर्यावर्त पत्र वैदिक सिद्धान्तो के मण्डन व वेद विरोधी विचारो के खण्डन के लिये सदा उद्यत रहता था। उस काल मे सनातन धर्म गजट, वेंकटेश्वर समाचार, ब्राह्मण सर्वस्व, प्रयाग प्रवासी, मोहनी, बिहार बन्धु, बगवासी, भारतमित्र, हितवार्ता और मुसलमानो के उर्दू पत्र अहले हदीस को मुंहतोड़ उत्तर इसने दिया था। हजामत के हुसाबाबा की पोलें खोली थी और प० भीमसेन शर्मा के वैदिक सिद्धान्तों व आर्यसमाज के विरुद्ध लेखो का उत्तर इसने दिया था। दिल्ली के पौराणिक महामडल और उनके सम्मुख आर्यसमाज की असाधारण सफलता के समाचार २९ सितम्बर १३, २० व २७ अक्टूबर १९०० के अंक मे विस्तार से छपी है।

आर्यसमाज कहैक (जिला अजमेर) का पौराणिको से शास्त्रार्थ विवरण ११ दिसम्बर १९०४ के अंक में है। २५ जून व २ और ७ जुलाई १९०४ के अंक मे आर्यसमाज नगीना (जिला बिजनौर) और अहले इस्लाम के मध्य इल्हाम अर्थात् 'ईश्वरीय ज्ञान' पर हुए शास्त्रार्थ का विवरण है। इस शास्त्रार्थ में मुसलमानो की ओर से १२० मौलवी थे और आर्यसमाज की ओर से मास्टर आत्माराम जी, प० भगवानदीन जी मिश्र, प्रधान श्रीमती आर्य प्र० सभा, स्वामी योगेन्द्रपाल, स्वामी दर्शनानन्द, मुन्शी गिरधारीलाल ठा० गिरधरसिंह, प० मुरारीलाल जी प्रभृति आर्य विद्वान् थे। मास्टर आत्माराम जी ने ७० प्रश्न इलहाम सम्बन्धी पूछे थे, जिसमें से केवल २२ प्रश्नो का उत्तर मौलवी सनाउल्ला ने दिये, मुसलमानो की ओर से केवल तीन प्रश्न वेदो पर किये गये, इन सबका सविस्तार वर्णन है।

वस्तुत पत्र के प्राप्त अंको के अध्ययन से स्पष्ट है कि २० वर्षों तक आर्य जगत् मे यह साप्ताहिक रूप में प्रकाशित रहा और इसकी विषय सामग्री वर्तमान समय के हिन्दी समाचार पत्रो से किसी प्रकार अधिक नही तो कम भी नही थी। आर्यसमाज के इतिहास भाग (१) (ड) पृष्ठ पर उल्लिखित विचारानुसार आर्यसमाज के इतिहास के अन्य भागो के सकलन मे इस पत्र से विशेष सहायता मिल सकती है। ●

रथयात्रा में आर्यसमाज रांची द्वारा प्रचार

२० जून व २८ जून १९६६ को छोटा नागपुर के सबसे बड़े आदिवासी मेले मे रथ यात्रा के अवसर पर गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी रांची की तीन आर्यसमाजो (रांची, डोरन्डा व धुरवा) के सयुक्त तत्वावधान मे धर्मप्रचार शिविर स्थापित किया गया। प० गोविन्द प्रसाद आर्य विद्यावारिधि और ब्रह्मचारी देशपाल दीक्षित ने वैदिक धर्म की महत्ता और बाइबिल की धर्म विरोधी बातो का पर्दाफाश किया गया। आर्य समाज रांची और डोरन्डा ने क्रमश ६००० और ३००० ट्रैक्ट छपवाकर बटवाये। इस मेले में १ लाख से भी अधिक आदिवासी आते हैं। प्रचार प्रभावशाली रहा।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-६०

आ० ९ अंक [illegible] प्र०आषाढ़ शु० १४
(दिनांक ११ जुलाई सन् १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
तार—'आर्यमित्र'
दूरभाष : २२९९२ तार . "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

नागा-मिजो विद्रोह

भारत सरकार की अदूरदर्शिता का परिणाम

[श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी]

भारत में अपने साम्राज्य को दीर्घायु व स्थायित्व प्रदान करने के लिए विदेशी अंग्रेज सरकार ने ईसाई धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए एक विशेष योजना बनाई थी जिसके अनुसार विदेशो से हजारों पादरियो को बुलाकर उन्हें सरकार की ओर से विशेष सरक्षण व सहायता देने के लिए नीति निर्धारित की गई थी। विदेशी ईसाई मिशनरियों को अपने मिशनों के लिए निःशुल्क भूमि दी गई और प्रत्येक सरकारी कर्मचारी उन्हे सरकार का प्रतिनिधि मानकर ही उनकी इच्छाओं को सरकारी आदेश समझकर पूर्ण करने का प्रयत्न करता था।

विदेशी ईसाई मिशनरियों को जब आर्यसमाज की ओर से खतरा उत्पन्न हुआ तो उन्होने शहरो के स्थान पर पहाड़ों के जगलो की भोली-भाली, अपढ़ व निर्धन जनता में प्रचार करना अच्छा समझा। और अंग्रेज सरकार ने उन्हे पूर्णत सुरक्षित करने के लिए भारत के अधिकाश पहाडी क्षेत्रो को सुरक्षित घोषित कर विदेशी ईसाई मिशनरियों के अतिरिक्त अन्य प्रचारकों का वहा जाना निषेध कर दिया। इस प्रकार भारत की पहाडी वनवासी जातियों को बलात् ईसाई बनाने के लिए अंग्रेज सरकार ने उन्हे पादरियो के हवाले कर दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत के प्रत्येक देश भक्त को यह आशा थी कि भारत सरकार विदेशी अंग्रेज सरकार के उक्त काले अराष्ट्रिय कानून को समाप्त कर पर्वतीय क्षेत्रों व जातियों मे जाने या वहा प्रचार करने की प्रत्येक भारतवासी को अनुमति दे देगी, परन्तु खेद के साथ कहना पडता है कि भारत सरकार मौन है और उस काले कानून को आज तक ज्यों का त्यो सुरक्षित रखा है और निर्धन भोले भाले वनवासियो को विदेशी ईसाई मिशनरियों की दया पर छोडा हुआ है।

महान आश्चर्य व खेद की बात तो यह है कि इस रहस्योद्घाटन के हो जाने के पश्चात भी कि विदेशी ईसाई मिशनरी ही नागा व मिजो प्रदेश मे वहा के ईसाई नागाओ से विद्रोह करा रहे हैं और उनका गुप्त रूप से नेतृत्व कर रहे हैं। भारत सरकार मौन है और उस काले कानून का हटाने के लिए तैयार नही है। आज नागा व मिजो प्रदेश मे जाने वाले भारतीय को सरकार की आज्ञा लेनी पडती है जब कि विदेशी ईसाई मिशनरी वहा मकड़ी के जाले की भाति छाये हुए हैं।

आसाम के नागालैण्ड आदि प्रदेशों की भूमि उपजाऊ है और वहाँ की जनसख्या नहीं के बराबर है। इस प्रकार लाखों एकड उपजाऊ भूमि बेकार पडी है यदि भारत सरकार वहा लोगों को जाने और बसने की अनुमति व विशेष सुविधा प्रदान करे तो देखते देखते वहा भारत के जाट आदि किसान बसकर जहा उस भूमि से लाखों मन अन्न उत्पन्न करेंगे वहा नागो मे देश भक्ति का भाव भरकर वहां स्थाई शान्ति की स्थापना करेंगे। परन्तु दुर्भाग्यवश भारत सरकार की अदूरदर्शिता ही उसमे बाधक बन रही है और नागा-विद्रोह का अप्रत्यक्ष रूप में सरक्षण कर रही है। यदि सरकार मे लेशमात्र भी दूरदर्शिता होती तो उस का प्रथम कर्तव्य यही होता कि समस्त पर्वतीय क्षेत्र सबके लिए खोल दिये जाते और वहा विद्रोह कराने वाले विदेशी मिशनरियो का निष्कासन कर दिया जाता। परन्तु दुर्भाग्यवश दूरदर्शिता और भारत सरकार में वैर है और यही वैर भारत के विनाश का कारण बन रहा है।

★

आर्य उप सभा मुरादाबाद

कार्यवाही क्षेत्रीय बैठक अमरोहा क्षेत्र स्थान आर्यसमाज काठ समय मध्याह्न २ बजे दिनांक १२-७-६६ को श्री लाला तोताराम जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

निश्चय किया गया कि काठ क्षेत्र को प्रगति देने के लिये यह आवश्यक है कि काठ के किसी व्यक्ति का सयोजक बना दिया जाये वह वहा के प्रचार आदि के कार्यक्रम बैठको आदि का आयोजन स्वय कर सभा को सूचित करें। सभा अब अपने प्रचारक उपदेशक आदि देगी।

निम्नलिखित दस क्षेत्रों में आर्य समाज की स्थापना का निश्चय किया गया।

(१) भंट खेडा—श्री अमरसिंह, जगराजसिंह, रामस्वरूपसिंह जी।
(अ) मोढी (ब) भावडी (स) भिक्क।

(२) शेरपुर—श्री बलबीरसिंह महावीरसिंह एव भगवन्तसिंह जी।
(अ) टाडा (ब) रुस्तमपुर, श्री विक्रमसिंह जी

(३) बेगमपुर—श्री दीवानसिंह, दलेलसिंह एव गगाप्रसादसिंह (मिश्रीपुर)

(४) सलेमपुर—श्री शिवराजसिंह, बस्तूसिंह, एव बलकरनसिंह, अतरसिंहजी
(अ) मढी [श्री रामनाथ जी)

५—कसमपुर—मु० मिश्रीसिंह जी
(अ) महमूदपुर।

६—नवादा—मा० रणजीतसिंह, मा० रामकुमार जी एव मा० जयकुमारसिंहजी

(७) रामपुर—श्री डा० घनश्यामसिंह जी चौ० हरपालसिंह जी। [अ] मुहम्मदपुर [श्री भगवानदास] [ब] पहाडगज।

(८) रसूलपुर—श्री रामचरनसिंह जी, रामचन्द्रसिंह जी, [अ] सिरसा [ब] मथपुरी [स] घाट।

(९) खलीलपुर कदीम—चौ० आनन्द सिंह जी, मा० सजानसिंह जी।

(१०) बादकपुर सिचकी—श्री रघुनाथसिंह साधक' [अ] मथाना [ब] विलायतनगर।

(११) पेली—श्री जगदीशसिंह जी

१०१) (एक सौ एक रुपया) व्यक्तिगत सहायता श्री सुरेशचन्द्र जी एकत्र करके भेज दग। सयोजक ला० तोताराम जी बनाये गये।

—हरि आर्य मन्त्री उपसभा

★

सार्वदेशिक सभा द्वारा दयानन्द भवन में आर्य नेताओं का स्वागत

आज सायकाल ४ बजे सभा के कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली में आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका के मन्त्री श्रीयुत चन्द्रप्रकाश जी गुप्त, आर्यसमाज के अनन्य भक्त सुप्रसिद्ध व्यवसायी एव दानी श्री सेठ रुलियाराम जी (कलकत्ता) दूसरे हैदराबाद राज्य तथा महाराष्ट्र में आर्य समाज की प्रगतियो के प्राण वयोवृद्ध श्री डा० डी० आर० दास वानप्रस्थी जी का भव्य स्वागत किया गया। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल जी शालवाले ने अतिथि महानुभावो का सक्षेप में परिचय दिया और सभा के कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्द जी आहूजा ने फूल मालायें भेंट कीं। सभा मन्त्री जी ने उपस्थित महानुभावो का भी परिचय दिया।

इस अवसर पर सभा मन्त्री ने सार्वदेशिक सभा की प्रगतियो का सक्षिप्त परिचय देकर ईसाइयों की अराष्ट्रिय गतिविधियो को रोकने के लिए सभा के प्रयासों का सक्षिप्त वर्णन किया।

श्री चन्द्रप्रकाश जी ने ईस्ट अफ्रीका विशेषत अफ्रीकनो में हो रहे सुधार एव प्रचार कार्य पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला और सार्वदेशिक सभा को अपनी प्रगतियों के प्रसार में आर्थिक सहयोग का भी वचन दिया। उन्होने सार्वदेशिक सभा की ओर स निकलने वाले अंग्रेजी मासिक पत्र की १००० प्रतिया प्रतिमास मगाने का आश्वासन दिया।

स्वागत समारोह में दिल्ली के चुने हुए आर्य महानुभावों ने भाग लिया जिनमें श्री वेदानन्द जी सरस्वती, श्री आचार्य कृष्ण जी, आचार्य विश्वश्रवा जी, श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, श्री शिवचन्द्र जी, श्री ला० नेकाराम जी ठेकेदार, श्री मनोहरलाल वर्मा ऐडवोकेट, श्री सोमनाथजी मरवाहा ऐडवोकेट, श्री नवनीतलाल जी ऐडवोकेट सुप्रीमकोर्ट, श्री बी० पी० जोशी ऐडवोकेट, श्री प० क्षितीशकुमार जी वेदालकार, श्री मनोहर जी विद्यालकार, स्नातक वेदव्रत जी, स्नातक सत्यदेव जी शर्मा, श्रीमती पुष्पापुरी, श्री डा० जी० सल हल्ला, श्री वैद्य प्रह्लाद दत्त जी, श्री ला० चतुरसेन जी गुप्त के नाम उल्लेखनीय हैं।

★

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

लखनऊ–रविवार श्रावण [illegible] शक १८८८, द्वि० श्रावण कृ० ६ वि० २०२३, दिनांक ७ अगस्त १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥

भावार्थ—जब दिव्य शक्तियां उपादेय पूर्ण परमात्मा के द्वारा समस्त यज्ञ को सम्पन्न करती हैं तो इस यज्ञ का घी वसन्त होता है। ग्रीष्म समिधा होती है। शरद् ऋतु हवि होती है।

विषय-सूची

विश्वविख्यात आर्य विद्वान्—

डा० वासुदेव शरण

भारतीय पुरातत्व वेत्ता, वैदिक विद्वान्, मंगलाप्रसाद एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्तकर्ता, अध्यक्ष भारतीय विद्या एवं कला विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का

वाराणसी में निधन

वैदिक अनुसंधान, भारतीय पुरातत्व संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा का सूर्यास्त

आर्यजगत्, शिक्षा क्षेत्र एवं हिन्दी संस्कृत जगत् में शोक व्याप्त

डा० वासुदेवशरण की विद्वत्ता से भारत की गौरव वृद्धि हुई—राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन्

डा० वासुदेवशरण बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति थे, कला एवं दर्शन के क्षेत्र मे उनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति थी। —प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी

धर्म, वेद इतिहास, दर्शन कला, पुरातत्व विज्ञान आदि विविध विषयो पर ८४ ग्रन्थो के रचयिता एवं ४८ अप्रकाशित ग्रन्थो के निर्माता डा० वासुदेवशरण जी सादा जीवन उच्च विचार के साक्षात् आदर्श थे। अपने महान् उत्तरदायित्वो को पूर्ण करते हुए वे जीवन पर्यन्त भारत के प्राचीन गौरव की खोज में खोये रहे। विश्व के बड़े-बड़े विद्वान् और प्राच्य विद्या विशारद उनके पास वैदिक साहित्य के गूढ रहस्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिये आते थे।

डा० वासुदेवशरण के निधन समाचार भारतीयता से सम्बद्ध ऐसा कोई भी व्यक्ति या वर्ग नहीं है जिसको दुख न हुआ। उनकी साहित्यिक एव अनुसधान रचनायें वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणा देती रहेंगी।

डा० साहब के प्रति हम देशवासी, भारतीयता के उपासक शोक मना रहे हैं परन्तु हमें उनके प्रति यदि सच्ची श्रद्धा है और हम चाहते हैं कि वे जिन आदर्शों के लिये जिये उनका प्रचार हो तो हमें वैदिक साहित्य, पुरातत्व एव हिन्दी प्रचार की ओर विशेष ध्यान देना होगा। उनके प्रति हमारी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मातृभूमि एव पृथ्वी पुत्र का रचयिता आज पृथ्वी में समा गया।

"कीर्तिर्यस्य स जीवति"

क्या प्रमाणों से ईश्वर को सिद्ध किया जा सकता है?

[ले०—श्री रामावतार आर्य, आर्यसमाज गाजीपुर]

★

सिद्धान्त-विमर्श

(पहले से आगे)

ईश्वर का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है

अब हम अपने मूल प्रश्न पर आते हैं। अगर यह सिद्ध हो जाय कि ईश्वर का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है तो सारी समस्या ही सुलझ जाय। तब तो ईश्वर को प्रमाणों से सिद्ध किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के सप्तम समुल्लास में इस विषय की चर्चा की है और यह सिद्ध किया है कि ईश्वर का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

प्रथम यह विचार करना चाहिये कि प्रत्यक्ष किसका होता है गुण का या गुणी का? हम आँख से फूल देख कर यह बता देते हैं कि अमुक फूल लाल है। लालिमा उस फूल का गुण है। तो हमें फूल के गुण का ज्ञान हुआ कि वह फूल लाल है। उसके अन्दर सुगन्ध है या नहीं, यह नाक बतायेगी। नाक सूंघ कर बता देती है कि इसकी खुशबू बड़ी अच्छी है। नाक ने खुशबू को देख लिया। कान उपदेशक को नहीं देखता लेकिन उसके उपदेश को सुनता है। कान यह नहीं बताता कि उपदेशक लूला है या लंगड़ा, काला है या गोरा। हां यह अवश्य बताता है कि उसका उपदेश सुन्दर था या असुन्दर। उपयोगी था या अनुपयोगी। उसके उपदेश को सुनकर आप यह नहीं कह सकते हैं कि यह आवाज अपने आप आ रही है। कोई बोल नहीं रहा है। इन उदाहरणों से यह सिद्ध हो गया है कि प्रत्यक्ष ज्ञान गुण का होता है गुणी का नहीं। जब हम कोई पाप कार्य करने की ओर उन्मुख होते हैं तो हमारे अन्तरात्मा से आवाज आती है 'मत करो' 'मत करो'। और उस कार्य को कर देने से बाद में मन में लज्जा, शंका, भय, शोक, पश्चाताप आदि होने लगता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो हमें अन्दर से कोई धिक्कार रहा है। दूसरी तरफ जब हम कोई पुण्य कार्य करने के लिए प्रस्तुत होते हैं तो अन्तरात्मा से आवाज आती है 'करो, करो'। और जब उस कार्य को कर देते हैं तो मन में उत्साह, निःशंकता, आनन्दादि की लहरें उठने लगती हैं। मन हर्षोल्लास से आपूरित हो जाता है। हमें स्वयं बहुत सन्तोष होता है। बहुत सुख मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे हमारे कार्यों के लिये कोई शाबाशी दे रहा हो। इस विषय में महर्षि दयानन्द लिखते हैं—

"जब आत्मा मन और इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा, चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय, जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाती है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है, वह जीवात्मा की ओर नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है और जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है तो उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह है? क्योंकि कार्य को देखकर कारण का अनुमान होता है।" (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास)

अब प्रश्न यह होता है कि हमारे, अन्दर विद्यमान उपदेष्टा कौन है? क्या यह ईश्वरीय उपदेश नहीं है? अभी हमने सिद्ध किया है कि प्रत्यक्ष गुण का होता है गुणी का नहीं यह 'ईश्वरीय उपदेश' ईश्वर का गुण है। जब गुण का प्रत्यक्ष हो रहा है तो ईश्वर प्रत्यक्ष ज्ञान हो गया। जैसे नाक सुगन्ध को नहीं देखती लेकिन सुगन्ध का प्रत्यक्ष करती है। इसी प्रकार मन इन्द्रिय से 'ईश्वरीय उपदेश' का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

इसमें एक आक्षेप किया जा सकता है कि यह 'उपदेश' ईश्वर की ओर से नहीं अपितु आत्मा की ओर से है। आत्मा स्वयं उपदेश कर रहा है। परन्तु थोड़ा विचार करने से इस प्रश्न का समाधान स्वतः हो जाता है। पहले यह विचार करना चाहिये कि उपदेशक और श्रोता एक होते हैं या दो। क्या कहीं ऐसा भी होता है कि उपदेशक अपने लिये उपदेश करे। स्वयं उपदेशक भी हो और श्रोता भी। थोड़ी देर के लिए कल्पना कर लो कि यह हो सकता है तो दूसरी दिलचस्प बात यह पैदा होती है कि जिस समय वह उपदेशक होगा उस समय श्रोता नहीं हो सकता और जिस समय श्रोता होगा उस समय उपदेश नहीं कर सकता। इससे यह सिद्ध होता है कि या तो आत्मा उपदेशक है या श्रोता। अगर आत्मा को उपदेशक मान लें तो वह किसके लिए उपदेश करता है। क्या ईश्वर के लिये। नहीं, ईश्वर तो पूर्ण है उसके लिए उपदेश की आवश्यकता नहीं। अब एक ही रास्ता है वह यह कि आत्मा श्रोता है और ईश्वर उपदेशक।

हम अब उस प्रश्न पर विचार करेंगे जिसको पिछले पृष्ठों में उठाया गया है। प्रश्न यह है कि जिसका प्रत्यक्ष नहीं होता क्या उस पर अनुमानादि प्रमाण नहीं घटित हो सकते? मेरा विचार यह है कि उस पर अन्य प्रमाण घटेंगे। क्योंकि अनुमान, उपमान, इत्यादि प्रमाण इसीलिए बनाये गये हैं। जिसका प्रत्यक्ष नहीं होगा उसका अनुमान कर लेंगे या उसका ज्ञान शब्द प्रमाण से कर लेंगे। शब्द प्रमाण तो इतना बड़ा प्रमाण है कि उसके बिना काम ही नहीं चल सकता। हमें जितना ज्ञान प्राप्त हुआ है उसका मुख्य कारण यही है कि हमने 'शब्द प्रमाण' को प्रमाण माना था। अगर इसको प्रमाण न माना जाय तो कोई कुछ सीख ही नहीं सकता। बहुत से काम बन्द हो जायेंगे। आप डाक्टर के पास जाते हैं और कहते हैं कि मेरे कान में दर्द है। पता नहीं क्या हो गया है। वह कान की परीक्षा करके कहता है 'फोड़ा हो गया है। मैं कान में दवा छोड़ने को देता हूं। इससे ठीक हो जायेगा।' आप उसकी बात को मान लेते हैं। उससे बहस नहीं करते हैं कि फोड़े का प्रत्यक्ष नहीं हुआ है तो हम कैसे मानें। वह क्या और कैसी दवा दे रहा है, इस पर भी आप बहस नहीं कर सकते। वह कहता है, "बहुत अच्छी दवा है, फौरन आराम हो जायेगा।" उसकी बात को प्रमाण मान दवा लेकर आप घर चले जाते हैं।

जब बच्चा पैदा होता है तो उसे क्या पता कि कौन हमारी मां है और कौन हमारा पिता। जब बच्चे को सिखाने वाले बताते हैं कि 'अमुक' तुम्हारा पिता है अमुक तुम्हारी मां। वही सीखी हुई बात वह कहता चला जाता है। बच्चे जब स्कूल में पढ़ने जाते हैं तो उन्हें अपने अध्यापक पर विश्वास रहता है। जो अध्यापक बताता है उसे वे उसी रूप में मान लेते हैं। 'शब्द प्रमाण' की परिभाषा भी तो यही है।

आप्तोपदेशः शब्दः।

(न्याय० १।१।७)

इसका अर्थ यह है कि (आप्त) अर्थात् पूर्ण विद्वान् का उपदेश शब्द प्रमाण है। बच्चा यह जानता है कि हमारे मास्टर साहब सब कुछ जानते हैं। पूर्ण विद्वान् हैं। इसलिए उनकी बात ही उसके लिए प्रमाण है। कभी-कभी बच्चे आपस में किसी बात के लिये झगड़ा करते हैं तो फौरन कहते हैं 'चलो पिता जी से पूछ लें।' अर्थात् वह अपने पिता की बात को प्रामाणिक मानता है। हमने जितना ज्ञान अर्जित किया है उसका आधार 'शब्द प्रमाण' ही तो है। 'प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण होते हैं' इसको भी हमने 'शब्द प्रमाण' से ही सीखा है। जब सब कार्यों में हम 'शब्द प्रमाण' को प्रमाण मानकर काम करते हैं तो ईश्वर के विषय में ही आक्षेप क्यों? वेद ईश्वर का उपदेश है। इसलिए वह 'शब्द प्रमाण' की कोटि में आता है। वेद में ईश्वर ने जो उपदेश दिया है वह हमारे लिए प्रामाणिक है। इसीलिए वेद को ऋषि दयानन्द ने स्वतः प्रमाण कहा है। वेद के मन्त्रों का हमें उस प्रकार प्रत्यक्ष नहीं होता जैसे अग्न्यादि ऋषियों को हुआ था। फिर भी हम उसे प्रमाण मानते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि जिस का प्रत्यक्ष नहीं होता उसे अन्य प्रमाणों से सिद्ध कर सकते हैं। जो बात 'शब्द प्रमाण' के बारे में है वही अन्य प्रमाणों के विषय में जाननी चाहिए।

●

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में नवीन प्रवेश

प्रसिद्ध आर्य शिक्षा संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का शिक्षा सत्र १ जुलाई से आरम्भ हो गया है। ६ से १० वर्ष की आयु के बालक विद्यालय विभाग में प्रविष्ट होवें। महाविद्यालय विभाग में पण्डित कक्षा ११-१२ में संस्कृत लेकर मैट्रिक (शिरोमणि कक्षा १३-१४ में संस्कृत इन्टर व अलंकार प्रविष्ट हो सकते हैं। शीघ्र पत्र-व्यवहार करें। —उमेशचन्द्र स्नातक कार्यालयी शिक्षा सभा गुरुकुल वि.वि. वृन्दावन

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः ।
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण ।।३१।।

—ऋ० १।७।६।१।

व्याख्यान–हे मनुष्यो ! जो हमारा तथा सब जगत् का राजा सब भुवनो का स्वामी "कम्" सबका सुखदाता और "अभिश्री" सबका निधि (शोभाकारक) है। 'वैश्वानरो यतते, सूर्येण संसारस्थ सब नरो का नेता (नायक) और सूर्य के साथ वही प्रकाशक है अर्थात् सब प्रकाशक पदार्थ उसके रचे हैं। "इतो जातो विश्वमिदं विचष्टे" इसी ईश्वर के सामर्थ्य से ही यह संसार उत्पन्न हुआ है अर्थात् उसने रचा है 'वैश्वानरस्य सुमतौ अर्थात् सुशोभन (उत्कृष्ट) ज्ञान में हम निश्चित सुख स्वरूप और विज्ञान वाले हों। हे महाराजाधिराजेश्वर ! आप इस हमारी आशा को कृपा से पूरी करो।

लखनऊ रविवार ७ अगस्त १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

वैदिक विद्वान् डा०वासुदेव शरण का निधन

अपूरणीय क्षति

आर्यसमाज का दुर्भाग्य है कि उसके उच्च कोटि के विद्वान् उसके मध्य मे से बिछुड़ते जा रहे हैं। डा० वासुदेव शरण उन विद्वानो मे से थे जिन पर आर्यसमाज को गर्व था। आर्यसमाज ने वैदिक साहित्य के अनुसन्धान और समुद्धार का जो संकल्प लिया है उसकी पूर्ति मे डा० वासुदेव शरण जी ने अपनी विद्वता एवं लगन से जो योगदान दिया उसे कभी भुलाया नही जा सकता। सरस्वती के महान् साधक के रूप में आपने अपनी समस्त शक्तिया ज्ञान साधना मे समर्पित कर दी थीं।

भारतीय पुरातत्व एवं वैदिक साहित्य सम्बन्धी उनकी खोजो और रचनाओं का विशेष महत्व है। भारतीय पुरातत्व-विभाग मे रहकर आपने मथुरा लखनऊ और दिल्ली के राजकीय संग्रहालयो के विकास में विशेष योग दान दिया। अपने मथुरा निवास काल में आप गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की उन्नति में विशेष योग-दान देते रहे। बाद में भी संस्था के साथ आपका घनिष्ठ सम्पर्क बना रहा।

पिछले कई वर्षो से आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे भारतीय विद्या विभाग के अध्यक्ष थे और वही बैठकर अपनी लेखनी से आपने हिन्दी माता की सेवा कर उसे समृद्ध और गौरवशाली बनाने का प्रयत्न किया।

हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार के साथ-साथ हिन्दी के लोक-भाषा आन्दोलन के भी आप सूत्रधार थे। ब्रज-साहित्य मण्डल मथुरा के संस्थापको में आप प्रमुख थे। इसी प्रकार हिन्दी मे वैज्ञानिक साहित्य की अभिवृद्धि के लिये आपने "हिन्दी विश्व भारती" ग्रन्थमाला का सम्पादन कर महत्वपूर्ण कार्य किया।

राजकीय सेवा, हिन्दी सेवा, शिक्षा कार्य आदि मे व्यस्त रहते हुए भी आप आर्यसमाज के कार्यों मे निरन्तर सहयोग देते रहे। अनेक वेद सम्मेलनो के अध्यक्ष बनकर और अनुसन्धान कार्यों में सहयोग देकर आपने आर्यसमाज की महती सेवा की। आप मथुरा मे स्थापित होने वाले गुरु विरजानन्द वैदिक अनुसंधान संस्थान के सम्बन्ध मे विशेष रुचि रखते थे। आपने अनुसंधान संस्थान के लिये बहुत सी उपयोगी पुस्तकें आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के पास भिजवाई थी जो अब उनके बाद अनुसन्धान संस्थान मे उनका स्मरण कराती रहेगी।

सभा के भूतपूर्व मन्त्री स्व० प० रामदत्त जी शुक्ल के आप अभिन्न मित्र थे और उनके साथ वैदिक साहित्य अनुसंधान कार्य में संलग्न रहते थे। किसी समय इन दोनो विद्वानो पर आर्यसमाज को गर्व था पर हमारा दुर्भाग्य कि आज उन दोनो में से हमारे मध्य कोई नही रहा।

आदरणीय डा० साहब के निधन समाचार से सारा राष्ट्र एवं आर्य जगत् शोक संतप्त है। हम आर्य जगत् एवं मित्र परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते एवं पारिवारिको के प्रति समवेदना के साथ महान् आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनके निधन से राष्ट्र आर्य जगत् हिन्दी, पुरातत्व सभी क्षेत्रो को जो भारी क्षति पहुची है उसकी पूर्ति असम्भव है। वास्तव में वे प्रतिभा के धनी थे, प्रतिभा का सूर्य अस्त हो गया।

उनके प्रति सम्बन्धित क्षेत्र अपने तरीको से श्रद्धांजलियां अर्पित करेंगे। आर्य जगत् की ओर से उनकी वैदिक साहित्य सम्बन्धी अप्रकाशित रचना का प्रकाशन एवं अनुसंधान कार्य को व्यवहारिक रूप देना ही वास्तविक श्रद्धांजलि होगी। ईश्वर हमे शक्ति और बुद्धि दें कि उनके अधूरे कार्य को पूर्ण करने में योग दे सकें।

धर्मदेव शास्त्री दर्शनकेसरी का निधन

आर्यसमाज के जिन व्यक्तियो ने समाज सेवा के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य किया है उनमे श्री धर्मदेव शास्त्री दर्शन केसरी का नाम सदैव स्मरण किया जायगा। आपने स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख सैनिक बनकर देश को स्वाधीन कराने मे तो योग दान दिया ही, अशोक आश्रम कालसी (देहरादून) की स्थापना कर आपने एक उपेक्षित एवं पीडित वनवासी गिरिवासी जाति के उद्धार की दिशा मे प्रशंसनीय रचनात्मक कार्य किया। जौन सार बावर मे बहु पति प्रथा और अशिक्षा एवं तज्जन्य सामाजिक अभिशापो को समाप्त करने के लिए आपने स्वयं तथा अपने सहयोगियो द्वारा विशेष कार्य किया। उस क्षेत्र मे विद्यालयों की स्थापना एवं महिलाओं मे जागृति उत्पन्न कर एक नवजीवन का आरम्भ किया। इस क्षेत्र की सेवाओ का ही यह परिणाम हुआ कि वह पिछड़ा हुआ दुर्गम क्षेत्र अब शिक्षा एवं सभ्यता की ओर तीव्र गति से बढ रहा है। श्री शास्त्री जी की सेवाओ का अखिल भारतीय मू ... न पिछडी जाति सेवा संघ का अध्यक्ष बनाकर किया गया। इस संघ के अध्यक्ष रूप मे उनकी देश व्यापी सेवाये हमारा सदा मार्ग दर्शन करती रहेगी। उनकी सेवा परम्परा मे सच्चा आदर्शवाद था और वे गांधी जी के लोक सेवा सम्बन्धी आदर्शों का पूर्ण तया पालन करते थे। आज के सरकारी समाज-सेवा तन्त्र की पद्धति से वे संतुष्ट न थे क्योंकि इसमे उन्हें सेवा के पवित्र आदर्शों के दर्शन नही होते थे। वे चाहते थे कि समाज सेवक जन-जीवन को स्वयं मे सात्म्य कर लें तभी सेवा कर सकते है। अपनी इसी प्रकार की एवं अन्य आदर्श भावनाओ के कारण वे सत्ता राजनीति से दूर रहकर अपने अंगीकृत कर्तव्य पालन में सर्वात्मना रत रहे।

श्री शास्त्री जी आर्यसमाज के वर्तमान रूप और कार्यक्रम मे भी क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहते थे समय समय पर आपके लेखो मे इस भावना की अभिव्यक्ति होती थी अपने रचनात्मक स्वभाव के कारण वे आर्यसमाज की राजनीति से प्रायः दूर ही रहे परन्तु जीवन भर आर्यसमाज के संसार उपकार सम्बन्धी आदर्श की पूर्ति मे, स्वदेश, स्वभाषा, स्व संस्कृति की रक्षा और गौरववृद्धि मे योगदान देते रहे।

ऐसे प्रमुख समाजसेवी शास्त्री जी का गत सप्ताह आकस्मिक निधन समाचार पाकर हम सब दुखी हैं और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं। शोक संतप्त पारिवारिको के साथ समवेदना के साथ उस महान् समाज सेवी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। रचनात्मक समाज-सेवा ही शास्त्री जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बाढ़ में २१ करोड़ की बरबादी

हम तृतीय पंचवर्षीय योजना समाप्त करने जा रहे हैं परन्तु हमारे योजनाकार अभी तक बाढ नियन्त्रण मे समर्थ नही हो सके हैं। संसद् मे सूचना दी गई है कि इस वर्ष २० जुलाई तक बाढ से २१ करोड रुपये की क्षति हो चुकी है। अभी सितम्बर तक वर्षा होगी इस अनुपात से अभी बहुत क्षति सम्भव है।

बाढ नियन्त्रण मे असमर्थता के दो तीन कारण हो सकते है (१) प्रकृति का प्रकोप (१) नियन्त्रण योजना का अभाव (३) नियन्त्रण योजना मे त्रुटि प्रकृति प्रकोप तो मनुष्य शक्ति से बाहर है परन्तु योजना का अभाव और त्रुटि ऐसे विषय हैं जिनकी सहसा उपेक्षा नही की जा सकती जहाँ तक हम समझ सके हैं स्थिति यह है कि अनेक स्थानो पर तो ऐसे बांध आदि बनाये गये है जहा नही बनाने चाहिये बांध बनने से प्राकृतिक स्थिति मे अन्तर आ गया और इसी प्रकार यह बात भी है कि जो बांध बनाये गये है उनके आयोजन मे त्रुटियां थी और निर्माण मे भ्रष्टाचार हुआ।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

गोवध बन्दी की मांग मे राष्ट्रपति की सहानुभूति

हमे हार्दिक खेद है कि २४ जुलाई के 'आर्यमित्र' में सम्पादकीय शीर्षक मे गोवध शब्द के पश्चात् बन्दी या निरोध शब्द अंकित होने से रह गया है पाठक शीर्षक का संशोधन कर लें। सम्पादकीय टिप्पणी मे गोवध निरोध के प्रति सहानुभूति मानकर ही चर्चा की गयी है। —सम्पादक

श्री डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का निधन

श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री की श्रद्धाञ्जलि

वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला और पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष तथा प्रोफेसर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान विख्यात हिन्दी प्रेमी ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के अनन्य भक्त और नेता माननीय डा० वासुदेव शरण अग्रवाल २७ जुलाई को इह लीला समाप्त कर प्रभु की गोद मे लीन हो गये। आर्य जगत तथा हिन्दी भाषा— विश्वविद्यालय को आज उनके अभाव से गहरा धक्का लगा है। उनके निधन से केवल भारतीय विद्या और पुरातत्व ही नहीं वरन ज्ञान और विद्या के सभी क्षेत्रों को महान अपूरणीय क्षति पहुंची है। डा० साहब कई भारतीय तथा विदेशी भाषाओं के प्रकाण्ड पंडित होने के साथ साथ ईश्वरीय ज्ञान के आदि स्रोत संस्कृत तथा वेदों के महान विद्वान शोधकर्ता थे। उनका हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम था। उनकी गुरुकुलों के प्रति बड़ी निष्ठा थी। कभी भी अवसर मिलता तो वे गुरुकुल ज्वालापुर गुरुकुल कांगड़ी मे अवश्य ही पहुंचते थे। आज उच्चकोटि के विद्वान नेता बारी बारी से जा रहे हैं इनके महत्वपूर्ण स्थान की पूर्ति करना ही सच्ची श्रद्धांजलि है। वियोग से दुख तो होता है, किन्तु रोने के लिए नहीं अपितु उनके गुणों से अपनों को तदनुरूप निर्माण करना ही उनकी सच्ची भक्ति है। आज हम आर्य जगत की ओर से श्री डा० अग्रवाल जी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट करते हैं।

वेद प्रचार सप्ताह के प्रोग्राम

(३० अगस्त से ८ सितम्बर)

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—१५ से २१ अगस्त छपरा (बिहार) २२ से ३० अगस्त बिजनौर ३१ अगस्त से ८ सितम्बर तक आ० स० लखीमपुर खीरी

बलवीर जी शास्त्री—१८ से २५ अगस्त कथा ग्राम बेवाना (फैजाबाद), ३० अगस्त से ८ सितम्बर गोंडा फैजाबाद

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री—३० अगस्त से ८ सितम्बर अलीगढ़।

श्री रामस्वरूप जी आ० मु०—३० अगस्त से ८ सितम्बर भरतपुर।

श्री धर्मराजसिंह जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर मथना (इटावा)।

श्री प्रकाशवीर जी शर्मा—३० अगस्त से ८ सितम्बर चन्दौसी।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—३० अगस्त से ८ सितम्बर अलीगढ़।

श्री यशराजसिंह जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर मऊनाथ भंजन।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

वेद प्रचार सप्ताह में गो एवम् कृष्यादि सूक्तों की कथा का आयोजन

मान्यवर महोदय नमस्ते।

आशा है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आप दिनांक ३० अगस्त से ८ सितम्बर १९६६ तक अर्थात श्रावणी से जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाने के आयोजन मे संलग्न होंगे और ऐसा रचनात्मक कार्यक्रम बना रहे होंगे जिससे कि जनता मे वेदों के प्रति आस्था बने और सामाजिक व राष्ट्रिय जीवन में नव जागृति की लहर आये।

आपको विदित ही है कि भारत जो सदैव से कृषि प्रधान देश रहा है, आज घोर दुर्भिक्ष से ग्रस्त है। अन्न और दूध के अभाव मे निरन्तर रोगों का विकास हो रहा है और ऋषियों व मुनियों की इस पवित्र भूमि पर वास करने वाले मानव जीवन के दुष्चक्र में घिरे त्राहि त्राहि कर रहे हैं और उसके फलस्वरूप पापों और अपराधों मे लिप्त होकर अधार्मिक जीवन व्यतीत करने को बाध्य हो रहे हैं।

अतएव वर्तमान परिस्थितियों मे पाश्चात्य की चकाचौंध से जनता को दूर हटाकर उन्हें ईश्वरीय ज्ञान से साक्षात्कार कराना हमारा परम धर्म है जैसा कि आर्यसमाजों के नियम ३ मे हमें बोध कराया गया है। वेद मे कृषि व गो सम्बन्धी अनेक सूक्त हैं जिनकी जनता में कोई जानकारी नहीं है और यही अज्ञान का तिमिर हमारी वर्तमान दुर्व्यवस्था का मुख्य कारण है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जहां पर पाखंड खण्डनी पताका लहराकर पाखंड व अधर्म की धज्जियां उड़ाई थीं वहां गोरक्षा के लिये भी सतत प्रयत्न किये थे। उनका देशी राजाओं से सम्पर्क स्थापित करना, जनता के हस्ताक्षरों से महारानी विक्टोरिया को पत्र भिजवाना तथा गो करुणा निधि पुस्तक लिखकर जनता का ध्यान आकर्षित करना एवम गो कृष्यादि रक्षिणी सभा का विधान बनाना, इस बात के द्योतक हैं कि महर्षि इस कार्य को महत्व देकर यहां के मानवी जीवन को पुष्ट करना चाहते थे।

अतः आप से अनुरोध है कि वेद प्रचार सप्ताह मे जहां आप आध्यात्मिक और नैतिक स्तर को ऊंचा करने के लिए वेद की पावन ऋचाओं पर अथवा विस्तृत कथाओं का आयोजन करें वहां ऋग्वेद के कृषि सूक्त व अथर्ववेद के गो सूक्त को भी प्रकाश मे लावें और विद्वानों से प्रार्थना करें कि वे इन महत्वपूर्ण विषयों पर जनता के सम्मुख वैदिक दृष्टिकोण अवश्य ही प्रस्तुत करें। जन्माष्टमी पर्व पर, जो योगीराज गोपाल कृष्ण से सम्बन्धित है गोरक्षा विषय को अवश्य ही प्रचारार्थ लिया जाना चाहिये। इस सम्बन्ध मे किए गये प्रचार की इस सभा को अवश्य ही सूचना दें।

आपके सहयोग को सभा सदैव प्रस्तुत है।

विनीत—

विक्रमादित्य 'बसन्त'

अधिष्ठाता

गोकृष्यादि रक्षिणी विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा

५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

दि० ३०।७।१९६६

प्रचार योजना वर्ष १९६६-६७

क्रम स० नाम प्रचारक	नाम मंडलपति	जिला जिनमे प्रचार करना है
१—श्री रामस्वरूप जी आर्य मु०	श्री मक्खनलाल जी कोटद्वार	गढ़वाल तथा टेहरी
२—श्री गजराजसिंह जी	श्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री,	झांसी झांसी, बांदा, हमीरपुर, जालौन
३—श्री धर्मराजसिंह जी	श्री रामावतार जी, जौनपुर	जौनपुर, प्रतापगढ़ बाराबंकी सुल्तानपुर, फैजाबाद
४—श्री धर्मदत्त जी आनन्द	श्री उमेशचन्द्र जी हल्द्वानी	कुमायूं क्षेत्र—नैनीताल, अलमोड़ा, पिथौरागढ़
५—श्री वेदपालसिंह जी	श्री आशाराम जी पाण्डेय	बलिया, बनारस मिर्जापुर गाजीपुर आजमगढ़
६—श्री प्रेमचन्द्र जी	श्री प० विद्याधर जी शर्मा	कानपुर उन्नाव फतेहपुर, रायबरेली
७—श्री बालकृष्ण जी धनुधर	श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार	गोरखपुर, देवरिया बस्ती, गोंडा, बहराइच
८—श्री रामनिवास जी	जिलोपसभा इलाहाबाद	इलाहाबाद
९—श्री रघुवरदत्त जी शर्मा	श्री मुरारीलाल जी चमकनी	हरदोई शाहजहांपुर, सीतापुर, लखीमपुर
१०—श्री ओमप्रकाश जी निर्द्वन्द	श्री विशुद्धानन्द जी शास्त्री	बदायूं, एटा फर्रुखाबाद
११—श्री खड्गपालसिंह जी	श्री चौ० तेजसिंह जी सहारनपुर	सहारनपुर, मु० नगर, देहरादून
१२—श्री प्रकाशवीर जी शर्मा	श्री ईश्वरदयालु जी आर्य	बिजनौर मुरादाबाद
१३—श्री जयपालसिंह जी	श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा	अलीगढ़ मथुरा, आगरा
१४—श्री दिनेशचन्द्र जी	श्री सत्येन्द्रबन्धु जी	बुलन्दशहर अलीगढ़
१५—श्री कमलदेव जी शर्मा	श्री रमेशचन्द्र जी एडवोकेट	मैनपुरी, इटावा
१६—श्री मुरलीधर जी	श्री बा० चन्द्रनारायण जी	बरेली, रामपुर, पीलीभीत

सुझाव और सम्मतियाँ

मुसलमान और आर्यसमाज

अभी आर्यमित्र के किसी गतांक में मैंने मुसलमानों की बदली हुई नीति शीर्षक एक लेख दिया था। इसके उत्तर में कुछ भाइयों ने लम्बे लम्बे पत्र लिखे। जिनका आशय यह है कि मुसलमान अभी वैसे ही हैं जैसे पहले थे। कुछ भाई सोचते हैं कि मुझे मुसलमानों धर्म के दोषों का पता नहीं। कुछ समझते हैं कि मैं मुसलमानों के इतिहास से परिचित नहीं कुछ की धारणा है कि मैं मुसलमानों के दोषों की उपेक्षा करता हूँ। सम्भव है यह बात भी अतथ्य न हो परन्तु मेरे सामने एक ही प्रश्न है इस्लाम कितना ही बुरा हो और मुसलमान कितने बुरे दोष युक्त हों क्या मनुष्य के नाते हमको इनमें भी प्रचार करना है या यह हम मान बैठें कि कभी हम किसी अवस्था में भी मुसलमानों को वैदिक धर्म की तरफ नहीं ला सकते यदि ऐसा ही है तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का क्या प्रयोजन है। और संसार के उपकार करने का क्या अर्थ है। हम मानते हैं कि मुसलमान संगठित और कट्टर हैं और मजहब में अकल का दखल भी पसन्द नहीं करते फिर भी हैं तो मनुष्य! अन्य मनुष्यों की भाँति इनमें भी गुण और दोष हैं। इनके विचारों की रातदिन परिवर्तन होता रहता है केवल हमको इसका पता नहीं। यदि पं० लेखराम के पुस्तकों ने कुछ प्रभाव डाला तो क्या हम नये युग में नई शैली से कोई रचनात्मक कार्य नहीं कर सकते कम से कम कोई विधि निकल सकती है कि मुसलमानों के विचारों में हम कुछ ढीलापन ला सकें। साहित्य में बड़ी ताकत है बन्दूक और तोपों से अधिक ताकत है साहित्य वह नर्म औजार है जो कड़े से कड़े लोहे को काट देता है इसलिये हमको किसी वर्ग विशेष की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। नये युग का निरीक्षण करके नए मार्ग को खोजते रहना चाहिये मेरा तो विश्वास है कि इस्लामी धर्म या इस्लामी नीति या इस्लामी सभ्यता में कोई ऐसा तत्व नहीं है जिसको हम अजर या अमर कह सकें या जिसकी निस्बत यह कह सकें कि जैसे वैदिक धर्म करोड़ों वर्ष से चला आया है इस प्रकार इस्लाम भी चलता रहेगा मुहम्मद साहब ने यह अवश्य कोशिश की थी कि वह अपने अनुयायियों को यह निश्चय करा दें कि अन्तिम पैगम्बर थे उनकी शिक्षा सर्वाङ्गपूर्ण थी और इस्लाम कयामत तक रहेगा परन्तु पिछले चौदह सौ वर्ष के इतिहास ने ही इस्लाम की कलई खोल दी है आर्यसमाज को भविष्य पर आशा रखनी चाहिये और हमारे नेताओं को यह सोचना चाहिये कि निराशापूर्ण वातावरण को आशापूर्ण कैसे बना सकते हैं।

भवदीय—

—गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रयाग

सांस्कृतिक समस्याएं

हम वियतनाम के बजाय घर की सुध लें

[श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी]

वर्तमान समय में श्रीमती इन्दिरा जी का कोई भाषण ऐसा नहीं होगा जिसमें वियतनाम का जिक्र न हो। मिश्र यूगोस्लाविया और रूस की यात्राओं में भी सर्वत्र वे वियतनाम की धुन लगाती रहीं। भारत के समाचार पत्रों को भी वह विदेशों से वियतनाम पर ही समाचार देती रहीं। उनके वक्तव्यों से ऐसा प्रतीत होता है जैसे भारत सरकार के सम्मुख वियतनाम की समस्या ही हल करने को रह गई है।

अपने समय में श्री नेहरू जी को भी यही धुन सवार रहती थी। भारत के बजाय उनके मस्तिष्क में २४ घण्टे कोरिया स्वेज दक्षिण अफरीका वियतनाम रहते थे। सीमाओं में चीन के आक्रमण ने उनकी आंखें खोलीं और उन्हें विदेशों के बजाय भारत की ओर ही ध्यान देना पड़ा।

श्री नेहरू जी के पश्चात् स्व० लाल बहादुर जी ने सही नीति को अपनाया और उन्होंने विदेशों की अपेक्षा भारत को ही प्रमुख स्थान दिया। यही कारण था कि श्री नेहरू जी जो कार्य अपने १८ वर्ष के शासन काल में न कर सके उन्होंने वह कार्य १८ मास में कर दिखाया।

यह बात भी सत्य है कि वियतनाम जैसी समस्या पर भारत जैसे विशाल देश को मौन नहीं रहना चाहिए। परन्तु जब भारत स्वयं जीवन मरण जैसे संकट काल में से गुजर रहा है तो उसे इस इतना तूल नहीं देना चाहिए जितना दिया जा रहा है।

समझदारी का भी यह तकाजा है कि ऐसे समय जब भारत में अन्न संकट है और दुर्भिक्ष जैसी स्थिति बनी है और अमरीका के अतिरिक्त कोई देश भारत को स्थिति से पार नहीं कर सकता है तो भारत का मौन रहना ही श्रेयस्कर है। यदि बोलना आवश्यक ही हो तो फिर अकेले अमरीका को ही दोषी ठहराने के स्थान पर उत्तरी वियतनाम में भी सशस्त्र विद्रोह करा रहा है।

नीति के तौर भी वियतनाम के विषय पर भारत को मौन रहना चाहिए चीन भारत का शत्रु नं० १ है और वह किसी भी क्षण भारत पर आक्रमण कर सकता है परन्तु चीन अब तक वियतनाम में अमरीका के साथ उलझा है तब तक वह भारत पर सीधा आक्रमण करने का साहस नहीं करेगा।

यदि चीन भारत को उलझाने या परेशान करने से रुके और भारत के

(शेष पृष्ठ १४ पर)

डा. वासुदेवशरण जी अग्रवाल का निधन!

वाराणसी २७ जुलाई। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का २६ जुलाई को वाराणसी के सर सुन्दरलाल अस्पताल में देहान्त हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ थे। वह १५ दिन पहले अस्पताल में भरती किया गया था। वे ६२ वर्ष के थे।

इनका अन्त्येष्ठि संस्कार ऐतिहासिक हरिश्चन्द्र घाट पर कर दिया गया इस अवसर पर अनेक विद्वान साहित्यिक प्रमुख नागरिक उनके शिष्य तथा प्रशंसक भारी संख्या में उपस्थित थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र ने अन्त्येष्ठि की।

उनकी मृत्यु के सम्मान में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कई प्रमुख कालेज आज बन्द रहे।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा के कार्यालय भी बन्द रहे। सभा के कर्मचारियों तथा हिन्दी प्रेमियों की एक सभा में स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल को श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

डा० वासुदेवशरण वेद उपनिषद पुराण भारतीय धर्म इतिहास कला पुरातत्व आदि विषयों के पण्डित थे। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से डा० राधाकुमुद मुखर्जी के निर्देशन में हिन्दू संस्कृति पर निबन्ध प्रस्तुत कर डाक्टर की उपाधि प्राप्त की थी

उन्होंने १५ से अधिक ऐसी पुस्तकें लिखी हैं जो युग युग तक विद्वानों का पथ प्रदर्शन करती रहेंगी—पृथ्वी पुत्र कला और संस्कृति हर्ष चरित्र, एक सांस्कृतिक अध्ययन मेघदूत, कल्पवृक्ष पाणिनी कालीन भारत, कादम्बरी का सांस्कृतिक अध्ययन और पदमावत संजीवनी भाष्य आदि। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ठोस विचारों को सुन्दर, सरल और ओजस्वी भाषा में व्यक्त करने में सिद्धहस्त थे। भारतीय विद्या पर हिन्दी और अंग्रेजी में समान अधिकार से लिखने वाले विद्वानों में वह सर्वश्रेष्ठ माना जाता था।

आन्ध्र में मुस्लिम साम्प्रदायिकता के उभरते चरण

(ले०—श्री रामचन्द्रराव देशपाड एम०एल०ए०)

स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व निजाम हैदराबाद के शासन-काल मे हैदराबाद नगर मुस्लिम साम्प्रदायिकता का केन्द्र बिन्दु बना हुआ था। सम्पूर्ण हैदराबाद राज्य मे मुसलमानो को हिन्दुओ के प्रति घृणा करना तथा उन्हे एक पराजित जन-समूह की भाति देखना सिखाया जाता था। सम्पूण भारत मे मुस्लिम साम्प्रदायिकता को यहा से खुल्लम खल्ला आर्थिक सहायता और प्रोत्साहन मिलता रहता था। हैदराबाद को एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में देखने तथा अन्तत: निजाम को मुगलो के उत्तराधिकारी के रूप मे दहली का सम्राट बनाने और लालकिले पर आसफिया झण्डा लहराने का स्वप्न देखा जाता था। स्व० सरदार पटल की दूर-दर्शिता और दृढता ने इस स्वप्न को वस्तुत स्वप्न ही बना दिया। पुलिस कायवाही न हैदराबाद को मुस्लिम साम्प्रदायिकता की कमर तोड दी थी, किन्तु मुस्लिम साम्प्रदायिकता को भडकाने वाली प्ररक शक्तिया सुरक्षित रही। उन्होने चतुर राजनीतिज्ञो की भाति अपनी टोपिया बदली, खादी के आवरण मे अपने आप को ढक लिया, अपनी लच्छेदार भाषा मे राष्ट्रीयता की लम्बी और जाशीली तकरीरे प्रारम्भ कर दी। कल के कट्टर मुस्लिम-लीगी आज के उग्र राष्ट्रवादी बन गये। कुटिल व्यावहारिक राजनीति मे पले हुए तथा शिष्टाचार और आदाब मजलिस के रग मे सिर से पाव तक रगे हुए शिक्षित एव उच्च घरानो के मुसलमान स्त्री-पुरुष १९५६ की प्रान्त पुर्नरचना के बाद आन्ध्र से आये हुए प्लेटफार्म के वीर हिन्दू राजनीतिज्ञो के स्वागत में पलक-पावडे बिछा दिये। इनके ऊपरी शिष्ट व्यवहार और भव्य मेहमान-नवाजी से देहली के बडे-बडे, काग्रसी नेता तक प्रभावित होकर जब हैदराबाद के मुस्लिम नेताओ को शिष्टता और सभ्यता के प्रशस्ति-पत्र देने लगे, तो गुटूर, कर्नूल और विजयवाडा से आये हुए बड-बड जमीदार तथा राजा टाइप के राजनीतिज्ञों ने, जो केवल सत्याग्रही या आन्दोलनकारी सगठन मात्र थे, हैदराबाद के मुसलमानो की भडकीली और जर्क बर्क मेहमानदारी तथा मजलिसी शिष्टता के ऐसे शिकार हुए कि इन्हे अपनी नाक का बाल बना लिया। हैदराबाद नगर मे मुसलमानो को अन्य प्रकार की जा सुविधा प्राप्त है, वह है उनकी सख्या—यह सख्या जहा वास्तव मे अधिक है वहा जनगणना के समय लगभग हर मुस्लिम घर से एक दो बढाकर लिखाई गयी सख्या के कारण भी इतनी अधिक बढी हुई लगती है कि वहा के काग्रसी उससे सदैव आतकित रहते है। इन मुसलमान नेताओ ने काचन कादम्बिनी और कामिनी के भी खूब जाल फैलाए। मानव दुर्बलताओं से प्रभावित कुछ राजनीतिज्ञ इस जाल मे फस गये। कुछ सेक्युलिरज्म और उदार अन्त करण की पूर्व से चली आने वाली काग्रसी घातक नीति के घोर अनुयायी बन गये। फलस्वरूप हैदराबाद मे मुस्लिम साम्प्रदायिकता फलती-फूलती रही और उसकी जडें मजबूत हो गयी।

हर मोर्चा मजबूत

मुसलमानों ने अनेक मोर्चे सभाल लिय। उर्दू की आड मे अनजुमन तर्की-ए,उर्दू उद मजलिस और अनजुमन तहफूज उर्दू ने आसमान गुजा दिया। इनके

पोषको को राष्ट्र और देश की कठिन से कठिन परिस्थिति मे भी उर्द के सिवा कुछ नही दिखाई देता। चीन पाकिस्तान का भारत पर आक्रमण हो या अन्न का सकट हो, मुद्रा का अवमूल्यन हो या देश का कोई भाग अकालग्रस्त हो जाय, इन्हे केवल एक ही चीज नजर आती रही और वह उर्द। इन लोगो के सौभाग्य से कुछ उदारमना हिन्दू परिवार ऐसे मिल गये जो निजाम के समय की नमक हलाली को अदा करने के लिए मैदान मे आ गये। एक सक्सेना परिवार और कीर्ति के भूखे एक रेड्डी एम एल ए तथा एक बेरोजगार श्रीवास्तव रात-दिन अपनी ऊट-पटाग बयानबाजी उर्द को इस रूप में प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया कि वह एक पद दलित और अन्याय से पीडित भाषा है उसे काग्रसी हुकूमत कुचल रही है। इस मोर्चे ने अन्त अपना रग जमाया और उर्दू को, जो विधानानुसार कभी भी अल्प सख्यको की भाषा नही बन सकती, आन्ध्र में तेलुगु के बाद महत्त्वपूर्ण भाषा बना दिया। आन्ध्र मे मुसलमान केवल ७-८ प्रतिशत हैं। मुगलकाल के सैयद बन्धुओं की भाति आन्ध्र के दो वर्तमान मुस्लिम सज्जनो ने यहाँ ऐसा प्रभाव जमाया और मुख्यमन्त्री के स्वागत-समारोह का ऐसा जादू चलाया कि आन्ध्र और काग्रेस के भाग्य निर्माता अपने आपको धन्य समझ बैठे।

मजलिस मशावरत और मजलिस जमियतुल-उलमा, यद्यपि दोनो पृथक् दीखते हैं, पर दोनो राष्ट्रीय मोर्चे से केवल मुस्लिम हित को सुरक्षित करने तथा मुसलमानो को पीडित सिद्ध करके उन्हे सदैव न्याय' दिलाने की चिन्ता में रहते हैं। मजलिस मुशावरत के सम्मानित (आनरेरी) प्रचारक प० सुन्दरलाल (जिन्हे हैदराबाद में मौलवी खूबसूरतलाल के नाम से लोग याद करते हैं) जब मजलिस मुशावरत के मच से खडे रहकर मुसलमानो के दुख-दर्द का रोना रो-रोकर आखो से आँसू बहाते हैं (भाषणो मे आसू बहाने मे पडित जी बहुत माहिर हैं) तो उसकी निरन्तर प्रतिध्वनि पाकिस्तान रेडियो से होती रहती है। मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन और मुस्लिम लीग तो रात दिन विषवमन करते रहते हैं। इन सभी मोर्चों का परिणाम अब प्रकट होने लग गया है।

मुसलमानों को विविध पृथक संरक्षण

जिस काग्रेस ने पृथक चुनावो और पृथक सुरक्षित मुस्लिम सीटो का अग्रेजो के काल मे विरोध किया, उसी काग्रेस के राज मे मुसलमानो को पृथक् स्कालरशिप, पृथक छुट्टियाँ और पृथक सुविधाए दी जा रही हैं। आन्ध्र प्रदेश एजुकेशनल रूल्स (प्रकाशित १९६६) पृ० ७९ आटिकल १३४ मे 'हिन्दूज एन्ड विटशन्स' शीर्षक से घोषित किया गया है कि 'उर्दू माध्यम के स्कूलों मे साप्ताहिक छुट्टी रविवार के स्थान पर शुक्रवार को दी जा सकती है।'

(In all Urdu schools Friday may be a whole holiday instead of Sunday)

इसी प्रकार मोहर्रम और बकरीद की सामान्य रूप से सरकारी स्कूलो और कार्यालयो को एक-एक दिन की छुट्टी दी जाती थी। किन्तु उपर्युक्त धारा १३४ में घोषणा की गई है कि उर्दू माध्यम के स्कूलो को मोहर्रम की दस दिन और बकरीद की चार दिन छुट्टियाँ दी जाएँ। इसके अतिरिक्त उर्दू स्कूलो और अन्य स्कूलो की छुट्टिया सवथा पृथक् की गई हैं। निजाम हैदराबाद के राज्य मे इन छुट्टियो का पहले यही क्रम था, किन्तु बाद मे उन्होने भी मोहर्रम की छुट्टियाँ कम कर दी थी। किन्तु आन्ध्र को यह काग्रसी हुकूमत श्री के० ब्रह्मानन्द रेड्डी के मुख्यमन्त्री काल में निजाम से भी अधिक मुसलिम पोषक बन गई है शायद भावनात्मक एकता के लिए यह पृथक्करण आन्ध्र सरकार की दृष्टि में आवश्यक है।

शहर में साम्प्रदायिक संघर्षों का सिलसिला

आन्ध्र के गृहमत्री एक मुसलमान हैं। उनकी ख्याति उनकी राष्ट्रीय विचारधारा के कारण बहुत है। किन्तु उनके काल मे तीन बाते स्पष्ट रूप से दीख रही हैं। शहर मे नयी-नयी दरगाहे, कबरे और भग्न प्राय मस्जिदें तेजी से उभर रही हैं। शहर के बीचो-बीच स्थित नौबत पहाड पर जहा बिडला प्रतिष्ठान की ओर से एक मदिर बनाने के लिए भूमि ले ली गई है, वहीं रातोरात एक कबर फफोले की तरह उभर गयी। उपयुक्त मुस्लिम गृहमत्री के कार्यकाल का दूसरा कारनामा जो स्पष्ट रूप से दीख रहा है, वह है पुलिस के जवानों मे मुसलमानो की बे-हिसाब भरती। इस का परिणाम यह होता है कि शहर के किसी प्रकार के प्रदर्शन मे अनिवार्य रूप से पुलिस के सामने सरकारी बिजली के पोलो की तोड-फोड और बाजार मे हिन्दूओं की दुकानों के शीशो की तोड़-फोड होती है। अगस्त १९६५ में विद्यार्थियो की एक हडताल आबिदरोड के प्रमुख बाजार मे हिन्दुओ की सभी दूकानो के शीशे तोडे गये, किसी भी मुस्लिम दूकान को धक्का नही लगा। तीसरी बात साम्प्रदायिक सघष। इस समय पिछले एक मास मे हैदराबाद शहर मे लगभग एक दर्जन साम्प्रदायिक

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भारत की स्वास्थ्य समस्या का समाधान—

भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के द्वारा होना चाहिए

(ले०—श्री प० कृष्णदत्त जी आयुर्वेदालङ्कार फैजाबाद)

कांग्रेस सरकार जब से पदारूढ़ हुई है स्वास्थ्य और चिकित्सा' का कार्य अंग्रेजी शासन में जिस ढग पर चल रहा था उसी ढग पर अब भी चल रहा है यह खेद का विषय है। भोर कमेटी की रिपोट को इस सरकार ने यह कह कर स्थगित कर दिया कि वह अव्यवहार्य है। फिर चोपड़ा कमेटी बनी जिसने अच्छे ढंग से काम किया। उसने अनेक सुझाव दिये जिनमें भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली और पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति एलोपैथी का समन्वय करने की बात कही गई थी विशेषत स्वास्थ्य रक्षा के लिए आयुर्वेदिक पद्धति को प्रचलित करने का आदेश था। कमेटी की इस रिपोर्ट से डाक्टरों को बड़ा धक्का लगा उन्होंने इसे रद्दी की टोकरी में फिकवाने का पूरा प्रयत्न किया। चिकित्सा तथा स्वास्थ्य का सम्पूर्ण विभाग भारत मे इन्ही के हाथ में था। केन्द्र में स्वास्थ्य मंत्री श्रीमती अमृतकौर थी वे जिस वातावरण मे पली और जिस समाज म रही वह भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के क्षेत्र से कोसो दूर था। मेडिकल कान्फ्रेंस और मेडिकल परिषद ने चोपड़ा कमेटी की रिपोट को व्यर्थ सिद्ध करने का प्रयत्न किया और जिसमे उसे सफलता प्राप्त हुई। फिर एक पण्डित कमेटी का निर्माण किया गया इस कमेटी की रिपोट के आधार पर आयुर्वेदिक अनुसन्धानशाला जामनगर में स्थापित की गई।

स्वास्थ्य का प्रश्न अभी तक हल नहीं हुआ। स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी कभी-कभी कुओ मे पोटाश डाल देते, स्कूल और कालेज के विद्यार्थियो के स्वास्थ्य की परीक्षा कर लेते या उनका तोल कर लेते या विसूचिका मसूरिका या प्लेग के फैलने पर इनके टीके लगाते रहते हैं। यही वर्तमान स्थिति का चित्र है। हा सामुदायिक विकास खण्डो तथा ग्रामोत्थान योजनाओं मे जो स्वास्थ्य सरक्षा का समावेश किया गया है उसमें स्वच्छता सम्बन्धी कुछ कार्य प्रारम्भ हुआ है। पर इतना पर्याप्त नहीं है। इसने कार्य मात्र से जनता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं बन सकता।

स्वास्थ्य रक्षा—सामान्यत हम उस मनुष्य को स्वस्थ समझते हैं जिसमे कार्य क्षमता, श्रम सहिष्णुता या रोग निवारक शक्ति (इम्यूनिटी) उचित मात्रा में हो परन्तु वस्तुतः यह स्वस्थ का सही लक्षण नहीं है।

आचार्य सुश्रुत कहते हैं—

समदोष समाग्निश्च समधातु मल क्रिय.। प्रसन्नात्मेन्द्रिय मना, स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥

अर्थात दोष, धातु मल, अग्नि और क्रियायें सब समता युक्त होने चाहिए। इनके वृद्धि, ह्रास और वैषम्य से रहित होने का नाम ही साम्य है इनकी समता ही आरोग्य की कुञ्जी है। जब वात पित्त और श्लेष्मा रस, रक्त, मेदा, अस्थि मज्जा शुक्र, मल, मूत्र स्वेद ये सब पदार्थ तथा मूलभूत कोष्ठाग्नि तथा शरीरस्थ मस्तिष्क हृदय फुफ्फुस, यकृत, प्लीहा वृक्क आदि यन्त्र बिना किसी बाधा के अयोग अतियोग, मिथ्यायोग से रहित हों। उचित रूप से अपने अपने कार्य को सम्पन्न करते हैं तभी मनुष्य स्वस्थ रहता है। जठराग्नि मन्द तीक्ष्ण और वैषम्य दोषरहित होनी चाहिए।

इस दिखाई देने वाले स्थूल शरीर में एक सूक्ष्म शरीर और है जिसे मानस शरीर भी कह सकते हैं। इस सूक्ष्म शरीर के स्वास्थ्य की अभिव्यक्ति उल्लिखित श्लोक मे निम्न शब्दो मे की गई है। प्रसन्नात्मेन्द्रियमना। अर्थात जीवात्मा मन तथा इन्द्रियो की प्रसन्नता मानस शरीर का स्वास्थ्य है। राग द्वेषादि विविध कारणो तथा विविध भोग वासनाओ से मुक्त मन की अवस्था ही मन की प्रसन्नता है। इस तरह मनोमय तथा स्थूल शरीर स्वस्थ कहलाता है।

ऊपर के लक्षण मे समयोग की प्रधानता है। दोष अग्नि, धात्वादि को सम अवस्था में रखने के लिए किस बात की आवश्यकता है अब हमें समझना चाहिए। हमें पता है कि शरीर की रक्षा के लिए आहार की आवश्यकता होती है। शरीर इस पर अवलम्बित है। प्रकृति, देश काल, आहार, विहार जल, वायु का योगायोग ही स्वास्थ्य के बनने बिगड़ने का हेतु है। इन साधनो को हम दो भागो में बांट सकते हैं—

(१) स्वकीय साधन, (२) परकीय साधन।

(१) स्वकीय साधन-प्रकृति आहार और विहार।

(२) परकीय साधन-देश काल, जल और वायु।

प्रकृति से अभिप्राय है प्रत्येक प्राणी की स्वाभाविक स्थिति आयुर्वेद में ७ प्रकार की प्रकृति का निरूपण किया गया है। मनुष्य अपनी प्रकृति को समझ और ध्यान में रखकर ही यदि खान पान करता है तो वह स्वस्थ रह सकता है। प्रकृति की अवहेलना करके यदि वह खान पान करेगा तो अवश्य रोगी हो जायगा। प्रकृति अपने विरुद्ध आचरण को सहन नही करती वह तुरन्त ही उसका प्रतिकार करने को उद्यत होती है। अत स्वस्थ रहने के लिए प्रकृति के अनुकूल ही आहार विहारादि की आवश्यकता है। यह स्वकीय साधन है इस पर हमारा ही पूरा अधिकार है।

देश, काल जल वायु परकीय साधन है। इनका महत्व भी स्वकीय साधन से कम नही है। देश काल जल और वायु पर हमारा अधिकार नहीं है। हम अपनी इच्छानुसार उनको जैसा बनाना चाहे नही बना सकते। जैसे बिना खान पान के हमारा जीवन नही रह सकता वैसे बिना जलवायु के भी हमारा जीवन बना नही रह सकता वैसे बिना जलवायु के भी हमारा जीवन बना नही रह सकता बिना भोजन तो मनुष्य कुछ जीवित रह भी सकता है पर बिना वायु तो कुछ मिनट भी जीवित रहना असभव है। जलवायु की स्वच्छता तथा मलिनता का सम्बन्ध देशकाल से है। उड़ीसा आसाम और बगाल जल बहुल प्रदेश हैं। अत वहा की वायु मे नमी रहती है। सौराष्ट्र राजस्थान पजाब अल्प जल वाले प्रदेश हैं इनमे वर्षाकाल को छोड़कर शेष ऋतुओं में वायु रुक्ष रहती है। देश की यह भिन्नता उन प्रदेशो के मनुष्यों अन्न, फल, फूल पशु पक्षी सब पर अपना प्रभाव डालती है देश की तरह काल का भी अपना महत्व है। शीत, उष्ण, वर्षा, ये सब काल जन्य ही हैं। जल वायु प्राणी तथा वनस्पति सभी पर सर्दी गर्मी और वर्षा का प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान स्वास्थ्य विभाग (हेल्थ डिपार्टमेन्ट) अति अपूर्ण—आजकल मेडिकल विभाग के अन्तर्गत स्वास्थ्य विभाग होता है। जिसका सचालन नगरपालिका द्वारा होता है। इस विभाग के लोग कभी-कभी हलवाइयो की दूकानों तथा फल बचने वालो तथा दूध, दही और घी बचने वालो की जांच करते हैं विसूचिका (कालरा) के दिनो मे इन दुकानो की अधिक जांच होती है। सड़े सड़े बासी खाद्य पदार्थ फिकवा दिये जाते हैं। मिठाई दूध और नकली घी बेचने वालों का चालान होता है। मुकदमे चलते हैं और दण्ड दिये जाते हैं। मेलो वगैरह पर हैजे के टीके का विशेष प्रबन्ध होता है। कुओ के जल को स्वच्छ करने के लिए पोटाश भी डलवाई जाती है किन्तु यह सब काम बड नगरो तक ही सीमित है। छोटे कस्बो और नगरो मे कोई उचित प्रबन्ध स्वास्थ्य रक्षा का नही है।

जो कुछ किया जाता है देश की कायम स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से उसका कोई विशेष महत्व नही है। वर्तमान प्रणाली में स्वास्थ्य का सम्बन्ध खान-पान जलवायु और सफाई तक ही सीमित है। इसमे प्रकृति देश और काल का कोई विचार नहीं है। मानसिक स्वास्थ्य का तो पूर्ण बहिष्कार है। सदाचार का भी स्वास्थ्य से कोई सम्बन्ध है यह तो डा० जानते ही नही। दिनचर्या और ऋतुचर्या के सम्बन्ध मे एलोपैथी की बड़ी बड़ी किताबो में कुछ नहीं लिखा है। आहार का विचारो से क्या सम्बन्ध है इस पर कोई डाक्टर कुछ नही जानता। 'आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि। सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृति की गहराई को वे नही समझते। क्योंकि उनके यहा आयुर्वेद की तरह इस प्रकार विचार करने की शैली ही नही है।

इससे स्पष्ट है कि वर्तमान हेल्थ डिपार्टमेन्ट या स्वास्थ्य विभाग अपूर्ण है और जनता के स्वास्थ्य की रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ है। एलोपैथी में स्वास्थ्य सरक्षण की क्षमता नहीं है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद मे स्वास्थ्य सरक्षण की पूर्ण क्षमता—आयुर्वेद ने इस तथ्य पर पूरा ध्यान दिया है कि बिना उत्तम स्वास्थ्य के मनुष्य जीवन के किसी भी क्षेत्र मे सफल नही हो सकता। आयुर्वेद के ग्रन्थो मे लिखा है कि—'धर्मार्थ काम मोक्षाणाम आरोग्य मूल मुत्तमम। अर्थात धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति बिना सुन्दर स्वास्थ्य के नही हो सकती। आयु

आयुर्वेद शारीरिक स्वास्थ्य पर ही विशेष बल देता है, सो बात नहीं उसने मानसिक स्वास्थ्य पर भी पूरा बल दिया है। चरक ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि— ...की इन्द्रियां अपने अपने विषयों के अतियोग, अयोग और मिथ्या योग से विकृति को प्राप्त होकर बुद्धि नाश के कारण बनते हैं। गीता में भी लिखा है— "ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते। सङ्गात् संजायते कामः, कामात् क्रोधोऽभिजायते। क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति विभ्रमः। स्मृति भ्रंशाद् बुद्धि नाशो बुद्धि नाशात् प्रणश्यति।"

आज हम सर्वत्र जिस भ्रष्टाचार का प्रसार देखते हैं। कोई विभाग, कोई व्यवसाय तथा कोई कार्य क्षेत्र इससे बचा नहीं है। क्या कभी आपने सोचा इसका क्या कारण है। इसका मुख्य कारण है मानसिक अस्वास्थ्य। जब बुद्धि का संतुलन बिगड़ जाता है तभी मनुष्य कर्तव्य और अकर्तव्य के भेद को भूलकर अनुचित कार्य (पाप) करने पर उतर आता है। इन्द्रियाँ विषयों के अतियोग से मन को परेशान कर बुद्धि विपर्यय द्वारा सदाचार के नियमों को तोड़ देती हैं। इसी को भ्रष्टाचार (करेप्शन) कहते हैं। यह दोष विटामिन की गोलियों से दूर नहीं हो सकता। इसके दूर करने के लिए चरक का (सद्वृत्त) पढ़ना होगा। स्वाध्याय और सत्संग करना होगा।

इस समय हमारा तात्पर्य यह है कि डाक्टरी ढंग से जो हेल्थ डिपार्टमेन्ट (स्वास्थ्य विभाग) चल रहे हैं वे संतोषजनक नहीं हैं। अब स्वराज्य हो गया है। हमें अपनी शास्त्रीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के अनुसार स्वास्थ्य विभागों को संचालन करने के लिए तैयार होना चाहिये। और कांग्रेस सरकार पर इसके लिये जनता को पूरा जोर डालना चाहिए क्योंकि अब तो जनतन्त्र है— जनता का राज्य है। इसलिये जनता की आवाज की उपेक्षा नहीं हो सकती। हमें इस भ्रान्ति से भी अपने को तुरन्त मुक्त कर लेना चाहिए कि एलोपैथी चिकित्सा प्रणाली ही वैज्ञानिक प्रणाली है। आयुर्वेद किसी से भी कम वैज्ञानिक नहीं है। विज्ञान का अर्थ होता है (सिस्टमेटिक्ड नालेज) क्रमबद्ध ज्ञान। आयुर्वेद का ज्ञान जितना क्रमबद्ध है उतना संसार की किसी भी चिकित्सा-पद्धति का नहीं है।

एलोपैथी चिकित्सा बड़ी महंगी भी है। हमारे देश की औसत आय बहुत कम है। आयुर्वेद बहुत सस्ता है। इस लिए गरीबी की जीवन रक्षा करने में सर्वथा समर्थ है। कृषक और मजदूर डाक्टरी महंगा इलाज नहीं कर सकते जिनकी एक लम्बी संख्या इस देश में रहती है। सरकार को चाहिए कि आयुर्वेदिक स्वास्थ्य विभागों की प्रत्येक जिले में शीघ्र स्थापना करे अर्थात् वर्तमान हेल्थ डिपार्टमेन्ट एलोपैथिक को आयुर्वेदिक स्वास्थ्य विभागों में बदल देवें।

आयुर्वेदिक स्वास्थ्य विभाग निम्न लिखित कार्य करेंगे—

(१) औषधियों तथा खाद्य पदार्थों मे मिलावट (एडल्टरेशन) को रोकेंगे।

(२) स्वास्थ्य के विषय मे प्रकृति जल, वायु देश, काल, आहार विहार और सदाचार का क्या स्थान है स्पष्ट बता सकेंगे?

(३) दिनचर्या, ऋतुचर्या, ब्रह्मचर्य और प्राणायाम की शिक्षा जन साधारण को देकर जनता का स्वास्थ्य निर्माण कर सकेंगे।

(४) रोगों के कारण और उनके प्रतिकार के उपाय बताकर रोगों की वृद्धि को रोक सकेंगे।

(५) स्वास्थ्य सम्बन्धी ट्रैक्ट, छोटी-छोटी पुस्तकें, विज्ञापन बांट कर जनता को रोगों को दूर कर सकेंगे। मैजिक लैन्टर्न से भी ग्रामों मे प्रचार किया जा सकता है।

(६) स्वास्थ्य प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया जा सकता है। बड़-बड़े मेलों मे उत्तम प्रकार हो सकता है।

यदि इस प्रकार हम स्वास्थ्य विभागों का संचालन करेंगे तो ५ ही वर्ष मे हमें बड़ी प्रगति दिखाई देगी, जनता संतुष्ट होगी और आयुर्वेद की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जिसका बढ़ाना हम सबका कर्तव्य है।

●

आर्य विद्वान् महोपदेशक—

माननीय पं. बिहारीलालजी शास्त्री

का बरेली में सार्वजनिक अभिनन्दन

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली द्वारा आयोजित श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह शनिवार १६-७-६६ को अध्यक्ष विधान सभा माननीय श्री मदनमोहन जी वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सभापतित्व में धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

बाहर से पधारने वालों में आर्यमित्र के सम्पादक श्री स्नातक उमेशचन्द्र जी, श्री राजाराम जी मन्त्री आ०स० बदायूं, कु० सरोजिनी पाठक प्रधानाचार्या आर्य पुत्री हा० से० स्कूल बिलसी, श्री आचार्य ब्रजनन्दन जी गुरुकुल सूरजकुण्ड बदायूं श्री नवीनचन्द्र गुप्त प्रधान आ०स० चांदपुर, श्री आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री एम०ए० थे जो मंच पर शोभायमान थे।

प्रधान जी के शुभागमन पर विशाल जन समूह ने बैण्ड बाजे से स्वागत किया। बाहर से आये हुए शुभ सन्देश श्री प्रणपाल शास्त्री उपमन्त्री आर्यसमाज बिहारीपुर ने पढ़कर सुनाये। पं० जयपालाल एम० ए० ने कविरत्न प्रकाशचन्द्र की इसी अवसर के लिए भेजी हुई कविता पढ़कर सुनाई। उर्दू के विख्यात कवि श्री किशनलाल साकिब की उर्दू कविता ने समां बांध दिया। श्री मुरलीधर के भजन भी पसन्द हुए।

श्री चन्द्रनारायण प्रधान आ० स० बरेली ने आ०स० बिहारीपुर की ओर से अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किया तत्पश्चात् विभिन्न संस्थाओं ने बिहारीलाल निधि में धन भेंट किया। पूज्य पं० बिहारीलाल जी का टीका किया, मालायें पहिनाईं।

धनराशि निम्न संस्थाओं से प्राप्त हुयी—

श्री वैद्य राधेश्याम बरेली (हकीम रामजीमल फार्मेसी)	१०१)
" विश्वनाथ शर्मा काशीनाथ शर्मा बरेली	१०१)
आर्य पुत्री इण्टरकालेज, सुभाषनगर बरेली	१००)
आर्यसमाज उझानी बदायूं	१०१)
पार्वती आर्य कन्या इण्टर कालेज बदायूं	१०१)
आर्यसमाज चांदपुर	५१)
" धामपुर	५०)
आ० क० हा० से० स्कूल बिलसी	५१)
आर्यसमाज बिहारीपुर	५१)
आर्य स्त्री समाज बिहारीपुर	२५)
श्री वीरेन्द्र शर्मा	५)
आर्यसमाज बदायूं	५१)
	योग—७८८)

पूज्य पंडित बिहारीलाल जी ने भेंट मे आई हुई राशि सभा प्रधानजी को वेद प्रचारार्थ भेंट कर दिये।

प्रधान जी ने अपने भाषण मे वेद प्रचार वैदिक सभ्यता का विस्तार, विद्वानों का सत्कार, सेक्युलरिज्म का अर्थ धर्मनिरपेक्षता नहीं वरन् असाम्प्रदायिकता के हैं। भाषण की जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

प्रात काल आर्यसमाज में वृहद यज्ञ हुआ जिसके यजमान श्री अरविन्दलाल एम० ए० थे। उपस्थित नर नारियों को प्रसाद बांटा गया।

मध्याह्न में श्री वैद्य राधेश्याम ने सभा प्रधान का आतिथ्य किया था।

—चन्द्रनारायणऐडवोकेट, मन्त्री आ०स० बिहारी

✱

विज्ञान वार्ता

चार वर्षीय बालकों को पढ़ाने की नई पद्धति

किंडर गार्टन में तकनीकी 'जादूगर'

चार वर्ष की आयु के बालकों को पढ़ाने के लिए एक नई मशीन काम मे लाई जाने लगी है, जिसे तकनीकी 'जादूगर' कहा जा सकता है। इसके द्वारा बालक खेलते हुए भी पढना सीख सकते हैं। प० जर्मनी में इसकी सफलता के लिए डा० वर्नेर कोरेल बडे प्रयत्नशील हैं और लगन के साथ सयोजित शिक्षा के कार्यक्रम को आगे बढा रहे हैं। भविष्य मे प०जर्मनी के ४ वर्षीय बालको को यह सिखाया जायगा कि उन्हें कैसे पढना चाहिये। सयोजित शिक्षा की प्रथम वि० वि० इस्टीट्यूट के डायरेक्टर डा० वर्नेर कोरेल ने यह क्रान्तिकारी योजना तैयार की है। तकनीकी युग मे नये तरीको का सहारा लेकर किस प्रकार अध्यापको की कमी व विषयों की वृद्धि का सामना करने के उपाय ढूंढ जा सकते हे, इसके लिए प्रो० कोरेल नये साधनो की तलाश में लगे हुए हैं।

प्रो० कोरेल ने 'बालको के बौद्धिक विकास के उत्पादक वर्ष अप्रयुक्त ही रह जाते हैं तथा स्कूलो मे कैसे पढना चाहिये इसे सिखाने मे भारी समय की बर्बादी होती है आदि विचारो को पेश करके रूढिवादी स्कूल अध्यापको को चौंका दिया है। ३८ वर्षीय विद्वान् प्रो० कोरेल वे, जो तरुण पीढी के विद्वानों व क्रियाशील सदस्यो मे अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं, इसकी प्रेरणा अमेरिका मे अपने तीन वर्षीय अध्ययन काल मे प्राप्त की। कुछ समय तक वे हार्वर्ड विश्व विद्यालय के प्रो० फ्रेड स्काइनेर के सहायक रहे, जो सयोजित शिक्षा की प्रेरक शक्ति माने जाते हैं। प० जर्मनी में आकर प्रो० कोरेल ने वहा तथा अपने देश के अनुभवों से लाभ उठाया तथा उन्हें मीसेन मे प्रस्तुत कीबिंग विश्व विद्यालय की सयोजित शिक्षा की प्रथम इन्स्टीट्यूट का डायरेक्टर मुकर्रर कर दिया गया।

अमेरिका मे उक्त प्रणाली पर शिक्षा देने की मशीन का प्रयोग होने लगा है, जिसे मोसेन में भी प्रयुक्त किया गया। यह स्कूल पूर्व के बालको को शिक्षा देगी तथा उन्हे पढने की कला सिखायेगी यह मशीन टाइप रायटर के आकार से अधिक बडी नही है और इस आधुनिक तकनीकी जादूगर को समृद्ध माता पिता २००० डी० एम० (५०० डालर मे खरीद सकेंगे और घर पर ही बालकों का पढने की शिक्षा दे सकेंगे। यदि यह मशीन सफल सिद्ध हुई तो इसे राज्य के किंडरगार्टनों मे लगाया जायगा। चार वष के बच्चे इस मशीन से खेलते हुए अपना पढना भी भलीभाति सीखते चलेंगे।

प्रो० कोरेल का कथन है कि इस मशीन को लगाने के साथ ही स्कूलो को अधिक आधुनिक बनाने का प्रयास करना चाहिये और उन्हे युगानुकूल प्रगति के साथ चलना चाहिये। आगे चलकर कम्प्यूटरों द्वारा शिक्षा के सारे पाठ्यक्रमो को हृदयगम कराने के प्रयत्न किये जाने चाहिये।

मानव-भाषा सीखने वाली मशीन

विद्युत टाइपिस्ट के विकास की कठिनाइयां

सारे ससार के अधिकारियो (बासो) का एक सपना है कि विद्युत टाइपिस्ट तैयार हो जाय। लगातार कर्मचारियो को रखने के बजाय एक मशीन के स्विच को खोला, मजमून को माइक्रोफोन के जरिये लिखवाया और आपकी खुशी का ठिकाना नही रहा कि स्वचालित टाइपराइटर की कुंजिया आगे-पीछे होने लगी और लीजिये बिलकुल सही-सही नोट पेपर आपके हाथों में है।

क्योंकि हमारे कान व मस्तिष्क में एक स्नायु-स्विच है जो मानव वाणी की व्यक्तिगत ध्वनियो में अन्तर कर और उनके अर्थ समझ लेता है, अत उसी पद्धति पर जानकारी प्राप्त करने वाले उपकरण का निर्माण भी सम्भव है। और आशा की जा रही है कि वह दिन दूर नहीं, जब यह सपना साकार रूप धारण कर ले। अभी तो इस प्रकार के मशीनी टाइपिस्ट के ठीक-ठीक काम करने के मार्ग मे अनेक बाधायें उपस्थित हैं, जिन्हे दूर करने का उपाय पूर्णतया नहीं खोजा जा सका है।

सक्षेप मे, कुछ बाधायें इस प्रकार हैं कि सर्वप्रथम तो उपकरण को लगातार बोलते जाने को पृथक्-पृथक् शब्दो में बांटना है और उन्हे सही उच्चारण

(शेष पृष्ठ १२ पर)

चयनिका

★ अत्यधिक विरोधी परिस्थितियो में ही मनुष्य की परीक्षा होती है। —महात्मा गांधी

★ ज्ञान ही वास्तविक सोना अथवा हीरा है। —लालबहादुर शास्त्री

★ आलस्य और अज्ञान मनुष्य के सबसे बडे शत्रु हैं। —गौतमबुद्ध

★ स्वय के सत्य की अथक खोज ही भक्ति है। —सुकरात यं

★ विद्या रहित मनुष्य बिना सींग वाला पशु है। —नीति शास्त्र

★ वीरता मारने में नही मारे जाने में है। —महात्मा गांधी

★ मनुष्य विद्या के बिना अन्धा और तप के बिना लगडा होता है। —अज्ञात

★ अपनी उन्नति के लिए कठिनाइयो, सकटो से उत्तम कोई दूसरा विद्यालय नहीं है। —प्रेमचन्द

★ बदनामी से अच्छी मौत है। —योग वासिष्ठ

★ देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए सब कुछ मिट जाय तो भी सौदा सस्ता है। स्वाधीनता नहीं मिटनी चाहिये। —अज्ञात

★ गुण कोई किसी को नही सिखा सकता। किसी गुण को सीखने की भूख जब मन मे जागती है तो गुण सीखने में देर ही नहीं लगती। —अज्ञात

● निरन्तर अवकाश का ही दूसरा नाम नरक है। —जार्ज बर्नार्डशा

● जो आदमी दूसरों से घृणा करता है समझ लीजिये कि वह ईश्वर से घृणा करता है। —प्रेमचन्द

● नम्रता से मनुष्य क्या देवता भी तुम्हारे वश में हो सकते हैं। —लोकमान्य तिलक

● मनुष्य का मन ही उसे अमीर और गरीब बनाता है। —शेक्सपीयर

● विद्या के समान नेत्र नही, सत्य के समान तप नहीं, राग के समान दुख नही और त्याग के समान सुख नही। —चाणक्य नीति

● जिसने स्वार्थ को जीत लिया उसने ससार को जीत लिया। —विवेकानन्द

● प्रतिभा से कार्य आरम्भ होते हैं पर उन कार्यों का अन्त परिश्रम से होता है। बिना परिश्रम के प्रतिभा व्यर्थ चली जाती है। —सस्कृति कुमारी

आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा में ब्रह्मचारियों का प्रवेश तथा ८४ खम्भों की यज्ञशाला का निर्माण

इस सस्था में महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश में निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि के क्रम से शिक्षा दी जाती है। पचम श्रेणी उत्तीर्ण मेधावी छात्र ७ वर्ष में अष्टाध्यायी महाभाष्य निरुक्तादि ग्रन्थो का अध्ययन करके आचार्य की योग्यता सम्पादन कर लेता है। इसके अतिरिक्त चारों वेदो का सस्वर पाठ सामगान, जटा शिखा, ध्वज आदि पाठों का ज्ञान भी प्राप्त कर लेता है। स्वल्प समय में व्याकरणादि के ज्ञान से परिपूर्ण विद्वान् बनाने का एक मात्र मार्ग महर्षि निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि हैं। गुरुकुल में ब्रह्मचारियो का प्रवेश प्रारम्भ है। गुरुकुल के कुलपति तपोधन श्री १०८ पूज्य आनन्दस्वामी जी महाराज हैं। इस समय जापान आदि देशो में वेद प्रचार में सलग्न हैं।

यज्ञशाला का निर्माण कार्य चल रहा है। ८० खम्भे बन चुके हैं। लिन्टर पड गया है। ऊपर ५ शिखर (मन्दिर) बन रहे हैं। १ शिखर बनना शेष है। लगभग ७० हजार रुपया लग चुका है। अभी ५० हजार रुपया और लगने की सम्भावना है। यज्ञशाला अनुपम होगी। वेद मन्त्र महर्षि दयानन्द तथा अन्य ऋषियो महापुरुषो की चित्रावली तथा सूक्तिया आदि विभिन्न रगो मे अकित की जायेंगी। आर्यजगत् के दानदाताओं से निवेदन है कि यज्ञशाला के निर्माण के लिए अधिकाधिक सहयोग प्रदान करें जिससे यज्ञशाला शीघ्र पूर्ण हो जाए और फिर श्रौत स्मार्त यज्ञो का वैदिक स्वरूप प्रस्तुत किया जा सके।

—ब्रह्मानन्द दण्डी
आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा

★

आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का ३८ वां मासिक अधिवेशन

३१ जुलाई को आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का ३८ वां मासिक अधिवेशन आर्यसमाज चन्द्रनगर लखनऊ में, इस उपसभा के प्रधान श्री कृष्णवल्देव जी के सभापतित्व, में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

सबसे पूर्व सामवेद से बृहत् वैदिक यज्ञ हुआ, श्री प० रामचरित्र जी पाडय पुरोहित थे। और चन्द्रनगर आर्यसमाज के मन्त्री श्री पृथ्वीराज जी बरमानी तथा श्रीमती लीला बरमानी जी यजमान बने थे। यज्ञ के पश्चात् जिला सभा के उपमन्त्री श्री कुन्दनलाल जी आर्य ने सन्ध्या करायी। इसके पश्चात् एक भजन हुआ। फिर सुश्री कुमारी मंजुबाला ने धर्म की महत्ता पर बड़ा सुन्दर संक्षिप्त भाषण दिया, फिर टकारा से आए हुए श्री राघव जी का भजन हुआ। इसके पश्चात् श्रीमती विमला जी माता का प्रभुभक्ति पर बड़ा हृदयग्राही भजन हुआ। इसके पश्चात् श्रीमान् आचार्य नरेन्द्रनाथ जी शास्त्री एम० ए० का यजुर्वेद के अध्याय ३७ के मन्त्र ७ के आधार पर बड़ा विद्वत्तापूर्ण सारगर्भित वेदोपदेश हुआ।

आपने अपने ओजस्वी भाषण मे बताया राजा अथवा राष्ट्रपति कैसा होना चाहिए, उसमे क्या-क्या गुण होना चाहिए। इसे केवल ऋषि दयानन्द ने अपने महान् ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के छठवें समुल्लास मे लिखा है। आज तक इतने बड़े-बड़े विद्वान् हुए पर किसी ने भी इस विषय पर प्रकाश नहीं डाला। हमारे आचार्य को ही यह श्रेय है।

जिला सभा का आगामी अधिवेशन २८ अगस्त को आर्यसमाज शृङ्गार नगर में होगा। और अन्तरंग सभा की बैठक ७ अगस्त की शाम को आर्यसमाज गणेशगंज में होगी।

शान्तिपाठ के पश्चात् यज्ञ शेष वितरित किया गया। यजमान श्री पृथ्वीराज जी बरमानी ने ५) जिला सभा को दान में दिये।

सूचना

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मैनपुरी का कार्यालय आर्यसमाज बेवर में आ गया है। अतः भविष्य में पत्र-व्यवहार आर्य जिला सभा मैनपुरी के लिए निम्न पते पर करें—

—मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा मैनपुरी
द्वारा आर्यसमाज बेवर
जिला मैनपुरी

आवश्यक सूचना

श्री सूर्यप्रसाद जी वर्मा चौक फैजाबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य चुने गये हैं। आप जिले मे सभा के लिए धन एकत्र करेंगे, नवीन आर्य समाजें स्थापित करेंगे सभा का प्राप्तव्य धन आर्यसमाजों से प्राप्त करेंगे और आर्यमित्र के नवीन ग्राहक बनायेंगे। आर्य बन्धुओं को वर्मा जी को इन कार्यों में सहायता करनी चाहिए।

—मन्त्री सभा

सूचना

जिला अलीगढ़ एवं प्रान्त की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि श्री प० किशोरीलाल जी मैजिक लालटेन प्रचारक को जिला प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ ने सेवाओं से मुक्त कर दिया है, अतः भविष्य में उनको कोई धन सभा के निमित्त या प्रचार के निमित्त न दिया जावे। सभा उनके सम्बन्ध में किसी प्रकार जिम्मेदार न होगी।

काठ (मुरादाबाद) क्षेत्र में आ०स० स्थापना आंदोलन

सेढू खेड़ा, सेरपुर, बेगमपुर, सलेमपुर, कासमपुर, नवादा, रायपुर, रसूलपुर, खलीलपुर, सावकपुर, पेली, उपर्युक्त स्थानों मे आर्य प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की ओर से आर्यसमाज स्थापना आन्दोलन आरम्भ किया गया है। श्री तोताराम जी सयोजन कर रहे हैं। श्री सुरेशचन्द्र जी ने १०१) की सहायता एकत्र करने का वचन दिया है।

—हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा

आ.स. नरही लखनऊ

३१ जुलाई को आर्यसमाज नरही का साप्ताहिक अधिवेशन श्री प० वासुदेवशरण अग्रवाल के निधन पर महान् शोक प्रकट करता है। वे महान् विद्वान् थे, उनकी विद्वता समस्त भारत मे विख्यात थी। उनका रहन-सहन अत्यन्त सरल था। उनके निधन से आर्यसमाज की महान् क्षति हुई है। परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। —नारायण गोस्वामी
उप मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्य कन्या पाठशाला जूनियर हाई स्कूल, इस्लामनगर (बदायूं)

पाठशाला को इस वर्ष उच्चतर माध्यमिक स्तर की स्थाई मान्यता मिल गई है। इस उपलक्ष्य मे ता० १-२-३ जुलाई १९६६ ई० को वार्षिकोत्सव मनाया गया। आर्य जगत् के विद्वान् सन्यासी श्री पूज्यपाद ब्रह्मानन्द जी दण्डी श्री शिवानन्द जी व्याख्यान मार्तण्ड, श्रीमती माता प्रभावती जी तथा श्री रामस्वरूप जी आर्यमुसाफिर के ओजस्वी भाषणों से जनता कृतार्थ हुई। श्री राम नारायण 'आर्य' प्रबन्धक पाठशाला ने पूज्यनीय ब्रह्मानन्द जी दण्डी से वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ली। समारोह सफल रहा।

छठा गोरक्षा सम्मेलन

बृहस्पतिवार दि० २८-७-६६ सायंकाल ८ बजे से ९-३० बजे तक श्री ओंकारेश्वर महादेव मन्दिर (शिवमंदिर) अमीनाबाद लखनऊ मे सार्वदेशिक गो कृष्यादि रक्षिणी सभा लखनऊ द्वारा गोरक्षा सम्मेलन श्री दीनानाथ जी की अध्यक्षता में मनाया गया। सर्वश्री कृष्ण चन्द्र व सत्यव्रत जी के गोरक्षा सम्बन्धी भजन हुए। तत्पश्चात् स्वामी केशवानन्द जी का गोरक्षा पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ जिसमे उन्होंने राष्ट्र की वर्तमान दुरावस्था का एकमेव कारण गो-वध बतलाया।

सातवें गोरक्षा सम्मेलन का आयोजन गुरुवार २५ अगस्त ६६ को रस्तोगी मन्दिर राजाबाजार मे किया जायगा।

—विक्रमादित्य 'बसन्त' मन्त्री
सार्वदेशिक गोकृष्यादि रक्षिणी सभा लखनऊ

आवश्यकता

एक सुन्दर सुशील, स्वस्थ राजपूत २२ वर्षीय वर के लिए राजपूत कन्या की आवश्यकता है। विवाह राजपूत मात्र में होगा। लड़का कृषि कार्य करता है। १०० बीघा जमीन है। कोई दहेज की मांग नहीं है।

पता—राजाराम शास्त्री
गाव—सातव
पो० बबेरू (बांदा)

आर्य उप प्रतिनिधि सभा (अमरोहा) मुरादाबाद

२४ जुलाई को श्री सम्पूर्णशरण जी की अध्यक्षता मे आर्यसमाज हसनपुर मे क्षेत्रीय बैठक हुई। जिसमें श्री वैद्य मुरारीलाल जी उपप्रधान उप सभा सर्व सम्मति से क्षेत्रीय सयोजक तथा श्री डा० महेन्द्र जी आर्य उपसयोजक बनाये गये।

(२) निम्नलिखित ८ केन्द्रों में वर्ष १९६६ में आर्यसमाज की स्थापना एव पुनर्जीवन का सामूहिक व्रत लिया गया।

नाम स्थान—सदनगली, उझारी, करनपुरी गजरौला रहरा, तरौली, धनौरा मण्डी, मोहद्दीपुर।

निर्वाचन—

—आर्यसमाज विधान सरणी कलकत्ता

आर्यसमाज कलकत्ता १९, विधान सरणी का निर्वाचन १७ ७ ६६ को साधारण सभा मे हुआ।

प्रधान—श्री सुखदेव उपप्रधान—श्री छबीलदास, श्री रलियाराम, मन्त्री—श्री पूनमचन्द्र आर्य, उपमन्त्री—श्री श्याम कुमार राव, श्री अमरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—श्री युवनाथ लाल, कोषाध्यक्ष—श्री प्रकाशचन्द्र, आय-व्यय निरीक्षक—श्री विष्णुदत्त जी तथा अन्य अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन हुआ।

—गढ़वाल आर्यसमाज दिल्ली

गढ़वाल आर्यसमाज दिल्ली (रामकृष्ण पुरम नई दिल्ली) का दिनांक १० ७ ६६ को वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री वचनसिंह जी आर्य, उपप्रधान—श्री शंकर लाल जी आर्य, मन्त्री—श्री काशीराम जी, उपमन्त्री—श्री रिखपाल सिंह जी, प्रचार मन्त्री—श्री नन्दराम जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री माधवानन्द जी, उपकोषाध्यक्ष—श्रीमहेन्द्र प्रसाद जी, निरीक्षक—श्री श्रीधरलाल जी

इसके अतिरिक्त कार्यकारिणी के लिए १० सदस्य निर्वाचित हुए। —मन्त्री

आन्ध्र में मुस्लिम

(पृष्ठ ६ का शेष)

झड़पें हो चुकी हैं। आये दिन मुस्लिम मुहल्लों में छुरेबाजी होती रहती है और प्राय सभी घटनाओं मे आक्रमक मुसल मान और आहत हिन्दू होता है। सड़को चौराहों पर गाइयो को मारकर फकने की भी एक से अधिक घटनाए हो चुकी हैं। शहर के अग्रजी और तेलुगु पत्र इस ओर से मौन रहते हैं और उर्दू पत्र ऐसी घटनाओं को रगकर ऐसे ढग से प्रका शित करते हैं कि जिनमे मुस्लिम ही वंचित नजर आय। किन्तु एक विशेष अनोख एसा भी होता है कि स्थानीय अखबारों से पूर्व पाकिस्तानी रेडियो से ऐसी घटनाओं का मुस्लिम हित के अनु सार प्रसारण हो जाता है। इन सघर्षों के बाद जो पकड धकड होती है उसका अभिनय बडा दिलचस्प होता है। कुछ हिन्दू और कुछ मुस्लिम पक" जाते हैं। फिर दोनों ओर के राजनतिक नेता मैदान मे आते हैं और सुलह समझौते की आशा करके आ क्रमक मुसलमानो और च सक हि न्दुओ को छडा दत हैं।

मुसलमानो को पृथक स्कालरशिप

शिक्षा विभाग के एक बड अधि कारी श्री एम० एम० बेग के हस्ताक्षर से एक सक्यूलर जा ी हुआ। जिसमे छात्रो को कुछ मारट स्कालरशिप दिये जाने की घोषणा थी। उनमें दो स्का लरशिप विशेष रूप से मुसलमानो के लिये सुरक्षित रखे गये हैं। डी०पी०आई० की प्रा सडिग स० ३०८/J1 ३ ६५ दिनाक १३ ९ ६५ के य शब्द ध्यान देने योग्य हैं।

To award the general merit scholarships twenty seven in number and the reserved scholarships for Muslim students three in number

अभी स्थानीय उर्दू अखबार मिलाप दैनिक के १ जुलाई ६६ के अक म एक माग की गयी है कि मुसलमानों के (३०) तबको (वर्गों) को मुस्लिम बकवड समझा जाये और बकवड क्लास की सूची मे उन्हे सम्मि लत कर लिया जाये तथा बकवड की सभी सु वधाय उन्हे दी जाय। सरकार की ओर से इससे पूव यह घोषणा निकल चुकी है कि यदि कोई हरिजन ईसाई बन जाए तो उसको शैडयूल्ड कास्ट की सभी सुविधाय और स्कालरशिप दिये जायगे। जब मुसल मानो के (३०) वर्गों को बकवड मान लिया जायगा तो उन (३०) वर्गों में सभी मुस्लिम जनता आ जायेगी। इसके लिए एक आल इन्डिया मुस्लिम बकवड क्लासेस फिडरेशन बन गयी है। उसकी आन्ध्र शाखा ने ब्रह्मानन्द रेड्डी की हुकू मत को एक मेमोरेण्डम दिया है। हमारी समझ मे यह नहीं आ रहा है कि अब मुसलमानो को किस चीज की कमी है। आबादी के अनुपात से अधिक अनाथ टिकिट मिल रहे हैं सरकारी नौकारयां दी जा रही हैं सरकारी स्कालरशिप मिल रहे हैं। शिक्षा विभाग मे ६५ ६६ के शक्षणिक वष में हैदराबाद व सिकन्द राबाद के हाईस्कल और कालेजो मे स्वीकृत सरकारी स्कालरशिप की श्री गियासुद्दीन अहमद डी०आई० ओ० के हस्ताक्षर से एक सूची प्रकाशित की गई है।

डी०पी०आई० की प्रोसिडिग स० ४५/L//६५ दि० ४ १ ६६ की सूची के अनुसार दोनो शहरो में ३६३ छात्र छात्राओ को ये मेरिट स्कालरशिप मिले हैं। इनमे से १८७ स्कालरशिप मुसल मानो को मिले हैं। शेष में कुछ ईसाई है और बाकी स्कालरशिप हि दू छात्रों को मिले हैं। बहुसख्यक हि दू स्कालर शिप लेने मे अ"पसख्यक बन गय है। और ७/८ प्रतिशत मुसलमान स्कालर शिप लेने में ५२ प्रतिशत हैं। इसके अतिरिक्त आ ध्रप्रदेश एज्युकेशन रूल्स (प्रकाशित १९६६) की धारा २१९ के पृष्ठ १२२ पर भी में भी ऐसे सभी मुसलमान लडको को आधी फीस की सुविधा दी गई है जिनक माता पिता या पालको की वार्षिक आय ३०००) से अधिक न हो। इस आय वाले हिन्दू छात्र भी हो सकते हैं किन्तु वे इससे लाभ ि बन नही हो सकत।

हैदराबाद शहर मे ईरानी होटलो का जाल

इधर कुछ वर्षो से शहर के हर छ ट बड चौराह पर ईरानी होटलों का जाल सा बिछता जा रहा है ये केवल होटल नही प्रात ६ से रात के १२ १ बजने तक मुस्लिम क्लब बन रहते हैं जहा शहर के हर वग के मुसलमानो का जमघट रहता है। अभी विद्या नगर मे जो साम्प्रदायिक झडप हुई उसमे ऐसी ही एक ईरानी होटल से सो"ड की बोतलों का खला प्रयोग किया गया। ये ईरानी होटल किसी भी दिन शहर में भीषण स्थिति पैदा कर सकती हैं।

इस प्रकार आ ध्र की इस राजधानी में बहुत भदकर मुस्लिम साम्प्रदायिकता सिर उठा रही है। इसमे बहुत अधिक जिम्मेदार यहाँ की हुकूमत है और जिसको मुख्यमन्त्री (जो सयोग से ईसाई हैं) बहुत हवा दे रहे हैं। आवश्यक एकता पैदा करने के इस युग मे मुसल मानो में पृथकवादिता को बड जोर से उभारा जा रहा है। ★

(पृष्ठ ९ का शेष)

सहित लिखना है। उस मशीन को वाक्य रचना को भी पहचान लेना है तथा वही विराम चिन्ह भी लगाना है। साथ ही जिस भाषा की मशीन हो उसे उस भाषा पर भी पूर्णाधिकार होना चाहिये। अभी हम यह नहीं कह सकते कि इस तरह की मशीन का निर्माण करना सम्भव हो सकेगा लेकिन इसके बावजूद कई अमेरिकन व यूरोपियन इस्टीटयूटो ने अपने प्रयासो को नही छोडा है। इसके लिए शायद नई लेखन प्रणाली की खोज करनी पड और हमारी उच्चारण पद्धति मे परिवतन करना पड।

—खोजी

(पृष्ठ १ का शेष)

उत्तरप्रदेश में एक बाध के निर्माण में १० करोड़ रुपये व्यय हुए पर वह बह गया है। उत्तरप्रदेश के वर्तमान राज्य इञ्जीनियर का कथन है कि इस बाध का निर्माण मूर्खता थी। इसीप्रकार दिल्ली के चारों ओर बाधों की जो विचित्र रचना है उससे कोई सन्तुष्ट नहीं हो सकता। वर्षा काल में प्रति वर्ष राजधानी बाढ़ और बाँध संकट में से गुजरती है, अन्य स्थानों की तो कथा ही क्या। हम चाहते हैं बाढ़ नियन्त्रण योजना में भ्रष्टाचार का जो घन व्याप्त है उसे नष्ट किया जाय। इस के लिए हम अपने शिल्पियों और अधिकारियों में राष्ट्रियता और नैतिकता की ज्योति जगानी होगी।

हिन्दी मे कार्य का संकल्प

शिक्षा सस्थाओ से अभ्यर्थना

भारत की राष्ट्रभाषा की गौरव वृद्धि एव उसके प्रति स्वाभिमान जागृत करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षा जगत में हिन्दी को व्यावहारिक रूप दिया जाय। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर श्री सेठ गोविन्द दास जी ने एक अभ्यर्थना प्रकाशित शिक्षा सस्थाओ के अधिकारियों से प्रार्थना की है कि वे अपना समस्त कार्य हिन्दी मे करने की कृपा करें। हम इस अभ्यर्थना का हार्दिक स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। वास्तव मे शिक्षा सस्थायें हिन्दी प्रचार मे सर्वाधिक सहायक बन सकती है।

अभी तक राज्य शासन एव केन्द्र शासन की उपेक्षा नीतियो के कारण शिक्षा सस्थाओ में भी अग्रेजी का सम्मोहन व्याप्त है परन्तु राष्ट्रिय स्वाभिमान की यह सामयिक माग है कि अब अग्रेजी मोह का त्याग किया जाय हम इस अभ्यर्थना का समर्थन करते हुए देश के अन्य राज्यों की शिक्षा सस्थाओ की अपेक्षा हिन्दी भाषी राज्यो की शिक्षा सस्थाओं की अपेक्षा हिन्दी भाषी राज्यों की शिक्षा सस्थाओ एव जनता से विशेष अनुरोध करेंगे कि वे इस अभ्यर्थना को क्रियात्मक कर दें। सेठ जी ने १५ अगस्त का दिन इस सकल्प के लिए रक्खा है। १५ अगस्त से हम वर्ष भर हिन्दी के लिए कुछ करें यह हमारा राष्ट्रिय कर्तव्य होना चाहिये।

आर्यसमाज सदैव हिन्दी का समर्थक रहा है। आर्य शिक्षा सस्थाओं को हिन्दी में विशेष कार्य कर अपनी गौरव परम्परा का परिचय देना चाहिये।

★

शीघ्रता कीजिये

इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह ३० अगस्त से ८ सितम्बर तक मनाया जा रहा है। प्रदेश की सभी समाजो से अनुरोध है कि उक्त तिथियो मे यदि मन चाहे उपदेशक प्रचारक सभा से नही मिल पाते हैं तो वह अगस्त और सितम्बर मे किन्ही भी तिथियो में मन चाहे महानुभावो को बुलाकर सप्ताह मनाने की व्यवस्था कर परन्तु इसके लिए तथा ३० से ८ सितम्बर की तिथियो के लिये पत्र लिखने की शीघ्र कृपा कर ताकि पूर्व से व्यवस्था की जा सके।

भ्रमण पुरोगम

सभा के सहायक कोषाध्यक्ष श्री प० विक्रमादित्य वसन्त जी लखनऊ निवासी ११ १४ १५ अगस्त ६६ को गोंडा तथा जिले के कतिपय समाजो में निरीक्षणार्थ एव धन सग्रहार्थ पहुच रहे हैं।

इसी प्रकार श्री वसन्त जी ३० अगस्त से ८ सितम्बर १९६६ में मिर्जापुर आर्यसमाज मे वेद की कथा के लिए पहुच रहे हैं। समयानुसार मिर्जापुर जिले के समाजो मे भ्रमण भी करेंगे। अत आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ से प्रार्थना है कि उपर्युक्त श्री सहायक कोषाध्यक्ष जी के पहुचने पर स्वागत आदि कर और सभा प्राप्तव्य धन दशांश, सूर्यकोटि रुपया फण्ड वेद प्रचार एव सभा भवन आदि के लिए धन से सहायता प्रदान कर अनुगृहीत करेंगे।

—चन्द्रदत्त तिवारी सभा मन्त्री

कथाओं का आयोजन कीजिए

बरसात का समय है अत प्रत्येक समाज का कर्तव्य है कि वह अपने यहाँ सुयोग्य एव प्रकाण्ड विद्वानो को आमन्त्रित कर कथा का आयोजन करें। यह आवश्यक नही है कि वेद प्रचार सप्ताह में ही केवल कथा सुनी जाये। सप्ताह से पूर्व और पश्चात मे भी कथाओं का कार्यक्रम बनाकर वैदिक धर्म का प्रचार एव प्रसार कर अपने कर्तव्य का पालन कर। जो समाज प्रचारको (भजनोपदेशको) को ही बुलाना चाहे वह शीघ्र लिखने की कृपा कर ताकि व्यवस्था की जा सके।

—अधि० उपदेश विभाग

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
वा० ६६ अंक १८ द्वि०श्रावण कृ०
(दिनांक ७ अगस्त सन् १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष्य २२११२ तार "आर्य्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

पोलैंड के राष्ट्रीय पर्व दिवस २२ जुलाई के उपलक्ष्य में

पोलैण्ड-भारत मैत्री का विकास

[ले०—श्री जानुश गोलेकियास्की]

पोलैण्ड में मई के प्रथम पखवाड़े में समाचार पत्रो, शिक्षा तथा पुस्तको के दिवस मनाने की परम्परा चली आ रही है। वारसा में भारतीय दूतावास के मेरे एक परिचित ने उनके विषय में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए मजाक में कहा कि पोलैण्ड में भारत के विषय में उतनी ही पुस्तकें प्रकाशित होती हैं जितनी भारत में। इसमे सन्देह नहीं कि मेरे परिचित ने बात बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कही। पर यह सत्य है कि पोलैण्ड मे भारतीय लेखकों की कृतियों के अनुवाद तथा भारत के विषय में पोलैण्ड के निवासियो की पुस्तकें भारी सख्या मे प्रकाशित हो रही हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पोलैण्डवासियों की भारत की नवीन तथा प्राचीन सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक समस्याओ की ओर कितनी गहरी रुचि है।

समय बीतने के साथ भारत के विषय मे रहस्य का आवरण' उठता जा रहा है, भारत की उन्नति और विकास से सम्बन्धित राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक विषय पोलैण्ड के निवासियो को आकर्षित करने लगे हैं। भारत और पोलैण्ड के बीच वैज्ञानिकों राजनीतिज्ञो, और विशेषज्ञो का बराबर आना जाना यह बताता है कि दोनो देशो का आपसी सहयोग बडी तेजी से बढ रहा है।

इस वर्ष के पहले तीन महीनो मे पोलैण्ड के दो उच्च स्तरीय शिष्टमडल भारत आये। पहला एक ससदीय शिष्टमण्डल था जिसके नेता पोलैण्ड की पार्लियामेंट के स्पीकर श्री चेस्लाफ वाइसेच थे। दूसरा एक आर्थिक शिष्टमडल था जिसके नेता पोलैण्ड के विदेश व्यापार के मन्त्री श्री ट्रैम्पचिंस्की थे। इत्तफाक से पोलैण्ड का ससदीय शिष्टमडल वह पहला विदेशी शिष्टमण्डल था जो श्रीमती इन्दिरा गांधी से उनके प्रधान मन्त्री निर्वाचित होने के पश्चात मिला। इस वार्तालाप में अनेक अन्तर्राष्ट्रिय विषयों के सम्बन्ध में दोनों देशों ने अपने सामान्य दृष्टिकोण को स्थिर किया। इन समस्याओं में शान्ति तथा सुरक्षा का प्रश्न, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व तथा अन्तर्राष्ट्रिय तनाव को कम करने के प्रयास उल्लेखनीय हैं। इस वार्तालाप में वियतनाम की समस्या को भी महत्व दिया गया कि यह समस्या केवल राजनीतिक ढग से सुलझ सकती है और उसका सैनिक निर्णय असम्भव है। वियतनाम के युद्ध ने एशिया मे चिन्ताजनक स्थिति उत्पन्न कर दी है। पोलैण्ड का दृष्टिकोण भी यही है।

इस वार्तालाप मे ताशकन्द सन्धि की चर्चा भी हुई [illegible] वाइसेच ने कहा कि कश्मीर के विषय मे पोलैण्ड की नीति का स्पष्टीकरण उस समय हो गया था जब पोलैण्ड के प्रधान मन्त्री श्री सिरैकविच भारत आये थे और उस मे कोई परिवर्तन नही हुआ है।

विदेश-वार्ता

वारसा वापस आने के बाद श्री वाइसेच ने पत्रकारो से बातचीत करते समय यह आशा प्रकट की कि इस सद्भाव यात्रा से भारत और पोलैण्ड की मैत्री तथा सहयोग मे वृद्धि होगी। उन्होंने इस पर बल दिया कि भारत मे उनका हर स्थान पर भावपूर्ण हार्दिक स्वागत किया गया।

कुछ दिनों पश्चात् पोलैण्ड के विदेश व्यापार मन्त्री श्री ट्रैम्पचिंस्की भारत पधारे जो पहले भी भारत की यात्रा कर चुके हैं। उनके आगमन ने भारत और पोलैण्ड के आर्थिक सम्बन्धों के इतिहास में एक नया मोड पैदा किया। भारत और पोलैण्ड के आपसी व्यापार की उन्नति का अनुमान इन आकडों से किया जा सकता है। १९६० में इसका मूल्य केवल ६ करोड रुपये था पर १९६५ में इसका मूल्य २४ करोड रुपये था। पोलैण्ड के विदेश-व्यापार मन्त्री के भारत में निवास काल के दौरान एक सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये जिसके अन्तर्गत १९६६ में दोनों देशों के आपसी व्यापार को चालीस प्रतिशत बढ़ाने की चेष्टा की गई है।

व्यापार की वृद्धि से अधिक महत्व बात का है कि दोनो देश एक दूसरे की उन्नति की आवश्यकताओ को ध्यान में रखकर एक दूसरे से अनेक प्रकार का सामान रखते हैं। पोलैण्ड ने भारत को १९६० मे तीन करोड डालर, १९६२ में तीन करोड २५ लाख और १९६५ मे २ करोड २० लाख डालर ऋण दिये हैं, जिनके द्वारा भारत मे पोलैण्ड की सहायता से नये कारखाने बनाने और कोयले की खानों को आधुनिक यन्त्रो से सुसज्जित करने का काम हो रहा है। इनमें बरौनी का एक बिजली घर, पारस और मुसावल के इन्जन हाल, और फरीदाबाद का मोटर साइकिल का कारखाना शामिल हैं। पोलैण्ड के विदेश व्यापार मन्त्री श्री ट्रैम्पचिंस्की और भारत के व्यापार मत्री श्री मनुभाई शाह ने एक और सन्धि पर हस्ताक्षर किये जिसके अन्तर्गत दोनों देशो के आर्थिक उत्थान वैज्ञानिक तथा टेकनिकल सहयोग द्वारा लाभ उठायेंगे यह उल्लेखनीय है कि पोलैण्ड ने पहली बार एक विकासशील देश से ऐसी सन्धि की है जिसके अन्तगत दोनों देशो में विशेषज्ञों के ऐसे कमीशन स्थापित किये जायेंगे जो जहाज निर्माण, मछली पकड़ने तथा अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में सहयोग का मार्ग-दर्शन करेंगे।

इस वर्ष बसन्त काल में भारत और पोलैण्ड के बीच वैज्ञानिक जानकारी सहयोग के विषय में भी एक सन्धि सम्पन्न हुई है जिसके अन्तर्गत वैज्ञानिक जानकारी तथा अनुभव का विनिमय होगा, संयुक्त गोष्ठियाँ तथा सम्मेलन किये जायेंगे। वैज्ञानिक प्रदर्शनिया करने में दोनो देश एक-दूसरे की सहायता करेंगे। दोनो देशो देशों में तरुण वैज्ञानिकों को वजीफे दिये जायेंगे।

ये सन्धियां बड़ा महत्व रखती हैं क्योंकि दोनों देशों के बढ़ते हुए सम्बन्धो की आवश्यकता केवल वस्तुओ के विनिमय द्वारा पूरी नहीं होती। उदाहरण के लिए पोलैन्ड मे भारतीय चाय की मांग बढाना कठिन है। इसीप्रकार औद्योगिक उन्नति के साथ-साथ भारत मशीनें तथा यन्त्र पोलैण्ड से खरीदने के बजाय देश के अन्दर ही प्राप्त करने का प्रयास करेगा, इसीलिये आवश्यकता इस बात की है कि आर्थिक सहयोग को दृढ बनाने के लिए लम्बे समय की आवश्यकताओ को सामने रखा जाये।

जिस प्रकार भारत अनेक क्षेत्रों में पोलैण्ड के अनुभव से लाभ उठा रहा है उसी प्रकार पोलैण्ड भारत द्वारा यह अनुभव प्राप्त कर रहा है कि गर्म जलवायु मे अनेक यन्त्र तथा मशीनें किस प्रकार काम करती हैं।

यह स्पष्ट है कि इन सब सन्धियो का भाग बढना और इन योजनाओं का साकार होना उसी समय सम्भव है जब ससार मे शान्ति रहे राजनीतिक तनाव मे कमी हो और ससार के साधन सैनिक लक्ष्यो की प्राप्ति के बजाय आर्थिक उन्नति के लिए उपयोग मे लाये जावें। भारत और पोलैण्ड दोनो देशो का हित इसी में है कि ससार मे शान्ति रहे और उसे बनाये रखने के लिए ससार के सारे देश प्रयत्नशील रहें।

शोक समाचार

दुःख है कि आर्यसमाज [illegible] जिला बरेली के कर्णधार श्री रामभरोसे लाल उपनाम छेदालाल आर्य का स्वर्गवास दिनांक १२ जौलाई को हो गया। उनका अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यानुसार बरेली में श्री प० सतीशचन्द्र शास्त्री जी ने कराया। स्वर्गीय आत्मा ने वैदिक प्रचार के लिए अपने जीवन मे जिले मे अनेको स्थानो पर प्रचार व उत्सव कराये। आपके सुपुत्र श्री महेन्द्र बहादुर जी आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला बरेली में प्रचार मन्त्री के पद पर कार्य कर रहे हैं। आर्य उपप्रतिनिधि सभा बरेली स्वर्गीय आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करती है और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनके परिवार के लिए शान्ति प्रदान करें। —[illegible], मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] बालभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम [illegible] द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

महात्मा नारायण स्वामी और बरेली

(ले०—श्री चन्द्रनारायण जी ऐडवोकेट बरेली)

महात्मा नारायण स्वामीजी का जन्म अलीगढ़ में, कार्यक्षेत्र मुरादाबाद में और अन्तिम लीला (देहावसान) बरेली मे हुआ। बरेली से स्वामी जी का बहुत घनिष्ट सम्बन्ध रहा। आर्यसमाज बिहारीपुर मे तो कई बार कथायें कहीं, उत्सव मे भी भाषण दिये। एक बार आर्यसमाज मूड मैं भी कथा कही।

बरेली मे वे प्राय आर्यसमाज बिहारीपुर में ठहरा करते थे। वह कमरा उन्हीं के लिए सुरक्षित था और 'स्वामी जी का कमरा' कहलाता था। उनके आतिथि होते थे रा० सा० डा० श्यामस्वरूप जो स्वामी जी का पितृवत मान आदर सत्कार करते थे। बाबू अम्बाप्रसाद वर्मा (बीज वाले) को भी कई बार अपने स्थान पर ठहराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाबू समशेर बहादुर जिनके दो लड़के इन्द्रजीत व ब्रह्माजीत गुरुकुल में पढते थे भी स्वामी जी के बडे भक्त थे। यज्ञप्रेमी बा० लक्ष्मीलाल ठेकेदार, बा० मुकुटबिहारीलाल मुख्तार, प० सत्यपाल वैद्य और डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री डी-लिट् (बनरछेड़ी बरेली निवासी स्वामी जी के अनन्य भक्तो थे। डाक्टर धर्मेन्द्रनाथ तो उनके पट्ट शिष्य ही थे। रामगढ़ के आश्रम पर "नारायण आश्रम" की सगमरमर की पट्टिका उन्ही ने लगवाई थी।

सरस्वती विद्यालय बहिरोका स्त्री सुधार महाविद्यालय मे भी पारितोषक वितरण किया। १९३० ई० में बरेली मे आर्य महासम्मेलन हुआ उसका सभापतित्व भी स्वामी जी ने किया था।

मथुरा जन्म शताब्दि के अवसर पर धन एकत्रित करने व प्रबन्ध सम्बन्धी परामर्श करने वे मेरे स्वर्गीय पिता श्री प्रमनारायण जी के पास आये। पिताजी ने उस महान् समारोह में गोरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया था उसके सभापति थे महाराजाधिराज हिज हाईनेस सर शाहर्दसिंह जी के० सी० एस० आई० बाहदुराधीश। जब स्वामी जी घर-पर पधारे तो पिता जी बाहर गये हुए थे। रसोई घर मे केवल पाच रोटिया थी मैंने और मेरी पत्नी ने भोजन नहीं किया था। दो दो रोटिया बाट कर खाने का निश्चय किया एक छोटे भाइयों के लिये बचा रखी। इतने मे सेवक ने आकर सूचना दी—'स्वामी जी आये हैं' मैं तुरन्त बाहर गया—पांव छुये, भोजन के लिए पूछा, कहा—हां' चरन धुलवाकर आसन बिछवाया और परसी हुई थाली लाकर सामने रख दी। स्वामी जी ने भोजन आरम्भ कर दिया। मैं तो हरी मूली बाग से से तोड लाया। बहुत प्रसन्न हुए। जब चौथी रोटी खा रहे थे, तब मैंने पूछा "और लाऊं' कहा 'नहीं' मैंने फिर आग्रह किया तो बोले 'खाने में भी झूठ बोला जाता ?' इतने में मेरी पत्नी बची हुई पांचवीं रोटी लेकर आई तो देखकर कहा—'ये बच्चों के लिये रहने दो"। हम एक दूसरे की तरफ देखने लगे कि इन्हे यह रहस्य कैसे ज्ञात हुआ।

मेरे पिता जी उस समय मुरादाबाद में रेलवे मे नौकर थे। वे और स्वामी जी एक ही मकान में रहते थे। मैं दो मास का था। मकान की दूसरी मंजिल पर हम लोग रहते थे, नीचे स्वामी जी और उनकी पत्नी। एक बन्दर ने मुझे उठा लिया और इमली के पेड़ पर जो मकान से मिला हुआ था चढ़ गया। माता जी के तन में काटो तो खून नहीं—रो पड़ीं—'हाय बीबी, चक्कियो लल्लन को बन्दर उठा ले गया'। स्वामी जी की पत्नी नीचे से चने और रोटिया लेकर आईं। माता जी से कहा अन्दर चली जाओ। रोटी और चने रखकर वे भी छिप गई। बन्दर इमली के पड से उतरा, मुझे पलगिया पर लिटाल दिया, चने मुह में भरे और रोटी लेकर भाग गया। इस प्रकार मेरा दूसरा जन्म स्वामी जी की पत्नी की युक्ति कौशल द्वारा हुआ।

भारत विभाजन से पूव वे लाहौर में थे। वहा बडे से बडा डाक्टर उनकी चिकित्सा को तैयार था परन्तु वे बरेली चले आये—"यहां मन मन घबराता है खून खराबा होने वाला है"। दोपहर को तूफान से बरेली आये बहुत से नर-नारियों ने स्वागत किया और डा० श्यामस्वरूप के यहां ठहरे। डा० साहब ने श्रद्धा सहित चिकित्सा की। एक सहस्र से ऊपर व्यय किया। श्रीमती प्रेम सुलभा यती और श्री वेदमुनि जी ने बहुत सेवा सुश्रूषा की। रोग विकट था कहा—"अब यह शरीर काम का नहीं है—चोला बदलने दो।' अन्त में १५ अक्तूबर १९४७ को दिन के २ बजे डाक्टर साहब के स्थान पर इस नश्वर शरीर को छोडकर परम धाम को सिधारे।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

वैदिक प्रार्थना

ओ३म न यस्य देवा देवता न मर्ता, आपश्चन शवसा अन्तमापु ।
स प्ररिक्वा त्वक्षसा क्ष्मो दिवश्च, मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥३२॥

ऋ० १।७।१० ११ ॥

व्याख्यान—हे अनन्तबल ! 'न यस्य' जिस परमात्मा का और उसके बलादि सामर्थ्य का 'देवा' इन्द्रिय 'देवता' विद्वान् सूर्यादि बुद्धयादि न, मर्ता' साधारण मनुष्य 'आपश्चन' आप, प्राण, वायु समुद्र इत्यादि सब अन्त (पार) कभी नही पा सकते किन्तु 'परिक्वा' प्रकृष्टता से इनमें व्यापक होके अतिरिक्त (इनसे विलक्षण) भिन्न ही परिपूर्ण हो रहा है। सो 'मरुत्वान्' अत्यन्त बलवान् इन्द्र परमात्मा 'त्वक्षसा' शत्रुओ के बल का छेदक बल से 'क्ष्म' पृथिवी को 'दिवश्च' स्वर्ग को धारण करता है, सो 'इन्द्र' परमात्मा 'ऊती' हमारी रक्षा के लिये 'भवतु' तत्पर हो ॥३२॥

लखनऊ रविवार १४ अगस्त १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत १ ९७ २९ ४९ ०६७

गोरक्षा और सरकार

देश में और उसके केन्द्र दिल्ली में गोवध के विरुद्ध आजकल व्यापक आन्दोलन चल रहा है। धरना, अनशन आदि के द्वारा राज्य अधिकारियो एवं जन प्रतिनिधियो का ध्यान इस प्रश्न की ओर आकृष्ट करने के निरन्तर प्रयास किये गये हैं परन्तु सरकार की अस्पष्ट नीति से मामला बिगड़ता ही जा रहा है संसद मे सदस्यो ने जब बारम्बार माग की कि सरकार गोवध निरोध के सबन्ध मे अपनी नीति घोषित करे तब संसद अध्यक्ष ने सरकार से इस सम्बन्ध में नीति वक्तव्य देने को कहा है।

सरकार की नकारात्मक नीति से देश की भावनाओ को गहरी ठेस पहुच रही है। भारतीय संविधान का आदर करते हुए सरकार को शीघ्र गोवध बन्दी की घोषणा करनी चाहिये।

भारतीय स्वाधीनता के कर्णधार

प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गाधी

गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा

विश्व न्यायालय में पक्षपात

हेग के अन्तर्राष्ट्रिय न्यायालय ने दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध एक अपील का निर्णय देते हुए दक्षिण अफ्रीका के पक्ष का समर्थन किया है। अपील इस आशय से की गई थी कि अफ्रीका के जो भाग प्रथम युद्ध के बाद दक्षिण अफ्रीका के नियन्त्रण मे रख गये थे अब उन पर नियन्त्रण समाप्त हो जाना चाहिये और वे क्षेत्र स्वतन्त्र हो जाने चाहिये।

हेग न्यायालय के निर्णय के पीछे श्वेत राजनीति कार्य कर रही है। यदि दक्षिण अफ्रीका का अधिकार समाप्त घोषित कर दिया जाय तो दक्षिण अफ्रीका की सरकार संकट में पड़ सकती है और वहाँ काले-गोरे की पृथकता का मानवता विरोधी कानून चल सकना कठिन हो जाता।

अन्तर्राष्ट्रिय न्यायालय के पक्षपात निर्णय से मानवता समर्थको को गहरी चोट पहुची है। विश्व न्यायालय मे यदि रंगभेद के आधार पर निर्णय लिये जाते हैं तब मानवता का पक्ष धर कौन होगा और कहा मिलेगा।

राष्ट्रोन्नति और वैदिक आदर्श

[लेखिका—आचार्या विद्यावती सेठ, महिला आश्रम देहरादून]

ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो व सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भाग प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवा अस्मिन गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून पाहि ।

यजुर्वेद अ० १।म०१॥

इस यजुर्वेद के मन्त्र मैं मनुष्य परमात्मा से प्रार्थना करता है कि अन्न आदि की प्राप्ति तथा विज्ञान, शारीरिक बल, आत्मिक बल तथा मोक्ष सुख की प्राप्ति के लिये मैं आप की उपासना करता हूँ आपकी शरण मे आता हू आप मुझ बल दीजिये ऐश्वर्य दीजिये, हमारे सब प्रकार के कष्टो को दूर कीजिये। उसके उत्तर मे भगवान कहते हैं 'तुम वायु के समान पुरुषार्थी बन कर अपने इन्द्रिय मन और अन्त करण का श्रेष्ठतम कर्म जो यज्ञ कहलाते अर्थात देव पूजा, संगति करण दान—उनकी ओर लगाओ और इस प्रकार अपने ऐश्वर्य को बढाओ तब मै तुम्हारी सहायता करूगा और तुम्हारे गो आदि पशु भूमि प्रजा पुत्रादि तथा इन्द्रिय, मन अन्त करण की रक्षा करूँगा जिसमे प्रबल रोग, विघ्न और चोरो का अभाव होकर तुम लोग सब सुखो को प्राप्त होगे।'

यज्ञ का अनुष्ठान ही मानव जीवन का लक्ष्य है और यज्ञ शब्द से ससार के सभी शुभकर्मों का ग्रहण होता है। उन सब शुभकर्मो का निरुपण ही इस वेद का मुख्य विषय है। यज्ञ शुभकर्म चाहे वह आध्यात्मिक हो या आधिभौतिक या आधिदैविक इसके लिये गौ आदि पशु भी अनिवार्य हैं। इनके बिना किसी प्रकार का भी यज्ञ सम्पन्न नही हो सका। इसलिये इस मन्त्र मे इनकी रक्षा के लिये प्रार्थना की गई है। प्रभुशक्ति सर्वत्र [illegible] शुभकर्म है। ज्ञान यज्ञ कर्म यज्ञ तथा अन्न आदि की प्राप्ति के लिये [illegible] आदि पुष्टिकारक द्रव्यो की प्राप्ति के लिये पशु पालन भी आवश्यक कर्तव्य बन जाता है। इसलिये प्रभु भक्ति ज्ञान उपलब्धि प्राणायाम द्वारा इन्द्रिय का शमन दमन के साथ ही गौ आदि महोपकारक पशुओ की पूर्ण रक्षा द्वारा इस ससार मे शुभकर्मो का प्रारम्भ करना हमारा परमधर्म है यह उपदेश इस प्रथम मन्त्र मे दे दिया है।

वेद ही हमारे जीवन के आधार हैं, और उनकी शिक्षा ही हम मानव की सृष्टि की आदि मे देकर भगवान ने हमे जीवन को सुखमय बनाने का कार्यक्रम बता दिया है। वेद ही वह ग्रन्थ है जिसमें प्रभु ने अपने आदेशो को स्पष्टीकरण कर दिया है। परन्तु बड़े खेद की बात है कि आजकल भोग प्रधान युग मे 'भुंक्ष्व पिब, रमस्व च" के सिद्धान्त इतने आकर्षक हैं कि हमारा इस उपदेश की ओर ध्यान ही नही जा रहा है। हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम मुखम्' भोगो की चमक से हमारी आखें चौंधिया गई हैं। हमें सत्यमार्ग दीख ही नही रहा है। वैदिक साहित्य भरा पड़ा है इन रत्नो से, पर हमारे लिये उसका कोई लाभ नही है। हम उधर देख ही नही रहे हैं हमारी शिक्षा मे, हमारे गृहस्थ जीवन के दैनिक कार्यों मे इनका समावेश ही नहीं है। आज के आत्मनिरीक्षण मे हमें अपना ध्यान इस वेद मन्त्र में गिनाये गये कुछ गुणो और कुछ दोषो की ओर भी ले जाना है और देखना है कि क्या हमारे अन्दर यह गुण हैं और वह दोष तो नहीं आ गये हैं? क्या हम श्रेष्ठतम कर्म—जो शास्त्रो में गिनाये गये हैं उनसे विमुख तो नहीं हो रहे हैं? वेद ही हैं जिनमें सृष्टि के अध्यक्ष दयालु न्यायकारी ईश्वर ने मानव को उत्पन्न करते ही उसके कल्याण के लिये आश्रम और वर्ण व्यवस्था रूपी समय और कार्य विभाग बना कर प्रत्येक आश्रमो के लिये दिनचर्या बड़े स्पष्ट शब्दो में बतायी है जिसके अनुसार आचरण करने से ही मनुष्य तथा प्राणिमात्र का जीवन सुखमय हो सका है। और यदि इसका उल्लंघन किया जाय तो सारी सृष्टि का व्यवस्था भंग होकर समाज मे दुःख दानव का राज्य फैल जाता है, जैसा कि वर्तमान समय मे हो रहा है।

जैसे किसी भी विद्यालय मे सुचारु रूपण अध्यापन काम चलाने के लिये प्रति दिन प्रति घण्टे और प्रत्येक पाठ्य विषय का प्रत्येक अध्यापक के लिये समय विभाग पहले ही बना दिया जाता है और सारे शिक्षक अपने अपने विषय को उन उन समयो मे पढ़ाते है और विद्यालय के प्रबन्ध का सुसंचालन रखते है उसी प्रकार भगवान विशाल सृष्टि के व्यवस्थापक ने ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्यास चार आश्रमों तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णों के कर्तव्यो का आदेश देकर और समय की व्यवस्था भी करके सृष्टि रूपी महान संस्था को सुचारु रूपेण चलाने की व्यवस्था की है। केवल

(शेष पृष्ठ १३ पर)

नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस

हमारे अजेय रक्षा मन्त्री

जिनके हाथों देश सुरक्षित है

श्री यशवन्तराव चौहान

मुक्तक

(१)

किरणों से ऊषा की ऊषा स्वर्ण विहान है
बना वयस्क स्वातन्त्र्य हमारा, विश्व का अभिमान है
मित्रो फिर से फहरा दो, जिसके तिरंगे को
मुल्क की मुक्ति का निश्चित निराला विधान है।

(२)

माता क्रुद्ध होती पर क्रूर नहीं होती है
धरा अशुद्ध होती पर धूर नहीं होती है
पांव से मत रौंदो, कोख से बचाओ
दोस्त देश की माटी, सिंदूर होती है

—मदनमोहन एडवोकेट, बोठ

वेद प्रचार सप्ताह के प्रोग्राम

(३० अगस्त से ८ सितम्बर)

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—१५ से २१ अगस्त छपरा (बिहार) २२ से ३० अगस्त बिजनौर ३१ अगस्त से ८ सितम्बर तक आ० स० अलीपुर चौरी

श्री अलबीर जी शास्त्री—१८ से २५ अगस्त कथा ग्राम बेवाया (फैजाबाद), ३० अगस्त से ८ सितम्बर टाडा फैजाबाद

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री—३० अगस्त से ८ सितम्बर अलीगढ़।

श्री प० जगन्नाथप्रसाद जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर तक चन्दौसी।

श्री भेरीदत्त जी शुक्ल—३० अगस्त से ८ सितम्बर तक धमीना।

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आ० मु०—३० अगस्त से ८ सितम्बर फैजाबाद।

श्री धर्मराजसिंह जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर चन्दौसी।

श्री गजराजसिंह जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर भर्थना (इटावा)।

श्री धमदत्त जी आनन्द—३० अगस्त से ८ सितम्बर मऊनाथ भंजन।

श्री प्रकाशवीर जी शर्मा—३० अगस्त ८ सितम्बर अलीगढ़।

श्री दिनेशचन्द्र जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर सिरोली।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम ए
स० अधिष्ठाता उपदेश विभाग

वेद कथा का समाचार

आर्यसमाज मलाही (चम्पारण) ने १९ अगस्त से २५ अगस्त तक वेद कथा का आयोजन किया है जिसमें श्रीरामजी प्रसाद गुप्त "आर्य भिक्षुक" और श्री ठाकुर नन्दलाल जी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। —वैद्यनाथ प्रसाद मन्त्री

तिकता का कार्य करे चाहे। उसके साथ रियायत न की जाय अपितु उसे कठोर दण्ड दिया जाय।

मुझसे पूछा गया कि मैं अपना सशोधन वापस लूगा ? मैंने कहा नहीं। बहुमत से मेरा सशोधन गिर गया।

उक्त सशोधन रखते हुए मैंने कहा था कि बिना इतना अश जोडे हुए मूल सकल्प का कोई मूल्य नही है और माननीय गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा का प्रण कि दो वर्ष मे भ्रष्टाचार का उन्मूलन कर दिया जायगा। कभी पूर्ण न होगा। हुई बात वही। केवल सदाचार समिति नाम रख देने से दुराचार दूर न होगा। भ्रष्टाचार विरोधी समितियो में ऐसे-ऐसे लोग भी घुस पडे हैं जो बदनाम हैं और जनता के विश्वासपात्र नही हैं। सरकार स्वय जब नशाबन्दी बन्द कर केवल आय वृद्धि के विचार से नगरों तथा ग्रामों में शराब, गाजा और भाग आदि की दूकानो के के ठेके दे रही है, तब इसे क्या कहा जाय ? कुत्सित उपायों द्वारा धनोपार्जन क्या भ्रष्टाचार का सूत्रपात नहीं है ?

सरकार भी परेशान है। शासन कांग्रेस दल के हाथ मे है। आवश्यकता है न्यायपूर्वक कार्य करने की। यह जान कर और मानकर कि कांग्रेस देश के लिए है, देश कांग्रेस के लिए नही है।

दुर्भाग्यवश देश मे ऐसी भी अनेक सस्थायें पनप रहीं हैं जिनकी लगामें विदेशियो के हाथो में हैं, वे उन विदेशो का हित अधिक चाहेगी, यह स्वाभाविक है। सावधानता अपेक्षित है।

शासन में भी ऐसे सज्जनो का विशेष प्रभाव है, जिन्होने माई की अपेक्षा दाई का दूध अधिक पिया है अर्थात् भारत मे अथवा भारत से बाहर पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त की है। भारतीय साहित्य, सस्कृति एव सभ्यता का अध्ययन अग्रेजी के माध्यम से किया है। यही कारण है कि ईमानदार तथा देश भक्त होते हुए भी वे भारतीय सस्कृति एव सभ्यता के अनुरूप शासन-व्यवस्था में सकोच करते हैं। उनके सामने विदेशों के आदर्श हैं। उनकी आस्था अभी तक विदेशीय सभ्यता एव भाषा आदि के प्रति वैसी ही बनी हुई है जैसी कि विदेशीय शासन काल में थी।

अब प्रश्न उठता है कि असख्य धन व्यय करने, कर पर कर लगाने और विदेशों से ऋण एवम् अन्न आदि की नाना प्रकार की सहायता लेने पर भी अपेक्षित रामराज्य की झलक क्यो नहीं दृष्टिगत हो रही है ? निदान में भूल है अथवा औषधि मे, जो 'रोग बढता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की।' निष्पक्ष विचार करने से प्रकट होता है कि त्रुटियाँ दोनों मे हैं। अन्यथा उन्नीस वर्षों मे पूर्ण सफलता क्यो न मिलती।

देश की दशा सुधारने का उपाय अविलम्ब होना चाहिए। हम विदेशीय हवा से बचें। सहशिक्षा तथा सिनेमा चरित्र भ्रष्ट करने मे बहुत आगे हैं। शिक्षा-दीक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन अनिवार्य रूप से आवश्यक है परन्तु ऐसा नही कि सस्कृत को तिलाजलि देकर और सविधान मे स्वीकृत देवनागरी लिपि मे हिन्दी भाषा का व्यवहार शिथिल करके सम्पूर्ण देश मे उसका स्थान उसे दिलाने में भयभीत हों। शासन दृढतापूर्वक किया जाय और महर्षि दयानन्द के शब्दो में गुण, कर्म, स्वभावानुसार व्यवस्था होनी चाहिए। नियुक्तियाँ आदि तदनुकूल हो तब समस्त प्रबन्ध सुचारु रूप से चलेगा और शासन मे अनुशासन भी रहेगा। सस्कारो पर विशेष ध्यान दिया जाय। आधुनिक आवश्यकताओ का समन्वय करते हुए प्राचीन पठन-पाठन पद्धति अपनायी जाय।

कृत्रिमताएं दूर की जायें, वास्तविकता से काम लिया जाय। भारत विद्या में, बल मे, धन में तथा सेवा में ससार के किसी देश से पीछे न रहे। अधिक से अधिक शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित रहे जिससे दुष्ट मन कोई उपद्रव करने का दुस्साहस न कर सकें। स्वतन्त्रता अक्षुण्ण रहे।

जय भारत

आर्यसमाज के सम्बन्ध में

श्री बलराज मधोक का स्पष्टीकरण

दिल्ली, जुलाई ३०। भारतीय जनसघ के जालन्धर अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण में हुई आर्यसमाज की चर्चा के विषय को लेकर आर्य जगत मे असन्तोष व्याप्त हो गया था। इस पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मैंने जनसघ के अध्यक्ष श्रीयुत बलराज जी मधोक को एक पत्र लिखकर स्थिति का स्पष्टीकरण करने की प्रार्थना की थी। इसके उत्तर में मुझ उनका २२ ७ ६६ का लिखा हुआ पत्र मिला है जो अविकल रूप मे प्रकाशित किया जाता है—

"आपका दिनाक २०-७-१९६६का पत्र मिला। धन्यवाद

जैसा कि आपको श्री दीनदयाल उपाध्याय ने अपने १७ मई के पत्र मे सूचित किया है कि पजाब जनसघ के अध्यक्ष डा० बलदेवप्रकाश जी द्वारा मेरा ध्यान मेरे अध्यक्षीय भाषण की आपके द्वारा उल्लिखित पक्ति की ओर आकृष्ट करने पर मैंने उसे तुरन्त काट दिया था और जो भाषण मैंने पढा उस मे उस पक्ति का समावेश नही था। मैंने उसी समय अपने कार्यालय को आदेश दिया था कि इस सशोधन की सूचना उन समाचार पत्रो को भी जहा पर भाषण की अग्रिम प्रतियां जा चुकी थी, तार द्वारा दे दी जाए। लगता है कि कुछ पत्रो मे भ्रान्ति पैदा हुई है। इसका मुझे खेद है।

जैसा कि आप जानते हैं मेरा सबध आर्यसमाज से अति पुराना है। वास्तव मे यह मेरी पैतृक सम्पत्ति है। वैसे भी महर्षि दयानन्द की विचारधारा और भारतीय जनसघ की विचारधारा मे अति अधिक समानता है। यही कारण है कि जनसघ बनाने वालो और चलाने वालों में आर्यसमाज से प्रेरणा पाने वाले लोगों का प्रमुख हाथ रहा है। परन्तु यह खेद का विषय है कि कुछ कांग्रेसी अपनी 'भेद डालो और राज करो" की नीति के चलाने मे आर्यसमाज की भी आड ले रहे हैं। ऐसे लोगो स हर सच्चे आर्यसमाजी और ऋषिभक्त को सचेत रहना चाहिए।

आज देश जिस भयानक परिस्थिति मे गुजर रहा है उसका मुकाबला करने के लिए सभी राष्ट्रवादी शक्तियो को कन्धे से कन्धा मिलाकर चलना होगा। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि आर्यसमाज जो सास्कृतिक क्षेत्र मे विशुद्ध भारतीय राष्ट्रीयता और सास्कृतिक चेतना का प्रतीक है, का सहयोग भारतीय जनसघ को जो कि राजनीतिक क्षेत्र मे उसी भावना को लेकर चल रहा है, पूर्णरूपेण मिलता रहे। मैं इसके लिए प्रयत्नशील हू और आशा करता हू कि आपकी सहानुभूति और सहयोग इस मामले मे मेरे साथ हैं।"

इस पत्र के प्रकाशन के पश्चात् यह विवाद समाप्त हो जाना चाहिए।

—रामगोपाल सभा मन्त्री
सार्वदेशिक आ०प्र०सभा नई दिल्ली।

सार्वदेशिक सभा की समवेदना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल जी ने सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के आकस्मिक निधन पर उनके परिजनों को समवेदना का निम्नलिखित तार दिया है—

"डा० अग्रवाल का आकस्मिक निधन बडी राष्ट्रीय क्षति है उन जैसे विद्वान् को पाकर देश और समाज धन्य था आप लोगों के दुःख को हम हृदय से अनुभव करते हैं। हार्दिक समवेदना। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।"

गोवध निरोधक साधुओं से आर्य नेताओं की भेंट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपालजी शाल वाले व सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री ओमप्रकाशजी और सभा उप मन्त्री श्री शिवचन्द्र जी के साथ स्वामी गयानन्द जी महाराज तथा अन्य साधु महात्माओ से भेंट की जो गोवध निवारण के लिए ससद भवन के समक्ष आमरण अनशन किये हुए हैं सभा मन्त्री जी ने अपनी तथा आर्यसमाज की ओर से पूर्ण सहानुभूति प्रकट की। सभा मन्त्री ने उन्हे आश्वासन दिया कि समस्त आर्यजगत् उनके इस बलिदान के मार्ग को आदर की दृष्टि से देखता और अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता है।

●

धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सरक्षण मे आर्यसमाज लखीमपुर खीरी मे अध्यापिकाओं को धर्म शिक्षा पढाने योग्य बनाने निमित्त एक प्रशिक्षण शिविर दि० १-९ ६६ से ६-९-६६ तक लगेगा जिसमे लखीमपुर, सीतापुर, पीलीभीत, शाहजहापुर तथा बरेली की आर्य कन्या शिक्षा सस्थाओं की ही अध्यापिकायें सम्मिलित हो सकेंगी। लखीमपुर के अतिरिक्त शेष उपर्युक्त जिले के प्रत्येक विद्यालय से दो-दो अध्यापिकायें भाग ले सकेंगी। सम्मिलित होने वाली अध्यापिकाओ को मार्ग-व्यय सम्बन्धित विद्यालय दें तथा भोजन, जलपान व निवास का प्रबन्ध आर्यसमाज लखीमपुर की ओर से होगा। उपर्युक्त जिले की प्रत्येक आर्य शिक्षा सस्था के प्रबन्धक महानुभाव कृपया शीघ्र ही सम्मिलित होने वाली अध्यापिकाओं की सूची भेजें तथा अन्य जानकारी के लिये पत्र-व्यवहार भी निम्नलिखित पते पर करें।

—रामबहादुर, एडवोकेट
अधिष्ठाता शिक्षा विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश
स्थान पूरनपुर, जि० पीलीभीत

●

काव्य कानन

क्या यही स्वराज्य कहाता है !

—डा० हरिशंकर शर्मा

जिस के निमित्त तप-त्याग किए, हंसते-हंसते बलिदान दिए,
कारागारों में कष्ट सहे, दुर्दमन नीति ने देह दहे,
फंदुआ ने न्याय-नीति कुचली, गोले बरसे-गोलियां चलीं,
घर-बार और परिवार मिटे, नर-नारि पिटे, बाजार लुटे,
आई-पाई वह 'स्वतंत्रता', पर सुख से नेह न नाता है—

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

प्यारी स्वतन्त्रता, स्वागत है, कृतकृत्य हुआ यह भारत है,
वह कुछ दिन था जब आई थी, तब खुशियां खूब मनाई थीं,
आशा-उत्साह भरे सब थे, तप-त्याग युक्त जन-जीवन थे,
समझे सुख-स्रोत बहा देंगे, फिर से सतयुग-छवि छा देंगे,
हो गए न जाने कैसे हम, अब वह सद्भाव न भाता है—

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

सुख, सुविधा, समता पाएंगे, पहनेंगे, पीएं-खाएंगे,
रक्षित रह आयु बिताएंगे, सब सत्य-स्नेह सरसाएंगे,
तब भ्रष्टाचार नहीं होगा, अनुचित व्यवहार नहीं होगा,
जन-नायक यही बताते थे, दे-दे दलील समझाते थे,
वे हुई व्यर्थ, बीती बातें, जिन का अब पता न पाता है—

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

बेकार व्यक्ति अकुलाते हैं, भूखे-नंगे घबराते हैं,
अपराध अब रहे हैं जारी, कर रहे लूट अत्याचारी,
रिश्वत रानी के नग्न-नृत्य, सुन्दरी सिफारिश के कुकृत्य,
नैतिकता की हो रही हार, है भ्रष्टाचार-प्रचार सार,
ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति को, लख देश-देश घबराता है—

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

योजना दुर्व्यवस्थित उलझ रही, स्वार्थिक शूलों में झूल रही,
दल-बाद-भूत मुंह फाड़ रहा, जनता को पकड़ पछाड़ रहा,
'कुर्सी' का गुन-गान करें, सत्ता की कीर्ति बखान करें—
तो सफल सिद्ध हो जाएंगे, जो चाहेंगे वो पाएंगे,
निष्पक्ष स्वतन्त्र सदस्यों पर 'अनुशासन' तीर चलाता है,

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

शुचि, स्नेह, अहिंसा, सत्य, कर्म, बतलाए 'बापू' ने सुधर्म,
जो बिना धर्म की राजनीति, उस को कहते थे वह अनीति,
अब 'गांधीवाद' विचार किया, सद्भाव, स्वावलम्बन मार दिया,
नव स्वार्थ-सिद्धि-पथ अपनाया, कटु कूटनीति कौतुक आया,
व्यवसाय बन गयी देश-प्रेम, कुछ नया स्वार्थ का नाता है—

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

शिक्षा का कुछ आदर्श नहीं, उपयोग नहीं उत्कर्ष नहीं,
हो रहे विविध निर्माण आज, शिक्षा चरित्र पर नहीं नाज,
कोरी रट-रट कर लिए ज्ञान, पाई न नौकरी है अजान,
चाहिये, नवा दें नवयुवक करें, बेकारी और अभाव हरें,
उद्योग, शिल्प, जीवन-उपयोगी ज्ञान कौन सिखलाता है—

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

जनता सेवा, तप-त्याग करें, प्रभुचरणों में अनुराग करें,
निर्वाचन में मतदान करें, कर दे दें अब भण्डार भरें,
कर्तव्य नहीं, अधिकार नहीं, जन-जीवन का आधार नहीं,
जनता सत्ता की चेरी है, सत्ता प्रभुओं की प्रेरी है,
यह धर्म नाम लेता है जो वह 'धर्मवीर' बन जाता है—

क्या यही 'स्वराज्य कहाता है !

सब सत्य-अहिंसा-साधक हों, गांधी-गरिमा-आराधक हों,
नैतिकता नित अपनायें हम, 'कथनी' 'करनी' में लायें हम,
सब स्वस्थ रहें—सब सुख पायें अनुकूल भावनायें आयें,
समता-सुविधा, सबम व्रत हों, सेवा में जन-जनता रत हों,
इस पथ पर चलने वालों को अब कौन भला पतियाता है—

क्या यही स्वराज्य कहाता है !

संतुष्ट, शान्त हों नर-नारी, हों हितकारी सब अधिकारी,
महंगाई, मारी, काल न हो, सत्याग्रह या हड़ताल न हो,
शासन-विधि में सुविधा आए, कोई न किसी पर झुक जाए,
जन-जन में नैतिकता आवे, मद, भ्रष्टाचार - भूत भागे,
ऐसी बातें तो कभी - कभी कोई बीतों में लाता है—

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

नेता सत्ता अनुगामी हैं, कुछ 'सेवक' हैं—कुछ 'स्वामी' हैं,
जनता की बातें कौन सुने, छाती कूटे या शीश धुने,
सुनकर 'स्वतन्त्रता' का सुनाम, हो जाते थे सब एक प्राण,
पर, अब तो वैसा भाव नहीं, उत्साह नहीं, वह चाव नहीं,
भारत के भव्य-भवन पर हां, शुचि तिरंगा ध्वज फहराता है—

क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है !

शपथ-पथ

—डा० रामकुमार वर्मा

कौन वह स्वर है कि जिससे वीर रथ का राग जागे।
कौन डमरू-निनाद है कि जिससे शिव का नाम जागे॥
कौन-सा वह होम है जिससे समर की आग जागे।
कौन है वह गर्व जिसमें वीरवर का भाग जागे।
बढ़ चलो ओ वीर ! तुम्हें विजयश्री की शपथ है,

यह शपथ आज पुकारती है

बढ़ चलो, ओ वीर ! तुमको हिम-शिखर की शपथ है,

यह शपथ-पथ की आरती है॥

कौन वह विक्रम जिसे इतिहास अब भी जानता है।
कौन वह अरि-मुण्ड है, जो युद्ध में ललकारता है।
कौन सा वह प्राण है जो व्याघ्र सा हुंकारता है॥
जानता हूं मैं युद्ध के जीतने का गर्व है,

तो गर्व फिर से जगमगाये।

समय तुमसे मांगता है प्राण की बलि,
कौन जाने वह समय आये न आए।

बहिन ने राखी तुझे बांधी, नहीं वे व्यर्थ जाये।
वीर मां के स्वप्न तुझको जन्म देकर भी न जागे।
वीर ! तुझमें शक्ति है तो मान को अभिमान कर दे।
पूर्व का तू सूर्य है जो काल को दिनमान कर दे।

एक हिम के पीक ने मधुरा कहानी
जो लिखी है खोज नया का निशान।
रक्त अब ऐसा बहा दे हिम शिखर से
स्वयं गंगा ही धोये उसे दुबारा

★

भगवती देवी—गाए

[डॉ०—श्री विक्रमादित्य को बसन्त', अधिष्ठाता गौ कृष्यादि संवर्धनी सभा आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ]

★

इस संसार में मनुष्य एक उन्नतिशील प्राणी है जो सतत् अथवा विकास की महत्ता के शिखर पर चढ़ने में ही उसे आनन्द की प्राप्ति होती है। भारत की पुण्य भूमि में हमारे ऋषिगण अपने जीवन में वेद का ज्ञान दीप जलाते थे, और अपने जीवन दीप से दूसरों के जीवन दीप जला कर विश्व को ज्ञान के आलोक से जगमगाते थे। स्वर्णिमय जीवन के निर्माण के लिए केवल भौतिक उन्नति ही नहीं वरन् उसके साथ-साथ आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है, ऐसा स्पष्ट बोध सतत कराया जाता था जिसके फलस्वरूप राजा एवम् प्रजा केवल भौतिक ऐश्वर्यों की ओर ही नहीं वरन् आध्यात्मिक ऐश्वर्यों की प्राप्ति करने में भी रत रहते थे और जीवन का सर्वांगीण विकास कर पूर्णता से युक्त हो कर आनन्दपान करते थे। आनन्दरूपी अमृत ही उन्हें धर्मात्मा और महात्मा बनाता था और उनके श्रेष्ठ दिव्य जीवन को देख कर ही साधारण जन ऐसी विभूतियों को भगवान कह कर अपनी श्रद्धा के पुष्प अर्पित करते थे।

क्या हम भी ऐसी साधना करके भगवान् हो सकते हैं? वेदमाता हमें कह रही है "भगएव भगवा, देवास्तेन वयं भगवन्त स्याम्" (ऋग्वेद मण्डल ७ सूक्त ४१ मन्त्र ५) अर्थात् जो भग से युक्त है वह भगवान है और वही देव होता है तथा हम भी भगवान बनें। उन्नति का देवता भग है। भग क्या है भग कितने हैं और भगों से युक्त क्यों हों। जब तक इन बातों का ज्ञान न हो भगों से युक्ति की इच्छा नहीं हो सकती। हमारे धर्म शास्त्रों ने बोध कराया है कि भग उस आत्मिक बल को कहते हैं जिसे प्राप्त कर आत्मा में जीवनशक्ति आती है। भग छः हैं—(१) ऐश्वर्य (२) वीर्य (३) श्री (४) यश (५) ज्ञान (६) वैराग्य। इन भगों से उन शत्रुओं का दमन होता है जो सतत् हमारे तेज का ह्रास करते हैं। ऋग्वेद के इन्द्र सूक्त (मण्डल १० सूक्त २७) के २२वें मन्त्र में कहा गया है "वृक्षे-वृक्षे नियता मीमयद् गौस्ततो वयः प्रपतान् पूरुषाद।" अर्थात् पुरुष को खाने वाले मांसाहार पक्षी जब तक जीवन रूपी वृक्ष से नहीं उड़ाए जाते तब तक जीवन में शान्ति नहीं आती। ये पक्षी हमारे शत्रु हैं और इनको ही हम काम क्रोध आदि लोभ, मोह और अहंकार से सम्बोधित करते हैं। कौन सा भग किस शत्रु का दमन करता है तो उसे संक्षेप में इस प्रकार जानिए—

(१) काम को जीता जाता है वैराग्य से।

(२) मोह को जीता जाता है ज्ञान से।

(३) लोभ को जीता जाता है श्री से।

(४) मद को जीता जाता है यश से।

(५) क्रोध को विजय करता है वीर्य।

(६) अहंकार नष्ट होता है ऐश्वर्य से।

तो इन छः शुभगों की प्राप्ति कहाँ से करें इस सम्बन्ध में वेद हमारा मार्ग दर्शन करता हुआ कहता है—

'गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद्,
गाव सोमस्य प्रथमस्य भक्ष।
इमा या गाव स जनास इन्द्र,
इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम।'
(अथर्व वेद काण्ड ४ सूक्त २१ मन्त्र ५)

वेद के जिस सूक्त का यह मन्त्र है वह सूक्त गो सूक्त कहलाता है। इस मन्त्र में बताया गया है—

१—गाव भग अर्थात् गौए ही भग को प्राप्त कराने वाली हैं। दूसरे शब्दों में गाए ही भगवती देवी हैं क्योंकि वह भग को प्राप्त कराती है। गाए के जिन पदार्थों का हम सेवन करते हैं, उन्हे गव्य कहते हैं। ये गव्य प्रमुख हैं—

(१) दुग्ध (२) दही (३) छाछ (४) मक्खन (५) घृत (६) मूत्र (७) गोबर।

ये गव्य अथवा इनसे निर्मित अन्य पदार्थ मनुष्य के जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। ये न केवल मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं वरन् उसकी आयु वृद्धि के साथ साथ उन सुभगों की भी प्राप्ति कराते हैं जिन से मनुष्य को सत्व की प्राप्ति होती है और वह जीवन संग्राम में विजयी होता है। इन गव्यों से भगों की प्राप्ति किस प्रकार होती है, इस सम्बन्ध में एक विस्तृत लेख पृथक रूप से प्रकाशित किया जाएगा ताकि जन साधारण पूर्णतया इस विषय को जानकर उसे धारण कर सके।

(२) गाव इन्द्रो म इच्छात्।

इन्द्र उसे कहते हैं जो इन्द्रियों का स्वामी हो। जब तक इन्द्र शक्ति युक्त है, इन्द्रियां उसके वश में कार्यरत रहती हैं अन्यथा जिस प्रकार दुर्बल शासक के कर्मचारीगण अपने स्वामी के आदेश का पालन न कर मनमानी करते हैं, उसी भांति जब आत्मा शक्तिहीन हो जाता है, इन्द्रियां नियन्त्रण से परे होकर विषयों में स्वच्छन्दता से लीन रहती हैं। जहाँ "पापोऽहं पापात्मा पाप सम्भव" की भावनाएं मानव को दुर्बल बनाती हैं, वहां वेद का यह वचन "अहं इन्द्र, न पराजिग्ये" आत्म विश्वास को जागृत कर आत्मा को सशक्त करता है। वेद का ज्ञाता इस बात को जानता है कि आत्मा की दुर्बलता सत्वहीनता के कारण है और सत्वहीनता का मूल आत्मा का अहंकार है। कैसे? तो इसे यों जानिए—अहंकार जनक है विकार का, विकार पिता है वासनाओं का, वासनाओं की सन्तति भोग हैं, भोग उत्पन्न करते हैं चिन्ता, विषाद और शोक को जिनके कारण जीवन में सत्व-हीनता आती है और सत्वहीनता से ही विनाश होता है।

चूंकि अहंकार जो मदोत्पादक है, मानवी उत्कर्ष का शत्रु है, अतः उत्थान के शिखर पर चढ़ने वाला साधक मद रूपी मल से मुक्त होने के लिए एक ही कामना करता है और वह यह कि उसे श्री रूपी भगवतीदेवी मिले ताकि उसके गव्यों से वह भगयुक्त हो सके और इस भगवतीदेवी के प्राप्ति के पश्चात् वह जीवन के निमित्त जो कर्म करता है उसे वेद माता ने यों कहा है—

(३) गाव सोमस्य प्रथमस्य भक्ष—जीवन को बनाए रखने के लिए आहार चाहिए क्योंकि आहार से ही रक्त, रस, सत्व, वीर्य्य आदि बनते हैं। साधक जानता है कि आहार का विचार से और विचार का आचार से एवम् आचार का व्यवहार से सीधा सम्बन्ध है। 'आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि' को विचार में रखता हुआ वह गाय के दुग्ध रूपी सोम का ही सर्व प्रथम सेवन करता है अर्थात् जीवन में उसे प्रमुखता देता है। पापों और तापों से संतप्त आत्मा जब जगत की ठोकरों से विवश होकर परम पिता परमात्मा को पुकारती है तो अन्तर की वाणी भी यही कहती है 'पिब सोम इन्द्र' और परमात्मा का भक्ति रूपी सोम जहां आत्मा को सशक्त करता है वहां गो दुग्ध रूपी सोम सात्विकता प्रदान कर प्रभु प्रेम की ओर प्रेरित करता है।

(४) "इमा या गाव स जनास इन्द्र"।

मन्त्र की यह सूक्ति कितनी महत्व-पूर्ण है, इसका आभास मनन् करने पर होता है। संसार में अनेक ऐसे हैं जो अपने को प्रभु के समीपस्थ होने का दावा करते हैं, जो यह कहते हैं कि वे पूर्णतया आध्यात्मिक ऐश्वर्यों से युक्त हैं और इन्द्रियों को वश में किए हुए इन्द्र हैं—कैसे जाने कि वे साधक इन्द्र हैं तो वेद माता हमें बोध कराती है कि इन्द्र उसे जानिए जिसके पास गौवें हों। जब साधक गोपालन करेगा तो गो-दुग्ध और अन्य गव्यों का भी सेवन करेगा जो उसके सत्व को बढ़ाकर उसे इन्द्रिय निग्रह वाला इन्द्र बनाते हैं और ऐसे ही इन्द्र के लिए कहा है—

संसार में प्रभु का गुणगान करने वाले बहुत मनुष्य होते हैं। अपने को प्रभु भक्त कहलाने में गौरव का अनुभव करने वाले भी अनेक होते हैं किन्तु कोई विरला ही ऐसा होता है जो हृदय से, मन से और चित्त से सतत् प्रभु की कामना करता है। जहां विशुद्ध प्रेम होता है वहां अतिशय लगन होती है। जिस साधक ने भगवती देवी गाए के योग से जीवन को योग किया है, उसका आत्मा रूपी इन्द्र परमात्मा रूपी परम इन्द्र के मिलन के बिना कैसे रह सकता है। उसको प्रत्येक श्वास में प्रियतम की पुकार होती है, दिल की प्रत्येक धड़कन में ब्रह्म का आह्वान होता है और ऐसा साधक मन से, चित्त से व हृदय से सर्वदा ब्रह्म का होता है। अपने जीवन को, अपने प्रियतम् को अर्पित करता हुआ वह प्रभु के दिव्य सन्देशों को सुनता हुआ उसकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहता है। वह उठते-बैठते, सोते जागते सतत् प्रभु की शरण में रहता है क्योंकि वेद की दिव्य वाणी से प्रभु ने स्वयम् कहा है—"यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत् सत्यम् अङ्गिरः॥" (ऋग्वेद १।१।६)

अतएव परमात्मा का गुणगान व ध्यान करने वाले भक्तो! प्रभु के समी-पस्थ होने के लिए स्वयम् भगवान बनो और भगों की प्राप्ति के लिए भगवती देवी गाय का पालन स्वयम् अर्चन करो। इसी में तुम्हारा व सारे जगत् का कल्याण अन्तर्निहित है।

❀

नाचते गाते राष्ट्रवासी

(श्री पं० प्रियव्रत जी शास्त्री वेदवाचस्पति, आचार्य गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी)

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या व्यैलबाः। युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः। सा नो भूमिः प्रणुदतां सपत्नानसपत्नं मा पृथिवी कृणोतु ॥
अथर्व /१२/१/४०//

हमारी मातृभूमि की राज्य-व्यवस्था ऐसी उत्तम है कि उसमें रहने वाले सब प्रजाजन सदा हर्षयुक्त होकर नाचते और गाते रहते हैं। किसी प्रकार का शोक और किसी प्रकार की उदासी उनके पास नहीं फटकती हर्ष आह्लाद में, प्रसन्नता से हंसते रहने में ही उनका जीवन बीतता है।

परन्तु उनके इस नृत्य गान के हर्ष आमोद प्रमोद शक्ति को क्षीण करने वाला निकृष्ट प्रकार का आमोद प्रमोद नहीं होता। उनका आमोद प्रमोद शक्ति को बढ़ाने वाला और संचित रखने वाला ऊंची किस्म का आमोद प्रमोद होता है। इसलिये वे सदा शक्ति के पुञ्ज बने रहते हैं और आवश्यकता पड़ने पर वे अपने रौद्ररूप का परिचय भी दे सकते हैं। आवश्यकता होने पर वे युद्ध दुर्मद वीरों का बाना पहन कर युद्ध-क्षेत्र में भी उतर आते हैं। उस समय उनके मुखों से निकलने वाले जयघोषों और शत्रुओं को दी हुई ललकारों का कोलाहल शत्रुओं के हृदय दहला देता है। उस समय बजने वाले युद्ध वाद्य दिशाओं को कंपा देते और आकाश को फाड़ डालते हैं। उस समय का उनका पद-प्रहार धरती को हिला देता है। उस समय शत्रु उनके आगे नहीं टिक सकते, उनके खड्गास्त्र दुश्मनों का रुधिर पीने के लिये लपलपा उठते हैं और उनके लहू को पीकर ही शान्त होते हैं। वे अपने शत्रुओं का पूर्ण पराजय करके ही युद्ध भूमि से वापस लौटते हैं।

ऐसे सिंह वाले पराक्रम से युक्त वीर प्रजाजनों से भरी हुई हे हमारी मातृभूमि! तू हमारे राष्ट्र के शत्रुओं को सदा पराजित करती और भगाती रहना। हमें सदा शत्रु रहित करके रखना। अपनी शक्ति सदा ऐसी बनाकर रखना कि कोई भी हमसे शत्रुता करने का साहस न कर सके मातृभूमि के इस वर्णन और उससे की गयी प्रार्थना द्वारा वेद ने यह उपदेश दिया है कि राज्य प्रबन्ध ऐसा उत्तम होना चाहिये कि राष्ट्र के सब अधिवासी सदा हर्ष से नाचते-गाते और हंसते-खेलते रहें। उनके मे नाच और गान इस प्रकार के होने चाहिये जो प्रजाओं को विलासी और शक्तिहीन न बनाकर उनकी शक्ति की रक्षा और वृद्धि करने वाले हों। राज्य को चाहिये कि वह राष्ट्रवासियों को युद्ध की शिक्षा भी अनिवार्य रूप से दे। जिससे आवश्यकता के समय राष्ट्रवासी शत्रुओं से अपने देश की रक्षा कर सकें उनमें युद्ध की क्षमता सदा बनी रहनी चाहिये जिससे उस क्षमता के कारण कोई भी उनके राष्ट्र से शत्रुता करने का विचार अपने मन में न ला सके।

★

गंगा मेला गढ़मुक्तेश्वर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ की ओर नवम्बर मास के कार्तिक मास की पूर्णिमा के अवसर पर गंगा मेला गढ़मुक्तेश्वर पर 'आर्य महा सम्मेलन" का आयोजन किया जा रहा है। मेरठ कमिश्नरी के आर्य बन्धु कृपया नोट करने का कष्ट करें और सम्मेलन को सफल बनाने का कष्ट करें।

—अशोककचन्द्र मन्त्री
उपसभा मेरठ

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में नवीन प्रवेश

प्रसिद्ध आर्य शिक्षा संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का शिक्षा सत्र १ जुलाई से आरम्भ हो गया है। ६ से १० वर्ष की आयु के बालक विद्यालय विभाग में प्रविष्ट होंगे। महाविद्यालय विभाग में पञ्चित कक्षा ११-१२ में संस्कृत लेकर मैट्रिक (शिरोमणि कक्षा १३-१४ में संस्कृत इण्टर व मध्यमा प्रविष्ट हो सकते हैं। शीघ्र पत्र व्यवहार करें। —उमेशचन्द्र स्नातक उपमन्त्री
शिक्षा सभा गुरुकुल वि वि वृन्दावन

आवश्यकता

एक सुन्दर सुशील, स्वस्थ राजपूत २२ वर्षीय वर के लिए राजपूत कन्या की आवश्यकता है। विवाह राजपूत मात्र में होगा। लड़का कृषि कार्य करता है। १०० बीघा जमीन है। कोई दहेज की मांग नहीं है।

पता—राजाराम शास्त्री
गांव—[illegible]
डा० [illegible] (बांदा)

क्या यह गांधीजी का रामराज्य है?

दीन दशा लखिकर स्वदेश की हुई वेदना एक हृदय,
असहयोग आन्दोलन में लोगों ने देखी प्रीति विनय।
पराधीन देश का विदेशों में हो सकता मान कहां—
बिन स्वराज्य दीखेगा कहिये भारत में उत्थान कहां। १।

दशा देख प्रण किया गांधी जी ने दुःख उठाऊंगा—
कर सर्वस्व निछावर भी लेकर स्वराज्य दिखलाऊंगा।
प्रजातन्त्र की नींव जमेगी फिर से रामराज्य होगा—
और साथ ही तीनों तापों का भी शीघ्र नाश होगा। २।

कारागार रहे वह कितने जाने कितने वार सहे—
कष्ट अनेकों झेल, न जाने भूखे कितनी बार रहे।
जब स्वराज मिल गया प्रथम तब देखा लोगों ने भारी-
समझ लिया अब दूर हो गई भारत की विपदा सारी। ३।

होइ गरीबी दूर देश से घर-घर होगा मंगलचार—
अपनी नींद जगे सोवेंगे सुधरें आपस के व्यवहार।
आधी रात अंधेरी में भी होगा भय का नाम नहीं—
गुण्डे चोर उचक्कों का दीखेगा नाम निशान नहीं। ४।

बिना धर्म की राजनीति की सूखी ही दिखलानी है—
स्वराज्य में कांग्रेस की भी आवश्यकता न दिखाती है।
कितने सुन्दर ये विचार यह राष्ट्रपिता श्री गांधी के—
चल न सकी पर भक्कुड़ें की हाड़ सामने आंधी के। ५।

दूध दही की नदी न बहती स्वराज्य का सुख रहा न श्रेष्ठ—
दुःसमय का कुछ काम सही तो क्या गांधीवाद यथेष्ट।
सदाचार अनुरक्त प्रजा है कहीं नशे का नाम न क्या?
सुखद स्वराष्ट्र स्वभाषा देखी वेश 'काम का काम न क्या। ६।

वरन विदेशी भाषा दीखे और विदेशी दीखे भेष—
ऋषियों की वो आन न भाई किन्तु शेष है दुःख का लेश।
घूस व चोरी डाके हत्या और दीनता अत्याचार—
पनप रहा पाखण्ड देश में दुरमति फैला भ्रष्टाचार। ७।

कौन चाहते मिनिस्टरों से तब बतला दें बात सही—
रखकर हाथ हृदय पर बोलो क्या स्वराज्य का अर्थ यही।
सुख की नींद प्रजा सोती है या कि जान के लाले हैं—
कहिये कितने छूट गये अपने मकान से ताले हैं। ८।

जब यह सब कुछ नहीं बता दो कौन स्वराज्य बता देगा—
झूठ बोलकर अपने शिर पर कौन कलंक लगा लेगा।
राज्य अधिकारी बतला दें राज्य था क्या करते आप—
सब कुछ सम्मुख होइ आपके और आप देखें चुप चाप। ९।

कर्तव्य च्युत का भी क्या अधिकार रहे वह निज पद पर—
आप चढ़ें आकाश प्रजा को चैन न देते धरती पर।
कांगरेस की फूट विषैली का क्या कहिये होय प्रभाव—
प्रतिद्वन्दी बन नित्य झगड़ते साबित करते कपट दुराव। १०।

शायद आप समझते हो नहिं खबर प्रजा को पड़ती है—
प्रजा के कानों पर भी जूं हाल रेंगने लगती है।
आज सभी करतूतों का अखबार पीटते डंका हैं—
जिनको पढ़कर लोगों के मन पैदा होती शंका है। १२

आज आत्मा गांधी जी की कहिये क्या कहती होगी—
दुर्गति लखिकर के स्वराज्य की हा-हा हा रोती होगी।
इस कारण से विनय करूं मैं कृपाकर यदि सुन लें आप-
भारत का उद्धार 'सरस' यदि निज कर्तव्य निभावें आप। १२।

—वैद्य राजबहादुर आर्य 'सरस'

आर्यसमाज एवं संस्था, निरीक्षण योजना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की सम्बन्धित आर्यसमाजों एवं जिला उपसभाओं तथा शिक्षण संस्थाओं के लिए निरीक्षणार्थ निम्न प्रकार व्यवस्था बनाई गई है जो आर्यमित्र में प्रकाशित की जाती है और सभा की ओर निरीक्षण करने तथा सभा का प्राप्तव्य धन प्राप्त करने का अधिकार दिया जाता है। समाजों एवं उप सभाओं तथा संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को चाहिए कि उनके पहुंचने पर निरीक्षण कराने में सहयोग प्रदान करें और सभा का प्राप्तव्य धन तथा मार्ग व्यय प्रदान किया जाय।

नाम जिला — नाम निरीक्षक

१—देहरादून—श्री बलबीरसिंह जी मन्त्री उपसभा देहरादून
२—सहारनपुर—श्री फूलसिंह जी रामनगर (२) श्री धर्मपालसिंह जी मन्त्री उपसभा
३—मुजफ्फरनगर—श्री निरंजनदेव जी शास्त्री (२) श्री त्रिलोकचन्द जी शास्त्री
४—मेरठ—श्री बलबीरसिंह जी वेधड़क (२) श्री मक्खनसैन जी मन्त्री (३) श्री मास्टरसिंह जी मवाना
५—बुलन्दशहर—श्री श्रीराम जी नागर (२) श्री सत्येन्द्र बन्धु जी आर्य
६—आगरा—श्री अमरनाथ जी गुप्त (२) श्री रोशनलाल जी गुप्त
७—अलीगढ़—श्री केदारनाथ जी अलीगढ़ (२) श्री मा० सरदारसिंह जी अकराबाद (३) श्री महेशचन्द्र जी शर्मा
८—मथुरा—श्री प्रेमचन्द्र जी कोसीकलां (२) श्री जयकुठार जी स्नातक मथुरा
९—मैनपुरी—श्री दयाराम जी शिकोहाबाद (२) श्री सूबेदारजी आर्य मन्त्री उपसभा
१०—एटा—श्री मथुराप्रसाद जी एटा
११—बरेली—श्री रामकुमार जी धीरेश (२) श्री ओमप्रकाश जी जोगीनवादा
१२—बिजनौर—श्री बनारसीलाल जी नजीबाबाद (२) श्री हरिसिंह जी धामपुर
१३—बदायू—श्री नरेशचन्द्र जी आर्य उपमन्त्री (२) श्री रघुनन्दनप्रसाद जी बदायू
१४—मुरादाबाद—श्री हरस्वरूप सिंह जी (२) श्री शम्भूशरण जी मुरादाबाद
१५—रामपुर—श्री कन्हैयालाल मुमुक्षु मन्त्री उपसभा
१६—शाहजहांपुर—श्री राजेन्द्र जी शर्मा
१७—पीलीभीत—श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार (२) श्री इन्द्रदेव जी
१८—गढ़वाल व टेहरी—श्री मक्खनलाल जी कोटद्वार (२) श्री तोताराम जी कुआखाल (३) श्री नरोत्तमदेव जी टेहरी
१९—नैनीताल व अल्मोड़ा—श्री बांकेलाल जी आर्य नैनीताल
२०—झांसी, जालौन, महरानीपुर—श्री केदारीलाल जी झांसी
२१—बांदा हमीरपुर—श्री रामचन्द्र जी शर्मा बांदा
२२—इलाहाबाद—श्री माताप्रसाद जी प्रयाग (२) श्री दयास्वरूप जी आर्य
२३—कानपुर—श्री विजयपाल जी शास्त्री (२) श्री मोहनलाल जी कानपुर
२४—फतेहपुर—श्री नन्दकिशोर जी जहानाबाद (२) श्री दीनदयालु जी आर्य
२५—इटावा—श्री हरिशंकर जी शर्मा (२) श्री भगवतदयालु जी भरना
२६—फर्रुखाबाद—श्री सच्चिदानन्द जी आर्य रम्पुरा (२) श्री राम रतपाल जी कायमगंज
२७—वाराणसी—श्री डा० आनन्दस्वरूप जी मलदहिया वाराणसी
२८—जौनपुर—श्री [illegible] जी जौनपुर
२९—मिर्जापुर—श्री [illegible] सिंह जी चुनार
३०—गाजीपुर—श्री शालिग्राम जी गाजीपुर
३१—बलिया—श्री सुदर्शनसिंह जी सहतवार
३२—गोरखपुर—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार (२) श्री वेदसिंह जी
३३—देवरिया—श्री फूलचन्द्र जी देवरिया
३४—आजमगढ़—श्री जगदम्बरनाथ जी आर्य
३५—बस्ती—श्री गिरजाप्रसाद जी आर्य
३६—फैजाबाद—श्री कल्पनाथ जी आर्य
३७—बहराइच—श्री गोविन्दराम जी
३८—गोंडा—श्री तीर्थराज जी शर्मा (२) श्री धर्मचन्द्र जी मन्त्री गोंडा
३९—बाराबंकी—श्री प्रभाकर जी बाराबंकी
४०—सुलतानपुर, प्रतापगढ़—श्री रामकुमार जी शास्त्री अमेठी
४१—लखनऊ—श्री मधुदेव जी (२) श्री भवानीप्रसाद जी (३) श्री विश्वामित्र 'वसन्त' जी मन्त्री उपसभा
४२—उन्नाव, रायबरेली—श्री मुन्नालाल जी मन्त्री समाज
४३—हरदोई—श्री रणजीतसिंह जी (२) श्री रामेश्वरप्रसाद जी वर्क मुहिउद्दीनपुर
४४—सीतापुर—श्री गजाधर जी शर्मा
४५—लखीमपुर खेरी—श्री ओमप्रकाश जी आर्य पढ़िया (लखीमपुर)

मुख्य जनरल निरीक्षकों के नाम

इस प्रकार मनोनीत किये गये हैं—

इनको अधिकार होगा कि अपने-अपने क्षेत्र के निरीक्षकों को आदेश करें और स्वयम् भी उत्तर प्रदेश में भ्रमण कर सभा-समाज के संगठन को दृढ़ करने में सहयोग प्रदान करें और सभा के लिए धन संग्रह करें।

नाम सूची

१—श्री विश्वम्भरनाथ जी त्रिपाठी कानपुर
२—श्री तेजसिंह जी आर्य सहारनपुर
३—श्री रामचन्द्र जी वि० पो० मा० बदायू
४—श्री रामप्रसाद जी आर्य मैन्धू
५—श्री डा० सुरेशचन्द्र जी शास्त्री झांसी
६—श्री इन्द्र वर्मा जी रामनगर नैनीताल
७—श्री सूर्यदेव जी शर्मा मिर्जापुर
८—श्री वीरेन्द्रबहादुर सिंह जी लखीमपुर

आर्य महिला प्रचार मंडल की निरीक्षण-योजना

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य महिला प्रचार मण्डल की ओर से स्त्री आर्य समाजों एवं महिला आर्यसमाजों और आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा आर्यसमाजों के अन्तर्गत अनाथ बाल गृहों के निरीक्षणार्थ निम्नलिखित जिलों के लिए निम्न देवियों को निरीक्षक पद पर नियुक्त किया गया है। उनके पहुंचने पर महिला समाजें तथा कन्या पाठशालाएं, कालेज आदि के संचालकों को चाहिए कि निरीक्षण कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें, और मार्ग व्यय आदि दिया जाए।

सभा की ओर से उत्तर प्रदेश की मुख्य निरीक्षिका पद पर महिला प्रचार मंडल की अधिष्ठात्री श्री माता शकुन्तला देवी जी गोयल सभा उपप्रधाना मेरठ तथा सभा उपमन्त्री श्री माता विद्योत्तमावती जी आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर निवासी नियुक्त की गयी हैं। उनके पहुंचने पर स्वागतादि की व्यवस्था करें और सभा के लिए धन द्वारा सहायता की जाए।

१—देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर—श्री वेदवती जी विद्यालंकार मेरठ।

२—मेरठ, बुलन्दशहर—श्री सावित्री देवी जी लालकुर्ती मेरठ।

३—आगरा, अलीगढ़, मथुरा, एटा, मैनपुरी—श्री सरलादेवी जी शास्त्री अलीगढ़।

४—बरेली, बदायू, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत, शाहजहांपुर, नैनीताल, अल्मोड़ा, गढ़वाल—हेमलता देवी जी अलीगढ़।

५—इलाहाबाद, कानपुर, फतेहपुर, इटावा, फर्रुखाबाद, मिर्जापुर—श्री विद्यावती जी शुक्ल कानपुर।

६—गोरखपुर देवरिया, बस्ती, आजमगढ़ फैजाबाद, बाराबंकी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, गोंडा, बहराइच—श्री डा० प्रकाशवती जी लखनऊ।

७—लखनऊ उन्नाव, हरदोई, सीतापुर, खेरी रायबरेली—श्री सुशीला देवी जी चौहरी लखीमपुर, श्री सन्तोषवती जी लखनऊ।

८—झांसी, जालौन, बांदा, हमीरपुर, महारानीपुर—श्री कु० कृष्णा कपूर जी झांसी।

क्या हम आशा करें ?

सभा की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। सभा के समस्त कार्य बिना धन के रुके पड़े हैं। क्या हम अपने आर्य भाइयों और माताओं से आशा करें जैसा कि पिछले आर्यमित्र अंक में प्रकाशित किया जा चुका है कि प्रत्येक समाज का वेद प्रचार सप्ताह में १) प्रदान कर वेद प्रचार निधि को पुष्ट बनाने में सहयोग देंगे ?

हम बारम्बार आप सबसे यह अनुरोध करते हैं कि जिस पुनीत सप्ताह को आप इतने उत्साह के साथ मना रहे हैं, वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए उसी उत्साह के साथ १)-१) प्रति व्यक्ति अवश्यमेव प्रदान करें। यह अनुरोध हमारा ८ सितम्बर तक बराबर प्रकाशित होता रहेगा। इन शब्दों के साथ हम पुनः आशा और विश्वास करते हैं कि आर्यसमाज के सदस्य तथा आर्य जनता अधिक से अधिक धन वेद प्रचारार्थ प्रदान कर हमें कार्य करने का अवसर देंगे।

—मन्त्री
आर्य प्र० सभा उ० प्र०

सभा की सूचनाएं

शंप्रना कीजिये

इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह ३० अगस्त से ८ सितम्बर तक मनाया जा रहा है। प्रदेश की सभी समाजो से अनुरोध है कि उक्त तिथियो मे यदि मन चाहे उपदेशक प्रचारक सभा से नही मिल पाते हैं तो वह अगस्त और सितम्बर मे किन्ही भी तिथियो में मन चाहे महानुभावो को बुलाकर सप्ताह मनाने की व्यवस्था करें, परन्तु इसके लिए तथा ३० से ८ सितम्बर की तिथियो के लिये पत्र लिखने की शीघ्र कृपा करें ताकि पूर्व से व्यवस्था की जा सके।

भ्रमण पुरोगम

सभा के सहायक कोषाध्यक्ष श्री प० विक्रमादित्य वसन्त जी लखनऊ निवासी १३, १४, १५ अगस्त ६६ को गोंडा तथा जिले के कतिपय समाजो में निरीक्षणार्थ एव धन सग्रहार्थ पहुच रहे हैं।

इसी प्रकार श्री वसन्त जी ३० अगस्त से ८ सितम्बर १९६६ मे मीरजापुर आर्यसमाज मे वेद की कथा के लिए पहुच रहे हैं। समयानुसार मिर्जापुर जिले के समाजो मे भ्रमण भी करेंगे। अत आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से प्रार्थना है कि उपयुक्त श्री सहायक कोषाध्यक्ष जी के पहुचने पर स्वागत आदि करें और सभा प्राप्तव्य धन दशांश, सूदकोटि, रुपया फण्ड, वेद प्रचार एव सभा भवन आदि के लिए धन से सहायता प्रदान कर अनुगृहीत करेंगे।

—चन्द्रदत्त तिवारी सभा मंत्री

कथाओं का आयोजन कीजिए

बरसात का समय है अत प्रत्येक समाज का कर्तव्य है कि वह अपने यहाँ सुयोग्य एव प्रकाण्ड विद्वानों को आमन्त्रित कर कथा का आयोजन करें। यह आवश्यक नहीं है कि वेद प्रचार सप्ताह मे ही केवल कथा सुनी जाये। सप्ताह से पूर्व और पश्चात् में भी कथाओ का कार्यक्रम बनाकर वैदिक धर्म का प्रचार एव प्रसार कर अपने कर्तव्य का पालन करें। जो समाजें प्रचारको (भजनोपदेशको) को ही बुलाना चाहे, वह शीघ्र लिखने की कृपा करें-ताकि व्यवस्था की जा सके।

—अधि० उपदेश विभाग

प्रचार योजना वर्ष १९६६-६७

क्रम स०	नाम प्रचारक	नाम मडलपति	जिला जिनमे प्रचार करना है
१	श्री रामस्वरूप जी आर्य मु०	श्री मक्खनलाल जी कोटद्वार	गढवाल तथा टहरी
२	श्री मजराजसिह जी	श्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री, झांसी	झांसी, बांदा, हमीरपुर जालौन
३	श्री धर्मराजसिह जी	श्री रामावतार जी, जौनपुर	जौनपुर प्रतापगढ बाराबंकी सुल्तानपुर, फैजाबाद
४	श्री धर्मदत्त जी आनन्द	श्री उमेशचन्द्र जी, हल्द्वानी	कुमायूं क्षेत्र-नैनीताल, अलमोडा, पिथौरागढ
५	श्री वेदपालसिंह जी	श्री आशाराम जी पाण्डेय	बलिया, बनारस मिर्जापुर गाजीपुर आजमगढ
६	श्री क्षेमचन्द्र जी	श्री प० विद्याधर जी शर्मा	कानपुर, उन्नाव फतेहपुर, रायबरेली
७	श्री बालकृष्ण जी धनुधर	श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, गोंडा, बहराइच
८	श्री रामनिवास जी	जिलोपसभा इलाहाबाद	इलाहाबाद
९	श्री रघुवरदत्त जी शर्मा	श्री मुरारीलाल जी चमकनी	हरदोई शाहजहापुर, सीतापुर, लखीमपुर
१०	श्री ओमप्रकाश जी निर्द्वन्द्व	श्री विशुद्धानन्द जी शास्त्री	बदायू, एटा फर्रुखाबाद
११	श्री खड़गपालसिह जी	श्री चौ०नेत्रसिह जी सहारनपुर	सहारनपुर मु० नगर देहरादून
१२	श्री प्रकाशवीर जी शर्मा	श्री ईश्वरदयालु जी आर्य	बिजनौर मुरादाबाद
१३	श्री जयपालसिह जी	श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा	अलीगढ मथुरा, आगरा
१४	श्री विनयचन्द्र जी	श्री सत्येन्द्रबन्धु जी	बुलन्दशहर, अलीगढ
१५	श्री कमलदेव जी शर्मा	श्री रमेशचन्द्र जी एडवाकेट	मैनपुरी, इटावा
१६	श्री मुरलीधर जी	श्री बा० चन्द्रनारायण जी	बरेली, रामपुर, पीलीभीत

बरेली. पीलीभीत जिलों में प्रचार व्यवस्था

सभा ने बरेली, पीलीभीत, रामपुर, जिले की समाजो में प्रचारार्थ ब्रह्मचारी श्री मुरलीधर जी भजनोपदेशक की नियुक्ति की है। समाजो को चाहिये कि उपरोक्त प्रचारक जी के पहुचने पर प्रचार की व्यवस्था करें तथा वेद प्रचारार्थ धन प्रदान करें।

मथुरा, आगरा, मैंनपुरी जिले में प्रचार व्यवस्था

उपरोक्त जिलो की समाजो मे प्रचार निमित्त श्री कमलदेवजी शर्मा की नियुक्ति सभा ने की है, हम आशा करते हैं कि उपरोक्त भजनोपदेशक के पहुचने पर समाज प्रचार की व्यवस्था कर वेद प्रचारार्थ धन प्रदान करेगी।

×

[illegible] और वैदिक आदर्श

(पृष्ठ ४ का शेष)

[illegible] इतनी ही है कि हमारे [illegible] से अव्यवस्था करने वालों को [illegible] ही दण्ड दिया जाता है, पदच्युत कर दिया जाता है। पर सृष्टि रूपी [illegible] ऐसी संस्था है जहा का मुखिया इतना दयालु और न्यायकारी है कि अव्यवस्था करने वालों को तत्काल ही [illegible] से पदच्युत नहीं करता है [illegible] धीरे धीरे उसकी बुद्धि भ्रष्ट होकर [illegible] ही अच्छन्न करा के ऐसा समझकर [illegible] को मिल जाता है जिससे व्यवस्था भग करने वाला—चाहे वह व्यक्ति हो, या समाज देश हो या राष्ट्र—[illegible] नष्ट हो जाता है।

[illegible] सृष्टि के उस अध्यक्ष की व्यवस्था भग करने से हम भारतीयों [illegible] दुर्दशा हो गई है। हमने [illegible] को भुला दिया है, महापाप [illegible] है। अब हम समूल ही नष्ट हो [illegible] है। कभी हम वेदवेत्ता थे अब मूर्ख हैं, गुरु थे अब शिष्य हैं, दानी थे अब भिक्षुक हैं, सम्पन्न थे अब दरिद्र हैं। [illegible] हमारे दैनिक जीवन के लिये भग-[illegible] द्वारा प्रदत्त मुख्य आदेश हैं। वेद [illegible] अवहेलना करके हम कहा बच [illegible] हैं? इसलिये मनुष्य मात्र को, [illegible] संसार को, विशेषकर भारतीयों को [illegible] उन सब में विशेषकर वेद को [illegible] करा के जीवन आधार मानने [illegible] हम आर्य समाजियों को तो उन [illegible] ध्यान देना आवश्यक है। [illegible] हम आत्म निरीक्षण करने के [illegible] अपने कर्मों को देखने का प्रयत्न [illegible] जब तक मनुष्य आत्म-निरीक्षण नहीं करता, अपनी न्यूनताओं को नहीं [illegible] तब तक उसका सुधार कदापि [illegible] हो सकता।

[illegible] हम आज ज्योतिष से अनभिज्ञ [illegible] हैं। अनार्ष ग्रन्थों के अध्ययन [illegible] पदाहत बुद्धि होने के कारण केवल [illegible] शिक्षा को धारण करने की ओर ही अग्रसर रहते हैं। हमारा मन स्थिर नहीं है। हम धन की पिपासा से सदैव पीडित रहते हैं—ससार में जो भी प्रवाह चले उसमें बह जाने वाले हैं चाहे वह कितना ही वैदिक आदर्शों के विप-[illegible] हो—केवल धन प्राप्ति के उद्देश से अपनी अन्तरात्मा के विपरीत भी जिस किसी कार्य को करने में तत्पर हो जाते हैं। भौतिकता में इतने लीन हो गये हैं कि वैदिक कर्म हमें इस समय विष के समान प्रतीत हो रहे हैं। हम अपनी अन्तरात्मा को धोखा दे देते हैं कि पुराना जमाना गया अब नवीनता का प्रारम्भ है। आज हमारा युग धर्म ही वास्तविक कल्याणकारी कर्तव्य है। इत्यादि—

परन्तु जब इन कर्मों के परिणाम से दुख मिलता है तब हम वैदिक आदर्शों उपदेशों को आधुनिक युग आदर्शों के साथ समन्वय करने की धृष्टता करते हैं और चाहते हैं कि परिणाम वही निकलें जो शुद्ध वैदिक धर्म के आदर्शों के पालने से निकलते हैं? ऐसा कैसे हो सकता है? उदाहरणार्थ प्रथम शिक्षा को ही लीजिये, हमारी आज कन्या पाठशालाएं व आर्य स्कूल कालेज नाम मात्र के तो आर्य हैं परन्तु उनमें न प्राचीन आदर्श के अनुसार ब्रह्मचर्य की शिक्षा, न उसका पालन। त्याग तपस्या और गुरु-शिष्य का सम्बन्ध गुरु का शिष्य के प्रति वात्सल्य और शिष्यों का गुरुओं के प्रति श्रद्धा, विश्वास कुछ भी नहीं है। जैसे अन्य सरकारी शिक्षा संस्थायें हैं वैसे यह भी हैं। पढ़ने पढ़ाने वालों में हवन सन्ध्या करने में, कराने में विश्वास नहीं श्रद्धा नहीं। अधिकांश अग्निहोत्र को तो व्यर्थ धन का नाश समझते हैं। वेदों के नाम भी अधिकांश को मालूम नहीं होते सिद्धान्तों का ज्ञान और उन पर चलना तो दूर की बात है।

आधुनिक फैशन सिनेमा, [illegible] व्यास और लोभ लिप्सा ही आदर्श है। जीवन का मूल्य ही नहीं है। शिक्षक सच्चे ब्राह्मण ही नहीं हैं, विद्या दान भी वैश्य वृत्ति बन गया है। दूसरी तरफ गृहस्थी को देखें तो गृहस्थी लोग कमाई की तरफ इतने संलग्न हैं कि 'घर' तो कोई मूल्य ही नहीं रखता। पुरुष अपने कार्यालय में जा रहे हैं तो पत्नी अपनी रोजी कमाने को किसी शिक्षा संस्था या फैक्ट्री आदि में जा रही है। बच्चे अब पढ़ने योग्य अपने-अपने स्कूलों में हैं। घर में ताला बन्द है। जीवन के अनि-वार्य कार्य—स्नान, भोजन आदि तो जैसे तैसे कर ही लिए जाते हैं पर जीवन एक मशीन की तरह व्यतीत होता है। बहुत से आर्य परिवारों में भी यही हाल है। पच महायज्ञ तो कहाँ रहे घर में कोई अतिथि, सम्बन्धी भी आ जाय तो घर में ताला बन्द ही पायेगा। हा शाम को दिन भर की थकान दूर करने बच्चों के मनोरंजन के लिए सिनेमा टाकीज तो अवश्य देखी जाती है। प्रात साय किसी भी समय सन्ध्या, हवन, बच्चों को बैठा साथ में, करना कराना, उन्हें वैदिक सिद्धान्तों से जानकारी कराने के लिए स्वाध्याय प्रवचन करें तो समय कहा है? तब बच्चे आर्यसमाजी बनें कैसे? भावी पीढ़ी में आर्यसमाज स्थायी हो कैसे? आप कहेंगे कि आज कल को आर्थिक स्थिति में पति पत्नी दोनों के कमाने से गुजारा नहीं होता तब हम गृहस्थ क्या भूखों मर जाय। ठीक है। उपदेशक और पुरोहित भी कम वेतन के कारण धनोपार्जन के अन्य कई तरीके निकलते हैं जिससे जनता की श्रद्धा का लोप हो जाता है। अ[illegible] समाज के सालाना हक अधिवेशनों में जाय तो वहा यज्ञ उपदेश तो सून ल पर वहा पर भी प्रधान, मन्त्री पदों के लिए झगड़ परस्पर ईर्ष्या द्वेष के दृश्य दीखते हैं तब हृदय श्रद्धा भक्ति से परिपूर्ण हो वैदिक आदर्शों की ओर मुक ऐसी प्रेरणा नहीं होती।

हमारे वानप्रस्थ आश्रम जगह जगह हैं। उनके वानप्रस्थी भाई और बहन भी हैं। कई त्याग वृत्ति वाले भी हैं, कई वहा पर भी घर के आराम चाहते हैं सम्भव होना है। पर प्राय वृद्ध लोग अपने घरों को और गृहस्थ के धन्धों को छोड़ने के लिए तयार नहीं हैं जबकि वैदिक सिद्धान्त के अनुसार हर एक व्यक्ति को—जब वह ५० वर्ष से ऊपर हो जाय और उसके पुत्र पौत्र हो जावें तो उनको घर के सुखों को छोड़कर त्याग वृत्ति से एकान्त में जाकर अन्तिम उन्नति के साथ साथ परोपकार में भी लग जाना ही चाहिए। यह उनके लिए अनिवार्य वेद की आज्ञा है। पर कौन इस पर ध्यान देता है? प्राय योग्य व्यक्ति पेन्शन पा लेने पर भी कोठियों और घरों का मोह नहीं छोड सकते। ऐश आराम को छोड़ त्याग का जीवन नहीं बिता सकते हैं। बल्कि रिटायर होने पर और भी अधिक धनोपार्जन के धन्धों में फंसे रहते हैं, मृत्यु पर्यन्त सासारिक धन्धों में फंसे रहते हैं।

सन्यास आश्रम तो है भी कठिन और सबके लिए है भी नहीं। केवल है उन्हीं वृद्ध ज्ञानी पुरुषों के लिए जो मोह आदि आवरण, पक्षपात छोड़कर विरक्त होकर सब पृथिवी में परोपका-रार्थ विचरें, क्योंकि 'सन्यास में दृढ वैराग्य और यथार्थ ज्ञान का होना ही मुख्य कारण है।' पुत्रादि के मोह, वित्तादि पदार्थों का मोह और लोकस्थ प्रतिष्ठा की इच्छा से मन को हटाकर परमात्मा में आत्मा को दृढ करके जो जिज्ञाचरण करते हैं वही सबको सरोपर देख देकर अभय दान देते हैं। वेद कहते हैं—

ओ३म् यद्देवा यतयो यथा भुवनान्य-पिन्वत। अत्रा समुद्र आगूळ्हमा सूर्यमज-भर्तन॥ ऋ म १० । सू ७२ । म ७

हे विद्वान् सन्यासी लोगो! तुम जैसे इस आकाश में पुरुषार्थ स्वय प्रकाश स्वरूप, सूर्यादि का प्रकाशक परमात्मा है उसको भ्रम में अपने आत्मा में धारण करो और आनन्दित होओ, वैसे ही जो सब भुवनस्थ गृहस्थादि मनुष्य हैं [illegible] विद्या और उपदेश से सयुक्त किया करो यह तुम्हारा परम धर्म है इस प्रकार चारो आश्रमों के कर्तव्य को वेद द्वारा भगवान ने निर्धा-रित कर के हमको प्रदान किया है। शक है कि हम इन पर ध्यान नहीं देकर अनेक प्रकार के दुख उठा रहे हैं।

हम प्रकार स्वतन्त्रता की पुण्य बेला में हम अपना आत्म निरीक्षण करना चाहिये।

बम्बई में गोहत्या निरोध

बम्बई ५ अगस्त। बम्बई नगर निगम ने आज सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकार किया कि समस्त बम्बई की सीमा में गोवध बन्द की जाय।

निगम को यह प्रस्ताव ३ मई १९५४ को दिया गया था पर विचार उस पर आज हुआ। प्रस्तावक श्री पी० बी० मेहता और अनुमोदक श्री एम० डी० चोकसी अब [illegible] हैं।

देश की सभी [illegible] में इस प्रस्ताव का अनुकरण करना चाहिए और देश में गोहत्या शीघ्र से शीघ्र बन्द होनी चाहिए।

—विक्रमादित्य वसन्त अधिष्ठाता गोकृष्यादि [illegible] विभाग आर्य प्र० सभा उ० प्र०

लखनऊ में पारिवारिक सत्संग

२१ जुलाई को प्रातःकाल श्री मुकुन्दराज जी सोबती के निवास स्थान पर (४१ सी) आर०पी०एस०ओ० कालोनी में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें वहां के निवासियों के अतिरिक्त चन्द्रनगर व आलमबाग आर्य समाजों के सदस्यों ने भी भाग लिया। श्री कृष्णबलदेव जी प्रधान जिला सभा लखनऊ भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

वैदिक सत्संग में श्री विक्रमादित्य जी वसन्त मन्त्री जिलोपसभा लखनऊ का वेदोपदेश हुआ जिसमें उन्होंने वेद मन्त्रों की प्रार्थना शब्दों पर प्रकाश डालते हुए उन मन्त्रों के आधार पर परमात्मा से सुमति को प्राप्त कराने वाले तथ्यों का विधिवत् विवेचन किया। एक सौ से अधिक नर नारियों ने इस आयोजन से लाभ उठाया।

लाजपत नगर (चौक) लखनऊ

बृहस्पतिवार को ८ बजे से ९ बजे तक श्री तिलकराज जी उपमन्त्री चौक आर्यसमाज के निवास स्थान पर वैदिक सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें लाजपत नगर (चौक) के निवासियों ने भाग लिया। श्री राघव जी टकारा प्रचार समिति के भजनों के पश्चात् जिलोपसभा लखनऊ के मन्त्री श्री विक्रमादित्य वसन्त का ऋग्वेद के पाप विमोचन सूक्त पर ओजस्वी व्याख्यान हुआ, जिसमें उन्होंने प्रथम मन्त्र (ऋ १ ४२ १) के आधार पर बताया कि पाप क्या है पाप की उत्पत्ति कैसे होती है और सर्वव्यापक एवं सर्व अन्तर्यामी परमात्मा को अपने सम्मुख रखने से किस प्रकार मनुष्य पापों से बच सकता है तथा परमात्मा किस भांति साधक को पाप विमुक्त कर उसकी आत्मिक शक्ति को पुष्ट करते हुए उसे सन्मार्ग पर चलाता है।

श्री वसन्त जी के वेदोपदेश लखनऊ नगर की आर्यसमाजों व आर्य परिवारों में सप्ताह में दो बार अर्थात् रविवार और गुरुवार को नियमित रूप से होते हैं। आप पहले सप्ताह ऋग्वेद दूसरे और तीसरे सप्ताह में सामवेद और चौथे सप्ताह में अथर्व वेद के मन्त्रों की व्याख्या करते हैं। पांचवें रविवार या बृहस्पतिवार को व्याख्या के लिए उस वेद मन्त्र को लेते हैं जो एक से अधिक वेद में आया हो। वसन्त जी इस नियम का पालन सन १९५८ से कर रहे हैं और अब तक लगभग ८०० वेद मन्त्रों की व्याख्या कर चुके हैं।

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७००) का दान

श्री भवानीलाल गजूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलरत्न श्रीमान् तिलोदेव भवानीलाल शर्मा ककुहास के पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान [illegible] (बिहार) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हित ७०००) [illegible] राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्न नियमानुसार भाद्रपद सं० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस धन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा उसे उत्तरप्रदेशीय प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब असहाय पढ़ने वाले बालक व बालिकाओं को [illegible] में दे दिया करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से एक फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु मय, त्वष्टादि [illegible] प० जा० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ अधिकतर सूचनायें प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को मित्र पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.९६०

वर्ष० २१ अंक १८८८ हि०अगस्त ह १३
(दिनांक १८ अगस्त सन् १९६६)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60

पता—,आर्य्यमित्र'
दूरभाष्य २२९९१ तार "आर्य्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

अखिल भारतीय हिन्दी टाइपिंग और आशुलिपि प्रतियोगिता

नई दिल्ली २१ जुलाई। हिन्दी टंकलिपिकों और हिन्दी आशुलिपिकों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी टाइपिंग और आशुलिपि प्रतियोगिताओं का आयोजन ९ तथा १० अक्तूबर, १९६६ को करने का निश्चय किया है। इनमें केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के कर्मचारियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति भी भाग ले सकेंगे।

सफल प्रतियोगियों को आकर्षक नकद पुरस्कारों के अतिरिक्त पदक, शील्ड तथा प्रमाणपत्र आदि भी दिए जायेंगे। अहिन्दी भाषी प्रतियोगियों के लिए विशिष्ट पुरस्कार होंगे। अखिल भारतीय पुरस्कारों के अतिरिक्त राज्य-राज्य और केन्द्र-केन्द्र के अनुसार भी पुरस्कार होंगे।

आशुलिपि प्रतियोगिता के लिए दिल्ली, लखनऊ, भोपाल, जयपुर, पटना, बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास में केन्द्र होंगे। टाइपिंग प्रतियोगिता देश के विभिन्न भागों में लगभग चालीस नगरों में होगी।

प्रतियोगिता के लिए परिषद टाइपराइटरों का प्रबन्ध करेगी पर प्रतियोगी यदि चाहें तो अपने-अपने टाइपराइटर ला सकते हैं। इन प्रतियोगिताओं के लिए नियमों की जानकारी परिषद के एल० आई० ६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली—३ स्थित कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

इन प्रतियोगिताओं का आयोजन परिषद पिछले कई वर्षों से कर रही है। गत वर्ष टाइपराइटिंग प्रतियोगिता देश के ३२ नगरों में हुई थी और उसमें पाँच सौ प्रतियोगियों ने भाग लिया था। उनमें कितने ही उच्च पुरस्कार अहिन्दी भाषी प्रतियोगियों ने प्राप्त किए थे। इस बार प्रतियोगियों की संख्या पहले से अधिक रहने की आशा है। यह भी आशा की जाती है कि इस वर्ष प्रतियोगी और अच्छी तैयारी से भाग लेंगे और अधिक ऊँची गति का रिकार्ड स्थापित करेंगे।

—रघुनाथ सहाय कार्यालय मन्त्री
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
नई दिल्ली

(पृष्ठ २ का शेष)

सायंकाल को बरेली की श्मशान भूमि में सहस्रों नर-नारियों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार हुआ। डा० श्यामस्वरूप ने पितृवत श्रद्धा से शव का दाह संस्कार किया। उस स्थान पर एक वेदी बना दी गई है उस पर स्वामी जी के जीवन की मुख्य मुख्य घटनायें अंकित हैं हिन्दू सोशल सर्विस ट्रस्ट प्रति वर्ष श्मशान भूमि में स्वामी जी की स्मृति में एक आध्यात्मिक प्रवचन कराता है।

हैदराबाद सत्याग्रह में जब स्वामी जी को कारागार में बन्द कर दिया गया तो वीर लाखनसिंह एक सौ साथियों का जत्था लेकर बरेली से गये। प० सत्यपाल और प० बिहारीलाल शास्त्री ने धन एकत्रित करने और जत्थों को संगठित करने का काम किया।

जिस दिन बिहार में भूकम्प आया था उस दिन स्वामी जी आर्यसमाज बिहारीपुर में ठहरे थे। मैं दोपहर को उनके पास गया तो बिस्तर बाँध रहे थे। मैंने कहा "स्वामी जी कहाँ को"। बोले—'दिल घबरा रहा है कहीं घोर विध्वंस होने वाला है।" यह कहकर तेजी से इधर-उधर टहलने लगे। मैं आंगन में लिवा लाया। थोड़ी देर में भूकम्प आया। कई झटके लगे तीसरे दिन समाचार पत्रों में भयंकर घटनाओं का वर्णन पढ़कर रो उठे। तुरन्त सार्वदेशिक सभा के कार्यालय को तार द्वारा प्रबन्ध सम्बन्धी आदेश दिये और दोपहर के तूफान से बिहार की सेवा के लिए चल दिये।

आवश्यकता

एक हायर सेकेण्डरी में ११ वीं कक्षा में पढ़ रही गृह कार्य में दक्ष सिलाई बुनाई से [illegible] १७ वर्षीय गौर वर्ण कन्या के लिए ग्रेजुएट या इंटर आर्यसमाजी कान्यकुब्ज ब्राह्मण व्यवसाय सम्पन्न वर की शीघ्र आवश्यकता है। दान-दहेज, ठहरौनी मिथ्या रूढ़ियों के उपासक व्यक्ति पत्र-व्यवहार करने का कष्ट न करें। इच्छुक लिखें—

पता—वैद्य शिवदत्त शर्मा आर्य
ग्रा० भीखनाथ पो० मालसी
जि०—शाहजहाँपुर म० प्र०
वाया भूपाल

सिपाह में आर्यसमाज की स्थापना

प० धर्मवीर जी आर्य ब्रह्मचारी व्याख्यान भूषण के प्रबल प्रचार करके सिपाह ग्राम में आर्यसमाज स्थापित कर दिया।

पदाधिकारियों का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ। प्रधान श्री सेठ कृष्णलाल जी। मन्त्री श्री स्वामी नाथ जी, उपमन्त्री श्री श्याम सुन्दर जी कोषाध्यक्ष श्री रजापत मल्ल जी चुने गये। सिपाह में आर्यसमाज भवन तथा यज्ञशाला बनाने का भी निश्चय हुआ।

निवेदन

किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय व मनीआर्डर भेजते समय ग्राहक अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें।—व्यवस्थापक आर्यमित्र,लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आत्मारूप प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

स्वामी दयानन्द और ज्योतिष

(ले०—श्री [illegible]नारायण जी एडवोकेट बरेली)

यों तो स्वामी दयानन्द जी ज्योतिष का विरोधी माना जाता है। आर्यसमाज के उपदेशक प्राय यह कहते हैं कि स्वामी जी गणित ज्योतिष को मानते थे, फलित को नहीं। गणित का कुछ फल भी निकलना चाहिये। मैं तो यह समझता हू कि ज्योतिष को व्यवसाय बनाकर यजमानों से धन ऐंठने के वे विरोधी थे। इसीलिये वे इस कुत्सित ज्योतिष के विरोधी थे।

स्वामी जी स्वयम् बड़े ज्योतिषी थे। उन्होंने कई भविष्यवाणियां की जो अक्षरश: सत्य निकलीं। अपने सम्बन्ध में भी उन्होंने कहा था कि १८८३ की दीपावली मुझे देखने को नहीं मिलेगी। कई युवकों की जन्म पत्रियां देखकर उनकी आयु भी बता दी कि तुम अमुक समय मर जाओगे। ऐसा ही हुआ। एक नवयुवक को उन्होंने तीस वर्ष तक विवाह न करने की चेतावनी भी दी। घर वालों के दबाव में आकर उसने विवाह कर लिया, तीसरे वर्ष में उसका देहान्त हो गया। अस्तु—

आज मैं एक विशिष्ट आर्य परिवार से सम्बन्धित घटना का वर्णन कर रहा हू।

बदायू के मुंशी रामजी मुख्तार के पिता जी ने स्वामी जी को भोजन का निमन्त्रण दिया। स्वामी जी ने यह समझकर कि यह कायस्थ हैं—मद्य मदिरा का सेवन करते होंगे मना कर दिया। बाद को यह जानकर कि उनके यहाँ प्याज भी नहीं खाया जाता, वे उनके यहाँ गये, भोजन किया और उपदेश दिया।

कई दिन बाद वे फिर भो सेवा में उपस्थित हुये। स्वामी जी को दही बड़े बहुत रुचिकर थे, कहा एक दिन दही बड़े बनवाकर लाओ और सबको खिलाओ। मुख्तार साहब के पिता जी ने कहा "बहू के लड़की हुई है सौरी से निवृत्त हो जाने पर आज्ञा का पालन होगा।"

स्वामी जी ने मुख्तार साहब की ओर देखकर (जो उस समय १८ वर्ष के थे) कहा—"अरे इस छोकरे के छोकरी हुई है।" फिर अकस्मात पूछ बैठे—"किस समय हुई।" उत्तर मिलने पर स्लेट जो सदा पास रहती थी कुछ हिसाब लगाकर कहा कि "किसी बड़े अधिकारी को ब्याही जायेगी और बड़े विद्वान के घर में ब्याही जायेगी।"

मुख्तार साहब के पिता ने पूछा—'महाराज सन्तान का योग क्या है।" हिसाब लगाकर कहा— एक पुत्र एक पुत्री।" तब उन्होने पूछा 'महाराज आयु कितनी है'—कहा- 'गिनती गिनो। उन्होने १ २ से गिनती गिनना आरम्भ किया जब २२ कहा तभी स्वामी जी अन्दर कमरे मे चले गये और वहाँ से कोई पुस्तक लेकर आये और श्रोताओ को पढ़कर सुनाने लगे। गिनती गिनना बन्द हो चुका था।

अब फल देखिये।

बड़े अधिकारी को ब्याही जायेगी, उनके पति श्री विष्णुदयाल सेठ डिप्टी एकाउन्टेंट जनरल हुये।

बड़े विद्वान के घर जायेगी, अथर्ववेद भाष्यकार प० क्षेमकरणदास के पुत्र श्री विष्णुदयाल को ब्याही गई।

सन्तान—लड़का श्री शंकरदयाल सेठ बी० एस् सी० जयपुर में स्टेट इञ्जीनियर हुये।

लड़की लक्ष्मीबाई श्री श्यामबिहारी लाल ऐडवोकेट चन्दौसी को ब्याही हैं।

आयु—गिनती २२ के आगे नहीं चली। बाईस वर्ष पूर्ण करके वे स्वर्गवास कर गईं।

यह घटना मैंने श्री रामस्वामी (श्री रामजी लाल मुख्तार) से सुनी जब वे सन्यास ले चुके थे।

●

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में नवीन प्रवेश

प्रसिद्ध आर्य शिक्षा संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का शिक्षा सत्र १ जुलाई से आरम्भ हो गया है। ६ से १० वर्ष की आयु के बालक विद्यालय विभाग में प्रविष्ट होंगे। महाविद्यालय विभाग में पठित कक्षा ११-१२ में संस्कृत लेकर मैट्रिक (शिरोमणि कक्षा १३-१४ में संस्कृत इन्टर व मध्यमा प्रविष्ट हो सकते हैं। शीघ्र पत्र-व्यवहार करें। —उमेशचन्द्र स्नातक उपमन्त्री शिक्षा सभा गुरुकुल वि.वि. वृन्दावन

'दून' में मून की झलक

—मदनमोहन एडवोकेट, मोंठ झांसी

यस्य भूमि: प्रमा अन्तरिक्षमतोदरम्।
दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ अ. १०।७।३२

जिसकी भूमि पाद है, अन्तरिक्ष उदर है, द्युलोक जिसका सिर है उस ज्येष्ठ ब्रह्म के लिए मैं विनम्र अभिवादन करता हू अज्ञ व्यक्तियों के बोधार्थ इस अलंकृत भाषा प्रयोग के प्रलोभन से मैं भी उस विराट स्वरूप के दर्शनार्थ चिर अतीत की आन्तरिक अभिलाषाओं को अभिलषित अन्तिम लक्ष्य प्राप्ति का दर्शन स्पर्शन कराने की, आसन झाड़े, बोरी बिस्तर बांधकर सार्वदेशिक देहरादून अधिवेशन की पुण्य तीर्थ यात्रा पर साहस करके निकल ही पड़ा। गत कई वर्षों से शारीरिक एवं आर्थिक रुग्णतायें मेरी उत्साहपूर्ण उत्ताल तरंगों को विशाल सागर के अवृत्त में विलीन कर रही थी।

प्रभु प्रदत्त प्राकृतिक सौन्दर्य का उपासक होने के नाते अनन्त के अन्तर्द्वन्द वृत्त के वैभव्य विकंपित परमाणु के समान, उस महान सृजन कर्ता के सान्निध्य की महत्त्वाकांक्षा लेकर अधिवेशन मे पहुचने के पूर्व, श्री बद्रीनारायण की कथित विशालता का अवलोकन करता अविराम एक प्यासे पथिक की भांति पथ पर चलता रहा, धर्म के नाम पर अन्ध श्रद्धालु भक्तों को धक्का खाते देख बड़ी वेदना हुई। अपार ग्रामीण, निर्धन मूक जनसमूह बाहर धूप में पंक्तिबद्ध तप करने वालो का अतिक्रमण करके, प्रचुर राशि प्रदान कर्त्ताओं को पीछे के द्वार से मन्दिर के अन्दर मूर्ति अचेतन के दर्शनार्थ ले जाते हुए देखकर आश्चर्य का ठिकाना न रहा, आशाओ का पुञ्ज वैराग्य के ताप से मुरझाकर सूखने लगा। परन्तु हिमगिरि की गगनचुम्बी शृङ्खलाओ ने आनन्द की लहर से वेदना को विस्मृति में विलीन कर दिया। 'आर्यमित्र' मे प्रतिनिधियो के प्रति मसूरी आने का प्रेरणात्मक प्रलोभन पढ़ कर तत्पश्चात् मैं भी मसूरी पहुचा वहा प्राय चलती फिरती गुड़ियों फैशन के सैलान का साम्राज्य देखकर अवहेलना हुई परन्तु आर्यसमाज मसूरी के दैनिक प्रात सत्संग से पुन शान्ति का संचार हुआ और स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती का अमृतमय उपदेश सुना तो यकायक मेरे हृदय की टूटी वीणा से भी यह स्वर निकल पड़े—

"अध्यात्मसुधा से नित्य प्रात जो करत पिपासा पूरी।
धन्य धरा उस उच्च शिखर की, धन्य समाज मसूरी॥

अन्त मे देहरादून पहुच कर महादेवी विद्यालय के प्रांगण में, वेदपाठी विद्वानो के दर्शन कर जिनकी अमृतमय वाणी से सभी प्राणी कृतकृत्य होते हैं मैंने अपने को भी धन्य माना और चिर शान्ति का अनुभव किया फिर हरिद्वार होता हुआ महर्षि के अमर स्मारक मोहन आश्रम का दर्शन किया जिसमें स्थित पाखण्ड खण्डिनी पताका आज भी पोप-पाखण्ड को चुनौती देती हुई सत्य सनातन वेद धर्म के वास्तविक स्वरूप की निर्भीक प्रतीक बन कर शाश्वत सन्देश सुना रही है। इस प्रकार ऋषि के अपार उपकारो का स्मरण करता हुआ घर आया और यात्रा समाप्त की इसका संक्षिप्त विवरण अपनी अनुभूति की अभिव्यञ्जना करते हुए पद्य में अंकित किया है आशा है पाठकगण कुछ तो रसास्वादन अवश्य ही करेंगे।

सुना रहा हू सच्ची रोचक गाथा देहरादून की,
छोड़ अटरिया बांध कथरिया, चढ़ी पुटरिया धून की॥
प्रारम्भिक पर्वत की यात्रा, मत समझो भी छोटी,
चर चर चलते रहे दिवस पर, मिली न मन की रोटी।
लोक टीन से सस्ता सस्ता, चिपटे बाथ लगोटी,
करने को विश्राम शाम को, पहुचें पिन्डक कोठी।
अजब कहानी यहा पानी की, आटा लकड़ी नून की।
नहीं अन्त था यहीं सन्त, अभयकर शंकर स्वामी,
ख्याति प्राप्त जोशी मठ जिसका, है प्रतीक हृदयगामी।
नास्तिकता को नया मोड़ दे, बना वेद पति गामी,
वेष बदलकर विकृत बन गये, पर उसके अनुगामी।
बिन व्याख्या की [illegible] न रहे, परिभाषा के शून्य की—

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥३३

व्याख्यान—हे "जातवेद" परब्रह्म ! आप जातवेद हो उत्पन्न मात्र सब जगत् को जानने वाले हो, सर्वत्र प्राप्त हो । जो विद्वानों से ज्ञात सबमें विद्यमान (जात अर्थात् प्रादुर्भूत अनन्त ज्ञानवान हो इससे आपका नाम जातवेद है), उन आपके लिए धय, सोम, सुनवाम जितने सोम प्रिय गुण विशिष्टादि हमारे पदार्थ हैं, वे सब अर्पित है । सो आप हे कृपालो ! 'अरातीयत' दुष्ट शत्रु जो हम धर्मात्माओं का विरोधी उसके वेद' धनैश्वर्यादि का 'नि दहाति' नित्य दहन करो, जिससे वह दुष्टता को छोड़ के श्रेष्ठता को स्वीकार करे तथा 'नः' हमको 'दुर्गाणि, विश्वा' सम्पूर्ण दुःसह दुःखों से 'पर्षदति' पार करके आप नित्य सुख को प्राप्त करो । 'नावेव सिन्धुम्' जैसे अति कठिन नदी वा समुद्र से पार होने के लिये नौका होती है । 'दुरितात्यग्निः' वैसे ही हमको सब पापजनित अत्यन्त पीड़ाओं से पृथक् (भिन्न) करके संसार में और मुक्ति में ही परम सुख को शीघ्र प्राप्त करो ।

लखनऊ रविवार २१ अगस्त १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

अश्लीलता विरोधी आन्दोलन

आर्यसमाज जीवन के आदर्शों एवं सांस्कृतिक मान्यताओं के प्रचार एवं प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील रहा है । आर्यसमाज का सारा रचनात्मक कार्यक्रम आदर्श नागरिक निर्माण की दिशा में संलग्न है । इस दृष्टि से आर्य-समाज ने सदा ऐसा प्रयत्न किया है कि आदर्श ब्रह्मचारी तय्यार हों, आदर्श गृहस्थ बनें और आदर्श वानप्रस्थी एवं सन्यासी बनें । यह तभी हो सकता है जब समाज-शिक्षा एवं व्यवहार में सांस्कृतिक आदर्शों को मुख्यता दी जाय । आज हमारे देश में और सब चीजें बढ़ रही हैं, परन्तु चरित्रवान व्यक्तियों का अभाव बढ़ रहा है । इस के जहाँ अनेक भौतिक वादी कारण हैं वहाँ समाज में अश्लीलता का व्यापक प्रचार भी एक मुख्य कारण है ।

एक युग था जब वेश्या नृत्य शिष्टता का एक स्तर माना जाता था । शादी बरातों में वेश्या नृत्य कराना शान समझी जाती थी, परन्तु आर्यसमाज के व्यापक आन्दोलन ने इस कुप्रथा को समाप्त किया पर आज उसके स्थान पर लड़कों से नवयुवक टिवस्ट और भांगड़ा करते हुए कदम बढ़ाते चलते हैं । क्या कभी समाज ने इस असभ्य और अश्लील कुप्रथा के विरुद्ध आवाज उठायी है ? आवाज कौन उठावे ? हममें से अनेकों के परिवारों में ऐसे अवसर आते हैं और हम चुप रह जाते हैं और असभ्यता एवं स्वच्छन्दता का यह वातावरण और भी बढ़ा होता जा रहा है । क्या इसे रोकना हमारा कर्तव्य नहीं है ?

इसी प्रकार एक और प्रकार से अश्लीलता का प्रचार समाज में बढ़ रहा है । सिनेमा के गन्दे पोस्टर नगरों के प्रमुख स्थानों में चिपके हुए युवक समाज को अश्लीलता का सन्देश दे रहे हैं । सैन्सर बोर्ड के सदस्यों की तीखी निगाहों में भी श्लीलता अश्लीलता का विवेक अस्पष्ट है । उनको येनकेन प्रकारेण सन्तुष्ट कर गन्दे चलचित्र अपनी प्रशंसा पा रहे हैं । क्या समाज में इस अश्लीलता के विरुद्ध कोई चेतना है । दिन रात अपहरण और पलायन की घटनायें बढ़ रही हैं, पर समाज को तभी आघात लगता है जब घटनायें हो जाती हैं । क्या समाज में ऐसी चेतना उत्पन्न नहीं की जा सकती कि वह अश्लील चित्रों का बहिष्कार करे । कभी कभी छोटे मोटे प्रयास होते हैं परन्तु आवश्यकता है कि व्यापक स्तर पर कार्यवाही की जाये ।

इसी प्रकार संगीत और साहित्य के क्षेत्र में भी एक व्यापक अश्लील अभियान चल रहा है । सिनेमा संगीत का आकाशवाणी से जो व्यापक प्रचार हमारी सरकार करती है वह बहुत कुछ अश्लील संगीत के प्रचार में सहायक है । इसी प्रकार साहित्य में काम वासनाओं का उद्दीपन करके आज के साहित्यकार जो कदम बढ़ा रहे हैं उससे साहित्य पथ भ्रष्ट हो रहा है । एक समय था जब इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि साहित्य में से अश्लील अंशों को पृथक् कर दिया जाय परन्तु आज इस प्रकार का विवेक करने की आवश्यकता नहीं समझी जाती ।

दूसरे अश्लीलता के व्यापक प्रचार का यहां संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है हमारा अभिप्राय है कि समाज के बुद्धि वादी वर्ग इस समस्या पर गम्भीरता पूर्वक सोचें और निरोधात्मक कदम उठाया जाय ।

पिछले दिनों दिल्ली निगम के आदेशानुसार अश्लील पोस्टरों पर तार कोल फेरने की कार्यवाही की गई, इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा की ओर से अश्लीलता विरोधी कार्यवाही आरम्भ की गई है । इस कार्यवाही का समस्त आर्यजगत् को हार्दिक समर्थन करना चाहिये । यह कार्य केवल दिल्ली का ही नहीं है प्रत्येक नगर और स्थान में होना है तभी देश में अश्लीलता विरोधी वातावरण बन सकता है और समाज के लिए आदर्श मान्यतायें पुनः पनप सकती हैं हां यह आवश्यक है कि इसका आरम्भ प्रत्येक आर्य को अपने घर से करना होगा । हम जितने सक्रिय होंगे उतना समाज पर प्रभाव पड़ेगा क्या हम आदर्श पग उठाकर समाज का मार्गदर्शन कर सकेंगे ।

मद्यपान का समर्थन क्यों ?

भारत को विश्व शिरोमणि का जो गौरव प्राप्त था उसके पीछे यहां के उच्चादर्श ही मुख्य कारण थे तभी लोग गर्वपूर्वक कहते थे कि यहां से (भारत से) संसार के लोग 'स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः' वह चरित्र क्या था जिसका अनुसरण दूसरे करते थे उसके सम्बन्ध में यह कथन पर्याप्त है—

न मे स्तेनो जनपदे,
न कदर्यो न मद्यपः ।

इस संक्षिप्त कथन में राजा अश्व-पति सगर्व कहते हैं कि मेरे राज्य में कोई शराबी नहीं है । क्या आज भारत का कोई शासक इस प्रकार का गर्व कर सकता है । आज तो अर्थशास्त्र के नाम पर शराब की बिक्री को प्रोत्साहन मिल रहा है । हजारों के ठेके लाखों तक पहुंच रहे हैं । भौतिक दृष्टिकोण के साथ-साथ शराब का प्रचार ऐसे बढ़ रहा है जैसे सोडावाटर का प्रचार । समाचार पत्र लोक शिक्षा के उत्तम साधन हैं परन्तु शराबों के विज्ञापन की आय के लोभ में वे भी फँस जाते हैं । यहीं तक नहीं कि शराब की बुराई को दूर करने वालों का समाज में आदर बढ़ाया जाय वरन् इसके विपरीत शराब के प्रचार के लिये संगठन बनाये जा रहे हैं । अभी पिछले दिनों दिल्ली के कुछ शराबियों ने मद्य प्रचार के लिये एक संगठन बनाया है जो मद्य-सेवियों के हितों की रक्षा करेगा ।

हम नहीं समझते इस प्रकार के संगठन को भारत की सरकार कैसे सहन कर रही है । क्या नन्दा जी ऐसे संगठनों को भारतीय संविधान के मद्यनिषेध सम्बन्धी निर्देशों के अनुकूल मानते हैं यदि नहीं तो क्यों नहीं इस संगठन के विरुद्ध कार्यवाही की गयी । सरकार की उदासीनता स्वच्छन्दता को प्रोत्साहन देती है । हम आशा करते हैं कि सरकार मद्य का प्रचार और समर्थन करने वाले किसी भी संगठन को अस्तित्व में न रहने देगी । सरकार गांधी जी के आदर्शों की दुहाई देती है क्या गांधी जी के मद्य-निषेध सम्बन्धी आदर्शों का सरकार को किंचितमात्र भी ध्यान है ?

वाराणसी आर्य उप प्रति-निधि सभा की बैठक

आर्य उप प्रतिनिधि सभा वाराणसी का प्रतिनिधि मण्डल 'अगस्त को आर्य-समाज गोपीगंज तथा ज्ञानीगंज के संयुक्त अधिवेशन में सम्मिलित हुआ अधिवेशन में जिला सभा के मन्त्री श्री प्रो० आनन्द प्रकाश जी का ओजस्वी भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने 'वर्तमान समय में आर्य-समाज की आवश्यकता" पर प्रकाश डाला । इससे पूर्व जिला सभा की अन्तरंग की बैठक हुई जिसमें आर्य-प्रतिनिधि सभा को ५१) रु० वेद प्रचार कोष में देने, आर्यसमाज जैतपुरा द्वारा महर्षि पातञ्जलि के ऐतिहासिक आश्रम स्थल पर आयोजित कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सहायता देने, २८ अगस्त को शिव-पुर में प्रचार करने तथा 'सार्वदेशिक' पत्र के वेदांक की १०० प्रतियां मंगाकर जिले में वितरित करने सम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण निर्णय किये गये ।

निरीक्षण योजना सूचना महिला प्रचार मंडल की ओर से

आर्य मित्र दि० १४ अगस्त १९६६ के पृष्ठ सं० १० पर इलाहाबाद कान-पुर, फतेहपुर, इटावा, फर्रुखाबाद, मिर्जापुर के लिए श्री विद्यवती जी शुक्ल का नाम प्रकाशित हो गया है । वास्तव में उनका नाम श्री विद्यादेवी जी त्रिपाठी प्रेमनगर कानपुर है । कृपया महिला आर्यसमाज नोट करने का कष्ट उठावें ।

(२) कानपुर जिला के लिए श्रीयुत कृष्ण कुमार जी आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर निवासी और नियुक्त किये गये हैं । कृपया समाजों को चाहिए कि उनके पहुंचने पर भाषण निरीक्षण कराने की व्यवस्था करें और सभा प्राप्त्युत्पन्न देकर सभा की रसीद प्राप्त कर लें । —चन्द्रदत्त, सभा मन्त्री

क्या हम हिन्दी को पीछे ढकेल रहे हैं ?

[ले०—श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, संसद सदस्य, उपप्रधान आ०प्र० सभा उ०प्र०]

हिन्दी बेचारी ने पता नहीं किस घड़ी में जन्म लिया जो अपने ही घर में आज वह बिरानी बनी हुई है। पराधीन भारत में वह राष्ट्रभाषा थी। राष्ट्रीयता की सन्देशवाहिनी के रूप में सब जगह उसका सम्मान होता था। परन्तु स्वतंत्र भारत के संविधान में वह राजभाषा मात्र रह गयी। खतरा यह है कि

श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री

सरकारी नीतियों से अब वह राजभाषा भी कहीं क्षेत्रीय भाषा ही बनकर न रह जाय। सूचना एवं प्रसार मंत्रालय और गृह मन्त्रालय में तो स्पष्ट ही हिन्दी क्षेत्रीय भाषा है। आकाशवाणी के हिन्दी कार्यक्रम केवल हिन्दी भाषी राज्यों के केन्द्रों से ही प्रसारित होते हैं, जबकि आज भारत में कोई नगर या राज्य इस प्रकार का नहीं है, जहां थोड़े बहुत हिन्दी जानने वाले न रहते हों। विदेशों के रेडियो स्टेशन तो भारत के लिए हिन्दी में कार्यक्रम प्रसारित कर सकते है, परन्तु १९६५ के बाद भी अभी तक भारत सरकार का यह मन्त्रालय हिन्दी को देश की प्रमुख राजभाषा का पद व्यवहार में देने के लिए तैयार नहीं। यही स्थिति गृह मन्त्रालय में भी है। इसकी अपनी राय में हिन्दी चार राज्यों में ही चल सकती है। भारत का आधे से अधिक भाग हिन्दी में अपना व्यवहार करता है, गृह मन्त्रालय के आंकड़े इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।

पराधीन भारत में हम मुक्त कंठ से यह स्वीकार करते थे कि हिन्दी का प्रश्न राष्ट्रीयता से बंधा हुआ है। स्वतंत्र होने के बाद देश में अगर कोई भाषा समान रूप से प्रचलित होगी तो वह हिन्दी ही होगी। परन्तु कुछ चतुर राजनीतिज्ञों ने हिन्दी को अंग्रेजी के सामने से हटा कर देशी भाषाओं के अखाड़े में ला खड़ा किया। संघीय लोकसेवा आयोग में हिन्दी कभी की चल पड़ती। उसके लिए बहुत पूर्व ही तैयारियां भी हो चुकी थीं। राष्ट्रपति के आदेश भी अब से पांच साल पहले निकल चुके थे, पर यह चतुर राजनीतिज्ञ ही उस बात को लम्बा करते चले गये और अब कहते हैं, जब तक चौदहों भाषाएं इस योग्य न हो जाएं, तब तक कैसे हिन्दी को परीक्षाओं का माध्यम बनाया जा सकता है ? इसकी बाकी देश में उल्टी प्रतिक्रिया हो जायगी। चौदहों भाषाएं कब इस योग्य होंगी, यह बात भी आज तो 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी' की तरह ही लग रही है। जिन अहिन्दी भाषी राज्यों की आड़ लेकर हिन्दी का रथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने से रोका जा रहा है, उनमें कितने उत्साह से आज हिन्दी सीखी जा रही है इसका परिचय उन राज्यों के हिन्दी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के आंकड़े ही अच्छा दे सकते हैं। शिक्षा आयोग ने अकेले केरल राज्य के सम्बन्ध में ही पीछे यह बताया था कि वहां अपनी मातृ भाषा मलयालम से भी अधिक हिन्दी के लिए उत्साह है। स्वयं इन पंक्तियों के लेखक से केरल राज्य हिन्दी प्रचार सभा की रजतजयन्ती के अवसर पर वहां के छात्रों और अध्यापकों ने कहा कि हिन्दी माध्यम के कालेज इधर अधिक से अधिक खुल सकते हैं, परन्तु कोई विश्वविद्यालय देश में ऐसा तो हो, जहां से वह मान्यता कर सके।

नई दिल्ली में स्थापित होने वाले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में इस प्रकार की व्यवस्था रखी जरूर गई है, लेकिन उसमें भी अभी समय लगेगा। अहिन्दी भाषी राज्यों में उनकी संख्या के अनुपात से अधिक से अधिक हिन्दी माध्यम के ऐसे विश्वविद्यालय भी हों, जो इन्हें मान्यता दे सकें तो अच्छी संख्या में युवक युवतियां हिन्दी की सेवा के लिए आगे आयेंगे।

गृह मन्त्रालय ने केन्द्रीय सरकार के दफ्तरों में काम करने वाले अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने की योजना भी चालू की है। १९६५ से पहले इस योजना के अन्तर्गत कर्मचारी अच्छी संख्या में हिन्दी सीखने आते थे। परन्तु जब उन्होंने देखा कि अब हिन्दी देर तक सरकारी कामकाज में आनी ही नहीं है, तो वह धीरे धीरे ढीले पड़ गये। हिन्दी की श्रेणियों में न अब उतनी संख्या ही पढ़ने वालों की होती है और न उतना उत्साह ही रह गया है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार अब तक केन्द्रीय सरकार के पौने दो लाख के लगभग कर्मचारी हिन्दी सीख चुके हैं। पर सीखने के बाद उसका कोई उपयोग न होने से वह भूलते चले जा रहे हैं। इन पौने दो लाख व्यक्तियों को हिन्दी सिखाने में कितना व्यय हुआ होगा अथवा उतने समय में वह और कितना सरकारी काम कर सकते थे, किसी ने आज तक उस ओर ध्यान नहीं दिया। भले ही सरकार हिन्दी की यह श्रेणियां न चलाती, लेकिन हिन्दी का बाजार भाव यदि ऊँचा कर दिया होता तो अपने आप लोग हिन्दी सीखते और धीरे धीरे संविधान में की गई प्रतिज्ञा को हम पूरा कर लेते।

[यदि सरकार हिन्दी का बाजार भाव ऊँचा कर दे तो लोग अपने आप हिन्दी सीखेंगे और इस तरह संविधान में की गयी प्रतिज्ञा को हम पूरा कर लेंगे।]

हिन्दी अभी जल्दी राजभाषा बनने वाली नहीं है, यह बात इससे भी झलकती है क्योंकि जितने भी मन्त्री और बड़े सरकारी अधिकारी हैं, उन सबके बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ते हैं अथवा फिर विदेशों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। साधारण आदमी के दिमाग में यहीं से सन्देह पैदा होता है कि यदि हिन्दी आने वाली होती तो फिर यह अपने बालकों को अंग्रेजी के माध्यम से क्यों पढ़ाते ? एक ओर हिन्दी को राजभाषा घोषित करने से अंग्रेजी का स्तर गिर रहा है और दूसरी ओर पब्लिक स्कूलों में बड़े लोगों के बालक अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। नहीं कहा जा सकता, इस विरोधाभास का अन्त कहाँ और किस रूप में होगा ?

संसद में अब तक जो विधेयक और अधिनियम आदि प्रस्तुत होते हैं, वे सब अंग्रेजी में ही आते हैं। विधि मन्त्रालय ने कानूनों का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए कुछ दिन पूर्व राजभाषा विधायी आयोग की स्थापना की थी, जो पुराने कानूनों का हिन्दी में अनुवाद करेगा। भारत सरकार के गजट प्रकाशित होने मात्र से ही वह प्रामाणिक मान लिए जायेंगे। समझ में नहीं आता, जब मन्त्रालय ने अनुवाद करने के लिए एक आयोग बना ही रखा है तो १९६६ के बाद संसद में दोनों भाषाओं में कानून क्यों नहीं पेश होते ? आगे चलकर फिर इन का उसी प्रकार अनुवाद हो और सरकारी गजट में छपे तब उनकी प्रामाणिकता बने, यह कहां की बुद्धिमत्ता है? होना तो यह चाहिए कि केवल हिन्दी में ही विधेयक प्रस्तुत हों और अंग्रेजी में उनका अनुवाद प्रामाणिक साथ-साथ दे दिया जाय। संविधान की व्यवस्था ऐसी ही आज्ञा देती है, पर इतना भी यदि न हो तो दोनों भाषाओं में तो साथ-साथ आने ही चाहिए।

हिन्दी भाषी राज्यों में भी केन्द्र की देखा देखी उतनी अच्छी प्रगति हिन्दी के कार्य में नहीं हुई जितनी अपेक्षा की जाती थी। केन्द्रीय सरकार ने बार-बार कहने पर इतना तो मान लिया है कि जो पत्र उन राज्यों से हिन्दी में आयेंगे, उनका उत्तर हिन्दी में ही दिया जायगा। उन पत्रों के साथ अंग्रेजी अनुवाद की आवश्यकता नहीं रहेगी, पर केन्द्रीय सरकार स्वयं इस विषय में कोई प्रेरणा अथवा प्रोत्साहन अपनी ओर से यदि देती तो इन राज्यों में सारा कार्य हिन्दी में अब तक चल पड़ता। हिन्दी भाषी ७ राज्यों में, जो केन्द्रीय सरकार के कार्यालय हैं, उनमें भी अभी तक अंग्रेजी का ही बोलबाला है। इन कार्यालयों में यदि हिन्दी में कार्य चल पड़े तो कम से कम उन पौने दो लाख कर्मचारियों को आसानी से खपाया जा सकता है, जिन्होंने अहिन्दी भाषी होते हुए हिन्दी सीखी है और उपयोग न होने से भूल रहे हैं।

हिन्दी के प्रश्न पर जनसाधारण को भी अब समझकर सरकार से उसका मन लेना होगा। निर्वाचनों में जब वे लोग आते हैं तो जनता की भाषा में बोलते हैं परन्तु निर्वाचित होने के बाद फिर मुट्ठी भर लोगों की भाषा बोलने में गौरव अनुभव करते हैं। जनता ने हल्की-सी भी टक्कर यदि इस प्रश्न पर इन्हें दे दी, तो अवस्था के समाधान में देर नहीं लगेगी।

सामयिक समस्याएँ

खतरा बढ़ रहा है

(ले०—श्री वीरेन्द्र जी संपादक वीर प्रताप जालंधर)

रक्षामन्त्री ने लोकसभा में पाक की बढ़ती हुई सैनिक शक्ति के विषय में जो बयान दिया है वह चिन्ताजनक है। जो जानकारी इस समय तक उन्हें मिली है उसके आधार पर आपने लोकसभा को बताया कि पाक ने न केवल अपनी उस क्षति को पूरा कर लिया है जो उसको गत सितम्बर के युद्ध से हुई थी इसके अतिरिक्त उसने और भी बहुत से शस्त्र जमा कर लिये हैं। गत युद्ध में उसने जो शस्त्र प्रयोग किये थे और विमान तथा टैंक यह सब कुछ उसे अमेरिका से मिले थे। उस समय उसे एक कठिनाई यह भी पेश आई थी कि अमेरिका ने शस्त्र देने बन्द कर दिये थे। उस स्थिति में उसके लिये लड़ाई जारी रखना कठिन हो गया था।

हमारी स्थिति पहले भी उससे अच्छी थी और अब भी है कि हम पहले केवल विमान ही स्वयं तैयार करते थे अब हम टैंक भी बना रहे हैं। इसके अर्थ यह नहीं कि हमें दूसरे देशों के शस्त्र लेने की जरूरत नहीं रही। वह तो अब भी है और जब तक पाक के साथ हमारा मुकाबला रहेगा यह जरूरत भी रहेगी। हम अपने कारखानों में अभी इतना माल तैयार नहीं कर सकते कि अपनी सारी आवश्यकताएं पूरी कर सकें। फिर भी हमारी स्थिति पाक से तो अच्छी है। क्योंकि यदि हमें विदेशों से शस्त्र मिलने बन्द हो जाएं तो भी हम अपने शस्त्रों से युद्ध जारी रख सकते हैं। किन्तु पाकिस्तान नहीं रख सकता। उसे दूसरे देशों पर भरोसा रखना पड़ता। इस दृष्टि से उसकी नीति सफल हो रही है। पहले उसे शस्त्र केवल अमरीका से ही मिला करते थे अब अमरीका प्रत्यक्ष में उसे शस्त्र नहीं दे रहा किन्तु अमरीका के बने शस्त्र उसे मिल अवश्य रहे हैं उसके एजेण्ट इस समय सारे योरुप में शस्त्र खरीद रहे हैं। दूसरे कई मित्र देश अपने लिए शस्त्र खरीदते हैं और पाक को दे देते हैं। टर्की और ईरान ने अमरीका के बने कुछ शस्त्र जो उन्हें सैनिक समझौता के कारण मिले थे पाकिस्तान को दिए हैं। इसी प्रकार पश्चिमी जर्मनी ने भी पाक को शस्त्र दिये हैं यह भी अमरीका के बने हुए थे। इस प्रकार अमरीका प्रत्यक्ष रूप में तो पाक को शस्त्र नहीं दे रहा किन्तु उस के बने शस्त्र पाक को बराबर पहुंच रहे हैं। उसे सबसे अधिक सहायता तो चीन की ओर से मिल रही है। कहते हैं कि उसने पाक को पर्याप्त संख्या में टैंक दिये हैं और विमान भी। इसके अतिरिक्त चीन ने पूर्वी पाक की जिम्मेदारी भी अपने ऊपर ली है इस लिये यदि कल को भारत और पाक में युद्ध फिर छिड़ जाए तो पाक को यह चिन्ता न रहेगी कि पूर्वी पाक की रक्षा कैसे होगा। वह इस स्थिति में अपनी सारी शक्ति पश्चिमी मोर्चे पर लगा सकता है विशेषतया काश्मीर में।

इस प्रकार पाकिस्तान गत वर्ष की अपेक्षा अधिक तैयार है। गत युद्ध में उसके सामने जो जो कठिनाइयां आईं थी उसने उनसे शिक्षा लेकर उन्हें दूर करने की योजना तैयार कर ली है। चीन इस समय उसका सबसे बड़ा समर्थक है। उसका हित भी इसी में है कि भारत और पाक परस्पर उलझते रहें ताकि उसे भारत के विरुद्ध लड़कर अपनी शक्ति नष्ट न करनी पड़े। गत युद्ध में भी उसने पाक की पीठ ठोकी थी किन्तु उस समय पाक को यह ज्ञात न था कि युद्ध अधिक समय तक जारी रख सके अतः एक ओर चीन ने भारत को अल्टीमेटम दिया और दूसरी ओर पाक ने राष्ट्रसंघ के दबाव में आकर युद्ध बन्दी स्वीकार कर ली।

खतरा निश्चय ही बढ़ रहा है। पाक की तैयारी पहले से अधिक है। अब युद्ध होगा तो पहले से अधिक भयानक होगा। किन्तु प्रश्न यह अब नहीं कि हम उसके लिए बिल्कुल ही तैयार नहीं। सरकार को कभी कभी सभी कहीं तो ... हैं किन्तु देश की पति ... योजना ... बहुत ... जनता के सामने नहीं रख सकती। भारत सरकार यदि हमें नहीं बता रही कि उसने कितने शस्त्र जमा कर रखे हैं या जमा किए हैं तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह हाथ पर हाथ रख कर बैठी है। वह जो कुछ भी कर सकती है कर रही है। हमारी सेना तो तैयार है किन्तु जनता तैयार नहीं है। जो कुछ आज देश में हो रहा है उसे देखकर ऐसा लगता है कि हमारे ... अनुभव ही नहीं कि ... खतरा ... है। हम हड़तालों और प्रदर्शनों में व्यस्त हैं और ... युद्ध की तैयारियों में।

साहस प्रेम और विश्वास

(ले०—श्री लालचन्द्र जी मेरठ)

साहस अदम्य हो प्रेम व्यापक हो और अपने निश्चय में तथा अपनी कार्य क्षमता में अटल विश्वास हो तो मनुष्य का व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं भी दृढ़ता और पूरी लगन से अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधन करता है तथा अपने में सबके प्रति सौहार्द और सौजन्य होने के कारण अन्य जनों से भी प्रेम से काम लेने का सामर्थ्य रखता है। नेता स्वयं स्व अनुशासन में रहता है तभी वह जनता का सफलता पूर्वक नेतृत्व कर सकता है। आत्मविश्वास एक महान् शक्ति है जिससे मनुष्य में दृढ़ता होती है और स्थिरता होती है। जो व्यक्ति स्वावलम्बी है जो आत्मनिर्भर है जिसे अपने में भरोसा है साथ ही जिसमें आत्मसम्मान है वह दूसरे व्यक्तियों का भी सम्मान करता है और उनसे सहानुभूति और मेल करता हुआ दक्षता से सबसे मिलकर एक मन से रहता हुआ अपने प्रेम और अपनी सद्भावना से सबके साथ मिलकर कार्य को सुगमता से सम्पन्न करता है। नेतृत्व करने से पहले स्व० अनुशासन में रहकर संयम और धैर्य सीखना आवश्यक है। सफल नेता वही हो सकता है जो कि जनजनता के हृदयों में निवास कर रहा हो उनका प्रेम और आदर पा रहा हो। निश्चय हो जाने पर पूर्ण तत्परता से उसे पूरा करना चाहिये। जब हम मिलकर पूरी लगन से कार्य में जुट जाते हैं तो कार्यसम्पन्नता में असुविधा नहीं होती और यदि विघ्न आते भी हैं तो वे हमारी समष्टि शक्ति के वेग के आगे विलीन हो जाते हैं। विघ्न बाधायें तो हमारे साहस उत्साह और तत्परता की परीक्षा करने आते हैं। धीर व्यक्ति विघ्नबाधाओं के परवाह न करते हुए अपने आपको सद्भाव और पूर्णशक्ति से लगा कर कार्य का पूरा नहीं कर देते हैं। सहयोग में अनुपम बल है पर सहयोग के लिए व्यक्तियों की सुसंस्कृत मनोवृत्ति होनी आवश्यक है। जिस मनोवृत्ति में हो सबका उत्कर्ष चाहते हों वहां सभी दक्षता से रहते हैं। ... में ईर्ष्या और घृणा नहीं उभरती। यह सफलता का रहस्य है।

आपस में विश्वास हो तभी सहयोग सम्भव है। मिलकर एक निष्ठा से आरम्भ से लेकर कार्य सम्पन्नता तक कार्य करते रहना ही सहयोग है। सहयोगी जन अपनी निजी स्वार्थ नहीं चाहा करते और यह भावना ही सहयोग को दृढ़ करती है।

सच्चरित्र सहयोगीजन एक दूसरे को आदर पाते देखकर प्रसन्न होते हैं। यही सर्वोदय का रहस्य है। हम केवल अपनी ही उन्नति न चाहें किन्तु अपने सहयोगियों की उन्नति में तथा उनकी कीर्ति और उनके यश की वृद्धि में भी हम मनायें तो आपस की एकता स्थिर रहती है और सभी यश के भागी होते हैं। एक निष्ठा से व्यक्तियों का समष्टि के लिए कार्य करना और समष्टि शक्ति का व्यक्ति के विकास में सहायक होना एक आदर्श स्थिति है जो व्यक्ति तथा समष्टि जीवन में सौन्दर्य लाती है। हम मिलकर हृदय का द्वेष दूर कर आपस में विश्वास और प्रेम से कार्य करने लगें तो संसार की कोई शक्ति भी हमारी प्रगति में बाधक न हो सकेगी।

श्री प० आशाराम जी पाण्डेय सभा उपमंत्री का प्रशंसनीय कार्य

आर्यसमाज जौनपुर के और श्री प० राजाराम जी शास्त्री में जो विवाद चल रहा था उसको दूर करने के लिए श्री आशाराम जी उपमन्त्री महोदय ११ जुलाई को जौनपुर पहुंचे अपने परम पूर्वक इस विवाद को सुलझाकर दोनों पक्षों में मेल करा दिया

श्री प० ... आर्यमित्र के १० नवीन ग्राहक बना दिये और ...) वेद प्रचार ... में ... हैं।

आशा है कि ...

प० आशा ...

कार्य में ...

के नवीन ग्राहक ... के

लिए धन एकत्र करने में ... ।

—... दत्त ... आर्य प्रतिनिधि सभा

सिद्धान्त विमर्श

पुनर्जन्म

[ले०—श्री एस० बी० सैदनगर, मेरठ]

श्री रूसी दास बाला ने नई दिल्ली के समाचार पत्र "सन्डे स्टैन्डर्ड" के ५ अगस्त १९६२ के अंक में पुनर्जीवन पर एक लेख लिखा था। जिसमें बड़ी सुन्दर युक्तियों से पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर प्रकाश डाला। वह लिखते हैं कि मनुष्य का जीवन अपनी उन्नतम अवस्था में भी एक ओस बिन्दु के समान है। एक नगण्य परिस्थिति भी मनुष्य-जीवन के कोमल सन्तुलन को नष्ट कर सकती है। मनुष्य आत्मा का शरीर धारण कर लेना मात्र ही नहीं है शरीर तो आत्मा के कारागार के समान है। चेतन-जीवन के लिए भार स्वरूप है और मानसिक क्रिया के लिए बाधक है। मनुष्य अपने वातावरण से भौतिक सम्पर्क, सूक्ष्म आचरक तथा मानसिक प्रेरणाओं के द्वारा अगणित आघात प्राप्त करता है। वह पदार्थ, जीवन, मन और आत्मा के विशाल स्फूर्ति सागर से घिरा हुआ है। इन अनन्त शक्तियों में से जितना वह ग्रहण कर सकता है, उतना ग्रहण कर लेता है और साथ ही उनका प्रत्युत्तर वह अपने बाहर प्रसारित करता रहता है। शरीर इन शक्तियों को अपनी वृद्धि के लिए उपयोग करता है और स्वयं उनके द्वारा उपयोग में आता है। जब इन पारस्परिक क्रियाओं में असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है। तब रोग तथा ज्वर उत्पन्न हो जाते हैं और अन्त में इस शरीर का अन्त हो जाता है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसे समय आते हैं जब मनुष्यों के दुखों को देखकर उसे व्यथा होती है और वह सोचने लगता है कि भगवान ने संसार में इतनी व्यथा व्याप्त करने में क्या

असमानता पायी जाती है। कुछ लोगों में शारीरिक और मानसिक कमी पाई जाती है। कुछ लोगों में समृद्धि के मध्य में पैदा होते हैं। जबकि अनेकों को जीवन के सामान्य सुख भी उपलब्ध नहीं होते हैं। साधारण मनुष्यों का यह विश्वास है कि सुखी लोगों ने अपने सुकर्मों द्वारा इस स्थिति को प्राप्त किया है और दुखी लोग दैनिक नियमों के उल्लंघन के कारण इस अवस्था में हैं। इस महान् प्रश्न का एक उत्तर पुनर्जन्म की सत्यता को प्रमाणित करता है। यह निष्कर्ष तर्क पूर्ण है कि आत्म-सिद्धि के केवल आत्मिक विकास के लिए भी एक सांसारिक जीवन नितान्त अपर्याप्त है।

पुनर्जन्म का विचार नया नहीं है। प्लेटो, पाइथागोरस प्लोटिनस, आयमब्लिकस, बुद्ध, वस्तुतः सभी यह मानते थे कि आत्मायें संसार में बार-बार आती हैं, और परीक्षण तथा त्रुटियों के द्वारा वह आगे अनुभव प्राप्त कर सकें।

ओरीगेन सन्त ऑगस्टीन तथा महान सन्त टामस् एक्वीनास पुनर्जन्म को अस्वीकार नहीं करते थे। सन ५५३ में कुस्तुनतुनिया की द्वितीय सभा ने ईसाई धर्म के कुछ अपने कारणों से पुनर्जन्म के विचार को ईसाई धर्म से निकाल दिया था, तथा इसे धर्म विरुद्ध माना था। पुनर्जन्म के विरुद्ध कई आपत्तियां की जाती हैं। जिसमें सबसे तीव्र यह है कि यदि आत्मा का जन्म कई बार होता है तो इसे अपने पूर्व जन्मों का स्मरण क्यों नहीं रहता। कर्म सिद्धान्त का आधार यह नहीं है कि आत्मा को त्रुटियों का दण्ड ही भोगना पड़े। सच तो यह है, कि इस सिद्धान्त की मूल-भावना आत्म-सुधार है। प्रकृति माता वर्तमान जीवन में पूर्व कर्मों को बीज रूप में रखती है, जिसके द्वारा कुछ प्रभाव उत्पन्न होते हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति में बताया गया है कि "कार्य की सफलता, भाग्य तथा प्रयत्नों पर समान रूप से निर्भर है। इनमें भाग्य पूर्व जन्म में किये गये प्रयत्नों को सूचित करता है।" इस प्रकार कर्म-सिद्धान्त शुद्ध रूप से कार्य करता रहता है और आत्मा पुनर्जन्म के कर्मों के ब्योरे के भार से दबने से बच जाती है। आत्मा अपनी विश्व यात्रा में समय-समय पर रुक कर नवीन शक्ति तथा स्फूर्ति ग्रहण करके पुनः उठती रहती है और आगे के कार्यों के लिए तैयार होती रहती है। उदाहरण के लिए हम विस्मरण रोग के व्यक्ति को ले सकते हैं। यद्यपि ऐसा व्यक्ति नाम, स्थान, कर्मों को भूल जाता है। परन्तु आचारिक मनोवैज्ञानिक प्रेरणायें जो उसमें पहले थी वे बिना प्रभावित हुए अब भी कार्यान्वित होती हैं। इसी प्रकार मनुष्य पूर्व जन्म की स्मृति से विहीन होते हुए भी पूर्व-जन्म की बीज रूपी प्रवृत्तियों से प्रभावित होता है। पुनर्जन्म के विरोध में दूसरा तर्क यह प्रस्तुत किया जाता है कि हिन्दू धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धार्मिक ग्रन्थ में पुनर्जीवन के मत का प्रतिपादन नहीं किया गया है। यही कारण है कि एक साधारण ईसाई पुनर्जन्म के सिद्धान्त को पूर्वीय देशों के लोगों की मनगढ़न्त धारणा ही मानता है। इस विश्वास की पुष्टि के लिए यह आवश्यक है कि यह माना जाये कि ईसाई धर्म ग्रन्थों में बाद में सुविधानुसार संशोधन नहीं किये गये। अर्द्ध-आत्म-विद्या सम्बन्धी साहित्य को छोड़कर जिसमें "थ्योसोफी" मत के लोगों ने कुछ निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं। पुनर्जीवन सम्बन्धी वास्तविक साहित्य का अभाव ही है। इनमें से एक ऐसी पुस्तक है 'मैन्स्न्स आफ दी सोल, दा कास्मिक कन्सी-पशन" जिसके लेखक डा० एच० स्पेन्सर लुइस हैं। डा० लुइस ने अपनी पुस्तक में पुनर्जीवन-मत की पुष्टि में रोचक तथा निर्णयात्मक ढंग से तथ्य प्रस्तुत किये हैं।—

न्यू टेस्टामेन्ट के नवे अध्याय 'गास्पेल आफ सेन्ट जान" में वर्णित एक घटना का डा० लेविस ने उल्लेख किया है। ईसु अपने कुछ अनुयायियों के साथ एक मार्ग पर जा रहे थे। उन्हें एक ऐसा अन्धा व्यक्ति मिला जो जन्म से अन्धा था। अनुयायियों ने पूछा "प्रभु इसमें किसका पाप है, इसका या इसके माता पिता का, जो यह अन्धा पैदा हुआ है। ईसु ने उत्तर दिया कि 'न तो इस मनुष्य ने पाप किया है और न ही इसके माता-पिता ने, वरन् भगवान् के कार्यों को इसके द्वारा दर्शाया गया है। इस घटना से यह बात प्रतीत होती है कि ईसु के अनुयायियों का पुनर्जन्म में विश्वास था। इसी प्रकार का एक अन्य तथ्य "सेन्ट जान के तीसरे अध्याय के आठवें पद में मिलता है। इस पद में कहा गया है कि मनुष्य की आत्मा वायु के समान आती जाती रहती है। यह कोई नहीं जानता है कि कितनी बार किस दिशा में तथा किस ढंग से वह भ्रमण करेगी। डा० लुइस ने पुनर्जन्म के बारे में 'बेनयाफि' के नवें अध्याय "सेन्ट मैथ्यू" के सोलहवें अध्याय तथा 'ल्यूक' के नवें अध्याय में पाये जाने वाले तथ्यों की ओर भी संकेत किया है। डा० लीविस ने कुछ महत्व तथ्यों पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं—एक आत्मा कितनी बार जन्म लेती है, दो जन्मों के मध्य में यदि कोई अवकाश होता है तो कितना, क्या, एक आत्मा का एक ही लिंग में पुनर्जन्म होता है। रोजी क्रूसन सम्प्रदाय ने आत्म विद्या का सम्बन्धी गूढ़ अध्ययन के पश्चात् यह मोटा नतीजा निकाला था कि आत्मा के प्रत्येक जन्म

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सुख-दुःख क्या और क्यों ?

[ले०—आचार्य मित्रसेन एम०ए०, सिद्धान्तालंकार]

जिस धरती पर हम निवास करते हैं, उसमें बड़ी आश्चर्यजनक वस्तुयें तथा घटनायें विद्यमान हैं। दृष्टि डालिये, अद्भुत निर्माण-कुशलता दृष्टिगोचर होती है। उसमें भी सबसे अधिक आश्चर्यजनक है मनुष्य जिसे सबसे अधिक बुद्धिमान समझा जाता है। देश विदेश की जलवायु और परिस्थितियों के कारण मनुष्य विभिन्न आकृति और स्वभाव के हैं, इन सबकी विचारधारायें भी एक नहीं हैं।

कुछ मानव जन्म से ही सुख-समृद्धि में होते हैं तो कुछ अभावग्रस्तता में, कुछ तीव्र बुद्धि के होते हैं तो कुछ मन्द बुद्धि के। कुछ जन्म से स्वस्थ होते हैं तो भविष्य में रोगी और कोई जन्म के समय रोगी तो भविष्य स्वस्थ। एक चिड़चिड़े स्वभाव का है, दूसरा प्रसन्न चित्त रहता है। एक सुन्दर आकृति वाला है तो दूसरे का मुख देखा भी नहीं जाता। महाकवि पद्माकर कहते हैं कि एक ओर तो—

गुलगुली गुल हैं गलीचा हैं गुनी जन हैं,
चाँदनी हैं, चिक हैं चिरागन की माला हैं।
कहैं पद्माकर त्यों गजक गिजा हैं सजी,
सेज हैं सुराही है, सुरा है और प्याला हैं।
सिसिर के पाला कौन व्यापत कसाला तिन्हैं,
जिनके आधीन एते उदित मसाला हैं।
तान तुक ताला हैं, बिनोद के रसाल हैं, सु-
बाला हैं, दुसाला हैं बिसाला चित्रसाला हैं॥

और दूसरी ओर एक व्यक्ति शिशिर की रात्रि में घुटने दबाकर और दिन में सूर्य की किरणों की आंच से ही ठण्ड दूर करने का प्रयत्न करता है—

रात्रौ जानुर्दिवा भानुः कृशानुः सन्ध्ययोर्द्वयोः।
इत्थं शीतं मयानीतं जानुभानुकृशानुभिः॥

इस प्रकार की अनेक विभिन्नताओं को देखकर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि सृष्टि में यह विचित्रता अर्थात् सुख-दुःख क्या है ? कतिपय विद्वान् उत्तर देते हैं कि यह ईश्वर की लीला है, उसका खेल है वह क्रीड़ा कर रहा है और निरुद्देश्य ऐसी सृष्टि रचता है। किन्तु यह विचार युक्ति की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, क्योंकि कोढ़ी बनकर कराहने में कोई लीला नहीं मालूम पड़ती। क्रीड़ा सुख के लिए होती है दुःख के लिए नहीं तब संसार में दुःख क्या दिखाई दे रहा है ? ईश्वर की लीला मानने पर वह पक्षपाती सिद्ध होता है। जो उचित समाधान नहीं। अतः प्रश्न ज्यों का त्यों ही उपस्थित रहता है।

सभी दार्शनिक सृष्टि के सुख-दुखों का एक ही कारण बताते हैं—मानव के पूर्व जन्म के किये हुए कर्म। बिना कर्म के कभी कोई जन्म या मृत्यु नहीं होती। एक कवि कहता है—

बिना कर्म के कभी न रण में जय की भेरी बजती है।
बिना कर्म के कभी न जग में सौख्य राह भी मिलती है॥
डग डग, पग-पग पर भी देखो कर्म धर्म की छाया है।
कर्म किया है जिस मानव ने मोक्ष उसी ने पाया है॥

वेद कहता है.—

मे मात्रा शार्यथ्य पुर ऋतोः ॥ ऋ० २-२८-२ ॥

अर्थात् भक्त प्रार्थना है हे प्रभो ! मेरे कर्मों की मात्रा अकाल में ही समाप्त न हो जाय, इसी का स्पष्टीकरण भगवान् पतञ्जलि करते हैं—

'सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः ॥' साधनापाद २, १३ ॥

तात्पर्य है कि कर्मों के फल जाति, आयु और भोग होते हैं, जबकि उनके मूल में क्लेश आदि विद्यमान हों। जाति का तात्पर्य योनि से है। मुख्य रूप से योनियाँ तीन कोटि की होती हैं, कर्मयोनि, भोगयोनि तथा कर्म भोग (उभय) योनि। जीव कर्मों के आधार पर ही योनि प्राप्त करता है। उन्हीं के आधार पर उसे आयु मिलती है। भोग (सुख-दुःख) से अभिप्राय कर्मफल से है।

सृष्टि की उत्पत्ति भी इसीलिये हुई है। गीता ने कहा है—

कार्यकरण कर्तृत्वे हेतु प्रकृतिरुच्यते।
पुरुष सुख दुःखानां भोक्तृत्वे हेतु रुच्यते॥ गीता १३ २०॥

भावार्थ यह है कि पुरुष के कर्मफल से सुख दुःख के भोगने के लिए यह प्रकृति से निर्मित संसार है। सांख्य दर्शन में लिखा है—

प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः॥

तथा—

पुरुषार्थं एव हेतुर्न केनचित् कार्य्य इति करणम्॥

तात्पर्य यह है कि पुरुष के पूर्वकृत कर्मों के भोग एवं भोग के बाद अपवर्ग की सृष्टि का प्रयोजन है। भोग एवं अपवर्ग उसी समय प्राप्त होते हैं जबकि मानव ने उसके लिये कर्म किये हों, अतः कर्म ही इसके कारण हुए।

गीता ने एक अन्य स्थान पर कहा है—

"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्॥

विश्व के प्राणी जिन सुख दुःखों का भोग कर रहे हैं वह उनके पूर्वकृत कर्मों का ही परिणाम है। इसी बात को संस्कृत के एक कवि ने यों कहा है—

रोग, शोक, परोताप, बन्धन, व्यसनानि च।
आत्मापराध वृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम्॥

कर्म की परिभाषा

अब समस्त सुख-दुःखों के मूल कर्म क्या हैं यह जानने की प्रबल इच्छा होती है। वैशेषिक-दर्शन ने कर्म की परिभाषा स्पष्ट रूप से यों दी है—

एक द्रव्यमगुणं संयोग विभागेषु।
अनपेक्ष कारणमिति कर्म लक्षणम्।

अर्थात् कर्म शब्द का साधारण अर्थ क्रिया है। किन्तु कर्मवाद में इसका अपना विशेष अर्थ है कि वे कर्म होते हैं जिनके करने में कर्ता स्वतन्त्र होता है या जिनका उत्तरदायित्व उसके ऊपर है। बहुत से कर्म ऐसे भी हैं जिनका उत्तरदायित्व कर्ता पर नहीं होता, जैसे युद्ध करने वाले सैनिक होते हैं परन्तु उनका उत्तरदायी (अर्थात् जय, पराजय का) राजा होता है वे नहीं। इसे ही भगवान् पाणिनि ने यों कहा—

"स्वतन्त्रः कर्ता॥"

गीता कहती है—'कर्मण्येवाधिकारस्ते॥"

वेद कहता है—

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः॥"

कर्म विभाग

कर्मों के विभाग कई प्रकार से किये जाते हैं। प्रथम विभाग है संचित प्रारब्ध एवं क्रियमाण, द्वितीय विभाग है नित्य, नैमित्तिक और काम्य। तृतीय विभाग है सकाम और निष्काम। यहाँ प्रथम विभाग ही काम में आता है, उसमें साधारणतः संचित और क्रियमाण दो ही कर्म भेद मुख्य हैं। प्रारब्ध संचित का ही एक विशेष भेद है।

कर्म-विपाक

कर्म तथा उसके फल का सम्बन्ध बहुत ही निकट का है। जैसे कार्य और कारण का है। जब कभी एक कर्म होता है तो उसका भोग होना ही चाहिये। गीता ने भी कहा है कि चाहे अच्छे कर्म करो या बुरे, फल अवश्य भोगना पड़ेगा। इसी फल को कर्म के भोग के लिए इस शरीर की प्राप्ति हुई है उनके भोगे बिना छुटकारा नहीं है। मनुष्य के हृदय में प्रारब्ध कर्म जनित प्रेरणा सदैव रहती है। उसमें जो फल या भोग होता है वह भी एक प्रकार से कर्म कहा जायेगा। यदि उसके प्रति मनुष्य में ममत्व हो तो वह फल-भोग भी उस ममत्व के द्वारा नया कर्म कहलाता है। और इस प्रकार कर्मों का संचय होता है, जब तक कर्म प्रेरणा शिथिल नहीं होती।

कर्म फल

किये हुये कर्मों का फल उत्तम अथवा अनुत्तम दोनों ही हो सकते हैं जो कि कर्मों के ऊपर ही आधारित है। जिस प्रकार कर्मों का विभाजन हुआ था, उसी प्रकार फल का भी हो सकता है। फल की भी तीन कोटियाँ हैं। एक ही कर्म के कई फल हो सकते हैं तथा कर्म मिलकर एक फल पैदा करते हैं। इनका फल जाति,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

विचार-विमर्श

प्रारब्ध कृत आयु क्षणों में, श्वासों में नहीं

(श्री विश्वनाथ जी आर्योपदेशक, ५ बेन्द्रनगर, नई दिल्ली)

[विचार स्वातन्त्र्य की दृष्टि से ही लेख प्रकाशित किया जा रहा है। अन्यों के विचार भी प्रकाशित किये जायेंगे। —सम्पादक]

२४ जुलाई के आर्यमित्र में माननीय श्री गंगाप्रसाद जी के उत्तर में श्री वैद्य राजबहादुर जी का लेख पढ़ा। प्रत्युत्तर तो श्री उपाध्याय जी ही देंगे। इस विवाद में भाग लेने का मेरा प्रयोजन आर्यसमाज में चल रही ईश्वर के सर्वज्ञ विषय में भ्रान्ति का निवारण है जिसके प्रभाव से कर्मफल व्यवस्था जैनानुकूल ईश्वर निरपेक्ष सी हो रही है।

सर्वज्ञता का अर्थ सब पदार्थ, उसके गुण कर्म स्वभाव और तत्सम्बन्धी घटनाओं का पूर्ण ज्ञान है। परन्तु ये घटनाओं को पृथक् करके कह देते हैं कि कल क्या होगा, यह तो ईश्वर भी नहीं जानता।

महर्षि दयानन्द ने अनेक स्थानों पर ईश्वर को भविष्यत् का ज्ञाता लिखा है। सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में इसकी व्याख्या कर दी है, परन्तु आर्य विद्वान् भाषा के नियम की उपेक्षा करके अपनी बात को सिद्ध करने का वृथा प्रयास करते हैं। भूत भविष्यत् और वर्तमान, कालकृत क्रिया के भेद हैं अतः किसी घटना का वर्णन करते हैं। केवल वर्तमान काल में किसी वस्तु के गुण कर्म का भी उल्लेख किया जाता है। यथा 'अग्नि जलती है' इस पद से किसी स्थान पर जल रही घटना का वर्णन होता है। अग्नि जला करती है अग्नि के ज्वलन गुण कर्म का भी उल्लेख हो सकता है। परन्तु 'अग्नि जली थी' 'अग्नि जलेगी' इस भूत भविष्य की क्रिया में जलने की किसी घटना का ही वर्णन हो सकता है गुण कर्म का नहीं। महर्षि ने लिखा क्या परमात्मा को कोई ज्ञान होकर नहीं रहता और न होके होता है? दोनों नहीं यहां पर भूत भविष्यत् में होनेवाली घटनाओं का ही ज्ञान अभिप्रेत है परन्तु ऐसे आर्य विद्वान् इसका यह अर्थ करते हैं, किसी वस्तु का गुण कर्म और स्वभाव आगे चलकर जीवों के कर्म की अपेक्षा से स्पष्ट हो परमात्मा को भविष्यत् का ज्ञाता कहा है परन्तु वे अपना हठ नहीं छोड़ते। उसी सन्दर्भ में लिखा जैसा जीव करता है वैसा ईश्वर जानता है। इसका अभिप्राय यही है कि परमात्मा का अनादि ज्ञान जीव के कर्म के प्रतिकूल नहीं होता परन्तु ये महानुभाव इसका यह अर्थ करते कि वर्तमान काल में जीव जैसा-जैसा करता जाता है वैसे ही ईश्वर जानता जाता है। इसका अभिप्राय यही है कि परमात्मा का अनादि ज्ञान जीव के कर्म के प्रतिकूल नहीं होता परन्तु ये महानुभाव इसका यह अर्थ करते हैं कि वर्तमान काल में जीव जैसा जैसा करता जाता है वैसे ही ईश्वर जानता है। यदि ऐसा अशुद्ध अर्थ करोगे तो अगले पद का क्या अर्थ होगा कि जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। यदि ईश्वर को भविष्यत् का ज्ञाता न मानें, तो वह कर्म फल नहीं दे सकता। एक जीव को किसी धनी के घर में प्रचुर भोग के लिए जन्म दिया। वह धनी अल्पकाल में ही कारण वश धनहीन हो गया। ईश्वर तो यह जानता ही न था तो उस जीव का प्रतिकूल फल मिला। यदि वह भविष्यत् का ज्ञाता तो कर्मफल की व्यवस्था सर्वथा ठीक हो जाती है। जीव स्वतन्त्रतापूर्वक भोग और आयु में अपने पुरुषार्थ से वृद्धि करे तथापि भोग आयु क्षणों में नियत ही रहेगी।

आप आश्चर्य से पूछेंगे कि यह कैसे तो सुनिये ईश्वर जीव को उसके कर्मों का फल दूसरे जीवों की स्वतन्त्रता से प्राप्त सामग्री द्वारा ही देता है। सन्तानउत्पत्ति दूसरे प्राणियों की स्वतन्त्र प्रवृत्ति से माता पितादि के शरीर के अनुरूप ही होती है उस शरीर (जाति) के अनुकूल जिस जीव के कर्म होते हैं उसे जगदीश्वर भेज देता है। भोग की सामग्री माता पितादि से समर्जित ही प्राप्त करता है। मृत्यु का भी कोई लौकिक कारण ही होता है आत्महत्या, दूसरे का आघात, रोग निर्बलता अर्थात् कारणवश जब शरीर जीव के रहने योग्य नहीं रहता तो ईश्वर वहां से निकालकर उसके कर्मानुसार दूसरा शरीर दे देता है तो ईश्वरीय नियम कर्म फल का है।

इसमें सन्देह नहीं कि निर्धन का पति अपने पुरुषार्थ से करोड़पति बन जाता है और करोड़पति का पुत्र निर्धन हो जाता है ऐसा होने पर भी ईश्वर कृत भोग-सामग्री नियत ही रहती है। एक मजदूर ने आपका काम किया तो दो रुपया मजदूरी उसे दी गई। अब वह चाहे तो दो रुपये की छाबड़ी लगा कर उससे दस रुपये कमा ले अथवा जुए में हार-जाय परन्तु उसे तो नियत मजदूरी ही दी। ऐसे ही सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा जन्म कृत भोग सामग्री नियत ही होती है।

आयु भी भोग का परिमाण ही होता है। जैसे अपराधी को उसके कर्मानुसार विशेष अवधि तक कारागार में रखा जाता है। ईश्वर अपनी सर्वज्ञता से जानता है कि इस जीव ने किस निश्चित से कितनी आयु में शरीर छोड़ना है, बस वही उसकी नियत आयु है।

जीवेम शरदः शतम् आदि प्रमाणों से आयु वर्ष दिन क्षणादि से परिमाणित होती है। श्वासों से नहीं। क्योंकि प्राणायाम का अर्थ है जब तक प्राण तब तक आयु।

(पृष्ठ ७ का शेष)

आयु और भोग है और मुख्य रूप से जाति ही है। जाति से तात्पर्य योनि है। यह मरण पर्यन्त एक ही रहती है, आयु और भोग पर गत जन्म के अतिरिक्त इस जन्म के कर्मों का भी प्रभाव रहता है।

कर्म और जन्मादि विपाक

जाति अर्थात् योनि का जन्म कर्मों के ही अधीन है, यह कहा जा चुका है तब यह सोचना भी परमावश्यक है कि एक कर्म से एक ही जन्म प्राप्त होता है या एक ही कर्म अनेक जन्म देता है? अथवा अनेक कर्म अनेक जन्म देते हैं या अनेक कर्म एक जन्म देते हैं? यदि एक कर्म ही एक जन्म देते हैं तब बहुत मुश्किल होगी, क्योंकि एक ही जन्म में अनेक कर्म होते हैं और पूर्व जन्मों के भी मिला लेवें तब वे अनगिनत होये। एक कर्म से एक जन्म मिले तब शेष कर्मों का फल कैसे मिलेगा? इसी प्रकार एक कर्म अनेक जन्म भी नहीं दे सकता। यदि एक ही कर्म से अनेक जन्म होते रह तो शेष कर्म व्यर्थ हो जायेंगे तथा यदि मान लेवें कि अनेक कर्म एक जन्म देते हैं तब यह प्रश्न उपस्थित होगा कि ये अनेक कर्म किस क्रम से होंगे और कैसे जन्म देंगे? यदि यह मान लेवें कि अनेक कर्म किस क्रम से होंगे और कैसे जन्म देते हैं तो शंका होती है कि वे अनेक जन्म एक साथ होंगे या क्रमश। एक साथ तो हो नहीं सकते और यदि क्रम से मान लें तो पूर्व कथित दोष इसमें भी आ जावेंगे।

इन सब पर गम्भीरता से विचार करने पर यह कहा जा सकता है कि जन्म से मृत्यु तक के बीच में किये गये सभी भले बुरे कर्मों का सारा समूह विचित्र रूप से प्रधान हुआ और गौण रूप से मरण से अभिव्यक्त होकर परस्पर मिला हुआ मृत्यु को सिद्ध करके एक जन्म पैदा करता है और वह जन्म उसी कर्म समूह के अनुसार आयु वाला होता है। इस आयु में उसी कर्म के अनुसार भोग प्राप्त होते हैं। यही कर्माशय जन्म आयु और भोग रूपी तीन फलों को देने वाला होने से ही पाप कहाता है।

कर्म और भाग्य

कुछ व्यक्ति भाग्यवादी होते हैं। उनका कार्य भाग्य के भरोसे ही चलता है। यह भाग्य भी क्या है? और कुछ नहीं पूर्वकृत कर्म ही भाग्य हैं, उन्हीं के आधार पर उसे फल प्राप्त होता है और वह उन्हें भाग्य या विधि द्वारा प्रदत्त मानने लगता है। एक कवि ने कहा भी है—

'पूर्व जन्म कृत कर्म तद्दैवमिति कथ्यते।'

अर्थात् पूर्व जन्मों के किये हुये कर्मों को दैव या भाग्य कहते हैं। एक अन्य कवि ने लिखा है—

यथा मृत्पिण्डतः कर्ता कुरुते यद्यदिच्छति।
एवमात्मकृतं कर्म मानवः प्रतिपद्यते॥

तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार कुम्भकार मिट्टी के पिण्ड से मनचाहा पात्र तैयार कर लेता है, उसी प्रकार मानव भी अपने पूर्वजन्मों के किये हुये कर्मों के अनुरूप ही फल प्राप्त करता है।

इस प्रकार से उक्त तर्कों के आधार पर यह ही निष्कर्ष निकलता है कि संसार में जितने सुख दुःख दिखाई पड़ रहे हैं वे और कुछ नहीं उसी मानव के किये हुये कर्मों का फल है। जब हमें अपने किये कर्मों का फल भोगना ही है तब हमें कर्म भी अच्छे ही करने चाहिये जिससे दुःख न प्राप्त हों।

सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में

[ले०—श्री धरमपाल शर्मा एम० ए० वेद-शिरोमणि, डी० १८ न्यू दिल्ली साउथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली ३]

१० जुलाई १९६६ के आर्यमित्र में गुरुकुल के एक अति विद्वान् महोदय श्री वेदानन्द जी शर्मा का इस विषयक लेख पढ़ने को मिला। इस लेख में जो बहुत से प्रश्न उठाये गये हैं। उनमें से कुछ ये हैं—

प्रथम समुल्लास (आ) शंका—

मनुस्मृति अ० १२ श्लोक १२३ का प्रमाण 'एतमग्नि-वदन्त्येके' इत्यादि दिया गया है परन्तु मनुस्मृति में 'एके' नहीं अपितु 'एक' पाठ है।

सम्भवत. इस लेख को लिखते समय शायद श्री शर्मा जी के सम्मुख रखे मनुस्मृति के संस्करण में 'एक' छपा होगा। यह मनुस्मृति का छापने समय 'मुद्रा राक्षस की की हुई शैतानी है। अच्छा हो कि वे इस आधार पर सत्यार्थप्रकाश के पाठ को बदलने के लिए कहने के बजाय अपने ही मनुस्मृति के संस्करण में थोड़ी सी कलम चलाकर अनुस्वार को 'ए' की मात्रा बना दें। जिसने थोड़ी भी संस्कृत पढ़ी हुई है वह कह देगा कि

'एतमग्नि वदन्त्येके मनुमन्ये प्रजापतिम्,' मे 'वदन्ते' शब्द पढ़ा हुआ साफ कह रहा है कि उसका पूर्ववर्ती शब्द 'एके' ही होगा 'एक' नहीं। यदि यह यदि यह भ्रान्ति हो कि 'एक' शब्द तो एक वचन ही हो सकता है, बहुवचन हो ही नहीं सकता (और इस आधार पर बहुत से विद्वान् 'नामिक' मे भी महर्षि की गलती का प्रतिपादन किया करते हैं) तो मेरा विनम्र निवेदन है कि 'एके' शब्द यहां संख्या वाची नहीं है अपितु अनिश्चय बोधक विशेषण है और उस रूप में इसका प्रयोग 'केचित्' के अर्थ में बहुवचन में होता है। देखिये—

'एके सत्पुरुषा. परार्थ घटका: स्वार्थं परित्यज्यये' —भर्तृहरि

अब और लीजिये शंका (उ)

सत्यार्थप्रकाश में किये गये प्रश्न के उत्तर में महर्षि ने जो यह लिखा है—"क्या परमेश्वर अप्रसिद्ध और उससे कोई उत्तम भी है? पुन. ये नाम परमेश्वर के भी क्यों नही मानते? जब परमेश्वर अप्रसिद्ध और और उससे तुल्य भी कोई नहीं "आदि-आदि—इसमें उत्तर में द्वितीय 'अप्रसिद्ध' (मैंने उसे रेखांकित कर दिया है) अशुद्ध है। इसके स्थान पर अति प्रसिद्ध अथवा प्रसिद्ध होना चाहिये ......।'

सम्भवतः शर्मा जी महर्षि की शैली से परिचित नहीं लगते। वास्तव में यह जो दूसरा अप्रसिद्ध शब्द है इसका सम्बन्ध 'नहीं' के साथ है। इस वाक्य के यदि टुकड़े किये जाय तो यह रूप होगा। 'जब परमेश्वर अप्रसिद्ध नहीं और उसके तुल्य भी कोई नहीं' है आदि। महाशय जी! इस 'अप्रसिद्ध शब्द से तो कोई अनर्थ आज तक नहीं हुआ, परन्तु आपके इसी प्रकार के अगर विलोडन चलते रहे तो 'अर्थप्रकाश' 'अनर्थ प्रकाश' हो जायगा। आपकी बात को 'ब्रह्म वाक्य' मानकर 'अप्रसिद्ध' के स्थान पर 'अतिप्रसिद्ध या प्रसिद्ध' करने पर कितना महाअनर्थ हो जायगा।

बस एक और शंका

शंका (ऐ)—द्विज घर मे ('अपने सन्तानों को' वाक्यांश श्री शर्मा जी 'भूल से' छोड़ गए हैं) उपनयन कर आचार्य कुल मे भेजें और शूद्रादि वर्ण उपनयन किए बिना विद्याभ्यास के लिए गुरुकुल भेज दें।'

(क) विचारणीय यह है कि द्विज का तात्पर्य प्रथम तीन वर्णों से है। ऐसी अवस्था में 'शूद्रादि' मे आदि शब्द व्यर्थ है।

वास्तव में द्विज और शूद्र तो होते ही हैं, कुछ ऐसे भी होते हैं जिनका गुण कर्म स्वभाव इन चारों ही वर्णों में फिट नहीं होता। जिस मनुष्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य का एक भी गुण कर्म स्वभाव नहीं है और जो शूद्र के कर्तव्य 'शुश्रूषामनसूयया' का भी पालन नहीं करता पर है मनुष्य ही—आप उसको जानवर तो नहीं कहने लगेंगे—ऐसे को आप कहां फिट करेंगे? या कहीं आपका यह तो तर्क नहीं है कि बच्चे केवल इन चारों वर्णों के माता-पिताओं के होते औरों के होते ही नहीं—? ऐसे चारों वर्णों से इतर व्यक्तियों का समावेश 'आदि' शब्द से हो जाता है। इसका कितना महत्व है—यानी महर्षि जी के कथनानुसार प्रगति करने के लिए प्रयत्न करने का अधिकार केवल द्विजों और शूद्रों को ही नहीं अपितु उनसे निकृष्ट मनुष्यों के लिए भी है। देखा, आपने जिसको व्यर्थ बताया वह शब्द कितना सार्थक है?

(ख) "बालकों मे वर्णगत भेद नहीं होना चाहिए बालक बालक सब शूद्र ही हैं।'

लेखक का कथन सर्वथा सत्य है। परन्तु आपको यह शंका कैसे हो गई कि महर्षि ने इस वाक्य में बालक के वर्ण के बारे में कहा है। जब वे लिखते हैं—द्विज अपने सन्तानों को ... भेजें. शूद्रादि वर्ण बिना उपनयन किए भेजें' तो इस वाक्य में तो स्पष्टत: द्विज और शूद्र विशेषण माता-पिता का है। बालकों का तो नहीं है। यहां उपनयन करने का अधिकार द्विज माता-पिता को दिया है। शूद्रादि तो बिचारे पढ़ना-लिखना ही नहीं जानते—वे उपनयन अपने बच्चों का करेंगे कैसे? लेकिन उन्हें भी प्रगति करने का अधिकार प्राप्त है और वे अपने बच्चों को द्विज बनाना चाहें तो गुरुकुल भेज दें। कितनी विशालता है महर्षि की भावना में।

ये तो जो मोटी-मोटी बातें मुझ दिखाई दी मैंने सम्मुख रखी हैं। इसी से स्पष्ट हो जाता है कि सत्यार्थप्रकाश को किस दृष्टि से समझना चाहिये।

जहां तक प्रमाणों का प्रश्न है—एक बहुत रोचक घटना मैं प्रस्तुत करना चाहता हूं। कुछ विद्वानों ने महर्षि की संस्कार विधि का भी बहुत कुछ आलोडन किया। उन्हें 'ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं' इत्यादि मन्त्र का प्रमाण कहीं से शतपथ का मिल गया। बस, जब शतपथ ब्राह्मण में देखा तो वहां 'विद्वात्' की जगह 'विद्वान्' पढ़ा हुआ था। बस फिर क्या था! महर्षि के इन गुरुओं ने 'विद्वात्' को अशुद्ध बतलाकर यहां महायज्ञों में 'विद्वान्' का पाठ गर्जन, तर्जन के साथ करना शुरू कर दिया। अभी हाल में वेदवाणी में भी युधिष्ठिर मीमांसक जी ने जो संस्कार

ईसाई मिशनरियों को रुपया कैसे आता है

(ले०—श्री हरिश्चन्द्र जी बी० ए० बी० टी०)

जब हम स्वतन्त्र हुए और लोकतन्त्री संविधान देश मे लागू हुआ तब प्रत्येक व्यक्ति के वोट (मताधिकार) मे राज्य-शक्ति निहित हो गई। इस देश विदेश में ऐसे व्यक्ति और ऐसी पार्टियाँ पैदा हो गईं जो भारतीयो के इस मताधिकार को अपने लाभ के लिए प्रयोग में लाने का प्रयत्न करने लगीं।

अपने देश में ऐसा होना तो स्वाभाविक है और जब तक लोकराज्य की यह प्रणाली चालू रहेगी, वह उसका आवश्यक परिणाम होगा।

मगर हमारे इस मताधिकार को विदेशी लोग और अन्य देश अपने वश मे करने का प्रयत्न करें—यह बात देश की स्वतन्त्रता के लिए घातक है। मगर यह हो रहा है।

इस मताधिकार को अपने देश की विदेशी नीति अनुसार सचालित करने के लिए अमरीका और उसके वशवर्ती देश तथा रूस और उसकी पार्टी के देश दोनों ही प्रयत्नवान हैं।

साम्यवादी देश भारतीयो को साम्यवादी बनाकर उनको अपने अधीन या अनुकूल बनाते हैं तो अमरीका आदि देश हमारे देशवासियों को ईसाई बनाकर अपने अनुकूल बनाते हैं।

अमरीका के विदेश मन्त्री जाहन फारेस्ट डलेस ने इस नीति का निर्धारण किया था और अब तक वह नीति चालू है। इसके लिए अमरीका और उसके साथी सैंटो सन्धि के देश भारत में ईसाई मिशनों को रुपया देकर लोगों को ईसाई बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

अब तक हम समझते थे कि यह रुपया हमारे रिजर्व बैंक के द्वारा विदेशों से आता है, अत इसका ज्ञान भारत सरकार को है, और यदि भारत सरकार चाहे तो इसको कन्ट्रोल कर सकती है। इसीलिए लोकसभा में भारत सरकार का ध्यान इस ओर कई बार आकृष्ट किया गया और जो आकड़े सरकार ने बताये उनके अनुकूल भी हर वर्ष करोडों रुपया मिशनों को मिलता रहा है।

मगर अब एक ऐसी बात प्रकाश में आई है जिससे पता लगा है कि अमरीका आदि देशो के पास कई ऐसे भी तरीके हैं, जिनसे भेजा गया रुपया भारत सरकार की भी नजर में नहीं आ सकता।

अमरीका हमको अपने ४८० एल० कानून के अधीन अन्न देता है और इसकी कीमत डालरो की बजाय रुपये में वसूल करता है। इसे हम अमरीका की उदारता मानकर उसका आभार मानते हैं और प्रसन्न होते हैं। यह वसूली दो प्रकार स होती है—या तो अमरीका इसे हमारे देश मे अपनी ओर से व्यय करे या इसकी चीजें खरीद करके ले जाय। अब तक यह रुपया लगभग ८ अरब था, जो रुपया के अवमूल्यन से १२ अरब हो गया है। पिछले दिनो श्री कृष्णमाचारी ने बयान दिया था कि अमरीकन राजदूत ने इस फंड से लगभग ८० करोड रुपया निकलवाया था जो अब अवमूल्यन के बाद एक अरब बीस करोड रुपये के बराबर है। जब इसके व्यय की जाच पडताल की गई तो केवल ३५।३६ करोड रुपये के व्यय का पता लग सका। शेष का या तो पता न लगा या बतलाया न गया।

यह रुपया कहाँ गया ? इसमें सदेह नहीं कि इसका काफी भाग भारत मे ईसाई मिशनों को दिया गया। पहले जब यह बात प्रकट हुई थी कि अमरीका ने करोडों रुपये मिशनरियों को दिये हैं तो भारत में उसकी साख गिरी थी। अब ऐसा नया तरीका निकल आया है जिससे रुपया भी ईसाई मिशनों को मिल जाय और अमरीका बदनाम भी न हो।

अमरीका से जो भी लोग या सस्थायें यहा ईसाई पादरियों या मिशनों को रुपया भेजना चाहें या भेजें वे भी यही तरीका बरत सकती हैं।

अमरीकन सरकार के खजाना में डालर जमा करा दिये और अमरीकन दूतावास पर तदानुकूल हुडी लेकर रुपया भारत में अमरीकन दूतावास से ले लिया। इससे साप भी मर गया और लाठी भी न टूटी। रुपया भी ईसाई मिशनो को मिल गया। भारत मे ईसाइयत भी फैली और इसी के लिए भारत सरकार और भारतीय जनता दोनों अमरीका का आभार भी मानते रहे और उसे धन्यवाद भी देते रहे।

इसका नाम है— 'राजनीति'

★

संस्था-परिचय

आर्य समाज सावली आदि पत्रपुरी गढवाल स्यूसी नगर में आर्यसमाज मदिर निर्माण की योजना

शिरोमणि आर्य समाजो के नेताओ का सहयोगात्मक समर्थन धर्मप्रेमी दान-दाताओ स विनम्र निवेदन

दस हजार रुपए की अपील

देश की एकता और अखडता की रक्षा के लिए जनता मे मनोबल तथा शुद्ध धार्मिक भावना का जागृत करने के लिए, एव सब प्रकार से स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए उत्तराखण्ड के इन वन-पर्वतो में वैदिक धर्म के प्रचारक और प्रसारक आर्यसमाज के सगठन और सहयोग के लिए जो कुछ भी किया जाय वह कम ही होगा। क्योंकि यह सबको विदित है कि देश की रक्षा के लिए आयसमाज एक जागरूक प्रहरी है।

आयसमाज पत्रपुरी गढ़वाल पच्चीस वर्षों से गढवाल के इस भू भाग मे धर्म प्रचार और समाज सुधार के कार्यों मे लगा हुआ देश की सेवा कर रहा है। देश-भक्त आर्य नेता स्वर्गीय श्री दयानद जी भारतीय और आर्य विद्वान् प्रोफसर प० चेतराम जी शर्मा आदि अनेक आर्य-समाज के भक्त अपने पवित्र श्रम-जल से इसे सींचते रहे, और जब कभी भी समाज ने सहायता की अपील की तो जनता ने खुले हाथ से इसकी सहायता की। अत इस आवश्यक और महान् काय के लिए आर्यसमाज आपकी सेवा मे यह विनम्र अपील लेकर आ रहा है।

यद्यपि पत्रपुरी मे इसका अपना एक पुराना जीर्ण शीर्ण भवन है, परन्तु वह बस्ती से दूर और सवथा पथरीला है। दीमक इतनी अधिक है कि प्रति वर्ष काफी धन इसकी मरम्मत पर खच हो रहा है। अत समाज के सभासदों ने निश्चय किया है कि आर्यसमाज का दूसरा भव्य मन्दिर अन्य स्थान में बनाया जाय और यह पुराना भवन पाठशाला आदि दूसरे लोकोपकारी कार्यों में आता रहेगा।

पत्रपुरी के समीप ही स्यूसी नगर के तलिया (मैदान) में स्वर्गीय प० रविदत्त जी वैद्य आर्यसमाज को एक नाली से कुछ ऊपर भूमि दान कर गए हैं जिसमें प्रस्तावित आर्यसमाज का भव्य मन्दिर बनेगा। यह स्थान रामनगर-बीरोखाल-बैजरो मोटर मार्ग पर और पूर्वी नयार (नारद) नदी के किनारे सुरम्य और व्यापारिक केन्द्र स्थान में स्थित है।

यह सत्य है कि इन सुरम्य वन पर्वतों मे शुद्ध जल-वायु और आचार-विचारों की पवित्रता तो है परन्तु आर्थिक स्थिति अत्यन्त निबल है। यही कारण है कि यहा के अधिकाश लोग आजीविका के लिए देश के विभिन्न नगरो मे प्रवास करते है। अत इस समाज की आर्थिक

अपील के सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण सम्मतियाँ

—मैं इस योजना से पूर्णतया सहमत हू। इसे प्रकाशित कराया जावे।

—चन्द्रदत्त मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

—मैं भी इस अपील का समर्थन करता हू। अपने प्रचार को स्थायी एव व्यवस्थित रूप देने के लिये आर्यसमाज मदिर के निर्माण की परम आवश्यकता है। धनी मानी आर्यों तथा आयसमाज के प्रेमी अन्य धर्म बन्धुओं से आशा की जाती है कि इस समाज के निर्माण में अपना अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग दें। धन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा या आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश या आर्यसमाज सावली आदि पत्रपुरी गढ़वाल, इन तीनों में से किसी के पास भेजा जा सकता है। सभा मे एकत्र धन उक्त समाज को समय समय पर मदिर निर्माण के लिये दिया जाता रहेगा।

भवदीय—

—रामगोपाल मंत्री, सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन रामलीला मैदान के सामने, नई दिल्ली—१

स्थिति भी कैसे अच्छी हो सकती है ? मन्दिर निर्माण का काय बहुत बडा है जिस पर १००००) रुपये का व्यय आ रहा है। निश्चित है कि यह विशाल और महत्वपूर्ण काय दानी मानी सज्जनों की कृपा और सहयोग के बिना पूर्ण होना सम्भव नही है।

आयसमाज ने निश्चय किया है कि जो दानी महानुभाव १०१) रुपये देंगे उनके नाम संगमरमर के पत्थर पर अंकित करके मन्दिर पर लगाया जायेगा। जो अपने नाम से अलग कमरा बना देंगे उनके नाम का अलग पत्थर उस कमरे पर लगेगा और उनका एक बडा चित्र भी उस कमरे मे टागा जायगा। अतिरिक्त इसके जो दान दाता सम्पूर्ण आय समाज मन्दिर निर्माण के लिये एकाकी दान देंगे उनके साथ आयसमाज उचित विचार विमर्श करेगा।

आशा है कि दानी मानी महानुभाव आयसमाज की इस अपील पर उदारता पूर्वक ध्यान देंगे और मुक्त हस्त से दान देकर जहा आय समाज के कार्यो में सहायक होंगे वहा एक बहुत बडा यश भी प्राप्त करेंगे।

निवेदक—

आनन्द आय — प्रधान
शान्तिप्रकाश प्रेम — मन्त्री
अन्तर्यामि आय कोषाध्यक्ष
आयसमाज सावली आदि पचपुरी
पो० बजरी (जिला गढवाल)

(पृष्ठ ... का शेष)

म ६८ वर्ष ... समय ... । मनुष्य जीवन को ... वर्ष की ... मानकर यह ... वर्ष दूसरे ... कुछ ... है। ... है। ... निश्चित गणना नहीं ... है कि आत्मा का ... यह विषय ... है। उक्त ... रहता है। ... भी हो ... पुनर्जन्म ... किसी विचार नही है। अथवा न वह किसी धर्म का कोई अटल नियम है। यह ... मनोवैज्ञानिक अनुभव है। "आत्मा ... है ... अपनी पवित्र भावनाओं द्वारा वह पिछले पाप पुण्य की

गोरक्षा प्रचार

उत्तरप्रदेश की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे साप्ताहिक अधिवेशनो में व अन्य सार्वजनिक समारोहों में आवश्यक गोरक्षा सम्बन्धी प्रचार अवश्य करें और उसकी सूचना गोकृष्यादि रक्षिणी विभाग को देवें। गोकरुणानिधि पुस्तक जो महर्षि स्वामी दयानन्द की लिखित है और अल्प मूल्य वाली है उसका भी वितरण करें।

इस पुस्तक को मगाने के लिए सभा के प्रकाशन विभाग से पत्र व्यवहार करें

विक्रमादित्य 'बसन्त'
अधिष्ठाता
गोकृष्यादि रक्षिणी विभाग
आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

आर्य समाज शाहपुरा द्वारा वृष्टि यज्ञ

शाहपुरा आयसमाज ने दि० २४-७-६९ से वृष्टि यज्ञ प्रारम्भ किया। वृष्टि यज्ञ का सचालन श्रीमान आदरणीय ... श्री वेदानन्द जी आय गुरुकुल चित्तौडगढ ने किया। वृष्टि यज्ञ प्रारम्भ होने के तीसरे दिन से ही ... प्रारम्भ हो गई। वृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति दि० १-८-६९ को श्रीमान् राजाधिराज सा० श्री सुदर्शन देव जी के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुई पूर्णाहुति तक शाहपुरा के तालाब पूरे भर गये तथा पानी बाहर निकल कर शहर की ... भर गई और खाइयो से भी पानी बाहर निकल गया। यह वृष्टि यज्ञ का फल है। शाहपुरा की जनता ने तन मन धन से पूर्ण सहायता दी। परमात्मा ने उनकी इच्छा पूरी की। पिछले ५ वर्षों मे ऐसी वृष्टि नही हुई थी। जनता इस यज्ञ से बहुत ही प्रभावित हुई।

इसमें पडाल निर्माण मे एव सामग्री एव समिध तैयार करने मे श्री गोकुल लाल की आय ने १५ दिन तक खेती बाडी छोडकर अथक परिश्रम किया। श्री मोहनलाल जी शारदा एवं भवर लाल जी ठोक ने यज्ञ व्यवस्था का सराहनीय काय किया। धन एकत्रित करने मे श्री शावकरण जी श्री रामजी दास जी ने दिनरात एक करके साथ दिया। श्री कल्याणमल जी आवडिया कायकर्त्ता प्रधान ने बीमार होते हुए भी हमारा मार्ग प्रदर्शन किया। श्रीमान राजाधिराज सा० एव महारानी साहिबा ने भी तन मन, धन से अपूर्व सहयोग दिया। श्रीमान मांगीलाल जी अमीन सा० ने वृद्ध होते हुए भी सहयोग दिया है। आय समाज शाहपुरा सभी का आभारी है। स्वामी आत्मानन्द जी की विशेष प्रेरणा से ही यह यज्ञ आरम्भ किया गया था इसलिये आयसमाज और जनता ने उनके प्रति विशेष आभार प्रदर्शन किया। —मन्त्री

गणना कर लेना है।

टिप्पणी

वैदिक धर्म के अनुसार जीव आत्मा ... पुनर्जन्म ... है ... अवस्था प्राप्त होने तक ... समाप्त होता है।

★

ऋषि मेला एवं राजस्थान आ० प्र० सभा की हीरकजयंती

अजमेर में महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में हर वर्ष की भांति इस बार भी ऋषि मेला आगामी १९ २० २१ नवम्बर ६९ को ऋषि उद्यान (आनासागर तट) ... सरस्वती भवन मे मनाया जायगा।

इस बार ऋषि मेला गत वर्षों की अपेक्षा ... व्यापक रूप मे भरेगा क्योंकि इसी अवसर पर चिर परिचित राजस्थान आय प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती (७५ वर्षीय समारोह) भी आयोजित की जा रही है। राजस्थान आय प्रतिनिधि सभा द्वारा हीरक जयन्ती समारोह की तैयारियाँ जोर शोर से प्रारम्भ कर दी गई हैं। स्मरण रहे कि हीरक जयन्ती समारोह गत वर्ष भारतीय सीमा पर पाकिस्तान के आक्रमण से उत्पन्न स्थिति के कारण स्थगित कर दिया गया।

गत दिनों जयपुर में हीरक जयन्ती समारोह की प्रबन्ध व्यवस्था और धन सग्रह पर विचार हेतु राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की एक बैठक मे हीरक जयन्ती की तैयारी पर विचार किया गया। इसी बैठक में हीरक जयन्ती की स्वागत समिति का पुनर्गठन किया गया और राजस्थान बैंक के चेयरमैन मेजर दौलतसिंह स्वागताध्यक्ष तथा श्री श्रीकरण शारदा स्वागत मन्त्री चुने गये। बैठक की अध्यक्षता जयपुर नगर परिषद के अध्यक्ष डा० मथुरालाल शर्मा एम० ए० डी लिट् ने की।

पारिवारिक सत्सङ्ग

गुरुवार दिनांक ११-९-६९ को सायकाल लाजपतनगर में एक पारिवारिक सत्सग का आयोजन आर्यसमाज चौक द्वारा किया गया जिसमें सर्वश्री तिलकराज व श्री सत्यव्रत जी तथा श्रीमती कौशल्यादेवी के भजन हुए। अन्त में श्री विक्रमादित्य बसन्त का मृत्यु के भय से मुक्ति विषय पर वेदोपदेश हुआ। जिसका लाभ लगभग ७० सज्जनो व देवियो ने उठाया।

सस्ती वार्षिकोत्सव योजना

आय उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद ने निश्चय किया है गत वर्षों से सचालित सफल ७५) की सस्ती उत्सव योजना के अन्तर्गत माह नवम्बर ६९ में आयसमाजों के उत्सव आयोजित किए जायें इस योजना के अन्तर्गत उपसभा अपनी ओर से दो उपदेशक और दो भजनोपदेशक देती है। उत्सव का शेष व्यय एव विद्वान भोजन इत्यादि का व्यय भार स्वय समाज को वहन करना होता है।

सम्बन्धित सभी आय समाजों से प्रार्थना है कि उपसभा की इस पुण्य योजना के अन्तर्गत अपने उत्सव निश्चित कर कार्यालय उपसभा को सूचित कर अनुगृहीत करें—

—हरिदत्त शर्मा आर्य मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन मे

डा० वासुदेव शरण के निधन पर शोक

प्रसिद्ध विद्वान डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के निधन पर गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन मे एक शोक सभा आयोजन हुई जिसमे दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार थे और गुरुकुल वृन्दावन से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।

ओम् छाप हवन सामग्री

सदैव प्रयोग करें

यह सामग्री शास्त्रोक्त विधि से ऋतु के अनुसार निर्माण की जाती है। इसके हवन करने से दैहिक, दैविक तथा भौतिक तीनो तापो से रक्षा होती है एवं सुख शान्ति की वृद्धि होती है।

मूल्य—१०० ग्राम ०.२५ पैसा, २५० ग्राम ०.६० पैसा, ५०० ग्राम १.१० पैसा तथा १ किलो ग्राम २.१०। सस्ती रू० २.०० प्रति किलो।

५० किलो लेने पर रेल किराया माफ।

●

"दन्त सुधा मंजन"

यह मंजन आयुर्वेदिक औषधियों द्वारा तैयार किया जाता है। इसके प्रयोग से दांत एवं मसूढ़े मजबूत होते हैं तथा हर प्रकार के दांतो के रोगो के लिये लाभदायक है।

मूल्य—०.५० १.०० तथा २.०० प्रति शीशी

●

एजेन्सी एवं थोक खरीद के लिये हमारे एक मात्र वितरक सर श्री लक्ष्मी बाटल स्टोर्स १९/२० मीरगंज इलाहाबाद से सम्पर्क स्थापित करें।

निर्माता—

प्रयाग औषधालय

१९/२०, मीरगंज,

इलाहाबाद ३

दैनिक स्वाध्याय के ग्रन्थ

(१ ऋग्वेदसुबोध भाष्य—मधुच्छन्दा, मेधातिथि, शुनःशेप, कण्व, ... हिरण्यगर्भ, नारायण, बृहस्पति, विश्वकर्मा, सप्त ऋषि आदि, १८ ऋषियों के मन्त्रों के सुबोध भाष्य मूल्य १६) डाक-व्यय १॥)

ऋग्वेद का सप्तम मण्डल (वसिष्ठ ऋषि)—सुबोध भाष्य। मू० ७) डाक-व्यय १)

यजुर्वेद सुबोध भाष्य अध्याय १—मूल्य १॥), अध्याय ३०—२) अध्याय ३६, मूल्य ॥) सबका डाक-व्यय १)

अथर्ववेद सुबोध भाष्य—(सम्पूर्ण २० काण्ड) मूल्य ३०) डाक-व्यय

उपनिषद् भाष्य—ईश २), केन ॥), कठ १॥।) प्रश्न १॥) मुण्डक १) माण्डूक्य ।॰), ऐतरेय ॥।) सबका डाक व्यय २)।

श्रीमद्भगवद्गीता पुरुषार्थ बोधिनी टीका—मूल्य २०) डा० व्यय २)

चाणक्य—सूत्राणि

पृष्ठ-संख्या ६९० मूल्य १२) डाक-व्यय २)

आचार्य चाणक्य के ५७१ सूत्रों का हिन्दी भाषा में सरल अर्थ और विस्तृत तथा सुबोध विवरण, भाषान्तरकार तथा व्याख्याकार स्व० श्री रामावतार जी विद्याभास्कर, रतनगढ़ जि० बिजनौर। भारतीय राजनैतिक साहित्य में यह ग्रन्थ प्रथम स्थान में वर्णन करने योग्य है यह सब जानते हैं। व्याख्याकार भी हिन्दी जगत में सुप्रसिद्ध हैं। भारत राष्ट्र अब स्वतन्त्र है। इस भारत की स्वतन्त्रता स्थायी रहे और भारत राष्ट्र का बल बढ़े और भारत राष्ट्र अग्रगण्य राष्ट्रों में सम्मान का स्थान प्राप्त करे, इसकी सिद्धता करने के लिए इस भारतीय राजनैतिक ग्रन्थ का पठन पाठन भारत भर में और घर घर में अवश्य होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए इसको आज ही मंगाइये।

ये ग्रन्थ सब पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलते हैं।

पता:—स्वाध्याय मण्डल, किल्ला पारडी, जिला सूरत

गुरुकुल कांगड़ी का

पायोकिल

इसके व्यवहार से ढीले मसूढ़े कठोर और दाँतों के विविध रोग दूर होते हैं।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार

श्री एम० एम० महता एण्ड कं०,

२०—२१ श्रीराम रोड लखनऊ

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जदेवी भवानीलाल शर्मा रुकुहास की पुण्यस्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७००) की धन-राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद सं० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु मय, त्वष्टादि गरीब प० ब्रा० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जावेगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को "मित्र" पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

भारत की इस्पात में आत्मनिर्भरता

—अर्थ शास्त्री

आजादी के बाद भारत ने लोहा और इस्पात उद्योग में उल्लेखनीय प्रगति की है। इस्पात उद्योग के सामने इस समय दो मुख्य लक्ष्य हैं। एक तो इतना लोहा और इस्पात बनाना जिससे घरेलू जरूरत पूरी होने के बाद इसका निर्यात भी किया जा सके। दूसरा, बिना बाहरी मदद के देश में इस्पात कारखाने खोल सकना।

देश में काफी लोहा इस्पात तैयार होने लगा है, जिससे विदेशी मुद्रा की काफी बचत हुई है। इस्पात के कारखाने अपने बल पर लगाने का काम बहुत जारी है फिर भी इस दिशा में काफी प्रगति हुई है।

इस्पात की कहानी

कुछ वर्ष पहले तक भारत में जितना इस्पात तैयार होता था, उससे दुगना बाहर से मंगाना पड़ता था। उस समय इस्पात के केवल दो निजी कारखाने थे। इस्पात की मांग तेजी से बढ़ रही थी और विदेशों से इस्पात मंगाने में काफी विदेशी मुद्रा खर्च होती थी।

इस्पात बनाने के लिए तीन चीजें मुख्य हैं—लोहा, कोयला और चूना। देश में लोहे का बहुत बड़ा भण्डार है, २१०० करोड़ टन अर्थात् संसार के कुल भण्डार का एक-चौथाई। चूने का भण्डार १० करोड़ टन होने का अनुमान है। कोयले की वार्षिक खुदाई ८ करोड़ टन है अर्थात् इस्पात उद्योग के विकास के लिए देश में आवश्यक साधन मौजूद हैं।

दूसरी योजना में इस्पात के सरकारी कारखाने खोलने का उपक्रम हुआ। इसके लिए हिन्दुस्तान स्टील लि० नामक कम्पनी खोली गई। इसके बाद उड़ीसा में राउरकेला, मध्य प्रदेश में भिलाई और पश्चिम बंगाल में दुर्गापुर में इस्पात के सरकारी कारखाने खुले। इस्पात कारखानों की स्थापना में भारत ने पूर्व और पश्चिम दोनों गुटों के देशों से सहयोग लिया। राउरकेला कारखाने में पश्चिम जर्मनी और दुर्गापुर में ब्रिटेन का सहयोग लिया गया। भिलाई इस्पात कारखाने की स्थापना रूसी सहयोग से हुई।

इन कारखानों की स्थापना के साथ गैरसरकारी कारखानों को अपना उत्पादन बढ़ाने का प्रोत्साहन दिया ग[illegible] ने निजी और सरकारी कारखानों [illegible] ११ लाख ३३हजार ८३१ टन बिक्री का लोहा और ४५ लाख २८ हजार ७१८ टन इस्पात बना। इसके अलावा १९६१-६६ में (सितम्बर, १९६५ तक) ६ लाख ९५ हजार ४१४ मी० टन इस्पात बाहर से मंगाया गया।

निर्यात का प्रयत्न

कुछ किस्म के इस्पात के निर्यात के लिए भी प्रयत्न किया गया। १९६१-६६ में (सितम्बर, १९६५ तक) ४ लाख ६९ हजार ५३२ मी० टन इस्पात का निर्यात हुआ, जिसका मूल्य ११ करोड़ १५ लाख ७ हजार ५० था। १९६६ में निर्यात बढ़ाने का प्रयत्न और तेज कर दिया गया है।

जिन देशों को भारत से इस्पात और बना सामान निर्यात होता है, उनमें पाकिस्तान, दक्षिण वियतनाम, ईराक, सूडान, थाईलैंड, ईरान हांगकांग, कुवैत इण्डोनेशिया, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, अमरीका, जापान और कोलम्बिया हैं।

मिश्र इस्पात योजना

देश रक्षा के लिए सामान तैयार करने हेतु विशेष और मिश्र इस्पात बनाने में आत्मनिर्भर होना जरूरी है। मशीन, कल पुर्जे, मशीनी औजार तथा रेलों के लिए भी ऐसे इस्पात की जरूरत होती है। अत: मिश्र और विशेष इस्पात उद्योग के विकास की योजना बनाई गई है। मिश्र इस्पात का उत्पादन पहले से काफी बढ़ा है। १९६४ ६५ में ८२ हजार ९८१ टन विशेष इस्पात तैयार हुआ। इससे विदेशी मुद्रा की काफी बचत हुई।

चौथी योजना में ३ लाख टन मिश्र इस्पात बनाने का कार्यक्रम है। चौथी योजना के अन्त तक हमारी जरूरत ३ लाख टन की होगी। अत चौथी योजना में ही मिश्र इस्पात के और अधिक कारखाने लगाने के लिए लाइसेन्स दिए गए, क्योंकि इनके खड़े होने में काफी समय लगता है।

चौथी योजना के लक्ष्य

चौथी योजना में वर्तमान इस्पात कारखानों के विस्तार का कार्यक्रम बनाया गया है। इसके अलावा रूसी सहयोग से बोकारो में इस्पात कारखाना लगाया जा रहा है, जिसमें १९७० में उत्पादन शुरू हो जायेगा। इस कारखाने में १७ लाख टन इस्पात-पिंड बनेंगे, इसकी कुल क्षमता ४० लाख टन इस्पात पिंडों की होगी। कारखाने के लिए कुल २ लाख ९२ हजार टन मशीनों की दरकार होगी, जिनमें से केवल ३६ ३ प्रतिशत रूस से आयेगी शेष भारत की ही होगी। इसी प्रकार कुल २ लाख १९ हजार टन इस्पात के भारी इमारती सामान में से केवल ११ प्रतिशत ही रूस से आयेगा। १ लाख ८७ हजार टन अग्नि ईंटों में से केवल ४ प्रतिशत ही रूस से आएगी और बाकी देश की बनी होगी।

पहले इस्पात कारखानों की स्थापना में सहयोग देने बाहर से विशेषज्ञ आते थे। अब देश में ही ऐसे इंजीनियर और विशेषज्ञ तैयार हो गये हैं।

हिन्दुस्तान स्टील लि० ने रांची में केन्द्रीय इंजीनियरी और डिजाइन कार्यालय खोला है। यह कार्यालय इस्पात कारखानों के निर्माण और डिजाइन का काम करता है और इनसे कारखानों की स्थापना में विदेशी सहयोग की मात्रा घटाई जा सकेगी।

इस्पात कारखाने के निम्नलिखित चार भाग होते हैं—

१—कोक भट्टी—कोयले को कोक बनाती है।

२—धमन भट्टी—लौह अयस्क से लोहा बनाती है।

३—इस्पात गलाने का यन्त्र—लोहे से इस्पात पिंड बनाता है।

४—बेलन मिल—इस्पात को बेल कर उसका सामान बनाता है।

इस्पात कारखाना लगाने के लिए तफसील से योजना बनाई जाती है। मशीनों व इमारत के नक्शे बनाये जाते हैं फिर मशीनों का बनाना या मंगाना और इमारत का निर्माण शुरू होता है।

रांची में हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन की स्थापना से देश में इस्पात कारखानों की काफी मशीनें बनने लगी हैं। जो सामान अभी नहीं बन पाता, उसको बनाने की भी कोशिश की जा रही है।

आशा है कि पांचवीं योजना में बिना बाहरी मदद के देश में इस्पात कारखाने खड़े किये जाएंगे।

(पृष्ठ २ का शेष)

हिम के उच्च शिखर का, मत पूछो कुछ हाल,
सिकुड़ सिकुड़ कर रात को, रह गई आधी खाल।
डंडा, पण्डा भिड़े मुठण्डा, भरें ओम के थाल,
विराजमान मन्दिर के अन्दर, लाल श्री बद्री विशाल।
उड़ गई हेरी मुड़ गई मेरी, जैसे भेड़ी ऊन को।
गोद में पावन प्रकृति की, विनोद करती वृतिकायें,
अगम्य गगन के आलिंगन को सुरम्य उठती उपत्यकायें।
वर्णन अतीत, हैं गीत, कीर्ति की, शोभित सुन्दर शृङ्खलायें,
विहग विलोक बस विस्मृतियों में, विलीन बनती विपत्तिकायें।
सरसाती हर्षाती जाती, बरसाती मनसून की
वन्य शक्ति है सैन्य शक्ति की, जितनी कठिन कटन में,
दुर्गम पथ सब सुगम बनावे, चूर-चूर कर चरम चट्टानें।
भीष्म भयकर, पदि प्रलयंकर, ककर झंकर गहन खदानें,
नैसर्गिक वैचित्र्य मनोहर, कैसे मित्र बखानें।
माया ऊंचा करती माँ का, गाथा इन्हीं प्रसून की,
रम विरती इम फि[illegible] [illegible] करती [illegible]।
कहीं झुकटिया, कहीं लुकटिया, हंसती गिरती कुटिया,
होड़ा सी परी, परी [illegible] वा सी, कहूँ लुढ़कती लुड़या।
घोड़ा के, कोड़ा से, घोड़ा के, चढ़तो ऊपर घुड़िया
है पूरी ऐसी मसूरी, पूनम जैसे मून की···।
अविरल अविकल बहुती महती, शुचि गंगा की धारा,
धर्म धाम का राम श्याम का भावी है हरिद्वारा।
पंके ढोल की पोल खोलकर, ऋषिवर ने ललकारा,
पाखण्ड खण्डिनी गाड़ पताका वेद धर्म विस्तारा।
पुण्य भूमि मोहन आश्रम की, प्रेरक बनी बहुत की···।
मठ मन्दिर सब छोड़े पीछे, मंजिल मेरी आई।
मह देवी की दिव वेदी पर, बजी वेद शहनाई।
मोहन को तब मनमोहन ने, दे दी विजय बधाई,
प्रतिनिधियों की पैरवी में, कुण्डलि तुरत सुनाई।
प्रीत प्रीति की माया प्यारी, यारो यात्रा जून की···।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पत्रीकरण सं० एल.-६०

आ० १० शक १८८८ वि०श्रावण शु ६
(दिनांक २१ अगस्त सन् १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L.-60

पता—,आर्य्यमित्र'

दूरभाष्य २१९९१ तार "आर्य्यमित्र"
१, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

राजधानी को हिन्दीमय करने का संकल्प

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की हिन्दी-व्यवहार वर्ष योजना

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने हिन्दी व्यवहार वर्ष के अन्तर्गत दिल्ली के कम से कम एक हजार अंग्रेजी साइनबोर्डों को दिल्ली में बदलवाने का निश्चय किया है। सम्मेलन को आशा है कि इस वर्ष वह राजधानी की टेलीफोन की डायरेक्टरी का हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध करा सकेगा दिल्ली के निवासियों के विवाह आदि के निमन्त्रण पत्र व्यवहार वर्ष की समाप्ति तक पूरी नहीं तो ७५ प्रतिशत अवश्य ही हिन्दी में छपने लगेंगे। दिल्ली नगर-निगम के काय में हिन्दी का व्यवहार ५० प्रतिशत से ऊपर बढ़ जायेगा और दिल्ली प्रशासन में हिन्दी मे कार्य करने की वास्तविक शुरुआत हो सकेगी।

इसके लि। सम्मेलन ने दिल्ली प्रशासन नगर निगम नाम ट्टो क' हिंदीकरण टेलिफोन निर्देशिका तथा 'निमन्त्रण पत्र आदि म हिन्दी के प्रयोग को बढाने के लिए अलग अलग समितियां नियुक्त की है। जिनक संयोजक ओर सदस्य प्रमुख ससदस स्य निगमपापद नथा दिल्ली के वरिष्ठ नागरिक भी हैं। राजधानी मे हिन्दी के तारा को प्रोत्साहन देने के लिए स मेलन ने विशेष कदम उठाए है। इनके अ नगन प्रमुख डाक खाना पर सम्मेलन के कायकर्ता तैनात किय जा ग। हिन्दी मे ता देनेवालों की सहा ा किय। जा ग।

गली गली मे सभाए

राज नी म 'हन्दी क ा क व्यवह रि २ १ ५ अ ग ब्थान को १९ सम्मलन ने अपने पांच हजार सदस्यों को निर्देश दिया है कि वे घर घर आकर लोगो से हिन्दी मे बोलने, हिन्दी मे लिखने और राजधानी को हिन्दीमय बनाने की प्ररणा कर। इसके लिए सम्मेलन की २५ शाखाओ ने राजधानी की गली गली में हिन्दी के प्रचार के लिए सभाओ और गोष्ठियो का आयोजन किया है। कराक है कि सम्मलन द्वारा हिन्दी के प्रचार क लए १०० स ऊपर सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया जा सकेगा।

बैंकों, व्यापारिक मन्डियों, फर्मों और एसोसियेशनो से सम्मेलनों के प्रतिनिधि मण्डल मिलेंगे और उनसे हिन्दी मे काम करने का निवेदन करेंगे। सम्मेलन व्यवहार वष हिन्दी क प्रचार के लिए लगभग २५ हजार रुपया व्यय करेगा। इस रुपये से साहित्य का प्रकाशन, अखबारो, सिनेमाघरों, बसों, मोटरो और टैक्सियो पर हिन्दी व्यवहार के लिए विज्ञापन और दूसरे अन्य महत्व पूर्ण कार्यों की व्यवस्था की जाएगी।

व्यवहार वर्ष कलेण्डर

सम्मेलन ने हिन्दी के व्यवहार का सक्रिय रूप से बढ ने के लिए अब तक जो चीजें प्रकाशित की हैं उनके नाम हैं एक छो. ा कानफा/जा ल्ब्ध्मारा' व्यापारिक फर्मे और जनता के अग्रजी से हिन्दी म काय करन का गाइड "हिन्दी व्यवहार दशन ह्या हिन्दी म तार देने की विधि और उसक लाभ पर एक पुस्तिका 'हिन्दी तार स देश'। इन सबसे भी महत्वपूर्ण चीज होगी हिन्दी व्यवहार वष कलेण्डर। इस कलेण्डर पर हिन्दी क प्राण टण्डन जी का चित्र होगा और इसमे स्वतन्त्रता-दिवस से व्यवहार वष की तिथियां अंकित की ज एगी। सम्मेलन क ये सभी प्रकाशन लागत मूल्य पर ही वितरित किये जाएगे। व्यवहार वर्ष मे इसी प्रका क कई और प्रकाशन भी ह गे।

स मेलन व्यवहार वष का रचनात्मक कार्यक्रम के रूप मे प्रारम्भ कर रहा है और उसके कायकर्ता इस उद्देश्य से इस काम मे लगे हैं कि यदि उनके प्रयत्न मे दिल्ली मे हिन्दी का वातावरण बन सका तो देश में इसकी प्रतिष्ठा होने मे देर नही लगेगी।

—गोपाल प्रसाद व्यास
दिल्ली प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन
४० कम्यूनिकेशन बिल्डिंग
कन ट पलेस नई दिल्ली

स्वतन्त्रता पुकारती

आज तुम सुनो कि है स्वतन्त्रता पुकारती,
देखती सजल दृगो से आज भव्य भारती।
मैंने विम्बजों को भी था कभी विजय किया,
भी शरण मे आ गया उसको आश्रय दिया,
जिसने क्रूर दृष्टि डाल दी उसे विजय किया,
किन्तु पुत्र वन मे ही अब मुझे कलक किया।
क्या दूँ दूसरों को स्वच कचुकि सवारती,
आज तुम सुनो कि है स्वतन्त्रता पुकारती।
साधना सफल हुई किन्तु स्वप्न ढल गये,
भी अखड आज अब कट गये निकुल गये।
स्वार्थ पथ के पथिक आज क्यो बदल गये,
हैं पर्वों की भूख मे एकता निगल गये।
लड़ रहे हैं आज प्रान्त प्रान्त के महारथी,
आज तुम सुनो कि है स्वतन्त्रता पुकारती।
लिख गये नई कहानी भूमि पर आकाश पर,
त्याग से चली यहा लो मैं जिन्हो की लाश पर।
धूल डाल दी उन्हीं भगतसिंह सुभाष पर,
मर रहे हैं एक दूसरे का दिल तराश कर।
कौन थ हैं क्या हुये हू यही विचारती,
आज तुम सुनो कि है स्वतन्त्रता पुकारती।
नेहरू और गांधी सिर्फ टग रहे दीवार पर,
जल रहे आदर्श भी सिद्धान्त द्वार द्वार पर।
है सही कि खादियों का रग है निखार पर,
किन्तु देखना जरा आवरण उघार कर।
सेवको का ह्रास है बढ रहे हैं स्वारथी,
आज तुम सुनो कि है स्वतन्त्रता पुकारती।
किन्तु यह न सोचना कि इन्हीं में दोष है,
है सही हरेक पर गलतियो का कोष है।
दूसरों को देखने का ही सिर्फ जोश है,
हम कहा हैं ये न सोचने का आज होश है।
क्षुद्रता की भेंट दे रहे अक्षा के आरती,
आज तुम सुनो कि है स्वतन्त्रता पुकारती।

—धर्मेन्द्रनाथ 'अलिन्द', हल्दौर, बिजनौर

टेलिफोन-निर्देशिका का प्रकाशन हिन्दी में हो

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से टेलिफोन-निर्देशिका का हिन्दी-सस्करण प्रकाशित कराने का प्रयत्न कन वष से चल रहा है। प्रसन्नता की बात है कि केन्द्रीय सचार मत्री श्री सत्यनारायणसिंह ने भी इस दिशा मे निर्देशिका के हिन्दी सस्करण के प्रति रुचि दिखाई है।

हिन्दी-राज्यों की हिन्दी-सस्थाओं और हिन्दी प्रमी सज्जनो का भी अपने अपने नगरो की टेलिफोन निर्देशिका के हिन्दी सस्करण के लिए सम्बन्धित अधिकारियो का ध्यान आकर्षित करना चाहिए। हिन्दी-व्यवहार वष आगामी १५ अगस्त से पूरे देश में मनाया जा रहा है। हिन्दी-प्रमियो को उस योजना के अन्तर्गत 'हिन्दी टेलिफोन-निर्देशिका' का कायक्रम भी सम्मिलित कर लेना चाहिए।

—गोविन्दप्रसाद प्रकाशन मन्त्री
दिल्ली प्रादेशिक
हिन्दी साहित्य सम्मेलन

स्वत्वाधिकारिणी ... उत्तरप्रदेश के लिए ... स्व ... प्रेस, ८ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार भाद्र ६ शक १८८८ द्वि० श्रावण शु० १३ वि० सं० २०२३, दिनांक २८ अगस्त १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥१७॥

भावार्थ—जलों से, पृथिवी के रस से, अग्नि से, पूर्व को सुसम्पन्न वर्तमान था उस जीव के शरीर को परमात्मा रचता है। पुन वह जीव, तादृश मनुष्यत्व तथा देवत्व को प्राप्त होता है।

विषय-सूची

२८ अगस्त को आर्यसमाजें गो रक्षा दिवस मनायें—

सार्वदेशिक सभा-मन्त्री श्री रामगोपाल जी की घोषणा

(सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग एवं साधारण सभा की विशेष बैठकें शीघ्र इस विषय पर विचार करेंगी)

प्रधान मन्त्री, गृहमन्त्री, खाद्य एवं कृषि मन्त्री के पास सार्वजनिक सभाओं में पारित प्रस्ताव भेजे जांय

अब आर्यसमाज गो रक्षा आन्दोलन को सबल और सफल बनायेगा। सरकार की उपेक्षा नीति को प्रबल जनमत द्वारा परिवर्तित करना होगा।

गोरक्षा आन्दोलन शनैः शनैः जन मानस का आन्दोलन बनता जा रहा है। भारतीय भावनाओं के समर्थक १५० से अधिक संसद सदस्यों ने भी इस आन्दोलन का समर्थन किया है, अनेक मुस्लिम सदस्यों ने भी इसके समर्थन में हस्ताक्षर किये हैं। श्री शंकराचार्य ब्रह्मचारी प्रभुदत्त योगिराज स्वामी सूर्यदेव आदि की घोषणायें प्रकाश में आ चुकी हैं। यदि सरकार ने अपनी उपेक्षा नीति जारी रक्खी तो इन धार्मिक नेताओं को आमरण अनशन और आत्माहुति जैसे सत्कर्मों को काम में लाना पड़ेगा। हम प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि वे प्रशासन को सद्बुद्धि दें कि ऐसी घटनाओं का अवसर ही न आने पावे। सरकार की ओर से संसद में कहा गया था कि एक सप्ताह में (१५ से २० अगस्त के बीच में) सरकार की ओर से नीति सम्बन्धी घोषणा कर दी जायगी। बड़ी उत्सुकता के साथ गोरक्षकों ने प्रतीक्षा की पर निराशा ही हाथ लगी। सरकार की इस उदासीनता के प्रति एवं गोवध के प्रोत्साहन देने की सरकार की नीति के विरुद्ध रोष प्रकट करने के लिए आवश्यक है कि आर्यसमाज अपनी संगठित शक्ति का उपयोग करे। इस दृष्टि से सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल जी ने एक वक्तव्य द्वारा सभी आर्यसमाजों से अपील की है कि २८ अगस्त को देश भर में गोरक्षा दिवस मनायें, सार्वजनिक सभायें की जाय और पारित प्रस्ताव प्रधान मन्त्री, गृह खाद्य एवं कृषि मन्त्रियों के समीप भेजे जाय।

आर्य नेताओं ने अपने वक्तव्य में कहा है कि देशवासियों को जिन अभिशापों के उन्मूलन की आशा थी उनमें से एक गो-वध था। इस कलंक को धोने के लिए संविधान में व्यवस्था भी कर दी गयी थी परन्तु वर्तमान सरकार ने गो वध निषेध कानून न बनाकर जहां संविधान का अपमान किया वहां करोड़ों देशवासियों के हृदयों को भी ठेस पहुंचायी। जनता सरकार की इस उपेक्षा से क्षुब्ध है। यदि सरकार ने शीघ्र ही सम्पूर्ण भारत के लिए गोवध-निषेध कानून न बनाया तो इसकी प्रतिक्रिया भयावह होगी। आज भारतीय संस्कृति की प्रतीक और भारत की अर्थ व्यवस्था [illegible]

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

सभा की सूचनाएं

मुख्य निरीक्षक महानुभावों का जिलों का कार्य विभाजन

(१) श्री तेजसिंह जी मुख्य निरीक्षक—सहारनपुर, देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फर नगर मेरठ, गढ़वाल बा० स० देहली।

(२) श्री राम प्रसाद जी आर्य मैन्दू (अलीगढ) मुख्य निरीक्षक—बुलन्दशहर, मथुरा, अलीगढ।

(३) श्री इन्द्रवर्मा जी राम नगर-मुख्य निरीक्षक—इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, मुरादाबाद बिजनौर रामपुर, शाहजहांपुर, बरेली, बदायूं।

(४) श्री विश्वम्भरनाथ जी त्रिपाठी निरीक्षक—फतेहपुर, फैजाबाद, प्रतापगढ सुल्तानपुर, उन्नाव रायबरेली, इटावा, फर्रुखाबाद, लखीमपुर खेरी हरदोई।

(५) श्री वीरेन्द्र बहादुरसिंह जी लखीमपुर मुख्य निरीक्षक—पीलीभीत, सीतापुर, अल्मोड़ा गोंडा, बहराइच, बाराबंकी।

(६) श्री सूर्यदेव जी शर्मा मिर्जापुर मुख्य निरीक्षक—वाराणसी, जौनपुर, बलिया, गाजीपुर, गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, आजमगढ।

(७) श्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री झांसी मुख्य निरीक्षक—झांसी, जालौन, बांदा, हमीरपुर, महाराजपुर।

(८) श्री महेशचन्द्र जी शर्मा बरौठा (अलीगढ) आगरा, एटा, मैनपुरी, गढवाल, टेहरी।

टि०—आर्य-मित्र दि० १४-८-६६ मे मुख्य निरीक्षक सूची प्रकाशित की गई थी उस सूची मे श्री महेशचन्द्र जी शर्मा का नाम और बढ़ाया गया।

चन्द्रदत्त
सभामन्त्री

गोन्डा मे वेद प्रचार

श्री विक्रमादित्य 'बसन्त' स० कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ अपने तीन दिन के प्रथम कार्यक्रम में १३ से १५ अगस्त ६६ तक गोन्डा में रहे और वहा की आर्यसमाजों का विस्तृत निरीक्षण किया। इसके साथ ही साथ उन्होंने वहाँ पर इस प्रकार वेद प्रचार किया—

(१) रविवार १४-८-६६ को प्रातः काल ९-३० से १०-३० तक आर्यसमाज गोन्डा के साप्ताहिक अधिवेशन मे "आत्म सुधार" विषय पर वेदोपदेश दिया।

(२) रविवार १४-८-६६ को सायकाल ५ से ६ तक महिला आर्यसमाज, गोन्डा के साप्ताहिक अधिवेशन में "वेद में नारी की महिमा" विषय पर वेदोपदेश दिया।

(३) सोमवार १५-८-६६ को प्रात काल ९ बजे गांधी विद्या मन्दिर इन्टर कालेज में शिक्षकों एवम् विद्यार्थियों के सम्मुख वेद का स्वाराज्य सूक्त सम्बन्धी वेदोपदेश दिया।

(४) सोमवार १५-८-६६ को सायकाल ९ से १०-३० तक अथर्व वेद के "गो सूक्त" पर वेदोपदेश दिया। जिसके निमित्त एक सार्वजनिक सभा आर्यसमाज गोन्डा ने आयोजित की थी। इसी सार्वजनिक गो-रक्षा सम्मेलन मे "गो कृष्यादि रक्षिणी सभा गोन्डा" की विधिवत स्थापना श्री बसन्त' जी द्वारा की गई।

निगम के सदस्यो से अपील करते हैं कि वे अपने मतो की जनता की भावनाओ का आदर करते हुए गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगा दें। केन्द्र सरकार ने तो इस दिशा मे गम्भीर उदासीनता दिखाई है सरकार के साथ [illegible] जारी है। यदि कलकत्ता, दिल्ली के निगम इस ओर कदम उठाएँ तो सरकार काफी प्रभावित हो सकती है। आशा है बम्बई के उदाहरण से प्रेरणा मिलेगी।

आर्यसमाज टांडा अफजल की हीरक जयन्ती

विदित हो कि आर्यसमाज टांडा अफजल जि० मुरादाबाद की हीरक जयन्ती समारोह दिनांक ३, ४, ५, ६ जून १९६६ को हर्ष उल्लास के साथ मनाई गई। श्री डा० प्रकाशवती जी आर्योपदेशिका की विशेष अनुकम्पा से महिला आर्यसमाज टांडा अफजल की भी ६ जून को स्थापना हुई। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

उपर्युक्त आ० स० आने उपदेशकों एव प्रचारको से टांडा अफजल मे प्रचारार्थ पधारने के लिए प्रार्थना करता है। —मन्त्री

आर्यसमाज पाली (हरदोई) का निर्वाचन

प्रधान—श्री रामदेव जी, उपप्रधान—श्री रूपराम जी मन्त्री—श्री राम जी आर्य उपमन्त्री—श्री सुरेन्द्र कुमार जी कोषाध्यक्ष—श्री अविनाशचन्द्र जी आर्य निरीक्षक—श्री रामेश्वर प्रसाद जी। —मन्त्री

सप्ताह पर नियुक्त महानुभावों के लिये

वेद प्रचार सप्ताह पर नियुक्त सभी उपदेशकों एवं प्रचारकों से अनुरोध है कि वह निश्चित समय से अपने-अपने स्थानों पर पहुंचने की कृपा करें ताकि सभा और समाजों के बीच पूर्व से जो व्यवस्था हो चुकी है, उसमें किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

हम विश्वास करते हैं कि समस्त आर्य बन्धु अपने कर्तव्य का पूर्ण रूपेण पालन करेंगे।

अलीगढ़, आगरा, मथुरा जिलों में प्रचार

आगरा, अलीगढ एव मथुरा जिले की समस्त समाजों प्रचारार्थ श्रीजयपाल सिंह "मानव" की नियुक्ति की गई है। उक्त प्रचारक जिन समाजों मे पहुंचे, प्रचार की व्यवस्था करने एव वेद प्रचारार्थ तथा अन्य सभा प्राप्तव्य धन सन् ६५ तक का प्रदान कर अनुगृहीत करें तथा सभा की रसीद प्राप्त कर लें। उपरोक्त प्रचारक महानुभाव को बुलाने के लिए श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा आर्य समाज हाथरस (अलीगढ) के पते पर पत्र लिखें।

श्री कमलदेव शर्मा भजनोपदेशक पता दें

मथुरा आगरा, इटावा, मैनपुरी जिले की समस्त समाजो को ज्ञात हो कि श्री कमलदेव जी शर्मा भजनोपदेशक की नियुक्ति वेद प्रचार सप्ताह पर जिला सभा झांसी मे की गई है। यह सज्जन जिस किसी समाज में हो, सूचित करें तथा सम्बन्धित महानुभाव को कहें कि वह २९ अगस्त की शाम तक झांसी अवश्य पहुंच जावें।

दयानन्द प्रचारक संघ की सूचना

उ०प्र० के आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ के प्रधान श्री डाक्टर भगवद्दत्त जी गोयल सरधना बाजार मेरठ निवासी की कथा एव उपदेश अत्यन्त रोचक होता है। उक्त डाक्टरजी का नाम सभा के अवैतनिक उपदेशक सूची मे अंकित किया गया है। समाजों एव आर्य जनता को चाहिए कि डाक्टर जी महोदय के उपदेश से लाभ उठावें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री,
सभा उपमन्त्री

सूचना

आर्यवीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश केन्द्र वाराणसी के समस्त आर्य वीरो तथा अधिकारियों को सूचित करता हूं आने- वाले [illegible] तथा स्थानीय आर्य समाज के साथ शहीद दिवस उत्साह पूर्वक ३०-८-६६ को मनावें तथा सूचना कार्यकर्ता के कार्यालय को अवगत करावें।

वेद प्रचार सप्ताह के प्रोग्राम

(३० अगस्त से ८ सितम्बर)

महोपदेशक एवं उपदेशक

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—३१ अगस्त से ८ सितम्बर तक आ० स० लखीमपुर खीरी।

श्री [illegible] जी शास्त्री—३० अगस्त से ८ सितम्बर टांडा, १० से १६ सि० दिल्ली।

श्री विश्ववर्धन जी—३० से ८ सि० जिलोपसभा झांसी।

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री—३० अगस्त से ८ सितम्बर अलीगढ।

श्री केशवदेव शास्त्री—३० अगस्त से ८ सितम्बर स्त्री आ स कटरा प्रयाग

श्री प० भगवानप्रसाद जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर तक कन्नौजी।

श्री कृष्णदेव जी शास्त्री—३० अगस्त से ८ सितम्बर लालकुर्ती मेरठ।

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आ० मु०—३० अगस्त से ८ सितम्बर फैजाबाद।

श्री धर्मपालसिंह जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर चन्दौसी।

श्री नवाबसिंह जी—३० अग० से ८ सितम्बर अर्थला, १७ से २० सित० बरौठा।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—३० अगस्त से ८ सितम्बर मऊनाथ भंजन, १० से १६ दिल्ली।

श्री प्रेमचन्द जी ३० अगस्त से ८ सितम्बर सीतापुर।

श्री प्रकाशवीर जी शर्मा—३० अगस्त से ८ सितम्बर अलीगढ।

श्री वेदपालसिंह ३० से ८ सितम्बर मिर्जापुर।

श्री जयपालसिंह—३० से ८ सित० स्त्री समाज कटरा प्रयाग।

श्री [illegible]सिंह ३० से ८ सित० सुन्दरमिल कन्नौजी।

श्री दिनेशचन्द्र जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर सिकन्दराराऊ।

श्री कमलदेव जी—३० अगस्त से ८ सितम्बर जिला सभा झांसी।

श्री रामचन्द्र शर्मा—३० अगस्त से ८ सितम्बर सागर।

श्री ब्रह्मानन्द जी शर्मा—३० अगस्त से ८ सितम्बर मुड़ाना (शाहजहांपुर)।

श्री [illegible]सिंह जी—३० अग० से ८ सित० हाथरस।

गावो विश्वस्य मातरः

[ले०-धर्मचन्द्र श्रीवास्तव 'धर्मेश', एडवोकेट गोंडा]

हम सभी यह जानते,
जब पड़े थे अन्न कभी
गौ का दूध साथ था
अपूर्ण धर्म जिस दिया ।१।

किन्तु ऋषि के शिष्य हम
स्वार्थ में ही डूब कर
आज भी क्यों भूल कर
परोक्ष पाप में पड़े ।२।

आज गो है कट रही
ऋषि व्यथा लिये हुये
ऋषि की यह व्यथा पड़ी
देव पथ सतत बढ़े ।३।

स्वराज्य देववाणी हो
गौ कभी कटे नहीं
स्वदेशी सर्व वस्तु हो
जिससे हम बिके नहीं ।४।

शाश्वत वेद कह रहा,
'गोध्न को मार कर,
धेनु का त्राण कर
यदि जियें तो जियें ।५।

यह पता नहीं तुम्हें
क्या कहाँ है हो रहा
राष्ट्र प्रिय गोवंश रोज
साठ हजार कट रहा ।६।

दिया मिट्टू चाल में
गोवंश खूब काट कर,
अहिंसक ईशा पोप को
जो मांस हैं खिला रहे ।७।

बछड़ों को कटा रहे
धेनु को मिटा रहे
पंच पसर दधि को छीन
कृषक को सुला रहे ।८।

आज कट अधिक चुकी
विधि नहीं बना सके
सोचने के मित्र से थे
सैंतालिस से बहका रहे ।९।

कोटि का मांस देश,
कोटि का अस्थि भेज,
जो स्वराज्य बावजूद,
वे हठात् कर रहे ।१०।

अशोक मनु ने भेजा था,
धर्म के प्रसार हेतु,
किन्तु ये हैं जा रहे
चर्म के बाजार हेतु ।११।

जो सवधन छोड़कर,
मुर्गियां हैं पल रहीं,
मछलियां भी पालते
शूकरों के दल सहित ।१२।

शराब अंडियां खिला
यह राष्ट्र कामुक हो चला
भ्रूण हत्या तक बढ़ा
विनाश बुद्धि वाद है ।१३।

और यह विदेशी धन,
आ रहा शराब साथ,
साथ में विदेशी वाद
अपने पशु को काटकर ।१४।

'पैक ओडी' कर्णधार,
जिसकी ये बुनियाद बात
कट रही हैं गो असंख्य
गोपाष्टमी मनाते साथ ।१५।

कब परोक्ष में नहीं
किन्तु मार भी रहा
बैल आडा कर्णधार
दीन कर्म कर रहा ।१६।

छोड़ दे विदेशी मोह
छोड़ दे घमंड का टोह
देश अब है जग चुका
विश्वास को वह खो चुका ।१७।

तू तो अब के याद कर
एक गौ के मूल्य पर
ऋषि च्यवन हैं बिक गये
समग्र राज्य छोड़कर ।१८।

स्वतन्त्रता का यह समर
उठा ही था इस प्रश्न से
गो की चर्बी स्वप्न में,
हम कभी छुयें नहीं ।१९।

'इक्कीस का वादा याद कर
'तिलक' की घोषणा पर चल
इतिहास से सबक तू ले
स्वयं सभल सम्भल ले ।२०।

अहिंसा के अनुयायियो,
सत्याग्रही जो आर्यो
राष्ट्र हित में कर्मरत्
स्वदेश के सिपाहियो ।२१।

जन के तू जगा दे जन
गो को तू कटा न अब
बने अखंड एक विधि
कटे न गो यह देश हित ।२२।

संविधान यदि अपूर्ण
तो बढ़ा सबल बना
संशोधित है अनेक बार
हाय क्यों मुकर रहे ।२३।

कृषि प्रधान देश की
यह भारती पुकारती
गो के तुल्य जो रही
गौ जिसे सवारती ।२४।

समृद्धि वृष्टि से रहा
वृष्टि यज्ञ से हुआ
यज्ञ के लिये था घृत
घृत गोवंश ने दिया ।२५।

किन्तु आज लुप्त है
'इदन्न मम' परम्परा
गो नाशकों के राज्य में
घृत सुलभ न शुद्ध है ।२६।

एक यदि उचित कहे
सोचते सब करके ध्यान
और जब सब कह रहे
तो पकड़ ले सूत्र ज्ञान ।२७।

स्वतन्त्रता निर्मूल है
एक ही विषय पर जब
विधि निर्माण मान कर
प्रान्त केन्द्र भेद हो ।२८।

छोड़ दे चुनाव चाल
छोड़ दे मुद्रा का प्रश्न
गाय को कटा न अब
यह राष्ट्र की पुकार है ।२९।

गोवंश तो अमूल्य है
जिसका वध चतुर्दिक
तृण चबा चबा अधिक
वे जोतते भी पालते ।३०।

साथ दूध पूत का नद
इस राष्ट्र को उड़ेल कर
वरिष्ठ हैं बना रहे
ताप तीन मेट कर ।३१।

अरे ओ आर्य जागो
हृदय से तू बनी तो बन
जला यह अग्नि उर में जो
है सृष्टि के प्रभात से ।३२।

मिटा तू कन्न की व्यथा
बढ़ के तू बचा के गौ
पवित्र धेनु सन्त हित
यह धर्म' की पुकार है ।३३।

भ्रात यह राखी का उपहार

इसे न समझो केवल भैया रंगे सूत के तार।
भ्रात यह राखी का उपहार ॥

आर्य संस्कृति की मर्यादा है ये अबलाओं का बल है,
अमानुषिक उत्पीड़न से पीड़ित आत्माओं का सम्बल है।
कर्म क्षेत्र का आवाहन ये वीरों का श्रृंगार।
भ्रात यह राखी का उपहार ॥

देते हैं साक्षात गवाही स्वर्ण पृष्ठ इतिहासों के।
राणा' सह सम्राट हुमायूं के अतुलित उल्लासों के ॥
जिसकी चमकी वीर भूमि में तलवारों की धार।
भ्रात यह राखी का उपहार ॥

आज देश की उत्तर सीमा पर अभिमुखित कोलाहल है।
अकुलित मातृभूमि का देखो आंचल-आंचल बलिदान आतुर है
फिर प्रयाण कर तुम्हें चढ़ाना उत्सर्गों का हार।
भ्रात यह राखी का उपहार ॥

आप सको तो बांधो कर में इसका मोल चुकाना होगा।
स्वतन्त्रता के चरण कमल पर जीवन सुमन चढ़ाना होगा ॥
पूर्ण प्रतिज्ञा कर पाओ तो करो इसे स्वीकार।
भ्रात यह राखी का उपहार ॥

भाई का उत्तर

बहिन मुझको राखी स्वीकार।
मम जीवन का लक्ष्य तुम्हारे आदेशों का सार ॥
यह राखी की मर्यादा है बहिनों का रक्षा बन्धन है।
नव प्रयाण की अमर गीतिका मानवता का सम्बोधन है ॥
इसमें चमक रहा बहिनों का सुन्दर मृदुल दुलार।
बहिन मुझ को राखी स्वीकार ॥

मैं क्षत्रिय हूं वीर पुत्र हूं मैंने प्रण को नहीं भुलाया।
मेरी बलखाई तलवारों के चमके का अवसर आया ॥
कस कर बांधो मणि बन्धों पर रक्षा सूत्र सवार।
बहिन मुझ को राखी स्वीकार।

मेरी दृष्टि काश्मीर नेफा के ऊंचे कगारों में।
बहिन भरो विश्वास लडूं, पीकिंग पिंडी के बाजारों में।
बन्धन मुक्त करूंगा निश्चित घाटी कूल कछार।
बहिन मुझको राखी स्वीकार ॥

पंचशील का भी दम मौन है, सह अस्तित्व का ढोंग चपल है
मुझ काटने दुःशासन के हाथ छुआ मां का आंचल है।
विश्व सुनेगा पांचजन्य, गाण्डीवों की टंकार।
बहिन मुझको राखी स्वीकार।

—धर्मेन्द्रनाथ 'अलिन्द' हल्दौर (बिजनौर)

वेद के विषय में—

राधास्वामियों के गुरु के भ्रामक विचार

(ले०—श्री बिहारीलाल जी शास्त्री, बरेली)

राधा स्वामी के तीसरे गुरु श्री आनन्द स्वरूप साहब जी महाराज ने एक पुस्तक लिखी है—'यथार्थ प्रकाश" पुस्तक मूल रूप में उर्दू में लिखी गयी

श्री बिहारीलाल जी शास्त्री

थी अब उसका हिन्दी रूपान्तर भी छापा गया है।

साहब जी महाराज संस्कृत भाषा से शून्य थे ही हिन्दी भी पढ़ना मात्र जानते थे लिखने में असमर्थ थे परन्तु साहस यह था कि यथार्थ प्रकाश में आर्य समाज के सिद्धान्तों की आलोचना करते हुए आपने वेद पर भी लेखनी चलाई है।

आपने लिखा है कि जब आर्य लोग बाहर से आकर इस देश में बसे तो और भी आर्यों के समूह आते रहे। अधिक भीड़ होने लगी तो नयी नयी भूमियों की खोज में उनके समूह इधर-उधर को चले। जब वे समूह चलते थे तो उनका नेता अपने हाथों में आग लिये हुए चलता था। उसके साथी पूछते थे कि किधर चलना है तो वह कहता था कि जिधर की अग्नि के चले उधर चलना है और कहता था कि—'अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्।"

'हे अग्नि हमें धन के लिये अच्छे मार्ग से ले चलो" और जिधर आग की लपट उठती थी उधर चल देता था समूह उसके पीछे चलता था। हमने उनके अन्ध लेख का यह भाव मात्र दिया है।

साहब जी ने निष्कर्ष निकाला है कि इस प्रकार वेदों के मन्त्र बने हैं।

अब विचारिये कि वेदों के विषय में आपकी इस मन गढ़न्त के लिये क्या आधार है?

इस प्रकार की कल्पनायें तो महात्मा कबीर की कविताओं पर, श्री राधा-स्वामी मत के गुरुओं के शब्दों पर कबीर जी की साखियों पर भी चिपकायी जा सकती हैं। यदि हम भी कहानियाँ आपके गुरुओं के शब्दों पर बनायें तो यह उप-हास क्या आप पसन्द करेंगे?

आपके चेला बसन्त चेले तो इन मूर्खतापूर्ण गप्पों को गुरु वाक्य मानकर शिरोधार्य कर लेंगे परन्तु वैदिक विद्वान् तो आपकी इन कल्पनाओं पर आपकी योग्यता को क्या योग्य ही समझेंगे।

मन्त्र में "युयोध्यस्मज्जुहुराणमेन" का प्रसंग आप क्या बनायगे 'हमें कुटिल पाप से दूर करो' इन वाक्यों का उस यात्रा से क्या प्रयोजन था वेद की इस सुन्दर भावमयी प्रार्थना पर कैसा तुच्छ विचार व्यक्त किया है श्री गुरु महाराज ने सम्भवतः सुरत चढ़ाने पर राधा स्वामी धाम से यह सन्देश उन्हें मिला है।

एक विदेशी सरकार के परम भक्त, संस्कृत ज्ञान से शून्य केवल संसारी व्यक्ति वेद वाणी पर उद् कल करे यह कितने क्षोभ की बात है। इन मतवालों की ऐसी ही चेष्टाओं पर ऋषि दयानन्द ने इनकी कठोर आलोचना की है। श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कबीर आदि पर जो वेदशास्त्र ब्राह्मण पठित शास्त्रीय मर्यादाओं का उपहास करते थे डटकर चोटें की हैं। श्री गोस्वामी जी ने इन लोगों की अशास्त्रीय युक्तियों पर ही यह लिखा है—

"कलिमल ग्रसे धर्म सब,
लुप्त भये सद्ग्रन्थ।
दम्भिन निज मत कल्पि कर,
प्रकट कीन्ह बहु पंथ॥"

यह दोहा राधा स्वामी मत पर पूरी तरह लागू होता है। सुरत शब्द योग के नाम पर ९९ नाम दम्भ ही दम्भ रहा है। और दम्भों में ही लोग शीघ्र फंस जाते हैं।

राधा स्वामी मत का उद्गम स्थान कबीर मत है। हाथरस के तुलसी साहब जिन्होंने घट रामायण लिखी कबीर पन्थी ही थे। उनके चेले बने मास्टर श्री शिव-दयालसिंह जी, उनके शिष्य रायबहादुर श्री शालिगराम जी, इन्होंने ही राधा-स्वामी मत की स्थापना करी। इनके शिष्य हर साहब जी महाराज हुए। इनकी एक शाखा सतमत मुरादाबाद में श्री मुंशी देवीप्रसाद जी ने चलायी जिनके शिष्य श्री महात्मा मेंहीदास जी बिहार में काम कर रहे हैं परन्तु यह वेद शास्त्रों के विरोधी नहीं हैं। कबीर साहब का सुरत शब्द योग वेदोपनिषद् का ही विकृत रूप है।

देखिये अथर्व वेद—काण्ड १० सूक्त ८

१—अष्ट चक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः (अथ० काण्ड १० सू० २।३१)

२—पुण्डरीक नव द्वारं त्रिभिर् गुणेभि रावृतम् तस्मिन् यद् यक्ष आत्मन् वतद्ब्रह्माविदो विदु। ४३

अर्थ—१—आठ चक्र और नौद्वार वाली देवो की पुरी अयोध्या (अजेय) है। उसमें सुनहरी कोश, प्रकाश से छाया हुआ स्वर्ग है।

२—नौ पत्तली वाला एक कमल है। तीन डोरों से घिरा हुआ है। उसमें जो पूजनीय वन्दनीय चेतना युक्त है उसे ब्रह्म ज्ञानी जानते हैं अर्थात् उसका अनु-भव करते हैं।

ऐसे ही रूपक प्राय: कबीर जी की कविताओं में हैं। हठयोगियों के अनु-संधान इसी आधार पर हैं। वेदों ने शरीर के भीतर ही ब्रह्मानन्द की प्राप्ति और उसका अनुसंधान करना बताया है। निर्गुण निराकारवादी सब संतों ने

श्रावणी

श्रावणी का पर्व प्राणों में अतुल उल्लास भरता।
ग्रीष्म का परिताप हरने पग पावस ने पसारे।
व्योम से रिम झिम झड़ी ने, मृण्मयी पद तक पखारे।
प्रिय-प्रकृति के प्रांगणे में बिछ गया परिधान धानी।
पल्लवित-पादप-शिखर पर चढ़ चली लतिका-सुहानी।
मेदनी के वक्ष से अतृप्त झरना आज झरता॥

योवना अज्ञात सी सरिता-बही इठिला रही है।
तोड़कर मर्याद कूल की, आकुलित बहका रही है।
छींट सी छिटकी बधूटी, मर्म में सिन्दूर शोभित।
भाल पर अनुराग बिन्दी रूप भरती है अपरमित।
इन्द्र धनुषी जलधरों का केतु नभ तल पर लहरता।

वेद-विद् विद्वज्जनों ने श्रुति का शुचि पाठ खोला।
बन्धु के उर में भगिन ने, प्रेम का पीयूष घोला।
कण्ठ भर-भर झूम कर, हिन्दोल पर मृदु गीत गाए।
सुप्त जीवन में सजगता के, मधुर स्वर सिहर आए।
ये सुखद वातावरण नैराश्य का नीहार हरता।

कीठ कोरी कुजरो के भाल भी पूजे इसी दिन।
पंचमी को पय पिलाकर व्याल भी पूजे इसी दिन।
प्रेम, करुणा, स्नेह की सीमा उल्लंघन की इसी दिन।
आत्म चिन्तन की चचाएँ, बैठ मनन की इसी दिन।
हो सदय, निर्मल हृदय तू क्यों नहीं चरता-विचरता?

कलुष मानस का मिटाती, भगिन की मादक मल्हारें।
ओज भरती हैं दलितों की, कहीं बर्जन पुकारें।
क्यों छिपाते बन्धुवर! लाओ इधर अपनी कलाई।
बांध दूं दृढ़-तार से, हो राष्ट्र-जीवन की भलाई।
राष्ट्र-रक्षा का सुदृढ़ बन्धन यही त्योहार करता।

बाह्य अन्तर शक्ति का संचय सभी करते इसी दिन।
पुरुष-पुंगव-वीर-पौरुष कोष भी भरते इसी दिन।
मोद के वन में सुखों के स्रोत भी झरते इसी दिन।
मानसों पर मोह-खग मृग मस्त हो चरते इसी दिन।
आज जन मन बैठ कर संताप का सागर उतरता।
श्रावणी का पर्व प्राणों मे अतुल उल्लास भरता॥

—श्री 'कुसुमाकर' फीरोजाबाद

भी अपनी ही में ब्रह्म को खोजा और माया ... मायानुभवात्मक, अध्यात्मक ध्यान उपनिषद् और पातंजलि को भी स्वीकार है—

नाद बिन्दूपनिषद नाम का एक उपनिषद् है। इसमें नाद के विषय में देखिये—

"ब्रह्म प्रणव सधान नादो,
ज्योतिर्मय शिव
स्वयमाविर्भवेदात्मा मेघापायेऽंशु मानिव
सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रा संधाय
वैष्णवीम्
शृणुयाद्दक्षिणे कर्णे नाद मन्तर्गत सदा
श्रूयते प्रथमाभ्यासे नादो नाना विधो
महान्
वर्धमाने तथाभ्यासे श्रूयते सूक्ष्म सूक्ष्मत
सर्वाचिन्ता समुत्सृज्य सर्व चेष्टा विव-
र्जित
नाद मेवानु सदध्यात् नादे चित विली-
यते ॥

अर्थ—ब्रह्म और ओम्" नाम का प्रेम यह नाद ज्योतिर्मय शिव है। इस प्रकार साधन करने से आत्म दर्शन इस प्रकार हो जाता है जैसे मेघ हट जाने से सूर्य दर्शन होता है।

योगी सिद्धासन पर वैष्णवी मुद्रा बनाकर बैठ और दक्षिण कान में सदा भीतरी नाद को सुने।

प्रथम अभ्यास में नाना प्रकार का महान् नाद सुना जाता है। अभ्यास बढ़ते बढ़ते सूक्ष्मातिसूक्ष्म नाद सुनाई देता है।

सब चिन्ताओं को छोड़कर सब प्रयत्नों से रहित होकर नादानुसंधान ही करता है तो नाद में ही चित्त लय हो जाता है।

यह नादानुसंधान भी केवल मन के ठहराने का एक ढंग है। ब्रह्म साक्षात्कार के लिए तो स्वाध्याय की आवश्यकता है और पातंजल विधि से मल, विक्षेप आवरण हटाकर आत्मा में व्यापक ब्रह्म साक्षात् करना अर्थात् ब्रह्मानन्द की अनुभूति करता है।

नाद एक साधन है साध्य नहीं परन्तु राधास्वामी मत के लोग इसे ही साध्य समझ बैठ और इससे आगे नहीं बढ़ते। इसीलिए उपनिषद् ने कहा है—

'तद विज्ञानार्थं गुरुमेवाभि गच्छेत् श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठम्'।

उस ब्रह्म के विज्ञान के लिये गुरु के समीप जाये किन्तु गुरु होना चाहिये श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ। वेदों का विद्वान भी और ब्रह्म भक्त भी अलेपनी और निर्मल भी। गुरु की साधना अधूरी रहती है। राधास्वामी मत वालों ने वेद उपनिषद् दर्शन, उपवेद आदि से अपने चेलों को दूर रखा और कूपमण्डूक बना दिया।

उक्त वेद मन्त्रों में जो आठ चक्र नव द्वार बताये हैं वह भी शरीर में इन्द्रियों के छिद्र द्वार हैं ... [illegible] ब्रह्म द्वार मस्तिष्क में। इस द्वार के लिए ही साधना की जाती है। ८ चक्र हैं—

१—मूलाधार चक्र—गुदा से कुछ ऊपर मेरुदण्ड के नीचे।

२—स्वाधिष्ठानचक्र—लिंग वा योनि के पीछे।

३—मणिपूरचक्र—नाभि के पास।

४—अनाहत चक्र—हृदय के समीप।

५—विशुद्ध चक्र—कण्ठ के समीप।

६—आज्ञा चक्र—भौंहों के बीच में

७—ललितचक्र वा सूर्यचक्र मस्तिष्क में।

८—सहस्रार चक्र व शतदल कमल चक्र—शिखा के नीचे।

अनुभवी योगी गुरु की सहायता से साधक अपने प्राण और प्राणों के साथ मनोवृत्ति को ऊपर ऊपर चढ़ाता है। ये चक्र ज्ञानवाहिनी नाड़ियों के गुच्छे हैं जहाँ चेतन की विशेष क्रिया होती रहती है। इनमें छूता हुआ प्राण अधिकाधिक शक्ति लेता हुआ ऊपर ही ऊपर जाता है।

जब सहस्रार चक्र तक चढ़ जाता है तो अपूर्व आनन्द की अनुभूति होती है। नवम द्वार खुल जाता है। मृत्यु पर अधिकार होता है। पूर्ण सन्तोष मिल जाता है।

नवद्वार पुंडरीक भी इसी सहस्रार चक्र का नाम है। यह भी सूक्ष्मातिसूक्ष्म नाड़ी जाल मस्तिष्क में ही है। सत्व रज तम इन तीन गुणों से यह चेतन स्थान घिरा हुआ है यहाँ ध्यान लाने पर पूज्य आत्मा का आनन्द मिलता है। यह सब विषय तर्क से समझने वा शब्दों द्वारा समझाने का नहीं है। इसीलिये ऋषियों और सन्तों ने लक्षणाओं द्वारा रूपकों द्वारा आभास दिया है। यह सब कुछ तो अनुभव से ज्ञातव्य विषय है। एतदर्थ गम्भीर ज्ञान और कठिन साधना चाहिये। उच्चकोटि के योगियों के सत्संग के बिना साधना भी अधबर में ही भंग हो जायगी।

साधना के समय एक अवलम्बन चाहिये यही है मन्त्र प्राण के ऊपर चढ़ने को यह एक डोर है। यह शब्द नाद वही होना चाहिये जो कानों में स्वयं सुन पड़े। ब्रह्माण्ड में गूंज रहा हो। अब कान बन्द करके सुनो, वा ध्यान लगाकर सुनो ब्रह्माण्ड में एक ध्वनि गूंजती है ॐ यह ध्यान अव्यक्त है 'ॐ' इसका व्यक्तोच्चारण है। यह ध्वनि आकाश नक्षत्र भ्रमण से प्रकट हुई है और आकाश में भरे वायु विद्युत् होती है इसी ध्वनि को ग्रहण किये हुए ध्यान लगाता हुआ योगी जब सूक्ष्मातिसूक्ष्म ध्वनि के रूप तक आयगा तब वह गूंज पराबाणी के रूप में, केवल ज्ञानात्मक इन्द्रियातीत हो जायगी। यही अन्तिम मंजिल है। स्थूल से सूक्ष्म तक जाना ही लक्ष्य है मन का नाम जपने का लक्ष्य यही है। और वह नाम ऐसा होना चाहिये जो कुदरती है। राम नाम, खुदानाम आदि नाम कुदरती नहीं है ओम् प्राकृतिक ध्वनि है।

इसीलिये उपनिषद गीता वेद, योगशास्त्र, गुरु नानक देव जी, जैन, बौद्ध सब ने 'ओम' को महावाक्य, ईश्वर का मुख्य नाम, भव तरने को सेतु माना है।

लेख बढ़ न जाये इस कारण हम सब प्रमाण नहीं लिखते हैं। इंग्लिश तक में ओम नाम है (O I M) पर राधा स्वामियों के सन्तोष के लिये उनके मूलमान्य महात्मा कबीर का प्रमाण लिखे देते हैं—

जो ओंकार आदि को जाने, लिख के मेटे ताहि सो माने।

जो ओंकार कहे सब कोई जिहि यह लखा सो बिरला होई॥

परन्तु राधास्वामियों के गुरु की लीला निराली है। साहब फरमाते हैं कि अन्तर्ध्यान होता है। राधास्वामी, कमाल है इस अंधविश्वास और असभ्यता का बस करो। किसने सुनी है यह ध्वनि? आकाश में कहाँ हो रहा है यह नाद? जब स्थूल में नहीं तो सूक्ष्म में कैसे माना जाये। ओम की ध्वनि तो स्थूल में भी प्रकट हो रही है तो इसका सूक्ष्मरूप भी अवश्य है जो परावाणी तक पहुंचता है। राधास्वामी यह ध्वनि सूक्ष्म में ही अस्वाभाविक है। ध्वनि अधिक अक्षरमयी कैसे हो सकती है। गूंज में अक्षर नहीं होते। नाम नहीं बन सकते। गूंज एकाक्षरमयी होती है।

राध स्वामी की अन्तर में ध्वनि में ध्वनि होना गुरु नानक देव महात्मा कबीर किसी ने भी नहीं माना। यह नाम भी इस मत का कबीर जी के एक दोहे पर इनके गुरु जी ने घड़ा लिया है। दोहा यह है—

कबिरा धारा अगम की घटघट रही समाय।
ताहि उलट सुमिरन करो स्वामी संग मिलाय॥

कबीर साहब कहते हैं कि अगम्य अर्थात् ईश्वर की धारा घटघट में समा रही है। अद्वैतवादियों के मतानुसार केवल ब्रह्म ही अविद्योपाधि जीव है। 'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः'। अद्वैतवादी जीव को ईश्वरांश मानते हैं वही कबीर जी ने कहा। उस धारा को तुम उलट कर अर्थात् संसार से विरक्त करके ईश्वर के संग मिलाकर ईश्वर का स्मरण करो।

धारा का उलटा होता है 'राधा' यहाँ इन लोगों ने आत्मा की वृत्ति को उलटना था पर यह शब्द को ही उलट बैठे!

भोंडे ढंग पर वेदों का उपहास करके साहब जी महाराज शास्त्रज्ञों की दृष्टि में स्वयं उपहासास्पद बने हैं। अध्यात्म के इच्छुकों को ऐसे अज्ञान प्रचारक गुरुओं से दूर रहकर वेदोपनिषद् का सहारा लेना चाहिये। उक्त अथर्व मन्त्रों पर ही हठयोगियों ने अपना भवन खड़ा किया है। कबीर जी ने बौद्धों का शून्यवाद और वैष्णवों की आस्तिकता लेकर काम चला या है। है सब एकांगी। आदि सृष्टि के योगी ऋषि जो शुद्ध संस्कारों से जन्मजात समाधिस्थ हुए। और माया के, प्रकृति के सूक्ष्म परदे के पार पर तब तक पहुंचे तब स्वयं ब्रह्म ने उनके हृदय में जिन शब्द राशि का प्रेरणा करी वे ही वेद हैं।

तानृइ तच्चरान् स्वयमुभ्यर्ष प्रातपत् तर्वेषत् तद् ऋषयो माम् ऋषित्वायेति॥

★

हरिजनों पर अत्याचार असह्य

उ० प्र० सरकार ध्यान दे

महान् आश्चर्य का विषय है कि स्वतन्त्रता की प्राप्ति के १८ वर्ष पश्चात् भी भारत में हरिजन दयनीय अवस्था में हैं। और उन पर पूर्व की भांति अन्याय अत्याचार किये जा रहे हैं। सुना गया है कि मुरादाबाद जिले के ग्राम कहरा कमबर में वहां अमीदार मुसलमान लोगों ने उनके धर्म मन्दिर और पीपल के वृक्ष का सफाया करके वहाँ जबरदस्ती कब्रिस्तान बना दिया और उनके साथ मारपीट की और उन्हें अपमानित किया। उनके इस गुण्डपन का समर्थन करने मुरादाबाद क्षेत्र के मुस्लिम एम०पी० भी गये। ग्राम में पुलिस का पहरा है परन्तु सर्वत्र आतंक छाया हुआ है। यह ग्राम मुस्लिम गढ़ सम्भल व सराय तरीन के साथ लगता है।

उ० प्र० सरकार का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस प्रकार के गुण्डेपन का कड़ाई के साथ दमन करे और वहाँ के हरिजनों के अधिकारों की रक्षा करे। सरकार की दब्बू एवं साम्प्रदायिकता पोषक नीति का ही यह कुपरिणाम है। सरकार को इस विनाशक नीति का परित्याग कर ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये अन्यथा इसके भयंकर कुपरिणाम होंगे। हरिजनों पर अत्याचार किसी भी अवस्था में सहन नहीं किया जायगा इस बात को भलीभांति सरकार को समझ लेना चाहिये।

—ओम्प्रकाश त्यागी
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान के सामने
नई दिल्ली—१

राजनैतिक समस्याएं

युद्ध और शान्ति के प्रश्न पर रूसी चीनी दृष्टिकोण

(ले०— श्री ब्रजनन्दनप्रसाद जी)

[युद्ध व शान्ति की आवश्यकता तथा महत्व पर इन दोनो विशाल कम्यूनिस्ट देशों मे जबरदस्त मतभेद है। जब उनका मतभेद खुल्लमखुल्ला सामने आया तो यह रहस्य भी प्रकट हुआ। भारत की वर्तमान व भावी शान्ति के प्रश्न को ठीक तरह से समझने के लिए वह भी ऐसे समय में जबकि चीन एक बार भारत पर हमला कर चुका है, दुबारा धमकी दे चुका है और उसकी सशस्त्र सेनायें हमारी उत्तरी लम्बी सीमाओ पर बराबर वर्षों से आज भी तैयार खडी है तथा जब रूस का रुख पाकिस्तान की ओर झुक रहा है, इनकी सिद्धांतिक नीतियो पर विचार करना परमावश्यक है। —सम्पादक]

रूस की छद्मपूर्णवार्ता—नवीन चीन की संवाद समिति ने ३० मार्च १९६४ को पीपुल्स डैली और रैड फ्लैग नामक चीनी पत्रो से कुछ अंश प्रकाशित किये थे। युद्ध तथा व्यूह की रचना की समस्यायें जिसमें कुछ चुने हुए फौजी लेख हैं और जिसे पीकिंग के विदेशी भाषा प्रेस ने १९६३ मे प्रकाशित किया है, के पृष्ठ संख्या २६७ से कुछ अंश नीचे उद्धृत किये जाते हैं। नीचे के चार प्रमाणित अवतरणो से चीनी दृष्टिकोण पर अच्छा प्रकाश पडता है।

कामरेड माओत्से तुंग का कथन है यह केवल बन्दूक की ही ताकत है जिस से कि मेहनत करने वाले व मजदूर लोग हथियार बन्द पूंजीपतियों व जमींदारो को हरा सकते हैं। इस धारणा से हम यह कह सकते हैं केवल बन्दूक के बल पर ही सारे संसार को बदला जा सकता है।

चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी के विचारो का वक्तव्य जो सोवियत कम्यूनिस्ट पार्टी के समक्ष नवम्बर सन १९५७ में प्रस्तुत किया गया। चालो को ध्यान मे रखते हुए यह उपयोगी है कि शान्तिपूर्ण परिवर्तन की इच्छा का जिक्र किया जावे लेकिन यह अनुचित होगा कि शान्तिपूर्ण परिवर्तन की सम्भावना पर अधिक बल दिया जावे और क्रांति के नाजुक समय मे जबकि मजदूरवर्ग राज्य की शक्ति को छीन रहा हो मालिक व अमीरो के वर्ग को हथियारो की ताकत से निकाल दिया जावे।

वैधानिक तरीके से यह समाजवाद को प्राप्त करना नितान्त असम्भव है और केवल यह धोखेबाजी की बात है।

जब कम्यूनिस्ट जोरशोर से सामयिक संघर्ष का नेतृत्व करते हो तब उन्हे जनता के आम और लम्बे समय वाले संघर्षो मे जोड देना चाहिए तब जनता को सर्वहारा क्रान्ति की भावना में दीक्षित करना चाहिये। इसी के साथ साथ उसमे राजनैतिक जागृति उत्पन्न करने और क्रांति की शक्ति का संचय करने के लिये लगातार प्रयत्न करना चाहिये जिससे फिर विजय प्राप्त कर सकें।

सुधारवादी लोग सशस्त्र संघर्ष तथा सभी गैरकानूनी संघर्षों को नापसन्द करते हैं। वे सदैव न्यायसंगत लडाई और कार्य करना पसन्द करते है और जिस कार्य को करने की शासकवर्ग इजाजत देता है उसी के अन्दर वे अपनी कार्यवाहियां और जनसंघ समिति रखते हैं। वे पार्टी के आन्दोलन को संयम की सन्धि और व्यवहार तक सीमित रखते हैं, क्रान्ति को त्याग कर केवल प्रतिक्रियावादी कानूनी प्रणाली का अनुसरण करते हैं।

निम्नलिखित ५ उद्धरण पीपुल्स डैली तथा रेड फ्लैग के १७ नवम्बर १९६३ के अंक से है।

हमारा विचार है कि पीडित लोग तथा जातियां केवल अपने दृढ क्रान्तिकारी संघर्ष के द्वारा ही मुक्ति पा सकते हैं कोई दूसरा उनको स्वतन्त्रता प्राप्त नही करा सकता।

सोवियत संघ की की कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता जब अपने आणविक हथियारों का जोर शोर से प्रदर्शन करते हैं तो उनका मन्शा साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनता के संघर्ष का समर्थन करना नही होता। कभी कभी सस्ते नाम कमाने की खातिर वे थोथे कथन प्रकाशित करवा देते हैं जिन्हें वे कभी भी कार्यरूप मे परिणत करने का विचार नही रखते। अन्य अवसरो पर जैसे कि करैबियन संकटकाल में, वे काल्पनिक अनुत्तरदायी तथा अवसरवादी आणविक जुएबाजी की चालें किसी दूरदर्शी मतलब से चला करते हैं। जैसे ही उनकी आणुविक चालो का भण्डाफोड हो जाता है और उनका उसी ढंग पर निराकरण कर दिया जाता है। वे एक एक कदम के द्वारा पीछे हट जाते हैं। एक साहसिक कार्य को छोड दूसरा नये ढंग का उपनिवेशवादी कार्य करने लग जाते है और फिर अपना आणुविक जुएबाजी मे सभी कुछ खो बैठते हैं।

तथ्यों के द्वारा यह बात सिद्ध हो चुकी है कि साम्राज्यवाद को केवल संघर्ष द्वारा ही हटने को मजबूर किया जा सकता है और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव मे वास्तविक ढील लाया जा सकता है।

दुनियां की शान्ति के लिए केवल वार्तालाप पर आशा लगाना उनके बारे मे झूठा प्रचार करना और जनता की लड़ाई लडने की इच्छा को कुचल डालना नितान्त अनुचित है।

वे (सोवियत नेतागण) आणविक धूमखोरी के प्रयोग से पीडित जनता और जातियों को धमकाते हैं तथा उन को क्रान्ति करने से रोकते हैं। वे क्रांति की चिनगारियो को नष्ट न करने मे अमरीकी साम्राज्यवाद से सहयोग करते हैं। वे इस प्रकार वे अमरीका को अपनी लडाई लडने व लडाई मे घुसने की नीति को प्रोत्साहन देते हैं। विशेषकर उन देशों मे जो अमरीका व समाजवादी देशों के बीच स्थित है।

इन्ही दोनो प्रसिद्ध चीनी पत्रो के अंको से नवीन चीन की संवाद समिति ने २१ अक्टबर १९६३ का यह अंश प्रसारित किये थे।

दूसरे महायुद्ध के उपरान्त १८ साल के इतिहास ने यह सिद्ध कर दिया है कि राष्ट्रो के लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करने की लड़ाइयां अवश्यम्भावी है।

इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि इस समय एक उपयुक्त क्रान्ति की स्थिति एशिया अफ्रीका व लैटिन अमरीका के देशो मे बडी मजबूती की शक्तियां बन गई हैं जो साम्राज्यवाद पर भारी आघात करती है। दुनिया की परस्पर विरोधी बातें इन दिनो एशिया अफ्रीका और लैटिन अमरिका मे केन्द्रित हो रही हैं।

संसार मे पीडित देशो और जातियो के द्वारा की गई क्रान्ति को सहायता देने व आगे बढाने के लिए समाजवादी राष्ट्रों को आधार क्षेत्र बन जाना चाहिये उनके साथ सम्बन्ध अत्याधिक घनिष्ठ बनाने चाहिये। संसार की सर्वहारा क्रांति को सफल बनाना चाहिये।

जब वे जातिवाद को आगे रखते हैं तथा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के संघर्ष को एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिका मे चल रहे हैं को गोरेंग व काली जातियो के बीच लडाई का रूप देते हैं तो रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता योरूप और उत्तरी अमेरिका के गोरों मे जातीय घृणा को जाग्रत करने की कोशिश करते हैं। ऐसा करके वह संसार की जनता का ध्यान साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करने से हटाना चाहते हैं और अन्तर-राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के आन्दोलन को वर्तमान सुधारवाद के विरुद्ध संघर्ष से दूर रहना चाहते हैं।

चीन और कागज का शेर

हम इस बात को बलपूर्वक कहते हैं कि शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व का अर्थ है भिन्न सामाजिक प्रणालियो वाले देशों तथा स्वतन्त्र सत्ता सम्पन्न राष्ट्रो के बीच सम्बन्ध। क्रान्ति मे विजय प्राप्त करने के बाद ही सर्वहारा वर्ग के लिये यह उचित तथा सम्भव है कि वह शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति का अवलम्बन करें। जहां तक पीडित जातियो तथा राष्ट्रो का सम्बन्ध होता है उनका प्रथम कर्तव्य अपनी स्वतन्त्रता को प्राप्त करना तथा साम्राज्यवादी शासन को उखाड़ फेंकना है।

पीपुल्स डेली तथा रैड फ्लैग से चीन की संवाद समिति ने १२ दिसम्बर १९६३ को ऊपर लिखा अंश तथा निम्नलिखित अंश प्रकाशित किये थे।

शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व जनता के [illegible] नहीं ले सकता।

सोवियत रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता इस बात का घोर प्रयत्न कर रहे है कि जनता की साम्राज्यवादी शासन और उसके पिछलग्गू लोगों के विरुद्ध क्रान्तिकारी संघर्ष को विफल कर दे। वे समाज मे सुधारवादी प्रचारको की हैसियत से कार्य कर रहे हैं और सर्वहारा वर्ग की संघर्ष करने की भावनाओ को तथा अनेक देशो में स्थित उनकी राजनैतिक पार्टियो को कमजोर कर रहे हैं।

आज की दुनिया की स्थिति क्रान्ति के [illegible] ही अधिक अनुकूल है।

रूस की [illegible] पार्टी [illegible] केन्द्रीय [illegible] के खुले पत्र मे नीचे के अंश उद्धृत [illegible] है जो रूसी पत्र प्रवदा [illegible]

(शेष पृष्ठ १२ पर)

श्रद्धानन्द ट्रस्ट के कार्यकर्ता के साथ अनुचित व्यवहार

[खूंटी क्षेत्र में ईसाई प्रचार निरोध के लिये श्रद्धानन्द ट्रस्ट कार्य कर रहा है। श्री बिरला जी शुद्धि कार्य में सदैव सहायक रहे हैं उनके नाम पर चलने वाले कालेज की ओर से श्रद्धानन्द ट्रस्ट के कार्य में बाधा नहीं पड़नी चाहिये। आशा है बिरला जी के लोग इस समस्या पर विचार करेंगे। सम्पादक]

महोदय,

श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट, दिल्ली एक भारतीय रजिस्टर्ड संस्था है। इसका प्रधान कार्यालय आर्य-भवन जोरबाग, नई दिल्ली—३ में है। इस ट्रस्ट के वर्तमान मन्त्री श्री ज्ञानचन्द जी हैं, जिनका निवास स्थान दिल्ली में है।

रांची जिले के खूंटी में लगभग ६–२१ भूमि कई वर्ष हुए ट्रस्ट ने प्राप्त की और इस भूमि को अपने काम में लाने लगा तथा क्रमश इस जमीन पर मकान आदि भी ट्रस्ट ने बनवाये, जो श्रद्धानन्द सेवाश्रम के नाम से पुकारा जाता है। ट्रस्ट ने समस्त छोटानागपुर डिवीजन में, इसके कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये मुझे नियुक्त किया हुआ है। मैं गत अप्रैल माह में खूंटी पहुंचकर ट्रस्ट के आश्रम में निवास करने लगा और ट्रस्ट के काम का संचालन करता रहा हूं। मेरे पहले श्री महावीर सिंह अनिल ट्रस्ट की ओर से खूंटी में काम करते थे।

लोगों का ज्ञान है कि खूंटी में अभी-अभी एक कालेज खोला गया है, जिसका नाम बिरसा कालेज है, इसका अपना निजी छात्रावास नहीं है। इस कमी की पूर्ति के लिये कालेज के लोगों की दृष्टि श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट के बने बनाये हुए खूंटी स्थित मकानों अर्थात् आश्रम पर गई। अपने अनुचित कामना की पूर्ति में मुझे बाधक पाकर, मुझे तरह-तरह की धमकियां दी जाने लगी। जहां तक मुझे ज्ञात हुआ है श्री नन्द किशोर जी भगत स्थानीय एडवोकेट और श्री मान एस० डी० ओ० महोदय (खूंटी) इस बिरसा कालेज से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। और लोगों को कहते सुना है कि श्री नन्द किशोर जी का दावा है कि ट्रस्ट के खूंटी आश्रम के प्रबन्ध में उनका अधिकार है। यह बात गलत है और तथ्य से बहुत दूर है। सुरक्षा के विचार से मैंने सारी बातों की रिपोर्ट सुपरिन्टेडिन्ट पुलिस रांची को दी। सुपरिनटेन्डेन्ट पुलिस दि० १० जुलाई १९६६ को खूंटी आये और ट्रस्ट के आश्रम पर आकर जांच पड़ताल की। उन्होंने मुझे आश्रम में रहते पाया तथा आश्रम की भूमि पर मेरे द्वारा की जा रही खेती को भी देखा। उन्होंने कालेज के अधिकारियों और श्री नन्द किशोर जी भगत को साफ शब्दों में कह दिया कि वे मेरे साथ या ट्रस्ट की सम्पत्ति के साथ किसी प्रकार की जबरदस्ती न करें जो कुछ उन्हें करना हो कानून के मुताबिक ही करें साथ ही उन्होंने मुझे आश्वासन भी दिया कि मेरे ऊपर या आश्रम की जायदाद पर कोई भी आघात न होने पावेगा। इसके पश्चात् श्री नन्द किशोर जी भगत और श्री मान एस० डी० ओ० महोदय खूंटी बिरसा कालेज के प्रिंसिपल साहब मुझसे मिले और आश्रम को छोड़ देने तथा इस उनको समर्पण कर देने को कहे। ट्रस्ट के कार्यों के स्थानीय निरीक्षक के नाते मैंने अपनी असमर्थता प्रकट की।

दिनांक १९-७-६६ को मेरी अनुपस्थिति में कुछ लड़के जो अपने को बिरसा कालेज का छात्र बतलाते हैं, आश्रम पर धावा बोल दिया और आश्रम के कमरों में मेरे लगे हुए तालों को तोड़ कर अपना कब्जा जमाकर निवास करने लगे। मैंने इस अनधिकृत कार्य की रिपोर्ट स्थानीय पुलिस को लिख दी परन्तु पुलिस की ओर से कोई कार्यवाही नहीं की गयी। फलस्वरूप दिनांक २१-७-६६ को मेरी अनुपस्थिति में कुछ लड़के पुन: आश्रम के जिस कमरे में मैं स्वयं रह रहा था, उसका भी ताला तोड़ कर घुस गये और मेरे सामान को इधर उधर कर दिया। मैंने इस घटना की भी रिपोर्ट खूंटी पुलिस को दी और साथ ही श्रीमान डिप्टी कमिश्नर रांची को फोन द्वारा सूचित किया तथा रजिस्ट्री पत्र द्वारा घटना की लिखित रिपोर्ट उनके पास, और एस० पी० रांची के पास भेजी। साथ ही तारीख २५-७-६६ को कमिश्नर, छोटा नागपुर डिवीजन इन्सपेक्टर जनरल पुलिस पटना को भी इस घटना की रिपोर्ट रजिस्ट्री द्वारा भेजी। परन्तु खेद है कि आज तक मेरी रिपोर्ट की कोई जांच पड़ताल नहीं की गई और न आश्रम के कमरों से छात्रों को हटाया गया, और और न मुझे बतलाया ही गया कि क्यों कोई भी उचित कार्यवाही इस दिन दहाड़े की धांधली पर नहीं की गयी। मेरी स्थिति बड़ी दयनीय हो गयी है। मुझे नहीं मालूम पड़ता कि मैं न्याय और सुरक्षा के लिये किस का द्वार खटखटाऊं श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट का कार्यकर्ता होने कारण मैंने अपना कर्तव्य समझ कर इन सारी बातों की सूचना ट्रस्ट के मन्त्री जी को दे दी है। आपकी सेवा में इस पत्र को सार्वजनिक और व्यक्तिगत अधिकार की सुरक्षा के लिये भेजता हूं और आशा करता हूं कि इस पत्र को प्रकाशित कर जनता का हित करेंगे।

—प्रेमनाथ शाण्डिल्य निरीक्षक
श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट दिल्ली
द्वारा संचालित संस्थायें
खूंटी जिला रांची छोटा नागपुर

नवीन मसिहा जय गुरुदेव !

[ले०—आचार्य सत्यमित्र शास्त्री वेदतीर्थ व्याकरण धर्माचार्य, बड़हलगंज, गोरखपुर]

सम्प्रति हमारे देश में हिन्दू जाति मे अनेक प्रकार के नव सम्प्रदायों मे एक नवीन मसिहा का जिनका नाम तुलसी बाबा है। जन्म लिया है। आपके सम्प्रदाय का नाम जय गुरुदेव है। यह गोरखपुर में रहते हैं। इनका कार्यक्षेत्र मथुरा आजमगढ़ है। आप अपने को ईश्वर का अवतार कहते हैं। कुछ दिन पूर्व आप लाला शिवराम मण्डली में रहे। और वहाँ से निकल कर नवीनमत की स्थापना किया। धनपति लोग आपको गुरु मानते हैं। आप अपने को ब्रह्म कहते हैं। इनके शिष्य इनको ईश्वर मानते हैं। आप अपने को तीनों देवता का अवतार मानते हैं। स्त्रियां एजेन्ट इनकी प्रचारिका हैं। अच्छे घराने की बहू बेटियों को फँसाकर उनका चरित्र भ्रष्ट किया जाता है। स्थान-स्थान पर इनका भंडारा होता है। आपका प्रवचन ही वेद है। स्थान-स्थान पर आर्यसमाज आजमगढ़ एवं गोरखपुर के कार्यकर्ताओं ने इनका भंडाफोड़ किया। आप शास्त्रार्थ आदि में कभी मैदान में नहीं आते हैं। ये लोग गीता रामायण वेदादि के विरोधी हैं। इनका कहना है कि गुरुदेव को तनमन धन सब समर्पित कर दें। तो इनकी कृपा से सब को मोक्ष मिल जायेगा। इनकी मंडली में सरकारी कर्मचारी अधिकतर फँसे हैं। उत्तर प्रदेश का पूर्वीय क्षेत्र प्रचार की दृष्टि से पिछड़ा है। वर्ष भर में कुछ समाजों के उत्सव हो जाते हैं। बस इतने से अपना प्रचार पूर्ण समझ लिया है। उत्सवों में भी राजनीति की बातें अधिक होती हैं। न वह तकरीर होती है। न हम लोगों में कार्य कर्मठता है। न वह क्रान्ति की भावना है। जबसे वर्तमान राजनैतिक दलों के लोगों का सम्मिश्रण समाज के अन्दर हुआ। तब से हम अपने कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् के ध्येय से अति दूर चले गये। इसी का परिणाम है। नये-नये गुरुदेव अपनी काम वासना को पूर्ण करने के लिये निकल रहे हैं। पूर्वीय क्षेत्र के लोगों को समाजों को चाहिये इस सम्प्रदाय का खुलकर विरोध करें। तथा स्थान स्थान पर इनका जोरदार खंडन करें। अब इन लोगों के तथा अन्य गुरुदेव लोगों के हेतुओं को उपस्थित कर रहा हूं। जय गुरुदेव जी से मेरी बातें हुई तो पता चला कि आप लोग ब्रह्म की शक्ति को दीपक मानते हैं। और पौराणिक जैनी बौद्धों की तरह ईश्वर का एक स्थान विशेष मानते हैं। किन्तु यदि ईश्वर व्यापक न हो तो वह सृष्टि कर्ता नहीं हो सकता है। रचयिता का रचना मे रहना आवश्यक है। दूसरी बात यह कहते हैं कि यदि ईश्वर व्यापक है तो उसकी चेतना प्रत्येक स्थान पर क्यों नहीं जान पड़ती है। यह हेतु बौद्धों का है। जगत की रचना ही ईश्वर की चेतनता को प्रगट करती है। क्योंकि बिना चैतन्य शक्ति की क्रिया से कोई कार्य नहीं हो सकता है। यदि शंकराचार्य के सिद्धान्तवत तर्क उपस्थित किया जावे तो ये लोग पलायमान हो जाते हैं। वेदादि के सम्बन्ध में इनका कहना है कि प्रत्येक ईश्वरीय ज्ञान किसी भाषा मे है। और यह रचना गुरुदेव ने ही किया था। अब उन्होंने जन्म लेकर वैखरी भाषा में अपनी वाणियों को वेद बनाकर दे रहे हैं। मेरा शास्त्रार्थ एक बार इनके एक शिष्य से हुआ। मैंने पूछा कुछ संस्कृत पढ़े हो। उन्होंने कहा मैं कई विषयों का आचार्य हूं। मैंने वैखरी का निर्वचन पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं नहीं जानता। इसका समाधान यह है। खरी की भाषा का नाम खरी और मनुष्य होकर किसी भी भाषा को न पढ़ न माने वह विमर है। तेषां या भाषा सा वैखरी भवा। इसपर वे लोग पलायमान हो गये। अत मे आर्य विद्वानों से तथा अपनी क्षेत्रीय समाजों से प्रार्थना करता हूं कि इन लोगों के पाखंड से जनता को बचावें। ये लोग अपने को परम योगी कहते हैं। और ब्रह्मचर्य का अर्थ ब्रह्म-परक करके कहते हैं। इसमे वीर्य संरक्षण की बात कहाँ है। इसी से इनकी मूर्खता को समझना चाहिये। जो लोग मुझे लिखेंगे। उन्हें प्रचार की दृष्टि से सहयोग किया जायेगा। यदि हमारी संतान इन लोगों के चंगुल में फँसकर व्यभिचारी हो गई तो पुनः आर्य्य किसको बनायेंगे। अत इस मसिहे से बचाने का प्रयत्न करें। आजमगढ़ के कार्यकर्ता श्री अक्षयवर नाथ जी प्रचार मन्त्री एवं श्री वेद प्रकाश जी एम ए आर्यवीर संचालक तथा मऊनाथ भंजन एवं गोरखपुर के श्री सुरेशचन्द्र जी आदि का ध्यान इधर विशेषतः आकृष्ट है। आशा है ये महानुभाव और सम्बन्धित क्षेत्रीय सभायें इस प्रश्न पर विचार करेंगी और पाखण्ड प्रसार का निरोध करने में सफल होंगी।

(पृष्ठ ५ का शेष)

मर्यादित, स्वशासन, अपने अनुशासन पूर्ण संयम में अपने आपको शुद्ध-पवित्र रखते हुए अधिक श्रेष्ठ और अधिक दिव्य नवजीवन, नया साहस धारण करते हुए पाप से बचते हुए हम जीवन मार्ग पर सत्पथ सुपथ पर ही चलते रहते हैं। हम कलुष वासनाओं की दलदल में नहीं फँसते। शुद्ध पवित्र पापरहित रहते हुए उत्तम संतान तथा ऐश्वर्य के साथ अभ्युदय को प्राप्त होते हुए अपने घरों मे हम सुगन्ध रूप सौरभमय सुगन्धयुक्त अर्थात् प्रशंसनीय जीवन व्यवहार वाले रहे।

हमारे जीवन मे सौरभ रहे, हमारे जीवन में सच्चरित्र की आकर्षक सुगन्धि रहे। हमारा सब प्रकार से अभ्युदय होता रहे। हम सुसन्तान और और दिव्य ऐश्वर्य से युक्त रहें और निरन्तर सुखी रहें, शान्त रहें, आत्मतृप्त रहें।

सह-भोज

स नः पावको द्रविणे दधातु,
आयुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम ॥
अथर्व० ६।४७।१॥

वह पावन परमेश्वर हमें दिव्य ऐश्वर्य सम्पन्न करे तथा हम दीर्घ आयु युक्त होकर इकट्ठे मिलकर भोजन करने वाले होवें। हम कभी स्वार्थी न हों, सदा मिल-बाँट कर सबके साथ में दिव्य ऐश्वर्य भोगें। हम मे से कोई भी स्वार्थी न हो। हम सब मे आपस मे मिलकर रहने तथा मिलकर संगति और उन्नति करने का दिव्य गुण विकसित हो। हम सब का जीवन यज्ञमय हो। हम सर्वहित मे निज हित जानते हुए मिल जुल कर रहें, एक दूसरे का हित करें, एक दूसरे की उन्नति मे सहयोग देवें और कभी विश्वासघात छल कपट न करें। हमारी जीवन चर्या मे अनृत दंभ आडम्बर पाखंड न घुसने पावें हम कभी छल कपट झूठ अपने व्यवहार और व्यापार मे न लावें। हम नित्य, सत्य ही अपने व्यवहार में स्थिर रखें और व्रत मे दृढ़ रहते हुए सत्य ज्योति का प्रकाश अपने मे अनुभव करें तथा सब को उन्नत करने में लगे रहें और सदाचार मे रहते हुए कभी अभिमान न करें हम सब कर्तव्य बुद्धि से ही उपकार किये जावें। हम सब मिल-बाँट कर दिव्य ऐश्वर्य को भोगें, हम में निजी स्वार्थ न आने पाए।

पत्नी का अधिकार और कर्तव्य

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना,
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथा सो
दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु ॥
अथर्व० १४।२।७५

हे देवी! तू पति के घर मे जाकर घर की स्वामिनी बनकर रह, किन्तु यह तभी होगा जब तू उत्तम ज्ञानयुक्त होकर सजग रहेगी। तू सौ वर्ष से भी अधिक दीर्घ आयु के लिए विवेकयुक्त रह। दिव्य गुण धारण किये हुए रह, सदा निरालस रह, प्रमाद न कर, जगत पोषक जगदीश्वर तेरी दीर्घ आयु करेगा।

पत्नी विदुषी होवे, सवेरे प्रातः प्रभात के तारे से पहले जागे, उषा दर्शन करे, चैतन्य रहे, सुबुध रहे, उसमें ज्ञान साधक हो, अपने घर मे घर का सुप्रबन्ध करे, घर की स्वामिनी रहे। अपनी जिम्मेदारी समझे और उस जिम्मेदारी को प्रसन्न रहती हुई पूरी करे। घर में सबकी क्षेम कुशल के लिए मंगल कामना करती रहे, सबका भला चाहे और सबका भला करे सबका हित करे, किसी का किसी भांति अहित न करे तथा मंगल साधना करे। पहले रात्रि भाग मे ही निश्चिन्त हो सो जाये, सोते हुए कल्याणकारी संकल्प करे, तथा सबका भला ही सोचे। प्रातः प्रभात के तारे से पहिले जागे, मंगल गान गावे और सारे घर के सदस्यों के लिये शुभ कामना करे। दया मय प्रेममय आनन्दमय भगवान् ऐसे सद् गृहस्थ मे अभ्युदय तथा दीर्घ आयु देते हैं।

राष्ट्रोन्नति

उदेहि वाजिन् यो अप्स्वन्त-
रिदं राष्ट्रं प्रविश सूनृतावत्।
यो रोहितो विश्वमिदं जजान,
स त्वा राष्ट्राय सुभृतं बिभर्तु ॥
अथर्व० १३।१।१

हे सामर्थ्यवान् मनुष्य! तू उदय को प्राप्त हो, जो तू प्राणों का स्वामी है, शक्ति का केन्द्र है वह तू प्रिय राष्ट्र मे प्रविष्ट हो। इस राष्ट्र मे सत्यनिष्ठ होकर अपने राष्ट्र मे लगन से राष्ट्रीय उन्नति के लिए अपना पूर्ण सामर्थ्य लगा दे। जगत् पिता सर्वरक्षक सर्वेश्वर सर्वपालक सर्व पोषक परमेश्वर जिसने तुझे शक्ति दी है जिसने तुझे समर्थ किया है, तुझे सामर्थ्य दिया है, तू योग्य बन या है वह तुझे राष्ट्रीय सेवा के लिए बना दे। प्रत्येक मनुष्य अभ्युदय और निःश्रेयस प्राप्त कर समर्थ रहे, योग्य रहे। कभी अपने जीवन का ह्रास न होने दे, पवित्र रहे, सदाचारी रहे। प्रत्येक मनुष्य राष्ट्र की उन्नति के साथ अपनी उन्नति करे। राष्ट्रहित मे संलग्न रहे कोई काम ऐसा न करे जिससे राष्ट्र के सम्मान में ठेस लगे। प्रत्येक मनुष्य राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझ, सजग रहे अपने राष्ट्र को उत्थान मे लगा रहे। भजन करे शुभ कर्म ही नित्य करता रहे समय को व्यर्थ न खोए।

(पृष्ठ ९ का शेष)

ने १४ जुलाई १९६३ को प्रकाशित किये थे।

"युद्ध और शान्ति के प्रश्नों में चीनी कामरेड दुनिया के कम्यूनिस्ट आन्दोलन की विचारधारा के विरुद्ध काम करते हैं। वे एक नये जगव्यापी युद्ध से बचने की सम्भावना में विश्वास नहीं करते।"

'चीनी कामरेड आणुविक युद्ध के भयंकर परिणामों का कम मूल्यांकन करते हैं। एटमिक बम एक कागज का शेर है। यह बिलकुल भयावह नहीं है। मुख्य बात तो साम्राज्यवाद का अन्त कर देना है। जितनी जल्दी इसको समाप्त कर दिया जावे उतना ही अच्छा है। यह प्रश्न गौण है कि उनको कैसे और कितना नुकसान उठाकर किया जा सकेगा। किन से यह प्रश्न पूछना उचित है, क्या यह बात गौण है? क्या उन लोगों से जो लाखों करोड़ की तादाद में आणुविक युद्ध के होते ही मारे जायेंगे या उन देशों से जो कि ऐसे युद्ध के आरम्भ के प्रथम कुछ घण्टों में ही सफर हस्ती से मिट जायेंगे?

नरसंहार

कुछ जिम्मेदार चीनी नेताओं ने कहा है कि लाखों करोड़ों स्त्री-पुरुषों की बलि देना युद्ध में सम्भव है" सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी चीनी नेताओं के इन विचारों से सहमत नहीं हो सकती कि लाखों करोड़ों इन्सानों की लाशों पर हजारों गुनी अच्छी महान सभ्यता का उदय हो सकता है।

ये लोग जो आणविक युद्ध को कागजी शेर बतलाते हैं वास्तव में उसकी भयंकर नाशकारी शक्ति से अन-भिज्ञ हैं।... अणुबम समाजवादी और मजदूरों के बीच में कोई भेदभाव नहीं करता।

'कोई भी दल जिसको जनता का हित वास्तव में प्रिय है दूसरे महायुद्ध की जिम्मेदारी समझे बिना नहीं रह सकती है और न विभिन्न सामाजिक व्यवस्था वाले देशों में शान्ति पूर्ण सहअस्तित्व को मजबूत बनाये रह सकता है।

"युद्ध और शान्ति के प्रश्नों पर चीनी नेताओं का वास्तविक रूप उनके स्थिति को कम गम्भीर समझने के कारण बहुत स्पष्ट दिखाई देता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात है, उनका निर-स्त्रीकरण के लिए संघर्ष को जानबूझ कर न मानना।

"चीनी कामरेडों ने 'बाके बे के' नारे लगाये और दूसरे समाजवादी देशों की नीति, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को ढीला करने तथा शीतयुद्ध को बन्द करने की है, का विरोध किया।"

नीचे का महत्वपूर्ण उद्धरण हम प्रवदा के १५ जुलाई के अंक से दे रहे हैं—

'चीनी साथी ऐसे विचार प्रका-शित करते हैं कि जब तक साम्राज्यवाद बना हुआ है, तब तक युद्ध का अन्त नहीं किया जा सकता, शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व एक भ्रान्ति है समाजवादी देशों की विदेशी नीति का यह एक आम सिद्धान्त नहीं है और शान्ति स्थापना के लिये किया गया। संघर्ष का तर्क ही संघर्ष के मार्ग में रोड़े अटकाता है। चीनी कामरेड लड़ाई में लाखों करोड़ों व्यक्तियों के स्वाहा करने की सम्भावना की बात भी कहते हैं और इस बात का दावा करते हैं कि साम्राज्यवाद के मृत प्राय हो जाने पर अर्थात् आणुविक युद्ध में भस्म हो जाने पर एक सुन्दर भविष्य का निर्माण होगा।"

★

आगरा के निकट एशिया का विशाल बूचड़खाना

प्रतिदिन हजारों पशुओं की हत्या की योजना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी द्वारा घोर विरोध

दिल्ली, अगस्त—११

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल शाल-वाले ने उत्तर प्रदेश राज्य की मुख्य मन्त्री श्रीमती सुचेताकृपलानी को एक एक विशेष पत्र भेज कर आगरा के निकट हजरतपुर ग्राम में बनाये जाने वाले एशिया के विशाल कसाई खाने की योजना पर दुःख एवं आश्चर्य प्रकट करते हुए उसे क्रियान्वित न होने देने का अनुरोध किया है।

समाचार के अनुसार सूखे मांस की तैयारी के लिए यह कसाई खाना स्था-पित किया जाने वाला है। पशुओं के शीघ्र वध के लिए ३२ करोड़ की लागत का एक स्वचालित प्लांट डन मार्क से मगाये जाने की योजना है जिसमें एक दिन में ३ हजार से लेकर १५ हजार तक पशु काटे जायेंगे। इस समय जबकि देश में गोहत्या बन्द कराने का आन्दो-लन उग्र रूप से चल रहा हो और बूचड़खानों को बन्द कराए जाने की मांग जोर पकड़ रही हो तब इस प्रकार के बूचड़खाने का आयोजन करना देश की करोड़ों जनता के साथ विश्वास घात और उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना है।

इस भूमि के आसपास ८० प्रतिशत तक जनता शाकाहारी है। इस बूचड़-खाने के बनाये जाने की योजना से उस क्षेत्र में बड़ी बेचैनी फैली हुई है। लोगों को भय है कि इसके कारण वहाँ का वातावरण गन्दा हो जायगा और किसानों की बहुत सी उपजाऊ भूमि उनसे छीन ली जायगी।

श्री शालवाले ने राज्य को चेतावनी दी है कि भारत की सम्पदा पशु धन के निर्मम विनाश की इस प्रकार की योजना को आर्य हिन्दू जनता कदापि सहन न कर सकेगी। और यदि इस योजना को मूर्त रूप दिये जाने की अदूरदर्शिता की गई तो इसकी प्रतिक्रिया बड़ी भयावह होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और आगरा की समाजों को भी आदेश दिया गया है कि वे इस योजना के विरोध में प्रान्त भर में प्रबल आन्दोलन करें।

गन्दी फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगाओ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्ट मण्डल की केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारणमन्त्री से मांग

दिल्ली, अगस्त—१०

सभा मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी शालवाले के नेतृत्व में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एक शिष्ट मण्डल ने ९ अगस्त १९६६ को केन्द्रीय सूचना तथा प्रसारण मन्त्री माननीय श्री राजबहादुर जी से उनके संसद भवन स्थित कार्यालय में भेंट की।

शिष्ट मण्डल ने गन्दी फिल्मों के कारण फैली हुई दुश्चरित्रता, अश्लीलता, उच्छृंखलता, बदमाशी, अपराध वृद्धि तथा इनके कारण घोर राष्ट्रीय चरित्र के पतन की ओर मन्त्री महोदय का ध्यान आकृष्ट किया। सेंसर बोर्ड की उपेक्षा और अपराध पूर्ण अकर्मण्यता भी मन्त्री महोदय के ध्यान में लाई गई जो गन्दी से गन्दी फिल्मों के प्रदर्शन को तुरन्त रोक देने की मांग की गई।

शिष्ट मण्डल ने आकाशवाणी के कार्यक्रमों में वेद के प्रवचनों, वैदिक धर्म की शिक्षाओं तथा आर्यसमाज के महा-पुरुषों की उपेक्षा और इसके कारण आर्यसमाज में व्याप्त असन्तोष से भी मन्त्री महोदय को अवगत किया और प्रतिदिन के कार्यक्रम में इन्हें सम्मिलित करने की प्रेरणा की। इस प्रसंग में मान्य मन्त्री महोदय को सभा की ओर से २ ज्ञापन दिए गए।

मान्य मन्त्री महोदय ने शिष्ट मण्डल की मांगों के औचित्य को अनुभव करते हुए उन पर विचार कर उचित कार्य-वाही करने का आश्वासन दिया।

शिष्ट मण्डल में श्रीयुत आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री और सभा के उप-मन्त्री श्री शिवचन्द्र जी भी सम्मिलित थे।

उड़ीसा में दयानन्द साल्वेशन मिशन का कार्य

उत्कल प्रान्त में अत्यन्त भुखमरी के कारण सैकड़ों लोग अपने बच्चे तथा घरों को छोड़कर अन्य स्थानों को चले गये हैं और जा रहे हैं, सैकड़ों ही अखाद्य पदार्थ खा कर अपना पेट भर रहे हैं, और सैकड़ों ही भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। ईसाई मिशनरी इस भुखमरी का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने उन भूखे तथा निर्धन आदिवासी लोगों तथा उनके बच्चों का धर्म परि-वर्तन करने के लिये वहाँ अनाथालय, अस्पताल तथा शिक्षा-केन्द्र स्थापित कर दिये हैं। आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर ने भी निर्धन तथा भूखे आदिवासियों के बच्चों को ईसाईयों की चंगुल से बचाने के लिये पानपोस, जिला सुन्दरगढ़ में एक अनाथालय खोल दिया है जिसकी देख-भाल मिशन के एक अवैतनिक, लगनशील तथा 'अनथक' कार्यकर्ता, स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती कर रहे हैं। मिशन एक और कार्यकर्ता स्वामी सदानन्द जी सरस्वती को इस अनाथालय का मैनेजर नीयत किया गया है।

सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस अनाथालय और शुद्धि के लिये मिशन को यथाशक्ति सहायता करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्त्वावधान में वेद प्रचार के २ महत्त्वपूर्ण आयोजन

३९ वाँ मासिक अधिवेशन

रविवार, दिनांक १८ अगस्त १९६६ को सायंकाल ५-३० से ८-३० तक आर्य समाज, शृङ्गार नगर (आलमबाग) लखनऊ के भव्य हाल में।

कार्यक्रम—सामवेद से बृहत् वैदिक यज्ञ सन्ध्या प्रार्थना प्रभु भक्ति के भजन एवम् वेदोपदेश। यज्ञ प्रेमी कृपया सामवेद साथ लावें सभा के सदस्यों व सदस्याओं की उपस्थिति अनिवार्य है।

श्रावणी पर्व

मंगलवार, दिनांक ३०अगस्त १९६६ को प्रातःकाल ८ बजे से १२ बजे तक आर्यसमाज, आदर्श नगर (आलमबाग) में

कार्यक्रम—श्रावणी यज्ञ (आचार्य नरेन्द्रनाथ जी शास्त्री के पुरोहित्व में), प्रभु भक्ति के भजन, कविता पाठ एवम् निम्नलिखित विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान—(१) वेद, (२) उपनिषद, (३) मनु-स्मृति, (४) ब्राह्मण ग्रन्थ।

कृपया सपरिवार व इष्ट मित्रों सहित पधार कर इन आयोजनों से लाभ उठावें और पारस्परिक संगठन के द्वारा वैदिक धर्म के पुनीत प्रचार में अपना योग दान दें। यह आपका पावन कर्तव्य है जिसका पालन कर आप ऋषियों के ऋण से उन्मुक्त हों।

कृष्ण बलदेव [प्रधान]
विक्रमादित्य बसन्त [मन्त्री]

अमृतसर में वेदकथा
श्री पं॰ ओमप्रकाश जी शास्त्री का आगमन

गत १२ जौलाई से आर्यजगत् के प्रसिद्ध तार्किक विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी, श्री प॰ ओम्प्रकाश जी शास्त्री, विद्याभास्कर, आ॰ स॰ माडल टाउन अमृतसर के विशेष निमन्त्रण पर यहाँ पधारे हुए है। इन दिनो उनके ६ व्याख्यान 'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है" विषय पर हो चुके हैं। इन भाषणो मे शास्त्री जी ने प्रबल तर्कों प्रमाणो तथा युक्तियो से संसार के अन्य मतो द्वारा मान्य ईश्वरीय ज्ञान पुस्तकों के साथ तुलना करके वेदो का ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध किया। वस्तुतः गम्भीर से गम्भीर विषय को मधुर, सरस तथा सरल मण्डनात्मक रूप में प्रस्तुत करके पठित अपठित सभी प्रकार की जनता को लाभान्वित कर देने की शास्त्री जी की कला को देखकर विरोधी मत वाले भी उनके भाषणों में आकृष्ट हुए प्रतिदिन बड़ी संख्या में सम्मिलित हो रहे हैं। स्थानीय सभी आर्यसमाजो के स्त्री-पुरुष तो बड़ी श्रद्धा से शास्त्री जी के प्रवचन सुन ही रहे हैं।

—विश्ववन्धु शर्मा मन्त्री

सूचना

आर्यवीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश केन्द्र वाराणसी के समस्त आर्यवीरों तथा अधिकारियों को सूचित करता हू अपने-अपने शाखाओं पर तथा स्थानीय आर्य समाज के साथ शहीद दिवस उत्साहपूर्वक ३०-८-६६ को मनायें तथा अपने कार्यक्रमों से कार्यालय को अवगत करायें।

—उमाकान्त मन्त्री

निर्वाचन

आ॰ स॰ पुखराया (कानपुर) का नवीन निर्वाचन दिनांक ५-८-६६ को सभा महोपदेशक श्री पंडित विश्वम्बर्धन जी वेदालंकार, के निरीक्षण मे सम्पन्न हुआ—निम्नपदाधिकारी चुने गए—

प्रधान—श्री श्रीराम शर्मा, उपप्रधान—श्री परशुराम जी, मन्त्री—श्री डा॰ ओम प्रकाश, उप-मन्त्री—श्री रघुनाथ जी, प्रचार मन्त्री—श्री भयकर जी, कोषाध्यक्ष—रामबाबू।

श्री प्रेमबिहारी जी आर्य उप मन्त्री उपसभा का भ्रमण प्रोग्राम

२१ अगस्त आ॰ स॰ चन्दौसी
२८ " " काठ
११ सितम्बर „ भगवानपुर
१८ " „ ठाकुरद्वारा
२५ " " बनीरामण्डी

आर्यसमाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि उपमन्त्री जी के पहुँचने पर कोटिशन राशि एवं व्यक्तिगत सहायता देने की कृपा करें।

—हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद

गोरक्षा आन्दोलन
कानपुर नगर की समस्त समाजो का सम्मेलन
(प्रस्ताव)

केन्द्रीय आर्य सभा के तत्त्वावधान मे आयोजित ति॰ २१-८-६६ की सभा में भारत सरकार से अनुरोध करता है कि गोहत्या का तत्काल समापन किया जाय। स्वतन्त्र भारत का यह बड़ा कलंक है कि ऋषि मुनियो की इस पवित्र भूमि पर स्वतन्त्रता के पश्चात् इस प्रकार का घोर अत्याचार होता रहे।

सभा दिल्ली में चल रहे आन्दोलन में साधू सन्यासियों की ओर से पूरा समर्थन देती है इस हेतु जो भी आवश्यक सार्वदेशिक आ॰ प्र॰ सभा की आज्ञा होगी वो उसका पूर्णरूप से पालन किया जायेगा।

ईश्वर से प्रार्थना है कि इस महान् कार्य में बल दें तथा इसकी शीघ्राति शीघ्र पूर्ति करें।

प्रतिलिपि—प्रधान मन्त्री, गृह मन्त्री सा॰ आ॰ प्र॰ सभा।

बालचर शिविर एवं दीक्षा समारोह

एम॰ डी॰ वैदिक इन्टर कालेज आगरा छावनी मे १३ अगस्त से १५ अगस्त तक तीन दिन का एक बालचर शिविर मनाया गया जिसमे ३८ सेव बच्चों ने भाग लिया। १५ अगस्त को सहायक प्रादेशिक संगठनकर्ता श्री वीरेन्द्र पालसिंह जी ने इन सेव बच्चों का दीक्षा संस्कार समारोह सम्पन्न किया।

आवश्यकता

आर्य परिवार की उन्नीस वर्षीय अग्रवाल गोयल गोत्रीय, स्वस्थ, सुन्दर, गोरवर्ण, एवं गृहकार्यों में दक्ष बी एस सी. बी.एड. कन्या के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त व्यवसाय सम्पन्न योग्य वर की आवश्यकता है। पूर्ण विवरण के साथ पत्र व्यवहार करें। ३७२३
न॰ २३ द्वारा आर्यमित्र, लखनऊ।

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जीदेवी भवानीलाल शर्मा वकुहास की पुण्यस्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७००) की धनराशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद सं० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक व बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करनी रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेज कर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु मय, त्वष्टादि गरीब प० ब्रा० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को मित्र पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

क्या गोरक्षा साम्प्रदायिक है ?

[ले०—आनन्द प्रकाश आर्य, मन्त्री जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी]

गोरक्षा के प्रश्न को लेकर भारतीय जन-मानस में अनेक वर्षों से व्याप्त असन्तोष आज फिर एक प्रबल आन्दोलन के रूप में सामने आया है। इस आन्दोलन को भारतीय जनता का बहुत व्यापक समर्थन ना मिल पाने का कारण कदाचित् यह है कि हमारे कर्णधारो ने इस आन्दोलन को साम्प्रदायिक बताकर जनता के सम्मुख इसका गलत स्वरूप उपस्थित किया है। फिर भी साधु-सन्तों द्वारा लोक सभा के समक्ष धरना देने और अनशन आदि किये जाने के परिणाम स्वरूप इतना तो अवश्य हुआ कि लोकसभा के अध्यक्ष को केन्द्रीय सरकार के लिये आदेश देना पड़ा कि वह सम्बन्धित प्रश्न पर अपना दृष्टिकोण उपस्थित करे। साथ ही लोक सभा के कुछ प्रभावशाली सदस्यों द्वारा एक समिति का गठन किया गया है जो कि इस आन्दोलन को अधिक प्रभावशाली और व्यापक बनाने मे अपना योगदान देगी। हर्ष की बात है कि माननीय सेठ गोविन्ददास जी, प्रकाशवीर जी शास्त्री, अटलबिहारी वाजपेयी जैसे प्रमुख सदस्य इसमे सम्मिलित हैं। जहाँ तक आर्य-समाज का सम्बन्ध है उसने वर्तमान गौरक्षा आन्दोलन के जन्मदाता युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारी संस्था होने के कारण इसको सदा ही प्रबल समर्थन दिया है।

क्या गोरक्षा की माग करना साम्प्रदायिकता है ?

जो लोग इस आन्दोलन को अपनी अज्ञानतावश साम्प्रदायिक बतात हैं उनको मालूम होना चाहिये कि आज इस देश की बागडोर जिस संस्था के हाथों में है उसके बड़े बड़े नेताओं ने इसको पूर्णतया राष्ट्रीय मानते हुये, समय-समय पर गोवध बन्दी का समर्थन किया था। आजादी मिलने के पूर्व कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों के साथ ही गोरक्षा सम्मेलन भी हुआ करते हैं। महामना मदन मोहन मालवीय के प्रयास से बेलगाव म काग्रेस महाधिवेशन के साथ ही गोरक्षा सम्मेलन का आयोजन भी किया गया था। सन् २२ में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता मे देहली के चटौदी हाउस में गोपाष्टमी के अवसर [इ]स प्रश्न पर विचार करने के लिये सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू आदि नेता सम्मिलित हो। इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष हकीम अजमल खाँ थे। सर्व-सम्मति से इसमें एक प्रस्ताव पारित किया गया कि 'यदि यह सरकार गो-हत्या बन्द नहीं करती, तो उससे किसी प्रकार का सहयोग न किया जावे।"

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहा करते थे कि भारतवर्ष में गोरक्षा का प्रश्न स्वराज्य से किसी प्रकार भी कम नहीं। कई बातों में मैं इसे स्वराज्य से भी बढ़कर मानता हूं। जब तक हम गाय को बचाने का उपाय ढूढ नहीं निकालते तब तक स्वराज्य अर्थहीन कहा जावेगा। देश की सुख समृद्धि गो और उसकी सन्तान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है।" हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डा० राजेन्द्र प्रसाद ने एक अवसर पर कहा था कि, 'हिन्दुस्तान मे गायों के लिये इस प्रकार की भावना है कि उनका मारना लोग पसन्द नहीं करते। यह जो बहादुरी की सलाह दी जाती है कि जितने खराब जानवर हैं उनको कत्ल कर दिया जाय, मैं समझता हू बहादुरी ज्यादा है बुद्धिमानी नहीं, यदि हम इस काम को करना चाहेंगे तो अपने खिलाफ एक बड़ी जमायत पैदा कर लेंगे। सन्त विनोबा भावे ने सर्वोदय के नवम्बर १९५१ के अंक मे लिखा था कि, 'इस देश में गोहत्या नहीं चल सकती। गाय बैल हमारे समाज मे दाखिल हो गये हैं। सीधा प्रश्न यह है कि आपको देश का रक्षण करना है या नहीं, यदि करना है तो गोवध भारतीय संस्कृति के अनुकूल नहीं जाता। इसका आपको ध्यान रखना चाहिये। गोहत्या जारी रही तो देश में बगावत होगी। गोहत्या बन्दी भारतीय जनता का मैनडेट या लोकाज्ञा है। प्रधान मन्त्री को इसे मान लेना चाहिये।" सत विनोबा ने २२ अगस्त १९५३ के "हरिजन सेवक" में लिखा कि, "हिन्दुस्तान में गोरक्षा होनी चाहिये, अगर गोरक्षा नहीं होती कि हमने अपनी आजादी खोई और इसकी सुगन्ध गवाई।" श्री रफी अहमद किदवई ने २३ दिसम्बर १९५२ को पटना में भाषण करते हुये कहा था कि, 'जब गोहत्या के विरुद्ध इतनी अधिक जनता की भावना है तो इसका सम्मान होना चाहिये, क्योंकि यही एक ढंग है जिसके द्वारा प्रजातन्त्र शासन चलता है।" लोकसभा मे कांग्रेस के वरिष्ठतम सदस्य श्री सेठ गोविन्द दास ने २६ नवम्बर १९५३ को गोवध निषेध के सम्बन्ध में विधेयक प्रस्तुत किया था जो तत्कालीन प्रधान मन्त्री प० जवाहर लाल नेहरू की व्यक्तिगत असहमति और प्रधान मन्त्री पद छोड़ने की धमकी के कारण पारित नहीं हो पाया सेठ जी ने अपने प्रभावशाली भाषण मे इस बात को सिद्ध किया कि गोरक्षा का प्रश्न राष्ट्रीय, धार्मिक आर्थिक मानवीय और सांस्कृतिक सभी दृष्टिकोणो से महत्त्वपूर्ण है। यदि हमारी सरकार इस आन्दोलन को साम्प्रदायिक मानती है तो उसको चाहिये कि वह इन सभी राष्ट्रीय नेताओं को भी साम्प्रदायिक और रूढ़िवादी घोषित करने का नैतिक साहस दिखा दे। लेकिन 'दो बैलों की जोड़ी" के नाम पर यहाँ की धर्म परायण जनता से वोट मागने वाली सरकार में यह साहस कहाँ ?

गोरक्षा का प्रश्न आज हमारे राष्ट्र के जीवन मरण का प्रश्न है। यह आन्दोलन हमारे राष्ट्रीय गौरव और आत्मसम्मान को अक्षुण्ण रखने का प्रयास है। इसको व्यापक समर्थन मिलना ही चाहिये। लोकमान्य तिलक ने घोषणा की थी कि स्वाधीन भारत में गोहत्या बन्द कर देना पाच मिनट का कार्य होगा। परन्तु कितनी लज्जा की बात है कि आज १९ वर्षों के उपरान्त भी वर्तमान सरकार अपने मच से की गई इन घोषणाओं को क्रियान्वित करने की स्थिति मे नहीं। इस राष्ट्रीय आन्दोलन सफल बनाने के लिये हमको हर प्रकार का सहयोग देना चाहिये।

★

आर्यसमाजें २८ अगस्त १९६६ को अखिल भारतीय गोरक्षा दिवस मनावें

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ला० रामगोपाल शालवाले का आदेश

दिल्ली अगस्त १०। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री युत ला० रामगोपाल शालवाले ने एक प्रेस वक्तव्य मे भारत की समस्त आर्यसमाजों को आदेश दिया है कि वे २८-८-६६ को "अखिल भारतीय गो रक्षा दिवस" मनावें। सार्वजनिक सभायें करके प्रस्ताव पास करें जिसमे केन्द्रीय सरकार से गो वध बन्द करने के लिए कानून बनाने की जोरदार माग की जाय। प्रस्ताव की प्रतियां प्रधान मन्त्री, गृहमन्त्री, खाद्य एव कृषि मन्त्री भारत सरकार को भेजी जाय। सार्वजनिक सभाओं मे स्थानीय गो प्रेमी नर नारियों को अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित करने की विशेष प्रेरणा की गई है।

वक्तव्य को जारी रखते हुए श्री शालवाले ने कहा है कि भारत के स्वतंत्र होने पर देशवासियों को जिन बुराइयों के उन्मूलन की आशा थी उनमे से एक अभिशाप गोवध था। गोहत्या के कलंक को धोने के लिए संविधान में व्यवस्था भी कर दी गई थी परन्तु कांग्रेस सरकार ने गोवध निषेध कानून न बनाकर जहाँ संविधान का अपमान किया है वहा करोड़ों देशवासियों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाई है। निराश और जागरूक जनता सरकार की इस उपेक्षा और मनमानी से क्षुब्ध है। यदि सरकार ने शीघ्र ही सम्पूर्ण भारत के लिए गोवध निषेध कानून न बनाया तो इसकी प्रतिक्रिया भयावह होगी। गऊ भारतीय संस्कृति का प्रतीक और भारत की अर्थ व्यवस्था का मेरुदण्ड है इसलिए इसकी रक्षा करना राजा और प्रजा दोनो का कर्तव्य है।

★

श्री आनन्द प्रकाश जी का भाषण

१४ अगस्त को आ० स० लल्लापुरा बनारस के साप्ताहिक सत्संग मे आर्य-वीर दल उत्तर प्रदेश के अधिष्ठाता श्री आनन्द प्रकाश जी का भाषण हुआ।

आपने भारत को राष्ट्रनायको द्वारा प्रदत्त नारा जय जवान जय किसान को अधूरा बताते हुए कहा कि जब तक इन दोनों नारो के साथ जय ज्ञान जय विवेक का नारा बुलन्द नही होगा तब तक नारा पूरा नही होगा। सिर्फ जवान के जोश तथा पैदावार बढ़ाने से देश सुखी तथा सम्पन्न नही हो सकता जब तक ज्ञान तथा विवेक न हो। क्योंकि इन दोनो के बिना जवानों का जोश तथा अधिक पैदा किया हुआ अन्न उस बेकारी जब तक उसे ज्ञान तथा विवेक मे काम म नही लाया जाये। उन्होंने कई एक ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत कर लोगो को बताया कि ज्ञान तथा विवेक शून्य रहने की वजह से हम इतने दिनो तक मुसलमानो मुगलो तथा अंग्रेजो के पास बने रहे। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय को आह्वान किया कि हम ज्ञान तथा विवेक का प्रचार कर महर्षि के मिशन को सफल कर सकते है। शान्ति पाठ के पश्चात् सत्संग का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—उमाकान्त मन्त्री, वाराणसी

★

प्रवासी भारतीयों की दृष्टि में—

भारत की कीर्ति पर आघात

[ले०—श्री विजेन्द्र साहित्यालंकार, पो० ब० ३, नौसोरी, फीजी]

भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् विश्व में भारत को जो सम्मान और गौरव मिला है उससे हर एक भारतीय का सर ऊँचा हो और भारत की प्रगति जिस गति से आगे बढ़ी है उससे एक भारतीय की छाती अभिमान से फूल उठती है। चाहे भारत का भारतीय हो या फीजी का, अफीका का प्रवासी भारतीय हो या इंगलैण्ड वासी, अमरीका में बसने वाला भारतीय हो या यूरूप में, भारत की प्रगति से सबको गहरी दिलचस्पी है और हम सब भारत की प्रगति की कामना करते हैं। भारत पर जब चीन का भारी आक्रमण हुआ तब फीजी से भी प्रवासी भारतीयों ने चन्दे द्वारा सहस्रों रुपये एकत्रित कर भारत की सहायता की थी।

भारत के गौरव को घटाने वाली बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनका समाधान भारत सरकार को करना आवश्यक है। जिन बातों से भारत के स्वाभिमान और गौरव पर ठेस पहुंचती है उनमें से कुछ को मैं बता देना चाहता हूँ। आशा है कि इससे भारत को कुछ लाभ हो।

कुछ दिन हुए मैंने कलकत्ता के एक उच्च सरकारी कर्मचारी को फीजी में मिले अति प्राचीन शिल लिपि के विषय में पत्र लिखा। पत्र का उत्तर मिला अंग्रेजी में। यह देखकर बड़ी ग्लानि पैदा हुई। उनके अंग्रेजी पत्र का उत्तर मैंने हिन्दी में लिखा कि महाशय जी जब दो भारतीयों को आपस में पत्र-व्यवहार करना हो तो किस भाषा में? क्या भारत से सहस्रों मील दूर स्थित इंगलैण्ड की भाषा अंग्रेजी में? अगर आप हिन्दी में लिखे पत्र का उत्तर अंग्रेजी में ही देने में अपना गौरव समझते हैं तो आप से पत्र व्यवहार करना ही उचित नहीं। दूसरी घटना इस प्रकार है—फीजी स्थित भारतीय कमिश्नर के एक कर्मचारी से मैंने भेंट की। मैं उनसे भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी में बातचीत करना चाहता था परन्तु भारत से आये हुये, भारत सरकार के कर्मचारी के मुँह से निकला—"आई ऐम सारी, आई डू नाट नो हिन्दी" अर्थात् मैं हिन्दी नहीं जानता।" यह सुन बिना कुछ बातचीत किये ही मैं वापस लौट आया।

क्या अंग्रेजी दासता का एक चिन्ह नहीं है? क्या भारतवासी और भारत सरकार दासता के इस चिन्ह को अपने सदा पास होते ही रहना चाहती है? समझ में नहीं आता कि क्यों भारत के कुछ लोग दासता के चिन्ह सहस्रों मील दूर इङ्गलैण्ड की भाषा अंग्रेजी को तो बनाये रखना चाहते हैं और हिन्दी का विरोध करते हैं जो सीखने में अंग्रेजी की अपेक्षा अत्यन्त सरल है। भारत से सहस्रों मील दूर प्रशान्त महासागर के मध्य रमणीक फीजी द्वीप से भारत की प्रगति सुख समृद्धि की कामना करता हुआ मैं तो यही कहूँगा कि जो लोग हिन्दी का विरोध करते हैं वे निज स्वार्थ को प्राथमिकता देकर भारतीय राष्ट्र की एकता और प्रगति को ठेस पहुंचाते हैं माना कि अंग्रेजी अन्तरराष्ट्रीय विश्व की भाषा है तो अंग्रेजी को उसी दृष्टि से देखना चाहिए। संसार में कोई अन्य देश नहीं जहां के लोग अपनी राष्ट्र भाषा का विरोध करते हों। भाषा के नाम पर पंजाब में जो कुछ हुआ वह अदूरदर्शिता के कारण ही और भारत सरकार की तुष्टीकरण की नीति के द्वारा ही। तुष्टीकरण की नीति भारत के गौरव को घटाने वाली दूसरी बात है। भारत सरकार कभी अल्पसंख्यक मुसलमानों को तुष्ट करने के प्रयास में बहुसंख्यक हिन्दुओं को असंतुष्ट करती है तो कभी सिक्खों को तुष्ट करना चाहती है। कभी पाकिस्तान को तुष्ट करना चाहती है तो कभी अंग्रेजी समर्थकों को। यह तुष्टीकरण की नीति भारत सरकार को हानि और व्यर्थ का झगड़ा खड़ा करती है।

भारत की तीसरी कमजोरी है भारत सरकार की ढिलमिल नीति। यह युग जिसकी लाठी उसकी भैंस का है। चीन तिब्बत को निगल बैठा और इस मामले पर सारा विश्व चुप है। चीन भारत का सैकड़ों वर्गमील दबाए बैठा है। पाकिस्तान भारत पर कश्मीर की समस्या का बहाना कर अमेरिकन युद्ध टैंकों के साथ पूरे बल से आक्रमण कर बैठा तिस पर भी क्या कोई अन्य देश होता तो पाकिस्तान को बरगा बक देता? पाकिस्तान सदैव से भारत से छेड़छाड़ करता रहा है फिर भी भारत वर्ष अपनी नदियों से पाकिस्तान को जल द्वारा सींचता रहा। यह दुश्मन को दूध पिलाने के समान है और योगिराज कृष्ण के उपदेश के प्रतिकूल। अब परमाणु आयुध युग आ गया है और इस परमाणु युग में जो अणु अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित रहेगा वही राष्ट्र बलवान माना जावेगा। जो चीन हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगाते हुए, भारत को मित्र बनाकर भारत पर व्यापक आक्रमण कर सकता है वह चीन क्या भारत पर अणु बम नहीं गिरा सकता? आज चीन जैसे युद्ध प्रिय देश के पास अणुबम है तिस पर भी भारत वही अपने साधुपने की नीति अपनाये हुए है। कल को चीन से युद्ध छिड़ गया और वह अणु आयुध काम में लाने लगा तो भारत के लिए वही 'आग लगे खोदो कुआ' वाला हाल होगा, नहीं तो फिर भारत हाथ पसारकर कहेगा—'भिक्षा देहि" जैसा कि विगत हिन्द-चीन युद्ध के समय हुआ है। शक्ति सन्तुलन के लिए भारत को अणु बम अति शीघ्र तैयार कर लेना चाहिए, यह समय की पुकार है।

आसाम में पादरी स्काट विद्रोही नागा फिजो का समर्थन करते रहे। समाचार पत्रों से तो पता चलता है कि पादरी स्काट का नागा विद्रोह से गहरा सम्बन्ध रहा लेकिन भारत सरकार की ढिलमिल नीति के द्वारा पादरी स्काट लाभ उठाते रहे। भारत सरकार को इस समय अत्यन्त सजग रहना है क्योंकि भारत के अन्दर बाहर चारों ओर शत्रु हैं। अपनी ढिलमिल नीति को भारत सरकार त्यागे तभी भारत का भला होगा।

●

गायत्री या वेदमाता

(पृष्ठ २ का शेष)

को स्वीकार करते जो इच्छित है। [illegible] सब दुखों की परम औषधि और [illegible] दुखों का नाशक है। [illegible] [illegible] की रुचि पैदा करता है।

[illegible]—[illegible] की [illegible] में तीसरा दूसरा साधन है जिसको दूसरे पद में स्पष्ट किया है। (भर्गो देवस्य धीमहि) उस प्रभु के परम तेज को धारण करें हृदय मन्दिर में स्थान दे यही [illegible] है। तीसरा साधन है।

कर्म—मन में विचार आता है किस प्रयोजन के लिये प्रभु की उपासना करें उसको हृदय में धारण करें। इसलिए कि वह देव है।

(धियो योन प्रचोदयात्) हमारी बुद्धियों को पवित्र प्ररणा से पवित्र करे और हमें शुभ कर्मों में लगावे।

प्रभु आज्ञा—हो विचार समान सबके चित्त मन सब एक हो। ज्ञान देता हूँ बराबर योग्य पा सब नेक हो॥

युग का मुख्य मन्त्र एक ही है। आजकल भिन्न भिन्न पूजा के साधनों से भेद व कलह बढ़ता है। सबका मुख्यमन्त्र गायत्री ही है।

जप तीन प्रकार का है—वाचक, उपांशु मानसिक वाचक जो मन्त्रों को जोर से बोल कर किया जाता है, यह पहिली अवस्था है। दूसरा उपांशु यह मन्त्र को मुंह में ही रटे शब्द बाहर न आवे। मानसिक—यह उत्तम जाप है। मन में जपे मन ही सुने। स्वयं गायत्री माता जप की विधि का सुन्दर संकेत कर रही है धारण करने के दो ही स्थान हैं। एक हृदय दूसरा मस्तिष्क गायत्री में यह दोनों उपस्थित हैं। दोनों को साथ लेना ही जाप है। हृदय के भाव उठ, मस्तिष्क में आवें फिर लौट कर हृदय में आवें। यह आता ही जप है। भूः भुवः स्वः के जप मन में रखे तत्सवितुर्वरेण्यम्—यह मस्तिष्क में ले जाइये। क्योंकि यह विचारने वाली शक्ति को वरण करती है वह बुद्धि है तथा यह परमात्मा ही वरने योग्य है। अब पुनः हृदय में धारण करें। भर्गो देवस्य धीमहि—उस प्रभु के शुद्ध पवित्र तेजस्वरूप को हम हृदय में धारण करें प्रभु के तेज प्रकाश से हमारी बुद्धि प्रकाशित हो, हमें शुभ कर्मों के करने की प्रेरणा दे।

●

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए [illegible] भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री [illegible] शास्त्री द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

वेदोपदेश

ओ३म् देव नः कामया वृष वाजिस्वर्वं शतक्रतो ।
स्तवाम त्वा स्वाध्य ॥ १२ ॥ ऋ० १।१।११।९ ॥

व्याख्यान—हे "शतक्रतो" अनन्तक्रियेश्वर ! आप असंख्यात विज्ञानादि यज्ञों से प्राप्त हो तथा अनन्तक्रियायुक्त हो । सो आप "गोमिरश्वैः" गाय उत्तम इन्द्रिय श्रेष्ठ पशु सर्वोत्तम अश्वविद्या (विज्ञानादियुक्त) तथा अश्व अर्थात् श्रेष्ठ घोड़ादि पशुओं और चक्रवर्ती राज्यैश्वर्य से "ऐर्य, न, कामयावृष" हमारे काम को परिपूर्ण करो । फिर हम भी "स्तवाम, त्वा, स्वाध्य" सुबुद्धियुक्त हो के उत्तम प्रकार से आपका स्तवन (स्तुति) करें । हमको दृढ़ निश्चय है कि आपके बिना दूसरा कोई किसी का काम पूर्ण नहीं कर सकता । आपको छोड़ के दूसरे का ध्यान व याचना जो करते हैं, उनके सब काम नष्ट हो जाते हैं ॥१२॥

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार ४ सितम्बर १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

राष्ट्र रक्षा के लिये सावधान रहें

भारत पाकिस्तान युद्ध को एक वर्ष हो रहा है। युद्ध में हमारे वीरों ने अपने बलिदान से भारत की विजय पताका फहराई। युद्ध-विराम और ताशकन्द समझौते का इतिहास अभी ताजा है पर पाकिस्तान की नीयत में कोई अन्तर आया हो ऐसा नहीं लगता। चीन तो पाकिस्तान की पीठ बराबर ठोकता रहा है हथियार, जहाज और टैंक देकर वह पाक की हिम्मत बढ़ाने में लगा है, ढाका के पास अणुभट्ठी लगाने का समझौता करके और पाक सैनिकों को चीनी सैनिकों द्वारा गुरिल्ला-युद्ध की शिक्षा देकर चीन ने पाक को पूरी तरह अपने साथ कर लिया है दूसरे शब्दों में चीन के समर्थन से पाक की शक्ति बढ़ रही है।

अमेरिका और इंगलैण्ड ने भी पाक को पुनः हथियार देने आरम्भ कर दिये हैं। पश्चिमी जर्मनी-ईरान होकर पाक के पास ९० हवाई जहाज पहुँचने का समाचार भारत में डाकने वाला तो है ही भारत को हैरत में डालने वाला भी है। क्या पाकिस्तान में इन जहाजों की आवश्यकता होगी यह सब धोखा है और धोखे को छिपाने के लिये कम महत्व रखती है। पाकिस्तान में भुट्टो को विदेश-मन्त्री पद से भले ही हटा दिया गया हो परन्तु पाक की आक्रामक नीति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। राजस्थान काश्मीर, लाहौर, पंजाब सभी सीमाओं पर पाक सैनिक तय्यारियां युद्धस्तर पर हो रही हैं। और ताशकन्द समझौते के बिना पाक के हृदय परिवर्तन की आशा भी व्यर्थ रही पाक फिर उठाकर ताशकन्द भावना की धज्जियां उड़ा रहा है। ६ सितम्बर को पाक "भारत से रक्षा दिवस" मना रहा है। वहां के विदेश-मन्त्री पीर जादा काश्मीर के प्रश्न को छोड़ कर अन्य प्रश्नों पर द्विराष्ट्र वार्ता के लिये सहमत नहीं है, राष्ट्रमण्डल सम्मेलन में भी काश्मीर प्रश्न उठाने की घोषणा कर चुका है।

पाक की युद्ध तय्यारियों और कूटनीतिक दम्भपूर्ण मनोवृत्ति के उपर्युक्त विवरण के पश्चात् हम भारत की स्थिति पर विचार करें तो हृदय में चिन्ता होने लगती है। यद्यपि हम स्वभाव से ही शान्तिप्रिय हैं गांधी नेहरू और शास्त्री जी की आदर्श विश्व शान्ति भावना के हम समर्थक हैं परन्तु हमें गफलत में नहीं रहना चाहिये। शत्रु हमारी शान्तिप्रियता का नाजायज फायदा न उठा सके इसके लिये देश को तय्यार रहना चाहिये। परन्तु ऐसा लगता है कि सरकार नौकरशाही रथ पथ पर ही चल रही है। सरकार ने संकटकालीन सैनिक अफसरों की हजारों की संख्या में छटनी करने का निश्चय कर लिया है। देश में युद्ध से रक्षा की भावना धीरे धीरे समाप्त हो चली है। हमारे राजनैतिक एवं सैनिक स्थानों पर जासूस घुसे बैठे हैं और हम उनका पता नहीं लगा पा रहे, काश्मीर में तोड़-फोड़ जारी है। ऐसी अवस्था में हम जनता और सरकार दोनों का ध्यान सम्भावित संकट की ओर आकृष्ट कर रहे हैं। हमारे रक्षा-मन्त्री बड़े साहस से काम ले रहे हैं परन्तु जन सहयोग की दृढ़ता अत्यन्त आवश्यक है उस राष्ट्रीय चेतना को सम्मिलित रूप से ही जागृत रक्खा जा सकता है। अतः प्रत्येक देशवासी को राष्ट्र-रक्षा के पवित्र कर्त्तव्य का पालन करने में सदैव सतर्क रहना चाहिये।

नारायणस्वामी जन्म-शताब्दी सफल बनावें

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने इस वर्ष अपने कार्यक्रम में आर्य नेता स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की जन्म-शताब्दी मनाने का निश्चय किया है।

इस निश्चय को क्रियान्वित करने के लिये प्रारम्भिक कार्यवाहियां आरम्भ हो चुकी हैं।

शताब्दी समारोह के संयोजक श्री भक्तदेव स्नातक जी ने शताब्दी की सफलता के लिये दौड़ धूप आरम्भ कर दी है। सार्वदेशिक स्तर पर इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये सार्वदेशिक सभा और सभी प्रान्तीय सभाओं का सहयोग प्राप्त किया जा रहा है। नारायण स्वामी जी की जीवनी, चित्र एवं अप्राप्त साहित्य प्रकाशन योजना पर कार्य आरम्भ हो चुका है। शताब्दी कार्यक्रम की सफलता के लिए धन-संग्रह का प्रमुख कार्य ऐसा है जिसमें प्रत्येक आर्य बन्धु का सहयोग अपेक्षित है। शताब्दी समारोह की रसीदें तय्यार हो रही हैं कार्यालय गुरुकुल विश्वविद्यालय में खुल चुका है और संयोजक महोदय ने प्रार्थना प्रकाशित की है कि स्वामी जी के भक्त शताब्दी सफलता के लिये अपना सहयोग दें और गुरुकुल पहुँचें।

यह शताब्दी समारोह आर्यसमाज के लिये तो महत्वपूर्ण होगा ही। देश के लिये विशेष महत्वपूर्ण होगा क्योंकि राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज ही राष्ट्र का सही मार्गदर्शन कर सकता है। इन सब बातों को दृष्टि मे रखते हुए सितम्बर से दिसम्बर तक के अल्प समय में इस शताब्दी को सफल बनाने मे जुट जाना चाहिये।

महात्मा नारायण स्वामी जी ने आर्यसमाज और मानव जाति के लिये जो कुछ किया उसके प्रति कृतज्ञता का यही वास्तविक रूप होगा कि हम उस महान् व्यक्ति को स्मरण करें और उसके मार्ग पर चलने का संकल्प दोहरावें और अन्यों को भी प्रेरित करें।

आशा है आर्य बन्धु इस शताब्दी की सफलता में अपने तन, मन, धन से सहयोग कर इसे सफल बनावेंगे।

★

उत्सव

आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल) का वार्षिकोत्सव दि० २५, २६, व २७ सितम्बर को होगा। कार्यक्रम के मुख्य अंग वार्षिक, सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन होंगे।

स्वामी शिवानन्द जी व शिवाश्रम

आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष शिवाश्रम भल्लाराम रोड हरिद्वार ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश को अपनी अमूल्य सेवायें प्रस्तुत की हैं। श्री स्वामी जी महाराज के व्याख्यान गम्भीर और ओजस्वी होते हैं। आपकी कथा हृदयग्राही और प्रभावशालिनी होती है। आर्यसमाजों को अपने उत्सवों और विशेष पर्वों पर श्री स्वामी जी को उपयुक्त पते पर लिखना चाहिये।

श्री स्वामी जी का शिवाश्रम बीच हरिद्वार में है। आर्य बन्धुओं को इस आश्रम पर ठहरने की समुचित निःशुल्क व्यवस्था है। आश्रम मे प्रात नित्य सन्ध्या, प्रार्थना, यज्ञ, प्रवचन, स्वाध्याय होता है। यज्ञ के पश्चात यज्ञ शेष भी वितरित होता है। इस आश्रम में ठहरने वाले को इस वैदिक कार्यक्रम में सम्मिलित होना अनिवार्य है। बीच हरिद्वार में इससे उत्तम आर्यों के लिए ठहरने की अन्यत्र व्यवस्था नहीं है। आशा है कि आर्य सज्जन हरिद्वार पहुंच कर इस आश्रम को अवश्य देखेंगे और श्री स्वामी जी के सत्संग से ज्ञानवर्धन करेंगे।

—धर्मदत्त तिवारी
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

लखनऊ में वेद सप्ताह

लखनऊ की आर्यसमाजों में वेद सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है आर्यसमाज गणेशगंज में ३१ अगस्त से श्री पं० सत्यव्रत जी शास्त्री विद्यालंकार की कथा हो रही है। आर्यसमाज चौक में श्री पं० रामचरित्र जी पाण्डेय, आर्य समाज चन्द्रनगर में श्री देवराज जी वैदिक मिशनरी, आर्यसमाज नरही में श्री रामेश्वरसहाय जी कथा कह रहे हैं ४ अगस्त से आर्यसमाज मुजफ्फरनगर में श्री देवराज वैदिक मिशनरी की कथा होगी।

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

(कुछ संस्मरण)

(श्री सर्वेमोहन जी, मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग)

जिसके रोम रोम से महर्षि दयानन्द के जय-जयकार की प्रतिध्वनि हो रही है। जिसके वाणी के प्रत्येक स्वर में कल्याणी वाणी वेद का निनाद निनादित होता रहता है। जिसका प्रत्येक पग महर्षि दयानन्द प्रदर्शित प्रशस्त पथ की ओर ही अग्रसर होता रहा है। जिसकी ज्ञान प्रसूता लेखनी दीर्घकाल से अविराम गति से वैदिक साहित्य के भण्डार की अभिवृद्धि में संलग्न है। जिसके जीवन का प्रत्येक क्षण वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में ही बीत रहा है। जिसने वैदिक सिद्धान्तो के समर्थनार्थ व उनकी विश्व व्याप्ति में आने वाली प्रत्येक बाधाओ से निपटने के लिए देश कालानुसार यथोचित निदान प्रस्तुत किया है। जिसके आशीर्वाद से उद्भूत शताधिक ग्रन्थ, सहस्राधिक सामयिक व सैद्धान्तिक लेख युगानुयुग कोटि-कोटि ज्ञान पिपासु आबाल वृद्ध नर-नारियों को सन्तृप्त करते रहेगे। जिसने यथासम्य धर्मानुसार प्रीतिपूर्वक महर्षि दयानन्द के सन्देशो को सुदूर देशो में रहने वाले मनुष्यो में तद्देशीय भाषाओ में पहुचाने मे सफल प्रयत्न किया है। जिसकी गुण गौरव गरिमा व साहित्य सेवा से समस्त आर्य जगत् ऋणी रहेगा। उपरोक्त गुणो से समलकृत अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्य साधक, तपोनिष्ठ, ऋषिभक्त वैदिक, सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान्, दार्शनिक स्वनाम धन्य विद्वद्वर श्री पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय से शायद आप अपरिचित न होंगे।

पूज्य पंडित जी का जन्म ८५ वर्ष पूर्व जिला एटा मे काली नदी के किनारे नदरई ग्राम में हुआ था। अल्प आयु मे ही आप पितृहीन हो गए थे। ममतामयी मा के ऊपर ही पालन-पोषण का भार आ पड़ा। उस मा को क्या मालूम था कि यही लाल भविष्य में महान लेखक होकर समस्त आर्य जगत् को अनन्तकाल तक अनुप्राणित करता रहेगा।

आज पूज्य पंडित जी के ८५ वें वर्षगांठ पर उनके जीवन के कुछ स्फुट विचार-चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करूंगा, जो कि इनके जीवन में कुछ अंशों पर प्रकाश डाल सकेगा।

आदर्श शिष्य

आप जब अलीगढ़ वैदिकाश्रम में पढ़ते थे, उसी समय दयानन्द के ग्रन्थो ने आपके विचारों में अभूतपूर्व क्रान्ति उत्पन्न कर दी, तब से निरंतर परम्परागत अन्धविश्वासों तथा रूढ़िवाद के व्यामोह से निपटने के लिए महर्षि द्वारा प्रदीप्त सत्यार्थ प्रकाश रूपी दीप शिखा के प्रकाश में संघर्ष करते रहे। आपका समस्त जीवन चक्र (जीवन चक्र नाम से आपने अपनी जीवन गाथा भी लिखी है) गुरुवर दयानन्द के ऋण से उन्मुक्त होने के लिए ही परिभ्रमित होता रहा है। महर्षि दयानन्द के शिष्य के नाते महर्षि की उत्तराधिकारिणी आर्यसमाज को समुन्नत करने के लिए आपने घोर परिश्रम किया है। उसकी पूर्त्यर्थ आपने कभी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री के रूप में और कभी उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के

श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम०ए०

प्रधान के रूप में और कभी गुरुकुल वृन्दावन के कुलपति पदक रूप में कार्य की हैं। देश-विदेश की यात्राएं भी आपने इसी सदुद्देश्य की पूर्ति के लिए किया है। आपके रोम-रोम से महर्षि दयानन्द की शिक्षाओ की सुगन्ध सौरभ सुवासित होती रहती है जो कि समीप आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। इस प्रकार गुरुवर दयानन्द की शिक्षाओ को जनसाधारण में पहुचाने के लिए आदर्श शिष्य के रूप में अविकल रूप से अविराम गति से, अटूट श्रद्धापूर्वक चिन्तन मनन व लेखन द्वारा रत हैं।

मैं देखता हू कि जिस प्रकार दयानन्द के प्रति अगाध भक्ति है, उसी प्रकार उन साधारण लोगों के प्रति भी जिन्होने कुछ भी आपके साथ उपकार किया है उसका भी ऋण अपने ऊपर मानकर सादर शिरोधार्य किया है। नीचे की घटनाएं इसकी साक्षी हैं।

१—आपको संस्कृत पढ़ने की अभिलाषा हुई। समीप के एक पाठशाला के आचार्य श्री प० सीताराम जी ने घर पर पढ़ाना आरम्भ किया, और कुछ दिनो में नैरन्तर्य प्रयास से शीघ्र ही संस्कृत आपको मातृभाषा हो गई। आपको कुछ कार्यवश कुछ दिनों के लिए शाहपुरा जाना पड़ा। तब आचार्य जी का सामीप्य भी भंग हो गया। किन्तु उनकी अनुपस्थिति मे भी आपके पठन पाठन का क्रम भंग न हुआ। फल यह हुआ कि वहीं पर आपने एक संस्कृत के अकलम छन्दों में आर्योदय काव्यम् नामक ग्रन्थ की रचना की जिसकी उच्चकोटि के देश-विदेश के विद्वानों ने भूरि भूरि प्रशंसा की। आपकी गुरु भक्ति देखिए—आप जब प्रयाग आए तब एक थाल में मिठाई सजाकर और आर्योदय काव्यम् के दोनों भाग रखकर नौकर को साथ लेकर श्री पंडित जी के निवास स्थान पर पहुचे। आपने अत्यन्त विनीत भाव से मिठाई आचार्य जी को समर्पित करके उनका अभिनन्दन किया, श्री आचार्य जी यह कृत्य देखकर दंग रह गए कि कहां यह आर्य जगत् का महा विद्वान् और कहां मैं एक साधारण अध्यापक। मेरे ऐसे मूर्ति पूजक आचार्य के प्रति यह भक्ति।

२—लगभग ६ वर्ष पूर्व अरबी पढ़ना आरम्भ किया। मौलवी अली उल्ला साहब आने लगे। आप बड़े आदरपूर्वक तथा नियमानुसार उनसे पढ़ने लगे। एक दिन मौलवी साहब आए, कमरे में एक ही कुर्सी थी, आप फौरन उठ और अपनी कुर्सी पर मौलवी साहब को बैठाया और दूसरी कुर्सी लाने के लिए दूसरे कमरे की ओर जाना चाहा मौल्वी साहब ने बारम्बार कहा कि मैं कुर्सी ले लूगा किन्तु आपने उन्हे कुर्सी नही लाने दी। मौलवी साहब ने फरमाया कि आप इतना तकल्लुफ क्यों करते हैं। आप बहुत वृद्ध हैं और मैं तो अभी मजबूत हू और अपने ही बैठने के लिए तो कुर्सी बगल के कमरे से लेना है। श्री पंडित जी ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया ठीक है, इससे क्या हुआ। कितना ही हो आप मेरे उस्ताद हैं। यह था मौल्वी साहब के प्रति आपका आदर भाव।

३—उपरोक्त मौल्वी साहब के अस्वस्थ होने पर उनके शिष्य श्री मौ० अली अकबर जी आने लगे। अली अकबर जी की आयु लगभग २२ वर्ष की थी जो कि उनके पोतो से भी कम। परन्तु उनके साथ भी आपका व्यवहार उसी प्रकार का था। मौल्वी साहब के अल्पायु होने पर आपके विनय मे कोई अन्तर न आया। मुझसे यदाकदा मौलवी साहब से धार्मिक विषयो पर बहस हो जाया करती थी। मैंने एकबार पूज्य पंडित जी से विनय की कि श्री अली अकबर जी आपके पास नित्य आते हैं और अमुक सिद्धान्त पर उनका यह दृष्टिकोण है, यदि आप उनके विचारों मे परिवर्तन ला सके तो अच्छा होता। आपने कहा कि देखो भाई श्री मौल्वी साहब इस समय मेरे गुरु हैं इसलिए मैं उन्हें छेड़कर कोई बात अपनी ओर से नहीं चला सकता हू यदि वे किसी विषय

पर बात आरम्भ करेंगे तो मैं अवश्य उस विषय पर सामोपाय प्रकाश डालूंगा। कोई बडे से बडा व्यक्ति आता तब आप सर्वप्रथम परिचय मोलवी साहब का कराते वह भी बड आदर के साथ। यह है आपको गुरु के प्रति विनयशीलता जो आज के विद्यार्थियो में शायद ढूंडने से भी न मिले।

एक बात और महत्वपूर्ण है कि आपने पठन पाठन काल मे एक दिन भी अनध्याय नहीं किया। आपको खांसी उठ रही है, अथवा बुखार चढा है, मोलवी साहब आ ज ते उनकी हालत देखकर जाना चाहते तो आप तुरन्त कहते, आइए, आइए मोल्वी साहब आप आए हैं तो अधिक न सही तो एक सतर तो पढ ही सकता हू। नागा क्यो किया जाय। इसी नियम बद्धता का फल है कि आपने अरबो में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली और एक महत्व-पूर्ण ग्रन्थ मआवोजुल इस्लाम की रचना की जो कि इस्लाम और मुहम्मद साहब के सम्बन्ध में एक क्रान्तिकारी पुस्तक मानी जाती है।

आदर्श गुरु

आदर्श शिष्य के साथ साथ आप आदर्श गुरु भी है। पढाने के लिए शिक्षार्थियो को आप ढूंढ-ढूंढ कर पकडा करते थे। कटरा आर्यसमाज प्रयाग में अपने व्याख्यान में आपने अपील की थी कि जो सज्जन आर्य ग्रन्थों को पढना चाहते हो वे मेरे पास आए जो लेखक बनना चाहते हों, वे मेरे पास आए, जो व्याख्यान दाता बनना च हते हो वे मेरे पास आए और जो शास्त्रार्थ करना चाहते हो वे मेरे पास आए और यदि कोई सज्जन केवल मर ही करना चाहते हों तो उनके लिए भी मेरा द्वार सवदा ... खुला है। आपकी यह आकांक्षा ... कि यहाँ आने पर किसी न किसी तरह से कुछ न कुछ पढ ही जाया करेगा। अकाट पढाने का नमूना देखिये।

१—उपरोक्त मोलवी अकबर जी अरबी के आलिम फाजिल थे। हिन्दी व अंग्रेजी ज्ञान से सवथा शून्य थे। एक दिन पूज्य पण्डित जी ने कहा कि मोलवी साहब, केवल अरबी व उर्दू का ज्ञान आपके लिए काफी नही है। आपको और भी आधुनिक परीक्षा (हाई स्कूल आदि) पास करना चाहिए तभी आपका जीवन सुचारु रूप से चल सकेगा। मोलवी स हब के हृदय मे बात जम गई किन्तु आगे पढ तो कैसे? एक ओर तो हिन्दी व अंग्रेजी गणित आदि विषयो मे अनभिज्ञता और दूसरी ओर अधिक कठिनाइयां। प० जी ने कहा कि आप मुझसे पढ़ा करें सभी विषय मैं पढा दिया करूंगा। हाई स्कूल का फार्म भर दिया गया। आश्चर्य की बात है ८ ९ महीने की ही पढ़ाई में हाई स्कूल में गुड सेकेंड डिवीजन में उत्तीर्ण हो गये। इन्टर में वे एक स्कूल में दाखिल हो गये और सुयोग्य पडित जी से ही पढते रहे। परीक्षा हुई और इन्टर में भी द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए। इस वष उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय मे प्रवेश पा लिया है और यथाविधि पडित जी के ही सानिध्य में ही आपकी शिक्षा पूववत चल रही है।

२—दूसरे सज्जन श्री बैजनाथप्रसाद जी आर्य मुट्ठीगञ्ज प्रयाग, किसी गल्ले के आढ़ती की दुकान मे ~द में मुनीमी करते थे किसी समय म आपन हाई स्कूल किया था। किसी प्रकार से आप का पडित जी से सम्पक हो गया। आप की प्ररणा से मुनीम जी ने इन्टर का फाम भरा और पडित जी से ही सभी विषय पढने थे। अच्छे नम्बरों से पास हुए फिर प्रयाग विश्वविद्यालय में बी० ए० मे प्रवेश पाकर आपकी कृपा से बी० ए० उत्तीर्ण किया। अब वे एम० ए० प्रथम वष सस्कृत मे उत्तीर्ण होकर फाइनल की तैयारी कर रहे है, पडित जी ही उनके एक मात्र पढ़ाने वाले हैं मैं देखता हू कि थोडा सा भी आपसे सम्पक हुआ तो झट उसे घसीटकर मा सरस्वती की वेगवती धारा मे बाध देते हैं। मैं देखता हू मेरे ऐसे तुच्छ व्यक्ति को भी पढाने के लिए वे कितने उत्सुक रहते है। आपकी प्ररणा से मैंने आपसे न्यायदशन पढना आरम्भ किया। एक दिन आपने आग्रहपूवक कहा यदि समय मिल सके तो १५ मिनट दोपहर को भी निकालो और पढकर भाग जाया करो। मैं उन्हे देखता हू तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे यह महामानव किसी ऐसे व्यक्ति को खोज रहा है जिसमें अपनी सारी सचित विद्या को उडलकर कृतकृत्य हो जाये। जब भी कोई विद्यार्थी आपके पास पहुच जाता है तब आप तत्काल अपना काम बन्द करके कहते हैं कि पढो भाई। एक दिन मोलवी साहब पहुचे। आप सध्या करने जा रहे थे आसन पर बैठ चुके थे, नेत्र बन्द हो होने जा रहे थे सहसा पैरो की आहट हुई, सामने देखा कि मोल्वी साहब किताब लिये चले आ रहे हैं। आपने तुरन्त कहा कि आइये आइये मोलवी साहब! पहिले आप पढ लीजिये। मोलवी साहब ने ठिठक कर कहा—नही नही आप सध्या कर लीजिए बाद मे मैं पढ लूगा। आपने सहज भाव से कहा कि मेरा भगवान तो कही भागा नही जा रहा है, आपको पढाने के पश्चात भी सध्या कर सकता हू फिर क्यों आपका समय नष्ट करूं। पाठक इन घटनाओ से सरलता स अनुमान लगा सकते हैं कि गुरु के रूप मे उनके हृदय मे विद्यादान में कितनी व्यग्रता और उत्सुकता है। कुछ घटनायें उनके अध्यापन काल की दे रहा हू जिससे पता लगेगा कि विद्यार्थियो के चरित्र निर्माण व उनके जीवन मे मोड देने के लिये किस प्रकार नये नये प्रयोग करते रहते थे। आप विद्यार्थियो को पुत्रवत् प्रेम करते हुये उन्हे उद्दण्डता करने पर उनके सुधार के लिये यथोचित दण्ड दिया करते थे। निम्नलिखित घटनायें उस की हैं जबकि आप दयानन्द कालेज प्रयाग मे प्रधाना-ध्यापक थे।

एक विद्यार्थी ने एक बार किसी

(शेष पृष्ठ १२ पर)

श्री पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी

८५ वीं जन्म जयन्ती (६ सितम्बर १९६६)

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान एव आर्य नेता श्रद्धेय श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय आगामी ६ सितम्बर को अपनी जीवन की ८५ वीं वष की यात्रा मे प्रवेश कर रहे हैं।

श्री गङ्गा प्रसाद जी उपाध्याय

माननीय श्री उपाध्याय जी की विद्वत्ता विश्व में विख्यात है उनके लिखित ग्रन्थों की ख्याति इससे ही सिद्ध है कि उन्हे आस्तिकवाद पर मंगला-प्रसाद पारितोषिक, कम्यूनिज्म एव जीवन चक्र जिसमें उनकी स्वय की जीवनी है उत्तरप्रदेश सरकार ने ६००) ३००) रु० के पुरस्कार से सम्मानित किया है। अंग्रेजी Vedic culture पर श्री ठाकुरदत्त जी अमृतधारा वालो ने पुरस्कार से विभूषित किया है।

वृहत अंग्रेजी पुस्तक Philosophy of Dayanand की प्रशंसा देशीय एव विदेशीय विद्वानों ने की है।

उनका जीवन सघषमय रहा है। उन्होने समाज एव राष्ट्र सेवा करने हेतु ब्रिटिश सरकार की सेवा छोडकर साधारण वृत्ति पर अध्यापक का रूप स्वीकार किया। वही अपने अथक परि-श्रम से जीविका वृत्ति करते हुये समाज की सेवा में लीन अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों तथा पुस्तिकाओ का प्रणयन किया। मैट्रिक के उपरान्त की परीक्षायें उत्तीण की और दो विषयो से एम०ए० किया। स्वत के परिश्रम एव लगन से सस्कृत भाषा में अधिकार प्राप्त करके 'आर्योदय काव्य तथा आर्य स्मृति' दो काव्य ग्रन्थो से सस्कृत का भडार भरा।

इन दिनों अत्यधिक वृद्ध होते हुये भी अब व ठीक से देख नही पाते। अग शिथिल पड गये हैं फिर भी अपने आत्म बल से निरन्तर ८९ घटे प्रतिदिन पढते लिखते हैं। कभी व्यर्थ समय नहीं गवाते। यदि कोई उनके पास जाय तो आदश गुरु के समान उसे स्नेहपूर्वक उत्साहित होकर उसकी शकाओं का समाधान करते हैं।

उनके हृदय में एक टीस है कि 'ऋषि दयानन्द एव वेद का सत्य रूप जगत को ज्ञात हो जाय। उसके लिये वे अभी तक प्रयत्नशील हैं। वैदिक धर्म के प्रचारार्थ उन्होंने विदेशों की यात्रा भी की है।

ईश्वर उन महात्मा, ऋषि दयानन्द के भक्त को शक्ति दे एव चिरायु करे जिससे वे हमें तथा ससार को अमूल्य निधि दे सकें।

आशा है उनकी ८५ वीं वषगांठ आर्य जगत् में विशेष उत्साह से मनाई जायेगी।

नैतिक और वैदिक शिक्षा

(ले०—श्री हरिहरप्रसाद जी वर्मा एम० ए०, बलरामपुर गोंडा)

विश्व एक पहेली है। इस पहेली को सुलझाने का प्रयत्न मानव युगों से करता आया है। आज भी वह इसी पहेली को सुलझाने में लगा है। इस पहेली को सुलझाना जितना सरल है उतना गहन भी है। पहेली की अनेक समस्याय है जो भूल भुलया की भांति मनुष्य की बुद्धि को चकरा देती है। पर अनेक लोगो ने समय समय पर इस पहेली को सुलझाया भी है और अनेक लोग इसे सुलझाते-सुलझाते इतना उलझ गये हैं कि उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। आज की पहेली की समस्या है 'अवनति के इस काल में नैतिक और वैदिक शिक्षा का महत्व।" इस मूर्तिमान पहेली को सुलझाना फूलों की सेज नहीं तो कांटों की शैय्या अवश्य है। अत जो लोग भी इस पहेली को सुलझाने के लिए आगे आयें, वह समझ बूझ कर आयें। नैतिक और वैदिक शिक्षा से प्रशिक्षित व्यक्ति ही नैतिक और वैदिक शिक्षा का प्रचार व प्रसार कर, अपने देश को नहीं नहीं, 'विश्व' को अन्धकार से निकाल प्रकाश में ला सकते हैं। देश को आज ऐसे ही प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता है।

किसी भी राष्ट्र का मूल उसकी अपनी नैतिकता ही होनी है। यदि मूल सूखा तो पौध की हरियाली समाप्त हुई और यदि नैतिकता' समाप्त हुई तो देश का विनाश निश्चय बन गया। इस कारण राष्ट्र रूपी पौध की सुरक्षा के लिए नैतिकता आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। आज विश्व के सभी धर्म भी एक स्वर से यही कह रहे हैं। आदि सत्य के निधि वेद' की तो बात ही क्या। उसकी तो प्रत्येक पंक्ति, चाहे 'ज्ञान' से सम्बन्धित हो, चाहे कर्म' से और चाहे 'उपासना से नैतिकता का ही उदघोष करती है। कहा जाता है कि व्यक्ति और व्यक्ति से बने समाज के लिए कोई कार्य असम्भव नहीं, यदि उस व्यक्ति और उस समाज की निष्ठा पूर्ण विश्वास उस कार्य के प्रति अविचल हो। सच्ची निष्ठा और विश्वास की प्राप्ति के लिए उत्साहपूर्ण गम्भीर अध्ययन की आवश्यकता है। गम्भीर अध्ययन के लिये नैतिकता एक आधार है और वैदिक शिक्षा द्वारा ही लाई जा सकती है। गुरु विरजानन्द द्वारा दी हुई सच्ची शिक्षा पर स्वामी दयानन्द की विश्वासपूर्ण निष्ठा थी। उनका उत्साह विश्वास से युक्त था। वह उत्साह उनको अपने सच्चे ब्रह्मचर्य से मिला था जो 'नैतिकता' की जननी है। यदि ऐसा न हुआ होता तो वे अकेले ही हरिद्वार में 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' न गाड़ पाते और न स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भारत में नैतिकता का प्रचार ही कर पाते। आज देश को स्वामी जी ऐसे उत्साही कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है जिसे हम देश में नैतिक और वैदिक शिक्षा देकर ही प्राप्त कर सकते हैं।

इस समय देश में उत्साह की कमी है इसे सभी मानते हैं। आज देश को स्वतन्त्र हुए १७ वर्ष बीत गये फिर भी राष्ट्रीय पर्व '१५ अगस्त' और '२६ जनवरी' के दिन जो उत्साह दिखाई देना चाहिये वह नहीं दिखाई देता। ऐसा क्यो ? इसलिए कि देश मे उत्साह' नहीं है नैतिकता' नहीं है। फिर भारतीयों का नैतिक स्तर दिन प्रतिदिन गिरता चला जा रहा है। नैतिकता के गिरने का एक मात्र कारण है देश मे नैतिक और वैदिक शिक्षा का अभाव। आज तो पैसा ही भगवान बन गया है। आज वही व्यक्ति बड़ा की संज्ञा पाता है जो धनी है और उस धन का सदुपयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि में करते हैं। गुणियों के 'गुणों' की कोई पूछ नहीं। उन्हे तो वर्तमान समय मे प्राय भूखों ही मरते देखा जाता है। फिर बताइये इस विकट परिस्थिति में कौन गुणों से प्यार करेगा पैसे के लोभ मे बड़' कहलाने की लालसा मे, आज अच्छे लोग भी 'सदाचार' को छोड़ते चले जा रहे हैं। इस प्रकार देश की मनोवृत्ति आज देश की नैतिकता को ही समाप्त करती चली जा रही है। अत इस गिरते हुए नैतिक स्तर के संतुलन के लिए नैतिक और वैदिक शिक्षा की परम आवश्यकता है वैदिक शिक्षा द्वारा ही भारत 'अर्थ प्रधान जीवन दृष्टि की जगह 'धर्म प्रधान जीवन दृष्टि' की स्थापना" कर सकने मे समर्थ हो सकेगा। यह नितान्त सत्य है। परतन्त्रता के समय की सी जागरूक नैतिकता का उत्थान इस स्वतन्त्रता के समय मे भी होना आवश्यक है। अन्यथा देश निकट भविष्य में ही रसातल को पहुंच जायेगा। अत इस कार्य को सच्चे आर्य ही कर सकते हैं पर उन्हें पहले अपने दामन को निदान कर लेना पड़ेगा यह कार्य साधारण नहीं वरन तलवार की धार पर चलने के सदृश है।

अन्य देशों की भांति अपना देश भारत भी आज रेगिस्तानी मृग मरीचिका की तरह, भौतिक आकर्षण एवं विज्ञान की चकाचौंध में, अपने को लूटता और लुटाता चला जा रहा है। उस पर पश्चिमी सभ्यता का व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। उसकी अपनी आध्यात्मिकता आज उससे कोसों दूर जा खड़ी हुई है। ईश्वरवाद के अभाव मे आज जिधर देखिये अशान्ति ही अशान्ति दिखाई पड़ रही है। दुख, भय, निराशा, अत्याचार अनाचार, भ्रष्टाचार स्वार्थ चारो ओर भारत को निगल जाने के लिए मुंह बाये खड़ी है। संघर्ष, युद्ध और अग्न के बादल निर्बाध रूप से आगे बढ़ रहे हैं। आखिर यह सारी बातें एक साथ क्यो पनप रही हैं ? इसे समझने के लिए मानव बुद्धि अपेक्षित है। बुद्धि को परिष्कृत कर निष्पक्ष भाव से यदि हम विचार करें तो इन सबके मूल में अपनी नैतिकता का अभाव ही मिलेगा। आखिर राम कृष्ण राणा शिवा जी दयानन्द श्रद्धानन्द और गांधी जवाहर के इस भारत मे ऐसा क्यो ? सच तो यह है कि वैदिक शिक्षा के अभाव में 'बुद्धि' की पवित्रता समाप्त हो गई है। 'बुद्धि' की पवित्रता के अभाव का नाम ही नैतिक पतन है। और बुद्धि की पवित्रता का योग ही नैतिक उत्थान' है। आज इसी नैतिक उत्थान की देश को आवश्यकता है। नैतिक उत्थान के लिये वैदिक शिक्षा की आवश्यकता है। क्योंकि वेद में ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्' का उदघोष है। वही असतो मा सद्गमय', तमसो मा ज्योतिर्गमय' तथा मृत्योर्मा अमृतंगमय का उपदेश करता है। 'सत्यमेव जयते नानृतम्' की ध्वनि संगति भी वही करता है। आज इन्हीं सुन्दर सिद्धान्तों के व्यापक प्रचार की आवश्यकता, लक्ष्य रूप में देश के राजनैतिक और सामाजिक नेताओं को स्वीकार करता है। शिक्षा वह है जो प्रेय से 'श्रेय' की ओर ले जायें और नैतिक शिक्षा इसी शक्ति प्राप्ति की एक 'साधना' है। भारतीयों को यह न भूलना चाहिये कि स्वतन्त्रता के पहले के राजनैतिक व सामाजिक आन्दोलनों में यदि नैतिकता न होती तो वह कदापि सफल न हो पाती आज भारत निर्माण हेतु पहले की सी नैतिकता की आवश्यकता है, पर आज के राजनैतिक व सामाजिक नेता या तो उसे अहंकारवश भूल गये हैं अथवा समझ कर भी उपेक्षा निज स्वार्थवश कर रहे हैं। असावधानी के इस दलदल से भारत को कौन मुक्त करायेगा ? सम्भवत ऋषि दयानन्द के अनुयायी ही इस कार्य को कर सकेंगे। पर दुख है कि आर्य सिद्धान्तों पर विश्वास करने वाले अधिकांश आर्य भी आज अनैतिकता बढ़ाने में ही अपना योग दे रहा है। इसीलिए आर्यसमाज ऐसी संस्थायें भी राजनैतिक अखाड़े मे बदल गई है। इन संस्थाओं के परिष्कार सुधार की आवश्यकता है जो नैतिक और वैदिक शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। पर दुर्भाग्य से आज उसी की कमी है।

देश के इस दुर्भाग्य से लोहा लेने के लिये 'कर्मवीरों' को आगे आना है। उन्हें धर्म रहित राजनीति से बचकर, भारत की पवित्र संस्कृति व सभ्यता के पुन स्थापन का व्रत लेना चाहिये। स्कूल कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में नैतिक और वैदिक शिक्षा के लिये आन्दोलन छेड़ना चाहिये। पर इसके लिये हमें सतत अपने जीवन दृष्टिकोण की परीक्षा करनी होगी, अपने को संयमित करना होगा मर्यादित नागरिक के रूप मे विश्व के समक्ष अपने को खड़ा करना होगा, दैवी आसुरी प्रवृत्तियों के संघर्ष मे दैवी पक्ष को सबल बनाना होगा, वर्ण व्यवस्था और आश्रम की मर्यादा को पुन कायम करना होगा, छुआछूत का भूत हटा देना होगा, [illegible] वाद और प्रान्तीयवाद के विचारों पर प्रहार करना होगा वेदों के प्रचार के लिये भूमि बनाते हुये 'जियो और जीने दो" के महान आदर्श को अपनाकर व्यवहारिक जीवन मे उसे उतारना होगा तथा सच्चे अर्थों मे भारत को विश्व नेतृत्व के लिये आगे बढ़ाना होगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि आज का उत्तरदायित्व पिछले सभी उत्तरदायित्वों से कहीं बढ़कर है। यद्यपि उत्थान पतन तो संसार का एक निश्चित क्रम है फिर भी हमें जागरूक प्रहरी के समान अपने कर्तव्य को निभाना होगा। 'कर्तव्य' निर्वाह की पहली वर्णमाला नैतिक एवं वैदिक शिक्षा ही है। देश को इस बार विशेष ध्यान देना है। नैतिकता' की नींव पर ही 'राष्ट्र' का महल खड़ा किया जा सकता है। इसके विपरीत सोचना मानव बुद्धि का दिवालियापन

है और कुछ नहीं। अत साहस के साथ भारत की उन्नति में अब योग देना है।

'साहसे श्री वसति' की व्याख्या हमारे धर्मशास्त्रो ने की है। आप्त मुनियो और महपुरुषो ने भी इसकी इसकी महत्ता स्वीकार की है। इतिहास भी इस बात का साक्षी है। भारतीयों ने धर्म साम्राज्य ही नही वरन् प्रत्यक्ष साम्राज्य भी स्थापित किये हैं। भारत में होने वाले 'अश्वमेध यज्ञ' इस बात के जीते जागते प्रमाण हैं। एक युग था जब हमारे पूर्वजों के पराक्रम पर लोग चकित थे। वे उनसे शास्त्र व शस्त्र ज्ञान प्राप्ति की लालसा रखते थे। हमारे धम, सभ्यता, सस्कृति, कला सभी की सराहना वे मुक्त कठ से करते थे। इतना ही नही तो अध्यात्मिक क्षत्र में वे भारत को विश्व गुरु मानते थे। पर आज भारत का वह सम्मान तिरोहित हो चला है। सुखी भारत, दुख और प्रताडना की काली घटाओ में निरन्तर छिपता चला जा रहा है। उसके शास्त्र की महिमा कम हो गई है। कुछ भी हो उसकी दिशा बदल गई है। मान, सम्मान एव गौरव, सब कुछ बदल गया है। सोचने समझने की धारा बदल गई है। उदात्त राष्ट्रीयता, राष्ट्रद्रोह में परिणत हो चली है या यूँ कहिये कि भारत का मस्तिष्क ही फिर गया है। आज भारत अपनी नैतिकता खोकर केवल भिखारी की स्थिति में ठडी सास ले रहा है। उसकी इस परिस्थिति से पड़ोसी देश चीन, पाकिस्तान, इन्डोनेशिया लाभ उठाने मे व्यस्त हैं। साधारण पैंडो का लोभ दिखाकर भारत की राष्ट्रीयता खरीद रहे हैं। ऐसा सब क्यों है? सोचना पड़ता। आखिर जिन महापुरुषो न भारत के पूर्व गौरव की स्थापना की थी उनमे कौन सी शक्ति एव प्रेरणा कार्य कर रही थी? सच पूछिये तो उनमें उत्कट राष्ट्र भक्ति की उमगे थी! राष्ट्र के प्रति मर मिटने की आकाक्षा थी। 'राष्ट्र को यदि सक्षेप मे कहना हो तो एक मातृभूमि, उसका समाज, उसके जीवन का तत्वज्ञान, उसकी जीवन की विशेष प्रणाली, दुख सुख की समान अनुभूति शत्रु मित्र का समन्वय, भावष्य के प्रति आकाक्षा और प्ररणा आदि ही है। इस प्रकार के राष्ट्र भक्ति का स्रोत सदैव व्यक्ति का नैतिकता' ही रही है। राम की नैतिकता को आधार मानकर ही रामराज्य' अच्छा कहा गया है। चाणक्य की नैतिकता ने ही मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के चार चाँद लगाये हैं। अशोक, समुद्रगुप्त की अपनी नैतिकता ने ही उन्हे इतिहास प्रसिद्ध बनाया है। महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह की नैतिकता ने ही उन्हे बल प्रदान किया भगतसिंह चन्द्रशेखर तथा अन्य क्रान्तिकारियों की अपनी नैतिकता ने ही उन्हें आदर का स्थान प्राप्त कराया। ल० लाजपतराय और महात्मा हसराज की नैतिकता ने ही उन्हे नैतिक और वैदिक शिक्षा की ओर प्रेरित किया। क्या आज उस प्रकार की निष्कलक नैतिकता' कही दिखाई पड़ती है? कहना पड़गा कहीं, कहीं। आज के लोग तो समाज को भूंखे मार कर पैसा जमा करने की प्रणाली पर विश्वास करते हैं। आज देशभक्ति का ऊपरी दम भरते हुये राष्ट्र द्रोह के काय करना बुद्धिमत्ता कहलाती है। काले धन की चाशनी चाटने वाले आज बड व दूरदर्शी कहे जाते हैं। पर याद रखें नैतिकता बिना देश काजल की कोठरी के सिवा कुछ नही। इस हेतु नैतिक और वैदिक शिक्षा ही राष्ट्र-रक्षा का एकमात्र हल है। बिना इसके भारत बिना मदन का शरीर मात्र होगा।

ध्यानपूर्वक विचार के पश्चात मनुष्य के केवल तीन मुख्य कर्तव्य है। स्वार्थ, परार्थ, परमार्थ। 'व्यक्ति' अपने इन्हीं तीनो कर्तव्यों का पालन कर मोक्ष अर्थात् सच्चे सुख का अधिकारी हो सकता है पर वह आज इसे भूल बैठा है। उसने केवल स्वार्थ तक ही अपनी सीमा बना ली है। परार्थ और परमार्थ उसके लिये गौण मात्र है। अत देश के विचारको को इस ओर विशेष ध्यान देना है। उन्हें देशवासियो को बताना है कि सत्याचरण, धर्म पालन, ब्रह्मचर्य ही व्यक्ति का सच्चा स्वार्थ है अन्य कुछ नहीं। ससार के शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति मे प्रीति करना, सामाजिक हितकारी नियमो का पालन करना दूसरो के प्रति प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना, परदुख को स्वदुख मानना ही 'परार्थ है। ईश्वर और उसकी दी हुई विद्या वेद के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखकर उपासना करना ही परमार्थ है, जो सच्चे सुख का द्योतक है! यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो अपने तीनों कर्तव्यो का पालन वही करा सकता है जिसका जीवन नैतिक और वैदिक शिक्षा से आच्छादित हो। इस प्रकार बिना नैतिकता के व्यक्ति न अपने प्रति आस्था रख सकता है न समाज को कुछ दे सकता है और न ईश्वर भक्ति का मधुर प्याला ही पी सकता है। अत धार्मिक राजनैतिक सामाजिक आर्थिक सास्कृतिक वास्तविक सभी दृष्टि से नैतिक और वैदिक शिक्षा आज के युग की एक महत्वपूर्ण समस्या और मांग है। यदि देश इस समस्या का समाधान कर ले तो वह पुन विश्व का सिरमौर बन सकता है इसमें तनिक भी सन्देह नही।

इस प्रकार जब तक देश में नैतिक तथा वैदिक शिक्षा देकर आदर्श भारतीय सस्कृति की स्थापना नहीं होती भारत की आत्मा सोती रहेगी। इसलिये भारतीय आत्मा के जागरण हेतु देश में नैतिक और वैदिक शिक्षा की अनिवार्य आवश्यकता, देश के कर्णधार अनुभव करें और फिर इसकी समुचित व्यवस्था कर 'भारत' को नैतिक पतन से बचायें अन्यथा अनैतिकता का अजगर भारत को शीघ्र निगल जाने में समर्थ होगा। समय से पहले उठना राष्ट्र को सदाचारी बनाना है। सदाचारी राष्ट्र को साधारण शत्रु क्या विश्व की सम्पूर्ण शक्ति भी तनिक नुकसान नही पहुंचा सकती। देश के आर्यो! दयानन्द के अनुयायियो! आगे आओ और देश की इस जटिल समस्या का निदान अपने हाथ में लो! स्वामी दयानन्द की आत्मा तुम्हे पुकार रही है। वैदिक धर्म की नैतिकता तुम्हारा आह्वान कर रही है।

स्वास्थ्य-सुधा

धूम्रपान से हृदय को हानि

(जर्मन विशेषज्ञ की सम्मति)

धूम्रपान न करने वालों की अपेक्षा धूम्रपान करने वालों की हृदय की धमनियो में ह्रास के चिन्ह शीघ्र ही प्रकट होने लगते हैं, अत उन्हे हृदय के अनेक प्रकार के रोगो के होने का अधिक अन्देशा रहता है। बोन विश्वविद्यालय (जर्मनी) के प्रोफेसर एच० क्लेविश के धूम्रपान करने वालो पर निकोटिन (एक विषैला तत्व) का क्या प्रभाव पड़ता है, सफल परीक्षण का एक दिलचस्प परिणाम यह निकला कि जहां तक हृदय पर पडने वाले प्रभाव का सम्बन्ध है फिल्टर की हुई अथवा फिल्टर न की हुई दोनो प्रकार की सिगरेटें पीने में कोई विशेष अन्तर नही पडता। उत्तम फिल्टर में से भी निकोटिन पर्याप्त मात्रा में गुजर जाता है।

हृदय की धड़कनो की गति और आक्सीजन की प्राप्ति दो बुनियादी बातें हैं। नाडी की गति और रक्तचाप से यह पता चलता है कि हृदय को कितना कार्य करना है। धूम्रपान करने से हृदय की गति ७० से ९० प्रति मिनट बढ जाती है तथा रक्तचाप भी बढता है, लेकिन ३० मिनट बाद दोनों अपनी पूर्वावस्था में आ जाते हैं। धूम्रपान करने वाले को ३५ प्रतिशत अधिक आक्सीजन की आवश्यकता होती है।

प्रो० क्लेविश का कथन है कि आधी सिगरेट पीने से हृदय पर उतना ही प्रभाव पडता है जितना २० मिनट तक ९० वाट का शारीरिक कार्य करने पर जो व्यक्ति दिन मे २० सिगरेटें पीता है, उसके हृदय पर ८ घण्टे तक शारीरिक कार्य करने की थकावट जितना प्रभाव पड़ता है।

धूम्रपान करने का महिलाओ व पुरुषो पर समान प्रभाव पड़ता है। इस से रक्त का दौरा कम हो जाने से उगलिया ठण्डी रहने लगती हैं। निकोटिन का हृदय पर सीधा प्रभाव नही पडता, बल्कि उसके कारण जब हृदय को कम आक्सीजन मिलने लगती है तो रगें तग और दुर्बल हो जाती हैं। अत, हृदय के रोगियो को सिगरेटें नही चाहिये।

★

राष्ट्रोन्नति और वैदिक आदर्श वर्ण-व्यवस्था-२

(ले०-श्री आचार्या विद्यावती जी महिला आश्रम, देहरादून)

जिस प्रकार व्यक्तिगत उन्नति के लिए चार आश्रमों के कर्तव्य हैं उसी प्रकार चारो वर्णों के भी कर्तव्य हैं, जिन पर यदि दृढ़तापूर्वक श्रद्धा और विश्वास से चला जाय तो बहुत सी हमारी आजकल की समस्यायें बिना अधिक धन के ही हल हो जाती हैं। विचारिये कि आश्रम व्यवस्था के पालन से केवल एक चौथाई ही देश की आबादी के लिए भोग विलास और ऐश्वर्य के साधन चाहिए, शेष तीन चौथाई मानव जाति के लिए तपस्या, त्याग का जीवन, सिर्फ शरीर रक्षा के लिए और तन ढकने के लिए खाने पीने, पहिनने का सामान चाहिये। अत जो कहा जाता है कि आबादी बढ़ रही है खाद्य पदार्थ कहा से पूरे किये जायेंगे। परिवार नियोजन कृत्रिम साधनो द्वारा करो सो इस भयकर उपाय की भी आवश्यकता न होगी, न 'पुनरहु ऊप' बनाने पडेंगे, न ओल्ड एज पेन्शन' ही होगी न अनाथालय होंगे। क्योंकि आश्रम व्यवस्था के पालन करने से आबादी बढने का भय ही नही रहता, वृद्धो की सेवा तो हर एक गृहस्थ स्वय करेगा ही। बलिवैश्व यज्ञ द्वारा रोगियो और अपाहिजों को भोजन मिलेगा। ब्रह्मचारियो को और सन्यासियो को तो सबसे प्रथम शुद्ध और पौष्टिक भोजन गृहणी देंगी ही तब आजकल के बोर्डिंग हाउस मे कैन्टीन द्वारा भोजन प्रबन्ध जो प्राय किया जा रहा है वह भी रखना पडेगा। रहे वानप्रस्थी सो तो जगल मे फल मूल-कन्द, दूध, मक्खन आदि जो भी उनके शिष्य गण लाया करेंगे उन्ही से निर्वाह करने के आदेश पालन करते हुये रहेंगे। इस व्यवस्था में तब विदेशो से अनाज और खाद्य उत्पादन के लिए ऋण भी लेने की आवश्यकता न होगी। प्रजा पर अनेक प्रकार के अनैतिक कर भी नहीं लगेंगे, हड़तालें नही होगी। इस तरह राष्ट्र की और ससार मात्र की बहुत सी आजकल की समस्याओ का स्वयमेव हल हो जायगा। यदि वेदोक्त प्रकार के सन्यासी होंगे तो आजकल के दूतावास के ऊपर करोडो अरबो धन के व्यय की भी आवश्यकता न होगी। प्रत्येक राष्ट्र मे पक्षपात रहित विद्वान् सन्यासी घूमा रहेंगे तो राष्ट्रों में अशांति और विवाद सकट भी बहुत कम होगे। क्योंकि उनके उपदेशो से पहिले तो जन-साधारण ही प्रेम से रहेंगे और कोई झगड़े हुए भी सन्यासी लोग उपदेशो द्वारा राष्ट्रो के सन्यासियो के अधिवेशन बुलाकर फैसले करायेंगे जिन्हें सबको मान्यता देनी होगी। प्रति १०० वर्ष के समय में केवल एक चौथाई आबादी के लिए ही भोग विलास सामग्री तथा उत्तमोत्तम खाद्य पदार्थ, व्यजन इत्यादि चाहिये होंगे सो पर्याप्त रूप में उपलब्ध होते रहेंगे। बाल्य विवाह न होने और ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करने के कारण न वह सन्तान का प्रश्न उठता, न तपेदिक ब्लडप्रेशर, डायबेटीज आदि भयकर रोगो के इलाज की इतनी आवश्यकता होगी जितनी आज है। प्राणायाम के अभ्यास होने से हार्ट फल्योर भी इस मात्रा मे न होगा। भगवान की आराधना करने और उस पर विश्वास और श्रद्धा होने से आत्म हत्यायें, चोरी, डाके तथा अन्य अनेक प्रकार के अत्याचार भी इतनी मात्रा में नहीं होंगे तब पुलिस विभाग पर भी इतना खर्च न होगा। यह तो हुई आश्रम व्यवस्था की बात जिसके पालन से महगाई का कष्ट भी दूर हो जायगा।

अब लीजिए वर्ण व्यवस्था—आजकल कहा जाता है कि वर्ण-व्यवस्था ही हमारी अधोगति का कारण है और इसे 'कास्ट सिस्टम' कह कर दुदुंराया जा रहा है। पर वैदिक वर्ण-व्यवस्था आज कल की 'कास्ट सिस्टम' नही है। वह तो मानव की योग्यता, कार्य क्षमता, रुचि और विद्वत्ता के अनुसार जीवन बिताने के मार्ग हैं। जब विद्यार्थी गुरुकुलो या शिक्षा केन्द्रों मे प्रविष्ट होते थे तब तो उनका वर्ण पैत्रिक वर्ण के अनुसार अंकित होता था पर विद्या समाप्ति पर तो उनकी रुचि, योग्यता आदि के कारण ही वर्ण अंकित होता था। जैसे आजकल भी १०वीं श्रेणी तक पास हो जाने के बाद आगे जिस क्षेत्र मे जाता है उसी के अनुसार पाठ विधि द्वारा शिक्षा ग्रहण कर के इन्जीनियर, ओवरसियर आदि बनते हैं। कोई डाक्टर कम्पाउन्डर वकील, बैरिस्टर, कलेक्टर, जज इत्यादि कोई सेना मे कोई, पुलिस विभाग में जाते हैं ऐसा ही वर्ण व्यवस्था के अनुसार विभाग किया जाता था। ब्राह्मण के लिए अध्यापन, अध्ययन, पढना, पढाना उपदेश, प्रवचन, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना भी (पर दान लेना नीचे दर्जे का काम समझा जाता था) यह उसके कर्तव्य थे। उसकी योग्यता के परिचायक गुण थे—शम, दम, तप, शौच, क्षान्ति, निरभिमानता, ज्ञान, विज्ञान आस्तिक, जिसमें यह ९ गुण हो वह ही ब्राह्मण है। उसे ही विद्या दान का अधिकार है। ज विकोपार्जनार्थ बडी बडी तनख्वाहे लेकर अध्यापन कार्य करना ब्राह्मत्व नही है। वह तो एक तरह से विद्या को बिक्री का साधन बनाना उसे गाजर मूली की समता पर ले आना है नीचे गिराना है। त्यागी तपस्वी ब्राह्मण का भरण-पोषण श्रद्धा से करना प्रत्येक गृहस्थ का मुख्य कर्तव्य था, उसकी सारी आवश्यकतायें गृहस्थ लोग प्रेम से पूरी करते थे, उन्हे बुलाया करते थे उपदेश सुनते थे।

क्षत्रिय के कर्तव्य हैं प्रजा की रक्षा करना (इसमें सब प्रकार के प्रशासन विभाग आ जाते हैं) दान देना, यज्ञ करना, अध्ययन करना आदि। क्षत्रियो की जीविका के साधन शस्त्र विद्या का पढाना, सिखाना, न्यायालय, सेना मे भर्ती आदि जीविका के साधन गिनाये गये हैं। वैश्यो के लिए दान यज्ञ करना, अध्ययन करना, पशुओ का पालन, व्यापार, भिन्न-भिन्न देशो की भाषा, हिसाब गुणन विद्या, भूमि, बीज आदि के गुण जानना, अन्न आदि की रक्षा सब पदार्थों के भाव, अभाव को समझना, ब्याज लेना देना खेती की विद्या जानना, खाद और भूमि की परीक्षा करना, भूमि जोतना बोना आदि यह गुण जिसमे हो वह वैश्य है। जो इन उपरोक्त किसी भी कार्य के लिए उपयुक्त न हो, जिसे पढने से भी विद्या न आती हो, शरीर से हृष्टपुष्ट, सेवा कार्य मे कुशल हो उस शूद्र के लिए तीनो वर्णों की सेवा करना यही एक कर्म है, उनका भरण पोषण सेवा लेने वाले ही करते थे। परन्तु उनका भी आदर होता था समाज मे उनकी भी स्थिति थी। आजकल भी सभी अगो मे चौकीदार, चपरासी, सफाई करने वाले, मजदूर, मेहतर, माली इत्यादि हैं ही। वर्ण-व्यवस्था मे भी इसी प्रकार के कार्य हैं। केवल उस व्यवस्था मे हडताल की लिए कोई स्थान न था। न कोई कारण ही था। हर एक को दूसरो के अधिकारो की रक्षा और अपने कर्तव्यो के पालन की चिन्ता स्वय रहती थी। य वर्ण और आश्रम के कर्तव्य आर्य समाजियों के लिये कोई नये नहीं हैं। इन्हे प्रत्येक पठित व्यक्ति प्राय जानते हैं परन्तु यह जीवन मे उतारे नही जा रहे हैं अत इनका लाभ हमें नही मिल रहा है। दवा तो लिखी गई है पर उसका सेवन न हो तो उसका लाभ ही क्या ? मनु का वाक्य है कि वृषलत्वमता लोके ब्राह्मणान म दर्शनात्।' ससार में ब्राह्मण न रहने से अधर्म फैल गया है अत: हमारा मुख्य कार्य यह है कि हम समाज मे ब्राह्मणत्व का जीवन लावें। तब हमें क्या करना है ? आयसमाजो मे उपदेशक पुरोहित होते हैं पर वे भी साधारणतया जीवनोपार्जन के लिये इस क्षेत्र में आ जाते हैं तब हम देखते हैं कि उपदेशों पर मूल्य लगाया जाता है। एक एक उपदेश के लिये २५) ५०) या उससे भी अधिक रुपये देने पर अच्छे उपदेशक समय देते हैं यज्ञ कराने की भी फीस है यहाँ तक कि मृतक सस्कार पर भी फीस देने पर ही कोई-कोई पुरोहित तैयार होता है सस्कार कराने को। शास्त्रार्थ, शुद्धि आदि कार्य के लिये वैतनिक उपदेशक भेजे जाते हैं। आर्यसमाज के प्रधान व मत्री जीवनोपार्जन कहीं अन्यत्र करते हैं आर्यसमाज के साप्ताहिक आदि मे भाग अवश्य लेते हैं पर अपने घरो में तो किसी किसी के ही पच यज्ञ होते हैं। बच्चो की शिक्षा पर भी वैदिक सिद्धान्तों का ध्यान नहीं रखा जाता है।

हमारी बहिनें भी स्त्री आर्यसमाज तो लगाती हैं पर धर्म प्रचार के रूप मे ईसाई महिलाओ की तरह कार्य क्षमता नही है जन जो कुछ थोडा बहुत उनसे होता है करती रहती हैं। शुद्ध अशुद्ध मन्त्रोच्चारण कर यज्ञ कर लिया, भजन हो गये, उपदेश भी किसी का करा लिया चन्दा इकट्ठा किया जल्सा किया बास खतम। आयसमाज के प्रारम्भ से ही आज तक प्राय यही प्रथा चल रही है। त्याग तपस्या सयम इन्द्रिय दमन, अभिमान, परमात्मा पर अटल विश्वास नही है। स्वय हम इनको जीवन मे घटाते नहीं हैं उनके अनुकूल जनता को ओर नही है उपदेशों म तो बहुत कुछ कहते रहते हैं। तब क्या इस तरह हम देश को वैदिक धर्म की ओर लाकर सुख, शान्ति और समृद्धि ला सकते हैं ? कदापि नही। इस दीन-हीन दशा मे आयसमाजी भाई बहिनों को आगे बढना होगा। ब्राह्मण और सन्यासी बनना होगा और पहले अध्यापन अध्ययन का ... बच्चो का वर्ण ... के लिये शिक्षा ... मे परिवर्तन कराना ... यह काम केवल ... नहीं ... इसके

लिये जिन्होंने युवावस्था मे धन कमा लिया है, शरीर स्वस्थ है और वैदिक सिद्धान्तों में श्रद्धा है, विद्वान हैं विदुषी हैं और त्यागी हैं उन्हें आगे आना होगा, कष्ट उठाने होंगे, तभी धर्म का प्रचार होगा। गुरु दयानन्द, श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव महात्मा हंसराज महात्मा गांधी जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री के ज्वलन्त उदाहरण हमारे सामने हैं। ऐषणाओं के त्याग कर ही यह लोग कृत कार्य हुये। दयानन्द के वचनों को जीवन मे ढालो। मेरा विनम्र सुझाव यह है कि प्रत्येक शहर मे वानप्रस्थी ही आर्य समाज के पुरोहित बनें, उनका लक्ष्य और कुछ न हो केवल धर्म प्रचार। दिन रात धर्म चर्चा मे समय दे सकें, धर्म से ओत प्रोत उनका जीवन हो तब कहीं हमारा कल्याण हो सकेगा वरना हम जैसे काठ का हाथी, चमड़े का मृग, वैसे हम आर्यसमाजी रहेंगे। महिलायें भी पुरोहित, उपदेशिका बनें, अपनी त्याग वृत्ति से, धर्म प्रियता से सबका उपकार कर, कष्ट उठायें तब कहीं लम्बे समय के बाद उसका लाभ दीखेगा। यदि रुचि हो तो ऐसी योजनायें कहीं-कहीं स्थापित की जा सकती हैं जहां देवियां ऐसी ट्रेनिंग ले सकें। इसके भी शिविर और सेमीनार बनाये जा सकते हैं।

हम दूसरों को विधर्मियों से छुड़ाने के लिए और अपने धर्म मे लाने के लिए तो प्रयत्न करते हैं पर स्वयं अपने धर्म पर दृढ़ नहीं रहना चाहते बच्चों को अपने धर्म में नहीं रख सकते क्या कारण है कि हमारे बच्चों मे, हमारी भावी पीढ़ी मे वह वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा और प्रेम नहीं आ रहा है जो कि आर्य बच्चों में होना चाहिये। इसके लिए हमें अपने निजी जीवन पर, दैनिक कार्यों पर दृष्टि डालनी चाहिये, अपनी आर्य शिक्षा संस्थाओं का और अपने बच्चों के वातावरण को बदलना चाहिये, और वैदिक सिद्धान्तों का समावेश दैनिक जीवन में लाना चाहिये।

यह कार्य किस प्रकार हो सकता है इस पर आर्य विद्वान् और विदुषी बहनें विचार विमर्श करें। शिक्षा संस्थाओं के संचालकों से विचार-विनिमय करें, राष्ट्र के संचालकों, व्यापार मे संलग्न व्यक्तियों और भोगों की धारा मे बहते भोले-भाले व्यक्तियों को बड़े प्रेम और आदरपूर्वक अपने वैदिक सिद्धान्तों की तरफ आकर्षित करें और जिस लगन और योजनाओं द्वारा उन्हें अपने और अपने सहयोगियों के जीवन में घटाकर महात्मा गांधी ने भारत को स्वराज्य प्राप्त कराया, उसी प्रकार वैदिक धर्म और आश्रम व्यवस्था को पुनरुज्जीवित करने के लिए कटिबद्ध हो जावें तो यह कार्य शीघ्र ही एक दो पीढ़ी मे सम्पन्न हो सकता है। यहां तो सिद्धान्तों को क्रिया मे लाने का प्रश्न है हर एक व्यक्ति को अपने निजी जीवन में परिवर्तन करना है कुछ विदेशी शासन हटाने जैसा कठिन कार्य नहीं है।

आशा है आर्य भाई और बहनें धर्म प्रचार के इस स्वरूप के सुझाव पर विचार करेंगे और शीघ्र ही इसके लिए योजनायें बनायेंगे तथा आन्दोलन प्रारम्भ कर देंगे। पत्तों को सींचने से वृक्ष हरा नहीं होता जड़ को सींचना होता है। तब उसमें फूल आते हैं पत्ते भी हरे होते हैं फल भी लगते हैं। शिक्षा संस्थाओं से जो बच्चे बच्चियां पढ़कर राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने जाते हैं उनके माता पिता आचार्य के संस्कार यदि वैदिक [illegible] उनके भी संस्कार शुद्ध पवित्र होंगे, उनमें भगवान के प्रति श्रद्धा, विश्वास और मानव के लिये प्रेम होगा तब वह भ्रष्टाचार अत्याचार अन्याय स्वच्छन्द चारित्र्य आदि दोषों से दूर रहेंगे, राष्ट्र की उन्नति किस प्रकार हो इसका भी ध्यान कर सकेंगे जनता के दुखों का निवारण भी कर सकेंगे। तभी हमारा यह देश ऐश्वर्यशाली समृद्धिशाली बनेगा अन्यथा नहीं।

★

सुझाव और सम्मतियाँ

पद यात्रा

पद यात्रा प्रचार की महत्वपूर्ण व्यवस्था है। महात्मा गांधी जी ने भी इसका आश्रय लिया और इस युग मे सन्त विनोबाभावे ने तो सारा प्रचार कार्य ही पद यात्रा द्वारा किया। कई वर्षों की बात है मैं अपने स्थान पर बैठा था। अकस्मात् बैंड की ध्वनि कान में आई। धीरे धीरे वह मेरे स्थान की ओर बढ़ती ज्ञात हुई। फिर 'हे राम 'हे राम' रा म' की ध्वनि कानों में पड़ी। ऐसा लगा कि कोई बड़ा समूह है अन्तत वह मेरे सामने से राज पथ पर होकर निकला। उसमे कई गैस की लालटेनें थी, स्त्री पुरुष थे बच्चे नहीं थे। बैंड था, साइकिल ठेलों मे एक मे मूर्ति विराजमान थी अन्यों पर लिहाफ गद्दे किसी पर फल सब्जी किसी पर असबाब थे।

यह समूह पैदल था। मेरे मुहल्ले के एक मन्दिर में रात मे विश्रामार्थ ठहरा। मन्दिर वालों का उनके आगमन की पूर्व सूचना थी। उन्होंने भोजन आदि की व्यवस्था की थी। प्रातःकाल वह समूह कीर्तन करता हुआ नगर के बाहर एक अन्य मन्दिर मे जा ठहरा वहां भी भजन कीर्तन भोजन और विश्राम हुआ। अस्तु प्रात और सायं पद यात्रा, यात्रा मे भजन कीर्तन, फिर किसी स्थान पर भोजन और विश्राम।

उस दल (जिसमे १०० स्त्री पुरुष थे) के नेताओं से बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि वह मुंगेर से आ रहा था और बद्रीनारायण जा रहा था। इसमे डाक्टर वैद्य प्रोफेसर वकील सभी थे। यात्रा की यात्रा, भजन कीर्तन का आनन्द और अन्य ग्राम वासियों से सम्पर्क कितना अच्छा क्रम था।

क्या मैं आर्य जनता के समक्ष यह प्रस्ताव करने का साहस करूं कि एक ऐसे दल को संगठित किया जाये वह काशी से चले और देहरादून तक जाये। मार्ग मे प्रयाग, जौनपुर, फैजाबाद, बाराबंकी, लखनऊ, हरदोई, शाहजहांपुर बरेली, मुरादाबाद, बिजनौर, हरिद्वार और देहरादून जिले पड़ेंगे। मार्ग पर पड़ने वाले नगरों, कसबों और ग्रामों में पूर्व सूचना दे दी जाये यह दल भजन कीर्तन उपदेश, यज्ञ प्रचार करता हुआ जाये। देखिये इस प्रचार का कैसा अच्छा प्रभाव पड़ता है छोटे-छोटे ट्रैक्टों के बांटने की भी व्यवस्था हो औषधियां भी बांटी जायें। दूसरी बार दूसरा कार्य चुना जाये।

इस पद यात्री दल में सन्यासी, वानप्रस्थी, अवसर प्राप्त वैद्य, डाक्टर, प्रोफेसर वकील आदि हों। सभा के उपदेशक, प्रचारक भी हों। मेरा अनुमान है कि इससे ग्राम्य जनता में पर्याप्त जागृति होगी।

मार्ग मे पड़ने वाली आर्यसमाजों में भी जीवन आ जायेगा। भोजन की कोई कमी नहीं रहेगी। सर्वत्र स्वागत सत्कार होगा। आर्यसमाज भी सहयोग देगी अन्य धर्म प्रेमी भी साथ देंगे।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस प्रकार से प्रचार की बहुत अच्छी व्यवस्था होगी। इस दल का एक अधिष्ठाता हो एक भण्डारी, एक कोषाध्यक्ष, तथा अन्य कार्यकर्ता हों। जो धन प्राप्त हो वह व्यय रहने पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश को दे दिया जाये।

यदि मेरे सुझाव [illegible] रिक और उत्साह वर्द्धक हो तो कोई भी आर्य सज्जन इसका संगठन व संयोजन कर प्रचार की व्यवस्था बनायें।

—चन्द्रनारायण एडवोकेट
प्रधान आ०स० बिहारीपुर, बरेली

★

हिन्दी की उपेक्षा क्यों ?

[ले०—राधेमोहन गुप्त, नगर मन्त्री आर्यवीर दल, जौनपुर [

कोठारी आयोग ने अपना प्रतिवेदन देश के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया। देश की शिक्षा तथा भाषा नीति क्या हो, आयोग ने विस्तृत रूप से विचार कर अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया है, जिस पर देश के शिक्षा विद् तथा साहित्य चिन्तन के महान् विचारकों की आलोचना समाचार पत्रों में आनी प्रारम्भ हो गई है। साप्ताहिक हिन्दुस्तान ने देश के बड़े बड़े नेताओं तथा हिन्दी प्रेमी मनीषियों के विचारों को देना प्रारम्भ कर दिया है, और इस प्रकार अब तक देश के सुप्रसिद्ध विचारक आचार्य काका साहेब कालेलकर संसद सदस्य श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री जनसंघ के नेता श्री अटल बिहारी बाजपेयी तथा हिन्दी के प्रसिद्ध कवि डा० रामधारी सिंह दिनकर जैसे चिन्तनशील नेताओं के विचार प्रकाश में आ चुके हैं। और प्रत्येक विचारकों ने कोठारी आयोग के प्रतिवेदन को हिन्दी के भविष्य को घोर अन्धकार में ढकेल कर अंग्रेजी के भविष्य को पुनः संवारने की भरसक चेष्टा की है। आयोग के प्रतिवेदन ने एक बार फिर हिन्दी जनमानस को झकझोर दिया है। और आज हिन्दी जगत् में हिन्दी के प्रति इस उपेक्षा के कारण एक तूफान-सा आता हुआ दिखाई देता है। श्री दिनकर जी के शब्दों में "भारतीय भाषाओं की समस्या को आयोग ने अपनी चिन्ता का विषय नहीं बनाया। वह शायद शक्ति तथा समय की बर्बादी होती। इस देश में जो भी व्यक्ति ऊँचे तबको का सम्मान पाना चाहता है वही अंग्रेजी के ढहती हुई छत में खम्भा लगाने दौड़ता है और आज कोठारी आयोग ने अपने प्रतिवेदन द्वारा अंग्रेजी की गिरती हुई छत को सहारा देने का प्रयास किया है। हिन्दी के महान् नेताओं के तप त्याग का आज घोर अपमान तथा हिन्दी की घोर उपेक्षा होने जा रही है।

आज आवश्यकता है हिन्दी जगत् को श्री पुरुषोत्तमदास टन्डन जैसे महारथी की। एक ऐसे महान् सेनापति की जो हिन्दी की व्यूह रचना इस प्रकार कर सके कि अंग्रेजी परस्तों की कुटिल नीति उसके व्यूह का भेदन न कर सके और यदि इस पर कोई आक्रमण करे तो स्वयम् टकरा कर अपने आप नष्ट हो जाय। यद्यपि हिन्दी जगत् आज भी स्वनाम धन्य महान् विचारक चिन्तनशील नेताओं से शून्य नहीं है किन्तु फिर भी हिन्दी जगत् में आज पता नहीं क्यों ऐसा लगता है जैसे उसके अन्दर पौरुष ही नहीं है। पौरुष हीन होने का क्या कारण हो सकता है इस पर भी हमें विचार करना चाहिये। देश का हर विचारक देश के अन्दर उठते हुये हर समस्याओं को समस्या गत भावना से नहीं सोचता और उसका निदान भी समस्या गत भावना से नहीं करना चाहता वह हर समस्या पर राजनैतिक आवरण चढ़ा देता है और उसे राजनैतिक ढंग से हल करने का प्रयास करता है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है देश के अन्दर पंजाबी सूबे का निर्माण।

राजनीति बड़ी छलिया है और कुटिल राजनीति ने तो कितने समर्थकों को विरोधी बना दिया है जिसका मुख्य कारण है राज सत्ता का व्यामोह। देश में कांग्रेस की हुकूमत चल रही है उसको चिन्ता है अपने दल के शासन को देश में कायम रखने की। कांग्रेस के सत्ताधारी प्रशासक समय समय पर अपनी कुर्सी को कायम रखने के लिये जनता में भ्रम डालते हैं और कभी समर्थन तथा कभी विरोध में वक्तव्य दिया करते हैं इसका उदाहरण है। राष्ट्रभाषा हिन्दी।

भारतीय संविधान के अनुसार हिन्दी को २६ जनवरी सन् ६५ से राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो जाना चाहिये था किन्तु ऐसा न होकर कुछ इने गिने लोगों के दुराग्रह पर सरकार ने सन् ६५ के पश्चात् भी अंग्रेजी को सह भाषा घोषित कर के हिन्दी के भविष्य को अनिश्चित काल तक फिर अन्धेरे में ढकेल दिया, है तथा सरकार ने अंग्रेजी के ढहती हुई दिवार को सम्भाल लिया है।

विद्यालयों महाविद्यालयों तथा विश्व विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम क्या और कौन सी भाषा हो? त्रिभाषा योजना कार्यान्वित होगी या नहीं। कोठारी आयोग शिक्षा मन्त्री महोदय देश के शिक्षा के विषय में क्या विचार रखते हैं। इस पर देश के शिक्षा शास्त्री विचार करेंगे और देशहित को ध्यान में रखते हुये देश के पथ प्रदर्शक बनेंगे। हमें तो यह सोचना है कि हम हिन्दी के भविष्य को किस प्रकार सुरक्षित रख सकेंगे।

देश के अन्दर मैकाले के मानस पुत्रों द्वारा हिन्दी रूपी द्रौपदी का हिन्दी पुत्रों के ही सम्मुख निलज्जता पूर्वक चीर खींचा जा रहा है, अंग्रेजी परस्तों के द्वारा आज हिन्दी को असहाय समझकर क्रूरता पूर्वक उसके उत्कर्ष पर वज्राघात किया जा रहा है, तथा हिन्दी के महारथी चुपचाप दुःशासन का प्रलाप सुनते तथा देखते चले जा रहे हैं। आज उसका भीम प्रतिज्ञा करने से भाग रहा है और उसका अर्जुन अपने गाण्डीव से सन्धान करने से घबरा रहा है। सभी योधा धर्मराज अजात शत्रु बनना चाहते हैं और किन्हीं प्रलोभनोंवश अपने जिह्वा को भी खोलना नहीं चाहते हैं। यह लज्जास्पद स्थिति भला कब तक चलेगी कुछ समझ में नहीं आता किन्तु निश्चित है समय आयेगा और आ भी चुका है बिहार प्रदेश के विधान सभा के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनरायण सुधांशु जी कांग्रेस के वरिष्ट नेता सेठ गोविन्द दास जी तथा श्री मुरारजी देसाई जी ने अब हिन्दी के पक्ष में अपने विचारों को स्पष्ट रूप से रखकर शासन के अकर्मण्यता पर घोर आपत्तियाँ की हैं। भारत सरकार ने तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित तो अवश्य किया किन्तु हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित हो इसका कोई प्रयास न तो किया और न करना ही चाहती हैं।

कांग्रेस के अध्यक्ष श्री कामराज जी रूस यात्रा पर गये थे वहां पर रूसी भाषा के विकास तथा रूसियों द्वारा अपनी क्षत्रीय भाषा के साथ साथ अपनी राष्ट्रीय भाषा रूसी से अपार स्नेह देख कर वह मुग्ध हो गये और सुना जाता है कि श्री कामराज जी पर रूसी भाषा की प्रतिभा ने ऐसा प्रभाव डाला है कि रूस के अन्दर उन्हें भाषा के सम्बन्ध में नवबोध हुआ है। उन्होंने अनुभव किया कि क्यों न भारत के अन्दर भी इसी प्रकार क्षत्रीय भाषा के साथ साथ राष्ट्रभाषा को सम्मानित किया जाय।

देश के अन्दर आज यह जोरो से दलील दी जाती है कि देश की एकता बिना अंग्रेजी के कायम नहीं रह सकती तथा विश्व के देशों से सम्बन्ध स्थापित करने तथा उसके विचारों को समझने के लिये अंग्रेजी की जानकारी आवश्यक है। ठीक है किसी भाषा से किसी को किसी प्रकार का द्रोह नहीं हो सकता विश्व के विचारों को समझने के लिये केवल अंग्रेजी से ही आज काम नहीं चल सकता बल्कि विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं के जानकार को देश के अन्दर पैदा करना है विश्व के राष्ट्र अब अंग्रेजी के गुलाम नहीं हैं। स्वभाषा के स्वाभिमान ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद को छिन्न भिन्न कर दिया है और अंग्रेजी प्रमुख रूप से केवल ब्रिटेन तथा अमरीका की भाषा रह गई हैं अब अंग्रेजी उनकी राष्ट्रीय भाषा है या नहीं यह भी एक विवाद का विषय बन गया है। भारत के अन्दर अंग्रेजी भाषा के ही द्वारा एकता कायम रक्खा जा सकता है ऐसी बात भी नहीं है। आज पूरा का पूरा भारत हिन्दी को किसी न किसी रूप में जानता और समझता है उसे अपनी भाषा मानता है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है हिन्दी फिल्मे।

भारत के कोने-कोने में हिन्दी फिल्मे देखी जाती हैं और हिन्दी फिल्मों के गाने देश विदेश में चाव से सुने जाते हैं, लोगों को हिन्दी समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। इस प्रकार देश के अन्दर हिन्दी का क्षेत्र व्यापक है और देश के अधिकांश लोग हिन्दी समझते तथा बोलते हैं तथा हिन्दी से प्यार करते हैं। समय है हिन्दी प्रेमी जनता अपने कर्तव्यों को पहचाने हिन्दी के स्वाभिमान पर बहुत आघात हो चुका है और अधिक आघात को हिन्दी जनता अब नहीं सहन कर सकती उसके मौन को कायरता न समझा जाय और उसके पौरुष को ललकारा न जाय। आज उसे मजबूर न किया जाय राष्ट्र भाषा के सम्मान पर उसे अपना बलिदान चढ़ाना ही हो। यदि ऐसी अप्रिय बातें देश के अन्दर आई तो देश के अन्दर एक ऐसा भूचाल आयेगा जिससे अंग्रेजी की इमारत छिन्न भिन्न हो जायेगी और वे ऊँचे ऊँचे पदाधिकारी अधिक दिनों तक अंग्रेजी के बूते पर देश में अपना साम्राज्य कायम न रख सकेंगे। ★

शोक-प्रस्ताव

गत ७-८-६६ को कलकत्ते का विशाल क्षेत्र धर्मतल्ला मैदान में आर्यसमाज जोड़ासाकू के अध्यक्ष श्री चन्द्रबली जी गुप्त की अध्यक्षता में निम्न शोक प्रस्ताव पारित हुआ।

दि० ७-८-६६ को आर्यसमाज जोड़ासाकू की साधारण सभा डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करती है और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को इस असह्य वज्राघात के सहन करने की शक्ति दे।

— [illegible] आर्य मन्त्री

श्री उपाध्याय जी के कुछ संस्मरण

(पृष्ठ ६ का शेष)

सहपाठी का कोई सामान चुरा लिया, छानबीन करने पर वह रंगे हाथो पकड़ा गया। वह समझता था कि अब मुझे बुरी तरह पीटा जायगा। पंडित जी ने कहा तुम ७ दिन तक प्रार्थना के समय सबके सामने हाथ जोड़कर प्रभु से प्रार्थना करो कि अब भविष्य में ऐसा कार्य न करूंगा। तुम्हारा दण्ड यही है। प्रथम दिन किसी प्रकार आदेश का पालन किया। दूसरे दिन प्रार्थना करते-करते विह्वल हो उठा और भागा भागा आया और अपनी हथेली आपके सामने बढ़ाकर कहा कि आप जितना चाहे मुझे पीट लें मुझ सबके सामने अपमानित न करें। मैं क्षमा चाहता हू कि अब भविष्य में ऐसा कार्य कभी न करूंगा। उसका गला रुंध गया और आंख सजल हो उठी। पंडित जी ने उसकी कातरता देखी और उसे गले लगाकर उसके आंसु पोंछे और कहा जाओ तुम्हे माफ कर दिया गया। इस घटना का उसके ऊपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि भविष्य में उसने कभी चोरी नही की।

आप बच्चो स सत्य बोलने का सदा उपदेश दिया करत थ। आपका कहना था झूठ बोलकर कोई छुट्टी न ले, और न न अपने अपराध को छिपाने के लिए झूठ की शरण ले यदि आपका मन न लगे पढने में बहाने न बनाकर सीधा सीधा सच बा कर दो जो चाहेगा उसे मिल जायेगी। एक दिन एक विद्यार्थी ने कहा कि मेरा मन उचट गया है, अतएव ४ दिन की छुट्टी दे द तो मैं घूमफिर कर आ जाऊंगा। आपने कहा एवमस्तु किन्तु याद रहे कि पढना तुम्हे ही है और परीक्षा भी तुम्हारी ही होनी है। जा सकते हो।

पिता ने उसे खेलते हुये देखा और कारण पूछा। उसने कहा कि ४ दिन बाद जाऊंगा मेरा मन लग नही रहा है। पिता जी उसके कालेज गये और आपसे निवेदन किया कि यह अपनी नानी के यहां जा रहा है और ४ दिन के पश्चात् कालेज आयेगा। उसकी छुट्टी स्वीकार कर लें। पंडित जी मुस्कुराये और दराज से उसका प्रार्थनापत्र पिता के हाथ पर डालते हुए कहा कि श्रीमान् जी मैं आपकी बात को सच समझूं या आपके पुत्र की। पत्र पढते हुए उसके पिता की आंखो में आंसू भर आये और गदगद होकर रुंधे कण्ठ से कहा कि बेटा पुत्र इतना सच बोलना है क्या? इतना मैं भी आशा नही करता था कि इस प्रकार वह सत्यवादी है। पंडित जी ने कहा कि यहा तो सब सच ही बोला करते हैं। यह था आपका सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने में व्यावहारिक प्रयोग।

एक बार कालेज से एक उद्दण्ड विद्यार्थी निकाल दिया गया उसने लड़कों को मिलाकर हड़ताल करा दी और उस की मांग थी कि जब तक हेडमास्टर साहब क्षमा प्रार्थना के साथ मुझ न लबे तब तक हड़ताल चलती रहेगी। जब आप कालेज गये तो देखा हड़ताल का भयावह रूप। फाटक पर लड़को का सख्त पहरा है और न किसी विद्यार्थी और अध्यापक को भीतर जाने देते थे। आपको देखते ही लड़को ने घर लिया नारे लगाने लगे और कहा कि आप अन्दर नही जा सकते हैं। आपने कहा कि कोई बात नही अन्दर नहीं जाऊंगा आप तपती दोपहरी मे धूप में मूर्तिवत खड़े रहे। जब दो बजा तो एक लड़के से नहीं रहा गया और भागकर एक कुर्सी लाकर आपके सामने रखकर कहा कि आप कुर्सी पर बैठ जाइये। आपने कहा कि कोई बात नहीं आप अपना काम करिये। लड़के एक दूसरे का मुह ताकते रह गये। अन्त मे आप घर चले आये। दूसरे दिन हड़ताल का दूसरा ही रूप था, मास्टरो को कोई रोकता न था। केवल विद्यार्थियो को ही रोकते थे। उसका कारण यह था कि आपको प्रथम दिन धूप मे दिन भर खड़ रहने पर विद्यार्थियों में ग्लानि हुई कि हम र पूज्य गुरु हमारे कारण धूप में तपते रहे और हम लोग उनके विरोध में अड़े रहे। ऐसा नही हो सकता। इस प्रकार आपकी सूझ से हड़ताल दिन प्रतिदिन शिथिल होती गई और एक दिन बिना किसी शर्त के वापस ले ली गई और उस उद्दण्ड विद्यार्थी की एक न चली। यह थी आपकी दार्शनिकता।

कोल्हापुर की एक बार की घटना है कि किसी पास के प्राइमरी स्कूल में एक जादूगर का खेल होना था। दसवीं कक्षा के विद्यार्थियो ने वहां जाने की अनुमति चाही। आपने इन्कार कर दिया दूसरे दिन ये देखते है कि सभी कक्षा का कोई विद्यार्थी नहीं आया है आप सन्नाटे मे आ गये और सोचने लगे कि दसवी कक्षा के सब लड़को को सामूहिक दण्ड देना लाभप्रद न होगा और कुछ न बोलना भी इन्हे उद्दण्डता के लिये प्रोत्साहन देना होगा। तीसरे दिन सभी विद्यार्थी दसवीं कक्षा के उपस्थित थे। आपने उनके कक्षाध्यापक को बुलकर आदेश दिया कि उस कक्षा को कोई पढाने नही जायगा। आदेश का यथावत पालन हुआ। पहिला घटा बीता कोई मास्टर नही दूसरा भी बीत गया किन्तु अध्यापक के दर्शन नहीं अब तो लड़के बड़ घबराये कि अब क्या किया जाय, किन्तु यह कहकर ढाढस बाधा कि तीसरा घटा तो हेड मास्टर जी ही लेते हैं, अतएव वे तो अवश्य आवेंगे ही। किन्तु तीसरे घण्टे में भी निराशा हाथ लगी। अब तो लड़के उद्विग्न हो उठे और लगे पश्चाताप करने कि कल हम लोगों ने उनकी आज्ञा का उल्लंघन करके अनुपस्थित रहे हैं इसलिए हेडमास्टर जी नाराज हैं हम लोगों को उनसे क्षमा मागनी चाहिये। एक लड़के को आपके पास भेजा गया उसने विनयपूर्वक कहा कि आज कोई पढ़ाने नही आया और आप भी नहीं आए। आपने झिड़क कर कहा जाओ जाओ तुम लोगो को पढाना पढाना नहीं है। उसने जाकर कक्षा में जब यह सभी बात बताया तब पूरा क्लास उमड़ पड़ा और लगा आपके चरणों मे गिरकर क्षमा मागने। आपने उनके अश्रुपूरित नेत्र शिथिल गात्र और कंपित स्वरो से अनुमान लगा लिया कि मेरा जादू काम कर गया हैं और कल की घटना की सजा इनको पर्याप्त मिल गई हैं आप उन सबको प्रेमपूर्वक उनके कमरे में ले गए और उस घटना पर प्रकाश डाला जिससे उन सबको जाने से रोका था इस घटना से आपने बच्चो के हृदय को जीत लिया। यह है आदर्श गुरु पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय का मनोवैज्ञानिक प्रयोग।

आपका सर्वप्रथम लेख १९०२ मे आर्यमित्र मे प्रकाशित हुआ था, तब से निरन्तर सभी आर्य पत्र, पत्रिकाओ मे आपका लेख प्रकाशित होता रहता है। रिफार्मर का वर्षों से जैसे नियम बन गया है कि आपका एक लेख उसमें रहना परमावश्यक है। अब आप रुग्ण शैय्या पर पड़ रहते है तब भी आपका लेख किसी न किसी प्रकार वहां पहुंच ही जाता है। क्रमबद्ध होकर निरन्तर अध्यवसाय से अनेकानेक ग्रन्थ रत्न आर्य जाति को दिया है। आपने जन साधारण में आर्यसमाज के प्रचार के लिए लगभग २५ वर्ष पूर्व आर्यसमाज चौक मे ट्रैक्ट विभाग की स्थापना की थी, और अन्धविश्वास रूढिवाद और भ्रान्तियों का समूल निराकरण करने के लिए और वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिष्ठार्थ छोटे छोटे ट्रैक्ट हिन्दी व अंग्रेजी में लिखना आरम्भ किया तत्कालीन कुछ भाइयो ने इससे आर्यसमाज चौक की आर्थिक क्षति की ओर संकेत करते हुए कहा कि ट्रैक्ट कौन खरीदेगा। आपने कहा कि घाटा जो होगा उसकी पूर्ति मैं स्वयं करूंगा और आप संयम से। इस शर्त पर कार्य आरम्भ हो गया है। आज यह स्थिति है कि लगभग ६ करोड़ ट्रैक्ट विविध भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और ट्रैक्ट विभाग की सम्पत्ति का अनुमान लगभग १६०००) रु० हो गया है। विदेशों में व अंग्रेजी जानने वालो के लिए आपने एक सीरिज निकाली जिसमें आपने आई एण्ड माई वाइ वर्शिप, डीवन एण्ड डिविजन दयानन्द कान्ट्रीब्यूशन और हिन्दू सोलिडरटी, ओरिजन स्कोप एण्ड ,आर्यसमाज मैरिज एण्ड मैरिड लाइफ आदि महत्व की पुस्तकें हैं। शंकर के मायावाद के खण्डन के लिए आपने शांकर भाष्यालोचन व अद्वैतवाद नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की है, वैदिक सिद्धान्तो के प्रतिपादन मे आस्तिकवाद, जीवात्मा, कर्मफल सिद्धान्त मुक्ति से पुनरावृत्ति हम क्या खावें? सन्ध्या क्यों करें, क्यो और कैसे धर्म सुधासार, आदि आपकी महत्वपूर्ण रचना है। तुलनात्मक दृष्टि से और दयानन्द शंकररामानुज दयानन्द राममोहन, केशव दयानन्द, आर्यसमाज और इस्लाम, क्रिश्चियनिटी इन इण्डिया मसाबी हुल (इस्लाम के दीपक) राष्ट्र निर्माता दयानन्द आदि पुस्तकें विशेष पठनीय है। आर्य ग्रन्थों के प्रचारार्थ आपने मनुस्मृति मीमांसा दर्शन का शाबर भाष्य सब दर्शन संग्रह का अनुवाद किया। ऐतरेयालोचन मीमांसा प्रदीप धर्म पर कम्युनिज्म आदि तत्सम्बन्धित विषयो पर सविस्तार प्रकाश डालने वाली अदभुत ग्रन्थ हैं। लेखक के साथ साथ आप कविता भी उच्चकोटि की करते हैं। संस्कृत में आर्योदय काव्यम और आर्य स्मृति आपकी है। उर्दू मे मुसद्दस दयानन्द आजम और मुसद्दस जाहेद जुबा उल्लेखनीय है। निम्नांकित ग्रन्थो पर आपको पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। जैसे आस्तिकवाद पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक १२००) रु० उत्तरप्रदेश सरकार ने जीवन चक्र पर ६००), कम्युनिज्म ५००), ऐतरेय ब्राह्मण ५००) कम्युनिज्म पर ६००) आपको पुरस्कार दिया है। वैदिक कल्चर पर अमृतधारा पुरस्कार मिला है। आपकी नई कृति शतपथ ब्राह्मण का छप रहा है जिसका मूल्य लगभग ८०) रु० हो गया। अष्टाध्यायी का भाष्य पाण्डुलिपि रूप में विद्यमान है। महर्षि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी में आपने आंशिक रूप से अनुवाद किया है आपके प्रयास से चीनी और बर्मी भाषा में भी सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद हो गया है। अन्य भाषाओं की अनुवाद के

आर्य उप प्रति. सभा लखनऊ का मासिक अधिवेशन

गत २८ अगस्त को उपर्युक्त सभा का मासिक अधिवेशन आर्य समाज शृङ्गारनगर में, श्री माननीय कृष्णदत्तदेव जी की अध्यक्षता में, समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। सबसे पूर्व सामवेद से यज्ञ हुआ। इस यज्ञ के यजमान थे श्री अर्जुन देव जी मन्त्री आर्यसमाज शृङ्गारनगर। यज्ञ के पश्चात् उपसभा के उप मन्त्री श्री कृष्णलाल जी आर्य ने सन्ध्या करायी और इसके उपरान्त कुमारी मञ्जु महाजन ने समय की महत्ता पर संक्षिप्त सारगर्भित भाषण दिया। इसके पश्चात् श्रीमती विमला जी महाजन का हृदय ग्राही भजन हुआ। इस कार्यक्रम के पश्चात् जिला सभा के मन्त्री श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' का ऋ० वेद के मन्त्र १०-१५२-४ के आधार पर विद्वत्तापूर्ण वेदोपदेश हुआ। अन्त में यज्ञ शेष वितरित किया गया।

●

आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर में श्री शास्त्री जी के भाषण

श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री उपमन्त्री सभा ११ अगस्त को आर्यसमाज लाजपत नगर, कानपुर पधारे। आपके २ दिन मनोहर भाषण हुये। समाज के साप्ताहिक सत्संग में ५१) एकत्र करके सभा को वेद प्रचारार्थ दिये तथा आर्य-मित्र के १२ नवीन ग्राहक बनाये।

—मन्त्री

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७००) का दान

श्री भवानीलाल मक्खूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा ककुहास की पुण्यस्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वतमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन-राशि सभा को समर्पण कर बी० बी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद सं० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेज कर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु मय, त्वष्टादि गरीब पं० ब्रा० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

... रविवार ... वि० सं० २०२१ दिनांक ११ सितम्बर १९६६ ई०

१४ सितम्बर को हिन्दी-दिवस

मनाकर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अपना कर्तव्य पालन करें

स्मरण रक्खें १४ सितम्बर को विधान निर्मातृ परिषद् ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा घोषित किया था

भारतीय संविधान की धारा ३४३ के १ अध्याय सम्बन्धी निर्णय से सभी हिन्दी भाषियों को हार्दिक प्रसन्नता होना स्वाभाविक ही था। इस निर्णय में हिन्दी को पूर्ण रूप से राजभाषा का स्थान देने के लिये पन्द्रह वर्ष का लम्बा समय भी निश्चित हुआ था। १९६५ की २६ जनवरी को यह अवधि पूर्ण हुई और हिन्दी प्रेमियों ने आशापूर्ण दृष्टि से अपने स्वप्न को साकार होते देखना चाहा पर अंग्रेजी के सम्मोहन से प्रभावित व्यक्तियों ने हिन्दी विरोधी आन्दोलन आरम्भ कर दिया। पर इसका यह अर्थ नहीं कि हम अपने गौरव को नष्ट हो जाने दें।

१४ सितम्बर उसी पवित्र गौरव को स्मरण कराने आ रहा है। इस अवसर पर प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को हिन्दी के विकास प्रचार एवं प्रसार के लिये अपने संकल्प को दोहराना होगा।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में सबसे अधिक आघात अंग्रेजी समर्थकों का लगता है। अंग्रेजी विश्व की ज्ञान खिड़की है इस मिथ्या दर्प से ग्रस्त ... ने की आज आवश्यकता नहीं हमें हिन्दी को ही प्रत्येक दृष्टि से ... बनाना है। हिन्दी में जन भावना और ... विज्ञान की अभिव्यक्ति की महान शक्ति है। हिन्दी को वर्तमान रूप देने में जिन व्यक्तियों ने आज तक सहयोग दिया है उनके प्रति श्रद्धाञ्जलियां अर्पित करते हुए हमें हिन्दी दिवस को सफल बनाना है।

कार्यक्रम इस प्रकार सम्पन्न करें—

१—प्रतिज्ञा वाचन २—सार्वजनिक सभा एवं हिन्दी गोष्ठी, ३—हिन्दी के व्यवहार के लिए जन-सम्पर्क, ४—हिन्दी दिवस ध्वज चिह्न वितरण ५—समाचार पत्रों में विशेष लेख आदि का प्रकाशन।

हिन्दी प्रेमी जगत् और सभी आर्यसमाजों एवं आर्यसंस्थाओं को हिन्दी दिवस को सफल बनाना चाहिये।

वेदामृत

ओ३म् प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते। तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥१९

भावार्थ—प्रजापालक परमेश्वर सब पदार्थों के मध्य में अन्तर्यामी रूप से वर्तमान रहता है। अतएव जन्म न लेता हुआ भी अनेक प्रकार से प्रसिद्ध होता है। उसके स्वरूप को ध्यानशील विद्वान ही देख सकते हैं। उस ही परमेश्वर में समस्त ब्रह्माण्ड स्थित है।

विषय-सूची

वेदोपदेश

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्द्धयामो वचोविदः । सुमृळीको न आ विश ॥ ३६

ऋ० १।९१।११

व्याख्यान—हे "सोम" सर्वजगदुत्पादकेश्वर ! आपको 'वचोविद' शास्त्रवित् हम लोग स्तुतिसमूह से वर्द्धयाम सर्वोपरि विराजमान मानते हैं । सुमृळीक', न आविश" क्योंकि हमको सुन्दर सुख देने वाले आप ही हो, सो कृपा करके हमको आप आवेश करो, जिससे हम लोग अविद्यान्धकार से छूट और विद्या सूर्य को प्राप्त हो के आनन्दित हों ।

आर्य्यमित्र

रविवार ११ सितम्बर १९६६ दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

शिक्षक-दिवस

५ सितम्बर को सम्पूर्ण देश में राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन का जन्म दिवस शिक्षक-दिवस के रूप में मनाया गया । विगत पाँच वर्ष से इस दिवस का आयोजन किया जाता है । शिक्षक-दिवस नाम के पीछे जो आदर्श भावना है उस का हम स्वागत करते हैं परन्तु केवल आदर मात्र प्रकट करने से शिक्षकों की समस्या हल नहीं हो सकती ।

कांग्रेस शासन तो समाजवादी ढांचे के नारे लगाता है परन्तु उसके अधीन शिक्षा क्षेत्र में सर्वाधिक असमाजवादी व्यवस्था है । जब संविधान में समान कार्य के लिये समान वेतन का सिद्धान्त निर्दिष्ट है तब शिक्षकों में क्यों विभेद किया जाता है । शिक्षा को राज्यों का विषय बताकर भारत सरकार अपने उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकती । उसने राष्ट्र की शिक्षा समस्या के समाधानार्थ शिक्षा आयोग नियुक्त किया था । बड़ी प्रतीक्षा के बाद तो उसने अपना प्रतिवेदन दिया । अब सरकार सहानुभूति के घड़ियाल आंसू टपकाकर शिक्षकों को बहकाना चाहती है । क्या शिक्षक समाज केवल घोषणाओं और सान्त्वनाओं से सन्तुष्ट हो सकता है । शिक्षक समाज राष्ट्र का निर्माता है उसे सन्तुष्ट रखना राज्य का कर्तव्य है परन्तु तीन योजनाओं की पूर्ति के बाद भी आज शिक्षक सर्वाधिक उपेक्षित है । चौथी योजना में भी उसे कुछ मिलने की सम्भावना नहीं है । ऐसी अवस्था में शिक्षकों में राज्य तथा राष्ट्रिय स्तर पर असन्तोष की अभिव्यक्ति स्वाभाविक है ।

शिक्षक वर्ग समाज का सबसे शिष्ट और सभ्य वर्ग है परन्तु उसे भी अब अपनी मांगों के लिये शान्ति प्रियता के स्थान पर परशुराम का क्रोध धारण करना पड़े तब राष्ट्र का विकास एवं निर्माण कैसे आगे बढ़ेगा । शिक्षक दिवस के सारे सन्देश और घोषणा प्रस्ताव व्यर्थ हैं, यदि सरकारें शिक्षकों के असन्तोष को दूर नहीं कर सकतीं । धनाभाव और सीमित साधनों की दुहाई में हमें सन्देह है । क्योंकि कल्पित एवं असफल योजनाओं के नाम पर सरकार करोड़ो रुपये पानी की तरह बहा रही है । अतः हम शिक्षक-दिवस की यही सफलता समझते हैं कि सरकार शिक्षकों के सम्मान की रक्षा करे और उनकी उचित आवश्यकताओं को स्वीकार करे । आशा है इस दिवस की प्रेरणा से सरकार की सद्बुद्धि जागृत होगी ।

आनन्द स्वामी जी की सफल विदेश यात्रा

आर्य नेता पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज अपनी विदेश प्रचार यात्रा से ११ अगस्त को भारत लौट आये, उनको अपने मध्य पाकर आर्यजनों को हार्दिक प्रसन्नता हुई । दिल्ली केन्द्रीय आर्यसभा द्वारा पालम में उनके भव्य स्वागत का आयोजन किया गया और बाद में एक दिन उनके सम्मान में अल्पाहार का समायोजन किया गया ।

पूज्य स्वामी जी थाईलैंड सिंगापुर फीजी, आस्ट्रेलिया, जापान, फार्मोसा आदि में वैदिक धर्म का प्रचार करके लौटे हैं । हम स्वामी जी को इस प्रचार कार्य के लिये हार्दिक बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि उन्होंने जो जागृति अपने प्रचार से यात्रा में आनेवाले देशो में की है वह स्थिर रहेगी एवं उसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी । साथ ही हम स्वामी जी से आशा करते हैं कि वे इसी प्रकार अपने आदर्श जीवन से हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहें प्रभु स्वामी जी को शक्ति प्रदान करें । स्वामी जी आजकल कुछ समय के लिये काश्मीर चले गये हैं मध्य सितम्बर से फिर वही "चरैवेति चरैवेति' के आदर्श पथ पर वे चल पड़ेंगे और हम सबको अपने अमृतोपदेश से अध्यात्म सुधा का पान करायेंगे । हम पुनः स्वामी जी की सफल विदेश-यात्रा पर आर्यजगत् की ओर से हार्दिक बधाई देते हैं ।

गोवा के भविष्य पर जनमत संग्रह

गोवा को पृथक् प्रान्त रखने या महाराष्ट्र में मिलाने के प्रश्न पर दीर्घ काल से विचार चल रहा है एक बार तो दस वर्ष बाद इस प्रश्न पर विचार होने की घोषणा कांग्रेस की ओर से हुई थी परन्तु अब कांग्रेस की केंद्रीय संसदीय समिति ने निर्णय किया है कि 'गोवा के राजनीतिक भविष्य का निर्णय वहाँ के लोगों का मत-संग्रह करके कर दिया जाय ।'

पुर्तगाल को दासता से मुक्त कराते ही गोवा का समीपस्थ राज्यों में विलय करना अधिक उपयुक्त था परन्तु उस समय भारत सरकार चूक गयी या जान बूझकर उसने ऐसा नहीं किया यह दौर्भाग्य है । परन्तु इस समय जनमत संग्रह से राष्ट्रिय एकता भावना को बल मिलने की अपेक्षा प्रान्तवाद और पृथक् अस्तित्व की भावना को बल मिलेगा । गोवा में ईसाई मिशनरियों ने पृथक् रहने की भावना को बलवान बना दिया है ।

इसके साम्प्रदायिक दुष्परिणाम भी सामने आ सकते हैं । पुर्तगाली संस्कृति के नाम पर गोवा को पृथक् रहने की स्वतन्त्रता देना स्वीकार करके भारत सरकार नई समस्या को जन्म दे रही है । हम समझते हैं कि गोवा विलय का प्रश्न सांस्कृतिक न होकर एक मात्र प्रशासनिक आधारों पर निर्णीत होना चाहिये । कांग्रेस पहले दबाव में आकर समस्याओं को महत्व दे देती है फिर बाद में एकता, राष्ट्रीयता आदि के नाम पर अपीलें की जाती हैं । हम समझते हैं कि गोवा के प्रश्न पर जनमत संग्रह काश्मीर के जनमत-संग्रह को सुलझाने में सहायक बनेगा ।

स्वर्ण नियन्त्रण में ढील

स्वर्णकारों के एक लम्बे संघर्ष के बाद भारत सरकार ने स्वर्ण नियन्त्रण में ढील देने का निश्चय कर लिया है । अभी तक १४ कैरेट के ही आभूषण बन सकते थे अब २२ कैरेट पूर्ण शुद्ध स्वर्ण के भी आभूषण बन सकेंगे । स्वर्ण रखने सम्बन्धी शेष व्यवस्थायें पूर्ववत् रहेंगी ।

इस घोषणा से सम्प्रति स्वर्णकारों को पर्याप्त राहत मिलने की सम्भावना है । अब नागरिक अपने पास उपलब्ध शुद्ध स्वर्ण के गहने बनवा सकेंगे और स्वर्णकार पहले की भांति बना सकेंगे ।

स्वर्ण नियन्त्रण से सुनारों के पेशे पर गहरा आघात पहुंचा था अब वे पुनः अपने पैरों पर खड़े हो सकेंगे ।

आभूषण रखना और बनवाना एक सामाजिक कमजोरी हो सकती है परन्तु प्रत्येक गृहस्थ की सुरक्षित सम्पत्ति के रूप में स्वर्णाभूषण बहुत बड़ा सहारा बनते हैं । प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारत सरकार की भूल का सुधार कर दिया है । देर आयद दुरुस्त आयद ।

राजस्थान प्रशासन को हार्दिक बधाई

हिन्दी हस्ताक्षर

राजस्थान सरकार ने आदेश प्रसारित किया है कि १५ सितम्बर ६६ से राजकार्यों में हिन्दी के हस्ताक्षर ही प्रमाणित माने जायेंगे । सभी कर्मचारियों को चाहिये वे बैंक, कोषागार, न्यायालय आदि में जहाँ भी उनके प्रमाणित हस्ताक्षरों की आवश्यकता है हिन्दी में प्रमाणित करके भेज दें और १५ ता० के बाद सभी कार्यों में हिन्दी में ही हस्ताक्षर करें ।

हम राजस्थान सरकार के इस निश्चय को क्रान्तिकारी पग कह सकते हैं । इस निर्णय की घोषणा पर हार्दिक बधाई देते हुए हम राजस्थान से यह आग्रह करना अपना कर्तव्य समझते हैं कि इस घोषणा का दृढ़ता से पालन भी कराया जाय ।

यह दुर्भाग्य ही है कि १९ वर्ष की स्वतन्त्रता के बाद भी लोग अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी में करना गौरव समझते हैं परन्तु इस मिथ्या गर्व को अब समाप्त करना ही होगा । हम आशा करते हैं कि कम से कम हिन्दी भाषी राज्य तो इसी प्रकार का निर्णय ले ही सकते हैं । इस घोषणा से राजस्थान उत्तरप्रदेश से आगे निकल गया । क्या उत्तर प्रदेश-प्रशासन इस प्रकार की घोषणा करने में पीछे ही रहेगा ?

विदेशों में भारतीय डाक्टर

एक डाक्टर को तय्यार करने में सरकार को कम से कम दो लाख रुपया खर्च करना पड़ता है । इतनी बड़ी धनराशि व्यय करके राष्ट्र जिस व्यक्ति को राष्ट्रोपयोगी बनाता है यदि वह राष्ट्र के काम न आये तो इससे अधिक दुःख और हानि की बात और क्या [illegible] ।

पिछले दिनों इस प्रकार की [illegible] उठी थी कि अलीगढ़ विश्ववि[illegible] मुस्लिम वर्ग के छात्र डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त करके पाकिस्तान चले जाते हैं [illegible]

उ. प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन

का १२वां अधिवेशन १०-११ सितम्बर ६६ को प्रयाग में होगा

अध्यक्ष पद्मश्री डा० हरिशङ्कर जी शर्मा होंगे

पद्मश्री डा० हरिशंकर जी शर्मा

इलाहाबाद २ सितम्बर। उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का द्वादश अधिवेशन १०–११ सितम्बर को प्रयाग नगर मे होने जा रहा है। अध्यक्षता पदमश्री डा० हरिशंकर शर्मा करेंगे। इसी अवसर पर सम्मेलन द्वारा सचालित राष्ट्रभाषा परीक्षा के स्नातको का दीक्षांत समारोह भी होगा। अधिवेशन की पूरी तैयारी हो चुकी है। डा० रामचरण अग्रवाल स्वागताध्यक्ष चुने गये हैं। बाहर से आने वाले प्रतिनिधियो के निवास के लिए प्रयाग की धर्मशालाओ मे व्यवस्था की जा रही है।

सम्मेलन के प्रधानमन्त्री डा० हरवशलाल शर्मा ने अपने एक वक्तव्य में अधिवेशन के महत्व की चर्चा करते हुए प्रदेश के सभी अचलों के हिन्दी लेखको, पत्रकारो, शिक्षको तथा अन्य नागरिको से इस अधिवेशन में भाग लेने का अनुरोध किया है। बाहर से आने वाले प्रतिनिधियों के नि शुल्क भोजन की व्यवस्था स्वागत समिति की ओर से की जा रही है।

सभा उपमन्त्री श्री आशाराम जी का निरीक्षण

५१) सभा को प्राप्त

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपमन्त्री श्री आशा राम जी पाण्डय १४ अगस्त को वाराणसी शहर की आर्यसमाजो के निरीक्षणार्थ पहुचे। आपने समाजो के निरीक्षण के साथ ५१) निम्नसमाजो से सभा के लिए प्राप्त किये —

१०) मन्त्री जिला आर्योपसभा वाराणसी वर्षाश १९६२ का, ११) मन्त्री आर्यसमाज कल्लापुरा वाराणसी सूद कोडिमध्ये, २) मन्त्री आर्यसमाज कल्लापुरा निरीक्षण शुल्क, २०) मन्त्री आर्यसमाज वाराणसी कैन्ट सूद कोटि वर्ष ६३ ६४, ६५ ई०, ८) श्री प्रेमचन्द्र जी धर्मा चेतगंज वाराणसी आर्यमित्र का वार्षिक शुल्क कुल ५१) प्राप्त हुवे।

धर्मदत्त तिवारी,
मन्त्री सभा

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री की विदेश यात्रा

आर्यसमाज के लब्ध प्रतिष्ठ नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपप्रधान, श्री प०प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य लोक सभा सितम्बर १९६६ को दक्षिणी पूर्वी एशिया- ताइवान, फिलीपीन थाईलैंड, इडोनेशिया और मलेशिया आदि देशों की यात्रा पर प्रस्थान कर रहे हैं। विस्तृत कार्यक्रम फिर प्रकाशित होगा। -सम्पादक

राष्ट्रपति चिरायु हों !

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन का ७८ वा जन्म दिवस सारे भारत में अध्यापक दिवस के रूप मे मनाया गया। आर्यमित्र परिवार की ओर से बधाई !

मास सितम्बर के प्रोग्राम

श्री विश्वबन्धु शास्त्री—१० से १६ नोनखा, १८ से १४ बीसलपुर २५ से २७ रामनगर।

श्री बलबीर शास्त्री—१० से १६ बिल्सी, १८ से २४ डिबाई।

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री—१० से १६ पुवाया।

श्री केशवदेव शास्त्री—१० से १६ पखिया।

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आ० मु०—२५ से २७ रामनगर (नैनीताल)।

श्री धर्मराजसिंह जी—१४ से १९ कीरतपुर, २० सि० से १८ अक्तूबर तक जिला सभा बिजनौर।

श्री मजराजसिंह जी– १० से १६ पखिया १८ से २० बरौठा।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द–१० से १६ बिल्सी १८ से २४ डिबाई।

श्री खेमचन्द जी–१८ से २५ जिला सभा मुरादाबाद।

श्री प्रकाशवती–२६, २७ रामनगर (नैनीताल)।

—सा च ।नन्द शास्त्री,
सभा उपमन्त्री

प्रकार वहाँ शत्रु देश के लिये डाक्टर तैयार करने की नीति का जोरदार विरोध हुआ सम्भवत अब वहा के छात्रों की इस पलायनवादी अराष्ट्रिय भावना में कुछ परिवर्तन हुआ होगा।

इसी प्रकार भारत की स्वास्थ्य मन्त्री डा० सुशीलानायर ने अपने वक्तव्य मे बताया है कि भारत मे डाक्टरो की इस समय अत्यधिक कमी है परन्तु इग्लैण्ड की चिकित्सा सेवा में २१३९ डाक्टर कार्य कर रहे है। इग्लैण्ड की चिकित्सा व्यवस्था मे इनका विशेष योगदान है अगर वे लोग वहा से आ जायें तो इग्लैण्ड की चिकित्सा व्यवस्था डगमगाने लगेगी।

इसी प्रकार अमेरिका में भारतीय डाक्टरो की सख्या सात हजार तक पहुच चुकी है और वे लोग अपनी आय सु वन था आदि को दृष्टि मे रखत हुए वही ३८ गय है ग बसना चाहते हैं।

वा १व मे डाज के अथ प्रधान ग्म मे राष्ट्र सेवा मानव सेवा आदि के च-च दन मानव को प्रेरित नही कर पात और एक बात यह भी है कि भारत का प्रशासनिक ढाचा भी एसा विचित्र है कि ।द कत्सक जैसे कायकर्ता को मा व सवा की अपेक्षा दफ्तर का आफीसर अधिक बना दिया जाता है।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे डाक्टर अपनी योग्यता का लाभ देशवासियों को पहुचायें तो उनके प्रति आ-श व्यवहार करना चाहिये। साथ ही उनके पास से प्रशासन ५। कय हटाकर केवल चिकित्सा की मुख्यता देनी चाहिये। सर कहे ५ न म विदेशो म भार-तीय र । श ।ना बसना रुक सक । म।शा है सरकार इस दिशा मे ।व करेगी। ★

शिवरात्रि

महर्षि दयानन्द सरस्वती

[प्रस्तुत खण्डकाव्य महर्षि दयानन्द की जीवनगाथा से सम्बन्धित एक साहित्यिक ग्रंथ है। इसके प्रणेता श्री आनन्दशरण आर्य आजमगढ़ जनपद की तथा आर्यजगत् की दिव्य विभूति हैं। महर्षि का गुणगान करके कवि ने अपनी वाणी को सार्थकता प्रदान की है। मौलिक उद्भावनाओं तथा साहित्यिक मानदण्डों के सम्यक् निर्वाह की दृष्टि से यह अभूतपूर्व प्रयास है। 'आर्यमित्र' ने इसे क्रमशः प्रकाशित करने की स्वीकृति प्रदान की है, एतदर्थ बधाई। आशा है, शीघ्र ही ग्रन्थाकार प्रकाशित होकर यह काव्य-ग्रंथ सुधी जनों के समक्ष प्रस्तुत हो सकेगा।

—वेद प्रकाश आर्य, एम० ए० डी० ए० वी० कालेज, आजमगढ़]

(१)

तपोनिष्ठ ब्राह्मण समाज का
वह था एक ग्राम सुन्दर,
कली-कली मधु कण बिखराती
वहाँ प्रकृति की लहर-लहर।

(२)

हिलक हारों सी खिल उठती
हरी भरी शोभा निष्काम,
उसके एक ओर बहती है
मछुकाँठा सरिता अभिराम।

(३)

शाखि पल्लवों में जिनके—
खिलती है मेंहदी की लाली,
नित्य नहा आती लहरों में
ऐसी किरणें मतवाली।

(४)

रम्य विरमें तरु शिखरों पर
विहगों का चुप चुप सल्लाप,
कविता के मानस में भरता
जो चुपके मीठा सताप।

(५)

पुरवा के झोंके जब चलते
मं' हो जाता और अधीर
सरिता की लहरें मुसकाकर
भर देतीं अन्तर में पीर।

(६)

जब घट लेकर पनघट पर,
जब आती ग्वालिनें बीन,
कह उठतीं सखि री, आँखों में
समा गया है जाने कौन ?

(७)

बने वाटिका के कुञ्जों से
छूट रहे रसिकों के मन,
उड़ती फिरती तितली रानी
जो कुसुमों का प्रेम-पत्रक

(८)

झड़ जाती रंगीन पखुड़ियाँ
जिन पर हँस देता मधुमास,
नयी कली पर नव आशा से
छिड़ती मधुपों की गुंजार।

(९)

जब उषा की किरणें बोलीं
कर लो तुम जीवन से प्यार,
'नहीं, झूठ है' सन्ध्या कहती
मिटना है जीवन का सार।

(१०)

बने हुए हैं खपरैलों के
लिपे-पुते कच्चे आवास,
जिनमें नित छिटका करता है
तरुण तरुणियों का मृदु हास।

(११)

कहीं दीखते झोपड़ियों के
स्वच्छ शुद्ध निखरे छाजन,
रहते कुछ उनमें किसान हैं
पुष्ट-बाहु, उभरे यौवन।

(१२)

जिसकी कीर्ति कौमुदी का था
दूर दूर तक तना वितान,
कुछ पक्के घर वहीं खड़े थे
ले अपने अन्तर में मान।

(१३)

पावन तट पर बना हुआ था
एक भव्य मन्दिर अभिराम,
जिसका स्वर्ण कलश भक्तों के
मन में भरता मोद ललाम।

(१४)

अन्तरिक्ष में मग्न खड़ा था
वह उन्नत उत्तुङ्ग त्रिशूल,
अरुण ताम्र सा विजय केतु था
लगा हुआ जिस पर अनुकूल।

(१५)

साम्य भवन में प्रातर्नभ में
मन्त्रों का शुभ, मङ्गल निनाद,
हर लेता था गुंजित होकर
त्रिविध ताप भव का अवसाद।

(१६)

शुद्धोदक से पूर्ण कुम्भ से
भक्तों की मन्दाकिनी पूर्ण,
नत मस्तक रहती थी निशिदिन
करके अपना गर्व विचूर्ण।

(१७)

कृष्ण वर्ण प्रस्तर प्रतिमा पर
जलते घृत के दीप अनेक,
बीजक के कोमल पत्तों से
होता था शिव का अभिषेक।

(१८)

देवालय के अन्तःपुर में—
जलती अग्निशिखा निर्धूम,
मन्द मन्द मलयानिल चलता,
चन्दन अगर धूप को चूम।

(१९)

इसी ग्राम के मध्य बसा था
एक अतर्क शैव परिवार,
बजती सरस्वती की वीणा
वह था वैभव का आगार।

(२०)

प्रौढ़ पुरुष उसमें रहता था
जिसका नाम पड़ा कर्षण,
उन्नत मस्तक पर त्रिपुण्ड था
बना अनोखा आकर्षण।

(२१)

गौर वर्ण पर तमी [illegible] सी
विकट बाहु नव वक्षस्थल,
कभी कभी लहरा उठता था
उत्तरीय का वस्त्र धवल।

(२२)

जूही की कोमल कलिका सी
उसकी थी रानी सुकुमार,
छिपा हुआ जिसके मानस में
नवयौवन का सरस उभार।

(२३)

पति के उर को उकसाता था
उसका सुन्दर रूप अनूप,
घने बादलों के पीछे से
जैसे झाँक रही हो धूप।

(२४)

मरुथल में मोती बिखराती
जिसकी एक मधुर मुस्कान,
छाया सी वह बनी सहचरी
वह थी लक्ष्मी की सन्तान।

(२५)

द्वार देहली पर रहते थे
खड़े विकट प्रहरी निर्द्वन्द्व
बँधे हुए थे शालाओं में
कितने अश्व वृषभ स्वच्छन्द।

(२६)

जाने किसकी पुण्य शक्ति से
जाता वहीं भूल थककर
हिम गिरि की चट्टानें जाती
जाग उठ कंकर, पत्थर।

(२७)

एक दिवस यों ही चुपके से
सोकर जब जागा गुजरात
अभी क्षितिज से बहुत दूर था
वह सुखमय अरुण प्रभात।

—आनन्दशरण आर्य

ग्राम परिवापुर, पो० रसूलपुर स्टेट, जि० आजमगढ़

भाग्यनगर की भाग्य-रचना और आर्यसमाज

(श्री वेदप्रकाश आर्य एम०ए०, प्राध्यापक डी०ए०वी० कालेज, आजमगढ़)

अब तक मेरा अनुमान था कि हैदराबाद का नाम भाग्य नगर कदाचित सन् १९३९ के आर्यसमाज के निजाम सत्याग्रह की सफलता के कारण पड़ा पर अभी गत अप्रैल, मई मास में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के आमन्त्रण पर मुझे इस प्रान्त में जाने और वहाँ का निकट से अध्ययन करने का अवसर मिला, तब कहीं जाकर इस तथ्य से परिचय हुआ कि वस्तुतः हैदराबाद का भाग्य नगर नाम दुर्भाग्य की उस घड़ी से सम्बन्धित है जबकि गोलकुण्डा दुर्ग के कुतुबशाही वंश के चतुर्थ बादशाह मोहम्मद कुली कुतुबशाह की कुदृष्टि हिन्दू सुन्दरी भाग्यमती पर पड़ी और उसने उसे अपनी बेगम बनाया तथा उसके नाम पर १६वीं सदी में "भाग्य-नगर" नामक नगर बसाया। भाग्यमती के निधनोपरान्त उसने इसका नाम हैदराबाद रखा। यद्यपि यह एक ऐतिहासिक तथ्य है पर इस सत्य को भी दृष्टि से ओझल करना ठीक न होगा कि इतिहास के इस कलंक का प्रक्षालन आर्यसमाज ने अपना रक्त बहाकर सन् १९३९ में आर्यसत्याग्रह का सचालन करके किया। आर्य सत्याग्रह के द्वारा डूबती हुई आर्य जाति के प्राणों की रक्षा हुई। इस बार तो सचमुच ही इस रियासत का "भाग्य" कसौटी पर था। इस सत्याग्रह से आर्य जाति के भाग्य की रक्षा और रचना हुई थी, इसलिए अब भाग्यनगर का सम्बन्ध भाग्यमती से नहीं, भाग्य का निर्माण करने वाले आर्य-सत्याग्रह से जोड़ना उचित होगा।

हैदराबाद का आर्यसमाज के इतिहास में विशिष्ट स्थान रहा है। यों तो सम्पूर्ण भारत के पुनर्निर्माण में आर्य-समाज की भूमिका बड़ी ही प्रभाव-शालिनी रही है पर भाग्यनगर वर्तमान हैदराबाद की भाग्य रचना में आर्यसमाज को सम्पूर्ण श्रेय निर्विवाद रूप से दिया जा सकता है। निजाम के अत्याचारों के भग्नावशेष अब भी यहां देखे जा सकते हैं। उन क्षणों की कल्पना ही कितनी भयावह है, जबकि यहां के मुस्लिम बन्धु ही नहीं, हिन्दू विधवाओं के पुर्नविवाह का बिल श्रीयुत केशवराव जी के द्वारा प्रस्तुत किया गया था तो मुसलमानों के साथ ही रूढ़िवादी हिन्दुओं के द्वारा भी इसका घोर विरोध हुआ था। एक ओर हिन्दू जनता की उदासीनता व अज्ञान दूसरी ओर धर्मान्ध मुसलमानों जिनकी पीठ क्रूर निजाम शासन द्वारा थपथपाई जा रही थी, के अत्याचार और तीसरी ओर अंग्रेज साम्राज्यवादियों की वक्र दृष्टि। इस त्रिकोणात्मक सघर्ष की भट्ठी में आर्य समाज कुन्दन बनकर तप रहा था।

सन् १९३१ से १९४१ तक के समय में यहाँ की धरती पर होने वाले अत्याचारों ने रावण और कंस की नृशसता को भी मात कर दिया। आततायी निजाम की धर्मान्धता के सामने औरंगजेब की क्रूरता भी लज्जित हो गई। वह समय अति सन्निकट था जबकि यहां की धरती से आर्य जाति का नामनिशान ही मिट जाता कि आर्य समाज के आन्दोलन के रूप में आर्य शक्ति अंगड़ाई ले उठी। अनाचार के अस्त्रास्त्र कुंठित कर देने के हेतु धर्मवीरों की ग्रीवायें गर्व से भर कर तन गईं। धर्म की पावन वेदी पर अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए होड़ लग गई। सख्या की दृष्टि से उगलियों पर गिनने योग्य, पर साहस में सागर से भी अथाह धर्मप्राण युवकों के वक्ष बलिदान की उमगों से भरकर फूल उठे। कदाचित् ही तत्कालीन हैदराबाद रियासत की धरती का कोई कण ऐसा होगा जो इन धर्म-वीरों के रक्त से रंजित न हुआ हो। ऐसे समय में अमर हुतात्मा भाई श्याम लाल जी तथा स्व० भाई बंसी लाल जी वकील का कर्मठ और सुदृढ़ व्यक्तित्व हैदराबाद की निरीह जनता की ढाल बनकर सामने आया और स्व० श्री विनायकराव विद्यालंकार तथा प० नरेन्द्र के उभरते हुये यौवन की ललकार सम्पूर्ण प्रान्त में गूंज गई। वही थे वे नाजुक हुए क्षण जब निजाम के समा-चार-पत्र में यह पंक्तियां प्रकाशित हुई थीं —"बन्द नाकूस हुए सुन के नवाये तकबीर। जलजला आ ही गया, सिल-सिले जुन्नार पे भी'। जिसका अभिप्राय यह है कि मस्जिदों से आने वाली अजान की आवाजों को सुन कर हिन्दुओं के शरीर तो कांपने लगे ही उनके भी कांप उठे। इस उद्धरण से उस भयकर आतंक का अनुमान लगाया जा सकता है जो निजाम शासन के द्वारा पनपाया गया था आर्यसमाज इस प्रान्त की पद दलित हिन्दू जनता का लौह कवच बनकर किस प्रकार आड़े आया, यह जानने के लिए स्वनाम धन्य प० गंगा प्रसाद उपाध्याय की इन पंक्तियों को प्रस्तुत किया जा सकता है, जो उन्होंने निजामशाही की उपयुक्त पंक्तियों के उत्तर स्वरूप लिखा था —

तीन धागे, के कच्चे सूत के कच्चे,
लेकिन,
आयी जुन्नार ने की हैदरी तलवार पे भी।

"यद्यपि यज्ञोपवीत में कच्चे सूत के तीन धागे मात्र थे, तथापि इन सूत के तीन धागों ने हैदरी तलवार की धारों को भी कुंठित करके दिखा दिया।" कौन थी वह शक्ति, जिसने जनेऊ को फौलाद बना दिया। वह शक्ति थी, आर्यसमाज के आन्दोलन की शहीदों के रक्त की बूंदों की। आर्यसमाज और निजाम शासन की इस टक्कर ने, दिये और तूफान की इस लड़ाई ने सारे, भारत का ध्यान अपनी ओर खींचा और अन्तत उस महान् आर्य सत्याग्रह का शुभारम्भ हुआ जो देश के इतिहास में एक बेजोड़ उदाहरण बनकर रह गया। महात्मा गांधी ने जिस सत्याग्रह रूपी अस्त्र का प्रयोग आधुनिक भारत को सिखाया, उसका पूर्ण परिपाक आर्य-समाज के इस आन्दोलन द्वारा हुआ। यदि आर्यसमाज का यह आन्दोलन न आरम्भ हुआ होता तो हैदराबाद का भाग्य कुछ और ही रहा होता।

इस सत्याग्रह से हैदराबाद की जनता के मूलभूत अधिकारों की रक्षा हुई और उस प्राणशक्ति का तिरोभाव न हो सका जिसे मिटाने पर शासन तुला हुआ था पर अभी कपट और प्रपच के एक और अध्याय का खुलना शेष था। सन् १९४१ के अनन्तर ज्यों-ज्यों स्वातन्त्र्य-सूर्य की लालिमा भारतीय क्षितिज को अनुरंजित करने लगी, यहां साम्प्रदायिक तत्वों की विघटनमूलक कालिमा भी स्पष्ट होने लगी। कासिम रिजवी, और रजाकारों की दुरभि-सन्धियों, जिनकी कमर पर निजाम की कुमन्त्रणाओं का हाथ था, का घटाटोप छाने लगा। हैदराबाद को पृथक् इस्ला-मिक स्टेट बनाये जाने के स्वप्न ही नहीं देखे जाने लगे स्थान-स्थान पर रजाकारों द्वारा दंगे कराये जाने का सगठनात्मक कार्य शुरू हो गया और बीदर के गुप्त हवाई अड्डे से आकाश की अदृश्य ऊँचाई पर से विदेशी अस्त्रास्त्र भी उतरने लगे। आर्यसमाज के आन्दोलन का जो मुंह अब इस स्थिति का सामना करने के हेतु मुड़ा। आर्यसमाज की तत्कालीन क्रांति का इतिहास तो पृथक् ग्रन्थ का विषय है, निबन्ध का नहीं।

श्री वेदप्रकाश जी आर्य

आर्य वीर दलों का सगठन विस्तार पाने लगा। जहाँ जहाँ यह विघटनकारी शक्तियों का जमाव होता था, आर्य वीरों का वहां पड़ाव था। जिस समय सारा देश अपनी-अपनी उलझनों में व्यस्त था, नेतागण सत्ता हस्तांतरण की कार्यवाही में लगे हुए थे, आर्यसमाज उस समय आततायियों से सत्तारूढ़ शासन से मुठभेड़ ले रहा था जोकि हैदराबाद को एक 'स्वतंत्र इस्लामिक स्टेट' के रूप में देखना चाहता था। अन्तत आर्यसमाज की सुदृढ़ शक्ति की चट्टान से टकराकर न कि विघटनकारी तत्व टूक टूक हो गये, सरदार वल्लभ भाई पटेल की सेनाओं को वहां पहुंचने के लिए विवश कर दिया गया। धन्यवाद है, उस नर-केसरी को 'जिसने समय की धड़कनों को सुना। बधाई है, उस लौह पुरुष को, जिसने इस आर्यभूमि को निजाम के चंगुल से मुक्त किया। साधुवाद है उस कर्मवीर को, जिसने आर्यसमाज के तप और त्याग को चरितार्थ कर दिया। पर कितना साधुवाद, कितना धन्यवाद दिया जाये उस आर्यसमाज को जिसने हैदराबाद को पुलिस कार्य-वाही तक दानवी शिकंजे से सुरक्षित रखा। पावस के आगमन तक उपवन की पादपावली को अपनी श्रम बिन्दुओं से सींच-सींच कर बचाये रखा।

●

देश में अविलम्ब गोवध बन्द होना चाहिए

[श्री फतहचन्द्र जी शर्मा आराधक, दिलशाद कालोनी, दिल्ली]

भारतीय संविधान में गोवध निषेध के महत्व को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। संविधान में इस बात का निर्देश है कि सरकार का यह दायित्व हो जाए कि वह गोवध-बन्दी करे और गोवंश की उन्नति के लिए प्रयत्न करे। १९ वर्ष बीतने के बाद भारतीय सरकार से देश के अनेक गोभक्तों ने समय-समय पर देश में अविलम्ब गोवध बन्द करने की मांग की। इसके लिए बड़े-बड़े आन्दोलन भी छेड़े गये पर सरकार के कानों पर जूं नहीं रेंगी। संविधान की घोषणा के पहले भी देश में गोवध निषेध के महत्व पर एक व्यापक आन्दोलन चलाया गया था। इस आन्दोलन के संचालन में स्व० बाबा राघवदास, गोभक्त लाला हरदेव सहाय आदि अनेक कर्मठ गोभक्त भारी प्रयत्न करके देश भर में इस प्रकार का वातावरण बनाने का प्रयत्न करते रहे कि सरकार संविधान की घोषणा के साथ साथ देश में गोवध बन्दी की घोषणा भी करे। इसका प्रमुख कारण यह था कि देश के कई मान्य राष्ट्र नेताओं ने यह घोषणा की थी कि स्वराज्य मिलने पर देश में पूर्ण गोवध बन्दी कर दी जाएगी।

इस सम्बन्ध में आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने सर्वप्रथम गोकरुणानिधि लिखकर यह मांग की थी कि गाय की रक्षा क्यों की जाए? इसी शृंखला में महात्मा गांधी ने गो रक्षा के प्रश्न स्वराज्य के प्रश्न से बड़ा बताया था, और मुसलमानों से अनुरोध किया था कि वे इस मामले में देश की बहुसंख्यक जनता की हृदयगत भावना का आदर करते हुए देश में गोवध बन्दी के आन्दोलन में सहयोग दें। महामना मदनमोहन मालवीय गाय के प्रति बड़े आस्थावान् थे और वे उसके संरक्षण और संवर्धन के लिये समय-समय पर प्रयत्न करते रहे। मालवीय जी के प्रयत्न से देश में बहुत सी गो शालायें स्थापित हुईं और गो संरक्षण का कार्य तेजी से चला। उन्होंने १९२८ में वृन्दावन में आयोजित अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन गोपाष्टमी दिवस को राष्ट्रीय दिवस में मनाना और गोसेवकों के सम्मान के लिए समय-समय पर प्रयत्न करते रहे। मालवीय जी के प्रयत्न से देश में बहुत सी गोशालायें स्थापित हुईं और गौ संरक्षण का कार्य तेजी से चला। उन्होंने १९२८ में वृन्दावन में आयोजित अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन गोपाष्टमी दिवस को राष्ट्रीय दिवस में मनाना और गोसेवकों के सम्मान के लिए समय-समय पर साहित्य प्रचार तथा आर्थिक सहायता प्रदान करने की दृष्टि से ऐसा फण्ड खोलने की योजना तैयार की थी—उन को यह विचार इस दृष्टि से था जिससे गोसेवा के कार्य में आर्थिक संकट न रहे और आन्दोलन को विधिवत चलाया जा सके। देश में अन्य कई महापुरुषों ने गोवध बन्दी आन्दोलन के लिए व्यापक प्रयत्न किया। भारी कष्ट सहे—इनमें अविभाजित पंजाब के स्व० बाबा जीवनदास वकील और भू० पू० संसद् सदस्य लाल ठाकुरदास भार्गव, स्व० हासानन्द जी, श्री मुकुन्दनारायण मालवीय परमगोभक्त बापू जी महाराज, देश भक्त सेठ जमनालाल बजाज आदि ने समय समय पर गोरक्षा आन्दोलन को व्यापक बनाया।

गोरक्षा-आन्दोलन

ऊपर वृन्दावन में होने वाले जिस गोरक्षा सम्मेलन की चर्चा की गई है उस सम्मेलन में मालवीय जी महाराज ने एक ऐसा प्रस्ताव भी पास कराया था कि जिसमें कि यह निश्चित किया गया है कि इस सरकार का विरोध इसलिए करना चाहिये कि वह गोवध कराती है। उस समय अंग्रेजी शासन का विरोध बहुत से देश भक्तों ने इस दृष्टि से भी किया था कि वह विदेशी सत्ता है—हमारी धार्मिक आस्थाओं को न मानकर हमें धर्म से भ्रष्ट करने के लिये अनेक प्रकार प्रयत्न करती रहती है। एक प्रकार से प्रथम भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन जो १८५७ में किया गया था—उसकी पृष्ठ भूमि में भी गोरक्षा की भावना निहित थी और भी अन्य कई आन्दोलन गोवध बन्दी के लिए चलाये गये थे-केवल हिन्दू राजाओं ने ही नहीं बल्कि मुसलमान बादशाहों तक ने अपने शासनकाल में गोवध बन्दी के फरमान जारी किये थे। उनमें शाह आलम और बहादुरशाह जफर के नाम उल्लेखनीय हैं। बहादुर शाह जफर ने ईद के अवसर पर १८५७ में गोकुशी न करने की हिदायत दी थी और भी अनेक अवसरों पर मुसलमान बादशाहों ने भारतीय जनता की जनभावना का आदर करते हुए गोवध बन्दी के महत्व को महत्वपूर्ण स्थान दिया था।

हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों में और हमारी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक वेद में गाय को अघ्न्या लिखा गया है। धर्म ग्रन्थों में ही नहीं हमारे साहित्य में गो रक्षा की भावना को विशेष बल दिया है। महाकवि कालिदास ने अपने रघुवंश महा काव्य में कामधेनु की पुत्री नन्दिनी के संरक्षण के लिये चक्रवर्ती सम्राट् राजा दलीप का जिस प्रकार गोसेवाव्रत का विवरण प्रस्तुत किया है—वह हमारी भारतीय संस्कृति में गोसेवा का एक सुनहला अध्याय है। रघुवंश में महाकवि ने लिखा है कि कामधेनु-पुत्री नन्दिनी की महाराजा दलीप इस प्रकार सेवा करते थे कि यदि वह कहीं बैठ जाती थी तो बैठ जाते थे और वह चल पड़ती थी तो चल पड़ते थे। और जब नन्दिनी पर आततायी शेर ने आक्रमण किया तो महाराजा दलीप ने गाय की रक्षा के लिए सामने प्रदर्शन किया और उसे गोहिंसा से पराङ्मुख कर दिया।

भारतीय संस्कृति में गाय केवल माता ही नहीं एक करुणा की मूर्ति भी कही जा सकती है। प्राचीन कथाओं के आधार पर भारतीय परिवारों में जहां गाय नहीं पलती उस परिवार को शोभनीय नहीं माना जाता है। और हमारे राज्य में सदैव यह भावना रहती थी कि विधाता की सौन्दर्यमयी सृष्टि को रूप और कुरूप होने से यदि बचाना है तो गोपालन किया जाये भगवान् श्री कृष्ण ने इसी संदर्भ में कहा था कि हे अर्जुन मैं गाय से बड़ी कोई शक्ति नहीं देखता और कृष्ण तो इतने परम गोभक्त थे उनकी आस्था थी गाय मेरे सामने रहे—गाय मेरे पीछे रहे, गाय मेरे चारों तरफ रहे और मेरा जीवन गौओं के बीच में ही रहे। इस तरह की परम्परा के कारण भारत सुखी और समृद्ध था–विदेशियों के लिये सोने की चिड़िया था और इस देश में भी दूध की नदी बहती थी–किन्तु जब से हमारी भावना में परिवर्तन आया तो हम पग २ पर पीछे हटते हैं और औसतन व्यक्ति के भारत के प्रत्येक नागरिक को कठिनता से दो औंस भी दूध अब नहीं मिल पाता होगा। मिश्रित दूध पानी जिसे आज की परिभाषा में मिल्क कह सकते हैं—वह तो साधारण दूध से दूधचूर्ण और दूधचूर्ण से तैयार किया जा सकता है। किन्तु प्रशासन की उदार नीति न होने के कारण देश में प्रतिदिन हजारों गौओं का वध किया जा रहा है और हरियाणा नस्ल की उत्तम गाय भी कलकत्ता बम्बई तथा अन्य बड़े नगरों में निर्दयता पूर्वक वधी जाती हैं। जिस देश का जीवनाधार कृषि है और जहां यान्त्रिक खेती के लिए अभी पर्याप्त अवसर नहीं है—उस देश में गोवंश के सहयोग के बिना कृषि सम्पन्नता नहीं हो सकती—इसलिये अंग्रेजी शासनकाल में भारी कष्ट सहकर भी जिन गोभक्त महापुरुषों ने आन्दोलन चलाया था। उनमें से बहुत से पुराने गोभक्त और कुछ नये गोभक्त इस आन्दोलन को व्यापक बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। इस देश में गोवध बन्दी हो और गोवंश की समृद्धि के लिए सरकार सक्रिय हो। इस आन्दोलन के लिए गोभक्त लाला हरदेव सहाय आन्दोलन करते-करते परमधाम सिधार गये। राजर्षि बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन भी प्रयत्न करते गोलोकवासी हुए और नामधारी सिक्खों के नेता सद्गुरु प्रताप सिंह भी गो सेवा के आन्दोलन में सहयोग देकर परमधाम गये। और भी अनेक गोभक्त जिनमें राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद का नाम भी श्रद्धा के साथ लिया जा सकता है गोरक्षा में प्रयत्नशील रहे परन्तु इस देश का दुर्भाग्य है कि वीतराग स्वामी करपात्री जी गोरक्षा आन्दोलन चलाये जाने पर गोहत्या बन्द नहीं हुई सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जो अपना सारा जीवन गोरक्षा आन्दोलन के लिए समर्पित कर चुके हैं अनेक स्थानों पर गो ग्रास यज्ञ और पुकिमदास आदि के आन्दोलन चलाकर अनुकूल वातावरण बनाते रहे। आर्यसमाज और भारतीय जनसंघ ने कई वर्ष पहले देश में अविलम्ब गोवध बन्दी के लिए व्यापक आन्दोलन किये हैं। प्रयाग में १२ वर्ष पूर्व हुए कुम्भ के मेले में गोभक्त नेताओं ने स्व० नेहरू से देश में गोवध बन्दी की मांग की थी। सेठ गोविन्ददास ने संसद् में और देश के बाहर गोरक्षा आन्दोलन

को व्यापक बनाया। इस आन्दोलन में सेठ रामधर डोमानी का पूरा सहयोग रहा। वह सारा आन्दोलन एक देश व्यापी स्तर पर चला। और सरकार ने इन सब लोगों की बात को अनसुना कर दिया।

अब फिर आन्दोलन

पिछले दो वर्ष पूर्व जब वृन्दावन मे गोरक्षा सम्मेलन भारत गोसेवक समाज के प्रयत्नों से सम्पन्न हुआ था—उस समय निश्चय किया गया था कि देश में व्यापक रूप से गोवध बन्दी की माग के लिए आन्दोलन चलाया जाए और अब वह आन्दोलन व्यापक रूप से गत मई मास मे प्रचण्ड रूप धारण कर रहा है—जब से इस आन्दोलन में गृहस्थी जनों की अपेक्षा साधु महात्माओं ने इस आन्दोलन को अपना लक्ष्य बनाया। इस आन्दोलन के सिलसिले में बहुत से साधु जेल जा चुके हैं। संसद् सभा के सामने धरना देने और अन्य मन्त्रियों के निवास स्थान के बाहर भी धरना देकर उन्होंने इस माग को व्यापक बनाया। परन्तु खेद है कि सरकार ने उन त्यागी महात्माओं की माग को मानने की बजाय उन्हें वह सजा दी जो किसी भी शासन में और जिसे अपने देश का शासन कहा जाए इस प्रकार की सजा नहीं दी जा सकती। इस आन्दोलन मे स्वामी गंगानन्द हरी का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्वामी शुक्लानन्द भी इस आन्दोलन में सक्रिय रहे - यह सब आन्दोलन ने जन जीवन पैदा करने का काम दिल्ली के प्रसिद्ध वकील श्री डी० पी० जोशी को दिया जा सकता है जो सारा काम काज छोड़कर इस आन्दोलन मे मन और तन से लगे। इस आन्दोलन मे प्रसिद्ध पत्रकार प० विश्वम्भरप्रसाद शर्मा का नाम भी उल्लेखनीय है—कि वे वृद्धावस्था में इस आन्दोलन के लिए अधिक से अधिक सेवा तत्पर हैं। इसी प्रकार इस सारे आन्दोलन को अपने सहयोग और शक्ति से शक्तिशाली बनाने में लाला लछमनदास की भी सेवा कम नहीं है। श्री किशनलाल कटपीस वाले ने भी इस आन्दोलन में दिलचस्पी के साथ भाग लिया है और जो भी दिल्ली में ऐसे व्यक्ति हैं जो अपना काम-काज छोड़कर गोरक्षा आन्दोलन मे भाग ले रहे हैं।

संसदीय गौ मंच

संसद के कुछ प्रभावशाली सदस्य जिनमें लोकनायक श्री माधवश्रीहरिअणे, सेठ गोविन्ददास श्री सजदेवसिंहसिद्धान्ती आदि के प्रयत्न से पिछले दिनों भारत गोसेवक समाज ने संसदीय गोमंच की स्थापना की है—इस मंच के सदस्य सर्वधानिक दृष्टि से गोवंश की रक्षा और उन्नति के लिए आन्दोलन का संचालन करेंगे।

देशव्यापी आन्दोलन

आगामी नवम्बर मास मे गोपाष्टमी के अवसर पर एक सर्वदलीय गोरक्षा महा अभियान समिति के प्रयत्न से एक देशव्यापी गोरक्षा आन्दोलन प्रारम्भ किया जा रहा है। इस सिलसिले मे सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी निरंजनतीर्थ और मुनि सुशील कुमार आमरण व्रत आरम्भ करेंगे। इस आन्दोलन को आर्यसमाज सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब और भारत साधु समाज आदि अनेक संस्थाओं का सहयोग और समर्थन प्राप्त है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संचालक श्रीमाधवराव सदाशिव गोलवलकर का भी आशीर्वाद इस आन्दोलन को पूर्णरूपेण प्राप्त है। वीतराग स्वामी करपात्री जी महाराज तथा देश के अन्य अनेक साधु महात्माओं ने इस आन्दोलन को पूरी शक्ति से समर्थन करने का आश्वासन दिया। इस सम्बन्ध में अखिल भारतीय स्तर पर देश के कोने कोने में सभाएं हो रही हैं।

संसद भवन के सामने विराट प्रदर्शन

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री स्वामी गणेशानन्द की घोषणा के अनुसार एक सितम्बर को संसद् भवन के सामने एक लाख से अधिक व्यक्ति गोवध बन्दी की माग के सम्बन्ध में विराट प्रदर्शन करेंगे। इस प्रदर्शन मे अधिक से अधिक व्यक्तियों द्वारा भाग लेने के लिए स्वामी गणेशानन्द ने माग की है। वे कुछ राज्यों का दौरा करके भी इस आन्दोलन को व्यापक बना रहे हैं। उनका कहना है कि प्रदर्शन में हरियाणा से बहुत से किसान भी भाग लेने आयेंगे। इस आन्दोलन की व्यापक रूप से तैयारी की जा रही है।

वीर जी का आमरण अनशन

गत १० अगस्त से महात्मा श्री रामचन्द्र वीर ने गोवध बन्दी की माग के सिलसिले मे हिन्दू महासभा भवन नई दिल्ली में आमरण अनशन आरम्भ कर दिया है। स्वामी रामचन्द्र वीर गोरक्षा के लिए कई बड़े अनशन कर चुके हैं—इस अनशन में उनका स्वास्थ्य बराबर गिर रहा है और ऐसा लगता है कि अभी उनके अनशन के न समाप्त कराया जा सका तो उनका प्राणान्त हो जाएगा।

देश पर संकट

गोवध बन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध मे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प्रो० बलराज मधोक ने हाल में ही दिए गये वक्तव्य में सरकार से जनभावना का आदर करते हुए अविलम्ब गोवध बन्दी की माग की है। उन्होंने अपने वक्तव्य में जल्द से जल्द गोवध बन्द करने की सरकार से माग की है। श्री मधोक ने अपने वक्तव्य में आर्थिक दृष्टि, संविधान में निर्देश और लोकतन्त्र में परम्परा में गोवध बन्दी की माग को उचित बताया है।

आर्य समाजों द्वारा समर्थन

दिल्ली की लगभग १५० आर्य समाजों ने गत २१ अगस्त को संसद् भवन के सामने प्रदर्शन एवं धरना देकर गोवध बन्दी आन्दोलन की माग का समर्थन किया है। आर्यसमाजों के केन्द्रीय संगठन की ओर प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने रामगोपाल शाल वाले ने एक ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए उनका ध्यान जल्दी से जल्दी गोवध बन्द करने की ओर आकर्षित किया है।

राजधानी में विशेष आन्दोलन

इन दिनों गोवध बन्दी आन्दोलन के सिलसिले मे राजधानी के सभी क्षेत्रों में व्यापक रूप से आन्दोलन चल रहा है। बम्बई जीव दया मण्डल के नेता तथा विश्व वनस्पत्याहार संघ के नेता और भारत गोसेवक समाज के महामंत्री श्री जयन्तीलाल मानकर बम्बई से बहुत सा समय दिल्ली में प्रवास करके इस आन्दोलन को व्यापक बनाने में जुटे हुए हैं। इस मास के अन्त तक सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी गोरक्षा आन्दोलन के लिये राजधानी के नागरिकों को सचेत कर रहे हैं। (शेष पृष्ठ १२ पर)

ला० विश्वम्भर दयाल जी का देहावसान!

दुख है कि गत २५ अगस्त को आर्यसमाज चन्दौसी के प्रधान श्री ला० विश्वम्भरदयालु जी का देहावसान हो गया। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

स्व० लाला विश्वम्भर दयाल जी

आपका जन्म २९ ११ १९१२ में चन्दौसी नगर के अग्रवाल वैश्य कुल में हुआ था। ला विश्वम्भर दयाल जी ने जब से होश सम्भाला तभी से ऋषि दयानन्द जी महाराज के अनन्य भक्त बन गये। कई बार आप आर्यकुमार सभा चन्दौसी के भी प्रधान रहे, और इस समय भी आर्यसमाज के प्रधान थे। इसके अतिरिक्त आर्य कन्या पाठशाला चन्दौसी के भी कई पदों पर कार्य चुके हैं तथा इस समय भी आप आर्य कन्या पाठशाला के प्रधान थे। आप नगरपालिका चन्दौसी के भी कमठ सदस्य रह चुके थे तथा भारतीय कन्या कालेज के भी उपाध्यक्ष थे। आप जिला सभा मुरादाबाद के भी उपाध्यक्ष रह चुके थे तथा गत वर्षों में लाला जी जिला मुरादाबाद से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के भी सदस्य आ०प्र० सभा उत्तर प्रदेश द्वारा चुने गये थे। आप के निधन पर अनेक संस्थाओं ने लाला जी को श्रद्धांजलियां दी और सभी शिक्षा संस्थायें तथा नगरपालिका चन्दौसी ने लाला जी के निधन पर शोक प्रकट करते हुये श्रद्धांजलि के रूप में अपने सभी कार्य बन्द रक्खे। लाला जी अपने पीछे ४ पुत्र तथा ४ पुत्रियां छोड़ गये हैं। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करें और दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—रामस्वरूप आर्यमुसाफिर

राष्ट्रीय एकता और संस्कृत भाषा

(ले०—श्री आचार्य रामवीर शर्मा एम ए साहित्यरत्न अलीगढ़)

भारतवर्ष एक विशाल देश है। इसकी जनसंख्या ४६ करोड़ के लगभग है। इसकी संस्कृति अति-प्राचीन है। इसकी आध्यात्मिकता सारे संसार को अपनी ओर आकृष्ट करती है। हिमालय पर्वत सुवर्ण-मुकुट धारण किये हुए इसके प्रहरी के समान खड़ा हुआ है। गंगा और यमुना इसके चरणों को प्रक्षालित करती हैं। अनेक महापुरुषों ने जन्म लेकर इसको धन्य बनाया है। इस कारण यहाँ देवता भी जन्म लेने की इच्छा करते हुये कहते हैं—

"गायन्ति देवा किल गीतकानि,
धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे।
स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते
भवन्तिभूय पुरुष सुरत्वात्"

धन-धान्य से परिपूर्ण इस देश पर विदेशियों की गृद्ध दृष्टि सदा से रही है। देशवासियों के पारस्परिक वैमनस्य और फूट के कारण लगभग एक हजार वर्ष तक उन्होंने शासन किया। इसके वैभव को लूटा तथा व्यापारिक, औद्योगिक और कृषि सम्बन्धी विकास से अवरुद्ध कर दिया व प्रत्येक प्रकार से इसे पंगु बना दिया। परन्तु भाग्यचक्र के परिवर्तन से, दूरदर्शी नेताओं के त्याग, सेवाभाव और बलिदान से हमारा देश १५ अगस्त सन् १९४७ को स्वतन्त्र हो गया और इसकी समृद्धि के लिये पंच-वर्षीय योजनाएँ प्रारम्भ की गईं। जिनसे देश का बहुमुखी विकास होने लगा है। इसकी प्रगतिशीलता देखकर देशों को ईर्ष्याभाव होने लगा और इसको अवनत कराने का यथाशक्य प्रयत्न किया। वे अब भी समझते हैं कि भारत एक विशाल देश है। इसमें सिख, जैन, ईसाई, मुसलमान आदि विभिन्न मतानुयायी रहते हैं, जो अपने-अपने मत पर अपश्रद्धा रखते हैं। साथ ही इस देश में अनेक भाषाएँ हैं, जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से पृथक रखती हैं। परस्पर प्रेमभाव व सहृदयता व एकता पैदा करने में बाधक बनती हैं। इन विभिन्न मतों एवं सम्प्रदायों के होने तथा अनेक भाषाओं के कारण देश की एकता को नष्ट कर के इसको पुनः पराधीन बनाया जा सकता है।

इसी विचार से चीन ने ६२ में देश पर आक्रमण किया जिससे देश को जन धन की बड़ी हानि उठानी पड़ी पर इससे देश में जागरण हुआ और देशवासी अपने देश की रक्षा करने के लिये से उद्यत हो गये।

वास्तव में यह सर्वथा सत्य है कि विविध मत एवं सम्प्रदायों व भाषाओं के जमघट वाले देश में भेदभाव होना स्वाभाविक है। क्योंकि उनमें अपने मत एवं अपनी भाषा से अधिक लगाव हो जाता है। साथ ही अन्ध श्रद्धा होने के कारण एक व्यक्ति दूसरों के मत एवं भाषा के प्रति उदार विचार नहीं रखता और संकीर्ण भावनाओं के समावेश से केवल अपने मत एवं सम्प्रदाय की ही उन्नति सोचने लगता है। देश की सम्पन्नता व समृद्धि की ओर ध्यान नहीं देता। अनेक भाषाओं के होने के कारण विभिन्न भाषा भाषी प्रान्तों के शासन कार्य में मन्थरता आ जाती है। जिससे देश की प्रगति में अवरोध उत्पन्न हो जाता है।

देश की समुन्नति के लिये आवश्यक

है कि उन राष्ट्रीय भावनाओं को पैदा किया जाय जिनसे प्रांतीय, साम्प्रदायिक व भाषावाद का मद समाप्त हो और देशवासी एकता की माला में गूंथकर बाह्य शत्रुओं से देश की रक्षा करने में समर्थ हो सकें। इस राष्ट्रीयता का प्रचार करने तथा भाषागत वैषम्य दूर करने के लिये भारत सरकार ने त्रिभाषा सूत्र (Three language formula) की स्थापना की जिसके अन्तर्गत प्रत्येक राज्य के निवासी को निम्नलिखित भाषाएँ पढ़ने का उल्लेख किया गया है।

(१) क्षेत्रीय भाषा यदि क्षेत्रीय भाषा हिन्दी हो तो संविधान स्वीकृत १४ भाषाओं में से कोई एक भाषा।

(२) विदेशी भाषा।

(३) राष्ट्र भाषा हिन्दी।

इस सूत्रानुसार सम्पूर्ण भारत में तीन भाषाओं के अध्यापन की व्यवस्था भारत सरकार के आदेशानुसार की गई है। हमारे प्रदेश में इसी के अन्तर्गत संस्कृत भाषा तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाने लगी है।

पर इस त्रिभाषा सूत्र के अनुसार भारत में राष्ट्रीय एकता की स्थापना करना कठिन है क्योंकि इसके मूल में कुछ ऐसी त्रुटियां हैं जिनसे देश की एकता में बाधा पड़ती है यद्यपि इसके द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के लिये अवसर दिया गया है और विदेशी भाषा के अन्तर्गत अंग्रेजी पढ़ने को बाध्य किया जाता है न कि फ्रेंच अथवा जर्मनी आदि भाषाओं के पढ़ने के लिए अंग्रेजी भाषा के अनिवार्य होने के कारण पूर्णतः मानसिक विकास नहीं हो सकता क्योंकि अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है। इसका हमारी क्षेत्रीय भाषाओं से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। साथ ही वह भारतीय संस्कृति की पोषक नहीं अपितु विनाशक है। यह केवल २ प्रतिशत की भाषा है। भारत में ९० प्रतिशत ग्राम निवासी हैं उन्हें अंग्रेजी से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। उन पर खर्च किया हुआ करोड़ों रुपया व्यर्थ ही जाता है राष्ट्र-भक्त, समाजसेवी, कर्तव्यनिष्ठ नेताओं ने देश में एकता स्थापित करने के लिये हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अपना समस्त जीवन लगा दिया। अंग्रेजी को वे देश की एकता में बाधक समझते थे।

विश्वबन्धु महात्मा गांधी भी अंग्रेजी से पीछा छुड़ाने के लिये देशवासियों को प्रोत्साहित करते थे। आपने एक बार कहा था—"जिस प्रकार हमारी आजादी को जबरदस्ती छीनने वाली अंग्रेज की सियासी हुकूमतों को हमने सफलता-पूर्वक देश से निकाल दिया उसी तरह हमारी संस्कृति को दबाने वाली अंग्रेजी भाषा को भी यहाँ से निकाल कर बाहर कर देना चाहिये।"

पर आज गांधी जी के अनुयायी अंग्रेजी के पोषक बने हुये हैं और इसी को सर्वांगीण उन्नति का साधन मानते हैं।

राष्ट्रीय एकता की अभिवृद्धि के के लिये सर्व भाषा जननी रूपा संस्कृत भाषा की महती आवश्यकता है जिसे इस त्रिभाषा सूत्र में स्थान नहीं दिया गया हैं क्योंकि इसी से भारतीय संस्कृति अनुप्राणित है। वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण और महाभारत आदि भारतीय संस्कृति के गौरव ग्रंथ इसी भाषा में हैं। समस्त भारतीय भाषाएँ इसी से जीवन प्राप्त करती हैं। यहाँ तक कि द्रविड़ परिवारीय दक्षिण भारतीय तेलगु आदि भाषाओं में भी संस्कृत भाषा के लगभग ३० प्रतिशत शब्द उपलब्ध होते हैं। संस्कृत का विद्वान् सारे भारत में भ्रमण करके प्रान्तवासियों से सम्पर्क स्थापित कर सकता है उनकी विचारधारा को समझ सकता है और अपने विचारों को भी समझा सकता है। उसे कहीं पर कठिनाई नहीं हो सकती और वह अपने कार्य को अनायास ही सम्पन्न कर सकता है।

संस्कृत भाषा में आत्मज्ञान भंडार सभृत है। इस आत्मिक ज्ञान सरिता में अवगाहन करने के लिये सैकड़ों विदेशी विद्वानों ने संस्कृत का अध्ययन किया। संस्कृत में ही मैक्समूलर, ग्रियर्सन आदि ने तो वेद भाष्य तथा इतिहास ग्रन्थ भी लिखे हैं अनेक विदेशी व्यक्ति अब भी भारत आकर यहाँ के विद्वानों व महात्माओं के चरणों में बैठकर अपनी ज्ञान पिपासा को शांत करते हैं।

यह भारतवर्ष ही नहीं अपितु विश्व की सबसे पुरातन भाषा है। गतवर्ष ६५ में राजकीय वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर भारत के राष्ट्र-पति महामहिम डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भाषण देते हुये कहा था—"संस्कृत दुनिया की सबसे पुरानी भाषा है। ऋग्वेद इसका जीता जागता उदाहरण है। विश्व में इसकी बराबरी करने वाला कोई साहित्य नहीं है।" शताब्दियों तक विदेशियों के शासन के कारण हम अपने संस्कृत के अतुल ज्ञान भंडार को भूल गये। साथ ही विदेशियों ने इसके प्रति घृणा की भावनाओं को हमारे हृदय में भर दिया तथा इस भाषा को मृत भाषा बतलाया। आज देश स्वतन्त्र है, हमें राष्ट्रीय एकता की समस्या को हल करने के लिये त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत संस्कृत को स्थान देना चाहिये जिससे समस्त देशवासी संस्कृत को पढ़ कर एकता के सूत्र में आबद्ध हो सकें।

राष्ट्र के सेनानी, जनता के कण्ठहार, सेवा की मूर्ति और राष्ट्र के गौरव भारतरत्न स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने भा० अ० सं० विद्या पीठ के शिलान्यास के अवसर पर भारतीय संस्कृत अध्यक्ष पद से भाषण देते हुये कहा था—

"भारतीयता को जगाने तथा उसे मजबूत बनाने के लिये देश के प्रत्येक

बच्चे को संस्कृत का थोड़ा ज्ञान आवश्यक है।"

इसी अवसर पर भाषण देते हुये पूना विश्वविद्यालय के उपकुलपति स्वर्गीय डा० मधुकर विष्णु वाडेकर ने भी अपने भाषण में कहा था कि संस्कृत के द्वारा आत्मज्ञान की उपलब्धि की जा सकती है। देश के कल्याण के लिये हमें संस्कृत का अध्ययन करना चाहिये। यहीं तक नहीं संस्कृत से ही विश्व-कल्याण सम्भव है।" नवम्बर ६५ में भारत की सद्भावना यात्रा पर आये हुये नैपाल नरेश महाराज महेन्द्र ने भी संस्कृत भाषा के गौरव और महिमा का वर्णन करते हुये दिल्ली में निम्नलिखित विचार व्यक्त किये थे—

"आज की दुनिया में संस्कृत शिक्षा का प्रचार वैज्ञानिक तरीके से और व्यापक रूप से होना चाहिये॥" इससे ज्ञात होता है कि संस्कृत ज्ञान की कितनी आवश्यकता है। जीवन-निर्माण के लिए इसका ज्ञान होना कितना जरूरी है।

संस्कृत भाषा देश की एकता की समस्या को हल करने का प्रधान साधन है। साथ ही इसके द्वारा भारतीय जन-मानस में प्रेम भ्रातृभाव तथा गुरुजनों के प्रति श्रद्धा का आविर्भाव होगा। जिनसे हमारा चरित्र निर्माण होगा और हम देश व समाज की उन्नति करने में समर्थ हो सकेंगे। संस्कृत के प्रति अश्रद्धा के भाव पैदा करना विदेशी शासन की देन है। अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन द्वारा आयोजित केन्द्रीय संस्कृत मण्डल के सम्मान-समारोह मे केन्द्रीय संस्कृत मण्डल के नवनियुक्त अध्यक्ष एवं जम्मू कश्मीर के राज्यपाल डा० कर्णसिंह ने संस्कृत भाषा को राष्ट्र की एकता के लिए संजीवनी बताते हुये नवम्बर ६५ को दिल्ली मे कहा था—

"संस्कृत का महत्व आज भी किसी प्रकार भारत मे कम नहीं हुआ है। यह शाश्वत रूप से भारतीय संस्कृति का अनिवार्य अंग बन चुकी है। बहुत से लोग यह मानते हैं कि संस्कृत एक मृत भाषा है। परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि संस्कृत आज भी हमारे प्रत्येक क्षेत्र में विद्यमान है। आज हमें संस्कृत की सेवा इसलिये अनिवार्य नहीं करनी है कि उसे सेवा की आवश्यकता है। प्रत्युत हमें संस्कृत की आवश्यकता है। इसलिए उसकी सेवा परमावश्यक है, संस्कृत देश की एकता के लिये संजीवनी के समान है।"

इसके अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने भी वर्तमान काल मे संस्कृत भाषा की उपयोगिता और महत्व को बतलाया है और प्रत्येक देशवासी के लिये इसका पढ़ना आवश्यक बतलाया है। वास्तव मे संस्कृत मे अनन्त ज्ञान राशि का भण्डार है। यह गुण रत्नाकर है। इससे रत्नों को निकालना हमारी पात्रता पर निर्भर करता है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में हुए संस्कृत सेमीनार में भाषण देते हुये बिहार के राज्यपाल श्री अनन्तशयनम् आयंगर ने ६५ मे कहा था—

"संस्कृत संसार की समृद्ध भाषा है। इसका व्याकरण पूर्ण है। जिससे भाषा का मूल रूप निखर कर हृदयंगम हो जाता है। इसमें भारतीय संस्कृति का भण्डार निहित है। भाषा किसी देश की जानकारी का प्रतीक होती है। संस्कृत भाषा में भारतीयता का भण्डार भरा पड़ा है।"

इन उपर्युक्त महापुरुषों के कथनानुसार देश के विकास, भारतीय संस्कृति के ज्ञान एवं राष्ट्रीय एकता के विकास के लिये आवश्यक है कि सम्पूर्ण भारत में संस्कृत की अनिवार्य रूपेण शिक्षा दी जाय। संस्कृत का भविष्य उज्ज्वल है। इसके शाश्वत् प्रवाह को कोई अवरुद्ध नहीं कर सकता। इसके निर्मल स्रोत में अवगाहन करके ही भारतीय सुख और शान्ति का अनुभव करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही संसार में अध्यात्म ज्ञान का प्रचार कर सकेंगे।

आज इसके महत्व को समझ कर ही बिहार, राजस्थान और मध्यप्रदेश की सरकारों ने हायर उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं तक इसे अनिवार्य विषय बना दिया है। उत्तर प्रदेशीय सरकार ने भी जूनियर हाई स्कूल कक्षाओं (कक्षा ८) तक इसे अनिवार्य कर दिया है। आशा है भविष्य में यह हाई स्कूल कक्षाओं तक अनिवार्य कर दी जाएगी अखिल भारतीय संस्कृत मण्डल ने भारत सरकार को परामर्श दिया है कि वह देश में भाषा विषयक विवाद को दूर करने के लिये, उत्तर व दक्षिण के भेदभाव मिटाने के लिये समस्त भारत में हायर सेकण्डरी कक्षाओं में संस्कृत को अनिवार्य विषय बना दिया जाय। इसके अनिवार्य हो जाने पर बच्चों में प्रेम और भ्रातृभाव का समावेश होगा। अनुशासन हीनता की समस्या का अन्त हो जायेगा। भारतीयों में पुरातन भारतीय-संस्कृति का ज्ञान होगा। राष्ट्र-भाषा हिन्दी का विकास होगा और इसके प्रति विद्वेष भावना भी कम हो जायेगी। आदर्श नागरिक बनकर हम निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा करके इसकी समृद्धि और सम्पन्नता की अभिवृद्धि करने में अपना पूर्ण योग प्रदान कर सकेंगे।

सिद्धान्त-विमर्श

पुनर्जन्म

[ले०—श्री एस० बी० माथुर, मेरठ]

आर्यमित्र के १० जुलाई और २१ अगस्त १९६६ के अंकों में इस विषय के मेरे दो लेख प्रकाशित हो चुके हैं। यह बड़े हर्ष की बात है कि निष्पक्ष हृदय वाले ईसाई भी पुनर्जन्म के सिद्धांत की सत्यता को मानने लगे हैं। इस सम्बन्ध मे मिस्टर बैंजामिन डायलर का ऋषीकेश के मुख्य अंग्रेजी पत्र 'डिवाइन लाइफ जरनल' के अंकों में दो लेखों मे पुनर्जन्म पर अपने विचार प्रकट किये हैं। ये लेख उक्त जरनल के जौलाई ६५ अंको मे प्रकाशित हुए हैं। जिनका तात्पर्य नीचे दिया जाता है।

निस्सन्देह संसार में इसको न्याय नहीं कहा जायगा। यदि मनुष्य की जीवन ज्योति का निर्माण प्रकृति (नेचुरल) का आकस्मिक कार्य ही हो। नहीं। इसके लिए अवश्य कोई नियम होना चाहिए। यह दूसरी बात है कि मनुष्य को उसकी अभी तक जानकारी नहीं हुई है। ऐसा नियम भगवान की अच्छाई और न्याय के प्रति विश्वास जमा सकने में भी सहायक हो सकता है। मैंने इस विषय पर एक ईसाई पादरी से पूछताछ की और उसके उत्तर से मुझे आश्चर्य हुआ। ईसाई पादरी ने कहा कि वह इसका उत्तर नहीं दे सकता। अगर आप चाहें तो पूर्व मे जाकर इस शंका का समाधान करें। मैंने ऐसा ही किया और पूर्व में जो मुझे उत्तर मिला वह यह है कि मनुष्य एक अनादि आत्मा निःसन्देह भगवान् का एक अंश है जो सदा पूर्णता और भगवान् के दर्शन प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रहता है। परन्तु इसके लिये बहुत समय की आवश्यकता है। कारण यह है कि संसार में ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने की सीमा बहुत विस्तृत है। ईसाई सिद्धान्त के अनुसार इस पूर्णता प्राप्त करने का कार्य मरने के बाद आत्मिक लोक में ही होता है। क्योंकि पश्चिम मे अभीतक पुनर्जन्म के सिद्धान्त को बहुधा स्वीकार नहीं किया गया है। परन्तु पूर्व मे इसके विपरीत माना जाता है। उनका यह विश्वास है कि मनुष्य को इस धरती पर ही पूर्णता प्राप्त करनी है। जो एक जीवन मे असम्भव है और इसीलिए उनका विश्वास है कि मनुष्य को बहुत से जीवनों में से गुजरना पड़ता है। ये सभी जीवन हार के मोतियों के समान जुड़े रहते हैं और यहां पर ही इसको मनुष्य की जीवन ज्योति के निर्माण के रहस्य का उत्तर मिलता है। जैसे-जैसे आत्मा बहुत से जीवनों के मार्ग में सफर करती है उस पर कारण व परिणाम (कौज एण्ड इफेक्ट) का नियम लागू

(शेष पृष्ठ १२ पर)

साथ ही दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि इस गौरवशालिनी राष्ट्रीय एकता की प्रसारक संस्कृत भाषा को कोठारी शिक्षा आयोग की २९ जून ६६ को प्रकाशित प्रतिवेदन में संस्कृत को वह स्थान नहीं दिया गया जो स्वतन्त्र भारत में होना चाहिये। संस्कृत को आयोग ने अरबी भाषा की समकक्षता में रखा है तथा कक्षा ८ से ऊपर इस संस्कृत भाषा के अध्ययन को अनावश्यक बतलाया है। साथ ही सरकार को यह भी परामर्श दिया है कि भविष्य में संस्कृत विश्वविद्यालय न खोले जायें। बलिहारी है ऐसे राष्ट्र के कर्णधारों पर तथा भारत भाग्य-विधाताओं पर जिन्होंने परम पावनी, पतितोद्धारिणी, पापनाशिनी तथा भारतीय संस्कृति प्रेरयित्री संस्कृत के महत्व को अब भी नहीं जाना। अतः आवश्यक है ऐसे आयोग का सर्वथा बहिष्कार किया जाय और संस्कृत भाषा को भारत भर के शिक्षालयों में अनिवार्य विषय बनाने के लिये प्रबल जनमत तैयार किया जाय और जनता को जागृत किया जाय। संस्कृत भाषा के अनिवार्य होने पर ही भारत से भाषा भेद समाप्त हो जायेंगे और भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान होगा साथ ही राष्ट्रीय एकता में संस्कृत का परम सहयोग प्राप्त होगा और देश की समृद्धि होगी।

★

गोपाल कृष्ण की भूमि में—

गोहत्या भारत माता के लिए कलंक

[ले०—श्री मधुकर सवार, दयानन्द भवन, नागपुर]

भारतीय संस्कृति के अनुसार हमारी तीन मातायें हैं। एक जन्म देने वाली माता या मातृशक्ति दूसरी गो माता और तीसरी भारतमाता। ईमानदार देशभक्त इन तीनों माताओं का आदर करता है। यजुर्वेद में भगवान से प्रार्थना की गई है।

आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्य शूर इषव्योऽति-व्याधि महारथी जायताम्
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः
पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो
युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः
कल्पताम्। (यजुर्वेद)

अर्थात् भगवान् हमारे देश में ब्राह्मण और क्षत्रियों का निर्माण करे गाय, साड, घोड़े, सुन्दर तथा बलवान् हों, जब आवश्यकता हो बादल बरसें, वनस्पति फलें फूलें, सब का योग और क्षेम हो। वैदिक काल में जब तीनों माता सुरक्षित थी संसार में भारत को सुवर्ण भूमि कहा जाता था। वैदिक काल की सुवर्ण भूमि भारत माता का गोहत्या से पतन हो रहा है। भ्रष्टाचार, दुराचार, स्वार्थपरता तेजी से बढ़ रही है और आज इस कलंक के कारण भारत माता को भिखारी होना पड़ा है। मातरः सर्व भूतानां गावः सर्व सुखप्रदाः। अर्थात् गाय समस्त प्राणियों की माता तथा समस्त सुखों को देने वाली है। धार्मिक दृष्टि से धर्म निरपेक्ष राज्य में हमारी धार्मिक भावनाओं को दृष्टि में रखते हुए एक भी गाय, बैल, बछड़ा, बछड़ी और सांड़ का, चाहे वह बुड्ढा हो, बीमार हो, किसी भी आयु का हो उसका कतल करना पाप है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि 'गो आदि पशुओं के नष्ट हो जाने से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है।'

स्वराज्य मिलने के पूर्व यह आशा थी कि स्वराज्य के बाद गोहत्या बन्द होगी लेकिन आज नित्य तीस हजार गोवंश की हत्या हो रही है जो अंग्रेजों के काल से भी बढ़कर है। कांग्रेस के राज्य में द ने खलों का निर्यात तथा गोचर भूमि को समाप्त कर, भ्रष्टाचार जातीयता, घूसखोरी को प्रोत्साहन देकर देश में अच्छे सांडों की कमी होते हुए भी अच्छे सांडों का विदेशों को निर्यात तथा गोरक्षा की भावना को नष्ट कर आज की कांग्रेस सरकार गौ की सबसे बड़ा शत्रु बन रही है। आज अपंग और वृद्ध ही नहीं सर्वोत्तम नसल की नौजवान दुधारू गाय की लाखों की संख्या में हत्या होती है और बड़ी संख्या में घी की खालें, गोमांस आदि विदेशों को भेजा जाता है। ऐसी गोहत्या संसार के किसी भी देश में नहीं होती और जब कि भारत कृषि प्रधान देश है। गोहत्या करके दूध रूपी अमृत को नष्ट कर सरकार विदेशों से दूध का सूखा पावडर मंगाती है, इससे बढ़कर और देश का पतन क्या होगा ?

कांग्रेसी कार्यकर्ता अपंग और वृद्ध गायों के नाम पर जनता को डराते हैं, भयभीत करते हैं। वास्तव में आर्थिक दृष्टि से अपंग गाय अभिशाप नहीं वरदान है। प्रथम योजना राष्ट्रिय आय रिपोर्ट १९५२ पशु संख्या विवरण १९५६ के अनुसार एक गाय के गोबर, गोमूत्र का आर्थिक मूल्य वार्षिक ४८) रुपया है और सरकारी विशेषज्ञों के मतानुसार गोसदन में गाय के रखने का खर्च वार्षिक ३६) रुपया है, अर्थात् १२) वार्षिक फायदा होता है। आज देश में एकड़ों जमीन ऐसी है, जिसमें मनों चारा उत्पन्न होकर नष्ट हो जाता है। इस भूमि में गोसदन बनाकर यदि अपंग, वृद्ध पशु रखे जायें तो उनका गोबर, गोमूत्र भूमि पर पड़ने से विशेष खर्च के बिना भूमि उपजाऊ बन सकती है। गोवंश देश को वार्षिक पन्द्रह सौ अरब रुपये की दूध, खाद खाल और बैलों के परिश्रम के रूप में देता है। इतना लाभ तो रेल्वे या किसी उपयोगी कारखाने से नहीं मिलता है।

कुछ लोग जनता को पथ-भ्रष्ट करते और कहते हैं कि घर-घर में गाय पालो, गाय का ही दूध, घी खाओ, गाय के चमड़े से बनी चीज का उपयोग न करो, गोहत्या आप बन्द हो जायगी। साधन सपन्न लोग ही ऐसा कर सकते हैं। सब लोग ऐसा करेंगे यह संभव नहीं है। आज की अपेक्षा वेदों के समय से लेकर मुसलमानों के समय तक गो पालन के अधिक साधन थे और गो हत्यारों को दंड देने के कानून बने थे। अत आज भी कानून से ही गोहत्या बन्द हो सकती है, गोहत्यारे को कड़ा दंड देना चाहिए। खाने, खाली और अच्छे सांड का विदेशों को निर्यात, गोचर भूमि का तुड़वाना आदि इस प्रकार की सरकारी नीति से गौ का रखना कठिन हो गया है। जो गौ रखे वही गौरक्षा की बात कहे यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता है। संसार के जिन लोगों ने अपनी मातृभूमि स्वतन्त्र कराने का काम किया क्या वह भूमि के मालिक थे ? गांधी जी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, नेहरू जी, शास्त्री जी आदि के पास कोई जमीन नहीं थी। शास्त्री जी के पास तो मकान की भी भूमि न थी, फिर भी वह लोग देश की चप्पे चप्पे जमीन के लिए जिए और मरे। मातृभूमि की स्वतन्त्रता की तरह ही गोरक्षा-भावना का प्रश्न है। यदि देश के सब लोग कतल किए चमड़े का व्यवहार छोड़ दें तब भी विदेशों को जो गाय, बछड़ों की खालें निर्यात की जाती हैं उसके लिए तो गौ का कतल जारी रहेगा ही। जब तक कानून के द्वारा गो हत्या बन्द नहीं होगी अच्छे पशु भी कतल से नहीं बचेंगे और देश तबाह हो जाएगा।

महात्मा गांधी जी व अन्य कांग्रेसी नेताओं ने स्वराज्य प्राप्त होने के पहिले कहा था कि स्वराज्य प्राप्त होते ही गोहत्या बन्द कर दी जावेगी लेकिन आज १९ वर्ष होने पर भी गोहत्या बन्द नहीं हुई और पहिले की अपेक्षा अधिक हो रही है। इस कलंक को मिटाने के लिए आर्यसमाज, स्वामी करपात्री जी महाराज, ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी, स्व० लाला हरदेवसहाय जी व अन्य महापुरुषों ने गोहत्या बन्दी आन्दोलन चलाये और सरकार के गोहत्या बन्द करने के आश्वासन पर आन्दोलन बन्द कर दिए लेकिन गोहत्या बन्द नहीं हुई। प्रयाग में कुम्भ मेला के अवसर पर सन्त सम्मेलन के निश्चयानुसार रामनवमी तक सरकार का कोई उत्तर न मिलने पर देश के साधु महात्माओं ने दिल्ली में आन्दोलन आरम्भ कर दिया जिनको सरकार ने तिहाड़ जेल में बन्द कर दिया, यह सरकार का कार्य सर्वथा अनुचित है।

अब समय आ गया है कि गोप्रेमी गोरक्षा के लिए राष्ट्रव्यापी आन्दोलन शुरू कर दें। यदि सरकार सन्तों की मांगों को स्वीकार नहीं करती तो राष्ट्रव्यापी आन्दोलन की घोषणा मुनि सुशील कुमार जी ने कर दी है। गोवर्धनपीठ जगन्नाथपुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेवतीर्थ महाराज ने गो हत्या के कलंक को दूर कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने की घोषणा की है उसके बलिदान के पश्चात् ज्योतिर्पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी कृष्णबोधाश्रम महाराज भी अपने प्राणों की आहुति देंगे। श्री ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी महाराज जी ने भी आने वाली गोपाष्टमी से आमरण अनशन की घोषणा की है। सरकार की गलत नीति के कारण ही इन महात्माओं को बलिदान की राह पकड़नी पड़ी है।

अब समय आ गया है भारत के इस गोहत्या कलंक को मिटाने के लिए "उत्तिष्ठित जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्" अर्थात् उठो, जागो और अपने कर्तव्य को पहचानों। जो लोग निजी लाभ की अपेक्षा करके राष्ट्र के लाभ को अधिक महत्व दें, जो हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार हो, देशभक्त हो वह संगठित होकर तन, मन, धन से इस महा आन्दोलन को सफल बनावें। गोमाता हमारी संस्कृति की प्रतीक है। उसकी लाज बचाना हरेक भारतीय का पवित्र कर्तव्य है। धर्म के लिए सदा बलिदान देने पड़े हैं और गो रक्षा के लिए भारतवासी सदा ही उत्सर्ग करते रहे हैं। भगवान श्रीराम और गोपालकृष्ण गोरक्षक थे, उन्होंने गोमाता की सेवा कर हमें आदर्श सिखाया है। उनके पद पर चलकर आज हमें राष्ट्र का नवनिर्माण करना है। तभी वेद की आज्ञानुसार हम संसार को आर्य बना सकते हैं।

●

सार्वदेशिक सभा द्वारा आगरा के समीप बनने वाले कसाईखाने का विरोध

यदि सरकार ने अपना निर्णय नहीं बदला तो आर्यसमाज आन्दोलन करेगा

श्रीमती सुचेता कृपलानी जी
मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश राज्य
लखनऊ

मान्या बहिन जी !

सादर नमस्ते !

जून १९६६ के योजन देहली में पृष्ठ ६ पर यह समाचार पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ और आश्चर्य हुआ कि आगरा के निकट हुबरतपुर ग्राम में एशिया का विशाल कसाईखाना जिसका नाम एक्सी केरेण्ड फ्रीज ड्राइड मीट प्लान्ट होगा बनने वाला है जहाँ सूखा मांस तैयार करने के लिए प्रतिदिन हजारों पशुओं की हत्या होगी। यह कार्य आटोमेटिक मशीन द्वारा होगा जो १२ करोड़ की पूंजी से डेनमार्क से मंगाई जा रही है।

जिस भूमि में इस कसाई खाने के निर्माण की योजना है वह १३० एकड़ बताई जाती है और आगरा से ३१ मील दूर एत्मादपुर और फीरोजाबाद की सीमा पर स्थित है।

समाचार में यह भी बताया गया है कि उत्तरप्रदेश सरकार ने १९५८ में इस भूमि में फलदार वृक्ष लगवाये थे और १९६५ में यह भूमि आगरा के मिलिटरी आफिसर को कसाई खाना बनाने के लिये सौंप दी गई थी।

प्रस्तावित कसाईखाने के निर्माण से वहां की शाकाहारी जनता बड़ी क्षुब्ध है। इससे न केवल उनकी भावनाओं को ही ठेस लगेगी अपितु यह उनके लिये सदैव परेशानी का कारण भी बन जायगा। उनकी खेती आदि पर जो दुष्प्रभाव पड़ने की आशंका है वह भी कम चिन्तनीय नहीं है।

यदि यह समाचार ठीक है जिसकी सत्यता में सन्देह नहीं जान पड़ता तो इससे न केवल उत्तर प्रदेश में ही अपितु समस्त भारत में रोष फैल जायगा जिसकी प्रतिक्रिया भयावह हो सकती है।

आपसे प्रार्थना है कि आप इस विषय में ठीक-ठीक जाँच पड़ताल करा के इस अनर्थ तथा भारत की सम्पदा पशुधन के विनाश को रोकने का समय रहते प्रबन्ध करने का कष्ट करें।

—रामगोपाल सभा मन्त्री
दयानन्द-भवन सार्वदेशिक आ० प्र० सभा देहली

आर्य समाज के अधिकारियों का निर्वाचन

श्रीमान् सम्पादक जी आर्यमित्र,

सादर नमस्ते,

३१-७-६६ के आर्यमित्र में 'सुझाव सम्मतियां' शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ आठ पर सम्पादक के नाम एक पत्र छपा है जिसमें पत्र लेखक ने क्या आर्य-समाज का मन्त्री गैर आर्यसमाजी बन सकता है।' यह प्रश्न आर्यसमाज के कर्णधारों के समक्ष रखकर एक अस्वस्थ लक्षण की ओर संकेत किया है और जिज्ञासा प्रकट की है कि आर्य जगत के विद्वान् इस समस्या के हल के लिये कोई वैधानिक उपाय बतायें ताकि भविष्य में ऐसी दुर्घटना पुनः जन्म न लेने पावे।

प्रजातान्त्रिक प्रणाली के इस स्वाभाविक रोग के निवारण के हेतु किसी आर्य विद्वान् ने लेखनी नहीं उठाई क्योंकि वे समझते हैं कि मतदान की शक्ति की चकाचौंध में निर्वाचन कला की तिकड़मबाजी के सामने गुणों का सत्कार पनपने नहीं पाता इस अस्त्र के प्रयोग में हमने वर्ण और आश्रम धर्म को भी धता बता दिया है जिसके फल-स्वरूप विद्वान् लोग भी हमारे संगठन से क्रियात्मक सम्पर्क रखना निभा नहीं पा रहे हैं।

हमारे देश में निर्वाचन कला की तिकड़म का राग अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचा हुआ है। यथा राजा तथा प्रजा। हमारे समाज का कोई अङ्ग इस रोग से मुक्त नहीं है। श्री मनुदेव अभय इन्दौर निवासी ने एक आर्यसमाज के निर्वाचन के मिस से इस भारतव्यापी रोग की ओर स्पष्ट रूप से ध्यान आकर्षित करके बड़ा सराहनीय साहस का परिचय दिया है। आर्यसमाज के अधिकारी तनिक ठंडे दिल से सोचें कि इस रोग से आर्यसमाज की छोटे से छोटी इकाई से लेकर बड़ी से बड़ी संस्था तक कौन मुक्त है। शायद दो चार या दस पांच ही मुक्त हों।

आर्यसमाज में इस रोग के पनपने में कई कारण हैं जिनमें से मुख्य उस नियम की अवहेलना है जो प्रजातान्त्रिक प्रणाली का प्राण कहा जा सकता है। अर्थात् किसी मुख्य लक्ष्य या योजना को सामने रखकर निर्वाचन करना जिससे समाज का प्रगति शील कर्म आगे आवे।

वैसे तो आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म प्रचार के लिये हुई और अब वह संगठित रूप से भारत और भारत के बाहर भी यथा शक्ति संसार के उपकार में लगा हुआ है। उसके संगठन में भी अभी त्रुटियां हैं। परन्तु देश और काल को देखते हुए भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अपनी संस्कृति के किसी विशेष अङ्ग या अङ्गों पर अधिक महत्व देने पर वह जनता के आकर्षण का पात्र बन सकता है, तब न धन की कमी रहेगी और न प्रगतिशील जन की। इस प्रकार से यदि किसी योजना को सामने रखकर आर्यसमाज के निर्वाचन हों तो गैर आर्यसमाजी अनुकूल वातावरण के अभाव में या तो स्वमेव पीछे हट जायगे या साहस का परिचय देकर अपने को सुधार कर समाज के उपयोगी सदस्य बन जावेंगे। आजकल निर्वाचन में कोई लक्ष्य नहीं रक्खा जाता। इस कारण अपात्र को तिकड़मबाजी के कारण खुला अवसर मिलता है जिसका परिणाम यह है कि हमारी कथनी और करनी में आकाश और पाताल की भिन्नता आ गई है और अनेक स्थलों में हम अब कथनी में भी पीछे रह गये हैं। आशा है आर्य जगत् में इस समस्या के सम्बन्ध में गम्भीर विचार किया जायगा।

चन्द्र सहाय
सभासद् आर्यसमाज मूड बरेली

★

(पृष्ठ १० का शेष)

होता है। जैसा कि बाइबिल में कहा गया है और पश्चिम वाले मानते हैं "जो बोवेगा वही काटेगा। यही वह नियम है, परन्तु बहुत से मनुष्य इस पर गम्भीरता से विचार नहीं करते। यदि वे ऐसा करें तो उनको अपने कथन व कर्म पर बहुत तत्पर रहना होगा। ठीक इसी नियम के अनुसार हम अपने आगामी जीवन को बनाते हैं। जैसे कर्म करेंगे वैसे ही भोगेंगे। बहुत से मनुष्य इस सिद्धान्त को इसलिये नहीं मानते हैं कि इससे उन पर बड़ा उत्तरदायित्व आ जाता है। जिसको वे पसन्द नहीं करते। परन्तु कुछ भी हो पूर्व वालों को यह स्वीकार है कि मनुष्य के जीवन में कारण व परिणाम का नियम लागू होता है। इस तरह के जीवन में वृद्धि करते हैं, जिससे कोई पुरुषार्थ बेकार नहीं जाता जो इस जीवन में पूरा न कर सके वह अगले जीवन में करेगे यदि इ०... प्रबल है।

सारांश यह है कि जो कुछ अच्छा बुरा हमने सीखा या उसके अनुसार ही हमारे अगले शरीर और स्वभाव का निर्माण होता है।

*[वैदिक सिद्धान्तानुसार जीवात्मा परमात्मा से पृथक् है। —सम्पादक]

★

(पृष्ठ ८ का शेष)

अब इन सब आन्दोलन करने वाले नेताओं से सम्पर्क करने के बाद यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि वे सब यह निश्चय कर चुके हैं कि देश से गोवध बन्दी कराने में भले ही हमारे प्राण चले जाएं कुछ लोगों का यह भी विचार है कि यदि सरकार शान्त आन्दोलन से नहीं मानेगी तो साधु महात्मा घर-घर जाकर अगले चुनाव में ऐसी सरकार को वोट न देने की अपील करेंगे कि यह सरकार गोवध कराती है। इन सबका कहना है कि धार्मिक आर्थिक और सांस्कृतिक तथा संवैधानिक दृष्टि से गोवध बन्द किया जाना आवश्यक है। इसके बिना हम चैन नहीं लेंगे।

★

नारायण स्वामी जन्म शताब्दी की सफलता में सहयोग दें

नारायणस्वामी जन्म शताब्दी का कार्यालय गुरुकुल में खुल गया है। नारायणस्वामी जी के भक्तों में से जो शताब्दी कार्य में सहयोग देना चाहें गुरुकुल से सम्पर्क स्थापित करें। यदि वे शताब्दी तक गुरुकुल में रहकर सहयोग देना चाहें तो उनके निवास भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में कर दी जायगी।

—नरदेव स्नातक एम०पी०
संयोजक नारायणस्वामी जन्म शताब्दी
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

आर्यसमाजों, शिक्षण-संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के लिए सुनेहला अवसर !

वेद प्रचार सप्ताह

के उपलक्ष में

३० सितम्बर ६६ तक १०) में निम्न पुस्तकें मंगाइये, डाक व्यय पृथक।

★ रेल द्वारा मंगाने पर व्यय कम पड़ेगा। ★

अभिनन्दन ग्रन्थ (वेदमन्त्रों की विशद् व्याख्या सहित)	मूल्य	१०.००
ऋग्वेद रहस्य	,,	५.००
सभा का ७५ वर्षीय इतिहास	,,	२.५०
विरजानन्द चरित	,,	०.५६
स्त्री ज्ञान दर्पण	,,	०.५०
ईशोपनिषद् (अंग्रेजी अनुवाद) महात्मा ना० स्वामी कृत	,,	०.२५
पिप्पलाद संहिता	,,	०.१९
		१९.००

शीघ्रता कीजिये !

क्योंकि प्रतियाँ न्यून मात्रा में हैं।

अधिष्ठाता

घासीराम प्रकाशन विभाग

आ०प्र० सभा, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् द्वारा चालित सबसे पुरानी धार्मिक परीक्षायें, सिद्धान्त सरोज, सि० रत्न, सि० भास्कर, सि० शास्त्री, सिद्धान्त वाचस्पति में बैठिए।

सुन्दर उपाधि, प्रमाण पत्र, प्रशंसापत्र प्राप्त कीजिए। ये मान्य परीक्षायें गत ब्यालीस वर्षों से धार्मिक ज्ञान, संस्कृति, शिष्टाचार तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में सहायक रही हैं।

फार्म और नियमावली कार्यालय से निःशुल्क मंगाइये।

डा० प्रेमदत्त शर्मा शास्त्री

परीक्षा मंत्री

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

परीक्षा कार्यालय अलीगढ़ उ० प्र०

'आयुर्वेद की सर्वोत्तम, कान के बीसों रोगों की एक अक्सीर दवा'

अवश्य पढ़िये …… **कर्ण रोग नाशक तैल** …… रजिस्टर्ड

कान बहना, शब्द होना, कम सुनना, दर्द होना, खाज आना, सांय सांय होना, मवाद आना, कुलना, सीटी सी बजना, आदि कान के रोगों में बड़ा गुणकारी है। मू० १ शीशी १।), एक दर्जन पर ४ शीशी कमीशन में अधिक देकर एजेन्ट बनाते हैं, अंर्चा पैकिंग-पोस्टेज खरीदार के जिम्मे रहेगा। बरेली का प्रसिद्ध रजि० 'शीतल सुरमा' से आंखों का मैला पानी, निगाह का तेज होना, दुखने न आना, अंधेरा व तारे से दीखना, धुंधला व जुकली नजर, पानी बहना, जलन, सुर्खी, रोहों, आदि को शीघ्र आराम करता है, एक बार परीक्षा करके देखिये, कीमत १ शीशी २), आज ही हमसे मंगाइये। पत्र साफ-साफ लिखियेगा। समय पर प्रयोग को हमेशा पास रखिये॥

'कर्ण रोग नाशक तैल' का आत्माराम आर्य, मछीआबाद यू.पी.

आवश्यकता

एक योग्य विद्वान् आर्य पुरोहित की आवश्यकता है। कृपया अपनी योग्यताओं एवं अनुभव सहित प्रार्थना-पत्र भेजिये।

—मन्त्री

आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली

आवश्यकता

आर्यसमाज हिसार के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो कि प्रवचन और संस्कारादि के कार्यों में निपुण हों। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। पुरोहित पद के इच्छुक महानुभाव निम्नलिखित पते पर प्रार्थना-पत्र भेजने की कृपा करें।

—मन्त्री आर्यसमाज हिसार

विश्वकर्मा वंशज बालकों को (७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिरनिधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा ककुहास की पुण्यस्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अकबरपुर जिला कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) को धन-राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद सं० २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को प्रस्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब; असहाय किन्तु होनहार बालक-बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को ।) के स्टाम्प भेज कर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

४—दान दाता की इच्छानुसार विश्वकर्मा वंशीय मनु, मय, त्वष्टादि गरीब पं० ब्रा० बालक बालिकाओं के लिए प्रथम सहायता दी जायगी।

५—उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना आर्यमित्र पत्र में उत्साहार्थ अधिकतर सूचनार्थ प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी और दान दाता को 'मित्र' पत्र के प्रत्येक अङ्क बिना मूल्य मिलते रहेंगे।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

लखनऊ में हमारी औषधियां निम्न स्थान से प्राप्त करें।

(१) श्री एम० एम० [illegible]

२०—२१ [illegible]

(२) डा० धर्मदेव [illegible]

सोहन आयुर्वेदिक [illegible]

कन्याओं का यज्ञोपवीत

कोण्डा आर्यसमाज के वरिष्ठ सदस्य श्री बद्रीप्रसाद जी आर्य के द्वारा अपने उद्योग—प्रतिष्ठान भवन में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन श्रावणी पर्व के बृहद् यज्ञ से सुसम्पन्न होकर उनके दोनों कन्याओं सुश्री सुशमा देवी तथा सुश्री सुषमा आर्या का उपनयन संस्कार समाज पुरोहित श्री शिवचेतन जी वैद्य श्रीमती कृष्णा चन्द्रा वार्ष्णेय के सुजन आचार्यत्व में सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर उदारमना श्री बद्रीप्रसाद जी ने १२५) रुपये का सहृदय दान विभिन्न धार्मिक संस्थाओं तथा विद्वानों को दिया।"

हीरक जयन्ती व वेद सम्मेलन का आयोजन

अजमेर (डाक से)

यहाँ आनासागर स्थित ऋषि उद्यान में आगामी १९ नवम्बर से २२ नवम्बर १९६६ तक होने वाले राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के हीरक जयन्ती (७५ वर्षीय महोत्सव) समारोह की तैयारियां जोर शोर से जारी है। समारोह के स्वागत मन्त्री श्री श्रीकरण शारदा ने घोषणा की है कि यह समारोह राजस्थान का एक महान् ऐतिहासिक धार्मिक मेला होगा जिसमें विशेष रूप से बृहद् महायज्ञ तथा वेद सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जायगा। वेद सम्मेलन की अध्यक्षता राजस्थान के राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द जी करेंगे।

अन्य आयोजनों में आर्य महा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आर्य भाषा सम्मेलन, गो रक्षा सम्मेलन तथा अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन प्रमुख हैं।

राजस्थान की आर्यसमाजों का इतिहास

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान डा० मथुरालाल जी शर्मा मन्त्री प० भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण तथा हीरक जयन्ती के स्वागत मन्त्री श्री श्रीकरण शारदा ने राजस्थान एवं भूतपूर्व मध्यभारत की समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, प्रमुख आर्य महानुभावों, आर्यसमाज के सहायकों और सराहना करने वालों का हीरक जयन्ती के अवसर पर इतिहास प्रकाशित करने के निश्चय की घोषणा करते हुये अपील की है कि जिन लोगों के पास आर्यसमाज की जानकारी के ऐतिहासिक तथ्य व प्रमाण हों वे हीरक जयन्ती के आयोजकों के नाम तुरन्त भिजवाने का कष्ट करें। प्रान्त की समस्त आर्यसमाजों से भी अपने-अपने सचित्र वृत्त भेजने का आग्रह किया गया है।

उत्सव—

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम पुलकाली नदी (अलीगढ़) का वार्षिक उत्सव दिनांक १९, २०, २१ नवम्बर को मनाना निश्चित हुआ है। —हरिहरानन्द

—आर्यसमाज मैनपुरी का वार्षिक उत्सव २५, २६, २७, २८ नवम्बर ६६ को सम्पन्न होना निश्चित हुआ है।

आर्यसमाज हरदोई

आर्यसमाज हरदोई की यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि भारत में गोहत्या निषेध के लिए अविलम्ब कानून बनाकर संविधान के निर्देश की पूर्ति करे व भारतीय जनता की चिरप्रतीक्षित कामना को पूर्णकर उसकी भावनाओं के प्रति सम्वेदनशीलता प्रदर्शित करे।

उत्सव—

आर्यसमाज, हरदोई का ८२ वाँ वार्षिकोत्सव २१, २२ तथा २३ अक्तूबर सन् १९६६ ई० दिन शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को आर्य कन्या पाठशाला इन्टर कालेज, हरदोई में होगा।

—मन्त्री आर्यसमाज हरदोई

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
भाद्र २० शक १८८८ भाद्र कृ० ११
(दिनांक ११ सितम्बर सन् १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष्य २१६११ तार 'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

देहली में एक मुस्लिम लड़की की शुद्धि

किंग्टोरोड आर्यसमाज में १८ अगस्त को बफहर नहीं बमम नामक एक मुस्लिम लड़की की शुद्धि सस्कार श्री हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ने कराया और वैदिक हिन्दू धर्म की दीक्षा दी और उसका विवाह श्री हरिहर वेंकटराम शर्मा हैदराबादी के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली के कई गणमान्य नेता उपस्थित थे जिनमें श्री [illegible] बिहारी लाल, श्री देवकीनन्द गोयल, श्री रामनाथ अरोड़ा, श्री अवनीन्द्र जी प्रधान, श्री मूलचन्द जी मन्त्री तथा श्री ओमप्रकाश जी अरोड़ा के नाम उल्लेखनीय है। लड़की का नाम आशा रक्खा गया।

उत्सव

आर्यसमाज बाकनेर जि० अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव दिनाक २७, २८ व २९ मई १९६६ को हुआ जिसमे निम्न विद्वानो के ओजस्वीपूर्ण भाषण हुये श्री बिहारीलाल जी शास्त्री, श्री शिवपाल सिंह जी श्री शिवकुमार शास्त्री श्री विश्वबन्धु शास्त्री श्री ओम प्रकाश शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा, श्री जयपाल सिंह मानव श्री महीपाल सिंह श्री देवेन्द्र तूफान श्री मक्खनसिंह, श्री श्रीचन्द्र जी एवं अन्य विद्वान

आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास श्री सुरेन्द्र कुमार जी उद्योगपति अलीगढ़ के कर कमलों द्वारा ता० २९.५.६६ को ही हुआ। उन्होंने मन्दिर के निर्माणार्थ १०००) दान दिया इसके अतिरिक्त भूतपूर्व प्रधान स्वर्गीय स्वरूप लाल जी की पत्नी लीलावती देवी ने भी १०००) दान दिया। इसके अतिरिक्त और काफी धन भी प्राप्त हुआ। हम समस्त कार्यकर्ताओं तथा दाताओं के प्रति आभारी हैं।

प्रभाव को देखकर बम्बई के नागरिकों में यज्ञ की महानता तथा यज्ञ के प्रति श्रद्धा जागृत हुई।

भगवती प्रसाद [illegible]
मन्त्री
केन्द्रीय आर्य प्रचार समिति बम्बई
३०२ मिमानो स्ट्रीट माटुंगा बम्बई-१९

गोवध निषेध

आर्यसमाज फिरोजाबाद में आज दिनांक २८-८-६६ की यह बैठक सर्वसम्मति से भारतीय संविधान के आधार पर गौ आदि उपयोगी पशुओं के लिये दिये गये आश्वासन के विरुद्ध देश मे हो रहे इस गौवध को घृणा और रोष की दृष्टि से देखती है तथा वह भारतीय सरकार से निवेदन करती है कि इस गौवध को वैधानिक रूप से बन्द कर भारतीय संस्कृति के प्रतीक गौ के प्रति अपनी सत्य श्रद्धा प्रकट करें तथा सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली को आर्यसमाज यह सभा पूर्ण विश्वास दिलाती है कि इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के द्वारा चलाये गये आन्दोलन में सब प्रकार का सक्रिय सहयोग देगी।

सात्विक दान

दिनांक २८ अगस्त को आ० स० अजमेर के वार्षिक अधिवेशन मे विद्वान श्री दत्तात्रेय बाब्ले एम० ए० प्रधान तथा श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० सर्वसम्मति से मंत्री निर्वाचित हुये। इस अवसर पर डा० सूर्यदेव जी ने समाज भवन मे ध्वनिविस्तारक यन्त्र लगाने के लिए १०००) रु० का दान घोषित किया इससे पूर्व वह ८०००) रु० इसी समाज को सत्यार्थ प्रकाश वितरणार्थ तथा ७५००) रु० आर्य साहित्य मण्डल को सत्यार्थ प्रकाश के सस्ते संस्करणार्थ तथा १००००) रु०, आर्यमित्र सार्वदेशिक सभा आदि को दान कर चुके हैं। बधाई है।

आ. स. महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर के तत्वावधान मे वेद प्रचार सप्ताह दिनांक २२ से २८ अगस्त ६६ तक नगर के मध्य मे रायबहादुर सेठ नरसिंहदास जी डागा की कोठी मे मनाया गया। प्रात यज्ञ भजन तथा उपदेश होते थे। आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वा० सर्वानन्द जी सरस्वती श्री प० मुनीश्वरदेव जी महोपदेशक [illegible] सभा तथा श्री अमरनाथ जी [illegible] के वेद कथा तथा शिक्षाप्रद भजनोपदेशो से बहुत ही प्रभाव पूर्ण प्रचार हुआ।

वेद कथा सप्ताह का आयोजन

आर्यसमाज मलाही (चम्पारण) में वेद कथा सप्ताह १९ अगस्त तक समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमे श्री रामजी प्रसाद गुप्त 'आर्य भिक्षक', श्री ठाकुर नन्दलाल जी और प० राम देव शर्मा भजनोपदेशक पधारे थे। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

आ. स. बड़राव में श्रावणी पर्व

आर्यसमाज बड़राव (आजमगढ़) मे ३० अगस्त को श्रावणीपर्व के उपलक्ष में श्रीमान प० द्वारिका प्रसाद शर्मा जी उपदेशक द्वारा आर्य्य पर्व पद्धति के अनुसार वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रीराम अवध जी का उपनयन संस्कार भी हुआ।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद

श्री रामकुमार जी शास्त्री एम०ए० का प्रचार प्रोग्राम मास सितम्बर ६६।

ता० ४ आर्यसमाज कुन्दरकी, ८ हसनपुर, ११ बहजोई, १८ ठाकुरद्वारा, २५ सम्भल २।१०।६६ काशीपुरा।

आर्यसमाजों के अधिकारियो से निवेदन है कि शास्त्री जी के पहुंचने पर प्रचार की व्यवस्था करें।

—हरिश्चन्द्र आर्य मंत्री

आर्यसमाज रोसड़ा

आर्यसमाज रोसड़ा जिला दरभंगा के नये वर्ष के अधिकारियों का निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआ है।

प्रधान—श्री देवनारायण पूर्वे, उप प्रधान—श्री अनूपलाल पूर्वे, मंत्री—श्री सीताराम ठाकुर, उपमंत्री—श्री मुनीदेव पोद्दार कोषाध्यक्ष—श्री बद्रीप्रसाद जी लेखा निरीक्षक—श्री रामविलास राउत पुस्तकाध्यक्ष—श्री पुष्पकुमार पविवार।

ग्राम खन्द्रावली में ३७१ ईसाइयों की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री हजारीलाल आर्य ने २१-८-६६ को ग्राम खन्द्रावली जि० मुजफ्फरनगर मे एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमे ३७१ ईसाइयों ने हिन्दू वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धि संस्कार श्री हरिप्रसाद वानप्रस्थी ने कराया। श्री रामजीदास कल्याण प्रधान [illegible] जनपद मेरठ व श्री बीरचन्द जी के भी भाषण हुए। भजनो और व्याख्यानों द्वारा ग्राम में दो दिन वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। प्रचार से ग्रामीण जनता बहुत प्रभावित हुई। श्री हरिदत्त शर्मा ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से शुद्ध होने वालों का स्वागत और बाहर से पधारे सभी महानुभावों का धन्यवाद किया

—द्वारकानाथ शर्मा

निर्वाचन

आर्यकुमार सभा जनक नगर, सहारनपुर के सदस्यों तथा अधिकारियों का नवनिर्वाचन २१ अगस्त १९६६ को हुआ।

(१) प्रधान श्रीमान [illegible] प्रकाश जी आर्य, (२) मन्त्री श्रीमान् धरम सिंह जी आर्य (३) कोषाध्यक्ष श्री मान् चन्द्रपाल जी आर्य, (४) पुस्तकाध्यक्ष श्रीमान् चरनसिंह हैं, (५) स० पु० अ० श्री मान् सत्यपाल जी आर्य, (६) निरीक्षक श्रीमान् धर्मवीर जी आर्य।

—ता० ३० अक्टूबर स० ६६ ई० को आर्यसमाज नेकोम (जि० मुजफ्फरनगर) का नव निर्वाचन हुआ—

प्रधान—श्री हरिशंकर शर्मा सराफ, उपप्रधान—श्री नरदेव जी शर्मा कोठी बसारी वाले, मन्त्री—श्री किशोर शर्मा, निरीक्षक—श्री रामदेव शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री महादेव जिज्ञासु अन्तरङ्ग—में ११ सदस्य निर्वाचित हुए तथा समाज जीर्णोद्धार हेतु चन्दा एकत्र हुआ जिसका विवरण निम्नलिखित है—

१०१) श्री हरीशंकर जी प्रधान; ५१) श्री नरदेव जी उप-प्रधान २१) श्री किशोर शर्मा मन्त्री, ५१) श्री छद्दी लाल, ११) श्री निरंजन लाल [illegible] उप मन्त्री, ११) श्री मूलचन्द [illegible] जिज्ञासु ५) श्री सुखदेव शर्मा।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेशके लिए जगबहादुर गर्गभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम शास्त्री द्वारा मुद्रित प्रकाशित

लखनऊ—रविवार भाद्र २७ शक १८८८ भाद्र शु० ४ वि० सं० २०२३ दिनांक १८ सितम्बर १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् यो देवेभ्य ऽ आतपति यो देवानां पुरोहित । पूर्वो यो देवभ्यो जातो नमोरुचाय ब्राह्मये ॥

भावार्थ—जो सब दिव्य शक्तियों को प्रकाशित करता है तथा जो उक्त देवों का अग्रनेता है एवं जो दिव्य शक्तियों के पूर्व से ही प्रसिद्ध है उस ब्रह्मानन्द के लिए नमन हो। २०॥

विषय-सूची

नारायण स्वामी जन्म शताब्दी

की सफलता के लिए आर्य जन सहयोग दें

आगामी दिसम्बर में इस आयोजन को सम्पन्न कर आर्यजगत्, देश विश्व का मार्ग दर्शन करें

महात्मा नारायण स्वामी जी ने आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बनाकर आर्यजनों को जो उत्तरदायित्व सौंपा था उसकी पूर्ति का संकल्प दोहरायें।

शताब्दी का व्यापक कार्यक्रम शताब्दी समिति तैयार कर रही है। आर्य जनता अपने सुझाव परामर्श आदि समिति के समीप भेजें।

शताब्दी समारोह के लिये धन संग्रह का कार्य आरम्भ हो गया है। सहयोग के इच्छुक समिति कार्यालय से रसीद मंगा लें और धन संग्रह आरम्भ कर दें।

शताब्दी कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है—

[illegible]

वार्षिक ८-६ [illegible]
विदेश १ पौं०
अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०
वर्ष ६८
[illegible] २०८

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा । मर्य इव स्व ओक्ये । १७॥

ऋ० १।९१।१३ ।

व्याख्यान—हे 'सोम' सोम्य सोमप्रदेश्वर ! आप कृपा करके 'रारन्धि, न हृदि' हमारे हृदय में यथावत् रमण करो । (दृष्टान्त) जैसे सूर्य्य की किरण विद्वानों का मन और गाय, पशु अपने-अपने विषय और घासादि मे रमण करते हैं, (दृष्टान्त का एक देश ग्रहणमात्र लेना) वा जैसे मर्य ' इव स्वे ओक्ये मनुष्य अपने घर में रमण करता है, वैसे ही आप सदा स्वप्रकाश युक्त हमारे हृदय (आत्मा) में रमण कीजिये, जिससे हमको यथार्थ सर्व ज्ञान और आनन्द हो ॥१७॥

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार १८ सितम्बर १९६६ दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

गोरक्षा आन्दोलन

★

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व सारे देश ने मना लिया । गोपालक कृष्ण के देश में गौ भक्ति का होना स्वाभाविक है । इस अवसर पर देशवासियों ने भारत में गो रक्षण एवं गो हत्या निषेध सम्बन्धी समस्त स्थिति पर गम्भीर विचार किया ।

देश में आज गोहत्या निषेध आन्दोलन व्यापक रूप धारण कर रहा है । वर्ष ९९ से भारत सरकार से मांग की जा रही है कि वह भारत भर में गोवध-निषेध की घोषणा करे और उसके लिये कानून बनावे परन्तु पहले तो सरकार ने इस मांग की ओर कोई ध्यान नहीं दिया परन्तु जब जत्थे और अनशन आरम्भ होने लगे और संसद के सम्मुख निरन्तर प्रदर्शन किये गये तब थोड़ी बहुत चिन्ता अवश्य दिखायी गयी फिर भी इस मामले को टालने की कोशिश की जाती रही । अत्यधिक दबाव पड़ने पर भारत सरकार के कृषि मन्त्री ने संसद में कहा कि यह विषय केन्द्र का नहीं है राज्यों से सम्बन्ध रखता है इसलिये राज्य सरकारें ही इस विषय में कानून बनायेंगी ।

इस वक्तव्य से गो रक्षक देशवासियों को सन्तोष नहीं हुआ और पूर्व प्रदर्शनों से बड़ा प्रदर्शन ५ सितम्बर को संसद के सम्मुख किया गया । यह प्रदर्शन अंतिम नहीं था सरकार की आँखें खुल जानी चाहियें । परन्तु ऐसा लगता है कि सरकार और स्वार्थ-शक्तियाँ चाहती हैं । श्री रामेश्वरानन्द जी ने गोरक्षा के कार्य पर अनशन का आरम्भ किया हुआ है, उनका स्वास्थ्य दिनों दिन कमजोर होता जा रहा है पर सरकार ने उनकी बात सुनने तक का कोई यत्न नहीं किया है । श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने गोहत्या निषेध कानून के सम्बन्ध में अपनी आवाज देश के प्रतिनिधियों तक पहुंचाने का यत्न किया पर उन्हें इस अधिकार से वंचित कर दिया गया । साहसी निर्भीक सन्यासी के रूप में स्वामी जी ने अपनी बात कहने के लिये सरकारी आज्ञा का उल्लंघन कर भाषण दिया । सरकार ने उनको कैद नहीं किया, इसे जहां वह अपनी समझदारी मान रही है वहां यह बात इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि सरकार गोवध-निषेध आन्दोलन का विरोध करने का साहस नहीं रखती है ।

इस आन्दोलन की पृष्ठ भूमि में सत्यता, नैतिकता एवं त्याग की भावना है । अतः सरकार उसका सामना करने से डरती है ।

सरकार के सम्मुख गोरक्षा आन्दोलन व्यापक रूप धारण कर चुका है । सरकार स्थिति का अध्ययन कर संविधान की निर्देश धारा ४८ के अनुसार राज्यों में गोवध-निषेध का कानून बनवाने की अविलम्ब व्यवस्था कर सकती है ।

अभी तक प्रधान मन्त्री और गृह मन्त्री में से कोई इस सम्बन्ध में अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करने को तय्यार नहीं था पर इस आन्दोलन के कारण कभी गृह मन्त्री कोई बात करने लगे हैं और कभी प्रधान मन्त्री कोई आश्वासन देने लगी हैं परन्तु उन सबसे कुछ होने वाला नहीं है ।

प्रधान मन्त्री ने कहा है कि गोरक्षा एवं गोवध बन्दी के सम्बन्ध में मैंने प्रत्येक राज्य के मुख्य मन्त्रियों को पत्र लिखे हैं और इस विषय पर विचार करने के लिए एक समिति भी बनाने को तैयार हूं । प्रधान मन्त्री की ये सब बातें दीर्घ सूत्री योजनायें हैं । वे यह अनुभव नहीं कर पा रही हैं कि गोहत्या की वर्तमान स्थिति से गोभक्तों की भावनाओं को जो व्यापक आघात पहुंच रहा है उससे वे लोग कितने व्याकुल हैं । इस व्याकुलता की अभिव्यक्ति श्री शंकराचार्य, श्री योगिराज सूर्यदेव, श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, श्री करपात्री एवं अन्य प्रमुख हिन्दू नेताओं की आमरण अनशन व्रत घोषणाओं में हो रही है । ईश्वर न करे देश को वह दुर्भाग्य दिन देखना पड़े जब ये महात्मा लोग भी आमरण अनशन व्रत धारण कर लें । उस समय देश में जो उद्विग्नता उत्पन्न होगी सरकार को उसकी चिन्ता करनी चाहिये । यदि सरकार सन्त फतेहसिंह की राष्ट्रीय एकता विरोधी मांग के लिये अग्निदाह की धमकी के सामने झुक सकती है तो गोवधबन्दी की मांग तो राष्ट्रहित में है उसे मानने से कैसे इन्कार कर सकती है । अभी समय है सरकार सोच ले और आने वाले संकट से बचने के लिये गोवध-निषेध की घोषणा कर दे अन्यथा देश को एक संकट का सामना करना पड़ेगा जिसका उत्तरदायित्व सरकार पर होगा ।

आर्यसमाज गोरक्षा आन्दोलन का सूत्रधार रहा है। प्रत्येक आर्य को गोरक्षा आन्दोलन की सफलता के लिये तन, मन धन सर्वप्रकारेण सहयोग देना चाहिये ।

●

सभा की सूचनाएं

श्री महा. नारायण स्वामी जयन्ती महोत्सव

गत सप्ताह आ० प्र० सभा के भूतपूर्व उपप्रधान एवं मन्त्री श्री प० प्रेम चन्द्र जी शर्मा हाथरस निवासी सभा भवन में पधारे । आपसे जयन्ती को सफल बनाने पर विचार होता रहा । आपने अपना अमूल्य समय सभा की प्रार्थना पर जयन्ती को देने का आश्वासन दिया । आप जयन्ती महोत्सव के सहायक संयोजक भी हैं और सभा के अन्तरंग सदस्य एवं आर्यसमाज हाथरस के प्रधान हैं ।

आपने उत्तर प्रदेश के समाजों से जयन्ती आन्दोलनार्थ एवं धनसंग्रह करने की योजना बनाई है जो शीघ्र ही आर्य-मित्र में प्रकाशित की जायगी ।

जो आर्यसमाज अपने नगर कस्बों, ग्रामों में जयन्ती के लिए प्रचारार्थ आमन्त्रित करें वे सभा कार्यालय को सूचित करने का कष्ट करें ।

जयन्ती का महोत्सव आप सर्व आर्य-बन्धुओं की सफलता पर ही निर्भर है ।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भक्ति को साकार रूप प्रदान करने के लिए समिति को अपना आर्थिक सहयोग दें और शताब्दी समारोह को सफल बनावें ।

जन्म-शताब्दी समिति के संयोजक श्री नरदेव स्नातक जी एम० पी०, उप-संयोजक श्री प० प्रेमचन्द्र शर्मा जी हाथरस, श्री प० शिवदयालु जी मेरठ, श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक (हल्द्वानी) बड़ी तत्परता पूर्वक समारोह की सफलता के लिए कार्य कर रहे हैं । आर्य जनता के सहयोग से ही यह कार्य सफल हो सकेगा शताब्दी सम्बन्धी समस्त पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें—

संयोजक—नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह समिति गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन (मथुरा) उ०प्र० ।

सभा की सूचना

सभास्थ अन्तरंग सदस्य एवं निरीक्षक महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि वर्षा समाप्ति पर है । शरद ऋतु का प्रारम्भ होने जा रहा है । अतः आप कृपा करके अपने अपने क्षेत्र के आर्य समाजों एवं संस्थाओं का निरीक्षण करने की कृपा करें ।

निरीक्षण करते समय निम्न बातों पर विशेष ध्यान दिया जाए—

१—प्रतिनिधि फार्म क्यों नहीं भेजे ?

२—सभा का दशांश, वेद प्रचार, सूबकोटि इत्यादि भेजा गया या नहीं ? यदि नहीं तो, क्यों नहीं भेजा गया । प्राप्त करने की कृपा करें ।

३—समाज के नियमपूर्वक साप्ताहिक अधिवेशन, पर्व इत्यादि होते हैं या नहीं यदि नहीं तो क्यों ?

४—समाज का निर्वाचन जनवरी या फरवरी मास में करने की प्रेरणा ।

५—दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में गुरुकुलोत्सव के साथ श्री महात्मा नारायणस्वामी जयन्ती महोत्सव में सम्मिलित होने की प्रेरणा की जाय और जयन्ती के लिए धन संग्रह की योजना बनाई जाए ।

६—आर्यकुमार समाजों एवं आर्य वीर दल पर विशेष बल दिया जाए । आर्यसमाज की सदस्यता पर बल दिया जाए ।

—सभा मन्त्री

वेद प्रचार सप्ताह में संग्रहीत धन भेजिये

सभा को यह ज्ञात कर अत्यन्त प्रसन्नता है कि उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाजों ने इस वर्ष "वेद प्रचार-सप्ताह" बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया है और वेद प्रचारार्थ प्रत्येक आर्य सभासद् एवं आर्य सदस्य बन्धु से १) एक रु० इस सप्ताह में संग्रह किया गया । जिन आर्यसमाजों ने अभी तक सप्ताह में वेद प्रचार के लिए १) प्रत्येक सदस्य से प्राप्त न किया हो तो उनसे प्रार्थना को

जाती है कि वह धन प्राप्त करने की कृपा करें और संग्रहीत धन तुरन्त सभा कोष कार्यालय लखनऊ के पते पर भेजने का कष्ट उठावें।

उपर्युक्त के सम्बन्ध में इस वर्ष जिन जिन समाजों के प्रतिनिधि फार्म (चित्र) सभा को प्राप्त हुए हैं, उन सभी समाजों को मुद्रित कार्ड सभा कार्यालय से आर्य सभासद् एवं आर्य सदस्य की संख्या पर वेद प्रचारार्थ धन भेजने के लिए भेजे गये हैं। इसके अतिरिक्त उन समाजों से भी निवेदन किया जाता है कि जिन्होंने प्रतिनिधि फार्म (चित्र) सभा कार्यालय में नहीं भेजे है, उन समाजों से भी यही प्रार्थना है कि अपने-अपने समाज के सभी सदस्यों से १) प्राप्त कर धन सभा में भेजने की कृपा करें।

—चन्द्रदत्त तिवारी सभा मन्त्री

मास सितम्बर के प्रोग्राम

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—१८ से २४ बाबत आटा, २६ से २ अक्तूबर बीसलपुर।

श्री बलवीर शास्त्री—१८ से २४ छिबाई।

श्री केशवदेव शास्त्री—२५ से २७ आ०स० रामनगर (नैनीताल)।

श्री रामस्वरूप जी आ०मु०—१८ २१ मसूरी, २५ से २७ रामनगर।

श्री धर्मराजसिंह—१९ सितम्बर से जिला सभा बिजनौर द्वारा प्रचार।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—१८ से २४ छिबाई।

श्री गजराजसिंह जी—१८ से २० बरौठा।

श्री खेमचन्द्र जी—१८ से २५, उप सभा मुरादाबाद द्वारा प्रचार।

श्रीमती डा० प्रकाशवती जी—२५ से २७ रामनगर।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम०ए० स० अधि० उपदेश विभाग

आ.स.मन्दिर अमरोहा में म. आनन्दस्वामी द्वारा वेद कथा (२२ से २५ सितम्बर ६६)

सभी आर्य प्रेमी जनता को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि विदेशों में सफलतापूर्वक वेदों का प्रचार करने के पश्चात् आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध सन्यासी परम पूज्य महात्मा आनन्द स्वामीजी महाराज २० से २५ सितम्बर ६६ तक रात्रि को ८॥ बजे से आर्य समाज मन्दिर में वेद प्रवचन करेंगे धर्म प्रेमी जनता से प्रार्थना है इस शुभ अवसर से लाभ उठावें।

मीरजापुर में वेदप्रचार

३०-८-६६ से ९-८-६६ तक आर्यसमाज मीरजापुर द्वारा वेद प्रचार का भव्य आयोजन किया गया। प्रति दिन प्रातःकाल ७॥ से ९॥ तथा रात्रि में ७॥ से १० बजे तक कार्यक्रम होते रहे। प्रातःकाल का यज्ञ श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' के पुरोहित्व में होता रहा तथा श्री वेदपाल सिंह भजनोपदेशक के भजनों के पश्चात् श्री 'वसन्त' जी के 'जीवन निर्माण' विषय पर वेदोपदेश होते रहे। सायंकाल भजनों के पश्चात् श्री 'वसन्त' जी की सामवेद कथा होती थी जिसमें मीरजापुर नगर के सैकड़ों नर नारी नियमित रूप से भाग लेते थे।

इस कथा की विशेषता यह थी कि यह सामवेद की एक दशति को लेकर क्रमानुसार की गई। प्रतिदिन एक मन्त्र के आधार पर कथा होती थी और "आत्माग्नि द्वारा ब्रह्माग्नि का आह्वान" विषय पर सरस आध्यात्मिक आनन्द वर्षा होती थी। कथा के पूर्व सामवेद के मन्त्रों का सस्वर पाठ होता था।

८-९-६६ को जन्माष्टमी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें वृहद् वैदिक यज्ञ श्री 'वसन्त' जी द्वारा करवाया गया और ऋग्वेद के अग्नि सूक्तों से विशेष आहुतियाँ दी गई। तत्पश्चात् श्री 'वसन्त जी का योगीराज कृष्ण के जीवन पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ तथा वेदमन्त्रों के आधार पर गो-पालन पर विशेष बल दिया गया।

इन आयोजनों के अतिरिक्त श्री 'वसन्त' जी ने दो उपदेश आर्य कन्या पाठशाला व इण्टर कालिज की अध्यापिकाओं एवम् बालिकाओं के सम्मुख भी दिये जिनमें वेदमन्त्रों के आधार पर पठन-पाठन, चरित्र सुधार एवम् समाज व राष्ट्र निर्माण की अनमोल बातें बताई गईं।

इन समस्त प्रचार आयोजनों में जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मीरजापुर के कार्यकर्ताओं ने विशेष सहसहयोग दिया। आर्य कन्या पाठशाला एवम् इन्टर कालिज तथा आर्य अनाथालय के अधिकारियों ने भी सराहनीय सहयोग दिया। कालिज व अनाथालय के अधिकारी व बालिकाएं भी इन आयोजनों में नियमित रूप से सम्मिलित होती रहीं।

—आशाराम पांडेय सभा उपमन्त्री

गुरुकुल वृन्दावन में शोक

श्री दरयावसिंह जी रईस इटावा की मृत्यु का समाचार जानकर समस्त कुलवासियों को अत्यन्त शोक हुआ। दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन,मथुरा

श्री स्वा. अखिलानन्द जी महाराज द्वारा नैरोबी (अफ्रीका) में वैदिक धर्म प्रचार

आर्य जगत् के प्रतिष्ठित सन्यासी श्री अखिलानन्द जी महाराज जुलाई मास में नैरोबी पहुंच गये हैं। स्वामीजी के वहां पहुंचने से आर्यसमाज के प्रचार को विशेष प्रोत्साहन मिल रहा है। नैरोबी पुरुष आर्यसमाज और स्त्री आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव आपकी उपस्थिति में बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुये। इस अवसर पर आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन में स्वामी जी ने ही आर्यसमाज (वैदिक धर्म) का प्रतिनिधित्व किया। स्वामी जी की भाषणमाला निरन्तर जारी है और जनता उससे पूर्ण लाभ उठा रही है। आर्य जनता की हार्दिक अभिलाषा है कि पूज्य स्वामीजी कुछ समय तक इस क्षेत्र में रहकर आर्य समाज के कार्य को प्रगति देवें। आशा है स्वामी जी सम्प्रति कम से कम एक वर्ष नैरोबी आदि क्षेत्रों में ही अपनी प्रचार यात्रा जारी रक्खेंगे। नैरोबी के आर्य बन्धु स्वामी जी के सहयोग के लिए सदैव आभारी रहेंगे।

★

श्रीपृथ्वीपाल जी तिवारी का देहावसान

गत २६ अगस्त को रुड़की में लम्बी बीमारी के पश्चात् श्री पृथ्वीपाल तिवारी, प्रधान आ० स० बलरामपुर (गोंडा) का लगभग ७६ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र पौत्र आदि का सम्पन्न परिवार छोड़ गये हैं। श्री पृथ्वीपाल जी को आर्यसमाज के कार्यों में बड़ी लगन और श्रद्धा थी। अपनी युवावस्था में उन्होंने बरेली में क्लटरबकगंज फैक्टरी में कार्य करते हुए वहाँ आर्यसमाज और स्कूल की स्थापना की और अनेक वर्षों तक वैदिक धर्म का प्रचार किया। यहाँ के आर्यसमाज ने गत वर्ष उनको अपना प्रधान बनाया था। उनके पुत्र श्री सुकदेव तिवारी इंजीनियर रुड़की में हैं।

आर्यसमाज बलरामपुर ने अपनी दिनांक ४ सितम्बर १९६६ की सभा में शोक प्रस्ताव पारित कर उनकी आत्मिक शान्ति के लिये प्रार्थना की।

—वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए० आचार्य

सीतापुर में वेद सप्ताह

आर्यसमाज सीतापुर में ३० अगस्त ६६ से ८ सितम्बर ६६ तक सोत्साह मनाया गया। नवीन यज्ञशाला में यजु-

आर्य सभा जिला बिजनौर

समस्त-आर्यसमाजों तथा आर्य भाइयों के सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला बिजनौर ने इस वर्ष आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों की एक "सामूहिक प्रचार योजना" का आयोजन किया है। यह कार्य-क्रम एक माह, १७ सितम्बर से १७ अक्टूबर तक, चलेगा। मुझे लिखते हर्ष होता है कि इस योजना को सफल-रूप देने का श्रेय श्रद्धेय लाला बनारसी लाल जी आर्य नजीबाबाद को है। सभा उनके सत्प्रयत्नों की सराहना करती है तथा उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है।

प्रचार योजना निम्न प्रकार है —

आर्यसमाज	दिनांक		
किरतपुर	१७ सि० से	१९ सि०	तक
बढ़ापुर	२० ,,	२२	,,
नगीना	२३ ,,	२५	,,
बसेड़ा कुंवर	२६ ,,	२७	,,
अफजलगढ़	२८ "	२९	"
शेरकोट	३० सि० से	१ अक्टू०	तक
इस्माइलपुर	२ अक्टू० से	३ अक्टू०	तक
बास्टा	४ "	५	"
चांदपुर	६ "	८	"
हल्दौर	९ "	१०	"
बिजनौर	११ "	१३	"
नजीबाबाद	१४ "	१७	"

प्रचार मण्डल में निम्नलिखित विद्वान होंगे :—

(१) श्री डा० देवराज जी आर्य मिशनरी, होशियारपुर (२) श्री प० बिहारी लाल जी शास्त्री बरेली (३) श्री ओम प्रकाश जी शास्त्री खतौली (४) श्री कुंवर सुखलाल सिंह जी आर्य मुसाफिर अरनिया (५) श्री ब्रह्मचारी बालकराम जी, गढ़वाल (६) भजन मण्डलिया दो श्री धर्मराजसिंह जी व म० मुखराम सिंह जी।

प्रचार से सम्बन्धित आर्यसमाजों से आशा है कि वे अपने-अपने यहाँ प्रचार की पूर्ण व्यवस्था रक्खेंगी तथा अपने नगर के अतिरिक्त अपने आस-पास के ग्रामों में भी प्रचार की सूचना निश्चित रूप से दे देंगी, जिससे प्रचार से अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सके। —हरीसिंह एम० ए०, मन्त्री

वेंद पारायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के यजमान आर्यवीरदल के नगर नायक श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य थे। कथा एवं वेदोपदेश प० गंगाधर शर्मा एवं भजनोपदेश श्री खेमचन्द्रजी के हुए। उपस्थिति सप्ताह भर पर्याप्त रही। वेद प्रचारार्थ २७) सभा को दान दिए गए।

आर्यसमाज सीतापुर का वार्षिको- ३, ४, ५ व ६ नवम्बर ६६ को होगा। पुस्तक विक्रेता नोट कर लें।

सरकारें समस्त कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही करें

प्रचार व प्रसार के लिए त्याग और सौहार्द जरूरी

उत्तर प्रदेश साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में डा० हरिशंकर जी शर्मा का भाषण

★

उत्तरप्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन में सभापति पद से भाषण करते हुए डा० हरिशंकर शर्मा ने कहा कि आजादी के बाद भी हिन्दी और उसके साहित्य मे उचित परिवर्तन नही हुआ है। विगत अब शती के सकट वैसे ही बने हैं। उन्हे समाप्त करने के लिए एकता, सौहार्द और त्याग की आवश्यकता है। हमें हिन्दी के सकटों को अनुराग और उत्थान में परिणत करना है।

उन्होने कहा कि हिन्दी की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे सुप्रसिद्ध विद्वानो का मत है कि वैदिक भाषा ही वह उदगम स्थान है जहा से समस्त प्राकृत एव अपभ्र श भाषाओ के स्रोत प्रवाहित हुए। सस्कृत भाषा उसी का परिमार्जित रूपान्तर है और हिन्दी भी उन्ही स्रोतो में से एक स्रोत का सामयिक स्वरूप है। ब्रज भाषा ब्रज की प्राचीन एव मुख्य भाषा है। अवधी भी इसी की बहिन है। ये दोनो भाषाएँ हिन्दी के अन्तर्गत ही हैं।

डा० हरिशङ्कर शर्मा का भाषण सक्षेप में इस प्रकार है।

हिन्दी बहुत पुरानी भाषा है। उसके बोलने तथा जानने वाले इस देश में सबसे अधिक व्यक्ति हैं। हिन्दी में सस्कृत भाषा के तत्सम एव तद्भव शब्दो की बहुलता है। यद्यपि स्वाभाविक रूप मे आये हुए अरबी, फारसी, तुर्की, अग्रजी, पुर्तगाली आदि विदेशी भाषाओ के शब्द भी उसमे हिलमिल गये हैं। इस दिशा में हिन्दी का अति उदार एव व्यापक दृष्टिकोण रहा है। हिन्दी सस्कृत की बडी बेटी है। उसने अपनी माता से बहुत कुछ लिया और ले रही है। सूर तुलसी, केशव, बिहारी, रहीम, रसखान, कबीर, नानक, भूषण,पद्माकर, अहल्या, मीरा, लल्लूलाल, हरिश्चन्द्र इत्यादि सभी साहित्यकारो ने अपनी प्रतिभा-प्रभा द्वारा हिन्दी जगत् को जगमगाया और इसके पुण्य प्रासादों तथा कमनीय कुञ्ज निकुञ्जों को आलोकित किया है।

आधुनिक युग मे भी हिन्दी प्रचार के लिये अनेक सभा-समाजो, सस्थाओ तथा साहित्यकारो ने सराहनीय सहयोग दिये और दे रहे हैं। व्यक्तिगत रूप से हिन्दी साहित्य की सेवा, समृद्धि एव उन्नति अभिवृद्धि करने वाले सुविज्ञ साहित्यकारो एव सुकवियो के पावन प्रयत्न की जितनी भी प्रशसा की जाय, थोड़ी है।

हिन्दी पत्रकार कला भी साहित्य का सुदृढ अङ्ग है। जिस हिन्दी मे किसी समय एक भी पत्र चल सकना कठिन था उसमे आज अनेक दैनिक पत्र निकल रहे हैं। मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक की तो प्रचुरता है। यह हिन्दी की साधारण सफलता नहीं है।

महान भक्त

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी गुजराती होते हुए भी हिन्दी के महान् भक्त थे। उन्होने जब स्वातन्त्र्य सग्राम का सूत्र अपने हाथो में लिया तो सर्वप्रथम हिन्दी को ही महत्व प्रदान किया और बड बलपूर्वक कहा कि आन्दोलन सम्बन्धी सारे भाषण और कार्य यथासम्भव राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही होने चाहिये। जिस हिन्दी को जानने वाली कोटानुकोट जनता है उसी मे सब बातें लिख और पढकर समझनी पडेंगी। अग्रजी तो विदेशी भाषा है उसको समझने वालो की गिनती उगलिया पर की जा सकती है।' पूज्य बापू की यह वाणी सारे देश मे गूंज गयी और हिन्दी का आश्रय लेकर ही स्वतन्त्रता की लडाई लडी जाने लगी।

जिस भाषा की चर्चा की जा रही है, वह चिरकाल से 'हिन्दी' और खडी बोली' कही जाती है। अर्थात् वह बहुत पुरानी है। प्रारम्भ में हिन्दी को 'भाषा 'हिन्दुई' या 'हिन्दवी' कहते थे। १८६१ विक्रमी में श्री लल्लूलाल ने 'प्रेमसागर' में इस भाषा का नाम खडी बोली' लिखा है। किसी समय वर्तमान हिन्दी का नाम रेख्ता भी था। अमीर खुसरो ने रेख्ता में ही कविता की है।

मुसलमान काल मे इस हिन्दी मे अरबी, फारसी, तुर्की आदि विदेशी भाषाओ के शब्द भरे जाने लगे और उसका नाम पहले 'रेख्ता' और फिर 'उर्दू' रख दिया। परन्तु व्याकरण की दृष्टि से कारक, सर्वनाम, लिंग, वचन, अव्यय आदि हिन्दी के ही रहे और अब भी हैं। 'उर्दू' शब्द तुर्की भाषा का है। इसका अर्थ है सेना या सेना का निवास-स्थान। 'उर्दू बाजार' से अभिप्राय उस बाजार का है जिसमे सैनिको की व्यवहारोपयोगी वस्तुएं बिकती हैं। अमीर खुसरो के पश्चात सादी, वली, मीर, रहीम, रसखान, नानक आदि ने खडी बोली में कविताएं की। फिर तो गद्य पद्य दोनो मे खडी बोली-हिन्दी का व्यवहार होने लगा।

अभिप्राय यह कि उर्दू भाषा हिन्दी का ही रूपान्तर है, कोई पृथक् भाषा नही। उर्दू का न कोई छन्द है और न व्याकरण, वह तो हिन्दी व्याकरण के ढाचे पर ही अरबी, फारसी, तुर्की शब्दो द्वारा खडी कर दी गई है। व्याकरण ही नही, उर्दू शायरी मे जो छन्द व्यवहृत होते हैं वे भी हमारे पिंगल शास्त्र के आधार पर ही हैं।

समय के प्रभाव से हिन्दी मे भी अरबी, फारसी तुर्की आदि भाषाओ के सैकडो शब्द हिल-मिल गये। इतना ही नही हिन्दुओ के नामो पर भी अरबी, फारसी भाषाओ का प्रभाव पडा और पड रहा है। हुकमसिंह, मुसद्दीलाल, इकबाल नारायण मुन्शीसिंह, रामबख्श बख्तावरसिंह, महालसिंह, सुल्तानसिंह, नवाबसिंह, जाहिरमल, जवाहरलाल, उल्फतसिंह, रोशनलाल, फकीरचन्द इत्यादि नामो को देखिए। वे अरबी, फारसी शब्दो से स्पष्ट हैं। हमारे मुसलमान भाइयो ने इस नीति को कभी नही अपनाया। उनके यहा सस्कृत मिश्रित एक भी नाम नही है।

एक समान

हिन्दी और हिन्दी से ही बनी उर्दू दोनो एक सी ही हैं। केवल लिपि का भेद है। यदि उर्दू भी नागरी लिपि में लिखी जाने लगे तो दोनो भाषाए एक हो जाएं। क्योकि व्याकरण और व्यवहार की दृष्टि से दोनों समान-सी ही हैं। उर्दू फारसी लिपि मे लिखी जाती है जो अनियमित और अवैज्ञानिक है। कुछ लिखिये और कुछ पढिए। यदि उर्दू नागरी लिपि मे लिखी जाने लगे तो हिन्दी उर्दू में बहुत कुछ समानता आ जाए और दोनो एक ही भाषा का रूप धारण कर लें। इस प्रश्न पर उर्दू वालो को गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। नागरी लिपि बडी सुन्दर, श्रेष्ठ और वैज्ञानिक आधार पर बनी हुई है। उसके अपनाने से उर्दू का बडा हित होगा।

विदेशों में

जैसा कि कहा जा चुका है, भारत में सबसे अधिक प्रचार हिन्दी का ही है। भारत से बाहर भी जहा-तहां लाखो प्रवासी भारतवासी बसे हुए हैं वहा भी वे हिन्दी को ही अपनाये हुए हैं। यह बात मुझ मेरे उन कृपालु विद्वानो ने बतायी है जो प्रवासियों मे वर्षों भारतीय भावनाओ का प्रचार करके स्वदेश वापस आए हैं, हिन्दी का सबत्र प्रभुत्व प्रचार है इसीलिए वह स्वतन्त्र भारत की 'राष्ट्र भाषा' बनायी गयी है।

अब से बहुत पूर्व, जर्मन विद्वान् प्रोफेसर मैक्समूलर हिन्दी की बडी प्रशसा कर गये हैं। उन्हे सस्कृत तथा हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान था। वे सस्कृत में अपना नाम 'मोक्षमूलर' लिखते थे। ग्राउस, ग्रियर्सन ग्रिफिथ आदि अग्रेजी विद्वानो ने भी हिन्दी भाषा को बहुत मान्यता प्रदान की। ग्राउस साहब ने तो अस्सी वर्ष पूर्व फर्रुखाबाद से 'कवि व चित्रकार' नामक एक मासिक पत्र प्रकाशित कराया था। उन्ही के नाम पर कई नगरो में 'ग्रूसगज' भी बनाय गये हैं। हमारे देश मे, राजा राममोहन राय, श्री केशवचन्द्र सेन, श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, स्वा० दयानन्द सरस्वती लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी श्री सुभाषचन्द्र बोस आदि हिन्दीतर प्रदेशो के विद्वान् नेताओ ने भी हिन्दी की उपयोगिता एवम महत्ता को बड सुन्दर शब्दो मे स्वीकार किया है और उसके प्रचार प्रसार एवम राष्ट्रभाषा' बनाने पर पूरा बल दिया है।

श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कहते हैं—'अग्रजी के विषय मे लोगो की जो कुछ भी भावना हो पर मैं यह दावे के साथ कह सकता हू कि हिन्दी के बिना हमारा काम नही चल सकता। जो सज्जन हिन्दी भाषा द्वारा भारत में एकता पैदा करना चाहते हैं वे निश्चय ही भारतबन्धु हैं।

लोकमान्य बाल गगाधर तिलक—'मेरी मातृभाषा मराठी है परन्तु मैं हिन्दी को भारत की सावजनिक भाषा बनाने के पक्ष में हूँ।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

श्री सुभाषचन्द्र बोस—'एक समय आएगा जब हिन्दी भारत देश की भाषा होगी क्योंकि उसी का प्रचार ज्यादा है।'

भारत के उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन—'हिन्दी का प्रचार करना राष्ट्रीय काम है। मुल्क की खिदमत करने का यह बहुत बड़ा काम है। राष्ट्रीय शक्तियों को एक सूत्र मे बांधने के लिए राष्ट्र-भाषा का होना जरूरी है। वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दी असली अर्थों में 'राष्ट्रभाषा होगी। हिन्दी एकता का माध्यम है लड़ाई और बटवारे का नहीं। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी की किसी प्रकार की शत्रुता नही। उर्दू न विदेशी भाषा है न मुसलमानों की भाषा है। उर्दू अनिवार्य रूप से भारतीय भाषा है। इसकी जड़ें हिन्दी में हैं। हिन्दी और उर्दू एक दूसरे की पूरक हैं—पूरक नहीं।

सरकार का कर्तव्य

ऐसी दशा में राज्य सरकारों और भारतीय सरकार का कर्तव्य है कि वे अपने समस्त कार्य राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही करें। ससद एवं विधान सभाओं में भी भाषण तथा अन्य सब कार्य राष्ट्रभाषा में ही हों। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही है। इस कार्य के लिए विश्व-विद्यालय सोत्साह सन्नद्ध होना चाहिए। रेल, तार, डाक, अस्पताल आदि सभी सरकारी विभागों में राष्ट्रभाषा ही प्रयोग हो। न्यायालयों, उच्च-न्यायालयों तथा समस्त शासन-सम्बन्धी विभागों में हिन्दी की ही प्रधानता दीजिए।

शब्दों की कमी नहीं

कहा जाता है कि हिन्दी में शब्दों कमी है, जबकि स्वय भारत सरकार के केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने पारिभाषिक शब्द समूह नामक एक वृहद्‌कोश प्रकाशित किया है। इसमें डेढ़-दो लाख अंग्रजी शब्दों के हिन्दी रूप दिये गये हैं। यह पारिभाषिक शब्द समूह विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा तैयार कराया गया है। सब ही विषयो और विभागों के आ गये है। ऐसे पारिभाषिक हिन्दी कोष के होते हुये हिन्दी में शब्दो की कमी कैसे बताई जा सकती है। यह ठीक है कि हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों की कमी है, साथ ही यह भी ठीक है कि अंग्रजी में सास्कृतिक, साहित्यिक, काव्यात्मक, याज्ञिक, आध्यात्मिक इत्यादि बहुत से शब्दो का अभाव है। इतने बड़े पारिभाषिक शब्द-सग्रह के होते हुये कोई कारण नही है कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी राजकाज, शिक्षा जगत् अथवा न्यायालयों तथा विविध विभागों में मुख्य स्थान न पा सके।

'जनतन्त्र' 'गणतन्त्र' अथवा 'लोकतन्त्र' का अर्थ है जनता का राज्य, अतएव जनता का कर्तव्य है कि वह अपने द्वारा निर्वाचित अथवा नियुक्त सदस्यों और सत्ताधारियों को विवश करें कि वे राष्ट्रभाषा प्रयोग करने में अनिवार्य रूप से आगे आयें और किंचित्मात्र भी उपेक्षा, अवहेलना या शिथिलता का प्रयोग न करें। मतदान देते समय विधान सभाओं के सभासदों तथा ससद-सदस्यों से प्रतिज्ञा कराली जाय कि वे अपने भाषण राष्ट्रभाषा में ही देंगे और सत्ताधारियो को अंग्रेजी प्रचार सम्बन्धी भावना को असह्य समझ उसका तीव्र प्रतिवाद करेंगे।

शिक्षा आयोग

हाल ही में हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध में सरकार द्वारा नियुक्त 'शिक्षा आयोग' की संकीर्णतापूर्ण विचार-विधि देखकर बड़ा दुःख हुआ। ऐसे अनौचित्य का पूर्ण प्रतिवाद होने की आवश्यकता है। आयोग का कहना है—

"अन्तर्प्रान्तीय व्यापार व्यवहार के लिए अंग्रेजी को बनाये रखा जाय। उस की पढ़ाई अनिवार्य रखी जाय और हिन्दी को गैर सरकारी स्तर पर बनाये रखा जाय। हिन्दी किसी पर लादी न जाय। हां, अंग्रेजी अवश्य लादी जाय। अंग्रेजी की शिक्षा उत्तमोत्तम ढंग से उनकी व्यवस्था की जाय। हिन्दी-भाषी क्षेत्रो में मातृभाषा के स्थान पर हिन्दी पढ़ाई जाय और हिन्दीतर प्रदेशों में मातृभाषा को अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाय।"

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिस अंग्रेजी से पीछा छुड़ाने का आदेश दे गये हैं, उसको प्रचलित रखने के लिए 'शिक्षा आयोग' के ये शब्द कितने अनुचित, असगत और अनावश्यक है। 'आयोग' के विधाता चाहते हैं कि कोई कुछ कहे परन्तु अंग्रेजी पुछल्ला का हमारे हर काम में हर वक्त लगा रहे। इससे अधिक अदूरदर्शिता और क्या हो सकती है। ऐसे बेढंगी बातो को राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की विमल विचार-धारा का घोर अपमान समझना चाहिए।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने एक पत्र में लिखा है "हम आपस में अंग्रेजी का ही इस्तेमाल करते हैं। यह आदत शीघ्र छोडनी होगी। हम राष्ट्रभाषा इस्तेमाल के लिये जोर दें और विदेशी भाषा का इस्तेमाल किसी तरह भी गरूर की बात न समझें।

हिन्दी साहित्य

अब तक मैंने हिन्दी की उत्पत्ति की ओर सकेत किया और और राष्ट्रभाषा प्रचार-प्रसार के विविध अथक प्रयत्न करने-कराने की प्रार्थना की। अंत में हिन्दी साहित्य के सम्बन्ध में कुछ निवेदन करना चाहता हू। साहित्य क्या है? "हितं सन्निहितं तत्साहित्यम, हित सन्निहित तत्साहित्यम्, हित सम्पादयति इति साहित्यम्" जिस सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, समन्वित शब्द-योजना में अभिव्यक्ति सद्भावो द्वारा सर्वसाधारण का हित साधन होता है, वही साहित्य है।

साहित्य के अन्तर्गत सभी विषय आ जाते हैं। लोक-कल्याणकारिणी जितनी भी विमल-विचारधाराए हैं, उन सबका स्रोत एवम् आधार साहित्य ही है। स्वर्गीय राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद जी की लिखी 'सस्कृत का अध्यापन' नामक पुस्तक बड़ी गवेषणापूर्ण है। उसमें सुदृढ युक्ति-प्रमाणपूर्वक सिद्ध किया गया है। कि सस्कृत साहित्य में ज्ञान-विज्ञान की विपुल सामग्री विद्यमान है। उसका हिन्दी द्वारा पूर्ण प्रचार होना चाहिए। अर्थात् सस्कृत के सब विषय हिन्दी-साहित्य में समाविष्ट हो। ऐसा करने से जनता का ज्ञान बढ़ेगा और साहित्य की समुन्नति भी होगी।

कविता

कविताए तो साहित्य का महत्वपूर्ण अग है ही—नाटक और उपन्यास भी। कविता का स्तर सदैव ऊँचा रखना चाहिए, जैसा कि हिन्दी के कवि, सुकवि या महाकवि का धर्म। आज हमारा आदर्श यही होना चाहिए। प्राचीन काल एवम् आधुनिक युग में भी अनेक सुकवि एव साहित्यकार अपनी विविध विषय विभूषित साहित्य सम्पदा द्वारा हिन्दी का समृद्ध तथा समुन्नत कर गये हैं, वे धन्य हैं। कोरी तुकबन्दी शब्दाडम्बर या छोटी-बड़ी पंक्तियों का नाम कविता नहीं है।

जिस कविता में भावों का अभाव हो प्रसाद गुण या चमत्कार न हो वह कविता नहीं है। कविता का 'वाद-विवादों या नये-पुराने पन से भी कोई सम्बन्ध नहीं। आज सैकडो वर्ष पुरानी कवितायें सहृदय-समाज को चमत्कृत कर रही एव प्रेरणा दे रही हैं। कविता के सैद्धान्तिक विश्लेषण में इधर की दशाब्दियो में बहुत कुछ कहा गया है पर कविता की प्राचीन सहज परिभाषायें आज भी हृदय का आकृष्ट करती हैं, बात अनूठी चाहिये, भाषा कोई होय, सत्कवि की कविता ज्योत्स्ना (चांदनी) की तरह हृदय को आनन्द देने वाली सुधा की तरह जीवन देने वाली और प्रभुता (हुकूमत) की तरह मनुष्यों को अकल्प अर्थों और कीर्तिकी प्रदायिनी होती है।

पत्रकारिता

हिन्दी संघर्षों के बीच आगे बढ़ी है यह हम जानते हैं अत सर्वपूर्ण हिंदी के इतिहास में पत्रकारिता का अत्यन्त महत्व का स्थान है, यह किसी से छिपा नहीं है। हिन्दी का सबसे पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था जो साप्ताहिक रूप में सन् १८२६ ई० में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। फिर सबसे पहला हिन्दी दैनिक पत्र 'सुधावर्षण' भी १८५४ ई० में कलकत्ता से निकाला गया। अब तो हमारे देश में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की अच्छी प्रगति है, और दैनिकों तथा साप्ताहिकों की भी सभी पत्रों ने देश और समाज की प्रशसनीय सेवा की तथा कर रहे हैं। सोती जनता को जगाया और उसे सन्मार्ग सुझाया। स्वतन्त्रता प्राप्ति में पूर्ण सहायता प्रदान की।

समाचार पत्रों को विचार पत्र भी बनाना चाहिये, जैसे कि वे हैं भी 'विचार-पत्र' से अभिप्राय यही है कि अन्यायों, अत्याचारों का युक्तियुक्त तीव्र प्रतिवाद कर सर्वसाधारण के समक्ष कल्याणमयी भावनायें समुपस्थित की जाय, मार्ग-दर्शन कराया जाय और निष्पक्ष तथा निर्भय नीति का पूर्ण प्रयोग हो ऐसा करने से ही देश का कल्याण हुआ है और होता रहेगा। पत्रकारिता के आदर्श को आज पुन उज्जीवित करने की आवश्यकता है।

अपील

अन्त में हिन्दी प्रेमी भाइयों से पुनः निवेदन है कि वे अपने नामों में अरबी, फारसी शब्दो का सम्मिश्रण कदापि न करें, जैसा कि हो रहा है। पुरुष अपने नामों के साथ शुक्ला, मिश्रा, गुप्ता, आदि न्गी लिग शब्द न लिखकर 'शुक्ल' 'मिश्र', 'गुप्त' आदि लिखें। पटिका (साइन बोर्ड) पर अंग्रेजी लिखना बन्द करें। विवाहादि किसी भी अवसर पर अंग्रेजी मे निमन्त्रण-पत्र न भेजें, सब हिन्दी में हों। दूकानों और व्यापारिक सस्थानों के नामों तथा कामों में हिन्दी का ही प्रयोग हो। हिन्दी मे पी० डी० शर्मा, डी० के० वर्मा, एच० के० गुप्त, आर० सी० शुक्ल एम० एच० मिश्र, आदि नाम लिखने की पोच प्रणाली को त्यागा जाय। इस प्रकार की प्रथा मानसिक दासता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

★

हैदराबाद नगर में सांप्रदायिकता के उभरते चिह्न

माननीय मुख्यमंत्री जी, आन्ध्र प्रदेश की सेवा में

स्मरण-पत्र

माननीय मुख्यमन्त्री जी,
आन्ध्र प्रदेश सरकार के नाम

भारत के अस्वाभाविक विभाजन के द्वारा जब पाकिस्तान का अस्तित्व निर्माण पाया तो इसी के साथ द्विराष्ट्र सिद्धान्त का भी दृष्टिकोण लोगो में स्थान प्राप्त करने लगा, जिसका कि प्रचार स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व मुस्लिम लीग किया करती थी। इस्लामी राज्य स्थापना का प्रयत्न भरपूर वेग द्वारा किया जाने लगा। जिन मुसलमानो ने नीतिमत्ता से भारत में ही अपना आवास निर्धारित किया था, इन्हें भारतीय संघ सरकार के विरुद्ध भड़काने और उभारने का भी पूरा-पूरा प्रयास यहाँ से होता रहा और भारत के अन्य भाग में मुस्लिम लीग के अस्तित्व को शेष रखकर इसके द्वारा विरोधी प्रचार का कार्य भी किया जाता रहा है। तथापि भारत के विभिन्न भागो में पाकिस्तानी मनोवृत्ति के मुसलमानों ने कुछ समय के मौन के उपरान्त पुन उभरने और अपनी प्रवृत्तियो को क्रियात्मक रूप देने का प्रयत्न प्रारम्भ किया। और अपने कार्यक्षेत्र को विशेष रूप से विस्तीर्ण करने पर कटिबद्ध हुए। दक्षिण भारत इस दृष्टि से विशेष अभिलक्ष रहा। मद्रास, केरल और हैदराबाद अब पाकिस्तान समर्थक क्षेत्र समझे जाने लगे हैं।

पुलिस एक्शन के पूर्व हैदराबाद के रजाकार मन्त्री ने कहा था कि "हैदराबाद अपने स्थान पर स्वयं एक पाकिस्तान है।" पुलिस कार्यवाही के पश्चात भी सर्वसाधारण मुसलमानों की मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं आया अपितु अब तो व्यापक रूप से इसका प्रदर्शन हो रहा है। जिसका अनुमान एक पत्र से जो आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान, पं० नरेन्द्र जी के नाम ८ सितम्बर १९६५ को कार्यालय को प्राप्त हुआ है, इस पत्र के लेखक का नाम है सैयद युसूफअली। यह पत्र हिन्दी में लिखा हुआ है। पत्र के लेखक का कथन है—

> हैदराबाद हमारे मुसलमानो का पाकिस्तान है इस पर हमारा जन्मजात अधिकार है। यहाँ हिन्दुओं का कुछ नहीं चलता। इसी प्रकार याद रखो! विद्रोहियो!!!

पुलिस कार्यवाही के तत्काल बाद ही पाकिस्तानी मनोवृत्ति के व्यक्तियों ने बोलपीर में एक मासूम अल्पवयस्क बालक कन्या का अपहरण कर इसके [illegible] किया और इसका वध कर डाला एवं इसी के रक्त से 'दरगाह" की दीवार पर अंकित करते हुए अपनी पाकिस्तानी प्रियता का परिचय प्रस्तुत करते हुए लिखा कि 'पाकिस्तान जिन्दाबाद।

सैनिक प्रशासन और इसके पश्चात के प्रस्थापित जनतन्त्र प्रशासन से विशेष यह भूल हुई थी कि 'इत्तेहाद उल मुसलमीन' जैसी साम्प्रदायिक और राष्ट्र विरोधी भावनाओ की प्रचारक विषाक्त संस्था को कानून विरोधी घोषित कर इस पर प्रतिबन्ध नही लगाया था। जबकि इसी कट्टर सम्प्रदायवादी पक्षपात समर्थक संस्था ने आजाद हैदराबाद' का आन्दोलन प्रारम्भ कर रियासत के रहने वाले हिन्दुओ और अन्य गैर मुस्लिमो पर अत्याचार किये थे। इतना ही नही बल्कि भारतीय राष्ट्रसंघ के विरुद्ध एक विद्रोही आन्दोलन खड़ा कर रखा था। इस भूल का भयानक परिणाम यह हुआ कि पुन जब मजलिस ने नगरपालिकाई एवं विधान सभा आदि के निर्वाचन में अपने प्रत्याशी खड़े कर सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ कर दिया तब सम्पूर्ण आन्ध्र प्रदेश क्षेत्र का वातावरण विक्षुब्ध कर दिया गया और दिन प्रतिदिन स्थिति बिगड़ती ही गयी। मजलिस इत्तेहादुल मुस्लमीन की वर्तमान प्रक्रिया भी वातावरण को उत्तेजित और विक्षुब्ध करने में लगी हुई है। धार्मिक प्रक्रियाओं की स्वतन्त्रता और भाषणो आदि के सामाजिक प्राप्त अधिकारो का जैसा दुरुपयोग इसके द्वारा हुआ और हो रहा है वह एक लम्बी कहानी है जो जनता और राज्य से छुपी हुई नहीं है। मेलाद उल नबी के पवित्र जलसों और मसजिदो में होने वाली प्रार्थना सभाओं में कांग्रेस और इसकी सरकार पर भद्दे और ओछे ढंग से आक्षेप किये जाते हैं। यहाँ तक कि महात्मा गांधी और पं० जवाहरलाल नेहरू जैसी विश्ववन्द्य विभूतियो की घिनौने ढंग से आलोचना की जाती है जो अप्रासंगिक होने के साथ सभा के उद्देश्य के विपरीत होते हैं। नगरपालिका एवं विधान सभा के निर्वाचन में मजलिसी प्रत्याशी के समर्थन में जो स्थान-स्थान पर भाषण दिये गये उनसे यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि मजलिस द्विराष्ट्र सिद्धान्त के दृष्टिकोण को ही रियासती मुसलमानो के मुक्ति का उपाय मात्र अनुभव करती है। और वह कट्टर साम्प्रदायिकता के प्रचार की घिनौनी मनोवृत्ति से विमुक्त नही होना चाहती। कांग्रेस ने भी अपने टिकट पर जिन मुसलमानों को राष्ट्रवादी मुसलमान अनुभव कर अवसर प्रदान किया उनकी भी मजलिसी मनोवृत्ति अधिक समय तक छुपी न रह सकी। जबकि कांग्रेस को उच्च श्रेणी के शिक्षित, सभ्य और राष्ट्रवादी मुसलमान उपलब्ध हो सकते थे, विशिष्ट प्रकार के मुसलमानो के वोटो की प्राप्ति निमित्त कुछ ऐसे अदूरदर्शी पग उठाये जाकर उन मुसलमानो से सौदा किया गया जो किसी भी प्रकार से न तो विश्वास के योग्य थे और न इसके पात्र ही।

श्री विजयवाडा गोपालरेड्डी जी ने जब उर्दू से अपनी रुचि प्रकट की और गुमायश क्लब में हैदराबाद-कराची मैत्री संस्था की स्थापना हुई तो इसके द्वारा पाकिस्तानी मनोवृत्ति के लोगों ने इस अवसर को देव कृपा अनुभव कर इससे पर्याप्त लाभ उठाया। इस सम्बन्ध में बम्बई के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'ब्लिट्ज' ने जब प्रकाश डाला तो लोगो को पता चला कि हमारे ही कांग्रेसी कर्णधार किस भयानक मार्ग पर देश को ले जा रहे हैं? विशेष आश्चर्य और खेद की बात तो यह है कि आज भी हमारे कांग्रेसी नेता ऐसी विषाक्त मनोवृत्ति वाले तत्वो की पुष्टि और समर्थन में लगे हुए हैं, जिसका एक दिन परिणाम राष्ट्र की अखण्डता और शान्ति को आघात पहुँचाने के अतिरिक्त और कुछ नही होगा।

देश की अखण्डता और राष्ट्रीय एकता को जान बूझ कर नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से वर्तमान में जो प्रयत्न किये गये उनमें उस आपत्तिजनक मानचित्र (नक्शा) का प्रकाशन भी सम्मिलित है जो कि स्थानिक व्यापारी कम्पनी टी० डिपो द्वारा प्रकाशित कर वितरण करवाया गया था और जिसमें कश्मीर को भी इस्लामी देशों में दर्शाया गया।

अशान्तता के उत्पादन की घटनाओं में सक्रिय गुण्डागर्दी को व्यापक रूप से स्थान प्राप्त होता जा रहा है और अब स्थिति यह है कि जनता का दैनिक जीवन अत्यन्त भयावह स्थिति से व्यतीत हो रहा है। ऐसा लगता है कि जंगल का कानून लागू है। पिछली घटित घटनाओ पर दृष्टिपात करने से पाकिस्तानी मनोवृत्ति विभिन्न रूपो में स्पष्ट साकार होती दिखाई देती है। पुलिस कार्यवाही के कुछ काल बाद ही एक स्थानिक जूतो की कम्पनी द्वारा जूतों के तल्वे केवल अपमान और भावनाओ को ठेस पहुँचाने के उद्देश्य से पवित्र राष्ट्रीय ध्वज के नमूने पर तिरंगे बनाये गये। प्राचीन पहाड़ी मन्दिरो की सम्पत्ति हड़पने के प्रयत्न भी होने लगे। आदिलाबाद की बस्ती के बीच बसनीगंज के कृष्ण मंदिर के राजकीय क्षेत्र के विस्तृत भू भाग पर अनुचित कब्जा कर मकान निर्माण किये गये एवं अभी तक यह अनुचित कब्जा चला आ रहा है। पुराने मलकपेठ के हनुमान मंदिर से मूर्तियो को उठा ले जाना और इन सबके अतिरिक्त वह घटना भी याद आती है जबकि श्री बी० रामकृष्णराव जी के मुख्य मन्त्रित्वकाल में सिटी कालेज के सम्मुख छात्रो के आन्दोलन का दमन करने के बहाने अशान्ति उत्पन्न करने का भी दुष्प्रयास किया गया था। अभी दो वर्ष होते हैं जब कि शिक्षण शुल्क की वृद्धि के सम्बन्ध में विद्यार्थियो द्वारा विरोधी प्रदर्शन (Agitation) जो राजकीय प्रयत्न हुए और इसके प्रति उत्तर में विद्यार्थियो के आन्दोलन के पीछे जो शहर के प्रमुख बाजार आबिदशाप आदि में दिन दहाड़े तोड़ फोड़ दुकानो में की गयी उनमें जितनी भी दुकानों को लक्ष्य बनाया गया वह सब हिन्दु व्यापारियों की ही थीं। तदर्थ प्रान्तीय विधान सभा के सम्माननीय सदस्य श्री रामगोपाल रेड्डी जी ने विधान सभा में इस विषय को प्रस्तुत कर स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित भी करवाया था। इसके पश्चात् से विभिन्न बस्तियो याकूतपुरा, दबीरपुरा, चपलगुडा इत्यादि में भी एक अवधि तक मुस्लिम गुण्डागर्दी का क्रम चलता रहा। प्रस्तुत घटनाओं के क्रम और रूप से पता चलता है कि अराष्ट्रीय तत्व किस नीचता पर उतर आए हैं? जैसे—
(१) ७ जून को नेल्लूर की सीताकुमारी नामक लड़की का अपहरण हैदरगुडा के मकान से बर्बरता से किया जाता है।
(२) ११ जून को बार्कस में एक

(शेष पृष्ठ १० पर)

खंड काव्य—

शिवरात्रि

((गतांक से आगे)

(२८)

धरती पर गिरने वाली थीं
तारों की फुलझड़ियां जीर्ण,
दुग्ध धवल सी स्निग्ध चांदनी
पूनम में हो रही विकीर्ण।

(२९)

वन के आंगन में कुछ परियां
आकर गाने बिखरातीं,
बाल हँसिनी सी शशि किरणें
मोती चुगने आ जातीं।

(३०)

तरु कोटर में सुख से सोते
वे भोले पंछी चुप चाप
नहीं गोचर होती थी,
मानव की कोई पद चाप।

(३१)

शशि होवही की किरणों में
उन कच्ची सड़कों की धूल,
खुली पखुरियां थी बेला की
महक रहे जूही के फूल,

(३२)

मद मद पुरवाई चलती
उमड़ रही थी उसकी सांस
शाखाओं की कूक गई
मिला नहीं प्रिय का भुजपाश।

(३३)

नारिकेल के नव वृक्षों से
पवन कर रहा था खिलवाड़,
देख रहे थे छवि अम्बर की
उठा उठाकर शिर सब ताड़।

(३४)

कमलों की पखुरिया सोतीं
करके अपना बन्द किवाड़,
मधुपों के सम हिलांचल निधि में
हल्का करती मन का भार।

(३५)

बिखर रही थी निर्मल जल में
नलिनी की आभा उद्दाम,
नभ से उतर उतर शशि किरणें
उन पर करती थीं विश्राम।

(३६)

कलकल स्वर से सुना रही थी
सरिता की लहरें संगीत,
दोनों तट बाहें पसार कर
दिखा रहे थे अपनी प्रीति।

(३७)

उस गृहस्थ के वाम पार्श्व में
धर अपना मस्तक सुकुमार,
एक सती ने कहा अरे 'आओ'
देखो आया प्रभात—

(३८)

नव चुम्बी तरु की शाखा पर
बैठा बोल रहा है काग,
पर तेरी इन मृदु पलकों में—
भरा अभी तक मदिर विहाग।

छिटक रहा तेरे आंगन में
ऊषा का पावन—आलोक
लदी कोंपलों से अलियां
फूल रहा है विटप अशोक।

(४०)

जन्मा आज तुम्हारे कुल में
जाने कैसा हीरा-लाल
जिसकी भोली सुन्दरता पर
रवि शशि भी हो गए निहाल।

(४१)

अभी अभी उस कीर्ति कुंज से
खिलने आया था सावन
उषा व्योम के ध्रुवतारे सा
धरती पर वह रूप सुघर।

(४२)

देव लोक की किन्नरियां
करती हैं उसका पद वन्दन,
नव किसलय ले मारुत करता
उसके चरणों का चुम्बन।

(४३)

ऊषा की नव वय किरणों से
रवि करता पूजा अर्चन,
पवनों का अंचल लहराया
नाच उठे कलियों के मन।

(४४)

अम्बर में हो रही आरती
गूंज रहे विहगों के गान,
तरुवर के मृदु पात पात पर
उतर पड़ा है स्वर्ण विहान।

(४५)

इतना कहकर चली गई वह
और बज उठा मंगल तूर्य,
तारों के अभाव में चुपके
चढ़ आया था नभ में सूर्य।

(४६)

जाने कितने नयन मृगों से
लगे दौड़ने इधर-उधर
डरे हुए थे विकट द्वार पर
भीम रूप अवनी पर चर।

(४७)

उनके भीषण पद चापों से
अन्तरिक्ष में उठती धूल,
स्वर्ण धूप में चम चम चमके
बर्छे भाले खड्ग त्रिशूल।

(४८)

कभी गूंजते नूपुर की ध्वनि
ज्यों यौवन की तरल तरंग,
छूट रहे चितवन के शर थे
पलकें थीं मन नहीं विभंग।

(४९)

भांति भांति के मृदु वस्त्रों का
बाल दुशालों का प्रति दान,
उस गृहस्थ ने पितृ स्नेह में
लुटा दिया था अपना प्राण।

(५०)

दौड़े आए बन्धु बान्धव
सुनकर बिखराने मृदु हास,
जिनके कोमल सुघर अंग में
भरी हुयी थी एक मिठास।

(५१)

कच्चे आंगन के मध्य बना था
सुन्दर हवन कुण्ड निष्पाप,
पुरोहितों ने पूर्ण कराये—
जात कर्म के क्रिया कलाप।

(५२)

ग्राम्य तरुणियों ने मिल जुलकर
गाया एक मनोहर गीत,
मंगल रस की वर्षा होती
छलक रहा था प्रेम पुनीत।

(५३)

जिस दिन जिस क्षण माँ ने देखा
अपने उर का स्नेह अखण्ड,
बाल रूप धर कर उतरा था
मानो सहसा भानु प्रचण्ड।

(५४)

मांस पिण्ड बनकर आया था
उसके अन्तर का मधु सार,
लगा लिया अपनी छाती से
बहती सरल दूध की धार।

(५५)

शिशु क्रीड़ा में भूल गयी वह,
प्रसव काल का उत्पीड़न,
पाणि पल्लवों का स्पर्श था
कोमल अधरों का चुम्बन।

(५६)

अपलक नयनों से अतृप्त सी
जननी करती छवि का पान,
छहर रही थी छटा निराली
ओंठों में फीकी मुस्कान।

(५७)

धनीभूत शोभा छिटकाती
दो नयनों की सुघराई,
तेज पुंज से अरुण कपोलों
पर कैसी आभा छाई?

(५८)

फूलों से लेकर कोमलता
मोम वृत्ति से होकर पीन,
जाने कैसे किन हाथों से
बन गया है जाने कौन?

(५९)

उसमें नव चारी कलिका का—
तेज अतुल था ज्ञान उदय,
या छोटे से स्वर्ण कुम्भ में
महा सिन्धु था भरा अहर।

—[illegible] आर्य

ग्राम परियापुर, पो० रसूलपुर स्टेट, जि० बाराबंकी

आर्य जगत् के प्रकाण्ड विद्वान्—
पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय
(एक संस्मरण)

[ले०—श्री रामावतार आर्य, आर्यसमाज गाजीपुर]

श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय

आत्म विज्ञापन से बहुत दूर, सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति हिन्दी, संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले, महान् दार्शनिक प० गंगाप्रसाद उपाध्याय अपने जीवन के ८५ वर्ष पूरे कर चुके। ८५ वर्ष की लम्बी आयु मनुष्य के लिए कोई कम नही होती है। लेकिन इस आयु में भी आप वैदिक साहित्य की निरन्तर अभिवृद्धि करते आ रहे हैं। आर्यसमाज के एक छोटे से सैनिक होने के नाते वर्षों से मेरी अभिलाषा थी कि पण्डित जी का सान्निध्य प्राप्त करू। सौभाग्य से वह दिन भी आया जब मुझे तीन-चार महीने तक इलाहाबाद रहने का अवसर प्राप्त हुआ इस बीच मैं पण्डित जी के निकट सपर्क में आया।

मैं प्रात काल ६ बजे पण्डित जी के अध्ययन कक्ष में पहुच जाता था। उस समय पण्डित जी वेद या अखबार पढ़ते हुए मिलते। मेरे पहुचते ही पूछते—कौन राम 'अवतारी' अच्छा भाई, सुनाओ क्या हाल है।' इसके बाद मैं उनसे करीब एक घण्टे दर्शनशास्त्र के मुख्य-मुख्य सूत्रों को पढता था। उनके समझाने की शैली इतनी अच्छी थी कि उनका पढाया हुआ सूत्र आसानी से समझ मे आ जाता था। उदाहरण देने में पण्डित जी इतने दक्ष हैं कि दार्शनिक गुत्थियां बडी जल्द समझ में आ जाती हैं।

आपका जन्म ६ सितम्बर १८८१ ई० ऐटे जिले के नदरई में हुआ था, जो कासगंज से दो मील पर काली नदी के किनारे स्थित है। आप सर्वप्रथम १९०२ ई० में टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में पढने इलाहाबाद आये। इसके बाद अध्यापक हो गये। बचपन से ही आप बहुत परिश्रमी थे। आपका जीवन एक आदर्श अध्यापक का जीवन था। आपने इन्टरमीडियट प्राइवेट पास किया। बी० ए० प्राइवेट किया और अंग्रेजी तथा दर्शन शास्त्र (फिलासफी) से एम० ए० भी प्राइवेट ही किया। आपके जीवन में संघर्ष करनेवाले प्रत्येक मनुष्य के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। आपके आदर्श को सामने रखकर यह कोई नहीं कह सकता कि नौकरी करते हुए पढाई कैसे की जा सकती है।

उनके काम करने का ढंग

मैं पण्डित जी के प्रत्येक कार्यों को बहुत ध्यान से देखता था। कभी-कभी ऐसे भी अवसर आते हैं जब वे पत्र लिखने लगते। जब मैं चुप हो जाता तो कहते चुप चुप क्यों हो गये, मैं दोनों काम साथ-साथ कर लेता हू। तुम्हारी पढाई भी या चीज मन भी लिख लूंगा। मैं कब मानने वाला था। मैं भी पूछने लगता। लेकिन मैंने देखा कि सचमुच वे ठीक ठीक उत्तर भी दे देते थे और पत्र भी लिख लेते थे।

वे अपने पाकेट में डाक टिकट, पोस्टकार्ड और कलम हमेशा रखे रहते हैं। उनकी मेज के पास ही कागज, स्याही, गोंद की शीशी और एक छोटी डिब्बी जिसमें दो दो कलमें रखी होती, दिखाई देती थीं। ८५ वर्ष के होने के बावजूद भी पत्र पत्रिकाओ में लेख भेजने के लिए उनके अन्दर तनिक भी आलस्य नहीं आता जब कभी कोई नयी बात सूझ जाती हैं, वे तुरन्त उसे लेखबद्ध कर देते हैं। उस लेख को एक अजीब ढग से मोडकर उसके ऊपर गोंद से कागज चिपका देते हैं। उस पर पता लिख और टिकट चिपकाकर तुरन्त किसी के हाथ पोस्ट आफिस में छोडने के लिये भेज देते हैं। उनका कहना है कि टिकट के न रहने से लेख पड़ा रह जाता है। इसलिए मैं पोस्टकार्ड और टिकट आदि सदा अपने पास रखता हू।"

कुछ पूछना या जानकारी करना होता है तो पण्डित जी थोडी दूर (१ या दो मील) के लिये भी पोस्टकार्ड लिख देते हैं।

पण्डित जी कभी पाण्डुलिपि की दो कापियां नहीं बनाते। छोटे-छोटे पुस्तक के साइज) कागज के पन्नो पर लिखते जाते हैं। जब वह पुस्तक पूरी हो जाती है तो छपने के लिए भेज देते हैं। मैंने एक बार पूछा—पण्डित जी इस प्रकार गलतियाँ नहीं होतीं। काटने-कूटने से कापी गन्दी हो जाती है। इसलिए दूसरी प्रतिलिपि बनानी पडती है। उन्होंने कहा—'नही, मेरे लिखने का तरीका यह है कि लिखने के पहले खूब अच्छी प्रकार सोच लेता हू। फिर उसे लिख देता हू। इसलिए काटने पीटने की जरूरत नही पडती। अगर कभी कोई विचार मुझे बाद में नापसन्द आ गया तो उस पत्र को फाड देता हू।'

इधर पण्डित जी की आखो से कम दिखाई देता है। लिखने और पढने पर उस पर काफी बल पडता है। इसलिये अब कभी किसी से लेख आदि लिखवाते हैं तो [illegible] पेज न० का बहुत ख्याल रखते हैं। ताकि बाद में कोई गडबडी न हो।

वह कहते हैं कि मैं अकेले टहलना पसन्द करता हू। इसलिए कि टहलते समय सोचने की मेरी आदत है। उस समय अच्छी अच्छी बातें सूझ जाती हैं। अब भी उनकी याददाश्त बहुत तेज है पुस्तकों के विषय में उन्हें यह पता रहता है कि कौन सी पुस्तक कहा, किस अलमारी में और कितनी पुस्तको के बाद रखी है।

विनोदी स्वभाव

एक दिन सन्ध्या समय लान में बैठा मैं पण्डित जी से आर्यसमाज और वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में बातें कर रहा था। कुछ प्रसगवश मैंने पूछा—प० जी आपकी जन्म तिथि कब पडगी ? आपने मुस्कराते हुए कहा—भाई अब तक तो ६ सितम्बर को पडती थी लेकिन इस बार पडगी या नहीं, मैं नही बता सकता। पढ़ाते और बातें करते समय भी अपने विनोदी स्वभाव के कारण आप ऐसे २ दृष्टान्त देते थे जिससे हसी आ ही जाती थी। एक दिन मैं उनको कोई लेख पढ़कर सुना रहा था। मैं पढ तो रहा था लेकिन वह बात मेरी समझ में नही आ रही है। यद्यपि लेखक महोदय ने कई बार अर्थात्-अर्थात् लिख रखा था। मैंने पण्डित जी से कहा पण्डित जी लेखक की बात मेरी समझ में नही आयी। पण्डित जी ने कहा मेरी समझ में भी नहीं आ रही है।' लोग अर्थात्, अर्थात् तो लिखते जाते हैं लेकिन अर्थ कुछ निकलता नही।'

साहित्य रचना

आपने हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू सभी भाषाओं मे काफी लिखा है। आपने ओजपूर्ण सामग्री तो पर्याप्त प्रदान किया है। उनकी पुस्तक अद्वैतवाद' इस बात का प्रमाण है। आपकी पुस्तकें मौलिक, विचारोत्तेजक और बोधगम्य होती हैं। अगर पाठक समझ-समझकर आपकी पुस्तकों का अध्ययन करे तो उसे बडा आनन्द आयेगा। आपकी युक्तियां और प्रमाण इतने प्रबल होते हैं कि पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं।

कुछ दिन हुए मुझे डी० ए० वी० कालेज गाजीपुर के एक अध्यापक ने उनकी पुस्तक 'आस्तिकवाद' मुझे देते कहा—लीजिये; इस पुस्तक ने मुझे नास्तिक से आस्तिक बना दिया।'पण्डित जी के साहित्य की सबसे बडी विशेषता यह है कि आप ऐसे प्रश्नो को उठाते हैं जो आवश्यक और स्वाभाविक रूप से प्रत्येक विचारशील पाठक के मन मे उठते हैं। इसीलिए उन प्रश्नों को पढ कर पाठक प्रसन्न होता है और कहता है—'यह तो मेरा अपना प्रश्न है।' उन प्रश्नो का जवाब आप इतने तार्किक और सरल ढग से प्रस्तुत करते हैं कि सहृदय पाठक झूम उठता है।

उनकी पुस्तक 'अद्वैतवाद की प्रशसा करते हुए उनके यहा एक वेदान्ती आया और कहने लगा। 'आपने मुझे ब्रह्म से जीव बना दिया।'

प्रचार का माध्यम क्या हो ?

मुझे दिल्ली जाना था इसलिए इलाहाबाद से होता आया। २२ जुलाई को प्रात काल मैं पण्डित जी से मिलने गया। इस समय आप टहलने जा रहे थे। मैंने कहा—'आप टहल लीजिये तो बातें होंगी।' पण्डित जी ने कहा—'नहीं' तुम आ गये। अब चलो कमरे में।' नमस्कार के बाद बातें प्रारम्भ हुई। प्रसगवश मैंने पूछा—'प० जी आर्यसमाज का प्रचार तेजी से कैसे हो सकता है। लेक्चर से अधिक लाभ पहुचेगा या साहित्य से उन्होंने कहा—दोनो आवश्यक हैं। लेक्चर मनुष्य को आकर्षित करता है। उसके अन्दर भावना भरता है। और साहित्य उस भावना को स्थायी बनाता है। तुमने लोगो को यह कहते हुए सुना होगा कि मैं पहले आर्य समाजी था। लेकिन अब आर्यसमाज में नहीं जाता। इसका कारण यही है कि उनके पास ऐसे साहित्य नही पहुचते जिनसे उनकी भावना स्थायी बन सके। समय समय पर उनके मन मे तरह तरह के प्रश्न उठा करते हैं। लेक्चर में उन सब प्रश्नों का जवाब देना सम्भव [नहीं] है। उसके लिए तो पुस्तकें पढनी पडेंगी।'

वेद का स्वाध्याय आवश्यक

[ले०—श्री मदनमोहन जी एडवोकेट, मौंठ झांसी]

पथवाही महत्वप्रमेषाम् पृष्ठपा युक्ता अनुसवहन्ति अपावमस्य वपृषे व पात्, पर नेदीयो अवर दवीय. ।

(अथर्व का० ४ सूक्त ८)

हमारा प्रधान अन्तःकरण रूपी इवन पांच ज्ञानेन्द्रियों से घाड़ो को किये जा रहा है। कर्मेन्द्रिया तथा पाच प्राण रूप गाड़ियां इनके पीछे जुड़ी हुई पीछे पीछे चल रही हैं। इनकी गति अर्थात दृष्टिगोचर नहीं होती। इतना अवश्य है कि दूरस्थ समीपस्थ तथा समीपस्थ दूरस्थ हो रहा है।

वेद को यह अलकृत भाषा एक आध्यात्मिक भावों की ही सांकेतक है। उपर्युक्त भावाथ कुछ पारस्परिक विरोधाभास सा प्रतीत होता है परन्तु यह वास्तविक तथ्य नहीं है। वेदो की अपौरुषयता ही उनकी सार्वभौमिक मान्यता एव सर्वोपरि महत्त्व का निश्चित कारण है। मानव जीवन यज्ञमय है जिसको वेदी उर है (उरो वेदी) तथा ऋत्विज इन्द्रियां हैं जो नित्य कर्मानुसार नित्याहुतियां अपण करती हुई ब्रह्मज्ञान रूपी अग्नि प्रदीप्त करती रहती हैं। गीता में भी इस स्वय सिद्धि का प्रतिपादन किया गया है 'अन्नाद्भवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्न सम्भव यज्ञाद्भवति पर्जन्यो, यज्ञ कर्म समुद्भव ॥१४॥ कर्म ब्रह्मोद्भव विद्धि, ब्रह्माक्षर समुद्भवम् तस्मात् सर्वगत ब्रह्म, नित्य यज्ञे प्रतिष्ठितम् । १५॥

अर्थात् अन्न से सब प्राणी बनते हैं, मेघ से अन्न, यज्ञ से मेघ तथा यज्ञ कर्म से उत्पन्न होता है।

कर्म को वेद से उत्पन्न हुआ जान और वेद अक्षर (परमेश्वर) से। अत सर्वगत परब्रह्म सदैव यज्ञ में विद्यमान रहता है। महात्मा तुलसीदास ने भी वेदो की वन्दना रामचरित मानस में भूरि-भूरि की है। वेदों के स्वाध्याय मे प्रमाद की भारी भर्त्सना की गई है —

"स्वाध्यायेनार्चयेदृषीन्, होमैर्देवान यथा विधि। पितृन श्राद्धैश्च नृनन्नै, भूतानि बलि कर्मणा ॥ (मनु ३ ८१)

स्वाध्याये नित्य युक्त स्याद्दैवे चैवेह कर्मणि (मनु ३ ७५)

अर्थात् स्वाध्याय से ऋषियो की, होम से देवों की, श्रद्धा से पितरो की, अन्न से नरों (अतिथियों) की तथा बलि कर्म (अन्न प्रदान) से क्षुद्र प्राणियो की यथा विधि पूजा करो। स्वाध्याय तथा दैव कर्म में नित्य तत्पर रहे।

सर्वबन्धन मुक्त सन्यासी को भी वेद त्यागने का निषेध किया गया है "सन्यसेत् सर्वकर्माणि, वेदमकम सन्येत्"। वेदो का विधिपूर्वक पठन पाठन तथा उनका भली भाति पालन मर्यादा पुरुषोत्तम राम के काल में चरम सीमा पर था इसका दिग्दर्शन बाल्मीकि रामायण के निम्न श्लोको में स्पष्ट रूपेण किया गया है—

सर्वे वेद विद शूर, सर्वे लोकहिते रत। सर्वे ज्ञानोप सम्पन्ना,सर्वे समुदिता गुणै (।२४॥ बालकाण्ड)

अर्थात् सबपुरुष वेदवेत्ता, वीर, प्रजा हितैषी, ज्ञानयुक्त तथा सर्वगुण सम्पन्न थे।

नाषऽङ्गविद नास्ति, नाव्रतो ना सहास्रद। न दीन क्षिप्त चित्तो वा, व्यथितोवापि कश्चन (बालकाण्ड १५)

अर्थात् उस राज्य मे वेद के छ अंगों को न जानने वाला, व्रत न करने वाला, बहुत दान न देने वाला, निर्धन, अस्थिर चित्त कोई न था। महर्षि दयानन्द ने इसी आदि स्रोत से ओत प्रोत होकर प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द की आज्ञा शिरोधार्य कर विश्व मे वेदों का डंका बजाया जिसके तुमुल नित्य निनाद से ढके ढोंग पाखण्डो की उठती हुई ध्वनि को धूल धूसित कर सदा को अदृश्य में विलीन कर दिया और आर्यों का वीर वसुन्धरा पर कीर्ति केतु फहराया। उस सर्वशक्तिमान् के विराट स्वरूप का साक्षात्कार करते हुए महर्षि ने कहा था, 'न्याय की सतुलित सयोजना में पूर्व नियोजित मान्यताओं की मृत स्थापना की, इतिहास की शिराओ से वह जो महाकाव्य का रक्त न बनकर ललकारता है, पौरुष के प्रयोगों को पुकारता है, वह मेरा ईश्वर है। जो कभी-कभी महामृत्यु की मूर्च्छना को को आत्मसात् कर अनन्त के अन्तर्द्वन्द्व वृत वैभव मे विकषित सृष्टि के परमाणुओं का कूजन सकेत बनकर गूंजता है और जो उष्णता की घाटी में स्वर सवेदना बन, प्राण की सम्बद्धता ढूंढता है, और जो अतृप्त जीव बनकर भावना की तरलता में डूबता है वह मेरा ईश्वर है"। महर्षि ने वेद का पढना पढ़ाना, सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म बतलाया। परन्तु खेद है कि अद्यतन स्वाध्याय शैथिल्य एव प्रमाद से हम उत्थान से पतन की ओर पदगामी बन रहे हैं। आज हमारी दिनचर्या एक भ्रामक यत्र मात्र बन गई जो अपने तत्रो से मनो को ऊपर ही भ्रमण कराती हुई मानस पटल पर अंकित नहीं होने देती। प्रचार से पूर्व विचार, उच्चार एव अनिवार्य अग हैं, हम उन सबको निलबित करके अंतिम श्रणी में पदार्पण करने की अनधिकार चेष्टा करते रहते हैं, परिणामत वांछित फल से भी वंचित रह जाते हैं। आज उपाकर्म एव उत्सर्जन प्राय उसी दिन हो जाते हैं।

प्रकृति का जीव से भोग्य एव भोक्ता का सम्बन्ध तो है परन्तु गौणिक है। जीव चैतन्य, प्रकृति जड है जीव का ब्रह्म से भी सम्बन्ध है परन्तु गुण के द्वारा है। दोनों चैतन्य हैं। ब्रह्म ज्ञान का भडार है, जीव अल्पज्ञ है। ज्ञान शक्ति ब्रह्म से प्राप्तव्य है, प्रकृति से नहीं। वास्तविक है ब्रह्म की ओर जाना। यदि शरीर, इन्द्रिय, प्राण, मन आदि ब्रह्म की ओर ले जा रहे हैं तो समझो गाड़ी ठीक चल रही है, परन्तु दशा यहां तो विपरीत है। हम अपने एक मात्र साधन अन्त करण के ऊपर प्रकृति के अनेक चित्र बनाते चले जा रहे हैं इस आवरण से ब्रह्म सत्ता अन्त करण से दूरस्थ होती जा रही है इसका विस्मरीकरण ही हमें अभीष्ट की प्राप्ति कर सकता है।

आज कितने कथित भक्त योगीराज कृष्ण की रास लीला कर नृत्यवादन में रत रहते हैं और सांदीपन ऋषि के गुरुकुल मे प्रदीक्षित उस महान् आदित्य तपस्वी के उज्ज्वल चरित्र को कलंकित करने की कुचेष्टा करते हैं जो उनकी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अकाल पीड़ितों में ईसाइयत का प्रचार

आर्य जनता विशेष ध्यान दे

★

रांची। उड़िया भाषा में पुरी से प्रकाशित 'समाज पत्र के अनुसार जर्मन की ईसाई मिशन ने १४ लाख रुपया और यूरोप के केथोलिक सगठन ने एक बड़ी राशि उड़ीसा के अकाल पीडित क्षेत्रों में वितरणार्थ वहां की मिशनों को दिया है।

गुरुकुल वैदिक आश्रम पानपोश पो० राउरकेला के सस्थापक व कर्मठ आर्य सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने उत्कल के कालाहांडी, बालांगीर जिले के अकालग्रस्त क्षेत्रों का दौरा कर आर्यसमाज रांची को लिखे एक पत्र में बतलाया है कि खरियार से ईसाई मिशन की ओर से नित्य-प्रति दो हजार से भी अधिक लोगों को चावल तथा खाद्य सामग्री वितरण की जाती है। वहां के साम्प्रदायिक बाजार में मिशनरियो की ओर से डाक्टर, कम्पाउन्डर व नर्सों द्वारा माइक से प्रचार कर मुफ्त में ईसाई धर्म की पुस्तकें व बिस्कुट आदि दिये जाते हैं और रोगियों का इलाज वे करते हैं। आदिवासियो को कार्ड दिया जाता है जिसे लेकर वे पुन दूसरे सप्ताह आते हैं। सरकारी चिकित्सा का प्रबन्ध न होने से लोग यहां आते हैं और कालान्तर में ईसाई हो जाते हैं पर साधन नामयात्र का है। केवल प्रयत्न व प्रभु कृपा से १८ परिवारों के १२१ व्यक्तियों को ईसाई होते हुए बचाया गया है। गुरुकुल की ओर से ५०० रु० के खाद्यान्न तथा अन्य वस्तुयें वितरित की गईं। यहां से २८ मील पर श्रीयुत बिड़ला जी की ओर से बिड़ला चैरिटेबिल ट्रस्ट भी अच्छा कार्य कर रही है। गुरुकुल द्वारा स्थापित अनाथाश्रम के अनाथ बच्चो को जिन्हें ईसाई होने से बचाया गया था, उन्हें बिड़ला चैरिटेबिल ट्रस्ट से ले लेने का अनुरोध स्वामीजी ने किया है। आशा है वे शीघ्र अनाथाश्रम को सभाल लेंगे। स्वामी जी ने अकाल पीड़ित क्षेत्रों के गाव-गाव मे प्रचार किया। सरकार को चाहिए कि अकाल पीड़ित क्षेत्रो में खाद्यान्न का वितरण व चिकित्सा अविलम्ब प्रबन्ध करे। आर्यसमाज व अन्य सज्जनों को भी चाहिए कि वे तन, मन, धन से सहायता दें। स्मरणीय हो कि स्वामी ब्रह्मानन्द जी उड़ीसा मे आर्यसमाज के एक कर्मठ आर्य सन्यासी हैं। उनके प्रयत्नों से हजारो आदिवासी वैदिक धर्मानुयायी हो गये हैं। स्वामी जी को विभिन्न आर्यसमाजें व आर्य सस्थायें वैदिक धर्म के लिए मासिक व वार्षिक सहायता देती हैं।

जो सज्जन सहायता करने के इच्छुक हो वे उनके नाम पर किसी अन्य सस्था को दान न देकर सीधे उन्हें दें या विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क स्थापित करें।

पता—स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती
गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास पानपोश
पो०—राउरकेला

यहां पाकिस्तान का दम चूर चूर हो गया—

स्यालकोट और खेमकरण के मोर्चे

फिरोज और असल उतार में ऐतिहासिक टैंक युद्ध और भारतीय सेना के शौर्य की अमर गाथा

भारत और पाकिस्तान में गत सितम्बर के युद्ध में टैंकों की सबसे बड़ी और भयंकर लड़ाइयाँ स्यालकोट सैक्टर में फिलौरा के निकट और कसूर खेमकरण सैक्टरों में लड़ी गई इनमें ही पाकिस्तान के बख्तरबन्द सैनिक दस्ते जिन पर उसे गर्व था और जिनके बलबूते पर उसने छम्ब में हमला किया था चकनाचूर कर दिये गये।

छम्ब सेक्टर में पाकिस्तानी हमले का दबाव कम करने के लिए भारत के लिए जवाबी आक्रमण अनिवार्य हो गया भारतीय फौज ६ सितम्बर को प्रातः ही वाघा सीमा पार कर गई। इसका समुचित प्रभाव पड़ा और छम्ब में पाकिस्तानी दबाव कम गया। भारतीय फौजों के अग्रिम दस्ते पहले हल्ला में ही इच्छोगिल नहर को पार करके लाहौर के निकट शालिमार बाग तक जा पहुंचे और लाहौर की गली गलियों में भगदड़ का यह हाल था कि कुछ औरत बच्चे तक छोड़कर भाग गईं।

तत्पश्चात उच्च स्तर पर निर्णय हुआ कि लाहौर पर कब्जा न किया जावे इसलिए भारतीय फौजों ने इच्छोगिल नहर पर मोर्चा लगाया। यह नहर १५ फुट गहरी और १२ फुट चौड़ी है और इसे फौजी महत्व के लिए बनाया गया है।

पाकिस्तानियों ने ७ सितम्बर को लाहौर सक्टर में फिर पूरा जोर लगा कर जवाबी हमला किया और स्पष्टतया ऐसा प्रकट होता था कि यहीं पर ही निर्णायक युद्ध लड़ा जा रहा है। पाकिस्तान यह समझता था कि भारत लाहौर पर कब्जा करना चाहता है और उसने इस फ्रंट पर अपनी फौज झोंक दी पाकिस्तानी फौज भारतीय कमाण्डरों के बिछाये हुए जाल में फंस गई। वे लाहौर पर कब्जा नहीं करना चाहते थे। क्योंकि सामरिक दृष्टि से यह पग लाभकारी नहीं था परन्तु वे पाकिस्तानियों पर दबाव यहीं कायम रखना चाहते थे जिससे छम्ब सैक्टर में पाकिस्तान का दबाव कम हो सके। भारतीय कमाण्डर पाकिस्तान की फौजी शक्ति को क्षति पहुंचाना चाहते थे जो इस उद्देश्य को समक्ष रखकर सारी [illegible] गई।

स्यालकोट सैक्टर में प्रवेश

भारतीय फौजें [illegible] सितम्बर की रात को सुचेतगढ़ [illegible] सीमा पार करके स्यालकोट सेक्टर में प्रवेश कर गई। इस आक्रमण का उद्देश्य पाकिस्तानी फौजी टुकड़ी को जिसमें छठा बख्तरबन्द डिवीजन भी सम्मिलित था युद्ध में उलझाना था जिससे वह लाहौर सेक्टर में सैनिक सहायता न पहुंचा सके। इन्फैंटरी ने आक्रमण करके कुछ ठिकानों पर कब्जा जमा लिया और उसके दिन भारत के बख्तरबन्द दस्ते इस सैक्टर में प्रवेश कर गये।

भारतीय फौजें जब पंजाब सीमा को पार करके पाकिस्तान में प्रविष्ट हुईं तब पाकिस्तान का सबसे बड़ा व शक्तिशाली बख्तरबन्द डिवीजन रावलपिण्डी के पास था। जब उसे वहां से कसूर लाया गया और जंग में झोंक दिया गया। पाकिस्तानियों ने यह अनुमान लगाया कि उन्होंने इच्छोगिल नहर के साथ साथ भारतीय हमला रोक दिया है और अब वह निर्णायक जवाबी आक्रमण कर सकते हैं।

कसूर के सामने पाकिस्तानी फौजों का दबाव बढ़ गया। इस पर स्थानीय कमाण्डर ने निर्भीक निर्णय किया। इसने यह निर्णय किया कि फौजों को कुछ पीछे हटाकर शत्रु को क्षति पहुंचाई जाए इस निर्णय से भारत को कुछ क्षेत्र छोड़ना पड़ता था। परन्तु युद्ध नीति की यह मांग थी और भारतीय कमाण्डर ने निर्णीत योजना बना ली थी कि फौज पीछे हटा ली और खेमकरण से ४ मील दूर असल उतार के निकट मोर्चे संभाल लिए।

शत्रु जाल में फंस गया दुश्मन ने इस से यह गलत अनुमान लगाया कि उसने भारतीय फौजों को धकेलना शुरू कर दिया और वह तेजी से आगे इस की तरफ बढ़ा जो भारतीय कमाण्डर ने बहुत होशियारी से पहले ही बिछा दिया था। भारतीय फौजों ने इस सेक्टर में अश्वक्षुर व्यूह रचना कर रखी थी। हमारी इस व्यूह रचना पर कई गढ़ों से हमले करते रहे और यही उनकी पराजय का कारण बना

९ और १० सितम्बर के दौरान एक के बाद एक करके पांच भरपूर हमले किये गये। भारतीय तोपचियों ने इसका पूरा पूरा जवाब दिया और शत्रु के कई टैंक बेकार कर दिये गए। भारतीय टैंक और अन्य बख्तरबन्द गाड़ियां गन्ना और बाजरे के खेतों में बड़ी होशियारी से छुपा कर रखी गई शत्रु पाचवां बख्तरबन्द ब्रिगेड के साथ आगे बढ़ा और उसे पीछे धकेल दिया गया और उसकी जगह पाकिस्तान के चौथे बख्तरबन्द ब्रिगेड ने ली।

भारतीय फौजों ने एक नाला काट कर उस का बायां किनारा बेकार कर दिया। इससे कई टैंक पानी में धंस गये और भारतीय बख्तरबन्द सैनिक दस्ते अन्तिम बाधा करने के लिये टूट पड़े और फायरिंग आर्डर सिर्फ चारों छम्ब तक ही सीमित रह गया।

इस लड़ाई में भी भारतीय स्थल सेना ने १०६ मिली मीटर कोइल्स तोपों और ग्रेनेडों से दुश्मन के कई टैंक नष्ट किए। इस लड़ाई में ही बहादुर कम्पनी क्वाटर मास्टर हवलदार मेजर अब्दुल हमीद ने शत्रु के तीन टैंक नष्ट किए और शहीद होने से पहले चौथे को बेकार कर दिया।

सबसे बड़ा इमाम मारा गया

पांचवें और आखिरी हमला में पाकिस्तान के प्रथम आर्मर्ड डिविजन का जनरल आफिसर कमांडिंग मेजर जनरल नसीर खां और तोपखाने का कमाण्डर ब्रिगेडियर शमीम मारे गये शत्रु ने वायरलेस से एक सन्देश जो भारतीय आपरेटरों ने भी सुन लिया था में कहा था हमारे सबसे बड़े इमाम मारे गये।

बाद पाकिस्तानी पैटन टैंकों ने उसकी लाश के चारों ओर घेरा डाल दिया और उसे उठा कर ले गये। बाद में हमें ब्रिगेडियर शमीम की लाश युद्ध भूमि में पड़ी मिली और उसे भारतीय जवानों ने फौजी सम्मान के साथ दफना दिया।

यह एक शानदार विजय थी जो सुसज्जित सैनिकों तोपों के अचूक निशानों और टैंकिंग से विशाल बख्तरबन्द फौज पर प्राप्त की गई। असल उतार की लड़ाई में पाकिस्तान के प्रथम बख्तरबन्द डिविजन और चौथी बख्तरबन्द रेजिमेंट को बुरी तरह नष्ट कर दिया। पाकिस्तान की बख्तरबन्द सेना को इतनी क्षति पहुंची कि भारतीय जवान असल उतार की लड़ाई को 'असली उत्तर' कहने लगे।

पाकिस्तान के कुछ टैंक नष्ट हो गये जिनमें से अधिकांश पैटन टैंक थे ९ टैंक जिनका डीजल खत्म हो गया था सही हालत में पकड़ लिए गये। इस लड़ाई में पाकिस्तान के २ लेफ्टिनेंट कर्नलों ६ मेजरों और ९ अन्य अफसरों और अनेक सैनिकों ने शस्त्र डाल दिये। वास्तव में यही असल उत्तर था।

टैंकों का कब्रिस्तान

असल उतार और उसके निकट का क्षेत्र पाकिस्तानी टैंकों के कब्रिस्तान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहां भारतीय सेना ने जो युद्ध कौशल दिखाया वैसा द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी जनरल रोमल ने अलामीन में युद्ध कौशल दिखाया था।

पाकिस्तान ने इस क्षेत्र में बड़ी योजना बनाकर आक्रमण किया था। बाद में जो कागज हाथ लगे हैं उनसे पता चलता है कि शत्रु ने यह योजना बनाई थी कि वह भारतीय फौजों को धकेल कर तरनतारन में घुस जायगे और वहां से वाघा और खालड़ा के सेक्टर के पीछे से अमृतसर पर हमला बोल देंगे। मगर जब पाकिस्तानियों का भारतीय फौजों से सामना हुआ तो उन्हें पता चल गया कि उनकी योजनाएं शेखचिल्ली जैसी थीं।

फिल्लौरा की लड़ाई

स्यालकोट सेक्टर में पाकिस्तान के छठे बख्तरबन्द डिविजन का पहले बख्तरबन्द डिविजन की अपेक्षा काफी बुरा हाल हुआ।

पाकिस्तान फौज ८ सितम्बर को यहां मुकाबला पर आई। पाकिस्तानियों को करीब करीब यह आशा थी कि स्यालकोट पर सीधा हमला होगा। मगर उन्हें निराश होना पड़ा भारतीय फौजों ने दो देहातों चाविंडा और मिराजके पर कब्जा कर लिया। मुसराजके गावों में बड़ी सड़क आकर मिलती थी और भारतीय बख्तरबन्द दस्ते फिलौरा की तरफ जो स्यालकोट के दक्षिण पूर्व में स्थित है तेजी से बढ़े।

पाकिस्तान के छठे बख्तरबन्द डिविजन की यूनिट जवाबी मुकाबिला के लिए बढ़याना पसरूर और फिलौरा से आगे आई और उसके बाद टैंकों की कई लड़ाइयां हुईं जो पन्द्रह दिन जारी रहीं। ये लड़ाईयां द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात की सबसे बड़ी लड़ाईयां थीं। दुश्मन ने पैटन, शमन और चफी टैंक मुकाबिले में झोंक दिए कई पैटन टैंक तो बिल्कुल नए थे।

शत्रु के एक दिन में ६६ टैंक नष्ट

पहले दिन शत्रु के २० टैंक नष्ट

(शेष पृष्ठ १६ पर)

(पृष्ठ-१३ का शेष)

केवल अज्ञानता का ही परिचायक है। आज हमारे राष्ट्र को ब्राह्म बल एवं क्षात्र बल दोनों की ही आवश्यकता है जो कि भगवान कृष्ण में विद्यमान थे और अन्ततोगत्वा विजय का मूल कारण बने —

ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरिता सह।

यदि आज हम योगेश्वर कृष्ण एवं धनुर्धारी अर्जुन बन जायें तो विजय श्री निश्चित ही हमारे चरण चूमेगी —

"यत्र योगेश्वर कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः तत्र श्री विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। ७८ गीता।

आओ आज इस पुण्य पर्व पर प्रभु की वाणी वेद के स्वाध्याय का प्रण लेकर इस पावन धरा को धन्य बनाए —

मा प्रगाम पथोवय, मा यज्ञान्द्रिय सोमिन मान्त स्थुर्नो अरातय (अथर्व १३-१ ५९)

हे प्रभो हों हम सभी वैदिक पथ अनुगामी।

कभी न विचलित होय कदाचन, बने पूर्ण हृद हामी।

यज्ञादिक जो कर्म श्रेष्ठतम, नित्य प्रति करते रहें।

ऐश्वर्य से ईश आपके, तन मन धन भरते रहें।

बनें कृपा से नाथ आपकी, गुण ज्ञाता गुह ज्ञानी।

रहें कभी न निकट हमारे कोई अरि अभिमानी।

मन मन्दिर में करो उजाला 'मोहन' अन्तर्यामी।

विश्व बन्द्य व्यापक विभो, तुभ्यम् अहम् प्रणामि। ●

आर्य समाज बगहा मीरजापुर

१० अगस्त से ८ सितम्बर तक "वेदप्रचार सप्ताह" आर्यसमाज बगहा, मीरजापुर द्वारा बड़े धूम धाम के साथ मनाया गया जिसमें आर्य वीर दल बगहा के आर्य वीरों ने पूर्ण सहयोग दिया। —बचनसिंह मन्त्री

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जिला मुरादाबाद

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के सभी अन्तरङ्ग सदस्यों की सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि सभा की अन्तरङ्ग सभा की एक आवश्यक बैठक दिनांक २५ सितम्बर ६६ रविवार को मध्यान्ह १ बजे से आर्यसमाज मन्दिर अमरोहा में होगी।

कृपया नोट करें—भोजन निवास की समुचित व्यवस्था की गई है। आगन्तुक महानुभाव यदि आगमन की सूचना दे सकें तो कृपा होगी।

—हरिश्चन्द्र आर्य, मन्त्री उपसभा

सूचना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के प्रचारक श्री ज्ञानप्रकाशजी भजनोपदेशक तथा श्री रामसेवक मैजिक लैन्टर्न प्रचारक का माह सितम्बर का कार्यक्रम—

१८, १९, २० कुरेशी अमरोहा उत्सव
२१-२२ २३ अमना मेला प्रचार
२४ २५ टांडा अफजल "
२६-२७ ठाकुर द्वारा प्रचार
२८ २९ सरकड़ा बिश्नोई प्रचार
३० जहांगीरपुर "

समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि प्रचार की व्यवस्था करें।

—हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री

उत्तर प्रदेशीय आर्यवीर दल (१९६६ का निर्वाचन)

सचालक—श्री देवीप्रसाद जी आर्य हापुड़, स० सचालक—श्री अवधविहारी खन्ना वाराणसी, श्री चन्द्रपाल जी आर्य, प्रधान शिक्षक—श्री छन्नूलाला जी आर्य मुरादाबाद, कोषाध्यक्ष—श्री केदारनाथ आर्य वाराणसी स० सचालक—गोकुल प्रसाद आर्य, मन्त्री—श्री आनन्दप्रकाश वाराणसी, का० मन्त्री—श्री जयप्रकाश शर्मा अशान्त बामनपुर, उप सचालक—श्री देवनसिंह वाराणसी, श्री मुन्नीलाल केराकत, श्री जगदम्बाप्रसाद गोंडा श्री रघुनाथसिंह सीतापुर, श्री महाराजकिशोर देहरादून, उ. म श्री विद्याशंकर अग्निहोत्र पीलीभीत, श्री रामनारायण जी शास्त्री आगरा, श्री नवलकिशोर कानपुर, श्री वेदप्रकाश जी आजमगढ़।

आर्यवीर दल द्वारा डा० वासुदेव शरण के निधन पर शोक

भारतीय विद्याओं, भारतीय संस्कृति इतिहास, पुरातत्व कलाविद्, वेद उपनिषद पुराण तथा विभिन्न भारतीय धर्मों एवं उत्तमोत्तम ग्रन्थों के प्रणयकर्ता डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के निधन पर शोक प्रकट करता है तथा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

—उमाकान्त मन्त्री वाराणसी केन्द्र

★

अमृताश्रम विठोरिया नं० १

पो० आ० हल्द्वानी (नैनीताल)

यह आश्रम हल्द्वानी नगर से दो मील की दूरी पर कोहरियासाक नहर के तट पर ग्राम स्वरूप भूमि पर स्थित है।

आश्रम में—वैदिक पुस्तकालय तथा गुरुकुल के ढंग पर विद्यालय का भी आयोजन किया जा रहा है।

श्रावणी पर्व

मछ्वाक आर्यसमाज दिल्ली की ओर से दिनांक ४।९।६६ को श्री शंकरलाल जी के निवास ८५/१९१ पंचकुइयां में बड़े समारोहपूर्वक श्रावणी के पुण्य पर्व पर वेद सप्ताह मनाया गया। जिसमें श्री धनश्याम आर्य के मधुर भजन हुये, तथा सभा प्रधान जी के सारगर्भित भाषण हुये, और श्री प० मनोहरलाल जी एवं श्री ओमप्रकाश जी बी० ए० के पर्व की महत्ता पर मधुर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त अनेक विद्वानों ने आर्यसमाज के इस पुण्य पर्व की महिमा पर विशेष प्रकाश डाला और म० आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने हेतु सबसे अपील की। —काशीराम मन्त्री

कानपुर में श्री जन्माष्टमी महोत्सव

केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के तत्वावधान में श्रीकृष्ण अष्टमी महोत्सव गोविन्दनगर आर्यसमाज में श्री डा० शिवदत्त जी की अध्यक्षता में, दि० ८-९-६६ को समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसमें श्री प० विद्याधर जी, श्री माता विद्योत्तमा यती, श्री डा० ब्रह्मस्वरूप जी नोहाबा, श्री डा० मुंशीराम जी शर्मा, और श्री देवीदास जी आर्य के विद्वत्तापूर्ण और प्रभावशाली भाषण हुए। इससे पहले १० से लेकर ७ सितम्बर तक माता श्री विद्योत्तमा जी का व्याख्यान, कुंवर भद्रपाल जी के भजनोपदेश प्रतिदिन होते रहे।

—मन्त्री योगेन्द्र सरीन

आर्यसमाज लाजपत नगर

आर्यसमाज लाजपतनगर की ओर से श्री माता विद्योत्तमा जी उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा का व्याख्यान तथा कुंवर भद्रपाल जी के भजनोपदेश ९-१० सितम्बर को हुये। —मन्त्री

आर्यवीर दल की शाखाओं को सन्देश

प्रान्तीय आर्यवीर दल के संगठन, प्रसार व प्रचार के लिये यह अत्यावश्यक है कि प्रत्येक प्रान्त में अधिक से अधिक मासिक योग्य प्रचारक हों और कार्यालय की सुन्दर व्यवस्था हो। इसके लिये धन प्रमुख साधन है। अर्थात् आर्यवीर दल का कोष जितना सुदृढ़ होगा उतना ही आर्यवीर दल स्वावलम्बी प्रगतिशील बनेगा।

विजय लक्ष्मी का पर्व आर्य वीर दल प्रारम्भ से ही दल सहायता व सदस्यता पर्व के रूप में मनाता आ रहा है। इस अवसर पर हमें अपने कोष के लिये प्रत्येक आर्यवीर व जनता से वीर निधि के रूप में अधिक से अधिक सहायता प्राप्त करने और अपने अधिक से अधिक सदस्य बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

विजय दशमी के पुनीत अवसर पर हमें व्यायाम, प्रदर्शन, खेल प्रतियोगिता बौद्धिक प्रतियोगिता भाषण आदि का भी अपनी सुविधानुसार आयोजन करना चाहिए और विजयदशमी के दिन वीर निधि को विशेष समारोह के साथ अपने अधिकारी को भेंट करें। —संचालक

आर्य मेला प्रचार समिति की २५ सितम्बर को बैठक

चुनार तहसील जिला मिरजापुर के समस्त 'आर्यसमाज' व 'आर्यवीर दल' को सूचित किया जाता है कि 'आर्य मेला प्रचार समिति (शिवशंकरी) व जिला आर्य वीर दल मीरजापुर के कार्य समिति की बैठक २५ सितम्बर रविवार को १२ बजे से शिवशंकरी धाम में भविष्य के आवश्यक विषयों पर विचारार्थ होगी।

अतः ठीक समय पर 'कार्यसमिति' के सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

—देवनसिंह

पूर्वी उत्तरप्रदेशीय आर्य वीर दलों को सूचना

पूर्वी उत्तरप्रदेशीय आर्यवीर दल केन्द्र वाराणसी के नगरनायकों तथा मण्डलपतियों को सूचित करता हूं कि अपने-अपने क्षेत्रों का मासिक विवरण अविलम्ब निम्न स्थानों को भेजना प्रारम्भ कर दें। इधर कुछ दिनों से मासिक विवरण प्राप्त नहीं हो रहा है।

१—रमाकान्त मन्त्री पूर्वी उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल वाराणसी डी ३२/३०२ विद्यापीठ रोड वाराणसी-१

२—श्री देवीप्रसाद आर्य प्रान्तीय संचालक—आर्यवीर दल उत्तरप्रदेश द्वारा इलाहाबाद बैंक लि० हापुड़ (मेरठ)।

३—श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी, प्रधान संचालक आर्य वीर दल सार्वदेशिक दीवानहाल नई दिल्ली—१

अपने मासिक विवरण निम्न अवश्य दिया करें। शाखाओं की संख्या, आर्य वीरों की संख्या, शिविर, सेवा कार्य तथा अन्य विवरण। इसे आवश्यक समझकर शीघ्र कार्य में लावें।

लखनऊ—रविवार आश्विन ३ शक १८८८ भाद्र शु० ११ वि० सं० २०२३, दिनांक २५ सितम्बर १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् एव ब्राह्म जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैव ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे ॥२१॥

भावार्थ—विद्वान् लोग उस ब्रह्म तेज को (हृदय में) प्रकट करते हुए आदि में उपदेश करते हैं। जो ब्राह्मण इस प्रकार ब्रह्म को जानता है, उसके वश मे सब दिव्य शक्तियां हो जाती हैं।

विषय-सूची

नारायण स्वामी जन्म-शताब्दी

समारोह आर्यसमाज के इतिहास में अपूर्व और स्मरणीय आयोजन होगा

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल समर्थक आर्यगण इस अवसर पर गुरुकुल आन्दोलन को नवीन स्वरूप। देंगे राष्ट्र की नीति पर गुरुकुल प्रणाली का व्यापक प्रभाव डालने के लिये गुरुकुल आन्दोलन के समर्थक की जन्म शताब्दी स्वर्णावसर सिद्ध होगी।

आर्यसमाज के संगठन की सुदृढ़ता और वैधानिक उन्नति के लिये शताब्दी-समारोह में आर्यजन गम्भीर विचार विमर्श करें।

आधुनिक जगत के सार्वभौमिक प्रचार की दृष्टि से रखते हुए शताब्दी पर आर्यसमाज के प्रचार साहित्य, प्रचार प्रणाली और हिन्दी प्रचारको को तय्यार करने की नवीन योजनाओं पर विचार किया जायगा।

आर्यसमाज द्वारा सञ्चालित शिक्षा संस्थाओं एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के कार्यों का मूल्याङ्कन करते हुए उनकी भावी उपयोगिता एवं नवीकरण पर गम्भीर विचार किया जायगा।

आर्यसमाज की समस्त गतिविधियों पर गम्भीर विचार विमर्श के लिये विविध सम्मेलनों, राष्ट्रीय समस्याओं पर गम्भीर चिन्तन राष्ट्र एवं विश्व के लिये वैदिक धर्म के सन्देश का प्रसारण शताब्दी समारोह की स्मरणीय घटनायें होंगी।

आर्यजन अभी से शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने का संकल्प कर तैयारी आरम्भ कर दें।

धन-संग्रह का कार्यक्रम आरम्भ हो गया है, आपका अमूल्य सहयोग प्रार्थनीय है। डेपूटेशन बन रहे हैं अपने नगरों मे पहुंचने के लिये लिखिये।

वार्षिक ८)
छः माही ५)
विदेश १ पौं.

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक २६

ज्ञान-कसौटी

सं श्रुतेन गमेमहि ।

अथर्व० १।१।४

हम ज्ञान के अनुसार आचरण करें ।

★

मन में कुछ और होना, वाणी से कुछ और कहना, कर्म से कुछ और करना, यह तो मूर्खों की नीति है । सज्जनों का व्यवहार तो मनसा, वाचा, कर्मणा, सुसंगत और एक सा ही होता है । हो सकता है कि समयवश सज्जन लोग भी कभी कोई भूल कर बैठें, परन्तु ज्ञात होने अथवा बताने पर वे अपनी भूल को मान लेते हैं । वे भूल सुधार भी करते हैं और भूल का यथोचित प्रायश्चित् भी । भूल को मान लेना ही मनुष्य की बड़ाई का ही निशान है ।

स्वाध्याय, सुसंगति, विचार-विमर्श, प्रकृति-निरीक्षण और सात्विक आहार विहार से ज्ञान की प्राप्ति एवं वृद्धि होती है । स्वाध्याय त्याग, कुसंगति, मूढ़ता आलस्य प्रमाद, अहंकार एवं राजसिक अथवा तामसिक आहार विहार से ज्ञान का ह्रास होता है । सब मनुष्यों को प्रसन्नतापूर्वक ज्ञान की वृद्धि के उपायों का ही अनुष्ठान करना चाहिए ।

ज्ञान क्या है ? और अज्ञान क्या ? ये प्रश्न बहुत पुराने हैं । इनकी मीमांसा भी बहुत पहिले हो चुकी है । अज्ञान मिथ्या-ज्ञान और अविद्या ये शब्द एक से अर्थ के ही प्रतिबोधक हैं । असत्य को सत्य, जड़ को चेतन, दुःख को सुख और अपवित्र को पवित्र समझना अज्ञान है । इसके विपरीत असत्य को असत्य, दुःख को दुःख, जड़ को जड़, अपवित्र को अपवित्र और सत्य, चेतन, सुख तथा पवित्र को यथावत् जानना ही ज्ञान है ।

हमारा वर्तमान ज्ञान तो सत्य ज्ञान और अज्ञान का मिश्रण है । सत्य-ज्ञान और मिथ्या ज्ञान दोनों ही मिले-जुले रूप में अपना काम कर रहे हैं । हमारा यह कर्तव्य है कि हम ऐसे उपायों का अवलम्बन करें जिनसे हमारे सत्य ज्ञान की मात्रा निरन्तर बढ़ती रहे और मिथ्या ज्ञान अर्थात् अज्ञान या अविद्या की मात्रा निरन्तर कम होती चली जाये । इसी अनुष्ठान का निर्देश इस प्रकार है कि "सत्य के ग्रहण और असत्य का परित्याग करने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।' यदि इस नियम की उपेक्षा की जायेगी तो यह मानव जीवन ही निष्फल हो जायेगा ।

सत्यासत्य परीक्षा पांच प्रकार से होती है । जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों के अनुसार हो, वह सत्य और जो विपरीत हो, वह असत्य है । यह प्रथम कसौटी है । दूसरी कसौटी यह है कि जो सृष्टि-क्रम के अनुकूल हो वह सत्य, और जो विरुद्ध हो, वह असत्य है । तीसरी का आप्त पुरुषों अर्थात् पक्ष रहित, तत्त्वदर्शी विद्वानों के उपदेशानुसार हो वह सत्य है और जो विपरीत हो, वह असत्य है । चौथी कसौटी यह है कि जो अपने आत्मा की पुकार के अनुसार हो वही सत्य है, आत्मा की आवाज के विपरीत चिन्तन और आचरण असत्य है । पांचवीं कसौटी—आठ दार्शनिक प्रमाण हैं अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य अर्थात् इतिहास, सम्भव और अभाव । सत्यासत्य के निर्णय के लिए प्रत्येक मनुष्य को इन पांचों कसौटियों का उपयोग विधि-पूर्वक करना चाहिये । सृष्टि क्रम के अटल नियम ज्ञान-मार्ग में विशेष सहायक हैं । अतः प्राकृतिक-जगत् में काम करने वाले नियमों का अध्ययन उनके तत्त्वज्ञान और सत्यासत्य के निर्णय का अभ्यास विशेष रूप से उपयोगी है । नाना प्रकार के धर्म-ग्रन्थों के रूप में जो साहित्य हमारे सामने है, वह सब ज्यों का त्यों पूर्ण सत्य नहीं है । कुछ तथाकथित धर्म-ग्रन्थ तो ऐसे भी हैं जिनकी रचना स्वार्थी पक्षपाती, अज्ञानी लोगों ने की है। कुछ ग्रन्थों में सत्य और असत्य का मिश्रित प्रतिपादन है । जो विशुद्ध धर्म-ग्रन्थ हैं उनके विषय में भी बहुत से परस्पर विरोधी विवाद पाये जाते हैं । अतः धर्म-ग्रन्थों की परीक्षा भी इन पांच कसौटियों के आधार पर अवश्य ही कर लेनी चाहिये ।

यद्यपि ज्ञान-प्राप्ति के अनेक मार्ग हैं, तथापि सरलतम उपाय तो सच्ची श्रुति का पठन-पाठन ही है । 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है ।" तभी तो उसका पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना 'परम-धर्म" है । इसीलिये श्रुति को "परम-प्रमाण" भी कहा जाता है । वेद की सम्पूर्ण शब्द-योजना और उसका अर्थ पूर्णतया अभेद है । फिर भी वेदों को सत्यता को कसौटी पर परखा जा सकता है ।

—साधु सोमतीर्थ

★

१००वें जन्म दिवस पर—

वेदों के आचार्य श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

पश्येम शरदः शतम्

[ले०—श्री रामकृष्ण योगेश्वर जी हेविष]

वेदों के आचार्य डा० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर को आज भला कौन नहीं जानता । उन्होंने वैदिक उच्च आदर्शों पर चलकर वैदिक वाङ्मय के अध्ययन और प्रसार के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया । १९ सितम्बर को श्री सातवलेकर अपने जीवन के सौवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं ।

सातवलेकर जी ने जनसाधारण को वेदों की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए वेदों का अनुवाद कर उन्हें सस्ते मूल्य पर देने का उल्लेखनीय प्रयास किया । उन्होंने संस्कृत के पंडितों के सहयोग से वेदों के पाठों को सरल भाषा में प्रकाशित कराया ।

डा० सातवलेकर ने ईसाई मिशनरियों के प्रचार कार्य को देखा और उससे उन्हें वैदिक संस्कृति के प्रचार की प्रेरणा मिली । श्री सातवलेकर के अनुसार प्राचीन वैदिक परम्पराओं और शिक्षा का अर्थ गलत लगाया गया है । उस अज्ञान को दूर कर वेदों के सही रूप को प्रकाश में लाना उनका ध्येय था । महर्षि दयानन्द का उनके जीवन पर भारी प्रभाव पड़ा और उन्होंने अपना सारा जीवन ही उस लक्ष्य की प्राप्ति में लगा दिया ।

संस्कृत के अध्ययन को सरलतम बनाने के लिए सातवलेकर जी ने 'संस्कृत स्वयं-शिक्षा' नामक चौबीस भागों की एक सीरीज निकाली जिसके माध्यम से कोई भी संस्कृत प्रेमी व्यक्ति बिना आचार्यों की सहायता के संस्कृत का ज्ञान स्वयं ही प्राप्त कर सकता है। इसके माध्यम से हजारों व्यक्तियों ने संस्कृत का अध्ययन किया । इसके अतिरिक्त सातवलेकर ने पुरुषार्थ बोधिनी नाम से भगवत गीता का भाष्य भी

श्री पूज्य सातवलेकर जी

लिखा, जिसकी गिनती आज भगवत गीता पर प्रकाशित बृहत भाष्यों में की जाती है । मराठी, हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी भाषाओं में भी इसका अनुवाद हो चुका है । उन्होंने वेदों के अनुवाद के साथ ही सभी उपनिषदों का संस्कृत भाषानुवाद एवं सरलतम हिन्दी अनुवाद करके उपनिषदों को लोकप्रिय बनाने का सराहनीय प्रयत्न किया । सातवलेकर ने स्वाध्याय मण्डल की स्थापना की और इसके माध्यम से वैदिक काल की पुस्तकों के आधार पर संस्कृत भाषा का अध्ययन करने और परीक्षा की व्यवस्था की । ६

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महात्मा नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह

— श्रीविश्वम्भर सहाय प्रेमी

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने आगामी दिसम्बर मास में गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन में आर्यसमाज के सुविख्यात विद्वान् महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की जन्म शताब्दी मनाने का निश्चय किया है। सभा ने इसके लिए नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह समिति का गठन भी किया है जिसके संयोजक सभा सदस्य श्री नरदेव स्नातक हैं।

मुझे ज्ञात हुआ कि समारोह समिति महात्मा नारायण स्वामी जी के समस्त साहित्य का पुनर्मुद्रण करना चाहती है जिसमें उनके कार्य का विशेष विवरण दिया जाएगा।

मुझे बताया गया है आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हरिशंकर जी शर्मा इस जीवन चरित्र का सम्पादन कर रहे हैं। निस्सन्देह आर्य जगत् के लिए यह गौरव की बात होगी कि डा० हरिशंकर जी के सम्पादन में यह कार्य सम्पन्न हो। परन्तु यह तभी सम्भव है जब आर्यसमाज के कार्यकर्ता उनको सर्व प्रकार का सहयोग प्रदान करें। इस सम्बन्ध में मुख्य बात यह है कि महात्मा नारायण स्वामी जी के सम्बन्ध में उनके पास उत्तम से उत्तम सामग्री तत्काल भेजी जाए। तत्काल से मेरा अभिप्राय यही है कि इसमें अधिक विलम्ब न किया जाए। सामग्री के सम्बन्ध में मेरा सुझाव है कि वे व्यक्ति जो महात्मा नारायण स्वामी जी के निकट सम्पर्क में आए, वे अपने संस्मरण लिखने का कष्ट करें। दूसरे जिन व्यक्तियों के पास स्वामी जी के पत्र हों, वे उन्हें भेजने का कष्ट करें। मेरा आशय ऐसे पत्रों से है जो सार्वजनिक रूप से अपना महत्व रखते हों।

इस अवसर पर उन संस्थाओं के संचालकों को भी अपने विचार लिखने चाहिए जिनका स्वामी जी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा।

जहां तक स्वामी जी के कार्य का सम्बन्ध है, उन्होंने आर्यसमाज के प्रायः सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा की उन्होंने ही स्थापना की थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वे प्रबल पोषक रहे। गुरुकुल वृन्दावन को वे बराबर पोषित करते रहे।

महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के वे मुख्य संयोजक थे। मुझे लगभग एक मास तक उनके साथ रहकर वहां कार्य करने का अवसर मिला था। स्वामी जी ने लाखों आर्य नर नारियों के निवास और खानपान की व्यवस्था करने में उस समय अपूर्व सफलता प्राप्त की थी।

नारायण आश्रम रामगढ़ के वे संस्थापक थे और वहां उन्होंने जो शिक्षा संस्था स्थापित की वह आज एक विशाल संस्था बन गई है। वे चाहते थे कि रामगढ़ पर्वतीय क्षेत्र का एक ऐसा केन्द्र बन जाए जहां से निकटवर्ती क्षेत्रों में आर्यसमाज का कार्य किया जा सके।

मैंने संक्षिप्त रूप से स्वामी जी के कार्य पर कुछ प्रकाश डालने का यत्न किया है। मेरा उनसे सन १९२० में सम्पर्क हुआ जब वे मेरठ आर्य कुमार सभा के वार्षिकोत्सव पर पधारे थे। उसके पश्चात् से मैं बराबर उनके सम्पर्क में आता रहा।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि उनकी जन्म शताब्दी समारोहपूर्वक मनाई जाए और उस अवसर पर उनका विस्तृत जीवन परिचय प्रकाशित किया जाए।

मुझे विश्वास है कि आर्यजगत के विद्वान् एवं कार्यकर्ता मेरे विनम्र निवेदन की ओर ध्यान देकर अपने अमूल्य विचार श्रद्धेय डा० हरिशंकर जी शर्मा को भेजने का कष्ट करेंगे।

निरीक्षक सूचना

विदित हो निम्न तीन जिलों के लिए निम्न महानुभाव निरीक्षक पद पर नियुक्त किये गये हैं। आशा है कि उनके पहुंचने पर समाज व संस्था का निरीक्षण कराने तथा सभा का प्राप्तव्य धन देने का कष्ट करेंगे।

१–रायबरेली—श्री प्रो० धर्मेन्द्र-कुमार जी वर्मा एम०ए० रायबरेली।

२–जिला कानपुर—श्री कृष्णकुमार जी वाजपेयी जवाहर नगर कानपुर।

३–इलाहाबाद—श्री हरिश्चन्द्र जी निगम उपसभा प्रयाग।

टिप्पणी श्री डा० सुरेशचन्द्र जी शास्त्री मुख्य निरीक्षक सभा अपने क्षेत्र के समाजों में शीघ्र ही निरीक्षणार्थ भ्रमण प्रारम्भ करने का प्रोग्राम बना रहे हैं, जो आगामी अंक में प्रकाशित होगा। —सभा मन्त्री

सुझाव और सम्मतियाँ

पद-यात्रा

[धर्म प्रचार में पद-यात्रा का विशेष महत्व है। बौद्ध और जैन धर्म के प्रचार में पद-यात्रा से जो सफलता पहुंची वह सर्व विदित है। वैदिक धर्म प्रचार में भी सन्यासी और धर्म प्रचारक पद-यात्रा का उपयोग कर सकते हैं। एक तो इससे जन-सम्पर्क बढ़ता है, जनता धर्म प्रचारकों के चरित्र का निकट से अध्ययन करती है। आर्यसमाज के मिशनरी इस दिशा में सचेष्ट बनें तो एक सामूहिक जन-जागरण उत्पन्न करने में सफल हो सकते हैं। आर्य जगत् के पुरोधा इस ओर ध्यान देने की कृपा करें। —सम्पादक]

श्री चन्द्रनारायण जी ने आर्यसमाज के प्रचारार्थ पद यात्रा का सुझाव दिया है। प्राचीन काल में प्रचार का यह साधन ही अधिकतया प्रयुक्त होता था। बौद्ध धर्म के प्रचार कार्य में इस पद्धति का बड़ा हाथ है।

इस समय श्री विनोबा भावे जी की अखंड-यात्रा उनके प्रचार का प्रधान साधन है। उसका प्रभाव देखना हो तो कुछ दिन इस पद यात्रा में रहना चाहिये। इसी का फल है कि लाखों रुपयों का विनोबा साहित्य देश में वितरित हो गया है और करोड़ों रुपयों की भू-सम्पत्ति हस्तान्तरित हो गई है।

इस पद-यात्रा का पाठ हमारे मुसलमान भाइयों ने पढ़ा है। इस्लाम के प्रचार में इनकी पद-यात्रा एक विलक्षण योजना है इस समय इस योजना में लगभग ७०,००० व्यक्ति भाग ले रहे हैं—यह बतलाया जाता है इस पद-यात्रा का संचालक मौलवी इनामुलहसन हैं और प्रधान केन्द्र निजामुद्दीन (देहली) की निजाम बंगला मस्जिद है। मौलवी जी का कथनानुसार भारत के भिन्न २ भागों में पद-यात्रियों की टोलियां प्रचार कार्य में लगी हैं।

१०/१५ व्यक्तियों की टोली केन्द्र स्थान से चलती है। पूर्व सूचनानुसार ही निश्चित स्थान पर पहुंचती है। मस्जिद में मुसलमान जमा होते हैं। यह लोग उन में निश्चित बातों का प्रचार ही नहीं करते, उन पर दृढ़ता से अमल करने के प्रण लेते हैं। व्याख्यानों, वाद-विवाद, जलसे-जलूसों से अलग रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक परिवार से अपने मन्तव्यों पर दृढ़तापूर्वक जमे रहने की प्रतिज्ञा लेते हैं।

सारी टोली का एक 'मीर' होता है। उसकी आज्ञा सर्वोपरि है। गाड़ियों में बाकायदा 'आज़ान' देकर जमायत में नमाज पढ़ने लगते हैं। अपने खान-पान पहनावे में ही इस्लाम के दर्शन करवाते हैं।

इस पद-यात्रा की विशेष बात यह है कि यह बिना एक पैसा भी व्यय किये हो रही है। प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी व्यय पर इसमें सम्मिलित होता है। जब उसका समय समाप्त हो जाता है तो चला जाता है। स्थान-स्थान से अन्य यात्री सम्मिलित होते रहते हैं और कुछ अपनी यात्रा-अवधि समाप्त करते रहते हैं।

खान-पान के प्रबन्ध के लिये केवल दाल-सब्जी तय्यार करने के लिए एक बरतन (पतीला) इनके पास होता है और एक तवा रहता है। जहां जाते हैं, आटा लेकर चपातियां और सब्जी या दाल तयार करके खा पी लेते हैं। भोजन केवल उन्हीं के घर करते हैं जो प्रतिज्ञा-बद्ध हो जाते हैं।

इस पद-यात्रा का प्रभाव गुड़गांवा जिले में बसे मेव लोगों में या उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों के ग्रामों में देखा जा सकता है।

अपनी प्रचार यात्रा में मुझे इनके सम्पर्क में आने का कई बार अवसर मिला है। यह बहुत ही प्रभावशाली प्रोग्राम है।

आर्यसमाज में यह प्रचलित हो सके तो हमारी बहुत सी समस्यायें हल हो जायेंगी। —हरिश्चन्द्र विद्यार्थी

अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन

योग्य वर की आवश्यकता

एक सुन्दर, सुशील, सर्वगुण सम्पन्न सुशिक्षित (एम ए एम.एससी) गृह कार्य में दक्ष कट्टर आर्य परिवार की कन्या के लिये, योग्य, सुन्दर, उच्च शिक्षा प्राप्त वर की आवश्यकता है, जिसकी आयु ११ से ३८ वर्ष की हो, और वह डाक्टर, इ-जीनियर, प्रोफेसर या अन्य किसी प्रतिष्ठित पद पर हो।

जात पांत का कोई प्रश्न नहीं है। विवाह शीघ्र और आर्य सामाजिक रीति से होगा। डाक्टर—बौक्स नं २८ द्वारा आर्यमित्र, लखनऊ,

पुराणों में क्या है ?

(ले०—श्री लेखराज शीतल, वनस्थली विद्यापीठ वनस्थली)

भोली जनता का धन हरने को पुराणों में पाप करने का (प्रलोभन दिखा कर) अनेक कल्पित तीर्थ कल्पित कर दिये हैं उनमें से कुछ नीचे दर्शाते हैं ?

तुरन्त ब्राह्मण बनने का तीर्थ

श्लोक—ब्रह्म तीर्थे नर स्नात्वा ब्राह्मण्य लभतेनर । ब्रह्मणं परमस्थानं गत्वा न शोचति ॥ नारद पुराण उत्तरार्ध ।

अर्थात् ब्रह्मतीर्थ में स्नान करके मनुष्य ब्राह्मणत्व को प्राप्त करता है और ब्रह्म के परम स्थान को पाकर शोक नहीं रहता।

श्लोक—ब्रह्म तुराङ्कुरे स्नात्वा सद्यो भवति ब्राह्मण । तस्मिन्श्राद्ध फलानन्त मवाप्नोति तपादिभि ॥ (ब्रह्माण्डपुराण)

अर्थ—ब्रह्म तुराङ्कुर नामक तीर्थ में स्नान करके मनुष्य तुरन्त ब्राह्मण हो जाता है। वहां पर श्राद्ध तप होम करने से अनन्त फल होता है तथा—

श्लोक—कपाल मोचने स्नात्वा ब्रह्महापि विशुद्ध्यति । वैश्वामित्रे नर स्नातो ब्राह्मण्य समवाप्नुयात ॥ ना० पु०

अर्थ—कपाल मोचन तीर्थ में स्नान करके ब्रह्मघाती भी पवित्र हो जाता है और विश्वामित्र तीर्थ में स्नान करके मनुष्य ब्राह्मणत्व को प्राप्त होता है।

अब विचारिये कि यह पाप नहीं तो और क्या है ? जब पातकी भी स्नान तक से पवित्र हो जाता है, तो सन्ध्या अग्निहोत्र या योगादि की क्या आवश्यकता रही ?

विश्वामित्र तीर्थ में स्नान कर लेने मात्र से किसी भी मनुष्य को पौराणिक ब्राह्मण मानने को तैयार हैं यदि नहीं तो क्यों ? क्या तीर्थ व्यर्थ हैं? यह ध्यान रहे कि यह सब तीर्थ कलियुग में ही बनाये गये हैं।

श्लोक—कलिजानान्तु पापानां पावनाय महात्मनाम् । ब्रह्मणाकल्पितं तीर्थं कुरुक्षेत्र सुखावहम् ॥ ना० पु० उ० अ० ना०प्र०अ० ६४

कलियुग के पापियों को महात्मा और पवित्र करने के लिए ब्रह्मा ने कुरुक्षेत्रादि तीर्थ बनाए हैं। ना०पु० ६३

श्लोक—किं गया पिण्ड दानेन काश्यांहि मरणेन किं । किं कुरुक्षेत्र दानेन प्रयागे मुण्डनं यदि ॥ (ना० पु० उ० अ० ६१)

अर्थ—गया में पिण्डदान से, काशी में मरने से, कुरुक्षेत्र में दान देने से क्या प्रयोजन, यदि प्रयाग में मुण्डन करा लिया। वाह रे ! कैसा उत्तम नुस्खा है। वे लोग कितने मूर्ख हैं जो गया में पिण्डदान के लिये जाते हैं और कहीं के कहीं ढो जाते परन्तु प्रयाग के लोग भी क्यों पिण्डदान के लिये जाते हैं, क्यों ?

जबकि उनके घर में पिण्डदान का तीर्थ मौजूद है। कम खर्च बालानशीं कितना अच्छा नुसखा है ?

इतना ही नहीं पौराणिक लोग जलों और स्थलों में स्नान, भ्रमण, दर्शन मरण आदि से मुक्ति मानते हैं जैसे—

स्नान से—पूर्वेवसि कर्माणि कृत्वा-पापानि वै नर । पश्चात्गङ्गा निषेवन्ते तेऽपियान्त्युत्तमांगतिम् ॥ १०

(महा०अनु०अ० २६)

मरण से—इह ये पुरुषा क्षेत्रे मरि-ष्यन्ति भारत । तेऽपि मिष्यन्ति सुकृतान लोकान पाप वर्जितान ॥६॥

(महा०शल्य०अ० ५३)

दर्शन से—भवन्ति निर्विषा सर्पा यथा ताक्ष्यस्य दर्शनात । गङ्गाया दर्शनात्तद्वत सर्वपापैं प्रमुच्यते ॥ (४४)

(महा०अनु०अ० २६)

भ्रमण से—पांसवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना समुदीरिता । अपिदुष्कृतकर्माण नयन्ति परमांगतिम ॥ (३)

(महा०वन०अ० ८३)

हैं क्योंकि वह वहां दूसरों को ठगते हैं। वहां पर किया हुआ पाप कभी क्षय नहीं होता। तीर्थवासियों से वहां पर तीर्थ के पंडे पुजारियों का ही ग्रहण है। क्योंकि वहां लोग यजमान यात्रियों को ठोक-ठोक कर अब भी ठगते हैं। मनमानी दक्षिणा लेकर तब सफल बोलते हैं यात्रियों के हाथ बाँध देते हैं, बिना सफल बोले हाथ नहीं खोले जाते। गरीब यात्री खर्च चुक जाने से रोते हैं, परन्तु पण्डा जी को दया नहीं आती, तब उधार या गहने कपड़े बेच कर सुफल चुकवाते हैं। उस कमाई से वहां जैसे-जैसे अत्याचार होते हैं उनकी लीला उन तीर्थों में रहने से ही पता लगाने से ही जानी जा सकती है। यह सब अन्ध भक्ति का ही चमत्कार है।

महाभारत में लिखा है कि—

यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम ।२२।

एव पूर्व कृत कर्म कर्तारमनुगच्छति। अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फला-नि च ।२३।

स्वकाल नातिवर्तन्ते तथा कर्म पुराकृतम ।२४।

(महा० अनु० अ० ७)

नाभुक्त क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि । अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम ।१७।

(ब्रह्मवैवर्त० प्रकृति० अ० १७)

अर्थ—जैसे हजारों गौओं में से बछड़ा अपनी मां को ढूंढ लेता है [२२] ऐसे ही पूर्व किया हुआ कर्म कर्ता को प्राप्त होता है बिना प्रेरणा के ही जैसे फूल और फल ।२३। अपने समय का उल्लंघन नहीं करते। वैसे ही पूर्व में किया हुआ कर्म समय का उल्लंघन नहीं करता ।२४। सौ करोड़ कल्पों तक किया हुआ कर्म बिना भोगे क्षय नहीं होता। किया हुआ शुभ तथा अशुभ कर्म अवश्य ही भोगना पड़ता है। (१७) इससे तो यह सिद्ध हो गया कि किया हुआ पाप क्षय नहीं होता चाहे किसी भी तीर्थ में स्नान, भ्रमण इत्यादि कर लो।

धार्मिक समस्याएं

नाम स्मरण से—गङ्गागङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि । मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोक स गच्छति ॥ (७१)

ब्रह्मवैवर्त० प्रकृति अ० १०

भावार्थ—जो मनुष्य अपनी पूर्व आयु में पाप कर्म करके पीछे से गंगा का सेवन करते हैं वह भी उत्तम गति को प्राप्त होंगे। (१०)

जैसे गरुड़ के देखने से सांप विष रहित हो जाते हैं। वैसे ही गंगा के देखने से ही मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। (४४)

हे इन्द्र ! जो लोग इस क्षेत्र में मरेंगे वह पापों से छूट कर पुण्य लोकों को प्राप्त होंगे (६) हवा से उड़ हुये रेणु भी जो कुरुक्षेत्र में किसी पर पड़ेंगे वे अति पापी को भी परम गति प्राप्त करा-वेंगे ॥३॥ यदि कोई आदमी चार सौ कोस से गंगा गंगा ऐसा कहेगा तो वह सब पापों से छूटकर विष्णु लोक को प्राप्त होगा ॥७१॥

इसके विपरीत पुराण कहता है यथा:—

श्लोक—तीर्थवासी महापापी अवेत-न्नाम्य भगनाः । तत्रैवा चरितं पाप मानन्त्याय प्रकल्पते । देवी भा० ४।८

तीर्थ में रहने वाले बड़े पापी होते

पुराणों के बदले इस तीर्थ महात्म्य है (कि जिनका बढ़ाने को रामावतार राम तथा गंगावतार भरत, लक्ष्मण अपना सकल कला नामकी जी के पुण्या और हाथ जुड़वाकर वेदों की छापें लग-वाईं और भवादि (वट) नदियों से आशीर्वाद की ध्वनि लगवाती है) प्रभा-वित होकर गंगा यमुना नदियों प्रयाग आदि स्थानों में पर्वादि अवसर पर वैसे ही जाकर स्नान करके स्वर्ग प्राप्ति का निश्चय मानते हैं। परन्तु शास्त्रोक्त यह उनकी बड़ी भूल है।

अब देखना यह है कि वे कौन से तीर्थ हैं कि जिनसे मनुष्य दुखों व आप-त्तियों को तर सकता है। क्या वे जल-स्थल सब तीर्थ हैं या विद्यालय, वेद-शास्त्र, सत्सङ्ग तीर्थ हैं। सो इसके प्रमाण प्रस्तुत हैं।

मन तीर्थ—मनसा च प्रदीप्तेन ब्रह्म ज्ञान जलेन च । स्नाति यो मानसे तीर्थे तत स्नान तत्व दर्शिनाम् ।१३।

(महा० अनु० अ० १०८।११)

सत्सङ्ग—सन्ति वाग्बुद्धिसम्पन्न सन्ति बहु श्रुता । तत्तमभ्युत्थाहु पार्थ तीर्थ च तद्वदेत ।९०।

(महा० वन० अ० १९९)

आत्मा—

आत्मा नदी भारत पुण्य तीर्था,
सत्योदका धृतिकूला दयोर्मि:
तस्यां स्नातः पूयते पुण्य कर्मा,
पुण्योऽह्यात्मानित्यमलोभ एव (२१
(महा० उद्योग० ३१०।३९)

सत्सङ्ग—तदल ते विरोधेन शम गच्छ नृपात्मज । वासुदेवेन तीर्थेन कुल रक्षितुमर्हसि ।३६।

ब्रह्म ध्यान पर तीर्थं तीर्थंनिग्रह-निग्रह । ब्रह्मतीर्थेतु परम भाव शुद्धि-पर तथा ।२३।

ज्ञान हृदे ध्यान जले राग द्वेषमला-पहे । य स्नाति मानसे तीर्थे सयाति-परमा गतिम ।२४।

(स्कन्द पूर्व० अ० ८१)

योग—लौकिक स्नानमात्यात योगेन हरिचिन्तनम ।१२।

आत्मतीर्थमिति ख्यात सेवित ब्रह्म-वादिभि ।१३।

(स्कन्द० पूर्व अ० ५०)

भावार्थ—मन से प्रकाशित ब्रह्मज्ञान रूप जल से जो मन के तीर्थ में स्नान करता है। तत्व दर्शियों का यह स्नान है ।१३।

घर में या जंगल में जहां ज्ञानी लोग रहते हैं उसी का नाम नगर है उसी को तीर्थ कहते हैं ।४०। हे भारत आत्मा नदी है यही पवित्र तीर्थ है। सत्य का इसमें जल, धैर्य के किनारे तथा दया की लहरें हैं। इसमें स्नान करने वाला पुण्यात्मा पवित्र हो जाता है। आत्मा पवित्र है नित्य निर्लेप है ।२१) हे राज-पुत्र दुर्योधन ! विरोध छोड़ के शान्त हो

(शेष पृष्ठ ११ पर)

देश विदेश में वैदिक धर्म का निनाद गुञ्जाने वाले–

श्रद्धेय महा० आनन्द स्वामी जी

(श्री रामेश्वरसहाय बी ए विशारद, सिद्धान्त शास्त्री ४६७ निशातगंज, लखनऊ)

भारत का संसार में जो गौरवमय स्थान रहा है वह रहा इसकी वैदिक संस्कृति के कारण। धन्य है महर्षि को जिन्होंने वेदों को जमनी से मंगा कर इस पवित्र संस्कृति का वास्तविक स्वरूप में पुनरुत्थान किया।

आर्य जगत में जिन महानुभावों ने वैदिक संस्कृति के सुमनों से अपने जीवन की माला को गूंथा उनमें महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती एक आदर्श विभूति हैं। उनके जीवन के पृष्ठ उलटने से हमें वह सभी सामग्री उपलब्ध होती है जो साधारण से साधारण बुद्धि वाले व्यक्ति को प्रेरणा प्रदान कर सकती है।

लगभग ७० वर्ष पूर्व पंजाब के एक छोटे से ग्राम जलालपुर जट्टां (अब पाकिस्तान में है) में कक्षा सात के बालक खुशहाल चन्द को देखते हैं। पिता का नाम मुंशी गणेशदास था जो स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री व जाति के खत्री थे। उनके कई लड़के थे परन्तु मन्द बुद्धि होने के कारण बालक खुशहाल चन्द प्रायः उनका कोप भाजन बनता था। उन्हीं दिनों स्वामी नित्यानन्द जी जलालपुर ग्राम में आये और मुं० गणेशदास के बाग में ठहरे। उन्हें रोटी खिलाने का काम बालक को सौंपा गया। बालक प्रतिदिन रोटी खिलाने जाता था इस कारण स्वामी जी इसका नाम जान गये थे। एक दिन बालक को भैंस को पानी पिलाने का आदेश दिया गया। भैंस तालाब में गहरे पानी में चली गई जब निकालने का प्रयास किया और ढेले फेंके तो भैंस दूसरी ओर चली गई और जमींदार के खेत में घुस कर फसल का नुकसान कर दिया। उधर जमींदार आ गये और इतना मारा कि हड्डी दर्द करने लगी। घर पर आया तो पिता ने मारा उस दिन स्कूल में भी मार पड़ी थी। बालक का हृदय रोने लगा। फिर स्वामी जी को रोटी खिलाने चला और खाना देकर एक ओर उदास खड़ा हो गया स्वामी जी यह देखते रहे और भोजन के पश्चात उन्होंने स्नेह व सहानुभूति के साथ कारण पूछा। बालक की आँखों में आँसू आ गये वह फूट फूट कर रोने लगा। स्वामी जी ने प्यार से गोद में बिठा लिया और कारण पूछने लगे। बालक ने रोरोकर सारी कहानी सुना दी और कहा कि मेरी बुद्धि बड़ी खोटी है। सन्तों का सत्संग जीवन को पलट देता है। स्वामी जी ने एक कागज लिया उस पर गायत्री मन्त्र लिख दिया और अर्थ बतलाकर कहा कि प्रातः तीन बजे उठकर स्नान करके इसका जाप किया कर तेरे सब दुःख दूर होंगे और परमात्मा कृपा करेंगे। एक एलार्म घड़ी की सहायता से बालक समय पर उठने लगा परन्तु जाप के समय आंख झपकने लगती। इसे दूर करने के लिये अपनी लम्बी चोटी छत के कड़े से तान कर बांधने लगा और गायत्री मन्त्र का जाप बड़ी श्रद्धा से करने लगा। लगभग छः मास के पश्चात मन्त्र का प्रभाव मालूम होने लगा। बालक के वार्षिक परीक्षा में ३३ प्रतिशत नम्बर आये और कक्षा उत्तीर्ण की, अध्यापक ने समझा कि नकल करके पास हुआ है। इसके बाद वह प्रत्येक परीक्षा में पास होने लगा। एक बार बालक ने एक कविता लिखी जो गुरु जी श्री काका राम को बहुत पसन्द आई और एक चिनी इनाम दी घर पर पिता जी ने भी एक चिनी पारितोषिक के रूप में दी। जब खुशहाल चन्द जी बड़े हुए, उनकी शादी कर दी गई एक बालक रणवीर जी पैदा हुआ। कुछ मास बाद आर्यसमाज जलालपुर जट्टां का वार्षिकोत्सव हुआ महात्मा हंसराज जी का व्याख्यान हुआ श्री खुशहाल चन्द जी ने व्याख्यान की रिपोर्ट ली और दूसरे दिन इस विचार से कि कोई अशुद्धि तो नहीं रह गई महात्मा जी को दिखलाई। महात्मा हंसराज जी बहुत खुश हुए और मुं० गणेशदास से पूछा कि यह लड़का क्या करता है। उन्होंने कहा कि पढ़ने में अधिक अच्छा नहीं है अतः घर के दुर्राब बुनने के कारखाने में काम करता है। महात्मा जी ने कहा कि इस लड़के को इसकी योग्यता के अनुसार काम मिलना चाहिये और उन्होंने श्री खुशहाल चन्द को लाहौर में आर्यगजट में ३०) मासिक वेतन पर नौकर रखवा दिया। यह वेतन उस समय बड़ा वेतन समझा जाता था। अपनी प्रतिभा और योग्यता के आधार पर श्री खुशहाल चन्द आर्य गजट के सम्पादक बने और सन् १९२१ तक उस पद पर कार्य करते रहे। उसी समय मालाबार में मोपला दंगा हुआ जिसमें २५०० हिन्दू मारे गये और २००० को बलात् मुसलमान बना लिया गया। इस घटना से नव युवक सम्पादक के हृदय पर आघात पहुंचा और उन्हें यह प्रतीत हुआ कि देश के पत्र कुछ सम्वादों को प्रकाशित नहीं करते और विपरीत प्रकार का हिन्दू-मुस्लिम एकता का सिद्धान्त बनाकर वे ऐसे समाचारों को दबा देना चाहते हैं। हिन्दुओं पर अत्याचार भी हो तो उनकी बात कोई छापना नहीं चाहता। उन्होंने सोचा कि हिन्दू मुस्लिम एकता आवश्यक है किन्तु वह एकता तब हो सकती है जब हिन्दू भी इतने संगठित हों जितने कि मुसलमान हैं अन्यथा पत्थर और मिट्टी का मिलाप नहीं होता पत्थर और पत्थर का मेल हो सकता है। अतः आप ने देश में एकता, हिन्दू संगठन, सदाचार, सत्य और मानवता की रक्षा के आदर्श को लेकर 'उर्दू मिलाप' समाचार पत्र निकाला और प्रभु का आसरा लेकर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

हमारा कश्मीर

कश्यप का काश्मीर बसाया
कौन छीन भारत से लेगा ॥
धर्म और मजहब के नाम पर।
तुमने कभी जेहाद किया था ॥
मन्दिर मस्जिद गिर्जा घर पर।
बम गिरा बरबाद किया था ॥
तूने भारी सख्या में।
बे गुनाह का खून बहाया ॥
फेंक फेंक कर अग्नि बम को।
कितने ग्राम और शहर जलाया ॥
सच कहता हूं अरे पाक जो।
समय बहुत नजदीक है आया ॥
दुनिया देखेगी एक दिन।
अपनी आंखों से तेरी माया ॥
पाकिस्तान श्मशान भूमि में।
फिर भुनों की तरह जलेगा ॥ क०
है कश्मीर प्राण से प्यारा।
इस प्यारे भारत का अंग ॥
दूर हटो ऐ पाकिस्तानी।
पागल मत बन पोरस संग ॥
जबकी बार किया जो हमला।
लेकर के तुम चीनी संग ॥
चीनी को चट कर जायेंगे।
कर देंगे हम तुमको तंग ॥
अवश्य मान लिया अयूब था।
नहीं तो बदले अपने ढंग ॥
तो खौल रहा है खून।
जवानों का करने को तुमसे जंग ॥
भारत का बच्चा बच्चा मर करके।
पुष्प की तरह खिलेगा ॥ २। क०
नहीं महा है मानसिंह और।
नहीं रहा कोई जयचन्द ॥
फूलों की कलियों को तोड़ना।
बन करके जो मकरन्द ॥
वर्ष रहे हैं वीर हमारे देश–
जब नहीं हिन्दू समाज ॥
जब लुंठन किये राष्ट्रपति।
वास्मीक किये अशवन्त चौहान ॥
मथा किये जल रहे भीम हैं।
मुहम्मदी मुखचारी लाल ॥
दुर्योधन चीनी दुःशासन।
पाकिस्तान बन होश सम्हाल ॥
द्रौपदी भारत माता का नहिं।
केश पकड़ के कोई छलना। क०
तुम्हें जोश है औरंगजेबी।
इधर खड़ा है शिवा महान ॥
कूटनीति अकबर बनते हो।
प्रताप खड़ा है भाला तान ॥
गोरी बन करके आओगे।
चौहान किये बहुरोके बाण ॥
डटकर तुम से जंग करेंगे।
चीनी हो या पाकिस्तान ॥
रक्षक मेरा जगदीश्वर है।
चाहे रूठे शत्रु महान ॥
चाहे जान चले ही जावे।
नहीं झुकेगा हिन्दोस्तान ॥
बाल कृष्ण भारत रक्षा हित।
हिम गिर पथ से नहीं टलेगा ॥

–बालकृष्ण शर्मा (धनुर्धर) घोसी, आजमगढ़

"आर्यों के पंचसकार"

[स्वाध्याय, सदाचार, सत्संग, सत्य एवं सन्ध्या]

[ले०—श्री आचार्य प० रामकिशोर जी शास्त्री गोवर्धन (मथुरा)]

संस्कृत साहित्य में पञ्चमकार, पञ्चलकार पञ्चतकार आदि का विस्तृत विवेचन है वाममार्गियों के पञ्चमकार उनके सिद्धान्तों के मूल रूप में ही हैं। मेरे हृदय में कई बार यह विचार उत्पन्न हुआ, कि इसी प्रकार की कोई रूपरेखा आर्यों की भी बन जाय, जिसके आधार पर हम लोग स्वयं ही अपना आत्मपरीक्षण कर सकें इसी विचारधारा ने इस प्रस्तुत लेख को जन्म दिया है, आशा है आर्यमहानुभावों में यह लेख प्रसन्नता का प्रचार कर अपना उद्देश्य पूर्ण करेगा।

स्वाध्यायश्च सदाचार, सत्सङ्ग, सत्यसेवनम्।

सन्ध्या चैव सदार्याणां, सकार पञ्च बोधयद ॥

भावार्थ —स्वाध्याय, सदाचार, सत्सङ्ग सत्यसेवन तथा सन्ध्या ये आर्यों के पाँच सकार सदा सुखदायक हैं। आर्यमतीय महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों के आधार पर "जहाँ तक मैंने स्वाध्याय किया है" उक्त पाँच नियमों का पालन आर्यजाति के लिये परमावश्यक है। अत आओ हम सभी पर संक्षेप में विचार करलें।

१—स्वाध्याय

शरीर में जितना गौरवपूर्ण स्थान प्राण का है, उतना ही स्थान वैदिकधर्मावलम्बी के विचार व्यवस्थित रखने हेतु स्वाध्याय को प्राप्त है। स्वाध्याय के बिना ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा तदनुकूल ऋषि प्रणीत शास्त्रों का ज्ञान कथमपि सम्भव नहीं है। श्री स्वामी जी ने आर्यसमाज के तृतीय नियम 'वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है" का निर्माणकर स्वाध्याय करने पर बल दिया। ऋषिगण ने हमारे कल्याण के हेतु अपनी अतीव तपस्या द्वारा अर्जित ज्ञानराशि शास्त्रों के रूप में हमें देकर अपना ऋणी बनाया है। 'ऋणत्रय' का प्रतिदिन दो बार पाठ करने वाले हम लोगों को उस ऋण से मुक्त होने के लिये स्वाध्याय ही एक मात्र साधन है। इस समय इस संसार में अनेक सम्प्रदाय अथवा लोक मत दिखा कर भोले मानवों को अपनी-अपनी ओर खींचने का अतीव प्रयत्न कर रहे हैं। इस स्थिति में वैदिक स्वाध्याय द्वारा ही सब मतों का खण्डन कर समाज को उनके जाल से बचाया जा सकता है। इसके प्रमाण रूप में हमारे स्वाध्यायशील शास्त्रार्थ महारथियों की सफलता हम सबके समक्ष है। वैदिक धर्म के मूलाधार स्वाध्याय का इस समय हमारे बीच में क्या स्थान है यह किसी से छिपा नहीं है। कल्याणार्थ हम सभी को इस महत्त्वपूर्ण नियम का दृढ़ता से पालन करना चाहिये।

२—सदाचार

सदाचार का सदैव हमारे देश में गौरवपूर्ण स्थान रहा है, भारतीय संस्कृति में सदाचार को जीवन का सर्वस्व घोषित किया है। महाभारत में तो "अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः" इस वाक्य द्वारा आचारहीन को मृतक कहा है, मनुस्मृति में "आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः" अर्थ आचारहीन को वेद भी पवित्र नहीं करते' यह कहकर उसे सर्वतोभ्रष्ट बताया है। हमारे देश में सृष्टि के आरम्भ से ही धर्म की सर्वाधिक मान्यता रही है। नीति शास्त्र के विद्वानों ने 'धर्मेण हीनः पशुभिः समानाः' इस उक्ति द्वारा धर्महीन मानव को पशु की उपमा दी है इससे सिद्ध है कि सभी को पूर्ण मनुष्य बनने हेतु धर्मात्मा होना अत्यन्त आवश्यक है। 'धर्म क्या है' इस प्रश्न के उत्तर में महर्षि मनु ने अपनी स्मृति में 'आचार परमो धर्म' यह लिखकर आचार को धर्म ही नहीं अपितु परमधर्म स्वीकार किया है। सदाचार पद का अर्थ सत्पुरुषों का आचरण है, शास्त्रज्ञ आप्तपुरुषों के आचरण का अनुकरण सभी मङ्गलाभिलाषियों को करना चाहिये। हमारे पूर्वजों ने सदाचार पालन पर विशेष ध्यान दिया था। महाराज अश्वपति जी की आगन्तुक ऋषियों के समक्ष की गई 'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।

नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।

अर्थ—मेरे राज्य में चोर, कायर, शराबी, यज्ञ हीन मूर्ख तथा दुराचारी पुरुष नहीं है फिर दुराचारिणी स्त्री कहाँ से हो सकती है' यह घोषणा सदाचार की पूर्ण प्रतिष्ठा की परिचायक है। महाराज रघु जन्मोत्सव पर महाराज दिलीप के बन्दियों के छोड़ने का आदेश देने पर महाकवि कालिदास द्वारा उल्लिखित 'न संयतस्तस्य बभूव रक्षितुः विसर्जयेद् यं सुत जन्म हर्षितः' अर्थ—उस राजा का कोई बन्दी ही न था जिसे पुत्र जन्म की प्रसन्नता में छोड़ता। यह यथार्थ सदाचार की परिपक्वता का असाधारण उदाहरण है। आर्य सज्जनों ने भी अंग्रेजी शासन में अपने आचरण से विदेशियों को प्रभावित किया था, जिसके कारण न्यायालय में एक आर्य प्रमाणित अनेक अन्य अप्रमाणित माने जाते थे। पुन उस गौरव को पाने हेतु हमें महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द प० लेखराम आदि के आचार को यथा शीघ्र क्रिया रूप में स्वीकार करना चाहिये।

३—सत्संग

सिद्धान्तों में पर्याप्त भेद होने पर भी सभी सम्प्रदाय के आचार्यों ने सत्संग का महत्त्व एक मत से स्वीकार किया है। सत्संग से मनुष्य की हीन भावनाओं के विनाश के साथ-साथ उदात्त भावनाओं का अनुपम विकास होता है, किसी कवि ने लिखा है 'सतां सङ्गो हि भेषजम्' सत्संग निश्चय ही औषध है, जिस प्रकार औषध सेवन से समस्त शारीरिक रोगों का शमन हो जाने से शरीर स्वस्थ हो जाता है, उसी प्रकार सत्संग सेवन से समस्त कामादिक रोगों के शमन से मन शुद्ध तथा आत्मा बलिष्ठ बन जाता है। नीति शास्त्र के विद्वान् श्री प० विष्णु शर्मा ने हितोपदेश में लिखा है।

संसारविषवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले।

काव्यामृत रसास्वाद सङ्गमः सज्जनैः सह ॥

अर्थ—संसारविषवृक्ष के, काव्यामृत रसास्वाद तथा सत्संग दो ही अमृत फल हैं। महाराजभर्तृहरि ने भी नीतिशतक में लिखा है—

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्, मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।

चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्, सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥

अर्थ—सत्संग बुद्धि की जड़ता को दूर करता है, वाणी में सत्य का सञ्चार करता है, सम्मान एवं उन्नति की वृद्धि करता है, पापों को दूर करता है चित्त को प्रसन्न करता है, सर्वत्र कीर्ति का विस्तार करता है इस प्रकार सत्संग कहो मनुष्यों का क्या कार्य नहीं करता, अपितु सब कुछ करता है। श्री वाल्मीकि जी एवं श्री स्वामी विवेकानन्द जी सत्संग के प्रभाव से नास्तिक भाव का परित्याग कर आस्तिक जगत् के मूर्धन्य बने। श्री स्वामी विरजानन्द जी के संग ने हमारे पथ प्रदर्शक वेदों के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्माण किया, महर्षि के संग पुरुषार्थ, जैसे नास्तिक भी दृढ़ ईश्वर विश्वासी बने। सत्संग के इस महत्त्व को देख कर ही महर्षि ने हम सब को साप्ताहिक सत्संग करने का आदेश दिया। कहांतक हमने इस आदेश का पालन किया है इसे गम्भीरतापूर्वक समझना तथा आत्म हितार्थ नियम से सत्संग करना हम सभी आर्यों का परम कर्तव्य है।

४—सत्यसेवन

अपने सभी व्यवहारों में सत्य का सेवन मानव जीवन को समुन्नत बनाने का अनुपम साधन है। 'सत्यमेव जयति नानृतम् सत्येन पन्था विततो देवयानः' अर्थ—सत्य ही विजयी होता है झूठ नहीं सत्य से मोक्षमार्ग सुगम बनता है, 'सत्यं वद' सत्य बोलो इत्यादि आप्तवाक्य अहर्निश सत्य सेवन का उपदेश दे रहे हैं। लिखा है—

न सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्। नहि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत् ॥

अर्थ- सत्य से बड़ा कोई धर्म तथा झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है, सत्य से बड़ा कोई ज्ञान नहीं, इसलिये सत्य का आचरण करना चाहिये। सत्य क्या है, इस जिज्ञासा को शान्त करते हुए दर्शन में ऋषि ने 'सत्यं यथार्थे वाङ् मनसो' वाणी तथा मन की यथार्थता को सत्य कहा। सत्य का फल बताते हुये महर्षि पतञ्जलि ने अपने योग दर्शन में लिखा है कि 'सत्य प्रतिष्ठायां क्रिया फलाश्रयत्वम्' सत्य की प्रतिष्ठा हो जाने पर साधक सम्पूर्ण क्रियाओं के फल का आश्रय बन जाता है। सत्य के महत्त्व को समझते हुये ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के दस नियमों में से दो नियम ४—सत्य के ग्रहण तथा असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिये। ५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करना चाहिये" के द्वारा सत्य सेवन पर विशेष बल दिया। सत्य के द्वारा ही हमारे पूर्वज विदेशियों के भी विश्वासपात्र बने, यह स्वाध्याय के प्रसंग में लिखा है।

५—सन्ध्या

भगवती श्रुति ने 'अहरहः सन्ध्यामुपासीत' प्रतिदिन सन्ध्या करो, इस वाक्य द्वारा हम सबको प्रतिदिन सन्ध्या करने का आदेश दिया है। पूर्व काल में शास्त्र सम्मत नित्य कर्म सन्ध्या का करना सभी का आवश्यक कर्तव्य था। सन्ध्याहीन व्यक्ति का समाज बहिष्कार कर देता था। महर्षि मनु ने लिखा है—

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम्। स शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्व-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

खंड काव्य—

शिवरात्रि

((गतांक से आगे)

(६०)

दिव्य कल्पना की परियो ने
अपने हाथों से चुपचाप
पूर्ण किया था कल्प कल्प में
इतना गुरुतर कार्य अमाप ॥

(६१)

अन्तरिक्ष से टूट पड़ा था
वसुधा पर तपता अंगार,
रूढ़ि कर्म के मिथ्या बन्धन
जिसमे जलकर होते क्षार।

(६२)

छहा था रोम रोम मे
सावन की मेहदी का रंग,
चाँद उतर आया धरती पर
छोड़ तारिकाओं का संग।

(६३)

धधकाने आया
देव का वह वरदान,
अरे विश्व का तम हरने को
छुटा प्रथम रश्मि का बाण।

(६४)

बाल रूप धर भू पर उतरा
वह त्रिनेत्र योगी निष्काम,
मा कौशल्या के अंचल में
जैसे खेल रहा था राम।

(६५)

बन्द कली से पलकों वाले
उस शिशु का करके शृंगार,
जननी लिए अंक में बैठी
मानस में था हर्ष अपार।

(बोध रात्रि)

(१)

आज अन्तर में छिपा है
एक हाहाकार कैसा ?
गर्जना की इस घड़ी में
वीर यह शृंगार कैसा ?

( )

सामने अब नाचती है
मौत की तपनी दुपहरी
तुम नशे में मस्त होकर
सो रही हो नींद गहरी।

(३)

हा, जमाने के लिए ही
पी लिया किसने हलाहल ?
कौन जिसको देखते ही
व्योम का दिनकर गया ढल।

(४)

कौन जिसके हाथ से ही
ढह गया पाखण्ड सारा ?
लड़खड़ाते धर्म को किसने—
दिया उठकर सहारा ?

(५)

दूर पर्वत की शिला पर
ओ३म की उड़ती पताका,
आज तक भी काल जिसका
कर न पाया बाल बाँका।

(६)

लिख रहा हूं काव्य अपना
बस वही करनी इशारा,
पा गगन से अंगिरा ने
तोड़ कर फेंका अंगारा।

(७)

और जिस दिन गजता सा
विपिन में पतझार बोला,
और उस खूसट पुराने
देवता का प्राण डोला।

(८)

आग में लिपटी हुयी सी
है उसी दिन की कहानी,
जो सुनेगा छार होगा
खौल उठेगी जवानी।

(९)

वज्र सदृश लेखनी से
जलधि की स्याही गिराकर,
व्योम के विस्तृत पटल पर
लिख गया आकर दिवाकर।

(१०)

मातृ अंचल में कुसुम सा
पल रहा था मूलशंकर
दिवस के तपते क्षितिज सा
जल रहा था मूलशंकर।

(११)

बाल योगी पढ़ रहा था
वेद की पावन ऋचायें।
रूप उसका देखने को
झाँकती थी तारिकाऐं।

(१२)

अर्ध विकसित पद्म सा
वह देवता था निर्विकारी,
यम नियम की रज लगाकर
तप रहा था ब्रह्मचारी।

(१३)

अग्नि की उठती लपट सा
धरणि तल प डोलता सा,
साम स्वर से दिव्य मन्त्र की
ग्रंथियो को खोलता सा।

(१४)

भावती थी स्पर्श उसका—
जाह्नवी की धार उज्ज्वल,
इन्दु की स्वच्छन्द किरणें
चूमती उसके चरण तल।

(१५)

पुष्प से कोमल अधर पर
अरुणिमा की लहलहाती,
प्रणय का उपहार लेकर
उषा अवगुण्ठन उठाती।

(१६)

आत्म रति से तनी ग्रीवा
जानु को छूती भुजायें,
प्राण नयनों में छलकता
गहराती थी घन घटायें।

(१७)

मेघ की विद्युच्छटा सा
चमचमाता भाल उसका,
एक सहचर बन रहा था
शिर झुकाकर काल उसका।

(१८)

दूर प्राची पर सुनहले—
बादलों की एक रेखा,
उभरते थे वक्ष पर—
उन बन्धकों किसने न देखा ?

(१९)

मरुद्गण सा मुक्त निशि दिन
अर्यमा सा न्यायकारी,
चन्द्र सा आनन्द दाता
इन्द्र जैसा वज्र धारी।

(२०)

कर रही थी हृदय प्लावित
वह पिता की स्नेह धारा,
व्योम के सप्तर्षियो ने
रूप था जिसका सवारा।

(२१)

खो रहा था मूल शंकर
शम्भु की आराधना में,
तत्व चिन्तक सा बना था
अर्चना में, साधना में।

(२२)

सन्धि वेला मे सजाके—
देव गृह के पत्थरों पर,
मूक अपनी बाल हठ से
आरती करता निरन्तर।

(२३)

शाम्भव की गम्भीरता में
घण्टियाँ थी टनटनातीं,
रुद्र का जयकार होता
तर्कनायें झनझनातीं।

(२४)

लहराती थी बाल उर मे
शैव मत की भावनायें,
पुष्ट करती थी जिन्हे
नाना पुराणो की कथाएं।

(२५)

प्रस्तरों के पिण्ड पर
वह चढ़ रहा था गंध माला,
झूम कर वह पी रहा था
भक्ति रस का एक प्याला।

—कामतारण आर्य
ग्राम परिवापुर, पो० रसूलपुर स्टेट, जि०बाराबंकी

पाखंड के किलों को ध्वस्त करना होगा

(लि०—श्री आचार्य सत्यमित्र जी शास्त्री वेदतीर्थ महोपदेशक बड़हलगंज गोरखपुर)

[आयजन पूरी शक्ति से पाखण्ड खण्डन में लग । ढके ढोंग की पोल खोलकर ही हम सत्य का प्रचार कर सकते हैं । प्रचार और साहित्य द्वारा इस दिशा में शीघ्र कदम उठाये जाने चाहिये ।
—सम्पादक]

आजकल योग के नाम पर भयकर व्यभिचार तथा नास्तिकवाद का प्रचार बढ रहा है । लोगो ने योग के आड में जनता को लटना एव अपनी पुस्तकों का व्यापार तथा चेला चेलिन बनाकर अपनी दूकानदारी को बढाना ही अपना परम धर्म समझ रक्खा है । इसे कपड में अभी मुझ आधुनिक एक मुनीश्वर जी की पुस्तक पढ़ने को मिली जिन्हों ने अपने को अपने मुख से स्वय मुनीश्वर योगीराज कहना प्रारम्भ कर दिया है पुस्तको में अपने को मैं ब्रह्म हू ईश्वर कुछ नही—इस प्रकार जिस किसी ने आस मींच लिया तथा कृष्ण बनकर नाचना प्रारम्भ किया एव व्यभिचार की दूकान धर्म के नाम पर खोल दिया । वह आजकल हिन्दुओं में परम योगी एव जयदेव नारायण नाम से विभूषित किया गया और उस परम सिद्ध का उपाधि प्राप्त हो गई । योग तु कर्म कौशलम कर्म की कुशलता का नाम योग है तथा योग चित्तवृत्ति निरोध चित्त की वृत्तियो के निरोध का नाम योग है । योग के आठ अग हैं जिनमे यम की गणना मे सत्य और ब्रह्मचर्य का प्रथम स्थान है । किन्तु ब्रह्मा कुमारी के योगी लाला लेखराज जी एव मुनि समाज के लोग एव आनन्द मार्गी कहते हैं कि वीर्य का संरक्षण करने से सड जाता है । इसका दान करना चाहिये । बतलाइये आजकल के पाश्चात्य सभ्यता के पुजारी उस योगी को ही योगी समझेगे जो दुराचार व्यभिचार, मास अडा शराब सुलफा का प्रोत्साहन दे । स्वामी दयानन्द के समय जो राम स्नेही तथा स्वामी नारायण मत था व २ अब कीर्तन सघ बना है । जिस मे समय बरबाद किया जाता है और उसमे राम का चरित्र कोई अनुकरणीय नही अपितु श्रीकृष्ण के कारनामे जो उन्होंने नहीं किया था वह पुराणो में वर्णित भागवत लीला, कुब्जा अनुराधा आदि गोपिकाओं का नग्नावस्था का गीतों मे वर्णन किया जाता है तथा वाममार्गी यामियो की आवाज लगती है जिनमें मीना बाजार के सामान जो अधिक धन गुरुदेव को देता है उसे स्त्रिया समर्पित की जाती हैं । कहीं-कहीं बालभोग भी लगता है अभी आनन्द मार्ग के एक आचार्य को प्रयाग मे इसी कुकृत्य मे जूतो से पीटकर पुलिस के हवाले किया गया । एक योगी जयगुरुदेव जो गोरखपुर के कुसमी जगल में गुफा बनाकर रहते थे उन्हे डाके डालते देखा गया । उनको जन्मस्थान मथुरा मे हुआ । प्रतापगढ के पास एक गुरुदेव को शराब पीकर तथा उसी का प्रसाद देकर व्यभिचार करते हुए ऊपर जाते पकड और वे पुलिस के हवाले किये गये । एक गुरुदेव बनारस मे मल्ल जो आनन्द मार्गी थे जो अग्रजी जानते थे और साधुवेश मे रहते थे । उनकी फीस ५) थी जिसमे परम स्वागत शराब की गालियों से होता था । कहने का अर्थ है कि आज योग

विचार-विमर्श

का नाम लेकर रोग व्यभिचार बढ रहा है । प्राणायाम कौन करता है तथा साधना मे कौन बठता है ? अभी अभी एक योगी साधु मिले जिनका शोर था गगोत्तरी से लौटे हैं । उनकी उम्र १५० वर्ष की है और साक्षात ब्रह्मा के अवतार सबको धन व चा आदि देते हैं । उन्होंने भी अपने भाषण में कहा कि मैंने तीनो देवताओ से गगोत्तरी में भेट किया । उनकी त्रिदेव अवतार पुस्तक अब बिक रही थी । वे पूरे जुए के ठकेदार भी निकले । यहा हरे रामा हरे कृष्णा से नभ गजायमान हो रहा है । गुरुदेव से मिलने की फीस ५) । इसी तरह आनन्द मार्गियो ने अपनी पुस्तक साधना मे लिखा है कि जिस ने खाल कटवाना चाहिये तथा चोटी और जनेऊ को तिलांजलि देनी चाहिये । तब आदिशक्ति के अवतार आनन्द मूर्ति प्रभातरंजन सरकार के दर्शन से भगवान का दर्शन होगा । यदि यही योग है तो वाममार्ग ही नास्तिकवाद का जन्मदाता होगा । एव कम्युनिज्म की विचारधारा को जन्म देगा । एक समय था जब वाममार्ग

शेष पृष्ठ १२ पर

ऋषि दयानन्द और फलित ज्योतिष

(श्री प० राजेन्द्र जी अतरौली (अलीगढ)

आर्यमित्र दिनाक २१ अगस्त १९६६ मे एक लेख, स्वामी दयानन्द और ज्योतिष प्रकाशित हुआ है । लेखक महोदय न केवल एडवोकेट हैं अपितु एक पुराने आर्यसमाजी भी हैं प्रतीत ऐसा होता है कि वह लिखित प्रमाणो की अपेक्षा सुनी सुनाई बातो पर अधिक विश्वास करते हैं । अन्यथा वह ऐसा लेख न लिखते । ऐसे लेखो द्वारा जहा स्वाध्याय विहीन आज के आर्यों मे भ्रम उत्पन्न होना है वहा विरोधियो के हाथ मे प्रचारार्थ एक प्रमाण आ जाता है । अतएव इस प्रकार के लेखो के लिखने और आर्य पत्र पत्रिकाओ में प्रकाशित करने मे बडी सावधानी बरतनी चाहिये ।

आप लिखते हैं—स्वामी जी स्वय बड ज्योतिषी थे । उन्होने कई भविष्य वाणिया की जो अक्षरशः सत्य निकलीं । यदि लेखक महोदय ने स्वामी जी की जीवनियो को देखा होता तो उनको यह भ्रम न होता । ऋषि ने जो भी भविष्य वाणिया की हैं उनका आधार उनका योग बल था फलित ज्योतिष नही । ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे इस प्रश्न के उत्तर मे कि तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है ? लिखा है नही जो उसमे अङ्क बीज रेखा गणित विद्या है वह सच्ची जो फल की लीला है वह सब झूठी है । आगे उन्होने जन्मपत्र को शोककारक बताते हुए इस फलित ज्योतिष का खूब उपहास और खडन किया है । इसी प्रकार एकादश समुल्लास मे फलित ज्योतिष की आलोचना करते हुए वह लिखते है—(सत्यवादी) जो यह ग्रहण रूप प्रत्यक्ष फल है सो गणित विद्या का है फलित का नहीं । जो गणित विद्या है वह सच्ची और फलित विद्या स्वाभाविक सम्बन्ध जन्य को छोड के झूठी है । जैसे अनुलोम प्रतिलोम घूमने वाली पृथिवी और चन्द्र के गणित से स्पष्ट विदित होता है कि अमुक समय अमुक देश अमुक अवयव मे सूर्य वा चन्द्र ग्रहण होगा इत्यादि ।

मैं समझता हूं उपयुक्त सत्यार्थप्रकाश के दो प्रमाण यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त हैं कि ऋषि दयानन्द न फलित ज्योतिष मे विश्वास रखते थे और न वह ज्योतिषी थे । लेखक की इस बात का गणित (ज्योतिष) का कुछ फल भी निकलना चाहिये ? भी उत्तर इसमें विद्यमान है । अर्थात गणित करने पर जो सूर्य चन्द्र के उदय अस्त का समय दिनमान नक्षत्र और राशियो का ज्ञान, ग्रहणादि का समय मास और वर्ष गणना आदि हैं वह फल है मनुष्य का भाग्य निर्णय नही । यहां हम ऋषि दयानन्द की जीवनी से फलित ज्योतिष और सामुद्रिक (हाथ देखकर) द्वारा भाग्य निर्णय की दो घटनाओ को प्रस्तुत करते हैं । पडित गौरीशंकर महाराज (ऋषि दयानन्द) के पास आए और निवेदन किया कि मैं ज्योतिषी हूं कुछ प्राप्ति की लालसा से आया हूं । महाराज ने कहा कि यदि आपके ज्योतिष ने आपको यह बताया है कि आपको मुझसे कुछ प्राप्ति होगी तो मिथ्या है, क्योंकि मैं आपको कुछ न दूंगा । और यदि यह बतलाया है कि प्राप्ति न होगी तो आपने व्यर्थ कष्ट किया । इसी प्रकार अनूपशहर के निकट एक ग्राम मे एक व्यक्ति ने अपना हाथ दिखलाकर कहा कि इसमें क्या है ? स्वामी जी ने उत्तर दिया—इसमे हड्डी है चाम है और रुधिर है और कुछ नही

आइये अब ऋषि दयानन्द द्वारा की गई अनेक भविष्यवाणियो को लें जो सत्य सिद्ध हुईं । इन भविष्यवाणियो का आधार उनका योगबल था फलित ज्योतिष सर्वथा नहीं जैसा कि लेखक का ऋषि की जीवनियो से स्पष्ट हो जायगा । इन समस्त घटनाओ मे कहीं भी स्लेट पर हिसाब लगाने का लेशमात्र भी उल्लेख नही है । जिस किसी ने इस स्लेट पर हिसाब लगाने की बात कही है वह नितान्त असत्य है जिसका कि समर्थन ऋषि के जीवन मे देखने और सुनने को कहीं नहीं मिलता । आर्य परिवारो मे चाहे वे साधारण हो या शिक्षित पौराणिक खिचडी पक रही है । यह भी उस परिवार के किसी

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पोशाक के वरदान एवं अभिशाप

(ले०—श्री रघुनाथप्रसाद पाठक जी)

जर्मनी के डाक्टरों ने अभी हाल में वेस्टर लैंड में हुए एक सम्मेलन में फैशन के नए नए तर्जों की तानाशाही पर अपनी सम्मति प्रकट की है। हैम्बर्ग के स्वास्थ्य-विज्ञान के विशेषज्ञ प्रोफेसर एफनवर्जर ने कहा है कि यदि असमत कपड़े पहने जाते रहे तो स्वास्थ्य की खराबी रोकी नहीं जा सकती। इन प्रोफेसर महोदय ने कपड़े पहनने की बुरी आदत से उत्पन्न अभिशापों की एक तालिका भी बनाई है।

अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया है कि तंग तथा अनेक वस्त्रों को धारण करने से पर्याप्त हवा का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है जिसके कारण शरीर से बहुत पसीना निकलता है। इसके अतिरिक्त वस्त्रों के प्रचलित डिजाइन और उनकी बनावट तंग होती है। जूतों, मोजों, कालर और हैट का बोझ अधिक होता है।

प्रोफेसर महोदय को पश्चिमी यूरोप के जूते के उद्योग के प्रति बड़ी शिकायत है। यह उद्योग फैशनेबिल जूते तैयार करता हुआ स्वास्थ्य विज्ञान का ध्यान नहीं रखता। परिणाम यह है कि ९५ प्रतिशत स्त्रियों के पैर बेढंगे हो गये हैं। स्कूलों के ८० प्रतिशत बच्चे बहुत तंग और नोकीले जूते पहनते हैं जिसके कारण पैरों में कुरूपता उत्पन्न हो जाती है। इन बच्चों के परीक्षण से विदित हुआ है कि १० से १२ वर्ष की आयु की प्रत्येक चौथी लड़की के पैरों में रोग है जो मुख्य रूप से जूतों के पहनने से उत्पन्न हुआ है।

इन दिनों स्त्रियों और लड़कियों में तंग कपड़ों के पहनने का प्रचलन जारी है। इन्हें पहने हुए वे अच्छा खासा कार्टून बन जाती हैं। यदि दुर्भाग्य से उन्हें आपत्ति से बचने के लिए तेज चलना या दौड़ना पड़ जाय तो वे अपने को असमर्थ पाती हैं। एक विमान दुर्घटना की जांच के समय एक जज महोदय ने यह रहस्योद्घाटन किया है कि एक देवी विमान से जीवित अवस्था में इसलिये न निकल सकी कि वह तंग कपड़े पहने हुए थी इसलिए वह भागकर अपनी जान न बचा सकी। इन कपड़ों को पहनने से निर्लज्जता का जो भी प्रदर्शन होता है उसमें मनचले कम आनन्द एवं और भले लोग दुःख अनुभव करते हुए पाए जाते हैं। इतना ही नहीं वे देवियां और लड़कियां दुष्टों एवं गुण्डों की कुदृष्टि तथा छेड़खानी का आप शिकार बन जाती हैं। अमेरिका के एक औद्योगिक संस्थान के प्रबन्धक को एक महिला कर्मचारी को सर्विस से इसलिये पृथक् कर देना पड़ा कि वह बहुत तंग भड़कीले और वासनाओं को उत्तेजित करने वाले कपड़े पहन कर आती थी जिससे पुरुष कर्मचारियों का ध्यान बटकर काम की हानि होती थी। प्रबन्धक महोदय की चेतावनी के भी सार्थक सिद्ध न होने पर उन्हें यह कठोर पग उठाने के लिये विवश हो जाना पड़ा था।

कपड़े पहनने का उद्देश्य सर्दी, गर्मी और वर्षा से शरीर की व लज्जा की रक्षा करना है। परन्तु उसी प्रकार के और उतने वस्त्र पहिनने चाहिये जिनसे शरीर की रक्षा हो, पर्दा हो और काम-काज में सुविधा हो। भारती ऐसी ही पोशाक है जिसकी उपयोगिता के विषय में श्रीमती मेनिंग कहती हैं कि "समस्त पोशाकों में भारती पूर्ण है और चलने-फिरने उठने-बैठने में सुविधाजनक ... भारतीय पोशाक की पूर्णता एवं सुन्दरता को देखकर कहा था— पोशाक के विषय में पश्चिम को पूर्व से बहुत कुछ सीखना है।'

पोशाक और फैशन की तानाशाही के प्रभाव में जो निर्लज्जता, विलासिता, असभ्यता और ईर्ष्या-द्वेष व्याप्त है। उसकी पूर्व से कल्पना करके ही आर्य संस्कृति ने बिना सिले कपड़ों को धारण करने का विधान किया था जो अब भी भारत के कुछ भागों में प्रचलित है। इस संस्कृति की पोशाक में धोती, शरीर पर चादर ओढ़ना, सिर पर केशों का मुकुट और गले में फूलों की माला है।

इस समय लहंगा, पायजामा, पतलून, कुरता, कोट, कमीज तथा चुगा आदि जितने सिले हुए वस्त्र पाए जाते हैं वे सब धोती और चादर के रूपान्तर हैं। धोती से तहमत और लहंगा बना है और इन दोनों के मेल से पायजामा, पतलून और जोधपुरी आदि बनी हैं। इसी प्रकार चादर से कुरता कुरते से कोट और चुगा आदि बने हैं। इसी तरह सिर के केशों से साफा और साफे से टोपी की सृष्टि हुई है।

संक्षेप में पोशाक में शरीर और लज्जा की रक्षा ही प्रधान भावना होनी चाहिए फैशनपरस्ती की नहीं, जिसके अभिशापों से मानव समाज ग्रस्त एवं खिन्न दिखाई देता है।

वैदिक-शोध-संस्थान

[ले०—श्री मुन्शीराम जी शर्मा]

जुलाई १९६२ में वैदिक शोध-संस्थान का कार्य दयानन्द कालेज कानपुर में प्रारम्भ हुआ था। इसे सुयोग अथवा भगवत्कृपा ही समझिये कि कालेज की सेवा से अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भावी अनुसंधान कार्य के लिए भारतवर्ष के समग्र अवकाश प्राप्त विभिन्न विषयों के प्रोफेसरों में मुझे भी चुन लिया। मैंने अनुसन्धान के लिए जिस विषय का प्रस्ताव आयोग के सम्मुख प्रस्तुत किया उसे अधिकारियों ने स्वीकार कर लिया विषय वैदिक अध्ययन से सम्बन्ध रखता था।

वैदिक स्वाध्याय में मेरी रुचि बाल्यकाल से ही थी। मेरा मनोयोग युवाकाल में ही वेदों की ओर ही लगा रहा। कदाचित् ही कोई ऐसा दिन व्यतीत हुआ होगा जब मैंने वेद का स्वाध्याय न किया हो। इसके परिणाम स्वरूप वेद के लगभग ५०० सौ मन्त्र आज भी मुझे कण्ठस्थ हैं। अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त मैं वेद माता की सेवा में सुयोग पाते ही अनायास संलग्न हो गया। सर्व प्रथम मैंने वैदिक मन्त्रों की संख्या पर विचार किया। ऋग्वेद में सबसे अधिक मन्त्र हैं जिनमें से अनेक मन्त्र अन्य तीन वेदों में भी उपलब्ध होते हैं। यही नहीं प्रत्येक वेद में कुछ मन्त्रों की पुनरावृत्ति भी हुई है। मैंने इन पुनरावृत्तियों पर विचार किया है। पुनरावृत्ति के समय मन्त्र के स्थान परिवर्तन से जो अन्तर आए हैं उनपर भी मैंने विचार किया है। अन्तरों को समानार्थक, भिन्नार्थक संज्ञा, विशेषण, अव्यय, क्रिया, पद, कृदन्त, तद्धित, आदि में विभाजित किया गया है और उन सब विवेचनात्मक विमर्श किया गया है।

प्रत्येक वेद की विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला गया है तथा उनके विषयों की मीमांसा की गयी है। यजुर्वेद के याज्ञिक प्रकरणों की ओर अभी तक किसी की दृष्टि नहीं गई थी। इन प्रकरणों का विस्तारपूर्वक उद्घाटन किया गया है। इस कार्य में अनेक ऐसे विज्ञान परक तथ्य भी सम्मुख आये जिन्होंने वेद को मेरी दृष्टि में बहुत ऊँचा उठा दिया वेद वस्तुतः ज्ञान का भण्डार है। हमारे पूर्वजों ने उसे स्वतः प्रमाण मानकर सकल ज्ञान विज्ञान का स्रोत कहकर जो प्रतिष्ठा प्रदान की है वह उसके गौरव के अनुकूल ही है।

पुनरावृत्ति सम्बन्धी वेद-विषयक कार्य का समारम्भ इस युग में सर्वप्रथम ब्लूमफील्ड ने किया। परन्तु उसने अपने कार्य को ऋग्वेद तक ही सीमित रखा। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है और दो भागों में प्रकाशित हो चुका है। मैंने चारों वेदों को पुनरावृत्ति-अध्ययन का क्षेत्र बनाया और वर्गों की विशेष भूमिका में न जाकर अन्तरों तक ही अपने को सीमित रखा। इससे चारों वेदों की ऋचायें संख्या में कितनी हैं, इसकी गणना भी आधुनिक रूप से स्वतः हो गई। चार वर्षों के अनवरत परिश्रम के उपरान्त अब यह कार्य पूर्ण हो गया है और चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी के प्रबन्धक उसे प्रकाशन के लिए ले गये हैं।

प्रकाशित वेदों में मन्त्र संख्या इस प्रकार दी हुई है—

मन्त्र संख्या

ऋग्वेद १०५५२

पुनरावृत्त मन्त्र ७७

द्विपदा ऋचायें १४० अतः चतुष्पदा रूप में ७०

वास्तविक ऋचाओं की संख्या

१०५५२–(७०+७७)=१०४०५

यजुर्वेद १९७५

पुनरावृत्त मन्त्र संख्या ८६

ऋग्वैदिक ऋचायें ९५८

यजुर्वेद की दो ऋचायें दो बार आवृत्त हुई हैं। ३।२५।२६

अतः निश्चित मन्त्र संख्या—१९७५—(८६+९५८+२)=१२२९

(शेष पृष्ठ १२ पर)

दून घाटी और उसकी ईसाई-समस्या

(श्री सुखदेव शास्त्री संयोजक अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार मिशन)

प्यारे देशवासियो !

दून घाटी में ईसाई समस्या आज ऐसे मोड़ पर पहुच गई है कि अब हम उसकी बहुत दूर तक उपेक्षा नहीं कर सकते, मसूरी, चूहड़पुर, चकरौता, राजपुर, क्लीमन टाउन आदि मे लेंग्वेजिज स्कूल, चिकित्सालय, चाय बागान के अशिक्षित तथा भोले भाले मजदूरों की बेबसी से लाभ उठाकर उनमें ईसाई प्रचार कैम्प का आयोजन, राजपुर मे बसे सहस्त्रों निर्धन निःसहाय तिब्बती शरणार्थियों की गरीबी और बेबसी से लाभ उठाकर उनकी सम्पूर्ण बस्ती को ईसाइयत के आचरण में विलीन कर लेने के लिए विपुल धन आदि का प्रलोभन देना और उनकी वेशभूषा रहन सहन खान-पान बदल उनका सम्पूर्ण ईसाई करण कर लेना। मन्सूरी में लेंग्वेजिज स्कूल खोलकर विश्व और भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओ का अध्ययनार्थ प्रबन्ध कर भारत के कोने-कोने में प्रशिक्षित प्रचारक भेजने के लिए भारी तैयारी कर धर्म परिवर्तन द्वारा देश के ईसाईकरण द्वारा ईसा स्थान बनाने के लिए उन सभी घातक हथकण्डों की शिक्षा देना जिनका पादरी प्रचार क्षेत्र में खुलकर प्रयोग करते हैं। राजपुर में जान मसीह ध्यान केन्द्र बनाकर धर्म प्रेमी भोले-भाले अध्यात्म साधकों को योग और समाधी झांसा देकर फसाना तथा विदेशो से इस बहाने भारी मात्रा मे धन प्राप्त करके उस धन को धर्म परिवर्तन मे व्यय करना। क्लीमन टाउन मे कन्वेन्ट और स्कूलो के बहाने यहा के और बाहर के अबोध बालक बालिकाओ को विदेशी राष्ट्र भक्ति का विष देकर उन्हें विदेशी बनाने का कुचक्र रचना पादरी तैयार करने के लिये प्रशिक्षण केन्द्र चलाने के अतिरिक्त दून घाटी के विस्तृत मैदानों और पहाड़ी क्षत्रों में ईसाई प्रचारकों का घूम घूमकर पर्वतीय अशिक्षित एव निर्धन भारतीयों का धर्म परिवर्तन करने के लिये भारी मात्रा में धन तथा प्रचार (प्रलोभन) सामग्री वस्त्र-खाद्य वस्तुयें तथा नौकरी आदि का प्रलोभन देकर अपने घृणित तौर तरीकों द्वारा ईसाईयत के जाल मे फसाने का अभियान तीव्रगति से चलाना आदि कार्य युद्धस्तर पर हो रहा है। खेद का विषय है कि देश की इस दिशा में काम करने वाली शुद्धि ईसाई प्रचार निरोधक आदि सस्थाओं और सगठनों ने दून घाटी की ईसाई समस्या के स्थाई समाधान के लिए कोई स्थाई और ठोस व्यवस्था बनाकर इस समस्या का कोई समुचित समाधान नहीं किया और यही कारण है कि आज भी यह क्षेत्र सूना (खाली) और उपेक्षित पड़ा है जबकि इस क्षेत्र में धार्मिक और सांस्कृतिक गम्भीर सकट उत्पन्न हो रहा है।

तात्कालिक आवश्यकता

दून घाटी के लिये तात्कालिक समाधान के रूप मे एक स्थाई और प्रभावकारी अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोधक प्रशिक्षण केन्द्र की आवश्यकता है जहा से न केवल इन ईसाइयत के रग में रगे मजहबी दीवानो के दूषित और राष्ट्र द्रोहात्मक हथकण्डो से भारतीय जनता को बचाने की प्रचार द्वारा व्यवस्था की जाय अपितु एक स्थाई कार्यालय की स्थापना भी की जावे जहा बैठकर इन विदेशी पादरियो की कुचालों का अध्ययन किया जाता रहे तथा एक स्थाई ट्रेनिंग सेन्टर जिसमें इनके भयकर षड्यन्त्रों तथा हथकण्डों का भावी प्रचारकों को ज्ञान कराया जाय और भावी प्रचारक तैयार किये जाय जिसमें देश की पहाड़ी और अन्य प्रान्तीय भाषाओ का अध्ययन भी प्रचारकों को कराया जाय जिससे देश के विभिन्न प्रदेशो में जाकर यह प्रचारक इन पादरियो के दूषित प्रचार का मुहतोड़ उत्तर दे सकें।

(२) चूहड़पुर चकरौता क्षेत्र की मुख्य समस्या डा० लेमिन का मिशनरी अस्पताल है जिसका लक्ष्य इस क्षेत्र में सिवाय ईसाइयत के प्रचार के और कुछ नही है उसकी प्रत्येक गतिविधि का केंद्र ईसाई प्रचार है और आज उसी के कारण इस क्षेत्र मे शोचनीय स्थिति उत्पन्न हो गई है। इस क्षेत्र मे ईसाइयत को सगठित और प्रभावी रूप में बढ़ाने और फैलाने में डा० लेमिन का अस्पताल मुख्य केन्द्र के रूप में कार्य करता रहा है। चिकित्सा और सेवा के नाम पर भारी मात्रा में देशी और विदेशी एजेन्सियों से धन बटोर कर गरीब निर्धन अशिक्षित भोली भाली पहाड़ी जनता के लोगो की बेबसी और दीनता का पूरा-पूरा लाभ लाभ उठाकर उन्हे ईसाई बनाने का प्रचार कार्य करता रहा है। इस क्षेत्र में चाय के बागान बहुत हैं उनमें हजारों अन्य प्रान्तों से आये गरीब मजदूर कार्य करते हैं, चाय के बागान प्राय ईसाई लोगो के केन्द्र रहे हैं। उनमें काम करने वाले मजदूरो की निर्धनता का ईसाईयत को बढ़ावा देने के लिए पूरा-पूरा वह लाभ लेते रहे हैं। प्रचार के साधन रूप में सिनेमा दिखाने के बहाने किंग एण्ड किंगड्स बादशाहो का भी बादशाह ईसु मसीह को सर्वोपरि राजा दिखला और बतलाकर सबको उसी की प्रजा बनने की प्ररणा देते रहे हैं तथा देश के शासन तथा राज्य व्यवस्था को घटिया करके बतलाकर ईसाई राज्य आने की खुश खबरी उन्हे सुनाते हैं। आदि २ अनेकों तरीके हैं जिनसे डा० लेमिन का लगभग सम्पूर्ण स्टाफ चिकित्सार्थ आये रोगियों को भी चिकित्सा की अवधि में ईसाइयत से प्रभावित करने तथा मौका लगे तो उसे ईसाई बनाने से भी यह लोग नहीं चूकते। यह समस्या कितने भयकर रूप में आज इस क्षेत्र में निवास करने वाले भारतीय विचारवान लोगों के लिये गम्भीर समस्या बनी हुई है इसका अनुमान स्वय इस क्षेत्र मे कुछ दिन रहकर और उनके द्वारा प्रभावित क्षेत्रो में घूम घूम कर स्वय अपनी आंखों से देखकर और यहां के मूल निवासियों को ईसाई बनाने के लिए उक्त चिकित्सालय का किस कदर हाथ है आदि का अध्ययन करने के उपरान्त ही लग सकता है। जब तक इसको र ाधान के लिए कोई और ठोस स्थाई प्रबन्ध न किया जायगा तब तक के लिए यह अपने स्थान पर खड़ी रहेगी.

एकमात्र उपाय

इस भीषण समस्या का एकमात्र उपाय यह है कि चूहड़पुर क्षेत्र में डा० लेमिन के उपरोक्त अस्पताल जो कि एक प्रभावशाली तथा आधुनिक उपकरणों (साधनो) से सम्पन्न है तथा जिसमे रोगियो की सुख सुविधा का ध्यान भी विशेष रखते हैं के बराबर उसी क्षेत्र में एक शक्तिशाली और बड़ा अस्तपाल खोला जाय जहा पर उच्चकोटि का स्टाफ हो तथा आधुनिक विज्ञान प्रदत्त उपकरणों के अतिरिक्त रोगियों की सुख

लक्ष्य-सिद्धि

(१)

देख कठिनाइयों को शीश जो झुकाता नहीं,
प्रबल प्रभजन न गति रोक पाता है।
चलता अकेला लेके उर में उमग सग,
तानों, उपहासों का विचार जो न लाता है।
हानि लाभ की न परवाह जिसे किंचित् भी,
गीत जो सदैव रण-रङ्ग के ही गाता है
फूल खिले, सो भी चुने, शूल मिले सो भी चुने,
सुकवि 'प्रदीप' निज लक्ष्य वही पाता है।

(२)

देखता चराचर में ईश की छटा जो नित्य,
सत्य और न्याय का सुपन्थ अपनाता है।
आनन सरोज पै विराजती तपोद्युति है,
प्रेम और ममत्व जो सदैव सरसाता है।
दलितों को दीनो को, अनाथ और पीड़ितो को—
बाहु से उठा के निज वक्ष से लगाता है।
साधना प्रदीप की प्रभा जो करता विकीर्ण,
सुकवि 'प्रदीप' निज लक्ष्य वही पाता है।

(३)

धेनुघातियों के लिए काल-सा कराल जो है,
राष्ट्र द्रोहियो पै भीम वज्र जो गिराता है।
वासना-प्रसारको का करता कचूमर जो,
धर्म द्वेषियो को सदा धूल जो चटाता है।।
धर्म त्राण हेतु कटिबद्ध सदा रहता जो,
परहित प्राण भी सहर्ष जो लुटाता है।
मोह, द्रोह, राग-रोष का जो करता विनाश,
सुकवि 'प्रदीप' आत्म-तत्त्व वही पाता है।

—भगवानशरण 'प्रदीप' एम. ए,

सुविधा तथा निःशुल्क चिकित्सा की पूर्ण व्यवस्था हो जिसमें उत्तम सर्जन तथा नेत्र चिकित्सक विशेष रूप से रखने की व्यवस्था हो यह अस्पताल कम से कम १ लाख से आरम्भ किया जाय और इसके उपरान्त उसके लिये स्थायी आर्थिक व्यवस्था का भी निश्चित प्रबन्ध करते रहने की व्यवस्था की जाय। रोगी जन की उत्तम आवास व्यवस्था उनसे उदारतापूर्वक प्रेम व्यवहार ही इसकी पूर्ति कर सकता है। ईसाई मिशन की आज की यह सब से बड़ी मुख्य समस्या है कि रोगियों की निःशुल्क सेवा चिकित्सा करके ही यह भयंकर राष्ट्रघात है जिसके कारण आज इस सुन्दर घाटी को राष्ट्र घातक, मुसल, विनाश कीड़ा हेतु ईसाई मिशनरीयन के द्वारा षड्यन्त्रों का एक सक्रिय क्षेत्र बना दिया गया है। यह उद्धार करने के लिये परमावश्यक है। जब तक उपरोक्त प्रबन्ध न किया जायगा तब तक यह कार्य अधूरा ही बना रहेगा इसलिए विचारशील देश के के दानी मानी समर्थ व्यक्तियों को मेरा यह परामर्श है कि इस कार्य के लिए आगे आवें और अपने धन का इस पवित्र देश, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, उद्धारक, राष्ट्र गौरव की रक्षा करनेवाले पवित्रतम कार्य में लगाकर अपना धन तथा पुरुषार्थ सफल बनावें। एक निर्धन असहाय पीड़ित दीन दुःखी रोगी की चिकित्सा सहायता एवं उद्धार, लाख रुपयों दान कर सुपात्र दूसरों को दे देने से कहीं बढ़ कर पुण्य का काम है। फिर आपके इस पवित्र धन से न जाने कितने सहस्त्रों लाखों रोगी, व्यक्ति लाभ उठाकर आप को आपके बाल बच्चों और आपके जीवन के लिए प्रभु से प्रार्थना करेंगे तथा उनकी सुखी प्रसन्न आत्मायें आपको आशीष देंगी जिससे न केवल आपको पारिवारिक सुख एवं आत्मिक शान्ति ही मिलेगी अपितु आपके पवित्र और महान दान से भगवान भी प्रसन्न होंगे। क्योंकि आप भी उनकी प्यारी प्रजा के दुःख निवारण में उनके साथ हो पावेंगे।

इसके लिये

देश में काम करने वाले जागरूक सक्रिय संगठनों के समाजों और सभा सदों के नाम भी मेरा यह खुला प्रार्थना पत्र है कि आप भी कृपा कर इस महान् कार्य को सफल बनाने की दिशा में अपने प्रभाव का प्रयोग करने की कृपा करें और अपने पवित्र संग्रहीत दान की राशि में से इस कार्य के लिये भी सहायता देकर आगे आवें। देश की समस्त समाज सेवी संस्थाओं और सांस्कृतिक केन्द्रों के संचालकों एवं देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों की सेवा में भी नम्र निवेदन है कि इस गम्भीर समस्या की ओर ध्यान देकर अपनी सहायता का उदार हाथ इस ओर भी बढ़ाने की कृपा करें। यह एक रचनात्मक कार्य है जिस पर कि जनता तथा अपने व्यापक हितों की रक्षा की दृष्टि से उन्हें अवश्य ध्यान देना चाहिए।

साथ ही स्वनाम धन्य सिक्ख बन्धुओं से जिन्होंने अपनी महान् उदारता एवं देश के प्रति सेवा तथा रक्षा के महान् प्रयासों द्वारा धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में व्यापक दृष्टिकोण तथा उत्तम मार्ग दर्शन सांस्कृतिक पुनरुद्धार और कृतियों तथा उदारतापूर्वक पवित्र दान के द्वारा निरन्तर भारत माता की निस्वार्थ भाव से सर्वदा सेवा की है के प्रति भी यह विश्व भारती की निर्धन साधन हीन सेवक हिन्दू (आर्य) भारतीय सन्तानें बड़ी आशा भरी निगाहों से निहार कर इस क्षेत्र में इस वृहद् स्तरीय अस्पताल के निर्माण हेतु सहयोग की आशा कर रहे हैं।

प्रसन्नता की बात है कि पारब्रह्म परमात्मा की कृपा और आप इस भीषण भय संकट वाले युग में इस कार्य की सफलता के लिए वैदिक धर्म प्रचारक संघ की प्रेरणा पर श्रद्धानन्द साल्वेशन मिशन ने उपरोक्त समस्या को आप तक पहुंचाकर आप ही के सहयोग द्वारा इसे पूरा करने का प्रण किया है। इस महान् कार्य की सफलता केवल आप के सहयोग, सद्भाव तथा सहायता पर ही निर्भर है। आशा है आप दून घाटी की इस समस्या और हमारा प्रस्तुत विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और इस विशाल पवित्र किन्तु रचनात्मक कार्य में योग दान करने के लिए उदारतापूर्वक आगे आयेंगे।

पुराणों में क्या है ?

(पृष्ठ ५ का शेष)

तो कृष्ण रूप तीर्थ से अपने कुल की रक्षा कर।३६। ब्रह्म का ध्यान परम तीर्थ है। इन्द्रियों का निग्रह तीर्थ है। मन का निग्रह तीर्थ है। भाव की शुद्धि परम तीर्थ है। ज्ञान रूप तालाब में ध्यान जल में जो मन के तीर्थ में स्नान करके राग द्वेष रूप मल को दूर करता है। वह परम गति को प्राप्त होता है २२ २४। बोध से हरि का चिन्तन मौलिक स्नान है।१२। आत्मा रूप तीर्थ प्रसिद्ध ब्रह्मवादियों ने सेवन किया।११।

अब यह सिद्ध हो गया कि मोक्ष के हेतु जल, थल, स्थान वसने मदन आदि तीर्थ नहीं अपितु उपरोक्त तीर्थ ही दुख विनाशक ज्ञान प्रकाशक तथा मोक्षदायक है।

वैदिक-शोध-संस्थान

(पृष्ठ १० का शेष)

सामवेद १८७५
पुनरावृत्त मन्त्र संख्या २६४
ऋग्वैदिक ऋचायें १७७१ जिसमें पुनरावृत्त मन्त्र भी सम्मिलित हैं।
अथर्ववेद की ऋचायें ८
यजुर्वेद की ऋचायें ६
सायणाचार्य के अनुसार ११११ से १११५ तक की मन्त्र संख्या एक साथ लेने से दो ऋचायें और कम हो जाती हैं।
अत निश्चित मन्त्र संख्या १८७५–१७७१–८+६+२=८८+१० महानाम्नी को जोड़ने से संख्या ९८ हो जाती है।
अथर्ववेद ५९७७
ऋग्वैदिक ऋचायें १२८१
पुनरावृत्त २९९
अथर्व के १७९ मन्त्र वस्तुत ऐसे हैं जो चतुष्पद के रूप में १०० ही रहते हैं, अत ७९ मन्त्र और कम हो जायेंगे।

अत वास्तविक मन्त्रों की संख्या ५९७७-(१२८१+२९९+७९)=४३४८ चारों वेदों के मन्त्रों की संख्या इस आधार पर १०४०४+१२२९+९८ ४३४८+=१६०८०=इसमें ऋग्वेद की ८० बालखिल्य ऋचाओं को यदि कम कर दिया जाय तो ऋचाओं की संख्या सोलह सहस्त्र होगी है।

वैदिक शोध संस्थान का यह प्रथम कार्य लगभग ५०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है। अब वैदिक संस्कृति पर दूसरा प्रबन्ध चल रहा है जो सम्भवत इस वर्ष के अन्त तक पूर्ण हो जायगा।

इसके अतिरिक्त विभिन्न वैदिक विषयों पर पचास निबन्ध और लिखे जा चुके हैं जो दो भागों में पृथक् रूप से साहित्य भवन लि० प्रयाग तथा चौखम्बा वाराणसी द्वारा प्रकाशित हो रहे हैं। ब्रह्मचर्या, जीवन दर्शन, वैदिक निबन्धावलि, सन्ध्या चिन्तन आदि निबन्ध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

वैदिक शोध संस्थान के समस्त वैदिक शोध कार्य की जो योजना है, वह प्रभु आश्रित चल रही है। प्रभु ही विविध अवलम्बनों के अवलम्बन है। उन्हीं का अवलम्बन इस जीवन का सम्बल रहा है। वे ही पार लगायें।

स व पर्षिद्र पारयाति,
स्वस्ति आना पुरुहूत।

आर्यों के पंचसकार

(पृष्ठ ७ का शेष)

स्याद् द्विज कर्मण ॥

अर्थ—जो व्यक्ति प्रात तथा सायं सन्ध्या नहीं करता उसे समस्त द्विज कर्मों से शूद्र के समान बहिष्कृत कर देना चाहिये। सभी वेदार्षि सन्ध्यात्मक ब्रह्मोपासना पर बल देते हैं। हमारे पूर्वज राम, कृष्ण प्रभृति सभी विधिपूर्वक सन्ध्या द्वारा ईश्वरोपासना करते थे यह उनके चरित्रावलोकन से स्पष्ट हो जाता है। हमारा कर्तव्य है कि महर्षि द्वारा प्रस्तुत सन्ध्या अवश्य करें। भगवान् का ध्यान कराने वाली क्रिया का नाम ही सन्ध्या है।

प्रस्तुत लेख में अति संक्षेप में आर्यों के पंच सकारों पर विचार किया है। हम सबको इनके आधार पर आत्म-निरीक्षण करके इन्हें व्यवहार में अवश्य अपनाना चाहिये, ऐसा करके ही हम महर्षि के संकल्पों को साकार रूप दे सकेंगे तथा गौरव प्राप्त करेंगे।

★

ऋषि दयानन्द और फलित ज्योतिष

(पृष्ठ ७ का शेष)

पौराणिक के मस्तिष्क की उपज है। यदि एडवोकेट महोदय जो स्वयं एक पुराने आर्य हैं, वह ही ऋषि के योग बल को फलित ज्योतिष समझ बैठे हैं और ऋषि पर एक बड़े ज्योतिषी होने का लाञ्छन लगाते हैं तो अन्य का कहना ही क्या ? यदि लेखक महोदय इस लेख को प्रकाशित कराने से पूर्व अपने नगर के विद्वान् प० बिहारीलाल जी से इन शंकाओं का समाधान न करा लेते तो लेख को प्रकाशित न कराते और यह मिथ्या भ्रम न फैलता।

पाखण्ड के किलों को ध्वस्त करना होगा

(पृष्ठ ७ का शेष)

बढ़ा और यज्ञों में वेद के नाम से मांस तक का हवन होने लगा तो हमारे देश में चारवाक बौद्ध जैन सम्प्रदाय पैदा हुए अत आर्यसमाज इससे सावधान सतर्क होकर इनके पीछे क्रान्ति का बिगुल बजा कर इनके अड्डों से जनता को बचावे। किन्तु यह कार्य कौन करेगा।

हमारे स्कूल कालेज सब पाश्चात्य सभ्यता के प्रचार में लगे हैं। सभायें चुनाव चक्रों में फसी हैं। आइये सावधान होकर एक बार इन दुराचारी सम्प्रदायों के पीछे पड़कर इनको उखाड़ फेंका जावे एवं इनके ढोल के पोल को खोलकर सच्चे वैदिक एवं साधना के स्थान लोक लोगों को उसमें आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करें। आर्यों मिशन का कार्य स्वयं करने से होगा जो कोई इस सम्बन्ध में सहयोग प्रचार साहित्य का चाहें मुझ से प्रत्येक प्रकार का सहयोग ले सकते हैं। प्रचार की दुन्दुभी के बाजार के पापी किले को ध्वस्त करने का शुभ संकल्प लेकर आगे बढ़ें।

★

जीवन-ज्योति

(पृष्ठ ६ का शेष)

बड़े परिश्रम और त्याग से सफलतापूर्वक अकेले इस पत्र को सफलता पूर्वक चलाते रहे जिसका बड़ा स्वागत हुआ इसके बाद "हिन्दी मिलाप" निकाला गया। आपको का श्रद्धा पूर्वक बाप और भगवान में अटूट विश्वास सदा बना रहा। कुछ ही समय में सभी सांसारिक सुख प्राप्त हुए। भवन, मोटर, पशु, सन्तान, धन, लाखों की सम्पत्ति सभी कुछ प्राप्त हुआ। इसी बीच प्रभु आपके धैर्य व विश्वास की परीक्षा लेना चाहते थे। लाहौर युनिवर्सिटी के हाल में गवर्नर पर गोली चली उनके पुत्र रणवीर जी भी पकड़ गये, श्री खुशहाल चन्द जी योगेन्द्र नगर आर्यसमाज के जलसे पर गये और वहाँ एक पहाड़ से नीचे गिरने के कारण रीढ़ की हड्डी टूट गई, पलास्टर बाँध कर सारा धड़ जकड़ दिया गया परन्तु गायत्री माँ की गोदी में आप निरन्तर सहारा पाते रहे। चिन्ता का नाम नहीं माँ ने सहायता की, लड़के का बाल बाँका न हुआ, आप स्वस्थ हुए। इसके बाद गायत्री माँ की प्रेरणा से लौकिक सुख प्राप्त करने के पश्चात आप ने तृणवत् सब सुखों को तिलांजलि देदी और सन्यास लेकर महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती हुए।

स्वामी जी की वाणी और लेखनों में वो जादू है उसे वही अनुभव करते हैं जो अमृतवाणी सुनते या उनकी पुस्तकें पढ़ते हैं। आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिये स्वामी जी ने देहरादून के निकट 'तपोवन' आश्रम स्थापित किया है जिसमें समय-समय पर योग विद्या, ध्यान, अमृत सुधा का पान कराते हैं। सम्प्रति आप कई देशों का भ्रमण कर रहे हैं। दक्षिण पूर्वी एशिया, प्रशान्त महासागर के टापू, थाईलैंड, सिंगापुर, फीजी न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, हांग-कांग, फारमूसा, जापान इत्यादि में वैदिक धर्म की पताका फहरा रहे हैं।

पूज्य स्वामी जी एक जीवन मुक्त सन्यासी हैं जो संसार को मोक्ष का मार्ग सरल ढंग से बतला रहे हैं। स्वामी जी के प्रवचनों को सुनकर विदेशी भी भारतीय योग विद्या की ओर आकर्षित हुए हैं। वास्तव में भारत संसार का गुरु अपने आध्यात्मिक ज्ञान के कारण रहा है उसी में सच्चा आनन्द है और यही जीवात्मा के लिये कल्याणकारी है। भौतिकवाद की होड़ में भारत पश्चिमी देशों का न तो मुकाबला कर सकता है और न धन सम्पत्ति के जोड़ने में आत्मिक लाभ है। भारत सरल जीवन, उच्च विचार के सिद्धान्त में विश्वास करता रहा है। स्वामी जी हमें इसी पथ की ओर ले चल रहे हैं। आप की रचनाएं तत्वज्ञान, प्रभुदर्शन, प्रभु भक्ति, आनन्द गायत्री कथा, एक ही रास्ता, आनन्द सत्यकथा, शंकर और दयानन्द, उपनिषदों का उपदेश, मानव जीवन गाथा, भक्त और भगवान, घोर घने जंगल में, महामन्त्र' इत्यादि भक्त हृदय में एक हिलोर उत्पन्न करते हैं और वह सच्चिदानन्द के दर्शन करने को लालायित हो उठता है। तपोवन में ऐसे योगी ऋषि, महात्मा उत्पन्न होकर देश और विदेश में सच्चे वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें तो स्वामी जी की साधना और भी चरितार्थ होगी।

लेखक कुछ श्रद्धा के सुमन महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती के चरणों में अर्पित करता हूं। यदि पूज्य स्वामी जी इसे स्वीकार कर तो लेखक अपने को भाग्यशाली समझगा। ★

श्री सातवलेकर जी

(पृष्ठ ३ का शेष)

मण्डल का यह कार्य आज भी जारी है।

सातवलेकर जी एक अच्छे वक्ता हैं वे अपनी बात को इस ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि श्रोताओं में प्राचीन जीवन मूल्यों के प्रति आस्था स्वयं ही पैदा हो जाती है।

सातवलेकर जी का जीवन अत्यन्त साहसी का रहा है। उनमें असीम हिम्मत एवं साहस कूट कूट कर भरा हुआ है। उन्होंने मराठी के एक मासिक पत्र में वेदों की ऋचाओं का जो भाष्य प्रकाशित किया था उससे ब्रिटिश हुकूमत तक के कान खड़े हो गये थे और वह उन्हें सन्देह की दृष्टि से देखने लगी थी। ब्रिटिश सरकार की उन पर कड़ी निगाह रही। सातवलेकर को ब्रिटिश सरकार की नजर से बचने के लिए दर दर घूमना पड़ा, यहां तक कि लाहौर में फोटोग्राफर का धन्धा करना पड़ा। इन कठिनाइयों के बावजूद वे निराश न हुये और अपना कार्य जारी रखा।

जिस उम्र में लोग किसी जिम्मेदारी के कार्य को अपने कन्धों पर लेने में घबराते हैं, उस आयु में उन्होंने अपने कार्य की ओर भी साहस और दृढ़ता के साथ बढ़ाया और उसमें सफलता प्राप्त की। संयम और दैनिक व्यायाम तथा नियमित रूप से कार्य करना ही उनकी सफलता की कुंजी है। उन्हें परमोह छू तक नहीं गया है उनके अनुसार वेदों और धर्म ग्रन्थों में इतनी समस्याएं मिलती हैं कि उनको सुलझाने के अतिरिक्त और समय ही नहीं मिलता।

सातवलेकर जी का जीवन औजस्मय है वे इस आयु में भी निरन्तर लेखन कार्य द्वारा हिन्दी और संस्कृत की सेवा में लगे रहे हैं। ★

आर्य-जगत

हिन्दी-दिवस समारोह

लखनऊ में १४ सितम्बर को सायंकाल हनुमान पार्क, आर्यसमाज मन्दिर में बड़े उल्लास व धूमधाम से मनाया गया। उक्त अवसर पर एक सभा आयोजित की गई थी जिसकी अध्यक्षता श्री श्रीमती भारतीय ने की। व्याख्यानदाताओं में श्री एस०एन० चतुर्वेदी श्री एस०एन० शास्त्री व श्री मुकुन्दचन्द्र जी पाण्डेय के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

शिया डिग्री कालेज के वनस्पति-विज्ञान विभाग के प्राध्यापक श्री मुकुन्द चन्द्र पाण्डेय का भाषण बड़ा ही पाण्डित्यपूर्ण व सराहनीय रहा। उन्होंने कहा— 'यह एक विशिष्ट राष्ट्रीय पर्व है और समस्त भारतवर्ष में यह बड़े ही धूमधाम से मनाया जा रहा है। आर्यसमाज के लिए यह उत्सव विशेष महत्व का है क्योंकि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती एक हिन्दी एतरप्रदेश के निवासी होते हुए भी उन्होंने अपने समस्त ग्रन्थों की रचना हिन्दी भाषा में की है और हिन्दी को "आर्य्य भाषा' की संज्ञा प्रदान की। वे ही नहीं अपितु पूज्य बापू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, लोकमान्य तिलक, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुभाषचन्द्र बोस तथा अन्य अहिन्दी भाषी लोगों ने हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा व राजभाषा बनाने का सुझाव सम्मुख रखा है।

नवीन योजना

उपसभा मुरादाबाद की सस्ती उत्सव योजना से प्रभावित होकर बाहर की बहुत सी समाजों ने हमें उत्सव कराने विषयक पत्र लिखा है और लिख रहे हैं। उपसभा मुरादाबाद ने जिले मुरादाबाद से बाहर की आर्यसमाजों के उत्सव १५०) दक्षिणा मार्ग व्यय के अतिरिक्त लेकर वार्षिकोत्सव कराने की सस्ती योजना बनायी है। इस योजना के अन्तर्गत उपसभा स्थानीय आर्यसमाज को केवल २-उपदेशक तथा २-भजनोपदेशक प्रदान करेगी शेष समस्त व्यय भार समाज को वहन करना होगा जो समाजें हमारी इस योजना से लाभ उठाना चाहें कार्यालय को लिखें।

हरिश्चन्द्र आर्य
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद

जयपुर में संस्कृत के विद्वान् सम्मानित

वेद संरक्षण के उद्घाटन के अवसर पर रवीन्द्र मंच पर संस्कृत के कुछ विद्वानों को सम्मानित किया गया। मुख्य मन्त्री श्री सुखाड़िया ने प० वीरसेन वेदश्रमी वेद सदन महारानी रोड इन्दौर को श्री शाल तथा मुद्रा भेंट कर सम्मानित किया जिन्होंने मन्त्रोच्चार के चमत्कार से गत फरवरी माह में जयपुर में तथा गत माह खण्डवा में यज्ञ के द्वारा वृष्टि करवाने में सफलता प्राप्त की है। जिन अन्य विद्वानों को शाल भेंट कर सम्मानित किया गया उनमें से श्री वे शृंगेरीमठ के शंकराचार्य के प्रतिनिधि श्री काशी विश्वनाथ, हरिद्वार के धर्मदेव विद्यावाचस्पति तथा मीमांसक श्री युधिष्ठिर।

सस्वर वेद पाठियों को रक्षा मन्त्री श्री चव्हाण ने तिलक कर शाल मुद्रा तथा नारियल भेंट कर सम्मानित किया। जिस समय रक्षा मन्त्री ने चारों वेद पाठियों के तिलक किया उस समय परम्परागत ढंग से मन्त्रोच्चार किया गया। पूजन के पश्चात् श्री चव्हाण ने वेद संरक्षण योजना का विधिवत् उद्घाटन किया।

निर्वाचन—

—सुरेशचन्द्र मन्त्री, आ० स० कांठ

आर्यसमाज खतौली जिला मुजफ्फर नगर का वार्षिक निर्वाचन दिनांक १२-९ ६९ ई० को निम्नलिखित हुआ—

प्रधान—श्री बाबू तिलकरामजी वर्मा, उपप्रधान—डा० जगतराम जी तथा लाला सोहनलाल जी मन्त्री—श्री सोहनलालजी नागर, उपमन्त्री—श्री सुखदेव जी शास्त्री तथा ला० महेशचन्द्र जी, कोषाध्यक्ष—ला० सत्यप्रकाश जी।

—आ० स० मुकरपुरी, बिजनौर

मुकरपुरी डा० खाना जिला बिजनौर मे श्री बुद्धदेव जी व हरकेशसिंह जी आर्य व श्री ध्यानसिंह जी के प्रयत्न द्वारा आर्यसमाज स्थापित हो गई है और निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—चौ० श्री बसन्तसिंह जी, उपप्रधान—श्री नत्थूसिंह जी, मन्त्री—श्री प० घसीराम जी, उपमन्त्री—श्री रघुनाथसिंह जी कोषाध्यक्ष—श्री बसन्तसिंह जी, निरीक्षक—श्री पूरनसिंह जी मास्टर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री कुंवरी तख्त सिंह जी।

लखनऊ—रविवार आश्विन १० शक १८८८ आश्विन कृ० ३ वि० सं० २०२३, दिनांक २ अक्तूबर १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् येभ्यो होत्रां प्रथमा
मायेजे मनुः समिद्धाग्निर्म-
नसा सप्त होतृभिः त
आदित्या अभयं शर्म यच्छत
सुगा नः कर्त्त सुपथा स्वस्तये।

काव्यानुवाद

सम्मान देता यज्ञ में
विद्वज्जनों को ईश है।
मन न क ... काल ...
समृद्ध है जिस विज्ञ की ॥
हैं ब्रह्मचारी व अभय
सुख के प्रदाता सर्वदा।
हमको सुगम पथ पर चलावें
धर्म के प्रमुवर सदा।

—[illegible] बाय

विषय सूची

* भारत की दो महान विभूतियाँ *

दो अक्तूबर जयन्ती

विश्ववंद्य बापू

श्री महात्मा गांधी

भारत की स्वाधीनता, दरिद्रनारायण की सेवा, विश्व शान्ति और सच्ची मानवता के सन्देशवाहक, जो जीवन पर्यन्त एक तपस्वी की भांति अपने आदर्शों के लिये साधना में रत रहे। स्वाधीनता की सूर्योदय वेला में जब उनकी अत्यधिक आवश्यकता थी वे हमें अकेला छोड गये। उन्होंने भारत के स्वराज्य को सुराज्य बनाने का दायित्व हम पर सौंपा है। २ अक्तूबर उस दायित्व का स्मरण कराने आता है।

भारत गौरव श्री शास्त्री

श्री लालबहादुर शास्त्री

भारतीय गौरव के अद्वितीय स[ं]रक्षक स्वाधीनता की सुरक्षा के लिये आपने देश को ललकारा और देश को विजयश्री दिलवायी। देश की [illegible] जनता आशा भरी दृष्टि से अपने प्रधान मन्त्री की ओर देख रही थी कब और कैसे यह भारत-पुत्र हमें गरीबी से मुक्ति दिलाता है। वे अधिक दिन हमारा पथ प्रदर्शन न कर सके पर उनका स्मरण भारतीय इतिहास के वीर योद्धा के रूप यावच्चन्द्र दिवाकरौ किया जायगा। उनका जन्म स्मरण राष्ट्र को नई प्रेरणा दे रहा है।

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक २७
एक प्रति

अध्यात्म-सुधा

जगत्-पिता

त्वं हि नः पिता वसो ।

ऋ० ८ । ९८ । ११

हे सर्वाधार ! तू ही हमारा पिता है ।

●

हे सकल सृष्टि के सृजनहार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमन् सर्वाधार परमात्मन् ! आप ही हमारे पिता हैं । सांसारिक पिताओं के भी पिता तो आप ही हैं आप ही हमारे सच्चे पालक पोषक और उत्पादक हैं । आप ही हमारे शिक्षक पथ प्रदर्शक और सहायक हैं । होने को तो हमारे लौकिक पिता भी हैं । वे भी हमारे आदरणीय हैं, परन्तु सर्वांश में सभी के सच्चे पिता तो बस आप ही हैं । प्रत्येक पुत्र अपने पिता का अनुगमन किया करता है । प्रत्येक पुत्र को अपने पिता का अनुव्रती होना ही चाहिए । अत हम भी आपके अनुगामी होना चाहते हैं । स्तुति, प्रार्थना और उपासना के द्वारा हम भी आपके गुण, कर्म, स्वभाव को अपने-अपने जीवन मे धारण करने का प्रयास कर रहे हैं । हम भी आपके व्रतो का पालन करने में तत्पर हो रहे हैं । हे जीवन-धन ! हमारे इस बाल-सुलभ क्रीडा-कौतुक को देखकर और हंसकर ही न रह जाना । सब प्रकार से हमारी सहायता भी करना । आपके भरोसे पर ही हम आगे बढ़ रहे हैं ।

जब आप हमारे पिता हैं फिर अभावों के कष्ट हम क्यो भोगें? अविद्या के कष्ट हम क्यो उठावें ? त्रिविध तापों मे अपने आप को हम क्यो तपावें ? और हे जगदीश ! काम, क्रोध मद, मोह, लोभ और अहंकार रूपी शत्रु हमें क्यों सतावें ? उत्तम और समृद्ध पिता की सन्तान भी तो उत्तम और समृद्ध ही होनी चाहिये । क्या कोई समर्थ पिता अपनी सन्तान की दुर्दशा को देख सकता है ?

भगवन् ! अपनी महती कृपा से, जो नाना प्रकार का ऐश्वर्य आपने हमें प्रदान किया है हम तो अपनी अल्पज्ञतावश उस का सदुपयोग करने में भी असमर्थ से हो रहे हैं । राग द्वेष और मोह माया के फन्दों में फसकर हम तो विश्व प्रेम और भ्रातृ-भाव के ऊंचे आदर्शों का पालन करने में भी असमर्थ हो रहे हैं । हमारा बहुमूल्य जीवन व्यर्थ के झंझटो में ही नष्ट हो रहा है । सुन्दर सुयोग हाथ से छूटे जा रहे हैं । हे दयानिधे ! हमें सुबुद्धि और धर्मानुष्ठान में दृढ़ता का दान दो । हमारे हृदय-मन्दिर को अपने दिव्य प्रकाश से परिपूर्ण कर दो ।

आप तो सभी तत्वों, पदार्थों, प्राणियों और नियमो के मूलाधार हैं । सकल ऐश्वर्य के स्वामी हैं, सबके सर्वोपरि शासक हैं । हे नाथ ! हम दीन जन कब से आप को पुकार रहे हैं ? क्या हमारी पुकार आप तक नही पहुंचती ? पिता जी ! हम अपना-अपना अधिकार मांगने के लिये आपके द्वार पर आये हैं । हमारा दाय-भाग, हमारे पैतृक-स्वत्व हमें दो ।

हे देव ! जब नाना प्रकार के प्रलोभन हमें पाप-पंक में लिप्त करना चाहें, तब हम प्रलोभनों को ठुकराकर सत्य-पथ पर डटे रहें । जब काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और अहंकार रूपी छ मनोविकार, जो कि हमारे सनातन-शत्रु हैं, हम पर आक्रमण करें, तब उनको पछाड़ने मे हम पूर्णतया सफल हों । जब संसार का पाशविक-बल हमें कुमार्ग की ओर धकेलना चाहे, तब हमें ऐसा बल, कौशल और बौद्धिक पराक्रम प्रदान करो, जिससे हम उस पाशविक-बल पर विजय प्राप्त कर सकें । हे प्रभु ! किसी भी अवस्था में हमारा किसी भी प्रकार का पतन कभी न हो ।

हे नाथ ! तेरी सर्वोपरि सत्ता के परिचायक नाना प्रकार के चमत्कार संसार में सुप्रकाशित हो रहे हैं । चन्द्र, सूर्य और असंख्य ग्रह, उपग्रह रूपी तारागण तेरी ही ज्योति से सुप्रकाशित हैं । पृथिवी, चन्द्र एवं सूर्य आदि को तू ही अनेक विध प्रगतियां प्रदान कर रहा है । सम्पूर्ण उत्पत्ति, स्थिति और विनाश-लीलाओं का प्रवर्त्तक भी तू ही है । तू ही न्याय-नियन्ता और सब प्राणियों का कर्म-फल-प्रदाता है । हे स्वामिन् ! आपकी महिमा को पूर्णतया समझ लेना भी हमारे वश में नहीं है । आपके स्तुति-गान में भी हम असमर्थ हो रहे हैं । हे देव ! ऐसी कृपा करो, जिससे हम सदा ही आपके आज्ञानुवर्ती बन कर शुभ कर्मों का अनुष्ठान करते रहें और सदा ही अपने पूर्वज ऋषि-मुनि महात्माओं के समान ही आप की कृपा, आपके प्यार और दुलार के पात्र बने रहें ।

—साधु सोमतीर्थ

★

गीत—

राष्ट्र का गौरव—गाय

गाय ! प्यारे राष्ट्र का जीवन रही है

वेद ने इसकी महा महिमा बखानी ।
वत्स वृषभों ने कही कृषि की कहानी ।
यज्ञ-होता ने इसे सर्वस्व माना ।
'गौ पतो" के मन्त्र ने सर्वस्व जाना ।
विश्व में बनकर धरा का धन रही है ।।

कृष्ण ने ब्रज में अनेकों 'धन' बसाये ।
नाम धर 'गोपाल' 'गो वर्द्धन' सजाये ।
गाय रक्षण हित रहे वन मे विचरते ।
ले लकुटि-कम्बल कछारों में विहरते ।
'नन्द' के आनन्द का वर्धन रही है ।।

नर-'दिलीपों' ने अनेकों प्राण वारे ।
'दक्षिणा' सी नारियों ने पद पखारे ।
सिक्ख गुरुओं ने सदय हो सिर झुकाये ।
कौन है जिसने न गौरव गीत गाये ।
आर्य-संस्कृति का विमल दर्शन रही है ।।

नृप 'हुमायूं' ने इसे रक्षित किया है ।
मीर 'बाबर' ने स-विधि पूजित किया है ।
नृप 'अकबर' ने इसे सादर सम्भाला ।
कौन सा युग था न जिसमे गोकपाला ।
'गौ' सिकन्दर का मधुर रंजन रही है ।।

पूंछ पकडी और वैतरनी उतरते ।
हो भला, चाहे बुरा, 'गोदान' करते ।
'बैल की जोडी' लिए नेता खड़े हैं ।
हम कृतघ्नी, मार्ग में निष्ठुर अड़े हैं ।
गौ निराली नीति का नर्तन रही है ।।

क्रूर हाथों ने रुधिर के नद बहाए ।
'बुद्ध' ने करुणा भरे आंसू बहाए ।
दैन्य-दुख भागा, इसी धन के सहारे ।
विश्व चमके डूबते, नभ के सितारे ।
सभ्यता के भाल का चन्दन रही है ।।

गाय ही परिवार का शृङ्गार करती ।
गाय रोगो का सदा संहार करती ।
गाय, ही भव-सिन्धु से उद्धार करती ।
गाय, माता के सदृश उपकार करती ।
गाय, ममता-मोह का बन्धन रही है ।।

—'कुसुमाकर' फीरोजाबाद (आगरा)

सामयिक समस्याएँ

डाक्टर वुर्ड की हत्या

दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मन्त्री डा॰ हेन्द्रिक वुर्ड की हत्या ६ सितम्बर को केपटाउन नगर में एक गोरे के द्वारा हुई जबकि वे संसद में भाषण देने के लिए उपस्थित थे। उनका अपराध यह था कि उन्होंने रंग-भेद की नीति का कठोरतापूर्वक अवलम्बन कर रखा था जिससे न केवल अश्वेत ही तंग और त्रस्त थे अपितु स्वयं श्वेत लोग भी असन्तुष्ट थे इसलिए नहीं कि वे इस नीति के विरोधी थे वरन इसलिए कि उनकी दृष्टि में डाक्टर महोदय अश्वेतों के प्रति अधिक उदार थे।

जन्म एवं रंग-भेद आदि के कृत्रिम आधार पर मानव का मानव से घृणा करना उस पर अमानुषिक अत्याचार करना और उसके स्वत्वों का अपहरण करना परमात्मा और मानवता के प्रति जघन्य अपराध है। दक्षिण अफ्रीका के गोरे महाप्रभुओं ने रंग-भेद की नीति का अनुसरण करने के कारण अपने को सभ्य जगत की निन्दा का पात्र बनाया हुआ है। इतना ही नहीं एक प्रकार से उनका बहिष्कार भी हो चुका है। राष्ट्र मंडल और राष्ट्रसंघ में दक्षिण अफ्रीका को अब कोई स्थान प्राप्त नहीं है।

उनकी हत्या पर दक्षिण अफ्रीका के गोरे ईसाई पादरी श्रद्धा के उद्गार प्रकट कर रहे हैं। वे रंग भेद की घातक नीति का समर्थन करते प्रतीत होते हैं, जिसे महात्मा ईसा की शिक्षाओं का समर्थन प्राप्त नहीं है। ईसाई पादरियों का रंग-भेद की नीति का शिकार हो जाना इस बात का परिचायक है कि गोरे ईसाई पादरी अश्वेत ईसाइयों को सामाजिक समानता का अधिकार देने को उद्यत नहीं हैं। अश्वेत ईसाई अब भी अनेक स्थानों पर असमानता के व्यवहार के शिकार बने हुए हैं। न उन्हें गिरजाघरों में समानता का अधिकार प्राप्त है और न श्मशान भूमि तक में। उनके मुर्दे गोरों के लिए नियत श्मशान भूमि में नहीं गाड़े जा सकते। अश्वेत ईसाइयों को इस भेद भाव को हृदयङ्गम करना चाहिए और ईसाई बनने से सावधान रहना चाहिए। साधारण जनता की बात जाने दीजिए। यदि गोरे ईसाई पादरी अपने व्यवहार से इस तथ्य को झुठलाएँ कि देव और दानव श्वेत और अश्वेत दोनों में समान रूप से निवास करता है तो वे ईसाइयत का बड़ा घिनौना रूप प्रस्तुत करने का अपराध करते हैं।

यदि डाक्टर महोदय की हत्या रंग-भेद की नीति के परित्याग में योग दे सकी तो निश्चय ही दक्षिण अफ्रीका के गोरे प्रशासन की कालिमा बहुत कुछ धुल जायगी। यदि ऐसा न हुआ जिसकी बहुत कम आशा है तो दक्षिण अफ्रीका का इतिहास अधिक काला बन जायगा जिस पर पड़े रक्त के छींटों और निर्दोषों एवं निरीह अश्वेतों की आहों तथा अरमानों की भयावह रेखाओं को देखकर आने वाली सन्तति मारे लज्जा के अपना सिर झुकाने के लिए बाधित हुआ करेगी।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

जागो हे आर्यपुत्र

जागो जागो हे आर्य पुत्र।
सच तुम जग में सब से महान्।
सदियों कि मिली आजादी की,
कीमत न कहीं घट जाये फिर।
माँ का ऊँचा मस्तक साथी,
देखो न कहीं झुक जाये फिर॥
दुश्मन न कहीं फिर सीमा पर,
बन अन्धकार छा जाये फिर।
भारत के वीर सपूतों की,
पूँजी न कहीं मिट जाए फिर॥
जागो जागो हे आर्य पुत्र,
जागो अतीत के क्रान्ति बान।
जागो दुनिया का अन्धकार,
सारा तुमको पी जाना है।
फिर दयानन्द के सूत्रों को
तुमको साथी दुहराना है।
देखो न कहीं हिम गिरि का सिर,
साथी न तनिक भी झुक पावे।
दुश्मन तो क्या? साथी मेरे,
प्रतिबिम्ब न उसका आ पाये।
जागो जागो हे आर्य पुत्र,
जागो जग के यौवन महान॥
भारत माता के मन्दिर को,
कुर्बानी के दो दीपक दो।
जीवन मशाल को फिर साथी,
नव यौवन के अंगारे दो॥
जागो जागो हे आर्य पुत्र,
जागो लेकर फिर नव दमक।
जागो भारत के नवजवान,
जागो अतीत के क्रान्ति बान॥

—श्री दयानन्द, नागपुर

सभा की सूचनाएँ

वेद प्रचार में सहयोग देना प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य

वेद प्रचार के लिये १) प्रति सदस्य के हिसाब से भेजने के लिये सभा से केवल उन्हीं समाजों को पत्र लिखे गये हैं जिनके वार्षिक कार्य मई जून में प्राप्त हुये थे।

देखने में ऐसा आ रहा है कि कुछ समाजें ऐसी हैं जिन्होंने इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह पर सभा के उपदेशकों प्रचारकों से प्रचार कराने के पश्चात् उन्हें धन दे दिया है और अब वह सभा को उक्त पत्रों के अनुसार नहीं भेजने के लिये पत्र लिख रही हैं। ऐसा होना नहीं चाहिये।

इस सन्दर्भ में निवेदन यह है कि १) प्रति सदस्य तो एकत्रित करके सभा को भेजना ही है। सभा की आर्थिक स्थिति में यदि सुधार करना है, वैदिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना है तो आर्य समाज के सदस्यों का ही नहीं, अपितु समस्त आर्यों का यह कर्तव्य है कि वे अधिक से अधिक धन एकत्रित कर सभा में भेजें।

स्थिति ठीक न होने के कारण ही सभा के बड़े बड़े कार्य एवं योजनाएं कार्यान्वित नहीं हो पा रही हैं। प्रयत्न कीजिए और बड़े-बड़े दानी महानुभावों से मिल कर उनसे अधिक से अधिक मात्रा में धन प्राप्त कर भेजने के लिये कमर कसिये।

सभा को दिये गये दान पर सरकार की ओर से भी प्रतिबन्ध नहीं है। अतः हम प्रत्येक आर्य और आर्यसमाजों से अनुरोध करते हैं कि वे इस कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें।

मास अक्टूबर के प्रोग्राम

महोपदेशक

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—१ से ९ आ॰ स॰ पकिया, १० से २१ पुरानी गोदाम गया, २८ से ३१ शाहजहाँपुर।

श्री धर्मवीर जी शास्त्री—१० से १६ बेवाना, २१ से २४ सिकन्दरपुर बलिया, २८ से ३० लाजपतनगर कानपुर।

श्री विश्ववर्धन जी शास्त्री—२८ से ३० पन्नोली।

श्री श्याम सुन्दर जी शास्त्री—१७ से २१ रामनगर मऊ, २८ से ३० काशीपुर

प्रचारक

श्री रामस्वरूपजी आ॰ मु॰—२१ से २४ सिकन्दरपुर, २८ से ३० पूर्वा (राबी)

श्री अमरपालसिंह—१ से १६ तक जय सभा बिजनौर, २८ से ३० पन्नोली।

उत्सवों एवं कथाओं निमित्त आमंत्रित करें

उच्चकोटि के विद्वान वक्ता, महोपदेशक एवं आ॰ विद्या प्रचारक

१—श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री
२—श्री धर्मवीर जी शास्त्री
३—श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री
४—श्री विश्ववर्धन वेदालङ्कार
५—श्री केशवदेव जी शास्त्री
६—श्री रामनारायण जी मिश्र
७—श्री रामनारायण जी विद्यार्थी
८—श्री वेदराज जी वैदिक मिशनरी
९—श्री प्रो॰ जगन्नाथप्रसाद जी

भजनोपदेशक

१—श्री रामस्वरूप जी आ॰ मु॰
२—श्री धर्मपालसिंह जी
३—श्री अमरपालसिंह जी
४—श्री धर्मदत्त जी आनन्द
५—श्री प्रेमचन्द्र जी
६—श्री वेदपालसिंह जी
७—श्री प्रकाशवीर जी
८—श्री जयपालसिंह जी
९—श्री जयपालसिंह जी
१०—श्री ओमप्रकाश जी सिद्धन्त
११—श्री दिनेशचन्द्र जी
१२—श्री कमलदेव जी शर्मा
१३—श्री निरञ्जनप्रसाद जी
१४—श्री रामचन्द्र जी शर्मा
१५—श्री विन्ध्येश्वरीसिंह जी
१६—श्री मुरलीधर जी
१७—श्री मदनमोहन जी
१८—श्री ब्रह्मानन्द जी

स्त्री उपदेशिका

१—श्रीमती सरलादेवी जी शास्त्री
२— „ विद्यावती जी एम॰ए॰
३— „ डा॰ प्रकाशवती जी
४— „ माता हेमलता देवी जी

वाद्य-विद्या प्रदर्शक

१—श्री बालकृष्ण जी शर्मा धनुर्धर
२—श्री रामनाथ जी धनुर्धर

मैजिक लैन्टर्न द्वारा प्रचार

१—श्री रामकृष्ण जी शर्मा

—सच्चिदानन्द शास्त्री
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

श्री अमरपालसिंह जी—१ से ९ पकिया, १३ से २३ फैजाबाद, २८ से ३० लाजपतनगर कानपुर।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—१ से १३ तक आ॰ स॰ फैजाबाद।

श्री वेदपालसिंह जी—१३ से २१ रामलीला फतेहगंज फैजाबाद, २७ से ३० बहराइच (गोंडा)।

श्री ओमप्रकाश सिद्धन्त—२८ से ३० काशीपुर (नैनीताल)।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम॰ए॰
उ॰ अधि॰ उपदेश विभाग

हिन्दी प्रचार सभा,

रजत जयन्ती समारोह

हैदराबाद १० सितम्बर, १९६६ ई०

आदरणीय अध्यक्ष जी,

माननीय मुख्यमन्त्री जी देवियो तथा सज्जनो !

हिन्दी प्रचार सभा की रजत जयन्ती के शुभ अवसर पर आन्ध्र की राजधानी हैदराबाद में आपका स्वागत करते हुए मैं बड़ी प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव करता हूं। इस सुन्दर ऐतिहासिक नगर की विशेषताओं से आप सब भलीभांति परिचित होंगे। यहां की साफ सुथरी सड़कें स्वच्छता एवं जल वायु आदि एक ऐसी विशेषता है जिसकी ओर आपकी नजर बरबस खिंच जाती है। अब मैं आन्ध्र की उस विशेषता की चर्चा करने जा रहा हूं जिस पर प्रत्येक आन्ध्रवासी को गर्व है। हमारा यह नगर विभिन्न संस्कृतियों, कलाओं एवं भाषाओं का संगम है। आपको ज्ञात होगा कि भाषा संस्कृति कला के नाम पर यहां कभी कोई बखेड़ा नहीं हुआ और हमें दृढ़ विश्वास है कि आगे भी नहीं होगा। अपने अतिथियों के आगे बिछ जाना मन प्राण से उनकी सेवा में आनन्द का अनुभव करना, आन्ध्रवासियों का एक और गुण है। अतः मेरा यह कहना अत्युक्तिपूर्ण नहीं कि विशेष रूप से बाहर से पधारने वाले हमारे सम्मानित अतिथियों के स्वागत में मेरे साथ सभी आन्ध्रवासी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

सज्जनो !

हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना आज से इकत्तीस वर्ष पूर्व ऐसे समय हुई थी, जब कि यहां हिन्दी का नाम लेना सबसे बड़ा राजद्रोह माना जाता था और हिन्दी कार्यकर्ताओं को बिना पूछताछ जेलों में ठूस देने में कोई संकोच नहीं किया जाता था। आप को यह जानकर हर्ष होगा कि कुछ कर्मठ सेवियों ने उस कड़ी धूप एवं जहरीली हवा में भी अपने वीर गम्भीर कदमों में किसी प्रकार की शिथिलता तक न आने दी और झूमते गुनगुनाते अपने उद्देश्य के दुर्गम पथ पर बढ़ते रहे। इसी शौर्य एवं साहस के बल पर हिन्दी का यह काफिला आज उस मंजिल तक पहुंच गया है

को झुलसा

आशा एवं उल्लास

हरियाली है। और

नहीं वहां बढ़ते हुए कदमों का स्वागत खिलती कलियां और महकते फूल करेंगे।

हमारी मंजिल और करीब हो जाती, यदि दुर्भाग्यवश काफिले के दो कर्मठ सरदार अचानक ही हमारा साथ न छोड़ गये होते। अद्धेय पण्डित वंशीधर जी विद्यालंकार एवं श्री गोपाल-राव जी मर्ढीकर सभा के ऐसे आधार स्तम्भ थे जिनकी अपूर्व सेवाओं का उल्लेख सभा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। इन दोनों के असामयिक निधन के अतिरिक्त पिछले पांच वर्षों में और भी ऐसी कठिनाइयां आईं जिसके कारण रजत जयंती समारोह टलता गया।

सज्जनो !

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, आन्ध्र प्रांत विभिन्न भाषाओं एवं संस्कृतियों का संगम है। यहां की प्रमुख भाषा तेलुगु है, किन्तु इस प्रान्त में कन्नड़ मराठी, उर्दू एवं हिन्दी भाषी भी बसते हैं। इस कारण आन्ध्र को उत्तर और दक्षिण का संगम भी माना जाता है। आन्ध्र दक्षिण भारत का हृदय है। इसका इतिहास न केवल दो हजार तीन सौ (२३००) वर्ष पुराना है प्रत्युत बड़ा गौरवशाली भी रहा है। भारतीय संस्कृति और साहित्य को आन्ध्र की देन अनुपम है। तेलुगु बड़ी मधुर समृद्ध भाषा है और उसका साहित्य भण्डार ऐसे अमूल्य रत्नों से भरा पड़ा है जिसकी आभा शताब्दियों तक क्षीण न होने पायेगी। संस्कृत साहित्य का सार ग्रहण करके नन्नय तिक्कना पोतना और श्रीनाथ आदि महान कवियों ने अपनी कलाकृतियों द्वारा भारतीय साहित्य के गौरव को बढ़ाया है।

राजनैतिक एवं सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में भी आन्ध्र ने ऐतिहासिक कदम उठाये हैं और कई बातों में समस्त भारत का मार्गदर्शन भी किया है। सब से पहले पंचायत राज्य की स्थापना इस प्रान्त में हुई थी। इसी प्रांत ने सर्वप्रथम त्रिभाषा फार्मूले को कार्यान्वित किया और हिन्दी को राज्य भर में अनिवार्य भाषा घोषित करके अन्य

इस्वावये (१५९१) में कुतुब शाह ने बसाया था। वह एक कुशल शासक ही नहीं, सहृदय कवि भी था। उसने एक ऐसी भाषा में काव्य रचना की थी, जिसे दक्खिनी के नाम से याद किया जाता है और जिसे हिन्दी उर्दू का प्राक्रूप माना जाता है। वह दक्खिनी का प्रथम कवि था। आन्ध्र पर इसकी सहिष्णुता एवं सहृदयता का प्रभाव इतना व्यापक था कि प्राचीन काल से आज तक इस प्रांत में भाषा आदि के नाम पर कोई उपद्रव नहीं हुआ।

हिन्दी प्रचार सभा भावनात्मक एकता की सदैव प्रबल समर्थक रही है। दूसरी भाषाओं से आदान प्रदान की नीति को इसने एक दूसरे के लिए हितकर एवं आवश्यक माना है, जिसके परिणामस्वरूप अन्य भाषाओं की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से इसके सम्बन्ध बड़े ही मधुर रहे और सभा के काम को आगे बढ़ाने में दूसरी सभी संस्थाओं से हार्दिक सहयोग मिला। ऐसी संस्थाओं में आन्ध्र सारस्वत परिषद मराठी साहित्य परिषद कर्नाटक साहित्य मन्दिर इदारए अदबियाते उर्दू एवं अंजुमने तरक्की उर्दू का नाम मैं विशेष आदर से लेता हूं जिनसे हमारे स्नेह सम्बन्ध बहुत दृढ़ हैं। हम हिन्दी कार्यकर्ताओं का यह विश्वास है कि प्रादेशिक भाषाओं की प्रगति में अंग्रेजी से बढ़ी और कोई बाधा नहीं। इस प्रान्त में कार्य करते हुए हमें यह सुखद अनुभव हुआ कि भाषा, धर्म, जाति आदि की भिन्नता हिन्दी के प्रचार में बाधक नहीं बल्कि साधक है। इसका सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती है हमारी सभा जो उसके कार्यकर्ताओं की भावनाओं का एक पुनीत मन्दिर है। इसके कार्यकर्ताओं में विभिन्न जातियों और विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले लोग सम्मिलित हैं। इन्हें सभा के प्रांगण में हिल जुल कर कार्य करते देखने पर आपको कुछ ऐसा ही लगेगा जैसा किसी देव मन्दिर में उसके उपासकों की टोली को देख कर लगता है। हम सभी का यह दृढ़ विश्वास है कि किसी एक राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र की एकता का

प्रचार एवं प्रसार का कार्य इसी आस्था से कर रहे हैं कि वह भारत की सर्वमान्य भाषा है और उसे यथाशीघ्र राष्ट्र भाषा के पद पर आसीन करके, राष्ट्र की एकता को हिमालय सा अडिग कर देना है और यही प्रत्येक भारतवासी का परम धर्म है।

मैं इस अवसर पर इस बात का उल्लेख किये बिना नहीं रह सकता कि संविधान की स्वीकृति के पश्चात हिन्दी प्रांतों का हिन्दी के प्रति जो दायित्व था उसे उन्होंने पूरा नहीं किया। यदि १९५० से हिन्दी भाषी प्रदेश अपना सारा कार्य हिन्दी में करने लगते तो १९६५ में हिन्दी को राष्ट्र भाषा पद पर आसीन करने का काम सरल हो जाता।

कुछ प्रांतों के शासन की बागडोर ऐसे लोगों के हाथों में है जो अपने आप को हिन्दी का परम भक्त मानते, और इस पर अभिमान करते हैं। हमारी निराशा और बढ़ जाती है जब हम उन्हें भी इस कार्य के प्रति इतना सजग नहीं पाते। यदि उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा किया होता तो इससे अहिन्दी प्रांतों को भी बड़ी प्रेरणा मिलती।

गत पन्द्रह वर्षों में और शिक्षा के नाम पर कई कमीशन नियुक्त किये गये। खेद का विषय है कि इनके द्वारा भी अपेक्षित कार्य नहीं हो सका। उन्हें यह सोचना चाहिए था कि लोकतन्त्र में लोक सभा की ओर राष्ट्र के अन्दर राष्ट्र भाषा की प्रतिष्ठा न करके क्या वे वस्तुतः जनता का हित साधन एवं अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं? अंग्रेजी के द्वारा क्या लोक जीवन की राष्ट्रीय एकता सम्भव है? इस प्रश्न का समाधान हमारे सम्मुख आज भी अस्पष्ट ही है। बहुत दिनों से दक्षिण के लिए हिन्दी माध्यम के एक विश्वविद्यालय की आवश्यकता अनुभव की जाती रही है। उस्मानिया विश्वविद्यालय को हिन्दी विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित करने की भी एक योजना थी। दुर्भाग्य की बात है कि इस योजना को क्रियान्वित नहीं किया जा सका।

हिन्दी के सम्बन्ध में आन्ध्र सरकार की नीति बहुत ही सन्तोषजनक रही है। प्राथमिक कक्षाओं से ही हिन्दी को अनिवार्य भाषा का रूप देने में आन्ध्र सरकार ने ही पहल की थी। आन्ध्र सरकार की इस उदार नीति के कारण ही राज्य में हिन्दी प्रचार संस्थाएं इतने बड़े पैमाने पर कार्य कर रही हैं। हमें

[illegible] का एक।

मैं पुनः एक बार आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री जी और अध्यक्ष जी का जिन्होंने हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर समारोह के उद्घाटन में पधारने का कष्ट किया है, स्वागत करता हूं और हृदय से उनका आभार मानता

(शेष पृष्ठ १२ पर)

हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद

रजत जयन्ती समारोह

विद्यावाचस्पति डा० रामधारीसिंह 'दिनकर' द्वारा प्रदत्त

दीक्षान्त — भाषण

हैदराबाद ११ सितम्बर, सन् १९६६ ई०

सभापति जी, स्नातक वृन्द, देवियो और सज्जनो,

हैदराबाद की हिन्दी प्रचार-सभा देश की प्रौढ़ और प्रतिष्ठित संस्था है। वर्ष उसकी रजत-जयन्ती हम आज मना रहे हैं, लेकिन कार्य करते इस संस्था को २५ नहीं ३१ साल हो चुके हैं। ऐसी हिन्दी सेवा परायण संस्था के रजत जयन्ती दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मांगलिक वचन कहने का सुयोग देकर आपने मेरा जो सम्मान किया है, उसके लिए मैं हृदय से आपको धन्यवाद देता हूं।

हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा हो, यह स्वप्न उतना ही पुराना है जितना पुराना यह विचार कि भारत को एक राष्ट्र होना चाहिये। राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र की कल्पना ही असम्भव है। इसलिये जिन नेताओं के दिमाग में यह बात आई थी कि सारा भारत देश एक राष्ट्र बनेगा, उन्हीं के मन में यह बात भी उठी थी कि इस राष्ट्र की राष्ट्र भाषा हिन्दी होगी। नये भारत का जन्म बंगाल में हुआ था और यह कल्पना भी सबसे पहले बंगाल में ही उदित हुई थी कि हिन्दी का प्रचार हमें अन्य प्रान्तीय भाषा के रूप में करना चाहिये जिससे एक समय यह सम्पूर्ण राष्ट्र की भाषा बन जाय। यह उन्नीसवीं सदी के अपरार्द्ध की बात है। किन्तु तब से भारतीय राष्ट्रियता के उन्नायक भारत के जिस किसी भी भाग में उत्पन्न हुए, उन्होंने पीढ़ी-दर पीढ़ी, इस प्रस्ताव का एक स्वर से समर्थन करके उसे और भी सुदृढ़ कर दिया। और जब गांधी जी आये, उन्होंने वातावरण में गूंजते हुए इस प्रस्ताव को पकड़ कर उसे राष्ट्रिय कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग बना दिया। फिर तो हिन्दी की सेवा देशसेवा का पर्याय बन गई और भारत के कोने-कोने से ऐसे असंख्य देश भक्त नौजवान निकल आये, जिन्होंने अपना सारा जीवन हिन्दी प्रचार को अर्पित कर दिया यह उन्हीं प्रचारकों के परिश्रम और पुण्य का परिणाम है कि आज भारत यह दावा कर सकता है कि अनेक भाषा-भाषी होते हुए भी उसने अपनी एक भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में अपना लिया है।

इतिहास की दृष्टि बराबर आकर्षक और टीम टाम पर रहती है। वह हमारी राष्ट्रियता के भव्य प्रसाद पर चमत्कृत अवश्य होगा, किन्तु उसके नाम वह नहीं लिख पायेगा जिनकी हड्डियों की नींव पर भारतीय एकता का महल खड़ा हो रहा है। हिन्दी-प्रचार सभा की रजत जयन्ती के इस मांगलिक अवसर पर मैं उन शहीदों को प्रणाम करता हूं जो हिन्दी का प्रचार करते करते स्वर्गीय हो गये, उन साधकों के सामने मस्तक झुकाता हूं जो नाना कष्टों और उपेक्षाओं को झेलकर आज भी प्रचार के काम को आगे बढ़ा रहे हैं और उन अजन्मा देशसेवकों की राह में पलक पांवड़े बिछाता हूं जो हिन्दी प्रचार के निमित्त भविष्य में आगे आने वाले हैं।

> आने वालो तुम्हें प्रणाम।
> जय हो, नव होतागण, आओ,
> सम नई आहुतियां लाओ,
> जो कुछ बने, फेंकते जाओ,
> यज्ञ जानता नहीं विराम।
> आने वालो, तुम्हें प्रणाम!

देवियो और सज्जनो, गंगा जब स्वर्ग से उतर कर पृथिवी पर आई थी तब उन्हें भी अनेक विघ्नों का सामना करना पड़ा था। गांधी जी हिन्दी के भगीरथ थे। उन्होंने हिन्दी की धारा को समतल पर ला तो दिया किन्तु अब उस धारा को इन्द्र के मदोन्मत्त ऐरावत रोक रहे हैं, अंग्रेजी के पक्षपाती बलवान लोग बड़ी-बड़ी चट्टानें गिराकर उसके प्रवाह को मन्द कर देना चाहते हैं और कहीं-कहीं जह्नु ऋषि भी इस ताक में बैठे हैं कि मौका मिलते ही वे इस भागीरथी को अंजलि से उठाकर पी जायेंगे। गांधीजी ने जिस यज्ञ का आरम्भ किया था, वह अभी समाप्त नहीं हुआ है। यह सत्य है कि संविधान और कानून, दोनों का समर्थन हिन्दी को प्राप्त है और संविधान तथा कानून दोनों ही दृष्टियों से आज हिन्दी भारत की प्रमुख तथा अंग्रेजी गौण राजभाषा है। कानून और संविधान की दृष्टि से राजमहल की स्वामिनी हिन्दी है, अंग्रेजी को केवल सखी रूप में ठहरने की अनुमति प्रदान की गई है। किन्तु व्यवहार में वह सहेली सखी-भाव को भूलकर आज भी अन्याय पर तुली हुई है। २६ जनवरी १९६५ ई० को हिन्दी राजसिंहासन पर आसीन हुई थी, किन्तु लगता है वह सिंहासन पर बैठी नहीं, सिंहासन से वह बांध दी गई है, जिससे वह अपने हाथ पांव न हिला सके और अंग्रेजी का जहां जो प्रभुत्व है, वह अक्षुण्ण रूप से चलता रहे।

सन् १९६३ ई० के भाषा-अधिनियम का उद्देश्य हिन्दी के व्यवहार पर रोक लगाना नहीं, बल्कि उन लोगों के लिए सुविधा का प्राविधान करना था, जो हिन्दी अभी नहीं या बहुत कम जानते हैं लेकिन सुविधा का यह प्रावधान ही हिन्दी की बाधा बन गया और अब वे लोग भी हिन्दी में काम नहीं कर रहे हैं, जो हिन्दी जानते हैं तथा संविधान और १९६३ के अधिनियम के अनुसार जिन पर ऐसी कोई भी कानूनी बाध्यता नहीं है कि वे हिन्दी में काम न करें। संविधान के अनुसार केवल दो ही ऐसे काम हैं जो २६ जनवरी १९६५ ई० के बाद भी तब तक केवल अंग्रेजी में किये जायेंगे जब तक संसद नया कानून बना कर उन कामों के लिए भी हिन्दी की व्यवस्था न कर दे। जब तक संसद यह कानून नहीं बनाती है, तब तक सुप्रीम कोर्ट के काम अंगरेजी में होते रहेंगे और संसद-सदस्य कोई संशोधन या विधेयक हिन्दी में पेश नहीं कर सकेंगे। किन्तु, इन दो कामों के अलावा, सरकार का और कोई भी ऐसा काम नहीं है, जिसके लिए अंगरेजी का प्रयोग अनिवार्य हो। फिर भी सरकार के प्रायः सारे काम आज भी केवल अंगरेजी में चल रहे हैं। कानून की दृष्टि से यह शायद कोई अपराध नहीं है, क्योंकि इन सारे स्खलनों पर १९६३ के अधिनियम का छाता तना हुआ है। किन्तु नैतिक दृष्टि से यह संविधान के साथ प्रवंचना और संसद के निर्णयों के प्रति खुली अवहेलना और उपेक्षा का दृष्टान्त है।

जब से गणतन्त्र का आरम्भ हुआ, सरकार हिन्दी के प्रचार, प्रसार, उन्नति और विकास के लिए थोड़ा बहुत काम बराबर करती रही है। आज भी योजनाओं का अभाव नहीं है। शिक्षा-मन्त्रालय के अधीन ऐसी दस बारह योजनाएं चल रही हैं, जिनका उद्देश्य हिन्दी का प्रचार और विकास है। विधि मन्त्रालय भी कानून के ग्रन्थों के अनुवाद और कानूनी शब्दों के निर्माण में लगा हुआ है। गृह मन्त्रालय के अधीन सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने की योजना आज कई वर्षों से काम कर रही है। किन्तु इन सभी योजनाओं पर आज एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक कुहासा छा गया है। जब तक २६ जनवरी १९६५ की अवधि दूर थी, सरकारी योजनाओं में तेजी और उत्साह का अभाव था। किन्तु जैसे-जैसे वह अवधि समीप आने लगी पुरानी योजनाओं में थोड़ी तेजी दिखाई पड़ने लगी और कई योजनाएं भी चालू कर दी गयीं। किन्तु जब लोगों ने देख लिया कि २६ जनवरी १९६५ को हिन्दी आ कर भी नहीं आयी, तब उनके भीतर यह संदेह उत्पन्न हो गया कि हिन्दी शायद अनिवार्य नहीं है। वह शायद अभी रोकी जा सकती है। भारतीय भाषाओं का आन्दोलन शायद आन्दोलन ही रहेगा और अंगरेजी शायद इस देश में बराबर बनी रहेगी। आज हिन्दी के कामों में जितनी भी बाधाएं दिखायी पड़ रही हैं, उन सब को ताकत इसी मनोवैज्ञानिक कुहासे से मिल रही है। सन् १९५० ई० से ही सरकार बराबर यह सोच कर चलती रही कि हिन्दी को वास्तविक व्यवहार में लाने के पूर्व हमें हिन्दी के प्रचार और विकास के कार्य को काफी आगे बढ़ा देना है। किन्तु सोचने की इस पद्धति का औचित्य २६ जनवरी, १९६५ के पूर्व ही समाप्त हो गया। जब तक हिन्दी का व्यवहार नहीं किया जाता है, तो सरकार की अनेक योजनाएं केवल खाना पूरी का काम करती रहेंगी और उनका कोई भी ठोस परिणाम नहीं निकलेगा।

उदाहरण के लिए, सरकार के जो लाखों कर्मचारी हिन्दी सीख रहे हैं, उन्हें यदि दफ्तरों में हिन्दी में काम करने का अवसर नहीं दिया गया, तो सीखी हुई हिन्दी वे भूल जायेंगे और सरकार जिस दिन दफ्तरों में हिन्दी के व्यवहार की पद्धति चालू करेगी, उस दिन नये सिरे से इन अफसरों को भी हिन्दी फिर से सिखानी पड़ेगी। इन अफसरों के हिन्दी ज्ञान को जीवित रखने का एक ही उपाय है कि उन्हें हिन्दी में काम करने का मौका दिया जाय। सरकारी दफ्तरों में जब हिन्दी का व्यवहार आरम्भ हो जायगा तब उसके प्रभाव अनेक दिशाओं में अनुकूल होकर पड़ेंगे। दफ्तरों में हिन्दी के प्रयोग के चालू होने का सबसे बड़ा परिणाम यह होगा कि देश के मन पर छाया हुआ सन्देह का कुहासा फट जायगा और लोगों का यह

(शेष पृष्ठ ११ पर)

जीवन-ज्योति

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्—

डा० वासुदेवशरण की सारस्वत साधना

(ले०—श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए०)

सरस्वती के अमर पुत्र डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का निधन मा भारती की एक अपूरणीय क्षति है। वासुदेवशरण ने जिस साहित्य का प्रणयन किया वह इस बात को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि कोई व्यक्ति निष्ठापूर्वक किस प्रकार गम्भीर उदात्त और प्रेरणादायक ग्रन्थों का निर्माण कर सकता है। वासुदेवशरण जी ने पुरातत्व, कला, धर्म, अध्यात्म, वैदिक साहित्य, पौराणिक साहित्य तथा संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में जो कार्य किया है वह उन्हें अमर बनाने के लिए पर्याप्त है। उनके द्वारा रचित साहित्य को हम निम्न भागों में विभक्त कर सकते हैं—वैदिक अध्यात्म विद्या का विश्लेषण करने वाले ग्रन्थ, संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन का विवेचन करने वाले ग्रन्थ, टीकायें और भाष्य ग्रन्थ, सम्पादित ग्रन्थ तथा जनपदीय तथा लोक जीवन का विवेचन युक्त साहित्य।

वेद और वैदिक साहित्य के प्रति डा० अग्रवाल की निष्ठा आरम्भ काल से ही रही। उन्होंने वेद तथा उपनिषद् में वर्णित अध्यात्म विद्याओं का न केवल तलस्पर्शी अध्ययन ही किया है, अपितु वे इन विद्याओं में निहित शताब्दियों से सुप्त रहस्य को उद्घाटित करने में भी समर्थ हुये हैं। उरुज्योति (प्रकाशक—रामलाल कपूर ट्रस्ट, वाराणसी) तथा वेद विद्या उनके ऐसे ही ग्रन्थ हैं जिनमें उन्होंने वेदों से सम्बन्धित कतिपय रहस्यों को स्पष्ट किया है। महर्षि दयानन्द की दीक्षा शताब्दी (१९५९ दिसम्बर) के अवसर पर आयोजित वेद सम्मेलन के अध्यक्ष पद से जो भाषण डा० अग्रवाल ने दिया था, उसमें भी वेद के परमतत्व को उद्घाटित करने का अनूठा प्रयास था। कहना नहीं होगा कि इस युग में स्वामी दयानन्द, अरविंद घोष, मधुसूदन झा आदि जिन विद्वानों ने वैदिक विज्ञान तथा वेदार्थ का विवेचन जिस नवीन दृष्टिकोण से किया है, डा० अग्रवाल भी उसी वेदार्थ प्रणाली के पोषणकर्ता तथा उसी सरणि के अनुयायी हैं।

वेदों के अतिरिक्त उपनिषद्, गीता, महाभारत आदि ग्रन्थों का भी डा० अग्रवाल ने तलस्पर्शी अध्ययन किया था। कई वर्ष पूर्व साप्ताहिक हिन्दुस्तान में 'भारत सावित्री' के शीर्षक से उनका महाभारत अनुशीलन प्रकाशित होता रहा। इसी प्रकार 'गीता नवनीत' और 'उपनिषद् नवनीत' लिखकर वे वेदान्त की प्रस्थानत्रयी के दो प्रमुख अंशों की सुबोध व्याख्या कर चुके हैं। यह वेदान्त नवनीत भी साप्ताहिक हिन्दुस्तान में धारावाही रूप से प्रकाशित हो चुका है। महाभारत के सांस्कृतिक अध्ययन का कार्य अभी जारी ही था और वे उसके २४००० श्लोकों का विवेचन कर चुके थे कि कराल काल ने उन्हें हमसे छीन लिया। पुराणों में भारत के सांस्कृतिक विकास की जो झलक मिलती है, उस ओर से भी डा० अग्रवाल उदासीन नहीं थे। उनका मारकण्डेय पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन इस बात का द्योतक है कि किस प्रकार धर्म ग्रन्थ कहे जाने वाले पुरातन ग्रन्थ देश की सांस्कृतिक तथा तत्कालीन दैनन्दिन जीवन की झलक उपस्थित करते हैं। सभी पुराणों पर वे इसी दृष्टि से कार्य करना चाहते थे और चार पुराणों का कार्य तो समाप्त भी हो चुका था।

सांस्कृतिक अध्ययन की परम्परा में ही उनके कादम्बरी का सांस्कृतिक अध्ययन और हर्ष चरित का सांस्कृतिक अध्ययन ग्रन्थ आते हैं। इनमें बाणभट्ट कालीन भारतीय संस्कृति को चित्रित करने की चेष्टा की गई है। हर्ष के युग का महान-भारत बाण के ग्रन्थों में उतर आया है। काव्य और साहित्य की दृष्टि से अब तक इन ग्रन्थों की परख होती रही परन्तु समाज शास्त्रीय दृष्टि से संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन डा० अग्रवाल की अपनी सूझ थी। इस सम्बन्ध में उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मूर्धाभिषिक्त काम था पाणिनि के अष्टाध्यायी व्याकरण का तात्कालिक जीवन की दृष्टि से अध्ययन। (India as known to panini) अथवा पाणिनि कालीन भारत यों तो उनको प्राप्त पी एच. डी और डी लिट् के लिये लिखे गये शोध-प्रबन्ध का ही विषय था, परन्तु वस्तुतः उस महान् कृति के द्वारा वे पाणिनि कालीन युग को साकार रूप प्रदान करने में समर्थ हुये हैं। व्याकरण के सूत्रों के आधार पर तत्कालीन जीवन; उस काल के लोग, उनके विचार, उनका धर्म, मान्यतायें, रहन-सहन, आचार-विचार, इतिहास, भूगोल आदि को निरूपित करना महामेधावान डा० अग्रवाल का ही कार्य था। इस ग्रन्थ के प्रकाशन ने उसके लेखक को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव और ख्याति प्रदान की।

अनुसन्धान, शोध, सम्पादन तथा दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशन का कार्य भी डा० अग्रवाल की साहित्य साधना का अनिवार्य अंग रहा। उन्होंने पं० रामदत्त शुक्ल के सहयोग से अथर्व वेद की पैप्पलाद शाखा का सम्पादन और अनुवाद कर उसे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के भारतीराम प्रकाशन विभाग से प्रकाशित कराया। मेघदूत पर उन्होंने जो टीका लिखी है वह कई दृष्टियों से अपूर्व है। साधारण मान्यता के अनुसार मेघदूत यक्ष के विप्रलम्भ शृंगार की भावनाओं का वाहक एक शृंगाररस परिपूर्ण काव्य है। परन्तु डा० अग्रवाल की भेदक अन्तर्दृष्टि ने मेघदूत की कथा और उस के यक्ष, यक्षी, कामरूप मेघ, शिव, अलका आदि का आध्यात्मिक और तात्विक अर्थ निरूपित किया है। इस दृष्टि से मेघदूत का यह अध्ययन एक नूतन परिप्रेक्ष का उद्घाटन करता है। जो यह बताता है कि आपाततः प्रतीत होने वाले संस्कृत के शृंगार काव्य भी भारत की गूढ़ आध्यात्मिक रहस्य दृष्टि के द्योतक हैं। डा० मोतीचन्द्र निदेशक—प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम बम्बई के सहयोग से डा० अग्रवाल ने संस्कृत साहित्य में उपलब्ध पद्मप्राभृतक, धूर्तविट सम्वाद, उभयाभिसारिका तथा पादताडितक नामक चार भाणों का सुन्दर सम्पादित संस्करण तैयार किया जो गुप्तकालीन समाज के एक विशिष्ट वर्ग की जीवन्त झांकी प्रस्तुत करता है। चतुर्भाणी या शृंगार हाट के नाम से प्रकाशित यह ग्रन्थ संस्कृत साहित्य में पाये जाने वाले सामाजिक यथार्थवाद का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

जयपुर के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० मधुसूदन झा के सुयोग्य शिष्य स्व० पं० मोतीलाल शास्त्री के वेद विद्या विषयक पांच व्याख्यानों का आयोजन डा० अग्रवाल की प्रेरणा से ही डा० राजेन्द्रप्रसाद के राष्ट्रपतिकाल में राष्ट्रपति भवन में हुआ था। इन व्याख्यानों के समय डा० अग्रवाल उपस्थित थे। इन व्याख्यानों के प्रकाशित होने पर डा० अग्रवाल ने ही उन पर एक विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखी थी।

वासुदेवशरण जी का संस्कृत से जितना अनुराग था, उतना ही हिन्दी से भी। उनका सम्पूर्ण साहित्य राष्ट्रभाषा में ही लिखा गया है। मलिक मोहम्मद जायसी के पद्मावत पर उन्होंने जो विशद भाष्य लिखा है वह यह बताने के लिए पर्याप्त है कि जनपदीय बोलियों और उसमें सुरक्षित जनपदीय लोक संस्कृति की रक्षा की ओर उनका कितना ध्यान था। वस्तुतः हिन्दी में जनपदीय आन्दोलन के तो वे जनक ही थे। पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के सहयोग से उन्होंने ही सर्वप्रथम इस ओर हिन्दी भाषा-भाषी लोगों का ध्यान आकृष्ट किया और साहित्यकारों को इस बात की प्रेरणा दी कि वे नागर संस्कृति से तनिक उन्मुख होकर ग्रामवासिनी भारतमाता के वास्तविक जनपदीय स्वरूप को समझें। 'पृथिवी पुत्र' शीर्षक से प्रकाशित उनके निबन्ध इसी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। वस्तुतः लोक जीवन, लोक साहित्य और लोक संस्कृति की ओर उनका ध्यान अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त के अध्ययन के अनन्तर ही गया। 'माता भूमिपुत्रो अहं पृथिव्याः' (अथर्व वेद १२।१।१२ भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं।) यह मन्त्र वासुदेव शरण जी को वेद से ही मिला और उन्होंने सच्चे अर्थों में पृथिवीपुत्र धर्म का प्रतिपादन किया। पृथिवी सूक्त की व्याख्या में लिखे गये उनके तीन निबन्ध इस दृष्टि से अविस्मरणीय रहेंगे। डा० वासुदेव शरण ने इस सूक्त के आधार पर जन-जीवन सम्बन्धी निम्न तीन सूत्रों को स्थापित किया। १—भूमि, २—उस पर निवास करने वाले जन, ३—इन लोगों की संस्कृति। पृथिवीसूक्त के ६३ मन्त्रों में यही तीन बातें व्याख्यात हैं। लोक जीवन का अध्ययन और लोक संस्कृति का आख्यान डा० अग्रवाल के

(शेष पृष्ठ १० पर)

(श्री रामावतार आर्य, आर्यसमाज गाजीपुर)

पुनर्जन्म शब्द से ही इसका अर्थ स्पष्ट है कि पुनः + जन्म धारण करना। वेद का सिद्धान्त है कि जीव अनादि अजर, अमर, अल्पज्ञ और कर्म करने में स्वतन्त्र है चूंकि वह स्वतन्त्रकर्ता है। इसलिए उसको अपने कर्मों के अच्छे-बुरे फल भोगने के लिये शरीर चाहिये। क्योंकि बिना शरीर धारण किये न तो वह भोग सकता है न तो कर्म कर सकता है, इसलिये सृष्टिकर्ता परमात्मा प्रत्येक जीव के कर्मों के अनुसार उसे दूसरा जन्म देता है। यही पुनर्जन्म कहलाता है।

जन्म और मृत्यु संयोग और वियोग के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जीव और शरीर इन दोनो का वियोग मृत्यु कहलाती है। लेकिन संयोग और वियोग अपने आप नही हुआ करता किसी के करने से होता है। प्रत्येक प्राणी से पूछो कोई मरना नहीं चाहता। लेकिन उसके न चाहने पर भी उसकी मृत्यु हो जाती है। इस पर विचार करना चाहिये कि ऐसा क्यों होता है? विचार करने पर अन्त में आप इस निष्कर्ष पर पहुचेंगे कि हमसे एक बहुत बड़ी सत्ता है जो जन्म और मृत्यु का कारण है, उसे ईश्वर कहते हैं। व्यास मुनि ने अपने वेदान्त दर्शन में स्पष्ट किया है—

जन्माद्यस्य यतः (वेदान्त १।१।२)

अर्थात् ईश्वर जन्म, पालन और मृत्यु का कारण है। कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर दयालु कैसे है, वह तो लोगों को मार डालता है। लाखों को प्रतिदिन मौत की सजा देता है। उसे तो क्रूर कहना चाहिये। लेकिन इस प्रकार की बात वे ही लोग कहते हैं जो पुनर्जन्म के सिद्धान्त को नहीं समझते। ईश्वर को क्रूर कहना और समझना बहुत बड़ी भूल है। वह दयालुओं में सबसे बड़ा दयालु है। उसके तुल्य तो कोई दयालु हो ही नही सकता उससे अधिक होना तो दूर की बात है। लेकिन उसकी दयालुता उसके समझ में आयेगी जो ईश्वर की व्यवस्था पर पूर्ण रूप से विचार करेगा। देखिए यजुर्वेद में लिखा है—

यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः
(यजु० २५।१३)

अर्थात् जिसकी छाया ही अमृत (जन्म) है और जिसकी छाया ही मृत्यु। उसकी दयालुता का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है। मां बच्चे को कपड़ा पहना देती है यह तो उसकी दयालुता है। लेकिन जब कपड़ा फट जाता है, चिथड़ा और गन्दा हो जाता है, उसके शरीर से बदबू आने लगती है तो उससे देखा नहीं जाता। प्यारी मां अपने बच्चे के शरीर पर से उस कपड़े को उतार लेती है तो क्या यह दयालुता नहीं है? फिर वह बच्चे को नंगा तो छोड़ती नहीं दूसरा नया कपड़ा पहना देती है। फिर फटेगा, फिर बदलेगी। गीता मे शरीर की उपमा वस्त्र से दी गई है—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।
(गीता २।२२)

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य पुराने फटे वस्त्रों को छोड़कर नवीन वस्त्र धारण करता है उसी प्रकार यह जीव जीर्ण शरीर छोड़कर नये शरीर को धारण करता है।

कल्पना कीजिये एक आदमी बुड्ढा हो गया है। आंखो से कम दिखाई देता है, कानों से कम सुनाई दे रहा है पैर चलने से लड़खड़ाते हैं, दांत सब गिर चुके हैं। ऐसे आदमी को कौन स्वस्थ बना सकता है? है कोई ऐसा डाक्टर जो उसे नई आंखें दे दे? नये कान दे दे? नये-नये दांत दे दे। पूरे शरीर को नया बना दे। कोई नहीं है। लेकिन देखिये तो उस ईश्वर की दयालुता कि वह हमारे पूरे शरीर को बदल देता है। हमें नई आंखें मिल जाती हैं, नये कान नये दांत सब कुछ नया हो जाता है।

पुनर्जन्म के विषय में वेदों का प्रमाण

पुनर्जन्म का सिद्धान्त वेदों का सिद्धान्त है। वेदों में बताया गया है कि मृत्यु के पश्चात् जीव दूसरा शरीर धारण करता है।

अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनुरुध्यसे।
गर्भे सन् जायसे पुनः ॥ यजु० १२।३६

इस मन्त्र में आत्मा को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि हे अग्नि के समान वर्तमान जीव! सहनशील तू जलों और सोमलतादि ओषधियों को प्राप्त होता है और गर्भ में स्थिर होकर फिर-फिर जन्म धरण तेरे हैं ऐसा तू जान।

प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। संसृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः। यजु० १२।३८

अर्थ—हे सूर्य के समान प्रकाशित प्रकाश से युक्त जीव! तू शरीर दाह के पीछे पृथिवी, अन्न आदि और जलों के बीच देह धारण के कारण को प्राप्त हो और माताओं के उदरों में वास करके फिर शरीर को प्राप्त होता है।

वेदों में कुछ प्रार्थना मन्त्र हैं जिनसे मनुष्य प्रार्थना करता है कि हे भगवन्! मेरा जब पुनर्जन्म हो तो बलिष्ठ शरीर प्राप्त हो अच्छी आंखें मिलें, अच्छे भोग के साधन प्राप्त हों और वह सब कुछ मुझे प्रदान करें जिससे हमारा पुनर्जन्म सुखमय हो।

असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्। ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडया नः स्वस्ति। (ऋ० १० ५९-६)

अर्थ—हे जीवनप्रद परमेश्वर! आप मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म मे हमें फिर से उत्तम दृष्टि शक्ति दें, उत्तम प्राण धारण करायें उत्तम भोग प्रदान करें जिससे हम [सूर्य को चिरकाल तक देखते रहे। आप] हमें सुखी करें।

यजुर्वेद के एक प्रार्थना मन्त्र में यह विषय अत्यधिक स्पष्ट हो जाता है। वह मन्त्र इस प्रकार है।

पुनर्मनः पुनरायुर्म आगन् पुनः प्राणः पुनरात्मा म आगन् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म आगन्। वैश्वानरोऽदब्धस्तनूपा अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्। य ४।१५

अर्थात् यह देह छोड़ने के पश्चात् पुनर्जन्म में फिर मन, आयु प्राण, आत्मा आंख, कान आदि की शक्ति की प्राप्ति हो। सर्व जन हितकारी और सर्व शक्तिमान नेता परमेश्वर हमे सदा पापो से बचावें।

पुनर्जन्म क्यों होता है?

पुनर्जन्म का कारण जीव का कर्म है। चूंकि जीव अनादि, चेतन और अमर है। इसलिए वह अनादि काल से कर्म करता चला आया है। कभी निष्क्रिय तो बैठा नहीं था। कर्म जीव करता है इसलिये फल भी उसी को मिलता है। जब उसका वर्तमान शरीर फल भोगने योग्य नहीं रह जाता तो उसे दूसरे शरीर की जरूरत होती है। अगर पुनर्जन्म न हो तो वे अपने कर्मों का फल कैसे पायेंगे? कुछ लोग कहते हैं कि कर्म तो शरीर करता है परन्तु उसका फल जीव को क्यों मिलता है? इसका उत्तर यह है कि शरीर जड़ है उसके अन्दर कर्म करने की शक्ति नही होती। वह जीव के आधीन रहता है। वह चाहे तो इस हाथ से किसी को तमाचा लगावें, चाहे तो किसी को रास्ता बतावे, चाहे तो इससे भोजन करे। यह पूरा शरीर जीव के आधीन है। स्वतन्त्र केवल जीव है। इसलिए फल जीव को मिलता है। कल्पना कीजिए आप सायकिल से बाजार जा रहे हैं आपकी सायकिल किसी लड़के की देह पर चढ़ जाती है। वह रोने-चिल्लाने लगता है। लोग इकट्ठे हो जाते हैं और आप से पूछ-ताछ शुरू करते हैं। आप यह क्यो नही कहते हैं कि मुझ से क्यों पूछते हो इस सायकिल से पूछो। क्योंकि मेरा पैर तो इसके शरीर पर चढ़ा नही था सायकिल का पहिया चढ़ गया था। मेरी क्या गलती, सारी गलती सायकिल की है। अगर आप रिक्शे पर बैठकर जा रहे हों और रिक्शा कही लड़ जाय तो आप से पूछ-ताछ नहीं होगी रिक्शे वाले से होगी। क्योंकि रिक्शा उसी के आधीन था। और रिक्शा वाला यह कह कर नहीं बच सकता कि रिक्शे से पूछो मैं क्या जानू। इसी प्रकार अच्छे या बुरे कर्मों का उत्तरदाता जीव है। क्योंकि यह शरीर उसी के आधीन है।

लोग कहते हैं कि ईश्वर जिसको जैसा चाहता है उसे वैसा बना देता है। किसी को मनुष्य, किसी को पशु, किसी को पक्षी, किसी को कीट-पतंगों का जन्म दे देता है। अगर ऐसी बात हो तो ईश्वर के अन्दर दो दोष आ जायेंगे। विषमता और क्रूरता का। जिसे दार्शनिक भाषा मे वैषम्य और नैर्घृण्य कहते हैं। ईश्वर अगर न्यायकारी है तो उसे सबको समान बनाना चाहिए। किसी को मनुष्य बनाता है, किसी को गाय, बैल, किसी को सर्प, किसी को बिच्छू किसी को नाली का कीड़ा। यह वैषम्य क्यों? यह जीवो के साथ अन्याय हुआ। तो क्या ईश्वर अन्यायकारी है? नहीं ऐसा तो नही है। दूसरा आरोप क्रूरता का है। ईश्वर हिंस्र प्राणियो को बनाता है जो अपनी क्रूरता से भोले भाले प्राणियों को कष्ट देते हैं। अगर वह क्रूर नहीं होता तो क्रूर प्राणियों को रचना क्यो करता? जो लोग पुनर्जन्म को नही मानते वे इन प्रश्नो का संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकते।

व्यास मुनि ने वेदान्त दर्शन में लिखा है—

वैषम्य नैर्घृण्ये सापेक्षत्वात् ।

(वेदान्त २ १।३४)

अर्थात् सृष्टि उत्पन्न करने में ब्रह्म पर विषमता या निर्दयता का दोष नहीं लग सकता क्योंकि यदि यह सृष्टि किसी के लिए सुखदायिनी है और किसी के लिए दुखदायिनी है तो इसका कारण ईश्वर नहीं किन्तु उन उन प्राणियों के कर्मों की अपेक्षा है। पूर्व जन्म के कर्म के अनुसार ईश्वर किसी को सुन्दर मनुष्य बनाता है, किसी को लँगड़ा, किसी को अन्धा, किसी को गरीब, किसी को अमीर, किसी को हाथी, किसी को चींटी, किसी को बैल किसी को नाली का कीड़ा। इसमें ईश्वर का दोष नहीं। दोष जीव के कर्मों का है। जो नाली में कीड़ा बनकर कष्ट भोग रहा है वह उसके कर्मों का फल है यजुर्वेद में लिखा है—

असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेनतमसाऽऽवृता। तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनोजनाः ॥ (यजु० ४०।३)

अर्थात् जो आदमी अपने आत्मा का तिरस्कार करता है मरने के पश्चात् उसे अत्यन्त निकृष्ट शरीर प्राप्त होता है।

पतञ्जलि मुनि ने अपने योगदर्शन में लिखा है—

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोग ।

अर्थात् पूर्व कर्मानुसार प्राणियों को जाति, आयु और भोग मिलते हैं। यहां जाति का अर्थ ब्राह्मण, ठाकुर, अहिर, कोइरी, लोहार, कोहार हरिजन आदि नहीं इसे स्पष्ट करते हुए न्याय दर्शन में गौतम मुनि ने लिखा है—

समान प्रसवा त्मि ा जाति ।

अर्थात् जिसका समान प्रसव हो वह जाति है। समान प्रसव का अभिप्राय यह है कि जिसके संयोग से वंश चले जैसे पुरुष और स्त्री से वंश चलता है। इसलिये पुरुष और स्त्री की एक जाति है। गाय और बैल से वंश चलता है इसलिये गाय और बैल की एक जाति है। लेकिन गाय और बकरी को एक जाति का नही कह स क्योंकि इनके संयोग से वंश नहीं चलता जाति के बाद आयु और भ ा का प्रश्न आता है जिसका जिस जाति में जन्म होता है उस जाति का आ यु और भोग निश्चित होता है। आयु से तात्पर्य उस जाति के औसत आयु से है। जितनी आयु मनुष्य की होती है उतनी चींटी की नहीं होती। जो चींटी खाती है वही मनुष्य नही खाता। मनुष्य का भोग अन्न है और शेर का मांस।

इन सूत्रों पर विचार करने पर पता लगता है कि मनुष्य, पशु पक्षी, कीट, पतंगे आदि की जो विभिन्न जातियां ईश्वर ने बनायी हैं इसका कारण उनके पूर्व जन्म के कर्म हैं। इसके लिये ईश्वर को दोष नहीं दिया जा सकता। यह जीव नाना योनियों से भटकते हुए मनुष्य योनि को प्राप्त करता है। कभी कुत्ते कुतिया के गर्भ में आया होगा, उसका दूध पिया होगा। कभी सूअर और गधी के गर्भ में आकर, उनका दूध पिया होगा। निरुक्त के परिशिष्ट भाग में लिखा है कि गर्भस्थ प्राणी पूर्व जन्म के स्मरण से गर्भ में पड़ा कहता है कि—

मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं पुनर्मृत । नाना योनि सहस्राणि मयोषितानि यानि वै ॥

आहारा विविधा भुक्ता पीता नाना-विधा स्तना । मातरो विविधा दृष्टा पितर सुहृदस्तथा ॥

अवाङ्मुख पीड्यमानो जन्तुश्चैव समन्वित ॥ (निरुक्त)

अर्थ—मैं मर के फिर जन्मा, जन्म लेके फिर मरा। ऐसे असंख्य जन्म मरणों के बीच-बीच मैंने असंख्य योनियों में निवास किया। सब प्रकार के भले बुरे भोजन खाये। भेड़ बकरी, घोड़ी, गधी, सूकरी, कुत्ती आदि सबके जिस प्रकार के थनों से दूध पिया। नाना योनियों में नाना प्रकार के माता पिता इष्ट मित्रादि देखे। हा दुख का विषय है कि अब मैं नीचे मुख ऊपर को पैर किये गर्भ में लटक रहा हूं।

इससे एक बात और स्पष्ट हो गई कि यह जीव न ता किसी का भाई है, न तो बहिन, न तो मात है न तो पिता यह सम्बन्ध तभी तक रहते हैं जब तक यह शरीर वर्तमान है। यह जीव जब शरीर से निकल गया तो किसी दूसरे का भाई बहन बनेगा, किसी दूसरे का माता पिता बनेगा। इस जन्म के पूर्व भी वह किसी का माता पिता रहा होगा, किसी का पुत्र-पुत्री रहा होगा। किसी का भाई-बहिन तो किसी का पति पत्नी रहा होगा।

पुनर्जन्म के विषय में लोग यह सवाल पूछते हैं कि हम कैसे मान कि पुनर्जन्म होता है। अगर पुनर्जन्म होता है तो हम पूर्व जन्म की बातें याद क्यों नहीं रहतीं? लेकिन ऐसा प्रश्न करने से पहले यह भी सोचना चाहिए कि क्या पूर्व जन्म की बात याद नहीं रहती इससे पुनर्जन्म नहीं सिद्ध होगा, ऐसा मानना चाहिए? अगर ऐसी बात है तो क्या आप बता सकते हैं कि माँ के पेट से बाहर निकलने के पश्चात् आपको पहले-पहल किसने दूध पिलाया? किसने स्नान

जीवन ज्योति

(पृष्ठ ७ का शेष)

लिए वस्तुत एक निष्ठा पूर्ण आध्यात्मिक साधना थी जिसे उन्होंने पूर्ण ईमानदारी

करवाया? आप कहेंगे कि उस समय होश ही नहीं था। यही होश न रहना ही भूल जाना है। जब आपको याद नहीं है तो क्या यह मान लेंगे कि किसी ने दूध पिलाया ही नहीं? या किसी ने स्नान कराया ही नहीं? यदि नहीं तो यह सिद्धान्त पुनर्जन्म पर ही क्यों लागू करते हैं। आप को बाध्य होकर यह स्वीकार करना होगा कि हमें पूर्व जन्म की बात याद नहीं रहती इससे यह नहीं सिद्ध होता कि पुनर्जन्म होता ही नहीं। जरा स्वप्न की बात कीजिये। आप स्वप्न में क्या से क्या देख जाते हैं। परन्तु निद्रा खुलते ही बहुत सी बातें भूल जाते हैं। यदि आप से कोई पूछे कि आज से १० वर्ष पहले २१ जुलाई को दोपहर के समय आपने कौन सा भोजन किया। किन-किन लोगों से बातचीत किया। तो क्या आप बता सकेंगे? बचपन की हमें अधिकांश बातें भूल जाती हैं। जब हमें खुद इस जन्म की बातें याद नहीं रहतीं तो पूर्वजन्म की बात ही दूसरी है। (क्रमश)

के साथ निबाहा। वे चाहते थे कि लोक-जीवन विषयक सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु हमारे अध्ययन का विषय बने और इस प्रकार हम उस महान् लोक संस्कृति को सुरक्षित रख सकने में समर्थ हों। लोक गीत, लोक वार्तायें, व्रतों और त्योहारों की कथायें धार्मिक उपाख्यान, कहावतें और लोकोक्तियां, राष्ट्र देवताओं की परम्परायें तथा कुलाचार उनके परिवर्तित रूप, विभिन्न उद्योगों और व्यवसायोंकी पारिभाषिक शब्दावलियां सभी हमारे अध्ययन का विषय बननी चाहिए। डा० अग्रवाल सच्चे अर्थों में शब्द ब्रह्म के उपासक थे। सरस्वती साधना उनके जीवन का ध्येय था जिसका निष्ठापूर्वक उन्होंने निर्वाह किया।

साहित्य के अतिरिक्त स्थापत्य, पुरातत्व, मूर्तिकला तथा चित्रकला विषयक उनका अध्ययन भी विशाल और तल-स्पर्शी था। मथुरा, लखनऊ और दिल्ली के संग्रहालयों के अध्यक्ष पद पर रह कर डा० अग्रवाल ने भारतीय पुरातत्व के प्रति जो गम्भीर अनुभूत्ता प्राप्त की, वह अद्भुत थी। वस्तुत डा० अग्रवाल का निधन भारत विद्या (इन्डोलोजी) के एक मर्मज्ञ विद्वान् का वियोग है।

★

दिनकर का दीक्षान्त भाषण

(पृष्ठ ६ का शेष)

विश्वास फिर से दृढ़ हो जायगा कि हिन्दी किसी भी प्रकार रोकी नहीं जा सकती। वह धीमी, किन्तु, निश्चित गति से आ रही है। दफ्तरों में हिन्दी के प्रयोग से संविधान और संसदीय निर्णयों के प्रति उपेक्षा और अवहेलना के भाव भी समाप्त हो जायेंगे। और उसका सबसे कल्याणकारी प्रभाव यह होगा कि सरकार हिन्दी के विकास और प्रचार के लिए जितनी भी योजनाएँ चला रही है, वे सब की सब वास्तविक हो उठेंगी, उनमें जान और तेजी आ जायेगी तथा कार्यकर्त्ताओं को यह महसूस नहीं होगा कि हिन्दी के नाम पर दफ्तरों की चक्की में वे केवल बालू पेर रहे हैं।

सरकारी दफ्तरों में भारतीय भाषाओं को स्थान न देकर हम बहुत बड़े अन्याय का पोषण कर रहे हैं। यह देश केवल उन्हीं लोगों का नहीं है जिनके माँ-बाप उन्हें पब्लिक स्कूलों में पढ़ा सकते हैं अथवा यथेष्ट धन लगाकर उन्हें अच्छी अंग्रेजी की शिक्षा दिलवा सकते हैं। सबसे पहले तो इस देश पर उन असंख्य लोगों का अधिकार होना चाहिए, जो निर्धन हैं, जिनके बच्चे साधारण स्कूलों में पढ़ते हैं और जो अपने बच्चों को अच्छी अंग्रेजी सिखलाने के लिए काफी पैसों का प्रबन्ध नहीं कर सकते। लेकिन भारत में गंगा उल्टी बह रही है। नारा तो हम जनता के राज्य का लगाते हैं, किन्तु इस राज्य की मिसरी और मक्खन का भोग मुट्ठी भर अंग्रेजी-परस्त लोग कर रहे हैं।

मुट्ठी भर पब्लिक स्कूलों को छोड़कर आज भारत के सभी माध्यमिक स्कूल भारतीय भाषाओं में चल रहे हैं। किन्तु, शासन की भाषा सर्वत्र अंग्रेजी है। नतीजा यह है कि नौकरियाँ ज्यादातर उन्हें मिलती हैं, जो पब्लिक स्कूलों में पढ़कर आते हैं और टेकनिकल इन्स्टीट्यूटों में भी प्रवेश ज्यादातर वे ही कर पाते हैं, जिन्होंने पब्लिक स्कूलों में शिक्षा पायी है अथवा अतिरिक्त पैसे खर्च करके जिन्होंने अंग्रेजी का कुछ ज्यादा ज्ञान प्राप्त कर लिया है। यह जनसाधारण के प्रति उपेक्षा और अन्याय का दृष्टान्त है और इसका खात्मा कल के बदले आज और आज के बदले अभी तुरन्त हो जाना चाहिए। टेकनिकल इन्स्टीट्यूटों, कालेजों अथवा नौकरियों में प्रवेश पाने के लिये अंग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य नहीं होना चाहिए। उम्मीदवारों की जाँच उन भाषाओं में की जानी चाहिए जिन भाषाओं में उन्होंने माध्यमिक स्तर तक शिक्षा पायी है।

माध्यमिक स्कूलों में शिक्षा-माध्यम के परिवर्तन से विश्वविद्यालयों पर दबाव पड़ा कि वे भी भारतीय भाषाओं के जरिये पढ़ाई की व्यवस्था करें। अतएव सत्ताधारियों और शिक्षा के अंग्रेजीपरस्त विशेषज्ञों की चेतावनियों के बावजूद, विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं का प्रवेश होने लगा। आज सौभाग्य से स्थिति यह बन गयी है कि देश के लगभग साठ विश्वविद्यालयों में से प्रायः चालीस विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषायें शिक्षा के वैकल्पिक माध्यम के रूप में प्रविष्ट हो गयी हैं, और अनेक क्षेत्रों में झुंड के झुंड स्नातक भारतीय भाषाओं में निकल रहे हैं।

शिक्षा शास्त्र का सामान्य नियम है कि परिवर्तन पहले जीवन में आता है, शिक्षा-संस्थानों में उसका संगठन बाद को किया जाता है। जीवन पहले बदलता है, शिक्षा बाद को परिवर्तित होती है। लेकिन यहाँ भी भारत में गंगा उलटी ही बह रही है। भारतीय स्वातन्त्र्य की सबसे बड़ी प्रेरणा यह थी कि हम शासन और वाणिज्य के सभी काम भारतीय भाषाओं में करना प्रारम्भ कर दें। लेकिन सरकारें जब दुविधा में ग्रस्त हो गयीं और शासन की भाषा में उन्होंने कोई परिवर्तन नहीं किया, तब स्वतन्त्रता की प्रेरणा अथवा यों कहें कि इतिहास के धक्के से स्कूलों और कालेजों में शिक्षा का माध्यम आप से आप परिवर्तित हो गया। लेकिन, इतनी बड़ी ऐतिहासिक क्रान्ति के बाद भी सरकारें अपनी जगहों पर ठिठुरी हुई ज्यों की त्यों खड़ी हैं। इतिहास हमें जिस ओर को ढकेल रहा है, हमारा कल्याण उसी दिशा की ओर चलने में है। इतिहास ने शिक्षा के माध्यम में जो क्रान्ति ला दी है, हमारा कल्याण उसी के स्वीकार करने में है। जब हमारे स्नातक भारतीय भाषाओं में तैयार होने लगे हैं, तब भारतीय सरकारों के भी सारे काम भारतीय भाषाओं में ही किये जाने चाहिए। यदि इतना कुछ हो जाने पर भी सरकारें अपने शासन के सारे कार्य अंग्रेजी में ही करते रहने का दुराग्रह करती हैं, तो सबक हम यही लेने को बाध्य होंगे कि भारत की सरकारें भारतीय भाषाओं का उत्थान नहीं चाहती हैं और शिक्षा के माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं ने कालेजों में जो प्रवेश पा लिया है, वह काम सरकारों की रुचि के खिलाफ है।

स्कूलों से लेकर कालेजों तक शिक्षा के माध्यम में जो परिवर्तन आया है उसे मैं देश की क्रान्तिकारी घटना मानता हूं। शिक्षा-माध्यम के परिवर्तन से देश में जो स्थिति उत्पन्न हुई है, उसका एक ही समाधान है कि प्रत्येक राज्य के शासन में वहां की क्षेत्रीय भाषा और केन्द्रीय शासन में सर्वत्र हिन्दी का व्यवहार अविलम्ब आरम्भ किया जाना चाहिए। इस कार्य में सरकारें जितना ही विलम्ब करेंगी, भारतीय भाषाओं द्वारा पढ़ने वाले युवकों की उतनी ही अधिक रोटियां छिन कर उनके हाथों में पहुंचती चली जायेंगी जो पब्लिक स्कूलों में पढ़ते हैं अथवा जो अन्य किन्हीं कारणों से अंग्रेजी में काफी तेज और तर्रार हैं। भारत में अंगरेजी चलाने का दोष लार्ड मेकाले के माथे मढ़ा जाता है मगर इस देश में अंगरेजी चलाने का असली काम मेकाले ने नहीं, लार्ड विलियम बेंटिक ने किया था। जब बेंटिक ने यह एलान कर दिया कि नौकरी सिर्फ उन्हें दी जायेगी जो अंग्रेजी के जानकार होंगे भारतवासी उस भाषा की ओर जोर से दौड़ पड़े। भारतीय भाषाओं में लोगों को जब तक रोटियाँ दिखाई नहीं पड़ेंगी, अंग्रेजी का साम्राज्य भारत में बना रहेगा और भारतीय भाषाओं द्वारा तैयार होने वाले स्नातक द्वितीय तृतीय श्रेणी के नागरिक बनकर पीछे छूटते जायेंगे।

हम लोग एक विचित्र गति में फंसे हुए हैं। भारत की भाषाएं उभर कर ऊपर आ रही हैं, मगर चिन्ता हमें अंग्रेजी की सता रही है। भारतीय भाषाओं को मुफ्त प्रोत्साहन कोई भी देने को तैयार नहीं है। वे केवल इतिहास के धक्के से बढ़ कर आगे आ रही हैं और भारत का जितना भाग भारतीय भाषाओं का साथ देता है, अंग्रेजी परस्त सत्ताधारी समझते हैं, देश का उतना हिस्सा उनके हाथ से निकल गया। विश्वविद्यालयों में शिक्षा के माध्यम में जो परिवर्तन हुआ है उसके बारे में शिक्षा आयोग ने सम्यक् रूप से विचार नहीं किया, न उसने यही जानने की कोशिश की कि भारतीय भाषाओं की समस्याएं क्या हैं और उनके समाधान के लिए क्या किया जाना चाहिए। लेकिन यह सिफारिश उसने काफी जोरदार ढंग से की है कि देश के अन्य विश्वविद्यालय चाहे भारतीय भाषाओं में ही चलें लेकिन कम से कम, चुने-चुनिन्दे छह विश्वविद्यालयों की भाषा केवल अंग्रेजी रहेगी। यानी देश के चाहे जितने भी विश्वविद्यालय हमारे हाथ से निकल जायें, कम से कम छह सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों को हम अंग्रेजी से बांधे रहेंगे जिससे नौकरियों में चोटी की सारी जगह उनके लिए सुरक्षित रखी जा सकें जो इस देश में अंग्रेजी के अलमबरदार हैं।

शिक्षा-आयोग ने काफी जोर से यह बात भी कही है कि मातृभाषा के बाद पहला स्थान संघ की राजभाषा का है। और अंग्रेजी का समर्थन उसने हर जगह यह कह कर किया है कि सह-भाषा होने पर भी अंग्रेजी संघ की ही राजभाषा है, अतएव उसे वही स्थान दिया जाना चाहिए जो स्थान संघ में हिन्दी का है। लेकिन, देश के सर्वश्रेष्ठ छह केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के प्रसंग में आयोग ने इस प्रखर सत्य को बड़ी आसानी से भुला दिया है। सन् १९६३ के अधिनियम के अनुसार भी संघ की राजभाषा एक नहीं, दो हैं और किसी भी केन्द्रीय संस्थान में जब एक भाषा लाई जायगी तब, विकल्प के रूप में, दूसरी को भी वहां लाना ही पड़ेगा। यह बात समझ में नहीं आती है कि देश के जो सर्वश्रेष्ठ छह विश्वविद्यालय केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाये जायेंगे, उनकी एकमात्र भाषा अंग्रेजी कैसे हो सकती है? अगर अंग्रेजी केन्द्र की सखी राजभाषा है, तो हिन्दी उसकी स्वामिनी है। हिन्दी इस देश में हमेशा रहने वाली भाषा है, मगर अंग्रेजी आज न तो कल पुस्तकालयों को छोड़ और कहीं भी

दिखाई नहीं देती। केन्द्र की जिस किसी भी संस्था में स्वामिनी के लिये स्थान नहीं है, स्वभावतः वहाँ सखी को भी स्थान नहीं दिया जा सकता। शिक्षा के ऊँचे कामों के लिये अगर केन्द्र छह विश्वविद्यालयों को अपने हाथ में लेना चाहता है, तो यह काम वह अवश्य करे किन्तु संविधान और संसदीय निर्णयों की मर्यादा तभी अक्षुण्ण रहेगी, जब इन छह विश्वविद्यालयों का माध्यम हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों ही भाषायें बनाई जायेंगी। हिन्दी को बहिष्कृत करके कोई भी विश्वविद्यालय केन्द्रीय नहीं बन सकता। यह संविधान की मर्यादा पर कुठाराघात होगा। यह संसदीय निर्णयों की अवहेलना होगी। भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी है। अंग्रेजी जब तक है तब तक भी वह केवल हिन्दी के साथ साथ चल सकती है। केन्द्र में जहाँ भी हिन्दी नहीं आयेगी वहाँ अंग्रेजी को लाने की भी कल्पना ही निराधार है।

देवियो और सज्जनो, हिन्दी तोड़ने नहीं, जोड़ने वाली भाषा है। हिन्दी भाषी प्रान्तों में अनपदीय भाषायें अनेक हैं किन्तु उनसे एकाकार होकर हिन्दी ने सभी हिन्दी भाषी प्रान्तों को एक सूत्र में बांध रखा है। यही नहीं, हिन्दी का एक अदृश्य तार गुजरात से लेकर असम तक सारे उत्तर भारत को एक धागे में बाँध हुए है। महात्मा गांधी ने हिन्दी की इसी प्रकृति से प्रभावित होकर उसे सारे देश के लिए चुना था।

हिन्दी साहित्य केवल हिंदुओं का लिखा हुआ नहीं है। कबीर जायसी, रहीम और रसखान, आलम और शेख तथा मुबारक और रसलीन ये सारे के सारे कवि मुसलमान थे किन्तु उनकी रचनायें हिन्दी की अनमोल निधियाँ समझी जाती हैं। हिन्दी के सन्त-साहित्य में सिक्ख गुरुओं की वाणियाँ अत्यन्त प्रमुख स्थान रखती हैं और पिछली शताब्दी में ईसाई मिशनरियों ने जब भारतीय भाषाओं की सेवा में हाथ लगाया, तब उन्होंने हिन्दी भाषा की भी इतनी उत्कृष्ट सेवा की कि हम उनके प्रति हमेशा कृतज्ञ होंगे।

हिन्दी संकीर्णता नहीं-उदारता की भाषा है। भारत का इतिहास साक्षी है, हिन्दी हमेशा ही सहिष्णु और उदार भाषा रही है। चन्द बरदायी, जो हिन्दी के आदि महाकवि हुए हैं, महाराज पृथ्वीराज के मित्र थे। पृथ्वीराज का वध एक मुस्लिम सुलतान के हाथों हुआ था। किन्तु उससे विचलित होकर चन्द बरदायी ने इस्लाम की निन्दा नहीं लिखी उलटे, उन्होंने बड़े ही फख के साथ यह लिखा है कि अपने महाकाव्य में मैं पुराण और कुरान, दोनों के तत्वों का बखान कर रहा हूं।

उक्ति धर्मविशालस्य राजनीति नव रसं,
षट् भाषा पुराणं च कुरानं कथितं मया।

और यह उदारता केवल चन्द बरदायी की ही विशेषता नहीं थी। हिन्दी साहित्य के शिरोमणि और भारत के भातख गोस्वामी तुलसीदास जी में साम्प्रदायिकता की बू भी नहीं थी। उन्होंने अरबी और फारसी के शब्दों को मुसलमानी शब्द नहीं समझा और बड़ी ही स्वाभाविकता के साथ अपने रामचरित मानस में उनका खुलकर प्रयोग किया है।

जहाँ तक हिन्दू मुस्लिम एकता का सम्बन्ध है, इस एकता के जितने अधिक साधक हिन्दी में हुए उतने भारत की किसी अन्य भाषा में हुए हैं या नहीं, यह बात निश्चयपूर्वक नहीं कही जा सकती। इस एकता आन्दोलन का प्रवर्तन कबीरदास जी ने किया था और उनके बाद कोई तीन चार सौ वर्षों तक सन्त भाषा के सभी हिन्दी कवि कबीर के स्वप्न को अपने-अपने छन्दों में दुहराते रहे।

हिन्दु कहत है राम हमारा,
मुसलमान रहिमाना,
आपस में दोउ लड़े मरत हैं,
भेद न काई जाना।
—कबीर

दादू ना हम हिन्दु होहिंगे,
ना हम मुसलमान,
षट् दर्शन में हम नहीं,
हम राते रहिमान।
दोनों भाई हाथ-पग
दोनों भाई कान,
दोनों भाई आख हैं,
हिन्दू - मुसलमान।
—दादू

हिन्दू की हद छाड़ के
तजी तुरक की राह।
सुन्दर सहजै चीन्हिया
एकै राम—अल्लाह।
—सुन्दरदास

हिन्दी की एक विशेषता यह भी है कि मध्यकाल में बिना किसी आन्दोलन और प्रचार के वह अपनी चौहद्दी से बाहर अनेक प्रान्तों में फैली थी और उसके कवि गुजरात और महाराष्ट्र में ही नहीं एकाध बार नरक और आन्ध्र में भी उत्पन्न हुए थे जिसका यत्किंचित् उल्लेख अब हाल में विद्वानों ने किया है कबीर से बहुत पूर्व नामदेव जी महाराज महाराष्ट्र में जन्मे थे, लेकिन एकता आन्दोलन का प्रचार उन्होंने भी हिन्दी में ही किया था।

हिन्दू पूजे देहरा, मुसलमान मसीत,
नामा सोई सेविया जह देहरा न मसीत
—नामदेव (१२ वीं सदी)

हिन्दी पर राजाओं का उपकार बहुत कम, सन्तों का उपकार बहुत अधिक रहा है। सन्तों की भाषा होने के कारण ही हिन्दी आरम्भ से ही कुछ कुछ सार्वदेशिक रही थी। वर्तमान युग में भी राजनीति जब तक सेवा और सतत्व की महिमा (त्याग तपस्या, कुर्बानी और प्रेम) प्रधान रही, हिन्दी का विरोध इस देश में कोई नहीं करता था। विरोध की भावना राजनीति की प्रधानता के साथ बढ़ी है।

विवशता की बात यह है कि राजनीति की प्रधानता अब मिटायी नहीं जा सकती। लेकिन हमें बराबर यह स्मरण रखना है कि प्रकृति ने भारत को एक सुस्पष्ट राष्ट्र के रूप में निर्मित नहीं किया है। राष्ट्रियता के जो भी आवश्यक उपकरण होते हैं, उन्हें जुटाकर प्रकृति ने यह कार्य यहां के निवासियों की इच्छा पर छोड़ रखा है कि वे एक राष्ट्र बनकर जीना चाहेंगे अथवा टूट कर बिखर जायेंगे। भारत गुलाम इस लिए हो गया था कि एकता की उसने उपेक्षा की थी। और जब उसने एकता की महिमा को समझा, वह पलक मारते स्वाधीन हो गया। अतएव यह बहुत आवश्यक है कि एकता के सवाल को हम क्षेत्रीय राजनीति की संकीर्णता से ऊपर रखें। राष्ट्र भाषा का चुनाव भारत ने किसी फैशन के लिए नहीं, अपनी एकता को मजबूत बनाने के लिए किया है। पिछले सौ वर्षों से भारत के सभी भागों के महापुरुष जिस बात को पीढ़ी दर पीढ़ी दुहराते आये हैं वही बात भी सही है। अगर अपने महापुरुषों के पिछले सौ वर्षों के स्वप्न की हम अवहेलना करते हैं, तो हम कहीं के भी नहीं रहेंगे। भारत की एकता और भारत की स्वतन्त्रता, ये एक ही तत्व के दो नाम हैं। अगर एकता को आलस्य या असावधानता में आकर, हमने खिड़की की राह से जाने दिया तो हमारी स्वाधीनता सदर दरवाजा खोलकर निकल जायगी। अगर दुनिया की महफिल में भारत को एक सबल और पूर्ण रूप से स्वतन्त्र राष्ट्र की हैसियत से आसन जमाना है, तो अंग्रेजी का अवलम्ब उसे छोड़ना ही पड़ेगा।

हिन्दी हमारे आन्तरिक व्यक्तित्व की भाषा होगी और हिन्दी के ही द्वारा विश्व मंच पर हम अपना राष्ट्रिय उद्घोष सुनायेंगे। देश की एकता को खतरा हिन्दी के आने से नहीं, उसके नहीं आने से होगा। हिन्दी में प्रकृति प्रदत्त कुछ गुण हैं जो भारत की एकता को मजबूत बना सकते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि धारा ३५१ के अधीन संविधान ने हिन्दी के कन्धे पर जो दायित्व डाला है तथा देश के नेताओं ने उससे जो आशायें लगायी हैं, हिन्दी उन सभी आशाओं को पूर्ण करेगी और धार्मिक भेद-भाव से सर्वथा मुक्त रह वह सभी भारतवासियों के घरों में अपने लिये प्रेम का स्थान बनाने में सफल और समर्थ होगी।

★

आय ।स हरदोई

आर्यसमाज हरदोई का ८२ वां वार्षिकोत्सव अष्टमी नवमी तथा दशमी स० २०२३ वि० तदनुसार २१ २२ तथा २३ अक्तूबर सन १९६६ ई० दिन शुक्रवार श नव र व्वा रविवार को आर्य कन्या पाठशाला इन्टर कालेज, हरदोई भवन में समारोहपूर्वक मनाया जावेगा।

इस अवसर पर राष्ट्र-भाषा सम्मेलन गो रक्षा सम्मेलन अराष्ट्रीय प्रचार निरोध सम्मेलन मद्य-निषेध सम्मेलन स्कूल सम्मेलन युवक सम्मेलन जिला आर्य सम्मेलन तथा सांस्कृतिक प्रदर्शिनी का भी आयोजन किया जा रहा है।

प्रचार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला अलीगढ़ के अन्तर्गत श्री विनेशचन्द्र जी भजनोपदेशक श्री शान्तिस्वरूपजी वानप्रस्थी श्री रामस्वरूप जी शान्त श्री ।ज्ञप्रोत जी शास्त्री आदि आदि महानुभावों ने जिले में वैदिक धर्म प्रचार के लिए अपना समय दिया है। सभी आर्य समाजों के अधिकारियों को कार्यालय आर्यसमाज अलीगढ़ से अपने अपने नगर र प्रचार का प्रोग्राम बनवा लेना चाहिये। श्री शिवकुमार जी शास्त्री से ो उत्सवों व प्रचार के अवसर पर पधारने का आग्रह किया गया है। उक्त महानुभावों के पहुंचने पर अपनी समाज की ओर से पूरा-पूरा हर प्रकार का सहयोग कर।

—प्रेमनारायण मंत्री

पूर्वी उ. प्र. आर्यवीर दल वाराणसी केन्द्र

पूर्वी उत्तरप्रदेशीय आर्य वीर दल के द्र वाराणसी की कार्यसमिति की सदस्यों की आवश्यक बैठक दिनांक ९ १० ६६ को आर्यसमाज मन्दिर जौनपुर में दोपहर एक बजे से प्रान्तीय सहायक संचालक आदरणीय अवधबिहारी शास्त्री की अध्यक्षता में होगी जिसमें ३१ १० को आर्यवीर दल जौनपुर मण्डल के सम्मेलन तथा विजय पर्व मनाने पर विचार किया जावेगा अतएव सदस्यों से निवेदन है कि अभी से ही तिथि नोट तथा समय नोट कर ल। पूर्वी उ० प्र० के निम्न जिलों में मण्डलपति पदेन सदस्य होते हैं। वाराणसी, मीरजापुर गाजीपुर बलिया, आजमगढ़, आजमगढ़, नपुर, प्रतापगढ़ सुल्तानपुर, बस्ती गोंडा फैजाबाद, तथा इलाहाबाद। अतः श्री मण्डलपतियों, मण्डलपतियों तथा संचालकों से निवेदन करता हू कि समे नगर मण्डल तथा शाखाओं का विव

रण ३० ९ ६६ का विवरण कार्यालय में ३० ९ ६६ तक अवश्य ही पहुंच जाना आवश्यक है।

—उमाकान्त मन्त्री

आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का ४० वां मासिक अधिवेशन

२५ सितम्बर को आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का ४०वां मासिक अधिवेशन महिला आर्यसमाज गणेशगंज में समारोह पूर्वक श्रीमान कृष्णबल्देव जी प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सबसे पहले महिला समाज में चल रहा यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा जी प० रामचरित्र जी पाण्डे थे। उसके पश्चात सन्ध्या प्रार्थना तथा श्री अयोध्या प्रसाद जी फैजाबाद श्री पृथ्वी राज जी वरमानी व अमरनाथ जी वर्मा बाजीपुर के भजन हुए। श्री मञ्जुभाषिणी का सगठन के महत्व पर बड़ा सुन्दर संक्षिप्त भाषण हुआ। इसके पश्चात वेदमनीषी श्री हरिवंशलाल जी मेहता का विद्वतापूर्ण वेदोपदेश हुआ।

जिला सभा की अन्तरंग की बैठक २ अक्तूबर को आर्यसमाज गणेशगंज में शाम को ६ बजे से होगी और इस सभा का आगामी ४१वां अधिवेशन ३०अक्तूबर को महिला आर्यसमाज सभा भवन के निमंत्रण पर सभा भवन में होगा। सभा ने ११)जिला सभा को दान भी दिए और यज्ञ शेष वितरित किया।

धमोरा में वेद प्रचार

आर्यसमाज धमोरा में ३० ८ ६६ आरम्भ से ८ ९ ६६ कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमें श्री स्वामी योगानन्द जी दण्डी हाथरस निवासी की अध्यक्षता में प्रति दिन प्रातःकाल स्थानीय समाज के प्रतिष्ठित सभासदों के घरों पर यज्ञ हुआ। जिसमें ग्राम के स्त्री पुरुषों की उपस्थिति प्रतिदिन अच्छी होती रही और रात्रि को समाज मन्दिर में श्री स्वामी जी का वेदोपदेश प्रतिदिन होता रहा और श्री जानकी प्रसाद जी के प्रतिदिन मधुर भजन भी होते रहे।

श्री स्वामी जी के वेदोपदेश का श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—पुरेशकुमार आर्य मन्त्री

आभार प्रदर्शन

मेरे पुत्र सत्यदेव वर्मा सहायक निरीक्षक डाक विभाग के परलोक गमन के शोक में अनेक आर्य महानुभावों तथा हितैषियों ने सम्वेदनापूर्ण पत्र मेरे पास भेजे हैं। इन सवस०मनों की सहानुभूति से मुझ पर्याप्त शान्ति और सान्त्वना प्राप्त हो रही है।

अपने दोनों पुत्रों की अकाल मृत्यु से परमात्मा की न्यायपूर्ण व्यवस्था "समय हुतो हन्ति" पर मेरा दृढ़ निश्चय और विश्वास हो गया है।

—रामचन्द्र दयानन्दसेवाश्रम, बदायूं

पिलौना में आर्य सम्मेलन

श्री महन्त डा० स्वामी जी की सरलता में १४ से १६ अक्तूबर को बड़ी धूमधाम से मनाया जावेगा जिसमें स्वा० शिवानन्द जी स्वा०रामानन्द जी भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री बेगराजसिंह बहन माता चन्द्रकला जी ठा०बलपाल एम०पी० श्री अमरदेवसिंह सिद्धान्ती एम० पी० पधार रहे हैं।

—ब्रजेशकुमार शुक्ल

बाढ़ की विभीषिका

अमृतसर फिरोजपुर तथा गुरदासपुर जिलों में इस भारी वर्षा के बहुत हानि हुई है। सैकड़ों ही लोग बेघर होगये हैं और हजारों रुपया की फसल तबाह हो गई है। इस शोचनीय परिस्थितियों को मुख्य रखते हुए आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर ने अपने एक कार्यकर्ता को वैद्य जी के साथ बाढ़ ग्रस्त इलाकों का भ्रमण करने के लिए भेज दिया है जो बेघर तथा बाढ़ पीड़ित लोगोंको बिनामूल्य दवादेकर उनकी सेवा करेंगे। इसके लिए श्री दौलतराम जी बी०ए०, मालिक-अशोक आयुर्वेदिक फार्मेसी अकाली मार्केट अमृतसर ने मिशन को बिना मूल्य औषधियां प्रदान की हैं जिसके लिये मिशन उनका अत्यन्त आभारी है। —रामलाल प्रधान मिशन

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

जिला सभा लखनऊ के प्रधान माननीय श्री कृष्णबल्देव जी की कोठी पर ३० अक्तूबर से १० अक्तूबर तक श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा।

१२ अक्तूबर को श्रीमान आनन्द स्वामी जी महाराज शृगार नगर में पधार रहे हैं। धर्मप्रेमी सज्जनो को उक्त समाज में पहुंच कर महात्मा जी के उपदेशामृत से लाभ उठाना चाहिये।

—नारायण गोस्वामी वैद्य

ठाकुरद्वारा क्षेत्रिय बैठक

ठाकुरद्वारा तहसील की समस्त आर्यसमाजों की सेवा में निवेदन है कि ठाकुरद्वारा क्षेत्र की समस्त आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं की एक आवश्यक बैठक दिनांक २ १० ६६ रविवार को मध्याह्न १ बजे आर्यसमाज मन्दिर ठाकुरद्वारा में बुलाई गई है। भोजन निवास की समुचित व्यवस्था है।

— हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री

आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर

आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के सब वैतनिक तथा अवैतनिक कार्यकर्ताओंका वार्षिक सम्मेलन १९ नवम्बर, १९६६ को होश्यारपुर में हो रहा है जिसकी अध्यक्षता करना श्री प० देवप्रकाश जी (म० प्र०) ने अत्यन्त कृपा करके स्वीकार कर लिया है।

आ०स०मकौनी का उत्सव

श्री महन्त डा० स्वामी जी की सरलता में बड़ी धूमधाम से ७ से ९ अक्तूबर में मनाया जा रहा है जिसमें स्वामी शिवानन्द स्वामी धर्मानन्द, ठा० बलपालसिंह एम० पी० प० खोबाराम भजनोपदेशक, माता चन्द्रकला जी, मी० अन्तुल हकीम आदि पधारेंगे।

(पृष्ट ५ का शेष)

हू। मैं रजत जयन्ती समारोह के सरक्षक श्री काशु ब्रह्मानन्दरेड्डी जी मुख्य मन्त्री आन्ध्र प्रदेश के प्रति हृदय से आभार प्रदर्शित किये बिना नहीं रह सकता जिनका सहयोग हमें सदव मिलता रहा है।

इस समारोह म सम्मिलित होने के लिए समस्त दक्षिण भारत से जो प्रतिनिधि एव कार्यकर्ता यहां उपस्थित है उन सब का अत्यन्त आभारी हू। उनके सहयोग के बिना इस समारोह की सफलता असम्भव थी। अन्त मे मे आप सबके साथ हिन्दी के उन अज्ञात सेवियों का भी हृदय से आभार मानता हू जिन्होंने नाम यश व दि की परवाह किये बिना, पीछे रह कर भी हिन्दी की सेवा कर गये हैं और जो आज भी कर रहे हैं। जय हिन्दी-जय हिन्द!

★

लक्ष्मणधारा
रूपविलास कम्पनी कानपुर

गोरक्षा आन्दोलन इतिहास के पृष्ठों में :-
गो-रक्षा के लिए अकबर का फरमान

अकबर ने मौलवियों से परामर्श करके १५८६ में गोहत्याबन्दी के लिये शाही फरमान जारी किया—

'सल्तनत के प्रबन्धक कर्मचारी अमीर उमरा परगनों के हाकिम और शाही सेवकों के कारबार के आदमी यह जान लें कि इस ज्याम के युग में यह फरमान जारी किया गया है कि इसका पालन सब के लिए परमावश्यक है। सब को मालूम रहे कि समस्त वस्तु ईश्वर ने बनाये हुए हैं। सबसे कोई न कोई काम होता है। इनमें गाय की जाति चाहे वह माता हो या नर लाभ देने वाली है क्योंकि मनुष्य और पशु अन्न खाकर जीते हैं। अन्न खेती के बिना नहीं हो सकता।

खेती हल चलाने से ही हो सकती है और हलों का चलाना बलों पर ही निर्भर है। इससे स्पष्ट हुआ कि समस्त संसार और पशुओं तथा मनुष्यों के जीवन का आधार एक गाय जाति ही है। ऊपर लिखे कारणों से हमारी ऊँची हिम्मत और साफ नियत का यह तकाजा है कि हमारे साम्राज्य में गोहत्या की रस्म बिलकुल न रहे। इसलिए इस शाही फरमान को देखते ही समस्त राजकर्मचारियों को इस विषय में विशेष रूप से प्रबन्ध करना चाहिए जिससे शाही फरमान के अनुसार अब से किसी गाँव या शहर में गोहत्या का नाम निशान तक बाकी न रहे। यदि कोई आदमी इस आज्ञा का उलंघन कर वर्जित काम को नहीं छोड़ता तो समझ ले कि उसे सुल्तानी गजब (कोप) में जो ईश्वरीय कोप का एक नमूना है फंसना पड़ेगा और वह दण्डनीय होगा। इस फरमान का जो उल्लंघन करेगा उसके हाथ पांव की उंगलियां कटवा दी जायगी।

(इस फरमान की मूल प्रति ग्वालियर में सुरक्षित है)

उपरोक्त फरमान से स्पष्ट विदित है कि मुस्लिम राज्य में भी कानूनन गोहत्या बन्द थी। भारत सरकार से निवेदन है कि इस फरमान से शिक्षा ग्रहण करे और अविलम्ब कानून द्वारा गोहत्या को बन्द कर दे। ●

सूचना

आयसमाजी कार्य कर्ताओं की सेवा में [illegible] निवेदन है कि पत्र व्यवहार [illegible] सं० पीलीभीत का निम्न पता [illegible] — [illegible] सिंह मंत्रि प्रचारक [illegible]

आर्यसमाज, बहराइच

कुंवरबहादुर सिंह जी भजनो-पदेशक ने बहराइच नगर में ७ ८ ९ १० ११ ८ ६६ अति उपरोक्त तिथियों में पृथक पृथक स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार किया जिससे बहराइच की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और लोग अपनी अपनी ओर से कुंवर जी को बहुत धन्यवाद दिया और लोगों में उनके उपदेश को और श्रवण करने के लिये इच्छा बाकी रही।

—गोबिन्दराम उपमन्त्री ●

भारत से विदेशों को चमड़े का निर्यात

(सन् १९६४-६५ के आंकड़े)

नाम खाल	वजन किलोग्राम	मूल्य रुपयों में
गाय की खालें	६०७१९५०	३५९५०१८२
ग व के बछड़ की खालें	७८२३९१	९-३६,०८६
भैंस की खाल	१२४५०७	६१०३५७
भैंस के बच्चों की खाल	२१५१२६८	१९८६११३४१
बकरी की खाल	५९६६४३२	५९६६४३२
भेड़ो की खाल	३३८५८३४	७४०२९२४१
छोटे जानवरों की खालें	१८५८०३	१२०५५११

जूतों और कच्ची खालों का निर्यात इन आंकड़ों से पृथक है। उपर्युक्त आंकड़े लेदर एक्सपोर्ट कौंसिल मद्रास के प्रतिवेदन से उद्धृत किये गये हैं।

इन खालों के निर्यात के लोभ में ही भारत सरकार बड़े पैमाने पर बूचड़खाने खुलवा रही है और गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने में संकोच कर रही है। विदेशी मुद्रा के लोभ ने देश की सुबुद्धि को कुबुद्धि में बदल दिया है विनाशकाले विपरीत बुद्धि।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
आश्विन १० शक १८८८ अं वर्ष ६० २
(दिनांक २ अक्तूबर सन् १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष २२९९३ तार 'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

गो रक्षा आन्दोलन में केरल के आर्य नेता जेल में

भारत भर में चल रहे गो रक्षा आन्दोलन की गति को तीव्र करने के लिये आर्य युवक लीग केरल के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र भूषण जी ने रोग शय्या से उठते ही गो रक्षा के लिये प्रदेश का तूफानी दौरा आरम्भ किया। त्रिवेन्द्रम में बूचड़खाने के विरुद्ध आपने ९ दो व्यक्तियों के प्रचण्ड सत्याग्रह का नेतृत्व किया। श्री नरेन्द्र भूषण जी अपने १६ साथियों सहित त्रिवेन्द्रम जेल में हैं।

प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु,
दयानन्द कालेज, शोलापुर

गोविन्द नगर में हिन्दी दिवस

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर के तत्वावधान में हिन्दी दिवस के सम्बन्ध में एक आम सभा श्री रामजीदास की अध्यक्षता में हुई जिसमें आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने हिन्दी दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला सभा में श्री मोहनलाल का भी भाषण हुआ।

अजमेर में जियालाल जयन्ती समारोह

दिनांक ४-८-६६ सायंकाल ७॥ बजे आर्यसमाज भवन में श्री रामनारायण जी चौधरी की अध्यक्षता में स्व० पं० जी की जयन्ती मनाई गई।

स्व० पं० जी के गुणों का वर्णन करते हुए मन्त्री श्री रामसिंह जी, मथुरादास जी शास्त्री, श्री रविदत्त जी वैद्य आदि महानुभावों ने बताया कि पं० जी के बिना अजमेर के सामाजिक राजनैतिक जीवन में शून्यता आ गई है।

दयानन्द कालेज अजमेर के आचार्य श्री दत्तात्रेय जी बाव्ले ने उनके जीवन की अनेक घटनाओं का वर्णन किया।

पं० प्रभुचन्द्र जी कविरत्न, चिमनलाल जी अन्जा रतनलाल जी पत्तेश आदि महानुभावों ने उनके जीवन पर कविताएँ सुनाईं। अन्त में श्री रामनारायण जी चौधरी ने अपना अध्यक्षीय भाषण दिया तथा श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा मन्त्री आर्यसमाज ने अध्यक्ष तथा अन्य सभी महानुभावों को धन्यवाद दिया।

गोवध निषेध

दिनांक ४-९-६६ रविवार को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् आर्यसमाज बाबूगंज ने गोवध बन्दी के समर्थन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया और उसकी प्रतिलिपि, भारत सरकार तथा सार्वदेशिक सभा को प्रेषित की गई।

—'आर्यसमाज मुबारकपुर टाण्डा जिला फैजाबाद की यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि वह गोवध निषेध कानून शीघ्रातिशीघ्र बनाकर कार्यरूप में लाये यदि सरकार इसकी उपेक्षा करती है तो आर्यसमाज को असमर्थ होकर आन्दोलन का ही सहारा लेना पड़ेगा।" —मन्त्री

—ता० २६-८-६६ को प्रयाग की आर्य महिला समाजों ने मिलकर गोवध बन्द करने का प्रस्ताव पास करके श्री प्रधान मन्त्री जी भारत को भेजा है। कि सारे भारत भर से गोवध बन्द होना चाहिये सारी बहिनें इसका समर्थन करती हैं। —प्रयाग की महिलायें

निर्वाचन—

आर्यकुमार सभा कासगंज का पुनर्गठन कर नव निर्वाचन सर्वसम्मति से इस प्रकार हुआ यह कार्य जिला उपसभा के मन्त्री का [illegible] की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री रमेशचन्द्र जी गुप्त, उपप्रधान—श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य मन्त्री—श्री दिनेशचन्द्र जी बिड़ला, उपमन्त्री—श्री नरेशचन्द्र जी माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष श्री गौरीशंकर जी माहेश्वरी पुस्तका०—श्री प्रमोदकुमार जी अग्निहोत्री, निरी०—श्री राजकुमार जी।

—जिला भजनोपदेशक प्रचार मण्डल अलीगढ़ का तृतीय वार्षिक उत्सव व निर्वाचन आर्यसमाज मई पो० बनेली जि० अलीगढ़ में दि० २७ व २८ नवम्बर सन् १९६६ को होना निश्चित हुआ है अतः सभी भजनोपदेशकों से प्रार्थना है कि २७ नवम्बर की प्रातः तक अवश्य पधारने की कृपा करें इस सम्मेलन में सभी प्रान्त के भजनोपदेशकों को भाग लेने का अधिकार है सूचनार्थ निवेदन है।

—रणधीरसिंह मन्त्री

श्री आशाराम जी पाण्डेय उपमन्त्री सभा का कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

दि० ५-१०-६६ ई० अपराह्न में निरीक्षण व धन संग्रह आर्यसमाज मुबारकपुर।

दि० ६-१०-६६ ई० निरीक्षण व धन संग्रह आर्यसमाज दुल्लापुर कला-जमी व आर्यसमाज काशी विश्वविद्यालय।

दि० ७-१०-६६ निरीक्षण आर्य विद्यालय केंद्रकी जौनपुर व आर्यसमाज जौनपुर।

दि० ८-१०-६६ निरीक्षण व धनसंग्रह आर्यसमाज मछली शहर केराकत व शाहगंज।

दि० ८ व ९-१०-६६ लखनऊ सभा कार्यालय में। —सभा मन्त्री

वेदप्रचार सप्ताह—

बुलन्दशहर १३ सितम्बर, नगर आर्यसमाज की ओर से यहाँ में गत ३० अगस्त से ६ सितम्बर तक वेद-प्रचार सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें सन्ध्या से आठ पं० शिवदीक्षित ने अपने भजनोपदेशों तथा वैदिक सिद्धान्तों के द्वारा श्रोताओं और बच्चों पर काफी प्रभाव डाला।

इधर रहे श्री अलीगढ़ के श्री डा० रघुवीर शरण ब्रह्मचारी नारायण स्वामी तथा पं० रमाकान्त त्रिवेदी के पाण्डित्य से भरे प्रवचनों से नित्य हजारों श्रोताओं ने लाभ उठाया।

इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय नगर समाज के मन्त्री श्री शिवनन्दनलाल को है मन्त्री जी को सर्वश्री टीकाराम सरोज रघुनाथप्रसाद शीतल नारायण-दत्त शर्मा, रामगिरि, राजेन्द्रप्रसाद के पूर्ण सहयोग दिया।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए सत्यव्रतीय बाबू भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम शास्त्री द्वारा मुद्रित प्रकाशित

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

लखनऊ—रविवार आश्विन १७ शक १८८८ आश्विन कृ० १० वि० सं० २०२३, दिनांक ९ अक्तूबर १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो, विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तव तेन कृताद कृतादेन सस्पर्यंद्या, देवासः पिपृता स्वस्तये ॥

काव्यानुवाद

विद्वान विज्ञानी अमर,
जड जगमों के ईश हैं।
बन्ध से कर वे मुक्त
कर्म अकर्म के गुणशील हैं॥
—बु द्धप्रकाश आर्य

विषय सूची

नारायणस्वामी जी महाराज की स्मृति में

बरेली में स्मृति-समारोह

प्रमुख आर्य नेताओं एव श्री आनन्दस्वामीजी महाराज द्वारा श्रद्धांजलि समर्पण

(१४, १५ अक्तूबर को समारोह)

म० आनन्द स्वामी सरस्वती

महात्मा नारायण स्वामी जन्म शताब्दी के कार्यक्रम आरम्भ।

बरेली में प्रतिवर्ष महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की स्मृति मे समारोह का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष स्वामी जी की जन्म शताब्दी के कारण इस समारोह का विशेष महत्व है।

जन्म शताब्दी के सम्बन्ध मे इस अवसर पर गम्भीर विचार किया जायगा।

विदेशो मे वैदिक धर्म का सन्देश गुञ्जाकर आने वाले श्री आनन्द स्वामी जी महाराज इस अवसर पर अपने स्वर्गीय गुरुदेव को श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे।

आर्यजन सोत्साह समारोह में भाग लें

वार्षिक ८) छःमाही ५) विदेश १ पौं.

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८ अंक १८
एक प्रति २० पै.

अध्यात्म-सुधा

ज्ञानाधिकरण

मयि-एव-अस्तु मयि श्रुतम् ।
अथर्व० १।१।२

मेरा ज्ञान मुझ में अवश्य ही रहे ।

★

ज्ञान-प्राप्ति के चार प्रसिद्ध स्तम्भ हैं—श्रवण, मनन, निदिध्यासन, और साक्षात्कार। श्रवण के स्थान पर आजकल पठन या अध्ययन का उपयोग अधिक होने लगा है। पुस्तकें ज्ञान-प्राप्ति का मुख्य साधन बन गई हैं। गुरु शिष्य परम्परा का श्रेष्ठ प्राचीन स्वरूप नष्ट हो चुका है। हाँ सिद्धान्त तो, उसका अभी भी स्थिर और मान्य है। वर्तमान अध्यापक प्रणाली तो पाश्चात्य देशों की नई देन है।

ध्यानपूर्वक सुनने को श्रवण कहते हैं। जब पठन या अध्ययन किया जावे, तो वह भी तन्मयता के साथ होना चाहिये। आज तो अच्छे श्रोताओं का भी अभाव हो चला है। ज्ञान-प्रसार में यह भी एक प्रधान बाधा है। पाठशाला के विद्यार्थी अध्यापक की बात को ध्यान से नहीं सुनते। सभा में श्रोता गण व्याख्यान के समय आपस में गप-शप लड़ाते रहते हैं, अथवा उनका ध्यान कहीं और होता है, व्याख्यान में नहीं। दूसरे अवसरों पर भी सुनने की रुचि का अभाव सा होता जा रहा है। पूरी बात न सुनना, अधूरी बात को सुनकर ही उत्तर देने की जल्दी करना, बात काटना, न सुनना सुनकर भी अनसुना सा कर देना, ये सब दोष हैं। सब कोई अपनी-अपनी बात कहना सुनना चाहते हैं। दूसरों की बात को सुनने समझने वाले कम होते जा रहे हैं। अच्छा श्रोता होना भी एक बड़ा गुण है। इससे ज्ञान की वृद्धि तो होती ही है, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने में भी आसानी हो जाती है।

कान का कच्चा होना तो बहुत ही बुरा है। जो कुछ सुने, मनुष्य उसका विचार करे। उसके सत्य, असत्य, सम्भव, आदि होने का परीक्षा द्वारा निश्चय करे। इसी को मनन कहते हैं। ज्ञान की वृद्धि निरन्तर करते रहने की क्रिया का नाम निदिध्यासन है। बारम्बार विचार, परीक्षा और अनुभव से प्रत्येक बात, रहस्य, पदार्थ या तत्व को यथावत् रूप में जानना, सम्यक्-ज्ञान को प्राप्त करना ही साक्षात्कार कहलाता है। श्रुत का अर्थ भी ज्ञान ही है।

अभ्यास के द्वारा ज्ञान का परिष्कार, विकास और परिपाक होता है। जो व्यावहारिक जीवन में साथ न दे सके, ऐसे काल्पनिक ज्ञान को तो ज्ञान कहना ही ठीक नहीं है। मनुष्य को चाहिये कि अपने प्रयत्न और अभ्यास के द्वारा उत्तम ज्ञान को प्राप्त करे और अपने स्वभाव को भी अपने उत्तम ज्ञान के साँचे में ढाले। जो अवसर आने पर काम न दे, विस्मृत हो जावे, या मिथ्या निकले, वह ज्ञान किस काम का है ?

हमारे ज्ञान का सुस्पष्ट परिचय हमारे व्यक्तित्व में चेष्टाओं में, कार्यक्षेत्र में, और सम्पूर्ण जीवन व्यापार में मिलना चाहिये। आत्म-विज्ञापन और आत्म-श्लाघा तो बहुत निन्दित कर्म हैं, परन्तु आत्म बोध और आत्म सम्मान तो अत्यन्त वाञ्छनीय हैं। ज्ञान का दम्भ कभी कोई भूलकर भी न करे। ज्ञान का दम्भ चिरस्थायी नहीं होता। एक और सिद्धान्त की बात यहाँ है। विद्या उपस्थित अर्थात् कण्ठस्थ हो। विद्या कण्ठ और पैसा गांठ। बार-बार पुस्तक खोलना और पुस्तक के अभाव में विद्या के उपयोग में असमर्थ होना तो अज्ञान का सूचक है। ऐसा करना कभी-कभी तो भारी अप्रतिष्ठा का कारण भी बन जाता है। कुछ विशेष-प्रसंगों में पुस्तकों का सहारा लिया जा सकता है, परन्तु साधारण जीवन, लोक-व्यवहार और व्यवसाय की बातें तो कण्ठाग्र ही रहनी चाहिये।

स्मरण-शक्ति को तेज करो। इसका एक उपाय यह भी है कि व्यर्थ बातों को न सुनो और न ही व्यर्थ पुस्तकों को पढ़ो। ध्यान रहे इन दिनों राजनैतिक एवं व्यापारिक कारणों से बहुत कुछ बोला जाता है और प्रचारात्मक साहित्य का प्रकाशन भी बहुत बड़ी मात्रा में होता है। अपनी शक्तियों का उपयोग हमें सोच-समझ कर ही करना चाहिये। जो विशेष ज्ञानी हैं, वे तो विशेष सम्मान के अधिकारी हैं ही; सदाचार-सम्पन्न साधारण ज्ञानी और ज्ञानियों की अपेक्षा अधिक माननीय हैं।

उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पै होय।
पड़ो अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय॥

★

अद्वैतवाद की दार्शनिक एवं व्यावहारिक आलोचना—

आदर्श और व्यवहार

(ले०—श्री रामसुमेर जी एम० ए०, कानपुर)

शंकर के प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त ने सत्य की श्रेणियाँ बतलाई हैं कि सत्य तीन प्रकार का है- प्रातिभासिक सत्य, व्यावहारिक सत्य और पारमार्थिक सत्य। प्रत्येक श्रेणी की अवस्था में बंधा हुआ व्यक्ति उस श्रेणी को मिथ्या नहीं कह सकता। उच्चतर श्रेणी की अवस्था में पहुँच कर ही निम्न श्रेणी की अवस्था को मिथ्या कहा जाता है। स्वप्न देखने वाला व्यक्ति स्वप्न काल में स्वप्न को मिथ्या नहीं कह सकता। जागृत अवस्था को प्राप्त करने पर ही स्वप्न को मिथ्या कहा जाता है। इसी प्रकार व्यावहारिक जगत में आने पर प्रातिभासिक सत्य मिथ्या भासित होता है और पारमार्थिक अवस्था प्राप्त कर लेने पर व्यवहार भी मिथ्या प्रतीत होता है।

अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्तानुसार मानव की साधारण अवस्था व्यवहार है इस अवस्था में प्रतिभास मिथ्या है। व्यवहार में भी मानव की दो कोटियाँ हैं-एक है व्यवहार दूसरा है आदर्श।

इस वाद में इस प्रकार के श्रेणी भेद की भी दार्शनिक भूमिका है। व्यवहार माया से निर्मित है। एक श्रेणी माया की चालक है उसके प्रभाव में नहीं आती और दूसरी श्रेणी है जो माया के पूर्णत प्रभाव में व्यवहार करती है, उसकी चालक नहीं है। जो माया के प्रभाव में है वह है साधारण और जो माया के प्रभाव से मुक्त हो उसको वश में रख कर चलाती भी है वह है आदर्श। इस आदर्श का सर्वश्रेष्ठ रूप ईश्वर कहलाता है जो माया को पूर्णत वश में रख उसके प्रभाव में कभी भी नहीं आता। इस माया से ईश्वर अपनी लीला करता है।

श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र इस दार्शनिक भूमिका की रचना है।

इस वाद के आगे चलकर दो मार्ग हो गए। एक का कथन है कि साधारण कोटि के मानव ज्ञान के द्वारा आदर्श को पा सकते हैं, और दूसरे प्रकार का कहना है कि साधारण लोग भक्ति के द्वारा ही आदर्श को प्राप्त कर सकते हैं। साधारण व्यक्तियों के जीवन का लक्ष्य आदर्श को पाना ही है। आध्यात्मिक क्षेत्र का प्रतिपादन है कि व्यवहार और आदर्श दोनों से मुक्त हो पारमार्थिक सत्य को प्राप्त करना ही मानव का लक्ष्य है।

इस आदर्शवाद की भूमिका का स्रोत जैन और बौद्ध से वैदिक संस्कृति को प्राप्त हुआ। जैन, वासना से मुक्त हो पुद्गल को तीर्थंकर, बनने का उपदेश देते हैं।

तीर्थंकर ही सच्चा पुद्गल (जीव) है। वासनाओं के वशीभूत होना उसका पतन है जो समस्त दुःखों का कारण है। हिंसा, असत, चोरी, व्यभिचार और परिग्रह दोष पुद्गल को पतित करते हैं। बौद्ध लोग भी बुद्ध के आदर्श का आकर्षण रखते हैं। सम्भवत शंकर इस भूमिका से प्रभावित होकर ही अपने प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त में व्यवहार के अन्तर्गत इसको भी एक स्थान दे गया है।

वर्तमान समय में समस्त व्यावहारिक जीवन का क्षेत्र आदर्शवाद की भूमिका से प्रभावित है। अध्यात्म, साहित्य, राजनीति आदि सभी क्षेत्र आदर्शवाद की भूमिका से प्रभावित हैं। आइडियल और गोयल के दृष्टिकोण से ही सब न्याय होते हैं।

आदर्श, समाज का पूज्य हो जाता है, आदरणीय व आकर्षण का बिन्दु बन जाता है किन्तु व्यवहार्य नहीं होता। लोग यह कह कर कि यह आदर्श (आइडियल) है उसे समाज के व्यवहार से पृथक् एक स्थान दे देते हैं जैसे ईश्वर को लोगों ने मन्दिर में स्थान दे रखा है।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

वनजातियां आर्य हैं

(ले०—श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी, रांची)

[भारत में आर्यों को विदेशी घोषित करने की भावना से अंग्रेज सरकार ने जो षड्यन्त्र किया था वह आज भी कायम है। स्वाधीन भारत में वन जातियों का विकास कर उन्हें आत्मसात् करके ही हम इस मिथ्या धारणा को बदल सकते हैं। सरकार ईसाइयत के प्रचार को वन जातियों में बढ़ने से रोके इसके लिये हमें उस क्षेत्र में विशेष रचनात्मक कार्य करना चाहिये—सम्पादक]

भारत में लगभग तीन करोड़ हिन्दू ऐसे हैं, जो जंगलों और पर्वतीय क्षेत्रों में रहते हैं। इनका प्राचीन काल से चला आ रहा एक विशेष संगठन है। इस संगठन का आधार एक वंश, गोत्र, खानदान या कबीला होता है। इसी लिये इन्हें 'कबायली' 'वन्य जातियाँ', 'जन-जातियां या 'अनुसूचित वन-जातियाँ' कहा जाता है।

अंग्रेजी शासन काल में इन्हें हिन्दू जाति से अलग करने के लिये 'अनार्य' 'अहिन्दू', 'आदिवासी' नाम दिये गए। धर्म के खाना में भी इनको 'हिन्दू' न लिख कर 'भूत प्रेत पूजक' (Animist) लिखा गया। और अन्य हिन्दुओं के पूर्वजों को भारतवर्ष से बाहर से आने वाले—'विदेशी' कहा गया।

इस बात का प्रचार प्रत्येक विद्यालय द्वारा किया गया, चतुर्थ श्रेणी से लेकर एम० ए० तक यह प्रचार किया गया। प्राचीन आर्यों के प्राचीन 'अनार्यों' या आदिवासियों' पर अत्याचारों की फरजी कथाएं बच्चों को पढ़ाई गईं परिणामस्वरूप यह वन-जातियां अपने आपको अनार्य, 'अहिन्दू' और आदिवासी मानने लगीं और भारतीय जनता भी इन्हें 'भारत के असली निवासी' समझने लगी। इनका सम्पर्क हिन्दू जनता से सैकड़ों वर्षों से कटा हुआ है, अब इनमें यह प्रचार कारगर हुआ। और हिन्दू जाति के इन दोनों भागों में अज्ञानतावश एक प्रकार का वैमनस्य फैल गया।

यह मानसिक अवस्था हिन्दू जाति की भावात्मकता में एक बहुत बड़ी रुकावट है और ईसायत के प्रचार का एक बहुत प्रभावशाली साधन है।

खेद से कहना पड़ता है कि स्वतन्त्र भारत में, आज भी इसी नीति को अपनाया जा रहा है। अंग्रेजी शासन काल की धारणायें आज भी स्कूलों और कालिजों की पाठ्य पुस्तकों में वैसी की वैसी ही विद्यमान हैं। आज भी अपनी सरकार इन तीन करोड़ हिन्दुओं को अहिन्दू ही मानती है और इन्हें आदिवासी या अनुसूचित वन जाति का नाम देती है। श्री वैरियर जैसे विद्वान पादरी भी कहते हैं कि यह जातियां हिन्दू हैं, मध्य प्रदेश के जन गणना अध्यक्ष ने अपनी रीपोर्ट में सरकार को लिखा कि ये लोग हिन्दू हैं और इन्हें हिन्दु ही लिखा जाना चाहिये, मगर सरकार टस से मस नहीं हुई और उसी पुरानी लकीर की फकीर बनी जा रही है।

मैंने स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री के सम्मुख यह प्रश्न रखा। तब वह स्वराष्ट्र मन्त्री थे। उनको अपनी रचित 'वन जातियां हिन्दू हैं' नाम की पुस्तक भेंट की और सब तथ्य उनको बताए। वह पूर्णतया सहमत हो गए कि यह जातियां मूलतः हिन्दू हैं और ऐसा ही इन्हें मानना चाहिये। मगर इस मान्यता का परिणाम जब उनके सामने रखा गया कि इनमें जो लोग अपनी परम्परा विशेष, अपना संगठन और अपनी प्रथाएं त्याग कर ईसाई बन गए हैं उन्हें वह प्रोत्साहन आदि प्राप्त न हो जो अपनी विशिष्ट संस्कृति में रहने वालों को सरकार देती है तो आप ने यह कह कर टाल दिया कि यह नीति का प्रश्न है।

जब यह कहा गया कि जब हरिजनों के लिये यह बात सरकार स्वीकार करती है तो वन जातियों के लिये केवल नीति' की आड़ में यह बात क्यों करती है तो आप इसका समाधान न कर चुप हो गए।

परिणामस्वरूप आज भी समस्या का यह स्वरूप वैसा ही बना है। समय आ गया है कि इस आधारभूत बात पर सरकार निर्णय ले या उसे ऐसा उचित निर्णय लेने के लिए बाध्य किया जाय।

काश्मीर में हिन्दू छात्रों का धर्म परिवर्तन

यह समाचार पढ़कर हार्दिक दुख हुआ कि जम्मूकश्मीर की सादिक साहब की सरकार ने ११ छात्र तथा छात्राओं को जबरदस्ती दबाव देकर हिन्दू से मुसलमान बनाया है जिसका नमूना निम्नप्रकार है—

ग्यारह काश्मीरी विद्यार्थियों ने अपना धर्म बदल दिया है।

यह विशेष पग उन्हें एम बी बी एस तथा इन्जिनियर कक्षाओं में प्रवेश पाने के लिए उठाना पड़ा है।

इन विद्यार्थी के नाम इस प्रकार हैं—

पुराने छात्र	नये नाम—
रूपकृष्ण रैना	मुश्ताक अहमद रैना
प्यारेलाल कौल	अफरउद्दीन महबूब
कन्हैयालाल रैना	नगीना अल्ला कौल
शशीकुमारी भट्ट	शमीमाबानू
ओ३म श्री रूपलता	सजेद बानू
जुत्सी प्यारेलाल	अल्ताफ हुसैन
मोहनलाल चपलू	निसार अहमद
चमनलाल कौल	मोहम्मद मुश्ताक
रोशनलाल कौल	सज्जाक अहमद
अशोककुमार पंडित	बशीर अहमद

उपरोक्त घटना के देखने से पता लगता है कि जो सादिक सरकार आज भारत का अंग कहलाती है उसकी सरकार में आज कैसे जबरदस्ती लोगों को मुसलमान बनाया जा रहा है। जनता इस समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे और कर्तव्य पालन करे।

भवदीय—
प्यारेलाल आर्य
गांधी कुञ्ज, हापुड़

●

सभा की सूचनाएं

उत्सवों एवं कथाओं निमित्त आमंत्रित करें

उच्चकोटि के विद्वान् वक्ता, भजनोपदेशक एवं बाणविद्या धनुर्धर

१—श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री
२—श्री बलवीर जी शास्त्री
३—श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री
४—श्री विश्ववर्धन वेदालंकार
५—श्री केशवदेव जी शास्त्री
६—श्री रामनारायण जी मिश्र
७—श्री रामनारायण जी विद्यार्थी
८—श्री देवराज जी वैदिक मिशनरी
९—श्री प्रो० जयनारायण जी

निरीक्षक महानुभावों की सेवा में निवेदन

सर्वश्री मुख्य निरीक्षक एवं श्री निरीक्षक महानुभावों को सूचित किया जाता है कि जिनके पास निरीक्षण फार्म न पहुंचे हों, वे सभा कार्यालय से मंगा लें। और अपने-अपने क्षेत्र के सभी आर्य समाजों में पहुंचकर निरीक्षण करने का कष्ट करें और सभा का प्राप्तव्य धन प्राप्त करके भिजवाने की कृपा करें।

२—मृतप्राय समाजों को जागृत करने की कृपा करें।

३—महात्मा नारायणस्वामी जयन्ती के लिए आन्दोलन करने की कृपा करें और जयन्ती के लिए धन संग्रह करने का कष्ट उठावें।

प्रमाण-पत्र निरीक्षण सभा कार्यालय से भेजे जा चुके हैं। सभा आशा करती है कि इस वर्ष सर्वसमाजों का निरीक्षण हो जाना चाहिये।

—चन्द्रदत्त तिवारी सभा मन्त्री

भजनोपदेशक

१—श्री रामस्वरूप जी आ०मु०
२—श्री धर्मपालसिंह जी
३—श्री गजराजसिंह जी
४—श्री धर्मदत्त जी आनन्द
५—श्री खेमचन्द्र जी
६—श्री वेदपालसिंह जी
७—श्री प्रकाशवीर जी
८—श्री जयपालसिंह जी
९—श्री सत्यपालसिंह जी
१०—श्री ओमप्रकाश जी निर्द्वन्द्व
११—श्री दिनेशचन्द्र जी
१२—श्री कमलदेव जी शर्मा
१३—श्री निरजनप्रसाद जी
१४—श्री रामचन्द्र जी शर्मा
१५—श्री विन्ध्येश्वरीसिंह जी
१६—श्री मुरलीधर जी
१७—श्री मदनमोहन जी
१८—श्री ब्रह्मानन्द जी

स्त्री उपदेशिका

१—श्रीमती सरलादेवी जी शास्त्री
२— „ विजयलक्ष्मी जी एम०ए०
३— „ डा० प्रकाशवती जी
४— „ माता हेमलता देवी जी

बाण-विद्या प्रदर्शक

१—श्री बालकृष्ण जी शर्मा धनुर्धर
२—श्री रामनाथ जी धनुर्धर

मैजिक लैन्टर्न द्वारा प्रचार

१—श्री रामकृष्ण जी शर्मा

—सच्चिदानन्द शास्त्री
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

★

वेद में ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि का भ्रम

(ले०—श्री प० सूर्यदेव जी शर्मा आर्योपदेशक अजरक मुख्यनिरीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, मुख्य उपप्रधान आर्यसमाज मीरजापुर उत्तर प्रदेश)

पाश्चात्य संस्कृतज्ञ विद्वानों एवं उनके पदचिन्हों पर चलने वाले भारतीय तथाकथित विद्वानों का विचार है कि वेदों में व्यक्ति विशेषों का इतिहास है। उनका कथन है कि वेदमन्त्रों अथवा सूक्तों के ऊपर जिन ऋषियों के नाम हैं वे ही उनके कर्ता थे। इस आधार पर इनके मतानुसार वेद पौरुषेय तथा अनित्य हैं।

श्री सूर्यदेव जी शर्मा

इस भ्रान्ति का मूल उद्गम-स्थान मध्यकालीन वेद-भाष्यकारों, सायण, उव्वट एवं महीधर आदि की निजी कल्पना मात्र है। इन भाष्यकारों की गति वैदिक वाङ्मय में नहीं के बराबर रही होगी तभी तो इन्होंने अपनी कल्पना का आश्रय लेकर वेद के उत्तम ग्रन्थों का अनर्थ किया।

पाश्चात्य संस्कृतवेत्ताओं ने इन अर्धज्ञानी भाष्यकारों से उधार ज्ञान प्राप्त कर अपने अन्ध परम्परा प्राप्त कुसंस्कारों के अनुसार ईश्वरीय ज्ञान वेद को अपमानित करने का पूरा प्रयत्न किया। उनके अन्ध उपासक भक्तगण भी उसी लकीर को पीट रहे हैं।

ईसाइयत के अविद्यान्धकाररूपी दलदल में स्वयं फंसकर अपने उद्धारार्थ अवलम्ब सम्बल ढूंढने के स्थान पर दूसरों को भी प्रलोभन के कदम में फंसाने का प्रयास पाश्चात्य सभ्यता की शाश्वत धरोहर है। वर्तमान समय में कतिपय तथाकथित, अंग्रेजी पढ़ लिखे भारतीय विद्वान् उनको ही अपना पथ-प्रदर्शक बनाकर उनके अन्धानुसरण में भारत के घर घर वेद के सम्बन्ध में भ्रान्तिपूर्ण असत् साहित्य सृजन कर उनके ऋण से उऋण होने का स्वप्न देख रहे हैं।

इस लघु लेख द्वारा यह स्पष्टतः निर्भ्रान्ति प्रत्यक्ष हो जायेगा कि हमारे वेद ही सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ व अपौरुषेय तथा नित्य हैं। वेद-ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में परब्रह्म परमात्मा की ओर से ऋषियों को मिला था। तदनन्तर अन्य ऋषियों ने विश्व के कल्याणार्थ उस दिव्य ज्ञान को प्रसारित किया। उन्होंने अपने योग समाधि द्वारा वेद मन्त्रों का साक्षात्कार कर उन्हें व्याख्या स्वरूप शाखाओं के रूप में पल्लवित कर युग-युगान्तर के लिए एक अप्रतिम आदर्श उपस्थित कर दिया वेद में आये शब्द व्यक्ति विशेषों के नाम नहीं हैं। वहाँ तो प्रकरणानुसार गुण व्यंजक सामान्य शब्द हैं।

वस्तुतः यह निर्भ्रान्त है कि वैदिक मन्त्रों के सौम्य अर्थ को प्रकाशित करने वाले वैदिक-व्याकरण अष्टाध्यायी, महाभाष्य ब्राह्मण, निघण्टु, निरुक्त इत्यादि ग्रन्थ हैं। इनकी सहायता व अपनी तपश्चर्या के बल पर उन्हें अव-

वेद-विवेचन

गत किया जा सकता हैं। यह बात अवश्य है कि उपर्युक्त ग्रन्थों को सभी लोग सरलता से नहीं समझ सकते हैं, क्योंकि यह ग्रन्थ भी उन्हीं महान् वेदवेत्ताओं द्वारा रचे गये हैं। उनका यथार्थ अनुगमन उतना सरल नहीं जितना लोग समझते हैं। यद्यपि सायण-भाष्य वेद ज्ञान के लिए एक अटूट सर्च लाइट' (कुछ लोगों के कथनानुसार) माना गया है, फिर भी स्पष्ट पूछा जाय तो सायण भी वेद-ज्ञान की तह तक नहीं पहुंच सके हैं। उदाहरणार्थ देखिए ऋग्वेद भाष्य में 'गौ का पृथिवी अर्थ कहीं नहीं किया, जबकि वेदांग निघण्टु प्रत्येक में पृथिवी के २१ नामों में 'गौ' शब्द भी हैं। इससे तो यही आभास होता है कि सायण के संकुचित मस्तिष्क में इस का अर्थ ही नहीं आया या उन्होंने जानबूझकर वेदांग की उपेक्षा की।

वेदार्थ समझने के लिए अथवा मन्त्रार्थ का अनुशीलन करने के लिए सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में योग्यता प्राप्त करने के साथ ही त्याग, तपश्चर्या और ब्रह्मचर्य की अत्यन्त आवश्यकता है। समाधि जन्य ऋतम्भरा प्रज्ञा की अधिगम अवस्था अवस्था में भगवान् 'प्रणव' के अत्यन्त दर्शन करने व के योगीजन ही वेद तत्व को समझ सकते हैं।

वैदिक साहित्य भी एक अथाह सागर है। इस महती जलराशि से अमूल्य ज्ञान रत्न प्राप्त करने के लिए कुशल गोताखोर की आवश्यकता है। जो व्यक्ति उपर्युक्त गुण सम्पन्न हैं वे ही वैदिक साहित्य रूपी महोदधि के सफल गोताखोर हो सकते हैं। बिना उपर्युक्त गुण अधिगम किये वेद मन्त्रों पर कलम उठाना अपने पारिवारिक कुसंस्कार तथा अनभिज्ञता का द्योतन है।

वेद एवं वैदिक साहित्य से अपरिचित व्यक्ति को ही यह भ्रम उत्पन्न होता है कि वेद में वर्णित वशिष्ठ, नहुष, रोमशा, उर्वशी, पुरुरवा भरद्वाज आदि जो इस भूतल पर कभी हो चुके हैं, वही वेद में हैं। ऐसे भ्रमित व्यक्तियों के स्वाध्याय का सहज ही में परिज्ञान हो जाता हैं कि वे कितने पानी में हैं। उन्हें यह जानकारी नहीं है कि आदि से अब तक भविष्य में भी वेद से लेकर नाम लोगों के रखे गये हैं, रखे जा रहे हैं आगे भी रखे जायेंगे। वेदों में व्यक्त नाम इन अनित्य लौकिक व्यक्ति विशेषों के नाम नहीं हैं। इसका समर्थन मनु, महाभारत आदि आर्ष ग्रन्थों में भी हैं। उदाहरणार्थ—

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च
पृथक् पृथक्। वेद शब्देभ्य एवादौ
पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥ मनु०

उस परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेदों शब्दों से सब वस्तुओं के नाम कर्म और उनकी विविध वृत्तियों की रचना कर दी।

"नाम रूपं च भूतानां, कर्मणां च प्रवर्तनम्। वेद शब्देभ्य एवादौ निर्मिमीते स ईश्वरः।"

प्राणियों के नानारूप और उनके कर्मों का विधान भगवान् प्रजापति ने सृष्टि के आदि में वेदोक्त शब्दों द्वारा ही निर्माण किये।

'नामधेयानि चर्षीणां, याश्चवेदेषु दृष्टयः। सर्वर्यन्ते सुजातानां, तान्येवैभ्यो ददात्यजः।' म०भा०।

ऋषियों के नाम और ज्ञान भी प्रलय के अन्त अर्थात् सृष्टि के प्रभात काल में वेदों के द्वारा दिये गये।

महर्षि व्यास ने वेदान्त दर्शन में लिखा है—

'शास्त्रयोनित्वात्।'

सब सत्य विद्याओं से युक्त ऋग्, यजु, साम अथर्ववेद चतुष्टय का कारण सर्वज्ञादि गुण विशिष्ट परमात्मा ही है।

महान आस्तिक कपिल मुनि ने सांख्य दर्शन में—

'निज शक्त्याभिव्यक्ते स्वतः प्रामाण्यम्'

वेदों को ईश्वरीय शक्ति से अभिव्यक्त अर्थात् प्रकट होने के कारण नित्य और स्वतः प्रमाण माना है।

इसके अतिरिक्त महर्षि जैमिनी ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ मीमांसा दर्शन में वेदों की नित्यता सिद्ध करते हुए पूर्व पक्ष उठाकर उत्तर दिया है जो इस प्रकार है—

पूर्वपक्ष

'अनित्यदर्शनाच्च।'

जै० सू० १।१ २७

महर्षि जैमिनि ने इस सूत्र में पूर्व पक्ष की ओर से वेदों पर यह शंका व्यक्त की है कि उनमें बहुत से ऐसे भी नाम दृष्टिगोचर होते हैं जिनसे सहज ही में ज्ञात होता है कि अमुक अमुक ऋषि, राजादि जो कभी इस वसुंधरा पर थे उन्हीं का यहां वर्णन है। इसलिए वेद अपौरुषेय नहीं हैं। अग्रिम सूत्र में इसका उत्तर देते हुए कहते हैं कि—

'उक्तं तु शब्दपूर्वत्वम्"

इसमें भी वेदों की पौरुषेयता नहीं सिद्ध होती, क्योंकि पिछले सूत्रों में वेदों का अपौरुषेयत्व नित्यत्व एवं अनादित्व कह आये हैं। पुनः—

"आख्या प्रवचनात्"

वेदों में जो नाम आये हैं उनकी प्रसिद्धि अमुक ऋषि के नाम से होने का कारण यह है कि उन्होंने उन विशेष मन्त्रों का अध्ययन एवं अध्यापन किया। वेद तो उन प्रवचन कर्ताओं के जन्म में प्रविष्ट होने से पहले भी उपस्थित था। वेद अपौरुषेय हैं। वेद में जो अनित्य व्यक्तियों के नाम लोगों को अपनी अज्ञानता के कारण दिखाई पड़ते हैं वह केवल शब्द सामान्य मात्र हैं न कि व्यक्ति विशेष। उदाहरणार्थ सर्वप्रथम वशिष्ठ शब्द को लीजिए। वेद में इस शब्द के क्या अर्थ हैं—

"वसिष्ठ ऋषि प्रजापति—
गृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्य"

यजु० १३। म० ५४।

यहां पर वशिष्ठ का अर्थ प्राण है।

ऋग्वेद ७।३३।१ में वसिष्ठ का अर्थ ऋत्विज, पुरोहित एवं विद्वान है। ऋग्वेद २।९।१ में अग्नि वसिष्ठ है। यदि ब्रह्मानन्द से अग्नि का अर्थ विद्वान लें तो भी वसिष्ठ रहेगा क्योंकि विद्वान के अनेकार्थ में एक अर्थ वसिष्ठ ही है।

शतपथ ब्राह्मण में—

'प्राणो वै वसिष्ठ ऋषिर्यद् नु श्रेष्ठस्तेन। ८।१ १।६

यहाँ पर भी प्राण को ही वसिष्ठ ऋषि कहा गया है। कौषति की १५ २ मे प्रजापति को वसिष्ठ कहा गया है। शतपथ २।४।४।२ 'एष (प्रजापति) वै वसिष्ठ ' यहाँ पर भी प्रजापति को ही वसिष्ठ कहा गया है। ऐ० ब्रा० १।२८। में अग्निर्वै देवानां वसिष्ठ है।

शतपथ ने वाग्वै वसिष्ठा कहा है। १४ ९ २ २।

ब्राह्मणकार एक मन्त्र की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—

इमावेव वसिष्ठकाश्यपावायमेव वसिष्ठोऽय कश्यप।

यहा पर दाहिने नासा रन्ध्र को वसिष्ठ कहा गया है। वेद मे वसिष्ठ का अर्थ बल भी है। वसिष्ठ उस व्यक्ति को भी कहते हैं जो अपने अन्दर उत्तम गुणों को बसाने अर्थात धारण करने वाला हो और दूसरे लोगों को बसने में सहयोग प्रदान करे। स्पष्ट है कि वसिष्ठ किसी व्यक्ति विशेष के हेतु नहीं प्रयुक्त है। यह शब्द अनेकार्थक हैं। जिनमे से कुछ को व्यक्त किया गया है।

इस भाति रोमशा शब्द भी वेदाभ विज्ञों को भ्रम के फन्दे मे फंसा रहा है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १२६।६ ७ मन्त्रो पर सायण ने ईश्वरीय ज्ञान के अभाव में कदाचित इन्द्रिय लोलुपतावश कपोल कल्पना तथा वितण्डा का सहारा लेकर अत्यन्त अश्लील अर्थ करने का दुस्साहस कर वेद को अपमानित करने का घृणित कार्य किया है। इसी अश्लील एवं मनगढन्त भाष्य को देखकर वैदिक एज के लेखकों ने नम्नलिखित टिप्पणी देकर अपने धर्म परम्परा के मिथ्या आदर्श को निलज्जतापूवक उपस्थित कर उससे वेदो को कलंकित करने का अक्षम्य अपराध किया है।

"This dismal hymn ends with two more verses not able only for their extreme obscenity It is in these Dan stuties that Brahmanical greed appers in its worst aspect in the Rigveda "

अर्थात यह निकृष्ट सूक्त दो मन्त्रों के साथ समाप्त होता है जो कि केवल अपने अत्यधिक अश्लीलता की पराकाष्ठा के कारण कुख्यात है। ऋग्वेद के इन दान स्तुतियों में ब्राह्मणों का लोभ निकृष्ट रूप में प्रकट होता है।

उदाहरण स्वरूप वेद के जिन दो सूक्तों के आधार पर सायण ने रोमशा का अत्यन्त अश्लील चित्र अंकित किया है। वे इस प्रकार है—

आगधिता परिगधिता या कशीकेव जङ्गहे। ददाति मह्यं यादुरी याशूनां भोज्या शता॥ ऋ० १ १२६।६॥

सायण भाष्य—सम्भोगाय प्रार्थिता भाव्यव्य स्वभार्या रोमशाम अश्लोडति बुद्धया।

परिदसत्सह (भोज्या) भोगयोग्येषा (आगधिता) वा समन्तात स्वीकृता तथा (परिगधिता) परिगृहीता यद्वा (आगधिता) वा समन्ताभ्निप्रयन्ती आन्तर प्रजनेन वाय मजादिभि कीदृशी सा या (जङ्गहे) अत्यन्त गह्णाति कदापि न विमुञ्चति। अत्यागे दृष्टान्त (कशीकेव) कशीका नाम सूनवत्सा नकुली सा यथा पत्या सह चिरकाल क्रीडति न कदाचिदपि विमुञ्चति तथैवैषापि। किंच भोज्यैषा य दुरित्युदक नाम रेतो लक्षणम उदक प्रभूत राति—ददातीति यादुरी बहुरेतोयुक्तेत्यथ। तादृशी सती (याशूनाम)सभोगाना यश इति प्रजनन नाम तत्सम्बधीनि कर्माणि याशूनि भोगा तेषा (शतम) असख्यातान मह्य ददाति।

दूसरा मन्त्र इस प्रकार है—

उपोप मे परामृश मा मे दभ्राणि मन्यथा। सर्वाहमस्मि रोमशा गन्धारीणा मिवाविका॥ ऋ० १।१२६।७

सायणभाष्य—"रोमशा नाम बृहस्पते पुत्री ब्रह्मवादिनी परिहसन्त स्वपति प्राह भो पते (मे)वा द्वितीयार्थे चतुर्थी (उपोप) उपेत्य (परामृश) सम्यक स्पृश भोगयोग्याम अवगच्छेत्यथ। यद्वा (मे) मम भोगनीयमङ्गम (उपोपमृश) अत्यन्तमान्तर स्पृश।

पेवामर्शभाव शङ्का विवास्वति(मे) यदङ्गनि रोमाणि (दभ्राणि)अल्पानि मा बुध्यस्व (अहम)(रोमशा)बहुरोमयुक्ता अस्मि यतो हृमीदशी अत (सर्वा) सम्पूर्णावयवास्मि रोमशत्वे दृष्टान्त—गन्धारदेशीय मेषा इव यद्वा(गन्धारिणाम) मर्याधारिभोना स्त्र ण मू अविका)अत्यय तपयन्ती यो नरिवास्मि यतोऽहमीदृशी अतो माम अप्रौढा मावबुध्यस्वेति।'

यदि ज्ञान चक्षु से समीक्षा की जाय तो स्पष्ट हो जायगा कि सायण ने केवल मनोविनोदनाथ अथवा अज्ञानतावश उपरुक्त दोनों सूक्तों का मनगढन्त एवं आडम्बरमय अर्थ खाच-तान कर किया है। स्पष्ट एवं सरल भाव को छोडकर दूर की कौडी लाने का प्रयास किया गया है। बिचारे टिप्पणी कारक क्या करते। अज्ञान होने के कारण सायण के पथ पर चले और उसी अशुद्ध भाष्य का अनुकरण कर विधिप की टिप्पणी का समर्थन किया है। वास्तविकता एवं स्थिति का ध्यान नहीं किया।

इन सूक्तों का सत्य अर्थ महर्षि के शब्दों में निम्न है। उसमें अश्लीलता एवं आडम्बर की गन्ध भी नहीं है। देखें—

मा (आगधिता) समान्तदगृहीता (परिगधिता) परित सर्वतो गधिता सुभैगुणै युक्ता नीति (व्यवहारभानुर्नीता-कर्मा नि० ५ १५) (जङ्गहे) अत्यन्त ग्रहीतव्या (कशीकेव) तथा ताडनार्थ कशीका (याशूनाम) प्रयतमानानाम् अन्य यत्नु प्रयत्ने धातोर्बाहुलकादक प्रत्यय अस्य प्रयत्न (य दुरी)प्रयत्नशीला (शता) शतानि असख्यातानि वस्तूनि (भोज्या) योक्तु योग्यानि (ददाति)या सर्वै स्वीकार्या।

भावाथ—यया नीत्याऽसख्यातानि सुखानि स्यु सा सर्वै सम्पादनीया।

अर्थात जिस उत्तम नीति-व्यवहार के ग्रहण करने से असख्य सुखो की प्राप्ति होती है जो सब शुभ गुण से युक्त है। उसका अनुष्ठान सबको करना चाहिये।

दूसरा—पुना राज्ञी कि कुर्यादित्याह—

हे पते राजन! याऽहं (गन्धारिणाम इव अविका) पृथ्वीराज्य धात्रीणाम मध्य रक्षिका (रोमशा) प्रशस्तलोमा (सर्वा) अस्मि तस्या मे गुणान(परामृश) विचारय(मे) (दभ्राणि) अल्पानि कर्माणि (मा) (उपोप)अति समीपत्व(मन्यथा) जानीया।

भावाथ—राज्ञी स्वान प्रति ब्रूयात अह भवतो न्यूना नास्मि। यथा भवान पुरुषाणा न्यायाधीशोऽस्ति तथाहं स्त्रीणां न्यायकारिणी भवामि। यथा पूर्णा राजवत्नय प्रजास्थाना स्त्रीणा न्यायकारिण्यो भूवन तथा हमपि स्याम।

अर्थात रानी राजा से कहती है कि आप भी मेरे गुणों का विचार करें और मुझ कभी तुच्छ न समझ और न मेरे कामों को निरस्कार दृष्टि से देखें। मैं आप से कम नही हू। जैसा आप पुरुषों के लिए न्यायक री हैं वैसे मे भी स्त्रियो के लिए न्यायकारिणी होती हू। मैं सदा स्त्रियों का न्याय करने में तत्पर रहू।

इसी प्रकार भरद्वाज शब्द भी व्यक्ति विशेष का नही अपितु यौगिक शब्द है। तथा—

'मनोवै भरद्वाज ऋषि। ८।१।८

भरद्वाज ऋषि—प्रजापति गृहीतया त्वया मन्येवगह्णामि प्रजाभ्य।

यजु० १३ ५५

भरद्वाज ऋषि—बिभर्तीति भरद्वाजम् (बलम) य स भरद्वाज अभिभर्ता मन।

अर्थात जो बल धारण करे या पुष्ट करे उसे भरद्वाज कहते हैं। बल को मन धारण करता है। अत मन में ही भरद्वाज है। इसकी पुष्टि में तै०में निम्न प्रकार से कहा है— मनो वै भरद्वाज ऋषि (अन्नम) वाजो यो वै मनो

(शेष पृष्ठ १२ पर)

साधना संकल्प

है शिराओं मे लहू की धार जब तक
साधना-पथ पर सदा बढता रहूगा।
तडतडाकर तोड दूगा आज जडता बन्ध सारे
मैं अमल, चिरमुक्त, मेरा बन्धनो से कौन नाता!
सिद्धि चूमेगी चरण, जब ध्येय का पाथेय लेकर
बढ चलूगा वायु गति से नित्य पावक गान गाता।
रोधको को चूर्ण कर दगा, प्रभजन—
से सदा हिमवन न बन बढता रहूगा।
पथ पर तम का लगे पहरा नहीं परवाह मुझको
मैं सनातन ज्योति का दीपक जलाता ही चलूगा
मैं अकेला ही मधुर उल्लास का वैभव लुटाता
शून्यता में प्यार का सरगम गजाता ही चलूगा
सकटो का मागता वरदान यौवन,
आपदा के शैल पर चढता रहूगा।
मिल न पाये ध्येय जब तक, पथ में विश्राम कैसा
मैं घृणा के वक्ष पर बन फूल बनकर हस पडूगा
हर उपेक्षित शूल पाएगा विमल अनुराग मुझसे
मे अर्तक्रन पीडितो पर प्रीति घन बन रम पडूगा
मे विजय सोपान पर चढता निरन्तर।
अन्तरायो से सदा लडता रहूगा।

—भगवानशरण प्रदीप एम० ए० गीतारत्न

सिद्धान्त विमर्श

भ्रान्ति निवारण:—

महर्षि दयानन्द और ज्योतिष

[श्री राधेमोहन जी मंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा, इलाहाबाद]

[इस लेख को महर्षि दयानन्द के विचारों का सिद्धान्त पक्ष समझना चाहिये। श्री चन्द्रभानसहाय जी ने जो शंका अपने लेख में उठाई थी उसका इस लेख में युक्तियुक्त उत्तर देकर समाधान कर दिया गया है और यही उत्तर आर्यसमाज का वास्तविक दृष्टिकोण है। —सम्पादक]

आजकल श्रीयुत चन्द्रभानसहाय जी एडवोकेट बरेली का स्वामी दयानन्द और ज्योतिष नामक प्रश्नोत्तरक लेख आर्यों में मुख्य चर्चा का विषय बना हुआ है। इस लेख के द्वारा विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द को एक बड़ा ज्योतिषी जन्मपत्री देखने वाला तथा उसका समर्थक सिद्ध करने की चेष्टा की है। आपने लेख में अपनी दृढ़ धारणा प्रकट करते हुए लिखा है कि स्वामी जी फलित ज्योतिष मानते थे लेखक के मंतव्यों से सब ऐंठने के विरोधी थे। आप लिखते हैं कि—

स्वामी जी स्वयं बड़े ज्योतिषी थे। कई युवकों की जन्मपत्रिका देखकर उनकी आयु भी बता दी कि तुम अमुक समय मर जाओगे ऐसा ही हुआ।

उपरोक्त कथनोपकथन की पुष्टि में आपने एक सुनी-सुनाई एक सर्वथा नवीन घटना का उल्लेख किया है। जिससे यह सिद्ध होता है कि स्वामी जी ने जन्म समय पूछकर और हिसाब लगाकर बता दिया कि "किसी बड़े अधिकारी को ब्याही जाएगी, वह विवाह के बाद मर जाएगी, एक पुत्र और एक पुत्री होगी, और बाईस वर्ष में मर जाएगी, आदि···

एक पुराने बाप का लेख पढ़कर जन साधारण में कौतूहल उत्पन्न होना एक साधारण बात है। और सम्भव है कि कुछ अपरिपक्व सज्जन इस भ्रान्ति के शिकार हो गये हों। यह सिद्ध है कि हम सदा सदा अपनी विचारधारा की पुष्टि में अनेकानेक भ्रान्तिपूर्ण युक्तियां दे बैठते हैं। पर यह नहीं सोचते कि इन युक्तियों का पाठकों के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ेगा। अब आइए वास्तविकता की ओर।

भाइयो, महर्षि दयानन्द को स्वर्गस्थ हुए अभी तो केवल ८३ वर्ष ही बीत पाए हैं। ज्यों-ज्यों समय बीतता जायगा त्यों-त्यों नये-नये तथाकथित अन्वेषक स्वामी जी के सम्बन्ध में नई नई किंवदंतियां प्रस्तुत करेंगे। कई भक्त जब महर्षि को सर्वोच्च महापुरुष सिद्ध करने के धुन में, कोई उन्हें ५७ ई० के भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम का अगुआ बनाने के धुन में कोई योगीश्वर बनाने की धुन में, कोई उन्हें निर्भ्रान्त और सर्वज्ञ सिद्ध करने की धुन में और कोई-कोई समस्त अवतारों, पैगम्बरों की भांति विलक्षण और अलौकिक पुरुष सिद्ध करने की धुन में नई-नई घटनाओं को गढ़कर प्रचारित करने की चेष्टा करेंगे। कोई-कोई अपनी प्रसिद्धि पाने के हेतु और ऋषि जीवनी की वर्णित परिधि में स्थान प्राप्त करने के लालच में नई-नई मिथ्योक्तियों की रचना करेंगे। विरोधी विद्वानों की ओर से भी ऐसी ही अविस्मरणीय में नई-नई घटनाएं गढ़ी जायेंगी जिससे महर्षि का मान-मर्दन हो। इन घटनाओं को पढ़कर आर्यों को अधिक चिन्तित नहीं होना चाहिए और न भावावेश में सुध-बुध भूलकर बहना चाहिए। प्रत्येक आर्य को महर्षि दयानन्द द्वारा दिया हुआ अमोघ अस्त्र "तर्क" के द्वारा ऊहापोह करना चाहिए। कोरी किंवदंतियों को प्रमाण कोटि में कभी स्थान नहीं दिया जा सकता है।

प्रत्येक आर्य व आर्यसमाजों के लिए निम्नलिखित प्रकार से सिद्धान्तों के सम्बन्ध में प्रमाण निश्चित करना चाहिए।

१—आर्यसमाज के १० नियम सर्वदा सब काल में और सबके लिए मुख्य प्रमाण हैं।

२—दूसरी कोटि में महर्षि का स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश है जिसमें ऋषि ने अपने ग्रन्थों में प्रयुक्त शब्दों व सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण किया है।

३—तीसरी कोटि में ऋषि कृत ग्रन्थ ग्रहणीय हैं।

४—चौथी कक्षा में महर्षि का स्वकथित जीवन व अन्य विद्वानों द्वारा लिखित महर्षि का जीवन चरित्र।

५—पांचवीं कोटि अर्थात् अन्तिम कोटि में महर्षि के सम्बन्ध में सुनी-सुनाई किंवदन्तियां जो युक्ति-युक्त हों।

अतएव ऋषि के सम्बन्ध में समस्त किंवदन्तियों को उत्तरोत्तर प्रमाणों पर कसकर देखते जायेंगे। यदि वे सर्वथा निर्दोष, युक्तियुक्त और ऐतिहासिक आधार पर सत्य सिद्ध हुई तभी माननीय हो सकती है।

अब आइये इस किंवदन्ती के सत्यासत्य के निर्णय की ओर। आप पहिले चौथी प्रमाण कोटि से इसे परखिये पुन. उत्तरोत्तर आगे बढ़ें। ऋषि का जीवन चरित्र श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वा० सत्यानन्द, प० इन्द्रविद्या वाचस्पति दीवानचन्द्र जी, महात्मा आनन्द स्वामी तथा हरिश्चन्द्र विद्यालंकार कृत हमारे सामने हैं किसी भी लेखक ने इस घटना का जरा भी संकेत नहीं किया है। और न कहीं पर महर्षि द्वारा मुहूर्त देखना, व जन्मपत्री देखकर फल बताने का उल्लेख है। जन्मपत्री देखकर भविष्य बताना, हस्तरेखा तथा फलित ज्योतिष का खण्डन प्रत्येक जीवन-चरित्र मे सैकड़ों स्थानों पर मिलता है। जिसका महर्षि ने कठोर शब्दों में खण्डन किया है। मैं जीवन-चरित्र से एक ही प्रमाण स्थानाभाव के कारण प्रस्तुत करता हूं।

श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय कृत महर्षि का जीवन-चरित्र पृष्ठ २०५ प्रश्न १३ के प्रश्नोत्तर को पढ़ें। यह प्रश्न फर्रुखाबाद में पौराणिकों की ओर से लिखित रूप से किये गये थे। महर्षि ने इसका उत्तर ७ अक्तूबर १८७८ को लिखकर और आर्यसमाज के अधिवेशन में सभी आर्य सज्जनों को सुनाकर १२ अक्तूबर को भिजवा दिया था।

प्रश्न १३—आप ज्योतिष शास्त्र के फलित ग्रन्थों को मानते हैं या नहीं और भृगु संहिता आप्त ग्रन्थ है या नहीं और उक्त शास्त्र द्वारा मनुष्यों के सुख दुःख का ज्ञान होता है या नहीं।

उत्तर १३—हम ज्योतिष शास्त्र के गणित भाग को मानते हैं, फलित भाग को नहीं क्योंकि जितने ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थ हैं उनमें फलित का लेश भी नहीं है। जो भृगु सिद्धान्त कि जिस में केवल गणित लिखा है उसको हम आप्त ग्रन्थ मानते हैं। इतर को नहीं ज्योतिष शास्त्र में भूत भविष्यत कालस्थ सुख वा दुःख विदित होना कहीं नहीं लिखा है सिवाय अनाप्तोक्त ग्रन्थ के।

महर्षि के उपर्युक्त उत्तर से स्पष्ट है कि वे फलित ज्योतिष को बिल्कुल नहीं मानते थे। तब फिर समझ में नहीं आता कि महर्षि के इस प्रकार की स्पष्टोक्ति के होते हुए भी ऐसी मिथ्या किंवदन्तियों को उद्धृत करने का दुस्साहस क्यों किया जाय। ऐसा लिखकर महर्षि दयानन्द को अनाप्त कोटि में रख कर उनकी निन्दा नहीं हो जाती है। आश्चर्य है यह लिखना कि महर्षि ने जन्मपत्री देखकर आयु बता दी। जन्म का मुहूर्त पूछ कर बता दिया कि बड़े अधिकारी को ब्याही जायगी एक पुत्र और एक पुत्री होगी और बाइस वर्ष में मर जायेगी। आदि-आदि।

अब आइये महर्षि के ग्रन्थों की छाया में। मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि फलित ज्योतिष के समर्थन में एक भी शब्द महर्षि ने कहीं नहीं लिखा। बल्कि खण्डन में सहस्रों प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं जो महर्षि के ग्रन्थों में अपनी अनुपम आभा से चमक रहे हैं। यहां महर्षि कृत सत्यार्थ प्रकाश से एक दो प्रमाण प्रस्तुत करना पर्याप्त होगा।

सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समुल्लास मे प्रश्नोत्तर

प्रश्न—तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है? उत्तर—नहीं जो उसमें अंक, बीज रेखागणित विद्या है वह सब सच्ची, जो फल की लीला है वह सब झूठी है। (प्रश्न) क्या जो जन्म पत्र है सो निष्फल है? (उत्तर) हां, वह जन्म पत्र नहीं किन्तु उसका नाम 'शोकपत्र' रखना चाहिए महर्षि यहां जन्म पत्र को निष्फल और फल की लीला को सर्वथा झूठी लिखते हैं और जन्म पत्री बनाने वाले ज्योतिषी के लिए लिखते हैं कि जो ग्रह के पाप से कुछ न हो तो दूने-तिगुने रुपये उन धूर्तों से ले लेने चाहिए और बच जाय तो भी ले लेने चाहिए क्योंकि जैसे ज्योतिषियों ने कहा कि इसका कर्म और परमेश्वर के नियम तोड़ने का सामर्थ्य किसी का नहीं' वैसे गृहस्थ भी कहें कि यह अपने कर्म और परमेश्वर के नियम से बचा है तुम्हारे करने से नहीं।'··· —अब पाठक स्वयं निर्णय करें कि क्या महर्षि फलित ज्योतिष-को कुछ भी मानते थे अथवा नहीं।

(शेष पृष्ठ १० पर)

(पृष्ठ ८ से आगे)

इस लेख में जो पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर मेरी थोड़ी विचार धारा है, उस विषय पर पाठकों के सम्मुख मनोवैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहा हूं। कारण यह है कि बहुधा जिज्ञासु सज्जन प्रश्न किया करते हैं, क्या पुनर्जन्म का कोई वैज्ञानिक आधार है ? या वर्तमान भारत की पीढ़ी को केवल पूर्वजों के धार्मिक सिद्धान्तों से यह ज्ञान प्राप्त हुआ है ? इस प्रश्न का उत्तर प्राचीन और वर्तमान लेखकों और विचारकों की लेखनी में मिलता है। उदाहरण के लिये मुगल बादशाह औरंगजेब ने 'आलमगीर' में कई ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख किया है, जिनकी उस बादशाह ने पुनर्जन्म सम्बन्धित बातों की जांच करा ली थी। इसके अतिरिक्त मुसलमान सन्त मौलाना रोम के निम्नलिखित शब्दों से पुनर्जन्म की पुष्टि की है—'हमचू सब्जा बारहा रोईदा अम हफ्त सद हफ्ताद कालिब दीदा अम'। जिसका तात्पर्य यह है कि मैंने सात सौ सत्तर योनियों का अनुभव किया है और घास की तरह बार बार जन्म लिया है। वर्तमान युग में भी ऐसे बालकों के हालात समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं जिनको अपने पिछले जन्म की बातों की स्मृति रही है। यह बालक भारत वर्ष के अति रिक्त टर्की, बर्मा, सीलोन थाइलैंड, ब्राजील, फिजी, कनेडा सोवियत यूनियन, पूर्वी बर्लिन, फ्रांस आदि के हैं। इन बालकों के विषय में महान मनोवैज्ञानिक खोज-बीन कर रहे हैं, परन्तु पुनर्जन्म के सम्बन्ध में धार्मिक दृष्टिकोण आत्मा की सत्ता पर आधारित है। मनोवैज्ञानिक आत्मा को नहीं मानते हैं इस कारण वह पिछले जन्म की स्मृतियां रखने वाले बालकों की स्मृति विशेष की श्रेणी में रखते हैं। परन्तु मनोवैज्ञानिकों के निष्कर्ष अभी तक पूर्णता को प्राप्त नहीं हुए हैं और वह यह स्वीकार करते हैं कि मस्तिष्क का ज्ञान बहुत विशाल है। और उन्होंने इस विशाल ज्ञान की अल्प झांकी ली है। परन्तु हिन्दू आर्य धार्मिक प्रवृत्ति वाले सज्जनों का विचार है कि पुनर्जन्म की स्मृति से आत्मतत्व की सिद्धि होती है।

जिन धार्मिक सज्जनों का पुनर्जन्म में विश्वास नहीं है वह केवल एक ही जन्म को मानते हैं और उनके मतानुसार इस जन्म के कर्मों का निर्णय प्रलय के दिन होगा, परन्तु गहराई से सोचने वालों को इस विषय में यह शंका होती है कि न्यायकारी ईश्वर अथवा परमात्मा लोक तथा परलोक को करने वालों और एक साधारण व्यक्ति एक

(श्री एस बी माथुर, मेरठ)

[श्री अरविन्द के अतिमानस की व्याख्या अभी अस्पष्ट है परन्तु इससे 'पुनर्जन्म' सम्बन्धी दार्शनिक सिद्धान्त की ही पुष्टि होती है। सम्पादक]

●

ही जन्म के थोड़े अच्छे बुरे कर्मों के फल से कैसे मुक्ति या स्वर्ग प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त यह न्यायसंगत नहीं है कि मरने के बाद कर्मों का न्याय हजारों लाखों वर्षों तक न किया जावे और प्रलय के दिन की प्रतीक्षा में इतना लम्बा काल व्यतीत हो जावे कारण यह कि न्याय का विलम्ब से होना न्याय से वंचित होने के तुल्य है फिर यह भी निश्चित नहीं है कि प्रलय का दिन कब आयेगा। ईसा मसीह से जब इस सम्बन्ध में प्रश्न किया गया तो उन्होंने स्पष्ट जवाब दिया कि भगवान के पुत्र को भी इसका ज्ञान नहीं है। आश्चर्य की बात यह है कि प्रलय के दिन जो न्याय होगा अर्थात् सदा के लिये नरक या स्वर्ग यह भी न्याय के विरुद्ध है। इस सम्बन्ध में एक और विचार के मानने वाले हैं कि भगवान आपकी कृपा से मनुष्यों के पाप क्षमा कर देंगे और मुक्ति या स्वर्ग प्राप्त हो जायेगा। परन्तु इस विचार के फल स्वरूप ही जनता में पाप पनप रहा है। क्योंकि पाप के क्षमा होने के सिद्धान्त से पाप के प्रति भय उत्पन्न नहीं हो रहा है। पुनर्जन्म से प्रत्येक व्यक्ति को पुन-पुन उन्नति करने का अवसर प्राप्त होता है। और एक समय ऐसा आ जाता है कि हम अपने ही पुरुषार्थ से मुक्त अवस्था को पहुंच जाते हैं।

अब भौतिकवाद को लीजिये जिस का सिद्धान्त यह है कि मृत्यु के साथ मनुष्य का सब कुछ नष्ट हो जाता है। परन्तु बहुत से विचारकों को यह तो मान्य है कि प्रत्येक व्यक्ति में प्रगति करने के अंकुर विद्यमान हैं। यदि मृत्यु के साथ हमारे सब विचारों और प्रगति करने के अंकुर का अन्त होता है तो जीवन बहुत ही निराशा जनक माना जायेगा। यदि हमको यह निश्चय है कि मृत्यु के बाद मनुष्य को प्रगति करने का फिर अवसर मिलेगा तो मृत्यु का हृदय से स्वागत किया जायेगा और जिन त्रुटियों के कारण एक जीवन में प्रगति नहीं हो पाई थी उनको दूर करने का प्रयत्न दूसरा अवसर मिलने पर करेंगे। इस सम्बन्ध में आचार्य विनोबा जी के विचार प्रस्तुत करना आवश्यक है। आचार्य विनोबा जी ने अपनी पुस्तक Science and self knowledge के पृष्ठ ४८ ४९ पर इस प्रकार विचार प्रकट किये हैं — हममें से अधिकतर व्यक्ति कर्मों के फलों के अनुसार पुनर्जन्म लेते हैं। इसमें कोई विशेषता नहीं है। परन्तु एक व्यक्ति जिसने पूरी तरह से आत्मसाक्षात्कार कर लिया है और मानस लोक से ऊपर उठ गया है वह फिर जन्म लेता है। उसको श्री अरविन्द घोष ने 'नीचे उतरना' माना है। मुक्ति अन्तिम ध्येय नहीं हैं। इसके बाद कर्मों का नया प्रोग्राम आरम्भ होता है जिसको श्री अरविन्द घोष की भाषा में अति मानस लोक कहते हैं। श्री अरविन्द के मतानुसार मुक्त जीवों को ही सुधार करने का अधिकार प्राप्त होता है। कोई व्यक्ति जिसको मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ है सच्चे अर्थ में लोक सेवा या सुधार नहीं कर सकता क्योंकि उसके गलती करने की सम्भावना रहती है। एक व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार करना आवश्यक है जिसके द्वारा वह अति मानसलोक पहुंचे परन्तु उस ऊंचाई से संसार में पैदा हो और अपने विचारों से दूसरों की सहायता करें। यह कैसा ऊंचा दार्शनिक तथ्य है।'

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के अनुसार मुक्ति की अवधि बहुत लम्बी परन्तु निश्चित काल के लिये है और मुक्त जीवों को भी लोक कल्याण के लिये पुन जन्म लेना होता है।

●

पुनर्जन्म का सिद्धांत वैज्ञानिक दृष्टि से विश्वसनीय

जयपुर, २६ सितम्बर। राजस्थान विश्वविद्यालय में परामनो विज्ञान विभाग के निदेशक प्रोफेसर एच एन बनर्जी ने आज दावा किया कि मेरे द्वारा किये गये अनुसन्धानो से इस बात की पुष्टि हो गयी है कि पुनजन्म का सिद्धान्त वैज्ञानिक दृष्टि से विश्वसनीय है।

प्रोफेसर बनर्जी ने ब्रिटेन, डन्मार्क नार्वे, अमरीका और फिलिपीन की यात्रा करके उन व्यक्तियों से भेंट की है जो पिछले जन्म की घटनायें याद करने का दावा करते हैं।

उन्होंने कहा कि अब तक पुनर्जन्म के ४००० मामले मेरे पास आये हैं।

उनमें एक मामला इटली की सात वर्षीय लड़की लीना मार्कोनी का है, जो इस समय कोपनहेगन (डन्मार्क) में रहती है। जब वह सात वष की थी, उसने अपने माता पिता से कहा था कि वह फिलिपीनमें अपन घर लौट जाना चाहती है, जहां पिछले जन्म में वह अपन पिता के साथ रहती थी, जो एक रैस्तरां मालिक था। उसका पिछले जन्म का नाम मारिया एस्पिना था और वह 'बीकन' नामक एक फिलिपीन मिठाई की शौकीन थी जो नारियल से तैयार की जाती है। उसकी १२ वर्ष की आयु मे मृत्यु हो गयी थी।

प्रो बनर्जी ने फिलिपीन जाकर उस लड़की के दावे की जाच की और उसकी बातों को सही पाया।

प्रो बनर्जी ने बताया कि ऐसे मामलों के अध्ययन की एक विशेष विधि राजस्थान विश्वविद्यालय में किये गये व्यापक अनुसन्धान के परिणाम स्वरूप निकाली गयी है। हमने ऐसे सभी मामलों को पुनजन्म की संज्ञा नही दी है, क्यो कि उनकी दूसरी व्याख्याए भी सम्भव हैं।

हमारे अध्ययन से इस बात की पुष्टि हुई है कि हमारा मन उन घटनाओं की भी जानकारी प्राप्त कर सकता है जिनसे उसका सीधा सम्बन्ध नही है। वह कैसे होता है, यह एक महान् प्रश्न है जिसका उत्तर देने का हम यत्न कर रहे हैं।

स्वास्थ्य-सुधा

भारत में पौष्टिक आहार की व्यवस्था

—मधुकर

हाल के वर्षों में खाद्य समस्या को हल करने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं। एक ओर खेती की नयी नयी विधियां अपनाकर अनाज की पैदावार बढ़ाई जा रही है दूसरी ओर फलों, दालों ज्वार, बाजरा, फल-सब्जी दूध साथ मछली और अण्डे का पौष्टिक आहार के रूप में प्रचार किया जा रहा है।

फलों आदि के संरक्षण और उन्हें शीघ्रता से एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने की व्यवस्था की जा रही है। लोगों की भोजन सम्बन्धी आदतों में सुधार के लिए जल्दी ही राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया जाएगा और पौष्टिक आहार के प्रचार के लिए अनुभवी लोग रखे जाएंगे।

नयी चीज को अपनाने में लोगों को समय लगता है। भारत जैसे बड़े देश में लोगों की भोजन सम्बन्धी आदतों को बदलने में निश्चय ही कुछ समय लगेगा। अब लोग अपने भोजन में पहले से ज्यादा नयी चीज शामिल कर रहे हैं। उदाहरण के लिए अब दक्षिणवासी चपाती खाने लगे हैं और उत्तर भारत के लोग डोसा, इडली आदि खाने लगे हैं।

लोगों में सस्ते पौष्टिक भोजन और पाक विज्ञान का पहले से ही प्रचार किया जा रहा है। इस काम के लिए चलती फिरती पौष्टिक आहार टुकड़ियों की व्यवस्था की गयी है ये टुकड़िया समाज कल्याण संस्थाओं, औद्योगिक बलगन-घरों विस्तार शिक्षा केन्द्रों विज्ञान मंदिरो और सार्वजनिक संस्थाओ के साथ मिलकर काम करती हैं।

अनाज की बचत

आज देश में अनाज की बचत बहुत जरूरी है। अतः विभिन्न पदार्थों से पौष्टिक आहार तैयार करने की योजनायें शुरु की गयी हैं। परीक्षणों से यह सिद्ध हो गया है कि विभिन्न देशी चीजो से प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ तैयार किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए मूंगफली का तेल निकालने के बाद जो खली बचती है उसके आटे से अच्छा भोजन तैयार होता है। मूंगफली से खाने योग्य आटा बनाने के लिए तीन तीन हजार टन की क्षमता के दो कारखाने अन्तर्राष्ट्रीय बाल सहायता कोष और खाद्य तेल उद्योग के सहयोग से लगाए गए हैं। मूंगफली के आटे से विभिन्न पौष्टिक पदार्थ बन जाते हैं। दिन में सामान्य भोजन के बाद एक-दो औंस ये पदार्थ खाने से शरीर को यथेष्ट मात्रा में प्रोटीन और विटामिन आदि मिल जाते हैं। गेहूं के आटे और मैदा में मूंगफली या टेपीओका का आटा मिलाने की विधि मालूम की जा चुकी है। पौष्टिक आटे को जिसमें १० प्रतिशत मूंगफली का आटा हो, गेहूं के आटे में मिलाने से स्वादिष्ट चपातियां पूरियां और पराठे बनाये जा सकते हैं।

मूंगफली के आटे को गेहूं के आटे में मिलाकर डबल रोटी भी बनती है। इसका उत्पादन बढ़ाने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं और साथ ही इसका प्रचार भी किया जा रहा है। जब इस उद्योग का पूरा विकास हो जायेगा तो लोगो को सालाना २० लाख टन प्रोटीन युक्त भोजन मिलने लगेगा और देश में पौष्टिक आहार की कमी दूर होगी।

मोटे अनाज के उपयोग

मोटे अनाजों में ज्वार, रागी, बाजरा जो मक्का और राजगिरि को मैदा में मिलाकर अधिक पौष्टिक बनाया जा सकता है। इनके मिश्रण से बने भोजन का इस्तेमाल करने से गेहूं आदि की काफी बचत की जा सकती है। इन चीजों से अनेक प्रकार का स्वादिष्ट और सस्ता भोजन बनाया जा सकता है।

घरों में खाना पकाने के पुराने तरीके बदले जाने चाहिए, ताकि खाद्य पदार्थों में विटामिन और प्रोटीन आदि नष्ट न हो। खाना पकाने की नयी विधियों के प्रचार से पौष्टिक भोजन का भी प्रचार बढ़ेगा।

अधिकांश परिवारों में सदा एक जैसा भोजन पकता रहता है और उसमें वसा या चीनी की मात्रा अधिक होती है। अतः ऐसे भोजन से स्वास्थ्य को हानि होती है। हमारे भोजन में प्रोटीन वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज और विटामिन युक्त पदार्थ शामिल होने चाहिये। एक ही प्रकार के भोजन में ये सभी तत्व नहीं हो सकते सन्तुलित आहार वह है जिसमें तरह-तरह के पदार्थ शामिल हों।

देश में पौष्टिक पदार्थों के प्रचार के लिए जल्दी ही बड़े पैमाने पर विभिन्न मण्डलों में पुस्तिकायें आदि बांटी जायेंगी और प्रदर्शिनियां की जायेंगी। इसके अलावा खाना पकाने की नयी विधियों का प्रचार किया जायगा, ताकि लोगों का यह भ्रम दूर हो कि पौष्टिक भोजन सस्ता नहीं होता और लोगों की भोजन सम्बन्धी आदतें भी नहीं बदलतीं।

(पृष्ठ ७ का शेष)

आगे चलकर ११ वें समुल्लास में महर्षि दयानन्द एक ऐसी प्रबल युक्ति देते हुए सिद्ध करते हैं कि कोई भी ज्योतिषी जन्म पत्र व जन्म के मुहूर्त देखकर फल नहीं बता सकता है और यदि बताता है तो उसका पोपचार्य मिथ्या पाखण्ड है।

महर्षि के शब्द पढ़े। 'जो तुम ग्रहों का फल मानो तो इसका उत्तर देओ कि जिस क्षण में एक मनुष्य का जन्म होता है जिसको तुम ध्रुवा त्रुटि मानकर जन्म पत्र बनाते हो उसी समय भूगोल पर दूसरे का जन्म होता है वा नहीं ? जो कहो कि नहीं तो झूठ जो कहो होता है तो एक चक्रवर्ती के सदृश भूगोल में दूसरा चक्रवर्ती राजा क्यों नहीं होता ? हां इतना तुम कह सकते हो कि यह लीला हमारे उदर भरने की है तो कोई मान भी लेवे' महर्षि की यह सत्योक्ति इतनी प्रसिद्ध है कि इसे आर्य समाजी का बच्चा-बच्चा और आर्य समाज का चपरासी भी इससे सुपरिचित है। अन्य मतावलम्बी भी भलीभांति जानते हैं कि महर्षि दयानन्द जन्म पत्री फलित ज्योतिष आदि पाखण्डों का तीव्र शब्दों में खण्डन करते थे। इतने स्पष्ट महर्षि के विचार होते हुए भी मलीक साहब ने लिख दिया कि स्वामी जी ने जन्म समय पूछा और फिर हिसाब लगा कर बता दिया कि "किसी बड़े अधिकारी को ब्याही जाएगी, एक पुत्र और एक पुत्री होगी और बारह वर्ष में मर जाएगी" आदि आदि जबकि महर्षि निश्चय पूर्वक कहते हैं कि जन्म समय देखकर बताना सर्वथा असम्भव झूठ और पाखण्ड है। ऐसे सशक्त प्रत्यक्ष प्रमाणों के होते हुए, सुनी-सुनाई साक्ष्य सत्य किंवदन्ती को सिद्ध पक्ष में प्रस्तुत करना दु साहस मात्र है खेद है कि इस सिद्धान्त विरुद्ध मिथ्योक्ति में एक कर्मठ आर्य विद्वान् के परिवार को घसीटने का व्यर्थ प्रयत्न किया है। प्रभु हम सबको सद्बुद्धि दे कि हम महर्षि के मन्तव्यों को ठीक ठीक सर्वथा समझते रहें और भ्रान्ति के शिकार न हों।

वेदप्रचार सप्ताह

कायमगंज आर्यसमाज द्वारा कायमगंज में वेद प्रचार सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। गो रक्षा सम्मेलन भी होता रहा। ता० ५ सितम्बर के गोरक्षा प्रदर्शन में श्री राधाराम जी प्रधान भाग लेने भेजे गये।

—जगन्नाथप्रसाद आर्य उपप्रधान

—आर्यसमाज मैनपुरी द्वारा जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित यह सार्वजनिक सभा गोवध के विरोध में महात्मा रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" द्वारा आरम्भ किये गये अनशन पर उनको साधुवाद देती है और इस सम्बध मे सारे साधु समाज ने जो प्रबल आन्दोलन छेड़ा है, उसके साथ पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन देती है। शासन से आग्रहपूर्ण अनुरोध है कि साधु महात्माओ के जीवन से खिलवाड़ न करे और तत्काल गोवध पर प्रभावपूर्ण रोक लगा कर जनता के असन्तोष को न बढावें। —मन्त्री

—आर्यसमाज मैनपुरी द्वारा जन्माष्टमी के शुभावसर पर आयोजित यह सार्वजनिक सभा गोवध को राष्ट्र के लिये घोर कलक मानती है। राष्ट्र की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिये गोरक्षा को अत्यावश्यक महत्व देती है, अतः शासन से अनुरोध करती है कि गोवध को अविलम्ब बन्द कराने का प्रभावपूर्ण पग शीघ्राति शीघ्र उठावे। —मन्त्री

—आर्यसमाज आजमगढ द्वारा वेद प्रचार सप्ताह रक्षाबन्धन से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक समारोहपूर्वक मनाया गया। नित्य काशी के वैदिक विद्वान श्री प० सत्यदेव जी शास्त्री की वेद कथा होती रही। साथ ही प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री नन्दलाल जी के मनोहर भजनों से गो नगर की शिक्षित जनता ने वेद रस का पान किया। हैदराबाद बलिदान दिवस, प० गगाप्रसाद उपाध्याय जन्म दिवस तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव विशेष रूप से मनाया गया। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन गोरक्षा दिवस का विशेष आयोजन रहा। सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से माग की गई कि वह देश की आर्थिक, धार्मिक तथा सास्कृतिक मानबिन्दु गोमाता की रक्षा के लिये सम्पूर्ण देश मे गोहत्या पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगावे।

—शुभनारायण मत्री

—आर्यसमाज लक्ष्मीपुर मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी श्री चेतनाथ आर्य प्रधान आ० स० के अध्यक्षता मे मनाया गया। शाम मे एक गोष्ठी रखी गयी और वहाँ पर २ बजे से ७ सात बजे शाम तक व्याख्यान तथा भजन हुआ।

—आर्यसमाज कर्णपुरवस्त (फर्रुखाबाद) मे वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। दि० ३०।८ ६६ ई० को श्रावणी पर्व मनाया गया, पश्चात् यजुर्वेद भाषा भाष्य' अध्याय २४ ३ की कथा दि० ८।९।६६ई० तक हुई और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया, पर्व पद्धति के अनुसार यज्ञादि पर्वो पर हुये। —मन्त्री

—आर्यसमाज बुधवा शहीद (सहारनपुर) का वेदप्रचार सप्ताह ३०अगस्त से ८ सितम्बर तक बडे उत्साहपूर्वक मनाया गया जिसमे प० विश्वम्भरदत्त शर्मा भजनोपदेशक द्वारा कार्यक्रम भली प्रकार सम्पन्न हुआ। ग्रामवासियो ने पूरा सहयोग दिया। —मत्री

—आ०स०दिलदार नगर मे ३०सेदसितम्बर तक वेद सप्ताह मनाया गया, नित्य हवन एव अन्तिम दिन वृहद यज्ञ तथा रात्रि मे सत्यार्थप्रकाश पढा गया।

ता० ६, ७ ८ सितम्बर सन् १९६६ई० को पुरवादेह पो० सुखसेन फर्रुखाबाद में वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष मे हवन तथा कथा हुई और ता० ८-९ ६६ को गोवध बन्दी आन्दोलन के लिये आर्थिक सहायता सज्जनो ने दी जो सत्याग्रही भेजने में व्यय होगा।

—आर्यसमाज चौन्दकोट की ओर मे ३०-८-६६ तक श्रावणी से ८-९-६६ तक कृष्णाष्टमी पर्व पर वेदप्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—आर्यसमाज 'झाझा" (मुगेर) की ओर से श्रावणी पूर्णिमा से लगातार वेद प्रचार सप्ताह स्थान स्थान पर यज्ञ, हवन, व प्रवचनो के रूप में मनाया गया। जनता के विशेष आग्रह पर ता० १०-९-६६ से १६-९-६६ तक प्रसिद्ध आर्य प्रचारक श्री सत्यदेव जी शास्त्री काशी का ('गोरक्षा" एव "वेद कथा") कार्यक्रम विशेष रूप से चलता रहा।

अन्तिम दिन नव-युवको एव माताओ ने निर्जला व्रतोपवास पूर्वक "गो सूक्त" से यज्ञ करते हुए परमात्मा से सामूहिक प्रार्थना की कि पुण्य भूमि भारत से शीघ्रातिशीघ्र विधानतः गोवध बन्द कराने की प्रेरणा जनमानस मे अवतरित होकर प्रवहमान होवे।

—प्रधान आर्यसमाज, झाझा

—पूना वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष में ऋषिकेश निवासी स्वा० केवलानन्द जी महाराज के सुमधुर प्रवचन नानापेठ (पूना) समाज मन्दिर मे होते रहे। जन्माष्टमी पर्व भी उत्साह के साथ मनाया गया। —सोमव्रत मन्त्री

—आर्यकुमार सभा जनकनगर की ओर से कृष्णाष्टमी का उत्सव बडे धूम धाम से मनाया गया।

—आर्यसमाज मलाही (चम्पारण) मे वेद प्रचार सप्ताह ३० अगस्त से ८ सितम्बर तक समारोहपूर्वक मनाया गया इस काम मे स्वा० महावीरानन्द जी सरस्वती का सहयोग प्रशसनीय है। ८ सितम्बर को श्रीकृष्ण जन्म दिवस भी मनाया गया।

—'आर्य समाज मन्दिर मुबारकपुर टाडा (फैजाबाद) मे ता० ३० ८-६६ से ८-९-६६ तक श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष मे नित्य यज्ञ होता रहा तथा श्री वैजनाथप्रसाद द्वारा अथर्ववेद की कथा भी होती रही और ता० ८-९ ६६ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व समारोह के साथ मनाया गया जिसमे भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया।

—आर्यसमाज-नवाबगज-कानपुर में वेद प्रचार सप्ताह बडी धूमधाम से रात्रि मे श्रावणी ३० अगस्त से ८ सितम्बर ६६ तक मनाया गया। इस अवसर पर सर्वश्री प० विद्याधर जी प्रधान जिला सभा, श्री प० विजयपाल जी शास्त्री एम० ए० प्राध्यापक दयानन्द कालेज कानपुर (सस्कृत विभाग) श्री डा० मुन्शीराम जी शर्मा 'सोम' डी-लिट् अध्यक्ष वैदिक अनुसधान विभाग कानपुर श्री लालताप्रसाद जी आदि के वेद सम्बन्धी महत्वपूर्ण उपदेश हुए। —मन्त्री

—दिनाक २८-८-६६ को सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार गोवध निषेध दिवस मनाया गया जिसमे सर्व सम्मति से १-१ प्रति प्रधान मन्त्री, गृह मन्त्री तथा सार्वदेशिक सभा को भेजना निश्चय हुआ।

—दि० ३०-८-६६ से ८-९-६६ तक आ०स० कोटद्वार गढवाल में वेद प्रचार सप्ताह बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे यजुर्वेद आशिक यज्ञ १० अध्यायों का श्री बालकराम जी ब्रह्मचारी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्री प०हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी संचालक द० सा० दयानन्द साल्वेशन मिशन तथा ब्रह्मचारी बालकराम जी के वेदोपदेश तथा प्रवचन हुए। श्री विद्यारत्न जी सगीताचार्य का भजनोपदेश हुआ। श्री तोताराम जी जुगडाण कार्यकर्त्ता दयानन्द साल्वेशन मिशन का इस पुण्य पर्व पर पूर्ण सहयोग रहा। —उमरावलाल मन्त्री

—बिधूना (इटावा) आर्यसमाज ने दिनाक ३० अगस्त से १० सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह मे बडे धूमधाम से कई स्थानों पर प्रचार कराया जिसमे स्वामी योगानन्द जी, स्वामी प्रेमानन्द जी, स्वामी परमानन्द जी, भजनोपदेशक श्री गजराजसिंह के भजन व उपदेश हुए। उपस्थिति बडी सख्या मे होती थी। गो वध निषेध पर भी प्रकाश डाला गया। श्री राष्ट्रपति, श्री प्रधान मन्त्री, तथा श्री गृहमन्त्री जी को प्रस्ताव पास करके भेजे गये। —मन्त्री

—आर्यसमाज नवीना मे सभा के आदेशानुसार दिनाक ३० अगस्त ६६ को श्रावणी का पर्व ३० से ६-९-६६ तक वेद प्रचार सप्ताह तथा ७ ९ ६६ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। श्री नन्दराम जी, श्री मुसराम जी के भजन, श्री राजेन्द्र नाथ जी स्नातक तथा श्री कन्हैयालाल जी के प्रवचन हुए।

—गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास पानपोष पो० राउर केला ४ जिला सुन्दरगढ उडीसा में वेद सप्ताह सोल्लास मनाया गया। प्रतिदिन यज्ञ भजन के बाद गुरुकुल आचार्य श्री प० नागेन्द्र झा जी की वेद की कथा होती रही। सध्या समय सभा मे श्रीस्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती सस्थापक तथा कुलपति श्रीस्वामी शिवानन्द जी तीर्थ ने श्रावणी पर्व पर प्रकाश डाला। प्रतिदिन कथा पूर्व ब्रह्मचारियो के सस्वर वेदपाठ तथा सामगान होता रहा। सयोग से रोहतक से पधारे हुए श्री स्वामी नित्यानन्द और नैष्ठिक ब्रह्मचारी रामकृष्ण जी का बाद्य के साथ दो दिन सगीत भी चालू रहा। अष्टमी कृष्ण जयन्ती मनाई गई।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी के सभापतित्व में अनेक वक्ताओ के भाषण गो रक्षा के सम्बन्ध मे हुए। सरकार से गोवध बन्द कराने के लिए आग्रह किया गया।

—आर्य स्त्री समाज कटरा, प्रयाग का ३० अगस्त से ८ सितम्बर तक वेद प्रचार मनाया गया। ६ दिन महिलाओं के घरो मे प्रचार हुआ व रात्रि मे आर्यसमाज मन्दिर से ग० जी की कथा हुई। कटरा स्त्री समाज प्रयाग प्रति मास अन्न व धन से गुरुकुल सिराथू की सहायता करती है। —शान्तोदेवी आर्य

प्रान्तीय आर्यवीर दल उत्तरप्रदेश की कार्य समिति के सदस्यों की सूची

१—सर्वश्री देवीप्रसाद आर्य प्रान्तीय संचालक द्वारा इलाहाबाद बैंक लि० हापुड़
२—" अवधबिहारी शर्मा " सहा० संचालक विश्वनाथ गली वाराणसी
३—" चन्द्रपाल जी आर्य " "
४—" सन्तूमल जी आर्य प्रधान शिक्षक
५—" केदारनाथ आर्य कोषाध्यक्ष द्वारा आर्यसमाज लोहवां वाराणसी
६—" गोकुलप्रसाद जी सहायक कोषाध्यक्ष
७—" आनन्दप्रकाश जी मन्त्री द्वारा आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी
८—" जयप्रकाश शर्मा प्रशान्त कार्यालय मन्त्री द्वारा देवीप्रसाद आर्य हापुड़
९—" देवनसिंह उप संचालक द्वारा साहु केमिकल्स वाराणसी
१०—" मुन्नीलाल आर्य " द्वारा आ० स० केराकत (जौनपुर)
११—" जगदम्बाप्रसाद " गांधी चौक नवाबगंज गोण्डा
१२—" रघुनाथसिंह आर्य सेवाश्रम हा०से० स्कूल कमालपुर सीतापुर
१३—" महाराजकिशोर आर्य " ८६ यमुना हाईडल कालोनी देहरादून
१४—" विद्यासागर अखिलेश " एम ए बी टी संगीत विशारद विश्वपुर पीलीभीत
१५—" रामनारायण जी शास्त्री „ द्वारा आ०स० आगरा
१६—" नवलकिशोर जी " कानपुर
१७—" रामदुलारसिंह सहायक शिक्षक द्वारा आ०स० बगहा (मीरजापुर)
१८—" वेदप्रकाश आर्य बौद्धिकाध्यक्ष " डी०ए०वी० कालेज आजमगढ़
१९—" नैपालसिंह सदस्य द्वारा आर्यसमाज बिजनौर
२०—" विश्वनाथ जी " मेरठ
२१—„ मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
२२—„ अधिष्ठाता „ श्री आनन्दप्रकाश जी
२३—„ काशीनाथ जी शास्त्री, द्वारा पब्लिक इण्टर कालेज, शाहगंज (जौनपुर)
२४—„ मानकचन्द आर्य, कानपुर
२५—, बलदेव राजरूपदेव, रूपदेव आप्टिकल कम्पनी हापुड़
२६—, पिताम्बरसिंह जी, द्वारा स्टेट बैंक आफ इण्डिया, शाहजहानपुर
२७—„ केशोप्रसाद भटनागर, मुरादाबाद
२८—, आदित्यकिशोर जी द्वारा डी०ए०वी० कालेज, मैनपुरी
२९—, लालबहादुर जी, लखनऊ
३०—„ सतोषकुमार जी, गाजिया बाद
३१—, रमाकान्त जी सदस्य सी० ३३/३ विद्यापीठ रोड, वाराणसी
३२—' रामजीप्रसाद गुप्त " मुगलसराय (वाराणसी)
३३—" मेवालाल आर्य " द्वारा प्रभात प्रेस, गोला दीनानाथ, वाराणसी

—आनन्दप्रकाश अधिष्ठाता आर्य वीर दल उ० प्र० वाराणसी

—वेद प्रचार सप्ताह मे ३०-८ ६६ से ८-९ ६६ तक श्री प० रघुवरदत्त जी धर्म प्रचारक सभा से पधारे जिन्होने वैदिक सत्यनारायण की प्राचीन कथा कही तथा पुराणों की आलोचना की और मूर्ति पूजा का निषेध किया तथा यजुर्वेद का पाठ किया गया और नीचे लिखे संस्कार कराये गये। तथा सदस्यो का प्रवेश किया गया और गो-रक्षा प्रस्ताव रखा गया जो आर्यसमाज की सभा में सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ।

(१) आर्यसमाज में ५नवीन सदस्य बनाये गये।

(२) ३ यज्ञोपवीत संस्कार कराये गये।

(३) गौ रक्षा के हेतु प्रस्ताव पास किया गया और सरकार से मांग की गई कि गो-वध निषध कानून बनाया जाय।

(४) आर्योदय का विशेषांक वेदांक २५ पुस्तकें जनता मे बांटी गई।

वेद विवेचन

(पृष्ठ ६ का शेष)

बिभर्ति सोऽन्न वाज भरति तस्मान् मनो भरद्वाज ऋषि।" यहां भी मन को ही भरद्वाज ऋषि कहा गया है। प्रक्रियानुसार यज्ञ मे अन्न का भरण करने वाला भरद्वाज यजमान (याज्ञिक) अथवा ऋत्विग् है। "इमावेव गोतमभरद्वाजो अयमेव गोतमोऽयं भरद्वाज।"

अर्थात् कर्ण का नाम पार्श्व भरद्वाज है। इन सब व्याख्याओं से यह स्पष्ट है कि भरद्वाज कोई व्यक्ति नही अपितु विशेष गुणों का परिचायक सामान्य शब्द है।

स्पष्ट है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है उसका अनादित्व सिद्ध है। उनमें प्रयुक्त नाम व्यक्ति विशेष के नहीं अपितु यौगिक है। इन नामो को ऐतिहासिक महत्व देना अज्ञानता एवं मदान्धता का परिचायक है। यह पूर्णरूपेण शाश्वत एवं विश्व का सर्वश्रेष्ठ सर्वाङ्ग सम्पन्न धर्म ग्रन्थ है। वेद के मन्त्रों के एक-एक स्वर व बिन्दु तक विद्वत्तापूर्ण है। इस सुदृढ़ दुर्ग में प्रतिस्थापन असम्भव है। अधिक क्या कहें सुप्रसिद्ध वैशेषिक दर्शनकार कणाद मुनि के शब्दो में—

'बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे" वेदों की सारी रचना बुद्धि पूर्वक ही है। उसकी मात्रा बिन्दु भी व्यर्थ नहीं।

तभी तो प्रात स्मरणीय वैदिक धर्मोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने गम्भीर घोष में कहा—

'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।"

मेरा सुझाव है कि वेद का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए जिज्ञासुगण, वैदिक वाङ्मय के मर्मज्ञ वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान् गुरुवर आचार्य श्रीयुत प० वैद्यनाथ जी शास्त्री, सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत पण्डित बुद्धदेव जी विद्यामार्तण्ड, शास्त्रार्थ महारथी (श्री स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती), वैदिक विद्वान् श्रीयुत पण्डित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड, आचार्य श्रीयुत पण्डित विश्वश्रवा जी व्यास वैदिक रिसर्च स्कालर, वैदिक अनुसंधान कर्त्ता श्रीयुत पण्डित विश्वनाथ जी विद्यालंकार, आचार्य श्रीयुत पण्डित प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज, श्रीयुत प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, श्रीयुत पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक श्रीयुत पण्डित रामावतार शर्मा षट्तीर्थ, शास्त्र समरस्थली के विजेता श्रीयुत पण्डित अमरसिंह जी शास्त्रार्थ कानन केसरी, आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी शास्त्रार्थ महारथी प्रभृति विद्वानो के चरणो में निष्ठापूर्वक बैठकर वेदाध्ययन और आर्य सिद्धान्तो का परिज्ञान करें तो समस्त अज्ञान तमिस्रा का विनाश हो जाय और यथार्थ ज्ञान सूर्य की ज्योति का आभास होने लगे।

आवश्यकता

एक सुन्दर, सुशील, गृह कार्य में दक्ष १६ वर्षीया राजपूत कन्या के लिए योग्य राजपूत वर की आवश्यकता है। वर शिक्षित व बारोजगार हो। दहेज आदि के इच्छुक पत्र न भेजें।

बाबूराम भारतीय
आर्य प्रतिनिधि सभा
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

गढ़वाल को सत्यार्थ प्रकाश की अमर देन:-

आर्य विभूति स्व० भारतीय जी

(ले०—श्री शान्तिप्रकाश 'प्रेम' मन्त्री आ० स० पचपुरी गढ़वाल)

सन् १९११ ई० की बात है। गढ़वाल का एक हृष्ट पुष्ट युवक आजीविका के लिये मसूरी में प्रवास कर रहा था। सौभाग्य से वह एक आर्य समाजी पंडित (श्री टीकाराम जी कुकरेती) के सम्पर्क में आया। पंडित जी ने युवक में कुछ विशेष गुणों को पाकर उसे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की प्रेरणा दी और पुस्तक उसके हाथ में पकड़ा दी। सत्यार्थ प्रकाश ने युवक की सुप्त आत्मा को जगा दिया, जागृत होकर उसने आत्म-निरीक्षण किया तो भारी अन्धकार पाया। अन्धकार से निकल कर प्रकाश में आने के लिये वह गुरु की खोज करने लगा। फिर उसे बताया गया कि आर्य-समाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी के पास गुरुकुल कांगड़ी पहुंचो। वह दौड़ा-दौड़ा स्वामी जी के चरणों में आ पहुंचा। स्वामी जी ने योग्य पात्र समझकर उसका उपनयन किया और आर्यसमाज की पवित्र सुखद गोद मे समर्पित कर दिया। युवक ने आर्यसमाज की क्रांतिकारी शिक्षाओं से प्रेरित होकर जहां आत्मोद्धार किया वहाँ गढ़वाल के लगभग एक लाख मानवों का जो सामाजिक अत्याचारों से बुरी तरह पीड़ित थे उद्धार करने का भी दृढ़ संकल्प कर लिया। वह युवक था गढ़वाल का प्रसिद्ध समाज सुधारक और देशभक्त श्री जयानन्द भारतीय।

भारतीय जी का जन्म १७ अक्टूबर १८८१ ई० को गढ़वाल के एक दीन परिवार मे हुआ था। तीस वर्ष तक जीवन यो ही अन्धकार मे बीता। कोई विशेष शिक्षा भी प्राप्त नही कर सके। कुछ कमाने के योग्य हुए तो नैनीताल, मसूरी-देहरादून आदि शहरो मे जाकर घरेलू कर्मचारी के रूप मे नौकरी करली। सत्संग के अभाव में अनेक दुर्व्यसनों के शिकार भी हो गए। परन्तु जब आर्यसमाज के सम्पर्क मे आये तो कांच से हीरा बन गए।

१९१४ का विश्व महायुद्ध छिड़ा हुआ था। भारतीय जी सर्वप्रथम बरेली से आर्योपदेशक प० पुरुषोत्तम जी तिवारी को साथ लेकर अपनी जन्म स्थली-सावली गढ़वाल मे प्रचार के लिये आ पहुचे। पहली टक्कर भी बुरी तरह से विवश होकर लौटना पड़ा गढ़वाल के पौराणिक गढ़ मे टक्कर लेना आसान काम नहीं था। इस भारी निराशा मे वीर गति प्राप्त करने की अभिलाषा से वे अंग्रेजी सेना मे भर्ती होकर सीधे ही फ्रांस और जर्मनी के मोर्चे पर आ पहुचे। जीवनदाता सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि को साथ लेते गए। फौजी जीवन और बाहरी देशों के स्वतन्त्र वातावरण ने भी उनमें एक अटूट साहस का संचार किया। जब सन् १९२० में सेना से मुक्त होकर स्वदेश आए तो फिर निर्भीकता के साथ सुधार कार्यों में कृत-संकल्प होकर जुट गए।

गढ़वाल के दलितोद्धार आन्दोलन में डोला-पालकी का आन्दोलन बहुत प्रसिद्ध हुआ। इस आन्दोलन ने महात्मा गांधी प० जवाहरलाल नेहरू, महामना प० मदनमोहन मालवीय प्रभृति सभी चोटी के नेताओं का ध्यान गढ़वाल के दलितों पर होने वाले सामाजिक अत्याचारो की ओर आकर्षित किया था। गढ़वाल में आर्यसमाज का प्रचार बहुत जोरो पर हुआ और यहाँ के एक लाख दलितो ने आर्यसमाज की शरण लेकर अपने धार्मिक, सामाजिक, नागरिक सभी प्रकार के अधिकारो को प्राप्त करने का आन्दोलन छेड़ दिया। इन सभी संघर्षों के सूत्रधार थे निर्भीक

जीवन-ज्योति

आर्यनेता श्री जयानन्द भारतीय। गढ़वाल के पौराणिक हिन्दुओ ने धर्मनाश का नारा लगा कर इन सभी संघर्षों को समाप्त करने के लिये एडी से चोटी तक का जोर लगाया। आर्यसमाजी शिल्पकारों पर मनमाना अत्याचार किया। इनको गावो से निकाला गया, जगह-जमीन से वंचित किया गया, मारे पीटे गये, पानी, गोचर रास्ते और जंगल आदि सभी आवश्यक सुख सुविधा के स्थान बन्द किये गये, परन्तु मुक्ति का आन्दोलन तब तक बन्द नही हुआ जब तक सफलता नही मिल गई। तात्पर्य यह है कि कर्मवीर भारतीय जी ने जहा आर्यसमाज से जीवन पाया वहा गढ़वाल के एक लाख पीडित मानवो की गुलामी की जंजीरो को चकनाचूर करके सभी अधिकार दिलाकर आर्यसमाज की सुखद गोद में सौंप दिया।

देश के स्वातन्त्र्य संग्राम में भारतीय जी एक वीर सेनानी की तरह कूद पड़े। वे एक क्रान्तिकारी नेता थे। अंग्रेज उन से सदैव भयभीत रहते थे और उनको अपनी नजरो में रखते थे। देश की आजादी के लिए वे एक नहीं छः बार जेल गये और कठोर यातनायें सहीं। गढ़वाल अंग्रेजों के समय से ही सैनिक प्रदेश रहा है। अंग्रेजी सरकार की हिमायती अमन सभा गढ़वाल ने यह घोषणा करके गढ़वाल पर कलंक लगाने की चेष्टा की, कि गढ़वाल स्वातन्त्र्य संग्राम में सम्मिलित नहीं है और यहां से कांग्रेस सरकार को सर्वथा मिटा दिया गया है। इसी उपलक्ष में यू० पी० के अंग्रेज गवर्नर सर मालकम हेली को गढ़वाल बुलाया गया और ६ सितम्बर १९३२ को पौड़ी में गवर्नर के स्वागत मे शानदार दरबार लगा। पूर्ण सैनिक प्रबन्ध के होते हुए भी वीर भारतीय जी उस सभा में और ठीक उस समय जबकि गवर्नर भाषण देने के लिए खड़ा हुआ मंच पर चढ़ते हुए 'मालकम हेली वापस जाओ' के नारों के साथ उन्होंने कांग्रेस तिरंगा झण्डा लहरा दिया। राष्ट्रिय नारो से सभा स्थल को ऐसा गुंजा दिया कि चारो तरफ भगदड़ मच गई सभा भंग हो गई। गवर्नर ने लखनऊ वापिस जाते हुए कहा था—मैं उस वीर का आभारी हू यदि वह चाहता तो मुझे गोली से भी उड़ा सकता था। भारतीय जी को इस काण्ड पर एक साल की कठोर जेल की सजा हो गई। इस घटना का वर्णन जयानन्द गौरव गान पुस्तक में इस प्रकार किया गया है—

शस्त्रधारी सैनिक थे चारो ओर घूम रहे
शेर सा स्वच्छन्द घुसा जनता की ठेल में
आगे बढ़ा और चढ़ा मंच ही के पास गया
बोलता था लाट जहा स्वागत के मेल मे।
हाथ में तिरंगा उठा नारे भी गुंजार उठे,
भाग चला लाट निज साथियो की रेल मे।
जनता पुलिस मध्य शेर यहा घेर लिया,
वीर जयानन्द चला पौड़ी वाली जेल मे।

इस ऐतिहासिक घटना ने उनको गढ़वाल का जन-जन प्रिय नेता बना दिया था। आर्यों में भी गौरव जगा और वे सिर ऊँचा कर चलने लगे। भारतीय जी गढ़वाल के कांग्रेसियो मे अग्रगण्य नेता थे।

अपने धार्मिक, सामाजिक और दलितोद्धार संघर्षों में उन्होंने शक्तिशाली विरोधियो की ओर से अनेक असह्य यातनाएं सहीं। उन पर लाठियों की मार पड़ी, गालियो की बौछार हुई, कीचड़ उछाला गया, पत्थर बरसाये गये और न जाने किस-किस प्रकार से अपमानित किया गया। परन्तु हिमालय की गोद में उत्पन्न हुआ और महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का दिया हुआ यह नररत्न जिस को अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त था, अपने कर्तव्य पथ पर हिमालय की तरह अडिग रहा और विजय पर विजय प्राप्त करता गया। जीवन के अन्तिम समय वे टिहरी गढ़वाल में घुसे। वहाँ भी लाठियां बरसी फिर भी वे अडिग थे। परन्तु मृत्यु कब किस के साथ रियायत करती है। ९ सितम्बर १९५२ को ७२ वर्ष की आयु मे वे सदैव के लिए प्यारे प्रभु की गोद में सो गए। मृत्यु के समय उन्हे इस बात की भारी शिकायत रही कि टिहरी गढ़वाल के पीड़ित भाइयों की वे कोई विशेष सेवा नही कर सके। भारतीय जी ने आर्यसमाज से ही जीवन पाया और उसी के प्रचार और प्रसार मे उसे बिता भी दिया। प्रति वर्ष कुछ स्थानो में १७ अक्तूबर को उनका जन्म-दिवस मनाया जाता है परन्तु मानना होगा कि भारतीय जी की मधुर स्मृति दिन प्रति दिन धुन्धली होती जा रही है। इसका कारण आर्यों मे आई हुई शिथिलता है।

गढ़वाल में एक सौ से भी अधिक आर्यसमाजें हैं। इनमें से अधिकांश समाजें स्व० भारतीय जी के करकमलों से स्थापित हुई थी। उनके जीवनकाल मे आर्यसमाज का प्रचार धड़ाधूम से चलता था, संगठन था और सामाजिक सुधारो का आन्दोलन बराबर ही चलता रहता था। खेद है कि आज यहा प्रचार के नितांत अभाव में प्राय सभी समाजें मर चुकी हैं और सामाजिक बुराइयो ने पुनः अपना जाल बिछा दिया है। आर्य-समाज का जो प्रभाव था वह शनै शनै लुप्त होता जा रहा है। आर्यों का जीवन पतितावस्था को भी पार कर गया है। यहाँ सुसंगठित रूप से प्रचार की नितान्त आवश्यकता है और आवश्यकता है यशस्वी निर्भीक आर्य नेता स्व० श्री जयानन्द जी भारतीय जैसे कर्मवीरो की। उनकी मधुर स्मृति को चिरस्थायी रखना है तो उनके उन महत्वपूर्ण कार्यों को जीवित रखना होगा।

●

वेदप्रचार सप्ताह

—सैन्ट्रै० उ०मा०वि०दिव्यपुरी (इटावा) में श्रावणी उपाकर्म का विधिवत् कार्य सम्पन्न होने पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का सफलतापूर्वक सचालन श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक के आचार्यत्व में ८-९-६६ तक आयोजन चला। प्रात ५ बजे प्रभात फेरी होती रही जिसमें नित्य १०० और १२५ के लगभग व्यक्ति सम्मिलित होते रहे तथा वेदोपदेश का भी कार्यक्रम चला जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा और अति शीघ्र ही आर्यसमाज की स्थापना होने जा रही है।   —कृपाशंकर आर्य

—आर्यसमाज शिकोहाबाद में वेद प्रचार सप्ताह ता० ३० अगस्त से ८ सितम्बर १९६६ तक समारोह पूर्वक मनाया गया प्रात ६ बजे से यजुर्वेद से यज्ञ तथा प्रवचन श्री बाबूलाल दीक्षित द्वारा बराबर होते रहे और सप्ताह मे ट्रैक्ट भी आयसमाज द्वारा बेचे गये। श्री बाबूलाल जी दीक्षित निवासी कर्णवास आश्रम की कथा का जनता पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा दीक्षित जी के भाषण दिन मे कालेजो मे होते रहे। सप्ताह का कार्यक्रम बहुत ही रोचक रहा और दीक्षित जी की विद्वत्ता की धाक शहर में खूब रही। लोग दिन मे भी आकर आयसमाज के सिद्धान्तो पर प्रश्न आदि करते थ। दीक्षित जी बड़ी उत्तमता से समाधान करते रहे।

—दयाराम गौड मन्त्री

—आर्यसमाज बेवर मे दिनाक ३० अगस्त से ८ सितम्बर ६६ तक वेदप्रचार सप्ताह श्री बिहारीबाबा वानप्रस्थी तथा श्री अर्जुनसिंह भजनोपदेशक जिला आर्य उ० प्र० सभा मैनपुरी की विद्यमानता मे ससमारोह पूण सम्पन्न हुआ प्रतिदिन प्रात पारिवारिक सत्सग तथा सायकाल धर्मोपदेश होता रहा। प्रचार से जनता पर अच्छा असर पड़ा।

—सूबदार आर्य मन्त्री

—आर्य समाज लखीमपुर में वेद प्रचार सप्ताह दि० ३० अगस्त से ८ सितम्बर तक मनाया गया। इसमें आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा के १५ व्याख्यान भिन्न भिन्न विषयों पर नित्य प्रात साथ हुए। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी सम्पन्न हुआ जिसकी पूर्णाहुति ८ सितम्बर को सम्पन्न हुई। श्री वीरेन्द्र बहादुरसिंह मुख्य निरीक्षक एव अवैतनिक उपदेशक सभा इस यज्ञ के पुरोहित थे।

इस अवसर पर १ से ६ सितम्बर तक लखीमपुर सीतापुर तथा बरेली जिले के आर्य विद्यालयो की अध्यापिकाओ का एक धार्मिक शिक्षा शिविर आर्य उप प्रतिनिधि सभा खीरी की ओर से आयोजित किया गया जिसका सचालन श्रीमती सुशीलादेवी जौहरी प्रधानाचार्या भगवानदीन आर्य कन्या डिग्री कालेज ने किया और प्रशिक्षण श्री आचार्य विश्वबन्धु जी ने किया। शिविर में ४५ अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

दि० ४ सितम्बर को सभा के शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता श्री रामबहादुर जी एव विद्यालय निरीक्षक श्री जयदेव जी विद्यालकार ने भी शिविर का निरीक्षण किया और प्रशिक्षार्थिनियों को उपदेश द्वारा लाभान्वित किया बाहर से आने वाली अध्यापिकाओ का भोजन आदि का व्यय आर्यकुमारी सभा ने वहन किया।

दि० ४ ९-६६ को प्रात १० बजे से श्री रामबहादुर जी के सभापतित्व में ९ वी कक्षा के ऊपर के विद्यार्थियो की एक भाषण प्रतियोगिता हुई जिसका विषय था 'वेदज्ञ दयानन्द की विश्व को देन।' प्रतियोगिता मे चल वैजयन्ती भगवानदीन आर्य कन्या डिग्री कालेज लखीमपुर ने प्राप्त की। प्रथम तीन विजेताओ को पुरस्कृत किया गया जो निम्न थे।

प्रथम—श्री राधेश्याय त्रिपाठी युवराज कालेज लखीमपुर एव कुमारी राष्ट्र कीर्ति भ० आर्य कन्या डिग्री कालेज लखीमपुर।

प्रथम—कुमारी कुसुमसिंह भ० आर्य कन्या डिग्री कालेज लखीमपुर।

तृतीय कुमारी सरला रामेश्वरप्रसाद हसरानी आर्य कन्या इण्टर कालेज सीतापुर।

सभा की ओर से भाग लेने वाले ११ छात्र-छात्राओं को २) पुरस्कार स्वरूप दिया गया।

—आर्यसमाज गोरखपुर छावनी की ओर से ता० ३० अगस्त सन् १९६६ से ८ सितम्बर ६६ तक वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। विभिन्न मुहल्लो में बदल बदलकर प्रत्येक दिन यज्ञ होता था और वैदिक धर्म की विशेषता पर प० रघुनन्दन शर्मा जी महोपदेशक एव श्री कृपाराम जी द्वारा सारगर्भित भाषण होते थे। जन्माष्टमी के दिवस भगवान कृष्ण का सच्चा परिचय देते हुए दयानन्द वैदिक कन्या विद्यालय की अध्यापिकाओं ने भी ओजस्वी भाषण दिये।

शुभ सूचना

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपकी मेरठ जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा ने आगामी गढमुक्तेश्वर गगा मेले के शुभावसर पर दिनाक २४ से २८ नवम्बर १९६६ तक आर्य भाई बहिनो के सगठन एव वैदिक धर्म के प्रचार को सुसगठित तथा प्रगतिशील बनाने के लिए एक आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया है।

इस सम्मेलन में जहाँ आर्यसमाज की सामयिक समस्याओं का समाधान, वैदिक धर्म प्रचार की सुदृढ़ व्यवस्था तथा देश की वर्तमान स्थिति पर विचार विमर्श करने का अवसर मिलेगा, वहाँ बाहर से पधारने वाले अग्रगण्य सन्यासी महात्माओं, प्रकाण्ड विद्वानों एव प्रसिद्ध भजनोपदेशको के उपदेशो तथा भजनों द्वारा आध्यात्मिक लाभ उठाने का भी सुन्दर अवसर प्राप्त होगा।

सुरसरी गगा के तीर पर बसे आर्य शिविर का रूप बड़ा ही अनुपम होगा। जलसे, जलूस, कवि गोष्ठी, शोभा यात्रा, प्रभात फेरियाँ, यज्ञ आदि दैनिक आकर्षक कार्यक्रम के साथ-साथ कई उपयोगी सम्मेलनो का भी आयोजन किया गया है।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मेरठ सभी आर्यबन्धुओं, महिलाओ, कुमारों तथा कुमारियो को आमन्त्रित करती है। आप अपनी अपनी समाजों के बोर्ड तथा ओ३म् ध्वज के साथ पधारिए तथा हार्दिक सहयोग प्रदान कर सम्मेलन को सफल बनाइए।

इस सब कार्य के लिए धन की आवश्यकता है। समय अल्प है। कार्य महान् है। सब आर्यों के सहयोग व सहायता की अपेक्षा है। अत उदारतापूर्वक तन, मन, धन से सहायता कीजिए। लिखिए आपके पास कितनी राशि के नोट भेजे जावें। सम्मेलन हेतु धन सयोजक के पास उपरोक्त पते पर भेजा जाए।

शिविर मे ठहरने तथा स्वयसेवकों द्वारा सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था होगी। जो आर्यसमाजें तथा महानुभाव अपनी जगह सुरक्षित कराना चाहे वे तुरन्त सयोजक को निम्न प्रकार धन भजने की कृपा करें।

१—स्विस काटेज ४०) प्रति
२—ई० पी० टैन्ट २५) प्रति
३—सिपाही पाल १५) प्रति

आर्यसमाजों के मंत्रीगण की सेवा में

यह तो आपको ज्ञात ही है कि आगामी गढमुक्तेश्वर गगा मेले के अवसर पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ ने दि० २४ से २८ नवम्बर १९६६ तक आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया है। इस अवसर पर ऐसे सदस्यों तथा कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी होगी जो देश की वर्तमान समस्याओं को आर्य समाज द्वारा सुलझाने के पक्ष में हों। गोष्ठी में देश की वर्तमान स्थिति एवं उसे स्वस्थ बनाने के लिए आर्यसमाज की उप देयता आदि प्रश्नों पर विचार होगा। अत आपसे प्रार्थना है कि उपरोक्त प्रश्नों में रुचि रखने वाले अपनी समाज के सदस्यों को गोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि रूप में अवश्य भेजने की कृपा करें। यदि कोई महानुभाव अपने सुझाव या विचार पहिले भेज सकें तो अधिक कृपा होगी।

प्रतिनिधि सदस्यो को २४ नवम्बर १९६६ के सायकाल तक आर्य सम्मेलन शिविर सन्तर न० ७ मेला गढमुक्तेश्वर में पहुच जाना चाहिए।

मेले में ठहरने की उचित व्यवस्था होगी। प्रतिनिधिगण अपने साथ बिस्तर अवश्य लावें।   —प्रधान तथा सयोजक

उत्सव

आर्यसमाज गोरखपुर छावनी का नवाँ वार्षिकोत्सव आगामी १६ अक्तूबर से १८ अक्तूबर ६६ तक दिन रवि सोम, मगलवार और बुधवार को समारोह पूर्वक मनाया जावेगा जिसमें आर्यजगत् क सुप्रसिद्ध विद्वान् साधु सन्यासी एव ख्यातिनामा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—रमापति सिंह मन्त्री

आर्य जिला सम्मेलन मैनपुरी

कस्बा बेवर मे आर्य जिला सम्मेलन दिनाक १८ नवम्बर से २१ नोम्बर सन ६६ ई० तक होने जा रहा है जिसमे आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, श्री रामप्रकाश जी एम०ए० रिसर्च स्कालर चंदीगढ, श्री बलवीर शास्त्री महोपदेशक सभा, तथा सभा प्रधान श्री मदन मोहन वर्मा अध्यक्ष विधन सभा श्री चन्द्रदत्त तिवारी सभा मन्त्री, व श्री नन्दलाल जी आर्य प्रचारक गाजीपुर व वीरभानु जी रेडियो सिगर सतोली व अर्जुनसिंह जी भजनोपदेशक जिला सभा, श्री परमानन्द जी वकी फरुखाबाद, बिहारी बाबा बिहार के पधारने की स्वीकृति आ चुकी है तथा श्री प्रकाशवीर शास्त्री तथा स्वामी वेदानन्द जी महाराज कानपुर, श्रीमती विद्यावती बाला के पधारने की पूर्ण सम्भावना है। इसके अतिरिक्त देश के अग्रगण्य नेताओं को भी आमन्त्रित किया है। सभी सज्जनो से प्रार्थना है कि इस सम्मेलन में इष्टमित्रो सहित उपस्थित हो धर्मोपदेश से लाभ उठावें।   —मन्त्री

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल ६०

आश्विन १७ शक १८८८ आश्विन कृ० १०
(दिनांक ९ अक्तूबर सन १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
दूरभाष्य २५११२ तार 'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आदर्श और व्यवहार

(पृष्ठ ३ का शेष)

आदर्श लोगों का सामान्य जीवन नहीं है ऐसा विश्वास समाज के अन्तस्तल में प्रत्येक देश और काल में जमा है। आदर्श एक मार्ग है लक्ष्य नहीं यह बलवान विश्वास बन गया है। आदर्श की ओर दृष्टि रखना मान्य है व दर्श का पालन मान्य नहीं। गांधी को लोगों ने आदर्श मान लिया विनोबा को भी आदर्श कह कर समाज से पृथक कर दिया। गांधी एक प्रतीक था लाल बहादुर शास्त्री ने दिल्ली में गांधी जयंती पर कहा।

महात्मा बुद्ध ने मध्यम मार्ग का उपदेश दिया अर्थात व्यवहार में सामान्य से उच्चतर और आदर्श से निम्नतर जीवन ही मनुष्य को रखना है। अरस्तू ने भी गोल्डन मिडिल का ही उपदेश दिया।

विचारक के हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि यह विभ्रम क्यों। उत्तर इसका साधारण रूप में यही है कि दुख, अशान्ति से निराकरण के लिए। दुख अशान्ति का हेतु यही है कि मानव का व्यवहार गन्त है असत है। इसका निराकरण यही कि सही हो जाय सत हो जाय। अत यही निष्कर्ष निकला कि समाज यदि सत की भूमिका में विधान वत होगा तो दुख और अशान्ति से मुक्त होगा और यदि असत की भूमिका पर होगा तो दुःख और अशान्तिमय होगा। इस सत्य के रहते हुए भटकावे क्या ?

इस प्रश्न का साधारण सा उत्तर यह है कि सत के स्वरूप के विषय में विद्वानों के विभिन्न मतों के रहते हुए मानव को संशय है अत अनेक भटकनों के बीच से मानव समाज को निकलना पड रहा है। मानव जीवन दो विरोधी शक्तियों के प्रभाव में असमर्थता अनुभव करता चला आ रहा है एक है जीवन (बायलोजिकल) सम्बन्धी शक्ति और दूसरी है आत्मिक सम्बन्धी प्रेरणा। जीवन सम्बन्धी प्रेरणाएं वासनाओं, आसक्तियों तथा प्रलोभनों को पैदा करती हुई भय जडता, असमर्थता तथा पराधीनता से आक्रान्त कर अशान्ति और असन्तोष पैदा कर देती हैं। इतने पर भी यह मार्ग प्रिय बाधित होता है अबाधित अनुभव होता है। शंकर का अनुभव है कि संसार दुःखमय है इसमें रहते हुए दुख से अत्यन्त मुक्ति का स्वप्न देखना भूल है।

प्रश्न की गहराई होते हुए भी यह सत्य है कि प्रत्येक हृदय पटल पर एक मंगलमय विधान सदा अवस्थित होता ही रहता है जिसकी उपस्थिति में परावीनता, असमर्थता और जडता का अभाव इतना विचारगम्य है कि संशय करने की सामर्थ्य भी उत्पन्न होना सम्भव नहीं दीख पडता। एक बालक के कष्ट को देख कर उसके अभिभावकों के हृदय में जिस करुणा का उदय होता है क्या उसमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि सुख के प्रलोभन का हरण कर त्याग और सेवा की वृत्ति को जाग्रत कर दे। क्या बालक के सुख तथा आनन्द को देख कर अभिभावकों का हृदय नहीं भर आता। कौन ऐसा व्यक्ति है जिसे यह अच्छा लगता है कि लोग उससे असत्य भाषण तथा व्यवहार करें लोग उसकी चोरी करें उससे अनैतिक सम्बन्ध रक्खें। स्पष्ट है कि सत्य एक विधान के रूप में सबके हृदय में उपस्थित है किन्तु हम उसको देखते हुए भी दूसरों के प्रति व्यवहार करते समय विपरीत व्यवहार करते हैं। अपने प्रति एक व्यवहार और दूसरों के प्रति विपरीत व्यवहार क्या स्पष्ट घोषित नहीं करता कि हम जान बूझ कर अपराध कर रहे हैं ? हम जान बूझ कर पाप करते हैं। हम ऐसा क्यों करते हैं क्या कि हमारा विश्वास है कि समस्या को नहीं दोष गुसाईं और सामर्थ्य साधन (पैसा) जुटाने में है। जैसा राजा वैसी प्रजा। राज्य की ओर से पैसे की पूजा का प्रचार किया जाने पर राज्य की ओर से ही भ्रष्टाचार को अपराध घोषित करना कहां तक न्याय संगत है। प्रजा में असत की पूजा पर आस्था आ जाने पर नीति के द्वारा उसका निराकरण सम्भव नहीं है। नीति जीवन को असत से निकाल कर सत पर लाने का मार्ग बतलाती है। सत ही एक मात्र मार्ग है अन्य सब कुमार्ग है। मार्ग को आदर्श कहना और कुमार्ग को व्यवहार कहना नीति नहीं है

महर्षि स्वामी दयानन्द ने इसी कारण सभी विधर्मियों का कड़े शब्दों में खण्डन किया क्योंकि वे सब विधान के विपरीत चलने की एक न एक बुद्धिगम्य भूमिका उपस्थित करते हैं। इन भूमिकाओं में बुद्धि को इतना सहज भुलावा मिलता है कि मानव सरलता से उनपर विश्वास कर पथभ्रष्ट हो जाता है। भला शंकराचार्य का यह कहना कि सत्य की श्रेणियां हैं और पूर्ण सत्य की अनुभूति के हेतु जीवन और संसार दोनों से छुटकारा लेना ही एक मात्र मार्ग है कहां तक वास्तविक सत्य है जब कि उसके ही शब्दों में उस अवस्था में पहुंचकर अनुभूति का होना ही सम्भव नहीं है। अत शंकर के शब्दों में ही सत्य की अनुभूति असम्भव है। सत्य की अनुभूति न होने का अर्थ विधान की अनुभूति न होना और न ही नव जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति होना सम्भव है। इस वाद के भुलावे में पड कर मानव जीवन की दुर्दशा हो रही है जहां शान्ति और सन्तोष पूर्णत असम्भव है।

वास्तविकता तो यह है कि न तो कोई आदर्श है और न कोई व्यवहार और न ही सत्य की कोई श्रेणियां ही हैं। है तो एक मात्र सत्य जिसकी अनुभूति प्रत्येक मानव को प्रत्येक अवस्था में होती है किन्तु वह किसी मन्तव्य के वह फन्दे में आकर उसका अनादर कर उस के विपरीत व्यवहार करने लगता है। इस प्रकार मानव जीवन के दो पहलू दृष्टिगोचर होते हैं—एक धर्म का और दूसरा अधर्म का। इसी को पुण्य का मार्ग और पाप का मार्ग कहते हैं।

प्रत्येक महापुरुष जो मानव के कष्ट से कम्पायमान हो उठता है उसकी वेदना की गहरी अनुभूति से हिल उठता है वह सभी परिस्थितियों और यातनाओं को सहता हुआ अपना दायित्व समझता है कि सत्य की स्थापना करे और असत्य की जडों को हिला दे। महर्षि स्वामी दयानन्द ने इसी कारण सत्यार्थ का प्रकाश करने के लिए अनेक विपरीत विश्वासों और वादों की जडों को उखाड फेंका और दर्शाया कि मानव का जीवन सत्य की भूमिका पर ही व्यवहार कर कृत्य कृत्य हो सकता है। ऐसे स्वरूप से ही मानव को आर्य की संज्ञा से सुशोभित किया जाता है। आर्य कोई आदर्श नहीं है यह ही व्यवहार है।

★

आर्य समाज हरदुआगंज

—आर्यसमाज मन्दिर हरदुआगंज में ता० १८ १९ २० सितम्बर को प० अमरसिंह जी शास्त्रार्थ महारथी के प्रवचन एवं शंका समाधान एवं कु० मजराज सिंह जी के प्रभावशाली भजन हुए। जनता पर अच्छा प्रभाव पडा और उपस्थिति के कारण लोगों को जगह [illegible] मिल सकी। पौराणिकों पर [illegible] पडा। इस अवसर पर आपने [illegible] अभिनन्दन किया गया।

कानपुर में आर्य सम्मेलन

९ अक्तूबर को आर्यसमाज बाबूपुरवा कानपुर में आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में शाम को ४ बजे से शहर की समस्त आर्यसमाजों का आर्य सम्मेलन होगा। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री कालिका प्रसाद जी भटनागर करेंगे। और सम्मेलन में प्रमुख वक्ता होंगे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री प० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०। आर्य जनों को अधिक संख्या में पहुंचकर लाभ उठाना चाहिये। —याम द सदीन म त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए मयखानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से श्री बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित प्रकाशित

लखनऊ—रविवार आश्विन २४ शक १८८८, आश्विन शु० ३ वि० सं० २०२३, दिनांक १६ अक्तूबर १९६६ ई०

वेदामृत

ओ३म् भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽंहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं, द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।

काव्यानुवाद

उस पाप नाशी इन्द्र रक्षक
का बुलावें हम सभी।
ऐश्वर्यशाली पूज्य पोषक
संकटों में है वही।
कर्ता सुकर्मों का विधाता
विश्व जन का मित्र है।
व्यापक वरुण भजनीय,
सब कल्याण कर्ता इष्ट है॥

—बुद्धिप्रकाश आर्य

विषय-सूची

गो-रक्षा आर्यसमाज के कार्यक्रमों का प्रमुख अंग है

इसको सफल बनाना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है।

१६ अक्तूबर को सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग में गो-रक्षा आन्दोलन की रूपरेखा पर गम्भीर विचार हो रहा है।

गो-वध विरोधी शिष्ट-मंडल की गृहमन्त्री श्री नंदा से भेंट

गृहमन्त्री द्वारा राज्यों के मुख्य मन्त्रियों के नाम गो-वध रोकने के लिए शीघ्र निर्णय करने के सम्बन्ध में पत्र प्रेषित

गोवध बन्दी आन्दोलन का सूत्रपात सर्वप्रथम आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था उनके तथा आर्यसमाज के कार्यक्रम का यह प्रमुख अंग रहा है और अब भी है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने देश के बहुसंख्यक हिन्दुओं की भावनाओं का आदर करते हुए गो-वध पर प्रतिबन्ध को राज्य के निर्देशक सिद्धान्त रूप में स्वीकार किया था परन्तु भारत सरकार इस दिशा में अब तक उपेक्षणीय उदासीनता दिखाती रही है। जून १९६५ में सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन में इस कार्यक्रम की पूर्ति के लिये प्रस्ताव स्वीकृत किया था और इस आन्दोलन को व्यापक बनाने में पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की थी। अपने इस निश्चय के अनुसार आर्यसमाजों ने गो-रक्षा दिवस सम्पन्न किया और राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, गृहमन्त्री एवं कृषि मन्त्री के पास पारित प्रस्ताव भेजे, संसद् के सम्मुख भी स्थानीय आर्यसमाजों संगठनों ने प्रदर्शन किये। समय-समय पर शिष्ट मण्डलों के साथ आर्यसमाज के प्रतिनिधि प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री आदि से भी मिले। आर्यसमाज के इस व्यापक सहयोग और नेतृत्व से भारत भर में गो वध निषेध आन्दोलन बढ़ रहा है और अब सरकार आन्दोलन के व्यापक परिणामों से चिन्तित होने लगी है।

भारत के गृहमन्त्री श्री नन्दा ने गो वध निषेध की संवैधानिक प्रेरणा को स्वीकार किया है और राज्यों के मुख्य मन्त्रियों को एक पत्र लिखकर प्रेरणा की है कि वे अपने राज्यों में गो-वध निषेध सम्बन्धी कानून बनाने में शीघ्रता करें।

साधारणतया गो रक्षा आन्दोलन को राजनैतिक एवं निर्वाचन के उद्देश्य से आरम्भ आन्दोलन बताकर इसके महत्व को कम आंकने का प्रयत्न किया जाता है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के उपप्रधान श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद् सदस्य और सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल जी ने जयपुर गो-रक्षा सम्मेलन में आर्यसमाज की ओर से स्पष्ट कर दिया है कि—

आर्यसमाज का गो रक्षा आन्दोलन राजनैतिक नहीं, उसका लक्ष्य वोट और सत्ता प्राप्ति भी नहीं है।

वार्षिक ८)
छ माही ५)
विदेश
१ पौं०

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८
अंक ४१
एक प्रति
२० पै०

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् समुनयो रणमञ्छूरसातौ त ऊतिस्य जिनय कृष्वत माम् ।
स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वाभी भवत्विन्द्र ऊती ॥ ४१ ॥

ऋ० १।७।१९।७

व्याख्या—हे मनुष्यो ! 'समुनय ०" इसी इन्द्र परमात्मा की प्रार्थना तथा पुरुषार्थ से अपने को 'ऊतय' अनन्त रक्षण तथा वर्णादि गुण प्राप्त होंगे । "शूरसातौ" युद्ध में अपने को यथावत् "रणयम्" रमण और रणभूमि में शूरवीरों से युक्त परस्पर प्रीत्यादि प्राप्त करावया "स क्षमस्य जितय हे शूरवीर मनुष्यो ! तुम को क्षेम कुशलता का, "माम" रक्षक 'कृष्वत" करो जिससे कभी पराजय हम को न हो । क्योंकि "स विश्वस्य" सौ करुणामय सब जगत् पर करुणा करने वाला "एक" एक ही है अन्य कोई नहीं, सो परमात्म 'मरुत्वान्' प्राण वायु, बल, सेनायुक्त ऊती" (ऊतये) सम्यक् वह लोगों पर कृपा से रक्षक हो, जिसकी रक्षा से हम लोग कभी पराजय को न प्राप्त हो ।

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार १६ अक्तूबर १९६६ दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

नागालैण्ड और आर्यसमाज

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देशवासियों से मार्मिक अपील करते हुए नागालैंड की समस्या के सम्बन्ध में कार्यक्रम की रूप रेखा प्रकाशित की है । रूपरेखा का परिपत्र समस्त आर्यसमाजों और प्रभाव शाली व्यक्तियों एवं संगठनों के पास भेजा गया है ।

आर्यसमाज देश को सदैव चेतावनी देता रहा है कि विदेशी ईसाई मिशन उसी प्रकार देश के लिये हानिकारक हैं जैसे कम्युनिस्ट लोग । परन्तु धर्म निरपेक्षता के नाम पर हमारी सरकार ने अपनी आंखें बन्द कर रक्खी हैं और विदेशी मिशन अपने धन द्वारा भारत की निरीह निर्धन और अबोध जनता को बहका-फुसला कर ईसाई बना रहे हैं । धर्म प्रचार की स्वतन्त्रता के हम सदैव समर्थक हैं परन्तु यदि वह बौद्धिकता के आधार पर हो यदि प्रचार का आधार प्रलोभन, घृणा और राष्ट्रविरोध हो तो उसको सहन नहीं किया जाना चाहिये ।

नागालैण्ड में ईसाई मिशन के कारण ईसाई नागाओं की संख्या बढ़ गयी और वे पृथक् नागा देश की मांग लेकर विद्रोह पर उतारू हो गये । भारत सरकार ने नागालैण्ड बनाकर उनका कुछ समाधान करना चाहा पर अभी तक उनकी विद्रोह भावना समाप्त नहीं हुई है । विद्रोही नागा अभी भी सशस्त्र हैं और वे समानता के आधार पर भारत सरकार से नागा देश स्वीकार करने की मांगें कर रहे हैं ।

इन परिस्थितियों में सरकार का विद्रोहियों से निपटने दीजिये परन्तु जो लोग पृथकतावादी नहीं हैं और गैर ईसाई नागा हिन्दुओं को संरक्षण और सहयोग देकर राष्ट्र को संकट से बचाया जा सकता है । हम सार्वदेशिक सभा की मार्मिक अपील का हार्दिक समर्थन करते हैं । आशा है देश इस समस्या की गम्भीरता को समझेगा ।

ईसाई मिशन और निर्वाचन

भारत के प्रजातन्त्र में विचारों की स्वतन्त्रता के नाम पर सभी प्रकार की प्रवृत्तियां अपने पैर पसारती हैं और स्थिति यहां तक बिगड़ती जा रही है कि निर्वाचन पर विदेशी धन की काली छाया पड़ने लगी है ।

केरल के निर्वाचनों में ईसाई मिशनों के दुष्प्रभाव को देश देख चुका है और अब नागालैण्ड बिहार मध्यप्रदेश में ईसाई मिशन सक्रिय हैं । आशा है देश व सी इसकी गम्भीरता को समझेंगे ।

स्वतन्त्रता से पहले जिस मिशनरी चर्च का नाम 'चर्च आफ इंगलैण्ड' था अब उसका नाम 'चर्च आफ इण्डिया' है परन्तु इसका प्रमुख कार्यालय आज भी लन्दन में है ।

इसी प्रकार अमरीका, स्वीडन न्यूजीलैण्ड इंगलैण्ड आदि देशों के ईसाई मिशनों ने सम्मिलित होकर यूनाइटेड चर्च आफ नार्थ इण्डिया व साउथ इण्डिया नामक संस्थाओं की स्थापना की है । इनके मुख्य कार्यालय भारत से बाहर हैं ।

ये ईसाई मिशन पांच हजार बड़े केन्द्रों द्वारा भारत में अपनी गतिविधियां फैला रहे हैं ।

केरल और नागालैण्ड में अपने प्रभाव की स्थापना के बाद अब इनका सारा जोर मध्यप्रदेश (छत्तीसगढ) और बिहार (छोटानागपुर) में लग रहा है ।

विदेशों से मिशन में प्राप्त धन को [illegible] की विघटन जनता को प्रभावित कर रहे हैं और निर्वाचन के लिये अपने समर्थक प्रत्याशियों की काफी सहायता देकर देश की सांस्कृतिक एकता को खण्डित करने का यत्न कर रहे हैं । निर्वाचन की वर्तमान चहल पहल में सरकार को इन मिशनों की दूषित गतिविधियों पर कठोर नियन्त्रण रखना चाहिये और देशवासियों को भी अपने आदर्शों को इनके चंगुल से बचाने का यत्न करना चाहिये । आर्यसमाज इस दिशा में सक्रिय पग उठा रहा है और करेगा ।

गो-वध समस्या, सरकार और मुसलमान

गोवध निषेध आन्दोलन की वेदि पर सरकार की ओर से अनेक बार कहा गया है कि यह आन्दोलन साम्प्रदायिक भावना से प्रभावित है । परन्तु इतिहास के पृष्ठों में अकबर के फरमान और इसी प्रकार की साक्षियों से स्पष्ट है कि मुसलमान गोहत्या के समर्थक नहीं हैं अपितु इसके समर्थन के लिये उनकी आड़ ली जाती है । अंग्रेजों ने यह नीति अपनाकर अपने समय में चाहे मुसलमानों का उपयोग गोवध के समर्थन में किया हो परन्तु स्वतन्त्र भारत का मुसलमान इस पाप के लिए अपना समर्थन नहीं देना चाहता ।

प्रसिद्ध मुस्लिम नेता श्री बसीकुर-रहमान किदवई का एक लेख हमें प्राप्त हुआ है जिसमें उन्होंने गोरक्षा आन्दोलन के सम्बन्ध में मुसलमानों की स्थिति को स्पष्ट करने का यत्न किया है । हम उनका लेख धारावाहिक में प्रकाशित कर रहे हैं जिससे पाठक उनके दृष्टिकोण को समझ सकें । संसद के भी कई मुस्लिम सदस्यों ने गोवध-निषेध के समर्थन हस्ताक्षर किये थे । श्री किदवई ने अपने लेख में मुसलमानों की स्थिति स्पष्ट कर दी है । आशा अब सरकार मुसलमानों का नाम लेकर गोवध बन्दी में रुकावट पैदा न करेगी ।

गाय राष्ट्रीय पशु हो

जिस देश में जिस पशु-पक्षी को विशेष महत्व प्राप्त हो वहां की सरकार उसे राष्ट्रीय सम्मान प्रदान कर देती है ।

भारत सरकार ने अपने एक निर्णय द्वारा मयूर (मोर) को राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया हुआ है ।

जहां तक भारत में पशु धन का महत्व है अनेक पशु अत्यन्त उपयोगी हैं परन्तु सभी दृष्टियों से गौ को सर्वाधिक महत्व प्राप्त है । देश की बहु संख्यक जनता की भावनायें भी गौ के साथ अनादि काल से सम्बद्ध हैं अतः हम भारत सरकार से अनुरोध करते [illegible] कि गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित [illegible] किया जाये । यदि सरकार इस [illegible] की घोषणा कर दे तो गो-वध [illegible] कानून बनाने के लिये राज्यों को [illegible] केन्द्र की जो सहायता सरकार की [illegible] पड़ रहा है वह भी न करना पड़ेगा [illegible] राज्य भी राष्ट्रीय पशु के रूप में गो-वध पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगा सकेंगे ।

हम समझते हैं कि गौ के प्रति राष्ट्रीय कृतज्ञता प्रकट करने का यह एक बहुत उत्तम तरीका होगा । गो-वध निषेध आन्दोलन के साथ इस मांग को भी सम्मिलित कर लिया जाना चाहिये । आशा है इस दिशा में देश-वासी अपना कर्तव्य पालन करेंगे ।

शिक्षा-जगत् में व्यापक असन्तोष

भारत के प्रमुख प्रान्तों और नगरों से छात्र एवं शिक्षक आन्दोलन के व्यापक समाचार आ रहे हैं । मध्यप्रदेश में पुलिस को गोली चलानी पड़ी लखनऊ में पुलिस नानाशाही ने शिक्षा जगत् की शान्ति भंग की ।

छात्रों को भी असन्तोष शिक्षक भी असन्तुष्ट, तब शिक्षा क्या और कैसे होगी ।

छात्र क्यों असन्तुष्ट रहते हैं इसका बहुत कुछ विवेचन कोठारी आयोग के सदस्य श्री राव ने शिक्षा परिषद में किया है । छात्रों में असंतोष का मुख्य कारण भाषा समस्या है, अंग्रेजी से उन्हें कोई मोह नहीं उसका भार उनके लिये असह्य है । धार्मिक या नैतिक शिक्षा की उनके लिये कोई व्यवस्था नहीं तब व अनुशासन की भावना में कैसे आबद्ध हों, शिक्षक अपनी दयनीय दशा से चिन्तित हैं । समाज में उनका स्थान छिन चुका है क्योंकि समाज की नैतिक मान्यतायें समाप्त हो चुकी हैं और समाज धन वैभव का दास है । भारत में विद्वान् स्नातक के सम्मुख राजा सवारी पर से उतर कर नतमस्तक होते थे और रुककर उन्हें प्रथम मार्ग देते थे पर आज भारत में गुरु का स्थान नहीं है स्वतन्त्र भारत के शासक गुरु के महत्व को भूल चुके हैं । उनके पास कल्पित योजनाओं के लिये पानी की तरह बहाने के लिये धन है, उनके लिये 'ऋण कृत्वा घृत पिबेत' के भौतिकवादी सिद्धान्त का पालन हो रहा है और शिक्षकों और छात्रों का शोषण करने का उपक्रम किया जा रहा है । आज देश की सबसे बड़ी समस्या गरीबी नहीं शिक्षा की दुर्व्यवस्था है । सबसे अधिक इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है । [illegible] से शिक्षा जगत् की अशान्ति दूर [illegible] के लिये कोई ठोस [illegible]

गोरक्षा-आन्दोलन

गो रक्षा से ही राष्ट्र रक्षा

(ले०—श्री प० विद्याधर जी)

[आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर के विशेष अधिवेशन मे प्रधान जि० आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर श्री प० विद्याधर जी द्वारा 'गोरक्षा से ही राष्ट्र रक्षा सम्भव है" विषय पर उद्बोधन —स०]

प्राचीन समय से भारतवर्ष की पवित्र भूमि मे दूध जो कि अमृत है पालन पोषण करके शौर्य प्रदान करने वाली गौ को, श्रद्धापूर्वक माता स्वीकार किया गया है। उसके बछड़े, बैल धान्य तथा कपास की उपज में सहायक होकर मानव मात्र के लिये अन्न और वस्त्र आदि जीवनपयोगी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहे हैं। वृद्ध हो जाने पर, दूध न देने की दशा में भी, बिना किसी व्यय विशेष के, केवल घास चर कर गोबर तथा गोमूत्र देकर अन्न उत्पादन मे सहायक होते हैं और प्राणोत्सर्ग के उपरान्त चमड़ा, हड्डी सब कुछ उपयोगी वस्तुयें समर्पित करके। वस्तु जिसके रोम-रोम में परोपकार व्यापक है, वह मारने योग्य नहीं! वह मारने योग्य नहीं!!

और हृष्ट पुष्ट गौ को मार कर खा लेने पर लगभग अस्सी व्यक्ति भले ही अपनी उदर पूर्ति कर लें, उसके चमड़े के मूल्य से कुछ भक्ष्याभक्ष्य क्रय कर लें किन्तु वही गौ केवल अपने १५ वर्ष के जीवन में असख्य व्यक्तियो का पालन पोषण करती है इस सम्बन्ध में, वैदिक धर्म के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व अपनी 'गो करुणा निधि" नामक पुस्तक में लिखा था—

जो एक गाय न्यून से न्यून २ सेर दूध देती हो और दूसरी २० सेर, तो प्रत्येक गाय के ११ सेर दूध होने में कुछ भी शका नही। इसी हिसाब से १ मास में ८। मन दूध होता है। एक गाय कम से कम ६ महीने और दूसरी अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती है तो दोनों का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में १२ महीने होते हैं, इस हिसाब से १२ महीनों का दूध ९९ मन होता है। इतने दूध को औटा कर प्रति सेर में १ छटाक चावल और १॥ छटाक चीनी डालकर खायें तो प्रत्येक पुरुष के लिए २ सेर की खीर पुष्कल होती है। क्योकि यह भी एक मध्य भाग की गिनती है। कोई २ सेर से अधिक और कोई कम भी खा सकता है। इस हिसाब से १ प्रसूता गाय के दूध से १९८० पुरुष एक बार में तृप्त होगे। गाय न्यून से न्यून ८ और अधिक से अधिक १८ बार ब्याती है इसका मध्य भाग १३ बार आया तो २५७४० मनुष्य एक गाय के जन्म भर के दूध मात्र से तृप्त हो सकते हैं। इस प्रकार एक गाय से १ पीढी में ६ बछिया और ७ बछड़े हुए। इनमें १ की मृत्यु रोगादि से हो गई तो भी १२ रहे। उन ६ बछियो के दूध मात्र से इस प्रकार १५४,४४० मनुष्यो का पालन होगा। अब रहे ६ बैल उनमें १ जोडी से दोनो, साल में दो सौ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है और ३ जोडी ६ सौ मन उत्पन्न करेंगे। यदि उनके कार्य का मध्य भाग ८ वर्ष भी माना जाय तो १ जन्म मे वे तीनो जोडी ४८,००० मन अनाज उत्पन्न करेंगे। १ मनुष्य का ३ पाव का भोजन अन्न का यदि माने तो इस हिसाब से २५६,००० मनुष्यो का १ बार का भोजन होता है। दूध और अन्न दोनों को मिलाने से ४,१०,४४० मनुष्यो का पालन १ बार के भोजन से होता है। और इसके मांस से अनुमान है कि केवल ८० मांसाहारी ही तृप्त हो सकते है। देखो इस तुच्छ लाभ के लिये लाखो प्राणियो को मारकर असख्यो की हानि करना महा पाप क्यों नही?

आज नगर में गो दुग्ध अप्राप्य सा है। जिनके घर गौ पली हुई है उनके अतिरिक्त गो दुग्ध एक कल्पना की वस्तु है। लाखों बच्चे और मातायें निर्बल और रोगी, गो दुग्ध के अभाव में, शक्तिहीन होते जा रहे हैं, अतस्त्य धनराशि विदेशी दूध तथा औषधियों में व्यय करना होता है। किन्तु अपने देश में अपनी सरकार अपने स्वार्थ की पूर्ति में दुराग्रह पूर्ण नीति को अपनाते हुए

(शेष पृष्ठ १४ पर)

गऊ माता है!

(१)

दूध दही घृत मूत्र आता है पुरीष काम,
औषधि के रूप पन्चगव्य कहलाता है।
गोबर का चौका घर दीनता को दूर करे।
दूध प्राण दाता और बुद्धि का प्रदाता है।
बैलन की जोडी ये हमारे बहु काम सरें,
पूजनीय धर्म दृष्टि से पुराना नाता है।
सबको समान पालने पैं भी निपोरे दात,
"सरस" न मारो ये गरीब गऊ माता है।

(२)

ऐसी उपकारिणी के गले पै छुरी विलोक,
चित्त को हो क्लेश, औ शरीर कप जाता है।
ईसाई, यवन, हिदू सबको समान दूध,
देने पैं भी हाय उसे त्रास दिया जाता है।
राजा का कर्तव्य ऐसे पशु को बचावे सदा,
ऐसा करने से राज उन्नति को पाता है।
इसलिये करता निवेदन मैं आप से हू,
"सरस" न मारो ये गरीब गऊ माता है।

—वैद्य राजबहादुर आर्य 'सरस'

गोबध बन्द…हो।

"मातरः सर्व भूतानां गावाः सर्व सुख प्रदाः"

अर्थात् गाय समस्त प्राणियो की माता तथा समस्त सुखो की देने वाली है। इसी सम्बन्ध में क्रांतिदर्शी ऋषि दयानन्द जी ने 'गो करुणानिधि" नामक पुस्तक लिखी है उस में ऋषि ने लिखा है कि गो आदि पशुओ के नष्ट हो जाने से राजा और प्रजा दोनो का नाश हो जाता है। पूज्य महात्मा गांधी ने अपने हृदयोद्गार इस प्रकार प्रकट किये हैं कि 'जो गाय की रक्षा नही कर सकता है वह सच्चा हिदू नही है और स्वाराज्य मिलते ही गोबध बन्द कर दिया जायेगा"। गोबध बन्द होने के सम्बन्ध में महान् सम्राट अकबर का यह फरमान उदधृत कर रहे हैं जो १५८६ ई० मे जारी किया था। 'यदि कोई गो हत्या करेगा तो उसके हाथ पाव की उंगलियाँ काट ली जावेंगी। 'यह सब होते हुये भी स्वराज्य प्राप्त होने के पश्चात् भी गोबध बन्द नही हुआ। इस कलक को मिटाने के लिये श्री सन्यासी रामचन्द्र वीर २० अगस्त से दिल्ली में आमरण अनशन कर रहे हैं। इस से पूर्व १९४७ मे ५२ दिन का आमरण अनशन कानपुर में किया था। 'गोबध बन्द हो' के सम्बन्ध मे ४१ दिन का अनशन सागर में किया था। ५ सितम्बर को ससद के समक्ष गो रक्षा के लिये एक विराट प्रदर्शन किया गया जो इतिहास में अभूतपूर्व है। इस सम्बन्ध में जगन्नाथपुरी के श्री जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी कृष्ण बोधाश्रम महाराज, श्री ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी आदि ने आमरण अनशन की घोषणा की हैं। इस सम्बन्ध में हिन्दू धर्म की सब सस्थायें सहयोग दे रही हैं। इसलिए हम स्वाधीन भारत के ४० करोड़ भारतियो का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि गोबध बन्द कराने हेतु गृहमन्त्री तथा प्रधान मन्त्री के पास प्रस्ताव पास करा कर भेजें कि गोबध शीघ्र बन्द हो। और जिससे स्वामी रामचन्द्र वीर का आमरण अनशन समाप्त हो, नही तो उपर्युक्त सन्यासियों से हमें हाथ धोना पड़ेगा।

—मोहनलाल आर्य

(बरपुर वाले) महराजगज तराई (गोंडा)

सभा की सूचनाएँ

अन्तरङ्गाधिवेशन की सूचना

विदित हो कि आर्यसमाज फैजाबाद की हीरक जयन्ती १ नवम्बर से ७ नवम्बर १९६६ तक बडे समारोह के साथ मनाने का आयोजन हो रहा है। इसी सुअवसर पर आर्यसमाज फैजाबाद का निमन्त्रण सभा की अन्तरग के लिए प्राप्त हुआ है। जिसे सभा श्री प्रधान जी ने सहर्ष स्वीकार करते हुए सभा की अन्तरग की तिथि ५ व ६ नवम्बर १९६६ दिन शनिवार व रविवार की नियत की है। अत सर्व अन्तरग सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि उक्त तिथिया नोट करने की कृपा करें और ५ नवम्बर को अवश्यमेव फैजाबाद पहुचने का कष्ट करें।

आवश्यक सूचना

सभा को ज्ञात हुआ है कि वाराणसी शहर व जिले में धर्मराजसिंह नामक कोई व्यक्ति आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए चन्दा वसूल कर रहा है। आर्य समाजो व आर्य सज्जनो को सूचित किया जाता है कि सभा की ओर से उपर्युक्त नाम का कोई भी व्यक्ति सभा के लिए रुपया एकत्र करने के लिए नही भेजा गया है। इस व्यक्ति को सभा निमित्त किसी भी प्रकार का धन नही देना चाहिये।

—चन्द्रदत्त सभा मन्त्री

प्रोग्राम मास अक्तूबर

महोपदेशक

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री— १७ से १८ अलीगढ, २० से २३ गया, २८ से ३१ शाहजहापुर।

श्री बलवीर जी शास्त्री—१७ से १९ दानापुर पटना २१ से २४ सिकन्दरपुर, २८ से ३० लाजपत नगर कानपुर।

श्री विश्ववर्धन जी वेदालकार—१६ से २३ अलीगढ, २८ से ३० चन्दौसी।

श्री श्याम सुन्दर जी शास्त्री—२८ से ३० काशीपुर।

श्री केशवदेव जी शास्त्री—१६ से १९ रामनगर, २८ से ३० शाहाबाद।

प्रचारक

श्री रामस्वरूपजी आ० मु०—१६ से १९ भीममण्डी कोटा, २१ से २४ सिकन्दरपुर।

श्री धर्मराजसिंह—२०, २१ काकोरी, २२ से २३ हरदोई, २८ से ३० चन्दौसी।

श्री गजराजसिंह जी—११ से २३ रामलीला प्रचार फैजाबाद।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द—३१ तक आ० स० फैजाबाद।

श्री खेमचन्द्र जी—१६ से ३१ मुजफ्फरपुर

श्री प्रकाशवीर जी—१६ से १९ गोरखपुर छावनी, २१ से २३ फैजाबाद २७ से ३० लाजपत नगर, कानपुर।

श्री वेदपालसिंह जी—१३ से २२ रामलीला फैजाबाद, २७ से ३० बहराच (गोंडा)।

श्री जयपालसिंह जी—२२ से २४ शमशाबाद (आगरा), २८ से ३१ शाहाबाद (हरदोई)।

उत्सवों एवं कथाओं निमित्त आमंत्रित करें

उच्चकोटि के विद्वान् वक्ता, भजनोपदेशक एव बाणविद्या धनुर्धर

१—श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री
२—श्री बलवीर जी शास्त्री
३—श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री
४—श्री विश्ववर्धन जी वेदालकार
५—श्री केशवदेव जी शास्त्री
६—श्री रामनिवास जी मिश्र
७—श्री रामनारायण जी विद्यार्थी
८—श्री देवराज जी वैदिक मिशनरी
९—श्री प्रो० भगवानप्रसाद जी

भजनोपदेशक

१—श्री रामस्वरूप जी आ०मु०
२—श्री धर्मराजसिंह जी
३—श्री गजराजसिंह जी
४—श्री धर्मदत्त जी आनन्द
५—श्री खेमचन्द्र जी
६—श्री वेदपालसिंह जी
७—श्री प्रकाशवीर जी
८—श्री जयपालसिंह जी
९—श्री खड्गपालसिंह जी
१०—श्री ओमप्रकाश जी निर्द्वन्द
११—श्री दिनेशचन्द्र जी
१२—श्री कमलदेव जी शर्मा
१३—श्री निरजनप्रसाद जी
१४—श्री रामचन्द्र जी शर्मा
१५—श्री विन्ध्येश्वरीसिंह जी
१६—श्री मुरलीधर जी
१७—श्री मदनमोहन जी
१८—श्री ब्रह्मानन्द जी

स्त्री उपदेशिका

१—श्रीमती सरलादेवी जी शास्त्री
२— ,, विजयलक्ष्मी जी एम०ए०
३— ,, डा० प्रकाशवती जी
४— , माता हेमलता देवी जी

बाण-विद्या प्रदर्शक

१—श्री बालकृष्ण जी शर्मा धनुर्धर
२—श्री बाबनाथ जी धनुर्धर

मैजिक लैन्टर्न द्वारा प्रचार

१—श्री रामकृष्ण जी शर्मा

—सच्चिदानन्द शास्त्री
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

ये घृणित अंधविश्वास किसी भी धर्म के लिए कलंक हैं

(ले० डा०-रामचरण महेन्द्र एम० ए०, पी एच० डी०, कोटा (राजस्थान)

धर्म के सम्बन्ध में हानिकारक गलत और तर्कहीन प्रचलित विश्वास एक मानसिक बीमारी है। बुद्धि विकास के प्रारम्भिक काल में जगली लोग धर्म का तत्त्व न समझते थे। उनकी समझ, चिन्तन, तर्क और मस्तिष्क सब अविकसित थे। तर्कहीन उपायो से वह धर्म को तोलते थे। जिस बात से डरते थे, उसे दूर करने के लिए जादू टोने, कुरीतियों और मूत्रप्रेत की कुकल्पनाएँ किया करते थे। सिद्ध कहलाने वाले ढोंगी बाबा करामातो छल और अदभुत चमत्कार दिखाया करते थे। ऐसे धूर्त लोगो से धर्म का क्षेत्र बड़ा बदनाम हुआ है और भोले भावुक जनता का बडा अहित हुआ है। समझदार पढे-लिखे लोग तो प्राय अन्धविश्वासों के अशुभ परिणामों से परिचित हैं और आये दिन समाचार पत्रों में ऐसी दुघटनाओ का हाल पढते रहते हैं, किन्तु पिछडे हुए लोगो को इन धूर्तों से सावधान रहने की बडी जरूरत है। घृणित अधविश्वास धम का कदापि अग नहीं है। पाखड के किले को ध्वस्त करना होगा। कुछ ताजे समाचार देखिए विवेकहीन अन्धविश्वासी लोग क्या-क्या मूर्खताएँ किया करते हैं—

झोपड़ी में आग लगा दी

गुडगाव क्षेत्र के पटोली ग्राम में एक महिला ने नौ झोपड़ियों में आग लगा दी। न जाने किस धूर्त ने उसके मन में यह अन्धविश्वास जमा दिया कि ऐसा करने से उसे सन्तान की प्राप्ति हो जायेगी। उसने बताया कि इस निस्सतान स्त्री से पटरी पर बैठने वाले किसी तान्त्रिक ने कह दिया था कि अगर वह कम से कम छ झोपडियों में आग लगा देगी, तो उसके बच्चा हो जायगा। अज्ञान और अन्धकार में फसी वह मूर्ख स्त्री इसी को सही तरीका मान बैठी और उसने झोपडियाँ जला डालीं। बाद में इस महिला को पचायत के सामने पेश किया गया। पचायत ने उस पर आग लगाने के अपराध में एक सौ रुपया जुर्माना किया।

शंकर जी को जीभ भेंट की

रामगढ जिले से प्राप्त एक समाचार में बताया गया है कि एक व्यक्ति ने स्थानीय मदिर में अपनी जीभ काटकर भगवान शिव के मदिर में चढा दी। इस व्यक्ति के कोई सन्तान नहीं हो रही थी। अन्त में उसने शिव जी को जीभ चढाकर पुत्र पाने का आशीर्वाद चाहा। देवी देवता मनुष्य और पशुओ की बलि या ऐसे उपहार पाकर प्रसन्न होते हैं, यह एक घृणित अन्धविश्वास है।

काली माता की प्रसन्नता के लिए

गाजियाबाद के केला मुहल्ला में रहने वाले एक हरीसिंह नामक व्यक्ति को अपने चार वर्षीय पुत्र वीरेन्द्र की हत्या के अपराध में आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। इस्तगासा के अनुसार अभियुक्त ने अपने पुत्र की गरदन छुरे से काटी और बेटे का रक्त काली माता को भेंट करने के लिए देवी के मन्दिर में गया। वहाँ अन्य भक्तों ने उसे पकड कर पुलिस के हवाले कर दिया। देवी-देवता को खुश करने के झूठे अन्धविश्वासों के फन्दो में न जाने कितने भोले लोगों को अपने धन, धर्म, प्राण और शरीर से हाथ धोना पड़ता है।

देवी से वरदान मिलने की तरकीब

अमृतसर में काली माई को अनाज

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यसमाज फैजाबाद उ. प्र. का हीरक जयन्ती समारोह

आर्यसमाज फैजाबाद की हीरक-जयन्ती महोत्सव कार्तिक कृष्णा तृतीया से नवमी स० २०२३ वि० तदनुसार १ से ७ नवम्बर सन् १९६६ई० मगलवार से सोमवार तक बडे धूमधाम से मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्य-सम्मेलन, गौरक्षा सम्मेलन की भी आयोजना की गई है। आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी व महोपदेशक पधार रहे हैं।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की कथा होगी, इस अवसर पर प० प्रकाशवीर शास्त्री व सेठ शूर जी वल्लभदास प्रधान सार्वदेशिक सभा के भी पधारने की आशा है।

सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि उस समय पर पधार कर धर्मोपदेश से लाभ उठावें।

—मन्त्री, आर्यसमाज फैजाबाद

वेद प्रचार सप्ताह की प्रेरणा

(ले०—श्री फूलनसिंह जी भूतपूर्व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

[आर्यसमाज के कर्मठ नेता आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मन्त्री श्री फूलनसिंह जी ने वेद प्रचार सप्ताह और उसकी प्रेरणा का उल्लेख करते हुए आर्य-बन्धुओं को आत्मनिरीक्षण का सन्देश दिया है। हम उनके विचारों का हार्दिक समर्थन करते हैं और आर्य जनता एवं आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना करेंगे कि वे इस ओर ध्यान दें। आर्यों का आदर्श व्यक्तित्व ही राष्ट्र का आदर्श नव निर्माण कर सकता है, जीवन में वेद के आदर्शों का पालन ही सच्चा आयत्व है।

—सम्पादक]

इसी वेद प्रचार सप्ताह में कई समाजों का कार्यक्रम देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, आर्यसमाज शिकोहाबाद में विश्व शान्ति यज्ञ यजुर्वेद के २०० अध्यायों से सम्पन्न हुआ। बाकी २० अध्यायों से शिवरात्रि पर दयानन्द सप्ताह में यज्ञ होकर पूरे यजुर्वेद से यज्ञ हो जावेगा। श्री बाबूलाल जी शास्त्री दीक्षित एम० ए० ७ रोज तक बराबर भिन्न विषयों पर व्याख्यान तथा कथा करते रहे। आर्यसमाज राजा की मंडी में तीन समाजों ने सम्मिलित रूप से वेद-प्रचार सप्ताह मनाया। सप्ताह के प्रत्येक दिन किसी न किसी गृह पर यज्ञ करके तथा अन्तिम दिवस (८०००) में किये गये नये प्लाट पर विशेष यज्ञ करके बड़े समारोह से मनाया। आर्य समाज नाई की मंडी में बड़े पैमाने पर कथा व भजनों का प्रबन्ध था दयानन्दनगर के ब्रह्मचारी सत्यव्रत जी की वहाँ कथा होती रही। सासनी कन्या गुरुकुल में ब्रह्मचारिणियों ने सप्ताह खूब सजधज से मनाया। धर्मेन्द्र कार्यक्रम में पं० रामचन्द्र जी, व पं० शिवकुमार जी की कथा व उपदेश होते रहे। अलीगढ़ से चलकर मैं जहाँ जब पहुँची आशा तो वहाँ पर भी विशेष प्रचार का प्रबन्ध एक विराट मण्डली के भजन व श्री ब्रह्मचारी सत्यव्रत जी के प्रवचन होरहे थे। यह मेरा बड़ा सौभाग्य था कि मैं इस सप्ताह में इतनी समाजों में पहुँच सका। मेरा विश्वास है कि रविवार व पर्वों पर जहाँ कहीं भी रहूँ वहाँ समाज मन्दिर में अवश्य जाकर सत्संग में सम्मिलित होऊँ अतः मैं इस आधार पर यह कहने का अधिकारी हूँ कि समाज जैसा नियमित भारतवर्ष में दूसरा कोई संगठित तथा आदेशों को मानने वाला कोई दूसरा संगठन नहीं है। इसमें ये अवगुण मौजूद हैं जो इसमें न होने चाहिये इसका संगठन ऐसा सुदृढ़ संगठित तथा सम्बद्ध देश में फैला हुआ है कि एक आवाज पर एकदम तैयार रहता है जिसका फल जनता ने भी हैदराबाद, कराची (सत्यार्थप्रकाश) हिन्दी सत्याग्रहों में भली भांत देख लिया है।

आज देश के अन्दर जो भ्रष्टाचार बुरी तरह फैला हुआ है तथा जो त्राहि त्राहि मची है उसका उपाय केवल आर्यसमाज पर है तथा वही इस कार्य को कर सकता है बाकी जितने धर्म, सम्प्रदाय, तथा पार्टियां हैं उनका ध्येय केवल राज्य करना व स्वार्थसिद्ध है अतः आज व सब अपना गौरव खो चुके हैं। हमारी आश्रम व्यवस्था के अनुसार भी राज्य का कार्य क्षत्रिय का है यह भिन्न भिन्न पार्टियां राजनैतिक उद्देश्यों से जो बनाई गई हैं वे स्वाभाविक रूप से अधिकार पाने पर अपने उद्देश्यों को भूल जाय तो अचरज ही क्या और इसी कारण ब्राह्मण समाज अथवा सन्यासी व वानप्रस्थी प्रबन्ध के कार्य से अलहदा रहते थे प्रबन्ध में कमी आवे, गलती होने के बहुत डर हैं और फिर अधिकार पाने पर उनको ही ठीक समझना स्वाभाविक सा हो जाता है अतः उन पर नियन्त्रण के लिये यह आवश्यक था और है कि एक ऐसा दल हो जो निडर होकर उनकी बुराइयों को बतलाये तथा उसका स्वयं ही न करे बल्कि अपने बल पराक्रम तथा तेज से बुराइयों को हटवाता रहे। अतः लोगों की ही यह राय सही है कि आर्यसमाज सीधे राजनीति में न जाकर उसका पथ-प्रदर्शन करे। सिवाय आर्यसमाज के कोई ऐसा दूसरा संगठन भारतवर्ष में नहीं है जो इस कार्य को कर सके। महर्षि दयानन्द के पश्चात् पूज्य महात्मा गांधी जी ने देश को नैतिकता के मार्ग पर आरूढ़ रखने का यत्न किया था परन्तु उनकी मृत्यु के बाद तो देश में कोई नेता नहीं रहा और न किसी पार्टी में यह शक्ति है कि वह अपने स्वार्थों से ऊपर उठकर देश का कल्याण कर सके। इस सारी परिस्थिति का अध्ययन करने के बाद हर एक की दृष्टि आर्यसमाज की ओर उठने लगती है और वह हृदय से अनुभव करने लगता है कि आर्यसमाज ही ऐसा संगठन है जो देश ही नहीं बल्कि संसार में शान्ति की स्थापना कर सकता है।

मैं अत्यधिक आशावादी हूं और मुझे अपने आर्य बन्धुओं पर पूर्ण विश्वास है कि वे भी आर्यसमाज के संगठनात्मक एवं विधानात्मक स्वरूप पर गर्व अनुभव करते होंगे और इस गौरव की रक्षा के लिये अपने कर्तव्य का भी पूर्ण ध्यान रखते होंगे।

ऊपर मैंने वेद प्रचार सप्ताह की चर्चा की है। वेद प्रचार सप्ताह जैसे कार्यक्रम हमारे आत्म-निरीक्षण के अवसर हैं। मैं अपने आर्य भाइयों को इस सप्ताह की प्रेरणाओं के रूप में स्मरण कराना चाहता हूं कि हम अपने व्रतों को दोहरावें और उनका पालन करें। हमें जो व्रत दोहराने चाहिये उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—(१) परिवार में नित्यप्रति पञ्चयज्ञ किया करें (२) अपनी आय का शतांश समाज को नियमित रूप से बिना मांगे दिया करें (३) प्रत्येक रविवार, पर्वों एवं आर्यसमाज द्वारा समय समय पर आयोजित कार्यक्रमों में नियमित रूप से समय से पूर्व पहुंचकर उनमें श्रद्धापूर्वक सम्मिलित हुआ करें साथ में पारिवारिक जनों को भी अवश्य लावें, इन अवसरों पर यदि निवास स्थान से बाहर हों तो जिस स्थान पर जावें वहां के आर्यसमाज में अवश्य पहुंचें। (४) नित्य स्वाध्याय करें, (५) नित्य एक सेवा का कार्य अवश्य करें।

और भी बहुत से व्रत हो सकते हैं परन्तु ऊपर के व्रतों का पालन व्यक्तिगत और सामाजिक उन्नति में अवश्य सहायक होगा और आर्यसमाज में तपोनिष्ठ व्यक्तियों की संख्या बढ़ेगी और इस प्रकार के जीवन राष्ट्र और समाज का पथ प्रदर्शन करने में अवश्य सफल होंगे, इस प्रकार आर्यसमाज की ओर आशा भरी दृष्टि से देखने वाले सन्तुष्ट हो सकेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि हमने थोड़ा भी आत्म निरीक्षण किया और स्वयं तथा समाज को आगे बढ़ाने का विचार किया तो हम अवश्य सफल होंगे। हमारे इस प्रयत्न से आर्यसमाज काफी आगे बढ़ेगा और फिर आर्यसमाज देश का नेतृत्व करता रहेगा।

★

लालबहादुर शास्त्री

काया लघु थी शांति का वह विश्व हित, सारे जग से वह निराला था।
कविता देवी का सुहाग था वह जन जन की आंखों का तारा था।
बराबर परिश्रमरत रहता देश हित वह कभी न सोचता निज विषय में वह
हारता साहस कभी भी न वह, हर कठिनाई को सुलझाने वाला था।
दुश्मन से भी करता था प्रीति वह सादगी और नम्रता की मूर्ति वह
रवि से प्रकाशित है विश्व जैसे वैसे ही भारत को जगमगाने वाला था।
शान्त-चित्त रहना था सदा वह, शुभ संकल्प में दृढ़ निश्चय वाला था।
स्नेह लुटाता था बच्चों पर विशेष वह, दुखियों का तो प्राणप्यारा था।
त्रिलोक में न मिलेगा मानव उस-सा, वह एक में अनेक रूप वाला था।

—कुमार स्वदेशी

विचार-विमर्श

श्री फूलनसिंह जी शिकोहाबाद द्वारा आर्यमित्र की सहायता

सभा की ओर से सभी अन्तरंग सदस्यों से आर्यमित्र के कम से कम पांच ग्राहक बनाकर सहयोग देने की प्रार्थना की गयी थी। सभा की प्रार्थना पर श्री ठाकुर-फूलनसिंह जी ने मित्र के पांच नवीन ग्राहकों का चन्दा भिजवाकर हमारा उत्साह बढ़ाया है। मित्र के साथ उनका सदा से स्नेह रहा है हम उनके सहयोग के लिए सभा एवं मित्र परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। हमें आशा है वे अपना सहयोग इसी प्रकार बनाये रखेंगे। अन्य सदस्य भी आपके कार्य से प्रेरणा प्राप्त करें।

—रमेश चन्द्र स्नातक

—सम्पादक आर्यमित्र

पोप लीला से सावधान—

मृतक श्राद्ध अवैदिक है

[ले०—आचार्य श्री सत्यमित्र जी शास्त्री वेदतीर्थ व्याकरणाचार्य विद्यावारिधि महोपदेशक बड़हलगंज गोरखपुर]

वेदों में जीवित श्राद्ध का विधान है। मृतक श्राद्ध शब्द ही वेदो में नहीं है। और्ध्वदैहिक शब्द कपोलकल्पित है। पुन इसका वर्णन कैसे होगा। यजुर्वेद तथा अथर्व वेद की सम्पूर्ण ऋचायें जीवित श्राद्ध में प्रयुक्त होती हैं। अभी अलावलपुर, गाजीपुर में काशीस्थ महापण्डितो से शास्त्रार्थ हुआ। जिसमें वे लोग किसी भी मन्त्र द्वारा मृतक श्राद्ध सिद्ध न कर सके। सबसे प्रथम पितर शब्द जीवितार्थ में प्रयुक्त होता है, पिता आत्मा की संज्ञा नही है नही तो अतिव्याप्ति दोष होगा। सब आत्मायें पिता हो जायेंगी। यदि यह संज्ञा शरीर की है तो सब शरीर पिता होगा। पिता पालयिता भवति (निरुक्त) जो पालक है वही पिता है अथवा जो उत्पन्न करता है, वह जनक होता है। शरीरी आत्मा जो पालक एव उत्पादक है वही पिता है। जब शरीर का त्याग कर आत्मा चला जाता है तथा दूसरे शरीर को स्वकर्मानुसार ग्रहण कर लेता है उस समय पुरातन शरीर का सम्बन्ध छूट जाता है, अत तन्निमित्त कोई भी कार्य करना अवैदिक है। वेद का प्रसिद्ध मन्त्र है—भस्मान्तं शरीरम्। यजु० अ० ४०। अर्थात शरीर का भस्म होना ही धर्म है अन्य क्रिया पिंडोदकादि जो कुछ किया जाता है मिथ्या है, एव अवैदिक है। मृतक श्राद्ध का प्रचार पौराणिककाल में हुआ। उस समय के मदान्ध स्वार्थी पंडितों ने अन्य ग्रन्थो में भी सम्मिश्रण कर यह प्रपंच लीला निजोदर महोदधि पूरणार्थ किया। मृतक श्राद्ध का खंडन पुराणों में भी है। यथा—विदर्भ देश का राजा श्येनजित राजर्षि था। उसके राज्य में सुमित्र नामक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम जयश्री था। वह स्त्री ऋतुकाल मे पात्रो को छूती रहती थी। कुछ दिन के उपरान्त वे दोनो मर गये। ऋतु दोष से सुमित्र का जन्म बैल का एवं जयश्री का जन्म कुतिया का हुआ। सुमित्र के पुत्र का नाम सुमति था तथा पुत्रवधू का नाम चन्द्रावती था। वे बैल और कुतिया स्वगृह मे रहते थे। एक दिन सुमति के घर पिता का श्राद्ध था। सुमति बैल को लेकर खेत मे जोतने गया था। चन्द्रावती ने खीर बनाई। उसमें सांप जहर डाल गया। कुतिया ने देख लिया कुतिया ने इस विचार से कि ब्राह्मण खाकर मर जायेंगे खीर में मुह डाल दिया। चन्द्रावती जलती लकड़ी से कुतिया को इतना पीटा कि उसकी कमर टूट गयी। भोजन फिर बनाया गया। ब्राह्मणो को खिला दिया गया। किन्तु कुतिया को जूठन भी न दिया। आधी रात्रि में कुतिया बैल के पास गई और अपनी सारी रामकहानी सुनाई और कहा कि मैं भूख से मरी जा रही हू। आज जूठा टुकड़ा भी न मिला। यह सुन बैल ने कहा कि यह पूर्व कर्मों का फल है देख तेरे पाप से मेरी क्या गति हो रही है।

कि करोमि अशक्तोह भारवाहश्च मावत। अथाहमात्मन क्षेत्रं वाहत सकल दिनम्॥ ४७

धारितश्चास्मजेनाहं मुख बद्धवा बुभुक्षित। वृथा श्राद्ध कृतेन आताव मम कष्टता॥ ४१ भविष्य पुराण उत्तर अ० ७८ भविष्य पुराणोक्त ऋषि पंचमी कथा।

मैं क्या करू विवश हू। मैं बोझ ढोने वाला बैल बन गया। आज सारा दिन अपने खेत मे हल चलाता रहा हू। पुत्र ने मेरा मुख बांधकर मुझे खूब मारा मैं भी बहुत भूखा हू इसने वृथा ही श्राद्ध किया। जिससे मुझे बड़ा कष्ट हुआ। यही कथा अक्षरश पद्मपुराण उत्तर खंड ६ अ० ७८ में है। इस कथा से साफ साफ पता चलता है कि मृतक श्राद्ध व्यर्थ है। मृतको के नाम पर उन्हे कुछ नही मिलता है। अपितु स्वार्थी वृकोदर ब्राह्मण डकार जाते हैं। यह माल बीच मे ही लुटेरे लूट लेते हैं। इसी प्रकार निमि का पुत्र श्रीमान मर गया, तो निमि ने शोक से व्याकुल होकर अपने पुत्र का मृतक श्राद्ध किया और पुन पश्चाताप किया।

तत्कृत्वा स मुनि श्रेष्ठो धर्मसंकर मात्मन। पश्चात्तापेन महता तप्यमानो चिन्तयत॥ १६

अकृत मुनिभि पूर्व कि मयैतदनुष्ठितम। कथनु शापेन मा दहेयुर्ब्राह्मणा इति॥ १७ महाभारत अनु०अ० ९१

वह मुनिश्रेष्ठ स्वय धर्मविरुद्ध कर्म करके पीछे से पश्चाताप करने लगा कि मैंने यह अवैदिक कर्म जिसका निषेध मुनियो ने भी किया है, क्यों किया, ऐसा न हो कहीं वैदिक ब्राह्मण लोग मुझे शाप देकर भस्म न कर दें। क्या अभी इस समय भी कोई आंख का अन्धा और गांठ का पूरा स्वार्थी ब्राह्मण पश्चाताप करके इस क्रिया को नष्ट करने का प्रयत्न करेगा। पितृपक्ष के नाम से यह पोप लीला क्यों नहीं समाप्त कर दी जाती है। इसी प्रकार भागवत माहात्म जो पद्मपुराण का गीता प्रेस ने भागवत टीका मे प्रकाशित किया है। उसमे इस प्रकार गया श्राद्ध खण्डन है। गोकर्ण और धुन्धकारी दो भाई थे जिसमे धुन्धकारी दुष्ट प्रकृति वाला था। उसको लोगों ने मार डाला। वह मरकर प्रेत बन गया। गोकर्ण उस का श्राद्ध करके गया में पिंडा डाला। फिर वह प्रेत बनकर गोकर्ण के घर पर आकर परेशान करने लगा। तब गोकर्ण ने कहा कि—

त्वदर्थं तु गया पिण्डो मया दत्तो विमानत। तद् कथं नैव मुक्तोऽसि ममाश्चर्यं मिदं महत्॥ ११

गया श्राद्धेन नो मुक्तिश्चेत् नापरस्त्विह। किं विधेयं मया प्रेत तत्वं वद सविस्तरम्॥ १२ भागवत माहात्म खंड अ० ५ श्लोक ११, १२ १३

मैंने तेरा गया में श्राद्ध कर तुझे पिंडा दिया। तू प्रेत योनि से मुक्त क्यों नही हुआ। मुझे यह आश्चर्य है। यदि गया श्राद्ध से मुक्ति नहीं होती है तो दूसरा मार्ग बताओ। इस पर धुन्धकारी ने कहा कि—गया श्राद्ध शतेनापि नैव तृप्तिर्भविष्यति। सौ बार भी गया में श्राद्ध करो। लेकिन उससे कुछ नहीं होना है तुम भागवत सुनो। गरुडपुराण लीला व्यर्थ है। इसी प्रकार अंगिराऋषि ने कहा कि मैं नहीं जानता कि मृतक श्राद्ध में खाने वालों की क्या क्या गति होती है।

मृतक श्राद्ध पुन्नाग द्विज शूद्रान्न भोजनम्। अहमेव न जानामि का का योनि गमिष्यति। ८५

(शेष पृष्ठ १९ पर)

सिंहावलोकन

सफलता

(श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० प्रयाग)

एक मुसलमान युवक जो उदार-हृदय तथा साहित्यप्रेमी हैं मुझसे पूछने लगे कि आर्यसमाज को काम करते हुये ९१ वर्ष हो गये और महर्षि दयानन्द के देहावसान को ८३ वर्ष, इतने दीर्घकाल में आर्यसमाज ने समाज सुधार में क्या सफलता प्राप्त की। इसी सम्बन्ध में कम्यूनिज्म, सोशलिज्म आदि कई देशीय और विदेशीय आन्दोलनों की भी बात आ गई। मैंने उनको कहा कि आर्य्य समाज कम्यूनिज्म के समान वर्ग हीन समाज (क्लासलेस सोसाइटी) का पक्षपाती नहीं है। वर्गहीन समाज उस कालेज के सदृश है जिसमें कक्षायें नहीं हैं। कोई विद्यार्थी किसी कक्षा में बैठ सकता है। ऐसे कालेज में व्यक्तिगत उन्नति नहीं हो सकती। वर्गहीन समाज में भी व्यक्तियों का विकास नहीं हो सकता। समाज व्यक्तियों से बनता है। व्यक्ति विद्वान् हों तो समाज विद्वान् होगा। यदि व्यक्ति बलवान हो तो समाज बलवान होगा। यदि व्यक्ति धनवान हों तो समाज धनवान होगा। अतः आर्य्यसमाज ऐसे समाज का निर्माण करना चाहता है जिसमें व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति और प्रवृत्ति-भेद के अनुसार अपनी उन्नति कर सकें। इसी का नाम चातुर्वर्ण्य अर्थात् गुण कर्म स्वभाव के आधार पर वर्णीकरण है। हिन्दू समाज में दोष यह था कि वर्णों के वर्ग तो थे परन्तु उनका आधार जन्म परक था। इसलिये सैकड़ों जातियाँ और उपजातियां हो गई। वर्णीकरण व्यक्तिगत योग्यता के अनुसार न हुआ। व्यक्तियों के पूर्वजों की योग्यता के अनुसार हुआ। ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण, चतुर्वेदी का लड़का चतुर्वेदी। यह वर्णीकरण वैज्ञानिक था। कल्पना ही इसका आधार थी।

मुसलमान और ईसाई इस दोष को जताते भी रहे और उससे अनुचित लाभ भी उठाते रहे। उनका प्रयास था कि हिन्दुओं के इस दोष को दिखाकर उनको ईसाई या मुसलमान बनाते रहें। अच्छा वैद्य वह है जो रोगी के वर्तमान शरीर को बिना बदले रोग का निवारण कर दे। यदि रोग के साथ साथ रोगी भी न रहे, और उसके स्थान में किसी दूसरे स्वस्थ शरीर की आशा पर चिकित्सा की जाय उसको तो चिकित्सक नहीं कह सकते। आर्य्यसमाज ने हिन्दुओं में समाज सुधार तो किया परन्तु धर्मपरिवर्तन नहीं कराया।

इसमें आर्यसमाज को कितनी सफलता हुई? इसकी जांच दो प्रकार से की जा सकती है। रोगी की पहली और वर्तमान अवस्था की तुलना है, दूसरे चिकित्सक की चिकित्सा के इतिहास से।

कोई नहीं कह सकता कि १८७५ ई० में जो हिन्दू समाज की अवस्था थी वह आज भी है। जाति और उपजाति भेद की जो कड़ाई तब थी अब नहीं है। जहा तक रोटी बेटी का सम्बन्ध है भेद-भाव मिट चुका है। जो कुछ है वह राजनैतिक प्रलोभनों के कारण है जिसको आजकल के राजनैतिक लोग कास्टिज्म कहते हैं और जो नैतिक अधिकारों के आधार पर स्थित है।

अब आर्य्यसमाज के प्रयास का इतिहास पढ़िये। सबसे प्रथम स्वामी दयानन्द जी महाराज ने पण्डित वर्ग के मस्तिष्क से यह बात निकालने की कोशिश की कि इस दूषित जन्म परक वर्णीकरण का आधार वेद शास्त्र नहीं हैं, 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत' का यह अर्थ नहीं है कि ब्राह्मण ईश्वर के मुख से उत्पन्न हुए। उच्च श्रेणी के पण्डितों की यह भावना बिना बदले सुधार होना था। आर्य्य जाति इतनी सुगमता से वेद-शास्त्र छोड़ने को तैयार नहीं थी। महात्मा बुद्ध ने वेदों का तिरस्कार करके यह सुधार करना चाहा परिणाम उलटा हुआ। बौद्ध धर्म चला गया। वर्णों का वर्णीकरण नहीं रहा। धम्मपद में बताया गया है कि असली ब्राह्मण कौन है। सब ने माना भी परन्तु ब्राह्मण जन्म से ही रहे। आर्यसमाज के सनातन धर्म वालों से जो शास्त्रार्थ लगभग २५ वर्ष तक चलते रहे उन में वर्ण व्यवस्था भी एक मुख्य विषय होता था। प्रमाण वेदों, ब्राह्मणों, स्मृतियों और सिद्धान्तों के दिये जाते थे। उस संघर्ष का इतिहास लिखने और मनन करने योग्य है। इससे आर्यसमाज के प्रयत्न का ठीक ठीक पता चलता है। आर्यसमाज के प्रवेशपत्रों में जाति का खाना उड़ा दिया गया। गुरुकुल आदि में प्रवेश के लिए जाति नहीं लिखनी पड़ती थी। अधिकारी चुनने में जन्म का विचार नहीं किया जाता था। महात्मा हंसराज, पं० गुरुदत्त स्वामी श्रद्धानन्द ब्राह्मणकुलोत्पन्न न थे। आजकल भी हमारे उपदेशकों, प्रचारकों याज्ञिकों, अध्यापकों में जन्म की कैद नहीं है। यह अवस्था जादू से नहीं हो गई। एक एक इन्च पर लड़ाई लड़नी पड़ी है। अछूतोद्धार आर्यसमाज के कार्यक्रम में उस समय से चला आता है। जब कांग्रेस नहीं थी। सोशल कान्फ्रेन्स नहीं थी। आर्यसमाज अकेला था और आर्यों को अपने परिवार और जातिवालों से भीषण युद्ध लड़ना पड़ता था। यह ठीक है कि महात्मा गांधी जी तथा कांग्रेस के सहयोग से सुधार में तीव्रता आई परन्तु यदि अर्द्ध शताब्दी से लड़ी जाने वाली लड़ाइयां पृष्ठभूमि में न होतीं तो महात्मा गांधी भंगी कालोनी में घर बनाने में सफल न होते अतः इस समस्त समाज सुधार की प्रगति के इतिहास से आर्यसमाज को बहिष्कृत कर देना कृतघ्नता की पराकाष्ठा होगी। आजकल के लोग क्या जानते हैं कि बाल विधवाओं की क्या दशा थी और आर्यसमाज को बाल विवाह के रोकने और पुनर्विवाह के चालू करने में क्या कष्ट उठाने पड़े। विधवा पुनर्विवाह एक्ट सन् १८५३ में श्री पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के उद्योग से पास हुआ था। परन्तु वह एक्ट केवल वकीलों की आलमारियों में पड़ा सड़ता रहा आर्यसमाज का ही काम था कि इस एक्ट का पूरा लाभ उठाया गया। अब बाल-विवाह भी बन्द है और बाल विधवाओं का प्रश्न भी उतना क्लिष्ट नहीं रहा। परन्तु आर्यसमाज रूपी भवन के फाटक पर जो गोलाबारी होती रही उसके चिह्न तो अब तक विद्यमान हैं, घाव अच्छे हो गये हैं परन्तु घावों के चिह्न तो अभी शेष हैं।

आर्यसमाज ने जितना काम किया

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सिद्धांत मार्तण्ड शास्त्रार्थ केसरी व्याख्यान वाचस्पति

पं. अमरसिंह जी आर्यपथिक

को

सादर "अभिनन्दन" समर्पित

अमरसिंह अमर हो अमरता लिये तुम। जगत में जिये हो सजगता लिए तुम ॥
अमर हो गई आर्य जाती तुम्हारी। अमर हो गई है करनियाँ तुम्हारी ॥
अमर हो गये आज पूर्वज तुम्हारे। अमर हो गई प्यारी जननी तुम्हारी ॥
अमर हो गई है कहानी तुम्हारी। अमर हो आज वाणी हमारी ॥
करें क्या विनय कुछ मधुरता लिये हम ॥ अमर हो० ॥ १

दयानन्द की ज्योति तुमने जगाई। मधुर वेद वीणा जगत में बजाई ॥
विजय पंडितों से सदा तुमने पाई। उपाधी महारथी की जग में पाई ॥
कसौटी महा तर्क की तुमने पाई। उसी पर कसा तो समझ में हैं आई ॥
वही फिर जगत को सुनाते रहे तुम ॥ अमर हो० ॥ २

किये अर्थ वेदों के मन्त्रों के तुमने। पुराणों, कुरानो, औ बाइबिल के तुमने ॥
मिर्जा, पादरी, पोप, पण्डों को तुमने। सभी को दिया वेद का ज्ञान तुमने ॥
अनेकों किये शुद्ध शास्त्रार्थ तुमने। किया शुद्ध विद्वान, मूर्खों से तुमने ॥
न पायी पराजय, अजयता लिये तुम ॥ अमर हो० ॥ ३

रहेगी सदा कीर्ति पावन तुम्हारी। खिलेगी सदा दिव्य यश की तुम्हारी ॥
दशा आर्यों की तुम्ही ने सुधारी। स्वयं बन के पंडित बनाये पुजारी ॥
सुनी जब कथा भव्य वैदिक तुम्हारी। किया आज अभिषेक 'कृष्णाकुमारी" ॥
करो भेंट स्वीकार नमता लिये तुम ॥ अमर हो० ॥ ४

—कृष्णाकुमारी चौहान

मन्त्रिणी महिला आर्यसमाज बरौठा, डा० अलीगढ

खंड काव्य—

शिवरात्रि

(गतांक से आगे)

(८९)

प्राण की चिर ग्रन्थियों को—
खोलता साकार आया,
इन्दु का मुख चूमने को
महोदधि में ज्वार आया।

(९०)

दीप के धुंधले तिमिर में
तृषित नयनों से निहारा,
आह ! खिलती सी कली पर
पड़ गया तपता अंगारा।

(९१)

जग उठा अन्त पटल में
तर्क का भीषण नगारा,
ढह गयी दीवार भ्रम की
चल गया उस पर दुधारा।

(९२)

सोचता था मूल शंकर
आज मैं क्यों खो गया हूँ ?
देखता हूँ एक सपना—
या नशे में सो गया हूँ।

(९३)

हाँकते हो डींग जिसकी—
क्या यही है अस्त्र धारी ?
अब समझ में आ गयी हैं
छद्म की बात तुम्हारी।

(९४)

क्या यही डमरू बजाकर
विश्व का संहार करता ?
सृष्टि के परमाणुओं में
क्या यही उत्थान भरता।

(९५)

क्यों न मुझको दीखती है
वह निराली मुण्ड माला
शत्रु की खर धार को क्यों—
पड़ गया है आज पाला ?

(९६)

क्या यही बिसरा गया है
व्योम के नक्षत्र सारे ?
जलधि के उस पार जाकर
क्या यही करता इशारे ?

(९७)

दैत्य नाशक मूषकों की
सह रहा अवहेलना क्यों ?
है कहाँ वह पूर्व पौरुष
सो गयी है चेतना क्यों ?

(९८)

आत्मा का पत्थरों से
हो रहा अपमान कैसा ?
मूढ़ तेरी कल्पना से
बन गया भगवान कैसा ?

(९९)

भगवान का यों
है असम्भव है असम्भव,
बालुका से स्नेह लेना
है असम्भव है असम्भव।

(१००)

खेलना रवि रश्मियों का
है असम्भव है असम्भव
रोकना मौन्दीव के बय
है असम्भव है असम्भव।

(१०१)

भरणि की गति रोक लेना
है असम्भव है असम्भव,
ईश का अवतार लेना
है असम्भव है असम्भव।

(१०२)

पूछ बैठा मूल शंकर
पिता को सहसा जगा कर
क्या इसी के तरुण तप से
तप रहा नभ में दिवाकर ?

(१०३)

प्रश्न क्या था कला त उर के
विष बुझ से तीव्र शर थे
जो तिमिर को ध्वस्त करता
रश्मि के जलते निकर थे।

(१०४)

अधर उसके फड़ फड़ाए
नयन से बरसे अंगारे।
तन गयी रोमावली भी
क्रोध के बरसे अंगारे।

(१०५)

पिण्ड पूजन के समय तू
बात ऐसी कह रहा क्यों ?
नास्तिकता की विनिन्दित
वासना में बह रहा क्यों ?

(१०६)

शैव निन्दक आज तेरी—
बुद्धि में क्या हो गया है ?
कौन इस भीषण पतन का
बीज सहसा बो गया है ?

(१०७)

रे कुतर्की ! इन कुतर्कों—
का अभी फल पाएगा तू ?
देख लेना भक्ति के
सोपान से ढह जाएगा तू ?

(१०८)

जो कि शिव है आज उससे—
खेलता तू खेल कैसा ?
भक्ति पूजन साधना में
तर्कना का मेल कैसा ?

(१०९)

बुद्धि की जादूगरी से
कौन है पहिचान पाया ?
तर्क की कारीगरी से
कौन उसको जान पाया ?

(११०)

गूँजता है व्योम का स्वर
गीत कोई गा रहा है,
निकलता जब शून्य से
फिर शून्य में ही जा रहा है।

(१११)

शून्य रवि है शून्य अम्बर
शून्य सारी कामनाएँ
शून्य में ही भस्म होंगी
एक दिन सारी विधाएँ

(११२)

शून्य का प्रति रूप है
पाषाण का यह पिण्ड उज्ज्वल,
आर्त जीवों मानवों की—
भक्ति का आधार सम्बल।

(११३)

वत्स तू अन्तःकरण से
तिमिर का पर्दा हटा कर
प्रभ की इस ज्योति को
देख ले आँखें उठाकर।

(११४)

जी महा विस्तृत स्वामी
सुन रही यह तर्क माला
अब न मेरा बस चलेगा
क्यों कि आता है उजाला।

(११५)

तत्व था नैयायिकों का
व्यास का अन्तःकरण था
छन्द का वह देवता था
दुर्ग का लौहावरण था।

(११६)

कंज सा कोमल हृदय था
किन्तु जादू चल न पाया
वह प्रबल चट्टान था
तूफान से भी टल न पाया।

(११७)

मूल शंकर था वही
वह था विकट आचार्य शंकर
जो न क्षण भर झुक सका था
आज भी पाकर भयंकर।

(११८)

कह उठा वह इस तरह
भगवान कैसे मिल सकेगी
भक्ति का सुमधुर कुसुम
पाषाण में क्या खिल सकेगा।

(११९)

हृदय का ज्वालामुखी
यह विष भरा विश्वास छल है
जल रहा संसार इस में
भस्म होता अवनि तल है

(१२०)

पत्थरों की अर्चना में
कण्ठ काटे जा रहे हैं
बचे कितने सिन्धु
कितने सिन्धु पाटे जा रहे हैं।

—माधवशरण आर्य

ग्राम कपिलापुर, पो० रसूलपुर स्टेट, जि०आजमगढ़।

राष्ट्रीय पर्व—

विजयदशमी का सन्देश!

[ले०—श्री अमीचन्द जी, प्रधान आ०स० चांदपुर (जि० बिजनौर) यू०पी०]

भारतवर्ष में विजयदशमी का पर्व बड़े उत्साह और आनन्द के साथ मनाया जाता है। यह एक राष्ट्रीय पर्व है और इस भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अमूल्य धरोहर की रक्षा करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है। बाजे-गाजे खेल तमाशे जलसे-जलूस और शोरोगुल से भरे वातावरण में आप का ध्यान मर्यादा पुरुषोत्तम के आदर्श जीवन और कार्यों की ओर भी जाये और 'वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना आपके अन्दर जागृत और विकसित हो यह ही इस लघु लेख का उद्देश्य है।

हमारा देश कितना विशाल तथा विविधतापूर्ण है, फिर भी भारत में एक छोर से दूसरे छोर तक बसने वाले लाखों करोड़ो नागरिकों का इस पर्व पर समान रूप से अधिकार है। राज महलों से लेकर टूटी फूटी झोपड़ियो तक और कल कारखानो से लेकर खेत-खलिहानों तक राम नाम की महिमा समान रूप से गाई जाती है। क्या यह हजारो साल से चली आ रही भावनात्मक एकता का ज्वलन्त प्रतीक नहीं है? वास्तव में यह तो सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर, न्याय की अन्याय पर, ज्ञान की अज्ञान पर और त्याग की भोग पर विजय का पर्व है। विजयादशमी की इस भावना को मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श जीवन में ओत-प्रोत पाते हैं। विजयादशमी स्वार्थ और अन्याय पर विजय का सन्देश देती है। इसी भावना को राम ने व्यावहारिक रूप दिया, परस्पर भाईचारे और कन्धे से कन्धा मिला कर चलने की भावना को जगाया, आसुरी और मायावी सृष्टि में परम सत्य की सत्यता का भान कराया, अत्याचार के विरुद्ध निरन्तर विद्रोह और युद्ध करना सिखलाया। राम रावण का युद्ध दो व्यक्तियो, दो राजाओ, सत्ता के महत्वाकांक्षी दो नरेशों का ही युद्ध नहीं है, वरन् दो आदर्शों का संघर्ष भी है। दो विचारधाराओं की टक्कर है।

ऐतिहासिक दृष्टि से राम रावण युद्ध का समय विजयादशमी काल से भिन्न है, फिर भी इस अवसर पर रामलीला करने का उद्देश्य लोक-भावना को प्रोत्साहित करना ही समझना चाहिए। परन्तु जीवन के मापदण्ड और मान्यतायें बड़ी तेजी से बदल रही हैं। नये विचार उभर रहे हैं। मनुष्य की रुचियां एक दूसरे से इतनी भिन्न हैं और उनकी नैतिक मान्यताओं में भी इतना विरोध है कि श्रेष्ठता अथवा सम्पूर्णता का कोई निश्चित मापदण्ड स्थापित करना कठिन होता जा रहा है। असंतुलित, असंयमित और अमर्यादित जन शक्ति को नियंत्रित करने के लिए जन जन का सहयोग अपेक्षित है। आर्य बन्धुओं के लिए यह कार्य कोई कठिन काम नहीं है।

पुरानी दुनियाँ लड़खड़ा कर गिरा चाहती है। हमारे राष्ट्र का भी नव-निर्माण हो रहा है। किसी भी राष्ट्र का केवल वर्तमान और भविष्य ही नही होता, बल्कि एक अतीत भी होता है, जो वर्तमान को शक्ति देता है और भविष्य के निर्माण में भी सहायता करता है। हमारा अतीत बड़ा गौरवपूर्ण रहा है, उसका हमें गर्व है। भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने को राष्ट्र का सच्चा नागरिक समझे और यथा-शक्ति उसके निर्माण की जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ ले। आडम्बर हीन, कर्मठ जीवन ही राष्ट्र की पुकार है।

अन्धकार में भटकते हुए मानव को प्रकाश की रेखायें ढूढने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम की शरण में जाना ही होगा। हमें दूसरों के विचारो को भी परखना चाहिए। तरह-तरह के विचार विभिन्नता का सम्मान न करने वाले, सामाजिक अधिनायकवादी होते हैं। सर्व जन हिताय आज राष्ट्र प्रत्येक नागरिक से निस्वार्थ सेवा त्याग, तपस्या एवं बलिदान का आवाहन करता है। यही विजयादशमी का सन्देश है।

आज रामलीला का जो स्वरूप रह गया है, वह न भारतीय गौरव के अनुरूप है और न राम की महत्ता के ही। रामलीला कर्ताओं में जो अश्लीलता और सुरापान तथा ओछापन सम्व्याप्त है। उसका अन्त होना ही चाहिये। यदि नौटंकियों के नाच-गाने और अश्लीलता प्रदर्शन बन्द नहीं किये जाते तो रामलीला से लाभ के बदले हानि ही होगी।

विजयादशमी की परम्परागत आत्म-

(शेष पृष्ठ १० पर)

राष्ट्र निर्माण

मातृभूमि का गौरव

[ले०—श्री भारतभूषण जी विद्यालंकार]

आजकल हमारे राष्ट्र की स्थिति बड़ी डावाडोल है या हमारे राष्ट्र को आज बाह्य शत्रुओं से अधिक भय है। इस प्रकार की बातें सर्वत्र ही कही व सुनी जाती हैं। परन्तु यह राष्ट्र है क्या?

क्या अनन्त हिम मण्डित हिमालय से कन्या कुमारी तक फैले इस विशाल भूखण्ड का नाम राष्ट्र है या इस पर अजस्र गति से किल्लोल करने वाली इन सरिताओं का अथवा योगी की भांति सदैव एक से रहने वाले इन विशाल पर्वतो का या इसमें निवास करने वाले नाना धर्मों को मानने वाले, नाना भाषाओं को बोलने वाले विचित्र वेश भूषाओं को धारण करने वाले एवं विभिन्न परम्पराओं से बंधे सहस्रश व कोटिश लोगों का नाम राष्ट्र है? तो इसका उत्तर नहीं में ही मिलेगा।

दूसरे शब्दों में हम कहे तो कह सकते हैं कि एक देश विशेष की सीमाओं का नाम राष्ट्र नहीं है। यह तो शिलाओं पत्थरो व धूल-मिट्टी का एक ढेर मात्र है। इसके स्थूल रूप भूमि में तो कहीं राष्ट्र नामक वस्तु के दर्शन नहीं होते क्योंकि 'भवन्ति भूतानि अस्यामिति भूमि।'

परन्तु जब इस स्थूल आकार से मानसिक सम्बन्ध जोड लिया जाता है, इसके मानापमान को उन्नति अवनति को जब अपना मानापमान, उन्नति अवनति समझा जाने लगता है, जब हम पर्वतो तक में देवतात्मा की भावना बना लेते हैं। "अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज" जब प्रत्येक जलाशय या वारिधारा के साथ एक आदरयुक्त सौहार्द हो जाता है। उनके जल में अमृत की सी श्रद्धा प्रस्फुटित हो जाती है। उनकी चन्द्रिका मयी बालुका में जब माता की गोद की भांति बैठने व लेटने की इच्छा होती है। संक्षेप में जब हम भूमि को भूमिमात्र न मानकर माता का आदरणीय पद उसे प्रदान कर देते हैं तब पुत्र बड़े गर्व गौरव व श्रद्धा के साथ गम्भीर स्वर में उद्घोष करता है "माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः" (अथर्व० १२।१।१२) और तब उस भूखण्ड का, जिसको कि हम अपनी मातृभूमि पुण्य भूमि या राष्ट्र समझते हैं, एक एक कण हमारा सखा व सहायक हो जाता है।

पाश्चात्य देशों की भांति भारतीय संस्कृति में पले हुए व्यक्ति की कल्पना में भी कभी यह नहीं आता कि यह प्रकृति मेरी शत्रु या विरोधिनी है मैं इस पर विजय प्राप्त करूं अथवा उससे पराभूत होने की हीन भावना को मन में क्षण भर के लिए भी स्थान दूं। क्योंकि प्रकृति तो उसके मन प्राण में समाहित हो चुकी है। उससे पृथक्ता के भावों को वह समाप्त कर चुका है। वह तो माता है उस पर विजय या पराजय कैसी?

शैशवावस्था में जब होश आया तो किसी पितृतुल्य ऋषि के परम पावन आश्रम पद में। क्योंकि वहीं तो द्विजत्व की उत्पत्ति होती है उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धिया विप्रो अजायत उसके बाद २५ वर्ष गृहस्थाश्रम में रहकर पुनः वन गमन की तैयारी।

जो व्यक्ति या जाति किसी भूखण्ड के साथ अपना इस प्रकार का मानसिक व आत्मिक सम्बन्ध नहीं जोडती या नहीं जोड पाती वह सदा दीन हीन रहकर समाप्तप्राय हो जाती है। घुमन्तु जातियो में यह भाव नहीं रहता इसी से उनकी कोई मातृभूमि नहीं, राष्ट्र नहीं होता।

यह हमारी इच्छा पर निर्भर है कि हम कितने भूखण्ड के साथ अपनी इस प्रकार की भावना जोड़ें। हम एक छोटे से प्रान्त से अथवा सम्पूर्ण पृथ्वी से अपना मातृभूमित्व का भाव जोड सकते हैं और धरती के सभी निवासियों को अपना भाई समझ सकते हैं। इस प्रसंग में परमात्मा का आदि काव्य आज भी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को प्रेरणा दे रहा है।

और जब पुत्र अपनी माता की स्तुति करता है यस्यां पूर्वे भूतकृत ऋषयो गा उदानृचुः जिस प्रकार की उसके प्राचीन पूर्वज विद्वान् कीर्तन करते रहे हैं। तो वह धूल-मिट्टी का ढेर अकथनीय ऐश्वर्यो एवं सुख शान्ति को प्रदान करने वाला बन जाता है। भगवती श्रुति स्पष्ट घोषित करती है—

शिला भूमि रश्मा पांसु सा भूमिः संधृता धृता, तस्यै हिरण्य वक्षसे पृथिव्या अकरं नमः'। अथर्व० १२।१।२६

जिस राष्ट्र या समाज में यह पूजाई

भाव समाप्त हो जाता है या कम हो जाता है, वहाँ अव्यवस्था फैल जाती है और देश पतनोन्मुख हो जाता है। जब स्वार्थ संकीर्ण हो जाते हैं तो वह व्यक्ति या समाज पूजनीय भावों से दूर हो जाता है। आजकल की तोड़-फोड़, अव्यवस्था इसी भावना की कमी का फल है। जब एक साधारण से ग्राम को इस प्रान्त से उस प्रान्त में परिवर्तित कर देने के प्रश्न पर सामाजिक या राष्ट्रीय सम्पत्ति के विनाश का ताण्डव प्रारम्भ हो जाता है परन्तु दूसरी ओर एक विशाल भू प्रदेश अजय कह कर शत्रु को सौंप दिया जाता है और उस ओर ध्यान देने का समय भी नहीं मिलता तो इसे राष्ट्रीय भावना की कमी नहीं तो क्या कहा जावे? परन्तु जिस देश के नागरिक क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर विशाल हृदय वाले बनकर अधिक से अधिक जीवों के अधिक से अधिक सुख के लिए प्रयत्नशील होते हैं तो उन्नति का मार्ग स्वयं प्रशस्त हो जाता है और वही भाव बलिदानों की प्रेरणा भूमि बनकर असम्भव को सम्भव बना सकने के सामर्थ्य से युक्त हो जाता है।

इस प्रकृति को चेतन मानव के जीवन से इस प्रकार गूंथ देने वाला एक पतला सा धागा और है जो कि एक राष्ट्र के सम्पूर्ण व्यक्ति रूपी मानवों में अनुस्यूत है और वह है संस्कृति। क्योंकि उस संस्कृति को मार्गदर्शक बनाकर प्राचीन विज्ञानों को पाथेय बनाकर ही समाज आगे बढ़ता है, राष्ट्र बनता है तथा राष्ट्र की एक सीमा से अपने को आवित करके काल के भाल पर अमिट पदचिह्न बनाता चलता है।

वह लोक समुदाय जो एक निश्चित भौगोलिक सीमा में बसता हो, उसकी भावना से अनुभावित हो तथा एक जीवन दर्शन व सभ्यता से अनुप्राणित होने के साथ साथ एक शासन के द्वारा एकताबद्ध हो राष्ट्र कहलाता है।

इसीलिए जब तक हम अपने राष्ट्र की भूमि को माता का पद नहीं देंगे उसकी स्तुति (स्तुति से तात्पर्य राष्ट्रीय भावना से है) नहीं करेंगे तब तक सुख शान्ति व बल समृद्धि कल्पना प्रसूत ही होगी वाक्यस्नु प्रवदे मातर महीम् दिति नाम वचसा करामहे (यजु० १८।३०) 'इसी भावातिरेक से विह्वल होकर क्रान्तदर्शी कवि की वाणी स्वयं स्फुरित हो उठी—वन्देमातरम्—'।

★

सुझाव और सम्मतियाँ

आगामी चुनाव और आर्य जनता

[ले०—श्री बाबूलाल जी, एम०एस०सी०, बुद्धि सदन जबलपुर मध्यप्रदेश]

आर्यमित्र का २५ सितम्बर सन् १९६६ ई० का अंक हाथ में आते ही पृष्ठ २ पर छपे सम्पादकीय लेख पर दृष्टि पड़ी। सुयोग्य सम्पादक महोदय ने बहुत अच्छा किया कि मित्र के पाठकों का ध्यान इस अत्यावश्यक प्रश्न की ओर आकर्षित किया और किसी विवाद में पड़े बिना सामान्य रूप से उनका मार्गदर्शन भी किया।

यद्यपि अभीतक आर्यसमाजियों का कोई अखिल भारतवर्षीय राजनैतिक संगठन तो बन नहीं पाया और न आगामी चुनाव सम्पन्न होने तक किसी ऐसे संगठन के बन जाने की सम्भावना ही है तथापि यदि आर्यसमाजी चाहें और अपनी जन्मजात नेतृत्व शक्ति का सदुपयोग करें तो अनेक क्षेत्रों से वे ऐसे महानुभावों को आगामी चुनाव में सफल करा सकते हैं जो या तो आर्य समाज के भलीभांति जिन्हें परखे पुराने सदस्य हैं अथवा जिनके सदाचारी होने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है और जिन्हें आर्य संस्कृति से प्रेम है।

गत १८-१९ वर्षों में विभिन्न विधान-सभाओं तथा संसद की गतिविधियों पर दृष्टिपात करने पर यह तथ्य स्पष्ट रूप से प्रगट हो जायगा कि हमारे विधायकों और संसद सदस्यों में जागरूक देशभक्त, निःस्वार्थ सेवी स्पष्ट वक्ताओं का अत्यन्त अभाव रहा है। अधिकांश सदस्य तो ऐसे रहे हैं कि जो उपर्युक्त सभाओं में विचार हेतु प्रविष्ट विषयों पर न तो अपना स्वतन्त्र मत बनाने की क्षमता रखते थे और न निर्भीक रूप से उसे प्रगट करने का उनमें यथेष्ट साहस था। जो केवल पैसे के बल पर अथवा तिकड़मबाजी द्वारा विधायक अथवा संसद सदस्य बने हों उनसे मननशील होते हुए केवल परोपकार की भावना से प्रेरित होकर कार्य करने की कैसे आशा की जा सकती है।

आर्यसमाज आरम्भ से ही ऐसा शिक्षणालय रहा है जिसमें प्रथम तो प्रवेश ही ऐसे विद्यार्थी करते हैं जिन्हें त्याग तपस्या का जीवन पसन्द है और जो परोपकार भावना से प्रेरित होते हैं। आर्यसमाजी रहते हुए अनेक अवसरों पर उनकी परीक्षा भी होती रहती है। ऐसे ही अनुभवी एवं तपोनिष्ठ व्यक्ति वास्तव में विधायक होने योग्य हैं। परन्तु उनके मार्ग में प्रायः अर्थाभाव की ऐसी दुर्गम खाई विद्यमान है जिसे अपने ही बल बूते पर पार कर सकना उनके लिये सर्वथा असम्भव होता है। उनकी योग्यता और उपयोगिता में विश्वास रखने वालों का यह नैतिक कर्तव्य है कि उनका परिचय निर्वाचन क्षेत्र में फैले हुए मतदाताओं से कराएं और मतदाताओं को भलीभांति समझाएं कि ऐसे ही व्यक्तियों के विधायक अथवा संसद सदस्य चुने जाने पर राज्य अथवा देश का वास्तविक हित होगा।

आगामी चुनाव सम्पन्न होने में अभी लगभग पांच मास शेष हैं। विविध राजनैतिक दलों ने विजयी होने पर अपने कार्यक्रमों की तथा प्रत्याशियों की अधिकृत रूप से अभी घोषणाएं भी नहीं की। जिस राजनैतिक दल का कार्यक्रम आर्यसमाज के मन्तव्यों के अधिक अनुकूल हो उसकी सहायता भी की जा सकती है। परन्तु यदि इस कारण आर्यसमाजियों में परस्पर फूट पड़ने की आशंका उत्पन्न हो जावे तो वही अधिक अच्छा होगा कि जहां जहां सम्भव हो आर्यसमाजी लोग एकमत होकर अपने में से किसी अनुभवी भले प्रकार परखे हुए ऐसे व्यक्ति को विधान सभा अथवा संसद का सदस्य चुने जाने हेतु तय्यार करें जो अपने गृहस्थ जीवन के कर्तव्य भार से मुक्त हो चुका हो और जिससे अपेक्षा की जा सके कि वह निर्भीक होकर निःस्वार्थ भाव से विधान सभा अथवा संसद में अपने कर्तव्य का पालन करेगा अपने मन के अनुकूल किसी व्यक्ति को चुनाव हेतु तत्पर करा देना ही पर्याप्त नहीं है अपितु चुनाव में उसको सफल बनाने में प्रत्येक वैध उपाय द्वारा तन मन धन से उसकी सहायता करना भी आर्यजनों का नैतिक कर्तव्य है।

जहां उपर्युक्त कार्य सम्भव न हो वहां के आर्यजनों का कर्तव्य है कि उनके क्षेत्र में जितने प्रत्याशी अपने को विधायक अथवा संसद सदस्य बनने हेतु प्रस्तुत करें उनमें से प्रत्येक की योग्यता, क्षमता, त्याग एवं तपस्या की भावना देश भक्ति तथा आर्य संस्कृति के प्रति उनके अनुराग आदि गुणों पर दृष्टि रखकर जो सर्वोत्तम व्यक्ति प्रतीत हो उसको स्वयं अपना मत प्रदान करें तथा अन्य मतदाताओं को भी वैसा ही करने हेतु प्रेरित करें।

★

विजय दशमी का संदेश

(पृष्ठ ९ का शेष)

भावना को ही राष्ट्र-रक्षा की दृष्टि से आज अधिक महत्व मिलना चाहिए। हम राष्ट्र रक्षा में तत्पर और समर्थ हों, यही विजयादशमी का सामयिक और सार्वकालिक सन्देश है।

राम का त्याग ही उनके जीवन का आदर्श है। नास्तिक शिरोमणि चारवाक का यह कहना कि—भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनम् कुतः।

तस्मात् सर्व प्रकारेण ऋणम् कृत्वा घृतम् पिबेत। यह मांसवान शरीर बार बार आता नहीं, कर्ज लेकर भी पियो और गुलछर्रे उड़ाओ। (Eat, drink and be merry) दुनियाँ में चाहे जैसे भी हो मजे लूटो, यह संसार असार है माया है, क्षणभंगुर है। यह वास्तव में आसुरी वृत्ति है। मानव कल्याण के हित में नहीं। इससे समाज में विद्रोह, व्यभिचार तथा अनाचार पनपता है। इसके विपरीत वास्तविकता यह है कि—

Life is not an empty dream
Life is real, life is earnest
and the grave is not its' goal.

जीवन कोई उद्देश्यहीन स्वप्न नहीं है। जीवन तथ्यमय है, उद्यमशील है, और केवल मृत्यु को प्राप्त होना ही इस का ध्येय नहीं है। जीवन के अपने कुछ आदर्श हैं मृत्यु भी उनको नाश नहीं कर सकती है। राष्ट्र-कवि स्व०नवीनजी के शब्दों में—

कर चुकी है क्षार तुमको
क्या चिता की ज्वाल लोहित?
कौन कहता है कि तुमको
कर चुका है भस्म पावक?
आज तो मैं जल रहा हूं
तन छटा सब ओर अपलक!

सत्य की सर्वदा जय होगी। यह ही सन्देश लेकर आज विजयादशमी फिर आई है। विजयादशमी तू धन्य है, तेरा स्वागत है।

★

पत्रकारिता के क्षेत्र में—

हिन्दी में सबसे अधिक दैनिक पत्र

(सन् १९६५ में हिन्दी पत्रों का विवरण)

संसद के सामने भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार का १९६५ वर्ष का विवरण पेश कर दिया गया। इसमें बताया गया है कि इस वर्ष के अन्त में देश में सब भाषाओं के कुल ५२५ दैनिक पत्र निकल रहे थे जिसमें से सबसे अधिक संख्या हिन्दी के दैनिक पत्रों की थी—१४८। उर्दू में ७१, अँग्रेजी में ५६, तथा मराठी में ४१ दैनिक पत्र निकल रहे थे। इस वर्ष सबसे अधिक नए दैनिक भी—११—हिन्दी में निकले।

इस वर्ष के अन्त में देश में सब भाषाओं के सब प्रकार के समाचार पत्रों की संख्या ७,९०६ थी। इनमें सबसे अधिक पत्र १,७३० अँग्रेजी में निकलते थे और इसके बाद हिन्दी का नम्बर आता है जिसमें १६८५ पत्र निकलते थे। हिन्दी में १४८ दैनिक, ६७० साप्ताहिक, १७१ पाक्षिक, ५९२ मासिक, ६८ त्रैमासिक तथा २६ अर्धवार्षिक तथा वार्षिक पत्र निकल रहे थे। इसके मुकाबले अँग्रेजी में ५६ दैनिक, २१० साप्ताहिक, १४१ पाक्षिक, ७४३ मासिक, ४६१ त्रैमासिक तथा २१४ अर्धवार्षिक और वार्षिक पत्र थे। इससे पता चलता है कि दैनिक, साप्ताहिक और पाक्षिक पत्रों में हिन्दी अँग्रेजी से आगे थी। सबसे अधिक नए पत्र भी, २६१, हिन्दी में निकले। इसके बाद अँग्रेजी का नम्बर था जिसमें १७२ नए पत्र शुरू हुए।

प्रचार-संख्या में हिन्दी का स्थान दूसरा रहा। हिन्दी के जिन पत्रों ने अपनी प्रचार-संख्या के आँकड़े दिए थे, उन सब का कुल प्रचार ३९ लाख ७१ हजार प्रतियां थी, जबकि अँग्रेजी का ५६ लाख २७ हजार था। तमिल के पत्रों की प्रचार-संख्या २५ लाख १८ हजार और मलयालम की १५ लाख ९० हजार थी।

दैनिक पत्रों में अँग्रेजी के पत्रों की प्रचार-संख्या १६ लाख ५८ हजार और हिन्दी के दैनिकों की ८ लाख ५७ हजार थी। हिन्दी के अर्ध-साप्ताहिकों की प्रचार-संख्या १७ हजार और अँग्रेजी की ५ हजार, हिन्दी के साप्ताहिकों की ११ लाख ५५ हजार, और अँग्रेजी की ११ लाख १८ हजार थी, हिन्दी के मासिकों की १६ लाख ३ हजार और अँग्रेजी की १७ लाख ७ हजार, हिन्दी के त्रैमासिकों की ३० हजार और अँग्रेजी की ३ लाख २२ हजार प्रचार संख्या रही।

पाँच साल में वृद्धि

रिपोर्ट में बताया गया है कि १९६० और १९६५ के बीच हिन्दी पत्रों की संख्या में ३१.७ प्रतिशत की वृद्धि हुई, अर्थात् वह १,२७९ से बढ़कर १,६८५ हो गई। सन् १९६० में हिन्दी के ११६ दैनिक और ४८४ साप्ताहिक निकलते थे जबकि १९६५ में इनकी संख्या १४८ और ६७० हो गई। इसी प्रकार हिन्दी पत्रों की प्रचार-संख्या भी सन् १९६० में ३७ लाख ४२ हजार से बढ़कर १९६५ में ३९ लाख ७१ हजार हो गई।

१९६५ में हिन्दी के सबसे अधिक पत्र ७०९, उत्तर प्रदेश से निकल रहे थे और इनकी प्रचार संख्या १३ लाख ४२ हजार थी। अन्य राज्यों के आंकड़े इस प्रकार हैं दिल्ली—१९४ और ९ लाख २३ हजार, मध्य प्रदेश—२२२ और २ लाख ७५ हजार, बिहार—९० और २ लाख ७७ हजार, राजस्थान—१९६ २ लाख २३ हजार, पंजाब—८९ और १ लाख २० हजार, महाराष्ट्र—७३ और ५ लाख ६२ हजार, बंगाल—७८ और १ लाख ३९ हजार तथा मद्रास—४ और ८६ हजार।

सन् १९६४ में १,२४४ हिन्दी पत्रों की प्रचार-संख्या के आंकड़ों का विश्लेषण इस प्रकार है—१,२४४ पत्रों में से १,०३७ पत्र अर्थात् ८३ प्रतिशत की प्रचार संख्या ५ हजार प्रतियों से कम थी और इनकी कुल प्रचार-संख्या हिन्दी पत्रों की कुल प्रचार-संख्या की ३१ प्रतिशत होती थी। हिन्दी के केवल दो पत्र ऐसे थे जिनकी प्रचार-संख्या १ लाख से अधिक और सात ऐसे थे जिनकी प्रचार-संख्या ५० हजार और १ लाख के बीच में थी। इन नौ पत्रों का प्रचार ७ लाख ३३ हजार होता था जो कुल प्रचार-संख्या का १६ प्रतिशत बैठता था।

१२१ हिन्दी दैनिकों में ७३, यानी ६० प्रतिशत का प्रचार ५ हजार प्रतियों से भी कम था और इनकी प्रचार संख्या कुल प्रचार-संख्या की १८.१ प्रतिशत होती थी। हिन्दी के ५ दैनिकों की प्रचार-संख्या ५० हजार और १ लाख के बीच में थी, जो कुल प्रचार संख्या की ३६.५ प्रतिशत बैठती थी।

१९६५ में हिन्दी के मुख्य मुख्य दैनिक पत्रों की प्रचार संख्या इस प्रकार थी

नवभारत टाइम्स, दिल्ली	१,१३ १७१
हिन्दुस्तान, दिल्ली	९४ ७३२
आर्यावर्त पटना	५७ ६९०
नवभारत टाइम्स बम्बई	५० ०७९

सन् १९६५ में मुख्य-मुख्य अदैनिक पत्रों का प्रचार था

कल्याण (मासिक), गोरखपुर १,३९ ०५०।

धर्मयुग (साप्ताहिक), बम्बई १११,९५६।

चन्दामामा (मासिक) मद्रास ७८ ८९०।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिल्ली ६३ ९७२।

पराग (मासिक), बम्बई ६२ ९६२

हिन्दी डाइजेस्ट (मा०), बम्बई ५५,५६९।

१९६५ में हिन्दीभाषियों की संख्या और हिन्दी पत्रों की संख्या का अनुपात प्रति लाख १२ था। प्रति हजार जनसंख्या पीछे हिन्दी पत्रों की औसत १३.८ कापियां खपती थी, जबकि अखिल भारतीय अनुपात ४४.५ कापियों का है। इससे पता चलता है कि हिन्दी पाठकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

विवरण में यह भी बताया गया है कि अँग्रेजी के बाद हिन्दी पत्रों में ही सबसे अधिक चित्र, कार्टून और नक्शे छपते हैं। ८९ हिन्दी दैनिक पत्रों ने छपाई, समाचार-संग्रह और सम्पादकीय विभाग के कर्मचारियों आदि की संख्या के विवरण भेजे थे। इससे पता चलता है कि २६ दैनिक पत्र हिन्दुस्तान समाचार, प्रेस ट्रस्ट या यू० एन० आई० से समाचार ले रहे थे। ७ पत्र अन्य छोटी समाचार समितियों से समाचार लेते थे। १६ दैनिक, भारतीय लेख-वितरण-संस्थाओं से लेख आदि लेते थे और ३ विदेशी संस्थाओं से।

८९ हिन्दी दैनिकों में ४७० आदमी खबरों के सम्पादन कार्य में लगे हुए थे, २७४ अग्रलेख तथा टिप्पणी लिखने में और २६ चित्र नक्शे या व्यंग्य-चित्र बनाने में। इसके अलावा इन पत्रों के ४१३ अपने संवाददाता थे १४१४ अंशकालिक संवाददाता और ३७४ रिपोर्टर थे। इनमें काम करने वाले कुछ पत्रकार-कर्मचारियों की संख्या ७४१ और सब प्रकार के कर्मचारियों की कुल संख्या ३,०७२ थी।

इन ८९ पत्रों में से ६८ के अपने छापेखाने थे। इनमें से १६ रोटरी मशीनों पर छपते थे, १६ दैनिकों में कम्पोजिंग मशीन से होती थी, ७ में कुछ मशीन से और कुछ हाथ से और बाकी ५९ हाथ से कम्पोजिंग होती थी। ८ दैनिकों के पास चित्रों के ब्लाक बनाने का विभाग था। इनकी औसत पृष्ठ-संख्या ५ होती थी और मूल्य ३ पैसे तक था।

इनमें से १० की ७५ प्रतिशत आय विज्ञापनों से होती थी, २८ की ५० से लेकर ७५ प्रतिशत तक, २३ की २५ से ५० प्रतिशत तक और १७ की २५ प्रतिशत से कम विज्ञापन की आय थी।

कश्मीर की विश्व प्रसिद्ध दस्तकारियाँ

कश्मीर अपनी दस्तकारी के लिए बहुत पुराने जमाने से प्रसिद्ध है। वहां के कारीगरों ने अपने बाप-दादों से यह कला पाई है। लेकिन दस्तकार इतनी सुन्दर वस्तुएं बनाकर भी भूखे मरते थे।

लेकिन अब हालत बिलकुल बदल गयी है। कश्मीरी कारीगर अब अच्छी कमाई कर लेता है। वह अच्छे औजार और नए डिजाइन काम में लाता है। अब वह महाजनों के आसरे नहीं रहता। अपना बनाया माल वह सरकारी कला भण्डार को बेचता है। इस कला भण्डार की शाखाएं दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास आदि नगरों में हैं। इनसे कश्मीर की लकड़ी, लुवबी और कसीदे की अद्भुत कलाकारी देश भर में सुलभ हो गयी है।

कश्मीर कला भण्डार का सदर दफ्तर श्री नगर की सिविल लाइन्स में है। इस इमारत में पहले अंग्रेज रेजीडेंट रहता था। उस समय कोई साधारण कश्मीरी यहाँ कदम भी नहीं रख सकता था। आज यहां कश्मीर की कारीगरी प्रदर्शित की जाती है। इससे पता चलता है कि आजाद देशमें कश्मीरके कारीगरोंको

कितना महत्व दिया जाता है।

कश्मीरी कारीगर आज भी कपड़ों पर निशात की पत्तियां बादाम और विचित्र चीनी नामों की आकृति काढ़ते हैं। इन कारीगरों को नये डिजाइन देने के लिए श्रीनगर में एक डिजाइन स्कूल खोला गया है।

हाल की एक पड़ताल से पता चलता है कि फिरोजा नग लकड़ी, कढ़ाई, कालीन और लुगदी (पैपियर मैशा) का काम करने वाले ६८ कारखानों ने इस स्कूल के निकाले १९० डिजाइनों का इस्तेमाल किया और २० लाख रु० की १ लाख १२ हजार वस्तुएं बनायी। इस वर्ष अखिल भारतीय दस्तकारी मण्डल ने, इस स्कूल की डिजाइन की ६० वस्तुओं के आडर दिए हैं।

कानी शाल बनाने में किसी समय हजारों कारीगर लगे रहते थे लेकिन कुछ साल पहले इस उद्योग की दशा खराब हो गई थी और वह खत्म हो रहा था। लेकिन सामयिक सहायता से इस मरते हुए उद्योग को बचा लिया गया है। कानीहामा में कानी शाल का एक स्कूल खोला गया है। गुलाम कादिर कानी शाल के सर्वश्रेष्ठ कारीगर हैं। उन्हें इस वर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था।

गुलाम कादिर लोन ने यह कला अपने उस्ताद नालिम से सीखी थी। गुलाम कादिर को अब भी वे दिन याद हैं जब उन्हें अपने माल को पीठ पर लाद कर दूकान दूकान चक्कर लगाना पड़ता था। तब गुलाम कादिर जवान थे अब गुलाम कादिर बूढ़े हो गये हैं, किन्तु उनका काम करने का सिलसिला और उत्साह जवानों को मात करता है।

कश्मीर के कालीन नमदे और दस्तकारियों की विदेशों में अच्छी मांग है। अनुमान है इनसे प्रति वर्ष ८ करोड़ रु० की विदेशी मुद्रा की आय होती है।

चीनी मिट्टी के बर्तनों के उद्योग के विकास का भी प्रयत्न किया जा रहा। कलकत्ता के एक विशेषज्ञ की सहायता से कुछ प्रयोग भी किए जा रहे हैं। कश्मीर के आभूषण पैपियर मैशे या लुगदी की चीजें और लकड़ी की नक्काशी की भी विदेशों में बिक्री बढ़ाई जा सकती है। राज्य और केन्द्र की सरकार इनकी उन्नति का प्रयत्न कर रही है।

१९५१ से अब तक की तीन योजनाओं की प्रगति की समीक्षा

पिछले १५ वर्षों में योजनाबद्ध विकास के फलस्वरूप जनसाधारण के रहन सहन में क्या सुधार हुआ है, इस बारे में कुछ मूलतथ्य इस प्रकार हैं—

प्रति व्यक्ति आय २७५ रु० से बढ़ कर ३२५ रु० (१९६०–६१ के मूल्यों पर) हो गई है। चौथी योजना के अन्त में प्रति व्यक्ति आय ४१७ रु० (१९६५–६६ के मूल्यों के अनुसार ५३२ रु०) हो जाएगी।

करीब २ करोड़ ८० लाख लोगों के लिए रोजगार की सुविधाएं बनीं। चौथी योजना में १ करोड़ ९० लाख और लोगों को रोजगार मिलेगा।

लोगों की औसत आयु ३२ से बढ़ कर अब ५० वर्ष हो गई।

५२ ३०० गावों और कस्बों में बिजली पहुचायी गई है जबकि १९५०–५१ में ३ ७०० गांवों और कस्बों में बिजली थी। चौथी योजना में ५७,७०० और गावों तथा कस्बों में बिजली पहुच जाएगी।

गावों में सात लाख कुएं खोदे गये हैं और १७ हजार गावों में पाइप द्वारा पानी की सप्लाई की गई है।

स्कूलों में बच्चों की सख्या २ करोड़ २५ लाख से बढ़कर ६ करोड़ ८० लाख हो गई है और १९७०–७१ तक यह सख्या ९ करोड़ ७५ लाख हो जायगी। कालेज छात्रों की सख्या ३ लाख से बढ़कर ११ लाख हो चुकी है।

७३ लाख एकड़ जमीन का स्वामित्व बदल कर ३३ लाख काश्तकारों को दिया गया है। जमींदारी प्रथा बिल्कुल समाप्त हो गई है।

खेती की उपज

पिछले १४ वर्षों में खेती की उपज में ६५ प्रतिशत वृद्धि हुई। अनाज की उपज ५ करोड़ ५० लाख टन से बढ़कर ९ करोड़ टन हुई है (क्षमता बढ़ाई गई है) चौथी योजना के अन्त में अनाज की इस उपज में ३ करोड़ टन की और वृद्धि हो जायेगी।

चौथी योजना में फल सब्जी सरक्षण उद्योग का उत्पादन ८० हजार टन से बढ़कर १ लाख ५० हजार टन हो जाएगा। अनाज के खाद्य पदार्थों का उत्पादन ५१ ९४५ टन से १ लाख १५ हजार टन और कोको पदार्थों का २७ हजार टन से ६० हजार टन करने का लक्ष्य रखा गया है। इन खाद्य पदार्थों को डिब्बा बन्द करने के लिए विशेष प्रकार की टीन की प्लेटों की जरूरत होती है। देश में इनका उत्पादन शुरू करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

डिब्बाबन्द खाद्य पदार्थों का उत्पादन न केवल घरेलू जरूरत पूरा करने के लिए किया जा रहा है, बल्कि इनका निर्यात करने की भी कोशिश की जा रही है।

सेना में धार्मिक स्वतंत्रता

भारतीय सेना के अधिकारियों और जवानों को धार्मिक मामलों में पूरी स्वतंत्रता है। सेना की टुकड़ियों में जन्माष्टमी बैसाखी, ईद, बड़ा दिन और दूसरे त्यौहार धूमधाम से मनाये जाते हैं। इनमें सभी धर्म के सैनिक बिना भेदभाव के भाईचारे के साथ सम्मिलित होते हैं।

हमारे सैनिकों के लिए यह बात नई नहीं है। गांवों में हमेशा से दिवाली और ईद हिन्दू मुसलमान मिलजुल कर मनाते हैं। दूसरे धर्मों का आदर व सहिष्णुता हमारी संस्कृति और जीवन का अंग है।

प्रत्येक धर्म कर्तव्य पालन पर जोर देता है। सेना कर्तव्य पालन और अनुशासन पर जोर देती है। सेना में यह बात भली प्रकार अनुभव की जाती है कि धार्मिक वृत्ति का जवान अच्छा सैनिक और अच्छा नागरिक होता है। धर्म जवान को न केवल देश रक्षा की सीख देता है वरन् पूजाघरों की रक्षा के लिये भी प्रेरित करता है। संकट के समय धर्म सैनिकों को एक सूत्र में बांधने वाली कड़ी है।

सेना की छावनियों में मंदिर गुरुद्वारा मस्जिद और गिरजाघर होते हैं। सेना के अगले ठिकानों में तम्बू या बैरक में पूजा का स्थान बनाया जाता है। ये पूजा के अन्य स्थानों की भांति साफ सुथरे और शान्त होते हैं। धीरे धीरे जवान इनकी जगह पक्के पूजाघर बना रहे हैं।

सेना की हर उस टुकड़ी को जिसमें एक ही धर्म के १२० से अधिक सैनिक होते हैं धार्मिक गुरु दिया जाता है। एक ही धर्म के इससे कम सैनिक होने पर उनके धार्मिक अनुष्ठान कराने के लिए नजदीक की सैनिक टुकड़ी से उनका धार्मिक गुरु आता है।

सैनिक टुकड़ी का धार्मिक गुरु कम्पनी हवलदार मेजर होता है। कुछ इम्तहान पास करने के बाद उसे जूनियर कमीशन अफसर बना दिया जाता है। बड़ी टुकड़ियों के पंडित, ग्रंथी, मुल्ला या पादरी जूनियर कमीशन अफसर होते हैं।

मृतक श्राद्ध अवैदिक है

(पृष्ठ ९ का शेष)

गृध्रो द्वादश जन्मानि दश जन्मानि सूकर। श्वायोनौ सप्तजन्मानि इत्येवं मनुरब्रवीत्॥ ८६ अत्रि स्मृति अ० ५

बारह वर्ष तक गीध का जन्म मिलता है तथा दस जन्म तक सूअर का जन्म मिलता है सात जन्म तक कुत्ते का जन्म मिलता है। जो मृतक श्राद्ध करता है अथवा उसमें भोजन करता है। ऐसा मनु जी ने कहा है। यह पोपलीला है इसे आज के युग में परित्याग कर जीवित माता-पिता आचार्य की सेवा करना ही वैदिक श्राद्ध है।

सफलता

(पृष्ठ ७ का शेष)

है उतना वाणी से कहा नहीं। हमने कई प्रकार के सुधार किये। आपत्तियां भी सहीं। परन्तु ढोल नहीं है। इतिहास नहीं है। हम ठोस काम करने में लगे रहे। प्रकाशन को गौण समझा। अत आर्यसमाज को यश की प्राप्ति में घाटा रहा। आजकल ढोल बजाने का युग है। हमारे पास पोले ढोल नहीं हैं। जो कुछ ठोस ढोल हैं उनकी आवाज धीमी निकलती है।

आर्यसमाज अब भी जिस तत्परता से समाज सुधार कर रहा है वह तुलनात्मक दृष्टि से किसी से पीछे नहीं है। हम यह नहीं कहते कि हम निर्दोष हैं, परन्तु जितना प्रान्त भेद जाति भेद अन्यत्र है आर्यसमाज में नहीं है। आर्यसमाज के समालोचकों की यह धारणा अयथार्थ है कि आर्यसमाज समाज सुधार में असफल रही।

श्री जिज्ञासु स्मारक समारोह स्थगित

श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु स्मारक समारोह १४ से १६ अक्टूबर तक सम्पन्न करने की घोषणा की गयी थी परन्तु अभी पञ्जाबी बाग वाली भूमि रा० ला० कपूर ट्रस्ट को विधिवत स्थानान्तरित नहीं हो सकी है अत सम्प्रति स्थगित कर दिया गया है। अगली तिथियों की सूचना पुन दी जायगी।

—युधिष्ठिर मीमांसक

आर्यसमाज काशीपुर (नैनीताल) का उत्सव

२८, २९, ३० अक्टूबर ६६

उत्तर भारत की प्राचीन आर्यसमाज काशीपुर (नैनीताल) का वार्षिकोत्सव आगामी २८, २९, ३० अक्टूबर ६६ को समारोहपूर्वक सम्पन्न होगा। इसी नगर में वह पुण्य "द्रोणसागर" है जहां महर्षि दयानन्द ने हिमालय-यात्रा के पश्चात् विश्राम एवं तपस्या की ओर संसार उपकार का सकल्प लिया था। आर्यसमाज की ओर से पशु बलि निरोध का आन्दोलन भी यहां बहुत प्रभावशाली बन गया है। ऐसे आर्यसमाज के उत्साही अधिकारियों ने उत्सव को सफल करने के लिये विशेष आयोजन किये हैं। कई प्रमुख आर्य नेताओं एवं विद्वानों के पधारने की आशा है।

श्री आनन्दप्रकाशजी का आर्यवीर दल भ्रमण प्रोग्राम

अक्तूबर—ता० १९ फैजाबाद, २० शाहजहापुर, २१ बरेली, २२ अलीगढ़, २३ गाजियाबाद, २४ देहली, २५ मेरठ, २६ सहारनपुर, २७-२८ २९ आगरा, ३० लखनऊ, ३१ जौनपुर।

नवम्बर—ता० २ कानपुर, ३-४ पीलीभीत, ५-६ मुरादाबाद।

आशा है कि श्री आनन्द प्रकाश जी के इस दौरा से आर्यसमाजों व आर्य-वीरों में नव उत्साह का सचार होगा और वे आप को सब प्रकार सहयोग प्रदान करके उनका उत्साह बढ़ावेंगे तथा सभा के लिए वेद प्रचारार्थ धन, आदि देकर कृतार्थ करेंगे।

—बाबाराम पाण्डेय, उपमन्त्री

उत्सव—

आर्यसमाज नयोला का २८वां वार्षिकोत्सव दिनांक २५ से २७ सितम्बर तक मनाया गया, २५ के मध्याह्नोपरान्त ३ बजे से ६॥ बजे तक नगर कीर्तन निकाला गया। प्रतिदिन प्रात. ८ बजे से यज्ञ, भजन, सायं ३ बजे से प्रवचन, भाषण तथा रात्रि में ८। बजे से भजन तथा भाषण हुए।

उत्सव में श्री बालकराम जी ब्रह्मचारी, श्री ओमप्रकाशजी शास्त्री खतौली, श्री कुंवर सुखलाल जी आर्यमुसाफिर, श्री देवराजजी वैदिक मिश्नरी होशियारपुर, श्री ईश्वरदयालुजी आर्यप्रधान उपसभा, श्री धर्मराजसिंह जी भजनोपदेशक सभा, श्री ध्यानसिंह जी ,, उपसभा श्री दुर्गाप्रसाद जी, श्री ब्र० विद्यारत्न जी के भाषण तथा भजन हुए। जनता पर उपदेशों व भजनों का काफी प्रभाव पड़ा।

—श्यामलाल मन्त्री

—आर्यसमाज उन्नाव का वार्षिकोत्सव ६-७ ८ नवम्बर को होना निश्चित हुआ है।

—मन्त्री

—आर्यसमाज शाहजहांपुर का ७१वां वार्षिकोत्सव दि० २८, २९ ३० व ३१ अक्तूबर १९६६को समारोहपूर्वक मनाया जावेगा।

—उपप्रधान

—आर्यसमाज बिसौली का वार्षिकोत्सव १०, ११, १२, दिसम्बर १९६६ मे मनाया जाना निश्चय हुआ, यह उत्सव पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जन्म शताब्दी के रूप में समारोहपूर्वक मनाया जावेगा।

—वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज शाहाबाद (हरदोई) का वार्षिकोत्सव २८, २९, ३० तथा ३१ अक्तूबर १९६६ को मनाया जा रहा है। "प० बिहारीलालजी शास्त्री काव्यतीर्थ अवश्य पधारने की कृपा करें।"

—ता० १२, १३, १४, १५ नवम्बर सन् १९६६ ई० को पनेवा समाज का उत्सव बड़े ही समारोह के साथ होने जा रहा है। गो-रक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन और जिला गोरखपुर देवरिया आर्य सम्मेलन भी होगा।

यजुर्वेद महापारायण यज्ञ का मुख्य प्रोग्राम है। यज्ञ विशाल रूप मे होना निश्चित है। जिसकी तैयारी अभी से बहुत ही सुन्दर ढग से हो रहा है।

जिसमें आर्य जगत् के गण्यमान्य नेता और विद्वान् सन्यासी भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया गया है। अभी तक श्री आचार्य इन्द्रदेव जी, श्री प०शिवनारायण जी वेदपाठी, श्री पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री, श्री ठा० इन्द्रसिंह जी, श्री महिपालसिंह जी, श्री महानन्दसिंह जी श्री देवव्रत जी और श्री सुरेन्द्रनाथ जी आधुनिक अर्जुन की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। श्री पूज्यपाद स्वा०अखिलानन्द जी महाराज (झरिया), श्री प० रामानन्द जी शास्त्री पाली पटना, के भी पधारने की पूर्ण आशा है।

नोट—गो-रक्षा सम्मेलन श्री परम पूज्य महन्त गोरखनाथ जी, बाबा अवैद्य नाथ जी एम०एल०ए० की अध्यक्षता मे होना निश्चित हुआ है और आर्य सम्मेलन श्री फूलचन्द जी प्रधान आर्यसमाज देवरिया, व अन्तरग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

—मन्त्री

शोक—

—आर्यसमाज टाडा अफजल के परम स्नेही, धर्मप्रेमी, भूतपूर्व उपप्रधान श्री हरिवंशसिंह जी का नैनीताल के समीप हुई बस दुर्घटना मे स्वर्गवास हो गया है। हमारे इस ग्रामीण क्षेत्र में यह समाचार अत्यन्त दु खपूर्वक सुना गया है। और उनकी अनुपस्थिति से समाज को अत्यन्त हानि हुई है।

सभासद परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और सतप्त परिवार को इस वेदना को सहन करने का साहस प्रदान करें।

—आर्यसमाज याकूतगंज फर्रुखाबाद का यह अधिवेशन श्री रामचन्द्र जी पूर्व मन्त्री आर्यसमाज याकूतगंज के ज्येष्ठ भ्राता श्री बिहारीलाल जी के निधन पर शोक प्रकट करता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।'

—आर्यसमाज बिसौली पन्वोसी आर्यसमाज के प्रधान एव प्राण डा० विश्वम्भर दयाल जी तथा आर्यसमाज के वयोवृद्ध सच्चे सेवक श्री बा० रामचन्द्र जी रि० पोस्ट मास्टर के एकमात्र पुत्र के असामयिक देहावसान पर अपनी विवशताओं पर आह भरता हुआ स्वर्गीय आत्माओं को शान्ति तथा पारिवारिक जनों को धैर्य प्राप्ति की कामना करता है।

हरदोई जिले की समाजों को सूचना

जिले की समस्त समाजों को सूचित किया जाता है कि २१ अक्तूबर ६६ को मध्यान्ह २ बजे से ५ बजे तक जिला सभा का अधिवेशन बुलाया गया है। जिसमें अगले वर्ष के लिये अधिकारियों का चुनाव तथा प्रचार योजना पर विचार किया जायगा।

आप अपने समाज से प्रतिनिधि भेजने की कृपा करें।

—केशवदेव शास्त्री मन्त्री

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्यसमाज लखीमपुर की ओर से वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव वेदोपदेश का आयोजन किया गया।

—मन्त्री

आर्यसमाज दानापुर

का अठ सौवा वार्षिकोत्सव १६ से १९ अक्तूबर तक मनाया जायगा।

(१) ता० ९ अक्तूबर, १९६६ से १५ अक्तूबर १९६६ तक आर्यसमाज मन्दिर मे प्रतिदिन ७ बजे सध्या अध्यात्म कथा प्रगाढ विद्वान् आचार्य कृष्ण द्वारा।

(२) ता० १२ अक्तूबर, १९६६ से १९ अक्तूबर तक वृहत यज्ञ।

शुद्धि

आर्यसमाज डाल्टनगंज बिहार द्वारा २५-९-६६ को एक ईसाई महिला की शुद्धि की गई जिसका नाम 'रेहाना' से बदल कर पुष्पाकुमारी रक्खा गया जिस को सभी सम्पन्न व्यक्तियों ने ग्रहण किया तत्पश्चात् बिहार पाडे से विवाह सम्पन्न सनातन धर्म मन्दिर मे कर्मानुसार पौराणिक पडितों द्वारा कराया गया और बहुत ही जोश के साथ गाजेबाजे सहित जलूस निकाला गया।

—ज्योतिप्रकाश गोयल, उपमन्त्री

आजमगढ़ जिले की समाजों का निरीक्षण

आजमगढ़ जिले के समस्त आर्य-समाजों के मन्त्री महोदय की सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि मैं सभा की तरफ से आजमगढ़ जिले के आर्यसमाजों के लिए निरीक्षक नियुक्त हुआ हूँ। अत सभी समाजें अपने रजिस्टर आदि हिसाब किताब ठीक रक्खें आने पर निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करें। सभा का जो धन दशांश, वेद प्रचार आदि शेष हों वह भी देने की कृपा करेंगे। मैं अक्तूबर मास से निरीक्षण प्रारम्भ करूँगा।

अक्षयवरनाथ आर्य, निरी० सभा

गो रक्षा आन्दोलन

(पृष्ठ ९ का शेष)

वासनाओं की तृप्ति के लिये गोवध बन्द नहीं कर सकती—यह है वास्तविकता। गोवध से सात्विक भावना पनपती है। उसके अभाव में यही होता है।

'धेनु सदन रयीणाम्" वेदादेश है।

गाय ऐश्वर्य का भण्डार है और हम बुद्धिमान पुरुष उस अतुल भण्डार को एक बार में ही वध करके नोच कर कैसा उचित समझते हैं—यह है विचित्र विडम्बना।

ऐसा क्यों हुआ? उत्तर बड़ा सरल है। अंग्रेज गो हिंसक एवं गो मांस भक्षी थे। वे चाहते थे कि भारतवासी किसी भी प्रकार स्वावलम्बी तथा सशक्त न होने पायें। वे दीन, दरिद्र और दुखी बने रहें। इस हेतु ही उन्होंने गोहत्या जैसे अधार्मिक कृत्य पर प्रतिबन्ध ही नहीं लगाया अपितु गाय की कुरबानी को मजहबी रूप देकर मुसलमानों को गो वध के लिये प्रोत्साहित किया।

उन दिनों देश के शीर्षस्थ नेताओं ने यह अनुभव किया और लोकमान्य तिलक की तो स्पष्ट घोषणा थी—

'जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे, तो ५ मिनट में, एक कलम से, गो वध बन्द कर देंगे।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज से १०० वर्ष पूर्व कहा था—

"गो आदि पशुओं का नाश होने से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है'।

महात्मा गान्धी जी ने तो यहां तक कहा—

"गोरक्षा स्वराज्य से भी महत्वपूर्ण है। देश की समृद्धि गाय के साथ जुड़ी हुई है। मुझे गोरक्षा बहुत प्रिय है क्योंकि गाय स्वयं एक मूर्तिमयी करुणा है।"

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने गोपाष्टमी सं० २००९ को आकाशवाणी से बड़े दुखी होकर कहा था—

"जब कि इस देश में मनुष्यों की संख्या ३६ करोड़ को लांघने जा रही है उस समय इस देश में पशुओं की संख्या है लगभग साढ़े पन्द्रह, करोड़। इनमें भी गायों की संख्या सुनते हैं पांच करोड़ के ही आस-पास है ऐसे में राष्ट्र का स्वास्थ्य बने तो कैसे?"

गो दुग्ध के अभाव में यज्ञीय वातावरण का प्रादुर्भाव हो तो कैसे? जो देश कभी घी और दूध का भण्डार कहा जाता था आज वहां विदेशों से डिब्बों में बन्द पाउडर का दूध और मक्खन मंगाया जाता है। वनस्पति घी लाखों मन पेटों में जाकर विकार उत्पन्न कर रहा है। तपेदिक, प्लेग हैजा, चेचक और त्वचा सम्बन्धी संक्रामक रोगों का जमाव हो रहा है। चेहरों की लाली, उल्लास और सुख की रेखायें देखने को नहीं मिलती। सात्विक भारतीय जीवन, आज तमोगुण का शिकार होता जा रहा है और शासकीय गतिविधियों को देखते हुए यह भी अनुमान नहीं कि पतन का यह क्रम रुकेगा कहां जाकर?

और आज स्वराज्य प्राप्ति के १९ वर्ष के उपरान्त गोरक्षा की परिस्थिति भीषणतम और संकट हो गई है। आज गोमांस देश के केवल किसी वर्ग विशेष का भोज्य पदार्थ ही नहीं अपितु विदेशों को निर्यात भी किया जाता है—कुछ धन अथवा आयात की प्राप्ति के लिये—जिससे कहा जाता है—देश समृद्ध होगा। समृद्धि ने तो उस क्षण से ही उपेक्षा करनी प्रारम्भ कर दी थी जब स्वतन्त्र होने पर, राम राज्य की स्थापना का दावा करने वालों ने—

'गावो विश्वस्य मातरः'

विश्व की माता 'गऊ' की अनिवार्य रूपेण रक्षा की उपेक्षा की थी।

अब भी समय है। हम सचेत हो जाय और अपने पशुधन और विशेष रूप से गो धन की रक्षा पालन एवं समृद्धि के हेतु—जिससे ही राष्ट्र की रक्षा हो सकती है—त्याग तपस्या और बलिदान का संकल्प करें—किसी सम्प्रदाय विशेष के हित में नहीं अपितु मानव मात्र के कल्याण के लिये।

परम पिता परमात्मा हमें सुमति प्रदान करें जिससे हमारी नाना प्रकार की सम्पत्ति की अभिवृद्धि हो।

★

आर्य विद्वानों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के माननीय प्रधान श्री मदनमोहन जी वर्मा ने आर्य विद्वानों से निम्न विषयों पर लेख मांगे हैं आशा है कि आर्य जगत् के नेता अपने अपने लेख शीघ्र भेजकर कृतार्थ करेंगे। इन लेखों को आर्यमित्र में सादर प्रकाशित किया जायगा। —सम्पादक

(१) आर्यसमाज के दृष्टिकोण से आधुनिक आवश्यकताओं की दृष्टि से 'शिक्षा पद्धति' की क्या रूप रेखा होनी चाहिये।

(२) धर्म निरपेक्षता का वास्तविक अर्थ क्या है? भारतीय संविधान को दृष्टि में रखते हुए आर्य शिक्षणालयों में धार्मिक शिक्षा तथा नैतिक शिक्षा की क्या रूप रेखा होगी।

(३) आधुनिक भौतिक विलासिता के रुझानों के क्या कारण हैं? आर्थिक समृद्धि को ध्यान में रखते हुए वर्तमान वृत्तियों में कौन से परिवर्तन किए जाने चाहिये जो सुगमता से जनता में प्रचारित हो सकें।

(४) वर्तमान छात्र आन्दोलनों द्वारा उपद्रवादि के क्या कारण हैं? और ऐसी अवस्था का प्रतिकार व निवारण किन साधनों द्वारा हो सकता है।

(५) गुरुकुल प्रणाली क्यों असफल रही और उन प्रणालियों में कौन से सामयिक परिवर्तन करके गुरुकुल पद्धतियों के प्रति अभिरुचि जनता में जागृत की जाय?

(६) आर्यसमाजों द्वारा प्रचुर संख्या में पाठशालाएं बालक बालिकाओं की चलाई जा रही हैं, तो भी उन संस्थाओं में अध्यापित व्यक्ति आर्यसमाज व आर्य सिद्धान्तों के प्रति उदासीन रहते हैं। इस उदासीनता की निवृत्ति के लिए क्या और कौन से कदम उठाने चाहिये।

(७) क्या यह ठीक है कि महर्षि दयानन्द द्वारा निर्मित ग्रन्थ के विशेष-विशेष अंश पाठ्य क्रम में रखे जावें? न कि समूचे रूप से। और यह पाठ्य-क्रम ऐसे हों जो वर्तमान समाज की आशाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति के हेतु पूर्ण क्षमता रखते हों अन्यथा पाठशालाओं में समूचे ग्रन्थों के पाठ छात्रों के लिए शुष्क और अरुचिकर और उनकी आयु की दृष्टि से अनावश्यक होंगे कि नहीं?

(८) हमारे वर्तमान उत्सवों की रूप रेखा में परिवर्तन करने की आवश्यकता है कि नहीं? यदि हां तो क्या क्या?

(९) क्या बौद्ध भिक्षुओं के तुल्य आर्यसमाज में आर्य समूह तैयार किया जा सकता है? या जिस प्रकार से ईसाई धर्म में वैतनिक मिशनरी काम करते हैं, उस प्रकार का संयोजन करना चाहिए कि नहीं।

मदनमोहन वर्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
लखनऊ

सभा की सूचनाएं

सभास्थ अन्तरंग सदस्यों की सेवा में

सब अन्तरंग सदस्य महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन तिथि कार्तिक कृ० ७ व ८ सं० २०२३ वि० रा० कार्तिक १४ व १५ शक १८८८ तदनुसार दि० ५ नवम्बर ६६ दिन शनिवार समय प्रथम दिवस २ बजे अपराह्न से ५ बजे सायं तथा दिनांक ६ नवम्बर ६६ दिन रविवार प्रातः ८ बजे से १२ बजे मध्याह्न तक स्थान आर्य समाज मंदिर फैजाबाद में आर्यसमाज की हीरक जयन्ती के साथ-साथ आरम्भ होगा।

निवास का प्रबन्ध—आर्य कन्या पाठशाला मुहल्ला कश्मीरी बाजार शहर फैजाबाद में किया गया है।

सर्व मान्य सदस्यों को फैजाबाद ज० स्टेशन पर उतरना चाहिए। स्टेशन पर स्वयंसेवकों का प्रबन्ध रहेगा। स्टेशन से आधा पौन मील कश्मीरी बाजार है।

अतः सर्व अन्तरंग सदस्य सभा से प्रार्थना की जाती है कि अपने-अपने पहुंचने की सूचना पत्र द्वारा श्री मंत्री जी आर्यसमाज फैजाबाद को देने की कृपा करें।

मध्याह्न २ बजे दिन रविवार दि० ६ नवम्बर को आर्यसमाज की शोभा यात्रा में सम्मिलित होने की कृपा करें।

आशा है कि सर्व सदस्यगण सभा की बैठक में अवश्यमेव सम्मिलित होकर कृतार्थ करेंगे।

महात्मा नारायण स्वामी जयन्ती महोत्सव की सूचना

आर्य जनता को विदित हो कि श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की जन्म शताब्दि के मनाने का समय अति निकट आ रहा है। शताब्दी दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन (मथुरा) की पवित्र भूमि में बड़े धूम-धाम के साथ मनाने का आयोजन हो रहा है। जयन्ती के निमित्त धन-संग्रह के लिए रसीदें प्रकाशित हो गयी हैं। अतः उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाजें एवं उपप्रतिनिधि सभाएं तथा निरीक्षक महानुभाव एवं सभास्थ अन्तरंग सदस्य गण महोदयों से प्रार्थना है कि उक्त निमित्त धन संग्रहार्थ रसीदें सभा कार्यालय से अथवा गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के पते से मंगाकर धन संग्रह करने की कृपा करें। जिसके लिए सभा आपकी आभारी रहेगी।

आवश्यक सूचना

आर्य कन्या विद्यालय बिल्सी (बदायूं) के विवाद विषयक पत्रों के अनुसंधानार्थ श्री हरप्रसाद जी आर्य अधिष्ठाता भू सम्पत्ति विभाग २५ सितम्बर को बिल्सी पहुंचे, आपने वहां की स्थिति की जांच करके श्री प्रधान जी सभा को वास्तविक आख्या से अवगत कराया।

—चन्द्रदत्त तिवारी सभा मंत्री

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार मैं १ सितम्बर सन १९६६ को आर्यसमाज दर्शनपुरवा, कानपुर के झगड़े को तय करने के लिए वहां गया, मैंने दोनों पक्षों की बातें सुनी, और ११ सदस्यों की एक सूची निर्वाचन के लिए बनाकर निर्वाचन के लिए ३० अक्टूबर की तारीख निश्चित कर दी। अतः उपर्युक्त तारीख को प्रातः १० बजे आर्य समाज मंदिर दर्शन पुरवा में निर्वाचन होगा। समस्त सभासदों को समय पर पहुंच कर कार्यवाही को सम्पन्न करना चाहिये।

—हरप्रसाद आर्य
सभा निर्णायक, लखनऊ

प्रोग्राम मास अक्तूबर तथा नवम्बर

महोपदेशक

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री—२५ से २७ अक्तूबर आ० स० सुदामज (शाहजहांपुर), २८ से ३१ आ०स० शाहजहांपुर ४ से ६ नवम्बर सीतापुर, ७, ८ नवम्बर गरही लखनऊ, ११ से १४ कटरा प्रयाग १८ से २१ सुभाषनगर प्रयाग, २३ से २९ नवम्बर गोरखपुर।

श्री बलवीर जी शास्त्री—२८ से ३० लाजपत नगर कानपुर, टटीरी (मेरठ) ४ से ६ नवम्बर सीतापुर, ७-८ उन्नाव १८ से २१ शिकोहाबाद, २५ से २८ प्रतापगढ़।

श्री विश्ववर्धन जी वेदालंकार—२८ से ३० चन्दौसी, ३१ से २ नवम्बर फरीदपुर (बरेली), ६ से ९ नवम्बर पूरनपुर

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री—१ नवम्बर से ११ जनवरी तक आ०स० सागर (म०प्र०)।

श्री केशवदेवजी शास्त्री—२३ से २९ अक्तूबर कथा—बेवाना, ५ से ८ नवम्बर आ०स० कायमगंज, १८ से २१ शाहाबाद (हरदोई)।

प्रचारक

श्री रामस्वरूपजी आ०मु०—११,१४ नवम्बर बाराबंकी, १८ से २१ शाहाबाद २५ से २८ बहराइच।

श्री धर्मराजसिंह—२८ से ३० चन्दौसी ३१ से २ नवम्बर फरीदपुर (बरेली) ३ से ६ नवम्बर सीतापुर १२ से १५ बिहारीपुर बरेली।

श्री मजराजसिंह जी—३ से ६ सीतापुर, ७ ८ गरही लखनऊ १३ से २० डीलामऊ कानपुर, २५ से २८ अलीगढ़।

श्री धर्मदत्तजी आनन्द—११ नवम्बर तक फैजाबाद, १८ से २१ सुभाषनगर प्रयाग, २५ से २८ नवम्बर प्रतापगढ़।

श्री सेमचन्द्र जी—३१ अक्तूबर तक मुजफ्फरपुर, ६ से २८ नवम्बर आ०स० टाटा।

श्री प्रकाशवीर जी—२१ से २४ सिकन्दरपुर २७ से ३० लाजपत नगर, कानपुर, ६ से ९ नवम्बर पूरनपुर १२ से १४ नवम्बर चन्द्रनगर लखनऊ।

श्री वेदपालसिंह जी—२७ से ३० बड़गांव, ५ से ८ नवम्बर उन्नाव २६ से २९ गोरखपुर।

श्री जयपालसिंह जी—२१ से २४ शमसाबाद (आगरा), ५ से ८ नवम्बर कायमगंज, १९ से २१ साधुआश्रम।

श्री कमलदेव जी—२४ से २७ अक्तूबर सुहागपुर।

श्री ओमप्रकाश जी निर्द्वन्द—३१ से २ नवम्बर फरीदपुर (बरेली)

—सच्चिदानन्द शास्त्री
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

विज्ञान वार्ता

अन्तरिक्ष की खोज

(श्री डा० विक्रम साराभाई)

भारतीय परमाणु शक्ति आयोग के प्रधान डा० विक्रम साराभाई ने इस लेख में अन्तरिक्ष की खोज, उसके प्रयोजन और उसके तरीकों के बारे में बताया है। आशा है पाठक इस वैज्ञानिक विषय में उनके ज्ञान से लाभान्वित होंगे। —सम्पादक

अज्ञात को जानने की इच्छा, प्रकृति-प्रेम, साहसिक कार्यों का आकर्षण तथा धन और शक्ति की लालसा मनुष्य को धरती और सागर के रहस्यों को खोजने के लिए प्रेरित करती थी। धरती और सागर की खोज के बाद, अब मनुष्य आकाश की खोज पर निकल पड़ा है।

आकाश के चार क्षेत्र

आकाश को हम चार क्षेत्रों में बांट सकते हैं। आकाश के प्रथम क्षेत्र में हमारी धरती का वायुमण्डल शामिल है और यह क्षेत्र सौर मण्डल का एक छोटा सा भाग है। इस क्षेत्र में वह सब भाग शामिल हैं, जहाँ तक पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव है। चूंकि ऊपर वायुमण्डल का अधिकांश आवेशित परमाणुओं, अणुओं और इलेक्ट्रानों से, जो चुम्बकीय क्षेत्र से प्रभावित हैं, बना हुआ है, इसलिए आकाश के इस क्षेत्र में पदार्थ के अस्तित्व का साफ पता चलता है। आकाश के पहले क्षेत्र से आगे दूसरा क्षेत्र है, जो सौर मण्डल के ग्रहों के बीच के भाग में फैला हुआ है। यह क्षेत्र मुख्यत. सूर्य के बाहरी परिमण्डल (कोरोना) से निकलने वाली पतली और निरन्तर फैलने वाली गैस से भरा हुआ है। यह पतली हवा, जो इलेक्ट्रान और प्रोटीन आदि आवेशित कणों से बनी हुई है, 'प्लाज्मा' या 'सौर हवा' कहलाती है। पृथ्वी से लगा हुआ आकाश का पहला क्षेत्र इसी 'प्लाज्मा' या 'सौर हवा' से घिरा हुआ है। इस 'सौर हवा' के माध्यम से सूर्य के प्रभाव पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों तक पहुंचते हैं। बहुत कुछ इसी हवा के कारण पुच्छल तारों की पूंछ सदा सूर्य से विपरीत दिशा में रहती है। इसी प्रकार यह हवा पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र को पूछ की शक्ल का बना देती है।

सूर्य और पृथ्वी के बीच जितनी दूरी है, उससे लगभग ४०-५० गुना दूर सौर मण्डल से आगे हमारी आकाश गंगा में तारों के बीच जो आकाश का भाग है, वही आकाश का तीसरा क्षेत्र है। यहां भी तारों के बीच के भाग में पदार्थ के उदासीन और आवेशित कणों से बनी हुई पतली गैस है। ज्योतिर्विदों का कहना है कि हमारी आकाश गंगा से आगे भी आकाश है, जहाँ अनेक आकाश गंगायें और विचित्र पिंड हैं। यही आकाश का चौथा क्षेत्र है।

आकाश की टोह

बहुत से लोग समझते हैं कि दर्शन साहित्य या कला की भांति विज्ञान में कल्पना का कोई स्थान नहीं है। यह बात गलत है। वैज्ञानिक भी कल्पना करता है, किन्तु वह कल्पनाओं को प्रयोगों की कसौटी पर कसता है। यदि सिद्धान्त या कल्पना कसौटी पर खरी नहीं उतरती, तो वह उसे तुरन्त त्याग देता है। पृथ्वी पर रहकर मनुष्य आकाश के बारे में जानकारी वायुमण्डल और पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र को पारकर आये हुए विकिरण से प्राप्त कर सकता था। मनुष्य को विद्युत् - चुम्बकीय विकिरण के विशाल वर्णपट पर कुछ ही ऐसे झरोखे मालूम थे जिनसे झांककर वह आकाश के रहस्यों के बारे थोडी बहुत जानकारी पा सकता था। दूरबीन आदि यन्त्रों और रेडियो विकिरण से मनुष्य को सौर मण्डल और ब्रह्माण्ड के बारे में जानकारी मिली। इसके अलावा पृथ्वी पर ध्रुवों के पास इकट्ठे होने वाले कम शक्ति के आवेशित कणों से जो ध्रुवीय प्रकाश पैदा होता है, उससे इसी आकाश के बारे में कुछ जानकारी मिली। आकाश गंगा में पैदा होने वाली अधिक शक्तिशाली ब्रह्माण्ड किरणों के अध्ययन से भी कुछ सामग्री मिली। इन सब अध्ययनों से ब्रह्माण्ड विज्ञान, आकाश गंगाओं और नक्षत्रों की रचना तारों के बीच और ग्रहों के बीच के आकाश में पदार्थ तथा बल-क्षेत्रों, पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र की आकृति और हमारी पृथ्वी के वायु मण्डल में होने वाली घटनाओं के बारे में जटिल सिद्धांत निकाले गये। अन्तरिक्ष में फेंके जाने वाले राकेटों और पृथ्वी, चन्द्रमा या सूर्य की कक्षा में घूमने वाले कृत्रिम उपग्रहों की सहायता से हमें आकाश के रहस्यों को करीब से जानने में बहुत कुछ मदद मिली है। पिछले कुछ वर्षों में हुई खोजों से पहले के कितने ही सिद्धान्तों की पुष्टि हुई और कितने ही गलत साबित हुए।

आज भी वैज्ञानिकों के सामने ऐसी कितनी ही समस्यायें हैं, जिनके बारे में मनुष्य सदियों से सोचता आ रहा है। हम आज भी नक्षत्र, ग्रह, सौर मण्डल और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, जीवन पर सूर्य के प्रभाव आदि के बारे में नहीं जानते। अन्तरिक्ष की खोज इन्हीं सब बातों से सम्बन्धित है।

अन्य ग्रहों में जीवन

जैसे-जैसे शिल्प में प्रगति होगी, वैसे-वैसे अन्तरिक्ष की खोज में भी आसानी होती जाएगी। तब चन्द्रमा से आकाश के प्रथम क्षेत्र के बारे में और ग्रहों से दूसरे क्षेत्र के बारे में अध्ययन किये जा सकेंगे। 'सौर हवा' और इसके साथ आने वाले कणों और बल क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त करना अन्तरिक्ष अनुसन्धान का मुख्य लक्ष्य है। ग्रहों के अध्ययन में भू-भौतिकी विदों और जीव शास्त्रियों दोनों की दिलचस्पी है। पृथ्वी का भीतरी भाग पिघला हुआ है और इसमें चुम्बकीय क्षेत्र है, इसके भीतर तथा बाहर वायुमण्डल में अनेक रासायनिक तत्व और यौगिक हैं। सम्भवतः पृथ्वी पर जीवन इन सब बातों और पृथ्वी के पिंड (मास) तथा पृथ्वी का तापमान नियंत्रित करने वाले सूर्य से इसकी दूरी आदि से सम्बन्धित है। किन्तु जीवन की सबसे अद्भुत बात यह है कि इसका मूल रचक तत्व, घास के तिनके से लेकर मनुष्य तक सभी प्राणियों में एक ही है। यानी डी० एन० ए०। इस प्रकार के जीवन का अस्तित्व कुछ विशेष परिस्थितियों में ही हो सकता है हम यह जानना चाहेंगे कि क्या अन्य ग्रहों पर भी ऐसी परिस्थितियां हैं, जिन में डी० एन० ए० अणु पर आधारित जीवन का अस्तित्व सम्भव है। या जीवन के ऐसे अन्य रूप सम्भव हैं, जो कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सीजन और नाइट्रोजन पर निर्भर नहीं है बल्कि लोहा आदि अन्य तत्वों पर आधारित हैं।

उल्लेखनीय है कि मंगल ग्रह में लोहा आदि तत्वों की उपस्थिति के संकेत मिलते हैं। इस समय हमारे सिद्धान्त केवल अनुमानों पर आधारित हैं, लेकिन वैज्ञानिक तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक वे इनकी निरीक्षणों द्वारा पुष्टि नहीं कर लेंगे। यह भी हो सकता है कि हमारे सौर मण्डल के किसी अन्य ग्रह में जीवन का अस्तित्व सम्भव न हो। लेकिन ब्रह्माण्ड में हमारे सूर्य जैसे अनेक तारे हैं, जिनके हमारे सौर मण्डल की तरह अपने ग्रह मण्डल हो सकते हैं। इस समय ऐसी अनेक बातें हैं, जिनसे इस धारणा की पुष्टि होती है कि केवल पृथ्वी पर ही जीवन है। अगर यह धारणा कभी गलत सिद्ध हुई तो जीवन और प्रकृति के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण में जबरदस्त परिवर्तन आएगा।

मनुष्य क्यों दूसरे ग्रहों में जाना चाहता है ?

इस समय दुनिया में इस बात की बड़ी चर्चा है कि क्या मनुष्य को अन्य बड़ी समस्याओं के मुकाबले में अन्तरिक्ष की खोज ज्यादा करनी है ? जब मनुष्य के पास टेलीविजन कैमरा आदि ऐसे यन्त्र हैं, जिन्हें अन्तरिक्ष यान में आकाश में भेजा जा सकता है और लाखों मील की दूरी से जानकारी इकट्ठी की जा सकती है, तो वह चन्द्रमा पर क्यों जाना चाहता है। यह सिर्फ इसलिए है कि विज्ञान और शिल्प में आश्चर्यजनक प्रगति के बावजूद भी मनुष्य जैसा कोई यन्त्र बनाना सम्भव नहीं हुआ है। मनुष्य एक साथ देख सकता है, अनुभव कर सकता है और सुन सकता है, किन्तु अभी तक ऐसा कोई यन्त्र नहीं बना है, जो एक साथ यह सब कर सके। हमारे संगणक (कम्प्यूटर) आदि वर्तमान यन्त्र एक के बाद एक कई काम कर सकते हैं, किन्तु एक साथ नहीं कर सकते। मनुष्य की इच्छा है कि वह खुद ही अन्तरिक्ष के रहस्यों को देखे और समझे। यह बात भी है कि मनुष्य में खतरा उठाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है और उसमें साहसिक कार्यों के प्रति हमेशा अदम्य आकर्षण रहा है।

हमारे देश में खोज कार्य

हमारे देश में भी अन्तरिक्ष की खोज का काम चल रहा है, किन्तु हमारे लक्ष्य बहुत ऊँचे नहीं हैं न तो हम मनुष्य को चन्द्रमा पर भेजने के इच्छुक हैं, न पृथ्वी की कक्षा में किसी अन्य प्राणी को भेजना चाहते हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य वायुमण्डल में ४० किलोमीटर से लगभग १०० किलोमीटर ऊँचाई तक के क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त करना है, जहाँ न तो गुब्बारे पहुंच सकते हैं और न ही वायुमण्डल के खिंचाव के कारण कृत्रिम उपग्रह काम कर सकते हैं। वायुमण्डल के इस अंश का अध्ययन इसलिये जरूरी है कि यहां से सौरमंडल के उन प्रभावों का पता चल सकता है। जिनसे नीचे के वायुमण्डल में होनेवाले मौसम के परिवर्तनों के बारे में जानकारी मिलती है। वैज्ञानिकों ने पृथ्वी से सम्बद्ध आकाश यानी आकाश के प्रथम अंश के अध्ययन के लिये एक नया शब्द "एरोनामी" निकाला है। यह अध्ययन बहुत उपयोगी है, विशेषकर हमारे देश के लिए, जहाँ खेती बाड़ी बहुत कुछ वर्षा पर आधारित है।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

सन्तान प्रशिक्षण

बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ।

—ऋ० २।४३।३

हम उत्तम सन्तान से युक्त और अध्ययन अध्यापन आदि में मुवक्ता हों।

★

प्रत्येक पिता की यह हार्दिक इच्छा होती है कि उसकी सन्तान सभ्यता, सुशिक्षा, सफलता, धन मान और श्रेष्ठता में उससे भी बढ़ चढ़ कर हो। प्रत्येक गुरु भी अपनी सन्तान अर्थात् शिष्य मण्डली को अपने से अधिक निपुण, विद्वान् कुशल, प्रसिद्ध, सुवक्ता, यशस्वी एवं विशेषज्ञ बनाकर प्रसन्न होता है। सभी अभिभावकों और गुरुजनों को अपनी अपनी सन्तान की सफलता से प्रसन्नता और विफलता से खिन्नता भी होती ही है। जिस प्रकार सभी माता पिता और गुरुजन अपनी-अपनी सन्तान को सुयोग्य बनाने का यत्न करते हैं, उसी प्रकार सन्तान का भी यह कर्तव्य है कि प्रयत्नपूर्वक सभी विद्यादि शुभ गुणों को ग्रहण करे। दक्षता कार्यकुशलता सफलता और सुरुचि सम्पादन द्वारा अपने अभिभावक और गुरु वर्गों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करती रहे

वास्तविक कारण कुछ भी हो, साधारणतया तो लोक में यही देखा जाता है कि सन्तान की अयोग्यता के कारण माता पिता, और गुरुजनों को भी लज्जित होना पड़ता है। अभिभावकों और गुरुजनों को ही सन्तान की अयोग्यता के लिए उत्तरदायी भी ठहराया जाता है। सन्तान की योग्यता या अयोग्यता को देखकर ही माता, पिता और गुरुजनों की योग्यता तथा अयोग्यता का पता भी चल जाता है। एक कहावत है कि आक के आम पैदा हो जाते हैं, और आम के आक पैदा हो जाते हैं। वानस्पतिक जगत में तो ऐसा होना असम्भव ही है। परन्तु लाक्षणिक रूप में एसा तब चरितार्थ होता है, जब सुयोग्य माता पिता और गुरुजनों की सन्तान अयोग्य सिद्ध हो जाती है। एवमेव जब अयोग्य माता पिता आदि की सन्तान सुयोग्य निकल जाती है।

जब माता, पिता और गुरुजन उत्तम गुणों से सम्पन्न होते हैं, तभी सन्तान और शिष्य भी उत्तम, सभ्य और सुशिक्षित होते हैं। सन्तान तो स्वभाव से ही अनुकरण प्रिय होती है। जो कुछ माता पिता तथा गुरुजनों को करते हुए देखते हैं, वे उसी का अनुकरण करने लगते हैं। अतः माता पिता आदि को अपने आचरण का कोई भी बुरा उदाहरण सन्तान के सामने नहीं रखना चाहिये। न ही बोल चाल में किसी प्रकार का प्रमाद, अपभाषण या मिथ्या कथन करना चाहिये। चोरी, मक्कारी गाली आदि का व्यवहार देखकर तो सन्तान भी इन दुर्गुणों में फंस जाती है। जब एक बार सन्तान का आचरण बिगड़ जाता है, तब उसका सुधरना कठिन होता है।

शुद्ध आदि कार्यों में पहिले बड़ों को ही आगे बढ़कर अपने उत्तम आचरण के द्वारा अपने उत्तम आचरण का उदाहरण सन्तान और शिष्य आदि युवक वर्गों के सामने प्रस्तुत करना चाहिये। "पर उपदेश पाण्डित्यम्" की नीति तो दोषपूर्ण है। शुद्ध आचरण का प्रभाव तो आदेश और उपदेश से भी बढ़कर होता है। माता, पिता, अध्यापक, उपदेशक और प्रशासक सभी को यह तथ्य भली प्रकार समझ लेना चाहिये और इसके अनुसार व्यवहार करना चाहिये।

अध्ययन से तो मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि होती ही है, अध्यापन के द्वारा वह वृद्धि और भी अधिक होती है। अध्यापन कर्म से अध्यापकों के ज्ञान का परिमार्जन और परिपाक बहुत उत्तम रूप में होता रहता है। समाज में उत्तम नागरिकों की वृद्धि भी अध्ययन और अध्यापन के द्वारा ही सम्भव है। अध्यापकों को समाज के प्रति और समाज को अध्यापकों के प्रति अपने-अपने कर्तव्यों का पालन भली प्रकार करना चाहिये। यह कार्य बहुत आवश्यक है।

—साधु सोमतीर्थ

यज्ञ

[लेखिका—श्री आनन्दीदेवी जी बिश्नोई, मन्त्रिणी स्त्री आ० स० काठ]

ओ३म् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय। आयु प्राण प्रजां कीर्तिं यजमान च वर्धय। अ० १९-६३ १।

भावार्थ—हे ज्ञान के स्वामिन्। उठ यज्ञ के द्वारा देवों को जगा।

आयु और प्राण को सन्तान और पशुओं को यश और यजमान को बढ़ा।

हमारे आर्यावर्त में यज्ञों का बड़ा महत्व था। अब भी है। प्राचीन युग में राजा लोग बड़े बड़े अश्वमेधादि यज्ञ किया करते थे। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के समय में यज्ञों का विशेष महत्व था। महाभारत तक यह प्रचार रहा। फिर शनै शनै कम हो गया।

राम युग में राजा लोग धर्म गोष्ठी कराया करते थे। जिसमें सर्वसाधारण जनता में धर्म की भावना जागृत रहती वह अपने २ कर्म व धर्म पर चलते थे। एक बार राजा जनक के यहाँ धर्म चर्चा हो रही थी। महर्षि याज्ञवल्क्य जी आ गये। राजा जनक स्वयं वेदों के ज्ञाता थे। धर्म में लीन रहने से उन्हें विदेह कहा जाता है। उन्होंने महर्षि से प्रश्न किया महाराज यज्ञ क्या है। ऋषि ने उत्तर दिया राजन् श्रेष्ठ कर्म ही यज्ञ है वैसे पंच यज्ञों का वेद में विधान है। ब्रह्म यज्ञ का ही यज्ञ कहा जाता है। कारण इस यज्ञ में परोपकार की भावना है दूसरे यज्ञ का लाभ व फल कर्त्ता को ही प्राप्त होता है परन्तु ब्रह्मयज्ञ का लाभ सब को पहुंचता है इससे यही यज्ञ नाम से विख्यात है। राजा जनक ने पुनः पूछा—भगवन् अगर यज्ञ के साधन घृतादि न हों तो यज्ञ कैसे करें। सामग्री आदि से। वह भी न हो तो जल से करें यदि जल भी न हो तो वायु से करें। अगर वाणी भी मूक हो जाय तो मन से करो। करो अवश्य। यह ऋषि आदेश है। स्वामी दयानन्द जी ने यज्ञों का पुनः प्रचार किया। उनकी पंच महायज्ञ विधि में पाँचों यज्ञों को विस्तार से लिखा है। देवयज्ञ ब्रह्मयज्ञ बलिवैश्वदेव पितृयज्ञ अतिथि यज्ञ।

देवयज्ञ—सन्ध्या उपासना जप आदि कर्म करना प्राणायाम करना।

ब्रह्मयज्ञ—अग्निहोत्र करना अग्नि को यज्ञ में अतिथि का रूप दिया जाता है नमक से बने पदार्थ छोड़कर पाक शाला में बने सब पदार्थों की आहुति देना चाहिये। गृहस्थी का धर्म है।

पितृयज्ञ—यह जीवित माता पिता पर पिता की सेवा करना। उन्हें अन्न धन वह जल व वस्त्र श्रद्धापूर्वक अर्पण करना। यही श्राद्ध व तर्पण है। बलिवैश्वदेव यज्ञ—पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि, जातवेदः पुनीहि मा स्वाहा।

भावार्थ—हे परमेश्वर आप सब प्रकार से मुझे पवित्र कीजिये। जो उपासक आपकी आज्ञा पालते हैं। अथवा जो विद्वान् ज्ञानी पुरुष कहाते हैं वे मुझको विद्या दान दें। आपके दिये विशेष ज्ञान व ध्यान से हमारी बुद्धि पवित्र हो। आपकी कृपा से सब संसारी पुनन्तु विश्वा भूतानि पवित्र होकर आनन्द से रहें?

अतिथि—जो मनुष्य पूर्ण विद्वान् परोपकारी, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा सत्यवादी, छल कपट रहित व नित्य भ्रमण करके सत्य वेद विद्या का प्रचार करने वाला हो वह संन्यासी सेवा के योग्य है। यह पंचयज्ञ करने की विधि स्वामी जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में बतलाई है। इन पंच महायज्ञों के अन्तर्गत सब आ गया है। गीता में योगीराज कृष्ण ने यज्ञ को सरल विस्तार से बतलाया है। महात्मा गांधी ने अनासक्ति योग में यज्ञ शब्द का अर्थ कर्म ही किया है। भगवान बुद्ध ने भी श्रेष्ठ कर्मों को ही यज्ञ लिखा है। गीता में यज्ञ को सेवा परोपकार व त्याग कहा है। भगवान कृष्ण ने निम्न श्लोक में स्पष्ट किया है।

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः।

कोई द्रव्य यज्ञ, कोई तपरूप कोई योग रूप, कोई स्वाध्याय रूप, कोई ज्ञान रूप कोई कर्मानुष्ठानरूप यज्ञ करते हैं। जो हवन किया जाता है उसे द्रव्य यज्ञ कहते हैं। होम भी एक उपकार है। जो सुगन्धित तथा पौष्टिक पदार्थ हम यज्ञ में प्रयोग में लाते हैं उन्हें अग्नि द्वारा सूक्ष्म कर उसका लाभ अपने पड़ोसियों

(शेष पृष्ठ १२ पर)

महर्षि दयानन्द का राष्ट्रीय एकता में योगदान

(ले०—श्री आचार्य रामवीर शर्मा एम०ए०, साहित्यरत्न घनश्यामपुरी अलीगढ़)

महर्षि दयानन्द सरस्वती देश के समुन्नायक, युग प्रवर्तक, हिन्दी भाषा के प्रचारक और वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक थे। उनका सारा जीवन देश की एकता अखण्डता और समुन्नति में व्यतीत हुआ। वे सदा यही सोचते रहते थे कि इस परतन्त्र भारत को किस प्रकार स्वतन्त्र बनाया जाय। वे समझते थे इतने बड़े साम्राज्य से सामना करना कोई मामूली बात नहीं है। इसलिए उन्होंने जन मानस को टटोला और उसमें अनुपम प्रेरणा भरा। वही प्रेरणा आगे चलकर स्वराज्य प्राप्त करने में सहायक हुई।

अनेक मत मतान्तर जातीय [illegible] तथा साम्प्रदायिक [illegible] मुसलमान [illegible] सम्प्रदाय भारत में [illegible] [illegible]

[illegible] यवन और [illegible] दायों की मलीनता [illegible] इयों को दूर करने का प्रयत्न किया। वे जहाँ जाते थे वहाँ स [illegible] का सबका उपदेश देते थे [illegible] गुणों का [illegible] आदर करते थे तथा देश की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिये वे पारस्परिक विद्वेष और असंगठन को दूर भगाने में लगे रहते थे।

महर्षि के जीवन चरित्र का जब हम अध्ययन करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि वे कितने निर्भीक स्पष्ट वक्ता और ईश्वर विश्वासी थे। कर्णवास में जब वह प्रचार कर रहे थे तो उनके विरोधी उन्हें मारने के लिये उतारू हो गये। जब ऋषि के भक्तों ने इनको दूसरे स्थान पर जाने की सलाह दी तब ऋषि ने कहा—कि संसार का रक्षक परमपिता सदैव मेरे पास रहता है वह मेरी अवश्य रक्षा करेगा मारने को आए हुए राजा कर्णसिंह की तलवार के टूक टूक कर दिए।

ऋषि देश को सर्वोपरि महत्व देते थे पर उन्होंने तात्कालिक परिस्थिति के अनुसार वह मार्ग अपनाया जो अपने [illegible] का निराशा था। जिससे सभी विधर्मी घबड़ा कर भाग जाते थे और कोई उनके पास नहीं फटकता था। ऋषि की वाणी में ओज [illegible] प्रभावोत्पादिकता थी जिससे कोई व्यक्ति बिना प्रभावित हुये न रहता था। [illegible]

[illegible] वातावरण [illegible] स्थापना करने के [illegible] जो भाषा [illegible] आर्य भाषा के नाम से पुकारते थे [illegible] हिन्दी के नाम से सारे देश में व्यवहृत होती है। इसी हिन्दी को वे देश प्रेम की भावना को भरने वाली व संकीर्णता को दूर करने वाली समझते थे। इसी कारण उन्होंने अपना समस्त प्रचार कार्य हिन्दी भाषा में ही किया। साथ ही अपने ग्रन्थों की रचना भी आपने हिन्दी भाषा में ही की। वे भविष्य द्रष्टा थे उन्होंने अपनी सूक्ष्म दर्शिनी बुद्धि से जान लिया था कि आगे हिन्दी ही स्वतन्त्र भारत के राष्ट्र भाषा के पद पर प्रतिष्ठित होगी। इसलिये वे हिन्दी भाषा की प्रगति में ही लगे रहे। देश में एकता की अभिवृद्धि के लिये जो दूसरा कार्य किया वह था एक अभिवादन। हमारे देश में अनेक अभिवादन के प्रकार प्रचलित थे। जिनसे पारस्परिक भेदभाव व संकीर्णता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती थी। कोई जयशिव कोई सीताराम कोई राधेश्याम', कोई राम राम, कोई जय जिनेन्द्र आदि कहकर अभिवादन करते थे इसलिये महर्षि ने वेदशास्त्रों में प्रचलित [illegible] अभिवादन पद्धति प्रचलन की और केवल नमस्ते को ही राष्ट्रीय अभिवादन [illegible] किया। आज आप समस्त भारत में [illegible]

[illegible] बहु [illegible] ननेया

इस प्रकार महर्षि ने [illegible] स्वरूप निराकार एकत्व परमेश्वर को ही बता दी। साथ ही ईश्वर प्राप्ति के साधन भी भिन्न भिन्न थे। कारण भिन्न भिन्न उपासना पद्धतियाँ प्रचलित थीं। अतः आपने देश में एकता की स्थापना करने व भारतीय जनता में प्रेम व समता लाने के लिये एक उपासना पद्धति प्रचलित की। सन्ध्या और हवन की एक पद्धति निश्चित की जो समस्त देशवासियों के लिये ही नहीं अपितु समस्त संसार के लिये एक है और 'संस्कार विधि' रचकर संस्कारों के विषय में एकरूपता स्थापित की।

यहीं तक नहीं ऋषि ने राजनीतिक एकता स्थापित करने के लिए रियासतों को एक सूत्र में बाँधने का भी प्रयत्न किया। जब दिल्ली में दरबार लगा तो आप जोधपुर जयपुर, बूंदी आदि के नरेशों से मिले और उनसे देश को स्वतन्त्र कराने के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया और उन्हें सद्मार्ग पर चलने का भी उपदेश दिया। कई नरेशों ने उन्हें अपना गुरु मान लिया। ऋषि दयानन्द के अथक प्रयत्न करने पर भी उस समय उनकी योजना पूर्ण नहीं हुई पर वही योजना स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सरदार पटेल ने सफल कर दिखाई।

ऋषि ने देश की स्वतन्त्रता एकता व अखण्डता की रक्षा के लिए अपने को महत्व न दिया जिन पर चलकर मानव जीवन सफल बनाया जा सकता है। अपनी योजना को पूर्ण करने के लिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना का [illegible] समुन्नत बनाने [illegible] हैं। [illegible] ऋषि के [illegible] सकते [illegible] २८७४० [illegible] हित को [illegible] है। जब इस [illegible] रक्षा की जायगी [illegible] हो तो सब ही [illegible] होकर कृषि द्वारा अधिक अन्न उत्पन्न कर देश को समृद्ध बनाने में सफल होंगे। इस कार्य के लिए ऋषि ने दो लाख आदमियों के हस्ताक्षर कराए और उनको तत्कालीन गवर्नर जनरल के सम्मुख प्रस्तुत किया।

महर्षि दयानन्द बड़े दूरदर्शी थे। वे राष्ट्र के कल्याण के व स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए मानव मात्र को समान समझते थे। समाज की सुव्यवस्था के लिए सभी का समान सहयोग आवश्यक मानते थे। अस्पृश्यता समाज व देश पर कलंक है उनकी समुन्नति के लिए सभी वर्गों से प्रेम व सहयोग अपेक्षित है—यह उनकी ध्रुव धारणा थी। स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम के आधार पर अध्ययन के जो द्वार अछूतों के लिए बन्द थे उन्हें खोल दिया। गुरुकुलों की स्थापना करके उन्हें भी वेदों का पण्डित बना दिया और

(शेष पृष्ठ १२ पर)

विदेशी षड्यन्त्रों से धर्म व संस्कृति को भयंकर खतरा

धर्म व संस्कृति को समाप्त कर विदेशी धर्म व संस्कृति की स्थापनार्थ भारत में अनेको विदेशी षडयन्त्र चल रहे हैं और उन्हें रूस, चीन, पाकिस्तान अमरीका आदि विदेशो से करोडो रुपया प्रतिमास आ रहा है। परिणामस्वरूप आज तक करोडो हिन्दू इन षडयन्त्रों के के शिकार बन चुके हैं और यदि शीघ्र इन कुचक्रो को समाप्त न किया गया तो भय है कि भारतीय संस्कृति का मूलोच्छेदन करने में कम्युनिज्म इस्लाम और ईसाइयत का विदेशी प्रयत्न कहीं सफल न हो जाय।

विदेशी ईसाई षड्यन्त्र

ऐसे खतरे मे विदेशी ईसाई षड्यन्त्र प्रमुख है जो सीधे आर्य धर्म व संस्कृति को समाप्त करने का शिव तोड प्रयत्न कर रहा है। अपार विदेशी धनराशि के बल पर हजारों मिशनरी भारत के वनवासियों व दलित वर्गों में अपने स्कूल व अस्पतालों के द्वारा निर्धनता, अशिक्षा व भोलेपन का अनुचित लाभ उठाकर उनका धर्म व संस्कृति छीन रहे हैं और धर्म परिवर्तन के साथ विशेष रूप से उन्हें देश-द्रोह का पाठ पढ़ा रहे हैं। नागा-मिजो विद्रोह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। वास्तव में विदेशी मिशन धर्म की आड में अपने राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति कर रहे हैं। उनका विश्वास है कि भारत को कम्युनिज्म से बचाने के लिए इसको ईसाई स्थान बनाना आवश्यक है। धर्म के नाम पर जब से पाकिस्तान बना है तब से इस विचारधारा व षड्यन्त्र को बड़ा बल व प्रेरणा मिली है।

देश की स्वतन्त्रता एवं आर्य हिन्दू संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने के लिए पादरियों, पाकिस्तानियों तथा कम्युनिस्टों की गति-विधियां

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

देशवासियों से मार्मिक अपील

अवमूल्यन से शक्ति मिली

विदेशी ईसाई मिशनरियो को बाहर से लगभग दो करोड़ रुपया प्रतिमास भिन्न-भिन्न रूपों मे अब तक प्राप्त होता रहा है। परन्तु अब भारतीय मुद्रा के अवमूल्यन होने से यही धनराशि स्वत ५७ प्रतिशत बढ़ गई है। अर्थात वही दो करोड़ की धनराशि तीन करोड बन गई है। धनराशि के बढ जाने से विदेशी मिशनो की दूनी वृद्धि हो जाना स्वाभाविक है। उनकी वर्तमान गति के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दस वर्ष के भीतर वनवासी जातियो मे हिन्दू नाम का कोई व्यक्ति नहीं रह जायगा।

आर्यसमाज द्वारा विरोध

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने जिस आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म व संस्कृति की स्थापना, प्रसार व रक्षा के लिए की थी वह भला विदेशी मिशनरियो द्वारा वैदिक धर्म व रक्षा के ह्रास को कैसे सहन कर सकता था? संसार भर के आर्यसमाजों की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस भावी खतरे को ध्यान में रखते हुए इस कार्य को स्वय अपने हाथ में लेना उचित समझा और विदेशी मिशनरियो की अराष्ट्रीय गति-विधियो का सामना करने के लिये अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति की स्थापना कर भिन्न-भिन्न प्रान्तो के वन एव पर्वतीय क्षेत्रों में अपने प्रचार केन्द्रों की स्थापना का कार्य प्रारम्भ कर दिया। सभा के अन्तर्गत जो केन्द्र स्थापित हो चुके हैं उनका विवरण इस प्रकार है—

केन्द्र	प्रान्त
१—पानपोष	उड़ीसा
२—बिलोनिया	त्रिपुरा राज्य
३—उज्जैन	मध्य प्रदेश
४—बांसवाडा	राजस्थान
५—हजारी बाग	बिहार
६—मद्रास	मद्रास
७—गोहाटी	आसाम
८—अलीगढ	उत्तर प्रदेश
९—मथुरा	उत्तर प्रदेश
१०—बुलन्दशहर	उत्तर प्रदेश
११—चेंगनूर	केरल

इन प्रमुख प्रचार केन्द्रों के अन्तर्गत अनेको उपकेन्द्र, छात्रावास, स्कूल आदि चल रहे हैं और अब तक एक लाख से ऊपर मुख्यत पिछड़े वनवासी बन्धुओं का पुन आर्य धर्म मे प्रवेश कराया जा चुका है। इन केन्द्रों पर सार्वदेशिक सभा भारी धन र शि व्यय कर रही है।

आसाम केरल की अवस्था गम्भीर

यों तो समस्त भारत मे ही अवस्था दयनीय है पर तु आसाम और केरल की अवस्था वास्तव मे भयावह है। दोनो ही प्रान्तो मे रूस चीन और अमरीका के एजेण्ट सक्रिय हैं और वहा की अधिकांश जनता इनके चंगुल मे फस चुकी है। अत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इन दोनों ही प्रान्तो मे विशेष रूप से प्रचार करने की योजना बनाई है। इस योजनानुसार हमें प्रमुख प्रमुख स्थानों पर सेवा आश्रमों, छात्रावासों, स्कूलो और औषधालयो की स्थापना करनी होगी और साथ ही वहा के ग्रामीण स्थानीय प्रचारको को विशेष प्रशिक्षण देकर प्रचार के लिये तैयार करना होगा।

आनुमानिक व्यय

प्रारम्भ मे सभा ने दोनो प्रान्तों में पांच पांच अर्थात् दस केन्द्रों की स्थापना करने का निश्चय किया है प्रत्येक केन्द्र पर २५०० रु० प्रतिमास व्यय होने का अनुमान है। इस प्रकार दस केन्द्रों पर २५,००० रुपया (पच्चीस हजार रुपया) प्रतिमास अर्थात् वर्ष में ३,००,००० रुपया (तीन लाख रुपया)

[शेष पृष्ठ ८ पर]

खंड काव्य—

शिवरात्रि

(गतांक से आगे)

(१२१)

ओ ऋषि सन्तान जागो
आज फिर से, आर्य हो तुम,
ऋद्धि हो पातञ्जलि के
विश्व के औदार्य हो तुम।

(१२२)

कृष्ण का जब बोध आये
आत्मा शाश्वत अमर हो,
क्षीण अस्त्रों के सहारे—
चल रहा जीवन समर हो।

(१२३)

महातम छाया हुआ था
कमलिनी भी सो रही थी,
झर रही थी ओस नभ से
जुही पागल हो रही थी।

(१२४)

गीत मीठे गा रही थी—
सरणि की कोमल लहरियां,
अंक में सोयी हुई थी—
मंद मधो सुकुमार कलिया।

(१२५)

झांकती थीं व्योम से—
खद्योत सी कुछ तारिकायें,
सरणि तट पर जल रही थी
चटचटा कर कुछ चितायें।

(१२६)

हिल गया विश्वास ही जब
गिरी कर से फूल माला
क्योंकि अब तो चल रही थी
मूष की विकराल ज्वाला।

(१२७)

तब पिता ने कहा चुपके
एक प्रहरी को जगाकर
इस प्रमादी को हटाओ—
देव गृह से शीघ्र सत्वर।

(१२८)

ध्रुव सदृश वह वीर बालक
बात का दृढ था धनी था
तप्त था शकर सदृश वह
भीष्म सा धीरव्रती था।

(१२९)

गरज कर बोला कि जब तक
शक्ति होगी प्राण होगा,
ढूंढ लगा खोज लूंगा
यदि कहीं भगवान होगा।

॥ समाप्त ॥

—मायाशरण आर्य
ग्राम परिवापुर, पो० रसूलपुर स्टेट, जि०आजमगढ़

कुछ पुरानी स्मृतियां—

महा.नारायणस्वामी जी

[ले०—श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी, 'मेरठ']

जून १९२१ ई० की बात है कि लाहौर में अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से परिषद् का द्वादश वर्षीय सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने की थी। सम्मेलन ७, ८, ९ व १० जून को हुआ परन्तु मैं ६ जून को ही वहां पहुंच गया था।

मेरे वहां जाने का मुख्य आकर्षण तो यही था कि सम्मेलन में भाग लूं। इससे पहिले एकादश सम्मेलन का मैं स्वागत मन्त्री था। वह सम्मेलन १९२१ ई० में मेरठ में हुआ था। उस सम्मेलन की अध्यक्षता देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी ने की थी जो उन्हीं दिनों कालापानी से छूटकर भारत लौटे थे। मेरठ में सम्मेलन होने के पश्चात् लाहौर सम्मेलन में भाग लेना मैंने आवश्यक समझा। इसके अतिरिक्त मेरे मन में देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी से भेंट करने की भी इच्छा थी। वे जब मेरठ आए थे, तब मेरे यहां आए थे। उन्होंने मुझे आदेश दिया था कि मैं लाहौर आऊं। इन कारणों के अतिरिक्त लाहौर घूमने की भी इच्छा थी।

मैं लाहौर पहुंचा। अपने परिचित साथियों के साथ मैंने लाहौर की सैर की। मैं भाई परमानन्द जी के निवास स्थान पर भी गया। मैंने उस समय के अनेक आर्य विद्वानों के भी दर्शन किए।

पूज्य नारायण स्वामी जी ७ जून को लाहौर पधारे। पं० ठाकुरदत्त जी वैद्य का नाम उन दिनों बड़ा विख्यात था। अमृतधारा औषधि ने उनके नाम की बड़ी प्रसिद्धि की हुई थी। उन्होंने ७ जून को सायं ६ बजे अपने अमृतधारा भवन में समस्त प्रतिनिधियों, विशिष्ट व्यक्तियों एवं श्री नारायण स्वामी जी महाराज को जलपान के लिए आमन्त्रित किया। मुझे स्मरण है कि स्वामी जी ने मुझे देखकर पूछा था—विश्वम्भर जी प्रसन्न हो। वे मुझे उन दिनों विश्वम्भर नाम से पुकारते थे। इससे पहले मैं चार-पांच बार उनसे भेंट कर चुका था। गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव पर मैंने उनसे तब भेंट की थी जब उन्होंने सन्यास भी ग्रहण न किया था और वे महात्मा नारायण प्रसाद के नाम से विख्यात थे।

स्वामी जी के साथ जलपान करने की प्रसन्नता का वर्णन करना कठिन है। पं० ठाकुरदत्त जी ने भी उस समय स्वामी जी के पधारने पर बड़ी प्रसन्नता प्रगट की थी।

जलपान के पश्चात् वहां से हम सब अनारकली आ०स० मंदिर गए वहां से एक विशाल नगरकीर्तन निकाला गया जिसमें पू० नारायणस्वामी जी, भाई परमानन्द जी एवं लाहौर के अन्य सभी नेता सम्मिलित थे।

पंजाब की आर्यसमाजों के जलूस उत्तर प्रदेश की आर्यसमाजों के जलूसों की अपेक्षा अधिक धूमधाम से निकलते थे। इनमें चिमटा भजन मंडलियां भी होती थीं। आर्य कुमार सभाओं के प्रतिनिधियों में सबसे महत्वपूर्ण भजन मंडली दिल्ली के आर्य कुमारों की थी।

जलूस सायं ७ बजे प्रारम्भ हुआ था और लाहौर के मुख्य-मुख्य मुहल्लों और बाजारों में घूमने में उसे ४ घन्टे लग गये। इस तरह वह जलूस रात्रि के ११ बजे समाप्त हुआ। स्वामी जी पूरे समय जलूस के साथ रहे।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष प्रो० शिवदयाल जी एम०ए० वाइस प्रिंसिपल गवर्नमेंन्ट कालेज लाहौर थे। उन्होंने अपने भाषण में जहां सब का स्वागत किया वहां पूज्य नारायण स्वामी जी के आगमन को पंजाब के लिए गौरव की बात बताया।

सम्मेलन में पंजाब के प्रमुख राजनैतिक नेता डा० सत्यपाल जी ने भी भाग लिया था। उन्होंने अपने भाषण में आर्यसमाज को देश की एक जीवित संस्था बताया था और कहा था कि आर्यसमाज ने धार्मिक और राजनीतिक दोनों ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

स्वागत भाषण समाप्त होने पर प्रो० रामदेव जी ने महात्मा नारायण स्वामी जी के नाम का सभापति पद के लिए प्रस्ताव किया। रायसाहब रोशनलाल जी ने इसका अनुमोदन किया। कुछ प्रतिनिधियों ने भी अनुमोदन किया जिस समय महात्मा नारायण स्वामी जी ने सभापति पद ग्रहण किया तब भाई परमानन्द जी ने उनके गले में पुष्पमाला पहनायी। स्वामीजी ने उनको अपने समीप ही बिठाया। इसका एक कारण यह भी था कि भाई जी इससे पहले के सम्मेलन के सभापति थे।

मुझे खेद है कि महात्मा नारायण स्वामी जी के भाषण की प्रति मुझे न मिल पाई। मैं उसके प्राप्त करने का यत्न कर रहा हूं। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर विशेष जोर दिया था कि आर्यसमाजों की सभासद संख्या बढ़ाने लिए यह आवश्यक है कि युवक आर्य कुमार सभाओं में भाग लें। आर्य सभासदों से उन्होंने विशेष अपील की थी कि वे अपनी संतान को आर्यसमाज के अधिवेशनों में साथ लाएं और उन्हें आर्य कुमार सभाओं में भाग लेने को प्रोत्साहित करें।

स्वामी जी की अध्यक्षता में अनेक प्रस्ताव पारित किए गए। स्वामी जी ने आर्य कुमारों को जीवन में सफलता प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया। ★

देशवासियों से मार्मिक अपील

(पृष्ठ ७ का शेष)

व्यय होगा। यह सभा एक लाख रुपया प्रति वर्ष अन्य प्रान्तों में इसी कार्य पर व्यय कर रही है।

वार्षिक व्यय के अतिरिक्त सभा का आश्रमों, छात्रावासों, यातायात आदि पर भी व्यय होगा। हमें योजना के अनुसार प्रथम वर्ष के लिए कुल २ लाख रुपये की आवश्यकता है।

अपील

आर्य हिन्दू संस्कृति में विश्वास रखने वाले प्रत्येक आर्य (हिन्दू) का कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने धर्म व संस्कृति के प्रहरी आर्यसमाज की इस पुनीत कार्य में सहायता करे। विदेशी ईसाई मिशनरियों के जाल को तोड़ने के लिये लाखों की संख्या में बिछुड़े बन्धुओं को पुनः आर्य [हिन्दू] धर्म में दीक्षित कर इस भावी संकट का मुकाबला किया जा सकता है। आर्यसमाज का सर्वोच्च संगठन इस महान् कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिये कृतसंकल्प है।

अमरीका, इंगलैण्ड, रूस, चीन और पाकिस्तान आज करोड़ों रुपया खर्च करके भारत के मान-चित्र को बदलने के लिए प्रयत्नशील हैं और उनके इस कुचक्र का सामना करने में हमारी राष्ट्रीय सरकार अपने सेक्युलरिज्म [धर्मनिरपेक्षता] के कारण सर्वथा अयोग्य और निष्क्रिय तथा किंकर्तव्यविमूढ़ बनकर देश की तबाही का तमाशा देख रही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस भयानक संक्रान्ति बेला में दर्शक बन कर चुपचाप इस महाविनाश लीला को नहीं देख सकती। अतः देश के धर्मावलम्बी तथा आर्य हिन्दू संस्कृति तथा भारतीय संस्कृति में विश्वास रखने वाले प्रत्येक धर्म-बन्धु से हमारी अपील है कि इस महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभा को भोगदान दें।

धन मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली' के नाम पर भेजने की कृपा करें।

निवेदक—

प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास — प्रधान

रामगोपाल — मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली—१

महर्षि दयानन्द कृत—

संस्कृत वाक्य प्रबोध

[ले०—आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम०ए० काव्यतीर्थ]

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र, पत्र और विज्ञापन पढ़ने से विदित होता है कि उन्होंने संस्कृत भाषा के प्रचार के लिए कितना महान् परिश्रम किया पहले वे संस्कृत में ही भाषण करते थे। वेदों का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना सबका परम धर्म बताकर उसकी पूर्ति के लिये वे संस्कृत भाषा का पढ़ना अनिवार्य समझते थे। अंग्रेजी शिक्षा के भयंकर परिणामों को अपनी दिव्य दृष्टि से जानकर महर्षि ने अपने कई पत्रों में अंग्रेजी की पढ़ाई के लिये धन व्यय न करने का आदेश दिया और कई स्थानों पर संस्कृत पाठशालायें खुलवायीं। प्रारम्भ में डी०ए० वी० स्कूलों में भी संस्कृत पढ़ना अनिवार्य था, किन्तु दुःख है कि आज महर्षि के नाम पर चलने वाले आर्यसमाज के विद्यालयों में भी संस्कृत की अनिवार्यता नहीं मिलती। संस्कृत भाषा प्रचार के सम्बन्ध में महर्षि के विचारों को जानने के लिए पाठकों को 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' पृष्ठ २५, १२२, १४७, १५२, २९४, २९५, २९७, २९८, ३२४, ३६६, ३६८, ३६९, ३८६, ४१६ और ४२९ देखने चाहिये।

संस्कृत सीखने की आवश्यकता को अनुभव कर जब बोलचाल की व्यावहारिक संस्कृत सीखने की पुस्तक की मांग होने लगी तो महर्षि ने 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' की रचना की। खेद है कि महर्षि के अनेक भक्त और अनुयायी भी इस पुस्तक के सम्बन्ध में जानते भी नहीं, उसका पढ़ना-पढ़ाना तो दूर रहा।

इस पुस्तक में छोटे बड़े ५२ प्रकरण हैं जिनमें नित्य प्रति व्यवहार में आने वाले शब्दों और वाक्यों का संग्रह है। महर्षि का मन्तव्य था कि मनुष्य ईश्वरीय भाषा संस्कृत बोला करें। इसके लिये वाक्यों के प्रबोध की आवश्यकता थी, जिसकी पूर्ति इस पुस्तक के द्वारा की गई। इसमें बाईं ओर संस्कृत के वाक्य और उनके सामने दाहिनी ओर उनका हिन्दी में अर्थ प्रकाशित किया गया।

इसका प्रथम संस्करण वैदिक यन्त्रालय काशी से (उस समय स्वामी जी का यन्त्रालय काशी में ही था जो अब अजमेर में है) फाल्गुन शुक्ल ११, संवत् १९३६ में प्रकाशित हुआ।

इस पुस्तक की रचना और प्रकाशन के समय महर्षि का चित्त स्वस्थ न था, अतः उन्होंने अपने शिष्य और लेखक प० भीमसेन को इसके शोधन, प्रूफ देखने आदि का कार्य सौंप दिया था। भीमसेन के विश्वासघात और असावधानता से तथा प्रेस में कम्पोजीटरों आदि की व्यवस्था ठीक न होने से इस पुस्तक में कुछ अशुद्धियां रह गयी थीं।

इन अशुद्धियों पर काशी की ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा के पं० अम्बिकादत्त व्यास, बाबू रामकृष्ण आदि ने 'अबोध निवारण' नाम की पुस्तक छपाकर कुछ आक्षेप किये थे। इसमें बहुत से आक्षेप निर्मूल थे। इस विषय में महर्षि ने श्री बख्तावरसिंह, प्रबन्धक वैदिक यन्त्रालय काशी को अपने श्रावण शुक्ल १३, बुधवार संवत् १९३७ के पत्र में निम्नप्रकार लिखा था :—

'जो संस्कृत वाक्य प्रबोध पर पुस्तक छपवाया है सो बहुत ठिकानों पर उसका लेख अशुद्ध है और कई एक ठिकानों पर संस्कृत वाक्य प्रबोध में अशुद्ध भी छपा है। इस अशुद्धि के कारण तीन हैं—एक शीघ्र बनना, मेरा चित्त स्वस्थ न होना दूसरा—भीमसेन के आधीन शोधन का होना और मेरा न देखना, न प्रूफ को शोधना; तीसरा—छापेखाने में उस समय कोई भी कम्पोजीटर बुद्धिमान न होना, लैम्पों की न्यूनता होनी। इसके उत्तर में जो जो उनकी सच्ची बात है सो सो शोधक और छापा का दोष रहेगा। इसके खण्डन पर भीमसेन का नाम मत लिखना किन्तु पण्डित ज्वालादत्त के नाम से छापना।

(पत्रव्यवहार पृष्ठ २२३)

इसी प्रकार महर्षि के अन्य पत्रों में भी संस्कृत वाक्य प्रबोध की छपाई की भूलों का उल्लेख मिलता है—

वेदभाष्य का प्रूफ और छापना संस्कृत वाक्य प्रबोध के तुल्य न होगा। संस्कृत वाक्य प्रबोध के विषय में जो तुमने लिखा सो छापे वालों की भूल से छप गया। वहाँ 'एकत्रैकाङ्गुष्ठ एकत्र चतुरंगुलयः' ऐसा चाहिये, सो सुधार लीजिये।" (पत्र व्यवहार पृष्ठ ४०९)

उपरि निर्दिष्ट सुधार किये गये वाक्य के स्थान पर प्रथम संस्करण में 'मुष्टि बन्धने एकत्रांगुष्ठ एकत्र चत्वारो-गुलयो भवन्ति' इस प्रकार संस्कृत में तथा इसका अनुवाद हिन्दी में भी अशुद्ध छप गया था।

काशी के पण्डितों के आक्षेपों के उत्तर 'आर्यदर्पण' पत्रिका के मई सन् १८८० के अङ्क में पृष्ठ ११३ से १२० तक छपे हैं। यह अङ्क अगस्त के अन्त या सितम्बर के आरम्भ में छपा होगा जैसा कि श्रावण शुक्ल १३ स० १९३७ (१८ अगस्त १८८०) के महर्षि के पत्र से विदित होता है। इस उत्तर के नीचे 'एक पण्डित' केवल इतना ही उल्लेख है किन्तु लेखन शैली से विदित होता है कि यह उत्तर महर्षि द्वारा लिखवाया हुआ है।

इस उत्तर के प्रारम्भ में 'ब्रह्मामृतवर्षिणी' सभा के विषय में और फिर 'अबोधनिवारण' के लेखक-प्रकाशक के नामों में किये गये छल कपट और धूर्तता का वर्णन किया गया है। फिर अन्त में कुछ आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर दिया गया है। यह उत्तर पत्र व्यवहार में पृ० २२५ से २२७ तक मुद्रित हुआ है।

प० देवेन्द्रनाथ संग्रहीत महर्षि जीवन चरित्र में भी पृ० ३७९ पर इस बात का वर्णन छपा है किन्तु वहां उसे स० १९३७ का न बताकर उससे चार वर्ष पूर्व अर्थात् संवत् १९३३ का महर्षि के लखनऊ में निवास के समय का बताया गया है जो उस ग्रन्थ के सम्पादक की भूल ही प्रतीत होती है। क्योंकि यह सम्भव नहीं प्रतीत होता कि जिस पुस्तक के सम्बन्ध में चार वर्ष पूर्व काशी के पण्डितों ने आक्षेप किया हो वह फिर पुनः उसी प्रकार अशुद्धियों सहित चार वर्ष पश्चात् भी छपाई जाये।

अस्तु प० ज्वालादत्त के कारण उस समय कुछ अशुद्धियों के रह जाने पर भी संस्कृत वाक्य प्रबोध पुस्तक का

(शेष पृष्ठ ११ पर)

संस्कृत प्रचारार्थ आर्यमित्र की नवीन योजना

महर्षि दयानन्द कृत 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' पुस्तक के पाठों का आर्यमित्र में क्रमशः प्रकाशन।

सभा के श्री घासीराम प्रकाशन विभाग के अधिष्ठाता श्री आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री, एम०ए० ने संस्कृत ज्ञानाभिलाषियों की सुविधा के लिये संस्कृत वाक्य प्रबोध के पाठों को क्रमशः प्रकाशित करने का निश्चय किया है। हम उनके सहयोग के लिए आभारी हैं। बाद में सं०वा० प्रबोध का नवीन संस्करण सभा की ओर से प्रकाशित किया जायगा। —सम्पादक]

आर्यसमाज और इस्लाम

[श्री उपाध्याय जी ने इस्लाम धर्मावलम्बियों तक वैदिक धर्म का सन्देश पहुंचाने के लिए "आर्यसमाज और इस्लाम" नामक ग्रन्थ की रचना की है उसका हम हार्दिक स्वागत करते हैं। आर्य जनता एवं शिरोमणि सार्वदेशिक सभा को इस ग्रन्थ के प्रकाशन की व्यवस्था शीघ्र करनी चाहिए। —सम्पादक]

यह मेरी नवीनतम पुस्तक है। उर्दू और हिन्दी दोनों में 'पाठकों का याद होगा कि चार वर्ष पहले मैंने 'मसाबीहुल इस्लाम' (उर्दू) और उसका हिन्दी अनुवाद (इस्लाम के दीपक) लिखे थे। उर्दू पुस्तक जो लगभग ५०० पृष्ठ की थी मुसलमान विद्वानों में मुफ्त दी गई थी, पाकिस्तान, भारत तथा विदेशों में भी।

उसी शैली की यह नई पुस्तक है, इसमें एक सर्वथा नया दृष्टिकोण रक्खा गया है, 'मसाबीहुल इस्लाम' का प्रभाव मुसलमानी पत्रों तथा व्यक्तियों के पत्रों से ज्ञात होता है कि अच्छा रहा मुसलमानी पत्रों में काफी चर्चा रही। मैं इस की उर्दू पुस्तक 'आर्यसमाज और इस्लाम' को भी मुसलमानों में मुफ्त बटवाऊँगा। इस्लाम के लिए लगभग १२००) व्यय होगे। मैं आर्य भाइयों तथा आर्य संस्थाओं से आशा रखता हूं कि वह पेशगी धन भेजें। मैं उनको कागज के नामों पर पुस्तकें भेज दूंगा जिनको मुफ्त बांट दें। पुस्तक तैयार है परन्तु धन हाथ में आ जाने पर प्रेस में दिया जायगा और छः मास छपाई में लगेंगे। यदि बारह सज्जन सौ सौ रुपये भेज दें तो सुगमता हो सकती है। मैं संस्थाओं को भी लिख रहा हूं। प्रचार के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारी आवाज वहाँ पहुंचाई जाय जहाँ साधारण साधन काम नहीं कर रहे। धन मनीआर्डर या चैक से आना चाहिए।

(चेक में अक्षर स्पष्ट होने चाहिए। ५+६+९=२० अक्षर)

—गंगाप्रसाद उपाध्याय, प्रयाग

राष्ट्र-भाषा हिन्दी और गांधी जी

[ले०—आचार्य रामवीर एम०ए० साहित्यरत्न, अलीगढ़]

भारतवर्ष एक विशाल देश है। इसमें अनेक भाषाएं हैं जो विभिन्न प्रदेशों में बोली जाती हैं, पर हिन्दी भाषा सब भारतीय भाषाओं में समृद्ध है। हिन्दी भाषियों की संख्या कुल जन संख्या का ४० प्रतिशत है। साथ ही इसका साहित्य भी अपार है। राष्ट्रीय एकता की स्थापना करने वाली यह हिन्दी भाषा ही है। यह एक जनवाणी है। इसके माध्यम से सूर, तुलसी, बिहारी और केशव आदि ने सरस्वती की आराधना की। इसी के द्वारा भारतेन्दु, गुप्त, प्रसाद, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी आदि अनेक विद्वानों राष्ट्रीयता का बिगुल बजाया और जनता में स्वतन्त्रता की भावना पैदा की।

इसी भाषा को ही बंगाल, मद्रास आदि सभी प्रदेशों के नेताओं ने स्वतन्त्रता संग्राम के लिए सम्पर्क भाषा बनाया। इसी के द्वारा आन्दोलन का बीजारोपण किया गया और अखिल भारतीय कांग्रेस ने इसे ही अपने कार्य संचालन का माध्यम निश्चित किया। यह भाषा अति सरल और बोधगम्य है। इसको थोड़े प्रयत्न से मनुष्य सीख लेता है। इसकी लिपि देवनागरी है जो वैज्ञानिक है। इस लिपि में जैसा लिखा जाता है वैसा ही पढ़ा जाता है। अंग्रेजी की तरह यह नहीं किया कि लिखा जाय राम और पढ़ा जाय रामा। जन जागरण करने वाले युग प्रवर्तक महापुरुषों ने इसे ही राष्ट्र भाषा स्वीकार किया था। राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार करने वाले, स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रवर्तक राष्ट्रभक्त वैदिक धर्म की रक्षा करने वाले, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी दीर्घ दृष्टि से यह जान लिया था कि देशोन्नति का मूल इसी भाषा में ही है। यही भविष्य में देश की एकता स्थापित करने वाली बनेगी। इसी कारण गुजराती होते हुए भी हिन्दी भाषा में ही 'सत्यार्थ प्रकाश' 'संस्कार विधि', 'गो करुणानिधि' आदि अपूर्व ग्रन्थ लिखे।

इसकी उपयोगिता को जानकर ही विश्वबन्धु महात्मा गांधी जी ने हिन्दी भाषा को महत्व प्रदान किया। अपने सभी राष्ट्रीय कार्यों का माध्यम इसी भाषा को बनाया। वे इसी भाषा को राष्ट्रीयता का जनक समझते थे। सभी को हिन्दी भाषा सीखने की सलाह देते थे। बापू जी के सम्पर्क में आकर सैकड़ों नहीं हजारों मनुष्यों ने हिन्दी भाषा पढ़ी। दक्षिण में हिन्दी भाषा का प्रचार करने के लिए 'दक्षिण भारतीय हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना की, जो आज भी दक्षिण भारत की एक सम्पन्न संस्था है। जिसके अन्तर्गत अनेक विद्यापीठ खुले हुए हैं जहां हिन्दी भाषा की शिक्षा दी जाती है। आपने हरिजन सेवक पत्र भी निकाल कर हिन्दी भाषा की सेवा की। इसके अतिरिक्त आपने अपनी आत्मकथा भी हिन्दी भाषा में लिखी जो आज हम सब को नूतन प्रेरणा देती है।

वे देश की उन्नति करने का एकमात्र साधन हिन्दी को मानते थे। वे कहते थे हिन्दी के बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। वे हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्दौर के सन् ३५ के के अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए निम्नलिखित मार्मिक शब्द उन्होंने कहे हैं—

'अगर हिन्दुस्तान को सचमुच हमें एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है वह किसी दूसरी भाषा को कभी नहीं मिल सकता।'

इस प्रकार गांधी जी के हिन्दी के सम्बन्ध में उदार विचार थे। वे अंग्रेजी के समर्थक नहीं थे। वे तो भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् अंग्रेजों की तरह अंग्रेजी भाषा को निष्कासित करना चाहते थे। वे इसे भारतीयों के लिए कलंक समझते थे। उन्होंने एक बार 'हरिजन सेवक' में इसी विचारधारा की सम्पुष्टि करते हुए लिखा था—

'जिस तरह हमारी आजादी को छीनने वाली अंग्रेज की सियासी हुकूमत को हमने सरलतापूर्वक बाहर निकाल दिया उसी तरह हमारी संस्कृति को दबाने वाली अंग्रेजी भाषा को भी यहां से निकाल देना चाहिए।'

(हरिजन सेवक २१-९-४७)

वे समझते थे कि २५० वर्ष राज्य करने के पश्चात् भी भारत में इसके बनाने और समझाने वाले २ प्रतिशत से भी कम हैं तो अब स्वतन्त्र भारत में इसके ऊपर अपार धनराशि क्यों व्यय किया जाय। देश की पंचवर्षीय योजनाओं में काम आ सकने वाली धनराशि व्यर्थ ही अंग्रेजी की शिक्षा पर व्यय किया जायगा इसका अर्थ यह नहीं है कि वे अंग्रेजी से घृणा करते थे पर इसका भाव यह है कि वह समस्त जनता को अनिवार्य रूप से अंग्रेजी पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे। दक्षिण भारतीयों को भी हिन्दी पढ़ने की प्रेरणा देते थे। बापू जी ने उन्हें परामर्श देते हुए कहा था—

'आज अंग्रेजी पर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए हम बड़, भाई बहन जितनी मेहनत करते हैं उसका आठवां हिस्सा भी हिन्दी सीखने में करें तो बाकी हिन्दुस्तान के जो दरवाजे आज उनके लिए बन्द हैं वे खुल जायें जैसे पहले कभी न थे। अगर रोज के मनोरंजन के समय में से थोड़ा समय निकाला जाय तो साधारण आदमी एक साल में हिन्दी सीख सकता है।'

उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि वे हिन्दी भाषा के कितने समर्थक थे और इसका समस्त भारत में प्रचार करना चाहते थे। पर आज हम गांधी जी के अनुयायी अभी तक अंग्रेजी से इतने चिपटे हुए हैं कि उसे छोड़ना ही नहीं चाहते। संविधान के अनुसार हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित हो जाने पर आज १८ साल बाद भी हिन्दी को वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ जो इसे मिलना चाहिये था। आजकल राष्ट्रिय एकता का प्रसार करने लिए जो त्रिभाषा फार्मूला चलाया है उसमें अंग्रेजी को अनिवार्य विषय बना रखा है और दक्षिण भारतीयों को हिन्दी पढ़ने या न पढ़ने की छूट दे दी गई है, वे कब हिन्दी के पूर्ण ज्ञाता हो जायेंगे तो सभी हिन्दी का सरकारी कामकाज में प्रयोग होगा। बड़े खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि आज हम सब गांधी जी के भक्त होकर भी विदेशी सभ्यता का पाठ पढ़ाने वाली अंग्रेजी से चिपटे हुए हैं।

यदि हम गांधी के सच्चे अनुयायी हैं और उनके सिद्धान्त को देश के लिए हितकर समझते हैं तो सभी भारतवासियों को हिन्दी से प्रेम करना चाहिए स्वयं हिन्दी इसे पढ़ना चाहिए तथा दूसरों को भी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए अन्यथा कोरी श्रद्धा से कोई लाभ नहीं हो सकता।

★

की कम आवश्यकता होती है। अधिक उपज लेन के लिये मटर की बोन विले किस्म को उगाना चाहिये। इस किस्म से प्रति एकड ११० मन तक उपज प्राप्त हुई है।

गन्ने के प्रमुख कीड़ों और रोगों की रोकथाम

पायरिला

इस कीडे का प्रकोप सितम्बर से नवम्बर तक बहुत ज्यादा होता है। इस कीड के बच्चे और प्रौढ दोनो ही पत्तियों का रस चूसते हैं। इसके प्रकोप से पौधों की बढ़वार रुक जाती है और गन्ने में चीनो की मात्रा कम हो जाती है। इसके प्रकोप से फसल को बचाने के लिये नीचे लिखे उपाय काम में लाने चाहिये।

(१) २०० गैलन पानी में २० प्रतिशत एन्ड्रिन की १ पौंड मात्रा घोलकर फसल पर छिडकाव करने से इसकी रोकथाम की जा सकती है।

(२) इसकी रोकथाम के लिये १० प्रतिशत बी० एच० सी० का छिडकाव करना चाहिये। छिडकाव का काम सुबह के समय करना चाहिये।

काना रोग

इस रोग से गन्ने की फसल को बहुत हानि होती है। इस रोग के प्रकोप से पौधों की पत्तिया सूखने लगती हैं। धीरे धीरे सारा गन्ना सूख जाता है। रोग से प्रभावित पत्तिया के बीच में लाल रंग के धब्बों की धारिया बन जाती हैं। इन पर काले रंग के निशान भी दिखायी पड़ते हैं। गन्ना गांठ पर सिकुडने लगता है। यह रोग फफूंद के द्वारा फैलता है। फफूंद गन्ने का रस चूस कर उसको हल्का बना देती है। काना रोग से प्रभावित गन्ने को यदि बीच मे चीर कर देखा जाय तो लाल धब्बे दिखलाई पडते हैं। इस रोग की खास पहचान यह है कि गन्ने को चीरने पर उसमे से शराब जैसी गंध आती है। इसकी रोकथाम के लिए नीचे लिखे उपाय काम मे लाने चाहिये—

१—बोने के लिये काना रोग से प्रभावित गन्नो से गन्ना नही लेना चाहिये।

२—इस रोग से बचने के लिये गन्ने की फसल की पेडी नही रखनी चाहिये। कारण, पेडी मे यह रोग बहुत फैलता है।

३—गन्ने के खेत मे जब कभी इस रोग से प्रभावित गन्ने दिखाई दें, उन्हे उखाड कर जला देना चाहिये।

उकठा रोग (विल्ट)

इस रोग से गन्ने की फसल को काफी हानि होती है। यह रोग एक प्रकार की फफूंदी द्वारा फैलता है। बरसात खत्म होने पर इस रोग का प्रकोप गन्ने की फसल पर शुरू होता है। इससे पौधों की बढवार रुक जाती है। बाद में पूरा पौधा सूख जाता है। इसकी रोकथाम के लिये हमेशा नीरोग गन्नों को ही बोना चाहिये। गन्ना बोने के लिये ऐसे खेत से बीज लेना चाहिये, जिसमें इस रोग का प्रकोप न हो। इस रोग से बचने के लिये गन्ने की पेडी नहीं रखनी चाहिये।

(कृषि अनुसंधान समाचार सेवा नई दिल्ली की ओर से साभार)

संस्कृत वाक्य प्रबोध

(पृष्ठ ९ का शेष)

बहुत अधिक महत्व है क्योंकि इसमे महर्षि की विचारधारा संकलित है उनके हृदय के भाव ओजपूर्ण भाष्य मे विद्यमान हैं और साथ ही संस्कृत सिखाने की एक शैली वर्तमान है जो आजकल प्रत्यक्ष प्रणाली तथा वार्तालाप एवं प्रश्नोत्तर प्रणाली नाम से शिक्षा जगत् में प्रसिद्ध है।

किन्तु इस पुस्तक द्वारा सर्वसाधारण को संस्कृत सिखाने के लिये यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि इसका एक नवीन विशिष्ट संस्करण प्रकाशित किया जाय जिसमें महर्षि कृत ग्रन्थ के वाक्यों को सुरक्षित रखते हुए प्रत्येक पाठ में क्रमागत आये हुए कठिन शब्दों शब्द रूप क्रिया रूपों तथा सन्धि समास प्रत्यय आदि का भी निर्देश किया जाये और उनके आधार पर अनुवाद और रचना के अभ्यासार्थ प्रश्न भी दिये जायें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए संस्कृत वाक्य प्रबोध का यह संस्करण संस्कृत पढने वाले प्रारम्भिक पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत किया जाता है। आशा है पाठक गण लाभ उठायेंगे और इससे संस्कृत भाषा का प्रचार हो सकेगा।

आर्यमित्र में संस्कृत वाक्य प्रबोध के नवीन विशिष्ट संस्करण के पाठ प्रति सप्ताह क्रमश प्रकाशित किये जायेंगे। पाठक गण लाभ उठावें।

यज्ञ

(पृष्ठ ३ का शेष)

तक पहुंचा देते हैं। वही ब्रह्मयज्ञ है।

तपयज्ञ—जो दूसरो के लिये कष्ट सहन करते हैं वही तप यज्ञ है।

योग रूप यज्ञ—जो दूसरो को आध्यात्मिक जीवन प्रदान करते हैं वह योगरूप यज्ञ करते हैं। जो ज्ञान द्वारा दूसरों की भलाई करते हैं वह ज्ञान यज्ञ कर रहे हैं। भगवान् कृष्ण गीता में कहते हैं जो द्रव्य द्वारा यज्ञ करते हैं यानी उपकार करते हैं। उसकी अपेक्षा ज्ञान द्वारा उपकार करना अधिक श्रेष्ठ है। हे पार्थ समस्त कर्मों का पर्यवसान ज्ञान मे होता है। फल की आशा आकांक्षा छोडकर जो अपना कर्तव्य समझकर शास्त्र विधि के अनुसार शान्त चित्त से जो पर उपकार करता है वही सात्विक यज्ञ है।

संयम यज्ञ—परमपिता में ही ध्यान लगाना उसी के ध्यान में तन्मय और किसी का चिन्तन न करना अन्तःकरण को शुद्ध रखना संयम यज्ञ है।

धन यज्ञ—जो ईश्वर अर्पित सब शुभ कर्मों में ही लगे हैं वह धन यज्ञ है।

स्वाध्याय यज्ञ—ज्ञान सत्र ईश्वर का ही चिन्तन करना ईश्वर प्राप्त कराने वाले शास्त्रों व वेदों का अध्ययन करना, प्राणायाम करना ईश्वर विषय पर वार्तालाप करना, वाणी से सदैव सत्य बोलना स्वाध्याय या ज्ञान यज्ञ है यह गीता का मत है। इन सब महान उपदेशों व वेदों की आज्ञानुसार यज्ञ करना मनुष्य का कर्तव्य है। जो नहीं करता वह पाप का भागी होता है दयानन्द वचनामृत से। लोग कहते हैं भाई हम नहीं करते हैं न यज्ञ कहां से कर, ठीक है परन्तु महर्षि याज्ञवल्क्य के कथन में यज्ञ भावना से हो सकता है। भगवान यज्ञमय है हमें भी यज्ञमय होना चाहिये। जब तक उपरोक्त यज्ञ को हम सब अपने जीवन मे नहीं उतारते हैं यज्ञमय जीवन नहीं बन सकता। परोपकार, दीनों दुखियों पर दया प्रेम भाव। गौ की रक्षा करना हमारा उद्देश्य होना चाहिये तभी हम आर्य बन सकते हैं।

दान का करना कराना आर्य का धर्म है दान ही हम आर्य का श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है।

महर्षि दयानन्द का राष्ट्रीय एकता मे योगदान

(पृष्ठ ८ का शेष)

कर जन्म पर वर्णव्यवस्था प्रचलित की। इस अस्पृश्यता की भावना का समूल नष्ट करने के लिए स्वामी जी ने अपना सारा जीवन लगा दिया और आर्यसमाज जैसे संगठन से मिला कर अछूत रूपी लोहे को सोने के रूप में परिवर्तित कर दिया। उन्हें पण्डित, उपदेशक गायक एवं संगीतज्ञ बनाकर देशसेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी कारण स्वतन्त्रता संग्राम मे उन्होंने अपना अपूर्व सहयोग प्रदान किया। बाद मे इसी अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन को महात्मा गांधी जी ने मूर्त स्वरूप प्रदान किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए इसे एक आवश्यक साधन माना और अपने कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाया जिसे अब सरकार ने कानूनी परिधान पहना दिया है जिसके अन्तर्गत ६ मास के कारावास अथवा १०० रु० का अर्थदण्ड उस व्यक्ति को दिया जा सकता है जो छुआछूत मानता है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द बड़े देश भक्त, दूरदर्शी, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित एवं स्वतन्त्रता व समानता के पक्षपाती थे। राष्ट्रीय एकता बनाये रखने का उनका प्रधान लक्ष्य था। जिस गोवध निषेध आन्दोलन का आज श्रीगणेश हुआ उसका सूत्रपात् महर्षि दयानन्द ने आज से १०० वर्ष पूर्व कर दिया था। राष्ट्रीय एकता की अभिवृद्धि के लिए जितना कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया उतना शायद ही किसी व्यक्ति ने किया हो, उनके विचारों का प्रचार आज आर्यसमाज कर रहा है। आर्यसमाज मानसिक संकीर्णता दूर करने वेद शास्त्रों का प्रचार करने अस्पृश्यता निवारण करने एवं पाखंड मिटाने के लिये ऋषि के पदचिह्नों पर चल रहा है पर समय के कारण इसमें भी शिथिलता आ गई है। सदस्यगण स्वार्थ के वशीभूत होकर ऋषि के सिद्धान्तो के प्रतिकूल कार्य करने में नहीं हिचकिचाते।

हमें महर्षि की विचारधारा का अनुकरण करके आर्यसमाज में व्याप्त शिथिलता को दूर करना चाहिये और उनके अधूरे कार्यक्रम को पूर्ण करने को सदा कटिबद्ध रहना चाहिए तभी पूर्ण रूप से राष्ट्रीय एकता की स्थापना हो सकती है।

आ.स. लाजपतनगर का उत्सव

आर्य समाज लाजपतनगर कानपुर का वार्षिक उत्सव दि० २८, २९, ३० अक्तूबर को लाजपतनगर पार्क पानी वाली टंकी ...ला पार्क' में होना निश्चित हुआ है। जिसमें श्री आचार्य प्रियव्रत जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, श्री त्रिलोकचन्द जी शास्त्री श्री बलवीर शास्त्री, महोपदेशक श्री वेदानन्द जी स्वामी, श्री राज पाल मदनमोहन विद्यार्थी भजन मंडली श्री प्रकाशवीर जी व श्री देवीप्रसाद जी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। दि० २३-१०-६६ से ब्रह्मचारी सतीशचन्द्र जी (आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर) की वैदिक कथा सम्मनलाल पुस्तकालय लाजपतनगर में होगी। कथा सायंकाल ८ बजे प्रारम्भ होगी।

दिनांक २७ १० ६६ को ४ बजे सायं से नगर कीर्तन उत्सव-स्थल से प्रारम्भ होगा।

—आर्यसमाज मैनपुरी का ८५ वा वार्षिकोत्सव आगामी २५-२६-२७-२८ नवम्बर १९६६ की तिथियों में सम्पन्न होने जा रहा है जिसके अन्तर्गत गोरक्षा सम्मेलन भी आयोजित किया गया है।

—गुरुकुल सिराथू का वार्षिकोत्सव इस वर्ष २६, २७, २८ नवम्बर १९६६ शनिवार, रविवार, सोमवार को सम्पन्न होगा।

पूर्वी उत्तरप्रदेश के लिए आर्य वीर दल का शिविर पांच दिन २४ से २८ नवम्बर तक लगेगा। शिविर का शुल्क केवल २) होगा। आर्यवीरो के भोजन का प्रबन्ध नि.शुल्क होगा।

इसी अवसर पर जिला आर्य सम्मेलन के करने का विचार आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के विचाराधीन है।

शिक्षा सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन, एवं महिला सम्मेलन होंगे।

शिक्षाप्रद चलचित्रो के प्रदर्शन की समुचित व्यवस्था होगी एवं ब्रह्मचारियों के व्यायाम प्रदर्शन भी होंगे।

—दयास्वरूप प्रधान गुरुकुल सिराथू एवं आर्यवीर दल, प्रयाग

गोवध का विरोध कीजिये !

१—सन् २२ मे महात्मा गांधी, श्री मोतीलाल नेहरू आदि की उपस्थिति, लाला लाजपतराय की अध्यक्षता तथा हकीम अजमलखां की स्वागताध्यक्षता में होने वाले सोपाष्ट्री के सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ कि यदि सरकार गोहत्या बन्द नहीं करती तो उससे किसी प्रकार का सहयोग न

किया जाय" (आर्यमित्र"—२८-८-६६)

२—जब गोहत्या के विरुद्ध इतनी अधिक जनता की भावना है तो उसका सम्मान होना चाहिये, क्योंकि यही ढंग है जिसके द्वारा प्रजातन्त्र शासन चलता है —रफीअहमद किदवई

३—लोकमान्य तिलक ने यह आश्वासन दिया था कि स्वराज्य मिलते ही पहला कानून गोहत्या बन्द करने का बनेगा। गांधी जी के महान् शिष्य संत विनोबा जी ने तो यहाँ तक कहा कि 'हिन्दुस्तान में गोरक्षा होनी चाहिये। अगर गोरक्षा नहीं होती तो कहना होगा कि हमने आजादी खोई और उसकी सुगन्ध गवाई।'—

भारत संविधान की ४८ धारा के अनुसार गोहत्या बन्द होनी चाहिये।

४—'खुदा का करम पाने के लिये यह सबका फर्ज है कि इस गरीब मा गाय की हिफाजत करें।"

—शेख फखरुद्दीन शाह

५—'तमाम बूढ़े, लूले, लंगड़े और रोगी ढोरों की रक्षा राज्य को ही करनी चाहिए"—महात्मा गांधी

गोरक्षा का प्रश्न राष्ट्रीय, धार्मिक, आर्थिक, मानवीय और सांस्कृतिक सभी दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है अत प्रार्थना है कि आप स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की दृष्टि तन, मन, धन द्वारा गोवध-विरोध में सहायक हों, साथ ही, निश्चय करें कि गोवध-समर्थकों को आगामी आम चुनाव में कदापि 'वोट' न दें।

गोरक्षा आन्दोलन—

—दि० २।१०।६६ को सायं मुगलसराय बाजार में आर्यसमाज मुगलसराय की ओर श्री चुन्नीलाल की अध्यक्षता मे एक विशाल सभा हुई। जिसमें ठा० ...सिंह, सावित्रीदेवी, रामविलास शास्त्री, सत्यदेव शास्त्री तथा अवधनन्दन मिश्र ने गोहत्या निरोध आन्दोलन के सम्बन्ध मे प्रकाश डाला। —मन्त्री

—आज ता० १-१०-६६ को आर्य समाज कासगंज की अन्तरंग सभा की बैठक गोरक्षा विषय पर हुई और सर्व सम्मति से बैठक भारत सरकार से मांग करती है कि सरकार सम्पूर्ण देश में केन्द्रीय सरकार द्वारा गोहत्या बन्द करने की निमित्त शीघ्र घोषणा करे और इसको संसद द्वारा वैधानिक रूप दिया जावे अन्यथा समाज हर सम्भव उपाय गोरक्षा के लिए प्रयोग में लाने को बाध्य होगी।'

—दि० २९-९-६६ रात्रि को आठ बजे बड़ा बाजार झांसी में एक आम सभा गोरक्षा सम्बन्धी हुई जिसके प्रधान श्री बा० मथुराप्रसाद थे। मन्त्री—श्री सीताराम आर्य ने संचालन किया। शहर आर्यसमाज की ओर से श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी एम ए के उपदेश हुए जनता ने उपदेशों की सराहना की तथा गोहत्या जब तक बंद न हो जायगी तब तक जनता का आन्दोलन तीव्र गति से चलाने के लिये आवाहन किया तथा सत्याग्रह के लिए तैयार रहना चाहिये। गऊ रक्षा पर प्रकाश डाला तथा आर्यसमाज हमेशा बलिदान देता आया है तथा बलिदान देने को तत्पर है।

—कायमगंज आर्यसमाज द्वारा श्री वीर रामचन्द्र जी के ८५ दिवस के घोर अनशन व्रत की सहानुभूति के प्रति श्री जयनारायणप्रसाद आर्य उपप्रधान तथा अध्यक्ष गोरक्षा समिति आ०स०कायमगंज ने ता० ९ १०-६६ रविवार साप्ताहिक सत्संग के दिन एक दिन का पूर्ण अनशन व्रत रखा तथा म० वीर रामचन्द्र जी के अस्पताल से मुक्त होने तथा उनके संकल्प की सफलता तथा दीर्घायु के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। —उपप्रधान

—महावीरप्रसाद मिश्र

—आर्यसमाज सरकड़ा बिजनोर्ई ने दिनांक २८-८-६६ ई० के साप्ताहिक सत्संग मे आज्ञानुसार सार्वदेशिक सभा दिल्ली के अनुसार प्रस्ताव पास करके सार्वदेशिक सभा दिल्ली प्रधान मन्त्री भारत सरकार तथा गृह मन्त्री को प्रतिलिपियाँ भेजी।

आर्यवीर दल—

पू० उ० प्रदेशीय आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री आनन्दप्रकाश जी एवं मिर्जापुर के मण्डलपति श्री राजेन्द्रप्रसाद जी ने २४ सितम्बर को मिर्जापुर पहुंच कर समाज के विशिष्ट अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया तथा २५ को सुबह ८ बजे साप्ताहिक अधिवेशन मे भाग लेकर आर्यवीर दल के स्थापनार्थ, दल की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

समाज के अधिकारियों ने शीघ्र ही दल के

तथा मडल ... का आश्वासन दिया ही, अविष्य में ... को धनराशि भी देने का भी वादा किया है धनराशि

अधिष्ठाता जी एवं मंड...

ने मिर्जापुर अन्तरगत शिवशंकरी ... पर होने वाले मेला समिति एवं मण्डल मिर्जापुर की बैठक मे २ बजे से ५ बजे दिन में भाग लेकर मंडल एवं समिति के कार्य का निरीक्षण भी किया।

—कैलाशसिंह उपमन्त्री

२—मैं आगामी १९ अक्तूबर से प्रान्त के कुछ प्रमुख स्थानों का दौरा कर रहा हूँ जिसका कार्यक्रम इस प्रकार होगा —

१९ अक्तूबर	फैजाबाद	नवाबगंज (गोंडा)
२०	"	शाहजहांपुर
२१		बरेली
२२	"	अलीगढ़
२३	'	गाजियाबाद
२४	'	मेरठ
२५	"	सहारनपुर

इन स्थानों पर पहुंचने पर आर्यवीर दल के अधिकारी गण जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभायें तथा आर्यसमाजें सहयोग देवें।

आर्यवीर दल से सम्बन्धित बैठकों, शाखाओं तथा सार्वजनिक भाषण का आयोजन करें।

दल की सहायतार्थ धनराशि भेंट (प्रान्तीय सभा तथा नारायणस्वामी शाखा जी के लिये।)

२३ ता० को विजयादशमी के अवसर पर गाजियाबाद मे विशेष कार्यक्रम का आयोजन हो।

—आनन्दप्रकाश अधिष्ठाता आर्यवीर दल उ० प्र०

(पृष्ठ ४ का शेष)

इस समय शान्तिपूर्ण कार्यों में बाह्य अन्तरिक्ष के इस्तेमाल पर खास जोर दिया जा रहा है। कुछ वर्षों में हिन्द महासागर के बारे में निरन्तर जानकारी इकट्ठी करते रहने के लिये एक कृत्रिम उपग्रह छोड़ा जायेगा। इस उपग्रह से ऋतु विज्ञान के बारे में उपयोगी जानकारी मिल सकेगी। इसके अलावा एक ऐसा कृत्रिम उपग्रह छोड़ा जाएगा, जिसके जरिये दुनिया के पिछड़े हुये और दूर दूर के इलाकों में रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रम प्रसारित किए जा सकेंगे।

अन्तरिक्ष की खोज से विज्ञान और शिल्प के विकास और विस्तार में भी बहुत मदद मिलती है। विज्ञान और शिल्प के नए नए तरीकों से भारत जैसे उन्नतिशील देश को आगे बढ़ने मे निश्चय ही मदद मिलेगी।

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर

विशेष अधिवेशन मे गो-रक्षा से ही राष्ट्र-रक्षा सम्भव है और उसके निमित्त सभासदों ने संकल्प किया कि प्रत्येक अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार त्याग तपस्या एवं बलिदान के लिए तन, मन, धन से तत्पर रहेगा। —उपमन्त्री

कानपुर में आर्य सम्मेलन

दि० ९-१०-६६ को केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के तत्वावधान में नवाब-गंज आर्यसमाज में आर्यसम्मेलन श्री कालकाप्रसाद जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री देवीदास आर्य व श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री आदि ने आर्यसमाज की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर श्री कुलराज जी वर्मा व श्री रामकिशोरजी शुक्ल ने नवाबगंज समाज के विवाद समाप्ति की घोषणा की। उपस्थिति अच्छी थी अन्त में यज्ञ शेष सबको वितरित किया गया। —मन्त्री

—आ०स० रहदरा मेरठ की स्थापना श्री प० हरस्वरूप आर्य जिला मेरठ के द्वारा १६ ९-६६ को हुई और उसका उत्सव मनाया। दि० ८-९ १० १० ६८ उसमें गौऊ सम्मेलन श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री जी की देख रेख मे हुआ जिसमें श्रो० रतनसिंह जी गा०बाद और जि० सभा प्रधान डा० भगवनदत्त गोयल के भाषण हरस्वरूप जी के भजन व श्री बेमराज जी के भजन प्रभावशाली हुए।

—आर्यसमाज शाहाबाद हरदोई का हीरक जयन्ती महोत्सव १८, १९ २० तथा २१ नवम्बर सन् १९६६ को मनाया जा रहा है। पुस्तक विक्रेता महोदय अवश्य पधारने की कृपा करे।

तिथियां बढाने का कारण यह है कि पूर्व तिथियों (२८ २९, ३० तथा ३१ अक्तूबर ६६) पर प्रचारक महोदय नही मिल रहे हैं। अत अब उत्सव १८ से २१ नवम्बर ६६ को मनाया जा रहा है।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज सरकडा विसनाई मे दिनांक ३० अगस्त से ७ सितम्बर तक वेद सप्ताह बडी धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रात से १० बजे तक हवन, वेद कथा, प्रवचन इत्यादि मे प्रोग्राम चलते रहे। वेद सप्ताह के अन्तिम दिनो में श्री आचार्य धर्मचन्द्र जी का आगमन हुआ उनके आने से हमारे सप्ताह की शोभा और दूनी हो गई। इस प्रकार आचार्य जी के लगभग ९ व्याख्यान हुए। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रवचन हुए। इसी प्रकार कई अन्य विषयों पर हुआ। इस प्रकार जनता ने अधिक सख्या में एकत्र होकर लाभ उठाया।

—ओमप्रकाश आर्य मन्त्री

—आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य भजनोपदेशक श्री ठाकुर देवपालसिंह जी दि० ७ १०-६६ को देवगाव (आजमगढ) में पधारे। दि० ८ व ९ को बाजार में उन्होने वैदिक धर्म सिद्धान्तों स तथा बाहरी खतरों से जनता को अवगत किया जिससे जनता पर अच्छा प्रभाव पडा। साथ ही स थ भारत सरकार से गोवध निषेध कानून बनाने का प्रस्ताव भी पास किया गया।

—केशवप्रसाद मौर्य प्रधान
आर्यसमाज देवगाव

हिन्दी विद्यालय मैसूर

महात्मा हंसराज हिन्दी विद्यालय अशोका रोड मैसूर का उद्घाटन ३-१० ६६ को श्री चित्र लिंगैया जी की अध्यक्षता में हुआ। श्री पृथ्वीचन्द जी बहल ने अपने, उद्घाटन भाषण में पूज्य महात्मा जी के त्याग एवं तपमय जीवन पर प्रकाश डाला तथा आर्य जनता से प्रार्थना की कि इस विद्यालय के उत्थान के लिए पूर्णरूप से सहयोग करें।

—अमरनाथ बी०ए० साहित्यरत्न मन्त्री

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि सभा के उपदेशक श्री बनवारीलाल ने ग्राम सबकोटा जि० बुलन्दशहर में एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें स्त्री, पुरुष तथा बच्चे कुल १८७ ईसाई प्राणियो ने हिन्दू वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धि संस्कार श्री हरप्रसाद वानप्रस्थी ने कराया।

शुद्धि

आर्यसमाज चौक लखनऊ में दिनांक ९ १०-६६ रविवार को एक मुसलिम युवती जिसका नाम कमर सुल्ताना था को वैदिक धर्म में दीक्षित करके और नाम परिवर्तित करके उसका विवाह एक आर्य युवक से किया गया जिसका नाम केवलकृष्ण खत्री है। युवती का नाम बदल कर कल्पना देवी रक्खा गया है।

समारोह की विशेषता यह थी कि आर्यसमाज के सभी सदस्यो के अतिरिक्त सैकडो की संख्या मे मुसलमान बन्धु भी उपस्थित थे। बडे उल्लास का वातावरण था। सभी संस्कार श्री रामचरित जी पाडे ने आर्यसमाज मंदिर चौक में सम्पन्न कराये।

हजरतपुर (आगरा) में खुलने वाले बूचड़खाने के विरोध में प्रस्ताव

आर्यसमाज आगरा छावनी कृषि के लिये खाद देने वाली तथा पीने के लिये दुग्ध व ऊन देने वाली भेड बकरियो जैसे परम उपयोगी पशुओं के काटने के लिये हजरतपुर में खुलने वाले बूचड़ खाने का प्रबल विरोध करता है और केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकारों से अनुरोध करता है कि राष्ट्र के लिये विनाशकारी व अहितकारी बूचड़ खाने के भवन को पशुओ के पालनार्थ प्रयोग करें।

हमारा देश कृषि प्रधान है। कृषि खाद के बिना नहीं हो सकती। अतः राष्ट्रहितार्थ समस्त पशुओ की रक्षा करना नितान्त आवश्यक है।

किशनदास पुरी प्रधान — आत्मानन्द द्विवेदी मन्त्री

भारत सरकार की मांस उत्पादन की योजना इस प्रकार है—

समय	गोमांस का उत्पादन मनो में	अन्य पशुओं के मास का उत्पादन	सर्व प्रकार के पशुओं के मास के उत्पादन का योग
१९६१ से '६६तक	११८७५०००	२१५३७५००	३२४१२५००
१९६७ से '७१तक	३९३७५०००	२५६७५०००	६५०५००००
१९७२ से '७६तक	६९५६२५००	३२४६२५००	१०२०२५०००
१९७७ से '८१तक	७१२५००००	४४२७५०००	११५५२५०००

अंग्रेजी राज्य में सन् १९२१-२२ मे बर्मा को गोमांस भेजने के लिए रत्तोना नगर (मध्य प्रदेश) मे एक बूचड़खाना बनाने की योजना थी। इसका घोर विरोध हुआ तो सरकार ने जन भावनाओं को ध्यान में रखते हुए इस योजना को रद्द कर दिया। इसी प्रकार अंग्रेजों ने सैनिकों के लिये मांस उत्पादन के वास्ते लाहौर (पंजाब) के समीप बूचड़खाना बनाने की योजना बनाई थी। बूचड़खाना बनाने का काम भी शुरू हो गया था और उसका कुछ भाग भी बन चुका था। जनता के तीव्र विरोध पर अंग्रेजो ने इसको रद्द कर दिया। ('मांस बाजार रिपोर्ट १९५५" एवं "श्री तनसुखराम जैन स्मृति ग्रन्थ')।

भारत सरकार हजरतपुर (आगरा) में एक बूचड़खाना बना रही है इसमें ५००० पशुओं की प्रतिदिन हत्या की जावेगी।

विचार-विमर्श

आर्यसमाज का आत्म-निरीक्षण

(ले०—श्री चन्द्रसहाय जी आर्य सभासद आर्यसमाज मूढ बरेली)

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी का आदेश पाकर अपना जीवन वैदिक धर्म के पुनरुत्थान में लगा दिया और उत्थान के कार्य को निरन्तर जारी रखने के हेतु आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज का प्राण ईश्वर में विश्वास और उसके ज्ञान वेद के अनुसार आचरण करना है जिसका उल्लेख मोटे रूप में आर्यसमाज के दस नियमो में निहित है। आर्यसमाज गत ९० वर्षों से अपनी सामर्थ्यानुसार लगातार कार्य करता चला आ रहा है। चूंकि आर्यसमाज का प्रेरणा स्रोत ईश्वरीय ज्ञान है अतः आर्यसमाज के प्रचार क्षेत्र से मनुष्य के अभ्युदय तथा निःश्रेयस का कोई अङ्ग बचा हुआ नहीं रहना चाहिये। इसके कार्यकर्ताओं ने देश, काल की विषम परिस्थिति मे अपने सामर्थ्य, ज्ञान और रुचि के अनुसार ऋषि ऋण चुकाने का यत्न किया है परन्तु हम देखते हैं कि आर्यसमाज के वयोवृद्ध मनीषी आर्यसमाज की प्रगति से संतुष्ट नहीं हैं। सामयिक लेखो के सिंहावलोकन से आर्यसमाज के कर्णधारों की मनोव्यथा का पता लगता है। जिससे रोग के लक्षणों का तो पता चलता है और उन रोगों की चिकित्सा का संकेत भी मनोव्यथा के कथन में संनिहित है परन्तु रोग क्यों उत्पन्न हुआ उसके कारण को समझकर उसके निराकरण के द्वारा ही रोग से वास्तविक मुक्ति हो सकती है।

माननीय प० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने अपने एक लेख में निदान और उपचार दोनो ही पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। वे लिखते हैं "एक चालू तथा जीती जागती संस्था के लिये यह भी आवश्यक होता है कि वह अपने पूर्वजों की भूलों और कमियो तथा असफलताओं पर भी पूर्ण रीत्या बिना संकोच के विचार करती रहे। किसी मानव संस्था के लिये यह सम्भव नहीं है कि उसमें कुछ न कुछ त्रुटियां न हों या कुछ ऐसी सामयिक बातें न हों जिनको अब अनुपयोगी समझकर छोड देना चाहिये। मैं यहां दो चार का ही उल्लेख करता हू। मुझे तो बहुत सी भूलें दिखाई पड रही हैं। परन्तु लोग अकारण ही चौंक न पडें इसलिये लिखने मे संकोच करता हू। प्रथम तो यह देखना चाहिये कि कुछ समाज सुधार जो हमने हाथ में लिये वह अधूरे क्यों रह गये" उन्होंने विधवा विवाह, शुद्धि शिक्षा सम्बन्धी नीति, साहित्य रचना आदि का उदाहरण दिया है। अन्त में कुछ अंश में चिकित्सा की ओर भी संकेत किया है। वे लिखते हैं "मेरी समझ में आज विद्वानो को ऋषि के ग्रन्थो का खुले मस्तिष्क से नये सिरे से अध्ययन करना चाहिये और जहां कहीं यह प्रतीत हो कि हमारे पूर्वज मनीषी और परम आदरणीय कार्यकर्ताओं ने समझने में गलती की हो उसे सत्यप्रिय आर्य की भांति त्याग देना चाहिये।" प्रस्तुत लेख इसी दिशा में एक प्रयत्न है।

वास्तव में आर्यसमाज का आदर्श उसके नियमो में वर्णित है। नियमो के आधार पर ही हमको कार्य शैली अपनानी चाहिए। आर्यसमाज के उपनियम धारा ४ एक व्यक्ति को आर्यसमाज में केवल प्रवेश का अधिकार देता है। इस उपनियम के दो भाग हैं—एक अर्थ सम्बन्धी, दूसरा सदाचार सम्बन्धी। चूंकि आर्यसमाज मे प्रवेश कर्त्ता के सामने केवल आर्यसमाज के नियम होते हैं और उपनियम उसकी आंख के सामने नहीं होते। अतः साधारण रीति पर इस नियम के दोनो भागों पर कड़ाई के साथ पालन नहीं हो पाता। फिर भी अनेक समाजों में नये प्रवेश का द्वार इस हेतु बन्द है कि योग्य पुरुष प्रवेश के लिए नही आते। हालांकि वस्तुस्थिति कुछ और ही होती है। इस उपनियम के दोनो भागों ने कुछ प्रतिबन्ध लगाकर सर्वसाधारण को नियमबद्ध सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने का अधिकार देने में बडी सहृदयता और सुलभता का परिचय दिया है। परन्तु यह केवल प्रवेशाधिकार ही है। इसके यह अर्थ कदापि नहीं लेना चाहिए कि जो योग्यता आदिम श्रेणी के विद्यार्थी की होनी चाहिए, वही योग्यता उच्च श्रेणियो में प्रवेश की भी हो। स्वामी जी महाराज ने आर्यसमाज के प्रतिबन्ध का ढाचा प्रजातन्त्रात्मक रीति पर रखकर वर्तमान धार्मिक जगत् में एक नया आविष्कार किया है परन्तु स्वामीजी के ग्रन्थों के अवलोकन से पता चलता है कि प्रजातन्त्रात्मक रीति को अपनाते हुए स्वामी जी वर्ण धर्म के भी पोषक हैं, जिसको आर्यसमाज ने भी अपनाया हुआ है। परन्तु क्रियात्मक रूप में वर्ण धर्म की अवहेलना करके हमने सब धान बारह पसेरी से बेचना आरम्भ कर दिया है, जिसका परिणाम आर्यसमाज भोग रहा है। उसका दिग्दर्शन विद्वानों के कथन से व्यक्त होता रहता है। आर्यसमाज मे प्रवेश होने पर प्रवेशार्थी की संज्ञा आय बाद को आर्य सभासद हो जाती है। परन्तु समाज के अधिकारी बनने पर या किसी संस्था के संचालक बनने पर अथवा उपप्रतिनिधि सभा, प्रान्तिक सभा के सदस्य बनने पर उत्तरोत्तर अधिकार और कर्तव्य के विस्तार के साथ इन पदों के उपयुक्त कुछ अन्य गुणो का प्रतिबन्ध भी लगना चाहिए जो आदिम प्रवेश के गुणों से कुछ विलक्षण हो।

वर्तमान काल में सब वर्णों के लोग आर्य सभासद होने के नाते केवल बहुमत के द्वारा अनधिकारी को अधिकारी और अयोग्य को योग्य तथा योग्य को अयोग्य बना देते हैं। परन्तु वर्ण धर्म हमको बताता है कि किसी एक स्तर के कार्य के लिए उसी स्तर के आर्य सभासदों में से चुनाव अधिक उपयुक्त होता है। भिन्न भिन्न स्तरों के व्यक्ति मिलकर किसी दशा मे भी किसी विशेष स्थान के लिए हर किसी का चुनाव उत्तम नही हो सकता। स्वामी जी महाराज ने अपने लोकप्रिय ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, राज्य अध्यक्ष, मन्त्री, राज्य सभासद आदि के गुणो का व्याख्यान व्यर्थ ही नही किया है। हमको संकुचित रीति पर यह अर्थ भी नहीं लगाना चाहिए कि एक स्वतन्त्र राज्य के अधिकारियों में ही वैसे गुण सम्पन्न व्यक्ति हो सकते हैं अन्य स्थानो मे नही।

निवेदन है कि वेदो को आधार स्तम्भ मानते हुए स्वामी जी महाराज ने यहां स्पष्ट रूप से जिस भावना को व्यक्त किया है उसका कार्यरूप में परिणत करना आर्यसमाज के जीवन का हेतु बनेगा। उनकी भावना के अनुरूप कार्य करने से वर्तमान प्रजातन्त्रात्मक पद्धति को अपनाते हुए इसके दोषों से बड़ी सीमा तक मुक्ति हो सकती है।

यह बात भी सत्य है कि साधारण आय सभासद् जो चुनाव में भाग लेता है वह ज्ञान, कर्म तथा अर्थदान के औसतीय अवस्था की अपेक्षा से हीन अवस्था में होता है। हम नियम के आधार पर किसी भी व्यक्ति को सदाचारी व धर्मात्मा नही बना सकते परन्तु मापदण्ड ऊंचा करके किन्ही दशाओ मे हम उन्नत अवश्य हो सकते हैं। ज्ञान सर्वोपरि है और यही मनुष्य जीवन के कर्मकाण्ड और उपासना काण्ड की आधारशिला है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम अपने नियमो को प्रत्येक आर्य सभासद के क्रियात्मक जीवन मे परिणत करें। जहां एक व्यक्ति किसी कार्य के करने का इच्छुक हो और समष्टि उस क्रिया के करने में प्रोत्साहन दे तो परमात्मा की कृपा से सफलता मिलना सम्भव हो जाता है। अब समय आ गया है कि हम अपने नियमो को प्रत्येक आर्य सभासद् के जीवन में क्रियात्मक रूप से लावें संसार का सुधार अपने सुधार से आरम्भ होता है। सबसे पहले हम अपनी अविद्या का नाश करें अपनी शारीरिक और आत्मिक उन्नति करें तथा वेद का पढ़ना पढाना आरम्भ करें। परस्पर विचार गोष्ठी करके अपने नियमों के आधार पर एक माप दण्ड निश्चित किया जावे जो आर्य सभासद उस मापदण्ड के अनुरूप अपने को सिद्ध कर दे उसको एक नवीन संज्ञा से दीक्षित करके अधिकारों के लेने का पात्र समझा जावे। जब तक आर्यसमाज में आय सभासदो के लिए किसी न किसी रूप में यह तीसरी श्रेणी न अपनाई जावेगी आर्य समाज की समस्याओ का समाधान कठिन प्रतीत होता है। बहुत सी बातें ऐसी हैं कि जिनका प्रचार तो हम करते हैं परन्तु समष्टि रूप से हम उसका उदाहरण नहीं देते और न सहूलियतें ही देते हैं। वेद के पढने पढाने का विषय ही ले लीजिये। यह बिना संस्कृत विद्या के प्रचार के सफलतापूर्वक नही हो सकता। आर्यसमाज ने बालकों के लिए संस्कृत विद्या का प्रसार अवश्य किया है परन्तु प्रौढ व्यक्तियो के लिए कुछ भी नही किया है। यदि आर्य समाज के लोकप्रिय समाचार पत्रो में एक पन्ना संस्कृत के क्रमिक पाठो के लिये नियत कर दिया जावे तो पाठकों का बड़ा उपकार हो। इसी प्रकार आर्य समाज में अच्छे साहित्य की खपत के सम्बन्ध में कहा जा सकता है। इसके दो पहलू हैं पहली बात यह है कि यदि पाठकों के ज्ञान का स्तर ऊंचा है तो उसमे अच्छे साहित्य का मान अवश्य होगा। ज्ञान स्तर ऊंचा करना हमारे मापदण्ड के

हवन यज्ञ की महानता

[मूल लेखक–स्व० डा० श्री कुन्दनलाल जी अग्निहोत्री एम्. डी. (लन्दन) मेडिकल आफिसर टी. बी. सेनेटोरियम]

(अनुवादक–प्रो० रवीन्द्र अग्निहोत्री, वनस्थली विद्यापीठ [राज०])

ईश्वर की वाणी वेद से लेकर आज तक सब आर्ष ग्रन्थ यज्ञ की महिमा गाते आये हैं। आदि सृष्टि से लेकर अब तक कोई समय ऐसा नहीं मिलता जब किसी न किसी रूप में हवन यज्ञ का प्रचार न रहा हो। वेद, शास्त्र, ब्राह्मण, उपनिषद्, रामायण महाभारत, पुराण आदि तो इसकी महत्ता को स्वीकार करते ही हैं, आधुनिक विद्वान भी इसकी उपयोगिता की उपेक्षा नहीं कर सके। प्रो० मैक्समूलर की पुस्तक 'फिजीकल रिलीजन' के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यवन देश के तत्ववेत्ता प्लूटार्क ने आग को वायुशोधक माना है। उक्त प्रो० महोदय ने ही लिखा है कि आग जलाने की रीति गत शताब्दी तक स्काटलैंड में पाई जाती थी। आयरलैंड और दक्षिणी अमेरिका में महामारी दूर करने के लिए आग जलाने की प्रथा प्रचलित रह चुकी है। प्रो० मैक्समूलर की उक्त पुस्तक के पढ़ने से पता चलता है कि हवन यज्ञ का प्रचार कभी समस्त भूमंडल में रह चुका है। जापान और चीन में होम को गोम कहते हैं। जर्मनी में लैवेन्डर की बत्ती जलाई जाती है। ईरान के पारसी लोग यज्ञ को हिन्दुओं की तरह उत्तम रीति से करते हैं। यूरोप आदि में वायु शुद्धि के जितने भी तरीके प्रसिद्ध हैं उन सभी में प्रायः फायर स्टोव' (अंगीठियों) का उपयोग किया जाता है। इसमें सिद्धान्त यह है कि दूषित वायु उष्ण होकर फैले और हल्की होकर घर की खिड़की, रोशनदान आदि विभिन्न मार्गों से दूर निकल जाय और उसके स्थान पर तत्काल ही ठंडी वायु नीचे के द्वारों से आ सके। पर वे लोग इस बात को भूल गये हैं कि इस अग्नि में सुगंधित और रोगनाशक पदार्थ जलाने से इसका काम लाखों गुना अधिक हो जाता है।

प्राचीन काल में जब वर्षा नहीं होती थी, अथवा युद्ध में किसी बलवान शत्रु से सामना हो जाता था और विजय का कोई मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता था तो विजय प्राप्ति के लिए यज्ञ की योजना की जाती थी। महाराज दशरथ के तीन विवाह करने पर भी जब वृद्धावस्था तक कोई सन्तान न हुई तो पुत्रेष्टि यज्ञ के द्वारा ही राम, लक्ष्मण सरीखे योद्धा पुत्ररत्न जन्मे। राक्षस होते हुए भी इन्द्रजीत राम पर विजय पाने को यज्ञ कर रहा था। जिसे श्री रामचन्द्र जी के सहायकों ने इस भय से पूरा नहीं होने दिया कि यदि यज्ञ पूरा हो गया तो इन्द्रजीत को जीतना असंभव हो जायगा। (इस प्रकार के यज्ञ हमारे दैनिक यज्ञों से अवश्य ही भिन्न रहे होंगे। इनकी प्रणाली और रूप रेखा क्या होती है, यह अनुसन्धान का विषय है।'–सन् १९४३ ई० में आर्यसमाज, बम्बई में दिए लेखक के भाषण से उद्धृत। अनुवादक) आर्यों का कोई भी संस्कार यज्ञ के बिना पूरा नहीं हो सकता। वर्तमान काल के सबसे बड़े तार्किक, सत्य के अमर उद्गाता, निष्पक्ष, अद्वितीय विद्वान्, आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द जी का कथन है कि इससे वायु शुद्धि होती है अतः मनुष्य अपने मलमूत्र से जो दुर्गन्ध उत्पन्न करता है उसे हवन यज्ञ द्वारा दूर करके वह जलवायु के बिगड़ने का कारण नहीं होता जिससे संसार में रोग नहीं फैलते। इसीलिए महर्षि दयानन्द यहाँ तक कहते हैं कि नित्य-प्रति हवन न करने वाला मनुष्य पापी है।

हवन यज्ञ की इस असाधारण प्रतिष्ठा के कारण उसके असंख्य लाभ हैं जिन्हें हम स्थूलरूप से आध्यात्मिक और आधिभौतिक–दो भागों में बांट सकते हैं। यज्ञ के आध्यात्मिक लाभ तो

[शेष पृष्ठ १४ पर]

ऊपर निर्भर है। यदि हम अपनी समाज में ज्ञान का स्तर ऊँचा करना चाहते हैं तो आर्यसभासद बनाते समय अथवा प्रस्तावित तीसरी नवीन संज्ञा के अपनाने के समय हमको मापदण्ड ऊँचा करना ही होगा। दूसरा पहलू यह है कि सार्वदेशिक सभा अथवा प्रतिनिधि सभायें समाजों में रखने योग्य पुस्तकों की दो तालिकायें (एक अत्यन्त आवश्यक और दूसरी वृहत्) अवश्य छपवायें और समाजों को बाधित करें कि प्रति वर्ष कुछ न कुछ पुस्तकें अवश्य खरीदी जावें। जिससे आर्य पुरुषों को ज्ञान वृद्धि का अवकाश मिले और माप दण्ड के अनुसार अपने को योग्य बनाकर कार्यक्षेत्र में अवतरित होने की क्षमता रख सकें।

★

सभा की सूचनाएँ

सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों की सेवा में

सर्व अन्तरंग सदस्य महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन मिति कार्तिक कृ० ७ व ८ सं० २०२३ वि० रा० कार्तिक १४ व १५ शक १८८८ तदनुसार दि० ५ नवम्बर ६६ दिन शनिवार समय प्रथम दिवस २ बजे अपराह्न से ५ बजे सायं, तथा दिनांक ६ नवम्बर ६६ दिन रविवार प्रातः ८ बजे से १२ बजे मध्याह्न तक स्थान आर्य समाज मंदिर फैजाबाद में आर्यसमाज की हीरक जयन्ती के साथ-साथ आरम्भ होगा।

निवास का प्रबन्ध–आर्य कन्या पाठशाला मुहल्ला कचारी बाजार शहर फैजाबाद मे किया गया है।

सर्वमान्य सदस्यो को फैजाबाद ज० स्टेशन पर उतरना चाहिए। स्टेशन पर स्वयंसेवकों का प्रबन्ध रहेगा। स्टेशन से आधा पौन मील कचारी बाजार है।

अतः सर्व अन्तरंग सदस्य वर्गों से प्रार्थना की जाती है कि अपने-अपने पहुंचने की सूचना पत्र द्वारा श्री मंत्री जी आर्यसमाज फैजाबाद को देने की कृपा करें।

मध्याह्न २ बजे दिन रविवार दि० ६ नवम्बर को आर्यसमाज की शोभा यात्रा में सम्मिलित होने की कृपा करें।

आशा है कि सर्व सदस्यगण सभा की बैठक में अवश्यमेव सम्मिलित होकर कृतार्थ करेंगे।

महात्मा नारायण स्वामी जयन्ती महोत्सव की सूचना

आर्य जनता को विदित हो कि श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की जन्म शताब्दि के मनाने का समय अति निकट आ रहा है। शताब्दी दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन (मथुरा) की पवित्र भूमि मे बड़े धूम-धाम के साथ मनाने का आयोजन हो रहा है। जयन्ती के निमित्त धन-संग्रह के लिए रसीदें प्रकाशित हो गयी हैं। अतः उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाजें एवं उपप्रतिनिधि सभाएं तथा निरीक्षक महानुभाव एवं सभास्थ अन्तरंग सदस्य गण महोदयों से प्रार्थना है कि उक्त निमित्त धन संग्रहार्थ रसीदें सभा कार्यालय से अथवा गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के पते से मंगाकर धन संग्रह करने की कृपा करें। जिसके लिए सभा आपकी आभारी रहेगी।

प्रोग्राम मास अक्तूबर तथा नवम्बर

महोपदेशक

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री–२५ से २७ अक्तूबर आ० स० खुदागंज (शाहजहांपुर), २८ से ३१ आ० स० शाहजहांपुर, ७, ८ नवम्बर नरही लखनऊ, ११ से १४ कटरा प्रयाग, १८ से २१ सुभाषनगर प्रयाग, २३ से २९ नवम्बर गोरखपुर।

श्री सत्यवीर जी शास्त्री–२८ से ३० लाजपत नगर कानपुर, टटीरी (मेरठ) ७-८ उन्नाव, १८ से २१ शिकोहाबाद, २५ से २८ प्रतापगढ़।

श्री विश्ववर्धन जी वेदालंकार–२८ से ३० चन्दौसी, ३१ से २ नवम्बर फरीदपुर (बरेली), ६ से ९ नवम्बर पूरनपुर

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री–१ नवम्बर से ३१ जनवरी तक आ०स० साबर (ब०प्र०)।

श्री केशवदेवजी शास्त्री–२३ से २९ अक्तूबर कन्या–वेदाना, ५ से ८ नवम्बर आ०स० कायमगंज, १८ से २१ शाहाबाद (हरदोई)।

प्रचारक

श्री रामस्वरूपजी आ०मु०–१३,१४ नवम्बर बाराबंकी, १८ से २१ शाहाबाद २५ से २८ बहराइच।

श्री धर्मपालसिंह–२८ से ३० पंदोली ३१ से २ नवम्बर फरीदपुर (बरेली) ३ से ६ नवम्बर सीतापुर १२ से १५ बिहारीपुर बरेली।

श्री ब्रजपालसिंह जी– ७-८ नरही लखनऊ, १३ से २० सीसामऊ कानपुर, २१ से २८ अलीगढ़।

श्री धर्मदत्तजी आनन्द–११ नवम्बर तक फैजाबाद, १८ से २१ सुभाषनगर प्रयाग, २५ से २८ नवम्बर प्रतापगढ़।

श्री खेमचन्द्र जी–३१ अक्तूबर तक मुजफ्फरपुर, ६ से २८ नवम्बर आ०स० टाडा।

श्री प्रकाशवीर जी–२१ से २४ सिकन्दरपुर, २७ से ३० लाजपत नगर, कानपुर, ६ से ९ नवम्बर पूरनपुर, १२ से १४ नवम्बर चन्द्रनगर लखनऊ।

श्री वेदपालसिंह जी–२७ से ३० बड़गांव, ५ से ८ नवम्बर उन्नाव, २६ से २९ गोरखपुर।

श्री जयपालसिंह जी–२२ से २४ शमशाबाद (आगरा), ५ से ८ नवम्बर कायमगंज, १९ से २१ साधुआश्रम।

श्री कमलदेव जी–२४ से २७अक्तूबर खुदागंज।

श्री ओमप्रकाश जी निर्द्वन्द्व–३१ से २ नवम्बर फरीदपुर (बरेली)

–सच्चिदानन्द शास्त्री

अधिष्ठाता उपदेश विभाग

वेदों में वर्णित—

धर्माचरण द्वारा उपार्जित धन हीं समृद्धि देता है !

(ले०—डाक्टर रामचरण महेन्द्र जी एम० ए०, पी-एच० डी०)

आज हम महँगाई का स्वर ऊँचा कर रहे हैं। प्रत्येक विभाग में दाम और नोकरी का वेतन बढ़ाने की जोरदार मांगें प्रस्तुत की जा रही हैं। हम जमाने को दोष देते हैं और सरकार को महँगाई का अपराधी ठहराते हैं। हम अपनी आर्थिक मुसीबत का कारण बाहरी मानते हैं, पर हमें देखना चाहिए कि बहुत से मामलों में हम स्वयं भी आर्थिक मुसीबतों के जिम्मेदार हैं।

सिनेमा वाले बहाबढ़ कमा रहे हैं, बाजार में पान सिगरेट की ढेर की ढेर दुकानें खुलती और अच्छी आमदनी दे रही हैं, अंग्रेजी शराब की दुकानें पर्याप्त पनप रही हैं, चाट पकोड़ी खूब बिकती है। फैशनेबिल वस्तुओं की दुकानों की बिक्री तेजी से बढ़ी है। सौन्दर्य-प्रसाधनों की बिक्री अच्छी है। तथा इसी प्रकार के विलास की वस्तुएं बेंचने वाले मालामाल हो रहे हैं।

फिर काहे की महँगाई ! यदि महँगाई होती, तो कौन उपर्युक्त वस्तुओं को खरीदता।

हम 'महँगाई' कह कर केवल अपनी शौकीनी पर बढ़े हुए खर्चों की शिकायत करते हैं। बाहरी टीपटाप और चमक दमक कायम रखने में मुश्किल पाते हैं। दिखावा करते नहीं थकते। फिर बेईमानी और मुफ्त की कमाई से वह बढ़े हुए अनुचित खर्च पूर्ण करना चाहते हैं। सर्वत्र हमी दोषी हैं। हमारी कृत्रिम आवश्यकताएं बहुत बढ़ गई है।

वेदों में आर्थिक समस्याओं का हल

वेदों में ज्ञान मन्थन का नवनीत पाया जाता है। हमारे मनीषियों ने थोड़े से शब्दों में हमारी समस्त आर्थिक कठिनाइयों का हल उपस्थित कर दिया है आज के सन्दर्भ में यह विचार हमारे बड़े सहायक हो सकते हैं। देखिए वेदों में क्या लिखा है—

अग्निनारयिमश्नवत् पोषमेव दिवे-दिवे। यशसंवीरवत्तमम् ॥

ऋग्वेद १।१।३

अर्थात् सच्ची और स्थायी समृद्धि के लिए यह जरूरी है कि हम ईश्वर के बनाये नियमों से ही ईमानदारी के श्रम से अपनी जीविका उपार्जित करें। बेईमानी का धन सदा हमसे दूर ही रहे। अनुचित रीतियों (जैसे रिश्वत, धोखा, ठगी, काला बाजार, झूठ फरेब या और अनैतिक रीतियों) से कमाया धन हम कदापि अपने पास न रक्खें। सदा अमीर बने रहने के लिए धर्म (नैतिक उपायों) से ही जीविका कमाओ और जो कुछ मिले उसे धर्म से (पूर्ण संयम और मितव्ययता पूर्वक) खर्च करो।

प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति तं चिकित्वान्प्रतिगृह्यानिधत्ते। तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचते सुवीरः ॥ ऋग्वेद १।१२५।१

अर्थात् (यह अनुभवसिद्ध बात है कि) जो निरालस्य पूर्वक धर्माचरण द्वारा धन उपार्जित करता है, उसकी रक्षा और उपभोग करता है, तथा दूसरों के हित में भी उसी प्रकार लगाता है, वह धर्माचारी व्यक्ति इस संसार में सदैव सुखी रहता है।

ईमानदारी के धन में सब में पूर्ण संतोष और शान्ति रहती है। किसी को यह भय नहीं रहता कि उनकी शिकायत हो जायगी अथवा मुकदमा इत्यादि चल जायगा। प्रत्येक पैसा जिसमें खरी मेहनत लगी है, तृप्ति देता है। अनैतिक उपायों वाला धन सदा मन पर सैनात रहता है।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देववयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥

ऋग्वेद १।१८९।१

अर्थात् हम (आधुनिक सभ्य जीवन में घुसे हुए) कुटिल कुटेवों को त्याग कर सदैव अच्छे मार्ग में चल कर धन धान्य की प्राप्ति करें।

याद रखिए—

ये त्वा देवोस्रिकं मन्यमानाः पापा भद्रमुपजीवन्ति पज्राः। न दूढ्यो अनु ददासि वामं बृहस्पते चयस इत्पियारुम् ॥

ऋग्वेद १।१९०।५

अर्थात् जो मनुष्य ईश्वर आराधना और शुभ कर्म नहीं करते, वे स्वभावतः बुद्धिहीन होते हैं। इसीलिए वे स्वत ही धन से वंचित बने रहते है।

पर ऋणा सावीरध मत्कृतानि,

माहं राजन्नन्यकृतेन भोजम्।

अव्युष्टा इन्नु भूयसी रुषास,

आनो जीवान् वरुण तासु शाधि ॥

ऋग्वेद २।२८।९

हे परमात्मन् मुझे शक्ति दो ताकि मैं पितृ ऋण, तथा ऋषि ऋण चुका सकूं। (संयोग से विषम परिस्थितिवश यदि कुछ ऋण ले लूं उसको भी अपने श्रम और संयम से जल्दी से जल्दी चुका दूं। हे ईश्वर ! मैं और की कमाई कभी न खाऊं। मैं अपनी ही ईमानदारी और सच्चे मेहनत की जीविका पर ही सदा सर्वदा जीवित रहूं। मैं दूसरे की कमाई पर कभी निर्वाह न करूं, क्योंकि यह एक पाप है। असत्य व्यवहार है। अनैतिकता है। खुद अपनी ही धर्मपूर्वक अर्जित कमाई पर जिन्दा रहूं। मेरा जीवन धर्म से सदा भली प्रकार अनुशासित रहे।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर। कृतस्य कार्य्यस्य चेह स्फातिं समावह ॥ —ऋग्वेद ३।२४।५

अर्थात् मनुष्य विद्या, बुद्धि, धर्म, गुण आदि सद्वृत्तियां और भौतिक साधनों के द्वारा ही उत्साहपूर्वक अपनी जीविका कमायें। (अनैतिक और गर्हित तरीकों, झूठफरेब और बेईमानी से हरगिज एक पैसा भी न लें) फिर इस पवित्र धन को समाज के लोक कल्याणकारी कार्यों में (जैसे धर्मशालाएं, कुएं, हरे वृक्ष लगवाने, गरीबों को दान देने में, पिछड़े हुओं को उठाने, सत्साहित्य खरीदने, चिकित्सालयों में गरीबों के लिए दवाई दिलाने, अंध कोढ़ी लंगड़े लूले अपाहिजों की सहायतार्थ) खर्च करें। धन वही धन्य है, जो विलास में नहीं, लोक-उपकारी कामों में व्यय होता है।

एक स्थान पर कहा गया है—

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय। स्तोतारमिद्दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय ।

—ऋग्वेद ७.३२।१८

अर्थात् उचित रीति से कमाया हुआ धन सत्कार्यों में लगने से मनुष्य को इस जीवन में सुख और संतोष, आन्तरिक शान्ति और सन्तुलन देता है तथा मरने पर सद्गति प्रदान करता है। जो धन को पाप के कामों में (जैसे

(शेष पृष्ठ १४ पर)

गोरक्षार्थ शासक[1] की चुनौती स्वीकार करो

जगा है वही जो कि सोया रहा है।
जगा है वही जो जगा सो रहा है॥
युवा जागता सुप्त सा हो रहा है।
कि जो शक्ति सारा नशा आ रहा है॥

चुनौती रहा राष्ट्र को दे प्रशासी।[1]
न क्या स्वाभिमानी रहा देशवासी ??
कहा मात गो को, मिटो आन पै तो।
रखो लाज माँ की पिया दूध है तो॥

कहा वेदमाता कि अघ्न्या गऊ है।
भरी भावना भव्य माता गऊ है॥
बहे रक्तधारा कटे शीश माँ का।
कृतघ्नी रहा, मूल्य आंका न माँ का॥

उठो देशवासी लखो हो रहा क्या ?
मिटा वंश गो का बताओ बचा क्या ?
रहू है रगों में सुनो जो गुहारी।
कि राज्याधिकारी कंपे जो हुकारी॥

बढ़ो आर्यवीरो यही टेक राखो।
धरा पै कहीं भी कसाई न राखो॥
बता दो सभी को कि मातु प्यारी।
'नरेन्द्रार्य' गो पै करो प्राण वारी॥

—नरेन्द्र, ओ३म् भण्डार, मैंनपुरी (उ०प्र०)

१. शासक

सत्यता की खोज—

गोवध समस्या, सरकार और मुसलमान

[ले०—श्री अतीकुरहमान किदवई]

हमारे देश में गोवध की समस्या वर्षों से विवाद का कारण बनी हुई है। अंग्रेजों के शासन में हिन्दू और मुसलमानों के मध्य इसी गोवध के झगड़े ने कैसी कैसी दुखद घटनायें उत्पन्न की और न जाने कितने मनुष्यों का रक्त बहाया गया और यह सिलसिला अभी तक जारी है।

अंग्रेजों के जमाने में भी हिन्दुओं की यही भावना थी कि गोवध बन्द किया जावे परन्तु अंग्रेज की नीति 'लड़ाओ और शासन करो' की थी। अतः अंग्रेजों ने इस समस्या को हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य फूट के तौर बनाये रखा। हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़ते रहें और अंग्रेज दोनों पर शासन करता रहे।

इस सिलसिले में देश के हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर कई बार प्रयत्न किया कि किसी सूरत से यह विवाद सदा के लिये समाप्त हो जावे और मुसलमान सदा के लिए गोहत्या करना छोड़ दें।

खिलाफत आन्दोलन के जमाने में जब हिन्दू और मुसलमानों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाया तो उस समय भी दोनों के सामने गोहत्या का विवाद मौजूद था। अतः गांधी जी और मौलाना मुहम्मद अली ने इस समस्या पर गम्भीरता से विचार करना शुरू किया और इस परिणाम पर पहुंचे कि हिन्दू मुसलमानों के मध्य घृणा का असली कारण गोवध की समस्या है और इसे प्रत्येक सम्भव उपाय से समाप्त करना है। हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए यह तय पाया गया कि मुसलमान गो हत्या बन्द कर दें और संगठित होकर अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा बना लें। साधारण मुसलमानों ने भी मौलाना मुहम्मद और गांधी जी के इस विचार का जोरदार समर्थन किया और इस पर अमल भी शुरू हुआ परन्तु बाद में खिलाफत आन्दोलन ही दम तोड़ गया और इसके साथ ही दूसरी बातें भी भुला दी गईं।

खैर! यह दौर अंग्रेजों का था। परन्तु आजादी के बाद देश के हिन्दू ठीक ही यह आशा करते थे कि सरकार गोवध बन्द करने के मामले में इनकी धार्मिक भावनाओं का अवश्य ही सम्मान करेगी और देश भर में गोवध पर प्रतिबन्ध लगा दिया जायेगा। परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ और हिन्दुओं का सरकार के रवैये से निराशा हुई जिसे वह बार बार व्यक्त करते रहे और अब इस का परिणाम यह हुआ कि देश भर में सरकार के रवैये के विरुद्ध घृणा की भावना उत्पन्न हो गई। जलसे, जलूस और प्रदर्शनों ने जोर पकड़ा। अब सरकार के सामने केवल यही सूरत शेष रह जाती है कि वह सारे देश में गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दे।

स्वाधीनता के बाद कांग्रेसी सरकार का यही रवैया रहा है कि जब कोई समस्या अत्यन्त गम्भीर रूप धारण कर लेती है तो उस समय ही सरकार हरकत में आती है और जनता की राय के सामने झुक जाती है। गोवध की समस्या भी अब गम्भीर रूप धारण कर गई है और यदि तत्काल ही कोई प्रभावशाली कार्यवाही न की गई तो समस्या की गम्भीरता स्पष्ट ही है। इसलिए इससे पूर्व कि गोवध की समस्या और भी गम्भीर रूप धारण करे सरकार पर यह जिम्मेवारी है कि वह देश के करोड़ों हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करे और इस झगड़े को सदा के लिए समाप्त कर दे।

गोरक्षा-आन्दोलन

मद्यपान और गोवध के सम्बन्ध में सरकार के कानून त्रुटिपूर्ण और हास्यास्पद हैं। किसी राज्य में मद्यपान कानूनी तौर पर बन्द है तो किसी राज्य में इस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। इसी प्रकार कई राज्यों में गोवध कानूनी तौर से बन्द है और साथ ही कई राज्यों में इस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। कानून में समानता की नितान्त आवश्यकता है अन्यथा कानून का कोई मूल्य नहीं रह जाता।

गोवध के विरोध में वर्तमान आन्दोलन का जहां तक सम्बन्ध है वह मुसलमानों के विरुद्ध नहीं है बल्कि सरकार के विरुद्ध है और इसका वास्तविक उद्देश्य बड़े-बड़े बूचड़खानों को बन्द कराना है। आजादी के बाद गोवध पर जो कुछ भी प्रतिबन्ध लगाये गये मुसलमानों ने उनका पूर्ण सम्मान किया है। जिन क्षेत्रों में गोवध पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है वहां के मुसलमानों की यह जिम्मेदारी है कि वह समय की नजाकत को अनुभव करें और कोई ऐसा मौका न दें जिससे कोई विरोध की स्थिति उत्पन्न हो।

समय और समझ बूझ का तकाजा है कि मुसलमान और इनके नेता मैदान में आयें और देश के अपने करोड़ों हिन्दू भाइयों के साथ गोवध के विरुद्ध आवाज उठायें और हिन्दुओं को विश्वास दिलायें कि देश के मुसलमान गोवध के मामले में पूर्णरूप से उनके साथ हैं। गोवध के विरोध में जहां जलसे जलूस हों और प्रदर्शन हों उनमें भी मुसलमान सम्मिलित हों और गोवध पर प्रतिबन्ध की मांग का जोरदार समर्थन करें। जहां तक साधारण मुसलमानों का सवाल है वह गोहत्या से बहुत दूर हैं। परन्तु खेद की बात है कि मुसलमानों की धार्मिक संस्थाओं और इनके नेताओं को अभी तक समय की गम्भीरता का आभास नहीं हुआ है और वे भी आज संकीर्णता में फंसे हुए प्रतीत होते हैं। हालांकि समय का तकाजा यही है कि वे मैदान में निकलें और स्पष्ट शब्दों में गोवध की निन्दा करें क्योंकि अब समय आ गया है कि व्यर्थ की दलीलों से कुछ बनने वाला नहीं है बल्कि अधिक बिगड़ने का खतरा है।

आज मैं मुसलमानों की समस्या को जिस ढंग से सोचता हूं उसका आधार ठोस वास्तविकता पर आधारित है और यही कारण है जो प्रायः मुसलमानों को विभिन्न खतरों से अवगत करता रहता हूं। परन्तु दुर्भाग्य से सत्ताप्रिय और अवसरवादी वर्ग हमेशा ही मुसलमानों को गुमराह करता रहा है और आज भी इसका यही प्रयत्न है कि देश का मुसलमान तबाह व बर्बाद होता रहे परन्तु यह मुसलमानों को कभी सही मार्ग दिखाने का प्रयत्न न करेगा। जब वस्तु स्थिति यह हो तो फिर आम मुसलमानों की क्या जिम्मेदारी है और इन का क्या कर्त्तव्य है? आम मुसलमानों को यह सोचना चाहिए कि इनके गुमराह नेता इनको किधर ले जा रहे हैं? आम मुसलमानों के हृदय में यदि कोई बात है तो वह यही है कि आम हिन्दुओं के हृदय में इनके लिए स्थान हो। परन्तु खेद है कि मुसलमानों के मजहबी ठेकेदार इस वास्तविकता से पूर्णतः अनभिज्ञ हैं।

मेरी यह बात चाहे कितनी भी कटु क्यों न हो परन्तु फिर भी मैं यही कहूंगा कि मुसलमानों को अब कांग्रेस और इसकी सरकार की ओर से बिल्कुल ही अपनी आंखें बन्द करनी होंगी क्योंकि सरकार के सहारे पर जीने वालों का कोई मूल्य नहीं होता।

आकोला और अन्य स्थानों पर जो कुछ हुआ वह निन्दनीय है। इस सिलसिले में मुसलमानों की ओर से यदि कोई निन्दनीय हरकत हुई है तो वह अत्यन्त खेदपूर्ण और निन्दायोग्य है और यदि मुसलमान निर्दोष हैं और कोई शरारती हिन्दू दोषी है तो वह भी निन्दनीय है। परन्तु मैं यह बात भी साथ ही कह देना चाहता हूं कि जब गोवध के विरोध में जलूस निकला तो मुसलमान की क्या जिम्मेदारी थी? यदि किसी शरारती व्यक्ति ने जलूस पर पानी या पत्थर फेंके थे तो मुसलमानों को एक आवाज होकर मैदान में आना चाहिए था और हिन्दुओं को यह आश्वासन देना चाहिए था कि उनका इससे कोई सम्बन्ध नहीं है और वे हिन्दुओं के साथ हैं और यदि सौभाग्य से मुसलमान पहले ही से इस जलूस में शामिल हो जाते तो यह बेढंगक घटना कभी घटित ही न होती। इसलिये मुसलमानों का हित इसी में है कि वे खुलकर मैदान में निकल आवें और हिन्दुओं के साथ मिलकर गोवध के विरुद्ध आम का जोरदार समर्थन करें। यदि आज भी वे अपने घरों में बेखबर और उदासीन होकर बैठे रहे तो वे निश्चित ही इस प्रकार की परेशानियों में पड़ रहेंगे।

आज आवश्यकता इस बात की है कि देश में गोवध के विरोध में जो आन्दोलन चल रहा है उसके नेताओं से मुसलमानों के नेताओं को मिलना चाहिये और उन्हें विश्वास दिलाना चाहिये कि मुसलमान उनके साथ हैं और इसका असली तौर पर प्रमाण भी उपस्थित करना चाहिये।

मुस्लिम संस्थायें और मुसलमान नेता मेरे उपरोक्त विचारों से बहुत परेशान होंगे, परन्तु मेरे सामने और मुसलमानों के सामने और कोई दूसरा रास्ता भी नहीं है।

निर्भीक महर्षि दयानन्द

[ले०—श्री जगदीशप्रसाद सिंह, "आर्य सिद्धान्त रत्न", मूसराय]

"अभयं मित्राद् अभयम् मित्रात्,
अभयं ज्ञातादभयं पुरोयः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः,
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।"
—अथर्व० १९।१५।६

भावार्थ—मुझे मित्रों से भय न हो, जो मित्र नहीं हैं उनसे भी डर न हो। जो मेरे परिचित हैं उनसे भी भय न हो, जो दूर हैं, आगे आने वाले हों उनसे भी भय न हो। रात्रि एवं दिन में भी मैं अभय रहूं, सभी दिशाओं के वासियों से मुझे भय न प्राप्त हो।

निडर रहना आस्तिकता का प्रधान गुण है। आस्तिक विश्व में किसी से नहीं डरते हैं। कायरता, डरपोकपना नास्तिकता का प्रधान गुण है। ईश्वर भक्त, अपने इष्ट, प्रभु के सिवा किसी से भय नहीं करते हैं। क्योंकि उनका ईश्वर निर्भय रहता है वह किसी से नहीं डरता है। अतः ईश्वर उपासक का निर्भय रहना उसका उच्चतम गुण है। म० दयानन्द ईश्वर के सच्चे उपासक थे। उनके गुणों के सम्बन्ध में सबसे प्रथम मैं उनकी 'निर्भीकता पर प्रकाश डालना चाहता हूं।

नर्मदा के स्रोत की ओर

सच्चे योगियों के अनुसन्धान हेतु उन्हें नर्मदा के स्रोत की ओर प्रस्थान करते हुए देखता हूं। नर्मदा का स्रोत बीहड़ जंगलों से भरा हुआ है। अलक्ष्य पर्वत मालाओं से मार्ग दुरूह हैं। इस यात्रा में दयानन्द को जो कष्ट उठाने पड़े हैं जैसी कठिन विपत्तियों का सामना उन्होंने किया उसका वर्णन पढ़कर ही शरीर रोमांचित हो उठता है।

घने जंगल में प्रवेश करते हैं मार्ग का चिन्ह कहीं नहीं है। युवक दयानन्द रुककर मार्ग का खोज करता है कि अचानक एक महा भयानक विपत्ति सामने आ जाती है। मुह खोले हुए काल का साक्षात् रूप लिए हुए एक भयंकर काला रीछ आता हुआ दिखाई पड़ा। गरजता हुआ अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया। परन्तु उस निर्भीक युवक सन्यासी ने अपनी चेतना नहीं खोई, उसने अपनी पतली छड़ी को रीछ को मारने के लिए धीरे-धीरे उठाई, न जाने रीछ ने क्या सोचा, वह धीरे से पीछे मुड़ गया और भाग गया। रीछ की विकट गरज को सुनकर आस-पास के झोपड़ियों में रहने वाले व्यक्ति मोटे-मोटे लट्ठ को लिए हुए आये। स्वामी जी से अनुरोध किया कि वे आगे न जायं क्योंकि मार्ग बहुत ही विकट है और व्याघ्र, सर्प, आदि हिंसक प्राणियों से भरा हुआ है। परन्तु दृढ़ संकल्पी महर्षि दयानन्द एक नहीं सुनता है। वह आगे बढ़ने के संकल्प को दुहराता है और चल देता है। कहीं रुक कर, कहीं बैठ कर, कहीं टेहुनों के सहारे चढ़ते गए। शरीर लहू-लुहान हो गया। वस्त्र की धज्जी-धज्जी उड़ गई क्षुधा से शरीर अवसन्न हो गया। पर दयानन्द विपत्तियों एवं आपदाओं से डरना तो जानता ही नहीं है। दयानन्द की मानसिक शक्ति के आगे संसार की कोई विपत्ति मानो विपत्ति नहीं है। उनकी अद्वितीय निर्भीकता के सामने विश्व का कोई भी भय दयानन्द को विचलित न कर सका। अन्त में दयानन्द अपने संकल्प के अनुसार नर्मदा के स्रोत पर पहुंच जाते हैं।

कर्नल ब्रूक और स्वा० दयानन्द

कर्नल ब्रूक भारत के गवर्नर जनरल का पोलिटिकल एजेन्ट था। बहुत प्रभावशाली व्यक्ति था। स्वामी जी उन दिनों अजमेर में थे। कर्नल ब्रूक साहब गेरुए वस्त्रधारी सन्यासियों से बहुत चिढ़ता था। गेरुए वस्त्र धारी संन्यासी उसके समक्ष कभी नहीं होते थे। स्वामी जी भी बंसीलाल के उद्यान में कुर्सी पर बैठे हुए थे कि कर्नल साहब अपनी कोठी से निकले और उद्यान की ओर चले। पं० वृद्धिचंद्र जो उस समय स्वामी जी से अष्टाध्यायी पढ़ रहे थे बड़े ही घबराये और स्वामी जी से कहा कि महाराज कुर्सी दूसरी ओर कर लें कर्नल साहब आ रहे हैं। परन्तु ऋषि दयानन्द ने कुर्सी दूसरी ओर करने के बजाय कुर्सी और आगे कर ली। जब कर्नल साहब ने बाग में प्रवेश किया तो उनके सम्मानार्थ वे कुर्सी से उठकर टहलने लगे। ब्रूक साहब ने पास आकर अपना टोप उतार कर स्वामी जी से हाथ मिलाया और दोनों व्यक्तियों ने आमने-सामने कुर्सी पर बैठकर वार्तालाप किया जो बातें स्वामी जी और ब्रूक साहब में हुई उनसे भी उनकी निर्भीकता ही टपकती।

क्रोधी जाट

सोरों में स्वामी जी के प्रभाव से मूर्ति पूजकों में खलबली मच गई। इससे पौराणिक पंडित रुष्ट हो गये। स्वामी जी की हत्या कर देने का षड्यन्त्र चलने लगा। एक दिन स्वामी जी उपदेश कर रहे थे कि पौराणिक पंडितों का उकसाया हुआ एक क्रोधी जाट मोटा लट्ठ लिए आया और स्वामी जी से कहा अरे साधु ! तू मूर्ति पूजा का खंडन करता है, गंगा मैया की निन्दा करता है, देवी-देवताओं को गाली देता है। बता यह लट्ठ तेरे कहां पर मार कर तुझे समाप्त करूं ? यह सुनकर सारी सभा विचलित हो गई परन्तु निर्भीक दयानन्द शान्त रहे। उन्होंने गम्भीरतापूर्वक कहा कि यदि तू समझता है कि वेद धर्म प्रचार करना अपराध है, तो इसका अपराधी मेरा मस्तक है। वही मुझसे यह कार्य कराता है। यदि तू अपराधी को दण्ड देना चाहता है तो अपना लट्ठ मेरे सिर पर मार। यह कह कर स्वामी जी ने अपनी दृष्टि उस पर डाली। महाराज की आंखें ज्यों ही उसकी आंखों के सामने हुई उसका हिंसक भाव विलुप्त हो गया और वह श्री चरणों में नत हो गया।

कर्णवास की घटना

म० दयानन्द सन् १८६८ में कर्णवास पहुंचे। कर्णवास गंगा के तट पर है। ज्येष्ठ दशहरा के स्नान का बड़ा महात्म्य है। स्वामी जी का उपदेश धुआंधार चल रहा था। एक दिन कर्णवास के ठाकुर कर्णसिंह दलबल सहित गंगा स्नान को पहुंचे। ठाकुर साहब चक्रांकित सम्प्रदाय के अनुयायी थे और इस सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गुरु रंगाचार्य के शिष्य थे। स्वामी जी वैष्णव मत का खंडन करते हैं। यह बात ठाकुर साहब को मालूम थी। ठाकुर साहब की उग्रता से पौराणिक पंडित लाभ उठाना चाहते थे उन्हें स्वा० दयानन्द के विरुद्ध भड़काया गया था। एक दिन महर्षि दयानन्द उपदेश कर रहे थे कि ठाकुर साहब पहुंचे। स्वामी जी को प्रणाम कर बोले हम कहां बैठें ?

द०—जहां आपकी इच्छा हो।

कर्णसिंह—घमंड के साथ बोले मैं तो वहीं बैठूंगा जहां आप बैठे हो। स्वामी जी शीतलपाटी खिसका दी और कहा आइये बैठिये। ठाकुर का प्रथम वार निष्फल गया। तब उन्होंने पैंतरा बदला और पूछा गंगा जी को नहीं मानते हो ?

स्वामी—जितनी गंगा हैं उतनी मानता हूं।

कर्ण०—कितनी ?

स्वा०—हम लोगों की गंगा तो कमण्डलु में है।

कर्णसिंह ने गंगा स्तुति के कुछ श्लोक पढ़े और उसका माहात्म्य पूछा। स्वामी जी ने गंगा स्तुति को कोरा गप्प बताया और कहा कि यह केवल पीने का पानी है मोक्ष गंगा जल से नहीं बल्कि अपने कर्मों से प्राप्त होता है। ठाकुर साहब के ललाट पर तिलक छाप था, स्वामी जी ने उसका लक्ष्य करके कहा तुम क्षत्रिय होकर भिखारियों का चिह्न क्यों धारण किये हो ? इस पर ठाकुर क्रोध के आवेश में तलवार निकाल बैठा। निर्भीक दयानन्द जरा भी विचलित नहीं हुआ। दहाड़ते हुए कहा 'अरे मूर्ख यदि शास्त्रार्थ करना हो तो जोधपुर और जयपुर के राजाओं से कर और यदि शास्त्रार्थ करना हो तो अपने गुरु रंगाचार्य को वृन्दावन से बुला ला। तुम कैसे ठाकुर हो जो रामलीला और रासलीला में लौन्डों का स्वांग भरवाकर महापुरुषों का नकल उतार कर उनको नचवाते हो ? अगर तुम्हारी बहन-बेटी का कोई स्वांग भरवा कर नचवाये तो तुम्हें कैसा लगेगा ? यह सुनकर कर्णसिंह क्रोध से पागल हो उठा। उसके नेत्र रक्तिम हो उठे, नथुने फड़कने लगे उसने आव देखा न ताव झट तलवार का वार कर दिया। स्वामी जी ने विद्युत् की तरह तलवार छीन ली और पृथ्वी पर टेक कर तोड़ डाली। कर्णसिंह अपमानित होकर लौट गया। कई लोगों ने कहा कि इसकी रिपोर्ट थाने में जाकर दी जाय। परन्तु स्वामी जी ने कहा कि जब वह अपना क्षात्रित्व को पूरा न कर सका तो मैं क्यों ब्राह्मणत्व से पतित होऊं। संतोष करना हमारा धर्म है।

बरेली की घटना

स्वामी जी प्रचार कार्य करते हुए बरेली पहुंचे और रईस लाला लक्ष्मीनारायण की कोठी में ठहरे। व्याख्यान आरम्भ हो गये। व्याख्यानों में ऊंचे राज्याधिकारी भी आया करते थे। एक दिन के व्याख्यान में ऋषि दयानन्द ने पुराणों की असम्भव घटनाओं का खंडन किया। उस सभा में पादरी स्काट, मिस्टर रेंड जिला मजिस्ट्रेट और मि० एडवर्ड कमिश्नर तथा अन्य प्रभावशाली १५।२० यूरोपियनों के साथ उपस्थित थे। पुराणों के असम्भव बातों के खंडन से कलक्टर एवं कमिश्नर बड़े प्रसन्न हुए, तालियां बजाईं। स्वामी जी महाराज इस विषय को समाप्त कर बोले अब किरानियों (क्रिश्चियन्स) की लीला सुनो। "वह ऐसे भ्रष्ट हैं कि कुमारी के पेट से बेटा पैदा होना बताते हैं और दोष सर्वज्ञ, शुद्ध स्वरूप परमात्मा को देते हैं। ऐसा घोर पाप करते इन्हें लज्जा नहीं आती। कलक्टर, कमिश्नर एवं अन्य यूरोपियनों के चेहरे क्रोध से रक्तिम हो उठे। व्याख्यान की समाप्ति पर कलक्टर ने अपनी कोठी पर लाला लक्ष्मी नारायन को बुला भेजा। साहब ने कहा कि अपने स्वामी जी से कहो कि इतनी सख्ती से व्याख्यान न दिया करें। हम लोग सभ्य हैं इसे सह लेंगे। लेकिन जाहिल हिन्दू और मुसलमान भड़क जाएं तब लाचार होकर मुझे उनका व्याख्यान बन्द करा देना पड़ेगा।

दूसरे दिन व्याख्यान में स्वामी जी

(शेष पृष्ठ १० पर)

एक मुस्लिम देश में पुनर्जन्म का एक विचित्र उदाहरण

[ले०—प्रतापकरण माथुर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के परामनोविज्ञान विभाग में शोध सहायक]

प्रस्तुत घटना लेबनान देश के कोरनाइल नामक गांव के एक ड्रूज परिवार में हुई थी। ड्रूज धर्म का जन्म सन् १०१७ ई० में हुआ, जब फातिमिद इस्लामिक खलिफ एलहाकिम ने जेरूसलम के पवित्र गिरजाघर को नष्ट कर के अपने आपको ईश्वर का अवतार घोषित कर दिया था। इसी घटना के थोड़े समय पश्चात् वह रहस्यपूर्ण तरीके से गायब हो गया, उसके अनुयायियों ने यह घोषित किया कि वह मरा नहीं था, बल्कि कहीं पर छिपा हुआ था जो बाद में महदी के रूप में वापस आने वाला था। इसी घटना से ड्रूज धर्म में पुनर्जन्म का स्थान ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मिलता है। ड्रूज जाति मुस्लिम सम्प्रदाय का ही एक अंग है।

एल-हाकिम के उत्तराधिकारियों ने उसके अनुयायियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया और उनको वहां से भगा दिया। एल-हाकिम के अनुयायियों ने, जिनको यह पूर्ण विश्वास था कि एल-हाकिम मरा नहीं बल्कि वापस आने वाला था, आखिर सीरिया में जाकर शरण ली। इस दल का नेता एक दर्जी था, जिसके नाम के पीछे ड्रूज सम्प्रदाय का नाम पड़ा। पड़ोस के मुस्लिम सम्प्रदाय और दूसरे अन्य धर्म के पालने वाले मनुष्यों ने ड्रूज लोगों को बहुत ही परेशान किया, इसलिए कि वे पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। इसीलिए बाद में वे लोग अपने पुनर्जन्म सम्बन्धी विश्वासों को गुप्त रखने लगे। ड्रूज सम्प्रदाय अन्य मुस्लिम सम्प्रदायों से धार्मिक धारणाओं में इतना अधिक भिन्न हो गया था कि कुछ लोग ड्रूज धर्म को मुस्लिम धर्म न समझकर कुछ अन्य ही धर्म समझते थे और आजकल भी इसको बहुत से लोग ऐसा ही समझते हैं। लेकिन वास्तव में ड्रूज लोग अपने धर्म को इस्लाम धर्म की ही एक शाखा मानते हैं और मोहम्मद को पैगम्बर मानते हैं।

जैसे-जैसे ड्रूज लोगों के धार्मिक संकट कम होते गये वैसे वैसे वे लोग अपने धर्म को खुले रूप में अपनाने लगे। पुनर्जन्म इस धर्म का मूल सिद्धांत है। ड्रूज लोग इस बात में विश्वास रखते हैं कि मनुष्य का पुनर्जन्म उसकी मृत्यु के तुरन्त पश्चात् ही हो जाता है। जहां पर मनुष्य की मृत्यु और उसके पुनर्जन्म के बीच कुछ समयान्तर होता है, जैसा कि प्रस्तुत वृत्तान्त से प्रतीत होता है, तो ड्रूज लोग यह मानते हैं कि इस बीच के समय में शरीर ने किसी अन्य शरीर में अवश्य प्रवेश किया होगा। अगर इस मध्यान्तर की स्मृति बच्चे को नहीं है, तो यह समझा जाता है कि उसके उस जीवन में कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं हुई या उसकी स्मृति में कोई बाधा पड़ गयी है।

जब जन्म लेने वाले व्यक्तियों की संख्या से मरने वाले व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है जैसा कि ड्रूजों के अनेक युद्धों के समय हुआ है, तो इन लोगों की मान्यता है कि ऐसी आत्मायें निर्धारित स्थान पर कुछ समय के लिए प्रतीक्षा करती हैं। पहले ऐसा स्थान चीन समझा जाता था। युद्धों के पश्चात् स्त्रियाँ फिर बहुत बच्चों को जन्म देती हैं, जिससे कुछ समय के लिए मरनेवालों से जन्म लेने वालों की संख्या बढ़ जाती है। और किसी भी अन्य परिस्थिति में ड्रूज लोग किसी भी प्रकार से बीच के समय को नहीं मानते। ड्रूज जाति के लोगों का यह विश्वास है कि उनकी जाति एक ऐसी पृथक् जाति है, जिसमें ईश्वर ने लोगों की संख्या को बराबर रखा है। आजकल ड्रूज लोग लेबनान, दक्षिणी सीरिया के पहाड़ी भागों तथा उत्तरी इजराइल और जार्डन के निकटवर्ती भागों में बस गये हैं।

पिछले जीवन के दुख: इस जीवन की प्रसन्नता

एहमद इलावर का जन्म २१ दिसम्बर सन १९५८ को लेबनान के कोरनाइल नामक गांव में हुआ था। छोटी अवस्था में ही उसने अपने पूर्वजन्म की बातें बतानी शुरू कर दी थीं वह अपने आप को खरेबी गांव का बतलाता था। कुछ बड़ा होने पर अपने आप को चलता-फिरता देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ करता था। जब कभी वह किसी ट्रक और मोटर आदि को देखता, तो घबरा सा जाता था। इस घटना की सूचना राजस्थान विश्वविद्यालय के परामनोविज्ञान विभाग को मिली। विभाग के संचालक डा० हेमेन्द्र नाथ बनर्जी सन् १९६४ के सितम्बर मास के पहले सप्ताह में आक्सफोर्ड विद्यालय में होने वाली पैरासाइकोलाजी कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिए लन्दन पहुंचे। लौटते समय प्रस्तुत घटना की जांच करना उचित समझकर वे कोरनाइल (लेबनान) ठहरे। काफी दिन लेबनान में रहकर उन्होंने घटना की छानबीन विश्वस्त व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कर की। इस जांच के फलस्वरूप बहुत से तथ्य प्रकाश में आये हैं।

ऐसा बताया जाता है कि एहमद जब डेढ़ या दो साल का था, तभी से वह अपने पुनर्जन्म का वृत्तान्त सुनाने लग गया था। उसी अवस्था में वह बहुत से लोगों का नाम लिया करता था। अपने गांव का नाम खरेबी (लेबनान) बतलाता था और अपने जीवन की कई घटनाओं और सम्पत्ति आदि का विवरण देने लगा था। कभी-कभी वह अपने मन में जोर-जोर से लोगों के नाम लेता और अपने आप से बातें करता हुआ स्वयं से ही पूछता था कि अमुक-अमुक व्यक्ति कैसे होंगे। जब कभी भी वह अपने पूर्वजन्म की बातें करता तो उसके पिता उसको डांटते थे। इसलिए उसने अपने पिता के सम्मुख ऐसी बातें करना बन्द कर दिया और तब से अपनी मां और परिवार के अन्य सदस्यों से ये बातें किया करता था।

खरेबी गांव कोरनाइल से ६७ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। एक दिन खरेबी गांव का एक व्यक्ति कोरनाइल में किसी काम से आया। बालक एहमद ने उसको सड़क पर देखकर तुरन्त ही पहचान लिया। इससे एहमद के परिवार वालों को आश्चर्य तो हुआ लेकिन किसी ने भी उसे खरेबी ले जाने और घटना की जांच करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। जब वह थोड़ा बड़ा हुआ और अपनी टांगों पर चलने-फिरने लगा, तो वह आश्चर्य से अपनी टांगों को देखता और कहता प्रसन्न होकर अपनी मां से कहता, "देखो मां, मैं अपनी टांगों पर खड़ा होकर अब फिर घूम सकता हूं।"

एहमद अक्सर दो शब्द बोला करता था—'महमूद' और 'जामिल'। लोग इन शब्दों को सुनकर कुछ समझ नहीं पाते और आश्चर्य व्यक्त करते थे कि वह क्या कहता है। बहुधा वह जामिल के सौन्दर्य का वर्णन किया करता था। कभी-कभी वह एक ट्रक-दुर्घटना की बात भी किया करता था। वह कहा करता था कि कोई एक व्यक्ति ट्रक के नीचे आ गया था और उसकी टांगें ट्रक से कुचल गयीं थी। इन सब बातों को सुनकर लोग हैरान हो जाते थे और कुछ समझ न पाते थे।

समय बीतता गया और एहमद बड़ा हुआ। लेकिन खरेबी गांव की बातें वह अब भी किया करता था। कुछ व्यक्ति इस बच्चे को देखने के लिए कोरनाइल पहुंचे। उन्होंने उसके माता पिता से आग्रह किया कि उसे खरेबी ले जाना चाहिए। पहले तो उसके माता-पिता ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया, किन्तु उनको जब बहुत समझाया गया तो वे लड़के को खरेबी ले जाने के लिए राजी हो गये। जब वे लोग खरेबी पहुंचे, और छानबीन की, तो विदित हुआ कि एहमद द्वारा बतायी गई घटनायें इब्राहिम बाउहाम जी नामक एक २५ वर्षीय युवक के जीवन से मिलती-जुलती थीं। वह नवयुवक रीढ़ की हड्डी के क्षय रोग से पीड़ित हो गया था और उसी से उसकी मृत्यु १८ सितम्बर, सन १९४९ को हो गई थी। बीमारी के अन्तिम समय में वह चलने में असमर्थ हो गया था। अतः इस जीवन में वह जब चलने-फिरने लगा, तो उसका प्रसन्न होना स्वाभाविक था तथा वह अपनी प्रसन्नता को व्यक्त भी करता रहता था। अपने पैरों को देखकर वह एकाएक प्रसन्न हो उठता था।

पूर्वजन्म का वह प्रेम प्रसंग

इब्राहिम बाउहाम जी एक रूपवती कन्या से प्रेम करता था। पर इस लड़की से इब्राहिम का विवाह नहीं हुआ था। इब्राहिम की मृत्यु के पश्चात् इस लड़की ने किसी और व्यक्ति से विवाह कर लिया था। एहमद इस प्रेम प्रसंग की चर्चा भी किया करता था। जब एहमद तथा अन्य व्यक्ति खरेबी गये, तो एहमद द्वारा कही हुई इस प्रेम प्रसंग की सभी बातें तथ्यपूर्ण पाई गई। इतना ही नहीं खरेबी पहुंचने पर एहमद ने उस लड़की का निवास स्थान भी बता दिया था। ऊपर जो 'जामिल' शब्द का जिक्र किया गया है, वह इसी लड़की के विषय में ही

(शेष पृष्ठ १० पर)

अरण्य रोदन!

(ले०— 'अजित')

भारत का स्वतन्त्रता संग्राम महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अपने यौवन पर था। अति प्राचीन किन्तु सुषुप्त भारत राष्ट्र अपने अभिनव जागरण की तन्द्रा में अंगड़ाइयाँ ले रहा था। स्वदेश, स्व-भाषा और भूषा की सम्मिलित आकांक्षायें जन मानस में आलोड़ित हो रही थीं। स्वतन्त्र नवागन्तुक के स्वागत गान के लिए उत्सुक थे तो परिजन दल के सवाल जवाब की टोह में थे। उधर उनके अब मौंटेग्यू चेम्स फोर्ड, साइमन, इरविन आदि के रूप में सक्रिय थे तो इधर के सूत्रधार मोहन ने भी पाञ्चजन्य का उद्घोष करवा दिया था, यद्यपि शान्ति से सत्ता के हस्तान्तरण के सब मार्ग खोज निकालने के लिए आधुनिक इन्द्र-प्रस्थ की गोलमेज कान्फ्रेंस में भी उन्होंने भाग लिया था। अभी गृह शासन की भूमिका ही बन रही थी, किन्तु अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अंग्रेजी शासन के समानान्तर अपना सेवादल खड़ा कर दिया था जो बाढ़ भूकम्प आदि दैवी आपदाओं में जनसेवा कर उसे मात दे रहा था। देश के कौरव पाण्डव दल अपनी-अपनी शक्ति का संग-ठन और संतुलन कर रहे थे। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—शिक्षा, शासन, न्याय आदि में दोनों पक्षों के समर्थक विद्यमान थे।

प्रयाग विश्वविद्यालय का शिक्षा के क्षेत्र में अन्तर्देशीय स्तर था किन्तु दोनों पक्षों में यहाँ भी स्पर्धा थी। म्योर होस्टल, हालैण्ड हाल और पी० सी० बैनर्जी होस्टल यदि अंग्रेजियत के ध्वज वाहक थे तो जगनाथ झा और हिन्दू छात्रावास आदि राष्ट्रियता के गढ़, एक में हिन्दुस्तानियत के दीवाने रहते थे तो दूसरे में अंग्रेजियत के शिकदारा। पी० सी० बैनर्जी और सर सुन्दरलाल होस्टल उस समय मुस्लिम धनी वर्ग के छात्रों के लिए वैसे ही प्रसिद्ध थे जैसे म्योर होस्टल सर्वोत्तम विद्यार्थियों के लिए। यदि दोनों में एक बात सामान्य थी तो वह थी अंग्रेजियत की धारा-एक में पठन-पाठन विमुख और दूसरे में क्रीड़ोन्मुख। सम्पन्न वर्ग के कतिपय निराली छात्र भी वैभव की इस धारा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते थे। सर सुन्दरलाल होस्टल के हरे भरे लान पर टैनिस का दृश्य उप-स्थित था। सफेद फलालैन की पतलून, सफेद मोजे और जूते तथा रेशमी कमीज पर लाल रेशम की टूटक टाई लगाये हरीश बाबा हाथ पैर और कमीज से लेकते हुए प्रकाश से कह रहा था एक पौइन्ट पर—"मेरा पौइन्ट हुआ, टेन लव। तुम्हारा फाउल हुआ।" प्रकाश ने उत्तर दिया "जब तक हैण्ड कमजोर है तो क्यों खेलते हो और बेईमानी करते हो।"

"हट बन" हरीश चीखा और प्रकाश अपना रैकेट लेकर चला गया बुदबुदाता हुआ—'पैसा होने से क्या खेल भी आ जाता है, 'डैम इट'। और वह अनमना सा होकर जीने से ऊपर चढ़ गया अपने कमरे की ओर। कामन रूम के पास जाकर वह रुका। एक ओर उसका मित्र चन्द्रप्रकाश कैरम खेलने में तल्लीन था 'डबल शाट—रिबाउन्ड, टैनजेन्ट' आदि शब्द उसके मुँह से निकल रहे थे। कहीं ब्रिज की गोष्ठी जमी थी कहीं शतरंज की। उसने सब पर एक उड़ती नजर डाली कहीं भी बैठने की उसकी इच्छा न हुई। चित्र का दूसरा पक्ष उसके मानस पटल पर अवतीर्ण हो रहा था—पददलित, त्रस्त, पादाक्रान्त जनता का—जिसका हाल वह सरदार पटेल के भाषण में उस दिन पुरुषोत्तम दास टण्डन पार्क में सुनकर आया था और वह मन ही मन दोनों रूपों की तुलना करने लगा। इस विचारधारा में वह खोया सा कितनी देर खड़ा रहा बोध नहीं, अपनी आँखों पर अनायास छाई हुई पट्टी को उसने बलपूर्वक अलग करने की चेष्टा करते हुए कहा—"विपिन" नहीं, अच्छा हरीश" और दोनों हाथ ढीले पड़ गये, सिलसिला शुरू हुआ। 'कैसे जायें' और छात्र मण्डली की जीवलोचित वृत्ति सब दुश्चिन्ताओं का अतिक्रमण करती हुई प्रवाहित होने लगी, नवीनता और दुर्धर्ष साहस की खोज में।

युवकों की साहसिक वृत्ति और उद्दाम पर्यटन की इच्छा की पूर्ति के लिए ही मानो प्रयाग का अखिल भारत मेला आ उपस्थित हुआ था और उसमें भी आकर्षण का परम केन्द्र था अग्रास सूर्यग्रहण का स्नान। पुण्य सलिला भगवती भागीरथी के तट पर त्रिवेणी स्नान करने के अक्षय पुण्य के भागी बनने के लिए देश के कोने-कोने से जनता उमड़ पड़ी थी। ऐसे सुअवसर को भला छात्र मण्डल कैसे हाथ से जाने देता। लड़कों की टोलियाँ सूर्योदय के पूर्व ही गंगा की ओर प्रयाण कर चलीं। ऐसी ही एक टोली में हमारे परिचायक छः छात्र थे जो विश्वविद्यालय के स्विमिंग क्लब के सदस्य थे। गत रात्रि को ही स्नान की योजना बन चुकी थी। सर सुन्दरलाल होस्टल से दो युवक प्रकाश और हरीश झोलों में कपड़े लिए और अंग्रेजी में बात करते निकले और हिन्दू होस्टल पहुँचे। एक कमरे पर दस्तक दी—'आनन्द प्रकाश चलोगे नहीं क्या, अभी सो रहे हो।" कमरा खुला और व्यायाम की मुद्रा में हाँफता हुआ एक युवक बाहर आया—'क्या बन्दी माता के पुत्रों को सोने का समय है" अब तीनों साथ चले और अपने अन्य साथियों को लेते हुए अन्तिम सहपाठी परमात्मा शरण के घर पर पहुँचे। उसे अस्त-व्यस्त दशा में चलने को उद्यत देख प्रकाश ने कहा—

'अरे भाई देख तो कर लिया होता"

"कौन मुझे ब्याह करने जाना है"

"घर वाले नहीं कुछ कहेंगे" हरीश बोला।

"उँह! सात भाई हैं, एक ऐसा ही रहे या न भी रहे तो क्या अन्तर पड़ता है।"

और यह टोली इठलाती हुई गंगा स्नान के लिए चल दी।

त्रिवेणी के पुण्य स्थल पर जब ये लोग पहुँचे तो वहाँ स्नानार्थियों की अजस्र धारा के कारण जल कीचड़ युक्त हो चुका था। आधुनिक शिक्षित युवक वर्ग उस कर्दम-स्नान की कल्पना से ही खिन्न हो गया और अन्य स्थान खोजने लगा। गंगा के विस्तृत तट पर प्रात कालीन धूप में झिलमिलाती रेती पर जब तब स्नान मण्डलियाँ फैली हुई थीं, उन्हीं के मध्य बचकर इस मण्डली ने भी डेरा जमाया और एक-एक कर गंगा की धारा में उतरे। तैरने का कुछ अभ्यास तो था ही तैरने लगे और बातें करते धार में संतरण करने लगे। विद्यालय के ताल के बँधे पानी में तैरने वाले ये युवक बँधे और बहते पानी के भेद को क्या जानते थे? जलक्रीड़ा करते दूर निकल गए, जब थकने लगे तो किनारे की ओर सीधे लौटने का प्रयास किया जैसा कि अपने ताल में करते थे, किन्तु धारा उन्हें आगे को बहाने लगी और किनारे की ओर एक कदम भी आगे में वे सफल न हुए। जितनी ही उन्हें असफलता होती थी उतना ही अधिक वह किनारा पकड़ने का प्रयास करते थे। आसन्न मृत्यु का भय उनके थके हाथ पैरों को प्रेरित कर रहा था। मृत्यु की विभीषिका को देख-कर पृथ्वी भी अचानक काँप उठी।

सूर्य पर राहु की छाया पड़ चुकी थी, आकाश में यत्र तत्र नक्षत्र दिखाई पड़ने लगे थे और धरती काँप रही थी थर-थर-थर-थर। मैदान में खड़ी हुई प्रत्येक वस्तु डोल रही थी, मोटरगाड़ियाँ खड़खड़ा रही थीं तटों की मिट्टी कट-कट कर गंगा में गिर रही थी और भयाकुल जनता किंकर्तव्य विमूढ़ सी हतप्रभ खड़ी थी। कुछ ही क्षणों के इस भीषण भूकम्प में बिहार ध्वस्त हो गया और निकटवर्ती प्रदेशों के धन जन की अमित हानि हुई। लाखों मनुष्यों की आशा और अभिलाषाओं पर क्षण भर में तुषारपात हो गया। कहते हैं कि बिहार में जो जिस मुद्रा में था लेटा, बैठा, खड़ा वह वहीं मूर्तिवत् दब गया, जो जान बचाकर भागे उनके आगे कहीं जमीन फट कर चौड़ी दरार पड़ गई और वे उसी में समा गए और कहीं सूखी जमीन पर नदी की धारा बहकर बहा ले चली और जहाँ नदी थी वहाँ सूखा हो गया। त्राहि त्राहि की पुकार त्रैलोक्य में छा गई। ठीक उसी समय हमारी छात्र मण्डली भी गंगा की धारा में डूब उतरा कर जीवन के अंतिम क्षण गिन रही थी।

इस मण्डली का सबसे अधिक बल तथा अनुभव वृद्ध छात्र हरीश अपनी थाह से अधिक गहरे जल में नहीं गया था। ग्रहण-मोचन के आरम्भ होते ही उसकी दृष्टि अपने डूबते हुए साथियों पर पड़ी जो एक शृङ्खला में एक के पीछे दूसरा धारा से संघर्ष कर किनारे पर आने के प्रयास में असफल होते जा रहे थे। सबसे आगे था उसका प्रिय मित्र प्रकाश, जिसने अनायास एक डुबकी ली और फिर कुछ क्षण में ऊपर आया। उसके हाथ पस्त हो चुके थे, रुक-रुक कर कभी एक चलाता था कभी दूसरा। आवेश में हरीश जल से निकल कर किनारे पर चिल्लाता हुआ भागा—"हेल्प, हेल्प, हेल्प!!!" चारों ओर की भीड़ ने उसे चिल्लाते सुना किन्तु वे कुछ समझ न सके, कुछ उसकी ओर उस पर कोई संकट समझ कर दौड़े। एक-एक बहुमूल्य क्षण बीत रहा था, मृत्यु का जाल उन डूबते युवकों पर कसता जा रहा था और उनका शाक-कर्ता अभ्यासवश अरण्य रोदन कर रहा था। अन्त में हताश होकर उसने दोनों

हाथ नदी की ओर फैलाये। लोगों की दृष्टि उधर दौड़ी और बात समझते देर न लगी। तैरने वाले धारा में कूद पड़े किन्तु डूबने वालों की विकृत मुख मुद्रा से आतंकित होकर लौट आये। तुरन्त एक नाव दौड़ी जो आगे से डूबते हुओं को लेकर पीछे को चली। युवक मृत्यु की शीतल गोद में झूलकर वापस आ रहे थे, पांच को निकाल कर छठे की ओर नाव तेजी से बढ़ने लगी किन्तु विपरीत धारा में उसकी गति अति मन्थर थी। डूबते हुए युवक के मुंह में पानी भर रहा था, जल के बुलबुले धारा पर उठते और विलीन हो जाते। मांझी बांसों और पतवार दोनों का जोर लगा-कर थक रहे थे, पर अभी फासला पांच गज से अधिक था, काश पांच मिनिट पहले मदद पहुंच सकती और नाव के पहुंचते-पहुंचते युवक अन्तर्धान हो चुका था। पुलिस, सेवा समिति, स्काउट दल सबने अथक प्रयास किए, मल्लाहों ने जाल डाले किन्तु कुछ पता न चला। तट पर कुछ लोग सायंकाल तक खड़े दुःख कातर माता-पिता का हृदय विदारक विलाप देख रहे थे। हरीश एक अपराधी की भांति सिर झुकाये धनीभूत होते हुए अंधकार में खड़ा था और आनन्दस्वरूप के मृत्युमय स्फुलिंग विद्युत्दीपों की भांति उसमें टिमटिमा रहे थे। ●

सिद्धान्त विमर्श

(पृष्ठ ९ का शेष)

एहमद जब तब कहा करता था और अपने भाव व्यक्त किया करता था।

इब्राहिम आबुहामजी का एक पड़ोसी था, जो उसका मित्र भी था। उस व्यक्ति का नाम साहिद आबुहाम जी था ऊपर जो ट्रक दुर्घटना की बात कही गई है वह इसी व्यक्ति के विषय में थी। साहिद आबुहाम जी की मृत्यु ट्रक-दुर्घटना में ८ जून सन् १९४३ को हो गई थी। उसकी मृत्यु से इब्राहिम को गंभीर आघात लगा था। अपने बचपन में एहमद इसलिए ट्रकों से बहुत डरा करता था और बहुधा इस ट्रक दुर्घटना का जिक्र किया करता था।

इसके अतिरिक्त करेबो पहुंचने पर एहमद जब इब्राहिम के मकान में गया, तो उसे चित्रों का एक एलबम दिखाया गया। उसमें से उसने इब्राहिम के बड़े भाई फाऊद के चित्र को चुन लिया और कहा, 'यह मुझे बहुत पसन्द है और यह कोई फौजी अफसर है।" फाऊद उस चित्र में साधारण नागरिक की वेशभूषा में था, लेकिन फिर भी एहमद ने उसको फौज का आदमी बताया जो वास्तव में सही था। उन चित्रों में इब्राहिम की एक बहन हुडा का चित्र भी था। एहमद ने उस चित्र को भी पहचान लिया। हुडा को अचानक अन्दर से बाहर लाया गया और एहमद से उसके बारे में पूछा गया कि यह कौन है ? एहमद बिना हिचकिचाहट के एकदम स्वाभाविक स्वर में बोला, 'तुम मेरी बहन हो, हुडा।" एहमद की इन बातों से वहां उपस्थित सभी व्यक्ति आश्चर्य चकित हो गये।

एहमद की प्रिय बातों में से एक यह भी है कि उसे शिकार खेलने में विशेष रुचि है। वह बहुधा अपने पिता से इस बात का आग्रह किया करता है कि जंगल में जाकर शिकार खेला जावे। इसी विषय में एहमद ने यह भी प्रकट किया था कि उसके पास एक बन्दूक और एक राइफल थी, जिनसे वह प्रायः शिकार खेलने जाया करता था। इस बात की भी करेबो में छानबीन की गई तो विदित हुआ कि इब्राहिम वास्तव में शिकार का बहुत शौकीन था तथा उसके पास बन्दूक तथा राइफल होने की बात भी बिल्कुल सही पायी गई।

राजस्थान विश्वविद्यालय के परामनोविज्ञान विभाग के कार्यकर्त्ताओं का इस प्रकार की घटनाओं के अध्ययन का दृष्टिकोण वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक पक्ष की ओर ही रहता है। वे पूर्वजन्म सम्बन्धी धार्मिक पहलुओं से अपने अध्ययन को प्रभावित नहीं होने देते। ऐसे किसी भी अध्ययन के समय वे अधिक से अधिक निष्पक्ष साथियों से सम्पर्क साधते हैं और इस बात की पूरी सावधानी बरतते हैं कि कोई भी साक्षी अपना कोई उद्देश्य या मतलब सिद्ध करने के लिए तो असत्य बात नहीं कह रहा है। वैसे वैज्ञानिकता का स्तर बनाये रखने के लिए विभाग अभी ऐसी घटनाओं को पुनर्जन्म के बजाय 'अति-मस्तिष्क स्मृति' कहना अधिक संगत मानता है। (धर्मयुग से साभार)

निर्भीक महर्षि दयानन्द

(पृष्ठ ७ का शेष)

ने सत्य की व्याख्या की। पादरी स्काट को छोड़कर सभी अंगरेज आए थे। कलक्टर एव कमिश्नर भी थे। व्याख्या के प्रसंग में स्वामी जी ने गरजते हुए कहा "लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो। कलक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हो, मैं तो सत्य ही कहूंगा। यह शरीर तो अनित्य है इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर असत्य व्यवहार व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नष्ट कर दें।"

लार्ड नार्थ ब्रुक और दयानन्द

सन् १८७३ में घटना है। लार्ड नार्थ ब्रुक उस समय भारत के वायसराय थे। लार्ड साहब से श्री स्वा० दयानन्द से भेंट की आलोचना पादरी लार्ड बिशप ने की थी। पादरी बिशप म० दयानन्द से प्रभावित थे। स्वामी जी के कई सभाओं की अध्यक्षता उन्होंने की थी। कलकत्ते में इस भेंट का प्रबन्ध किया गया था। बिशप साहब दुभाषिये का काम कर रहे थे।

लार्ड नार्थ ब्रुक ने पूछा—पंडित जी आपके द्वारा दूसरे मत-मतान्तरों का कड़ी आलोचना होने से ईसाई एवं मुस्लिम आपसे क्षुब्ध हो उठते हैं क्या इनसे आप कोई खतरा अनुभव करते हैं। क्या आपकी रक्षा का प्रबन्ध कर दिया जाय ?

स्वामी दयानन्द—इस अंगरेजी राज में मुझे पूरी स्वतंत्रता है कि मैं अपने विचारों को प्रकट करूं। मुझे किसी से कोई भय नहीं है। यह बात सुनकर लार्ड नार्थ ब्रुक ने अपने दिल में यह अनुभव किया कि स्वामी जी अंगरेजी राज्य के प्रशंसक हैं अतः उन्होंने उत्सुकता से पूछा कि अगर ऐसी बात है तो क्या आप इस देश में अंग्रेजी शासन स्थिर रहे, इसकी प्रार्थना ईश्वर से करेंगे ? अंग्रेजी राज्य द्वारा प्राप्त उपकारों का वर्णन अपने व्याख्यान में करेंगे ? महर्षि दयानन्द ने इसकी किञ्चित्मात्र भी परवा न की कि मैं एक सम्राट् के प्रतिनिधि से बात कर रहा हूं जिसके राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता है जिसने अभी-अभी भारत की स्वाधीनता आन्दोलन को संगीन के नोक से कुचल डाला है। जिसके आतंक से सारा देश आतंकित है महर्षि दयानन्द ने शेर की तरह दहाड़ते हुए कहा महाशय मैं अपनी दैनिक प्रार्थनाओं में इस देश से अंग्रेजी शासन सदा के लिए समाप्त हो जाय इसकी प्रार्थना किया करता हूं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मेरा यह प्यारा देश विश्व में सर्वोच्च स्थान तभी प्राप्त करेगा जब यह राजनैतिक गुलामी से मुक्त हो जाय। मेरे राष्ट्र में शीघ्र स्वतंत्रता आवे मैं यही चाहता हूं।

म० दयानन्द साधारण कोटि के व्यक्ति न थे। वे युग प्रवर्तक थे। थोड़े ही समय में उन्होंने देश का नक्शा ही बदल डाला। अपनी तेजस्विता से, अपनी गम्भीर स्पष्ट वाणी से सारे देश को झकझोर डाला। ऋषि दयानन्द पूरी तरह निर्भय थे। सत्रह बार उन्होंने विष के प्याले पिए। सारा विश्व उनका विरोधी था किन्तु वे किसी खतरे से घबराते नहीं थे चाहे वह मानसिक हो या शारीरिक।

★

साहित्य-समीक्षण

सनातन धर्म

ले०—प० राजेन्द्र जी अतरौली।

साइज २०×३०=१६, पृ० सख्या ३१६, मूल्य २ ७५।

पुस्तक मिलने का पता—व्यवस्थापक वेद मन्दिर प्रकाशन अतरौली (अलीगढ)

श्री प० राजेन्द्र जी विशुद्ध वैदिक सस्कृति के अन्यतम श्रेणी के प्रतिपादक हैं उनकी प्रणीत ग्रन्थ शृङ्खला—भारत में मूर्ति पूजा से महर्षि दयानन्द और गीता आदि तक—इसी महर्षि प्रणीत परम्परा की पूरक है। वह समन्वयवाद और समझौतावाद के—जिन्होंने आज देश को पथ-भ्रष्ट कर दिया है—कट्टर विरोधी हैं। हमें उनकी बात कटु प्रतीत हो सकती है किन्तु है वह सत्य और औषधिवत् श्रेय! आर्यसमाज ने जब से ज्ञान के अमोघ अस्त्र को छोडकर राजनैतिक दलों का महनात्मक अन्धानुकरण किया तब से उसमें वह शिथिलता आई जिससे स्वजन, परिजन सब ही चिन्तित हैं। यह हर्ष का विषय है कि मथ स अधिक स्थायी शासन मुद्रण द्वारा उस परम्परा का निर्वाह आर्यजगत् के विद्वानों ने आरम्भ कर दिया है।

प्रस्तुत पुस्तक 'सनातन धर्म' २५ अध्यायों में विभाजित है। इसका विषय अपने नाम से ही, जो अत्यन्त स्पष्ट हो गया है, कौतूहल उत्पन्न करने वाला है। भूमिका मे ही लेखक ने अपना मन्तव्य स्पष्ट कर दिया है कि सनातन धर्म नाम के पीछे कैसे प्रच्छन्न रूप से पौराणिक मत का प्रचार हो रहा है और वेदों का नाम लेकर वेद विरोधी मतों का प्रतिपादन आज ४-५ हजार वर्ष से देश और राष्ट्र का अहित कर रहा है। पुराण जिनको प्राचीन कहा कहा जाता है देश के इस महाभारत काल के पश्चात् के अन्धकार युग से अधिक पुराने नहीं हैं। भविष्य पुराण तो अंग्रेजी काल प्रणीत ही प्रतीत होती है, क्योंकि अंग्रेजों के राज शासन में स्वतन्त्रता और स्वराज्य का उसमें कहीं वर्णन नहीं है अपितु "मौन-राज्य" का उल्लेख है। इसी प्रकार तथाकथित हिन्दू धर्म के सर्व अंगों पर—क्रमशः अध्यायों में उपास्यदेव, ईश्वर अवतार, तीर्थ आदि से लेकर आधुनिक युग के सर्व धर्म समन्वय आदि तक—शोधपूर्ण प्रकाश डाला गया है। और उसका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अन्त में वेद और वैदिक धर्म का विद्वत्तापूर्ण प्रतिपादन कर उपसहार किया गया है कि वास्तविक सनातन धर्म वैदिक धर्म ही है, हिन्दू धर्म नाम से जो कुछ आज प्रचलित है वह एक चूं चूं का मुरब्बे से अधिक कुछ नहीं है, देश और जाति का कल्याण वैदिक धर्म के विशुद्ध प्रसार में ही है।

वैदिक धर्म के उज्ज्वल वाहक जन तथा सस्थाओं का यह परम पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि वे इस राष्ट्र विरोधी तत्त्वों की चुनौती को स्वीकार कर "सनातन धर्म" जैसे तिमिर भास्कर ग्रन्थों की जगमगाहट उनकी ओर उन्मुख कर दें जिससे देश से अज्ञान तमिस्रा का अवसान होकर वैदिक धर्म के सूर्य का उदय हो। आशा है वैदिक साहित्य के प्रसार मे सलग्न पुस्तकालय, वाचनालय और ग्रन्थागार इस युक्तियुक्त ग्रन्थ से वंचित न रहेंगे।

—समीक्षक

संध्या पर व्याख्यान

ले० स्व० श्री महात्मा हसराज जी, साइज १८×२२, पृष्ठ स० ७६+४—८०, छपाई सफाई आकर्षक, मूल्य १) रुपया, प्रकाशक—महात्मा हसराज साहित्य विभाग, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, निकट जिला कचहरी जालन्धर।

आर्य जगत् में महात्मा हसराज जी का नाम बडी श्रद्धा से लिया जाता है। उन्होंने डी० ए० वी० कालेज की नींव डालकर, उस युग में एक महत्वपूर्ण कार्य किया था। जब इस देश में अंग्रेजी का बोल बाला हुआ और उसके द्वारा वैदिक सस्कृति और वैदिक सभ्यता पर कुठाराघात होने लगा तब महात्मा हसराजजी व लाला लाजपतराय आदि आर्य नेताओं ने वैदिक सस्कृति और वैदिक सभ्यता की रक्षा करने के लिए डी०ए०वी० कालिज की स्थापना की। आज आप किसी भी शहर में चले जाइये, जहाँ-जहाँ हमारे पजाबी भाई हैं, उनमें अधिकतर डी०ए०वी० कालेज के पढे हुए मिलेंगे। महात्मा हसराजजी ने आर्यसमाज की जो अनुपम सेवा की वह कभी भुलाई नहीं जायगी।

प्रस्तुत समालोच्य पुस्तक सध्या पर व्याख्यान, उपर्युक्त महात्मा जी की ही लिखी हुई है। यह पुस्तक आज से ४०-४२ वर्ष पहले छपी थी परन्तु अब अप्राप्त थी। उसी पुस्तक का यह नवीन सस्करण है। श्री महात्मा जी ने सध्या के प्रत्येक मन्त्र की इस पुस्तक में सरल और सुबोध व्याख्या की है। सध्या के मन्त्रों पर विशद विवेचन किया है। सध्या के मन्त्रों का जब तक भाव मालूम न हो, उन मन्त्रों के अर्थ ज्ञात न हों तो ऐसी दशा में सध्या करने से विशेष लाभ नहीं होता। इसलिए सध्या के मर्मों को समझने के लिए यह पुस्तक पठनीय और सग्रहणीय है।

हमारे वीर जवान

ले०—श्री शिवकुमार गोयल।

प्रकाशक—व ज्ञमय प्रकाशन, शान्ति कुञ्ज, छीपी तालाब मेरठ।

पृष्ठ स० ४४, सचित्र पुस्तक का मूल्य १ ५०।

इस पुस्तक की भूमिका श्री यशवन्तराव चौह्वाण रक्षा मन्त्री भारत सरकार ने लिखी है।

भारत एक वीर देश है, इसके नवयुवकों को जब-जब देश की रक्षार्थ दुश्मन का सामना करना पड़ा है, तो इन्होंने अपने शौर्य का चमत्कार सदैव दिखाया है। भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् पाकिस्तान ने तुरन्त काश्मीर पर चढाई कर दी उस समय भारत के वीर नवजवानों ने पाकिस्तान के छक्के छुडाकर काश्मीर की रक्षा की। सन् ६२ में अचानक जब चीन ने भारत की सीमा पर चढाई की तो उस समय भी भारत के वीर जवानों ने अपने बल का चमत्कार दिखाया और जब सन् १९६५ में जब पाकिस्तान से भारत का युद्ध हुआ तो हमारे वीर बाकुरों ने पाकिस्तान के छक्के छुडा दिए। पाकिस्तान जिन अमरीकी टैंकों और अन्य हथियारों के बलबूते पर कूदता फिरता था, उन्हे हमारे वीर योद्धाओं ने गाजर मूली की तरह तोडकर पाकिस्तान का गर्व मिट्टी मे मिला दिया।

प्रस्तुत पुस्तक मे इन युद्धों में लडने वाले कुछ वीर जवानों की साहसपूर्ण गाथाओं का वर्णन है। पुस्तक इतनी रोचक है, कि पढ बिना छोडा नहीं जाता।

प्रत्येक आर्य को इस पुस्तक को अपने बालकों के हाथ मे देना चाहिए, जिससे इन वीरों की प्रेरणादायक गाथाओं से वह भी वीर पराक्रमी बन सकें।

नित्य कर्म विधि

ले०—श्री ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम एम० ए० साहित्य रत्न' सिद्धान्त शास्त्री।

सपादक—तपोभूमि मथुरा,

प्रकाशक—सत्य प्रकाशन मथुरा।

साइज—२०×३०=१६, पृ० स० १५४, मूल्य ६५ न०पैसा।

पुस्तक की महत्ता इसी से ज्ञात होती है, कि इसके ५ सस्करण समाप्त हो गए, और यह छठवां सस्करण है। नित्य कर्म विधि मे विद्वान् लेखक ने अपनी विद्वत्ता के सागर को गागर में भर दिया है। प्रत्येक आर्य परिवार में यह पुस्तक रहना ही चाहिए प्रस्तुत समालोच्य पुस्तक में निम्न विषय है—

सध्या रहस्य, सध्या, ब्रह्मयज्ञ, यज्ञ रहस्य, ईश्वर प्रार्थना के मन्त्र, स्वस्ति वाचनम, शान्ति प्रकरण, दैनिक यज्ञ, विशेष यज्ञ पक्ष यज्ञ-विधि पितृयज्ञ, बलिवैश्य देवयज्ञ, अतिथि यज्ञ, प्रातःकाल उठने एव रात्रि को सोते समय के मन्त्र, ईश्वर स्तोत्र, मनन करने योग्य आप्त वचन, प्रभु भक्ति के भजन आदि। प्रत्येक मन्त्र का विद्वान् लेखक ने अर्थ दिया है और कविता में ही अनुवाद करके पुस्तक के महत्व को बढाया है।

—नारायण गोस्वामी

★

गंगा मेला तिगरी घाट

आपको सूचित करते हुए है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिनांक २४ नवम्बर ६६ से २८ नवम्बर ६६ तक गंगा मेला तिगरीघाट के शुभ अवसर पर वैदिक उप सभा मुरादाबाद की ओर से वैदिक धर्म प्रचार शिविर लगाने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर आर्यजगत् के गण्यमान्य विद्वानो एव भजनोपदेशकों की स्वीकृति मिल चुकी है।

आर्य नगर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी इस मेले में आर्यनगर बसाने की योजना विस्तृत रूप मे बनाई गयी है। शिविर में ठहरने तथा स्वयंसेवकों द्वारा सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था-जल, प्रकाश, शौचालयो का उचित प्रबन्ध होगा।

सशुल्क आवास व्यवस्था—जो आर्य समाजें या आर्य महानुभाव अपने लिए आयनगर मे डेरे सुरक्षित कराना चाहे उनकी दर निम्न प्रकार है।

नाम डेरा	शुल्क	चटाई-पराल सहित
छोलदारी	८)	"
सिपाही पाल	१५)	"
ई०पी० टैन्ट	३०)	"
स्विस काटेज	४५)	"

रिजर्वेशन कराने के इच्छुक महानुभाव अपनी धनराशि ३० अक्तूबर तक कार्यालय को भज दें।

विशेष जानकारी के लिए लिखें।

—हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री

आ०स०मोहम्दी के प्रस्ताव

दि० १६ अक्तूबर को मोहम्मदी के सभासदो ने सर्वसम्मति से केन्द्रीय सरकार से गोवध बन्दी कानून शीघ्र बनाकर श्री रामचन्द्र शर्मा वीर एव अन्य अनशनकारी तथा गोरक्षा हेतु बन्दी सत्याग्रहियो को अविलम्ब मुक्त कर भारत को बहु सख्यक जनभावना का आदर राष्ट्र की सर्वाङ्गीण उन्नति करने की मांग की।

प्रचार—

—आर्य समाज शाखा अफजल के तत्वावधान मे वेदप्रचार मास ३० अगस्त से ३० सितम्बर १९६६ मनाया गया। स्थानीय व्यक्तियो के अतिरिक्त श्री क्षेमचन्द जी भजनोपदेशक श्री ज्ञानप्रकाश जी एव श्री रामसेवक उपदेशक विभाग उपसभा मुरादाबाद, श्री कुवर सत्यदेव जी भजनोपदेशक ने मेरठ वेदप्रचार एव मेला प्रचार मे सक्रिय योग दिया। प्रति दिन २, ३ यज्ञ सम्पन्न किये।

—जगपतसिंह एम० ए० मन्त्री

—आर्यसमाज मेंहनगर (आजमगढ) दि० १३-८-६६ से १६-८-६६ तक वेद प्रचार बड़ी धूमधाम से मनाया गया प्रचार कार्य मे श्री नन्दलाल जी भजनोपदेश तथा श्री ओमप्रकाश आर्य के उपदेश हुए। और अछूतोद्धार के सम्बन्ध मे भी लोगो ने काफी प्रकाश डाला। इधर तीन चार मील की एरिया में इसाइयो का गुप्त प्रचार बड़े जोरो पर चल रहा है और वह हरिजनों पर विशेष प्रभाव डाल रहे हैं। इस वेदप्रचार द्वारा हरिजनो पर भी प्रकाश डाला गया तथा हरिजन सम्मेलन भी १६-८-६६ को सम्पन्न हुआ।

—ता० १४-१०-६६ ई० को काशी निवासी प्रोफेसर रामनाथसिंह धनुर्वेदाचार्य आर्य भजनोपदेशक ने आर्यसमाज देवगाव जिला आजमगढ मे वैदिक धर्म प्रचार किया, जनता काफी तादाद मे जुटकर आपके उपदेशो को सुनती रही और इसके बाद आपने प्राचीन कला धनुर्विद्या के अद्भुत चमत्कारिक खेलो का प्रदर्शन बहुत ही ढंग से दिखलाकर जनता को वेद पढने के लिये आकर्षित किया।

—ता० ७-१० ६६ ई० को आर्यसमाज कहवरिया जिला आजमगढ मे वाराणसी निवासी आधुनिक अर्जुन प्रोफेसर रामनाथसिंह धनुर्वेदाचार्य, आर्य भजनोपदेशक ने वैदिक धर्म प्रचार किया आपके उपदेश का प्रभाव यहाँ की जनता पर बहुत ही अच्छा पड़ा यहाँ पर अधिकतर मुसलमानो की आबादी है पर आपके उपदेश से मुसलमान जनता भी अत्यन्त प्रसन्न रही इसके साथ आपने प्राचीन-कला धनुर्विद्या के अद्भुत चमत्कारिक खेलो का प्रदर्शन दिखलाते हुये प्राचीन भारत के गौरव की याद दिलाया।

—१३ अक्तूबर सन् १९६६ ई० को आर्यसमाज लालगज जिला आजमगढ़ मे वाराणसी निवासी श्री रामनाथसिंह जी ने वैदिक धर्म प्रचार किया जिसका प्रभाव जनता पर बहुत ही अच्छा पड़ा और साथ ही प्राचीनकला धनुर्विद्या का प्रदर्शन दिखलाकर यह साबित किया कि यह सब चीजें वेदो से प्राप्त हुई हैं इसलिये वेदों का पढना अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है।

उत्सव—

आर्यसमाज देवबन्द का वार्षिक उत्सव १८, १९ और २० नवम्बर ६६ को मनाया जाना निश्चित हुआ है। जिसमे आर्यजगत् के महान् सन्यासी, उपदेशक तथा भजनीकों को आमन्त्रित किया गया है। दि० २० को तहसील देवबन्द के आर्यसमाजों का सम्मेलन होना निश्चित किया है।

अत सभी समाजें अपने अधिक से अधिक सदस्यो को भेजने की कृपा करेंगे। —विश्वम्भरदेव शास्त्री

—आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी का २२ वा वार्षिकोत्सव दि० ८ से ११ दिसम्बर १९६६ तक मनाया जायगा। तथा १ दिसम्बर से ७ दिसम्बर तक श्री ज्ञानेन्द्रदेव जी सूफी की कथा आर्यसमाज मन्दिर में होगी। उत्सव में श्री ज्ञानेन्द्र जी सूफी, श्री प० विद्यानन्द जी मन्तकी, श्री रामगोपाल जी शालव ले, श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, श्री ओमप्रकाश जी स्वामी एव श्री ठा० नन्दलालजी गाजीपुर, श्री महानन्द जी, श्री वेदपालसिंह जी आदि महानुभाव पधार रहे हैं।

—प्रेमचन्द आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज हरचन्द कालोनी का प्रथम वार्षिकोत्सव बुधवार २ नवम्बर से शुक्रवार ४ नवम्बर ६६ तक आर्यसमाज मे होना निश्चित हुआ है। उत्सव मे ख्याति प्राप्त महोपदेशक व प्रचार० सम्मिलित हो रहे हैं। आपसे सानुरोध प्राथना है कि इस अवसर पर इष्ट मित्रो सहित पधार कर अनुगृहीत करें।

शोक—

२—प० श्यामनारायण जी मिश्र एडवोकेट के आकस्मिक निधन पर आ०स०मोहमदी ने शोक प्रकट किया एव दिवगत आत्मा को सद्गति और शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभू से प्रार्थना की।

—रामस्वरूप आर्य मन्त्री

—श्री जगदीशचन्द्र जी शास्त्री स्नातक महाविद्यालय (गुरुकुल) ज्वालापुर जो तिरवा कालेज मे अध्यापक थे उनकी असामयिक मृत्यु पर आर्यसमाज गोरिया (हरदोई) शोक प्रकट करता है तथा परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति तथा ८ पुत्र-पुत्रियो सहित उनकी धर्मपत्नी को धैर्य प्रदान कर रक्षा करे जो असमर्थ हैं।

—आर्यसमाज गोरिया (हरदोई) अपने मन्त्री (वीरेन्द्रसिंह) के पिता (श्यामक सिंह) की मृत्यु पर शोक सहानुभूति प्रकट करता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि महात्मा को सद्गति तथा दु.खी परिवार को धैर्य प्रदान करे। —रणजीतसिंह निरीक्षक

—श्री ठा० ईश्वरी प्रसाद सिंह जी ग्राम करमा निवासी के देहावसान अकस्मात् दि० १० अगस्त ६६ को हृदयगति रुक जाने से हो गया। ठाकुर साहब बस्ती जिले के एक दृढ आर्य पुरुष थे जिनका यज्ञ तथा कर्मकाण्ड पर बड़ी श्रद्धा थी। पिछले दिनों ठाकुर साहब ने दर्जनो पौराणिक शास्त्री एव आचार्यों की उपस्थिति में प० शिवनारायण जी वेदपाठी को यज्ञ के आचार्य पद पर सुशोभित कर आर्य विद्वानो की प्रतिष्ठा की थी। जिससे क्रुद्ध होकर समस्त पौराणिक पण्डितो से वेदपाठी जी का शास्त्रार्थ हुआ जिसमें वैदिक धर्म की विजय हुई। ऐसे योग्य आर्य पुरुष का अभाव बस्ती जिले के लिये असह्य है ईश्वर ठाकुर साहब को सद्गति एव सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

गोरक्षा आन्दोलन—

१५-१० ६६, गोरक्षा आन्दोलन में अब नया मोड आ गया है। हरयाना क्षेत्र से हजारो व्यक्ति गो-धन की रक्षा के लिये १ नवम्बर से पहले सत्याग्रह के लिये दिल्ली पहुच रहे हैं।

हरयाना के लोकप्रिय नेता आचार्य भगवान देव जी ने अपनी पूरी शक्ति के साथ गो रक्षा के लिये शीघ्र आन्दोलन आरम्भ कर दिये हैं।

ससद सदस्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने देश की जनता से प्रार्थना की कि वह सर्वस्व देकर भी गो-माता की रक्षा के लिये त्याग-बलिदान की तैयारी कर। स्वामी जी ने यह विश्वास प्रकट किया है कि सरकार ने गो वध बन्द न किया तो सरकार स्वय समाप्त हो जायेगी।

इस समय ४०० के लगभग साधु-सन्यासी-ब्रह्मचारी गो-रक्षा आन्दोलन के लिये तिहाड जेल में है। ससद् सदस्य बी० पी० मौर्य की पत्नी भी इस रक्षा के लिये जेल में ही है।

हिन्दू महासभा भवन मे श्री धर्मेन्द्रजी के अनशन का आज २५वा दिन है किन्तु उनका उत्साह निरन्तर बढ रहा है और एक भेंट मे उन्होने यह सकल्प घोषित किया है कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वे और भी अधिक तीव्र पग उठायेंगे।

महात्मा 'रामचन्द्र वीर' पत हुल्लास में हैं, उनके अनशन को ५६ दिन हो गये है उनका जीवन-दीप बुझने वाला है यदि सरकार ने शीघ्र ही कोई पग न उठाया तो उसे जनता के भारी रोष का सामना करने के लिये तैयार रहना होगा। —कार्यालयाध्यक्ष

गोहत्या उन्मूलन सघर्ष समिति
हिन्दू महासभा भवन, नई दिल्ली

नवयुवको! तनिक सोचो

(ले०—श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक वीर प्रताप)

जो जवानो जो तर्बे यत में तुम्हारी खटके,
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके।

मैं आज अपने देश के नौजवानों को अपने उन शहीदों की याद दिलाना चाहता हू जिन्हे वह भूल गये हैं। जगह जगह जो दंगा प्रदर्शन और हड़ताल हो रही हैं वह कभी न होती यदि यह देश स्वतन्त्र न होता। इसमें सन्देह नहीं कि स्वतन्त्रता से पूर्व भी हम हड़ताल किया करते थे और हमारे प्रदर्शन भी होते थे, किन्तु वह सदैव शान्तिपूर्ण हुआ करते थे। कभी किसी का यह साहस नहीं होता था कि वह सरकारी इमारतों को आग लगा दे, या सरकारी सम्पत्ति को क्षति पहुंचाये। यदि कभी कोई ऐसी घटना हो जाती तो पुलिस की गोलियां लोगों को भून देती। स्वतन्त्रता से पूर्व भी युवक प्रदर्शन करते थे। स्कूलों और कालिजो में भी हड़ताल हुआ करती थी, किन्तु वह सब कुछ देश को स्वतन्त्र कराने के लिये था।

हमारे नौजवानो को जो स्वतन्त्रता प्राप्त है और जिसके कारण वह जगह जगह फसाद भी करते हैं, प्रदर्शन भी करते हैं, अपने ही देश की सम्पत्ति तबाह भी करते हैं। वह स्वतन्त्रता उन्हें उन शहीदों के कारण मिली जो हंसते हंसते फांसी पर चढ़ गये। जिन्होंने पुलिस और सेना की गोलियां खाई और जिन्होंने अपनी जवानी जेलों की अंधेरी कोठड़ियों में गला दीं। वह जो कुछ भी किया करते थे इस बात के लिए नहीं कि किसी कालेज के प्रिंसिपल से उन्हें कोई शिकायत पैदा हुई या किसी विश्वविद्यालय ने परीक्षा की तिथि स्थगित नहीं की या सरकार ने उनका शुल्क बढ़ा दिया है। उनकी दृष्टि में यह सब घटिया चीजें थीं। उनके सामने बड़े-बड़े आदर्श हुआ करते थे—देश को स्वतन्त्र कराने का, गरीबी और बेकारी दूर करने का, विभिन्न वर्गों में जो अन्तर पैदा हो चुका था, उसे दूर करने का। मैं कई बार सोचा करता हूं कि हमारे देश के युवक कहां से कहां पहुंच गए हैं। उनमें कितनी गिरावट आ चुकी है। कभी इस देश ने भगतसिंह जैसे युवक पैदा किए थे, करतारसिंह सराभा, और राम प्रसाद बिस्मिल जैसे शहीद पैदा किए थे। गदर पार्टी के वह नौजवान जो हंसते-हंसते फांसी की रस्सी को चूम लेते थे, वह भी इसी देश में पैदा हुए। सुभाषचन्द्र बोस के आजाद हिन्द फौज के सिपाही भी तो इसी मातृभूमि के बेटे थे। गान्धी जी के नेतृत्व में संसार के सबसे बड़े साम्राज्य को चुनौती देने वाले जवान भी तो इसी देश ने पैदा किए थे।

यह लोग कभी फसाद नहीं किया करते थे, हुल्लड़बाजी में उन्हें विश्वास न था। देश की सम्पत्ति को तबाह करना वह पाप समझते थे। आज का युवक शायद उनकी महानता को न समझ सके, किन्तु अपने युवक भाइयों को एक घटना याद दिलाना चाहता हूं। शायद उससे वह अनुभव करने लगें कि वह क्या कर रहे हैं। यह १९२४ की घटना है। काकोरी षड्यन्त्र केस के एक अभियुक्त इश्फाकुल्ला को फांसी का दण्ड दिया गया। जिस दिन उन्हें फांसी पर लटकाया जाना था, उससे एक रात पूर्व नियमानुसार जेल अधिकारियों ने उनसे पूछा कि उनकी अन्तिम इच्छा क्या है? क्या वह किसी से मिलना चाहते हैं? या कोई ऐसी चीज खाना चाहते हैं जो उन्हें बहुत अधिक पसन्द हो? या कोई और इच्छा हो जिसे पूरा किया जा सके। इस पर इश्फाकुल्ला ने उत्तर दिया, वह मैं अपने युवक साथियों के समक्ष रखना चाहता हूं। उन्होंने जेल अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा—

कुछ आरजू नहीं है है आरजू तो यह है।
रख दे कोई जरा सी,खाके वतन कफन में।

कितना महान आदर्श था, उस युवक के सामने। अपने देश की धूल को वह किस प्रकार पवित्र समझता था कि उसे अपने कफन के साथ क़बर में ले जाना चाहता था। मैं अपने देश के युवकों को पूछना चाहता हू कि क्या कभी उन्होंने सोचा है कि वह किस पतन की ओर बढ़ रहे है। एक ओर उनके सामने भगतसिंह, करतारसिंह सराभा, रामप्रसाद बिस्मिल, और इश्फाकुल्ला जैसे युवकों के उदाहरण हैं और दूसरी ओर यह स्थिति कि तनिक सी बात पर फसाद, झगड़ और हुल्लड़बाजी। इसका परिणाम? सारा राष्ट्र बदनाम हो रहा है, भारत का युवक संसार की दृष्टि में अपमानित हो रहा है। इसलिए मैं अपने नवयुवक साथियो से कहना चाहता हू कि जरा सोचो और सम्भलो।

●

स्वास्थ्य-सुधा

गुर्दे के रोगियों को सहायता

(१७ क्लीनिकों द्वारा संयुक्त अनुसंधान)

(श्री गुनर बेकर)

[स्वस्थ मनुष्य तथा दुर्घटना में मृत व्यक्ति के शरीर से गुर्दा निकाल कर गुर्दे के रोगी के शरीर में उसे लगाने के कार्य में अब वैज्ञानिकों को अच्छी सफलता मिल गई है। उस गुर्दे को कार्यकारी अवस्था में रखने के लिए जो पद्धति अपनाई जाती है उसका नाम है—पेलेटियर प्रणाली। प० जर्मनी में इस कार्य पर और भी अनुसंधान किये जा रहे हैं।]

प० जर्मनी के १७ जर्मन विश्वविद्यालय क्लीनिकों ने संयुक्त अनुसंधान कार्य प्रारम्भ किया है ताकि गुर्दे की नेफ्रोटिक सिंड्रोम नामक बिमारी के बाबत इलाज के तरीकों को खोजा जा सके। बर्लिन विश्वविद्यालय अस्पताल के सर्जनों ने यातायात दुर्घटनाओं में मृत व्यक्तियों के गुर्दों को उन रोगियों में लगाना शुरू कर दिया है जो असाध्य गुर्दे के रोग से पीड़ित हैं। अर्लेंगन अनुसंधान केन्द्र में एक निराली पद्धति अपनाई गई है जिससे उस गुर्दे को किसी रोगी में लगाने के पूर्व कार्यशील दशा में रखा जाता है। उसकी हर समय बराबर देखभाल की जाती है। इस प्रकार वैज्ञानिक अनुसंधान के सहयोग का आदर्श कार्य जर्मनी में किया जा रहा है।

गुर्दे के 'नेफ्रोटिक सिंड्रोम' नामक रोग का सही पता लगाना बड़ा कठिन है क्योंकि यह बहुत कम होता है। एक प्रथम श्रेणी का जर्मन विश्वविद्यालय अस्पताल एक वर्ष में इस तरह के लगभग ३० मामलों का इलाज करता है। लम्बे अर्से तक सभी इलाज की सम्भावनाओं के परीक्षण के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए अधिक संख्या में क्लीनिकों में समन्वय व सहयोग की आवश्यकता है। इस समय जर्मनी के प्रमुख गुर्दा विशेषज्ञ योजनानुसार इस कार्य को संयुक्त रूप से कर रहे हैं। जर्मन अनुसंधान सोसाइटी द्वारा उन्हें अपनी 'परियोजना के हेतु वित्तीय सहायता प्राप्त हो रही है, जो इस प्रकार के कार्यों के व्यय को वहन करती है। अध्ययन के प्रथम दौर के रूप में 'नेफ्रोटिक सिंड्रोम' के रोगियों की गत ३० वर्षों की केस हिस्ट्री तैयार करना जरूरी है। व्यक्तिगत परिणामों को मूल्यांकन के हेतु कम्प्यूटर में पहुंचाया जाता है। यह विद्युत् मशीन इस बिमारी के नियमित भाग का प्रदर्शित कर देती है, जो अभी तक छिपा कर रखा गया था। तब रोगियों के इलाज में समन्वय स्थापित किया जाता है और एक साथ उसके परिणामों का मूल्यांकन किया जाता है। फिर इस प्रकार के परिणामों का प्रकाशित किया जायगा और वे सभी डाक्टरों के लिए उपलब्ध रहेंगे।

गुर्दे को किसी रोगी को लगाने में सबसे बड़ी कठिनाई थी गुर्दे का दान करने वाले व्यक्ति के शरीर से उस गुर्दे को निकालने से लेकर रोगी के शरीर में उसे फिट करने के बीच के समय की। यह समस्या अब हल कर ली गई है। पेलेटियर प्रणाली द्वारा उन गुर्दों को ठण्ड खानों में रखा जाता है। १५ डिग्री सेल्सियस तापमान में यह गुर्दा अपना कार्य करता रहता है। गुर्दे को किसी रोगी को लगाने से पूर्व उस गुर्दे की कार्य करने की क्षमता का पूरा परीक्षण कर लिया जाता है।

गुर्दे निम्न तापमान में सुरक्षित रखे जा सकते हैं

गुर्दों को सुरक्षित रखने की नई प्रणाली

एक ऐसा नया तरीका खोज लिया गया है, जिससे वैज्ञानिकों को इस बात की सुविधा हो गई है कि वे गुर्दों को रोगियों को लगाने से पूर्व उन्हें सुरक्षित रख सकें और उनकी कार्यकारी क्षमता की जांच कर सकें। यह नया उपकरण अर्लेंगन विश्वविद्यालय के सर्जनों के एक समूह ने खोजा है। उन्होंने वहां सीमेन्स प्रयोगशाला के विशेषज्ञों के सहयोग से कार्य किया।

मृत्यु के तत्काल पश्चात, आमतौर से दुर्घटनाओं के बाद स्वस्थ मनुष्यों के

(शेष पृष्ठ १५ पर)

हवन यज्ञ की महानता

(पृष्ठ ४ का शेष)

इतने अधिक हैं कि यदि आधिभौतिक लाभ कुछ भी न होते तो भी इसका महत्व किसी भी अंश में कम नहीं हो सकता था। इन आध्यात्मिक लाभों की हमारे ऋषियों, वेद, शास्त्रों आदि ने बहुत चर्चा की है पर आज के शिक्षित और अशिक्षित सभी व्यक्ति आध्यात्मिक बातों को भुलाकर आधिभौतिक बातों के पीछे दीवाने हैं, अतः यहाँ पर हम विशेष रूप से यज्ञ के आधिभौतिक लाभों पर ही विचार करेंगे। (आध्यात्मिक लाभों पर अन्यत्र विचार करेंगे।) आधिभौतिक लाभों को चार भागों में बांटा जा सकता है—

१—शारीरिक आरोग्यता।
२—जलवायु शुद्धि।
३—वर्षा वृद्धि।
४—वनस्पति वृद्धि।

यह विषय भी इतना बड़ा है कि पूरे विषय पर एक पृथक पुस्तक तैयार हो सकती है। अतः यहाँ हम इनमें से शारीरिक आरोग्यता पर ही लिखेंगे। शेष बातों पर केवल उतना ही प्रकाश डाला जायगा जितना प्रसंगवश आवश्यक होगा।

कुछ विद्वानों का तो यह विचार है कि अंग्रेजी भाषा का शब्द 'हाइजीन' (स्वास्थ्य रक्षा) हवन यज्ञ का ही अपभ्रंश है। भाषा विज्ञान के दृष्टिकोण से यह बात कहाँ तक सही है, हम नहीं कह सकते पर स्वास्थ्य रक्षा के जितने साधन अब तक ज्ञात हुए हैं उनमें हवन यज्ञ सर्वोत्तम एवं सर्वोच्च साधन है अतः उक्त विचार में भी सत्य का कुछ अंश मालूम पड़ता है।

भौतिक शास्त्र का यह सिद्धांत है कि किसी भी वस्तु का नाश नहीं होता केवल उसका रूप समय समय पर कुछ कारणों वश बदल जाया करता है। हवन में पुष्टिकारक रोग नाशक, सुगन्धित और मिष्ट—ये चार प्रकार के पदार्थ जलाए जाते हैं। हवन करते समय दूर बैठे मनुष्य की नासिका में भी सुगन्धि पहुंचती है, जिससे भौतिक शास्त्र के उक्त सिद्धान्त की पुष्टि होती है, और ज्ञात होता है कि जलाई गई वस्तुओं के परमाणु वायु में पहुंच गए। ये परमाणु जब श्वास द्वारा हमारे शरीर में जावेंगे तो रोगनाशक औषधियों के परमाणु रोग का नाश करेंगे, मिष्ट और पुष्टिकारक औषधियों के परमाणु पुष्टि देवेंगे तथा सुगन्धित औषधियों के परमाणु चित्त को प्रसन्न रखेंगे। जब नित्यप्रति प्रातः और सायं ऐसा होता रहेगा तो हम कभी भी रोगी नहीं हो सकेंगे।

जैसा कि ऊपर कह चुके हैं कि हवन यज्ञ से वायु शुद्ध होने की बात आधुनिक विज्ञान द्वारा भी सत्य सिद्ध है। चूंकि हवन की अग्नि जलने तथा कार्बन गैस निकलने से गर्मी बढ़ जाती है अतः हमारे घरों की गन्दी वायु गर्म होने से हल्की होकर बाहर निकल जावेगी और उसके स्थान पर शुद्ध वायु अन्दर आ जायगी। इसके अतिरिक्त हवन गैस में तो ऐसी उत्तमोत्तम औषधियों के सूक्ष्म परमाणु हैं जो रोग कृमि का नाश करते हैं। इस प्रकार हवनगैस के परम गुणों से सैकड़ों ऐसे रोगों का बीज उनके उत्पन्न होने से पूर्व ही नष्ट हो जायगा जो एक बार उत्पन्न होकर मृत्यु का कारण बनकर भी पीछा नहीं छोड़ते।

रक्त की अशुद्धि अनेक रोगों का कारण है। रक्त की शुद्धि के लिए लोग अनेक उपाय करते हैं। डाक्टर, वैद्य और हकीम लोग कड़वी कड़वी औषधियां पिलाते हैं। स्वादिष्ट भोजन छुड़वाते हैं। इंजेक्शन लगाते हैं। फिर भी रक्त शुद्ध नहीं होता तो फस्द खुलवाते हैं। इतना करने पर भी रक्तदोष के रोग हो ही जाते हैं। हवन में डाली हुई सोमलता, चिरायता आदि के सूक्ष्म परमाणु प्रातः सायं श्वास द्वारा फेफड़ों में पहुंच कर रक्त के दोषों को नित्य ही दूर करते रहते हैं जिससे हवन करने वाले व्यक्ति का रक्त शुद्ध रहता है और वह कभी भी रक्तदोष के रोग में नहीं फंस सकता और यदि कभी किसी भूल से रक्तदोष हो ही जावे तो बिना औषधि के केवल हवन से शुद्ध हो जाता है।

तपेदिक आदि जब कोई कठिन रोग हो जाता है जिसमें औषधि भी काम नहीं देती तो डा० लोग रोगी को पहाड़ व समुद्र पर जाने का परामर्श देते हैं। कारण यह है कि वहाँ की वायु में न केवल शुद्ध आक्सीजन होती है बल्कि उस से भी उत्तम भाग 'ओजोन' होती है जो बड़ी उपयोगी गैस है और एक प्रकार की 'तीव्र आक्सीजन' है। निर्मल वायु में यह बहुत अधिक पाई जाती है और अशुद्ध वायु में बहुत कम। ओजोन की पहचान उसकी गंध है जो बहुत तीव्र होती है। यहां तक कि यदि वायु के पच्चीस लाख भागों में केवल एक भाग ओजोन हो तो भी उसकी विद्यमानता प्रकट हो सकती है। वन, उद्यान अथवा समुद्र की खुली हवा में श्वास लेने से जो आनन्द प्रतीत होता है वह इसी की विद्यमानता का प्रतीक है अंग्रेजी भाषा में जिसे ओजोन कहते हैं उसी को हम अपनी भाषा में शुद्ध प्राणप्रद अथवा सुगन्धित वायु कह सकते हैं। हवन करने पर वही आनन्द और उससे अधिक सुगन्धि प्रत्यक्ष प्रतीत होती है। अतः नित्यप्रति वैज्ञानिक ऋतु अनुकूल हवन सामग्री से हवन करने वाला व्यक्ति प्रतिदिन कुछ देर उस वायु में श्वास लेता है जो ओजोन का भण्डार है (दैनिक प्रयोग की वैज्ञानिक ऋतु अनुकूल हवन सामग्री के नुस्खे एवं अन्य विवरण लेखक की 'देवयज्ञ' पुस्तक में देखें) फिर ऐसे व्यक्ति को तपेदिक आदि भयानक रोग कैसे सता सकते हैं? जो इन रोगों में फंस चुके हैं वे भी कुछ अन्य साधनों के साथ हवन यज्ञ करने से निरोग हो जाते हैं। इसकी विस्तृत विवेचना हमने 'क्षय रोग की अचूक चिकित्सा' पुस्तक में की है जिस पर सरकार ने पुरस्कार दिया है और सनेटोरियम में जिसका परिणाम ८० प्रतिशत से भी अधिक रहा।

यह सब जानते हैं कि पुष्ट शरीर न केवल रोगों से सुरक्षित रहता है वरन् जीवन के सारे आनन्द एक पुष्ट शरीर वाला मनुष्य ही भोगता है। हवन में जो पुष्टिकारक पदार्थ डाले जाते हैं उनके सूक्ष्म परमाणु शरीर में पहुंच कर उसे पुष्ट बनाते हैं। पुष्टिकारक पदार्थों का खाना ही बल देता है इसलिए इन्हें अवश्य खाना चाहिये, पर इससे भी अधिक उपयोगी इनका हवन में जलाना है। जलाने में दो गुण विशेष हैं। प्रथम यह कि खाने में आवश्यकता (अर्थात् अपनी पाचन शक्ति से अधिक खाकर उस पर कोई बोझ नहीं डालते। तभी तो पुत्रेष्टि यज्ञ में जब खाने के पदार्थों से वीर्य पुष्ट नहीं होता और अधिक खाने से पाचन शक्ति बिगड़ती है उस समय हवन यज्ञ में डाले पुष्ट पदार्थों के सूक्ष्म परमाणु सीधे रक्त में पहुंच कर वीर्य पुष्ट करते हैं।

दूसरा गुण यह है कि औषधि को सूक्ष्म करने से उसकी भीतरी प्राणशक्ति उभर आती है अतः ऐसी थोड़ी चीज भी स्थूल रूप की अपेक्षा अधिक बल देती है। होम्योपैथी में दवा की पोटेन्सी इसी सिद्धान्त के आधार पर बनाई जाती है। आप दस बादाम नित्य प्रति एक मास तक खावें, फिर एक मास तक चार बादाम पत्थर पर घिसकर खावें। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आप में पूर्व की अपेक्षा अधिक बल आ रहा है। इस सिद्धान्त को एक दूसरे उदाहरण द्वारा और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। एक लाल मिर्च लीजिये इसे स्थूल रूप में एक व्यक्ति सुगमता से खा सकता है। इसी मिर्च को यदि इमामदस्ते में कूटें (अर्थात् इसके परमाणु सूक्ष्म करें) तो पास बैठे दस पाँच व्यक्ति भी इसके प्रभाव को न सह सकेंगे। और यदि इसे आग में जलावें तो दूर दूर बैठे लोग भी खांसने लगेंगे क्योंकि आग में जलाने से उस मिर्च के परमाणु अति सूक्ष्म हो गये हैं, उसकी भीतरी प्राणशक्ति उभर आई है अतः वह अपने स्थूल रूप की अपेक्षा बहुत अधिक शक्तिशाली हो गई है। अब सोचिये हवन में जो पदार्थ डाले जाते हैं वे अग्नि द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप हो जाते हैं अतः थोड़ा पदार्थ भी अधिक बल देता है। इससे हवन की उपयोगिता और महानता और भी बढ़ जाती है।

★

वेद-व्याख्या

(पृष्ठ ५ का शेष)

विलास, फैशनपरस्ती, शराब, पान, सिगरेट, व्यभिचार, थोथे टीपटाप, कुटिल कुटेवों स्वार्थ, व्यसन इत्यादि में) लगाता है, वह माता लक्ष्मी का अपमान करता है। उसका नाश होता है।

हमारे यहाँ अनैतिक साधनों को सदा हेय माना गया है और स्पष्ट निन्दा की गई है। केवल धन की अधिकता से कोई सम्माननीय नहीं समझा जाता। अनैतिक धन तो चोरों, डकैतों, लुटेरों, हत्यारों, वेश्याओं इत्यादि के पास भी बहुतायत से होता है। रिश्वत और सरकारी गबन से लोग मालामाल हो गए हैं। सैकड़ों पर धोखादेही और गबन के मुकदमे चले हैं। ऐसा अनैतिक धन व्यर्थ है। हिन्दू धर्म की दृष्टि से हेय और त्याज्य है। हिन्दू विचारकों का तो यह मत है—

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्रेधन्तं रयिर्नशत्। सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥

—ऋग्वेद ७।३२।२१

अर्थात् धन, पद, श्री और समृद्धि की प्राप्ति न्यायपूर्ण आचरण से होती है। अधर्म से कमाया धन कमानेवाले की इज्जत, सम्मान, यश और प्रतिष्ठा के लिए विनाशकारी होता है।

मोषु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम्। मृळा सुक्षत्र मृळय ॥

—ऋग्वेद ७ ८९।१

मनुष्य को चाहिए कि अथक सच्चे परिश्रम और निरन्तर पुरुषार्थ द्वारा ही अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनायें ताकि सारा समाज समुन्नत हो, ईमानदारी और परिश्रम की ओर, अग्रसर हो।

★

लखनऊ—रविवार आश्विन २९ शक १८८८ कार्तिक शु० ८ वि० सं० २०२३ दिनांक २० नवम्बर १९६६ ई०

भारतीय इतिहास में गो-भक्ति परम्परा

क्या स्वतन्त्र भारत में हम इस परम्परा को नष्ट कर कलंकित बनेंगे

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पतिर्यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत् ।
इन्द्रो यो दस्यूँरधराँ अवातिरन् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ॥

—ऋ० १।१०१।५

व्याख्यान—हे मनुष्यो ! जो सब जगत् (स्थावर) जड़ अप्राणी का और प्राणस्य चेतन वाले जगत् का 'पति' अधिष्ठाता और पालक है, तथा जो सब जगत के प्रथम सदा से है । और 'ब्रह्मणे, गा, अविन्दत्' जिसने यही नियम किया है कि ब्रह्म अर्थात् विद्वान के ही लिये पृथिवी का राज्य और उसका राज्य है और जो 'इन्द्र' परमैश्वर्यवान परमात्मा डाकुओं को 'अधरान्' नीचे गिराता है, तथा उनको मार ही डालता है, 'मरुत्वन्त, सख्याय, हवामहे' आओ मित्रो भाई लोगों ! अपने सब सुप्रीति से मिलकर मरुत्वान् अर्थात परमानन्द बल वाले इन्द्र परमात्मा को सखा होने के लिये अत्यन्त प्रार्थना से गदगद् हो के बुलावें । वह शीघ्र ही कृपा करके अपने से सखित्व (परम मित्रता) करेगा । इसमें कुछ सन्देह नहीं ।

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार २० नवम्बर १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६७

गोरक्षा आन्दोलन एवं दिल्ली की दुर्घटना

गोरक्षा आन्दोलन के प्रसंग में सात नवम्बर को दिल्ली में जो विशाल प्रदर्शन हुआ उसकी सफलता से आन्दोलन के विरोधियों को मानसिक आघात पहुंचा है । आन्दोलन समिति ने प्रदर्शन का आयोजन प्रजातन्त्र के मौलिक अधिकार जनमत की अभिव्यक्ति के लिये किया था प्रदर्शन को शान्त और अहिंसक रूप में सफल बनाने के लिये पूर्ण प्रयत्न किया गया था, आन्दोलन अधिकारियों को पूर्ण विश्वास था कि जनता की भावना का आदर करने वाली सरकार जनता की सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करेगी ।

सात नवम्बर का विशाल प्रदर्शन संख्या, व्यवस्था और प्रचार सभी दृष्टियों से सफल था परन्तु प्रदर्शन पथ में जो बाधायें शासन और असामाजिक तत्वों ने उत्पन्न कीं उनके कारण एक महान सफलता कलंकित कर दी गई ।

प्रात ९ बजे से प्रदर्शन आरम्भ हुआ, संसद के सम्मुख सभास्थल पर कार्यक्रम १२ बजे से आरम्भ हुआ, सभा की कार्यवाही विधिवत चलती रही, जिस उत्तेजनात्मक भाषण का हवाला दिया जाता है उसके बाद भी श्री सेठ गोविन्ददास, श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी के भाषण हुए और उन्होंने जनता को पूर्ण शान्त कर दिया, जब श्री अटल जी बोलने खड़े हुए उसी समय माइक के तार कट गये और सभास्थल पर अश्रु गोले गिरने लगे, लाठीचार्ज और गोली वर्षा शुरू हो गई । शासन की ओर से अपने इस कार्य के लिये जो विवरण प्रस्तुत किया गया है उसे पढ़ कोई भी प्रजातन्त्री सरकार गर्व नहीं कर सकती, दिल्ली के उपराज्यपाल श्री झा ने जो वक्तव्य दिया है उसमें उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया है कि उपद्रव ११ बजे से एक गुण्डा दल कर रहा था और वही दल दो बजे सभा तक पहुंचा, हम सरकार से पूछना चाहते हैं कि सरकार की पुलिस ११ बजे से २ बजे तक क्या करती रही क्यों नहीं उस गुण्डा तत्व को पकड़ा गया और सारे उपद्रव करने दिये गये । जलूस से पृथक चलने वाले गुण्डा तत्वों की कार्यवाहियों का दायित्व गोरक्षा प्रदर्शन पर डालना शासन के लिये गौरव की बात नहीं हो सकती, इस घटना से यह शंका स्वाभाविक है कि कहीं इन गुण्डा तत्वों को शासन का या गोरक्षा विरोधी राजनैतिक दलों का इशारा या समर्थन तो प्राप्त नहीं था ।

हम सात नवम्बर की दुर्घटना पर हार्दिक दुखी हैं हमें सबसे अधिक दुख इस बात का है कि सरकार ने अश्रु गैस, लाठी चार्ज और गोली वर्षा की प्रक्रियाओं के लिए जो सामान्य नियम हैं उन का भी पालन नहीं किया । नियमों की हत्या करते हुए अमृतसर जलियांवाला बाग के डायरी अत्याचारों की पुनरावृत्ति की, निरीह जनता जिसमें लाखों स्त्रियां और बच्चे सम्मिलित थे, बिना किसी चेतावनी के पुलिस के अत्याचारों से पिसने लगे । क्या सरकार में इतनी हिम्मत है कि वह न्यायिक जांच कराकर अपने कलंकित दामन को पवित्र कर सकेगी । क्यों नहीं मृतकों के शव मांगने वालों को सरकार के लिए दिये गये और क्यों बिना शव दाह मुंह में पुलिस के कठोर पहरे में [illegible] की भांति किया गया । आज भी गोरक्षा की मांग को ब्रिटिश सरकार ने [illegible] से दूर रखकर पूछ-[illegible] जैसा जोरदार किया था, उधर [illegible] का [illegible] सरकार अपने इस कार्य को औचित्य सिद्ध करने में समर्थ होगी । प्रजा अपनी शासन पर कैसे विश्वास करे, जब प्रजा रक्षा के नाम पर प्रजा के जीवन से तानाशाही तरीकों से खिलवाड़ किया जा रहा है ।

दिल्ली में घटित हिंसात्मक उपद्रवों की हम और निन्दा करते हैं हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि हिंसा साधनों से किसी पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति अनुचित है । और उससे आन्दोलन को धक्का पहुंचता है । गोरक्षा आन्दोलन के सत्यात्मक आरम्भ से अब तक आन्दोलन की अहिंसक [illegible] पर चल रहे हैं और आगे भी आन्दोलन अहिंसक ही रहेगा तभी सफल होगा ।

दिल्ली में जो कुछ हुआ वह आन्दोलन के समर्थकों ने नहीं आन्दोलन के विरोधियों और असामाजिक तत्वों ने किया, उनका उद्देश्य आन्दोलन को सफल न होने देकर उसे बदनाम करना था वे अपने उद्देश्य में क्षणिक सफल रहे परन्तु आन्दोलन की आत्मा बलवान है और वह इस संकट में से सफल होकर निकलेगा ।

इस दुर्घटना में राष्ट्रीय क्षति के रूप में जो कुछ हुआ उस पर हम हार्दिक दुख अनुभव करते हैं और हम आशा करते हैं कि शासन भविष्य में ऐसी उपेक्षा से काम न लेगा, और न प्रजा की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर उसे उत्तेजित किया जायगा जिससे आतंकित जनता दूसरा मार्ग अपनावे ।

दिल्ली प्रदर्शन में बलिदानी भाइयों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम आशा करते हैं कि गोरक्षक भारतीय जन आन्दोलन को सफल बनाकर अपने कर्तव्य का पालन करेंगे और यही बलिदानी भाइयों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

आर्यसमाज और गोरक्षा आन्दोलन

गोरक्षा आन्दोलन के साथ आर्यसमाज का अभिन्न सम्बन्ध है । महर्षि दयानन्द ने आन्दोलन को आरम्भ कर आगे बढ़ाया था, आर्यसमाज एक लम्बे समय से इस आन्दोलन को बल देता रहा, आज वह समय है जब उस आन्दोलन का परिणाम सामने आने वाला है, आर्यजगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने अपने आदेश द्वारा आर्यजगत पर इस आन्दोलन की सफलता का दायित्व सौंप दिया है ।

आन्दोलन में व्यक्तिगत रूप से अनेकों आर्यबन्धु पूर्व से ही भाग ले रहे थे परन्तु ११ नवम्बर से आर्यसमाज ने संगठित रूप से आन्दोलन में स्वयं को सम्मिलित कर सत्याग्रही भेजने आरम्भ कर दिये हैं । अनेकों आर्य नेता सत्याग्रहियों के साथ गिरफ्तार हो चुके हैं । सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी [illegible] इस समय जेल में हैं सरकार ने आन्दोलन को शिथिल करने के लिये अनेकों आर्य नेताओं को पकड़ लिया है । अब हमारी परीक्षा का समय है कि हम आर्यसमाज और सार्वदेशिक सभा के आदेश के नाम पर तन-मन-धन सर्व प्रकार से आन्दोलन को सफल बनायें । आर्यजनता ने अपना कदम बढ़ा दिया है अब सफलता पर ही उसे विश्राम मिलेगा और तब यह देखा जायगा कि कौन संगठन के प्रति [illegible] रहा और कौन [illegible] से स्वार्थसाधन करता रहा, आज कौम की [illegible] है ।

दयानन्द के वीर सैनिक आगे ही बढ़ेंगे और [illegible] की पुकार है ।

गो-गौरव

सुरभि, सदा अभिनन्दन तेरा ।
[illegible] 'माता' [illegible],
[illegible] गोकुल-[illegible], [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible]—
सुरभि, सदा अभिनन्दन तेरा ॥
तेरे वीर [illegible] [illegible],
चौरी, धनी, सबल [illegible],
[illegible], [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible]
सुरभि, सदा अभिनन्दन तेरा ॥
घृत नवनीत, [illegible],
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible],
[illegible] [illegible]—[illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible]—
सुरभि, सदा अभिनन्दन तेरा ॥
घूम-घूम तिनके चरती है,
दूध झरती, पर-हित करती है,
जीते जी वैभव भरती है,
[illegible] उपकार [illegible]—
सुरभि, सदा अभिनन्दन तेरा ॥
गोमय, शुभ रोग-संहारक,
विष-मारक शुभ स्वास्थ्य-प्रसारक,
उपले, खाद आदि हित कारक,
शुभ गौरव वर्णित [illegible]—
सुरभि, सदा अभिनन्दन तेरा ॥

—पद्मश्री डा० हरिशंकर शर्मा

गोरक्षा आन्दोलन में आ० स० के सत्याग्रही जत्थे गिरफ्तार

सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री रामगोपालजी गिरफ्तार

श्री रामगोपाल जी ने २१ सत्याग्रहियों को साथ लेकर आर्यसमाज दीवानहाल से चांदनी चौक के लिये प्रस्थान किया, पुलिस ने सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर लिया।

श्री आचार्य भगवानदेव जी

आचार्य भगवानदेव जी ने सत्याग्रहियों के साथ गृहमन्त्री की कोठी पर सत्याग्रह किया, पुलिस ने लाठीचार्ज किया और आचार्य जी एवं गोरक्षकों को गिरफ्तार कर लिया। जत्थे को श्री जगदेव सिद्धान्ती जी संसद सदस्य ने जत्थे को आर्यसमाज करोलबाग मे विदाई दी।

श्रीमती राकेश रानी प्रसिद्ध लेखिका

प्रसिद्ध आर्य लेखिका राकेशरानी जी अपनी चार मास की पुत्री को साथ लेकर ६० महिलाओं के साथ गोरक्षा सत्याग्रह मे गिरफ्तार कर ली गयीं।

श्री प्रो० रामसिंह जी प्रधान आ० प्र० नि० सभा पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान प्रो० रामसिंह गोरक्षा आन्दोलन में सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार कर लिये गये।

श्रीमती भाग्यवती जी प्रभाकर

श्रीमती भाग्यवती जी प्रभाकर धर्मपत्नी श्री प्रो० रामसिंह प्रधान पंजाब आ०प्र०सभा महिलाओं के जत्थे का नेतृत्व करती हुई गिरफ्तार कर ली गयीं।

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रही गिरफ्तार

हैदराबाद से दिल्ली पहुंचे हुए गोरक्षा सत्याग्रही आर्य वीरों का एक जत्था [illegible] मे नारे लगाते हुए गिरफ्तार कर लिया गया।

आर्य सन्यासी स्वामी नित्यानन्द जी गिरफ्तार

आर्यसमाज दीवान हाल से सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करते हुए श्री स्वामी नित्यानन्द जी (हरियाणा) ११ सत्याग्रहियों के साथ गिरफ्तार कर लिये गये।

गाजियाबाद की आर्य महिलायें गिरफ्तार

गाजियाबाद की आर्य महिलाओं का एक जत्था गोरक्षा सत्याग्रह के लिए दिल्ली पहुंचते ही गिरफ्तार कर लिया गया।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज तीसरी बार कारागार में

गोरक्षा आन्दोलन को अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज दो बार सत्याग्रह करते हुए जेल भेज दिये गये थे। ७ नवम्बर के दिल्ली प्रदर्शन के पश्चात् उनको पुनः गिरफ्तार कर लिया गया है।

स्थान-स्थान पर गोरक्षा सम्मेलनों की धूम, आर्य जगत् मे अपार उत्साह, आन्दोलन को सफल बनाने के लिये सत्याग्रहियों के जत्थे रवाना होने लगे।

शीघ्र ही आर्य नेता जत्थे लेकर सत्याग्रह करेंगे, अपना नाम सत्याग्रहियों की सूची में लिखाइये।

उ० प्र० में आर्यसमाजें गोरक्षा आन्दोलन को सफल बनावें

श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री उपमन्त्री सभा उत्तरप्रदेश में गोरक्षा आन्दोलन के सञ्चालक नियुक्त

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की ओर से सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार गोरक्षा आन्दोलन का सञ्चालन करने के लिए व्यापक तैयारियां तथा अन्तरंग सभा की ओर से आन्दोलन समर्थक प्रस्ताव पारित, और श्री सच्चिदानन्द शास्त्री उपमन्त्री सभा गोरक्षा आन्दोलन के सञ्चालक नियुक्त, सभी उपदेशकों प्रचारकों को आन्दोलन की सफलता के लिये कार्य करने का आदेश, प्रत्येक आर्यसमाज मे गोरक्षा आन्दोलन समिति गठन, धन-संग्रह एवं सत्याग्रही भर्ती करने के आदेश प्रेषित किये जा रहे हैं।

आर्यसमाज अपनी पूरी शक्ति से आन्दोलन को सफल बनावें। आन्दोलन सम्बन्धी समस्त गतिविधि की सूचना प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक सभा कार्यालयों को भेजी जावे।

संसद के इस अधिवेशन में गोहत्या बन्दी का कानून न बना तो देश में क्रान्ति हो जायगी

देहरादून में प्रकाशवीर शास्त्री का भाषण

देहरादून १४ नवम्बर। आर्यसमाज देहरादून के ८७ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित गोरक्षा सम्मेलन के [illegible] पद से भाषण करते हुए संसद् सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने सरकार को चेतावनी दी कि यदि उसने देश के भारी बहुमत की अवहेलना जारी रखी और संसद के चालू सत्र में गोहत्या बन्दी का कानून न बनाया तो [illegible] देश में [illegible] हो जायेगी।

श्री शास्त्री ने कहा कि ७ नवम्बर के गोहत्या विरोधी प्रदर्शन में जो तोड़-फोड़ के काम हुये उनके पीछे किसी षड्यन्त्रकारी शक्ति का हाथ है जिसका पता लगाने के लिए और पुलिस द्वारा किये गये दमन के औचित्य की जांच करने के लिये न्यायिक जांच कराया जाना अत्यन्त आवश्यक है। आपने कहा कि प्रदर्शनकारियों को तोड़-फोड़ के लिये उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता।

७ नवम्बर को आगजनी व तोड़फोड़ में दूसरों का हाथ

दिल्ली के उप-राज्यपाल श्री आदित्य नाथ झा ने बताया कि राजधानी मे हुई आगजनी और तोड़-फोड़ के वारदातों मे प्रदर्शनकारियों के अलावा अन्य वर्गों ने भी हिस्सा लिया।

उन्होंने बताया कि सबसे पहले उन वर्गों ने आज दिन मे ११ बज कर २५ मिनट पर इर्विन अस्पताल के बाहर डी०टी०यू० की एक बस मे आग लगाई इससे भी पहले उन्होंने ११ बजकर २० मिनट पर डिलाइट सिनेमा पर पथराव किया। इसके ५ मिनट बाद इर्विन अस्पताल के बाहर पथराव किया। ११-३० बजे से १ बजकर ४० मिनट के भीतर रणजीत होटल के पास, दो बिजली के सब स्टेशनों, मिन्टो रोड स्थित गवर्नमेंट प्रेस, गुरुबाजार लाकोइये रेस्तरां, ओडियन सिनेमा पर पथराव किया गया। २ बजकर १० मिनट पर इस वर्ग की एक भीड़ ने लेहनासिंह मार्केट पर २ बजकर ३८ मिनट पर कांग्रेसाध्यक्ष श्री कामराज के बंगले पर, १२ बजकर ५५ मिनट पर न्यू अमर टाकीज, अजमेरी बाजार पर पथराव किया। १ बजकर २० मिनट पर दिल्ली कालेज आफ इन्जीनियरिंग और कश्मीरी गेट स्थित पालिटेक्निक का फर्नीचर जला दिया या क्षतिग्रस्त कर दिया।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की अन्तरंग सभा की बैठक दि० २७-११-६६ रविवार को २ बजे से आर्यसमाज [illegible] में होगी। [illegible] पधारने की कृपा करें।

—[illegible]

शृङ्गेरी मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य के वक्तव्य पर आर्य विद्वान् की चेतावनी

दैनिक हिन्दुस्तान १३ नवम्बर के पत्र में समाचारदाता सम्मेलन मे शंकराचार्य जी ने जो विचार दिए हैं, वे विचार सिद्धान्ततः सदोष और अप्रामाणिक हैं। समस्त पशुओं की रक्षा की बात कहकर मुख्य विषय गौ की उपेक्षा की जा रही है, यह तर्क उसी प्रकार सदोष है जिस प्रकार भारत की समस्त भाषाओं के आदर के नाम पर हिन्दी राष्ट्र भाषा की उपेक्षा।

अहिंसा क्या है और हिंसा क्या है, इसका सूक्ष्म विवेचन न तो समाचारदाता गोष्ठी मे किया गया और न आवश्यकता ही समझी गई।

हिंसकों को प्रसन्न करने के लिये तथा हिंसा को प्रोत्साहन देने के लिये श्री शंकराचार्य जी ने राजधानी की छत्रछाया मे 'दुर्बल तोष न्यायेन' यह वक्तव्य दिया प्रतीत होता है।

गोहत्या निरोध के विषय मे यदि कानून नहीं बन सकता तो बूचड़खाने के खोलने का कानून तो बन सकता है गो हत्या कानून से तो हो सकती है परन्तु गोरक्षा कानून से नहीं हो सकती—इस पर बड़ी हैरानी हुई। इस प्रकार प्रजा की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाना कहाँ तक उचित है? यह दिग्विजयी श्री शंकराचार्य के पीठ पर आसीन श्री शंकराचार्य की उक्ति आपत्तिजनक है।

आशा है इसका स्पष्टीकरण आप अवश्य पत्रों मे करने की कृपा करेंगे। आर्यसमाज शंकराचार्य के विचारों का विरोध करता है और यथायोग्य व्यवहार के सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। यदि शंकराचार्य चाहें तो आर्यसमाज के विद्वान् उनसे शास्त्रार्थ करने के लिये उद्यत हैं, क्या शंकराचार्य आर्य विद्वानों के चैलेंज को स्वीकार करेंगे।

[illegible]

गौ रक्षा और धर्म निरपेक्षता

(ले०—श्री शिवकुमार गोयल)

कांग्रेसी सरकार एक ओर तो "धर्म-निरपेक्ष" नीति का ढिंढोरा पीटती है और दूसरी ओर धर्म-कर्म हिन्दू सभ्यता संस्कृति को, आर्य हिन्दू धर्म के मानव बिन्दुओ को समाप्त करने पर तुली हुई है। किसी भी धर्म मे हस्तक्षेप न करने की घोषणा करने वाली सरकार द्वारा गोहत्या जारी रखना स्पष्ट रूप से हिन्दू धर्म के सिद्धान्तो का हनन करना है। गोहत्या का कलक कांग्रेसी सरकार की हिन्दू धर्म विरोधी और मुसलिम पोषक नीति का ही परिचायक है।

एक बार हिन्दु महासभा का एक शिष्टमण्डल गोहत्या बन्दी की माग को लेकर स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू से मिलने गया तो नेहरू जी ने शिष्टमण्डल से कहा कि "हमारा शासन धर्म निरपेक्ष शासन है और इस देश मे केवल हिन्दू ही नहीं अपितु मुसलमान-ईसाई भी रहते हैं। अत हम मुसलमान भाइयों के मजहबी अधिकार में हस्तक्षेप करके गो हत्या पर प्रतिबन्ध कैसे लगा सकते हैं?"

शिष्ट मण्डल के नेता प्रो० विष्णु-धनश्याम देशपाण्डे ने नेहरू जी को तुरन्त उत्तर दिया "पण्डित जी! जब आप अपने मुसलमान भाइयों के मजहब मे हस्तक्षेप नहीं कर सकते तो आपको हिन्दुओं के ही धर्म मे हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है? यदि मुसलमानों को अपने मजहब की आज्ञानुसार गाय की हत्या करने का अधिकार है तो हिन्दुओ को भी अपने धर्म की, वेदो की आज्ञानुसार गोघातकों को मार डालने का भी धर्मसम्मत अधिकार मिलना ही चाहिये। हमारे सर्वोच्च धर्मशास्त्र वेद स्पष्ट रूप से "यो गो या हसि, त त्वा सीसेन विध्याम." अर्थात् गो हत्यारे को सीसे की गोली से बींध कर मार डालो का आदेश देते हैं। अत. आपके "धर्मनिरपेक्ष" शासन मे जहां मुसलमानों को अपने मजहब के पालन का अधिकार दिया हुआ है वहां हिन्दुओं को भी अपने वेद-शास्त्रों की आज्ञा के पालन का जन्म जात अधिकार अवश्य मिलना चाहिये, तभी आपका शासन सच्चा "धर्म निरपेक्ष" शासन कहा जा सकता है।" नेहरू जी इस तर्क का कोई उत्तर न दे सके।

विशुद्ध भावना का प्रश्न

कांग्रेसी नेता गोहत्या के समर्थन मे तरह-तरह की लचर दलीले देकर जनता को भ्रमित करना चाहते हैं। कभी गो हत्या से मिलने वाले "डालरों" एव आर्थिक लाभ की बात कहते हैं तो कभी दूध न देने वाली गायो को चारा खिलाने से क्या लाभ? इस प्रकार की दलीलें देते है। यदि गो माता के सम्बन्ध मे उपयोगी-अनुपयोगी का रोना रोया जा सकता है तो फिर बूढे एव अशक्त माता-पिता को जहर का इन्जेक्शन देकर अन्न की बचत करने का भी आविष्कार किया जा सकता है। जिस प्रकार हमारे माता पिता बिल्कुल अशक्त एव अपग हो जाने पर भी हमारे लिये सम्माननीय हैं उसी प्रकार गाय माता भी हमारे लिये हर परिस्थिति मे आदरणीय है। गाय हमारी भावनाओं का प्रतीक है, हिन्दू संस्कृति की मानबिन्दु है। गाय की हत्या किया जाना हमारी धार्मिक भावनाओं का खुला हनन है।

गोरक्षा के प्रश्न पर लाभ-हानि और उपयोगी अनुपयोगी की दलीलें देने वाले शासक काश्मीर मे मोहम्मद साहब की दाढी के एक "पवित्र" बाल की आड मे सैकडों हिन्दुओं की खाल खींची जाती देखकर लाभ-हानि बाल के उपयोगी-अनुपयोगी होने की दलीलें देने का साहस न कर सके। "पवित्र" बाल के गुम होते ही प्रधान मन्त्री, गृहमन्त्री भागे-भागे काश्मीर गये और बाल की खोज मे करोडो रुपये पानी की तरह बहा दिये। बाल का प्रश्न जब मुसलमानो की भावना का प्रश्न हो सकता है तो गाय का प्रश्न हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओं का प्रश्न क्यों नहीं?

बलिदान के लिए तत्पर रहें

आज गोमाता ने समग्र हिन्दू (आर्य) समाज को सगठित कर दिया है। गो माता की करुण पुकार को सुनकर समस्त हिन्दू सम्प्रदायों ने, संस्थाओं ने अपने आपसी मतभेदों को भुला दिया है। जगद्गुरु रामानुजाचार्य, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य, जगद्गुरु शकराचार्य श्री श्री जी महाराज, वीर राघवाचार्य जी महाराज, धर्म सम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज, संत प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी जैनाचार्य मुनि सुशीलकुमार जी महाराज आर्य सन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज, गुरु गोलवलकर जी आदि ने विभिन्न सम्प्रदायो के नेता गो माता की रक्षा के लिये एक मच पर एकत्रित हो चुके हैं। प्रसिद्ध तपस्वी हिन्दू महासभाई सत गो भक्त महात्मा रामचन्द्र "वीर" एव तरुण हिन्दू सभाई नेता प० धर्मेन्द्र शर्मा ने गोमाता की रक्षा के लिये आमरण अनशन करके प्राणो की बाजी पर लगाया हुआ है। जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी निरजनदेव तीर्थ जी महाराज, जगद्गुरु रामानुजाचार्य, वीर माधवाचार्य जी महाराज, ब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी, गुजरात के सत शम्भू जी महाराज आदि विभूतिया गोपाष्टमी से आमरण अनशन करके प्राणो की बाजी पर खेल जाने को कटिबद्ध हैं। आर्यसमाज के प्राय सभी उच्च नेता सन्यासी एव आर्यसमाजी कार्यकर्ता गोमाता की रक्षा के लिये बडे से बडा बलिदान देने के लिये तत्पर हैं। इस समय प्रत्येक आर्य धर्मावलम्बी हिन्दू मात्र को पूर्ण निष्ठा और तन-मन-धन से गोहत्या के पातक के उन्मूलन के लिये जुट जाना चाहिये।

धर्मनिरपेक्षता के राग अलापने वाले शासन को देश की बहुसख्यक हिन्दू जनता की भावनाओं का सम्मान करने के लिये विवश होना ही पडेगा। यदि कांग्रेसी शासन धर्मनिरपेक्षता के कारण गैर हिन्दुओं के मजहबी अधिकार मे हस्तक्षेप करने का साहस नहीं कर सकता, तो हिन्दुओं को तो कम से कम अपने वेदों की आज्ञा के पालन का अधिकार मिलना ही चाहिये।

★

हजरतपुर में कट्टीखाना स्थापना का विरोध

आगरा

२३-१०-६६ ई० को आर्यसमाज द्वारा आयोजित आगरा छावनी मे श्री विशन-दासपुरी प्रधान आर्यसमाज मन्दिर आगरा छावनी की अध्यक्षता मे एक सभा हुई जिसमे सर्वसम्मति से हजरतपुर आगरा मे केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाये जानेवाले विशाल कट्टीखाने का विरोध किया और कट्टीखाने निर्माण के विरोध मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ प्रस्ताव मे केंद्रिय एव प्रान्तीय सरकारो से अनुरोध किया गया कि वे कट्टीखाने के निर्माण कार्य को तुरन्त ही बन्द कर देवें।

शमसाबाद-कस्बा मे दिनाक २३-१०-६६ ई० को आगरा जिला आर्यसमाज का उत्सव हुआ और एक विशाल सभा हुई जिसमे जिले एव अन्य स्थानो के अनेक विद्वान के भाषण हुये तथा उन्होंने हजरतपुर आगरा मे सरकार द्वारा बनाये जाने वाले विशाल कट्टीखाने की निन्दा की तथा सर्वसम्मति से कट्टीखाने निर्माण के विरोध मे प्रस्ताव पारित किया गया कि वह कट्टीखाने के निर्माण कार्य को तुरन्त बन्द कर देवें।

टूंडला—दि० २५-१०-६६ को टूंडला मेले मे आयोजित एक सभा मे सहस्त्रो नर-नारियो की उपस्थिति मे हजरतपुर आगरा मे सरकार द्वारा बनाये जाने वाले विशाल कट्टीखाने के विरोध मे श्री रमेश मधुकर अलीगढ द्वारा प्रस्तुत एव श्री प्रेमचन्द्र द्वारा समर्थित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ जिसमे सरकार से प्रार्थना की गई कि वह कट्टीखाने के निर्माण को तुरन्त ही बन्द कर देवें। दि० २४-२५-२६ सन ६६ को कट्टीखाने बनाये जाने के विरोध मे अनेक विद्वानो के प्रभावशाली भाषण हुए।

—मोतीचन्द्र जैन वकील सयोजक

दिल्ली में विरोध

देहली दि० ३०-९-६६ ई० से गाधी समाधि राजघाट देहली मे हजरतपुर कट्टी खाने के निर्माण के विरोध मे ला० प्यारेलाल सक्सेना २०४४ सोती कटरा आगरा, प० महेशदत्त शर्मा रावतपाडा आगरा एव प० रामचन्द्र शर्मा श्री मन्त्री जी महाराज शीतल कुण्ड पो० मिढाकी (आगरा) ने ४० घण्टे का अनशन प्रारम्भ किया, अनशनकारियों को गोरक्षा अभियान समिति की ओर से पुष्प अर्पण किये गये तथा शुभ-कामनायें व्यक्त की गईं।

हजरतपुर कट्टी खाना निरोध समिति ऐत्मादपुर के प्रतिनिधियों ने एक ज्ञापन पत्र राष्ट्रपति महोदय, गृह मन्त्री महोदय सर्वश्री प्रधान मन्त्री महोदया केन्द्रीय सरकार को प्रस्तुत किया।

दि० २-१०-६६ ई०को गांधी समाधि पर के कार्यकर्त्ताओं ने एक प्रदर्शन कट्टीखाने

(शेष पृष्ठ १० पर)

गोरक्षा आन्दोलन और उसकी मौलिक दिशाएँ

[श्री कालीचरण 'प्रकाश' आर्योपदेशक आ० प्र० सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद]

देशवासियों के लिए गोरक्षा आन्दोलन एक पुरानी समस्या है। देशवासी गौ तथा गौवंश की उपयोगिता से अनभिज्ञ हैं, ऐसी बात नहीं। फिर भी गौवध भयकर रूप मे प्रचलित है, यह महान आश्चर्य की बात है। गौवध का यदि कोई विशुद्ध मौलिक कारण है तो अर्थ प्रधानता एव मास भक्षण। देश की मौजूदा सरकार केवल आर्थिक लाभ-हानि को विचार कर ही गौवध पर ही प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहती। कारण कि आज देश मे गोवध से प्राप्त होने वाले पदार्थ अर्थ प्रदान करने वाले बने हुए हैं। क्या गौ मास, क्या गाय की अन्ते क्या गाय की कलेजी, क्या गाय की अस्थिएँ आदि-आदि सभी चीजें आज प्रयोग मे लाई जा रहीं हैं, विदेशो को भेजी जा रहीं हैं, और गौ मास का प्रयोग तो दिन प्रति दिन बढता ही जा रहा है। भले ही इसके प्रयोग से आयुर्वेद क आचार्यों के मतानुसार क्षय इत्यादि रोगो की अभिवृद्धि हो रही हो। महान आश्चय तो इस बात का है कि इन पदार्थों का कमिकल ढग से उपयोग करने वाले "गोरक्षा" का नारा लगाने वाले ही निकल आते हैं। इसी प्रकार आतें इत्यादि भी बडे ठके के रुप मे बन्द कर विदेशो को भेजने वाले भी ऐसे ही व्यवसायिक बन्धु निकलेंगे। हमे इनक सबन्ध मे अधिक गम्भीरता से सोचना है पूवकाल मे ऐसी प्रथा थी कि समाज की व्यवस्था भग करने वाले को सामाजिक रूप मे बहिष्कृत कर दिया जाता था। चाहे वह शासक हो अथवा धनिक या और कुछ इसी प्रकार गौ मास आदि सेवन करने वालो को अस्पृश्य बनाकर समाज से बहिस्कृत किया जाता रहा है। इनकी सज्ञा "अत्यज" शूद्र और चाडाल आदि बनती रही है। परन्तु आज विदेशी शिक्षा और विदेशी आचार-विचार चाहे वह मुसलमानो का हो अथवा क्रिश्चियनो का देश के लिये इस दिशा मे मांस भक्षण मे पोषक ही सिद्ध हो रहा है। इस लिये मास भक्षण की दृष्टि से हमे सोचना है कि क्या उपाय किए जाएँ ?

गौ मास और गौ के शारीरिक अवयवो से बनने वाले पदार्थों की खोज करनी होगी और इसका प्रचार करना होगा कि अमुक वस्तु गौ के शारीरिक अवयव से बनी है, प्रयोग न हो। चिकित्सा की दृष्टि से ऐलोपैथी के स्थान आयुर्वेदिक चिकित्सा को प्रोत्साहन देना होगा। चूंकि आयुर्वेदिक चिकित्सा की दैवी प्रणाली मे गो मास या गौ के शारीरिक अवयवो के प्रयोग का कहीं आदेश नहीं है। इसके विपरीत ऐलोपैथी मे चहचक टीको से लेकर आज स्थानिक बनने वाला लीवर स्ट्रेक्ट आदि सारा गौ के शारीरिक अवयवों से निर्मित है।

गौमास जो आज लोगो केभक्षण मे आ रहा है, उसके प्रति सरकार को इस बात का प्रयत्न करना होगा कि खाद्य की दृष्टि से अन्न-फल, दूध और मक्खन तथा घी पुष्कल मात्रा मे प्रजा को पहुचाना होगा और वह भी सस्ते दामों मे। इससे आम लोगो को पौष्टिक तत्व और अल्प मूल्य मे प्राप्त होने से वह शाकहारिता की ओर अग्रसर होगी। इससे बडी ही सुगमता से मासाहार रुककर मास की दृष्टि से जो गोवध हो रहा है, वह रुक सकेगा। आज अपनी सरकार देश मे देशवासियो को भरपेट अन्न न दे पा रही है उसका यह निकम्मापन है। इससे बढने कर उसके लिए और शर्म की बात नही हो सकती। जो नीति इस सम्बन्ध मे राज्य ने अपनाई हुई है वह ऐसी कुछ शत्रुतापूर्ण घातक नीति है कि जो मीठे जहर का काम करे। इससे एक ओर प्रजा मे अविश्वास हो रहा है और सरकार के लिए घृणा उत्पन्न होती जा रही है आज यही कुछ हो रहा है और होना स्वाभाविक भी है यदि कोई पिता अपनी सन्तानो को भर पेट भोजन न दे सके तो उसे सभ्य समाज औरसभ्य जगत मे क्या कहा जायगा ? विचारणीय है। दूसरे इस आन्दोलन की एक यह भी शिक्षा है कि आन्दोलनकर्त्ताओं को गोरक्षा की बात के स्वतन्त्रता के बाद से चुनावकाल के साल दो साल प्रथम याद आती है बाद के तीन या ४ वर्ष खाली चले जाते हैं। क्या हमारे आन्दोलन के लिए इतना ही कुछ पर्याप्त है ? नही बल्कि होना तो यह चाहिए कि बडी ही निर्भीकता से चुनावकाल के समय नही बल्कि उन ३–४ सालो मे जमकर तैयारी करें जनता मे इस प्रकार की भावना निर्माण करें कि जो गोवध समथक होगा उसे शासन की कुर्सी हर ही ना लावें। भले ही प्रत्याशी किसी भी दल का क्यो न हो ? आन्दोलन हो और पूर्ण विशुद्धता से आत्म विश्वास पूवक होना कि अवसर सिद्धि क लिए। इस दिशा मे यदि पुरोहित गौमांस भक्षक परिवार के कार्य को सम्पन्न न करावें। महन्त मन्दिरों के लिये दान लेवें और इसी प्रकार उपयोगी कार्य किये जाएँ तो बहुत प्रभावकारक हो सकते हैं।

गौ और गोवंश की रक्षा और उसका पालन उसकी उपयोगिता पर निभर है, यह एक व्यावहारिक बात है। गौ की उपयोगिता दूध दही और मक्खन के लिये है। जो भारतीय भोजन का प्रधान अग है। आज इस ओर शिक्षा तथा डालडा आदि कृत्रिम पदार्थों ने ले लिया है। इसी प्रकार गोवंश मे बैल आदि की प्रधानता कृषि के लिये है। आज सरकार और जनता मौलिकतया इस दिशा मे विस्मृत है। सरकार कृषि मे मशीनों और कृत्रिम खाद से पूर्ति कराने की प्रेरणा करती है और देश का अशिक्षित और भोला किसान अपने नन्दी और कामधेनु का भुलाकर "आधुनिकता की चका-चौंध मे भ्रमित होता जा रहा है। याद रखना है कि पशु घटते जायेंगे तो उत्पादन मे वृद्धि भी किसी रूप में सम्भव नहीं। यदि कृत्रिमता से होती भी है तो निश्चित जानो कि वह "वृद्धि" कृत्रिम ही है। इसलिए आन्दोलन सरकार से ज्यादा जनता से करना योग्य है और वह भी जो बाहर एक है और भीतर एक। ★

(पृष्ठ ४ का शेष)

४९ दिन से रामचन्द्र वीर अनशन कर रहे हैं उनकी हालत चिन्ता जनक है।

उनके पुत्र श्री धर्मेन्द्रनाथ भी १० दिन से अनशन पर डटे हुए हैं। स्वामी-रामेश्वरानन्द जी ने ५ अक्टूबर से अकारण ही अनशन कर दिया है। फिर भी सरकार के कानों पर जूं नहीं रेंगती। वह इस समस्या को साम्प्रदायिक कहकर टाल देती वह तो केवल वोट की भूखी है। उसे तो मुसलमानों के वोट चाहिये चाहे इस काय क लिये उन्हें कितना ही पाप क्यो न करना पडे। इस कारण देश को समृद्ध बनाने वाले और कल्याण कारी पशुओ को काटा जाता है और इनके मास आदि को बाहर भेजकर पैसा पैदा किया जाता है जो देश हित की दृष्टि से सवथा अनुपयुक्त है।

गोरक्षा का प्रश्न विशुद्ध राष्ट्रिय समस्या है। इसका सम्बन्ध किसी, धर्म या सम्प्रदाय से नहीं, गौ का दूध हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी के लिए आवश्यक हैं। यदि गौ आदि दुधारू पशुओं का वध बन्द कर दिया जाय तो हमारा स्वास्थ्य उत्तम हो उनके बच्चे कृषि में काम करके अन्न की पैदावार बढ़ावें। उनके गोबर का खाद बनाया जाय जिससे खाद मगाने में खर्च होने वाली करोडों रुपये की धनराशि बच जाय जिससे खाद मगाने मे खर्च होने वाली करोडों रुपये की धनराशि बच जाय। उनके बछड़े कृषि के काम में आवे और अधिक अन्न उत्पन्न न होने का एक मात्र कारण यही है कि किसान खाद मगाने के लिये पैसा खर्च नहीं कर पाता। उसके पास अच्छे उत्तम कोटि के बैल आदि भी नहीं रहते। इसलिये आर्थिक लाभ पहुचाने वाली तथा देश को भुखमरी से बचाने वाली गौ की रक्षा करना सरकार का राष्ट्रिय कर्तव्य होना चाहिये।

यदि इसी गोवध होता रहा तो दो चार वर्षों में शेष पशुओं का भी विनाश हो जायेगा। वैसे ही हमे विदेशों पर आश्रित होना पडेगा जिससे हमारा करोडों रुपये व्यर्थ चला जायेगा। वैसे ही हम विदेशी कर्जे से दबे हुये हैं। हमारे ऊपर विदेशों का अरबो रुपयों का ऋण है। उस ऋण का चुकाना ही बहुत कठिन है। इस पर अन्न आदि उपर्युक्त पदार्थों के लिये भी करोडों रुपये व्यय करने पडेंगे। इस प्रकार हमारा देश आर्थिक दृष्टि से अवनत हो जायेगा।

इसलिये अन्न के उत्पादन मे वृद्धि करने के लिये आर्थिक विकास करने तथा विदेशी ऋण से मुक्त होने के लिये आवश्यक है कि हम गोरक्षा करने मे सहायक हों। गो हत्या निरोध आन्दोलन को और उग्र करें। जनता में गौ के प्रति श्रद्धा-भाव जागृत करें। सरकार से अनुरोध करें जिससे गोवध निरोध कानून पारित कर दे। श्री रामचन्द्र वीर, श्री धर्मेन्द्रनाथ, स्वामी रामेश्वरानन्द आदि व्यक्तियों के जो गोरक्षा के लिये प्राणों को बलिदान करने के लिये उद्यत हैं। प्राण बचाये जा सकें, देश को भयकर आपत्ति से बचाया जा सके और देश का कल्याण हो।

गौ का महत्व

(ले०—श्री भारतभूषण जी विद्यालंकार)

महर्षि यास्क ने अपने निरुक्त में गौ शब्द के अनेक अर्थ बताये हैं। जिन में कुछ इस प्रकार हैं—सूर्य, पृथिवी, वाणी, प्रकाश, किरणें, इन्द्रियां स्त्रियां इत्यादि। अमरकोषकार ने भी नाना-र्थवर्ग में गौ शब्द के दस अर्थ बताये हैं। "स्वर्गेषु पशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणि भूजले। लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौ।

आज गोरक्षा आन्दोलन चल रहा है तो गौ शब्द से सूचित होने वाले सभी अर्थों व वस्तुओं की रक्षा करनी चाहिए परन्तु वर्तमान समय पर प्रसगानुसार हम केवल गाय पशु पर ध्यान देंगे।

हमारे इस कृषि प्रधान देश का आधार प्राचीन समय से ही गौ रही है यहां तक कि गोपुत्र धरती धारक कहा जाने लगा। बैल के सींग पर पृथिवी के टिके होने की इस अलकारपूर्ण कथा का तात्पर्य ही यह है, देश की उन्नति गोवश पर आधारित है। जिस देश में गौ बैल समाप्त हो जायेंगे मानों उस राष्ट्र की धरती अपना स्थान ही छोड़ देगी। इस प्रकार बैल को सम्पूर्ण समृद्धियों का प्रतीक बताना ही इस कथा का उद्देश्य था। इसीलिए गौ को इतना अधिक श्रेय प्राप्त हुआ कि उसे माता का पद दे दिया गया। और अब तक गौ ने अपने मातृत्व को निभाया भी है। हमने उसे कभी सामान्य पशु नहीं समझा। राजा और महाराजा तक अपने को गोपाल व नन्द कहलाने के श्रेय को प्राप्त करने को लालायित रहा करते थे। हमने उसे इससे भी ऊँचा स्थान प्रदान कर दिया और कामधेनु बनाकर स्वर्ग का सदस्य बना दिया। अर्थात् जहां भी गौ का सुख-पूर्वक निवास होगा वह स्थान स्वतः ही स्वर्ग बन जायेगा। उस घर के सभी सदस्यों की कामनाएं पूर्ण करने का सामर्थ्य उसमें है इसी से वह धेनु नहीं कामधेनु है धनु कामदुघा मे अस्तु" की प्रार्थना इसका स्पष्ट प्रमाण है।

हमारा प्राचीन साहित्य आज भी अपनी मूक भाषा में पुकार-पुकार कर कह रहा है, अपने कान्तासम्मित उपदेश द्वारा हमें प्रेरित कर रहा है। 'रघुवंश' काव्य की महाराज दिलीप के माध्यम से गौ के अपमान का फल घोषित कर रहा है और वहीं पर पुन. गौ की सेवा व प्रसन्नता का परिणाम भी हमारे सामने है। यह कामधेनु के साथ-साथ नन्दिनी (प्रसन्न करने वाली) भी है। कृष्ण को भगवान कृष्ण एवं गोवर्धन धारी बनाने वाली भी यही शक्ति थी। नन्द एवं गोपाल ने उपाधियां जब नव कोटि की गिनती भी जो समीचित एवं स्वस्थ सुपुष्ट गौओं का स्वामी होती था।

इसी प्रसग में यह भी स्पष्ट कर देना उचित होगा कि कृष्णचन्द्र जी महाराज के साथ जो माखनचोर या दधि, मक्खन विक्रेताओं की हांडी फोड़ने की गाथाएं संयुक्त हैं। उनका आधार स्पष्ट ही यह रहा होगा कि अत्याचारी कंस के साम्राज्य में धीरे-धीरे नगर प्रदेशों में आजकल की भांति गोपालन की प्रवृत्ति कम हो रही होगी। क्योंकि उस सम्पन्न समय में दूध, दही इत्यादि सस्ता और सुलभ था। अत गो-सेवा के कार्य के प्रति अरुचि बढ़ने लगी होगी। परिणाम स्वरूप नगर प्रदेशों के निकट वर्ती ग्रामों से यह अमृत तत्व बाहर जाने लगा होगा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भी उसकी कमी सी होने लगी होगी। ऐसे समय में कृष्ण ने स्वयं गोपालन का आदर्श प्रस्तुत किया और तदुपरान्त नेता कृष्ण ने विचार किया होगा कि यह सर्वोत्तम समय है जब कि कंस साम्राज्य का विनाश किया जा सकता है क्योंकि "गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का नाश हो जाता है" भगवती श्रुति का यह आदेश उनके सम्मुख था कि तेजो राष्ट्रस्य निर्हन्ति न वीरो जायते वृषा अ० ५-१९-४' अर्थात् जिस देश में गौ का आदर नहीं होता तथा वह पीड़ित होती है वहां बलवान वीर पुत्र पैदा नहीं होते। अतः उन्होंने एक आन्दोलन छेड़ा कि ग्राम से बाहर दूध-दही इत्यादि न भेजा जाये तथा जो इस उद्देश्य से इस अमृत तत्व का संचय करे उसे लूट लो व छा-छीकर समाप्त कर दो पर बाहर मत जाने दो। इसके फलस्वरूप हमारे भाई-बन्धु बलवान होंगे तथा अत्याचारी का विनाश सरल हो जायेगा। इस प्रकार एक विशाल साम्राज्य का विध्वस उन्होंने किया जिस का मूल आधार यह आन्दोलन था। इस प्रकार यह आन्दोलन नया नहीं है, केवल इसे नया रूप प्रदान किया गया है। गो-पालक कृष्ण चन्द्र का कार्य ही इसके द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। अत. प्रत्येक धर्मप्राण व देशभक्त का कर्त्तव्य है कि इसमें अधिक से अधिक योगदान दे।

सुख और शान्ति का आधार, समृद्धि का द्योतक, तेज एवं कान्ति का आगार यह दूध हमें तभी प्राप्त होगा जब हम वेद के शब्दों में प्रार्थना करेंगे कि "इम गोष्ठं पशवः स्रवन्तु' अर्थात् हमारी गोशालाएं सदा भरी पूरी रहें परन्तु वे कैसी हों इसका स्पष्टीकरण भी हमी ने किया है।

'गावो भगम् वाजिनी' हमारी गौएं सुपुष्ट एवं बलवान हों जब उन्हें उत्तम जल एव चारा मिलेगा तभी हमारे घर 'क्षीरेणपूर्णा उदकेनदध्ना' होंगे। हमारा यह संसार स्वर्ग होगा और हम सब भगवान हो जायेंगे क्योंकि 'गावो भगो गाव इन्द्रोमइच्छादगाव सोमस्य प्रथमस्य भक्ष। इमा या गाव सजनास इन्द्र इच्छ मि हृदा मनसा चिदिन्द्रम्' ऋ० ४ २१ ५। गौएं सेवन करने योग्य ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। सम्राट व पर-मात्मा मुझे गौएं प्रदान करे क्योंकि गौओं के घृत, दुग्धादि का भक्षण सोम की तरह गुणकारी है। हे लोगो! ये जो गौएं हैं वे इन्द्र अर्थात् ऐश्वर्य रूप हैं। 'इदि परमैश्वर्ये' मैं तो हृदय एव मन से इस गौ रूप ऐश्वर्य की ही इच्छा करता हूं। भग की व्याख्या करते हुए कहा है कि—

'ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्ययशस श्रिय। ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णा भग-इतीरिणा॥'

जो भग सम्पन्न होगा वह स्वयं भग-वान हो ही जायेगा।

हम कहते तो हैं कि हम रामराज के इच्छुक हैं। पर जनता के आदर्श को हमने तिरोहित कर दिया। महाराज जनक ने अपने हाथों से हल चलाया तब उन्हें सीता की प्राप्ति हुई। सीता का अर्थ हल द्वारा खोदी हुई लकीर होती है। अर्थात् जब राजा स्वयं कृषि कार्य तथा गोपालन में रुचि लेगा। तभी देश धन धान्य से परिपूर्ण होगा। इस कथा का सारांश है कि कृषि कार्य को ही न समझते हुए राजा को उस ओर गौओं की रक्षा हत करते रहना चाहिए।

बचपन में एक कहानी सुनी थी कि एक राजा की लड़की का विवाह हुआ अन्य दहेज के साथ गौएं भी दी गईं। राजा ने कहा कि मेरी छोटी गोशाला खोल दो और दो मील के क्षेत्र में जितनी भी गौएं आयें वे सब दहेज में दे दो। इसी प्रकार उपनिषद् में एक कथा आती है जिसके अनुसार महाराज जनक ने सबसे बड़े आत्मज्ञानी को सोने से मढ़े हुए सींगों वाली १०० गौएं दान में देने की घोषणा की थी। इसीलिए हमारे देश के चारण अब तक राजा को 'गो ब्राह्मण प्रतिपालक' के गौरवपूर्ण सम्बो-धन से सम्बोधित करते रहे हैं।

... अलाउद्दीन खिलजी के ... राजा शिवप्रसाद सि... ... लिखते हैं कि 'तवारीख फरिश्ता ... लिखा है उस वक्त दिल्ली में ... से १) का २ मन गेहूं बिकता था और ३० सेर घी।'

नरहरि कवि के निम्न पद्य को सुन-कर मुगल सम्राट अकबर ने गोकशी बिल्कुल ही बन्द करा दी थी—

'तृण जो दन्त तर धरहीं,
तिनहिं न मारत सबल कोई।
हम नित तृण चरहिं,
बैन उच्चरहिं दीन होई।
हिन्दुहिं मधुर न देहिं,
कटक तुरकहिं न पियावहिं।
पय विशुद्ध अति स्रवहिं,
बच्छ महिं कम्पन आवहिं।
सुन शाह अकबर! अरज यह,
कहत गऊ जोरे करन।
सो कौन चूक मोहि मारियत,
मृप चाम सेवहु चरन।'

बदायूंनी नामक प्रसिद्ध इतिहास लेखक लिखता है कि अकबर ने जैनाचार्य हरिविजय सूरि व जयचन्द सूरि के अनु-रोध के साल में कुछ नियत दिनों के लिए जीव हिंसा मात्र बन्द कर देने का फरमान भी जारी कर दिया था।

सिखों के गुरु श्री गोविन्दसिंह जी ने घोषणा की थी कि 'गोघात का दुख जग से हटाऊँ' सम्पूर्ण संसार में ही गोहत्या बन्दी का स्वप्न देखने वाला यह महापुरुष धन्य है।

महर्षि दयानन्द तो इस सम्बन्ध में एक नवीन प्रेरणा ही बनकर प्रकट हुए थे। उनकी गो करुणानिधि उस समय की अपेक्षा आज अधिक मूल्यवान है। उन्होंने आर्यसमाज को भी यही उद्देश्य दिया था। महर्षि के चरणचिन्हों पर चलते हुए राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने तो स्पष्ट ही घोषणा की थी कि 'यह अकेला गो सेवा का काम ही स्वराज्य को नजदीक लाने वाला है। जब तक गोवध होता है तब तक मुझे ऐसा लगता है कि मेरा अपना ही वध हो रहा है। मेरी दृष्टि में गोवध व मनुष्य वध एक ही समान है' उन्होंने उस समय में भी हिन्दु जाति को प्रेरणा दी थी कि गाय को बचाने के खातिर जो अपने प्राण देने को तैयार नहीं, वह हिन्दु नहीं है। गो-रक्षा का प्रेम ही हिन्दुत्व का मुख्य लक्षण है।"

भूतपूर्व कृषि मन्त्री रफी अहमद किदवई ने स्वय इस बात को स्वीकार किया था कि 'गोकशी पर पाबन्दी लगाने का सवाल अब ज्यादा वक्त तक टाला नहीं जा सकता।' हमारा स्वप्न था कि स्वराज्य प्राप्ति के बाद यह कलंक

हमारे मस्तक से साफ हो जायगा परन्तु बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि स्वतन्त्र भारत की बागडोर सम्भालने वाले अपने वायदे भूल गए तथा स्वदेशी मुद्रा के चक्कर में स्वदेश एवं विदेशी को भी भूल गए। इस लोभ ने बुद्धि को दुर्बुद्धि में परिवर्तित कर दिया। दुधारू व अन्य पशुओं के साथ १९६४-६५ में ६०७१९५० (साठ लाख इकहत्तर हजार नौ सौ पचास) किलोग्राम बछड़े व बछड़ियों की खालें विदेश भेजी गईं। करीब ३० हजार गौएं प्रतिदिन कलकत्ता, मद्रास व बम्बई में काटी जाती हैं। तथा ५ हजार गौएं काटने की सामर्थ्य का एक कारखाना आगरा के निकट लगाने की योजना है। जबकि कृषि-विशेषज्ञों के अनुसार आज भी देश में ३ करोड़ बैलों की कमी है।

ऐसी स्थिति में राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में विवश होकर गौ की ओर से, यही कहना पड़ेगा कि—

'जारी रहा क्रम यदि यहाँ,
यों ही हमारे नाश का।
तो अस्त समझो सूर्य्य,
भारत-भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही,
वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ण भारत भूमि बस,
मरघट मही बन जायेगी॥'

ऐसी विकट परिस्थिति में एकमात्र उपाय है कि हम गौ को उसका वही पुराना स्थान प्रदान करें। तभी वेद के शब्दों में गौ हमारी रक्षा करेगी।

'घृत दुहाना विश्वत प्रपीता यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः।' अ० ३-१६ ७

हे गौओ! तुम वरणीय सर्वोत्पादक भगवान के श्रेष्ठतम कर्म यज्ञादि के लिए सदा सुलभ रहो। हे न मारने योग्य! तुम परमैश्वर्यवान इन्द्र के लिये क्षीर इत्यादि का वपण करती रहो और तुम हमेशा सन्तान वाली होओ। यक्ष्मा इत्यादि रोगों से रहित होकर स्वस्थ और सानन्द रहो। कोई भी चोरस्वभाव का व्यक्ति अपने कलुषपूर्ण कार्यों के लिये तुम्हें उपलब्ध न कर सके। तुम इस यजमान स्वभाव वाले यजमान के घरों में ध्रुव रूप से निवास करो तथा इसके घर को दूध घृत से परिपूर्ण रखो।

इषे त्वोर्जे त्वावायवस्थ .... पशून पाहि।'

गौ रक्षक बड़े गर्व व गौरव के साथ कहता है कि—

स सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्। संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ। तथा—

'आ हरामि गवां क्षीरमाहार्षं धान्यं रसम्। आहृता अस्माकं वीरा आ पत्नीरिदमस्तकम्।'

अर्थात्—हमारे ध्रुव रूप से निवास करने वाली गौओं के दूध के प्रभाव से ही बलवान बने हैं तथा हमारे स्त्री व पुत्र भी इन्हीं की देन हैं क्यों कि आचार्य चरक ने स्पष्ट लिखा है कि "सद्य शुक्र कर पय"

ऐसे समय में भी न जाने कैसे गलत विचार हमारे देश में फैल गया है प्राचीन आर्य गोमांस भक्षक थे तथा अतिथियों व ऋषियों के लिए मांस पकाया जाता था कि जगह जगह स्पष्ट रूप से 'हिंसेन्न पशून' "अघ्न्या" इत्यादि शब्दों द्वारा उसकी हत्या का स्पष्ट निषेध है। मनुमहाराज ने तो गोहत्या का पाप इन सब को बताया है जो कि उसकी अनुमति दे काटे मारे खरीदे बेचे पकाकर परोसे तथा खाये। "अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रय विक्रयी, संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातका।"

अथर्व वेद में स्पष्ट ही घोषणा की है कि 'धीरनाका' गौ भक्षण के योग्य नहीं है। गौ भक्षण करने वाले को यहाँ तक सोच लेना चाहिए कि 'मामद्यात्सव जीवानि मास्व' आज तो गोमांस भक्षण कर रहा हूँ पर मैं कल जीवित नहीं रहूँगा। अर्थात् गोहत्या करने वाले को राज्य की ओर से कठोरतम दण्ड भी मिलना चाहिए। यहाँ तक कि उसे तुरन्त मृत्यु-दण्ड दे देना चाहिये और सब को यह ज्ञात होना चाहिए कि 'मा अघ्न्या न जायात कश्चन' गोमांस का भक्षण करके राष्ट्र में कोई जीवित नहीं रहा।

जैसा कि आज तस्कर का दण्ड है वैसा दण्ड उस समय गोघातक का था क्योंकि गौ उस समय विनिमय का साधन बन चुकी थी। मुद्रा में गड़बड़ करने जैसा ही उसका दण्ड था।

जब हम गौ के वास्तविक महत्व को समझ लेंगे तभी हमारा देश बलवान विद्वान् व सुन्दर पुत्र पौत्र शिष्यों से एवं क्रान्तदर्शी ऋषियों से युक्त होगा क्योंकि—

'पयोधनूना रसमोषधीना जवमर्वतां कवयो य इन्वथ।' अ० ४-२७ ३

तभी हमारा रामराज्य का उद्देश्य पूरा होगा। राष्ट्र पुनः स्वर्ण-विहान का अवलोकन करेगा और हम कह सकेंगे—

'एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।'

भगवान का साक्षी एवं पुनीत रूपवती श्रुति की शक्ति हमारे साथ है हमें सफलता मिलेगी और अवश्य मिलेगी।

गो माता के लिए हम नवयुवक मर मिटेंगे

(ले०—श्री जयरोपन प्र० आर्य एम० ए०)

कौन कहता है कि इस योगीराज श्री कृष्ण की पावनी वसुन्धरा पर माँ गौ की हत्या होगी? कौन कहता है कि इस गौ माँ की पवित्र धरती पर उसकी रक्षा के लिए लाडला नहीं है? अब हम जाग चुके हैं। अब हत्यारे मुसलमान एवं देशद्रोही ईसाइयों का कुचक्र नहीं चल सकता। हम सभी बलिदान हो जायेंगे गौ माँ की रक्षा के लिए। हम वीर कृष्ण, वीर शिवा के पुत्र हैं। हमारे हाथों में गौ मां की रक्षा के लिए चमकती तलवारें हैं, हम उसकी गर्दन उड़ा देंगे जो भी गौ मां की हत्या करेगा। हम कच्ची मूली की तरह हत्यारे की गर्दन तोड़ देंगे जो गौ मां की हत्या करेगा। हम ऋषि दयानन्द का स्वप्न अधूरा नहीं रहने देंगे। यह मनु दिलीप, रघु, अज, राम, कृष्ण, बुद्ध और दयानन्द की भूमि है जिन्होंने देश की संस्कृति, धर्म के लिये प्राण न्योछावर कर दिये। नवयुवको! शपथ तुम्हें राम और कृष्ण की, शपथ है तुम्हें शिवा और राणाप्रताप की जिन्होंने माँ गौ के लिए सब कुछ दान कर दिए। आओ, हम सभी प्रतिज्ञा करें कि जब तक मा गौ की हत्या सरकार बन्द नहीं करायेगी, आराम से हम नहीं बैठेंगे।

यही वह वसुन्धरा है जहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को 'वेद' की पावनी अमृतमयी धारा पिलाई थी। यही वह धरा है जहाँ अत्याचार का दमन कर धर्म की स्थापना योगी कृष्ण ने की थी। और अर्जुन से कहा था कृष्ण ने—अर्जुन तपस्वी, मेधावी, देश रक्षक, प्रजापालक धर्मात्मा राजा एवं पुरुष को सात्विक आहार प्रिय होता है और नीच, कामी, व्यभिचारी तथा प्रजाशोषक को तामसी आहार प्रिय होता है। आज तामसी वृत्ति हर जगह अपनायी जा रही है। यही यह धरणी है जहाँ यज्ञवेला में 'वेद' की ध्वनि गूँजती थी, पर आज उस स्थान पर मांस एवं अंडे का प्रचार रेडियो द्वारा होता है। जहाँ गीता में सात्विक आहार की प्रधानता है वहाँ आज गीता के स्थान पर मांस जैसे तामसी आहारों का प्रचार होता है। अब पाप का घड़ा भर चुका है। गौ भी तड़प रही है। हमारी नसें तड़प उठी हैं। अब हम नहीं रुकेंगे। नहीं तो यह प्यारा भारत जो दयानन्द बापू और प्यारे जवाहर के त्याग से स्वतन्त्रता की बेड़ी से आजाद किया गया, फिर नष्ट हो जायेगा। हमारी गीता रूठ जायेगी, हमारा धैर्य खो जायेगा।

अतः हम सभी नवयुवक सूर्य की प्रथम किरण की वेला में प्रतिज्ञा करते हैं और सरकार से अनुरोध करते हैं कि गोहत्या बन्द करे सारे भारत में, नहीं तो ४७ करोड़ जनता, नवयुवक, बच्चे एवं बूढ़े सभी बलिदान हो जायेंगे, हमारी धार्मिक मांग है सरकार से। हम गोमाता की रक्षा के लिये अपनी जान तक दे देंगे।

गो हत्या बन्द नहीं की गई तो देश में गड़बड़ी फैल जायगी

गो रक्षा सम्मेलन में भाषण

आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर गोरक्षा सम्मेलन आर्य नेता श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हुई। सम्मेलन में ब्रह्मचारी सतीशचन्द्र, प० कालीशंकर अवस्थी, प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री सम्पादक आर्य जगत जालन्धर, माता त्रिलोत्तमावती और गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के आचार्य प्रियव्रत के भाषण हुए। वक्ताओं ने गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने तथा गौ पालन पर बल दिया और इस बात का खण्डन किया कि वेदों में गोवध लिखा है। वेदों में तो गो हत्यारे को गोली मार कर मृत्यु दण्ड देने की आज्ञा दी गई है। मुस्लिम बादशाहों ने भी अपने राज्यों में गोवध बन्द कर भारतवासियों की धार्मिक भावनाओं की कदर की थी। अपने राज्यों में गोवध दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है लगभग १ करोड़ गायें हर साल काटी जाती हैं। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने चेतावनी दी कि यदि अब भी गोवध पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया तो देश में गड़बड़ी फैल जायेगी। आर्यसमाज दिवाली के दिन से सदन के बाहर सत्याग्रह आरम्भ कर रहा है।

राष्ट्रपति की सेवा में हजरतपुर कट्टीखाने के विरोध में जनता का निवेदन

परम सम्मान्य राष्ट्रपति महोदय !

प्रार्थना-पत्र संख्या

ज्ञापन पत्र—आगरा नगर एवं जिले के निवासियों द्वारा,

विषय—ग्राम हजरतपुर परगना एत्मादपुर जिला आगरा में बूचड़खाना निर्माण कार्य बन्द करने के लिये,

सेवा में सविनय प्रार्थना है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा ग्राम हजरतपुर में करोड़ों रुपया की लागत से एक विशाल बूचड़खाना बनाया जा रहा है। इसके विदेशों से प्रचास करोड़ रुपये की आटोमेटिक मशीनें लगाने के लिए मंगाई जा रही है। इसके एक ओर पर प्रतिदिन पांच हजार बहुमूल्य पशु-वध होंगे और दूसरी ओर ४०० मन के बराबर १५ टन सूखा मांस प्राप्त होवेगा। इसके विरोध में हम दो निम्न लिखित कारण हैं—

१—यह कि इस विनाशकारी योजना से पश्चिमी उत्तर प्रदेश और विशेषतः आगरा कमिश्नरी एवं आगरा जिले में रेगिस्तान का विस्तार होगा। पांच हजार पशु प्रतिदिन आने जाने से हजरतपुर इलाके के आसपास की कुल जमीन रेगिस्तान में शीघ्र ही परिवर्तित हो जायेगी।

२—यह कि इस बूचड़खाने के बनने से लाखों गिद्ध एवं चील सदैव एकत्र होंगे। इस प्रकार ऐसे मांसाहारी पक्षियों के निरन्तर आने-जाने से फलदार वृक्ष एवं पौधे नष्ट हो जावेंगे।

३—यह कि प्रतिदिन पांच हजार पशुओं की खाल वहां पर सुखायी जाया करेगी। इससे इस इलाके की समस्त जलवायु दूषित हो जावेगी और उस इलाके की जितनी भी शाकाहारी आबादी है उसके खान पान एवं भजन आदि में विशेष तौर पर बाधा पड़ेगी।

४—यह कि हजरतपुर के इर्द गिर्द के कुल इलाके में लगभग ९५ प्रतिशत से भी अधिक शाकाहारी लोग निवास करते हैं (इस बूचड़खाने के बनने से) उनकी मूल संस्कृति धर्म एवं परम्पराओं का विनाश होगा इसलिये भी यह कार्य संविधान के सर्वथा विरुद्ध है।

५—यह कि राजस्थान से आने वाले रेगिस्तान को रोकने के लिये सन् १९५५ में सरकार द्वारा एक नर्सरी हजरतपुर में बनाई गई थी जिसमें सरकार के कई लाख रुपय खर्च हुये। इस बूचड़खाने के निर्माण से यह नर्सरी बिलकुल नष्ट हो जायेगी और इस बूचड़खाने के निर्माण हेतु छायादार फलदार एवं कीमती लकड़ी के वृक्षों को काटा जावेगा इस प्रकार दशकों के परिश्रम से वर्षों में जो तैयार [illegible] हो जावेगी।

६—[illegible] भूमि ही एक ऐसा [illegible] स्थान है जहाँ [illegible] शाकाहारी लोग निवास करते हैं इसलिये [illegible] बूचड़खाना बनाया जाना किसी भी प्रकार उपयुक्त नहीं है। संविधान में नागरिकों के धर्म संस्कृति एवं परम्पराओं के रक्षार्थ गारंटी दी गई है और इस बूचड़खाने के बनने से सरकार द्वारा दी गई इस गारन्टी की अवहेलना होती है क्यों शाकाहारी लोगों के दिलों को इसके बनने से सर्वाधिक आघात पहुंचता है।

७—यह कि इसी स्थान से होकर सरकार द्वारा एक हरनन्द नामक नाला निकाला जा रहा है। अब यदि इस स्थान पर बूचड़खाना भी बनाया जाता है तो निश्चय ही हरनन्द नाले का मार्ग बदलना होगा। ऐसी स्थिति में उसके लिये सैकड़ों एकड़ की जमीन सरकार को लेनी पड़ेगी जिससे खेती के कार्य को विशेष रूप से हानि होगी और अन्नोत्पादन में कमी हो जायेगी क्योंकि यह इलाका विशेष रूप से अन्नोत्पादक है (इस इलाके में अधिक अन्न पैदा होता है)।

८—यह कि एक ओर तो केन्द्रीय सरकार ऊसर एवं बंजर भूमि को भी कृषि योग्य बनाने के लिये इतनी तत्पर है और वह इसी कार्य के लिये अन्तर्राष्ट्रीय सहायता ले रही है दूसरी ओर जो हजरतपुर की बंजर एवं ऊसर जमीन को उपजाऊ बनाया गया है उसे पुनः ऊसर बनाये जाने के सरकार द्वारा ही काज बाये जा रहे हैं।

९—यह कि इस इलाके में हार्टीकल्चर ब्लाक हजरतपुर सरकार द्वारा तथा एक नवजीवन फार्म व्यक्तिगत प्रयास से स्थापित किये गये हैं। इस बूचड़खाने की स्थापना से यह दोनों ही बर्बाद हो जायेंगे और यह सरसब्ज इलाका ऊसर एवं बंजर के रूप में परिवर्तित हो जावेगा। इसके अतिरिक्त इस बूचड़खाने के बनने से हार्टीकल्चर ब्लाक हजरतपुर तथा नवजीवन फार्म जो कि उत्तर प्रदेश के लिये दो प्रेरणा सूत्र हैं वे भी नष्ट हो जावेंगे।

१०—यह कि हजरतपुर के सरकारी उद्यान में हमारे अनुमान से लगभग २० लाख रुपये की कीमत के १० हजार फलदार एवं इमारती वृक्षों एवं पौधों को काटकर बूचड़खाना इस समय बनाया जा रहा है। इसके बनने से २० लाख रुपये की कीमत की सरकारी सम्पत्ति नष्ट हो जावेगी।

यह कि अनेक प्रार्थनाएं करने पर भी भारत सरकार ने अभी तक इस योजना को रद्द नहीं किया है हालांकि, अब भारत का अवसर हमारी लोकप्रिय सरकार को भी संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार का अनुकरण ही करना चाहिये (जैसा कि न्यूयार्क में एक ऐसा न ब [illegible] जिसमें श्रीमती जानसन और उनकी पुत्री भी थी इसलिए बन्द कर दिया गया कि पड़ोसियों ने शोर की शिकायत की) उदाहरण ६ ६ ६६

अतएव हमारी सविनय प्रार्थना है कि इस बूचड़खाने के निर्माण कार्य को तुरन्त ही बन्द करा जाने के आदेश दिया जावे। अति कृपा होगी।

विनीत—

शिवलाल शर्मा संयोजक हजरतपुर कट्टीखाना विरोध समिति एवं [illegible] कल्याण समिति ऐत्मादपुर [illegible]

महन्त मठाधीश मनकामेश्वर मन्दिर रावतपाड़ा, आगरा

संरक्षक [illegible] सभा आगरा १३६ आगरा के सम्भ्रान्त नागरिक

गो हत्या बन्द न हुई तो सरकार शासन न कर सकेगी

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती संसद सदस्य की घोषणा

प्रधान मंत्री की कोठी पर अपने २५० साथियों के साथ गोहत्या बन्द कराने के लिए सत्याग्रह करने वाले वीर आर्य सन्यासी लोक सभा सदस्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती ने अपने एक वक्तव्य में सरकार को चेतावनी दी है कि वह तुरन्त गो वध बन्द करे अन्यथा यदि जनता का धैर्य सीमा लांघ गया तो उत्तरदायित्व सरकार का होगा।

कल शाम आर्यसमाज करोलबाग में आयोजित विराट सभा में भाषण करते हुए स्वामी जी ने देश के प्रत्येक व्यक्ति को गो हत्या बन्द कराने के लिए जेल जाने के लिये आह्वान किया।

स्वामी जी का स्वागत करते हुए आर्योदय के संपादक प० भारतेन्द्रनाथ ने उन्हें दैवी संस्कृति का प्रतिनिधि बताते हुए विश्वास दिलाया कि स्वामी जी के आदेश पर देश का प्रत्येक व्यक्ति सर्वस्व समर्पण के लिए तैयार है।

सभा में स्वामी महेश्वरानन्द जी, अयोध्या के स्वामी शिवराम दास जी, सनातन धर्म सभा के मंत्री श्री रघुनाथ प्रसाद जी गगेश्वर धाम के स्वामी राम मुनि जी व श्री देवराज ने भी भाषण दिये।

अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान प्रो० रामसिंह ने कहा कि १८६४ में महर्षि दयानन्द ने गो-रक्षा आन्दोलन आरम्भ किया था और अब १९६६ में देश के सभी हिन्दू गो वध बन्द कराने के लिये प्रत्येक बलिदान करेगा।

स्वामी जी के साथ इस जत्थे में गाजियाबाद के आर्यसमाज की मन्त्रिणी श्रीमती दया व श्रीमती कैलाश व श्रीमती मायादेवी भी जा रही हैं। दिल्ली से इस जत्थे में प्रमुख आर्य महिला प्रसिद्ध लेखिका और कवयित्री श्रीमती राकेश अपनी ४ मास की कन्या मृदुला के साथ गयीं।

गुरुकुल नरेला के ब्रह्मचारी पाठक की दस महिलायें भी उत्साह से सत्याग्रह में गयीं। लगभग ४०० व्यक्तियों ने स्वामी जी के साथ इस जत्थे में सत्याग्रह किया।

स्वामी जी ने दूसरी बार सत्याग्रह किया है।

आर्यसमाज गाजियाबाद (मेरठ)

गाजियाबाद की समस्त आर्य संस्थाओं की एक आवश्यक बैठक दि० २३ १० ६६ को आर्यसमाज में हुई और सर्वसम्मति से गोरक्षा आन्दोलन में गाजियाबाद से सत्याग्रही जत्थे भेजने का निश्चय किया गया। कार्य संचालन के लिये एक गोरक्षा समिति बनाई गई जिसके प्रधान श्री महाशय बनवारी जी व मन्त्री श्री परमानन्द जी व कोषाध्यक्ष श्री [illegible] स्वरूप जी चुने गये।

पहला सत्याग्रही जत्था जिसमें ९ सन्यासी व ३ महिलायें (सुश्री दयादेवी पत्नि श्री प्रो० रत्नसिंह जी, कैलाशवती पत्नि श्री परमानन्द व श्रीमती दयावती पत्नि श्री ओम्प्रकाश जी) थीं, दि० २५-१० ६६ को सत्याग्रह करने के लिए रवाना हो गया।

दो अन्य जत्थे एक महिलाओं का तथा एक पुरुषों का सत्याग्रह में भाग लेने के लिए तैयार हैं —परमानन्द मंत्री

आर्य जनों में गोरक्षा आन्दोलन के लिये उत्साह

कोसीकला आर्यसमाज के उत्सव पर हुआ गोरक्षा सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने की। दूर दूर से सहस्रों व्यक्ति श्री शालवाले का भाषण सुनने को एकत्र हुए थे। कार्यवाही रात के १२ बजे तक चली।

श्री शालवाले गोरक्षा आन्दोलन के संबंध में समाजों का भ्रमण कर रहे हैं। सत्याग्रह के लिए सर्वत्र जोश पाया जाता है। उन्होंने २३ अक्तूबर को अलीगढ में हुए गोरक्षा सम्मेलन में भाग लिया। यहां से लगभग १०० सत्याग्रहियों का प्रथम जत्था श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री के नेतृत्व में पहुंचेगा।

आर्य हिन्दू जनता सम्पूर्ण देश में गोवध के कलंक को समाप्त करने के लिए भारी से भारी बलिदान देने को तैयार है।

क्या आप जानते हैं?

एक दिन में ५०००
एक माह में १५००००
एक साल में १८०००००
पांच साल में ९०००००००

मूक पशु

टूंडला के निकट ग्राम हजरतपुर (जिला आगरा) में बनने वाले एशिया के विशाल बूचड़खाने में काटे जायेंगे।

क्या आप चाहते हैं कि भगवान राम एवं कृष्ण की इस पवित्र भूमि पर ऐसा भीषण अत्याचार हो?

हमारे देश में रहने वाले हर धर्म, हर जाति के लोगों के मासूम बच्चे मां के दूध अथवा, पशुओं के दूध पर आधारित रहते हैं।

क्या आप चाहते हैं कि ये मासूम बच्चे रोग ग्रस्त एवं दुर्बलता के शिकार हों?

आर्य जनता राष्ट्र के नाम पर लगे गोहत्या के कलंक को मिटा देगी

गोरक्षा आन्दोलन में भाग लेने के लिए दिल्ली जाने वाले सब बाग़ी सत्याग्रही जत्थे के स्वागत में आयोजित पिलखुवा में एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि गाय आर्य हिन्दू धर्म का मानबिन्दु है और यह भारी लज्जा की बात है कि कांग्रेसी सरकार प्रतिदिन हजारों गायों की हत्या कराकर हिन्दुओं की भावनाओं को आघात पहुंचाती है। अब गोहत्या के कलंक के उन्मूलन के लिये समस्त हिन्दू समाज उठ खड़ा हुआ है। इस बार यदि सरकार ने गोहत्या बन्द न की तो देश की हिन्दू जनता गोहत्या समर्थक कांग्रेसी शासन को उखाड़ फेंकेगी।

श्री शालवाले ने घोषणा की कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने गोरक्षार्थ सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया है। समस्त देश की आर्य जनता इस कलंक को मिटाने के लिए जेलें भरने को उत्सुक है।

सभा में दिल्ली जाने वाले कुछ महात्माओं के एवं भावी सत्याग्रही जत्थे का स्वागत किया गया।

सभा में प० बालमुकुन्द सूर्य, प्रो० जगदीश कुमार व श्री ओमप्रकाश शर्मा ने भी भाषण किया।

ध्यान दीजिये

जिस तरह हमारी सरकार पशुधन का दुरुपयोग कर रही है। उससे पशु धन का नाश ही नहीं बल्कि आने वाली हमारी और आपकी सन्तानों पर भी इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा।

इसलिए अभी से अपने कर्तव्य को पहचानिये और पशु धन की रक्षा कर देश की खुशहाली में सहयोगी बनिये।

जीव रक्षक नवयुवक संघ आगरा
हजरतपुर कट्टीखाना विरोध समिति
एत्मादपुर

[पृष्ठ ५ का शेष]

के विरोध में किया तथा सांकीर्तन, अहिंसा एवं मानवता प्रचारक साहित्य का वितरण किया। 'विश्व मानव परिषद आगरा द्वारा लगभग १००० पुस्तकें जैसे नवरत्न, गीतावली, तथा १० हजार परिपत्र एवं जीव रक्षक नवयुवक संघ आगरा द्वारा ४ हजार परिपत्र वितरित किये गये। महन्त श्री उद्धवपुरी जी महाराज संरक्षक जीव रक्षक नवयुवक संघ डा० प्रकाशचन्द्र माहेश्वरी, पं० जगतनारायण पाठक एडवोकेट, समंधी अजयसिंह प्रधान हजरतपुर, इतवारी भाई बल्देवसिंह वर्मा, लक्ष्मीनारायण वर्मा, श्रीनारायण पाठक, हरीमोहन संयोजक। जीवरक्षक नवयुवक संघ, वैद्यराज यादव ठा० महेन्द्रसिंह, दीपचन्द्र शर्मा, सोमपाल भाई, प० मिठाईलाल शर्मा, महेन्द्र कुमार, सुरेशचन्द्र, एत्मादपुर, राजकुमार मन्नारदार, शान्तिस्वरूप वैद्य भारती, श्यामबाबू भारती, [illegible] तथा जीवरक्षक नवयुवक संघ के कार्यकर्ता श्री मन्नूलाल, श्री लक्ष्मीनारायण एवं श्री भगवान आदि इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुये। अनशन की समाप्ति दि० २-१०-६६ को परम श्रद्धेय श्री १०८ श्री सुशीलकुमार मुनिजी महाराज ने आशीर्वाद प्रदान किया। सन्ध्या के समय प० शिवलाल शर्मा संयोजक कट्टीखाने के निर्माण के विरोध में गांधी पार्क में एक प्रभावशाली भाषण हुआ जिसमें लगभग पचास हजार की संख्या में जनता उपस्थित थी इस कार्य में विशेष सहयोग श्री प्रेमचन्द्र गुप्ता, मन्त्री सर्वदलीय गोरक्षा महा अभियान समिति ३ सदर बाजार रोड दिल्ली तथा प० शिवकुमार शर्मा मन्त्री भारत जैन समाज ३ सदर बाजार रोड दिल्ली एवं श्री रिछपालसिंह [illegible] मन्दिर वाली पहाड़ी धीरज देहली ६, श्री १०८ मुनि श्री सुशीलकुमार जी महाराज तथा श्री १०८ मुनि [illegible] श्री महाराज का सहयोग [illegible] है।

...रहते हैं। जीवों पर अनुकम्पा करता (दूसरों के दुःख का) ...

...सर्वभूतानुकम्पनम्। ... ५-१५

भूमि, राष्ट्र और गौओं की रक्षा करने से ही मानव का कल्याण साधन निश्चित हैं। हमारे राष्ट्र की पशु गौ है। इसके अत्यन्त उपकार के बदले हम इसको 'गोमाता' के पवित्र पद से स्मरण करते हैं। वेद की आज्ञा है कि अपना सर्वस्व स्वाहा करके भी गो की रक्षा करना। यदि इस अघ्न्या नामि 'अदिति' गौ का रक्षण, पोषण और वृद्धि होती गई तो तू भी एक दिन अमृत स्वरूप हो जायगा, देवों का राज्य पा जाएगा, देवो का राज्य पा जायगा। अन्यथा मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में—

जारी रहा क्रम यदि यहा,
यों गोवश के नाश का।
तो अस्त समझो सूर्य,
भारत-भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही,
वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ण भारत-भूमि बस,
मरघट मही बन जायेगी॥

पाश्चात्य देशों के अधानुकरण मे हमारा सामान्य ज्ञान भी लुप्त हो गया है। सामान्य ज्ञान के लुप्त होने से हमारा संस्कार कलुषित हो गया है। शुद्ध संस्कार के बल से सृष्टि का कार्य-व्यापार तथा व्यवहार चलता है। भूमण्डल की सत्ता संस्कार सत्ता पर ही निर्भर है। जब तक संस्कार शुद्ध है तब तक प्रत्येक वस्तु स्व-स्वरूप मे प्रतिष्ठित रहती है और इसमे गड़बड़ी होने पर उसका पतन हो जाता है। हमारे यहाँ शास्त्रों मे प्रथम ज्ञान को वेद, दूसरे ज्ञान को ब्रह्म और तीसरे ज्ञान को सामान्य ज्ञान का आश्रय त्यागकर दूसरे देशो के विदेशियों के मुहताज रहेंगे तो यावज्जीवन संकटग्रस्त रहेंगे। म० गांधी का यह कथन यथार्थ है कि—

"सच तो यह है कि गरीब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो सकता है लेकिन चरित्र खोकर धनी बने हिन्दुस्तान का स्वतन्त्र रहना मुश्किल है।"

हमारे पाठकों को यह जानकर अवश्य हँसी आवेगी कि देश मे अन्नाभाव के कारण खाने की आदतो को बदलने के लिये स्थान-स्थान पर बूचड़खाने खोले जा रहे हैं और इनका उद्घाटन भी माननीय मन्त्री गणो ने करना आरम्भ कर दिया है। २४ अगस्त ६६ के कलकत्ता के 'विश्वमित्र' पत्र से घोषित हुआ है कि सूअर के मांस के व्यवसाय का वैज्ञानिक रीति से ...

गोरक्षा आन्दोलन सफल करें!

[श्री महेशदत्त शर्मा, सम्पादक 'गोरक्षक']

रांची मे बिहार के मुख्य मन्त्री श्रीकृष्ण वल्लभसहाय ने किया है। इस कारखाने पर २७ लाख रु० व्यय होने का अनुमान है। उत्तर प्रदेश में आगरा के पास एक विशाल यान्त्रिक बूचड़खाना भी खुलने जा रहा है। अब यह सुना है कि उत्तर-प्रदेश सरकार मछली का उत्पादन बढाने के लिये गांवो में ४४ लाख रु० तालाब खोदने मे खर्च करेगी।

राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर के देश मे पैदा होने वाले हमारे शासनाधिकारियो के दिमाग मे केवल गोबर ही भरा है या और कुछ? यह भारत सरकार की मांस उत्पादन की योजना से समझ लीजिये। देखिये—

भारत सरकार की मांस उत्पादन की पञ्चवर्षीय योजना

समय	मांस का उत्पादन मनो मे
१९६१ से '६६ तक	१,१८,७५ ०००
१९६७ से '७१ तक	३,९ ३,७५,०००
१९७२ से '७६ तक	६,९५,६२,५००
१९७७ से '८१ तक	७,१२,५०,०००

अन्य पशुओं के मांस का उत्पादन	सर्वप्रकार के पशुओ के मांस के उत्पादन का योग
२,१५,३७,५००	५,२४,१२,५००
२,५६,७५,०००	६,५०,५०,०००
३,२४,६२,५००	१०,२०,२५,०००
४,४२,७५,०००	११,५५,२५,०००

किसी कवि ने कहा है—

पशु की होत पनहिया,
नर का कुछ नहीं होत।
यदि नर करनी करे तो,
नर-नारायण होत॥

पता नहीं जिनकी बदौलत असंख्य पशुओ का नृशंसवध हो रहा है। वे अगले जन्म मे राक्षसराज रावण होंगे या नर-नारायण? पशु धन का नाश करके हमारे नेताओ ने देश को अन्न धन से तबाह कर दिया है और ऋण भार से देश की कमर टूट गई है। आज दिन दाने-दाने के लिये देश के बच्चे बूढ़े और जवान चिन्तित है। क्यो?

पशुधन के विनाश से

मांस उत्पादन की योजना बनाने वाले अघासुर से यह कोई प्रश्न करने वाला नहीं है कि अपने यहा की खाद और दूध की मशीन को कत्ल कराकर देश को उजाड़ वाटिका बनाने की जिम्मेदारी किस पर है? शासनाधिकारी राजनीतिज्ञों की बुद्धि का दिवाला भी ... पड़ता है। क्योंकि कुर्सियों के मोह मे वे भी अपना स्वतन्त्र अस्तित्व खो चुके हैं। परिणाम स्वरूप भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, साम्प्रदायिकता प्रान्तीयता, जातिवाद भाषावाद उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता चरम सीमा पर पहुच गई हैं।

देश की उन्नति के लिए पहली योजना मे १९४ करोड दूसरी करोड, दूसरी योजना मे १४२२ करोड और तीसरी योजना में २६५० करोड रु० की सहायता विदेशो से लेने पर भी वास्तविक लाभ क्या हुआ, जब कि हमारे बच्चे अन्न के अभाव मे बिलख रहे हैं। खेद है कि दूध जैसे पौष्टिक आहार देने वाली गौ का विनाश कर सरकार विलायती सत्व रहित दुग्ध चूर्ण मगाती है और खाद के लिये गोबर देने वाले पशु धन को बूचड़खानों मे कटवाकर अन्य देशों से रासायनिक खाद तथा उवरक मगाने के लिए तथा विदेशों की सहायता से रासायनिक खाद के कारखानों की स्थापना के लिए लाखो करोड़ो रुपयो की विदेशी मुद्रा व्यय करती है। कृषि-व्यवस्था का पलड़ा उलट जाने का कारण एकमात्र गोवंश का ह्रास ही है। रूसी समाचार पत्र 'प्रावदा' ने एक बार लिखा था—भारतवर्ष मे २२ अरब मन गोबर होता है। यदि १) रु० प्रति मन के हिसाब से गोबर की खाद का मूल्य रखा जाय तो उसका उपयोग कर २२ अरब रुपये की विदेशी मुद्रा बचायी जा सकती है। लेकिन जो अधिकारी हैं वे विदेशों से व्यवहार रखने मे ही लाभ का अनुभव करते हैं और उसी के अनुरूप उनकी योजनायें भी बनती रहती हैं।

उन्नीस वर्षो के कांग्रेसी शासन में अनेक अनापशनाप योजनायें बनीं और अरबो रुपये स्वाहा हो गये। ... अनुपात मे देशोन्नति के विकास का स्वरूप कल्पना जगत मे विलीन हो गया। अब जनता की आखें खुलीं और उसने पहचान लिया है कि हमने अपने देश के पूज्य गोवंश की उपेक्षा की है उसी के परिणाम स्वरूप घोर कष्ट भोग रहे है।

देश के पूज्य संत-महात्माओं और गोभक्तो ने इसके पूर्व कई बार गोरक्षा के लिए प्रयत्न किये परन्तु राजनीति के कुटिल चक्रो मे पड़कर आगे न बढ़ सके। लेकिन वह दबी हुई आग बुझी नहीं। आज प्रत्येक क्षेत्र से संत महात्माओ की गोहत्या बन्द कराने के आन्दोलन मे कूदों की बाजी लगाकर मैदान में आ गई है। जनता भी चाहती है कि सम्पूर्ण भारत के लिये गोवध निषेध कानून संसद शीघ्र पास करे।

यदि भारत सरकार वर्तमान गोरक्षा के हेतु जनता की मांगो को सम्मान के साथ स्वीकार कर ले तो कुशल है। अन्यथा श्रीस्वामीरामचन्द्रजी 'वीर' श्री संतप्रवर प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, पूज्य श्रीवीरराघवाचार्यजी महाराज, श्री जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराज प्रभृति का बलिदान व्यर्थ न जायगा। गोरक्षा के लिये वीरो का बलिदान सार्थक शुद्ध संस्कार होगा और अनूठा रंग दिखावेगा।

श्री टामस कारलाइल एक अंगरेज ने अपनी एक पुस्तक 'हीरोज एण्ड हीरो-वर्शिप" मे लिखा है—

In all times and in all places the Hero has been worshipped, It will ever be so Hero worship exists has existed and will forever exist universally among mankind

आशय यह कि प्रत्येक समय मे और प्रत्येक स्थानो मे वीरो की पूजा हुई है और सदैव ऐसा होता रहेगा। वीर पूजा है, पूजा रही है और सदैव मानव समाज मे सवत्र रहनवाली है।

हमारा भारत आदि काल से शक्ति का उपासक है। शक्ति की उपासना में शिथिलता आने से हम दास मनोवृत्ति के भूल रहे हैं। और हमारी गोमाता पर दिनदहाड़े कुठाराघात हो रहा है। आइये ऐसे समय मे कायरता को छोड़कर हम सब गोमाता की रक्षा के लिये तैयारी करें। याद रखिये, यह नश्वर शरीर परोपकार के लिए ही है।

परोपकाराय दुहन्ति गाव।
परोपकारार्थ मिदं शरीरम्॥

परोपकार के लिये गायें दूध देती हैं और परोपकार के लिये ही यह शरीर है।

★

आ.दर्शित साप्ताहिक, लखनऊ
रजिस्ट्रेशन सं० एल. ६०
कार्तिक २९ शक १८८८ कार्तिक शु० ८
(दिनांक २० नवम्बर सन १९६६)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L. 60
टेलीफोन : २५९९१ तार . "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आ० स० लखनऊ (गणेशगंज) का वार्षिकोत्सव

स्थान—डी०ए०वी० कालेज, लखनऊ
दि —२५, २६, २७, व २८ नवम्बर १९६६

आर्यसमाज लखनऊ [गणेशगंज] का वार्षिकोत्सव विशेष समारोह के साथ २५ नवम्बर से २८ नवम्बर तक डी ए०वी० कालेज लखनऊ के विशाल प्राङ्गण में मनाया जावेगा। जिसमे आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान, उपदेशक तथा व्याख्याता पधार रहे हैं। अभी तक बाहर से आने वाले निम्न विद्वानो की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है—

कुंवर सुखलाल जी आय मुसाफिर, बुलन्दशहर, प० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ बदायूं, प० ब्रह्मदत्त जी शास्त्री देहरादून, प० वाचस्पति जी शास्त्री महाविद्यालय ज्वालापुर प० रामानन्द जी शास्त्री पटना बिहार प० रामस्वरूप जी आयमुसाफिर भजनोपदेशक, श्रीमती विद्योत्तमा यती ज्वालापुर, ला० देवराज जी वैदिक मिशनरी होशियारपुर।

दैनिक कार्यक्रम

प्रात ८ से १० तक यज्ञ भजन व प्रवचन। दिन मे २ से ४॥ बजे तक विभिन्न कायक्रम। साय ५॥ से १० बजे तक सध्या, भजन, व्याख्यान।

आप महानुभावो से निवेदन है कि इस पुनीत अवसर पर सपरिवार पधार कर लाभ उठाव एव पुण्य के भागी बनें।

तेजनारायण एडवोकेट — प्रधान
प्रियव्रत तिवारी — मन्त्री

गोरक्षा आन्दोलन को सफल बनाइये

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के निश्चयानुसार गोरक्षा अभियान आरम्भ कर दिया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के १९ वर्ष पश्चात भी गो वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध का न लगाया जाना भारतवासियों के मस्तिष्क पर बहुत बडा कलक का टीका है। आर्य जगत अनेक वर्षो से इस सम्बन्ध मे आन्दोलन करता रहा है परन्तु भारत सरकार इस सम्बन्ध मे अभी तक मौन रही है। इसलिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार शीघ्र ही इस सम्बन्ध मे सत्याग्रह आरम्भ किया जायगा।

अत आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि गोरक्षा सत्याग्रह मे सम्मिलित होने के लिये सत्याग्रहियो की सूची बनाई जाये जिससे यथा समय जत्थे बनाकर आन्दोलन को सफल बनाने का सङ्कल्प किया जा सके। सत्याग्रहियो की सूची जिला उपसभा को अविलम्ब भेजी जावे।

मथुरादास सलूजा — प्रधान
हरिश्चन्द्र आर्य — मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा जि० मुरादाबाद

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या का उत्सव

श्री नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के संस्थापक स्व० श्री स्वामी त्यागानन्द जी सरस्वती के जन्म दिन कार्तिक शुक्ल एकादशी तदनुसार दि० २३-११-६६ से दि० २८ ११ ६६ तक विश्व कल्याणार्थ यजुर्वेद परायण यज्ञ के साथ कुल का वार्षिक महोत्सव मनाया जा रहा है, एव साधारण सभा का निर्वाचन दि० २८-११-६६ को १० बजे दिन मे होगा।

कृपया बन्धु बान्धवो के सहित पधार कर कुल को लाभ पहुचाव।

—वसुमित्र मुख्याधिष्ठाता

आ०स० नरही का उत्सव

आयसमाज नरही लखनऊ का उत्सव ७, ८, और ९ नवम्बर को बडे समारोह से हुआ। श्री आचाय विश्वबन्धु जी शास्त्री, श्री विक्रमादित्य जी 'बसन्त', श्री हरवश लाल जी मेहता, श्री बा० तेजनारायणजी एडवोकेट और श्री विश्व बधन जी के प्रभावशाली व्याख्यान और श्री रामस्वरूप जी आयमुसाफिर के रोचक भजनो का जनता पर खूब प्रभाव पड़ा।

—नारायणगोस्वामी उपम त्री

निर्वाचन सम्बन्धी टिप्पणियां व प्रारूपों के हिन्दी रूपान्तर की पुस्तक

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद नई दिल्ली ने एक ऐसा प्रकाशन तैयार किया है जिसमे निर्वाचन सम्बन्धी टिप्पणियाँ व प्रारूपो (मसौदो) के नमूने हिन्दी रूपान्तर के साथ प्रस्तुत किये गये हैं। इस की सहायता से निर्वाचन कार्यालयो के अधिकारियो व कर्मचारियो को अपना काम हिन्दी मे करने मे काफी सुगमता होगी। पुस्तक की भाषा बडी आसान और सहज समझ मे आने वाली रखी गई है। इसकी प्रतियां परिषद की ओर से उन सरकारी कार्यालयो को नि शुल्क दी जा रही हैं जहा निर्वाचन सम्बन्धी काम होता है।

इससे पूर्व परिषद अन्य विभागों के लिए ऐसे कई प्रकाशन तैयार करके कई प्रकाशन तैयार करके सरकारी कार्यालयों मे वितरित कर चुकी है और उनसे प्रेरित होकर सैकड़ों कर्मचारियो ने सरकारी काम हिन्दी मे करना आरम्भ किया है।

(हरि बाबू कंसल) महा मन्त्री

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन

७ नवम्बर को दिल्ली प्रदर्शन और दुर्घटनाओ को लेकर केन्द्र सरकार में मतभेद उत्पन्न हो गया। गृहमन्त्री पद से श्री गुलजारीलाल नन्दा ने त्यागपत्र दे दिया और उसे स्वीकार कर लिया गया। इससे उत्पन्न परिवतन के कारण श्री यशवन्तराव चह्वाण गृहमन्त्री, श्री छागला विदेशमन्त्री और श्री फखरुद्दीन शिक्षामन्त्री पदों पर नियुक्त किये गये हैं।

गोरक्षा आन्दोलन की ओर से दिल्ली में भव्य प्रदर्शन

७ नवम्बर को १० लाख गोरक्षको ने ससद के सम्मुख पहुच कर गोवध बन्दी कानून बनाने की माग की, प्रदर्शन शान्त और सुव्यवस्थित था परन्तु जनता को उत्तर मे अश्रुगैस, लाठी और गोली वर्षा मिली, भगदड मच गयी, मृतको की सख्या सरकार ने छिपा ली, सैकडो घायल हुए।

बाद कर्फ्यू लगा और एक आतंक का राज्य स्थापित हो गया। परन्तु सत्याग्रह जारी है और सफलता तक जारी रहेगा।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए प्रकाशित आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार २०७० ६ अक १९८८, कार्तिक शु० १५ वि० सं० २०२३, दिनांक २७ नवम्बर १९६६

सात नवम्बर की घटनाओं के लिये—

गोहत्या विरोधी लोग जिम्मेदार नहीं।

श्री नन्दा का स्पष्टीकरण

स्वराष्ट्र मन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने १८ नवम्बर को दिल्ली की एक सभा में सात नवम्बर को हुई घटनाओं की चर्चा करते हुये कहा कि मैं यह मानने

भूतपूर्व गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा

के लिये कदापि तैयार नहीं हूं कि इन घटनाओं के पीछे गोहत्या विरोधी प्रदर्शन के आयोजकों का तनिक भी हाथ था।

श्री नन्दा ने कहा कि हमारे महान् आचार्यों के हृदय में हिंसा व तोड़-फोड़ की बातें हो ही नहीं सकती। मैं तो यह मानते हैं कि गोमाता की रक्षा के लिए हुये पुनीत कार्यक्रम में बाधा पड़ने का कारण यही हो सकता है कि इसमें कोई आध्यात्मिक कमी रही होगी।

उन्होंने कहा कि मैंने प्रदर्शन से एक दिन पूर्व सभी उच्चाधिकारियों को बुलाकर आदेश दिया था कि सभी गुण्डों को गिरफ्तार कर लिया जाना चाहिये किन्तु अपनी सारी तत्परता के बाद भी जो दुर्घटना घटी उससे मुझे भारी आघात लगा और इसी कारण मैंने पद त्याग कर दिया।

सभा का आयोजन लेडीहार्डिंग रोड पर स्थित जन आश्रम मे किया गया था तथा इसमें ज्योतिषपीठ, शृंगेरी तथा पुरी के शंकराचार्य एवं जैन मुनि श्री सुशीलकुमार भी उपस्थित थे।

श्री नन्दा ने कहा कि मैं जब सरकार में था तब भी गाय के प्रति मेरी श्रद्धा थी और मैं गोहत्या के पाप को दूर कराने का प्रयत्न करता रहा। अब सरकार से बाहर आ जाने पर भी गोहत्या बन्द कराने का प्रयत्न करता रहूंगा। मुझे आशा थी कि शीघ्र ही गोहत्या बन्द हो जायगी किन्तु सात नवम्बर की घटनाओं से इसमें बाधा पड़ गयी।

उन्होंने पद त्याग कर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि अब मैं पूरी तरह से आजाद होकर देश की सेवा में जीवन लगा दूंगा।

अनशन न करें

श्री नन्दा ने गोवर्धन मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निरंजनदेव तीर्थ से प्रार्थना की कि वह २० नवम्बर को किये जाने वाले अनशन को कुछ समय के लिये स्थगित कर दें जिससे

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्य नेता श्री प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा—

गोवध पर प्रतिबंध के लिए निजी विधेयक पेश

लोक सभा में १८ नवम्बर को श्री प्रकाशवीर शास्त्री उप प्रधान सार्वदेशिक सभा एवं उ०प्र० प्रतिनिधि सभा ने एक

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम०पी०

निजी विधेयक उपस्थित किया जिसका उद्देश्य गोवध पर प्रतिबन्ध लगाना है।

विधि मन्त्री श्री जी० एम० पाठक ने कहा कि विधेयक इसलिए सदन में पेश नहीं किया जा सकता क्योंकि संसद इस विषय पर कानून बनाने की अधिकारी नहीं है।

श्री रघुनाथसिंह (कांग्रेस) ने कहा विधेयक को व्यवस्थित समझा गया है और अध्यक्ष द्वारा उसे कार्यवाही की सूची में शामिल कर लिया गया है। यदि सरकार उसका विरोध करना चाहती है तो वह ऐसा उस पर बहस के समय कर सकती है, न कि उसे पेश किये जाने के समय।

श्री टी० एच सोनवणे ने जो उस समय अध्यक्ष पर बैठे हुए थे कहा कि ऐसी परम्परा है कि विधेयक संविधान के अनुकूल है या विरुद्ध है, इस प्रश्न पर तब विचार किया जाना चाहिये जब विधेयक पर विचार हो रहा हो।

इसके बाद सदन ने श्री प्रकाशवीर शास्त्री को विधेयक उपस्थित करने की अनुमति दी।

●

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

❀ वैदिक प्रार्थना ❀

ओ३म् [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] विमेम है।
[illegible] च [illegible] [illegible] पिता [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३२ ॥

[illegible]—हे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible]" सुखी कर, तथा "[illegible]" हमको भय अर्थात् अत्यन्त सुख का सम्पादक कर। "[illegible], [illegible], विमेम, ते" शत्रुओं के वीरों का वध करने वाले अत्यन्त नमस्कारादि से आपकी परिचर्या करने वाले हम लोगों को प्रसन्न [illegible] कर। "[illegible]" हे [illegible]! आप हमारे पिता (पालक) हो, हमारी सब प्रजा को भी सुखी कर, [illegible] प्रजा के [illegible] का भी नाश कर। जैसे 'मनु' मान्यकारक पिता '[illegible]' सन्तानों को [illegible] और अधिक [illegible] लाडन करता है वैसे आप हमारा पालन करो। हे [illegible] भगवन्! [illegible], [illegible]' आपकी आज्ञा का प्रणय अर्थात् उत्तम न्याययुक्त नीतियों में प्रवृत्त [illegible] '[illegible]' वीरों के चक्रवर्ती राज्य को आपके अनुग्रह से प्राप्त हों।

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार २७ नवम्बर १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत १,९७,२९,४९,०६७

जांच नहीं होगी क्यों ?

★

भारत के नये गृहमन्त्री श्री चह्वाण ने लोक सभा में एक वक्तव्य द्वारा सात नवम्बर के गोलीकाण्ड की न्यायिक जांच कराने से अस्वीकार कर दिया है।

सात नवम्बर को दिल्ली में जो भी हुआ उससे भारतीय प्रजातन्त्र की गौरव गरिमा को गहरा आघात पहुंचा इस बात से सरकार और गोरक्षा आन्दोलन कारी दोनों पक्ष सहमत हैं। भारत सरकार की प्रतिष्ठा तो इसी में है कि वह दुर्घटना की पूरी जांच कराये और दोषी व्यक्तियों और वर्गों को दण्डित करे, परन्तु सरकार ने न्याय के स्थान पर दमन का सहारा लिया है और वह चाहती है कि सरकारी मशीनरी जो भी चाहे करे सरकार से उसका जवाब-तलब न किया जाय। कोई भी प्रजातन्त्रप्रिय सरकार साहसपूर्वक जनता के चैलेन्ज को स्वीकार कर लेती है परन्तु अंग्रेजों के कदमों पर चलने वाली नौकरशाही सरकार में इतना साहस कहां कि वह जांच के लिये तैयार हो। सात नवम्बर को जो कुछ हुआ उसमें किसका दोष है यह अब रहस्य का विषय नहीं है। गोरक्षा आन्दोलन को तो बदनाम किया जा रहा है परन्तु वास्तविकता यह है कि बम्बई और कलकत्ता से पेशेवर गुण्डा तत्वों को राजनैतिक पहलवानों ने बुलाकर एकत्र किया था वे चाहते थे कि गृह मन्त्रालय को बदनाम कर दिया जाय और गृह मन्त्रालय पर अपनी इच्छा का व्यक्ति बठा दिया जाय। सत्ता के इस घृणित षडयन्त्र का शिकार गोरक्षकों को बनाया गया।

यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रदर्शन संयोजक अहिंसक थे और उनकी कोई हिंसक योजना नहीं थी एक ओर प्रदर्शन हो रहा था दूसरी ओर गुण्डा तत्व सक्रिय था सरकार की सारी शक्ति प्रदर्शन व सभा को विफल करने में लगा दी गयी, गुण्डों को खुली छूट मिल गयी।

पुलिस ने न्याय, विधान, कानून और मानवता को तिलांजलि देकर बिना चेतावनी के गोली वर्षा की और एक वीभत्स नर हत्या काण्ड उपस्थित कर दिया। मृतकों को छिपा लेने में कौन सी मानवता थी विलिंग्डन होस्पीटल ने १७ मृतक थे तब सरकार मृतकों की संख्या सात कैसे बताती है।

प्रजातन्त्र भारत के गोली वर्षा से मारे गये सैकड़ों प्रजा जनों साधु सन्तों को उनकी धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करते हुए रात्रि में चोरी-चोरी विद्युत् शवदाह गृह में भस्म करने वाली सरकार मानवता और न्याय के नाम की कैसे दुहाई दे सकती है। सरकार के पास अपने घृणित व्यवहार का कोई उत्तर नहीं है। एक अधिनायकवादी हेठी के समान सरकारी मन्त्री झूठे वक्तव्य दे रहे हैं और अब पोल खुल रही है तब बगलें झांकने लगते हैं।

इस स्थिति में गृहमन्त्री न्यायिक जांच का साहस कैसे दिखा सकते हैं। उनकी शूरवीरता चीन और पाकिस्तान के मुकाबले में चाहे कितनी ही गौरवपूर्ण रही हो पर प्रजातन्त्र की कसौटी "जनता के साथ न्याय" में वे सफल नहीं हैं।

इस अवसर पर हम एक सुझाव गोरक्षा आन्दोलन के संयोजकों विशेष रूप से सार्वदेशिक सभा के सम्मुख रखते हैं कि सरकार न्यायिक जांच न कराये तो भी हमें एक ऐसी जांच कमेटी बना देनी चाहिये जो इस सम्बन्ध में जांच का सार्वजनिक कार्य आरम्भ कर दे। हम समझते हैं कि इस कमेटी के प्रतिवेदन से बहुत कुछ सच्चाई सामने आ जायगी। आशा है इस पर विचार किया जायगा।

श्री नन्दाजी की स्पष्टोक्ति

श्री गुलजारीलाल नन्दा ने गोरक्षा आन्दोलन पर लगाये जा रहे हिंसाकाण्ड के उत्तरदायित्व से सात नवम्बर के प्रदर्शन कर्ताओं को मुक्त मानने की घोषणा की है श्री नन्दा ने अपनी इस स्पष्ट घोषणा द्वारा सरकार को इस बात के लिये विवश कर दिया है कि वह श्री नन्दा के वक्तव्य का खण्डन करे या उसकी सत्यता को स्वीकार करे।

हम यह बात स्वीकार करते हैं कि नन्दा जी गोवध बन्दी के लिए अपनी ओर से पूरी तरह प्रयत्नशील थे पर सरकार के रोड़ों को वे हटाने में असमर्थ रहे, उन्होंने गोरक्षा के काम में अपने सहयोग की घोषणा कर सत्साहस का परिचय दिया है हम उसकी हार्दिक प्रशंसा करते हैं।

उनके साहसपूर्ण वक्तव्य से यह और अधिक स्पष्ट हो जाता है कि प्रदर्शन पर हिंसा काण्ड का आरोप एक सुनियोजित षडयन्त्र था। क्योंकि यदि किसी को इस प्रकार के काण्ड की आशंका थी तो गृहमन्त्री को उसकी सूचना क्यों नहीं कराया गया। जहां तक असामाजिक तत्वों को रोकने में हुई विफलता का प्रश्न है यह दिल्ली प्रशासन की कमजोरी ही है हम समझते हैं कि नन्दा जी की स्पष्टोक्ति से गोरक्षा आन्दोलन के पवित्र नाम पर जो कलंक लगाने का षडयन्त्र किया गया वह धुल जायगा और वास्तविक रहस्य को सर्व साधारण जनता [illegible] जायगा। भारत सरकार के सूचना विभाग को भी नन्दा जी के इस वक्तव्य को उसी भांति प्रसारित करना चाहिये था जैसे ७-८ नवम्बर को गोरक्षकों पर दोषारोपण के वक्तव्यों को प्रसारित किया गया था। सरकार जनतन्त्र, विचार स्वातन्त्र्य एवं न्याय का नाम जपती है क्या वह नन्दा जी के कथन का उत्तर दे सकेगी।

★

गो भक्त बन्दियों के साथ अमानवीय व्यवहार

महिलाओं को दुश्चरित्र अपराधियों के साथ रखा गया [illegible]

बन्दियों को एक समय भोजन, [illegible] की [illegible] की अव्यवस्था के विरोध में स्वामी रामेश्वरानन्द जी का अनशन

दिल्ली केन्द्रीय कारागृह में श्री [illegible] सत्याग्रहियों के [illegible] के [illegible] को लेकर स्वामी जी ने जेल अधिकारियों से मांग की है कि [illegible] [illegible] [illegible] भारती सरकार अपनी [illegible] के साथ [illegible] व्यवहार करे। [illegible] जी ने [illegible] हुई [illegible] में सत्याग्रहियों की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] व्यक्त किया। स्वामी जी ने [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महिलाओं को तो श्रेणी में दुश्चरित्र बन्दियों के साथ रखे जाने विरोध [illegible] बन्दियों के प्रति [illegible] पूर्ण व्यवहार आदि के सम्बन्ध में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है अविलम्ब सुधार किया जाय।

श्री काशीराम गुप्त (निर्दलीय) तथा श्री हुकुमचन्द कछवाहा (जनसंघ) ने जेल का निरीक्षण किया। उन्हें बताया गया कि सत्याग्रहियों को एक समय भोजन मिलता है महिलाओं और नेताओं तक को सी श्रेणी में दुश्चरित्र बन्दियों के साथ रक्खा गया है, जेल में भोजन बनाने के बर्तनों और पहनने के वस्त्रों की भारी कमी है। चिकित्सा की सुविधायें भी अपर्याप्त हैं। इन सदस्यों ने गृह मन्त्री श्री चह्वाण को सारी स्थिति बतायी और उन्होंने जांच का आश्वासन दिया।

आर्यनेता प्रो० रामसिंह एम०ए० को एक मास का दण्ड—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री प्रो० रामसिंह एम० ए० तथा उनके साथ सत्याग्रह करने वाले सभी सत्याग्रहियों को एक मास की कैद और १००-१०० रु० का दण्ड दिया गया, दण्ड न देने पर १५ दिन की कैद और होगी। श्री प्रो० साहब और उनके साथियों को आगरा सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया है।

करपात्री जी के जत्थे को एक मास की सजा

गोरक्षा आन्दोलन के सिलसिले में गिरफ्तार श्री करपात्री जी और उनके साथियों को एक मास की कैद की सजा दी गई है।

इस जत्थे में श्री स्वामी [illegible], श्री [illegible] [illegible], श्री [illegible] द्विवेदी, आचार्य वृन्दावन संस्कृत विद्यालय, श्री [illegible] [illegible] एवं श्री वासुदेव शास्त्री आदि प्रसिद्ध विद्वान् हैं।

सत्याग्रह जारी

४९ गोभक्त बन्दी—

गोरक्षा आन्दोलन के सिलसिले में ४९ सत्याग्रहियों का जत्था गिरफ्तार कर लिया गया यह जत्था धम सब वेला रोड से रवाना हुआ जिसे अजमेरी गेट पर रोक लिया गया। जत्थे में मध्यप्रदेश रामगढ़ के सत्याग्रही थे।

६ साधुओं की गिरफ्तारी—

छ साधुओं का एक जत्था जमोध्याघाट से चला जिसे कश्मीरी गेट पर गिरफ्तार कर लिया गया।

२[illegible] सत्याग्रही गिरफ्तार—

बीस गोभक्त सत्याग्रहियों का जत्था कश्मीरी गेट पर गिरफ्तार कर लिया गया। (१६ नवम्बर)

चार सत्याग्रही जत्थों में २० सत्याग्रही गिरफ्तार—

गो रक्षा की मांग लेकर दिल्ली में चार सत्याग्रही जत्थों ने प्रदर्शन किया। रामगढ़ राजस्थान के श्री मदनलाल अग्रवाल के नेतृत्व में एक जत्था लोक सभा भवन के बाहर तक पहुंच गया। जत्थे में १२ व्यक्ति थे। श्री अग्रवाल की धमपत्नी और दो बालक भी थे।

इसी प्रकार २२ सत्य ग्रही चांदनी चौक में गिरफ्तार किये गये तीसरा जत्था ७ साधुओं का था और चौथे में ९ सत्याग्रही थे ये जत्थे वेला रोड पर बन्दी बनाये गये (७ नवम्बर)।

६५ गोभक्त सत्याग्रही गिरफ्तार—

सरकार गोरक्षा आन्दोलन को कुचलने की नीति पर जैसे जैसे बढ़ रही है वो जत्थों में उतना ही उत्साह बढ़ रहा है।

बनारस का पहला जत्था श्री लक्ष्मीनन्दन मिश्र के नेतृत्व में जैसे ही रवाना हुआ, ९० सत्याग्रहियों सहित हिन्दु महासभा भवन के सामने गिरफ्तार कर लिया गया।

श्री हरिलाल तिलक के नेतृत्व में दूसरा जत्था २५ सत्याग्रहियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया।

१० साधुओं का तीसरा जत्था बेलारोड से निकला और कश्मीरी गेट पर गिरफ्तार कर लिया गया।

इस प्रकार १४४ धारा का उल्लंघन करते हुए ९५ गोभक्त सत्याग्रह में सम्मिलित हुए। (१९ नवम्बर)

श्री धर्मचन्द्र जी एडवोकेट गिरफ्तार—

'गोंडा १२ नवम्बर ६६। नगर के विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित श्री शतीपीठ सहकुण्ड पर गोपाष्टमी को गोरक्षार्थ यज्ञ के पूर्णाहुति पर यज्ञ कराते हुए गोंडा आर्यसमाज के मन्त्री श्री धर्मचन्द्र एडवोकेट तथा उनके साथ विभिन्न संस्थाओं के अन्य सत्रह प्रतिनिधियों को उपजपीलक पुलिस तथा शहर कोतवाल गोंडा द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया।

श्री प्रधान सभा को बेवर में १००१) की थैली भेंट

आर्य उप सभा मैनपुरी का प्रशंसनीय कार्य

श्री ठा० फूलनसिंह जी ने सबसे पूर्व कर्तव्य पालन किया

श्री प० चन्द्रदत्त जी तिवारी
मन्त्री सभा

श्री मदनमोहन जी वर्मा
प्रधान सभा

फैजाबाद में अन्तरंग सभा ने निश्चय किया था कि प्रत्येक अन्तरंग सदस्य सभा को कम से कम २००) ३१ दिसम्बर ६६ तक लाकर दे, इस निश्चय के अनुसार आर्यसमाज शिकोहाबाद के सुप्रसिद्ध नेता श्री ठा० फूलनसिंह जी ने अपने जिले की आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा सभा के माननीय प्रधान श्री मदनमोहन जी वर्मा और सभा मन्त्री श्री प० चन्द्रदत्त जी तिवारी को आर्यसमाज बेवर मे निमन्त्रित किया। सभा के दोनों मान्य नेता २१ नवम्बर को बेवर पहुंचे, वहां आर्य जनों ने आपका धूमधाम से स्वागत किया, और श्री प्रधान सभा को १००१) की थैली सभा के लिये भेंट की। श्री ठा० फूलनसिंह जी अन्तरंग सदस्य ने सबसे पहले अपने जिले से उपर्युक्त धन दिलाया है, और आगामी वर्ष पुन ११००) रु० दिलाने का वचन दिया है। सभा के प्रत्येक मान्य अन्तरंग सदस्य से प्रार्थना है कि वे श्री ठा० फूलनसिंह जी का अनुकरण करें और शीघ्र से शीघ्र सभा को अपने जिले से धन भिजवायें।

२७ अक्तूबर को श्री प्रधान जी आर्यसमाज कोसीकलां (मथुरा) के महोत्सव पर भी पधारे, आर्यसमाज कोसी ने श्री प्रधान जी को १५१) की थैली भेंट की।

२० नवम्बर को गोवध बन्दी की मांग के लिए देश भर में सामूहिक व्रत

भारतीय जनता में गौ के प्रति कितनी श्रद्धा है और वह उसकी रक्षा के लिए कितना आत्मिक बल रखती है इस तथ्य को व्यक्त करने एवं सरकार से गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग के लिये २० नवम्बर गोपाष्टमी के दिन कोटि-कोटि जनों ने सामूहिक उपवास रखा और गोरक्षा के व्रत को दोहराया।

श्री शंकराचार्य का अनशन

पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ ने गोरक्षा के लिए २० नवम्बर से आमरण अनशन आरम्भ कर दिया।

अनशन घोषणा से पूर्व ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य श्री स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी की अध्यक्षता में सभा सम्पन्न हुई जिसमें शंकराचार्य जी ने सरकारी दमन चक्र की परवाह न करते हुए गोरक्षा आन्दोलन को सफल बनाने में सब के सहयोग की अपील की।

श्री स्वामी करपात्री सरस्वती, श्री भक्त रामशरणदास, श्री पूर्णचन्द्र मेहता एडवोकेट, श्री सीताराम खेमका, श्री रामनाथ कालिया और श्री रघुबन्धु शास्त्री, गोस्वामी श्री विजयकृष्ण आदि ने श्री शंकराचार्य (पुरी) के कदम की सराहना की और सरकार की दमन नीति की निन्दा की।

श्री सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी बन्दी

गोपाष्टमी २० नवम्बर से गोलोक वृन्दावन मे गोरक्षा की मांग को लेकर आमरण अनशन करने वाले श्री सन्त प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी जी को १९ नवम्बर की रात्रि मे सरकार ने गिरफ्तार कर लिया।

गोभक्तों की स्पेशल ट्रेन रद्द

श्री सन्त प्रभुदत्त जी गोभक्तों को लेकर जिस स्पेशल ट्रेन मे बम्बई की ओर यात्रा कर रहे थ उसे बीच मे ही रद्द कर दिया गया था बाद मे बड़ी कठिनाई से बम्बई तक यात्री गाड़ी पहुंची और वहां पर ट्रेन को रद्द कर दिया गया। रेल विभाग ने भी गोरक्षा के विरुद्ध नीति अपनाकर अदूरदर्शिता का परिचय दिया।

उत्तरप्रदेश की आर्यसमाजें गो-रक्षा अन्दोलन को सफल बनावें

अन्तरङ्ग सभा दि० ६-११-६६ का प्रस्ताव

श्रीयुत मन्त्री जी, आर्यसमाज,

सादर नमस्ते !

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में गोरक्षा के प्रश्न को अत्यधिक महत्व प्रदान किया था, आर्यसमाज के कार्यक्रम में गोरक्षा का कार्य एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है। अब भारत में गोवध की वृद्धि के कारण गोरक्षा का प्रश्न और भी अधिक व्यापक महत्व का बन चुका है। भारत की गो भक्त जनता ने गोवध के अन्याय-अत्याचार का प्रतीकार करने के लिये व्यापक आन्दोलन आरम्भ कर दिया है। इस आन्दोलन को सबल एवं सफल बनाने के लिये आर्यजगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने १६-१०-६६ की अन्तरंग में प्रस्ताव पारित कर आर्यजगत् को आदेश दिया है कि इस दिशा मे पूरी शक्ति लगा दी जाय।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा ६-११-६६ में सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार निम्न प्रस्ताव पारित किया गया है। अत आपसे प्रार्थना है कि अपनी आर्यसमाज द्वारा गोरक्षा आन्दोलन की सफलता में पूर्ण तत्परता से सहयोग दें। सभा का प्रस्ताव निम्न प्रकार है—

प्रस्ताव

यह सभा गोरक्षा आन्दोलन के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करती है और उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को आदेश देती है कि वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति गोरक्षा आन्दोलन को सफल बनाने में लगावें। जन-सम्पर्क स्थापित कर गोरक्षा के समर्थन और गो-हत्या के विरोध मे जन जागरण करें। सभा के आदेशानुसार अहिंसात्मक सत्याग्रह के कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग दिया जाय जिससे भारत-सरकार को गो हत्या-निरोध सम्बन्धी कानून बनाने के लिये प्रभावित किया जा सके।

यह सभा गोरक्षा के प्रश्न को भारतीय भावनाओं से सम्बद्ध मानती है और भारतीय संविधान के निर्देशक सिद्धान्तों को दृष्टि में रखते हुए भारत सरकार से मांग करती है कि वह अविलम्ब संसद द्वारा कानून बनाकर देश मे गोहत्या को बन्द करें।

आप इस प्रस्ताव की भावना के अनुसार अपनी समाज से और सार्वजनिक समाओं द्वारा प्रस्ताव पारित करा-कर भारत सरकार के अधिकारियों (राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, गृहमन्त्री, कृषि एवं खाद्य मन्त्री) आदि के पास भेजते रहें।

महर्षि दयानन्द लिखित 'गोकरुणानिधि' सार्वदेशिक सभा से मंगाकर जनता में वितरित करें।

गोरक्षा आन्दोलन की सफलता के लिये विशेष धन संग्रह किया जाय और सभा के गोरक्षा-आन्दोलन विभाग में लखनऊ भेजा जाय।

सत्याग्रहियों की सूची तैयार करके सार्वदेशिक सभा और इस सभा के कार्यालय को भेजी जावे और आदेश प्राप्त करके जत्थे दिल्ली भेजे जावें। जत्थों का विवरण प्रकाशनार्थ आर्यमित्र तथा अन्य पत्रों में भेजा जाय।

प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्सगों की समाप्ति पर गोरक्षा आन्दोलन के समाचारों का विवरण सदस्यों के सम्मुख प्रस्तुत करते रहें।

नगर के सभी गोरक्षा प्रेमी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के साथ सहयोग कर आन्दोलन को सफल बनाने का यत्न करें।

विनीत :—

सच्चिदानन्द शास्त्री एम. ए.
उप मन्त्री तथा, संचालक गोरक्षा आन्दोलन विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

जगद्गुरु शंकराचार्य जी गिरफ्तार

गोवर्धन पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निरञ्जनदेव जी तीर्थ को २२ नवम्बर को प्रात. निगम बोध घाट से गिरफ्तार कर विशेष हवाई जहाज से पाण्डिचेरी ले जाया गया। वहाँ आपको इन्सपेक्शन बगले मे रखा जायगा।

आपकी गिरफ्तारी पर सर्वदलीय गोरक्षा समिति ने २५नवम्बर को हड़ताल रखने की अपील की है। उनके साथ एक व्यक्ति देखभाल के लिये है। जब तक स्थिति मे सुधार नहीं हो जाता तब तक जेल मे ही रखा जायगा।

दिल्ली गोलीकाण्ड की अदालती जांच हो

संसोपा द्वारा १५ दिन का अल्टीमेटम

संयुक्त समाजवादी दल द्वारा आर्य-समाज दीवान हाल मे आयोजित सभा मे श्री डा० राममनोहर लोहिया ने जोर-दार शब्दों में माग की कि ७ नवम्बर को दिल्ली में गोहत्या विरोधी प्रदर्शन-कारियों पर जो गोली वर्षा की गयी उसकी अदालती जाच करायी जाय।

श्री लोहिया ने कहा कि ७ नवम्बर की घटना से मुझे सन्देह हो गया है कि अब कांग्रेस अपने शासन को बचाने के लिए यह सब कुछ कर रही है। यदि सरकार स्वय अदालती जाँच कराने की घोषणा कर देती तो सन्देह की गुजाइश न रहती और दोषी व्यक्ति भी पकड़े जाते।

सरकार द्वारा यह कहा जा रहा है कि उक्त घटना पूर्व नियोजित थी। यदि ऐसा होता तो १५ मिनट की फायरिंग और लाठीचार्ज के बाद सड़क प्रदर्शन-कारियों से साफ न हो जाती। एक ओर तो हमारे शासक श्री शंकराचार्य के चरण छूते हैं और दूसरी ओर अश्रु गैस के गोलों से उनका स्वागत किया जाता है।

सरकार को दिल्ली पुलिस पर विश्वास न था इसीलिये प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध पहली तीन पंक्तियो मे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस और राजस्थान पुलिस रक्खी गयी, उसके पीछे दिल्ली पुलिस को रक्खा गया।

सभा मे एक प्रस्ताव द्वारा सरकार के कार्य की निन्दा की गयी और समस्त काण्ड की न्यायिक जाच कराने की मांग की गयी। यह भी घोषित किया यदि १५ दिन के अन्दर सरकार ने जांच का निर्णय न लिया तो संसोपा भी सत्याग्रह आरम्भ कर देगी।

सभा की अध्यक्षता श्री इमदाद साबरी ने की और श्री मनीराम बागड़ी मलिक अब्बास [स्वतन्त्र पार्टी] श्री सावलदास गुप्त और बख्शी जगदेव सिंह ने अपने भाषणो मे गोली काण्ड की निन्दा की।

यह स्मरणीय है कि संसोपा और वक्ताओं का आर्यसमाज और गोरक्षा आन्दोलन से कोई निकट सम्बन्ध नहीं परन्तु जनता के मौलिक अधिकारों की रक्षा के संघर्ष में वे हमारे साथ हैं।

★

आर्य उप सभा लखनऊ का ऋषि निर्वाण पर्व

शनिवार १२-११-६६ को प्रातःकाल ८ से १२ बजे तक आर्यसमाज गणेशगंज के हाल मे लखनऊ नगर की समस्त आर्यसमाजों की ओर से सम्मिलित रूप मे ऋषि निर्वाण पर्व मनाया गया। इस अवसर पर बृहत् वैदिक यज्ञ के अति-रिक्त सर्वश्री प्रकाशवीर शर्मा, पृथ्वीराज वरमानी व लीलावती के अतिरिक्त पं० हरिवंशलाल मेहता व वैदिक मिश-नरी पं० देवराज जी-के व्याख्यान हुए।

आ० स० लखीमपुर

आ०स०लखीमपुर खीरी का वार्षिक उत्सव २ से ४ दिसम्बर ६६ तक मनाया जायगा। जिसमें राष्ट्र-रक्षा गौरक्षा व वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन होंगे।

ता० ४ दि० मध्याह्न जिला सम्मेलन भी होगा। जिले की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधि पधारने का कष्ट करें। —वीरेन्द्रबहादुरसिंह मन्त्री

—देवा (हरदोई)के जीवनलाल आर्य ने भी नव मंत्री बनाये, सत्याग्रह में जाने का निर्णय किया।

आवागमन का तहक़ीक़ी जायज़ा

[श्री दियालाल जी संयोजक वेद प्रचारक मण्डल कोटा]

एक ज़ीवक की १६० सुफे की किताब श्री अबू मुहम्मद अमामुद्दीन राम नगरी—बनारस की लिखी हमारे पास आई है। आवागमन के सम्बन्ध मे जो अक़ाय और सवालात इस पुस्तक मे किये गये हैं उनके समाधान और जवाबात निम्न प्रकार हैं—

(१) सुफा ३२—रात दिन का सिलसिला सिर्फ़ इस हालत में पाया जावेगा जब सूरज मौजूद हो। जबकि यह बात मालूम है कि दिन रात का सिलसिला ही लाइब्तिदा और लाइन्तिहा नहीं है—(तो सृष्टि और प्रलय के सिलसिले की यह मिसाल नहीं बन सकती है)

जवाब—मिसाल को दावे के हर पहलू से मिलाने से मिसाल भी दावा (प्रतिज्ञा) हो जाता है। इसलिये तरीका यह है कि दावे से मिलता जुलता सिर्फ़ एक जुज मिसाल मे से लिया जाता है। ज्यादा नहीं। अब सवाल सिर्फ़ यह रह जाता है कि क्या कोई सूरज ऐसा है जो अज़ल से (अनादि काल से) अबद तक (अनन्त काल तक) रह रहा है जिसकी मौजूदगी से पदाइश (सृष्टि) और फ़ना (प्रलय) का सिलसिला चलता रहे? वह सूरज है परमात्मा (अल्ला) जिसे आप भी अज़ली और अबदी मानते हैं। उसी की मौजूदगी से सृष्टि और प्रलय का सिलसिला अनादि काल से चला आ रहा है और अनन्तकाल तक चलता रहेगा। क्या नमाज़ मे आप यह दुआ नहीं पढ़ते कि—

व हु वा हैयुल्का यमूतु अबदन अबदन।

अथ—वह हमेशा-हमेशा ज़िन्दा है जो मरेगा नहीं।

(२) सुफा—३४ इसका क्या जवाब है कि चार ऋषि पवित्रात्मा कैसे हो गई?

जवाब—जिन आत्माओ के पिछले जन्म के वे शुभ कर्म जिनके फलस्वरूप सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान उनके हृदय में ईश्वर प्रकट करे ऐसी आत्माय बहोत होती हैं। इस भूमण्डल के लिये उनमें से ऐसी चार आत्माय यहा भेजी जाती हैं। परमात्मा की सृष्टि मे हमारे जैसे भूमण्डल अनगिनत हैं। बाकी की ऐसी रूहें वहां भेज दी जाती हैं। क्या आपने कुर्आन की इस आयत से अपना ईमान हटा लिया है जिसमें कहा गया है—

व लक़द् अर्सलना रसुलम्मिन् क़ब्लिक सू० २ आयत३९

अथ—और भेजे हैं हमने किते रसूल तुझसे पहले।

बेशक महर्षि-दयानन्द दुनिया वाले हैं जिनका ज़िकर अल्लामिया ने हज़रत मोहम्मद साहब से इस आयात मे किया है।

(३) सुफा—३५ स्वामी दयानन्द महर्षि होते हुए कदी थ।

जवाब—महर्षि होने का फल तो उन्हें भविष्य मे (ज़माने मुस्तक़बिल) म मिलेगा जो इनके जीवन मुक्त हो जाने से बेनजात (मुक्ति) हासिल कर चुके हैं। लेकिन उनका वर्तमान जन्म तो बिलकुल पिछले जन्म का नतीजा है। इन्सानी जिस्म कुछ आज़ादी के साथ मिला हुआ शफ़ाख़ाना हैं। महज़ शफ़ाख़ाना तो भोग योनि है जिसने इंसान को छोड़कर सब और जिस्म हैं। जैसे ही इन जिस्मों वाली रूहें इन्सानी जिस्म के लायक शुद्ध हो चुकती है कि फिर उनको इन्सानी

जिस्म मे यहा के भूमण्डल मे या और किसी भूमण्डल मे भेज दी जाती हैं। कोई भी रूह हर वक़्त के लिये किसी शफ़ाख़ाने (योनि जिस्म) मे रहने नहीं दी जाती है। उसे हर हालत मे इन्सानी जिस्मे आना पड़ता है और नजात हासिल करने की कोशिश करनी पड़ती है। कुर्आन कहती है—

व मईयशा यज अल्हु अला सिरातिम्मुस्तक़ीम। सू० इनआम आयत ३५वीं

अथ—और जिसको चाहे डाल द सीधी राह पर।

अल्ला मिया ने महर्षि स्वामी दयानन्द को सीधी राह डाल दिया था जिस से उन्हें नजात हासिल हो गई।

(४) सुफा—३७ यह दुनिया कैदख़ाना तो है ही। मगर ऐसा कैदख़ाना नहीं जिसकी सज़ा भुगतने के बाद इन्सान इससे आज़ाद हो जाये। वह ऐसा कैदख़ाना होने के साथ ही जरायमख़ाना भी है। वह सज़ा भी भुगतता है और साथ ही मजीद जरायम भी करता है। इस तरह कैद की मियाद ख़त्म होने के बजाए बराबर बढ़ती चली जाती हैं—

जवाब—यह दुनिया कैदख़ाना नहीं है बल्कि वह एक नुमाइश ख़ाना है जिस में इस नुमाइश को देखने वालों के लिये एक मदरसा इम्तिहान घर और शफ़ाख़ाना भी है। इस नुमाइश को देखने के कुछ उसूल भी है जो इसके मालिक ने शुरू मे ही सबको सुना दिये हैं। जो इन उसूलो का पाबन्द होकर नुमाइश की सैर करता है और साथियो के साथ तमीज़ इस नियत कद्रदानी से आपस मे पेश आता है वह इस नुमाइश को देख कर खुश होता है और इस नुमाइशख़ाने के मालिक से जा मिलना है जिससे मिलने की इसे ख़्वाहिश थी लेकिन अगर कोई तमाशबीन इस नुमाइशख़ाने की चीजों को तोड़ता फोड़ता बत्तमीज़ी से अपने साथियों से पेश आता है उसूलो का पाबन्द नहीं होता है जिससे उसके दिल पर तमोगुण की कालोंस चढ जाती है। जो रूह जिस कदर अपना दिल काला कर सकती है उसी के मुताबिक के शफ़ाख़ाने मे उसे भेज दिया जाता है। वहा से शुद्ध होकर लौटने पर कितनी ही रूहें सम्भल कर ईमानदारी से नुमाइश की सैर करते हैं वे सीधे इस नुमाइश ख़ाने के ईमादकर्ता से जा मिलते हैं और उसकी खूबिया देखकर चैन मनाते हैं।

चूंकि रूह का कोई फल लाइन्तहा नतीजे का सबब नहीं होता लिहाज़ा अहला के सौ साल के बाद नुमाइश देखने की ख़्वाहिश फिर ज़ाहिर करता है और दरख़्वास्त करता है तो मालिक उसे उसके पिछले जन्म के रहे सहे फैल जो नजात के हासिल होने मे किसी किस्म की रुकावट डालने नहीं थ लेकिन थ सहिल। इनका अब नम्बर आया और उनके मुताबिक इस नुमाइश ख़ाने मे फिर दाख़िल हो जाता है। कितनी ही रूहें इस नुमाइशख़ाने मदरस और आपस के मेल जोल के उसूलो और नेक चलनी को इस सख़्ती से पालते हैं कि वे पहले ही दौरे मे इस नुमाइश के मालिक के पास जा मिलती हैं और उस की मौजूदगी का फ़ैज़ बड़ी लम्बी मियाद तक उठती रहती हैं। ऐसी बेशुमार रूहे जो इस नुमाइशख़ाने के दौरे मे बेकायदे के चाल-चलन से अपने दिल को जिस कदर काला कर लेते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि वे रूहें चौरासी लाख शफ़ाख़ानो मे से किसी न किसी में दाख़िला पा जाता है। इन्सानी क़ालिब मे दाख़िले के लायक शुद्ध होने पर नेक चलनी के लिये और परमात्मा से मिलने की कोशिश के लिये फिर यह मे भिया ०त। अगर यह ग़ाफ़िल इमानदारी और नेक चलनी का सुबूत देता है तो वह उस रास्ते पर चल रहा है जो उसे सीधा इस नुमाइशख़ाने के मालिक के पास पहुंचा देता है। यह सिलसिला है।

कहिये इसमें आपकी वह कौन सी गुत्थी है जो नहीं सुलझ रही है?

आप कुर्आन मजीद की इन आयतों पर ध्यान दे तो आवागमन का उसूल आपकी समझ मे आसानी से आ जायगा

(१) क़ाला रब्बिर जिऊन ला अ लि अअमल स्वालिहन फ़ीमा त रक्तु क़ल्ला।

अथ—ऐ रब मुझको फिर भेजो शायद मैं कुछ भला काम करू उसमे जो पीछे छोड आया। सू० मोमिनू० आयत ९९ वीं

(२) फ़ हल इला ख़रू जिम्मिन सबील।

अथ—फिर अब भी है निकलने को कोई राह? सू मोमिन आयत ११ वीं

(३) फ़यक़ूला रब्बि लौला अख़्ख़रतनी इला अजलिन।

अथ—तब कहे ऐ रब क्यों न ढील दी तूने मुझको।

क़रीबिन फ़ अस्सद्दक़ा व अकुम्मिनस्स्वालिहीन।

थोड़ी मुद्दत के मैं ख़ैरात करता और होता नेक लोगो मे। सू०मुनाफ़िक आयत ११ वीं

चूंकि जीवात्मा महदूद ताक़त वाला है तो वह कोशिश का मोहताज है कोशिश करने का मौका मिलता है तो वह ज़रूर कामयाब हो सकता है मौका फिर न देना अल्ला के बड़प्पन को घटाता है और वह तनास्सुख के उसूल के बगैर रूहो के तरह तरह के मर्ज़ों की दवा नहीं हो सकती है।

नाकामयाब रूहो ने ऊपर की आयतों मे दोबारा मौका दिये जाने की दरख़्वास्त अल्ला मिया से की थी लेकिन उन्होंने दरख़्वास्त ठुकरा दी और कहा—

व लौ रद्दू ल अ़दूलिमा नुहू।

अथ—और अगर फिर भेज दो फिर कर वही जो मने हुआ था।

सू० नआम-आयत २५ वीं

हमें अल्लामियां की यह बात कुछ जची नहीं। बल्कि परमात्मा बड़ा दयावान है और रूह की दरख़्वास्त पर हर वक़्त इनायत फ़र्माता रहता है। दोनों की ख़ुसूसियत में बड़ा भारी फ़र्क़ है।

वेद कहता है—

पाहि नो अग्न एकया पाह्यु त द्वितीयया पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जांपते पाहि चत-सृभिर्वसो ॥

ऋ० ८-७-६१-९ ॥

अर्थ—हे अग्ने ! हमारी एक प्रार्थना को सुनकर हमारी गति कीजिये। दूसरी से तीसरी नहीं तो चौथी को अवश्यमेव सुनिये।

है न फर्क, कुर्आन के अल्ला मे और वैदिक ईश्वर मे ! अब आपको जौन सा ईश्वर पसन्द हो उसे तस्लीम करें।

(५) सुफा—३८—दयानन्द जी के अकीदे के मुताबिक तो रूह की हालत बडी दर्दनाक और काबिल रहम है। मुक्ति की भी एक हद मुकरर है। इसके बाद फिर इन्सान का जन्म मिलता है और इस जन्म मे फिर मुक्ति की बजाये सख्त खतरा है कि—सूअर, कुत्ते, कीड़े मकोडे ही का जन्म मिले। खुशकिस्मती से इन्सान का जन्म मिल जावे तो चाण्डाल और म्लेच्छ। दयानन्द जी का खुदा ऐसा सयदिल और खुश्क तबका का है कि वह मुआफ करना जानता ही नहीं वह जुर्म की सजा देकर ही रहता है। मग्फिरत और बख्शिश परमेश्वर के इन्साफ के खिलाफ है।

समाधान—चूंकि रूह का हर एक फैल हदवाला होता है तो उसका नतीजा भी लाजमी तौर पर हदवाला होगा। उसका नतीजा लामहदूद नहीं हो सकता है। फिर इस उसूल के खिलाफ कोई दलील और मिसाल भी नहीं मिलनी है जिससे ऐसा नही माना जावे। इस उसूल से नजात की भी मिआद बन जाती है। अगर अपने बुरे फैल से कोई रूह इन्सानी जिस्म मे अपना दिल इतना काला (तमोगुणी) करले कि जिसकी सफाई इन्सानी जिस्म मे न हो सके तो उसका इलाज जिस शफाखाने मे हो सके जो ८४ लाख गिने जा चुके है किसी एक या दो या तीन शफाखानो मे दाखिल कर दिया जाता है। शुद्ध होने पर फिर इन्सानी जिस्म मे ला दिया जाता है।

इस नुमाइशखाने के मालिक ने वेदो के द्वारा यहा के उसूलो का इज्हार आगाज दुनिया मे कर दिया है। इस-लिये जो जैसी पाबन्दी इन उसूलो की करता है उसको बिल्कुल उसके मुताबिक नतीजा दिया जाये इसे ही इन्साफ कहते हैं। आप जानते ही होंगे कि कुर्आन् का अल्ला चाहे जिसको बहकाता है और चाहे जिसको राह बताता है। इसे इन्साफ नहीं कह सकते। यह तो बे-इन्साफी है। आप कुर्आन् की इन आयतों को देखें कि उनमें यही बात लिखी है या नहीं—

सूरत २—आयत् २६, ६/३५, ७/९९, ८/३०, १३/३३, १६/९७, ३०/२९, ३५/८, ३९/२३, ४०/३२, ४२/४४।

इन सब सूरतों की आयतो मे लिखा है—व मँई युज्लिल्लाहु फमालहु मिन्हाद ॥ ४०/३२॥ और जिसको गलती मे डाल दे अल्ला तो कोई नहीं उसको बचाने वाला।

फ इन्नल्लाहा युजिल्लु मईयशाउ व य दी मँईयशाउ ॥

अथ—क्योंकि अल्ला बहकाता है जिसको चाहे और सुझाता है जिसको चाहे ॥ ३५/८।

अगर इस तरह के इन्साफ का सबक पढकर आपने आवागमन पर शक और सवाल किये हैं तो उनमे बुनियादी कम-जोरी है।

चाण्डाल और म्लेच्छ इन्सान ही है। वह कोई अलग जाति नहीं है। अपने फायदे के लिये जो दूसरो को तकलीफ दे, उनकी जान और माल छीन ले, गदी और नापाक चीजो को खावे, बेचें और भ्रष्टाचार मे खुश रहे। ऐसे कुछ-कुछ फर्क से कोई राक्षस, कोई चाण्डाल और कोई म्लेच्छ कहा जाता है। अगर ये रूहे इन्सानी जिस्म मे ही खुद-ब खुद अपनी आदतें बदल ले तो यही देवता, ऋषि और महात्मा बन सकते है। इसमे क्या रुकावट है। सस्कार सत्सग और स्वच्छता धारण करने मे क्या रुकावट हो सकती है?

दुनिया मे आपको एक भी मिसाल इस बात की नहीं मिलेगी जिसमे कोई बेइन्साफ मुन्सिफ रहम वाला हो सका हो या कोई बेरहम मुन्सिफ ठीक इन्साफ करने वाला हो सका हो। नतीजा यह कि इन्साफ वाला ही रहीम हो सकता है और रहीम ही इन्साफ वाला हो सकता है। रहीम अपने इन्साफ मे बिल्कुल ठीक सजा और जजा देगा गुनाहो और नेक कामो को नजर अन्दाज करके उन पर मुआफी (क्षमा) की चादर डालना मुन्सिफ को उसकी ऊँची कुर्सी से नीचे गिरा देता है। हम हैरान है यह देखकर कि, अगर आप कुर्आन मजीद पर ईमान रखते हैं तो आप माफी-नामे का जिकर और खयाल कर ही नहीं सकते हैं। देखिये कुर्आन मजीद क्या कहती है—

[१] फ मँईयमल् मिस्काला जर्र-तिन् खैरँईयरा। व मँईयमल् मिस्काला जर्रतिन् शर्रँईयरा ॥

सू० जलजाल ९९।७।८

अर्थ—सो जिसने की जर्रे भर भलाई वह देख लेगा। और जिसने की जर्रे भर बुराई वह देख लेगा उसे।

(२) व नजअऊ ल्मवाजीनल् क़िस्ता लि योमिल् कियामति फलातुज्लमु नफ्-सुन शैअन् व इन्कामा मिस्काला हब्ब-तिम्मिन खर्दलिम् अतैनाबिहा। व कफा बिनाहासिबीन्।

सू० नबिया २१ आयत ४२ वीं

अर्थ—और हम रखेंगे तराजू मे इन्साफ के कयामत के दिन। फिर जुल्म न होगा किसी जी पर एक जर्रा और गर होगा बराबर राई के दाने के, वह हम ले आवेंगे। और हम बस हैं हिसाब करने को।

[३] व अन्जलना मआहुमुल्कि-ताबा वल्मीजाना ॥

सू० हदीद आ० २५ वीं

अर्थ—और उतारी उनके साथ किताब और तराजू ॥

इन आयतो की मौजूदगी मे आप क्षमा (मगफिरत) का पारा कैसे खोल सकते हैं? इन आयतो मे जर्रे और राई के दाने के बराबर नेक और बदफैलो का जिकर और फिर साथ मे तराजू और अल्का मिया का दावा के हम हिसाब करने को बस हैं फिर भला आपके सवालों और शिकायतों का जवाब तो खुद कुर्आन मजीद ही दे रही है। आप क़बूल आवागमन के उसूल से परेशान हैं। एक बात और—जब साल भर तक एक लडके को पढाया है। जब इम्तहान का वक्त आया तो बगलें झांकने लगे और तौबा की किताब मे से सवालों का जवाब चुराने लगे और हाथ जोडकर "बोगस" सर्टिफिकेट मागने लगे तो उस शागिर्द का भला चाहने वाला उस्ताद उसकी इस दर्खास्त को कभी मजूर नहीं करेगा। बल्कि कहेगा कि फिर सबक याद करो और दुबारा इम्तहान मे बैठो। ईमान से कहिये कौन सा तरीक़ा ठीक है? इस लये आप अपने खयालात हमारे साथ मिलाकर ठीक कर लें जिससे आपकी उलझन सुलझ जाये।

●

गोरक्षा प्रदर्शन दिल्ली का आंखों देखा हाल

[श्री मोहनलाल सारस्वत, सदस्य राजस्थान विधान-सभा]

दिनांक ६ नवम्बर को मैं दिल्ली आया और सन्ध्या के प्रथम लाल किले के सामने सुभाष मैदान के पण्डाल में सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति के द्वारा निर्धोषित साधारण सभा में सम्मिलित हुआ। पण्डाल खचाखच भरा हुआ था और मंच पर विशिष्ट साधु महात्मा एवं अन्यान्य वरिष्ठ लोग बैठे हुए थे वहां समिति की नीति और अगले दिन होने वाले प्रदर्शन के सम्बन्ध में वक्ताओं ने कुछ बातें बतायीं। समिति का आरम्भ से ही यह निश्चय है कि भारतवर्ष में गोवंश की पूर्णतया हत्या बन्द होनी चाहिये और इसके लिये कानून के द्वारा सरकार को चाहिये कि समस्त राज्यों में गोहत्या बन्द कर दे। इसी मांग को उपस्थित करने के लिये समिति का निर्माण हुआ और समिति के सिद्धान्त में यह बात प्रधान रूप से मानी गई कि इस समिति का किसी भी राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं होगा। इससे किसी प्रकार का कोई राजनैतिक काम नहीं उठाया जायगा। बौद्ध, जैन, सिक्ख सनातन धर्म, आर्यसमाजी एवं विविध पंथावलम्बी आदि समस्त सम्प्रदायों के हिन्दू भारतीय तो सम्मिलित हैं ही, मुसलमान, ईसाई आदि भी इसमें सम्मिलित रहेंगे। किसी भी सम्प्रदाय या राजनैतिक दल या अन्य किसी मत या दल विशेष के प्रति और उनके विचारों के प्रति किसी प्रकार का कोई द्वेष न रखते हुए सर्वथा अहिंसा और प्रेम का अवलम्बन करके गोवंश की रक्षा के लिये सुव्यवस्थित और सुसंगठित रूप से सरकार के सामने अपनी मांग पेश की जायेगी।

यह बातें सभी वक्ताओं ने जनता के सामने रक्खीं और अहिंसात्मक, त्यागपूर्ण आन्दोलन चलाने के लिये लोगों को प्रोत्साहन दिया। इसी के साथ अगले दिन निकलने वाले जुलूस में किस प्रकार से सर्वथा सयमपूर्ण अनुशासन रक्खा जाय और सब उसको मानें। जरा-सी भी कहीं कोई हिंसा की चेष्टा न हो, इसके लिये खूब सावधान रहें। ये बातें भी समझायी गयीं।

बाहर से बसें, ट्रेनें और साइकिलों के द्वारा और पैदल लाखों गो-भक्त नर-नारी देश के कोने-कोने से आये। सुनियोजित रूप में दिनांक ७ को प्रातःकाल दस बजे जुलूस का चलना प्रारम्भ हो गया। इतना लम्बा जुलूस था कि सभा की कार्यवाही के प्रारम्भ होने के डेढ़ घण्टे बाद तक भी जुलूस का अंतिम भाग आता हुआ दिखाई दिया। जुलूस में १० लाख से अधिक नर-नारी थे। सभी सम्प्रदायों के सम्मिलित थे, मुसलमान भाई भी, अनेक प्रकार के अनेक अहिंसायें थीं। जुलूस बड़ी शान्ति के साथ चलता हुआ अपने गन्तव्य स्थान तक पहुंचा था। बीच में एक बार तीन-चार नागा साधु आगे दौड़ने लगे। उनको समझा बुझाकर महावीर दल के स्वयं सेवकों ने शान्त कर दिया। कुछ बच्चों के दल साथ में होने लगे थे। उनमें से एक दल ने पार्लियामेण्ट स्ट्रीट के एक बैंक में घुसने की चेष्टा की, परन्तु सतरी के द्वारा गेट बन्द कर लिए जाने के कारण वे असफल रहे। उनको भी दो-तीन जगह हटाने की चेष्टा की गई, क्योंकि बच्चों को जुलूस में सम्मिलित होने के लिये नहीं बुलाया गया था। जुलूस बड़े शान्त भाव से उचित नारे लगाता हुआ गन्तव्य स्थान पर पहुंच गया। नेतागण मंच पर विराज गये और

गोरक्षा-आन्दोलन

सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई। परम पूज्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी (पुरी) परमपूज्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी (ज्योतिर्मठ, बद्रिकाश्रम) और स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के भाषण हुए भाषण बड़े ही सुन्दर और सर्वथा निर्दोष थे। श्री करपात्री जी महाराज ने तो कहा—'हमारा किसी दल विशेष से कोई द्वेष नहीं है। हम किसी भी राजनैतिक मांग को लेकर नहीं आये हैं। इस समय जो लोग शासनारूढ़ हैं, वे सब हमारे ही घर के लोग हैं। हम उन सबका कल्याण चाहते हैं। हम तो केवल गोरक्षा की मांग रखने आये हैं। बीच-बीच में मुनि सुशीलकुमार जी महाराज भी वक्ताओं का नाम निर्देश करते समय शान्ति और प्रेम का सन्देश दे रहे थे।

एक बात अवश्य खटकने वाली थी। मंच की बायीं ओर दीवाल के अन्दर और कुछ बाहर भी ऐसे लोग थे जो बार-बार प्रदर्शन में निर्णीत नारों के अतिरिक्त दूसरे नारे लगा रहे थे। उनमें से किसी के पास माइक भी था। और वे लोग जुलूस पहुंचने से पूर्व से ही वहां बैठे हुये थे। उनपर कुछ लोगों ने सन्देह किया कि सम्भवत ये लोग जुलूस के साथी न होकर उसमें विघ्न डालने वाले हो। उन्हे बार-बार मंच से और वक्ताओं के द्वारा रोका गया तथा प्रार्थना भी की गयी पर वे नहीं मानें।

इसी बीच श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी जी, जिनको कुछ दिनों पूर्व मोटर-दुर्घटना के कारण मद्रास में चोट लग गयी थी और जो छाती में दर्द होने से जुलूस में सम्मिलित नहीं हो पाये थे मंच पर पधारे। उनके भाषण की घोषणा की गयी। इसी बीच में संसद के सदस्य स्वामी श्री रामेश्वरानन्द जी मंच पर आये। यद्यपि मंच पर बोलने वालों के नाम पहले से निर्दिष्ट थे और यह भी प्रथम दिन की सभा में सूचित कर दिया गया था कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई वक्ता नहीं बोलेंगे और जिनका नाम निर्दिष्ट है, वे भी अहिंसा, प्रेम और सद्भावना का अवलम्बन करते हुए भी अपनी बात कहेंगे, जिससे जरा भी हिंसा या तोड़-फोड़ को उत्तेजन मिले ऐसा कोई भी शब्द भी उच्चारण नहीं करेंगे। स्वा॰ रामेश्वरानन्द जी ने कुछ बोलना चाहा। उन्हें दो मिनट का समय दे दिया गया और संसद से पहले कैसे निकाले गये इसका उल्लेख करते हुये जोशीले शब्दों में कहा—'इन भाषणों में क्या रक्खा है? चलकर संसद के दरवाजों पर घेरा डाल दो तथा मन्त्रियों को बाहर न निकलने दो। 'श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी जी ने रोका, हाथ जोड़कर विनती की, समिति के अध्यक्ष की हैसियत से उन्हे रोका, मुनि सुशीलकुमार जी ने तथा अन्यान्य महानुभावों ने उन्हें समझाने की विनय पूर्ण चेष्टा की और उनके न मानने पर माइक उनके सामने से हटा दिया गया, पर उनके जोशीले शब्दों से दो-चार साधु पहले से ही नियन्त्रण में नहीं थे और वस्तुत वे दूसरे ही उद्देश्य से आये हों, दौड़ पड़े और चिल्लाने लगे। मंच के लोगों ने तथा नीचे बैठे हुये लोगों ने भी शान्ति स्थापना के लिये और उन्हें रोकने के लिये बड़ी चेष्टा की। इतने में ही संसद सदस्य श्री गोविन्ददास जी, श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, श्री अटल-बिहारीजी बाजपेयी आदि सज्जन आगये पहले श्री गोविन्ददास जी ने शान्ति का सन्देश दिया। तदनन्तर श्रीप्रकाशवीरजी शास्त्री ने सबको शान्त और अनुशासित रहकर सभा की कार्यवाही सम्पन्न होने देने के लिए प्रार्थना की। लोग शान्त भी हुए। इतने में पीछे से कुछ लोगों ने चिल्लाकर कहा कि पुलिस लाठी चार्ज कर रही है और एक साधु मारा गया है। सम्भव है कि उपर्युक्त दो-चार साधु आगे बढ़े हो, और तब पुलिस ने लाठी चार्ज किया। पुलिस लाठी चार्ज करती हुई इधर आयी और मंच की ओर आगे बढ़ी। और उधर मंच के बायीं ओर बैठे हुए नारे लगाने वाले लोगों में से (जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है) कुछ ने पत्थर फेंकने शुरू किये। उस समय तक वातावरण बिगड़ा नहीं था और उन पांच-सात उपद्रवियों को, जो वस्तुत प्रदर्शनकारी नहीं थे, पकड़कर पुलिस परिस्थिति को काबू में ला सकती थी। परन्तु ऐसा नहीं हुआ और दुर्भाग्य-वश माइक का तार काट दिया गया। पुलिस ने अन्धाधुन्ध शान्त बैठे हुए लोगों पर भी अश्रुगैस बरसाना और लाठी चार्ज करना शुरू किया। यहाँ तक कि मंच के ऊपर बैठे हुए शान्त शिष्ट-वरिष्ठ लोगों पर भी अश्रुगैस छोड़े गये और उनमें से दो-एक तो बेहोश हो गये। पुलिस इस समय स्वयं बेकाबू हो रही थी, वह लाठी चार्ज तथा अश्रुगैस के द्वारा लोगों को भगाने में लगी थी। बिचारे शान्त, शिष्ट नर-नारी इस अनपेक्षित दुर्घटना से सर्वथा चकित और अत्यन्त सन्त्रस्त हो रहे थे। इसके बाद किसी तरह मैं वहां से जान बचाकर हटा। पीछे से पता लगा कि कुछ लोग मर गये हैं।

पुलिस गोली चला रही है, गुण्डे प्रदर्शनकारियों के नाम पर आग लगाने और पत्थर फेंकने के दुष्कृत्य में लगे हुए हैं। उस समय देखा गया कि निरीह शान्त प्रदर्शनकारी नर-नारियों की बड़ी दुर्दशा थी। कई बूढ़ा माताएँ और दुध-मुहें बच्चों को गोद में लिये हुए देवियां बुरी तरह से भाग रही हैं और कई तो पार्लियामेण्ट स्ट्रीट के फुटपाथ पर खोदी गयी नाली में गिर पड़ीं। भागते हुए लोगों ने यह बताया कि कई लोगों को पुलिस ने पकड़-पकड़ पीटा, लाठियां मारीं तथा स्त्रियों पर भी प्रहार किया गया। पीछे से यह हल्ला आया कि मोटरों और इमारतों में आग लगा दी

[शेष पृष्ठ ११ पर]

काव्य-कानन —

गौ गुहार की ललकार

★

राम-कृष्ण की भूमि पर, नहिं रह सकने गौ के हत्यारे ।
दूर हटो तुम जो भी हो, यह भरत-भूमि के तीखे नारे ।।

गाय हमारी माता है इसका हम पर अहसान बड़ा है,
जननी तो कुछ मास-बाद इसके ही पय पर देह पला है,
जननी से भी महान है यह, इसके उर मे स्वार्थ नहीं है,
बिना कामना सब कुछ देती, जग मे यह परमार्थ सही है,

आज उसी माता की गर्दन रेत रहे निर्मम हत्यारे ।१। दूर

अरी यहां तो कृष्ण रहा है, जो जीवन मे गाय चराया,
रहा ग्वाल घर गायो के संग, फिर भी योगीराज कहाया,
गौ माता की नित पूजा मे, दिलीप जीवन दान दिया था,
इसके प्राणो को रखकर, भक्षक को अपने प्राण दिया था,

आर्य भूमि के पावन पथ पर बहती गौ के खू की धार ।२।

गौ ही धन था इस भारत का, यही राष्ट्र की थी सम्पत्ति,
गौ वंशों का नाश नहीं था, बढती थी इसकी उत्पत्ति,
इसी गाय मे सब देवो का वास ऋषी ने बतलाया है
इसकी महिमा का वर्णन वेदो शास्त्रो तक मे आया है,

आज उसी के वंश नाश हित, गरम हो रहे हैं बाजारें ।३।

शदियो से पलती अरमानें, दिल ही दिल से दूर हो गया,
स्वतन्त्रता के बाद अरे, सदेशा चकना चूर हो गया,
शासक होकर इस 'इंडिया' को आर्यावर्त बनायगे हम,
गौ वंशो की रक्षा हित ही, पहला कदम उठायगे हम,

आज उसी को काट-काट कर, लगा रहे धन की अम्बारें ।४। दूर

है हड्डी ना लहू मांस, बस आखो मे है अविरल धारा,
आनन पर करुणा ले कहती, कहां गया वह कृष्ण हमारा,
वही आज भी विपदकाल मे, होगा केवल एक सहारा,
हत्यारो के बल पर बोलो, अरे, मिला कब किसे किनारा,

देख आज उस करुणानिधि पर, मचल रही निर्दय तलवारें ।५। दूर

मचल पड़े हर प्राण प्राण, गो भक्त, आज सुन गौ पुकार,
थर्रा जरा थर्रा जाये, गौरक्षा हित सुनकर हुंकार,
सिंहासन भी कांप उठे, सुनकर असीम इन हुंकारों को,
शेषनाग भी करवट बदले, देख हमारी फुफकारों को,

निश्चय विजय वरेगी हमको, कहो सत्यव्रती कब हैं हारे ?।६। दूर

बढे चले ले लक्ष्य हृदय मे, गौरक्षा है ध्येय हमारा,
गौ वंशो की वृद्धि [illegible] ही [illegible] है उद्देश्य हमारा,
कृषि प्रधान भारत भूमि, [illegible] भविष्य इस पर निर्भर है,
भारत को [illegible] करने गौ के पूत सदा तत्पर है?

आज हमारी पावन भू पर, उठा है को [illegible] गद्दारे !
कह दो [illegible] अब ना तेरा यहां गुजारे ।७।

धरने हैं मां पर [illegible] उन्हे बता दो,
या धरने को [illegible] पाठ सिखा दो,
अरे देख हम जाग उ[illegible] गजेगी,
तिमिर दूर हट [illegible] नरी चाल चलेगी,

उनकी [illegible] के [illegible], पड़े हुए हैं प्राण हमारे,
गौ की रक्षा मे कट जाये, [illegible] प्राण नहीं है प्यारे ।८। दूर हटो ।

—देवनन्दन प्रसाद 'नन्दन' मुंगेर

गोरक्षा में मर मिटने को, उठो दिलीपो, करो न देर ।

पी जाने को खून तुम्हारा गरज रहा शासन का शेर ।
गोरक्षा मे मर मिटने को, उठो दिलीपो, करो न देर—
युगों युगों तक तलवारों की तुमने भीषण चोट सही,
पर 'गो हत्या सहन न होगी'—यही तुम्हारी टेक रही,
बड़े बड़े सिंहासन पल मे गिरकर चकनाचूर हुए,
ध्वस्त हुये अनगिन शासन जो ताकत मे भरपूर हुए;
जब जब गौ ने आर्त स्वरो में गर्जन उठा लगाई टेर—
यही दृश्य देखा है अब तक भारत के इतिहासों ने,
जन-मानस के प्रबल रोष पर सत्ता के उपहासो ने,
जब जब धर्म विकल हो रोया और अधम हुआ जगभूप,
बढा ठठाकर उसे कुचलने, तभी धरा ने धर गो रूप,
अपनी करुण पुकारो से युग पुरुष बुलाया, हुई न देर—
आज धर्म-निरपेक्ष राज्य मे कैसी गोमाता की भक्ति ?
यह दुर्बलता, मूढ़ भाव यह, मध्य युगी यह तो आसक्ति,
ऐसे तर्क अनेक और छल-पूर्ण युक्तियां भी अनेक हैं,
तर्क सफल हो नहीं अगर तो दमन-शक्तियां भी अनेक है,
चलती रोज रोज गोली है, लोकतन्त्र यह बड़ा दिलेर—
जलियावाला बाग कह रहा जोर जोर से चिल्लाकर,
बड़ा उग्र हो जाता जन मन सत्ता की गोली खाकर,
रक्त विदेशी शासन पीता तो आश्चर्य नहीं था रञ्च,
किन्तु आज अपने शासन मे ध्वस्त हुआ है अपना मञ्च,
दण्ड नीति ने रोक न पाई कभी कुपित जनता की टेर—
गौ तो पशु है निरी ! भला क्या उससे माता का सम्बन्ध ?
यह कुतर्क है जड़ वादियो, अब बकवास करो यह बन्द ।
इसीलिए तो 'भारत मां' का भाव नहीं विश्वास नहीं,
विनिमय योग्य देश को समझे, मां का अंग विकास नहीं,
बहुत चली यह नीति अधर्मी सहन नहीं अब यह अधेर ।

—कृष्णबिहारी 'प्रणत' एम॰ए॰ मोठ (झांसी)

जब दुख से आहें भरती है इस धरती की गैया

यह धरती, यह राम-कृष्ण की चिर पावन धरती है,
जो संस्कृति-सभ्यता विश्व को सदा दिया करती है ।
उस पर उसकी ही संस्कृति का निर्मम हन्त ! हनन हो,
तो फिर इस धरती के नर का दिन-दिन क्यों न पतन हो ?
गो माता, हां गोमाता है शुचि प्रतीक संस्कृति का,
इसका पावन जीवन है आधार सकल संसृति का ।
जब दुख से आहे भरती है इस धरती की गैया,
तब डगमग-डगमग हिल जाती हर शासन की नैया ।
धर्म-अर्थ की जननी गैया निशदिन कटती जाए,
धर्म-अर्थ की सरिता तो फिर क्यो न सूखती जाए ?
शासन से कह दो—यह गोवध है कलंक भारत का,
जो अपने प्रिय बछड़े देकर कृषि को सफल बनाती,
दुग्धहीन होकर भी क्या वह गोबर-मूत्र न देती ?
और मृत्यु के बाद हमें क्या हड्डी चर्म न देती ?
उसके उपकारो को यदि हम भूलेंगे क्षण भर मे,
तो कृतघ्न होगा न कहीं पर हम समान जग भर मे ।
दुखिया गोमाता की आहे गूंज रही अम्बर मे,
सुनना चाहो तो सुन लो सागर की लहर-लहर मे ।
कहीं फटा ज्वालामुखी बनकर हृदय दुखी धरनी का,
कहीं [illegible] से कांप उठा थर-थर शरीर धरती का ।
हा ! पाषाण-हृदय मे नर [illegible] उर मे दया न जागी !
शासन का पद पाकर उसने क्यो मनुष्यता त्यागी ?
क्यों नर का बलिदान चाहता है भारत का शासन ?
क्यो उसका आराध्य बन गया आज अधम दुःशासन?
जागो सत्ताधारी मानव ! करवट लेकर जागो,
जागो राम-कृष्ण के वंशज ! सुप्त हिन्दुओ ! जागो ।

—आचार्य श्यामसुन्दर 'श्याम' [बदायूं]

आर्यसमाज की उन्नति के दस सूत्र—

आ. स. कैसे आगे बढ़े?

[श्री प० धर्मदेव 'विद्यामार्तण्ड' (देवमुनि वानप्रस्थ), आनन्दकुटीर, ज्वालापुर]

(१) आर्यसमाज की उन्नति का सबसे प्रमुख साधन इसके सदस्यों का सच्चे अर्थों में आर्य बनना है। आर्यसमाज के सदस्य जितने अधिक धर्मात्मा, सदाचारी, ईश्वर भक्त, कर्तव्य परायण, सत्य निष्ठ, विशाल हृदय और परोपकारी होंगे उतनी मात्रा मे आर्य समाज की उन्नति हो सकेगी। आर्यों के व्यक्तिगत जीवनो को अपवित्रता तथा पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष आर्यसमाज की उन्नति में सबसे अधिक बाधक हैं। समाज शब्द सम+आ+अज इस प्रकार बनता है। अज-गति-क्षेपणयो के अनुसार समाज मे लोगो के मिलकर गति करने और बुराइयो को परे फेंकने का भाव है। गति के ज्ञान, गमन और प्राप्ति अर्थ होते हैं इस प्रकार समाज शब्द के अन्दर प्रेम पूर्वक मिलकर चारों ओर से ज्ञान प्राप्त करने, ससार के उपकार करने के उद्देश्य से गति करने और उस उद्देश्य को प्राप्त करने का भाव आता है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। आर्यसमाज के इस प्रकार सच्चे कर्तव्यपरायण ईश्वर भक्त धर्मात्मा आर्यो का सगठित प्रेमबद्ध समुदाय बनने पर आर्यसमाज की यथेष्ट उन्नति मे क्या सन्देह हो सकता है?

(२) आर्यसमाज की उन्नति का दूसरा सूत्र है तर्क के साथ श्रद्धा का समन्वय। यह तर्क या मेधा के साथ श्रद्धा का सच्चा समन्वय ही वैदिक धर्म की बड़ी विशेषता है जिसका निर्देश 'स मे श्रद्धा च मेधा च जातवेदा प्रयच्छतु' (अथर्व १९-६४-१) इत्यादि मन्त्रो मे किया गया है। धर्म ज्ञान के लिये तर्क की भी बड़ी भारी आवश्यकता है किन्तु स्वयं वेद मे बताया गया है कि 'श्रद्धा भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।' (ऋ० १-१५१-१) अर्थात् श्रद्धा को हम धर्म के मस्तक स्थानीय बताते हैं। श्रद्धा के बिना धर्म ऐसा ही है जैसा मस्तक के बिना शरीर। जब तक आर्यों के जीवनो मे तर्क के साथ श्रद्धा का समन्वय न होगा और उनके यज्ञ सस्कारादि सब कार्य श्रद्धापूर्वक न होंगे तब तक आर्य समाज की यथेष्ट उन्नति न हो सकेगी और न वह सर्वसाधारण जनता को अपनी ओर आकृष्ट कर सकेगा।

(३) अथवा उसकी उन्नति का तीसरा सूत्र है कुमार-कुमारियो मे उसके द्वारा विशेष प्रचार की व्यवस्था। सब आर्यसमाजो के साथ आर्यकुमार सभाओं की स्थापना और उनके साथ प्रेमपूर्ण सहयोग से इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। छात्र-छात्राओ मे वैदिक धर्म के प्रचार की व्यवस्था आर्यसमाज की उन्नति के लिए अत्यावश्यक है। सुयोग्य विद्वानों और विदुषियों के उत्तम व्याख्यानों के अतिरिक्त धार्मिक परीक्षाओ, भाषण और निबन्ध प्रतियोगिताओ के आयोजन और पुरस्कारादि द्वारा प्रोत्साहन से भी बड़ा लाभ हो सकता है। उत्तम विद्वान लेखको द्वारा छात्रोपयोगी सदाचार और समाज सेवा वर्धक स्फूर्ति दायक साहित्य की रचना करवाकर उसे छात्र वर्ग मे वितरित कराया जाए। अभी इस ओर बहुत कम ध्यान है।

(४) आर्य समाज की उन्नति के लिए महिलाओ मे वैदिक धर्म के प्रचार की अत्यधिक आवश्यकता है। आर्य महिला समाओ और पारिवारिक सत्सगो द्वारा देवियो मे प्रचार का विशेष आयोजन विदुषी देवियो को करना चाहिये। सगीत भजन तथा कथाओ का इस सत्सगों मे विशेष आकर्षण होना चाहिये,

विचार-विमर्श

जब तक महिलाओ मे वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न नहीं होना तब तक आर्यसमाज की प्रगति असम्भव है। केवल पुरुष वर्ग मे प्रचार से भावी सन्तति आर्य नहीं बन सकती। सन्तान पर माताओ का प्रभाव विशेष होता है। महिलोपयोगी सरल भाषा और शैली मे उत्तम साहित्य को भी विदुषियो द्वारा विशेष रूप से तैयार करवाकर उसका घर-घर प्रचार किया जाए।

(५) आर्यसमाज की उन्नति का पचम सूत्र शिक्षित वर्ग के लिए विद्वत्ता पूर्ण प्रभावजनक साहित्य के निर्माण और उसके प्रचार की व्यवस्था करना है। यह उत्तम साहित्य वेद विदेश की जितनी भाषाओ मे तैयार कराया जाय और जितने कम मूल्य पर प्रचारार्थ बेचा जा सके, उतना ही अधिक लाभ होगा। इसके लिये कुछ सुयोग्य विद्वानो और विशेषज्ञो को आर्थिक दृष्टि से निश्चिन्त करके उनका विशेष सहयोग लेना आवश्यक है। अपने देश की भाषाओ के अतिरिक्त अग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रशियन आदि विदेशी भाषाओ मे भी इस प्रकार के साहित्य को तैयार करवाने का यत्न करना चाहिये। इसके बिना केवल मौखिक प्रचार का भी स्थायी प्रभाव नहीं हो सकता। अभी तक सगठित रूप मे इस ओर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभादि का ध्यान भी बहुत अपर्याप्त है।

(६) वैदिक धर्म के उत्साहपूर्वक प्रचार के साथ-साथ हमारी शिथिलता के कारण निरन्तर अनेक रूपो मे बढ़ते हुए पाखण्ड और दम्भ के निर्भयतापूर्वक खण्डन की भी मुझे अत्यन्त आवश्यकता प्रतीत होती है। खण्डन कठोर और दिल दुखाने वाले शब्दो मे न हो किन्तु प्रभावजनक प्रमाण और तर्क द्वारा प्रेम से जनता के कल्याण की दृष्टि से उसका करना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार मौखिक व लिखित शास्त्रार्थों के आयोजन से भी धार्मिक जागृति लाने मे सहायता मिल सकती है।

(७) शुद्धि आन्दोलन को उत्तम उपायो से प्रेमपूर्वक चलाना आर्यसमाज को आगे बढ़ाने मे विशेष सहायक होगा, किन्तु इसके साथ जब तक आर्य नर-नारियां शुद्ध हुए व्यक्तियो के साथ सामाजिक सम्बन्ध रखने को तैयार न होंगी तब तक इसमे विशेष लाभ न होगा। इसके लिये जन्म मूलक जाति-भेद का उन्मूलन करके अन्तर्जातीय विवाहो को प्रोत्साहित करना तथा अन्य प्रकारो से अपनी उदारता और विशाल हृदयता का परिचय देना आवश्यक होगा। जाति-भेद निवारण के आन्दोलन को प्रबल और सगठित बनाना शुद्धि आन्दोलन को सफल बनाने के लिये अत्यावश्यक होगा। आर्यसमाज को, विधर्मियो को अपने अन्दर लेने और स्थिर रखने की शक्ति को बढ़ाना होगा।

(८) आर्यसमाज की यथार्थ उन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि आर्यों मे आध्यात्मिकता को विकसित किया जाय। इसके लिये अनुभवी आर्य योगियो का सहयोग लिया जाए जो आध्यात्मिक योग शिविरों और साधनों द्वारा सच्चे अध्यात्म मार्ग का प्रदर्शन कर सकें। इसके अभाव मे जिज्ञासु लोग राधा स्वामी मत, ब्रह्मकुमारी तथा इस सम्प्रदाय आदि मे शान्ति और आनन्द की खोज मे भटकते फिरते हैं। वानप्रस्थाश्रमादि को सच्ची आध्यात्मिकता की शिक्षा का केन्द्र बनाया जाय।

(९) आर्यसमाज की उन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि उसका जनता से घनिष्ठ सम्पर्क रहे और वह उसके कष्टो के निवारण तथा सेवा मे कार्य मे सदा तत्पर रहे। इस दृष्टि से अनाथालयो के अतिरिक्त (जिनका सचालन बड़ी सत्यनिष्ठा और सेवा भावना से करना और उनको देश के उत्तम नागरिक बनाने का लक्ष्य रखना अत्यावश्यक है) धर्मार्थ औषधालयो की भी आवश्यकतानुसार स्थापना की जानी चाहिये। केवल मौखिक प्रचार से जनता को सन्तोष नहीं हो सकता।

(१०) जन-सम्पर्क बढ़ाने की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि भ्रष्टाचार और दुराचार निवारण, मद्य मांस, धूम्र-पान आदि दुर्व्यसन निवारण [जिनकी राष्ट्र मे निरन्तर वृद्धि होती जा रही है] अस्पृश्यता निवारण, जो अस्पृश्यता विधि वा कानून द्वारा अपराध घोषित करने पर भी ग्रामो मे विशेष रूप से प्रचलित है तथा गोवध निषेध विषयक आन्दोलनो मे आर्यसमाज प्रमुख सक्रिय भाग ले और इन देशोपयोगी आन्दोलनो का सच्चा नेतृत्व करे। इसी के साथ राष्ट्र भाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि के तथा सस्कृत के सर्वत्र प्रचार की ओर आर्य नर-नारियो तथा विशेषत विद्वानो का इस समय अति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सुयोग्य आर्य राजनीति शास्त्रज्ञ विद्वान राजनैतिक क्षेत्र मे भी कार्य करते हुए उसे वेदो तथा आर्य सस्कृति के अनुरूप बनाने का अधिक से अधिक प्रयत्न करें तो यह देश की बड़ी भारी सेवा होगी। इस दृष्टि से उत्तम राजनैतिक साहित्य का भी निर्माण उपयोगी होगा।

इस दशसूत्री के अवलम्बन से आर्य समाज आगे बढ़ सकता है, उसकी वास्तविक उन्नति हो सकती है और वर्तमान शिथिलता दूर हो सकती है। इसमे अणुमात्र भी सन्देह का कारण नहीं।

३३

अध्यात्म-सुधा

आत्म-रहस्य

[श्री रघुनाथ जी विद्यालंकार]

आत्मा की सत्ता सभी धर्मों के प्रतिपादकों ने किसी न किसी रूप मे स्वीकार किया है। नास्तिक कहलाने वाले बौद्ध तथा जैनियो ने भी पुनर्जन्म स्वीकार किया है। इसलिये आत्मा एक ऐसी वस्तु है जिसने ससार के विभिन्न विचारकों को गम्भीर विचार करने के लिये विवश कर दिया है। आज भी इसके ऊपर गम्भीरता से विचार होता है। परन्तु भारतीय मनीषियो ने जिस गम्भीरता से विचार किया और परिणाम निकाला वह अभी तक सभी के लिए प्रतिमान बना हुआ है। कठोपनिषद् मे यम और नचिकेता के सवाद के द्वारा इस पर प्रकाश डाला गया है। इसमे यम एक आर्य आचार्य के प्रतीक हैं तथा नचिकेता धर्म जिज्ञासु शिष्य का प्रतीक है।

आत्म तत्व सब सुलभ नहीं है—जो वस्तु जितनी सरल होती है मानव मन उसकी ओर शीघ्र ही चल पडता है जिस मे कम बुद्धि, लगे, सोचना कम पड़े तथा लाभ अधिक हो। आजकल नाम स्मरण माहात्म्य इसी का कुपरिणाम है। गगा स्नान, स्नान मात्र से पाप मुक्ति का सरल समाधान है। परन्तु आत्मज्ञान सरल नहीं हैं क्यो कि कहा है—

न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमान। अनन्य प्रोक्ते गतिरत्र नास्ति अणीयानह्यतर्क्यमणुप्रमाणात्। कठ २।८

इस आत्म-तत्व का ज्ञान कोई असाधारण विद्वान ही दे सकता है क्योकि आत्मज्ञान सूक्ष्म है, तर्क के क्षेत्र है। आत्मज्ञान इस क्षेत्र से भी परे है। जैसा कि कहा है—

नैषा तर्केण मतिरापनेया प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय प्रेष्ठ। कठ० २।९

इसलिये जो मनुष्य आत्मतत्व का ज्ञान, तर्क, बुद्धि से प्राप्त करना चाहता है वह आकाश-पुष्प तोडना चाहता है।

आत्मज्ञान मे विघ्न—मनुष्य का चरम लक्ष्य मोक्ष है। मोक्ष के मार्ग मे सांसारिक बन्धन महान् विघ्न हैं। मनुष्य कुछ वस्तुओं को सुनकर देखकर उस समय स्वीकार कर लेता है वह उसके परिणाम के विषय मे नहीं सोचता है परिणाम मे दु:खदायी होता है। इसी बात को इस मन्त्र मे इस प्रकार कहा गया है—

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभेनानार्थे पुरुषं सिनीत। तयो श्रेय आददानस्य साधु भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयोवृणीते॥

श्रेय और प्रेय दोनों मनुष्य को अनेक प्रकार से बन्धनो मे डालते हैं। श्रेय का पालन करने वाले का कल्याण होता है। प्रेय को मानने वाला अपने उद्देश्य से पतित हो जाता है। इसलिए बुद्धिमान् मनुष्य श्रेय और प्रेय दोनो मे से श्रेय को ही चुनता है। श्रेय मार्ग ही परिणामत लाभदायक होता है।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्यविविनक्ति धीर। श्रेयो हि धीरोऽपि प्रेयसोवृणीते प्रेयोमन्दो योगक्षेमाद्वृणीते।

मनुष्य योग और क्षेम के कारण प्रेय मार्ग का वरण करते है। अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति को योग कहते है। जो वस्तु हमारे पास नहीं है उसे सतत प्रयत्न करके प्राप्त करना योग कहलाता है आज सम्पूर्ण विश्व इन्हीं दो वस्तुओ के कारण विनाश की ओर अग्रसर हो रहा है। पूंजीवाद का प्रारम्भ भी योग के कारण है साम्यवाद का प्रसार भी क्षेम के कारण है। अधिक से अधिक सामग्री की प्राप्ति का उद्देश्य धनपतियो का है तथा उस प्राप्त की रक्षा के लिए शोषण करने वाली विधि का निर्माण भी उनका उद्देश्य है। इसी सरक्षण को सर्वसुलभ बनाने के लिये हिंसक मार्ग का अनुसरण साम्यवाद है दोनो ही परस्पर विनाश की अजस्र धारा बहाने मे लगे हैं। दोनों ही भौतिकतावादी हैं। दोनो ही ससार को सब कुछ समझने वाले हैं। इसीलिये विरोध है, विनाश है तथा अहम्मन्यता है। इसीलिए कहा है—

अविद्यायामन्तरे वर्तमाना स्वयं धीरा पण्डितमन्यमाना। दन्द्रम्यमाणा परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः॥ न साम्परायः प्रतिभाति बाल प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्। अय लोको नास्ति पर इति मानी पुन पुनर्वशमापद्यते॥

ऐसे लोग स्वय अज्ञानी होते हुए अपने को महान पण्डित समझते हैं ऐसे मनुष्य सदा ससार के आवागमन मे सदा भटकते रहते है। जिस प्रकार एक अन्धे के पीछे-पीछे चलते हुए अनेक अन्धे निरन्तर भटक रहते हैं, ठोकर खाते हैं तथा अन्धकूप मे गिर पडते है इसलिए ससार को ही सब कुछ समझने वाले व्यक्ति स्वय अपना विनाश करते हैं तथा दूसरो को भी विनाश के गहरे गर्त मे झोक देते हैं।

विद्या तथा अविद्या—वस्तुत सच्ची विद्या और झूठी विद्या दो प्रकार की होती हैं ये दोनो परस्पर विरुद्ध स्वभाव वाली होती हैं। विरुद्ध फल देने वाली हैं।

दूर मेते विपरीते विषूची अविद्या या च विद्येति ज्ञाता। विद्याभीप्सिन नचिकेतसमन्ये नत्वा कामा बहवोऽलोलुपन्त॥

विद्या तो सार्वकालिक सत्य को बतलाने वाली होती है जिससे मानव अपना चरम लक्ष्य प्राप्त कर लेता 'सा विद्या या विमुक्तये' विद्या वही है जो मानव को मुक्ति तक पहुचाये। इसलिए आत्मतत्व की प्राप्ति मे विद्या एक प्रमुख साधन है इसका सच्चा उपदेष्टा मिलना भी सरल नहीं है।

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्य,
शृण्वन्तोऽपि बहवो य न विद्यु।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा-
श्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्ट ॥२।६।

कुछ मनुष्यो को आत्मज्ञान सुनने तक के लिए भी नहीं प्राप्त होता है कुछ इसको सुनकर भी इसको नहीं पाते है। इसका कुशल उपदेष्टा विरला ही होता है और इसका यथार्थ ज्ञाता भी विरला ही होता है।

आत्मज्ञान के उपाय—आत्म रहस्य गम्भीर तथा सूक्ष्म है इसको प्राप्त करने के लिए इन्द्रियो को यम-नियमादि द्वारा सयमित करना चाहिये तब अच्छे आर्ष ग्रन्थो का अध्ययन करना चाहिए तथा अल्प ज्ञान सम्पन्न मनुष्य उपदेशादि को श्रवण करें तदनन्तर प्रत्येक वस्तु पर मनन करें यह वस्तु क्या है इससे मानव जीवन को क्या लाभ है इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। विचार करके उसको अमल में लाना चाहिए। श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन सत्सगति के द्वारा ही सुलभ है। इसलिए आर्य सदस्यो का पुनीत कर्तव्य है कि वे आर्य विद्वानो की वैदिक कथाओं में अभिरुचि रखें तथा साप्ताहिक सत्सग मे नियमित रूप से आकर अपना तथा समाज का कल्याण करें।

★

केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर में ऋषि निर्वाण उत्सव

दिनाक १३ नवम्बर रविवार को गोविन्दनगर आर्यसमाज के सामने पार्क मे केन्द्रीय आर्य सभा की ओर से ऋषि निर्वाण उत्सव श्री डा० कालकाप्रसादजी भटनागर की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। आर्य कन्या पाठशाला गोविन्द नगर की बालिकाओं के गान तथा भाषण हुए श्री देवीदास जी आर्य ने श्री चौ० चरणसिंहजी मन्त्री वन विभाग उत्तर प्रदेश का भव्य स्वागत किया। माननीय श्री चौ० जी का ऋषि दयानन्द की महत्ता पर डेढ़ घण्टा तक विद्वता पूर्ण प्रभावशाली भाषण हुआ। जिसमे उन्होने ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुये ऋषि के बताए हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा की। सभा मे पर्याप्त प्रतिष्ठित पुरुष और महिलाओ ने भाग लिया।

आर्य समाज चन्द्रनगर का उत्सव

आर्यसमाज चन्द्रनगर आलमबाग लखनऊ का वार्षिकोत्सव १३ से १५ नवम्बर तक बडी धूमधाम से हुआ। विशाल पण्डाल की सजावट दर्शनीय थी। श्री प० रामदयालु जी शास्त्री। श्री प० ओंकार जी मिश्र प्रणव शास्त्री, श्री विक्रमादित्य जी बसन्त और श्री आचार्य विश्वबन्धुजी शास्त्री के विद्वता पूर्ण प्रवचन और व्याख्यान हुए। श्री प्रकाशवीर जी शर्मा भजनोपदेशक तथा श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर के भजनो का प्रभाव रहा। अन्तिम दिन आचार्य विश्व बन्धु जी शास्त्री के प्रवचन और विद्वतापूर्ण भाषण ने आर्य जनता को मुग्ध कर लिया। रात को साढे ग्यारह बजे तक जनता एकत्रित आपका व्याख्यान सुनती रही। जिला सभा के प्रधान श्री कृष्ण बलदेव जी की अपील पर ३००) तुरन्त प्राप्त हुए।

[पृष्ठ ७ का शेष]

गयी है। नहीं कहा जा सकता कि आग किसने लगाई, पर मैंने और मेरे साथियो ने जहा तक देखा, जाना और सुना वहा तक यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि यह काम प्रदर्शनकारियों का बिल्कुल नहीं था। एक सज्जन ने तो बताया (मैं नहीं कह सकता कि कहाँ तक सत्य है) कि कोई एक दल ऐसा है जो ऐसे मौको पर भाड़े के आदमियों से इमारतो में आग लगवाने, अग्निकाण्ड एव तोड़-फोड़ करवाने का काम कराता है और वे मूर्ख लोग पैसे के लोभ मे यह पाप करते है। सम्भव है, ऐसे ही लोगो का यह काम हो जो प्रदर्शन मे इधर-उधर बिखर कर शामिल रहे हो या जो पहले से ही आये बैठे हो। पर इसके बाद ही प्रदर्शन के कई विशिष्ट नेताओ से मैं मिला। उन्होने निरीह लोगो के मरने, सम्पत्ति नष्ट होने तथा इमारतो और मोटरो मे आग लगाने की घटनाओ पर बड़ा ही दु:ख प्रकट किया। उन लोगो ने कहा कि किसी की भी सम्पत्ति नष्ट हुई हो वह देश की सम्पत्ति थी, पुलिस के या जनता के कोई मरे हो वे सब अपने ही लोग थे, इस प्रकार की हिंसा और तोड़फोड़ का कार्य सर्वथा निन्दनीय है और प्रदर्शन के निमित्त से उपद्रवी लोगो के द्वारा यह काण्ड हो गया, इसका उन्हें बड़ा दु:ख है। साथ ही पुलिस ने जिस अन्धाधुन्ध रीति से लोगो को मारने अश्रुगैस के गोले फेंककर सभा को विसर्जित करने और बिना चेतावनी दिए एकाएक बल प्रयोग करने की जो चेष्टा की वह भी कम निन्दनीय नहीं है। बताया जाता है कि इससे आठ लोगो की मृत्यु हुई और लगभग एक सौ से अधिक व्यक्ति घायल हुए। दूसरी तरफ एक सज्जन ने बताया (कहां तक सत्य है, मुझे मालूम नहीं) कि एक जगह अठारह और दूसरी जगह अट्ठाईस अर्थात् कुल ४६ लाशें तो बिजली के शव-दाह गृहो मे जलाई गयीं।

इनके अतिरिक्त जिन लाशो अथवा सख्त घायलो को लोग ले गए वे अलग है तथा घायलो की सख्या भी तीन-चार सौ से कम नही है। पुलिस के भी बहुत लोगो को चोट लगी। पुलिस का एक सिपाही पुलिस की ही गोली से मारा गया यह भी सुना है। ये जो सारी बातें मैंने ऊपर लिखी है इनमे से अधिकाश मेरी स्वय देखी हुई हैं और कुछ निजी व्यक्तियो से सुनी हुई है। मै यह विश्वासपूर्वक कह सकता हू कि जो कुछ घटना हुई है उसकी प्रदर्शन के प्रबन्धको को कोई कल्पना नहीं थी और मेरे ख्याल से अधिकारियो को भी कोई कल्पना न रही हो। इसलिए पहले से सुनियोजित कहना सर्वथा असत्य है। अवश्य ही इस अभिप्राय से इसे सुनियोजित कह सकते हैं कि शायद इस प्रकार शान्ति भग का पेशा करने वाले कुछ गुण्डे लोग अथवा प्रदर्शन मे विघ्न डालने वाले लोग अपने मन मे ऐसी योजनायें बनाते रहे हो।

यह कहा गया है कि प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी गिरफ्तारी से बचने के लिए बम्बई हवाई जहाज से भाग गये। यह सर्वथा मिथ्या आरोप है। वे अपने पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार ही तीर्थयात्रा ट्रेन मे सम्मिलित होने के लिए बम्बई गये थे।

यह तो कल तक की स्थिति का सक्षिप्त वर्णन है। मैंने महात्माओ का मत जानने की चेष्टा की। वे गो हत्याबन्दी के अपने अहिंसक आन्दोलन की प्रवृत्ति पर सुदृढ है। कल ही श्री करपात्री जी महाराज अपने भक्तो के साथ सत्याग्रह करते हुए जेल गए हैं, पर उन्होने अपने प्रत्येक साथी से यह लिखित प्रतिज्ञा करा ली है कि वे पूर्णतया अहिंसा का पालन करेंगे, क्रोध नही करेंगे, किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करगे, आदि। अन्यान्य सत्याग्रहियो के जत्थे भी शान्त एव अहिंसक सत्याग्रह करने के लिए तैयार है और बराबर सत्याग्रह करते रहेंगे। अनशनकारी अनशन भी करते रहेगे। श्री रामचन्द्र जी वीर और उनके सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र की स्थिति भी बड़ी शोचनीय बताई जाती है। उनका देहान्त हो गया तो लोगो मे और भी सताप और क्षोभ फैलेगा। अत मेरी सरकार से यह प्रार्थना है कि बुद्धिमानी के साथ शान्त और शिष्ट भाव से परिस्थिति को समझते हुए कोई ऐसा रास्ता निकाले जिससे देश मे सद्भाव और प्रेम पैदा हो। यह समस्त उपद्रव और हिंसा का कार्य उन प्रदर्शनकारियो द्वारा, जिनमे सन्त-महात्मा एव अहिंसा पर विश्वास रखने वाले सभी मतो के आस्तिक स्त्री-पुरुष सम्मिलित थे, किया गया, ऐसी सर्वथा गलत धारणा सरकार को बिल्कुल नही रखनी चाहिए। किसी के कहने पर विश्वास न करके अच्छी तरह जाच करके ही सत्य का निर्णय करना आवश्यक है।

गुण्डो और अवाछनीय तत्वो द्वारा किए गये उपद्रवो का दायित्व शान्त, शिष्ट प्रदर्शनकारियो पर लादकर सरकार अपने विचार को दूषित न करे और गो-हत्या-बन्दी की दिशा मे सहानुभूति के साथ पग बढावे। यह मेरी विनीत प्रार्थना है। ❀

गोरक्षा—एक नया दृष्टिकोण

[श्री दयास्वरूप जी प्रधान आजीवन सदस्य सार्वदेशिक आ०प्र सभा नई दिल्ली, अधिष्ठाता अराष्ट्रीय प्रसार निरोध विभाग, उत्तर प्रदेशीय आ०प्र सभा लखनऊ]

आर्य धर्म के महान आचार्य, युग निर्माता राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना ९१ वर्ष पूर्व संसार के कल्याणार्थ, सत्य के प्रचारार्थ वैदिक धर्म के विस्तारार्थ की थी। वेद ही संसार का एकमात्र अपौरुषेय ग्रन्थ है। वैदिक धर्म, सनातन धर्म, मानव धर्म पर्यायवाची शब्द हैं। वेद में वेद मे गऊ अघ्न्या कहा गया है अर्थात न मारने योग्य। अंग्रेजी शासन मे गऊ वध को रोकने के लिए महर्षि दयानन्द ने लाखो व्यक्तियो के हस्ताक्षर करा के रानी विक्टोरिया के पास भेजे थे। उन्होंने गोरक्षा के समर्थन मे गो करुणा निधि लिखी जो आज भी अपने विषय की सर्वमान्य पुस्तक है। अस्तु गाय प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिए रक्षा एव सेवा की वस्तु है। गाय की हम जितनी भी सेवा करते है उससे अधिक ही लाभ हमे वह देती है।

गाय का दुग्ध अमृत तुल्य है। यह कोई भी डाक्टर हकीम, होमियोपैथ, आयुर्वेदाचार्य प्राकृतिक चिकित्सक आप को बता देगा। शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिये गो दुग्ध से श्रेष्ठ दूसरा पदार्थ अन्य नहीं। आज देशवासियो का शारीरिक, बौद्धिक एव आध्यात्मिक स्वास्थ्य अत्यन्त दीन हीन एव जर्जर हो रहा है। जहा दूध घी की नदिया बहती थीं वहा आज प्रत्येक देशवासी को कठिनाई से आधी छटाक दूध मिल पाता है। अच्छा स्वास्थ्य ही जीवन की सफलता का मुख्य आधार है। अच्छा स्वास्थ्य निर्भर करता है अच्छे भोजन पर। अच्छे भोजन मे सर्वप्रथम स्थान है है गऊ दुग्ध का। इसी बात को ध्यान मे रखते हुये भारतीय धर्म, संस्कृति एव परम्परा मे गऊ रक्षा और गऊ सेवा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है। आर्थिक रूप से हमारी गणना संसार के निर्धनतम देशो मे है। कृषि कार्य के लिये ट्रैक्टर हजारो किसानो मे एकआध ही खरीद सकता है। हमारा आर्थिक ढाचा ऐसा है कि बिना बैलों के हमारे यहा खेती नहीं हो सकती।

इससे स्पष्ट है कि खाद्य समस्या के हल के लिये, देश के नवयुवको के शारीरिक बौद्धिक एव आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिये गऊ रक्षा एव गऊ सेवा का प्रश्न कितना प्रमुख है।

गऊ रक्षा के विषय मे एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है हिन्दू मुस्लिम एकता का। हमे हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के सदा से प्रबल समर्थक रहे हैं, गान्धी जी और नेहरू जी से भी अधिक। यह एकता तुष्टीकरण की नीति से नहीं हो सकती। इसका उचित आधार है सामाजिक न्याय।

गान्धी जी ने एक सिद्धान्त बनाया 'बिना हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के स्वराज्य तभी होना चाहिये था जब हिन्दुओं मुसलमानो मे पूर्ण एकता होती। परन्तु हुआ ठीक इसके विपरीत १९४७ मे जब स्वराज्य हुआ तो हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य अपने शिखर पर था। सच्चाई यह है कि जितना जितना प्रयत्न गाधी जी ने हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये किया उतना ही अधिक हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य बढ़ता गया।

हिन्दू मुस्लिम एकता कदाचित गाधी जी के लिये एक राजनतिक आवश्यकता के रूप मे आई। हमारे लिये वह एक सामाजिक राष्ट्रीय एव मानवीय प्रश्न के रूप मे है।

मैं चाहता हू भारत के निवासी हिन्दू मुस्लिम इत्यादि सब एक समाज के अंग हों तभी वह सही अर्थों मे एक राष्ट्र, एक देश के निष्ठावान नागरिक हो सकते हैं। सम्प्रदाय अथवा मजहब की सीमा केवल व्यक्ति और ईश्वर अथवा उसके आराध्य देव की पूजार्चना तक सीमित होनी चाहिये। अपने मन्दिर अथवा मस्जिद अथवा गिर्जे मे जाने की सबको पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिये। अपने घरो अथवा पूजा स्थानों के बाहर जब हम सड़क पर हों, यात्रा मे हों, कार्यालयों में हों, दूकान पर हों, कारखानों मे हो खेत पर हो, सभा सोसाइटी मे हो, संक्षेप मे जितने भी हमारे सामाजिक, राजनतिक एव व्यावसायिक कार्य हो उसमे हिन्दू मुसलमान ईसाई हरिजन का प्रश्न ही नहीं होना चाहिये। इन सब क्षेत्रो मे हमे विशुद्ध भारतीय के रूप मे आना चाहिये।

यह स्पष्ट है कि अभी हम एक समाज बनाने मे असमर्थ रहे है—हम सब—शादी ब्याह की बात तो अलग छोडिये, एक साथ भोजन भी नहीं कर सकते। यह देश का, हम सबका दुर्भाग्य है। मेरा खाना पीना सबके साथ है। खाने पीने का शास्त्र अलग। मानव का भोजन, मैं शाकाहार, फलाहार एव दुग्ध यही भक्षण मानता हू। यही मैं खाता हू और यही खिलाता हू। भोजन शुद्धता से बनाना व शुद्ध स्थान में खाना चाहिये। चूकि मेरा खाना पीना और सामाजिक व्यवहार सब भारतीयो के साथ एक समान है, अतएव इस राष्ट्रीय कर्तव्य का प्रचार भी मैं यथासम्भव करता हू। इस पर अधिकांश हिन्दू भाइयों को यह आपत्ति होती है कि मुसलमान भाई गोश्त खाते पीते हैं। यह तर्क अशुद्ध है और बेईमानी से भरा हुआ भी। हिन्दू की एक बड़ी संख्या मांस खाती है और उन मांसखोर हिन्दुओं के साथ हम सब खाते पीते हैं। परन्तु एक तर्क है जो कुछ अर्थ है और जिसमें सात प्रतिशत ईमानदारी है। वह यह कि मुसलमान गाय का गोश्त खाते है। इस तर्क का मेरे पास कोई उत्तर नहीं। मेरे विचार में गऊ मांस भक्षण करने वालो एव हिन्दुओं में खान पान का व्यवहार उस समय तक पूर्णरूपेण सफलता प्राप्त नहीं करेगा जब तक गऊ मास भक्षण का समस्त भारतीय परित्याग नहीं करते। इसीलिये गाय के वध पर समस्त देश मे कानूनन रोक होनी चाहिये। न गाय कटेगी न गाय का मांस उपलब्ध हो सकेगा। मेरे सैकड़ों हिन्दू मित्रो ने इस बात को स्वीकार किया है कि मुसलमान भाइयों के यहा खाने मे कोई दोष नहीं है यदि वे गऊ मांस भक्षण छोड दें। गऊ रक्षा का यह पक्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैं इस पर सदा बल देता आया हू। गोरक्षा के विषय में यदि मुझे (फैनाटिक) मतान्ध कहा जाय (जो मेरे जैसे बुद्धिवादी के लिये गाली समान है) तब भी मैं बुरा न मानूगा। मेरी इस विषय मे बड़ी तीव्र भावना है। मेरे विचार मे यदि १००० भावी हत्याकाड हो जाय तब भी भारत मे वह हिन्दू मुस्लिम ऐक्य न होगा जितना कि अकेले गऊ के वध पर रोक लगाने से हो सकता है। अतएव राष्ट्रीय सुदृढ़ता एव सुरक्षा के लिये गऊ वध निषेध का स्थान सर्व प्रथम है।

गाय अघ्न्या "न मारने योग्य" है। वैदिक धर्मियो को उसी समय सन्तोष होगा जब न केवल भारत में अपितु संसार के किसी भाग मे भी, चाहे वह न्यूयार्क या वाशिंगटन लन्दन या पेरिस, मक्का या मदीना, मास्को या स्टालिन ग्रेड, जकार्ता या पैकिंग अथवा अन्य कोई स्थान क्यो न हो। गो वध पर न केवल भारत मे अपितु सारे संसार में रोक होनी चाहिये। यह तभी सम्भव है, जब हम वेद की आज्ञा का पालन करें जो हमे स्पष्ट निर्देश देता है" स्वयं आर्य बनो और सारे संसार को आर्य बनाओ।"

गो रक्षार्थ शासन की चुनौती राष्ट्र ने स्वीकार करली

राष्ट्र-व्यापी बिगुल देश लो बज गया।
व्यक्ति व्यक्ति है बलिदान को सज गया॥

समझा शासन ने हम स्वाभिमानी नहीं।
बुद्धि की एक भी बात मानी नहीं॥
बुद्धि पै मद भरा आवरण पड़ गया॥१॥

दूध घी को प्रजा नित तरसती रहे।
व्यक्ति भूखा भले गाय कटती रहे॥
धैर्य प्याला हमारा छलक अब गया॥२॥

वीर' आसन हिला कब से अनशन पै हैं।
पुत्र धर्मेन्द्र भी उनके मारग पै हैं॥
सारा साधू समाज हो विचलित गया॥३॥

सार्वदेशिक सभा का भी आदेश है।
आर्य जन को 'नरेन्द्र' यों आवेश है॥
ओ प्रशासी समल देश अब जग गया॥४॥

—नरेन्द्र ओम भण्डार, मैनपुरी (उ०प्र०)

नारायणस्वामी श्रद्धांजलि ग्रन्थ

'आगामी दिसम्बर सन १९६६ ई० के अन्तिम सप्ताह मे गुरुकुल वृन्दावन भूमि में आर्य प्रतिनिधि सभा श्री महात्मा नारायणस्वामी जयन्ती मना रही है। इस अवसर पर गुरुकुल स्नातक मण्डल की ओर से एक श्रद्धांजलि संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। जो सज्जन अथवा आर्यसमाजें इसे लेना चाहें अभी से दस रुपए मन्त्री स्नातक मण्डल के पास भेज देवें। उन्हे ग्रन्थ बिना मूल्य केवल डाक-व्यय मात्र लेकर भेजा जायगा। ग्रन्थ अद्वितीय एवं संग्रहणीय होगा। प्रत्येक आर्य पुस्तकालय के लिए संग्रहणीय, इस ग्रन्थ के ग्राहक को स्थायी साहित्य प्राप्त होगा। रुपये भेजने का पता—श्री अर्जुनदेव जी स्नातक मन्त्री, स्नातक मण्डल, एन० सी वैदिक इंटरकालेज, आगरा कैंट। गुरुकुल वृन्दावन के स्नातक बन्धुओं से निवेदन है कि अपने लेख तथा २५) रु० मेरे पास भेजने का कष्ट करें।

—कविराज, रत्नाकर शास्त्री, स्नातक प्रधान
स्नातक मण्डल, श्री विमला रसायनशाला, इटावा

(पृष्ठ १३ का शेष)

रहन सहन शोध जीवन मे मुख्य कारण है।

(३) यज्ञोपवीत पहनने वालो को सदा श्रेष्ठ हितकारी कार्यों में अग्रसर रहना चाहिये।

(४) यज्ञोपवीत धर्म भावना एवं लोक कल्याण का प्रतीक है, यज्ञोपवीत पहनने वाला व्यक्ति सदा लोकहित की दृष्टि रखता है।

५—यज्ञोपवीत सदा यज्ञिय श्रेष्ठ कर्म करने के लिए एक प्रेरणा प्रदान करता है। यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा है उसका पूरक यज्ञोपवीत है।

६—यज्ञोपवीत के तीन तार और उनमें परस्पर ग्रन्थि बन्धन एक दृढ़ संगठन का सूचक है, इसके द्वारा मनुष्य व्रत का पालन करने का अभ्यासी होता है।

७—यज्ञोपवीत के द्वारा मानव अपना जीवन सामाजिक बनाने का दृढ़ संकल्प ग्रहण करता है। यह एक मानसिक नैतिक बन्धन है। इसको व्रतक सूत्र भी कहा जाता है।

८—यज्ञोपवीत साधारणतया वाम स्कन्ध पर धारण किया जाता है। और वह हृदय और वक्षस्थल के ऊपर होता हुआ दक्षिण कटि तक जाना चाहिये, ग्रन्थि का यही स्थान है।

वाम स्कन्ध पर भार वहन का सामर्थ्य प्रदान करता है हृदय और वक्षस्थल के ऊपर धारण किया हुआ यज्ञ सूत्र दृढ़ संकल्प और आस्तिकता तथा श्रद्धा का स्थान है।

कटि तक जाता हुआ यज्ञ सूत्र और ग्रन्थि बन्धन की तालिका कर्तव्य में कटिबद्ध रहने का पाठ पढ़ाते हैं, मनुष्य को जीवन में सहनशील, संकल्पवान् श्रद्धालु और अपने कर्तव्य पर कटिबद्ध एवं जागरूक तथा सावधान रहना चाहिये। यही इसकी पवित्र शिक्षा है। यज्ञोपवीत के तीन तन्तु जीव, ब्रह्म और प्रकृति का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कराने के लिए इन तीनों अनादि पदार्थों को हृदयङ्गम कराने के लिये एक अपना विशेष प्रभाव रखते हैं। ऋग्वेद मे एक मन्त्र के आधार पर यह विषय और भी स्पष्ट हो जाता है—

स सूर्यस्य रश्मिभि परिव्यत तन्तुं तन्वानास्त्रिवृतं यथा विदे। नयत् ऋतस्य प्रशिषो नवीयसीं पतिर्जनीनामुपयाति निष्कृतम्॥ ऋ० ९ ८६ ३२

वह यथावत् ज्ञान प्राप्ति के लिए तीन लपेटो से युक्त यज्ञ सूत्र को धारण करता हुआ सूर्य की किरणों से सदा प्रकाश प्राप्त करता है, देदीप्यमान रहता है। वह ज्ञान की नित्य नूतन एवं सुन्दर सुशिक्षाओं को प्राप्त करता है।

यह यज्ञ सूत्र नित्य नैमित्तिक काम्य कर्मों के पश्चात् अनुष्ठान का व्रत ग्रहण कराता हुआ ब्रह्म अर्थात् वीर्य की रक्षा करने में परम सहायक है। ब्रह्मचर्य अथवा संयम की साधना का व्रत वही ग्रहण करता है।

यज्ञोपवीत का धारण करना अपने कर्तव्यो का पालन करना अपने जीवन को संगठित एवं लोक हित के योग्य बनाना अपनी संचित ज्ञान रश्मियो से सूर्य के समान तेजस्वी बनना विद्या का दान देकर अज्ञानान्धकार दूर करके मुक्ति प्राप्त कराना यह सब इन तीनो तारों में ही निहित है।

ब्रह्म सूत्र की ग्रन्थि को ब्रह्म पाश अथवा प्रणव इन नामो से भी व्यवहृत किया है। उपनयन के अनन्तर ब्रह्मचारी को व्रतादेश और नियमपूर्वक ब्रह्म ग्रहण (वेदाध्ययन) का अधिकार प्राप्त होता है, उपनयन संस्कार का ही दूसरा नाम व्रतबन्ध है। हिन्दू शास्त्रो के अध्ययन से विदित होता है कि उपनयन के द्वारा उनका उद्देश्य मानव जीवन को व्रतोमय यज्ञमय, अनुष्ठानमय, अथवा धर्ममय बनाकर सुसंगठित करना रहा है। धर्म शब्द का इतना व्यापक अर्थ है कि जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई भी महत्वपूर्ण कर्तव्य इसके बाहर नहीं जा सकता।

(क्रमश)

इन्द्र और वृत्र

न त्वावाँ अस्ति वृत्रहन्।

सा० पू० १।२

हे अज्ञाननिवारक! कोई तुझ से बड़ा नही है।

★

इन्द्र और वृत्र की एक प्राचीन आलंकारिक कथा प्रसिद्ध है। इन्द्र और वृत्र का आपस मे युद्ध हुआ। इन्द्र ने वृत्र को मार डाला। इन्द्र कौन है? और वृत्र कौन? क्या ये दोनों कोई ऐतिहासिक व्यक्ति हैं? ये दोनो ऐतिहासिक व्यक्ति नही हैं। इनका संक्षिप्त परिचय आगे लिखे अनुसार है।

सूर्य इन्द्र है और अन्धकार वृत्र। सूर्य इन्द्र है और मेघ वृत्र। सूर्य अन्धकार को हटाकर प्रकाश फैलाता है, और मेघों को, जो कई बार सूर्य के प्रकाश प्रसार मे बाधा डालते हैं छिन्न भिन्न कर डालता है। प्राकृतिक जगत के इन उदाहरणो से स्पष्ट है कि जीवन ज्ञान प्रकाश और विकास में बाधक शक्तियो का नाम वृत्र है। और उन शक्तियों की निवारक शक्तियाँ अर्थात् जीवन, ज्ञान प्रकाश और विकास को प्रदान करने वाली तथा उनकी सहायक शक्तियो को इन्द्र कहते हैं। वृत्र विनाश का प्रतिनिधि है इन्द्र निर्माण का। वृत्र पाप का प्रतीक है, इन्द्र पुण्य का। वृत्र अन्धकार का सूचक है, इन्द्र प्रकाश का।

सामाजिक जीवन में अविद्या, अज्ञान, अभाव और अनेक प्रकार की रोगोत्पादक शक्तियाँ भावों, विचारो तत्त्वों और पदार्थों का नाम वृत्र है, दुष्ट, दस्यु चरित्र हीन और पर-स्वत्वापहारी जन वृत्र हैं, धन लिप्सा, अधिकार लिप्सा, साम्राज्य-लिप्सा व अपने अहंकार-भाव की तृप्ति के लिये दूसरों पर आक्रमण करके संसार में अशान्ति फैलाने वाले राजा, राजपुरुष, राजनीतिज्ञ, सैनिक और उनके समर्थक-जन भी वृत्र हैं। जो इनका निवारण एवं पराजय करने वाले धर्म-प्रचारक, चिकित्सक, न्यायाधीश, राजा, जन नेता और उनके सहायक होते हैं, वे सभी इन्द्र हैं। इन्द्र के द्वारा वृत्र का पराभव ही वृत्र की हत्या है। तभी तो इन्द्र को 'वृत्रहन्' कहते हैं।

जो कि संयम शील है, जो काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और अहंकार रूपी षड् रिपुओं को जीतने मे समर्थ है, कर्तव्य-परायण है, पुरुषार्थी, परोपकारी, विद्वान्, ईश्वर भक्त और दुर्जनों का निरोध करने में समर्थ है वह भी इन्द्र है। पाप की वृत्तियाँ और पाप के समर्थक जन ही वृत्र हैं। मानव-समाज में आये दिन घटित होने वाले दैवी और आसुरी वृत्तियों के पारस्परिक संघर्ष भी देवासुर-संग्राम अथवा इन्द्र और वृत्र के युद्ध ही हैं।

हे अविद्यान्धकार विनाशक! सत्य ज्ञान प्रकाशक, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामिन्! हे सकल ऐश्वर्य के स्वामी और सबके सर्वोपरि शासक! हे शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव भगवन! हमने संसार में कई प्रकार के छोटे छोटे वृत्रहन्ता देखे और सुने हैं, परन्तु सर्वोपरि वृत्रहन्ता तो बस आप ही हैं। आपसे बढ़कर तो क्या? आपके समान भी और कोई नहीं है। हे कृपानिधे! आपकी सत्ता सब प्रकार के दोषों, दुर्गुणो और पाप ताप आदि से रहित है। हे नाथ! सब प्रकार के दोषों, दुर्गुणों एवं दुष्ट-जनों से हमारी रक्षा करो। हमें उत्तम ज्ञान और निरोग चिर-जीवन का दान दो। आपकी कृपा से संसार में सज्जनों और सज्जनता की विजय एवं दुर्जनों और दुर्जनता की पराजय सदा ही होती रहे।

★

गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज का वार्षिकोत्सव

२४ नवम्बर से २८ नवम्बर तक पूर्वी उत्तरप्रदेश का क्षेत्रीय आर्यवीर दल शिविर लगेगा। प्रवेश शुल्क २) है। भोजन और आवास निःशुल्क होगा।

२६ नवम्बर को अपराह्न २ से ५ तक संस्कृत सम्मेलन प्रो० आर०एन० शास्त्री की अध्यक्षता में होगा। रात्रि ७ से १० तक आर्य युवक सम्मेलन श्री गयाप्रसाद जी मालिक उमाशंकर आयल मिल्स प्रयाग के सभापतित्व में होगा। सम्मेलन का उद्घाटन प्रो० आनन्दप्रकाश वाराणसी करेंगे।

२७ नवम्बर को २ से ५ बजे तक शिक्षा सम्मेलन डा० सत्यप्रकाश की अध्यक्षता में होगा। रात्रि ७ से १० तक जिला आर्य सम्मेलन होगा।

२८ नवम्बर २ से ५ महिला सम्मेलन माता पार्वतीदेवी की अध्यक्षता में रात्रि ७ से १० तक गुरुकुलोत्सव।

व्यवस्थापक प्रधान गुरुकुल सिरसागंज

कुष्ट रोगी समस्या और आर्यसमाज

[श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी बी०ए० दयानन्द सालवेशन मिशन]

भारत में लगभग २५।३० लाख कुष्ठ रोगी हैं। ये अधिकांश हिन्दू ही हैं। मुसलमान, ईसाई, पारसी या कोई अन्य अहिन्दू कुष्ट रोगी बहुत कम देखने को मिलते हैं। इसलिये यह समस्या एक राष्ट्रीय समस्या होने साथ-साथ हिन्दू-जाति की भी समस्या है। हिन्दू जाति की इतनी बड़ी संख्या इस रोग से पीड़ित होकर न केवल जाति के स्वस्थ भाग पर बोझ है बल्कि इस महान जाति के एक अंग के कट जाने के समान है। जिस प्रकार स्वस्थ मनुष्य के किसी अंग को लकवा हो जाने से उस अंग और अंगी की हानि होती है, उसी प्रकार ही हिन्दू समाज के इस अंग और समाज की रक्षा है।

इस समस्या के दो भाग हैं। (१) अनायास ही हिन्दू जाति से छिन जाती हैं और ईसाई बनाई जा रही हैं।

पहले यह माना जाता था कि कुष्ट रोग संक्रामक है और पैतृक भी है। मगर अब यह सिद्ध हो गया है कि न ही यह छूत से फैलता है और न ही माता-पिता से सन्तान को जाता है।

कुष्टि माता पिता की सन्तान प्रायः स्वस्थ होती है। यह बात अनुभव में सब स्थानों पर देखी जा सकती है।

आर्यसमाज इन अर्थों में हिन्दू जाति का रक्षक होने का दावा करता है कि वह जाति के बच्चों को मुसलमान या ईसाई होने से बचाता है और हो जाने वालों को वापस भी लेता है।

सरकार भी यह दावा करती है कि भारत में किसी नाबालिग का मत परि-

सामाजिक समस्याएँ

प्रथम है रोग से मुक्त होना और इसके उपेक्षित करना और दूसरा भाग है, (२) कुष्ट रोगियों की सन्तानों की सम्भाल और व्यवस्था।

अब तक हिन्दू समाज और इसके जीवित अंग आर्यसमाज ने भी इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। यह क्षेत्र ईसाई मिशनरियों के लिये छोड़ दिया गया है।

महात्मा गांधी ने इस ओर कुछ ध्यान दिया था। उस महात्मा के नाम से लाभ उठाने वाली कांग्रेस सरकार ने भी कहीं-कहीं इस कार्य को करने का आंशिक यत्न किया है, पर समस्या के मूल का कोई ठोस प्रयत्न अब तक नहीं किया गया है।

ईसाई पादरियों ने इस समस्या को अपने धर्म-प्रचार की दृष्टि से देखा है। रोगियों के इलाज का प्रबन्ध ईसाई मिशनरियों या विदेश कुष्ट रोग मिशनरियों द्वारा किया जाता है। कई पादरी केवल इसी काम में अपना सारा समय लगा रहे हैं।

इनकी सन्तानों को प्रायः ईसाई मिशनरी ले जाते हैं। उनका प्रबन्ध करके पढ़ाते और उन्हें ईसाई बना लेते हैं। इस प्रकार सहस्रों बालक-बालिकायें

वर्तन करना नियम विरुद्ध और दण्डनीय है।

मगर कुष्ट रोगियों के सहस्त्रों नाबालिग बच्चे बच्चों को ईसाई बनाये जा रहे हैं, नहीं तो सरकार का यह विधान बनता है और न ही आर्य समाज की रक्षा-भावना को ठेस पहुंचती है। आर्य समाज का ध्यान ही इस तरफ नहीं गया प्रतीत होता। आर्यसमाज के लिये यह काम कोई ऐसा कठिन काम नहीं जो यह न कर सके।

रोग निवारण के लिए तो अनेक नजदीकी अस्पताल की सेवा से लाभ उठाया जा सकता है। जैसे हल्द्वानी नगर के एक सज्जन श्री राजेन्द्रप्रसाद श्रीवास्तव पिछले दिनों (नैनीताल) की यात्रा के अवसर पर आर्यमित्र सम्पादक श्री उमेशचन्द्र स्नातक जी ने मेरा परिचय कराया उन्होंने एक ऐसी सस्ती दवाई भी बना दी है जो गलित-कुष्ठ की अचूक औषध कही जाती है। उससे कुष्ठ रोगियों के इलाज का हमें प्रबन्ध करना चाहिये।

आर्यसमाज के सैकड़ों शिक्षा केन्द्र हैं इनमें निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध कर सकना कुछ मुश्किल न होना चाहिये।

कठिनाई केवल बच्चों के भरण-पोषण के व्यय की है। इसके लिये सर-

कारी सहायता, बच्चों के माता-पिता, और धनी-मानी दानी सज्जनों से सहयोग लिया जा सकता है। यदि स्थान स्थान पर आवश्यकता अनुसार समाज ने अनाथालयों का और आश्रमों आदि का प्रबन्ध कर लिया है तो इन बच्चों के लिये उचित प्रबन्ध करने में भी समाज समर्थ हो सकता है।

केवल इस समस्या की ओर ध्यान देने और योजनाबद्ध कार्य करने की आवश्यकता है। इसके लिए समाजों की ओर से कोई अलग संस्थान या संगठन भी बनाया जा सकता है जो केवल इसी समस्या को अपने हाथ में लें।

शुद्धि कार्य में लगी सभी संस्थाओं का कर्तव्य है कि इस समस्या की ओर ध्यान दें और अपनी सहस्त्रों सन्तानों को ईसाई बनने से बचावें।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सरकार को कुछ सोचने का अवसर मिल सके। अनशन तो बिल्कुल अन्तिम हथियार है। शंकराचार्य श्री निरंजनदेव तीर्थ ने कहा कि एक दृष्टि से भी नन्दा जी के बाहर जाने की खुशी है किन्तु यदि वे कांग्रेस को भी छोड़कर और हमारे साथ मिलकर गोहत्या के कलंक को मिटाने में योग दें तो भारी प्रसन्नता होगी।

श्री शंकराचार्य ने कहा कि देश की जनता गत २० वर्षों से गोहत्या का कलंक मिटाने के लिए शान्ति वार्ताओं का प्रयोग करती रही है। दो करोड़ हस्ताक्षर भेजे गये किन्तु जब सफलता नहीं मिली तो लाचार होकर हमें अनशन की घोषणा करनी पड़ी है। हम गोपाष्टमी से धर्मसंघ में अपना अनशन शुरू कर रहे हैं।

भू मेरी के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री अभिनव विद्यातीर्थ ने कहा कि गोमाता अत्यन्त उपकारी एवं पूजनीय है अतः उसकी हत्या बन्द की जानी चाहिये। उन्होंने गोहत्या बन्दी के लिये शान्त एवं अहिंसात्मक पग उठाने की प्रेरणा दी।

मुनि सुशीलकुमार

जैन मुनि श्री सुशीलकुमार ने कहा कि जब रूस में कबूतर की हत्या पर प्रतिबन्ध है तो भारत में गोहत्या करके करोड़ों हिन्दुओं की भावनाओं को आघात पहुंचाना सर्वथा अनुचित है। कोई भी लोकप्रिय सरकार जनता की भावनाओं का आदर किये बिना टिक नहीं सकती।

मुनि जी ने कहा जैन साधु गोमाता की रक्षा के पुनीत कार्य में पीछे कदापि नहीं रहेंगे।

उन्होंने कहा कि कल मैंने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिलकर उन्हें सुझाव दिया है कि वह राष्ट्रपति से अध्यादेश जारी करवा कर गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगवा दें। प्रधान मन्त्री ने मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुना।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

वर्ष ६ अंक १८८८ कार्तिक शु० १२
(दिनांक २० नवम्बर सन् १९६६)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60

पता—'आर्यमित्र'

दूरभाष : २२९९१ तार : "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

गंगा मेले पर आर्य महा-सम्मेलन

मेरठ आर्य उपप्रतिनिधि सभा की ओर से गंगा मेले के अवसर पर २३ से २५ नवम्बर तक आर्य महासम्मेलन बड़ी तैयारी के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में मेरठ की समस्त आर्य समाजें अपने प्रतिनिधि अवश्य भेजने की कृपा करें।

कैम्प नं० ७ गंगा किनारे गढ़मुक्तेश्वर शिविर आर्य महा सम्मेलन
आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ

आर्य उपसभा मुरादाबाद

—मुरादाबाद बांस मण्डी आर्यसमाज का उत्सव १३ से १५ नवम्बर ६६ तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

आ०स० उन्नाव का उत्सव

आर्य समाज उन्नाव का ६९ वां इस वर्ष बड़े धूमधाम से मनाया गया, जिसमें सर्वश्री पं० शिवानन्द जी, स्वामी शिवानन्द जी महाराज, पं० मुन्शीरामजी व पं० दिवाकर जी के प्रभावशाली भाषण और कुं० महिपालसिंह जी तथा श्री ठा० देवपालसिंह जी आर्य के भजनोपदेश हुये, जिसका जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। साथ ही साथ नगर आर्यवीर दल का निर्वाचन भी हुआ। —मन्त्री

जिला सभा लखनऊ का ४२वाँ मासिक अधिवेशन

रविवार दिनाङ्क २७—११ – ६६ को सायंकाल ५ से १० बजे तक डी० ए० वी कालिज आर्य नगर लखनऊ में (आर्य समाज गणेशगंज के सुप्रबन्ध में) होगा। * कार्य क्रम *

१—सामवेद से बृहत वैदिक यज्ञ
२—सन्ध्या एवम् प्रार्थना
३—भक्ति रस के सुमधुर भजन
४—बाल कार्य्य-क्रम
५—ठोस वेदोपदेश।

कृपया इष्ट मित्रों व सपरिवार पधार करइस पुनीत आयोजन से लाभ उठावें और आर्य संगठन को सुदृढ़ करें। यज्ञ प्रेमी सामवेद साथ में लावें और यज्ञ में सस्वर वेद पाठ कर आनन्द प्राप्त करें। ज्ञातव्य—चूंकि यह मासिक अधिवेशन आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ के वार्षिकोत्सव के साथ हो रहा है अतएव बाहर से पधारे हुए भजनोपदेशकों व विद्वानों के भजन व व्याख्यान भी आपको श्रवण करने को मिलेंगे।

कृष्णवल्लभ विक्रमादित्य 'वसन्त'
[प्रधान] [मन्त्री]
तेजनारायण एडवोकेट चन्द्रदत्त तिवारी
(प्रधान) (मन्त्री)
आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ।

बिजनौर मंडल में वेद प्रचार की धूम

श्री लाला बनारसीदास आर्य नजीबाबाद के उन पुराने आर्यों में हैं जिनका शौक दिलचस्पी मनोविनोद सब कुछ आर्यसमाज ही है। जो लगन इन्हें जवानी में थी वही अब बुढ़ापे में भी है। कृष, निर्बल परन्तु आर्यसमाज के काम के लिये पूरे तन्दुरुस्त और जवान। भी उपदेशक और प्रचारकों का दल लेकर निकल पड़े जिले के समाजों में अलख जगाने को। वेदिल आलसी समझते थे अब वेद प्रचार का समय गया। परन्तु जब जिले में एक सिरे से दूसरे सिरे तक यह बूढ़ा बाबा घूमा तो मुर्दे भी जाग उठे। जिले के वीर आर्यों ने रुपयों से झोली भर दी। आतिरदारी तो वह हुई कि बारातों में ही इतनी हो सकती है। श्रोताओं के समूह दूर-दूर से आकर घंटों बैठे एकाग्र मन से वेदोपदेश सुनते थे। श्री धर्मराज जी के वीररस पूर्ण गानों से जनता अघाती ही न थी। एक-मास जिले में वैदिक दुंदुभि बजती रही पर श्रोता तृप्त न हुए। बराबर अन्य-अन्य ग्रामों के निमंत्रण आते रहे। आगे को प्रचार का वायदा करना पड़ा। श्री लाला जी के भार को कई दिन श्री भगवान् जी ने भी वहन किया भगवान् जी प्रसन्नचित्त निर्द्वन्द्व महात्मा हैं। श्री लाला देवराज जी वैदिक मिशनरी बुढ़ापे में भी जवान, प्रसन्नचित्त, अथक काम करने वाले और सुलझे हुए सौम्यबहु श्रुत व्यक्ति हैं। श्री कुमर सुखलाल जी के भजन और व्याख्यानों ने तो जनता में नयी चेतना ला दी। पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री के करारे व्याख्यानों ने वैदिक धर्म की धाक जमा दी। उपसभा के भजनोपदेशक श्री मुखराम जी, श्रीप्यान सिंह जी, श्री रघुवीर जी आदि ने भी बहुत श्रम किया, यज्ञ भक्त श्री ब्रह्मचारी बालकराम जी के उपदेश बहुत उपयोगी रहे किरतपुर, बढ़ापुर, बसेड़ा कुमर, नगीना, अफ़ज़लगढ़, शेरकोट, धामपुर, इस्माईलपुर, चांदपुर, हल्दौर, बिजनौर, नजीबाबाद के उत्सव हुए और जामपुर में एक दिन प्रचार हुआ। उपसभा के प्रधान श्री ईश्वरदयालु जी आर्य तथा अधिष्ठाता उपदेश विभाग, श्री पं० नरेन्द्र शास्त्री जी ने भी समय दिया। उपसभा की २ बार अन्तरंगें भी हुईं। श्री लाला अमीचन्द जी जो हिन्दी के उत्तम लेखक हैं आर्यसमाज की प्रगति पर एक इतिहास लिख रहे हैं। प्रचार में मैं भी एक मास साथ रहा।

—बिहारीलाल शास्त्री

आर्य विद्वान श्री वीरसेन वेदश्रमी की सफलता

आर्य समाज बिलासपुर (म० प्र०) ने दि० ४ से ११ अक्टूबर तक वृष्टियज्ञ का आयोजन किया इस निमित्त श्री प० वीरसेन जी वेद श्रमी वेद विज्ञानाचार्य को इन्दौर से विशेषरूप से निमन्त्रित करके यज्ञ कार्य सम्पन्न कराया। इस क्षेत्र में वर्षा के अभाव से धान की फसल नष्ट होने को थी। दि० ११ को यज्ञ पूर्ण हुआ और दि० १२ को १ लाख ६० हजार वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में व्यापक वर्षा हो गये और दि० १३ तक ४० हजार वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र अच्छी वर्षा हुई और फसल नष्ट होने से बच गई।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से बाबूराम भारती द्वारा मुद्रित प्रकाशित।

गोरक्षा सत्याग्रह का प्रथम बलिदान

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम०ए०, गोरखपुर]

[illegible] ने जो वक्तव्य दिया है वह निःसन्देह भारत राष्ट्र के लिए विचारणीय विषय है। उससे [illegible] का 'गौरव' यह समझा है कि देश में कुशल नेतृत्व का अभाव है और नेतृत्व के अभाव में नौकरशाही का बोलबाला हो जाता है और यही आज देश में हो रहा है। यही कारण है कि गो भक्त प्रदर्शनकारियों पर पुलिस के अधिकारियों ने १५ मिनट तक अन्धाधुन्ध गोलियों की वर्षा की और इतनी भयंकर वर्षा के होने के बाद भी उसी नौकरशाही ने उस समय के गृहमन्त्री और प्रधान मन्त्री को सूचना दी कि इस गोली वर्षा में केवल चार व्यक्तियों की मृत्यु हुई और कुछ घायल हुये और हमें आश्चर्य तब हुआ कि प्रजातन्त्र का दम भरने वाली कांग्रेस की तालिका और गृहमन्त्री ने उन वक्तव्यों को सत्य समझ कर मृत्यु संख्या केवल चार मानी और अपनी बहादुरी का इजहार करते हुए सूचना दी कि दिल्ली में अब शान्ति हो गई। परन्तु प्रधान मन्त्री और गृह मन्त्री के इस असत्य वक्तव्य की पोल तब खुली जब ज्योतिष्पीठ तथा गोवर्धन पीठ (पुरी) के शंकराचार्य ने संयुक्त वक्तव्य कर दिल्ली में ७ नवम्बर की गोली वर्षा से मरे लोगों की संख्या के बारे में सरकारी बयान को गलत बताते हुए कहा कि पुलिस ने बिरला मन्दिर गृह में पचास से अधिक लाशें जलाईं। उन्होंने यह भी कहा कि जिन ट्रकों पर वे शव वहां से लाये गये उनके नम्बर तथा अन्य प्रमाण हमारे पास हैं। हमारा अनुमान है कि मृतकों की संख्या सौ से भी अधिक हो सकती है।

ऐसी स्थिति में जब दोनों वक्तव्यों में अन्तर है तो सरकार को और ऐसी सरकार को जो अपने को प्रजातन्त्री होने का दावा करती है इस विषय में अवश्य ही जांच करवाना चाहिए। परन्तु यह तो एक स्वाभाविक बात हुई। हम इस अवसर पर जबकि सैकड़ों आदमी गोली के शिकार बना दिये गये हैं, जब सैकड़ों स्त्रियों को विधवा, बच्चों को अनाथ और माता-पिताओं को पुत्र-विहीन कर दिया गया है, उस अत्याचारी सरकार को स्पष्ट शब्दों में बता देना चाहते हैं—

बलिदानों का इतिहास नहीं,
कालिमा स्याही लिखपाती है।
जिसके लिखने के लिए खून,
की नदी बहाई जाती है।

वेद में स्पष्ट शब्दों में लिखा है—

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः।

इसका मूल्य है कि जो बलिदान किया जाता है वह बलिदान कभी असफल नहीं होता। सचमुच क्या आपने देखा नहीं कि जब बीज अपने को मिट्टी में मिला देता है तब उसके स्थान पर लहलहाते नए पौधे निकलते हैं। जिस समय दीपक की बत्ती अपने को जला देती है तभी वह भटकतों को मार्ग दिखलाती है। ठीक इसी प्रकार आर्यसमाज, भारत साधु समाज और सभी हिन्दू धर्म से सम्बन्धित व्यक्तियों की ओर से जो ७ नवम्बर को दिल्ली में प्रदर्शन हुआ और उस शांत प्रदर्शन के पीछे जन-भावना को देखकर और उस आन्दोलन को कुचलने के लिये अवसर की खोज में बैठे कुछ कांग्रेसी, कम्युनिस्ट तथा अन्य भारत विरोधी एवं हिन्दू विरोधी तत्वों ने अराजकता उत्पन्न कर गोहत्या

गोरक्षा-आन्दोलन

आन्दोलन में सम्मिलित शांत प्रदर्शनकारियों पर १२ मिनट तक उन गोलियों का प्रयोग किया जो या तो युद्ध में या पशुओं के मारने के लिये काम में लाई जाती हैं। परन्तु मैं आज की गद्दी पर बैठी भारत सरकार की प्रधान मन्त्री को यह बता देना चाहता हूं कि उसकी नृशंसता, यह क्रूरता, यह मानव हत्या गोरक्षा आन्दोलन को कुचल न सकेगी, इस आन्दोलन को दबा न सकेगी। यह आन्दोलन बढ़ेगा और बढ़ता चला जायगा। हमारा तो यह विश्वास है कि इस आन्दोलन के बहाने देश में उस वातावरण का निर्माण होगा जो सच्चे अर्थों में कामराज्य (वर्तमान शासन) को समाप्त कर राम राज्य की स्थापना करेगा। ऐ प्रधान मन्त्री! याद रख आज इस आन्दोलन में आर्यसमाज भी कूद पड़ा है। तुमने और तुम्हारे अनुयायियों ने दिल्ली में शांत हिन्दू प्रदर्शनकारियों पर गोली वर्षा का षड्यन्त्र कर जो हत्याकांड किया है ऐसे एक नहीं सैकड़ों बलिदान आर्यसमाज और गोभक्त प्रजा देने को तैयार हैं। मैं तुम्हें चुनौती देता हूं कि तुम आर्यसमाज के सत्याग्रह का मुकाबला करो।

आर्यसमाज का इतिहास बलिदानों का इतिहास है। देश जाति और धर्म पर जब जब विपदा आई आर्यसमाज उसमें सबसे पहले कूदा है और 'कार्यं वा साधयेयम् देहं पातयेयम्' कार्य सिद्ध करूंगा या अपना बलिदान कर दूंगा, इसी भावना से उसने सदा सफलता प्राप्त की है। इसलिए आज उसके नेताओं ने जब कांग्रेसी सरकार की गो हिंसक नीति को बदलने के लिए सामूहिक सत्याग्रह में शामिल होने का आह्वान किया है ऐसे समय हम वर्तमान सरकार को चेतावनी देना चाहते हैं कि आर्यसमाज उन तत्वों से बना है जिन्हें तुम पकड़ कर अपने पेट (कारागार) में तो रख सकते हो पर हजम नहीं कर सकते। आर्यसमाज का इतिहास उठाकर देखो उसने सदा अहिंसात्मक युद्ध किया है। परन्तु उसका इतिहास बलिदानों का इतिहास है, उसकी परम्परा बलिदानों की परम्परा है, उसके आदि प्रवर्तक स्वामी दयानन्द को जन कल्याण के लिए विष दिया गया, उनके शिष्य पं० लेखराम के पेट में छुरा भोंका गया, स्वामी श्रद्धानन्द के सीने पर गोलियां दागी गयीं, राजपाल छुरे का शिकार बना, हैदराबाद में पच्चीसों नवयुवकों ने निजामशाही के अत्याचारों को हंसते-हंसते सामना किया और न्याय तथा सत्य की रक्षा के लिए हंसते-हंसते अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया, लाला लाजपतराय ने अपनी खुली छाती पर लाठी की मार सही और मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की बलि दी और क्या तुम्हारी सरकार पंजाब के हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में आर्य समाज के शानदार बलिदानों और सुमेरसिंह की अमर कहानी को भूल गई है? आज पुनः गौओं की रक्षा के लिए आर्य समाज मैदान में कूद पड़ा है जब एक ओर युद्ध में काम आने वाली बन्दूक की गोलियां, शाश्वत जनता के खून से रंगे हाथों वाली नृशंस पुलिस, जनता के पैसों से ऐश्वर्यों से सम्पन्न तुम्हारे ग्रस्कारी अधिकारी हैं तो दूसरी ओर निहत्थी परन्तु दृढ़ अहिंसक गो भक्तों का सहयोग लेती हुई आर्यसमाज है। विजय हमारी होगी यह हमें विश्वास है। याद रखो, यह तुम्हारी भूल है कि तुम इसे चुनाव का एक हथकंडा समझो। यह चुनाव का हथकंडा नहीं। तुम्हारी तरह आर्यसमाज चुनाव के लिए ही अपने सब कार्य नहीं करता। उसका उद्देश्य महान् है, उसके साधन पवित्र हैं। परन्तु स्वार्थ की कुर्सियों से चिपके हुए ऐ कांग्रेसी मन्त्रियो, और पदाधिकारियो! तुम्हारी दृष्टि तो उन वोटों तक सीमित है अतः तुम्हें हर जगह वोट ही वोट दृष्टिगोचर हो रहे हैं। तुम स्वयं समझ रहे हो कि यदि हमने गो हत्या पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो शायद हमें मुसलमानों के वोटों से वंचित होना पड़े। परन्तु यह गाय केवल हिन्दुओं को अपना मधुर दूध नहीं देती, यह गाय केवल हिन्दू बच्चों को ही अपने स्वस्थ दुग्ध से पुष्ट नहीं करती वह सबको समान रूप से, समभाव से अपना समग्र शरीर दे देती है। इसलिए इसकी हत्या पर प्रतिबन्ध लगाओ। इसके सम्वर्धन की योजनायें बनाओ। और इस प्रकार राष्ट्र रक्षा में यत्नवान् बनो।

आर्य समाजियों और गोभक्त जनता से मेरा यह नम्र निवेदन है कि ७ नवम्बर के प्रदर्शन में जिन्होंने आत्म बलिदान किया है उनकी आत्मा के संतोष और उनके उद्देश्य की पूर्ति के लिए सबसे अच्छी श्रद्धांजलि अपना तन-मन धन आर्यसमाज के सत्याग्रह में लगाना होगा। जो धन दे सकें वे इसे सफल बनाने के लिए धन दें जो तन दे सकें वे इसे सफल बनाने के लिए अपना तन दें और मन तो बच्चे बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुष स्वस्थ और अस्वस्थ सभी दे सकते हैं। अपना सर्वस्व देकर इस आर्यसमाज के आन्दोलन को सफल बनावें और पुलिस की नृशंस गोलियों से मृत गोभक्तों की आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करें। विजय हमारी निश्चित है। बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। वेद का यह कथन अवश्य पूर्ण होगा—

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि
तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः।

श्री ओमप्रकाश त्यागी गोरक्षा आन्दोलन में गिरफ्तार

दिल्ली पुलिस ने गोरक्षा आन्दोलन के दमन चक्र में श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी को घरपर आकर रात में कैद कर लिया। बाद में उन्हें छोड़ दिया गया।

'वर्तमान राष्ट्रीय समस्या'
छात्र आन्दोलन

[श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य एम०काम० एल०एल०बी० उपमन्त्री आ०प्र० सभा,उ०प्र०]

पिछले कुछ दिनों में जिसे राष्ट्र को जिस समस्या ने झकझोरा, वह है 'छात्र आन्दोलन'। आज वह अनेक कारणों से देश से तनिक भी हित है चिन्तित हो उठा है और उसका चिन्तित होना स्वाभाविक भी है। कौन ऐसा अभागा बाप होगा जो अपने बच्चों को विनाश की ओर जाता देख दुःखित एवं द्रवित न हो उठता हो? अब तक जो कुछ हुआ वह इतना कष्टदायक नहीं जितना कि यह एक पीढ़ी नष्ट होकर रहेगी। अब तक की अपनी इस उपेक्षा पर पश्चाताप करके यदि आज भी हम सतर्क हो इस समस्या का उचित हल निकाल सके तो राष्ट्र का हित होगा और आने वाला विनाश टल सकेगा।

राजनैतिक सामाजिक तथा शिक्षा सम्बन्धी स्तर पर यद्यपि समस्या का समाधान सोचने का प्रयत्न किया जाना प्रारम्भ हो गया है पर अभी तक हम किसी ऐसे निश्चित परिणाम पर नहीं पहुंच पाये कि जिसे समस्या का निदान कहा जा सके। इसका एक बहुत बड़ा कारण भी है कि हम इस समस्या के तात्कालिक कारण ढूंढ उनका निदान करने की भूल कर रहे हैं। इसीलिए तो हमारी प्रान्तीय सरकार ने कुछ स्कूल व कालेजों की सरकारी सहायता रोक दी है और सम्भवतः इसी लिये पुलिस के डण्डे व गोलियां हम अपने निरीह होनहार बच्चों पर बरसा रहे हैं। पर वास्तव में क्या इन प्रयोगों से समस्या का निदान हो सकेगा, मेरे विचार में नहीं। क्योंकि रोग का कारण तात्कालिक ही नहीं है बल्कि कहीं और ही है यद्यपि तात्कालिक कारणों से समस्या का विस्फोट अवश्य हुआ जान पड़ता है। एक उदाहरण से स्थिति स्पष्ट हो जायगी। एक सभ्य पुरुष ने अपने घर की सफाई की। समस्त घास फूस निकालकर बाहर प्रांगण में ऐसे स्थान पर डाला जहां पहले से कुछ लकड़ियां जमा थीं रात्रि में एक राहगीर सिगरेट पीता हुआ उधर से निकला और सिगरेट का जलता हुआ टोंटा उन कूड़े करकट पर डालकर चल दिया। समय पर हवा के प्रभाव से आग बढ़ी और लकड़ियों में लगकर घर जला डाला। अब यदि कोई कहे कि इस के लिये वह राहगीर जिम्मेदार है तो यह एकांगी निर्णय होगा। कारण यह कि घास फूस इकट्ठा करके आग लग जाने का साधन तो स्वयं गृहस्वामी ने ही उपलब्ध कर दिया है। यद्यपि यह भी सत्य है कि अकारण ही उस राहगीर का टोंटा जाना आग लगने का तात्कालिक कारण बना। ठीक यही दशा हमारे विद्यार्थी समाज की है।' असन्तोष का यह घास-फूस जो वर्षों से

हमारी उपेक्षा वृत्ति से विद्यार्थी समाज में जमा था कई सामयिक कारणों से आग पकड़ बैठा है। मनीषी लोगों का काम है कि ऐसे उपाय ढूंढें कि जो इस समय शान्ति हो जाये और भविष्य में पुनः यह भयानक ज्वाला न भड़के।

शिक्षा के प्रति उपेक्षा वृत्ति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व जो स्थिति हमारे शिक्षा जगत की थी वही स्थिति आज स्वतन्त्रता प्राप्त होने के २० वर्ष बाद भी है। क्या यह स्थिति हमारे लिये हास्यास्पद नहीं? उस दूकानदार का क्या होगा जो रुपया तो दूकान में लगाता जाये परन्तु कभी उसका लेखा जोखा न ले, कि परिणाम क्या रहा यही दशा हमारी सरकार व समाज की

शिक्षा के प्रति है। सरकार शिक्षा विभाग को इतना उपेक्षित समझती है कि जब वित्तीय प्रश्न उपस्थित होता है तो सब से पहिले शिक्षा का ही बजट काटा जाता है। नाच व गाने वालों के प्रतिनिधि मंडल जो सांस्कृतिक मिशन के नाम पर भेजे जाते हैं बन्द नहीं किये जाते। वर्तमान शिक्षा पद्धति के विषय में दो राय अब नहीं हैं कि यह हमारे देश के लिये हितकर नहीं। भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति से लेकर निचले विभाग के कर्मचारी तक इसे स्वीकार करते हैं और समय-समय पर टिप्पणी भी करते हैं। फिर भी इसमें वांछित परिवर्तन करने की क्षमता व सामर्थ्य हम में नहीं ऐसा क्यों? इस उपेक्षावृत्ति का जो परिणाम होना चाहिये वह हमारे सामने है। शिक्षा का क्षेत्र तो बढ़ाया परन्तु क्या फल हम उससे ले सकते हैं यह नहीं सोचा गया और यदि सोचा भी गया तो उसे कार्यान्वित नहीं किया गया। कई शिक्षा आयोग बने, अच्छे प्रस्ताव आये, पर उन पर क्या अमल हुआ? यह प्रश्न चिन्ह बना हुआ है।

दूषित शिक्षा प्रणाली

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोष सर्वविदित हैं, जहां शिक्षा का उद्देश्य आत्म-निर्भर होना है वहां आजकल की शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी दिलाना ही है हमारे बच्चे आत्म निर्भर नहीं बन पाते। ग्रेजुएट होकर वे नौकरी में ही जाना पसन्द करते हैं न कि अपने व्यवसाय व खेती आदि में। यह एक बुनियादी कारण है हमारे छात्र आन्दोलन का। १९५० के सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग ३॥ लाख बेरोजगार भारत में थे, जो बढ़कर १९६० में १६ लाख से ऊपर हो गये। जून १९६६ में यह संख्या २६ लाख हो गई और चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के समाप्त होते होते यह संख्या ४० लाख हो जायगी। विचारने का विषय है कि इतनी बड़ी संख्या को केवल नौकरी जुटा पाना सम्भव नहीं। दूसरी ओर दूसरे व्यवसायों में अच्छे शिक्षित व दक्ष व्यक्तियों की कमी रहेगी। इसी लिये आज विद्यार्थी समाज में असन्तोष व्याप्त हो गया है और वह कहीं न कहीं तो निकलेगा ही। अतः इस दृष्टिकोण से वर्तमान प्रणाली में परिवर्तन आना ही चाहिये। यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि छात्र असन्तोष का वर्तमान रूप इंजीनियरिंग व मेडिकल कालेजों तथा टेकनिकल स्कूलों में आम तौर पर नहीं देखा गया, क्योंकि उनके सामने एक निश्चित भविष्य है।

असमानतीय शिक्षा

१—समाजवादी सरकार बनाने का नारा लगाते हुए न तो कांग्रेस दल और न अन्य राजनीतिक पार्टी थकती हैं, परन्तु उसके लिए जो बुनियादी काम होने चाहिये वह एक भी नहीं करता। स्वतन्त्र भारत में शिक्षा की दो पद्धति इसका प्रमाण हैं। पब्लिक स्कूल व भारतीय स्कूल। भारत में यह पब्लिक स्कूल हमारे ही राज्य में असमानता के केन्द्र हैं। इन स्कूलों में शिक्षा-दीक्षा पाकर छात्र हमारी संस्कृति व सभ्यता का यदि शत्रु नहीं तो उससे अरुचि तो करने ही लगता है, ऐसा प्रतीत होने लगा है कि इन स्कूलों को इसीलिये [illegible] शिक्षा

[illegible] चुका है कि [illegible] ही राज्य द्वारा अधिकृत व मान्यता प्राप्त संस्थाओं में बालक नौकरी पाते रहे। स्थिति यहां तक आ गई है कि शिक्षा जगत में काम करने वाले अध्यापक तक भी अपने बच्चों को भारतीय स्कूलों में भेजना नहीं चाहता भले ही हजारों रुपये उधार लेकर इन पब्लिक स्कूलों के बिल चुकाने पड़ें। परिणाम यह है कि भारतीय स्कूलों के प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी भी जीवन की दौड़ में पीछे रह जाते हैं जो एक बड़े असन्तोष का कारण बन रहे हैं और स्वाभाविक भी है। यदि हम उक्त शिक्षाप्रणाली को अच्छा समझते हैं तो सबको एक समान अवसर उसे प्राप्त करने का मिले। अन्यथा अपनी शिक्षा पद्धति के समानान्तर दूसरी प्रणाली को चलने देने से समाज में जो असमानता बढ़ रही है उसका परिणाम छात्र असन्तोष में परिणित होकर सामने आयगा ही।

२—परिणामों का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि अधिकतम बच्चे इंगलिश भाषा में अनुत्तीर्ण होते हैं। फिर भी इस अभारतीय भाषा को जबरदस्ती अनिवार्य किया जा रहा है। परिणाम फिर उन बच्चों में असन्तोष व्याप्त होना ही है।

परीक्षा की दोषपूर्ण प्रणाली

छात्र को यह ज्ञात है कि वार्षिक परीक्षा में पास होने पर ही उसकी प्रतिभा आंकी जाती है तो उसके लिये वर्ष भर परिश्रम की क्या आवश्यकता है। परीक्षा के दिनों में केवल एक मास अथवा दो मास के परिश्रम से काम चल जाता है अन्य दस मास वह स्वच्छन्दता से घूमता है। स्कूल व कालेज उसके लिये विद्या मन्दिर न रह कर आमोद-प्रमोद के साधन बन गये हैं। पुरानी कहावत है कि खाली बैठे मनुष्य में शैतान निवास होते हैं। खाली मस्तिष्क शैतान का घर बन जाता है। सही दिशा मिलती नहीं। उस पर सिनेमाओं का दूषित प्रभाव। सब कुण्ठित हो, भावनायें असन्तोष में परिणत हो जाती हैं और फिर समाज के प्रति विद्रोह। आवश्यकता है कि घर और स्कूल-कालेजों में बच्चों की व्यस्त दिनचर्या रक्खी जावे। इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं कि हर समय वह किताबों में उलझा रहे बल्कि इसके विपरीत यह है कि मनोरंजन खेल कूद तथा आमोद-प्रमोद के सभी उपयुक्त साधन अध्यापकों की देख-रेख में विद्यालयों में ही उपलब्ध रहें। बच्चों को समय का दुरुपयोग न करने दिया जावे। इसके लिए विद्यालयों में नौकरों की संख्या घटाकर स्वयं श्रम-

(शेष पृष्ठ १९ पर)

विदेश-वार्ता

ब्रह्म देश में हिन्दुओं की दशा

[ले०—एक बर्मी बन्धु]

सारे और पर ब्रह्म देश में भारत मूलक हिन्दुओं के ६ विभाग किये जा सकते हैं—

१—सर्व प्रथम वे लोग हैं जो यहां सिर्फ बस कर रह गये हैं। ये लोग देर सबेर भारत ही वापस जाने वाले हैं। जो लोग सरकारी नौकरी पर थे या व्यापार करते थे उन्हें भारत तथा बर्मी सरकारों ने भारत जाने की सुविधा दे दी है। भारत में उनके पुनर्वास में कुछ कठिनाइयां हैं। जिन लोगों के सम्बन्धी वहां थे अथवा जिनका सम्पर्क भारत से बना हुआ था उन्हें तो कहीं न कहीं पैर जमाने के लिए स्थान मिल ही गया, परन्तु अनेक ऐसे हैं जिनके सम्बन्धी नहीं हैं, अथवा कम नहीं पाये हैं। ये लोग मुख्यत मध्यम वर्ग के थे, तथा ब्रह्म देश में छोटे व्यापारी, दलाल या प्राइवेट नौकरियों पर थे। इन लोगों की दशा भारत जाकर बहुत संतोषजनक नहीं रही है ऐसा उनसे प्राप्त पत्रों द्वारा ज्ञात होता है। इन्हें रहने को घर नहीं मिलते, नौकरियां नहीं मिलतीं, व्यापार करने के साधन नहीं, उनके बच्चों को स्कूल तथा कालिजों में प्रवेश पाने के लिए भटकने जाने पर भी सफलता नहीं मिलती। आदि फिर भी उनका भारत लौट जाने के सिवाय और कोई चारा नहीं, क्योंकि बर्मा में उनका अथवा उनके बच्चों का कोई भविष्य नहीं है।

२—दूसरा वर्ग उनका है, जिन्होंने यहां की नागरिकता ले रक्खी है। राजनैतिक अथवा आर्थिक दृष्टि से इनका साम्य यहां के मूल निवासियों के साथ है। उन्हें वे सब सुविधाएं प्राप्त हैं जो दूसरों को, अर्थात् उनकी सन्तान उच्च शिक्षा की अधिकारी है, उन्हें नौकरियां मिल सकती हैं सिद्धान्त रूप में उनके प्रति कोई भेदभाव नहीं बरता जाता, व्यावहारिक रूप में भले ही हो। इनकी सन्तान बर्मी भाषा लिख पढ़ तथा बोल सकती है, पर अपनी मातृभाषा तथा संस्कृति तथा हिन्दू धर्म का ज्ञान बहुतरों को शून्य समान ही है। इस समुदाय में जो लोग साधन सम्पन्न थे, या जो सरकारी नौकरियों पर थे उन्हें विशेष कठिनाई नई परिस्थितियों के कारण नहीं हुई। परन्तु जो लोग व्यापारी थे, छोटी या बड़ी दुकानदारी करते थे, उन्हें आजीविका प्राप्ति में कठिनाई हो रही है। देश की समाजवादी सरकार ने सारा व्यापार, सूत, तेल, मिल से लेकर कपड़ा, लकड़ी, चावल, बैंक तक का राष्ट्रीयकरण कर दिया है। व्यापारी वर्ग प्राय सभी से बेकार बना है, उन्हें दुकानदारी भी कुछ नहीं मिल रहा है। इनमें से जो भारत जाना चाहते हैं उन्हें अनुमति प्राप्त हो जाती है। अनेक भारत अपने भाग्य आजमाने जा रहे हैं। इन्हें भी कठिनाइयां दीखती तो हैं, पर वे उनके लिए कटिबद्ध होकर ही गये हैं। इनके बच्चों को वहां के स्कूलों में हिन्दी होने के कारण कठिनाई होती है अवश्य, पर जो एकबार कहीं प्रविष्ट हो गया वह कुछ समय में ही प्रवीण भी हो जाता है। हिन्दी भाषा या देवनागरी लिपि की यह सुगमता उनके लिये एक उत्साहवर्धक विषय है।

३—तीसरा वर्ग वह है, जिनकी माता ब्रह्म देश की मूल निवासिनी तथा पिता भारत मूलक थे। इस प्रकार के मिश्रित रक्त वालों की संख्या भी सहस्त्रों में है। इनमें से बहुत से उच्च सरकारी पदों पर डाक्टर, इन्जीनियर, अध्यापक, प्रोफसर, व्यापारी हैं। बहुत से मध्यम वर्ग के लोग हैं और हजारों ही छोटे-मोटे काम करने वाले मजदूर, किसान आदि भी हैं। राजनैतिक अथवा धार्मिक या सामाजिक रूप में इन्हें संगठित करने का गम्भीर प्रयास कभी नहीं हुआ। "जाति वाले" हिन्दुओं ने इन लोगों को सदा ही हेय दृष्टि से देखा, फलस्वरूप शनै शनै ये लोग भारतीयों से अलग होते गये। इनका रहन-सहन, खान पान, बच्चों के विवाह आदि बर्मी बौद्धों में ही हुए और ये लोग उनमें ही विलीन हो गये या हो रहे हैं। इनमें से कुछ को अपने भारतीय खून का मद है। पर तथापि कुछ ऐसे भी हैं जो भारतीयों के कमीनेपन के कारण उन्हें अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते हैं। दूसरी ओर चीनियों ने मुस्लिम और ईसाइयों ने इस प्रकार की मिश्रित रक्त की सन्तान को अपनाया। मुस्लिमों ने इसे प्रोत्साहन भी दिया तथा बर्मी मुस्लिम नामक एक सशक्त 'अल्प संख्यक वर्ग' भी बन गया है। यह समुदाय अपने धार्मिक कट्टरपन के लिए प्रख्यात भी है। इसी प्रकार सिक्खियों ने भी अलग अलग बनाये हैं। हां सिक्ख भाइयों ने अवश्यमेव ऐसे लोगों को अपने में मिलाया, फलत ऐसी सन्तान सिक्खों में खप गई। शेष हिन्दुओं में से कुछ पंजाबी भाइयों ने आर्यसमाज के प्रभाव के कारण अपनी इस प्रकार की सन्तान को हिन्दू बनाया तथा बीसियों परिवार इस प्रकार मूल स्रोत से मिल गये। फिर भी यह कटु सत्य है कि हिन्दू मिश्रित रक्त की अधिकांश सन्तान हिन्दू नहीं रही।

४—चौथा विभाग उन लोगों का है जो व्यवसाय से कृषक हैं। इनकी तीसरी या चौथी पीढ़ी यहां बसते हो गई है। ये लोग हजारों की संख्या में कई जिलों में छोटी छोटी बस्तियां बना कर बसे हुए हैं। खेती बारी करना ही इनका पेशा है। दक्षिण भारत के तमिल प्रदेश के हिन्दू बहुसंख्या में मोल्मीन, पगो, तथा डल्टा के अन्य जिलों में बसे हुए हैं। हिन्दू संस्कृति के अनुसार ही रहते हैं। आपस में ही विवाह आदि करते हैं। बहुत थोड़े लोगों ने बर्मी स्त्रियों से विवाह किये हैं। कुछ अपनी मातृभाषा तमिल बोलते हैं, और बहुतों की घर की बोली बर्मी हो गई है। ये लोग अशिक्षित हैं, धार्मिक पूजा कर्म के लिए कुछ पंडितों पर निर्भर हैं। पर्व त्योहार आदि भी अपने ढंग से मनाते हैं। छोटे छोटे मंदिर अवश्य हैं पर उनका कोई संगठन नहीं है। न कोई नेता है न धार्मिक ज्ञान ही है।

५—इसी प्रकार के हिन्दुओं का दूसरा क्षेत्र जियावडी है और चौतगा प्रान्ट है। यहाँ बिहार के छपरा, चम्पारन आदि जिलों के लोग बसे हैं। इन दोनों स्थानों को अंग्रेजी सरकार ने दो जमींदारों को दे दिया था, (शायद ५७ के "सिपाही विद्रोह" में अंग्रेजों की सहायता करने के पुरस्कार स्वरूप) इन जिमींदारों ने भारत के इन जिलों के हजारों परिवार यहाँ लाकर बसाये। जहां घने जंगल थे, शेर, बाघ, जंगली हाथी आदियों का राज्य था, इन लोगों ने यहां हरे-भरे खेत खड़े कर दिये। धान और गन्ने की खेती होने लगी। एक चीनी की मिल लग गई। अब तो जिमींदारी का अन्त हो गया है और सारा ग्रान्ट बर्मा सरकार के आधीन है। अब यह भूमि किसानों की हो गई है। इनमें तो कुछ ने विदेशी नागरिकता ली, बहुतों ने बर्मी नागरिकता ली, बहुतों ने बर्मी नागरिकता प्राप्त की है, तथा कुछ एक के आवेदन पत्र इसके लिए विचाराधीन ही हैं। इन सब कृषकों को वे समस्त सुविधायें प्राप्त हैं जो कि एक बर्मी किसान को मिलती है। यथा, सरकार से ऋण मिलना, बीज मिलना, खाद मिलनी तथा पैदावार का सरकारी मूल्य पर खरीदा जाना आदि। इस क्षेत्र की जनसंख्या ४५००० तक होगी। १९६० में राष्ट्रीयकरण के पश्चात कुछ लोग भारत जाने के लिए व्यग्र हो उठे थे, कुछ गये भी। परन्तु बाद में दोनों देशों की सरकारों ने इन कृषकों का हित बर्मा में रह जाने में ही देखा अब किसी भी कृषक को भारत जाने की सुविधा नहीं मिलती प्राप्त होता। जियावाडी, चौतगा क्षेत्र के किसान वर्षों तक अविद्या के गर्त में पड़े रहे, शोषित होते रहे रूढ़ियों के शिकार बने रहे। आज भी उनके ग्राम भारत के सबसे पिछड़े हुये ग्राम से भी पीछे ही हैं। संतोष है कि पिछले दशक में इनमें कुछ युवक शिक्षा प्राप्त कर आगे बढ़े हैं कुछ डाक्टर, इंजिनियर अध्यापक कालेजों में लेक्चरर भी हो गये हैं। आर्यसमाज का भी प्रचार गत ५ ६ वर्षों से बढ़ रहा है। इन सब नवयुवकों में उत्साह है भावना है, अपने साथियों को ऊपर उठाने की उत्कट आकांक्षा है। युद्ध के पूर्व तथा १९६ तक उन्नति के अच्छे अवसर थे, क्योंकि स्वर्गीय श्री प० हरिचरन शर्मा के प्रयत्नों से इस सारे क्षेत्र में ६०, ६५ प्राथमिक पाठशालाएं खुल गई थीं। इनमें हिन्दी, अंग्रेजी और बर्मी भाषा की पढ़ाई होती थी तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार होता था। एक अच्छा हाई स्कूल भी बन गया था जिसका अढ़ाई लाख का अपना भवन था तथा १३०० विद्यार्थी विद्या अध्ययन करते थे, परन्तु गत अप्रैल मास से इन समस्त पाठशालाओं का राष्ट्रीयकरण हो गया और अब केवल सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार ही शिक्षा होती है, जिसमें हिन्दी भाषा को कोई स्थान नहीं है। इससे इन लोगों में अपने धर्म और संस्कृति का बहुत बड़ा प्रचार साधन बन्द हो गया है।

६—तीसरा समुदाय नेपालियों का है। ये लोग उत्तरी बर्मा में काछन स्टट,

तथा उत्तरी और दक्षिणी शान स्टेट मे बसे हुए हैं। इनकी कुल सख्या ६०,००० तक होगी। इनकी भी तीसरी पीढ़ी चल रही है। ब्रिटिश सरकार के साथ जो 'गोरखा" पल्टन आई थी उनमे से कुछ सिपाही यहीं रह गये, अपने परिवार यहीं बुला लिये तथा अपने बन्धु बान्धवो को भी आमन्त्रित कर लिया। लगभग सब के सब छोटे छोटे किसान ही हैं तथा गो पालन आदि भी करते हैं। इनमे शिक्षा का अभाव है, पुरानी रूढ़ियो मे फसे हैं, अपनी भाषा भी सब नही पढे हैं, स्वभाव के भीरु हैं, छोटी छोटी बस्तियों मे दूर दूर तक बसे हैं कोई-कोई बस्ती तो बड़े शहर से ४०, ५० मील दूर है तथा यातायात के साधन भी नहीं हैं, कच्ची सड़कें ही हैं सरकार से इन्हें भी सहूलियतें मिली हैं। अनेक बर्मी नागरिक हैं, कुछ भारतीय हैं, कुछ नेपाली नागरिक हैं, थोड़ी सी सख्या में कुछ भारत भी चले गये हैं, पर अधिकाश मे ये यहीं टिक रहने वालो मे से हैं। इनमे भी पिछले वर्षों मे कुछ पढ़े लिखे व्यक्ति हुए हैं। इनमे कुछ वकील, डाक्टर, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, अध्यापक, क्लर्क आदि बने हैं। इन युवको में अवश्य उत्साह है तथा उन्नत होने की भावना है। वैसे कुछ साधु तथा सस्कृतज्ञ पडित भी इनमे हैं, पर वे अधिकतर अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगे हैं। इन लोगों में विशेष सगठन नहीं है तथा इनकी अशिक्षा आदि का लाभ उठाकर ईसाई लोग प्रचार कर रहे हैं।

गत महायुद्ध के पूर्व ब्रह्म देश में हिन्दुओं की विशेष समस्याएँ नहीं थीं। भारत से आवागमन मे किसी प्रकार के बन्धन नहीं थे। इस कारण धार्मिक विचारों तथा शिक्षा का आदान प्रदान तथा विवाह आदि भी सरलता से सपन्न हो जाते थे। यहां के बच्चे भी भारत की किसी भी शिक्षा सस्था मे शिक्षा प्राप्ति के लिए जा सकते थे। ब्रह्म देश मे भी लगभग सभी वर्ग के लोगों की अपनी अपनी शिक्षण सस्थाएं थीं, सरकारी सहायता प्राप्त एग्लोवर्नाकुलर प्राइमरी, मिडिल तथा हाई स्कूल थे। डी०ए० वी० स्कूल, खालसा स्कूल, गुजराती स्कूल मारवाड़ी स्कूल, रंगून स्कूल, बाल एकेडमी, सरदा सदन, आदि सस्थाओं मे हिन्दुओं के विभिन्न वर्गों के बच्चे शिक्षा प्राप्त करते थे। कई स्कूलों मे धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था थी। आर्यसमाजों, कुमार सभाओं, मन्दिरों, ठाकुर बाड़ियों की भरमार थी। पडित, पुजारी, उपदेशक, महोपदेशक, कथावाचक, साधू सन्यासी, महात्मागण समय समय पर आकर धार्मिक पिपासा शान्त करते थे तथा समाज प्रवर्तन करते थे। राजनैतिक दृष्टिकोण से भी कोई समस्या नही थी, क्योंकि सभी परतन्त्र थे। भारत मे प्रकाशित होने वाले सभी समाचार पत्र सरलता से मगवाये जा सकते थे। धार्मिक साहित्य भी बेरोकटोक आता था केवल यदि कमी थी तो हिन्दुओ मे अपने मे ही थी कि उन्होने निश्चित योजना बना कर अपने इस देश के भविष्य की समस्याओ पर विचार नही किया। वे भारत पर ही निर्भर रहे। युद्धोपरान्त स्वतन्त्रता के बाद धीरे धीरे इन सुविधाओ पर रोक लगने लगी। धर्मोपदेशको का आना जाना कठिनतर होता गया, और क्रान्तिकारी सरकार के समय से तो नितान्त ही रुक गया। धार्मिक साहित्य ही नहीं, अन्य सारा साहित्य रोक दिया गया।

सरकार द्वारा गठित एक सस्थान साहित्य के आयात की एकमात्र अधिकारी है, वह अपने ही नियम से कार्य करती है। इस कारण पाठ्य पुस्तकें धार्मिक पुस्तक, समाचार पत्र सब पर प्रतिबन्ध है, इस रूप मे कि इनके लिए धन नहीं भेजा जा सकता। विदेशी मुद्रा के बचाने के लिए ही ऐसा किया गया है ऐसा बताया जाता है। सरकार की नीति धर्म प्रचार के लिए निरपेक्ष है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को अपने अपने धार्मिक विश्वास तथा आस्थाओ के पालन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। अपने विचारों के प्रसार और प्रचार मे भी रुकावट नहीं है। वास्तव मे सरकार की ओर से बौद्धों, मुस्लिमो ईसाइयों को तथा हिन्दुओ को भी एक निश्चित धन राशि धर्म प्रचार के लिए प्राप्त होती है। परन्तु कोई विदेशी व्यक्ति यह धर्म प्रचार का कार्य नहीं कर सकता। देश के नागरिक ही प्रचारक हो। हिन्दुओ को यह भारी पड़ा। उन्होंने अपनी अदूरदर्शिता के कारण नागरिकता प्राप्त लोगो को धर्म प्रचारक बनने की प्रेरणा नहीं दी। स्थानीय लोगो मे भी विशेष प्रचार नहीं किया। इससे व्यावहारिक रूप मे कठिनाई सामने आ रही है। विवाह शादी कराने, पूजा पाठ कराने तथा मन्दिरो के लिए पुजारियो का अभाव हो गया है सैकड़ो मन्दिर, गुरुद्वारे बिना पुजारी, पुरोहित अथवा ग्रन्थी के हो गये। यही बात साहित्य के बारे में भी है। बाहर से साहित्य आ नहीं पा रहा है। ब्रह्म देश मे लेखन, लिखना या मुद्रण करना सम्भव नहीं। इस कोटि के विद्वान लेखक नहीं, प्रेस नहीं, ले देकर एक हिन्दी प्रेस रह गया है। उसका टाइप ठीक नहीं, उसका सचालन सतोषप्रद नहीं। इसके ऊपर सरकारी अनुमति भी प्रकाशन के लिए अनिवार्य है, जो सरलता से नहीं मिलती। फिर भी हिन्दी भाषा की सरल पाठ्य पुस्तको के लिखने तथा मुद्रण की ओर ब्रह्म हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रयत्न जारी हैं। वर्णमाला की पुस्तिका छप चुकी है। माला की अन्य पुस्तकें सरकारी अनुमति की प्रतीक्षा मे है। भाषा की शिक्षा भी क्योंकि स्कूल भवनो मे नहीं हो सकती, इसलिए मन्दिरो, ठाकुर बाड़ियो अथवा घरो मे थोड़े थोड़े बच्चो मे पढाई की जा रही है। इसमे भी कठिनाइयाँ है, क्योकि अब अध्यापक नहीं रहे। कहीं कहीं यदि अध्यापक हैं भी तो स्थानीय लोगों मे उसके भत्ता या पारिश्रमिक देने भर को धन नहीं है। ऐसी दशा मे यदि यह कह जाय कि वर्तमान समय मे ब्रह्म देश मे हिन्दू धर्म तथा सस्कृति के जीवन-मरण का प्रश्न है तो अत्योक्ति नहीं।

जो बर्मी भाषी अपने बच्चे हैं उनकी समस्या तो और भी गम्भीर है। इनके लिए बर्मी भाषा मे हिन्दू धर्म सम्बन्धी कोई साहित्य नही है। 'सत्यार्थप्रकाश का बर्मी अनुवाद ब्रह्म देश के आर्यों ने कर सन १९५९ मे प्रकाशित करवा लिया था। प्रथम दस समुल्लासो का सुन्दर छपा अनुवाद है। छापने की प्रेरणा का श्रेय श्री पूज्य प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय को ही है। गीता का अनुवाद भी सेन्ट्रल हिन्दू बोर्ड की ओर से प्रकाशित हो गया है। महाभारत की कहानी सक्षिप्त रूप मे एक सज्जन के दान से प्रकाशित हुई। वाल्मीकि रामायण का अनुवाद बोर्ड द्वारा पूर्ण हो चुका है, मुद्रण शेष है। कुछ एक छोटे ट्रैक्ट भी छपे हैं। इनको छोड़कर और कोई साहित्य बर्मी मे नहीं है। अब कुछ व्यक्तियो द्वारा इस दिशा मे निश्चित कदम उठाने की योजना बन रही है। परन्तु उनके सम्मुख आर्थिक कठिनाई होगी। अनुवादको की भी कमी है। बहुत कम ऐसे व्यक्ति हैं जिनका बर्मी और हिन्दी भाषा पर समान अधिकार हो। कोई ऐसा नेता भी नही है जिसे इन समस्याओ के समाधान की आवश्यकता भी अनुभव हो। अनेक मन्दिरो के पास अतुल धन राशि है परन्तु उनके ट्रस्टियो को इस ओर व्यय करना उचित नहीं लगता। यह हिन्दुओ का दुर्भाग्य रहा है कि वे अपने भविष्य मे सदा ही उदासीन रहे हैं।

अनुभवी कर्मठ कार्यकर्ताओ का भी अभाव है। नागरिकता प्राप्त लोग ही कार्य कर सकते है। इनमे हिन्दी सस्कृत ज्ञान वाले लोग है ही नहीं, न ऐसे व्यक्तियो को तैयार ही किया गया। आर्य समाज ने गत साठ-सत्तर वर्षों के काल मे केवल भारत मूलक भाइयो मे ही कार्य किया। सच पूछा जाय तो केवल पजाबी भाइयो तक ही आर्यसमाज का कार्य क्षेत्र सीमित रह गया। आर्यसमाज की लाखो की सम्पत्ति थी तथा ऐसे विशाल सुन्दर भवन बनाये जिन पर किसी को भी गर्व हो सकता है। पर अब उन्हें सभालने वाले ही नहीं रहे। रामकृष्ण मिशन का रगून मे बहुत बड़ा पुस्तकालय तथा बहुत अच्छा सेवाश्रम अस्पताल था, इन दोनों ही का राष्ट्रियकरण हो गया और उनके प्रबन्धक सन्यासी भी भारत चले गये, क्योंकि वे विदेशी नागरिक थे। उनके चले आने से जो कुछ धार्मिक और सस्कृतिक जागृति उनके कारण होती थी वह भी समाप्त हो गई सिक्ख भाइयों में कुछ जागृति है, वे अपनी थोड़ी सी सख्या को सम्भाले हुए हैं। परन्तु उनके सम्मुख भी साहित्य प्राप्ति तथा उसके प्रचार का प्रश्न है। हिन्दू सेन्ट्रल बोर्ड, सरकार से मान्यता प्राप्त एक सगठन है। हिन्दू मात्र के धार्मिक हितों की रक्षा करना उसका उद्देश्य है। सरकार की ओर से वार्षिक अनुदान भी इसे प्राप्त होता है। यही एक सगठन है जिससे कुछ आशा की जा सकती है। परन्तु अभी इसके कार्य में कुछ शिथिलता ही है। इसके अधिकारी व्यापारी लोग ही हैं। व्यापार के राष्ट्रियकरण होने के कारण उनकी निजी समस्यायें अनेकों हैं, इससे उन्हें अवकाश नहीं मिलता। कोई एक सर्वमान्य नेता नहीं जिसे हिन्दू हित की टीस हो। कुछ नवयुवक हैं जो आगे बढ़कर कार्य करना चाहते हैं, पर उन्हें उचित मार्ग दर्शन तथा उत्साहित करने वाला कोई नहीं।

मुसलमानों तथा ईसाइयों की यह दशा नहीं है। उन्होंने आरम्भ से ही देश के मूल निवासियों मे प्रचार कार्य किया तथा उन्हें भी प्रचारक आदि बनाया, भले ही आरम्भ में अथवा कोई और प्रकार का लोभ दिया हो। ईसाई पादरियों ने स्वय भी बहुत त्याग तप करके पहाड़ी, जगली जातियों मे प्रचार किया उन्होने बर्मी भाषा स्वय सीखी तथा उस पर पूर्णाधिकार प्राप्त किया। यह सर्व ज्ञात तथ्य है कि बर्मी भाषा का सबसे प्रथम और अति प्रामाणिक शब्द कोष एक अमरीकन पादरी द्वारा निर्मित है। उन्होने कठिन लोगों को उनकी भाषा लिखने की लिपि दी। इसी प्रकार मुस्लिमों का कार्य भी सगठित है। अनेकों मदरसे हैं जिनमें मौलवी तथा प्रचारक तैयार हैं। उनकी शिक्षा का माध्यम बर्मी भाषा है। इसी भांति ईसाइयो ने लाखों करेन और कचिन लोगों को धर्म की दीक्षा दी है। अब विदेशी पाद-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सत्य और शास्त्र

[ले०—श्री बिहारीलाल जी शास्त्री, बरेली]

आज हर (मत) कहता है कि हम सत्य को स्वीकार करेंगे वह सत्य चाहे किसी भी धर्म ग्रन्थ में हो। और असत्य का तिरस्कार करेंगे वह चाहे किसी भी धर्म पुस्तक में हो।

बात सुनने में बहुत अच्छी लगती है किन्तु व्यवहार में ऐसा दावा करने वाले लोग अपनी बुद्धि विपरीत, असमत बातों पर भी हठ करते रहते हैं और अन्यों के कुव्यकादि के निष्फल, तर्क पूर्ण वचनों को भी नहीं मानते। 'अहम्' का आवरण उन्हें सत्य का दर्शन करने नहीं देता।

सत्य क्या है? और सत्य में असत्य कहाँ मिश्रित है? यह विश्लेषण करके सत्य प्राप्त कर लेना साधारण बुद्धि के लोगों के तो वश की बात है नहीं।

निर्मल प्रज्ञा प्राप्त योगीश्वर ऋषि साक्षात् कृतधर्मा व्यक्ति ही चरम सत्य को प्राप्त कर सकते हैं अतः उनके अनुभूत सत्य जो लिखे गये हैं वे तो शास्त्र हैं। जो तमोगुण रजोगुण से रहित, विज्ञान से, सृष्टिक्रम से अविरुद्ध, देश काल जाति के पक्षपात और परिस्थितियों के प्रभावों से रहित, सर्वजन हितकारक, सार्वभौम, सार्वकालिक उपदेश हैं उन्हीं का संग्रह है शास्त्रों में। जो ऐसे नहीं हैं वे अपशास्त्र हैं, अमान्य हैं।

भक्त जी स्वयं मानते हैं—

"जिससे सत्य न मिल सके,
जो जगहित प्रतिकूल।
ऐसे शास्त्राचार को,
शास्त्र समझना भूल॥"

किन्तु जो इससे उलटा हो अर्थात् सत्य का प्रतिपादक हो, प्राणिमात्र का हितकारक हो उस शास्त्र को तो मानना ही पड़ेगा। जिसकी घोषणा है—

"सत्येनोत्तभिता भूमिः सत्येनोत्तभिता द्यौः"

"सत्यमेव जयते नानृतम्"

"मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।"

"सर्वभूतान्यपीडयन्।"

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।"

पर भक्त जी ऐसे शास्त्रों को और पराकालो की वस्तुओं को एक कोटि में रख रहे हैं। वेदों के विषय में फिर वही बातें दुहराई हैं जिनका सप्रमाण हम खंडन कर चुके हैं। वेदादि शास्त्रों में क्या गलती है? विज्ञान और बुद्धि विरुद्ध क्या है? इसका कोई उदाहरण भक्त जी नहीं दे सके। मांसाहार में दिये प्रमाणों का हमने सयुक्तिक काट कर दिया है। आचार्य भास्कर की ज्योतिष सम्बन्धी योग्यता को तो भक्त जी भी मान चुके हैं। आचार्य भास्कर हों या कोई भी विद्वान हो उनको प्रेरणा जिस आदिम ज्ञान से मिली वह बीज ज्ञान वेद है भक्त जी!

१—शास्त्र के आधार पर विचारों का समन्वय होता है।

२—शास्त्र को केन्द्र बिन्दु मानकर राष्ट्र का संघ न चलता है।

३—शास्त्रों के सहारे से राजनीति और संस्कृति में स्थायित्व आता है। समाज पुष्ट बनता है।

४—शास्त्राधार पर विश्वास दृढ़ता होती है।

५—शास्त्र से प्रेरणा मिलती है।

इसलिये श्रीकृष्ण भगवान् ने गीता में कहा है—

'तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ, दृष्ट्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्मकर्तुमिहार्हसि।"

अर्थ—हे अर्जुन क्योंकि मनुष्य अल्पज्ञ है इस कारण से शास्त्र तेरे लिये प्रमाण है शास्त्रोक्त विधान को देखकर कर्तव्याकर्तव्य का निश्चय करो और शास्त्रोक्त कार्य करो।

परन्तु भक्त जी सब शास्त्रों को श्मशान भेजने पर तुले हुए हैं।

"मृतक (है) तो भेजिये आदर सहित मसान" (भक्तोक्ति)

क्यों भक्त जी क्या पुरातन शास्त्र सब मृतक हैं? यदि आयुर्वेद के सब शास्त्रों को फूक दिया जाये तो धातुओं की भस्में, तथा अनेक रसादि औषध किस विधान से बनाये जायेंगे? रोगों के लक्षण और निदान कौन बतायेगा? यदि आजकल की नयी डाक्टरी खोजें, तो उनका भी तो आधार वे ही शास्त्र हैं। प्रकार भेद से आधार तो नहीं बदलता।

भक्त जी के मत में संस्कृत भाषा ऐसी हाली हैं 'उसमें से मनचाहा अर्थ निकाला जा सकता है' 'उसका भावार्थ बहुत ही लूला लंगड़ा है।"

भक्त जी की इस मतान्धता पर दया आती है। जिस संस्कृत साहित्य की सराहना संसार भर के विद्वान् कर रहे हैं जिस भाषा का सुगठित व्याकरण अष्टाध्यायी संसार में अद्वितीय है। जिस संस्कृत भाषा में हृदयों को विकसित और आप्यायित करने वाले सकड़ों काव्य और नाटक हैं। जिस भाषा में वेदान्त सांख्यादि वैदिक दर्शन और आप्त परीक्षा, आप्त मीमांसादि जैन दर्शन और असंग सुबन्धु आदि बौद्ध विद्वानों के अनेकों दार्शनिक ग्रन्थ बुद्धिजीवियों को मुग्ध कर देते हैं। जिसमें कथा पुराण इतिहास नीति सब ही विषयों पर प्रचुर साहित्य विद्यमान है। ज्योतिष गणित और आयुर्वेद के जिसमें अनेकों ग्रन्थ हैं उस भाषा की निन्दा करना भगत जी जैसों को ही शोभा देता है कूप मण्डूकता और मतान्धता की हद हो गयी।

वेदों की निन्दा में आप चाहे जितना लिखते रहे परन्तु बिना प्रमाण प्रस्तुत आपका सब लिखना धूल में मिल रहा है। अभी अभी अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्राध्यापक श्री प० हबीबुर्रहमान शास्त्री जी ने ईशोपनिषद का स्वरचित भाष्य प्रकाशित किया है जो बुद्धिजीवियों के लिये एक अनूप वस्तु है।

जब तक संसार में एक भी ज्ञानाभिलाषी विद्यमान है तब तक आप जैसे वेद निन्दक मूर्ख मण्डली में ही ढोल बजाते रहेंगे।

आप सब सम्प्रदायों और मतों का आदर करने का दावा करते हुए भी ऋषि दयानन्द, वेद और आर्यसमाज के विरोध में जमीन आसमान एक क्यों कर रहे हैं। कारण स्पष्ट है कि वेदों में आपके अभीष्ट पाखंड को स्थान नहीं। मूर्तिपूजा और मन कल्पित "सत्यार" जैसी क्रियाओं का वेदों में समर्थन नहीं। यदि वेदों से मन चाहे अर्थ निकाले जा सकते हैं तो आप अपने पाखंड का समर्थन तो किसी वेद मन्त्र से करके दिखाइये। यदि ऐसा नहीं कर सकते तो झूठे दावे छोड़िये।

स्वामी दयानन्द आपकी दृष्टि में इसीलिये संकीर्ण थे कि उन्होंने वेद को मान्यता दी। अपने को आगे न रखकर ऋषियों को आगे किया। अपना सम्प्रदाय न चलाकर पुरातन सनातन धर्म का प्रचार किया। ऋषि का यह स्वात्मत्याग उदारता है या संकीर्णता? भक्त जी क्यों संसार में भ्रम की धूल उड़ा रहे हो? स्वामी जी मूर्खों को अनार्य कहते थे या सब लोग कह रहे हैं? मूर्ख और अनाड़ी- अनारी पर्यायवाची है और अनार्य शब्द का अपभ्रंश है। जो देश दूसरे देशों को लूट खसोट वे दस्यु देश नहीं हैं तो क्या हैं? भक्त जी थोड़ा बोलो पर सप्रमाण बोलो।

परन्तु वास्तविक बात तो यह है कि ऋषि दयानन्द ने जिन अन्धविश्वासों का खंडन किया है उनमें आपका सत्यार" भी आता है। अन्य पाषंड मतों के साथ आपका मत भी उखड़ा जा रहा है। यही दुष्ट बुद्धि आप से ऋषि का विरोध करा रही है।

भक्त जी! संसार में मूर्तियों की क्या कमी है जो आप नये नये मूर्तिसेट मंगाकर प्रतिष्ठित करा रहे है। देश की जीवित मूर्तियां तो भूखों मरती हैं और लाखों की संख्या में ईसाई बनकर अराष्ट्रियता की ओर जा रही हैं और आप जड़ मूर्तियों के नये नये 'सत्यार" बना रहे हैं। शोक!

वस्तुतः सब मतों को साथ रखने का इरादा रखते हुए भी आर्यसमाज से इसलिए कुढ़ते हैं कि आर्यसमाज के तर्क सब मतों की मूर्खतापूर्ण मान्यताओं का खंडन करते हैं और उसका प्रभाव आपके पंथ पर भी पड़ता है। जड़ मूर्तियों से पाठ पढ़ना, अपनी कल्पित लीलाओं से मन को रिझाना, सत्यार और सत्य तेजो बतार जैसे ऊटपटांग स्वांगों से जनता का हित समझना महामूर्खता के खेल हैं। आपके इन खेलों से तो रामलीला कहीं अच्छी और शिक्षाप्रद है। जैनों का पंचकल्याणक भी कुछ प्रयोजन रखता है।

"सब धर्मों के पैगम्बर हैं,
सत्येश्वर के भक्त।"

भक्त जी क्या आप अपनी इस कल्पना को कुरान शरीफ और बायबिल से सिद्ध कर सकते हैं?

हजरत मूसा की व्यवस्था के अनुसार जरा जरा से पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए कबूतर और पंडुक का जोड़ा मारकर यहोवा की भेंट किया जायगा। इस्लाम के अनुसार भी पशुओं की कुर्बानी अनिवार्य है। ईसाइयत के अनुसार हजरत यीसू का बलिदान क्रूस पर हुआ। यदि ऐसा नहीं हुआ तो मनुष्यों के पाप का प्रायश्चित्त नहीं हो सकता और कुरान शरीफ के अनुसार हजरत मसीह 'मक़्तूल हों' न व मासलबूहो' न

जलाल हुए व सलीब पर चढ़ाये गये। जैन धर्म के अनुसार किसी भी जीव को मारना पाप है, सिक्ख और कबीर पंथी तथा मुसलमान मूर्तिपूजा के विरोधी हैं। इस्लाम के अनुसार तो जानवारों के खिलौने तक बनाना भी कुफ्र है इस सब भिन्न भिन्न मान्यताओं की चटनी कैसे बनायेगा आपका सत्य समाज? मानवता की रक्षा के लिए इन सब मतों को समाप्त कर एक मानव धर्म में ही सबको दीक्षित किया जाय तो कल्याण हो सकता है और वह धर्म वही है जो सब धर्मों का मूल स्रोत है—सनातन वैदिक धर्म। ऋषि दयानन्द का यही अभिप्राय था सत्यमत मण्डन का।

'जो जो बात सबके सामने माननीय है उनको मानना अर्थात् जैसे सत्य बोलना सबके सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हूं और जो मत मतान्तर के विरुद्ध झगड़े हैं उनको मैं प्रसन्न नहीं करता क्योंकि इन्हीं मत वालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसाकर परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट सर्व सत्य का प्रचार कर सबको ऐक्य मत में करा द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुख लाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।'

(सत्यार्थप्रकाश)

ऋषि के उक्त अभिप्राय को आपने भी अपनी तुकबन्दी में स्वीकार किया है—

'मन्दिर, मस्जिद चर्च, जिनालय
सब में भारी द्वन्द्व।
मिटा रहे हैं ये जन-जन के
शान्ति प्रेम आनन्द।
सत्य प्रेरणा दे न सके ये
मिलता यहां न ज्ञान।
इनसे केवल आज मिल रहे
दम्भ द्वेष अभिमान
बढ़ा रहे हैं जन को जन से
सारे धर्म स्थान
जनता के मन में न रहा है
सत्य लोक का मान

यहां भक्त जी और स्वामी दयानन्द की एक आवाज है। दोनों सत्य की ओर जनता को लाने के इच्छुक दीखते हैं। पर सत्य क्या है यही मतभेद है। भक्त जी अपनी मनगढ़न्त को सत्य बता रहे हैं ऐसा न करता उनकी दूकान चट्ट हो जाये और स्वामी जी एक सनातन वैदिक धर्म के अनुसार सत्य की ओर जनता को प्रेरित करते हैं। भक्त जी सब मतों का रद्द कर अपना मत स्थापित करते हैं जैसा कि सब मत वाले करते रहे हैं और ऋषि दयानन्द अपना मत सम्प्रदाय पंथ न चलाकर सब ज्ञान के उद्गम सब विकासों की जड़ की ओर जनता का ध्यान ले जाते हैं। भक्त जी पूर्व पुरुषों के वचनों को तिरस्कार्य बताते हैं:—

'बूढ़े जो लिखकर मरे
उनको शास्त्र न मान
हम बूढ़े होकर मरें
तो क्या हुए महान।

बस लगा दो आग सब पुरातन साहित्य में? क्यों भक्त जी बूढ़ों का लिखा सब ही व्यर्थ है तो उन बूढ़ों की मूर्तियों को क्यों स्थापित कर रहे हो? (देखो इसी अङ्क में भक्त जी का लेख) यह परस्पर विरोध कैसा? यह तो व्याघात दोष है या नहीं? मजे की दूकान दार इसी प्रकार टकराया करता है। क्या बूढ़ों का लिखा गया सब असत्य है? क्या आपका लिखा सब खरा है? हमारे दिये वेद मन्त्र की भाषा को भक्त जी समझे नहीं और श्री शङ्करराव जी के आगे अपनी गोल कर गये कुरान शरीफ के अर्थ अपनी कल्पना से उड़ा रहे हैं जो इस्लामी ऐतिहासिक परम्परा के विरुद्ध है।

श्री स्वामी जी के विषय में जो भक्त जी ने पृ० १८७ पर विष वमन किया है वह प्रेम भाव से ठुकराने योग्य है। श्री स्वामी जी ने वनों के विषय में जैसा आप कहते हैं कहां लिखा है? अन्य देशों को दस्यु देश कहां कहा है? सत्य भक्त कहलाकर झूठी बात लिखने में लज्जा नहीं आती? भक्त जी की बुद्धि देखिये कि पुराणोक्त ऐतिहासिक सामग्री की कल्पना बता रहे हैं! और ऋषियों ने भौतिकवाद को हानिकारक समझा तो रथ क्यों बनाया? यह पूछ रहे हैं? सुनिये—आपका प्रश्न ऐसा ही है कि महल छोड़ा है तो कुटी क्यों बनायी? महल छोड़कर कुटी तक सीमित रहना क्या भौतिकता का त्याग नहीं है? और ऋषि लोगों ने रथ को भी नहीं अपनाया सवारी मात्र का त्याग कर दिया। किसी वस्तु का न बनाना यह सिद्ध नहीं करता कि वे निर्माण कला में अक्षम थे। जब कि उनकी बुद्धिमानी के प्रमाण उनके उच्च विचार उपलब्ध हो रहे हैं। रथ निर्माण क्या मामूली बात है? क्या इस में बुद्धिमत्ता नहीं थी? उस समय और इस समय की कला में विज्ञान में प्रकार भेद रहना स्वाभाविक होने से तत्कालीन लोगों को मूर्ख नहीं माना जा सकता। पूर्व पुरुषों के रचित ग्रन्थों की निन्दा करते हो और उनकी आत्माओं का अपनी स्थापित मूर्तियों में आवाहन करते हो कहो ईश्वर कौन है? इञ्जील बिना पढ़े ईसा की मूर्ति से क्या प्रेरणा मिलेगी?

आप शास्त्रों को आदर देने वालों को अन्धा बता रहे हैं और नीतिकार आप जैसे शास्त्र हीनों को अन्धा कह रहा है।

सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः

सबकी आंख शास्त्र है जिसके पास शास्त्र नहीं वह अन्धा है। बात ठीक ही है। सोंठ के क्या गुण हैं? कौन किन गुण वाली है यह ज्ञान प्रत्येक मनुष्य को नहीं यह ज्ञान निघण्टु शास्त्र ही करायेगा। प्रत्येक व्यक्ति सत्यान्वेषण की क्षमता नहीं रखता उसे दूसरों की खोज से ही लाभ उठाना होगा। आदिम काल की खोज से लेकर वर्तमान काल तक की खोज से लाभ लेना होगा। वेद बीज ज्ञान है। प्रभु प्रदत्त ज्ञान के संकेत हैं। उन बीजों का विकास आज का ज्ञान विज्ञान है और आगे भी सब विकास सृष्टि नियमानुसार ही होगा।

बीज ज्ञान में फोटोग्राफी ढूंढना मूर्खता की पराकाष्ठा है। हां चित्र कला बहुत पुरानी है और मनोभावों तक से चित्र कल्पित कर लेने की कथायें मिलती हैं। बाणासुर पुत्री उषा के स्वप्न के भावों को लेकर उसकी सखी ने अनिरुद्ध का चित्र बना डाला। यह कथा चाहे औपन्यासिक ही हो परन्तु चित्राङ्कन का विचार तो भारतीयों को उस समय भी था। परन्तु आपकी द्वेष वृत्ति को क्या किया जाये अपने अतीत के प्रति अश्रद्धा, अनास्था और अभाव ही आपके भाग्य में हैं। भक्त जी वेदवाणी पर जो आप यह आरोप लगा रहे हैं कि उसमें से चाहे जैसे अर्थ निकाल लिये जाते हैं आपका यह अज्ञान है। अर्थों के नियम हैं। प्रत्येक शब्द नियमों में बंधा है। देखिये अर्थ करने के नियम

संयोगोविप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता
अर्थः प्रकरणं लिङ्गं शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः
सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः
शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृति हेतवः।

इन्हीं नियमों में बंधा हुआ अर्थ चलेगा। वेदार्थ के भी नियम हैं—व्याकरण स्वर प्रकरण, निरुक्त, ब्राह्मण ग्रन्थ तथा आर्ष परम्परा।

मतवादियों ने इन नियमों की अवहेलना करके जो वेदार्थ किये उनको स्वामी जी ने अमान्य ठहराया और उक्त नियमों के अनुसार ही वेद भाष्य रचकर जनता को वेदार्थ की शैली बताली। इस लिए स्वामी जी पर आपके आक्षेप मिथ्या हैं और आपकी संकीर्णता तथा अज्ञानता के द्योतक हैं।

श्री भक्त जी! आपने आर्यसमाज को छेड़ कर बर्रों के छत्ते में हाथ डाल दिया है। सोते हुए केहरी को जगाया है वेद हमारा सर्वस्व है। परम आदरणीय है। वेद निन्दक नास्तिकों की विचारधारा का दमन करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। यदि आप वेद निन्दा का दुस्साहस न करते तो हमें आपकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता न थी। सैकड़ों मजहबी दूकानें खुली हुई हैं। हमें तो जाति को अराष्ट्रियता से बचाने का ही ध्यान है। परन्तु आप स्वयं टकरा रहे हैं तो याद रखिये—

पाषण्डि-मूकने यस्का दयामण्डस्य सैनिका भुविश्चक निमाबेन पूरयन्तोऽखिलो दश।

भक्त जी का कुतर्क—शास्त्रादि पुस्तक को चूहा कुतर जाय तो क्या शास्त्र को त्याग दोगे नहीं तो फिर मूर्ति पर चूहा चढ़ गया तो स्वामी जी ने मूर्ति पूजा क्यों त्यागी?

उत्तर—मूर्ति पूजक मूर्तियों को प्राणवान मानते हैं शास्त्र प्राणहीन अतः उदाहरण गलत है। प्राणवान् शिव का तिरस्कार चूहा करता रहा यह है मूर्ति पूजा से अनास्था का कारण। आप भी मूर्तियों में रामादि का आवाहन करते हैं परन्तु उन्हें जड़ भी बताते हैं। यह धोखे में डालना है। भला जड़ भक्तों की श्रद्धा से खिलवाड़ कर रहे हैं।

भक्त जी! यह 'सत्येश्वरी' देवी आपकी पूज्य कौन देवी है? सत्यार्थ किस भाषा का शब्द है?

टार्च से प्रकाश डालकर उसे आत्मिक प्रकाश समझ कर तालियां बजाना आदि बच्चों का सा खेल है या नहीं?

ऐसे बाल बुद्धि वेदों को अविकसित न कहें तो आश्चर्य ही क्या है।

वेद निन्दा पराभूता पाखण्डासक्त मानसा, वञ्चयन्ति जनान् लोभात् सत्य शास्त्र विवर्जिता।

विचार-विमर्श

वेदों की महत्ता

लेखक श्री प० विद्याभिक्षु आर्य एम० ए० एल० टी

भारतवर्ष के धार्मिक पुनरुत्थान के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती का कथन है "वेद ईश्वरीय ज्ञान है उन्हें विषय यह भी बता कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना तथा सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' तत्कालीन धर्म सुधारक ब्रह्मसमाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन तथा अन्य कतिपय महानुभावों ने जो महर्षि दयानन्द के सुधारवादी आन्दोलन तथा उनके कतिपय सिद्धान्तों से सहमत थे, उन्होंने महर्षि दयानन्द से यह प्रार्थना की कि वैदिक वे समाज के नियमों से इस विषय को निकाल द तो वे शेष नियमो को ग्रहण मान लगे परन्तु महर्षि दयानन्द ने उन्हें उत्तर दिया कि या तब मे सब नियमों मे यही एक ऐसा नियम है जिस पर भारतीय संस्कृति का ही नहीं अपितु मानव मात्र के समस्त ज्ञान विज्ञान का आधार है।

मनुष्य अल्पज्ञ है, उसकी शक्तियां सीमित है। उसका सामर्थ्य तथा उसकी उपलब्धियां अस्थायी हैं। बड़े-बड़े वैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनीति के पंडित, समाज सुधारक तथा उद्भट विद्वान् आज एक तथ्य को खोज कर उस से सम्बन्धित एक सिद्धान्त निकालते हैं कल दूसरा विद्वान् उसी का खण्डन करके एक नया सिद्धान्त संसार के समक्ष प्रस्तुत करता है। कारण स्पष्ट है। मनुष्य का ज्ञान तथा बुद्धि अपनी सीमा के अन्तर्गत ही रह सकता है। अंग्रेजी की प्रसिद्ध उक्ति "टाएर इज ह्यू मेन" मनुष्य का स्वभाव ही भूल करना है, यथार्थ ही है। अरबी भाषा के भी किसी नीतिकार ने कहा है "अल इन्सानु मुरक्कब मिनल्खता व निस्यानि"अर्थात् मनुष्य त्रुटियों तथा भूलों का समाज है। अस्तु यह आवश्यक है कि उसके ज्ञान तथा अनुभवों को 'दवी ज्ञान' के प्रकाश मे परख कर ठीक किया जाये। महर्षि दयानन्द के मतानुसार यह दवी ज्ञान जिसका प्रादुर्भाव आदिम ऋषियो के अन्तस्तल मे हुआ और जिसके आलोक मे अज्ञान के तिमिर मे भटकते हुए मानव ने स मार्ग का दर्शन किया, उसी का नाम 'वेद' है। स्वामी जी केवल वेद को ही स्वत प्रमाण और वेदानुकूल होने पर अन्य ग्रन्थो को परत प्रमाण मानते थ। उनके अनुसार सत्यासत्य के निर्णय मे वेद ही एक मात्र कसौटी हैं।

वेद के सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द का मत कहां तक मान्य हो सकता है इस विषय पर इस लेख मे तर्क वितर्क प्रस्तुत करना अभीष्ट नहीं है वह किसी अन्य लेख मे प्रस्तुत किया जा सकता है, यहां केवल कुछ सम्मतियां पाठकों की जानकारी के लिये दी जाती है। सर्व प्रथम सम्मति मनु भगवान की जो संसार में विधान के प्रथम निर्माता हैं दी जाती हैं—

चातुर्वर्ण्यं त्रयोलोकाश्चत्वारश्चाश्रमा पृथक्। भूत भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति ॥ सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च। सर्व लोकाधिपत्यं च वेद शास्त्र विदर्हति ॥ मनु०

अर्थात चारो वर्ण, तीन लोक, तथा चारों आश्रम, भूत, भविष्यत और वर्तमान सभी की वेद से भली प्रकार सिद्धि होती है। सेनापति के कर्तव्य राजनीति दण्डनीति तथा नतृत्व तक ही नहीं अपितु वेद शास्त्र द्वारा समस्त लोक के अधिपति के कर्तव्य (गुण) भी जाने जा सकते हैं।

समस्त ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, दर्शन शास्त्र, उपनिषद स्मृतियां तथा पुराणों से मनु भगवान की इस उक्ति की पुष्टि होती है।

'वेद' के सम्बन्ध मे दूसरी सम्मति शाहजादा दारा शिकोह की है जो सम्भवत वदिक वाङ्मय का प्रथम अनुवादक है जिसने ४९ उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद किया जो 'सिर्रे अकबर' के नाम से प्रख्यात है। वह अपनी पुस्तक की भूमिका मे लिखता है कि मुझे मार फत (ब्रह्मज्ञान) के रहस्यो के जानने का बहुत अधिक चाव था। इस सम्बन्ध मे मैंने अनेक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया और मैंने कतिपय ग्रन्थ भी इस विषय (तसव्वुफ) लिखे परन्तु मेरी जिज्ञासा दिन प्रतिदिन बढती ही गयी। विशेष रूप से जब मैंने 'कुरआन शरीफ' में यह देखा कि उसमे 'मारिफत' के सम्बन्ध में जो कुछ मिलता है वह बहुत ही संक्षिप्त तथा दुरूह है तो मैंने अन्य आसमानी किताबों तौरात जुबूर तथा इन्जीलादि को इस उद्देश्य से पढ़ा कि स्यात इन पुस्तकों से 'कुरआन' की उन का स्पष्टीकरण हो सके परन्तु मुझ इन पुस्तकों मे ब्रह्मज्ञान के सम्बन्ध कुछ भी सन्तोषजनक न मिल सका। मैं निरन्तर कुरआन की इन शिक्षाओ के स्रोत की खोज करता रहा इसके बाद वह कहता है। बाद अज तहकीक मालूम शुद कि दरमियाने ईं कौमे कदीम पेश अज कुतुबे समावी चहार कुतुब कि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्वन वेद बाशद बर अम्बियाए आवक कि बुजुर्गतर आदम सफी अल्लाह अलेहिस्सलाम अस्त बाजमीअ अहकाम नाज़िल शुद हर मुश्किले व हर सखुन बुलन्दे कि मीख्वास्त व तालिबे आदू व मी जुस्त व नमी याफ्त अजीं खुलासए किताबे कदीम कि बेशक व शुबह अव्वलीन किताबे समावी व सरचश्मए तहकीक व बहरे तौहीदस्त व मुताबिक कुरआने मजीद बल्कि तफसीरे आनस्त व सरीह जाहिर मीशवद कि ईं आयत बिऐनिही दरहक ईं किताबे कदीमस्त "इन्नहू ल कुरआनुन करीमुन फी किताबिम्मकनूनिल्ला यमस्सुहू इल्लल्मुतह्हरून तनज़ीलुम्मिर्रब्बिल आलमीन' यानी कुरान दर किताबेस्त कि आं पिनहास्त व इदराक नमीकुनद मगर कि मुतह्हिर बाशद व नाज़िल शुदास्त अज परवरदिगारे आलमियां। व मुशख्खास मालूम मीशवद कि ईं दरहक्के जुबूर व तौरात व इंजील नेस्त व अज लफ्ज़े तनज़ील चुनी जाहिर मीशवद कि दर हक्के लोहे महफूज हम नेस्त। चू उपनिषद कि सिर्रे पोशीदनीस्त अस्ल ईं किताबस्त व आयतहाय कुरआने मजीद व बिऐनिही दरायाफ्त मीशवद (दारा शिकोह दीबाचा सिर्रे अकबर)।

अर्थ—बहुत खोज के पश्चात ज्ञात हुआ कि इस प्राचीन जाति (आर्य) के मध्य आसमानी पुस्तकों (तौरातादि)से पूर्व चार पुस्तक जो ऋग्वेद, यजु साम० और अथर्व वेद हैं। तत्कालीन ऋषियों जो मनुष्यो मे श्रेष्ठतम हैं समस्त विधियों के सहित उतरे प्रत्येक कठिनाई और प्रत्येक उच्च शिक्षा जिसे कि मैं चाहता था और चिरकाल तक जिस की खोज करता रहता था और नहीं पाता था इन प्राचीन पुस्तक (वेद) के सार (उपनिषद) जो निस्सन्देह सर्वप्रथम दवी वाणी और ब्रह्मज्ञान का मूल स्रोत है, और कुरआन मजीद के अनुसार उसकी व्याख्या है और जिसके सम्बन्ध मे ऐसा प्रतीत होता है कि यह आयत साक्षात इसी प्राचीन पुस्तक (वेद) के निमित्त है निश्चय ही कुरआन करीम एक गोपनीय पुस्तक मे है और उसे केवल पवित्र आत्माएं ही समझ सकती है। संसार के पालक की ओर से उतरा है।' अर्थात कुरआन करीम एक पुस्तक मे है, जो गोपनीय है वह परमात्मा के द्वारा उतरी है और पवित्र आत्मा ही उसको समझ सकते हैं और स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि यह आयात जुबूर तौरातादि के पास में नहीं है और शब्द 'तनजील' से यह भी विदित हुआ है कि 'लोहे महफूज' के लिये भी नहीं है, क्योंकि उपनिषद जो कि गोपनीय रहस्य है इस पुस्तक की अस्ल है और कुरआन की आयत उसमे ज्यो की त्यो पायी जाती हैं।

वेद के सम्बन्ध मे यूरोपियन विद्वान जैकालियट की सम्मति निम्न है—

Astonishing fact ! the Hindu Revelation (Veda) is of all revealations the only one whose ideas are in perfect harmonly with modern science as it proclaims the slow and gradual formation of the world" Jackaliat Bible in India

अर्थात आश्चर्यजनक तथ्य ! हिन्दू दैवी पुस्तक (वेद) ही केवल वह पुस्तक है जो समस्त दवी पुस्तकों मे आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के पूर्णतया अनुकूल है क्योंकि संसार की रचना के सम्बन्ध में शनैः शनैः क्रमानुसार होने को प्रकट करती है।

इस सम्बन्ध मे कुमारी हीलरविलोक्स की सम्मति भी निश्चय ही उल्लेखनीय है- उसका कहना है कि—

We have all heard and read about the ancent religion of India It is cord ? the great Vedas, the most remarkable works, containing not only relegious ideas on perfect life, but also facts, which all the science has since proved true Electricity, Radium, Electrons, Airships all seem to be known to the sires who found the Vedas Miss Healer Vilox an Amarican learned scholar Lady

अर्थात हम सबने प्राचीन हिन्दू धर्म के सम्बन्ध मे सुना तथा पढा है। यह महान वेदो को भूलता है जो अत्यन्त प्रशंसनीय कृतियां हैं जिनमे न केवल धार्मिक विचार ही पूर्ण जीवन के निमित्त हैं अपितु वे सभी तथ्य भी है जिन्हें विज्ञान ने अब तक सत्य सिद्ध किया है। विद्युत रेडियम आणविक सिद्धान्त, वायुयान आदि समस्त विद्याओ का ज्ञान उन ऋषियो को विदित हुआ प्रतीत होता है जिन्होने वेद को प्राप्त किया।

एक अन्तिम सम्मति योगिराज

सांस्कृतिक समस्याएं

यज्ञोपवीत की उपयोगिता और उसका महत्व

ले० श्री म यदत्त शास्त्री (विद्याभास्कर)

(गताङ्क से आगे)

यज्ञोपवीत के दिन बा क का जीवन व्रत मे ब धा जाता है इस ल इसे व्रत ब ध कहा गया है। प्रसग र व्रत शब्द का विवेचन ध्यान देने योग्य है। व्रत शब्द का अथ है त्याज्य वस्तु का त्याग, और ग्राह्य वस्तु के ग्रहण करने के लिये एक विशेष सकल्प लेना प्र तज्ञा या प्रण करना है। व्रत धातु का प्रयोग इन्हीं दोनो अर्थों मे किया गया है। "पयो व्रतयति" पयोव्रतो ब्राह्मण केवल दूध पीने का व्रत ग्रहण करने वाला पयोव्रत कहाता है।

यहा व्रत का अथ ग्रहण करना किया है। और 'शूद्रान्न व्रतयति' मे शूद्र के अन्न का त्याग बताया है। इस प्रकार व्रत शब्द अपना महत्व प्रकट कर रहा है। यज्ञोपवीत के सम्बन्ध मे एक स्थान पर लिखा है—'प्रसुती है व यज्ञोपवीतिनो यज्ञ यत्किञ्च ब्राह्मणो यज्ञ पवीती—अधीते यजत एक तत् ।।" यज्ञोपवीत धारण किये हुए का यज्ञ भले प्रकार से स्वीकार किया जाता है। यज्ञोपवीत धारण किया हुआ ब्राह्मण या विद्वान व्यक्ति जो कुछ भी पढ़ता है वह यज्ञ ही कहाता है।

ब्रह्मचय व्रत का ग्रहण करना—एक दीर्घ सत्र (बहुकालीन व्रत] यज्ञानुष्ठान का व्रत ग्रहण करना है। यज्ञोपवीत के दिन से ही यह दीघ सत्र प्रारम्भ होता है और यावज्जीवन अर्थात सन्यास आश्रम मे दीक्षित होने तक रहता है। वर्ण श्रम धर्म का पालन करने वाले द्विज का जीवन यज्ञमय है, उसकी दिनचर्या, रात्रि चर्या जो वर्णाश्रम धर्म के अनुसार बनती है उसी दीघ सत्र का अङ्ग है। ब्रह्मचर्याश्रम इसकी प्रथम सोपान है, गृहस्थ श्रम द्वितीय और वानप्रस्थाश्रम तृतीय है। सन्यास आश्रम का आरम्भ होने ही यह दीघ सत्र जिसकी दीक्षा अनुष्ठान का व्रत ब्रह्मचय व्रत का ग्रहण करते समय आचाय के पवित्र चरणो मे बठकर नत मस्तक होकर सूर्य समान तेजस्वी आचाय की प्रदक्षिणा करके ली था—समाप्त हो जाता है।

यदि कथञ्चित स यास की दीक्षा या व्रत न ग्रहण किया हो तो उस अवस्था मे यह दीर्घसत्र जीवन पयन्त चलता है। इसके नियमों का पालन व्रतानुष्ठान यावज्जीवन आवश्यक है। ब्रह्मचय के समय द्विज बालक अपने मे जो शक्ति स चित करता है उसी की चर्चा पूर्वोक्त मन्त्र मे है।

ब्रह्मचय व्रत का ग्रहण करने वाला द्विज चार भागो से महाभूतो मे प्रवेश करता है—१ भाग से अग्नि मे, २ भाग से मृत्यु मे, ३ भाग से आचाय मे, और ४ भाग से वह अपने ही मे अवशिष्ट रहता है। यदि अपने मे वह चतुथ भाग को अवशिष्ट न रक्खे तो बाहर से आने वाली शक्तियो का सचय किस मे करे। द्विजत्व की प्राप्ति सस्कार से ही होती है, शारीरिक मानसिक एव आत्मिक शक्तियों का विकास ही द्विजत्व है और द्विजत्व ही उपनयन सस्कार का फल है।

८०१ ईसाइयों की शुद्धि का विशाल भव्य आयोजन

बिहार, उडीसा और मध्य प्रदेश की सीमाओ पर स्थित र ची जिले के सिमडगा सब डिवीजन मे बोलवा थाना तात कुरडुन्डा ग्राम [र ची से १२८ मील] मे प्रसिद्ध आर्य स यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती (अध्यक्ष आश्रम, पानपोश पो० राउरकेला) के तत्वावधान मे गत १७ अक्तूबर को पूर्व कार्यक्रमानुसार एक विशाल शुद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसे देखने के लिये आसपास के ग्रामो से हजारो वनवासी बन्धुओ के अतिरिक्त रांची बामडा, सिमडगा, सुन्दरगढ राउरकेला, पदमपुर व सबलपुर से आयजन भी आये थे। इस अवसर पर ११४ परिवारों के ८०१ ईसाईयों को हिन्दू धर्म मे पुन दीक्षित किया गया सभी शुद्ध हुये व्यक्तियो को इसके पूर्व मुण्डन कराकर शिखा धारण करवायी गयी और उनका यज्ञोपवीत सस्कार किया गया। सभी का नवीन वस्त्र प्रदान किये गये और १००० से भी अधिक लोगो को भोजन का समुचित प्रबन्ध भी २ दिनो के लिये किया गया था। रात्री ८ बजे से प्रात ८ बजे तक वनवासी लोगों ने अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। इस अवसर पर स्वामी सत्यभूषण जी, स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ, ब्र० देशपाल दीक्षित व श्री प्रमनाथ शाण्डिल्य ने अपने उपदेशो द्वारा शुद्ध हुये लोगों का स्वागत किया। बाहर से आये हुये लोग इस कार्यक्रम से बड़ प्रभावित हुये।

यह वनभूमि (कुन्दरमुण्डा) ठंठईटागर से लगभग २२-२३ मील है। ठंठईटागर तक तो मोटर सर्विस मैं किसी प्रकार जाया जा सकता है पर आगे का माग अनेकानेक पवतों, पहाडी नदी नालों एव बीहड जगलों से आवृत है, सवसाधारण पदल और बसैलसे साइकल से यहा पहुच सकते है। ऐसे ही स्थानों पर विदेशी मिशनरिया भोले भाले निधन आदिवासी लोगो को अपने चगुल मे फसा रहे हैं। सभवत स्वामी ब्रह्मानन्द जी पहले आय सन्यासी व वैदिक मिशनरी है जि होने इस क्षेत्र मे प्रवेश कर आय समाज का सन्देश लोगो को देकर प्रबल जनजागरण किया है। यदि आर्य जगत् तन, मन, धन से स्वामी ब्रह्मानन्द जी को सहयोग दे तो निश्चय अधिकाधिक इस काय मे विशेष सफलता की सम्भावना है।

स्मरणीय हो कि इस क्षेत्र मे आर्य समाज द्वारा शुद्धि किये जाने की सभावना से विदेशी मिशनरियों द्वारा उत्पात की आशका थी पर वे इस अवसर पर सम्मुख नहीं आये। स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा पूव ही केन्द्रीय गुप्तचर विभाग को सूचना प्रेषित कर दी गई थी फलतः केन्द्रीय सरकार से वायरलेस प्राप्त कर पुलिस, डी० डी० ओ० पुलिस इन्सपेक्टर सी०आई डी० विभाग अपनी फोस के साथ शुद्ध स्थल पर पहुच गये। सरकारी अधिकारी तथा आगन्तुक सज्जन शुद्धि समारोह को बड़ी शान्ति से सम्पन्न होते देखकर बहुत प्रभावित हुए।

(पृष्ठ ९ का शेष)

अरविन्द का भी यहा उद्धत करना अप्रगत न होगा। योगिराज अपनी पुस्तक दयानन्द और वेद मे लिखते—

There is nothing fantastic in Dayanands idea that the Veda Cantains truths of science as well as truth of religion I will even add my own Conviction that the Veda contains other truths of a science, the modern world does not at all possess and in that Case Dayanand has rather under stated than over stated the depth and range of Vedic wisdom

(Dayanand and Vedas)

अर्थात (महर्षि) दयानन्द के इस विचार मे कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है कि वेद मे विज्ञान तथा धर्म के समस्त तथ्य विद्यमान हैं। यहां मैं अपनी स्वयं की धारणा और भी जोड़ देना चाहता हू कि वेद मे वे समस्त तथ्य भी विद्यमान हैं जिन्हें अभी तक आधुनिक विज्ञान खोज सका है। इस स्थिति में दयानन्द का कथन न्यूनोक्ति ही कहना चाहिये इसकी अपेक्षा कि उसे अत्युक्ति कहा जाय जो उन्होंने वेदों की गरिमा तथा महत्ता के सम्बन्ध मे व्यक्त किया है।"

उपर्युक्त सम्मतियों के आधार पर महर्षि दयानन्द द्वारा वेद के अध्ययनाध्यापन को परम धर्म बतलाना नितान्त युक्तियुक्त है।

महिला मण्डल

नारी के प्रति महर्षि दयानन्द की असीम श्रद्धा

[ले०—श्री अनूपसिंह मन्त्री आर्यसमाज शुक्रताल मुजफ्फरनगर]

एक समय वह था जबकि इस देश में स्त्रियों को समाज में कोई स्थान प्राप्त न था। यज्ञ में वे सम्मिलित नहीं हो सकती थी। वेद पढ़ने का, गायत्री मन्त्र के जप का और शिक्षा ग्रहण करने का भी अधिकार उन्हें नहीं था। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उनको 'पैरों की जूती' समझा जाता था। निर्जीव ढोल की भाँति वे प्रताड़ना पाने के लायक समझी जाती थी जैसा कि महाकवि तुलसीदास जी की इसी निम्न चौपाई से स्पष्ट है—

ढोल गवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥

यही नहीं अपितु जगतगुरु शंकराचार्य ने अपनी पुस्तक प्रश्नोत्तरी में लिखा है "द्वार किमेकं नरकस्य नारी" अर्थात् नारी तो नरक का द्वार है।

कबीरदास जैसे सन्त ने नारी के प्रति अपने विचारों को यों प्रकट किया है—

नारी की छाया पड़त
अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी क्या गति
जो नित नारी के संग॥

परन्तु धन्य है अखण्ड बाल ब्रह्मचारी दयानन्द! तू ने स्त्री समाज की इस हीन दशा पर तरस खाया और मनु जी महाराज के निम्न श्लोक द्वारा स्वमन्तव्य प्रकट किया—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

अर्थात् जिस कुल में नारियों की पूजा अर्थात् सत्कार होता है उस कुल में दिव्य गुण, दिव्य भोग और उत्तम सन्तान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती वहाँ सब क्रिया निष्फल हो जाती है।

केवल इतना ही नहीं कि महर्षि दयानन्द ने स्त्री समाज के प्रति अपनी मौखिक निष्ठा ही प्रकट की हो परन्तु उनके जीवन की कई घटनाओं से नारी समाज के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा एवं सम्मान की भावना प्रकट होती है।

स्वामी जी जब उदयपुर में कई सज्जनों के साथ भ्रमण कर रहे थे तब मार्ग में बहुत से खेलते हुए बच्चों में उन्होंने एक बालिका को भी देखा। उसे देख ऋषिवर ने अपना सिर झुका दिया। उनके साथ भ्रमण करने वालों ने पूछा कि आपने सिर क्यों झुकाया है? ऋषि जी ने कहा यह मातृशक्ति है जिसने हम सबको जन्म दिया है।

इसी प्रकार जिन दिनों मथुरा में स्वामी जी अपने भाषणों में वैदिक धर्म की पुष्टि करते हुए और पुराणों एवं मूर्ति पूजा का खण्डन करते थे तब पाखण्डियों ने जो धर्म के नाम पर लोगों को ठगते थे सोचा कि यह दयानन्द कौन? कहाँ से यहाँ से पढ़कर गया है अब हारने में नहीं आता। हमारी रोजी भी छीन रहा है। खीजकर पाखण्डियों ने एक योजना बनाई। वे एक वेश्या के पास गये और उसको बहुत से रुपये और आभूषण देने का प्रलोभन देकर महर्षि दयानन्द जी के स्थान पर भेजा। उसे कहा कि जब वे सन्ध्या करने लगे तो वहाँ जाकर शोर मचा देना कि इसने मुझे छेड़ा है। हम पास में ही छिपे रहेंगे। उनको डंडों से मारकर अधमरा कर देंगे। ध्यानावस्थित ऋषि को देखते ही वेश्या की सब दुर्भावनाएं सद्भावनाओं में बदल गयी और वह अपनी करनी के फल स्वरूप एकाएक चीख पड़ी। ऋषिवर ने चीख की आवाज सुनकर आँखें खोल दी और बोले माँ! तुम कौन हो? माँ शब्द सुनते ही वेश्या का हृदय भर गया और आँखों में आँसू आये। ऐसी हालत में देखकर फिर स्वामी जी ने पूछा माँ! तुम कौन हो? अपने बेटे से क्या लेने आई हो? स्त्री ने सिसकते हुए कहा क्षमा माँगने आई हूँ। इन आभूषणों ने मुझे अन्धा कर दिया। रोते हुए उसने अपनी सारी कथा ऋषिवर को सुनाई। ऋषिवर ने आशीर्वाद दिया—माँ! ईश्वर ने जो सद्बुद्धि इस समय दी है वह सदा बनी रहे।

एक कवि के शब्दों में ऋषिवर की नारी के प्रति असीम श्रद्धा को इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है—

नारी निन्दा मत करो
नारी नर की खान।
नारी से ही ऊपजे
बड़ बड़ सुजान॥

सुझाव और सम्मतियाँ

साम्प्रदायिक घुसपैठिये और आर्य समाज

आर्य जगत एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ध्यान आकर्षित करते हुए मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि आज आर्यसमाज के सुव्यवस्थित संगठन एवं कार्यक्रमों को देखकर अन्य तथाकथित संस्थाएं आर्यसमाज से प्रेरणा लेने की अपेक्षा ईर्ष्या करने लगी हैं। मैं इन्हीं पंक्तियों द्वारा आर्यजगत तथा समस्त आर्यों को इससे पूर्व भी निवेदन कर चुका हूँ कि आर्यसमाज मन्दिरों प्रांगण विद्यालयों एवं अन्य भव्य भवनों को कतिपय संस्कृति प्रेमी संस्थाएं लालच भरी दृष्टि से देखने लगी हैं। वे येन-केन प्रकारेण इन चल एवं अचल सम्पत्ति पर अपना कब्जा जमाना चाहती हैं।

(१) जिस प्रकार राष्ट्र विरोधी ईसाइयों ने हिन्दुओं के धर्मपरिवर्तन कर उनके नाम रामदास किशोर रमेश तथा सुरेश रखना प्रारम्भ कर दिये हैं ठीक इसी प्रकार कई हिन्दु साम्प्रदायिक एवं सेना संगठन वादियों ने दयानन्द श्रद्धानन्द डी०ए०वी० आदि नाम रख कर अपना साम्प्रदायिक कार्य प्रारम्भ कर रखा है। हमें तो उस समय अत्यन्त आश्चर्य हुआ जबकि दयानन्द के नाम पर स्थापित एक विद्यालय में महर्षि दयानन्द के चित्र का अनावरण किया गया। यह सारा कार्य तथाकथित तथा नामधारी आर्यसमाजी कहलाने वाले ने किया। क्या ऋषि दयानन्द के चित्र का अनावरण सिद्धान्ततः ठीक है?

(२) इतना ही नहीं कतिपय सनातन धर्मी व्यक्तियों ने आर्यसमाज की कार्यविधि को ठप्प करने की एक नई चाल चली है। वे निर्वाचन के आधार पर अपने वैष्णवी एवं शाक्त मतावलम्बियों को पदाधिकारी बनवा देते हैं। कार्य-कारिणी में ऐसे छिपे सनातनी आर्य समाज के कार्य में बाधा पहुँचाते हैं। क्या आर्यजगत के विद्वान आर्यसमाज के निर्वाचन नियमों में कोई परिवर्तन नहीं कर सकते?

(३) पिछले सार्वजनिक निर्वाचनों के अवसर पर देखा गया कि अनेक आर्य समाजी कांग्रेस जनसंघ या हिन्दूसभा के टिकिट से चुनाव लड़ते हैं। वे आर्य समाज के उपदेशकों एवं भजनीकों से अपना अपना प्रचार कार्य करवाते हैं। इधर इन उपदेशकों को वेतन आर्य समाजों या प्रतिनिधि सभाओं से मिलता है और उधर वे प्रचार कार्य राजनैतिक दलों का करते हैं। क्या यह उचित है? क्या आर्यसमाज के कर्णधार इस पर अपना अभिमत व्यक्त करेंगे।

(४) कुछ दिनों से इन संस्कृति निष्ठ संस्थाओं के जिम्मेदार व्यक्तियों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया है कि स्वामी दयानन्द ने स्वयं ब्राह्मण होकर वेद के नाम पर हिन्दुओं को आपस में लड़वा दिया। वे यह नहीं जानते कि आज के ये स्वयंसेवक ऋषि दयानन्द की कृपा से ही हिन्दू हैं।

(५) आर्यसमाज के साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों के पाठकों को भली भांति ज्ञात है कि इन पंक्तियों के लेखक ने क्या आर्यसमाज का मंत्री गैर आर्य समाजी हो सकता है? शीर्षक के अन्तर्गत आर्य जगत का ध्यान आकर्षित किया, परन्तु उसका प्रत्युत्तर नहीं के बराबर ही रहा।

(६) आर्यसमाज की निर्वाचन पद्धति में कुछ मूलभूत ऐसे नियम बनाये जाये जिससे छद्मवेषी तथा बनावटी नामधारी आर्यसमाजी कहलाने वाले लोग निर्वाचनों में मतदाता न बन सकें। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।

अतएव आर्यसमाज के मूर्धन्य नेताओं तथा सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से साग्रह अनुरोध है कि वे उपरिलिखित तथ्यों की ओर ध्यान देकर यथायोग्य निश्चय कर तथा आर्य जगत को सचेत करते रहें।

—मनुदेव 'अभय'
१/२८ राज मोहल्ला उत्तर
इन्दौर नगर

आ० स० की स्थापना

१ नवम्बर ६९ को सभा प्रचारक श्री रघुवरदत्त जी द्वारा ग्राम उदेपुर कोरया पो० बोरेमऊ जिला सीतापुर में आर्यसमाज की स्थापना हुई, जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान—श्री सोहनलाल जी, उप-प्रधान—श्री चन्द्रपाल जी, मंत्री—श्री रामप्रसाद जी सक्सेना।

सामयिक समस्यायें

(पृष्ठ ४ का शेष)

बाने के बजाय बच्चों को स्वेच्छा से कार्य कराने की प्रवृत्ति पर बल दिया जायेगा तो अवश्य ही उसके अच्छे परिणाम होंगे।

अनुपयुक्त साधन

१—यह ठीक है कि पढाई का क्षेत्र बढा है पहले से छात्र संख्या मे आशातीत वृद्धि हुई, परन्तु पढाई की जो उचित व्यवस्था होनी थी वह न हो पाई न यो य अध्यापक मिले और न ही अच्छी शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था हम कर पाये। शिक्षकों की समाज में प्रतिष्ठा गिरी, जब छात्र अपने गुरुजनों को अपनी वेतन वृद्धि की मांग करते देखता है तो फिर भला वह कैसे पीछे रहे। परिणाम, शिक्षा का स्तर गिरा और स्थान स्थान पर शिक्षकों का अपमान व निरादर होने लगा। वही शिक्षक जो विद्यार्थी का वास्तविक मार्गदर्शक है अपनी रोजी रोटी के लिये यह सब कुछ सहने को उद्यत हो गया। उसके जीवन मे वास्तविक समाज के निर्माण का जो स्वप्न था वह खण्डित हो गया। परिणाम, विद्यार्थी समाज मे अनुशासनहीनता जागृत हो उठी। यदि इस रोग का सही निदान हम चाहते हैं तो समाज मे अध्यापक को उचित स्थान देना ही होगा। गोली व लाठी इच्छा से छात्रों की इन अनुशासन हीनता को सरकार अथवा कोई राजनतिक पार्टी रोक नहीं सकती। विद्यार्थियों के बीच अधिक सम्पर्क मे रहने के कारण अध्यापक ही ऐसा साधन है जो उसे सही मार्ग पर ला सकता है। क्या सरकार आज इस दृष्टिकोण से इस समस्या पर विचार करने को उद्यत है? यदि नहीं तो परिणाम स्पष्ट है।

२—इसी सदर्भ मे यह भी ध्यान योग्य बात यह है कि यदि छात्र को कोकर्म मे आनन्द आये तो उसका उतना ध्यान अन्यत्र क्यों जाय (१) कक्षाओं न ध्यान पढ़ करने का सारा भार अध्यापक पर ही है। अतः इस दृष्टि से भी समाज के इस महत्व पूर्ण अध्यापक को सब दृष्टि से उपयोगी बनाया जाय। इसके लिए उसके लिए उसके प्रति समाज की मान्यता अवश्य ही बदली जानी चाहिये तभी सुखद परिणाम होगा।

३—योप में नित्य नये परिवर्तन शिक्षा की दृष्टि से न करके जब कुछ स्वार्थवश नई-नई पुस्तकें अपने व्यक्तियों को लगवाने हेतु किये जाते हैं तो उसका आर्थिक व मानसिक बोझ बढ़ता है, परिणाम असन्तोष मे बदलता है, आवश्यकता है कि इस ओर ध्यान दिया जावे।

धार्मिक शिक्षा

छात्रों के चरित्र निर्माण के बिना राष्ट्र निर्माण सम्भव नहीं सबसे बडी शिक्षा तो चरित्र गठन ही है यदि नहीं तो फिर शेष बचता ही क्या है? धार्मिक शिक्षा इस कार्य मे सहायक थी परन्तु हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार ने स्कूल व कालेजों मे उसको प्रत्साहन देने के बजाय निरुत्साहित किया है। यदि बिना किसी पूर्वाग्रह के जैसा कि श्री मोरार जी देसाई ने कहा है कि प्रत्येक छात्र को धार्मिक शिक्षा दी जाय तो निश्चय उसके सुखद परिणाम होंगे।

शिक्षा क्षेत्र स्वतन्त्र हो

कहने को तो शिक्षण संस्थाएं स्वतन्त्र हैं परन्तु वास्तव मे आज राजनीति के जोर अखाड़े स्वार्थी लोगों ने बना लिए हैं और उनका प्रयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए करते हैं। समस्त राजनीतिक पार्टियां विचार करें कि यह स्थिति कहां तक छात्रों के वर्तमान असन्तोष को दूर करने मे सहायक होगी? इस सम्बन्ध मे भी सबसे बडा दायित्व कांग्रेस पर ही है, क्योंकि वह सत्तारूढ है, उस सबसे पहले उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये। शिक्षण संस्थाओं का संचालन शिक्षा शास्त्र अथवा शिक्षा मे रुचि रखने वाले परम सामाजिक कार्य कर्ताओं के पास ही रहना चाहिए।

शासकीय निर्बलता

शासन की हर क्षेत्र निर्बलता का परिणाम हमारी शिक्षण संस्थाओं व उसमे शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों पर भला बिना पड़े कैसे रह सकता है आखिर विद्यार्थी व अध्यापक भी तो इसी समाज के अंग हैं। सारे समाज मे जो विभिन्न कारणों से असन्तोष है और स्थान स्थान पर उसके प्रदर्शन व हिंसात्मक रूप दृष्टिगोचर होते हैं ये सब शासन की दुर्बलताओं के परिणाम हैं। हमारी सरकार की प्रकृति सी बन गई है कि जब बात चरम सीमा पर पहुंचे तभी विचार करती तथा उपाय ढूंढती है आवश्यकता है कि सरकार अपनी इस सही निर्णय लेने में देर करने की प्रवृत्ति को बदले और निर्णय लिए जाय उन्हें कार्यान्वित सच्चाई से करें।

शिक्षा पर तो अलग ही कभी लेख दिया जायगा, परन्तु इस समय कहना पर्याप्त होगा कि समाज व सरकार इस परिस्थिति की उपेक्षा की दृष्टि से न देखे और अविलम्ब समुचित उपाय काम में लाए केवल स्कूल बन्द करके या फिर प्रान्त बन्द, अथवा पुलिस कार्यवाही करके समस्या का निदान समझना गलत होगा और परिणाम अच्छे न होंगे।

सिद्धान्त विमर्श

(पृष्ठ ६ का शेष)

रियों के निष्कासन के बाद यहाँ वालों ने ही उनका कार्य सम्भाल लिया है। ईसाई मिशनरियों ने अब कुछ काल से नेपाली लोगों में भी काम करना आरम्भ कर दिया है। नेपाली भाषा मे ईसाई साहित्य दार्जिलिंग तथा बंगलौर से प्रकाशित होकर आता है और निःशुल्क वितरित होता है। नेपाली भाषा की वर्णमाला की पुस्तक भी आई है। सुन्दर आकर्षक छपाई है, तथा अन्य किसी वर्णमाला की पुस्तक के अभाव मे नेपाली लोग उसे ही प्राप्त कर अपने बच्चों को पढ़ाते हैं। उसमे वर्णमाला के बाद अन्य जितने पाठ हैं वे ईसाई धर्म सम्बन्धी हैं। इस प्रकार अनायास ही उनके धर्म का प्रचार हो जाता है। अन्य ट्रक्ट भी आते हैं। इनके आने पर कोई रोक टोक नहीं क्योंकि ये निःशुल्क उपहार स्वरूप आते हैं। इसी प्रकार विदेशों अमरिका, ब्रिटेन आदि से भी अति सुन्दर साहित्य प्राप्त होता है। हिन्दुओं को इस प्रकार धार्मिक साहित्य भेजने वाला कोई व्यक्ति या संस्था नहीं है। मांगने, मंगवाने पर भी लोग नहीं भेजते।

नेपाली पत्र 'जनमत' जो कि आर्य समाज दार्जिलिंग का मुखपत्र है एक प्रति आकर ही रह गया। नेपाली सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति अढाई वर्ष लिखापढ़ी के पश्चात प्राप्त हुई, वह भी अब एक सज्जन ने व्यक्तिगत रूप से दिलवा आकर भेजा, परन्तु यह हमारी धर्म प्रचार के प्रति रुचि अथवा आस्था का परिचायक है। ऐसी दशा मे यदि यहां देश की हिन्दू धार्मिक स्थिति को अनाथ और दयनीय न कहें तो और क्या कहें? यहां देश से ही नहीं, फीजी, मारिशस, ट्रिनीडाड, मलाया, थाईलैंड तथा जहां भी भारतीय उपनिवेश हैं सब की यही मांग है। पूज्यवर महात्मा आनन्दस्वामी जी के पत्र जो गत तीन मासों से विदेशों से आये हैं, उनकी भी यही पुकार है। आर्यसमाज की संस्थाओं, गुरुकुलों, अनाथ आश्रमों, कन्या महा विद्यालयों केन्द्रीय संस्थाओं ने इन विदेशों से लाखों रुपये खूब पूर्व उठाये हैं। अब उस ऋण से उऋण होने का समय आ गया है।

जो हिन्दू यहां देश से बाहर भारत छोड़ गये हैं उनमें भी कुछ कर्तव्य है, उन्हें चाहिये कि देश के लोगों की धार्मिक स्थिति का यहीं सही परिचय दें। सरकारी क्षेत्र में जो कहा सुना जाता है वह कई बार वास्तविकता से भिन्न होता है इसका सदा ध्यान रहे। अभी बहुत कुछ बिगड़ा नहीं है। यहां देश में लाखों की संख्या में हिन्दू हैं और रहेंगे। उनकी लाखों की धन सम्पत्ति बिखरी पड़ी है उसको ध्यान देना बुद्धिमत्ता नहीं होगी। कुछ कार्य उधर से हो, इस ओर ध्यान दिया जाय तो यहां भी कार्यकर्ता खड़े हो सकते हैं जो इस कार्य में ईमानदारी से कार्य करें उन्हें प्रोत्साहन तथा मार्ग दर्शन चाहिये और चाहिये क्रियात्मक सहायता। कार्य असम्भव या कठिन नहीं है। केवल करने की इच्छा भर चाहिये। क्या ५० करोड़ भारतीयों में से कुछ ऐसे नहीं निकल सकते जो व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कुछ धार्मिक साहित्य वितरित कर सकें। क्या 'आर्यमित्र', सार्वदेशिक, आर्योदय, जनमत, वेद व णी, कल्याण तमिल भाषा तेलगु भाषा के साप्ताहिक या मासिक पत्र निःशुल्क अलग अलग व्यक्तियों से नहीं भेजे जा सकते? इस प्रकार क्या विशेषांक या ट्रक्ट विशेष लिखवा या पहले से प्रकाशित नहीं भेजे जा सकते? परोक्ष या अपरोक्ष रूप मे अनुवाद आदि करके उनका उपयोग इन विदेशों मे हो सकता और भी कई प्रकार के इस कार्य को बढ़ावा दिया सकता है। जो कार्य भी हो नियोजित हो, तभी फलदायक होगा।

लखनऊ-रविवार रा०आ० १२ शक १८८८, मार्गशीर्ष कृ० ४ वि० सं० २०२३, दिनांक ४ दिसम्बर १९६६

वेदामृत

ओ३म् निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः। मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि ॥ २

भावार्थ-(आत्मन) व्रत को धारण करता हुआ वरणीय उत्तम बुद्धि और कर्म से युक्त सम्राट् साम्राज्य के लिये प्रजाओं के मध्य विराजमान हो। मृत्यु से हमारी रक्षा कर। विद्युत् आदि भौतिक आपत्तियो से हमारी रक्षा कर।

विषय-सूची

गो रक्षा आन्दोलन प्रगति पर

श्री शंकराचार्य पुरी, तथा श्री ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी के अमरण अनशन व्रत जारी।

जैन मुनि श्री सुशीलकुमार का अनशन समाप्त

आर्य नेता श्री बाल दिवाकर हंस जयपुर के साथ गिरफ्तार

सरकार का वार्ता का निमन्त्रण बिना किसी निश्चित आश्वासन के स्वीकार नहीं होगा।

गो-रक्षा आन्दोलन का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं

वार्ता के लिये शान्त वातावरण बनाने का उत्तरदायित्व सरकार पर है।

उत्तर प्रदेश, पञ्जाब, बम्बई, आन्ध्र, राजस्थान से आर्यवीरों के जत्थों का आना जारी।

गोरक्षा आन्दोलन अब अपने पूर्ण विकास पर है। सरकार ने जैसा सोचा था कि दमन और गिरफ्तारियों से आन्दोलन को समाप्त कर दिया जायगा वैसा नहीं हो सका, सरकार के निरन्तर दमन के पश्चात भी गोरक्षा सत्याग्रही दिल्ली पहुच रहे हैं। दिल्ली मे प्रतिदिन आय सत्याग्रहियों की गिरफ्तारी से सरकार परेशान है, और सरकार की ओर से सर्व दलीय गोरक्षा अभियान समिति को वार्ता का निमन्त्रण भेजा जा चुका है। परन्तु समिति ने बिना किसी निश्चित आश्वासन के आन्दोलन को स्थगित करना अस्वीकार कर दिया है। गोरक्षा प्रेमियो में आन्दोलन के प्रति पूर्ण उत्साह है और प्रति दिन सत्याग्रह शिविर मे आर्य सत्याग्रहियों के पहुंचने की सूचनायें आ रही हैं।

उत्तर प्रदेश की आर्य समाजें अपनी ओर से सत्याग्रही जत्थे भेजने और आन्दोलन के लिये धनसग्रह कार्य जोर शोर से करें।

आर्यसमाज के गौरव पूर्ण आन्दोलन को सफल बनावें।

अन्त में विजय हमारी होगी

वार्षिक ८) छ:माही ५) विदेश

अवैतनिक सम्पादक
उमेश चन्द्र स्नातक
एम० ए०

वर्ष ६८ अंक ४७
एक प्रति २० पै०

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् ता मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च ।
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्यः ।४७।

—ऋ० ७-८-१२-२

हे सर्वाभिरक्षकेश्वर ! "ता मा सत्योक्तिः" आपकी सत्य आज्ञा जिसका हमने अनुष्ठान किया वह "विश्वतः, परि पातु मा" हमको सब संसार से सर्वथा पालन और सब दुष्ट कामों से सदा पृथक् रक्खे कि कभी हमको अधर्म करने की इच्छा भी न हो। "द्यावा, च" और दिव्य सुख से सदा युक्त करके यथावत् हमारी रक्षा करे। "यत्र" जिस दिव्य सृष्टि में "अहानि" सूर्यादिकों को दिवस आदि के होने के निमित्त "ततनन्" आपने ही विस्तारे हैं, वहां भी हमारा सब उपद्रवों से रक्षण करो "विश्वमन्य०" आपसे अन्य (भिन्न) विश्व अर्थात सब जगत् जिस समय आपके सामर्थ्य से (प्रलय में) "निविशते" प्रवेश करता है (कार्य सब कारणात्मक होता है) उस समय में भी आप हमारी रक्षा करो। "यदेजति" जिस समय यह जगत् आपके सामर्थ्य से चलित हो के उत्पन्न होता है, उस समय भी सब पीड़ाओं से आप हमारी रक्षा करें "विश्वाहापो, विश्वाहा" जो-जो विश्व का हन्ता (दुःख देने वाला) उसको आप नष्ट कर देओ, क्योंकि आपके सामर्थ्य से सब जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होता है, आपके सामने कोई राक्षस (दुष्ट जन) क्या कर सकता है ? क्योंकि आप सब जगत में उदित (प्रकाशमान) हो रहे हो। (सूर्यवत्) हमारे हृदय में कृपा करके प्रकाशित होओ, जिससे हमारी अविद्यान्धकारता सब नष्ट हो।

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार ११ दिसम्बर १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत १,९७,२९,४९,०६७

गो-रक्षा आन्दोलन सफल होगा

गोरक्षा आन्दोलन की महत्ता और व्यापकता का प्रभाव अब उन लोगों के हृदयों पर भी पड़ने लगा है जो इस आन्दोलन को साधारण समझते थे प्रारम्भ मे इस आन्दोलन की उपेक्षा की गई और सरकार ने ऐसा रुख अपनाया कि सरकार इसे कोई महत्व नहीं देना चाहती।

जब साधु मण्डली ने अपना आग्रह और धरना जारी रक्खा तब आन्दोलन को बदनाम करने की कोशिश की गयी कि आन्दोलन में साधुओ को जबरदस्ती भेजा जा रहा है। इस आन्दोलन से देश की विदेशों मे बदनामी हो रही है। योरप और रूस के लोग गोरक्षा की बात पर भारत का मजाक उड़ा रहे हैं।

जब इससे भी काम न चला और आन्दोलन जनमानस की आवाज बनकर राष्ट्रव्यापी हो गया तब गोरक्षा के नाम पर राज्यो की ओट ली जाने लगी संविधान मे यह विषय राज्यो का है इस लिये राज्य इस सम्बन्ध मे कानून बनायगे।

जब इसमे भी जनता का समाधान सम्भव न हुआ और ७ नवम्बर के व्यापक प्रदर्शन का आयोजन होने लगा तब उनके मुकाबले दुरभिसन्धि करके प्रदर्शन को बदनाम करने के लिये असामाजिक तत्वो का सहारा लिया गया। ७ नवम्बर की दुर्घटना से गोरक्षा आन्दोलन की प्रगति को एक धक्का अवश्य लगा परन्तु शासन ने दमन का दुधारा चलाकर जन भावना को कुचलने और गोली वर्षा से मृत मानवों का पशुवत् संस्कार करके जो पाप कमाया उसने जनता के साहस को और भी अधिक मजबूत कर दिया। हजारों की धड़पकड़ के बाद भी गोरक्षा सत्याग्रह अपनी नियमित गति से चल रहा है। प्रतिदिन गोरक्षा सत्याग्रही आर्यसमाज दीवानहाल और ममलघ से धर्मयुद्ध के लिए विदाई लेते हैं। सारे देश से जत्थों की रवानगी के समाचार आ रहे हैं।

२० नवम्बर को गोपाष्टमी के व्रत से आन्दोलन में और भी शक्ति आ गयी श्री जगद्गुरु शंकराचार्य और श्री ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी जैसे सन्तों के आमरण अनशन से सरकार को परेशानी हुई और सरकार ने धर्मनिरपेक्षता का लबादा उतार कर धार्मिक सन्तो के धार्मिक व्रतों मे विघ्न डालना आरम्भ कर दिया। श्री शंकराचार्य को पाण्डुचेरी और बाद मे पुरी ले जाया गया, उनके व्रत तोड़ने के झूठ समाचार दिये गये पर वे अपने व्रत पर दृढ़ हैं। ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी के साथ भी असम्मानजनक व्यवहार किया गया इलाहाबाद उच्च न्यायालय में सरकार अपने दुष्कर्मों का उत्तर देने के लिए कटघरे मे खड़ी की गयी है।

२५ नवम्बर की देश व्यापी हड़ताल ने सरकार को चुनौती दे दी, सारे शासन ने कांग्रेस व कम्युनिस्ट पार्टियों के सहयोग से हड़ताल को असफल करने का षड़यन्त्र किया पर उन्हें सफलता न मिली।

इस वक्तव्य ने यह सिद्ध कर दिया कि कम्युनिस्टों के प्रति जिन्हें देश की जनता और सरकार भी देशभक्त नहीं मानती कांग्रेस का रुख नरम है और वह तथा कम्युनिस्ट पार्टी दोनों ७ नवम्बर के प्रदर्शन में विस्फोटक स्थिति के लिये उत्तरदायी हैं।

श्री जैन मुनि सुशीलकुमार जी ने २ दिसम्बर से अपना व्रत आरम्भ कर आन्दोलन की धधकती ज्वाला को और भी अधिक प्रज्वलित कर दिया है। शासन को आशा थी कि जैन मुनि को व्रत करने से रोकने में सफल हो जायगा परन्तु जैन मुनि ने प्रधान मन्त्री के पत्र का स्पष्ट उत्तर देकर साहस का कार्य किया है। जैन मुनि ने स्पष्ट कह दिया है कि सरकार गोवधबन्दी का जबतक निश्चित आश्वासन नहीं देती व्रत जारी रहेगा। प्रधान मन्त्री के पत्र से यह स्पष्ट हो गया है कि अभी तक शासन इस आन्दोलन की जो उपेक्षा कर रहा था वह अब अधिक नहीं चल सकती इसलिये वार्ता का निमन्त्रण आ रहा है परन्तु सरकार आन्दोलनों को समाप्त करने के लिये इसी प्रकार के जाल फेंका करती है। वार्ता के लिये आन्दोलन कर्ताओं ने बहुत समय दिया, शान्त वातावरण में किसी ने बात नहीं सुनी अब बात चरम हुई तब शान्ति स्थापना की अपील आने लगी।

सरकार की सदाशयता में हमें तब तक सन्देह रहेगा जब तक कि—

(१) सरकार कोई स्पष्ट घोषणा न करे।

(२) गोरक्षा आन्दोलन में गिरफ्तार व्यक्तियों को रिहा न करे।

(३) गोरक्षा आन्दोलन प्रदर्शन कारियों को गिरफ्तार न करे।

(४) ७ नवम्बर की दुर्घटना गोली वर्षा काण्ड की जांच न करे और मृतकों के साथ किये गये अमानवीय व्यवहार के लिये पश्चात्ताप न करे।

(५) गोरक्षा के लिये संविधान में आवश्यक संशोधन की दृष्टि से गोवध निषेध अध्यादेश जारी करे।

(६) गोरक्षा आन्दोलन को धार्मिक एवं भावना प्रधान न मानकर गोरक्षा के पक्षधारियों के प्रति धर्मनिरपेक्ष सरकार ने जो सकीर्ण व्यवहार किया है, श्री शंकराचार्य, श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के व्रत मे बाधा पहुंचाकर और श्री ऋषि स्वरूप जी के शव के प्रति खिलवाड़ करके जो अधार्मिकता दिखाई गयी है उस पर खेद प्रकट न किया जाय।

यदि सरकार का हृदय पवित्र है और वह अपने को जनता का सच्चा प्रतिनिधि मानती है तो वह पूर्ण सद्भावना का परिचय दे और वातावरण को स्वयं वार्ता योग्य बनाये।

यदि सरकार यह समझती है कि उसका काम भेद बुद्धि उत्पन्न करके एवं दमन द्वारा चल जायगा तो यह उसकी भ्रान्ति है।

सरकार ने इस आन्दोलन को राजनैतिक घोषित करने का दुस्साहस किया है इस कारण बुद्धिजीवी वर्ग में भ्रम उत्पन्न हुआ है परन्तु आन्दोलन का आरम्भ और संचालन जिन संस्थाओं ने मिलकर किया है वे सभी सांस्कृतिक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थायें हैं। संचालन समिति में सभी व्यक्ति अराजनैतिक प्रतिनिधित्व रखते हैं। ऐसी स्थिति में राजनीति का नाम लेकर आन्दोलन को बदनाम करना उचित नहीं है।

आशा है सरकार अपनी कुम्भकर्णी निद्रा त्याग कर जन-भावना को सुनेगी और उसे पूर्ण करेगी। गोवंश बैलों की जोड़ी का सहारा लेकर चुनाव की वैतरणी पार उतरने वाले शासक दल को गोभक्ति का परिचय देना चाहिये था जबकि वह गोवध का समर्थन कर रहा है ऐसी स्थिति में चुनाव पर परिणाम पड़ना स्वाभाविक है पर इसका पूर्ण उत्तरदायित्व स्वयं शासक दल पर ही है।

एक बात आन्दोलन संचालकों एवं गो रक्षा प्रेमियों से हम निवेदन कर देना आवश्यक समझते हैं कि ७ नवम्बर की दुर्घटना की जाँच कराने से सरकार ने इन्कार कर दिया है तब क्यों न शीघ्र ही उच्चकोटि के न्यायविदों की समिति बनाकर हम जाँच आरम्भ कर दें। हमने मित्र के पिछले अंक में सार्वदेशिक सभा का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था, हमारे प्रस्ताव का स्वागत हुआ है पर उसे क्रियान्वित किया जाना चाहिये। गोरक्षा के नाम पर शहीदों के प्रति हमारी यह वास्तविक श्रद्धाञ्जलि होगी।

इसी प्रकार हम यह भी संकेत कर देना उचित समझते हैं कि सरकार के निमन्त्रण पर वार्ता या कोई भी घोषणा सहसा किसी एक व्यक्ति द्वारा न की जाय जो भी निर्णय लिया जाय वह पूर्ण विचार विमर्श एवं सम्बन्धित संस्थाओं द्वारा अधिकृत तथा सम्पुष्ट होना चाहिये।

यदि हमने ऐसा किये बिना कोई भी कदम उठाया तो आन्दोलन की सफलता पर पानी फिर जायगा और वही सरकार को अभीष्ट होगा। सरकार सब प्रकार के प्रयत्न कर रही है और करेगी पर हमे अपने पूर्ण विवेक से काम लेना होगा अन्यथा सब परिश्रम व्यर्थ जायगा।

इस पृष्ठभूमि के साथ साथ हमे आन्दोलन को साहसपूर्वक आगे बढ़ाना है। आन्दोलन तो सफल होगा ही पर उस समय आपका स्थान किस पंक्ति मे होगा यह आपके सहयोग पर ही निर्भर होगा।

कर जाओ काम दोस्तो जग में नाम रहे।
नहीं तो पछताना ही रहेगा ॥

महर्षि दयानन्द के शब्द जन-जन की आवाज बन गये—

गोहत्या बन्द करो

[श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, उपमन्त्री सभा, संचालक गोरक्षा आन्दोलन]

सौ वर्षों के बाद आज भारत का बच्चा-बच्चा एक स्वर में बोल उठा—गोहत्या बन्द हो। 'गो हमारी माता है। राष्ट्र-धर्म का नारा है।' इस नारे ने हिन्दू मात्र ही नहीं, इसके अतिरिक्त जैन सिख, बुद्ध, सभी सम्प्रदायों ने भी एक झण्डे के नीचे एकत्र होकर एक स्वर मे माग की है गो हत्या बन्द हो। आज यह प्रश्न नहीं है कि गो हत्या बन्द होने पर किसे यश मिलेगा। यश और कीर्ति उसे मिलेगी जो गोहत्या का काला कानून बन्द करायेगा, लोकतन्त्र मे जन-भावना का आदर करेगा। राष्ट्र के सुख समृद्धि का ध्यान रखेगा या फिर कीर्ति उसे मिलेगी जो उसके प्रतिशोध मे जो भी जन-आन्दोलन कर इसके लिए अग्रसर करेगा और सरकार को झुका देगा, कानूनन गोहत्या बन्द करायेगा, यश उसे मिलेगा। समय की माग है जन-भावना को पहचानो, अन्यथा समय आ गया है तुम्हें भी बदला जायगा। उस सरकार को भी बदला था जिसके राज्य मे सूर्य नहीं छिपता था। आपने लोकतन्त्र पनपाया है आप ही उसकी भी रक्षा करो। अन्यथा यह लोकतन्त्र ही तुम्हें खा जायेगा। फिर कहता हू उस मूक प्राणी की हत्या बन्द करो। गोरक्षा का नारा भी बुलन्द करो, जिसके बच्चों की जोड़ी को एक सम्बल बनाकर उस स्थान पर बैठे हो। भूतकाल के उज्ज्वल इतिहास से भविष्य भी उज्ज्वल करो।

हमे आशा करनी चाहिये कि निरकुश नौकरशाही साधु-महात्माओं के आग्रह पर उदारतापूर्वक विचार करेगी और देश के जन हित के लिये अविलम्ब गोहत्या बन्द करने के निमित्त अपने संविधान मे संशोधन शीघ्र ही करेगी। काश नेताओं ने दुराग्रहवश इस विपरीत दमन की नीति का पुन आश्रय लिया तो परिणाम भयकर होगे। राष्ट्र का बच्चा-बच्चा आज गोहत्या के लिये चिन्तित है। गो संरक्षण के आन्दोलन को सबल बनाने के लिये गोरक्षा प्रेमी भाई-बहनो से मुक्त-हस्त से सहायता भेजने की हमारी अपील है, जब तक सरकार गो हत्या बन्दी की घोषणा नहीं करती है।

★

गोरक्षा आन्दोलन के लिये जन धन की अपील

समस्त आर्य जनता से आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से परिपत्र भेजकर प्रार्थना की है कि समय आ गया है जब कि गोमाता की करुण पुकार को सही अर्थों मे आप लोगो ने सुना है तो आवश्यकता इस बात की है कि अब आप लोग तन-मन-धन से सभा को सहायता भेजकर सरकार की कारागारो को भर दो। गोहत्या बन्दी के लिये साधु-महात्माओं के नेतृत्व मे जन-समुदाय भारत की राजधानी दिल्ली मे नौकरशाही का कोप भाजन बनकर कारागार का अतिथि हो रहा है, उसे बाध्य कर दो कि गोरक्षा का संविधान बनाकर हत्या बन्द करो। इसके लिये आर्य प्रतिनिधि सभा को सत्याग्रहियो की संख्या तथा अधिक से अधिक धन शीघ्र ही भेजने की कृपा करे, जिससे काय मे ओर प्रगति आ सके।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

गोरक्षा आन्दोलन

निम्न आर्यसमाजो के गोरक्षा आन्दोलन सत्याग्रह के हेतु पत्र प्राप्त हुए है।

१—आर्यसमाज महाराजपुर—१५सत्याग्रही
२—आर्यसमाज तालग्राम —३ सत्याग्रही
३—आर्यसमाज केराकत —११ सत्याग्रही

प्रदेश की सभी आर्य समाज इस कार्य मे सहयोग दीजौर धन संग्रह करने की कृपा करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा उप मन्त्री एव
संचालक गोरक्षा आन्दोलन

फतेहपुर

आर्य समाज फतेहपुर के मंत्री जी हमें अपने पत्र दि० २-१२ में सूचित करते हैं कि गोरक्षा आन्दोलन में आर्यसमाज पूरा सहयोग दे रहा है। गोरक्षा अभियान समिति के अध्यक्ष आय समाज के वयोवृद्ध नेता माननीय श्री उमाशकर जी एडवोकेट, श्री वेदप्रकाश जी कोषाध्यक्ष आ०स० समिति के मन्त्री नियुक्त रहा है। कार्य बड़े उत्साह के साथ प्रारम्भ कर दिया गया है। सत्याग्रही तैयार किये जा रहे हैं।

आवश्यकता ?

आर्य समाज अल्मोड़ा के लिए एक सक्रिय कार्यकर्ता की आवश्यकता है। निवास, भोजन, तथा उपवेतन का प्रबन्ध कर दिया जायगा जो महाशय अल्मोड़ा रहना चाहें शीघ्र सभा के पते पर प्रार्थना पत्र योग्यतादि के साथ भेजने की कृपा करें। स्थानीय आ० स० के प्रधान जी का प्रमाण-पत्र भी साथ हो।

पता—मंत्री आ०प्र०सभा उ०प्र०
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

चित्रकूट में आर्यसमाज निर्माण योजना

आर्य जनता सहयोग दे

श्रीमन नमस्ते !

विन्ध्याचल प्रदेश के अन्तर्गत मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की तपोभूमि चित्रकूट गिरि के अञ्चल में कर्वी बहल पुरवा, मानिकपुर आदि स्थानो मे ईसाइयो के प्रचार व प्रसार के घृणित कार्यों की रोकथाम और चित्रकूट मे आई अनाथ स्त्रियो, विधवाओं व अनाथ बालक-बालिकाओं की रक्षार्थ तथा आर्यत्व की स्थापना एव वैदिक संस्कृति के प्रसार व प्रचार की आवश्यकता को देखकर श्री प० शिवसागर शर्मा वानप्रस्थ प्रधान आर्यसमाज नैनीताल, चित्रकूट मे आर्यसमाज की स्थापना के लिये सतत यत्नशील हैं। एतदर्थ उन्होने चित्रकूट स्टेशन के निकट जमीन भी खरीद ली है। आर्यसमाज की स्थापना के बाद ही भगवान राम के पावन पुनीत तीर्थ स्थल चित्रकूट अचल मे व्याप्त घोर अज्ञानता, पाखण्ड व इसाइयो के घृणित प्रचार को रोका जा सकता है। इस महनीय काय की सम्पूर्ति में काफी धनराशि व्यय होगी जिस राशि को पूर्ण करना उदार दानी आर्य जनता का पुनीत कर्तव्य है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा द्वारा दिनाक २९ अगस्त १९६५ मे सवसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुआ—"निश्चय संख्या १३ विषय १३ चित्रकूट मे आयसमाज मन्दिर का निर्माण करने हेतु आयसमाज नैनीताल के श्री शिवसागर जी उपप्रधान का पत्र विचाराथ प्रस्तुत होकर निश्चय हुआ कि चित्रकूट मे आयसमाज मन्दिर निर्माण कार्य करने के लिए धन सग्रह की स्वीकृति दी जाय और सग्रहीत धन पृथक उक्त मद का बैंक मे जमा किया जाये" इस निश्चय के आधार पर चित्रकूट मे आयसमाज मन्दिर निर्माण हेतु श्री स्वामी आनन्दभिक्षु जी महाराज आर्यसमाज नया बास देहली एव श्री प० शिवसागर शर्मा वानप्रस्थ प्रधान आयसमाज नैनीताल धन सग्रह का काय कर रहे हैं।

अत दानी महानुभावो से सभा की ओर से अपील है कि वे उक्त दोनो महानुभावो को अपने नगर मे पहुचने पर सभा की रसीद प्राप्त कर आर्य समाज मन्दिर निर्माणार्थ पुष्कल धनराशि भेंट करने की कृपा कर पुण्य व यश के भागी बनें।

निवेदक—
चन्द्रदत्त तिवारी, मन्त्री

सभा के समस्त अधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो की सेवा मे—

अन्तरग के निश्चयअनुसार अपने अपने क्षेत्र से सभा को भेजने की कृपा करें।

अन्तरग सभा दि० ५-११-६६ के नि० सं०३ की प्रतिलिपि

३—विषय स० २ वेद प्रचार के निमित्त धन सग्रह करने पर विचार प्रस्तुत हुआ। श्री सभा मन्त्री जी ने उपदेशको एव अन्य विधियो मद्दे विगत वर्षों मे दिये धन की सूचना प्रस्तुत की जिससे ज्ञात हुआ कि सभा का कर्जा लगभग समाप्त हो गया है। श्री मन्त्री सभा ने निवेदन किया कि थोड़ा सा प्रयत्न किया जावे तो इस वर्ष पुराने सारे कर्जे निपट जाय। विचार होकर निश्चय हुआ कि प्रयत्न किया जावे कि इस वष के अन्त तक सभी का देना समाप्त हो जावे।

यह भी निश्चय हुआ कि समस्त अन्तरग सदस्य अधिकारियो के साथ कार्य क्षेत्र बाटकर दशाश सुवर्कोटि धन तथा विशेष वेद प्रचार निधि मद्दे धन एकत्रित करें और जहा तक सम्भव हो प्रत्येक अन्तरग सदस्य ३१-१२-६६ तक २००) व अधिकारी १०००) एकत्रित कर सभा को भेज दें।

निम्न सदस्यो से वेद प्रचार के लिये आश्वासन प्राप्त हुए।

१—श्री फूलन सिंह जी शिकोहाबाद—५००)

नोट—जिन्होने १००१)की थैली श्री प्रधान जी को भेंट कर वचन पूरा किया

२—श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री हरदोई ५००)
३—,, हरप्रसाद जी आर्य रामपुर ५००)
४—,, निर्मल चन्द्र जी राठी लखीमपुर ५००)
५—,,आनन्द प्रकाश जी वाराणसी २५१)आश्वासन मिले ।

चन्द्रदत्त तिवारी, सभा मंत्री

गोभक्त जगद्गुरु शङ्कराचार्य व देशद्रोही शेख अब्दुल्ला

[ले०—आचार्य विशुद्धानन्द जी एम०ए० बदायूं]

बाल ब्रह्मचारी आदि शंकराचार्य के नाम से कौन अपरिचित होगा, यह निर्भीक सन्यासी अज्ञानान्धकार में पड़े नास्तिक जनों के लिए 'ब्रह्म सत्यम्' का सन्देश सम्बल लेकर अकेले पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक समस्त देश के एकीकरण के लिये आज से लगभग १२ सौ वर्ष पूर्व घर से निकला था। उनकी प्रखर-पाण्डित्य मण्डित प्रतिभा और ब्रह्मचर्य से देदीप्यमान तेजोमण्डल राजित दर्शनों से सभी प्रभावित हुये। ब्रह्म ज्ञान की ज्योति सदा जलती रहे और चारों दिशाओं मे ज्ञान का शुभ आलोक बिखरे, अतः उन्होने चार पीठों की स्थापना की थी। अवान्तर दार्शनिक मतभेद होते हुये भी ४० करोड़ हिन्दुओं ने अपने श्रद्धा एवम् पावन निष्ठा के पुष्प प्रसून इन पीठों के धर्माचार्यों के पवित्र चरणों में अब तक चढ़ाये। परन्तु २२ नवम्बर को तपोमूर्ति आचार्य के पवित्र पूजा स्थल को एक अनार्य ने प्रवेश करके अपवित्र करने का जघन्य अपराध किया और साथ ही धर्म प्राण हिन्दुओं के हृदय पर वज्राघात भी।

हमारी विवेक-हीन सरकार की दृष्टि में देशद्रोही शेख अब्दुल्ला के अपराध की अपेक्षा पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य का अपराध बढ़कर है। भारतीय संस्कृति के प्रतीक, राष्ट्र की अखण्डता के हामी, कहाँ जगद्गुरु, और कहाँ भारत माँ का दूध पीकर, शस्य श्यामला सजल शीतला भारत वसुन्धरा में पाकिस्तान के षड्यन्त्रों के रेशमी टोपी के सपनों को साकार करने में लीन, माँ का (काश्मीर) शिरश्छेदन कर माँ के ही खून से रंगे हाथों शेख अब्दुल्ला। ज्ञान गरिमा की कीर्ति से देश के मस्तक समुन्नत करने वाले धर्मावतार शंकराचार्य जी एक ओर, दूसरी ओर देश और विदेश में भारत का अपयश बखान करने वाले साक्षात् कलंक शेख जी। याद रहे कि अतीत में जनता के भीषण आन्दोलन के बाद बड़ी कठिनता से शेख जी को सरकार ने नजरबन्द किया पर साथ ही हजारों रुपये व्यय करके राजकीय समग्र सुविधायें प्रदान कीं, दूसरी ओर मन-वचन-कर्म प्राण, अहिंसा और शान्ति के पुजारी देशभक्त को जो प्रातःस्तवन पूजा विधि सम्पादन की तैयारी में व्यस्त थे सैकड़ों की संख्या में पुलिस ने जाकर अनायास बन्दी बना लिया। जबकि नजरबन्दी का कानून केवल देशद्रोह पर ही लग सकता है। वाह रे लोकतन्त्र की दुहाई देने वालो! तुम्हारा कैसा यह लज्जाजनक क्रूर कर्म है। सच है 'अन्धेर नगरी अनबूझ राजा। टके सेर भाजी टके सेर खाजा॥" ये लक्षण देश के दुर्गति परिचायक हैं। नीतिकार ने भी उचित ही कहा है—

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्य पूजा व्यतिक्रम। त्रयस्तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्ष मरण भयम्॥

जिस देश में अपूज्यों की पूजा होती है और पूजनीयों का अपमान होता है वहां तीन चीजें सदा रहती हैं १—दुर्भिक्ष, २—मरण और भय (आन्तरिक उत्पात और बाह्य शत्रु जन्य भय)।

आश्चर्य और महान् दुःख है—सरकार की न्याय तुला में एक ओर जगत् कल्याणार्थ परार्थ व्रतधारी तपस्वी अनशन व्रतधारी शंकराचार्य और दूसरी ओर स्वार्थी द्वेषधारी पैशाच व्रतधारी चोटीराज रूकने वाले सरकारी मेहमान शेख जी, पलड़े दोनों बराबर। वाह रे न्याय! एक ओर पशु रक्षण के लिये प्राणों का होम करने वाले आचार्य, अपरत पशुभक्षण से प्राणों का पोषण करने वाले दुराचारी। मदान्ध नन्द का साम्राज्य उलटने वाले चाणक्य ने कहा था "राजा यथाहं दण्डकारी स्यात्" और सृष्ट्यादि के राजा मनु ने राज सचालन व्यवस्था में लिखा है—"अदण्ड्यान् दण्डयन् राजा दण्ड्यांश्चैवाऽप्यदण्डयन्। अयशो महदाप्नोति, नरकं चैव गच्छति॥ जो राजा अदण्ड्यों को दण्ड देता है और दण्डनीयों का समादर करता है उसका इस लोक में महान् अपयश होता है और नरक को जाता है। पर एक व्याख्याकार की राय में हमारे शासकों को अपयश की कोई चिन्ता नहीं यदि सीट बनी रहे और न नरक जाने की फिक्र है यदि वहां पर भी कुर्सी मिले। दूसरे नरक और स्वर्ग तो खयाली दुनिया है। भाई—कुर्सी लग्ना करे यस्य, माल जेबेषु गच्छति। कुलमुच्च पदेलग्नम् तस्य स्वर्ग इहैवहि"॥ कुर्सी जिसके हाथ लग गई, माल जेबों में जा रहा है और रिश्तेदार भाई-बन्धु ऊंचे पद पर लग गये, उसे तो स्वर्ग यहीं है।

मैं अपनी सरकार को सावधान कर देना चाहता हूं कि अब गोरक्षा का प्रश्न करोड़ों वर्ष से अजस्र बहती हुई संस्कृति गंगा की पावन धारा को अक्षुण्ण रखने का प्रश्न है। "माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽदित्यानाम् अमृतस्यनाभि। प्रनु वोचं चिकितुषे जनाय मा गाम् अनागाम् अदितिं वधिष्ट" वेद, रुद्रों की माता, वसुओं की दुहिता, आदित्यों की बहिन और अमृत की नाभि, अघ्न्या गौ अवध्य है" इन भावनाओं से सृष्टि के आदि में सींचे हुये ऋषियों के हृदयों की तपोमयी निष्ठा की रक्षा का प्रश्न है। आर्यों की रक्त की बूंदों में बिखरे हुये गीता के गानों, मुरली की तानों और गोविन्द के गोवर्धन की पूजा का प्रश्न है। यह प्रश्न है वीर बन्दा वैरागी की धू धू कर धधकती हुई जौहर ज्वाला में जीवन को होमकर शरीर को कुन्दन बनाने वाली वीर ललनाओं के रक्त-रंजित हिन्दुत्व प्रदीप पर पतंगे बनकर हंसकर जलने वाले शूरों की आन, बान, शान और मान-मर्यादा का। यह प्रश्न है कण्टकाकीर्ण-पथ में मग्न पदचारी चक्रवर्ती सम्राट् दिलीप के गुरु वसिष्ठ की 'दिनावसानोत्सुक बाल वत्सा नन्दिनी, की रक्षा का। यह केवल पशु मात्र की रक्षा का प्रश्न नहीं है यह प्रश्न है

(शेष पृष्ठ १४ पर)

गोहत्या पर पूर्ण रोक लगे

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री द्वारा लोक सभा में प्रस्ताव

नोट—सम्पूर्ण भाषण देर से प्राप्त होने के कारण आगामी अंक में प्रकाशित होगा—स०

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने २ दिसम्बर को लोकसभा में गोवध निषेध के आन्दोलन को चुनाव की चाल कहकर टालने की जिद न करे तथा इसे प्रतिष्ठा प्रश्न न बनाकर खेती और समृद्धि के हित में तुरन्त सारे देश में

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री

गोवध निषेध का कानून लागू करे। अन्यथा उसकी जिद उसके लिए घातक सिद्ध होगी।

उन्होंने कहा इस महत्वपूर्ण प्रश्न को, जिसको लेकर भारत में स्वाधीनता के पहले जाने कितने आन्दोलन हुए, हमने स्वाधीनता के बीस वर्ष बाद सरकार के रवैये से निराश होकर ही उठाया है। श्री प्रकाशवीर ने पूछा यदि सरकार को सचमुच गो वध की रक्षा की चिन्ता है तो वह संघशासित क्षेत्रों में अभी तक क्यों नहीं गोवध निषेध लागू कर पायी?

श्री प्रकाशवीर ने प्रधान मंत्री के इस कथन का खण्डन किया कि गोवध निषेध का आन्दोलन चुनाव के लिए उठाया जा रहा है। उन्होंने कहा जगद्गुरु शंकराचार्य, मुनि सुशीलकुमार, विनोबा भावे और श्री जयप्रकाश नारायण को चुनाव नहीं लड़ना है। 'चुनाव की वैतरणी तो यह सरकार गाय के बच्चे—बैल की पूंछ पकड़ कर पार करती है।"

श्री प्रकाशवीर ने गोरक्षा के आर्थिक पहलू पर जोर देते हुए बताया कि गोवध के निरादर के कारण १९४० से लेकर अब तक देश में दूध का उत्पादन केवल एक हजार टन बढ़ा है, जो कि खेद की बात है। इसी प्रकार खेती में भी बैलों की जोड़ी २०००) रु० की मिलने के कारण छोटा किसान निराश हो गया है।

सरकार को १९६५-६६ में गोमांस के विदेशों को निर्यात से १ करोड़ २५ लाख रुपये का लाभ हुआ। इस प्रकार स्वतन्त्रता के बीस वर्षों में ६५ करोड़ रु० की आमदनी गोमांस से हुई होगी। गांधी के देश में गोमांस और गाय की खाल के चक्कर में सरकार पड़ गयी है।

श्री प्रकाशवीर ने सूखी गायों और बूढ़े बैलों को एक जगह रखकर उनसे खाद आदि के होने वाले लाभ का उल्लेख किया और बताया कि मन्दिरों की चर्च से बची आमदनी को गोपालन पर खर्च किया जावे तो किसी को आपत्ति नहीं होगी। गोवध निषेध का कानून वर्तमान संविधान के अनुसार भी बनाया जा सकता है। परन्तु आवश्यक हो तो यहां इतने संशोधन संविधान में हुए एक और संशोधन करने में क्या हर्ज है। सात नवम्बर के कांड की भी जांच की मांग उन्होंने की।

राक्षस

हे ज्योति स्वरूप ! राक्षसों से हमारी रक्षा कर ।

ऋ० १ । ३६ । १२

हे ज्योति स्वरूप ! राक्षसों से हमारी रक्षा कर ।

★

जो प्राणियों के जीवन को नष्ट करते हैं, उनको राक्षस कहते हैं । जीवन को नष्ट करने का उनका कोई एक निश्चित प्रकार नहीं है । कभी वे स्वार्थ के वश मे होकर विनाश का आरम्भ करते हैं कभी केवल मनोरंजन के लिये ही दूसरो को मौत के घाट उतार देते हैं । कभी वे सज्जनों की सज्जनता को देखकर ही कुपित हो जाते हैं । सच बोलना भी पाप है झूठों के राज्य मे, जब उनके विनाश-काण्ड मे कोई बाधा उपस्थित होती है, तो वे उसे अपने अधिकारो का अपहरण समझते हैं । इससे उनकी दुष्ट प्रवृत्तियाँ तुरन्त ही बहुत अधिक उत्तेजित हो जाती हैं । वे सहसा ही बडे बड उपद्रव खड कर देते हैं । जब किसी के मुंह को लोहू लग जाता है तब उसको उसकी चाट-सी पड जाती है ।

जो कसाईखानों मे जानवरो क गले काटते हैं, अथवा अस्त्र प्रयोग द्वारा मार-काट मचाते हैं, वे तो राक्षस हैं ही । सूद खोर, किराया-खोर, मिलावट करने वाले, नकली औषधियां और नकली माल बेचने वाले, कम तोलने वाले, अधिक काम लेकर कम वेतन देने वाले भी राक्षस ही हैं । वे भी अपनी शोषण प्रणाली द्वारा दूसरों के जीवन का घात ही तो करते हैं। राक्षसों की कोई पृथक योनि नहीं है। मानव-जाति के ही अत्यन्त पतित समुदाय का नाम राक्षस है । राक्षसो का न कोई नियम है, न मर्यादा । वे तो उच्छृङ्खलता पूर्ण आचरण करते हैं ।- बहुरूपियों जैसे नये-नये स्वांग रचते रहते हैं । जनता को तरह-तरह क धोके देते रहते हैं । "अन्दर से शिव जी के भक्त, बाहिर से शक्ति क उपासक, सभा मे विष्णु क पूजक, ऐसी होती हैं उनकी प्रगतियां ।"

राज्य का कर्तव्य है कि वह इन दुष्टों का कठोरता के साथ निरोध करे । राजा और सेनापति को वेद ने इसीलिये तो अग्नि कहा है कि वे ज्ञानी होते हैं, जीवन, रक्षक होते हैं, और राक्षस-समुदाय को भस्मीभूत करने मे भी समर्थ होते हैं । दुष्टो के अन्त का एक उपाय यह भी है कि उनकी दुष्टता का अन्त कर दिया जावे । धब्बे को धो डालना भी एक बुद्धिमत्ता ही है । यदि प्रयत्न करने से धब्बा छूट जावे तब कपडे को फाडने या फेंक देने का प्रसग ही न आयेगा । जिनकी दुष्टता असाध्य हो चुकी है, उनक लिये तो उग्र-उपायो को ही काम में लाना होगा । यह काम शासन का है । विचारोपरान्त वह जैसा उचित समझे करे । जेल मे रखे, या दुष्टो का वध करवा दे ।

रोग-जन्तुओं अर्थात नाना प्रकार के रोगो को फैलाने वाले क्रिमियों को भी राक्षस कहते हैं । मच्छरो की गणना भी राक्षसो मे होती है । इन जन्तुओं के प्रहार कब आरम्भ होते हैं, इसका तुरन्त ही कुछ पता नहीं चलता । तब कुछ न कुछ हानि अवश्य ही हो चुकी होती है । इनसे सुरक्षित रहने के लिये भी जागरूकता की आवश्यकता है । यह जागरूकता समाज-कण्टको से बचने से कुछ भिन्न प्रकार की है । हवन, यज्ञ और औषधोपचार की नाना प्रकार की विधियां इन दूसरे प्रकार के राक्षसों से बचने के लिये ही व्यवहार मे लाई जाती हे । जब रोग हो जाये, तब उसके निवारण के प्रभावपूर्ण उपाय शीघ्र ही किये जाय और अवश्य ही किये जायें, परन्तु उत्तम तो यही है कि कोई रोग होने ही न पाये । संयमपूर्वक रहने-सहने से रोगो के होने की सम्भावनायें बहुत ही कम हो जाती हैं ।

हे जगदीश्वर ! हम नहीं जानते, कौन सज्जन है, कौन असज्जन ? कौन देव है, कौन राक्षस ? अन्य जीवन-नाशक तत्त्वो को भी हम जानते पहिचानते नहीं हैं । अब तो आप ही हमारी रक्षा करें । दयानिधे ! हमें आपका ही सहारा है ।

—श्री साधु सोमतीर्थ

गोवध पूर्ण रूप से बन्द हो

[श्री जितेन्द्र कुमार सिंह, समाजशास्त्र विभाग गोरखपुर विश्वविद्यालय]

गोवंश का महत्व जितना सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से है, आर्थिक दृष्टि से उससे तनिक भी कम नहीं है । भारतीय-संस्कृति की परम्परा में गाय को परिवार के एक सदस्य के रूप में माता का स्थान मिला है । अध्यात्म की पूर्ति मानव के जीवन से तपस्वियों ने बहुत कुछ सीखा है । हमारी संस्कृति में त्याग और संतोष का जो बहुत बड़ा हिस्सा है, वह हमने गायों के जीवन से लिया है । विश्व की समस्त संस्कृतियों में सर्वोत्कृष्ट जीवन व्यवस्था, आश्रम, तभी चल सकते हैं जब कि गायों का सहारा लिया जाय । इतना महान महत्व है गायों का सांस्कृतिक पक्ष मे, परन्तु इससे भी कहीं ज्यादा उभरा हुआ और स्पष्ट पक्ष है आर्थिक महत्व का जो किसी से छिपा नहीं है ।

मैं यहाँ केवल एक बात का स्पष्टीकरण करना चाहता हू कि यह जो कहा जाता है कि अनुपयोगी गायों का वध बुरा नहीं है, एक बहुत बडा भ्रम है । क्योंकि यदि अगर हमने सृष्टि की सभी अनुपयोगी समझी जाने वाली वस्तुओं को समाप्त कर देने का ठेका ले लिया है (जिसे कि मैं नहीं मानता) तो ऐसे नाना प्रकार के काम करने पड़ेंगे जिसे करने से हमें कोई पागल के सिवा और कुछ नहीं कहेगा । फिर दूसरी बात यह है कि गायें तो कभी अनुपयोगी किसी भी अवस्था मे होती ही नहीं । लोग अनुपयोगी गायें उन गायो को कहते हैं जो न दूध देतीं हैं और न बछडा या बछिया हो और कहते हैं कि ऐसी गायो का पालन करके खर्चा क्यों किया जाय । परन्तु सत्य इससे कुछ भिन्न है क्योंकि दूध न दे सकने वाली एव बछडा या बछिया भी न दे सकने वाली गायें कम से कम इतना गोबर तो अवश्य देती हैं जो उनके पालन मे लगने वाले खर्चे से ज्यादा कीमती होता है । फिर ऐसी वृद्ध गायें सूखे तृण पात खाकर जीवित रहती है, जिन पर किसी प्रकार का खर्चा नहीं होता । आवश्यकता इस बात की है कि अनुपयोगी कही जाने वाली गायो के वध को भी रोक कर लाभ उठायें । अनुपयोगी पशुओं के नाम पर होने वाले गोवध को रोक कर हम राष्ट्र की समृद्धि एव सांस्कृतिक मर्यादा की रक्षा करें ।

हमारे देश के सभी मनीषियों ने गाय की उपयोगिता को समझा था और उसकी पूर्ण सुरक्षा और सेवा का पाठ जनता को सिखाया था । महाराज दिलीप की गोरक्षा की कहानी हमारे लिये आज भी अनुकरणीय है । भगवान् कृष्ण का तो समस्त जीवन गोभक्ति से पूर्ण है उनका नाम ही गोपाल पड गया । मुगल शासन काल में भी कई एक शासकों ने गोरक्षा का प्रशसनीय काय किया है । स्वामी दयानन्द ने तो स्वतन्त्रता से बहुत पहले गोवध को बन्द कराने का आन्दोलन हजारों व्यक्तियो के हस्ताक्षर युक्त प्रतिवेदन को देकर तत्कालीन शासकों के समक्ष प्रस्तुत किया था ।

गोवध को पूर्णतया वैधानिक प्रतिबन्ध लगाकर न रोकना सरकार की अदूरदर्शिता एव हठवादिता है । गांधी जी ने इस बात को स्वीकार किया था कि भारत के लिए गायों का महत्व स्वराज्य से कहीं ज्यादा है । स्वराज्य का अथ तभी सार्थक होगा जब कि हम अपनी सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा और आर्थिक दृढता प्राप्त कर सकें । यह दोनो गोवध करके नहीं प्राप्त कर सकते हैं और न प्राप्त कर ही रहे हैं । इस गांधी के नाम पर चलने वाली सरकार के राज्य मे गोवध सरकार के माथ पर कलक है ।

आज देश मे खाद्यान्न के अभाव का जो दुष्परिणाम हमारे सामने है, उसका एक बहुत बडा कारण गोहत्या है । हमारे भोजन मे दूध की कमी से अन्न पर बहुत ज्यादा बल पड रहा है । गायों की रक्षा सेवा करके हम अन्न की कमी की समस्या को हल कर सकते हैं और विदेशो मे भीख मांग कर जो हम राष्ट्र का अपमान कर रहे हैं उससे बच सकते हैं । बच्चो एव वृद्धो के लिये दूध के अतिरिक्त और कोई उत्तम खाद्य पदार्थ नहीं कहा जा सकता । भारत के सन्दर्भ मे कृषि काय बैलो द्वारा ही खेत जोतकर अधिक सफल किया जा सकता है । ट्रैक्टर भारतवर्ष के लिए उतने उपयुक्त नहीं हैं क्योंकि यहा के खेत इतने छोटे-छोटे हैं कि उनकी जुताई ट्रैक्टरो से हो ही नहीं सकती । दूसरी बात यह

[शेष पृष्ठ १२ पर]

पुनर्जन्म

[ले०—श्री रामअवतार जी आर्य बाजीपुर]

पुनर्जन्म न मानने से हानि

कुछ लोग कहते हैं कि पुनर्जन्म होता है या नहीं इस चक्कर में मैं नहीं पड़ना चाहता। अगर यह मैं मानूं कि पुनर्जन्म होता है तो इससे मुझे क्या लाभ होगा और यह मानूं कि पुनर्जन्म नहीं होता है तो इसमें मेरी क्या हानि है। ठीक है। परन्तु यह कहना कि इस चक्कर में मैं नहीं पड़ना चाहता, अच्छी बात नहीं है। विचार-विमर्श करना कभी बुरा नहीं होता। परन्तु हठ, दुराग्रह और पक्षपात को छोड़कर पवित्र मन और शुद्ध हृदय से सत्यासत्य के निर्णय के लिए वाद विवाद करना चाहिए। यही विद्वानों का मत है। 'सत्येन पन्था विततो देवयान' ।' विद्वानों ने सत्य से ही वैदिक धर्म का प्रचार किया है जिससे मानव-मात्र का कल्याण हो रहा है।

जो विषय हमारे जीवन से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं उनके विषय में हमें जानकारी न रहे यह अत्यन्त खेद का विषय है और यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि उसके विषय में हम जानकारी रखना भी नहीं चाहते। मृत्यु के बाद हम कहां जाते हैं? फिर कैसे इस संसार में आते हैं? क्या जन्म-मरण से कभी छुट्टी भी मिलती है या जीव इसी प्रकार भटकता रहता है? ये कितने मनोरंजक और जटिल प्रश्न हैं। हमारे ऋषियों ने इन प्रश्नों को कैसे हल किया था। क्या उनके विचार युक्तियुक्त हैं? आदि प्रश्नों पर हमें पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। मनुष्य को चाहिये कि अपने अन्दर से भ्रम को सदा निकालता रहे। ऐसे वास्तविक विषयों पर उसकी अपनी एक सम्मति होनी चाहिए। 'मनुष्य विचारशील प्राणी है।' कम से कम इस नाते तो विचार होना ही चाहिए।

वस्तुतः कुछ लोग वाद विवाद से घबड़ाते हैं। वे वाद विवाद को कलह, ईर्ष्या द्वेष और कटुता का कारण समझते हैं। जब कि सच्चाई यह है कि वाद विवाद सत्यासत्य के निर्णय का अच्छा माध्यम है। एक संस्कृत की प्रसिद्ध सूक्ति है—'वादे-वादे जायते तत्त्वबोधः।' अर्थात् वाद-विवाद करने से तत्त्व का पता चलता है। इससे स्पष्ट है कि वाद-विवाद हार-जीत के लिये नहीं अपितु सत्य के निकट पहुंचने के लिये किया जाता है। मनुष्य अल्पज्ञ है। कोई मनुष्य पूर्ण नहीं है। उसकी अल्पज्ञता में कमी तभी आ सकती जब वह असत्य को छोड़ने और सत्य को ग्रहण करने के लिये तैयार रहे।

अब हम अपने मूल प्रश्न पर आते हैं कि पुनर्जन्म न मानने से हानि क्या है? पुनर्जन्म न मानने से सबसे बड़ी हानि यह होगी कि मनुष्य का मोक्ष न होगा और वह परमानन्द से वंचित होकर जन्म-मरण के चक्कर में बार-बार पड़ेगा। उसका लक्ष्य होगा भौतिक सुख की प्राप्ति। वह इस सुख के पीछे इतना दीवाना बन जायेगा कि दूसरों के सुख साधनों को छीनकर स्वयं अत्यधिक सुख प्राप्त करना चाहेगा। इस प्रकार वह बहुत स्वार्थी आदमी बन जायेगा। क्योंकि जब उसे यह विश्वास हो जायगा यही जन्म है, इसके बाद दूसरा जन्म नहीं होता तो वह इस संसार के अधिक से अधिक भौतिक सुखों को प्राप्त करने की कोशिश करता है। उसके विचार में इस सुख की अपेक्षा और किसी प्रकार के सुख की तो कल्पना भी नहीं होती। वह नहीं देखता कि भाई दुखी है या नहीं, माता-पिता, पास-पड़ोसी, इष्ट मित्र सुखी हैं या दुखी। उसे केवल अपना सुख दिखाई देता है। वह चाहे नैतिकता से प्राप्त हो या अनैतिकता से, कोई हानि नहीं। उसे पाप-पुण्य नहीं देखना होता उसे तो केवल अपना सुख दिखाई देता है।

चारवाक तो इसी बात का प्रचार करता था। वह कहता था—'ऐ मनुष्यो! क्यों व्यर्थ के चक्कर में पड़े हो, जब तक इस संसार में जिन्दा रहो, सुख से रहो। अगर मजा लेने के लिये पैसे न हों तो कर्ज ले लो। खूब खाओ, पिओ, मौज करो। क्योंकि मृत्यु के पश्चात् इस संसार में आना नहीं है।'

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥

ऐसे मनुष्य के लिये पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, नैतिकता-अनैतिकता सब व्यर्थ हैं। उसके लिए तो वही काम सबसे अच्छा होगा जिससे उसे अधिक से अधिक सुख प्राप्त होगा। अगर शराब पीने में सुख है तो शराब पीयेगा। मांस खाने में सुख होगा तो मांस खायेगा। डाका डालने में सुख मिलेगा तो डाका डालेगा। जीव हिंसा अर्थात् शिकारादि करने में सुख मिलेगा तो शिकार करेगा। इस प्रकार वह संसार की समस्त बुराइयों में लिप्त होकर सुख प्राप्त करना चाहेगा ऐसे ही अभिमानी मनुष्यों को लक्ष्य कर के कठोपनिषद में कहा गया है कि—

न साम्परायः प्रतिभाति बालं
प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्।
अयं लोको नास्ति पर इति मानी
पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥
(कठो० २।६)

अर्थ—धन के मोह से मोहित तथा धर्माचरण में प्रमाद करने वाले मूढ़ मनुष्य को इह लोक और परलोक सुधारने वाले धर्म के कार्यों में रुचि नहीं होती। केवल यही लोक है दूसरा नहीं। अर्थात् पुनर्जन्म नहीं होता, इस प्रकार मानने वाला घमण्डी मनुष्य जन्म-मरण रूपी बन्धन में बार-बार फंसता है।

आत्मा स्त्री या पुरुष

आत्मा के सम्बन्ध में एक प्रश्न किया जाता है कि जो आत्मा स्त्री के शरीर में रहता है क्या वही पुनर्जन्म में पुरुष का शरीर भी प्राप्त कर सकता है? अथवा जो आत्मा पुरुष के में शरीर रहता है क्या उसे पुनर्जन्म में स्त्री का शरीर प्राप्त हो सकता है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि आत्मा न तो स्त्री है न तो पुरुष, न पशु है, न पक्षी, न कीट-पतंग। परन्तु इस आत्मा को कर्म करने के लिये शरीर चाहिये। फल भोगने के लिए शरीर चाहिये। जब तक इसे शरीर प्राप्त नहीं होगा तब तक न तो वह कर्म कर सकता है न तो फल ही भोग सकता है। इसलिये इस आत्मा ने पूर्व जन्म में जैसा कर्म किया है उसे वैसा शरीर मिल जाता है। इस विषय में अपने न्याय-दर्शन में गौतम मुनि ने लिखा है—

पूर्वकृतफलानुबन्धात्तदुत्पत्तिः।
(न्याय० ३।२।६४)

'अर्थात् पूर्व जन्म के किये हुये कर्म के फल में शरीर की उत्पत्ति होती है।' इसका अर्थ यह नहीं है कि कर्म स्वयं अपने आप फल देंगे। किसी फल देने वाले की जरूरत नहीं है। अगर ऐसी बात होती तो ईश्वर की क्या जरूरत थी। इसलिये इस बात को स्पष्ट करने के लिये गौतम मुनि ने एक दूसरा सूत्र लिखा—

ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात्। (न्याय० ४।१।१९)

अर्थात् पूर्व जन्म के कर्म स्वयं ही फल रूपी शरीर को उत्पन्न नहीं करते किन्तु कार्यों के अनुसार ईश्वर उनका फल देता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आत्मा को शरीर उसके कर्मों के अनुसार प्राप्त होता है और कर्मों का फल देने वाला ईश्वर है। पूर्व जन्म में मनुष्य जैसा कर्म किये होता है उसी प्रकार उस आत्मा को ईश्वर शरीर प्रदान करता है। शरीर स्त्री का भी है और पुरुष का भी। अगर आत्मा ने पूर्व जन्म में ऐसा कर्म किया है जिससे स्त्री का शरीर प्राप्त हो तो उसे वह प्राप्त होगा, भले ही पूर्वजन्म में पुरुष रहा हो। अगर किसी आत्मा को पूर्वजन्म में स्त्री का शरीर प्राप्त हुआ हो और उसने ऐसा कर्म किया हो जिससे पुरुष का शरीर प्राप्त हो तो उसे पुरुष का ही शरीर मिलता है। आत्मा को सम्बोधित करते हुये अथर्व वेद में कहा गया है—

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी। त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः ॥ उतैषां पितोत वा पुत्र एषामुतैषां ज्येष्ठ उत वा कनिष्ठः। एको ह देवो मनसि प्रविष्टः प्रथमो जातः स उ गर्भे अन्तः ॥
अथर्व० १०।८।२७–२८

अर्थात् तू कभी स्त्री का रूप ग्रहण करता है कभी पुरुष का, कभी तू कुमार बनता है कभी कुमारी। तू कभी दण्ड लेकर वृद्ध रूप में चलता है और अपने कर्मानुसार चारों दिशाओं में प्रकट होता है।

यह आत्मा कभी इनका पिता बन जाता कभी पुत्र, कभी ज्येष्ठ भ्राता और कभी कनिष्ठ। यह एक आत्म-देव मन के अन्दर प्रविष्ट है और यही माता के गर्भ में प्रवेश करता है।

मनुष्य जैसा देखता है, सुनता है, विचार करता है, बोलता है और कर्म करता है वैसा ही चिह्न उसके अन्तःकरण पर बन जाता है। एक चक्रवर्ती सम्राट् स्वप्न में देखता है कि मैं एक हजार आदमियों के बीच में जा रहा हूं, लोग अनमुक्त कुछ रहे हैं।

(शेष पृष्ठ १२ पर),

गोरक्षा के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री द्वारा प्रधान मन्त्री को पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्रीयुत शिवचन्द्र जी ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी को एक विशेष पत्र भेजकर सम्पूर्ण देश में सम्पूर्ण गोहत्या बन्दी कराने की प्रेरणा की है साथ ही गोहत्या बन्दी के सम्बन्ध में आर्य समाज की स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा है कि गोरक्षण और गोहत्या बन्दी आर्यसमाज का उसके जन्म दिवस से मुख्य कार्यक्रम रहा है और अब भी है।

पत्र अविकल रूप में इस प्रकार है—

"इस पत्र के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग दिनांक १६-१०-६६ की बैठक के निश्चय सं० १५ की प्रतिलिपि सूचना तथा उचित कार्य के लिए भेजता हूं।

सभा को आशा थी कि आपके नेतृत्व में भारत सरकार सम्पूर्ण भारत मे गोहत्या बन्दी के लिए कानून बनाकर बहुसंख्यक लोगों की भावना, संविधान के आदेश का आदर करने और भारत के मस्तक पर लगे कलंक को धोने का श्रेय प्राप्त करेगी और जनता सीधी कार्यवाही करने के लिए विवश न होगी। परन्तु सभा को और आर्य जनता को भारत सरकार के रवैये से इस सम्बन्ध मे निराशा देखनी पड़ रही है, फलतः सभा को अपने उपर्युक्त निश्चय को बड़े दु:ख के साथ क्रियान्वित करना पड रहा है।

गोहत्या बन्दी के सम्बन्ध मे आर्य समाज की वही स्थिति है जो उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की थी और जिसकी एक झांकी उनके प्रयत्नो और आवेदन पत्र से मिल जाती है जो उन्होंने महारानी विक्टोरिया को भेजने के लिए तैयार किया था। गोहत्या के अभिशापों और गोरक्षा के वरदानों का उनकी गो करुणा निधि पुस्तक में सजीव चित्र अंकित है जिसकी १ प्रति साथ है। गोहत्या बन्दी उनके उपदेशों और कार्य का प्रमुख अंग था। उन्होंने ही सर्वप्रथम गो हत्या बन्दी के आन्दोलन का सूत्रपात किया था। तभी से यह आर्यसमाज के कार्यक्रम का मुख्य अंग बना हुआ है।

आर्यसमाज हिंसा और तोड़-फोड़ की प्रवृत्ति का परम विरोधी है और उसे एक क्षण के लिए भी आश्रय नहीं देता। अतः आर्यसमाज का सत्याग्रह आन्दोलन नितान्त शान्त और अहिंसक और बलिदान एवं त्याग से ओत-प्रोत रहेगा। उसकी दृष्टि मे राष्ट्रीय या व्यक्तिगत सम्पत्ति को क्षति पहुंचाना या हिंसा का आश्रय लेना बड़ा निन्दनीय कृत्य है। जैसा सभा प्रधान जी ने ९ तारीख के अपने वक्तव्य मे स्पष्ट कर दिया है। ७ नवम्बर को दिल्ली में जो कुछ हुआ वह बड़ा शोचनीय है इसके लिए कौन दोषी है इसकी निष्पक्ष जांच कराई जाय तो एक गंभीर विवाद का अन्त हो जाय।

अन्त में मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप सीधे या संविधान मे आवश्यक परिवर्तन कराके गोहत्या बन्दी का श्रेय प्राप्त करें जिससे आपकी कीर्ति अमर रहे।"

—शिवचन्द्र उपमन्त्री
सार्वदेशिक आ०प्र० सभा दिल्ली

एक वक्तव्य—

आग दब नहीं सकती

[ले०—श्री धर्मचन्द्र जी एडवोकेट मन्त्री आ०प्र०सभा गोंडा]

हिंसात्मक आग को हिंसात्मक उपायों से बुझाया जा सकता है किन्तु अहिंसात्मक सत्याग्रह की ज्वाला को हिंसात्मक तरीकों से दबाया नहीं जा सकता है—हैदराबाद सत्याग्रह आर्यों का धर्मयुद्ध इसका ज्वलन्त प्रमाण है। वर्तमान गोरक्षा आन्दोलन स्वतन्त्रता से पहले प्रारम्भ हुआ तथा स्वातन्त्र्य सूर्य की प्रथम किरण के साथ गोहत्या बन्दी की घोषणा सत्ता लोलुपता के मायावी कफन के नीचे ढक दी गई किन्तु मुर्दे की कफन हटाने मे आर्य वीरों को कितनी देर लग सकती है—विश्व इस बात को जानकर गोरक्षा आन्दोलन को विस्फारित नेत्रों से देखने के लिए बेताब दिखाई पड़ता है। भारत की धरती 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की घोषिका ही नहीं वरन् कर्मणा आदर्श प्रतिमान स्थापित करने का विश्व का रंगमंच ही कहा जा सकता है।

कमेटियो पर कमेटियां बनाकर इस आन्दोलन को दबाने का करिश्मा अब अधिक नहीं दिखाया जा सकता। फोर्ड फाउन्डेशन के चमत्कारी भरे ट्रैक्टरों की रोजमर्रा बढ़ाने की तिजारती सूझें इस पशु वृक्ष के आश्रय मे बढ़ने वाली सम्पूर्ण विश्व को आरोग्य प्रदान करने वाली यज्ञाग्नि ज्वालाओं से दीपित भारत की अरण्यवासिनी ऋषियों की परम्परा और भुखमरी बेरोजगारी रोगो से रहित स्वस्थ समाज के निर्माण मे अब बाधक नहीं बन सकती है।

इक्यासी करोड़ एकड़ो से अधिक भूमि पर फले भारत माता के ४८ करोड सन्तानो के बचे केवल सोलह करोड़ प्रिय गोवंश को अब किंचितमात्र भी कटने के लिये इस वैदिक धरती की देवात्मा लोकात्मा अनुमति नहीं दे सकती है। आज हमें जितने बैलों की जरूरतें हैं उतना सम्पूर्ण गोवंश बचा है। ढाई करोड़ दूध देती हुई गायों से भारत की जनसंख्या को दूध पिलाने का सपना भी नहीं देखा जा सकता है।

भूखा से मुकाबला करने वाली प्रधान मंत्री की ललकारें 'देश एकता के दांव पर' एक व्यर्थ दकोसला, गोरखधन्धा मात्र हैं। जब तक कि वृष्टि की जनक यज्ञ की आहुतियों के लिये भारत की कामधेनु सीताः राजर्षि जनक के गोशालाओं का गोघृत लाकर देश के लिये सर्वहितकारिणी भावना के साथ यज्ञ के पावन परम्पराओं के सृजन मे सहायक नहीं हो पा रही है।

हमारे आर्थिक जीवन के सबसे सबल अंग और कृषि, पशु और वृक्ष के पहलुओं को ठुकराकर बांध और ट्रैक्टर, मुर्गी और सूअरखानों को बढ़ावा देने वाली सरकार भ्रूण हत्या जैसे जघन्य कार्यों को कानून का रूप दे सकती है मद्य,मांस,मीन,मैथुन (फेमिली प्लानिंग लूप आदि) की आसुरी प्रवृत्तियों को धारण कर पवित्र ऋषि भूमि की सन्तानों के साथ खिलवाड़ करने वाली सरकार से लड़ने के लिये हम आर्यों का आह्वान करते हैं कि ओ इस पवित्र धरती का दम भरने वालो कब तक तुम इस मायावी पाशविक भोग मे पड़े रहोगे। निकलो और देखो ऋषि च्यवन के जीवन से तुली हुई एक गोमाता के ही तीस सहस्र से अधिक गोवंश को प्रतिदिन काटा जा रहा है। यदि तुम कटना बन्द न करवा सको तो मर मिटना ही उचित है।"

★

गोवध निरोध विधेयक पारित न करने पर आन्ध्र प्रदेश विधान सभा से दो सदस्यों का त्यागपत्र

सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति आन्ध्र प्रदेश के उपाध्यक्ष तथा विधान सभा के निर्दलीय सदस्य प०वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी तथा अन्य एक गोभक्त विधान सभा सदस्य श्री रामचन्द्रराव जी देशपाण्डेय ने १८ नवम्बर को विधान सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया है।

दोनों सदस्यों का त्यागपत्र देने का कारण यह बताया जाता है कि दोनो सदस्यों तथा अन्य विरोधी पक्ष के सदस्यों के हस्ताक्षर से विधान सभा मे आयी गई स्वतन्त्र प्रस्ताव गोवध निरोध विधेयक पारित करने सम्बन्धी प्रस्तुत किया गया था। प्रस्ताव पर आज सदन मे चर्चा भी की गई जिसमे सर्वदलीय गोरक्षा अभियान समिति द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन पर प्रकाश डाला गया। परन्तु श्री के० ब्रह्मानन्दरेड्डी जी, मुख्य मन्त्री आन्ध्र प्रदेश से इस प्रश्न पर सदन मे सतोषजनक उत्तर न प्राप्त होने से दोनों सदस्यो ने सदस्यता से त्यागपत्र देने की घोषणा कर दी। बाद मे उन्होने विधान सभा अध्यक्ष को अपने त्यागपत्र प्रस्तुत कर दिये हैं।

★

'गावो विश्वस्य मातरः'

कविवर राष्ट्रकवि स्वर्गीय श्री मैथिलीशरण गुप्त (भारत भारती से)

"दांतो तले तृण दाबकर है दीन गायें कह रहीं—
हम पशु तथा तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही ?
हमने तुम्हें मा की तरह है दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमे तुमने हमारा वध किया।'

"जारी रहा यदि क्रम यहा यों ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायगी,
यह स्वर्ण भारतभूमि बस, मरघट मही बन जायगी॥'

ये पंक्तियां ब्रिटिश टाइम में लिखी गई थी किन्तु आज स्वतन्त्रभारत में चौगुना गोवध ब्रिटिश भारत की अपेक्षा हो रहा है। यह अत्यन्त दुख का विषय रहा जसा कि श्री सेठ गोविन्ददास जी कहते भी हैं कि भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री नेहरू नें गोरक्षा का पक्षपाती न होकर देश को रसातल मे पहुचा दिया।

हमारे कविवर गुप्त पुन कहते हैं—

माय कहू वा तुमको माय ?
आय आबाल वृद्ध हम सबकी जीवन भर की माय।
तेरा मूत्र और गोबर भी पावे, सो तर जाय,
घर ही नहीं, खेत की भी तू सबकी एक सहाय।
न्योछावर है उस पशुता पर यह नरता निरुपाय,
मा, हम दोनों आज पुकारें—कहां कन्हैया हाय!

अरे मां, आदि कवि वाल्मीकि ने ही तो लिखा था अनुव्रजिष्यामि वन त्वयैव गौ सुदुबला वत्समिवाभिकाक्षया वा० रामायण २।२०।५४ अर्थात् राम को वन जाते देख कौशल्या उनका अनुगमन करने को इसी प्रकार उद्यत हो गयीं, जिस प्रकार अधीर गौ अपने वत्स का। किन्तु मा! आज इस अपने स्वतन्त्रभारत में कितने बछड अपनी गोमाताओं से काटकर अलग कर दिये जाते हैं भला बताओ कविहृदय क द्वारा उपमा पाने वाला गौ का अपने बछड़े के स्नेह का जो यह भीषण हत्या हो रही है क्या उसक हम और आप जिम्मेदार नहीं हैं। अत मा! इसीलिये तो आपसे निवेदन करता हू कि 'जय किसान' क नारे के पहले 'जय गोपाल' का नारा लगे।

पाण्डेय प० श्री रामनारायणदत्त जी शास्त्री 'राम' की वाणी—

सुन्दर वैभव हैं और भूति हैं प्यारी।
सुर वन्द्य सुरभि की ये प्रसूति हैं प्यारी।
इनको पाकर है धन्य विश्व यह सारा,
ये विश्वरूप विभु की विभूति हैं प्यारी॥
इनके भीतर धन धान्य हमारे सोये।
इनके भीतर अरमान हमारे सोये॥
ये कामधनु हैं क्षीर समुद्र धरा का,
इनक भीतर भगवान् हमारे सोये॥
अस्त्रों का सुन्दर दृश्य इन्हीं क कर में।
यज्ञों का पूत हविष्य इन्हीं क करमे॥
ये करती रहती सुधा दान वसुधा को,
भूतलका भूत भविष्य इन्हीं के कर में॥
द्वारा करतीं ये नहीं, सहारा करतीं।
भवसागर से उद्धार हमारा करतीं।
निज त्याग तपस्यामय जीवन से जग का,
ये लोक और परलोक सुधारा करतीं।
सूखे तृण हमें खिलाने वाली गौए,
विष पीकर अमृत पिलाने वाली गौए,
मिट रहीं हमारी ही आखों के आगे,
मरकर भी हमें जिलाने वाली गौएं॥

इनकी आहों में भरे धधकती ज्वाला।
उच्छ्वासों में झंझा प्रचण्ड विकराला॥
इनकी आंखों का एक बूंद भी पानी—
है अखिल विश्व में प्रलय मचाने वाला॥
पापाचारी ससार टिका जो अब तक
अत्याचारी ससार टिका जो अब तक
गौओ क ही वह क्षमादान का फल है,
हत्याकारी ससार टिका जो अब तक॥
कौशिक मुनि का अभिमान न रहने पाया।
नृप कार्तवीर्य का प्राण न रहने पाया
इन गायों का अपमान बुरा होता है,
रे! देवराज का मान न रहने पाया॥
अत अब भारत क हित मे गोवध बन्द हो।

जिन लोगों ने कुछ नाम कमाया है जो अत्यन्त बली और वीर हुए हैं, जिनके समाज मे बालमृत्यु की सख्या बहुत घट गयी है जिन्होंने ससार मे व्यापार ध ध पर अधिकार किया है जो साहित्य सगीत कला का आदर करते हैं तथा जो विज्ञान और मानव बुद्धि की प्रत्येक दिशा मे प्रगतिमान हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्होने गाय के दूध और दूध के बने पदार्थों का स्वच्छन्दता से उपयोग किया है। —डा० ई० वी० मककालम अमेरिका।

महाकवि होमर ने युद्ध वरजिल ने आयुध, होरेस ने प्रम, दान्ते ने नरक और मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया।

परन्तु मुझ मे यदि इन सब सिद्ध कवियों की सम्मिलित प्रतिभा होती और मेरे हाथ मे हजार तारों का तानपूरा होता तथा सारा ससार श्रोता बनकर सुनता तो मैं अपना हृदय खोलकर गौ का गीत गाता, उसके गुण बखानता और उसकी महिमा का गान यावच्चन्द्र दिवाकर अमर कर देता।

गौ बिना ताज की महारानी है, उसका राज्य सारी समुद्रवसना पृथ्वी है। सेवा उसका विरद है और जो कुछ वह लेती है, उसे सौगुना करके देती है।

—श्री मालकम आर पेटसन, अमेरिका, टेनेसी प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर।

हमारी सभ्यता तो गो प्रधान सभ्यता ही है, "आवर इज दी काऊ मिल्किङ्ग सिविलिजेशन" जहा गोवंश उन्नत न हो वहा श्वेत जाति का गुजर ही नहीं हो सकता है। हम चाहते हैं कि रूस में यान्त्रिक ह, और गाय का विशेष रूप से प्रचार हो। यदि इन दो विषयों की उन्नति करने मे रूस यश लाभ करे तो रूस को एक स्थायी सस्कृति के प्रवतक का पद गौरव प्राप्त हुये बिना नहीं रह सकता। —श्री मिलो हेस्टिंग्स।

और भारत की अपनी एक गोसेवा प्रधान सस्कृति रही है। महाभारत युद्ध के साथ भारतीय सस्कृति का पतन हुआ किन्तु हम भगवान और गोमाता की ही कृपा से आज मककालम के अनुसार स्वतन्त्रता लाभ कर रहे हैं।

सबसे बड़ा डरपोक या कायर वह है जो लाचार जीवों के साथ क्रूरता का व्यवहार करता है। —डाल मार्कोस

जननी बनकर दूध पिलाती, केवल साल-छमाही भर।
गोमाता पय सुधा पिलाकर रक्षा करती जीवन भर॥

—गुरु नियालीमल जी सिपला गुमानी

होती दया जिस पर तुम्हारी मोक्ष पद पाता वही।
अति हीन ही वह क्यों न हो ऊंचा गिना जाता वही॥
गुणगान तेरा क्या करूं महिमा अनन्त अपार है।
माता! तुम्हीं से सवदा पालित सकल ससार है।

—कृष्णकुमारी

सब धनधाम, भारधन धाइ। टाका कौड़ी किछू किछू, भारधन सब छाई।

—वनका लोकोक्ति

'गाय को पीछे मारो, पहले मेरा काम तमाम कर दो।' १९१७ में अखिल भारतीय गो महासभा के सभापति पद से दी हुई कलकत्ता हाईकोर्ट के माननीय विचारपति सर जॉन वुडरफ की वक्तृता से।

मातु समान अपान विमारि सदा द ध दूध की धार धरी है।
हाय गरीब अबोलन वे असि काढ़ि कसाइन काट करी है।
दीन दहारत भारत हूं तऊ प्रेम अवाजन कानपरी है।
कोसत भारत वासिन को तब ही तो इते यह गाज गिरी है।

(शेष पृष्ठ १० पर) —प्रेम नारायण त्रिपाठी प्रेम

ऋषि दयानन्द की लक्ष्य पूर्ति के लिये—
ग्राम प्रचार की सुध लीजिये

(श्री सीताराम आर्य मैजिक लैन्टर्न वाला, आर्य वस्त्र भंडार सुशीला भवन हिसार)

ऋषि दयानन्द की प्रबल आकांक्षा थी कि विश्व एक भाषा तथा धर्म को अपनाए। ला० लाजपत राय जैसे कुछ ऋषिभक्तो ने इसको समझा, जब वे हिसार नगरपालिका के प्रधान थे और पंजाब का तत्कालीन अंग्रेज गवर्नर यहा पधारा था तब लाला जी ने उन्हें अभिनन्दन पत्र अंग्रेजी में न देकर आर्यभाषा मे देकर अपने को ऋषि का दृढ शिष्य प्रमाणित कर दिया था। परन्तु उसके सर्वथा विपरीत आज के आर्यसमाजी साप्ताहिक सत्संगों के उपस्थिति रजिस्टर मे उर्दू तथा अंग्रेजी मे हस्ताक्षर कर तथा अपना दैनिक पत्र-व्यवहार भी उक्त भाषाओं मे कर एवं अपने मकान दुकानों के बोर्ड मे भी हिन्दी को स्थान न देकर अपनी मानसिक दासता का परिचय देते हैं। सोचिये यदि आर्य लोग ही अपनी भाषा के साथ गैरों जैसा व्यवहार करें तो ऋषि का विश्व की एक भाषा वाला लेख तो स्वप्न बनकर रह जायगा।

ऋषिवर जड़ पूजा के अविश्वासी थे इस कारण उन्होंने अपनी समाधि अथवा मूर्ति स्थापना का घोर विरोध किया था परन्तु आज आर्यसमाज के उत्तरदाता नेता भी जड मूर्तियो के गलो मे माला डालकर जड़ पूजा की जड़ें दृढ़ करते हैं। कई लोग तो झण्डे का कार्य सम्पन्न करते समय अथवा यज्ञ रूप प्रभु प्रार्थना के अन्त मे जड़ वस्तुओं के आगे करबद्ध हो नतमस्तक होते हैं। गम्भीरता से सोचिये क्या वे जड वस्तुए ऐसा करने से कल्याण कर सकती हैं। क्या यह पौराणिक अन्ध परम्परा को प्रोत्साहित कर आत्मिक पतन करना नहीं है। महर्षि की प्रबल इच्छा थी कि बाल-विवाह तथा दुराचार का समूल विनाश हो। इसलिए लिखा कि बालकों के विद्यालय मे ५ वर्ष की कन्या भी न जाने पावे। परन्तु आज महर्षि के अनुयायी उनके नाम से कालेज चलाकर उनके आदर्शों की प्रत्यक्ष मिट्टी पलीत करते हैं यहाँ तो १८-१८ वर्ष की कन्यायें बैंचों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों मे समान वयस्क लड़कों से कन्धे से कन्धा भिड़ाती हैं, वहां महर्षि ने दोनों के विद्यालयों का अन्तर कई मील कहा वहां आज उतने इंच भी अन्तर नहीं। क्या यह हमारे लिये महान कलंक नहीं है। आर्यसमाज के एक विद्वान् कहा करते हैं कि भक्तों ने कृष्ण को बदनाम किया। मैं पूछता हू कि दयानन्द कालेजों मे सहशिक्षा को प्रोत्साहन दे आर्यों ने क्या महर्षि के आदेशों की धज्जियां नहीं उडाई हैं।

ऋषि ने अपने लेखों मे प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति को महत्व दिया कि जिससे आर्य अपने जीवन को पवित्र बना देश से पाप, पाखण्ड, अनाचार, बेईमानी तथा रिश्वतखोरी को निर्मूल कर सके, परन्तु आज प्राय सभी आर्य उपदेशको के पुत्र कालेज पद्धति से पढकर मानसिक दासता को अपनाते जा रहे हैं। अपनी सन्तान को उपदेशक बनाते नहीं हैं दूसरे भूले भटके लोगों को इस मार्ग पर ला पटकते हैं। क्या यह आत्म-प्रवचना वा धोखा नहीं है? इसके अतिरिक्त महर्षि ने सबसे अधिक जोर वेद प्रचार पर दिया है। प्रथम तो वेद के यथार्थ आशय को समझने वाले उपदेशक हैं ही कितने जो कुछ हैं वे भी ऐसे स्थानो पर भाषण झाडने जाते हैं जहा यातायात की सुविधा है अथवा स्वागत तथा दक्षिणा की आशा होती है। आज भारत की ग्रामीण जनता से हम कटते जा रहे हैं। वहाँ न उपदेशक जाते हैं और न समायें ध्यान देती हैं। परिणाम, पाखण्ड अपने पाव पसारता जा रहा है। अत मान्य विद्वानो तथा नेताओ ग्रामीण जनता का ध्यान करो। आपके सिद्धान्त वहाँ शीघ्र तथा स्थायी रूपेण फलीभूत हो सकते हैं। मेरा यह अनुभव है।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला कानपुर द्वारा गंगा मेला में प्रचार

बिठूर मे—श्री विजयपाल शास्त्री, प०बालकृष्ण शर्मा एव श्री हरिश्चन्द्र जी

दुर्वासा में—स्वामी शिवमुनि जी, श्री प्रभूदयाल जी, श्री देवीप्रसाद जी।

सरसैयाघाट—श्री तेजभान जी भवान एव मूलचन्द जी।

गगापार—मा० नवलकिशोर आर्य आदि द्वारा व्यापक प्रचार किया गया विशेष रूप से आर्योद्देश्य रत्नमाला तथा गो करुणा निधि की प्रतियाँ बिना मूल्य या नाममात्र के मूल्य पर शिक्षित एवं श्रद्धालु व्यक्तियों में वितरित की गई।

ऐसा अनुभव किया गया है कि मेलों में इस प्रकार का साहित्य वितरण प्रभावशाली एव अधिक स्थायी होता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हीरक जयन्ती
वेद सम्मेलन में विद्वानों के भाषण

(गताङ्क से आगे)

राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द जी के उद्घाटन भाषण के पूर्व हीरक जयन्ती महोत्सव के स्वागत मन्त्री श्री श्रीकरण शारदा ने राज्यपाल महोदय, सम्मेलन अध्यक्ष गुरुकुल कागडी के आचार्य प्रियव्रत जी तथा अन्य उपस्थित विद्वानों का अभिनन्दन किया। उद्घाटन भाषण के बाद प० भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर ने अपने भाषण मे कहा कि वेदों का अध्ययन साधारण कार्य नहीं है। वेद अतीन्द्रिय ज्ञान है जिसका अध्ययन यज्ञोपवीत बिना सम्भव नहीं है। वेद के ज्ञान के लिये अद्वितीय बुद्धि चाहिए। केवल संस्कृत के ज्ञान से वेद नहीं आ सकता, सबसे पहले भाषा को समझना पडेगा। आपने दावा किया कि यूरोप व अमेरिका वाले नहीं जानते कि भाषा कैसे उत्पन्न हुई। भाषा के अन्दर शब्द महत्वपूर्ण नहीं वाक्य महत्वपूर्ण है। अर्थ को जानकर मूल शब्द पर पहुचा जा सकता है। मेरी कामना है कि आर्य जाति जागे और वेदो का उद्धार हो।

इसके बाद प० युधिष्ठिरजी मीमांसक ने संस्कृत में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा अपनाई गई वेदो की भाष्य पद्धति पर प्रकाश डाला।

उनके पश्चात् राजस्थान विश्वविद्यालय के संस्कृत के रीडर प० सुधीर कुमार ने अपने भाषण मे कहा कि आज राष्ट्र जिस परिस्थिति मे होकर निकल रहा है उसके लिये स्वामी दयानन्द ने अश्वमेध यज्ञ का जो स्वरूप रखा है उस पर चला जाय।

आपने कहा कि अश्वमेध का लक्ष्य ऐश्वर्य की प्राप्ति है। इस सम्बन्ध मे आपने ब्राह्मण ग्रन्थों का उल्लेख किया कि राष्ट्र यदि अच्छी तरह चलता है तो सबका कल्याण होता है। मनुष्य ससार का अग नहीं बने तो वह देन नहीं दे सकता। वेदों मे पशुओं के ज्ञान को भी आवश्यक बताया है आज हमारा पशु ज्ञान भी भली भांति नहीं रहा।

अश्वमेध की व्याख्या करते हुए आपने कहा कि अश्व का अर्थ शासन के द्वारा असुरत्व का नाश है और महिषी यह जगती है, यज्ञ प्रतीक रूप है इसके लिये पीछे की भावना को समझना जरूरी है। यदि दयानन्द के मार्ग पर चल कर हम ब्राह्मण ग्रन्थो के अनुसार उसके प्रतीक को समझने की कोशिश करे तो हम इस यज्ञ के अर्थ को समझ सकेंगे।

अध्यक्ष आचार्य प्रियव्रतजी का भाषण

अंत मे वेद सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य प्रियव्रत जी ने अपने भाषण मे कहा कि आर्यसमाज के दस नियम मे यह नियम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि वेद सब विद्याओ की पुस्तक है। हर आर्यसमाजी इन नियमो को मानने और उन पर चलने पर प्रतिज्ञाबद्ध होता है। सत्य विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है। स्वामी दयानन्द ने इस युग मे जो बात कही वह कोई नई बात नहीं है और न उन्होंने ऐसा दावा ही किया है। उनका कहना था कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त जो कहा गया है उसके आधार पर ही वे कह रहे हैं।

आचार्य प्रियव्रत ने कहा कि महर्षि व्यास और शंकराचार्य ने वेद को ज्ञान विज्ञान का भंडार बताया है। सभी ऋषि मुनियो की यह धारणा है कि वेदो मे अनन्त विद्या भरी पडी है। वेदो में अनेक प्रकार का ज्ञान भरा पडा है। इस युग मे वेदों के ज्ञान की आवाज दयानन्द ने उठाई। उन्होंने आध्यात्मिक व आधिभौतिक अर्थ किये थे और कहा था कि वेद का पूरा मर्म योगाभ्यासी व्यक्ति ही समझ सकता है। प्राचीन आचार्य मनु के अनुसार वेदों मे राजनीति का भी ज्ञान भरा पडा है। स्वामी दयानन्द ने वेद मन्त्रों के अर्थ दैनिक जीवन को सामने रखकर किये हैं और उन्होंने वेद भाष्य की यौगिक पद्धति की ओर ध्यान किया है।

आपने कहा कि योगीराज अरविन्द ने भी यह माना है कि स्वामी दयानन्द ने ही आवाज उठाई कि यौगिक पद्धति ही वेदो के ज्ञान की कुंजी है।

अन्त मे आचार्य प्रियव्रत जी ने आर्य जनो को आवाहन किया कि ऋषि दयानन्द की यह जो देन है उसे समझकर और उसे पूरा करने का गुरुतर भार वे हमारे कंधों पर डाल गये हैं। वेदों के उद्धार का यह काम मिशनरी भावना से ही संभव होगा।

★

गोसंवर्धन और गोवध

[ले०—श्री कालिकाप्रसाद तिवारी, आर्यसमाज नासनेर आगरा]

इस लेख के शीर्षक को देखकर पाठक आश्चर्य न करें। प्रत्यक्षतः गोसंवर्धन और गोवध परस्पर विरोधी कार्य हैं। गोसंवर्धन का अर्थ गोवंश का वर्धन (बढ़ाना) है और गोवध का अर्थ गोवंश का संहार करना है।

भारतीय जनतंत्र के संविधान में जहाँ गो संवर्धन का प्राविधान है, वहाँ गोवध का प्राविधान नहीं है। भारत सरकार के कृषि मन्त्री प्रतिवर्ष गोपाष्टमी के दिन गो संवर्धन की बातें करते हैं, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब कुछ वे रस्म अदायगी के लिये करते हैं। उनका वास्तविक उद्देश्य गोसंवर्धन नहीं है। यदि उनका उद्देश्य गोसंवर्धन होता तो वे गोवध को रोकते और गोवध विरोधी कानून बनवाने में अग्रसर होते। वे कह सकते हैं कि कृषि की उन्नति के लिए गोसंवर्धन आवश्यक है और अनुपयोगी गौओं का वध करने से कृषि की उन्नति में कोई रुकावट नहीं आ सकती।

परन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या अनुपयोगी गौओं का कृषि की उन्नति में कोई उपयोग नहीं हो सकता। कहा जाता है कि अनुपयोगी पशुओं का यदि वध न किया जाय तो उनके लिए चारा आदि कहाँ से आवे? ठीक है चारे की समस्या तो है, किन्तु अनुपयोगी पशु भी तो उपयोगी हो सकता है। यह कैसे? अनुपयोगी पशु जो चारा खाता है, उसका वह गोबर देता है। उस गोबर से खाद का काम लिया जा सकता है। आज जो रासायनिक (विदेशी) खाद काम में लाई जा रही है, वह इतनी उवरक नहीं जितनी गोबर की खाद होती है। परिणाम यह है जहां जहाँ रसायनिक खाद खेतों में डाली जाती है वहाँ-वहाँ उपज कम होती है और जहाँ-जहाँ गोबर की खाद डाली जाती है, वहाँ-वहाँ उपज पूर्ववत् होती है।

हमारे पूर्वजों ने बड़ी बुद्धिमानी से गो-धन की रक्षा तथा उसका संवर्धन करना धर्म का अंग बताया था। इसीलिए भारतवासी गो को अपनी माता की तरह पूजते हैं, यद्यपि गो पूजा मात्र से गोसंवर्धन हो सकता है। गो की सच्ची पूजा तो यह है कि गोवंश की बढ़ोत्तरी हो, अधिक से अधिक मात्रा में दूध देने वाली गायें हों।

बहुधा देखा गया है कि लोग अपनी गायों को बाजार में छोड़ देते हैं और वे गायें जो कुछ (विष्ठा तक) मिलता है उसे खा लेती हैं। परिणाम यह होता है कि उनका दूध अच्छा नहीं होता, बल्कि कभी-कभी उसमें क्षय रोग के कीटाणु आ जाते हैं।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि जनता गो पूजा के सच्चे अर्थ को समझे। गोवध पर रोक लगाने की माँग के पीछे जहाँ हिन्दुओं की धार्मिक भावना छिपी हुई है वहाँ उसके आर्थिक लाभ का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। यह नहीं हो सकता कि एक ओर तो सरकार गो संवर्धन की बात कहे और दूसरी ओर गोवध की खुली छुट्टी दे दे। राष्ट्रीय स्वास्थ्य के हित में यह आवश्यक है कि गोवध तुरन्त बन्द हो। सम्भव है इससे सरकार को कुछ आर्थिक हानि उठानी पड़े, किन्तु राष्ट्रीय स्वास्थ्य के हित में यह हानि कुछ मूल्य नहीं रखती। संक्षेप में, सरकार को गो-संवर्धन और गोवध-निषेध साथ-साथ करना चाहिए। इसी में राष्ट्र का हित है।

★

भ्रम निवारण

हमे यह जानकर अत्यन्त वेदना हुई है कि किसी या किन्हीं व्यक्तियों ने हमारे नामों को दानाभिलाषी रूप में देकर आदर्श विवाह सम्बन्धी नितान्त असत्य सूचना का निमन्त्रण पत्र छपवाकर अनेक व्यक्तियों व संस्थाओं को डाक द्वारा भेजा है। हमारा इस निराधार तथा नीचतापूर्ण कार्य से कोई सम्बन्ध नहीं है और न यह निमन्त्रण पत्र हम लोगों ने छपवाया है। यह कार्य घ या विद्यालय और आर्यसमाज के विरुद्ध वातावरण बनाने के लिए किन्हीं स्वार्थी लोगों ने किया है।

बल्देवाग्निहोत्री	जगदीशप्रसाद अग्रवाल एम एल सी
मन्त्री	प्रधान
आ०स०गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद	आर्य कन्या इंटर कालेज मुरादाबाद

पृष्ठ ७ का शेष

गाय हमारे दुग्ध भुवन की देवी है। यह भूखों को खिलाती है, नंगों को पहनाती है और बीमारों को अच्छा करती है। इसकी ज्योति चिरन्तन है। —सम्पादक 'होर्डस डेरीमैन' अमेरिका

भारत को बचाने के लिए तत्काल गोवध बन्द हो सरकार की ओर से।

गाय के बात जो पात लबै, जलपान करैं वहाँ ताल तलैया।
सांझ भये घर घर आपुहि आवत, कोउ न चाहिय चाहि ढुँढैया।
है जग देवसरूप गऊ हा ! ताहि सतावत कस कसैया।
गोवध दारुण बन्द करौ, नहिं, भारत की अब बूढ़ति नैया॥

(संग्रहीत)

कोई भी जाति या देश गाय के बिना उच्च सभ्यता नहीं प्राप्त कर सका है गाय के बिना खेती स्थिर और समृद्ध नहीं हो सकती। और न लोग सुखी और स्वस्थ ही हो सकते हैं। जहाँ गाय है और उसकी उचित देख भाल होती है वहाँ सभ्यता बढ़ती है पृथ्वी उपजाऊ होती है, घर अच्छे बनते हैं और मनुष्यों का ऋण चुक जाता है। —राल्फ ए० हेवे

गाय मनुष्य का सर्व श्रेष्ठ हितैषी है। उन हजारों बच्चों के लिये तो गाय जीवन ही है जो दूध रहित वर्तमान भारीत्व की रेती पर पड़े हुए हैं। हम जानते हैं जो गाय हमारे एक मित्र के रूप में है जिससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ। जो हमारी पाई पाई चुका देती है और घर की—देश की—रक्षा करती है

—ई०डी० बेनेट, स्टेट डेयरी कमिश्नर, मिसूरी अमेरिका।

गाय मरी तो बचता कौन।
गाय बची तो मरता कौन॥

—रोमांस आफ दि काउ

जब तक प्रकाश है तब तक काम करो और जब तक दम है तब तक दया करो अतः भारत में सरकार की ओर से गोवध बन्द हो।

आ०स०लल्लापुरा वाराणसी का २२ वां वार्षिक महोत्सव

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी का २२ वा वार्षिक महोत्सव दि० ८ दिसम्बर से ११ दिसम्बर १९६६ तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

इस अवसर पर श्री ज्ञानेन्द्रदेव सूफी मौलवी फाजिल ग्वालियर, श्री प० विद्यानन्द मस्ताने, श्री राजा रणञ्जयसिंह एम०पी० अमेठी राज्य, श्री नरदेव स्नातक एम०पी, आचार्य देवदत्त जी शर्मोपाध्याय काशी, श्री सत्यदेव शास्त्री बौद्धिकाध्यक्ष पूर्वी उत्तरप्रदेशीय आर्यवीर दल, कुमारी प्रज्ञाजी पाणिनी महाविद्यालय वाराणसी, आर्य भजनोपदेशक श्री नन्दलाल जी गाजीपुर, श्री महानन्दसिंह कुमार, श्री देवपालसिंह भजनोपदेशक आ०प्र० सभा उ०प्र०, श्री हीरासिंह, श्री विन्ध्येश्वरीसिंह आदि विद्वान एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं तथा महात्मा आनन्दस्वामी दिल्ली, श्री विक्रमादित्य वसन्त महोपदेशक लखनऊ श्री रामगोपाल शालवाले मन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली, श्री वेदप्रकाश आर्य एम० ए० आजमगढ़ के पधारने की सम्भावना है।

उत्सव—

—आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार (अड्डा होश्यारपुर) जालन्धर नगर का ८४ वा वार्षिक महोत्सव,२३, २४, २५ दिसम्बर १९६६ को आर्यसमाज मन्दिर में बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। जिसमें आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी, महात्मा, दार्शनिक विद्वान तथा संगीताचार्य पधार रहे हैं। नगर कीर्तन शुक्रवार ९ पौष तदनुसार २३ दिसम्बर, २ बजे बाद दोपहर आर्यसमाज मन्दिर से आरम्भ होगा और रात्रि ८ से १० तक श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जायेगा।

—योगेन्द्रपाल सेठ, मन्त्री

शोक सहानुभूति

वृन्दावन गुरुकुल निवासी समस्त ब्रह्मचारियों और कर्मचारियों की यह शोक सभा वृन्दावन गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित स्नातक अवैतनिक आयुर्वेद महोपाध्याय वैद्य श्री प० विद्याभूषणजी आयुर्वेद शिरोमणि एटा निवासी के युवा कनिष्ठ पुत्र श्री योगेशचन्द्र जी के असामयिक देहावसान पर गहरा शोक प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति और वैद्य जी के परिवार को इस असह्य शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —आचार्य बृहस्पति

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

सुख और आनन्द

[ले०—स्व० श्री लालचन्द्र जी मेरठ]

स्वास्थ्य, शक्ति, आत्म विश्वास, ऐश्वर्य, समृद्धि, उदारता, सौहार्द सौजन्य, आपस का विश्वास, कार्य तत्परता और सद्भाव, इस क्रम से जीवन में सुख और आनन्द प्राप्त होता है। "सब सुखी हों", यह सभी की आकांक्षा है किन्तु जब तक कि "हम स्वयं सुखी होकर संसार में सुख और शान्ति की वृद्धि करें", यह अभिलाषा नहीं हो तो मनुष्य की किसी सुख की कामना और उसके लिए प्रयत्न केवल स्वार्थ ही रहेगा। स्वार्थ के कारण ही मनुष्य मे दोष आते हैं। स्वार्थ का नियन्त्रण यदि स्व-अनुशासन द्वारा हो तो वह मनुष्य का तप कहलाता है। मनुष्य के संयम स्थिर रहे तभी वह वासनाओं पर विजय प्राप्त करने की आशा कर सकता है। वासनाएं अनेकों हैं किन्तु यह सत्य है कि वासना का जन्म स्वार्थ और लालसा के मेल से होता है। वासना का जन्म होते ही मनुष्य को चिन्ता घेर लेती है और उसमें अन्दर ही अन्दर घुन लगना आरम्भ हो जाता है और इस कारण रोगी हो जाता है। रोगी होने की अवस्था में मनुष्य क्षीण रहता है। स्वास्थ्य उस स्थिति को कहते हैं जिसमें व्यक्ति निरोग रहता हुआ अपना संतुलन स्थिर रखता है और अपने आप में संतुष्ट और स्थिर तथा दृढ़ रहता है। ऐसा मनुष्य सत्य को पा चुका है और असत्य को छोड़ चुका है। स्वस्थ मनुष्य और स्थितप्रज्ञ व्यक्ति एक ही स्थिति के दो नाम हैं जिसकी बुद्धि स्थिर है जिसका मन अपनी बुद्धि के अधीन है और जिसको बुद्धि को आत्म प्रेरणा मिलती रहती है उसी की इन्द्रियों का सारा व्यवहार सदा सम्यक् हुआ करता है। उसका जीवन रथ सत्पथ पर ही चला करता है उसकी जीवन-चर्या सही कही जा सकती है। ऐसा व्यक्ति अनायास ही सन्मार्ग पर चलता रहता है अपने साधन तथा भगवत् कृपा द्वारा अपने ध्येय को, अपने जीवन लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त कर लेता है। यह नहीं कि सन्मार्ग के राही के आगे विघ्न बाधाएं नहीं आतीं पर स्वस्थ स्थित-प्रज्ञ मनुष्य अपने दृढ़ निश्चय से और निश्चय पूर्ति के लिए दृढ़ संकल्प की सहायता से अपने अन्दर ऐसी अनुपम शक्ति और अदम्य साहस उत्साह और सामर्थ्य उत्पन्न कर लेता है कि वह कर्मठ व्यक्ति अपनी लगन और धैर्य से सभी दुख दुर्ग रुकावटों पर अपने आत्म-विश्वास और निजी सामर्थ्य के भरोसे विजय प्राप्त करता है। उसकी अपनी आत्म ज्योति का प्रकाश अन्धकार को विलीन कर देता है और वह निर्मोह और निर्मम होकर कर्तव्य करता है। आत्म-विश्वासी और समर्थ व्यक्ति भगवान से निरन्तर शक्ति पाता रहता हैं क्योंकि वह शक्ति बल और सामर्थ्य के केन्द्र विष्णु भगवान से अपना सम्बन्ध अनुभव कर रहा और उसे अपने हृदय मे तथा सभी जनों के हृदयों मे अनुभव कर रहा है। ऐसे सज्जन को सभी साधु लोग सभी परिजन लोग सहायता करते हैं, वह कभी भी हताश नहीं होता उसमे कभी विषाद और अवसाद नहीं उभरता। मनुष्य निराश क्यों हो? मनुष्य कभी भी अकेला नहीं है निरन्तर सर्व शक्तिमान भगवान अपनी सम्पूर्ण शक्तियों सहित उसके हृदय मे परिपूर्ण है। भगवान की देखरेख में जीवन व्यवहार करने से मनुष्य अपने आपको सबल सशक्त और अभय अनुभव करता है उसमे आत्म-विश्वास स्थिर रहता है और वह अपने कार्य मे सफलता प्राप्त करता हुआ ऐश्वर्यवान और समृद्ध हो जाता है। भगवान का भक्त अपनी समृद्धि और अपनी सफलता को भी अपने प्यारे भगवान् को समर्पित करता रहता है और इस प्रकार वह उस ऐश्वर्य के अक्षय भंडार से नित्य ऐश्वर्य पाता है और उस धन ऐश्वर्य और दिव्य सपत को उदारता से वितरण करता है। ऐसे ऐश्वर्य को 'रयि' कहा है क्योंकि वह धन सब में फैलता है और सबका भला करता है। उदारता सौजन्य आदर सत्कार प्राप्त होता है।

सौहार्द प्राप्त करने की यही विधि है कि मनुष्य अपना ऐश्वर्य जनहित में सर्वहित में, जन-जीवन के विकास में, अवश्य लगाता रहे, यही ढंग सुयश प्राप्ति का है। जो व्यक्ति अपने धन को अकेला भोगता है वह पाप का भागी होता है। उसका धन उसी के लिए अभिशाप हो जाता है उसकी अपनी सम्पत्ति ही उसके बन्धन का हेतु हो जाती है और वह चिन्ताग्रस्त तथा भयभीत व्याकुल रहा करता है। आपस का विश्वास जिस व्यक्ति ने अपने सुव्यवहार से प्राप्त कर लिया है उसने अपनी सुख-शान्ति और तृप्ति पा ली है। वह अवश्य भाग्यवान है। आपस के विश्वास में ही उन्नति होती है, आपस के विश्वास में ही सहयोग होता है और सहयोग में निपुणता आती ही है। सहयोग की शक्ति असीम है। सहयोग की शक्ति कभी विफल नहीं हुई। सहयोग करने वाले सदा वर्चस्वी और यशस्वी हुए हैं। सहयोग में तो अदम्य शक्ति है सहयोग में महान् सामर्थ्य है। ओजस्वी व्यक्तियों के आपस में मिलने और मिलकर सर्वहित के यज्ञरूप कर्म में तत्परता और पूरी लगन से लगे रहने से सहयोग उदय होता है। सहयोग में ऐश्वर्य प्राप्ति तथा सुखी दीर्घ जीवन निश्चित है। इस प्रकार अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों एक साथ प्राप्त होते हैं। ★

आर्य समाज, गोंडा

"आर्यसमाज गोंडा की ओर से आयोजित हरिद्वार से पधारे हुए श्रद्धेय स्वामी श्री शिवानन्द जी महाराज के द्विदिवसीय वेदोपदेश में उपस्थित जन समूह ने पूज्य स्वामी जी से वेदों के पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने की प्रेरणा को हृदयंगम करते हुए कल सर्वसम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के २३ नवम्बर ६६ के परिपत्रान्तर्गत गोरक्षा आन्दोलन विभाग संचालक श्री सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए० द्वारा प्रषित प्रस्ताव अविलम्ब संसद द्वारा गोहत्या बन्दी कानून बनाने के प्रस्ताव को पारित किया। श्रद्धेय पूज्य स्वामी जी ने महाभारत के कथन को उद्धृत करते हुए बताया कि जब तक देश में पशु विशेषतः गोवंश की हत्या होगी, नारी जाति का निरादर सिनेमा के गन्दे चित्रों से होगा तथा अवसरवादी तत्व राष्ट्रीयता के साथ विश्वासघात करते रहेंगे तब तक देश का अधोगमन कोई रोक नहीं सकता है। अतः देशभक्त जाति इस सभी का यह कर्तव्य है कि अविलम्ब गोहत्या बन्द करके सिनेमा के पतनकारी प्रवाह और पदलोलुपों को समाप्त कर देश का नाश होने से बचा लेवें।" —मन्त्री आर्य समाज गोंडा

शोक प्रस्ताव

दि० १३-११-६६ ई० को श्री प्रयाग नारायण जी की अध्यक्षता मे श्री लटकन लाल आर्य जी की आकस्मिक मृत्यु पर आर्यसमाज गया की ओर से शोक सभा मनाई गई। जिसमें श्री लटकनलाल जी आर्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए निम्न प्रस्ताव पारित हुआ।

"आर्यसमाज गया के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री आर्यवीर दल गया के भूतपूर्व सेनापति, आर्यसमाज गया के तात्कालीन पुरोहित, उदार हृदय के उठ जाने से यह सभा गहरा शोक प्रकट करती है, ईश्वर से प्रार्थना करती है कि मृतक आत्मा को शान्ति दे, शोकमग्न परिवार एवं आर्य समाज गया को धैर्य प्रदान करें, जिससे इस महान् क्षति को सहन कर सके।-मन्त्री

आर्य समाज बहराइच

१—आर्यसमाज बहराइच के तत्वावधान में गत २८ नवम्बर को आयोजित विशाल जन सभा मे भारत सरकार से गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की प्रबल शब्दों में मांग की गई। सभा में सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव मे कहा गया है कि देश के कृषि उत्थान एवं धार्मिक भावनाओ को ध्यान मे रखते हुये गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जावे। गोरक्षा के निमित्त आमरण अनशन करते हुये पकड़े गये स्वामी शंकराचार्य तथा श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी तथा सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले आदि महानुभावों के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट करते हुए, उनको अविलम्ब रिहा करने की मांग की गई है। साथ ही ७ नवम्बर को देहली के प्रदर्शन मे पुलिस द्वारा गोलीवर्षा की तीव्र भर्त्सना करते हुये, इस गोलीकाड में मारे गये सभी गोभक्तों की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गई है। अन्त मे प्रस्ताव में गोरक्षा आन्दोलन मे सहायता देने के लिये जनता से अपील की गई। श्री आनन्द प्रकाश, अधिष्ठाता आर्य वीर दल, उत्तर प्रदेश ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसका समर्थन श्री जगदीशप्रसाद आर्य आदि अन्य वक्ताओ ने किया।

२—बहराइच आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव दिनांक २५ से २८ नवम्बर तक समारोहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रात काल बृहत् यज्ञ का आयोजन किया जाता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं० विद्यानन्द जी मन्तकी तथा यजमान २५ को श्री हरीराम वर्मा, २६ को श्री बख्शी राममोहन, २७ को शीतलप्रसाद गुप्त तथा २८ को श्री रामचन्द्र जी व श्री गोविन्दराम सपत्नीक यजमान बने। उत्सव मे सर्वश्री पं० विद्यानन्द जी मन्तकी, स्वामी शिवानन्द जी, सुरेशचन्द्र वेदालंकार, विक्रमादित्य वसन्त सहा० कोषाध्यक्ष आ०प्र०सभा उ०प्र०, श्री आनन्द प्रकाश अधिष्ठाता आर्यवीर दल उ०प्र० जगदीशप्रसाद आर्य विद्यानन्द जी, कमलदेव जी आदि विद्वानो के प्रभावशाली व्याख्यान तथा भजन हुए। २८ नवम्बर को दोपहर मे जिला विद्यालय निरीक्षक की अध्यक्षता में आर्य कन्या लघु माध्यमिक विद्यालय बहराइच का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें पारितोषिक तथा निर्धन छात्राओं को वस्त्र आदि वितरण किया गया।

—गोविन्दप्रसाद उप मन्त्री

★

गोरक्षा-आन्दोलन

आज अहिंसावादी सरकार भी स्वकर्तव्य से विमुख

(लेखक श्री राम निवास शास्त्री साधु आश्रम (अलीगढ़)

धर्मपरायण भारत जैसे देश के लिये गोवध महान कलंक है। आज खेद का विषय है कि स्वाधीनता के बाद भी गोहत्या निरन्तर अबाध गति से बढ़ती जा रही है और हमारी अवध्य गायों का प्रतिदिन हनन किया जाता है, इतना सब होने पर भी हमारी सरकार मूक बनी हुई है। आज महात्मा गांधी के अनुयायी अहिंसावादी भी हिंसक बने हुए हैं

महात्मा गांधी ने भी गाय के विषय में कहा है। "गाय की हत्या मेरी हत्या है।" मेरे जैसे पक्के हिन्दू को गोवध से कितना दर्द होता है? मुझे ऐसा लगा करता है कि जब तक गाय की हत्या होती है। गाय छुड़ाने के लिये मैं निरन्तर प्रयत्न करता हूं। मैंने यदि आज इस्लाम को बचाने के लिए अपने प्राण अर्पण किये हैं तो गाय को बचाने के लिए ही किए हैं। जो गाय को बचाने के लिए प्राण होम देने को तैयार नहीं वह हिन्दू है।" नवजीवन २४।४।२१

गाय के विषय में श्री लोकमान्य तिलक ने लिखा है—

"स्वराज्य मिलते ही कलम की एक नोक से एक मिनट में ही गोहत्या बन्द की जावेगी।"

हकीम अजमल खां—

न तो कुरान और न अरब की प्रथा ही गौ की कुर्बानी का समर्थन करती है।

आज गोभक्तों को बुरी तरह से कारागारों में ठूंसा जा रहा है। प्यारे भाइयो यह सर्व विदित है, इस समय गौ के प्रति निष्ठा रखने वाले लोगों के प्रति जो हमारी सरकार द्वारा अमानवीय व्यवहार हो रहा है वह सर्वथा अनुचित है। "विनाश काले विपरीत बुद्धि" वाली उक्ति यथार्थ चरितार्थ हो रही है। मैं पूछना चाहता हूं कि इससे देश का कल्याण हो सकता है। वेद का भी आदेश है कि "मा गा हिंसीः" गौ मत मार। तू किसी के बच्चे को मार कर अपने बच्चों को नहीं रख सकेगा। तुझे शांति कहां से मिलेगी। अशान्त को सुख कहां से हो सकता है। भला तू दूसरों को दुःखी कर कैसे सुख पा सकता है। आज हमारी सरकार अभक्ष्य पदार्थ खिलाकर अन्न समस्या हल करना चाहती है वह स्वप्न में भी सम्भव नहीं हो सकता। आज इस भारतभूमि की इस प्रकार की दशा देखकर रोना आता है कि यह हमारी 'जननी' कभी सच्ची (विश्वम्भरा) थी विश्व का पालन पोषण करती थी। इतना अन्न पैदा होता था कि अन्य देशों को भी भेजा जाता था और यही देश कभी स्वर्ण भूमि कहा जाता था। क्या इसी प्रकार के वातावरण में पोषित होकर भारतीय सन्तान राम, लक्ष्मण, भीम, हनुमान, राणाप्रताप व महर्षि दयानन्द जैसे वीरवर इन्द्रियजित महापुरुष पैदा हो सकेंगे? कदापि नहीं। आज हमारी सरकार धर्मनिरपेक्ष घोषित कर धर्म प्रेमी जनता की आवाज को न सुनकर उनकी पुण्य आत्माओं को कुचल कर बुरी तरह से दबाना चाहती है। लिखा भी है—'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत्॥

मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश और रक्षित किया हुआ धर्म रक्षक की रक्षा करता है। इसलिये धर्म का हनन कभी न करना इस डर से कि मारा हुआ धर्म हमको न मार डाले।

आज अहर्निश होने वाली गौवध पशु हत्या के कारण देश की समृद्धि नष्ट हो रही है। यदि इस पर प्रतिबन्ध न लगाया तो कुछ ही काल में देश सब प्रकार से तबाह हो जायगा। लिखा भी है है—"यस्मिन् देशे भवेद् हिंसा गा पशूनां भारत। स दुर्भिक्षादिभिर्नित्यो नश्योपद्रव तथा॥ जिस देश में निरपराध पशुओं की हत्या होती हो वह देश अकाल, महामारी और अन्य उपद्रवों से पीड़ित होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

आज देश में यह आग भड़क उठी है उस प्रज्वलित अग्नि में अपने प्राणों की आहुति देने के लिए आज से वृद्ध तथा

सुझाव और सम्मतियाँ

भारतीय संस्कृति का प्राण गौ

गौ भारतीय संस्कृति का प्राण और कृषि प्रधान देश के जीवन का आधार है। वेद शास्त्र ने गौ को अघन्या प्रतिपादित किया है और उसका वध करने वालों को प्राण-दण्ड का विधान किया है।

महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम गोकरुणानिधि लिखकर धार्मिक, नैतिक, आर्थिक दृष्टिकोणों से उसके महत्व पर प्रकाश डाला और ब्रिटिश पारलियामेंट को मेमोरियल भेजने का उपक्रम किया था। स्थान स्थान पर गोशाला बनाने का भी आदेश दिया था।

महात्मा गांधी जी ने भी गोवध बन्द करने पर विशेष बल दिया था। विश्वास था कि देश स्वतन्त्र होने पर गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगेगा और कांग्रेसी सरकार गोसंवर्धन और उसके वंश की रक्षा के निमित्त कोई पग उठा न रखेगी किन्तु आज १९ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी इस दिशा में कोई समुचित पग नहीं उठाया गया।

गोहत्या निरोध का कानून न बना कर सरकार उसके वध करने का प्रोत्साहन ही देती रही। करोड़ों रुपयों का गोमांस व चर्म का व्यापार भी यह सरकार करती जा रही है। यह नितान्त दुःख और लज्जा का विषय है।

आज गोरक्षा के निमित्त भारत की जनता को सत्याग्रह भी करना पड़ेगा इसका तो कभी स्वप्न में भी अनुमान न था।

७ नवम्बर को गो अभियान समिति ने जो विशाल व शान्त प्रदर्शन का आयोजन किया उससे सरकार का आसन डोल उठा। गोघातियों और गोमांस भक्षकों को तथा मांस व चर्म का व्यापार करने वालों को प्रदर्शन असफल करने हेतु उभारा तक दिया गया।

७ नवम्बर के दिल्ली के उपद्रव इस के जीते जागते और बोलते हुए प्रमाण हैं।

इन उपद्रवों के कारण आन्दोलन बन्द होने वाला नहीं, ऐसा अनुमान लगाने वाली सरकार भारी भ्रम में है।

गोवर्धन पीठ के श्री शंकराचार्य तथा ब्र० प्रभुदत्त को जो आमरण अनशन पर बैठे हैं गिरफ्तार करना सरकार की बौखलाहट का स्पष्ट परिणाम है।

२१ नवम्बर की देशव्यापी हड़ताल ने बतला दिया है कि जनता सरकार के रवैये से सर्वथा असन्तुष्ट है।

आन्दोलन व्यापक रूप पकड़ता जा रहा है और आर्यसमाज, सनातन धर्म, जैन आदि धर्मों के नेता एकमत हो इस पुण्य कार्य में जुट गये हैं।

धर्मसंघ, जनसंघ व हिन्दू सभा, जैन समाज की भी शक्ति इस ओर लगी हुई है।

भारतीय जन तुले हुये हैं। आज गोमाता की करुण चीत्कार को सुनने वाले लोगों पर कांग्रेसी सरकार कठुर प्रहार कर अपने को सबल समझती है। अभी हुये ७ तारीख के प्रदर्शन में सरकार ने जो अपनी अक्षमता का परिचय दिया है उसे भारतीय जनता सहसा कभी भुला नहीं सकती। इसका भविष्य में भीषण परिणाम होगा। आज जो कांग्रेसी पदाधिकारी भविष्य में स्वप्न देखने की अभिलाषा कर रहे हैं वह सभी जनता पर आधारित हैं। इन सत्ताधारियों की सभी आशायें "रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्" की तरह अविलम्ब ही तूफान के उबाल के सदृश स्वत विलीन हो जायेंगी। आज जब पतन की ओर अबाध गति से अग्रसरित होने वाले इस देश का ईश्वर ही मालिक है आज हमारे शासक लोक दमन करके "उल्टी गंगा बहाने के सदृश" लोकतन्त्र की रक्षा करना चाहते हैं वह कदापि सम्भव नहीं हो सकता। जिस जनता ने अंग्रेजों के दांत खट्टे किये थे क्या वह इस कार्य को नहीं कर सकती। आज प्रत्येक बच्चा-बच्चा वीर भगतसिंह बनकर बलि-वेदी पर चढ़ने को तैयार है सभी के हृदय पटल से यही आवाज निकल रही है गोहत्या बन्द हो।

★

सरकार को समय रहते इस दिशा में अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये नहीं तो परिस्थिति बिगड़ती चली जायगी और आगामी निर्वाचन के समय कांग्रेसी सरकार को इसका प्रतिफल भुगतना पड़ेगा।

—शिवदयालु
अध्यक्ष आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर
पूर्व प्रधान जिला कांग्रेस मेरठ

★

विचार-विमर्श

शृंगेरीपीठ के शंकराचार्य की भ्रान्त धारणा

सम्पूर्ण गोवंश निरोध आन्दोलन अनिवार्य

(गोरक्षा महाभियान के प्रमुख नेता श्री स्वामी करपात्री जी द्वारा शास्त्रीय एवं लौकिक भावना का स्पष्टीकरण)

शृंगेरीपीठ के शंकराचार्य बड़े योग्य विद्वान एवं आचार्य हैं। उनके प्रति देश में महत्त्वपूर्ण सम्मान है। मैं भी उनका आदर करता हूं परन्तु उनके सामयिक गोहत्या बन्दी आन्दोलन सम्बन्धी वक्तव्य एवं कार्यकलाप बड़े ही भ्रामक हैं। जिनका उन्हें स्पष्टीकरण करना चाहिये। उन्हें यह मालूम ही होगा कि धर्म के नाते ही भारतीय जनता शंकराचार्य का सम्मान करती है। यदि उनका रवैया धर्म के सम्बन्ध में विपरीत हो गया तो उनका महत्व डाक्टर कुर्त कोटि शंकराचार्य से अधिक कुछ भी न रह जायगा।

"आप कहते हैं कि समुचित कार्य के लिये भी आन्दोलन नहीं करना चाहिये यह तो ठीक है कि हिंसात्मक आन्दोलन नहीं करना चाहिये परन्तु किसी प्रकार का आन्दोलन ही न करना चाहिये इसका क्या अर्थ? क्या सरकार जो भी अनुचित कार्य करे उसका प्रतिकार करना ही न चाहिये? और चुपचाप अन्याय सहन कर लेना चाहिये? क्या वे यह नहीं जानते हैं कि दूसरों पर अन्याय अत्याचार करने के समान ही अत्याचार सहन करना भी पाप ही है। ये भी वे जानते होंगे कि लोकतन्त्र में शासन की सर्वोच्च सत्ता की अधिपति जनता ही होती है और वही शक्तिशाली शासन पर अंकुश भी है।

अध्यात्मवाद पर आधारित धर्म-नियन्त्रित शासन तन्त्र में तो शासन पर धर्म का नियन्त्रण होता है परन्तु भौतिकवादी धर्म निरपेक्ष शासन तन्त्र में तो एकमात्र नियन्त्रण जनता का ही हो सकता है और उसकी व्यञ्जना आन्दोलन से ही होती है जैसे लगाम बिना घोड़ा, नकेल बिना ऊँट, अंकुश बिना हाथी, वैसे ही निरंकुश शासन की स्थिति होती है। क्या शंकराचार्य चाहते हैं कि निरंकुश शासन इस पवित्र भारत भूमि में गोहत्या चालू रखे और मनमाने ढंग से धर्म, संस्कृति, राष्ट्र की हत्या करता रहे जहां तक विचार-विनिमय के द्वारा समस्या के समाधान का प्रश्न है हम सर्वदा तैयार ही रहते हैं परन्तु सरकार इस पर ध्यान नहीं देती।

गोवर्धनपीठ तथा ज्योतिषपीठ के शंकराचार्य ने शिष्ट मण्डल का नेतृत्व करते हुए स्वयं जाकर भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री को समझाने का प्रयास किया था यद्यपि स्वर्गीय शास्त्री जी ने शंकराचार्य के तर्कों को मानकर कलकत्ता, बम्बई में बनने वाले मशीनी कतलखानों का निर्माण रोक देने का वचन दिया था परन्तु उसका पालन नहीं किया गया।

शृंगेरी पीठ के शंकराचार्य भी तो गो हत्या को पाप मानते ही होंगे। फिर वे ही वर्तमान सरकार को गोहत्या बन्द कराने को बात समझाने का भार क्यों नहीं ले लेते?

शृंगेरी पीठ के शंकराचार्य जी का एक तर्क सुनकर आश्चर्य की सीमा नहीं रहती और सन्देह होने लगता है कि यह कैसे शंकराचार्य हैं। वे कहते हैं कि 'अघ्न्या गौरवध्या' इत्यादि वचनों में स्त्री लिंग का प्रयोग होने से स्त्री गौ ही अवध्य सिद्ध होती है, पुमान गौ बैल अवध्य नहीं है। शायद उन्होंने पशुना यजेत के तुल्य अघ्न्या के लिंग एवं संख्या को विवक्षित मानकर ऐसा अर्थ किया होगा। परन्तु उन्होंने यह नहीं सोचा कि विधीयमान की ही लिंग संख्या विवक्षित होती है। उद्देश्य या अविधीयमान की लिंग संख्या विवक्षित नहीं होती तभी तो 'ग्रह सम्मार्ष्टि' इस वाक्य में ग्रहगत संख्या विवक्षित नहीं होती और एक ही नहीं सभी ग्रहों का मार्जन अभीष्ट होता है उसी तरह 'ब्राह्मणो न हन्तव्य' इस वाक्य में भी ब्राह्मण इस पद का पुंस्त्व विवक्षित नहीं होता। अतएव ब्राह्मण के तुल्य ही ब्राह्मणी की भी हत्या निषिद्ध ही मानी जाती है। 'अणुदित सवर्णस्य चाप्रत्ययः' इस सूत्र में इसी दृष्टि से अविधियमान अण् एवं उदित सभी अपने सवर्ण के बोधक होते हैं अतएव अविधीय मान अकार अष्टादश प्रकार के आकार का बोधक होता है।

श्री शंकराचार्य जी को स्मरण करना चाहिये कि मीमांसा के अनुसार अघ्न्य इस शब्द से स्त्री पुमान गोमात्र को अवध्य कहा गया है। ब्राह्मणो न हन्तव्य में जैसे ब्राह्मण का पुंस्त्व विवक्षित नहीं है ब्राह्मण ब्राह्मणी सब की हत्या निषिद्ध है वैसे ही अघ्न्या इस शब्द में भी स्त्री लिंग गोवंश मात्र की हत्या निषिद्ध है। ●

(पृष्ठ १ का शेष)

[illegible] संस्कृति की सर्वस्व भूत माताओं की सहोदरा कामधेनु का।

आज मर्द [illegible] चेरी में बनाये [illegible] के बीच कैद रखकर [illegible] समझ रही है कि वह इन्हीं [illegible] नारों से भोली भाली जनता की भावना को कुचल देगी और सदा के लिए यह आन्दोलन सो जायेगा, उसे पता नहीं कि वे लाठीचार्ज और गोलियों से क्रांति की आग को भड़का रहे हैं, उसे हवा दे रहे हैं और हम स्वयं भी अब तक न जान पाये थे कि जिसको उपवन का स्वामी बनाया था वही इस उपवन को उजाड़ कर देगा जिन पै तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे।' पर आज इसको सब समस्त देश जान गया है, गोमाता की करुण पुकार पर चारों दिशाओं से मां के लाल सत्याग्रहियों के जत्थे चल पड़े हैं और दमन की चुनौती को स्वीकार कर चुके हैं ऋषि दयानन्द और गांधी की जन्मभूमि गुजरात अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया है। दुर्गावती और छत्रसाल का मध्यप्रदेश कटिबद्ध है, धर्म रक्षा के लिये खौलते हुए तेल के कड़ाहे में सुकोमल शरीर की आहुति देने वाले गुरु नानक के शिष्य गुरु अर्जुनसिंह ला० लाजपत राय और स्वामी श्रद्धानन्द की शपथ लेकर पंजाबी नवयुवक गोमाता की जय जयकार कर घरों से निकल पड़े हैं। वृन्दावन की कुन्ज गलियों और यमुना के कछारों पर गोचारण करने वाले चक्र सुदर्शनधारी गोपाल के आराधक और धर्म रक्षा के लिये ही १४ वर्ष बनधारी राम के पुजारी अब शान्त न बैठेंगे। 'यदर्थं जननी सूते तस्य कालोऽयमागतः।' आत्म बलिदान के लिये मचलती हुई जवानियां आत्माहुति देंगी। जीजाबाई और झांसी रानी की अनुगामिनी बहिनें बद्ध परिकर कृत संकल्प हैं, अब देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है।'

वह दिन दूर नहीं जब दिल्ली की गलियों में भारत की ममता मूर्तियां अपने दुधमुंहे बच्चे को आंचल में छुपाये तुम्हारी लाठियां और गोलियां खाती हुई घायल होकर भी गोरक्षा के गगनभेदी नारों से तुम्हारे सिंहासन हिला देंगी और गोरक्षा के लिये स्वराज्य का [illegible] न कर सकने वाले गांधी की [illegible] उनके नारों को सहना पड़े [illegible] गांधी जी के [illegible] पदचिन्हों पर [illegible] वाली सरकार [illegible] श्री गोवर्धन की रक्षा के लिये दधीच आत्मसमर्पण के लिये सन्नद्ध हो चुका है। गुरु गोविन्दसिंह के नौनिहाल सिंह पुत्र औरङ्गजेबी शासक की क्रूरता की दीवाल में चुने जाने को बेताब प्रतीक्षा में खड़े हैं। पर आज रावण जी के इन निर्दोष बेबसी के आंसुओं में ज्वालामुखी सो रहा है, भड़कने ही वाला है।

बौद्ध और जैनों की अहिंसक भूमि के सम्प्रति शासकों! नेतो, अब और समय है। हमने तुम्हें सम्मान दिया था, शासक चुना था। पर क्या इसी आशा से कि तुम कपिल, कणाद, 'मद्यपो न चपः' की डिंडिम घोषणा करने वाले राजा अश्वपति के राष्ट्र में, राम और कृष्ण के प्यारे देश में शराब की नदियां बहाओ, शिवा और प्रताप की मातृभूमि के पावन आंचल में गोवंश विनाशक बूचड़खाने खुलवाओ, लाखों की लाश और खाल विदेशों में भेजकर राष्ट्र की अर्थनीति सुधारने का दम्भ भरो। अर्थशास्त्र के महान् पण्डित 'साधुजन बहुलो देश' की परिभाषा देने वाले महात्मा चाणक्य के देश में साधु और महात्माओं पर डण्डे बजवाओ सीता और सावित्री की अनुयायिनी माताओं की कोख में भी जन्म लेकर क्या तुम्हारी कुलाङ्गार आत्मा तुम्हें न धिक्कारती होगी? अथवा यह किसी नीतिकार का वचन सत्य है—

यौवन धन सम्पत्ति प्रभुत्व अविवेकिता। एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥

यौवन धन, सम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक इनमें से एक एक भी अनर्थ के लिए पर्याप्त हैं फिर जहां चारों मिल जायें तो कहना ही क्या? माननीय नन्दा जी पर आक्रमण फन्दा फिट हो गया, यह आपकी घरेलू राजनीति होगी।

करोड़ों भारतीयों के श्रद्धाभाजन शङ्कराचार्यों को उत्पन्न करने की शक्ति भारतभूमि के प्रत्येक कण में है। यदि सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा का कानून अविलम्ब नहीं बनेगा तो श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, श्री रामचन्द्र जी वीर, श्री राम गोपाल जी शालवाले, श्री शिवकुमार जी शास्त्री सदृश लाखों लाल तुम्हारी जेलों को भर देंगे। यह निश्चित है कि संगीनों की छाया में लोकतन्त्र चिरजीवी नहीं हो सकता।

कानपुर के श्री लाला दीवानचन्द जी का देहावसान !

महान् दार्शनिक शिक्षा-शास्त्री उठ गया !!

आर्य जगत् में शोक की लहर !!!

अत्यन्त दुःख है कि गत ४ दिसम्बर को प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री, महान् दार्शनिक, आगरा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति, डी० ए० वी० कालेज कानपुर के भूतपूर्व प्रिंसिपल, आर्य जगत की विमल विभूति कानपुर के श्री लाला दीवानचन्द जी का ८९ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। लाला जी का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार हुआ। लाला जी के शोक में कानपुर की शिक्षा संस्थाएं बन्द रहीं, और जगह-जगह उनके शोक में शोक सभाएं हुयीं, जिनमें दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की गयीं। सारे आर्य जगत में यह समाचार बड़े दुःख के साथ सुना गया।

श्री लाला दीवानचन्द जी

४ दिसम्बर १९६६ को श्री लाला दीवानचन्द जी का देहावसान हो गया। श्री लाला जी आर्यसमाज के स्तम्भ थे। उत्तर प्रदेश में विशेषकर कानपुर में तो उनकी प्रसिद्धि बहुत अधिक थी। वह आगरा विश्वविद्यालय के उपकुलपति रह चुके थे। डी० ए० वी० कालेज के आदि प्रधानाचार्य वही थे। इस कालेज को जो गौरव प्राप्त हुआ उसका अधिक श्रेय श्री लाला जी को है। श्री मुन्शी ज्वालाप्रसाद जी तथा श्री लाला दीवानचन्द जी दोनों के सहयोग से डी० ए० वी० कालेज का निर्माण हुआ। महात्मा हंसराज जी के वह अनन्य भक्त थे। लाला जी देखने में बड़े गम्भीर और शुष्क दिखाई पड़ते थे परन्तु उनका हृदय सर्वथा विपरीत था। वह अपने मित्रों तथा परिचितों का स्वयं ही बड़ा ध्यान रखते थे, मेरा उनका लगभग ४८ वर्ष का घनिष्ठ सम्बन्ध था।

वह आरम्भ से ही प्रसिद्ध वक्ता समझे जाते थे। पंजाब में जब वह डी० ए० वी० कालेज लाहौर में थे तो देश भर के आर्य समाजी उनके व्याख्यानों के लालायित रहते थे। वह दर्शन शास्त्र के विशेषज्ञ थे, उन्होंने इधर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। पिछले दिनों जब मैं कानपुर में था तो उन्होंने वेदान्त दर्शन पर एक अपनी नवीन पुस्तक पढ़कर सुनाई। इससे पूर्व वह गीता और उपनिषद पर अच्छी पुस्तक लिख चुके थे। इधर वह हिन्दी में ऐसी पुस्तकें लिख रहे थे जिनमें उच्च धार्मिक शिक्षाओं का अत्यन्त सरल जन साधारण के समझने योग्य मिश्रण रहता था। दो मास हुये कानपुर में रिक्शे से गिर पड़ा था और अपने पुत्र ओमप्रकाश के पास ठहरा था। वह प्रो० श्री कृष्णकुमार (आजकल प्रेम आश्रित जी वानप्रस्थी) के साथ देखने आये थे। मुझे यह मालूम नहीं था कि अब उनके दर्शन न होंगे। उनके कोमल हृदय का एक छोटा उदाहरण यह है कि वह एक दिन कानपुर में मुझे देखने आये, मैं दोपहर को खाना खाकर सो गया था। घर में कोई और न था। वह मुझे सोता देखकर चुपके से चले गये। मुझे तीसरे दिन पुत्र वधू प्रिंसिपल सुमन ने सुनाया और मैंने उनको पत्र लिखा। इसी प्रकार के और बहुत से उदाहरण हैं। मैं उनके पुत्र श्री लाला शान्तिनारायण नं० ६३ कान्टूनमेन्ट कानपुर से सहानुभूति प्रकट करता हूं। वह मुझसे तीन-चार साल बड़े थे। इधर कुछ दिनों से उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था और कई ऐसी बीमारियां हो गई थीं जो प्रायः बुढ़ापे में हो जाया करती हैं जो स्वभावतः शान्ति और गम्भीर थे और उनको शान्ति प्राप्त होगी, यह निश्चय ही समझना चाहिये।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय इलाहाबाद

कानपुर जिले में व्यापक वेद प्रचार

विगत दीपावली के अवकाश में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर के प्रचार पं० विद्याधर जी, मन्त्री श्री प्रभुदयाल जी, एम० ए० ने जिले की फतेहपुर रोशनाई, रनियां, अकबरपुर बोनापुर, पुखरायां, मूसा नगर मलोसी, घाटमपुर आदि अनेक आर्य समाजों में पहुंच कर वहां के अधिकारियों एवं क्रियाशील सदस्यों को वेद के व्यापक प्रचार के लिये प्रोत्साहित किया, विशेषतया दैनिक यज्ञों का निष्ठापूर्वक सम्पन्न करना तथा साप्ताहिक अधिवेशन का नियमित आयोजन। उन्हें यह भी प्रेरणा की गई कि वे आर्यमित्र के ग्राहक बनें तथा सभा का दशांश गुरु कोटि आदि धन अवश्य भेजें। प्रायः सभी स्थानों में सार्वदेशिक के वेद कथा अंक, आर्य विजय अंक, दीपावली अंक, एवं आर्योदय का वेदांक तथा आर्योद्देश्य रत्नमाला आदि बिना मूल्य वितरित की गईं। ऐसा प्रतीत हुआ कि धार्मिक प्रवचनों में सम्मिलित होने की सर्वत्र बड़ी अभिरुचि है और ग्राम प्रचार का विशेष प्रबन्ध होना आवश्यक है।

—विजयपाल शास्त्री

श्री विद्याभूषण जी वैद्य एटा को पुत्र शोक

गुरुकुल विश्वविद्यालय [illegible] के प्रतिष्ठित स्नातक श्री विद्याभूषण जी वैद्य भूषण औषधालय एटा के छोटे पुत्र श्री [illegible]चन्द्र वैदिक का २२-११-६६ को आकस्मिक निधन हो गया। इस समाचार से आर्यजनों को हार्दिक शोक और दुःख हुआ। इस शोकावसर पर वैद्य जी के प्रति शोक समवेदना प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना है कि वे दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करें।

—मन्त्री [illegible] सभा [illegible]

आर्यसमाज मिरजापुर का महोत्सव

आर्यसमाज मीरजापुर का ८१ वां वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से आगामी ८ दिसम्बर से ११ दिसम्बर ६६ ई० तक मनाया जा रहा है। इसमें निम्न लिखित महोपदेशक, भजनोपदेशक एवं आर्य नेता पधार रहे हैं—

माननीय स्वामी आनन्द गिरि जी महाराज, माननीय चौधरी चरणसिंह जी वन एवं स्वायत्त शासन मंत्री उत्तर प्रदेशीय सरकार, पं० विद्यानन्द शर्मा शास्त्रार्थ महारथी, बलवीर जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी, रामजीप्रसाद आर्य मिश्र, विक्रमादित्य 'वसन्त', नरदेव स्नातक संसद सदस्य, देवराज वक्ता, धर्मदत्त आनन्द, ओमप्रकाश वर्मा रेडियो सिंगर, विश्रामसिंह जी हीरालालसिंह जी।

दीवानचन्द के निधन पर शोक

नयी दिल्ली, मंगलवार। आगरा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति श्री दीवानचन्द की मृत्यु पर भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री मेहरचन्द महाजन ने गहरा शोक प्रकट किया है।

श्री दीवानचन्द की मृत्यु गत सोमवार को कानपुर में हुई।

श्री महाजन ने कहा कि श्री दीवानचन्द की मृत्यु से शिक्षा-जगत को भारी क्षति पहुंची है। वह एक महान दार्शनिक, शिक्षा शास्त्री तथा आर्यसमाज के रत्न थे।

गोरक्षा आन्दोलन मे धन की सहायता

आर्यसमाज [illegible]पुर ने गोरक्षा आन्दोलन सहायतार्थ दि० १५-११-६६ को २५०) रु० तथा दि० २१-११-६६ को १०) रु० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को भेजे।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L.

पता—आर्यमित्र

५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

(दिनांक ११ सितम्बर सन् १९६६)

आर्य समाज, फैजाबाद हीरक जयन्ती समारोह

आर्यसमाज फैजाबाद का हीरक जयन्ती महोत्सव १ अक्टूबर से ७ अक्टूबर १९६६ तक बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें लगातार दोनों समय यजुर्वेद पारायण यज्ञ का क्रम चलता रहा। दिन में रोज सम्मेलनों का आयोजन रहा। आर्यकुमार सम्मेलन महिला सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन व शिक्षा सम्मेलन सफलतापूर्वक हुए जिनमें फैजाबाद जनपद के अतिरिक्त बाहर के निकटवर्ती नगरों से भी आर्य सज्जनों ने सपरिवार भाग लिया। रात्रि में विद्वान् उपदेशकों सन्यासी व भजनोपदेशकों के प्रवचन व भजन होते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रचारक श्री धर्मदत्त आनन्द द्वारा एक मास पूर्व से जिले में प्रचार कराया गया। प० देवराज जी वैदिक मिशनरी प० विक्रमादित्य वसन्त, प० सुदेव शर्मा जी, प० शिवकुमार शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर माता प्रभावती देवी जी गुरुकुल कांगड़ी व माता प्रियम्वदा देवी व माता शकुन्तला शोभक व प० नन्दलाल भजनोपदेशक द्वारा उपदेश व भजन होते रहे। सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव श्री स्वामी आनन्द गिरि महाराज का रहा जिन्होने १५ अक्तूबर से कथा प्रारम्भ कर दी थी। जिसमें अपार जनता उनके कथा में सम्मिलित होती थी। सारी जनता उनके प्रवचन पर मन्त्र मुग्ध हो सुनती रहती थी। सम्मेलन के मुख्य पारित प्रस्ताव यह थे—

आर्यसमाज के सदस्यों को सपरिवार साप्ताहिक अधिवेशनों में भाग लेना चाहिए अपने लड़के-लड़कियों को कुमार कुमारी सभाओं मे भी भेजना चाहिए संस्कारों का अधिक प्रचार हो। अवैदिक रूढ़िया स्त्रियों से दूर हों स्कूलों में धार्मिक शिक्षा का समावेश हो। गोहत्या विरोधी प्रस्ताव भी पारित किए गये जिसमे प्रशासन से आग्रह किया गया कि शीघ्र ही गोहत्या बन्द करने के लिए कानून बनाए। हरेक हिन्दू से अनुरोध किया गया कि वह घर में गाय पाले। हिन्दी का प्रयोग प्रत्येक आर्य के लिए अपने दैनिक कार्यों में अनिवार्य बताया गया। इस प्रकार एक सप्ताह तक सफलतापूर्वक जयन्ती महोत्सव चलता रहा। आर्यवीर दल के शारीरिक प्रदर्शन भी हुए।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए ... आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ ... द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् देवो देवानामसि मित्रोअद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥१४॥

—ऋ० १।६।१२।१३

हे मनुष्यो ! वह परमात्मा कैसा है ? कि हम लोग उसकी स्तुति करें। हे अग्ने परमेश्वर ! आप "देव, देवानामसि" देवो (परम विद्वानों) के भी देव (परम विद्वान) हो तथा उनको परमानन्द देने वाले हो, तथा "अद्भुत" अत्यन्त आश्चर्यरूप मित्र सब सुखकारक सबके सखा हो, 'वसु०' पृथिव्यादि वसुओं के भी वास कराने वाले हो तथा 'अध्वरे' ज्ञानादि यज्ञ में 'चारु' अत्यन्त शोभायमान और शोभा के देने वाले हो। हे परमात्मन् ! 'सप्रथस्तमे सख्ये, शर्मन् तव' आपके अतिविस्तीर्ण आनन्दस्वरूप सखाओं के कर्म में, हम लोग स्थिर हों जिससे हमको कहीं दुःख न प्राप्त हो और आपके अनुग्रह से हम लोग परस्पर अप्रीतियुक्त कभी न हों।

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार १८ दिसम्बर १९६६, दयानन्दाब्द १४२, सृष्टिसंवत् १ ९७ २९ ४९ ०६७

धोखा नहीं खायेंगे

★

१ दिसम्बर को ठीक एक मास बाद लोकसभा में बैठक के अन्तिम क्षणों में गोवध निषेध के सम्बन्ध में गृह मन्त्री श्री चह्वाण ने जो वक्तव्य दिया उसने गोरक्षा आन्दोलन के संचालकों को धोखा देने की कोशिश की है।

श्री चह्वाण ने कहा है कि सरकार सिद्धान्त रूप से गोरक्षा से सहमत है और वह गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगवा-देगी, यह विषय राज्यों का है अतः वह राज्यों के इस कार्य के लिए तयार करेगी।

इस वक्तव्य के बाद गृह मन्त्री ने आशा की कि गोरक्षा आन्दोलन को समाप्त कर दिया जाय परन्तु गृहमन्त्री का आश्वासन १ नवम्बर को भू० पू० गृहमन्त्री श्री नन्दा की घोषणा से एक इंच भी आगे नहीं है। इस वक्तव्य में पुरानी बात को दोहराया मात्र गया है।

गोरक्षा आन्दोलन के संचालकों ने इस वक्तव्य के बाद उसकी शब्द परीक्षा करके यही परिणाम निकाला है कि सरकार इस आन्दोलन से जिस संकट में फंस गई है उससे बाहर निकलने के लिए छटपटा रही है परन्तु उसकी नीयत साफ नहीं है। जो सरकार गोरक्षा को सिद्धान्ततः स्वीकार करने की घोषणा कर रही है वही गोरक्षा एवं गोसंवर्धन का नारा करने वाले नागरिकों को … दमन कर रही है और … ने के बाद भी … जनता … कुछ मन्त्री आदि … कर रहे हैं। होना तो यह चाहिये था कि सरकार गोरक्षा समर्थकों की गिरफ्तारी बन्द कर देती और गिरफ्तार व्यक्तियों को रिहा करती साथ ही ७ नवम्बर की बर्बर अत्याचार की दुर्घटना के लिए पश्चाताप करती एवं सही बात करवाकर जनता को विश्वास प्राप्त करती। परन्तु हो इससे उल्टा रहा है।

श्री शंकराचार्य का अनशन जारी है उनकी दशा चिन्ताजनक है और न जाने कब क्या हो जाय परन्तु प्रधान मन्त्री गृह मन्त्री अपनी शान में ऐंठ रहे हैं किसी को शंकराचार्य के पास पहुंचकर दृढ़ आश्वासन देने का साहस नहीं है। मुनि सुशीलकुमार जैन ने वातावरण को अनुकूल बनाने की सरकारी मांग के उत्तर में व्रत तोड़ दिया पर किसी ने पूछा भी नहीं न कोई बात करना चाहता है और न कर रहा है। इसके विपरीत सन्त फतेहसिंह के अनशन एवं आत्मदाह की घोषणा मात्र से सरकार को नींद नहीं आ रही है जबकि देश के किसी वर्ग या दल ने सन्त की मांग का समर्थन नहीं किया है। दूसरी ओर ९ प्रतिशत बहुसंख्या की श्रद्धा और भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।

गृह मन्त्री के लम्बे चौड़े आश्वासन के बाद भी … अपमान न अध्या … देश सारा नहीं हो सके अन्य रक्षा की सो बात … है।

हम … दर … करने के … पहुंचने हैं कि … चाहिये। … इस … ओर सरकार के वायदे … कसकर … निश्चय करा … लेना चाहिये। हिन्दी रक्षा आन्दोलन और पंजाबी सूबा विरोध आन्दोलन का आश्वासन देकर समाप्त करा दिया गया पर परिणाम विपरीत ही निकले। ऐसी स्थिति में इस बार … विश्वास … अब विनाश ही नहीं … है।

… एक जनता की ओर से … मंचालकों को … चाहते हैं कि जनता आन्दोलन के लिए तन-मन धन से पूरा सहयोग दे रही है और अन्त तक देती रहेगी अन्तिम विजय के लिये जनता सभी प्रकार के कष्ट उठाने के लिए तयार है।

हम आन्दोलन की सफलता के लिए शुभ एवं सहयोग की कामना करते हैं हमें पूर्ण विश्वास है कि इस बार हम धोखा नहीं खायेंगे और देश से गोहत्या का कलंक समाप्त होकर रहेगा।

★

हा ! ला. दीवानचन्द जी

आर्यसमाज गेस्टगंज रोड कानपुर की यह शोक सभा आर्यजगत के सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् लाला दीवानचन्द जी के निधन पर अपना हार्दिक दुःख प्रकट करती है।

पूज्य लाला जी आर्य समाज गेस्टगंज रोड कानपुर की गतिविधि को अर्ध-शताब्दी तक प्रतिष्ठित सभासद एवं अधिकारी के रूप में अपने आदर्श जीवन से सर्वतोभावेन प्रभावित करते रहे हैं।

संयम तप और स्वाध्याय उनकी जीवन साधना के मूल मन्त्र थे। नियम पालन द्वारा अर्जित अद्भुत शक्ति के वे धनी थे और मानवमात्र की शारीरिक और सामाजिक उन्नति के निमित्त अपना पवित्र जीवन समर्पित कर रक्खा था। इस उद्देश्य की पूर्ति के हेतु सम्पूर्ण भारतवर्ष की आर्यसमाजों में समय-समय पर उनके प्रवचन हुए।

श्री ला० दीवानचन्द जी

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि तो उनके जीवन का मुख्य अङ्ग था। क्रियाशील जीवन के प्रारम्भ में ही डी० ए० वी० कालेज सोसाइटी पंजाब की आजीवन सदस्यता स्वीकार की और निर्वाह मात्र धन लेकर डी० ए० वी० हाईस्कूल लाहौर के प्रधानाध्यापक पद पर तथा डी०ए० वी० कालेज लाहौर के दर्शन विभाग के प्रोफेसर रहे। उनकी विद्वत्ता एवं कार्य कुशलता से प्रभावित होकर डी०ए०वी० कालेज, सोसायटी संयुक्त प्रान्त (अब उत्तरप्रदेश) ने उन्हें १९१९ में संस्थापित डी०ए०वी० कालेज के प्रिन्सिपल पद का उत्तरदायित्व सौंपा।

इस प्रदेश में एक भारतीय को डिग्री कालेज के प्रिन्सिपल पद पर प्रतिष्ठित करने का यह सर्वप्रथम अवसर था। अल्पकाल में ही पूज्य लाला जी की गौरव गरिमा से प्रयाग पंजाब तथा अनेक विश्वविद्यालयों के ज्येष्ठ एवं वरिष्ठ शिक्षा शास्त्री प्रभावित होकर उनके प्रशंसक एवं अनुगामी बन गये।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

महात्मा नारायणस्वामी जन्म-शताब्दी की तिथियों में परिवर्तन

देश की वर्तमान खाद्य संकट एवं अन्य कठिन परिस्थिति को दृष्टि में रखते हुये शताब्दी समिति ने दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आयोजित समारोह को सम्प्रति स्थगित करने का निश्चय किया है। आगामी तिथियां शीघ्र ही घोषित की जायगी। शताब्दी की अन्य तयारियां पूर्ववत होती रहेंगी स्वामी जी के भक्त उत्साहपूर्वक अपना सहयोग बनाये रक्खें।

—उमेशचन्द्र स्नातक सहायक संयोजक
म० नारायणस्वामी जन्मशताब्दी समारोह समिति
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

योग विद्या तथा आनन्द मार्ग

(ले०—श्री आचार्य रामानन्द शास्त्री उपप्रधान बिहार आ०प्र सभा पटना)

भारत तथा विदेशों में भी योग के प्रति बहुत ही आकर्षण है। अभी नवम्बर के प्रथम सप्ताह में बिहार के मुंगेर नगर में विश्वयोग सम्मेलन हुआ था। बिहार के इस अन्न संकट के समय भी उपस्थिति पर्याप्त हुई थी। उस अवसर पर संसार के विभिन्न भागों से साधक उपस्थित हुये थे। अमेरिका, पश्चिमी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, कनाडा से आये हुये अनेक प्रतिनिधियों ने हिन्दू धर्म की दीक्षा ली तथा सन्यासी बनकर अपना नाम भी भारतीय ही रखा। कितने साधकों ने आसन तथा प्राणायाम के द्वारा ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) तथा हृदय रोग को दूर करने की विधियाँ बतायीं। सर्व साधारण के लिये यह सम्मेलन बहुत ही उद्बोधक रहा। सम्मेलन में हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा विभिन्न हिन्दु सम्प्रदाय के साधक तथा ईसाई, यहूदी आदि सम्मिलित हुए थे। समाचार पत्रों के द्वारा लोगों के हृदय में योग के प्रति बड़ी श्रद्धा बढ़ी। कुछ लोगों का ध्यान योग वास्तविकता की ओर गया है।

बहुत पाखण्डियों ने योग के नाम पर अनुचित लाभ उठाना प्रारम्भ कर दिया है। मेरे पास कितने आर्यसमाजियों ने योग के सम्बन्ध में इस तत्व को जानने के लिये पत्र लिखा है। मैं योग विद्या में निष्णात नहीं हूं, अपितु इसका एक विद्यार्थी हूं।

योग भारत की प्राचीन विद्या है। ऋग्वेद एवं यजुर्वेद में योग परक अनेक मन्त्र मिलते हैं।

अपश्य गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्। स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आवरीवर्ति भुवनेष्वन्तः। इसमें व्यापक (प्राण) को जानने की चर्चा की गयी है। प्राणायाम ही योग का मूल है। ऐतरेयारण्यक के अनुसार—प्राण और अपान के सहयोग का नाम "पृश्निगर्भ" कहा गया है। शिश्न के पाप से बचाने वाले प्राण का 'ओम' कहते हैं। यजुर्वेद में—युञ्जते मन उत युञ्जते धिय—आदि श्रुति द्वारा आत्मा तथा परमात्मा के योग का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार कठ, छान्दोग्य तथा बृहदारण्यक आदि उपनिषदों में साधना का महत्व बताया गया है। विदेशी जन इसे मनोविज्ञान बताते हैं, तथा कहते हैं कि भारतीय ऋषि मनोविज्ञान के सूक्ष्म तत्व से परिचित थे।

यजुर्वेद का शिव संकल्प सूक्त—यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवम्—आदि मन्त्र मनोविज्ञान के जिज्ञासु के लिये मनन करने योग्य हैं। योगशास्त्र व्यावहारिक शास्त्र है। इसमें किसी प्रकार विवाद नहीं, जो आस्तिक नहीं है, वह भी चिंतन का महत्व कर देते हैं। चारवाक के अनुयायी भी किसी विषय को गम्भीरता से विचार करने के लिये चिन्तन करते

इस विषय की जानकारी के लिये पातञ्जल योग शास्त्र ही आदरणीय है। उसमें योग की परिभाषा—योगश्चित्त वृत्ति निरोधः। अर्थात चित्तवृत्तियों के निरोध का नाम योग है। ऐसा कहा है कि जब चित्तवृत्तियों का निरोध हो जाता है, तब "तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्" आत्मा अपने स्वरूप को जान लेता है। चित्तवृत्तियों की ५ भूमि हैं—(१) क्षिप्त (२) मूढ़ (३) विक्षिप्त (४) एकाग्र (५) निरुद्ध। जब वृत्ति निरुद्ध होती तब समाधि की प्राप्ति होती है। समाधि का वर्णन वाणी से नहीं किया जा सकता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में कहा है कि—'न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते।" स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि समाधि वह अवस्था है जहाँ जाने की बारम्बार प्रवृत्ति होती रहती है।

पातञ्जल योगशास्त्र में योग के आठ अङ्ग बताये गये हैं—

यम, नियम, आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान तथा समाधि। योग शास्त्र में इन्हीं विधियों से सिद्धि-प्राप्त करने का उपदेश है। जैसे-जैसे एक की सिद्धि होती है, मनुष्य दूसरी सीढ़ी पर बढ़ता जाता है। इसमें भोजन पान आदि व्यवहार की शुद्धता पर बहुत ध्यान दिया गया है। यही विधियां प्राचीन हैं। किन्तु जब भारत में जैन तथा बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव हुआ तो उन लोगों ने साधना की दूसरी पद्धति निकाली। बौद्धों के 'विसुद्धिमग्गो' में भगवान बुद्ध ने साधना की विधि बतायी है। भगवान बुद्ध के पहले पञ्च-धर्मीय भिक्षु थे। उनके अनुसार वृक्षों पर लटकना काँटों पर सोना तथा पञ्चाग्नि सेवन था।

कुछ ने इस मार्ग का विरोध किया तथा मध्य मार्ग की पद्धति चलाई। बौद्ध साधकों की दूषित परम्परा में ८४ सिद्ध हुए जिन्होंने साधना के नाम पर अनेक विध कदाचार का प्रचार किया। वाम मार्ग के प्रचारकों ने कहा कि हमें जिस चीज से घृणा है उसे ही अपनानी चाहिये। जैसे एक आदमी भोजन करने बैठा, ज्योंही भोजन प्रारम्भ किया, उसे कुछ दूर पर मल दिखाई पड़ा वह उस मल को देखकर कय (वमन) कर दिया, तथा भोजन छोड़कर चला गया। वाम मार्गी साधक कहते हैं कि उसे ऐसी साधना करनी चाहिये कि उसके शरीर में भी मल लग जाय अथवा थाली में भी मल गिर जाय तो किसी प्रकार की घृणा उत्पन्न न हो।

उसी से सरभंग सम्प्रदाय का जन्म हुआ, जिसे औघड़ कहते हैं। ये औघड़ साधु अपने पेशाब से भी अपना मुंह धो लेते हैं। इन्हें मनुष्यों के मांस से भी परहेज नहीं है, इनका कहना है कि सच्चा सिद्ध वह है जो अपनी स्त्री तथा बहिन या माता में भेद नहीं मानता है। उसी प्रकार उसके साधक कहते हैं जिसे कालरङ्ग से प्रेम है, वह काला रंग धारण करले जिससे मन का पूर्ण दमन हो। पञ्चमकार की बातों से सब परिचित ही है।

बिहार में एक नया सम्प्रदाय फैल रहा है। इसका प्रचार जम्मू कश्मीर मध्यप्रदेश आदि स्थानों में भी हो रहा है, उसका नाम 'आनन्द मार्ग' है। यह भी वाम मार्ग का ही नया संस्करण है। आनन्द मार्ग में भोजन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। साधक मांस, मछली तथा शराब का भी सेवन कर सकता है। उससे साधना में कोई बाधा नहीं पहुंच सकती है। आनन्द मार्ग के प्रवर्तक श्री प्रभात रञ्जन सरकार कहते हैं कि ब्रह्मचर्य का अर्थ वीर्य रक्षा नहीं है। कोई पूर्ण ब्रह्मचारी नहीं हो सकता है आनन्द मार्ग की पुस्तक "जीवन वेद" में लिखा है कि मास में एक बार वीर्य पात आवश्यक है।

आनन्द मार्ग में साधक को अपने गुरु जी को सम्पूर्ण अर्पित करने की भावना होनी चाहिये। प्रत्येक साधिका तथा साधक बैठकर अपने सम्पूर्ण अङ्गों पर हाथ रखकर चिन्तन करते हैं कि यह हमारा अङ्ग नहीं अपितु गुरु जी को

(शेष पृष्ठ ४ पर)

योगि बिना न वियोग मिटे

[इन्द्र विजय भगणात्मक छन्द]

वैदिक धर्म रहे सबके मन, मानवमात्र न भिन्न निहारे।
वेद पढ़ें, सब प्रेम परायण, वे नित आर्य-संयुक्त विचारे॥
नीति सहीत चले निज जीवन, मानव कर्म सदा सब धारे।
दम्पति एक विचार रहे तब, जीवन को भवसागर तारे॥

वाचिक लोक रहे भ्रम में सब, आप न वेद पढ़े न पढ़ावें।
वेद विरुद्ध, चले नित सो ठग, पोपट स्वारथ पथ बनावें॥
बुद्धि न पुग सके जिनकी तब, वैदिक को वह जाल बतावें।
शक्ति नहीं तन-तेज नहीं मन मंदिर वेद प्रकाश न आवें॥

वैदिक-रीति विशुद्ध पुरातन, जान सके बिन ताप सहे हैं।
कर्म्म विहीन बने नर-नायक, पूज्य बनें गुरु आप रहे हैं॥
शिष्य वही गुरु के गुन ग्राहक, वाम विचारक वाम गहे हैं।
कारण है इस बोध लहें कब, है गुरु जो शिव ज्ञान कहे हैं॥

भारत घोर रहा तम आवृत, पाखंड का भरपुर व्यवहारा।
भूल गये सब वेद सही निज, धर्म-सनातन ध्यान बिसारा।
आ करके फिर लोप विवेचक, स्वारथ के निज जाल पसारा।
आज रहे दुख भोग सभी हम, वैदिक ज्ञान बिसार हमारा॥

आ उतरे ऋषि देव दयानन्द, भारत का सब एक विधाता।
पोल निकाल यही सबकी जब, आज बनें सब धर्म्म सुज्ञाता॥
देश बचाय लिये ऋषि ने यह, आतुर देश रसातल जाता।
योगि बिना न वियोग मिटे निज, योगि वही सुख के निरमाता॥

—कवि कस्तूरचन्द "घनसार" पीपाड़ शहर (राज०)

गोहत्या पर पूर्ण रोक लगे

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री द्वारा लोक सभा में प्रस्ताव

सभापति महोदय,

भारतवर्ष में गाय के प्रति आस्था वैदिक काल से चली आ रही है। वेदों में गाय के सम्बन्ध में ये शब्द लिखे हैं— "माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसा आदित्यानाम्।" इसके प्रारम्भ से ही

श्री प्रकाशवीरजी शास्त्री

गाय के सम्बन्ध में वे पवित्र सम्बन्ध रखे हैं, जो पुत्र और माता, भाई और बहिन और पुत्री में होते हैं।

जब से इस देश मे गाय की हत्या प्रारम्भ हुई, उस समय से उसकी हत्या को बन्द कराने के लिये आन्दोलन भी प्रारम्भ हुआ। मैं बहुत लम्बे चौड़े उदाहरण न देते हुये मुगल-काल का केवल एक ही उदाहरण देना चाहता हू। बाबर के अपने हाथ से लिखा हुआ वसीयतनामा भोपाल की लाइब्रेरी मे सुरक्षित है। उसमें बाबर ने अपने पुत्र हुमायू को कहा कि अगर हिन्दुस्तान मे देर तक हुकूमत करनी है, तो ये दो काम कभी न करना। एक तो गाय की हत्या न होने देना और दूसरे हिन्दू धर्म-मन्दिरो का विनाश न करना। इससे पता चलता है कि मुगल काल मे भी मुगल शासक इस बात के लिये लिए कितने सतर्क रहते थे, कि गाय का वध न हो और उसकी रक्षा की यथेष्ट व्यवस्था हो।

ब्रिटिश काल मे भी समय-समय पर इस प्रकार के आन्दोलन चले। अमृतसर का कूका आन्दोलन एक बहुत बडी ऐतिहासिक घटना है, जिसमे सद्गुरु रामसिंह का बलिदान हुआ। १८५७ की क्रान्ति के पीछे जो कारण थे उनमे से एक यह था कि इससमय बन्दूको के लिये जो गोली दी गई, उसमे गाय की चरबी इस्तेमाल होती थी, जिससे हिन्दू सिपाहियों की भावनायें उभड़ीं और उससे प्रभावित होकर १८५७ की क्रान्ति की चिनगारियां जगह-जगह फैल गई।

१८५७ की क्रान्ति के बाद जब राजस्थान के पोलीटिकल एजेन्ट कर्नल ब्रुक्स, राजस्थान से विदा होकर जाने लगे, तो स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भरी सभा में कर्नल ब्रुक्स को कहा कि महारानी विक्टोरिया को जाकर कहना कि अगर गौ-हत्या का कलंक इस देश में से जल्दी न मिटा, तो इस देश में १८५७ की पुनरावृत्ति फिर भी हो सकती है। उसके बाद स्वामी जी ने इस सम्बन्ध मे लगभग दो करोड़ हस्ताक्षर कराकर १८८३ के करीब ब्रिटिश पार्लियामेन्ट को भेजने का प्रयत्न किया, लेकिन उनकी जीवन लीला बीच मे ही रह जाने से उनका वह उद्देश्य पूरा न हो सका।

इसी तरह गाय के प्रश्न को लेकर १८९२ में बलिया मे एक क्रान्ति हुई, जिसको देखने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेन्ट से एक डेलीगेशन आया। उसके बाद गाय के प्रश्न को लेकर १९१७ मे एक बडा आन्दोलन हुआ, जब कटारपुर मे एक केस हुआ।

मैं इस सदन के माध्यम से यह सारा इतिहास सरकार को इसलिए बता रहा हू कि कहीं यह न समझ लिया जाये कि गाय की हत्या को बन्द कराने का आन्दोलन कोई नया है। इस आन्दोलन को सबसे अधिक बल उस समय मिला जब महात्मा गाधी ने इस आन्दोलन को अपने हाथो मे लिया और इस आन्दोलन मे मुसलमानों को सम्मिलित करने के लिये उन्होने खिलाफत आन्दोलन का साथ दिया। मेरे हाथ मे यह १९२४ की छपी हुई पुस्तक है, जिसमे लिखा हुआ है कि खिलाफत आन्दोलन के सम्बन्ध मे किसी ने जब गाधी जी से पूछा कि विदेशो के आन्दोलन से हमारा क्या मतलब और आप तिलक स्वराज्य फण्ड का हमारा पैसा खिलाफत आन्दोलन मे क्यो लगा रहे है? तो गाधी जी ने उत्तर दिया कि मै मुहम्मद अली और शौकत अली की खिलाफत मे इसलिये साथ दे रहा हू जिससे वे मेरी गाय माता को बचायें।

जिस समय हमारे देश मे विभाजन की माग बल पकड रही थी, तो मुस्लिम लीग से यह पूछा गया कि क्या वह किसी शर्त पर विभाजन की माग छोड सकती है। महादेव देसाई ने अपनी डायरी मे यह घटना लिखी है कि मि० जिन्ना की ओर से जो तरह शर्ते गाधी जी के पास आई, उनमे से एक शर्त यह थी कि आजाद हिन्दुस्तान मे मुसलमानो को गोकशी की खुली छूट रहेगी। महादेव देसाई लिखते हैं कि गांधी जी ने यह कह कर उन शर्तों का पर्चा वापस कर दिया कि मैं गाय की गर्दन पर छुरी रख कर हिन्दुस्तान की आजादी नहीं लेना चाहता हू।

मैंने यह पृष्ठभूमि इसलिये बताई है ताकि गाय की रक्षा के आन्दोलन को नया न माना जाये। लोकमान्य बालगगाधर तिलक के पराधीन भारत मे ये शब्द थे कि गाय के प्रश्न को लेकर हिन्दू ज्यादा रोष में न आयें, जिस दिन स्वतन्त्र होगा, उसी दिन एक कलम से गो हत्या को रोक दिया जायेगा और भारतवर्ष मे पहला कानून जो बनेगा, वह गोवध-बन्दी का होगा।

तीस वर्ष की निरन्तर इन्तजार के बाद जब इस देश मे इस प्रकार की स्थिति नहीं आई, तब राजनीति दलो से ऊपर उठे हुये कुछ सन्तो ने, जिनमे जगद्गुरु शकराचार्य, जैन मुनि सुशील कुमार और प्रभुदत्त ब्रह्मचारी आदि व्यक्ति सम्मिलित हैं, इस आन्दोलन को अपने हाथ मे लिया।

हमारे देश मे गोहत्या से कितना बडा ह्रास होता हुआ चला आ रहा है, मैं उसका मामूली सा उदाहरण आपको देना चाहता हू। १९४० मे इस देश मे गाय का दूध ७५१७ हजार टन होता था। सरकारी आकडो के हिसाब से १९६१ मे गाय का दूध हो रहा है ८५३८ टन। यानी इन तीस सालो मे गाय का दूध केवल हजार टन ही बढ पाया है। इससे ही अनुमान लगा लिया जाये कि इस देश मे गोधन का कितना बडा ह्रास हो चुका है।

जहा तक सख्या की दृष्टि से गोवश की हानि का सम्बन्ध है, १९५१ मे इस देश मे १५५३ लाख गाय थे, जब कि १९६१ मे यह सख्या १७५५ लाख है, यानी इस अवधि म गोवश की वृद्धि केवल मात्र १२ प्रतिशत हुई है, जबकि दुनिया का रिकार्ड देखने से पता लगता है कि इसमे ८ प्रतिशत की वृद्धि अवश्य होनी चाहिये थी। उसका दुष्परिणाम यह है कि हमारे देश मे आज सब मिलाकर गाय, भैंस, बकरी वगरह का जो दूध होता है उसमे प्रति व्यक्ति खपत सब मिलाकर है ४९ ग्राम लगभग २ छटांक दूध प्रति व्यक्ति के हिस्से मे आता है। लेकिन गाय का दूध तो इससे भी कम है। वह ३ २८ औंस आ कर पड़ता है। इससे आप अन्दाज लगा लें कि हमारे देश में गोवश का कितना ह्रास हुआ है जिसका दुष्परिणाम यह है कि आज खेती का यह हाल है कि ट्रैक्टर चलाने के लिये पैसा किसान के पास नहीं है और इतनी जमीन किसान के पास नहीं है वह ट्रैक्टर चलाये। पचास-पचास साठ साठ बीघे खेत मे कहा वह ट्रैक्टर चलायेगा। बैलों की जोडी इतनी महगी हो गई है कि पन्द्रह सौ, दो-दो हजार रुपये मे बैलो की जोड़ी आ रही है। आर्थिक दृष्टि से एक ओर सरकार कह रही है हम अन्न का उत्पादन बढ़ायें और दूसरी ओर इस प्रकार की दुरवस्था होती जा रही है। सरकार को ऐसा लाभ क्या है जिसके आकर्षण मे आकर सरकार गोहत्या को चालू रखना चाहती है? सरकार ने अभी एक प्रश्न के उत्तर मे बताया कि ६५-६६ में जो विदेशों को गाय का मास भेजा गया वह कितना था। सरकार उत्तर देती है कि ६५ ६६ मे ३२५ लाख रुपये का यानी ३ करोड २५ लाख रुपये का गोमास विदेशो को भेजा गया। अगर इसी हिसाब से हम आकडे लगायें तो पिछले २० वर्षों मे ६५ करोड़ के आंकडे गोमास क विदेशो मे भेजने के आते है।

गाधी जी के देश के लिये आज इससे बडी लज्जा और शर्म की बात दूसरी नहीं हो सकती। इसी तरह से खालों क चक्कर मे आकर हमारे देश से लगभग २५० करोड रुपये की खाल गायो की विदेशो को भेजी गई। इस विदेशी मुद्रा क चक्कर मे आकर सरकार किस तरह से हमारे गोवश का ह्रास जानबूझ कर करती जा रही है उसके मैंने कुछ प्रमुख आंकड दिये हैं।

एक ओर बात मे कहना चाहता हू। प्रधान मन्त्री ने अभी राज्य सभा मे एक भाषण देते हुए कहा कि समझ मे नहीं आता कि गोहत्या बन्द करने का आन्दोलन चुनावो से पहले क्यो उठाया जाता है? मै पूछना चाहता हू कि चुनावो से पहले अगर विरोधी दल क लोगो ने यह आन्दोलन उठाया होता तो कहा जा सकता था कि चुनावो को प्रभावित करने के लिए उठाया लेकिन कोई देखे चलकर जगद्गुरु शकराचार्य को कौन सा चुनाव लडना है जैनमुनि सुशील कुमार जी का कौन-सा चुनाव लडना है? आचार्य विनोबा भावे का कौन सा चुनाव लडना है? जयप्रकाश नारायण को कौन चुनाव लडना है। जो यह कह कर इस आन्दोलन की पवित्रता को नष्ट किया जाता है कि चुनावो से पहले इस आन्दोलन को छेड़ा गया है?

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द के आदर्श शिष्य—

म० नारायण स्वामी की साहित्य साधना

(जिन्होंने महर्षि के सन्देश को साकार रूप दिया)

श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम०ए० अध्यक्ष हिन्दी विभाग मव०कालेज पाली

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध सन्यासी और नेता महात्मा नारायण स्वामी एक उच्चकोटि के योगी, आध्यात्मनिष्ठ साधक और उत्कृष्ट सगठक ही नहीं अपितु एक महान् साहित्यकार भी थे। उन्होंने अपने जीवनकाल मे जिन उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की, वे बडे लोकप्रिय हुये तथा सहस्रो व्यक्तियों ने उनके स्वाध्याय द्वारा अपनी आध्यात्मिक पिपासा शान्त की। महात्मा नारायण स्वामी की जन्म-शताब्दी के वर्ष मे यह आवश्यक है कि हम उनके सम्पूर्ण साहित्य को सुन्दर रूप मे सम्पादित कर प्रकाशित करें।

महात्मा जी द्वारा रचित ग्रन्थो का परिचय निम्न प्रकार है—

१—उपनिषद् रहस्य—इस ग्रन्थमाला के अन्तगत स्वामी जी ने ईश केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक इन दसो उपनिषदों का सुबोध भाष्य किया। यह भाष्य इतना लोकप्रिय हुआ कि, इसके अब तक कई सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। यह ग्रन्थमाला सार्वदेशिक सभा ने छापी है।

२—आत्म दर्शन—यह आत्म तत्व का निरूपण करने वाला दर्शन ग्रन्थ है। इसका प्रथम सस्करण १९२१ मे छपा। इसमे चार्ल्स डार्विन प्रतिपादित विकासवाद का खण्डन करते हुये आत्मा और परमात्मा की सत्ता को सिद्ध किया गया है। लेखक का विशाल अध्ययन इसी बात से द्योतित होता है कि उसने आत्मतत्व के सम्बन्ध मे सभी प्रमुख पाश्चात्य दार्शनिको की विचारधाराओ का उल्लेख करते हुये तथा विभिन्न धर्मों मे प्रचलित आत्मा के विषय की मान्यताओ का विवेचन करते हुये वैदिक सिद्धान्त को स्थापित किया है। इसका प्रथम सस्करण इन्द्रजीत एण्ड सस शाहजहापुर तथा द्वितीय सस्करण राजपाल ने छापा था।

३—कर्म रहस्य—कर्म जैसे गहन विषय पर महात्मा जी ने यह विवेचनात्मक ग्रन्थ आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य मे १९३८ मे लिखकर छापा था। लगभग ४०० पृष्ठो मे लिखी गई इस बृहद् पुस्तक मे कर्म विषयक सभी सिद्धान्तो का ऊहापोह किया गया है।

४—मृत्यु और परलोक—सम्भवत यह महात्मा जी की सबसे अधिक लोकप्रिय पुस्तक है। अब तक इसके २२ सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। लेखक ने इसमें परलोक विषयक सम्पूर्ण जानकारी सगृहीत कर दी है। विदेशो के उन सारहीन बातो जो प्रेत के आधार पर मृतात्माओ को बुलाते हैं, उनकी पूरी पोल खोली गई है। इसका प्रथम सस्करण १९२८ मे प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ भी सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित किया जाता रहा है।

५—कथा माला—उपनिषदो में आने वाले उपाख्यानो को एकत्रित किया गया है।

६—वेद रहस्य—वेद से सम्बन्धित विषयों पर विचार किया गया है। वैदिक सम्पत्ति के लेखक प० रघुनन्दन शर्मा के सहिताओ मे प्रक्षेप सिद्धान्त का बलपूर्वक खण्डन करते हुये वेदों के बालखिल्य, कुन्ताप आदि सूक्तो तथा वेदों के खिल भाग का महत्वपूर्ण विवेचन किया गया है। इसका प्रकाशन प्रेम पुस्तक भण्डार बरेली द्वारा हुआ।

७—कर्तव्य दर्पण—भक्ति दर्पण की पद्धति पर ही सन्ध्या, अग्निहोत्र, भजन तथा अन्य नित्य और नैमित्तिक कर्मकाण्ड पद्धतियों का सग्रह किया गया है। इसका प्रथम सस्करण वैदिक यन्त्रालय अजमेर ने छापा। अब गोविन्दराम हासानन्द छापते हैं।

८—अमृत वर्षा २ भाग—महात्मा जी के लेखों का स्फुट सग्रह प्रथम भाग राजपाल द्वारा प्रकाशित किया गया तथा द्वितीय भाग श्यामलाल सत्यदेव बरेली ने छापा।

९—नारायणोपदेश—यह भी निबन्धों का सग्रह है जिसे राजपाल ने छापा।

१०—आर्य सिद्धान्त विमर्श—सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे सवत् १९३३ मे एक आर्य विद्वत् सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमे विभिन्न विद्वानो ने वेदो के विषय मे अपने निबन्ध पढ़े। इन निबन्धो का सग्रह १९३३मे महात्मा जी द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित हुआ। उपोद्घात के अन्तगत महात्मा जी का वेद का आविर्भाव और उनके समझने का प्रकार शीर्षक विस्तृत निबन्ध है। यह उपयोगी ग्रन्थ कई वर्षों से अनुपलब्ध है।

११—वैदिक सिद्धान्त—ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर लिखे गये विभिन्न विद्वानो के लेखो का सम्पादन कर महात्मा जी ने १९२५ ई० मे जन्म-शताब्दी सभा के तत्वावधान में प्रकाशित किया।

१२—योग रहस्य—पतञ्जलि कृत योगदर्शन का सारगर्भित भाष्य है। भूमिका के रूप मे योग विषयक जिज्ञासाओं का समाधान किया गया है। यह ग्रन्थ भी सार्वदेशिक सभा ने छापा।

१३—प्राचीन और नवीन समाजवाद—स्वामी जी जितने दार्शनिक और आध्यात्मिक विषयों के ज्ञाता थे, उतने ही राजनीति और समाजवाद के भी। समाजवाद के प्राचीन और अर्वाचीन सभी सिद्धान्तों और वादों का ऐतिहासिक अनुशीलन करते हुए समाजवाद की दार्शनिक ढग से आलोचना की गई है। यह ग्रन्थ आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा छपा।

१४—साम्यवाद—उक्त ग्रन्थ का ही एक अश प० जगतकुमार शास्त्री द्वारा साहित्य मण्डल, दीवान हाल, दिल्ली द्वारा पृथक् प्रकाशित हुआ।

१५—वैदिक सन्ध्या पद्धति—कर्तव्य-दर्पण का सन्ध्या विषयक व्याख्या भाग गोविन्दराम हासानन्द द्वारा छापा गया।

१६—प्राणायाम विधि—कर्तव्यदर्पण का प्राणायाम विषयक व्याख्या भाग, प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द।

१७—वैदिक यज्ञ पद्धति—यज्ञपद्धति की यह व्याख्या भी गोविन्दराम हासानन्द द्वारा छपी है।

१८—आत्म कथा—महात्मा जी ने अपनी आत्म कथा भी लिखी। यह आर्य साहित्य सदन, दिल्ली से २००० वि० मे छापी। सम्प्रति अनुपलब्ध है।

१९—पाप पुण्य—यह भी स्वामी जी के लेखो का एक सग्रह है।

२०—विद्यार्थी जीवन रहस्य—विद्यार्थियो के लाभार्थ स्वामी जी ने लिखी। इसके कई सस्करण हो चुके है। इसमे ब्रह्मचर्य, वीर्य रक्षा, चरित्र निर्माण, आसन आदि विषयो पर प्रकाश डाला गया है। पाचवा सस्करण आर्य प्रकाश पुस्तकालय, आगरा से छपा।

२१—गृहस्थ जीवन रहस्य—विषय नाम से ही स्पष्ट है। यह गोविन्दराम हासानन्द ने छापा।

२२—आर्यसमाज क्या है? यह परिचयात्मक ग्रन्थ राजपाल तथा सार्वदेशिक प्रकाशन (२०१२ वि०) ने छापा।

२३—पुरुषार्थ करो—ट्रैक्ट प्रकाशन, सार्वदेशिक प्रकाशन।

२४—ईशोपनिषद् की अंग्रेजी टीका—यह अंग्रेजी अनुवाद प० काशीराम जी द्वारा तैयार किया गया और उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा १९२९ ई० में छपा।

महात्मा जी विषयक साहित्य

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में महात्मा जी को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया। इसके सम्पादक प० महेन्द्रप्रसाद शास्त्री थे। यह नारायण अभिनन्दन ग्रन्थ १९४५ मे प्रकाशित हुआ। महात्मा जी का हिन्दी मे सक्षिप्त जीवन चरित श्री त्रिलोकचन्द्र विशारद ने लिखा जो आदर्श जीवनमाला—२ के अन्तगत गोविन्दराम हासानन्द ने छापा। एक अन्य सक्षिप्त जीवनी भी छप चुकी है। सस्कृत मे कविरत्न मेधाव्रताचार्य ने 'नारायण स्वामि चरितम्' लिखा, जो गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित हुआ। इस की विस्तृत समीक्षा मेरे शोध प्रबन्ध (आर्यसमाज की सस्कृत भाषा और साहित्य की देन) मे होगी।

ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी के तत्वावधान मे जो साहित्य सृजन और प्रकाशन का वृहद् कार्य हुआ, उस महान समारम्भ के आयोजक भी महात्मा जी ही थे। उन्हीं की व्यवस्था से जन्म-शताब्दी के अवसर पर कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ छपे। आज आवश्यकता इस बात की है कि महात्मा के उपरिलिखित २४ ग्रन्थो को एक विशाल भूमिका तथा उनकी जीवनी सहित कई भागो में प्रकाशित किया जाय।

स्वामी जी के [illegible] की इस समय नाम मुक्तिराम था। उसके पश्चात् प० मुक्तिराम उपाध्याय रहा और सन्यास दशा में स्वामी आत्मानन्द विख्यात हुआ। आपका जन्म मेरठ जनपद के नजदीक से ११ किलोमीटर दूर गम्भाड़ में हुआ था। आप निर्धन गौड ब्राह्मण थे। पौराणिक परिवार से थे। आरम्भ से ही आपको संस्कृत अध्ययन में रुचि रही। इसके लिए आप मेरठ, मुजफ्फरनगर में पढ़कर काशी प्रस्थान कर गये थे। उन दिनों काशी नगरी को प्रकाण्ड पण्डित सुशोभित किया करते थे, वहां स्वामी जी को भी श्री प० तिवारी जी, महामहोपाध्याय श्री लक्ष्मण शास्त्री जी, श्री शंकर भट्टाचार्य जी से क्रमशः व्याकरण, वेदान्त और न्याय ग्रन्थ पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अध्ययन में अत्यधिक परिश्रम से उनका स्वास्थ्य बिगड़ हो गया था। जीवन से निराश हो चुके थे। तब स्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती ने उन्हें अपने सान्निध्य में लिया और रावलपिण्डी नगर से ८० मील दूर श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित किये गये गुरुकुल पोठोहार में भुला लिया। वहां उनका स्वास्थ्य उत्तरोत्तर दिन दूना चौगुना बढ़ता चला गया। अतः वे वहीं स्थिर हो गए।

बनारस में यद्यपि आप उन दिनों आर्यसमाजी नहीं बने थे, फिर भी आर्य समाज की धारा से प्रेम रखते थे। इसीलिए जब स्वामी दर्शनानन्द जी का जैनियों से शास्त्रार्थ चल रहा था और जैनियों ने आर्यसमाज से १११ प्रश्नों का उत्तर लिखित मांगा था, तब स्वयं ही उत्साह में आकर बिना किसी के संकेत के अपनी मेधावी बुद्धि से सब प्रश्नों के उत्तर लिखकर प्रकाशित करा दिये थे। आर्यसमाज इन उत्तरों से बहुत प्रभावित हुआ था। सम्भवत आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उन्हें पुस्तक रूप में छपवा दे; क्योंकि आर्य प्रतिनिधि सभा के समीप उनकी एक प्रति मेरे द्वारा पहुंचाई हुई विद्यमान है।

स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती की बुद्धि बहुत तीव्र थी। गीता में उन्हें अनेक स्थलों पर असंगति जान पड़ी थी। इसलिए उन्होंने अपने तर्कों के आधार पर सप्रमाण, गीता में आए हुए अनेक प्रक्षिप्त श्लोकों को बाहर निकाल डाला। जब उनका ग्रन्थ जनता के सम्मुख उपस्थित हुआ था, तो हमारे ही हिन्दू भाइयों ने यहाँ तक कह दिया था कि यह बड़ी लज्जा की बात है कि हमारे रहते गीता के अङ्ग-भंग करने वाला व्यक्ति जीवित है।" इस कथन पर स्वामी आत्मानन्द जी ने जो उस समय श्री प० मुक्तिराम

स्मृति-प्रसंग —

स्वा. आत्मानंद सरस्वती

[१२ दिसम्बर १९६० को निर्वाण-दिवस]

[ले०—श्री स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश]

उपाध्याय थे कह दिया था—"एक दूसरे के प्राण लेना तो क्षत्रियों का काम है, ब्राह्मणों का नहीं। मुझे जैसा सूझा, लिख दिया है। आपके द्वारा इसका सयौक्तिक खण्डन कर दिया जाय, तो मुझे ही नहीं, अपितु जनता को भी ग्राह्य होगा। उनके इस प्रतिवचन से सब जगह चुप्पी छा गयी थी और आज उसी गीता के अनेक संस्करण छपकर पठनार्थियों को सच्चा ज्ञान करा रहे हैं।

"मनोविज्ञान तथा शिव संकल्प" नामक ग्रन्थ भी आपकी मौलिक रचना है, जिसका समुचित आदर आर्यकुमार परिषद् की परीक्षाओं में रखकर किया है।

'सन्ध्या अष्टाङ्ग योग" भी अपने ढंग की निराली ही पुस्तिका है।

कोई बुलाने वाला आप तदैव साथ हो लिये। कभी-कभी आपको घोड़े पर चढ़कर भी जाना पड़ता था।

अवकाश के दिनों में स्वामी जी महाराज छात्रों सहित प्रचार में निकल जाते थे। उधर के पर्वतीय स्थान ही प्रचार से प्रभावित होते थे। एक स्थान पर अछूतों को शुद्ध करने की जब लोगों ने आपत्ति उठाई, तो महाराज ने कहा—"भोले भाइयो! तनिक यह तो सोचो, इस प्रान्त में हिन्दू कहलाने वाले लोग कितनी संख्या में हैं। मुसलमानों की अपेक्षा आप लोगों की संख्या नगण्य है। ऐसी अवस्था में हिन्दू कहलाने वाले अपने इन अस्पृश्य भाइयों को आप गले नहीं लगाएंगे, तो वे विवश होकर मुसलमान बन जावेंगे। और आपके

जीवन-ज्योति

इस प्रकार आदर्श ब्रह्मचारी, आत्मा का स्थान, उपासना का वैदिक स्वरूप आदि जिस विषय पर भी आपने लेखनी उठाई, उससे नया ही ज्ञान जनता को उपलब्ध हुआ।

हैदराबाद सत्याग्रह में आपने जेलों का भ्रमण करके अन्त स्थिति से स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज को परिचित कराया और अनेक नगरों में व्याख्यानों द्वारा इतना अधिक प्रचार किया कि आपको रुधिर-निपीड (ब्लड प्रेसर) का रोग पीछे लग गया।

आर्यसमाज के प्रचार की लगन आपको बहुत तीव्र थी। गुरुकुल पोठोहार में छात्रों को पढ़ाने से अतिरिक्त रावलपिण्डी नगर में उपदेशक विद्यालय खोलकर उपदेशक भी तैयार करते जाते थे। रात्रि पाठशालायें भी प्रौढ़ों के लिए सञ्चालित की हुई थी।

सम्प्रदायवाद से आपको प्रेम न था। मानवता आपके हृदय में सञ्चार करती थी। अत दयार्द्र होकर आप चिकित्सा का कार्य भी साथ-साथ करते थे। कोई हिन्दू हो या मुसलमान, जिस समय भी

कट्टर शत्रु बन जायेंगे। यदि मुसलमान न बने, तो ईसाई बनेंगे। तब भी यही दशा होगी और दोनों ही तरह हिन्दुओं की संख्या घटेगी। आप इनके अधीन रहोगे। ये आप पर राज्य करेंगे।"

हमारे ही हिन्दू भाई शुद्ध हुये उन लोगों से यहा तक घृणित व्यवहार करते थे कि जिसे सुनकर मानवता भी लजा जाती है। वे कहते थे—आर्यसमाजी जनेऊ पहनाकर तो क्या शुद्ध करेंगे हम ऐसा यज्ञोपवीत पहना देते हैं जो कभी उतारे भी न उतरे और वे अग्नि में तपाती लाल करके यज्ञोपवीत के स्थान पर शरीर के चारों ओर ऐसी घुमा देते थे कि नीचे तक का मास तक जल जाता था।

स्वामी जी महाराज का भारतीय अनेक भाषाओं पर अधिकार था और जिनमें संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, अवधी और व्रजभाषायें प्रमुख थीं। हिन्दी भाषा के उन्नयन के लिये उन्होंने सन १९४१ में एक कविता ऐसी बनाई थी—

जाके वर्ण गण को
विज्ञान मान मान करे,
शब्द राज को भण्डार
जासु की विशाल है।
विविध प्रकार को
भण्डार कोष सोहु रह्यो,
कौन है संसार जाय
जो न याँ के साल है।
ऐसी निज भारती
बिसार दयी गौरव की,
फूल हार जाय रह्यो
निज अपमान है।
वेश निज भेष भूल
भेष पर हाथ दिये
शेष रहियो शेष याहु
द्वार लख्यो काल है।
होय पराधीन
धन होन, बल होन भये,
हिल ना सके हैं
जिमि मीन जलहीन हो।
नाव मझधार
पतवार मन सोय गयो,
भागो कर्णधार
मतिहार मतिहीन हो।
मान अरु आन गये
ज्ञान गये ध्यान गये,
मधुर मिलाप गये
प्रेम अतिदीन हो।
मातु बिसराय
सब हाथ लुटवाय दियो,
जेपहु न जाय
मति चेत हियहीन हो।

स्वामीजी का उस प्रदेश में भगीरथ प्रयत्न रहा कि एक बालक से लेकर बूढ़े तक के लिये हिन्दी भाषा का पढ़ाना अनिवार्य हो जावे।

वे जीवन की गहराइयों में बहुत अधिक पहुंचते थे और उनका हृदय यहां तक कहने के लिये उछल पड़ता था—

उथल-पुथल है, हर्ष-शोक है
राग-द्वेष है जीवन में।
कभी मान अपमान भावना,
वीतरागता हर क्षण में।
लोलुपता का नृत्य कभी है,
कभी भरा सन्तोष अपार।
कभी देश के हित मर जाना,
कभी स्वार्थ का अधम विकार।
दयादीन पर कभी दिखाये,
मृदुता का निज रूप अनूप।
कभी क्रूरता वमन मद की,
प्रकटाती निज विषम स्वरूप
भक्तिभाव से भरा हृदय य,
कभी ईश गुण गाता है।
नास्तिकता की कभी तरंगों में—
पड़कर वह जाता है।

आर्यसमाज का प्रचार करने के लिये स्वामी जी महाराज स्वोपज्ञ बुद्धि से काम लिया करते थे। वे गुरुकुल पोठोहार की समाप्त करके उसे रावल-

(शेष पृष्ठ ९ पर)

गोरक्षा आन्दोलन में २०० व्यक्तियों का अ.स. का पहला सत्याग्रही जत्था स्वा. रामेश्वरानन्द जी के नेतृत्व में गिरफ्तार

६ मील का प्रदर्शन कर प्रधान मन्त्री की कोठी पर धरना : प्रधान मन्त्री कोई उत्तर न दे सकीं

२०० व्यक्तियों का जत्था, स्वामी रामेश्वरानन्द जी के नेतृत्व में जिनमें गुरुकुल घरौंडा के ब्रह्मचारी, साधु, सन्त, गृहस्थी और आर्य महिलायें भी शामिल थे, २६ अक्तूबर को आर्यसमाज मन्दिर करौल बाग, नई दिल्ली से विदा हुआ, जत्थे को विदा देते हुए स्वामी रामेश्वरानन्द जी के साथ आर्यसमाज करोलबाग के मन्त्री श्री विश्वम्भरदास व पं० भारतेन्द्र नाथ भी दिखाई पड़ रहे हैं। आर्यसमाज के अन्य कार्यकर्त्ता भी साथ खड़े हैं।

★

आर्य महिलाओं के जत्थे ने भी २६ अक्तूबर को स्वामी रामेश्वरानन्द जी के साथ सत्याग्रह किया, जत्थे में गाजियाबाद आर्यसमाज की मंत्राणी श्रीमती उषा (धर्मपत्नी प्रो० रत्नसिंह एम० ए०) श्रीमती कैलाश व श्रीमती मायादेवी भी पधारीं।

दिल्ली से सर्वप्रथम आर्य महिला श्रीमती राकेश रानी (धर्मपत्नी पं० भारतेन्द्र नाथ, अपनी कन्या (आयु ''४ मास) वसुमेधा (१० वर्ष) के साथ सत्याग्रह में गयीं।

पाढ़ा (करनाल) की आठ महिलायें भी सत्याग्रह में गईं, इस चित्र में स्वामी जी के साथ खड़ी हैं।

(पृष्ठ ७ का शेष)

पिण्डी नगर से ८ मील दूर रामवन नाम के पास कोहमरी पथ पर के आये। वहाँ बौद्ध भिक्षुओं के समान दयानन्द भिक्षु तैयार करने की योजना बनाई। जिसके नियम-उपनियम बनाये। इक्कीस वर्ष से ऊपर की आयु के ब्रह्मचारी वानप्रस्थ और संन्यासी ही उसमें प्रविष्ट हो सकते थे। भोजनाच्छादन का समस्त व्यय गुरुकुल की ओर से था। छोटे ब्रह्मचारियों का अलग विभाग रक्खा गया था, जिसका व्यय उनके माता-पिता से लिया जाता था और इन्हें पढ़ाने के लिये भिक्षु मण्डल के योग्य प्रौढ़ विद्वान् नियुक्त थे। आर्यसमाज के तपस्वी नेता श्री आनन्द भिक्षु जी उसी समय भिक्षु मण्डल में प्रविष्ट हुये थे। यह नाम उसी समय रक्खा गया था।

सन् १९४७ में जब पंजाब में साम्प्रदायिक दंगे हुये, उस समय आपने न केवल गुरुकुल को बचाया, अपितु सारे रावलपिण्डी नगर को हिन्दू जनता में वीरता का प्रचार करके प्रबुद्ध कर दिया। उनकी प्रतिज्ञा थी कि जब तक भारत जाने की इच्छा रखने वाला हिन्दू का एक बच्चा भी शेष है, उसे भारत प्रदेश में भेजकर ही रावलपिण्डी छोड़ूँगा। मुसलमान अपना कार्य कराने के लिए अस्पृश्यों को वहीं रखना चाहते थे, किन्तु उनकी इच्छा भारत जाने की थी; अतः अत्यन्त संघर्ष का सामना करके उन्हें भी जब भारत भेज दिया, तब ही उन्होंने रावलपिण्डी छोड़ा। इस कार्य में उन पर अनेक प्रकार के षड्यन्त्र किये गये, किन्तु भगवान की दया से वे सभी से अछूते निकल आये।

भारत प्रदेश में आकर स्वामी जी महाराज ने फिर उपदेशक विद्यालय चालू कर दिया, जिसने उन्हीं के स्थान "वैदिक साधन आश्रम" यमुनानगर को सुशोभित किया। विद्यालय का व्यय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वहन करती थी।

उनकी प्रत्येक कृति मे दिव्यता विराजमान थी, आश्रम के चारो ओर दीवार के पर्दों पर उन्होने लिखाया— [१] अहिंसा प्रेम का श्रेष्ठ स्रोत है [२] सत्य संघटन का जनक है [३] अस्तेय विश्वास का मूल है [४] ब्रह्मचर्य शक्तियो का भण्डार है [५] अपरिग्रह वैराग्य का स्तम्भ है [६] शौच तत्व का प्रकाशक है [७] सन्तोष सुख का साधन है [८] तप क्षमा का आधार है [९] स्वाध्याय लक्ष्य का दर्शक है [१०] ईश्वर प्राणिधान प्रभु में निज अर्पण है [११] आत्म-शुद्धि इन यम-नियमों से करें।

स्वामीजी महाराज आर्य प्रतिनिधि

गृहमन्त्री की कोठी पर पुलिस द्वारा सत्याग्रहियों पर निर्दयता से लाठी प्रहार

२ व्यक्ति बेहोश—एक की स्थिति चिन्ताजनक

★

नयी दिल्ली—हरयाणा के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता आचार्य भगवानदेव जी के नेतृत्व में ५ नवम्बर को १०० से अधिक सत्याग्रहियों ने गृहमन्त्री के निवास पर सत्याग्रह किया।

आचार्य जी के जत्थे का स्वागत आर्यसमाज करोलबाग नई दिल्ली में किया गया। दो सत्याग्रही स्वामी धर्मानन्द और श्री देवीदास के साथ आर्यसमाज के अधिकारी भी खड़े हैं।

★

जाग उठी हैं अब नारी—

संसद भवन पर १ नवम्बर को वीर महिलाओं के एक जत्थे ने सत्याग्रह किया। चित्र में प्रो० रामसिंह की पत्नी श्रीमती भागवती प्रभाकर, श्रीमती शान्ति शर्मा और ४५ दिन से अनशन कर रहे वीर युवक की पत्नी श्रीमती प्रतिभा शर्मा भी हैं।

सभा के [illegible] प्रधान और सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान भी रहे। न्याय सभा के प्रधान भी थे। कार्य का भार आपके स्वास्थ्य पर गहरी छाप छोड़ जाता था। फिर भी आपने हिन्दी सत्याग्रह का सूत्रधार बनकर "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। एवं त्वयि नान्यथे-तोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।" इस यजुर्वेद ४०वें अध्याय द्वितीय मन्त्र को साक्षात् करके दिखा दिया और निष्काम भावना से [illegible] समर्पित सब कार्य करते हुये अपने मुक्ति मार्ग को प्रशस्त कर डाला।

उत्तर प्रदेश को यह गौरव प्राप्त है कि ऋषि दयानन्द के पश्चात् भगवद् भक्ति से परिपूर्ण, सर्वोत्कृष्ट पाण्डित्य से भरपूर, तप और त्याग से परोपकार वृत्ति से समन्वित, एक आदित्य ब्रह्मचारी [illegible] स्वामी आत्मानन्द सरस्वती के रूप में आर्यसमाज की वेदी पर न्योछावर कर सका।

(पृष्ठ ५ का शेष)

इसके अतिरिक्त अगर इसके दूसरे पक्ष को देखा जाय तो क्या जनता आप लोगो से यह पूछ सकती है। हमने सुना है, पुराणो मे एक नदी की चर्चा आती है। वैतरणी नदी पार करने के लिए गाय की पूंछ पकड़ कर उसे पार करते हैं आज तक मैंने देखा नहीं वैतरणी नदी कहा है। लेकिन यह सरकार या उसका दल हर चुनाव को गाय के बच्चों की बलो की पूछ पकडकर के चुनाव की वैतरणी नदी पार करता है। तो यह चुनाव मे अनुचित लाभ उठा रहे हैं या यह लोग अनुचित लाभ उठा रहे हैं जो चुनाव से लोगों दूर रहना चाहते हैं ?

एक बात बडी विचित्र कही जाती है कि अगर हम गोवध को बन्द कर द तो उसका दुष्परिणाम यह होगा कि सूखी गायो और बूढ़ बलों का भार देश पर आकर पडगा। मेरे पास विस्तृत समय नहीं है कि जिससे मैं विस्तार से समझाऊ लेकिन मेरा अपना एक सुझाव है। गाधी जी के एक शिष्य थ बगाल के उनका नाम था सतीशचन्द्र दास। उन्होंने बड अध्ययन के बाद एक पुस्तक लिखी थी काऊ। उसका अनुवाद हिन्दी में भी गाय नाम से छपा है। उसमे उन्होने लिखा है कि सूखी गायो और बूढ़ बलो का अगर सामूहिक रूप से पालन किया जाय तो वह देश पर कभी भार नहीं पडगे बल्कि देश के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। ऐसा उन्होंने सिद्ध किया है। लेकिन सरकार ने इस प्रकार की आवश्यकता को कभी अनुभव ही नहीं किया। दूसरा मेरा कहना यह है कि आज जो हिन्दू भावना मे भरकर यह माग करते है कि हम इस देश मे गोहत्या को बन्द होनी चाहिये उनसे आप यह कह सकते हैं कि आपके मन्दिरों मे खच के अतिरिक्त जितनी आय है उस आय को आप इस गोवंश के पालन के निमित्त दीजिए ताकि सरकार पर इनका बोझ न पड और उस आय से हम इस देश के अन्दर सूखी गायों और बूढ बलों का पालन कर सक। फिर उनकी हार्दिक भावना भी देखिए कि केवल गोहत्या बन्द करने का आन्दोलन ही वह करना चाहते हैं या उनकी हार्दिक इच्छा भी सक्रिय रूप मे इसके साथ है।

अन्तिम बात एक विशेष रूप से कहना चाहता हू और वह यह कि प्रधान मत्री ने मेरे पत्र के उत्तर म लिखा है कि राज्य सरकारो की जिम्मेदारी यह है। सविधान की धारा ४८ मे जहा यह लिखा है कि राज्य सरकार गोवध को बन्द कर वहा राज्य की व्याख्या जो है वह सविधान की धारा १२ मे है। सविधान की धारा १२ में जो राज्य की व्याख्या है उसमे स्पष्ट लिखा है कि राज्य से अभिप्राय विधान मडल प्रान्तो की सरकार पार्लियामेन्ट और केन्द्र की सरकार यह सारे के सारे राज्य शब्द के अन्दर आ जाते है। तो यह कह कर सरकार अपनी जिम्मेदारी से क्यो भागना चाहती है ? लेकिन इसके बाद भी अगर सविधान मे सशोधन करने की आवश्यकता हो तो मैं कहता हू देश के इतने बड़ जनमत का आदर करते हुए सरकार यह निश्चय ले सकती है। सविधान में जहा उन्होंने ११ २२ बार सशोधन किया है वहां एक सशोधन यह भी अगर करते हैं तो उसमे क्या कठिनाई है ? अगर योजना के अन्दर जनभावना जानने के लिए एक विधयक लाकर के लोजा में जनमत कराया जा सकता है तो देश में कितनी जनता आज इस प्रकार की है कि जो गोवध बन्द करने के पक्ष मे है इसको जानने के लिए देश मे जनता का मत क्यों नहीं जाना जा सकता ? गृहमंत्री ने ४ नवम्बर को कहा हमने राज्य सरकारो को पत्र लिखा है। लेकिन शिक्षा उप खाद्यमंत्री ने १९ नवम्बर को जवाब दिया है कि ६ में से ३ राज्यों ने अभी तक उत्तर दिये हैं। यानी राज्य सरकारो को पत्र लिखा गया ४ नवम्बर से पहले और २९ नवम्बर को इन्हीं की सरकार एक जिम्मेदार मंत्री कहता है कि ६ मे से ३ राज्यो ने उत्तर दिया है। इससे मालूम पड़ता है कि कितनी राज्य सरकारो की लापरवाही इसमे चल रही है ? राज्य सरकार इसमे तत्परता से काम नहीं ले रही हैं तो देश की भावना का आदर करते हुए क्यो नहीं केन्द्र इस प्रकार का कानून बनाता है जिससे इस प्रकार की स्थिति बने और गोवंश की हत्या बन्द हो ?

दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि सघ शासित क्षत्रो मे अब तक क्या किया ? इनमे जब केन्द्रीय सरकार स्वय कानून लागू कर सकती है तो अब तक क्यो नहीं लागू किया ? इससे केन्द्रीय सरकार के मन का चोर मालूम पड़ता है।

एक बात और यहा विशेष रूप से कहना चाहता हू और वह यह कि मेरे मित्र श्री हुकमचन्द कछवाय ने कहा कि ७ नवम्बर की जो घटना घटी है उसकी न्यायिक जाच कराने से जो सरकार हट रही है उससे लोगो के मन में तरह तरह के भ्रम पदा होते जा रहे हैं कि सरकार जानबूझ कर इससे बच रही है क्योकि उसमे सरकार के कुछ जिम्मेदार व्यक्ति फसगे सरकार क कुछ विभाग फसगे सरकार क कुछ जिम्मेदार अधिकारी फसगे। इसी से न्यायिक जाच कराने मे सरकार डर रही है। मैं एक बात आपके माध्यम से सरकार से अवश्य कहना चाहूगा कि ७ नवम्बर क प्रदर्शन में दिल्ली क अन्दर पार्लियामेन्ट हाउस क सामने इतने प्रदर्शन हुए लेकिन आज तक इतनी भारी सख्या मे गोली चलना इतने लोगों का मारा जाना इस तरह का खून बहना यह पहली अपने ढग की घटना थी। पजाब मे लाला लाजपतराय की कमर मे सा लाठिया लगीं थीं और लाला लाजपतराय ने मरते समय कहा था कि मेरी कमर पर पडी हुई एक एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य क कफन मे एक एक कील बनकर गडगी। वही बात मै दोहराना चाहता हू। ७ नवम्बर को पार्लियामेन्ट हाउस क सामने जो साधुओ का खून बहा है वह इस गवनमेन्ट क अत्याचार को ही नहीं इस गवनमेन्ट को भी समाप्त करक छोडगा जो गोहत्या क प्रश्न पर इतनी जिद पकड हुए है और देश की भावना का आदर करने क लिए तयार नहीं है। इन शब्दों क साथ मे इसको उपस्थित करता हू और यह कहना चाहता हू कि गृह-मंत्री और भारत सरकार इस प्रश्न को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाय और देश मे गाय क प्रश्न पर जो एक भयकर तनाव की स्थिति बनने जा रही है वह न बनने द। जगद्गुरु शकराचार्य पुरी वालों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी को आपने गिरफ्तार किया। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उनको इलाहाबाद आने क लिए आडर देकर सरकार क मुह पर करारी चपत दी है। मगर सरकार की समझ मे नहीं आया। १०७ क अन्दर गाय क प्रति सहानुभूति रखने वाले जिन लोगों को दिल्ली के अन्दर गिरफ्तार किया था दिल्ली हाई कोर्ट ने उनको भी छोड़कर सरकार क मुह पर करारी चपत दिया। लेकिन इसक बाद भी केन्द्रीय सरकार सही रास्ते पर आने क लिए तयार नहीं है। मैं चाहता हू कि गाय जसे पवित्र प्रश्न को हठ का और प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाया जाय बल्कि इस पर शान्ति और गम्भीरता क साथ विचार किया जाय और जल्दी ही इस प्रश्न का समाधान कर लिया जाय। जिससे साधु महात्मा जो इस अनशन और उपवास क माग पर चलने के लिए विवश हो गये हैं उनको इस प्रकार की आवश्यकता न पड।

★

श्री आचार्य भगवानदेवजी के पथ का एक दृश्य साथ मे स्वामी धर्मानन्द श्री देवीदास और राममेहर एडवोकेट दिखाई पड रहे हैं।

७ नवम्बर का गोरक्षा प्रदर्शन

[आँखों देखा हाल]

(श्री हरिकिशनदास अग्रवाल, बम्बई)

आचार्य मुनि सुशीलकुमार के निर्देशन में सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति की ओर से ७ नवम्बर १९६६ को एक प्रदर्शन गोहत्या निषेध के लिए निकालने का निश्चय हुआ—जिसका सदेश सभी सम्प्रदायों के विद्वान् सत-महात्माओं द्वारा सारे देश मे पहुचा। फलत. अदाजन आठ-दस लाख की सख्या मे जनता बसों, रेलगाड़ियों तथा अन्य साधनो द्वारा ७ नवम्बर को गोहत्या निषेध के प्रदर्शन में भाग लेने के लिए दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बंगाल, बिहार, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र आदि प्रान्तो से उमड पडी। जितनी भी जनता वहाँ आई थी वे प्राय गोभक्त, ईश्वरासक्त तथा धर्मपरायण थी। इनमे माताओं की भी बहुत बडी सख्या थी।

६ नवम्बर को दिन व रात सैकड़ो गाड़ियों पर यात्रियो के लिए साग पूड़िया बनती रहीं। यात्री तीन बडे कम्पो मे बट गए थे। एक कैम्प रोशन आरा बाग मे, दूसरा अजमल खा रोड और तीसरा लाल किले मे लगा था। और भी अन्य २१ छोटे कम्प जमुना किनारे व भिन्न-भिन्न धर्मशालाओ मे खोले गए।

स्थान स्थान से विरक्त सत महात्मा विद्वान भी पधारे हुए थ। जुलूस पाचो स्थानों से गोवध-बन्दी के नारे लगाता हुआ शान्तिपूर्वक निकला और पार्लियामेन्ट स्ट्रीट की ओर चलता रहा। रास्ते में सैकडो जगहो पर जनता ने फूलो की वर्षा की और महात्माओ के गले मे फूल मालाए डालीं। जगह-जगह ठडा पानी, शबत आदि बडे आदर के साथ प्रदशन मे सम्मिलित जनता को दिल्ली की जनता ने पिलाया।

प्रदशन मे जनता गोहत्या निषध के नारे लगाती शान्तिपूर्वक चल रही थी। किसी प्रकार की दुघटना रास्ते मे नहीं हुई। लाल किले से निकला हुआ जुलूस अभी चादनी चौक, नया बाजार मे ही था कि आसफअली रोड पर कुछ अवाछनीय लोगो न, जिनका जुलूस क साथ कोई सम्बन्ध नही था दुकानो के काच इत्यादि तोडना शुरू कर दिया।

जलूस उपरोक्त पाचो स्थानों से निकला हुआ शान्तिपूवक पार्लियामन्ट स्ट्रीट पर दोपहर १२ ३० प० पहुच गया। वहा पर १० ११ फुट ऊचा एक विशाल मच बना हुआ था। जिसके ऊपर जैन मुनि सुशीलकुमार, शकराचाय जगन्नाथ पुरी व बदरीनाथ, श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, श्री स्वामी पूर्णान द, श्री स्वामी गुरुचरण दास, श्रीस्वामी प्रकाशानन्द, श्री स्वामी सदानन्द व स्वामी अरविन्दानन्द के साथ अन्य पचास साठ साधु-सत मंच पर बैठे हुए थे। सभा की कार्यवाही जैन मुनि श्री सुशील कुमारजी ने प्रारम्भ की। दोनों शकराचार्यों का भाषण हुआ, फिर प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी बोले। जनता मे शान्ति का सन्नाटा छाया हुआ था। जनता बडे आदरपूर्वक महात्माओ के प्रवचन सुन रही थी। तब श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी पार्लिया मेन्ट स बाहर निकल कर आये और उन्होंने अपन पार्लियामेन्ट से बाहर निकलने की व्यथा तथा ससद की १ घण्टे के लिए स्थगन की सूचना जनता को सुनाई किन्तु साथ ही जनता को पार्लियामेन्ट पर घेरा डालने को कहा—इस पर श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी अपने स्थान पर खडे होकर रामेश्वरानन्द की इस बात का विरोध किया और कहा कि हमारा ऐसा कोई कायक्रम नहीं है और न हम किसी प्रकार का घेरा ही डालना चाहते है। हमारा कायक्रम केवल शान्तिपूवक प्रदशन का है। उन्होंने जनता को सम्बोधित करते हुए शान्तिपूवक अपने स्थान पर बैठ रहने की प्राथना की। इसके बाद श्री सेठ गोविन्ददास जी (पार्लियामेन्ट के सदस्य) का भाषण हुआ। उन्होने भी गोहत्या बन्दी के पक्ष मे भाषण किया। इतने मे श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी फिर माइक की ओर लौटे और उन्होने अपनी पहले कही हुई बात का स्पष्टीकरण कर यह कहा कि घेरा डालने से मेरा तात्पय यह नहीं था कि आप अभी उठकर के घेरा डालना प्रारम्भ कर द। अभी आप शान्तिपूर्ण ढग से अपने स्थान पर बैठे रहे और जिस प्रकार गोरक्षा समिति का आदेश होता है, वैसा करें। इससे उन्होने गलतफहमी को दूर कर दिया। इनके बाद प्रकाशवीर शास्त्री (पार्लियामेन्ट के सदस्य) ने भाषण किया और कहा कि जनता के इस विशाल गोहत्या बन्दी के प्रदशन को सरकार ठुकरा नहीं सकती। उसे जनता की आवाज को मान्यता देकर गोहत्या बन्द ही करनी होगी। साथ ही उन्होंने पुलिस वालो को चेतावनी दी कि वे सभा से १०० गज पीछे हट जाय और जनता के साथ छेड़खानी न कर, अन्यथा जनता के भडकने की सारी जिम्मेदारी उनके सिर पर होगी। यह चेतावनी सुनकर पुलिस वाले पीछे हटे हो ऐसा हमे दीखने मे नहीं आया। मच पर कायवाई अदाजन १ घटा शान्तिपूवक चलती रही। किन्तु कोई किसी प्रकार की दुघटना नहीं हुई। सब मुख्य वक्ता भी बोल चुके थ। इतने मे ही एक अजनबी मनुष्य ने मच पर आकर लाउडस्पीकर पर सूचना दी कि साधुओ पर

पुलिस लाठी प्रहार कर रही है। उस मनुष्य को उसी समय माइक से अलग कर दिया गया कि इतने मे पुलिस ने मच पर अश्रुगैस छोडना शुरू कर दिया जिससे मच पर बैठे बहुत से लोग बेहोश हो गए। बहुतो को इतने ऊँचे मच से कूदना पडा और उन्हे चोटें भी आई। अश्रुगस छूटे १—२ मिनट हुए थ कि गोलियां भी चलने लगीं और जनता अपने प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगी। बहुत सी मातायें रोती हुई दिखायी पडीं और वे इधर-उधर अपने प्राणो की रक्षा के लिए भागने लगीं। पीछे से भागती जनता का दबाव इतने जोर से आया कि बहुत से लोग गिर कर भी घायल हुए। मै अपने प्राण बचाने के लिए ट्रासपोर्ट भवन मे अन्दर चला गया। वहा पर लगातार गोलियो तथा अश्रुगस चलने की आवाज आती रही और घुडसवार पुलिस के घोडो के दौडने की टपटप की भी आवाज सुनाई पडती रही। ट्रासपोर्ट भवन के काच इत्यादि भी टूट गये। इतने मे किसी ने आकर खबर दी कि ट्रासपोर्ट भवन मे खडी कारें और स्कूटरो पर भी आग लगा दी गयी है। जब बाहर का वातावरण थोडा शान्त हुआ तो मैं ट्रासपोर्ट भवन से निकल कर पार्लियामेन्ट स्ट्रीट से पंजाब नेशनल बैंक की ओर चलने लगा। वहाँ पर कि मैंने अपने ड्राइवर को कार खडी करने के लिये कहा था—किन्तु वहा पर कार नहीं मिली। मैं पंजाब नेशनल बैंक से अपने एक मित्र की कार मे करोलबाग पहुचा और वहाँ से टैक्सी लेकर डिफन्स कालोनी ५ बजे शाम को पहुचा।

अंदाजा लगाया जाता है कि प्रदशन मे भाग लेने वाली जनता ८ से १० लाख थी। जिनमे करीब करीब २लाख स्त्रियां थीं। चूकि गाय के प्रति लोगों मे आदर की भावना है गाय एक चलता फिरता मदिर है। मदिर मे तो सिर्फ एक देवता का निवास होता है, किन्तु गाय में ३३ करोड देवताओ का निवास शास्त्र बतलाते हैं। गाय परम्परा से भारतीय परिवार का एक अग मानी गयी है, जो कि किसान का धन है, और देश की सम्पत्ति है।

हमारी सरकार धर्म निरपेक्ष है। धर्मनिरपेक्ष होने के नाते उसे चाहिये कि वह हिन्दू धर्म के इस भावनात्मक प्रश्न पर आदर भाव प्रदर्शित करे और गोहत्या बन्द करे न कि गोहत्या कर के बहुमत हिन्दुओ की धार्मिक भावना पर ठेस पहुचाये। ऐसे जनसमूह मे अधिकारी वग को अधिकार तथा बल का ही नही किन्तु जनसमूह के मनोविज्ञान का भी ध्यान रखना चाहिये। ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिये जिससे जनसमूह मे उत्तेजना फैले। अधिकारी वग को चाहिये था कि यदि थोडी सी जनता रामेश्वरानन्द की घेरा डालो आवाज सुनकर पार्लियामेंट के गेट की ओर बढी तो उन को बजाय लाठियो से मारने के पुलिस विवेक से काम लेती और वह प्रकाशवीर शास्त्री के कहे अनुसार कुछ पीछे हट जाती और उन सौ पचास आदमियो को एक तरफ ले जाती और वहा उन्हे मौका देखकर गिरफ्तार कर लेती। इससे जितने मनुष्यो की जान गयी, व इतने लोग जख्मी हुए वह न होते और शान्ति से प्रदशन सम्पन्न होता।

प्रदशन करने वाली जो जनता शान्तिपूवक लालकिला, रोशनआरा बाग, अजमल खा रोड आदि स्थानो से निकलकर पार्लियामेन्ट स्ट्रीट से होता हुआ आयोजकों के सभास्थल पर शान्तिपूवक भाषण सुनती रही उसके उत्तेजित होने का कोई प्रश्न ही नहीं था। रामेश्वरानन्द जी के वक्तव्य के २० मिनट बाद तक शान्तिपूवक कार्यवाही चलती रही। किन्तु जब मच की पिछली तरफ साधुओ के ऊपर पुलिस ने लाठीचार्ज किया, अगर उस समय जनता के मनो-

विज्ञान का ध्यान रखते हुए पुलिस विभाग द्वारा काम लेती तो यह दुःखद काण्ड न होता।

इस-जुलूस के जो संचालक हैं, उन्हें कभी स्वप्न में भी यह आशंका नहीं था कि इस शान्तिमय प्रदर्शन का ऐसा कांड होगा। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि पुलिस के लाठीचार्ज के बाद जब जनता मे असन्तोष फैला तो कुछ बाहरी तत्त्व व गुण्डागर्दी मचाने वालो ने इसका लाभ उठा लूटमार की कांच तोड़, कार स्कूटरों इत्यादि को जलाया। रविवार ३० अक्तूबर १९६६ को प्रात साढ़े नौ बजे एक डपुटेशन जिसमें जगद्गुरु मुनि सुशीलकुमार, स्वामी गुरुचरणदास, स्वा अरविन्दानन्द, श्री घोष और मैं श्रीमती इन्दिरा गांधी जी प्रधानमन्त्री से मिले। इस डपुटेशन ने प्रधान मन्त्री से गोहत्या बन्द करने के लिए अनुरोध किया। किन्तु उन्होंने उत्तर में कहा कि गोहत्या बन्दी के विषय में जनता की कोई माग ही नहीं और मुझे कुछ रिपोर्टें मिलती हैं जिसमें गो रक्षा विषय के पक्ष मे जो सभायें होती हैं उसमे बहुत ही कम हाजिरी होती है। श्री सुशीलकुमार जी ने कहा कि १९ अक्तूबर की बालमीकीक की सभा मे पचास-साठ हजार व्यक्ति थ और जनता में गोरक्षा के प्रति बड़ी उच्च भावना है और यह आन्दोलन जोर पकड़ रहा है। अभी तक तो यह आन्दोलन हमारे हाथ से निकल गया और दूसरी राजद्वारी संस्थाओं के हाथ मे चला गया तो हम जिम्मेदार नहीं होंगे।

आज के इस अशान्त वातावरण मे जहा पर विद्यार्थी और सरकार मालिक और मजदूर सरकारी कर्मचारी व सरकार आदि के बीच झगड़ और स्ट्राइक हो रही हैं रेल की पटरिया तक उखाडी जा रही हैं। जगह जगह विरोधात्मक प्रदर्शन हो रहे हैं। अगर इसी प्रकार गोली चलाकर ही बलपूर्वक स्थितियों पर काबू पाना सरकार की नीति रहेगी तो इन सबका कहाँ अन्त होगा इसका अन्दाजा लगाना कठिन है।

अत सरकार को चाहिये कि ऐसे मोको पर बुद्धि और विवेक से काम ले न कि सिर्फ बल प्रयोग से। गोलियों से जनता मे असन्तोष कम नहीं होता किंतु बढ़ता है और अधिक विद्रोह का रूप धारण करता है।

सम्पूर्ण गोवंश हत्या बन्दी का कानून केन्द्र मे बनाकर सरकार को चाहिये कि बहुजन मानित्र धर्म की मान्यताओं को मान देते हुए हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार धर्म की भावनाओं को आदर की दृष्टि से देखे।

★

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द

[ले०—श्री राधेमोहन जी, मन्त्री आर्यउप-प्रतिनिधि सभा, इलाहाबाद]

युग युगानुयुग से बहने वाली प्रभु की कल्याणी वाणी वेद की अजस्र धारा अवरुद्ध गई थी। जब शंकर, रामानुज, माधव, वल्लभ, निम्बार्क प्रभृति जगद्गुरुओं की दृष्टि भी वेदान्त उपनिषद तथा गीता तक ही सीमित रह गई थी। जब नाना प्रकार के मतमतान्तरों एवं पुराणों ने वेद को परित्यक्त कर विभ्रमित कर दिया था जब जनता को जाति-पांति और ऊँच-नीच की दलदल मे फांस दिया था और वैदिक ईश्वरोपासना के स्थान पर असंख्य भयानक देवी देवता, शक्ति मूर्ति पूजा एव जटिल कर्मकाण्डों के अतिरिक्त कोई धर्म शेष न रह गया था। जब स्त्री, शूद्रों को वेद पढ़ने, सुनने तथा स्पर्श करने पर भी दण्डनीय समझा जाने लगा था। जब सायण के यज्ञपरक तथा महीधरादि के अश्लील वेद भाष्यों ने वेदों को दूषित कर दिया था, जब जब त्रयो वेदस्य कर्तार भाण्ड, धूर्त, निशाचर की उक्ति से ऋषियो का उपहास किया जाने लगा था। जब स्वत प्रमाण और परत प्रमाण को न जानने के कारण आर्य ईसाई मुसलमानों द्वारा शास्त्रार्थों मे उपहास का पात्र बन रही थी और अनेक विद्वान धड़ाधड़ हिन्दू धर्म को तिलांजलि देकर विधर्मी होते चले जा रहे थ और महाजनो येन गत स पन्था की उक्ति के अनुसार अवशिष्ट आर्य जाति के होनहार काल विधर्मियो के क्रोड को विभूषित करते जा रहे थ और ईसाई और मुसलमान वैदिक धर्म को विशेष एव अपमानित करने के लिये कटिबद्ध होकर सुसंगठित रूप से सहस्रश कुत्सित ग्रन्थों की रचना कर रहे थ। जिसका यथोचित प्रतिउत्तर न देने में अक्षम आर्य जनता लज्जा से म्लानिभूत होकर तन हीन मन मलीन अपना मुह छिपाती फिर रही थी। ऐसे दारुण दग्ध दावानल की परिस्थिति मे युग प्रवर्तक वेदोद्धारक प्रात स्मरणीय परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव हुआ।

महर्षि दयानन्द ने आर्य जाति की इस विपन्नावस्था को देखा और राष्ट्र की अधोगति का निरीक्षण किया उन्होंने देखा कि क्या शव क्या सन्यासी क्या वैष्णव क्या वैरागी सब एक ही रोग में ग्रस्त हैं। सब अपने ही संकुचित सम्प्रदायो की दलदल मे फंसे हुये हैं। महर्षि ने तत्कालीन ब्रह्मसमाज, प्रार्थना समाज और देव समाज आदि सुधारवादी दलों में कार्यों को देखा और देखा कि इनके द्वारा इस मरणासन्न जाति को पुनरुज्जीवित करने के हेतु जो उपचार किया जा रहा है वह इसकी प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल है। कारण स्पष्ट था कि प्रभु प्रदत्त सर्वोत्तम संजीवनी महौषधि वेद की ओर किसी का ध्यान भी न था। इस पांच हजार वर्ष के असाध्य रोगी आर्य जाति को महर्षि दयानन्द ने प्रथम बार वेदामृत का पान कराया और सदा के लिये समस्त व्याधियों से मुक्त होने के लिये वेदों की ओर लौटने का सन्देश दिया। उन्होंने पवित्र वेद वाणी के स्थायी प्रचार, प्रसार तथा विश्व व्याप्ति के लिये सन् १८७५ ई० में बम्बई नगर में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना की और आर्यसमाज के दस नियमों मे एक नियम यह भी सुस्थिर किया कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' क्रान्तिद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने अपनी दिव्यदृष्टि से सहजतया देख लिया कि आर्य जाति के पराभव का मूल कारण वेदों का विस्मरण करना ही है उन्होंने देखा कि महाभारत काल के पश्चात ५००० हजार वर्षों के पतनोन्मुख काल मे अनेक उच्चकोटि के जगद्गुरु आचार्य विद्वान सुधारक एव सन्त अवतरित हुये और सभी ने आर्य जाति को इस शोचनीय अवस्था से उबारने का यत्न किया किंतु कोई विशेष लाभ न हुआ वरन वहाँ अनेक मतमतान्तर पुराण उपपुराण आर्य जाति को विखंडित करने का कारण बन रहे थ वहा उनके मरणोपरान्त उन के चेलो द्वारा एक और नये सम्प्रदाय का जन्म दे दिया जाता था जिससे औषधि ही एक नये रोग का कारण बन जाती थी। भारतवर्ष मे जितने मत पथ और सम्प्रदाय हैं वे सभी रोग के निवारणार्थ ही उत्पन्न हुये थ किन्तु बाद मे एक सम्प्रदाय का रूप धारण करके महारोग का कारण बन गये हैं प्रश्न उठता है कि सुधार का प्रयत्न ही रोग का कारण क्यो बन जाता था? उत्तर मे यही कहा जा सकता है कि सभी सुधारको व आचार्यों ने वेद से पराङ्मुख होकर अपनी स्थूल और अदूरदृष्टि से तत्कालीन समस्याओं का समाधान करने का यत्न किया। उनको यह आभास भी नहीं हुआ कि वेद की उपेक्षा ही इस अधोगति का मूल कारण है। [illegible] के लिये उनके [illegible] नहीं [illegible] शक्ति ने अपनी शक्ति [illegible] के सम्मोहन में उलझे का ही [illegible] रहे। उन्नीसवें और बीसवीं शताब्दी में भी हम देखते हैं कि भारत के [illegible] शिक्षित वर्गों में भी वेदों की [illegible] उपेक्षा की जा रही थी। स्वामी विशुद्धानन्द और बाल शास्त्री जैसे काशी के धुरन्धर पण्डितों को भी वेदों का कुछ ज्ञान न था। इनका [illegible] अध्ययन वाम शास्त्रों एवं स्मृत्यादि ग्रन्थों के अनुशीलन में [illegible] था। [illegible] के नेता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी आत्म कथा (आत्मचरित्र) मे पृष्ठ ४१ पे बंगाल का जो चित्र इस विषय में खींचा है वही भारत के प्रायः सभी स्थानो का है।

"अर्थात वेद बंगाल से लगभग सर्वथा लुप्त हो चुके थे। न्याय और स्मृति शास्त्र सब पाठशालाओं में पढ़ाये जाते थे और इन शास्त्रों में निपुण पंडित बंगाल में अनेक थे किन्तु वेदों की सर्वथा उपेक्षा की जाती थी। वेद के ब्राह्मणो का वेदों के पठन पाठन का काम सर्वथा नष्ट हो चुका था। केवल नाममात्र क ब्राह्मण रह गये थे जो वैदिक ज्ञान से सर्वथा शून्य थ। वे केवल यज्ञोपवीतधारी थ। एक दो विद्वान ब्राह्मणो को छोड़कर उनको दैनिक सन्ध्या वन्दन के मन्त्रों का अर्थ भी नहीं आता था। इत्यादि।"

(वेदों का यथार्थ स्वरूप पृ० ४५)

परन्तु महर्षि दयानन्द ने आर्य जाति भारत और मानवता का उद्धार एकमात्र वेद की महत्ता मे समझा और अपनी सम्पूर्ण शक्ति उसी मे लगा दी। आज भारत का विश्व मे जो भी गौरव है वह वैदिक वाङ्मय क कारण है। उसकी पुनःस्थापना एव सुरक्षा करने वाले महर्षि क हम चिर ऋणी रहेंगे। उस महानात्मा को मानवता की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

★

मेला प्रचार

मेला ढाईघाट (कातिकी) पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा शाहजहाँपुर की ओर से प्रचार कम्प २६ नवम्बर से २९ नवम्बर ६६ तक लगाया गया। प्रचार कार्य में श्री स्वामी प्रभानन्द जी मथुरा व श्री सीताराम जी भजनोपदेशक कायमगंज व श्री प० रामऔतार जी वाजपेयी हरियावां व श्री प० विद्याधारिणि जी शर्मा सिद्धान्त शास्त्री व श्री डा० धर्मेन्द्रपालसिंह जी [illegible] आदि ने भाग लिया।

दि० २८ नवम्बर सोमवार को गोरक्षा सम्मेलन हुआ। —[illegible]

आन्ध्र में गोरक्षा आन्दोलन

सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति की ओर से हैदराबाद नगर में सत्याग्रह क्रम जारी है।

पांचवां जत्था।—

दि० ३०-११-६६ को एक विशाल सार्वजनिक सभा में पांचवें सत्याग्रही जत्थे के नेता श्री बी० राजेश्वरराव जी तथा उनके अन्य पांच साथियों सर्वश्री बी० मुरलीकृष्णा, आर० मावरेड्डी, श्री कैलाश, डी० कृष्णा और बी० लिंगम का भव्य स्वागत किया गया। इस जत्थे को स्टेशन पहुंचते हुए पुलिस ने बेगम बाजार में ही गिरफ्तार कर लिया। जत्थे के सम्पूर्ण सत्याग्रही आ० स० सुलतानपेठ के कार्यकर्त्ता हैं।

छठवां जत्था—

सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति, आंध्रप्रदेश की ओर से जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी के अनशन के प्रति सहानुभूति तथा महाभियान समिति के सर्वोच्च नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में आंध्र की राजधानी हैदराबाद, सिकन्दराबाद दोनों शहरों में पूर्णरूपेण शांति हड़ताल रही और सारी दुकानें तथा कारोबार बन्द रहे। इस दिन अन्य जिलों के कुछेक प्रमुख स्थानों पर भी हड़तालें रहीं।

३०-१२-६६ को पूर्ण हड़ताल—

दिनांक २ दिसम्बर ६६ को आर्य समाज मन्दिर बाबरघाट में छठवें सत्याग्रही जत्थे के नेता श्री भवरलालजी और उनके तीन साथी सर्वश्री बुडप्पा होजी, शरदाप्पा तथा बाबूलाल का एक सभा में स्वागत किया जाकर सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन पहुंचाया जा रहा था कि रास्ते ही में समाज भवन से निकट ही पुलिस ने सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर लिया।

जाति निर्णय

जाति अन्वेषण प्रथम भाग—२६१ हिन्दू जातियों का 'विश्वकोष'—डि० ६७८ पृष्ठ। सजिल्द ८।) अजू १।।।), क्षत्रिय वंश प्रदीप प्र०भाग—११०० क्षत्रिय वंशों की सूची सहित क्षत्रिय जाति का प्रसिद्ध ग्रन्थ। सजि० ८।) डा० व्यय १।।।) श्री मुसलिम जाति निर्णय ५२० पृ० अद्वितीय शुद्धि व्यवस्था सहित उद्धारक ग्रन्थ सजिल्द ८) डाक व्यय १।।।)। शूद्रजाति का उद्धारक ग्रंथ सजिल्द६।।) डा०१।।) नियमानुसार—'गीता' रामायण' सूचिपत्र 'मुफ्त'। पता:—वर्ण व्यवस्था मण्डल (ए) फुलेरा (जयपुर)

प्रधान मन्त्री के नाम पत्र

ओ३म् गावो विश्व मातरः
गाय विश्व की माता है।

प्रिय इन्दा तुम्हारा शासन अटल न्याययुक्त हो।

प्रभु कृपा करें मुझे तुम्हारे वचनों की प्रतीक्षा में पूर्व १० दिवस का पूर्ण अनशन व्रत गोरक्षा हितार्थ रखना पड़ा। अब तुम्हारे पत्र ने विश्वास दिलाया। गोवध निषेध विधान संसद द्वारा पारित होने जा रहा है। व्रत केवल १० बीस दिन ही रखकर पूर्ण कर दिया, पश्चात् ता० ७-११-६६ के देहली प्रदर्शन के नग्न अत्याचारों ने हृदय को पूर्ण मौन कर दिया। फलस्वरूप १५ दिन निरन्तर रात दिन मौन व्रत रखा है। अब मुझे तथा जनता-जनार्दन को पूर्ण आशा है कि तुम अपनी विशेष आज्ञा द्वारा इस पवित्र गोरक्षा विधान को पारित कर जन साधारण के असन्तोष को शीघ्रातिशीघ्र दूर करोगी।

तुम्हारा शुभाकांक्षी—
जगन्नाथप्रसाद आर्य, उपप्रधान
आर्यसमाज कायमगंज

—कायमगंज में ता० २४-११-६६ को गोरक्षा हितार्थ पूर्ण हड़ताल रही तथा सभा हुई।

श्री प० रघुवरदयालु जी शर्मा गढ़वाल द्वारा वानप्रस्थ की दीक्षा

आर्य जगत को यह सूचना देते हुए प्रसन्नता हो रही है कि पंडित रघुवरदयालु जी शर्मा ग्राम प करी कोन्वकोट गढ़वाल ने दिनांक २१-१०-६६ को मोहनाश्रम हरिद्वार में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर लिया है अब उनका नाम स्वामी दयानन्दमुनि वानप्रस्थी हो गया है। अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही उन्होंने आर्यसमाज की तन मन से अथक सेवा की है इस कार्य में उनको कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा है।

अब उनकी हार्दिक इच्छा है कि वे अपने इस वानप्रस्थी जीवन में वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में लगे रहें। आर्यसमाजों से निवेदन है कि उनकी सेवाओं से लाभ उठायें। सत्कार करने में वे बड़ी रुचि रखते हैं और श्रद्धापूर्वक सत्कार करते हैं। पर्वतीय आर्य समाजों को विशेष रूप से लाभ उठाना चाहिए। कुछ दिन के लिये वे देहरादून में हैं उनका देहरादून का पता निम्न प्रकार से है—

—स्वामी दयानन्दमुनि जी वानप्रस्थी
११२ पुराना डालनवाला
देहरादून उ० प्र०

हिन्दी में आवश्यक सामग्री

देश में अनेक ऐसे लोग हैं जो अपना कामकाज हिन्दी में करना चाहते हैं। परन्तु उसमें उन्हें एक बड़ी कठिनाई यह रहती है कि अभी उन्हें उचित प्रकार की लेखन सामग्री हिन्दी में नहीं मिलती अथवा हिन्दी के रजिस्टर, फार्म, मोहरें आदि नहीं मिल पाती। इनमें से कुछ वस्तुएं किसी एक नगर में मिलती हैं तो अन्य नगर में नहीं मिलतीं। इन सब कामों में समन्वय की आवश्यकता है और ऐसा प्रबन्ध करना भी आवश्यक है कि जो व्यक्ति संस्थायें एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान इस प्रकार की सामग्री अपने उपयोग के लिए खरीदना और बनवाना चाहें तो इसके लिए उन्हें उपर्युक्त सूचना किसी निश्चित स्थान से मिल सके। यथासम्भव यह सामग्री वहीं से उचित मूल्य पर प्राप्त भी हो सके तो और भी अच्छा होगा। उदाहरण के रूप में कई छोटे-छोटे दुकानदारों को रसीदों के फार्मों, कैशमीमो के फार्मों, फाइल आवरणों, तारीख लगाने की मोहरों आदि की आवश्यकता पड़ती है। अदालतों में वकीलों को वहां काम में आने वाले विभिन्न प्रकार के फार्मों की आवश्यकता होती है। सामान्य नागरिक दीपावली, नव वर्ष तथा अन्य प्रमुख पर्वों पर बधाई अथवा अभिनन्दन कार्ड खरीदते हैं। ये सब सामग्री अंग्रेजी में सर्वत्र मिल जाती है। हिन्दी की सामग्री कहां-कहां मिलती है, क्या उसका मूल्य है, जो सामग्री अभी नहीं बनती या बिकी के लिए उपलब्ध नहीं है उसको तैयार कराने तथा उसके वितरण या बिक्री का उत्तरदायित्व कौन-कौन व्यक्ति या संस्था लेने को तैयार हैं, इसके बारे में सभी हिन्दी प्रेमियों से उनके सुझाव आमंत्रित हैं। —मन्दिर दास अध्यक्ष

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग